भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २१२०७/७३ रजि० नं० P RTK

मृद्रित संवत १,९६,०८,५३,०९०

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालङ्कार, एम. ए. पौष १८ २०४६ वि०

वर्ष १७ अङ्क ७ ७ जनवरी, १९९० वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड) एक प्रति ६० पै०

वेद मार्ग पर बढ़ते चरण

—प्रा० भद्रसेन, डाक० साधु आश्रम (होशियारपुर) १४६०२१

अपने गुरु ब्रह्मर्षि विरजानन्द जी दण्डी की आज्ञा पर जब महर्षि दयानन्द जी सरस्वती प्रचार क्षेत्र में आए तो भारतीय समाज में पुराण, रामायण, महाभारत की ही चर्चा थी। दो चार विद्वान् ही कभी कभार उपनिषदों या वेदान्त की बात करते थे। प्रायः सर्वत्र यही विश्वास था कि शंखासुर वेदों को पाताल लोक ले गया है। वेदों के पढ़ने-पढ़ाने की बात तो क्या, वेद के दर्शन ही दुर्लभ थे। इसीलिए सर्वत्र कर्मकाण्ड में भी इधर उधर के जैसे-कैसे कल्पित मन्त्र या श्लोक प्रचलित थे। कुछ विशेष विद्वान् ही कर्मकाण्ड के कुछ वेदमन्त्रों से परिचित थे।

महर्षि ने वेदों के प्रचार के लिए अत्यधिक प्रयास किया। गुरु-मन्त्र के रूप में गायत्री मन्त्र तभी तो आज यत्र-तत्र-सर्वत्र गूंजने लगा है।

पञ्चमहायज्ञ विधि, संस्कारविधि, हवन मन्त्र की पुस्तकों के माध्यम से कर्मकाण्ड के अन्दर वेदमन्त्रों का प्रयोग साधारण जन भी करने लगे हैं, क्योंकि इससे पूर्व अनेकों के लिए वेदों का उच्चारण और श्रवण भी दण्डपूर्वक प्रतिबन्धित था। वैदिक यन्त्रालय, अजमेर से महर्षि ने वेदसंहिता, वेदभाष्य, वैदिक वाङ्मय के प्रकाशन की भी व्यवस्था की।

वेदार्थ को जन-जन तक पहुंचाने के लिए महर्षि ने स्वयं जनता में वेदमन्त्रों की व्याख्या प्रारम्भ की और वेदभाष्य का क्रमशः प्रकाशन भी प्रारम्भ किया। इस कार्य को सामूहिक एवं स्थायी रूप देने के लिए महर्षि ने १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना की। प्रारम्भिक काल से आज तक आर्यसमाज ने वेद सम्बन्धी प्रकाशन एवं प्रचार के लिए काफी कार्य किया। चारों वेदों का भाषाभाष्य हजारों की संख्या में (दो संस्करण) आज सर्वत्र उपलब्ध हैं। वेदों के चुने हुए मन्त्रों की व्याख्या के रूप में बीसों पुस्तकें भिन्न-भिन्न लेखकों की उपलब्ध हैं। महर्षि दयानन्द के पश्चात् आज अनेक अन्य विद्वानों के वेदभाष्य सामने आ चुके हैं। शास्त्री, आचार्य और संस्कृत एम. ए. के पाठ्यक्रम में वेद के कुछ सूक्त सभी विश्वविद्यालयों में निर्धारित हैं। अनेक आर्यसमाजें प्रतिवर्ष वेदसप्ताह का विशेष आयोजन करती हैं और अनेक पत्रिकाएं वेद-विशेषांक प्रकाशित करती हैं।

वेदप्रचार के पीछे महर्षि की मूलभावना यही थी कि—'कहने, सुनने, सुनाने, पढ़ने, पढ़ाने का फल यही है कि (जो) वेद और वेदानुकूल स्मृतियों में प्रतिपादित धर्म का आचरण करना, इसलिए धर्माचार में सदा युक्त रहें ॥१॥ क्योंकि जो धर्माचरण से रहित है, वह वेद प्रतिपादित धर्मजन्य सुखरूप फल को प्राप्त नहीं हो सकता और जो विद्या पढ़ के धर्माचरण करता है वही सम्पूर्ण सुख को प्राप्त होता है ॥२॥

आचारः परमो धर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त एव च।
तस्मादस्मिन् सदा युक्तो नित्यं स्यादात्मवान् द्विजः ॥१॥

आचाराद्विच्युतो विप्रो न वेदफलमश्नुते।
आचारेण तु संयुक्तः सम्पूर्णफलभाग्भवेत् ॥२॥

(मनुस्मृति १, १०८, १०९)

सत्यार्थ प्रकाश समु. ३, पृष्ठ ५२ (वेदानन्द सम्पादित)

निःसन्देह महर्षि के आगमन काल की अपेक्षा आज वेद का प्रकाशन तथा प्रचार अपने बढ़ते चरणों पर है। पुनरपि हमारी स्थिति हवन मन्त्र के पाठ तक ही सीमित होकर रह गई है। आचरण की बात तो दूर अर्थज्ञान की ओर भी विशेष प्रवृत्ति नहीं। यह ठीक है कि पुराने आर्य बन्धु अधिकतर उर्दू आदि भाषाओं के ज्ञाता थे। कुछ ने वेद के प्रति श्रद्धा रखते हुए देवनागरी लिपि सीखी और कुछ ने अपनी परिचित लिपि में ही वेदमन्त्रों का रूपान्तरण करा लिया और वेदपाठ करने का यथाशक्ति प्रयास किया।

आज पहले की अपेक्षा हिन्दी-संस्कृत या देवनागरी लिपि का बहुत अधिक प्रसार है। अतः वेदमन्त्रों के पाठ में सरलता रहती है। हां, शुद्धता और अर्थज्ञान तो किसी से सीखने पर ही आ सकता है। आर्यसमाज के क्षेत्र में वेदभाष्य, वेदव्याख्या, हवनमन्त्र की अनेक पुस्तकें प्रायः छपती रहती हैं। यह कार्य अधिकतर व्यक्तिगत स्तर पर हो रहा है सामूहिक रूप में कम है। कोई विरली ही ऐसी आर्य-प्रतिनिधि सभा होगी, जिसने प्रचारकों की तरह कोई लेखक भी रखा हुआ हो। ऐसा क्यों? जब यह प्रश्न उभरता है, तो एक समाधान यह सामने आता है कि हम यह समझते हैं, यह तो स्वतः हो जाएगा। इसके लिए किसी विशेष व्यवस्था या एतदर्थ साधना की जरूरत नहीं।

वस्तुतः आज की परिस्थिति के परिप्रेक्ष्य में बहुत कम लोग ही इस ओर ध्यान देते हैं। अधिकतर के पास इसके लिए समय, रुचि ही नहीं है। हां, यह तो स्पष्ट बात है कि आज पहले की अपेक्षा वेद पढ़ने की ओर रुचि कम हो रही है। इस रुचि के कम होने के अनेक कारण हैं। जैसे कि—पहली बात तो यह है कि आर्थिक स्थितिवशात् प्रत्येक व्यक्ति को अधिक से अधिक समय धन कमाने के लिए कारोबार को देना होता है, क्योंकि आए दिन जीवन का स्तर उठ रहा है।

दूसरी बात यह है कि वेद पढ़ने की योग्यता बहुत कम में है, वे संस्कृत नहीं जानते या बहुत थोड़ी जानते है। उस पर भी तीसरी बात यह है कि वेद का स्वरूप, वर्णनशैली सरल-स्पष्ट नहीं। अर्थों में बहुत ही खींचतान है। अतः वेद का मार्ग (बोध) इतना सपाट नहीं है कि प्रत्येक सरलता से समझ ले।

इस पर पुनः प्रश्न उभरता है कि आखिर ऐसी स्थिति कब तक बनी रहेगी? हां, नेताओं का उत्तर तो हो सकता है कि, जब तक निभे तब तक ही सही' पर यह उत्तर वेदप्रेमियों का नहीं कहा जा

(शेष पृष्ठ ४ पर)

आओ सत्संग में चलें

यदि जीवन में प्रसन्न रहना चाहते हो, तो...

प्रत्येक व्यक्ति प्रसन्न रहना चाहता है और अपने ही तौर से प्रसन्न रहने का प्रयत्न भी करता रहता है। "आप किसी व्यक्ति से पूछिये कि क्या इसकी भेंट किसी ऐसे व्यक्ति से हुई है जो सर्वदा प्रसन्न रहता हो।" उत्तर होगा "नहीं।" आप उनसे पुनः पूछिये, "क्या उसने कभी सवदा प्रसन्न रहने वाले व्यक्ति के बारे मे सुना है ?" इसका उत्तर भी होगा, "नही।"

क्या यह आश्चर्य की बात नही है कि यद्यपि प्रत्येक मानव अपने को प्रसन्न रखने का प्रयत्न कर रहा है लेकिन फिर भी कोई ऐसा व्यक्ति हमारे सुनने मे नही आता जो प्रसन्न हो ? इसका कारण जानना कठिन नही है।

हम मानव के रूप मे जिस दिन जन्म लेते है हम वह सब कुछ उत्तराधिकार मे प्राप्त हो जाता है जो प्रसन्न रहने के लिये आवश्यक है, परन्तु वास्तविकता यह है कि हम अपने इस उत्तराधिकार को भूल जाते है और हमारी हालत उस करोडपति के पुत्र के समान हो जाती है जो अपने पिता से अनभिज्ञ होते हुये एक-एक रुपया भीख मागता डोल रहा है।

आप यदि अपनी खुशी को किसी भावी घटना पर निभर कर लेते है तो स्पष्ट ही इसका यह अर्थ होता है कि आप वर्तमान की खुशियो को बटोरने से इन्कार करते है। हा सकता है कि आपको खुशहाल बनाने की जिस घटना की आप प्रतीक्षा कर रहे हो, वह आपके जीवन मे आये या न आये और आप अप्रसन्न ही बने रहे। आप जीवन मे जितनी वस्तुये भी चाहते है उनम से कुछ को ही प्राप्त कर पाते हैं। और, क्योकि आपने अपनी खुशी को उन वस्तुओ की प्राप्ति की इच्छा पर निर्भर कर लिया है, इसलिए आप कभी खुशी प्राप्त नही कर पाते।

परिस्थितियो का प्रभाव

'जैसा करोगे वैसा भरोगे'—इस कर्म सिद्धान्त के अनुसार भाग्य हमे जीवन मे तरह-तरह के खेल खिलाता है। परन्तु प्रयत्न करने से हम अपने मन को इस प्रकार साध सकते है कि बाहर की परिस्थितिया हमको प्रभावित कर पायें और उनमे उत्पन्न होने वाली प्रतिक्रियाओ की दिशा को ही हम बदल सके। बाह्य परिस्थितियो द्वारा उत्पन्न होने वाली प्रतिक्रिया पर ही हमारी प्रसन्नता निर्भर रहती है अत हमे अपने मन को इस प्रकार प्रशिक्षित और सस्कारित करके बदलने की आवश्यकता है कि वह अनुशासित रूप से दिव्य मार्ग पर अग्रसर हो जाय।

इस पर कोई कह सकता है कि इसमे आध्यात्मिकता की तो कोई बात नही है। यदि आप जीवन यात्रा मे सुख प्राप्त करना चाहे तो आसानी से यह बात समझ मे आ सकती है कि इसके लिये कुछ न कुछ अनुशासन की अपेक्षा तो होगी ही। यह अनुशासन सरल, वैज्ञानिक और सब साधारण व्यक्ति की सहज पहुच मे होना चाहिये।

आप अपने दृष्टिकोण को बदलने के लिये मन को प्रशिक्षित कीजिये—आपको सुख की अनुभूति हो जायेगी। मन बड़ा जालिम भी है अत हमे इसे इस प्रकार साधना चाहिये कि यह एक वफादार चाकर हो जाये। चाहे कोई कितनी ही हथेली नचाये अथवा मत्र जपे परन्तु जब तक वह 'अपने पडोसी से वैसा ही प्यार नही करेगा जैसा कि वह अपने से करता है" कोई प्रगति नही हो सकती। हमारे प्राचीन ज्ञान की यह आधारभूत शिक्षा है।

देवयान = प्रकाशमार्ग

अग्रेजी का शब्द DIVINE सस्कृत क्रिया 'द्यु' से निकला है जिसका अर्थ है प्रकाश। सस्कृत मे इसे देवयान कहते हैं, अग्रेजी मे यह DIVINE PATH बन जाता है जिसका अर्थ है प्रकाशमार्ग। मन को बन्धन से मुक्त करके ज्ञान की ओर अग्रसर करने वाली सिद्धि का पथ ही दिव्य पथ है।

वैदिक ज्ञान का महत्त्व

हमे यह समस्त ज्ञान वेदो से प्राप्त हुआ है। वेद जिस भाषा मे हैं वह यूरोप की और अन्य भाषाओ की भी जननी है। वेद शब्द सस्कृत क्रिया विद् से बना है जिसका अर्थ है 'जानना।' अग्रेजी शब्द WIT भी सस्कृत की उसी धातु (विद्) से निकला है। ससार की सभी भाषाओ मे सस्कृत के शब्द पाये जाते है परन्तु सस्कृत भाषा मे एक भी शब्द ऐसा नही है जो किसी अन्य भाषा से लिया गया हो। समस्त विज्ञान का स्रोत वेद ही है। वहम और वद्वेषभाव को त्यागे बिना वैदिक ज्ञान के खजाने से पूर्ण लाभ उठाना सम्भव नहीं है। आज २०वी शताब्दी के वैज्ञानिक के लिये वेदो को अन्य व्यक्तियो की अपेक्षा समझना अधिक आसान है। अगर आप इस २०वी शताब्दी के किसी अन्तरिक्ष यात्री द्वारा खीचे गये विश्व के चित्र को देखे तो आप देखेंगे कि आप वैदिक ज्ञान की ओर बढ रहे हैं।

प्रयोगात्मक विज्ञान के तरीको ने अध्यात्मिकता की भौतिकता से पृथक् करने वाली काल्पनिक दीवार को विध्वस कर दिया है। सृष्टि के रहस्य को हल करने और समझने वाला भावी वैज्ञानिक कोई योगी ही होगा। सकीर्ण धार्मिकता के दिन अब इने गिने रह गये है क्योकि अब ज्ञान का प्रकाश मानव मस्तिष्क को प्रकाशित करने ही वाला है। अत यह उपयुक्त समय है कि मानव जाति के पास उपलब्ध प्राचीनतम ज्ञान का भण्डार, जो वेदो मे मौजूद हैं उसका अध्ययन और अनुसरण किया जाये। यह ज्ञान न तो किसी एक देश की और न किसी एक जाति की बपौती है। यह समस्त मानव जाति की विरासत है जो कि सृष्टि की आदि भाषा मे लिखित है।

यदि आप आज और अब खुश नहीं रह सकते तो स्वर्ग के सुख की बात करना भी व्यर्थ है। प्रकृति किसी से पक्षपात नही करती, आदमी जैसा बोता है उसे वैसा ही काटना पडता है। वेदो का मार्ग इस ससार मे अपने को सुखी बनाने का मार्ग है। केवल अपने 'कर्म की चिन्ता करो, शेष की चिन्ता भगवान पर छोड दो।'

[अग्रेजी से अनूदित]

साम्प्रदायिक दलों पर प्रतिबन्ध की मांग

सार्वदेशिक सभा के वार्षिक अधिवेशन में प्रस्ताव : ननकाना और हज की सामूहिक यात्रा बन्द हो

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (दिल्ली) के, वार्षिक अधिवेशन १५,१६ दिसम्बर ८४ को आर्य समाज दीवानहाल दिल्ली मे सम्पन्न हुआ। १५० प्रतिनिधियो ने भाग लिया। आगामी वर्ष के लिए २६,५०,२०० का बजट स्वीकार हुआ प्रतिष्ठित सदस्यो, पदाधिकारियो और अतरग सदस्यो का निर्वाचन हुआ—

प्रतिष्ठित सदस्य—१ श्री स्वा० सर्वानन्द जी महाराज, २ श्री स्वा० रामेश्वरानन्द जी, ३ म० आर्य भिक्षु जी ४ श्री सत्यदेव जी भारद्वाज (लन्दन) ५ श्री पृथ्वीसिंह आजाद।

पदाधिकारी श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले आगामी ३ वर्ष के लिए पुन सव सम्मति से प्रधान निर्वाचित हुए और उन्हे ही अन्य पदाधिकारियो एव अतरग सदस्यों को नियुक्त करने का अधिकार दिया गया। मन्त्री ओमप्रकाश त्यागी, कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह उपप्रधानो, उपमन्त्रियो, पुस्तकाध्यक्ष एव अतरग सदस्यो का भी निर्वाचन हुआ।

श्री रवीन्द्र कपूर चार्टर्ड एकाउटेन्ट नारायण दास कपूर एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली लेखा निरीक्षक नियुक्त हुए।

आर्यसमाज के दिवगत विशिष्ट व्यक्तियो के साथ देश की अप्रतिम नेता श्रीमती इन्दिरा गाधी की निर्मम हत्या पर शोक प्रस्ताव पारित किया गया। देश मे बढते आतकवाद के विरोध मे और भोपाल काड के पीडित व्यक्तियो के पुनर्वास के लिए उचित सहयोग देने के सम्बन्ध मे प्रस्ताव पास करते हुए भारतीय राष्ट्र को बिखरने मे बचाने के लिए निम्न कदम उठाने की सिफारीश की गई—

कट्टर साम्प्रदायिक पार्टियो पर जो अपनी जाति के पक्ष मे ही काम करती हो और एक सीमा से जाकर राष्ट्रीयता को हानि पहुचाने मे कसर नही रखती हो पूरी पाबन्दी लगा देनी चाहिए। केवल अपने धम अथवा भौगोलिक सीमा के ही हित मे कार्य करने के लिए कृत सकल्प पार्टियो पर भी रोक लगा देनी चाहिए। तेलगू देशम और खालिस्तान के इसी किस्म के दो उदाहरण आपके सामने हैं। कुछ इनमे से अपने अलग झण्डे और सविधान की भी बात करते हैं। अकालियो को अपना आनन्दपुर प्रस्ताव वापिस करने के लिए कहा जाना चाहिए। ननकाना साहब और हज की सामूहिक यात्रा को बन्द किया जाना चाहिए। जिससे कि देश के विरुद्ध षड्यन्त्र और तस्करी को रोका जा सके। ×

अमरीकी करोड़पति का भारतीय युवती से विवाह

फोर्ड मोटर कम्पनी के उत्तराधिकारी अल्फेड फोर्ड ने 29 वर्षीय बगाली युवती डॉ० शर्मिला भट्टाचार्य से विवाह कर लिया। वह विवाह उन्होंने 26 दिसबर को भारतीय विधि से किया।

अल्फेड फोर्ड और शर्मिला भट्टाचार्य दोनो ही हरे कृष्ण पथ के अनुयायी हैं। अल्फेड ने हरे कृष्ण पथ की दीक्षा ग्रहण करने के बाद अपना नाम अम्बरीष रख लिया है। विवाह समारोह सिडनी मे नदी के किनारे हरे कृष्ण आन्दोलन के एक फार्म मे हुआ।

—आर्य समाज, लल्लापुरा, वाराणसी के प्रधान श्री मेवालाल के पिता श्री मुसेराम मुखिया का निधन हो गया वे 91 वर्ष के थे। दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई। समाज ने शोक प्रस्ताव पारित किया।

सुभाषित

मेरा आशावाद

बुराई क्या चीज है, सो मैं जानती हूं। एक दो बार मैं उससे जूझी हूं और अपने जीवन में उसके ठिठुरा देने वाले स्पर्श का अनुभव किया है। इसलिए जब मैं कहती हूं कि बुराई की एक मानसिक कसरत के सिवाय और कोई अहमियत नहीं है तो समझिये कि मैं अनुभव के बल पर ही ऐसा कह रही हूं। क्योंकि मेरा उससे वास्ता पड़ा है, इसलिए मैं ज्यादा सही रूप से आशावादी हूं। विश्वासपूर्ण कह सकती हूं कि बुराई में जो संघर्ष अनिवार्य हो जाता है, वह बड़े-बड़े वरदानों में से एक है। वह हमें मजबूत, धैर्यशील और सदा सहायता करने वाला व्यक्ति बना देता है। परिस्थितियों की गहराई तक वह हमें ले जाता है और सिखाता है कि भले ही संसार दुख से भरा है, पर वह उसे जीतने की शक्तियों से भी भरा है मेरा आशावाद इस बात पर आधारित नहीं है कि बुराई का अस्तित्व है ही नहीं, किन्तु वह इस उल्लास-पूर्ण विश्वास पर आधारित है कि उसकी अपेक्षा अच्छाई कहीं अधिक है और वह जीते, इसलिए अच्छाई के साथ पूरा मन लगा कर सहयोग करने के लिए मैं सदा तैयार रहती हूं। हर वस्तु और हर व्यक्ति में उसके अन्दर छिपी अच्छाई को पहचानने की जो शक्ति प्रभु ने मुझे दी है मैं उसे और अधिक विकसित करने का प्रयत्न करती हूं और कोशिश करती हूं कि वह अच्छाई मेरे जीवन का अंग बने। संसार में सुख के बीज बोये गए हैं, किन्तु यदि मैं आनन्ददायक विचारों को अपने व्यावहारिक जीवन में न ढालूं, अपने खेत को खुद न जोतूं, तो उस अच्छाई की फसल को मैं कैसे काट सकती हूं।

—हैलन केलर

सम्पादकीयम्

हिन्दू वोट का चमत्कार

इस बार लोकसभा के चुनाव में जिस तरह इंका ने विजय प्राप्त की है, उसने सबको चकित कर दिया है। सब ज्योतिषी, सब अखबार वाले, और जनता की राय जानने के लिए लाखों रुपया खर्च करके आकलन करने वाली संख्याविद् संस्थाएं भी पूर्व अनुमान करने में सर्वथा विफल रहे। इसको कहते हैं चमत्कार। स्वयं कांग्रेस के नेताओं को भी इस चमत्कार की न तो पूर्व कल्पना थी और नहीं कुछ आभास था। संसद में दो तिहाई बहुमत ही बहुत अधिक माना जाता है और उसी के आधार पर संसद से कोई भी निर्णय मनवाया जा सकता है। परन्तु तीन चौथाई बहुमत तो जैसे दिमाग को सातवें आसमान पर पहुंचा देने वाला है।

इस अभूतपूर्व चमत्कार के कारणों का विचारकों ने तरह-तरह से विश्लेषण किया है। भारतीय जनता को अनपढ़ और नासमझ समझने वाले तथाकथित बुद्धिजीवी भी यह देखकर गच्चा खा गये हैं कि इन गूंगे, जहालत के मारे, तरह-तरह के अन्ध-विश्वासों में फंसे और अपनी अत्यधिक गरीबी के कारण जीने के लिए संघर्ष करने वाले, जनता जनार्दन के नाम से सम्बोधित, इन करोड़ों लोगों में इतना आत्म-विश्वास कहाँ से छिपा हुआ था। जैसे रात का अंधेरा अग-जग को अन्धकार के एक आवरण से ढक देता है, किन्तु सूर्योदय होते ही अन्धकार पता नहीं कहां विलीन हो जाता है, उसी तरह भारतीय जनता ने जैसे क्षितिज पर नया सूर्योदय देखकर दोनों हाथों से जल भर भरकर अर्घ्य चढ़ाया है।

क्या यह इन्दिरा गांधी की हत्या से उत्पन्न आक्रोश की लहर थी या राजीव गांधी के लिए सहानुभूति की लहर थी? इसमें कोई सन्देह नहीं कि इन्दिरा गांधी की हत्या ने जैसे सारे देश को लहूलुहान कर दिया था उसका आक्रोश और सहानुभूति की लहर भी अवश्य थी, परन्तु जिस लहर ने इतना बड़ा कहर बरपा कर दिया, वह इससे भी कहीं बड़ी लहर थी। वह बड़ी लहर जनता का यह विश्वास था कि इस देश के चुनाव में जीतकर लोकतान्त्रिक विधि से प्रधानमंत्री बने व्यक्ति की हत्या करके देश के मनोबल को गिराया नहीं जा सकता। पूर्व से पश्चिम तक और उत्तर से दक्षिण तक जो कांग्रेस को इतना बड़ा समर्थन मिला है, वह केवल कांग्रेस या राजीव गांधी के प्रति सहानुभूति के कारण नहीं मिला, वह इस कारण मिला है कि देश हत्या की राजनीति के सर्वथा विरुद्ध है। और यह भी कि देश के नेता को मारकर लोकतन्त्र का जनाजा नहीं निकाला जा सकता।

स्वयं राजीव गांधी ने स्वीकार किया है कि इतना बड़ा बहुमत सहानुभूति की लहर नहीं थी, बल्कि भविष्य के प्रति जनता की आस्था थी। नहीं तो क्या स्वयं राजीव गांधी नहीं जानते कि वे स्वयं एक परिस्थिति की पैदावार हैं। न वे पं० जवाहरलाल नेहरू हैं और न इन्दिरा गांधी हैं। उनकी मां ने और उनके नाना ने देश में जितनी लोकप्रियता प्राप्त की थी, उनके पीछे पूरा उनका जीवन था, जबकि श्री राजीव गांधी का राजनीतिक जीवन तो अभी प्रारम्भ ही हुआ है।

अभी तक कांग्रेस हमेशा अल्प संख्यकों के भरोसे उनके तुष्टिकरण के माध्यम से सत्ता में आती रही है। इस बार शायद पहला अवसर है जब अल्पसंख्यकों ने संगठित रूप से कांग्रेस के विरोध में वोट दिया है। अल्प संख्यकों के इस कांग्रेस-विरोधी रुख के कारण देश के जन-जन में यह मानसिक प्रतिक्रिया भी हुई है कि राष्ट्र के भविष्य को अगर बचाना है तो हमें ऐसी पार्टी को वोट देना है जो देश को स्थिर सरकार दे सके। सन् सतत्तर में जनता पार्टी को वोट देकर भारत की जनता ने परख लिया कि इन तिलों में तेल नहीं है, इसलिए अब वह उस प्रकार का परीक्षण करने को तैयार नहीं। गलती करना मनुष्य का स्वभाव है, परन्तु उस गलती से जो शिक्षा ग्रहण नहीं करता वह मनुष्य अर्थात् मननशील कहलाने योग्य नहीं है। भारत की जनता इतनी मननशील अवश्य है कि एक बार की हुई गलती को दुबारा न दुहराये। अल्प संख्यकों के विरोध का परिणाम यह हुआ कि बहुसंख्यकों ने जी भरकर कांग्रेस को वोट दिया। यह केवल हम ही नहीं कह रहे हैं, बल्कि जितने धराशायी दिग्गज नेता हैं, वे भी मन ही मन इस बात को पहचानते हैं और दलित मजदूर किसान पार्टी के नेता श्री चरण सिंह और कांग्रेस-ज के नेता श्री जगजीवन राम ने तो खुले बन्दों घोषणा की है कि इस बार कांग्रेस की इस चमत्कारी विजय में हिन्दू वोट ही कारण है। समस्त हिन्दुत्ववादी संस्थाओं ने, जिनमें राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, आर्य समाज जैसी प्रगतिशील संस्था तथा अन्य हिन्दुत्ववादी और राष्ट्रवादी एकत्र हैं, उन सबने खुलकर कांग्रेस के उम्मीदवारों का समर्थन किया है। असल में कांग्रेस की इस चमत्कारपूर्ण विजय का श्रेय हिन्दू वोट के चमत्कार को है।

आज तक इस देश का 85 प्रतिशत, और सबसे बड़ा घटक, हिन्दू समाज न स्वयं अपनी शक्ति को पहचान सका और न राजनीतिक दलों ने हिन्दुत्व की शक्ति को पहचाना। शायद इस बार पहला अवसर था जब दोनों ने इस शक्ति को हृदयंगम किया है।

अगर हमारा यह विश्लेषण सही है तो भविष्य में कांग्रेस को अल्प संख्यकों के तुष्टिकरण की आवश्यकता नहीं है। वह उनके वोटों के बिना भी भारी बहुमत से जीत सकती है। इसलिए इस समय कांग्रेस के सामने सबसे बड़ा उद्देश्य केवल यही होना चाहिये कि भविष्य में वह कभी हिन्दू हितों की उपेक्षा नहीं करेगी। आखिर अन्य पार्टियों की पराजय का कारण क्या है? भारतीय जनता पार्टी जैसी हिन्दू-हितैषी समझी जाने वाली पार्टी ने भी अल्पसंख्यकों के वोट पाने के लिए हिन्दू हितों की बात कहनी छोड़ दी थी। बाकी सब पार्टियां तो निकली ही कांग्रेस से थी। इसलिए वे तो सिवाय कांग्रेस की कार्बन कापी के और कुछ हो ही नहीं सकती थी। इसलिए वे सब जितना-जितना कांग्रेस की 'तथाकथित असाम्प्रदायिकता' की ओर बढ़ती गई, उतना-उतना देश का बहुमत उनसे कटता गया।

तो क्या इसका यह अर्थ है कि अब कांग्रेस हिन्दू साम्प्रदायिकता की शिकार हो गई है? नहीं, हमारी बात को गलत मत समझिए। असलियत यह है कि सम्प्रदाय-निरपेक्षता के सिद्धांत को कभी ठीक तरह से समझा ही नहीं गया। इतिहास, संस्कृति और व्यवहार—इन सब दृष्टियों से सम्प्रदाय निरपेक्षता की कसौटी पर सही तौर से कोई उतरता है तो केवल हिन्दू समाज ही उतरता है। इसलिए निश्शंक रूप में यह घोषणा की जा सकती है कि जिस दिन यह देश हिन्दू बहुल नहीं रहेगा, उस दिन यहां सम्प्रदाय-निरपेक्षता भी नहीं रहेगी। क्या हमारे सारे पड़ोसी देश इस बात के जीते-जागते उदाहरण नहीं है? संसार में और कौन सा देश है जो हिन्दुस्तान के हिन्दुओं की तरह देश के सबसे बड़े गौरवास्पद पदों पर किसी गैर-हिन्दू को बिठाने का साहस कर सके? इसी दृष्टि से सम्प्रदाय-निरपेक्षता के सिद्धांत को मानने वाले राष्ट्र में सबसे पहली आवश्यकता यह है कि वह योग्यता को सम्प्रदाय से ऊपर स्थान दे और अल्प संख्यकों के संरक्षण को यथा योग्य के व्यवहार में परिणत करे।

हम बार-बार यह कहते रहे हैं कि सम्प्रदाय निरपेक्ष राष्ट्र में किसी साम्प्रदायिक पार्टी को राजनीतिक मान्यता नहीं मिलनी चाहिए। फिर उसी बात को दुहराते हैं। श्री राजीव गांधी ने स्वयं इसके औचित्य को स्वीकार किया है और आम जनता की सहमति से इस पर अमल करने का आश्वासन दिया है। हम समझते हैं कि कांग्रेस की इस विजय में आम सहमति की वह बात अपने आप छिपी हुई है। इसी प्रकार हमारा कहना यह भी है कि इंका को विजय दिलवा कर देश ने आनन्दपुर प्रस्ताव के विरोध में जनमत प्रकट कर दिया है। इसलिए भविष्य में उस पर चर्चा नहीं होनी चाहिए। यों भी सरकारिया आयोग बन जाने के बाद वह सर्वथा अन्यथा सिद्ध हो चुका है।

हिन्दू वोट के इस चमत्कार को सही रूप में समझने का समय आ गया है।

स्वामी श्रद्धानन्द राष्ट्रीयता के प्रतीक थे

६३वें बलिदान दिवस पर दिल्ली में विशाल शोभा यात्रा

आर्य समाज के तीन सूत्रीय महाभियान के क्रियान्वयन पर विशेष बल

दिल्ली २५ दिसम्बर—स्वामी श्रद्धानन्द के ६३ वें बलिदान दिवस के अवसर पर आज श्रद्धानन्द बाजार से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नेतृत्व में एक विशाल एवं भव्य शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। शोभा यात्रा बड़ी ठण्ड के बावजूद अपने निश्चित समय १० बजे से प्रारम्भ हो गई थी। प्रातः से ही गुरुकुलों व डी०ए०वी० स्कूलों के बच्चे बड़ी संख्या में शोभा यात्रा में भाग लेने के लिए श्रद्धानन्द बलिदान भवन के सामने पहुंच चुके थे। हंसराज कुलाची माडल स्कूल की ओर से अनेक सुन्दर झांकियों का प्रदर्शन किया गया गाजियाबाद, बहादुरगढ़, नरेला, फरीदाबाद आदि के आर्यसमाजों के लोग तथा गुरुकुलों के बच्चे भी समय पर अपने बैनर के साथ यहां पहुंच चुके थे। आर्य प्रादेशिक सभा के मन्त्री श्री रामनाथ जी सहगल शोभा यात्रा कार्यक्रम का आदेश दे रहे थे।

शोभा यात्रा में बड़ी संख्या में घोड़े, हाथी, बैंड बाजे तथा सुसज्जित झांकियां सम्मिलित थे। फूलमालाओं से सुसज्जित टैम्पुओं पर संगीत कलाकार संगीत प्रस्तुत कर रहे थे। स्कूलों तथा गुरुकुलों के बच्चे अपने कार्यक्रम पेश कर रहे थे। आर्यवीर दल और आर्य वीरांगना दल के युवक व युवतियों ने अनेक प्रकार के शारीरिक कार्यक्रमों का प्रदर्शन किया।

श्रद्धानन्द बलिदान भवन में यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् शोभायात्रा का संचालन प्रारम्भ हुआ यह शोभा यात्रा श्रद्धानन्द बाजार नयाबास, लालकुआं, चावड़ी बाजार, नई सड़क, चादनी चौक आदि क्षेत्रों से होती हुई लगभग आठ किलोमीटर का मार्ग तय करते हुए लालकिला मैदान पहुंची। जब शोभायात्रा अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द के विशाल प्रतिमा के सामने घण्टाघर पहुंची तो वहां विशाल मंच पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्य जनता तथा देशवासियों को सम्बोधन देते हुए कहा चादनी चौक क्रान्तिकारियों की क्रीडा स्थली रही है। इसी जगह स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अंग्रेज सिपाहियों के संगीनों के सामने छाती खोलकर अपनी निर्भीकता का परिचय दिया था। इसी चादनी चौक में वीर वैरागी, गुरु तेगबहादुर, भाई सतीदास और भाई दयाला का बलिदान हुआ था।

भाई-सतीदास को यहीं आरों से चीरा गया था। इसी वीर स्थली पर रास बिहारी बोस ने कटरा धूलिया से लार्ड हार्डिंग पर बम फेंका था। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द राष्ट्रीयता के प्रतीक थे। हिन्दू-मुस्लिम इतिहास में वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने प्रथम गैर मुस्लिम नागरिक के रूप में दिल्ली की विशाल जामा मस्जिद के मेम्बर से हिन्दू-मुस्लिम एकता का सन्देश राष्ट्रवासियों को दिया। उन्होंने भारतीय संस्कृति की पुनर्स्थापना और राष्ट्रीय चरित्र निर्माण के लिए गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की थी। उन्होंने हिन्दी के प्रचार तथा अछूतोद्धार के लिए महान् कार्य किए थे। मंच पर आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल और प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु भी उपस्थित थे। यह मंच आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली के सौजन्य से विशेष रूप से बनाया गया था, जिसका संचालन आर्य समाज दीवान हाल के प्रधान श्री सूर्यदेव जी कर रहे थे।

तीन सूत्रीय महाभियान पर विशेष बल

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने सम्बोधन में देशवासियों से अपील की कि वह अंग्रेजी के मोह तथा भ्रमजाल से मुक्त होने का प्रयत्न करें। शराब हमारे शारीरिक और मानसिक पतन का कारण है, इसलिए शराबबन्दी आवश्यक है। गाय हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं की प्रतीक है। देश का आर्थिक ढांचा गोवंश की रक्षा करने से सुदृढ़ होना सुनिश्चित है। इसलिए गोहत्याबन्दी तथा गौ रक्षा देशवासियों का मुख्य कर्तव्य होना चाहिए। आर्यसमाज अपने ३ सूत्रीय महाभियान के माध्यम से इन कार्यक्रमों पर विशेष बल दे रही है। स्वामी जी ने जन समूह के साथ ३ नारे भी लगाए—गो की रक्षा करो, अंग्रेजी छोड़ो-देशी भाषाएं लाओ और शराब बन्द करो।

ऐतिहासिक लालकिले के सामने जब शोभा यात्रा पहुंची तो वहां विशाल जन सभा का आयोजन श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर लालकिला मैदान में सांसद सुश्री उमा भारती ने स्वामी श्रद्धानन्द को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे एक आदर्श महात्मा थे जिनके जीवन मूल्य आज भी हमारे लिए अनुकरणीय है। संसद सदस्य श्री विजय कुमार मल्होत्रा प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् प्रो० राजेन्द्र सिंह जिज्ञासु तथा डा० शशि प्रभा आदि वक्ताओं ने भी श्रद्धानन्द द्वारा समाज व राष्ट्र के प्रति की गई बहुमूल्य सेवाओं का स्मरण कराते हुए उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए।

—प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

वेद मार्ग पर बढ़ते चरण

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सकता। ऋषि भक्तों की भावना इस उत्तर से कभी भी सन्तोष नहीं कर सकती। ऐसे वेद प्रेमियों से निवेदन है, कि वे अपने हृदय की भावनाओं को केवल हृदय में ही न रखें, अपितु मिल-जुल कर प्रयास करें और कम से कम वर्ष में एक बार तो एक पग वेदमार्ग पर आगे बढ़ाएं।

आज की स्थिति में आवश्यकता इस बात की है, कि वेद की भाषा और वर्णन शैली को हृदयंगम कराने के लिए विशेष प्रयास हो। क्योंकि वेद की भाषा व शैली लौकिक संस्कृत से भिन्न भी है। अतः क्रमश: ऐसे पग सामने आयें, जिससे वेद का शब्दार्थ, पर्याय, परिचय, पठन-प्रकार और शैली स्पष्ट हो। अत जो वेदप्रेमी इस योजना को साकार करना चाहते हैं वे लेखक से सम्पर्क करें।

धोखेबाज से सावधान

एक लड़का ब्रह्मपाल सिंह पुत्र गजेसिंह ग्राम-पोस्ट इटावा जिला मुजफ्फर नगर (उ. प्र) का रहने वाला लगभग डेढ़ दो मास से श्री आनन्द मित्र शास्त्री जी के साथ मेरे वैदिक आश्रम भादस में आया था और मेरे आश्रम का निर्माण कार्य चल रहा है। मैं चिनाई करवा रहा था। २-१२-८९ को पांच हजार रुपए बैंक से निकलवा कर लाया था। ५-१२-८९ को वह प्रातः लगभग साढ़े सात बजे बक्से से ढाई हजार रुपए निकाल कर फरार हो गया। यहां पर वह कहता था, मैं गुरुकुल भैंसवाल, गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली और गुरुकुल झज्जर में भी पढ़ा हूं। स्वामी ओमानन्द जी की बहुत बुराई करता था। स्वामी जी को तो मैं ३५-४० वर्षों से जानता हूं परन्तु वह ब्रह्मपाल सिंह स्वयं ही चरित्रहीन था और बहुत ही आवारा व बदमाश था। मैंने उसके खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करा दी है। यदि गुरुकुल झज्जर या गुरुकुल भैंसवाल में पहुंच जाए तो ऐसे व्यक्ति को बन्द करवा देना चाहिए।

—मा० वेदप्रकाश आर्य

राष्ट्रीय शिक्षा-नीति के संबंध में कुछ उपयोगी सुझाव

श्री बलभद्र कुमार हूजा,
कुलपति गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार

विभिन्न शिक्षा-पद्धतियो का बारीकी से अवलोकन करने के पश्चात् राष्ट्रीय शिक्षा पर विचार करते हुए मैं महसूस करता हू कि वह वर्तमान शिक्षा-पद्धति क्या हमे सस्कारी बना सकती है जिसमे गुरु-शिष्य सबन्ध टूटे हो, नियम-बद्धता का स्थान अनुशासन हीनता ने ले रखा हो, गुरु-छात्र मर्यादायें इस सीमा तक पहुची, हो कि अध्यापक छात्र के पीटने से सत्रस्त हो।

हमारी शिक्षा-नीति भटकाव के चौराहे पर खडी है। स्वतत्र भारत के शैक्षणिक कारखाने बेरोजगार नवयुवको की विशाल पक्तियो को बढाये जा रहे हैं। शिक्षा प्राप्ति तथा नैतिक स्तर उठाना ये हमारे शैक्षणिक जीवन की दो पृथक धारायें बन गई हैं। यह अत्यन्त खेद और चिन्ता का विषय है कि शिक्षा का उदात्त सस्कारो से कोई तालमेल नही रहा है। कहा गयी ऋषि-मुनियो की आदर्श परम्परायें एव प्राचीन सस्थायें जहा गुरु-शिष्य दीप से दीप जलन की भावना से जगत् मे नव-जागरण का सचार करते थे। कहाँ गई हमारी आध्यात्मिकता जिसका आज की शिक्षा से कोई सरोकार नही। शिक्षा मानव निर्माण का ऐसा साधन है जो उसे पशु के स्तर से सस्कृत कर उसकी जीवन-धारा बदल देती है। किन्तु शिक्षा के समग्र सवाल पर आज जन-मानस दिग्भ्रात है।

ऋषि दयानन्द जी ने आज से १०० वर्ष पूर्व नव-भारत के निर्माण हेतु शिक्षा का जो स्वरूप हमारे सामने उपस्थित किया उसके क्रियान्वयन हेतु स्वामी श्रद्धानन्द ने १९०० मे गुरुकुल कांगडी की स्थापना की। शिक्षा जगत् के विद्वान मानते है कि यह गुरुकुल शिक्षाप्रणाली के उजागर स्वरूप के सम्बन्ध मे अत्यन्त सफल प्रयागशाला व निर्माणशाला के रूप मे कार्य करता रहा है। यद्यपि गुरुकुल कागडी की प्राचीन परमपराये राष्ट्रीय शिक्षा के सन्दर्भ मे नवप्रभात सदृश सुखद रही तथापि कालान्तर मे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय भी इन पुरातन मूल्य-परम्पराओ का निर्मल रूप मे पूर्णत निर्वाह न कर पाया। राष्ट्रीय शिक्षा-प्रणाली आज और भविष्य की आवश्यकताओ, आकाक्षाओ के अनुकूल होनी चाहिये। जितना भी अध्ययन मैं विभिन्न शिक्षा-प्रणालियो का कर पाया हू, मेरा मत सुदृढ हो गया है कि स्वामी दयानन्द द्वारा प्रतिपादित ऋषि प्रणीत शिक्षा-प्रणाली ही राष्ट्र को समुन्नत कर सकती है। उसके आधार स्तम्भ हैं, यम नियम का पालन, गुरु शिष्य परम्परा, अन्य विषयो के साथ धनुर्वेद, आयुर्वेद, गाधर्व वेद और अथर्ववेद अर्थात् शिल्पविद्या का समावेश, रोजगार शिक्षा के साथ आत्मिक उन्नति के सस्कार भी प्रत्येक युवक मे जागृत होना जरूरी है।

आज चारो ओर से हमे शिक्षा-सबधी समस्याओ ने घेर रखा है। देश मे १२० से भी अधिक विश्वविद्यालय, ४५०० कालेज, ४०००० माध्यमिक पाठशालायें, और छ लाख प्राथमिक पाठशालायें है। उच्च शिक्षा के सस्थानो मे लगभग दो लाख अध्यापक है। इक्कीस लाख विद्यार्थी अध्ययन कर रहे है। अढाई लाख विद्यार्थी स्नातकोत्तर अध्ययन कर रहे हैं। वैज्ञानिक जनशक्ति के अनुसार हमारी गणना विश्व के राष्ट्रो मे तीसरी है। हमारे वैज्ञानिक विश्व के राष्ट्र वैज्ञानिको के समकक्ष हो सकते हैं। लेकिन फिर भी वर्तमान शिक्षा-प्रणाली हमारी सास्कृतिक परम्पराओ, सामाजिक लक्ष्यो और आर्थिक आवश्यकताओ तथा हमारे पुरानी पद्धति पर आधारित स्नातक कोर्स देश की आधुनिक आवश्यकताओ को पूरा नही कर पा रहे।

शिक्षा का सार्थक प्रयोजन केवल पढना-पढाना नही बल्कि निर्माण करना एव कराना है। शिक्षा की अहमियत निर्माणकर्ता एव निर्मित वस्तु की तरह होनी चाहिए। शिक्षा से हम एक अबोध बालक मे सत्य-असत्य का विवेक पनपाकर उसे एक जिम्मेदार नागरिक के रूप मे राष्ट्र को समर्पित करते है।

शिक्षा के उद्देश्य की सफलता माता-पिता एव आचार्य के सम्मिलित प्रयास मे ही सभव है। प्रत्येक गृह बालक की प्राथमिकता का निर्माणशाला है। इस हेतु 'माता निर्माता भवति' सिद्धान्त स्वीकार किया जाना चाहिये। आचार्य शिष्य का सबध गर्भस्थ शिशु की तरह अतरग होना चाहिए। प्रत्येक शिक्षक छात्र के एक छोटे समुदाय के सर्वतोमुखी विकास के लिए उत्तरदायी हो। छात्र-अध्यापक सबध कक्षा तक सीमित न होकर जीवन-पर्यन्त जीवन मूल्यो के साथ जुडे हो।

बालक मे अनुकरण की स्वभाव-जन्य प्रवृत्ति होती है। माता, पिता एव आचार्य के आचार-व्यवहार का अनुकरण करने के उसके प्रयास निरन्तर जारी रहते हैं, अत अपेक्षित है कि ये महत्वपूर्ण घटक अपने क्रियाकलापो पर पूर्ण निगरानी रखें जिससे सवेदनशील बाल-मस्तिष्क मे गलत प्रवृत्तियो का उदय न हो। प्रत्येक अध्यापक और छात्र दैनिक कार्य विवरण डायरी रखे तथा इस प्रक्रिया को शिक्षा का अविभाज्य अग माना जाये। बचपन से ही आत्मदर्शन एव स्वविवेचन की प्रवृत्ति विकसित करायी जाये ताकि वह अपने विवेक को सत्यासत्य की खोज मे लगा सके। उसमें उचित सस्कारों के आरोपण की जिम्मेदारी राज्य समाज, एव व्यक्ति तीनो पर है। आठ वर्ष के पश्चात यदि कोई अपने बच्चो को पाठशाला न भेजे तो उसे कानूनन दडनीय घोषित किया जाये। यद्यपि राज्य सरकारो की नीति है कि प्रत्येक ५ वर्ष का बालक पाठशाला जाये लेकिन अधिकाश निर्धन वर्ग के बच्चे बीच म ही पाठशाला छोड देते है जिससे शिक्षा कार्यक्रमो मे लगे करोडो रुपये का अपव्यय होता है। इसे रोकने हेतु निम्न सुझाव दिये जा सकते है—

स्वावलम्बन का महत्व

क—पाठ्यक्रमो मे रोजगारी शिक्षा का समावेश।

ख—शिक्षा सस्थान बालको की रुचियो को स्वाभाविक रूप से बढाने मे सहयोगी रहें।

ग—खेल-खेल मे शिक्षा देने का महत्व प्रत्येक स्तर पर अपनाया जाये।

घ—बच्चो के स्वास्थ्य की समय-समय पर पाठशालाओ द्वारा जाच हो।

च—निर्धन छात्रो की शिक्षा जारी रखने हेतु अनेक प्रकार के आर्थिक प्रोत्साहन दिये जायें।

छ—माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा मे ही छात्रो मे स्वावलम्बन के बीज अकुरित किये जाये जिससे वे अपने पैरो पर खडे होने की योग्यता हासिल कर सके।

शिक्षा का जन-जन मे प्रचार करने हेतु विश्वविद्यालय के स्नातक पाठ्यक्रमो मे यह शर्त लगा दी जाय कि स्नातक उपाधि प्राप्त करने हेतु छात्र ग्राम्य अचलो मे एक वर्ष शिक्षा-प्रसार मे ही व्यतीत करे। बेरोजगार युवको की विशाल जन-शक्ति को अनिवार्य शिक्षा-प्रसार मे योजनाबद्ध रूप से लगाकर उसका उचित उपयोग हो।

प्रजातात्रिक परम्पराओ के स्वस्थ विकास हेतु आवश्यक है कि राजा और रक तक शिक्षा-दीक्षा समान हो। कथित उच्च श्रेणी एव निर्धनवर्ग के शिक्षा सस्थानो का वर्गीकरण समाप्त किया जाये। 'बालक-बालक एक समान' नारा शिक्षा-दीक्षा मे लागू नही होगा? तो कहाँ होगा? साधन बढाने हेतु धनी बच्चो से फीस ली जा सकती है लेकिन गरीब बच्चो को इससे मुक्त रखा जाना आवश्यक है। मोहल्ला स्कूलो का प्रारभ किया जाना इस दिशा मे प्रथम कदम हो। मुहल्ला स्कूल अपने आप मे उस मुहल्ले का ऐसा केन्द्र हो जिससे समाज की बुराइयो पर सीधा आक्रमण किया जा सके। आस-पास के स्थान की स्वच्छता पर मुहल्ला पाठशालाए विशेष ध्यान दे। पेड, पौधे लगाने के रचनात्मक कार्य भी इस प्रकार के शिक्षा सस्थान चलायें।

शिक्षा कार्यक्रम मे जहा उपयुक्त विचारो का समावेश आवश्यक है वहा आज की शिक्षा को सही परिप्रेक्ष्य मे प्रयोजनीय बनाने से निम्न निष्कर्ष भी लाभदायक सिद्ध हो सकते है। मेरे इन निष्कर्षो की पुष्टि अभी हाल म गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय मे आयोजित राष्ट्रीय वैदिक शिक्षा कार्यशाला म उपस्थित शिक्षा मनीषियो ने भी की। इन सस्तुतियो को यदि शासन शिक्षा विषयक दिशा निर्देश के रूप म अगीकृत करे तो भारत की शिक्षा नीति म एक जबरदस्त परिवर्तन आ सकता है। शिक्षा जगत के नीति नियताओ पर पूरे राष्ट्र का सस्थापित करने की जिम्मेदारी है। अत आध्यात्मिक मूल्यो वाले रोजगारी शिक्षा सगठन से ही आदर्श नागरिक का सृजन हो सकता है। शिक्षा नीति के निर्देशक तत्वो के रूप मे मान्य कुछ निष्कर्ष विचारार्थ उपस्थित हैं।

निर्देशक तत्व

१ बच्चे को प्रारम्भिक शिक्षा उसकी मातृभाषा मे दी जाये। उच्चतम शिक्षा का माध्यम राष्ट्रभाषा हो, इसलिए हिन्दी भाषा को विज्ञान और साहित्य से अधिकाधिक सम्पन्न किया जाना आवश्यक है। हिन्दी मे प्रकाशित श्रेष्ठ वैज्ञानिक साहित्य को राष्ट्रीय एव प्रादेशिक स्तर पर साहित्य अकादमियो द्वारा पुरस्कार देने की व्यवस्था हो जिससे साहित्य की युगधारा हिन्दी भाषा मे प्रतिबिंबित हो सके।

२ पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय के नमूने पर देश के सभी प्रमुख विश्वविद्यालयो मे अनुवाद एव प्रकाशन-निदेशालयो की स्थापना की जाये जिससे हिन्दी भाषा मे वैज्ञानिक साहित्य अनूदित किया जा सके। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय मे श्रेष्ठ वैज्ञानिक साहित्य के हिन्दी अनुवाद का श्रीगणेश आज से ७५ वर्ष पूर्व श्री गोवर्धन जी शास्त्री ने किया था तथा उनकी भौतिक विज्ञान एव रसायन विज्ञान की अनूदित पुस्तको ने वैज्ञानिक साहित्य के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया लेकिन कालान्तर मे अनुवाद की यह धारा अवहेलना की शिकार हो गई। आज पुन श्रेष्ठ वैज्ञानिक साहित्य के हिन्दी भाषा मे अनुवाद का कार्य व्यापक स्तर पर कराये जाने की आवश्यकता है।

३ गुरुकुल कागडी मे जिस प्रकार गत ८० वर्षों मे सभी स्तरो पर प्रशासनिक कार्य हिन्दी भाषा म हो रहा है, क्या वैसी परम्परायें अन्य शिक्षा निकायो एव सरकारी प्रतिष्ठानो मे नही हो सकती?

४ उच्चतम शिक्षा का द्वार जिज्ञासु छात्रो के लिये ही खुला होना चाहिए।

(शेष पृष्ठ १० पर)

बलिदानी वीर प्रतापसिंह बारहठ

—श्री ब्रह्मदत्त, मंत्री बारहठ स्मारक समिति—

"आप कहते है कि मेरी माता मेरे लिए रात-दिन रोती है। उन्हे रोने दीजिए, दल का भेद बताकर मैं सैकडो माताओ को रुलाने का कारण नही बन सकता। यदि मैंने ऐसा किया तो वह मेरी वास्तविक मृत्यु होगी और मेरी माता के लिए अमिट कलक होगा।

ये शब्द बाईस (२२) वर्षीय क्रान्तिकारी युवक प्रतापसिंह ने तत्कालीन ब्रिटिश सरकार के गुप्तचर विभाग के निदेशक चार्ल्स क्लीवलैण्ड को बरेली सेन्ट्रल जेल मे कहे जबकि वे बनारस षडयन्त्र अभियान मे गिरफ्तार होकर पाच वर्ष का कारावास भुगत रहे थे और उन्हे छोडने, पैतृक जागीर वापस लौटाने तथा उनके पिता (केसरी सिह जी बारहठ) और चाचा (जोरावर सिह जी), जिन पर अनेक मुकद्दमे चला रखे थे, को क्षमा दिलाने के अनेक प्रलोभन दिए जा रहे थे।

कारावास मे दी गयी अमानुषिक यातनाओ के फलस्वरूप इस नवयुवक ने स्वतन्त्रता की बलि वेदी पर अपने प्राणो की आहुति दे दी, किन्तु अपने क्रान्तिकारी साथियो का भेद नहीं दिया।

घिन प्रताप जीवन सरब,
तजियो घणो उछाह।
भारत हित मिटियो मुलक
बावीसी नर नाह॥
(मनोहरसिंह लखावत)

महाविप्लवी नायक रास बिहार बोस ने राजस्थान मे क्रान्तिकारी कार्यों का प्रशिक्षण मास्टर अमीरचन्द के नेतृत्व मे शाहपुरा (भीलवाडा) के ठाकुर केसरीसिंह के सुपुर्द किया। ठा० केसरी सिंह ने अपने पुत्र प्रताप सिह को मास्टर अमीरचन्द के पास प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए भेज दिया और वे स्वय तथा उनके भाई जोरावर सिंह राजस्थान मे सशस्त्र क्रान्ति के लिए सगठन का कार्य करते रहे।

सन् १९१२ मे जब भारत की राजधानी दिल्ली मे लाने की योजना बनायी गयी, तो तत्कालीन वायसराय लार्ड हार्डिंग ने भारत के समस्त राजा महाराजा और अधिकारियो को दिल्ली मे एकत्रित कर ब्रिटिश हुकूमत का प्रभाव जमाने के लिए बडी शान शौकत से बडा जलूस निकाला। स्वय वायसराय एव वायसरीन (उनकी पत्नी) हाथी पर बैठी थी और पूरा लवाजमा साथ था। बाहर से आए हुए हजारो नर नारी एकत्रित हुए।

जब वह जलूस चादनी चौक मे जा रहा था, उस समय जोर का धडाका हुआ और वायसराय के हाथी पर बम फटा जिससे वायसराय घायल हो गये। किन्तु उनके प्राण बच गये और हाजी के होदे पर पीछे बैठे जमादार महावीर सिंह का वही प्राणान्त हो गया।

चादनी चौक की जिस इमारत पर महिलाए बैठी थी वही जोरावर सिंह बुर्का पहन कर बम लेकर बैठे थे और सीढियो पर उनके भतीजे प्रताप सिंह खडे थे। वायसराय का हाथी जब सामने आया तो जोरावर सिंह ने बम फेंका किन्तु किसी महिला के हाथ का धक्का लग जाने से निशाना थोडा चूक गया।

जोरावर सिंह इस घटना के बाद आजन्म फरार रहे। उन पर आरा षडयन्त्र केस का वारण्ट था। ठा० केसरी सिंह के विरुद्ध भी राजद्रोह का मुकद्दमा चलाकर बरेली जेल मे भेज दिया गया।

जेल यात्रा से पूर्व लार्ड कर्जन ने सन् १९०३ मे दिल्ली दरबार का आयोजन किया। उस समय मेवाड के तत्कालीन महाराणा भी जब इसमे सम्मिलित होने गये तो ठा० केसरी सिंह ने कुछ सोरठे "चेतावनी रा चूगटया" लिखे। इन्हे पढकर महाराणा बिना दरबार मे हाजिरी दिए वापस उदयपुर लौटे आए। इस पर रावल नरेन्द्र सिंह जोबनेर ने लिखा—

पात अणें रजपूत,
इलू मे मिल सी अनगणित।
भोपाला अद्भूत,
छेडै कवण चरुठिया॥

चारण और राजपूत तो ससार मे फिर भी अनेको मिलेंगे किन्तु राजाओ के (चूगटी) भरने मे केसरीसिंह के अलावा और कौन समर्थ है?

प्रतापसिंह पर अनेक क्रान्तिकारी गतिविधियो और षडयन्त्र के केस के वारण्ट ब्रिटिश सरकार ने जारी कर रखे थे। फरारी अवस्था मे ३-४ रात बिल्कुल नही सोये थे। हैदराबाद (सिन्ध) से बीकानेर जाते समय जोधपुर के पास आसानाडा स्टेशन मास्टर के क्वार्टर मे सो गये थे। उस समय वहा के विश्वासघाती स्टेशन मास्टर ने पुलिस को खबर देकर उन्हे गिरफ्तार करा दिया। उन्हे बरेली सेन्ट्रल जेल भेज दिया गया।

श्री शचीन्द्र नाथ सान्याल (सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी) ने अपनी पुस्तक 'बन्दी जीवन' में लिखा है —"न मालूम आज भारत मे ऐसे कितने पिता हैं जो सरदार केसरीसिंह जी की तरह सब जान बूझकर अपने को और अपनी सन्तान को इस प्रकार देश के कार्य मे बलि दे देंगे। भारत का दुर्भाग्य है कि प्रताप सा युवक इस जगत मे नही है।"

२३ दिसम्बर को, जिस दिन दिल्ली के चादनी चौक में हार्डिंग पर बारहठ परिवार द्वारा बम फेंका गया था, शाहपुरा (भीलवाडा) मे जहा इन तीनो क्रान्तिकारी शहीदो की मूर्तियों के रूप मे स्मारक बनाया गया है गत दश वर्षों से बारहठ स्मृति दिवस मनाया जाता है। इस बार भी मनाया गया। यही २३ दिस० अमरहुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द का भी बलिदान दिवस है।

राजस्थान सरकार के भू० पू० मुख्य मंत्री स्व० बरकतुल्ला खा साहब ने बारहठ स्मारक का शिलान्यास करते समय दि० २९ नवम्बर १९७२ को यह घोषणा की थी, "राज्य सरकार शाहपुरा स्थित ठा० केसरीसिंह के मकान (हवेली) को अधिग्रहीत कर उसे भी स्वतन्त्रता सग्राम के दौरान उन के द्वारा की गई सेवाओ के अनुरूप एक उपयुक्त स्मारक का रूप देगी।"

इस दिशा मे राज्य सरकार द्वारा इस हवेली को अधिग्रहीत करने की कार्यवाही की जा रही है।

पता—बी-४६ गणेश मार्ग बापू नगर, जयपुर, ३०२०१५।

काल तुम्हारे इशारे पर नाच उठेगा

यह पीडा की नदी का पानी है
जो चट्टानो को काटता है
कगारो को ढहाता है
इसमे कमल के फूल खिले हुए हैं
और इसकी गहराई की थाह
आज तक कोई लगा नहीं पाया है
इसको भी लगती है प्यास
और जब-जब लगती है प्यास
पीने को मिलता है केवल जहर
शायद इसलिए इसका चेहरा नीला है।
पर शायद तुम्हे यह मालूम नही
जिसने भी इसको पिया है।
अमरता की देवी ने
उसी का वरण किया है।

० ०

ये फूल, ये तितलिया
ये झुकी हुई शाखें
ये चहचहाती हुई चिडियाए
और उडती हुई पाखें
ये खेतो की ओर बढते हुए
धूल सने नगे कदम
जो आंधियो के बीच भी
लहराते हैं साहस के परचम
ये फाइलो मे डूबी हुई—धसी हुई आखें
रोज-रोज प्राणो मे
चुभती है जिनके नयी-नयी सलाखें
ये बेजान मशीनो से गुत्थम-गुत्था
होती हुई बाहे
जिनको पता नही कैसे मिलती हैं
आलिगन की राहे
हा—ये सब
जो गुमसुम भी हैं
और अदर-अदर चीखते भी हैं
जो हर क्षण जीते भी हैं
और हर क्षण मरते भी हैं
तुमसे कुछ कहना चाहते हैं
तुमसे कुछ सुनना चाहते हैं।

० ०

आओ इनसे बातचीत करो
और अपनी यात्रा को
इनकी यात्रा के सग जोड दो
तुम्हारी कविता यात्रा की एक लय
बन जाएगी
वह कविता जो सडक पर बिखरी हुई है
वह कविता जो उसके सफेद सूखे
बालो मे उलझी हुई है।
वह कविता जो मा के सूखे स्तनो मे
दूध को खोज रही है
और वह कविता जो उस मा की आखो
से लाल-लाल खून बनकर टपक रही है।
यह कविता जो सगीनो के साये मे
घिरी हुई है
और वह भी कि जो अगारो को
निगल भी रही है
और उगल भी रही है
बजने दो, बजने दो उस कविता को
अपने प्राणो की बासुरी मे
काल अपनी पिटारी से बाहर निकल कर
तुम्हारे इशारे पर नाच उठेगा।

□ डा० दुर्गाप्रसाद झाला

भारत का शाश्वत अस्तित्व : स्वेतलाना

स्तालिन की पुत्री स्वेतलाना की हार्दिक इच्छा है कि वह दक्षिण भारत के किसी विश्व विद्यालय मे अध्यापन या किसी प्रकाशन मे काम कर। अमेरिका और यूरोप मे १७ वर्ष तक निर्वासित जीवन बिताने के बाद सोवियत सघ लौटने पर स्वेतलाना ने अपनी पुस्तक 'द फार अवे म्यूजिक' के भारतीय प्रकाशक को फरवरी मे एक पत्र लिखा जिसमे कहा कि वे इस वर्ष अक्तूबर या नवम्बर मे भारत आने वाली थी। १९६७ में अमेरिका जाते समय वे भारत आई थीं। उन्होने कहा कि उन्हे उत्तर भारत के अवलोकन में दिलचस्पी नहीं है। वह बम्बई, मद्रास और दक्षिण भारत के दर्शन के लिए बडी इच्छुक हैं।

स्वेतलाना ने भारत मे आगामी चुनावों के परिणाम के बारे में लिखा कि 'इससे मुझे कोई फर्क नहीं पडता। मेरे लिए भारत एक शाश्वत अस्तित्व रखता है। यह परम्पराओं वाला देश है। मैं यहा रहकर यहीं के लोगों की तरह जीना चाहती हू। १९६७ में भी मेरी यही इच्छा थी और अब भी यही है। कुछ भी नहीं बदला।

आजकल बडी निराशा महसूस कर रही हू, बहुत पहले ही मैं भारत आ जाती लेकिन मेरी बिटिया को ब्रिटेन पसन्द है। वह वहा एक छात्रावास में रह कर पढ रही है।

श्री अशोक मेहता दिवगत

अल्मोडा (उ० प्र०) ताडीखेत समाज मदिर मे दिवगत प्रसिद्ध अर्थशास्त्री नेता श्री अशोक मेहता की आत्म शांति के लिये यज्ञ हुआ तथा स्वामी गुरुकुलानन्द कन्धाहारी ने दिवगत आत्मा की शांति हेतु प्रार्थना की।

वैज्ञानिक युग का भूत

प्रोटीन खाने की दौड़ में दुनिया दीवानी

—डा० डी० सी० जैन—

आदमी पर हावी होने वाले धार्मिक जमाने के भूतो के इलाज के लिए ओझाओ को बुलाना पडता था। वैज्ञानिक जमाने मे भी कई भूत ऐसे हैं जिनका कोई इलाज नजर नही आ रहा है। इन्ही मे एक भूत है प्रोटीन का, जिसने सारे डाक्टरों, आहार वैज्ञानिको और आदमी को तदुरुस्त रखने के तरीके ईजाद करने मे लगे लोगो को इस तरह जकड लिया है कि इससे छुटकारा पाना मुश्किल है। बीमार तो डाक्टरो से इलाज करा लेते हैं, पर डाक्टर ही किसी भूत के वशीभूत हो जाए तो उनका डाक्टर कौन हो ? प्रोटीन की होड ने अनेक समस्याए पैदा कर दी है। प्रोटीन पाने के लिए सरकारो तक को झुकना पडा है। देश-विदेश की सरकारो को विशेषज्ञ बुलवा कर कसाईघर खुलवाने पडे हैं जहा से मास डिब्बा बद हो कर बाजारो मे जाता है। सचार माध्यमो ने भी यह सदेश प्रसारित करना शुरू कर दिया कि माम अडे खाओ, नही तो कमजोर हो जाओगे, मर भी सकते हो। प्राण चाहते हो तो प्रोटीन खाओ। बेचारे पशु पक्षियो की शामत है। अनेक सद्बुद्धि वालो ने उनकी पैरवी की, पर तर्क यह दिया जाता है कि वैज्ञानिक खोजो के आधार पर ऐसा करना उचित है। लोगो ने यह भी तर्क दिया कि उनके पिता, पितामह और पूवजो ने इन पदार्थो का कभी सेवन नही किया इसके बावजूद स्वस्थ जीवन जिया। वे दूध-दही, शाक रोटी खाते थे और उन्हे रोग भी कम होते थे। पर डाक्टर अपनी राय बदलने को तैयार नही है। उन पर प्रोटीन का भूत सवार है।

बीसवी सदी के शुरू मे आहार का मसला बाकायदा एक विज्ञान क तौर पर सामने आया। भोजन मे ऊर्जा के स्रोतो जैसे कार्बोहाइड्रेट, चर्बी और प्रोटीन की खोज हुई। प्रोटीन को मांसपेशियो और बच्चो के विकास के लिए जरूरी समझा गया। चर्बी और कार्बोहाइड्रेड को ऊर्जा का प्रमुख स्रोत माना गया। मैक कालम और डेविस नाम के वैज्ञानिको ने विटामिन "ए" खोजा, फिर दूसरे विटामिन भी खोजे गए। आज विटामिन ए, बी, सी, डी, ई के का विस्तृत ज्ञान चिकित्सा वैज्ञानिको को है।

प्रचलित भ्रांतिया

प्रोटीन को लेकर भ्रातिया कब शुरू हुई, यह कहना तो कठिन है, पर वे बहुप्रचलित हैं। यह आम धारणा है कि प्रोटीन खूब खाने चाहिए। नतीजतन डिब्बों मे बद बहुत से प्रोटीनमय पदार्थों की बिक्री बहुत होने लगी। इन चीजों को दूध या पानी में घोल कर पिया जाने लगा। माओं ने बच्चो को जबरिया पिलाना शुरू कर दिया। दूध पिलाने के लिए माए अनेक मधुर वचन कहा करती थी कि दूध पिओगे तो जल्दी से बडे ही जाओगे, राजा बेटा बनोगे, गैरह। सूरदास का पद याद करें तो कृष्ण भी यही कहते थे मैया कबहु बढेगी चोटी। किती बार मोहि दूध पियावत, है अजहू छोटी की छोटी।' लगभग यही बात प्रोटीन वाले भोजन को घोल-घोल कर पिलाने के लिए कही जाने लगी। सिनेमा रेडियो, टी वी, अखबार सबमे विज्ञापन के जरिए 'प्रोटीन ही जीवन हैं' का सदेश हमारे गले उतरवाने की कोशिशें जारी हैं।

दरअसल प्रोटीन की मात्रा भोजन मे सतुलित होनी चाहिए। ऊर्जा देने वाले तत्व के रूप मे प्रोटीन की विशेष जरूरत नही होती। ऊर्जा के अच्छे स्रोत तो कार्बोहाइड्रेट और वसा है। आहार वैज्ञानिक इस पर एकराय हैं कि प्रति एक किलो वजन पर एक ग्राम प्रोटीन एक साधारण व्यक्ति के लिए काफी है। बच्चो को अधिक से अधिक २ ग्राम प्रति किलो प्रोटीन पर्याप्त होगी। साधारण भोजन मे तो प्रोटीन की इतनी मात्रा अपने आप ही मिल जाती है। आम तौर पर एक औसत व्यक्ति २५० ग्राम अन्न और ५०-१०० ग्राम दाल या दाल से बनी चीजें जरूर खाता है। २५० ग्राम अन्न मे लगभग ३० ग्राम प्रोटीन, दाल मे २० ग्राम से अधिक प्रोटीन और दूध, दही, पनीर आदि मे १०-२० ग्राम प्रोटीन मिल जाती है। इस तरह आदमी ६०-७० ग्राम प्रोटीन रोज ही उदरस्थ कर लेता है। तब फिर प्रोटीन की कमी कहा है ?

प्रोटीन के स्रोत

यह बात काफी प्रचारित हुई है कि मासाहार और अडे उच्च कोटि के प्रोटीन के स्रोत हैं। यह विचार सबसे पहले कहा से आया, इसका कोई प्रमाण नही मिलता। चिकित्सको से पूछिए कि प्रोटीन का ऐसा वर्गीकरण किसने किया है और इसका कहा उल्लेख है, तो जवाब यही मिलता है कि ऐसा सुनते हैं। यानी सुनी सुनाई ही किताबो मे लिखी जाने लगी और मान लिया गया कि पशुओ के मास और अडो मे उच्च कोटि के प्रोटीन होते हैं और वनस्पतियो मे दोयम दर्जे के। प्रसिद्ध वैज्ञानिक सैमसन राइट ऐसे विभाजन को अवैज्ञानिक और अव्यावहारिक मानते हैं। उनका कहना है कि पशुओ की मासपेशिया तो घास खाने से बनती हैं। जिस प्रोटीन को हम उच्च स्तर का कहते हैं वह घास से बनती है। अचरज यह कि सभी जगह डाक्टरी के छात्रो को सैमसन राइट की किताब पढाई जाती है, पर इस वैज्ञानिक की इस बात को नजर अदाज कर दिया जाता है। बहुत से चिकित्सा-वैज्ञानिको को यह भी नही पता कि किताब मे इस बात का उल्लेख है।

प्रोटीन ज्यादा खा लिए जाए तो क्या हो ? आधुनिक वैज्ञानिक खोजो से पता चला है कि प्रोटीन के मेटाबोलिज्जम के बाद इनकी तोडफोड से कई विषैले पदार्थ पैदा होते हैं—यूरिया, यूरिक एसिड क्रीटीन, क्रोटीनीन आदि। ये मनुष्य के गुर्दो पर असर करते हैं। अधिक मात्रा मे इनकी उत्पत्ति होने से इनका गुर्दों से निकलना कठिन हो जाता है और गुर्दे समय से पहले जवाब भी दे सकते हैं। देश मे गुर्दे की बीमारी की बढोत्तरी का एक कारण यह भी समझा जा रहा है। लदन के मेडिकल पत्र 'लैंसेट' मे छपे एक लेख मे कहा गया है कि प्रोटीन अत्यधिक स्वस्थ व्यक्ति के गुर्दो को खराब करने का भी काम करता है। गठिया की बीमारी का कारण भी भोजन मे प्रोटीन की अधिकता समझा जाता है।

दाल और दूध

प्रोटीन सबको मिले इसके लिए जरूरी है कि उसकी कीमत कम हो। पर क्या अडे सस्ते होते हैं ? एक अडे का दाम ६० ७० पैसे है जिसका वजन लगभग ५०-६० ग्राम होता है। उसमे प्रोटीन की मात्रा लगभग ६६ ग्राम होती है। इस तरह १०० ग्राम अडे मे लगभग १३ ग्राम प्रोटीन। मूल्य १ रुपए २० पैसे के आस-पास। इसके विपरीत १०० ग्राम सोयाबीन में ८३ ग्राम प्रोटीन होता है, जिसका दाम ६०-७० पैसे होता है। यानी अडो की तुलना मे लगभग ८ गुना अधिक।

इडियन कौंसिल आफ मेडिकल रिसर्च के अनुसार प्रोटीन के अच्छे स्रोत दालें, अन्न और दूध हैं। सोयाबीन में प्रोटीन की मात्रा ४३ ग्राम प्रतिशत है। दालो में भी प्रोटीन पर्याप्त होता है। मास, अडे मे प्रोटीन की मात्रा क्रमश १८ और १३ ग्राम प्रतिशत होती है।

फिर भी मासाहार से प्रोटीन पाने का भूत नही उत्तर रहा प्रकृति और पर्यावरण का सतुलन बिगडने की एक वजह यह भी है। जरूरत है प्रोटीन की होड से छुटकारा पाने की। □

मरण कहूं या इसको जीवन

—स्व० श्री उदय शकर भट्ट—

मरण कहू या इसको जीवन ?
सीमित त्याग असीम पहन तन
आ जम बैठे हम सब के मन

ऐसी जीवन-ज्योति जगाई—हिले शत्रुओ के सिंहासन।
हटे न पथ से डटे कटे जम गये हृदय मे सब के बन
मरण कहू या इस को जीवन ?

वह गम्भीर सिंह सा गर्जन
वह मीठा पर तीखा तर्जन
सत्पथ पर वह आत्म-विसर्जन

अब दीखेगा कहाँ, अहा, अब श्रद्धा-आनन्द का सम्मिश्रन
डटे गोलियो की झडियो मे अरियो का कर मान विमर्दन
हटे न पथ से डटे कटे रम गये हृदय मे सब के वन
मरण कहू या इस को जीवन ?

हिन्दू हित के हामी बन
सदाचार के स्वामी बन
सत् शिक्षा अनुगामी बन

अपनी सस्कृति की उन्नति मे तन-मन-धन सब कर अर्पन
हटे न पथ से डटे कटे मिल गये हमी मे सब के बन
मरण कहू या इस को जीवन ?

(जनवरी १९३५ 'अलङ्कार' के श्रद्धानन्द विशेषाक मे से उद्धृत)

—प्रे० ओमप्रकाश आर्य जालधर

पत्रों के दर्पण में

राम की अनेक पत्नियां नहीं थी

एडिन वर्ग विश्वविद्यालय के संस्कृत शिक्षक डा० जे० एल० ब्राकिंस्टन ने वाल्मीकीय रामायण के आधार पर राम के बहुपत्नीक होने की कल्पना की है। इस कल्पना के लिए उन्होंने मूल श्लोको को उद्धृत किए बिना तीन उदाहरण दिये है। उनके अनुसार—

१ "अयोध्या मे वापसी के बाद राम के राज्याभिषेक की तैयारियो मे शत्रुघ्न, राम और लक्ष्मण का तथा कौशल्या राघव पत्नियो का शृगार करती है।"

इस प्रसग के मूल श्लोक है—

प्रतिकर्म च रामस्य कारयामास वीर्यवान्।
लक्ष्मणस्य च लक्ष्मीवानिक्ष्वाकुकुल वर्धन ॥ (वा० रा० ६,१२८,१६)
प्रतिकर्म च सीताया सर्वा दशरथ स्त्रिय।
आत्मनैव तदा चक्रुर्मनस्विन्यो मनोहरम्॥ (वा० रा० ६,१२८,१७)

स्पष्ट है कि उक्त डा० साहब ने अर्थ करने मे भूल की है। कौशल्या ने नही, अपितु दशरथ की मनस्विनी पत्नियो ने सीता का शृगार किया। दूसरी जिस बात पर कवि ने जोर दिया है, वह यह है कि शत्रुघ्न ने राम-लक्ष्मण का शृगार करवाया (प्रतिकर्म कारया माम) और दशरथ की पत्नियो ने सीता का शृगार स्वय किया—(आत्मनैव प्रतिकर्म चक्रु)

२ "लका की अशोक वाटिका मे कैद सीता कल्पना करती है कि वनवास से लौटकर राम साकेत मे अनेक पत्नियो के साथ सुखभोग करेंगे"

३ "मन्थरा कैकई को उकसाती है, 'निश्चय ही भरत के पतन पर राम की सुन्दर स्त्रिया हर्षित होगी और तुम्हारी पुत्रवधू दु खित होगी।"

इन दोनो प्रसगो के मूल श्लोक है—

पितुर्निदेश नियमेन कृत्वा वनान्नि वृत्तश्चरितव्रतश्च।
स्त्रीभिस्तु मन्ये विपुलेक्षणाभि सरस्यसे वीतभय कृतार्थ॥
हृष्टा खलु भविष्यन्ति रामस्य परमा स्त्रिय।
(वा० रा० ५,२८,१४)
अपहृष्टा भविष्यन्ति स्नुषास्ते भरतक्षये॥ (वा० रा० २,८,१२)

पहला श्लोक आसन्न मृत्युभीता सीता के उस समय के विलाप का है जब उनकी कैद का दसवा महीना बीत रहा था। रावण ने उन्हे अपनी पत्नी बनने को राजी होने को बारह मास की अवधि दी थी। इस अवधि मे राजी न हुई तो रसोइये रावण के प्रातराश के लिए सीता के शरीर के टुकडे-टुकडे कर देंगे। उसी विलाप मे वे कह चुकी है—

हा राम हा लक्ष्मण हा सुमित्रे हा राममात सह मे जनन्य।
एषा विपद्याम्य हमल्पभाग्या महार्णवे नौरिव मूढवाता॥
(वा० रा० ५,२८ ८)

सीता के इस विलाप के आधार पर राम को बहुपत्नीक नही कहा जा सकता।

मन्थरा की उक्ति मे "**रामस्य परमा स्त्रिय**" कहा गया है, तो "स्नुषास्ते" भी कहा है। डा० महोदय ने "स्नुषास्ते" का अर्थ 'तुम्हारी-पुत्र वधू' एकवचनान्त ही किया है। इसी प्रकार "**रामस्य परमा स्त्रिय**" का कोई बहुवचनान्त अर्थ नही करता। कैकेयी की पुत्रवधू के लिए "**आदरार्थे बहुवचनम्**" व्याकरण के इस नियम के अनुसार दासी मन्थरा ने बहुवचन का प्रयोग किया। अधिक मे अधिक इसे "**बहुवचनमार्षम्**" कह सकते है, जैसे "**सत्यमेव जयते**" और **कतु तथेच्छा हृदय ममास्ति, दुनोति चित्ते यदि त न पश्ये**', (महाभारत (३ ११२ १६) मे "**जयते** और **पश्ये**" मे "**आत्मनेपदमार्षम्**" कहा जाता है।

और फिर कवि अन्त तक राम को एकपत्नीक कहते है। सीता-परित्याग के बाद राम अश्वमेध यज्ञ करते है। अश्वमेधकर्ता सपत्नीक ही यज्ञ कर सकते है। अश्वमेध यज्ञ की तैयारी का आदेश देते हुए राम कहते है—

काचनी मम पत्नी च दीक्षाया ज्ञाश्च कर्मणि।
अग्रतो भरत कृत्वा गच्छत्वग्रे महायशा॥ (वा० रा० ७,९१,२५)

यदि राम बहुपत्नीक होते तो उन्हे यज्ञ करने समय सोने की सीता न बनवानी पड़ती।

—इन्द्रचन्द्र नारग, ६३-टैगौर टाऊन, इलाहाबाद-२११००२

नववर्ष एक जनवरी से नहीं

भारत के राष्ट्रीय वर्ष शक सवत् का प्रारम्भ एक जनवरी से नही होता। यह केवल ईसाई मतावलम्बी अथवा अग्रेजो के दास रहे देशो मे मनाया जाता है। स्वतन्त्र होने के पश्चात्, धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र होने के नाते हमे शक संवत का प्रारम्भ अथवा प्राचीन भारतीय विक्रम सवत् का प्रारम्भ ही धूमधाम से मनाना चाहिये। भारत सरकार को भी नव वर्ष का आरम्भ व्यावहारिक रूप से उसे ही मानकर करना चाहिये। वर्ष के अवकाशो की घोषणा शक सवत् के आरम्भ और अन्त के अनुसार करनी चाहिये। कर्मचारियो के वार्षिक-आकस्मिक या रुग्णता-सम्बन्धी आदि अवकाशो की गणना भी उसके अनुसार ही की जाये। इससे हमारा राष्ट्रीय गौरव बढेगा और जो कैलेंडर वर्ष तथा वित्त-वर्ष दो चलते हैं वे भी समाप्त होकर बजट समाप्त करने की होड मे अन्धाधुन्ध खर्चे मे कमी आयेगी।

यदि किन्ही सज्जनो को अग्रेजी नव वर्ष एक जनवरी—मनाने के उद्देश्य से अपने मित्रो तथा बन्धुओ को अभिनन्दन पत्र भेजने ही हो, उनसे निवेदन है कि वे हिन्दी मे ही अभिनन्दन भेजे और अग्रेजी के अभिनन्दनों का बहिष्कार करे। बाजार मे हिन्दी के अभिनन्दनो की माग करें जिससे अभिनन्दन छापने वालो को हिन्दी मे अधिक अभिनन्दन छापने की प्रेरणा मिले। —डॉ० कृष्ण लाल, आचार्य, सस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

सिख अतिवाद के प्रवक्ता

हिन्दी मे सिख अतिवाद के अकेले सशक्त प्रवक्ता श्री महीपसिंह के लेख कई वर्षो से पत्र-पत्रिकाओ मे छप रहे है। उन पर पाठको की प्रतिक्रिया भी यदाकदा छपती है। इन्होने पिछले दिनो पजाब समस्या को भाषायी-सास्कृतिक परिप्रेक्ष्य मे राजनीतिक उठापटक बताते हुए जो कुछ लिखा, भिंडरावाले के अपने साथियो सहित सफाये और श्रीमती गाधी की नृशस हत्या के बाद उसकी कलई खुल गयी। उग्रवादियो के हत्या काड को सांस्कृतिक गतिरोध निरूपित करना विकृत मानसिकता की निशानी थी। वह हवाई किला ढहने के बाद प्रोफेसर साहब के उद्गारो मे राष्ट्र-भजन की प्रच्छन्न धमकी प्रत्येक भारतीय के लिये एक चुनौती बन गयी है। ब्रिटिश शासन काल की साम्प्रदायिक व वर्गीय तुष्टीकरण की नीति आज कहीं अधिक व्यापक रूप से देश की राजनीतिक हवा मे जहर घोल रही है। —ब्रह्मदत्त स्नातक, भारतीय सूचना सेवा (रिटायर्ड)।

राम जन्मस्थान का मुक्ति आंदोलन

लखनऊ के नवाब वाजिद अली शाह ने १८५७ ईसवी मे तथा-कथित बाबरी-मस्जिद मे सीता-रसोई देकर हिन्दुओ पर कोई अहसान नही किया था अपितु अपने पुरखाओ के पापो को धोने का प्रयास किया था।

बाबरी-मस्जिद वाला यह स्थान हिन्दुओ का ही था, इसका प्रमाण मुस्लिम शासको के समय-समय पर जारी किए गए हुक्मनामो मे भली-भाति मिल जाता है। अयोध्या के प्राकृतिक प्रकोप से उजड जाने के पश्चात ईसा से पूर्व प्रथम शताब्दी से सम्राट विक्रमादित्य ने खोजबीन करके राम जन्मभूमि पर एक भव्य मन्दिर का निर्माण करवाया था जो दुर्लभ कसौटी पत्थरो के ८४ स्तम्भो से युक्त था। इस पवित्र मन्दिर को बादशाह बाबर ने १५२८ ईसवी मे हजरत जलालशाह तथा फकीर फजल अब्बास कलदरी की शह पर अपने सिपहसालार मीर बाकी खा ताशकन्दी और उसके सिपाहियो की सहायता से तबाह कर दिया। इस बात का सबसे बडा गवाह बाबर का यह हुक्मनामा है—

बहुक्म शहन्शाहे हिन्द मालिक उल-जहा बादशाह बाबर हजरत जलालशाह की ख्वाहिश के मुताबिक अयोध्या के जन्मस्थान को शाही कब्जे मे लिया गया और उसमे रद्द-ओ-बदल किया गया। (द्रष्टव्य ६-७-१९३४ का माडर्न रिव्यू)।

इस पवित्र मन्दिर को तबाही से रोकने के प्रयास मे राजा महताब सिंह के नेतृत्व मे एक लाख ७४ जार हिन्दुओ ने बलिदान दिया। तब से ही इसकी मुक्ति का आदोलन चल रहा है। इस बात की साक्षी अब्दुल फजल की आईने-अकबरी मे होती है।

अकबर के पश्चात यह स्थान पुन बादशाह औरगजेब के शाही कब्जे मे आ गया। स्वय औरगजेब स्वलिखित आलमगीरनामा मे स्पष्ट करता है कि—'मुतवातिर चार बरस की खामोशी के बाद रमजान की सातवी तारीख के रोज शाही फौज ने फिर मे अयोध्या मे राम जन्म-भूमि पर हमला बोल दिया। यकायक हुए हमले मे दस हजार हिन्दू हलाक हुए। उनका चबूतरा व बुतखाना दोनो जमीनदोज कर दिए और फिलहाल शाही फौज के कब्जे मे हैं।

न्याय न मिल पाने पर यदि इसके असली हकदार आदोलन चला रहे है तो कौन सा गुनाह कर रहे हैं? मुक्ति आदोलन चलाए जाने पर इतनी हाय-तोबा क्यो मचाई जा रही है? क्या इसी को मुस्लिम इन्साफ कहते हैं।

—राजेन्द्र सिंह ८४३, सेक्टर १५, फरीदाबाद, हरियाणा

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ पंजि० नं० P/RTK ४५ फोन ४५१२

ओ३म् सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री सह सम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार, एम. ए. पौष २१ २०४६ वि०

वर्ष १७ अङ्क ८ १४ जनवरी, १९९० वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड) एक प्रति ६० पै०

पंजाब समस्या का समाधान करते समय हरयाणा के हितों की उपेक्षा न की जाए

हरयाणा रक्षावाहिनी का शिष्टमण्डल भारत सरकार से मिलेगा

—केदारसिंह आर्य

हरयाणा रक्षावाहिनी की एक आवश्यक बैठक प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता में ७ जनवरी ९० को दयानन्दमठ रोहतक में सम्पन्न हुई। इस बैठक में महाशय भरतसिंह, श्री अमीरसिंह एडवोकेट, प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार, श्री पूर्णचन्द आजाद पूर्व एम०एल०सी०, श्री श्यामसुन्दर कतियाल प्रचार मन्त्री सनातन धर्म सभा, प्रि० गुगनसिंह (रोहतक), श्री आर्यव्रत शास्त्री एडवोकेट (झज्जर), प्रो० धर्मचन्द विद्यालंकार पलवल जि० फरीदाबाद, श्री जयनारायण पूर्व विधायक चरखीदादरी (भिवानी), प्रि० लाभसिंह, श्री जगतसिंह शास्त्री, श्री धर्मसिंह राठी पूर्व विधायक (पानीपत), राव रामचन्द्र आर्य (रेवाड़ी), श्रीमती किरणमयी आर्या (जींद), श्री दीपचन्द आर्य छिक्कारा जूआं (सोनीपत), प्रि० दलीपसिंह सिरसा, श्री धर्मचन्द शास्त्री पाथरी जि० करनाल। ने हरयाणा के हितों की रक्षा करने पर अपने सुझाव दिए। अबोहर से पधारे चौ० तेगराम जी पूर्व विधायक तथा उनके साथ प्रो० विश्वबन्धु शास्त्री ने हरयाणा की जनता को स्मरण करवाया कि १९७० में भारत की तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने अपने एवार्ड में चण्डीगढ़ के बदले में पंजाब के अबोहर फाजिल्का के हिन्दीभाषी क्षेत्र हरयाणा को दिए थे परन्तु हरयाणा न तो चण्डीगढ़ और न ही अबोहर फाजिल्का के हिन्दी भाषी क्षेत्र प्राप्त कर सका। इसी कारण अबोहर फाजिल्का के हिन्दी भाषी छात्रों को पंजाबी भाषा जबरन पढ़नी पड़ रही है, जबकि हमारे सभी धर्म ग्रंथ संस्कृत तथा हिन्दी भाषा में हैं। उग्रवादियों के आतंक के कारण वहां आर्यसमाज का प्रचार नहीं हो रहा है। आर्थिक दृष्टि से भी यह क्षेत्र भारत का कैलोफोरनिया (अत्यन्त उपजाऊ भूमि) है। अतः हमें इस क्षेत्र को हरयाणा में मिलाने के लिए बड़े से बड़ा बलिदान करना चाहिए।

इस अवसर पर प्रो० शेरसिंह द्वारा प्रस्तुत निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार किए गए।

प्रस्ताव संख्या १ :

भारत सरकार की पहल तथा सद्भावना का वातावरण बनाने के लिए उठाए गए ठोस कदमों का यह हरयाणा रक्षावाहिनी की बैठक स्वागत करती है। साथ ही यह बैठक अकालियों विशेष रूप से मान धड़े तथा दमदमी टकसाल और सिख विद्यार्थी संघ की ओर से सकारात्मक तथा सुस्पष्ट अनुक्रिया न आने पर चिन्ता व्यक्त करती है।

हरयाणा रक्षावाहिनी का यह निश्चित मत है कि पिछले ७ वर्षों में जो भी हत्यायें पंजाब, हरयाणा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली और पूना आदि में की गई हैं, वे सभी हत्यायें भारत के नागरिकों की हैं और उन हत्याओं के सभी दोषियों को सजा दी जाए तथा मरने वालों को परिवारों को उचित मुआवजा दिया जाना चाहिए। इस सम्बन्ध में कोई भी रूह रियायत बरतना न तो न्यायसंगत है और न ही देश के हित में। देश के किसी भी वर्ग या क्षेत्र के साथ किसी प्रकार का अन्याय संविधान की भावना के विरुद्ध है तथा देश की एकता के लिए घातक सिद्ध हो सकता है।

समय आ गया है जब इस तथ्य को खुलकर उजागर किया जाए कि पाकिस्तान भारत पर दो तरफा हमला कर रहा है, एक तरफ तो आतंकवादियों तथा अलगाववादियों को प्रशिक्षण, हथियार तथा अन्य साधन देकर भारत को तोडने की साजिश करके और दूसरी तरफ पंजाब तथा गुजरात की सीमाओं से मादक द्रव्यों की तस्करी करके। पाकिस्तान की इन वर्षों से चली आ रही विदेशी हरकतों को बन्द करने के लिए भारत सरकार को कड़ी चेतावनी देनी चाहिए तथा सीमाओं की तुरन्त सील करना चाहिए और यदि आवश्यक हो तो सीमा के साथ सुरक्षा पट्टी बनाने में संकोच नहीं करना चाहिए। मजबूत से मजबूत कदम उठाकर देशद्रोही आतंकवाद और अलगाववाद को समाप्त करना अब अनिवार्य हो गया है।

प्रस्ताव संख्या २ :

हरयाणा रक्षावाहिनी भारत सरकार के उन सभी प्रयासों में रचनात्मक सहयोग और समर्थन देगी, जिनके द्वारा पंजाब की जटिल से जटिलतर होती जा रही पंजाब की समस्या का स्थाई तथा न्यायसंगत हल निकल सके। परन्तु वह ऐसे सभी प्रस्तावों और निर्णयों का विरोध करेगी जिससे देश की एकता प्रभुसत्ता को ठेस पहुंचता हो या हरयाणा के साथ अन्याय होता हो। हरयाणा के साथ अन्याय करने का अर्थ होगा हरयाणा का मनोबल गिराना। देश और देश की [illegible] गिराना आज की परिस्थतियों में देशकी सुरक्षा तथा एकता के लिए घातक सिद्ध होगा। १९६६ में पंजाब का पुनर्गठन भाषा के आधार पर हुआ था। आजादी के बाद भारत के सभी प्रदेशों का निर्माण भाषा के आधार पर हुआ, पंजाबी सूबा और हरयाणा के नए प्रान्त भी उसी आधार पर बने। यदि वहां सिखों का बहुमत हो गया, इसलिए उसे सिख सूबा कहकर पुकारना साम्प्रदायिकता से प्रेरित है। पंजाब की समस्या को उलझाने में यह चिन्तन सहायक हुआ है। पंजाब हरयाणा और हिमाचल को मिलाकर एक प्रांत बनाने की बात करने वाले लोग साम्प्रदायिक हैं और देशवासियों के बीच भावात्मक एकता स्थापित करने में बाधक है। वैसे भी उनकी बात किसी तरह भी युक्तियुक्त नहीं है, बल्कि विवेकहीन है। ज्ञानी जैलसिंह जी की भूमिका १९७० से ही पंजाब के मामले को उलझाने वाली रही है। पिछले दिनों दिया गया उनका वक्तव्य साम्प्रदायिक विवेकहीन तथा असंगत ही नहीं शरारतपूर्ण भी है। (शेष पृष्ठ दो पर)

आम जनता का घोषणा पत्र

(पृष्ठ 4 का शेष)

उपलब्ध रहेगी, इसलिए जनता को शस्त्र रखने का अधिकार मिलना ही चाहिए।

दल बदल का इलाज

एक प्रवृत्ति पिछले दिनों यह हो गई है कि लोग चुने जाकर दल बदल लेते हैं और आया-राम गया-राम की श्रेणी में आ जाते हैं। यह दल बदल रोकना जनता मेनिफेस्टो का अंग है। इसके लिए केवल एक ही नियम पर्याप्त होगा कि दल-बदल करना हो तो पहले चुनावी पद से त्याग-पत्र दो। फिर नए दल के टिकट पर चुनाव लड़ा जाए। इसके साथ ही जनता यह भी चाहेगी कि जिस तरह उसे किसी को चुनने का अधिकार है, उसी तरह उसे अपने निर्वाचित प्रतिनिधि को वापस बुलाने का अधिकार भी हो। जनता के पास अपने प्रतिनिधि को वापस बुलाने का अधिकार रहेगा तो जन-प्रतिनिधि अपने मतदाताओं के प्रति उत्तरदायी रहेंगे, ताकि वे आसमान पर उड़ते रहने की बजाए धरती पर रहेंगे। आज की तरह गैर जवाबदारी नहीं। मतदाता का अधिकार इनके लिए चुनौतीपूर्ण होगा।

सत्तासीनों ने अपनी सुविधा के लिए लोकसभाओं व नगर निगमादि के चुनाव पृथक्-पृथक् कराने की सफल अभिसंधि करा ली है। इस कारण धन, समय व साधनों के असीम अपव्यय को रोकने के लिए सभी चुनाव अनिवार्य रूप से एक साथ कराए जाए। उपचुनाव की नौबत आए तो केवल शेष अवधि के लिए करा कर फिर वह सब चुनाव एक साथ कराए जाए।

सत्ता के प्रति सब महत्वाकांक्षी लोगों के मन में तीव्र लालसा होने के पीछे यही बात है कि चुने जाकर जो लोग पदासीन हो जाते हैं वे सरकारी साधनों पर विशिष्ट, अति विशिष्ट जीवन जीने लगते है। जनता चाहेगी कि वे सब लोग जो चुने जाकर पदासीन हो जाते है, वे सब अपने पद पर वेतनभत्तों की सीमा में सामान्य जनों के बीच, समान सामाजिक जीवन जीएं। मोटर, बगले, मुफ्त के टेलीफोन, मुफ्त की हवाई, रेल-परिवहन यात्रा बन्द की जाए। मन्त्रिगण विशिष्ट अतिविशिष्ट न बन कर सामान्य ही बने रहें। यह जरूरी है, इसलिए 'माले मुफ्त दिले बेरहम' वाली जीवन यापन प्रवृत्ति समाप्त की जाए। वी० आई० पी० ट्रीटमेंट सविधान की मंशा के प्रतिकूल है, यह समाप्त होना ही चाहिए।

मतदान में गड़बड़िया, मतदाता सूचियो में घोटाले, देशी-विदेशी के झगड़ों ने विकट रूप ले लिया है, देश की एकता व अखडता ही इससे खतरे में पड़ गई है। हमने 'राष्ट्रीय नागरिक पंजी' रखने का सकल्प किया था, वह 'नेशनल रजिस्टर' अभी तक कहीं अस्तित्व में नहीं है। यह राष्ट्रीय पंजी रखी जाए और उसके आधार पर मतदान सूची बने साथ ही मतदाता को उसका सचित्र परिचय पत्र प्रदान किया जाए।

शिक्षा में समानता

आर्थिक-सामाजिक-शैक्षणिक क्षेत्र में हद दर्जे की गैर बराबरी चल रही है। एक तरफ बच्चे शिक्षा से वंचित है दूसरी ओर पब्लिक स्कूल की शाहशाही है। विशेष स्कूलों की सुविधा है। पालको की आय के आधार पर स्कूलों में दाखिले, घरो में अंग्रेजियत के प्रमाणपत्र प्रवेश की शर्तें हैं-यह सविधान के बिलकुल विपरीत है। न अवसर की समानता है, न प्रतिष्ठा की रक्षा, न गौरव गरिमा की बराबरी। शिक्षा के क्षेत्र में यह वैषम्य समाप्त हो, यही जनता की माग है। इसी तरह नौकरियों व नियुक्तियों की बात है। जो सत्ता वर्ग में है, जो सत्ता वर्ग को सुख-सुविधा साधन जुटाने वाले प्रथम व द्वितीय श्रेणी के लोग हैं, उन सबके वारिसो को ही श्रेष्ठतम नौकरी, श्रेष्ठतम शिक्षा पाने के अवसर प्राप्त हैं। हो यहा तक गया है कि इन्होंने सारे नियम, कायदे अपनी सुविधा के अनुसार बना लिए हैं। समानता सबको मिले, इसलिए गैर बराबरी वाले सारे कायदे समाप्त हो यही जन-भावना है और लोक-माग है।

अनुचित कर। प्रणाली

वर्तमान सरकार ने कायदे-कानूनों के माध्यम से भारतीय कुटुम्ब परिवार की सास्कृतिक, परम्परा प्रणाली टूट रही है। आयकर सपत्ति कर, दान कर, भेंट कर, मृत्यु कर, के नाम से सरकार ने किसी भी बहाने लोगों को सम्पत्ति से वचित करने के करोपाय किए हैं। उन करो में भी सम्यक सुधार हो कि करो से बचने के लिए घर न टूटे पारिवारिक इकाइया विघटित न हो।

जनता द्वारा अच्छा सुखमय जीवन जीना भी सरकार की नजरों में खटकने लगा है। इसके ठीक विपरीत सरकारी अमला श्रेष्ठियों को भी मात करने वाली शाही जिन्दगी जीता है। यह एक बड़ी विडम्बनापूर्ण स्थिति है। इस विडम्बना का अन्त हो यही जनता चाहेगी।

राम बाण औषधि

इसी के साथ सविधान में जनता को भी कुछ करणीय कर्तव्य सौंपे गए हैं। इस सन्दर्भ में हमें सबसे पहले वही जीवन धोरण अपनाना होगा, जो हमने स्वराज्य की लड़ाई के समय अपनाया था। स्वदेशी का उपयोग हमारा जीवन-धर्म होना चाहिए आज हमारी आर्थिक दुर्दशा स्वदेशी को छोड़ने के कारण है। हमारे समस्त अतिविशिष्ट एव विशिष्ट जनों के हमारे श्रेष्ठि वर्ग के आवास आयतीत वस्तुओं के केवल अजायब घर हैं, बल्कि सग्राहलय बने हुए हैं। विदेशी वस्तुओं की यह ललक समाप्त की जाए यह भी जनता की माग है। स्वदेशी हमारी समस्त आर्थिक विपदाओं की रामबाण औषधि है। □

राष्ट्रीय शिक्षा नीति......

(पृष्ठ ५ का शेष)

५ उपार्जित योग्यता के आधार पर विभिन्न सेवाओं में नियुक्ति के अवसर उपलब्ध कराये जायें न कि केवल डिग्री के आधार पर। डिग्रियों की होड के स्थान पर उपार्जित योग्यता को सेवा का मूलाधार माना जाये।

६ वतमान शिक्षा प्रणाली के स्थान पर मूल्याकन का आधार आतरिक, बाह्य एव साक्षात्कार के आधार पर नियत किया जाये।

७ शिक्षकों और छात्रों के हड़ताल एव सगठन आदि बनाने पर प्रतिबन्ध लगे। छात्र एव शिक्षकों का कर्तव्य-क्षेत्र पढ़ने-पढ़ाने की सीमा में हो। कार्य को आवश्यक सेवा की कोटि में रखा जाये।

८ वर्ष में कम से कम २०० दिन वास्तविक रूप से अध्ययन-अध्यापन होना चाहिए।

९ आज की समूची शिक्षा नीति में अभिभावक की नगण्य भूमिका को सपूर्ण शिक्षा-चक्र में अधिकाधिक सक्रिय बनाया जाये। छात्रों की अनुशासनहीनता पर उनके माता-पिता के सतत सपर्क से सीधा नियत्रण किया जा सकता है। उद्दण्ड शरारती छात्र भी माता पिता से शिकायत किये जाने का भय रखता है। छात्र के व्यक्तित्व के विकास में माता पिता से अपेक्षित सहायता आवश्यक है। स्वयत्तशासी शिक्षा सस्थानों की समितियों में अभिभावकों का मनोनयन किया जाना एक स्वस्थ परम्परा है।

१० छात्रों को कठोर नियमित जीवन का अभ्यासी बनाने हेतु गुरुकुल कागड़ी में ५० वर्षों तक ब्रह्मचारी की परिपाटी चलती रहती थी। इस प्रकार की नियमित दिनचर्या का अभ्यास अन्य शिक्षा सस्थाओं में भी लागू हो। वैदिक दृष्टि से योग व ब्रह्मचय ही व्यक्तित्व के चरम विकास के आधारभूत तत्व हैं। जिनका समावेश छात्रों का सही अर्थों में सस्कारित करने में सहायक होगा।

११ शिक्षालय में शिक्षण कार्य से पूर्व सम्मिलित प्रार्थना, अग्निहोत्र करने तथा परिपाटी विकसित की जाय जो शैक्षिक वातावरण पैदा करने में सहायक सिद्ध होगी।

१२ समूची शिक्षा नीति का मूलाधार शिक्षक है अत सर्वप्रथम देश के १० लाख शिक्षकों को भी शिक्षित किया जाना आवश्यक है। इसके लिए देश के प्रमुख शिक्षा सस्थानों में शिक्षक प्रशिक्षण शिविरों का विराट् आयोजन किया जाना चाहिये।

अमृतसर में पाकिस्तानी महिला

ब्रिटेन में रहने वाली एक ३४ वर्षीया पाकिस्तानी महिला कु० मेरी जाज को पुलिस ने अमृतसर के एक होटल से गिरफ्तार किया। पुलिस ने महिला के पास से एक लाख के जेवरात १३६० पोंड की विदेशी मुद्रा, २५ घड़िया और १० हजार के नकली आभूषण भी बरामद किए। नगर-पुलिस अधीक्षक के अनुसार उसके कब्जे से कुछ कागजात भी बरामद हुये हैं। यह महिला वीसा की अवधि खत्म होने के बावजूद अवैध रूप से भारत में रह रही थी।

मासिक व्याख्यान माला

आर्य समाज ने प्रतिमाह अंतिम रविवार से प्रारभ होने वाली मासिक व्याख्यान माला के अन्तर्गत महात्मा नारायण स्वामी के प्रवचनों का आयोजन किया गया। सान्ताक्रुज के अलावा माटुगा व भाण्डुप समाजों, आर्य विद्यालयों व विश्व हिन्दू परिषद में स्वामी जी के भाषण से आर्य हिन्दू धर्म के प्रति नई जागृति पैदा हुई।

प० अमरसिंह द्वारा वेद प्रचार

अम्बाला प० अमर सिंह, कुवर जगतराम तथा श्री बस्तीराम ने नवम्बर से अब तक अम्बाला-कुरुक्षेत्र मण्डल के लगभग २१ ग्रामों में व्यापक वेदप्रचार किया। सभी कार्यक्रमों में उत्साहवर्धक उपस्थिति थी तथा सामूहिक उपनयन-सस्कार, धूम्रपान, नशाखोरी, मासाहार त्याग की प्रतीज्ञाए, वृहद् गायत्री-जप अनुष्ठान किये गये। कार्यक्रमों का प्रभाव भारी उपस्थिति में परिलक्षित था।

—वाराणसी (उ० प्र०) स्वाध्याय-शील तपस्विनी व कुशल वक्ता विदुषी श्रीमती अनिला देवी आर्या इस समय पाणिनि कन्या महाविद्यालय में निवास कर रही हैं। अपने उत्सव आदि में इनकी सेवाए प्राप्त करने की इच्छुक समाजें निम्न पते पर सम्पर्क करें—प्रज्ञा देवी, आचार्या, पाणिनि कन्या महाविद्यालय, पो० पथरडीहा, तुलसीपुर, वाराणसी (उ० प्र०)।

दयानन्द शताब्दी समारोह

स्वामी दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह मराठवाड़ा के रेणापुर ग्राम में २ ३ ४ फरवरी को सोत्साह मनाया जायेगा। इस अवसर पर नेत्र रोग शिविर दयानन्द चित्र प्रदर्शनी, मराठवाड़ा गोहत्या आन्दोलन, युवकों का पुनर्गठन, विशाल शोभा यात्रा आदि कार्यक्रम और सम्मेलन होंगे। समारोह को स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी अग्निवेश, डॉ० अमरेश-आर्य, श्रीमती नसीमा पठान और डॉ० प्रदीप देशमुख आदि विद्वान सम्बोधित करेंगे। —डॉ० चन्द्रशेखर लोखडे

सामाजिक जगत्

५०० अनाथ बच्चों की रक्षा

भोपाल गैस दुर्घटना मे सहस्त्रो मृत हो गए हजारो उसके दुष्ट प्रभाव से पीडित हैं। हजारो बच्चे अपने घर से बिछुडकर अनाथ हो गए हैं। इनके सपूर्ण पालन पोषण और शिक्षा दिक्षा के व्यवस्था करने हेतु कम से कम ५०० बच्चों का भार उठाने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ ने तैयारी प्रदर्शित की है। इम सम्बन्ध मे मध्यप्रदेश के मुख्यमत्री श्री अर्जुन सिह जी को तार एव पत्र भेजकर निवेदन किया गया है। सूचना आने पर तुरन्त आवश्यक व्यवस्था कर दी जाएगी। पीडित व्यक्तियो की महायताथ धन एव अन्य सामग्री मग्रह कर मुख्यमत्री महायता कोष मे भेजन की व्यवस्था की जा रही है।

ममस्त देशवासियो से प्राथना है कि इस सबध मे जो भी आर्थिक सहायता देना चाहें वे आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य-प्रदेश व विदर्भ, महर्षि दयानन्द भवन मगलवारी बाजार, सदर, नागपुर को भेज सकते हैं।-रमेशचन्द्र मत्री आर्य प्रति निधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ नागपुर,

हैदराबाद के प्रसिद्ध चित्रकार दिल्ली मे

आयसमाज के क्षेत्र मे प्रसिद्धि प्राप्त चित्रकार श्री प्रकाशार्य 'सग्राम' जो हैदराबाद निवासी है, एक वर्ष पूव हैदराबाद चले गये थे, वह पुन आर्यममाज (अनारकली) मन्दिर माग, नई दिल्ली मे आ गये हैं। उन्होने आर्य नेताओ, ऋषियो महर्षियो के चित्र बनाने आरम्भ कर दिये हैं। गत दिनो कई आर्य समाजो और डी० ए० वी सस्थाओ के अधिकारियो ने उनसे सम्पक करना चाहा था, पर वे न मिल सके थे। वे अधिकारी अब पुन प्रकाशार्य कलाकार से आर्य ममाज, मन्दिर माग, नई दिल्ली-१, दूरभाष-३४३७१८ से सपर्क कर मकते है।

—आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ नागपुर द्वारा नगर के श्री विजय आर्य "स्नेही" को जिले के लिए वेद प्रचार अधिष्ठाता नियुक्त किया है।

श्री हरिकृष्ण आर्य दिवगत आर्यसमाज में शोक सभा

आर्यसमाज लाजपतनगर नयी दिल्ली के प्रधान श्री जयदेव आर्य के पिता श्री हरिकृष्ण आर्य व माता जी श्रीमती सोभा धन्ती आर्या का स्वर्ग वास हो गया है। श्रद्धाञ्जलि सभा दि० ६-१-८४, रविवार, दोप० २ से ४ बजे तक आर्य समाज लाजपतनगर-२ (सी० ब्लाक बिजली घर के पास-फोन ६९०६४८) मे होगी। —प० मेघश्याम वेदालकार।

आर्यसमाज, कलकत्ता का वार्षिकोत्सव स्थगित

आर्यसमाज विधान सरणी कलकत्ता का जो वार्षिकोत्सव २२ से ३० दिसम्बर तक होना था, वह अब १९ से २७ जनवरी तक स्थानीय मोहम्मद अली पार्क मे सोत्साह मनाया जायेगा। —राधेश्याम

—आयसमाज निर्माण बिहार, दिल्ली प्रधान श्री त्रिगेश्वर नाथ शर्मा, मत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा और कोषाध्यक्ष श्री रवि प्रकाश बहल चुने गये।

—आर्यसमाज, घौंडा, दिल्ली के वार्षिक चुनाव मे प्रधान श्री आमप्रकाश गुप्त, मन्त्री श्री लक्ष्मणदास आय और कोषाध्यक्ष श्री सत्यप्रकाश शर्मा चुने गये।

आर्य समाज शालीमार बाग का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज, शालीमार बाग (कैलाश गोदाम के पास) दिल्ली का वार्षिकोत्सव 23 दिसम्बर को समारोह पूर्वक बनाया गया। डी०ए०वी० माडल स्कूल के छात्रो का विशेष यज्ञ हुआ। तदुपरान्त आचाय पुरुषोत्तम एम०ए० तथाडाक्टर महावीर के विशेष व्याख्यान हुए। दिल्ली की डी०ए०वी० पब्लिक स्कूलो की सगीत और व्याख्यान प्रतियोगिता हुई जिममे डी०ए०वी० माडल स्कूल शालीमार बाग प्रथम, और डी०ए०वी० माडल स्कूल प्रतिमपुरा द्वितीय रही। डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल आर० के० पुरम का सास्कृतिक कायक्रम हुआ जिमकी आर्य जनता ने भूरि-भूरि प्रशसा की। इस सभी कार्यों का सफल सचालक डी० ए०वी०माडल स्कूल शालीमार बाग की प्रिंसिपल श्रीमती आदश कोहली ने किया।

स्वामी सुकर्मानन्द द्वारा प्रचार

केन्द्रीय आर्य समिति, मेरठ और श्री इन्द्रराज के अनुरोध पर स्वामी सुकर्मानन्द जी ने 4 दिसम्बर को मेरठ के निम्नलिखित समाजो मे प्रचार किया—आर्यसमाज और स्त्री आर्यसमाज, मेरठ शहर, स्त्री आर्य समाज थापर नगर, आर्य समाज साकेत, आर्य समाज दयानन्द पथ सदर स्त्री आर्य समाज आनन्द पुरी आदि।

पाटण मे वेद-प्रचार

आर्य समाज पाटण (उ० गुजरात) मे स्वामी आशानन्द जी द्वारा वेद प्रचार किया गया। इस समाज मे दैनिक यज्ञ होता है और समय समय पर आर्य साहित्य विपरीत किया जाता है।

स्वामी भास्करानन्द अस्वस्थ

कर्मठ आर्य सन्यासी स्वामी भास्करानन्द तर्क भास्कर आजकल बीमार चल रहे हैं वे इस समय पन्त चिकित्सालय, दिल्ली मे स्वास्थ्य लाभ प्राप्त रहे हैं। प्रभ उन्हे शीघ्र निरोग करें।

'आर्य जगत्' के नए आजीवन सदस्य

पिछले कुछ समय से हम 'आर्यजगत्' के नये आजीवन सदयस्यो की सूची प्रकाशित नही कर सके। इसमे पहले आजीवन सदस्यो की सूची 9 सितबर 84 के अक मे प्रकाशित हुई थी। पाठको के स्नेह के लिए क्या कहे। हम इस वर्ष तक अपने ग्राहको और आजीवन सदस्यो की मख्या दुगुनी कर देना चाहते है। हरेक ग्राहक एक नया ग्राहक बना दे, और हरेक आजीवन सदस्य एक नया आजीवन मदस्य बना दे तो यह मकल्प पूरा हो सकता है। यही सकल्प नए वर्ष मे आपके सशक्त हाथो मे सौप रहे हैं। आपके स्नेह और आपकी क्षमता दोनो मे हमे विश्वास है। क्या अगली बार आप अपना नाम इस सूची मे छपा हुआ देखना चाहते है? अगर हां! तो अपना 201 रुपये का चाक/मनीआर्डर बक ड्राफ्ट शीघ्र ही सभा कार्यालय 'आर्य जगत्' मन्दिर मार्ग नई दिल्ली का भेजें अब तक 669 आजीवन सदस्यो की सूची छप चुकी है। आगे की सूची नीचे दे रहे हैं—

670 श्री सूरज प्रमाद, 12 गणेश गज, इन्दौर
671 श्री शिवकुमार नेगी, ग्रा० रामपुर (लालपानी) पा० कुम्भी चौड (कोटद्वार) जिला पौडीगढवाल
672 श्री रामाज्ञा वैरागी, वैरागी कुटीर, पजाबी कालोनी, कलम बाग चौक, मुजफ्फरपुर (बिहार)
673 डॉ० देवेन्द्र प्रताप, प्रि० सरस्वती कालज ऑफ एजूकेशन, चरखी दादरी, भिवानी (हरि०)
674 श्री जयदव आय, ग्रा० पा० गुन्दियाना, जि० कुरुक्षेत्र (हरि०)
675 अखिल भारत वर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा, 8392—आर्य नगर, पहाडगज, नई दिल्ली
676 श्रीमती सपना तलवार, 75 शास्त्री नगर, यमुनानगर
677 श्री गुरुदत्त तिवारी, एफ 68 ग्रीन पार्क मेन, नई दिल्ली
678 श्री प्रधान जी, आर्य ममाज, 289 सतना बिल्डिग, राइट टाउन, जबलपुर
679 डॉ० सी०बी० चौधरी C/O श्री आर०एन० मेहदीरत्ता ए-7 लाजपत नगर III, नई दिल्ली
680 श्री रघुनाथ आर्य बाडी चितालिमिया निकल रोड, पो० गारुलिया, जि० चौबीस परगना (प० बगाल)
681 श्री रामनिवास जिन्दल, मु० बालावास, पो० कवारी, वाया—नलवा, हिसार
682 श्री शकर लाल केडिया, बी/6 अर्जन मोहल्ला, मौजपुर, दिल्ली
683 टेक टिम्बर इण्डस्ट्रीज, सुभाष वाड, हरदा जिला—होशगाबाद
684 डॉ० राम स्वरूप शर्मा, 5219 कोल्हापुर रोड, दिल्ली
685 श्री विशनदास आय प्लाट न० 218 चावला चौक, जरी पटका नागपुर
686 श्री विजय कुमार आय, ग्रा० बमतपुर, पो० कुडवा—चैनपुर, पूर्वी चम्पारण
687 श्री एन० के० अग्रवाल, प्राईट इन्टर नैशनल ओरियन्टल हाउस, 7-जमसेद जी टाटा रोड, चर्च गेट बम्बई
688 स्वामी गुरुकुलानन्द, आयसमाज, ताडीखेत, अल्मोडा (उ०प्र०)
689 सु श्री विशा पुरी D 5 ग्रेटर कैलाश, एन्कलेव-II नई दिल्ली
690 फारचून एण्ड क०, रीड रोड, रेल्वेपुरा अहमदाबाद
661 श्री नन्दलाल चाण्डक A-2/8 महेश नगर, गोरेगाव, (वेस्ट) बम्बई
662 श्री पुरुषोत्तम दास, मेन रोड, जल गाव जामोद, जि० मुलढाणा
693 श्री मत्री जी, आर्यसमाज, कपूरथला, पजाब
694 आचार्या सरोजिनी आर्या, कन्या गुरुकुल नरेला, दिल्ली

×

ऋग्वेद पारायण यज्ञ

आर्य समाज कृष्ण नगर, दिल्ली मे क्षत्रीय उपप्रतिनिधि सभा, जमनापार के तत्वावधान मे 17 से 23 दिसम्बर तक ऋग्वेद पारायण-यज्ञ ऋषि दयानन्द शताब्दी के रूप मे मनाया गया, जिसमे श्री ओम्प्रकाश खतौली वाले, श्री ओम्प्रकाश आय, श्रीमती उषा शास्त्री के व्याख्यान और प० सत्यदेव स्नातक के भजन हुए। श्री राम गोपाल जी के पुन सार्वदेशिक सभा का प्रधान निर्वाचित होने पर स्वागत किया गया।

श्रद्धानन्द दिवस

जिला आय प्रतिनिधि सभा, भिवानी द्वारा आर्य समाज घटाघर, भिवानी मे 23 दिसम्बर को श्रद्धानन्द बलिदान दिवस श्री विश्वम्भर नाथ खन्ना की अध्यक्षता मे सोत्सह मनाया गया। श्री खन्ना ने कहा कि शुद्धि कार्यक्रम और वैदिक रीति से शिक्षा को अपनाना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

यू० १०३/१०८ लायसेंस टु पोस्ट विदाउट प्रीपेमेन्ट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११६३/७२ डी० सी० (४६)

उपयुक्त वर चाहिए

(रजिस्ट्रेशन नं० ३०३)

१९ वर्षीय कद ५ फुट २ इंच मैट्रिक पास, गौर वर्ण, गृहकार्य में दक्ष सुशील और सुन्दर कन्या के लिए रोजगार में लगे, शाकाहारी, आर्य विचारों के योग्य वर की आवश्यकता है। पत्र व्यवहार का पता श्री –जे० पी० चौहान ... सी ३१-बी, एल० आई० जी० फ्लैट्स जी-८ एरिया, राजौरी गार्डन नई दिल्ली-६४

जानकी देवी पाठक दिवंगत

श्रीमती जानकी देवी पाठक (धर्मपत्नी प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान एवं संस्कृत में सत्यार्थ प्रकाश के अनुवादक स्व० पं० शंकरदेव पाठक काव्यतीर्थ) का १३ दिसम्बर ८४ को दिल्ली में अपने पुत्र सुरेशचन्द्र पाठक (परराष्ट्र विभाग भारत सरकार से रिटायर्ड) के निवास स्थान सैक्टर २ क्वार्टर ६०४ सादिक नगर दिल्ली में स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे ३ सुयोग्य पुत्र एवं पौत्र पौत्रियां छोड़ गई हैं। उनकी आयु ८४ वर्ष की थी। कई वर्षों तक आगरा और लखनऊ में माध्यमिक स्कूलों में संस्कृत हिन्दी का उन्होंने अध्यापन किया था। उनका जन्म येवला (नासिक) के एक सम्पन्न गुजराती वैश्य परिवार में हुआ था। कन्या गुरुकुल हाथरस में भी शिक्षा प्राप्त की थी। विवाह अन्तर्जातीय एवं अन्तर्प्रान्तीय था। अतः दोनों परिवारों को बिरादरी व सब कुटुम्बियों का जाति बहिष्कार सहना पड़ा। उनके दो पुत्रों के भी अन्तर्जातीय विवाह हुए। वे संस्कृत के कविरत्न स्व० पं० मेधाव्रत जी की छोटी बहिन थीं। उन्होंने हजारों रुपयों का संस्कृत साहित्य सार्वदेशिक सभा के पुस्तकालय को दान किया था।

पं० शंकरदेव पाठक (रघुनाथप्रसाद पाठक के बड़े भाई) गुरुकुल वृन्दावन में अध्यापक थे। वहीं जीवन का अन्त हुआ। वे बिजनौर जिले के प्रसिद्ध ब्राह्मण परिवार से सम्बन्धित थे।

कन्या महाविद्यालय की प्रथम आचार्या लज्जावती दिवंगत

कन्या महाविद्यालय जालन्धर की प्रथम आचार्या कुमारी लज्जावती का १४ दिसम्बर १९८४ को रात्रि लगभग ८ बजे देहावसान हो गया। १५ दिसम्बर को सायं ४ बजे उनका अन्त्येष्टि संस्कार किया गया जिसमें जालन्धर तथा बाहिर से आए सैकड़ों लोगों ने तथा कन्या महाविद्यालय के स्टाफ व छात्राओं ने भाग लिया। उनके शव को श्रद्धालुओं ने फूल-मालाओं से लाद दिया था। १७ दिसम्बर सोमवार को सायं दो बजे से पांच बजे तक उनका अन्तिम शोक दिवस मनाया गया। इस अवसर पर बृहद् यज्ञ श्री पं० धर्मदेव जी सहायक अधिष्ठाता वेद प्रचार, श्री नरेशकुमार जी शास्त्री, आचार्य गुरुकुल करतारपुर श्री पं० उमेश जी पुरोहित आर्य समाज माडल टाउन जालन्धर ने करवाया। श्री चतुर्भुज मित्तल उपाध्यक्ष आर्य शिक्षा मण्डल, प्रिंसिपल श्रीमती उमा देवी जी, अध्यापिका श्रीमती कपूर, प्राध्यापक श्री रामनाथ जी शर्मा, भूतपूर्व प्राध्यापक श्री ... जी जोशी, कुमारी खन्ना जी प्रिंसिपल हंसराज महिला महाविद्यालय जालन्धर, श्रीमती ...मोहन जी, प्रिंसिपल बी० डी० आर्य गर्ल्ज कालेज जालन्धर छावनी, कुमारी विमला छाबड़ा प्रिंसिपल लालबहादुर शास्त्री गर्ल्ज कालेज ..., प्रिंसिपल कुन्दन विद्या मन्दिर लुधियाना श्री मुदर्शन नन्दा प्रिंसिपल द्वाबा कालेज जालन्धर प्रसिद्ध पत्रकार श्री चन्द्रमोहन श्री ... मेठ प्रधान आ० स० अड्डा होशियारपुर, श्री धर्मपाल जी ... एडवोकेट श्री रविन दा जी एडवोकेट, और आचार्या लज्जावती जी के छोटे भाई श्री इन्द्रदेव जी दुआ, रिटायर्ड मुख्य न्यायाधीश दिल्ली हाई कोर्ट तथा अन्त में श्री बलवीर जी सोंधी कोषाध्यक्ष आर्य शिक्षा मण्डल जालन्धर ने उन्हें भावभीनी श्रद्धाजंलि भेंट की।

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के कर कमलों द्वारा स्थापित और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित

भारतवर्ष का पुराना और उत्तरी भारत का प्रमुख अनाथालय

कुशल प्रशासक शैक्षिक ज्ञाता, उदार हृदय प्रबन्धकों की देखरेख में बालक-बालिकाओं के पालन-पोषण, शिक्षा आदि का उचित प्रबन्ध है।

आप सभी दानी महानुभाव इस पुनीत कार्य में दान देकर पुण्य के भागी बनें।—प्रि० पी० डी० चौधरी, मैनेजर आर्य अनाथालय, फिरोजपुर छावनी।

महात्मा हंसराज दिवस २१ अप्रैल १९८५ को

दिल्ली की समस्त आर्य समाजों, डी० ए० वी० संस्थाओं, एवं अन्य आर्य संस्थाओं को सूचनार्थ निवेदन है कि इस वर्ष का महात्मा हंसराज दिवस २१ अप्रैल १९८५ को हर वर्ष की भांति प्रातः ९ बजे से १२.३० बजे तक तालकटोरा गार्डन के इण्डोर स्टेडियम में समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। मेरी समस्त आर्य जनता से प्रार्थना है कि वह ये तिथियां अभी से अंकित कर लें। अपना कोई भी अन्य कार्यक्रम न रखें और अधिक से अधिक संख्या में इस समारोह में सम्मिलित होने की कृपा करें।

—रामनाथ सहगल सभा मंत्री

साहित्य समीक्षा

'वेद ज्योति' मासिक पत्रिका

वेद सम्बन्धी मासिक पत्रिका है। इसमें धारावाही रूप से शतपथ ब्राह्मण, अष्टाध्यायी और निरुक्त का हिन्दी अनुवाद भी अन्य लेखों के साथ प्रकाशित हो रहा है। सम्पादक—आचार्य वीरेन्द्र मुनि शास्त्री। पता—प्रकाशक वेद ज्योति सी-८१७ महानगर, लखनऊ-६। वार्षिक मूल्य २०)

ऐतरेय ब्राह्मण ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद

महर्षि महीदास ऐतरेय का ऋग्वेदीय ब्राह्मण ग्रन्थ जिसमें श्रौत यज्ञों की विधि और रहस्य तथा एक हजार से अधिक ऋग्वेद मन्त्र और उनकी व्याख्या, विविध सूक्तियों और महत्वपूर्ण भूमिका के साथ विद्यमान है। मूल्य केवल ३० रुपये प्रकाशक—विश्ववेद परिषद्, C-८१७ महानगर लखनऊ।

भटके हुए सिख

कानपुर के भटके हुए सिखों को प्रातः स्मरणीय श्री देवी दास आर्य ने पुनः हिन्दू बनाया है। अब ऐसा माहौल बम्बई में पनप रहा है। बम्बई निवासी आर्य भी कर्त्तव्य निभाते हुए ऐसे व्यक्तियों को दिशा प्रदान करें जो दंगों के परिणाम स्वरूप हिन्दू धर्म छोड़ मुसलमान बनना चाहते हैं।

—ओम प्रकाश आर्य, ८२ आर्य भवन, प्रेमनगर, करनाल (हरि०)

बहुओं को क्यों जलाया जाता है

आजकल दहेज लेने की प्रथा चरम सीमा तक पहुंच चुकी है। प्रतिदिन समाचार पत्रों में आता है कि दहेज कम लाने के कारण बहुओं को मिट्टी का तेल छिड़ककर जलाया जाता है। यह बड़ा भारी जघन्य अपराध है। इस अपराध से बचने के लिए आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग नई दिल्ली-१ में दहेज रहित अन्तर्जातीय विवाह विभाग खोल रखा है। इससे सभी सज्जन लाभ उठा सकते हैं। सेवा सर्वथा निःशुल्क है।

मिलने का समय —सायं ५ से ७ बजे तक (रविवार छोड़कर)

सम्पर्क करें डा० मदनपाल वर्मा, अधिष्ठाता-अन्तर्जातीय विवाह विभाग, आर्य समाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१

सवाई माधोपुर में सामूहिक विवाह

सवाई माधोपुर। अग्रवाल समाज सवाई माधोपुर के तत्वावधान में तेतीस जोड़ों के विवाह सम्पन्न हुए। इनमें दस ऐसी कन्याओं को सुहाग मिल गया जिनको पारिवारिक निर्धनता के कारण कभी भी सुहाग मिलने की आशा नहीं थी। अग्रवाल समाज सवाई माधोपुर ने प्रत्येक लड़की के परिवार से तथा प्रत्येक लड़के के परिवार से २५००/- रुपये शुल्क के रूप में प्राप्त किये। इस प्रकार प्रत्येक जोड़े से समाज को पांच हजार रुपये शुल्क के रूप में मिले। इसके बदले में समाज ने प्रत्येक कन्या को छः हजार रुपये का सामान प्रदान किया। अग्रवाल समाज ने इस आयोजन के लिए सामाजिक कार्यकर्ताओं से लगभग डेढ़ लाख रुपए चन्दे के रूप में एकत्रित किया था।

—... अग्रवाल प्रचार मंत्री

अल्लाह की मर्जी : उम्र १७ वर्ष : पति १८वां

बात अमरीका या किसी अन्य पश्चिम देश की नहीं, जहां बात-बात पर तलाक लेकर नई शादियां कर ली जाती हैं, अपने इसी हिन्दुस्तान की है। उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले की रहीमा के सत्रह वर्ष की उम्र तक पहुंचते पहुंचते सत्रह विवाह हो चुके हैं और अब वह अठारहवें विवाह की तैयारी कर रही है। अपने किसी भी पति के साथ वह कितने दिन रह पाई होगी, इसका अनुमान ही लगाया जा सकता है। उसके तीन पतियों की मृत्यु हुई पांच को उसने स्वयं छोड़ा और छः ने उसे छोड़ दिया। रहीमा का इस बारे में एक ही उत्तर है—यह अल्लाह की मर्जी है।

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाड़ी धीरज, दिल्ली से छपवा कर कार्यालय, 'आर्य जगत' मन्दिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

साप्ताहिक पत्र   ओ३म्   कृण्वंतो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

वार्षिक मूल्य-२० रुपये | विदेश मे २० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४८, अक २, रविवार, १३ जनवरी १९८५ | दूरभाष ३४३७१८
आजीवन सदस्य-२०१ रु० | इस अक का मूल्य—५० पैसे | सृष्टि सवत् १९७२९४९०८४, दयानन्दाब्द १६० | माघ कृष्णा ७, २०४१ वि०

पंजाब समस्या के समाधान के लिए सुझाव

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और चण्डीगढ़ को मिलाकर बृहद् पंजाब बनाया जाय

लोक सभा निर्वाचन के उपरान्त प्रधान मत्री माननीय श्री राजीव गाधी द्वारा की गई इस घोषणा का, कि भारत सरकार पजाब समस्या का समाधान करने के लिए कृतसकल्प है, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने हार्दिक स्वागत किया है। इस सदर्भ मे, पजाब समस्या का स्थायी समाधान सुझाते हुए उन्होने फार्मूला पेश किया है कि पजाब, हरियाणा एव हिमाचलप्रदेश तथा केन्द्र शासित चण्डीगढ़ को मिलाकर एक बडे प्रान्त—वृहद पजाब—का सृजन किया जाय। पद्रह करोड की आबादी वाले प्रान्त—उत्तर प्रदेश का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए उन्होने कहा कि ऐसा प्रान्त अव्यवहारिक नहीं होगा। उन्होने भाषावार राज्य निर्माण को एक भारी राजनैतिक भूल की सज्ञा दी। प्रान्तो के मध्य अनेक प्रकार के मत-भेदो का जनक, यह भाषाई आधार ही है। प० जवाहरलाल नेहरू हमेशा ही पजाब के बटवारे का विरोध करते रहे।

श्री शालवाले ने कहा कि स्व० प्रधान मत्री श्रीमती इन्दिरागाधी ने भी मुझ से एक मुलाकात मे पजाब के बटवारे को गलत बताया था। यह भूल इसलिए हुई, क्योकि उस कमीशन के अध्यक्ष श्री सरदार हुकमसिह थे।

उन्होने अकाली नेताओ के इस कथन की निन्दा की कि आनन्दपुर साहिब प्रस्ताव को आधार मानकर और अकाली नेताओ को रिहा करने पर ही पजाब सबधी वार्ता हो सकती है। उन्होने वर्तमान प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी से अपील की कि वे पजाब समस्या के समाधान मे भी अपने अनुपम साहस का परिचय दें। पूरा देश उनके प्रयासो का समर्थन करेगा।

गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाए: कृषिमंत्री को पत्र

माननीय सरदार श्री बूटासिह जी,   सादर नमस्ते।

भारत के कृषि मत्री चुन जाने पर मेरी तथा समस्त आर्य जगत् की हार्दिक बधाई और शुभकामना स्वीकार करे।

आपकी निष्ठा, योग्यता और कार्य क्षमता पर पूरा विश्वास व्यक्त करके एक नए [illegible] की जनता ने आपको विशाल बहुमत से विजयी बनाकर लोकसभा मे भेजा है। आपकी राष्ट्र भक्ति, वफादारी, ईमानदारी और अनुशासन भावना को देखकर भारत के प्रधान मत्री श्री राजीव गांधी ने आपको केन्द्रीय मत्रिमण्डल मे कृषि मत्री के महत्वपूण पद पर सुशोभित किया है।

इस अवसर पर आपकी सेवा मे निवेदन है कि भारत के बहुसख्यक जन समुदाय की हार्दिक इच्छा को पूरा करने के लिए आपके कार्यकाल मे गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाय। आजादी से पूव महात्मा गाधी व लोकमान्य बाल गगाधर तिलक आदि नेताओ ने देशवासियो को विश्वास दिलाया था कि आजादी के मिलते ही कलम की नोक से गोहत्या बन्द कर दी जायेगी। कृषि प्रधान भारत मे आधुनिक यन्त्रो एव उपकरणो के होते हुए भी अभी तक देश के बहुसख्यक किसान बैलो द्वारा ही खेती पर निर्भर है। अत भारत मे गोवश की रक्षा एव खेती के लिए बैलो के महत्व को बढावा देना बहुत आवश्यक है। इसके लिए गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित कर दिया जाय। यह महान कार्य आपके मत्रित्वकाल मे हो जाना चाहिए। मैं बडी आस्था और विश्वास के साथ यह पत्र आपकी सेवा मे भेज रहा हू।

प्रधान   भवदीय
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली   रामगोपाल शालवाले

दयानन्द निर्वाण शताब्दी का विशाल समारोह

२० जनवरी को तालकटोरा स्टेडियम में विशेष कार्यक्रम

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा हनुमान रोड की ओर से 13 जनवरी से 20 जनवरी 1985 तक महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी का विशाल समारोह मनाया जा रहा है। इस उपलक्ष्य मे राजधानी के विभिन्न स्थानो पर विशेष यज्ञो और उपदेशो की व्यवस्था की गई है। इस अवसर पर एक भव्य स्मारिका भी प्रकाशित की जा रही है। आर्य साहित्य के वितरण की भी योजना है। 20 जनवरी को ताल कटोरा स्टेडियम मे विशेष कार्यक्रम रखा गया है जिसमे देश के प्रमुख आर्य विद्वान् भाग लेंगे। और मुख्य अतिथि राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिह होगे।

यज्ञ और उपदेशो का क्रम इस प्रकार होगा—दीवान हाल मे प० राजगुरु शर्मा, करोलबाग मे प० शिवकुमार शास्त्री, लाजपत नगर मे डा० महेश विद्यालकार, जनकपुरी मे श्री मनोहर लाल ऋषि, शालीमार बाग मे प जैमिनी शास्त्री, तीमार पुर मे श्री मुरारीलाल बेचैन, आर्यपुरा (सब्जी मडी) मे श्री मोहन लाल पथिक, चूनामडी मे श्री सत्यपाल पथिक, गाधी नगर मे श्री श्याम सुन्दर स्नातक, बाकनेर (देहात) मे आचार्य रामकिशोर वैद्य।

समस्त आर्यजनो से इस ऐतिहासिक समारोह मे अधिकाधिक आर्थिक सहायता के लिए निवेदन है।

सूर्यदेव प्रधान   डा० धर्मपाल महामन्त्री
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली

आओ सत्संग में चलें

तपस्वी ऋषि ही मार्ग दर्शक होते हैं

—श्री मनोहर विद्यालकार—

अग्ने विश्वेभिरग्निभिर्जोषि
ब्रह्म सहस्कृत।
ये देवत्रा य आयुषु
तेभिर्नो महया गिर ॥
[साम १५०३

ऋषि - तापसोऽग्नि। देवता—अग्नि। छन्द—अनुष्टुप्।

शब्दार्थ—हे (सहस्कृत) सहनशीलता अर्थात् साधना की निरन्तरता और प्रतीक्षा द्वारा साक्षात्कृत (अग्ने) मार्ग दर्शक प्रभो! आप, (ये) जो (देवत्रा) देवो विद्वानो मे तथा (ये) जो (आयुषु) कर्म प्रधान मनुष्यो मे नेता या मार्ग दर्शक पुरुष हैं (तेभि विश्वेभि अग्निभि) उन सब मार्ग दर्शक मनुष्यो के माध्यम से (ब्रह्म) हमारे द्वारा प्रदत्त अन्न और धन को (जोषि) सेवन कीजिये। और (न गिर महय) हमारी वाणियो को सम्मान प्रदान कीजिये—हमारी प्रार्थनाओ को स्वीकार करके, हमारी शुभ इच्छाओ को पूर्ण कीजिये, जिससे हम भी आपके समान अग्नि बनकर दूसरो का मार्ग दर्शन कर सकें।

निष्कर्ष अग्नि बनने की कामना वाले को तपस्वी अर्थात् सयमी और परिश्रमी बनना चाहिये।

'ज्ञानियो और कर्मवीर मनुष्यो के अनुकरण द्वारा तपस्वी मनुष्य भी अग्नि बन कर दूसरो का मार्ग दर्शन कर सकता है।

ब्रह्म (बृहत्-बडे) भगवान्, वेद, अन्न और धन अथवा किसी भी महान् आदर्श की साधना मे लगे महापुरुष का सत्सग सामान्य जन को अग्नि सदृश तेजस्वी बना सकता है। मार्ग दशक अग्नि बनने के लिए प्रतिकूल परिस्थितियो और विरोधी मनुष्यो को स्तुति (गुण दोष कीर्तन), द्वारा अनुकूल बनाने की क्षमता आवश्यक है, ऐसा छन्द का शब्दार्थ सकेत करता है। अग्नि बनने वाले को किसी न किसी ब्रह्म अर्थात् भगवान्, वेद, अन्न और धन अथवा महान् आदर्श की साधना मे लगना, आवश्यक है। बिना साधना के सिद्धि सभव नही।

विशेष—इस मन्त्र के ऋषि, देवता और छन्द शब्दो के अर्थ सकेत करते हैं कि—मनुष्य मे जिस गुण या पदार्थ की कामना हो, उस गुण या पदार्थ के निधि या स्वामी—का सत्सग उससे प्रार्थना और उसका अनुकरण, तपस्या और मनोयोग से करना चाहिये। कामना पूर्ति में उपस्थित होने वाली प्रतिकूल परिस्थितियो और विरोधी जनो को अनुकूल बनाने का सामर्थ्य उत्पन्न करना चाहिये।

अग्नि—अग्रे गच्छति, अग्रे नयति, अग्रे गन्तु कामयते।

तापस—तपस्वी-तप और मनोयोग से प्रयत्न करने वाला।

अनुष्टुप्—अनु=अनुकूल+स्तुप् स्तुञ् स्तुतौ। विरोधियो को स्तुति (गुण दोषानु कीर्तन) द्वारा, खुशामद करके नही, अनुकूल बनाने वाला।

ब्रह्म—अन्ननाम। नि० २-६, धननाम। नि० २-१०,

ब्रह्म तत्व तपो वेदे न द्वयो पु सि वेधसि। मेदिनी

परमात्मा परो ब्रह्म जीव क्षेत्रज्ञ आविश। वैजयन्ती

हममें यज्ञ भावना को बढ़ाइये

त्व नो अग्ने अग्निभिर्ब्रह्म
यज्ञ च वर्धय।
त्व नो देवतातये
रायो दानाय चोदय ॥

साम १५०५ (ऋक् १०-१४१-६)

ऋषि—तापसोऽग्नि। देवता—अग्नि। छन्द—अनुष्टुप्।

शब्दाथ—(अग्ने) सबको प्रकाश प्रदान कर मार्ग दर्शन करने वाले तेजस्विन् प्रभो? (त्वम्) कृपा करके आप (अग्निभि) अपने तेजो तथा ससार का मार्ग दर्शन करने वाले अपने भक्तो द्वारा (न) हमारे (ब्रह्म यज्ञम्) बडे-बडे सत्कार, सगठन और दान के कार्यो को अथवा यज्ञ-भावना से किये जा रहे प्रत्येक महत्कर्म को (वर्धय) बढाइए, समृद्ध करिए। समृद्धि के साथ-साथ (त्वम्) आप (न) हमारे (राय) धनो तथा समृद्धियो को (देवतातये) दिव्य-भावनाओ का विस्तार करने के लिये तथा (दानाय) उन भावनाओ की पूर्ति के निमित्त दान देने के लिए (चोदय) प्रेरणा करें।

निष्कर्ष—परमात्मा, परोपकार के लिये जाने वाले बडे से बडे कर्म को भी नही बढाता; उसकी पूर्ति या सफलता कर्त्ता के परिश्रम के कारण होती है।

परिश्रम के फल स्वरूप परमात्मा समृद्धि अवश्य देता है। उस समृद्धि को पाकर, सामान्य जन इसे परमात्मा की कृपा न समझकर अहकार तथा तज्जन्य अन्य दोषो मे फस जाते है। और परिणामत आगे आगे बढने के स्थान पर आत्मिक दृष्टि से पिछड जाते हैं। इसलिये प्रार्थना की है कि—समृद्धि प्राप्ति के अनन्तर हमे दिव्य भावनाओ की पूर्ति के लिये धन का, दान करने की प्रेरणा करिए, जिससे हम किसी दोष मे लिप्त न हो जावें।

हमें समृद्धि-शाली बनाइए

प्र स विश्वेभिरग्निभिरग्नि
स यस्य वाजिन।
तनये तोके अस्मदा
सम्यग् वाजै परीवृत ॥
साम १५०४।

ऋषि—तापसोऽग्नि। देवता—अग्नि। छन्द—अनुष्टुप्।

शब्दार्थ—(यस्य वाजिन) जिस समृद्धिशाली तथा सर्व समर्थ प्रभु की (विश्वेभि अग्निभि) जगत् के समस्त मार्ग दर्शक विद्वानो द्वारा तथा अग्नि सम तेजस्वी पदार्थो द्वारा (प्र) सर्वत्र प्रतिष्ठा—प्रकृष्ट स्थिति है (स अग्नि) वही वास्तव मे अग्नि है, अन्य अग्निया तो उसके अश ग्रहण के कारण अग्नि प्रतीत होने लगती हैं। सदा (वाजै परीवृत) समृद्धियो से घिरा रहने वाला (स) वह प्रभु (अस्मद् तनये तोके) हममे तथा हमारे पुत्रो और पौत्रो में (सम्यक्) भली-भाति (आ) आकर विराजमान रहे।

इसका एक सगत अर्थ यह भी हो सकता है कि (यस्य) जिस प्रभु के (विश्वेभि अग्निभि) समस्त मार्ग दर्शनों द्वारा (वाजिन प्रभवाम) हम सब ससृद्धिशाली बनते हैं, वही सच्चा अग्नि है।

निष्कर्ष—ब्रह्माण्ड के सब पदार्थ और सारे विद्वान् उस प्रभु का मार्ग दर्शन और तेज प्राप्त करके ही अग्नि सदृश बनते है।

वह प्रभु ही सब समृद्धियो का स्वामी है। ससार के प्रत्येक पदार्थ और प्राणी मे दृश्यमान समृद्धि का वही मूलकारण है। यदि वह अपने तेज और समृद्धि को खीच ले तो सब प्राणी व पदार्थ निस्तेज और निर्जीव से प्रतीत होने लगते है।

यद्यद्विभूतिमत्सत्व
श्रीमदूर्जितमेव वा।
तत्तदेवावगच्छ त्व
मम तेजोऽश सभवम् ॥
गीता १०-१४

वह प्रभु अपनी कृपा द्वारा जिसमे अपनी समृद्धि का शक्तिपात करता है, वह भी अग्नि सम तेजस्वी दिखाई देने लगता है। इसलिये इस मन्त्र मे प्रार्थना की गई है कि हे प्रभो! न केवल हममे अपितु हमारे पुत्रो और पौत्रो मे अर्थात् सारे कुल मे, तदनन्तर सारे समाज और देश मे, अपनी समृद्धियो और तेज के साथ विराजमान रहे।

यदि मनुष्य किसी भी क्षेत्र मे मार्गदर्शक नेता बनना चाहता है, तो उसे कोई न कोई विशिष्टता या समृद्धि अवश्य अर्जित करनी चाहिये, क्योंकि बिना विशिष्टता के कोई अग्नि के समान तेजस्वी बनकर चमक नही सकता। विशिष्टता प्राप्ति के लिए परिश्रम और सयम अनिवार्य है। इसी बात को इस मन्त्र के ऋषि शब्द का अर्थ प्रकट करता है कि यदि अग्नि बनने की कामना है, तो तापस बनो, अर्थात् सयम के साथ कठोर परिश्रम करो।

अर्थ पोषक प्रमाण—

देवतातये - देवताता यज्ञनामसु। नि० ३-१७

तापस अग्नि—मार्ग दर्शन चाहने वाला साधक—ऋषि या शिष्य

अग्नि—मार्ग दर्शन देने वाला—देवता या भगवान्।

वाज—अन्ननाम। नि० २-७, बलनाम। नि० २-६, वाज—समृद्धि। श्री अरविन्द वजति गच्छति सुखानि—अनेनेति वाज धनम्।

पता—५२२, ईश्वर भवन,
खारी बावली, दिल्ली-६

आर्यसमाजियों की निष्ठा

आर्यसमाज सदा कुरीतियो का खण्डन करता रहा है। पिछले दिनो प० बगाल के २४ परगना स्थित आर्य समाज गरुलिया मे देखने को मिला। पौराणिको के अष्टयाम यज्ञ मे आर्यसमाजियो ने भी २४ घण्टे तक राम और कृष्ण के नाम का जप किया और विश्वकर्मा पूजा के दिन मूर्ति के सामने हवन-यज्ञ से पूजा-पाठ किया। क्या यही आर्यत्व है?—आर्ययवक

सुभाषित

को लाभो गुणि सगम किमसुखं प्राज्ञेतरं सगति
का हानि समयच्युतिर्निपुणता का धर्मतत्वे रतिः ।
क शूरो विजितेन्द्रिय प्रियतमा कानुव्रता किं धन
विद्या कि सुखमप्रवासगमन राज्य किमाज्ञा फलम् ॥
—भर्तृहरि

कहो लाभ क्या ? सत समागम, दुख क्या है ? मूढो का सग ।
और हानि क्या ? समय नाश अरु, क्या नैपुण्य ? सुधर्म प्रसग ॥
कौन शूर ? जितेन्द्रिय प्राणी, प्रिया कौन ? पति के अनुकूल ।
क्या धन ? विद्या, अप्रवास सुख, और राज्य क्या ? आज्ञा मूल ॥

सम्पादकीयम्

आनन्दपुर साहब प्रस्ताव की व्यर्थता

श्री राजीव गांधी ने चुनावो मे अभूतपूर्व विजय के पश्चात जिस तरह दो दिन के अन्दर ही नये मत्री मण्डल का गठन कर लिया उससे यह पता लगता है कि वे किसी बात मे अनावश्यक विलम्ब के पक्षपाती नही हैं। इसके अलावा 5 तारीख के अपने भाषण मे राष्ट्र को सम्बोधित करते हुए उन्होने जिस आत्मविश्वास के साथ अपने विचार प्रकट किये हैं, उससे भी लगता है कि अनेक मुद्दो पर उनका दृष्टिकोण सर्वथा स्पष्ट है और पूरी सदाशयता के साथ वे नेता के बजाय एक 'वर्कमैन' की तरह देश को आगे ले जाने के कार्यक्रम तैयार करना चाहते हैं। मत्रीमण्डल के गठन के पश्चात उन्होंने सबसे अधिक महत्व जिस बात को दिया है वह पजाब की समस्या है। हालाकि अपने चुनाव भाषणो मे उन्होने सकेत दिया था कि पजाब की समस्या के समाधान के लिए उनके मन मे कोई सूत्र है। पर अब जिस तरह उन्होने इस समस्या पर सुझाव देने के लिए एक मत्रीमडलीय समिति का गठन किया है, उससे यह भी लगता है कि अपने मन के अलावा वे अपने मत्रीमण्डल को और देश की जनता को भी उस महत्वपूर्ण निर्णय मे अपने साथ रखना चाहते हैं। यह एक अच्छी शुरूआत है।

पजाब की समस्या के समाधान मे सबसे बडी बाधा आनन्दपुर साहब का प्रस्ताव है। 1973 में पारित यह प्रस्ताव वहा सिखो के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया, वहा सारे देश की जनता के लिए भी प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया। इस बार के चुनावों में भले ही और कोई मुद्दा रहा हो या न रहा हो, परन्तु श्री राजीव गांधी ने निकट और दूर के भविष्य को देखते हुए एक मुद्दा खडा किया था। उस मुद्दे ने देश की जनता की सही नब्ज पकड ली और देश को एक और अखण्ड रखने की तीव्र भावना से ओत प्रोत होकर जनता सत्ताधारी दल के पक्ष में वोट डालने को टूट पडी। एक तरह से इतनी बडी अभूतपूर्व विजय का होना भारतीय जनता द्वारा आनन्दपुर प्रस्ताव के विरोध मे दिया गया वोट है। हम पहले भी यह कह चुके हैं और अब फिर दुहरा रहे हैं कि इस विजय का अर्थ आनन्दपुर प्रस्ताव के विरोध मे दिया गया जनमत है। प्रसन्नता की बात है कि अन्य बडे-बडे समाचार पत्र भी अब इस बात को खुलकर कहने लगे है।

एक ओर यह विशाल भारतीय जनमत है ओर दूसरी ओर हमारे कुछ सिख बन्धु हैं जो अभी तक यही रट लगा रहे हैं कि आनन्दपुर प्रस्ताव से कम किसी भी बात पर वे सहमत होने को तैयार नहीं हैं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के कार्यकारी अध्यक्ष श्री प्रेमसिंह लालपुरा ने यह घोषणा की है कि वे आनन्दपुर प्रस्ताव पर पहले की तरह ज्यो के त्यो अडिग हैं और अकाली दल तब तक अपना आदोलन जारी रखेगा जब तक केंद्रीय सरकार आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव को पूर्णतया स्वीकार नहीं कर लेती। वे यह भी कहते हैं कि इस प्रस्ताव में कोई सविधान विरोधी बात नहीं है, वह केवल राज्य के लिए अधिक स्वायत्तता की माग करता है। निःसन्देह आनन्दपुर प्रस्ताव मे खालिस्तान शब्द नहीं आता और केवल अधिक स्वायत्तता की माग कोई राष्ट्रद्रोह भी नहीं है। किन्तु क्या कोई सिख बुद्धिजीवी यह कह सकता है कि आनन्दपुर प्रस्ताव में अलगाव के बीज नहीं हैं? आनन्दपुर प्रस्ताव के जो कई-कई विवरण प्रकाशित हुए हैं उन सबको सर्वथा अस्वीकार करने की बात चुनाव भाषणों के दौरान भाजपा के नेता केवल अटल बिहारी वाजपेयी ही नहीं, बल्कि अन्य विपक्षी दलों के प्रमुख नेता भी स्पष्ट कर चुके हैं। अगर आनन्दपुर प्रस्ताव अलगाववादी नहीं होता, तो ये सब विपक्षी दल इस तरह उससे पल्ला क्यों झाड लेते। और तो और, तेलगुदेशम आन्ध्र प्रदेश में और वामपथी सरकार पश्चिमी बगाल में अधिक स्वायत्ता की माग की खातिर ही सत्ता में आये हैं। किन्तु आनन्दपुर प्रस्ताव पर वे विचार तक करने को तैयार नहीं हैं। क्योंकि वे जानते हैं कि यह प्रस्ताव केवल अधिक स्वायत्तता के लिए नही है।

इस प्रस्ताव के अनुसार पहले 45 मांगें पेश की गईं और उसके पश्चात उनको बढ़ाकर 60 कर दिया गया और अन्त में वह 15 मांगों तक आ गया। लेकिन अलगाव का बीज उसमे हमेशा बना रहा। सन् 1981 के अप्रैल मे आनन्दपुर साहब में जो विश्व सिख सम्मेलन हुआ था उसमे इस प्रस्ताव को इस मुख्य भाग के रूप मे समाहित करने का प्रयत्न किया गया था—"उत्तर भारत मे एक ऐसा स्वायत्त प्रदेश स्थापित किया जाना चाहिए जहा सिखों के हितों को प्रमुखता दी जाय। उसे अपना सविधान बनाने का अधिकार दिया जाय तथा विदेश सम्बन्धों, रक्षा एव सामान्य सचार को छोडकर सभी शक्तिया अपने लिए प्राप्त करने का हकदार घोषित किया जाय।"

निश्चय हो एक देश मे दो स्वायत्त राज्य नही बन सकते और न ही दो सविधान चल सकते हैं। प्रेमसिंह लालपुरा तथा अन्य सिख बन्धु इस प्रस्ताव के पक्ष मे अब चाहे कितनी ही सफाई देते रहे लेकिन उससे ज्यादा अच्छी तरह अब देश की जनता ने इस प्रस्ताव को समझ लिया है और उसके विरोध मे अपनी राय दे दी है। देश की जनता ने यह भी बता दिया है कि एकता और अखण्डता ये दो ऐसे मुद्दे हैं जिनके लिए सारा देश बडी से बडी कीमत चुकाने के लिए तैयार है।

अगर केवल स्वायत्तता की ही बात हो, तो भी अब यह प्रस्ताव एकदम व्यर्थ है। हम यह स्वीकार करते हैं कि केन्द्र और राज्यो के सम्बन्धो का प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण है और देश की भावी एकता उस पर निर्भर है। परन्तु उसके लिए केन्द्रीय सरकार सरकारिया आयोग का निर्माण कर चुकी है। अब वह आयोग इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर विचार करेगा ही। इस आयोग की रिपोर्ट के अनुसार जो अधिकार आन्ध्र प्रदेश और पश्चिमी बगाल को तथा अन्य राज्यो को प्राप्त होंगे, वे ही अधिकार पजाब को भी प्राप्त होगें। मुख्य बात यह है कि अन्य राज्यो से भिन्न कोई विशेष व्यवस्था केवल पजाब के लिए किसी को स्वीकार नहीं होगी। इसीलिए हरकिशनसिंह सुरजीत ने, जो भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के पोलित ब्यूरो के सदस्य है, सिखो से अपील की है कि वे आनन्दपुर प्रस्ताव को भूल जायें। अकाली नेता अब यह तो कहने लगे है कि हमारी माग खालिस्तान की नहीं है परन्तु वे आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव को छोडने को तैयार नही है जबकि खालिस्तान की मनोवृत्ति का जनक यही प्रस्ताव है। अब किसी भी प्रकार की व्याख्या इस प्रस्ताव के पक्ष मे न जनमत को मोड सकती है और न केन्द्रीय सरकार को। इस प्रस्ताव पर जोर देकर सिख समाज और सारा देश उसके दुष्परिणामो को भुगत चुका है। इन्दिरा गाधी की हत्या ने इस प्रस्ताव की विभीषिका को और उसकी चरम परिणति को ससार के सामने उजागर कर दिया है। फिर भी यदि दिन की रोशनी मे किसी पक्षी विशेष को दिखाई न दे तो सूर्य को दोष नहीं दिया जा सकता।

निःसन्देह केन्द्रीय सरकार यदि पजाब की समस्या का कोई उचित समाधान कर देती है तो इससे सारा देश राहत की सास लेगा। परन्तु यदि सिख बधु भी इस समस्या का समाधान चाहते हैं तो उन्हे आनन्दपुर प्रस्ताव को सर्वथा तिलाजलि देनी ही होगी। हम तो यहा तक कहेंगे कि इस प्रस्ताव के विरोध मे देश का जनमत प्राप्त करके भी यदि केन्द्रीय सरकार इस प्रस्ताव के आधार पर सिख नेताओ से बात करती है तो वह न केवल जनमत का अनादर होगा बल्कि वह जनता के साथ विश्वासघात भी होगा।

केन्द्रीय सरकार को भविष्य मे यह भी ध्यान रखना होगा कि पजाब की समस्या पर बातचीत करते समय केवल अकालियों को ही पजाब का प्रतिनिधि न माना जाय बल्कि उसमे हिन्दुओ की भी बराबर की भागेदारी हो। भविष्य मे केंद्रीय सरकार ऐसे किसी सिख प्रतिनिधि मडल से बात नही करेगी जिसमे कम से कम उतनी ही सख्या में हिन्दुओं के प्रतिनिधि शामिल न हो जितनी सख्या में सिखो के हों। अकाली दल को समस्त सिखो का प्रतिनिधि मानने का भी कोई औचित्य नही है। पजाब केवल अकालियों का ही नहीं है। इसलिए पजाब की समस्या के समाधान के लिए अकालियो से इतर लोगों को भी उतना ही महत्व देना होगा। उसके बिना पजाब की समस्या का न्यायपूर्ण हल नहीं हो सकता।

धर्म-निरपेक्षता का वास्तविक अर्थ क्या है ?

—श्री सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'—

धर्म का सम्बन्ध आचरण से है, इसलिए उससे अलग हुआ ही नही जा सकता। इस दृष्टि से 'धर्म निरपेक्षता' की बात गलत है।

सिख धर्म कोई अलग धर्म नहीं, वह केवल एक बिरादरी है। मध्ययुग मे एक खास व्रत लेने वाले ही सिख कहलाए। गुरु शिष्य परम्परा हिन्दुत्व को बहुत पुरानी देन है।

अल्पसंख्यको के नाम से बहुसंख्यक जनता के अधिकारो को छीनना गलत है, खास तौर से लोकतंत्र मे तो यह एक दम गलत है।

यदि सरकार विवाह के मामले पर हिन्दू धर्म मे हस्तक्षेप कर सकती है, तो इस्लाम में क्यो नही ?

देश के प्रसिद्ध विचारक और साहित्यकार, ज्ञान पीठ पुरस्कार विजेता, श्री अज्ञेय (सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन) ने गांधी शांति प्रतिष्ठान व्याख्यान माला का उद्घाटन करते हुए जो लिखित भाषण दिया उसका मुख्य अंश यहां दिया जा रहा है।

धर्म, धर्मतंत्र और राजनीति एक सनातन विषय है। लेकिन आज की परिस्थिति मे यह विषय इतना ज्यादा सामयिक हो गया है कि जिस ढंग से मैं इस बारे मे बात करना चाहता हू, उसमे कठिनाई होती है। मैं सोचता हू कि धर्म का विचार अगर हम करे तो उसके दो पक्ष हमारे सामने उभरते हैं। एक तो बुनियादी सिद्धांत की बात है और एक समकालीन व्यवहार की बात है। प्राय चर्चा मे हम उसके सिद्धान्त पक्ष की, उसके आदर्शों की बात करने लगते हैं और यह भूल जाते हैं कि हमारे ही समय मे व्यावहारिक रूप मे उस धर्म की क्या स्थिति है।

हम सभी मानते हैं कि सभी धर्म बुनियादी तौर पर एक ही बात कहते हैं। यह बात सच नही है। अगर हम गहराई से विचार करे तो हम पाएगे कि सभी धर्मों मे बहुत सी चीजें निश्चय ही समान हैं, लेकिन जो चीजे समान हैं, उनके आधार पर धर्म का निर्णय नही होता। बल्कि जो चीजे समान नही हैं, उनके आधार पर धर्म का निश्चय होता है।

मसलन दगो मे हमने देखा है कि आदर्श रूप मे हिन्दू-मुसलमान यह मानते रहे कि सब मूल्य बुनियादी तौर पर एक ही हैं और हम सब इन्ही को आदर्श मानकर जीते हैं और वर्षों तक, पीढियों तक भाई की भांति रहते हैं, लेकिन जब संघर्ष की स्थिति होती है तो कोई नही पूछता कि यह दयावान व्यक्ति है या नही। इसने अमुक-अमुक ढग से काम किया है या नही, तपस्या की है या नहीं। त्याग किया है या नही। दूसरो को भाई माना है या नही। यह सवाल उठ सकता है कि इसका खतना हुआ कि नहीं।

सिद्धान्त और व्यवहार मे अन्तर

यह तो सिद्धान्त और व्यवहार के विरोध की बात हो गई। सिद्धांत पक्ष पर ही रहे और अगर हम अपने देश मे जो धर्म प्रचलित हैं उन पर विचार करें तो हम देखते है कि प्राय कुछ चीजों पर बल होता है जिनको हम धर्मबीज कह सकते हैं। उन चीजो को मानने से व्यक्ति उस धर्म का होता है और बाकी जो चीजें सामने हैं, जिनको हम मूल्यो की दृष्टि से सामने रखते हैं, जिनके आधार पर हम आचरण की अच्छाई-बुराई का फैसला करते है, उनका वहां पर कोई महत्व नही रहता।

सभी धर्मों मे इस पक्ष पर बल रहा कि हम दूसरो के बीच कैसे रहते हैं। सारी सृष्टि के प्रति हमारा भाव क्या है ? यह एक ऐसी बात है जिसको लेकर कभी इस तरह कोई कसौटी नही बनती जिससे कि दो व्यक्तियो के बीच वैर का भाव उदय होता हो। मैं कहू कि अगर हिन्दू धर्म की (या कि हिन्दू धर्म के मूल मे जो धर्म विश्वास रहा—जिसे शायद भारतीय धर्म कहना अधिक अच्छा होगा।) एक ऐसी कसौटी थी जो कि वैर को जन्म नही देती। किसी भी दूसरे मत के, दूसरे धर्मबीज पर अपने को टिकाने वाले व्यक्ति के प्रति वैर के भाव का कोई आधार नही देती। लेकिन आदर्श के रूप मे जो चीजे रही और व्यवहार के रूप मे जो चीजें सामने आई, उसमे हमेशा अन्तर रहा।

दूसरो के साथ किस तरह का संबंध बनाकर हमे जीना चाहिए, अगर यही धर्म का आधार है तो धर्म संस्थान उससे अलग है, क्योकि इस आधार पर संस्थान खडे नही होते। इस आधार पर क्योकि कोई संस्थान नही बन सकता, इसलिए हिन्दू धर्म का कोई एक संस्थान नही बना। अगर बने भी तो अनेक संस्थान बने। ये संस्थान सप्रदायो के बने और इस आधार पर बने कि एक-एक सप्रदाय ने उस तरह की कई चीजें अपना ली जिसे मैंने पहले धर्मबीज कहा है और जिसमे विश्वास होना एक कसौटी हो गई। आप अमुक प्रकार के ईश्वर को मानते हैं या नहीं मानते, इस आधार पर कई एक विरादरिया बनी, सप्रदाय बने और उनके संस्थान बने। तो जिसे आज हम हिन्दू नाम से जानते हैं उसके भीतर कई एक संस्थान हैं जो सभी अपने को धार्मिक संस्थान मानते हैं लेकिन हिन्दू धर्म का कोई एक संस्थान अभी तक नही है।

इसके प्रयत्न भी हुए और अधिकतर प्रयत्न प्रतिक्रिया रूप मे हुए। जब इस्लाम के मुकाबले मे इस बात का अनुभव किया गया कि उसके साथ कोई एक धर्म संस्थान हो सकता है सारा जीवन उसके आधार पर चलाया जा सकता है और उसकी भी उपयोगिता होती है, तब एक प्रतिक्रिया के रूप मे प्रयास हुआ। ईसाई धर्म का जब सामना हुआ, उसके धर्मबीज भी हमारे सामने आए—तब भी यह सवाल फिर एक नए रूप मे आया कि धर्म संस्थान एक बहुत बड़ी शक्ति होती है और उसका उपयोग भी हो सकता है।

ईसा या ईसाइयत

निश्चय ही संसार मे जितने संघर्ष हुए, सब धर्म संस्थान के नाम पर ही हुए लेकिन फिर भी वह एक बडी शक्ति है जिसका उपयोग भी हो सकता है। ईसा के तुरन्त बाद यह प्रश्न उठा था कि ईसा का महत्व ज्यादा है या कि ईसाईयत का। ईसा के दो शिष्यो मे आपस मे मतभेद हो गया था जिसके आधार पर शुरू से ही दो सप्रदाय चल पडे। इनमे से एक के आगे और विभाजन हुए। दूसरा पक्ष लगभग उपेक्षित रहा क्योकि वह एक रहस्यवादी पक्ष था। लेकिन उसके अनुयायी आज भी हैं। पर उसका संस्थान बहुत छोटा है, या कि छोटे-छोटे संस्थान हैं, जिसका कि कोई महत्व नही रहा। इस धर्म संस्थान की कितनी शक्ति थी और उसने राजनीति मे क्या रूप लिया इसके सबसे अच्छे शिक्षाप्रद उदाहरण हमे ब्रिटेन के इतिहास मे मिल सकते हैं जहा चर्च की सत्ता के विरुद्ध राज्य की सत्ता ने धीरे-धीरे एक खुली लडाई लडी और उसमे विजय प्राप्त की।

कुछ समय पहले सिख मत के मानने वाले कुछ लोग तनखैया घोषित किए गए थे। तनखैया का वही अर्थ है जो अंग्रेजी में 'मर्सीनरी' का है। यह इतनी बडी गाली क्यो हुआ—इसका कोई कारण आज के इतिहास मे हमको नही मिल सकता। हमारी सारी सेना तनखैया सेना है—बल्कि हमारे राष्ट्रपति से लेकर साधारण कर्मचारी तक—सभी वेतनभोगी होते हैं और तनख्वाह लेकर कोई काम करना कोई अपमान की बात नहीं समझी जाती। फिर यह शब्द कहा से ?

सेवा के दो प्रकार

जो इसका दूसरा पक्ष है, उसका भी एक नाम हमारे सामने आया—कारसेवा। जो बुनियादी तौर पर यह विरोध एक मध्यकालीन, बल्कि एक सामन्ती संगठन मे से पैदा हुआ था जब सैनिक कर्म जीवन का एक अंग था और यह कर्म दो मनोभावो से किया जा सकता था। आप अपनी सेवा अर्पित करते थे सामंत के या राजा के प्रति और राजा की आवश्यकता के अनुसार सैनिक सेवा उसको देने के लिए तैयार रहते थे, बिना किसी प्रतिदान के यह आपके जीवन के कर्तव्यों में से एक था। दूसरी तरफ ऐसे भी कुशल पेशेवर लडैत थे, किसी के प्रति जिनकी कोई निष्ठा नही थी, राजभक्त का सवाल नही था। एक और शब्द अंग्रेजी मे है—फ्री लान्स। वे फ्री-लान्सर थे। 'लान्स' उनके पास जरूर था लेकिन किसी के प्रति कोई कमिटमेंट उनका नही था। जो उनको पैसा देगा उसकी ओर से लडने को वे तैयार रहेगे और जब तक यह संबंध बना रहेगा, पैसे मिलते रहेंगे, तब तक लडेंगे—नही तो फिर अपनी राह देखेंगे। कोई दूसरा पैसा देकर उनसे काम लेना चाहेगा तो उसके पक्ष से वे लड सकगे। उस समय यह भी कोई बहुत ज्यादा असम्मान की बात नही थी—क्योकि ये बडे कुशल और अनुभवी लडैत होते थे। दु साहसी उन्हें कहा जा सकता था।

एक तरफ सेवा का व्रत था, तो दूसरी तरफ तनखैया लोग थे, जो कि दूसरे राजाओं के लिए वेतनभोगी सिपाही होकर लडते थे। एक तरफ सेवाभाव से लिया हुआ व्रत और उस व्रत के अधीन दी हुई सैनिक सेवा थी और दूसरी तरफ वेतनभोगी। इसलिए तनखैया एक अपमानजनक शब्द हो गया। एक तरफ मुस्लिम शासकों के वेतनभोगी सैनिक थे, दूसरी तरफ वे व्रत लिए हुए लोग थे, जिनका सैनिक

(शेष पृष्ठ १० पर)

चोर की दाढ़ी में तिनका

इन्दिरा गांधी की हत्या में अमरीकी हाथ

'—श्री शैलेन्द्र कुमार—

अमरीकी राजनीतिक पोषक इस बात का प्रमाण मागते थे कि श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या के पीछे केन्द्रीय अमरीकी गुप्तचर ऐजेन्सी सी आई ए का हाथ था। यद्यपि उन्हें मालूम था कि प्रेट्रिस लुमुम्बा की हत्या के बाद चिली के राजनेता अलेन्दे से बगलादेश के राष्ट्र-पिता मुजीबुर्रहमान की हत्या तक की सफल साजिश इसी अमरीकी गुप्तचर एजेन्सी ने रची थी। परन्तु वे परिस्थितिक साक्ष्य में विश्वास करने की जगह ऐसे राजनीतिक कुचक्र के लिए भी प्रत्यक्ष प्रमाण चाहते थे। राजनीतिक सुबूत से सतोष न होने का मुख्य कारण यह था कि अमरीका और उसके आश्रित राज्य सत्य के मुख पर आवरण डालना अपनी समरनीति के अनुरूप अपने चरित्र की विशिष्टता मानते हैं। मगर मनीषियो का मत रहा है कि सदा के लिए सच्चाई को छिपाना असभव है। श्रीमती इन्दिरा गाधी की हत्या के पीछे सी. आई. ए. का हाथ होने के एक नए सबूत के प्रकाश में आने से अमरीका का पूर्णतया पर्दाफाश हो गया है। श्रीमती गाधी को विश्वास हो गया था कि उनकी हत्या की साजिश रची गई है और उनके कागजो मे अब मिले एक नोट से उनकी इस धारणा की पुष्टि होती है। यों हत्या के एक दिन पूर्व ही उन्होंने भुवनेश्वर की एक जन-सभा में बाहरी व्यक्तियों के इस पाशविक षड्यंत्र की ओर सकेत किया था।

दिल्ली से प्रकाशित होने वाले एक अग्रेजी दैनिक का सी आई ए द्वारा प्रवर्तित तथा अमरीकी विदेश मत्रालय द्वारा आयोजित श्रीमती गाधी की "मृत्यु" सबधी एक ऐसे अध्ययन की रिपोट हाथ लग गई, जो 31 अक्टूबर को प्रधानमत्री की हत्या के आठ सप्ताह पूर्व ही सितम्बर में अमरीकी विदेश मत्रालय का मिल गई थी और उस पर इसने विचार किया था। 16 दिसम्बर के अपने अक मे इस दहला देने वाली रिपोर्ट के कुछ महत्वपूर्ण प्रासगिक अशों को प्रकाशित किया जा चुका है। गभीर चेतावनी के रूप मे यह रिपार्ट अति विश्वसनीय सूत्र के जरिए उसे सुलभ हो गई थी। रिपोर्ट मे कहा गया है कि यदि ससदीय चुनाव के पूर्व श्रीमती गाधी की मृत्यु हो गई तो भारत मे राजनीतिक अस्थिरता पैदा हो सकती है। इनका अर्थ यह हुआ कि अमरीका को विश्वास था कि चुनाव के पूर्व श्रीमती गाधी मौत के घाट उतार दी जायेगी। वही हुआ भी।

अमरीकी विदेश विभाग ने भी इस रिपोर्ट की सत्यता स्वीकार कर ली है और निष्कर्ष की जिम्मेवारी इसके मुख्य लेखक प्रोफेसर राबर्ट एल. हार्डग्रेव पर डाल दी है, यद्यपि यह कार्य उन्हें सभी ने सौंपा था। इस रिपोर्ट का नाम है—

'भारत दबाव में' (India under Pressure) यह हमारे देश के लिए ही नही, सभी नवस्वतत्र देशों के लिए यह लोमहर्षक रिपोर्ट है। यह एक 'लोकतत्र-वादी' देश के घोर गैर-जनवादी और नव-साम्राज्यवादी आचरण का मुख प्रतिबिम्ब है।

अमरीकी सरकार ने आस्टिन के टेक्सास विश्वविद्यालय के प्रोफेसर राबर्ट एल हार्डग्रेव को इस अध्ययन का काम सौंपा था कि ससदीय चुनावो के पूर्व ही श्रीमती गाधी के 'मर जाने पर' भारत मे किस प्रकार की घटनाए घटेंगी। इस अध्ययन मे उक्त प्रोफेसर को सी आई ए के अधिकारी एडवर्ड जी ग्रिफिन ने मदद दी थी। इसमें चुनाव के पूर्व श्रीमती गाधी की मृत्यु हो जाने पर राजीव गाधी की स्थिति विषम हो जाने की बात कही गई है और साथ ही षडयन्त्र पर आवरण डालने के लिए यह भी कहा गया है कि अगर चुनाव के बाद प्रधानमत्री पद पर कार्य करते हुए श्रीमती गांधी की मौत होती है तो राजीव गाधी के उत्तराधिकारी होने की सभावनाए अपेक्षाकृत अधिक निरापद हो जाएगी। इस रिपोर्ट मे कांग्रेस पार्टी के भीतर और बाहर इंदिरा विरोधियों की हैसियत और स्थिति पर भी विचार किया गया है। कुल मिला कर श्रीमती गांधी की मौत को सुनिश्चित माना गया है। वे हत्या के पूर्व बीमार नहीं थी और उनका स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक था इस दिशा मे उनके मरने की बात सोचने का अर्थ यही है कि सी आई ए को यह पक्का विश्वास था कि जिन अग रक्षको को हत्या करने का बर्बर काम सौंपा गया था, वे निश्चय ही अपना काम पूरा करेंगे। खालिस्तानियो तथा अन्य अलगाव-वादियो की पोषक इस अमरीकी गुप्तचर एजेंसी को इसकी जानकारी थी। यह रिपोर्ट से जाहिर है। इसे दृष्टि मे रख कर नई स्थिति मे भारत की स्थिति का मूल्याकन करके अपने लिए पहले से ही यह रिपोर्ट तैयार करा ली गई थी। सी आई ए के जरिए ऐसा दुष्कर्म कराने के पहले अमरीकी विदेश मन्त्रालल या पेंटागन पहले भी ऐसा काम कराता रहा है और इस आशय की बातें सी आई ए के पूर्व अधिकारियो के लेखो तथा पुस्तको से प्रकाश मे आ चुकी हैं। इस प्रकार के अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह होता है कि किसी देश विशेष को अमरीका किस प्रकार अपने प्रभाव क्षेत्र मे ला सकता है और यदि यह सभव नही हो तो कैसे उसे कमजोर बनाया जा सकता है।

इस रिपोर्ट मे कांग्रेस पार्टी की स्थिति की विस्तृत विवेचना है और इसके भीतरी कलह पर जोर देते हुए यह भी कहा गया है कि राजीव गाधी की अपेक्षा कांग्रेस ससदीय पार्टी के सदस्य किसी अन्य को अपना समर्थन प्रदान करेंगे। यह निष्कर्ष गलत साबित हो चुका है। केन्द्र में कांग्रेस की सरकार के गिरने और विरोधियो की सयुक्त सर-कार बनने तथा उसमे कांग्रेस के विरो-धियो के शामिल होने तथा भीतरी टक-राव से इस सयुक्त सरकार के पतन के बाद भारत मे लम्बे समय तक अस्थिरता की स्थिति बने रहने का निष्कर्ष भी निकाला गया है। लेकिन अनेक स्थलो पर श्रीमती गाधी की मौत हो जाने और राजीव गाधी को शोक-सतप्त देश से सहानुभूति वोट पाने तक के उल्लेख से यही सिद्ध होता है कि सी आई ए को इन्दिरा जी की हत्या हो जाने मे कोई सन्देह नही था।

जब हमारी लोकप्रिय प्रधानमत्री इन्दिरा जी की हत्या के बाद देश-विदेश के अनेक बुद्धिजीवियो, राजनीतिज्ञो और सुविज्ञ टीकाकारो ने इस जघन्य काड के पीछे सी आई ए का हाथ होने की आशका प्रकट की थी तो रीगन प्रशासन बौखला उठा था और वस्तुत इस बौख-लाहट से ही चोर की दाढी मे तिनका वाली कहावत ने 'आशका' को वास्त-विकता का रूप प्रदान कर दिया था। अब उक्त रिपोर्ट के प्रकाश मे आ जाने के बाद अमरीकी शासक किस मुह से अपने गुनाह पर पर्दा डालेंगे। क्या स्वय इस गुप्तचर एजेन्सी के कई पूर्व अधि-कारियो ने ही यह नहीं स्वीकारा है कि एशिया, अफ्रीका और लातिनी अमरीका के कई राजनेताओ प्रगतिशील बुद्धि-जीवियों और राजनीतिज्ञो की हत्याए यह गुप्तचर सगठन करता रहा है और आदर्श निष्ठ गुटनिरपेक्ष देशों मे समाज-वादी देशों की भाति अस्थिरता की स्थिति पैदा कराने का षड्यन्त्र रचता रहा है। चूकि श्रीमती इन्दिरा गाधी अमरीकी प्रभुत्ववादी समरनीति की प्रबल विरोधी थी और नव-साम्राज्यवाद के विरोधी गुट-निरपेक्ष आदोलन की प्रभावकारी नेता थीं, इसलिए फौजी तानाशाहियो के पोषक अमरीका ने उन्हें खत्म कराने का षड्यन्त्र रचा और उक्त रिपोर्ट मे हत्या की जगह 'मृत्यु' शब्द का प्रयोग करके पाशविक योजना पर पर्दा डालने का बचकाना प्रयास किया गया है।

अमरीका तथा उसके पिछलग्गुओं के भारत-विरोधी सयुक्त षड्यन्त्र के कारण इस समय हम अपने इतिहास के एक बहुत ही नाजुक दौर से गुजर रहे हैं। जो इस षडयत्र का तथा इसके पीछे विदेशी हाथ होने का खण्डन करते रहे हैं उन्हे भी उक्त रिपोर्ट के खतरनाक पहलुओ को ध्यान मे रखकर अब अपने दृष्टिकोण मे बुनियादी परिवर्तन लाना चाहिए तथा एकता की राष्ट्रीय धारा के साथ मिलकर सच्चे देशप्रेम का परि-चय देना चाहिए।

इस बाहरी और भीतरी सकट से राष्ट्र को मुक्त करने की भारत माता की पुकार वातावरण में गूज रही है।

मिटाने का नाम

—बाबूलाल परमार 'सेवक'—

मिटाना तो आसान है
क्यो इतनी कठिनाई
महसूस की जा रही है।
मिटाने के लिए
न जाने किस-किस से
घूस ली जा रही है।
अरे यह काम तो—
बच्चे चुटकी मे कर देते हैं।
क्या-क्या मिटाता है—
आइए, जरा इधर बताइए
पहले आप किसी बच्चे से—
या किसी सच्चे से
अपनी स्लेट व पेन्सिल मगवाइए
उस पर लिखि साफ अक्षरो मे
जो-जो मिटाना है

गरीबी मिटाना है
लिखिए-'गरीबी'
भेदभाव मिटाना है
लिखिए-'भेदभाव'
छल-कपट मिटाना है
लिखि'—'छल कपट'
लिख दीजिए जो कुछ मिटाना है
स्लेट पर बेधड़क
अब सब कुछ मिटाने के लिए
सत्य जताने के लिए
बच्चे से स्लेट पर हाथ फिरवा
दीजिए, मिट गया सब कुछ-एक
चुटकी मे। सच है न-सब रोग
कट गया—दवा की एक
घुटकी मे।

क्या महिलाओं के प्रति अमानुषिक अत्याचार का कारण केवल दहेज है ?

—श्री अनन्त लाल राठी—

हर रोज के दैनिक अखबारों मे नव-वधुओ एव महिलाओ के जल मरने की घटनाओ के वृत्तान्त पढने मे आते हैं। इन समाचारो मे देहज के कारण ही जलाए जाने का अथवा मारने का उद्देश्य छपा होता है। इन 3-४ वर्षों मे ऐसी घटनाओं का क्रम बढ रहा है।

हम अगर दूर से इस विषय पर अध्ययन करके देखें, क्या ऐसी मौत के पीछे दहेज ही एकमात्र कारण है ? क्या ये सब हत्याए है या इनमे कुछ आत्म-हत्याए भी है।

अनादि काल से नारी अदम्य, त्याग और बलिदान का परिचय देती रहा है। मनोवैज्ञानिको के अनुसार धैर्य सहिष्णुता, समस्वरता औदार्य जैसे गुणो के आधार पर मूल्यांकन किया जाए तो नारी-नर से श्रेष्ठ ठहरती है। वैदिक धर्म मे नारी का स्थान अन्य मतावल-बियो की अपेक्षा हमेशा ही उच्च रहा है। राष्ट्रहित में उसका समर्पण समाज के सभी वर्गों को सदा प्रेरित करता रहा है।

सृष्टि के आदि काल से नारी ने पराक्रम की भूमिका निभाई है। घूघट पहने घर मे बद रहने वाली अबला की मोहर तो मध्यकाल मे उस पर जबरन लगा दी गई। उसके समक्ष प्रतिबन्धो की दीवार खडी की जाती रही है। यह तो पुरुष का अहमन्यतापूर्ण दृष्टि रोग है जो उसकी गरिमा को भूलकर उसे श्रेय से वचित कर रहा है। नारी न अपनी शिक्षा से सतुष्ट है और न अपने सामाजिक परि-वेश से, जिसमे वह धुए की भांति अदर ही अन्दर घुट रही है। नारी की इस कुठा का मूल समाज का उसके प्रति घोर अन्याय है। आत्म समर्पण, त्याग, सहन-शीलता, तथा करुणा के बदले समाज ने उसे दहेज सबधित यत्रणा देकर जडवत बना दिया है। नर-नारी के बीच भेद-भाव ओछी प्रवृति दहेज प्रथा जैसे कोढ को उत्पन्न करने मे सफल हुई है। इस कुप्रथा के व्यापक विस्तार के कारण आज अनेक लडकिया अविवाहित जीवन गुजार रही हैं। कितनी ही लड-किया अपने पिता की दयनीय स्थिति को देखकर फासी लगा लेती हैं या गलत मार्ग की ओर अग्रसर हो जाती है।

विवाह मे धन की प्रधानता

वैदिक काल से कुछ समय पूर्व तक विवाह एक विशेष सस्कार माना जाता था। कन्यादान का महत्व सबसे ऊचा माना जाता था। पर आज विवाह जैसे पवित्र सस्कार को सौदेबाजी का रूप दे दिया गया है। आजकल विवाह का मूल आधार धन हो गया है। विवाह का स्तर योग्य, सुशील, गृहकार्य मे निपुण सुशील लडकी से न आंककर धन से आका जाने लगा है। जो बहू अधिक धन लाती है वही परिवार में सम्मान पाने की अधि-कारिणी है। जो अधिक धन नही लाती वह ससुराल वालो की प्रताडना का शिकार बनती है।

रईस परिवारो मे दहेज जुटाना कोई समस्या नही होती। अपितु इसे विशेषा-धिकार माना जाता है। वहा लडकियां स्वय अपने माता-पिता से अच्छे दहेज की मांग करती हैं। ऐसे विवाह में खूब लेन-देन होता है। पाच सितारा होटलो मे पार्टिया होती हैं। बारातियों को ऐश हर तरह से कराया जाता है। इसका कुप्रभाव पडता है मध्यम वर्गीय परिवारो पर। मध्यम वर्गीय परिवार के लिए यह समस्या भीषण रूप ग्रहण करती रही है अपनी लडकी के लिए योग्य वर पाना मुश्किल हो गया है। वर वालो की सीमित आय होने पर भी अमीरो की तरह जीने मरने के सपने सजोना। नतीजा यह निकलता है कि वह अपनी औकात भूलकर अधिक से अधिक धन मांगते हैं। ऐसे लोग उस समय यह बात भूल जाते हैं कि भविष्य मे इनकी बहन बेटियो के विवाह मे भी दहेज की समस्या सामने आएगी। दहेज प्रथा ने हमारे समाज में बूचडखाने का रूप धारण कर लिया है।

पराया धन

बचपन से ही लडकी को पराए घर जाने का हवाला बारबार दिया जाता है। विवाह के समय भी सिर्फ ससुराल को ही अपना घर समझने की सीख उसे दी जाती है। पराए घर की अमानत का सस्कारगत हौवा ससुराल जाने वाली लडकियो के मन मे कम नही बिठाया जाता यही हौवा उन्हे भीरु तथा विवश बना देता है।

नवयुवती 15-20 वर्ष अपने स्वजनो के साथ बिता कर भी विवाह पश्चात उन्हें छोड सर्वथा भिन्न व्यक्ति घर में उस परिवार को अपना बनाने के लिए प्रवेश करती है। उस परिवार के सदस्यो से दहेज के कारण बारबार कटु-वचनो से दुखी होकर वह उस परिवार में अपने आपको ढाल नहीं सकती। वह ऐसी परिस्थिति से टक्कर लेने में अपने आपको असमर्थ पाती है। वह अगर सहती रहे तो आगे जाकर ससुराल उस बहू के लिए एक यातना शिविर का रूप धारण कर लेती है। बहू को ऐसी जली कटी सुनाई जाती है कि उसका दाम्पत्य जीवन नीरस हो जाता है। धीरे-धीरे वह परिवार से कटती जाती है। उसे उसके मायके जाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाता है। ऐसी परिस्थिति उस देश में हो रही है जहां नारी को 'श्रद्धा' और 'लक्ष्मी' कहा जाता है।

पाश्चात्य शिक्षा और नकल

ऐसी हत्याओ के अनेक करणो मे एक कारण आज की शिक्षा प्रणाली एवम् पाश्चात्य नकल है। पाठ्यक्रम जीवन उप-योगी बात का कुछ भी ज्ञान नहीं देता। वैदिक सस्कृति के प्रति लगाव नहीं है। आधुनिकता के रूप मे पाश्चात्य सस्कृति के प्रति लगाव है। वतमान पढाई स्व-

श्री अनन्त लाल राठी

च्छन्दता, तथा अहं की पोषक है। लड-कियों की पढ़ाई के कारण विवाह की आयुमर्यादा बढ़ गई है। विवाह की बढती उम्र, सिनेमा, टेलिविजन आदि के कारण आज का युवावर्ग मर्यादा से अधिक स्वा-भिमानी हो गया है। उनमे सहनशीलता नहीं के बराबर हो गई है। छायाचित्रो मे नग्नता, डिस्को, बलात्कार, मारकाट, अश्लिलता, शराब हिसा आदि दृश्यों की भर मार होती है। इसका प्रभाव आज की युवा पीढ़ी पर पड रहा है। इस कारण युवक और युवतियो की विचारधारा गलत मार्ग की ओर तीव्र गति से बढ़ती जा रही है। इसी कारण परिवार मे सघर्ष होने लगता है। परिवार टूटते जा रहे हैं। लडकियो मे सहिष्णुता भी कम होती जा रही है। लडकी जब देखती है की उसका पति उसके कहने में नहीं हैं। माता-पिता इसका हल निकालने में अस-मर्थ हैं। तो वह अपने अहं के कारण अपना सम्पूर्ण दुःख दूर करने का सिर्फ एक मार्ग आत्म हत्या ही मानने लगती है।

महिलाओं का दोष

दहेज रूपी भूत को बढ़ाने मे महिलाए कम दोषी नहीं है। नारी ही स्वयं नारी की दुश्मन है। धनवान घरो में दहेज प्रदर्शनि का रोग है। जब तक नारी स्वय अपनी कमजोरियों से उठकर अपनी जाति को ऊपर नहीं उठाएगी तब तक किसी भी 'नारी मुक्ति' आन्दोलन को थोथी नारे-बाजी से इन समस्याओ और जुल्मों से मुक्ति मिलना असभव है।

बराबरी का दर्जा कहाँ ?

सविधान मे नारी और पुरुष को बराबरी का दर्जा दिए जाने के बावजूद आज भी नारी को उसका उचित स्थान नहीं मिला है। नारी की प्राकृतिक कोम-लता को उसकी कमजोरी का लक्षण मानने वालो की सख्या भारतीय समाज में आज भी बहुत अधिक हैं। कानून बन जाने से समाज विरोधी और दहेज-समर्थक तत्वों के कान खडे होंगे। नारी मुक्ति आन्दोलन की अगुवा होने का दम भरने वाली महिलाए स्वातत्र्य के सही मर्म और उद्देश्य को समझ नही पाई हैं। वे आम नारी के सामने खडी समस्याओं का अध्ययन करने तथा उन्हें सुलझाने को उत्सुक नहीं है। उनके लिए स्वतत्रता के माइने हैं जुलूस निकालना, घर-गृहस्थी की ओर दुर्लक्ष्य करके क्लबों में जाना। ऐसी महिलाओ ने नारी समानता को उपहास का विषय बना लिया है।

दहेज विषयक कुछ हत्या के मामले शासन के सामने आए। प्रतिक्रिया में कठोर दड के फैसले सुनाए गए। कुछ लोग सदेह के लाभ मे बरी हो गए। क्या कानून बन जाने से ही समस्या हल हो जाएगी ? क्या दहेज के इच्छुक तत्व यातनाए देने और दहेज वसूली के लिए नए-नए रास्ते नही निकाल लेंगे ? महिलाए अपने अधिकार के लिए विद्रोह करे अवश्य। परन्तु यह विद्रोह समाज की दूषित दहेज प्रथा के विरुद्ध होना चाहिए जो उनकी अभिशप्त हालत के लिए जिम्मेवार है।

हैसियत से अधिक

वर्तमान मे हम देखते हैं कि सम्बन्ध करने के वक्त माता-पिता अपने से हर तरह से श्रेष्ठ धनवान परिवारों में सबंध करने के लिए होड लगा रहे हैं। मेरे एक परिचित ने अपनी बहन का सम्बन्ध करने के लिए कहने लगे—"मेरी समस्त रिश्तेदारी धनवान परिवारों में है। (वे स्वय वैसे नहीं हैं) तो हमें लड़का कम से कम 20-25 लाख की पार्टी वाला उद्योगपति चाहिए। उन्होंने अपनी बात-चीत में अन्य किसी बात को महत्व नहीं दिया।

एक दूसरा उदाहरण मेरे एक निकट के रिश्तेदार का है। 10-12 वर्ष पुरानी बात है। वह उस लड़की के लिए वर देखने निकले। उनकी इच्छानुसार वर पढ़ा-लिखा गोरा, खूबसूरत, स्वस्थ, कम

(शेष पृष्ठ १० पर)

साहित्य समीक्षा

होम्योपैथी का क. ख. ग.

[THE A. B. C. OF AOMOEPATHY]

लेखक—डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, मूल्य-54 रु०, प्राप्ति स्थान—विजय कृष्ण लखनपाल, 4/24 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

होम्योपैथी की पुस्तक के प्रसिद्ध लेखक ने होम्योपैथी को सरल बनाने के लिये यह नवीन पुस्तक लिखी है। यह पुस्तक होम्योपैथी में प्रवेश के इच्छुक तथा होम्योपैथिक कालेजों के विद्यार्थियों के लिये अत्यन्त उपयोगी है। इस पुस्तक की 5 विशेषताए हैं

(1) **पहली विशेषता**—ससार प्रसिद्ध होम्योपैथी प्रैक्टिकल अनुभव दिये गये हैं। जैसे प्रत्येक अस्पताल मे एक प्रैक्टिकल वार्ड होता है जिसमे बीमारों के प्रैक्टिकल केस किये जाते हैं, वैसे इस पुस्तक मे 86 मुख्य-मुख्य दवाइयो के प्रैक्टिकल केस दिये गये हैं। ससार के किस प्रसिद्ध होम्योपैथ ने, किस लक्षणो के रोग मे, किस औषधि से, किस पोटेन्सी से, किस प्रकार ठीक किया—इस बात को सैकडों ग्रन्थो तथा दुर्लभ पीरियोडीकलो से सग्रहीत करके इस पुस्तक रूपी गागर मे भर दिया है। अस्पतालों में विद्यार्थियों को प्रैक्टिकल कराया जाता है जिससे दवाइयों के लक्षण ठीक-से दिमाग मे बैठ जाते हैं केवल 'मैटिरिया मैडिका' पढ लेने से दवाइया दिमाग में नहीं टिकतीं। इसमे होम्योपैथी का औषधि-निर्माण, मैटीरिया मैडिका, फिलोसोफी, थेराप्युटिक्स—ये चारों सक्षेप में आ जाते हैं।

(2) **दूसरी विशेषता**—मुख्य मुख्य 86 औषधियो की पाच लिस्टें दी गई हैं जो चिकित्सा में अनिवार्य हैं। पहली लिस्ट मे प्रत्येक औषधि के विषय मे एक ही जगह यह दिया है कि दवा की 'प्रकृति' क्या है—शीत है या उष्ण है। दूसरी लिस्ट मे प्रत्येक औषधि के विषय मे एक ही जगह यह दिया है कि औषधि का किस 'अग' पर विशेष प्रभाव है। तीसरी लिस्ट में यह दिया है किस प्रकार की 'शारीरिक-रचना' पर कौन-सी दवा उपयोगी है। चौथी लिस्ट मे यह दिया है कि किस औषधि का 'मुख्य-लक्षण' क्या है। पाचवी लिस्ट मे बतलाया है कि रोग मे जो औषधि दी जाय, अगर वह काम न करे, तो उसकी 'श्रेणी' या "ग्रुप" की औषधियां कौन-सी हैं ताकि उनमे से चुनाव किया जाय।

(3) **तीसरी विशेषता**—इन 86 औषधियो मे से प्रत्येक औषधि का पृथक् रूप मे विस्तृत वर्णन करते हुए उससे निरोग होने वाले केसो (दृष्टान्तो) का उल्लेख किया गया है पाठक को लगता है कि वह एक होम्योपैथिक अस्पताल के रोगियो के किसी वार्ड मे अपने शिक्षक के साथ बैठे हुए रोगी को एग्जामिन कर रहे हैं, उसके लक्षणो को सुन-देख रहे हैं, और उनके आधार पर औषधि का चयन कर रहे हैं।

(4) **चौथी विशेषता**—रोग मे जो औषधि आपने दी यदि उससे लाभ न हुआ, तो उस रोग की औषधियों का जो "ग्रुप" का नमूना क्या है यह पृष्ठ 56, 57, 58, 59 मे दिया गया है।

(5) **पांचवीं विशेषता**—सबसे बडी विशेषता यह है कि अन्त मे 278 रोगों मे से प्रत्येक रोग की बहु मुख्य औषधि दी गई है जो उस रोग के लक्षणो के अनुसार प्रमुख औषधि है। रोगी आपके पास आता है, अपना कष्ट बतलाता है, उसके रोग के लक्षणो को सुनकर एकदम आपके ध्यान में कौन-सी दवा आ जानी चाहिए ताकि उस सूत्र को पकड कर आप आगे गहराई मे जा सकें और रोगी को तत्काल कोई दवा दे सकें। यह दवा रोगी के लिए फर्स्ट-एड का काम करेगी, और आपको ठीक दवा ढूढने के लिये समय देगी।

सात दिन तक पसन्द न आने पर पुस्तक रजिस्ट्री से लौटा देने पर खरीदी पुस्तक के पूरे दाम लौटा देने की व्यवस्था है। यह रियायत केवल इसी पुस्तक के लिए है।

—समीक्षक—एक जानकार

सामगान सहस्रधारा

(पूर्वार्चिक)

कवि—रामनिवास विद्यार्थी, पृष्ठ—524, मूल्य—40 रुपये, प्रकाशक—कृष्णलाल वेद प्रकाशन निधि, सुन्दर नगर, फजलपुर, (मेरठ)। दिल्ली में प्राप्ति स्थान—1 आर्य समाज दीवानहाल, चांदनी चौक, दिल्ली-6, 2 आर्यसमाज नांगलराय, नई दिल्ली-110046

प्रस्तुत काव्य-ग्रन्थ मे सामवेद संहिता का गीतिकामय पदार्थ सहित हिन्दी भाषान्तर प्रचलित सभी छन्दो, और लोक-धुनों मे किया गया है। कवि का सस्कृत और हिन्दी पर समान अधिकार है। भाषा सस्कृतनिष्ठ होते हुए भी सरल, स्वाभाविक तथा प्रवाहमयी है। कहीं-कहीं उर्दू पदावलि का भी सफल प्रयोग किया गया है। गीतिका छन्द मे रचित काव्य मे गेयता का गुण सर्वत्र विद्यमान हैं। आर्य समाज के प्रचलित भजनों की लय मे रचित छन्द उत्सवों, जलसों व सत्सगो की शोभा बढ़ायेंगे, इसमे सन्देह नहीं। गम्भीर से गम्भीर भाव को प्रकट करने के लिए शब्द पूर्ण अर्थसहित सहजकता से जडे गए हैं। वेद जैसे गम्भीर ग्रन्थ के अर्थ को साधारण व्यक्ति के लिए तथा ग्राह्य बनाना कठिन कार्य है। श्री विद्यार्थी ने दो वर्ष के अल्प समय में इतने दुस्तर कार्य को अपने परिश्रम, साधना व काव्य-प्रतिभा के बल पर जनसाधारण तक पहुचाने का सफल प्रयास किया है।

इन्हीं रामनिवास जी का एक अनूठा ग्रन्थ "ऋचाओं की छाया में, वाराणसी से छप चुका हैं। इसकी भूमिका मुनिवर स्वामी आत्मानन्द जी ने लिखी थी। इसमें पृथ्वीसूक्त सहित 382 मन्त्रों का काव्यानुवाद है। कई-कई छन्दो में वेद की ऋचाओ को हिन्दी काव्य का रूप दिया गया है। वास्तव में इस ग्रन्थ का जन्म कारावास मे हुआ था। प्रात —साय यज्ञ-हवन के पश्चात् एक वेदमन्त्र की व्याख्या हुआ करती थी। उन्हीं मन्त्रों का काव्यानुवाद श्री रामनिवास नित्य-प्रति रचकर सुनाया करते थे इनके काव्यानुवाद पर हम सब मुग्ध थे।

कुछ बानगी देखिए—

पुस्तक के पृष्ठ 125 पर मत्र सख्या 152 का अर्थ द्रष्टव्य है—

अहमिद्धि पितुष्परिमेधामृतस्य जग्रह।
अहं सूर्य इवाजनि ॥ ऋ० 8 6 10 ॥

मैंने परम पिता की ऋत का
मेधा का आदान किया है।
बन गया तेज का पुज सूर्य सम
ज्ञान विहान किया है ॥
जिस भाति सूर्य ससृति के
अधकार घन को हर लेता
इस भाति विश्व अज्ञान हरण
करना मैंने ठान लिया है।
जिस भाति सूर्य जीवन दाता
सुखदाता प्रेरक अग-जग का
उसी भाति सब हितकारी
बनना मैंने ठान लिया है।
जिस भांति चमकता है सूरज
एकाकी नभ मडल में
मैंने ज्ञान ज्योति से दीप्त
जीवन द्युतिमान किया है।
वासर विधान कर जग को देता
जीवन दान तरणि है
मैंने भी वासर विधान कर
जगहित जीवन दान किया है।
मैं सदा बसाता रहू
उजाडू कभी नहीं जन-जन को
यह सूर्य देव प्रेरक से
मैंने दीक्षा ज्ञान लिया है।

कवि ने इस गीतिका मे न केवल भावार्थ ही दिया है अपितु अपनी अद्भुत प्रतिभा व विद्वता से इसकी पूर्ण व्यवस्था की है। सूर्य के कौन से गुण हैं, वह कवि ने सारे के सारे गिनाये हैं और उन्हें मानव जीवन मे अपनाने की उत्कठा प्रकट की है।

ईश्वर के विराट् रूप की व्याख्या पृष्ठ 501 पर क्रमाक 617 मे इस प्रकार की है—

सहस्रशीर्षा पुरुष सहस्राक्ष सहस्रपात्।
स भूमिं सर्वत वृत्वात्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम् ॥

वह है परम पुरुष अविनाशी।
सहस्रशीर्षा सहस्राक्ष है
सहस्रपाद प्रकाशी।
अगणित शिर हैं
अगणित दृग् हैं।
अगणित चरणयुक्त अगजग हैं।
घेर रहा सब ओर भुवन को
वह ब्रह्माण्ड निवासी।
घेरे सभी ओर भू मडल।
लाघे इससे परे दशागुल।
दश अगो वाले दिग्मडल से
ऊपर सुखराशी।
वह सर्वज्ञ सर्व द्रष्टा है।
वह समग्र जग स्रष्टा है।
यह सारा ब्रह्माण्ड उसी का
वह घट घट अधिवासी।

इस प्रकार उपरोक्त काव्यानुवाद एक उत्कृष्ट कृति है जो आर्यसमाज के साहित्य गगन मे अपना एक निश्चित स्थान बनायेगी। पुस्तक का यह प्रथम भाग आर्य सभाओ, स्कूलो, कालेजो के पुस्तकालयो की शोभा सिद्ध होगी। हर हिन्दू के घर में ऐसी पुस्तकें हो तो वेदो के अथाह भण्डार का द्वार जनसाधारण के लिए खुल सकता है।

समीक्षक—मूलचन्द गुप्त, मन्त्री
आर्यसमाज, दीवान हाल, दिल्ली-6

हवन--यज्ञ की वैज्ञानिकता

लेखक—श्री यशपाल आर्य बन्धु मुरादाबाद प्रकाशक—आर्यसमाज रेलवे हरथला कालोनी, मुरादाबाद, मूल्य—आगामी प्रकाशन हेतु यथाशक्ति सहयोग।

आर्यसमाज के विद्वानो द्वारा यज्ञ की प्रक्रिया एव महत्व के स्पष्ट करने के लिये अनेक पुस्तकें लिखी गयी हैं। पचमहायज्ञो के आध्यात्मिक एव समाज वैज्ञानिक स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए श्री प० बुद्ध देव जी विद्यालकार (स्वामी समर्पणानन्द जी) की "पचयज्ञ प्रकाश" पुस्तक बहुत उपयोगी है। "वैदिक यज्ञ दर्शन" नाम से श्री आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री का अत्यन्त पाण्डित्यपूर्ण ग्रन्थ अभी प्रकाशित हुआ है। श्री आचार्य विश्वश्रवा जी व्यास के दो ग्रथ सन्ध्या तथा यज्ञ पद्धति पर काफी पहले प्रकाशित हुए हैं। ये सभी ग्रन्थ यज्ञ के विभिन्न पक्षों के बोध के लिये उत्कृष्ट हैं। अन्य विद्वानो की भी यज्ञ सम्बन्धी पुस्तकें उपलब्ध हैं जो कि अपना अपना महत्व रखती हैं।

(शेष पृष्ठ १० पर)

पत्रों के दर्पण में

अमरीकी वकीलों के हथकंडे

धनी एवं विकसित राष्ट्र अपने धन के मद मे हमारी जिन्दगी की कोई कीमत नही समझते क्योंकि वे लोग भौतिक सुखो मे ही ज्यादा लीन हैं तथा मानवीय सवेदना उनमे होती ही नही हैं। कुछ वकील लोग अमरीका से भोपाल पहुचे हैं और लोगो से कहते हैं कि वे अमरीकी कोर्ट मे तुम्हारी तरफ से मुकदमा चलाए गे एव कम्पनी से भारी मुआवजा दिलवाए गे। यह सरासर गलत है। वास्तविकता तो यह है कि ये वकील लोग भारी फीस के लालच मे, जो कि मुआवजे की राशि का १० से १५ प्रतिशत तक होता है, मानवीय सवेदना दिखा रहे हैं।

मैंने अपने अमरीका प्रवास के दौरान दो वर्ष मे इन वकीलो के सैकडो कारनामे देखे व सुने हैं। चू कि इस तरह की दुर्घटनाओ के मामलो मे अमरीका मे कोर्ट के द्वारा भारी मुआवजे दिलवाए जाते हैं, जो सर्वविदित है, एव भोपाल गैस काण्ड के मामले मे काफी बडी रकम कोर्ट द्वारा मुआवजे के रूप मे दिलवाए जाने मे कोई शका नही है, इसलिए ये वकील लोग यहा चले आ रहे है। यदि २० अरब रुपए का मुआवजा मिलता है तो १५ प्रतिशत के हिसाब से ३ अरब रुपए ये वकील लोग हडप लेगे।

क्या हमारे भारतीय वकील अमरीका एव भोपाल मे इतने खुदगर्ज व अमानवीय है या लायक नही है कि बिना फीस की चिन्ता किए मानवता के नाते यह मुकदमा लडे ? क्यो हम उन धनलोलुपो के हाथो मे यह मुकदमा सौपना चाहते है या फिर वे अमरीकी वकील कह दें कि वे फीस के रूप मे एक पैसा भी नही लेंगे। —डॉ० विनोद सुराना, निसरपुर, (जिला धार)

ये छुट्टियां नहीं, अंग्रेजों का ताबूत

छुट्टियो का बोझा ढोते मध्य प्रदेश मे एक और अदूरदर्शिता पूर्ण निर्णय यह लिया गया है कि 'बडे दिन' की छुट्टिया २५ दिसम्बर की बजाय ३१ दिसम्बर से ६ जनवरी तक की गई क्योंकि चौबीस और सत्ताइस को लोकसभा हेतु मतदान है। 'बडे दिन' की छुट्टिया क्रिसमस के सदर्भ मे दी जाती हैं और अग्रेज जब तक इस देश मे रहे वे इसका लाभ पूरे देशवासियो को देते रहे। उनके पलायन के बाद हमने उनके कदमो का अनुसरण बद नही किया और सैंतीस वर्षों बाद भी यह सिलसिला बदस्तूर जारी है। 'बडे दिन' की एक दिन की छुट्टी मे भी हमारा काम चल सकता है फिर क्यो हम आठ दिन तक घर पर निरर्थक बठे रहें ? फिर अग्रेजो का यह ताबूत ढाने का भार सिर्फ शिक्षण सस्थाओ के कधो पर डाला जाता है। जिन लोगो के भविष्य निर्माण का कार्य चल रहा है, उनके जीवन के महत्वपूर्ण समय को छुट्टी के हवाले कर दिया जाता है। अब समय आ गया है कि हम इस बहस को शुरू करे कि ये छुट्टिया सार्थक है या निरर्थक ? अगर निरर्थक है तो हमे इनके विरोध के लिए आगे आना होगा और इन छुट्टियो की 'छुट्टी' करके अपने शिक्षण सत्र को लम्बा करना होगा। इसी तरह गर्मी और दीपावली अवकाश की दीर्घता पर भी सोचा जाना चाहिए।

—पवन राठी, ६६ बजाज खाना, इन्दौर

आर्य महासम्मेलन दिल्ली में नहीं, शोलापुर में

१८ नवम्बर के अक मे हैदराबाद सत्याग्रह के सम्बन्ध मे श्री शालवाले के लेख मे सन् १९३८ मे दिल्ली मे आर्य महासम्मेलन होने का उल्लेख है। यह महासम्मेलन दिल्ली मे नही, शोलापुर मे हुआ था। उसमे तथाकथित राष्ट्रीय नेताओ ने नही, बल्कि भाई परमानन्द और वीर सावरकर जैसे हिन्दू महासभा के नेताओ ने ओजस्वी भाषण देकर सक्रिय योग दिया था। तभी सत्याग्रह का प्रस्ताव पास हो सका। राष्ट्रीय नेता तो हैदराबाद सत्याग्रह के विरुद्ध थे। आर्यसमाज के साथ ही हिन्दू महासभा ने भी सत्याग्रह प्रारम्भ कर दिया था। मै स्वय उस सम्मेलन मे मौजूद था।

लेख मे सत्याग्रह मे शामिल हुए सत्याग्रहियो की सख्या १२,००० बताई गई है। मेरी जानकारी के अनुसार वह २२,००० होनी चाहिए।
—नारायणपाल आर्य, दाल चौक, खामगाव, जिला बुलढाना

राजा जी की भविष्यवाणी की प्रासंगिकता

ऐसे बहुत कम महापुरुष हैं जो अपने बाद भी प्रासगिक कहे जा सकते हैं। स्व० चक्रवर्ती राजगोपालचारी ऐसे ही महापुरुषो मे एक हैं जिनकी प्रासगिकता महत्वपूर्ण है।

श्री क्षितीश वेदालकार ने अपनी अभी प्रकाशित पुस्तक 'तूफान के दौर से पजाब' मे राजाजी की भविष्यवाणी उद्धृत की है

"१९६३ के १७ अगस्त को श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने राष्ट्र को चेतावनी देते हुए कहा था—

"पुराने शासन के बहुभाषीय प्रान्त अपनी-अपनी सीमाओ मे एकाधिक भाषाओ वाले समुदाय को अखिल भारतीय सामन्जस्य से जोडे रहे थे। परन्तु एक भाषा के आधार पर प्रान्तो के निर्माण ने उस प्रक्रिया को रोक दिया। राज्यो मे अलग इकाई का राष्ट्रवादी अभिमान और एक दूसरे के विरुद्ध आक्रामक रूप पनपने लगा। इससे अखिल भारतीय एकता को भारी आघात लगा। उन सबको बाधने वाला तत्व केवल केन्द्रीय सरकार रह गई। विदेशी दासता से मुक्ति दिलाने की उसकी छवि ज्यों-ज्यो धूमिल पडती जाएगी त्यो-त्यो भारत विघटन की ओर बढता जाएगा। इसका इलाज केन्द्र को और अधिकार सौपना नही है जैसा कि कुछ लोग समझते हैं। इसमे निर्माण की बजाय विद्रोह को उत्तेजन मिलेगा। यह इसलिए होगा कि केन्द्र को सदा अधिक बलवान राज्य के रूप मे पहचाना जाएगा। दूर भविष्य की दृष्टि से यह तस्वीर अधकारपूर्ण है।

राजा जी की वह भविष्यवाणी तमिलनाडु, तेलेगुदेशम् से होती हुई पजाब मे पूरी उतरी है।

क्षेत्रीयता, उपराष्ट्रवाद आदि जिस तेजी से उभर रहे हैं उन्हें देखते हुए इस भविष्यवाणी की प्रासगिकता और भी बढ़ गई है।

—निरजन जमीदार (१६ दिसम्बर के दैनिक भास्कर (इन्दौर) मे प्रकाशित श्री राजगोपालाचारी सम्बन्धी लेख से उद्धृत)

आकाशवाणी का उर्दू प्रेम

आकाशवाणी दिल्ली का ए केन्द्र हिन्दी के लिए है और बी केन्द्र गैर हिन्दी भाषाओ के लिए है - जिनमे अग्रेजी और उर्दू मुख्य हैं। उर्दू के लिए एक अलग सर्विस भी 'उर्दू सर्विस' के नाम से है। फिर भी, ए केन्द्र से भी उर्दू मे प्रसारण होते है। उदाहरण के लिए सवेरे ८-४० पर उर्दू मजलिस, ८-५० पर खबर, १-५० पर खबर, ६-१५ (रात) खबर इत्यादि। जब उर्दू के लिये पहले ही अलग से एक केन्द्र नियत है तो हिन्दी से उर्दू के प्रसारण की क्या आवश्यकता हैं। क्या उर्दू सर्विस मे हिन्दी प्रसारण हो सकता है ?
—ज्ञानचन्द गोयल, उपमत्री आर्य युवक परिषद, पो० मालब (मेवात), जि० गुडगावा (हरि०)

आर्य नेताओ की राय

जो सज्जन श्री शालवाले की अपील की आलोचना करते हैं, लगता हैं उन्होने उनकी अपील पूरा नही पढ़ा या फिर पार्टी से बधे होने के कारण ही आलोचना करते हैं। आर्य समाज ने कोई राजनीतिक स्वरूप नही लिया है बल्कि आर्य समाज देश हित मे बलिदान होने वालो एक देशभक्त सस्था है, इसलिए उसे देश को चिन्ता है। देश मे काग्रेस सरकार नही बनी तो प्रधानमत्री इन्दिरा के हत्यारो के भी मनसूबे पूरे होगे। बातें बहुत हैं, बहुत सोच विचार कर हो आर्य नेताओ ने अपना मत स्पष्ट किया है। श्री शालवाले जनसघ के सहयोग से एम पी अवश्य बने थे परन्तु उन्होने भारतीय जनता पार्टी (गाधी जी की समाधि पर सिर पटकने वाली पार्टी) से कोई टिकट नही मागा। —नाथूलाल वर्मा, म. भा आर्य प्रतिनिधि सभा, इन्दौर

ईसामसीह प्रभु पुत्र ?

६ दिसम्बर के अक मे प्रकाशित 'ईसामसीह प्रभु-पुत्र था ?' लेख मे आपने लेखक का नाम श्री वैद्य गुरुदत्त लिखा है। उसे आपने 'शाश्वत वाणी' से साभार लिया है, इसका उल्लेख तो किया है, किन्तु वह वैद्य जी का लेख नही है। वह शाश्वत वाणी का सम्पादकीय था जो कि मेरा लिखा हुआ है। विगत २० वर्षो से मै ही सम्पादकीय और समाचार समीक्षा लिखता आ रहा हू। जिस लेख की चर्चा कर रहा हू वह भी मेरा ही लिखा हुआ था। — अशोक कौशिक, ७ एफ, कमलानगर, दिल्ली-७

सम्पादक 'शाश्वतवाणी'

मकर संक्रान्ति पर विशेष

क्रान्ति और संक्रान्ति

—निशान्तकेतु, रीडर हिंदी-विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना—

"क्रान्ति" राजनीति का शब्द है और "सक्रान्ति" धर्म का। "क्राति और "सक्रान्ति" का अन्तर या सबध राजनीति और धर्म के अन्तर या सबध से जुडा हुआ है। वर्तमान शताब्दी की वामपथी विचारधारा के अन्तर्गत धर्मनिरपेक्षता (सेकुलरिज्म) का आरभिक प्रयोगार्थ रहा है, "धर्मविरोध"। अनेक देशो की राजनीतिक प्रयोगशाला मे धर्मनिरपेक्षता का आज भी यही अर्थ है। विशेषकर वामपथी विचार-राजनीति से नियत्रित राष्ट्रो मे इसका यही अर्थ है। जिन देशो मे लोकतत्र कायम हुआ, वहा धर्मनिरपेक्षता का अर्थ धीरे-धीरे बदलने लगा और इसका वर्तमान और सांविधानिक अर्थ है, धार्मिक सह-अस्तित्व। यहा से धर्म और राजनीति दोनो के आयाम अलग हो जाते हैं। राजनीति मे धर्म का प्रवेश अथवा धर्माश्रित शासन-प्रणाली को सकीर्ण और अकल्याणकारी माना गया। इसके दो परिणाम हुए। राजनीति मूल्यहीन होने लगी।

इसी प्रकार धर्म जब राज्याश्रय से विच्छिन्न हो गया तो उसकी आचरणीयता क्षीण होने लगी। राजनीति और धर्म दोनो की उत्पत्ति अलग-अलग स्थलो पर अलग-अलग मातृकाओ से हुई थी। बाद मे दोनो एकायन और परस्पराश्रित भी हो गए। वह तीसरी स्थिति है जब दोनो एक दूसरे से विच्छिन्न हो गए है और यह विच्छिन्नता ध्रुवातरो तक चली गई है, जहा से राजनीतिज्ञो ने घोषणा की "धर्म अफीम है" और धर्माधिकारियो ने भी कहा,—"राजनीति भ्रष्टाचार का भण्डार है।" दोस्ती कुछ ऐसी दुश्मनी मे बदल गई कि दोनो का मेल असभव सा है। (वास्तव मे जब से 'मजहब' को 'धर्म' मान लिया गया, तभी से यह उत्पात प्रारम्भ हुआ।—स०)।

सक्रान्ति—विकास का पर्व

वस्तुत सक्राति ज्योतिष-शास्त्र का शब्द है, जो वर्षारभ का प्रथम और महत्व पूर्ण पर्व बन गया। भारतीय ज्योतिष-शास्त्र के अनुसार बारह महीनो के आधार पर बारह राशिया मानी गई हैं। सूर्य जब एक राशि को छोडकर दूसरी राशि मे प्रवेश करता है तो उसके गमन को सक्रमण और नई राशि पर पहुच जाने की स्थिति को सक्राति कहते है। इसलिए सक्राति सूर्य व्रत है। वर्ष मे बारह सक्रातिया मानी गयी हैं, जो भिन्न-भिन्न नामो से जानी जाती हैं—धान्य सक्राति, लवण सक्राति, भोग सक्राति, रूप सक्राति, तेज सक्राति, अशोक सक्राति, मकर सक्राति। इन सभी सक्रातियो मे मकर सक्राति सर्वाधिक महत्वपूर्ण और लोकप्रिय है। सूर्य जब मकर राशि मे आता है तो मकर सक्राति शुरू होती है और पूरे महीने तक यह सक्रात स्थिति बनी रहती है। लोकाचार के अनुसार इस मकर सक्राति मे मिष्ठान्न (खिचडी) खाने की परपरा है। तिलसे बने मिष्ठान्न की भी महिमा है। इस मकर सक्राति मे तिल की महिमा का बखान किया गया है। शास्त्रो मे तिल का षट्कर्म मिलता है - तिल-मिश्रित निर्मित उबटन लगाना, तिल - मिश्रित जल से स्नान, तिल से हवन, तिल-मिश्रित जल पीना, तिलान्न भोजन और तिल का दान।

मकर सक्राति का पर्व सूर्य-पूजा-पर्व है। यह मगल-विधायक और आरोग्यदायक है। यह वर्तमान स्थिति से ऊपर उठने का मक्रमण-क्रम और सक्राति है। जीवन की सार्थकता तेजस्विनापूर्ण विकास गति मे है। सक्राति का पर्व सपूर्ण विकास का सकल्प-यज्ञ है। यही सक्राति है। यह पर्व "उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत" मन्त्र का सकल्पात्मक मगलमुहूर्त है। यह ज्ञान-प्रकाश और स्वसाक्षात्कार का सूर्य नमस्कार यज्ञ है।

मकर-सक्रान्ति के अवसर पर गगा सागर मे महान् मेला लगता है। तीर्थराज प्रयाग के त्रिवेणी सगम पर भी स्नानार्थियो और कल्पवासियो का सम्मेलन होता है। इस प्रकार सक्रान्ति हिन्दू-धर्म का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पर्व माना जाता है।

क्रान्ति और सक्राति

"सक्राति" शब्द सम् और क्राति के मेल से बना है। सक्राति का अर्थ है, सक्रमण। यह स्थित्यतरण और कालातरण है। सास्कृतिक भूमिपीठ पर जो सक्राति है, वही राजनीतिक प्रागण मे क्राति है। क्राति युद्ध को रोकती है। क्राति नही हुई तो युद्ध होगा। कहते हैं, कामयाब बगावत इन्कलाब और नाकामयाब इनक्लाब बगावत है। बगावत विद्रोह है। द्रोह जब विशिष्टता को प्राप्त कर लेता है तो विद्रोह हो जाता है। द्रोह मे विक्षोभ का स्वर है। विद्रोह तक पहुचकर द्रोह सपबोध की वृत्ति बन जाता है।

नाफरमानी और सविनय अवज्ञा के नारे महात्मा गाधी ने स्वतत्रता सग्राम के दिनो दिए थे। यह अहिंसक क्राति का मगल मत्र बना था। राजनीतिक परिसर मे प्रयुक्त इस नारे ने अपना कमाल दिखाया भी। सविनय अवज्ञा के महारथ पर बैठी क्राति ने स्वतत्रता दिलाकर सक्राति का ही धर्म अनुष्ठित किया था। सत्य और अहिंसा के अश्व ने इस महारथ को खींचा था। हमारे राष्ट्र ने पराधीनता के कारागार से स्वतत्रता के मुक्ताकाश मे इसी महारथ पर बैठकर सक्रमण [सक्राति] किया था

क्राति तक पहुचने के पहले यह तूफान अनेक अवघाटियो की शिलासधियो से टकराता है। कभी घेराव और हडताल होती है, सामूहिक अवकाश और तालाबदी होती है, काम रोको प्रस्ताव से कलम बद अभियान चलता है, नारे बाजी और जुलूस का सगठन होता है। अनशन और धरना की रूपरेखा बनती है। जनसचार (मास-मीडिया) के सभी उपलब्ध साधन, समाचारपत्र, आकाशवाणी, चलचित्र, दूरदर्शन, विज्ञापन, नाट्यमच, जनमच भाषण इत्यादि का आश्रय लिया जाता है।

भारतीय इतिहास मे संक्राति

भारतीय इतिहास-चक्र मे क्राति के अनेक आयाम और स्वरूप मिलते हैं सामरिक क्राति का पौराणिक रूप देवासुर सग्राम, राम रावण-युद्ध, पाडव-कौरव-युद्ध मे मिलता है। महाराणा प्रताप और शिवाजी ने अपने काल मे क्राति का महाशख फूका था। बीसवीं शती मे सुभाषचद्र बोस और महात्मा गाधी जैसे दो क्रातिपुरुष आए। दोनो की क्राति—काया भिन्न थी। फिर जयप्रकाश ने क्राति (सपूर्ण क्राति) का सिद्धात और प्रयोग दिया। धार्मिक जीवन के स्तर से याज्ञवल्क्य ने जीवन को यज्ञ और जगत को प्रयोगशाला मानकर जो सास्कृतिक क्राति की, वह विश्व-जीवन के लिए आज भी अभूतपूर्व और सर्वोच्च शिखर है। उस क्राति —शिखर के ऊपर कोई दूसरा शिखर नही बना।

[परतु इस युग मे सबसे बडी वैचारिक क्राति की ऋषि दयानद ने। आर्य-समाज ने उसी क्राति के माध्यम से देश को सक्राति के पथ पर आरूढ कर दिया। सक्राति पथ अर्थात् विकास पथ। पर इस विकास के पथ से जन-जन को परिचित करवाना अभी शेष है।—स०]

[युगवार्ता]

देशान्तर प्रचार के लिए प्रचारकों की आवश्यकता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने देशान्तर प्रचार पर विशेष ध्यान देने का निश्चय किया है। पिछले सौ वर्षों के दौरान विश्व के अनेक देशो मे आर्य समाज का सदेश पहुचा। मोरिशस, ब्रिटिश, गायना और त्रिनिडाड जैसे देशो मे अब तक आर्य समाज का सगठन कायम हो चुका है, उसका श्रेय कुछ व्यक्तियों की स्वत प्रेरणा और भारत से गये विद्वान् प्रचारको की कठिन साधना को ही है। आर्य समाज ने इन देशों में वैदिक धर्म के प्रचार के साथ ही समाजिक और राजनैतिक चेतना जगाने में भी प्रमुख भूमिका अदा की। पर अब ऐसा अनुभव हो रहा है कि सैध्दान्तिक प्रचार मद होता जा रहा है—क्यो कि विश्व स्तर पर सगठित प्रयास की कमी रही। अभी तक विश्व के बहुत सीमित क्षेत्र मे ही आर्य समाज का प्रचार हो पाया है, इसे विश्वव्यापी बनाने की आवश्यकता है। अतएव ऐसे महानुभावों की जानकारी चाहिए जो देशान्तर प्रचार के कार्य में अपना समय देने को तत्पर हों।

इच्छुक महानुभाव इस विज्ञप्ति के सदर्भ में हमसे पत्र व्यवहार करने का कष्ट करे। अपने पत्रोत्तर मे वे अपनी आयु, शैक्षणिक योग्यता, भाषाओ का ज्ञान, आर्य समाज से सबन्ध, प्रचार कार्य का अनुभव, प्रकाशनो की सूची एव अन्य आवश्यक जानकारियो का विवरण देने का कष्ट करे। भारत अथवा देशान्तर के तीन ऐसे प्रमुख आर्य जनो का नाम और पता भी लिखें, जो आपके कार्यों के विषय मे भली भाति जानते हों। यह भी सूचित करें कि कितना समय इस कार्य मे दे सकते हैं। प्रथम पत्र मे ही पूर्ण विवरण देना उचित होगा।

डा० आनन्द प्रकाश उपमत्री सभा एव सयोजक—विदेश प्रचार उपसमिति।

—आर्यसमाज, फोर्ट, बम्बई मे २३ दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान-दिवस प्रसिद्ध उद्योगपति श्री भगवती [illegible] गया। इस अवसर पर श्रीमती सुमित्रा अमीन, श्री प्रकाशचन्द्र त्यागी, श्री प्रदीप शास्त्री और श्री सोमदेव शास्त्री तथा अन्य अनेक वक्ताओ ने अपने विचार

धर्म-निरपेक्षता की वास्तविक ..

(पृष्ठ ४ का शेष)

धर्म भी उनके व्रत का ही एक अंग था। मेरे बचपन तक यह स्थिति थी कि हिन्दू परिवारो मे बडा लडका यह व्रत लेता था कि वह सिख व्रत के अधीन केश रखेगा, कृपाण धारण करेगा, लडने के लिए तैयार होगा। मेरे दूर के रिश्तेदारों मे, कई परिवारो में यह स्थिति रही कि बडे लडके ने यह व्रत लिया। यह समकालीन परपरा थी इसलिए सिख धर्म कोई अलग धर्म है, यह कल्पना मे भी बात नहीं थी। लेकिन आज इसके नाम पर हम लडने को तैयार हो गए हैं—इसलिए कि इतिहास से जो शिक्षा हमे मिलनी चाहिए थी, वह हमे नही मिली है

धर्म के नाम पर राजनीति

इतिहास की ऐसी विपरीत शिक्षा क्यो मिलती है ? इसका मूल राजनीति मे है। लेकिन अब एक ऐसा सस्थान वहा पर है जिसकी कम से कम उसके भीतर रहने वाले लोग धर्म सस्थान मानते हैं जब कि वास्तव मे धर्म से उसका सबध नही था।

धर्म के नाम पर धर्म सस्थान कोई भी अत्याचार कर सकता है और राजनीति के नाम पर राजनीति सस्थान भी कोई अत्याचार कर सकता है और करता आया है। आज शायद धर्म सस्थान मे सबसे बडा धर्म सस्थान एक राजनीति का सस्थान है—मार्क्सियन धर्म का सस्थान। उसमे ईसाई धर्म के दो चर्चों की तरह दो प्रमुख चर्च आज हमारे परिचय में है। दोनो मार्क्स के ही, मार्क्स धर्म के ही अवलबी और एक दूसरे के कट्टर विरोधी हैं। और आज के समाज मे, आज के ससार मे कितने अत्याचार इन दो धार्मिक सस्थानो ने राजनीतिक सस्थान बनाकर किए हैं, यह हम सब लोग जान गए हैं।

सर्वोपरि बात यह है कि मनुष्य मात्र के साथ कैसा सबध बनाए रखना हमारे मनुष्य होने के नाते आवश्यक है, हमारा धर्म यही है। इसके अलावा और तरह-तरह के विश्वासो का भी हम निर्वाह कर सकते हैं, तरह-तरह के धार्मिक आचरण भी हम कर सकते हैं, किसी भी धर्म समाज के भीतर रहते हुए। लेकिन बुनियादी बात यह है।

लेकिन क्या सचमुच ऐसा हो सकता है, क्या आज की राजनीति भी हमें इसकी अनुमति देती है कि ऐसा हो सके। सिर्फ सिद्धान्तो के या आदर्शों के आधार पर विचार करने से तो बात नही बनेगी। हमे धर्म के आज जो व्यावहारिक रूप हैं, उसी तरह हमारे समाज के भी जो व्यावहारिक रूप हैं, और राजनीति के भी जो व्यावहारिक रूप हैं, उस पर विचार करना चाहिए। भारतीय चिन्तन के आधार पर कोई एक ऐसा धर्म सस्थान नही बन सकता था जो अत्याचारी हो सके। जहा यह उसका धन पक्ष हैं वहां एक उसका ऋण पक्ष भी है कि ऐसे सस्थान की अनुपस्थिति मे जो तरह-तरह के छोटे-छोटे सस्थान बने, उनमे से कोई भी ऐसा नही पाया गया जो राजनीति के क्षेत्र मे हमारा मार्ग-निर्देश करने वाला नही था, इसलिए हमारी सारी हिन्दू राजनीति इसी जाति के आधार पर चलाई गई।

जाति को महत्व

आज सारे धार्मिक और राजनीतिक आदर्शों के बावजूद अब चुनाव लडा जाता है तो जाति के आधार पर लडा जाता है। यह आज के यथार्थों मे से एक है। तो धर्म सस्थान से भी ज्यादा महत्व जाति सस्थान का हो गया है। लेकिन राजनीति के नाम पर जब हम विचार करते हैं तो हमे यह बात ध्यान मे रखनी होगी कि एक तरफ धर्म सस्थान को कमजोर करने वाले जो आदर्श थे, उनकी एक कमजोरी यह भी थी कि उन्होमे एक दूसरे प्रकार के सस्थानो के बनने की सुविधा दी। उसमे सहायता दी।

हमारी राजनीति का आज जो बडा रोग है, वह धर्म नहीं है, वह जाति है और विशेष रूप से हिन्दू धर्म की बात तो यही है और हिन्दू धर्म से फैलता हुआ यह रोग दूसरे धर्मों मे भी गया है—आज कोई भी धर्म जातिवाद से मुक्त नही है।

अगर हम धर्म को मानते हुए चलना चाहते हैं और मैं समझता हू कि धर्म ने ऐसी दृष्टि और शक्ति दी है कि धर्म को मानते हुए चलना मैं गलत नही समझता हू। मैं यह नही कहता कि धर्म ही हमारा शत्रु है या धर्म को जड से उखाड कर ही हम अच्छे नागरिक बन सकते हैं। ऐसा मैं बिल्कुल नही मानता। लेकिन किस तरह का विश्वास वास्तव में धर्म है और कौन से धार्मिक विश्वास धर्म मे ही बाधक हो जाते हैं, इसकी ओर हमें ध्यान देना चाहिए।

हम लोग आज आदर्श रूप मे मानते हैं और यह हमारे सविधान का एक अग भी हो गया है कि हम एक सेकुलर, समाज (धर्म निरपेक्ष) है। अब इस शब्द का भी इतिहास अगर हम ध्यान मे नही रखें तो इसका दुरुपयोग हो सकता है और आज होता है। ऐसा बहुत से लोग कहते हैं, किसी भी व्यक्ति के बारे मे और विशेष रूप से अगर वह किसी राष्ट्रीय सस्थान मे किसी ऊचे पद पर है तो यह सवाल उठता है कि अगर राष्ट्रपति मन्दिर मे जाते हैं या गुरुद्वारे में जाते हैं या गिरिजाघर में जाते हैं, तो वह धर्म निरपेक्ष नही है। यह धर्म निरपेक्षता को बिलकुल गलत समझना है क्योकि उस चीज से इसका कोई सबध ही नही है। वास्तव में मैंने तो भारतीय परम्परा की बात कही, उसमें धर्म निरपेक्ष हम हो ही नही सकते। अगर वास्तव में धर्म वह है कि मनुष्य मात्र के साथ कैसा सबध हम स्थापित करते हैं तो धर्म निरपेक्ष न सिर्फ हम हो नहीं सकते, हमे होना चाहिए भी नहीं, होने की कोशिश भी नही करनी चाहिए। धर्म तो हमारे आचरण के हर पक्ष का नियन्त्रण करने वाला हो जाता है क्योकि दूसरो के साथ, दूसरो के बीच हम कैसे रहते हैं, यह हमारे आचरण के हर पक्ष की बात है। इसीलिए जो इस विचार के लोग थे, वे किसी भी चीज को धर्म के बाहर नहीं मानते थे, कुछ भी धर्म के बाहर नही है और जिसको मैंने धर्मबीज कहा, उससे इसका सबध नहीं रहता।

तो धर्म निरपेक्षता का या सेकुलर डेमोक्रेसी का इसमें कोई सबध नही है कि आप इस दृष्टि से क्या मानते हैं। उसका सबध आपके सामाजिक आचरण से है, सामाजिक और नागरिक आचरण से। और धर्म निरपेक्षता वही है। उसी मे जाति बाधा होती है, इसीलिए जाति मे विश्वास रखना भी सेकुलर नहीं रहता है। सेकुलर के विरुद्ध जाता है जातिगत आचरण, सेकुलर के विरुद्ध जाता है दूसरों को अपने से छोटा मानना या अपने मानव समाज के बाहर मानना इत्यादि। तो सेकुलर होने का सही अर्थ भी यहीं है। इसका मूल हमे उस धर्म के बुनियादी चिन्तन मे मिल जाता है जिसमे हम दूसरो के बीच अपने रहने की, अपने धार्मिक आचरण की कसौटी बना लेते हैं। अगर वही कसौटी है तो हम धर्मवान हैं और हम रह सकते हैं और हमे रहना चाहिए। हम सेकुलर हैं और रह सकते हैं और हमे रहना चाहिए। हम अपने राजनीतिक कर्तव्य भी इससे पूरा कर सकते हैं और हमें करना चाहिए। □

क्या महिलाओं के प्रति

(पृष्ट ६ का शेष)

परिवार वाला, महानगर निवासी, स्वय की उत्तम कोठी एव कार तथा धनवान होना आवश्यक था। अपनी बुद्धि के अनुसार उन्हे सलाह दी कि आप अपनी परिस्थिति के अनुसार ही सम्बन्ध करें। बात उनकी समझ मे नही आई। 5-6 वर्ष भटकते रहे। अन्त में मेरी बात समझ मे आते ही सम्बध शीघ्र हो गया।

किन किन बातो को महत्व दे

सम्बन्ध करते समय इन बातो को महत्व तथा प्राथमिकता देवें —

(1) लडका लडकी का सम्बन्ध परस्पर रग, रूप, स्वास्थ्य, पढाई, गुण-कर्म आदि मे समानता को देखकर करें।

(2) लडका निर्व्यसनी तथा आस्तिक विचार वाला हो।

(3) अपने से आर्थिक दृष्टि से

(4) जहा दहेज की माग न हो, ऐसे स्थल को उपयुक्त समझें।

(5) दहेज लालचियो का सामाजिक बहिष्कार करे। ताकि दहेज के लालची अपनी महत्त्वाकाक्षा से विमुख होकर सही मानव बनें।

ऊपर लिखे सुझावो को यदि क्रियान्वित करे तो निश्चित ही दहेज विषयक स्थिति मे अवश्य सुधार होगा।

आज समाज को इस बात की आवश्यकता है कि प्रत्येक युवक अपने से हटकर दूसरो के बारे मे सोचें। करुण और सवेदनशील होकर विचार करें। बडे से बडे तथा सामाजिक कार्यकर्ता दहेज के मामले मे ईमानदारी और निष्ठापूर्वक सादगी का प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत करें। स्त्रियां अधिक से अधिक फैशन और मैकप के चक्कर मे न पडकर अपनी जरूरतो को कम करें। वे अपने माता-पिता के लिए बोझ न बनकर कर्मठता का सहारा लेवें।

युवा वर्ग का कर्तव्य है कि दहेज रूपी दानव को भस्म करके स्वय सादगी से विवाह करके समाज का मार्गदर्शन करें।

पता—सेक्टर 7 बी, कोठी न० 447
फरीदाबाद (हरियाणा) 121006

हवन यज्ञ की वैज्ञानिकता ..

[पृष्ठ ७ का शेष]

यह पुस्तक अपनी अलग वैशिष्ट्य रखती है। लेखक ने वैज्ञानिक तथ्यों तथा अनुसन्धानो के एकाधिक उद्धरणो से उन्होने यह प्रमाणित कर दिया है कि मनुष्य मात्र के लिये अग्निहोत्र अत्यन्त कल्याणकारी तथा आवश्यक है। जो इस पुस्तक को एक बार पढ जायेंगे उनके मन मे अग्निहोत्र की वैज्ञानिकता पूरी तरह बैठ जायेगी। यज्ञ के अन्य पक्षों पर प्रकाश डालने वाली तो अनेक पुस्तकें उपलब्ध थी, किन्तु अग्निहोत्र की आवश्यकता का विज्ञान सम्मत निदर्शन करने वाली कोई इस प्रकार की पुस्तक अभी तक नहीं थी। यद्यपि इसमें यज्ञ के आध्यात्मिक पक्ष पर भी प्रकाश डाला गया है, किन्तु पुस्तक का मुख्य प्रतिपाद्य अग्निहोत्र के भौतिक लाभों का वैज्ञानिक निदर्शन होने से तथा पुस्तक के कलेवर की सीमा का ध्यान रखने के कारण उसे सक्षिप्त रखा गया है।

जो लोग अग्निहोत्र के प्रति अनेक प्रकार के सन्देह मन में रखते हैं, उनके सन्देहों की निवृत्ति इस पुस्तक को पढ़ने से हो जायेगी। इस पुस्तक को एक बार निष्पक्ष दृष्टि से पढ जायें। जो लोग आस्थापूर्वक अग्निहोत्र करते चले आ रहे हैं, उनको यह पुस्तक वैज्ञानिक एव तर्क पूर्ण आधार देगी।

समीक्षक—आचार्य [illegible], गुरुकुल एटा (उ०प्र०)

आर्य पर्व सूची (१९८५)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा स्वीकृत सन् १९८५ के आर्य पर्वों की सूची इस प्रकार है —

स०	पर्व	सौरतिथि	चन्द्रतिथि	अ ग्रेजी	दिन
१	मकर सक्रान्ति	१ माघ २०४१	माघवदि ८ २०४१	१४-१-१९८५	सोमवार
२.	बसत पचमी	१२ माघ २०४१	फा० सु० ५ २०४१	२६-१-१९८५	शनिवार
३	सीताष्टमी	१ फा० २०४१	फा० ब० ८ २०४१	१२-२ १९८५	मगलवार
४	दयानद बोधरात्रि (शिवरात्रि)	६ फा० २०४१	फा० ब० १३ २०४१	१७-२-१९८५	रविवार
५	वीर लेखराम तृतीया	११ फा० २०४१	फा० सु० ३ २०४१	१२ २-१९८५	शुक्रवार
६	नव सस्येष्टि (होली)	२४ फा० २०४१	फा० सु० १५ २०४१	६-३-१९८५	बुधवार
७	नव सवत्सरोत्सव एव आर्य समाज स्थापना दिवस	९ चैत्र २०४१	चैत्र सु० १ २०४२	२२-३-१९८५	शुक्रवार
८	रामनवमी	१७ चैत्र २०४१	चै० सु० ९ २०४२	३०-३-१९८५	शनिवार
९	हरि तृतीया	५ श्रावण २०४२	श्रावण सु० ३ २०४२	२० ७-१९८५	शनिवार
१०	श्रावणी उपाकर्म	१४ भाद्रपद २०४२	श्रावण सु० १५ २०४२	३०-८-१९८५	शुक्रवार
११	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	२२ भाद्रपद २०४२	भाद्रपद बदि ८ २०४२	७ ९-१९८५	शनिवार
१२	गुरु विरजानद दिवस	२३ आश्विन २०४२	आ० बदि १० २०४२	९-१०-१९८५	बुधवार
१३	विजय दशमी	६ कार्तिक २०४२	आ० सु० १० २०४२	२२-१०-१९८५	मगलवार
१४	महर्षि निर्वाण दिवस (दीपावली)	२७ कार्तिक २०४२	कार्तिक बदि ३० २०४२	१२-११-१९८५	मगलवार
१५	श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	८ पौष २०४२	अगहन सु० १२ २०४२	२३-१२-१९८५	सोमवार

टिप्पणी १ इन पर्वों को वैदिक धर्म के प्रचार और वैदिक सस्कृति के प्रसार का महान् साधन बनाना चाहिए।
२ देशी तिथियो के घटबढ जाने से अ ग्रेजी तारीख मे परिवर्तन हो सकता है।

ओमप्रकाश त्यागी, सभा मन्त्री

वीर हकीकत राय बलिदान दिवस

आय समाज, विनय नगर, नई दिल्ली की ओर से हर वष की भाति इस वर्ष भी 27 जनवरी रविवार का वसन्त मेला 'हकीकत राय बलिदान दिवस' प्रात 8-30 से 1-30 बजे दोपहर तक आर्य समाज, वाई ब्लाक, सरोजनी नगर, नई दिल्ली मे समाराह पूवक मनाया जायेगा। इस उपलक्ष्य मे बच्चो का राचक कार्यक्रम और श्रद्धाञ्जलि सभा हागी, विजयी छात्रो को स्व० श्री उत्तम चन्द चावडा के परिवार की ओर से माता पुरुषोत्तम देवी की पुण्य-स्मृति मे पारितोषिक वितरण होगा।—रोशन लाल गुप्त

प्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव

गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोलाभाल (टीकरी) मेरठ का तेरहवा वार्षिकोत्सव मकर सक्रान्ति के अवसर पर 13,14 जनवरी कोसोत्साह मनाया जायेगा। इस अवसर पर 'ऋग्वेद परायण महायज्ञ' श्रीमती शकुन्तला गायल की ओर से 1 जनवरी से हो रहा है।

ब्र० आय नरेश द्वारा प्रचार

आर्य समाज, चेम्बर, कलेक्टर कालोनी, बम्बई की ओर से श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर 24 दिसम्बर से 6 जनवरी तक विशेष आयाजन किया गया। ब्र० आर्य नरेश व ब्र० ज्ञानेश्वर ने न्यू बम्बई, अणुशक्ति नगर, चेम्बर पारिवारिक सत्सग आदि मे प्रचार कार्य किया। प्रचार आयोजन मे श्री देवव्रत शास्त्री और श्री ज्येष्ठ वर्मन, और श्री कल्याण जी भाई बेलाणी का विशेष योगदान रहा। ब्रह्मचारी जी गुजरात मे प्रचार करते हुए टकारा रजत जयन्ती उत्सव मे सम्मिलित होगे।

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश, नई दिल्ली के वार्षिक निर्वाचन मे प्रधान श्री शान्तिप्रकाश बहल, मन्त्री प्राणनाथ घई और कोषाध्यक्ष श्री बोधराज अबरोल चुने गये।

केन्द्रीय मन्त्री श्री धर्मवीर आर्य का निधन

पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वाराणसी मे २३ दिसम्बर को श्री धर्मवीर आर्य (केन्द्रीय श्रम एव आवास मन्त्री) के निधन पर एक शोक सभा हुई। वे ४२ वर्ष के थे। आचार्या प्रज्ञा देवी ने दुःख व्यक्त करते हुए कहा—श्री धर्मवीर जी सच्चे आर्य, निष्ठावानन् व विनम्र व्यक्ति थे। श्री आय की आत्मशान्ति के लिए परमात्मा से प्रार्थना की गयी।

यू० १०३/१०८ लायसस टु पोस्ट विदाउट प्रीपेमेन्ट
रजिस्ट्रेशन न० आर० एन० आई० ११६३/७२ डी० सी० (४९)
१३ जनवरी १९८५

राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह मुख्य अतिथि होंगे

१३ से २० जनवरी तक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की ओर से मनाए जाने वाले समारोह मे मुख्य अतिथि राष्ट्रपति ज्ञानि जैलसिंह होगे। मुख्य समारोह २० जनवरी को तालकटोरा गाटन मे अपरान्ह १॥ बजे होगा। उसका कार्यक्रम निम्न प्रकार होगा।—

मुख्य अतिथि—महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिह। प्रमुख वक्ता—राज्य सभा के उपाध्यक्ष श्री श्यामलाल यादव प्रति रक्षा मत्री श्री पी० वी० नरसिहराव, शिक्षा मत्री श्री कृष्णचन्द पन्त, आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान श्री प्रो० वेद व्यास, पूर्व सासद श्री प० शिवकुमार शास्त्री, श्री प० राजगुरु शर्मा।

सभी आर्य नर-नारियो से अनुरोध किया गया है कि अपने रविवासरीय सत्सग ११ बजे समाप्त कर अपनी आर्यसमाज के बैनर, ओम् ध्वज आदि से सुसज्जित वाहनो पर १ बजे तक तालकटोरा स्टेडियम अवश्य पहुच जावें।

प्रो० वेदव्यास जी

प्रो० वेदव्यास जी आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान तो हैं ही, इस वर्ष डी० ए० वी० कालिज प्रबन्धकर्त्री सभा के पुन प्रधान निर्वाचित हुए हैं। दिसम्बर मे हुए। सार्वदेशिक सभा के चुनाव मे प्रोफेसर साहब को वरिष्ठ उपप्रधान भी निर्वाचित किया गया है।

श्री सत्यानन्द मुजाल का अभिनन्दन

आय प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि, हीरो साइकल्स (प्रा०) लिमिटेड, लुधियाना के डायरेक्टर, आर्यसमाज के कार्यों मे सदा सहायता देने वाले और अपने प्रयत्न से अनेक आयसमाजो की स्थापना करने वाले माननीय श्री सत्यानन्द मुजाल इस वर्ष सावदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान निर्वाचित हुए है। इस उपलक्ष्य मे आर्य क्लब लुधियाना की ओर से उनका ६ जनवरी को सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। समारोह की अध्यक्षता पजाब के पूत्र मत्री श्री जोगीन्द्र पाल पाण्डे ने की।

—सतीश कुमार ओल, प्रधान आर्य क्लब लुधियाना।

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य अनाथालय, फिरोजपुर छावनी मे अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द का 58 वा बलिदान दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। प्रात काल बृहद्यज्ञ श्री मनमोहन शास्त्री के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ। यजमान प्रि० पी० डी० चौधरी सपत्नीक थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी को अनेक वक्ताओ ने अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। सभा मे आश्रम के विद्यार्थी, कार्यकर्त्ता गण और डी० ए० वी० शिक्षण सस्थाओ के अध्यापक गण और विद्यार्थियो ने भाग लिया। प्रि० चौधरी ने उस निर्भीक सन्यासी के कार्यों से प्रेरणा लेने की अपील की। सहयोगी शिक्षण सस्थाओ की छात्र छात्राओ ने भजन प्रस्तुत किये।

बृहद् शान्ति यज्ञ : दुर्व्यसनों का परित्याग

प्रगति सेवा मडल आणद सचालित दयानन्द बाल मन्दिर ग्राम जीटाडिया मे ३० दिसम्बर को पातजल योग साधना श्रम के सचालक स्वामी विश्वमित्रानन्द के आचायत्व म बृहद शान्ति यज्ञ हुआ। स्वामी जी का भारतीय सस्कृति के सम्बन्ध मे सारगभित प्रवचन हुआ। यज्ञ के यजमान मडल-प्रधान श्री विट्ठल भाई चावडा बने बाल मन्दिर के अध्यक्ष श्री मनु भाइ चावडा न धूम्रपानादि दुव्यसन छोडन का व्रत लिया। इस यज्ञ मे लगभग ५०० व्यक्तियो न भाग लिया। इसमे पहले भी आठ ग्रेजुएट सज्जनो ने भी उपरोक्त व्यसन त्यागने का व्रत लिया था। इस प्रकार लगभग सैकडो लोग इस व्यसन को छोडने का व्रत ले चुके है। काय को सफल बनाने और बाल मन्दिर की सुव्यवस्था के लिए निम्नलिखित व्यक्ति श्री रणछोड भाई सोलकी एम० एल० ए०, म्यूनिसिपल काउसिलर तथा शिक्षा समिति के चेयरमैन श्रीमती आशाबेन दलाल ग्राम पचायत के सरपच श्री अम्बालाल पटेल, आदि को आमन्त्रित किया गया।

सुयोग्य वर चाहिए

(1) ३० वर्षीय, कद ५ फुट १ इच, एस० एम०—सी० फस्ट क्लास फर्स्ट, १९७८ मे राष्ट्रपति का स्वर्ण पदक प्राप्त, आल इडिया मेडिकल साइसेज इस्टिट्यूट मे लेक्चरार, वेतन २२०० रु० मासिक, गौर वर्ण, सुन्दर सुशील, स्वस्थ, पिता केन्द्रीय सरकार मे प्रथम श्रेणी के अफसर पद से हाल मे ही काय निवृत्त, होशियार पुर का प्रसिद्ध पजाबी खत्री आर्यसमाजी परिवार, कन्या के लिए सुयोग्य वर चाहिए। पत्र-व्यवहार का पता—श्री सी० के० वत्स, विद्याभवन, १०४, गगन बिहार, दिल्ली-५१

(2) २८ वर्षीय, ५ फुट ३ इच, बी० ए० हरियाणा मे गणित अध्यापिका, मासिक वेतन १२०० रु०, पतली, रग गेहुआ, चश्मा धारिणी कन्या के लिए सुयोग्य वर चाहिए। जाति और दहेज का बन्धन नही। (रजिस्टेशन न० १९३), अन्तर्जातीय विवाह विभाग आर्यसमाज अनारकली, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली—१

पुरोहित चाहिए

आर्यसमाज श्रीगगानगर मे एक योग्य व अनुभवी पुरोहित की आवश्यकता है। बिजली पानी की व्यवस्था युक्त आवास के अतिरिक्त वेतन योग्यतानुसार देय होगा। इच्छुक व्यक्ति पत्र व्यवहार करें। मत्री आर्यसमाज, श्रीगगानगर (राज०)

ऋतु अनुकूल हवन सामग्री

हमने आर्य प्रेमियो के आग्रह पर सस्कार विधि के अनुसार हवन सामग्री का निर्माण हिमाचल की ताजी जडी-बूटियो से प्रारम्भ कर दिया है, जो कि उत्तम, कीटाणु-नाशक, सुगन्धित एव पौष्टिक तत्वो से युक्त है। वह आदर्श हवन सामग्री अत्यन्त अल्प मूल्य पर प्राप्त है। थोक मूल्य ४रु० प्रति किलो है।

जो यज्ञ प्रेमी हवन सामग्री का निर्माण करना चाहे वह सब ताजी हिमालय की वनस्पतिया हमसे प्राप्त कर सकते है, वे चाहे तो कुटवा भी सकते है। वह सब सेवा मात्र।

योगी फार्मेसी, लकसर रोड

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के कर कमलों द्वारा स्थापित और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित

भारतवर्ष का पुराना और उत्तरी भारत का प्रमुख अनाथालय

कुशल प्रशासक शैक्षिक ज्ञाता, उदार हृदय प्रबन्धको की देखरेख मे बालक-बालिकाओ के पालन-पोषण, शिक्षा आदि का उचित प्रबन्ध है।

आप सभी दानी महानुभाव इस पुनीत कार्य मे दान देकर पुण्य के भागी बने।—प्रि० पी० डी० चौधरी, मैनेजर आर्य अनाथालय फिरोजपुर

साप्ताहिक पत्र | ओ३म् | कृण्वंतो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

वार्षिक मूल्य-२० रुपये | विदेश मे २० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४८, अक ३, रविवार, २० जनवरी १६८५ | दूरभाष ३४३७१८
आजीवन सदस्य-२०१ रु० | इस अक का मूल्य—५० पैसे | सृष्टि सवत् १६७२६४६०८४, दयानन्दाब्द १६० | माघ कृष्णा १४, २०४१ वि०

पंजाब की शिक्षा संस्थाओं से संस्कृत का सफाया

आर्यसमाज का शिष्टमंडल केन्द्रीय शिक्षामन्त्री से मिला

पंजाब की सरकार ने न जाने किस दबाव से सभी शिक्षा सस्थाओ से सस्कृत हटाने की घोषणा की है। राज्य सरकार के इस निश्चय से देश का समस्त बुद्धिजीवी वग और विशाल हिन्दू समाज अत्यन्त क्षुब्ध है। इस सम्बन्ध मे आर्य समाज का एक शिष्टमडल केन्द्रीय शिक्षा मत्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त से मिला है और उनको निम्न ज्ञापन दिया है—

माननीय श्री कृष्णचन्द्र जी पन्त
(शिक्षामत्री भारत सरकार)।

सेवा मे सादर नमस्ते।

लोक सभा के चुनाव मे आपकी भारी विजय से आर्य जगत् मे सर्वत्र प्रसन्नता की लहर दौड गयी। समूचे आर्य जगत की ओर से आपको बधाई देता हू।

प्रधानमत्री श्री राजीव गाधी ने आपको शिक्षा मत्री का गौरवपूर्ण पद देकर अत्यन्त दूर-दर्शिता का कार्य किया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपके सेवा काल मे शिक्षा क्षेत्र मे मौलिक सुधारो के साथ भारतीय सस्कृति और सभ्यता के विकास के लिए आप निश्चित दिशा देगे जिससे राष्ट्र की भावी पीढी मे राष्ट्रीय निष्ठा तथा सास्कृतिक चैतन्य जागृत होगा।

इस अवसर पर आपकी सेवा मे एक विशेष निवेदन करना चाहता हू। पजाब ने विद्यालयो, कालेजो तथा सभी शिक्षण सस्थाओ मे सस्कृत को बिल्कुल हटा देने की घोषणा की है। इस समाचार से समूचे देश के सस्कृत प्रेमी और धार्मिक जन अत्यन्त क्षुब्ध हैं। सारा हिन्दू समाज तो इससे मर्माहत हो उठा है। वेद, उपनिषद, दर्शनशास्त्र गीता, पुराण आदि सभी ग्रथ सस्कृत मे ही हैं। उस के हटाए जाने मे विशाल हिन्दू समाज के साथ कितना अन्याय होगा और जनता को कितनी ठेस लगेगी? इसके अलावा सस्कृत केवल हिन्दुओ की या केवल भारत वासियो की ही नही, बल्कि विश्व मानवता की बहु-मूल्य थाती है।

अग्रेजो ने हमारे देश पर 150 वर्ष राज्य किया परन्तु उनमे भी यह दुस्साहस नही हुआ कि वे सस्कृत भाषा की उपेक्षा करे। किन्तु आज अपने स्वतन्त्र राष्ट्र मे सस्कृत जैसी समृद्ध तथा धर्म और सस्कृति का दर्शन कराने वाली एकमात्र समर्थ भाषा की ऐसी उपेक्षा किसी भी अवस्था मे सह्य नही हो सकती है।

अत आपकी सेवा मे मेरा नम्र निवेदन है कि समूचे देश मे सस्कृत का शिक्षण सभी शिक्षा केन्द्रो मे अनिवार्य घोषित कराने हेतु लोक सभा के आगामी अधिवेशन मे एक विधेयक पारित करावे। आज आपकी पार्टी का पूर्ण बहुमत है अत आप राष्ट्र एव सस्कृति के प्रति ऐसा पुनीत कर्म करके केवल यश के भागी ही नही बनेंगे प्रत्युत देश को उसका प्राप्तव्य देंगे। आदर व शुभ कामनाओ सहित।

भवदीय—रामगोपाल शालवाले प्रधान

आर्यसमाज के शिष्टमडल की शिक्षामन्त्री से भेट

आर्यसमाज के एक शिष्टमडल ने केन्द्रीय शिक्षामन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त से मिलकर पजाब से सस्कृत को हटाए जाने के सम्बन्ध मे एक ज्ञापन दिया। शिष्टमण्डल मे श्री रामगोपाल वानप्रस्थ, श्री ओम्प्रकाश त्यागी, दिल्ली सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव, सार्वदेशिक सभा के उपमत्री श्री आनन्दप्रकाश और श्री लक्ष्मीचन्द थे।

राष्ट्रपति मुख्य अतिथि होंगे

20 जनवरी को तालकटोरा गार्डन मे हो रहे महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के भव्य समारोह मे मुख्य अतिथि राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह होंगे। रक्षा मन्त्री श्री पी नरसिंह राव और शिक्षा मन्त्री श्री कृष्ण चन्द्र पन्त के अलावा आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान प्रो० वेद व्यास, मध्य प्रदेश आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प० राजगुरु शर्मा और प्रसिद्ध आर्य विद्वान श्री शिवकुमार शास्त्री भी सभा को सम्बोधित करेंगे। समारोह की अध्यक्षता करेंगे सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री राम गोपाल शालवाले

पथप्रदर्शक—अमर स्वामी सरस्वती | सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

अश्वमेध यज्ञ का स्वरूप

(गतांक से आगे)

—सुखदेव शास्त्री महोपदेशक आर्य सभा मौरिशस

ऊपर लिखे मन्त्र के भावार्थ में महर्षि ने स्पष्ट रूप से लिख दिया है कि 'सब संसार का उपकार करने वाला अश्वमेधादि यज्ञ' इससे पूर्व पंक्ति में महर्षि ने सर्वव्यापक परमेश्वर को भी यज्ञ रूप में प्रतिष्ठापित किया है। नीचे की पंक्ति में शिल्पविद्या' सिद्ध करके उपकार लेना यज्ञ बतलाया है। शिल्प से अभिप्राय, अनेक प्रकार के विमानों, शस्त्रों-यन्त्रों तथा कलाओं से है जिनसे समाज सुखी तथा राष्ट्र उन्नति के शिखर पर पहुंच जाता है। इससे यह सिद्ध होता है कि सर्वव्यापक परमात्मा की मान्यता तथा सर्वोपकारी, सर्वोत्कृष्ट अश्वमेध यज्ञ का आयोजन, तथा सब प्रकार की शिल्प विद्याओं की रचना करके ही संसार में सुख शांति का साम्राज्य लाया जा सकता है। ईश्वर की मान्यता के कारण सर्व पापों से छुटकारा, अश्वमेध यज्ञ से सभी दुर्वासनाओं दुर्भावनाओं, दूषित पर्यावरणों से मुक्ति तथा राजा द्वारा दुष्टों के दलन से प्रजा में सुखशान्ति का पवित्र वातावरण पैदा हो सकता है। इन सब सामाजिक सुखों की प्राप्ति के लिए अश्वमेध यज्ञ सब के लिए सदैव अनिवार्य कार्य है।

इस यज्ञ के आयोजन से समाज में शासन व्यवस्था, राज्यसंगठन सेना तथा अन्य बड़ी-बड़ी राष्ट्रीय भावनाओं का उदय किया जा सकता है। इस यज्ञ के द्वारा निर्वाचित कोई भी राजा या प्रधानमन्त्री, सेनापति, इस तत्व को ग्रहण करके सारे संसार में एक ही शासन प्रणाली हो ऐसा सोच सकता है। इस प्रकार की राज्य शासन प्रणाली आर्यावर्त्त के सम्राटों द्वारा सदैव करोड़ों वर्ष तक चालू रखी थी। अतएव उन्होंने अश्वमेध यज्ञ का आविष्कार किया था।

सत्यार्थप्रकाश

महर्षि दयानन्द सरस्वती से ग्यारहवें समुल्लास में प्रश्न किया गया है कि—अश्वमेध यज्ञ, गोमेध, नरमेध आदि शब्दों का क्या अर्थ है?

महर्षि ने उसका उत्तर देते हुए लिखा—इनका अर्थ तो यह है कि—

"राष्ट्रं वा अश्वमेधः। अन्नं हि गौः। अग्निर्वा अश्वः। आज्यं मेध (शतपथ ब्राह्मण)"

देखो! राजा न्याय धर्म से प्रजा का पालन करे, विद्यादि का देने हारा यजमान और अग्नि में घी आदि का होम करना (अश्वमेध), अन्न, इंद्रियां, किरण, पृथिवी आदि को पवित्र रखना गोमेध, जब मनुष्य मर जाए तब उसके शरीर का विधिपूर्वक दाह करना 'नरमेध' कहाता है। अग्नि को अश्व भी कहा है।

इन उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर में महर्षि ने अग्नि में घी का होम करना अश्वमेध यज्ञ माना है। जो कि होम परोपकार के लिए ही होता है।

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

इसी विषय को महर्षि दयानन्द सरस्वती ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के राजधर्म विषय में पुनः उठाते हुए कहते हैं—

'राष्ट्रं वा अश्वमेधः' राष्ट्रपालनमेव क्षत्रियाणां अश्वमेधाख्यो यज्ञो भवति नाश्वं हत्वा तदङ्गानां होमकरणं चेति।

जो न्याय से राज्य का पालन करना है वही क्षत्रियों का अश्वमेध कहाता है। किन्तु घोड़े को मारकर उसके अंगों का होम करना यह अश्वमेध नहीं है। महर्षि ने कितने अच्छे ढंग से परोपकारी यज्ञ अश्वमेध का वर्णन किया है।

इसी प्रकार राजा प्रजाधर्म विषय में ही महर्षि यजुर्वेद अध्याय बीस, मन्त्र दस—'प्रतिक्षत्रे प्रति तिष्ठामि'... आदि के अन्तिम पद-प्रतिष्ठावा पृथिव्यां प्रति तिष्ठामि यज्ञे' की व्याख्या करते हुए लिखते हैं—

जितना सूर्यादि प्रकाशरूप और पृथिव्यादि अप्रकाशरूप जगत् तथा जो अश्वमेधादि यज्ञ हैं इन सब के बीच में भी मैं सर्वदा व्यापक होने से प्रतिष्ठित रहता हूं। यह परमात्मा ने मनुष्यों के लिए स्वयमेव कहा कि मैं अश्वमेध यज्ञ में प्रतिष्ठित रहता हूं, परमेश्वर सर्वत्र व्यापक है।

विशेषरूप से अश्वमेध यज्ञ के अति उपकारी कार्य होने के कारण परमात्मा अपनी प्रतिष्ठा दिखाता हुआ अश्वमेध यज्ञ करने की प्रेरणा सब मनुष्यों को देता है। इसी की प्रेरणा अथर्ववेद के ग्यारवें काण्ड के ७वें मन्त्र में भी अश्वमेध यज्ञ के ईश्वर में निहित होने के कारण दी गई है। साथ ही इस यज्ञ को 'जीववर्हिमदिन्तम' अर्थात् जीवों की उन्नति करने वाला व्यवहार जो कि मदिन्तम—बहुत ही हर्ष देनेवाला माना गया है।

एक भ्रम और उसका निवारण

मुख्यतः यज्ञ के पर्यायवाची 'मेध' शब्द को अजमेध गोमेध, पुरुषमेध, अश्वमेध इत्यादि शब्दों को देखकर, असल में तो-वेदों में अश्वमेध शब्द को छोड़कर अन्य शब्दों का प्रयोग नहीं पाया जाता। वैदिक यज्ञों में पशुहिंसा—विधान का भ्रम हुआ यह स्पष्ट प्रतीत है।

मेध् धातु के 'मेधा संगमने हिंसायां च' इस धातुपाठ के अनुसार मेधा वा शुद्ध बुद्धि को बढ़ाना, लोगों में एकता व प्रेम को बढ़ाना और हिंसा ये तीन अर्थ होते हैं, हिंसा ही उसका एक मात्र अर्थ नहीं है जैसा कि प्रायः लोग भ्रम से समझ लेते हैं। ऐसी अवस्था में कोई कारण नहीं कि हिंसा अर्थ पर ही क्यों आग्रह किया जाए जब कि निम्नलिखित तथा अन्य पुष्ट प्रमाणों से और सामान्य बुद्धि द्वारा हिंसा अर्थ का ग्रहण सर्वथा असंगत प्रतीत होता है।

पुरुषमेध, पुरुष यज्ञ और नृयज्ञ ये तीनों शब्द पर्यायवाचक हैं, और मनुस्मृति में नृयज्ञ की व्याख्या 'नृयज्ञोऽतिथिपूजनम्' (मनु ३-७०) इस प्रकार की गई है। जिसका अर्थ यह है कि नृयज्ञ वा नृमेध से मनुष्यों की यज्ञ में बलि देने का तात्पर्य नहीं, बल्कि उत्तम विद्वानों विशेषतः अतिथियों की पूजा का उस में भाव है।

मेधृधातु के संगमनार्थ को लेने से मनुष्यों को उत्तम कार्यों के लिए संगठित करना, उनमें प्रेम और एकता को बढ़ाना नृमेध का तात्पर्य है। प्रमाण के रूप में—

सामवेद उत्तरार्चिक अध्याय ४२ मन्त्र देखें—

"आहरय: समृञ्जिरेऽरुपीरधिर्हिषी। यत्राभिसंनवामहे"

इस मन्त्र के नृमेध पुरुमेध ऋषि हैं। अष्टम प्रपाठक के 'पर्षि तोकं तनयम्' इस मन्त्र का ऋषि नृमेध है।

उसका अर्थ मनुष्यों की यज्ञों में बलि चढाने वाला नहीं, अपितु मनुष्यों में संगतिकरण वा मेलमिलाप को बढ़ाने वाला है। यह स्पष्ट हो गया है। ऐसे ही गोमेध के विषय में भी समझ लेना चाहिए।

इसी प्रकार अश्वमेध के अर्थ भी वास्तविक रूप से अन्य अर्थ हैं, इस बात का ब्राह्मण ग्रन्थों तथा महाभारत आदि में स्पष्ट निर्देश दिया गया है। उदाहरणार्थ देखिए— शतपथ ब्राह्मण (१३-१-६) में कहा है—राष्ट्रं वा अश्वमेध। 'वीर्यं वा अश्वः।' (क्रमशः)

सुभाषित

भर्तृ पिण्डमुपाश्नन् यो राजद्विष्टानि सेवते ।
सोऽपि मोहमापन्नो मृतो जायति वानर ।।
महाभारत अ० १११/६४

जो व्यक्ति भरण पोषण करने वाले राजा का या देश का अन्न खाकर भी मोह मे पडकर देश द्रोहियो की सेवा करता है, वह मरने के बाद बदर बनता है ।

गंगा के साथ राम-कृष्ण जन्म स्थान भी

—अभय वाजपेयी—

राजीव गाधी ने चुनाव जीतने के बाद, प्रधानमत्री के रूप मे अपने पहले राष्ट्र व्यापी प्रसारण में जिस निष्ठा और सवेदनशीलता के साथ देशवासियो से अपने नए कार्यक्रम मे सहयोग देने का अनुरोध किया है उससे राष्ट्र मे श्री गाधी के प्रति सद्भावना, सहयोग-भाव तथा वस्तुत उन्हें काम करने का अवसर देने की इच्छा का उदय होना स्वाभाविक है। नए नेता ने प्रशासन को, नीतियो को, एक नयापन देने मे और जनता तक नए-पन का सदेश पहुचाने मे सफलता पाई है । चालीस वर्षीय नेता ने पिछले सेंतीस वर्ष मे अधिक आयु के प्रधानमत्रियो द्वारा किए गए ऐसे ही प्रसारणों से अधिक प्रभाव डाला है । यह निश्चत रूप से आम आदमी की प्रतिक्रिया है ।

इस देश के सामने समस्याओ की कोई कमी नही है और उन्हे उलझाने वाले भी बहुत हैं । इसमे विपक्ष पर पूरा दोष लादा जाता है । पर यह तो मानना ही पड़ेगा कि विपक्षी दलो को सत्ता पक्ष की कमजोरियो, गलतियो, उलझनो से लाभ उठाने का अधिकार है । आखिर वे जब जनता के सामने जाते हैं तो अपने विपक्ष, सत्ता पक्ष का लेखा-जोखा प्रस्तुत कर उसकी कमजोरियो पर ही तो अपनी ताकत का आधार बनाने का प्रयास करते हैं । ऐसी स्थिति मे उन्हें समस्याओ को उलझाने के लिए अधिक दोष देना व्यर्थ है। केवल यह सही हो सकता है कि जो दल या गुट आतकवादी, राष्ट्र विरोधी कार्यों मे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हों उन्हें दोषी ठहराया जाए । ऐसे दलों को जनता ही सजा देगी, यदि कानून के अनुसार शासन दंड न दे सके ।

समस्याओं के बावजूद नए प्रधान मत्री ने अपने प्रसारण में उन्हे हल करने में कदम बढ़ाने के लिए कहीं शिथिलता नहीं दिखाई, समस्याओं को लटकाने का उपक्रम नहीं किया है, बल्कि उन्हें प्राथमिकता के आधार पर हल करने की पहल का सकेत दिया है । इनमें सबसे पहली और असली समस्या तो पजाब की ही है। सतोष का विषय है कि प्रधानमत्री ने उस समस्या को हल करने के लिए हाथ बढ़ाया है और अब दूसरे पक्ष को देश-हित में उसका सद्भावनापूर्ण, सहयोगात्मक उत्तर देना चाहिए । इसके लिए जरूरी है कि दिल साफ हों, व्यापक देशहित को ध्यान में रखा जाए और समस्या के दूसरे पक्ष को यह अहसास हो कि सत्तापक्ष की भारी जीत के बाद पजाब के इस विरोधी दल को अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए रचनात्मक, शान्तिपूर्ण एव सकारात्मक भूमिका निभानी होगी, नकारात्मक या आतकवादी नहीं ।

दूसरी बडी समस्या असम की है जहा विदेशी घुसपैठियो के कारण असम के मूल निवासियों-भारतीयों की सख्या का प्रतिशत ही गिरने लगा है । इसे नई मतदाता सूचियां 1971 के आधार पर तैयार कर कुछ सीमा तक हल किया जा सकता है । इससे पहले जो आ गए उनका पता लगना मुश्किल है तथा उन्हे निकालना तो और भी मुश्किल। वे तो अब असम या अन्य निकटवर्ती राज्यों के जनजीवन मे इतने घुल मिल गए हैं कि उन्हे अलग करना ही सभव नही । इसीलिए ऐतिहासिक 1971 को आधार वर्ष बनाने की माग बहुत समय से थी, जो चुनाव आयोग द्वारा भी अपनी भी ओर से स्वीकार कर ली गई है ।

असम के गलत चुनावो मे गलत रूप से जीते मुख्यमत्री हितेश्वर सैकिया 1979 की सूची पर मजबूती से जमे रहे थे क्योकि उनकी विजय का आधार ही वह मतदाता सूची है जिसमें बडी सख्या विदेशियो की है । विधानसभा चुनाव में जिन्हें मतदाता बनाया गया था उसमे से बहुत बडी सख्या को लोकसभा चुनावो में, जो कुछ समय में असम मे कराए जा सकते हैं, मतदाता सूची मे से निकाल देना व्यावहारिक तो नहीं लगता, पर उचित अवश्य है । यह काम किस प्रकार जल्दी से जल्दी हो सकेगा, यही समस्या है जिसका समाधान केन्द्र सरकार की तत्परता पर निर्भर है । चुनाव आयोग का अमला तो बाद में इस पर अमल कर सकेगा, चाहे मुख्य रूप से यह उसी का काम है ।

राजीव गांधी ने अपने प्रसारण मे प्रशासन को सुधारने और दायित्व निर्णय के विकेन्द्रीकरण को प्रोत्साहन देने की जो घोषणा की है उसका निश्चित रूप से स्वागत किया जाएगा क्योकि यदि ऐसा हो सके तो इस देश की अनेक समस्याए हल की ओर अग्रसर होने लगेंगी । प्रशासन आज देश की जनता पर न केवल बड़ा बोझ है बल्कि प्रगति की योजनाओं की गति रोकने वाला भी बन जाता है । लालफीताशाही, अनेक नियमों-कानूनों में जकड़ने की जनता की नियति यदि खत्म होती है तो प्रशासन से लोगों का लगाव बढ़ेगा और उसे गतिरोधक कोई नहीं समझेगा । प्रशासन की चुस्ती, भ्रष्टाचार रहित स्वरूप और जिम्मेदारी तय करने के पक्ष से इस देश की तेज प्रगति हो सकेगी, यह निश्चित है ।

इस देश में आज की स्थिति के अनुसार कोई भी नागरिक अपने को सुरक्षित नहीं मानता । वह दिन गए जब गहने पहनकर महिलाए रात को भी बाजार मे घूम सकती थी । (कुछ स्थान अपवाद हो सकते हैं) और सामान लेकर कोई कुली मालिक साथ न होने पर भी पता दिए जाने पर सब कुछ सुरक्षित रूप से घर पहुचा देता था । आज सुरक्षा और ऐसी ईमानदारी अपवाद ही है । फिर हाल के उपद्रवों और लूटमार ने समाज विरोधियो का उत्साह और भी बढा दिया है । सुरक्षा, प्रशासन को गति और जिम्मेदारी, निर्णय की जिम्मेदारी—देने से, पुलिस को रक्षक का सही दर्जा मिलने से आम जनता की कठिनाइया बहुत सीमा तक दूर हो जाए गी, यह निश्चित है ।

इस देश मे विकास के नाम पर विनाश का जो भयावह नाटक चल रहा है उसमें वनों, वनकर्मियो, ठेकेदारो और कही-कही राजनीतिज्ञो/नेताओ का भी भरपूर योग है, स्वार्थ है । राजीव गाधी स्वय राष्ट्रीय निधि तथा पर्यावरण सरक्षण कार्य के लिए प्रतिबद्ध हैं और स्वाभावत उनका ध्यान इन प्रश्नो की ओर गया है । वन इस देश की सम्पदा है और उनका सरक्षण, तथा व्यवस्थित रूप से विकास का अर्थ देश को समृद्धि के अगले पडाव पर तेजी से ले जाना है । वृक्षारोपण कर देशव्यापी अभियान यो तो पचास के दशक मे तत्कालीन कृषि मत्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी ने वन महोत्सव के नाम से शुरू किया था पर तब अनेक ने इसका मजाक उडाया था । जब सजय गाधी ने इसे अभियान के रूप में लिया तो उसकी उपयोगिता के बारे में किसी को सदेह नहीं रहा, चाहे अनेक ने उसमें भी भ्रष्टाचार का तरीका खोज लिया था। वन विकास कार्यक्रम बहुत तत्परता से तो चलाना ही होगा पर श्री गाधी को अपने कम्प्यूटरीकृत प्रबध से ऐसी भी व्यवस्था करनी होगी जिससे वहा भ्रष्टाचार की कोई गुजाइश न रहे । इस विभाग में बेईमानी की कोई सीमा नहीं है ।

प्रधानमत्री ने पर्यावरण को सुधारने के अपने लक्ष्य के अनुसार और संभवत इस देश की सस्कृति मे विशिष्ट स्थान रखने के कारण गगा को सुधारने, सवारने सुन्दर, प्रदूषण रहित बनाने का इरादा प्रकट किया है । आज सबसे पवित्र माने जाने जाने वाले स्थान दशाश्वमेध घाट (वाराणसी) मे गगा का जो घिनौना रूप नजर आता है, शायद और कहीं नही होगा । वहा पवित्रता की बात तो दूर, सफाई भी कोसो दूर है । वहा के पानी मे नहाने की इच्छा नही होती । वहा का पानी मरते के मुह मे डालना तो दूर जिन्दे के मुह मे डालनो भी कठिन है । उसी गगा मे शहर के नालो की गदगी, अनेक स्थानो पर कारखानो का कचरा, प्रदूषित पानी और कूडा सब कुछ आकर मिलता है । उसे विशाल अभियान के द्वारा फिर से पवित्र पावन भागीरथी बनाने का कार्य किसी भी भगीरथ प्रयत्न से कम नही होगा । युवा नेता ने यदि इसी अर्ध-दशक मे इसे किसी सीमा तक पूरा कर दिया तो वह ऐतिहासिक उपलब्धि होगी।

गगा से वैसे तो सभी नागरिको की भावनाए जुडी होनी चाहिए पर विशेष रूप से हिन्दू इसे माता मानते हैं । इसे प्रदूषण रहित बनाने का कार्य तो उत्तम ही है पर साथ मे यदि यमुना तीर और सरयूतीर का काम भी राजीव गांधी करवा सके तो यह उन्हें अत्यधिक भारी बहुमत से विजयी बनाने वाले बहुसख्यको की भी हार्दिक इच्छा की पूर्ति होगी । एक अन्याय जो न जाने कब से चला आ रहा है, दूर हो जाएगा । यह कार्य है अयोध्या (राम जन्म स्थान) और मथुरा (कृष्ण जन्म स्थान) की मुक्ति । दोनो स्थान हिन्दुओ के लिए परम पावन हैं । उन्हे अतिक्रमण से मुक्त करना है, मुगलकाल के अतिक्रमण और बाद के कानूनी शिकजे से भी । इसमे साम्प्रदायिकता नही, बल्कि एक अन्याय का प्रतिकार, न्याय दिलाना ही देखा जाना चाहिए ।

आवश्यक नही कि राजीव गाधी कल ही इसकी घोषणा करें क्योकि इसे कुछ लोगो ने नाजुक मामला भी बना दिया है । आशा करनी चाहिए कि जहा अल्प सख्यको की सुरक्षा और सरक्षण की बात होती है वहीं बहुसख्यको की उपेक्षा की बात नही आएगी, उनके हितों की चिन्ता भी उसी प्रकार होगी । इसी से साम्प्रदायिक सद्भाव भी बना रहेगा और बहुमत के व्यापक सरक्षण की व्यवस्था भी । □

वैदिक साहित्य का प्रचार

पाटण गुजरात में श्री डोंगरे महाराज की कथा मे वैदिक साहित्य बिक्री केन्द्र खोला गया । इस अवसर पर 'आर्य समाज के नियम' और 'आर्य समाज का कार्य' नामक ट्रैक्ट निशुल्क वितरित किए गये ।

उस पंच परमेश्वर की गवाही में

—प्रभाष जोशी—

इस देश के वोटर मे कुछ खुदाई फितरत है। देता है तो छप्पर फाड कर देता है। फिर चुपचाप और बारीकी से जाचता भी रहता है। और जब सजा देता है तो उसी सख्ती और बेरहमी से। असम और पजाब मे चुनाव नही हुए फिर भी राजीव गाधी को कोई चार सौ सीटें मिल रही हैं जो जवाहरलाल और इदिरा गाधी को भी उसने नही दी थी। लेकिन जिस इन्दिरा गाधी का मगल श्राद्ध करते हुए उसने उसके अनपरखे और जवान बेटे को लोकतात्रिक दुनिया की सबसे ज्यादा ताकत थमा दी उसी को 1977 मे पटना से अमृतसर तक एक सीट नही दी थी। अपने यहा पच को परमेश्वर यो ही नही कहा गया है। परमेश्वर ही एक साथ इतना उदार और दयालु और इतना सख्त और निर्दयी हो सकता है।

अपनी मा के खून से सनी गद्दी छोड कर लोकगगा से धुले और पच परमेश्वर द्वारा दिए गए आसन पर जब राजीव रत्न गाधी बैठ तो अपने देश के वोटर की इस फितरत को याद रखें। यही उनके सबसे ज्यादा काम आनी है। उन्हे जो सत्ता मिली है वह अच्छे-अच्छे विश्वामित्रो की नीयत बिगाड सकती है। जिसके सिर पर गचने के लिए अकुश न हो वह ऐरावत पागल हो सकता है। वोटर ने लगभग उन सभी विपक्षी नेताओ को ससद से बाहर कर दिया है जो लोकतात्रिक सत्ता के अनिवार्य अकुश का धर्म निभा सकते थे। बाहर भी सगठित विपक्ष सिर्फ नाम भर के लिए बचा है। काग्रेस मे वे जडो वाली सस्थाए और लोहे की अनदिखती लकीरो जैसी परमपराए नही बची है जो लोकमत्ता की ऊर्जा को धरती के गर्भ से शिखर तक और शिखर से वापस धरती तक पहुचाती रहती हैं। बल्कि जगह-जगह निहित-स्वार्थों ने तार डाल कर गैरकानूनी कनेक्शन ले रखे है जिनसे बिजली चुरा कर वे काले धधे का माल बनाते रहते है और बिजली को नीचे जाने ही नही देते।

ऐसी बिजली चुराने वाले वैसे तो सब पार्टियो मे है पर सबसे ज्यादा काग्रेस मे हैं। जो बिजली चुरा कर काले धधे का माल बनाते हैं उन्हे चपरासी से लेकर ग्राहक तक को रिश्वत देनी पडती है। एक डाकू भी फिरौती मे जो एक लाख रुपया वसूलता है उसमे से कोई दस हजार ही उसके पल्ले पडते हैं। बाकी के नब्बे हजार थानेदार से आई जी और गृहमत्री तक और इनके बीच के लोगो मे बट जाते हैं। यह भ्रष्टाचार नही है। यह सपदा के वितरण की एक काली पद्धति है जो समाजवादी समाज रचना के लिए हमने विकसित की है। एक तरफ हमारा सविधान है, ससद है और कायदे-कानून हैं जिनको लागू करने के लिए सरकारें हैं। वह पूरा तामझाम हमारे पास है जो सामाजिक न्याय और सपदा के बराबरी वाले वितरण की गारटी कर सके। इस ढाचे को हमने एक हिमालयी कारखाने की तरह खडा कर रखा है लेकिन इसमें जरूरी वोल्टेज की वह सफेद और उजली बिजली नहीं मिलती जो इसे दिन के उजाले मे चला सके और जिससे बना माल गरीब के घर का चूल्हा जला सके। अगर इस ढाचे पर जान लगा कर कोई जीना चाहे तो ईमानदारी मे भूखों मर जाएगा।

लेकिन जो खभे पर तार डाल कर बिजली (सत्ता) की चोरी करता है और जिसके काले धधे का कारखाना तहखाने मे छुपा है वह सिर्फ बिजली ही नीचे तक नही जाने देता। इस काली बिजली से जो कुछ बनाता है उसे चलाने के लिए भी नीचे से लेकर ऊपर तक काला पैसा बाटता है लेकिन उसी को जो उसका कारखाना बद करवा सकता है। समानातर काले समाजवाद मे सचमुच ही ताकत बदूक की गोली से निकलती है। इसलिए तरक्की की भैंस उसी के पिछवाडे बधी दूध दे रही है जिसकी लाठी है। काली सपदा के वितरण की यह समानातर पद्धति सामाजिक न्याय और समाजवादी समाज रचना के हमारे विराट सपने को इसीलिए सच नही होने देती क्योंकि शिखर पर बैठे नेता ने जगह-जगह गैरकानूनी कारखाने बनाने की छूट दे रखी है जो लोकगगा से बनी बिजली की चोरी से चलते हैं और उससे बने काले माल का एक बडा भाग ऊपर पहुच जाता है।

बिजली चोरी करके कारखाने चलाने वालोसे थानेदार तक मे आख मिलाने की ताकत नही होती क्योंकि वे जानते हैं कि इस चोरी मे कितने उनके भागीदार हैं। लेकिन ऐसे थानेदार क्या आई जी तक मे ताकत नही होती कि वे ऐसे कारखाने के कारकुन तक को पकड सकें क्योंकि उन्हें मालूम है कि उनका घर इसी कारखाने के माल से लकदक है। एक मत्री भी ऐसे कारखाने को यूनियन कारबाइड के ज्वालामुखी की तरह चलने देता है क्योंकि उस मत्री के भी दस रिश्तेदार उससे मोटी तनखाए ले रहे हैं। ऐसे सारे लोगो की रीढ़ मे हड्डियाँ नही, लचीले रबडके डडे लगे रहते हैं। इन लोगों के हाथ फौलादी मुट्ठी मे तन नही सकते क्योंकि वे कधे पर एक मूठ के नट-बोल्ट से कसे हुए हैं और सिर्फ कोरनिश मे नीचे से ऊपर उठ कर सिर से लग कर नीचे उतर आते हैं। ऐसे हाथ सिर्फ एक हाथ को मजबूत करने का दावा कर सकते हैं। ऐसे गलो से सिर्फ जयजयकार निकलती है, समझदार असहमति की हुकार नहीं। इनके लिए हमेशा आनेवाला का बोलबाला है और जानेवाला का मुह काला काले धधे की यह समानातर वितरण व्यवस्था और रबड की रीढ़ वाले ये समानातर वितरण लोग समतावादी समाज रचना के हिमालयी कारखाने को लोकगगा से बनी बिजली सही वोल्टेज मे नही लेने देंगे। ये सत्ता को धरती के गर्भ से शिखर तक और शिखर से वापस धरती के गर्भ तक एक जैविक चक्र में नही चलने देंगे।

यह काली छाया मूरत को असल नही होने देती। इस छाया को क्या राजीव गाधी तोड सकते हैं? चार साल मे उनके बारे मे कहा गया है कि वे सत्ता के भूखे और अनकमाई ताकत का गैरकानूनी इस्तेमाल करने वाले आदमी नही हैं। वे साफ-सुथरे और मित भाषी मृदु आदमी हैं जो सत्ता और शान-शौकत के बडबोलेपन को स्वभाव से ही नापसद करते हैं। चूकि सजय गाधी की मृत्यु एक हवाई दुर्घटना मे हुई थी इसलिए मा इदिरा गांधी ने उनसे जहाज उडाने की नौकरी छुडवाई और उनकी इच्छा न होते हुए भी उन्हे राजनीति मे उसी तरह की मदद करने के लिए बुलाया जैसी सजय किया करते थे। लेकिन सजय अपनी इच्छा को बुलडोजर की तरह चलाते थे और अपने सामने किसी को कुछ नहीं समझते थे। जबकि राजीव सबकी सुनते हैं और मा की छाया की तरह रहते हैं। कश्मीर मे फारूक को और आध्र में रामराव को हटाने की साजिश उनकी बनाई बताई जाती है। लेकिन इसके बावजूद 31 अक्तूबर 1984 तक वे अपनी मा की कुछ ऐसी डमी माने जाते थे कि उनकी छवि चारित्रिक शक्ति और दमगुर्दे वाले आदमी की नहीं थी। एक हादसे ने मूरत को गायब कर दिया और दो महीने बाद देश ने एक प्रतिमूर्ति को सिंहासन पर बैठा दिया। प्रतिमूर्ति से असली शक्ति बने राजीव गांधी असल से ज्यादा ताकतवर और व्यापक समानातर की इस काली छाया को किस तरह मिटाएगे?

एवजी प्रधानमत्री के नाते उन्होंने कहा था कि वे राज्य की मशीनरी को अच्छी तरह चलाना चाहते हैं। उनका जोर काबिलियत से काम करने वालो का हौसला बढ़ाने और आलसी और भ्रष्ट लोगों को सजा देने पर था। यानी कुल मिला कर वे मानते हैं कि हमारे ढाचे मे कहीं कोई खराबी नहीं है। जो पद्धति हमने अपनाई है उसमें भी कोई बुनियादी नुक्स नही है। जरूरत है इस ढाचे को और इस पद्धति को हुनर और चुस्ती से चलाने की। चूकि यह अभी तक नहीं हुआ इसलिए दफ्तरों मे काम, कारखानो में उत्पादन और खेतों में पैदावार बराबर नहीं होती। एक बार ठीक से तेल पानी करके इस मशीन को हुनरमदी से चलाया जाए तो सब ठीक हो सकता है। यह सीधा-साधा नुस्खा गलत है। अगर हमारे ढाचे और हमारी पद्धति मे कोई बुनियादी गलतियां नहीं होती तो चौंतीस साल की नियोजित अर्थ-व्यवस्था मे गरीब ज्यादा गरीब और अमीर ज्यादा अमीर नही होते। तरक्की और रईसी के जो चमकीले द्वीप हमे दिखाए जाते हैं वे गरीबी, भुखमरी और सब तरह के अभावों के काले समुद्र से घिरे हुए हैं। ये द्वीप इसलिए बने हैं कि कुदरत के साधन और लोगो का उपभोक्तावादी शोषण करके सपदा बनाने की जो पद्धति और ढाचा हमने पश्चिम से उधार लिया है वह हमारे जैसे विशाल और करोडों लोगो के देश को कुदरत और लोगों के शोषण की वह सुविधा और बेशर्मी नहीं देता जो अमेरिका, ब्रिटेन और पश्चिम के दूसरे देशो को एक सदी पहले मिली हुई थी। बल्कि ऐसे बाहरी साम्राज्यवादी पूजीवादी शोषण के हम खुद शिकार रहे हैं और अभी कुछ हद तक हैं।

जब हम इस ढाचे और पद्धति को अपने देश पर लगाते हैं तो अपने ही कुदरती साधनो और अपने ही लोगो का वैसा शोषण करते हैं जैसा पहले साम्राज्यवादी पूजीवाद करता था। जिस तरह पश्चिम के देश अपने उपनिवेशो का शोषण करके अमीर हुए उसी तरह हमारे यहाँ कुछ वर्ग अपने ही साधनों और लोगो का शोषण करके अमीरी के द्वीपों की तरह ऊपर उठ आए हैं। इस देश की बुनियदी समस्याए अभी भी करोडों लोगो को उत्पादक रोजगार देने, उन्हें घर, कपडा और पीने का साफ पानी देने की है। पश्चिम की पूजी और मशीन आधारित तकनीक की चाबी से हमारे दरवाजे पर जडा जग खाया ताला खुलेगा नही। अगर हम सचमुच सबके लिए बुनियादी सुविधाए देना चाहते हैं तो हमे अपने साधनों और लोगो का ऐसा उपयोग करना होगा कि अमीर की अमीरी उसी अनुपात मे घटे जिसमे गरीब की गरीबी घटती जाए। ऐसी तकनीक हमे खुद बनानी है। पश्चिमी ढाचे को हम यहा कितनी ही काबिलियत से चला लें हमारी समस्याए हल नहीं होगी क्योंकि ये समस्याए औद्योगिक समाज की कोख से जन्मे तकनीकी समाज की नही हैं।

काबिलियत जरूरी है लेकिन हमें तकनीशियन नही, नया ढाचा बनाने वाले सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक इजीनियर चाहिए जो आविष्कार की प्रतिभा का चमत्कार दिखा सकते हो। कपनियो और राजनैतिक गुटों के मैनेजरों के बस का काम यह नही है। और यह सब करवाने के लिए भी चुनाव जीतने

(शेष पृष्ठ १० पर)

परिवार नियोजन का असली उपाय

संयमी जीवन... संयमी जीवन...संयमी जीवन

सयमी जीवन से परिवार नियोजन अनुसंधान संस्थान के राष्ट्रीय सम्मेलन मे दिया गया भाषण। स्वामी चिन्मयानन्द की अध्यक्षता मे बम्बई मे हुए इस सम्मेलन मे महाराष्ट्र के राज्यपाल, मुख्यमन्त्री तथा अन्य विशिष्ट अधिकारी भी उपस्थित थे।

—श्री चमनलाल, पूर्व प्रधान आर्यसमाज, अशोक विहार—

आज के युग मे जहा विज्ञान के नाना प्रकार के आविष्कार करके मानव जीवन के लिए अनेक सुख सुविधायें जुटाई हैं, वहा अनेक समस्याओं को भी जन्म दिया है। विश्व के सारे ही राष्ट्र चाहे वे निधन हों या धनी, बडे हो या छोटे, विकसित या अविकसित, सभी इन समस्याओ से पीडित है। जलवायु प्रदूषण की घिनौनी समस्या सभी देशो के लिए चिन्ता का विषय बनी हुई है। परमाणु अस्त्र-शस्त्रो के सग्रह करने की होड मे लगे कुछ समृद्ध बडे देश सभी छोटे बडे विकासशील देशो के लिये महान आतक का कारण बने हुए हैं। किन्ही वैज्ञानिको का यह भी मत है कि कुछ ही वर्षों के पश्चात विश्व के खाद्यान्न की कमी का घोर समस्या के उत्पन्न होने की भी भारी सम्भावना है। परन्तु सबसे बडी भयानक समस्या जो दक्षिणी अमेरिका, अफरीका, एशियायी देशो विशेषकर भारत के लिए महान चिन्ता का विषय बनी हुई है, वह है जनसख्या की वृद्धि। इसमे भी कुछ सन्देह नही है कि कुछ विकसित देशो की सरकारे तो जनता को अधिक से अधिक बच्चे उत्पन्न करने के लिए उनको तरह-2 से पुरस्कृत करके प्रोत्साहित भी करती है। परन्तु भारत जैसे विशाल लेकिन गरीब देश मे इस बढती हुई आबादी की समस्या ने एक घोर विकट रूप धारण किया हुआ है। इस विषय मे चिन्ता प्रकट करते हुए स्वर्गीय पण्डित जवाहरलाल ने एक बार कहा था—"There are as many problems in India as there are people But the problem of problems according to him was too many people" कहा जाता है कि इस देश में प्रति तीन सैकेण्ड में दो बच्चे जन्म लेते हैं और इस प्रकार प्रतिवर्ष आस्ट्रेलिया की आबादी के बराबर हमारी जनसख्या बढ़ जाती है और अनुमान लगाया जाता है कि शताब्दी के अन्त तक (दो हजार इस्वी तक) इस देश की आबादी एक सौ करोड से अधिक हो जायेगी।

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् गत सैंतीस वर्षों में खाद्यान्न की उपज दुगनी से भी अधिक हो गई है, जीवनोपयोगी सभी वस्तुए पर्याप्त मात्रा मे बनने लगी हैं। आधुनिक तकनीकों का प्रयोग करके जनता के जीवन को सुखद बनाने का भरसक प्रयास किया जा रहा है। मकानों स्कूलो, शिक्षा सस्थाओ, हस्पतालो की भी कुछ कमी नहीं है। रोजी रोटी के साधन भी पर्याप्त मात्रा मे जुटाये जा रहे हैं परन्तु तो भी जनता मे अशांति फैली हुई है। कोई भी वस्तु सुविधा से उचित दामो पर उपलब्ध नही है। सभी का अभाव प्रतीत हो रहा है। अत इस भयानक स्थिति का एक मात्र कारण "जनसख्या का तीव्र गति से बढना" बताया जाता है। यह सत्य है कि कोई भी सरकार बढती हुई आबादी की भौतिक दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने मे असमर्थ होती है। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री Malthus said that 'Population increases in geometrical progression where as its means of sustenance increase in arithmetical progression"

सफलता क्यो नही

यद्यपि सरकार इस भयकर स्थिति से निबटने के लिए कटिबद्ध है। शिशु निरोध के लिये तरह-तरह की योजनायें बनाकर और करोडो रुपये के बजट बनाकर और युद्ध स्तर पर इसका अभियान चलाकर जनसख्या की वृद्धि को रोकने मे सलग्न है। तो भी यह स्थिति नियन्त्रण मे नही आ रही है। अत इसके कारणो को खोजने की आवश्यकता है। निरक्षरता, पिछडापन, गरीबी, आदि अनेक कारणो के अलावा यहा के निवासियो के कतिपय वर्गों की धार्मिक मान्यताये और जीवन के प्रति भोगवाद और विलासिता का दृष्टिकोण भी शिशु निरोध के कार्यों मे बाधक होने के कारण सरकार को इस विषय में वाछित सफलता नहीं मिल रही है। इन लोगो का खान पान, रहन-सहन उत्तेजक होने के साथ साथ बहुपत्नी रखने का धार्मिक विधान इस कार्य मे महान बाधक है। इस पर खूबी यह है कि गृहस्थ जीवन (जो सन्तान उत्पत्ति का एक मात्र साधन है। बिताने की कोई सीमा भी तो निर्धारित नही है। जब तक जनन शक्ति है, इस कार्य मे लोग लगे रहते हैं।

जनगणना के सरकारी आकडो से स्पष्ट है कि प्रतिशत इस वर्ग के लोगो की आबादी औरो की अपेक्षा अधिक बढती है और इस के साथ ही ये लोग सरकारी हस्तक्षेप का अपने धर्म मे अनुचित समझते हैं। दूसरी ओर इसी देश में एक बडा वर्ग हिन्दू धर्मावलम्बियों का है जो देश की बान और शान हैं। इनके धर्म ग्रन्थो मे मानव जीवन को ससार यात्रा का एक पवित्र साधन माना गया है। उपनिषद और श्रुति ग्रन्थो मे मानव को भोग विलास विषय वासना के निकृष्ट जीवन मे न फस कर दिव्यता का जीवन बिताने का सुन्दर उपदेश किया है। जिसके अन्तगत आत्म सयम का जीवन-बिताने और ऋतुगामी होने के विशेष आदेश स्थान स्थान पर मिलते हैं। जीवन के किसी भी समय मे किंचित भाव भी भोग और विलासिता का सकेत तक नहीं मिलता मानव जीवन विलासिता के लिए नहीं है।

वैदिक धर्म की विशेषता

सनातन वैदिक हिन्दू धर्म किसी सकुचित वर्ग विशेष का धर्म नही है। यह धर्म जीवन बिताने की एक सुन्दर पवित्र पद्धति है। इस समाज का सारमूलाधार वर्णाश्रम व्यवस्था है। इसके अनुकूल मानव समाज को उनके गुण कम स्वभाव के आधार पर चार वर्गों मे विभक्त किया गया है यह चार वण कहलाते हैं और ये हैं ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र। धर्म ग्रन्थो मे इन के अलग-अलग कर्त्तव्य-कम योग्यता के आधार पर निर्धारित किये गये हैं। ये चार विभाग (चार वर्ण) मनुष्य की चार मुख्य प्रवृत्तियों को ध्यान मे रख कर किये गये हैं।

इन ब्राह्मणादि वर्गों के समुदाय से बने मानव समाज को मनुष्य के शरीर के चार भागों से (ब्राह्मण को सिर व मुख से, क्षत्रिय को भुजाओ से, वैश्य को उदर, पेट से और शूद्र को पैरो से) उपमा दी गई है। हिन्दू धर्म के परमपवित्र विश्व के पुस्तकालय मे प्राचीनतम धर्म ग्रन्थ वेद मे इस तथ्य का इस प्रकार निरूपण किया है।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्
बाहू राजन्य कृत ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्य
पद्भ्यां शूद्रोऽजायत ।।

(ऋग्वेद 10-90-12 यजुर्वेद 31-11)

जिस प्रकार वेद में मानव समाज को ब्राह्मणादि चार महत्वपूर्ण वर्गों में विभक्त किया है, ठीक उसी प्रकार व्यक्ति के जीवन को (ताकि यह अधिक उपयोगी और सशक्त हो) वेद मे ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास इन चार आश्रमों में विभक्त किया है। सामान्यत हिन्दू धर्म ग्रन्थो में मनुष्य की आयु की कम से कम अवधि सौ वर्ष कही गई है।

अति क्रामन्तो दुरिता पदानि,
शत हिमा सर्व वीरा वदेम ।
अथर्ववेद 12-2-28
शत जीवन्त शरद पुरुचीस्तिरो
मृत्यु दधतां पर्व तेन ।
अथर्ववेद 12-2-3,
जीवेम शरद शतम् भूयश्च शरद शतात् ।

इस आधार पर कम से कम 25 वर्ष तक ब्रह्मचर्य, 50 वर्ष तक गृहस्थ, 75 वर्ष तक वानप्रस्थ और शेष सन्यास आश्रम का समय रखा गया है। इनमे गृहस्थ आश्रम को सबसे मुख्य और श्रेष्ठ कहा जाता है यही आश्रम (25 से 50 वर्ष तक) विवाहित जीवन भोगने तथा सतानोत्पति आदि के लिये माना गया है। इस लिए जितना कुछ व्यवहार ससार मे है उसका आधार यह गृहस्थ आश्रम ही है। महर्षि मनु कृत धर्म शास्त्र (अध्याय 3 श्लोक 77-78-79 मे) इसका विस्तृत वणन किया गया है। विवाह को हिन्दू धमग्रथो मे दूसरे वर्गों के लोगो की तरह भोग विलास और कामवासाना पूर्ति का साधन न मानकर इसको एक पवित्र, अटूट धार्मिक बन्धन स्वीकार किया गया है। यह दुबलेन्द्रिय और निर्बुद्धि पुरुषो के धारण करने योग्य नहीं है। विवाह का समय कन्या 16वे वर्ष से 24वें वर्ष तक और पुरुष का 25वें वर्ष से 48वे वर्ष तक उत्तम कहा गया है। 16 वष की कन्या और 25 वर्ष के पुरुष के विवाह को निकृष्ट और 18-20 वर्ष की कन्या से 30-35 वर्ष के पुरुष के *विवाह को मध्यम माना गया है, क्योकि मुनिवर धन्वतरि अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सुश्रुत' में अल्पायु वाले* स्त्री पुरुष को ऋतुदान का निषेध करते हैं—(अ० 10 श्लोक 47-48)

मनु आदि महर्षियो ने पुरुष को ऋतुकाल मे ही स्त्री समागम करने का विधान लिखा है। मनु धर्म शास्त्र (अध्याय 3 मे) इसका विस्तृत वर्णन किया गया है।

एक पत्नी का विधान

दूसरे धर्मों के विपरीत हिन्दू धर्म मे बहु पत्नी विवाह का निषेध है और एक समय मे एक ही पत्नी और एक ही पति का विधान है।

स मा तपत्यभित
सपत्नीरिव पर्शव ।
मूषो न शिश्ना व्यदन्ति
माध्य स्तोतार ते शतक्रतो
वित्त मे अस्य रोदसी ।।
ऋ 1/105/8
इहैव स्त मा वियौष्ट

(शेष पृष्ठ १० पर)

आर्य समाज की शिथिलता के कारणों की एक अनुभव जन्य मीमांसा और समाधान

—पिशोरीलाल प्रेम—

आर्यसमाज के योग्य व्यक्तियों ने कई बार इस विषय पर अपने विचार प्रकट किए हैं। एक विचार यह है कि जो आर्य समाजी आर्य शिक्षा सस्थाओ को चला रहे है, उन संस्थाओ को चलाने मे उनकी सारी शक्ति व्यय हो जाती है और आर्यसमाज के प्रचार की ओर उनका ध्यान नही होता। इसके अतिरिक्त, सस्थाओ को चलाने के लिए धन की आवश्यकता होती है। धन एकत्र करने के लिए कई धनी चरित्रहीन व्यक्तियो को, जो कि आर्यसमाज के सिद्धान्तो को न जानते हैं, न मानते है, उन्हे पधाधिकारी बनाना पडता है और ऐसे पधादिकारियो के निरीक्षण मे जो सस्थाए चलती हैं वह आर्यसमाज के प्रचार का कारण कदापि नही हो सकती। इसके विपरीत, कई महानुभाव इन सस्थाओ को आर्य समाज के प्रचार का कारण कदापि नही हो सकती। इसके विपरीत, कई महानुभाव इन सस्थाओ को आर्यसमाज के प्रचार का मुख्य साधन समझते है। इनके विचार मे यह सस्थाए गैर आर्यसमाजी नवयुवको को आर्यसमाज की ओर आकर्षित करती है। इन सस्थाओ ने आर्यसमाज को कई अच्छे रत्न दिए है।

एक विचार यह है कि आर्यसमाज को सामूहिक रूप मे भाग लेना चाहिए। क्योकि जैन, बौद्ध, इस्लाम और ईसाईयत आदि सम्प्रदायो के प्रचार का कारण यह था कि इनके पीछे राज शक्ति कार्य करती थी। राज शक्ति से ही धर्म का प्रचार सुगमता से हो सकता है। इसके विपरीत कई महानुभावो का विचार है कि आर्यसमाज को राजनीतिक मे बिल्कुल भाग नही लेना चाहिए। क्योकि धर्म प्रचार के लिए राजनीति मे भाग लेने की आवश्यकता नही है। वर्तमान राजनीतिक का आधार छल कपट और झूठ है। यदि आर्यसमाज ने राजनीति मे भाग लिया तो यह सत्यपथ से विचलित हो जाएगा। धर्म का आधार है सत्य। सत्य के बिना धर्म प्रचार कैसा !

एक विचार यह है कि आर्यसमाज ने खडन-मडन और शस्त्रार्थो को त्याग दिया है इसलिए शिथिलता आ गई है। आरम्भ काल मे जबकि आर्य समाज खूब खडन-मडन और शास्त्रार्थ करता था तब आर्यसमाज का प्रचार भी खूब होता था। इसके विपरीत, कई महानुभावो का विचार है कि उस समय लोग अनपढ थे। अज्ञान-अन्धकार अधिक था इसलिए खडन-मडन और शास्त्रार्थो की आवश्यकता थी। अब लोग मे विद्या का प्रचार बढ गया है। लोगो आर्य समाज के सिद्धान्तो को जानते और मानने लगे है। इसलिए आर्यसमाज को सबके साथ मिलजुल कर प्रचार करता चाहिए।

इसके अतिरिक्त अन्य भी कई विचार प्रस्तुत किए जाते है। परन्तु विशेष कर ऊपर लिखित विषयो पर ही अधिक वाद-विवाद होता है।

शिक्षा स स्थाओं को उपयोगिता

इस विषय मे मेरे तुच्छ विचार यह हैं।

आर्य शिक्षा संस्थाए प्रचार का साधन तभी हो सकती हैं जब उनके पदाधिकारी दृढ आर्यसमाजी चुने जाए और सस्थाओ मे सब अध्यापक गण भी आर्य समाजी हो। यदि ऐसा सभव न हो सके तो फिर यह सस्थाए प्रचार मे बाधक ही हैं। क्योकि जितनी शक्ति और धन इन पर व्यय होता है यदि उतनी शक्ति और धन केवल मात्र आर्यसमाज के प्रचार मे व्यय हा तो इससे आर्य समाज का प्रचार बहुत अधिक हो हो सकता।

आर्यसमाज का राजनीति मे भाग लेने का तात्पर्य है लोक सभा, प्रान्तीय विधान सभाओ, नगर पालिकाओ आदि के चुनाव मे भाग लेना जैसे कि हमारे मुसलिम, ईसाई एव अकाली भाई भाग लेते है। इन चुनावो मे भाग लेने का लाभ तभी हो सकता है जब हमे आर्य समाज के टिकट पर चुनावो मे सफलता मिले। परन्तु आय समाजियो की सख्या इतनी अधिक नही कि केवल मात्र आर्यसमाजियो के वोटो से सफलता सभव हो। इसलिए गैर आर्य समाजियो के वोट प्राप्त करने के लिए आर्यसमाज के टिकट के स्थान पर किसी राजनैतिक सस्था के टिकट पर या स्वतन्त्र रूप से चुनाव लडे जाए। ऐसी अवस्था मे हमे वह सब कुछ करना पडेगा जो चुनाव जीतने के लिए दूसरे लोग किया करते है। अर्थात छल-कपट और झूठ का सहारा लेना पडेगा। ऐसी अवस्था मे सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए आर्य समाज के इस नियम का पालन हम कैसे कर सकेगे ? महर्षि स्वामी दयानन्द और उनके पश्चात् स्वामी श्रद्धानन्द, प० लेखराम, पडित गुरुदत्त, महात्मा हसराज आदि के हाथ मे कौन सी राज्य शक्ति थी—जिसके द्वारा उन्होने ने आर्य समाज का इतना अधिक प्रचार किया। अब तो लोक सभा, राज्य सभा और विधान सभाओ मे कई आर्य समाजी नेता हैं, उनके द्वारा आर्य समाज का कितना प्रचार हो रहा है ? इस पर पाठक गण स्वयं विचार कर सकते हैं।

शास्त्रार्थ का रूप

शास्त्रार्थों से आर्य समाज का प्रचार तभी सभव हो सकता है यदि प्रतिपक्षी भी प्रेम पूर्वक हठ और दुराग्रह को सत्य-असत्य का निर्णय करने के लिए शास्त्रार्थों के लिए उद्यत हो। परन्तु वर्तमान समय मे चरित्र-हीनता और स्वार्थ के कारण प्रतिपक्षियो से ऐसी आशा करना सभव नही। इसके अतिरिक्त अवैदिक सिद्धान्तो का खडन और वैदिक सिद्धान्तो का मडन अवश्य होना चाहिए। परन्तु यह खडन युक्ति युक्त, वेद शास्त्रो के प्रमाणो सहित, मीठे शब्दो मे होना चाहिए। कडवे शब्द मे खडन-मडन प्रचार का साधन नही अपितु बाधक हैं।

वाद-विवाद से दूर

अब मैं पाठको की सेवा मे आर्यसमाज की शिथिलता को दूर करने के लिए यह निवेदन करूंगा कि यदि आपको आर्यसमाज के प्रचार की सच्ची लगन है तो आपको उपरोक्त वाद विवाद से अलग रह कर निम्नलिखित सादा और सरल क्रियात्मक कार्यों मे लग जाना चाहिए।

(1) महर्षि दयानद कृत समस्त ग्रन्थो का नियमानुसार स्वाध्याय करना चाहिए और इसके साथ-साथ आर्यसमाज के उच्च कोटि के अन्य विद्वानो के ग्रन्थो का स्वाध्याय भी अवश्य करना चाहिए जिमसे आर्यसमाज के सिद्धान्तो का पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो सके।।

(2) प्रत्येक आर्यसमाजी को अपना चरित्र इतना उज्जवल बनाना चाहिए कि विरोधी भी उनके चरित्र पर उङ्गली न उठा सके, अपितु उनका अनुकरण करे।

(3) प्रत्येक आर्यसमाजी को नियमानुसार ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना तथा यज्ञ आदि करने चाहिए जिस से आत्मिक शक्ति बढे और वह अधिक से अधिक प्रचार कर सके।

(4) प्रत्येक आर्यसमाजी के मन मे पदाधिकारी बनने के स्थान पर तप त्याग और सेवा की भावना होनी चाहिए।

(5) प्रत्येक आर्यसमाजी के मन मे आर्यसमाज के प्रचार की सच्ची लगन और तडप होनी चाहिए ॥

बस ये हैं वे सरल साधन जिनसे आप आर्यसमाज की शिथिलता को दूर कर सकते है। आप बडे से बडे अधिकारी हो, अथवा साधारण व्यक्ति, वकील डाक्टर, अध्यापक, दुकानदार, किसान, मजदूर, शिल्पकार आदि कुछ भी हो, धनी-निर्धन, नगरो मे रहने वाले हो, आप आर्यसमाज का अथवा वैदिक सिद्धान्तो का प्रचार कर सकते है, आप की निराशा दूर हो सकती है और फिर आपको आर्य समाज की शिथिलता के कारण ढूढने की आवश्यकता नही रहेगी।

यह लेख मैंने अपने अनुभव के आधार पर लिखा है। मैं भावुक नहीं हू, यथार्थवादि हू। इन सुझावो पर यदि आचरण किया जाए तो आर्यसमाज का प्रचार बडी तेजी से हो सकता है।

पता— पो० ददाहू, रेणुका, जिला सिरमौर (हि० प्र०)

उग्रवादियों ने लन्दन में मन्दिर जलाया

नई दिल्ली यहा प्राप्त सूचना के अनुसार कुछ उग्रवादियो ने लन्दन की सटोनी स्टेटन रोड स्थित प्रसिद्ध भगवान कृष्ण मन्दिर को आग लगा दी। चडीगढ के एक दैनिक के अनुसार उक्त उग्रवादी रात देर गए। मन्दिर की एक खिडकी तोड़कर अन्दर घुस गए तथा उन्होने सभा हाल मे कुर्सिया, दरिया तथा लगभग सात सौ पुस्तकों के ढेर लगा कर इसे आग लगा दी। एक घटे मे सब जल कर राख हो गया। इसी दौरान किसी राहगीर ने मन्दिर मे आग देखकर फायर ब्रिगेड को सूचित कर दिया।

मन्दिर प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष श्रीवानेल पटेल के अनुसार उग्रवादियो द्वारा मन्दिर पर हमले की यह छठी घटना है। 1981 मे इस मन्दिर मे पेट्रोल बम फेंके गए थे तथा पुलिस ने तीन उग्रवादी को गिरफ्तार किया था। लगभग तीन मास पूर्व मे एक अन्य मन्दिर को आग लगा दी गई। पटेल ने बताया कि मन्दिर समिति के सदस्यों को धमकी भरे पत्र भी मिले हैं।

श्री रामरतन राय और श्री रोहितराय का निधन

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से २० और २१ दिसम्बर को श्री रामरतन राय और श्री रोहितराय के निधन पर शान्ति-यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डा० सुखदेव प्रसाद सि० शास्त्री के प्रवचन और श्री दयानन्द सत्यार्थी के भजन हुए। दोनों की आत्मशान्ति हेतु प्रार्थना की गई।

कुछ अनोखे संस्मरण

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी, आचार्य के रूप में

—प्रोफेसर विश्वनाथविद्यालंकार—

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी, महात्मा मुंशीराम थे निज आचार्यत्व काल मे। स्वामी श्रद्धानन्द जी का कार्य क्षेत्र व्यापक रहा है। सामाजिक सुधारक, शुद्धि आदोलन मे नेतृत्व, राष्ट्र नेतृत्व, आदि क्षेत्रो मे इन्हे अभूतपूर्व सफलता मिली। सर्व प्रथम उनका कार्यक्षेत्र शिक्षा विषयक कथा, जो गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के रूप मे प्रकट हुआ। इस निमित्त मुंशीराम के रूप मे उन्होने तीस हजार रुपयो को संग्रह किया, जिसके आधार पर गुरुकुल कागडी का बीजारोपण हुआ। इस राशि के सग्रह मे लगभग ६ मास लगे थे।

गुरुकुल कागडी की स्थापना, अग्रेज शासकों द्वारा भारत मे चलाई गई शिक्षा पद्धति की प्रतिक्रिया रूप मे ही न थी, अपितु महर्षि दयानन्द द्वारा उपदिष्ट शिक्षा पद्धति के रूप मे थी। गङ्गा के पूर्वी तट पर स्थित कागडी ग्राम के अधिपति ने अपनी भूमि का एक बहुत बडा भाग गुरुकुल के लिए दान मे दे दिया था, जो वर्षा-ऋतु मे गङ्गा की दूसरी धारा द्वारा घिर कर एक द्वीप सा बन जाता था।

प्रारम्भ मे फूस की कतिपय झोपडिया ही ब्रह्मचारियो और अध्यापको के लिये आश्रम रूप मे बनी थी। इन्ही मे ही शिक्षण कार्य भी प्रारम्भ हुआ। कुछ काल पश्चात् एक बडे आंङ्गन के साथ कच्ची-ईटो के कमरे बनाए गये, और इन पर टीन की चादरे डाली गई और कुछ काल पश्चात् महाविद्यालय और विद्यालय के लिए पक्की-ईटो की एक बडी इमारत बनाई गई जिस पर २५ हजार रुपये व्यय हुए। साथ ही औषधालय, अतिथि भवन, तथा गङ्गा के तट पर आचार्य मुंशीराम जी का एक छोटा सा बगला भी बनाया गया।

प्रारम्भ मे शिक्षा के विषय प्राय सस्कृत प्रधान ही थे। परन्तु समय बीतने पर स्वर्गीय श्री प्रोफेसर रामदेव जी की प्रेरणा आग्रह पर अन्य नए विषयो का भी समावेश हुआ।

मुंशीराम जी का आचार्यत्व विशेष महिमा का था। इनके आचार्यत्व मे ब्रह्मचारियो के प्रति पितृस्नेह का मिश्रण था। इस सम्बन्ध में दो-चार घटनाए उपस्थित करना चाहता हू।

छातो पर सांप

(१) आचार्य जी निज वानप्रस्थी वेश मे, एक लम्बा दण्ड हाथ मे लिये, रात्रि के समय, जब कि ब्रह्मचारी और उनके गुरुवर्ग गाढ़-निद्रा मे मग्न होते थे, प्राय: आश्रम का चक्कर लगाया करते थे। एक बार आश्रम का चक्कर लगाते हुए इन्होंने देखा कि एक सोए हुए ब्रह्मचारी की छाती पर एक सांप बैठा है। आचार्य ने सोचा कि ब्रह्मचारी ने जरा भी हरकत की तो वह साप का शिकार बन सकता है। हिम्मत करके उन्होने लम्बे डण्डे से साप पर इस प्रकार प्रहार किया कि वह तख्त से भूमि पर गिर गया और कमरे के बाहर चला गया। यदि आचार्य उस समय कमरे मे उपस्थित न होते तो ब्रह्मचारी का जीवन खतरे मे था।

हाथों में उल्टी

(२) आचार्य प्रतिदिन रोगि-गृहो मे भी जाया करते थे। एक ब्रह्मचारी रुग्णावस्था मे तख्त पर लेटा हुआ था। आचार्य पितृस्नेह से उसे तसल्ली देने के लिये ब्रह्मचारी के पास बैठ गए ब्रह्मचारी ने कहा कि मुझे उल्टी आने वाली है। समीप मे कोई और कर्मचारी न था जो चिलमची ला देता आचार्य ने दोनो हाथो की अञ्जलि बनाकर उसके मुख के सामने कर दी, और उसके वमन को अञ्जलि मे ले लिया। यह आचार्य के हार्दिक पितृ-स्नेह का उदाहरण है। वह ब्रह्मचारी मेरा सहाध्यायी स्वर्गीय प० चन्द्रमणि विद्यालकार थे।

श्री पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति के सहाध्यायी, गुरुकुल कांगड़ी के जीवित स्नातकों मे सबसे बुजुर्ग (आयु लगभग ९५ वर्ष), अनेक वर्षो तक गुरुकुल में वेदोपाध्याय के रूप में कार्यरत, गुरुवर श्री विश्वनाथ जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के आचार्य-काल के कुछ अद्भुत सस्मरण भेजे है। 'स्वामी श्रद्धानन्द विशेषांक' छपने के बाद यह लेख प्राप्त हुआ, इसलिए अब दिया जा रहा है।

(३) दो मास के स्वाध्यायावकाश मे महाविद्यालय के ब्रह्मचारी आचार्य जी के साथ "सरस्वती यात्रा" मे 'धर्मशाला' पर्वत गए थे। इस यात्रा मे एक ब्रह्मचारी ने, जो स्वय आचार्यजी द्वारा दी गई छात्रवृत्ति पर गुरुकुल मे शिक्षा प्राप्त कर रहा था— अपने एक अध्यापक को चिट्ठी लिखी जिस मे कि आचार्य जी के लिए कुछ अपशब्द था। उसने चिट्ठी पोस्ट आफिस मे डालने के लिये किसी दूसरे साथी को दे दी। परन्तु चिट्ठी धर्मशाला मे ही वापिस किसी तरह आचार्य जी के हस्तगत हो गई। आचार्य ने अवश्य पढी होगी। परन्तु यात्रा-काल मे ब्रह्मचारी को कुछ न कहा। वापिस गुरुकुल लौटने पर ब्रह्मचारी से पूछताछ की ब्रह्मचारी ने चरणो पर गिरकर क्षमा मागी। पितृरूप आचार्य ने इसे तो क्षमा दे दी, परन्तु जिस प्रोफेसर को चिट्ठी लिखी गई थी, उसे गुरुकुल से त्याग पत्र देकर जाना पडा।

(4) गुरुकुल महाविद्यालय मे आचार्य जी के सभापतित्व में सभा हो रही थी। एक ब्रह्मचारी को आचार्य जी ने एक आज्ञा दी। ब्रह्मचारी ने खडे होकर कहा "खरगोश के सीग भले ही निकल आएँ" परन्तु मैं आपकी आज्ञा का पालन नही करूंगा।" सभा मे स्तब्धता छा गई। परन्तु आचार्य मौन रहे। सभा की समाप्ति पर आचार्य ने अपने कमरे मे ब्रह्मचारी को बुलाया और उसे प्यार से समझाया। ब्रह्मचारी ने क्षमा मागी। आचार्य ने उसे क्षमा कर दिया।

ये चार उदाहरण है आचार्य के स्नेहाप्लावित हृदय के। दो-चार घटनाए आचार्य के आचार्यत्व काल की और भी दे देना चाहता हू, जो कि रुचिकर होगी।

अंग्रेजी सहायता ठुकराई

(१) अग्रेजी सरकार गुरुकुल को सदेह-दृष्टि से देखती थी। सरकार को रिपोर्ट मिली कि गुरुकुल मे ब्रिटिश शासन के विरुद्ध शिक्षा दी जाती है। जाच के निमित्त उत्तर प्रदेश के तात्कालिक गवर्नर श्री मैस्टन गुरुकुल पधारे। ये हरद्वार से ही हाथी पर सवारहोकर आए और कई अङ्गरक्षक घोडे पर थे। आचार्य जी ने उनका यथोचित स्वागत करते हुए सभा का आयोजन किया। गवर्नर ने निज भाषण देते हुए गुरुकुल से सन्तोष प्रकट किया और १ लाख रुपये वार्षिक अनुदान की घोषणा की। आचार्य ने धन्यवाद देते हुए कहा कि आप के अनुदान के लिए हम कृतज्ञ है, परन्तु गुरुकुल की गुरुकुलीयता तब तक ही कायम रह सकती है जब तक कि इसे प्रजा के दान पर ही चलाया जाय। इस लिये अनुदान लेने से इन्कार कर दिया। तत्पश्चात गवर्नर को सम्मानपूर्वक विदाई दी गई।

(2) गुरुकुल मे समय-समय पर कुश्तियो, फुटबालो, हाकियो और क्रिकेटो, तथा वर्षाकाल मे गगा के तैरने के आयोजनो मे भी आचार्य जी कर्मचारियो और अध्यापको समेत पूरा सहयोग दिया करते थे। हाकी-टूर्नामिण्ट मे बाहर से भी टीमें आती थी। कुश्ती मे मेरे साथी इन्द्र थे, जो बाद मे प्रोफेसर इन्द्र विद्यावाचस्पति के नाम से प्रसिद्ध हुए।

कोठी भी दान

(3) आर्य समाज, और आर्य प्रतिनिधि सभा, पजाब के कई सचालक आचार्य जी पर यह आक्षेप किया करते थे कि आचार्य जी स्वयं तो जालन्धर मे एक बडी कोठी के मालिक हैं, जिसका स्वामित्व इनके दो पुत्रो को, उनके स्नातक हो जाने पर मिल जायगा, परन्तु शेष ब्रह्मचारी तो अनाथ हुए फिरेंगे, जिन के माता-पिता साधारण कोटि के है, और सरकारी डिग्री न होने पर उन्हें सरकारी नौकरिया भी न मिल सकेंगी।

ऐसे आक्षेपो का उत्तर आचार्य ने निम्न प्रकार से दिया—

अपने दोनो पुत्रो को अपने पास बुलाया, जो उस समय गुरुकुल मे शिक्षा पा रहे थे। वे थे हरिश्चन्द्र और इन्द्र। उनके सामने दान पत्र लिखा, और दोनो पुत्रो के हस्ताक्षर दान पत्र पर करवा दिये। इस दान पत्र मे जालन्धर की बडी कोठी" आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के नाम कर दी गई थी। गुरुकुल के वार्षिकोत्सव के समय जब कि "आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के तात्कालिक प्रधान श्री रामकृष्ण जी, वकील मन्च पर विराजमान थे, आचार्य जी ने व्याख्यान देते हुए बीच मे आक्षेपों के सम्बन्ध मे भी चर्चा की और उत्तर मे यह कहा कि "यह है मेरी कोठी के सम्बन्ध मे दान पत्र" और दानपत्र प्रधान श्री रामकृष्ण जी को दे दिया। सभा मण्डप और मच पर बैठे कई व्यक्ति सिसकिया लेते हुए रो रहे थे।

गुरुकुल के लिए भिक्षा मागते के लिये ब्रह्मचारी और कर्मचारी हाथो मे बाल्टिया लेकर जब सभा मण्डप मे घूमे तो पचास हजार रुपये दान मे मिले। इतनी बडी राशि पहले के किसी वार्षिकोत्सव मे प्राप्त न हुई थी। कई महिलाओ ने तो दानपत्र मे प्रभावित होकर अपने आभूषण भी उतार कर दान मे दे दिये थे।

शेष रहा गुरुकुल के अवशिष्ट स्नातको की आजीविका का प्रश्न। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के आचार्यत्वकाल मे गुरुकुल के स्नातको को उच्च और बहुमुखी उदार शिक्षा मिली थी। इसी कारण सब स्नातक अपनी आजीविका से सन्तुष्ट है। और कई तो अच्छे लेखक, प्रभावशाली प्रचारक सर्वश्रेष्ठ पत्र सम्पादक, तथा स्वराज्य होने पर असेम्बलियो मे मन्त्री, तथा राजसभा के मनोनीत सदस्य तक भी रहे हैं।

जब दानपत्र आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान जी को प्राप्त हुआ उसके बाद से श्री मुंशीराम जी, महात्मा मुंशीराम के नाम से प्रसिद्ध हुए।

पता—61, कावली रोड, देहरादून

पत्रों के दर्पण में

कांग्रेस के हाथ बिक गए

(1) पिछले कई अको मे आपके सम्पादकीय पढकर लगा कि आप सत्ताधारी कांग्रेस के हाथ बिक गए हैं। इसी कारण मेरी अन्तरात्मा ने यह पत्र लिखने को विवश किया है। क्या पाठको को भ्रम मे डालना ही आपका उद्देश्य रह गया है। आप जनता को 'उल्लू' बनाना चाहते है, एक ओर हिन्दू हितो की बात करते हैं और दूसरी ओर काग्रेस को वोट देने की बात कहते हैं। लगता है, आप किसी राजनीतिक दबाव मे हैं। हिन्दू हितो की जितनी विरोधी काग्रेस है, उतनी और कोई राजनीतिक पार्टी नहीं। पहले आपके सम्पादकीय पढकर हृदय गद्गद् हो जाता था, पर अब लगता है कि आपकी निर्भीकता और स्पष्टवादिता को किसी ने ग्रस लिया है। पाठको को भ्रम मे क्यो डालते है ?

—कोमल स्वरूप आर्य, आर्यसमाज शमसपुर सद्दो, पी० हरगगपुर, बिजनौर

(२) २३ दिसम्बर का अग्रलेख पढ़कर लगा कि आपका पत्र काग्रेस-प्रचार का मच बन गया है। पजाब की समस्या को उलझाने वाली स्वय काग्रेस है। भिंडरावाले को भी उसी ने सिर चढाया। फिर उसी काग्रेस को वोट देने की बात कहते हैं—और आप—जो हिन्दू हितो के रक्षक होने का दम भरते हैं।—नीना पुरी, एन-4, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-२७

(३) क्या आप समझते है कि आर्यसमाजी आपकी बात आख मूद कर मान लेंगे ? आपने किसी स्वार्थ वश ही काग्रेस को समर्थन देने की बात लिखी होगी। इतनी बात तो हम अल्पबुद्धि वाली बहिनें भी जानती है कि लोकतन्त्र के लिए और अच्छी सरकार चलाने के लिए सशक्त विपक्ष का होना आवश्यक है। नही तो सत्तारूढ पक्ष को मनमानी करने से कौन रोकेगा ? कमिया हरेक मे हो सकती हैं, पर जितने अच्छे वक्ता भाजपा मे है उतने और किसी पार्टी मे नहीं। आप जनता को गुमराह क्यो करते हैं ? आप जैसे उत्तरदायी और निर्भीक व्यक्ति को किसी स्वार्थ के वशीभूत हो देखकर आश्चर्य होता है।—आर्यसमाजी बहनें, दिल्ली

(४) सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री शालवाले ने और आपने अपनेसम्पादकीय अग्रलेखों मे जिस तरह कांग्रेस का समर्थन करने की जनता से अपील की उसके कारण अधिकांश आर्यसमाजियो के वोट तो काग्रेस को गए ही, आर्यसमाज की विचारधारा से सहानुभूति रखने वाले हिन्दू समाज के भी अधिकाश वोट काग्रेस को गए। इसी कारण काग्रेस को भारी जन-समर्थन प्राप्त हुआ और काग्रेस इतने विशाल बहुमत से विजय प्राप्त कर सकी। मेरा विश्वास है कि पजीकृत आर्यसमाजियो की सख्या भले ही सारे देश मे केवल दो या तीन प्रतिशत हो, किन्तु हिन्दू समाज का विशाल वर्ग विचारधारा की दृष्टि से सदा आर्यसमाज की ओर ही निहारता है। इसलिए इस विजय मे आर्यसमाज के योगदान को नगण्य नही समझना चाहिए। अब यह सरकार का कर्तव्य है कि वह आर्यसमाज की प्रगतिशील विचारधारा के अनुरूप देश को आगे ले जाए।—ज्ञानचन्द गोयल, उपमन्त्री आर्य युवक परिषद, मालव (मेवात) गुडगाव (हरियाणा)—१२२१०७

(५) लोकसभा के चुनावो मे काग्रेस की यह अमूलपूर्व विजय एक ऐतिहासिक घटना है। इस बार के वोट श्रीमती गाधी के प्रति श्रद्धाजलि वोट ही कहलाएंगे और यह स्वाभाविक भी है। पर आपके अग्रलेखो ने जिस प्रकार राजनीतिक विश्लेषण करके जनता को सही दिशा दी और उचित वातावरण का निर्माण किया, उसका भी प्रभाव कम नही था।—ओमप्रकाश 'अशु' एडवोकेट, करनाल

भारतीय जनता पार्टी विघटन के कगार पर: जिम्मेदार कौन ?

भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष प० दीनदयाल उपाध्याय की रहस्यमय हत्या के पश्चात् भारतीय जनसघ का अध्यक्षपद नाटकीय ढग से श्री अटल बिहारी वाजपेयी को मिला। उसी समय से पहले तो भारतीय जनसघ की नीतियों मे धीरे-धीरे परिवर्तन कर उसे धर्म निरपेक्षता की ओर लाया गया और 1977 मे जब जनता पार्टी का गठन हुआ तब भारतीय जनसघ को समाप्त कर जनता पार्टी मे मिला दिया गया। उसके पश्चात जब जनता पार्टी बिखरी तब जनसंघ के लोगो ने भारतीय जनता पार्टी बना डाली तथा उसका अध्यक्ष भी श्री अटल बिहारी वाजपेयी को ही बनाया। श्री वाजपेयी ने भारतीय जनता पार्टी की नीतियो को पूरी तरह बदल कर उसे महात्मा गान्धी के समाजवाद, धर्म निरपेक्षता, अल्पसख्यको के तुष्टीकरण तथा हिन्दू हितो की उपेक्षा की नीति अपनाने पर ही बल दिया।

वर्तमान लोक सभा के चुनाव मे दिल्ली चादनी चौक निर्वाचन क्षेत्र के मुस्लिम प्रत्याशी, भाजपा के उपाध्यक्ष, श्री सिकन्दरबख्त को बहुत बुरी हार का समाना करना पड़ा है जब कि जामा मस्जिद के शाही इमाम अब्दुल्लाह बुखारी ने मुसलमानों से अपील भी की कि जालिम काग्रेस को हराओ। पर भाजपा के उम्मीदवार को मुस्लिम वोट तो मिल ही नही, इसने हिन्दू हितो की उपेक्षा की नीति अपना कर अपने हिन्दू मतो को भी खो दिया। जो भारतीय जनसघ 1967 मे था यदि वह उन्ही नीतियो पर चलता रहता तो अब तक वह काग्रेस का एक सुदृढ विकल्प बन जाता। किन्तु ऐसा नही हो सका, क्योकि भाजपा को काग्रेस का विकल्प बनाने की बजाय उसका पृथक दल बना दिया गया। आज का मतदाता सोचता है कि जब काग्रेस और भाजपा की नीतियो मे कोई अन्तर नही तो फिर काग्रेस को ही मत क्यो न दिया जाय।

जब से श्री अटल बिहारी वाजपेयी के हाथ मे पार्टी की बागडोर आयी है तभी से यह सब कुछ हुआ है। इससे सन्देह उत्पन्न होता है कि कही श्री वाजपेयी इन्दिरा काग्रेस के एजेन्ट की भूमिका तो नहीं निभा रहे हैं। गत वर्ष दिसम्बर के 'माया' के अक मे भी यह सकेत था। लेख का शीर्षक था किस 'किस दल मे इन्दिरा काग्रेस का कौन कौन एजेन्ट है'। इसमें श्री वाजपेयी का नाम तथा फोटो भी था।

क्या इसी कारण पार्टी विघटन के कगार पर आ कर नही खडी हो गयी है ? भाजपा मे बैठे संघ के प्रचारक इस पर गम्भीरता से विचार करें और भाजपा को उसी पुराने जनसघ की नीतियो पर लायें, अन्यथा भाजपा को छोड कर बाहर आ जाये और संघ के सहयोग से डा० मुखर्जी तथा डा० हैडगेवार के सिद्धान्तो पर आधारित एक नये दल का गठन करें। —विशन स्वरूप गोयल, महा मन्त्री दिल्ली प्रदेश जनसघ 3514, बैंक स्ट्रीट न्यू दिल्ली- 5

जैसे प्रिय रिश्तेदार का खत आया

मेरी मातृभाषा गुजराती है। पर जब पोस्टमैन 'आर्यजगत्' लाकर देता है तब ऐसा ऐसा लगता है जैसे किसी प्रिय रिश्तेदार का खत आ गया। हम सब मिल कर एक साथ उसे पढते है। जहा इस पत्र द्वारा आप आर्यसमाज की बहुत बडी सेवा कर रहे है, वहा राष्ट्र को भी सही दिशा दे रहे है।—खोडा भाई आय, सरपच शखेश्नर, जि० मेहसाना, गुजरात

निर्वाण शताब्दी स्मारिका

आपके द्वारा तैयार की गई निर्वाण शताब्दी स्मारिका अब पढ पाया। उसमे दिए गए उपयोगी लेखो के लिए बधाई। पृष्ठ १७९ पर श्री प० नरदेव जी ने बहुत अच्छे सुझाव दिए हैं। एक सुझाव मैं भी देना चाहता हू। जो समाज को सस्कारित करना चाहते है, उनको सबसे पहले सस्कार वान् बनाना है। ऐसे उत्तरदायी लोगो की असस्कारिता देखकर दुख होता है। श्री टेकचन्द जी का लेख भी पठनीय है, खास तौर मे पृष्ठ २४७ के मध्य का पैरा।—हरिभाई पटेल, सुरेश निवास, १ कैलासवाडा, जकशन प्लोट, राजकोट, गुजरात—३६०००१

सम्पादकीय लेख

आपके सम्पादकीय लेख बहुत पसद आते है। उनमे प्रदर्शित देश प्रेम और हिन्दुत्व की भावना देश के प्रत्येक नागरिक मे होनी चाहिए। आपके लेख इतनी सूझ-बूझ से भरे होते हैं कि उनके लिए जितनी भी प्रशसा की जाए, थोडी है। यह आपका आर्यसमाज पर ही नही, हर भारतवासी पर इतना बडा अहसान है जिसके लिए हम सदा कृतज्ञ रहेगे।—भरतसिह आर्य, मु० नोहरा, पो० शौदापुर, वाया पानीपत

भारतीय संस्कृति के प्रति अनुराग ?

हमारे महान् महाकाव्य रामायण तथा गीता को संयुक्त राज्य अमरीका व यरोप के ईसाई धर्मावलम्वी देशों तक मे महती प्रतिष्ठा तथा लोकप्रियता मिल चुकी है। 'हरे कृष्ण आन्दोलन' की विश्वव्यापी लोकप्रियता से भी यह प्रमाणित होता है कि हमारे धर्मग्रन्थो में मानव मात्र के लिए शिक्षा संदेश अवश्य निहित हैं तभी विदेश भी हमारी संस्कृति के प्रति आकर्षित है। इसमें कोई आश्चर्य नही कि अब सोवियत सघ और चीन ने भी हमारे धर्म शास्त्रो मे रुचि दिखाना आरम्भ कर दिया है। फलतः उनका रूसी और चीनी भाषा में अनुवाद भी किया गया है। स्मरणीय है कि चीन एक बौद्ध देश है और माओ की तथाकथित सास्कृतिक पुनर्जागृति तक चीनी संस्कृति मे कोई परिवर्तन नही ला सकी थी। अतः चीन और रूस हमारी गीता और रामायण मे जो असाधारण रुचि दिखाने की होड़ सी लगा रहे है उसके पीछे अवश्य कोई गुप्त अभिप्राय निहित है। यदि ये देश वास्तव में हमारी गीता और रामायण के बारे मे अधिक जानने को इच्छुक होते तो अपने विद्यार्थियो को भारत भेजते और अपनी मार्क्सवादी प्रणाली के अन्तर्गत भी 'हरे कृष्ण आन्दोलन' को मुक्त गतिविधियो की अनुमति देते। इन देशो मे इसके विपरीत 'हरेकृष्ण' अनुयायियो का दमन किया जा रहा है अतः उक्त शका उठना स्वाभाविक ही है।

—केशवदत्त शर्मा, ए—४ विनोद नगर, दिल्ली

विश्व हिन्दी सम्मान समारोह

नयी दिल्ली के विट्ठल भाई पटेल भवन में "विश्व हिन्दी दर्शन" द्वारा आयोजित "विश्व हिन्दी सम्मान" समारोह में पांच विद्वानों का विदेशों में उनकी हिंदी सेवाओ के उपलक्ष्य में सम्मान किया गया। सम्मानित व्यक्तियों में सोवियत संघ के प्रोफेसर ई० पी० चेलिशेष, डॉ० ब्लादीमिर लिपेरोव्स्की, अमेरीका के पं० रामलाल, ब्रिटेन के श्री जगदीश मित्र कौशल तथा कनाडा की श्रीमती निर्मला आदेश थी। उन्हे चन्दन की माला अर्पित करने के साथ सम्मान-पट्टिका भी भेंट की गई। इस क्रम का पहला आयोजन जनवरी, 1983 मे हुआ था।

"विश्व हिन्दी दर्शन' के सम्पादक श्री लल्लन प्रसाद व्यास ने बताया कि "विश्व हिन्दी सम्मान" समारोह का उद्देश्य एक ओर भारतवासियो को विदेशो मे हिंदी भाषा और साहित्य की प्रगति और विकास से अवगत कराना है तथा दूसरी ओर विदेशो मे हिंदी सबधी गतिविधियो को भारत की मुख्य धारा से जोडना है। ऐसे कार्यक्रम सहज ही भारत और विश्व देशो के बीच सास्कृतिक सम्बन्धो को परिपुष्ट करने मे सहायक बनते हैं। इस प्रकार हिन्दी सास्कृतिक सम्बन्धों को बढाने मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

सम्मानित व्यक्तियों का परिचय "विश्व हिन्दी दर्शन" के सह-सम्पादक श्री हरि बाबू कसल ने दिया तथा उन्हे चदन मालाए तथा सम्मान पट्टिकाएं श्री लल्लन प्रसाद व्यास, श्री गोपाल प्रसाद व्यास, डा० लोकेशचन्द्र, श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन तथा कुमारी निर्मला देशपाण्डे द्वारा भेट की गई।

सोवियत संघ की ओर से सद्भावना व्यक्त करते हुए प्रो० चेलीशेष ने हिन्दी को भारतीय सस्कृति की सदेश वाहिका बताया। डा० लिपेरोव्स्की, प० रामलाल, श्री कौशल तथा श्रीमती निर्मला आदेश ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

आशीर्वचन प्रदान करते हुए श्री गोपाल प्रसाद व्यास ने कहा कि हिन्दी की प्रगति के अवरोध के सम्बन्ध मे हम दूसरो को दोष देना छोड़े, हिन्दी को स्वयं अपनाए तथा अपने उदाहरण से दूसरों को प्रेरित करे। कुमारी निर्मला देशपाण्डे ने बताया कि पूज्य विनोबा जी ने देश में हजारो किलोमीटर की पदयात्रा की, उसमें वह अपने विचार हिन्दी के माध्यम से व्यक्त करते रहे।

अध्यक्ष पद से बोलते हुए त्रिनिडाड के महाकवि प्रो० हरिशंकर आदेश ने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से यह व्यक्त होता है कि हिन्दी अन्तराष्ट्रीय सद्भाव तथा मैत्री बढ़ाने में सहायक बन सकती है। इससे हिन्दी सेवियो को प्रोत्साहन मिलता है अतः यह परम्परा निरन्तर चलती रहनी चाहिए। उन्होने सुझाव दिया कि ऐसे कार्यक्रम भारत मे ही नही, भारत से बाहर भी आयोजित किए जाएं।

इस कार्यक्रम में सम्मानित विदेशी अतिथियों के अतिरिक्त 9 अन्य विदेशी अतिथि थे। लाओस राजदुतावास के द्वितीय सचिव श्री फेनूका खोउन्नाउवांग तथा दिल्ली के अनेक साहित्यकार तथा हिन्दी प्रेमी उपस्थित थे।

कार्यक्रम का प्रारम्भ प्रो० आदेश द्वारा रचित गीत से हुआ जिसे पंकज, भरत, रुचि तथा निशी ने प्रस्तुत किया। धन्यवाद ज्ञापन "विश्व हिन्दी दर्शन" के व्यवस्थापक श्री दिलीप कुमार ने किया।

ज्ञातव्य है कि "दूरदर्शन" ने इस समारोह का विवरण उसी रात्री अपने 9 बजे के राष्ट्रीय प्रसारण मे प्रसारित करके इसे राष्ट्रीय महत्व प्रदान किया।

सम्मानित विदेशी अतिथियों का परिचय

प्रोफेसर ई० पी० चेलीशेष—

सोवियत विज्ञान अकादमी के तथा सोवियत लेखक यूनियन के सदस्य हैं। हिन्दी को समृद्ध तथा समुन्नत करने मे विशेष योगदान रहा है। डाक्टर की उपाधि के लिए लिखे शोध प्रबन्ध का विषय था "आधुनिक हिन्दी कविता की परम्परा और नवीनता"। सन् 1967 में 'आधुनिक हिंदी काव्य' शीर्षक पुस्तक रूसी भाषा मे प्रकाशित की। भारतीय लेखको की 30 से अधिक पुस्तको का रूसी मे सम्पादन किया है। आपने "हिन्दी साहित्य का सक्षिप्त इतिहास",, "सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला" आदि पुस्तके तथा भारतीय साहित्यकारो पर अनेक विचारोत्तेजक निबन्ध लिखे है। उनकी हिन्दी सेवा को दृष्टि मे रख कर उन्हे सन 1967 मे "जवाहर लाल नेहरू पुरस्कार" से सम्मानित किया गया। भारत के विभीन्न स्थानो पर सपन हुए अनेक साहित्यिक एव सास्कृतिक सम्मेलनो मे उन्होने अपने देश का प्रतिनिधित्व किया है। डा० चेलिशेष अपने देश की अनेक साहित्यिक, सास्कृतिक तथा वैज्ञानिक संस्थाओ से सम्बन्धित हैं।

डा० ब्लादीमिर लिपेरोव्स्की

जन्म मास्को मे अगस्त, 1927 मे हुआ। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात 1953 56 तक सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी के प्राच्य विद्या संस्थान मे उत्तर स्नातक थे। 1956 से लेकर आज [illegible] अध्येता के रूप में काम करत [illegible] का क्षत्र नवीन भारतीय आर्य भाषाएं, विशेषतया हिन्दी भाषा है।

उनकी लिखी हुई अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुई (रूसी भाषा मे) :

1. आधुनिक साहित्यिक हिन्दी मे क्रिया के अर्थ (क्रियाभाव) की व्याकरणिक कोटि—1964, 2. हिन्दी भाषा मे यौगिक (संयुक्त एवं मिश्रित) वाक्य—1972, 3. हिन्दी भाषा के नामात्मक शब्द भेद—1978, 4. हिन्दी में क्रिया—1984

इन्होने सुनीति कुमार चटर्जी की "इण्डो आर्यन एण्ड हिंदी" नामक पुस्तक का अंग्रेजी से रूसी मे अनुवाद किया। सोवियत सघ मे सन् 1972 मे जो दो खण्डो वाला हिन्दी-रूसी शब्दकोश निकला उसके चार सकलनकर्ताओ मे से वे एक हैं।

उनके दो विनिबध (मोनोग्राफ) प्रकाशनगृह मे है.— 1. हिन्दी वाक्य - विन्यास की समस्याए, 2 आधुनिक ब्रज भाषा के व्याकरण की रूप-रेखा

इसके अतिरिक्त आपके बहुत से लेख पत्रिकाओ मे प्रकाशित हुए हैं।

श्री जगदीश मित्र कौशल—

इनका जन्म 29 अगस्त, 1932 को भारत मे हुआ। सन् 1966 से इगलैण्ड मे कार्य कर रहे हैं। वहा हिन्दी का पहला समारोह सन् 1970 मे आयोजित किया जिसमे उपस्थिति खूब रही तथा उसका प्रसारण बी० बी० सी० और टेलीविजन द्वारा हुआ। इगलैण्ड की चतुर्थ तुलसी जन्म शताब्दी समारोह समिति तथा पचम सूर जन्म शताब्दी समारोह समिति के अध्यक्ष रहे। सन् 1972 से हिन्दी साहित्य सभा के महामन्त्री हैं। ब्रिटेन मे हिन्दी सम्मेलन के अध्यक्ष है, लन्दन से प्रकाशित हो रहे हिन्दी साप्ताहिक "अमरदीप" के सन् 1971 से सम्पादक हैं। अनेक चर्चाओं मे भाग लेते रहे है। इनके अनेक लेख अग्रेजी तथा अन्य भाषाओ की पत्रिकाओ मे प्रकाशित होते है।

पं० रामलाल—

जन्म स्थान—गयाना (दक्षिण अमेरिका) आपके पिता जी बिहार से मजदूरी लिए 1912 मे गयाना गए थे। छोटी आयु से ही हिन्दी तथा भारतीय सस्कृति एव वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के कार्य में लगे हैं। टैगोर मेमारियल हाईस्कूल मे हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रहे। गयाना के राजनैतिक क्षेत्र मे भी सक्रिय रहे। इन्हे गयाना के स्वतन्त्रता सघर्ष मे दो वर्ष काला पानी का दण्ड भी दिया गया था। गयाना के हाईस्कूल मे हिंदी को द्वितीय भाषा के रूप मे पढाने मे आपका बडा हाथ था। अब न्यूयार्क मे रह रहे हैं। वहा भी भारतीय सस्कृति तथा हिन्दु धर्म के साथ हिंदी के प्रचार मे भी लगे हैं।

श्रीमती निर्मला आदेश—

इन्होने अपने विद्वान पिता श्री हरिशकर आदेश के साथ त्रिनिडाड तथा कनाडा मे हिन्दी के प्रचार-प्रसार मे ऐतिहासिक योगदान किया है। विदुषी होने के साथ-साथ सगठनकुशल महिला हैं। हिन्दी साहित्य भूषण, साहित्य शास्त्री तथा लन्दन विश्वविद्यालय की जी० सी० ई० एडवान्स्ड लैविल हिंदी लिटचेरचर परीक्षाओं का शिक्षण कार्य करती हैं। "ज्योति" (मासिक) तथा जीवन ज्योति (त्रैमासिक) पत्रिकाओ की सह-सम्पादिका। "त्रिनिडाड मे प्रथम हिंदी साधक", "उभरते क्षितिज" तथा पाठ्यपुस्तको "हिंदी विवेक" (3 भाग) की लेखिका है। अठारह वर्ष त्रिनिडाड मे हिंदी प्रचार का कार्य किया। आजकल कनाडा में सेवा कार्यरत है।

प्रेषक - हरिबाबू कंसल

वे भूल गये उपकार !

एहसानमन्द होना सभ्यता का सूचक माना जाता है। पर जहाँ सभ्यता आदि से भी बढकर एक बात होती है—मजहब, और उस मजहब का पालन अधा बनकर किया जाता है। एहसान फरामोशी से बढकर कोई पाप नही होता। देखिए बगला देश का निर्माण। जब वह पाकिस्तानी तानाशाहो के दमन से पीडित था तब भारत ने उसे उबारा, विश्व के मानचित्र मे. उसे एक राष्ट्र का स्थान दिया। पर इसे भूलने मे उसे अधिक समय नही लगा। बगला देश के वर्तमान तानाशाह जनरल इरशाद अपने मजहबी कर्तव्यो को पूरा करने याने बगला दश के हिन्दुओ को येन केन प्रकारेण मुसलमान बनाने मे अब कटिबद्ध हो चुके है। इरशाद ने शत्रु सम्पत्ति कानून को अन्यायपूर्ण ढग से लागू कर 1981 तक 8, 41, 112 एकड भूमि हिन्दू बगलावासियो से बलपूर्वक छीन ली और उन 21,126 घरो पर अधिकार कर लिया जो हिन्दुओ की सम्पति थे। 1983 तक हिन्दुओ की 95, 606 अतिरिक्त इकाइया बगलादेश सरकार ने हडप ली और मार्च 1984 तक और 2356 इकाइयो का गैर कानूनी ढग से हिंदुओ से छीन लिया। हिंदू अपनी शक्ति का चमत्कार दिखाये तो निश्चय ही भारत सरकार भी अपनी शक्ति का चमत्कार बगला देश को दिखा देगी ।[हिन्दू सभा वार्ता से]

सब जगन्नाथ की माया

आपने अपना हाथ जगन्नाथ' की कहावत सुनी होगी। सचमुच जगन्नाथ की महिमा निराली है। कभी-कभी ऐसे सयोग जुड जाते है कि बस देखते रहिये। राजस्थान मे भीलवाडा जिले मे पढेर थाना क्षेत्र मे एक गाव है जगन्नाथ पुरा। पिछले दिनो पुलिस ने वहाँ एक व्यक्ति के यहां से चोरी की दो साइकिले बरामद की। जिस आदमी के घर से यह साइकिले बरामद की, उसका नाम है जगन्नाथ। जिसने ये साइकिलें चुराकर उसे बेची थी, उसका नाम भी जगन्नाथ ही है। बात यही खत्म नही होती, आश्चर्य की बात यह कि इन साइकिलो की चोरी की रिपोर्ट जिस व्यक्ति ने थाने मे लिखाई, उसका नाम भी जगन्नाथ ही है। देखिये कैसी जोडी मिली। जगन्नाथ की रिपोर्ट पर पुलिस ने जगन्नाथ पूरा गांव मे जगन्नाथ द्वारा बेची गई चोरी की साइकिल जगन्नाथ के घर से बरामद की।

परिवार नियोजन......

(पृष्ठ ३ का शेष)

विश्वमायुर्व्यश्नुतम् ।
क्रीडन्तौ पुत्रैर्नप्तृभि-
र्मोदमानौ स्वे गृहे ।। ऋ 10/85/42

इस पर भी अधिक संतान उत्पत्ति पर रोक लगा दी गई है और सीमित परिवार को ही आदर्श परिवार कहा गया है।

हजारों वर्ष पूर्व हमारे ऋषि मुनियों ने श्रुति ग्रंथो मे इन पवित्र देश हितकारी भावनाओ को जीवन का अङ्ग कहा है। धर्म ग्रन्थो मे चेतावनी दी है कि अधिक सन्तानो वाले दुख पाते हैं।

'बहु प्रजा निर्ऋतिमा विवेश'।
ऋग्वेद 1/164/32

अथर्ववेद के 14/1/23 मे तो स्पष्ट ही दो सन्तानो वाला उत्तम गृहस्थ कहा गया है।

"पूर्वापरम् चरतो माय यैतौ
शिशू क्रीडन्तौ परियातोऽर्णवम् ।
विश्वान्यो भुवना विचष्टे
ऋतु रन्यो विदध ज्जायसेनव ।।

इसी भाव को ध्यान मे रखकर हमारे नीतिकारो ने भी बड़ा सुन्दर कहा है—

वरमेको गुणी पुत्रो
न च मूर्ख शतान्यपि ।
एकश्चन्द्र तमो हन्ति
न च तारा सहस्रकम् ।।

इन धार्मिक विधानों से स्पष्ट है कि हिन्दू धर्म मे (जिसका सार वर्णाश्रम व्यवस्था है) कहीं भी बहु सतान के लिए गुंजाइश नही है। इन आदर्शों के मूर्तिमान दो महापुरुष थे मर्यादा पुरुषोत्तम राम और योगीराज कृष्ण महाराज ने सयम का जीवन बिताकर क्रमश. दो और एक ही पुत्र को धारण करके जनता के आगे महान आदर्श उपस्थित किया था। ऐसी सुन्दर अद्भुत समाज व्यवस्था-वर्णाश्रम धर्म की अनेको विदेशी मनीषियों ने भी भूरि-भूरि प्रसंशा की है। रूस के एक महान विचारक AuspensKy ने अपने एक विचारपूर्ण ग्रन्थ 'A New model of the Universe' में व हालैण्ड के Dr. G H. Mees ने अपने ग्रन्थ 'Dharmaand Society' मे वर्णाश्रम व्यवस्था को समाज व्यवस्था की सर्वोत्तम पद्धति माना है। हिन्दू धर्म मे परिवार नियोजन Population Control की भावना स्थान-2 पर फैली प्रतीत होती है। इस सयमी जीवन का महर्षि मनु, स्वामी दयानन्द, राष्ट्रपिता महात्मा गाधी एवं अन्य महापुरुषो ने अपने ग्रन्थों मे बल पूर्वक समर्थन किया है।

कृत्रिम साधन क्यों

सुखी एवं सीमित परिवार के लिए प्रभावशाली संयम की पद्धति के होते हुए न जाने क्यों हमारी सरकार ने इस समस्या से पीड़ित विदेशों में चलाए जा रहे आधुनिक कृत्रिम तकनीक और Medical साधनों को अपनाकर करोड़ों रुपये व्यय किये, जिसका परिणाम सन्तोषजनक तो न हुआ, अपितु इससे स्वास्थ्य की हानि हुई और अनेक लोग रोग ग्रस्त हुए बहुतो को अपनी जान से भी हाथ धोना पड़ा। यही नहीं, गर्भपात पर कुछ प्रतिबंध न होने से अत्याचार को भी बढ़ावा मिला, जबकि हमारे शास्त्रों में गर्भपात कोपाप बताया गया है 'भ्रूणहा मा वो वधीरिन्द्र'। यदि आधुनिक कृत्रिम साधनों के साथ सयम के जीवन का प्रचार किया जाता तो निश्चित ही परिणाम बड़े संतोषजनक होते और करोड़ों रुपये की बचत भी होती, जो जन कल्याणकारी अन्य योजनाओ पर खर्च करने को उपलब्ध होते।

इस पद्धति को प्रभावशाली बनाने के वास्ते मैं यहां कुछ सुझाव देना भी आवश्यक समझता हूं।

1. विद्वान लोग धर्म ग्रन्थो का विशेष रूप से अध्ययन करके उनमें से सीमित परिवार तथा शिशु निरोध सम्बन्धी साहित्य तैयार करके जनता को धर्म के नाम पर जीवन अपनाने के लाभों से अवगत करायें।

2. सरकारी प्रसारणों के माध्यम से इनका प्रचार व प्रसार करें।

3. पाठ्य पुस्तकों मे संयम के जीवन के लाभों पर प्रकाश डालें।

4. दूरदर्शन पर उत्तेजक फिल्में दिखाने पर कड़ा प्रतिबंध हो।

5. होटलों मे युवतियों के नग्न नृत्यों और शारीरिक प्रदर्शनों पर रोक लगे।

6. समाज सेवी संस्थाओ के माध्यम से सरकार युद्धस्तर पर इसका प्रचार करे।

7. विवाह की आयु बढ़ाई जाये, और उल्लंघन करने वालों के लिए दण्ड की व्यवस्था हो।

हिन्दुओं के अलावा देश के अन्य वर्गों के लोग देश हित मे बहुपत्नी प्रथा और आजीवन गृहस्थ भोगने की विचारधारा को छोड़कर सीमित परिवार और संयम के जीवन की पद्धति को अपना कर इस जन वृद्धि की घोर समस्या को हल करने मे सहयोग दें। विकट समस्या को हल करने में ही राष्ट्र और जनता का हित निहित है। हम अपने धर्म ग्रन्थों के आधार पर इस समस्या का हल करके फिर से ससार मे अपना प्राचीन गौरव स्थापित कर सकते हैं।

पता—एच-64 अशोक बिहार-I दिल्ली—52

×

उस पंच परमेश्वर को......

(पृष्ठ ४ का शेष)

और सरकारें गिरवाने वाले एक आम राजनीतिक की बुद्धि और चतुराई और काईयापन नहीं, क्रांतिकारी दृष्टि चाहिए। इसके बिना नई समाज रचना नही हो सकती। इसमे राजीव गाधी को पूरे देश के और सब क्षेत्रो के लोगो का सहयोग और भागीदारी हासिल करनी होगी। उन्हे जिस तरह का समर्थन देश भर से मिला है उसका तकाजा भी यही है कि वे पार्टी, वर्ग और क्षेत्र की मौजूद दीवारो को लाघे और उसके ऊपर राष्ट्रीय सर्वानुमति का ऐसा चंदोवा तानने की कोशिश करें जिसके नीचे देश की सभी प्रतिभाओ को विकसित होने का न केवल मौका मिले बल्कि उनके अंदर सूझ कर खिलने की उमग पैदा हो। चुनाव जीतने के आत्मविश्वास की कमी के कारण उन्हे टकराव और आरोपो की रणनीति का सहारा लेना पड़ा हो, पर अब वे लगभग चार सौ सीटो के समर्थन में सुरक्षित हैं और इंदिरा गांधी के टकरावी और तोड़क रवैए को छोड़ना उनके लिए जरूरी होगा। वे दसियों बार इंदिरा गाधी की नीतियो को आगे बढ़ाने की कसम खा चुके हैं। लेकिन एक नई और कारगर सर्वानुमति की लोक गगा उन्हे भगीरथ की तरह बहानी पड़ेगी जिसमे देश की शक्ति लबालब बह सके और इसके लिए अपनी मा की एक नीति और अपनी एक कसम उन्हें तोड़नी पड़ेगी।

यह इसलिए भी जरूरी है कि वे मानते हैं कि जनादेश उन्हे एकता और अखडता के लिए मिला है। इस देश को अखडता और एक रखना किसी सेना और सरकार के बूते की बात नही है। यह एक तभी रह सकता है जब सब क्षेत्र अपनी स्वायत्तता मे फलने-फूलने के लिए आजाद हो और सब मिल कर एक महा राष्ट्र हो सकते हो। तेलुगू देशम नही उखड़ा, बगाल मे मार्क्सवादी नहीं उखड़े और कश्मीर घाटी मे फारूक की नेशनल कान्फ्रेंस भी जमी हुई है। यानी हमारी एकता और अखंडता की अनिवार्य शर्त हमारी क्षेत्रीयता की आत्म संतुष्टि है। पंजाब की समस्या इसी कारण विकट बनी हुई है कि पंजाबियत की माग को पहले सिखों की और फिर आतंकवादी बनने दिया गया। असम मे भी समस्या असमियत की ही है। सिखों और असमियो को वापस अपना घर बनाने की सुविधा और दिल हमें देना है और यह धर्म, जाति और क्षेत्र के नाम पर लोगों को बांट कर उनमें टकराव पैदा करते रहने से नही होगा। देश को एक नए सिरे से एक और अखंड बनने की जरूरत है। उसे सीआरपी- बीएसएफ और फौज की बंदूकों का डर और अनुशासन नही चाहिए। उसे लगाव और एक दूसरे के होने का नया विश्वास चाहिए। इक्कीसवी सदी की फैशनपरस्त तकनीक के डिजनीलेंड मे पहुच कर यह देश एक अखड और ताकतवर नही हो सकता। उससे तो यूनियन कारबाइड के कारखानो से मिथाइल आइसोसाइनेट ही निकलेगी।

राजीव गाधी को शायद याद हो कि मोहनदास करमचद गाधी भी जब परिस्थितियों के कारण भारत वापस आए और देश की आजादी में लगने की जिम्मेदारी उन पर आई तो वे उस समय के तीसरे दर्जे के डब्बो मे बैठकर रेल से देश भर में घूमे ताकि असलियत जान सकें। वे मूर्ख नही थे न उन्हें घूमने का सुझाव देने वाले गोखले ट्रैवल एजट थे। गाधी को इस देश की असलियत जानने की जितनी जरूरत थी, राजीव गाधी को उससे कम नही है। एक पायलट और प्रधानमंत्री के पुत्र और फिर प्रधानमत्री के नाते जो दिखता है वह शायद आकाश और सत्ता की असलियत हो। जरूरत लोगों और देश की असलियत समझने की है। और इसे समझने के बाद गांधी जी के उस ताबीज को आजमाना जरूरी है जो अभी भी सिर्फ सिद्ध किया रखा है। यह ताबीज कहता है कि जो भी फैसला लो, गरीब से गरीब आदमी की भलाई करने वाला लो। राजीव गाधी को अपने आप से पूछने की जरूरत है कि जिस राजनीति और साइंस और टेक्नालॉजी की बात वे कर रहे है उसका गुब्बारा अमीरी के द्वीपो पर उतरेगा या गरीबी और अभाव के काले समुद्र मे डूबेगा। नई सरकार को जरूरत नए सिरे से और क्रांतिकारी ढंग से सोचने की है, कम्प्यूटर से जवाब लेने की नहीं।

राजीव गाधी को अपने नाना जवाहरलाल की बात भी याद होगी जिसमे उन्होंने कहा था कि उन्हे इस देश के लोगों का अपार और अटूट प्रेम मिला और उन्हे समझ में नहीं आया कि वे उसका क्या करें और कैसे उसका जवाब दें। राजीव गांधी को जो समर्थन और प्यार मिला है वह उन्हे समझ में आ जाए और वे उसके योग्य साबित हों तो इस देश की सत्तर करोड़ लोकतांत्रिक तोप एक साथ दग कर उनको सलामी देंगी।

[जनसत्ता से साभार]

जिला फरीदाबाद में वेदप्रचार मण्डल का गठन तथा कुछ उपयोगी सुझाव

जिला फरीदाबाद के सभी आर्यसमाजों तथा आर्य संस्थाओं के कार्यकर्त्ताओं की एक बैठक 4 फरवरी 1990 रविवार को आर्यसमाज मन्दिर जवाहर नगर पलवल में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

बैठक में आर्यसमाज की वर्तमान समस्याओं के समाधान करने तथा शराब, मांस, दहेज, गोहत्या आदि बन्द कराने के लिए निम्न-लिखित महानुभाव ने अपने सुझाव प्रस्तुत किए। श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री सभा उपदेशक ने आर्यसमाज के प्रचार का विस्तार करने के लिए जिला वेदप्रचार मण्डल के गठन करने का सुझाव दिया जिस से जिले के कर्मठ तथा लगनशील कार्यकर्ताओं के सहयोग से आर्य-समाज का प्रत्येक ग्राम में प्रचार किया जा सके।

डा० रणजीतसिंह पूर्व सभामन्त्री ने कहा कि आर्यसमाज की पुरानी पीढ़ी के कार्यकर्ता शनैः शनैः हम से विदा हो रहे हैं। अतः हमें उन द्वारा चलाई गई आर्य संस्थाओं की सुरक्षा करनी चाहिए और उनके त्याग, तपस्या तथा लगनशीलता का अनुसरण करके आर्यसमाज के कार्य को आगे बढ़ाना चाहिए। सभी कार्यकर्ताओं को समाज सुधार के कार्यों में तन, मन तथा धन से योगदान करके ऋषि ऋण चुकाने का यत्न करना चाहिए।

प्रो० धर्मचन्द विद्यालंकार पूर्व सभाउपदेशक ने कहा कि सत्य करने से आर्यसमाज की शक्ति बढ़ती है। हैदराबाद आर्य सत्याग्रह तथा हिन्दी रक्षा आंदोलन से आर्यसमाज की शक्ति तथा संगठन का परिचय सारे राष्ट्र को मिला था। अतः हमें अब शराब आदि बुराइयों के विरुद्ध आंदोलन करके रचनात्मक कार्य करना चाहिए। अपने वेदप्रचार तथा शराब विरोधी आंदोलन में समय देने का वचन दिया।

श्री आनन्द स्वरूप भाटिया मन्त्री आर्यसमाज जवाहर नगर पलवल ने सुझाव दिया कि हमें पहले अपनी त्रुटियों को दूर करके अन्यों की त्रुटियां दूर कराने का यत्न करना चाहिए। आर्य विद्यालयों में केवल आर्य अध्यापकों की नियुक्तियां करके विद्यालयों को आर्य-समाज के प्रचार का केन्द्र बनाना चाहिए। दूरदर्शन पर महाभारत में पाखण्ड दिखाया जा रहा है। आर्यसमाज के विद्वानों को शुद्ध महाभारत की घटनाओं पर लेख लिखने चाहियें। हमें विश्व हिन्दू परिषद् के नेताओं से सावधान रहे जोकि नमस्ते के स्थान पर नमस्कार तथा मूर्ति पूजा का प्रचार करके आर्यसमाज को हानि पहुंचा रहे हैं।

श्रीमती राजबाला आर्या उपदेशिका ने आर्यसमाज के प्रचार में सहयोग देने का वचन देते हुए सुझाव दिया कि वर्ण तथा आश्रम व्यवस्था पुनः लागू की जावे और आर्य कुमार सभा तथा आर्य युवती दलों की स्थापना करके आर्यसमाज के संघटन को सुदृढ़ करना चाहिए।

श्री संजीव मंगला एडवोकेट एवं पत्रकार ने आर्यसमाज के संघटन में युवकों को समुचित स्थान देने की मांग की और सभा द्वारा चलाए जा रहे शराबबन्दी आंदोलन में पूरा सहयोग देने का वचन दिया।

श्री यशपाल भाटिया आर्य वीरदल के कार्यकर्ता ने शिकायत करते हुए कहा कि आर्यसमाज के अधिकारी आर्य वीरदल को प्रोत्सा-हन नहीं दे रहे। हम आर्यसमाज के संघटन में कार्य करना चाहते हैं।

श्री हेतराम आर्य पलवल ने श्री कन्हैया लाल जी महता द्वारा चलाए जा रहे दयानन्द विद्यालयों की सराहना करते हुए कहा कि फरीदाबाद में छात्र तथा छात्राओं को आर्यसमाज के सिद्धान्तों से पूरी जानकारी दी जावे।

श्री रामरंग प्रधान आर्यसमाज पलवल शहर ने सभा प्रधान जी से अनुरोध किया कि आर्यसमाजों तथा आर्य विद्यालयों की गतिविधि तथा आय-व्यय की जांच पड़ताल करनी चाहिए।

अर्जुनदेव गुलाटी पलवल ने आर्यसमाज के प्रचार कार्यों में सहयोग करने का वचन देते हुए सुझाव दिया कि पद न मिलने पर भी आर्यसमाज का पूर्ववत् कार्य करते रहना चाहिए।

श्री लक्ष्मीचन्द आर्य फरीदाबाद का सुझाव था कि आर्यसमाज के सेवानिवृत नेता वानप्रस्थी तथा सन्यासी बनकर आर्यसमाज का कार्य करें। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ आर्यसमाज का प्रचार केन्द्र बनाया जावे और सभी आर्यों के घरों तथा आर्यसमाज मन्दिरों पर ओ३म् के झंडे लगाए जावें।

श्री कृष्ण कुमार भुटानी पलवल ने आर्यसमाज के आर्यसभासदों को ईमानदारी से अपनी मासिक या वार्षिक आमदनी का शतांश (सौ वां भाग) अपने आर्यसमाज को सदस्यता शुल्क देना चाहिए। आपने दुःख प्रकट किया कि अनेक बड़े-बड़े अधिकारी तथा व्यापारी अपनी आमदनी का शतांश न देकर एक रुपया देकर आर्यसमाज को हानि पहुंचाते हैं। हम आर्य हैं। अतः हमें अपनी आय नहीं छिपानी चाहिए। शतांश देने पर स्थानीय आर्यसमाज की आय बढ़ेगी और सभा को दशांश की राशि भी अधिक मिलेगी। इस प्रकार आर्यसमाज की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी और धन के अभाव की शिकायत न रहेगी। मा० हेतराम आर्य मानपुर ने शहरी आर्यसमाज के कार्य-कर्ताओं से गिला प्रकट किया कि हम ग्रामीण कार्यकर्ता शहर आर्य समाज के उत्सवों आदि में सम्मिलित होते हैं परन्तु शहरी कार्यकर्ता ग्रामीण आर्यसमाजों के उत्सवों पर नहीं पहुंचते। हमें सभी को मिल कर आर्यसमाज के कार्यों में सामूहिक रूप से भाग लेना चाहिए।

चौ० राजेन्द्र सिंह पूर्व विधायक ने सभा द्वारा आयोजित जिले-वार कार्यकर्ता बैठकों के आयोजन की सराहना करते हुए कहा कि शहरों तथा ग्रामों में अनेक ऐसे आर्य नर-नारी हैं जो आर्यसमाज के प्रचार तथा संघटन के कामों में सहयोग दे सकते हैं। अतः वेदप्रचार मण्डल आदि गठन करके उनसे सहयोग लिया जा सकता है। सरकार अपनी आमदनी बढ़ाने के लालच में शराब के ठेके गांव-गांव में खोल रही है जिनसे शराब पीने का रिवाज बढ़ रहा है। शराबी लोग गांवों में आर्यसमाज का प्रचार करने में अड़चन डालते हैं। अतः सभा को प्रत्येक जिले में प्रचारकों की संख्या बढ़ाकर कार्यकर्ताओं के सहयोग से शराब, मांस, दहेज तथा गोहत्या आदि बुराइयों के विरुद्ध संघर्ष करना चाहिए।

श्री सत्यदेव आर्य फरीदाबाद ने सुझाव दिया कि सभा के चुनाव के अवसर पर सभी प्रतिनिधियों को बोलने का अवसर दिया जावे तथा समय देने वाले प्रतिनिधियों को अधिकारी चुना जावे।

श्री बलवन्त सिंह गांव घोडी ने शराबबन्दी आंदोलन में पूरा सहयोग देने का विश्वास दिलाया।

श्री कन्हैया लाल महता संचालक दयानन्द विद्यालय ने सुझाव दिया कि हमें आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं को संघटन में रहकर कार्य करना चाहिए। उन्होंने बताया कि फरीदाबाद में बीस के लगभग दयानन्द विद्यालय चलाए जा रहे हैं। मैं चाहता हूं कि प्रत्येक विद्यालय में आर्य वीरदल की स्थापना हो। जो कार्यकर्ता इस कार्य में सहयोग करेगा उसे हर प्रकार की सुविधा दी जाएगी।

श्री जयप्रकाश आर्य पलवल ने चिन्ता प्रकट करते हुए कहा कि डी०ए०वी० स्कूल तथा कालेज दयानन्द के नाम से चलाए जा रहे हैं, परन्तु उनमें दयानन्द के सिद्धान्तों के विरुद्ध कार्य हो रहा है। पहली कक्षा से अंग्रेजी तथा लड़के तथा लड़कियों को ईसाई मत की निशानी नेकटाई का प्रयोग अनिवार्य रूप से किया जा रहा है। अतः हमें ऐसे विद्यालयों का बहिष्कार करना चाहिए। (शेष पृष्ठ ६ पर)

यू० १०३/१०८ लायसस टु पोस्ट विदाउट प्रीपेमेन्ट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११६३/७२ डी० सी० (४०६)

सावरकर स्मरण समारोह

नई दिल्ली फिक्की सभागार मे 25 फरवरी को साय 5 बजे सावरकर स्मरण, आत्मार्पण दिवस और जन्मशती समारोह एक साथ मनाया जाएगा। इस समारोह के मुख्य आकर्षण होगे 1 वीर सावरकर के जीवन पर आधारित एक पुरस्कृत चलचित्र, 2 सावरकर के कुछ गीत-प्रसिद्ध सगीत निर्देशक श्री सुधीर फडके द्वारा, 3. सावरकर के नाट्यांशो का प्रस्तुतिकरण सौ० वसुधा तित्तुरे द्वारा, 4. कई प्रसिद्ध नेताओ के विचार और भाषण। मच सचालन—सावरकर के चर्चित चरित्रकार श्री हरीन्द्र श्री वास्तव।

हंसराज माडल स्कूल का बालमेला

नई दिल्ली। 6 जनवरी दोपहर को हंसराज माडल स्कूल पजाबी बाग मे, जो दिल्ली का प्रसिद्ध और प्रतिष्ठत स्कूल है, बडे पैमाने पर बाल मेला लगा। इसमे बच्चो ने ही अपनी ओर से लगभग सवा सौ दुकाने लगाई थी। अभिभावको की बाल मेले मे इतनी भीड थी कि सारा मैदान खचाखच भरा था। बच्चो के लिए ऊंट की सवारी हाथी की सवारी, तरह-तरह के झूले और अन्य अनेक मनोरजन के साधनो की व्यवस्था थी। इस मेले मे पजाब और हरियाणा से आए विभिन्न डी०ए०वी० संस्थाओ के प्रिंसिपल और प्रबन्ध कर्त्री सभा के पदाधिकारी भी उपस्थित थे। लकी ड्राॅ मे आने वाले प्रथम तीन स्थानो के लिए मोटर साईकल, स्कूटर, और फ्रिज जैसे पारितोषिको की व्यवस्था थी। सभी स्कूल के प्रिंसिपल तथा अन्य शिक्षको की प्रबन्ध कुशलता की प्रशंसा कर रहे थे।

हरियाणा में वेद प्रचार

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा करनाल (हरि०) की ओर से निम्नलिखित जगहो पर वेद प्रचार का आयोजन किया गया—1 से 6 जनवरी तक आर्य समाज मुलतानपुर, 9 से 13 जनवरी तक आर्य समाज, दादुपुर, जटा, 17 से 29 जनवरी तक आर्य समाज सैदपुर (अम्बाला)। और 2६ से 27 जनवरी तक आर्य समाज, रामशरण माजरा, कुरुक्षेत्र, 28 जनवरी से 1 फरवरी तक आर्य नगला साधा (अम्बाला) 2 से 5 फरवरी तक आर्य समाज खानपुर, 8 से 10 तक आर्यसमाज रामपुर मैनियान, 16-17 को आर्य केन्द्रीय समाज, पानीपत 17 से 19 तक आर्य समाज बस्तली। 23 से 28 तक आर्य समाज गजनाला और 3 से 7 मार्च तक आर्य समाज डारपुर मे वेद प्रचार का आयोजन किया गया है—वेद सुमन वेदालकार।

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के कर कमलों द्वारा स्थापित और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित

भारतवर्ष का पुराना और उत्तरी भारत का प्रमुख अनाथालय

कुशल प्रशासक शैक्षिक ज्ञाता, उदार हृदय प्रबन्धको की देखरेख में बालक-बालिकाओं के पालन-पोषण, शिक्षा आदि का उचित प्रबन्ध है।

आप सभी दानी महानुभाव इस पुनीत कार्य में दान देकर पुण्य के भागी बने।—प्रिं० पी० डी० चौधरी, मैनेजर आर्य अनाथाय, फिरोजपुर छावनी।

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाड़ी धीरज, दिल्ली से छपवा कर कार्यालय, 'आर्य जगत', मन्दिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

साप्ताहिक पत्र ओ३म् कृण्वंतो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

वार्षिक मूल्य-२० रुपये | विदेश मे २० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४८, अक ६, रविवार, ३ मार्च १९८५ | दूरभाष : ३४३७१८
आजीवन सदस्य-२०१ रु० | इस अंक का मूल्य—५० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८४, दयानन्दाब्द १६० | फाल्गुनशुक्ला ११, २०४१ वि०

टंकारा में ऋषि बोधोत्सव और रजत जयन्ती का अपूर्व समारोह

यो तो शिवरात्रि के पर्व को सारे देश के आर्य सामाजिक जगत् मे ऋषि बोधोत्सव के रूप मे प्रति वर्ष उत्साह से मनाया ही जाता है, परन्तु इस वर्ष टंकारा मे 16 से 18 फरवरी तक यह समारोह अपूर्व रहा । इसके साथ ही टकारा स्थित महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक विद्यालय की इस वर्ष रजत जयन्ती होने के कारण इस समारोह को चार चाद लग गए ।

ठेठ दक्षिण के तमिलनाडु से लेकर ठेठ उत्तर के जम्मू कश्मीर से भी ऋषि-भक्त आर्यजन भारी सख्या मे टकारा पहुचे । टकारा न केवल युग प्रवंनक ऋपि दयानन्द की जन्मस्थली है, बल्कि जिस घटना की स्मृति मे समस्त आर्य-जगत् ऋषि बोधोत्सव मनाता है, वह घटना भी यही घटित हुई थी । बालक मूलशकर ने डेमी नदी के तट पर जिस शिवमन्दिर मे शिवरात्रि के दिन अपने पिता और शिव-भक्तो के साथ रात्रि जागरण किया था, वह ऐतिहासिक मन्दिर अभी तक विद्यमान है और जिम पावन गृह को अपने जन्म से उस महापुरुष ने कृतार्थ किया था, वह घर भी अभी तक सुरक्षित है ।

देश के विभिन्न भागों मे आए लगभग 5 हजार नर-नारी उक्त दोनो स्थानो को देखकर भाव विभोर हुए बिना नही रहे । टकारा की गलियो मे जब शोभा-यात्रा निकली तो अनेक वृद्ध पुरुषो और वृद्ध माताओ की आखो से यह सोच-सोच कर प्रेमाश्रु बहने लगे कि कभी इन्ही गलियो मे देव दयानन्द भी अपने बचपन मे खेला करते होंगे । कुछ लोग तो उस रज को अपने माथे से भी लगाते देखे गए । इस दृश्य को देख कर कई पत्रकार भी गद्गद् हो गए ।

महात्मा आर्य भिक्षु जी व्याख्यान वाचस्पति की अध्यक्षता मे 17 फरवरी की रात का जो श्रद्धाजलि सभा हुई उसमे प्रसिद्ध उद्योगपति, हीरो साईकल्स के प्रबन्ध निदेशक और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान श्री सत्यानन्द मुजाल ने जब ऋषि के चरणो मे अपनी भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा कि टकारा की भूमि का कण-कण इतना पवित्र है कि मन करता है—इस मिट्टी को अपने सारे शरीर पर मल लूं, तो मच पर बैठे अनेक बुद्धिजीवियो को रस की खान, जन्मना पठान, रसखान की यह उक्ति याद आए बिना नही रही-या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहू पुर को तजि डारौं" ।

इस समारोह की और क्या क्या विशेषताएं थी, यह विवरण अगले अक मे पढ़िए—समारोह की सचित्र झाकी भी ।

केवल भाषण नहीं, आचरण पर बल दें—श्री जाखड़

नई दिल्ली, १७ फरवरी लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड ने महर्षि दयानन्द बोधोत्सव के अवसर पर फीरोजशाह कोटला मैदान मे आयोजित समारोह में बोलते हुए कहा कि हम ही गाय को मारते है, प्रकृति को नष्ट करते है, देश के विरुद्ध जासूसी करते हैं और अपने ही लोगो के प्रति दुर्व्यवहार करते है। मानव कल्याण के लिए भाषण देने की अपेक्षा महर्षि के मन्तव्यों के अनुसार अपने जीवन मे आचरण करना कही अधिक आवश्यक है। सस्कृत सभी भाषाओं की जननी है, उसकी पूर्ण सुरक्षा आवश्यक है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनधि सभा के अध्यक्ष ला० रामगोपाल शालवाले ने कहा कि देशमें गौ हत्या पूर्णत: बन्द होनी चाहिए तथा संस्कृत अध्ययन करने वालो को विशेष प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। इस अवसर पर सर्व श्री ओमप्रकाश त्यागी, राजगुरु शर्मा, सच्चिदानन्द शास्त्री और पृथ्वीराज शास्त्री ने भी अपने विचार रखे।

महाशय धर्मपाल ने विभिन्न खेलकूद और सास्कृतिक प्रतियोगिताओ के विजेताओ को पुरस्कार प्रदान किए। महासचिव श्री सूर्यदेव ने आह्वान किया कि वे ऋषि के आदर्शों के अनुरूप अपने बच्चो को बनाएं। महोत्सव का प्रारम्भ यज्ञ के साथ हुआ।

डा० कृष्णलाल द्वारा रचित 'वन्दना' नामक पुस्तक का इस अवसर पर विमोचन किया गया और उसकी एक प्रति श्री जाखड को भेंट की गई।

श्री सोमनाथ मरवाह की अध्यक्षता मे ग्रीन पार्क मे आयोजित एक अन्य समारोह मे महर्षि दयानन्द के सदेश को फैलाने का सकल्प किया गया। करौलबाग मे आयोजित एक समारोह की अध्यक्षता श्री अजय भल्ला ने की।

उड़ीसा में व्यापक शुद्धि समारोह

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द जी के आग्रह पर सार्व० आर्य प्र० सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी वानप्रस्थ ने शुद्धि समारोह मे भाग लेने के लिये श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री उपमन्त्री को भेजा।

१० फरवरी को प्रात: उत्साहमय वातावरण मे शुद्धि समारोह श्री विशिखेश न शास्त्री के पौरोहित्य मे प्रारम्भ हुआ श्री पृथ्वीराज शास्त्री ने शुद्ध होने वाले व्यक्तियो को नवीन वस्त्र प्रदान किये। श्री महात्मा प्रेमप्रकाश जी वानप्रस्थी ने दीक्षित होने वाले बन्धुओ को आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर ११५ परिवारो के ५०० से अधिक व्यक्ति पुन: आर्य धर्म मे प्रविष्ट हुए। कार्यक्रम का आयोजन उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द जी तथा उनके सहयोगियो के प्रयास मे हुआ साथ मे आर्य समाज सम्बलपुर, आर्य प्र० सभा म० प्र० आर्य आर्यसमाज रायपुर का सहयोग भी उल्लेखनीय रहा। व्यवस्था में श्री डा० कृष्णदेव सारस्वत, श्री भवानी शकर साहू ने अच्छा योग दिया।

परामर्शदाता—अमर स्वामी सरस्वती सम्पादक—क्षितीश वेदालकार व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

अब तो यथार्थ को पहचानें

वे युग-पुरुष कौन थे ?

—आचार्य ब्र० आर्य नरेश वैदिक प्रवक्ता—

वे 'युग-पुरुष' कौन थे जिन्होने आज से ११६ वर्ष पूर्व सर्वप्रथम निम्नलिखित कार्य किये और पूरे विश्व को प्रभावित किया ?—

१ किसने सर्वप्रथम स्वदेशी वस्तुओ के प्रयोग का आन्दोलन चलाया तथा इसके साथ ही गरीबो के लिए नमक एव जगली लकडी से कर को समाप्त करवाने व अल्प-मूल्य पर न्याय की सुविधा दिलाने के लिये १८६५ मे प्रयास किया ?

२ देश की अखण्ड स्वतन्त्रता के लिए हैदराबाद की रियासत को भारत मे मिलाने के सफल प्रयास मे भारत के इतिहास मे जिन्दा जलाये जाने वाले माता गोदावरी एव श्री कृष्णराव (ईंटे), काशिनाथ (धारूर) गोविन्दराव (जानावाडी, कर्नाटक) आदि अमरशहीद किस स्वतन्त्रता सेनानी के शुभ्र शिष्य थे ?

३ (क) किसकी देशभक्ति की प्ररणा से प्रभावित होकर अमर क्रान्तिकारी श्यामजी कृष्णवर्मा ने १९०५ मे इंगलैण्ड मे जाकर राष्ट्र को स्वतन्त्र करवाने के लिये इडिया हाउस की स्थापना की एव वीर सावरकर, मदनलाल धीगरा व हरदयाल एम० ए० को छात्रवृत्ति दी ? वे तथा इसके साथ ही उसी युग पुरुष से प्रभावित होकर लाला लाजपतराय, भगतसिंह, रामप्रसाद विस्मिल, अशफाक उल्लाखा, चन्द्रशेखर आजाद जैसे सैकडो होनहार युवक देश की आजादी के लिए शहीद हुए और तब भारत आजाद हुआ ?

(ख) अग्रेज यह समझते थे कि अगर हम यहाँ के मूल निवासियो को इस भ्रम मे डाल दे कि तुम इस देश के मूल निवासी नही अपितु वाहर से आकर यहाँ बस गये हो, तो भारतवर्ष मे वे वडी सुगमता से अपनी जडे जमा सकते है। क्योंकि यहाँ के मूल निवासी आर्यो को विदेशी आक्रामक सिद्ध करने के वाद उनके हाथ मे एक वडा तर्क यह होता कि—'तुम आय हम अंग्रेजो का विरोध क्यो करते हो ? आखिर तुम भी तो हमारी ही तरह एक विदेशी आक्रामक के रूप मे आकर यहा राज्य करने लग गये हो न्याय मे जितना अधिकार इस देश पर तुम्हारा है, उतना ही हमारा भी है।'' देश-भक्त लोकमान्य तिलक जैसे लोग भी अग्रेजो की इस कुटिल चाल को न समझकर आर्यो को बाहर से आया हुआ वता गये। पर वह दूरदर्शी देवता पुरुष कौन था जो हमे वहुत पहले, ही अग्रेज की इस चाल से मुक्त होने का मार्ग वतलाता हुआ आर्यों को इसी देश का मूल निवासी सिद्ध कर गया ?

४ सरदार पटेल ने किस महापुरुष के लिए यह कहा था कि भारत के सविधान ने छुआछूत को एक अपराध तथा हिन्दी भाषा को राष्ट्र-भाषा का स्थान उसी युगपुरुष के प्रभाव से मिला ? इतना ही नही, अपितु हमारे मत मे लडकियो के लिये उन्नीस वर्ष की विवाह अवस्था, गोरक्षा, शराववन्दी तथा अन्धविश्वासो के निराकरण आदि की अनेको धाराए उसी युगपुरुष की कृपा से सविधान में दृष्टिगोचर हो रही है।

५. किस महापुरुष योगिराज की शिष्य मण्डली ने अत्याचारी निजाम के दात खट्टे करके उसे भारत का अभिन्न अंग बनाया ?

६ किस बाल ब्रह्मचारी ने देश को आकर आजाद करवाने के लिये अपने गुरु श्री विरजानन्द सहित सन् १८५७ के स्वतन्त्रता सग्राम मे सक्रिय भाग लिया ?

७ (क) १८५७ ई० की क्रान्ति के वाद महारानी विक्टोरिया ने भारत का राज्य ईस्ट इन्डिया कम्पनी से लेकर अग्रेजी साम्राज्य मे मिला लिया। इस अवसर पर महारानी की ओर से एक घोषणा-पत्र प्रचारित हुआ जो अपने राजनीतिक महत्व के कारण इतिहास प्रसिद्ध है। अग्रेज सरकार ने इस घोषणा पत्र मे वड़े मीठे-मीठे वायदे किये थे—राज्य की ओर से धार्मिक पक्षपात नही होगा, प्रजा पर माता-पिता की भाँति रानी का शासन होगा, इत्यादि-इत्यादि। किस महापुरुष की लौह लेखनी ने एक ही वाक्य में इस घोषणा का करारा उत्तर दिया कि—"चाहे कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत मतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराये का पक्षपात-शून्य, प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ भी विदेशियो का राज्य पूर्णतया सुखदायक नही होता ?"

(ख) ब्रह्म सत्य, एव जगत् को मिथ्या सिद्ध करने मे व्यस्त आदि शंकर से लेकर गुरु नानक जी तक दर्जनो आचार्य, विचारक और सन्त महात्मा हुए पर किसी एक ने भी भारत में विदेशी आक्रमण की निंदा और मातृ-भूमि की स्वतन्त्रता के लिये एक शब्द कहने की आवश्यकता नही समझी। इसके सर्वथा विपरीत, किस उच्चकोटि के योगी ने विदेशी शासन (जिसके राज्य मे सूर्य अस्त नही होता था) का प्रबल विरोध किया ?

८ किस व्यक्ति की बनाई सस्था के विषय मे आज से १०३ वर्ष पूर्व स्टेट्समेन' ने कहा था—"The action of the members of the LAHORE ARYA SAMAJ founded by the learned Pundit Deya Nand Saraswati should therefore be hailed with satisfacion by those who have the interest and welfare of this country at heart. They resolved at a meeting lately held at the premises of the Vrya Samaj building to abstain from the use of English clothes

९ किसने अस्पृश्यता के उन्मूलन के लिये अभियान चलाया एव छुआछूत को मिटाने के लिये सम्मिलित भोज का आदर्श प्रचलित किया ? उनके ही अमर शिष्य महाशय रामचन्द्र जी असवर्णों को कुए से पानी पिलवाने के लिए सवर्णो की लाठिया खाकर शहीद हो गये।

१०. आर्यो (हिन्दुओ) मे से विधर्मी बने ईसाई व मुसलमानजनो की शुद्धि करवाकर देश को विदेशी षड्यन्त्र से सचेत करते हुए किसके शिष्य श्रद्धानन्द, लेखराम तथा राजपाल आदि शुद्धि के कार्य के लिए ही गोलियो तथा खजरो से शहीद हो गये ?

११ किसके सुयोग्य शिष्य अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने सर्वप्रथम ४ अप्रैल १९१९ मे दिल्ली की जामामस्जिद के मच से वेद के मन्त्र 'त्वहि न पिता वसो०...' का पाठ करते हुए हिन्दु-मुस्लिम एकता की प्रेरणा का सूत्रपात किया ?

१२. किसके शिष्यो की प्रेरणा से गाधी जी छूआछूत आदि विभिन्न कार्यो को करने में समर्थ हुए तथा 'महात्मा' की उपाधि प्राप्त कर सके ?

१३. किस महापुरुष के प्रभावशाली शिष्यो ने हिन्दू से मुसलमान बन चुके बापू महात्मा गाधी के पुत्र 'हीरालाल' को चन्द दिनों मे ही पुन शुद्ध करके मां कस्तूरबा की झोली को खशियों से भर दिया ?

१४. किसने राष्ट्र के सर्वागीण विकास व एकता की आधार शिला आश्रमवास सहित सनातन वैदिक 'गुरुकुल प्रणाली' का पुनरुद्धार करते हुए अमीर-गरीब व ऊच-नीच की भावना से रहित होकर सबको यथायोग्य समान आसन, समान वस्त्र, समान भोजन एव समान निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था का आन्दोलन किया ?

१५ किसने पिता के सम्बन्ध को एव सम्पत्ति के अधिकार को जन्म से न मानकर, गुण-कर्म-स्वभाव से ही माना ?

१६. परमात्मा की श्रेष्ठतम कृति मनुष्य सन्तानो को नव-जीवन प्रदान करने के लिये फिरोजपुर (पजाव) मे भारत मे सर्वप्रथम अनाथालय की स्थापना किस करुणामय हृदय ने की ?

१७ किसने वर्ण व्यवस्था को जन्म से न मानकर वेद व आर्ष-ग्रंथो के अनुसार गुण-कर्म स्वभाव से ही माना ?

१८ (क) किसने सत्य एवं पक्षपातरहित न्यायप्रियता को मानव तथा राष्ट्र की उन्नति का मूलमन्त्र वताया ?

(ख) व्यक्ति-व्यक्ति तक ईश्वर की अमृतवाणी पहुचाने के लिये किसने सर्व प्रथम वेदो का प्राचीन ऋषिशैली मे हिन्दी भाषा मे भाष्य (अनुवाद) किया ?

१९ वेदो पर लगे जातिवाद, छूआ-छून, नरबलि, पशुवलि, नारी-निन्दा, जादू-टोना, बहुदेवतावाद, अवतारवाद जगद् मिथ्यावाद, मृतक-श्राद्ध, मूर्तिपूजा, सुरापान, गोमास-सेवन व बहुपत्नीवाद, एव अश्लील आक्षेपो का प्राचीन ऋषिशैली से खण्डन करके उन्हे सब सत्य-विद्याओ का आदि मूल ग्रन्थ किसने प्रतिपादित किया ?

२०. किसके वेदभाष्य की योगी अरविन्द एव मैक्समूलर जैसे विद्वानो ने मुक्तकण्ठ से प्रशसा की ?

२१ वेदशास्त्रो एव सस्कृत भाषा के गौरव को बताते हुए किस महापुरुष के शिष्यो ने संसार मे सर्व प्रथम (राईटब्रदर्स से भी लगभग आठ वर्ष पूर्व) सन् १८९५ में स्वयं विमान की रचना करके उसे वम्बई मे १८०० फुट ऊचा उड़ाकर वैदिकधर्म को पूर्ण वैज्ञानिक सिद्ध किया ?

२२. किसने सर्व प्रथम मानव-समाज को असंख्य मतमतान्तरों की परस्पर विरोधी मान्यताओं से मुक्ति

(शेष पृष्ठ ९ पर)

सुभाषित

जब मैं सोचती हूं कि मनुष्य के हाथ ने क्या-क्या चमत्कार किए हैं, तो मुझे खुशी होती है और लगता है कि मैं कुछ ऊंची उठ गई हूं। मनुष्य का हाथ मानो ईश्वरीय हाथ का प्रतिरूप और माध्यम है। हम लोग उसी हाथ की कृति, उसी का कीर्ति हैं और मानव-जाति के जन्मकाल से लेकर युग-युग तक उसी के द्वारा पुनर्निर्मित होते रहे हैं। हमें बनाए रखने अथवा नष्ट कर देने में हमारे अपने हाथ इतने अधिक शक्ति सम्पन्न है कि इस धरती पर उनकी शक्ति से अधिक लोमहर्षक और कुछ भी नहीं है। मनुष्य जो भी करता है, उसमें वही हाथ जीवित एवं निहित है, रचता हुआ और नष्ट करता हुआ, व्यवस्था और विध्वंस—दोनों का स्वत. सूत्रधार। वह एक पत्थर को हटाता है कि समस्त विश्व की योजना परिवर्तित हो जाती है, वह एक ढेला तोड़ता है कि फलों-फूलों के रूप में नूतन सौन्दर्य विकसित हो उठता है और मरुभूमि पर उर्वरता का सागर लहराने लगता है।

—हेलेन केलर की कृति 'The Open Door' से।

अनु०—स्व० श्री भवानी प्रसाद मिश्र

सम्पादकीयम्

टंकारा-एक स्वप्न-एक यथार्थ

टकारा एक स्वप्न था। वह आज भी एक स्वप्न है।

टकारा को स्वप्न का रूप ग्रहण करने मे भी पूरे 50 वर्ष लग गये। आर्य जनता की जडता को क्या कहे! एक समय था, जब यह स्वप्न भी नही था। टकारा का नाम इतिहास-बोध की हमारी उपेक्षा को उजागर करता हुआ कही अतीत मे खोया हुआ था और हम नही जानते थे कि इस स्थान से आर्य समाज का भी कोई सम्बन्ध होगा। हम ऋषि दयानन्द का नाम लेते थे, उनकी जय के नारे लगाते थे और यथा-तथा ऋषि के उपदेशो पर आचरण करने का प्रयत्न भी करते थे, परन्तु नही जानते थे कि टकारा के साथ उस युग-प्रवर्तक का भी कोई सम्बन्ध है। इतना तो शुरू से ही पता था कि मोरवी रियासत के किसी स्थान को इस महापुरुष-शिरोमणि की जन्म स्थली होने का सौभाग्य प्राप्त है, परन्तु वह टंकारा ही है, यह हम कहा जानते थे। धन्य हो उस गैर आर्य समाजी ऋषि-भक्त, तपस्वी, बंगाली बाबू देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय को जिन्होने ऋषि जीवन की खोज मे अपना जीवन गला दिया और इस बात के निश्चायक प्रमाण प्रस्तुत किये कि टकारा ही देव दयानन्द की जन्म भूमि है। उनके पहले ससार मे अस्तित्व होते हुए भी हमारे मानस-क्षितिज पर टकारा का कोई अस्तित्व नही था। बाबू देवेन्द्रनाथ की कृपा से हमने टकारा को महर्षि की जन्म भूमि के रूप मे पहचाना और तब वह हमारे स्वप्न मे स्थान पा सका।

50 वर्ष की उस उपेक्षा-भरी गाढ निद्रा के पश्चात जब हम जागे तब भी यह नही समझ पाये कि हम टकारा का क्या करे। ऋषि को जन्म स्थान है, हुआ करे। उसके प्रति हमारा कोई दायित्व भी है, यह पहचानने मे हम असफल रहे। इस उपेक्षा की अवधि भी लगभग 35 वर्ष है। पहले 50 वर्ष और उसके बाद ये 35 वर्ष। तदनन्तर हमको ध्यान आया कि टकारा मे तो ऋषि का कोई स्मारक बनना चाहिए। वह स्मारक क्या हो, इस उलझन मे फिर कई साल निकल गये। कुछ प्रयत्न हुए। कुछ मनस्वी लोगो ने इस दिशा मे प्रयत्न भी किये, परन्तु टकारा को स्वप्न की अवस्था से नही निकाल सके।

धीरे-धीरे स्वप्न मे यथार्थ का रग भरने की नौबत आई और तरह-तरह के परीक्षणो की विफलता के पश्चात अन्त मे टकारा मे अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक विद्यालय स्थापित करने का निश्चय हुआ। उस बात को भी अब 25 वर्ष गुजर गये और इस वर्ष इस उपदेशक विद्यालय की रजत जयन्ती मनाई गई। जैसे 25 वर्ष की अवस्था किसी युवक के जीवन मे इस बात का प्रमाण होती है कि अब यह व्यक्ति यौवन से भरपूर होकर सब तरह से अपने पावो मे खडा होने मे समर्थ है, उसी तरह की मन: स्थिति किसी सस्था की रजत जयन्ती मनाने पर भी उपस्थित होती है। हालाकि सस्थाओ के जीवन मे 25 वर्ष का काल बहुत थोडी अवधि है फिर भी पालने मे पूत के पावों की परीक्षा के लिए यह अवधि अपर्याप्त नही है। निश्चित रूप से टकारा का उपदेशक विद्यालय अब अपने बाल्यावस्था और किशोरावस्था के उपद्रवों से निकल चुका है। परन्तु फिर भी हम अभी तक टकारा को एक स्वप्न ही मानते है।

टंकारा को अभी तक स्वप्न मानने का एक कारण यह भी है कि इस स्वप्न को यथार्थ का जो रूप देने की कल्पना हमारे मन मे है, वह उतनी सहज नही है। अगर टकारा के स्वप्न को यथार्थ बनाना है तो उसका रूप क्या हो, यह हमारी कल्पना-शक्ति को तो चुनौती है ही, हमारे पुरुषार्थ को भी चुनौती है। जिस जड़ता की बात हमने प्रारम्भ मे कही है, उस जडता का स्मरण करके कोई बडी कल्पना करते भी डर लगता है। परन्तु हम यह भी जानते हैं कि आर्य जनता एक सोता हुआ शेर है। जब तक वह निद्रा में मग्न है, तभी तक जंगल मे अराजकता और छोटे-मोटे अन्य जानवरों की धमाचौकड़ी चलती है, किन्तु जब वनाधिपति सिंह अपनी निद्रा से जागता है और हुंकार भरता है तो उसकी गर्जना से न केवल दिशाएं गूंजती हैं, बल्कि अन्य श्वापद शरण ढूंढते फिरते हैं और अरण्य की अराजकता समाप्त हो जाती है। जब-जब आर्य जनता ने हुंकार भरी है, तब-तब यही स्थिति हुई है। जिस दिन आर्य जनो की यह जडता चैतन्य मे बदलेगी है, उस दिन समस्त विश्व उसकी चेतनता को देखकर चकित हुए बिना नही रहेगा।

तो टकारा का वह यथार्थ क्या हो? आर्य बन्धु अन्यथा न ले तो हम अपने मन की बात कहे। हम समझते हैं कि जिस तरह कन्या कुमारी मे विवेकानन्द शिला स्मारक बनाकर और विवेकानन्द नगर की स्थापना करके पुरुषार्थ के धनी कुछ मनस्वियो ने उसे सारे देश ही नही विश्व भर के विवेकानन्द-भक्तों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना दिया है, कुछ वैसा ही प्रेरणा का स्रोत ससार भर मे फैले ऋषिभक्तो के लिए टंकारा को बनना चाहिए। नही, विवेकानन्द शिला स्मारक का नकल करने की बात हम नही कह रहे है। परन्तु उससे प्रेरणा लेने की बात अवश्य कहना चाहते है। इस शिला स्मारक के साथ जिस प्रकार विवेकानन्द नगर नाम से नई नगरी बसाकर कन्याकुमारी मे देश की सेवा करने के उत्सुक सुशिक्षित युवकों और युवतियो को जीवन व्रती बनाने की योजना कार्यान्वित की जा रही है, क्या उस प्रकार के जीवन-व्रती हम तैयार नही कर सकते? धर्म और जाति के लिए अपना जीवन लगाने वाले उत्साही आर्य वीरो और आर्य वीरागनाओ की क्या हमारे पास कमी है? हम सारे संसार को आर्य बनाने के लिए देश-विदेश मे उच्च कोटि के प्रचारको की आवश्यता दिन-प्रतिदिन अनुभव करते हैं, परन्तु उसके लिए हमारा प्रयत्न केवल सदिच्छा तक सीमित रह जाता है। हम केवल यह चाहते हैं कि गरीबो के या निर्धन ग्रामीण जनों के बालक किसी तरह हमारी छात्रवृत्ति और सहायता के द्वारा छोटे-मोटे पुरोहित या सस्कार करवाने वाले और आर्य समाज के सत्सगों मे उपदेश देने वाले, आत्महीनता से ग्रस्त, उपदेशक तैयार हो जाये। परन्तु ऐसे स्तर-हीन, अल्प शिक्षित और केवल लाचारी मे उपदेशक-वृत्ति अपनाने वाले युवक ससार को आर्य बनाने का स्वप्न पूरा नही कर सकते। प्रथम अवसर मिलते ही वे उससे हाथ धो लेते है। यह उनका दोष नही उनकी विवशता है। हम मुकाबला करना चाहते हे देश-विदेश के अन्य दिग्गज धर्माध्यक्षो से और उसके मुकाबले मे तैयार करते है बहुत बौने आदमी। इस के कारणो की मीमासा की आवश्यकता है।

सबसे पहले तो हमको स्वय आत्म विश्लेषण करना पडेगा। महाराजा अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए अपने पुत्र महेद्र और पुत्री सघमित्रा को भिक्षु और भिक्षुणी बनाया था। तभी तो उस युग के धनाढ्य, राजा-महाराजे और प्रकाण्ड पंडित भी बौद्ध धर्म की शरण मे आये थे। बर्मा के प्रधानमन्त्री ऊ नू स्वय बौद्ध भिक्षु बन सकते हैं। अमेरिका के विदेश मन्त्री डलेस का होनहार पुत्र पादरी बनने के लिए रोम जा सकता है। परन्तु हमारे समाज के तथाकथित उच्च वर्ग के लोग कभी यह नही सोच सकते कि उनकी सन्तान भी उपदेशक बने। स्वयं उपदेशक भी अपनी सन्तान को उपदेशक नही बनाना चाहते। सब अपनी सन्तान को वकील, डाक्टर इजिनीयर या सरकारी अफसर बनाना चाहते है। तो क्या गोदान के होरी का लडका ही उपदेशक बनने को रह गया है? युवको मे भावना की कमी नही होती, परन्तु उनका सही ढग से मार्ग दर्शन करके और उनके योगक्षेम की उचित व्यवस्था करके उनके सामने वैदिक धर्म के मिशनरी का उदात्त आदश उपस्थित किया जाय तो अभी यह मही इतनी वीर-विहीन नही हुई है कि आर्य समाज मे भी स्वामी रगनाथानन्द या चिन्मयानन्द तैयार न हो सकें।

हम टकारा को कन्याकुमारी के ढग का रूप देकर अद्भुत तीर्थ ही नही, बल्कि स्वप्न को यथार्थ मे परिणत करने वाला एक विश्व दर्शनीय चमत्कारी स्थान बनाना चाहते हैं और अपना यह स्वप्न आर्य जनता के मन मे उतारना चाहते है। उसका क्रियात्मक रूप क्या हो, यह आर्य नेताओ पर छोडते है।

टंकारा की रजत जयन्ती से इस बार हम यही विचार लेकर लौटे हैं। टकारा को उसका प्राप्तव्य मिलना ही चाहिए। जब आर्य मनीषी इस दिशा मे विचार करना प्रारम्भ करेंगे, तो स्वयं उनके सामने मार्ग प्रशस्त होता जाएगा। हम तो केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि टकारा में वे सब सम्भावनाएं हैं। □

[हमारे मन में क्या योजना है—यह अगले अक मे पढ़िये]

सत्य का अखण्ड साधक

जिसे भय या प्रलोभन विचलित नहीं कर सके

—डा० रघुबीर वेदालंकार—

बोधरात्रि चली गई। उद्बोधन देने के लिए, सोतो को जगाने के लिए, नई चेतना, नई उमंग नया जीवन प्रदान करने के लिए प्रतिवर्ष उपस्थित होती थी यह महाशिवरात्री। इसी रात्रि को मूलशंकर ने जाग कर शिव की आराधना की थी। शिव के नाम पर पाषाण पिण्डी पर चूहो को चढ़ते देख सच्चे शिव को प्राप्त करने की जिज्ञासा उठी थी बालक मूलशंकर के मन में।

वस्तुत वह सत्य का पुजारी था, सत्य का अन्वेषक था, सत्य का आराधक था तथा सत्य का साधक था। वह सत्य के लिए जिया तथा सत्य के लिए उसका बलिदान हुआ। जोधपुराधीश तथा नन्हीबाई के सम्बन्ध को लेकर किये गये ऋषि के सत्य उद्घोष के कारण ही तो नन्हीबाई उनकी जान की ग्राहक बन गयी। वह सचमुच सत्य पर बलिदान हो गया। बोधरात्रि के अवसर पर भी वह सत्य की जिज्ञासा ही थी जिसने अबोध मूलशंकर को बोध प्रदान किया। उसे मूलशंकर से दयानन्द—ऋषि दयानन्द बना दिया।

उसका जीवन सत्य पर आधारित था। सत्य उसमे कूट-कूट कर भरा हुआ था। उसके रोम-रोम मे सत्य व्याप्त था। सत्य के सहारे वह आगे बढ़ता चला गया। उसको जहाँ से भी सत्य मिला, उसने ग्रहण किया। इसी सत्य की खोज मे उसने दण्डी विरजानन्द का द्वार खटखटाया। अन्दर से आवाज आयी—कौन? उत्तर था—"मै यही जानने के लिए तो यहा आया हू।' अपने विषय मे, सच्चे शिव के विषय मे यह सत्य की जिज्ञासा ही थी, जिसने बालक मूलशंकर को सभी सुख-सुविधाओ से पूर्ण घर का परित्याग करके एक फकीर की झोपडी पर लाकर खड़ा कर दिया। विरजानन्द ने पूछा—'अब तक क्या-क्या पढा है?' दयानन्द ने कौमुदी आदि ग्रन्थो का नाम लिया। विरजानन्द ने उनको यमुना मे बहाने की आज्ञा दी। दयानन्द ने उसे शिरोधार्य किया क्योंकि उन्होने अब तक जो कुछ पढ़ा था, वह अनार्ष था, असत्य था। सत्य विद्या की प्राप्ति के लिए पूर्व के असत्य को भूलना पडता है, छोडना पडता है। दयानन्द ने ऐसा किया। उसे जो-जो सत्य मिला, वह उसे ग्रहण करता गया। जो नियम उसने जीवन मे अपनाया उसे ही आर्य समाज के नियमो मे प्रविष्ट कर दिया 'सत्य को ग्रहण करने तथा असत्य को छोड़ने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।' काश, यदि यह प्रवृत्ति समाज मे व्याप्त हो जाए तो व्यर्थ के लडाई-झगडे-ईर्ष्या-द्वेष, वैरभाव, पाखण्ड, मत-मतान्तर स्वत समाप्त हो जाए।

अनार्ष ग्रथो मे सत्य नहीं मिला

दयानन्द के समय मे नाना मत-मतान्तर, मजहब समाज मे व्याप्त थे। उन सबके ग्रन्थो का एक एक भयकर जजाल था जिसमे से पार होना उतना ही कठिन था जितना कि दुर्गम, अनन्त वन को पार करना। दयानन्द ने वह सब कुछ किया। सभी मत-मतान्तरो के ग्रन्थ पढ डाले। ३००० से भी अधिक ग्रन्थो के पन्ने उन्होने पलट डाले। सत्य कहीं भी हाथ न लगा। वह परम सत्य की तलाश मे था। इन ग्रन्थो के जजाल मे इसे सत्य के दर्शन नही हुए। उसने वेद को पकड़ा, वही उसे परम सत्य मिल गया। दयानन्द ने घोषणा कर दी—"वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है।' इसी सत्य के कारण उसने वेद तथा तदनुकूल ग्रन्थों को प्रमाण माना। उसकी विजय हो गयी। वह अजेय रहा। शास्त्रार्थ में उसे कोई हटा न सका। उसके सिद्धान्तो का कोई प्रतिवाद न कर सका।

दयानन्द समझ गया था कि सत्य क्या है। उसने आर्ष-अनार्ष ग्रंथो की सूची बनाई तथा कहा कि आर्ष ग्रंथो का पढना उसी प्रकार है जैसे समुद्र मे गोता लगाना तथा मोतियो का लाभ होना तथा अनार्ष ग्रन्थों का पढना ऐसा है जैसे पहाड को खोदना तथा कौडी का लाभ होना। दयानन्द ने मत-मतान्तरों में छिपे असत्य को पहचाना तथा उसका उच्छेद करके सत्य-अर्थ-प्रकाश करने के लिए ही अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ-प्रकाश' की रचना की।

सत्य की खोज और परीक्षण

दयानन्द सत्य का जिज्ञासु था, सत्य का साधक था, सत्य का आराधक था। सत्य उसका उपास्य था। सत्य उसका देव था। वह सत्य को परीक्षण के आधार पर स्वीकार करता था। उसकी यही परीक्षण भावना थी कि नदी मे बहते मुर्दे को चीर कर वह जानना चाहता था कि इसकी शरीर रचना कही से उपलब्ध तंत्र के एक ग्रंथ से मेल खाती है या नही? उस ग्रन्थ को विपरीत पाकर मुर्दे के साथ ही उसने उस ग्रंथ को भी बहा दिया।

दयानन्द ने सत्य का उद्घोष किया। असत्य के खण्डन का बीड़ा उठाया। यही था उसकी पाखण्ड-खण्डनी का उद्देश्य। ऐसा करने में उसको भय और लालच का भी सामना करना पड़ा। किन्तु दयानन्द ने असत्य के साथ समझौता करने से, भय अथवा लोभ वश सत्य का परित्याग करने से सर्वथा मना कर दिया। वह जानता था—'सत्यमेव जयते।' इससे अधिक आदर और क्या होगा कि लोग उनको अवतार मानने को तैयार थे। ऐसा उनको कहा भी गया, किन्तु शर्त यही थी कि दयानन्द मूर्तिपूजा का खण्डन छोड़कर उसको शास्त्र सम्मत घोषित कर दें। कितना बड़ा प्रलोभन था अवतार बन जाने दयानन्द! किन्तु सत्य के पुजारी? तुमने प्रस्ताव को ठुकरा दिया। तुमने घोषणा की 'मुझे विश्वनाथ की गद्दी का लालच काशी नरेश ने भी दिया था किन्तु मै किसी भी सांसारिक वासना के वशीभूत होकर सत्य का परित्याग नही कर सकता।'

सत्य की रक्षा के लिए, सत्य के प्रचार के लिए उसने बडे से बडे भय की भी परवाह नही की। यहा तक कि प्राणो का भय भी उसको सत्य से विमुख न कर सका। उसने जिसको सत्य समझा, उसे ही सत्य कहा। उसका ही प्रचार किया। उसने वेद को अन्तिम सत्य समझ कर वेद के प्रचार को जीवन का लक्ष्य बनाया। उसे पता था कि इस कार्य मे कठिनाइया आयेंगी। किन्तु वह यह भी जानता था कि सोना अग्नि में तपाने से ही कुन्दन बनता है। इसलिए उसने किसी विरोध की किसी भय की परवाह किये बिना घोषणा की 'विरोध को असत्य से सत्य की कान्ति चौगुनी चमकती है। दयानन्द को यदि कोई तोप के मुँह के आगे रखकर भी पूछेगा कि सत्य क्या है, तब भी उसके मुख से वेदों की स्तुति निकलेगी।'

मूलशंकर! शिवरात्रि को जाग कर तूने बोध प्राप्त किया। शिवरात्रि को तूने बोध रात्रि बना दिया। अपने साथ-साथ उसे भी अमर बना दिया। सत्य की जिज्ञासा ने सच्चे शिव की अभिलाषा ने तुझे जगल-वन-पर्वतों मे भटकाया किन्तु तूने हिम्मत न हारी। जो रास्ता अपना लिया—उससे पीछे पैर न हटाया। न केवल तूने सच्चे शिव के दर्शन किये, अपितु संसार को भी सच्चे शिव की प्राप्ति का मार्ग दिखला दिया। सोते भारत की आत्मा को झकझोर दिया। तूने जन-जन को राष्ट्रीयता का, स्वाभिमान का पाठ पढ़ाया। तन्द्राग्रस्त भारत की धमनियो मे नयी चेतना, नयी स्फूर्ति का सचार किया। विदेशी धर्म प्रचार की आधी के सामने तू हिमालय के समान खडा हो गया। वह आधी तुझसे टकरा कर लौट गयी। भारत माँ की सन्तान विधर्मी होने से बच गयी। इस महा शिवरात्रि पर जागकर तूने सबको जगा दिया।

धन्य है तुमको ऐ ऋषि!
तूने हमें जगा दिया।
सो सो के लुट रहे थे
हम, तूने हमें बचा लिया॥

पता—ए-एम ३८ शालीमार बाग
दिल्ली-५२

हमें मिला स्वराज्य है!

—श्री देव, केरलीय—

हमें मिला स्वराज्य है
सु-राज तो मिला नहीं
कल्पना, मनोज्ञ थी कि
रामराज्य हो यहा
सत्य धर्म आदि की
तो, मान्यता बढ़े यहाँ।
स्वप्न सुनहरा मिटा
प्रेम-भाव भी घटा
लक्ष्य तो दूर है।
पासबा बना है चोर
रक्षक बनेगा कौन?
उजड़ गया चमन है
न किसी के मन लगन है।
क्या करे, कहाँ चले?
हर कहीं अशांति है?
बढ रही है, यातनाएं
हम सभी विकल है।
अनन्य भाव भक्ति का
उड़ चला है देश से
राग निन्द्य द्वेष का
निकल रहा है कंठ से।
गौण है परार्थ भाव
स्वार्थ ही प्रधान है,
द्रोपदी के चीर-सा
बढता भ्रष्टाचार है
नाक तक डूबे हम
सिर को फिर बचावे कौन
विफल होती योजना
व्यर्थ होती साधना।
बोलता कृतांत घोर
नाश हो जगत् का
मूक हो विपचिके
नृत्य पूर्ण हो चुका!
एक जुट होके अब
प्रयत्न हम करे सभी,
राष्ट्र के उत्थान मे ही
लीन होवें, हम सभी।
डरे नही अराति से
मुडे न संकटो से हम
दृढ प्रतिज्ञ हो चले
न हीन भावना जगे
विचलित न हो सारथी
रथ बिना रुके चले,
हे प्रभो! कृपा करो
हम समर्थ हो चले!
बोल प्रिय कोकिले
क्यो चुप हो गयी है तू,
पचम क्यों थम गया,
मौन क्यो साधे भक्ता?

पता : पं० नारायण देव,
हिन्दी सस्कृत विद्या भवन
कोट्टयम-६८६००४

बोधोत्सव का सत्य संदेश

एक ईश्वर की उपासना

—श्री ओम्प्रकाश आर्य—

बालक मूलशङ्कर ने एक छोटी सी घटना से इतना कुछ प्राप्त किया था कि उसे शब्दो में वर्णन करना कठिन है। ईश्वर के स्थान पर जो कल्पित पाषाण प्रतिमा आदि का पूजन हो रहा था उसकी निस्सारता का उन्हे ऐसा बोध हुआ कि वे जीवन भर सच्चे शिव-कल्याण-कारी सर्व-व्यापक-सर्वज्ञ सर्वान्तर्यामी परमात्मा की खोज मे लगे रहे और जब उसका साक्षात्कार कर लिया तब निरन्तर उसके सत् स्वरूप की जानकारी सभी को देते रहे। ईश्वर को छोड़कर उसके स्थान पर किसी अन्य की उपासना करना वे महापाप समझते थे। मूर्तिपूजा को वे ईश्वर प्राप्ति की सीढ़ी नही, बल्कि ऐसी खाई समझते और मानते थे कि जिसमे गिर कर मनुष्य फिर बाहर निकल नहीं सकता। उनका कहना था कि मानव-मानव मे भेद-भाव पैदा कर उसे आपस मे शत्रु बना-लडाने का काम इसी जड पूजा ने शुरू कराया है। यह तो हम भी अनुभव करते हैं कि कोई भी मूर्ति पूजक जो इसे सीढ़ी मानता है कभी इस सीढ़ी से अपना चरण अगली सीढ़ी पर चढाते नही देखा गया।

अवतारवाद और मूर्तिपूजा इन दो मान्यताओ ने मानव-मात्र का अनिष्ठ किया है। एक बार पिलखुवा निवासी भक्त रामशरण दास जी को मैंने पत्र लिख कर पूछा कि आधुनिक तथाकथित भगवानो और अवतारो के सम्बन्ध मे आपका लेख जो प्रकाशित हुआ है वह मैंने पढ़ा है और इस प्रकार इन पाखण्डो का पर्दाफाश किया ही जाना चाहिए, परन्तु मेरा विनम्र अनुरोध है कि आखिर इन नये-नये भगवानो की सृष्टि का मूल कारण क्या आपका माना हुआ अवैदिक सिद्धान्त अवतारवाद नही है ? स्वर्गीय भक्त जी ने मेरे इस प्रश्न का उत्तर न देना उचित समझा।

इसी प्रकार जालंधर के प्रसिद्ध सनातन धर्म विद्वान् श्री प० खैराती राम शास्त्री जी से निवेदन करते हुये मैंने कहा था कि मूर्तिपूजा के बारे में आपका और मेरा मतभेद है। इस पर हम आपस मे मिलकर प्रेमपूर्वक विचार कर सकते है परन्तु यह तो बताने की कृपा करे कि क्या मूर्तिपूजा के अन्तर्गत मरे हुए मुसलमानो की कब्रो का पूजना भी सम्मिलित है ? श्री शास्त्री जी कहने लगे—'बिल्कुल नही।' तब मैंने निवेदन किया कि क्या आप प्रतिदिन नहीं देखते कि हमारी बहने-भाई और बच्चे सभी मुर्दों की कब्रो पर जा-जा कर चढावे चढ़ाते और शीश झुकाते-मुरादें मांगते और हर वीरवार को वहां भारी संख्या में उपस्थित होकर पूजा आदि करते है। आप इस निकम्मी चीज को रोकते क्यो नही ? श्री शास्त्री जी ने कहा—आर्य समाज को आगे आना चाहिये। मैंने निवेदन किया मान्यवर शास्त्री जी इस महारोग की जड तो मूर्तिपूजा है जिसे आप छोडना या छुडवाना नही चाहते। आर्य समाज तो अपने प्रारम्भ से ही ईश्वर के सच्चे स्वरूप और उसकी उपासना का वेद विहित मार्ग बतलाता चला आ रहा है। काश ! आप बन्धुओ ने आर्य समाज का साथ दिया होता तो न केवल जड पूजा ही समाप्त हो जाती अपितु ईश्वर की सच्ची उपासना का भी प्रचार हो जाता। श्री शास्त्री के पास इसका उत्तर न था। आर्य बन्धुओ—क्या आज मूर्तिपूजा नये-नये रूप लेकर मानव समाज को एकेश्वरवाद तथा उसकी सच्ची उपासना से दूर नही ले जा रही ? क्या नये नये मत-पन्थ और सम्प्रदाय जन्म नहीं ले रहे ? और इस प्रकार आपके जातीय जीवन को छिन्न भिन्न नही कर रहे ? कहा स्वामी दयानन्द जी जिनके प्रचार से लोगो ने अपनी इच्छा से मूर्तिपूजा छोड़ मूर्तियों को जल मे प्रवाहित किया और कहा आज के हम उनके अनुयायी जो मूर्ति पूजा, और अवतारवाद—जैसे गलत सिद्धान्तो की भी न केवल उपेक्षा ही कर रहे हैं अपितु कही-कही तो इनका समर्थन भी हमारे स्वयम्भू नेतागण करते सुने जा रहे है। इन नेताओ से तो श्री युत् देवेन्द्र नाथ जी मुख्योपाध्याय ही महर्षि की विचारधारा के निकट और उसके प्रबल समर्थक एवं प्रचारक थे। वे लिखते है :—यह निर्भ्रान्त रूप से कहा जा सकता है कि अपनी रुचि और इच्छा के अनुसार नित्य नूतन ईश्वरो की सृष्टि करने की प्रवृत्ति मे हिन्दुओं ने अपनी मृत्यु का बीज स्थापित कर दिया है। यही हिन्दुओ की अवनति का प्रधान कारण है। "मूर्ति पूजा के बारे मे भी देवेन्द्रनाथ जी लिखते है : -

"मूर्तिपूजा ने भारत के अकल्याण की जो सामग्री एकत्रित की है, उसे लेखनी लिखने मे असमर्थ है। जो धर्म सम्पूर्ण भाव से आन्तरिक वा आध्यात्मिक था उसे सम्पूर्ण रूप से बाह्य किसने बनाया ? मूर्तिपूजा ने हिन्दुओं के चित्त से स्वाधीन चिन्तन की शक्ति किसने हरण की ? मूर्तिपूजा ने। हिन्दुओ के मनोबल, वीर्य, उदारता सत्साहस को किसने दूर किया ? मूर्तिपूजा ने। प्रेम, समवेदना और पर दु:खानुभूति के बदले घोरतर स्वार्थ परता को हिन्दुओ के चरित्र मे कौन लाई ? मूर्तिपूजा। आर्य जाति को सैकडो सम्प्रदायो ने किसने बाटा ? मूर्तिपूजा ने ! इत्यादि।"

अपने लेख के अन्त मे भी उपाध्याय जी लिखते है :—"दयानन्द ने मूर्तिपूजा जैसे प्रबल शत्रु के विरुद्ध प्रचण्ड युद्ध का आयोजन करके न केवल भारत की आचार्य मण्डली मे अपने लिए अद्वितीय आसन बना लिया है बल्कि हिन्दुओ के अतिरिक्त समस्त सम्प्रदायो तथा गोरी कही जाने वाली जातियो के लिए प्रकृत कल्याण के द्वार खोल दिये हैं।

'इस देश के प्राय: सभी आचार्यो ने तथा अन्य देशो के सम्प्रदायानुयायियो ने मूर्तिपूजा के साथ सन्धि कर ली, या उसके साथ किसी न किसी प्रकार का समझौता करने की चेष्टा की परन्तु दयानन्द ने समस्त भारत भूमि में अति उज्जवल तथा प्रबल भाव से इस बात का प्रचार किया कि जब तक मूर्तिपूजा समूल नष्ट नही होगी तब तक भारत भूमि का कोई भी कल्याण साधित न होगा।

"शायद यह बात बहुत से लोगो को ज्ञात नही होगी कि स्वामी दयानन्द से बहुत से स्थानों मे और बहुत बार मूर्तिपूजा का खण्डन छोडने के लिए अनुरोध किया गया और उन्हे प्रबल, प्रलोभन तक दिये गये। सन् १८७७ मे जब कि वे लाहौर मे ठहरे हुए थे और उन्होने पंजाब मे प्रबल आन्दोलन उपस्थित कर रक्खा था तब काश्मीरपति महाराजा रणवीर सिंह ने पण्डित मनफूल सिह द्वारा स्वामी जी से अनुरोध किया था कि 'आप जो कुछ और कार्य कर रहे है किए जाए, परन्तु मूर्तिपूजा के विरोध मे कुछ न कहे, यदि आप ऐसा करें तो मैं अपना धनागार आपके समर्पण कर दूंगा।' परन्तु दयानन्द ने इसका क्या उत्तर दिया ? उन्होने पण्डित मनफूल से कहा कि मै वेद प्रतिपादित ब्रह्म को सन्तुष्ट करूंगा न कि काश्मीरपति को। आप ऐसी बात फिर मेरे सामने न कहिये।"

सन् १८६९ ई० मे. जब काशी मे शास्त्रार्थ के कारण चारो ओर प्रबल आन्दोलन हो रहा था, काशी का एक प्रसिद्ध पण्डित रात्रि के समय ऋषि दयानन्द के पास आया और यह प्रार्थना करने लगा "यदि आप अन्य सब बातो का खण्डन करें किन्तु एक मूर्तिपूजा का खण्डन न करें तो काशी की समस्त पण्डित मण्डली एकत्रित होकर आपके गले मे जयमाला पहनाएगी और आपको हाथी पर सवार करा कर आपकी सवारी सारे नगर मे निकालेगी और आपको हिन्दुओं का अन्यतम अवतार मान लेगी।" इसके उत्तर मे ऋषि दयानन्द ने कहा - 'मै यह कुछ नही चाहता, मैं तो वेदप्रतिपादित सत्य के प्रचार के लिए आया हू।" पण्डित जी यह सुनकर चुप हो गये।

पाठक वृन्द ! ऋषि जीवन में अन्य अनेक ऐसी घटनाये विद्यमान है जिनसे पता चलता है कि ऋषिवर को जो सच्चा बोध प्राप्त हुआ था। उसकी रक्षा उन्होने प्राण-पण से की और उसी सत्य का, जिसने उनके जीवन को इतना ऊंचा उठाया था, वे सदा प्रचार करते रहे।

हिन्दुओ की संख्या वृद्धि की ओर ध्यान देना अच्छा है परन्तु इसके साथ-साथ, बल्कि उससे भी बढ़कर, हिन्दुमात्र को सच्चा वेदानुयायी एकेश्वरवादी, बनाना उससे भी अधिक आवश्यक है। सत्य और ज्ञान मूलक सिद्धान्त-मन्तव्य और तदनुकूल कर्तव्य ही कल्याणकारी हुआ करते है।

महर्षि ने अपने ग्रन्थो तथा वेद-भाष्य मे ईश्वर के सत्स्वरूप और उसकी सच्ची उपासनाविधि पर उत्तम रीति से प्रकाश डाला है। कुछ पंक्तिया पाठको के लाभार्थ नीचे दी जा रही है—

इन्द्र वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्य ।
अस्माकमस्तु केवल ।

ऋग्वेद के इस मन्त्र का भाष्य करते हुए महर्षि ने भावार्थ मे लिखा है—

ईश्वरोऽस्मिन् मन्त्रे सर्वजनहितायोपदिशति । हे मनुष्या ! युष्माभिर्नैव कदाचिन्मद्विहायान्य उपास्यदेवो मन्तव्य । एवं सति य: कश्चिदीश्वरत्वेऽनेकत्वम् आश्रयति स मूढ एव मन्तव्य इति ॥

—अर्थात् इस मन्त्र मे ईश्वर ने सब मनुष्यो के हित के लिये उपदेश दिया है कि तुम्हे मुझे छोडकर किसी को उपास्य देव न मानना चाहिए। ऐसी अवस्था मे जो ईश्वर मे अनेकता का आश्रय लेता है उसे मूर्ख ही समझना चाहिये।

य एकश्चर्षणीना वसूनामिरज्यति ।
इन्द्र: पञ्च क्षितीनाम् । ऋ० १-७-९

(शेष पृष्ठ ६ पर)

जन-जन का प्रेरणा स्रोत ऋषि दयानन्द

—श्री कंवल सूद, प्रिंसिपल—

१९वी शताब्दी ! परतन्त्रता की बेडियो मे जकडा भारत ! सब तरफ वैमनस्य और घृणा का वातावरण। राजनीतिक क्षेत्र मे ही नही सामाजिक क्षेत्र मे भी सब तरफ विघटनकारी शक्तियो का ही बोलबाला था। अपने ही लोगो द्वारा विदेशियो से मिलकर अपनो का गला घोटा जा रहा था। मनुष्यता का दामन छोडकर पशुता का जीवन अपनाया जा रहा था। धर्म के नाम पर जनसाधारण का शोषण किया जाता था। ऐसे ही घोर निराशा के वातावरण मे प्रकाश की पहली किरण देने वाले अपने ढग के अकेले महापुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती का आगमन हुआ। स्वामी दयानन्द जी जब कार्यक्षेत्र मे उतरे तो उन्होने अनुभव किया कि भारतवासी लम्बी तानकर ऐसी गहरी नीद मे सो रहे है कि मीठे शब्दो से तो वे आखें खोलने को भी तैयार नहीं। अत भारत की जनता को जगाने के लिए दयानन्द जी को लोगो के कुकर्मों की कडी आलोचना का सहारा लेना पडा। यद्यपि बदले मे उन्हे स्थान-स्थान पर अवहेलना, निन्दा, कुवचन, ईट-पत्थर और विष ही मिला तथापि देशहित की भावना उनके मन से कभी नही हटी। यही भावना उन्हे विपत्तियो के जटिल जाल मे फसे होने पर भी समाज-सुधार के लिए प्रोत्साहित करती रही, मानो उनके जीवन की एकमात्र लगन स्वधर्म की रक्षा और देश के प्रति भक्ति भावना थी। उससे भी बढकर मानव का मानव बनाने की भावना ! उनकी इच्छा थी कि मनुष्य बस मनुष्य बनकर धरती पर रहे।

आज उन्हे हमसे बिछुडे सौ वर्ष से ऊपर हो चुके है। पूरे देश मे बडे जोर-शोर से पिछले वर्ष उनका 'निर्वाण-शताब्दी वर्ष' मनाया गया। यदि हम उनके कार्य का सही मूल्याकन कर सके तो पूरे देश मे एक बार पुन. समाज और धर्म के क्षेत्र मे वैसी ही क्राति लाई जा सकती है, जैसी कभी उनके जीवन-काल मे आई थी। आज भी देश की आन्तरिक स्थिति ठीक वैसी ही है। आज भी विघटनकारी शक्तिया देश को छिन्न-भिन्न करने पर तुली है। अन्तर केवल इतना ही है कि तब हमे विदेशी शक्तियो से जूझकर देश को बचाना था, पर आज हमे अपने ही मार्ग से भटके भाइयो को ठीक रास्ते पर लाकर अपने हृदय के टुकडो को जोडना है। स्वामी जी का कहना था—"एक धर्म, एक भाव और लक्ष्य बनाए बिना भारत का पूर्ण हित और राष्ट्रीय उन्नति का होना दुष्कर कार्य है। सब उन्नतियो का केन्द्र-स्थान ऐक्य है। जहा भाषा, भाव और भावना मे एकता आ जाए वहाँ सागर मे नदियो की भाति सारे सुख एक-एक करके प्रवेश करने लग जाते है।" हम उनके अमर सदेश को भुलाकर जातिवाद क्षेत्रवाद और साम्प्रदायिक झगडो मे उलझ कर अपने ही हाथो देश का अहित करते है। स्वामी जी का दृढ विश्वास था कि जब तक मनुष्य को मनुष्य से अलग करने वाली, भेदभावो की प्रतीक, सम्प्रदायों की दीवारे रहेगी, जब तक मनुष्य विभिन्न मतो मे बटा रहेगा, तब तक ससार मे झगडे रहेगे।

जीवन का सही परिचय

मानवता के उद्धारक और राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देने वाले दयानन्द का नाम अमर रहेगा, यह निश्चित है, पर अमरत्व से हम भारत-वासी तभी लाभान्वित हो सकते है यदि उनके आदर्श और त्याग को अपने जीवन मे व्यावहारिक रूप से अपना ले। दुख इस बात का है सौ वर्षों से भी हम ऋषि दयानन्द के जीवन को भी पूर्णतया नही जान पाये। उनके जीवन की प्रारम्भिक घटनाओ को ही हम अपने विद्यार्थियों तक पहुचाकर ही सन्तुष्ट हो जाते है। बहुत कम लोग जानते है कि तात्याटोपे तथा महारानी लक्ष्मीबाई जैसे क्रातिकारी देश-भक्तो के स्वतन्त्रता सग्राम को सफल बनाने के लिए दयानन्द की प्रेरणा और आशीर्वाद काम कर रहा था। उनके लिए देश ही सर्वोपरि था, अत सन्यासी होने के नाते उन्होने देश के सारे सन्यासी-वर्ग को देश की जनता को जागृत करने मे जुटा दिया था। देश को एक सूत्र मे बाधने के लिए 'रक्त-कमल और रोटी' के प्रचलन के पीछे दयानन्द की ही प्रेरणा काम कर रही थी। आज भी यदि हम अपनी आने वाली पीढ़ियो को उनके आदर्शों तथा उनके जीवन की घटनाओं से सही और पूर्ण रूप से अवगत कराएं तो निश्चित ही देश का भविष्य उज्ज्वल हो जाएगा।

युवक क्या प्रेरणा लें

आज का नवयुवक जो कल का नागरिक है, कल का नेता है, कल के भारत का भाग्य-विधाता है—

१. वह महर्षि के जीवन से 'जीवन मे ईमानदारी से सघर्षरत' रहने की आश्चर्य-जनक प्रेरणा ले सकता है।

२. दयानन्द का जीवन प्रत्येक नवयुवक को, चाहे वह किसी भी क्षेत्र का निवासी हो, सर्वप्रथम भारतवासी होने की प्रेरणा ले सकता है।

३. गुजराती होते हुए भी उनका 'हिन्दी-प्रेम' निज-भाषा से (राष्ट्र-भाषा से) प्रेम करने का मार्ग दिखाता है।

४. उनका भारत की सेवा मे समर्पित जीवन नवयुवको को 'देश' को एकसूत्र में बाँधने और उसकी सुरक्षा के लिए बलिदान देने की माग करता है।

५ इन सब बातो से बढ़कर उनका पवित्र तथा उज्ज्वल कर्मनिष्ठ जीवन मानवता की सेवा करने का न्यौता देता है।

आओ हम सब उनके आदर्शों पर चलने की प्रतिज्ञा करे।

पता—दयानन्द माडल सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, दयानन्द नगर, जालन्धर-८

एक ईश्वर की .....

(पृष्ठ ५ का शेष)

इसके भावार्थ मे ऋषि लिखते हैं—"यः सर्वाधिष्ठाता सर्वान्तर्यामी व्यापकः सर्वैश्वर्यप्रदोऽद्वितीयो जगदीश्वरः सर्वजगतोरचको धारक आकर्षण कर्तास्ति स एव सर्वैर्मनुष्यै-रिष्टत्वेन सेवनीयोऽस्ति। य कश्चित् तं विहायान्यमीश्वरभावेन इष्ट मन्यते स भाग्यहीनः सदा दु:खमेव प्राप्नोति।"

—अर्थात् जो सबका स्वामी अन्तर्यामी व्यापक और सर्व ऐश्वर्यप्रद, अनुपम अद्वितीय तथा जिसे किसी दूसरे के सहाय की इच्छा नही है वही सब जगत् का रचने वाला, पालन-पोषण करने वाला है। सभी मनुष्य उसी को अपना इष्ट माने और उसी की उपासना करे। जो मनुष्य उसे छोड़कर किसी अन्य मे ईश्वरभाव रख उसे अपना इष्ट मानता है वह भाग्यहीन सदा दुःख को प्राप्त करता है।

आर्य बन्धुओ ! कितने स्पष्ट शब्दो मे महर्षि ने वेदमन्त्रो के आधार पर एक ईश्वर को मानना तथा उसी की उपासना करने का उपदेश दिया है। हमारा कर्तव्य है कि हम जहाँ स्वयं जड़ पूजा का परित्याग करें और अन्यो से कराएं वहाँ ईश्वर की सच्ची उपासना—दोनो काल बैठकर नित्य नियम से सन्ध्या-स्वाध्याय और आत्म-चिन्तन भी करे ताकि अपने जीवन को निर्मल बना सके।

यदि ऋषि बोध के इस पावन पर्व पर हमें अपने इस कर्तव्य का बोध हो जाय तो यह हम सबके लिए अत्यन्त लाभप्रद होगा। इस बोध के होते ही हमारे मन में, घर मे तथा धर्ममन्दिर में नवजीवन का संचार होना प्रारम्भ हो जायगा इसमे किंचित्मात्र भी सन्देह नहीं।

पता—एन. सी. २३९ ओमभवन कोट किशनचन्द, जालन्धर-४

आर्य विद्वानों की सेवा में

समय-समय पर आर्य शिक्षण सस्थाओ एव आर्य समाजो की ओर से ऐसे पत्र आते रहते है जिसमे सुयोग्य पुरोहित तथा धर्म-शिक्षा अध्यापक की माँग की जाती है। इसके साथ ही अनेक ऐसे सेवानिवृत आर्य विद्वानो और अध्यापको के भी इस आशय के पत्र आते है कि सेवा निवृत्ति के उपरान्त वे आर्य समाज की सेवा का कोई कार्य करना चाहते है जिससे उनके अनुभवो का लाभ समाज को मिल सके। हम दोनो प्रकार के आर्य बन्धुओ से निवेदन करते हैं कि वे अपनी-अपनी आवश्यकता के सम्बन्ध मे निम्न पते पर पत्र व्यवहार करने की कृपा करे—

—श्री प्रो० रतन सिंह, परामर्शदाता नैतिक शिक्षा डी०ए०वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी, चित्र गुप्ता मार्ग, नई दिल्ली-110055

निवेदक—रामनाथ सहगल मंत्री

भोपाल गैस कांड मे अनाथ बच्चे

भोपाल के गैस कांड मे जो बच्चे अनाथ हो गए हैं वे विधर्मियों के हाथ में न पड़ें इसके लिए आवश्यक है कि आर्यसमाज उनकी रक्षा के लिए आगे आये। उनकी संख्या अधिक हो तो उनके लिए अलग से श्रद्धानन्द बाल रक्षागृह के नाम से अलग अलग आश्रम खोले जा सकते हैं। प्रत्येक समर्थ आर्यसमाज ऐसे कुछ बच्चो को गोद लेकर उन्हें गुरुकुलों में प्रविष्ट करवा सकती हैं। —शिवनाथ आर्य टेलर, ३१ चुक्खूवाला, देहरादून

शहीद की भस्मी

—विष्णु प्रभाकर

बात मेदिनीपुर जिले के एक स्कूल की है।

सातवीं कक्षा के अध्यापक ने कमरे में आकर कहा, "आज तुम लोगों की घूसे मारने की परीक्षा होगी। देखता हू, कौन सबसे अधिक घूसे इस मेज पर मार सकता है।"

किसी ने एक घूसा मारा, किसी ने दो, एक बच्चा हिम्मत करके सात तक पहुच गया। लेकिन जब खुदीराम बोस नाम के लडके की बारी आई तो वह रुकने का नाम ही नही ले रहा था। पच्चीस तक पहुचा तो अध्यापक चिल्ला उठे, "बस, बस खुदीराम! अब रुक जाओ।"

लेकिन वह नही रुका। वह तीस घूंसे मार चुका था। उसके हाथ से खून बह रहा था। अध्यापक ने आगे बढकर उसका हाथ पकड लिया, "ना, ना और नही, खुदीराम! तुम जीत गये, तुम सचमुच बहादुर हो।"

जानते हो यह कब की बात है? यह तब की बात है जब हमे गुलाम बनाने वाले अंग्रेजो ने बगाल को दो हिस्सो मे बाट दिया था। यह अन्याय लॉर्ड कर्जन ने सन 1905 मे किया था। तब सारा देश तिलमिला उठा था। बगाल के युवक तो पागल हो उठे। उन्होने छिपे तौर पर और खुले रूप मे इस बटवारे के विरोध मे आदोलन शुरू कर दिया। सोलह वर्ष का खुदीराम बोस भी उनमे था। वह तो बचपन से ही अन्याय का विरोध करता आ रहा था।

उन दिनो मेदिनीपुर मे एक कृषि-प्रदर्शनी चल रही थी। बडे-बडे गोरे अफसर वहा आए हुए थे। तभी खुदीराम बोस वहा आया। उसके हाथ मे कुछ पुस्तके थी। वह पुकार-पुकार कर कह रहा था, "लीजिए पढिए! यह पुस्तक पढिए। अंग्रेजो ने हमारे सोने के बगाल की क्या दशा कर दी है! हमारी मा के टुकडे कर दिये है! यह पुस्तक पढिए और पुकारिए 'देश एक है।' पुकारिये 'वदे मातरम्'!"

जनता ने पुकारा। बार-बार पुकारा, 'देश एक है।' वदे मातरम्।"

उन दिनों 'वंदे मातरम' पुकारना कानून के विरुद्ध था, पर जो देश को प्यार करते थे वे हंस-हस कर वंदे मातरम् पुकारते और कोड़े खाते। जब खुदीराम यह सब कर रहा था तो उसके अध्यापक वहा आ गये। वह तो घबरा गये। बोले, "यह क्या कर रहे हो! भागो यहां से। किताबें छिपा दो। यह विद्रोह है।"

खुदीराम ने उत्तर दिया, "यह विद्रोह है, तो मैं विद्रोह हू। मैं नहीं भागू गा, मैं नही डरता। आप डरते हैं, आप भाग जाइए।"

अध्यापक चिढ़ गये। पुलिस को बुला लाये, लेकिन खुदीराम आसानी से गिरफ्तार नहीं हुआ। खूब पिटाई हुई। नाक से खून बहने लगा। उस पर मुकदमा चला। उसका नाम चारो तरफ गूंज उठा उसने कुछ भी नही बताया। लेकिन इस बात का कोई प्रमाण नही था कि उसने विद्रोह किया था। जज ने उसे छोड दिया। तब बडा स्वागत हुआ उसका! उस समय के महान क्रांतिकारी अरविंद घोष उससे मिलने आये। छाती से लगा लिया। बोले "बहुत कुछ करना है, देश को तैयार करो।"

बस खुदीराम गांव-गांव, घर-घर, घूम-घूम कर जनता को जगाने लगा। तब आदोलन के कई रूप थे। एक ओर चरखा, करघा और स्वदेशी का प्रचार। गा-गाकर कहता, -'मां ने जो मोटा कपडा दिया है उसे सिर पर रख ले मेरे भाई।"

दूसरी ओर हथियार चलाना सीखता भी और सिखाता था। आदोलन लगातार बढ़ रहा था।

इसी समय कलकता में एक गोरा मजिस्ट्रेट था जो बडा जालिम था। मुकदमे पर विचार पीछे करता था, सजा पहले तय कर देता था। नाम था किंग्सफोर्ड। बडे-बड़े नेताओ को भी उसने नही छोडा था। लेकिन पन्द्रह वर्ष के बालक सुशील सेन के साथ उसने जो सलूक किया, उससे बगाल के युवक तडप उठे।

सुशील सेन का अपराध यही था कि उसने 'वंदे मातरम्' का जयघोष किया था। जालिम किंग्सफोर्ड ने हुक्म दिया, 'इसको सोलह बेंते लगाओ। सुशील ने हसते-हंसते बेंते खाली, उफ तक न की। लेकिन युवको के दल ने उस दिन तय किया, "अब और नही सह सकते हम। किंग्सफोर्ड को मारना होगा। कौन मारेगा। इसे?"

खुदीराम अन्याय का हमेशा विरोध करने वाला खुदीराम आगे बढ़ा। बोला, मैं मारूंगा।"

सारा बंगाल खुदीराम बोस को जान चुका था। उसकी बात मान ली गयी। लेकिन उस अकेले को ही यह काम नही सौंपा गया। उसके साथ वैसा ही निडर युवक प्रफुल्ल चाकी भी था।

इधर जब किंग्सफोर्ड कलकत्ता मे बहुत बदनाम हो गया तो सरकार ने उसका तबादली बिहार के मुज्जफरपुर मे कर दिया। खुदीराम और प्रफुल्ल ने भी वहीं जाने का निश्चय किया।

तभी एक मजेदार घटना हुई। खुदीराम नया जूता खरीद रहा था। उसके एक दोस्त ने पूछा, "जूता क्यों खरीद रहे हो?"

खुदीराम ने उत्तर दिया, "मेरी शादी हो रही है।"

दोस्त ने पूछा, "सच, कहा हो रही है?"

खुदीराम मुस्कराया, "उत्तर दिशा मे हो रही है। ससुर साहब घरजवाई बनाकर रखेंगे, इसलिए अब लौटना नही होगा।"

इसका मतलब समझे? हम बतलाते हैं—विवाह यानी किंग्सफोर्ड की हत्या! उत्तर दिशा यानी मुजफ्फरपुर! ससुर यानी सरकार! घरजवाई यानी जेल मे फांसी!

अब सोचिये-कितना बहादुर, कितना निडर था वह। जानता था कि फासी पर चढ़ना होगा। फिर भी एक क्षण को भी नही डरा। पहुचा मुजफ्फरपुर। पर किंग्सफोर्ड तक पहुचना आसान नही था। कई दिन तक दोनो दोस्त उसके बगले के पास चक्कर काटते रहे देखते रहे वह कब जाता है, कहाँ-कहाँ और कब-कब लौटता है। किस गाडी मे बैठता है। रग कैसा है उसकी गाडी का। सब कुछ देख लेने के बाद उन्होने तय किया कि 30 अप्रैल 1908 की सध्या को जब वह क्लब से लौट रहा हो तब उसकी गाडी पर बम फेका जाए। उस समय चारो ओर अधेरा छाया होगा। सडके सूनी होगी।

आखिर वह क्षण आ पहुचा। दोनो मित्र छिपे हुए थे। घोडो की टाप सुनाई देने लगी। गाडी पास आई। रग ठीक वैसा ही था। उन्होने दम साध कर बम फेक दिया। भयानक विस्फोट हुआ। धरती कांप उठी। साथ ही औरतो के चीत्कार से वातावरण गूज उठा।

खुदीराम और प्रफुल्ल तो तुरन्त वहा से नौ-दो-ग्यारह हो गये वे रात भर भागते रहे। खुदीराम ने सवेरे अपने को बेनी मे पाया। कुछ लोग बाते कर रहे थे कि कल शाम मुज्जफरपुर मे दो बगाली युवको ने बम फेक कर दो गोरी औरतो को मार डाला।

खुदीराम चौंका-औरते मर गयी! किंग्सफोर्ड नही मरा! सहसा वह चीख पडा, "नही, नही, यह नही हो सकता। हमने मेमो को मारने के लिए नही, किंग्सफोर्ड को मारने के लिए बम फेंका था। यह क्या हुआ?"

उसकी चीख सुनकर लोगो ने उसे घेर लिया। वह जान गये, यही वह युवक है, जिसने बम फेका है। वह भागा, पर पकडा गया। पकडा प्रफुल्ल भी गया, पर उसने अपनी पिस्तौल से ही अपने प्राण ले लिये।

खुदीराम पर मुकदमा चला। उसने अपनी रक्षा के लिए कोई वकील नही किया। अपना अपराध स्वीकार करते हुए स्पष्ट कहा, "इसमे प्रफुल्ल चाकी या किसी और का दोष नही है। बम मैंने फेंका था मैं किंग्सफोर्ड को मारना चाहता था। उन दोनो महिलाओ को नही, उनसे हमारी कोई दुश्मनी नही थी, वे मर गईं इसके लिए मैं बहुत दुखी हू।"

लोग उसकी बात सुनते, चकित रह जाते। उसकी ओर देखते, देखते रह जाते बडी-बडी आकर्षक आखे, लबे घुघराले बाल, चेहरे पर कैसी प्यारी मुस्कान, कैसी निर्भीक मूर्ति

वकील ने पूछा, "तुम्हें जरा भी डर नहीं लगता?"

खुदीराम हसा, बोला, "गीता पढी है मैंने। मैं क्यो डरूगा!"

फिर जो होना था वही हुआ। मुकदमे के नाटक के बाद जज ने 18 वर्ष के उस युवक को फासी की सजा सुना दी। पूछा, "इसका मतलब जानते हो?"

"जानता हूं जज साहब"—वह मुस्कराया, वह 3 दिसम्बर सन् 1889 के दिन पैदा हुआ था और ग्यारह अगस्त 1908 के दिन उसने देश की आजादी के लिए हसते-हसते फासी का फदा गले मे पहन लिया।

उस दिन उसने खूब अच्छी तरह स्नान किया। अपने लम्बे-लम्बे घुघराले बालो को उगलिया फिरा कर ठीक बिठाया। एक सिपाही काली माता का चरणामृत ले आया था, उसे पिया। फिर गीता हाथ में लेकर वदे मातरम् का जयघोष करता हुआ फासी के तख्ते की ओर चल पडा ‥ ‥

अपार भीड थी उसकी चिता के पास सभी उसकी भस्मी लेने को पागल थे। पुरुषो ने उसकी भस्मी को माथे पर लगाया। युवतियो ने छाती पर मला, माताओ ने ताबीज बना कर बच्चो के गले मे पहनाया, एक दिन कुछ लोगो ने उसे पकडवा दिया था। दूसरे दिन अपार भीड उसे सिर झुका कर प्रणाम किया, क्योकि वे जान गये थे कि निडर युवक अन्याय का विरोध करने वाला देशभक्त था।

पत्रों के दर्पण में

एक मुस्लिम महिला का पत्र प्रधानमंत्री के नाम

विषय : मुस्लिम परसनल ला को खत्म कर मुस्लिम औरतों को दोज़खी जिन्दगी से छुटकारा दिलाने के लिए अपील।

जनाब-ए-आली,

मैं आप का ध्यान मुस्लिम औरतों को दोज़खी जिन्दगी गुजारने की मजबूरी की तरफ दिलाना चाहती हू। आप जानते ही हैं कि "मुस्लिम परसनल ला" की वजह से एक मुस्लिम चार बीवियां तक रख सकता है। क्या आप इसे मुनासिब समझते है ? जबकि आदमी अपनी बीवी को दूसरे आदमी से बात करना भी पसन्द नही करता। इसी तरह औरत भी यह नही चाहती और न ही पसन्द करती है कि उसका शौहर किसी दूसरी औरत से हम-बिस्तर हो। लेकिन इस मुस्लिम परसनल ला की आड मे मुस्लिम औरत अपने शौहर को अपनी आखो के सामने ही दूसरी, तीसरी और चौथी औरत के साथ हम-बिस्तर होते चुपचाप देखती रहती है क्योकि उसके सिर पर "मुस्लिम परसनल ला" की तलवार लटकी रहती है। यह सिर्फ हिन्दुस्तान मे हो है, वरना दुनियां के दूसरे मुस्लिम मुल्को में भी इस मे सुधार कर लिया गया है, मगर यहा नही किया गया। वहा हर मुस्लिम औरतों को बराबर के हकूक दिये जा रहे हैं जहां ऐसा नही हुआ, वहां सुधार करने पर विचार हो रहा है।

मगर हिन्दुस्तान की मुस्लिम औरतों को मुस्लिम परसनल ला और शरीयत के तहत लौण्डी, बान्दी, गुलामी तथा दोजखी जिन्दगी गुजारने पर मजबूर होना पड़ रहा हैं। इसी कानून के तहत अगर मुस्लिम मर्द अपनी बीवी के सामने तीन बार 'तलाक-तलाक-तलाक' कह दे तो वह तलाक जायज करार दिया जाता है, औरतो का अपनी सफाई देने का भी हक हासिल नही है। शरीयत के मुताबिक कुरआन मे औरतो को मर्दो की खेतिया बताया गया है और एक जगह उन्हे मर्दो का लिबास अर्थात् पोशाक बताया गया है। इसी बात का फायदा उठाकर मुस्लिम मर्द जब समझता है कि एक औरत पुरानी हो गयी है तो वह पोशाक की तरह ही उसे बदल कर नयी ले आता है जिसकी वजह से मुस्लिम औरत को दिमागी तकलीफ दी जा रही है। यदि मुस्लिम परसनल ला और शरीयत के ठेकेदार यही चाहते है कि यह कानून बना रहे और लागू रहे तो कुरआन के मुताबिक चोरी करने वाले मुसलमान का हाथ काट देने की सजा का फरमान है, क्या यहा हिन्दुस्तान मे इन शरीयत के ठेकेदारो ने किसी मुसलमान चोरी करने वाले का हाथ काटने की सजा दी है। कभी नही। फिर यह सौतेला तरीका मुस्लिम औरतो के साथ ही क्यो बरता जाता है। जब मुस्लिम शरीयत के मुताबिक ही करना है तो फिर सारे कानून कुरआन के मुताबिक ही होने चाहिये। मगर ऐसा नही है। जहाँ मर्दो को फायदा दिखाई देता है वहा उन्हे ये शरीयत के ठेकेदार मानते हैं, जहा फायदा नही, उन्हे नही मानते।

हिन्दुस्तान एक जमहूरी देश है। यहाँ हर एक इन्सान को बराबरी का हक़ होना चाहिए मगर मुस्लिम औरत को वह हासिल नही है। न हमे खुले रूप से घूमने की इजाजत है, न ज्यादा पढने लिखने की, और न ही कोई अधिकार है। बस जो मुस्लिम मर्द चाहें वैसा करे, उन्हें सब तरह की खुली छूट दी गयी है।

इसलिए मैं आपसे अरज और दरख्वास्त करती हू कि मुस्लिम परसनल ला को खत्म किया जाय और सभी पर सिविल कानून बराबर लागू किया जाए। अगर ऐसा करना मुमकिन न हो तो कम से कम इस कानून मे इतना सुधार तो जरूर ही किया जाए कि कोई भी मुस्लिम मर्द अपनी बीवी की मरजी के खिलाफ दूसरी शादी न कर सके और तलाक घर बैठे न हो, अदालत के जरिये हासिल करे। इसके साथ ही अगर कोई मुस्लिम औरत अपने शौहर के जुल्मो से छुटकारा पाना चाहे तो उसे भी तलाक लेने का हक हासिल हो। उन्हे अपनी पूरी तालीम हासिल करने का भी पूरा हक दिया जाए और हिन्दुओं की तरह ही मुस्लिम औरतो को भी हक दिलाये जायें।

इसलिए मैं आपसे दोबारा अरज करती हू कि आप इस कानून को खत्म कर मुस्लिम औरतो को राहत दिलाने की मेहरबानी करें ताकि लाखो मुस्लिम औरतों को इस दोजखी जिन्दगी गुजारने से छुटकारा मिल सके। ये सभी आपकी दुआयें देगी।

आखिर मे मैं आपको चुनावों में हासिल भारी जीत के लिए मुबारकबाद पेश करती हूं और खुदा से दूआ करती हू कि आपको उमर दराज दे और आप जब तक जिन्दा रहें; इस मुल्क की तरक्की और बहबूदी के लिए इस मुल्क की आवाम की रहनुमाई करते रहें और आपका मरतबा बुलन्द हो।—जहान आरा बेगम ३३४, विले पार्ले, बम्बई।

मजहब के सौदागर

धर्म के नाम पर सिर्फ हमारे देश में ही रुपया नहीं एँठा जाता, जिन मुल्कों को हम बहुत तरक्कीयाफ्ता समझते हैं, उनमें भी मजहब के नाम पर तगडी ठगाई होती है। ऐसा ही एक वाकया अभी अमेरिका मे हुआ। वर्जीनिया की 'डेस्प्रिंग इन्टर-नेशनल' नामक सस्था ने दो घटे का एक कार्यक्रम टेलीविजन पर पेश किया, जिसका मकसद यह बताना था कि भारत अब हिंदू धर्म से तग आ चुका है और उसके 66 करोड़ हिंदू ईसाई धर्म अपनाने के लिए बेताब हैं लेकिन इन बेचारे हिंदुओ तक ईसामसीह का संदेश पहुचे तो कैसे पहुंचे, पहुचाने के लिए उक्त सस्था ने एक 'एक मार्मिक फिल्म बनाई है, जिसका नाम 'दया सागर है दया से इस सागर को हिंदुओं के घर-घर पहुचाने के लिए उक्त सस्था ने अपने लाखो दर्शकों से चन्दे की अपील की है और अपील को असरदार बनाने के लिए उन्होने महात्मा गाधी और मदर टेरेसा का नाम भी घसीटा है। महात्मा गाधी को यह कहते हुए बताया है कि आप भारत को नही भारतीयो को बदल सकते हैं और मदर टेरेसा की इस उक्ति को उद्धृत किया गया है कि ईसा मसीह ही भारत के एक मात्र उद्धारक हो सकते हैं।

जाहिर है कि इस तरह की सस्थाओ का न ईसा मसीह से कुछ लेना देना है, न गाधी या टेरेसा से। उनका एक मात्र मकसद पैसा बनाना है और इसके लिए आप कहे उसको, वे बेच खाएँ। इन्हे इतनी शर्म भी नही कि अपने काले इरादो को कारगर करते वक्त भारत जैसे देशो पर वे कीचड़ उछालने से बाज आएं।

['नवभारत टाइम्स' का एक सम्पादकीय]

गाय को शहरियों से बचाओ

आजादी के बाद सबसे बडी बरबादी उत्तम गोधन की हुई। कलकत्ते मे बढिया से बढिया दुधारू गाएं ग्वाले ले जाते रहे। दूध सूखने पर कसाइयो को बेचते रहे। परिणाम स्वरूप हरियाणा की बढिया नस्लें कलकत्ते मे कट गई और कम दर्जे की नस्लें हरियाणा मे रह गई। जिस हरियाणे मे 10-15 सेर दूध देने वाली गाएं आसानी से निकलती थी वहा आज आठ-दस सेर दूध देने वाली गाएं मुश्किल से मिलती हैं। यह जानकारी उस समय प्रधानमत्री जवाहरलाल नेहरू को दी गई थी। एक डेपूटेशन मिला था। सारी बात सुनने के बाद पडित जी ने स्वीकार किया कि बडे शहरो मे गाएं रखने पर रोक लगा दी जायेगी। ताकि अच्छी नस्ल बरबाद न हों, यह बात ठीक हैं, लेकिन आज तक भी यह बरबादी रुकी नही और सारी हरियाणा से नस्ल खत्म हो गई।

बम्बई मे यही हाल गीर नस्ल की गायो के साथ हुआ। वहा सौराष्ट्र की बढिया से बढिया गीर नस्ल की गाये आईं और दूध सूखने पर कसाईखाने पहुचती गईं। पहले दिन भर मे 18-20 किलो दूध हैं। डा० राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता मे एक विशेषज्ञ समिति ने गोसेवा सघ की ओर से जाच की थी और उसने एकमत से सिफा-रिश की थी कि शहर वालों को दूध भेजा जाए। गाय शहर से दूर रहे। उसका भी कोई अमल नही हुआ। आज करीब सालाना 15-20 लाख टन खली आदि निर्यात किया जाता है। वह खली देश की गायों को खिलाई जाए तो खली से दुगुना दूध आसानी से बन सकता है और देशी खाद भी मिल सकती है। लेकिन गाय का दूध बढाने की किसको चिता है। इस देश का कोई वारिस है जो पूरे देश की चिता करे।

—राधाकृष्ण बजाज, गोसेवा सघ, वर्धा

गद्दाफी के खतरनाक इरादे

लीबिया के शासनाध्यक्ष कर्नल गद्दाफी की महत्वाकांक्षाओ की कोई सीमा ही नही है। फिलिपीन मे मुस्लिम अलगाववादियो को समर्थन तथा डब्लिन मे आयरिश रिपब्लिकन आर्मी को सहयोग देने से लेकर रीगन, मित्तराँ, हेलमुट कोल, यहा तक कि सउदी अरब के शाह फहद को खत्म करने तक में वह रुचि रखते हैं। अत काहिरा जैसे अधिकृत सूत्रो की इस सूचना मे उनका नाम पढ़कर कोई आश्चर्य नही हुआ कि हमारी प्रिय दिवगत प्रधानमत्री की निर्मम हत्या मे उनका भी हाथ था। इस तथ्य को भी अनदेखा नही किया जा सकता कि स्वघोषित खालिस्तानी नेता डॉ० जगजीत सिंह चौहान को गद्दाफी द्वारा त्रिपोली आमत्रित किया गया था। ये आरोप कहा तक सही है, यह निर्णय करना तो न्यायधीश श्री ठक्कर का काम है, परन्तु इतना तो निश्चित है कि गद्दाफी, केवल पश्चिम एशिया ही नही, वरन् यूरोप और एशिया में ही अपनी कूट योजनाओ और गुप्त गतिविधियो मे आगे भी लगे रहेगे।

पूरे अरब जगत मे यह माना जाता है कि सोवियत सघ गद्दाफी का प्रमुख समर्थक है, और कितनी ही बार ये उन देशो मे अस्थिरता उत्पन्न करने की चेष्टा कर चुके हैं जो सोवियत संघ के विरोधी है। यह बात भी अब छिपी नही रह गई है कि कर्नल गद्दाफी पर सारे विश्व मे हत्या और आतंक फैलाने के लिए धन देने के कई बार आरोप लगाए गए हैं। यदि हम भारत मे आतकवाद का दमन कर, न्याय और व्यवस्था स्थापित करना चाहते हैं तो हमें अन्तरराष्ट्रीय आतकवाद और उनसे संलग्न गद्दाफी और क्यूबाई-सूत्रों से सावधान रहकर उनकी खुली भर्त्सना करनी चाहिए।

—इन्द्रसेन शर्मा, 90 विनोबापुरी, नई दिल्ली

वे युग-पुरुष कौन थे ?

(पृष्ठ २ का शेष)

दिलाने का प्रयास किया और एक सार्वभौम सत्यमत पर सभी मतावलम्बियों को आरूढ़ करने के लिये दिल्ली में सर्वधर्म-सम्मेलन का आयोजन किया ?

२३ किसने स्त्रियों को सामाजिक, धार्मिक तथा शैक्षणिक समान अधिकार दिलवाये, जिसमें विधवा-विवाह भी सम्मिलित है ?

२४. किसने एक, निराकार, सर्वव्यापक, सृष्टिकर्त्ता परमात्मा के स्थान पर जड़ देवी-देवताओ तथा नये-नये सम्प्रदाय चलाकर मनुष्यों में फूट डालने वाले तथाकथित अवतारों एव गुरुओ के मिथ्यावाद का निराकरण किया ?

२५. धर्म और आध्यात्मिकता की आड़ मे रूढिवादी धर्माचार्यो, मठाधीशों, पण्डो व बुद्धिभेद पैदा करने वाले स्वार्थी-विद्वानो के विरुद्ध किसने प्रबल संघर्ष किया, जिससे कि आम जनता का आर्थिक, सामाजिक व चारित्रिक शोषण रुक सके ?

२६. मानव समाज को पतन के गर्त में ले जाने वाले तथाकथित भाग्यवाद, दहेज-प्रथा, फलित ज्योतिष, जादू-टोना, भूत-प्रेत, मूर्ति-पूजा व अन्ध-श्रद्धा का निर्भीक खण्डन सर्वप्रथम किसने किया ?

२७. उपरोक्त मुख्य कारणो से गुलामी की जजीरो मे जकडे भारतवर्ष के लिये 'स्वराज्य' शब्द का तिलक से भी ५० वर्ष पूर्व सर्वप्रथम उद्घोष किसने किया ?

२८. किसके शिष्य ने सर्वप्रथम सामाजिक कुरीतियो के मूल बाल-कन्याओं के साथ वृद्धो के विवाह रोकने के लिए अपने हाथों से अपने दांतों को तोड़कर इस कुप्रथा की अन्त्येष्टि की ?

२९. किसके शिष्यो ने पूरे विश्व के लोगो को ओ३म् तथा गायत्री मन्त्र का सबसे अधिक उपदेश किया ?

३०. भारत में औद्योगिक व तकनीकी विकास के लिये किसने सर्वप्रथम जर्मनी के विशेषज्ञों से पत्र-व्यवहार किया एवं मानव समाज की रक्षा के लिये अधिक वृक्ष लगाने का उपदेश दिया ?

३१. किसने सर्वप्रथम नशाबन्दी के लिये प्रयास किया और गोरक्षा के पवित्र अभियान को लाखो लोगो के हस्ताक्षर सहित प्रारम्भ किया ?

३२ किसने सर्वप्रथम गोमांस भक्षक अंग्रेजो के राज्य मे भी रेवाडी (हरियाणा) मे विश्व की प्रथम गोशाला का निर्माण करवाया ?

३३. (क) किस वीर सन्यासी की पुस्तक को पढते हुए श्री दादाभाई नारोजी ने यह कहा था कि— तुम यह मत समझना कि मै आर्यसमाजी हो गया हू, पर इसमे दो राय नही कि जितनी देशभक्ति एवं स्वराज्य प्राप्ति की प्रेरणा मुझे इस ग्रन्थ से मिलती है उतनी और किसी दूसरे ग्रन्थ से नही मिलती।

(ख) किसने स्वयं हिन्दीभाषी न होते हुए भी राष्ट्र की एकता के लिये सर्वप्रथम 'हिन्दी भाषा' को ही राष्ट्रभाषा बनाने का उद्घोष किया ?

३४. किस महामानव के चित्र को फ्रास वालों ने अपने हिन्दी भवन मे लगाकर उन्हे 'विश्वमित्र' की उपाधि से सुशोभित किया ?

३५. उन्नीसवी शताब्दी के किस महापुरुष ने विदेशो मे गये बिना एव अंग्रेजी पढे बिना ही अनेकों विदेशियो को अपना शिष्य बनाया ?

३६ किस वेदों के प्रकाण्ड पंडित की लिखी 'संस्कार-विधि' नाम की पुस्तक को दिखाकर हिन्दुओं ने इंगलैण्ड एवं मारीशस में मृतक शरीरों को गाड़ने की अपेक्षा उन्हे वैदिक विधि से जलाने का कानूनी अधिकार प्राप्त किया ?

उत्तर—जागो ऐ देशवासियो, आंखे खोलो, वे युग पुरुष थे 'महर्षि दयानन्द सरस्वती'। क्या उनके उपरोक्त सर्वहितकारी अद्भुत कार्यो का यथार्थ मूल्याकन न करके हम कृतघ्नता के जघन्य अपराध से कभी मुक्त हो सकेंगे ?

पता—ज्ञानसदन, ४६ माडल बस्ती, दिल्ली-५

देश भर में शिवरात्रि पर ऋषि बोधोत्सव की धूम

१७ फरवरी शिवरात्रि के महापर्व के अवसर पर जहां आम हिन्दू जनता ने नदियों, सरोवरों और समुद्र में स्नान करके भजन-पूजन और कीर्तन द्वारा शिवजी की अर्चना की, वहाँ देश भर मे फैले आर्यसमाजियो ने इस पर्व को ऋषि-बोधोत्सव के रूप में मनाया। सबसे अधिक विशिष्ट समारोह ऋषि दयानन्द के जन्मस्थान और बोध प्राप्ति स्थान टंकारा में मनाया गया (इसका विवरण प्रथम पृष्ठ पर देखिये)। अन्य अनेक स्थानो पर भी ऋषिबोधोत्सव मनाने के समाचार निरन्तर आ रहे है। उनमें से अब तक जिन स्थानों से समाचार प्राप्त हो चुके है उनका विवरण नीचे दे रहे है।

प्रान्तीय आर्य महिला सभा, दिल्ली की ओर से १७ फरवरी को आर्य कन्या गुरुकुल न्यू राजेन्द्र नगर में श्रीमती शान्तिदेवी अग्निहोत्री की अध्यक्षता में ११॥ बजे से सायं ४॥ बजे तक ऋषिबोधोत्सव मनाया गया, जिसमें डा० शशिप्रभा और डा० सुषमा मलहोत्रा के ओजस्वी व्याख्यान हुए। कन्या गुरुकुल की छात्राओं ने रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किया और मेरठ की श्रीमती पद्मा शर्मा ने कविता पाठ किया।

—प्रान्तीय आर्य महिला सभा की वार्षिक साधारण सभा की बैठक ४ मार्च को दोपहर २॥ बजे आर्य-समाज दीवान हाल मे होगी। सब प्रतिनिधि बहने समय पर पधारने की कृपा करें।—संयोजिका प्रेमशील

भटिंडा—आर्य समाज भटिंडा मे १७ फरवरी को श्री अमृतलाल मित्तल की अध्यक्षता मे ऋषि-बोधत्सव मनाया गया जिसमे सनातन धर्म हाईस्कूल, सनातन कन्या महाविद्यालय, म० हसराज हाईस्कूल और आर्य गर्ल्स हाईस्कूल के छात्र-छात्राओं ने भाषण प्रतियोगिता के रूप मे भाग लिया। इस अवसर पर स्वतन्त्रता सेनानी श्री सत्यपाल कपूर और श्री ओमप्रकाश वानप्रस्थी को सम्मानार्थ शाल भेंट किये गये। आर्य माडल स्कूल की छोटी-छोटी कन्याओ ने सुमधुर गीत सुनाए। अध्यक्ष श्री अमृतलाल मित्तल ने ११०० रु०, श्री सुन्दरलाल सर्राफ ने ५०० रु०, श्री विरजीलाल ठेकेदार ने १०१ रु० दान किया।

—कृष्णकुमार मंत्री

आदर्शनगर—आर्य समाज आदर्शनगर दिल्ली में आर्य केन्द्रीय सभा की ओर से स्वामी विद्यानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में 'ऋषि-जीवन की तीन प्रेरणादायक घटना' विषय पर भाषण प्रतियोगिता हुई जिसमे दीपिका बत्रा प्रथम, नीतू आहूजा द्वितीय रही। इन्हे अध्यक्ष ने पुरस्कृत किया।—महावीर बत्रा, सयोजक।

त्रिनगर—आर्य समाज त्रिनगर मे १६ फरवरी को केन्द्रीय न्याय राज्य मंत्री श्री हंसराज की अध्यक्षता मे ऋषिबोधोत्सव मनाया गया जिसमे विद्वानो ने ऋषि को शिक्षाओ के आचरण पर बल दिया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव जी तथा महामंत्री डा० धर्मपाल जी ने भी अपने विचार प्रकट किए।—सत्यपाल कालड़ा, मंत्री।

अमृतसर—आर्यसमाज लक्ष्मणसर मे १७ फरवरी को सभी स्थानीय आर्यसमाजो और आर्य युवक परिषद् पट्टी की ओर से ऋषिबोधोत्सव मनाया गया जिसमे संस्कृति, समाज और राष्ट्र के प्रति ऋषि के उपकारो को स्मरण किया गया। समारोह की अध्यक्षता प्रि० श्री केवलकृष्ण ने की। मुख्य अतिथि थे श्री प्रो० दरबारी लाल अध्यक्ष सीवरेज बोर्ड पंजाब। कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी छात्रो को पुरस्कृत किया गया। ऋषि लंगर की सुन्दर व्यवस्था थी। श्री ओम्प्रकाश आर्य, श्री इन्द्रपाल तथा श्री विजयकुमार ने कार्यक्रम को सफल बनाने मे विशेष योग दिया।—राजकुमार मत्री, आर्य युवक परिषद् पट्टी।

जोधपुर—महर्षि दयानन्द स्मृति-भवन जोधपुर मे १५-१६-१७ फरवरी को ऋषि बोधोत्सव धूम-धाम से मनाया गया जिसमे शास्त्रार्थ महारथी श्री प० शान्तिप्रकाश जी, डा० भवानीलाल भारतीय, और श्री अभयमुनि वानप्रस्थ ने अपने उद्बोधक विचार प्रकट किए। इस अवसर पर महर्षि दयानन्द व्यायामशाला का उद्घाटन, वैदिक शोधकक्ष का शुभारम्भ और सन्यास आश्रम तथा वानप्रस्थाश्रम का जीर्णोद्धार कार्य भी प्रारम्भ किया गया।

—रतनलाल द्विवेदी एडवोकेट, मत्री

अम्बाला—आर्यसमाज डी०ए०वी० कालेज अम्बाला मे १७ फरवरी को ऋषिबोधोत्सव मनाया गया जिसमें स्वामी कृष्णानन्द सरस्वती (बडौदा) बहिन रूपरेखा जी (पूर्व प्राचार्या दयानन्द कालेज, कुरुक्षेत्र) और पं० नेत्रपाल शास्त्री (श्रीनगर) के विशेष प्रवचनों का आयोजन था।

—प्रो० ऋषिराम भारद्वाज, मन्त्री

महात्मा आर्यभिक्षुजी का ६३वां जन्मदिवस

विभिन्न संस्थाओं को १२ हजार रु० का दान

ज्वालापुर। ३१ जनवरी को यहां महात्मा आर्यभिक्षु जी का, जो महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास अजमेर के और प्रधान, विद्यावाचस्पति, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पुस्तकाध्यक्ष और प्रतिष्ठित सदस्य हैं, उत्साहपूर्वक ६३ वा जन्म-दिवस मनाया गया। यज्ञ के पश्चात् वानप्रस्थाश्रम के प्रधान श्री जगदीशचन्द्र जौहरी ने उनके गुणों पर प्रकाश डाला और समस्त आश्रमवासियों की ओर से उनके दीर्घजीवन की कामना की। महात्मा जी ने इस अवसर पर अपने गुरुवर ब्रह्मचारी अखिलानन्द जी महाराज की स्मृति में स्थापित स्थिर निधि के ब्याज से प्राप्त बारह हजार रु० की राशि विभिन्न संस्थाओं को दान दी, जिसका विवरण इस प्रकार है—

५००० रु० आर्य समाज टंकारा (यज्ञशाला), १२०० रु० आर्यसमाज रानीपुर हरिद्वार, ६०० रु० स्वामी श्रद्धानन्द चिकित्सालय हरिद्वार, १००० रु० आर्य समाज मुगल सराय उ० प्र०, ६०० रु० महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास अजमेर, १००० रु० महर्षि दयानन्द ट्रस्ट टंकारा, १६३ रु० आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर, १२० रु० अभिनव यूथलीग धूरी, १०० रु० किसान इण्टर कालेज शामली, १०० रु० कन्या इण्टर कालेज रुडकी, १०० रु० कन्या गुरुकुल हरिद्वार, १०० रु० पाणिनि कन्या गुरुकुल वाराणसी, १०० रु० मातृ मन्दिर वाराणसी, १०० रु० गुरुकुल बैरगनिया, १०० रु० गुरुकुल अयोध्या, १०० रु० विरजानन्द संस्कृत विद्यालय करतारपुर, १०० रु० मोहन आश्रम हरिद्वार, १०० रु० विश्ववेद परिषद् लखनऊ, १०० रु० सत्य प्रकाशन मथुरा, १०० रु० 'आर्यजगत्' दिल्ली, १०० रु० भारती अनुसंधान परिषद् ज्ञानपुर वाराणसी, २०० रु० 'सार्वदेशिक' दिल्ली।

शुद्धि समाचार

१. सैनिक महिला ले० कु० जीरफीन सालोमन (२६) कानपुर ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण कर वैदिक रीत्यानुसार डा० श्री अनिल गुप्ता (२८) के साथ पाणिग्रहण संस्कार कराया। इस शुद्धि को आर्य समाज गोविन्द नगर मे श्री देवीदास आर्य ने सम्पन्न कराया। उल्लेखनीय है कि श्री गुप्ता ने इस विवाह के लिए अन्यत्र से मिलने वाले ३ लाख रुपए के दहेज को ठोकर मार दी। शुद्ध हुई कु० जीरफीन का नाम साधना रखा गया है।

२. डैनियल दिनेशसिंह ने स्वेच्छया वैदिक धर्म की दीक्षा ली। डैनियल का नाम दिनेश चन्द्र आर्य निश्चित किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज ताड़ीखेत अलमोड़ा में वसन्तोत्सव मनाया गया।

उड़ीसा में वस्त्र-वितरण

आर्य यतिमंडल के सदस्य महात्मा प्रेमप्रकाश जी ने उड़ीसा के निर्धन लोगो मे तीन हजार वस्त्रों का वितरण किया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री पृथ्वीराज-शास्त्री आर्य समाज के सेवाकार्य का परिचय दिया।
—स्वामी धर्मानन्द सरस्वती।

महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी

म० द० आर्य गुरुकुल कृष्णपुर, मंझना, फर्रुखाबाद उ० प्र० के प्रागण में 'महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी' समारोह १६-१७-१८ मार्च को होगा। जिसमें आर्य जगत् के विख्यात विद्वान् पधार रहे हैं।

आर्य गर्ल्स कालेज रजत जयन्ती

आर्य गर्ल्स कालेज, अम्बाला छावनी का रजत-जयन्ती समारोह १३-१४-१५ फरवरी को मनाया गया जिसकी अध्यक्षता श्री रामगोपाल शालवाले ने की। अन्तः महाविद्यालय में श्लोक, कविता, भाषण प्रतियोगिताएं हुई और दीक्षान्त समारोह तथा पारितोषिक वितरण प्रो० बी० एस० बुद्धराज प्रो० वाइस चांसलर कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय द्वारा किया गया। डा० हरिप्रकाश प्रधान प्रबन्धक समिति, डा० शान्ता मलहोत्रा, प्राचार्या।

राष्ट्रोत्थान में ऋषि दयानन्द का योगदान

आर्य युवक परिषद् दिल्ली द्वारा १७ फरवरी को १२ बजे कोटला मैदान में 'राष्ट्रीय उत्थान में ऋषि दयानन्द का योगदान' विषय पर बाल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अध्यक्षता=मा० श्री धर्मपाल जी करेंगे। प्रथम विजेता को 'सत्यप्रिया' चल विजयोपहार दिया।

—आर्य समाज कुल्टी जिला वर्दवान (प० बंगाल) का वार्षिकोत्सव २१ से २५ मार्च तक मनाया जाएगा।—गंगादयालसिंह आर्य, मंत्री

—२७ फरवरी से ३ मार्च तक २१५ एल, माडल टाउन पानीपत में सामवेद ब्रह्मपारायण यज्ञ होगा। पूर्णाहुति के पश्चात् मेरे पौत्र आशुमूलक का मुंडन संस्कार होगा।
—तिलकराज मलहोत्रा।

दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार मंडल

दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार मण्डल (४७ आर्यसमाजों का संगठन) के तत्वावधान में आयोजित होने वाला ऋषि बोधोत्सव अब २४ फरवरी १९८५ को महारानी बाग में न होकर १० मार्च १९८५ रविवार को आर्य समाज मन्दिर श्रीनिवासपुरी में होगा जिसमें उच्चकोटि के आर्योपदेशक व वरिष्ठ पत्रकार आमन्त्रित हैं।—नरेन्द्र अवस्थी, संयोजक।

यजुर्वेद परायण महायज्ञ

आर्य समाज खपरपदा, बालेश्वर (उड़ीसा) में ५ से ७ फरवरी तक यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पं० नकुलदेव और पं० वीरेन्द्र कुमार के प्रवचन हुए।—संचालक, महापुरुष आश्रम कांजियापाल, बालेश्वर।

पाणिनि कन्या महाविद्यालय में कल्प उपचार

पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी में गत दिनों 'दुग्ध कल्प' का ४० दिन (१२ दिसम्बर से २१ जनवरी तक) उपचार क्रम आचार्य रामशास्त्री वैद्य द्वारा चलाया गया। सुश्री मेधा देवी का लगभग दस वर्ष से पाचनक्रम बिगड़ा हुआ था। उनके इस कष्ट का निवारण दुग्धकल्प से आशातीत सफलता के साथ किया गया। होमियोपैथ ऐलोपैथ आदि से हार मानने पर इस कल्प का सहारा लिया था जिसकी पूर्ण सफलता ऋषि प्रणीत वेदानुमोदित आयुर्वेदादि सच्छास्त्रों की ही विजय है।—माधुरी शास्त्री।

गाजियाबाद संन्यास आश्रम में शिविर

वैदिक यति मंडल की ओर से वैदिक संन्यास आश्रम गाजियाबाद में १६ मार्च से ३१ मार्च १९८५ तक स्वाध्याय, संस्कृत शिक्षण शिविर लगाया जायेगा अतः सब इच्छुक मान्य यतियों (संन्यासी, नैष्ठिक ब्रह्मचारी तथा वानप्रस्थियों) से प्रार्थना है कि समय पर पहुंच कर अवश्य लाभ उठावें। सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि आदि पुस्तकें, कापी, लेखनी तथा ऋतु अनुसार वस्त्र अपने साथ अवश्य लावें। भोजन का प्रबन्ध आश्रम की ओर से होगा।
—सर्वानन्द, अध्यक्ष, वैदिक यति मंडल।

डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल नाहन

२७ जनवरी को डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल नाहन के वार्षिकोत्सव की अध्यक्षता करते हुये डा० कृष्ण-स्वरूप (अवकाश प्राप्त स्वास्थ्य निदेशक हि० प्र०) ने विद्यालय की प्रशंसा करते हुये कहा कि यहां भारतीय संस्कृति के अनुरूप आधुनिकतम तकनीक पर आधारित शिक्षा दी जाती है। बच्चों द्वारा प्रदर्शित सांस्कृतिक कार्यक्रम सभी दर्शकों द्वारा सराहा गया। कला व विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन भी सराहनीय रहा। प्राचार्य श्री वर्मा ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट में डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी द्वारा संचालित विद्यालयों में भारत के भावी नागरिकों के चरित्र निर्माण में सक्रिय योगदान को महत्वपूर्ण बताया।

पलवल में शहीद सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य वीरदल के तत्वावधान में अमर शहीद लाला लाजपतराय जयन्ती तथा धर्मवीर हकीकत राय बलिदान दिवस के अवसर पर पलवल के दयानन्द चिकित्सालय में शहीद सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता आर्य समाज पलवल शहर के अध्यक्ष श्री भगवान दास ने की तथा मुख्य अतिथि श्री राजू गुप्ता थे।—सं० कुमार आर्य, मंत्री।

सोहनलाल डी० ए० वी० कालिज, अम्बाला सिटी
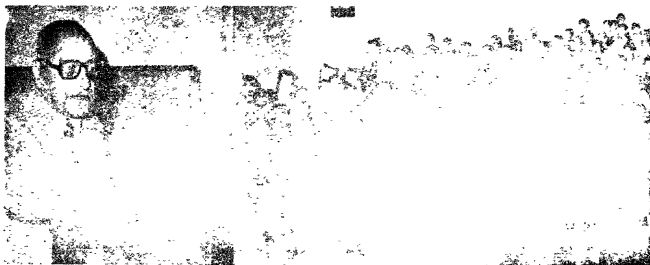
सोहनलाल डी० ए० वी० कालिज आफ एजुकेशन, अम्बाला सिटी मे १०+२+३ शिक्षापद्धति पर विचार के लिए एक गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमे हरयाणा के स्कूल-कालिजो के प्राचार्यों ने बडी सख्या मे भाग लिया। चित्र मे प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री श्री बी० एस० बहल श्रोताओ को सम्बोधित कर रहे हैं।

कालिज मे आयोजित 'आन दि स्पाट पेंटिंग' प्रतियोगिता का हरयाणा चैम्बर आफ कलर्स के प्रधान श्री डी० आर० धवन उद्घाटन कर रहे है।
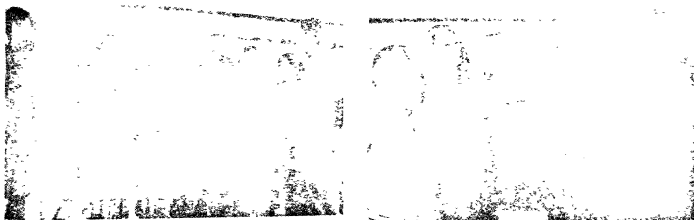
कालिज में जो सगीत-नृत्य प्रतियोगिता आयोजित हुई उसमे विजयी भारतीय पब्लिक स्कूल की छात्राओं को श्री राजेन्द्रनाथ जी चल विजयोपहार भेंट कर रहे हैं।

हरयाणा के सयुक्तशिक्षा सचिव श्री एस० एल० धानी 'आन दि स्पाट पेंटिंग' प्रतियोगिता मे विजयी एम० एन० स्कूल के छात्रो को चल विजयोपहार प्रदान कर रहे हैं।

यू० १०३/१०८ लायसेंस टू पोस्ट विदाउट प्रीपेमेन्ट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११६३/७२ डी० सी० (४६)

'आर्यजगत्' सम्बन्धी घोषणा

फार्म-4

1. प्रकाशन स्थान	:	नई दिल्ली-110001
2. प्रकाशन अवधि	:	साप्ताहिक
3. मुद्रक का नाम	:	एस० नारायण एण्ड संस,
(क्या भारत का नागरिक है है ?)	:	हां,
4. प्रकाशक का नाम	:	रामनाथ सहगल
पता	:	आर्यसमाज (अनारकली) मंदिर
	:	मार्ग, नई दिल्ली-110001
5. सपादक का नाम	:	क्षितीश वेदालंकार
(क्या भारत का नागरिक है ?)	:	हा
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हो।	:	रामनाथ सहगल, मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली-1

मैं रामनाथ सहगल एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए हुए विवरण सत्य हैं।

रामनाथ सहगल
प्रकाशक

महात्मा हंसराज दिवस
स्वामी सत्य प्रकाश जी अध्यक्ष होंगे

महात्मा हंसराज दिवस समारोह जो 21 अप्रैल रविवार को ताल कटोरा गार्डन के इन डोर स्टेडियम मे प्रातः 9-30 से 12-30 तक मनाया जायेगा उसके अध्यक्ष आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध परिव्राजक स्वामी सत्य प्रकाश जी महाराज होंगे। मेरी दिल्ली की समस्त आर्य समाजो और आर्य सस्थाओ से प्रार्थना कि है कि वे उस दिन अपना साप्ताहिक सत्संग स्थगित करके बसो द्वारा ताल कटोरा पहुचने की कृपा करें। विस्तृत कार्यक्रम शीघ्र ही तैयार करके आर्य समाजो को भिजवा दिया जायेगा।

—रामनाथ सहगल, सभा मत्री

दीवान चन्द्र अवाल नर्सिग होम
आंखों का विशाल निःशुल्क शिविर

इस शिविर मे सफेद मोतिया, काला मोतिया, रोहे, कुकरे, टेढी आखे, आख से पानी आना आदि आख की सभी प्रकार की बीमारियो का नि शुल्क इलाज तथा आपरेशन किया जायेगा।

15 तथा 16 मार्च 1985 शुक्रवार, शनिवार प्रात. 8 बजे से 2 बजे तक रोगियो की जाँच होगी। आपरेशन वाले रोगियो को उसी दिन दाखिल कर लिया जायेगा।

स्थान .— दीवानचन्द अवाल नर्सिग होम (मद्रास होटल के पीछे)
2-जैन मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001
सुप्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक डॉ० एस० आर० के० मलिक
डॉ० आर० पी० सी० मचदेव, डा० पी० वी० सी० भाटिया आदि

सूचना - आपरेशन वाले रोगी बिस्तर तथा भोजन के बर्तन साथ लाये।
2. भोजन दवाईया, आपरेशन तथा चश्मे का व्यय लाला दीवानचन्द ट्रस्ट द्वारा किया जायेगा।
3. नाम रजिस्टर करवाने के लिये दीवान चन्द अवाल नर्सिग होम मे सम्पर्क करे।

नोट .— किसी भी प्रकार का सहयोग देने के इच्छुक सयोजक से सम्पर्क कर।

दूरभाष : 343536

निवेदक :

प्रो० वेद व्यास	ला० हस राज गुप्ता	अशोक मल्होत्रा
(प्रधान)	(मन्त्री)	(सयोजक)

लाला दीवान चन्द्र ट्रस्ट

योग्य वधू चाहिए

30 वर्षीय, हिंदू आर्य युवक, भारतीय मूल, होलेंड निवासी (नागरिक) गौर वर्ण, सुन्दर, स्वस्थ ऊंचाई 180, निजी व्यवसाय (संगीत रिकार्ड निर्माता) मासिक आय-पाच अंको मे, (मकान, गाड़ी,) के लिए आवश्यकता है हिंदू कुआरी कन्या, आयु 22 से 26 वर्ष, गौर वर्ण सुन्दर, लम्बाई 160 से 165, हिन्दी का ज्ञान, हिन्दू परम्परा मे विश्वास, भारतीय संस्कृति तथा घरेलू काम काज मे निपुण, वर्ण बन्धन नही, दहेज मुक्त विवाह, पत्राचार के साथ नवीन फोटो निम्न पते पर भेजे (कृपया पत्र द्वारा ही संपर्क करें)। यू० एन० तिवारी, डी० —18 कैलास कालोनी, नई दिल्ली — 110048

कार्य सम्पन्न होने पर फोटो चित्र वापस कर दिया जाएगा) (P)

सोहनलाल कालिज मे विज्ञान सम्बन्धी निबन्ध प्रतियोगिता मे विजयी श्री एम०एन० कालिज अम्बाला कैंट के छात्रो को पोलिटैकनीक कालिज के प्रिंसिपल श्री आर० के० गुप्ता चल विजयोपहार प्रदान कर रहे हैं।

Suitable match

Suitable mach for beautiful punjabi khatri girl, smart well versed in house hold B. A (hons) M. A. B. ed. 33/156/1200. Teacher in public school Delhi Father retired executive engineer owns kothi in New Delhi. Boy should be preferably post graduate class I officer in Government service. Please write to Amar nath, Kothi No A2/97, Paschim Vihar, New Delhi-110063 (P.)

सिनेमा स्लाइड से प्रचार कराइए

इस प्रचार को लोग बहुत दिनो तक याद करते रहेंगे अगर आप अपने नगर तथा ग्राम मे वैदिक सिनेमा-स्लाइड्स द्वारा चित्रपट पर प्रचार करायेंगे। साथ-साथ जोशीले गीत भी सुनने को मिलेंगे। बिजली का प्रबन्ध अवश्य हो।—आशानन्द भजनीक, I/9359, आर्य भवन, प्रतापपुरा गली न० 2, वैस्ट रोहतास नगर, शाहदरा दिल्ली-110032

श्री चन्द्रगुप्त विद्यालंकार दिवंगत

गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक और हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक श्री पं० चन्द्रगुप्त विद्यालंकार का गत सप्ताह बम्बई मे ७८ वर्ष की आयु मे अकस्मात् हार्ट फेल हो जाने से स्वर्गवास हो गया। उससे पहले वे एक सडक दुर्घटना मे घायल हो गए थे। कहानीकार और नाटककार के रूप मे उन्होने विशेष ख्याति प्राप्त की थी। वे 'सारिका' 'आजकल' और 'विश्वदर्शन' के सम्पादक रहे थे। देश-विभाजन से पहले लाहौर में उन्होने हिन्दी का एक समाचार-पत्र भी निकाला था और कई पुस्तके भी लिखी थी। वे अपने पीछे पत्नी और दो पुत्रिया छोड गए हैं।

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स ७११७ १८ पहाड़ी धीरज, दिल्ली से छपवा कर कार्यालय, 'आर्य जगत्,' मन्दिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

साप्ताहिक पत्र | ओ३म् | कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

वार्षिक मूल्य-२० रुपये	विदेश में २० पौ० या ५० डालर	वर्ष ४८, अंक १०, रविवार, १० मार्च १९८५	दूरभाष : ३४३७१८
आजीवन सदस्य-२०१ रु०	इस अंक का मूल्य—५० पैसे	सृष्टि संवत् १९७२९४९०८४, दयानन्दाब्द १६०	चैत्र कृष्णा ४, २०४१ वि०

टंकारा में जंगल में मंगल

आर्य नर-नारी नई प्रेरणा लेकर लौटे

महात्मा आर्य भिक्षु जी

जिनकी अध्यक्षता मे टंकारा मे ऋषि बोधोत्सव और रजत जयन्ती समारोह हुआ।

(टंकारा मे ऋषि बोधोत्सव और रजत जयन्ती समारोह का कुछ विवरण पाठक गताक मे पढ चुके हैं। शेष विवरण नीचे पढ़िए—)

टंकारा मे इस वर्ष रजत जयन्ती समारोह पर श्रद्धालु भक्तो की अप्रत्याशित भीड जिस तरह उमड पडी, उसके कारण बस्ती से दूर उपदेशक विद्यालय के प्रागण मे जैसा दृश्य उपस्थित हुआ, उसे देखकर सभी यात्रियों के मुख से बार-बार यही शब्द निकलते रहे—कि इस बार तो जगल मे मगल हो गया।

टंकारा मे वैसे पानी का अभाव है। काफी प्रयत्न करने पर भी पानी की समस्या का कोई स्थायी समाधान अभी तक नहीं निकल पाया है। इसलिए शिव रात्रि के अवसर पर ऋषि मेले के आयोजको को काफी दूर से टंकरो में यात्रियो के लिए पानी मंगवाने की व्यवस्था करनी पड़ी। उस पर खर्च काफी आया। भीड ज्यादा होने के कारण जब महालय के सब हाल कमरें तथा बरामदे भी भर गये, तब तम्बुओ और छोलदारियों की व्यवस्था करनी पडी। उसके लिए भी टंकारा ट्रस्ट को काफी खर्च करना पड़ा।

५ हजार व्यक्तियो के लिए तीन दिन तक भोजनाच्छादन की समुचित व्यवस्था आसान नही होती। परन्तु टंकारा ट्रस्ट के अधिकारियो ने जिस कुशलता से सब प्रबन्ध किये उसके कारण किसी को भी शिकायत का मौका नही मिला। ऋषिलगर की व्यवस्था का भुज और कच्छ से आये ११० आर्य स्वयसेवको ने जिस अनुशासनबद्ध ढग से सभाला, उसके कारण सभी यात्री उनकी प्रशसा करते नही अघाते थे दोनो समय ठीक समय पर भोजन और ठीक समय पर चाय तथा जलपान की व्यवस्था मे कही भी अनुशासन को भग न होने देना बडी बात है।

११ फरवरी से ही उपदेशक विद्यालय के उपाचार्य श्री हरिओम सिद्धान्ताचार्य की अध्यक्षता मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ प्रारम्भ हो गया था। इसी यज्ञ की पूर्णाहुति १७ फरवरी को शिवरात्रि के दिन हुई जिसमे महात्मा आर्य भिक्षु जी ने

(शेष पृष्ठ 11 पर)

स्वामी ईशानन्द जी

बम्बई मे आर्यसमाज के प्रचारक श्री जगदीश प्रवासी जी ने टंकारा मे यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर अपनी जीवन भर की कमाई ५० हजार रु० की राशि टंकारा ट्रस्ट को दान देने की घोषणा की और महात्मा आर्यभिक्षु जी के सान्निध्य मे आर्य सन्यासियो से सन्यास की दीक्षा लेकर भविष्य मे ईशानन्द नाम से आर्यसमाज की सेवा का व्रत लिया।

टंकारा ट्रस्ट के अधिकारी तथा उपदेशक विद्यालय के छात्र

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के यशस्वी मंत्री रामनाथ सहगल, उपप्रधान पं० आनन्द प्रिय जी, अवैतनक व्यवस्थापक डा० आर० के० पुंशी के साथ ट्रस्ट के कार्यकर्त्ता और विद्यार्थीगण।

आओ सत्संग में चलें

प्राणवायु की रक्षा का एकमात्र उपाय अग्निहोत्र

—डा० ईश्वर चन्द्र शास्त्री—

वर्तमान अवस्था मे देश के कई राज्यो मे अग्निहोत्र न करना फैशन समझा जा रहा है जिनमे हमारा बिहार भी एक है। औद्योगिक स्थानो तथा कल-कारखानो के कारण सारा पर्यावरण दूषित हो रहा है। फलस्वरूप वायुमडल इतना दूषित बन रहा है कि यदि अच्छी हवा का निर्माण नही किया गया तो एक समय ऐसा आएगा जब सारे ससार मे प्राणवायु की समाप्ति हो जाएगी।

अत्यधिक कलकारखानो के कारण सारा वातावरण दूषित हो रहा है। सरकार इसके लिए जगह-जगह वन लगवा रही है ताकि उसके माध्यम से वातावरण शुद्ध हो। विषाक्त बनी हवा मे गन्दगी को चूस कर वृक्षादि ससार को बदले मे प्राण वायु दे सकें। पर ससार मे जनसख्या की वृद्धि के फलस्वरूप जितने वृक्ष लगाए जाते हैं उससे अधिक नष्ट किये जा रहे है। अतः यह सभव नही कि वातावरण पूर्ण-रूपेण शुद्ध हो सके।

इस समस्या पर विचार करते हुए अब यही अन्तिम उपाय प्रतीत होता है कि यदि प्रत्येक घर मे अग्निहोत्र किया जाय तो इस गन्दगी को दूर किया जा सकता है और वातावरण को शुद्ध किया जा सकता है।

हम विचार करे कि अग्निहोत्र मे कौन-कौन सी ऐसी चीजे है जिनके माध्यम से हम वातावरण को भी शुद्ध कर सकते है तथा उनका स्वास्थ्य पर भी अच्छा असर पड सकता है। अग्निहोत्र मे सबसे मुख्य वस्तु धूप (देवदार की छोटी छोटी समिधा) है जो प्रज्वलित अग्नि मे डालने से आग की ज्वाला बढाती है और उनकी सुगन्धि से वातावरण शुद्ध होता है। यह इतना सुगन्धित पदार्थ है कि जिस जगह अग्निहोत्र होता है उस स्थान के अतिरिक्त आस-पास के क्षेत्र भी सुगन्धित हो जाते है यदि इसी प्रकार सभी घरो मे अग्निहोत्र हो या हवन हो, तो सब ओर का वातावरण क्यो न शुद्ध हो इसका प्रत्यक्ष प्रभाव फसलो पर भी पडता है।

बेल की लकडी—बेल की लकडी समिधा के लिए उपयोगी तथा स्वास्थ्य के लिए लाभकर है। बेलपत्र तथा इसकी लकडी मे अनेक गुण है। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह सिर दर्द, शोथ, साप के काटने पर, ज्वर मे, पेट की गडबडी मे, हृदय रोग मे तथा खांसी मे यह दवा के रूप मे लाभदायक है इसके अतिरिक्त यह स्वजभग तथा शीघ्र प्रतन के निवारण मे काम आता है। यह सभी प्रकार के आँव मे भी लाभ देता है। यदि इसकी लकडी जलाई जाए तो वह अपने गुणो से हवा के सम्पर्क से बहुत से लोगो को लाभ करेगी। जो लोग इसे अग्निहोत्र मे समिधा के रूप मे जलाते हैं उन्हे तो विशेष लाभ होगा ही। क्योकि जलते समय इसका धुआ हम लोगो के शरीर मे सद्य प्रवेश कर जाता है।

पलाश की लकडी—पलाश की लकड़ी भी समिधा के लिए उपयुक्त है। पलाश के फूल तथा गोद मे भी अनेक गुण हैं। इसका गोद वीर्य वर्धक है। फल मे पेट से कीडा (चुरमे) निकालने की अद्भुत क्षमता है। इसके फल पर परिवार नियोजन सम्बन्धी खोज हो रही है। इस प्रकार यदि इसकी समिधा अग्निहोत्र के काम मे लाई जाती है तो स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभप्रद है।

सेमल की लकडी—सेमल को शमी भी कहते है। सेमल के वृक्ष तथा गोद मे भी अनेक गुण है। इससे पुराना संग्रहणी रोग अच्छा हो जाता है। यदि इसकी लकड़ी समिधा के काम मे लाई जाए तो प्रत्यक्ष प्रभाव पडता है।

बड, गूलर, आम, पीपल—इनकी भी लकडी समिधा के काम मे लाई जाती है। स्वास्थ्य की दृष्टि से बड़ पुष्टिकारक व वीर्यवर्धक है तथा रक्त शोधक है। गूलर सग्रहणी नाशक तथा रक्तशोधक है। आम सग्रहणी नाशक तथा पुष्टिकारक है। पीपल रक्तशोधक, विषनाशक तथा रक्तरोधक हैं। अग्निहोत्र मे इन वृक्षो की लकडियाँ जलने पर सभी के स्वास्थ्य पर अच्छा असर पडता है तथा वातावरण शुद्ध होता है।

कस्तूरी, केसर, अगर, तगर इलायची जावित्री आदि सुगन्धित पदार्थ अग्निहोत्र मे जलाने से मानव शरीर मे विषाक्त चीजे असर नही करती और वातावरण शुद्ध होता रहता है। इससे मनुष्य के शरीर मे सर्दी आदि का असर नही होता है।

कुछ पदार्थ ऐसे है जो स्वयं पुष्टि-कारक है और अग्निहोत्र मे प्रयुक्त होते है, जैसे घृत, दूध, छुहारा, सूखा नारियल, फल, चावल आदि। ये सब स्वास्थ्य की दृष्टि से पुष्टिकारक तो है ही, अग्निहोत्र मे पडने से अग्निहोत्र करने वाले व्यक्ति को ही लाभ नही करते, सारे समाज को लाभ करते है। आकाश मे वायु द्वारा वर्षा लाने मे सहायक होते हैं जिससे फसलो को लाभ पहुचता है और वातावरण शुद्ध रहता है।

शक्कर, मधु, दाख, आदि—ये सभी मीठे पदार्थ हैं। अग्निहोत्र मे ये सभी चीजें धूप के साथ डाली जाती हैं। इनके सेवन से शरीर शुद्ध होता है, पर सार्वजनिक लाभ इनसे अग्निहोत्र द्वारा ही सम्भव है। मधु एक ऐसा पदार्थ है कि मधुमेह तक के रोगी इसका सेवन करते है।

रोग नाशक सोमलता (गिलोय)—सोमलता की छोटी-छोटी समिधाए भी अग्निहोत्र मे काम आती हैं।

यह इतनी अच्छी लता है कि तरह-तरह की बीमारियो को जड से उखाड़ देती है। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह बहुत महत्वपूर्ण लता है। यह वीर्यवर्धक तथा रोग नाशक है। जो चीजें व्यक्तिगत लाभ करती है वही चीजे समिधा के रूप मे अग्नि मे पडकर सामाजिक लाभ करती हैं। इसी कारण अग्निहोत्र को देवयज्ञ के रूप मे नित्य कर्तव्य बताया गया है। निस्स्वार्थ भाव से परोपकार के लिए ऋषियो ने यह कितना महत्वपूर्ण विधान किया है।

आधुनिक समय मे जबकि सर्वत्र अणु परमाणु बम तथा नाना प्रकार की रेडियम किरणें और विषैली गैसो की भरमार हो रही है, तब यह कितना आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति अग्निहोत्र प्रति दिन करे ताकि इन गन्दी वायु का शमन हो और सदा पृथ्वी पर सुखद वायु मण्डल बना रहे। तभी हम वेद के आदेश के अनुसार "जीवेम शरद शतम्" सौ वर्ष तक की आयु भोग सकते है। सच तो यह है कि दैनिक अग्निहोत्र की जितनी अधिक आवश्यकता आज के युग मे है, उतनी शायद प्राचीन युग मे नही थी, क्योकि तब वायुमण्डल इतना दूषित नही था। सारे ससार को दूषित पर्यावरण से मुक्ति दिलाने का एकमात्र उपाय केवल अग्निहोत्र है।

पता—मालडा, गिरिडीह (बिहार)

इन रंगे सियारों का

—मोहनलाल शर्मा 'रश्मि'—

ये धोखे से गला काटते है, अपने ही प्यारो का।
तुम कभी भरोसा न करना, इन रगे सियारों का॥

पार लगाने के जो तुमको है भ्रम मे डाल रहे।
भंवर बीच डुबोने वाले, इन्हे पता नही किनारो का॥

पाठ प्रेम का पढा रहे, लिये ये द्वेष की ज्वाला।
झुलस जाय न हाथ कही, ख्याल रखो अगारो का॥

बन महा स्वार्थी धूर्त यहा अपना उल्लू सीधा करते।
क्यो पर्दा फाश नही करते, तुम ऐसे मक्कारों का॥

ये भेष बदलते रहते हैं, झूठा यश हासिल करने।
असली चेहरा पता नही, शायद इन गद्दारो का॥

धरम-करम ये क्या जाने, हैं मद मे डूबे दीवाने।
बुजदिल न कहीं बन जाना तुम हाथ पकड़ बेकारो का॥

आर्य धरा पर देखो फिर वेदो के स्वर हैं गूँज रहे।
करो सफाया हिम्मत से, पथ में खड़ो दिवारों का॥

हो दयानन्द के वीर सिपाही, तुम सब हे आर्यो!
करो उजागर रूप 'रश्मि' इन झूठे दावेदारों का॥

शुभ विवाह

दिल्ली—सार्वदेशिक सभा मे ऋग्वेद के अंग्रेजी भाष्य के सम्पादक एवं पत्रकार श्री ब्रह्मदत्त स्नातक एम० ए० की सुपुत्री दीपिका आत्रेय एम० एस० सी० का शुभ विवाह जम्मू निवासी श्री राममूर्ति शर्मा के सुपुत्र डा० रवीन्द्र शर्मा एम०बी०बी० एस० के साथ १० फरवरी ८५ को वैदिक विधि से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् उपस्थित थे। वर पक्ष की ओर से ४३०) रु० इस अवसर पर दान मे [सार्वदेशिक सभा को ३६१) रु० आर्यसमाज रामकृष्णपुरम् से० 6 को ७८) एव सेक्टर ३ को २१) तथा दक्षिणा में उभयपक्ष की ओर से १५०) रु० दिए गए। —रघुनाथ पाठक, सह सपादक—

सुभाषित

नाना श्रान्तस्य श्रीरस्ति इति रोहित शुश्रुम ।
पापो नृषद्वरो जन इन्द्र इच्चरतः सखा ॥
चरैवेति चरैवेति चरैवेति ।

हे रोहित ! जो कठिन परिश्रम करके थक नही जाता उसे समृद्धि और सफलता प्राप्त नही होती । परिचितों और सम्बन्धियों के बीच निठल्ला बैठकर खाने वाला मनुष्य श्री-हीन हो जाता है । स्वयं प्रभु या ऐश्वर्यशाली लोग भी परिश्रमशील व्यक्ति के ही मित्र होते हैं । इसलिए रुको मत, चलते रहो, चलते रहो ।—ऐतरेय ब्राह्मण

सम्पादकीयम्

टंकारा-एक स्वप्न-एक यथार्थ (२)

पिछले अंक में हमने ऋषिवर दयानन्द के जन्म स्थान टंकारा को एक स्वप्न से निकालकर एक यथार्थ के धरातल पर पहुंचाने का आर्य जनता से आह्वान किया था। उस यथार्थ का स्वरूप क्या हो, इस सम्बन्ध में संक्षेप से चर्चा भी की थी। इस बार टंकारा के सम्बन्ध में हमारे मन में जो योजना है, उसी को कुछ विस्तार से पाठकों के सामने रखना चाहते हैं।

टंकारा में मोरवी नरेश का महालय (महल) खरीदकर ऋषि के स्मारक के रूप में कुछ परीक्षणों को अपनाने के पश्चात् जब अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय की स्थापना की गई, हो सकता है तब भी इस प्रकार की कुछ योजना सस्थापको के मन मे रही हो। परन्तु जिस लघु रूप में वह कार्य शुरू हुआ, उससे उसके भावी विस्तार की सम्भावना नष्ट नही होती। इस महालय में राज निवास, रानी निवास और कर्मचारी निवास के लिए जितने कमरे और भवन बने हुए हैं, और आस-पास जितनी भूमि है, वह अपने आप में ही इतनी विस्तृत है, कि कोई भी विशाल योजना वहा सफल हो सकती है। कहने का भाव यह है कि स्थान की तंगी नही है। उस समय महालय और उसके परिसर को खरीदने में जो कुछ लाख रुपया लगा था, अब वही स्थान भौतिक दृष्टि से करोड़ो रुपए की सम्पदा अपने मे समेटे है। आवश्यकता उसके समुचित उपयोग की है।

जो उपदेशक विद्यालय इस समय वहां चल रहा है, उसमें 20 विद्यार्थी हैं। यह हमारे गत 25 वर्षों की उपलब्धि है। इतनी संख्या इससे पहले वहा कभी नही हुई। किन्तु वहां गुंजाइश सैकड़ो विद्यार्थियों की है। प्रश्न यह है कि उसके लिए क्या योजना हो और किस प्रकार देश भर में उस योजना को प्रचारित करके इसको एक सचमुच ही अन्तर्राष्ट्रीय संस्था का रूप दिया जाय। इस समय वहां जो उपदेशक विद्यालय स्थापित है, उसके नाम के शुरू मे 'अन्तर्राष्ट्रीय' शब्द लगा अवश्य है, पर यह केवल बड़बोलेपन का परिचायक एक विशेषण मात्र बनकर रह गया है। इसकी सार्थकता दृष्टि गोचर नहीं होती। अन्तर्राष्ट्रीय तो क्या, 20 विद्यार्थियो वाली किसी सस्था को अखिल भारतीय स्तर की राष्ट्रीय संस्था कहने भी सकोच होता है।

इस संस्था को अन्तर्राष्ट्रीय रूप देने से पहले राष्ट्रीय रूप देने की आवश्यकता है। इकाई और दहाई को पकड़े बिना सैकड़ो को पकड़ने की बात कहने वाला व्यापारी कभी विश्वसनीय नहीं होता। राष्ट्रीय रूप देने के लिए इस सस्था मे हमें देश भर के समस्त राज्यो से उत्साही और ऋषि दयानन्द के मिशन के दीवाने नव युवको को एकत्रित करना होगा और उन्हे वैदिक धर्म के प्रचार की दीक्षा देकर सुनियोजित ढंग से प्रशिक्षित करना होगा। जब हम सब प्रान्तों से विद्यार्थियो को एकत्रित करने की बात कहते हैं तब साथ यह भी कहना चाहते हैं कि उपदेशक बनने वाले उन विद्यार्थियों को केवल हिन्दी और सस्कृत मे ही नहीं, बल्कि उस-उस राज्य की भाषा में भी निष्णात होकर व्याख्यान देने की कला का अभ्यास कराना होगा। इस समय हम हिन्दी और संस्कृत के अलावा, गुजरात में होने के कारण, उपदेशक विद्यालय में गुजराती भाषा की वाद-विवाद प्रतियोगिता का तो आयोजन कर सकते हैं और करते भी हैं, परन्तु गुजराती को छोड़कर किसी अन्य प्रादेशिक भाषा को हम कोई स्थान नही देते। अच्छा तो यही है कि जिस प्रान्त से जो विद्यार्थी आए वह उस प्रान्त की भाषा मे भी प्रचार करने मे दक्ष हो।

भारत की जितनी प्रादेशिक भाषाएं हैं, वे सब राष्ट्रीय भाषाएं हैं और वे भारत की अपनी हैं। उनकी उपेक्षा करके हम उन प्रदेशों की आम जनता तक नहीं पहुंच सकते। हिन्दी और संस्कृत राष्ट्रभाषा और सांस्कृतिक विरासत के रूप मे कितनी ही मान्य और पूज्य क्यों न हों, जब तक लोक भाषाओं को हम प्रचार का माध्यम नहीं बनाते, तब तक गैर-हिन्दी भाषी प्रान्तों मे जनता-जनार्दन के मनों तक हमारी पैठ नहीं हो सकती। अभी तक आर्य समाज का प्रचार यदि अधिकतर उत्तर भारत तक ही सीमित रहा तो उसका एक बहुत बड़ा कारण यह भी है कि हमने दक्षिण भारत की भाषाओं में प्रचारक तैयार करने की ओर ध्यान नहीं दिया। इसीलिए पूर्वी, पश्चिमी और दक्षिणी भारत में भी जो उत्तर भारत के निवासी बसते हैं, हमारी प्रायः केवल उन्हीं तक पहुंच है, उन राज्यों के मूल निवासियों तक नहीं। उन प्रान्तों के लोग समझते हैं कि आर्य समाज तो केवल उत्तर-भारतीयो का आन्दोलन है।

जब से भाषावार राज्यो का निर्माण हुआ है तब से हरेक राज्य मे अपनी प्रादेशिक भाषा के प्रति मोह भी आवश्यकता से अधिक बढ़ गया है। अपने धर्म प्रचार का माध्यम उन प्रादेशिक भाषाओ को बनाकर हम प्रदेशवाद के स्थान पर राष्ट्रवाद की नई लहर चला सकते हैं और यह काम केवल आर्य समाज ही कर सकता है। क्योंकि किसी अन्य संस्था के पास वैसी विशुद्ध राष्ट्रीय दृष्टि नही है, जैसी आर्य समाज के पास है। प्रादेशिक भाषाओं के प्रति मोह और आग्रह जहां धीरे-धीरे प्रदेशवाद और अलगाववाद को बढ़ावा देता है, वहा उन्हीं प्रादेशिक भाषाओं के माध्यम से हमे भारत की अखण्ड राष्ट्रीयता की दिशा मे जनता को जागृत करना है। अन्य संस्थाएं अपनी प्रादेशिक भाषाओ के माध्यम से प्रायः प्रदेश वाद और साम्प्रदायिकता का प्रचार करती हैं। हमारे उपदेशको को उस लहर को उलट कर प्रादेशिक भाषाओं को भी सही राष्ट्रवाद का वाहन बनाना होगा।

सस्था को अखिल भारतीय रूप देने के लिए जब हम प्रादेशिक भाषाओ के प्रशिक्षण की बात कहते हैं तो हमें उन प्रादेशिक भाषाओ का साहित्य और उन भाषाओ के पढाने वाले प्राध्यापक भी रखने पड़ेगे। अभी तक देश की किसी संस्था में ऐसी व्यवस्था हो, यह ध्यान नही आता। लेकिन इसके बिना सस्था को अखिल भारतीय रूप देने की बात कैसे हो सकती है, यह हमे समझ मे नही आता।

अब लीजिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की बात। वह काम और भी कठिन है। विदेशी भाषा के रूप मे अभी तक हम केवल अग्रेजो की दासता के परिणाम-स्वरूप अग्रेजी को ही जानते पहचानते हैं। परन्तु सारा ससार अग्रेजी भाषी नही है। अंग्रेजी में भाषण देने वाले विद्वान् उपदेशक तैयार करके आप उन्हे ब्रिटेन या अमेरिका और कनाडा तो भेज सकते हैं, या जो स्थान पहले ब्रिटिश उपनिवेश रहे हैं, वहा भी अंग्रेजी से काम चल सकता है। परन्तु शेष सारे संसार मे अंग्रेजी के माध्यम से सफलता प्राप्त करना सम्भव नही है। वैदिक धर्म के जो प्रचारक चीन और रूस मे जायेंगे उनको चीनी और रूसी भाषा का प्रशिक्षण देना होगा। दक्षिण अमेरिका मे जाने वालो को स्पेनिश भाषा का प्रशिक्षण देना होगा। इसी तरह अरब देशो में जाने वाले प्रचारकों को अरबी भाषा मे भाषण देने की अच्छी क्षमता प्राप्त करनी होगी। जिस तरह हमको अपनी भाषाओ से प्रेम हैं, ससार के अन्य देशो को भी अपनी भाषाओं से उससे कम प्रेम नही है। किसी देशवासी की भाषा मे बात करके ही आप उसके मन को सहज रूप से जीत सकते हैं। अभी तक विदेशों मे भी आर्य समाज केवल वही-वहीं है, जहां भारतीय मूल के लोग हैं। कितने अफ्रीकी, कितने रेड इण्डियन और कितने अरब देशों के निवासी या चीन और रूस के लोग आर्य समाज के नाम से भी परिचित है—यह हमने कभी सोचा है? इस दृष्टि से हम पूरे कूप-मण्डूक हैं।

हमारे मन की यह उडान कोरी खाम खयाली लग सकती है। पर ससार को आर्य बनाने का जो सकल्प ऋषि ने हमको दिया है, उस सकल्प को पूरा करने का श्रीगणेश ऋषि के जन्म स्थान से नही होगा तो और कहा से होगा? सारा आर्य समाज अपने समस्त साधन और शक्ति लगाकर भी इस योजना को पूरा कर सके, तो यह न केवल एक महान् रचनात्मक कार्य होगा, बल्कि संसार को नये युग की दीक्षा देने का भी पथ प्रशस्त करेगा। यह योजना एक दिन मे पूरी होने वाली नही है, परन्तु इस प्रकार की कल्पना यदि हमारे स्वप्नों मे स्थान पा जाय तो एक दिन टंकारा का यह स्वप्न यथार्थ में भी परिणत हो सकता है।

भजनोपदेशक चाहिए

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू काश्मीर के लिये दो आर्य भजनोपदेशकों की आवश्यकता है। वेतन न्यूनतम छः सौ रुपये मासिक होगा। इच्छुक सज्जन शीघ्र प्रार्थना पत्र भेजें।

सूर्य देव—वेद प्रचार अधिष्ठाता आ० प्र० सभा, दयानन्द मार्ग, जम्मू तवी

हरियाणा तोड़कर भारत को तोड़ना चाहते हो ?

—प्रो० शेरसिंह, प्रधान आ० प्र० स० (हरि०)—

पंजाब को खालिस्तान बनाने के लिए विदेशी महाशक्तियों की मिलीभगत से जो षडयन्त्र रचा गया, सारा विश्व आज उससे परिचित हो चुका है। अपेक्षा थी कि प्रधानमन्त्री पद सम्भालने के साथ इस समस्या को सुलझाने का प्रयास श्री राजीव गांधी प्राथमिकता देकर करेंगे। उन्होने एक समिति बनाकर इस दिशा मे कदम बढ़ाया भी। लेकिन हरियाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल ने एक अजीबोगरीब वक्तव्य देकर उन सब लोगो को आश्चर्य मे डाल दिया जो कुछ आश्वस्त अनुभव कर रहे थे। गृह-मन्त्री श्री शंकर राव चौहान स्पष्ट रूप से यदि संसद को यह विश्वास न दिलाते कि भजनलाल का प्रस्ताव विचाराधीन नही है, और एक वरिष्ठ पत्रकार को यदि प्रधानमन्त्री यह न बताते कि बिना सभी पक्षों के सन्तोष के कोई भी प्रस्ताव किसी पर थोपा नही जायेगा, तो इस वक्तव्य ने खासी उलझन खड़ी कर दी थी। अब भी, हिमाचल, हरियाणा और पंजाब के निवासियों के बीच एक बहस तो छिड़ ही गई है। हिमाचल और हरियाणा के लोगो के मन में जो पुरानी धारणाए भाषाई पुनर्गठन से पहले थी, वे फिर से उजागर हो गई हैं। परस्पर सद्भाव का वातावरण बनाने की जो प्रक्रिया शुरू हुई थी उसे भी ठेस पहुंची है।

भजनलाल का कहना है कि अकालियों की साम्प्रदायिकता, क्षेत्रीय विवाद तथा जल-विवाद महापंजाब बनते ही स्वयंमेव हल हो जाएंगे। उग्रवाद तथा अलगाववाद की समस्या केवल अंकगणित से ही हल हो जाता तो दुनिया ही बदल जाती। यही बात होती तो बिहार जैसे बड़े प्रदेश में १० प्रतिशत से कम मुसलमान उर्दू को दूसरी राज भाषा बनाने की अपनी माग नही मनवा सकते थे और न ही उत्तर प्रदेश मे उसी माग को लेकर सत्ताधारी दल मे ले-दे होती। १९६६ से पंजाब में अकाली आन्दोलन होते रहे और सरकार हमेशा झुककर उनसे समझौते करती रही। अंकगणित तो वही था जिसकी कल्पना आज पंजाब के साथ हरियाणा और हिमाचल के विलय के द्वारा की जा रही है। स्पष्ट है कि कोई भी समस्या प्रदेश का आकार बड़ा होने से या किसी सम्प्रदाय का प्रतिशत कम होने से न तो रुकती है और न ही हल होती है। साम्प्रदायिक समस्याएं तो सभी आकार के प्रदेशो मे पैदा होती रहती हैं। यदि सरकार मजबूती से हल निकाल कर उसे तुरन्त लागू कर दे तो समस्याए उलझती नही। समस्याएं उलझती हैं सिद्धान्तहीन राजनीति और कमजोरी से। पंजाब की समस्या को उलझाया ज्ञानी जैलसिंह की सिद्धांतहीन राजनीति ने। अकालियों को मात देने के लिए ही उन्होंने उग्रवादी तत्वों को प्रश्रय दिया।

पुनर्गठन के कारण नये क्षेत्रीय विवाद उठेंगे। हरियाणा, पंजाब तथा हिमाचल के बीच क्षेत्रीय विवादों का अंत श्रीमती इन्दिरा गांधी ने सबकी सहमती से २९ जनवरी, १९७० के अपने पंचनिर्णय द्वारा कर दिया था। चण्डीगढ़ पंजाब को फाजिल्का, अबोहर, हरियाणा को तथा अन्य छोटे-मोटे क्षेत्रों के दावे एक आयोग के सुपुर्द। उस पंचनिर्णय की धज्जियां उड़ाई पंजाब के कांग्रेसी नेताओंने, अकालियो को मात देने के लिए। उन्होंने प्रचार किया कि अकालियो ने मज्झा (भैंस) हरियाणा को दे दी और खोता (गधा) पंजाब के लिए ले लिया। अब अकालियो ने भैंस और गधा दोनो को माग लिये। समस्या सिद्धांतहीन राजनीति से उलझ गई। वैसे समस्या हल हुई पड़ी है, केवल अमल करना बाकी है। महापंजाब बनने से समस्या नही सुलझ सकती, क्योकि फिर भी एक सवाल तो खड़ा रहेगा कि किस क्षेत्र में हिन्दी पहली भाषा और किस में पंजाबी पहली भाषा हो।

पानी और बिजली

महापंजाब बनते ही हरियाणा को रावी-व्यास का पानी स्वयं मिल जाएगा, इससे बड़ा भुलावा कोई नही हो सकता; हरियाणा को पानी तो तब मिलेगा, जब सतलुज-यमुना लिंक नहर बन जाए। महापंजाब बनने पर पंजाब की प्राथमिकता तो थीन डेम होगी। भारत सरकार के पैसे से ऐसी बड़ी परियोजनाएं बनती हैं और एक प्रदेश को एक समय मे एक ही प्रोजेक्ट के लिए पैसा मिल सकता है। इसलिए महापंजाब बनते ही लिंक नहर का मामला खटाई में पड़ जाएगा। लिंक नहर पर काम आरम्भ हुए तीन साल होने को हैं। आठ महीने से अधिक सेना को आए हुए भी हो गए, परन्तु कितना काम हुआ? भारत सरकार और हरियाणा सरकार दोनों की उदासीनता अफसोसनाक है। पानी पाकिस्तान मे जा रहा है और हरियाणा के लाखो किसान अपने हिस्से के पानी के लिए तरस रहे हैं जबकि व्यास डेम के खर्चे का भार हरियाणा की जनता वहन कर रही है। महापंजाब बनने पर तो हरियाणा को पानी मिलेगा ही नही, शिकायत भी तब कौन सुनेगा? फिर तो यह महापंजाब का अन्दरूनी मामला हो जाएगा।

कौन सी नहर बने और किसमें कितना पानी जाए, इस पर प्रदेश सरकार (जिसमें पंजाब का बोल बाला होगा) का पूरा-पूरा अधिकार होगा। भजनलाल दिसम्बर १९८१ के फैसले में भी हरियाणा को बहुत बड़ा नुकसान पहुंचा चुके हैं।

बिजली की समस्या हरियाणा मे कृषि और उद्योग दोनो को चौपट कर रही है। भाखड़ा नागल परियोजना पर बिजली के खर्चे का ४७ प्रतिशत देने पर भी हरियाणा का विलय पंजाब मे हो जाएगा, तब थोड़ी बहुत बिजली जो आज मिल जाती है, वह भी मिलने में सन्देह है।

हिमाचल प्रदेश की सरकार तथा जनता ने एक स्वर से इस प्रस्ताव का विरोध किया है। हरियाणा के लोगों ने भी लगभग एक स्वर मे इसका विरोध किया है, कांग्रेसी विधायक जरूर चुप रहे हैं, परन्तु वे भी विरुद्ध हैं। केवल पंजाबी हिन्दू भाइयो ने ही इस प्रस्ताव का समर्थन किया है। पंजाब के एक कांग्रेसी सिख ने इसका समर्थन किया, यह भी इस शर्त के साथ कि समूचे महापंजाब की एकमात्र राजभाषा पंजाबी हो। अकाली अपनी कल्पना का बड़ा पंजाब चाहते हैं, जिसमें हरियाणा तथा दिल्ली के साथ लगते कुछ जिले शामिल न किए जाएं। वे उतना क्षेत्र ही चाहते हैं, जिसमे सिख विधायकों का बहुमत रहे, ताकि शासन पर सिखों का बोलबाला रहे।

१९६६ में पंजाब का पुनर्गठन वहां की समस्या के समाधान के लिए किया गया था। वे समस्याएं थी : (१) भाषा समस्या, जिसको लेकर १९५७ में प्रबल हिन्दी सत्याग्रह हुआ। (२) पंजाबी भाषी और हिन्दी भाषी क्षेत्रों के विकास में असन्तुलन। (३) हरियाणा और हिमाचल क्षेत्रों का राजनीतिक और आर्थिक शोषण। महापंजाब के पुनर्निर्माण के बाद वही समस्याएं फिर से उग्र रूप में उभर आएंगी। भाषा के आधार पर किए गए पंजाब के पुनगठन को यदि रद्द किया तो इससे देशव्यापी आंदोलन उभर सकता है, क्योंकि देश के सभी प्रदेश भाषा के आधार पर बने हैं, उनके साथ फिर छेड़छाड़ से सभी प्रदेशो के लोग उखड़ सकते हैं।

कुछ सुझाव

महापंजाब के पक्ष में जो वक्तव्य आज हैं, उनमें तीन सुझाव मुख्य रूप से हैं (१) सारे देश में केवल पांच जोन बना दिये जाएं, और भाषा के आधार पर बने सभी प्रदेश समाप्त कर दिए जाएं। इस सुझाव के समर्थक ये भूल जाते हैं कि उनकी कल्पना के आधार पर बने बहुत बड़े प्रदेश, केन्द्र को कमजोर बनायेंगे। वे अधिक से अधिक विषय अपने पास रखना चाहेंगे। तब भारत फैडरेशन न होकर, कान्फेडरेशन बन जायेगा। जैसे ही प्रदेश में विद्रोह की भावना जगी, और विदेशी शक्तियों ने उसको सहारा दिया, वह पृथक देश बन जाएगा। बंगला देश का उदाहरण हमारे सामने है।

(२) महापंजाब में जम्मूकश्मीर भी मिला दिया जाए। इसके पीछे जो भावना है, वह स्पष्ट है। कोई प्रदेश भी ऐसा न रहे जहां अल्पसंख्यक सम्प्रदाय का बहुमत हो। ऐसे प्रदेश यदि आरम्भ में ही किसी सिद्धांत के सहारे न बनते तो सहन हो सकता था, परन्तु इतने वर्षों तक बने रहने के बाद आज केवल उनको ही तोड़ने की बात किसी के गले नहीं उतरेगी। इसकी प्रतिक्रियाए गम्भीर हो सकती हैं। प्रजातन्त्र में यह सम्भव नहीं है।

(३) अकालियों का एक प्रस्ताव, ज्ञानी करतार सिंह के चिन्तन पर आधारित है। वह यह है कि हरियाणा के तीन चार जिले दिल्ली मे मिला दिए जाए और शेष पंजाब के साथ। सुरजन सिंह ठेकेदार ने यह प्रस्ताव रखा है और हैरानी की बात है कि जालंधर के श्री उप्पल ने उसका समर्थन किया है। ज्ञानी करतार सिंह पंजाबी सूबे के आकार के बारे मे एक ही गिनती को आधार बनाए हुए थे, कि जिस क्षेत्र मे सिख विधायकों की संख्या बराबर से एक भी अधिक हो, उसको पंजाबी सूबा बना दें ताकि उसमें सदा सिख मुख्यमन्त्री बने। इसीलिए उन्होंने १९६५ के पंजाब मे से रोहतक, महेन्द्रगढ़ और गुड़गांव जिले को निकाल कर बाकी को पंजाबी सूबा (या पंजाब के हिन्दू चाहें तो महापंजाब कह लें) बनाने की बात कही। उनके गणित के हिसाब से हरियाणा के तीन जिले निकलने पर पंजाब में सिख विधायको की संख्या ६५ और बाकी की ६४ रह जायेगी। मुख्यमन्त्री सिख होगा ही, वह कुछ सदस्यों को अपने प्रभाव से ही साथ मिला लेगा। इस प्रस्ताव का समर्थन बड़े सिख होमलैण्ड के नाम से गंगा सिंह ढिल्लो ने भी पाकिस्तान में दी गई अपने प्रेस इण्टरव्यू में किया। मा० तारासिंह अकाली दल की हरियाणा शाखा ने भी उसकी पुष्टी की है। अकाली किसी भी धड़े का हो, सब इस मामले में एक ही बोली बोलते हैं। सरकार को ढीला करने के लिए वे एक दूसरे का विरोध बेशक कर लें, अन्दर से असल बात में सब एक है। मुख्य ग्रन्थियों को चुनौति देकर सरबत खालसा बनाने में अग्रणी सरदार रिछपाल सिंह ने उन्हीं के प्रभुत्व को जमाने के लिए बरतन साफ किए और ज्ञानी जैलसिंह ने बूटा सिंह और सन्ता सिंह को छोड़ कर तनखैय्या करार दिए जाने का आदेश वापिस करवा दिया।

(शेष पृष्ठ ९ पर)

कर्म-अकर्म-विकर्म को पहचानो

पांचजन्य की आवाज सुनो !

—श्री वत्स शास्त्री, निगमालंकार एम. ए., एम. फिल.—

आज से लगभग पांच हजार वर्ष पहले श्रीकृष्ण ने कुरुक्षेत्र के समरांगण में जिन बुनियादी तत्वों की रक्षा के लिए पाञ्चजन्य का घोष निनादित किया था उनमें धर्म का स्थान सर्वोपरि है । उन्होंने आजीवन मानवता रूपी धर्म की रक्षा के लिए अज्ञान और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष किया । उन्होंने जिस धर्म की रक्षा के लिए शंखनाद किया था वह कोई सम्प्रदाय नहीं, अपितु मानवमात्र के अभ्युदय और निःश्रेयस का साधक था । वे भारत के जीर्ण शरीर के लिए संजीवनी स्वरूप धर्म के जीवन तत्वों को लेकर आये थे । अखण्ड भारत के आत्मरूप धर्म को समझकर उसकी संस्थापना के लिए उन्होंने धर्मज्वाला प्रज्वलित की थी । उनकी इस अव्याहत गति में जो भी व्याघात बना वह वही धराशायी हो गया, चाहे वह कंस हो या जरासन्ध, शिशुपाल हो या दुर्योधन, भीष्म हो या द्रोणाचार्य, कर्ण हो या दुःशासन । अन्याय के उन्मूलन में और धर्म की संस्थापना में भारतीय आत्मा के प्रतीक अर्जुन को समझाया—ईश्वर के वरद पुत्र ! परन्तप हे भारतीय जनमानस क्लीबता को, हृदय की दुर्बलता को छोड़ो, उठो, देखो, पाञ्चजन्य से प्रभु का सन्देश आ रहा है, ध्यान से सुनो, तुम्हें ही विश्व के अज्ञान अन्याय और अभाव को दूर कर अखण्ड सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित कर शान्ति की स्थापना करनी है ।

गीता के सन्देश ने भारतीय चिन्तनधारा को प्रभावित किया है । समय-समय पर उसको वेगवान् बनाया है । उसका सन्देश है कि अज्ञान और अन्याय के विरुद्ध धर्म की स्थापना करनी है । योगिराज श्रीकृष्ण का दृढ़ निश्चय था कि दुष्टों के विनाश के लिए ही उनका जन्म हुआ है । इसलिए सव्यसाची से उन्होंने कहा था—'तू तो निमित्त-मात्र बन जा, बाकी काम मैं कर लूंगा ।'

उन्होंने स्वजन हत्या से डरे हुए अर्जुन को उसका धर्मबोध कराया । 'पार्थ ! क्षत्रिय को इस प्रकार का युद्ध बड़े सौभाग्य से मिलता है, जहां पर स्वर्ग द्वार सीधा खुला दिखाई देता है । और यदि स्वर्ग नहीं चाहिए तो भी तुझे इसे करना पड़ेगा क्योंकि यह तेरा स्वधर्म है, तेरा कर्तव्य है । जो अपना कर्तव्य होता है वह चाहे कैसा भी हो, करना ही पड़ेगा क्योंकि वही श्रेयस्कर है—

श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः
परधर्मात्स्वनुष्ठितात ।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः
परधर्मो भयावहः ॥

लोभवश अथवा मोहवश क्षणिक रूप से स्वीकार किया हुआ परधर्म चाहे उसका क्षणिक नाटक कितना भी सुन्दर क्यों न हो, तो भी अच्छा नहीं । अर्जुन मोहवश अपने धर्म (कर्तव्य) को भूल रहा था । उसे कर्म और अकर्म समझ में नहीं आ रहे थे । उसने दुष्ट स्वजनों की हत्या को दुष्कर्म समझ लिया था । यह विपरीत बोध धर्म और न्याय की स्थापना में बाधक हो रहा था, इसलिए उन्होंने कहा—

कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः ।
अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः ॥

जैसे प्रसंगतः—क्षत्रिय का आततायी को मारना 'कर्म' है, पागल आततायी को प्राणदण्ड देना 'विकर्म' है, आलस्यवश पड़ा रहना अनुचित अकर्म है, इस सबको जानना बहुत आवश्यक है ।

कोई भी शुभ या अशुभ कर्म सर्वदा सर्वथा उपादेय या अनुपादेय नहीं होता । यदि किसी दुर्ग का प्रहरी सन्ध्योपासना के समय ध्यान-मग्न हो जाये तो यह घोर अशुभ का संकेत होता है । सन्ध्योपासना कब शुभ कर्म होता है, यह जानना अत्यावश्यक है । यदि कोई शत्रु गौ को माता मानने वालों के सामने गौओं को आगे कर युद्ध करता है तो वहां अशुभ कर्म (गोहत्या) भी शुभ कर्म बन जाता है, वहां अकर्म में भी कर्म देखना पड़ता है । जो इस कर्म, अकर्म और विकर्म को समझता है तथा कर्म में अकर्म एवं अकर्म में कर्म को देखता है, वही स्वधर्म को समझ सकता है; वही अपने कर्तव्य का पालन कर सकता है ।

आज हम और हमारी सरकार कर्म की इस गहनतम गति के भंवर में चक्कर काट रहे हैं । कर्तव्य पालन में मात्सर्य आ जाने से लक्ष्य से च्युत हो कर्म, विकर्म और अकर्म को समझने में असफल हो रहे हैं । माता-पिता भी कर्तव्य-पालन से विमुख होकर बच्चों से वही सब करा रहे हैं जो उन्हें भी कर्तव्यच्युत कराता है । उन्हें मानवीय मूल्यों की शिक्षा नहीं दी जाती, उन्हें स्वसंस्कृति से प्रेम नहीं सिखाया जाता । मोहवश बच्चों को महान् अकर्म की ओर धकेल रहे हैं । क्या ऐसे बच्चे कभी गहनतम मानवप्रणीत ऋषियो की पवित्र संस्कृति के नैतिक मूल्यो को समझ सकते हैं ? कदापि नहीं, क्योंकि ये ही बच्चे आगे चलकर अध्यापक, अफसर, विधिवक्ता, न्यायाधीश, सेनानायक और नेता बनते हैं और ऐसी शिक्षा आगे की परम्परा को प्राप्त होती रहती है । अन्तःसार हीनता के कारण शुष्क जीवन धारा में रहते हुए क्या ये जीवन की गहराइयों को समझ सकते हैं ? नहीं, अधिक से अधिक भौतिकता के झंझावातों के थपेड़े खाते हुए इधर-उधर बिखर जाने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं कर सकते । यहां तक ही नहीं, जो कोई उद्‌बुद्ध संस्कार वाले स्वदेशानुरागी जन होंगे उन्हें भी पथच्युत करने में ये संकोच नहीं करेंगे । इन सबके मूल में काम कर रही होती है पाश्चात्य संस्कृति से अनुप्राणित कर्तव्यहीनता की शिक्षा देने वाली धर्महीन शिक्षा ।

'यतो धर्मस्ततो जयः' की बात सब कहते हैं । किन्तु क्या है वह धर्म, जिससे जय मिलती है ? धर्म कोई अन्य स्थूल पदार्थ नहीं, कर्तव्य का नाम ही धर्म है । जो कर्तव्य पालन में किसी प्रकार की लापरवाही नहीं बरतता वही वास्तविक रूप से धर्मात्मा है । जो मानवीय नैतिक मूल्य जीवन में धारण किये जाते हैं उसी से मनुष्य धार्मिक बनता है । नमाज पढ़ने से या बाईबल पढ़ने से, या गुरुग्रन्थ साहब का पाठ करने से या त्रिपिटक से चिपके रहने से, मन्दिरों मे धूपदीप दिखाकर घण्टी बजाने से या रोज अग्नि में घी सामग्री की आहुति डालने से यदि कर्तव्य पालन में प्रवीणता नहीं आयी, तो यह सब व्यर्थ है । इन कर्म काण्डों से यदि जीवन में धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय, पवित्रता, इन्द्रिय सयम, विवेक, सत्यता, अक्रोध, सन्तोष, तप, ईश्वर प्रेम, अहिंसा, अपरिग्रह की भावनायें नहीं आयीं, मानव में अभ्युदय और निःश्रेयस की इच्छा जागृत नहीं हुई, तब, इन सब आडम्बरों के जाल मे दूसरों को फंसा कर आत्म प्रवञ्चन करने से लाभ क्या ?

वास्तविक सेवा भावना के बिना सेवा का बहाना लेकर अखण्डता को क्यो खण्डित किये जा रहे हैं ? जोर-जोर से खुदा का नाम लेकर मानव-प्रेम की जगह शत्रुता पैदा कर निरीह प्राणियों की लाशों से जिन्दगी बसर करने वाले धर्म का ढोंग क्यों फैला रहे हैं ? धर्म के नाम पर आतंक-वादियो को शरण देकर अखण्डता को तोड़ने के षड्यन्त्र को क्यो प्रोत्साहन दिया जा रहा है ? मानवता से खिलवाड़ करने वाले देश-द्रोहियों को क्यों नहीं कुचला जा रहा है ? क्या इस विषय में हम अपने कर्तव्यों से हटकर गहनतम कर्म अकर्म की झंझा में भटक नहीं रहे है ? इन्हीं परिस्थितियों के लिए ही तो पांचजन्य ने आवाज दी थी—"विनाशाय च दुष्कृताम्," "धर्म संस्थापनार्थाय ।"

आइये हम ऐसे दुष्टों के नाश के लिए कर्म, अकर्म और विकर्म को समझ कर, समय पड़ने पर कर्म में अकर्म और अकर्म में कर्म को समझकर स्वधर्म को ठीक से समझें और उसकी रक्षा करें । पांचजन्य का यही सन्देश है । इसको यदि हम समझ सके तो राष्ट्र की अखण्डता बनी रह सकती है । दुष्टों का विनाश कर, शान्ति की स्थापना की जा सकती है । इसके विपरीत यदि हम सोते रहे तो बाद में रोना ही शेष रह जायेगा ।

पता—गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ

भुवनेश्वर एवं छोटा नागपुर की प्रचार यात्रा

वनवासी प्रदेशों में आर्यसमाज का कार्य

—प्रो० रत्नसिंह, परामर्शदाता नैतिक शिक्षा—

डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल भुवनेश्वर (उड़ीसा) की प्राचार्या श्रीमती विट्ठल राजा के निमंत्रण पर २२ फरवरी, १९८५ मध्यान्होत्तर ३ बजे मैं भुवनेश्वर रेलवे स्टेशन पर जा पहुचा। इधर आने का यह मेरा प्रथम अवसर था। डी० ए० वी० स्कूल के अध्यापक तथा स्थानीय आर्य समाज के कई अधिकारी व कार्यकर्त्ता स्टेशन पर उपस्थित थे। वे मुझे अपने अतिथि भवन में ले गए। २० मिनट विश्राम के उपरान्त डी० ए० वी० स्कूल में पहुंचा जहां स्कूल की स्थानीय प्रबन्ध समिति की बैठक चल रही थी। बैठक में प्रिंसिपल श्री नारायण दास ग्रोवर के दर्शन का लाभ प्राप्त हुआ। प्रिंसिपल ग्रोवर तथा प्राचार्या विट्ठल राजा ने मिल कर २८ जनवरी तक स्कूल व आर्य समाज मन्दिर में मेरे प्रचार कार्यक्रम की रूपरेखा निर्धारित की।

लगभग १३ वर्ष पूर्व इस स्कूल की स्थापना की गई थी। इस समय स्कूल के पास एक विशाल भवन व क्रीड़ा स्थल हैं। यहां लगभग १५ सौ छात्र-छात्राएं शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। धर्म शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं है। प्राचार्या से पता चला कि गत ७-८ वर्षों से वे निरन्तर प्रयत्न कर रही हैं कि कोई योग्य धर्म शिक्षक उपलब्ध हो, परन्तु सफलता नहीं हुई। व्यक्तिशः प्राचार्या महोदया धार्मिक वृत्ति की एक लगन शील, उदार व कर्मठ महिला हैं। स्कूल के अध्यापक एवं छात्रो मे ६ दिन तक धर्म प्रचार की पूरी सुविधा उनकी ओर से प्राप्त हुई। इस अवसर के लिए बोकारो डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल में संस्कृत तथा धर्म शिक्षा अध्यापक श्री कृष्णदेव शास्त्री को स्कूल में आमंत्रित किया हुआ था। विभिन्न कक्षाओं में जाकर शास्त्री जी विद्यार्थियों को सन्ध्या व हवन के मंत्रों का पाठ कराते थे और मैं उनके सम्मुख महर्षि दयानन्द के जीवन व वैदिक सिद्धान्तों पर व्याख्यान देता। स्कूल में लगभग ५५ शिक्षक एवं शिक्षिकाएं हैं जिनको प्रति दिन एक घंटा पृथक् से सम्बोधित करता था।

इनमें से ६ अध्यापक एवं अध्यापिकाओं ने मेरी प्रेरणा पर स्कूल में धर्म शिक्षा अध्यापन हेतु अपनी सेवाएं प्रस्तुत कीं। उनको अलग से कई घंटा समय देकर आर्य समाज के सिद्धान्तों तथा साहित्य से परिचित कराया। २५ जनवरी को स्कूल के प्रागण में ६ हवनकुण्डों से यज्ञ कराया गया। जिसमें स्कूल के छात्रों व अध्यापकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। श्री कृष्णदेव शास्त्री तथा स्थानीय आर्य समाज के सदस्यों के संयोजकत्व में यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर यजमान का आसन स्कूल प्रबन्ध समिति की मैनेजर श्रीमती मिश्रा ने ग्रहण किया। यज्ञोपरान्त स्कूल में धर्म शिक्षा की आवश्यकता तथा उसे लागू करने के उपायों पर मैंने अपने विचार प्रकट किए। मेरे अनुरोध पर श्रीमती मिश्रा ने सार्वजनिक सभा में घोषणा की कि भविष्य में प्रति शनिवार स्कूल में अनिवार्यतः हवन हुआ करेगा और आगामी शिक्षा सत्र से प्रत्येक कक्षा में धर्म शिक्षा की व्यवस्था की जाएगी।

भुवनेश्वर में कार्य

पूर्वी उड़ीसा में आर्य समाज का प्रचार कार्य नगण्य है, यह जानकारी मुझे पहले से ही थी, परन्तु भुवनेश्वर आर्य समाज मन्दिर व आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं को देखकर कुछ सन्तोष हुआ। एक विशाल भूखण्ड पर ८ वर्ष पूर्व आर्य समाज मन्दिर की आधार शिला रक्खी गई थी। धीरे-धीरे कई कमरो तथा हाल का निर्माण हो चुका है। एक विशाल यज्ञशाला का निर्माण कार्य चल रहा है, जिसका उद्‌घाटन १३ अप्रैल को स्वामी सत्य प्रकाश जी द्वारा किया जाएगा। अकेला व्यक्ति क्या नहीं कर सकता, इसका उदाहरण श्री प्रियव्रत दास हैं, जिनके अथक परिश्रम के फल स्वरूप इतना विशाल भवन बन कर खड़ा हो सका है। इनका जीवन प्रेरणा दायक एवं अनुकरणीय है। उत्तर भारत के बहुत कम आर्यों को इस बात की जानकारी है कि श्री प्रियव्रत दास के चाचा स्वर्गीय श्री बच्छ पाण्डे उड़िसा प्रान्त के प्रथम व्यक्ति थे जो ६०-७० वर्ष पूर्व वैदिक धर्म ग्रहण कर आर्य समाजी बने थे। उन्होने उड़ीया भाषा में सत्यार्थ प्रकाश का अनुवाद प्रकाशित कराया था और गोशाला तथा संस्कृत पाठशाला की स्थापना के साथ ही उड़िया भाषा में "आर्य" नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया था। प्रियव्रतदास जी के स्व० पिता श्री लिंगराज दास भी एक सामाजिक सुधारक तथा राष्ट्रवादी व्यक्ति थे। पटना (बिहार) [illegible] काल में श्री प्रियव्रतदास स्वामी अभेदानन्द जी, पं० गंगा प्रसाद जी उपाध्याय तथा राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री के सम्पर्क में आए और समाज के प्रति उनकी रुचि निरन्तर बढ़ती गयी। उड़िया भाषा में आपने कई मौलिक ग्रंथों की रचना की है और वैदिक विद्वानों द्वारा हिन्दी में लिखित अनेक पुस्तकों का उड़िया में अनुवाद प्रकाशित कराया है। जिनमें कुछ पुस्तकें इस प्रकार है:—ऋग्वेद सौरभ, यजुर्वेद सौरभ, सामवेद सौरभ, अथर्ववेद सौरभ, चतुर्वेद सूक्ति सहस्रिका, वैदिक विवाह पद्धति तथा व्याख्या, वैदिक धर्म प्रश्नोत्तरी, वैदिक नित्य कर्म विधि, वैदिक अन्त्येष्टि संस्कार, श्राद्ध-निर्णय, आर्य समाज परिचय इत्यादि।

श्री प्रियव्रतदास जो ने प्रति रात्रि ७ से ८ बजे तक तीन दिन के लिए आर्य समाज मन्दिर में वैदिक धर्म प्रचार करने का मुझे अवसर प्रदान किया। धर्म व धर्मान्धिता, ईश्वर विश्वास की आवश्यकता तथा दुख का स्वरूप विषयों पर बोलने के लिए मुझसे कहा गया। मुझे यह बतला दिया गया था कि सभा में अधिकांश व्यक्ति आर्य समाज के सिद्धान्तों से अपरिचित होंगे और अपने विचार उन तक सरलता से पहुंचा सकूं इसके लिए मुझे संस्कृत-निष्ठ हिन्दी में बोलना होगा और बीच-बीच में अंग्रेजी का भी सहारा लेना होगा। वस्तुतः मैंने अनुभव किया कि संस्कृत शब्दों को समझने में वहां के लोगों को कोई कठिनाई नहीं होती क्योंकि उड़िया भाषा में ८० प्र० श० से अधिक शब्द संस्कृत भाषा के हैं। मुझे यह देखकर प्रसन्नता हुई कि आर्य समाज की विचार धारा को सुनने के लिए आर्य समाज मन्दिर में भारी संख्या में नर-नारी उपस्थित होते थे। दार्शनिक व तार्किक विचारों को वहां के लोग बहुत पसन्द करते हैं।

इसी बीच प्राचार्या श्रीमती विट्ठल राजा के सौजन्य से मैं और श्री कृष्णदेव शास्त्री भुवनेश्वर, कोणार्क तथा पुरी के दर्शनीय ऐतिहासिक स्थानों की सैर कर आए। यहां के मन्दिरों की चित्रकला विश्व विख्यात है। किन्तु उनके ऊपर बने अश्लील चित्रों को देखकर लज्जा से सिर झुक जाता है। प्रतीत होता है कि वाममार्ग काल में इन मन्दिरों का निर्माण हुआ था। भाई-बहन, पिता-पुत्र एक साथ खड़े होकर इन चित्रों को नहीं देख सकते, इसी से इनकी अश्लीलता का अनुमान लगाया जा सकता है। वहां के लोगों का विश्वास है कि इन चित्रों का आध्यात्मिक महत्व है जिसे साधारण बुद्धि के व्यक्ति नहीं समझ सकते। आध्यात्मिकता के नाम पर कितना पाखण्ड है?

भुवनेश्वर से जनवरी २८ को रात्रि ट्रेन से चलकर अगले दिन डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल बोकारो पहुंचे स्टील सिटी के अनुरूप यहां के डी० ए० वी० स्कूल का भवन भव्य एवं विशाल है जिसमें लगभग २५०० विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते हैं। प्रिंसिपल आर. सी. मुञ्जाल के अथक परिश्रम से स्कूल निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर है। इस स्कूल में धर्म शिक्षा की अच्छी व्यवस्था है। अभी केवल ८ वीं कक्षा तक ही धर्म शिक्षा पढ़ाई जाती है। मेरे निवेदन पर प्रिंसिपल मुञ्जाल ने आगामी सत्र से १२वीं कक्षा तक धर्म शिक्षा की व्यवस्था करने का आश्वासन दिया। तीन दिन तक अध्यापकों तथा छात्रों के सम्मुख धार्मिक प्रवचन किए। रात्रि में आर्य समाज के तत्वावधान में व्याख्यान दिया। आर्य समाज का निजी भवन निर्माणाधीन होने के कारण इसके सत्संग डी. ए. वी. स्कूल भवन में ही लगते हैं।

बोकारो में ३ दिन तक प्रचार कर १ फरवरी को प्रातः धनबाद पहुंचा। यहां पर आर्य समाज के प्रधान श्री महेन्द्र कुमार नारंग के घर पर ठहरने की व्यवस्था की गई। तीन दिन तक रात्रि में आर्य समाज के वार्षिकोत्सव पर भाषण दिये और दिन में निकटस्थ कोयला खानों में स्थित डी० ए० वी० पब्लिक स्कूलों का निरीक्षण किया। अतकुसर स्कूल के प्रिंसिपल श्री भट्टाचार्य जी मुझे धनबाद आर्यसमाज से अपने साथ ले गए। स्कूल में धर्मशिक्षा की व्यवस्था का निरीक्षण किया और छात्रों के सम्मुख महर्षि दयानन्द जी के जीवन की कुछ घटनाएं प्रस्तुत करते हुए आर्यसमाज का संक्षिप्त परिचय दिया। प्रिंसिपल भट्टाचार्य की कर्त्तव्यपरायणता, कठिन परिश्रम, लगन तथा संस्था के प्रतिनिष्ठा से मैं अत्यधिक प्रभावित हुआ।

अगले दिन कुसुण्डा डी०ए०वी० स्कूल में गया जहां कि अल्पावधि में स्कूल को उन्नत करने में प्रिंसिपल कुलकर्णी के परिश्रम को देखकर अति प्रसन्नता हुई। इन दोनों स्कूलों

(शेष पृष्ठ ६ पर)

गोमांस निर्यात के लिए गोहत्या जारी रखना राष्ट्रद्रोह है

—शरद् चन्द भटोरे—

भारत समान कृषि प्रधान देश में गाय को अनादिकाल से विश्व माता कहा गया है। भारतीय मनीषियों की दृष्टि सिर्फ अपने हिताहित तक सोचने की कभी नहीं रही, वे हमेशा विश्व और मनुष्य मात्र की भलाई की सोचते रहे और इसीलिए हम देखते हैं कि वेद उपनिषदों में प्रार्थना व संकल्पों के जरिए कहा जाता रहा है कि सब सुखी हों, प्राणी मात्र सुखी हो।

हिन्दू धर्म ही नहीं, इसके बाद में जन्मे व फैले ईसाई, मुस्लिम जैन-बौद्ध, पारसी और सिख धर्मों के प्रवर्तक एवं राजा-महाराजाओं ने प्राणियों की हत्या का निषेध किया और गाय को आदर का सर्वोच्च स्थान दिया, ईसाई व मुसलमान धर्म के प्रवर्तक सत्य, प्रेम और करुणा के प्रचारक रहे और गो हत्या के पक्षधर कभी नहीं रहे।

पर आज स्थिति बदलती जा रही है। उचित शिक्षा या पर्याप्त जानकारी के अभाव में पढ़ा लिखा व्यक्ति भी आज यह तर्क करता देखा गया है कि मनुष्य तो मर रहा है, तो गाय को कैसे बचाएं। इसका तर्क सम्मत व सीधा सादा जवाब तो यही है कि मनुष्य को बचाने के लिए गाय को बचाना आवश्यक है। बल्कि स्पष्ट शब्दों में यह कहा जा सकता है—गाय ही मनुष्य को बचा रही है। गाय कामधेनु है जो सब प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है।

विपुल उत्पादन के लालच में हम रासायनिक खाद का उपयोग करते हैं लेकिन प्रत्यक्ष व्यवहार ने बता दिया है कि अधिक रासायनिक खाद के उपयोग से जमीन बंजर होती है और भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाए रखने के लिए मनुष्य व पशु का खाद व मूत्र नितान्त आवश्यक है। जाहिर है कि बैल शक्ति को अधिकाधिक विकसित किया जाए और गाय का उचित रूप मे पालन पोषण करके दूध में वृद्धि की जाए और पशुओं के खाद का उपयोग खेती के लिए किया जाए। जापान बरसों से ट्रैक्टर की बजाय गाय और बैल पर आ रहा है। वहां के किसानो का कहना है कि ट्रैक्टर दूध व गोबर तो नहीं देता जिसकी हमे नितान्त आवश्यकता है। भारत मे पहले कपड़ा इंग्लैण्ड से आता था, अब हम कपड़े मे आत्मनिर्भर हो गए हैं, किन्तु दूध वाले मामले मे हम अभी गुलाम ही बने हुए हैं। जो जर्सी गाय अच्छे दूध के नाम पर हम पर थोपी जा रही है वह हमारे देश की जलवायु के अनुकूल नहीं, उसका रख रखाव अत्यधिक महंगा और उसके बछड़े खेती के योग्य नहीं—उनमें भार-वहन क्षमता नहीं। हमारे देश को आज लाखों पौंड विदेशी दूध का पाउडर मिल रहा है जो हमारी डेयरी में अपने दूध के मिश्रण के साथ हमें उपलब्ध कराया जा रहा है। हमारे देश मे भी अच्छी गौ-नस्ल हैं। उनको प्रोत्साहित कर अधिकाधिक दूध प्राप्त किया जा सकता है। इन्दौर में कस्तूरबा ग्राम की गोशाला और बम्बई की माधो बाग की गोशाला देखें कि कितनी अच्छी गायें हमारे देश मे हैं। गोपालन व गोसंवर्धन काम को बढ़ावा यदि नहीं मिला तो जर्सी गाय हम पर लादी जाती रहेगी और विदेशी दूध का पाउडर हमे निरन्तर मिलता रहेगा और इस मामले में हमारी गुलामी बनी रहेगी। इस दासता से हमें मुक्त होना है।

सबसे गंभीर स्थिति गोमांस निर्यात की है। विदेशी मुद्रा प्राप्त करने की लालसा में हम अपने दुधारू पशुओं को काट रहे हैं। अच्छी गाय-भैंसें, बैल कत्लखानों में काटे जा रहे हैं। देवनार (बम्बई) के कतल खाने को देखिए, खेती में काम आने लायक बैल काटे जा रहे हैं और भैंस तथा अन्य पशु भी बड़े पैमाने पर कतल किये जा रहे हैं। मध्य प्रदेश में कृषक पशु परिरक्षण अधिनियम १९५९ के रहते भी इन्दौर व आस-पास के जिलों से गाय-बैल का लदान जारी है और भारतीय संविधान की भावना व प्रदेश के कानून को रौंदा जा रहा है—कोई उसका पालन नही करता है। और यह सब हो रहा है गलत व्यापार नीति तथा भ्रष्टाचार के कारण, अनीतिपूर्ण व्यापार के कारण जिसे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने ७ पापों में से एक पाप कहा है।

गोमांस का निर्यात

पशु आहार बाहर जा रहा है—खली-भूसा और गोबर भी बाहर जा रहा है और अब विगत १० वर्षों से गाय-बैल का मांस विदेशी मुद्रा के लालच मे बाहर भेजा जा रहा है। दस वर्षों का नाम तो इसलिए लिया जा रहा है कि इसी व्यापार में गो मांस के निर्यात मे अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। इस अवधि में जरा स्थिति को समझिए—

गोधन की बरबादी—देवनार कतलखाने की कहानी के बोलते आंकड़े इस प्रकार हैं—१९७३-७४ मे ६६७८९ बैल काटे गए। १९७४-७५ में ७५५३८। १९७५-७६ मे ८६८१९। १९७६-७७ में ९१११०। १९७७-७८ में १०७२४०। १९७९-८० में ११९२४८ और १९८०-८१ में १२१६५६।

यह कहानी अकेले देवनार (बम्बई) कत्लखाने की है। पश्चिम बंगाल, केरल और अन्यान्य स्थानों पर जो कसाई खाने चल रहे हैं वहां खुले रूप में व चोरी छिपे जो हो रहा है उसकी स्थिति अलग है।

पक्ष और विपक्ष की सरकारें 'गोरक्षार्थी केन्द्रीय कानून बनाने में विफल रही हैं और बिनोबा जी को दिए गए वायदे पूरे नहीं हो सके। अब आशा की जानी चाहिए कि नई सरकार संविधान के शब्दों और भावना के अनुसार गोरक्षार्थ दृढ़ संकल्प करेगी। संसद में गोरक्षार्थ एक सुदृढ लाबी बननी चाहिए तथा सासदों को गोरक्षा के लिए केन्द्रीय कानून बनवाना चाहिए।

चर्बी व गोमास के निर्यात के व्यापार मे सरकार और व्यापारी लगे हैं जो देश को अपने-अपने स्वार्थों से खोखला कर रहे हैं। चाहे वे मासाहारी हों—चाहें व्यापार के जरिए अपनी तिजोरी भरने वाले हों। हमारे ही देशवासी देशद्रोह कर रहे हैं और इस राष्ट्रद्रोह का इलाज है लोकजागरण और लोक-संगठन। सबके सब नगर निगम, नगर पालिकाएं, पचायतें, कानून विशेषज्ञ और प्रबुद्ध नागरिक तय कर लें कि हम यह अनैतिक व्यापार हरगिज नहीं चलने देंगे। इस देश को यदि खुशहाल और समृद्ध बनाना है, तो सबको गोमांस से मुक्त हो जाना चाहिए—जितने जल्द हो सके उतना अच्छा।

होली के हुरदंग में

—श्री प्रणव शास्त्री एम०ए०, महोपदेशक—

होली के हुरदंग में रहा न कोई ढंग
कविवर जी भी पी गये कूट कल्पना भंग
कूट कल्पना भंग न जाने क्या लिख डाला
बुरा न मानो मित्र हो गया अमर उजाला
रिश्वत रानी पहिन न पावे रेशम चोली
तब ही होली सत्य, नहीं तो होली-होली ॥१॥

इन्दिरा गान्धी का हुआ शोक पूर्ण बलिदान
विश्व देख कर रह गया मन ही मन हैरान
मन ही मन हैरान देश की क्या मजबूती
पड़ी मियां के सिर पर ही मीयां की······।
सुदृढ़ विचार की आई जनता में आंधी
धन्य-धन्य है, अमर हो गई, इन्दिरा गांधी ॥२॥

जनता पार्टी का हुआ बड़ा हाल-बेहाल
शेखर जी औंधे गिरे बलिया में तत्काल
बलिया में तत्काल न कोई हुआ सहायक
क्योंकि दिखते थे सबको सब ही······।
बिना मिले आपस में कोई काम न बनता
हित-अनहित पहचान गई है, प्यारे, जनता ॥३॥

अटल बिहारी की हुई सब बेकार दहाड़
ऊंट हुआ व्याकुल बड़ा ऊंचा देख पहाड़
ऊंचा देख पहाड़ चला नहिं कोई चारा
कमल हो गया म्लान शीत का मारा मारा
जनता ने संस्कृति के परखे कपट पुजारी
समझ न पाये समय, लहर को अटल बिहारी ॥४॥

देखा पुण्य प्रयाग में दो मल्लों का युद्ध
जैसे भैंसे से अड़ा बछड़ा होकर क्रुद्ध
बछड़ा होकर क्रुद्ध दाव क्या नये चलाये
चारों खान चित्त बहुगुणा नीचे आये।
होनहार बलवान, न मिटती इसकी रेखा
बच्चन का पुरुषार्थ बड़े-बूढ़ों ने देखा ॥५॥

राजनारायण की हुई सब करामात फेल
दाढ़ी ठाड़ी ही रही, है कुदरत का खेल
है कुदरत का खेल, कपट की हंडिया फूटी
गुरुओं के आशीष, सिद्धियां हो गईं झूठी।
कलियुग के हनुमान फाड़ते हैं रामायण
घर न घाट के रहे हमारे राज नारायण ॥६॥

नगर अमेठी में उठी जेठ-बहू की जंग
रंग रहा राजीव का और सभी बदरंग
और सभी बदरंग-धड़कती डम्पी-छाती
आश्चर्य है मित्र,···मेंढकी नाल ठुकाती
मात खा गई मंच मेनका ऐंठी-ऐंठी
इतिहासों में अमर हो गया नगर अमेठी ॥७॥

प्यारे भारतवर्ष का प्रकटा भाग्य महान्
नया सूर्य आया यहां लेकर नया बिहान
लेकर नया बिहान भगे चिमगादड़, उल्लू
भ्रष्टाचार भुजंग नशेगा निश्चय लल्लू।
पड़ी नाव मझधार इसे तो ये ही तारे
करो सभी सहयोग राष्ट्र का बन कर प्यारे ॥८॥

पता:—शास्त्री सदन, रामनगर (कटरा), आगरा-६ (उ०प्र०)

पत्रों के दर्पण में

गाय बैल और गोबर की उपयोगिता

गोवध बन्दी के लिए केन्द्रीय कानून की आवश्यकता जैसी उपयोगी बात पर हम अभी तक मुंह उठाए क्यों फिर रहे हैं ? शायद यह हमारी धर्म निरपेक्षता का परिणाम है। दुर्भाग्य इसी को कहते हैं। हमारी नियति त्रिशंकु जैसी हो गई है। सरकार कानून नहीं बनाती है और हम बहुसंख्यक होने के नाते अल्पसख्यकों को यह नहीं समझा पा रहे हैं कि जहाँ आज के वैज्ञानिक शोध में शाकाहारी भोजन को प्रामाणिकता मिल रही हो फिर वहाँ गोवध की जरूरत क्या है ?

जिस तरह गंगा व नर्मदा को इस देश से अलग नही किया जा सकता वैसे ही भारतीय जीवन से 'गाय' को अलग नही किया जा सकता है। राजनीति प्रवन्ध कुछ भी हो, सभी समुदाय इस बात के हामी हैं कि बैल ने बढ़कर खेती के लिए पशु और इसकी पूर्ति के लिए 'गाय' से बढ़कर कोई नही है। गाय केवल कृषक संस्कृति नहीं है, बल्कि एक वैज्ञानिकता है। कुछ उदाहरण है—

(१) सौरमंडलीय क्षय-किरणें गोबर से नष्ट होती है, इसलिए मकानों पर गोबर थापने की प्रथा पडी।

(२) गाय पालने से मनुष्य की आय बढ़ती है। मनुष्य के श्वासीय लार्वा वैक्टीरिया गाय के श्वास से नष्ट होते हैं।

(३) गोमूत्र—गोबर जलमल निकाय में पानी के प्रदूषित बैक्टीरिया को नष्ट करते हैं।

(४) गोबर का खाद जमीन को बंजर होने से बचाता है जबकि रासायनिक खाद का अंधाधुन्ध प्रयोग, उपजाऊ भूमि को बंजर बना रहा है।

(५) लकड़ी के ईंधन की वैकल्पिक व्यवस्था गोबर गैस से की जा सकती है।

(६) गोमूत्र पीने से या सूंघने से बीटा तरंगें बलवती होती हैं और मस्तिष्क में ऑक्सीजन की कमी दूर होती है।

(७) घर के पर्यावरण को ठीक करने के लिए गोबर की जो भूमिका है उससे [illegible]की चीज अभी तक कोई उपलब्ध नहीं है—आदि।

—लक्ष्मीनारायण पटेरिया, ६८४ छोटा बाजार, महू (म० प्र०)।

हिन्दी ऐसे नहीं बढ़ेगी

पिछले कुछ अरसे से अंग्रेजी अनिवार्यता विरोधी मंच के नाम पर मीटिंग कार्यक्रम और योजनाओं का सूचना साहित्य आता रहा है। इसमें कतिपय प्रख्यात हिन्दी प्रेमियो एवं साहित्यिको के नामों व मंच की सराहना का उल्लेख रहता था। साथ ही मंच के महामन्त्री श्री मुकेश कुमार जैन द्वारा इस सम्बन्ध में की गई सेवाओं का उल्लेख तथा उनके नाम से इस विषय मे प्रसिद्ध हिन्दी पत्रों मे प्रकाशित कतरनें भेजी जाती हैं, जिससे मुझ जैसे लाखों हिन्दी प्रेमी प्रभावित और उत्साहित होते हैं।

हाल में इसी प्रकार साहित्य के साथ ५-५ रुपये की पॉच रसीदें भेजकर धन एकत्र कर आई० आई० टी० में इंजीनियरिंग की प्रवेश परीक्षा में अंग्रेजी की अनिवार्यता का केस सर्वोच्च न्यायालय में लड़ने के लिए भेजने की अपील प्राप्त हुई। साथ ही यह सारा रुपया महामंत्री के नाम पर भेजने का अनुरोध था। स्पष्टतः मुझे इसमें सन्देह हुआ। इस पर उनको मैंने १६ जनवरी को पत्र लिखकर स्पष्टोकरण माँगा। उत्तर में मुझे डांट पिलाई गई है। इस मंच का मुख्य पंजीकृत कार्यालय रुड़की तथा अध्यक्ष और महामंत्री आदि अधिकारी रुड़की के ही हैं। दिल्ली कार्यालय के दो पते व फोन नम्बर उसमें दिये गये थे। फोन ६३१७६३ ओखला स्थित कार्यालय से बताया गया कि मुकेश कुमार जैन वहाँ नौकरी से चले गये हैं। दूसरे करौलबाग फोन ५६३२३१ से श्री विशनस्वरूप ने बताया कि मेरा पत्र वहाँ पहुंचा है, परन्तु उत्तर देना या न देना मुकेशकुमार जी की इच्छा और सुविधा पर है। सुना है, मुकेशकुमार जैन की अपील पर पैसा धडाधड़ आ रहा है। परन्तु इस तरह जनता को बेवकूफ बनाने से हिन्दी नही बढेगी।—ब्रह्मदत्त स्नातक भारतीय सूचना सेवा (रिटा०) ६/१४४ रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-२२

गोडसे की किताब

कुदाल कमीशन की अंतरिम रिपोर्ट में एक आरोप यह है कि मदुराई के गांधी स्मारक संग्रहालय में नाथूराम गोडसे की वह किताब भी मौजूद थी, जिसमें गांधी जी की हत्या को गोडसे ने उचित ठहराया है। अब सवाल यह है कि किसी भी गांधी पुस्तकालय में गोडसे का वह बयान होना चाहिए या नहीं, जो उसने फांसी पर चढ़ने के पहले दिया था ? कोई भी सार्वजनिक पुस्तकालय इस किताब को खरीदे कि नहीं खरीदे ? भारत में इस किताब को बिकने की इजाजत हो या न हो ?

बिकने की इजाजत तो उसे है। इसका मतलब यह कि स्वयं भारत सरकार की राय में गोडसे की इस किताब से साम्प्रदायिक शांति, सार्वजनिक नैतिकता या भारत को सुरक्षा को आज कोई खतरा नहीं है। इस बात का भी कोई खतरा नही है, कि गांधी के हत्यारे की किताब पढ़ कर इस देश के लोग यह यकीन कर लेंगे कि गांधी गलत थे और गोडसे सही था। अतः किताब बिक रही है और जिज्ञासु लोग उ[illegible] पढ़ रहे हैं। जो सार्वजनिक पुस्तकालय गांधी के बारे में हजार दूसरी किताबें रखते हैं, वे यदि गोडसे का एक बयान भी रख लेंगे, तो यह गांधी-द्रोह नहीं होगा।

लेकिन प्रश्न यह है कि गांधी पुस्तकालयों में गोडसे की किताब हो या न हो ? यह प्रश्न ऐसा है कि देवबन्द में मोहम्मद साहब की शिक्षाओं का खंडन करने वाली किताब हो या न हो? गिरजाघर में ईसामसीह को सलीब पर लटकाने का समर्थन करने वाला ग्रंथ हो या न हो ?

यह एक ऐसा प्रश्न है, जिसका उत्तर सम्बन्धित पक्षों को खुद ही देना चाहिए। यदि सुकरात से पूछा जाता कि उसके मुकदमे की किताब में सिर्फ उसका जवाब छापें, या आप पर लगाए गए आरोप भी छापें, तो वे क्या जवाब देते ? गांधी स्वयं इस बारे में क्या कहते ? शायद वे ऐसा तो कभी नही कहते कि मेरे प्रति आस्था रखने वाला व्यक्ति गोडसे का बयान कभी न पढ़े।

—सम्पादकीय टिप्पणी 'नवभारत टाइम्स', ६ फरवरी, ८५

कड़वी मीठी प्रतिक्रया

२० जनवरी के अंक में आप के चुनावी सम्पादकीय के प्रतिक्रिया-स्वरूप कड़वे-मीठे पत्र पढ़ने को मिले।

जब देश की एकता, और अखण्डता का प्रश्न था, तब ऐसे नाजुक समय में आपने राजनैतिक विषय पर सुन्दर सम्पादकीय लिखकर और देश की जनता को स्पष्ट स्थिति बताकर कि कांग्रेस (इ) को वोट क्यों देना है, देश के हित में अहम् भूमिका निभाई है। शतशः साधुवाद। कांग्रेस (इ) की ऐतिहासिक विजय इसी बात का सबूत है कि देश का नागरिक देश को स्वतंत्र व सशक्त देखना चाहता है।

—जे० पी० भारद्वाज, जय जनरल स्टोर्स, भानपुरा (मन्दसौर) म० प्र०

एक 'संत' के शव का यह कैसा चमत्कार

शायद ही किसी सन्त के शव का इतना अधिक अंग-भंग हुआ हो, जितना गोआ के तथाकथित सन्त फ्रांसिस जेवियर का हुआ, जिनके शव की एक नयी प्रदर्शनी गोआ में हुई थी। कई दिनों तक चलने वाली प्रदर्शनी को देखने के लिए विश्व के काफी दर्शनार्थी आए। इससे पूर्व जेवियर के शव के १३ सार्वजनिक प्रदर्शन हो चुके हैं। सबसे पहले प्रदर्शन १७५२ में, जेवियर के निधन के २०० वर्ष बाद हुआ।

विभिन्न कारणों से गोआ के निवासी, और चर्च (जिसके प्रवक्ता हैं आर्कबिशप गोन्सालविस) इस प्रदर्शन के आयोजन के पक्ष में नहीं, लेकिन पर्यटन मन्त्रालय इस धार्मिक समारोह का उपयोग गोआ में अधिकाधिक ईसाई पर्यटकों को गोआ की ओर आकर्षित करने लिए करना चाहता था। जेवियर को, जिसने इतिहास-लेखकों के अनुसार, भारत में ईसाइयत और पश्चिम के साम्राज्यवाद की जड़ें मजबूत करने के लिए, गोआ के असंख्य हिन्दुओं को बड़ी बेरहमी के साथ ईसाई बनाया था, सपने में भी यह ख्याल न आया होगा कि उसकी मौत के बाद, उसके शव का उससे भी अधिक बेरहम शोषण होगा। वैसे उसकी आत्मा को इस बात से थोड़ा बहुत संतोष अवश्य हुआ होगा कि उसके शव का प्रदर्शन ईसाई धर्म का प्रचार करने और हिन्दुओं के खिलाफ नफरत का वातावरण उत्पन्न करने मे सफल हुआ है।

इस अनावश्यक और अनुचित प्रदर्शन के बारे में हम आर्कबिशप गोन्सालविस के इस कथन से पूरी तरह सहमत हैं कि 'संतो की अत्यधिक पूजा; ईसाई-धर्म के मूलस्रोत ईश्वर के महत्व को भक्त के मन में कम करती है।' ईसाई भक्तों ने जेवियर की पूजा कम की है, निजी स्वार्थ के लिए, उसका अंग-भंग अधिक किया है। १५५२ में उसके वरिष्ठ पादरियों ने ही उसकी सब हड्डियां अपने कब्जे में कर ली थीं। १५५४ में एक पुर्तगाली महिला ने शव के दाहिने पांव की बड़ी ऊंगली को हथिया लिया था। १७५२ के प्रदर्शन के अवसर पर, एक ईसाई उच्चाधिकारी शव के अनेक अंग लेकर चलता बना था। बाद में शव की बांहें और कन्धे आदि के अनेक भाग निकालकर, दुनियां के अनेक स्थानों में भेजे गये। फिर भी, उसके शव के अक्षुण्ण रहने के तथा कथित चमत्कार का प्रचार करके, लाखों लोगों को उल्लू बनाया जाता है। —सदाजीवत लाल, बम्बई

वनवासी प्रदेशों में

(पृष्ठ ६ का शेष)

में धर्म शिक्षा के अध्ययन में पर्याप्त रुचि ली जाती है। आर्यसमाज धनबाद के वार्षिकोत्सव पर यहां छात्रों ने जो धार्मिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये. उनकी सराहना सभी व्यक्तियों ने की। तीसरे दिन मुनीडीह पब्लिक स्कूल देखने गया। मेरे साथ प्रिंसिपल भट्टाचार्य तथा प्रिंसिपल कुलकर्णी भी थे। इस स्कूल में अभी तक धर्मशिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं है। प्रातःकालीन सार्वजनिक प्रार्थना करना भी अभी तक बच्चों ने नही सीखा है। यहाँ के प्रिंसिपल श्री वरियार ने आश्वासन दिया है कि शीघ्र ही यह कमी दूर की जायेगी।

मुस्लिम छात्रों का वेदपाठ

इन तीन स्कूलों के अतिरिक्त धोडी, राजरप्पा परियोजना तथा आरा कोयला खानों में स्थित डी० ए० वी० स्कूलों में भी प्रचार किया। इन तीनों स्कूलो के प्रिंसिपलो की आर्यसमाज के प्रति रुचि देखकर प्रसन्नता हुई। धर्मशिक्षा की व्यवस्था तीनो स्कूलों में है। आरा स्कूल के प्रिंसिपल श्री जे. एन. ऋषि तथा उनकी धर्मपत्नी जो कि जूनियर विभाग मे प्राचार्य है, की लगन व निष्ठा वस्तुतः सराहनीय है। प्रातःकालीन प्रार्थना में वेदमन्त्रों का सामूहिक पाठ कराने वाले ३ बच्चों में दो बच्चे मुसलमान है, यह जानकर सुखद आश्चर्य हुआ। मुझे यह भी बतलाया गया कि किसी भी मुस्लिम अभिभावक ने उनके बच्चों द्वारा वेदमन्त्र पाठ करने पर कोई आपत्ति नहीं की। काफी संख्या में मुस्लिम बच्चे यहाँ पढ़ते है। कोयला खानो में स्थित इन स्कूलों के अध्यापकों को कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, इसका अनुमान हम दिल्ली में बैठकर नही लगा सकते। चौबीसों घण्टे धुंआ व धूल में रहना, यातायात की असुविधा, खान-पान की सामग्री का सुलभ न होना इन सभी विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। यहां के अधिकतर छात्र अशिक्षित मजदूरों के बच्चे हैं जिनके पास आधुनिक नागरिक सभ्यता अभी तक पहुच नही पाई है। ऐसे वातावरण में पालित-पोषित बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देना बड़े साहस का कार्य है। इन क्षेत्रों मे ईसाई मिशनरियो का जाल बिछा हुआ है। आर्य समाज का यह प्रचार बिल्कुल नही है। यह श्रेय इन डी० ए० वी० स्कूलों को ही है इनके माध्यम से आर्य समाज की विचार धारा को उन क्षेत्रों में पहुंचाया जा रहा है जहाँ हम अभी तक नहीं पहुच सके हैं।

रांची में प्रचार

६ फरवरी को मैं रांची पहुंचा। डी० ए० वी० पब्लिक स्कूलों के डाइरेक्टर श्री प्रिंसिपल ग्रोवर जी के कार्यालय में ठहरने की व्यवस्था थी। यही पर डी० ए० वी० कालिज प्रबन्धकर्त्री समिति नई दिल्ली के शिक्षा सलाहकार श्री जे० एन० दयाल से भेंट हुई। रांची में ४ दिन तक विभिन्न संस्थाओ मे धर्मप्रचार किया। यहा पर एक अविस्मरणीय घटना हुई जिसका उल्लेख करना आवश्यक समझता हू। आजकल स्कूलो मे दिखाये जाने वाले तथा कथित सास्कृतिक कार्यक्रमों में मेरी बिल्कुल रुचि नही है क्योंकि कई बार पाश्चात्य सभ्यता में रंगे हुए ऐसे अभद्र प्रदर्शन किए जाते है जिन्हें देखकर सिर लज्जा से झुक जाता है।

रांची स्थित डी. ए.वी. जवाहर विद्या मन्दिर की ओर से ७ फरवरी को आयोजित इसी प्रकार के कार्यक्रम में भाग लेने का निमन्त्रण मुझे प्राप्त हुआ। श्री ग्रोवर साहब के आग्रह पर मैं वहा गया। कार्यक्रम लगभग २॥ घन्टे तक चला। कार्यक्रम में सगीत, नृत्य व नाटक सभी कुछ थे, परन्तु इतने शालीन, सभ्य एवं सुरुचि पूर्ण कि एक स्वर से सभी व्यक्तियों ने उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की।

तीन सप्ताह के प्रचार कार्यक्रम में श्री प्रिंसिपल ग्रोवर को बहुत निकट से देखने का अवसर प्राप्त हुआ। उनके जीवन की सादगी, कर्मठता, आर्य समाज के प्रचार के लिए तड़प तथा सहृदयता से मैं अत्यन्त प्रभावित हुआ। ६३ वर्ष के आयु में भी नवयुवकों से अधिक कार्य करने की उनकी क्षमता को देखकर आश्चर्य होता है। उनके प्रति आभार प्रदर्शित करते हुए १० फरवरी को मैं रांची से नई दिल्ली लौट आया।

हरियाणा तोड़कर भारत को......

(पृष्ठ 4 का शेष)

हरियाणा को तोड़ने की चाल

पंजाब मे हिन्दू बहुमत होने से अकाली उग्रवादियों को दबाया जा सकेगा, इस भ्रांत धारणा से पंजाब मे बसे कुछ हिन्दू "महापंजाब" का समर्थन करते हैं। वे समझे नही कि अकाली यदि हरियाणा को तोड़ना चाहते हैं, तो इसलिए कि सिख होमलैण्ड बना सकें। इन तत्वो के लिए भारत "होमलैण्ड" नही होता तो अलग होमलैण्ड की बात क्यो करते? जब से "महापंजाब" का शोशा भजनलाल ने छोड़ा है, उग्रवादी पंजाब मे फिर से इतने सरगर्म हो गए हैं कि अमृतसर की गलियों मे सेना को पुनः तैनात करना पड़ा और यातायात नियन्त्रण के लिए सीमा-सुरक्षा-बल बुलाना पड़ा। एक ओर विदेशी शक्तियां उग्रवादियो की पीठ पर हैं, दूसरी ओर सरकारी तन्त्र में हर मुकाम पर बिकाऊ जासूस देश को खोखला कर रहे हैं, और इधर हरियाणा के मुख्यमन्त्री को यह तथ्य नजर नही आते कि "एशियाड" के समय यदि हरियाणा, दिल्ली और पंजाब की सीमा के बीच बफर न बनता, तो अकाली क्या-क्या गुल न खिलाते। संविधान बनाने के लिए अकालियो ने बंगला साहेब को ही अपना अड्डा बनाया था, यह बात देश अभी भूला नही है।

हरियाणा के भाग्य से खेलकर आज देश के भाग्य से खिलवाड़ न किया जाए। अकालियों के सामने बार-बार घुटने टेकने की रीती अब सरकार को छोडनी चाहिए। ऐसा करने से हरियाणावासियों का मनोबल गिरता है। देश मे शांति बनी रहे, इसके लिए हरियाणा ने जल विवाद हो या क्षेत्र विवाद, हमेशा धैर्य से काम लिया है। पर अकालियो के अनुचित दबाव मे आकर एक के बाद एक सब फैसलों को ठुकरा दिया गया। पहले शाह कमीशन का फैसला हुआ फिर इंदिरा गांधी ने फैसला किया, पर अमल किसी पर नहीं हुआ, क्योंकि हरियाणा को न्याय देना अकालियों को मंजूर न था। लेकिन फिलहाल तो हरियाणा का नही देश की सुरक्षा और मजबूती का सवाल है। हरियाणा राजधानी की ही नही, पूरे देश की सुरक्षा चौकी है। उसे देखकर यह समझना कठिन नही होना चाहिए कि वह भारत को तोड़ने की हर साजिश खत्म करने मे हरियाणा को तोड़ने का अर्थ भारत को तोड़ना होगा।

हमारा हर विचार और कदम ऐसा होना चाहिए, जिसमे राष्ट्र की एकता और अखण्डता अक्षुण्य रहे और भारत एक शक्तिशाली देश बन कर उभरे।

[नवभारत टाइम्स से]

टंकारा में पं० आनन्द प्रिय का स्वागत

टंकारा ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्ट श्री ओंकार नाथ जी गुजरात के आर्य सेनानी और पितामह श्री पं० आनन्दप्रिय जी का अभिनन्दन कर रहे है

महर्षि दयानन्द का सार्वभौमिकता सूत्र

—भगवानदेव चैतन्य, एम० ए० साहित्यालंकार

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के प्रति अपने उद्गार महान् क्रांतिकारी तथा योगी श्री अरविन्द घोष जी ने इस प्रकार से प्रकट किए हैं कि यदि हम सभी समाजसुधारकों को यदि पर्वतों की चोटियां मान लें तो महर्षि दयानन्द जी को सबसे ऊंची चोटी मानना पड़ेगा। वास्तव में यह उपमा देव दयानन्द पर अक्षरशः चरितार्थ होती है। इतिहास में जितने भी महान् सुधारक हुए उन्होंने कहीं न कहीं अपनी ऐषणा के वशीभूत होकर कार्य किए हैं मगर दयानन्द जी के जीवन में हमें एक भी प्रसंग ऐसा नहीं मिलता है जिससे यह आभास हो कि उन्होंने अपने बड़प्पन और किसी अन्य ऐषणा की पूर्ति के लिए कार्य किया हो। इसी प्रकार बाहर बाहर से भले ही कुछ भी लगे मगर अधिकतर महापुरुषों ने किसी जाति या सम्प्रदाय विशेष के लिए ही कार्य किया है मगर दयानन्द जी ने मनुष्यमात्र की भलाई के लिए ही अपना समूचा जीवन लगा दिया। चाहे वह राष्ट्र की बात हो, समाज की बात हो या आध्यात्मिकता की बात हो दयानन्द ने कहीं भी अपने आप को बीच में नहीं रखा है अर्थात् उन्होंने जिस ढंग से भी कार्य किया उसमें यह कहीं नहीं आता है कि आप दयानन्द का नाम जपो या उसके दिए हुए गुरुमन्त्र का ही जाप करो आदि आदि।

उन्होंने समूची समस्याओं के समाधान के लिए जिस ग्रन्थ को चुना वह किसी जाति या सम्प्रदाय विशेष का है ही नहीं। उन्होंने वेद को इसी आधार पर चुना कि वह स्वयं परम पिता परमेश्वर द्वारा दिया गया ज्ञान है। वेद में कहीं भी किसी जाति या मजहब का नाम नहीं है। वेद सार्वभौमिक हैं और वेदों की शिक्षाएं भी सार्वभौमिक हैं, वेदों को आधार मानकर दयानन्द जी ने भी सार्वभौमिकता का ही सन्देश दिया। दयानन्द की यह सार्वभौमिकता ही उन्हें अन्य सभी महापुरुषों और समाज सुधारकों से अलग खड़ा करती है। आज राष्ट्र का ढांचा कुछ ऐसा बनता जा रहा है कि सम्प्रदाय विशेष के तुष्टीकरण की नीतियों में समूची मानवता खण्ड खण्ड हो रही है। इसी के कारण क्षेत्रवाद और अलगाव के कीड़े पनप रहे हैं। हमारा राष्ट्र ही नहीं बल्कि समूचे विश्व में ही ऐसी भावनाएं अपना सिर उठा रही हैं। इससे व्यक्तिवाद और संकुचितता का वातावरण बनता जा रहा है। वसुधैव कुटुम्बकम् के स्वप्न बिखरने की कगार पर हैं। दयानन्द ने जिस सार्वभौमिकता का मार्ग प्रशस्त किया था वही आज हमें इस विनाशकारी वातावरण से मुक्ति दिला सकती है।

हम अपने ही देश को लें पता नहीं प्रतिदिन कितने ही नए मत और मजहब पनपते जा रहे हैं। नित नए गुरु बन रहे हैं जिन्होंने व्यक्ति की स्वतन्त्र विचारधारा को कुण्ठित कर दिया है। दयानन्द ने हमें विचारों की स्वतन्त्रता दी थी मगर उस विचारधारा पर स्वयं परमात्मा की विचारधारा का अंकुश भी लगा दिया था। इसी आधार पर उन्होंने इस सिद्धांत की स्थापना की—व्यक्ति कर्म करने में स्वतन्त्र मगर उसका फल भोगने में परतन्त्र है। इस सिद्धांत को यदि हम गहराई से देखें तो हमें धर्म के सही स्वरूप का पता भी लग सकता है। महर्षि की दृष्टि से धर्म मात्र कुछ ग्रन्थों को रट भर लेना नहीं था बल्कि वे व्यक्ति की क्रियात्मकता पर अधिक बल देते थे अर्थात् हम यदि धर्म के तत्वों को अपने जीवन के रंग ढंग में उतार कर तद्वत् आचरण करते हैं तभी हम सच्चे धार्मिक कहला सकते हैं और फिर हमें फल की चिन्ता से घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है और न ही किसी बाहरी कर्मकांड या ढोंग के करने की ही जरूरत है। उन्होंने व्यक्ति के आचार व्यवहार और कथनी व करनी की समता पर भी बल दिया है। उनकी दृष्टि में जिस प्रकार सत्य केवल एक ही हो सकता है। उसी प्रकार व्यक्ति का दोहरा व्यक्तित्व नहीं होना चाहिए। आज दुर्भाग्य यही है कि व्यक्ति धार्मिक बनने के स्थान पर धार्मिक दीखना अधिक पसन्द करता है। इसी दोहरी प्रवृति के कारण आज धर्म भी अपना वास्तविक स्वरूप खो चुका है। महर्षि की नीति थी—व्यक्ति का चरित्र निर्माण। इसी लिए उन्होंने वेदों के आधार पर व्यक्ति को अपने चरित्र का उत्तरोत्तर विकास करने की प्रेरणा दी है। उन्होंने हिन्दू, सिख, मुसलमान या ईसाई बनने के स्थान पर मानव बनने पर अधिक बल दिया। हम ईमानदारी से सोचें तो आज सभी व्यक्ति यदि मानव बन जायें तो देश या विदेश में जितना भी अनाचार और दुराचार तथा मानवता का जो लहू बह रहा है वह रुक सकता है मगर ऐसे में लोगों की अपनी अपनी चौधराहट को अन्तर पड़ता है। ये तथाकथित धर्म के ठेकेदार ही अन्ततः मानव मानव में दीवार बने रहते हैं। महर्षि दयानन्द ने इस ठेकेदारी के विरुद्ध बहुत ही सार्थक कदम उठाए हैं। बल्कि देखें तो उनका समूचा प्रयास यही रहा है कि ईश्वर और भक्त में से दलालों का पूरी तरह से सफाया कर दिया जाए। इसी प्रयास के फलस्वरूप उन्होंने एक धर्म और एक ईश्वर की बात हमारे समक्ष रखी थी।

मजहब और सम्प्रदाय की दीवारों का उन्होंने अपने समय में गिराने की कोशिश की थी और एक ऐसे सार्वभौमिक धर्म की छाया तले सभी को इकट्ठा करना चाहा था जो मानवता को एक सूत्र में पिरो सके। मगर सभी सम्प्रदायों के लोग उनकी सद्भावना को नहीं समझ सके और सर्वधर्म सम्मेलन का उनका यह सपना साकार नहीं हो सका था। उनका एक ही तर्क था कि प्रत्येक मत में जो जो बातें वेद विरुद्ध, मानवता विरुद्ध और सार्वभौमिकता के विपरीत हैं उन्हें छोड़ दिया जाए शेष जो भी बचेगा वही धर्म का उत्कृष्टतम रूप है। इस प्रकार से धर्म पर छाए सभी प्रकार के ढोंग और पाखण्ड ध्वस्त हो जाने थे तथा मानव मात्र के कल्याण की एक ऐसी परम्परा का शुभारम्भ होना था, जिससे अपने आप धर्म, गुरु और ईश्वर की समस्त दुकानें बन्द हो जानी थी। दुकानें बन्द हो जाने के डर से ही तथाकथित धर्माचार्यों ने दयानन्द की इस बात को महत्व नहीं दिया और एक बहुत बड़ा स्वप्न साकार होते-होते रह गया मगर महर्षि दयानन्द जी का वह सपना कभी न कभी अवश्य ही साकार होगा और मैं तो यह समझता हूं कि उसके साकार हुए बिना रोती बिलखती हुई मानवता कभी भी चैन की सांस नहीं ले सकेगी।

आज समाज के समस्त बुद्धिजीवियों और राजनेताओं को उस मनीषी की विचारधारा को गहराई से समझना चाहिए और उन्हें कार्यान्वित करने के लिए सबसे अधिक प्रयास किए जाने चाहियें। आमतौर पर ऊपर ऊपर से देखकर ही लोग दयानन्द की विचारधारा को देखकर नकार देते हैं मगर यदि गहन चिंतन किया जाए तो मजहब और धर्म या अपनी अपनी अलग अस्मिता की जो लड़ाई आज गलियों और बाजारों में लड़ी जा रही है वह एक ऐसे सौहार्दमय वातावरण में बदल सकता है जहां कोई भी एक दूसरे के खून का प्यासा नहीं होगा। दयानन्द जी ने मानव को किसी दायरे में बांटकर कभी देखा ही नहीं था यही कारण है कि उनके प्रशंसकों में सभी मजहबों के खुले दिमागों के लोग हैं मगर जिन्हें मानवता को अलग अलग दायरे में बांटकर ही अपनी रोटियां सेंकने का शौक है वे उनके कट्टर विरोधी भी बने। आज पुनः उनकी विचारधारा को गहराई से समझने और अपनाने की आवश्यकता है। अपनी वाह वाही या लोगों की सद्भावना प्राप्त करने के लिए उन्होंने कहीं भी कभी समझौता नहीं किया।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

टंकारा ऋषि बोधोत्सव की चित्रमय झांकी

टंकारा मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति का एक दृश्य
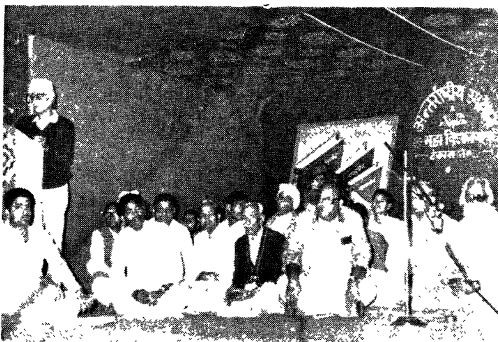
हीरो साइकिल्स के प्रबन्ध निदेशक और सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री सत्यानन्द मुंजाल ऋषि के चरणो मे अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि प्रस्तुत कर रहे है। इस अवसर पर टंकारा ट्रस्ट को उन्होने ११ हजार रु० दान भी दिया।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज का वार्षिकोत्व

अमर स्वामी जी और श्री मदनमोहन विद्यासागर का अभिनन्दन

आर्य समाज सान्ताक्रुज का 40 वां वार्षिकोत्सव रविवार 20 से 27 जनवरी 1985 तक सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री पं० मदनमोहन जी विद्यासागर के ब्रह्मत्व मे निरन्तर आठ दिन तक अथर्ववेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया। 20 जनवरी से 23 जनवरी तक व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया जिसमे स्वामी सच्चिदानन्द, 24 से 27 जनवरी तक पूजनीय महात्मा अमर स्वामी जी महाराज पूज्य महात्मा दयानन्द जी सचालक तपोवन आश्रम देहरादून, स्वामी सच्चिदानन्द जी सरस्वती, श्री पं० मदनमोहन जी विद्यासागर पं० सत्यपाल जी पथिक भजनोपदेशक, श्री चैतन्यमुनि जी देहरादून आदि विद्वानो के उपदेश एव भजन हुए।

आर्यसमाज अलवर

आर्य समाज, अलवर (राज०) की ओर से ऋषि बोधोत्सव सभी समाजो और शिक्षण सस्थाओं की ओर से आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, अलवर मे उत्साह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर श्री गुलजारी लाल माथुर श्रीमती लीलावती, सुश्री सविता, सुश्री उर्मिला ने अपने विचार व्यक्त किये। आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान की ओर से भोपाल के काण्ड मे हुई बाल विधवाओं हेतु पाच सिलाई मशीनें दी गई। इसके अतिरिक्त अन्य सहायता भी दी गई।

अपहृत कन्या मुक्त

कानपुर के अतिरिक्त जिला व सेशनजज श्री राधाकान्त ने 13 वर्षीय बालिका को रामस जीवन नामक अपराधी से मुक्त कराया, अभियुक्त को 10 वर्ष का कारावास का दण्ड दिया गया है। इस कन्या की खोज मे कानपुर के प्रसिद्ध आर्य नेता श्री देवीदास आर्य का विशेष योग है।

टंकारा मे जंगल में मंगल

(पृष्ठ १ का शेष)

सब यजमानो को तथा यज्ञ मे सम्मिलित होने वाले आर्य नर-नारियो को आशीर्वाद दिया। पूर्णाहुति के समय आर्यजनो की श्रद्धा दर्शनीय थी।

गुजरात राज्य मे आर्य समाज की गतिविधियो के प्रमुख सूत्रधार श्री प० आनन्द प्रिय जी के अभिनन्दन के साथ १६ फरवरी को मुख्य कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। फिर उन्ही की अध्यक्षता मे हिन्दी, गुजराती और संस्कृत व्याख्यानो की तथा श्लोक पाठ की प्रतियोगिता हुई, जिसमे गुजरात की अनेक सस्थाओ ने भाग लिया। अन्त में इस प्रतियोगिता मे विजयी होने के कारण उपदेशक विद्यालय के छात्रों ने ही अचल वैजयन्ती को पुरस्कार रूप मे प्राप्त करके जहा अपनी सस्था का गौरव बढ़ाया, वहा आर्य जनता मे उपदेशक विद्यालय की सार्थकता की भावना भी उत्पन्न की।

१७ फरवरी को गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री, प्रसिद्ध उद्योगपति, श्री रतन प्रकाश गुप्त ने ओ३म्ध्वज का आरोहण किया, जिसके सयोजक चैम्बूर [बम्बई] के श्री देवव्रत शास्त्री थे। इसके बाद उपदेशक विद्यालय से शोभायात्रा प्रारम्भ हुई, जो टंकारा की गलियों और बाजार से गुजरती हुई, ऋषि के जन्म-स्थान पर अपनी श्रद्धा के पुष्प चढाती हुई, अन्त मे उस दिन मन्दिर मे आकर समाप्त हुई, जिसमे बालक मूलशंकर के मन मे सच्चे शिव को जानने की उत्सुकता पैदा हुई थी और ऋषिबोध के अंकुर ने जन्म लिया था। शोभा-यात्रा मे जो जहा आर्य नर नारी ऋषि भक्ति के गीत गा रहे थे, वहाँ आर्य वीर और वीरागनाए अपने व्यायाम कौशल का प्रदर्शन भी करते जा रहे थे।

शिवरात्री वाले दिन ही यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् बम्बई निवासी श्री प० जगदीशचन्द प्रवासी ने अपने जीवन भर की कमाई ५० हजार रुपए की राशि दान मे दी।

दोपहर को श्री आचार्य वीरेन्द्र मुनि जो मन्त्री विश्व वेद परिषद की अध्यक्षता मे वेद सम्मेलन हुआ जिसका सयोजन अल्मोडा के प्रसिद्ध सस्कृत विद्वान डॉ० जयदत्त उप्रेती ने किया। सम्मेलन मे ब्रह्मचारी आर्य नरेश तथा अन्य अनेक वक्ताओ ने, जिनमे चण्डीगढ़ के डा० बालकृष्ण तथा "आर्य जगत्" के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालकार मुख्य है, के भाषण हुए। सायंकाल को छात्र/छात्राओं का व्यायाम प्रदर्शन हुआ। रात्रि को श्रद्धांजलि सभा हुई इसमे विभिन्न राज्यो से आये प्रतिनिधियो ने ऋषि के चरणो मे अपने भक्ति प्रसून निवेदित किये। प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु ने ऋषि के जीवन के अनेक अज्ञात पहलुओ पर प्रकाश डाला। श्री स्वामीसत्यपति जी और स्वामी केवलानन्द जी ने भी अपने विचार प्रकट किये।

अखिल भारतवर्षीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा (रजि०) देहली

(आर्य समाज मन्दिर, आर्य नगर, पहाड गज, नई दिल्ली-55)

इस सभा को अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने १६२१ मे स्थापित किया था । सभा की गतिविधियो के प्रचार के लिए १६२१ से लेकर १६८५ तक जितना कार्य सभा द्वारा हुआ है उसकी एक सुन्दर स्मारिका छपवाई जा रही है। जिसमे जापान यात्रा का, जो इस सभा के तत्वावधान मे ८-६-८४ से २७-६-८४ तक हुई, का विवरण एव सब यात्रियो के फोटो के अतिरिक्त अब तक जितने सभा के प्रधान, मन्त्री एव सहयोगी रहे उनके फोटो भी प्रकाशित किये जायेंगे। सभा को सहयोग देने के लिए स्मारिका का विज्ञापन पूरे पेज का १०००/-रु० भी देने का कष्ट करे। स्मारिका सारे भारत मे एव विदेशो मे भेजी जाएगी। सभा के अधीन कन्या व बाल, दो पाठशालाये चल रही है जिसमे ६०० से भी अधिक गरीब बच्चो को मुफ्त शिक्षा, पुस्तके और वस्त्र दिए जाते है और एक फ्री डिस्पेंसरी चलाई जा रही है।

मिनी आर्य विदेश यात्रा

प्रोग्राम : दिल्ली से बैंकाक, पट्टेया, बैंकाक (थाइलैण्ड) क्वालालमपुर, पिनांग (मलेशिया), सिंगापुर, बम्बई से दिल्ली

प्रस्थान दिल्ली पालम—२२-३-१६८५
वापस दिल्ली— — २-४-१६८५

रास्ते मे हर स्थान पर प्रात काल का नाश्ता, रात का खाना, होटल मे ठहरने के लिए स्थान, हवाई अड्डे से होटल तक जाने तथा ऐतिहासिक स्थलो को दिखाने का खर्चा सभा करेगी। यात्री उतना सामान ले जावे जो अपने साथ रखकर एयरपोर्ट से बाहर ले जाया जा सके। बिस्तर नही ले जाना, जिस होटल मे ठहरोगे वहीं प्रबन्ध होगा। कुल खर्चा रु० ७८००/- होगा।

आर्य समाज करोल बाग नई दिल्ली—११०००५, फोन ५६७४५८, सभा के नाम (Akhil Bharat-Varshiya Shradhanand Dalitodhar Sabna) का ड्राफ्ट क्रास करके तथा नकद भेज कर अपनी सीट बुक करवा सकते हैं। दिल्ली से जाने वाले भाई-बहन अपना ड्राफ्ट, क्रास चैक एव नकद भी दे सकते हैं।

पासपोर्ट आपको बनवाना होगा। पासपोर्ट बनाने मे आपको कोई तकलीफ हो तो सभा आपकी सहायता करेगी। जिस-जिस मुल्क मे जाना है वहा के वीसा सभा बनवायेगी।

रास्ते मे तीन ही आर्य समाजे आती है, बैंकाक, क्वालालमपुर तथा सिंगापुर। तीनो आर्य समाजें आपका स्वागत करेगी।

इससे अधिक जानकारी प्राप्त करनी हो तो श्री रामलाल मलिक 52/78, रामजस रोड, करोल बाग, नई दिल्ली-११०००५ से सम्पर्क स्थापित करे। फोन ५६२५१०, ५६७२६२

निवेदक	रामभज बत्रा	न्यादरमल गुप्ता	रामलाल मलिक	दिवानचन्द पलटा
	उपप्रधान सभा	उपप्रधान सभा	प्रधान सभा	उपप्रधान सभा
दूरभाष दफ्तर :	५३१६५४	५२४४६६	घर ५६२५१०	२७४४६६
घर :	५०२१०५	२६१५११	५६७२६२	५६२६२५

शास्त्रार्थों का संग्रह

आर्य समाज के इतिहास मे जितने भी शास्त्रार्थ किसी भी सम्प्रदाय से हुए हो, उनका सग्रह पूज्य अमर स्वामी जी महाराज द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है। अत किसी भी सज्जन के पास शास्त्रार्थ विषयक सामग्री किसी भी रूप मे उपलब्ध हो तो वह निम्न पते पर रजिस्ट्री द्वारा भिजवाने की कृपा करे।

नये ग्रन्थ मे उन व्यक्तियो का आभार प्रकट किया जावेगा। आशा है इस कार्य को अत्यावश्यक एव महत्वपूर्ण समझते हुए हमे आर्य सज्जन अधिक से अधिक सामग्री भेजेंगे। ग्रन्थ छपने के बाद सामग्री सुरक्षित वापिस कर दी जायेगी। छपने से पूर्व लेने वालो को ग्रन्थ आधेमूल्य मे बुक किया जा रहा है।)

पता—शास्त्रार्थ कार्यालय, १०५८, विवेकानन्द नगर गाजियाबाद (उ०प्र०)

निबन्ध प्रतियोगिता

स्वर्गीय श्री लालमन आर्य जी की पुण्यस्मृति मे एक अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। निबन्ध के विषय निम्नांकित हैं —

1. वर्तमान चारित्रिक संकट—समस्या और समाधान।
2. महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत।

किसी एक विषय पर हिन्दी मे 2000 शब्दो मे लिखे हुए निबन्ध की तीन प्रतिया भेजना अनिवार्य है। निबन्ध मिलने की अन्तिम तिथि 20 मार्च 1985 है।

प्रथम पुरस्कार—	1000/-रु०
द्वितीय —	500/-रु०
तृतीय —	300/-रु०
पांच सान्त्वना पुरस्कार—	प्रत्येक 100/-रु०

प्रतिष्ठित विद्वानो का एक निर्णायक मण्डल निबन्धो का मूल्यांकन करेगा, जिसका निर्णय सर्वमान्य होगा।

निबन्ध भेजने का पता—श्री तिलक राज गुप्त, सयोजक, (स्व०) श्री लालमन आर्य निबन्ध प्रतियोगिता। प्रधानाचार्य—हसराज माडल स्कूल, पंजाबीबाग, नई दिल्ली—110026

आर्य जनता के प्रति आभार

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टकारा मे १६, १७, १८ फरवरी १६८५ को ऋषि मेला रजत जयन्ती समारोह के रूप मे सफलता पूर्वक मनाया गया, इसके लिए मैं समस्त आर्य जगत् का आभार प्रकट करता हू। हजारो ऋषि भक्त देश-विदेश से पधारे और ऋषि दयानन्द को अपनी श्रद्धाजलि दी। ऋषि मेला मनाते हुए २५ वर्ष हो गये है पर आज तक इतने ऋषि भक्त इसमे पहले टकारा नही आए थे। मुझे पूरी आशा है कि भविष्य मे टकारा पधारने वाले ऋषिभक्तों की सख्या इसी प्रकार बढती जाएगी।

टकारा ट्रस्ट की ओर से आवास तथा भोजन का नि शुल्क प्रबन्ध किया गया जिससे अन्य वर्षो की अपेक्षा यह व्यय भी तिगुना हो गया। समस्त आर्य जनता से प्रार्थना है कि महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा के कार्यों हेतु अपनी अमूल्य दान की राशि चैक ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा अथवा टकारा सहायक समिति आर्य-समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१ के नाम भिजवाने की कृपा करें। आभार के साथ। —रामनाथ सहगल, मन्त्री-टकारा ट्रस्ट

दिल्ली में ऋषि बोधोत्सव

दिल्ली फिरोजशाह कोटला मैदान मे हुए ऋषि बोधोत्सव के विशाल समारोह मे मुख्य अतिथि लोक सभाध्यक्ष श्री बलराम जाखड का पाण्डाल मे पहुचने पर श्री रामगोपाल शालवाले और श्री महाशय धर्मपाल स्वागत कर रहे है

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स ७११७ १८ पहाड़ी धीरज, दिल्ली से छपवा कर कार्यालय, 'आर्य जगत्,' मन्दिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

साप्ताहिक पत्र

ओ३म

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

वार्षिक मूल्य-२० रुपये | विदेश मे २० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४८, अंक ११, रविवार, १७ मार्च १९८५ | दूरभाष : ३४३७१८

आजीवन सदस्य-२०१ रु० | इस अक का मूल्य—५० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८४, दयानन्दाब्द १६० | चैत्र कृष्णा ११, २०४१ वि०

अकालियों का सरकार को अल्टीमेटम

वैशाखी से पुनः आन्दोलन छेड़ने की धमकी

अकाली दल और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी ने सरकार को अल्टीमेटम दिया है कि यदि उसने 13 अप्रैल (वैशाखी) तक पजाब समस्या को हल नही किया तो वे पुन आदोलन छेड देगे। आनन्दपुर साहब मे होला मोहल्ला के अवसर पर हुई बैठक मे उन्होने फैसला करके जहा यह धमकी दी है, वहा साथ ही नई मागे भी पेश की है। ये मागे, सवा वर्ष पहले तथाकथित धर्मयुद्ध शुरू करने के समय जो मागे की गई थी, उनसे सर्वथा भिन्न है। इन नई मागो का सम्बन्ध अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर मे सैनिक कार्यवाही के बाद की घटनाओ से है।

इन मागो मे कहा गया है कि श्रीमती इन्दिरा गाँधी की हत्या के बाद हुए हिंदू सिख दगो की जाँच किसी सुप्रीम कोर्ट के जज से करवाई जाय, ब्लू-स्टार आपरेशन के दौरान दरबार साहब और अन्य स्थानो से पकडे गये लोगो को तत्काल बिना शर्त रिहा किया जाय, उन पर से सभी मामले वापस लिये जाये, भगोडे फौजियो को पुन बहाल किया जाय, उन पर मुकदमे चलाने के लिए विशेष अदालतो को समाप्त किया जाय, पंजाब को अशान्त क्षेत्र घोषित करने का कानून वापस लिया जाय, राज्य से सेना और अर्द्ध सैनिक बलो को हटाया जाय, सिख स्टुडेंट फेडरेशन पर लगी पाबन्दी को समाप्त किया जाय और विभिन्न आरोपो मे सिख युवको की गिरफ्तारी बन्द की जाय।

4 घण्टे की बैठक के बाद बताया गया कि अकाली दल 12 अप्रैल तक सरकार के फैसले की प्रतीक्षा करेगा और 13 अप्रैल को अपने आदोलन के नये रूप का ऐलान कर देगा। इन 7 मागो के अलावा दो अन्य प्रस्ताव भी मजूर किये गये, जिनमे अन्य राज्यो की पुलिस मे सिखो को भर्ती करने और पजाब के बाहर रहने वाले सिखो को हथियारो के लाईसेंस देने की की माग की गई है।

इस बैठक मे भिडरावाले के समर्थन मे भी नारे लगे, श्रीमती गाधी की हत्या को उचित बताया गया और खालिस्तान के पक्ष मे भी नारे लगे।

विश्वस्त सूत्रो से यह भी विदित हुआ है कि तलविन्दर सिंह, जिसकी पुलिस को पजाब मे हिन्दुओ की सामूहिक हत्या के आरोप मे तलाश है, खालिस्तान आदोलन को पुन. शुरू करने के लिए कोई गुप्त दल भारत भेजने की योजना बना रहा है। इन उग्रवादियो मे से कुछ लोग सैनिक कार्यवाही के दौरान चुपचाप बचकर भाग निकले थे। उन्ही को अब पुन सगठित किया जा रहा है। यह सूचना इण्टर पोल के नाम से विख्यात अन्तर्राष्ट्रीय जासूसी सगठन ने पजाब सरकार को दे दी है।

तलविन्दर सिंह पहले भाग कर नाम बदलकर, पश्चिमी जर्मनी पहुचा और वहा से कनाडा चला गया। वहा उसने फिर नाम बदलकर अपना नया पासपोर्ट बनवा लिया। जासूसी सूत्रों का कहना है कि खालिस्तान के स्वयभू नेता डॉ० जगजीत सिंह चौहान ने तलविन्दर को इस काम के लिए नियुक्त किया है। समझा जाता है कि तलविन्दर सिंह किसी भी समय भारत मे कही भी प्रकट हो सकता है।

ईसाई मिशनों का बड़ी संख्या में भारत में आगमन

पिछले तीन मास से ईसाई मिशनो के विदेशी प्रतिनिधि भारी सख्या मे भारत मे आने का लगातार प्रयास कर रहे है। केन्द्रीय गृह मन्त्रालय इस बात से परेशान है। ये ईसाई मिशनरी रोम, ब्रिटेन, पश्चिम जर्मनी और अमेरिका से ही नही, बल्कि चीन से भी आ रहे हैं।

सबसे विचित्र तथ्य यह है कि ये लोग हिन्दू धर्म के प्रति घृणा फैलाने, गांधीवाद के विरुद्ध जहर भरने और भारतीयता के प्रति आक्रोश पैदा करने की एक समान नीति अपना रहे हैं। जबसे अमेरिका और चीन का राजनीतिक गठबन्धन हुआ है, तब से चीन भी इस मिशन मे शामिल है। हाल मे ही चीन से ईसाई मिशनरियो का एक प्रतिनिधि मण्डल भारत आ रहा है। उसके बाद भारत से ईसाई मिशनरियो का प्रतिनिधि मण्डल चीन जायेगा।

पंजाब समस्या और कुछ राज्यो मे आरक्षण विरोधी आदोलन के कारण इन ईसाई मिशनो को गरीब लोगो को अपने धर्म मे परिवर्तित करने की अच्छी सुविधा नजर आने लगी है। यह भी कहा जाता है कि गुजरात और मध्य प्रदेश मे आरक्षण विरोधी आदोलन को बढावा देने मे इन ईसाई मिशनों का काफी बड़ा हाथ रहा है। वे सवर्णो और हरिजनो मे मतभेद की खाई को बढाकर अपने मिशन के लिए रास्ता साफ करना चाहते है। वे हिन्दू समाज के विरुद्ध हरिजनो और पिछडे लोगो को उकसा कर अपनी दुरभिसन्धि पूरी करना चाहते है और इस काम के लिए उनको विदेशो से काफी धन मिल रहा है। विदेशो से आने वाले इस धन को रोकने मे भारत सरकार को सफलता नही मिल रही है। पिछले कुछ समय से ईसाई मिशनो के विरुद्ध कोई चर्चा न होने के कारण भी उनका उत्साह और बढा है।

अकाली नेता छूटे

लोगोवाल समेत सात और अकाली नेता, जो रासुका के अन्तर्गत नजरबन्द थे, छोड दिए गए हैं। प्रकाशसिंह बादल और तोहडा अभी नही छोडे गए है।

चेरनेंकोव का निधन

रूस के राष्ट्रपति चेरनेंकोव काफी समय तक बीमार रहने के बाद दिवगत हो गए। श्री राजीव गाधी १३ मार्च को उनकी अन्त्येष्टि मे शामिल हुए। श्री गारवोचेव रूस के नए राष्ट्रपति बने है।

परामर्शदाता—अमर स्वामी सरस्वती | सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः

—आचार्य सत्यप्रिय जी—

वेद का आदेश है कि सभी ज्ञानी, धनी, मानो और श्रेष्ठ पुरुष आलस्य, प्रमाद को त्याग कर राष्ट्र मे सदैव जागरूक रहते हुए देश-धर्म रक्षार्थ और उन्नत्यर्थ सन्नद्ध रहे। युवक वीरता से, ज्ञानो अपने ज्ञान से, और धनी लोग धन से यथाशक्ति अपने कर्तव्य का पालन करते रहे।

राष्ट्र मे ज्ञानीजन इसलिये जागरूक रहे कि विद्या के अभाव के कारण देश मे पाप, पाखण्ड और अज्ञान का अन्धकार न फैल पाये। धनियो के दान अभाव के कारण देश मे लाखो ही भूख, प्यास और जीवनीय साधनो के अभाव मे मर रहे है। या विवश होकर गैरो के धर्म मे चले जाते है। युवक इसलिए सतर्क रहे कि कही वीरता के अभाव मे देश विदेशियो की दासता की बेड़ियो मे जकड न पाये। इसलिये ज्ञानी स्व-ज्ञान के अभिमान मे लिप्त न रहे। धनी कजूस, लोभी और केवल स्वार्थहित साधक ही न रहे। और युवक कायर, कमजोर, भीरु और निष्क्रिय न हो।

हे युवको ! जहाँ आप शक्ति के पुज, ज्ञान के धनी और राष्ट्र के किसी विशेष पद पर आसीन हो, वहा चरित्र, सद्व्यवहार, कर्मठता और देशप्रेम को न भुलाना। आप इतिहास से परिचित ही हो कि बडे-बडे शक्तिशाली और विद्वान् हुए, परन्तु वे अपनी चरित्रहीनता के कारण ससार मे यशस्वी नही हो पाये। जगद्गुरु भारतवर्ष को ससार मे जहाँ अपनी विद्या से ख्याति प्राप्त हुई वहां सबसे अधिक महत्त्व उसे अपने ऋषियो और पूर्वजो के चरित्र से प्राप्त हुआ।

हे युवको ! जागो। तुम्ही तो हो, जो देश-धर्म को आगे बढाते हो। जातीय जीवन मे स्फूर्ति और चेतना की चिन्गारी उत्पन्न करते हो। देश की आशायें तुम पर लगी हुई है। क्योकि जब नवयुवक आगे बढते है तो और लोग उनके पीछे चलते है। जब नवयुवक खडे हो जाते है, तो दूसरे लोग बैठ जाते है। जब नवयुवक बैठ जाते है, दूसरे लोग सो जाते है और जब नवयुवक सो जाते तब और लोग मर जाते है। कहने का भाव यह है कि देश-जाति के उत्थान और पतन का उत्तरदायित्व नौजवान, धनी और ज्ञानीजनो के ऊपर है। इसलिए आप ओज, साहस, शक्ति और विचारशीलता पूर्वक देश-धर्म की डगमगाती हुई नौका को संकट से पार ले जाने के लिये आगे बढो।

गति ही जीवन है, स्थिरता मृत्यु है। जो आगे बढता है वह स्वास्थ्य, शक्ति और दीर्घ जीवन प्राप्त करता है। सर्वत्र सदा मान-सम्मान पाता है। विजय लक्ष्मी उसके चरण चूमती है, उसके गले मे विजय-माला पडती है। इसके विपरीत जो आलसी है, थक कर बैठ जाता है, वह निर्बल, निस्तेज और अल्प आयु वाला होता है। दीन-हीन हो जाता है। अत आलस्य और प्रमाद को त्याग कर आगे बढो।

वेद मनुष्य की वर्तमान अवस्था से आगे बढने और ऊपर उठने का आदेश देता है—आरोहणमाक्रमण जीवतो जीवतोऽयनम् (अ०५।३०।७) उद्यान ते पुरुष नावयानम् (अ० ८।१।६।) उत्क्रामात पुरुष माव-पत्था मृत्यो. पड्वीशमवमुञ्चमानः (अ० ८।१।४।) अर्थात् प्रत्येक मानव का धर्म है कि वह दुष्ट और दूषित वृत्तियो को मार कर आगे ही आगे बढता जाये। आलसी, प्रमादी होकर नीचे न गिरे और उन्नति करता हुआ एक बार तो मृत्यु की बेडियो को भी काट दे।

'दूष्या दूषिरसि, हेत्या हेतिरसि, मेन्या मेनिरसि आप्नुहि श्रेयासमति सम क्राम। ऐ० अ० २।११।१॥ तू दुष्टो को दण्ड देने वाला, वज्रो का वज्र और शस्त्रो का भी शस्त्र है।

'अहमिन्द्रो न परा जिग्ये' सदैव देशभक्तो मे यह भावना जागरूक रहनी चाहिये कि मै इन्द्र अर्थात् तेजस्वी और ऐश्वर्यशाली हू, कभी भी किसी से भी पराजित नही हो सकता।

'अश्मा भवतु नस्तन' युवको का शरीर ब्रह्मचर्य पालन, व्यायामासनो और द्वन्द्वो के सहने से वज्र के समान होना चाहिये।

प्रिय नवयुवको ! इस ससार क्षेत्र मे शिखण्डियो के लिये स्थान नही है—'वीर भोग्या वसुन्धरा' इसलिये उठकर खडे हो जाओ, केवल स्वय ही खडे मत हो, दूसरे गिरे हुओ को भी उठाकर खड़ा कर दो। जब तक शरीर में श्वास है और रक्त की एक भी बूद गतिशील है, तब तक निरन्तर अपने उत्तरदायित्व को निभाते हुए आगे बढ़े चलो।

सघर्ष ही जीवन है, कायरता ही मृत्यु है। वीरो के ही मार्ग मे ससार की विघ्नबाधाये चट्टान बनकर खडी होती है। वे विघ्न-बाधाएं वीरो की परीक्षा लेती है। परन्तु वे अपने लक्ष्य की ओर बढते ही जाते है। दुःख, सकट और विपत्तियो की चोट से उनके भीतर सिंह की सी शक्ति का संचार होता है ?

युवको ! विघ्न-बाधायें सब पर आई है। वे तो आयेगी ही। वे तो अपरिहार्य हैं। क्या राम, क्या श्रीकृष्ण, क्या शिवा, प्रताप और स्वामी दयानन्द को विघ्नबाधाओ का सामना नही करना पडा था ? पर उन्होने अपने लक्ष्य को नही छोडा। उन्होने यह नही देखा कि अभी परिस्थितिया अनुकूल नही है। परिस्थितियाँ तो अपनी क्षमता के अनुरूप बनाई जाती है, बदलनी होती है। समय बहुत अमूल्य है, इसे व्यर्थ न खोइये। खाने-पीने, सोने और चौपड खेलने मे सब कुछ चौपट मत कीजिये।

अतः देश के युवको ! निडर होकर अपने लक्ष्य मे जुट जाओ, फिर पग पीछे मत हटाओ।

सुनो—

क्यो न काल हो खडा,
शेष नाग हो अडा।
देश की शपथ,
वेद की कसम,
तुम्हे लौटना हराम है।

**वह कौनसा उकदा है
जो हल हो नहीं सकता।
हिम्मत करे इन्सां तो
क्या हो नहीं सकता।**

पता—वैदिकाश्रम-प्रचार-केन्द्र तिजारा (अलवर) राजस्थान।

टकारा उपदेशक विद्यालय के विजयी छात्र
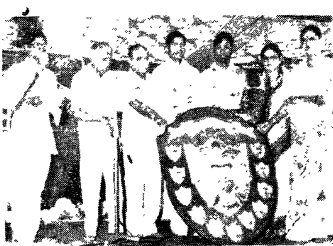
टकारा उपदेशक विद्यालय के छात्र वाद विवाद प्रतियोगिता मे विजयी होकर अचल वैजयन्ती ग्रहण कर रहे हैं। दाईं ओर हैं इस शील्ड को दान देने वाली श्रीमती स्नेहलता हाडा और बम्बई की प्रसिद्ध आर्य महिला श्रीमती शिवराजवती। बाईं ओर माइक पर हैं विद्यालय के उपाचार्य श्री हरिओम सिद्धान्ताचार्य

फांसी से बचना है तो मुसलमान बनो

खरतूम (सूडान)। सरकारी सूडान सवाद समिति ने बताया है कि प्रतिबंधित रिपब्लिकन ब्रदर्स सगठन के चार सदस्यो को फाँसी की सजा से मुक्त कर दिया गया है जिन्हे विधर्मी हो जाने के कारण आठ जनवरी को मौत की सजा सुनाई गई थी। इन लोगों द्वारा पश्चात्ताप व्यक्त करने तथा इस्लाम धर्म पुन: स्वीकार करने के कारण इनकी फासी की सजा रद्द कर दी गई। इनके नेता 76 वर्षीय मोहम्मद ताहा को फांसी पर चढा दिया गया क्योंकि उन्होंने पुनः मुसलमान बनने से इन्कार कर दिया था।

जिन्ना की वसीयत का हिस्सा देने पर रोक

सिंध हाई कोर्ट ने मोहम्मद अली जिन्ना की वसीयत का हिस्सा अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय को देने पर रोक लगा दी है। कायदे आजम मोहम्मद अली जिन्ना अलीगढ विश्वविद्यालय को मुसलमानो मे शिक्षा प्रसार का एक बडा संस्थान मानते थे। इसी नाते उन्होने अपनी वसीयत मे शेष जागीर का एक तिहाई हिस्सा अलीगढ़ विश्वविद्यालय को दे दिया था। जिन्ना की जागीर के प्रशासकों की याचिका पर सिंध हाई कोर्ट ने फैसला दिया कि जिन्ना का वसीयतनामा एक ट्रस्ट की तरह माना जाएगा और अलीगढ विश्वविद्यालय को हस्तांतरित किया जाने वाला कोष पाकिस्तान में ही समान उद्देश्यों के लिए खर्च किया जाएगा।

सुभाषित

यस्यात्मबुद्धिः कुणपे त्रिधातुके, स्वधी कलत्रादिषु भौम इज्यधि।
यस्तीर्थबुद्धिः सलिलेन कर्हिचित्. जनेष्वभिज्ञेषु स एव गोखरः ॥

जो वात, पित्त, कफ इन तीन मलों से बने शरीर में आत्म बुद्धि रखता है, स्त्री पुत्री आदि को अपनी समझता है, पृथ्वी से बनी हुई मूर्तियों को पूजता है, और जो जल मे तीर्थ-बुद्धि रखता है, वह व्यक्ति बुद्धिमान मनुष्यों में गोखर अर्थात् गौओं का चारा ढोने वाला गधा है।

—भागवत पुराण, १०/८४/१३

सम्पादकीयम्

नई लहर का नया संकेत

किसी देश की आन्तरिक बुनावट को समझने के लिए केवल उसकी बाहरी बनावट को देखने से काम नहीं चलता। जो लोग भूगोल को केवल पूर्व-पश्चिम और उत्तर-दक्षिण की परिभाषाओं में सपाट मैदान के रूप में पढ़ते हैं, वे लोग सम्भवतः उस देश की आन्तरिक बुनावट के प्रति न्याय नहीं करते। आन्तरिक मनोवैज्ञानिक बुनावट को समझने के लिए किसी वर्गाकार या आयताकार धरातल की नहीं, बल्कि एक वृत्ताकार धरातल की कल्पना करनी होगी। हरेक वृत्त का एक केन्द्र होता है और एक परिधि होती है। उसी तरह प्रत्येक देश को एक गोल घेरे के रूप मे लिया जाय तो स्पष्टतः उसके केन्द्र और परिधि के आचरण का अन्तर समझ में आ जायेगा। केन्द्र के निकटवर्ती प्रदेश हमेशा अधिकाधिक केन्द्र की ओर उन्मुख होना चाहते हैं, जबकि परिधि के निकटवर्ती प्रदेश केन्द्र से कुछ पराङ्मुखता की ओर प्रवृत्त होते हैं। यह स्वाभाविक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है और यह प्रत्येक देश पर लागू होती है।

लोक सभा के चुनावों में कांग्रेस को जिस तरह लेखा-तोड़ विजय मिली थी, लगभग वैसी ही लेखा-तोड़ विजय इस बार केवल हिन्दी भाषी प्रदेशों तक सीमित रही है। गैर हिन्दी भाषी प्रदेशों में कांग्रेस की विजयवाहिनी यदि उतने प्रखर रूप में सफल नहीं हुई, तो उसका कारण यही समझना चाहिए कि भारत के जो मध्यवर्ती प्रदेश हैं, उनके चिन्तन में और जो परिधि के निकटवर्ती प्रदेश हैं, उनके चिन्तन मे थोड़ी सी भिन्नता है। इस भिन्नता को एकदम विरोध मानने की गलती नहीं करनी चाहिए। यह तो भारत की विविधता मे एकता का एक प्रमाणमात्र है।

भारत मे 7 हिन्दी भाषी राज्य हैं, और भारत के मध्यवर्ती होने के नाते से इनको भारत का हृदय प्रदेश कहा जा सकता है। शरीर में जो स्थान हृदय का है, भारत राष्ट्र में वही स्थान इन हिन्दी भाषी प्रदेशों का है। हृदय में विकार हो जाने पर जैसे हार्टफेल की नौबत आ सकती है, वैसे ही यदि इन हिन्दी भाषी प्रदेशों मे कभी दृढ़ केन्द्र के प्रति आस्था विचलित हो जाय तो केन्द्र नहीं टिक सकता और भारत राष्ट्र भी खण्ड-खण्ड हुए बिना नहीं रह सकता। इन हिन्दी भाषी प्रदेशों को ही कुछ लोगों ने मध्य देश (मध्य प्रदेश नहीं) या आर्यावर्त का नाम दिया है। यह नाम देना उचित है या नहीं, इस बहस मे बिना पड़े यह तो पूरी ईमानदारी से कहा जा सकता है कि केन्द्र की दृढ़ता के लिए ये मध्यवर्ती प्रदेश सदा से अधिक से अधिक कुर्बानी करते आये हैं, इसीलिए इस देश की अखण्डता कायम रही है। भले ही सीमावर्ती प्रदेशों मे कुछ हेर-फेर हों, परन्तु मध्यवर्ती प्रदेश सदा दृढ़ केन्द्र के प्रति आस्थावान रहे हैं, इसीलिए भारत एक राष्ट्र भी रहा और अखण्ड भी रहा।

कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश और सिक्किम में जनता ने केन्द्र के शासक दल को अस्वीकार कर दिया और अपने प्रादेशिक दलों का पक्ष लेकर उनको विजयी बनाया। इसी प्रकार प्रादेशिक दलों को तरजीह देने की प्रवृत्ति तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, कश्मीर और केरल में भी है ही। कभी-कभी ऐसा लगता है, कि जैसे देश की राजनीति दो हिस्सों में बंटती चली जा रही है। हिन्दी भाषी भारत की राजनीति शेष भारत की राजनीति से कुछ भिन्न प्रकार की लगती है। हालांकि यह सरलीकरण इतना सीधा नहीं है, कि इसे एकदम नियम के रूप में घोषित किया जा सके। उसके कुछ अपवाद भी हैं। उस अपवाद के रूप में हम गुजरात और महाराष्ट्र को ले सकते हैं। उनकी लिपि जैसे हिन्दी भाषी भारत जैसी है, वैसे ही प्रायः वे राजनीति में भी हिन्दी भाषी भारत का ही साथ देते रहे हैं। इस अपवाद में उड़ीसा को भी शामिल किया जा सकता है।

पूरे हिन्दी भाषी प्रदेशों में अभी तक कोई प्रादेशिक दल नहीं पनप पाया। गुजरात और महाराष्ट्र मे भी नहीं। अलबत्ता उड़ीसा मे प्रादेशिक दल अवश्य पनपा। कश्मीर, आन्ध्र प्रदेश और तमिलनाडु में तो साफ-साफ जमे-जमाए प्रादेशिक दल हैं ही, पश्चिमी बंगाल मे भी मार्क्सवादी दल अब एक प्रादेशिक दल बनकर ही रह गया है। उड़ीसा मे गणतन्त्र परिषद् के रूप मे एक सबल प्रादेशिक दल रहा ही है। कर्नाटक मे हेगड़े की विजय को प्रादेशिकता की विजय ही मानना होगा। केरल, सिक्किम, पंजाब, गोवा और पूर्वांचल के छोटे-छोटे प्रदेशों मे अपने-अपने प्रादेशिक दल हैं ही। हिन्दी भाषी प्रदेशों में भाजपा या दमकिपा (या लोक दल) ने कभी प्रादेशिकता को अपना आधार नहीं बनाया। यह अलग बात है कि हिन्दी भाषी प्रदेशों के बाहर राष्ट्रीय विपक्ष कहे जाने वाले इन दलों का कोई विशेष प्रभाव नहीं है।

काफी अर्से से केन्द्र का शासक दल इन हिन्दी भाषी और कुछ उनसे सटे हुए प्रदेशों से ही अपने लिए जरूरी सीटें निकालकर सफल होता रहा है। जो कांग्रेस पहले अखिल भारतीय स्तर पर हावी थी, अब वह जैसे हिन्दी भाषी प्रदेशों तक सिमटती जा रही है। इसका अर्थ यह नहीं कि देश की परिधि के निकटवर्ती प्रदेशों में कांग्रेस फिर शासक दल बनकर नहीं उभर सकती। परन्तु अन्नाद्रमुक, तेलगुदेशम्, मार्क्सवादी पार्टी, नेशनल कान्फ्रेन्स कभी अपने-अपने सीमित दायरों से बाहर निकलकर हिन्दी भाषी प्रदेशों मे कामयाब हो सकेंगी, इसकी कोई सम्भावना नहीं है। केन्द्रीय सत्ता को सुरक्षित करने के लिए हिन्दी भाषी प्रदेशों का सदा प्रबल आग्रह रहा, परन्तु शेष भारत की राजनीति मे अपनी प्रादेशिक आवश्यकताओं के अनुरूप लगातार परिवर्तन होते रहे। राजनीति के अलावा सामाजिक जीवन की दृष्टि से भी यह बात साफ दिखाई देती है कि यदि भारत मे किसी दल या किसी आन्दोलन को सफल होना है तो वह तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक हिन्दी भाषी प्रदेशों में उसकी जड़ न जम जाय। परिधि के निकटवर्ती प्रदेशों के नेता भी भारत राष्ट्र की इस महत्ता को अनुभव करते रहे है। इसीलिए दक्षिण के भक्ति आन्दोलन की पूरी अभिव्यक्ति हिन्दी भाषी प्रदेशों मे आकर हुई। केरल के आदि शंकराचार्य अपने अद्वैत की प्रतिष्ठा के लिए दक्षिण से उत्तर मे आये और गुजरात के स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी को भी उनके अपने प्रदेशों से कहीं अधिक तत्परता के साथ हिन्दी भाषी प्रदेशों मे ही अपनाया गया।

यह कहकर न तो हम हिन्दी भाषी प्रदेशों के अहम् की तुष्टि करना चाहते हैं, और न ही अहिन्दी भाषी प्रदेशों को कुछ आत्महीनता का बोध कराना चाहते हैं। परन्तु यह अवश्य कहना चाहते हैं कि भारत की इस विविधता को केन्द्रवर्ती और सीमावर्ती दोनों प्रकार के प्रदेशों को समझने की आवश्यकता है। इन सबके मूल में एकात्मता की जो अन्तः सलिला बह रही है, उसे शासक दल को भी हृदयंगम करना पड़ेगा। प्राय लोग विविधता की चर्चा करते-करते उस एकता के सूत्र को भूल जाते हैं। उस सूत्र का नाम है—हिन्दुत्व, जिसने इन सब प्रदेशों को जोड रखा है। इसका एक ही उदाहरण काफी है—गंगा प्रदूषण को रोकने के अभियान का जैसा स्वागत हिन्दी-भाषी प्रदेशों की या गंगा-जमना काठे की जनता ने किया है, उससे कम गैर हिन्दी भाषी प्रदेशों की जनता ने नहीं किया होगा, क्योंकि गंगा के प्रति उनकी भी उतनी ही आस्था है। क्या कारण है कि प्रतिवर्ष हिमालय के उत्तराखण्ड की यात्रा के लिए उत्तर भारत से अधिक दक्षिण भारत के तीर्थ यात्री आते हैं। इसके उत्तर में ही हमारी स्थापना का मर्म छिपा है।

'आपने पूछा था—बेअंत और सतवंत ने इंदिरा गाधी के साथ जो किया उसके बाद क्या सिखों पर भरोसा किया जा सकता है ? अब मैं आपसे पूछना चाहता हू कि कुमार नारायण, अरोडा, खेर, गोपालन, मलहोत्रा, शंकरन, जगदीशचंद्र, चानना, जगदीश तिवारी, आर. के. धवन, रामनाथ काव, अमरीक लाल, स्वामीनाथन, मानेकलाल (सभी जासूसी काड के अभियुक्त) ने जो किया है उसके बाद क्या हिंदुओं पर विश्वास किया जा सकता है। सतवंत और बेअंत ने तो एक व्यक्ति की हत्या की थी इन देशद्रोही हिंदुओं ने तो 'भारतमाता' को ही बेचने में कोई कसर नही छोड़ी।'

इस चिट्ठी जैसे कई पत्र जासूसी कांड के भंडाफोड़ के बाद हमारे पास आए हैं। गए साल जून मे मनदीप सिंह ने पूछा था कि संत भिंडरांवाले और उनके साथियो की करतूतों पर सिखों को क्यो बदनाम किया गया ? क्या हिंदुओं में रमेश सिकरवार और कुसुमा जैसे डाकू सरदार और उनके गिरोह नहीं हैं ? यानी किसी भी तरह की दलीलें देकर काफी सिख कहना चाहते हैं और यक्ष प्रश्न है जो मेरी बेटी महीपसिंह से पूछना चाहती है।''' बेअंत और सतवंत ने जो किया क्या इसके बाद सिखों पर भरोसा किया जा सकता है ?'

इकतीस अक्तूबर को यही सवाल मेरी बेटी ने ही नही, कई मुसलमानो, इसाइयो, जैनियों, बौद्धों, पारसियो और यहूदियो यानी भारतीयो ने पूछा था। लेकिन पंजाब में जश्न मना था और दूसरी कई जगह सिखों ने इंदिरा गांधी की हत्या को स्वर्ण मन्दिर में सैनिक कार्रवाई का सही बदला मानकर खुशी मनाई और सन्तोष पाया था। सिखों के खिलाफ दंगे इकतीस अक्टूबर की शाम से चार नवम्बर तक हुए। और इन दंगो ने बकौल महीपसिंह भारत में सिखों के विश्वास की सभी चूलें हिला दी। दंगे के चार दिनो ने अगर इस देश में सिखों के विश्वास की चूलें हिला दी हैं तो यह देश पलट कर पूछेगा भी नही कि आप पर भरोसा किया जाए या नही ?

'बेअत और सतवंत कोई मामूली अपराधी और भाड़े के हत्यारे नही थे। पिछले तीन महीनो में जितनी सतवंत और हत्या की साजिश में पकड़े गए दूसरे लोगों के बयानों को झूठे बताने वाले कई सिख मिल जाएगे। वे कहते हैं कि यह सब सिखों को बदनाम करने और इन पर अत्याचार करने की सरकारी चाल है। वे चौहान के बयानों को भी सिखो की भावनाओ का नमूना मानने से इन्कार करेंगे। लेकिन अकाल तख्त के मुख्य ग्रंथी ज्ञानी किरपाल सिंह के उस बयान का क्या किया जाए जो उन्होने हत्या की निंदा वाले बयान को वापस लेते हुए दिया था कि हम (यानी पाँचों प्रमुख ग्रंथी) इन्दिरा गांधी की हत्या पर न दु.खी हैं न सुखी। अगर सिख समाज का इन्दिरा गांधी की हत्या से कोई भी रागात्मक लगाव नहीं था तो पंजाब में खुशियां किसलिए मनाई गई और मिठाइयां क्यों बांटी गई ? दिल्ली और दूसरे कई शहरो में एक तरह का संतोष क्यों प्रकट और महसूस किया गया ? क्यों सिख समाज ने राहत की सास ली कि अहमदशाह अब्दाली के बाद अकाल को ध्वस्त करने वाली इन्दिरा गाधी को मार दिया गया है ? बने हुए हैं, क्योंकि उन्होंने सरबत खालसा करवाया था तो बेअंत, सतवंत, जगजीतसिंह चौहान और इन्दिरा गांधी की हत्या की साजिश में शामिल लोगों के विरुद्ध कोई कार्रवाई क्यों नही हो सकती ? बल्कि इसके ठीक खिलाफ अकाली दल की तदर्थ समिति की बैठक में प्रस्ताव आया था कि बेअंत को शहीद घोषित किया जाए जो पास नही हुआ। बेअंत के गांव मलोया में हुए उसके भोग में भाषण देने वालों ने उसे शहीद बताया भी। और खुशवंत सिंह का तो कहा छपा भी है कि लोकप्रिय सिख मानस और परम्परा में बदला लेने वाले शहीद माने जाएंगे। क्या अकाल तख्त के मुख्य ग्रन्थी ज्ञानी किरपाल सिंह, इतिहासकार और लेखक खुशवन्तसिंह और तथाकथित खालिस्तान के स्वयंभू राष्ट्रपति जगजीत सिंह चौहान सिख मानस और परम्परा को नही जानते ?

मनदीपसिंह ने जब संत भिंडरांवाले को सिख कहे जाने पर एतराज करते हुए डाकू रमेश सिकरवार और कुसुमा का हवाला दिया था तो एक पाठक ने लिखा था कि रमेश

पहले सांप्रदायिक चश्मा उतारिए

—श्री प्रभाष जोशी, सम्पादक 'जनसत्ता'—

कि किसी सिख के कारण पूरे समुदाय को बदनाम, दोषी, गद्दार आदि नही कहा जा सकता।

यही मैं कहता रहा हू। इंदिरा गांधी की हत्या वाले दिन 'मैंने लिखा था—'जब आतंकवादी सिखों की नफरत का लक्ष्य होने के बावजूद इंदिरा गाधी इतना भरोसा रख सकती थी तो देश के लिए तो सिख समाज पर अविश्वास होना ही नहीं चाहिए।' हमने कहा था। 'बेअंत और सतवंत कोई सिख समाज के प्रतिनिधि नही थे और उनके किए का पाप सभी सिखो पर नही है। अपनी मां की छलनी लाश के पास खड़े राजीव गाधी तक यह सच्चाई देश को बता चुके है। महीपसिंह ने अपनी भाभी की सूनी-सूनी आखो से निकलता सवाल पूछा था'''मेरे वीर, बताओ अब हमारा भविष्य क्या है ' अब हम क्या करे ' क्या हम रह पाएंगे ?' इसे मैंने आज के भारत का यक्ष प्रश्न बताया था और कहा था—'अगर हम इसका समाधान नही कर पाए तो हमारा वही होगा जो युधिष्ठिर के चारों पांडव भाइयो का हुआ था।' और इसी के बाद लिखा था—'लेकिन एक बातें बाहर आई हैं उनसे साफ है कि वे स्वर्ण मन्दिर में सैनिक कार्रवाई के दिन से ही इंदिरा गाधी के खिलाफ बोलने लगे थे। खुद सतवंत ने कबूल किया है कि उन दोनों को अकाल तख्त पर ले जाकर कसम दिलाई गई थी कि वे बदला लेंगे। बदला लेने की कितनी तरह की योजनाएं किन-किन लोगों ने बनाई थी इस बारे में भी काफी जानकारी मिल चुकी है। ऐसा कोई सबूत या सुझाव तक नही मिला है कि बेअंत और सतवंत की इंदिरा गाधी से कोई निजी दुश्मनी थी या वे सी आई ए या केजीबी द्वारा लगाए गए भाड़े के हत्यारे थे ? अब तक की सारी जानकारी बताती है कि इंदिरा गांधी की हत्या सिख आतंकवाद की परिणति थी और उन्हें इसलिए मारा गया कि उन्होने स्वर्ण मन्दिर में सेना को जाने का निर्देश दिया था। जगजीतसिंह चौहान ने तो बाकायदा विज्ञापन छपवा कर हत्यारे माँगे थे और हत्या के बाद कहा था कि सिखों के पवित्र स्थानों में सेना भेजने का बदला ले लिया गया है और इंदिरा गांधी के पूरे परिवार को भी बख्शा नहीं जाएगा।

अगर एक समुदाय के नाते सिख इन्दिरा गाधी की हत्या के खिलाफ थे तो उन्होने ज्ञानी किरपाल सिंह को अकाल तख्त के मुख्य ग्रंथी पद से हटाकर तनखइया करार क्यो नहीं दिया ? अगर राष्ट्रपति होने के नाते ज्ञानी जैलसिंह को तनखइया कहा जा सकता है तो प्रधानमन्त्री की हत्या पर बयान वापस लेने और सुख-दुख से ऊपर उठने वाले ज्ञानी किरपाल सिंह के खिलाफ कोई कार्रवाई क्यों नही हुई ? 'बेअंत, सतवंत और उनके साथ साजिश में शामिल सिखों के खिलाफ कोई हुकुमनामा जारी किया गया ? अगर बेअंत और सतवंत के विश्वासघात और अपराध से सिख पंथ का कोई सरोकार नहीं हैं और वह इसके खिलाफ है तो क्यों पाँचों ग्रन्थियों ने अब तक ऐसा कदम नहीं उठाया जो अपराधियों को सिख धार्मिक सत्ता की सजा मानी जा सकती।

अगर बाबा संतासिंह को शिरोमणि कमेटी से आज्ञा लिए बिना अकाल तख्त की कार सेवा करवाने के लिए पंथ से निकाला जा सकता है और बूटासिंह तनखइया सिकरवार और कुसुमा किसी मंदिर या मठ में अड्डा जमा कर नही बैठे थे। वे हत्याएं, डकैती और अपहरण हिन्दू धर्म के नाम पर नही करते थे। किसी देवस्थान, ट्रस्ट या शंकराचार्य ने उन्हें शरण देकर धार्मिक और राजनीतिक कवच के पीछे आतंक फैलाने की छूट नहीं दी। किसी आर्यसमाज या राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, जनसंघ या भाजपा ने रमेश सिकरवार और कुसुमा को हिंदू बता कर रक्षा नहीं की थी। जबकि संत भिंडरांवाले को गुरु नानक निवास से हटा कर अकाल तख्त में शिरोमणि कमेटी के अध्यक्ष गुरुचरण सिंह तोहड़ा ने भिजवाया था और पूछे जाने पर कहा था कि, "संत जी तो बादशाह हैं। जहां उनकी मर्जी हो रह सकते हैं।" उन्हें अकाल तख्त में इसलिए भेजा गया कि गुरु नानक निवास में पुलिस कार्रवाई हो सकती थी और जब सैनिक कार्रवाई में संत भिंडरांवाले मारे गए तो ज्यादातर सिखों के लिए वे शहीद बन गए। रमेश सिकरवार और कुसुमा को डाकू से ज्यादा कभी कुछ नहीं माना गया। उनकी किसी डकैती और हत्या को

→ धर्म के नाम पर उचित नहीं ठहराया गया और किसी हिंदू धार्मिक या राजनैतिक संस्था या पार्टी ने नहीं अपनाया। संत भिंडरांवाले और उनके साथियों के बारे में सिख धार्मिक संस्थाओं और समुदाय का क्या रवैया था? और अगर सिख उनके खिलाफ थे तो किसी पंथक कार्रवाई की माँग क्यों नहीं की गई? संत भिंडरांवाले अगर स्वर्ण मंदिर में बिठाए गए कांग्रेसी एजेंट थे तो वे सिखों के शहीद कैसे हो गए?

एक समुदाय के नाते कुछ सिख दूसरे सिख के सार्वजनिक बचाव में किस हास्यास्पद हद तक जा सकते हैं इसका एक नमूना कुछ साल पहले दिल्ली में ही देखने को मिला था। एक निहंग पंजाब के किसी गाँव से घोड़ी समेत बिना टिकट रेल में बैठ कर दिल्ली उतरा था। घोड़ी लाने और बिना टिकट होने पर उसका चालान किया गया। लेकिन रेल में घोड़ी लाने, बिना टिकट सफर करने और इस सबको अपने पंथ के अनुसार होने का दावा करने वाले

यह नहीं हो सकता कि एक समुदाय मीठा-मीठा तो गप करे, और कड़वा थू-थू। अगर कोई अपने समाज के व्यक्तियों की उपलब्धियों को पूरे समाज का गौरव मानता है तो कुछ व्यक्तियों की करतूतों को भी उसे अपनी मानना होगा। बेअंत और सतवंत ने बकौल खुशवन्तसिंह, सिख परंपरा के अनुसार स्वर्ण मंदिर में सैनिक कार्रवाई का बदला लिया और पंजाब में ज्यादातर सिख यही मानते हैं। इन्दिरा गांधी ने एक विदेशी पत्रकार से बेअंत की तरफ देख कर कहा था कि जब तक ऐसे सिख मेरे अंगरक्षक हैं मुझे कौन मार सकता है? यह भी सब जानते हैं कि सुरक्षा अधिकारी बेअंत और सतवंत को हटाना चाहते थे लेकिन इन्दिरा गांधी ने उनकी नहीं सुनी। अगर वे बेअंत पर इतना भरोसा नहीं करतीं तो मारी नहीं जातीं। और बेअंत और सतवंत ने कोई निजी दुश्मनी या पैसे के लिए इन्दिरा गांधी को नहीं मारा। सिख पंथ की

होने के कारण पकड़े गए हैं। पैसे के लिए की गई उनकी जासूसी और गद्दारी को अब तक किसी भी हिंदू संस्था या व्यक्ति ने वह कवच नहीं दिया है जो संत भिंडरांवाले से लेकर स्मगलरों, हत्यारों, बदमाशों और बेअंत को मिलता रहा है। स्वर्ण मन्दिर में सैनिक कार्रवाई से उत्तेजित होकर भागने वाले सिख रंगरूटों के साथ नरमी से पेश आने की सलाह देने वाले रिटायर सिख सेनापतियों की तरह रिटायर हिंदू अफसरों ने नहीं कहा है कि इनके खिलाफ कार्रवाई से सरकार में हिंदुओं का मनोबल गिरेगा, इसलिए उनके साथ सख्ती न की जाए। बल्कि इसके ठीक खिलाफ अखबारों के हिंदू पाठक उन्हें फांसी की सजा देने की माँग कर रहे हैं जिन्होंने जासूसी करके 'भारतमाता' को बेचने की कोशिश की।

हिंदू समाज और धार्मिक संस्थाओं ने न कभी इन जासूस गद्दारों से अपने लिए जासूसी करवाई, न

वह चाहे आतंकवादी हो या दूसरे देशों के लिये अपने देश में जासूसी करने वाला, अपराधी की कोई जात और धर्म-ईमान नहीं होता। किसी अपराधी को हिन्दू होने के नाते अगर कोई बचाना चाहता है या उसे हिंदू राष्ट्र की स्थापना के लिए शहीद होने वाला क्रांतिकारी कहता है तो वह साम्प्रदायिक है, उसे लोकतांत्रिक धर्म निरपेक्ष भारत में कोई जगह नहीं है। अगर कोई शंकराचार्य या संत-महात्मा काशी विश्वनाथ सोमनाथ, महाकालेश्वर या तिरुपति के मंदिर में बैठकर वही करे जो संत भिंडरांवाले स्वर्ण मन्दिर से कर रहे थे तो हिन्दुत्व की रक्षा के लिए मैं मन्दिर समेत उस शंकराचार्य या संत को डायनामाइट से उड़ा दूंगा। पर जासूसी में लगे हिन्दुओं के अपराध को लेकर मैं हिंदुओं में विश्वास का सवाल इसलिए नहीं उठाऊंगा कि अब तक कोई सबूत या शक तक नहीं है कि वे हिंदू-साम्राज्य की

जासूसी कांड में गिरफ्तार भले ही सब हिन्दू हों, किन्तु वे हिन्दू राष्ट्र की स्थापना के लिए जासूसी नहीं कर रहे थे। किसी भी राजनैतिक या धार्मिक हिन्दू संस्था ने उनके साथ नरमी बरतने की अपील नहीं की। न हिन्दू होने के कारण वे सरकार में थे और न हिंदू होने के कारण पकड़े गए हैं। उनको सबने गद्दार कहा है और उनके लिए कड़ी से कड़ी सजा की मांग की है। रमेश सिकरवार जैसे डाकू भी किसी मठ या मंदिर में अड्डा जमाए नहीं बैठे थे, न ही वे हत्याएं, डकैती या अपहरण हिन्दू धर्म के नाम पर कर रहे थे। किसी धार्मिक नेता ने उनका पक्ष लेकर उन्हें आतंक फैलाने की छूट नहीं दी। कुछ सिख नेता अन्य सिखों के सार्वजनिक बचाव के लिए जिस प्रकार आगे आते हैं, उससे वे हास्यास्पद स्थिति तक पहुंच जाते हैं। यदि कोई सन्त महात्मा तिरुपति या विश्वनाथ के मन्दिर में बैठकर वही सब कुछ करे जो भिंडरांवाले करते रहे, तो स्वयं हिन्दू ही उसके सबसे बड़े विरोधी सिद्ध होंगे। प्रश्न यह है कि अकाली सिख साम्प्रदायिकता से क्यों नहीं उबर पाते और उन्हें अपनी आंख का शहतीर क्यों नहीं नजर आता।

इस निहंग को सिखों ने जुर्माना भर कर छुड़वाया और फिर घोड़ी पर बैठा कर बड़ी शान से हीरो की तरह उसका जुलूस निकाला। अखबारों में मखौल की तरह छपा इस खबर का दिल्ली के कुछ सिखों ने ऐसा जोरदार जवाब दिया था। क्या वे उस निहंग के रिश्तेदार थे? क्या वे मानते थे कि निहंगों को रेल में घोड़ी लाने और बिना टिकट सफर करने का विशेषाधिकार होना चाहिए? और रेलवे अधिकारियों और मजिस्ट्रेट को किसी निहंग के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने का अधिकार नहीं है? अगर ऐसा नहीं था तो निहंग को कानून के हवाले क्यों नहीं छोड़ दिया गया? और मान लो उसके पास पैसे नहीं थे इसलिए उसकी मदद की गई तो फिर उसका जुलूस निकालने की क्या जरूरत थी? मैंने माना कि दिल्ली के ज्यादातर सिखों को यह सब हास्यास्पद और शर्मनाक लगा होगा। लेकिन किसी ने इसकी सार्वजनिक निंदा की?

तरफ से बदला लिया था। इन्द्रजीत सिंह के लिए वे सिर्फ व्यक्ति और दूसरे सिखों के लिए नफरत की पुतली रही हों, पर देश के लिए वे भारी बहुमत से निर्वाचित प्रधानमंत्री थीं। स्वर्ण मंदिर में सैनिक कार्रवाई के उनके फैसले को देश ने सही माना था। दिसम्बर के चुनाव से यह बात साबित भी हो चुकी है। फिर जिसमें विश्वास की चूलें हिल गई है वह देश उन लोगों से क्यों नहीं पूछेगा कि उनमें भरोसा किया जाए या नहीं?

जासूसी कांड में गिरफ्तार सब हिंदू है लेकिन उनके हिंदुओं में विश्वास करने का सवाल इसलिए नहीं उठता कि ये गद्दार हिंदू धर्म के लिए जासूसी करके पैसा लेकर विदेशी धन से हिंदू राष्ट्र की स्थापना की कोशिश नहीं कर रहे थे। अब तक किसी धार्मिक या राजनैतिक हिंदू संस्था ने इन्हें अपनाकर इनके साथ नरमी बरतने की अपील नहीं की है। वे हिंदू होने के नाते सरकार में नहीं थे न हिंदू

कभी इन्हें अपना समझा और न खुशी मनाई कि चलो बहुत से राज विदेशियों के हाथ लग गए और अब यह तथाकथित धर्म निरपेक्ष सरकार हिंदू राष्ट्र को बनने से रोक नहीं सकेगी। इन्हें हिंदुओं ने अपना शहीद नहीं माना है और इनके कानूनी बचाव के लिए वकीलों की कमेटी बना कर पैसा भी इकट्ठा नहीं किया है। ये जासूस हिंदू धर्म के रक्षक और उसकी परम्पराओं के पालक नहीं माने जाते थे। सच पूछिए तो हिंदुओं का ऐसा कोई चर्च या प्रतिष्ठान ही नहीं है जो किसी हिंदू की उपलब्धि को हिंदू समाज की गौरवकथा माने और जासूसी जैसे अपराध को कुछ हिंदुओं का जुर्म बता कर अलग हो जाए। इसीलिए जासूसी कांड के भंडाफोड़ पर ऐसा नहीं हुआ कि हिंदुओं को बुरा लगा हो और अब वे मुंह छुपाते फिर रहे हों। दरअसल उनमें से ज्यादातर लोगों को इसका भी अहसास नहीं होगा कि जासूसी करने वाले हिन्दू थे।

स्थापना के लिए दूसरे देशों की तरफ से जासूसी कर रहे थे। मैं उन्हें गद्दार मानता हूं और चाहता हूं कि ऐसी सजा मिले कि कोई भी अपने देश के खिलाफ जासूसी करने से कांपे।

लेकिन यही मैं ज्ञानी किरपाल सिंह से लेकर सारे ग्रंथियों और अकाली नेताओं से भी कहना चाहता हूं। देश के सारे मामले को अगर वे साम्प्रदायिक और सिख चश्मे से देखेंगे तो पंथ अभी जिस संकट में है वह और गहराता जाएगा। कई अकाली नेता दिसम्बर चुनाव के नतीजे को साम्प्रदायिक कह कर रद्द करते हैं क्योंकि वे मानते हैं कि राजीव गांधी ने अपनी मां की लाश हाथ में लेकर और आनंदपुर साहिब प्रस्ताव का डर बताकर सिखों के खिलाफ हिंदुओं से वोट मांगे। अपने गुरुद्वारों के अंधकूपों में बैठे वे लोग जानते नहीं कि केरल, गुजरात या मणिपुर में सिख-हिंदू सवाल

(शेष पृष्ठ ७ पर)

कहाँ धर्म का आलोक ! कहां धर्म का उन्माद !

—श्रीमती सुशीला राजपाल—

धर्म एक प्रदीप के समान है जो अग्नि शिखा के समान प्रकाश फैलाती है। धर्म मानव जाति के उच्चतर मन की चीज है। वह उच्चतर मन की चेष्टा है जिसके द्वारा वह अपनी शक्ति अपने से परे की किसी वस्तु को प्राप्त करना चाहता है। उस वस्तु को जिसे मानव समाज ईश्वर, परमात्मा, श्रद्धा, सत्य, अनन्त सर्वशक्तिमान या किसी प्रकार की निरपेक्ष सत्ता के नाम से पुकारती है। जहां मानव मन की पहुच न होने पर भी वह पहुचने की चेष्टा करता रहता है। इस चेष्टा का नाम धर्म है धर्म हमे एक प्रकार के सच्चे जीवन की ओर संकेत करता है। वह आध्यात्मिक विकास मे सहायता देता है और हमारे व्यक्तित्व को प्राणवान बना देता है।

जो धर्म इस बात का ध्यान रखकर चलता है कि जड चेतन के लिए, अर्थात् ये मन्दिर, गुरुद्वारे और मस्जिद, बाह्य कर्मकाण्ड वेश भूषादि बातें आत्मा के विकास के लिए हैं, तो वह आत्म समर्पण कर देता है लेकिन जब वह देखता है कि ये आत्म-विकास मे बाधा डाल रही हैं, मिथ्या अहंकार, राग द्वेष, जाति वर्ग भेद और पृथकतावाद को बढ़ावा मिल रहा है तो उन्हे परिस्थितियो के अनुसार बदलने या छोडने को तैयार रहता है। इसके विपरीत जो धर्म कोरे कर्म काण्ड एवं रूढ़िवादी अन्ध परम्परा के नाम पर इन बातो को महत्व देने लग जाता है। तो उस धर्म की प्राणशक्ति क्षीण होती चली जाती है। वह आत्म-साधना का मार्ग न रहकर आत्मा का आवरण हो जाता है। वहां प्राण के स्थान पर शव की पूजा प्रारंभ हो जाती है।

अंध रूढ़ियां भी शव हैं

भारतीय संस्कृति मे शव को जला देने की प्रथा है। उनकी धारणा है कि जिस शरीर मे आत्मा का अधिष्ठाता नहीं रहा, जिसका उपयोग समाप्त हो गया उसे सुरक्षित नहीं रखना चाहिए। ऐसा शरीर पौराणिक मान्यता के अनुसार भूत प्रेतो का अड्डा बन जाता है।

वैयक्तिक क्षेत्र मे शव जला देने की प्रथा होने पर भी सांस्कृतिक क्षेत्र मे वह प्रथा प्रचलित नहीं रही। वहां अब भी उन बातो का घसीटा जा रहा है जिनकी उपयोगिता समाप्त हो चुकी है। गुरु-गोविन्द सिंह जी ने युद्ध कालीन परिस्थितियो के कारण पाच ककार का आदेश किया था—कडा, कंघी, कच्छा, कटार और केश। परन्तु सिख भाईयो ने इसको धर्म का सच्चा स्वरूप मान लिया, जिसके कारण उनके मन मे साम्प्रदायिकता का भयानक भूत सवार हो गया।

संस्कृति के शव हमारे जीवन को घेरे हुए हैं और वह नयी प्राणशक्ति का विरोध कर रहे हैं। इतना ही नहीं उन रूढ़ियों को आधार बनाकर अनेक मिथ्या सम्प्रदाय पनप रही हैं, उनको ऐसा लगता है कि निर्जीव संस्कृति की पूजा न करने पर वे हमारा सर्वनाश कर देंगी। आज के धर्माचार्य अपने सिद्धांतो की आड़ लेकर उसका पोषण करने लगते हैं और अपने सिद्धांतो को समग्र सत्य का रूप देकर उत्कृष्ट सिद्ध करने लग जाते हैं। तब धर्म जीवन का मधुर तत्वन बनकर के कड़वा घूट बन जाता है। वह आत्म-साधना का मार्ग न रहकर अहंकार पोषण का मार्ग बन जाता है।

बाह्य चिन्हों पर जोर

कश्मीर मे मुहम्मद के बाल को लेकर तूफान खड़ा हो गया। मुहम्मद ने परमात्मा पर विश्वास और विश्व बंधुत्व का सन्देश दिया था। इस्लाम जड़ वस्तुओं की पूजा को कुफ्र या नास्तिकता कहता है किन्तु उसका झण्डा लेकर चलने वाले मुहम्मद के बाल को लेकर पडोसी का गला काटने को तैयार हो गये। ईसाई धर्म मे चार सौ वर्ष पूर्व जेनियर नाम के सन्त हुए हैं। गोवा मे उसकी लाश रखी हुई। समय-समय पर उसका प्रदर्शन किया जाता है और लाखो ईसाई उसके दर्शन के लिए इकट्ठे होते हैं। महात्मा बुद्ध का एक दांत सांची के खंडहरो मे मिला था। अंग्रेज शासक उसे इंग्लैंड ले गये और लन्दन के संग्रहालय मे रख दिया। भारत के स्वतन्त्र होने पर बहुमूल्य निधि के रूप मे उसे वापिस लाया गया। एक वर्ष तक वह स्थान-स्थान पर घूमता रहा। कुछ वैज्ञानिको की मान्यता है कि यह मनुष्य का दांत नहीं हो सकता। महात्मा बुद्ध के देह त्याग से पहले उनसे जीवन काल मे ही उनकी शिक्षा विकृत किया जाना प्रारम्भ हो गया था।

यही दशा ईसा मसीह की शिक्षा की भी हुई। जो धर्म ईसायत के नाम से विख्यात है निःसन्देह उनकी रचना ईसा-मसीह ने नहीं की थी। ईसामसीह से पूर्व ही कुछ चतुर विद्वानो ने आज ईसा-इयत हमारे सामने है उसका रूप था। जिस प्रकार इसकी रचना की गयी उसमे से दिव्यता का कहीं नामोनिशान नहीं है। यह कहा जा सकता है कि ईसा मसीह किसी उच्चतर नाम और सत्य का संदेश लेकर आए थे, परन्तु बहुत बिरले ही होगे जिन्होंने उसकी वाणी को ठीक-ठीक समझा हो। यदि ईसामसीह और बुद्ध वापिस लौटकर आवें और अपनी शिक्षा के प्रचलित रूप को देखें तो वे उनको पहचान भी न पायें ईसाई धर्म ने विश्व बन्धुत्व का सन्देश दिया था, किन्तु उसके अनुयायियों ने धर्म परिवर्तन के लिए सैनिक अभियान प्रारंभ किया। 'क्रूसेड' के नाम से धर्म युद्ध सैकड़ो वर्षों तक चलते रहे किन्तु वास्तव में देखा जाये तो यह युद्ध धर्म के नाम पर अपने अहंकार की पूर्ति मात्र था। वह धर्म नहीं, एक उन्माद बन गया।

जैन धर्म प्राणि मात्र के साथ मित्रता और समता का उपदेश देता है शारीरिक तपस्या पर अधिक बल देता है, नंगे पाव चलना मुंह पर पट्टी बांधना, और व्रतो को अधिक महत्व देना। परन्तु जब दृष्टि अभ्यन्तर से हट कर बाह्य तक सीमित हो जाती है तो धर्म की आत्मा लुप्त हो जाती है। जब वेश भूषा और बाह्य प्रदर्शनो का महत्व बढ़ जाता है तब धर्म उन्माद बन जाता है। मेरे लिखने का तात्पर्य यह है कि सभी धर्मों के अनुयायियों ने अपने धर्म प्रवर्तकों की जीवन कथाओं मे अतिश्योक्ति पूर्ण किंवदन्तियों का प्रचार और प्रसार करना प्रारंभ कर दिया ताकि अधिक से अधिक गुटबन्दियां बन जायें।

स्वर्ग के प्रलोभन

धर्म का स्वरूप, जो हमारे जीवन के लिए प्रेरणाप्रद होना चाहिए था, उसमे अन्धवादिता दुराग्रहादि दोष प्रवेश कर गये। फिर धर्म ने पंथ का रूप ले लिया। सहज प्रेरणा समाप्त हो गयी, उसका स्थान प्रलोभन तथा उन्माद ने लिया प्रत्येक सम्प्रदाय के तीर्थ स्थान, मन्दिर और धार्मिक पुस्तकें उस संप्रदाय की धरोहर बन गयी, अपने धर्म की पूर्णता के झूठे दावे किये गये। कई सम्प्रदाय अपने अनुयायियों को स्वर्ग की अप्सराओं और धन संपति का प्रलोभन देने लगे। वर्तमान जीवन मे इन्द्रियों के संयम पर बल दें तो उसके परिणाम स्वरूप में आप को स्वर्ग मे रम्भा और मेनका जैसी हजारों की संख्या मे अप्सरायें मिलेंगी। इस जन्म में संपति का त्याग करने से स्वर्ग में ऐसे विमान और महल मिलेंगे जिसमे रत्नों के ढेर भरे होंगे। ब्रह्मा कुमारियां अपनी प्रदर्शनी में (स्वर्ग में चित्रद्वारा) प्रदर्शित करती हैं कि ब्रह्माकुमारियां विमान द्वारा स्वर्ग में उड़ान भर रही हैं

ब्रह्माकुमारियों की पोल

सन् 1956 में मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की उपदेशिका के रूप में धर्म प्रचार के कार्य में नियुक्त थी। उन दिनों आर्यसमाजी घरों की दो बहनें अपने पति और बच्चों को छोड़कर ब्रह्माकुमारी बन गयी। उन देवियों को इस प्रपंच से निकालने के लिए स्वर्गीय वेद प्रकार अधिष्ठाता श्री यशपाल जी के आदेशानुसार प्रचार कार्य छोड़ कर मैं ब्रह्माकुमारियों के आश्रम शक्ति नगर में ब्रह्माकुमारी के रूप में उनका प्रशिक्षण लेकर माउण्ट आबू गयी। 15 दिन वहां पर रह कर मैंने जो कुछ देखा उसे सविस्तार नहीं लिख सकती। परन्तु संक्षिप्त रूप में इतना ही कहना चाहती हूं कि वे लोगों को इन्द्रलोक, ब्रह्मलोक और स्वर्ग लोक सपनों का प्रलोभन देकर फंसाते हैं। वेद, उपनिषद् और यज्ञादि का पूरा खंडन किया जाता है। खेद से लिखना पड़ता है कि आज इनकी शाखायें देश-विदेश में फैल गयी हैं।

सन् 1975 में विज्ञान भवन मे देश की प्रधान मन्त्री इन्दिरा गांधी के नेतृत्व में स्वतन्त्रता सेनानियों की विशाल सभा के आयोजन मे देश की वर्तमान समस्याओं के समाधान के विषय में कई प्रस्ताव रखे गये। एक प्रस्ताव स्वर्गीय प्रकाश वीर शास्त्री जी ने देश की प्रधान मन्त्री को सम्बोधित करते हुए रखा कि राम लीला ग्राउन्ड मे प्रतिवर्ष नए-नए अवतार ले रहे हैं। स्वतन्त्रता के पश्चात् इन भगवानो की भीड लग गयी है। कृपया आप इन पर ध्यान दीजिये। कहीं ऐसा न हो कि ये देश के विकास में घातक सिद्ध हो जायें। उनकी भविष्य वाणी आज चरितार्थ हो रही है। और तो और भिंडरांवाले जैसे व्यक्ति को सन्त और अवतार मानने वाले इस देश में विद्यमान हैं।

देवी-जागरण

आज वैष्णव देवी का प्रचार बड़े जोर शोर से फैल रहा है। देवी जागरण मे गायक लोग शराब पीकर गाते हैं। कोरी मिथ्या और पूर्ण निराधार कथायें सुनायी जाती हैं। कथा का सार यह बताया जाता है कि देवी जागरण से पुत्र प्राप्ति होती है और देवी जागरण न कराने से पुत्र की मृत्यु हो जाती है। जनता के मस्तिष्क में निराधार कथाओं का विष भर दिया जाता है

मेरे लिखने का तात्पर्य यह है। कि कैंसर के रोग की तरह अनेक सम्प्रदाय फैलते जा रहे हैं। जनता के मस्तिष्क को धर्माचार्य गिरवी रख लेते हैं। राजनैतिज्ञ तो वोटों के प्रलोभन में आत्मा-विहीन हो चुके हैं। मेरे देश की सचेतन वेद विज्ञ विद्वत् मण्डली को चाहिए कि वह निर्भीकता के साथ संगठित होकर बढ़ते हुए सम्प्रदायों का समूल, उन्मूलन करने के लिए कटिबद्ध हो। यही वेद की सच्ची सेवा है।

पता—एन 13, वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली-110008

धूम्रपान का शैतान

विश्व स्वास्थ्य संगठन की चौंकानें वाली चेतावनी

धूम्रपान स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है यह चेतावनी सिगरेट के विज्ञापनों में पढ़ने को तो मिलती है, लेकिन इसके बावजूद धूम्रपान पर कोई रोक नही लगी अपितु तम्बाकू निर्मित पदार्थों की खपत मे बेशुमार बढ़ोत्तरी हुई है। इसके मूल में तम्बाकू निर्मित पदार्थों के आकर्षक एवं अन्धाधुन्ध विज्ञापन ही प्रमुख है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अपने एक अध्ययन मे चौंकाने वाले निष्कर्ष प्रकाशित किये हैं। उनके अनुसार तो एक दशक मे विकासशील देशो मे फेफड़े का कैंसर उग्र-रूप धारण कर लेगा। प्रायः सभी देशों के पचास प्रतिशत पुरुष धूम्रपान का शौक करने लगे हैं। पहले केवल विकसित देशो की स्त्रिया ही धूम्रपान का चाव रखती थी लेकिन अब यह लत विकासशील देशो की किशोरियो में भी जोर पकडने लगी है। अब हर साल पाच लाख ९० हजार नए फेंफड़े के कैंसर के मामले सामने आते हैं और दस हजार मौतो के कारण भी यही होते है। जबकि फेफडों के कैंसर का मुख्य जनक धूम्रपान ही है।

एक बात और है कि विकसित देशो की तुलना मे विकासशील देशो की ही सिगरेट अधिक निकोटीन युक्त होती हैं जो कैंसर जैसे रोग के लिए सर्वाधिक आकर्षक तत्व है। अत. फेफडो के कैंसर की रोकथाम तथा भावी अनुमान की भयावहता को देखते हुए तम्बाखू सेवन को हतोत्साहित करने के लिए कोई उचित योजना बनाई जानी चाहिए। भारत जैसे विकासशील देश में जहां गरीबी, भुखमरी और बेकारी साधनो की तुलना में ज्यादा है—सिगरेट या अन्य धूम्रपान के साधनो का प्रचलन इन समस्याओं को ही अधिक विस्तृत बनायेगा। यद्यपि यह सही है कि तम्बाकू पर लगे करों से सरकार को बहुत अधिक आय होती है। यह भी सही है कि सरकार चाहे जितना प्रयास करे धूम्रपान जड से खत्म होना मुश्किल ही नही असभव जैसा है। लेकिन कल्याण कारी राज्य के उद्देश्य को दृष्टि गत रखते हुए कम से कम इस फैशन को बढ़ावा देने के बजाय हतोत्साहित तो किया ही जा सकता है।

इसके लिये जरूरी यह है कि तम्बाकू अन्य पदार्थों के विज्ञापन के लिये कडा कानून बनाना चाहिये। जिसमे उनके विक्रय के लिये आकर्षक नारो, फोटो आदि के बजाय साधारण तरीके से विज्ञापन किये जाने की शर्त शामिल हो, साथ ही हर ऐसे विज्ञापन तथा पैंकिंग पर स्पष्ट रूप से सिगरेट या अन्य तम्बाखू उत्पादो के उपयोग से सभावित बीमारी तथा खतरो का खुलासा भी होना आवश्यक बनाया जाये। इसके अतिरिक्त अधिक निकोटिन वाले तत्वो को पूणतया निषेध किये जाने की दिशा मे भी विचार करना अब अत्यन्त आवश्यक हो गया है। करों के माध्यम से होने वाली आय का लालच अब तक सरकार को इस दिशा मे कोई कदम उठाने से रोकता रहा है। यही हाल शराब बन्दी के सबध मे भी है। लेकिन जन स्वास्थ्य और जन रक्षा का उद्देश्य सामने रखकर काम करना एक कल्याणकारी राज्य के लिये निहायत जरूरी है। इसके लिये व्यापक प्रचार की मुहिम भी चलानी होगी।

सरकार के लिये सीधा और सरल तरीका यह भी है कि तबाखू से प्राप्त करो की आय का एक बडा हिस्सा इससे होने वाली बीमारियो की सभावनाओं के बारे मे प्रचार प्रसार करने के लिये खर्च किया जाये। स्त्रियो को धूम्रपान से स्वयं के अलावा गर्भस्थ शिशु पर पडने वाले कुप्रभावो के बारे में भी व्यापक जानकारी दी जाये तो कम से कम नये लोगों को सिगरेट बीडी से तो दूर रखा ही जा सकता है। सरकार के अलावा समाज सेवी सस्थायें भी धूम्रपान विरोधी माहौल बनाकर रोकथाम मे सहयोग दे सकती है। अतः विश्व स्वास्थ्य सगठन के विशेषज्ञो की राय की गभीरता को समझकर तुरन्त ही प्रयासरत होना जरूरी है। अन्यथा परिणाम अनुमान से ज्यादा भयंकर भी हो सकते हैं।

['स्वदेश' से साभार]

सिगरेट के खिलाफ चीन में मुहिम

चीन की सौ करोड़ आबादी में से लगभग २५ करोड़ लोग सिगरेट पीते हैं। सन् १९८३ में चीन मे लगभग इक्यानवे हजार करोड़ सिगरेट बनी अर्थात् हर सिगरेट पीने वाले ने साल मे औसतन ३६०० सिगरेट फूंकी।

चीन में १४० कारखानो में सिगरेट बनती है। लगभग एक हजार ब्रांड की इन सिगरेटो से सरकार को हर साल लगभग पांच सौ करोड़ अमेरिकी डालर के इतनी आय कर के रूप मे होती है।

सिगरेट पीने की लत जितनी फैल रही है उसी अनुपात से कैंसर से मरने वालो की संख्या भी बढी है। शघाई मे बीस साल पहले एक लाख जनसंख्या में ५.२५ लोग कैंसर से मरते थे। दस साल पहले औसतन २७.०२ लोग कैंसर से मरने लगे। इसलिए चीन की सरकार ने लोगो को धूम्रपान से विमुख करने के लिए राष्ट्रव्यापी अभियान चलाया है।

सरकार चाहती है कि लोग सिगरेट की लत छोडे। पिछले तीन साल में सिगरेट के दाम मे तीस प्रतिशत की वृद्धि हुई है। तबाकू की खेती पर भी प्रतिबंध लगाए जा रहे हैं। सार्वजनिक जगहो पर सिगरेट पीना मना है। सरकार का कहना है कि सिगरेट बनाने वाले सिगरेट पीने से जो घातक परिणाम होते हैं उनके प्रति कितने उदासीन हैं यह देखकर हैरत होती है। ब्राजील जैसे विकासशील देश में १९७९ में ९०,००० लोग दिल की बीमारी के शिकार हुए। ये सभी ऐसे लोग थे जिनकी मौत का सिगरेट पीने से सीधा संबन्ध था।

ब्रिटेन में डाक्टरों ने धूम्रपान के खिलाफ मुहिम चलाई है। जब किसी व्यक्ति की मौत और धूम्रपान की लत से सीधा संबंध होता है तो डाक्टर अपने क्षेत्र के सासद को काली किनारी वाला एक कार्ड भेजकर बताता है कि सिगरेट ने एक और बलि ले ली।

राम जहा खेलतें थे, वहां चन्दन ही चन्दन

कर्नाटक के अलावा सारे देश में एक ही छोटा सा क्षेत्र है जहां अभी भी चंदन के पेड हैं और वे बिना प्रयास उगते तथा बढ़ते हैं। यह क्षेत्र है उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जिले के अयोध्या के निकट एक गाव सरयू बाग। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की कर्मभूमि जहा अनगिनत किवदंतियां लोकोक्तिया और सत्य न लगने वाले सत्य हैं, वही एक सत्य चन्दन के हरे भरे पेड़ भी हैं।

लगभग एक दसक पहले उत्तर प्रदेश सरकार ने राज्य मे चन्दन के पेड़ उगाने का प्रयास किया था जो असफल रहा। चन्दन के कुछ पेड़ इलाहाबाद कृषि संस्थान में लगाए गए थे पर उनके सूख जाने के कारण वह प्रयोग बन्द कर दिया गया। यह तो किसी को नहीं मालुम कि इस क्षेत्र में चदन के पेड़ क्यों उगते हैं पर, कहा जाता है कि वहां श्रीराम अपने भाइयो के साथ खेलते थे। बहुत ज्यादा वर्ष नहीं बीते जब सरयू नदी इस क्षेत्र से बहती थी और इसके तट पर घने जगल के बीच एक अकेली अट्टालिका थी जिसे सरयू बाग कहते हैं। यह अट्टालिका अब भी वहा है। जंगल पचास वर्ष पहले तक थे और नदी अब वहां से लगभग पांच किलोमीटर पूरब की ओर गई है।

क्षेत्र में आबादी बढ़ने के साथ ही पेड़ो की कटाई शुरू हुई। आज जंगल की जगह खेतो ने ले ली है। पर जाने क्या सोंचकर वहा के निवासियों ने चंदन के पेड़ नही काटे। सभवत. जनमानस मे यहाँ के चन्दन के वृक्ष रामकथा से जुड़े हैं। चंदन के ये पेड़ सरयूबाग में एक तालाब के किनारे और खेतो में भी है। कुछ वर्ष पहले तक वहां अशोक, कपित्थ, अमलतास, गुलमोहर आदि के पेड़ भी बड़ी संख्या मे पाए जाते थे।

भारत के बारह कई देशो मे चंदन का तेल लोकप्रिय है। सूडान की स्त्रिया घर से बाहर निकलते समय अपने शरीर पर चंदन के तेल की कुछ बूंदे अवश्य छिडकती है। भारत मे चन्दन की लकड़ी और तेल का सदियो से उपयोग होता आया है और आज भी सभ्रात कुल के व्यक्तियो के शवदाह मे चन्दन की लकडी का इस्तेमाल किया जाता है। इसका उपयोग तेल, साबुन और इत्र बनाने मे खासतौर पर होता है। चन्दन के पेड काटने और इसकी माग बढने के कारण इसकी लकड़ी और तेल दोनों के दाम बेहद बढे है। चदन के तेल का दाम कर्नाटक सरकार ने पिछले कुछ वर्ष मे इतना अधिक बढा दिया है कि उत्तर भारत के कई ख्याति प्राप्त इत्र बताने वाले घराने अपना कारोबार बन्द कर चुके हैं।

पहल साप्रदायिक (पृ० ५ का शेष)

है ही नही। और फिर अकाली दल खुद एक साप्रदायिक पार्टी है, हमेशा पथ को खतरा बता कर सिखो के वोट लेती है। और उसे जो भी जनादेश मिलता है, साप्रदायिक होता है। उसे क्या हक और हिम्मत है कि राजीव गाधी के बहुमत को हिन्दू कहे जबकि मुसलमानो, ईसाइयो, पारसियो, जैनियो और बुद्धो के भी काफी वोट उन्हे मिले है। जो साप्रदायिकता के बिना खत्म हो जाएंगे वे अकाली राजीव गाधी के प्रचड बहुमत को किस मुह से साप्रदायिक कह सकते है? १९८४ का का वोट उनकी नीतियो आनदपुर साहिब प्रस्ताव और उनके पनपाए आतकवाद के खिलाफ है। इसे वे साप्रदायिक चश्मे से देख कर कोई फायदा नही उठा पाएगे। पंजाब मे जब भी चुनाव होगा यह विभाजन उनके हितो के खिलाफ जाएगा। वे अगर यह साप्रदायिक चसमा नही उतारेंगे तो नजर उन्ही का खराब होगी, देश अंधा नही होगा।

[जनसत्ता से साभार]

पत्रों के दर्पण में

हैदराबाद सत्याग्रहियों को स्वाधीनता सेनानी क्यों न माना जाए ?

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान की ओर से प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी को एक पत्र ३० नवम्बर, ८४ को हैदराबाद मे १९३८-३९ मे आर्य समाज के सत्याग्रह मे शामिल लोगो को स्वाधीनता सेनानी सम्मान दिलाने के लिए भेजा गया था। उस पत्र का उत्तर इतने दिनो के पश्चात् १ मार्च, ८५ को गृह मंत्रालय के अवर सचिव श्री के० एन० सिंह की ओर से प्राप्त हुआ है। उसमे लिखा गया है कि यह विषय सरकार के विचाराधीन है। (पत्र सं० ४/१/८५ एफ० एफ० पी० तिथि २६/२/८५)।

आश्चर्य है कि सभा प्रधान के पत्र को प्रधान मन्त्री कार्यालय ने लगभग १ मास बाद गृह मन्त्रालय को भेजा, और वहा से फिर इतने दिन के बाद अब उत्तर आया है। स्मरण रहे कि १९३८-३९ मे निजाम रियासत मे इस सत्याग्रह में भाग लेने वाले वर्तमान आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र और कर्नाटक के निवासियो को राज्य सरकारो द्वारा पेंशन एव अन्य सुविधाएं वर्षों से दी जा रही है, परन्तु उन्ही अभियोगो मे दण्डित पंजाब, हरियाणा, सिंध (अब पाकिस्तान) उ०प्र० बिहार आदि राज्यो के निवासियो को अब तक वैसी कोई सुविधा नही मिली ? गत १२ वर्षों से मामला लटका हुआ है और खिलाफत अकाली, मोपला आदि साम्प्रदायिक और हिंसक आंदोलनो को तो केंद्रीय सरकार पहले ही स्वाधीनता संग्राम का अंग मान चुकी है। गृह मंत्रालय की सम्बन्धित परामर्शदात्री समिति द्वारा सर्व सम्मति से आर्य समाज के उस सत्याग्रह को भी उसी कोटि मे रखने की सिफारिश मन्त्रिमडल की स्वीकृति के लिए जुलाई १९८४ से अधर मे लटकी हुई है। सभा इस मामले को शीघ्रातिशीघ्र निपटाने के लिए प्रयत्नशील है। —ब्रह्मदत्त स्नातक अवै० सूचना एव जनसपर्क सलाहकार, भारतीय सूचना सेवा (रिटा०)

ऐसे होता है प्रचार !

सडक पर चलते-चलते एक जीप एक मुख्य किनारे पर रुकती है और बोनट पर अन्दर से दो ब्रह्मचारी झोलो मे से सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, व्यवहार भानु आदि वैदिक साहित्य की पुस्तकें निकालते हैं इधर गाडी पर लगे दो लाउडस्पीकर से आर्य समाज, ऋषि दयानन्द के भजन शुरू हो जाते हैं। बड़ी चोटी, खडाऊं, चादर, यज्ञोपवीत वाले ब्रह्मचारियो को देखकर गाड़ी के चारों तरफ लोगों की भीड़ लग जाती है, तो स्पीकर से उनको १५-२० मिनट तक वैदिक धर्म, संस्कृति, आचार, इतिहास की बाते बताई जाती हैं और लोग पुस्तकें लेने को टूट पड़ते हैं। सैंकड़ों का साहित्य बिक जाता है और गाड़ी अगले स्टाप के लिए चल पडती है। यह सब काम आधे घंटे मे हो जाता है।

यह कार्य है वैदिक प्रचार वाहन का जिसको लेकर ब्र० आर्य नरेश जी प्रचार कर रहे है, बम्बई के डोंबिवली के नवीन क्षेत्र के पश्चात् गोवा की राजधानी, पणजी, पौण्डा नगर, शकराचार्य संस्कृत पाठशाला, कवके, शिरोना आदि स्थानो की सडको पर यह प्रचार-यात्रा तीन दिन तक चली। ब्र० आर्य नरेश जी के साथ ब्र० ज्ञानेश्वरार्य जी, ब्र० शंकर देव व ब्र० श्यामसिंह थे। इस प्रचार यात्रा मे आर्य समाज घाटकोपर के उपप्रधान श्री कल्याण जी भाई तथा उत्साही नवयुवक मनसुख भाई व कीर्ति भाई व डोंबिवली के श्री कर्षण जी भाई शामिल थे। इस प्रचार यात्रा को आर्थिक सहयोग श्री कल्याण जी भाई तथा श्री प्रभु भाई धनजी भाई का रहा। प्रचार यात्रा का प्रबन्ध आर्य समाज घाटकोपर की ओर से हुआ। —धर्मधर आर्य सि० आचार्य, पुरोहित—आर्य समाज, घाटकोपर, बम्बई-८६

व्यापार की आड़ में जासूसी

भारत से सोवियत संघ तथा अन्य पूर्व यूरोपीय देशों को चावल का निर्यात द्विपक्षीय व्यापार-अनुबन्धो का मुख्य अंग रहा है, पर गत वर्ष ही एक षड्यंत्र का भंडाफोड हुआ था कि उत्तम कोटि के महगे बासमती चावल के नाम पर यहा से सस्ता परमल चावल निर्यात किया जा रहा था। आश्चर्य इस बात का था कि इस परमल चावल के लिए, मूल्य बासमती का ही मिल रहा था जिससे निर्यातक तथा उनके सपर्क सूत्र मालामाल हो गए।

तब यह शका उठी थी कि सोवियत संघ इस घोटाले से अनभिज्ञ तो हो नहीं सकता, फिर खुशी से धन क्यो देता रहा। साधारणतः यही समझा गया था कि भारत मे कम्युनिस्ट गतिविधियो के प्रसार हेतु इस प्रकार धन पहुंचाया जा रहा था, जो अपने आप मे आपत्तिजनक था। वर्तमान जासूसी कांड मे पूर्व यूरोपीय देशों के व्यापार संबंधो और गुप्तचरी की गतिविधियो का रहस्योद्घाटन होने पर गुप्तचर विभाग द्वारा चावल निर्यातक कम्पनियो, राजनीतिज्ञो और दलालों आदि के जरिए किए गए सौदो की जांच की जा रही है, और उसकी प्रकाशित सूचनाओं से अब स्पष्ट हो गया है कि इस कांड में रूस की 'मेहरबानी' का राज क्या था। परमल चावल के लिए बासमती के मूल्य इसलिए दिए जा रहे थे कि घटिया चावल के साथ देश की गुप्त सूचनाएं भी उन्हे प्राप्त होती थीं जो निश्चय ही बासमती से अधिक कीमती थीं। लगता है, व्यापार की आड़ मे जासूसी कम्युनिस्ट देशो की आदत बन चुकी हैं। इससे भारत की आंखें खुल जानी चाहिए। —डा० सोमनाथ रैना, लोशाली भवन, बरेली रोड हल्द्वानी, (नैनीताल)।

टंकारा—एक स्वप्न—एक यथार्थ

इस शीर्षक के दोनो अग्रलेखो में आपने एक नग्न सत्य की ओर पाठको का ध्यान आकर्षित किया है। मैं तो समझता हूं कि आर्य समाज के कर्णधार वास्तविक स्थिति से भली-भांति परिचित हैं। कारणो की जानकारी भी उसको है। परन्तु **'जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिः'** के शिकार हैं। कई बार उपदेशक सम्मेलन हुए जिनमें वर्तमान स्थिति का गम्भीरता से विश्लेषण हुआ, प्रस्ताव पारित हुए, अधिकारियो से स्थिति मे सुधार करने की प्रार्थना की गई। परन्तु परिणाम में वही ढाक के तीन पात। उपदेशको व पुरोहितो के प्रति आर्य समाज के अधिकारियो की यह उपेक्षा वृत्ति बनी रही तो भविष्य मे नामकरण कराने वाला भी कोई व्यक्ति नहीं मिल सकेगा।

वर्तमान दुरवस्था के दो प्रधान कारण हैं—आर्थिक व सामाजिक। भूखे भजन न होय गोपाला। सन् १९८४ में सरकारी कर्मचारियों को महंगाई की ६ किश्ते दी गई हैं। उपदेशको की दक्षिणा मे कितनी वृद्धि हुई है ? दक्षिणा भेंट करते समय मन्त्री जी पिछले वर्षों का रजिस्टर देखते हैं। उपदेशकों को कितना सम्मान दिया जाता है, यह किसी से छिपा नही है। यदि उपदेशको की आर्थिक स्थिति में सुधार हो जाये और समाज में उनको सम्मान का स्थान मिले तो आपको शिकवा करने के लिए लेखनी न उठानी पड़ेगी। मनुष्य में अनुकरण की प्रवृत्ति स्वाभाविक है। **'यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः'** राजीव गाधी को शाल व कुर्ता-पाजामा पहिनते देखकर अनेक नव युवक पतलून त्याग कर यही वेश धारण करने लगे हैं। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व अधिकारियों पूज्य महात्मा नारायण स्वामी, पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय, स्वामी ध्रुवानन्द व श्री रघुवीर सिंह शास्त्री की भांति सभाओ व समाजों के वर्त्तमान अधिकारीगण स्वयोग्यतानुसार उपदेश व पौरोहित्य कार्य करने में गर्व समझे तो निश्चित रूपेण इस कार्य को आदर प्राप्त हो सकेगा। —प्रो० रत्नसिंह, बी-२१, गांधी नगर, गाजियाबाद (उ०प्र०)

देशान्तर प्रचार के लिए प्रचारक

देशान्तर प्रचार के कार्य में ऐसे उच्च शिक्षित सज्जनों को वरीयता दी जायगी जो आर्य समाज के संगठन को शक्तिशाली बना सकें। उन्हे विदेशों की सामाजिक व राजनीतिक परिस्थितियों के अनुकूल प्रचार प्रणाली अपनाते हुए, आर्य समाज के संगठन को नई दिशा देना, साप्ताहिक सत्संग और आर्य पर्व पद्धति का ज्ञान कराना, आर्य वीर दल व महिला संगठन की नीव डालना, आर्य साहित्य के स्वाध्याय की प्रेरणा देना, आर्य शिक्षण संस्थाओं मे अध्यापको एवं छात्र-छात्राओ को वैदिक धर्म के मूल सिद्धांतो का परिचय देना और समाचार पत्र, रेडियो व टेलीविजन के माध्यम से जन-सामान्य को आर्य समाज के सिद्धांतो का ज्ञान कराना होगा। एक देश में अथवा उस क्षेत्र मे कम से कम एक वर्ष का समय देना अपेक्षित है। सार्वदेशिक सभा अपने निर्देशन एवं अनुशासन में यह कार्य करायेगी। कालान्तर मे विश्व के सभी भागो मे आर्य समाज के कार्य का विस्तार करना तथा आर्य समाज के अनुकूल विश्व संस्थाओ में अपने मन्तव्य को पहुंचाना, हमारी दीर्घकालीन योजना का लक्ष्य है। इसकी प्रथम कड़ी के रूप में कुछ योग्य आर्य जनों की सेवाएं इस कार्य में ली जायेंगी।

इच्छुक महानुभावो को पत्र व्यवहार के लिए हम पुनः अवसर दे रहे हैं। अपने पत्रोत्तर मे वे अपनी आयु, शैक्षणिक योग्यता, भाषाओ का ज्ञान, आर्य समाज से सम्बन्ध, प्रचार कार्य का अनुभव, प्रकाशनों की सूची एवं अन्य आवश्यक जानकारियो का विवरण देने का कष्ट करें। अंग्रेजी भाषा का अच्छा ज्ञान अनिवार्य है। भारत अथवा देशान्तर के तीन ऐसे प्रमुख आर्य जनों का नाम और पता भी लिखें जो आपके कार्यों के विषय में भली-भांति जानते हों। यह भी सूचित करने का कष्ट करें कि कितना समय इस कार्य में दे सकते हैं। सभी महानुभावों को अपने प्रथम पत्र में ही पूर्ण विवरण दे देना उचित होगा। — डा० आनन्द प्रकाश उपमन्त्री—सार्वदेशिक सभा, संयोजक—देशान्तर प्रचार समिति

महात्मा वेदभिक्षुः— एक कर्मठ जीवन

—सत्यपाल शास्त्री—

स्वर्गीय पंडित भारतेन्द्रनाथ जी अत्यन्त कर्मठ व्यक्ति थे। खाली बैठना तो वे जानते ही न थे। जब वे गुरुकुल में मेरे साथ पढ़ते थे, तब उन्होंने एक बार गम्भीरता-मिश्रित विनोद में कहा था कि "अपने जीवन में मैं कम से कम इतना तो कर ही डालना चाहता हूं कि जब मैं इस संसार से विदा होऊं, तब ट्रिब्यून' के प्रथम पृष्ठ पर समाचार छपे कि Bharatendra Nath Shukla dead (भारतेन्द्रनाथ शुक्ल का निधन)। कर्मठता बचपन से ही उनके स्वभाव का अंग रही। वे सदा कुछ न कुछ करते रहते थे। भाषण, कविता, लेखन आदि में उनकी रुचि जीवन के प्रारम्भिक काल से ही थी। इन सब क्रियाकलापों को लेकर वे किस दिशा में सोचते थे, इसका अनुमान आप इस बात से लगा सकते हैं कि उन्होंने अपना उपनाम 'विप्लव' रखा हुआ था। उन दिनों मण्डी धनौरा (जिला मुरादाबाद) की मासिक पत्रिका 'शिक्षासुधा' और लाहौर के साप्ताहिक 'आर्य' में उनकी रचनायें प्रकाशित हुआ करती थीं। बचपन से ही उनका झुकाव पत्रकारिता की ओर था। यह उन दिनों की बात है, जब पत्रकारिता देश सेवा का सशक्त माध्यम ही न थी अपितु देशभक्ति और पत्रकारिता पर्यायवाची समझे जाते थे। उनकी पत्रकारिता को आप मधुसंचय का नाम दे सकते हैं। 'रीडर्स डाईजेस्ट' और नवनीत की तरह जहां से भी कोई अच्छी चीज मिली, उसे अपने पत्र में स्थान दे दिया।

भारतेन्द्र जी की रुचि पढ़ने तक ही सीमित न थी। न जाने कहां-कहां की पत्रिकायें खरीदना, फाइल बनाना और यथासमय उनकी कतरनों से अपनी पत्रिका को सजाना संवारना—यह सब उनके लिए व्यसन ही हो गया था। लेखन के बारे में उनका विचार था कि मन में जो भी विचार उठे, उन्हें लेखनी-बद्ध कर डालना अच्छे लेखन को जन्म देता है। तैयारी तो सदा चलती रहनी चाहिए, न कि लिखने से ठीक पहले। वे बताते थे कि एक बार जब वे दैनिक आर्य मित्र के सम्पादक थे, तब एक रात लम्बे दौरे के बाद कार्यालय में आकर बैठे ही थे कि फोरमैन ने आकर सम्पादकीय लेख का तकाजा किया। भारतेन्द्र जी का शरीर टूट रहा था, लेकिन सम्पादकीय लेख तो देना ही था। उन्होंने उसी स्थिति में सम्पादकीय लेख लिख दिया। शीर्षक था—'नींद आ रही है।' उस स्थिति में लिखा गया वह सम्पादकीय लेख सामान्य स्थिति में लिखे जाने वाले अनेक सम्पादकीय लेखों से भी कहीं अधिक अच्छा बन पड़ा।

१४-१५ वर्ष की उम्र में उनका अध्ययन इतना था कि सुमित्रानन्दन पन्त की रहस्यवादी कविताओं पर भी वे बातचीत कर सकते थे और करते थे। उनकी माताजी शिक्षिका थी और पत्र-पत्रिकाओं व पुस्तकों में संचित यह अमूल्य ज्ञान उन्हें मुख्यतः अपनी माताजी से ही मिला। बाद में तो उन का वैचारिक धरातल काफी ऊंचा उठ गया था और वैदिक साहित्य के अतिरिक्त जवाहरलाल नेहरू और हैराल्ड लास्की सदृश आधुनिक लेखकों के साहित्य में भी उनकी गहरी पैठ हो गई थी।

भारतेन्द्र जी केवल पाँच घंटे सोते थे—रात के बारह बजे से प्रातः पांच बजे तक। कभी समय मिल जाये तो एकाध घंटा दिन में आराम कर लेते थे। उनका शेष सारा समय कामकाज में बीतता था। मन-मस्तिष्क योजनाओं से भरे रहते थे।

उनका झुकाव मौलिक लेखन की ओर था। पण्डित किशोरीलाल वाजपेयी भारतेन्द्र जी के गुरुतुल्य थे। वाजपेयी जी बहुत विद्वान् थे, लेकिन उनका सारा जीवन मुख्यतः हिन्दी भाषा के लेखन में होने वाली गलतियां ठीक करने में ही बीत गया। इस मामले में भारतेन्द्र जी वाजपेयी जी से भिन्न थे—यद्यपि वे वाजपेयी जी का बहुत आदर करते थे। भारतेन्द्र जी का कहना था कि भाषा में प्रवाह होना चाहिए। उसे व्याकरण के नियमों में बहुत अधिक जकड़ा नहीं जाना चाहिए। प्रयोजन तो अपनी बात समझाने से है।

महात्मा सुमेर सिंह जी, स्वामी योगेश्वरानन्द जी, आचार्य रामदेव जी (स्वामी सत्यानन्द जी), स्वामी ब्रह्ममुनिजी, मौलाना हसरत-मोहानी, डॉक्टर सूर्यकान्त शास्त्री आदि अनेक मनीषी भारतेन्द्र जी की माता जी को अपनी बहन मानते थे और भारतेन्द्र जी इन्हें मामा जी कहते थे। इस नाते इन सज्जनों के सान्निध्य का अवसर और लाभ भारतेन्द्रजी को मिला। इन सबका जीवन के अन्ततक भारतेन्द्र जी के परिवार से घनिष्ट सम्बन्ध बना रहा। इन महापुरुषों के संस्कार भी भारतेन्द्रजी को विरासत में मिले। बचपन में वे क्रान्तिकारियों के सम्पर्क में भी आये। सरदार भगतसिंह उनके बचपन में सहारनपुर जिले के ग्राम टोपरी में कुछ मास उनकी माताजी के घर में ही रुके थे।

राजनीति में धर्म और धर्म में राजनीति का दखल हो या न हो, यह विवाद बहुत पुराना है। इस सम्बन्ध में भारतेन्द्र जी के कुछ सुलझे हुए विचार थे। वे (अपने गुरुतुल्य आचार्य नरदेव शास्त्री की तरह) धर्ममय राजनीति और राजनीतिमय धर्म के तो विरुद्ध न थे, लेकिन इन दोनों में एक विभाजक रेखा बनाये रखना चाहते थे। राजनैतिक कार्यों के लिए अलग मंच के पक्ष में थे। आर्य समाज को वे मुख्यतः धार्मिक कार्यों के लिए सुरक्षित रखना चाहते थे। इसलिए हिन्दू हितों की रक्षा के लिए उन्होंने हिन्दू रक्षा समिति की स्थापना की। उन्हें यह निश्चय हो चुका था कि राजनीति में भाग लिये बिना अपनी आवाज को प्रभावशाली नहीं बनाया जा सकता।

भारतेन्द्रजी जिस काम को हाथ में लेते थे, उसे बड़े पैमाने पर अच्छे ढंग से करते थे। एक बार आस्ट्रेलिया के रिसर्च स्कालर प्रो० जे० टी० एस० जोर्डन्स भारतेन्द्रजी के निवास स्थान पर आये। उन्होंने पंडित गंगाप्रसाद उपाध्याय द्वारा अनूदित अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश भारतेन्द्रजी को दिखाते हुए कहा कि "यह आपका धर्म ग्रन्थ है। मैं इस का सम्मान करता हूं। लेकिन इसकी छपाई, कागज आदि इतने घटिया हैं कि जी चाहता है, इसे उठाकर फैंक दूं।" भारतेन्द्रजी को यह बात इतनी चुभी कि उन्हीं के शब्दों में "मुझे रात भर नींद न आई।" उन्होंने स्वर्गीय दुर्गाप्रसाद जी द्वारा अनूदित अंग्रेजी सत्यार्थ प्रकाश जनज्ञान प्रकाशन की ओर से प्रकाशित करवाया और प्रारम्भ में उसे केवल पाँच रुपये में उपलब्ध करवाया।

चारों वेदों का भाष्य उन्होंने केवल ३५ रुपये में देने की व्यवस्था की। लेकिन वे इतना करके भी सन्तुष्ट नहीं हुए। उनका कहना था कि मेरा वश चले तो मैं पांच रुपये में चारों वेदों का भाष्य सुलभ कर दूं।

अर्थ और काम के लिए तो प्रायः सभी लोग प्रयत्न करते हैं, लेकिन भारतेन्द्र जी ने तो सारा जीवन धर्म प्रचार में लगाया, धन परिवार और अपने शरीर तक की चिन्ता छोड़कर बीमारी की हालत में भी काम करने से उनका स्वास्थ्य अधिकाधिक खराब होता गया—यहां तक कि अन्ततः वे दो वर्ष अन्न, नमक, मीठा छोड़ने से सिरासिस ऑफ लिवर जैसे दुस्साध्य रोग के शिकार हो गये। इतने पर भी उनका कहना था कि "जब मरना ही है, तो कुछ करके मरूंगा।" वे अन्त तक काम में लगे रहे। उनका अन्तिम लेख "हिंदू बैठे कब तक पिटते रहेंगे?" ५ दिसम्बर १९८३ को लिखा गया था—अस्पताल ले जाये जाने से कुछ ही घण्टे पूर्व।

नई सुबह को प्यार दो

बीते कल का लेखा जोखा व्यर्थ है
आने वाली नई सुबह को प्यार दो।

कुंठाओं का क्या रिश्ता निर्माण से
निर्ममता का क्या रिश्ता है प्राण से

तुम चेतनता के स्वर दो मेरे गीत को
निष्ठुरता का क्या रिश्ता म्रियमाण से

उन्मादी संध्या के सपन सजाना व्यर्थ है
आने वाली नई किरण को भावों का उपहार दो।

बहुत उगाए मन के हमने सब स्वांग मनमाने
देते रहे निमंत्रण सूधियों को अनजाने

और भटकते रहे अकारण कोलाहल में, भीड़ में
खा कर धोखा लगे, स्वयं को भरमाने

बीते पल को स्नेह लुटाना व्यर्थ है
खिलने वाली नई कली को ममता का शृंगार दो।

—मनहर परदेशी

आचार्य बृहस्पति शास्त्री दिवंगत

देहरादून, २७ फरवरी। गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के भूतपूर्व उप-कुलपति आचार्य बृहस्पति शास्त्री, एम० ए०, वेद-शिरोमणि ८७ वर्ष की अवस्था में यहां दिवंगत हो गये। वे आर्यसमाज देहरादून के प्रधान और स्थानीय डी० ए० वी० कालेज में संस्कृत-विभाग के प्राध्यापक भी रहे थे। आचार्य जी की अन्त्येष्ठि में आर्यसमाज के तथा डी० ए० वी० कालेज स्टाफ के लोग बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए। ३ मार्च को २६ मान-सिंहवाला, देहरादून में शान्तियज्ञ हुआ।
—धर्मपाल सूद, प्रधान आर्य समाज देहरादून

बाजार सीताराम का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बाजार सीताराम दिल्ली के ६५ वें वार्षिकोत्सव पर आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान पं० मदनमोहन विद्या-सागर जी (हैदराबाद वाले) ने ५ दिन वेदो की कथा की जिसे श्रोताओं ने काफी सराहा। २ मार्च को रात्रि के ८॥ बजे एक विशाल कवि सम्मेलन हुआ जिसका उद्-घाटन सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने किया और अध्य-क्षता श्री रामनाथ सहगल मंत्री आर्य प्रादेशिक सभा ने की। महानगर परिषद के सदस्य श्री अशोक जैन मुख्य अतिथि के रूप में पधारे।

कविसम्मेलन में श्री सारस्वत मोहन मनीषी, श्री उत्तम चन्द 'शरर' डा० वीरेन्द्र तरुण (जो अमेरिका से उसी दिन आए थे) प्रो० सतपाल 'बेदार' तथा कवि-वर प्रकाशवीर व्याकुल ने अपनी कविताओ से श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया। कवि सम्मेलन रात्रि के १ बजे तक चलता रहा।

३ मार्च दोपहर को श्री क्षितीश वेदालंकार और श्री वाचस्पति उपाध्याय के विशेष व्याख्यान हुए और श्री गुलाब-सिंह राघव के भजन हुए। श्री मामचंद रिवारिया ने कवि सम्मेलन का संयोजन किया।☐

कन्या गुरुकुल नरेला

आर्ष कन्या गुरुकुल, नरेला, दिल्ली के वार्षिक महोत्सव ९-१० मार्च को सोत्साह मनाया गया। इस अवसर पर श्री कृष्ण चन्द्र पन्त, कु० विमला देश पाण्डे, श्री महेन्द्र सिंह साथी, स्वामी सर्वानन्द, स्वामी ओमानन्द, प्रो० शेरसिंह, स्वामी वेदानन्द, आदि महानुभावो ने भाग लिया, गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियो द्वारा अथर्ववेद पारा-यण यज्ञ हुआ।

—सार्वदेशिक आर्यवीर दल समिति के तत्वावधान में आर्य समाज हजारी बाग (बिहार) मे १५ से ३० मई तक आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

महिला ट्रक ड्राईवर

आर्य समाज ताड़ीखेत, अल्मोड़ा द्वारा २ मार्च को एशिया की प्रथम महिला ट्रक ड्राईवर पार्वती स्वस्तियज्ञ पं० प्रेमदेव शर्मा के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। स्वामी गुरुकुलानन्द कन्धाहारी ने मन्द-सौर निवासी ३५ वर्षीय पार्वती के जीवन पर प्रकाश डाला। पार्वती को शराब और शराबी से चिढ़ है, अपनी मेहनत से वह दो ट्रकों की मालिक है और स्वयं ट्रक चलाती हैं, माता-पिता के साथ रहते हुए एक भाई को एम०बी०बी० एस० एवं एक बहन को विज्ञान स्नातिका बनाने का संकल्प किया है।

कुरुक्षेत्र में युवा वर्ष समारोह

वेद प्रचार मण्डल कुरुक्षेत्र की ओर से अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष के रूप में पूरे जिले में गाव-गाव मे युवकों में ब्रह्मचर्य, आस्तिकता, देश भक्ति की भावना पैदा करने हेतु शिविरो का आयोजन किया गया जिनमें ब्र० कृष्णपाल, ब्र० हरिपाल ने शारीरिक प्रशिक्षण दिया और मंडल के महामन्त्री श्री धर्मदेव विद्यार्थी ने युवको को सम्बोधित किया।

जम्मू में ऋषि बोधोत्सव

आर्य समाज, पुरानी मण्डी, जम्मू में गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी १७,१८ फरवरी को ऋषि बोधोत्सव सोत्साह मनाया गया। श्रद्धाञ्जलि सभा की मुख्य अतिथि राज्य की समाज कल्याण मन्त्री श्रीमती गुरुचरण कुमारी राणा थीं। "आधुनिक युग के महानतम समाज सुधारक महर्षि दयानन्द" विषय पर छात्रों को प्रतियोगिता हुई जिसमें प्रथम कु० सोनिया गुप्ता, द्वितीया कु० मनीषा आर्या व तृतीय विक्रम भान को पुरस्कृत किया। —प्रभूशूर आर्य मन्त्री

आर्य युवा मन्च

अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष के उप-लक्ष्य में युवा शक्ति को सशक्त और संगठित करने के लिए सम्बलपुर(उड़ीसा) मे उत्कल आर्य युवा मन्च की स्थापना २६ जनवरी को की गई।

फरीदाबाद में पुरोहित चाहिए

आर्य समाज ४६० सेक्टर-२२ हाऊसिंग बार्ड कालोनी फरीदाबाद के चुनाव में मेजर राजकुमार प्रधान, श्री सोमदेव आर्य मन्त्री और श्री पवन कुमार कोषाध्यक्ष चुने गये। इस समाज को एक पुरोहित की आवश्यकता है जो सभी संस्कार यज्ञ करा सके। वेतन योग्यता-नुसार, आवास का प्रबन्ध। प्रार्थी उप-रोक्त पते पर सम्पर्क करें।

ईसाई परिवार की शुद्धि

आर्यसमाज मालवीय नगर मे श्री हंसराज पोस्ट मैन फतेहपुर बेरी की प्रेरणा से श्री रमेश चन्द्र, पत्नी लज्जा-वती और पुत्री पूनम सोनिया ने स्वेच्छा से ईसाई धर्म का परित्याग कर वैदिक धर्म का ग्रहण किया। पं० तुलसीदेव जी ने यज्ञ करवा के यज्ञोपवीत प्रदान किया।
—वेदरत्न आर्य मन्त्री

—आर्यसमाज, अम्बाजोगाई (महा-राष्ट्र) में कु० नन्दा सांडूक और श्री अण्णा साहेब रोहम बी० काम० का अंत-र्जातीय विवाह बिना दहेज और जाति पाति के २६ फरवरी को श्री वशिष्ठ के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। श्री पं० प्रशान्त कुमार एम० ए० ने गृहस्थ का महत्व समझाया, आर्य समाज के अधिकारी और नगर के विशिष्ट व्यक्तियों ने वर-वधू को आशीर्वाद दिया।

—आर्य समाज, ताड़ीखेत, अल्मोड़ा में २८ फरवरी को भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री मोरार जी भाई देसाई के ९० वें जन्मदिवस पर यज्ञ का आयोजन पं० प्रेम देव शर्मा के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। स्वामी गुरुकुलानन्द कन्धाहारी ने मोरार जी के जीवन पर प्रकाश डाला और उनके दीर्घायु होने की प्रार्थना की।

—सनातन धर्म महासभा के संस्था-पक सभापति, विराट हिन्दू समाज के महासचिव श्री प्रेम चन्द गुप्त को गोविन्द वल्लभ पन्त अस्पताल से छुट्टी दे दी गयी। वे पैरों की तकलीफ से पीड़ित थे, डॉक्टरों ने आपरेशन के पश्चात् ३१ मार्च तक पूर्ण विश्राम की सलाह दी है। श्री गुप्त अपने निवास ४/१७ रूप नगर दिल्ली-७ में स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं।
—सुरेन्द्र मोहन

दिवंगत श्री जगदीश राज के लिए शोक सभा

आर्य समाज, शक्ति नगर अमृतसर के प्रधान श्री जदीश राज का निधन हो हो गया, वे अपने कार्यों से सारे अमृतसर में प्रसिद्ध थे। सार्वदेशिक सभा में श्री रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता में शोक सभा हुई जिसमें दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की गई।

नागदा में आर्य समाज की ओर से कुष्ठ निवारण धाम की स्थापना

आर्य समाज, नागदा द्वारा संचालित आयुर्वेदिक धर्मार्थ औषधालय में 'कुष्ठ निवारण धाम' का उद्घाटन मध्यप्रदेश राज्यपाल प्रो० के० एम० चाण्डी ने २३ जनवरी को किया। नन्ही-नन्ही छात्राओं ने फूलों वर्षा कर राज्यपाल महोदय की का स्वागत किया। राज्यपाल ने सपत्नीक में भाग लिया, पश्चात् दीप प्रज्वलित कर 'कुष्ठ निवारण धाम' का शुभारम्भ किया।

इस अवसर पर प्रो० चाण्डी ने कहा—आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द, सरस्वती ने समाज सुधार के महान कार्य किये, इस कार्य में आर्य समाज लगा हुआ है आर्य समाज को कुष्ठ निवारण की दिशा में भी सफलता मिले, यही मेरी शुभ कामना है।
—जोधसिंह राठोर

महापंजाब ही समस्या का निदान

राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के व्यापक हित में पंजाब हरियाणा के विवाद को सदा के लिए समाप्त करने व सीमावर्ती प्रान्त को मजबूत बनाने हेतु पंजाब-हरियाणा व हिमाचल को एक करके महापंजाब का रूप देना बुद्धिमत्ता व समयोचित कदम होगा। इससे चण्डीगढ़ व अबोहर-फाजिल्का का झगड़ा भी मिट जाएगा। रावी-व्यास के फालतू पानी का बंटवारा विवादास्पद न रहेगा। इस तरह हरियाणा और राजस्थान के क्षेत्रों को सिंचाई के पानी अपने आप उपलब्ध हो सकेगा। लोक सभा व राज्य-सभा के सदस्यों की संख्या बढ़ने से केन्द्र में वे ज्यादा प्रभावशील रहेंगे। भाषा की समस्या सुलझाने के लिए क्षेत्रीय फार्मूले को इस महाप्रदेश में लागू किया जा सकता है। राज्य स्तर पर सरकारी कर्मचारियों और अधि-कारियों को हिन्दी और पंजाबी में से किसी भी भाषा का प्रयोग करने की खुली छूट दी जा सकती है। पंजाबी भाषा का कार्यक्षेत्र भी बढ़ेगा।

तीन राज्यों के लिए एक ही विधान सभा, एक ही मन्त्रिमण्डल, एक ही सचिवालय विकास कार्यों की एक ही योजना बनने से करोड़ों रुपयों की आर्थिक बचत होगी। सफेद हाथी की तरह राजनीतिज्ञों के अनाप-शनाप खर्चों पर अंकुश लगेगा। साम्प्रदायिक व संकीर्ण चिन्तन का अन्त होगा। आवश्यकता इस बात की है कि इसे आन्दोलन का रूप देने के लिए तीनों प्रान्तों में जनमत तैयार करने हेतु राष्ट्रवादी नेता और कार्यकर्ता व सक्रिय हों। अकाली दल का यह कहना कि इससे सिख महापंजाब में अल्पसंख्यक हो जायेंगे, मूर्खतापूर्ण चिन्तन है। सिख तो हिन्दू समाज का ही अंग है, शरीर से कोई अंग जुदा नहीं किया जा सकता। कुर्सी के स्वार्थ ने उनके सही चिन्तन को जंग लगा दिया है। महापंजाब का प्रस्ताव सराहनीय है। आवश्यकता है इस हेतु अनुकूल वातावरण निर्माण करने की।
—नरेन्द्र अवस्थी 'पत्रकार' आर्यसमाज श्रीनिवास पुरी, नई दिल्ली-६५

डी० ए० वी० कालिज जालंधर में ऋषि बोधोत्सव

ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष्य मे हुए यज्ञ का एक दृश्य। यज्ञ के पुरोहित प० अयोध्या प्रसाद शास्त्री और यजमान कालेज के प्राचार्य श्री रघुनाथ मेहता बने। यज्ञ के पश्चात् प० खुशीराम जी महोपदेशक का प्रवचन और प्रो० बलदेव शरण नारग के मधुर भजन हुए।

ऋषि बोधोत्सव के पश्चात् ऋषिलगर हुआ जिसमे डी० ए० वी० कालेज के प्रध्यापको, छात्रो तथा नगर के गण्यमान्य जनो ने अत्यन्त प्रीतिपूर्वक भोजन किया।

मानवती आर्य कन्या उच्च विद्यालय

मानवती उच्च कन्या विद्यालय के पारितोषिक वितरण समारोह मे बाँए से—श्री अमीर चन्द्र जी मक्कड एम० एल० ए० आर श्रीमती मक्कड, मुख्याध्यापिका कु० विजया, श्री एम० एस० वर्मा एस० डी० एम०

माता वीरांवाली जी

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा के पूर्व मैनेजिंग ट्रस्टी श्री जी० आर० मेहता [स्वर्गीय] की पत्नी श्रीमती वीरावाली जी प्रतिवर्ष टकारा आती है और पर्याप्त राशि एकत्रित कर दान मे देती है। इस बार भी उन्होने 11 हजार रु० टकारा ट्रस्ट को दान दिया।

म० वेदभिक्षु जयन्ती

नई दिल्ली। दयानन्द सस्थान और हिन्दू रक्षा समिति के सस्थापक स्वर्गीय महात्मा वेद भिक्षु जी का 57 वा जन्म दिवस वेद मन्दिर (ईब्राहीमपुर गाव) मे 14 मार्च से 17 मार्च तक मनाया जायेगा। समारोह 14 मार्च को प्रात 8 बजे यजुर्वेद पारायण यज्ञ से प्रारम्भ होगा। पूर्णाहुति 17 मार्च को प्रात. 10 बजे होगी। 16 मार्च को दोपहर बाद दो बजे कार्यकर्त्ताओ की बैठक और हिन्दू रक्षा सम्मेलन होगा। 17 मार्च को पूर्णाहुति के तुरन्त बाद साढे दस बजे महात्मा वेदभिक्षु जयन्ती सभा होगी जिसमे उन्हे श्रद्धाजलि भेट की जायेगी।

वेद मन्दिर पहुंचने के लिये अन्तर्राज्यीय बस टर्मिनल से १३४ और १६२ न० की बसे उपलब्ध है। आजादपुर से भी १३४ न० की बस मिलती है।

तपोवन मे वृहद् यज्ञ

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून मे वृहद् यज्ञ और साधना शिविर २२ से २६ अप्रैल तक सोत्साह मनाया जायेगा। यज्ञ महात्मा दयानन्द वानप्रस्थ के ब्रह्मत्व मे होगा, इस अवसर पर स्वामी दीक्षानन्द, स्वामी सत्यपति और पं० पृथ्वीराज शास्त्री आदि पधार रहे है। १६ से ३० जून तक स्वामी सत्यपति के सानिध्य मे योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन भी किया जा रहा है।

—देवदत्त बाली

—हरियाणा इंका अध्यक्ष और ससद सदस्य चौधरी सुल्तान सिंह के पोत्र चिरजीव अमर जीत के जन्म दिवस पर उनके घर पर आर्य समाज शान्ति नगर सोनीपत के मन्त्री श्री हरिचन्द स्नेही ने यज्ञ करवाया। नगर के गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

यू० १०३/१०८ लायसेंस टु पोस्ट विदाउट प्रीपेमेन्ट
रजिस्ट्रशन नं० आर० एन० आई० ११६३/७२ डी० सी० (४०६)

जाना तेरी गली में

टकारा मे ऋषिबोधोत्सव की शोभायात्रा ऋषि जन्मस्थली वाली गली से गुजर रही है।

खूंटी (रांची) मे स्वमी श्रद्धानन्द सेवाश्रम

खूंटी [रांची] के स्वामी श्रद्धानन्द सेवाश्रम मे डी० ए० वी० कालिज कमेटी के प्रधान प्रो० वेदव्यास जी, सगठन सचिव श्री दरबारी लाल जी, अन्य अधिकारीगण तथा आश्रम के छात्र और अध्यापक

पादरी द्वारा धोखाधड़ी

केन्द्रीय जाच ब्यूरो द्वारा एक पादरी और तेरह अन्य व्यक्तियों पर भारतीय राज्य व्यापार निगम से करोड़ों रुपयो की कथित धोखाधडी का एक मामला दर्ज किया गया है। मद्रास स्थित सेंट ऐंथोनी गिल्ड के फादर इग्नेशियस गिल्ड की वल्लापुरम शाखा के प्रबधक अब्दुल कादिर तथा बारह अन्य व्यक्तियो पर आरोप है कि उन्होंने केरल के विभिन्न इलाकों मे 25000 मीट्रिक टन आयातित सीमेंट कालाबाजार में बेच दिया।

सी० बी० आई० के अनुसार फादर इग्नेशियस ने जुलाई 1983 मे नई दिल्ली स्थित राज्य व्यापार निगम के कार्यालय में 2700 मीट्रिक टन आयातित सीमेंट का आवेदन किया। आवेदन पत्र में उन्होंने कहा था कि यह सीमेंट गरीबो के लिए 300 मकान बनाने के लिए चाहिए। आरोप है कि फादर इग्नेशियस तथा अब्दुल कादिर को राज्य व्यापार निगम से जो 25000 मीट्रिक टन सीमेंट मिला उसे उन लोगों ने विभिन्न स्थानो में गैर कानूनी ढंग से कालाबाजार म बेच दिया।

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स ७११७ १८ पहाड़ी धीरज, दिल्ली से छपवा कर कार्यालय, 'आर्य जगत्,' मन्दिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

साप्ताहिक पत्र ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

वाषक मूल्य-२० रुपये | विदेश में २० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४८, अंक १२, रविवार, २४ मार्च १९८५ | दूरभाष : ३४३७१८
आजीवन सदस्य-२०१ रु० | इस अक का मूल्य—५० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८५, दयानन्दाब्द १६० चैत्र शुक्ला ३, २०४२ वि०

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

महर्षि के चरणों मे

नतमस्तक सब आर्य जन, करते तुम्हें प्रणाम
अजर अमर है विश्व में, दयानन्द का नाम।
दयानन्द का नाम, महर्षि पदवी पाई
भूले-भटके जन-गण-मन को राह दिखाई।
गोरे, भारत नही छोडते राजी.राजी
अगर न देते योग, देश के आर्य समाजी।

—पद्मश्री काका हाथरसी

सिखों को भड़काने में पाक एजेंटों का हाथ

पाकिस्तानी एजेंट भारत से बाहर के सिख संगठनो में घुसपैठ कर उन्हे प्रभावित करने का प्रयास कर रहे हैं। लन्दन में हैवलोक रोड पर स्थित सिह सभा गुरुद्वारा पाकिस्तानियो का मुख्य निशाना है। भारत से वाहर यह गुरुद्वारा हरयदिर साहव जैसा महत्व रखता है। इसी गुरुद्वारे से जरनैलसिह भिण्डरावाले को १,००,००० पौड से भी अधिक राशि भेजी गई थी। पिछले २० वर्ष से प्रकाशित होने वाला पजाबी साप्ताहिक "देश परदेश", चौधरी जहूर इलाही द्वारा प्रकाशित ऊर्दू दैनिक 'वतन' और पाकिस्तान का एक दैनिक पत्र 'जग' ऐसे माध्यम है जिनसे लन्दन मे खालिस्तानी आन्दोलन के लिए प्रचार किया रहा है। इन सभी पत्रो का लन्दन के सिखो मे काफी प्रचार है।

लन्दन स्थित पाकिस्तानी दूतावास में अलग से एक खालिस्तान विभाग है जो गत ५ वर्ष से कार्यरत है। इस विभाग की देख-रेख ब्रिगेडियर पद के पाच उच्च अधिकारी करते है। ये अधिकारी लन्दन मे पाकिस्तान की ओर से खालिस्तान समर्थक गतिविधियों का संचालन करते है।

अव भारत स्थित पाकिस्तानी एजेण्ट खुले रूप मे भारतीय सिखों को अपने बाल और दाढी कटाकर "हिन्दुओ के हमलों से अपनी रक्षा के लिए" इस्लाम ग्रहण करने का प्रचार कर रहे है। सिखो को उनके अपने ही हित मे मुसलमान बनने का निमंत्रण देने वाले उत्तेजक विज्ञापन वम्वई के पत्र 'मिड डे' तथा वम्वई और कलकत्ता से प्रकाशित होने वाले उर्दू और अग्रेजी के पत्रों मे प्रकाशित भी हो चुके हैं।

जन० जिया के सैनिक शासन और उसके भारत स्थित एजेण्टो ने हिन्दू सिखो मे फूट डालने को अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया है।

आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह

आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह २४ मार्च, ८५ मध्यान्ह २ से ५ बजे तक श्री रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता मे मनाया जाएगा। विधि राज्यमंत्री श्री हसराज भारद्वाज मुख्य अतिथि होगे। वक्ता होगे—आचार्य सुशील कुमार जैन मुनि, श्री सीताराम केसरी ससत्सदस्य, श्री रामचन्द्र बिकल संसत्सदस्य, श्री पं० शिवकुमार शास्त्री, डा० वाचस्पति उपाध्याय।

—सूर्यदेव महामंत्री, आर्य केन्द्रीय सभा, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

महात्मा हसराज विशेषांक

'आर्य जगत्' का आगामी विशेषाक महात्मा हसराज विशेषाक होगा जो अपूर्व सामग्री और सजधज के साथ २१ अप्रैल को प्रकाशित होगा। उसके लिए अभी से विज्ञापन भेजने की कृपा करें।

परामर्शदाता—अमर स्वामी सरस्वती सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

ईश्वर सिद्धि

(महर्षि दयानन्द सरस्वती के पूना प्रवचन से)

'ओम्' यह ईश्वर का सर्वोत्कृष्ट नाम है, क्योकि इसमे उसके सब गुणो का समावेश होता है।

प्रथम हमे ईश्वर की सिद्धि करनी चाहिए, उसके पश्चात् धर्म-प्रबन्ध का वर्णन करना योग्य है, क्योकि 'सति कुड्ये चित्रम्' इस न्याय से जब तक ईश्वर की सिद्धि नही होती, तब तक धर्म-व्याख्यान करने का अवकाश नही है।

स पर्यगाच्छक्रमकायमव्रण—
मस्नाविर शुद्धमपापविद्धम्।
कविर्मनीषी परिभू स्वयम्भूर्याथातथ्यतो-
र्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्य समाभ्य ॥

न तस्य कार्य करण च विद्यते
न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते।
परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते
स्वाभाविकी ज्ञानबलक्रिया च ॥

ये वाक्य कहकर स्वामीजी ने इनकी व्याख्या की और कहा—मूर्त्त देवताओ मे ये गुण नही लगते। इसलिये मूर्ति-पूजा निषिद्ध है। इस पर कोई ऐसी शका करते है कि रावणादिको के सदृश दुष्टो का पराभव करने के लिए, भक्तो की मुक्ति होने के अर्थ (ईश्वर को) अवतार लेना चाहिये। परन्तु ईश्वर सर्वशक्तिमान् है, इसमे अवतार की आवश्यकता दूर होती है, क्योकि इच्छामात्र से वह रावण (जैसो) का नाश कर सकता था। इसी प्रकार भक्तो को उपासना करने के लिये ईश्वर का कुछ आकार होना चाहिए, ऐसा भी बहुत से लोग कहते है। परन्तु यह कहना भी ठीक नही है, क्योकि शरीर-स्थित जो जीव है, वह भी आकार रहित है, यह सब कोई मानते है अर्थात् जैसे आकार न होते भी हम परस्पर एक-दूसरे को पहिचानते है और प्रत्यक्ष कभी न देखते हुये भी केवल गुणानुवादो से ही सद्भावना और पूज्य बुद्धि (अदृष्ट) मनुष्य के विषय मे रखते है, उसी प्रकार ईश्वर के सम्बन्ध मे नही हो सकता, यह कहना ठीक नही है। इसके सिवाय मन का आकार नही है, मन द्वारा परमेश्वर ग्राह्य है, उसे जडेन्द्रिय-ग्राह्यता लगाना यह अप्रयोजक है।

श्रीकृष्णजी एक भद्र पुरुष थे। उनका महाभारत मे उत्तम वर्णन किया हुआ है, परन्तु भागवत मे उन्हे सब प्रकार के दोष लगाकर दुर्गुणो का बाजार गर्म कर रखा है।

ईश्वर सर्वशक्तिमान् है। इस शक्ति का अर्थ क्या है? 'कर्तुमकर्तुमन्यथा कर्तुम्' ऐसी शक्ति से तात्पर्य नही है, किन्तु सर्वशक्तिमान् का अर्थ न्याय न छोडते हुए काम करने की शक्ति रखना, यही सर्वशक्तिमान् से तात्पर्य है। कोई-कोई कहते है कि ईश्वर ने अपना बेटा पाप-मोचनार्थ जगत् मे भेजा, कोई कहते है कि पैगम्बर को उपदेशार्थ भेजा, सो यह सब कुछ करने की परमेश्वर को कुछ भी आवश्यकता न थी, क्योकि वह सर्वशक्तिमान् है।

बल, ज्ञान और क्रिया ये सब शक्ति के प्रकार है। बल, ज्ञान और क्रिया अनन्त होकर स्वाभाविक भी है। ईश्वर का आदि कारण नही है। आदि कारण मानने पर अनवस्था प्रसंग आता है। निरीश्वरवाद की उत्पत्ति साख्यशास्त्र पर से हुई प्रतीत होती है, परन्तु साख्य-शास्त्रकार कपिल मुनि निरीश्वरवादी न थे। उनके सूत्रो का आधार लेकर कपिल निरीश्वरवादी थे ऐसा कोई-कोई कहते है, परन्तु उन सूत्रो का अर्थ बराबर नही किया जाता। वे सूत्र निम्नलिखित है—

ईश्वरासिद्धे
मुक्तबद्धयोरन्यतराभावान्न तत्सिद्धि।
उभयथाप्यसत्करत्वम्।
मुक्तात्मन प्रशसा उपासासिद्धस्य वा।
इत्यादि।

परन्तु सूत्रसाहचर्य से विचार करने पर ईश्वर एक ही है, दूसरा ईश्वर नही है, ऐसा भगवान् कपिल मानते थे, क्योकि 'पुरुष है' ऐसा उनका सिद्धान्त था। वही पुरुष सहस्र-शीर्षादि सूक्तो मे वर्णन किया हुआ है। उसी के सम्बन्ध से 'वेदाहमेत पुरुषं महान्तम्' इत्यादि कहा है।

प्रमाण बहुत प्रकार के है—प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द इत्यादि। भिन्न-भिन्न शास्त्रकार प्रमाणो की भिन्न सख्या मानते हैं।

मीमासा-शास्त्रकार जैमिनिजी दो प्रमाण मानते है। गौतम न्यायशास्त्रकार आठ, कोई-कोई अन्य न्याय-शास्त्रकार चार, पतजलि योग-शास्त्रकार तीन प्रमाण, साख्य-शास्त्रकार तीन, वेदान्त ने तो छः प्रमाण स्वीकार किये हैं। परन्तु भिन्न-भिन्न संख्या मानना, यह उस-उस शास्त्रकार के विषयानुरूप है। सारे प्रमाणो का अन्तर्भाव करके तीन प्रमाण अवशिष्ट रहते है—'प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द'।

इन तीन प्रमाणो की लापिका कर ईश्वरसिद्धि-विषयक प्रयत्न करते समय प्रत्यक्ष की लापिका करने के पूर्व अनुमान की लापिका करनी चाहिए, क्योकि प्रत्यक्ष का ज्ञान बहुत ही सकुचित और क्षुद्र है। एक व्यक्ति को इन्द्रियो द्वारा कितना ज्ञान हो सकता है? अर्थात् बहुत ही थोडा हो सकता है। इससे प्रत्यक्ष को एक ओर रखकर शास्त्रीय विषयो मे अनुमान प्रमाण ही विशेष गिना गया है। व्यवहार के लिए अनुमान आवश्यक है। अनुमान के बिना भविष्य के व्यवहारो के विषय मे हमारा जो दृढ निश्चय रहता है, वह निरर्थक होगा। कल सूर्य उदय होगा, यह प्रत्यक्ष नही, तथापि इस विषय मे किसी के मन मे तिलमात्र की शका नही होती। अब (इस) अनुमान के तीन प्रकार है—शेषवत्, पूर्ववत् और सामान्यतोदृष्ट।

पूर्ववत् अर्थात् कारण से कार्य का अनुमान, सामान्यतोदृष्ट—अर्थात् ससार मे जिस प्रकार की व्यवस्था दिखाई देती है उस पर से जो अनुमान होता है, वह।

इन तीनो अनुमानो की लापिका करने से ईश्वर-परमपुरुष-सनातन-ब्रह्म सब पदार्थो का बीज (है) ऐसा सिद्ध होता है। रचनारूपी कार्य दीखता है, इस पर से अनुमान होता है कि इस (सृष्टि) का रचने वाला अवश्य कोई है। पचभूतो की सृष्टि आप ही आप रची हुई नही है, क्योकि व्यवहार मे केवल घर का सामान विद्यमान होने ही से घर नही बन जाता, यह हमारा देखा हुआ अनुभव सर्वत्र है। साथ ही साथ (पच भूतो) का मिश्रण नियमित प्रमाण से विशिष्ट कार्य उत्पन्न होने की ही सुगमता के लिए कभी भी आप स्वय घटित नही होता। इससे स्पष्ट है कि सृष्टि की व्यवस्था जो हम देखते है, उसका उत्पादक और नियन्ता ऐसा कोई श्रेष्ठ पुरुष अवश्य होना चाहिए।

अब किसी को यह अपेक्षा लगे कि ईश्वर की सिद्धि में प्रत्यक्ष ही प्रमाण होना चाहिए, तो उसका विचार यूं है कि प्रत्यक्ष रीति से गुण का ज्ञान होता है। गुण का अधिकरण जो गुणी द्रव्य है उसका ज्ञान प्रत्यक्ष रीति से नही होता। इसी प्रकार ईश्वर सम्बन्धी गुण का ज्ञान चेतन और अचेतन सृष्टि द्वारा प्रत्यक्ष होता है। इसी पर से ईश्वर सम्बन्धी गुण का अधिकरण जो ईश्वर है, उसका ज्ञान होता है, ऐसा समझना चाहिए।

हिरण्यगर्भ समवर्तताग्रे
भूतस्य जात: पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवी द्यामुतेमा
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

हिरण्यगर्भ का अर्थ शालिग्राम की बटिया नही है, किन्तु हिरण्य अर्थात् ज्योति जिसके उदर मे है, वह ज्योतिरूप परमात्मा ऐसा अर्थ है। मूर्ति-पूजा का पागलपन लोगो मे फैला हुआ है। इसका क्या करना चाहिए? यह एक प्रकार की जबरदस्ती है। मूर्ति का आडम्बर जैनियो से हिन्दू लोगो ने लिया है।

यत्र नान्यत् पश्यति नान्यच्छृणोति
नान्यद् विजानाति स भूमा परमात्मा।

वह अमृत है और वही सब के उपासना करने योग्य है। उससे जो भिन्न है वह सब झूठा है, वह अपना आधार (मान्य) नही है।

प्रेषक—पुष्करलाल आर्य
सयोजक, वैदिक प्रचार समिति
१२१, काटन स्ट्रीट, कलकत्ता-७

आर्य समाजो के चुनाव

—आर्य समाज, नगी कला करनाल का चुनाव प० दुर्गा सिह आर्य तूफान की उपस्थिति मे हुआ जिसमे प्रधान श्री जवाहरलाल पवार, महामत्री श्री नरोत्तम देव आर्य और कोषाध्यक्ष श्री वीरेन्द्र सिंह चुने गये।

—स्त्री आर्य समाज जीन्द के चुनाव मे प्रधान श्रीमती मनोरमा देवी, मत्री श्रीमती सरला गोयल और कोषपाल श्रीमती कृष्णा नेहरू चुनी गयी।

—आर्य विद्यार्थी सभा, गुरुकुल, गौतम नगर, नई दिल्ली का वार्षिक चुनाव आचार्य हरिदेव जी अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ जिसमे प्रधान श्री धूमकेतु वेदार्थी, मत्री श्री धर्मेन्द्र कुमार उपाध्याय और कोषाध्यक्ष श्री पं० नरेन्द्र कुमार 'आलोक' चुने गये।

—आर्य समाज, आगरा नगर के वार्षिक चुनाव मे प्रधान श्री हरिगोपाल सिह, मत्री श्री ओम्प्रकाश गुप्त और कोषाध्यक्ष श्री मुन्ना लाल चुने गये।

सुभाषित

जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मतमतान्तर का विरुद्धवाद न छूटेगा, तब तक अन्योऽन्य को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और विशेष विद्वज्जन ईर्ष्या-द्वेष छोड़ सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना कराना चाहें, तो हमारे लिए यह बात असाध्य नहीं है। यह निश्चय है कि इन विद्वानों के विरोध ही ने सबको विरोध-जाल में फंसा रखा है। यदि ये लोग अपने प्रयोजन में न फंसकर सबके प्रयोजन को सिद्ध करना चाहें, तो अभी ऐक्यमत हो जायें। —ऋषि दयानन्द

(सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास की अनुभूमिका से)

सम्पादकीयम्

आर्य समाज को नया रूप दें

आर्य समाज को स्थापित हुए 110 वर्ष हो चुके है। इन 110 वर्षों मे आर्य समाज कहा से कहा पहुचा है, अगर इसकी तुलना अन्य धार्मिक सस्थाओ से करें तो आर्य समाज की प्रगति अभूतपूर्व दिखाई देगी। जहा आदोलन के रूप मे आर्य समाज अत्यन्त प्रभावशाली सिद्ध हुआ, वहा सस्था के रूप मे यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि सगठनात्मक दृष्टि से प्रजातत्र के आधार पर चलने वाली जैसी सुसगठित और सुसूत्रित आर्य समाज की संस्था है, वैसी शायद ही अन्य कोई मिले। एक शताब्दी से अधिक के काल में सामाजिक सुधार या शिक्षा के क्षेत्र मे, और राजनीतिक चेतना की दृष्टि से भी, जितना जन-जागरण आर्य समाज ने किया है, उतना कदाचित् और किसी सस्था ने नही किया। इस समय ससार भर मे लगभग पाच हजार आर्य समाजे होगी और लगभग 5 करोड पजीकृत आर्य समाजी होगे। परन्तु जब 'कृण्वन्तोविश्वमार्यम्' के वैदिक घोष के अनुसार विश्व के स्तर पर सोचने लगते है तो हमे अभी तक किये गये अपने सारे प्रयत्न न कुछ के बराबर प्रतीत होते है।

हरेक युग की अपनी अलग-अलग चुनौतिया होती हैं और जो सस्था उस युग की चुनौतियो का सामना करने मे समर्थ नही होती, वह सस्था समय पाकर लुप्त भी हो जती है। स्वतंत्रता-प्राप्ति से पूर्व देश के सामने सबसे बडी चुनौती विदेशी दासता से मुक्ति प्राप्ति करना थी। उस उद्देश्य की प्राप्ति मे जितना योग, अनुपात की दृष्टि से, आर्य समाज का है, इतना किसी अन्य संस्था का नही। राजनीतिक नेता या निहित स्वार्थों से घिरे इतिहास लेखक कुछ भी कहते रहे, किन्तु स्वय राष्ट्रीय महासभा काग्रेस का इतिहास लिखने वाले श्री पट्टाभि सीतारामैया यह उन्मुक्त भाव से स्वीकार कर गए है कि स्वाधीनता आदोलन मे काग्रेस के झण्डे के नीचे सत्याग्रह मे हिस्सा लेने वाले और जेलो मे जाने वाले लगभग 80% लोग आर्य समाजी विचारधारा से प्रभावित थे। अग्रेज लोग इसीलिए आर्य समाज को सदा विद्रोही और राजद्रोही सस्था समझते रहे। केवल अहिंसात्मक सत्याग्रह ही क्यो, हम तो यहा तक कहेगे कि क्रातिकारियो के रूप मे हिंसा के माध्यम से स्वराज्य प्राप्त करने के लिए देश की बलिवेदी पर सहर्ष अपने प्राणो की बलि चढ़ाने वाले नवयुवको मे भी अधिकतर आर्य समाजी ही थे। केसरी सिंह बारहठ और रामप्रसाद बिस्मिल से लेकर भगतसिंह तक इनकी सख्या बिखरी पडी है।

हम सदा से कहते आये है कि आर्य समाज की दो भुजाए है—एक वेद और दूसरी राष्ट्र। आर्य समाज अपने जन्मकाल से ही जितना महत्व वेद को देता आया है, उससे कम महत्व उसने कभी राष्ट्र को नही दिया। इसीलिए जैसी अनन्य निष्ठा आर्यसमाजियो की वेद के प्रति है, वैसी ही अनन्य निष्ठा राष्ट्र के प्रति भी है। राष्ट्र के प्रति आर्य समाज के द्वारा की गई कुर्बानी का एक सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि स्वतन्त्रता-सघर्ष मे जूझने वाले जहा अन्य लोग सत्ता-प्राप्ति के मोह मे फस गये, वहा आर्य समाज आज तक सस्था के रूप मे कभी अपनी उस कुर्बानी को भुनाने के लिए आगे नही आया। यह आर्य समाजियो की नि स्वार्थ देश भक्ति का ऐसा ज्वलत प्रमाण है, जो उनको सबसे अधिक नि.स्वार्थ राष्ट्र भक्तो की कोटि मे रखता है। जब किसी मुस्लिम नेता ने आर्य समाज के सम्बन्ध मे अपनी ओर से यह उद्गार प्रकट किया था—"आर्य समाजी विचारधारा मे न जाने ऐसी क्या विशेषता है कि आर्य समाज के सम्पर्क मे आते ही व्यक्ति राष्ट्रभक्त बन जाता है" तो उसने गलत नही कहा था। यह राष्ट्रभक्ति आर्य समाज को अपने प्रवर्तक ऋषिवर दयानन्द से विरासत मे मिली है। ब्राह्म समाज तथा प्रार्थना समाज आदि अपने समय की अन्य संस्थाओं के प्रति गुरुवर दयानन्द का यही तो आक्रोश था कि उनके मन मे राष्ट्रभक्ति की भावना बहुत न्यून है।

इस नाते से हम यह भी कहते आये है कि असाम्प्रदायिक सस्था सही मायनो मे कोई है तो केवल मात्र आर्य समाज ही है। क्योकि जहा अन्य धार्मिक सस्थाए अपनी धार्मिक साम्प्रदायिक सकीर्णताओ से ग्रस्त है, वहा राजनीतिक पार्टिया अपनी राजनीतिक साम्प्रदायिकता से ग्रस्त है। राजनीतिक दलो ने अपनी-अपनी पार्टियो को एक सम्प्रदाय का ही रूप तो दे रखा है। इसीलिए उनको अपने दल से भिन्न किसी अन्य राजनीतिक दल मे कोई भला आदमी नजर नही आता, और तब भी वे किसी न किसी तरह उसकी निन्दा करने का रास्ता ढूढ निकालते है। यह बात जहा विपक्षी दलो के सत्तारूढ दल के प्रति रवैये से प्रकट होती है, वहा सत्तारूढ दल द्वारा विपक्षी दलो के प्रति अपनाए गये रवैये से भी उतनी ही प्रकट होती है। जो लोग किसी भी व्यक्ति की योग्यता को अपनी पार्टी या अपने सम्प्रदाय की सदस्यता के पैमाने से नापते है, वे साप्रदायिक नही तो और क्या है?

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् विदेशी सत्ता के हट जाने पर अब चुनौतिया भी बदल गई है। पहले स्वराज्य प्राप्ति की चुनौती थी, अब सुराज्य प्राप्ति की चुनौती है। स्वराज्य प्राप्ति की चुनौती बहुत बडी थी। उसमे निपटने मे हमे लगभग पौन सदी लग गई। परन्तु सुराज्य प्राप्ति की चुनौती उससे भी कही बडी है। अब बीसवीं सदी समाप्ति की ओर अग्रसर है और इक्कीसवीं सदी की ओर हम आशा भरी नजरो से देख रहे है। 15 वर्ष की अवधि की स्वल्पता पर विचार करते है, तो स्वराज्य को सुराज्य मे बदलने की यह चुनौती और महत्वपूर्ण बन जाती है। अभी ही विज्ञान ने मनुष्य के मानसिक और भौतिक जीवन मे इतने परिवर्तन कर दिये है, तो अगली सदी मे ये परिवर्तन किस रूप मे होगे, यह नही कहा जा सकता। विज्ञान की उन वर्तमान और भावी चुनौतियो का सामना करने की तैयारी भी हमे अभी से करनी होगी।

जहा हम वैज्ञानिक चुनौती की बात करते है, वहा हम यह भी मानते है कि समस्त वैज्ञानिक उन्नति के मूल मे, जिसकी सबसे अधिक उपेक्षा हो रही है, वह है मनुष्य। औद्योगिक क्राति ने जहा बडे-बडे कारखानो के निर्माण को महत्व दिया है, वहा मनुष्य का निर्माण पिछड गया है। बडे बडे सपनो के चक्कर मे, समस्त उन्नति जिसके लिए की जा रही है, उस बेचारे मनुष्य को हम सर्वथा भूल ही गये है। राष्ट्र निर्माण की पहली शर्त मनुष्य निर्माण है और जिस सुराज्य का स्वप्न हम लेते है, उसके मूल मे इसी 'मनुष्य' को प्रतिष्ठापित करना चाहते है। विज्ञान धीरे-धीरे मनुष्य को भी मशीन बनाता जा रहा है। मनुष्य के दिमाग का स्थान कम्प्यूटर लेते जा रहे है और हार्दिक सवेदनाओ का स्थान मानसिक तनाव लेते जा रहे है। वैज्ञानिक उन्नति के साथ साथ मनुष्य के राग द्वेष भी बढते जा रहे है। शरीर, मन और बुद्धि से सन्तुलित मानव दुर्लभ होता जा रहा है।

हमे प्राचीन और अर्वाचीन का समन्वय कर ऐसे मनुष्य का निर्माण करना है जिसे विज्ञान केवल पशुता की ओर अग्रसर न कर सके, बल्कि उसके लिये देवत्व के द्वार खोल दे। मनुष्य के जितना निकट देवत्व है, उतना ही निकट पशुत्व भी है। इन दोनो सीमाओ के बीच मे मानव जीवन का प्रवाह दो तटो के बीच मे बहने वाली नदी के समान प्रवाहित होता रहता है। ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज के छठे नियम मे कहा है—"ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।" इस नियम से भी यह स्पष्ट है कि ससार के मूल मे मानव विद्यमान है। इसलिए मानव निर्माण आर्य समाज की पहली शर्त होनी चाहिए। इसके लिए आर्य समाज को किस तरह नया रूप दे—यह अगले अंक मे पढ़िए।

आर्य समाज स्थापना दिवस

—श्री रामसिंह, लेखक 'वेद रहस्य—

आर्य समाज विश्व व्यापी एक पजीकृत संस्था है जिसकी शाखायें देश विदेश मे सर्वत्र फैली हुई है। आर्य समाज के अकुरित होने की अपनी एक ऐतिहासिक कहानी है जिसका आर्य समाज स्थापना से गहरा सम्बध है।

जब शुद्ध चैतन्य नामधारी, अखण्ड ब्रह्मचारी, स्वामी दयानद सरस्वती के नाम से सन्यास धारण कर प्रज्ञा चक्षु स्वामी विरजानद दण्डी के आश्रम मे पहुचे और गुरु से अष्टाध्यायी के माध्यम से व्याकरण और वेदो का अध्ययन किया तो वेदज्ञ एवं ब्रह्मज्ञानी बने। गुरु की इच्छा पूर्ति मे अविद्या और पाखण्ड को दूर करने मे सलग्न हो गये और अपनी तर्क पूर्ण, अकाट्य युक्तियो से उन्होने धार्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय समस्यो की गुत्थियो का हल प्रस्तुत किया। क्रान्तिकारी प्रवचनो से उन्होन जनता को झकझोर कर रख दिया।

मार्ग शीर्ष विक्रमी सम्वत १९३१ की बात है कि स्वामी जी के व्याख्यानो से प्रभावित कुछ सज्जन बम्बई मे उसके पास आये और बोले कि आपके उपदेशो से लाभ उठाने के लिये किसी सस्था की स्थापना करना चाहते है। कृपया आप अपने श्री मुख से उसका नाम करण कर दीजिये। प्रेमियो की उत्साह भरी वाणी को सुन कुछ काल के लिये ध्यान मग्न हो गये और नेत्रो को खोलने के पश्चात बोले इस सस्था का नाम 'आर्य समाज' रखना उचित है। भक्तो ने स्वामी जी के प्रस्ताव को स्वीकार किया। उस वक्त २५ सत्सगियो के नाम लिखे गये, किन्तु किन्ही कारणो से आर्य समाज की स्थापना न हो सकी। हा उसका बीजोरोपण अवश्य हो गया।

स्वामी जी के बम्बई पुन: आगमन पर तथा कथित—आर्य समाज के नियम निर्माण करने का अधिकार सर्व सम्पति से राजमान्य राजेश्वर पानाचन्द आनंद पारिख को सौपा गया जिन्होने प्रारम्भ मे २८ नियम बनाये और आर्य समाज की स्थापना वैक्रमाब्द १९३१ चैत्र शुक्ला प्रतिपदा बुधवार तदनुसार ७ अप्रैल सन् १८७५ को सायकाल ५॥ बजे बम्बई नगर के गिर गाव मुहल्ले मे डॉ० मानिक चन्द की वाटिका मे हुई। उस समय सदस्य सख्या लगभग १०० थी। उसके प्रथम प्रधान भी गिरधारीलाल दयालदास कोठारी और मत्री श्री सेवक लाल कृष्ण दास जी चुने गये। स्वामी जी ने सदस्यो के आग्रह करने पर भी कोई पद नही लिया और केवल साधारण सदस्य ही बने रहे।

तत्पश्चात् अविभाजित भारत के पजाब प्रात के लाहौर नगर मे आर्य समाज की स्थापना के अवसर पर २८ नियमो का परिमार्जन कर १० नियम निश्चित किये गये जो वर्तमान मे नियम और उद्देश्य करके जाने जाते है।

आर्य समाजी दयानन्दी नही ?

"समस्त आर्य समाजी विक्रमी चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को *आर्य समाज स्थापना दिवस*" को पर्वोत्सवरूप मे मना कर अनुप्राणित होते है।

प्रश्न उठता है कि आर्य समाज की स्थापना दिवस क्यो ? क्या "आर्य समाज दयानन्दी नही ? स्वामी जी रचित सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ के अन्त मे दिए ५१ मन्तव्यामन्तव्य सिद्धात माने जाते हैं। क्या इससे भारतीय मतमतातरो की सूची मे आर्य समाज के नाम से एक नाम और जोड नही दिया गया ?

स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनकी आर्य समाज का प्रादुर्भाव उस समय हुआ जब हिन्दू इस्लामी सलतनत की जीणशीर्ण इमारत को ठोकरे लगा कर स्वय प्रबल सामर्थ्यवान अग्रेजो के पजे मे फसते आ रहे थे। ब्राह्मसमाज वेदो से अनभिज्ञ येन-केन प्रकारेण प्राचीन-आर्य धर्म का प्रचार करने के लिए प्रयास कर रहा था और ईसाई धर्म की भारत मे जड जम रही थी। श्री काली मोहन बनर्जी और प० नीलकण्ठ शास्त्री जैसे सस्कृत विद्वान् ईसाइत की शरण मे जा रहे थे और ईसायत का प्रचार कर रहे थे। पौराणिक रीति से दी गई संस्कृत-शिक्षा मसीही धर्म की वृद्धि को रोक न सकी। प्रोफेसर गोल्ड स्टकर जैसा यूरोपीय विद्वान् भारतीयो की दुर्दशा पर हिन्दू विद्वानो से अपील कर रहा था कि वे वेदों के पवित्र सन्दर्भों को एकत्र करके दुनिया को यह दिखला दे कि उनका धार्मिक विश्वास और विचार किसी दूसरे धर्म के नियमो और विचारो से कम नही है।

भ्रमोच्छेदन—स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज के नाम से किसी नये सम्प्रदाय या मत का प्रवर्तन नही किया वरन् ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्त ऋषि-महर्षि जिसे धर्म को मानते आये, उसी का प्रतिपादन किया। काल-चक्र से उस पर जो आवरण (पर्दा) पड गया था उसे उन्हें अपने सबल हाथो से हटा दिया और शाश्वत सत्य सनातन वैदिक धर्म की पुन दुन्दुभि बजाने के लिए वैदिक धर्म के वास्तविक सिद्धान्तो के अनुरूप अपना जीवन ढालने के लिये आर्य समाज की स्थापना की। यही आर्य समाज की उपयोगिता है।

रही बात 51 सिद्धान्तो की। ये तो स्वामी जी के कोई अपने सिद्धान्त नही है, बल्कि वेद विहित सिद्धान्त हैं। आर्य-समाज अथवा आर्यसमाजी वैदिक धर्मावलम्बी हैं, दयानन्दी नही। स्वामी दयानन्द को आर्य समाजी किसी नवीन धर्म का सस्थापक नही मानते बल्कि वैदिक-धर्म के मर्मो को जनता तक पहुचाने वाला एक प्रचारक समझते हैं।

वेद की दृष्टि मे मानवमात्र समान हैं। "शृण्वन्तु सर्वे अमृतस्य पुत्रा." कह कर मानव जाति को वेद ने 'अमृत पुत्र' की सज्ञा दी है। वेद धर्म केवल भारत के लिये नही, या संसार के किसी विशेष भूखण्ड के लिये नही, वह तो सभी देशो, सभी कालो और सभी जातियो के लिये है। धर्म की समीचीन परिभाषा यह है—

"यतोऽभ्युदय निःश्रेयससिद्धिः स धर्म." इसी परिभाषा का सिहनाद आर्य समाज के दीवाने करते रहते हैं और यदि इस धारणा को विश्व के मानव शुद्ध हृदय से अपना ले तो मानवता का सृजन होकर दानवता, साम्प्रदायिकता आदि बुराइयो का उन्मूलन हो जाय।

पता—१७ गाँधीनगर आगरा—३

"जलता देश"

—राधेश्याम 'आर्य'—

जलता है
भीषण ज्वालाओ से
यह भारत देश।
पूरब मे आसाम जल रहा
पश्चिम मे पजाब जल रहा,
अमर शहीदों का धूधूकर
अब सारा अरमान जल रहा,
गाधी के सपनो का जलता
देखो तत्व विशेष।

राजनीति की अधिक घिनौनी
अग्निशिखा मे
स्वार्थवाद की, अनाचार की,
महगाई की, दुराचार की,
बेकारी की, उग्रवाद की.
जामूसी और भ्रष्टाचार की
भीषण ज्वाला मे—
जलता आज स्वदेश।

द्वेष-ईर्ष्या फैल रहे हैं
आज मनुजता सिसक रही है
डाके चोरी-कत्ल
अपहरण-बलात्कार—
बने हैं लडको के खेल,
नहीं रही है
आज मनुज मे—
मानवता कुछ शेष।

दया-प्रेम निरुपाय खड हैं
परहित के अब पख झडे हैं
पशुवत हुआ मनुज जीवन है,
काप रहे गिरि-गह्वर सारे
खेत-बाग-खलिहान,
दानवता के कदम बढे हैं
वसुधा पर सविशेष।

मधुऋतु के इस
पुण्य पर्व पर आओ !
स्वार्थवाद की, दानवता की
होली आज जलाएं।
भारत मे हम
शान्ति-सुखो की, समरसता की,
समृद्धि की, शुचि ऐश्वर्यों की,
पावन गंग बहाए
उगे पुन: इस भारत भू से
विश्व-शान्ति का
अरुणाभामय
पावन-दिव्य-दिनेश ॥

पता—मुसाफिर खाना, सुलतानपुर

प्रान्तीय आर्य महिला सभा

प्रान्तीय आर्य महिला सभा, 3-सी/31 रोहतक रोड, नई दिल्ली, का वार्षिक चुनाव आर्य समाज, दीवान हाल मे वेदप्रिय सुशीला आनन्द की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। जिसमे प्रधाना सुश्री सरला मेहता। उपप्रधाना—सुशीला आनन्द, प्रेमशील, शकुन्तला आर्या, और शान्ति देवी, मलिक, महामन्त्रिणी—प्रकाश आर्या, सहमन्त्रिणी कृष्ण चड्ढा, उपमन्त्रिणी—शकुन्तला दीक्षित और चंद्रकला, कोषाध्यक्ष—तारा वैद और सहकोषाध्यक्ष—सत्य वैद, कृष्णा ठुकराल चुनी गयीं।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २१२०७/७१ रजि०न-

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम०ए० फाल्गुन ११, २०४६ वि०

वर्ष १७ अङ्क १५ ८. ७ मार्च, १९९० वार्षिक शुल्क २५) आजीवन शुल्क २५१) विदेश में ८ पौंड) एक प्रति ६० पै०

प्रेम-प्रसार का पर्व—होलिकोत्सव

—[illegible] शास्त्री [illegible]

●

संस्कृत में अग्नि में भुने हुए अर्द्ध-पक्व अन्न को "होलक" कहते हैं, हिन्दी का प्रचलित "होला" शब्द इसी का अपभ्रंश है। प्राचीन नवान्नेष्टि में नवागत अन्नके अन्नों के होम के कारण उसको "होलिकोत्सव" कहते थे।

एक समय राजा पृथ्वीराज चौहान ने अपने दरबार के राजकवि चन्द से पूछा कि हम लोगों में जो होली के त्योहार का प्रचार है, वह क्या है? हम सभ्य आर्य लोगों में ऐसे अनार्य महोत्सव का प्रचार क्योंकर हुआ कि आबाल-वृद्ध सभी उस दिन पागल से होकर बीभत्स रूप धारण करते तथा अनर्गल और कुत्सित वचनों को निर्लज्जतापूर्वक उच्चारण करते हैं। यह सुनकर कवि बोला—"राजन! इस महोत्सव की उत्पत्ति का विधान होली की पूजा विधि में पाया जाता है। फाल्गुन मास की पूर्णिमा में (होलिकोत्सव) होली का पूजन कहा गया है। उसमें लकड़ी और घास-फूस का बड़ा भारी ढेर लगाकर वेदमन्त्रों से विस्तार के साथ होलिका-दहन किया जाता है। इसी दिन हर महीने की पूर्णिमा के हिसाब से इष्टि (छोटा सा यज्ञ) भी होता है। इस कारण भद्रा रहित समय में होलिका-दहन होकर इष्टि यज्ञ भी हो जाता है। पूजन के बाद होली की भस्म शरीर पर लगाई जाती है।

होली के लिए प्रदोष अर्थात् सायंकाल व्यापिनी पूर्णिमा लेनी चाहिए और उसी रात्रि में भद्रारहित समय में होली प्रज्वलित करनी चाहिए। चन्द कवि आगे कहने लगे—फाल्गुन की पूर्णिमा के दिन जो मनुष्य चित्त को एकाग्र करके हिंडोले में झूलते हुए श्री गोविन्द पुरुषोत्तम का दर्शन करता है वह निश्चय ही बैकुण्ठ में जाता है। यह उत्सव होली होने के दूसरे दिन होता है। यदि पूर्णिमा की पिछली रात्रि में होली जलाई जाए तो यह उत्सव प्रतिपदा को होता है और इसी दिन अबीर गुलाल की फाग होती है। उपर्युक्त कारणों के अतिरिक्त इस फाल्गुनी पूर्णिमा के दिन चतुर्दश मनुष्यों में से एक मनु का भी जन्म है। इस कारण यह मन्वादि तिथि भी है। अतः उसके उपलक्ष्य में भी उत्सव मनाया जाता है। कितने ही शास्त्रकारों ने तो संवत् के प्रारम्भ एवं वसन्तागमन के निमित्त जो यज्ञ किया जाता है और जिसके द्वारा अग्नि के अधिदेव स्वरूप का पूजन होता है वही पूजन इस होलिका का माना है। इस कारण कोई कोई होलिका दहन को संवत् के प्रारम्भ में अग्निस्वरूप परमात्मा का पूजन मानते हैं।

वैदिक धर्मावलम्बियों में प्राचीन काल से यह प्रथा चली आती है कि नवीन वस्तुओं को देवों को समर्पण किए बिना अपने उपयोग में नहीं लाया जाता है। जिस प्रकार मानव देवों में ब्राह्मण वर्ण सर्वश्रेष्ठ है उसी प्रकार भौतिक देवों में अग्नि सर्वप्रधान है। वह विद्युत रूप से ब्रह्माण्ड में व्यापक है। देवयज्ञ का प्रधान साधन भौतिक अग्नि ही है। क्योंकि वह सब देवों का दूत है। वेद में उसको अनेक बार 'देवदूत' कहा गया है। वही सब देवों को होमे हुए द्रव्य पहुंचाता है। इसलिए यज्ञ के माध्यम से होलिकोत्सव पर नवागत अन्न सर्वप्रथम अग्नि के ही अर्पण किए जाते हैं और तदन्तर मानवदेव ब्राह्मण वर्ण के विद्वद जनों को भेंट करके अपने उपयोग में लाए जाते हैं। इसलिए अब तक भी जन साधारण में यह प्रथा प्रचलित है कि जब तक नवीन अन्नों को व फलों को पूजा के प्रयोग में न लाया जाए, तब तक

(शेष पृष्ठ २ पर)

'होली आयी ! होली आयी'

—राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ.प्र.)

●

आपस का हम प्रेम बढ़ाएं,
भेदभाव सब दूर भगाएं,
जाति-पाति के काले बादल-
इस धरती से दूर हटाएं,
यही सन्देशा है यह लायी।
होली आयी, होली आयी ॥

सुखी-समृद्ध हो जन-जीवन,
ऐश्वर्यों से पूरित भू-कण,
नई सफलता, समरसता से,
आह्लादित हो मानव-अभिमन,
जाग्रत, जग में, ज्योति जगायी।
होली आयी, होली आयी।

फैले धरती पर अपनापन,
विस्तृत हो शुचि प्यार अप्रमन,
दूर हटे इन महाशक्तियों--
का सब आपस का कडुवापन,
जगा रही युग की तरूणायी।
होली आयी, होली आयी।

इसके स्वागत में बसन्त नव,
हर्षित कोकिल करती कलरव,
नव आशा-अभिलाषाओं के--
निकल रहे डालों पर पल्लव,
प्रकृति वधू नव, गई सजायी।
होली आयी, होली आयी ॥

टंकारा यात्रा के कुछ खट्टे-मीठे संस्मरण

ऋषि दयानन्द और पटेल का गुजरात अब जाग रहा है

—प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु—

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट के मंत्री की प्रेरणा से मैं इस बार पुन टंकारा ऋषि मेले मे सम्मिलित हुआ। यह मेरी तीसरी टंकारा यात्रा थी। इस बार ट्रस्ट ने ऋषि मेले की रजत जयन्ती मनाई। मै यहा से अहमदाबाद पहुचा। प्राचार्य वेदव्रत जी अबोहर के चिरञ्जीव सजय भी मेरे साथ थे। अहमदाबाद पहुचकर सामान आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग मे रखकर हम साबरमती आश्रम देखने गये। यद्यपि इस आश्रम को देखने के लिए सैकडो व्यक्ति प्रतिदिन आते है परन्तु, आश्रम प्राणहीन है। गाधी जी के ऐतिहासिक चित्र, गाधी साहित्य व गाधी जी की कई महत्वपूर्ण वस्तुए देखने का तो अवसर मिलता है परन्तु वहा और कोई प्रेरणा व आकर्षण नही। कारण यह है कि गाधी जी के नाम लेवा तो अब राजभवनो व सत्ता की ओर देखते है।

अहमदाबाद का लौह पुरुष सरदार पटेल से विशेष सम्बन्ध रहा है परन्तु शासन की ओर से वहां उनकी प्रतिष्ठा के अनुरूप उनका कोई स्मारक नही। सरदार पटेल सग्रहालय का भी सब यात्रियो को पता नही होता। हम चाहते थे कि यह सग्रहालय देखते जावे परन्तु आर्यसमाज मे हमे बताया गया कि एक बजे एक विशेष बस टंकारा जावेगी। इस सुविधा के प्रलोभन मे हम सग्रहालय न जा सके। एक बजे कोई बस भी टंकारा न गई। यह निराधार जानकारी हमारे लिए कष्ट का कारण बनी।

एक परिवर्तन देखा——जब 1977 ई० मे मैं टंकारा गया था तब अहमदाबाद बस स्टैण्ड पर कोई टंकारा का नाम भी न जानता था। अपवाद रूप से ही दो एक व्यक्ति मुझे टंकारा का अता पता व मार्ग बता सके। इस बार बसो पर ऋषि मेले के विज्ञापन लगे देखे। राजकोट से टंकारा वाली बस मे भी बहुत भीड थी। बस का कण्डक्टर हमारी आकृति से ही पहचान गया कि हम ऋषि मेले पर जा रहे है। वह बोला, "आप महर्षि दयानन्द के मेले पर टंकारा जायेगे?"

उसके ये शब्द सुनकर लम्बी यात्रा की थकावट दूर हो गई। 1977 ई० मे जब गुजरात के यात्री टंकारा का मार्ग न बता सके तो मेरी आखो से अश्रु गिरने लगे। ऋषियो के सिरताज दयानन्द के प्रति ऐसी उदासीनता! उस कण्डक्टर ने स्थान रिक्त होने पर औरों को पीछे करके हमे बिठाया। निश्चय ही यह ट्रस्ट के लगातार प्रचार व यात्रियो के आने जाने का सुखद परिणाम है।

श्री रामनाथ सहगल गत दिनो दुर्घटना ग्रस्त हुए तथापि वह हमसे भी पहले टंकारा पहुचे हुए थे। इस बार यात्रियो के पुराने सब रिकार्ड टूट गये। अब वहा भोजनशाला का स्थान तग हो गया है। इसे खुला करना पडेगा। इससे भी आनन्द की बात यह है कि गुजरात के भाई अब भारी सख्या मे टंकारा आने लगे है। इससे भी बड़ी बात यह है कि गुजरात के आर्य समाज के पास सुशिक्षित लगनशील युवको की कमी नही। युवक भी है, युवतिया भी। ग्रामो व नगरो से सब प्रकार के भाई आए। मैंने सब समाजो के नाम नोट किए परन्तु वह कागज गुम हो गया है। जूनागढ, महसाणा, अहमदाबाद, भुजकच्छ, राजकोट, पोरबन्दर आदि सब जिलो के आयेजन आए। ध्रागध्रा व भुज के आर्य वीर दल की तो शान ही निराली थी।

शोभायात्रा—शोभा यात्रा का आकर्षण भुज के आर्य वीर, ध्रागध्रा के युवक व घाटकोपर आर्य समाज के विद्वान युवक पं० धर्मधर जी की मण्डली थी। पं० धर्मधर जी टंकारा उपदेशक विद्यालय की देन है। महाराणा प्रताप की धरती उदयपुर मे जन्मा यह सुकवि आर्यवीर इसी लगन से कार्यरत रहा तो एक दिन आर्य समाज का गौरव बनेगा।

उनके पीछे-पीछे पजाब, गुजरात, महाराष्ट्र के आर्य राजस्थानी गीत झूम-२ कर गा रहे थे। नगर कीर्तन के चित्र दूरदर्शन वालो ने भी लिये। इस बार भीड के कारण सब जन ऋषि की जन्म स्थली वाले भवन के अन्दर नही पहुच सके।

महाराष्ट्र का प्रदेश गुजरात का पडोसी है, परन्तु वहा से यात्री कम आते है तथापि विदर्भ से श्री नामदेव जी शास्त्री व अन्य कई सज्जन पधारे। मध्य प्रदेश, बिहार व उ० प्र० के अति दूरस्थ स्थानो से श्रद्धालु पधारे। कहीं भिलाई, कहा जमशेदपुर, कहीं गोरखपुर और कहा अटारी, अमृतसर। हिमाचल से आर्य-गौरव कृष्णलाल जी पधारे नाईजरिया से भी एक सज्जन आये थे।

गुजरात में प्रचार—श्री बेल जी भाई प्रधान आर्य समाज भुज व उनके सहायक सेनापतियो आर्यवीर नरेन्द्र जी वा डा० बालजी भाई पटेल ने कहा "अब हम पूरा यत्न करेगे कि ऋषि मेले पर जाने वाले आर्यो की संख्या मे 50% गुजरात के आर्य हो।" ब्र० आर्य नरेश जी श्री स्वामी सत्यपति जी जैसे तपस्वी गुजरात मे दिन रात प्रचार मे जुटे हैं। नये-नये समाज बन रहे हैं। शिविर लग रहे हैं। आर्यवीर दल दृढ हो रहा है। ग्रामो के किसान हरियाणा व पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों की भाँति वैदिक धर्म के प्रचार मे आगे आने लगे है। यह दृश्य देख मेरे मुख से अनायास बाबा बस्तीराम की यह पक्ति निकलती थी—

लहराती है खेती दयानन्द की।

ओ३म् पताका सबल हाथों में—गत वर्ष भी मैंने लिखा था कि रक्तसाक्षी लेखराम व शूर शिरोमणि श्रद्धानन्द का लहू रग ला रहा है। गुजरात मे सरदार पटेल के सकल्प ने रग दिखाना आरम्भ कर दिया है। गुजरात मे सरदार पटेल की बिरादरी के लोग दृढ सैद्धान्तिक निष्ठा से महर्षि की ओ३म् की पावन पताका को लेकर आगे निकल रहे है। महसाणा के कुछ पटेल कार्यालय मे दान देने पहुचे तो मुझे अपने ग्रामो का निमन्त्रण देते हुए बोले—"हम अजमेर भी पहुचे थे। हमारे ग्राम के दलित भाई भी बडे श्रद्धालु आर्य है।"

एक सन्यासी निकला—आर्यजगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक, लाहौर उपदेशक विद्यालय के स्नातक, लौह पुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के शिष्य, मधुरभाषी, श्री प० जगदीश चन्द्र जी प्रवासी ने अपना सब कुछ ट्रस्ट को दान देकर इसी अवसर पर सन्यास की दीक्षा ली। वह गुजराती भाषी है। उनके द्वारा वैदिक धर्म के प्रचार मे बहुत वृद्धि होगी।

जामनगर आर्य समाज—टंकारा मे मैंने जामनगर आर्य समाज का साहित्य का स्टाल देखा। मन गद्गद् हो गया। श्री जयन्ती लाल जी ने बताया कि हमारा समाज इसे अपना बहुत महत्वपूर्ण अग मानता है। कई भाषाओ मे वहा सत्यार्थ प्रकाश अनूदित देखकर बहुत प्रसन्नता हुई। जामनगर समाज से बहुत से भाई-बहन थे। जामनगर ही नही, सारे गुजरात वासियो का यह सौभाग्य है कि उनके पास प्राध्यापक दयाल जी जैसे गवेषक और श्रद्धालु विद्वान् युवक हैं। प्रा० दयाल का जन्म टंकारा मे उसी गली मे हुआ जिसमे ऋषि दयानन्द जन्मे थे। आर्य समाज अहमदाबाद का भी अपना साहित्य बिक्री विभाग है।

ऋषि लगर का दृश्य—इस बार लगर का सारा व्यय तो ट्रस्ट ने किया परन्तु व्यवस्था आर्य समाज भुज ने की। यात्रियो की भारी भीड को सम्भालना कठिन तो था, परन्तु भुज वालो का प्रबध कमाल का था। श्री क्षितीश कुमार जी वेदालकार ने वहा अपने एक अनूठे व्याख्यान में कहा 'गुजरातियो को तो लूटने की कला आती है। पहले मुरलीधर मोहन ने लूटा, फिर मूलशंकर (ऋषि दयानन्द) ने हमारे हृदयो को लूटा, फिर मोहनदास करमचद गाधी ने लूटा और फिर सरदार पटेल ने हमारे दिल लूटे अब भुज के इन लुटेरो ने ऐसा लूटा है कि लुटने वालो को भी लुट कर आनन्द आ रहा है।

108 स्त्रिया पुरुष, युवक युवतिया ऋषि लगर की सेवा कर रहे थे। एक अदूरदर्शी भाई ने आर्यवीर नरेन्द्र से पूछा कि 'आप लोग ऐसे काम कर रहे है, लगर का यह ठेका कितने का लिया है?' श्री नरेन्द्र ने एक युवक की ओर सकेत करके कहा—'यह सज्जन आपको खरीद सकते है। ऐसे ही औरो के बारे मे जानिए।' भुज के शीर्षस्थ डा० बालजी भाई पटेल आर्य समाज के स्तम्भ है। उनकी पत्नी भामुबेन और डा० साहब स्वयं ऋषिलगर की जूठी थालियां सगर्व उठाते थे। कौन कहता है कि आर्यो मे श्रद्धा नही। रात के 12 बजे भी उन्होने भोजन दिया और प्रात चार बजे यात्री पहुचे तो भी सेवा की। श्री लधा भाई पटेल घाटकोपर बंबई वाले आर्य समाज के एक प्रमुख दानी और सिद्धान्त निष्ठ सज्जन है। इन्हे भी लंगर की सेवा मे हमने देखा। सेठ धनजी भाई वेलाणी गुजरात के एक प्रमुख आर्य है। आर्य बन विकास फार्म ट्रस्ट के मुख्य प्रबधक आप ही है। वे निजी जीप मे घूमते है, परन्तु आर्य समाज के गौरव के लिए उस पर 'आर्य बन विकास फार्म ट्रस्ट' लिखवाया है। वे वृद्ध अवस्था होते हुए भी भागदौड मे युवको से पीछे न थे। भुज के शीर्षस्थ सर्जन डा० योगेश जी उन लोगो मे से हैं जिनसे बात करने के लिए बडे बडो को पक्ति मे खडा होना पडता है। उनकी पत्नी रेखा बहिन और उनके सब भाई बहिने लगर मे दिन रात सेवा करते देखे गये। यह सब श्रद्धा का चमत्कार था।

लुडवा के कर्मठ आर्य पुरुष श्री अर्जुन भाई, कार्य समाज अमृत फार्म के नान जी भाई, श्री देवशकर पटेल आर्य समाज नखतराणा आदि। आर्य पुरुषो ने लगर मे भुज समाज का सहयोग किया। आर्य वीर दल भुज के श्री रवि पटेल, श्री प्रकाश कक्कड, श्री प्रकाश पटेल, श्री चन्दुलाल श्री शरद जी, किशोर जी, दिनेश जी, महेश जी, राजेन्द्र जी, अशोक जी, कीर्ति जी, केशवलाल जी पटेल, श्री विजय, श्री उदय, श्री सुधीर, श्री राजु पटेल आदि आर्य वीरों का उत्साह देखकर मन हर्षित होता था। देवियो मे शारदा जी, कमला बेन, सावित्री बेन, गीता बेन, नीति बेन, कल्पना पटेल, हीरा बेन, लक्ष्मी जी, अदम्य उत्साह से लगर सेवा मे लगी रही।

आर्य समाज टंकारा—आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात के प्रधान श्री मंगल सेन जी, मन्त्री श्री रतनचन्द जी भी सब

(शेष पृष्ठ 7 पर)

राज्य सत्ता पर आर्यसमाज अपना वर्चस्व स्थापित करें

—श्री विशनस्वरूप पटवारी—

धर्म निरपेक्षता के नारे को हमारे देश के बहुसंख्यक हिन्दू समाज ने जिस तीव्रता से ग्रहण किया है, उतनी तीव्रता से और किसी ने नही। हमारे देश के अल्पसंख्यक समाज के लोगो ने न तो इस नारे को अपनाया है और न ही वे इस पर चलते है।

वास्तव मे बटवारे के बाद इस देश मे जिस हिन्दुत्ववादी विचार धारा को अपनाया जाना चाहिए था वह नही अपनाई गई क्योकि उस समय जिन लोगो के हाथ मे सत्ता आई उनमे वैसी कोई भावना नही थी। यदि उस समय सरदार पटेल जैसे व्यक्ति के हाथ मे देश की बागडोर आई होती तो आज देश का नक्शा कुछ और ही होता किन्तु जब तक देश मे हिन्दुत्ववादी विचार धारा सत्ता पर अपना प्रभुत्व स्थापित नही कर पायेगी तब तक इस देश और हिन्दु समाज का उत्थान होना एक कल्पना मात्र बनी रहेगी।

हमारा इतिहास इस बात का साक्षी है कि देश मे शासक जिस मत या सम्प्रदाय का होता है, जनता उसी मत या सम्प्रदाय को सर्वश्रेष्ठ मान कर अपना लेती हैं। जैसे सम्राट अशोक ने जब बौद्ध मत स्वीकार कर लिया और उसका प्रभावी ढंग से प्रचार भी किया तो हमारे देश से नही, चीन, जापान तथा लका मे भी बौद्ध मत का प्रसार हुआ। यह कहना कि बौद्ध धर्म अपनी विशेषता के कारण फैला, गलत होगा। इसी प्रकार जब इस देश मे मुस्लिम शासक आये तो उनके शासनकाल मे इस्लाम मत का और उनकी भाषा के रूप में उर्दू तथा फारसी का विस्तार हुआ। बहुत सारे लोगो को तो तलवार के बल पर बलात् मुसलमान बनाया गया और कुछ लोग स्वेच्छा से ही डर के कारण मुसलमान बन गये।

अग्रेजो के शासन काल मे ईसाई मत का तथा अग्रेजी भाषा का विस्तार हुआ। ईसाई बनने के लिए भी अग्रेजो ने उस समय लोगो को मानसम्मान तथा अच्छी नौकरियो का प्रलोभन दिया और कुछ बड़े लोगो को तो उन्होने गौरागना मेम भी दी ताकि वे ईसाई मत स्वीकार कर ले। इस प्रकार जिस सम्प्रदाय या मत पर राज्य की मोहर लग जाती है वही सम्प्रदाय उस देश की जनता मे लोकप्रिय बन जाती है। किन्तु हमारे देश के बहुसख्यक बुद्धिजीवियो की समझ मे यह बात आज तक नही आइ कि जब तक हिन्दू धर्म देश का राज्य धर्म नही बनेगा तब तक इस देश मे हिन्दू हितो की रक्षा नही हो सकेगी उल्टे इनकी उपेक्षा ही होगी।

आर्य समाज की स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसी आशय से की थी कि यह देश आर्यो अर्थात् हिन्दुओ का है। समस्त विश्व को आर्य बनाने का एक स्वप्न देखा था जिसके लिए उन्होने "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का उद्घोष किया था। किन्तु क्या आर्य समाज इन 105 सालो मे महर्षि के उस स्वप्न को साकार कर सका? यह प्रश्न विचारणीय है। वैसे आर्य समाज ने समाज के उत्थान के लिए बहुत अच्छे अच्छे कार्य किए है और यदि आवश्यकता पडी है तो आन्दोलन भी करने से पीछे नही हटी है, किन्तु वास्तव मे आर्यसमाज को जो नीति अपनानी चाहिए थी वह नही अपनाई गई और इसी कारण वह अपने लक्ष्य की प्राप्ति मे विफल रहा।

जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है किसी भी विचारधारा, मत अथवा सम्प्रदाय का प्रचार व विस्तार तभी होता है जब उसे उस देश की राज सत्ता अपना लेती है। इसलिए आर्य समाज को अपनी विचारधारा और जीवन पद्धति का प्रचार करने के लिए इस देश की राज्य सत्ता को अपने अनुकूल बनाना अथवा उसे प्रभावित करना चाहिए था, किन्तु ऐसा नही हो सका। इसके विपरीत आर्य समाज के लोग विभिन्न राजनीतिक दलो मे बटकर बिखर गये और एक दूसरे का विरोध करने मे जुट गये।

अभी भी समय है जब आर्य समाज, सनातन धर्म तथा रा० स्व० सघ जैसे हिन्दुत्ववादी सगठन सगठित होकर अपने परस्पर वाद-विवादो से ऊपर उठकर अपने इस आर्य हिन्दू धर्म तथा देश की रक्षा के लिए इस देश की राज्य सत्ता पर अपना वर्चस्व स्थापित करे। यह कार्य प्रतिवर्ष आर्य समाज स्थापना दिवस और ऋषिबोधोत्सव मनाकर पूरा नही होगा। इसके लिए हम सभी हिन्दुत्ववादी लोगो को सगठित होकर प्रयास करना होगा ताकि हम देश की राज्य सत्ता को प्रभावित करने मे सफल हो सके। इसके लिए पहले आर्य समाज जैसे सबल सगठन को ही करनी होगी।

इस प्रकार के कार्य को आन्दोलनात्मकरूप देने का कार्य केवल युवा शक्ति ही कर सकती है। इससे मेरा अभिप्राय अनुभवी वृद्ध महानुभावो की उपेक्षा करना कदापि नही है। उनका अनुभव ही तो युवा शक्ति का मार्ग दर्शन करेगा ताकि वह इस कार्य को सफल बना सके। आज आर्य समाज मे युवा शक्ति का प्रायः अभाव ही दिखाई देता है। अधिकाश लोग जो सत्सगो आदि मे रूप से भाग लेते है, वे सभी 40 वर्ष की आयु से अधिक के ही लोग है। जब कि नई युवा शक्ति की इसमे सक्रिय भाग लेना अत्यन्त आवश्यक है ताकि देश और समाज का हित सरक्षण करने मे उनका योगदान मिल सके। आज की युवाशक्ति इस ओर से बिल्कुल उदासीन है उसे तो केवल अपने खेल कूद तथा आराम के अतिरिक्त अन्य कुछ दिखाई ही नही देता और न ही वह देश और समाज के प्रति चिन्तित है। हमारे इन प्रौढ आर्यजनो को चाहिए कि वे आर्य समाज की युवा शक्ति को जगाये, क्योकि युवा शक्ति ही देश और समाज का कायाकल्प कर सकती है।

जब हमारी युवा शक्ति को अपने देश और सस्कृति के अनुरूप शिक्षा नही दी जायेगी तो उससे यह अपेक्षा करना भी एक भूल ही होगी कि वे देश और समाज को चिन्ता करे। इसलिए आर्य समाज को तथा अन्य राष्ट्रवादी तत्वो को सोचना होगा कि आज हमारी नई पीढी यदि देश तथा धर्म के प्रति उपेक्षा की मनोवृत्ति अपना रही है, तो उसका बहुत बडा कारण उनकी गलत ढग से शिक्षा दीक्षा है।

इस समय तो यहा का हिन्दू बहुमत समाज अपने ही देश मे पराया और यतीम बन गया है। मैं आर्य समाज, रा० स्व० सघ तथा सनातन धर्म एव अन्य हिन्दुत्ववादी सगठनों के नेताओ से अपील करता हू कि अभी समय है जाग जाओ और सगठित होकर अग्रसर हो ताकि हिदू धर्म इस देश का राज्य धर्म का स्थान ग्रहण कर सके चाहे फिर हम सबको खुल कर राजनीति मे एक मंच पर ही क्यो न आना पडे। यदि इस देश के आर्य समाजी तथा अन्य आर्य हिंदू जन अपनी विचारधारा जीवित रखने के लिए एक मंच पर सगठित नही हुए तो हम महर्षि के समस्त विश्व को आर्य बनाने का घोष पूरा नही कर सकेगे। □

ऋषि दयानन्द और पटेल

... (पृष्ठ 6 का शेष)

कार्यों मे आगे आगे रहे। आर्य समाज टकारा मे ऋषि बोध पर्व 17 फरवरी को दोपहर बाद मनाया गया। बडा रोचक कार्यक्रम था। उपस्थिति भी बहुत थी। अब टकारा का समाज मन्दिर बहुत सुन्दर व खुला बन गया है। ऋषि बोध पर्व पर जामनगर के उत्साही आर्य नेता श्री खन्ना जी, सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान श्री सत्यानन्द जी मुजाल लुधियाना व महर्षि स्मारक ट्रस्ट की ओर से श्री ओकार नाथ जी ने टकारा समाज को अच्छी धन राशि दान मे दी। टकारा स्थानीय लोग आर्य समाज में भक्तिभाव से आगे आवे, यह हमारा यत्न होना चाहिए। अब भुज आर्य समाज भी टकारा मे प्रचार कार्य को बढाने के लिए एक योजना को मूर्त रूप देने वाला है।

आगे के लिए यत्न यही होना चाहिए कि जो यात्री जावें, वे टकारा के ऋषि मेले को प्रमुखता देवे। टकारा को हाथ लगाकर जो बसें द्वारिका, पोरबन्दर, सोमनाथ आदि के लिए भाग जाती हैं, वे तो कार्यक्रम मे बाधक ही सिद्ध होती हैं। भविष्य मे महसाणा या अहमदाबाद एक ही स्थान पर देहली की ओर के यात्रियो के उतरने की व्यवस्था हो। वहा से गुजरात सभा या ट्रस्ट की ओर से टकारा के लिए चार पाच स्पैशल बसो की व्यवस्था हो। गुजरात की बस सर्विस अच्छी नही। वहा बस से यात्रा करना बडा कष्ट प्रद है। बस स्टैण्ड की बजाय आर्य यात्री अहमदाबाद के समाज मन्दिर से ही बसे पकडे। सब यात्री इधर से एक दो निश्चित गाडियो मे ही जावे तो अधिक लाभ और सुविधा हो।

टकारा मे प्रवचनो, व्याख्यानो व भजनो का कार्यक्रम कुछ तो पूर्व निश्चित होना चाहिए। सब वहा जाकर बोलना व कुछ कहना चाहते हैं—यह एक स्वाभाविक सी बात है परन्तु यह मिशनरी भाव नही। एक उदाहरण देता हू। लेखराम नगर (कादिया) मे एक बार प० बुद्धदेव जी विद्यालंकार बोल रहे थे। एक वृद्ध सिख ने बीच मे खडे होकर कुछ आपत्ति कर दी। प० जी जैसा प्रकाण्ड विद्वान् अपनी जोर से उत्तर दे सकता था, परन्तु झट से ऋषि का दीवाना बुद्धदेव बोला, यदि आपका इस प्रकार से कुछ कहना है तो मैं इस विषय के जानकार महाशय तारा चन्द जी (स्वामी अमृतानन्द जी) को मच पर बुलाता हू। महाशय ताराचन्द जी एकदम खडे हो गये और प० जी की बात की पुष्टि मे सिख साहित्य के प्रमाणो की झडी लगा दी। श्रोता उनकी योग्यता से परिचित थे ही। इससे आर्य समाज का गौरव बढ़ा। मैं उस सभा मे मच पर उपस्थित था।

टकारा की गलियो मे कई प्रदेशो की बोली व भाषा के गीत गूजते थे तो एक समा बध जाती थी। एक दिन एक गुजराती मण्डली जोश से कुछ गाती जा रही थी। देहली से गई कुछ माताएं उनके आगे लग कर पजाबी का एक सुन्दर गीत गाने लगी। गुजराती पीछे बोलते तो थे परन्तु पंजाबी गीत बोलना उनके लिए कठिन था। मैंने उन्हे कहा—आप कोई गुजराती गीत ही गावें तो स्थानीय दृष्टि से अधिक लाभ दायक होगा।

बाद विवाद व भाषण प्रतियोगिता पर कुछ आपत्ति हुई। लोगो मे रोश था। यह रोष उचित था। कारण वह कि सिद्धान्त पक्ष की खिल्ली खूब उडाई गई, परन्तु सिद्धान्त पक्ष का मडन योग्यता से न किया गया, न ही विपक्ष के कथन की पुराने आर्यों की भाति धज्जिया उडाई गई। जामनगर, पोरबन्दर, बडौदा व टकारा के आचार्यो को यह कमी दूर करनी चाहिए।

सास्कृतिक कार्यक्रमो से अधिक मूल्यवान क्षितीश जी के और प्रा० दयाल जी के भाषण थे जो सुनने को कम मिले। आर्य युवक सम्मेलन शोर शराबे के कारण नीरस रहा।

टकारा जाने वाले जन यह सोचकर न जाया करें कि वहाँ आवास की सब सुविधाए सुलभ होगी। ट्रस्ट के प्रबन्ध की उत्तमता प्रशसनीय है, परन्तु यात्रियो का लक्ष्य सुविधा नही नहीं चाहिए। ट्रस्ट को वहा कुछ शौचालय और स्नानागार और बनवाने चाहिए ऋषि का गुजरात जागा है। सरदार पटेल के मानस पुत्र उठे हैं—यह देश का सौभाग्य है।

पता—वेदसदन, न्यू सूरज नगरी, अबोहर

पत्रों के दर्पण में

टंकारा रजत जयन्ती स्मारिका इतनी लोकप्रिय हुई कि हमारे पास स्टाक में उसकी एक भी प्रति नहीं बची। और प्रतियां चाहने वालों से क्षमा याचना। —सम्पादक

टंकारा—एक स्वप्न—एक यथार्थ

आपका ३ मार्च १९८५ के आर्य जगत मे 'सम्पादकीयम्' आखे खोलने वाला था। आपने टंकारा मे यथार्थ का उल्लेख किया और स्वप्न का भी। मेरा निवेदन है कि इस यथार्थ के निर्माण के लिए भी बहुत समय, बहुत परिश्रम बहुत बलिदान और अपार-धन राशि का व्यय हुआ है।' आपके स्वप्न के लिए आर्य समाज क्या कर सकेगा यह तो देखा जायगा। पर इन गरीबो और निर्धन ग्रामीण-जनो के बालको के प्रति, जिन्होने दुर्भाग्य से उपदेशक का कार्य सीखा है, आर्य समाजों का क्या व्यवहार है, इसका एक उदाहरण दे रहा हू। यह ऐसे ही एक बालक का पत्र है जिसने तीन वर्ष तक ऋषि ग्रंथो और शास्त्रो का अध्ययन किया है और पाच वर्ष तक आर्यसमाजो मे पुरोहित और उपदेशक का कार्य किया है। पत्र २ मार्च ८५ का है, एक अंश देखिए :—

"आचार्य जी, यह है समाज के मन्त्रियों का हाल, पुरोहित के लिए बनारस का शास्त्री, आचार्य, एम० ए० अथवा बी० ए० चाहिए। टकारा के लिए इन लोगो के दिल मे शायद कोई स्थान नही। मुझसे सहानुभूति का बर्ताव लेशमात्र भी नही किया जाता। कई बार मुझ से कहा गया कि कोई और काम करो, जैसे प्राइवेट नौकरी आदि, केवलमात्र पुरोहिताई करने से न तो रोटी मिलेगी और न ही आत्म सम्मान। इस लिए मै चाहूगा कि टकारा के विद्यालय का नाम **सेवक विद्यालय या गवार विद्यालय** रखा जाना चाहिए।

"किसी भी समाज के पुरोहित को आत्मसमान नही और विशेष रूप से टंकारा के स्नातकों का हाल बहुत खराब है। कहा जाता है कि टंकारा को कोई मान्यता नही, जब टंकारा की कोई मान्यता समाज के अधिकारी ही नही मानते तो निर्दोष बच्चो के जीवन से खिलवाड करना, समाज के और सभा के अधिकारियो को शोभा नही देता। वे लोग समाज के महान् शत्रु है जो दयानन्द के काम के लिए टकारा को दान देते है।"

इस बालक ने तो और भी बहुत कुछ लिखा है, पर इतना ही पर्याप्त है। आपके लेख और इस बालक के पत्र से कुछ स्वाभाविक प्रश्न उठते है जो उत्तर मागते है :—

i क्या गरीबो और निर्धन बालको के लड़के यदि उपदेशक बनेगे तो ससार को आर्य नही बनाया जा सकता—और अमीरो के लडके यदि उपदेशक बने तो संसार को आर्य बनाना अधिक सभव होगा?

ii यदि टकारा के विद्यार्थी स्तर हीन और अल्प शिक्षित है तो उनकी शिक्षा का प्रबन्ध और अच्छा होना चाहिए इसमे गरीबी और अमीरी का प्रश्न कहाँ है?

iii. आपने प्रशसात्मक रूप मे स्वामी रगनाथानन्द और स्वामी चिन्मयानन्द का उल्लेख किया है। मैने बम्बई पवाई झील के पास स्वामी चिन्मयानन्द का आश्रम स्वय अच्छी तरह देखा है। सजावट और सौन्दर्य पर धन का अपार व्यय हुआ है। पर पढाई टकारा-विद्यालय से आधी भी नही। हा दो आकर्षण है। अग्रेजी माध्यम है और कुछ विदेशी विद्यार्थी है। काशी मे व्याकरण तथा दर्शन के महान् विद्वान् है—उनका कोई सम्मान नही, पर अग्रेजी मे लघु सिद्धान्त कौमुदी और तर्क संग्रह की व्याख्या करने वाला भी परम-विद्वान् बन जाता है। टकारा के विद्यार्थियो को ही अंग्रेजी की योग्यता प्रदान कीजिए। अग्रेजी का सुनहरी मुलम्मा चढते ही किसी धर्मस्थान के सुनहरी कलश की तरह वे चमकने लगेंगे।

iv क्या आर्य समाज मे संस्कृत का सम्मान है? हिन्दू धर्म ब्राह्मण प्रधान है, सिख धर्म ज्ञानी प्रधान है, इसलाम मुल्ला प्रधान है, पर आर्य समाज लाला प्रधान है। क्या आज तक किसी आर्य-कालिज मे किसी संस्कृत के एम. ए. या आचार्य को प्रिंसिपल बनाया गया?

मेरा निवेदन यह है कि स्वप्न अवश्य देखिए और दिखाइए। पर यथार्थ को संवारिए, शायद स्वप्न से भी अधिक सुन्दर बन जाए। अपनी पत्नी श्यामा हो तो गोरी का स्वप्न नही देखा जाता है। मेरे निवेदन का अभिप्राय यह है कि स्वप्न का आधार यथार्थ को बनाने का प्रयत्न कीजिए।

—सत्यदेव विद्यालङ्कार, शान्ति सदन, १४५।४ सेण्ट्रल टाऊन, जालन्धर नगर।

[आचार्य श्री सत्यदेव विद्यालकार ने टकारा उपदेशक विद्यालय को निरन्तर १५ वर्ष तक अपने तप, त्याग और श्रम से सींचा है। किसी भी दृष्टि ने उसके वर्तमान रूप की अवहेलना हमारा उद्देश्य नही है। उस के वर्तमान रूप का विकास करके ही तो हम उस स्वप्न को पूरा करना चाहते है जिसका हमने ३ और १० मार्च के अग्रलेखों मे उल्लेख किया है। गरीबो के लड़के उपदेशक न बने, यह भी अभिप्राय नहीं है, अभिप्राय केवल इतना ही है कि जब तक समाज के तथाकथित उच्च वर्ग के लोग अपनी सन्तान को उपदेशक बनने के लिए प्रेरित नही करेंगे तब तक उनके मन में उपदेशकोके प्रति वह आदर और स्नेह उत्पन्न नही होगा जो उन्हें मिलना चाहिए।

—सम्पादक]

आर्यसमाज को मोड़ कौन दे?

टकारा स्मारिका मे आपका सम्पादकीय अत्यन्त सारगर्भित और अक्षरशः सत्य है। आपने जिस उदासीनता और उपेक्षा की चर्चा की है वह चिरकाल से चली आ रही है। विरोध करने वाले किसी न किसी रूप मे मीन-मेख निकालते ही रहते है। इससे आर्य समाज का ही अहित होता है। मैने इस विषय मे 'आर्य समाज को नया मोड कौन दे?' शीर्षक से एक पत्र आपको गत वर्ष १४ अक्टूबर को भेजा था। आपने वह नही छापा। आर्य समाज के हित मे यह आवश्यक है कि इस उदासीनता का अन्त हो। यह कौन करे? यह विषय त्यागी तपस्वी सन्यासियो का है। सर्वान्तर्यामी परमात्मा किसी ऐसे तपस्वी के मन मे प्रेरणा दे तो आर्यसमाज का कायापलट हो सकता है। यदि इस काम में सफलता मिल जावे तो आर्यसमाज संसार में अपूर्व और अजेय शक्ति बन कर खडा हो सकता है। —देवराज कोछड, ५१ कदम नगर, वडोदरा—३९०००२।

कौन सा कलेंडर अपनावें

२२ मार्च से भारतीय नव सवत्सर प्रारम्भ होने जा रहा है। भारतीय सवंत्सरो मे प्राय: हम लोग विक्रमी सवत् को स्वीकार करते है। और इसी के अनुसार गणना करते है। परन्तु वि० सवत् जो चन्द्रमा के अनुसार चलता है, कुछ अव्यावहारिक-सा लगता है। यानी यदि ५ तथा ६ जनवरी को अष्टमी पडे तो भारतीय कलेन्डर को व्यवहार मे लाने वाला व्यक्ति कोर्ट मे ५ जनवरी को पहुचे या ६ जनवरी को। इस बात का समाधान होना चाहिये। इसके विपरीत यदि १२ जनवरी को सप्तमी तथा अष्टमी दोनो एक हो जाएं तो कोई सप्तमी को पहुचे या अष्टमी को। साधारण व्यवहार मे तो दिन निकलते ही दिन माना जाता है और तारीख बदल जाती है।

तो क्या शक सम्वत् को स्वीकार कर ले? परन्तु ध्यान रहे कि शक सवत् भी विदेशी है क्योकि मध्य एशिया की शक जाति ने, जो भारत पर आक्रमण कर भारत को दास बना भारत मे ही बस गई, चलाया था। ऐसी स्थिति मे क्यो न ईसा सवत ही स्वीकार कर ले।

भारत की लोक सभा मे जब राष्ट्रीय केलेन्डर पर विचार चल रहा था तब पं० इन्द्र जी ने सृष्टि सवत् का प्रतिपादन किया था। परन्तु नेहरू जी ने स्वीकार नही किया। अतः आप ही बतावें कि हम कौन-से भारतीय केलेन्डर को, जो सौर वर्ष के अनुसार हो, स्वीकार करें।

—ओम्प्रकाश गुप्त, २३ वीर सावर कर ब्लाक, शकरपुर रोड, दिल्ली-९२

कांग्रेस का समर्थन उचित था

चुनावों मे काग्रेस का समर्थन करने की सलाह उचित व सामयिक थी। यह सही है कि आर्यसमाज कोई राजनीतिक संस्था नही है लेकिन चूंकि हमारे देश मे संसदीय प्रजातंत्रात्मक शासन की व्यवस्था है, इसलिए आर्यसमाज के प्रत्येक सदस्य को राजनीतिक क्रिया-कलाप मे भाग लेना ही पड़ेगा। उसे मतदान करना ही होगा। मतदान के समय इस बार कुछ विशेष परिस्थितिया उत्पन्न हो गयी थी। पजाब व कश्मीर की दशा तथा प्रधानमन्त्री की हत्या ऐसी समस्याए थी, जिनके निराकरण के लिए केन्द्र में एक शक्तिशाली सरकार का निर्माण होना आवश्यक था। ऐसी स्थिति मे काग्रेस को छोड कर अन्य कोई विकल्प नही था। सत्ता लोलुप विपक्ष, जो रचनात्मक विरोध के स्थान पर मात्र सत्ता हथियाने की ताक मे ही रहता है, क्या देश को स्थायी और सशक्त शासन देने की स्थिति मे था? क्या वर्तमान परिस्थितियो मे केन्द्र में साझा सरकार सफल हो सकती है? यदि सूक्ष्म दृष्टि से समस्त परिस्थितियों का विश्लेषण करें, तो काग्रेस को समर्थन देने की सलाह समयानुकूल और राष्ट्रहित में थी। —राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ० प्र०)

पंजाब केवल अकालियों का नहीं हिन्दुओं का भी है

आठ नजरबंद अकाली नेताओ को रिहा करके भारत सरकार ने अपनी ओर से पजाब समस्या के समाधान की दिशा मे पहल कर दी है। इस पहल का सर्वत्र स्वागत हुआ। पर श्री लोंगोवाल ने और अन्य अकाली नेताओ ने जो वक्तव्य दिए हैं वे समस्या के समाधान मे सहायक नही होगे। प्रधानमंत्री श्री राजीव गाधी ने स्पष्ट कर दिया है कि उग्रवाद का सख्ती से दमन किया जाएगा और अकाली नेताओ को स्पष्ट रूप से उग्रवाद की निन्दा करनी होगी। इसके साथ ही आनन्दपुर साहब प्रस्ताव की सविधान विरोधी और अलगाव की समर्थक धाराओ को जब तक नही हटाया जाता, तब तक उस प्रस्ताव पर कोई विचार नही किया जा सकता।

इस सन्दर्भ मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने एक वक्तव्य मे कहा है कि पजाब केवल अकालियो या सिखो का नही है, उसमे ४८ प्रतिशत हिन्दू भी रहते है। यदि बिहार और उत्तर प्रदेश से प्रतिवर्ष लाखो की सख्या मे आने वाले कृषि मजदूरो को भी शामिल कर लिया जाए तो पंजाब में हिन्दू ५२-५३ प्रतिशत बन जाते है। इसलिए पजाब की समस्या के समाधान के लिए बातचीत में उतने ही प्रतिनिधि हिन्दुओ के भी होने चाहिएं जितने सिखो के हों।

श्री शालवाले ने आगे कहा है कि अकालियों को समस्त सिखो का प्रतिनिधि मानना भी गलत है। नामधारी, निरंकारी, उदासी, निर्मले, निहग, रामगढ़िये भी सिख है और वे भी गुरवानी और गुरु ग्रथ साहिब का उतना ही आदर करते है जितना अकाली करते है। अन्तर केवल इतना ही है कि जहा अकाली (वे भी सब नही, उनका एक विशिष्ट वर्ग) साम्प्रदायिक उन्माद से ग्रस्त हैं, वहां अन्य सिख अपने आपको राष्ट्र का अभिन्न अग मानते है। इसलिए सिखो के प्रतिनिधियो मे गैर अकाली सिखो का भी शामिल किया जाए।

उन्होंने सरकार से आग्रह किया है कि इस नीति पर चलने से ही अकालियो की अनुचित मागो के निराकरण के लिए उचित वातावरण तैयार किया जा सकता है।

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के कर कमलों द्वारा स्थापित और आर्य प्रादेशिक सभा द्वारा संचालित

भारतवर्ष का पुराना और उत्तरी भारत का प्रमुख अनाथालय

कुशल प्रशासक शैक्षिक ज्ञाता, उदार हृदय प्रबन्धको की देखरेख में बालक-बालिकाओ के पालन-पोषण, शिक्षा आदि का उचित प्रबन्ध है।

आप सभी दानी महानुभाव इस पुनीत कार्य मे दान देकर पुण्य के भागी बने।— प्रि० पी० डी० चौधरी, मैनेजर आर्य अनाथालय, फिरोजपुर छावनी।

युवकों द्वारा वृद्ध सम्मेलन का आयोजन

आर्य समाज नैनीताल के 20 मई से होने वाले वार्षिकोत्सव के अवसर पर 25 मई को भारतीय सस्कृति की मर्यादा को स्थिर रखने हेतु नवयुवक मंडल मे वृद्ध सम्मेलन का आयोजन किया है। इस सम्मेलन की अध्यक्षता हेतु भारत के भूत पूर्व प्रधान मन्त्री मोरारजी भाई देसाई को जो 90 वर्ष की आयु पूरी कर चुके है, आमन्त्रित किया गया है। दादा धर्माधिकारी भी आमन्त्रित है। सम्मेलन का उद्घाटन श्री राम गोपाल शालवाले, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली करेंगे। किसी भी जाति/समुदाय के बुजुर्गों से कर बद्ध अनुरोध है जो अपनी आयु के 80 वर्ष 31 अप्रैल 1985 को पूर्व कर चुके हो, वे अपने पधारने एव अपने अनुभवो द्वारा मार्गदर्शन करने की स्वीकृति 20 मई 1985 तक आर्य समाज नैनीताल के मंत्री के पास भेजने की अनुकम्पा करे। उनके लाने तथा पहुचाने की व्यवस्था की जायेगी। नवयुवक मडल समाज मे जलपान एव प्रत्येक बुजुर्ग को एक ऊनी शाल द्वारा सम्मानित करने का आयोजन कर रहा है।

—सुबोध कुमार कसल, मन्त्री नैनीताल नागरिक युवक मडल

—आर्य समाज निराला नगर, लखनऊ का वार्षिकोत्सव 15 से 17 फरवरी तक सैक्टर एफ, मृत्यु जय पार्क मे सोत्साह मनाया गया। श्री मेधा जी शास्त्री द्वारा यज्ञ, श्री सत्य प्रकाश द्वारा भजनोपदेशक श्री शिवनारायण वेदपाठी द्वारा आर्य-सस्कृति पर प्रवचन हुए।—दुर्गाप्रसाद आर्य।

प्रेस कारीगरों की आवश्यकता

वैदिक मुद्रणालय, आर्य समाज, पुल-बंगश, नया मोहल्ला, आजाद मार्किट, दिल्ली को हिन्दी अंग्रेजी के कम्पाजिटर, बैन्डर प्रिंटिंग प्रेस के कारीगरो (मशीनमैन) की शीघ्र आवश्यकता है। दूरभाष—519247—जुगल किशोर

—आर्य समाज मालवीय नगर, नई दिल्ली के चुनाव मे प्रधान श्री धर्मवीर भसीन, महामन्त्री श्री डी० आर० जुनेजा, श्री वेदरत्न और श्री एल० आर० बत्रा और कोषाध्यक्ष श्री चुन्नीलाल वैद्य चुने गये।

आर्य समाज, रमेश नगर, नई दिल्ली के प्रधान—श्री नन्दलाल मन्त्री—श्री सुरेन्द्रपाल महाजन और कोषाध्यक्ष श्री मदन लाल बहल चुने गये।

—आर्य समाज, शिवाजी चौक, खडवा के तत्वावधान मे श्री रामचन्द्र आर्य (प्रधान आ० स०) की अध्यक्षता मे, माणकचन्द सोनी यहा के बजरग चौक पर आदर्श होली पर्व समारोह पूर्वक मनाया गया। उपदेश और भजन का भी आयोजन किया गया।—कैलाशचन्द पालीवाल

—आर्य समाज, दयानन्द मार्ग, निरपुडा, मेरठ के चुनाव मे प्रधान श्री रघुवीर सिंह मरपच, मत्री श्री धनकुमार आर्य विद्यावाचस्पति और कोषाध्यक्ष श्री सुखवीर सिंह चुने गये।

—आर्य समाज, दरियागज, नई दिल्ली के चुनाव मे प्रधान श्री बी० बी० सिहल और मत्री श्री वीरेन्द्र पाल त्यागी चुने गये। होली पर्व पर आचार्य पुरुषोत्तम एम० ए० की 3 से 6 मार्च तक वेद कथा हुई।

—आर्य समाज, नागदा (म० प्र०) के वार्षिक चुनाव मे सरक्षक श्री डी०एन० माखरीया प्रधान श्री सेवाराम आर्य, मत्री श्री जोधसिंह राठौड और कोषाध्यक्ष श्री नरेन्द्र देवडा चुने गये।

—आर्य समाज, मठपारा, दुर्ग (म० प्र०) के निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये प्रधान श्री गुलाबचन्द बसल, मत्री श्री चुन्नीलाल आर्य और कोषाध्यक्ष श्री रामलाल लूथरा।

—आर्य समाज, वार्ड-17, डी-६४ गोविंद नगर, कानपूर के चुनाव मे प्रधान श्री श्याम प्रकाश शास्त्री, मत्री श्री राम कृष्ण और कोषाध्यक्ष श्री कृपाधर चुने गये।

—आर्य समाज, सदर बाजार, दिल्ली मे 24 फरवरी को धर्मवीर प० लेखराम के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य मे कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमे श्री उत्तम चन्द 'शरर' श्री सत्यपाल वेदार, श्री व्याकुल आदि मे भाग लिया।

—आर्य समाज, आर्य समाज मार्ग, उज्जैन (म०प्र०) के प्रधान श्री चरण दास जुनेजा, मत्री श्री रामनिवास आर्य और कोषाध्यक्ष गोवर्धन लाल आर्य चुने गये।

—भारतीय सार्वजनिक विचार मंच दिल्ली से चुनाव मे प्रधान श्री अखिलेश भारती, महामंत्री श्री कमलकिशोर आर्य, और कोषाध्यक्ष श्री अशोक कुमार मधुर चुने गये।

—आर्य कन्या गुरुकुल नरेला का वार्षिकोत्सव 8-9 मार्च को हुआ जिसमे अनेक विद्वान पधारे,

—आर्यसमाज काचर पाडा जिला 24 परगना का वार्षिकोत्सव 23 से 26 जनवरी तक धूमधाम से मनाया गया,

—स्वामी मुनिश्वरानन्द जी (प्रि० ज्ञानचन्द जी एम ए०) का स्मृति दिवस दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार मे 11 फरवरी को मनाया गया।—आचार्य सत्य प्रिय शास्त्री

- आर्य समाज, टोहाना का वार्षिकोत्सव 29 से 31 मार्च तक सोत्साह मनाया जायेगा। इस अवसर पर सामवेद पारायण महायज्ञ होगा जिसमे वेदपाठ कन्या गुरुकुल कन्याये करेंगी और अनेक महात्मा सन्यासी भजनोपदेशक भाग लेंगे।

मानवता के महान्

(पृष्ठ 5 का शेष)

से लगे प्रतिबन्ध उनकी इस हुकार से एकदम ही धर्म विरुद्ध माने जाने लगे और देखते-ही-देखते समाप्त हो गये। वैदिक संस्कृति 'प्रथमा संस्कृति विश्ववारा' अर्थात् प्रथम विश्ववरणीय संस्कृति बनकर समस्त विश्व के क्षितिज पर अपना दिव्य प्रकाश उंडेलने लगी। महर्षि दयानन्द ने कहा कि धार्मिक मनुष्य का अर्थ रूढ़िग्रस्त और कूपमण्डूक नही, अपितु, ईश्वर की सत्य सृष्टि का उसकी सम्पूर्णता मे अनुसन्धान करने वाला, तदनुसार निरन्तर शुभकर्मों मे निरत, सर्व प्रकारक ज्ञान-विज्ञान का अध्येता और स्वयं को किसी एक खण्ड का नही, अपितु अथर्ववेद के शब्दों—'माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या'—के अनुसार समस्त पृथ्वी का पुत्र—विश्वमानव मानकर सारे संसार मे विचरण करने वाला मनुष्य है। यह भारतीय संस्कृति का आह्वान था 'समस्त विश्व के लोगो को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनने का, ठीक मार्क्स के आदर्श घोष 'ससार के मजदूरो' एक हो जाओ' के समानान्तर, उसका कुछ ऐसा विशिष्ट सुधरा हुआ विकल्प—'मजदूरो' के स्थान पर 'श्रेष्ठ मजदूरो', 'समाजवाद' के स्थान पर 'आर्य समाजवाद' 'द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद' के स्थान पर 'समन्वयात्मक भौतिक-आध्यात्मिकवाद,' निरे 'यथार्थवाद' के स्थान पर 'आदर्शोन्मुख यथार्थवाद।'

महर्षि दयानन्द के इस मानवतावादी सन्देश मे कही कोई देश, जाति, रंग, लिंग, भाषा और सम्प्रदाय का भेद नही है। आध्यात्मिक क्षेत्र में उन्होने मानव का भाई के रूप मे मानव और पिता के रूप में ईश्वर के साथ सीधा सम्बन्ध घोषित किया, बीच मे किसी दलाल या बिचौलिये की सत्ता को नही स्वीकारा। मानव-निर्माण की ठोस योजना के रूप मे उन्होंने हमे गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली दी। मानव न तो केवल शरीर है और न ही केवल आत्मा, बल्कि उन दोनो का संयोग है। अत उनके अनुसार आदर्श शिक्षा वह है, जो उसके शरीर को पुष्ट करे और आत्मा को भी। उसका मानसिक और बौद्धिक विकास भी इनके अंतर्गत ही समाहित हो जाता है। उनकी इस शिक्षा-प्रणाली मे सब बालको के लिए अनिवार्य शिक्षा का विधान है—नि शुल्क और एक समान सुविधाओ के साथ फिर अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार शिक्षा-प्राप्ति के पश्चात् सबके अपने-अपने गुण-कर्म स्वभाव के अनुसार विभिन्न वर्णो मे प्रवेश और तदनुसार उनकी आजीविका की व्यवस्था है। सामाजिक क्षेत्र मे वर्ण व्यवस्था के आधार पर ज्ञान, सत्ता और धन की शक्तियो का विकेन्द्रीयकरण है। न माता-पिता के वर्ण का उनकी सन्तानो पर कोई बन्धन है और न उनकी आर्थिक स्थिति का उनकी शिक्षा पर किञ्चित मात्र भी प्रभाव पड़ता है। महर्षि द्वारा प्रतिपादित व्यवस्था मे जीव के प्रथम चरण से ही समाजवाद और मानवतावाद के सम्मिलित रूप, यथायोग्य व्यवहार के सिद्धान्त पर आधृत 'आर्य समाजवाद' का आरम्भ हो जाता है। उनका स्पष्ट कथन है कि सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वरतना चाहिए। चाहे उच्चतम शिक्षा की बात हो और चाहे निजी तथा सामाजिक जीवन की उपलब्धियों की; चाहे जीवन-साथी के चुनाव का प्रश्न हो, चाहे आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत पालन करने का, महर्षि ने स्त्रियों और पुरुषो को पूर्णत. एक समान अधिकार किये है—कही कोई भेद नही किया है। सब मनुष्यो की शारीरिक और आत्मिक उन्नति का विधान करते हुए महर्षि दयानन्द ने व्यक्ति और समाज के सम्बन्धो का भी एक सन्तुलित आदर्श रूप आर्य समाज के दशम नियम मे प्रस्तुत किया है, जिसके अनुसार जहाँ तक व्यक्ति के निजी जीवन से सम्बन्धित और उस तक ही सीमित प्रभाव वाले कार्यो का सम्बन्ध है, वहा तक व्यक्ति को स्वतन्त्रतापूर्वक आचरण करने का अधिकार होना चाहिए, परन्तु उसके जिन कार्यों का प्रभाव समाज पर पडता है, उतने अंश में व्यक्ति को स्वेच्छा से समाज की अधीनता स्वीकार कर अनुशासन मे रहना चाहिए।

और महर्षि दयानन्द का यह मानवतावाद केवल सैद्धान्तिक विवेचन तक सीमित नहीं था। वह मात्र सुविधा जीवी निष्क्रिय विचारक नही थे। उन्होने अनवरत रूप से एक न्यायपूर्ण, सोषणविहीन, प्रगतिशील कल्याणकारी समाज की रचना के लिए सभी लोगों का आह्वान किया। उन्होने बुद्धिवादी धर्म के पक्ष मे रूढिवादी सम्प्रदायवाद, स्त्रियो के पक्ष मे पुरुषाधिनायकवाद, शोषित और दलित वर्गों के पक्ष मे मिथ्या जातिवाद और राष्ट्रीय स्वाधीनता के पक्ष मे ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध एक सुनियोजित आन्दोलन का समारम्भ कर दिया। सन् १८५७ मे भारत मे और सन् १८७९-८० में अफगानिस्तान में अग्रेजो के विरुद्ध जो स्वतन्त्रता सेनानी लड़े थे, उनकी महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में खुली प्रशंसा की। सुशिक्षित और चरित्रवान व्यक्तियों के नेतृत्व में एक चुनी हुई विश्व सरकार का और अच्छे-से-अच्छे भी विदेशी राज्य के श्रेष्ठ होने का महान् क्रान्तिकारी विचार उन्होने आज से एक सौ वर्ष पूर्व तब दिया, जबकि विश्व के किसी भी विचारक के स्वप्न में भी यह विचार नही आया था। निर्धनो और दलितो को सामाजिक सुरक्षा और न्याय दिलाने के विधान के साथ-साथ उन्होने गांधी जी के डांडी मार्च से ५५ वर्ष पूर्व सन् १८७५ ई० में प्रकाशित अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे लिखा कि नमक तथा गरीबों द्वारा जगल से काटी जाने वाली लकडी और घास पर जो कर एवं न्यायालयो मे जो अत्यधिक स्टाम्प-शुल्क लगता है, वह अत्यन्त अन्याय है। उपेक्षित किसानों को उन्होने उस समय राजाओं का भी राजा कह कर पुकारा था।

अपने मन्तव्यो को क्रियात्मक रूप देने के लिए उन्होने आर्य समाज के रूप मे अपना एक जीवन्त स्मारक खडा किया और योगी अरविन्द घोष के शब्दो मे उसमे अपनी जीवनी-शक्ति फूंक दी। अपने संस्थापक के आदर्शो को मूर्त रूप देने के लिए आर्य समाज ने देश में दलितो और शोषितो के पक्ष मे एक प्रबल आंदोलन का सूत्रपात किया। उसने जम्मू के मेघों, पंजाब के ओडो, सामान्यत: सारे उत्तर और विशेषत गढ़वाल तथा दक्षिण भारत मे केरल के दलित और पीडित वर्गो के उत्थान के कार्य मे सक्रिय भाग लिया और फलस्वरूप हिन्दू समाज द्वारा किये गये अपने सामाजिक बहिष्कार तक की मन्त्रणाओं को भोगा। इसी प्रकार नारी-जाति के उत्थान के लिए भी कन्याओं को जन्म लेते ही मार देने, उनके लालन-पालन मे उपदेश भाव वर्तने उन्हें घरों मे और पर्दे में बन्द करके अशिक्षित रखने, उनका अनमेल विवाह करने, विधवाओ पर बलात् आजीवन-वैधव्य लादने तथा पुरुषों द्वारा बहुविवाह रचाने आदि कुप्रथाओं के विरुद्ध घोर संघर्ष किया और महिलाओं के लिए बड़ी शिक्षण संस्थाएं स्थापित की। देश के पशु-धन और अनाथ बच्चो के रक्षण के लिए गोशालाएं और अनाथालय खोले। शिक्षा को जन-व्यापी बनाया और हानिकारक सामाजिक रूढियों को खण्ड-खण्ड कर दिया।

मानव-मात्र के लिए एक-समान कर्त्तव्य-कर्मो के विधायक और उनके एक-समान अधिकारो के उद्घोषक वाक्य महर्षि दयानन्द की रचनाओं में भरे पडे है। मानव व्यक्ति हो या समाज, उसका भौतिक पक्ष हो या आध्यात्मिक, उसकी धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक आदि सभी समस्याओ पर उन्होने अपने ग्रन्थों मे मानव-समाज का अत्युत्तम मार्ग दर्शन किया है।

[महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी के अवसर पर आकाशवाणी के दिल्ली केन्द्र से प्रसारित वार्ता]

प्रजातन्त्र का हृदय ठीक कार्य कर रहा है

विधान सभा के निर्वाचन मे अधिकांश राज्यो मे कॉंग्रेस (आई) को प्रबल लोकमत मिला, जो इस बात को प्रकट करता है कि देश की सामान्य जनता ने राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को ही इन चुनाव का भी मुख्य मुद्दा माना है। परन्तु साथ ही जिन राज्यो में जनता ने यह समझा कि कॉंग्रेस (आई) का स्थिर विकल्प है, वहाँ पुन विरोधी दलो को अवसर प्रदान किया। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि देश में प्रजातन्त्र और उसका हृदय ठीक स्थान पर है। इन चुनावो में पुन: यह दर्शाया कि विश्व में सबसे परिपक्व लोकतंत्र भारत मे ही है। साथ ही, यह भी सिद्ध कर दिया कि चुनावो मे जनमानस का स्थान ही सर्वोपरि होता है। जनता नए सिरे से देश का पुनर्निर्माण चाहती है। यह भी असंदिग्ध है।

पिछले लोक-सभा निर्वाचन के उपरान्त युवा प्रधान मंत्री माननीय राजीव गाँधी ने प्रशासनिक एव न्याय व्यवस्था का सुधार, काले धन पर आधारित समानान्तर अर्थव्यवस्था की समाप्ति, पड़ोसी देशों से सम्बन्ध सुधारने एवं विरोध पक्ष को आदर देने संबन्धी जो घोषणाएं की, उनका बहुत व्यापक प्रभाव हुआ। ३५ वर्षो मे दल-बदल रोकने का उपाय नही हो सका, अब एक मास के अन्दर ही दल विरोधी कानून के रूप में सामने आ गया, जिससे लोकतन्त्र की मर्यादा की रक्षा की जा सकेगी।

केन्द्र सरकार की उपरोक्त प्रगतिशील एवं जनहितकारी नीतियों ने जनमानस को प्रभावित किया और उसका परिणाम विधान सभा चुनाव परिणामों के रूप मे सामने आया है। नि:संदेह बहुमत ने पुन: श्री राजीव गाधी के नेतृत्व में विश्वास व्यक्त किया है—डा० आनन्द प्रकाश, उपमन्त्री—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली-२

सामाजिक जगत्

अमरशहीद पं० लेखराम के जीवन से प्रेरणा लें

'अमर शहीद प० लेखराम ने आत्म-बल से इस्लाम और इसाईयत की आंधी को केवल रोका ही नही बल्कि शुद्धि के द्वारा उन्हे वापिस अपने मे मिलाया।' आर्यसमाज शालीमार बाग के वार्षिकोत्सव पर बोलते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्य देव ने यह उद्गार व्यक्त किये। उन्होने स्वामी श्रद्धानन्द के शब्दो को दोहराया, जिन्होने प० लेखराम की हत्या पर कहा था—'शहीद के खून की एक एक बूंद से एक एक वीर उत्पन्न होगा जो आर्य धर्म की रक्षा व प्रसार मे अपना जीवन लगा देगा।'

आर्यसमाज शालीमार बाग मे प० लेखराम पुस्तकालय का उद्घाटन आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी ने किया तथा 1100/-रुपए का पुस्तकालय हेतु सात्विक दान दिया। इस अवसर पर आयोजित वेद सम्मेलन मे श्री स्वामी जगदीश्वरानद सरस्वती, प्रो० रत्न सिंह, डा० वाचस्पति उपाध्यक्ष, प० प्रेमचद श्रीधर तथा डा० आनन्द प्रकाश ने वेदो की महत्ता का प्रतिपादन किया। स्वामी विद्यानन्द सरस्वती का उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा उनकी पुस्तक 'तत्वज्ञान' पर पुरस्कार देने पर अभिनन्दन किया गया। स्वामी जी ने ध्वजारोहण किया। 2 फरवरी को चुन्नीलाल मेहता भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमे क्षेत्रीय विद्यालय के छात्र/छात्राओ ने भाग लिया। चल वैजयन्ती डी० ए० वी० स्कूल शालीमार बाग को प्रदान की गई। मेहता परिवार ने सभी बच्चो को पुरस्कार प्रदान किये। श्रीमती ईश्वरदेवी की अध्यक्षता मे आर्य महिला सम्मेलन भी सम्पन्न हुआ जिसमे श्रीमती प्रेमशील महेन्द्र, श्रीमती शकुन्तला दीक्षित और डा० वर्मा ने महिलाओं के उत्थान के लिए अपने विचार प्रस्तुत किए।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में प० सत्यदेव भारद्वाज वेदालकार का स्वागत

आर्य किला गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ नई दिल्ली मे नैरोबी के प्रसिद्ध उद्योगपति दानवीर श्री सत्यदेव भारद्वाज वेदालकार का 31 मार्च को भव्य स्वागत किया जायेगा जिसकी अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले करेगे। डा० सत्यव्रत सिद्धातालंकार, डा० सत्यकेतु विद्यालंकार, प० क्षितीश वेदालंकार, एव श्री ओम्प्रकाश त्यागी मुख्य वक्ता होगे। इस अवसर पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियो के खेल एवं कला प्रतियोगियो को पुरस्कृत किया जायेगा। —स्वामी शक्तिवेश

आर्य विरक्ताश्रम ज्वालापुर

आर्य विरक्त वानप्रस्थ-सन्यासाश्रम ज्वालापुर का वार्षिकोत्सव 15 से 18 अप्रैल तक मनाया जाएगा। इस उपलक्ष्य मे 10 अप्रैल से सामवेद परायण महायज्ञ का आयोजन होगा। प्रसिद्ध संन्यासी महात्मा व्याख्याता और भजनोपदेशक पधार रहे है। —जगदीश चन्द्र जौहरी

वेद भवन कुरुक्षेत्र

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हरियाणा के तत्वावधान मे वेदभवन कुरुक्षेत्र का प्रथम वार्षिकोत्सव 29 से 31 मार्च तक मनाया जायेगा जिसमे स्वामी सत्यप्रकाश, श्री अमर स्वामी, प० शान्ति प्रकाश, प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु आदि विद्वान पधार रहे है।

आर्यसमाज स्थापना दिवस

आर्य उप प्रतिनिधि सभा आगरा के तत्वावधान मे बेनीसिंह वैदिक पूर्व माध्यमिक विद्यालय में आर्य समाज स्थापना दिवस 24 मार्च को मनाया जायगा। इस अवसर पर डा० राज गोपालन और डा गगाराम आर्य अपने विचार व्यक्त करेगे। छात्र-छात्राओ का सास्कृतिक कार्यक्रम भी रखा गया है।

—कुवर बादाम सिह

शहीद दिवस

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् विक्रान्त नगर (बगीची पीर जी) की ओर से युवा वर्ष के शहीद दिवस उपलक्ष्य मे 23 मार्च को राम बाग रोड (किशनगज) मे सोत्साह मनाया जायेगा। इस उपलक्ष्य मे 24 मार्च को आर्य समाज प्रताप नगर के पीछे बाल भवन पार्क मे खेल कूद प्रतियोगिता का आयोजन प्रात 7 से 9 30 बजे होगा। —चन्द्रमोहन आर्य

होली मिलन

आर्य समाज, हनुमान रोड नई दिल्ली की ओर से क्लाइव स्क्वेयर काली बाडी मार्ग मे 7 मार्च को होली मिलन का कार्यक्रम हुआ जिसमे सरकारी अधिकारी और डा० राममनोहर लोहिया अस्पताल के डाक्टरो ने भी सोत्साह भाग लिया। प० रूप किशोर शास्त्री के उपदेश और स्वामी स्वरूपानन्द जी के मधुर भजनोपदेश हुए। इस क्षेत्र की एसोसिएशन के अध्यक्ष डा० एस० के० मिनोचा ने इस आयोजन के लिए आर्य समाज का धन्यवाद किया। —के० एल० भाटिया

आर्यसमाज कवारी का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज, कंवारी (हिसार) का वार्षिकोत्सव 1 से 3 मार्च तक सोत्साह मनाया गया जिसमे स्वामी ओमानन्द डा० सुदर्शन देव, प० सत्यप्रिय शास्त्री, प्रो० पी० के० सक्सेना आदि विद्वानों ने भाग लिया। 'सफल शराब बन्दी आदोलन' पुस्तक का विमोचन सेठ गोविन्दराम द्वारा किया गया। —अतर सिंह आर्य

नई यज्ञशाला का उद्घाटन

श्री मद्दयानन्द आर्य गुरुकुल महाविद्यालय होशगाबाद (म० प्र०) मे नवनिर्मित यज्ञशाला का उद्घाटन श्रीमती कौशल्या देवी (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ) ने किया। इस अवसर पर स्वामी आत्म देव, प० सत्य मित्र शास्त्री, प० शिव पूजन मिश्र, श्री सुरेन्द्र पाल आर्य, श्री विजय सिंह 'विजय, प० सुमन, श्री सेवक राम आर्य आदि उपस्थित थे। मुख्य अतिथि श्री माधुरी शरण अग्रवाल, प विश्वम्भर प्रसाद शर्मा और श्री गौरी शकर कौशल थे।

हरियाणा उपसभा द्वारा प्रचार कार्यक्रम

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा (करनाल) हरियाणा की ओर से निम्नलिखित जगहो पर वेद प्रचार का आयोजन किया गया है—18 फरवरी से कन्या गुरुकुल लोवाकला, 22 फरवरी से आर्य समाज गजन्नाना, 27 फरवरी से आर्य समाज, दिल्ली माजरा, 5 मार्च से आर्य समाज, अलाहर, 8 मार्च से आर्य समाज, सीवन, 11 मार्च से आर्य समाज, रंदौली 14 मार्च से आर्यसमाज ज्वालापुर, 15 मार्च से आर्य समाज, फरल, 15 मार्च से आर्य पाठशाला कमर्जापुर खेडी, 22 मार्च से आर्य समाज साच, 21 मार्च से आर्यसमाज टोहाना, 25 मार्च से वेद भवन कुरुक्षेत्र, 1 अप्रैल से आर्य समाज बस्तली, 22 अप्रैल से आर्यसमाज गुडगाव। —प्रो० वेद सुमन वेदालकार वेद प्रचार अधिष्ठाता

आर्यसमाज की स्थापना

आर्यसमाज, नारायणा विहार जी ब्लाक नई दिल्ली का 25 फरवरी को समाज भवन का उद्घाटन श्रीराम गोपाल वानप्रस्थ ने किया। इस अवसर पर अनेक शिक्षण सस्थाओ का व्यायाम प्रदर्शन हुआ, स्वामी विद्यानन्द जी ने ध्वजारोहण किया, स्वामी दीक्षानन्द जी व अन्य विद्वानो के उपदेश हुए।

गाजियाबाद जनपद मे प्रचार

दयानन्द वैदिक सन्यास आश्रम गाजियाबाद के प्राचार्य स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज ने अपनी प्रचार मण्डली के साथ गाजियाबाद जनपद के जलालाबाद सिरौरा तथा गढ़ी ग्रामो मे एक सप्ताह तक वेद प्रचार किया। गढी ग्राम मे एक नवीन आर्य समाज की स्थापना की गई। इस अवसर पर ग्राम के 22 नव युवको का यज्ञोपवीत सस्कार कराया गया। इस समय सन्यास आश्रम के द्वारा दो वेद प्रचार मण्डलियो के सहयोग से ग्रामीण क्षेत्रो मे उत्साह पूर्वक वेद प्रचार किया जा रहा है।

श्री चानन राम गोयल का निधन

मण्डी कालावाली के प्रसिद्ध आर्य कार्यकर्त्ता श्री चानन राम गोयल का 6 जनवरी को निधन हो गया। उनके सुपुत्र ने आर्य वानप्रस्थाश्रम गुरुकुल भटिण्डा के अधिष्ठाता श्री ओम्प्रकाश आर्य वानप्रस्थी के द्वारा अपने घर मे यज्ञ कराया और शोक सभा हुई। दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की गई। उनके सुपुत्र श्री अमर नाथ गोयल ने विभिन्न सस्थाओ को 801 रु० दान दिया।

आर्य समाज बक्सर

आर्य समाज, बक्सर, भोजपुर (बिहार) का वार्षिकोत्सव 30 मार्च से 6 अप्रैल तक सोत्साह मनाया जायेगा। जिसमे प० जयप्रकाश आर्य (हिसार) प० राजपति शास्त्री (गाजीपुर), श्री रामप्रसाद सिंह' प० शिवदेव बेधडक (एटा) कुवर .हिपाल सिंह (बलिया), स्वामी सत्यानन्द व अन्य विद्वान पधार रहे हैं।

—राजेश्वर प्रसाद आर्य

काशीराम स्मृति दिवस

आर्य समाज मन्दिर ट्रस्ट सोसाइटी फिरोजपुर शहर की ओर से आर्य समाज कालेज विभाग, फिरोजपुर शहर मे लाला काशीराम मल्होत्रा स्मृति दिवस 17 से 24 मार्च सोत्साह मनाया गया जिसमे ठाकुर विक्रमसिंह व श्री हरिदत्त भजनोपदेशक ने भाग लिया।

प्रशिक्षण शिविर

गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरि०) के वार्षिकोत्सव के अवसर पर उत्सव से पूर्व आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर 14 से 31 मार्च तक लगाया जा रहा है, जिसमे चुने हुए आर्य वीर ही भाग ले सकेगे, प्रशिक्षण कार्य डा० देवव्रत व्यायामाचार्य और निर्देशन श्री बाल दिवाकर हस करेगे। 27-28 मार्च को आर्य समाज के अधिकारियो का दो दिवसीय कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर का भी आयोजन किया गया है।

—आर्य समाज, बुढाना गेट, मेरठ की ओर से शर्मा स्मारक मैदान मे होली यज्ञ का आयोजन हुआ। तदुपरान्त बुढाना गेट, समाज मे होली मिलन हुआ। इस मिलन समारोह मे कांग्रेस के नवनिर्वाचित एम० एल० ए० श्री प० जयनारायण शर्मा ने भाग लिया। श्री शर्मा जी का प० इन्द्रराज, समाज के प्रधान श्री मनोहरलाल सर्राफ, केन्द्रीय आर्य समिति के प्रधान श्री मानसिंह वर्मा ने माल्यार्पण कर स्वागत किया। कार्यक्रम का सचालन श्री ओम्प्रकाश व श्री स्वराज्य चन्द्र ने किया। श्री हीरालाल व श्री सी० एल० सेठ के भजन हुए। —प० इन्द्रराज

—आर्य समाज, रामनगर, करनाल के प्रधान श्री प्रभु दयाल, मत्री श्री रामस्वरूप भाटिया और कोषाध्यक्ष श्रीकैलाश चन्द्र चुने गये।

यू० १०३/१०८ लायसेंस टु पोस्ट विदाउट प्रीपेमेन्ट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११६३/७२ डी० सी० (४०६)

महात्मा हंस[illegible] समारोह

अध्यक्ष स्वामी सत्य प्रकाश जी और मुख्य अतिथि केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली, डी० ए० वी० संस्थाओं, दिल्ली की समस्त आर्य संस्थाओं की ओर से त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज जी का जन्म दिवस समारोह २१ अप्रैल रविवार को प्रातः ९ से १२ बजे तक तालकटोरा गार्डन इण्डोर स्टेडियम में मनाया जायेगा। समारोह की अध्यक्षता आर्य समाज के सुप्रसिद्ध संन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश जी करेंगे। मुख्य अतिथि होंगे—श्री कृष्ण चन्द्र पन्त जी—केन्द्रीय शिक्षा मंत्री। समारोह में श्री रामगोपाल जी शालवाले, डा० एम० एल० सिंघवी, प्रो० रतन सिंह, पं० शिवकुमार शास्त्री, श्री क्षितीश वेदालंकार आदि महात्मा जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। समारोह का मुख्य आकर्षण हंसराज माडल स्कूल पंजाबी बाग एवं कुलाची हंसराज माडल स्कूल अशोक विहार की छात्र/छात्राओं का महात्मा हंसराज जी पर सांस्कृतिक कार्यक्रम होगा। मेरी समस्त आर्य जनता से प्रार्थना है कि उस दिन इस समारोह में अधिक से अधिक संख्या में पधारें। —रामनाथ सहगल, मंत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

तपोवन, देहरादून की यात्रा

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के वार्षिकोत्सव में शामिल होने के इच्छुक आर्यजनों के लिए स्पेशल बस की व्यवस्था की गई है। बस २४ अप्रैल को प्रातः ७ बजे आर्यसमाज करौल बाग से चलेगी और २८ अप्रैल की रात को वापिस दिल्ली पहुंचेगी। आने जाने का किराया ८० रु० होगा। यात्रियों को हरिद्वार, ऋषिकेश, देहरादून—सहस्रधारा, मसूरी देखने का अवसर भी मिलेगा।

मिनी विदेश यात्रा जो पहले २२ मार्च से होने वाली थी, अब २९ मार्च से होगी। आर्य समाज करोलबाग में २३ मार्च तक अपना पासपोर्ट देकर सीट बुक करवा सकते हैं। किराया—७८०० रु०।

—रामलाल मलिक, संयोजक फोन—५६७४५८,—५६२५१०

आर्यसमाज किदवई नगर, नई दिल्ली

भवन निर्माण के लिए अपील

आर्य समाज किदवई नगर, नई दिल्ली की स्थापना सन् १९६० में हुई थी। उसी समय एक अस्थायी भवन बना लिया था जिसमें यज्ञ आदि का कार्यक्रम होता है। अब यह भवन बहुत जीर्ण-शीर्ण हो चुका है। इसलिये अब इसका जीर्णोद्धार आवश्यक हो गया है। समाज मन्दिर के प्रागण में पर्याप्त खाली स्थान उपलब्ध है जिसमें कुछ और कमरे, शौचालय तथा स्नानागार बनाकर निम्नलिखित कार्यों के लिये उपयोग में लाने की योजना विचाराधीन है—इस योजना पर लगभग २५ हजार रुपये की लागत का अनुमान है—

(१) दलित वर्ग (हरिजन आदि) के लिये निःशुल्क प्रौढशिक्षा तथा उनके बच्चों की निःशुल्क रात्रिपाठशाला। (२) एक निःशुल्क होम्योपैथिक डिस्पेन्सरी। (३) पुस्तकालय तथा वाचनालय की स्थापना।

किदवई नगर में अधिकांश निम्न तथा मध्यम वर्ग के व्यक्ति रहते हैं। उनसे इतनी बड़ी धनराशि एकत्रित करना असम्भव है। अतः सभी आर्यबन्धुओं, धर्मप्रेमियों तथा मातृशक्ति से अपील और सविनय प्रार्थना है कि अधिक से अधिक धनराशि देकर इस पवित्र कार्य को पूरा करने में अपना सहयोग प्रदान करें। ड्राफ्ट, मनीआर्डर तथा चेक 'आर्य समाज किदवई नगर' ए २६८, किदवई नगर, नई दिल्ली-११००२३ के पते पर भेजें।

निवेदक—

श्री रामसिंह शर्मा, प्रधान — श्री राजेन्द्रनाथ मलिक, कोषाध्यक्ष — डा० मदनपाल वर्मा, मन्त्री

गुरुकुल कांगड़ी के लिए स्पेशल बसें

गुरुकुल कांगड़ी का वार्षिकोत्सव १२ से १४ अप्रैल १९८५ को हो रहा है। आर्य जनों की सुविधा के लिए दिल्ली से दो स्थानों से स्पेशल बसों की व्यवस्था की गई है—आर्य समाज ग्रेटर कैलाश और आर्य समाज, मन्दिर मार्ग। ११ अप्रैल की रात को १० बजे बसें रवाना होंगी और १४ अप्रैल की रात को वापिस दिल्ली पहुंचेंगी। यात्री ऋषिकेश, स्वर्गाश्रम आदि भी देखेंगे। किराया केवल ६५ रु०। गुड़गांव जिले के आर्य बन्धु धौलाकुआं से बस में बैठ सकेंगे। सम्पर्क करें—टंकारा प्रिंटिंग प्रेस, गुरुद्वारा रोड, गुड़गांव फोन—पी० पी० २६०७

—रामचन्द्र आर्य, प्रबंधक यात्रा, ४६६, भीमनगर, गुड़गांव।

मिलें बन्द होने से कर्मचारी परेशान

अहमदाबाद में १८ और शेष गुजरात में १० मिलें काफी समय से बन्द हैं। अहमदाबाद में बिड़ला की न्यू स्वदेशी मिल और मंजुश्री मिल भी बन्द है। भारत का सर्वप्रमुख उद्योगपति और अपनी धार्मिकता और सामाजिक कार्यों में उदारता पूर्वक दान देने वाला व्यक्ति भी मजदूरों के साथ इतनी हृदयहीनता का व्यवहार करेगा, यह आशा नहीं थी। ८ महीने से मिलें बन्द हैं। विचारे कर्मचारियों को भूखे मरने की नौबत आ गई है। हम गरीब मजदूर केन्द्रीय सरकार से भी फरियाद कर चुके हैं, पर गरीबों की कहीं सुनवाई नहीं होती। हमारी इतनी ही मांग है कि मिलों को चालू करो, या हमारे प्रोविडेण्ट फंड का पैसा हमें दे दो, जिससे अपने बच्चों और परिवार का पेट तो भर सकें। —आर्य वीर मेवाड़ी घनश्याम, न्यू स्वदेशी मिल, अहमदाबाद—३८००२५

आर्य समाज में सर्वप्रथम प्रशंसनीय प्रयास

चारों वेदों का उर्दू में अनुवाद

आर्य समाज विश्व में वेदों का प्रचार यदि करना चाहता है तो संसार की सब भाषाओं में वेदों की व्याख्या प्रकाशित करनी होगी। केवल हिन्दी से काम नहीं चल सकता। दाराशिकोह ने जब अरबी भाषा में उपनिषदों का अनुवाद किया तब अरब के देश के लोगों ने उपनिषदों का महत्व समझा। आर्य समाज इस दिशा में सौ वर्ष उदासीन रहा है।

पं० आशुराम जी आर्य पुरोहित ने चण्डीगढ में बैठकर चारों वेदों का उर्दू अनुवाद करके प्रकाशित करने का कार्य आरम्भ किया है। यजुर्वेद के उर्दू अनुवाद का एक भाग छप गया है। मैंने उसे देखा और आश्चर्य हुआ कि जो काम सार्वदेशिक सभा और परोपकारिणी सभा के करने का था, जो लाखों रुपया अपील में वेदों के नाम पर माँग लेता है वह न करे और अकेला व्यक्ति साहस करे।

अभी महर्षि नगर में विश्व वैदिक विद्वत् सम्मेलन हुआ। ३०० विद्वान पधारे। विचार हुआ कि विश्व में वेद प्रचार कैसे हो। मेरा प्रस्ताव पास हुआ कि – **सर्वासु देश भाषासु भवेद् व्याख्यानुना श्रुतेः**। संस्कृत भाषा में ही सम्मेलन हुआ। प्रस्ताव था—सब देश भाषाओं में वेद की व्याख्या हो।

भारतवर्ष में कई हजार आर्य समाजें हैं। प्रत्येक आर्य समाज का कर्त्तव्य है कि पं० आशुराम जी कृत चारों वेदों के उर्दू अनुवाद को जो-जो प्रति छपती जावे अपने आर्य समाज के लिए लेता जावे और ऋषि भक्त प्रकाशन में सहयोग देवें। इस से भी पं० आशुराम जी का साहस बना रह सकेगा। पं० आशुराम जी अन्य सब काम छोड़कर केवल इस काम पर ही लग जावें। काम लम्बा है। मनुष्य जीवन अल्प है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी जीवन के अन्त में यह इच्छा प्रकट करके चले गये कि वेदों की संसार की भाषाओं में व्याख्या हो। महर्षि भक्तो! ऋषि तर्पण करो यदि तुम ऋषि भक्त हो।

प्रार्थी—म० म० आचार्य विश्वश्रवा व्यास वेदाचार्य M A.

आर्य समाज की कृपा!

आर्य समाज सीताराम बाजार के मन्त्री श्री बाबू राम गुप्त के पास २३ फरवरी १९८५ को गोल डाकखाना नई दिल्ली में बैठा था। वे वहाँ असिस्टेंट पोस्टमास्टर हैं। अचानक उनके कमरे में उनके पोस्टमास्टर श्री सेवा सिंह आए, जिनका स्थानान्तरण उसी दिन बम्बई में हुआ था। उनके साथ नये पोस्ट-मास्टर भी थे। मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई जब दोनों पोस्ट-मास्टरों ने स्नेह-दृष्टि से गुप्त जी को देखा और श्री सेवासिंह ने मुस्कराते हुए उन्हें एक प्रशंसा-पत्र दिया जिसमें अ० पो० मास्टर के तौर पर उनके निष्ठापूर्वक कार्य की सुन्दर शब्दों में सराहना की गई थी।

मैंने उस पत्र को पढा और गुप्त जी को बधाई दी। उनका केवल यही कहना था कि 'यह सब आर्य समाज की कृपा है; उस मां की ही यह एक शिक्षा है कि अपने कर्तव्य का पालन धर्म समझ कर जी-जान से करो।'

—ओम्प्रकाश प्रिंसिपल

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स ७११७ १८ पहाड़ी धीरज, दिल्ली से छपवा कर कार्यालय, 'आर्य जगत्,' मन्दिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य-२५ रुपये | विदेश में ३० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४८, अंक १५-१७, रविवार, २१ अप्रैल, १९८५ | दूरभाष : ३४३७१८

आजीवन सदस्य-२५१ रु० | इस अंक का मूल्य—दो रुपये | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८५, दयानन्दाब्द १६० | वैशाख शुक्ला १, २०४२ वि०

महात्मा हंसराज विशेषांक
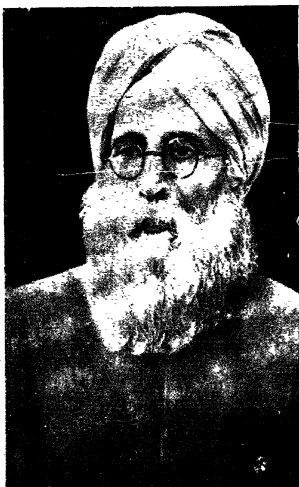
Smt. Rajeshwari Tandon
Social Secretary to PM

No 1 (10) 85-PMP I
प्रधान मंत्री कार्यालय
नई दिल्ली-110011
PRIME MINISTER'S OFFICE
NEW DELHI-110011
March 30, 1985

Dear Shri Sehgal,

The Prime Minister Shri Rajiv Gandhi sends his good wishes to the Arya Pradeshik Pratinidhi Sabha and the D. A. V. College Trust and Management Society on the occasion of the celebration of Mahatma Hans Raj Birthday at New Delhi on 21st April, 1985.

Yours sincerely,
(Rajeshwari Tandon)

Shri Ram Nath Sehgal
General Secretary
Arya Pradeshik Pratinidhi Sabha
Mandir Marg
New Delhi-110001

पौरुष के प्रभात

—प्रो० सारस्वत मोहन मनीषी—

दुखती हुई विश्व को सूनी आखो के काजल का।
हसराज है नाम असल में पावन गगाजल का।
तप के लिए जन्मे तुम तप के लिए मरे थे।
किसी कोण से देखो चन्दन कुन्दन शुद्ध खरे थे।
मानवता के मानसरोवर के इक नील कमल का।
हसराज है नाम असल में पावन गगाजल का।
अनहोनी घटनाओ को भी बना दिया था होनी।
किसमे उपमित करू, लगे है उपमा भी तो बौनी।
वेद-ऋचा या देश-भक्ति की मौलिक एक गजल का।
सराज है नाम असल मे पावन गंगाजल का।
जग ने तुम मे कटुता ढूढी तो मधु घट ही पाया।
जो भी प्यासा आया तो तुमको पनघट ही पाया।
झुलस रही मानवता की खातिर शीतल आँचल का।
हंसराज है नाम असल मे पावन गगाजल का।
हर साधना तुम्हारी सचमुच मे असिधारा ही थी।
किन्तु तुम्हारे लिए सदा हर लहर किनारा ही थी।
सोये पौरुष के प्रभात फिर से नूतन हलचल का।
हसराज है नाम असल में पावन गगाजल का।
त्याग तपस्या की प्रतिमा शिक्षा के देवालय थे।
पूरब पश्चिम के सगम तुम वैदिक विद्यालय थे।
निर्मल दर्पण अमृत वर्षण झरने की कलकल का।
हंसराज है नाम असल मे पावन गगाजल का।
सत्य, सरल, निष्ठा आशा पर्याय तुम्हारे लगते।
जहा देखते अकित अब अध्याय तुम्हारे लगते।
डी० ए० वी० उपवन के माली निर्धन के सबल का।
हसराज है नाम असल में पावन गंगाजल का।
शब्दकोष में सचमुच तुमने नए शब्द थे जोडे।
मरहम बने, समय के झेले अपने तन पर कोड़े।
कवियो की कविता, किसान की हंसती युवा फसल का।
हंसराज है नाम असल मे पावन गगाजल का।।

पुण्य स्मृति

—श्री यश—

जो लहरो से लड़-२ कर पतवार हाथ मे थामे।
जो वक्ष चीर सागर का उस तूफानी वेला मे।।
जब झझा के झोंके थे, उन्माद भरा था सागर।
मुह फाडे तकते थे जब लहरों के भूखे अजगर।।
जिसके अदम्य साहस ने डरकर मुंह जरा न मोडा।
जिसने अपनी नौका का पलभर भी साथ न छोड़ा।।
उस नाविक को तकती हैं मेरी वे आज निगाहे।
औ' अन्तस्तल से बरबस निकली पडती है आहें।।

आगामी अंक

'आर्य जगत्' का २८ अप्रैल का आगामी अक प्रकाशित नही होगा। कृपया पाठक नोट कर लें।—व्यवस्थापक

परामर्शदाता—अमर स्वामी सरस्वती | सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

नैया की पतवार थामने वाला

—स्व० महात्मा आनन्द स्वामी जी—

एक खेवट मिला डगमगाती नैया को, नैया के सवारो ने उसे नदी मे धकेल दिया। तब झुंझला के उन्होने देखा, नदी मे सागर की लहरे नैया को खा जाने के लिए बढ रही है। आतक फैल गया। घबराहट अकुलाने लगी। निराशा उभरने लगी। चिन्तित जाति सोचने लगी, 'अब क्या होगा!' तब दयानन्द की जोत से प्रकाश पा एक युवक ने इस निराशा को चीर नैया की पतवार थामने का निश्चय किया। इस निश्चय की पूर्ति मे उसे अपना जीवन बलिदान कर देना पडा।

महात्मा हसराज चाहते तो अन्य सांसारिक लोगो की तरह उच्च से उच्च पद प्राप्त कर लाखो की सम्पत्ति जुटा लेते। लेकिन जाति की दुरावस्था ने उन्हे बलिदान के मार्ग पर बढने के लिए प्रेरित किया। उन्होने बढता हुआ एक तूफान देखा और रुक न सके। कूद पडे। सारी आयु निर्धनता, तपस्या और त्याग मे बिताते हुए संसार के कल्याण के लिए धर्म, देश और जाति की सेवा का प्रण लिया। होश सम्भालने से लेकर अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक उन्होने हर श्वास के साथ देश से अज्ञानता को दूर करने का प्रयत्न किया। हिन्दू समाज को सुधारने और दुखी, भूकम्प, अकाल, दुर्भिक्ष, महामारी पीड़ितो की सेवा सहायता करने के लिए वह सदा तत्पर रहे। जीवन के 74 वर्षों मे से 58 वर्ष उन्होने परोपकार में ही बिताए। दयानन्द कालिज को सफल बनाने के लिए उन्होने 1885 मे अपना जीवन अर्पण किया और एक कौडी लिये बिना शीत, ग्रीष्म बीमारी दुख, गरीबी, कष्ट, विरोध की तनिक भी परवाह किये बिना उन्होने मृत्यु-पर्यन्त अपना प्रण निभाया।

उनकी नि स्वार्थ सेवाओ और निष्काम प्रयत्नो से उन्हे हर क्षेत्र मे पूर्ण सफलता मिली। उनके विरुद्ध कई षड्यन्त्र रचे गये, बीसियो लेख लिखे गये, झूठे दोष आरोपित किये गये, परन्तु वह अपने निश्चय पर स्थिर रहे। इस बीच उन्हे कई प्रलोभन दिये गये, देश के नेतृत्व का स्वर्ण जाल फैलाया गया। प्रबल राजनैतिक आन्दोलन के समय उन्हे कहा गया कि यदि आप इसमे शामिल हो जायेगे तो सारे देश के नेता बन जायेगे। तब महात्मा जी ने केवल इतना ही कहा, "मैं नीव मे पडने वाला पत्थर हू, रचनात्मक कार्य मे लगा हू और इसी मे लगा रहूगा।'

उनका सारा जीवन तप और त्याग का जीवन है। धन दौलत, सुख सम्पदा, भोग-ऐश्वर्य सब त्याग दिया। गरीबो को निमन्त्रण दिया। भाई द्वारा प्राप्त केवल चालीस रुपये मासिक पर गुजारा करते रहे। स्व-प्राप्त गरीबी मे दुख के दिन काटना सबसे कठोर तपस्या है। यक्ष के पूछने पर कि 'तप क्या है?' युधिष्ठर ने कहा था, तप. स्वधर्म वर्तित्वम् अपने कर्तव्य करते रहना ही तप है। दुख-सुख, रोग-अरोग, मान-अपमान, प्रसन्नता-अप्रसन्नता की अपेक्षा किये बिना जो कर्तव्य अपने कन्धे ले लिया, उसे निभाते जाना सच्चा तप है। महात्मा जी ने एक भाषण में कहा था, 'मनुष्य जीवन का एक ध्येय होना चाहिए. एक केन्द्र जहा पहुंच कर वह अपना जीवन कुर्बान कर सके, अपने धन-दौलत और बाल-बच्चो को सुविधा से छोड सके। एक स्थान होना चाहिए, जहा पहुच कर गर्व के साथ कह सके कि चाहे प्राण चले जाये, चाहे सब ओर नाश विनाश नाचने लगे तो भी वह लौटेगा नही, पीछे हटेगा नही। ऐसे स्थान पर ही मनुष्य का वास्तविक चरित्र और उसका असल मोल मालूम होता है।' यह शब्द महात्मा जी ही के मुख से शोभा देते हैं, जिन्होने जीवन का एक ध्येय मानकर उमर भर तपना मजूर किया।

त्याग की साक्षात मूर्ति, सरलता एवं सादगी का सजीव चित्र, निरभिमानता के आदर्श हसराज का जीवन अनुकरणीय है। रहने का एक छोटा-सा कमरा, लकडी का एक तख्तपोश, दो टूटी हुई कुर्सिया और बस। कपडे मोटे-मोटे शुद्ध स्वदेशी, जूता होशियारपुर का। सीधा सादा पाजामा बन्द गले का कोट, उबड़ खाबड सी पगडी —यह उनका वेश था। उन्नत विशाल मस्तक, श्वेत वर्ण, लम्बे चेहरे पर भव्य दाढी, ऐसे लगती थी मानो कोई प्राचीन काल का ऋषि हो। बातचीत मे केवल माधुर्य ही नही, आधिकता भी थी। नपे-तुले शब्द, एक अक्षर भी व्यर्थ न बोलते। सागर की तरह गम्भीर, हिमालय की तरह निश्चल और चन्द्रमा की तरह शान्त क्रोध पर उन्हे पूर्ण विजय प्राप्त थी पूर्ण सयमी।

बे-लगाव कितने थे, इसका एक ही उदाहरण है। 1885 से 1911 तक दयानन्द कालिज रूपी पौधे को वृक्ष बना उसके प्रिंसिपल पद को भी त्याग दिया और वेद-प्रचार तथा लोक सेवा की ओर ध्यान दिया। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का काम अपने हाथ मे लेकर वेद-प्रचार का क्षेत्र बहुत विस्तृत कर दिया। दुखी-पीडितो की सेवा मे दिन-रात एक कर भारत के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक दयानन्द का सन्देश पहुचा दिया और जब देखा कि सभा का काम भी अब सुचारु रूप से होने लगा है तो 1937 मे इसका प्रधान पद भी त्याग दिया।

महात्मा जी के जीवन का एक ही उद्देश्य था। ऋषि का मिशन सफल हो ताकि हिन्दू जाति मे नया जीवन आये, वह कुरीतियो और वहमों से बचे, एक ईश्वर की उपासक हो और पराधीनता की कडिया काट सके। इसके लिये उन्होने उपयुक्त साधन बरते। दयानन्द कालिज की नि.स्वार्थ एव निष्काम सेवा, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की स्थापना, महिला महाविद्यालय की स्थापना आदि सब इसी कार्यक्रम की कडिया थी। इसी ध्येय प्राप्ति के लिये जहा कहीं भी भारतीयो पर कष्ट आया, उन्होने वहा ही आर्य सेवक भेजे, स्वय भी वहा पहुचे। शुद्धि आदोलन, अछूतोद्धार, हरिजनों की उन्नति आदि सबका यही प्रयोजन था। महात्मा हसराज जी महात्मा गाधी के हरिजन सेवक सघ मे भी काम करते रहे।

इस ध्येय के पीछे एक विचार था, जो महात्मा जी के इस वाक्य मे झलकता है, "मैं तो अन्त में आपसे यही कहना चाहता हू कि महर्षि दयानन्द के बताये मार्ग पर दृढता से कायम रहे और उस पर चलते हुए वैदिक धर्म का प्रचार और आर्य जाति का सुधार करे, ताकि सारे संसार का कल्याण हो सके।"

महात्मा हंसराज

—नरेन्द्रार्य—

मनीषी महान मात्र मानव न, देव भी थे,
हारे न हताश हुये, स्वावलम्बी आप थे।
त्याग तप की थे प्रतिमूर्ति अनुकरणीय,
मान्यवर माननीय शिक्षक महान् थे॥

हंस के समान नीर-क्षीरविवेकी भी थे,
सभी शिक्षार्थियो शिक्षको के आदर्श थे।
रागद्वेष से शून्य सहृदय शालीन थे,
जयति जयति जय, नरेन्द्र, आर्य निष्पाप थे॥

पता—ओम भडार, मैनपुरी-२०५००१

सहगल जी का स्वागत

डी० ए० वी कालिज कमेटी ने निश्चय किया है कि संगठन-कुशल और आर्यसमाज की सेवा मे निरन्तर लगे रहने वाले, आर्य प्रादेशिक सभा के मत्री श्री रामनाथ सहगल का उनकी सेवाओ के उपलक्ष्य मे 21 अप्रैल के महात्मा हसराज दिवस समारोह मे विशेष रूप से स्वागत किया जाएगा। दरबारी लाल, सगठन सचिव, डी० ए० वी० प्रबन्धकर्त्री सभा

महात्मा हंसराज दिवस समारोह

२१ अप्रैल, रविवार प्रातः ९ बजे से १२ बजे तक

स्थान— तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली

अध्यक्ष—स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

मुख्य अतिथि—श्री के० सी० पन्त (केन्द्रीय शिक्षामन्त्री)

वक्ता—ला० रामगोपाल शालवाले (प्रधान सार्वदेशिक सभा)
पं० शिवकुमार शास्त्री, प्रो० रत्नसिंह
प्रि० कृष्णसिंह आर्य श्री क्षितीश वेदालंकार

संयोजक : श्री रामनाथ सहगल

सभी आर्य समाजों एव आर्य संस्थाओं से निवेदन है कि भारी संख्या मे पहुचकर कार्यक्रम को सफल बनाये।

सुभाषित

जीवन-संग्राम

ऋग्वेद से भगवद्गीता और भगवद्गीता से रघुवंश तक का भारतीय साहित्य जीवन-संग्राम में विजय प्राप्त करने की कामनाओं से भरपूर है। उसमें युद्ध पर आंसू नही बहाये गये, युद्ध में जीतने के उपाय बतलाये गये हैं। हमारी जाति को हरेक अप्रिय चीज पर आंसू बहाने की आदत पड़ गई है। आंसू बहाने वालों पर संसार दया कर सकता है, पर इन्हें क्षमा नहीं कर करता। प्रकृति की शक्तियां उसे कुचल कर रख देती है। आवश्यक है कि हम संसार की वास्तविकता को देखें। मिथ्या आर्तनाद को छोड़कर जिस अन्याय से कोई नही बच सका, उसका सामना करने और उस पर विजय प्राप्त करने के लिए सन्नद्ध हो।

(स्व० इन्द्र विद्यावाचस्पति कृत जीवन संग्राम' से)
प्रेषक प्रा० धर्मेन्द्र धींग्रा, ओंकार कुंज, खारीवाव मार्ग, बड़ौदा

सम्पादकीयम्

अग्नि-पथ का पथिक

हिमालय की उपत्यका में, घोर अरण्यव में, गाण्डीवधारी अर्जुन तपस्या कर रहा था। उसका संकल्प था कि अपने तप से देवाधिदेव शिवजी को प्रसन्न करके किसी तरह पाशुपत अस्त्र प्राप्त करना है, क्योंकि उसके बिना महाभारत के युद्ध को जीतना सम्भव नहीं था। पाण्डवों ने बारह वर्ष के वनवास और एक वर्ष के अज्ञात-वास में ही भावी महायुद्ध की आशंका से उसमें विजयी बनने के लिए धनुंधारी अर्जुन पर सबसे अधिक विश्वास किया था और इसीलिए उन्होंने आपस मे परामर्श करके अर्जुन को पाशुपत अस्त्र प्राप्त करने के लिए भेजा था। शिवजी आशुतोष भले ही कहे जायें, किन्तु कठिन परीक्षा लिये बिना वे अनायास प्रसन्न होने वाले नहीं थे। यों भी तपस्या के मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति के समक्ष मानसिक दृष्टि से काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि अपना उग्र रूप दिखाने से बाज नही आते। जो तपस्वी इन आन्तरिक शत्रुओं से विचलित हो जाता है उसका तप भंग होते भी देर नहीं लगती। जब इन्द्र द्वारा भेजी गई उर्वशी के मोह पाश में भी अर्जुन नही फंसा, तब शिव ने वेष बदल कर स्वयं अर्जुन की वीरता की परीक्षा लेनी चाही।

तपस्या-विरत अर्जुन के सामने से एक जंगली सूअर निकला। अर्जुन ने उस पर बाणप्रहार किया। तभी अकस्मात वह क्या देखता है कि पेड़ की ओट में छिपे एक किरात ने भी उसी जंगली सूअर पर बाण फेंका। बनैला सूअर घायल होकर धराशायी हो गया, तो अर्जुन अपना बाण वापिस प्राप्तकरने के लिए सूअर के पास पहुंचा। उधर से किरात भी पहुंचा। दोनों में इस बात पर विवाद हुआ कि यह सूअर किसके बाण से मरा है। अर्जुन कहता था—मेरे बाण से, और किरात कहता था—मेरे बाण से। बाण दोनों के लगे थे। यह निर्णय करना कठिन था कि किसके बाण से उस जंगली जानवर का प्राणान्त हुआ और उस शिकार पर किसका अधिकार है। जब आपसी विवाद से मामला तय नही हुआ, तो दोनों ने एक दूसरे को चुनौती दी। दोनो भिड़ पड़े। मल्ल-युद्ध होने लगा। किरात भी कोई मामूली पहलवान नहीं था। साक्षात् शिवजी ही तो किरात का वेश धारण करके अर्जुन की वीरता की परीक्षा लेने आये थे। परन्तु अर्जुन को हराना किरात वेशधारी शिव के लिए भी जब कठिन पड़ा, तो अन्त मे शिवजी अपने असली रूप मे प्रकट हो गये और अर्जुन से उसकी तपस्या और उसकी वीरता दोनो से प्रसन्न होकर कहा कि – "वर मांगो—क्या मांगते हो।"

जब अर्जुन को यह रहस्य पता लगा कि साक्षात् महादेव ही मेरी परीक्षा लेने के लिए आये हैं, तब उसने विनम्र भाव से उनके चरणों में प्रणाम किया और पाशु-पतास्त्र प्राप्त करने की अपनी मनोकामना प्रकट की। शिवजी ने प्रसन्न होकर उसे पाशुपतास्त्र तो दिया ही, साथ ही उसकी वीरता की और कठोर तपस्या की भी प्रशंसा की। तेज और ओज के संस्कृत के महाकवि भारवि ने अपना "किरातार्जुनीयम्' नामक महाकाव्य महाभारत की इसी अर्ध पौराणिक और अर्ध-ऐतिहासिक कथा को उपजीव्य बनाकर लिखा है। उस ग्रन्थ के नाम में ही ग्रन्थ की केन्द्रीय मूल कथा का सारांश छिपा है। इसी प्रसंग में अर्जुन की तपस्या की प्रशंसा करते हुए महाकवि भारवि ने महादेव शिव के मुख से यह श्लोक कहलाया है—

त्वया साधु समारम्भि नवे वयसि यत् तपः।
ह्रियते तादृशं प्राय वर्षीयानपि मादृश ॥

—इस नई उम्र में तुमने इतनी कुशलता से यह जो कठोर तप सम्पन्न किया है, उसको देखकर तो मेरे जैसे बुजुर्ग भी लज्जित हो जायेंगे।

इस श्लोक में जिस विशेष बात की ओर महादेव शिव ने ध्यान खींचा है वह यह है—कि बुढ़ापे में जब इन्द्रियां शिथिल हो जाती हैं, तब तप और संयम के मार्ग पर चलना उतना कठिन नहीं होता जितना कि यौवन काल मे। जवानी में जहां समस्त ज्ञानेन्द्रियां और कर्मेन्द्रियां अपने विकास की पूर्ण पराकाष्ठा पर होती हैं और मानसिक आकांक्षाओं का भी पारावार हृदयान्तरिक्ष में उद्दाम वेग से लहराता है, उस समय अपने शरीर और मन की सब प्रकार की बहिर्मुखी वृत्तियों को अन्तर्मुखी बना देना और अपने आप को किसी निश्चित उद्देश्य के लिए पूर्णतया समर्पित कर देना, सरल काम नहीं है। यह कठोर तप है। इस तप की कठोरता तब और बढ़ जाती है, जब यह तप [illegible] बन जाए।

जब कोई नवयुवक अपन छात्र जीवन मे अपने सब साथियो से अधिक उज्ज्वल यश प्राप्त करके विश्व विद्यालय से और पुस्तको की दुनिया से निकलकर बाहर की दुनिया मे कदम रखता है तब उसके मन में क्या-क्या स्वप्न होते हैं? अपन जीवन मे सुख और समृद्धि प्राप्त करने के लिए वह नया ग्रेजुएट अपन मन में क्या-क्या तूमार बांधता है? जिन तीन एषणाओ की चर्चा शास्त्रकारों ने की है—लोकैषणा, वित्तैषणा और पुत्रैषणा—ये तीन एषणाएं भी तो उस समय पूरे यौवन पर होती हैं। वह युवक उस समय धरती पर नही चलता, उसके मन का रथ धरती से ऊंचा उठकर हवा मे उड़ता है। आगामी जीवन में वे स्वप्न भले ही चकनाचूर हो जायें, परन्तु इससे यौवन के प्रारम्भ में युवा मन के उस स्वप्न-भण्डार मे कमी नही आती। यह नितान्त स्वा-भाविक है और प्रत्येक व्यक्ति अपने अनुभव से इसकी सच्चाई को जानता है।

भरी जवानी में उन सब स्वप्नो, एषणाओ इच्छाओ, और आकांक्षाओ को लात मारकर जो अग्नि-पथ का वरण करते हैं, ऐसे व्यक्ति मशाल लेकर ढूंढने पर भी इतिहास मे बहुत विरले ही मिलते हैं। महात्मा हंसराज ऐसे ही अग्नि पथ के पथिक थे। आधुनिक युग के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि बन्धुवर हरिवंश राय जी बच्चन ने अपनी 'अग्नि पथ" शीर्षक कविता मे ऐसे पथिक को सम्बोधित करते हुए लिखा है–

ओ अग्नि-पथ के पथिक! यह ध्यान रखना कि यह अग्नि पथ है। रास्ते में कही घने घने छायादार और मोटे तनेदार बड़-बड़ पेड़ मिल सकते है, परन्तु तू एक पत्ते से भी छाया की याचना मत करना। क्योंकि यह अग्निपथ है और तूने उस पर चलने का व्रत लिया है। तेरे मार्ग मे नाना रूपधारी प्रलोभन आयेंगे और बड़ त्रास-दायी भय भी उपस्थित होंगे। पर तू शपथ ले कि तू क्षण भर के लिए भी कहीं रुकेगा नही, कहीं झुकेगा नही।' कविता के अन्त में बच्चन जी लिखते हैं—

यह महान् दृश्य है
चल रहा मनुष्य है
अश्रु, रक्त, स्वेद से लथ पथ, लथ पथ, लथ पथ।
अग्नि पथ, अग्नि-पथ, अग्नि पथ॥

सचमुच ही, इस कृतघ्नता भरी दुनिया के व्यवहार से अश्रुसिक्त आखें लिए, संघर्ष में जूझते हुए, अंग-अंग से लहूलुहान और फिर भी हार न मान कर निरन्तर श्रम मे तत्पर रहने के कारण पसीने से सराबोर इस अग्नि पथ के पथिक को देखने से बढ़कर दर्शनीय और महान दृश्य कौन सा हो सकता है? विपरीत परिस्थितियो से लगातार संघर्ष करते हुए मनुष्य का यह एक अद्भुत चित्र है। क्या इस चित्र को देखकर उस पथिक के प्रति मन में दया नही उपजती? उसकी हिम्मत के प्रति श्रद्धा का भाव नही उमड़ता? उसके प्रति क्या मुख से बारम्बार आह और वाह की ध्वनि नहीं निकलती?

परन्तु महात्मा हंसराज उक्त अग्नि-पथ के पथिक के समान करुणा के पात्र नहीं हैं, क्योंकि उनकी आंखो मे कहीं पश्चात्ताप का आंसू नही है। उनके शरीर का कोई अंग क्षतविक्षत और लहूलुहान नहीं है और उनके मस्तक पर थकावट के चिन्ह रूप श्रम-सीकर भी दृष्टिगोचर नहीं होत। क्योंकि स्वेच्छा से, और दृढ़ संकल्प के साथ भरी जवानी मे उन्होंने अग्नि-पथ का वरण किया था। उसमें कहीं टूटन नहीं है, रुदन नहीं है और पश्चात्ताप भी नहीं है। इसीलिए वह अक्षय प्रेरणा का स्रोत है।

महात्मा हंसराज ने अपनी तपस्या के द्वारा जो पाशुपतास्त्र प्राप्त किया उसके बिना महाभारत-विजय सम्भव नही है। वह पाशुपत अस्त्र वही है जिसे ऋषि दयानन्द ने सारे संसार के उपकार के लिए मूल आधार माना है। वह आधार है—मनुष्य की शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति। इस त्रिविध उन्नति के बिना विश्व-विजय संभव नही है। इस त्रिविध उन्नति के लिए, देश और जाति के बच्चो के विकास के लिए ऐसी शिक्षा संस्थाएं तैयार करना, जहां उनको इन तीनों उन्नतियो का समु-चित अवसर मिल सके–ही वह पाशुपात अस्त्र है जिसे महात्मा हंसराज ने ऋषि दयानन्द की स्मृति को अक्षुण्ण रखने और सारे संसार को आर्य बनाने के मन्त्र के रूप मे पाया था। यही मन्त्र डी० ए० वी० आन्दोलन का आधार है।

अग्निपथ के इस अद्भुत पथिक के जीवन में अग्नि की ऊष्मा भले ही न दिखे, परन्तु उसका तेज निरन्तर परिलक्षित होता है है। यह तेज जलाता नहीं,केवन शनी

महात्मा हंसराज जी का व्यक्तित्व और उनकी विचारधारा

— म० म० आचार्य विश्वश्रवा व्यास वेदाचार्य एम०ए० बरेली —

श्री पूज्य महात्मा हंसराज जी का व्यक्तित्व ऋषियों मुनियो जैसा था। लाहौर टिब्बा फरीद के एक मकान के ऊपर के भाग में वे रहते थे जहा चटाइयां बिछी रहती थीं। एक हिलने वाली कुर्सी पर बैठे रहते थे। यदि वे इच्छा करते तो उनके लिये विशाल कोठी मिल सकती थी, जिसे आधुनिक उपकरणो से सुसज्जित किया जा सकता था। उनका निवास-स्थान चक्रवर्ती सम्राट् चन्द्रगुप्त के महामंत्री चाणक्य के जैसा था। पजाब की बड़ी-बडी हस्तियां वहीं आकर उनसे बात करती थीं।

वे किसी व्यक्ति को बोल-बोल कर पत्र लिखाते थे। मुझे अटपटा लगता था। मैंने कहा कि मैं आपके पत्र लिख दूं। बस आप बता दीजिये कि आप क्या जवाब देना चाहते हैं। उन्होने मेरी परीक्षा एक पत्र पर की। मैंने विस्तार से पत्र लिख दिया। सुनाया। बड़े प्रसन्न हुए। मैं पत्र लिखने लगा। डी० ए०वी० कालिज की सर्विस मे था। प्रतिदिन सायकाल 4 बजे मैं जाता, उनके पत्र लिखता और उनके साथ टहलने जाता। वे अपने स्थान और मार्ग में जो बातें करते थे वे बड़ी लाभदायक होती थी। दिन-रात महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज की चर्चा किया करते थे।

उनके दो विचारो की चर्चा मैं करता हूं—

महात्मा जी इस बात पर बहुत बल देते थे कि प्रचार का काम शिथिल न हो। लेखनी और वाणी द्वारा प्रचार में तेजी आती चली जावे। सिद्धान्तों का प्रचार करो, ठाकुर सुहाती वाली बात मत करो। साथ ही वे स्वाध्याय पर बल देते थे। वे स्वयं बताते थे : मैं और लाजपतराय, भाई परमानन्द आदि पण्डितों को रखकर अष्टाध्यायी पढ़ते थे। उनके कमरे की अलमारी में मैंने अष्टाध्यायी के एक-एक पाद के आर्यभाषानुवाद सहित ट्रैक्ट देखे जो वे सब पढ़ते थे।

जो दूसरी बात उनकी है, कोई मुझ पर विश्वास करे या न करे, वह बात यह है कि महात्मा हंसराज जी प्रादेशिक सभा के सार्वदेशिक मे जाने के बहुत पक्ष में नहीं थे। महात्मा नारायण स्वामी जी उनसे आग्रह करते रहे, पर उन्हें मंजूर नही था। प्रादेशिक सभा का वातावरण बिल्कुल भिन्न था और अब भी है। गुरुकुल सेक्सन के सब दृश्य वे देख रहे थे। आज भी प्रादेशिक सभा के निर्वाचन में कोई आकर देख ले। पाच मिनट में निर्वाचन समाप्त हो जाता है। प्रादेशिक सभा के लोगो का सिद्धान्त है—

'एक ने कही एक ने मानी,
नानक कहे दोनों ज्ञानी'।

प्रादेशिक सभा के लोग अब सार्वदेशिक मे जाने लगे हैं पर उखाड़-पछाड़ वाली राजनीति उन्हें रास नहीं आती।

मेरी आयु छोटी थी। मैं लड़के के समान उनके पास बैठता था। एक गणपति जी थे वे। आर्य गजट के सम्पादक भी रहे। पर थे बड़े भुलक्कड़। महात्मा जी जो बात गणपति जी से करने को कहते थे दूसरे दिन जब गणपति जी आते, महात्मा जी पूछते, काम कर लिया। वे सदा कह देते थे कि भूल गया। तब महात्मा जी बोले—'गणपति तुम गांठ बांध लो, तुम भूल जाते हो'। गणपति जी ने धोती में गांठ बांध ली--अब याद रहेगी। मैंने महात्मा जी से कहा कि गणपति जी कल स्नान करेंगे तो यह धोती तो धोकर डाल देंगे, दूसरी धोती पहन लेंगे, याद कैसे रहेगी। महात्मा जी इस पर बहुत हंसे।

हमारे वे दिन ऐसे व्यतीत होते थे जैसे पिता के पास पुत्र के दिन।

महात्मा हंसराज जी डी० ए० वी० कालिज कमेटी के अन्तर्गत विभागों को जिसके सुपुर्द कर देते थे, जीवन भर वे उस पद पर उसको देखना चाहते थे। अत: प्रत्येक व्यक्ति कालिज विभाग में विश्वास पूर्वक निश्चिन्त होकर कार्य करता रहता। वे रोज-रोज फेर-बदल के पक्ष मे नहीं थे। उनके काल में कालिज के सब प्रमुख प्रोफेसर अवकाश के दिनों में प्रचारार्थ जाते थे। उनकी प्रेरणा से पं० भगवद्दत्त जी ने विशाल पुस्तकालय मुद्रित-अमुद्रित ग्रन्थो का बनाया। वे अपने व्यक्तियों पर अतिविश्वास करते थे। उनके तप का प्रभाव था कि कोई व्यक्ति मक्कारी या विश्वासघात नहीं करता था।

उनकी दूर-दृष्टि थी। सत्यार्थ प्रकाश भाष्य का काम पं० वाचस्पति जी से कराना प्रारम्भ किया जो अधूरा रहा। अब तक उस कार्य की कोई सुध नहीं ली जा रही है। डी० ए० वी० कालिज का विशाल पुस्तकालय, जो लालचन्द पुस्तकालय नाम से प्रसिद्ध था, हमने वर्षों उसमें बैठकर काम किया है। महान पुस्तकालय था। जो पं० भगवद्दत्त जी के सम्पर्क मे नहीं रहा, उसे ग्रन्थों का सही ढंग से अध्ययन करना नहीं आता। यह महात्मा जी की ही देन थी।

जो लोग मिथ्या भ्रान्ति फैलाते हैं कि कालिज सेक्शन और महात्मा हंसराज जी मांस के पक्ष में थे, निराधार है। महात्मा हंसराज जी की लिखित 'दशप्रश्नी की समीक्षा' ग्रन्थ, जो प्रादेशिक सभा ने दुबारा छपवा दिया है, कोई पढ़े तब उसे पता चले कि महर्षि के मिशन की कितनी जानकारी महात्मा जी को थी। इस 'दशप्रश्नी की समीक्षा' ग्रन्थ को पढ़कर पं० बुद्धदेव विद्यालंकार ने उनके चरण छूकर क्षमा मांगी कि महात्मा जी! आज मैं आपके स्वरूप को समझा? भगवान क्या वे दिन फिर आवेंगे।

DAV Centenary Celebrations

PROGRAMME COMMITTEE

(To decide about the functions, their venue and dates on which those be held)

1. Prof Veda Vyasa Chairman
2. Shri M.R Bhalla
3. Shri Vishwa Nath
4. Shri T.R. Tuli
5. Shri M.N. Kapur
6. Dr. D.P. Seth
7. Shri Darbari Lal
8. Shri J N Kapur
9. Km V. Anand
10. Dr Ganesh Dass
11. Ch. Partap Singh
12. Shri R N. Sehgal
13. H L. Chawla
14. Principal B S. Bahl
15. Shri C.L. Arora
16. Principal Dev Raj Gupta
17. Principal N.D. Grover
18. Principal P.D. Chaudhary.
19 Principal R N. Mehta
20. Principal K. S. Arya
21. Principal Mrs. S. Roy
22 Principal T.R. Gupta
23. Principal Kanwal Sud
24. Principal B. B. Gakhar
25. Principal Mrs. S. Taneja
26. Principal Mrs. S. Ahlawat
27. Principal D V. Pasricha
28. Principal M.L. Sekhri
29 Principal R S. Sharma
30. Principal R.C. Jeewan
31. Principal P.L. Trakru
32. Principal P.K. Bansal
33. Principal A.R. Sharma

SOUVENIR COMMITTEE

1 Dr. Swami Satya Prakash .. Patron
2. Shri Vishwa Nath .. Chairman
3 Principal Madan Lal Sekhri ... Secretary
4. Shri R.N. Sehgal . Propaganda Secretary
5. Pt. Kshitish Kumar . Editor
6. Shri Darbari Lal ... Member
7. Prof. Rattan Singh ... —do—
8 Shri Ram Bhaj Batra ... —do—
9. Shri H.S. Kher ... —do—
10. Shri Shanti Parkash Bahl ... —do—
11. Shri V.P. Goyal ... —do—
12. Shri S.D. Munjal ... —do—
13. Shri T.R. Tuli ... —do—
14. Principal K.S. Arya ... —do—

BOARDING AND LODGING COMMITTEE

for making necessary arrangements for outstation invitees participating in Inauguration, Closing and other Functions to be held in Delhi.

1. Shri M.R. Bhalla ... Chairman
2. Principal T.R. Gupta ... Secretary
3. Shri Ram Lal Malik .. Vice-Chairman
4. Shri R.N. Sehgal ... Organiser
5. Shri Darbari Lal
6. All local Principals
7. Shri R.B. Batra
8. Shri H.S. Kher
9. Shri H.L. Kohli
10. Shri S.P. Bahl
11. Mrs. Kamla Arya

PUBLICITY COMMITTEE

1. Shri Inderjeet
2. Shri S.P. Puri
3. Shri Prem Bhatia
4. Shri Pran Seth
5. Shri Inder Malhotra
6. Dewan Barinder Nath
7. Shri Ashwani Kumar
8. Shri Navin Suri
9. Shri Om Prakash Tyagi
10. Shri Ram Chand Vikal
11. Shri Ram Lal Malik
12. Shri H.S Kher
13. Shri Ram Saran Das
14. Shri R.P. Batra

Setting up of new DAV Public Schools at Visakhapatnam and Hyderabad.

Shri Darbari Lal, Organising Secretary, DAV College Managing Committee, accompanied by Principal T.R. Gupta of Hans Raj Model School, Punjabi Bagh, New Delhi, visited Hydrabad and Visakhapatnam on the 2nd and 3rd April, 1985 to finalise the arrangements for the establishment of D.A.V. Public School at these places in collaboration with Mishra Dhatu Nigam Ltd., Hyderabad and Visakhapatnam Steel Project Ltd. Their mission was successful and the D.A.V. Public Schools are expected to start functioning in the Townships of these Under takings at Hyderabad and Visakhapatnam from this session.

'योगदर्शन के अनुसार चार प्रकार के दुःख'

—ब्र० विवेक भूषण दर्शनाचार्य

इस संसार में प्रत्येक प्राणी दुःख से छूटकर सुख को प्राप्त करना चाहता है। मनुष्य से भिन्न योनियों में दुःख अधिक और सुख कम मिलता है। मनुष्य योनि में दुःख कम और सुख अधिक मिलता है। फिर भी (चाहे कोई मनुष्य-शरीर भी प्राप्त कर ले, तब भी) दुःखों से पूर्णरूप से नहीं छूट पाता। जब तक जीवित रहता है, तब तक सामान्य परिस्थितियों में किसी न किसी दुःख से आक्रांत रहता ही है। हां, इन दुःखों से पूर्णतया छूटने का उपाय तो मनुष्य जन्म में कर सकता है। वह उपाय है—"योगाभ्यास"। इस उपाय से जीवित रहते हुए समाधि-काल में सम्पूर्ण दुःखों से व्यक्ति छूटकर ईश्वरीय-आनन्द को प्राप्त कर लेता है। और इसी उपाय का अभ्यास करते-करते जन्म-मरण के चक्र से छूटकर सम्पूर्ण दुःखों से निवृत्ति और मोक्षानन्द की प्राप्ति कर लेता है। जब तक व्यक्ति योगाभ्यास के ईश्वरीय-आनन्द की अनुभूति नहीं कर लेता, तब तक उसकी रुचि सांसारिक-सुख की ओर प्रायः रहती ही है। जीवात्मा स्वभाव से ही सुख को चाहता है, अतः ईश्वरीय आनन्द जब तक उसे प्राप्त नहीं हो जाता, तब तक वह सांसारिक सुख से ही अपनी इच्छा पूर्ण करने का प्रयत्न करता है। परन्तु जैसा कि विशुद्ध सुख जीवात्मा चाहता है, वैसा उसे संसार में कहीं भी उपलब्ध नहीं हो पाता। वह विशुद्ध सुख केवल ईश्वर से ही मिल सकता है, इसीलिए योगाभ्यास करने की आवश्यकता पड़ती है। संसार में जो सुख प्राप्त होता है, उसमें अनेक प्रकार के दुःख मिश्रित रहते हैं। महर्षि पतञ्जलि जी महाराज के अनुसार सांसारिक सुखों में चार (४) प्रकार के दुःख मिले रहते हैं। आइये, इन्हें समझने का प्रयत्न करें।

परिणाम तापसंस्कारदुःखैर्गुणवृत्तिविरोधाच्च दुःखमेव सर्वं विवेकिनः ॥ (योग० २।१५)

सूत्रार्थ—परिणाम, ताप और संस्कार दुःख के कारण तथा सत्वादि गुणों के स्वभाव में विरोध होने के कारण विवेकी=(योगी) व्यक्ति के लिए समस्त पदार्थ दुःख से युक्त हैं=(उसे पूर्ण सुख किसी भौतिक पदार्थ से नहीं मिल सकता।

व्याख्या:—प्रश्न हो सकता है कि वैदिक मान्यता के अनुसार पुण्य कर्मों का फल सुख और पाप कर्मों का फल दुःख मिलता है तो हम पुण्य कर्म करके सुखदायक=(मनुष्य के) जाति, आयु और भोग रूपी फल को प्राप्त करते रहेंगे, इसमें क्या हानि है? प्रस्तुत प्रश्न का उत्तर इस सूत्र के माध्यम से दिया गया है, कि चाहे मनुष्य बनकर सुखदायक जाति, आयु व भोग भी क्यों न प्राप्त कर लेवें, इन सांसारिक सुखों में तब भी ४ प्रकार के दुःख मिश्रित होने के कारण सभी भौतिक सुख त्याज्य ही हैं। अतः इनसे पूर्ण रूप से छूटने के लिए 'योगाभ्यास' के माध्यम से मोक्ष प्राप्त करना ही चाहिए।

(१) परिणाम दुःख—जब कोई व्यक्ति अपनी इन्द्रियों रूप, रस आदि का सेवन करके कुछ समय के लिए थोड़ी सी तृप्ति जैसी अनुभव करता है, तो वह भौतिक सुख कहलाता है। और इन्द्रियों की चंचलता के कारण कुछ अशान्ति सी अनुभव करता है, तो वह दुःख कहलाता है। व्यक्ति यह सोचता है कि मैं इन्द्रियों से इन भोगों को भोग-भोग कर अपनी इच्छाओं को शान्त कर लूंगा। परन्तु ऐसा होता नहीं है। बल्कि ऐसा कहना चाहिए कि—'भोगों को बार-बार भोग कर इच्छाओं को शान्त कर देना' असम्भव है। कारण—कि भोगों के भोगने पर उस वस्तु से जो सुख प्राप्त होता है, उस सुख में व्यक्ति का राग बढ़ जाता है तथा इन्द्रियों की भोगने की शक्ति भी बढ़ जाती है। परन्तु इच्छा कुछ देर के लिए तो शान्त हो जाती है, पूर्ण रूप से शांत नहीं हो पाती। इसका कारण यह रहता है कि—इन्द्रियों का भोगों को भोगने का सामर्थ्य सीमित है। कुछ देर तक किसी भोग को भोगते रहने पर उस इन्द्रिय का सामर्थ्य समाप्त हो जाता है। परन्तु मन की (आत्मा की) इच्छा पूरी नहीं हो पाती। व्यक्ति और भोगना चाहता है, इन्द्रिय का सामर्थ्य समाप्त हो जाने से वह भोग नहीं पाता। परिणामस्वरूप उस व्यक्ति को दुःख होता है। यह दुःख भोगों को भोगने के परिणामस्वरूप होता है, इसलिए इसे 'परिणाम दुःख' कहते हैं।

एक बार उस वस्तु का भोग करने पर इन्द्रिय का जो सामर्थ्य समाप्त हो जाता है, कुछ काल के पश्चात् इन्द्रिय में वह सामर्थ्य पुनः संचित हो जाता है। अब की बार व्यक्ति और अधिक वेग से उस भोग को भोगता है, परन्तु परिणाम फिर भी वही रहता है। थोड़ी ही देर में इन्द्रिय फिर से शिथिल हो जाती है तथा इच्छा होते हुए भी व्यक्ति भोग नहीं पाता। इससे उसे दुःख होता है। इस प्रकार बार-बार इन भोगों का अभ्यास करते रहने से इन्द्रियों का भी भोगों को भोगने का सामर्थ्य बढ़ता जाता है और साथ-साथ इच्छा भी बढ़ती जाती है। इन्द्रियों का सामर्थ्य चाहे जितना भी बढ़ जाए तब भी भोगों को भोगने से इच्छाएं शान्त नहीं हो पाती, परिणामस्वरूप दुःख ही हाथ लगता है। इसीलिए इसे 'परिणामदुःख' कहते हैं। अतः सुख का उपाय भोगों का अभ्यास करना नहीं है, बल्कि 'योग का अभ्यास करना' है।

उदाहरण—जैसे एक व्यक्ति को रसगुल्ला खाना अच्छा लगता है। वह पहली बार दो-चार रसगुल्ले खाकर सुख का अनुभव करता है। वह और खाना चाहता है, परन्तु रसना इन्द्रिय का सामर्थ्य समाप्त हो जाने के कारण और खा नहीं पाता। दो-चार दिन के पश्चात् पुनः रसगुल्ला खाने की इच्छा होती है। अब की बार पांच-छः रसगुल्ले खा जाता है, परन्तु इच्छा और अधिक खाने की बनी ही रहती है। सामर्थ्य न होने से खा नहीं सकता। यदि जबरदस्ती खा भी लेवे तो पेट खराब हो जाने से रोग के कारण सुख के स्थान पर दुःख ही बढ़ता है। इस प्रकार वह अभ्यास करते-करते १०-१० अथवा १२-१४ रसगुल्ले तक खा लेने का सामर्थ्य बढ़ा लेता है। परन्तु इच्छाएं पूर्ण रूप से फिर भी शांत नहीं होतीं। परिणाम 'दुःख' ही रहता है। इसी प्रकार से सिगरेट, शराब आदि पीने वालों तथा सिनेमा आदि देखने वालों के दृष्टांत भी समझ लेने चाहिए। इसीलिए महर्षि व्यास जी ने इस सूत्र के भाष्य में कहा है—"तस्मादनुपायः सुखस्य भोगाभ्यास इति।" अर्थात् सुख का उपाय भोगाभ्यास नहीं है, (बल्कि योगाभ्यास है)।

(२) ताप दुःख—भोजन, वस्त्र, मकान, यान आदि जड़ पदार्थों तथा पुत्र-परिवार आदि चेतन प्राणियों से मनुष्य सुख प्राप्त करता है। जब कोई व्यक्ति इन जड़-चेतन पदार्थों से प्राप्त होने वाले सुख में बाधा डालता है, तो उस सुख भोगने वाले व्यक्ति को दुःख का अनुभव होता है। यह दुःख बाधा डालने के बाद भी होता है और यदि बाधा डालने से पहले ही पता चल जाए कि 'अमुक व्यक्ति मेरे अमुक सुख में बाधा डालेगा' तो बाधा डालने से पहले भी दुःख होता है, चाहे वह व्यक्ति बाद में बाधा डाल सके या न डाल सके। यदि बाधा डाल देवे, तो और अधिक दुःख होता है। इसे 'ताप दुःख' कहते हैं।

उदाहरण—कल्पना कीजिए, हमारे पास एक बहुत उत्तम 'ध्वन्यंकन-यन्त्र' (टेप-रिकार्डर) है। हमारा पड़ोसी हमसे वह यन्त्र मांग कर ले जाना चाहता है। हम उसे देना नहीं चाहते। जब हमें पता चलेगा कि 'कल वह यन्त्र मांगने के लिए आएगा' तो हमें सूचना मिलते ही दुःख होना प्रारम्भ हो जाएगा। यदि वह अगले दिन मांगने आ ही गए और पड़ोसी होने के नाते से, इच्छा न होते हुए भी हमें यन्त्र देना ही पड़े, तो और भी दुःख होगा।

(क्रमशः)

अकालियों से बातचीत में पंजाब के हिन्दू भी साथ हों

आर्य समाज के शिष्ट मण्डल की प्रधानमन्त्री से भेंट : अनेक आर्य संस्थाओं के प्रतिनिधि शामिल

नई दिल्ली। सार्वदेशिक सभा के प्रधान, श्री राम गोपाल शालवाले के नेतृत्व में एक शिष्टमण्डल प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाधी से मिला। शिष्टमण्डल ने प्रधानमन्त्री को राष्ट्रीय अखण्डता की रक्षा के लिए किए जा रहे प्रत्येक प्रयत्न मे पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया तथा एक ज्ञापन भी दिया। इस शिष्टमण्डल मे अनेक आर्य सस्थाओ के प्रतिनिधि शामिल थे। सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री रामचन्द्रराव वन्दे मातरम, महामन्त्री श्री ओमप्रकाश त्यागी कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह, श्री प० राज गुरु शर्मा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्यदेव महामन्त्री श्री डा० धर्मपाल श्री महाशय धर्मपाल, श्री वेदप्रताप वैदि, श्री क्षितीश वेदालकार आदि थे।

प्रदत्त ज्ञापन इस प्रकार था—

भारत मे अस्थिरता पैदा करने की साजिश मे इसको चारों ओर से घरने और सीमावर्ती विघटनकारी शक्तियो को प्रोत्साहन देने की जो प्रवृत्ति चल रही है उससे राष्ट्र के सामने काफी भयकर सकट पैदा हो गया है। राष्ट्रय को एक और अखण्ड रखने के लिए तथा एक राष्ट्रीयता का निर्माण करने के लिए हमारे निम्न सुझाव हैं—

१ भारत के सविधान मे सम्प्रदाय निरपेक्षता को स्वीकार करने के कारण किसी साम्प्रदायिक पार्टी को राजनीतिक मान्यता नहीं मिलनी चाहिये। न ही किसी वर्ग विशेष के लिए अलग से सिविल कोड हो और न ही अनुचित आरक्षण को श्रय दिया जाये।

२ अकाली दल भी एक साम्प्रदायिक दल है, वह सिक्खो का केवल एक सीमित वर्ग का ही प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए उस को राजनीतिक मान्यता देना सविधान की दृष्टि से अनुचित है।

३ राजनीतिक पार्टी के रूप में उसकी मान्यता रद्द नही की जाती तो तब तक उस दल से कोई बातचीत न की जाय, जब तक वह अकाल तख्त मे स्व० माननीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी की हत्या की निन्दा न करे, उसके लिए पश्चात्ताप प्रकट न करे और भारत की एकता और अखण्डता के लिए तथा भारतीय सविधान के पालन के लिए प्रतिज्ञा न करे।

४ अकालियो के किसी ऐसे शिष्टमडल से बातचीत न की जाये जिसमें उतनी ही सख्या मे गैर अकालियो के और पजाब के हिन्दुओ के प्रतिनिधि भी शामिल न हो।

५ आनन्दपुर साहब प्रस्ताव देश के विघटन का दस्तावेज है। उसी के विरोध में आपने आम जनता से वोट मागे थे और जनता ने आपको अपूर्व बहुमत से जिताया था। उस आनन्दपुर प्रस्ताव पर किसी भी तरह की बात करना जनादेश का उल्लंघन होगा।

६ हिन्दू नेताओं को जेलों से बिना रिहा किये केवल अकाली नेताओं को छोडना पक्षपात-पूर्ण करवाई है।

७ अकाली नेता श्री लोंगोवाल के जेल से छूटने के बाद दिये गये वक्तव्यों से यह स्पष्ट हो गया है कि वे भारत सरकार की सत्ता को स्वीकार नहीं करते और उससे बातचीत के सद्भावना प्रयत्नों को उसको कमजोरी समझते हैं। गुरुद्वारो में हथियार रखने पर उन्हें कोई आपत्ति नही है। श्रीमती गांधी की हत्या की निन्दा करने को भी वे तैयार नही हैं और उनके वक्तव्यों में से यह भी ध्वनि निकलती है कि आपको इन्दिरा गाधी से बडा दुश्मन समझते हैं और राष्ट्रपति जी को अपशब्द कहने से बाज नही आते हैं।

८ गुरुद्वारा ऐक्ट को पजाब के बाहर के गुरुद्वारों पर लागू न किया जाये। और अखिल भारतीय गुरुद्वारा एक्ट न बनाया जाये।

९. विदेशों में जो सिक्ख भारत-विरोधी कार्रवाईयो मे लिप्त हैं और खालिस्तान के लिए कायरत हैं। एक अध्यादेश बनाकर भारत में विद्यमान उनकी सारी सम्पति जब्त की जाये।

१० जो उग्रवादी गिरफ्तार किये गये हैं उनके ऊपर पजाब के बाहर विशेष अदालत में मुकद्मे चलाये जायें और उनसे कोई रियायत न की जाये।

११ अकाली नेताओं ने छूटने के बाद जो वक्तव्य दिये हैं, उनसे पंजाब के हिन्दुओ मे असुरक्षा की भावना पुनः व्याप्त हो गई है। कि उन्हें लगता है कि फिर जून १९८४ से पूर्व की स्थिति आ रही है। अकाली नेताओं को छोडने की एकपक्षीय करंवाई से यह असुरक्षा की भावनाओर बढ़ गई है।

१२. अबोहर-फाजिल्का हरियाणा को देने की और लिंक नहर को बनाने की व्यवस्था तुरन्त की जाये क्यो कि ऐसा न करने से जहां हरियाणा की जनता में ज्यादा असन्तोष बढ रहा है, वहां श्रीमती इन्दिरा गाधी द्वारा दिये हुए वचन को भी भंग किया जा रहा है। इससे देश की सीमा पर भी सकट की सभावना बढ़ती है।

१३ विभाजन से पूर्व और उसके बाद भी पजाब के सामाजिक जीवन में आर्यसमाज का बहुत बड़ा योगदान रहा है और आर्यसमाज ने आज तक बिना किसी राजनीतिक स्वार्थ के निःस्वार्थ भाव से देश सेवा के अपने प्रण को निभाया है। इसलिए पजाब की किसी भी समस्या के समाधान मे आर्य नेताओं के परामर्श पर विचार करना जहां सरकार के हित में होगा, वहा राष्ट्रीय हित में भी होगा।

महात्मा वेद भिक्षु जयन्ती

दयानन्द सस्थान, हिन्दू रक्षा समिति और, जन ज्ञान मासिक के सचालक स्व० महात्मा वेद भिक्षु जी की जयन्ती के अवसर पर १४ से १७ मार्च तक वेद मदिर, इब्राहीमपुर, दिल्ली मे यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। चित्र में २७ मार्च को यज्ञ की पूर्णाहुति का एक दृश्य।

गीत

—बाबूराम शर्मा विभाकर—

विश्व के गुरुवर रहे हम,
आ, वही गरिमा निभाए।
शुभ्र गुण सचित करें हम,
जिंदगी में मुस्कराए।
एटमी ताकत लिए जो
देश पागल हो रहे हैं।
अध्यात्म के विज्ञान बिन जो
जिंदगी को ढो रहे हैं।
आज उस अध्यात्म-गुर को
हम सभी को ही बताएं।

तप्त वे दारुण दुखो से
आस्तिकता जो न वरते।
कर्म करने से पूर्व भी
याद प्रभु को जो न करते।
आज उन नास्तिकों को
स्वय प्रतीतियां दिखाएं।

पता—लोक मान्य तिलक, जनता इन्टर कॉलिज, मोरटा (गाजियाबाद)

अपरिग्रह और समर्पण-भावना के जीवन्त प्रतीक—महात्मा हंसराज

—प्रि० पी० डी० चौधरी—

किसी विचारक के कथनानुसार 'महानता किसी की व्यक्तिगत बपौती नहीं'—के अनुरूप ही महात्मा हंसराज जी अपने गुण कर्मों से अपने समय में ही महानता के उच्चपद पर पहुंच चुके थे। उन सब गुणों मे श्रेष्ठ यदि किसी एक गुण को रख सकते हैं तो वह है उनकी 'अपने कार्यों के प्रति पूर्णतया समर्पित' होकर रहने की भावना।

आज से 100 वर्ष पहले, जबकि सामान्य पढ़े-लिखे मनुष्य भी सभा सोसायटी के सरताज बन जाया करते थे, शायद महात्मा हंसराज जी उन इनेगिने भारतीयों में से एक थे जिन्होंने बी०ए० की परीक्षा प्रथम श्रेणी से न केवल उत्तीर्ण की थी, बल्कि उससे पूरे पंजाब में हलचल मचा दी। वह बी० ए० पास नौजवान बड़ी पदवी को प्राप्त करके ऐशोआराम की जिन्दगी बसर कर सकता था, परन्तु केवल शिक्षा जगत के ही प्रति समर्पित होकर तथा वास्तव मे शिक्षा के एक सच्चे पारखी की हैसियत से यह समझते हुए कि भारतीय होने के नाते प्रथम कर्तव्य 'यहां के लोगों के लिए यहां की शिक्षा' होनी चाहिए, उसने शिक्षा के प्रसार के लिए न केवल अपना व्यक्तिगत सुख ही छोड़ा, अपितु अपने परिवार के लिए भी फाकाकशी तथा आर्थिक परेशानी का कारण बन गया। बड़े भाई मुल्खराज ने अपना कर्तव्य समझते हुए आजीवन 40/- मासिक की आर्थिक सहायता इनके परिवार के लिए दी।

लाहौर के गणमान्य व्यक्तियों के सहयोग से जब स्वामी दयानन्द सरस्वती की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए डी० ए० वी० स्कूल का निर्माण हुआ, तब से जीवन पर्यन्त समर्पण की दिशा मे वे आगे ही आगे बढ़ते गये। प्रत्यक्षदर्शियो के अनुसार उनका जीवन इतनी सादगी से भरा हुआ था कि बरबस ही मौर्य साम्राज्य के संस्थापक महामन्त्री चाणक्य की याद आ जाती है। तख्त के ऊपर एक कंबल बिछाना, घर के प्रयोग की कलम अलग, कालेज के प्रयोग की अलग, किसी भी विभागीय वस्तु का कदापि दुरुपयोग नहीं करना, पुराना कोट, पुरानी पगड़ी, पुराना जूता आदि। यह वर्णन एक ऐसे प्रिंसिपल का है जो अपरिग्रह तथासमर्पण भावना से समाज तथा शिक्षा क्षेत्र की सेवा कर रहा था। ऐसा उदाहरण शिक्षा के क्षेत्र में दूसरा मिलना मुश्किल होगा।

जिन्हें अपनी व अपने परिवार की सुखदुख न हो, केवल संस्था के विकास की ही लगन हो, ऐसे महापुरुषो के आधार पर ही किसी संस्था का निर्माण हो सकता है। "मन्दिर के गुम्बद सिर ऊंचा करके चमचमाते हैं परन्तु यह वे भी भलीभांति जानते हैं कि इसकी नीव का पत्थर ही वह दृढ़ आधार प्रदान कर रहा है जिसके कारण गुम्बदो, कंगूरों तथा मीनारों की पूजा हो रही है।" युवक हंसराज ने 21 वर्ष की आयु मे बी० ए० पास किया था। किसी रियासत का दीवान बनने, ब्रिटिश सरकार की सेवा में उच्चपद पाने या निजी व्यापार से खूब सारा धन कमाने के यौवनोचित सपनो को लात मार कर उसी समय यह सादगी का वेश अपनाया था तथा चेहरे पर दृढ़ संकल्प की झलक तथा कार्य कर गुजरने की ललक पैदा की थी, तभी तो इस नवयुवक ने आजीवन अवैतनिक रूप से आर्य समाज और डी० ए० वी० की सेवा का व्रत लिया। इस सादगी और दृढ़ संकल्प का उन्होने जीवन के अन्तिम श्वास तक पालन किया। इस महानता को शिखर पर पहुंचाने के लिए किस प्रकार का आनन्द तथा कुरबानी का पाठ मिला था, उन्हीं के शब्दो में :—

"मनुष्य के जीवन मे एक ध्येय होना चाहिए, एक केन्द्र होना चाहिए जहा पहुंच कर मनुष्य अपना जीवन कुर्बान कर सके। अपनी धन दौलत और अपने बच्चों को आसानी से छोड़ सके। एक स्थान होना चाहिए जहा पहुंच कर वह गर्व से कह सके कि चाहे प्राण चले जाये, चाहे सब ओर से विनाश का ताण्डव घेर ले, पर वह उस स्थान से लौटेगा नहीं, पीछे हटेगा नहीं। ऐसे स्थान पर ही मानव का वास्तविक चरित्र तथा वास्तविक मोल मालूम पड़ता है।"

उन्होंने अपने जीवन में प्राप्त यश और कीर्ति को तथा धन वैभव को तिनके की तरह समझा और पूरे जीवन विनम्र बने रहे।

शास्त्रो के कथनानुसार 'यो अर्थ शुचि सशुचि न मृद् वारि शुचि शुचि'—अर्थात् धन की पवित्रता ही वास्तविक पवित्रता है, मिट्टी पानी से की हुई पवित्रता नही है। इस मामले में महात्मा हंसराज जी इतने संवेदनशील थे कि वे कालेज के कलम-दवात अलग रखा करते थे यहा तक कि निजी प्रयोग के लिये विभागीय कागज भी प्रयोग नही करते थे।

बड़ी से बड़ी आपदायें भी उन्हे अपने उद्देश्य से डिगा नही सकी। बड़े भाई की बैंक की नौकरी छूट जाने से मिलने वाली सहायता का बन्द हो जाना, दोनो परिवारो का भयंकर आर्थिक संकट, पुत्र को दिल्ली राजद्रोह के षड्यन्त्र में सात वर्ष की कैद तथा काले पानी की सजा, बलराज की माता की इस सन्दर्भ से मृत्यु, छोटे पुत्र बोधराज का निमोनिया, इस प्रकार एक के ऊपर एक विपत्तिया आ जाने पर तो बड़े-बड़े साहसवीरो तथा धैर्यशालियो का भी धैर्य डिग जाता है, वे विचलित हो जाते हैं। परन्तु धन्य हैं 'अपरिग्रह व समर्पण भावना के धनी महात्मा हंसराज जी' जिन्होने इन विपदाओ की तनिक भी परवाह न करते हुए अपने प्रण को पूर्ण करने में एक कर्मयोगी की तरह "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" की भावना का परिचय दिया, पर्वत के समान अड़े रहे, जरा भी विचलित नही हुए।

यही कारण रहा कि उनके पश्चात् भी ऐसे अनेक कर्मयोगी कमठ कार्यकर्ता इस डी० ए० वी० आदोलन को समय समय पर प्राप्त होते रहे जिन्होने कर्तव्य-परायणता तथा कार्यकुशलता का परिचय देते हुए इस आदोलन को शिक्षा जगत का एक महान आदोलन बना दिया और इसे भारतीय समाज मे अपने उज्ज्वल तथा कर्तव्यनिष्ठ स्नातको को उनके राष्ट्र निर्माण के महत्वपूर्ण कार्यों के द्वारा एक विशिष्ट स्थान प्राप्त करवाया। उसी से यह डी० ए० वी० आदोलन एक वट्वृक्ष की भांति भारतीय शिक्षा जगत पर छाता जा रहा है और अपनी जड़े भी मजबूत करता जा रहा है। इसी कर्मयोगी की शृंखला में लाला साईंदास, प० मेहरचन्द, डा० महाजन बक्शी टेकचन्द, प्रि० दीवानचन्द, लाला सूरजभान तथा प्रि० जी० एल० दत्ता जैसे कर्म समर्पित महानुभाव प्राप्त हुए तथा वर्तमान में भी प्रो० वेदव्यास जी तथा उनके समस्त [illegible] अपनी [illegible] मे इसे और भी उन्नत करने के प्रयास में लगे हुए हैं।

महात्मा हंसराज जी ने त्याग और निष्ठापूर्वक शैक्षणिक व सामाजिक क्षेत्रो मे सेवा करते हुए 74 वर्ष तक इस आन्दोलन को आधार दिया तथा अस्वस्थ होते हुए भी काम करते रहे। बीमार पड़ जाने पर भी उन्होने अपने इष्ट मित्रो व शुभ चिन्तको को बुला कर कहा कि 'अब मेरा अंत निकट है। यह रोग मुझे साथ लेकर ही जाएगा।' उस वक्त वहा पर उपस्थित व्यक्तियो मे से महात्मा आनंद स्वामी जी को एकात मे बुलाकर समाज के ढाचे को बरकरार रखने, वैदिक धर्म का प्रचार निरंतर करते रहने, देशी रियासतों मे धार्मिक शिक्षा का प्रसार करने, साधुआश्रम होशियारपुर व मोहन आश्रम आदि का पूरा ध्यान रखने का निर्देश देकर 'ओ३म् विश्वादि देव" मंत्र का पाठ करते हुए 15 नवम्बर 38 की रात 11 बजे अपने प्राण त्याग दिए। 'ऐसे अद्वितीय कर्मयोगी व समर्पित जीवन भी कोटिशः वन्दन॥"

पता—आर्य अनाथालय, फिरोजपुर, छावनी

ईश्वर भी आज कैद है

—हीरालाल आर्य—

वेदों ने जिसका
आख्यान किया,
ऋषियो ने
गाया जिसको।
वह निराकार, सर्वशक्तिमान,
अजर अमर
और सृष्टि रचयिता है।
ऐसे परम-ब्रह्म को
इस धरती के मानव ने
मंदिरों गिरजाघरो,
मस्जिद और गुरुद्वारो में—
सीमित किया है।
मत-मतान्तरों के जाल ने,
साम्प्रदायिक विद्वेष ने,
ईश्वर के नाम पर
छेड़ा घोर संग्राम है।
आज धरती अशान्त है, दुःखी है।
नृशंस हत्याएं आये दिन होती हैं।
मानव के खून से सने हाथ
क्रूर-कृत्य हेतु उद्यत हैं,
मानव का राक्षस रूप
आज साकार है, क्योकि
वह भय रहित है—
इस सभ्यता और विकास के युग मे।
इसलिये,
हे, ईश्वर-पुत्र !
हे, मानव !
तेरे स्वच्छन्द-राज्य मे
ईश्वर भी आज कैद है,
अतः वह लाचार है। इति।

पता—'सूर्य निवास' नई बस्ती,
कुण्डगेट, शाहपुरा जि० भीलवाड़ा
(राज०)

□

जब मैंने महात्मा जी के प्रथम बार दर्शन किये

—पिशोरी लाल प्रेम—

महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती की निर्वाण अर्ध शताब्दी (सन 1933) के अवसर पर अजमेर मे मुझे पूज्य महात्मा हसराज जी के शुभ दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उस समय मैं नया-नया आर्य समाजी बना था। मेरी आयु भी कम थी परन्तु फिर भी मे महात्मा जी की सौम्य मूर्ति तथा मधुर वाणी से बहुत प्रभावित हुआ।

उस समय उत्सव मे एक प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ। प्रस्ताव क्या था यह तो मुझे याद नही है। परन्तु इतना याद है कि उस प्रस्ताव के पक्ष और विपक्ष मे दोनों ओर से बहुत वाद-विवाद हुआ। दोनो पक्षो ने एक दूसरे की कटु आलोचना की वातावरण मे बहुत अधिक तनाव उत्पन्न हो गया था। उस समय यद्यपि महात्मा हसराज जी का स्वास्थ्य ठीक नही था फिर भी दो महानुभाव उन्हे दोनो बाहुओ से पकड कर धीरे धीरे मच पर लाये थोडे से शब्दो में महात्मा जी ने अपने विचार प्रकट किए और इसके साथ सारा वातावरण शात हो गया। इसके पश्चात मुझे पुनः महात्मा जी के शुभ दर्शन न हो सके। परन्तु जिस समय मुझे उनका ध्यान आता है उनकी सौम्य मूर्ति मेरी आखो के सामने आ जाती है।

महात्मा जी की सादगी, सरलता, तप-त्याग, वीरता, विद्वत्ता और अमृतभरी मीठी वाणी के विषय मे विस्तार से अधिक न कह कर दो तीन घटनाओ का वर्णन अवश्य करना चाहता हू।

महात्मा जी के बाल्य काल की एक घटना इस प्रकार है, जब वे मिशन हाई स्कूल लाहौर में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे उस समय एक बार पाठशाला के मुख्य अध्यापक ने प्राचीन आर्यों के सम्बन्ध मे कुछ अनुचित शब्द कह दिये। मुख्याध्यापक ने कहा कि प्राचीन आर्य मूर्ति पूजक थे वृक्षो तथा पत्थरो की पूजा करते थे, वे असभ्य और अशिक्षित थे। बालक हसराज इन बातो को न सह सके। उन्होने बडी निर्भीकता से मुख्य अध्यापक की इन बातों का विरोध करते हुए उनके आक्षेपो का उत्तर दिया। इस पर उन्हे स्कूल से निकाल दिया गया। परन्तु उनके अन्य सद्गुणों के कारण दो दिन के पश्चात् उन्हें पुन स्कूल मे बुला लिया गया।

इसके पश्चात उनके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण क्षण वह था जब उन्होने अपने लक्ष्य को साकार रूप देने का मार्ग चुना। बी० ए० की परीक्षा मे सारे कालेज मे द्वितीय रहे। (प्रथम आने वाले भी आर्य समाज के महाविद्वान् प० गुरुदत्त जी विद्यार्थी थे। यदि महात्मा जी चाहते तो वकालत पास करके लाखों मे खेलते, अथवा सरकारी नौकरी करके धन और मान दोनो अधिकाधिक उपार्जन कर लेते। यदि वह चाहते तो एक और परीक्षा देकर EXTRA ASSISTANT-COMMISSIONAR बन सकते थे। परन्तु तप और त्याग की मूर्ति हसराज ने सुख और वैभव के मार्ग को ठोकर मारते हुए कांटों भरे मार्ग को अपनाया।

उस समय आय समाजी महर्षि दयानन्द के मृत्यु स्मारक के रूप मे दयानन्द ऐग्लो वैदिक कालेज की स्थापना करना चाहते थे। परन्तु धनाभाव के कारण ऐसा करना असम्भव प्रतीत होता था। उस तपस्वी महात्मा ने बडी वीरता से कालेज को अपनी अवैतनिक सेवाए अर्पित कर दीं। महात्मा जी ने पच्चीस वर्ष तक डी० ए० वी० कालेज मे कार्य किया। इसके पश्चात् जब उन्होने आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का कार्य भार सम्भाला, तब भी वह अपना कुछ समय कालेज को देते रहे। कहने की आवश्यकता नहीं कि आज स्थान स्थान पर डी० ए० वी० कालेज और स्कूल फल-फूल रहे हैं तथा अन्य सब स्कूलों और कालेजों से ये अधिक उन्नतिशील हैं, तो उसका कारण उस महात्मा की तपस्या ही है।

महात्मा जी सादगी के अवतार थे। अभिमान तो उन्हें छू भी नहीं सकता था। एक बार रावलपिंडी के एक सज्जन जो कि आर्य समाजी न थे, अपने पुत्र के अत्यन्त अनुरोध पर उसे डी० ए० वी० कालेज में प्रविष्ट कराने के लिए लाहौर आए। वापिस जाने सेपूर्व उन्होंने प्रिंसिपल साहब से मिलने की इच्छा व्यक्त की। पहिले तो वह हिचकिचाए। उनहोंने सोचा कि डी० ए० वी० कालेज का प्रिंसिपल बडे ठाट बाट से एक बडी कोठी मे रहता होगा। परन्तु उस समय उनके आश्चर्य की कोई सीमा न रही जब उन्हे एक साधारण से मकान में ले जाया गया। वहाँ उन्होंने एक व्यक्ति को बहुत सादे कपडों मे तख्तपोश पर बैठें हुए पाया। वह सज्जन उनसे प्रेमपूर्वक वार्तालाप करते रहे। बाद में उन्हें पता लगा कि जिनसे वह बातें कर रहे थे वे ही प्रिंसिपल महोदय थे। वह व्यक्ति महात्मा जी की सादगी से इतना प्रभावित हुआ कि उसी समय वह आर्य समाज का सदस्य बन गया।

महात्मा जी में अनेक गुण थे। सबका वर्णन करना कठिन है। यदि हम उनके जीवन से किसी एक गुण को भी अपने जीवन में धारण कर लें तो यह हमारा सौभाग्य होगा। पता—पो० दद्याहु, रेणुका, जिला-सिरमौर (हि० प्र०)

गुड़गांव मे डी. ए. वी. शताब्दी

आर्य समाज, माडल टाऊन, गुडगाव मे महात्मा हसराज स्मृति दिवस और डी० ए० वी० शताब्दी समारोह २६ से २८ अप्रैल तक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के तत्वावधान मे मनाया जायेगा, जिसमे यजुर्वेद पारायण यज्ञ, वेदकथा, भाषण प्रतियोगिता, शका समाधान, अनेक सम्मेलन के अतिरिक्त दयानन्द शताब्दी अजमेर का चलचित्र भी दिखाया जायेगा। समारोह मे स्वामी सत्यप्रकाश स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी अग्निवेश, स्वामी शक्तिवेश, स्वामी सच्चिदानन्द, प० शान्ति प्रकाश शास्त्रार्थ महारथी, बहन कलावती, बहन दशनाजी, प्रो० रूपरेखा, बहन उषा शास्त्री, डा० सुमन आनन्द, प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु, प्रो० रामविचार, ठाकुर रणधीर सिंह, प० जगदीश चन्द्र वसु, आचार्य सत्यप्रिय, श्री जयदेव शास्त्री, श्री लक्ष्मण सिंह बेमोल, श्री कृष्णपाल रंगीला, के अतिरिक्त प्रादेशिक सभा और डी० ए० वी० कमेटी के अधिकारी श्री दरबारी लाल, श्री रामनाथ सहगल, चौ० प्रतापसिंह, डा० गणेश दास और श्री वेदसुमन वेदालकार आदि पधार रहे हैं।

आर्यवीर दल शिक्षक प्रशिक्षण शिविर

आर्य समाज हजारी बाग (बिहार) मे १५ से ३० मई तक वीर दल शिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है जिसमे प्रधान सचालक बालदिवाकर हस एव सहसचालक श्री देवव्रत व्यायामाचार्य प्रशिक्षण देंगे। २४ से ३० अप्रैल तक नवादा मे भी शिविर लगेगा।

—भूपनारायण शास्त्री अधिष्ठाता,
—रामाज्ञा वैरागी सचालक

गंगा प्रदूषण दूर होगा

विश्व हिन्दू परिषद के एक शिष्टमडल ने २६ मार्च को प्रधानमत्री से मिलकर उन्हें हिन्दू समाज की समस्याओं के बारे में एक ज्ञापन दिया। प्रधानमंत्री ने गगा प्रदूषण को ५ वर्ष के अन्दर ही दूर करने का वचन दिया।

—दत्तात्रेय तिवारी

पं० जगदीचन्द्र सभा के उपदेशक बनें

आर्य ससाज के प्रसिद्ध विद्वान् वैदिक कर्मकाण्ड के मर्मज्ञ श्री प० जगदीशचन्द्र वसु विद्यावाचस्पति की नियुक्ति आर्य-प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, कार्यालय डी० ए० वी० महिला कालेज, करनाल, (हरियाणा) ने की है। जो आर्यसमाजें उन्हें बुलाना चाहे वे उपरोक्त पते पर सम्पर्क करे।—वेदसुमन वेदालकार

संविधान के अनुच्छेद ४४ का पालन करें

सभी नागरिकों के लिये समान आचार संहिता (सिविलकोड)

(प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी को पत्र)

प्रिय श्री राजीव गांधी जी !,

आप जबसे प्रधानमंत्री बने हैं, राष्ट्रीय एकता पर उचित बल दे रहे हैं। सभी राष्ट्रवादियो को यह बात पसन्द है। इसलिए आपको और आपकी कांग्रेस पार्टी को गत लोकसभा चुनाव मे प्रभावी जनादेश मिला है।

परन्तु एकता केवल नारा नहीं है। इसका आधार वे सांझी भावनाएं और आस्थाएं हैं जो राष्ट्रवाद का ही आधार होती हैं। जैसा कि महर्षि अरविन्द घोष ने भी जोर देकर कहा है, भारतीय राष्ट्रवाद हिन्दुत्व के साथ जुड़ा हुआ है। हिन्दुत्व ही हमारे देश की एकता का मूल आधार है। हमारा सारा इतिहास इस बात का साक्षी है कि जहा हिन्दुत्व और हिन्दू दुर्बल हो गए वह क्षेत्र हिन्दुस्थान से कट गया। गान्धार, सिन्ध, पश्चिमी पंजाब और पूर्वी बंगाल के भारत से कट जाने का यही मुख्य कारण बना। खण्डित भारत में भी अलगाव वादी मागे वही उठ रही हैं, जहा हिन्दू कम है। कश्मीर घाटी, मिजोरम, नागालैण्ड ऐसे ही क्षेत्र हैं। पंजाब में अलगाव वादी नारे अकाली लगा रहे हैं जो अपने आप को हिन्दू कहलाने से कतराते हैं। इसलिए जो कोई प्रामाणिकता से हिन्दुस्थान को एकता चाहते हैं उन्हे हिन्दुओं और हिन्दुत्व को सुदृढ़ बनाना चाहिए। जो नीतिता या व्यक्ति हिन्दुओं को दुर्बल बनाते हैं वे भारत की एकता की जड़ो को काटते हैं। यह इतिहास का सबक है। यदि हम इसकी अपेक्षा करेंगे तो नुक्सान उठायेंगे। हिन्दुओं और हिन्दुस्तान की एकता को आज सबसे बड़ा खतरा इस्लामवाद से है। पाकिस्तान ले लेने के बाद अब इस्लामवादी खण्डित हिन्दुस्तान का इस्लामीकरण करने के मन्सूबे बना रहे हैं। जम्मू-कश्मीर विधान परिषद के भूतपूर्व उपाध्यक्ष और फारूक अब्दुला के नेशनल कांफ्रेंस के वरिष्ट नेता मौलाना सुहरावर्दी द्वारा 20 फरवरी, 1985 को विधान परिषद में दिया गया वक्तव्य इस दृष्टि से आखें खोलने वाला है। आपको इसकी पूरी रपट मिल चुकी होगी।

इस्लामवादियों के हाथ में खण्डित भारत व इस्लामीकरण के लिए सबसे खतरनाक हथियार वह इस्लामी सिविल और विवाह कानून है। जो उन्हें एक समय चार पत्नियां रखने की छूट देता है। वे इसके द्वारा अपनी जनसंख्या तेजी से बढ़ा रहे हैं।

मुसलमानों को भी सांझे सिविल कोड के अन्तर्गत लाना हिन्दुस्तान की एकता के लिए अनिवार्य हो गया है। मुसलमानों के लिए अलग कानून के विरोध में निम्न तथ्य और तर्क है :—

1. यह सविधान की धारा—44 की जो सरकार को आदेश देती है कि वह सभी नागरिको पर समान कानून लागू करे, खुली अवहेलना है।

2, यह मानवता विरोधी और नारी विरोधी है। यह मुसलमान महिलाओं को उनके बुनियादि मानवीय अधिकारो से वंचित करता है।

3. इसके कारण इस्लामी तबलीग को बढ़ावा मिल रहा है। दूसरा विवाह करने के लिए अनेक हिन्दू-मुसलमान बन रहे हैं। इस आशय की रपटे रोज आ रही हैं।

4. इसके कारण परिवार नियोजन कार्यक्रम एक मखौल बनकर रह गया है। गत संसद के सदस्यो समेत अनेक सर्वेक्षणो ने यह सिद्ध कर दिया है कि मुसलमान परिवारों में अनुसूचित परिवारो की अपेक्षा कई गुना अधिक बच्चे पैदा हुए हैं।

5. इसके कारण एक हास्यास्पद और लज्जाजनक स्थिति पैदा हो गई है। कोई मुस्लिम पुलिस अधिकारी या न्यायाधीश जिसके स्वयं अनेक पत्नियाँ हो, किसी अमुस्लिम को दूसरी पत्नी रखने के लिए कैसे गिरफ्तार कर सकता है और कैसे दण्ड दे सकता है ?

6. इसके कारण मुसलमानो की संख्या बहुत तेजी से बढ रही है। जिससे देश की जनसंख्या मे ऐसा असन्तुलन पैदा हो रहा है जो राजनैतिक दृष्टि से बहुत खतरनाक सिद्ध होगा।

सबसे बढकर मुसलमानो के लिए यह अलग कानून देश की एकता के लिए खतरा है। समान कानून राष्ट्रीय एकता का एक प्रभावी माध्यम है जो मुसलमान भारत के नागरिक हैं उन पर भारत का समान कानून लागू होवा चाहिए। और यदि वे भारत के नागरिक नही है तब उन्हें विदेशी मानना चाहिए और उनसे मताधिकार छीन लेना चाहिए। जो मुसलमान हिन्दुस्तान के कानून के दायरे से बाहर रहना चाहते हैं। उन पर शरीयत का सिविल कानून ही नहीं शरीयत का फौजदारी कानून भी लागू तर्कसंगत होगा।

सैकूलरिज्म या सम्प्रदाय निरपेक्षता का भी यह तकाजा है कि सभी भारतीयों के लिए समान कानून हो। ब्रिटेन एक घोषित ईसाई राज्य है परन्तु यह सैकुलर राज्य भी है क्योंकि वहां के मुसलमानों सहित सभी नागरिकों पर समान कानून लागू होते हैं। क्या कारण है कि हिन्दुस्तान ब्रिटेन की तरह एक घोषित हिन्दू राज्य और सैकुलर राज्य नही हो सकता जबकि हिन्दूस्तान की सम्प्रदाय-निरपेक्षता की परम्परा बहुत पुरानी है और हिन्दू राज्य कभी भी मजहबी राज्य (या थियोक्रेटिक स्टेट) नही बना। आज तो स्थिति यह है कि भारत सैकुलर राज्य के बजाय एक प्रच्छन्न और प्रदूषित मुस्लिम राज्य बनता जा रहा है।

मेरा इन बातो को आपके ध्यान मे लाने का एक मात्र उद्देश्य यह है कि आप सविधान की धारा 44 को अविम्लब कार्यरूप दें ताकि अलग मुस्लिम कानून से उत्पन्न उपरोक्त खतरो से देश को बचाया जा सके।

अधिक से अधिक लोगो का अधिक से अधिक भला लोकतत्र का ध्येय माना जाता है। बहुमत की इच्छा को कार्यरूप देना लोकतत्र का बुनियादी तकाजा है भारत सरकार बहुमत की इच्छा के विपरीत अलग मुस्लिम कानून को बनाये रखकर लोकतंत्र की इन दोनो बुनियादी बातो की अवहेलना कर रही है। यह बात केवल धर्मान्ध और विकृत यौन मानसिकता वाले मुल्लाओ को तुष्ट करने के लिए की जा रही है।

हिन्दू जनता सहिष्णु है। इसमे धैर्य और संतोष भी बहुत है। परन्तु, इसके धैर्य की भी एक सीमा है। मेरी आपसे प्रार्थना है कि इन पर अधिक दबाव मत डालिए।

निवेदन है कि इस पत्र का सकारात्मक उत्तर 13 अप्रैल तक मिल जाए तो उचित होगा क्योकि उस दिन जनसघ की कार्यसमिति और कुछ अन्य हिन्दू नेता इस गम्भीर प्रश्न पर विचार करने के लिए एकत्र हो रहे हैं।

नव विक्रम सवत की शुभ कमनायें

पता—जे०,३६४ जगन्नाथ मधोक मार्ग न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली—60

भवदीय—

बलराज मधोक, भूतपूर्व समद, अध्यक्ष अखिल भारतीय जनसघ, सभापति हिन्दूस्तान हिन्दूमच

मित्र थे संसार के उपकार सबका कर गए

—रामसिंहासन मिश्र 'सन्त' अध्यापक—

हे मानस के 'हंसराज'! नाम अमर तुम कर गए।
मित्र थे संसार का उपकार सबका कर गए॥
सुना रहा हूं हंसराज की
यह गौरवमय—गाथा;
श्रद्धा और विश्वास झुकाता
अनायास ही—माथा॥
हार न पथ के अवरोधों से
कभी न तुमने—मानी
सदा देश सेवा करने की
निज अन्तर में ठानी॥
दयानन्द विद्यालय देकर, उपकार सबका कर गए।
मित्र थे संसार का, उपकार सबका कर गए॥
हो गए तुम समस्त देश के
श्रद्धा के अधिकारी—।
लेने लगे प्रेरणा तुमसे यह
कोटि—कोटि नर-नारी॥
कर-तन-मन-धन सर्वस्व होम
तुमने जो ध्वज लहराया था
निज रक्त-दान दे तुमने जो
लघु अंकुर उपजाया था
ज्ञान का भण्डार दे, अज्ञान सबका हर गए।
मित्र थे संसार का उपकार सबका कर गए॥
वैदिक धर्म ध्वजा के नीचे
फूले नही समाते थे—।
कर्तव्य, त्याग, तप यज्ञ सभी
नर-नारी को सिखलाते थे॥
जब तक विधु नक्षत्र तारागण
चमकेंगे इस अम्बर मे
हंसराज जी अमर रहेंगे;
भारत के घर-घर में॥
'स्वामी जी' के वेद सूर्य का प्रकाश 'सन्त' पर कर गए।
मित्र थे संसार का, उपकार सबका कर गए॥

पता—डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल ककरी हीना मिर्जापुर (उ०प्र०)

हंस के समान अमल धवल और परमहंस के समान पुण्यशील

महात्मा हंसराज

—आचार्य दीनानाथ सिद्धांतालंकार

भारत की प्राचीन आध्यात्मिक संस्कृति मे "हंस का वरीय पद है।"

प्रसंगवश, इस देश की संस्कृति में एक विचित्र विरोधाभास है। चेतन जगत् में पशु-पक्षी, कीट, पतंग इत्यादि को जहा निम्न और पाप योनि का और मानव को पुण्य और दुर्लभ योनि का वर्णित किया गया है, वहा शारीरिक सौन्दर्य, बल, शक्ति और कई सात्त्विक गुणों की शाब्दिक अभिव्यक्ति के लिए जितनी अनुकरणीय उपमाएं हैं वे सब इन निम्न योनियो पर आधारित हैं। जैसे—वीरता के लिए सिंह, मस्त चाल के लिए गज, त्वरित गति के लिए अश्व, मधुर संगीत के लिए कोकिल, सुन्दर नयनो के लिए मृग, वृथा जीवन के लिए कौआ, संग्रह कुशलता के लिए पिपीलिका-इत्यादि। इसी दृष्टि से शुद्ध पवित्र, निष्कलंक और गौरवपूर्ण जीवन के लिए "हंस" को आदर्श माना गया है। योगी मुमुक्षु और ब्रह्मार्पित व्यक्ति के लिए "हंस" या परम 'हंस' वाचक शब्दो से उपमित किया जाता है। यहा तक कि उपनिषदो मे मुमुक्षु साधक आत्मा को 'हंस' शब्द द्वारा ही अभिहित किया गया है। कठोपनिषद पंचम वल्ली के दूसरे मंत्र मे इसके लिए "हंस,' मे अनुस्यूत विभिन्न गुणो और साधक की परिस्थितियो की प्रस्तुति निम्न शब्दो द्वारा की गयी है—

हंस: शुचिषद् वसु अन्तरिक्ष सद्
होता वेदिषद् अतिथि दुरोणसत्।

(१) जीवात्मा हंस है। हंस जिस प्रकार शुद्ध पवित्र स्थान मे रहता है वैसे ही जीवात्मा स्वभावत. शुद्ध ब्रह्म मे ही अर्पित रहना चाहता है। संस्कृत कवि के शब्दो मे "हंस" अपनी इस सहज प्रवृत्ति का वर्णन इन शब्दो मे करता है—

गंगातीरमपित्यजन्विमलिन ते राजहंसा: वयम्" अर्थात् :—हम (मानसरोवर वासी) वह शुद्धराजहंस हैं जो गंगातट को भी मलिन जानकर (ग्रीष्म ऋतु मे) त्याग कर देते हैं जब कि अन्य पक्षी इसकी चिन्ता नही करते।

हंस का दूसरा गुण "वसु" अर्थात् अन्तरिक्ष मे निवास करना है। अर्थात् "वसु" अन्तरिक्ष सदृश यह जीव हृदय के अन्तरिक्ष मे निवास करता है। "होतावेदिषत्" जैसे वेदी के सम्मुख "होता" बैठकर यज्ञ करता है वैसे ही होत रूप यह जीव अग्नि चयन करता है "अतिथिदुरोणसत्" जैसे अतिथि आश्रम की कुटिया को अपना समझकर वही जमकर बैठ नहीं जाता और रात बीत जाने पर चल देता है, वैसे ही अतिथि रूप जीव इस नर देह को सदा के लिए अपना समझकर नही बैठा रहता। फलत जो जीव अपने को "हंस" "वसु" "होता" और "अतिथि" समझ जीवन यात्रा करता है वह उत्तरोत्तर विकास करता जाता है।

"हंस" को विशेषता-नीर-क्षीर विवेक

संस्कृत साहित्य मे तो कवियों ने हंस के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की रोचक उपमा उत्प्रेक्षा आदि अलकारों का वर्णन किया है। हंस को हंसराज शब्द नहीं अपितु "राजहंस" अभिधान दिया गया है, यद्यपि इससे अर्थ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। उसका निवास प्रधानत: मानसरोवर अथवा किसी ऊँचे स्थान पर गहरा जलाशय है उसका रंग सर्वथा शुभ्र कलक रहित और उसका भोजन मृणाल (कमलदंड), कमल पुष्पफल आदि हैं जो गहरे जलाशयो की ही उपज हैं। एक दम निर्मल, सुरम्य, सरोवर सदृश स्थान पर ही रहने वाला यह पक्षी कुछ अंश तक अपने ही सदृश श्वेत और जलचर पक्षी बगुले से सर्वथा भिन्न है। हंस की एक अद्भुत विशिष्टता जो अन्य किसी पक्षी में नही है, वह है दुग्ध और जल को पृथक् करने की है।

हंस : श्वेतो वक: श्वेत: को भेदो-वक हंसयो: ।
नीर क्षीर विभागे तु हंसो हंस: वको वक: ।।

अर्थात् हंस भी श्वेत है और बगुला भी श्वेत है, पर दूध और जल को पृथक् करने के समक्ष ही पता लगता है कि हंस हंस और बुगला-बुगला है।

भर्तृहरि कवि ने तो हंस के इस नीर-क्षीर विवेक को हंस का ही जन्म सिद्ध अधिकार घोषित करते हुए यहां तक कह दिया है कि अगर ब्रह्मा भी उससे क्रुद्ध हो जाय तो वह भी उसका यह अधिकार छीन नही सकता। कवि के शब्दों मे—

अम्भोजिनी वन निवास विलास मेव हंसस्य हन्त नितरां कुपितो विधाता।
नत्वस्य दुग्ध जल भेद विधौ प्रसिद्धां वैदग्ध्य कीर्तिमप हर्तुमसौ समर्थ: ।।

गाय के बछड़े के साथ जन्म

१९ अप्रैल सन् १८६४ इतिहास के पृष्ठो पर नवज्योति की छाप लगाने वाली एक घटना। स्थान पंजाब के जिला होशियारपुर का एक गाव बजवाड़ा। समय भोर वेला की की पहली ज्योति किरण। एक कर्तव्यनिष्ठ देवी, नाम ठाकुर देवी, घर की पालतू गौमाता की सेवा के लिए मकान के ऊपर के कमरे से जब नीचे नित्य नियम के अनुसार आयीं तो वह गाय भी इस सुघड़ देवी के हाथों चारा प्राप्त करने की सतृष्ण नयनों से प्रतीक्षा कर रही थी। इस देवी ने प्रतिदिन की तरह जब इस गाय के समूचे शरीर पर स्नेहिल हाथों से मालिश की और सद्य: जात बछड़े के मुंह को स्तनपान के लिए आगे किया, उसी क्षण ठाकुर देवी के उदर में प्रसव पीड़ा उठने लगी। गौमाता के बछड़े के जन्म के कुछ समय बाद ही इस देवी की गोद में भी एक भाग्यवान् तेजस्वी शिशु अठखेलियां करने लगा। पड़ोसिन वृद्धामाता ने मुस्कराते, मधुर शब्दो मे इस होनहार बालक के प्रति सिरवारनाएं करते हुए अनायास ही कह दिया "बहिन ठाकुरदेवी" गौमाता के सद्य: जात शिशु के साथ हो तेरी गोद भी इस प्रभात वेला की शुभघड़ी में भरी है। मंगलमुहूर्त में जन्मा यह बालक भी गौ की तरह सेवा, नम्रता माधुर्य, परोपकार शील से यशस्वी होकर दीर्घ आयु प्राप्त करे। एक दूसरी पड़ोसन के मुख से अनायास ही निकल पड़ा—'बहिना ! इसका नाम "हंसराज" रख दो।' रख बधाई देने आयी पड़ोसिनों ने नि: सकोच कह दिया—'रामरक्खी ! तेरे मुंह मे घी शक्कर, तू ने तो हम सबके मुंह की बात चुरा ली"। ठाकुर देवी का मुखमण्डल हर्षपूर्ण सजल नयन और मधुर मुस्कराहट से खिल उठा।

गांव का प्यारा बालक

अपने तपस्वी, सेवाप्रिय और प्रभुभक्त पिता चुन्नीलाल और माता ठाकुरदेवी के सुसंस्कारों की सम्पत्ति लेकर आया यह बालक हंसराज गाव बजवाड़ा से लगभग ५ मील दूर, बीच में विस्तृत रेतीला मैदान, नगे पैर केवल लकड़ी की तख्ती से मौसम के थपेड़े सहता पढ़ने जाता और वापस आने पर शाम को गाँव वालों की चिट्ठियां लिखता अथवा डाक में आये उनके पत्रों को पढ़कर सुनाता। गांव के छोटे बच्चों को इकट्ठा कर उन्हे कहानियां सुना कर खुश करता।

ईसाई स्कूल में बेतों की मार

हंसराज के बड़े भाई मुल्कराज लाहौर में पढ़ते थे। इससे लाभ उठाते हुए हंसराज भी लाहौर जाकर एक ईसाई स्कूल में प्रविष्ट हो गये। पढ़ाई में बहुत अच्छे और सदा प्रथम आते। इन्ही दिनों १९ अप्रैल १८७७ को महर्षि दयानन्द जब लाहौर पधारे, उनके व्याख्यानों की धूम मच गयी। तभी आर्यसमाज की स्थापना हुई। ईसाई स्कूल के मुख्याध्यापक ने एक दिन जब हिन्दूधर्म पर अनुचित आक्षेप करते हुए आर्य विचारधारा का उपहास किया, तो ९वीं कक्षा के बालक हंसराज ने इसका विरोध किया। मुख्याध्यापक ने अत्यन्त क्रुद्ध हो हंसराज पर बेंतों की बौछार कर स्कूल से निकाल दिया।

हंसराज मेधावी और सदा प्रथम रहने वाला छात्र था। मुख्याध्यापक को बाद में अपनी भूल महसूस हुई उसने उसे पुन: स्कूल में दाखिल कर लिया तब इस किशोर के दिल में यह विचार दृढ़ हो गया कि हिन्दुओं की अपनी शिक्षा संस्था होनी चाहिए। एंट्रेंस परीक्षा १२८० में पास कर १८८५ मे बी० ए० पास करली सारे पंजाब मे दूसरे नम्बर पर ग्रेजुएट हो गये। पहले नम्बर पर भी उन्ही के साथी श्री गुरुदत्त विद्यार्थी रहे। उन दिनों अच्छी सरकारी नौकरी ग्रेजुएट को सहज मे मिल जाती थी। पर हंसराज ने इसे अस्वीकार करते हुए सार्वजनिक सेवा करने का निश्चय किया।

दोनों भाइयों का त्याग

लाहौर पधारने पर महर्षि दयानन्द से हंसराज बहुत प्रभावित हुए थे अजमेर में महर्षि दयानन्द की अनोखी मोक्ष यात्रा को आर्य समाज लाहौर के प्रतिनिधि प० गुरुदत्त ने अपनी आखों से प्रत्यक्ष देखा था। एक दम जीवन में परिवर्तित हो गया था। वे नास्तिक से कट्टर आस्तिक और महान् ऋषिभक्त बन गये थे। लाहौर आर्य समाज ने ऋषि की पुण्य स्मृति मे डी० ए० वी० कालेज खोलने का निश्चय किया। पर योग्य प्रिंसिपल न मिलने से कई वर्ष तक कार्यान्वित न हो सका। तब हंसराज ने आजन्म अवैतनिक सेवा देने का व्रत लिया। उस युग में प्रिंसिपल का वेतन ५०० रुपये निश्चित किये गया था। हंसराज पर इस समय आर्य समाज का गहरा रंग चढा चुका था। वह प्रतिदिन दोनों समय संध्या, गायत्री जाप और वेद का स्वाध्याय करते थे। कालेज की सेवा के लिए अपना जीवन अर्पित करने का निश्चय करने के पश्चात् वे अपने बड़े भाई मुल्कराज के पास आशीर्वाद लेने गये। उन दिनो मुल्कराज किसी बैंक में ८० रु० मासिक पर कार्यरत थे। बड़े भाई अपने छोटे भाई के इस शुभ संकल्प को सुन हर्ष से पुलकित हो गये। राम और लक्ष्मण की तरह दोनों भाइयों में मे अटूट प्रेम था। दोनों भाइयों ने त्याग का निश्चय किया। बड़े भाई ने जहां आजन्म अपना आधा वेतन छोटे भाई को देने का प्रण किया वहा छोटे भाई ने सारी आयु संस्था से बिना कोई वेतन के बड़े भाई से मिलने वाले ४० रु० में गुजारा करने का निश्चय कर संस्था को जीवन दान कर दिया। इस समाचार से जहां समूचे आर्य जगत् में हर्ष की लहर व्याप्त हो गयी वहां इस युवक की अपनी मानसिक स्थिति का वर्णन उसके अपने शब्दों में ही इस प्रकार है—"इस राख

देर तक मुझे नींद नहीं आयी। आसन लगाकर मैं प्रभु भजन में लगा रहा। गायत्री मन्त्र का जाप करते-करते एक ऐसी ज्योति मेरी मूंदी आखों ने देखी कि जिसका वर्णन नही कर सकता। मैंने अनुभव किया कि आत्मा ऊपर उठ रहा है। वैसा आनन्द प्राप्त करने के लिए मेरा जीवन बार-बार आग्रह करता है।"

अत्यन्त सादा जीवन

भारत के इतने बडे कालेज के प्रिंसिपल की पोशाक और रहन सहन तथा घर में पडे सामान को देख कोई स्वप्न में भी यह कल्पना नहीं कर सकता था कि यहा महात्मा हंसराज रहते हैं सिर से पैर तक एक दम शुद्ध : खादी का कुर्ता पाजामा, सिर पर स्वेत पगड़ी, शरीर पर आवश्यक सीमित कपड़े, पैरो मे देशी जूता घर मे लकड़ी का एक तख्त पोश, तीन चारपाई, एक लकड़ी की कुर्सी, सर्दी मे पुराना काश्मीरी पट्टू ओढ़ना, लिखने पढ़ने के लिए एक मामूली मेज। राजा, महाराजा, गवर्नर, सरकारी अफसर अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति व नेता, तथा सामान्य से सामान्य व्यक्ति के साथ एक ही वेश मे उसी घर मे भेंट ईमानदारी इतनी कड़ी कि कालेज के टाइम में कोई निजी काम नही, अपना पत्र व्यवहार कालेज के समय के बाद, और कलम दवात कागज भी कालेज का नहीं, अपना ही। कालेज की प्रशंसा सुन कई धनाढ्य, गणमान्य व्यक्ति उनसे मिलने आते पर अपनी कल्पना के सर्वथा विपरीत ऐसे सादे व्यक्ति को सामने देख एक दम चकित हो जाते। शीत काल में मिलने के लिए आये कई सम्पन्न व्यक्ति, बढ़िया कम्बल, काश्मीरी शाल आदि ले आते पर यह मनस्वी महात्मा उन्हें छूता तक भी नही। सब कालेज व आर्य समाज को दान दे देता और उसकी रसीद दानदाताओं को भेज देता। रावलपिण्डी का एक प्रसिद्ध पौराणिक, प्रतिदिन स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज को अपराष्ट्र कहने वाला समृद्ध व्यक्ति अपने लड़के को डी० ए० वी० कालेज मे दाखिल कराने आया। कालेज के प्रिंसिपल के लिए उसके हृदय में एक शानदार चित्र था महात्मा जी को एक किराये के मकान मे रहते और सामान्य वेशभूषा मे देख कर चकित रह गया। वापस घर आकर सब मूर्तियो को फेंक आर्य समाज का सदस्य बन कर प्रतिदिन सन्ध्या हवन करने लगा।

छ: आने के चने खाके गुजारा

एक बार महात्मा हंसराज और उनके भाई ला० मुल्कराज मे मनमुटाव हो गया। उसने सहायता की राशि देनी बन्द कर दी। उस समय घर मे केवल छ: आने थे। इन पैसों से चने मंगवाये और सारे परिवार ने तीन दिन उसी पर गुजारा किया। वह भी समाप्त हो गया। कुछ घबराहट होने लगी। महात्मा जी अपने छोटे से कमरे में टहल रहे थे। अचानक पुस्तको वाली अलमारी खोली। एक पुस्तक निकाल उसका पन्ना पलटा। उस पर गीता का आधा श्लोक लिखा था—
"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"

—तेरा अधिकार कर्म मे ही है, फल में कभी नही। महात्मा जी की घबराहट दूर हो गयी और हृदय मे बल अनुभव किया।

पुत्र को फांसी की सजा

महात्मा जी के सुपुत्र बलराज को दिल्ली राजद्रोह षडयंत्र मुकदमे मे फांसी की सजा हुई। उन दिनो महात्मा जी आर्य समाज के प्रचार के लिए दिल्ली में ही थे। यह समाचार सुनकर भी धैर्य नही

खोया। पूर्व निश्चित कार्यक्रम के अनुसार जालन्धर चल दिये। वहा स्टेशन पर उनके स्वागत के लिये भीड़ जमा थी। आर्य पुरुषों को सन्देह था कि पुत्र को फासी की सजा सुन महात्मा जी शायद न ही आवे। पर उन्हे आया देख सबको आश्चर्य हुआ। महात्मा जी पूर्ववत् शांत और सर्वथा स्थिर चित्त थे। प्रात. काल ही उनका उपदेश "आत्मिक उन्नति" पर था, और वह बडा मार्मिक तथा उद्‌बोधक था।

चाहे पुत्र को फासी की सजा हो, पत्नी मृत्यु शय्या पर हो, घर में चोरी हो गई हो, दूसरी बच्चे योधराज को निमोनिया हो रहा हो, आर्थिक स्थिति बिगड़ गई हो—इस प्रकार कितनी ही विपत्ति क्यो न आई हो, पर यह महापुरुष सदा की भांति शांत और धैर्यवान् ऐसे अपवाद रूप महापुरुषों के लिए ही कवि ने कहा है—

सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता

—हर्ष और शोक दोनों अवस्थाओं मे महापुरुष एक ही रहते हैं।

उपनिषदों के ऋषि सदृश

महात्मा जी का समूचा जीवन ऋषि मुनियो की तरह परोपकार दया, करुणा, मौन सेवा, यश निडरता, त्याग, तप धैर्य इत्यादि समस्त सद्‌गुणो से प्रन्तिमक्षण तक आपूरित रहा ऋषि दयानन्द के मिशन को ऐसे मेधावी और तपस्वी शिष्यो के कारण ही इतनी सफलता मिली।

इस लेख के प्रारम्भ में हमने कठ उपनिषद् का जो मन्त्र दिया है, महात्मा हंसराज उसके मूर्तिमान रूप थे। वह हंस ही नही 'परमहंस' वत् "शुचि" 'वसु' उदार चित्त जीवन यज्ञ के 'होता' और इस जगत में 'अतिथि' सदृश निवास करते थे। 'नीर क्षीर विवेक के धनी थे।

अन्तिम क्षण

इस दिव्य पुरुष के प्रिय शिष्य और अन्तिम क्षण तक सेवारत महात्मा आनन्द स्वामी जी के अनुसार उनकी अन्तिम इच्छा यही थी—

"आर्य समाज का काम निरन्तर चलता रहे, और तुम भी समाज का काम बराबर करते रहना"।

अंतिम श्वास छोडते हुए उन्होने कहा था। "हाँ, ओ विश्वानिदेव' मन्त्र इक्कीस बार" और बीस दिन की बीमारी के बाद १५ नवम्बर १९३८ रात्रि के ११ बजे सद्‌गुणो और उज्ज्वलता का प्रतीक यह महान पुरुष परम धाम की यात्रा पर चल पड़ा

वेद के शब्दो मे हम सबकी प्रार्थना है—
ओ३म् ! सर्वतो न शकुने भद्रमावद विश्वतो नः शकुने पुण्यमावद ॥
(ऋ० २/८/१२/२)

हे सर्व सामर्थ्यवान ईश्वर ! सब ओर से कल्याण करो हे। सुखदाता ! ईश्वर ! सब जगत् के कल्याण के लिए हम निरन्तर मार्ग पर चलते रहे।

पता—के० सी० ३७/बी अशोक बिहार दिल्ली—५२

मेरा मन करता है

—विनोदकुमार सिद्धान्तशास्त्री—

युग की मान्यताओ मे परिवर्तन आ रहे हैं
अत दृढ शैल होने को मेरा मन करता है।

अधर्म धर्म के नाम पर फैलता ही जाता
अयोग्यो की होती पूजा, योग्य ठुकराया जाता
इसलिए अधर्म से जूझने का मेरा मन करता है।

मन कहता है कि सत्य का सम्बल लेकर आगे आयें
पापो के तूफान को नष्ट करते जायें
जग के साथ न बहने को मेरा मन करता है

रिश्वत झूठ कपट व जालसाजो की दुनिया
क्या किसी मनस्वी का सिर झुका सकी है
अत: स्वय मिटकर नव-निर्माण का मन करता हैं

गर आग ऐसी जली तो हर घर श्मशान बनेगा
दुल्हन के सुहाग के पूर्व यह मण्डप राख बनेगा
इस जग को स्वर्ग बनाने को मेरा मन करता है

अत: दृढ़ शैल......

पता—उपदेशक महाविद्यालय, टंकारा—३६३६५० (राजकोट)

मेरे जैसे सैंकड़ों साधु जिस पर निछावर हों —स्वामी सर्वदानन्द

—धर्मदेव "चक्रवर्ती"—

मेरे जैसे सैकड़ों साधु महात्मा हंसराज पर न्योछावर किये जा सकते हैं। ये शब्द किसी साधारण साधु सन्यासी के नहीं, ये शब्द हैं आर्य-समाज के मूर्धन्य परम तपस्वी स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज के जो उन्होंने हंसराज के अनेकानेक गुणों को दृष्टि-गोचर रखते हुए कहे थे।

भरी जवानी में जब अधिकांश युवक ऐशोआराम और ठाठ-बाठ की जिन्दगी जीने के सुहाने सपने लेते है, हंसराज ने अशिक्षा, अन्धविश्वास एवं समाज में व्याप्त कुरीतियों से लोहा लेने के लिए तपत्याग-मय जीवन अपनाने का दृढ़ संकल्प किया। उनके अनेक सहपाठी जहां बी० ए० और एम०ए० की डिग्री प्राप्त करके भारी वेतनों पर ऊंचे-ऊंचे सरकारी पदों पर आसीन हो सरकारी सुविधाओं का उप-भोग करने लगे वहाँ हंसराज ने बी०ए० करने के बाद इन सुविधाओं का मोह-त्याग कर स्वयं को अपने गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती की पुण्य स्मृति में स्थापित दयानन्द ऐंग्लो-वैदिक हाई स्कूल के अवैतनिक मुख्याध्यापक के रूप में समर्पित कर दिया। यह स्कूल 1 जून 1886 में स्थापित हुआ था। लगभग चार वर्ष बाद 1889 में इसी स्कूल के साथ डी० ए० वी० कालेज की स्थापना हुई और हंसराज को इस कालेज का अवैतनिक प्रिंसिपल नियुक्त किया गया। 1911 तक हंसराज इस कालेज को अपने तप-त्याग, कर्तव्य-निष्ठा एवं अथक परिश्रम द्वारा तत्कालीन भारत की सर्वश्रेष्ठ शिक्षण-सस्थाओं की अग्रिम पंक्ति में ला खड़ा किया।

उन दिनों किसी भारतीय को किसी कालेज का प्रिंसिपल बनने योग्य न समझा जाता था। हंसराज प्रथम भार-तीय प्रिंसिपल थे जिन्होंने ब्रिटिश आकाओं की इस धारणा को निर्मूल सिद्ध कर दिखाया कि भारतीय कालेज का प्रिंसिपल होना अंग्रेजों की बपौती नहीं।

कालेज में धर्म शिक्षा

जहां अंग्रेज प्रिंसिपलों के अधीन कालेजों में छात्रों के दिलों में भारतीय परम्पराओं, भारतीय संस्कृति एवं वैदिक सिद्धांतों के प्रति घृणा का भाव भरा जाता था वहाँ प्रिंसिपल हंसराज के कालेज में इनके प्रति आदर के भाव भरे जाते थे। विद्यार्थियों में अपने देश के इतिहास, संस्कृति एवं वाङ्मय के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान के बीज अंकुरित करने के लिए हंसराज ने डी० ए० वी० स्कूल एवं कालेज में धर्म-शिक्षा एवं नैतिक शिक्षा देने का प्रचलन किया। परिणाम स्वरूप इस संस्था ने देवता स्वरूप भाई परमानन्द, डा० गोकुल चंद नारंग जैसे नेता, जस्टिस बख्शी टेक चन्द, सुप्रीम कोर्ट के मुख्य-न्यायाधीश जस्टिस मेहर चन्द महाजन जैसे न्यायविद, सरदार भगत सिंह जैसे देशभक्त पैदा किये। हंसराज ने अपने जीवन में डी०ए०वी० कालेजों शृंखला का अधिकाधिक विस्तार करने का जो ध्येय रखा था उसने भार-तीयों, विशेषकर वैदिक धर्मियों में अपनी संस्कृति, अपने धर्म, अपने इतिहास एवं अपने देश के प्रति गौरव का भाव भर दिया। आज देश में हजारों डी०ए० वी० सस्थाएं हंसराज के बताये मार्ग का अनुसरण कर रही हैं। लगभग 25 वर्षों तक हंसराज ने डी० ए० वी० स्कूल एवं डी० ए० वी० कालेज की सेवा तन, मन, धन से की इनकी स्थापना से लेकर अव-काश-ग्रहण तक वे इनके अवैतनिक प्रिंसिपल रहे। इन संस्थाओं को परवान चढ़ाने के लिए अपना सर्वस्व होम कर दिया। इस कार्य में इनके बड़े भाई-लाला० मुल्कराज इन्हें अपने वेतन का आधा भाग प्रति मास देते रहे।

कोई यह न समझे कि महात्मा हंस-राज किसी वैभव सम्पन्न परिवार से संबंधित होने के कारण ही इतने वर्षों तक अवैतनिक प्रिंसिपल के रूप में काम करते रहे। अभी पिछले दिनों एक सज्जन व्यग्य कर रहे थे कि अवैतनिक काम बस मजे ही मजे हैं। आम के आम गुठ-लियों के दाम! उन्होंने अपनी बात के प्रमाण में बताया कि किस प्रकार देश की एक बहुत बड़ी कपड़ा मिल में अवैतनिक सलाहकार के रूप में काम करने वाले एक अतिविशिष्ट अवकाश प्राप्त अधि-कारी कोठी-बंगला, नौकर-चाकर मोटर गाड़ी तथा अन्य मासिक भत्तों के रूप में लगभग दस हजार रुपये आजकल कम्पनी से बटोर रहे हैं, किन्तु इतने पर भी उन्हें अवैतनिक सलाहकार कहा जाता है।

अभूतपूर्व त्याग

महात्मा हंसराज ने एक पैसा तक डी०ए०वी० सस्थाओं से कभी नहीं लिया और न ही किसी प्रकार का भत्ता ही। यहां तक कि निजी प्रयोग के लिये कलम स्याही तक अपने खर्च पर रखी। कहते हैं, उनके कालेज के डेस्क पर दो दवातें और दो ही कलम रहते थे। जब कभी उन्हें निजी पत्र-व्यवहार करना होता तो अपनी कलम-दवात प्रयुक्त करते और जब स्कूल या कालेज सम्बन्धी काम होता तो दूसरी कलम-दवात का प्रयोग करते थे।

महात्मा हंसराज का जन्म एक मध्य वित्त के साधारण ग्रामीण परिणाम परि-वार में हुआ था। जन्म के समय उनकी माता को एकाएक प्रसव वेदना शुरू हो गई और भूसा रखने वाले एक ऐसे कमरे में इनका जन्म हुआ जहां न कोई बिस्तर था, न कोई नर्स दाई। जब विद्याध्ययन अवस्था हुई तो अपने गांव बजवाड़ा से नंगे पांव पैदल होशियारपुर नगर तक स्कूल जाय करते थे। वापस लौटते तो गरमियों में दोपहर के सूर्य के प्रचंड ताप से तपती धरती पर पैदल अपने गांव बजवाड़ा चल पड़ते। आकाश से सूर्य देवता अंगारे बरसा रहे होते और धरती माता आग उगल रही होती। ऐसे में अपने सिर और पैरों को सूर्य के प्रचण्ड ताप से बचाने के लिए यह नन्हा बालक कभी अपनी तख्ती पैरों तले रखता तो कभी सिर पर टिकाता।

कदाचित् सूर्य भगवान रूपी सोने के बचपन में ही तप और त्याग की मट्टी में गलाकर कुन्दन बनाना चाहते थे। सचमुच जब हंसराज ने तप-त्याग की मट्टी से बाहर निकल कर यौवन की दहलीज पर कदम रखे तो वह एक खरा सोना—खालिस कुन्दन—बन चुका था। आर्य जगत् की निःस्वार्थ सेवा का व्रत लेकर हंसराज ने जिस-जिस व्यक्ति का या सस्था का स्पर्श किया वह वह इस कुन्दन के स्पर्श से दीप्त हो उठा।

विपत्ति में भी धैर्य

एक बार बड़े भाई लाला मुल्कराज से मन मुटाव हो गया। बड़े भाई ने अपने वेतन का आधा भाग इन्हें देना एकाएक बंद कर दिया। उस वक्त इनके पास कुल छ आने (आज कल के 35 पैसे) थे। रोटी के लाले पड़ गये। हंस राज स्वय तो भूखे रह सकते थे, बच्चों को कैसे भूखा रखते। भूख बड़े-बड़े साहसियों को भी पथ से विचलित कर देती है। महाराणा प्रताप जब मुगलों से लोहा लेते जगलों में भटक रहे थे और घास की रोटी उनके अबोध शिशु की हाथ से एक जगली बिल्ली झपट कर ले भागी, तो राजसी ठाठ बाठ में पले शिशु की यह दुर्दशा देख महराणा प्रताप जैसे शूरवीर अदम्य योद्धा तक विचलित हो उठे थे और भूख की ज्वाला से पीड़ित होकर अकबर बादशाह से सुलह करने को प्रस्तुत हो गये थे......, किंतु महात्मा हंसराज अचानक आ पड़ी इस विपत्ति से घबराये नहीं। उन्होंने छ आने के भुने चने खरीदे और तीन दिन तक अपना और अपने परिवार का इन चनों से गुजारा करते रहे, किंतु किसी के आगे हाथ फैलाकर अपना सम्मान नहीं बेचा। बड़े भाई को शीघ्र ही अपनी गलती का अह-सास हुआ और उन्होंने यथापूर्व महात्मा जी की आर्थिक सहायता शुरू कर दी।

मांस भक्षण के विरोधी

एक बार महर्षि दयानंद के समका-लीन साथी लाला मूलराज ने कहीं कह दिया कि महर्षि दयानद वेदों में मांस-भक्षण का वर्णन मानते थे तथा स्वामी जी मांस भक्षण के विरोधी न थे। इसे आधार मानकर बाद में कीन्हीं आचार्य ने मांसाहार के पक्ष में एक 'दश प्रश्नी' पुस्तक लिखी। इस कारण आर्य समाज दो भागों में बट गया। एक को मांस-पार्टी और दूसरी को घास-पार्टी कहा जाने लगा। महात्मा हंसराज यद्यपि कालेज पार्टी और (मांस पार्टी) के सदस्य थे किंतु मांसाहार के सर्वथा विरोधी थे। महात्मा जी उपरोक्त 'दश प्रश्नी' पुस्तक के विरोध में 'दश प्रश्नी की समीक्षा' नाम से एक पुस्तक लिखी और अकाट्य तर्कों से सिद्ध किया कि न तो वेदों में कहीं मांसभक्षण का समर्थन है और न ही कहीं स्वामी दयानंद ने मांस भक्षण का समर्थन किया है।

अन्य सेवा कार्य

महात्मा हंसराज ने न केवल शिक्षा के क्षेत्र में ही निस्स्वार्थ सेवा की बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी समाज की सेवा करते रहे। केरल में मोपला हत्याकाण्ड में पीड़ित हिंदुओं की सेवा सहायता की। आगरा में धर्म भ्रष्ट सैकड़ों राजपूतों की शुद्धि की। बिहार और क्वेटा के भूकम्प पीड़ितों की सहायता की जहां-जहाँ भी साम्प्रदायिक दगों से सताये गये लोगों, दुखियों अथवा अकाल पीड़ितों की पुकार सुनाई दी, महात्मा जी अपने निस्स्वार्थी कार्य कर्त्ताओं की टोली समेत वहां पहुंचे और तन, मन, धन से सबकी सेवा की।

महात्मा हंसराज को हम मानस का राजहंस भी कह सकते हैं। राजहंस के बारे में प्रचलित धारणा है कि यह दूध का दूध और पानी का पानी कर देता है और यह मानसरोवर के तलघट से अपनी नैसर्गिक बुद्धि के द्वारा मोती छाट लाता है। महात्मा हंसराज ने भी अपनी नैसर्गिक बुद्धि के बल पर समाज में व्याप्त अशिक्षा, अंध विश्वास और स्वार्थ की तलघट में से विद्या, ज्ञान और परोपकार के मोती छाट कर मानव समाज की भलाई के लिए न्योछावर कर दिये। ऐसे स्वनामधन्य तप.पूत त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज को हमारे शतशः प्रणाम।

पता : 19 माडल बस्ती, दिल्ली-5

आज हम कहाँ खड़े हैं ?

—आचार्य सत्यदेव विद्यालंकार—

पिछले दिनों आर्यसमाज के समाचार पत्रों में कुछ लेख आए हैं। इनसे प्रतीत होता है कि पुराने माने गए बहुत से सिद्धान्तों तथा ऐतिहासिक तथ्यों का पुन: मूल्यांकन हो रहा है। पहले कुछ सिद्धान्तों की बात ली जाए।

११ नवम्बर १९८४ के 'आर्य-मर्यादा' पत्र में श्री योगेन्द्रपाल जी सेठ, उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब का एक लेख 'महर्षि दयानन्द फिल्म निर्माण विरोध क्यों' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। माननीय श्री सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार के अनेक लेख आर्य मर्यादा, आर्य जगत् आदि में प्रकाशित हुए हैं। इनमें गुरुकुल शिक्षा पद्धति के पाठ्यग्रन्थ भाग तथा आश्रम भाग को अलग-अलग कर इनके साक्षेप महत्व को आंकने का प्रयत्न किया है। मूर्धन्य आर्य संन्यासी श्री सत्यप्रकाश जी के 'आर्य जगत्' में प्रकाशित लेख में वेदों का अपौरुषेयता के सम्बन्ध मे नया विचार दिया है तथा ऋषि निर्दिष्ट सृष्टि संवत् तथा मन्वन्तर आदि के विषय में भी कुछ नए विचार दिए है। ऐतिहासिक तथ्यों पर भी पुनर्विचार हो रहा है। ऋषि दयानन्द की मृत्यु के सम्बन्ध मे डा० भवानी लाल भारतीय जी द्वारा यह स्थापना की गई है कि धौड़ मिश्र ने ही वस्तुतः ऋषिवर को दूध में विष दिया। १९२४ में हुए मथुरा शताब्दी सम्मेलन में ऋषि भक्त महाराजा नाहर सिंह जी ने इसका प्रत्याख्यान किया था। धौड़ मिश्र महाराजा के पास ऋषिवर के देहान्त के बाद भी अनेक वर्ष रहा और महाराजा ने ही उसे ऋषिवर की सेवा के लिए नियुक्त किया था। इस तथ्य को लेकर कुछ अन्य विद्वानों ने भी अपने विचार दिए हैं।

पिछले दिनों एक सज्जन ने 'आर्य जगत्' में एक टिप्पणी प्रकाशित करवाई थी, जिसमें यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया था कि आर्य मुसाफिर पंडित लेखराम जी ने गुरु विरजानन्द के भक्त श्री नयनसुख जड़िया के साक्ष्य से ऋषि दयानन्द के प्रति जो कुछ दण्ड आदि देने की घटनाएं वर्णित की गई है, वे ठीक नहीं।

एक और विवाद का विषय ऋषि दयानन्द का अपने जीवन में दूसरी बार टंकारा जाने के सम्बन्ध में भी है।

सम्भवतः विद्वानों में यह आलोड़न प्रत्यालोड़न की परम्परा तो चलती ही रहेगी। इन सब विषयों पर एक साथ तो विचार करना सम्भव नहीं। अतः पहले ऋषि दयानन्द पर फिल्म निर्माण की बात पर ही विचार किया जाए।

आर्य भाइयों की सेवा में यह सूचना भी देना ठीक होगा कि फिल्म निर्माण कार्य का कुछ प्रारम्भ भी हो गया है। 'धर्मयुग' साप्ताहिक सचित्र पत्र में दो चित्र भी आ चुके हैं। फिल्म के हीरो ऋषि के साफे-चोले से सुसज्जित खड़ी मुद्रा मे, तथा एक चित्र मे बैठी मुद्रा में।

वस्तुतः इस आन्दोलन का प्रारम्भ तब हुआ, जब दिल्ली में एक सभा हुई। इसमें आर्य समाज के प्रसिद्ध अनेक संन्यासी तथा विद्वान् उपस्थित थे। आन्दोलन के लिए एक समिति बनाई गई। प्रसिद्ध संन्यासी श्री विद्यानन्द जी सरस्वती उसके संयोजक नियत किये गए। इस समिति की ओर से यह कहा गया कि ऋषि दयानन्द ने कर्णवास में स्पष्ट रूप से महापुरुषों के स्वांग भरने का विरोध किया था। उनके पत्रों से भी ऐसे नाटक आदि के प्रति उनका दृढ विरोध प्रकट होता है। आचार्य प्रवर श्री विश्वश्रवा. व्यास जी ने यह विचार एक लेख में प्रगट किया है कि इस विवाद को सार्वदेशिक सभा के पास भेजा जाना चाहिए था और धर्मार्य सभा इसका निर्णय करती। परोपकारिणी सभा या अन्य किसी समिति का आन्दोलन चलाना ठीक न होगा।

इधर सेठ योगेन्द्र पाल जी, आचार्य सत्यप्रिय जी तथा अन्य सज्जनो ने ऋषि पर फिल्म बनाने के औचित्य को सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। मैं समझता हूं कि श्री सेठ जी तथा अन्य सज्जन भी आर्य समाज की हितभावना से ही प्रेरित हैं तथा उनकी युक्तियों में बल भी है। फिल्म या चलचित्र प्रचार का एक सशक्त साधन है। इसका प्रभाव बहुत व्यापक है। चलचित्रों के ही प्रभाव से हिन्दी का प्रयोग भारत भर में व्याप्त हो गया है। चित्रों द्वारा प्रशिक्षण बड़ा प्रभावी प्रशिक्षण है। कुछ लोगों का यह विचार है कि सम्भवतः ऋषि दयानन्द को इस सशक्त माध्यम के विषय में अधिक ज्ञान न था। इसलिए उन्होंने इसका विरोध किया। श्री योगेन्द्रपाल सेठ जी ने कन्धे पर बाजा उठाए, ग्राम-ग्राम जाकर प्रचार करने वाले भजनोपदेशकों की खिल्ली भी उड़ाई है।

मेरा नम्र निवेदन यह है कि विरोध और विवाद का क्षेत्र संकुचित हो जाए यदि यह समझ लिया जाए कि कोई भी सज्जन फिल्म या चलचित्र के महत्व को और इस बात को कि यह एक बहुत महत्वपूर्ण सशक्त प्रचार का माध्यम है, मानने से इन्कार नहीं करते। यह भी कोई नही कहता कि आर्य विचारो पर आधारित फिल्मे न बनाई जाएं। ऐसी फिल्मे तो बन रही है, और बनेंगी भी। आक्षेप तो केवल ऋषि दयानन्द के व्यक्तित्व को फिल्म द्वारा चित्रित करने पर है।

यदि हम यह स्पष्ट समझ ले कि फिल्म कोई ऐतिहासिक चित्र नही होता, फिल्म मे व्यक्ति अथवा घटना को कल्पना की पुट देकर आकर्षक और मनोरजक बनाकर चित्र पट पर लाया जाता है, फिल्म इतिहास नही एक प्रकार दृश्य काव्य है, उसमें तथ्य एक छोटा-सा भाग है। पात्रों के कल्पित रूप और कल्पित घटनाओं की उद्भावना करके सजावट उत्पन्न करना ही महत्व की बात है। यही बात काव्य और नाटक में भी होती है। जो भी महापुरुष एक बार काव्य-नाटक-नौटंकी आदि के काल्पनिक रूपों में प्रवेश पा गया, उसका चरित्र ऐतिहासिक न रह कर काल्पनिक हो जाता है। राम और कृष्ण का चरित्र इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। धार्मिक पुराण शास्त्र (मिथोलोजी) प्रत्येक धर्म का एक सुन्दर अंग है। महारास में गोपियों को आलिंगन कर नृत्य करते हुए भगवान कृष्ण की बांकी छवि भक्तो को सदा लुभाती है। यदि दयानन्द भी कल्पना के पात्र बने, तो गुर्जर वालाओं के साथ डांडिया नृत्य करते हुए ऋषि की मनोरम मूर्ति भी चित्रपट पर आ सकती है।

फिल्म उद्योग के दो मुख्य लक्ष्य हैं मनोरंजन तथा अर्थ प्राप्ति। केवल लोगों को धर्म शिक्षा या आचार शिक्षा देने के लिए कोई लाखो रुपया खर्च कर फिल्म नही बनाता। मनोरंजन द्वारा ही अर्थ प्राप्ति होती है। ऋषि के जीवन मे भी मनोरंजन के अनेक साधन कलाकार को उपलब्ध हो जाएंगे। बहिन की मृत्यु के समय बालक मूलशकर नृत्य देखने गया हुआ था, एक वेश्या ने शृंगार द्वारा ऋषि को प्रलोभित करने का प्रयत्न किया था। वेश्या विरोधियो द्वारा भेजी गई थी। जोधपुर दरबार का दृश्य भी मनोरजक होगा। जहां इतिहास सहायता न देगा वहां कल्पना काम करेगी।

क्या ऋषि जीवन का यही रूप प्रचार का साधन बनेगा?

आजकल कैलेण्डरो द्वारा भी प्रचार हो रहा है। क्या उन पर ऋषि का ऐतिहासिक चित्र होता है। मूर्ति निर्माण भी तो कलात्मक प्रचार का एक साधन है। मूर्तिया और समाधियाँ आजकल का फैशन हैं। मूर्ति पर हार भी चढते है पर कभी-कभी मुंह काला भी कर दिया जाता है। मूर्ति बनाने पर मूर्ति रक्षा भी आवश्यक हो जाती है। ऋषि ने तो मूर्ति और समाधि बनाने का प्रबल विरोध किया था, फिर भी कही-कही ऋषि की मूर्तिया बनी है। अन्य आर्य नेताओ की भी मूर्तियाँ बनी है।

फिल्म और उपन्यास का विषय जब ऋषि दयानन्द बन गए तो रामलीला की तरह दयानन्द लीला भी होनी शुरू हो जाएगी। महापुरुषो के इन्हीं काल्पनिक रूपो द्वारा इतिहास की हत्या होती है। इस दृष्टि से ऋषि का विरोध सच्चा था।

आम चुनावो के समय प्रबल प्रचार चला। फिल्म, दूर-दर्शन, दूरभाष तथा समाचार पत्र इन सब साधनो के होते हुए भी विभिन्न दलों के नेता और उनके कार्यकर्ता दर-दर घूमे। अधिक से अधिक व्यक्तियो तक सम्पर्क किया गया। व्यक्तिगत सम्पर्क प्रचार का सबसे अच्छा साधन है, क्योंकि यह सीधा और सरल है तथा अधिक प्रभावी है। अन्य साधन सीधे माध्यम नही हैं। जो आर्य-समाजो के अधिकारी दुकानों तथा अपने-अपने कार्यालयों मे बैठ कर चपरासियों तथा समाचार पत्रों द्वारा जनता से सम्पर्क चाहते है, वे कभी पूर्णतया सफल न होंगे। ऋषि दयानन्द तथा आदि शंकराचार्य जैसे प्रचारकों ने देश भर मे घूम-घूम कर प्रचार किया, केवल साहित्य द्वारा नही। वे इस व्यक्तिगत सम्पर्क के महत्व को जानते थे।

कन्धे पर बाजे और बिस्तर रख कर गाँव-गाँव घूमने वाले भक्त बस्तीराम जैसी भजनमण्डलियों ने ही हरियाणा को आर्यसमाज का गढ बना दिया। पंजाब में शहरों को ही

(शेष पृष्ठ १८ पर)

मेरी जावा और बाली द्वीपों की यात्रा

—स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती—

शायद सन् 1936 की बात है। नई-नई मेरी शादी हुई थी। न जाने कहा से मेरे घर एक ज्योतिषी आ टपके। मेरा हाथ पकड़ कर हस्त-रेखायें देखने लगे। पास बैठी पत्नी ने उत्सुकता से पूछा—विदेश जाने की भी क्या कोई सभावना है? मेरे घर की परिस्थिति सबको पता थी। 150) यूनिवर्सिटी का मासिक वेतन था। सभी स्थिति भापकर ज्योतिषी ने सहानुभूति प्रकट करते हुए बताया—मेरे हाथ मे विदेश यात्रा की कोई रेखा नही है।

मैं नही जानता कि किस अरमान से नव-विवाहिता मेरी पत्नी ने उनसे यह प्रश्न पूछा था, और निराशाजनक उत्तर पाकर उसकी क्या भावना रही होगी।

बात वहा की वहा रह गयी। दुनिया बदली। मालूम नही, हस्तरेखाये बदली या नही बदली। मैंने और मेरी पत्नी ने जी भरके यूरोप की यात्रायें की, अपने खर्चे से। कराची देखा, बेरूत देखा, केयरो गए, एथेन्स गये, रोम गये, ज्यूरिख गये, फ्रैंकफुर्ट (जर्मनी मे तीन सप्ताह रहे), पैरिस गए, स्पेन (बार्सिलोना) गए, लदन रहे और वापसी में वियना और इस्तम्बूल भी रहे।

और तब से आज तक मैंने इतनी विदेश यात्रायें की हैं, कि अब उसकी कोई उत्सुकता नही रही है। विदेश यात्रा की संख्या यह कौन सी थी कैसे गिनाऊं—पासपोर्ट की मोहरों के आधार पर, या अन्यथा मान लीजिए कि मेरी यह तेरहवीं विदेश यात्रा थी। पिछले वर्ष भारतीयों के प्रतिनिधि-मण्डल के साथ मॉरिशस गया था, एक सप्ताह के लिए और 30 अक्टूबर को भारत लौटा।

बहुत दिनो से बाली और जावा द्वीपों मे जाने की बात डी० ए० वी० कालेज कमेटी के अध्यक्ष प्रो० वेदव्यास जी चला रहे थे। कई बार प्रोग्राम बने और बिगड़े। अकस्मात् मुझे सूचना कलकत्ते मे मिली कि 2 फरवरी 1985 को हम लोग दिल्ली से बैंकाक के लिए प्रस्थान करेंगे। इस यात्रा का प्रबन्ध डा० सत्यकेतु जी की पुत्री श्रीमती उषा त्रिखा ने किया था और सत्यकेतु जी भी हमारी यात्रा मे साथ थे। मेरे साथ डी०ए०वी० कालेज के व्यक्तियो, श्री दरबारी लाल जी, प्रिंसिपल कृष्णसिंह आर्य (चंडीगढ़), प्रिंसिपल तिलक राज गुप्त, होशियारपुर विश्वेश्वरानन्द शोध संस्थान के श्री भास्करन् नैयर और श्री एस० पी० पुरी (चार्टर्ड अकाउण्टेण्ट) थे। सभी अपने थे। टोली के अन्य साथियो से भी अच्छा भाई-चारा हो गया था।

दिल्ली से 2 फरवरी की रात्रि वेला में चले और भोर होते-होते बैंकॉक पहुंच गए। सन् 1980 को अपनी बर्मा यात्रा के बाद में 10 दिन बैंकॉक भी रह आया था। बैंकॉक आर्य समाज मे रहा था। देवरिया (पूर्वी उत्तर प्रदेश) के कतिपय ग्रामीणो ने इस आर्य समाज को जन्म, पोषण किया। यह आर्य समाज उत्तर प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ अब भी सम्बद्ध है। इस समाज का संचालन जो व्यक्ति करते हैं, वे न तो धनी है, न बहुत पढ़े-लिखे विद्वान्, रक्षा को वे कुछ सस्थाओ मे दरबानी करते हैं। अपनी ईमानदारी के लिए थाइलेंड में इनकी बडी साख है। एक यज्ञ शाला है, सुन्दर हॉल है, और अतिथि भवन, पुस्तकालय आदि के लिए ऊपर-नीचे 6 कमरे हैं। इन लोगों ने 3 ता० को हम लोगों का स्वागत किया। रविवार का दिन था, उन्होने हमारे भोजन का भी प्रबन्ध किया।

थाई भाषा में सत्यार्थ प्रकाश

सबसे बड़ी बात तो यह थी, कि आर्य समाज के अधिकारियों ने हमे बताया कि उन्होने सत्यार्थ प्रकाश का थाई-भाषा मे अनुवाद करा लिया है, और अब वह इसके छपाने का प्रयत्न कर रहे हैं। क्या मैं आशा करूं कि भारत के धनीमानी व्यक्ति अथवा हमारी संस्थाये उनकी कुछ आर्थिक सहायता कर सकेंगी। मुझे थाई भाषा के विद्वान् श्री शनन छायानुकूल (Sanan Chaiyanukul) से भी मिलाया गया, जिन्होने अंग्रेजी सत्यार्थ प्रकाश के आधार पर थाई भाषा मे सत्यार्थ प्रकाश अनूदित किया है। जो धनीमानी सज्जन थाई-भाषा के प्रकाशन में सहायता करने की उदारता करें, वे सेक्रेटरी आर्य समाज, जी० पी० ओ० बाक्स 799, बेंकाक, थाईलैंस से पत्रव्यवहार कर सकते हैं—मेरा उल्लेख करते हुए।

५ टन स्वर्ण की बुद्ध-मूर्ति

बैंकॉक मेरा देखा हुआ था—वहां की रामायण-चित्रावली, महात्मा बुद्ध की स्वर्णमूर्ति—साढ़े पाच टन 18-कैरट सोने की बनी हुई, इत्यादि-इत्यादि। मैं पहले पटाया (Pattaya) नही गया था—इस बार इसे भी देखा। समुद्र के किनारे पर बसी हुई भव्य नगरी है जिसमे विलास-प्रेमी यात्री आधुनिकता का रसानन्द लेते हैं।

हम लोग बेंकॉक से सिंगापुर पहुंचे, पर एयरड्रोम पर ही समय बिताया (मेरी दृष्टि मे जितना भव्य सिंगापुर का एयराड्रोम है, संसार का और कोई एयरड्रोम शायद ही हो)। यहां हमारे साथियों ने मन भर कर खरीदारी की। सारा सिंगापुर तिकड़मो से खरीदारी करने का एक विश्वविख्यात केन्द्र बन गया है। जैसे तीन लोक से न्यारी काशी कही जाती है, उसी प्रकार व्यापारियो के लिए तीन लोक से न्यारा सिंगापुर है।

इण्डोनेशिया और बाली

6 फरवरी की रात्रि को हम लोग सिंगापुर से जकार्ता पहुंच गए और सावेय-मेट्रोपोलिटन होटल मे रुके। जकार्ता समस्त इण्डोनेशिया की राजधानी है। पिछले विश्व युद्ध मे जापानियों ने इन स्थलो पर बमबारी की थी, जिसका परिणाम यह हुआ, कि जावा, सुमात्रा, बाली आदि द्वीप योरोपियनो के शासन से मुक्त हो गए। जावा, बोर्नियो, सुमात्रा, बाली आदि कतिपय द्वीप मिलकर अब नया देश बन गए हैं, जिन्हें इण्डोनेशिया कहते हैं। जावा मे मुसलमान अधिक हैं, पर बाली मे पुराने भारतीयों की बस्ती है, जिनकी संस्कृति 6-8वी शती मे प्रारम्भ हुई थी—शैवो की जब प्रधानता थी, और पौराणिकता अभी पूरी तरह पल्लवित नहीं हुई थी। चार वर्ण थे—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र और वे अपने-अपने गुण धर्मों पर निर्धारित होते थे। व्यवसायभिन्नता होने पर एक ही जन्म में परिवार में कई वर्ण के व्यक्ति भी हो सकते हैं। अपने देश में जैसे अनेक उपभेद ब्राह्मणो मे हैं, या क्षत्रिय एवं वैश्यों में भी, इस बाली-संस्कृति में वैसे उपभेद नही हैं। वर्ण के बाहर भी विवाह हो सकते हैं। कुछ-कुछ मनुस्मृति के आचारो का यहां प्रचार है। यज्ञों की यहां प्रथा रही है। विशेष यज्ञों मे अरण्य और ग्राम्यपशु दोनों दूर-दूर से लाये जाते हैं। अरण्यपशु यज्ञ की समाप्ति पर छोड़ दिए जाते हैं—कुछ की बलि भी चढ़ा दी जाती है।

शान्ति और स्वस्ति

इण्डोनेशिया की राजनीति में मुस्लिम, भारतीय पूर्ण धर्म, और ईसाई धर्म, तीनों को साथ-साथ प्रश्रय देने की नीति आरम्भ की गई है। भाषा सबकी ही संस्कृतनिष्ठ है। बाली के आर्य भारतीयों में अभिवादन के लिए "ओम स्वस्ति स्तु" कहा जाता है। ओम, शान्तिः शान्तिः, भी सब लोगों को याद हैं काफी लोगों को गायत्री मन्त्र भी याद हैं। लगभग सभी मांसाहारी हैं। इन्हें गाय का मांस भी खा लेने में कोई अनौचित्य नहीं दिखाई देता।

यह याद रखना चाहिए कि थाइलेंड, जावा, बाली आदि देशों में यदि रामायण के खेल दिखाये जाते है, तो इस दृष्टि से नहीं कि उनकी राम मे या राम के चरित्र में कोई आस्था है। थाईलैंड की रामायण मे सीता को राम की पत्नी नहीं, किन्तु उनकी प्रेमिका माना जाता है। यहां के लोगों की रुचि कला-पूर्ण अभिनय में है। इस अभिनय का मुख्य आनन्द मुखौटे लगाकर चरित्रचित्रण करने मे है। बाल्मीकि रामायण की कथानक इन देशों में इसीलिए लोकप्रिय और रुचिकर हुआ कि इसके अभिनय में कभी उन्हें बन्दर बनना पड़ता है, कभी रीछ बनना पड़ता है, कभी सोने का मृग बनना पडता है। हनुमान को परिस्थिति के अनुसार अपना शरीर घटाना-बढ़ाना पड़ता है। रावण को दशानन (दशकधर) दिखाना पड़ता है, और चतुराई से वह सीता हरण करता है।

बाल्मीकि रामायण के कथानकों की यही कलापूर्ण विशेषता है, कि उन कथानको में अमानवीय तत्त्व काफी हैं। रामायण के पात्रों में जानवर भी हैं, पक्षी भी हैं, बन्दर भी हैं, रीछ भी हैं, हिरन भी हैं। शुद्ध संस्कृत बोलने वाला भी बन जाता है, राक्षसनिया भी हैं, और हर प्रकार के रूप धारण करने वाले राक्षस भी हैं। बीच-बीच मे विमान भी हैं, और सीता को बगल में दबा कर और उड़ाकर ले चलने वाला रावण भी है। वहा इस रामलीला को खेलने वाली सांस्कृतिक मण्डलियां भी हैं। अगर आदि कवि बाल्मीकि ने अपने जगत्-प्रसिद्ध काव्य मे इन मानवेतर तत्त्वों का समावेश न किया होता। तो यह काव्य कदाचित् अभिनय की दृष्टि से इतना लोकप्रिय न होता। मानव दुर्बलताओं के भी अनेक चित्रण इस काव्य में हैं, और श्रेष्ठतम मानव के आदर्श के चित्रण भी। यही आदि कवि के इस महाकाव्य की विशेषता है। 'अभिज्ञान शाकुन्तलं' के जगत् प्रसिद्ध नाटककार कालिदास भी अपने नाटक में ऐसे तत्त्वों का समावेश करते हैं, और शेक्सपियर भी अपने नाटक टेम्पेस्ट (Tempest) मे। इन अमानवीय तत्त्वों को मानवीय और ऐतिहासिक सिद्ध करने की प्रवृत्ति से कवि की काव्य कला की अवहेलना ही होती है।

आर्य समाज क्या करे?

थाईलैंड, बाली, आदि स्थलों पर आर्य समाज को क्या करना चाहिए, यह एक विचारणीय विषय है। बैंकॉक में आर्य समाज है, सिंगापुर में भी आर्य समाज है। पर ये आर्य समाजें अब तक भारतीयों में ही कार्य करती रही हैं। बैंकॉक की आर्य समाज सिंगापुर की आर्य समाज से (मेरी दृष्टि में) अधिक अच्छी है। सिंगापुर की आर्य समाज

(शेष पृष्ठ २६ पर)

'योगदर्शन के अनुसार चार प्रकार के दुःख'

—ब्र० विवेक भूषण दर्शनाचार्य

(गतांक से आगे)

और यह तब तक होता रहेगा, जब तक कि वह यन्त्र हमारे पास सुरक्षित लौट नहीं आवेगा। साथ ही यह भी मन में भय बना रहेगा कि कहीं पड़ोसी व्यक्ति हमारा यन्त्र खराब न कर देवे। इसे 'ताप-दुःख' कहते हैं। इसी प्रकार से कोई अन्य कीमती वस्तु (कपड़े, करदीप (टार्च), कार आदि वाहन) मांगने पर होने वाले दुःख के उदाहरण भी समझे जा सकते हैं। यदि हम कपड़े के व्यापारी हैं, और हमारे बाजार में एक और नई दुकान कपड़े की खुलने वाली हो, तो उस से हमारे व्यापार में धन की कमी होने से हमें दुःख होगा, वह भी ताप दुःख, इत्यादि।

(३) संस्कार दुःख—जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु से सुख भोगता है, तो मन पर सुख के संस्कार पड़ जाते। ये ही संस्कार कुछ समय के पश्चात् उस व्यक्ति को पूर्व भोगे हुए सुख की ओर पुनः प्रेरित करते हैं। परन्तु जब किन्हीं कारणों से उस सुख की प्राप्ति नहीं हो पाती, तो व्यक्ति दुःख का अनुभव करता है। यह दुःख संस्कारों के कारण होता है, इसलिए इसे 'संस्कार दुःख' कहते हैं। इसी प्रकार से जब व्यक्ति किसी वस्तु से दुःख प्राप्त करता है, तो मन पर दुःख के संस्कार पड़ जाते हैं। जब वह दुःखदाई वस्तु पुनः सामने उपस्थित हो जाती है, अथवा वह व्यक्ति उस दुःखदाई वस्तु का स्मरण कर लेता है, तो वे ही दुःख के संस्कार पुनः दुःख को उत्पन्न कर देते हैं। यह दुःख भी संस्कारों के कारण होता है, अतः इसे भी संस्कार दुःख कहते हैं।

उदाहरण—कल्पना कीजिए, कोई व्यक्ति प्रतिदिन कार से अपने कार्यालय में जाता है। कार में यात्रा करने पर वह सुख का अनुभव करता है। यदि किसी दिन उसकी कार रास्ते में खराब हो जाए अथवा पहिया पंचर हो जाए और उसे टैक्सी भी न मिले बस में ही यात्रा करनी पड़े, तो उसे दुःख होगा। उसने कार से होने वाले सुख के संस्कार अपने मन पर डाल लिए थे। जब वह सुख किसी दिन नहीं मिला, तो उन संस्कार के कारण उसे दुःख उठाना पड़ा। इसी प्रकार से चाय, पान, बीड़ी का सेवन करने वालों को जब ये वस्तुएं यात्रा आदि में अथवा अन्य किन्हीं कारणों से उपलब्ध नहीं हो पातीं तब उन्हें जो दुःख होता है, उसे प्रायः सभी लोग जानते हैं। यह सब 'संस्कार दुःख' कहलाता है। दूसरे पक्ष में—एक व्यक्ति ने दूसरे व्यक्ति का अपमान कर दिया। उससे उसे दुःख हुआ। जब अपमान करने वाला व्यक्ति उसके सामने आयेगा अथवा वह अपमानित व्यक्ति उस अपमान करने वाले व्यक्ति का स्वयं स्मरण कर लेगा, तो उसे उन संस्कारों के कारण दुःख होना आरम्भ हो जाएगा, जो संस्कार उसने अपमान होते समय अपने मन पर डाल लिए थे। इसी प्रकार से किसी से धोखा खाने वाला व्यक्ति, किसी से मार खाने वाला व्यक्ति, किसी अन्य प्रकार की हानि उठाने वाला व्यक्ति भी, सम्बन्धित धोखेबाज या पीटने वाले व्यक्ति के सम्मुख उपस्थित हो जाने पर अथवा उनका स्मरण कर लेने पर जिस दुःख का अनुभव करता है, वह भी 'संस्कार-दुःख' कहलाता है।

(४) गुणवृत्तिविरोध दुःख—योग दर्शन के व्यास-भाष्य के आधार पर इस दुःख के दो स्वरूप समझ में आते हैं। 'गुण' का अर्थ है=सत्व, रज और तम नामक सूक्ष्मतम कण, जिनके समुदाय का ही नाम 'प्रकृति' है। 'वृत्ति' का अर्थ है=स्वभाव।

गुणवृत्तिविरोध दुःख का पहला स्वरूप

(क) चित्त में गुणों का परिवर्तन—प्रकृति से उत्पन्न सभी पदार्थ त्रिगुणात्मक हैं। चित्त (अथवा मन) भी त्रिगुणात्मक है। इन तीनों गुणों=(सत्व, रज और तम) की वृत्तियों=(स्वभाव) में परस्पर विरोध है। यथा—सत्व सुख को उत्पन्न करता है और तम मिथ्या-ज्ञान को उत्पन्न करता है। इसी प्रकार से सत्व धार्मिक प्रवृत्तियों=(न्याय, दया और परोपकार, कर्तव्यपालन आदि) को उत्पन्न करता है और रज अधार्मिक प्रवृत्तियों=(पक्षपात, हिंसा, चोरी, स्वार्थ आदि) को उत्पन्न करता है। चित्त में स्थित इन गुणों का प्रभाव आत्मा पर पड़ता है। इन गुणों का व्यापार=(कार्य करना) चचल है। इसका व्यापार चचल होने से चित्त में स्थित इन गुणों के प्रभाव में भी परिवर्तन होता रहता है। जब कभी व्यक्ति सत्वगुण के प्रभाव से परोपकार, न्याय, दया, धर्म आदि से युक्त होता है, तो वह सुख का अनुभव करता है। परन्तु किसी कारणवश रजोगुण या तमोगुण के प्रभाव से उसको यह स्थिति छूट जाती है और वह स्वार्थ, पक्षपात हिंसा, चोरी आदि के विचारों से युक्त हो जाता है तो उसे दुःख होना प्रारम्भ हो जाता है। यह दुःख इन गुणों की वृत्तियों=(स्वभाव) के परस्पर विरुद्ध होने से होता है, इसलिए इसे 'गुणवृत्तिविरोध दुःख' कहते हैं।

उदाहरण—सत्वगुण के प्रभाव से मन=(चित्त) में यह विचार उत्पन्न होता है कि—'चोरी नहीं करनी चाहिए, मेहनत से काम कर खाना अच्छा है।' रजोगुण के प्रभाव से मन में एक विरुद्ध विचार उत्पन्न होता है कि—'एक बार चोरी कर लो, क्या फर्क पड़ता है। बीस हजार रुपए मिल जाएगे, आगे फिर चोरी नहीं करेंगे।' अब इन दोनों वृत्तियों में परस्पर विरोध होने से युद्ध चलता है। इस युद्ध के परिणामस्वरूप व्यक्ति व्याकुल=(दुःखी) हो जाता है। क्योंकि यह वृत्तियों के विरोध से होता है, अतः 'गुणवृत्तिविरोध' दुःख कहलाता है। इसी प्रकार से—सत्वगुण='समय हो गया है, अब घर चलना चाहिए।' रजोगुण='घर तो रोज समय पर ही जाते हैं, आज तो सिनेमा देख ही लेते हैं। कुछ देर से घर पहुंच जाएगे।' फिर इन वृत्तियों में युद्ध और फिर चित्त की व्याकुलता आदि होना—सर्वत्र समझ लेना चाहिए।

गुणवृत्तिविरोध दुःख का दूसरा स्वरूप

प्रत्येक भौतिक पदार्थ दुःख से युक्त हैं—प्रकृति से उत्पन्न सभी पदार्थ सत्व, रज और तम से युक्त हैं। प्रत्येक भौतिक पदार्थ में कम या अधिक मात्रा में इन तीनों गुणों=(सूक्ष्मतम परमाणुओं) का समावेश है, और प्रत्येक पदार्थ में विद्यमान होते हुए, अपने-अपने स्वभाव के कारण सुख-दुःख और अज्ञान को ये तीनों गुण कम या अधिक मात्रा में उत्पन्न करते ही रहते हैं। क्योंकि रजोगुण भी इन तीनों में से एक है, अतः यह भी प्रत्येक पदार्थ में रहता हुआ कम या अधिक दुःख को उत्पन्न करता ही है। जिस पदार्थ में जिस गुण की अधिकता होती है, वह पदार्थ उसी गुण के नाम से कहा जाता है और उसका प्रभाव भी उसी गुण के अनुसार होता है। जैसे—

उदाहरण—चावल, दूध, बादाम, घी आदि पदार्थ यद्यपि तीनों गुणों के सम्मिश्रण से बनते हैं, फिर भी इनमें सत्वगुण की अधिकता होने और 'सुख देना' रूपी सत्वगुण का प्रभाव विशेष होने से ये 'सत्व-प्रधान' पदार्थ कहलाते हैं। इसी प्रकार से 'मिर्च मसाले' आदि 'रजः प्रधान' पदार्थ तथा 'मद्य-मांस' आदि 'तमः प्रधान' पदार्थ कहलाते हैं।

इतना होने पर भी चावल, दूध, घी, बादाम आदि सात्विक पदार्थों में, रजोगुण की अल्प मात्रा होने पर भी वह अल्प दुःख को उत्पन्न करता ही है। यद्यपि इन सात्विक पदार्थों का सेवन करते समय रजोगुण से उत्पन्न उस अल्प दुःख की सामान्य व्यक्ति को कोई स्पष्ट अनुभूति नहीं होती। फिर भी उपादान कारण के नियम से योगाभ्यासी व्यक्ति उस दुःख का बुद्धि से अनुभव कर लेता है कि—(उपादान का नियम) जब इसमें रजोगुण विद्यमान है, तो दुःख को भी अवश्य ही उत्पन्न करेगा। (क्रमशः)

'आर्य जगत्' के लिए विशेष

वेद और ऊर्ज्जा के संसाधन

7 जुलाई 1974 को अ० भा० ऊर्जा संसाधन विकास एवं परियोजना संगोष्ठी, केन्द्रीय भवन, अनुसंधान संस्थान, रुड़की में पठित

—श्री पं० वीरसेन वेदश्रमी, वेद विज्ञानाचार्य—

समस्त विश्व ऊर्जा से पूर्ण है। इस अखिल विश्व में ऊर्जा का प्रवाह एव सभरण कार्य एक सूक्ष्मातिसूक्ष्म परम परम महान शक्ति से हो रहा है। यजुर्वेद अध्याह 36 के 24 वें मन्त्र मे इस रहस्य को—सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च—इन शब्दो से प्रकट किया गया है। अर्थात् सूर्य ही समस्त जगत की आत्मा है। सूर्य ऊर्जा का केन्द्र है। उसी से समस्त पदार्थों मे ऊर्जा की विविध प्रकार की उत्पति, सचरण, सभरण, वृद्धि आदि कार्य होता रहता है।

सूर्य से समस्त कालचक्र प्रतिक्षण बनता रहता है अतः सूर्य से प्रतिक्षण ऊर्जा का सभरण एव ऊर्जा का संतुलन विश्व मे होता रहता है। सूर्य के नियमित रूप से उदय एवं अस्त के चक्र से ऊर्जा के ताप मे सुनिश्चित तथा सुनियमित न्यूनाधिकता होती रहती है जिससे विश्व मे, उसके विविध पिण्डो मे ऊर्जा का सभरण, सगोपन और सन्तुलन होता रहता है। यह क्रम प्रतिक्षण, प्रतिदिन-रात, प्रति शुक्ल पक्ष, कृष्ण पक्ष मे चलता है। इससे सृष्टि की विविध ऋतुओ का ऊर्जामय जीवन, अन्न, बल, ताप, तेज, वृष्टि, वात शीत से सृष्टि को प्रभावित कर उत्पति का कारण बनता है और एक सवत्तर का ऊर्जामय चक्र 12 मास मे 6 ऋतुओ से बन जाता है

सूर्य से सृष्टि मे विविध न्यूनाधिक तापक्रमो से हमारा जीवन प्रभावित होता है अतः ऊर्जा जीवन का आधार है। यह ऊर्जा विविध पदार्थों के माध्यम विविध रूप मे विकरित, प्रसारित या प्रभावित होती है, अतः ऊर्जा के विविध और रूप ससाधन हो जाते हैं। इसी कारण विविध ऊर्जा के विविध न्यूनाधिक तापक्रम सामर्थ्य से उन ऊर्जा केन्द्रो के नाम भी भिन्न-भिन्न परिगणित हो जाते है। वेद ने समष्टि ऊर्जा की विभिन्न व्याप्तियो मे मूलरूप से एक ही ऊर्जा को प्रकट करते हुए कहा—तदेवाग्निस्तदादित्स्तद्वायुस्तदु चन्द्रमा.। तदेव शुक्र तद् ब्रह्म ता आपः स प्रजापति.॥ यजुर्वेद अध्याय 32 के इस प्रथम मन्त्र मे बताया है कि जो समष्टि ऊर्जा है यही अग्नि रूप मे है। यही आदित्य अर्थात् सवस्तर के 12 मासो के रूप मे न्यूनाधिक ऊर्जा के रूपों मे विद्यमान है। वही ऊर्जा विविध तापक्रमों से अनेक रूप या स्थितियो से विविध वात बलों के रूप में वायु संज्ञक है। वही चन्द्रमा रूप से शीतलता के रूप मे तीव्र तापमय ऊर्जाओं को विभाजित करने वाली है। वही ऊर्जा शुद्धिकारक एव शीघ्रकारी है। वही सब से महान है, परम शक्ति है। वही सर्वत्र व्यापक होने से आप. सज्ञक है वही ऊर्जा सब प्रजाओ का स्वामी होने से प्रजा का पालक तथा रक्षक होने से प्रजापति है।

ऊर्जा के असन्तुलन से प्राकृतिक उपद्रव

पूर्व मन्त्र मे अग्नि, सूर्य, वायु, चन्द्रमा आदि दृष्ट ऊर्जा केन्द्र और अदृष्ट व्यापक ऊर्जा की स्थितियो मे शुक्र, ब्रह्म, आप. तथा प्रजापति को बताया है। विश्व मे यद्यपि ऊर्जा का सन्तुलन क्रम कार्य चलता रहता है तथापि जब असन्तुलन हो जाता है तो ऋतुओ का कार्य बिगड जाता है तो प्राकृतिक उपद्रव, ऋतु वैपरित्य, शीत ऋतु मे शीत का अभाव, असामयिक वृष्टि, आंधी-तूफान, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकम्प, बाढ, रोगो की वृद्धि आदि अनेक रूप मे होने लगते हैं। सृष्टि के पदार्थों मे ऊर्जा की कमी होने पर उनमे ऊर्जा का सभरण या उनको शक्तिशाली बनाने का कार्य सौत्रामणि यागद्वारा किया जाता है जिसकी प्रक्रिया यजुर्वेद के 19, 20 व 21 वे अध्याय के मन्त्रो मे वर्णित है। अर्थात् यज्ञ के द्वारा विश्व के किसी भी भाग मे ऊर्जा की न्यूनता या असन्तुलन को सन्तुलित करने का विज्ञान वेद प्रदर्शित करता है। ऊर्जा का सन्तुलन सृष्टि का जीवन है और उसी का असतुलन प्राकृतिक उपद्रव है।

यज्ञ से ऊर्जा को उत्पत्ति

यज्ञ प्रकिया द्वारा ऋतुओं का संभरण एवं सन्तुलन अग्नि तत्व मे आहुति क्रियाओ द्वारा तथा मन्त्र ध्वनि द्वारा किया जाता है। विश्व मे व्याप्त ऊर्जा के किस भाग व पदार्थ मे ऊर्जा का असन्तुलन है उसके निवारण के लिये मन्त्र और उसके छन्द की व्याप्ति या प्रभाव क्षेत्र का ज्ञान होना चाहिये। गायत्री मन्त्रो की ध्वन्यात्मक ऊर्जा का यज्ञाग्नि में आहुतिपूर्वक कार्य करने से पृथिवी मण्डल एवं उसके पदार्थों पर प्रभाव पड़ता है। त्रिष्टुप् छन्द के मन्त्रों से उत्पन्न ध्वनि ऊर्जा का यज्ञाग्नि में आहुतिपूर्वक प्रयोग से अन्तरिक्ष मण्डल पर अनुकूल प्रभाव होता है और जगती छन्द के मन्त्रों से क्रिया करने पर उसका अनुकूल प्रभाव द्युमण्डल पर पडता है। वेद के यज्ञविज्ञान से समस्त विश्व क्रमश. छन्दो से सगठित एवं नियन्त्रित है।

विश्व व्याप्त मूल ऊर्जा, विश्व के विविध पदार्थों मे विविधता को प्राप्त होकर अपने प्रसारण धर्म के कारण एवं उपयोग लेने पर निष्कासित, विकरित एवं निर्गमन करती है तथा अन्य पदार्थों मे प्रविष्ट होती है। पुन. उस पदार्थ की धारण सामर्थ्य के अनुसार उसमे स्थित रहकर क्रमश: निर्गमन करती है। इस प्रकार विश्व के पदार्थों मे ऊर्जा का संक्रमण चक्र चलता रहता है। परन्तु जब हम किसी पदार्थ का इन्धनवत् प्रयोग ऊर्जा की प्राप्ति के लिये करते हैं और इन्धन नष्ट हो जाता है तथा भस्म रूप को प्राप्त हो जाता है तो ऊर्जा के इन्धन की उत्पत्ति भी आवश्यक है। ऊर्जा के इन्धनो की उत्पत्ति भी प्रकृति मे, विश्व मे स्वत. होती रहती है। प्राकृतिक ऊर्जा की क्षमता से अधिक यदि हम ऊर्जा का निर्माण करे तो ऐसी भी स्थिति आ जाती है कि वैकल्पिक व्यवस्था का आश्रय लेना पडता है।

भस्मीभूत इन्धन से पुनः ऊर्जा

वैकल्पिक व्यवस्था मे एक व्यवस्था भस्मीभूत इन्धन के शीघ्र पुनरुज्जीवन की है। प्रकृति के नियमो के आधार पर प्रकृति मे उसी भस्म इन्धन की पुनः रचना में पर्याप्त समय अपेक्षित होता है। मानवकृत प्रयत्नो की विज्ञानाश्रित प्रक्रिया से शीघ्र सफलता हो सकती है। वेद ने ऊर्जा के विनष्ट साधन या भस्मीभूत रूप को पुनर्जीवित करने के लिये कहा है—प्रसद्य भस्मना योनिमपश्य पृथिवीमग्ने। ससृज्य मातृभिष्ट्वं ज्योतिष्मान् पुनरासदः॥ यजुः अ० 12/38 अर्थात् हे ऊर्जा से सम्पन्न अग्नि, तू जिन ऊर्जा के ससाधन रूप इन्धनों मे प्रदीप्त होता है वे भस्म रूप को प्राप्त होते हैं। उस भस्म मे पार्थिव पदार्थ, ताप और तरल के मिश्रण को संरक्षित कर पुनः इन्धन रूप को प्राप्त हो।

पुनः ऊर्जा की आवृत्ति के लिये यजुर्वेद अध्याय 12 मन्त्र 9 में भी कहा—पुनरूर्जा निवर्तस्व पुनरग्न इषायुषा। पुनर्नः पाह्यंहतः॥ अर्थात् हे अग्नि, तू पुन. ऊर्जा सम्पन्न हो। पुनः ऊर्जा सम्पन्न होने के लिये जिस अन्न अर्थात् जीवन साधन से जीवन स्थिरता प्राप्त करता है उससे पुन ऊर्जा सम्पन्न होकर पुनः हमे रक्षण प्रदान कर। इसी प्रकार यजुर्वेद अध्याय 12 मन्त्र 8 में नष्ट ऊर्जा को पुनः प्राप्त करने को लिखा है—

अग्ने अगिरः शतंते सन्त्वावृतः
सहस्रंत उपावृतः।

अधा पोषस्य पोषेण पुनर्नो
नष्टमा कृधि पुनर्नोरयिमाकृधि॥

अर्थात् हे विविध ऊर्जा की सारभूत अग्नि, तेरे सैकडो आवर्तन और हजारों उपावर्तन होवें। इस प्रकार इन आवर्तन और उपावर्तनों से पोषित होकर हमें नष्ट हुई ऊर्जा से पुनः सुसम्पन्न कर और पुन. ऐश्वर्यवान् सामर्थ्य युक्त कर।

ऊर्जा के एक स्थान से आहरण करके अपने कार्य के निर्विघ्न संचालन के लिये स्थापित करने का भी वेद मे उपदेश है—आ त्वाहार्षमन्तरभूर्ध्रुवस्तिष्ठाविचाचलिः। विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु मा त्वद्राष्ट्रमधिभ्रशत्॥ अर्थात् हे ऊर्जा, तुझको हम द्युलोक, अन्तरिक्ष और पार्थिव साधन स्थानो से अच्छे प्रकार आहरण करे और तुझको सुरक्षित स्थानों मे अविचल, स्थिर करे। सब प्रजा तेरी कामना करे, चाहे, उपयोग ले। तुझसे राष्ट्र का अकल्याण, अमगल न हो। अर्थात् राष्ट्र मे ऊर्जा की स्थिति दृढ रहनी चाहिये और उसका अन्यत्र स्थानों से आहरण आकर्षण करना चाहिये।

आध्यात्मिक एव भौतिक ऊर्जायें

ऊर्जायें अनेक प्रकार है। वर्तमान विज्ञान भौतिक ऊर्जा के साधनों की खोज करता है। वैदिक विज्ञान भौतिक ऊर्जा, आत्मिक ऊर्जा के भी अनुसन्धान, उसको ऊर्जावान् बनाने का उपदेश देता है। सुप्रसिद्ध गायत्री मन्त्र में—भर्गो देवस्य धीमहि—द्वारा जिस भर्ग—तेज को धारण करने का उपदेश है वह परब्रह्म की सर्वश्रेष्ठ ऊर्जा है। परब्रह्म की वह ऊर्जा सविता देव तत्व से ध्यान द्वारा प्राप्त होती है। य आत्मदा बलदा० मन्त्र यजुः अ० 25/13 मे उपासना, भक्ति, योग के द्वारा आत्मिक एवं शारीरिक ऊर्जा-बल प्राप्ति बताया है। येन द्यौरुग्रा पृथिवी दृढ़ायेन स्वस्तभितं →

→

येननाकः । यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः-(यजु० 32/6) मन्त्र मे सृष्टि के पदार्थों में व्याप्त महती ऊर्जा—शक्ति को जानने का संकेत है । हिरण्यगर्भः समवर्त्ततात्र° यजुः 13/4 मन्त्र द्वारा एकमहान् ऊर्जागर्भित ऊर्जा पिण्ड के रूप को प्रकट कर रहा है जो सृष्टि के प्रारम्भ से है।

ऊर्जा से सृष्टि निर्माण

सृष्टि के पदार्थों में अनेक रूप से ऊर्जा है परन्तु यह ऊर्जा सृष्टि मे कही से आई है या आ रही है इसका विवेचन वेद ने ऋग्वेद के अघमर्षण मन्त्रो मे प्रकट किया है। ये मन्त्र ऋग्वेद दशम मण्डल के 190 सूक्त के 3 मन्त्र हैं । उसमे बताया है कि सर्व प्रथम सृष्टि निर्माण के कार्य के प्रारम्भ मे परमात्मा की अनन्त ऊर्जा सामर्थ्य—अभीद्धात्तपस—से—ऋतं च सत्यं च अजायत—ऋतु और सत्य इन दो रूपो को धारण करता है। ऋत अर्थात् गति और सत्य अर्थात् स्थिरता, केन्द्र स्थिति भाव का युग्म उत्पन्न हुआ। दोनो प्रकार की ऊर्जाओं की गति से एक ऊर्जा का प्रादुर्भाव हुआ जिसे वेद मे—ततो रात्र्यजायत—शब्दो द्वारा रात्रि की संज्ञा दी। दैनिक रात्रि से भिन्न वह रात्रि है जिसे ऋग्वेद के दशम मण्डल के नासदीय सूक्त 29 मन्त्र मे—नासदासीन्नो सदासीन्नासीद्रजो नो व्योमापरो यत्—स्थिति वाली प्रथम स्थिति वाली रात्रि रूप मे वर्णित की है। इस रात्रि रूपी ऊर्जा के विकेन्द्रित अर्थात् खण्ड भाव की स्थिति होने से—ततः समुद्रो अर्णवः—दो ऊर्जाओ का युग्म रूप समुद्र और अर्णव की स्थितियां उत्पन्न हुई। रात्रि रूपी ऊर्जा मे एक सम्य भाव था। समुद्र और अर्णव स्थितियो मे घनत्व एव विरलत्व का भेद सापेक्षरूप से उत्पन्न हुआ । नासदीय सूक्त के प्रथम मन्त्र में—किमावरीवः कुहकस्य शर्मन्न अम्मः किमासीद्गहनं गभीरम्—यह स्थिति जो वर्णित की गई है वह समुद्र और अर्णवात्मक स्थिति, कुहक—कुहरा और अम्मस—जल की गहन और गम्भीर स्थिति थी। इसी को अर्णव कहा है। अर्थात् दो प्रकार की सापेक्ष जलीय ऊर्जा की उत्पत्ति हुई। सागर जलो के मूल रूप को हेवीवाटर की श्रेणी मे परिगणित कर सकते हैं। जब इस सापेक्ष घनत्व विभाजित समुद्र और अर्णवो का ऊर्जामय गति—चक्र—प्रवाह चलता है तो उस घनत्व चक्र से काल सापेक्षता गर्भित एव संवर्धित होकर ऊर्जामय स्थिति के गर्भ से दिन और रात्रि का काल सापेक्ष भाव प्रकट हो कर गति करता है। पुन. कालात्मक घनात्मक एवं दिशात्मक सापेक्षता से सूर्य चन्द्रादि रूप मे पृथिवी अन्तरिक्ष एवं द्यु रूप में विश्व की ऊर्जा के केन्द्र बन जाते हैं। समस्त ज्ञात और अज्ञात ऊर्जा के ये साधन रूप से हैं । इनसे निष्पन्न ऊर्जायें परस्पर पूरक भी हैं और परस्पर में ऊर्जा का अन्तर्निवेश भी आदान-प्रदान रूप में होता है।

विश्व में व्याप्त ऊर्जा ओम् है

घनात्मक, दिशात्मक एव कालात्मक सापेक्षता विश्व का जीवन है—परन्तु ये उत्तरोत्तर अपने मूल से सम्बधित हैं। और अन्त मे ऊर्जा के परम सूक्ष्म एवं व्याप्त ऊर्जा के स्रोत से प्रादुर्भूत हैं। ऊर्जा का यह मूल स्रोत परमात्मा है जिसे वेद मे—ओम्—कहा गया है। उसे ही —ख ब्रह्म—यजुर्वेद अ० 40 मन्त्र 17 मे कहा है। खम् -आकाश के समान व्यापक और ब्रह्म—अर्थात् सबसे महान् बडा। अर्थात् कालात्मक, तत्वात्मक एवं दिशात्मक सापेक्षताओ की जहा समाप्ति हो जाती है वही ऊर्जा का व्यापक मूल स्रोत है। इसी मंत्र मे यह भी कहा है कि—योसाऽवादित्ये पुरुषः सोऽआवहम्—अर्थात् जो इस आदित्य मण्डल मे व्याप्त पुरुष=पौरुष=ऊर्जा है वह मैं—ओम ही हूं। इस प्रकार अघमर्षण मन्त्रों मे जिस ऊर्जा से सृष्टि निर्माण का प्रवाह एवं उसके विकास व प्रकाश का विवेचन किया है यह महान् ऊर्जा का स्रोत ओम्—नाम से वेद मे विख्यात है।

ऊर्जा के अनुसन्धान की प्रेरणा

वेद ने उपरोक्त प्रकार से ऊर्जा के परम तथा स्रोत से उत्तरोत्तर सृष्टि के तत्वो में ऊर्जा के अधिष्ठान एवं दैनन्दन ऊर्जा के चक्रो की स्थिति का ज्ञान दिया और उस ऊर्जा के लाभ को विकसित एव अन्वेषित करने के लिये ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र द्वारा निम्न प्रकार ज्ञान दिया—अग्निमीडे पुरोहितम्—हम अग्नि अर्थात् ऊर्जा का, उसके ससाधनो का अनुसन्धान करें। क्योंकि यह पुरोहित है। उत्पत्ति के समय से पहिले परमाणु आदि सृष्टि के मूल कारण को धारण करने वाला है। तथा—यज्ञस्य देवम्-सगम संयोग, मिश्रण, रचनादि कार्य का करने, वाला, पदार्थों का प्रकाशक, व्यवहार का प्रणेता है । —ऋत्विजम्—विविध ऋतुओ को निर्माण करने वाला है। होतारम्—अग्नि पदार्थों को ग्रहण करने वाला तथा दाता भी है। उसमे जिन, शब्द, रूप, रस गंधादि पदार्थों की आहुति दी जाती है उसका यह दाता भी है वह अग्नि—रत्नधातमम्—भी है अर्थात् पृथिवी मे जो अनेक प्रकार की सुवर्णादि धातु हैं उनका और विविध रत्नो का धारण करने वाला व उनका दाता भी है। अतएव—अग्निमीडे—अग्नि का अन्वेषण नित्य करते रहना चाहिये—अर्थात् विविध प्रकार की ऊर्जाओ तथा उसके संसाधनों का अनुसन्धान करना चाहिये। इन्धनों से उत्पन्न ऊर्जा इन्धन की समाप्ति के साथ शीघ्र ही नष्ट हो जाती है। अतः ऊर्जा प्राप्ति के लिए एवं उसके इन्धन संसाधनो का अनुसन्धान आवश्यक है। इस लिये वेद ने इसके ही अनुसन्धान आवश्यक है। इस लिये वेद ने इसके ही अनुसन्धान का सर्वप्रथम उपदेश किया।

ऊर्जा के ससाधनो तथा ऊर्जा की अन्वेषण-प्रक्रिया सदा होती रही है और सदा ही होती रहेगी, क्योकि ऊर्जा इंधनो से प्राप्त होती है अत इन्धन के साथ ऊर्जा का भी ह्रास होना स्वभाविक है। इसलिये ऋग्वेद के दूसरे ही मन्त्र मे कहा अग्निः पूर्वो भिऋषिमिरीड्यो तनैरुत । सदेवाँ एह वक्षक्षति ।। अर्थात् पहले के ऋषि, वैज्ञानिको द्वारा यह अग्नि नित्य स्तोतव्य एवं अन्वेष्टव्य रहा है और वर्तमान के ऋषि=वैज्ञानिको द्वारा भी नित्य अन्वेष्टव्य है। ऊर्जा के ससाधनों की उत्तरोत्तर गवेषणा होनी चाहिये तथा संगोष्ठियां करनी ही चाहिये। क्योकि ऊर्जा ही दिव्यगुणो, दिव्य भोगों और दिव्य ऋतुओ को इस ससार मे हमें प्राप्त कराने वाला है।

ऊर्जा के साधन

अग्नि के पश्चात दूसरा ऊर्जा का संसाधन वायु है अत. ऋग्वेद के दूसरे सूक्त मे—वायो आयाहि—वायु को ग्रहण करने को कहा है। इसी सूक्त में पुन ऊर्जा के साधनो के लिए इन्द्र अर्थात् पार्थिव और सौर ताप-जन्य विद्युत के साथ वायु का उपदेश है। अर्थात् पार्थिव क्षेत्र के समीप के और उससे उत्तरोत्तर ऊपर के स्थानो मे ऊर्जा के ससाधनों का वेद उपदेश करते हुए इस क्षेत्र से भी ऊपर के क्षेत्र के दो ऊर्जा तत्वो का उल्लेख मित्र और वरुण नाम से कर रहा है। मित्र और वरुण से जल के निर्माण का भी साथ ही उपदेश इसी दूसरे सूक्त मे है। मित्र को ऑक्सीजन, वरूण को हाइड्रोजन माना गया है।

तीसरे सूक्त मे इससे भी ऊपर के क्षेत्र की ऊर्जाओ का वर्णन है। अश्विनी नाम से प्रसिद्ध ऊर्जाओ का निर्माण सूर्य एवं चन्द्र का संयोग समय में होता है। द्युलोक और पृथ्वी की शक्तियो के सम्मिश्रण से भी अश्विनी की उत्पत्ति होती है। इसके पश्चात् इन्द्र अर्थात् विद्युत ऊर्जा का क्षेत्र है और उसके पश्चात् समूह रूप मे ऊर्जा के अनेक ससाधन है और उसके भी ऊपर ध्वनी की ऊर्जा है। तत्पश्चात् चतुर्थ सूक्त से ११ वे सूक्त तक द्युलोक की विशाल ऊर्जा का विद्युन्मय क्षेत्र बताया है।

हमे अपने उपयोग के लिये एक ऊर्जा के ससाधन के साथ ऊर्जा के दूसरे ससाधन का प्रयोग करना चाहिये जिससे ऊर्जा की शक्ति-सामर्थ्य मे वृद्धि हो। उदाहरणार्थ काष्ट से प्रदीप्त अग्नि मे यदि किसी तरल ऊर्जा रूपी इन्धन का प्रयोग होगा तो मूल इन्धन के जीवन की वृद्धि होगी और ऊर्जा में तेजस्वोता उत्पन्न होगी। इसी मे वायु की ऊर्जा के सहयोग के लिये वायु का वेगपूर्वक प्रवाह स्थूल इन्धन की बचत का कारण बन कर ऊर्जा को विशेष बल देने वाला हो जाता है। भार, दबाव आदि का संतुलित गतिचक्र यन्त्र वैज्ञानिक रीति से प्रयोग करने से ऊर्जाओं को उत्पन्न कर सकता है।

वर्तमान इन्धनों से प्रदूषण

ऊर्जा के लिये अनेक प्रकार के इन्धनों का प्रयोग हो रहा है। वृक्षो की कटाई, कोयले के लिये खानो की खुदाई, मट्टी के तेल, पेट्रोल एवं गैस के लिये पृथ्वी और समुद्र मे खुदाई द्वारा प्राप्त इन्धन से ऊर्जा की प्राप्ति हो रही है जो कि उत्तरोत्तर अपर्याप्त होती जा रही है। इससे पृथ्वी की शक्ति का ह्रास ही हो रहा है। परन्तु उन इन्धन से भूमण्डल का पर्यावरण उत्तरोत्तर दूषित होता जा रहा है। क्या हम खानो में कोयला उत्पन्न कर सकते हैं? क्या हम मिट्टी का तेल, डीजल, पेट्रोल आदि पृथ्वी मे उत्पन्न करने की क्षमता रखते हैं? यदि उत्पन्न करने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेंगे तो पर्यावरण प्रदूषण भयकर रूप से बढ़कर प्राणिमात्र के जीवन के लिये घातक ही बनेगा।

प्रदूषण रहित ऊर्जा

ऐसी स्थिति मे ऊर्जा के ऐसे ससाधनो की खोज करनी होगी जिससे प्रदूषण कम से कम हो। वेद ने इसका उपाय बताया है—समिधाग्नि दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् । आस्मिन्न् हव्या जुहोतन ।। (यजु. ३/१) कतिपय यज्ञिय वृक्ष विशेष की समिधाओं से, जिससे ऊर्जा अधिक उत्पन्न होती है और अपकारक कार्बन-डाई-ऑक्साइड आदि गैसो की उत्पत्ति अपेक्षाकृत न्यून होती है, उनमें सुगन्धित पदार्थ कपूर से अग्नि प्रदीप्त करे—फिर उस प्रदीप्त अग्नि को घृत से संवर्धित करें और उसमें सुगंधित, रोगनाशक और पर्यावरण शोधक हव्य द्रव्यो की आहुति देवें। इस प्रकार अग्नि और घृत से उत्पन्न ऊर्जा और उपरोक्त गुण युक्त हवि के द्वारा ऊर्जा का निर्माण तो होगा ही, परन्तु पर्यावरण प्रदुषित न होकर शुद्ध और पुष्टि कारक होगा तथा वृक्ष वनस्पति, अन्न, जलादि सभी के लिये परम लाभकारी भी होगा।

घृत का उपयोग ऊर्जा के निमित्त कुछ प्रारम्भ मे कुछ सीमित क्षेत्र मे परीक्षणार्थ करना चाहिए। यद्यपि पेट्रोलियम आदि पदार्थ शीघ्र ज्वलनशील है और घृत शीघ्र ज्वलनशीलता मे सामान्य रूप से नही के बराबर है, परन्तु जब घृत को तीव्र गरम कर दिया जाता है और उष्णता के कारण उसमे बाष्प की उत्पत्ति होती है तो वह भी शीघ्र ज्वलनशील अवस्था मे आ जाता है और उस अवस्था मे उसके तापित धूम्र की क्रियाशीलता से कार, मोटर आदि का सचालन किया जा सकता है। यजुर्वेद अध्याय तीन के मन्त्र दो मे कहा है—सुसमिद्धाय शोचिषे घृते तीव्रं जुहोतन । अग्नये जातवेदसे ।। अर्थात् जब समिधाओ से अच्छी प्रकार अग्नि प्रदीप्त हो तो उस अग्नि मे उत्पन्न उष्ण घृत की आहुति कुछ-कुछ समय के अन्तर से थोडी-थोडी देनी चाहिये जिससे अग्नि का ताप घृत के ताप से बार-बार तेजस्वी होकर उससे उत्पन्न

(शेष पृष्ठ 20 पर)

राष्ट्रीय शिक्षा : रीति-नीति

—स्वामी गुरुकुलानन्द कन्दाहारी—

राष्ट्रीय एकता—अखण्डता—सम्पन्नता हेतु शिक्षा की रीति-नीति केन्द्र सरकार द्वारा संचालित की जानी चाहिये। सम्पूर्ण राष्ट्र में एक पाठविधि हो। ब्रह्मचर्याश्रम (विद्यार्थी जीवन) का सम्बन्ध शारीरिक—मानसिक—आध्यात्मिक आधार को पक्का कर व्यक्ति को स्वावलम्बी—चरित्रवान् – राष्ट्रभक्त नागरिक बनाने से है। शिक्षा व संस्कार प्राप्ति के बाद ही युवक-युवतियों को जनजीवन या राजजीवन में प्रवेश करना चाहिये।

"मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषोवेद" के अनुसार जब शिक्षकत्रयी (तीन शिक्षक) अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है। गर्भावस्था से ५ वर्ष की आयु तक माता, ८ वर्ष की आयु तक पिता और फिर आचार्य बालक/बालिका के जीवन का मार्गदर्शन करते हैं, शिक्षा की रीति-नीति सम्बन्धी सूत्र विचारणीय हैं :—

(१) नि.शुल्क शिक्षा व्यवस्था

अभिभावक को आर्थिक निश्चिन्तता देने पर विचार हो। समानता समाजवाद के संस्कार डालने हेतु छात्र-छात्राओं का सम्पूर्ण (आहार-वस्त्र-पुस्तक आदि) व्यय सरकार द्वारा वहन किया जाय। समान-सुविधा -अवसर देकर प्रत्येक को योग्यता के आधार पर जीवन में स्थान दिया जाय। समान व्यवहार, समान गणवेश आदि के द्वारा अमीरी-गरीबी की भावना दूर करनी चाहिये। सरकार शिक्षा-कोष की संस्थापना करे। प्रत्येक परिवार के केवल दो सन्तानों के ही नि:शुल्क शिक्षा-व्यवस्था पर विचार करना चाहिये।

(२) राष्ट्रभाषा हिन्दी

राष्ट्रभाषा हिन्दी के साथ संस्कृत अंग्रेजी, उर्दू, तामिल, कन्नड, तैलगु बंगला, गुरमुखी, आदि में से कोई दो भाषायें पढने की सुविधा हो।

(३) नैतिक शिक्षा

शिक्षा १ से १० तक क्रमबद्ध नैतिक शिक्षा के रूप में अष्टांग योग (यम-नियम-आसन-प्राणायाम-प्रत्याहार-धारणा-ध्यान-समाधि) की सैद्धान्तिक व क्रियात्मक शिक्षा दी जाय। राष्ट्रीय प्रार्थना हो। महापुरुषों का जीवन चरित्र पढ़ाया जाय।

(४) प्राथमिक विद्यालय

ग्राम व नगर में कक्षा ४ तक के प्राथमिक विद्यालयों में बच्चे घर से पढ़ने आया करें। आठ वर्ष की आयु तक पिता का भी मार्गदर्शन मिलेगा।

(५) आवासीय विद्यालय गुरुकुल

कक्षा ५ से १० तक की शिक्षा हेतु छात्र-छात्राओं को अलग-अलग गुरुकुलों में पूर्ण रूपेण आचार्यों के संरक्षण में रखने से सुसंस्कारों का आधान होगा। घर जाने पर प्रतिबन्ध रहे। सभी को विभिन्न आवश्यक विषयों का बोध कराया जाय।"

"उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम् धियो विप्रोअजायत।" के अनुसार पर्वतों के निकट और नदियों के संगम स्थल पर गुरुओं द्वारा प्रज्ञा और क्रिया-कुशलता से युक्त मेधावी चरित्रवान् संस्कारित विद्वान् बनेंगे। एकान्त शान्त प्राकृतिक स्थान में स्थापित विद्यालयों का वातावरण ही निराला होता है।

(६) महाविद्यालय

कक्षा ११ से छात्र छात्राओं को योग्यतानुसार जीवन में निश्चित सेवायोजन व जीवनयापन हेतु—तकनीकी शिक्षा, मेडिकल, इन्जीनियरिंग, कृषि, वाणिज्य, सैन्य आदि हेतु महाविद्यालयमें प्रवेश दिया जाय। महाविद्यालय में विषय के अनुसार १ से १० वर्ष तक की पाठविधि हो सकती है। लैखिक परीक्षा की अपेक्षा व्यावहारिक.क्रियात्मक परीक्षा को महत्व दिया जाय।

(७) समावर्तन संस्कार [दीक्षान्त संस्कार]

विद्या-शिक्षा समाप्ति पर छात्र-छात्राओं को दीक्षान्त संस्कार के बाद सेवा योजन व समाज सेवा का अवसर दिया जाय। विवाहे हेतु वर-वधू को क्रमश: २४ व १८ वर्ष के बाद अनुमति दी जाय। गृहस्थाश्रम मे न जाने की इच्छुक स्त्री को ३६ वर्ष के बाद क्रमश: चन्द्र श्री व आदित्य श्री की उपाधि से विभूषित व सम्मानित किया जाय। जन गुणा न चाहिवे; गुणीजन चाहिये।

हर्ष है कि प्रधानमन्त्री राजीव गांधी शिक्षा की रीति-नीति में आमूल चूल परिवर्तन हेतु। संकल्प वद्ध हैं। पता—आर्यसमाज, ताड़ीखेत, अल्मोड़ा (उत्तर प्रदेश)

हम कहां खड़े हैं ?

(पृष्ठ १३ का शेष)

प्रचार का केन्द्र बनाने के कारण जमींदार वर्ग तथा उन पर आश्रित मजदूर वर्ग तक आर्य समाज का सन्देश नही पहुंच पाया।

वे आर्य नेता तथा अन्य सज्जन जो फिल्मों की लंगड़े की वैसाखी द्वारा प्रचार की आशा रखते हैं, क्यों नही देख पाते कि विदेश से आई एक देवी मदर टेरसा ने केवल दिव्य सेवा भावना द्वारा भारत भर के तथा संसार के अन्य देशो मे करुणा केन्द्रों का जाल बिछा दिया। ईसाई पादरियों ने कुष्ठ रोगियों की सेवा द्वारा धर्म प्रचार किया। वे यह भी नहीं देख पाते कि सिख भाइयों का प्रत्येक गुरुद्वारा प्रत्येक आगन्तुक की सेवा द्वारा किस प्रकार आकर्षण का केन्द्र बन जाता है। ईमानदारी से जनता जनार्दन की सच्ची सेवा ही प्रचार का, धर्म प्रचार का, सबसे बड़ा साधन है।

दिव्य दृष्टि सम्पन्न ऋषिवर दयानन्द ने जो बात कही थी कि रास मण्डलियों व लीला-पार्टियो द्वारा जो महापुरुषों के रूप को बिगाड़ने वाले होते हैं, यह बात सोलह आने ठीक थी। मूर्तियों और समाधियों द्वारा भी धर्म प्रचार कम होता है, पाखण्ड-प्रचार अधिक होता है। पूज्य महात्मा गांधीजी की समाधि पर हाथ जोड़कर प्रतिज्ञा करने वाले न जाने कितने लोगों को लोभ की आँधी ने उड़ा दिया है।

फिल्म उद्योग के काम करने के इच्छुक आर्य भाइयो को आर्य समाज की या वेदो की विचार-धारा को लेकर कहानियों की फिल्में बनाने से कोई नही रोकेगा। पर ऋषि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द या महात्मा हंसराज आदि महापुरुषों की जीवनियो को फिल्माने से इनका महत्व घटेगा ही, बढ़ेगा नही। इनका ऐतिहासिक रूप अवश्य विगड़ेगा।

इसी सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण आधुनिक प्रसंग की ओर भी ध्यान खींचना आवश्यक है। संसद में भीषण चुनाव संघर्ष में अन्य सब अच्छे बुरे साधनों के साथ फिल्म उद्योग का भी प्रयोग किया गया। १६ दिसम्बर १९८४ के अंग्रेजी पत्र 'इन्डियन एक्सप्रेस' के अनुसार कांग्रेस-ई तथा भाजपा पार्टी ने इसका मुख्य रूप से पालन किया। इन्दिरा-कांग्रेस ने रिडिफ्यूजन नामक संगठन द्वारा लगभग ६० करोड़ खर्च किया। दो फिल्में बनाई गई एक श्रीमती इन्दिरा गांधी पर, नाम "मा" रखा गया। दूसरी राजीव गांधी पर, नाम रखा गया "अमेठी का सूरज" भाजपा दल ने श्री अटल बिहारी पर फिल्म बनवाई, निमाया संगठन द्वारा। खर्च लगभग २० लाख रुपया। इन फिल्मों की सैंकड़ों प्रतियाँ प्रदर्शनार्थ देश भर में भेजी गई। एक प्रति पर खर्च लगभग एक लाख।

पर क्या इन फिल्मों में इन मान्य नेताओं के सही चित्र थे। बिल्कुल नहीं—काल्पनिक सौन्दर्य मय रूप। इतना खर्च करने पर भी दोनों पार्टियो को दर-दर पहुंचने का व्यक्तिगत रूप से प्रयास करना ही पड़ा।

क्या फिल्म प्रेमी ऋषि दयानन्द का भी काल्पनिक सुन्दर रूप जनता के सामने रखना चाहते हैं ?

पता—शान्ति भवन १४५/४ सैंट्रल टाऊन, जालन्धर (पंजाब)

उग्रवादियों को उकसाने वाले अकालियों को गिरफ्तार करो

रोहतक २७ मार्च। हरियाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेर सिंह ने चण्डीगढ़ में भाजपा नेता श्री कृष्णलाल मनचन्दा की कायरतापूर्ण हत्या की और अमृतसर में हिन्दुओं की दुकानें जलाने और बम विस्फोट की तीव्र निन्दा करते हुए भारत सरकार से मांग की है कि वह उन अकाली नेताओं को तुरन्त गिरफ्तार करे जो उग्रवादियों को उकसाने वाले वक्तव्य दे रहे है।

उन्होंने सरदार अमरेन्द्र सिंह (पटियाला नरेश) के वक्तव्य की आलोचना करते हुए कहा कि उन्हें हरियाणा के सिखों की तो चिन्ता है किन्तु पंजाब में हिन्दु नेताओं को चुन-चुन कर मारे जाने की निन्दा उन्होंने आज तक नहीं की। उन्होंने कहा कि समस्या पंजाब की नहीं, हरियाणा की है, क्योंकि अन्याय हरियाणा से हो रहा है, पंजाब से नहीं। हिन्दी भाषी फाजिल्ला और अबोहर हरियाणा को देने के बजाय अब हरियाणा को ही तोड़ने का षड्यन्त्र चल रहा है।

उन्होंने कहा कि रावी व्यास का पानी हरियाणा के हिस्से का है। वह सारा पानी पाकिस्तान जा रहा है। हरियाणा के खेत सूख रहे हैं और लोग एक-एक बूंद को तरस रहे हैं। यदि फाजल्का अबोहर हरियाणा को नहीं दिया गया और लिंक नहर के निर्माण का कार्य शुरू नहीं हुआ तो हरियाणा रक्षावाहिनी आन्दोलन का बिगुल बजा देगी।

गणित से चरित्र-निर्माण

—सुभाष चन्द्र आर्य, अध्यापक गणित—

सभी भाषाओं में लिपि के अनुसार वर्णों तथा अंकों में परिवर्तन होता है जैसे—ब के लिए अंग्रेजी में B (बी) और उर्दू में (बे)। इसी प्रकार अंकों में भी, जो क्रमशः हैं—१, २, ३........, 1, 2, 3,........इत्यादि। किन्तु, गणित के चिन्ह +(योग), – (ऋण), × (गुणा), ÷ (भाग) और = (बराबर) आदि में आज तक परिवर्तन नही हुआ। क्यों नही हुआ, यह विचारणीय है।

इनके स्थान पर आकृतियां भी बन सकती थीं। पर हमारे ऋषियो ने ये ही आकृतियां (विशेष) क्यों प्रतिपादित की? ये दोनों शंकाएं मेरे मन में उत्पन्न हुई। इसके समाधान के लिए, जैसा मैंने अपनी बुद्धि से जाना है वह आपके समक्ष प्रस्तुत है—

विश्व की सबसे प्राचीन पुस्तक वेद हैं और भाषा संस्कृत (देव भाषा) है। सत्य बात है इसी संस्कृत भाषा से ही ये चिन्ह अन्य भाषाओं में गये हैं, जिससे सिद्ध होता कि इनमें आज तक परिवर्तन नहीं हुआ। अब यथा-क्रम चिन्हों का वर्णन इस प्रकार है :—

(१) +योग) :—

आप इस चिन्ह में चार कोण देख रहे हैं; ये, चारों वेदों, (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद, चार वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र), चार आश्रमों (ब्रह्मचर्य गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास), चार लक्ष्यों (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष), चार युगों (सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग) और चार दिशाओं (पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण) के प्रतीक हैं।

चारों विद्या (वेद) का स्वाध्याय गुरुकुल में रहकर करना, चारों वर्णों (योग्यता) को प्राप्त कर, चारों आश्रमों के माध्यम से समाज को गठित कर अपने-२ व्यवहारों को सिद्ध करना और मानव जीवन के चारों लक्ष्यों को प्राप्त होकर, एक आदर्श प्रस्तुत करना, जो चारों दिशाओं में कीर्ति का कारण होकर प्रेम, सत्य, न्याय और शान्ति की सुगन्ध विश्व के कोने-२ में फैले, यही रहस्य इस चिन्ह का है। चरित्र निर्माण में यही प्रक्रिया सर्वोत्तम है।

वर्णाश्रम व्यवस्था का पालन करते हुए अपने-२ कर्तव्यों को करना यही सर्वोत्तम समाजवाद है। संगठन शक्तिशाली होने के लिए किया जाता है, जैसे—५+६+७+८=२६, ५ या ६, ७ या ८ की अपेक्षा से अधिक शक्तिशाली है। २६ में ही ये (अलग-२) पद आ गये। एक होने में एकता है। एक को कोई भी अन्य भाजक (पहाड़ा) विभाजित नही कर सकता। अतः योग हम सभी को शक्तिशाली बनने की प्रेरणा देता है—'जोड़ हमें शिक्षा देता है 'मिलकर रहना'

(२)—(ऋण) :—

यह चिन्ह मार्ग का प्रतीक है, जैसे—किसी गाड़ी को मार्ग का निर्देश करने हेतु सड़क पर एक बोर्ड बना होता है, जिस पर बना चिन्ह रास्ते का निर्देश करता है, उसी प्रकार, यह चिन्ह भी मानव के जीवन पथ का संकेत करता है। वेद में आया है—'**तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्य स्विद्धनम्**'। जिसका अर्थ होता है कि त्यागपूर्वक भोगों को भोगो; प्राकृतिक वस्तु (भूमि, जल, अग्नि, वायु और नक्षत्र इत्यादि) पर उतना ही अधिकार होना चाहिये जितना किसी के लिए आवश्यक है। पृथ्वी पर सबको रहने और जीने का अधिकार है, धन को पाकर हमें घमण्ड नही करना चाहिए। क्योंकि यह धन किसी का नही है। दूसरों के सुख के लिए भी हमें त्याग करते रहना है। दूसरे के अधिकार या भाग का हनन नहीं करना चाहिये। यही एक जीवन-पथ मानव के लिए निर्धारित है और इसके सिवा कोई दूसरा रास्ता नही। माना हमारे पास ९ की सामर्थ्य है तो उनमें से ७ की सामर्थ्य दूसरे की रक्षा के लिए प्रदान करो, तो हमारे पास ५ की सामर्थ्य है तो उसमें से ४ की सामर्थ्य दूसरे की रक्षा के लिए प्रदान करो, तो हमारे पास ५ की सामर्थ्य बच रही। इसका परिणाम यह होगा कि आपस में प्रीति बढ़ेगी और परस्पर रक्षा भी होती रहेगी।

(३) × (गुणा) :—

आप देख रहे हैं कि यह चिन्ह एक प्रकार से घूमता हुआ है, जो यह संकेत कर रहा है कि योग से संगठन और शक्ति बढ़ाकर, त्याग और सेवा से प्रीति और रक्षा, ये जो दो क्रम कहे हैं, उनको राष्ट्र की उन्नति के लिए चालू रखो। इस प्रक्रिया से उन्नति अर्थात् ऐश्वर्य की वृद्धि होती है। यथा—२५+४=२९ तथा २५×४=१००; अतः दोनों का अन्तर (१००—२९)=७१ होता है। यह ७१ ही वृद्धि है। लोक में माता पिता रज वीर्य का दान कर सन्तान की वृद्धि करते हैं; गुरु शिष्यों को विद्या का दान कर अच्छे विद्वान् नागरिकों की वृद्धि करते हैं तथा विद्या की रक्षा करते है। यही उन्नति का क्रम है।

(४) ÷ (भाग) :—

इस चिन्ह में ऊपर का बिन्दु उन्नति या कीर्ति का प्रतीक तथा नीचे का बिन्दु अवनति या अपयश का सूचक है। यह वितरण व्यवस्था तथा न्याय व्यवस्था का भी संकेत देता है। वितरण के लिए ही हम गणित में भाग की क्रिया करते हैं। अर्थात् जिसका जितना भाग जाये वह उसे प्राप्त हो। राष्ट्र में न्याय की तुला हो। सही न्याय मिले तो संघर्ष या युद्ध की आशंका नहीं उठती। महाभारत इसी भाग के छिन जाने पर हुआ। दुर्योधन ने पाण्डवो को उनका भाग नही दिया।

(५) = (बराबर) :—

जब राष्ट्र मे चारों क्रम ठीक ढ़ंग से चलते है तो समाजवाद आ जाता है और समता के दर्शन होते हैं। आनन्द बढ जाता है। यही चिन्ह समता का सूचक है।

गणित के चिन्हो की विशेष आकृतियाँ होने का कारण मेरी बुद्धि में जितना आया है उतना आप लोगों के समक्ष रख दिया है।

पता—श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय
११९ गौतम नगर, नई दिल्ली-४९

तेलगूदेशम भी अकालियों के पदचिन्हों पर

पिछले दिनों जो कुछ पंजाब में हुआ है और मौजूदा सरकार इस समस्या के हल की दिशा में जो कदम उठा रही है, विघटनकारी शक्तिया उसका दुरुपयोग कर रही है। पंजाब में निरन्तर चल रहे हत्याकाण्ड के लिए जो लोग जिम्मेदार है उनको जेल से छोड़ना राजनीतिक बुद्धिमत्ता नही है। पंजाब के अकालियो को छोड़ना और हिन्दू नेताओ को न छोड़ना हम पक्षपात-पूर्ण समझते हैं। सरकार से हमारी अपील है कि पंजाब के हिन्दू नेताओ को छोड़ने के उपरान्त ही कोई वार्ता की जावे। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले और आन्ध्र प्रदेश के नेता प्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम ने यह माँग करते हुए एक सम्मिलित वक्तव्य मे कहा है—आन्ध्र प्रदेश में भी अब पंजाब जैसे नाटक का आरम्भ हो चुका है। तेलगूदेशम पार्टी के उपाध्यक्ष ने हाल ही में विधान परिषद में जो बयान दिया है, वह देश की अखण्डता के लिए खुली चुनौती है। उनका कहना है कि यदि देश का कोई राज्य अपने आप को मजबूत करने के लिए अलग होने की बात करता है, तो उसमें आपत्ति जनक कुछ नही है। तेलगूदेशम पार्टी के अध्यक्ष अब अकालियों जैसी बात कर रहे हैं। उनका कहना है कि केन्द्र के अन्तर्गत—विदेश विभाग, प्रतिरक्षा, संचार-साधन और वित्त के अतिरिक्त अन्य मुद्दों में केन्द्र का दखल नहीं होना चाहिए। उनकी अन्य मांगें इस प्रकार हैं:

(१) प्रान्तों मे राज्यपाल का पद समाप्त कर देना चाहिए।

(२) प्रान्तों के मुख्यमंत्री को प्रधामंत्री के नाम से संबोधित किया जावे। इन्होंने अपनी मागें पूरी न होने पर रक्तपात की भी धमकी दे रखी है।

स्व० सरदार पटेल ने निजाम और उसके रजाकार समर्थक रिजवी के विरुद्ध इसलिए कार्रवाई की थी कि वे भी आजाद हैदराबाद का स्वप्न देख रहे थे। यही स्वप्न अकाली और तेलगूदेशम के पक्षधर देख रहे है।

श्री एन० टी० रामाराव तेलगूदेशम दल के अध्यक्ष और आन्ध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री हैं ये अब तक दो बार अमेरिका हो आए हैं। अमेरिका मे नान रेजिडिन्शियल इन्डियन्स के प्रतिनिधियों तथा अन्य लोगों से उनके मिलने जुलने की बात उतनी निर्दोष नही है जितनी कि बताई जाती है। पंजाब में आपरेशन ब्लूस्टार की रामाराव ने कटु आलोचना की थी।

रामाराव ने बड़ी सूझबूझ से काम लेकर आर्थिक विकास की दृष्टि से तेलंगानावालों को नजर-अन्दाज किया है, और राजनीतिक सत्ता से उन्हें वंचित किया है।

आन्ध्र की किसी सीट से तेलंगाना का कोई उम्मीदवार खड़ा भी नहीं किया। आजाद हैदराबाद के विरुद्ध तेलंगाना की जनता ने जैसा संघर्ष किया है, देश की विघटनात्मक शक्तियो के विरुद्ध भी वह वैसा ही संघर्ष करने को उद्यत हैं।

इस संबंध में हैदराबाद में बृहत् जन सभा (२७।२।८५) में तथ्यों पर विस्तृत प्रकाश डाला था। जन सभा ने सरकार को ३० जून, १९८५ तक का समय दिया था। यदि तब तक कोई कार्रवाई नही की गई तो तेलंगाना में भारी आंदोलन की तैयारियां हो रही हैं। इसी सिलसिले में २७ अप्रैल १९८५ को तेलंगाना के पूरे जिले में मुक्ति दिवस मनाया जा रहा है। □

वेद और ऊर्जा......

(पृष्ठ 17 का शेष)

बार-बार शक्ति से एक मार्ग से निकलकर नियमित ऊर्जा का साभार शक्ति प्रभाव आघात प्रदान करती हुई यन्त्र को चला सके यह पर्यावरण को प्रदूषित नहीं करेगी, प्रत्युत पर्यावरण शोधन के साथ पर्यावरण को पुष्ट भी करेगी।

घृत की ऊर्जा के लिये पशुपालन

यजुर्वेद का प्रारम्भ का मन्त्र—इषेत्वोर्जे त्वा वायवस्थ—है इस मन्त्र मे ऊर्जा की प्राप्ति के लिये यज्ञ का आश्रय लेने के लिये बताया है और यज्ञ के लिये उत्तम गौओं के पालन का— अस्मिन्न गोपतौस्यात बह्वीः —तथा—यजमानस्य पशून् पाहि—यज्ञ के यजमान के पास बहुत गौवें हो—और यजमान के पशुओ की रक्षा हो, यह उपदेश दिया है। वास्तव मे ऊर्जा का आधारभूत साधन गौ आदि पशु ही हैं। गौ की ध्वनि से, उसके श्वास प्रश्वास से, उसके दूध, दही घृत आदि से, उसके मूत्र एवं गोबर से पृथ्वी एवं पर्यावरण शुद्ध होता है। जीवन की नई सभ्यता एवं संस्कृति ने गौ का तिरस्कार किया है। उसको अपने घरों में न रखकर कसाईखानों में भेज दिया है और पृथिवी को उर्वरा बनाने के लिये फर्टिलायजरों को स्थापित किया है जिनसे अन्न-बल ऊर्जा एवं स्वाद विहीन, तथा रोगोत्पादक बन गये हैं। यदि गौ आदि प्राणी हमारे पास बहुत होंगे तो ऊर्जा के साधन शुद्ध होंगे। ऊर्जा का स्रोत घृत प्रचुर मात्रा मे पृथ्वी को बिना खोदे, बिना बड़े-बड़े करखाने खोले प्राप्त होगा। ऊर्जा प्राप्ति के साधन की प्राप्ति गौ के माध्यम से होती रहेगी। अतः यज्ञ द्वारा विश्व के पदार्थों और पर्यावरण में ऊर्जा के संभरण के लिये घृत की आहुति देना विहित किया।

अग्नि, विद्युत और सोम से ऊर्जा

सामवेद का प्रथम मन्त्र—अग्न आयाहि वीतये०—है। इसमे यज्ञ अग्नि से ऊर्जा द्वारा प्रकाश, गति, ऊर्जा उत्पत्ति, स्थान, स्थिति की उपयोगिता, विद्युत की ऊर्जा की उपयोगिता ऐन्द्रकांड मे और सोम की ऊर्जा की उपयोगिता के लिये पवमान सोमकांड में वर्णन है। किसी भी वेद मे दुर्गन्धयुक्त ऊर्जा के संसाधनों के प्रयोग का आदेश नहीं दिया। यदि घृत से ऊर्जा की प्राप्ति एवं उसका प्रचलन प्रारम्भ किया जावे तो संसार में उसका प्रचलन होने लगेगा। घृत से उत्पन्न ऊर्जा में प्रदूषण दोष तो होगा नहीं अपितु अमृत का प्रसारण होगा। यजुर्वेद अध्याय दो के मन्त्र बत्तीस मे—ऊर्ज्जं वहन्तिरमृतं घृतं मयः कीलालं परिस्रुतम्—जब अग्नि मे परिस्रुत प्रणाली अर्थात् क्रमशः अल्प-अल्प मात्रा में घृत, दूध और अन्न रसों का निषिचन किया जायेगा अर्थात् आहुति दी जाएगी तो अमृतमय ऊर्जा का प्रवाह गति करेगा।

जलीय ऊर्जा एवं ध्वनि की ऊर्जा

अथर्ववेद अनेक प्रकार की जलीय ऊर्जाओं के लिए—शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभि स्रवन्तु नः ॥—इससे प्रारम्भ होता है। अर्थात् जलों की ऊर्जाओं से मनोवांछित कामनाओ की पूर्ति होगी और जलाभाव नष्ट होगा, अनावृष्टि, सूखा से संसार मुक्त होगा और सर्वत्र सुख ही सुख होगा। जिन साधनों से वर्तमान समय में ऊर्जा प्राप्त कर रहे हैं वे सर्वत्र सुख का प्रसार प्रदूषण उत्पन्न करने से नहीं कर सकते। अथर्ववेद के प्रथम काण्ड के प्रथम सूक्त का मन्त्र—ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः। वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे ॥—यह है। यह मन्त्र विश्व व्याप्त ध्वनि शक्ति की ऊर्जा को धारण कर विश्व कल्याण में प्रयुक्त करने का संकेत दे रहा है। ध्वनि व्यक्त और अव्यक्त रूप मे है। उसमें महान् ऊर्जा है। ध्वनि की ऊर्जा से अत्यन्त शक्तिशाली कार्यों की प्रेरणा यह मन्त्र दे रहा है।

वेद मे ऊर्जा प्राप्ति, उसके संसाधन, उनके अनुसन्धान का बहुत ज्ञान विद्यमान है। उनका प्रयोगात्मक एव व्यावहारिक ज्ञान का लाभ विश्व के लिए हित कर है। प्रस्तुत लेख मे ऊर्जा के ससाधन के विषय पर वेद के आधार पर कुछ लिखा है। आशा है, पाठकगण वेद का अध्ययन कर आगे अनुसन्धान कार्य के लिए प्रवृत्त होगे। पता—वेद सदन, महारानी पथ, इन्दौर-7

D.A.V. centenary celebrations

Members of Reception Committee

(More Names to be added)

.. ... **Chairman**

Shri Bal Ram Jakhar
Speaker, Lok Sabha, New Delhi

MINISTERS

1. Shri Bansi Lal, Minister for Railways. New Delhi.
2. Shri H K L. Bhagat, Minister for Parliamentary Affairs, New Delhi.
3. Shri Ram Niwas Mirdha State Minister for Communications, New Delhi
4. Shri V. N. Gadgil, Minister for Information and Broadcasting, New Delhi.
5. Shri Ashok Gahlot, State Minister of Tourism and Civil Aviation, New Delhi.
6. Shri Bhajan Lal, Chief Minister, Haryana Chandigarh.
7. Shri S. S Surjewala, Minister, Haryana, Chandigarh.
8. Shri Jagdish Mehra, Education Minister, Chandigarh.

MEMBERS OF PARLIAMENT

1. Shri JaganNath Kaushal, NewDelhi.
2. Shri N. C. Prashar, New Delhi.

GOVERNORS/EX-GOVERNORS

1 Dr Dharam Vira, New Delhi

JUDGES/RETD-JUDGES

1. Justice Rajinder Sachar, New Delhi
2. Justice H R. Khanna, New Delhi.
3. Justice Dalip Kapur, New Delhi
4. Justice I. D. Dua, New Delhi.
5. Justice Tek Chand, Chandigarh'
6. Justice P. C Pandit, —do—
7. Justice R. N Mittal, —do—
8. Justice J. M. Tandon —do—
9. Justice B. R. Tuli —do—
10. Justice M M. Panchhi —do—
11. Justice D. K. Mahajan, Bhadwar (H. P)
12. Justice K. B. Asthana, Allahabad
13. Justice A S. Anand Jummu

VICE/CHANCELLORS/EX-VICE-CHANCELLORS

1. Dr. D. P. Singh, New Delhi
2. Shri Kirpa Narain, Pant Nagar, Distt. Naini Tal
3. Shri K. K. Sharma, Kurukshetra
4. Dr. Satya Vrat Sidhantalankar, New Delhi

SENIOR BUREAUCRATS

1. Shri T. N. Caturvedi, CAG. New Delhi,
2. Shri R. S. Saini, G. M. HFC, Baraυni.
3. Shri M. L. Narula, G. M. ACC. Gagal, Bilaspur
4. Shri Jayaraman, G M. BCW Surajpur
5. Shri D. P Borkar, G. M. ACC.

RESIDENTS IN FOREIGN COUNTRIES

1. Charean Hindu Society, Bangkok,
2. Shri A Pandey —do—
3. Dr. Puniatma Jayakarta
4. Dr. Pujya —do—
5. Shri S. N. Bhardwaj London
6. Shri Wadhera —do—
7. Shri Mohan Lal Mohit Mauritius
8. Shri Bishan Dayal —do—
9. Shri H. C Sood —do—
10. Shri Ram Chand Mahajan USA

EMINENT PUBLIC MEN/ CITIZENS

1. Dr Swami Satya Prakash New Delhi
2. Shri Ram Gopal Shalwale, Delhi
3. Shri Som Nath Marwaha, New Delhi
4. Shri Shiv Kumar Shastri, —do—
5. Pt. Satya Ketu Vedalankar, —do—
6. Dr. Karan Singh, New Delhi
7. Shri Bhagwat Jha Azad, New Delhi
8. Shri Inder Kumar Gujral, —do—
9. Shri Vikram Mahajan —do—
10. Prof. Sher Singh —do—
11. Dr. L. M. Singhvi —do—
12. Dr. Bhai Mahavir —do—
13. Brig. Kapil Mohan —do—
14. Shri B. D. Ball —do—
15. Smt. Vinod Bhasin —do—
16. Smt. Savita Behan —do—
17. Shri Shanti Parkash Bahi, NewDelhi
18. Shri Kundan Lal Ahuja, Abohar.
19. Shri Dev Mitter Ahuja, —do—
20. Dr. Siri Ram Chaudhry —do—
21. Shri M. L. Nagpal —do—
22. Shri D Vable Ajmer
23. Shri R S Kapur —do—
24. Ch Chhotu Singh Alwar
25. Shri P. D. Kapila Bokaro Steel City
26. Shri Partap Bhai Sur ji, Bombay
27. Shri M. L. Gupta. —do—
28. Shri Devander Kapur —do—
29. Shri Sita Ram Arya Calcutta
30. Shri Gajanand Arya —do—
31. Shri Radha Nath Rath Cuttack
32. Shri Vandemataram Ramchandra Rao, Hyderabad
33. Shri Ramchandra Rao Kalyani, Hyderabad
34. Shri Chander Prakash Dewra, Jaipur
35. Captain Dewan Singh, Jammu
36. Ch. Partap Singh, Karnal
37. Dr Ganesh Das, Karnal
38. Shri Mela Ram Bark, Karnal
39. Shri Kedar Nath Sawhney, Karnal
40. Dr. Dukhan Ram, Patna
41. Dr. R. N. Dandekar, Poona
42. Shri Shatrughan, Ranchi
43. Shri Jai Dev, Srinagar
44. Shri Kultar Singh

All Managing Committee Members.
All Chairmen, Local Managing Committees.
All Heads of our Institution.
All Donors.

साहित्य समीक्षा

दयानन्द की उद्घोषणा पर आधारित नई पुस्तक

वैदिक स्टडीज

अभी हाल में गुरुकुल कांगड़ी के ही एक ख्यातिप्राप्त स्नातक तथ वर्तमान में दिल्ली विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग में प्रोफेसर डा० सत्यकाम वर्मा का एक नया ग्रन्थ अंग्रेजी में प्रकाशित हुआ है : "वैदिक स्टडिज" ! इसमें वेदों पर आधारित विविध विषयों पर लिखे गये प्रो० वर्मा के उन लेखों का संकलन है, जिन्हें समय समय पर वे अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों एवं अपनी विदेश यात्राओं के अवसर पर प्रस्तुत करते रहे हैं । इसमें कुल मिला कर तेरह निबन्ध हैं, जिनमें संस्कृति, धर्म, ब्रह्मज्ञान, आयुर्वेद, विज्ञान, सृष्टिविज्ञान, एवं दर्शन आदि सभी पक्षों पर विचार किया गया है । अंग्रेजी में इस प्रकार के शोधपूर्ण साहित्य का प्रकाशन इसलिए जरूरी है, क्योंकि आज का शिक्षित वर्ग इसी माध्यम से लिखे गए ग्रन्थ को पढ़ने के लिए उद्यत होता है। इसके अतिरिक्त भारत और भारत से बाहर करोड़ो ऐसे भारतीयता प्रेमी विदेशी लोग है, जो 'वेदो के ईश्वरीय ज्ञान' होने की वास्तविकता को तर्क एवं युक्तिसंगत आधार पर जानना चाहते हैं । उनके लिए यह पुस्तक एक 'जेबी विश्वकोष' कही जा सकती है । लेखक ने इस ग्रन्थ की प्रेरणा का स्रोत स्वयं कुछ अपने विदेशी मित्रो को घोषित किया है।

यज्ञ-संस्कृति—प्रथम निबन्ध का विषय अत्यन्त व्यापक है: 'वैदिक संस्कृति : प्राचीन विरासत'. । इसमे सर्वप्रथम उसने 'यज्ञ' को वैदिक संस्कृति का मूलाधार घोषित करके, 'पुरुष' एव 'नासदीय' सूत्रो के आधार पर यह समझाने का प्रयास किया है कि यज्ञ स्वयं सृष्टि-क्रिया का प्रतीक है । इसे जीवन से सम्बद्ध करने का अर्थ है व्यष्टि और समष्टि तथा व्यक्ति और ब्रह्माण्ड के बीच आधारभूत एकता को सक्रिय रूप से स्वीकार करना । इसे लेखक ने यज्ञ की तीन मुख्य भावनाओ को 'इदं न मम' सर्वं वै पूर्णं स्वाहा' और 'द्विपदे- चतुष्पदे' के प्रयोगों द्वारा सिद्ध किया है। इस यज्ञ का ,ब्रह्म' से क्या सम्बन्ध है ?, ब्रह्मो और वेद क्या सम्बन्ध है ?, वेद भी ईश्वर की भांति नित्य क्यो है?, उसके ईश्वरीय ज्ञान होने का क्या अभिप्राय है ? वेद को 'त्रयी' कहना कहाँ तक उचित है ?, वेद तीन हैं या चार ?, वैदिक साहित्य का क्या अभिप्राय है ?, ब्राह्मणग्रन्थ, उपनिषद्, छहो दर्शन, आदि का वास्तविक स्वरूप क्या है ?, संस्कार, वर्ण, आश्रम, व्यवस्थादि का आधार क्या है ?, —आदि सभी विषयों को अत्यंत संक्षेप से इस अकेले निबन्ध मे दिखलाने का प्रयास किया गया है ।

दूसरा निबंध भी महत्वपूर्ण है । 'ब्रह्म' पर लिखे गए इस बात को स्पष्ट किया है कि वेद में 'ब्रह्म' शब्द का प्रयोग 'ईश्वर, 'ज्ञान' और 'वेद' के तीन समानान्तर अर्थों में किया गया है, वह नहीं है । बल्कि ऐसा होना स्वाभाविक एवं नितान्त वैज्ञानिक है कारण यह कि वेद के अनुसार 'चेतना', 'ज्ञान' और 'शब्दात्मक रूप' का नित्य सम्बन्ध है । वेद के अनुसार 'यदि ईश्वर नित्य है, तब चेतना मे संग्रहित ज्ञान भी नित्य है । और क्योंकि ज्ञान शब्दरूप के बिना रह नही सकता, अत. यदि ज्ञान नित्य है, तब उसका शब्दरूप 'वेद' भी नित्य ही होना चाहिए । इसी बातको आज के युक्तिक्रम से भी सत्य सिद्ध किया है।

इसके बाद तीन निबंध वैज्ञानिक विषयों पर है ।' वेद मे मृदाविज्ञान', 'वेद मे आयुर्विज्ञान ', एवं 'वेदो मे सृष्टि-ऊर्जा ये तीनों निबंध अत्यत वैज्ञानिक होते हुए भी केवलमात्र वेदमंत्रो पर आधारित होकर ही लिखे गए हैं । इन्हें पढ़कर मान्य से सामान्य जन भी समझ सकता है कि वेदों के ज्ञान को नित्य क्यो कहा गया है । रोग और स्वास्थ्य के परस्पर सम्बंध एवं वास्तविक स्वास्थ्य का अर्थ जिस प्रकार की मैडिकल इस निबंध मे स्पष्ट हुआ, उससे आज साइंस भी प्रेरणा ग्रहण कर सकती है । यही बात विश्व ऊर्जा के सम्बंध में है ।

छठे निम्बन्ध मे भारतीय दर्शनो का मूल वेद को सिद्ध किया गया है । उनकी वेदमूलकता को समझे बिना छहो दर्शनो की आधारभूत मौलिक एकता को समझा नही जा सकता। लेखक ने स्वामी दयानद की इस धारण को सही प्रमाणित किया है कि छहो दर्शन कोई 'छह सिस्टम्स' या 'धाराए, नहीं है, बल्कि एक दूसरे की पूरक एव पोशक धाराए हैं।

सातवां निबंध सिन्धु घाटी की सभ्यता के सम्बंध मे है। आज के अधिकाश विदेशी और भारतीय इतिहासकार हड़प्पा और मुएं-जो-दडो की समकालिन सभ्यता सिद्ध करने की दुहाई देते हैं। इससे न केवल भारत मे आर्योंऔर वेदो का बाहर से आना ही वे सिद्ध करना चहाते हैं, बल्कि वेदों की रचना सिन्धुसभ्यता के बहुत बादहुई, यह भी कहना चाहते हैं । लेखक ने बहुत तथ्यों की चर्चा करके मिस्र तथा अन्य प्राचीन सभ्यताओं से तुलना करके यह सिद्ध किया है कि यह सभ्यता वैदिक सभ्यता के ही महाभारतसमकालीन रूप पर आश्रित थी, मिस्र की संस्कृति भी वैदिक एवं आर्य संस्कृति ही थी ।

नौवां निबंध 'वेदो की व्याख्या में आने वाली ऐतिहासिक समस्याएँ' है । अनेकानेक प्रमाणों से लेखक ने यह सिद्ध किया है कि वैदिक सभ्यता एक अत्यधिक समुन्नत सभ्यता थी और कभी वह सचमुच ही समस्त विश्व मे व्याप्त रही होगी । वेदो मे आए वैज्ञानिकतापूर्ण वर्णन किसी कालविशेष की उपलब्धियो के कारण नही है । बल्कि उन वर्णनो के आधार पर ही मानव ने अपनी सभ्यता एवं विशाल, सस्कृति आदि का विकास किया । लेखक के अनुसार अमरीका, मिस्र, फ्रास एव भारत की सभ्यताओ के तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है, कि कभी इन सभ्यताओ के मानने वाले एक ही ज्ञान-स्रोत से प्रेरणा लेते रहे । और यह श्रोत 'वेद' ही रहे होगे ।

आठवा और तेरहवा निबन्ध वेदो मे भाषाविज्ञान विषयक विचार तथा वेदो के व्याकरण से सम्बन्धित है । व्याकरण एवं भाषाविज्ञान लेखक का विशेष अनुसधान का क्षेत्र रहा है । वेदो में आए भाषाविषयक चिन्तन को देखने से यह लगता है कि आज का भाषाविज्ञान भी इन वर्णनो से बहुत सी गुत्थियो को सुलझा सकता है ।

दसवा निबध 'वैदिक थीइज्म या वेदवाद' पर है । वेदो मे जितने भी-अग्नि, वायु, इन्द्रादि-देवताओ के नाम आए हैं, वे सभी एक ही केद्रीय सत्ता के विभिन्न पक्ष या पहलू है । इससे यह भी सिद्ध होता है कि ये विविध देवता वास्तव मे एक ही महाशक्ति की अंगभूत विविध शक्तिया हैं । जिस प्रकार सभी विविध शक्तियो मिलकर किसी एक शक्तित्व का निर्माण करती है, उसी तरह ये सभी शक्तियो एक ही सत्ता...पुरुष या ब्रह्म -की ही शक्तियां हैं । अत. देवता का अर्थ परमात्मा की एक विशिष्ट शक्ति के रूप में लेना चाहिए ।

ग्यारहवा निबध वेद के एक ऐसे सूत्र पर आधारित है, जिसमे वेद की सामाजिक दृष्टि स्पष्ट होती है । वेद कही भी ऐसे समाज की कल्पना नही करता, जहाँ अधर्म या अन्याय का नामोनिशान भी न हो । इस 'अक्षसूक्त के अतिरिक्त अन्य भी कई सूक्तो मे स्पष्ट ही जुआरी, असत्यभाषी, एवं व्यभिचारी, आदि दुर्जनों की चर्चा आती है । किन्तु प्रस्तुत निबन्ध मे यह बताया गया है कि वेद सामान्य सामाजिक जनो से ऐसे लोगों के प्रति किस तरह के व्यवहार की आशा करता है । साथ ही यह भी इस सूक्त में इंगित किया गया है कि ऐसे लोगों को सुधारने के सामाजिक या आर्थिक उपाय क्या हैं ?

बारहवा निबध 'पुरुष सुक्त' के एक अन्य पहलू पर प्रकाश डालता है । प्राय: विश्व की आदिमतम सभी जातियो मे आरम्भ मे इसी प्रकार के एक 'महादेव' या 'महान् देव' की कल्पना किसी न किसी रूप मे की गई थी । किन्तु 'हजार सिर-आख- पांव वाले ऐसे महादेव को वेद मे किस प्रकार एक अत्यन्त स्वर्णिम प्रतीक के रूप मे पलट दिया गया है, और सृष्टि उत्पत्ति के रहस्य को सिद्ध किया है, इससे पता चलता है कि सृष्टि की ये विश्वव्यापी कल्पनाएँ मूलत: वैदिक कल्पना पर ही आधारित रह कर चली होगी, किन्तु बाद मे उनमे से दार्शनिक पहलु छूट गया और वे निरी 'आदिम कल्पना' मात्र रह गई । इससे वैदिक दृष्टि की महत्ता सिद्ध होती है ।

इस प्रकार इन तेरह निबधों मे वेद, वैदिक सस्कृति, एव वैदिक साहित्य के विविध पक्षो पर इस तरह प्रकाश डाला गया है, कि आग्लभाषा के माध्यम से पढ़ने वाला सामान्य जन भी वेदो के प्रति आस्थावान् हो सके । जो आज पश्चिमी ज्ञानविज्ञान के विकास की चकाचौंध से प्रभावित होकर अपने अतीत के गौरव को भूलते जा रहे है उन्हे यह पुस्तक अवश्य पढनी चाहिए ।

इससे पहले लेखक 'होली वेदाज' नाम के एक पुस्तक और लिख चुके हैं जिसमे चुने हुए वेदमत्रो के अंग्रेजी मे पद्यानुवाद है । उस पुस्तक का भी देश-विदेश मे बहुत अच्छा स्वागत हुआ है ।

विशेष घोषणा—

इस पुस्तक का मूल्य यद्यपि 100 रूपया रखा गया है, किन्तु प्रकाशको ने 'आर्यजगत्' से ग्राहको को आधे मूल्य पर देने का संकल्प किया है । आप अपनी ग्राहक सख्या लिखकर ग्रन्थ की प्रति सीधे प्रकाशक से या 'आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा' आर्य समाज, मदिर मार्ग नई के कार्यालय से प्राप्त कर सकते है ।

दिल्ली-1 —क्षितीश

'वैदिक स्टडीज' : प्रकाशक, भारतीय प्रकाशन डब्लु. ६ए/८ई. ए करोल बाग नई दिल्ली-११००५, पृष्ठ संख्या:२००, मूल्य रु० 100:00, केवल ।

भारतीय भाषाओं पर.........

(पृष्ठ १५ का शेष)

ऐसी युवती की तरह बनी रहना चाहती है जो रहना और सोना तो हमारे साथ चाहती है लेकिन खून की शुद्धता बनाए रखने के लिए वहीं से जुड़े रखना चाहती है जहां से वह आई है। इसीलिए अंग्रेजी भाषा के भारतीय रचनाकार अपना मुहावरा यहा की जमीन मे ढूंढ़ने से कतराते हैं। अमेरीका और दूसरे अंग्रेजी भाषी मुल्कों मे लिखे जा रहे साहित्य मे ही वे अपनी जड़ें खोजते हैं। अफ्रीकी साहित्य फिर भी उस प्रवृत्ति से मुक्त है। भारतीय अंग्रेजी रचनाकारो का अपना समकालीन साहित्य यहा नही बहा है। भारतीय जनमानस का दूसरी भाषाओं से भी संपर्क रहा है परन्तु उन भाषाओं ने अपने को भाषा होने तक ही सीमित रखा। दूसरो के मानसिक परिवर्तन का माध्यम नहीं बनी। ससार की सबसे समृद्ध और वैज्ञानिक भाषा हमारी रही है। पर उस भाषा ने भी कभी दूसरो की मानसिकता पर कब्जा करके अपने को प्रसारवादी बनाने की कोशिश नही की।

लगता है कि सगी दीखने वाली अंग्रेजी मर्मांतक चोट किए बिना मानेगी नही। आजादी के बाद भाषा की दृष्टि से हम थोड़े संभले थे। स्वदेशी भावना आई थी। हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति निष्ठा बढी थी। लेकिन हम फिर पहले से भी बदतर हालत में पहुंच गए हैं। व्यावसायिकता के दबाव ने फिर पीछे ढकेल दिया है। मलेशिया की तीन हिस्सा आबादी चीनी भाषा बोलती है और एक हिस्से मे अंग्रेजी बोलने वाले ज्यादा हैं। पहले वहाँ चीनी और अंग्रेजी दोनों माध्यमो में शिक्षा दी जाती थी। यहां भी पिछले दिनों शिक्षा मंत्री ने सेंट्रल स्कूलो के संदर्भ में यही उद्घोषणा की थी कि शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी और हिंदी दोनों ही रहेगा। लेकिन मलेशिया मे हालत बदल चुकी है। वहा अब शिक्षा का माध्यम केवल अंग्रेजी हो गया है। चूंकि भारत में लगभग वैसी ही परिस्थिति है, इसलिए इस खतरे की घंटी से सावधान होना जरूरी है। जिन देशों ने अंग्रेजी को शिक्षा माध्यम के रूप में या तो अपने यहां घुसने नहीं दिया या समय रहते बाहर कर दिया, वे ज्यादा सुरक्षित हैं। यह नही कि उनके यहां विज्ञान का विकास न हुआ हो। इस मामले में वे उन देशों से ज्यादा ही स्वावलम्बी हैं जहां अंग्रेजी का वर्चस्व है। प्रश्न निष्ठा का है। एक जगह की निष्ठा हर क्षेत्र मे निष्ठा ही रहती है। प्रवंचना नही बन सकती। सवाल यही है कि अंग्रेजी के बारे अंग्रेजी के दृष्टिकोण से सोचें या धरती से जुडी अपनी भाषाओं के नजरिए से।

है कोई आर्य शिक्षण संस्था ?

महर्षि दयानन्द के इतिहास विषयक मन्तव्य और आर्य समाज

—डा० सत्यकेतु विद्यालंकार—

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने ग्रन्थों में जो अनेक इतिहास-विषयक मन्तव्य प्रतिपादित किये हैं। उनमें मुख्य निम्नलिखित है—

(१) सृष्टि के प्रारम्भ से पांच सहस्र वर्ष पूर्व समय पर्यन्त पृथिवी पर आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य रहा। यह दशा स्वायम्भव मनु से शुरू कर पाण्डव राजा युधिष्ठर के समय तक रही।

(२) जितनी भी विद्या, संस्कृति विज्ञान व मत संसार में फैले, वे सब आर्यावर्त (भारत) से ही प्रसरित हुए। प्राचीन समय में सर्वत्र वैदिक धर्म का प्रचार था, या अन्य देशों के निवासी ऐसे मतो के अनुयायी थे। जिनका प्रादुर्भाव वैदिक धर्म से हुआ था।

(३) महाभारत युद्ध व कौरव-पाण्डवों का काल अब से लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व था। स्वायम्भव मनु से युधिष्ठिर तक जो राजा भारत में हुए, उनका इतिहास महाभारत आदि ग्रंथों में लिखा है। युधिष्ठिर के पश्चात् अनेक राजवंशों ने भारत के विविध प्रदेशों पर राज्य किया। इनमें दिल्ली (इन्द्रप्रस्थ) के राजाओं की वंशावली महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश मे दी है। जिसके अनुसार बारहवीं सदी के अन्तिम भाग में दिल्ली का राजा यशपाल था, जिसे परास्त कर शहाबुद्दीन गौरी ने भारत में अपने प्रभुत्व का जिसे सूत्रपात किया था।

(४) आधुनिक विद्वानों ने भारतीय इतिहास के जिस तिथिक्रम का प्रतिपादन किया है, वह महर्षि को स्वीकार्य नही था। आधुनिक विद्वान् वेदों की रचना काल २००० से १२०० पूर्व तक मानते हैं। पर महर्षि वेदों को अपौरुषेय मानते थे। आधुनिक इतिहासकार जो महाभारत के काल को १००० ईस्वी पूर्व के लगभग मानते हैं, और राजा विक्रमादित्य के समय को जो पाँचवीं सदी ईस्वी में मानते हैं, वह महर्षि को स्वीकार नहीं था।

(५) प्राचीन आर्य सभ्यता की उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर पहुंचे हुए थे। मनुष्य की सभ्यता का आदि युग पाषाण युग था, जब कि वह जंगली और असभ्य जीवन व्यतीत करता था, धीरे-धीरे मनुष्य सभ्यता के मार्ग पर अग्रसर हुआ, यह मत महर्षि को स्वीकार्य नहीं था। सभ्यता और संस्कृति के क्षेत्र में वे विकासवाद को नहीं मानते थे।

(६) आर्यो का आदि निवास स्थान त्रिविष्टप (तिब्बत) था, जहाँ से जाकर वे अन्यत्र बसे। 'आर्य' किसी जाति विशेष का नाम नही है, और न ही उससे किसी नस्ल का बोध होता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदो को अपौरुषेयता, एकेश्वरवाद, षड्-दर्शनों में अविरोध, राजधर्म आदि के सम्बन्ध में जो मन्तव्य प्रतिपादित किये है, उनकी पुष्टि के लिये समाज के विद्वानों ने पर्याप्त परिश्रम किया है। पर उनके इतिहास विषयक मन्तव्यो के सत्यासत्य की जांच के लिये या उनके समर्थन में अभी तक कोई महत्वपूर्ण कार्य नहीं किया गया। केवल पण्डित भगवदत्त जी बी० ए० रिसर्च स्कालर तथा आचार्य रामदेव जी ने इस दिशा में कार्य किया था। आचार्य जी ने 'भारत का प्रचीन इतिहास' तीन खण्डो में लिखा था, जो महर्षि के मन्तव्यो के पूर्णतया अनुरूप था। इस इतिहास के दो खण्डो के लिखने में मैंने भी आचार्य जी को सहयोग दिया था। पर गत पचास वर्षो में न तो डी० ए० वी० कालिजो ने इस सम्बन्ध में कोई कार्य किया, न गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय ने और न ही किसी आर्य प्रतिनिधि सभा व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने।

भारत के स्कूलों, कालिजों और यूनिवर्सिटियो मे भारत का जो इतिहास पढाया जाता है, वह महर्षि के मन्तव्यो के अनुरूप नही है। आर्य समाज की शिक्षण-संस्थाओ में भी ऐसा ही इतिहास पढाया जाता है इस का परिणाम यह है कि केवल उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों मे ही नही, अपितु (शिक्षा के व्यापक प्रसार के कारण) सर्व साधारण जनता में भी इतिहास विषयक वे धारणाएं बद्धमूल होती जाती है, जो महर्षि के मन्तव्यो के विरुद्ध हैं।

गत वर्षों मे विश्व के विविध देशों मे पुरातत्त्व सम्बन्धी जो खोज हुई है। और प्राचीन साहित्य का जो विवेचनात्मक अध्ययन किया गया है, उससे बहुत-से ऐसे संकेत व प्रमाण उपलब्ध हुए है। जो महर्षि के इतिहास विषयक मन्तव्यो की पुष्टि करते हैं। उनसे ज्ञात होता है, कि अत्यन्त प्राचीन काल मे ईजिप्त, एशिया माईनर, मध्य एशिया आदि सर्वत्र वैदिक धर्म का प्रभाव विद्यमान था और पूर्वी एशिया के देशों मे भी प्राचीन हिन्दू (आर्य) धर्म की सत्ता थी। विविध देशो मे आर्य राजाओं के शासन के प्रभाव भी प्रकाश में आए है। पर महर्षि मन्तव्यों के सत्यासत्य के निर्णय के लिये अभी बहुत खोज व परिश्रम की आवश्यकता है यह कार्य विद्वानो की एक ऐसी मण्डली द्वारा किया जाना चाहिये। जो सस्कृत भाषा के पूर्णतया ज्ञाता तथा प्राचीन भारतीय साहित्य व इतिहान में तो पारंगत हो ही, साथ ही जिन मे फ्रेञ्च, जर्मन, रूसी चीनी व तिब्बती आदि भाषाएं भी जानने वाले हो और जिन्हें ईजिप्त ग्रीस, चीन, एशिया माइनर, ईरान आदि देशो के प्राचीन इतिहास की भी समुचित जानकारी हो। ऐसे विद्वानों द्वारा गम्भीर रूप से शोध के अनन्तर ही महर्षि के इतिहास विषयक मन्तव्यों की पुष्टि कर सकना सम्भव होगा।

क्या कोई आर्य शिक्षण-संस्था इस महत्वपूर्ण कार्य को अपने हाथ में लेने को उद्यत है ?

पता - सरस्वती सदन, ए-१/३२
सफदरजग एनक्लेव, नई दिल्ली-२९

दूसरों के लिए जीना ही मानव धर्म

—विष्णुप्रभाकर—

असाजिक तत्वों को दोष देकर मुक्ति पा लेना आज एक फैशन हो गया है। इसी तरह फैशन हो गया है दो चार विशाल हृदयता के उदाहरण देकर अपनी तथाकथित महान् परंपरा की दुहाई देना। यदि हमारे भीतर सचमुच इंसान बनने की चाह है तो सस्ते टोटकों को छोड़ कर अपने भीतर झांकना होगा। जानना होगा कि क्यों जरा-सा अनुकूल वातावरण पाते ही मनुष्य के भीतर सोया राक्षस पूरी भयानकता के साथ जाग उठता है।

मनुष्य हजार वर्ष पूर्व भी बलात्कार करता था, निर्दोषों की हत्याएं करता था आज भी करता है। वह क्या चीज है जो आदिम परंपरा को जीवित रखे है। वह कौन से विशिष्ट भाव हैं जो मनुष्य को मोहासक्त करके विमूढ़ बना देता है। क्या ऐसा नहीं लगता आपको कि संस्कार मनुष्य को मोहासक्त करते हैं और संस्कारों को सबसे अधिक शक्ति मिलती है धर्मांधता से। धर्मांधता मनुष्य के विवेक और सोचने की शक्ति को नष्ट कर देती है। जो दूसरों के कधों पर बंदूक चलाते हैं सबसे पहले उन्ही का विवेक नष्ट होता है। इतिहास के पन्नो पर खून के छीटे जितने धर्मांधता ने लगाए हैं उतने रक्तलोलुप राजसत्ता ने भी नहीं।

आज जब एक बार फिर विश्वास की छाती में छुरा भोंका गया है एक बार फिर शपथ अपना अर्थ खो बैठी हैं, एक बार फिर आदमी विश्वास करके ठगा गया है, एक बार फिर प्रतिहिंसा ने इंसान को हैवान बना दिया है, एक बार फिर दर्पण में दरार पड़ गई है और शीशा चटक गया है, ऐसी नाजुक स्थिति में परंपरागत सत्य, अहिंसा, उदारता और वसुधैव कुटुम्बकम की औपचारिक दुहाई देकर कब तक अपने पापों को ढकते रहेंगे। कही ऐसा तो नही कि स्वयं शांति मार्च करने वालों के हाथ किसी न किसी रूप में खून से रंगे हो। इन्ही हाथों ने किसी न किसी रूप से आग लगाई है, किसी न किसी रूप में चोरी की है। मैं शब्दों से नहीं खेल रहा यथार्थ के पीछे के सत्य को खोजने का प्रयास कर रहा हूं। आप भी करिए न तनिक। तब आप पाएंगे कि हम सब भागीदार है इस जघन्य हत्याकाड में।

आइए जरा गहरे सोचें। उन मूल्यों को परखे जिनको हम जी रहे है। मरना बहुत आसान है, उससे भी आसान है उपदेश देना। कठिन है जीने की, सही राह खोजना। भूल जाइए थोडी देर के लिए परंपरा को, स्मृतियो को, धर्मग्रथो को। नई स्मृति बनाइए और अपना दीपक आप बनिए याद रखिए मनुष्य का धर्म मंदिर में घंटे घड़ियाल बजाकर आरती उतारना, मस्जिदों में अजान देकर नमाज पढना, गिरजो में घंटे बजाकर प्रार्थना करना, गुरुद्वारो में पवित्र ग्रन्थ पर चुनर डुलाकर शब्द कीर्तन करना नहीं है, मनुष्य का एक ही धर्म है दूसरों के लिए जीना। मंदिरों, मस्जिदों, गिरिजों और गुरुद्वारो का धर्म व्यक्ति का धर्म है। व्यक्ति और मनुष्य के इसी अंतर को पहचानना है हमें।

जितना पहचानेंगे उतना ही मनुष्य बनने की राह पर आगे बढ़ेंगे। संकल्प करके देखिए तो।

पता—८१८, कुंडेवालान,
अजमेरी गेट, दिल्ली-६

महात्मा हंसराज - एक विलक्षण व्यक्तित्व

—राजकुमार, एम० ए० बी० एड०—

साधुता और सादगी की मूर्ति, महर्षि दयानन्द जी के अनन्य भक्त, डी० ए० वी० आन्दोलन के प्रणेता महात्मा हंसराज जी एक महान् व्यक्तित्व के स्वामी थे । उनका सारा जीवन आर्य धर्म, आर्य सिद्धांत और आर्य विचारधारा के प्रति समर्पित था । बलिदान के पथ का अनुसरण करते हुए इस महापुरुष ने अपना यौवन समाज सेवा में भेंट कर दिया । भारत मे डी० ए० वी० आन्दोलन की सरस्वती सरिता को प्रवाहित करने में उनका नाम और काम सदा अमर रहेगा ।

त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज जी ने अपने जीवन काल के 74 वर्षों मे से 58 वर्ष परोपकार के कार्यों मे ही बिताए । डी० ए० वी० कालेज लाहौर के प्रथम प्रिंसिपल के रूप में उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि भारतीयो द्वारा चलाया हुआ कोई कालेज भी अंग्रेजो द्वारा चलाए गए कालेजों का मुकाबला अच्छी प्रकार से कर सकता है । कालेज के प्रथम अवैतनिक प्रिंसिपल के रूप मे उन्होंने इस संस्था की जिस असाधारण योग्यता और निष्ठा के साथ सेवा की उसी का ही यह परिणाम है कि लाहौर में डी० ए० वी० स्कूल के रूप में लगाया गया एक छोटा सा पौधा आज वट वृक्ष का रूप धारण कर गया है । राष्ट्र निर्माण के कार्यों मे डी० ए० वी० संस्थाओं का बहुत बडा योगदान रहा है । इन सस्थाओं का नाम राष्ट्र क्षितिज पर प्रदीप्त नक्षत्र की भांति चमक रहा है । विज्ञान, राजनीति, राष्ट्र निर्माण तथा समाज हित इत्यादि क्षेत्रों में इन संस्थाओ के होनहार विद्यार्थियों ने महत्वपूर्ण सफलताए प्राप्त करके महात्मा जी के स्वपन्न को साकार किया है ।

महात्मा हंसराज जी ने जीवन पर्यन्त समाज सेवा के कार्यों में बढ़-चढ कर भाग लिया । उनकी दिव्य दृष्टि ने यह भली भाति अनुभव किया कि ब्रह्मचर्य हीनता, दूषित वर्ण-व्यवस्था, छूआ-छूत, स्त्री-शिक्षा की कमी इत्यादि बुराइयो ने हमारे समाज को बुरी तरह से ग्रस्त कर रखा है । जब उन्होने कालेज के प्रिंसिपल पद से अवकाश ग्रहण किया तो सबसे पहले गढ़वाल, मालाबार और उत्तर प्रदेश मे अपनी सेवाएं विशेष रूप से अर्पित की । चाहे 1895 और 1899 के बीकानेर के अकाल हों और चाहे 1905 और 1925 के कागड़ा और कोयटे के भूकम्प, चाहे मालाबार के साम्प्रदायिक दंगे हो या जम्मू-कश्मीर में हिन्दुओं का नर-संहार, काश्मीर से कन्या कुमारी तक महात्मा हंसराज जी ने अपने अद्वितीय त्याग, सेवा भावना और कार्य करने की शक्ति से स्वर्णिम यश पाया था । वे स्वयं अमृत थे और सभी को अमतपान करा कर जीवन दान देते थे । वे द्वेष से शून्य थे तथा सर्व भूत हितैषी थे ।

महात्मा हंसराज को भले ही डी० ए० वी० संस्थाओ का निर्माता कहा जायें, परन्तु उनका गुरुत्तम कार्य आर्य शिक्षण संस्थाओं के लिए आदर्श सेवक उत्पन्न करना था जो इतिहास में एक अद्भुत बात है । उनके तैयार किये हुए आदर्श सेवकों द्वारा ही आज आर्य शिक्षण सस्थाएं भली भांति कृतकार्य हो रही हैं ।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् डी० ए० वी० आंदोलन को जो एक स्थायी आधार मिला है उसका श्रेय उन महान् आर्य नेताओं तथा डी० ए० वी० विभूतियों को है जिन्होंने पूर्ण निष्ठा और त्याग के साथ इन संस्थाओं की सच्चे मन से सेवा की है । जस्टिस मेहर चन्द जी महाजन, डा० गोवर्धन लाल जी दत्त, ला० सूरज भान जी ने अपने अपने समय मे इन संस्थाओं की अवर्णनीय सेवाएं की हैं । इन महान् नेताओं के कार्यों को निरन्तर गति प्रदान करने के लिए आज कल प्रो० वेद व्यास जी, श्री दरबारी लाल जी, श्री रामनाथ सहगल, ला० मुलख राज भल्ला तथा डा० डी० पी० सेठ दिन रात एक होकर दिल जान से काम कर रहे हैं । पिछले कुछ वर्षों में डी० ए० वी० संस्थाओं के प्रादुर्भाव तथा विकास के लिए श्री दरबारी लाल जी ने जिस मेहनत और लगन के साथ कार्य किया है यदि उन्हे डी० ए० वी० संस्थाओं की धुरी कह दिया जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी । 'डी० ए० वी० संस्थाए कभी भी नेतृत्व विहीन नहीं रह सकती'—इस बात का सारा श्रेय महात्मा हंसराज जी को ही प्राप्त है । उनके जन्म दिवस के अवसर पर इस प्रकार के नेतृत्व को अक्षुण्ण रखना ही एक सच्ची श्रद्धांजलि हो सकती है और आर्य जगत् के लिए एक पथ-प्रदर्शन का कार्य कर सकती हैं ।

पता—आर्य समाज, पट्टी (अमृतसर)

□

डी० ए० वी० शताब्दी समारोह की तैयारी
५ करोड़ रुपया एकत्र करने का संकल्प

डी० ए० वी० शताब्दी समारोह समिति की एक बैठक 25 मार्च को मैनेजिंग कमेटी, चित्र गुप्त रोड, नई दिल्ली-55 स्थित कार्यालय मे हुई । बैठक की अध्यक्षता प्रो० वेद व्यास जी ने की । डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी के संगठन सचिव श्री दरबारी लाल ने सदस्यों को बताया कि शताब्दी सम्बन्धी परियोजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए 5 करोड़ रुपया एकत्र करने का निश्चय किया गया है । अभी तक 25 लाख 69 हजार रुपया एकत्र हो चुका है । इस राशि में अधिकतर योग डी० ए० वी० संस्थाओं का ही है । डी० ए० वी० संस्थाओं के द्वारा राशि एकत्रित करने के जो लक्ष्य निर्धारित किये गये हैं वे इस प्रकार हैं :—

राज्य	केन्द्र	राशि
दिल्ली	दिल्ली	30 लाख
चण्डीगढ़	चण्डीगढ़	15 लाख
पंजाब	अमृतसर	15 लाख
	बटाला	4 लाख
	भटिण्डा-अबोहर	10 लाख
	जालन्धर	15 लाख
हरियाणा	अम्बाला	8 लाख
	हिसार	5 लाख
	यमुना नगर	10 लाख
हि० प्र०	कागड़ा-कुल्लू	2 लाख
	शिमला-बिलासपुर	1 लाख
	नाहन-पौंटा	1 लाख
जम्मू-कश्मीर	जम्मू-श्रीनगर	10 लाख
महाराष्ट्र	शोलापुर-हैदराबाद	15 लाख
राजस्थान	अजमेर	2 लाख
बिहार और उड़ीसा	राची, बोकारो, राऊरकेला	3 लाख
विभिन्न राज्यों के अन्य केन्द्रों से		4 लाख
		150 लाख

प्रो० वेद व्यास जी ने सदस्यो को बताया कि हरियाणा मे "दयानन्द अकादमी" की स्थापना के लिए राज्य सरकार की ओर से एक करोड़ रुपया का अनुदान और दो सौ एकड़ भूमि मिलने कीआशा है ।

श्री दरबारी लाल ने बताया गया कि डी० ए० वी० संस्थाओं से एकत्रित की जाने वाली राशि कुल मिलाकर डेढ़ करोड़ ही बनती है जबकि शताब्दी समारोह के कोष के लिए हमारा संकल्प 5 करोड़ रुपया एकत्र करने का है । शेष राशि जनता से दान के लिए सीधी अपील करके एकत्र की जायेगी ।

उन्होंने कहा कि शताब्दी का मुख्य उद्घाटन और समापन समारोह आगामी वर्ष दिल्ली में होगा । भारत के रास्ट्रपति और प्रधान मन्त्री से इन समारोहों में मुख्य अतिथि बनने के लिए प्रार्थना की जा रही है । शताब्दी समारोह के कार्यक्रम में देश भर की डी० ए० वी० संस्थाकों के और आर्य समाजों के प्रतिनिधि, प्रमुख धार्मिक नेता, विशिष्ट विद्वान् और जीवन के विविध क्षेत्रों के जाने-माने व्यक्ति शामिल होंगे । इसके अलावा ब्रिटेन, अमेरिका, केनिया, थाईलैण्ड, मौरिशस से भी प्रतिनिधि गण समारोह में शामिल होने के लिए आयेंगे ।

शताब्दी समारोह के लिए स्वागत समिति का निर्माण हो गया है (उसकी सूची अन्यत्र देखिए) । स्वागत समिति में केन्द्रीय मन्त्री, न्यायाधीश, वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी, उद्योगपति, प्रमुख शिक्षा शास्त्री, प्रसिद्ध आर्य नेता और डी० ए० वी० के तथा अन्य क्षेत्रों के कार्यकर्त्ता शामिल होंगे ।

सामाजिक जगत्

आर्य समाज कलकत्ता

आर्य समाज कलकत्ता की ओर से आर्य समाज स्थापना दिवस सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री गजानन्द आर्य की अध्यक्षता में और रामनवमी का पर्व आर्य समाज कलकत्ता के उपप्रधान श्री लक्ष्मण सिंह जी की अध्यक्षता में सोत्साह मनाया गया। इन दोनों कार्यक्रमों में प्रो० उमाकान्त उपाध्याय, डा० सुनीति एम०ए०, स्वामी जीवानन्द, श्री विश्वम्भर नेवर, श्री बटुकृष्ण वर्मन, श्री संतोष वेदालंकार, पं० भारद्वाज पाण्डेय, प्रो० शिवनाथ चौबे, श्री शिवमंगल सिंह आर्य आदि ने अपने विचार रखे। कार्यक्रमों के संयोजक श्री राजेन्द्र जायसवाल और श्री चांद रतन दमानी थे।

आर्य समाज, कलकत्ता ने सेठ सूरजमल गुप्त, जो प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता और आर्य ट्रस्ट बड़ा बाजार के प्रधान थे। श्री बनारसी दास अरोड़ा जो आर्य समाज के प्रधान और प्रतिष्ठित व्यक्ति थे, उनके निधन पर समाज में श्रद्धांजलि सभा की और दिवंगत आत्मा की सद्गति हेतु प्रार्थना की। श्री श्यामलाल सहगल की स्मृति में समाज को ११०० सौ रुपये दान दिये।

—राजेन्द्रप्रसाद जायसवाल

आर्यसमाज टंकारा में स्थापना दिवस व रामनवमी

आर्य समाज टंकारा (गुज०) में आर्य समाज स्थापना दिवस श्री सुखबीर सिंह (व्यवस्थापक कृषि व गोशाला म० द० स्म० ट्रस्ट) की अध्यक्षता में मनाया गया। प्रतियोगिताओं में विजयी आर्य वीरों को श्री हरिओ३म् सि० आचार्य ने पुरस्कार वितरित किये। इसी तरह रामनवमी का पर्व सोत्साह मनाया गया जिसमें, प्रभातफेरी, शोभा यात्रा आदि का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री हीरालाल साम जी ने की। श्री भूपत सिंह साइमा, श्री भगवान भाई परमार श्री हंसमुख परमार आदि ने अपने विचार व्यक्त किये। आर्य वीर दल की नियमित शाखा चलाने हेतु श्री राजेश कुमार दिनकर राय को नायक बनाया गया। टंकारा में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद की स्थापना हुई जिसके नायक अशोक कुमार परमार को बनाया गया।

डा० भवानीलाल भारतीय का अभिनन्दन

आर्य समाज, बड़ा बाजार कलकत्ता द्वारा आर्य समाज के प्रसिद्ध साहित्यकार वक्ता तथा गवेषक डा० भवानी लाल भारतीय (अध्यक्ष—दयानन्द शोध-पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़) का वैदिक धर्म की उन्नति में महत्त्वपूर्ण सेवाओं के लिए महाजाति-सदन कलकत्ता में ४ मई को सार्वजनिक अभिनन्दन किया जायेगा।—[illegible] चन्द्र आर्य

अजमेर में आर्यसमाज स्थापना दिवस

आर्य समाज, अजमेर में २४ मार्च को ११० वां आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह गांधीवादी नेता श्री रामनारायण चौधरी की अध्यक्षता में मनाया गया। कार्यारम्भ आचार्य गोविन्द सिंह के संयोजकत्व में डा० देव शर्मा, डा० बुद्धिप्रकाश आर्य, श्री देवदत्त शास्त्री ने वृहद् यज्ञ के साथ सम्पन्न कराया। आर्य शिक्षण संस्थाओं के छात्र-छात्राओं के और श्री अनंत राव, श्री रामचंद्र तथा स्वामी धर्मानंद के मधुर भजन हुए। डा० बद्रीप्रसाद पंचोली, डा० कृष्णपाल सिंह एम० पी०, श्री किशन मोटवानी, भाजपा के श्री हरिसिंह चौहान आदि ने अपने विचार रखे। समाज के प्रधान श्री दत्तात्रेय आर्य ने आर्य समाज मे आई शिथिलता पर दुःख प्रकट किया और सुझाव दिया कि आज की सबसे बड़ी आवश्यकता समाज को सुदृढ़ सुसंगठित और गतिशील बनाना है। अध्यक्ष पद से बोलते हुए श्री चौधरी ने महर्षि दयानन्द को संसार का सबसे महान सुधारक बताया। अन्त में समाज के मंत्री श्री रासासिंह ने आगन्तुक महानुभावो का आभार व्यक्त किया।

गुरुकुल सिंहपुरा द्वारा मासिक छात्रवृत्ति

गुरुकुल सिंहपुरा, सुन्दरपुर जींद रोड, रोहतक (हरि०) में महर्षि दयानन्द के मन्तव्यानुसार आर्ष-पाठ-विधि से अध्ययन करने के इच्छुक छात्रो के लिए २०० रु० तक प्रतिमास छात्रवृत्ति देने की व्यवस्था की गई है। पहले १० छात्रों को छात्रवृत्ति दी जायेगी। प्रवेश हेतु न्यूनतम १० वीं पास होना अनिवार्य है। वैदिक सिद्धान्तों पर निष्ठा एवं वैराग्यवान् छात्रो को प्राथमिकता दी जायेगी। इच्छुक छात्र आवेदन पत्र ३० जून तक अवश्य भेज दें। —आचार्य द्विजराज

जोधपुर में पुरोहित प्रशिक्षण शिविर

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन, जसवन्त कालेज के पास, महर्षि दयानन्द मार्ग, जोधपुर (राज०) में १६ से २३ जून तक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है जिसमें षोडश संस्कारों का प्रशिक्षण दिया जायेगा। आर्यसमाजों के मन्त्री, और पुरोहितों के अतिरिक्त सभी आर्य भाई भी भाग ले सकेंगे। प्रशिक्षणार्थियों के आवास, भोजन की समुचित व्यवस्था होगी। आयु सीमा नहीं। इच्छुक व्यक्ति 31 मई तक १०१ रुपये उपरोक्त पते पर भेज कर अपना नाम पंजीकृत करवा सकते हैं।

—रतनलाल त्रिवेदी एडवोकेट

योग शिक्षण शिविर

आर्य समाज रामपुरा, कोटा में ७ से १४ अप्रैल तक पातंजलि योग शिक्षण शिविर का किया गया। स्वामी सत्यपति जी, ब्र० विवेक भूषण और ब्र० वीरेन्द्र ने प्रशिक्षण दिया।

रामजन्मोत्सव

आर्य समाज, जनकपुरी बी ब्लाक नई दिल्ली में डा० आर० के० पुंशीकी अध्यक्षता में ३० मार्च को रामनवमी को पर्व सोत्साह मनाया गया। जिसमें श्री सुधांशु का प्रवचन और श्री भगवान दास व श्री रामस्वरूप के भजन हुए।

—योगेश्वरचन्द्र

आर्य समाज मुस्करा

आर्य समाज मुस्करा, हमीरपुर का वार्षिकोत्सव ७-८अप्रैल को मनाया गया। जिसमें श्रीराम चन्द्र शर्मा, श्री अगनवीर स्नेही, श्री जलेश्वर सिंह और श्रीमती सरला देवी आदि ने भाग लिया।

श्री यज्ञदत्त दिवंगत

आर्य समाज, गुप्ता कालोनी, विजय नगर, दिल्ली के कर्मठ और उत्साही कार्यकर्ता श्री यज्ञदत्त पाहवा का १३ मार्च को निधन हो गया। श्रद्धांजलि सभा उनके निवास स्थान पर हुई। आर्य समाज, गुप्ता कालोनी ने शोक-प्रस्ताव पास किया। परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति दे।—मेलाराम कपूर

आर्यसमाज फोर्ट में रामनवमी

आर्य समाज, फोर्ट बम्बई की ओर से ३१ मार्च को आचार्य वशिष्ठ बलसे (नवभारत टाइम्स, बम्बई) की अध्यक्षता में रामनवमी महोत्सव मनाया गया जिसमे मुख्य अतिथि डा० ब्रह्मधकर व्यास, मुख्य वक्ता श्री गणेश मंत्री (उपसम्पादक धर्मयुग), श्री प्रकाशचन्द्र त्यागी व श्रीमती सुमित्रा अमीन थी। श्री रामसिंह आर्य संयोजक थे।

गुरुकुल वैद्यनाथ धाम

गुरुकुल महाविद्यालय, वैद्यनाथ धाम (देवघर) का स्थापना दिवस और रामनवमी पर्व ३०-३१ मार्च को पं० हरिदास ज्वाल (मन्त्री आ० प्र० सभा बिहार) की अध्यक्षता में मनाया गया। बृहद्यज्ञ के पश्चात् गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न हुआ। दूसरे खेल-कूद का आयोजन श्री सीताराम छबछरिया की अध्यक्षता मे हुआ। मुख्य अतिथि देवघर के आयुक्त श्री कृष्णानन्द एम० एल० ए० थे। विजयी छात्रों को श्री ज्वाल ने शील्ड प्रदान की।

—विन्ध्या प्रसाद

आर्य अनाथालय फिरोजपुर में रामनवमी

आर्य अनाथालय फिरोजपुर में ३१ मार्च को रामनवमी का पर्व सोत्साह मनाया गया। प्रातःकाल श्री प्रिं० पी० डी० चौधरी (सपत्नीक) के यजमानत्व में बृहद्यज्ञ हुआ। ब्रह्मा श्री मनमोहन शास्त्री थे। यज्ञ के पश्चात् प्रिं० चौधरी की अध्यक्षता मे सभा हुई जिसमें आश्रम के छात्र-छात्राओं के अतिरिक्त अधिकारीगण और कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

चण्डीगढ़ में रामनवमी

आर्य स्त्री समाज 19-सी चण्डीगढ़ मे रामनवमी का पर्व २४ से ३१ मार्च तक मनाया गया। प्रतिदिन श्री निरंजनदेव के प्रवचन और श्री सीताराम के भजन हुए। ३१ मार्च को डा० सुषमा शर्मा, व प्रिं० दिवान ने श्रीराम के बारे में विशेष व्याख्यान दिये।

ठमोली में वेदप्रचार और विद्यालय का शिलान्यास

ठिमोली (सीकर) मे २१ से २७ मार्च तक वेदप्रचार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पं० मोतीराम व श्री देवीदत्त निडर के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद पारायण यज्ञ हुआ। पूर्णाहुति के दिन प्रसिद्ध समाजसेवी श्री लक्ष्मणसिंह आर्य ने आर्य बालिका विद्यालय के भवन का शिलान्यास रखा। भवन निर्माण व यज्ञ का सारा व्यय श्री लक्ष्मण सिंह आर्य ने ही वहन करने का संकल्प किया।

—स्त्री आर्य समाज त्रिनगर दिल्ली का चुनाव श्रीमती कृष्णा चड्ढा की अध्यक्षता मे हुआ जिसमे प्रधाना रमेश रानी, मन्त्रिणी कैलाशवती आर्या और कोषाध्यक्ष डा० शकुन्तला वर्मा चुनी गई।

उग्रवादियों द्वारा समाज के प्रधान की हत्या

सहारनपुर मुरादाबाद पैसेन्जर ट्रेन में कुछ अलगाववादी सिख युवकों ने एक बोगी को लूटा और टुण्डला के रेलवे निर्माण निरीक्षक श्री श्रीकृष्ण तायल की हत्या कर दी। श्री तायल आर्य समाज के प्रधान थे। अपने कर्तव्य परायणता और ईमानदारी के लिए अपने विभाग मे विख्यात थे। आर्य उपप्रतिनिधि सभा आगरा ने मांग की है कि हत्यारो को सख्त से सख्त सजा दी जाय। और परिवार की पूर्ण सहायता की जाय।

—कुंवर बादामसिंह

सीताराम बाजार में आर्यसमाज स्थापना दिवस

आर्य समाज, सीताराम बाजार, दिल्ली मे 22 मार्च को आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया जिसमें श्री राजाराम शास्त्री, आचार्य प्रकाशचन्द्र शास्त्री, श्री राजाराम सिंह और श्री न्यादर मल गुप्त ने अपने विचार रखे।

—आर्य समाज कवारी के चुनाव में प्रधान श्री अतर सिंह आर्य क्रान्तिकारी मंत्री श्री वजीरसिंह आर्य और कोषाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश आर्य चुने गए। महिला आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती सुनहरी आर्या, मंत्री बहन वीरमती आर्या और कोषाध्यक्ष श्रीमती नत्थिया आर्या चुनी गई।

दयानन्द कालेज हिसार

इस कालेज की स्थापना जून १९५० में प्रि० ज्ञानचन्द महाजन ने की थी। जिस महत् उद्देश्य के लिए महाजन जी ने इसकी स्थापना की उसको पूरा करने के लिए यह कालेज निरन्तर प्रयत्नशील है। इस समय छात्र-छात्राओं की संख्या व गुणवत्ता दोनों दृष्टि में हरियाणा का सबसे बडा डिग्री कालेज है।

१९६० में डी० ए० वी० प्रबन्धकर्त्री समिति नई दिल्ली का अंग बना। १९६४ से १९७७ तक कालेज का तीव्रगति से विस्तार हुआ। आज यह कालेज पूर्ण यौवनावस्था पर है और सारे हरियाणा में इसकी ख्याति है।

छात्र संख्या—इस वर्ष कालेज में २५३४ विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया जिसमें छात्राओं की सख्या ३१९, अनुसूचित जाति के छात्रों की संख्या ६५ और ११७ विद्यार्थी पिछड़े वर्ग के थे।

सुखद परीक्षा-परिणाम— हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी कालेज का परीक्षा-परिणाम उसकी गरिमा के अनुरूप श्रेष्ठ रहा। विभिन्न कक्षाओं की योग्यता सूची में कुल ५५ स्थान मिले जो अन्य कालेजों की अपेक्षा सर्वाधिक हैं।

प्री-यूनिवर्सिटी (विज्ञान)— २३ छात्र-छात्राओं को योग्यता-सूची मे स्थान मिला। प्री-यूनिवर्सिटी (मेडिकल) और प्री-यूनिवर्सिटी (नान-मेडिकल) में प्रथम श्रेणी प्राप्त करने वाले छात्रो की संख्या क्रम· ३५ और ६७ रही।

कु० नन्दिता काड प्री० यूनिवर्सिटी-मेडिकल मे ७११/८५० अंक प्राप्त कर प्रथम रहीं। कु० मनीषा भूटानी ६८१/८५० कु० दीपिका भास्कर ६५३/८५० कु० सीमा मलिक ६४२/८५० को क्रमशः तीसरा, आठवां और दशवां स्थान मिला।

प्री-यूनिवर्सिटी नान-मेडिकल विनोद कुमार ७४८/८५० अंक प्राप्त कर तीसरे स्थान पर रहे। अरविन्द कुमार केजरीवाल ७३२/८५० अंक प्राप्त कर योग्यता-सूची मे छठे स्थान पर रहा।

प्री-यूनिवर्सिटी (वाणिज्य)— में इस विद्यालय के २१ विद्यार्थियों को प्रथम स्थान मिला, जो हरियाणा के सभी कालेजों से अधिक है। कु० स्नेहलता राठी ५२९/७५० अंक प्राप्त कर योग्यता सूची में नवें स्थान पर रही।

प्री-यूनिवर्सिटी (कला) में कु० अपर्णा ६१४/८५० अंक प्राप्त कर आठवें स्थान पर रहीं।

प्री मेडिकल—में इस कालेज ने योग्यता सूची मे २३ स्थानों में से १६ स्थान प्राप्त किये। यह एक कीर्तिमान है इस कालेज के ५३ छात्रों को प्रथम मिला। कु० अनुराधा अग्रवाल ५०९/६०० अंक प्राप्त कर योग्यता सूची में प्रथम और अमित मेहता ५००/६०० अंक प्राप्त कर विश्वविद्यालय में द्वितीय रही। कु० मोनिका मेहता ४८३/६००, धर्मवीर सिंह ४८०/६००, कु० ऋतुला भूटानी ४७९/६००, सुरेन्द्र मोहन ४७३/६०० ने योग्यता सूची में क्रमशः पांचवें, छठे, सातवें, एवं दसवें स्थान पर रहे।

प्री-इंजीनियरिंग— में योग्यता सूची में १२ में से ५ स्थान इस विद्यालय के छात्रों को मिले। ३३ विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। गुरु शरण बंसल ४९०/६०० का योग्यता सूची में पहला स्थान रहा। अरविन्दर सिंह चावला ४७५/६००, कु० निशा ४६८/६०० अनिल कुमार ४६५/६०० की योग्यता सूची में क्रमशः पहला, सातवां और दसवां स्थान मिला। इसके अतिरिक्त अन्य परीक्षाओं मे भी इस विद्यालय का नाम उज्ज्वल हुआ है।

प्राध्यापक वर्ग—किसी भी शिक्षण संस्था की पहचान उसके विद्वान्, कर्मठ और सुयोग्य प्राध्यापकों से होती है। इस कालेज को आरम्भ से ही गम्भीर और प्रतिभा सम्पन्न प्राध्यापकों ने एक अतिरिक्त गरिमा प्रदान की है। जिसके लिए प्राध्यापक गण धन्यवाद और प्रशंसा के पात्र हैं।

एथलेटिक्स—इस विद्यालय के छात्र सजय सुहाग ने करनाल में आयोजित हरियाणा राज्य स्पोर्ट्स फेस्टिवल में हिसार जिले का प्रतिनिधित्व करते हुए 'हाई जम्प और 'शाट पुट' में स्वर्ण-पदक प्राप्त किया। अपनी आयु के वर्ग में इसे सर्वश्रेष्ठ-खिलाड़ी घोषित किया गया। मद्रास मे ६ से १० फरवरी तक आयोजित अन्तः राज्य ऐथलेटिक्स प्रतियोगिता में हरियाणा राज्य का प्रतिनिधित्व किया और उपरोक्त दोनों खेलों में पुनः स्वर्ण पदक प्राप्त कर राज्य का नाम उज्ज्वल किया और आफ वर्ग में सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का गौरव प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त क्रीडागन मे योग, कुस्ती, बाक्सिग, जुडो, शतरंज, बैडमिण्टन आदि खेलों का अभ्यास कराया जाता है।

सांस्कृतिक गतिविधियां—शिक्षा के विशिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति में सांस्कृतिक मूल्यों का भी अधिक योगदान है। कुछ अनवेक्षित व्यवधानों के बावजूद कालेज के सांस्कृतिक विभाग ने 'अध्यापक दिवस' और 'प्रतिभा खोज प्रतिभा खोज प्रदर्शन में भाषण, निबन्ध एवं काव्य पाठ-प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया।

बृहतर समाज की सेवा—इस कालेज ने आगामी डी० ए० वी० शताब्दी समारोह के लिए एक लाख रुपये देने का निश्चय किया है। अब तक कालेज २१०८२-०० रु० का योगदान दे चुका है। इसके अतिरिक्त करनाल में आयोजित दयानन्द निर्वाण शताब्दी के लिए ४०००/- और यमुनानगर में स्थापित डी० ए०वी० चिकित्सा संस्थान को ११००/- रुपये का योगदान दिया। उपेक्षित वर्गों के १०० छात्रों को निश्शुल्क प्रशिक्षण दिया गया।

राष्ट्रीय सेवा योजना—कालेज मे इस साल से राष्ट्रीय सेवा योजना का विस्तार किया गया है। प्रो० कु० मंजू गुप्ता की देख-रेख में छात्राओं के लिए पृथक इकाई गठित की गई। दो छात्र इकाइयां प्रो० मदन गोपाल शर्मा और प्रो० रघुवीर शरण गुप्त की देख रेख में पहले से ही संलग्न हैं। २६ अगस्त ८४ और २ सितम्बर 84 को एक.एक दिवसीय शिविर के अन्तर्गत पटेल नगर श्मशान भूमि को जाने वाले मार्ग की सफाई की गयी। इसके अतिरिक्त मंजू गुप्ता के नेतृत्व में २८ महिला स्वयं सेविकाओं ने घर-घर जाकर ग्रामवासी महिलाओं को स्वच्छता, कढाई-बुनाई आदि के विषय में परामर्श दिया।

हमारी समस्याएं और आवश्यकताएं—शिक्षा संस्थाओं के सम्मुख एक बहुत बड़ी समस्या अपने कर्मचारियो को उचित समय पर वेतन भुगतान की है। गत वर्षों मे सरकार की अनुदान-राशियों के उदार रहने के बावजूद यह समस्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। महंगाई भत्तों की निरन्तर बढ़ोत्तरी से प्रबंध कर्त्री समिति पर वेतन का बोझ बढ़ रहा है। कई समितियों ने तो इस समस्या के सामने अपनी हार मान ली। हरियाणा सरकार से अनुरोध किया गया है व निजी महाविद्यालयों की इस विकट समस्या की ओर तुरन्त ध्यान दे और वेतन के भुगतान की कोई ऐसी विधि अपनाएं जिससे हमारा ध्यान शैक्षणिक विकास की ओर केन्द्रित हो और हमारी सामर्थ्य का सही उपयोग हो सके। इस सम्बन्ध में जनता से भी सहयोग की अपील है।—प्राचार्य—डॉ कृष्ण कुमार धवन

मेरी जावा और बाली की यात्रा......

(पृष्ठ १४ का शेष)

हेराफेरी करने वाले भारतीय व्यापारियों का मुसाफिरखाना है—ऐसी मेरी भावना रही। मैंने वहां का भवन जाकर देखा। श्री दरबारी लाल जी भी मेरे साथ थे। विदेशों में आर्य समाज के लोग पौराणिक हिन्दुओं के साथ हर दिलअजीजी वाला गठ-बन्धन स्वीकार कर लेते हैं। सबके साथ मैत्री और शिष्ट व्यवहार तो होना ही चाहिए, किन्तु आर्य समाज का अपना एक लक्ष्य भी है। संयुक्त राज्य अमरीका मे एक सज्जन हैं, जो आर्य प्रतिनिधि सभा बनाना चाहते हैं, वे हरे-राम-हरे कृष्ण मिशन के भी कार्य कर्त्ता हैं, विश्व हिंदू परिषद् के भी—वे ही अब आर्य समाज का नेतृत्व करेंगे। इस प्रकार की नीति से हमारे अधिकारियों को देश में और विदेश में भी संभल कर रहने की आवश्यकता है। आर्य समाज का अपना एक प्रोग्राम है, अपना एक क्षेत्र है, अपने कुछ सिद्धांत हैं। किसी भी संस्था का कोई अच्छा काम हो, उसमें आर्य समाज सहयोग दे सकता है, किंतु खारी समुद्र में विलीन होने की उदारता और उत्सुकता इसे नहीं दिखानी चाहिए। काम धीरे हो, साथ देने वाले चाहे जितने कम हों, इसमें कोई बुराई नहीं, किन्तु ध्येय निश्चित हो। आर्य समाज को सोचना होगा, कि पूर्वी एशिया के द्वीपों में उसे क्या करना है। विदेशियों ने इन देशों को टूरिज्म का अड्डा बना रखा है। वे यहां के वासियों को अपनी परंपरागत मूल-अवस्था में जीवित रखना चाहते हैं, जिससे यूरोपियनों और अमरीकियों को आदिम जातियों की कला, उनके अभिनय, उनकी अविकसित सभ्यता और संस्कृति का रसास्वादन मिल सके। ईसाइयों का काम उनकी स्थिति में परिवर्तन लाने का है, वे उन्हें विकसित करके आज की सुसंस्कृत-मानव बनाने की ओर अग्रसर हैं। परन्तु कुछ हिन्दुत्ववादी संस्थाएं उनके अन्धविश्वासों और आदि में पूजापद्धतियों को जीवित रखने में गौरव का अनुभव करता है। आर्य समाज वहां क्या कार्य करना चाहता है, इसकी हमारे पास उदात्त आयोजना होनी चाहिए। भारतीयों और भारत-वंशियों के अतिरिक्त हमें विदेशियों में भी काम करना है, यह नहीं भूलना चाहिए।

मेरी अंग्रेजी की एक पुस्तक 'पातञ्जलराज योगा' है। इण्डोनेशिया के कतिपय लोगों को मेरी यह पुस्तक पसंद आई। उन्होंने इसका अनुवाद अपनी भाषा में करना चाहा। मैंने और मेरे प्रकाशक ने अनुमति दे दी। यह अनुवाद डा० जे० बी० ए० एफ० मेजर पोलक ने किया और पुस्तक छपी। मैं मेजर पोलक से मिलना चाहता था, किन्तु पता लगा कि कुछ मास हुए उनकी मृत्यु हो गयी। मेरी पुस्तक के प्रारम्भ में इण्डोनेशिया के हिंदू धर्म शास्त्र के प्रधान अधिकारी डा० पूज्य (Dr. Pudjya) के भूमिका के रूप में कुछ वाक्य हैं। गत वर्ष इन्द्रप्रस्थ गुरुकुल के समारोह में दिल्ली में उनसे भेंट हुई थी। 12 फरवरी को हम लोगों ने इन्स्टीट्यूट आफ धर्म शास्त्र (बाली द्वीप में) देखी। वहां डा० पूज्य और अन्य लोगों से भेंट हुई। इण्डोनेशिया की पार्लियामेंट में हिंदु धर्म का प्रतिनिधित्व डा० आई० बी० पुण्यात्मज (Drs. I. B. Oka Puniatmaja) करते हैं उनसे भी इस समारोह में भेंट हुई। डा० पूज्य ने इण्डोनेशिया भाषा में गीता, मनुस्मृति और ऋग्वेद की कुछ ऋचाओं का अनुवाद किया है। ×

आर्य समाज के चुनाव

—आर्य समाज, केराकल, जौनपुर (उ० प्र०) में प्रधान श्री उमाशंकर आर्य, मन्त्री-श्री रामनारायण आर्य और कोषाध्यक्ष श्री रमाशंकर चुने गये। समाज का वार्षिकोत्सव 6 से 9 अप्रैल तक मनाया गया।

आर्यसमाज—परिचय

—प्रा० भद्रसेन डाक० साधु आश्रम (होशियारपुर)

(गतांक से आगे)

इसके बाद मैंने पुनः पूछा—

सोमेश—हां, आपने बहुत सुन्दर ढंग से ऋषि जीवन का परिचय दिया है तथा बताया है, कि उन्होंने एक विशेष उद्देश्य से आर्यसमाज की स्थापना की है। मैं इस सम्बन्ध में और जिज्ञासाएं प्रकट करूं। अच्छा हो आप पहले यह बताएं, कि आप ऋषि जीवन में क्या अनोखापन अनुभव करते हैं ?

प्रा०—संसार के इतिहास की यह एक अपूर्व घटना है, कि एक पठित २१ वर्षीय युवक लगातार १४ वर्ष भटकने के बाद एक गुरु को प्राप्त करता है। वहां विशेष शिक्षा प्राप्त करके जब अपने पूर्व संकल्प को साधने के लिए विदा मांगता है, तो गुरुदेव उसके जीवन का कांटा ही बदल देते हैं। एतदर्थ अपनी योग साधना को भी गौण करके महर्षि दयानन्द सर्वात्मना जनता जनार्दन को सत्पथ दर्शाने में जुट जाते हैं। आर्षज्ञान की ज्योति को सदा प्रज्वलित रखने के लिए जहां आर्यसमाज की स्थापना की, वहां महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश, संस्कार विधि, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वेदभाष्य आदि बड़े-छोटे बीस ग्रन्थ लिखे।

अगले दिन कालेज के अनन्तर जब सोमेश आर्यसमाज जाने लगा, तो उसके कुछ साथी भी साथ हो लिए। कुछ चर्चा के पश्चात् विश्वेश्वर ने पूछा, आपकी दृष्टि से आर्यसमाज की विचारधारा का सबसे बड़ा लाभ क्या है ?

प्रा०—इसको एक छोटे वाक्य में कहना हो, तो कह सकते हैं कि उलझाव से बचाव।

सोमेश—किस-किस उलझाव से आप बचाव समझते हैं ?

प्रा०—जीवन के हर क्षेत्र के उलझाव से यहां बचाव है। अगर कुछ के नाम ही गिनाने की बात हो तो मैं कहूंगा, कि ईश्वर, धर्म, मानव जाति, महापुरुष, तीर्थ, पर्व आदि। क्योंकि हर एक के भेदों का कोई अन्त नहीं। इन सबका एक सरल - सीधा - स्पष्ट सा रूप यहां हाथ लग जाता है। तब व्यक्ति असम्बद्ध फैलाव में नहीं पड़ता और न ही पत्तों को पानी देने जैसा निरर्थक श्रम। जैसे कि प्रातः उठते ही दिन, तिथि, राशि, ग्रह, दिशा के शुभ-अशुभ के विचार सामने आ जाते हैं।

अमितेश—हां, आपने बचाव की बात की है और उसको स्पष्ट करते हुए शकुन-अपशकुन, मुहूर्त्त विचार का दृष्टान्त दिया है। इसी प्रकार, अन्य अनेक बातों में बचाव का नाम निर्देश किया है। हां, चमत्कारों के सम्बन्ध में ऋषि जी की क्या धारणा है ?

प्रा०—देखो ! आज हमारे समाज में ईश्वर भक्ति, जप-तप, मन्त्र-तन्त्र, यज्ञ-योग, व्रत-तीर्थ आदि से प्राप्त होने वाले अनेक तरह के चमत्कारों की सर्वत्र चर्चा होती है। ऋषि ने इस सम्बन्ध में सब से पहले इस बात की ओर सबका ध्यान आकर्षित किया है कि व्यवहार में ऐसा कहीं सामने नहीं आता। शीतला माता, सिरड़ी वाले साईं बाबा जैसे धार्मिक चल-चित्रों से भक्तिमात्र से ही हर सिद्धि की प्राप्ति का दावा किया जाता है। हां, जब कोई इस प्रकार के चमत्कारों पर विश्वास करता है, तो इसका पहला परिणाम यही होता है कि वह उस-उस वस्तु को प्राप्त करने के लिए अन्य प्रयास नहीं करता। उस-उस व्यावहारिक प्रयास के न करने पर उसको विद्या धन आदि प्राप्त नहीं होते। और तब वह उसी धोखे मे ही रह जाएगा। जैसे कि जब कोई यह विश्वास करता है, कि अमुक मन्त्र की सिद्धि से विद्या प्राप्त हो जाती है, तो वह पढ़ने के स्थान पर मन्त्र सिद्धि में लग जाता है।

नवीन—श्रीमान् जी ! सोमेश ने जो आर्यसमाज के सत्संग सम्बन्ध में सुनाया है, उससे ऐसा झलकता है कि जैसे महर्षि दयानन्द ने अपनी खिचड़ी अलग ही पकाई है ?

प्रा०—ऐसी कोई बात नहीं है, क्योंकि आर्यसमाज के सत्संग में सर्वप्रथम यज्ञ होता है, जोकि वैदिक वाङ्मय के श्रोत-गृह्यसूत्रों जैसे यज्ञ साहित्य के अनुरूप ही होता है। वहां अधिकतर वेदों के ही मन्त्र प्रयुक्त होते हैं। वेद भारतीय साहित्य, धर्म, परम्परा के मूल आधार हैं तथा ईश्वरीय ज्ञान होने से इनमें सार्वभौमिक विचार हैं। अतएव आर्यसमाज के विचारों का वेद ही मूल आधार हैं। हां, यहां के सत्संग में केवल एक ईश्वर की पूजा, भक्ति, उपासना होती है, जोकि वेद और हमारी भावना एवं कथनी के अनुकूल होती है।

आपके इस प्रश्न के सभी पहलुओं का उत्तर महर्षि के 'स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश' में इन शब्दों द्वारा प्राप्त होता है। 'जो वेदादि सत्यशास्त्र और ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्तों के माने हुए ईश्वरादि पदार्थ हैं, जिनको मैं मानता हूं, सब सज्जन महाशयों के सामने प्रकाशित करता हूं। मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूं कि जो तीन काल में सबको एक सा मानने योग्य है।

मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु जो सत्य है उसको मानना मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है।'
पृ. ५८५ [स्वा वेदानन्द सम्पादित संस्करण)

विवेक—यदि महर्षि ने नई प्रथा नहीं चलाई तो उनका इस क्षेत्र में क्या योगदान है ?

प्रा०—महर्षि ने बारम्बार यही लिखा है कि हमारा धर्म वही है, जो वेद कहता है। (पूर्व०) तुम्हारा मत क्या है ? (उत्तर०) वेद अर्थात् जो जो वेद में करने और छोड़ने की शिक्षा की है, उस उस का हम यथावत् करना छोड़ना मानते हैं। जिस लिए वेद हमको मान्य है इसलिए हमारा मत वेद है। ऐसा ही सब मनुष्यों को विशेष आर्यों को एकमत्य होकर रहना चाहिए। ३, ६७

हां जहां तक महर्षि के योगदान की बात है, तो वस्तुतः महर्षि ने वैदिक साहित्य, धर्म के क्षेत्र को एक निश्चित दिशा और व्यवस्थित रूप दिया है। अतः संशय, अनिश्चय, पारस्परिक विरोध की स्थिति में एक 'सुसंगत जीवनपथ' दर्शाकर महर्षि ने एक अपूर्व योगदान दिया है। श्री परमानन्द शर्मा के शब्दों में इसको ऐसे कह सकते हैं—

'जब ललाट पर चेतनता के
चिह्न अनिश्चय का अङ्कित था,
दिखलाया निश्चय - पथ तुमने
शोषित कर शङ्का का सागर'
'एक बार फिर आओ प्रभुवर'

अभिनव—मुझे तो यज्ञ की प्रक्रिया में भी अन्तर प्रतीत होता है ?

प्रा०—हां, ठीक कहा, आर्यसमाज केवल ईश्वर को ही जगत् कर्त्ता-धर्त्ता मानता है। ये सूर्यादि प्राकृतिक पदार्थ उसी की ही व्यवस्था में बन्धे हुए हैं। आर्यसमाज की दृष्टि से देवी-देवताओं की स्वतन्त्र सत्ता नहीं है। अतः महर्षि के विचार से यज्ञों का देवताओं की प्रसन्नता से कोई सम्बन्ध नहीं है। हां, ये यज्ञ, धूप, अगरबत्ती की तरह जल, वायु आदि की शुद्धि के लिए किए जाते है। इसीलिए इनकी सामग्री उसके अनुरूप होती है। 'एक पन्थ दो काज' के अनुसार ईश्वर के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना विषयक एवं यज्ञ सम्बद्ध मन्त्र भी पढ़े जाते हैं। अतएव महर्षि ने लिखा है —(पूर्व०) होम से क्या उपकार होता है ? (उत्तर०) सब लोग जानते हैं कि दुर्गन्धयुक्त वायु और जल से रोग, रोग से प्राणियों को दुख और सुगन्धित वायु तथा जल से आरोग्य और रोग के नष्ट होने से सुख प्राप्त होता है।

[क्रमशः] सत्यार्थ. समु ३ पृ. ४३

आर्यसमाज सुदकैन कलां का उत्सव सम्पन्न

सुदकैन कलां जिला जींद का प्रथम वार्षिक महोत्सव १६ से १८ मार्च तक बड़े हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ। इसमें स्वामी गोरक्षानन्द जी (गोशाला उचाना खुर्द) व धानानन्द जी के मधुर उपदेश हुए तथा पं० ईश्वरसिंह तूफान (भजनोपदेशक सभा), बहन दर्शना आचार्या गुरुकुल खरल के भजनों तथा ओजस्वी प्रवचनों ने उत्सव के महत्व को और बढ़ाया। कन्या गुरुकुल खरल से कुछ छात्राएं भी आई जिन्होंने बड़े सुन्दर प्रवचनों तथा गीतों से लोगों को प्रभावित किया।

१८-३-९० को व्यायाम प्रदर्शन में ब्रह्मचारी रामस्वरूप जी ने सरिए मोड़ना, नाड़ी रोकना, दो कारें रोकना आदि से लोगों को आकर्षित किया।

इस उत्सव में कुछ लोगों को यज्ञोपवीत दिए गए। आस-पास के गांवों तथा नरवाना से बहुत से लोग उत्सव देखने आए। आर्यसमाज करसिधु खेड़ा, आर्यसमाज तारखा तथा आर्यसमाज नरवाना के मन्त्री व प्रधान भी उत्सव पर पधारे तथा आर्य विचारों से लोगों को अवगत कराया। अन्त में सभा के प्रधान श्री राजेन्द्र जी ने अपार भीड़ को सम्बोधित करते हुए कहा कि जो दान आपने श्रद्धा से दिया है वो आर्यसमाज मन्दिर के निर्माण हेतु व कन्या पाठशाला के लिए लगाया जाएगा।

दिलबाग शास्त्री
मन्त्री, आर्यसमाज सुदकैन कलां (जींद)

अबोहर की खूनी होली

तेगराम पूर्व विधायक, अबोहर

अबोहर में सरकार के अनुसार अब तक ३५ जानें गई हैं किन्तु गैरसरकारी अनुमान से ६० जानें गई तथा इतने ही लोग गम्भीर रूप से घायल हुए। देश के लोगों ने रंगों का त्यौहार होली अबीर, गुलाल व रंग भरी पिचकारी से मनाया पर यहां तो लोगों के शरीर पर और शहर की नालियों में खून की धाराएं बहीं। देश में उपले-लकड़ी जला कर होली प्रज्वलित की गई किन्तु यहां तो दर्जनों लाशों की श्मशान भूमि में सामूहिक दाह-संस्कार से अग्नि की लपटें उठीं। शहर कर्फ्यू की जकड़ में है। रात-दिन सी०आर०पी०एफ० के जवान बन्दूकें ताने गश्त लगा रहे हैं तथा शहर में अभी भी तनाव है।

महर्षि दयानन्द विद्यालय जींद रोड़, रोहतक में प्रवेश आरम्भ

१ अप्रैल से प्रभाकर की ट्रेनिंग प्रारम्भ। नर्सरी से दसवीं तक तथा 10+2 B. A. I, II, B. Sc. B.com. उचित शिक्षा का प्रबन्ध है।

१- नैतिक शिक्षा का उचित प्रबन्ध
२- परिश्रमी तथा निष्ठावान अध्यापक
३- पंखे तथा बिजली और पानी का उचित प्रबन्ध
४- पहली से दसवीं तक अंग्रेजी का भी उचित प्रबन्ध

नोट:—इच्छुक विद्यार्थी निम्न पते पर सम्पर्क करें।

निवेदक:—

संरक्षक
बलराज शास्त्री काशी विद्यापीठ

प्रधानाचार्य
महर्षि दयानन्द विद्यालय
जींद रोड रोहतक

शराब हटाओ
देश बचाओ।

शराब नीति की आलोचना

भाजपा के श्री बलबीर सिंह चौधरी ने पिछले सत्र में आबकारी नीति की आलोचना करते हुए उन्होंने कहा कि १९८७-८८ में आबकारी से से हुई आय ९ करोड़ रु. अधिक थी जो उससे अगले वर्ष १६ करोड़ रु. बढ़ गई तथा इस वर्ष ४६ करोड़ रु. बढ़ गई। अब गांव-गांव शराब और उससे होने वाली कुरीतियां आम हैं। चर्चा में सर्वश्री टेकचन्द नैन, मांगेराम नम्बरदार, मास्टर महेंद्रसिंह दहिया आदि ने भी भाग लिया।

बुढलाडा मण्डी (जि. बटिण्डा) में पारिवारिक सत्संग

१८-३-९० दिन रविवार को प्रात: साढ़े दस बजे से साढ़े बारह बजे तक श्री मेघराज जी गोयल प्रधान आर्यसमाज बुढलाडा ने अपने परिवार में श्री ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी बटिण्डा द्वारा संध्या-हवन यज्ञ-प्रार्थना- ईश्वर भक्ति के भजन का बड़ा सुन्दर कार्यक्रम सत्संग के रूप में रखा। श्री ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी ने 'पंच महायज्ञ' पर अपने विचार व्यक्त किए। उपस्थित नर-नारियों ने पुष्पों द्वारा प्रधान जी के परिवार को आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर श्री मेघराज जी गोयल ने १०० रुपए आर्यसमाज बुढलाडा को और १०० रुपए आर्य वानप्रस्थ आश्रम बटिण्डा को दान दिया। उपस्थित देवी देवताओं का मिठाई एवं चाय से सत्कार किया गया। ऐसे पारिवारिक सत्संगों से बहुत अच्छा प्रचार होता है।

धन्यवादी
ओमप्रकाश वानप्रस्थी

शराब विरोधी पंचायत

होडल मार्केट कमेटी के चेयरमैन किशोर सिंह रावत ने बताया कि हथीन के विधायक भगवान सहाय रावत के कहने पर मानपुर गांव में शराब विरोधी पंचायत हुई। पंचायत में निर्णय लिया गया कि यदि कोई व्यक्ति शराब बेचता या पीता पाया गया तो उसके खिलाफ कार्यवाही की जाएगी तथा उसका सामाजिक बहिष्कार किया जाएगा। इस कार्य के निरीक्षण के लिए एक ३१ सदस्यों की कमेटी भी गठित की गई है।

किसान यूनियन का गठन

भारतीय किसान यूनियन की ग्रामीण इकाइयों का गठन कार्य बड़ी तेजी से चल रहा है। मालसिंह को बलिलका, लेखराम को छपरौला, नत्थीसिंह को दूधौला, गिरधर लाल को कोंडिल, बाबूराम को अहरवां, रतनलाल को नांगल जाट, करणसिंह को बहीन, सुखीराम को मण्डकौल, रूपचन्द पहलवान को ममरौला, धर्मबीर को रूंधी, भूपसिंह को सौंध तथा राधेलाल को मानपुर का अध्यक्ष चुना गया है।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज जौहर खेड़ा का तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विश्व शांति यज्ञ हुआ तथा भजनोपदेश हुए। अनेक वक्ताओं ने लोगों से शराब, मांस व धूम्रपान का प्रयोग छोड़ने की अपील की।

अंग्रेजी हटाओ
देश बचाओ

सर्वत्र बेचैनी और बिखराव : चाहिए धैर्य और एकता

प्रो० शेरसिंह प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

देश की अवस्था शोचनीय होती जा रही है। पंजाब और कश्मीर की अवस्था दिन प्रतिदिन बिगड़ती जा रही है। हत्यायें तो रोज होती ही हैं, अब अपहरण करके आतंकवादी अपने साथियों को छुड़वाने की शर्तें रखने लगे हैं। यह कश्मीर में हो रहा है और आन्ध्र में भी। यह बीमारी और जगह भी फैल सकती है। पंजाब में तो अपहरण पैसा वसूल करने के लिए हो रहा है। एक ओर इस प्रकार की अराजकता फैलती जा रही है और दूसरी ओर इन समस्याओं का हल करने की क्षमता रखने वाले जिम्मेदार संगठन बिखर रहे हैं।

आज आवश्यकता तो है दलों से ऊपर उठकर राष्ट्र की एकता को बचाने का। परन्तु दलों के अन्दर ही बिखराव और संघर्ष चल रहे हैं। सभी दल अपनी अन्दरूनी समस्याओं में ही उलझे हैं, राष्ट्र की समस्याओं में समय और ध्यान नहीं दे पा रहे हैं।

राजनैतिक दल ही नहीं, सभी आर्थिक और सामाजिक संगठन भी बिखर रहे हैं। किसान की यूनियन तथा मजदूरों की यूनियन भी अपने अन्दर के संघर्षों में लगे हैं। किसान संगठन जात-पात के नाम पर बंटता जा रहा है, मजदूर भी मनमानी शर्तें पेश करने में ही लगे रहते हैं, सौदे करते रहते हैं, मजदूरों का उद्योग का तथा देश का ध्यान किसी के मन में नहीं। जैसी शर्तें असन्तुलित वैसे ही वायदे भी असन्तुलित।

वायदे तो असन्तुलित किए जाते हैं और उनको पूरा करते समय सन्तुलन की बात याद आने लगती है।

बेचैनी, असन्तुलन, हिंसा और बिखराव से ही घिरे हुए हैं संगठन। आवश्यकता है धैर्य, सन्तुलन प्रेम और एकता की।

क्या सभी संगठन, दल, यूनियन आदि समय की नजाकत को देख कर देश के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करेंगे ?

कोटि प्रणाम

मर्यादा पुरुषोत्तम तुम थे, मर्यादाओं के अनुरक्षक।
सत्य धर्म के अहे प्रणेता मानवता के बने सुरक्षक।
विप्र धेनु—सुर—सन्तजनों को किया तुम्हीं ने निर्भय।
दूर किया सारी धरती की दानवता—अन्याय—अनय।
निर्बल को दे नया सहारा, नवयुग का आह्वान किया।
जन-जन में जागृति लाकर के चेतना का अनुदान दिया।
स्थापित कर मानवता का, अनुपमेय सा मेरुदण्ड।
मार गिराया समस्त राक्षसों को, जो थे अति तीव्र उदण्ड।
रावण जैसे असुरों का वध करके, भू उद्धार किया।
वैदिक पथी बनाकर सबको जगती का उपकार किया।
ऋणी तुम्हारा सदा रहेगा, महिमण्डल सारा, हे राम।
आज तुम्हारे जन्मदिवस पर युग के कवि का कोटिप्रणाम।

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना,
सुलतानपुर (उ०प्र०)

चैत्र शुक्ल १ (२७ मार्च १९९०) नव वर्ष प्रतिपदा की बधाई

विक्रमी सम्वत् २०४७ आपके लिए, परिवार के लिए, समाज के लिए, राष्ट्र के लिए, विश्व के लिए मंगलमय होवे।

—हरिश्चन्द्र स्नेही आर्यवीर दल सोनीपत

अलीपुर में सर्वखाप पंचायत का आयोजन

पालम खाप ३६० ग्रामों की पंचायत है के पंचों ने यह अनुभव किया है कि १२ मार्च को ग्राम बैंसी जिला रोहतक में महम चुनाव के दौरान मृत व्यक्तियों को श्रद्धांजलि देने हेतु जो शोकसभा आयोजित की गई थी, उसमें मृतकों को श्रद्धांजलि देने तथा संवेदना प्रकट करने के अतिरिक्त कोई नई बात होनी चाहिए थी। शोकसभा के अवसर पर मृतकों तथा उनके सम्बन्धियों के प्रति सहानुभूति एवं संवेदना प्रकट करने का कार्यक्रम ही रहना चाहिए था। वहां राजनैतिक मामले उठाना हमारी सभ्यता और परम्परा के विरुद्ध है। शोकसभा सर्वखाप पंचायत कहकर यदि कोई स्वयंभू पंच सर्वखाप पंचायत के नाम से मनमाने निर्णय सुनादे तो उसका कोई महत्त्व नहीं है। इस प्रकार की कुचेष्टा से महान संघटन की गरिमा तथा प्रतिष्ठा को भारी आघात पहुंचाना है क्योंकि तथ्य यह है कि उक्त सभा में किसी खाप को पत्र डालकर न बुलाया गया और न खापों के प्रतिनिधि उसमें सम्मिलित हुए। शोक सभा पर राजनैतिक निर्णय करके भ्रामक प्रचार सर्वखाप पंचायत का नाम लेकर किया जा रहा है। यह सब प्रकार से निन्दनीय है।

अत: ३१ मार्च शनिवार को प्रात: ११ बजे शहीद स्मारक ग्राम अलीपुर (जी०टी० रोड) में खाप पालम ३६० ग्रामों की ओर से एक सर्वखाप पंचायत बुलाई गई है और पंचायत की परम्पराओं के अनुसार सभी खापों को पत्र भेजे गए हैं। अलीपुर के चारों ओर बसे हुए ८१ ग्रामों की पंचायत ने इस पंचायत का प्रबन्ध करने का उत्तर-दायित्व लिया है और चौ० हीरासिंह पूर्व कार्यकारी पार्षद दिल्ली को इसका अध्यक्ष बनाया गया है। अत: इस पंचायत में सम्मिलित होकर सर्वखाप पंचायत जैसे महासंघठन की प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए सभी खापों के प्रतिनिधियों को अधिक से अधिक संख्या में पहुंचना चाहिए। निवेदक—

खाप पालम (३६०) पालम दिल्ली

श्री सोमपाल जी राज्यसभा के सदस्य निर्वाचित

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति एवं पूर्व सांसद श्री रघुवीरसिंह शास्त्री के सुपुत्र श्री सोमपाल जी उत्तरप्रदेश से जनता दल की ओर से राज्यसभा के सदस्य चुने गए हैं। आर्य प्रति-निधि सभा हरयाणा की ओर से श्री सोमपाल जी को बधाई भेजी गई है। —सभा मन्त्री

आर्यसमाज खटकड़ (जीन्द) का चुनाव

प्रधान—बलदेव सिंह आर्य उपप्रधान—सरजीत सिंह आर्य
मन्त्री—डा० सतबीर सिंह खटकड़ एम०ए०, एल०एल०बी०
प्रचार मन्त्री—धर्मवीर शर्मा संगठन मंत्री—बलवानसिंह आर्य
कोषाध्यक्ष—सूरजमल आर्य सलाहकार—महासिंह आर्य
पुस्तकालयध्यक्ष—जयभगवान आर्य

हमें अपने महापुरुषों के दिखाए मार्ग पर चलकर उनके ऋण से उऋण होने का प्रयत्न करना चाहिए।

एक मास का अद्भुत पुरोहित प्रशिक्षण शिविर वैदिक धर्म के प्रसार की स्वर्णिम योजना

एक पुरोहित जागृत परिवार, समाज व राष्ट्र का निर्माता होता है। बिना पुरोहित का समाज निष्प्राण देह के समान होता है।

अग्निपुंज आचार्य सन्निध्य में रहने वाले व्यक्ति में एक चिंगारी का सा स्फुरण आ जाता है। देश-विदेश में ख्याति प्राप्त आचार्य वेदभूषण अपनी अद्भुत शैली से पुरोहितों में एक निखार ला देते हैं।

इस वर्ष १५ मई से १५ जून ९० तक देहरादून के तपोवन आश्रम में अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद की ओर से तृतीय पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का रचनात्मक आयोजन किया जा रहा है।

नए पुरोहितों के निर्माण का और पुराने पुरोहितों में निखार व नए प्रभाव को भर लेने का यह एक स्वर्ण अवसर है। एक प्रभावशाली पुरोहित संगठन में नवोन्मेष उत्पन्न कर देता है।

आपके ग्राम में, नगर में, जिले में, प्रांत में जितने पुरोहित बढ़ेंगे उतना ही आर्यसमाज आगे बढ़ेगा।

हमारी संस्कार विधि स्वस्थ मानव निर्माण के सामर्थ्य से परिपूर्ण है। संसार की उन्नति संस्कारित प्रजा पर ही आधारित होती हैं। अपने बच्चों को, समाज के युवकों को, अपनी पुत्रियों को, ग्रीष्मावकाश के दिनों में एक स्वस्थ पवित्र वातावरण में भेजकर आप संस्कारित कर सकते हैं। एक पुरोहित एक संस्था व मिशनरी जैसा कार्य करता है। अतः अपने परिवार से, आर्यसमाज से, आर्य शिक्षण संस्था से, अधिक से अधिक युवक/युवतियों को प्रशिक्षण के लिए संकल्प पूर्वक भेजिए।

एक प्रशिक्षणार्थी का व्यय पांच सौ रुपए मात्र लिया जाएगा। भोजन में शुद्ध गो-घृत का प्रयोग कराया जाएगा। आवेदन-पत्र मंगा कर शीघ्र ही स्वीकृति प्राप्त कीजिए। प्रवेश सीमित होगा। अतः शीघ्रता कीजिए।

स्मरण रखिए एक प्रभावशाली पुरोहित अपनी आय भी बढ़ा सकता है। अध्यापक व अध्यापिकाएं तथा कालेज के लेक्चरर्स पौरोहित्य के कार्य को सरलता से निभा सकते हैं।

अपने आर्यसमाज अथवा आर्य शिक्षा संस्था द्वारा व्यय वहन कर कम से कम एक बुद्धिमान् स्वस्थ सदाचारी युवक को इस प्रशिक्षण में अवश्य भेजिए। धन अकाउन्टपेयी ड्राफ्ट द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय वेद-प्रतिष्ठान के नाम से भेजिए।

इस सूचना को अपने सत्संगों में आर्य परिवारों में एवं सदस्यों में प्रसारित कीजिए। युवकों को प्रेरणा देकर भेजिए।

छात्राओं व महिलाओं के लिए सर्वथा पृथक् निवास की उत्तम सुविधा रहेगी। मौरिशस की चार महाविद्यालय की छात्राएं भी इस शिविर में भाग ले रही हैं। देश भर से अनेकों युवकों की मांग पर यह आयोजन एक बार फिर किया जा रहा है। डा० सुनीति एम०ए० पी-एच०डी० के संरक्षण में छात्राओं की उत्तम व्यवस्था होगी। महिलाएं, माताएं भी भाग ले सकती हैं आवेदन-पत्र प्राप्ति के लिए ६० पैसे के पांच पोस्ट के टिकट भी साथ भेजिए।

एक महत्वपूर्ण योगदान

प्रत्येक व्यक्ति इस सूचना को संकल्प पूर्वक दस-दस परिवारों में पहुंचाकर हमें रचनात्मक योग दे सकता है।

प्रशिक्षण हेतु आवेदकों की आयु कम से कम १६ वर्ष की होनी चाहिए। हिन्दी पढने व लिखने का अच्छा अभ्यास आवश्यक है। योगाभ्यास वृष्टि यज्ञ, पुत्रेष्टि यज्ञ एवं विशेष रोगों की चिकित्सा के लिए गोमेध आदि यज्ञ की विधियां भी सिखलाई जाएंगी। ३० अप्रैल ९० तक शिविर में भाग लेने का पूर्व स्वीकृति-पत्र प्राप्त कर लेना आवश्यक है।

निवेदक—

आचार्य वेदभूषण, आचार्य प्रशिक्षण शिविर
अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद
4-5-753 ज्ञानगंगा महर्षि दयानन्द मार्ग, हैदराबाद—27

पानीपत में जि. करनाल तथा पानीपत के आर्यसमाजों की बैठक

जैसा कि आपने सर्वहितकारी के माध्यम से जानकारी प्राप्त कर ली होगी कि हरयाणा प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा के प्रस्ताव के अनुसार वेदप्रचार को हरयाणा में गति प्रदान करने का निर्णय लिया गया है। इसी के अन्तर्गत प्रत्येक जिले में वेदप्रचार मण्डलों का गठन सभा की ओर से किया जा रहा है :

अतः इसी सम्बन्ध में जिला करनाल व पानीपत के आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं की एक आवश्यक बैठक दिनांक १-४-९० को प्रातः ११ बजे आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल पानीपत में होनी निश्चित हुई है, जिस की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी करेंगे। अतः आप से सानुरोध प्रार्थना है कि इस बैठक में अवश्य पधारने का कष्ट करें और वेद प्रचार के कार्यों में सहयोग देवें और अपने अमूल्य विचार व सुझाव भी देवें। इसकी सूचना अन्य कार्यकर्त्ताओं को भी देने का कष्ट करें ताकि वे भी इस बैठक में भाग ले सकें। इसी प्रकार की बैठक १ अप्रैल को ही दोपहर बाद आर्यसमाज सोनीपत शहर में होगी।

संयोजक—
रामानन्द सिंगला, अन्तरंग सदस्य,
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, पानीपत।

बारात वापसी

खरखौदा २२ मार्च (निस)। मोरखेड़ी गांव में आई एक बारात को दूल्हे की अजीबो-गरीब हरकतों के कारण बिना दुल्हन के ही लौट जाना पड़ा। बारात पुरखास से आई थी।

बताया जाता है कि बारोठी (विवाहोत्सव की एक रस्म) पर जाते हुए दुल्हे मियां ने मोड़ (मुकुट) को हाथ में लेकर स्वयं ही नाचना शुरू कर दिया। कन्या पक्ष वालों ने इस पर नाराजगी जाहिर की। फिर माला डालते हुए दुल्हन का घूंघट पलट दिया जाने के कारण दोनों पक्षों में कहा-सुनी हो गई।

लड़की वालों की सहनशीलता की उस समय हद हो गई जब फेरों के समय दूल्हे ने कहा कि वह और उसका मित्र साथ-साथ बैठेंगे तथा आध आध फेरे लेंगे। अब तो पानी सिर से गुजर चुका था, कन्या पक्ष ने इस विवाह से साफ इन्कार कर दिया और बारात को बैरंग लौटना पड़ा।

बारात के आगे नाचने पर जुर्माना होगा

गन्नौर २३ मार्च (एस)। गत दिवस उपमंडल के आहुलाना गांव में भारतीय किसान यूनियन के कैलाना हल्के के प्रधान महासिंह की अध्यक्षता में एक बैठक हुई। इसमें गांव के पूर्व सरपंच महेंद्रसिंह भी उपस्थित थे।

बैठक में फैसला लिया गया कि अगर गांव में कोई बारात के आगे नाचेगा तो उसे ५०० रुपए जुर्माना किया जाएगा। इसी प्रकार यदि गांव में कोई व्यक्ति शराब पीकर गलियों में घूमेगा तो उसे दो सौ रु० तथा अवैध शराब बेचने वाले पर ११०० जुर्माना किया जाएगा।

बैठक में एक उपसमिति का भी गठन किया गया, जिसमें मास्टर रामचन्द्र प्रधान, नरसिंह उपप्रधान तथा जागे राम सचिव बनाए गए।

महात्माजी का आशीर्वाद

—यश एम०एल०ए० उपाध्यक्ष पंजाब प्रदेश कांग्रेस प्रबन्ध सम्पादक डेली मिलाप हिन्दी मिलाप—

मैट्रिक करने के बाद जब मैं हिन्दी मिलाप में सहायक सम्पादक के रूप में काम करने लगा तो पूज्य पिता (श्री आनन्द स्वामी जी) ने कहा— महात्मा जी का आशीर्वाद ले आओ !

महात्मा हंसराज जी पूज्य पिता जी के गुरु थे। उनके आशीर्वाद के बिना वे कोई काम शुरू नहीं करते थे।

मैं महात्मा जी के चरणों में उपस्थित हुआ तो उन्होंने कहा तुम अच्छा बोलते हो। अच्छा लिखोगे भी मेरी यह बात याद रखना जब गुस्सा आ जाय तो न लिखना न बोलना !

यह आशीर्वाद मेरे कितने काम आया यह मैं ही जानता हूं !

पता—मिलाप भवन जालन्धर

सारस्वत मोहन 'मनीषी' का अभिनंदन

अखिल भारतीय तरुण संघ के वार्षिक समारोह में जो होटल सिद्धार्थ देहरादून के सभागार में कविवर तारा चन्द्र पाल बेकल' की अध्यक्षता और डा० योगेन्द्र नाथ शर्मा अरुण के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ डी० ए० वी० कालेज अबोहर के हिन्दी प्राध्यापक आग के अक्षर आधा कफन तथा बूंद बूंद वेदना जैसे सशक्त काव्य-संकलनों के रचयिता युवा कवि श्री सारस्वत मोहन मनीषी को तरुण श्री 1984' की उपाधि से विभूषित करके मानपत्र स्मृति चिन्ह शाल और नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

—महेन्द्र प्रताप असीजा

मोहनलाल डी०ए० वी० कालिज आफ एजुकेशन, अम्बाला शहर
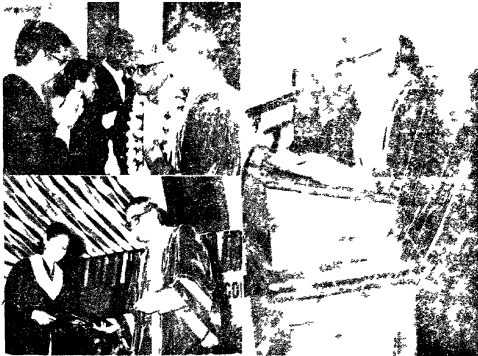
मोहनलाल डी० ए० वी० कालिज आफ एजुकेशन अम्बाला शहर के ३७वें दीक्षान्त समारोह में डी० ए० वी० प्रबन्धकर्त्री सभा के महासचिव श्री धर्मपाल सेठ का कालिज के प्राध्यापक स्वागत कर रहे हैं। दूसरे चित्र में श्री सेठ नवस्नातकों को सम्बोधित कर रहे हैं। तीसरे चित्र में कालिज के प्रिंसिपल डा० वी० के० कोहली स्नातकों को उपाधि वितरण कर रहे हैं।

आर्यसमाज चित्रगुप्त गंज लश्कर का वार्षिकोत्सव

चित्रगुप्त गंज लश्कर (ग्वालियर) आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव के अवसर पर राजमाता श्रीमती विजयाराजे सिंधिया जनता को सम्बोधित कर रही है। उनके साथ बैठी हैं समाज की प्रधाना श्रीमती उमा बरतरिया। बाईं ओर बैठे हैं मध्यभारत के भूतपूर्व शिक्षा संचालक श्री बाबूलाल गुप्त श्री भवानीलाल भारतीय और स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

आर्य समाज लश्कर का उत्सव

आर्य समाज चित्रगुप्त गंज लश्कर (म० प्र०) का वार्षिकोत्सव 22 से 24 मार्च तक सोत्साह मनाया गया। इस अवसर पर प्रथम दिन राष्ट्रीय एकता अखंडता द्वितीय दिन देश की स्वतन्त्रता में क्रान्तिकारियों का योगदान और तृतीय दिन महर्षि दयानन्द और विश्व कल्याण विषय पर क्रमश स्वामी जगदीश्वरानन्द डा० भवानीलाल भारतीय और स्थानीय विद्वान प्रो० दिवाकर विद्यालंकार के उपदेश और प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री विजय सिंह विजय के भजन हुए। अन्तिम दिन राजमाता विजयाराजे सिंधिया संसद सदस्य मुख्य अतिथि रही श्री बाबूलाल गुप्त श्रीमती उमा बरतरिया व श्री शीतल प्रसाद का अभिनन्दन किया गया। स्वामी जगदीश्वरानन्द ने इनको शाल भेंट किये। कार्यक्रम का संचालन समाज मंत्री श्री किशोरीलाल गौतम ने किया।

यू० १०३/१०८ लायसेंस टू पोस्टविदाउट प्रीपेमेन्ट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एम० आई० ११९३/७२ डी० सी० 409

डी० ए० वी० शताब्दी CENTENARY
ओ३म्
महात्मा हंसराज
जन्म दिवस
21 अप्रैल 85
1886 TO 1986
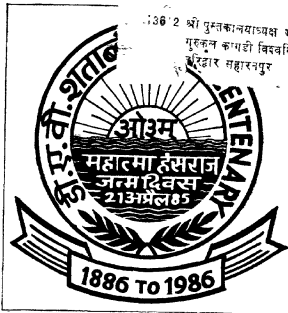
मधुर स्मृति में

त्याग तपस्या के पथ यात्री, शिक्षा धर्मोद्धार किया।
निःस्वार्थी जीवन अपनाकर, आर्यों का कल्याण किया॥
बन्धु भाव का प्यार बढ़ाकर, शत्रुभाव का नाश किया।
हंसराज तुमने जीवन में, कितना सुन्दर कार्य किया॥
आज तुम्हारी प्रेरक शक्ति, देती है सबको संदेश।
त्याग तपस्या बन्धु भाव से, हर दें जीवन का सब क्लेश॥

(खैरातीराम महेन्द्र डी० ए० वी० कालेज नकोदर
के नतमस्तक
प्राचार्य, प्राध्यापक एवं विद्यार्थीगण)
प्रि० आर० एम० डी० ए० वी० कालिज नकोदर

मेष संक्रान्ति २०४२

ईश्वर की हो दया, मेष सक्रान्ति क्रान्ति दे।
भांति-भाँति की भ्रान्ति भगाकर विश्व शान्ति दे।
भारत की उन्नति प्रचुर में न कभी क्लान्ति दे।
वैभव की कर वृद्धि 'रणंजय' दिव्य कान्ति दे।

—रणंजयसिंह (राणा)गढ अमेठी, जनपद सुल्तानपुर (उ० प्र०)

महान शिक्षा शास्त्री (महात्मा हंसराज)

डी० ए० वी० शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य मे महात्मा हसराज जन्मोत्सव के शुभ अवसर पर आर्य जनता को एक विशेष उपहार है।

प्रस्तुत पुस्तक में ससार के महान शिक्षा-शास्त्रियों—रूसो, पेस्टालॉजी, हरबर्ट, फ्रोबेल, माण्टेसरी, टैगोर, गांधी, मदन मोहन मालवीय, जाकिर हुसैन आदि के शिक्षा सिद्धान्तो से डी० ए० वी० शिक्षा प्रणाली के सूत्रधार, त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज के शिक्षा सिद्धातो की तुलना की गई है। यह अपने आप मे सर्वथा नया प्रयास है। आज सारे भारत मे डी० ए० वी० सस्थाओ का जो जाल सा बिछा देखते हैं इसकी आधार-शिला वे महात्मा हसराज ही थे। वे पहले भारतीय थे जिन्होने विदेशी शिक्षा पद्धति को चुनौती दी थी। उनकी दृष्टि मे वैदिक सस्कृति का सदेश यही है कि जीवन मे विद्या—आध्यात्मिक ज्ञान तथा अविद्या—भौतिक ज्ञान को एक साथ लेकर चलने से ही कल्याण होगा। इसीलिए उन्होने शिक्षा मे नैतिक शिक्षा पर इतना बल दिया था। उनके अनुसार चरित्र निर्माण ही हमारी पहली और अतिम आवश्यकता है।

महात्मा हसराज के आत्म त्याग से अनेक नवयुवको के हृदय मे त्याग की भावना उत्पन्न हुई थी। देश की भावी संतति को उनके त्यागशील जीवन से प्रेरणा प्रदान करने के उद्देश्य से इस पुस्तक का प्रणयन एव प्रकाशन किया गया है। यह पुस्तक प्रत्येक आर्य के लिए पठनीय एवं पुस्तकालयो के लिए संग्रहणीय है।

मूल्य – 20 रुपये मात्र

प्राप्ति स्थान—आर्य प्रकाशन मडल, निकट महाबीर चौक,
गाधीनगर, दिल्ली-110031

योग्य पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज मन्दिर, वाई ब्लाक सरोजिनी नगर नई दिल्ली मे योग्य पुरोहित की आवश्यकता है। वानप्रस्थी को प्राथमिकता दी जाएगी। शीघ्र संपर्क करें। —रोशन लाल, मंत्री आर्य समाज
सरोजिनी नगर, दिल्ली-२३

प्रभावशाली वेद प्रवचन

आर्य समाज सरोजिनी नगर नई दिल्ली की ओर से सोमवार २९ अप्रैल, से शनिवार ४ मई १९८५ तक रात्रि के ८ बजे से १० बजे तक सरोजिनी मार्किट के पार्क मे (पजाब नेशनल बैंक के सामने) आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान श्री आचार्य पुरुषोत्तम शर्मा एम० ए० वेद प्रवचन करेंगे और श्री सत्य देव स्नातक के मनोहर भजनोपदेश होंगे।

केन्द्रीय आर्ययुवक परिषद् विकास नगर दिल्ली के शहीद दिवस समारोह मे मुख्य अतिथि के रूप मे श्री कुलानन्द भारतीय युवको को राष्ट्रहित के लिए अपनी शक्ति का प्रयोग करने के लिए आह्वान किया।

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स ७११७/१८ पहाड़ी धीरज, दिल्ली से छपवा कर कार्यालय, 'आर्य जगत्,' मन्दिर मार्ग

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वाषिक मूल्य-२५ रुपये | विदेश मे ३० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४८, अंक १६, रविवार, ५ मई, १९८५ | दूरभाष ३४३७१८
आजीवन सदस्य-२५१ रु० | इस अंक का मूल्य - ६० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८५, दयानन्दाब्द १६० | ज्येष्ठ कृष्णा १, २०४२ वि०

भौतिकवाद से अध्यात्मवाद का समन्वय आवश्यक

हंसराज जन्म दिवस समारोह पर शिक्षामन्त्री श्री पन्त व अन्य विद्वानों के उद्गार

"भौतिक दृष्टि मे आज हम पहले की अपेक्षा निरन्तर उन्नत होते जा रहे है, परन्तु यह भी सत्य है कि अकेले भौतिकवाद से जीवन

श्री पन्त जी

मे असंतोष भी बढता जा रहा है। अत सच्ची शान्ति प्राप्ति करने के लिए भौतिकवाद व अध्यात्मवाद का समन्वय होना चाहिए। मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता होती है कि महात्मा हसराज जी ने डी०ए०वी० संस्थाओं के द्वारा इस प्रकार का समन्वय हमारे सामने प्रस्तुत किया है।" आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा तालकटोरा क्रीडा उद्यान नई दिल्ली मे आयोजित महात्मा हंसराज जन्म दिवस समारोह मे मुख्य अतिथि के रूप मे भाषण देते हुए भारत सरकार के शिक्षा मंत्री श्री कृष्ण चन्द्र पन्त ने ये उद्गार प्रकट किये।

महात्मा हसराज जी द्वारा किए गये समाज सुधार, नारी शिक्षा तथा अस्पृश्यता निवारण के कार्य की चर्चा करते हुए उन्होने कहा कि महर्षि दयानन्द ने अपने समय मे प्रचलित अन्ध विश्वास, पाखण्ड, कुरीतियो तथा रूढिवाद का खण्डन कर समाज व राष्ट्र का जो कल्याण कार्य किया था, उसी से महात्मा हसराज जी ने प्रेरणा ग्रहण की थी।

महात्मा हसराज के शिक्षा क्षेत्र मे योगदान का उल्लेख करते हुए श्री पन्त ने कहा कि डी० ए०वी० आन्दोलन द्वारा देश की पराधीनता के समय राष्ट्रीय भावना को जाग्रत करने का प्रशसनीय कार्य किया गया। राष्ट्र निर्माण मे डी०ए०वी० के अध्यापको व प्राचार्यो का रचनात्मक योग अनुकरणीय रहा है। अन्त मे उन्होने कहा कि मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि इस समय सारे देश मे लगभग ३०० डी०ए०वी० कालेज व स्कूल तथा पब्लिक स्कूल कार्य कर रहे है। निर्धन बच्चो को नि शुल्क शिक्षा दी जा रही है। राची व छोटा नागपुर की जनजातियो मे लगभग १२ डी ए०वी० स्कूल शिक्षा दे रहे है। इस वर्ष डी०ए०वी० शताब्दी समारोह प्रारभ हो रहा है। मै शताब्दी समारोह की सफलता की कामना करते हुए आशा करता हू कि सभी व्यक्तियो का इस कार्य मे सहयोग प्राप्त होगा।

प्रो० वेद व्यास जी ने श्री पन्त का स्वागत करते हुए डी०ए०वी० आन्दोलन का सक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत किया और कहा कि १९४७ मे देश विभाजन मे डी ए वी० आन्दोलन को अपार क्षति पहुची क्योकि दो तिहाई संस्थाए पाकि-

प्रो० वेद व्यास जी

स्तान मे रह गई थी। परन्तु श्री मेहरचन्द महाजन ने अपनी अदभुत सूझ-बूझ व अथक परिश्रम से डी० ए० वी० आन्दोलन मे नव-

(शेष पृष्ठ ११ पर)

तालकटोरा स्टेडियम मे हसराज जन्म दिवस समारोह
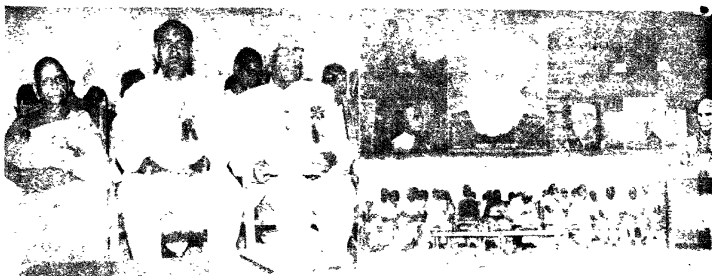
अध्यक्ष स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती, मुख्य अतिथि शिक्षामंत्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त, डी० ए० वी० प्रधान प्रो० वेदव्यास जी तथा मंच पर विराजमान अन्य विशिष्ट

परामर्शदाता—अमर स्वामी सरस्वती | सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

ईश्वर सिद्धि
(सत्यार्थ प्रकाश के आधार पर)

—यशपाल आर्यबंधु—

आज के युग की यह प्रवृत्ति है कि वह प्रत्येक वस्तु की सिद्धि तर्क और प्रमाणो के आधार पर करना चाहता है। यह एक स्वस्थ प्रवृत्ति है जो अन्धविश्वास को समाप्त करने मे बहुत सहायक सिद्ध हुई है और हो रही है। यह प्रवृत्ति बढते बढते ईश्वर तक आ पहुची है। आज ईश्वर को भी केवल वेद शास्त्र के आधार पर लोग बनाने को तैयार नही। वह उसकी भी सिद्धि चाहते है। महर्षि दयानन्द के सम्मुख भी यह स्थिति आई होगी तभी उन्होने अपने सुप्रसिद्ध ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश मे यह प्रश्न उठाया कि—

प्रश्न—आप ईश्वर—ईश्वर कहते हो, परन्तु उसकी सिद्धि किस प्रकार करते हो ?

उत्तर—सब प्रत्यक्षादि प्रमाणो से।" (सप्तम समुल्लास)

ईश्वर भौतिक पदार्थो की भाति इन्द्रिय प्रत्यक्ष नही होने से अब तक के सभी धर्माचार्य प्रत्यक्ष प्रमाण से बचते रहे है। किन्तु जिस प्रमाण से लोग बचते आये हैं महर्षि ने उसी प्रमाण को ईश्वर की सिद्धि मे प्रस्तुत किया। यह महर्षि की अपनी विशेषता है।

इस प्रश्न के उत्तर मे कि "ईश्वर मे प्रत्याक्षादि प्रमाण कभी नही घट सकते।" महर्षि न्याय दर्शन का निम्न सूत्र उद्धृत करते है— इन्द्रियार्थस निकर्षोत्पन्न ज्ञानमव्यपदेश्य मव्य भिचारिव्यवसायात्मकं प्रत्यक्षम। 'और इस पर लिखते है कि—"जो श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, जिह्वा, घ्राण और मन का शब्द, स्पर्श, रूप, रस गंध, सुख, दुःख, सत्यासत्य विषयो के साथ सम्बन्ध होने से ज्ञान उत्पन्न होता है उसको प्रत्यक्ष कहते है, परन्तु वह निर्भ्रम हो। अब विचारना चाहिये कि इन्द्रियो और मन से गुणो का प्रत्यक्ष होता है, गुणी का नही। जैसे चारो त्वचा आदि इन्द्रियो से स्पर्श, रूप, रस और गध का ज्ञान होने से गुणी जो पृथिवी उसका आत्मायुक्त मन से प्रत्यक्ष किया जाता है, वैसे इस प्रत्यक्ष सृष्टि मे रचना विशेष आदि ज्ञानादि गुणो के प्रत्यक्ष होने से परमेश्वर का भी प्रत्यक्ष है।

महर्षि का जो आशय है वह समझ लेना चाहिये। गुणाना प्रत्यक्ष न गुणिन — अर्थात गुणो का प्रत्यक्ष होता है, गुणी का नही। गुण अनिवार्यत. गुणी मे ही रहते हैं। गुण-गुणी मे समवाय सम्बन्ध होने से गुणो के साथ-साथ गुणी का भी प्रत्यक्ष मान लिया जाता है। मन की आशु गति होने से यह प्रक्रिया इतने वेग से होती है कि हम गुणी का ही अनुभव करने लगते है।

बारहवे समुल्लास मे भी इसी विषय को स्पष्ट करते हुए महर्षि लिखते हैं कि—जैसे कान से रूप चक्षु से शब्द ग्रहण नही हो सकता, वैसे अनादि परमात्मा को देखने का साधन शुद्ध अन्तःकरण, विद्या और योगाभ्यास से पवित्रात्मा परमात्मा को प्रत्यक्ष देखता है। जैसे बिना पढे विद्या के प्रयोजनो की प्राप्ति नही होती, वैसे ही योगाभ्यास और विज्ञान के बिना परमात्मा भी नही दीख पडता। जैसे भूमि के रूपादि गुण ही को देख जान के गुणो से अव्यवहित सम्बध से पृथिवी प्रत्यक्ष होती है, वैसे इस सृष्टि मे परमात्मा को रचना-विशेष लिंग देख के परमात्मा प्रत्यक्ष होता है।"

एक अन्य रीति से भी ईश्वर के प्रत्यक्ष की बात महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के सातवे एव बारहवे समुल्लास मे स्वीकार की है। वे लिखते है-"जब आत्मा मन और मन इन्द्रियो को किसी विषय मे लगाना वा चोरी आदि बुरी वा परोपकार आदि अच्छी बात के करने का जिस क्षण मे आरम्भ करता है, उस समय जीव की इच्छा, ज्ञानादि उसी इच्छित विषय पर झुक जाता है। उसी क्षण मे आत्मा के भीतर से बुरे काम करने मे भय शका, लज्जा तथा अच्छे कामो के करने मे अभय, निःशकता, और आनन्दोत्साह उठता है। वह जीवात्मा की ओर से नही, किन्तु परमात्मा की ओर से है। और जब जीवात्मा शुद्ध होके परमात्मा का विचार करने मे तत्पर रहता है, उसको उसी समय दोनो प्रत्यक्ष होते हैं। जब परमेश्वर का प्रत्यक्ष होता है तो अनुमानादि से परमेश्वर के ज्ञान होने मे क्या सन्देह है ? क्योकि कार्य को देख के कारण का अनुमान होता है।"

शरीर की अद्भुत ज्ञान पूर्वक रचना को देख कर रचयिता की सिद्धि अनुमान प्रमाण से की गई है। "देखो। शरीर मे किस प्रकार की ज्ञानपूर्वक सृष्टि रची है कि जिसको विद्वान लोग देखकर आश्चर्य मानते है। भीतर हाडो का जोड, नाडियो का बंधन, मास का लेपन, चमडी का ढक्कन, प्लीहा, यकृत, फेफडा, पखा कला का स्थापन, रुधिर-शोधन, प्रचालन, विद्युत का स्थापन, जीव का संयोजन, शिरोरूप कूलरचन, लोम नखादि का स्थापन, आख की अतीव सूक्ष्म शिरा का तारवत् ग्रन्थन, इन्द्रियो के मार्गो का प्रकाशन, जीव के जागृत स्वप्न सुषुप्ति अवस्था के भोगने के लिए स्थान विशेषो का निर्माण, सब धातु का विभागकरण, कला, कौशल स्थापनादि अदभुद सृष्टि को बिना परमेश्वर के कर सकता है ?" (सप्तम समुल्लास)

"बिना कर्त्ता के कोई भी क्रिया वा क्रियाजन्य पदार्थ नही बन सकता।" "जब कोई किसी पदार्थ को देखता है तो दो प्रकार का ज्ञान उत्पन्न होता है। एक जैसा वह पदार्थ है और दूसरा उसमे रचना देख कर बनाने वाले का ज्ञान है। जैसे किसी पुरुष ने सुन्दर आभूषण जगल मे पाया। देखा तो विदित हुआ कि यह सुवर्ण का है और किसी बुद्धिमान् कारीगर ने बनाया है। इसी प्रकार यह नाना प्रकार सृष्टि मे विविध रचना बनाने वाले परमेश्वर को सिद्ध करती है।" (अष्टम समुल्लास)। वस्तुत यह विशाल सृष्टि जिसके आर-पार का कुछ पता नही चलता, जिसमे प्रत्येक क्रिया कतिपय सुनिश्चित नियमो से नियत्रित हो रही है तथा जिसके प्रत्येक कार्य मे कोई न कोई प्रयोजन है, बिना किसी नियामक के जो कि सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान हो, सम्भव है ही नही।

इसके अतिरिक्त भी महर्षि दयानन्द न्याय आदि वैदिक दर्शनो की भाति सृष्टि मे कर्मफल व्यवस्था को देखकर व्यवस्थापक ईश्वर की सिद्धि करते है। इसमें महर्षि तर्क देते हैं कि "यदि ईश्वर फल-प्रदाता न हो तो पाप के फल, दुख को जीव अपनी इच्छा से कभी नही भोगेगा, जैसे चोर आदि चोरी कर दण्ड अपनी इच्छा से नही भोगते, किन्तु-राज-व्यवस्था से भोगते है।" महर्षि दयानन्द ईश्वर की सिद्धि ज्ञान की विद्यमानता से भी करते है। महर्षि ईश्वर को ज्ञान का आदि मूल अथवा आदिस्रोत मानते हैं। उनका कथन है कि—"जैसे जंगली मनुष्य सृष्टि को देखकर भी विद्वान् नही होते और जब उनको कोई विद्वान् शिक्षक मिल जाय तो विद्वान् हो जाते है और अब भी किसी से पढे बिना कोई विद्वान नही होता। इससे भी ईश्वर की सिद्धी होती है।" क्योकि यदि आदि सृष्टि मे परमात्मा ऋषियो को ज्ञान न देता तो आज तक कोई भी व्यक्ति ज्ञानी नही हो सकता था। फिर ईश्वर ने वह ज्ञान भाषा-सहित प्रदान किया और उसका अर्थ भी ऋषियो को बताया। यदि ईश्वर ऐसा न करता तो कोई भी व्यक्ति भाषा और अर्थ ज्ञान सीख ही नही सकता। महर्षि का सुस्पष्ट कथन है कि—"जो परमात्मा वेदो का प्रकाश न करे तो कोई कुछ भी न बना सके।"

इस प्रकार अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे महर्षि ने ईश्वर की सिद्धी विभिन्न प्रकार से की है। महर्षि के तर्क अकाट्य है एव युक्तिया प्रबल एव सशक्त हैं। आवश्यकता उन्हे समझने की है। पता—आर्यनिवास चन्द्रनगर, मुरादाबाद-244032

महात्मा हंसराज जन्म दिवस समारोह की एक झाँकी

(१) केन्द्रीय शिक्षामत्री का स्वागत करते हुए प्रो० वेदव्यास जी, (२) स्वागत करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले, (३) स्वागत करते हुए 'आर्यजगत' के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालंकार, (४) श्रीमती पन्त का स्वागत करती हुई प्रान्तीय आर्य महिला सभा की प्रधाना श्रीमती सरला मेहता

सुभाषित

इतिहास पक्षपात रहित हो

इतिहास एक पवित्र वस्तु है। उसके साथ किसी प्रकार की भी तोड़-मरोड़ एक निन्दनीय कृत्य समझा जायगा। भारत के इतिहास की पवित्रता को बनाए रखने के लिये आवश्यक है कि अपनी भरी जवानी में जीवन की सभी उमंगों पर ठोकर मारने वाले सशस्त्र क्रांतिकारियों की निःस्वार्थ देश-भक्ति का ठीक मूल्यांकन किया जाय। सब तत्वों का समान मूल्यांकन करने के बाद जो इतिहास बनेगा, वही भारत का वास्तविक इतिहास होगा और उसे ही विद्यालयों में पढ़ाया जाना चाहिये।

किसी भी देश की राष्ट्रीय सरकार का यह कर्तव्य हो जाता है कि देश के बच्चों को ठीक तथा पक्षपात रहित इतिहास पढ़ाये। यदि कोई राष्ट्रीय सरकार देश के तरुण विद्यार्थियों को अपनी सत्ता के बलबूते पर किसी एक संस्था विशेष का इतिहास पढ़ाने का यत्न करें तो उसका गम्भीरता से विरोध किया जाना चाहिये। इस प्रकार का कृत्य भेदभावपूर्ण होने के साथ देश के प्रति एक बौद्धिक धोखे के बराबर भी होगा।

—स्वतंत्र्य वीर विनायक दमोदर सावरकर

किसान से कसाई तक

हमारे पूर्वजों ने कहा था—

गावोऽस्माकं वयं तासां, यतो गावस्ततो वयम्

—'गायें हमारी हैं, हम गायों के हैं, जहाँ गाये हों, वहा हम हों।' यह कहकर हमारे पूर्वजों ने गायो के साथ अपने अस्तित्व को पूरी तरह जोड दिया था। गायो के अन्दर समस्त देवताओ के निवास की कल्पना भी व्यर्थ नही है। जन जीवन के लिए गायो के महत्व को समझ कर ही वेद ने यहां तक कहा था कि 'जो तुम्हारी गाय की हत्या करे, उसे गोली से उड़ा दो।' महात्मा गांधी और आचार्य विनोबा भावे देश मे गौ हत्या बन्दी का स्वप्न देखते-देखते चले गये। परन्तु उनका स्वप्न आज तक पूरा नहीं हुआ। भले ही भारत के संविधान मे धारा 48 मे कहा गया हो—"गाय-बछड़े और अन्य दूध देने वाले पशुओं के वध पर प्रतिबन्ध लगे।" परन्तु जिस तरह संविधान की अन्य धाराओं का उल्लघन होता है उसी प्रकार इस धारा के पालन की भी किसी को चिन्ता नहीं है। विज्ञान ने बहुत उन्नति की है पर आज तक विज्ञान ऐसी मशीन नही बना पाया, जिसमे दाल-रोटी डालने पर रक्त तैयार हो सके और घास-फूस तथा पत्ते डालने पर दूध तैयार होकर बाहर निकल सके।

धार्मिक दृष्टि के अलावा आर्थिक दृष्टि भी कम महत्वपूर्ण नही है। भारत मे प्रतिवर्ष दुधारू गायो के साढे तीन करोड टन दूध मिलता है जिसकी कुल कीमत लगभग नब्बे अरब रुपया होती है। 7 करोड़ बैलो के माध्यम से लगभग 3 करोड किलोवाट ऊर्जा मिलती है, जिसकी कुल कीमत 50 अरब रुपये के आसपास बैठती है। 18 करोड़ गायें और उनके वंशज तथा 6 करोड भैसे और उनके वंशज लगभग 84 करोड टन गोबर देते है। अगर उसका समुचित उपयोग गोबर गैस सयत्र मे किया जाय तो उससे भी 50 अरब रुपए की भोजन बनाने की गैस मिल सकती है। उस गोबर से जो खाद तैयार होगी, उसकी कीमत भी 30 अरब रुपए के आस-पास बैठेगी। इस प्रकार इन पशुओ से उपलब्ध सारी सामग्री का उपयोग किया जाय तो देश को लगभग दो खरब रुपयों की प्राप्ति होगी जो हमारे देश की सम्पूर्ण आय के 12 प्रतिशत के बराबर है। ये आंकड़े चौंकाने वाले हैं।

यदि इन पशुओं को कत्ल करके उनके स्थान पर ट्रक, ट्राली और ट्रैक्टरो की व्यवस्था करनी हो तो उनको चलाने के लिए पैट्रोल और डीजल की भारी मात्रा में आवश्यकता पड़ेगी। गोबर के स्थान पर रासायनिक खाद लाने के लिए जितनी राशि की जरूरत पड़ेगी, वह भारत की छठी पचवर्षीय योजना से भी कही अधिक होगी। देश को पहले ही विदेशी व्यापार मे अरबों रुपए के घाटे का सामना करना पड़ रहा है। ट्रकों, ट्रालियों और ट्रैक्टरो आदि के निर्माण के लिए जो अतिरिक्त लोहा चाहिए, उसके लिए देश की सीमित लघु उत्पादन क्षमता को देखते हुए कितना खर्च करना पड़ेगा, यह कुछ नही कहा जा सकता। सारे देश को दूध से जो हाथ धोना पड़ेगा, सो अलग। अगर इस समस्या पर रचनात्मक दृष्टि से विचार नही किया गया तो स्वर्गीय राष्ट्रकवि श्री मथिलीशरण गुप्त की यह चेतावनी पूरी होते देर नहीं लगेगी—

जारी रहा क्रम यदि यहा यो ही हमारे नाश का
तो अस्त समझो सूर्य भारत-भाग्य के आकाश का।
जो तनिक हरियाली रही वह भी न रहने पायेगी
यह स्वर्ण भारत भूमि बस मरघट मही बन जायेगी।

भारत में गोवंश का नाश किस तेजी से हो रहा है, वह भी कम आश्चर्य जनक नहीं है। प्रतिवर्ष 4 करोड़ 30 लाख पशु मारे जाते हैं। अहिंसा को परम धर्म मानने वाले इस देश में 2800 कसाई घर चल रहे हैं, जहां दिन-रात इन पशुओ की गर्दन पर कुठाराघात होता है। भारत का शासक वर्ग इतना धन लोलुप है कि गोवश की हत्या करके धन अर्जन करने पर भी उसे कोई आपत्ति नहीं है। गो मांस का उत्पादन प्रतिवर्ष बढ़ रहा है। जब खाड़ी देशों मे 250 रु० प्रति किलो गोमांस बिकता हो तो

सम्पादकीयम्

गोमांस का निर्यात करके धन कमाने मे किसी को लज्जा क्यो आवे! जहा सरकार इतनी कठोर हृदय बन गई, वहा स्वयं भारतीय जनता इस विषय मे इतनी उदासीन है कि उसको अपने भविष्य की बिल्कुल चिन्ता नही है। गो हत्या बन्दी का आन्दोलन कभी-कभी सत्याग्रहो और मोर्चों के रूप मे सुनाई देता है पर उसकी आवाज इतनी नगण्य होती है कि किसी के भी कान पर जू नही रेगती। दूध और घी देश मे दुर्लभ होता जा रहा है और वनस्पति घी के कारखाने आये दिन बढते चले जा रहे हैं।

कभी-कभी ऐसा लगता है कि गो रक्षा के प्रति स्वयं भारत की जनता भी ईमानदार नही है। जो लोग इस समस्या को केवल धार्मिक दृष्टि से देखते हैं, उनके लिए तो जैसे यह जीवन और इस लोक से बाहर का विषय हो गया और जो केवल आर्थिक दृष्टिकोण से देखते हैं, उनके सामने केवल पश्चिम का अर्थशास्त्र है। उनको पाश्चात्य लोगो की तरह ही गोमास का निर्यात करके धन कमाने के लिए गोवध करने में कोई बुराई प्रतीत नही होती। कितनी बडी विडम्बना है कि गाय की पूजा करने वाले देश मे केवल गाय की पूजा होती है, उसकी रक्षा नही होती। और अब स्थिति यहां तक पहुंच गई कि जिन्दा गाय की अपेक्षा मरी हुइ गाय की ज्यादा कीमत उठती है।

हमारे धर्मध्वजी लोग बूढी गायो के लिए गौशाला और पिंजरा पोल के नाम पर दान तो दे सकते हैं, परन्तु स्वय गाय की अच्छी नस्लें तैयार करने की तपस्या को तैयार नही जिससे मृत गाय की अपेक्षा जीवित गाय अधिक मूल्यवान बन सके। जब जबानी जमाखर्च से ही धर्म की रक्षा हो जाती हो, तो यह श्रम साधना करने की क्या जरूरत है? किसी जराजीर्ण गाय को अपने पितरो के पिण्ड दान के समय हरिद्वार के पंडे को दान करके जब वैतरणी पार की जा सकती हो, तो गाय की नस्ल सुधारने की जहमत कोई क्यो उठावे।

एक तरफ भारत जैसे धर्म परायण देश मे यह हालत है, और दूसरी ओर पश्चिमी यूरोप मे इस साल के आखिर तक 5 लाख गायो की केवल इसलिए हत्या कर दी जायेगी क्योंकि वहा दूध और मक्खन इतना अधिक हो गया है कि उनके पास उसके रख-रखाव की पूरी व्यवस्था नही हो पायेगी। जिन किसानो को पहले अधिक दूध उत्पादन करने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता था, अब उन पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है कि एक सीमा से अधिक दूध या दूध से बनी चीजो के उत्पादन पर उन्हे जुर्माना देना पड़ेगा। ग्रीस और इटली को छोडकर सारे पश्चिमी यूरोप मे दूध और दूध से बनी चीजो की इतनी भरमार हो गई है कि वे बडी सख्या मे गायो को मारने की बात सोच रहे हैं। यह ठीक वैसी स्थिति है जैसी कि कभी अमरीका मे गेहू अत्यधिक मात्रा मे पैदा हो जाने पर लाखो टन गेहूं केवल इसलिए समुद्र मे फेंक कर नष्ट कर दिया गया था कि संसार मे गेहू का भाव गिरने न पाये। पश्चिम की दुनिया दूध की बहुतायत से परेशान है और गौ भक्तो का यह देश दूध के अभाव मे अपने बच्चों को कुपोषण का शिकार होते देखने को विवश है।

सबसे पहले शायद ऋषि दयानन्द ऐसे व्यक्ति थे जिन्होने 'गो-करुणा निधि' नामक पुस्तक लिखकर गायों के सम्बन्ध मे एक व्यावहारिक दृष्टिकोण उपस्थित किया था। जब-जब गौरक्षा आंदोलन की आंधी चली, तब-तब आर्य समाज ने भी पूरे मन से उसमे सहयोग दिया। पर हम समझते हैं कि यह समस्या मोर्चों से या केवल आन्दोलन से हल होने वाली नही है। इसके लिए रचनात्मक दृष्टिकोण अपनाना होगा और यह पहल भी आर्यसमाज को ही करनी होगी।

अब पता लगा है कि भारत सरकार यूरोप से बीस हजार गायें मंगा रही है। क्यो न आर्य नेता सरकार से आग्रह करके सौ से लेकर एक हजार गायो तक प्राप्त करने का प्रयत्न करे और व्यवस्थित ढंग से डेरी उद्योग चलावे। यदि राधा स्वामी लोग दयालबाग जैसा औद्योगिक नगर स्थापित कर सकते है तो आर्य समाज क्यो न आर्य डेरी उद्योग नगर स्थापित करे। इससे जहा अनेक युवको को रोजगार मिलेगा, वहा देश को बहुत बडी कमी को पूरा करने का अवसर मिलेगा। यदि पूरी निष्ठा के साथ आर्य नेता गौ रक्षा के इस रचनात्मक दृष्टि को अपना ले तो उन्हे जनता के सहयोग की भी कमी नही होगी और इस उद्योग मे घाटे का तो प्रश्न ही नही है। आर्य समाज की स्थापना की दूसरी शताब्दी के प्रारम्भ मे हम को इसी प्रकार के रचनात्मक कार्यो को अपना कर आर्य समाज के कार्य को नये रचनात्मक आयाम देने होंगे।

नेपाल से बंगलादेश तक मिनी पाकिस्तान बनाने का षड़यंत्र

—ओम शरण त्रिपाठी—

धर्म एक व्यक्तिगत मामला है, हर व्यक्ति को अधिकार है कि वह अपनी इच्छानुसार धर्म को माने या न माने, वह अपना धर्म छोड़ भी सकता है, कोई दूसरा धर्म स्वीकार भी कर सकता है, किन्तु सामूहिक रूप से धर्मान्तरण होने से यह बात साफ हो जाती है कि यह "आस्था परिवर्तन" का मामला नहीं है। सामूहिक धर्म परिवर्तन का अर्थ ही है कि इसके पीछे कोई न कोई संगठित शक्ति है जो भारत के आंतरिक मामलो में हस्तक्षेप करके असंतुलन और तनाव उत्पन्न करना चाहती है।

बहराइच में पिछले पाच वर्षों से धर्मान्तरण का जो सिलसिला चला आ रहा है, उसके पीछे भी एक ऐसी संगठित ताकत की झलक दिखाई पड़ रही है जो एक खतरनाक अन्तर्राष्ट्रीय

बहराइच में धर्मान्तरण अन्तर्राष्ट्रीय षड़यंत्र का अंग

षड़यंत्र को अपने ढंग से क्रियान्वित कर रही है। किन्तु ताज्जुब है कि जिला प्रशासन से लेकर राज्य सरकार तक इस धर्मान्तरण को मामूली सामाजिक मामला बताकर, एक बहुत बड़े खतरे को नजरंदाज कर रही है।

बहराइच में सामूहिक धर्मान्तरण की यह पहली घटना नही है। यह सिलसिला उस समय से चला आ रहा है, जब १९८१ को तमिलनाडु के तिरुनेलवेल्ली जिले में 'मीनाक्षीपुरम्' गाँव के एक हजार हरिजन रातों रात मुसलमान हो गये थे। १६ फरवरी के धर्मान्तरण से पूर्व १९८१ में इसी जिले के ५५ गांवो में २२५ नटो ने तथा १९८२ में १७ हरिजन परिवारों ने सामूहिक रूप से धर्म परिवर्तन किया था। इसके अलावा कुछ छुट-पुट धर्मान्तरण भी होते रहे हैं, जो प्रकाश में नही आ सके।

हालांकि, १६ फरवरो के धर्मान्तरण में जिला प्रशासन व पुलिस अभी तक किसी भी प्रकार के प्रलोभन, बल तथा विदेशी एजेंसी का हाथ होने की बात मानने को तैयार नही है, और न ही इस सबध में कोई परोक्ष प्रमाण मिल सका है, किन्तु १९८१ में सामूहिक धर्मान्तरण की घटना जिले मे चल रही है। कुछ धार्मिक संस्थाओं की संदिग्ध गतिविधियाँ और धर्मान्तरण हरिजनो के संदिग्ध बयान इस बात का संकेत है कि "नटों" की आर्थिक तंगी और सामाजिक तिरस्कार के कारणों के अलावा, धर्मान्तरण के पीछे एक सुनियोजित विदेशी साजिश है, जिसका पर्दाफाश कर पाना स्थानीय प्रशासन और पुलिस के बश की बात नहीं है।

नानपारा से भारतीय जनता पार्टी के भूतपूर्व विधायक श्री जटाशंकर सिंह इस जिले के पिछले इतिहास से काफी अच्छी तरह वाकिफ हैं। मीनाक्षीपुरम् के तुरन्त बाद बहराइच के भी कुछ गावो में सामूहिक धर्मान्तरण का जिक्र करते हुये उन्होने बताया कि १९८१-८२ के ही दौरान बहराइच में गुप्त रूप से करीब २०-२५ अरबी नागरिक घुस आये थे। ये लोग काफी समय तक नानपारा, कर्नलगंज तथा बहराइच की मस्जिदों में ठहरे थे तथा गाँव-गांव जाकर अनेक प्रकार के समारोह और प्रचार करते थे। इन विदेशियों का भारत में रहने का बीसा तक नही था। जब तत्कालीन पुलिस अधीक्षक को इसकी भनक लगी तो इन विदेशी नागरिकों की तलाश की, किन्तु पुलिस की पकड़ में आने से पूर्व ही वे फरार हो चुके थे। इसी दौरान गोण्डा जिले के पहड़वा क्षेत्र में भी कुछ अन्य विदेशी नागरिक देखे गये थे।

इन अरबी नागरिकों के आने के बाद से ही बहराइच में धर्मान्तरण की बीमारी फैली थी।

हालांकि पुलिस अधीक्षक श्री मलिक और जिलाधिकारी डा० ओम प्रकाश ने अरब नागरिकों के आने की इस जानकारी के प्रति अनभिज्ञता व्यक्त की है, किन्तु एल. आई. ओ. और सी. आई. डी. के कुछ लोगो ने इस बात को स्वीकार किया है कि बहराइच में कुछ विदेशी नागरिक आये थे तथा पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार करने का प्रयास किया है।

जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक की इस बात से इन्कार नही किया जा सकता कि खानपान, रहन-सहन में हिन्दुओं से भिन्नता, तथा बिरादरी में लड़कियों की कमी से शादी ब्याह न हो पाने के कारण नटों ने स्वेच्छा से धर्म बदला है, किन्तु यदि बहराइच में विदेशी नागरिकों की घुसपैठ तथा १९८१ में ही ग्वालेपुर सहित ५५ गांवों के नटो द्वारा सामूहिक धर्मान्तरण की घटनाओं को एक ही कड़ी में जोड़ा जाये तो बहराइच की "मिल्ली इमदादी सोसायटी" "मदरसा नूरूल उलूम" तथा "सुन्नी वक्फ बोर्ड" की गतिविधियों की गुप्तचर जांच की आये तो संभवतः सनसनीखेज रहस्य सामने आ सकते हैं।

करोड़ों की सम्पत्ति

शहर के बीचों-बीच घंटाघर के पास मिल्ली इमदादी सोसायटी का कार्यालय है। करीब आठ वर्ष पूर्व मुसलमानों को आर्थिक सहायता के उद्देश्य से इस सोसायटी का गठन किया गया था। गठन के समय से ही एक सरकारी स्कूल के अध्यापक श्री नइम उल्ला इसके सर्वेसवा तथा संचालक है। स्थानीय राजनीतिक नेताओं तथा पुलिस के कुछ अधिकारियों के अनुसार सोसायटी के पास करोड़ों की सम्पत्ति है तथा यह बैंकर का काम करती है। इसके अलावा घंटाघर में ही सोसायटी का

५ वर्षों में नौ हजार मदरसे : नेपाल का पूरा गाँव मुसलमान बना

एक आलीशान भवन है, जिसमें अनेक दुकानें व लाज चल रहे हैं। भूतपूर्व विधायक श्री जटाशंकर सिंह ने बताया कि करोडों की संपत्ति एकत्र हो जाने के बावजूद अभी तक इस बात का पता नही चल सका कि यह धन कहा से आता है तथा किस-किस मद में खर्च होता है।

जिलाधिकारी डा० ओमप्रकाश के पास भी मेरे इन सवालों का कोई जवाब नहीं था कि सोसायटी के आय-व्यय की आडिट रिपोर्ट क्या कहती है तथा बगैर रिजर्व बैंक की अनुमति के सोसायटी बैंकिंग का काम कैसे कर रही है?

श्री जटाशंकर का आरोप है कि "मिल्ली इमदादी सोसायटी" के खिलाफ आयकर का भी एक मामला चल रहा है। किन्तु जिस अधिकारी ने यह मामला उठाया था, उसका स्थानान्तरण करा दिया गया। श्री जटाशंकर सिंह ने स्पष्ट आरोप लगाया कि धर्मान्तरण में मिल्ली इमदादी सोसाइटी के जरिये ही पैसा खर्च किया जाता है। "मिल्ली इमदादी सोसायटी" के अलावा सुन्नी वक्फ बोर्ड और उसकी दरगाह की भूमिका पर अंगुलियां उठी हैं। दरगाह के "तहखाने" और "वक्फ बोर्ड" के माध्यम से चाहे कुछ भी न हुआ हो किन्तु वोर्ड के अध्यक्ष तथा मुस्लिम मजलिस के नेता निजामुद्दीन सदैव संदेह के घेरे में रहे हैं। जिला प्रशासन और पुलिस के अधिकारी भी इस बात को स्वीकार कर रहे हैं कि गत २५ अक्टूबर १९८३ के दंगे के संबंध में निजामुद्दीन को गिरफ्तार किया गया था।

भाजपा व दमकिपा नेताओं के अलावा कुछ इंका नेताओं ने भी आरोप लगाया कि वक्फ बोर्ड तथा दरगाह के पास भी करोड़ों की संपत्ति है तथा इसके आय-व्यय का प्रशासन के पास कोई भी हिसाब-किताब नहीं है।

मदरसा नूरुल उलूम "देवबंद" से सम्बद्ध आवासीय विद्यालय है जो कि शैक्षिक कम धार्मिक संस्थान ज्यादा है...भारतीय तथा अन्तरराष्ट्रीय इस्लामी नेताओं की सभाओं एवं भाषणों तथा कुछ अन्य गतिविधियो के अलावा यह संस्था इस्लामी शिक्षा प्रसार में संलग्न है।

नेपाल-सीमा की १६८ किलोमीटर लम्बी पट्टी से घिरा हुआ बहराइच उत्तर प्रदेश का अत्यंत संवेदनशील जिला है। सीमा पर कोई प्रतिबन्ध न होने के कारण यहां के घुमक्कड़ नट व हरिजन अक्सर नेपाल आते जाते रहते हैं तथा बहराइच के अनेक परिवारों का कारोबार भी सीमा के उस पार तक फैला है।

नेपाल का पूरा गांव मुसलमान बना

इस जिले में सामूहिक धर्म परिवर्तन भले ही स्वेच्छा से होता हो, किन्तु इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि नेपाल में भी धर्मान्तरण का सिलसिला चल रहा है और इसमें खुल कर विदेशी धन का प्रयोग हुआ है। सीमा के उस

(शेष पृष्ठ ५ पर)

मिनी पाकिस्तान......

(पृष्ठ ४ का शेष)

पार नेपाल का मौलवीपुर पूरी तरह धर्मान्तरित हो चुका है और बहराइच जिले में अनेक नट तथा मुस्लिम परिवार अब स्थायी रूप से वहां बस गये हैं।

अभी हाल मे धर्मान्तरित नटो ने इस बात को स्वीकार किया है कि उनके सम्बन्ध पहले से ही नेपाल मे रह रहे नटो व मुस्लिम परिवारों से हैं। रहमतू चनेनी तथा चौरी कुटिया के धर्मान्तरित नटो से बातचीत में कुछ ऐसे नाम खुल कर सामने आये जो बहराइच के गावो मे धर्म परिवर्तन का बहुत ही गुप्त तथा सुनियोजित अभियान चला रहे हैं। वे मुस्लिम होने से बचे हरिजनो, नटो व थारुओं को समझाने का प्रयास करते हैं कि अगर उन्होने धर्म नहीं बदला तो बिरादरी मे हुक्का पानी बद हो जायेगा तथा उनके साथ शादी ब्याह भी नही होंगे।

दो जून की रोटिया भी न जुटा पाने वाले घोर अशिक्षित किसी भी नट ने यह कार्य अपनी तरफ से नहीं शुरू किया होगा। इसके लिये कुछ चलते-पुरजा किस्म के नौजवानो को गुप्त तरीके से प्रशिक्षित किया गया, ताकि धर्म परिवर्तन मे किसी विदेशी एजेन्ट व पेट्रो डालर के प्रयोग की बात साबित न हो सके। यही कारण है कि धर्म बदलने वाले नटों को खुद भी नही मालूम है कि आखिर उन्होंने क्यो धर्म बदला। सब एक स्वर से एक ही बात कहते हैं "लरिकन के शादी-बियाह न होत राहे, बिरादरी वाले रिश्ता-नाता तोडतराहै, हिन्दू अपन मनतै नही हैं, यही मारे हमउ मुसलमान हुयी गैन।'

रहमतू गाव का दीन मोहम्मद व टडवा का खुडभुड हज भी कर आया है और अक्सर गाव से गायब रहता है। गुलामी रामगाव का निवासी है, जबकि सोबराती नेपाल के मौलवीपुरवा मे रहता है। रहमतू गाँव के ही कुछ अन्य जाति के ग्रामीणो के अनुसार, १६ फरवरी के धर्मान्तरण से पहले तक खुडभुड और सोबराती अक्सर आसपास के गाँवो में दिखायी पडते थे किन्तु धर्मान्तरण का हो हल्ला मचने के बाद से ये चारो नट नेता गायब हैं। नायाबगज थानाध्यक्ष भी यद्यपि इन चारो नटो को सदिग्ध व्यक्ति बताते हैं, किन्तु फिर भी उनके पास इस बात का कोई जवाब नही हैं कि इन चारो को अभी तक गिरफ्तार कर के पूछताछ क्यो नही की गयी ? बहराइच मे १९८१ से लेकर हाल तक के धर्मान्तरणो के पीछे पेट्रो डालर और विदेशी षडयन्त्र की पुष्टि करते हुये विश्व हिन्दू परिषद् को उत्तर प्रदेश इकाई के सगठन मत्री श्री महेश नरायण सिह ने पत्रकारो के सामने एक रहस्योद्‌घाटन करते हुये बताया है कि '१९८० मे कलकत्ता मे सम्पन्न हुये अन्तरराष्ट्रीय मुस्लिम सम्मेलन मे एक गुप्त योजना तैयार की गयी थी। इस योजना के ही तहत एक नक्शा बनाया गया था, जिसमे बगला देश की सीमा से लेकर नेपाल की सीमा के किनारे-किनारे 'मिनी पाकिस्तान' बनाने का षडयन्त्र रचा गया था। इसी षडयन्त्र के तहत गोण्डा, बस्ती और बहराइच जिलो मे धर्म परिवर्तन करा कर एक "मुस्लिम बेल्ट" बनायी जा रही है। श्री महेश नरायण सिह ने अपनी बात की पुष्टि मे यह भी बताया कि इसी अन्तरराष्ट्रीय षडयन्त्र के तहत पिछले ५ वर्षों के दौरान गोण्डा मे ४०००, बस्ती मे ३००० तथा बहराइच मे २००० इस्लामी मदरसे स्थापित किये जा चुके है। उन्होने स्पष्ट किया कि आपत्ति इस बात पर नही है कि इतने मदरसे क्यो स्थापित किये गये, बल्कि इस बात पर सदेह पैदा होना स्वाभाविक ही है कि आखिर इतनी बडी सख्या के मदरसों का सचालन व आर्थिक मदद कहाँ से होती है। इन्ही मदरसो के जरिये धर्मान्तरित हरिजनो के बच्चो को इस्लामी शिक्षा दी जाती है।

देश के सीमावर्ती जिलो मे इस प्रकार की साजिश से देश की सुरक्षा और अखण्डता को किसी भी समय गम्भीर खतरा पैदा हो सकता है।

(दैनिक जागरण से साभार)

□

श्रद्धाञ्जलि गीत

—श्री हरिश्चन्द्र जी 'निस्तन्द्र' शास्त्री, जालधर—

(तर्ज नगरी-नगरी द्वारे द्वारे)

हसराज के चरणो मे पहुचे मेरी श्रद्धाञ्जलि।
जिसने अपने जीवन की असली मजिल पहचान ली॥

श्रेष्ठदान है विद्या का यह, वेदो ने बतलाया है।
तन-मन देकर हसराज ने हमको यही सिखाया है।
सारा जीवन डी० ए० वी० की सेवा जिसने ठान ली॥

ग्रेजुएट को उन्ही दिनो मे बडी नौकरी मिलती थी।
पर समाज की दशा देख उसकी आत्मा दहलती थी।
सरकारी सर्विस ठुकराई सुध समाज की आन ली।

डी० ए० वी० का शिक्षा-सागर ठाठे हरसू मारता।
जग का हर कोना ऋषिवर की जय जयकार पुकारता।
सत्ता आर्य समाज की शिक्षा क्षेत्र मे सबने मान ली।

अगर हस के गुण गौरव को सच्ची याद मनानी है।
तो जीवन मे त्याग भावना हम सबको अपनानी है।
क्यों 'निस्तन्द्र' अभी से यह तन्द्रा की चादर तान ली।

उस महात्मा के चरणो मे नत मस्तक श्रद्धाजलि।
जिसने अपने जीवन की असली मजिल पहचान ली॥

आर्य समाज बारां

आर्यसमाज, बारां (कोटा) मे 22 से 24 मार्च आ०स० स्थापना दिवस सोत्साह मनाया गया। इस अवसर पर प्रात काल प्रभात फेरी निकाली गयी जिसका सचालन श्री ओम्प्रकाश शास्त्री, प० अबमलाल वर्मा ने किया। अन्तिम दिन आचार्य वेदभिक्षु शास्त्री के प्रवचन और श्री चन्द्र बिहारी के भजन हुए।

लक्ष्मणसर में रामजन्मोत्सव

आर्य समाज, लक्ष्मणसर (अमृतसर) मे राम जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया। भगवान रामचन्द्र के विषय मे अनेक व्यक्तियों ने अपने विचार रखे और उनके आदर्शों पर चलने का आह्वान किया। सम्मेलन का आयोजन स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्री जगदीश रानी की ओर से किया गया।—राजकुमार कपूर

गुरुकुल गौतमनगर में यज्ञशाला का उद्‌घाटन

श्रीमद दयानन्द वेद विद्यालय 119 गौतम नगर गुरुकुल मे 2100 वर्गफुट मे बनी भव्य यज्ञशाला का उद्‌घाटन आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान आयनेता श्रद्धेय श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती द्वारा 5 मई 1985 रविवार प्रात 8 बजे से 12 बजे तक सम्पन्न होगा।

इसी पुनीत अवसर पर श्री ला० त्रिलोकचन्द्र जी वैश्य द्वारा बनवाये गये 15×15 फुट मे निर्मित चार कमरो का उद्‌घाटन भी सम्पन्न होगा। इसके साथ ही वेदविद्यालय की ओर से नव प्रकाशित ऋग्वेद का' विमोचन आर्य जगत के प्रसिद्ध लेखक, मूर्धन्य विद्वान श्रीयुत प० क्षितीश कुमार जी वेदालकार के कर कमलों से होगा।

इस अवसर पर पधारने वाले प्रमुख विद्वान सर्व श्री स्वामी दीक्षानन्द जी, स्वामी यज्ञानन्द जी स्वामी जीवनानन्द जी मनोहर जी विद्यालकार, सूर्यदेवजी प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, डा० योगानन्द जी स्नातक, प० राजवीर जी शास्त्री आदि। प्रिय व्रत जी शास्त्री स्नातक वेदविद्यालय के मधुर भजन होंगे।

12 बजे से 1 बजे तक ऋषि लगर की व्यवस्था है। अत आप से निवेदन है कि समय पर पधार कर कार्यक्रम की शोभा बढावें और अधिक अन्न धन का दान दे कर पुण्य के भागी बने।

निवेदक—

प्रधान चौ० दिलीप सिह
सयोजक रामनाथ सहगल
ब्रह्मा-आचार्य हरिदेव

महात्मा हंसराज जन्म दिवस

फिरोजपुर 21 अप्रैल, आर्य अनाथालय की भव्य यज्ञशाला मे महात्मा हसराज जन्म दिवस समारोह का प्रारम्भ बृहद से हुआ। आश्रम के कार्यकर्ता वं विद्यार्थी गण तथा डी० ए० वी० शिक्षण सस्थान की छात्र छात्राओ व अध्यापिकाओ की उपस्थिति स यज्ञ की शोभा बढ गई। यजमान पद पर श्री प्रि० पी० डी० चौधरी सपत्नीक विराजमान थे। प० मनमोहन शास्त्री ने यज्ञ सम्पन्न कराया। तत्पश्चात् अधिष्ठाता जी की अध्यक्षता मे सभा का आयोजन हुआ जिसमे वक्ताओ ने महात्मा हसराज जी को अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। प० मनमोहन शास्त्री न महात्मा जी के अपरिग्रह व्रत और नियम परायणता को अपनाने का आग्रह किया।

अपने अध्यक्षीय भाषण मे प्रि० पी०डी० चौधरी ने डी० ए० वी० के इतिहास का उल्लेख करते हुए निम्न सेवा व्रती महानुभावो की शृखला का वर्णन किया। लाला साईंदास, बक्शी टेक चन्द्र, प्रि० लाला मेहर चन्द्र, प्रि० प० मेहरचन्द्र तथा चीफ जस्टिस मेहरचन्द्र महाजन, प्रि० दीवानचन्द्र, डा० जी० एल० दत्ता व लाला सूरजभान आदि प्रमुख थे। उन्होंने कहा कि सभी शिक्षको को महात्मा जी का तपत्याग व आदर्श अपनाना चाहिए। तथा विद्यार्थियो को राष्ट्रनिर्माण का आधार बनाकर उनकी योग्यता तथा गुण प्रियता को बढावा देना चाहिए क्योकि ऐसे विद्यार्थी ही इस प्रगतिशील राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं।

तत्पश्चात् शान्ति पाठ व प्रसाद वितरण के साथ सभा का विसर्जन हुआ

भारत को महान् भारत बनाने का व्रत लो

—दीक्षान्तभाषण-कर्ता आर्यरत्न श्री पं० सत्यदेव भारद्वाज, उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा—
[Founder and Chairman Sun-Flag Group of Industries, Inter continental and International].

कुलं पवित्रं जननी कृतार्था वसुंधरा पुण्यवती च तेन।
अपारसंवित्सुखसागरेऽस्मिन् लीनं परे ब्रह्मणि यस्य चेतः॥

इन शब्दों के साथ, सौम्य-स्वभाव नवदीक्षित नवस्नातको ! मेरा स्नेह और सत्कार तुम्हें स्वीकृत हो।

विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी के अधिकारिगण ने इस वर्ष दीक्षान्त भाषण देने के लिए निमन्त्रित कर मुझे आदृत किया है; इसके लिए मैं सबका आभारी हूं। मुझे अपने गुरुकुलो से विशेष स्नेह है, जो स्वाभाविक है, क्योंकि मैं भी आपकी तरह से ही गुरुकुलों मे ब्रह्मचारी रहते हुए, इसी कुलभूमि से स्नातक रूप में दीक्षित हुआ था। मेरे मन, बुद्धि और आचार-विचार पर गुरुकुल शिक्षा का अमिट प्रभाव रहा है और उसके द्वारा संसार की सब तरह की भिन्न-भिन्न विपदाओ, संकटों और आधि-व्याधियों मे से गुजरते हुए, प्रभु मे अगाध विश्वास रखते हुये, किसी भी रूप में सदा कर्मयोगी निःश्रेयस मार्ग का दर्शन करता रहा हूं। जीवन-यात्रा मे समय-समय पर गुरुकुल बन्धुओ से मिलते हुए सदा ऐसा अनुभव हुआ है जैसे अपने सगे-जैसे गुरु-भाइयों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ हो। इस मिलन मे कितना स्नेह, श्रद्धा, सरलता और पारस्परिक विश्वास प्राप्त होता है, इसके बारे में तो यही कहूंगा—'स्वयं तदन्तः करणेन गृह्यते।"

जब गुरुकुल कुरुक्षेत्र में अध्ययन किया तो वैदिक ब्रह्मचर्य जीवन में 'भगवद्-गीता' ने अद्‌भुत जीवन-ज्योति के लिए वैदिक कर्मयोग का अमिट आलोक प्रदान किया। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ मे भारत की राजधानी दिल्ली या इन्द्रप्रस्थ के उत्थान और पतन का इतिहास सदा सामने रहा और जब गुरुकुल कागड़ी की पुरानी और नई भूमि में आवास हुआ तो गगा का वातावरण सदा के लिए जीवन पर छा गया। गंगा अपने साधारण स्वरूप को छोडकर 'ज्ञान-गंगा' के प्रवाह मे हमे तैराती थी, डुबकियां दिलाती थी और अनमोल जीवन-प्रवाह का मधुर सन्देश देती थी। यहां पर ही अनुभव होता था कि गंगा के साथ खड़े पर्वत, जगल, नदी नीर, सभी अपना-अपना संदेश लिये हमें जीवन के विशाल रूप को दे रहे थे। गुरुजनो की कृपा से हमें कर्तव्य का उद्‌बोधन होता था और जिस कुलमाता की गोद में हम प्रेम से पल रहे थे उसके संवेदन से सहसा हृदय की धडकनो में एक गूंज उठती अनुभव होती थी, जिसके स्वर थे:—

वन पर्वत मे नदी नीर में माता जो पाया संदेश।
तेरी पुण्यपताका लेकर फैला दूंगा देश-विदेश॥

सचमुच यह भावना सदा साथ मे रही और तदनुसार भारत तथा विश्व के विविध प्रदेशो मे यथाशक्ति ओर यथासम्भव पुनीत वैदिक सन्देश पहुंचाने मे मैंने तन, मन, धन आदि सभी साधनो से कार्य किया है। आर्य संस्कारो के पले सभी अपने पारिवारिक जनो से भी पर्याप्त सहायता मिली।

यह सब कुछ गुरु-जनो की कृपा का फल था। गुरु-जनो का प्रेम तथा जिज्ञासाओं मे उद्‌बोधन सदा आनन्दप्रद रहा है। उनके आशीर् वचनों का वरदान भी मिलता रहा हैं, इसी से नतमस्तक होकर अपने सब गुरु-जनों का विशेष श्रद्धा के साथ अभिनन्दन करता हू। यथायोग्य रूप से गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के परमोत्कर्ष की भी हृदय से कामना करता हू।

अपने इस कुल की आत्मा का स्वरूप कुलपित श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द के व्यक्तित्व से अनुप्राणित था। वैदिक ज्ञान की विशुद्ध धारा, गुरु-शिष्य परम्परा द्वारा शिक्षा-दीक्षा की सरस्वती के प्रवाह रूप मे अक्षुण्ण रूप मे प्रवाहित हुई थी। परन्तु बीच मे आयी बहुत सी चट्टानो से टकरा गई और भिन्न-भिन्न धाराओ मे बहने लगी। मुख्य धारा कुछ विलुप्त-सी प्रतीत होती है—जब से भारत विप्लव या विभाजन की अवस्थाओ मे से गुजर रहा है; भविष्य को इस सब का निर्णय करना है। इसी से यह कहने का साहस करता हूं कि महर्षि दयानन्द की वैदिक श्रद्धा फिर से किस रूप में उभरेगी यह अब भविष्य का विषय हो गया है। वर्तमान तो धूमिल है।

वैदिक वाङ्‌मय मे 'व्रतेन दीक्षामाप्नोति, दीक्षया दक्षिणामाप्नोति, दक्षिणया श्रद्धामाप्नोति, श्रद्धया सत्यमाप्यते" इस मन्त्र का सन्देश हमारी सम्पूर्ण शिक्षा का उपसंहार बता रहा है। ब्रह्मचर्य व्रत से आगे बढ़ते बढ़ते श्रद्धा की प्राप्ति और उससे परम सत्य का दर्शन या अनुभव, यही परमार्थता है जिससे अभ्युदय और निःश्रेयस् का मार्ग प्रशस्त होता है। "यो वै भूमा स एव सः।"

दक्षिण-वाम : दैवी-आसुरी

इन दिनों में संसार विशेष रूप से दो विभागों में बंट गया है। दोनों का स्वरूप दक्षिणपक्ष (Right Wing) या वाम पक्ष (Left Wing) में है। निःश्रेयस् मार्ग की तरफ सदा दक्षिणपक्षीय आते हैं और क्रांतिमय लौकिक प्रेयमार्गी वाम पक्ष के हैं। ये सत् और असत् की विचारधारायें हैं। एक तरफ दैवीय प्रवृत्ति उभरती है और दूसरी तरफ आसुरी प्रवृत्ति। परिणाम दैवी संपत् का संचय या आसुरी सपत् की प्राप्ति होता है। इस पर गीता के विशेष प्रवचन ध्यान देने योग्य हैं। संसार को इन दो दृष्टियों में आसानी से समझा जा सकता है। दीक्षा से दक्षिण पक्ष का अनुसरण करना ही वैदिक वाङ्मय का आदेश है। श्रेय मार्ग अभ्युदय को समुचित रूप से स्वयं ही खींच लाता है और इससे 'धर्मसिद्धिः' प्राप्त हो जाती है—"यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः।" अतः धर्म का सदा ध्यान रखना उचित है—"धर्मो धारयते प्रजाः।"

निराहार रहने में लोगों ने व्रत-दीक्षा को समझ लिया है। यह आरोग्य का एक साधन है। हमारी महान् शिक्षायें इससे बहुत आगे बढ़ जाती हैं। योग दर्शन में महर्षि पतञ्जलि ने नियमों के यम विवेचन मे यमों को अर्थात् "अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः, एताः जातिदेशकालसमयानवच्छिन्ना सार्वभौमाः महाव्रतम्", कहकर संसार को सार्वभौम महाव्रत का सन्देश दिया है जिसमे संयमित संसार सुख और शान्ति को आसानी से प्राप्त कर सकता है। संसार को सार्वभौम महाव्रत में दक्षीत किया जाना शिक्षा का सार्वभौम यौगिक अंग माना है जिससे शिक्षा की पूर्णता होती है। योगिराज पतञ्जलि के यम-नियम (Law and Order) एक शाश्वत सनातन आर्य-धर्म हैं। इनके प्रति निरपेक्षता तो आत्महत्या के रूप में ही समझी जानी चाहिए। यही वैदिक धर्म मार्ग है।

संसार के प्रथम कानूनदाता महर्षि मनु के "दशकं धर्मलक्षणम्" एवं "आचारः प्रथमो धर्मः", "न हि सत्यात् परो धर्मः", 'व्रतपते...अनृतात् सत्यमुपैमि" आदि वचन तथा वैदिक धर्म का मानव धर्म सदा ही मनुष्यों को "सर्वभूतहिते रताः" "वसुधैव कुटुम्बकम्", "सर्वजनसुखाय", "सर्वजनहिताय" "मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे" आदि से मनुष्यो की सार्वभौम विचारधारा की ओर ध्यान खींचता है। हमारे ऋषियो ने या धर्मग्रंथो दैशिक दृष्टि (Nationalist View) को तुच्छ समझते हुए मानव मात्र को भाई-बन्धु रूप में ही पहिचाना है। "माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः", "पृथिव्यै अकरं नमः", "नमो मात्रे पृथिव्यै" आदि वैदिक पृथिवी सूक्त के मन्त्रोपदेश और निर्देश हमारी सस्कृति को ससार के उच्चतम शिखर पर ले जाते हैं।

संसार एक देश बन गया

भौतिक विज्ञान की उपलब्धियो से संसार एक बहुत छोटी इकाई बन गया है। रेडियो, टेलीविजन, टेलीफोन, कम्प्यूटर आदि के आविष्कार तथा तेज रफ्तार से उडने वाले हवाई जहाजों से दुनिया अब एकदेशीय बन गई है। हमारे सब विचार अब सार्वभौम दृष्टि से ही होने चाहिएं। संसार को विनष्ट करने वाली प्रवृत्तियों—बड़े-बड़े एटम बम, मिसाईल्स, जगी जहाज, विषैली गैसें, कीटाणु बम आदि के हथियारों—का सम्बन्ध प्राणिमात्र के जीवन से है। आवश्यकता है कि जीवनमात्र को नष्ट करने वालों—आसुरी प्रवृत्ति वालों—के प्रति विरोध भावना बचपन से ही शिक्षा का अभिन्न अंग हो। इससे जहां सदाचार या धर्मसंस्थापना होती है और नैतिकता के धर्मचक्र का प्रवर्तन होता है, वहां मनुष्यो को संरक्षा पाने में जनता के नैतिक प्रभाव का बल प्राप्त हो जाता है। पृथिवी सूक्त के वैदिक संदेश को एक सार्वभौम शाश्वत धर्म के रूप में संसार की सब संस्थाओ, शिक्षणालयो, में गर्व से रख सकते हैं। कोई भी मतमतान्तर इससे उच्च रूप मे नेतृत्व न दे सकेगा। शब्द स्पष्ट हैं:—

'सत्य बृहद् ऋतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञ पृथिवीं धारयन्ति. सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्नी उरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु।" "मा नो द्विक्षत कश्चन मा नो द्विक्षत कश्चन।"

नवदीक्षित स्नातकों, यहां पर 'दीक्षा' शब्द पर विशेष ध्यान देना। साथ के शास्त्र वचनों को भी याद रखना:—

माता मे पृथिवी देवी, पिता देवो महेश्वरः।
मनुजाः भ्रातरः सर्वे स्वदेशो भुवनत्रयम्॥

इसके बाद मैं आपको याज्ञिक-दीक्षा की तरफ भी आकर्षित करना चाहूंगा। हमारी शिक्षा-दीक्षा में यज्ञ की प्रधानता है—"यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म।" हमें पञ्च-महायज्ञों पर चिन्तन को समाप्त नहीं करना चाहिए। राष्ट्रीय दृष्टि से राजसूय तथा राष्ट्रमेध यज्ञों का भी नवीन रूप में विधान समझना चाहिए। इससे हम चक्रवर्ती राज्य (One-World Wefare State) की दिशा को भी दृष्टि में रख सकते है। भिन्न-भिन्न अन्तर्राष्ट्रीय संगठन संगतिकरण रूप से यज्ञ रूप में प्रवृत्त हो रहे हैं। हमें भी इस तरह आगे बढ़ना है। इन यज्ञों में लौकिकता का विशेष प्रभाव न हो सके परन्तु आध्यात्मिकता पनपती हो, इसे ध्यान में रखना चाहिए।

यज्ञीय जीवन

आधुनिक वैज्ञानिक युग में मनुष्य आकाश में दूर से दूर पहुंच रहा है। चन्द्रमा पर तो वह अपने पैर भी फैला चुका है। धरती के विस्तृत भूखण्डों पर, उत्तरी व दक्षिणी ध्रुवों के विशाल प्रदेशों का भी पर्यालोडन हो रहा है। समुद्रों और धरती की गहराइयां भी मापी जा रही हैं। इन सब दूरियों और गहराइयों को मापते हुए लौकिक पुरुषों ने अपनी बड़ी से बड़ी विजयों के झण्डे गाड़े हैं। परन्तु इस धरती पर बसने वाले मानवों के हृदयों, मनों और बुद्धियों की गहराइयों को मापना उसने अभी तक नहीं सीखा है। मनुष्य के मन और हृदय को अन्दर से जीतने का और उसमें प्रेम, सहानुभूति, उत्साह, सहायता तथा वीरता आदि का शान्तिमय सन्देश नहीं दिया जा सका है। वह मार्ग अभी तक प्रशस्त नहीं हुआ। यहां पर आकर भौतिक विज्ञान असफल हो गया है। यहीं से हमें श्रेयमार्ग को प्रशस्त करना है और यह यज्ञमय जीवन से प्रारम्भ होता है। "बहुविधा यज्ञाः वितताः ब्रह्मणो मुखे" का ध्यान रखते हुए हमें वर्तमान में द्रव्य-यज्ञों के प्रति बढ़ती प्रवृत्ति को अन्ध-श्रद्धा की तरफ जाने से रोकना होगा। हमें यज्ञों की विविधता तथा विशालता को भी समझना चाहिए। संयतेन्द्रियता से ये यज्ञ ज्योतिर्मय हो जाते हैं।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में दीक्षान्त भाषण

द्रव्ययज्ञा तपोयज्ञा योगयज्ञा तथापरे।
स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च यतयः संशितव्रताः॥
श्रेयान् द्रव्यमयात् यज्ञात् ज्ञानयज्ञःपरंतप।
सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते॥
नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम॥
श्रद्धावान् लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति॥

श्रद्धापूर्वक विभिन्न यज्ञों से, यज्ञमय जीवन से, ज्ञान प्राप्त करते हुए शान्ति की प्राप्ति सहज हो जाती है। हमारे भूतकाल में ज्ञानयज्ञ का अनुष्ठान सदा तीव्र रूप में अग्रसर होता हुआ, सामाजिक जीवनों में विशुद्ध दृष्टि या चिन्तन प्रदान करता था। ज्ञान की धारा लौकिक और अलौकिक, प्रेय और श्रेय, आसुरी तथा दैवी, वामपक्षी या दक्षिणपक्षी आदि द्वंद्वों में संघर्षात्मक दृष्टि से आगे बढ़ी थी। दर्शन शास्त्र या आन्वीक्षिकी विद्या का इसमें विशेष भाग है। बड़े-बड़े ऋषि, मुनि और आचार्य जब उपरोक्त असत् और सत् विचारधाराओं पर गम्भीर मन्थन करते थे तो जातियों के जीवन परिवर्तित हो जाते थे। धर्म, संस्कृति, सभ्यता और समाज-रचना के नये-नये स्रोत वह निकलते थे और संसार को नवजीवन प्राप्त होता था। मैं वर्तमान युग में ज्ञानी पुरुषों में भारतीय आन्वीक्षिकी विद्या या दर्शन शास्त्र की पूर्ण चर्चा आवश्यक समझता हूं। यह विश्वविद्यालयों की पुण्यस्थली में ही समुचित रूप से हो सकेगा। जब 'धर्मनिरपेक्ष' शब्द बार-बार सुना जाता है तो लौकिक दृष्टि से धर्म शब्द तिरस्कृत हो जाता है। जब वैदिक ज्ञानधारा "आचारः प्रथमो धर्मः", "धर्म परं" का उद्घोष करती है तो 'Secular' शब्द धर्मनिरपेक्षता के अर्थों में 'आचार-निरपेक्षता' की तरफ खींच ले जाता है। यही कारण है कि वर्तमान भारतीय समाज में 'भ्रष्टाचार' बुरी तरह से फैलता जा रहा है और नैतिक मूल्य गिर रहे हैं। 'धर्म-संस्थापना' या 'धर्मचक्रप्रवर्तन' एक हंसीमात्र दिखाई देते हैं। धर्म शब्द महान् है—वह कर्तव्य, पुण्यकार्य, कानून तथा व्यवस्था आदि अर्थ में मुख्यतः प्रयुक्त होता है। 'धर्म-निरपेक्ष' शब्द को सरकारी रूप से तिलाञ्जलि दी जानी चाहिए। भिन्न-भिन्न मतों या सम्प्रदायों के साथ धर्म शब्द का व्यवहार हमारी अशिक्षा का परिचायक है। सब सम्प्रदायों के प्रति उदारता का परिचय देना, विभिन्न मतभेदों में भी पारस्परिक आदर-भाव रखना, मानवमात्र को भाईचारे से वर्तना, ईश्वर के प्रति श्रद्धा और विश्वास रखना 'Secular' शब्द का अर्थ नहीं है। भारत में इस विषय में अर्थ का अनर्थ रोकना चाहिए। 'Secular' विचारधारा वामपक्षीय लौकिक विचारधारा है जो अनीश्वरवादी नास्तिक विचारों से ओतप्रोत हो जाती है।

जब वैदिक परम्पराओं में याज्ञिक हिंसा और दुराचार प्रवृत्त हुए और लौकिक दृष्टि ही प्रमुख हो गयी तो बौद्ध धर्म ने पुरानी सदाचार की धर्म-मर्यादाओं को स्थापित किया था। नये-नये विचारों से दृष्टि परिवर्तन भी हुआ। करीबन डेढ़ हजार वर्ष पूर्व से हमारे वैदिक और अवैदिक—सत् और असत्—दार्शनिकों का ज्ञानचर्चा-द्वंद्व अत्यन्त गम्भीरता से चलता रहा है। वैदिक आर्य दर्शनों पर बौद्ध आचार्यों के घात-प्रतिघात हुए। इस संघर्ष में कई सदियां बीत गईं। आर्य दर्शनों के ऋषि कपिल, कणाद, गौतम, पतञ्जलि, व्यास, जैमिनि आदि का सम्पोषण समन्वयात्मक दृष्टि से अग्रसर करने में वात्स्यायान, उद्योतकाचार्य, शंकर, वाचस्पति मिश्र, उदयनाचार्य आदि थे तो दूसरी तरफ असत् विचारधारा में बौद्ध दार्शनिकों ने भी प्रतिघात किए। इनमें नागार्जुन, दिङ्नाग, धर्मकीर्ति, कल्याणरक्षित, दीपकर, वसुबन्धु, आसंग आदि प्रौढ़ विद्वानों द्वारा गम्भीर चिन्तन होता रहा और ज्ञान का चतुर्मुखी प्रवाह बहता रहा। इस तरह से दीर्घ काल के संघर्ष में, अन्त में, वैदिक विचारधारा ने ही 'सत्पक्ष' में भारत की विजय को स्थापित किया। अब वही विचारधारा आगे सैमेटिक विचारों से टकरा रही है। इसमें महर्षि दयानन्द का प्रकाण्ड साहस, दूरदर्शिता, गम्भीर चिन्तन तथा सार्वभौम संस्कृति, धर्म, सभ्यता को समन्वय रूप से वैदिक धर्म के मानववाद में पाना अभी गम्भीर चिन्तन का विषय है जिसे भविष्य अपनी कसौटी पर परखेगा।

भारत की सम्पूर्ण विचारधारायें गुरु-शिष्य परम्पराओं द्वारा बड़-बड़े गुरुकुलों या विहारों में पनपी थी। भगवद्गीता की वैदिक कर्मयोग की राजविद्या भी गुरु-शिष्य परम्परा से ही विकसित हुई थी।

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्।
विवस्वान् मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवे

—इत्यादि परम्परा प्राप्त ज्ञान है। क्षत्रविद्या के लिए हमें तक्षशिला गुरुकुल के आचार्य विष्णुगुप्त चाणक्य के शिष्य सम्राट् चन्द्रगुप्त को भुलना नहीं चाहिए। इसी तरह से महर्षि पतञ्जलि द्वारा शिक्षित सेनापति पुष्यमित्र को भी लभुाया नहीं जा सकता। नवरत्नविभूषित उज्जयिनी के महाराजा विक्रमादित्य को भी सदा याद रखना चाहिए। इन्होंने भूतकाल में आर्य जाति की स्वतन्त्रता को अखण्ड रूप से स्थापित किया था और भारत को शिरोमणि राज्य का स्थान दिलाया था। उस समय ब्रह्म और क्षत्र के समन्वय से भारत पुण्यलोक बन गया था।

राजधर्म को समझाने में जो कार्य रामायण तथा महाभारत ने किया है एवं भारतीय स्मृतिग्रन्थों ने जो ज्ञान भारतीय मनीषियों को समय-समय पर दिया है, उस सबका भी पुनः भारतीय दृष्टि से चिन्तन आवश्यक है। वर्तमान सांस्कृतिक या राजनैतिक विचारधारायें भारतीय चिन्तन में से न आकर विदेशी या पराये रूप में हम पर लद-सी गयी है। यह गम्भीर चिन्तन भारतीय समाज शास्त्रियों का अब विशेष विषय होना चाहिए। हम सब कुछ अग्रेंजी की ऐनक से देखते हैं और उसी में सत्य का दर्शन समझते हैं। अपनी स्वयं की आँखों की विशुद्ध दृष्टि ही अन्ततः यथार्थ होगी, इसे जानना होगा।

भारत से महान् भारत

सम्पूर्ण भारत की भौगोलिक एकता को कविकुलगुरु कालिदास ने 'कुमार-संभव' के प्रारम्भ में अत्यन्त मधुरता से दिया है:—

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा, हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः॥

इसी तरह 'रघुवंश' में रघु की सेनाओं ने दिग्विजय करके जिस स्वराज्य की स्थापना की थी और जिसके द्वारा सूर्यवंश या रघुवंश ने भारतीय राजतन्त्र में 'रामराज्य' की विचारधारा को सनातन रूप दिया था, वह भी भुलाया नहीं जा सकता। रघुवंश ने भारत के भौगोलिक स्वरूप को स्थायी दृष्टि दी थी। राघव वंश के रामराज्य की दृष्टि से भारत का केन्द्रीकरण सदा ही हमारा उद्देश्य रहना चाहिए।

अयोध्या से निकल कर जब महाराजा रघु ने केन्द्रीकृतार्थ (For ietgration) महाभारत निर्माण में जो सेना-प्रस्थान किया था वह पहिले पूर्व की तरफ बढ़ा। मगध राज्य और सुह्म राज्यों को परास्त करते हुए बंगदेश के अन्तिम किनारे तक रघु के झण्डे गड़े थे। इसी तरह से गंगासागर के सब द्वीपों को वश में कर उड़ीसा और कलिंग देश को वशवर्ती किया। पास के सब पहाड़ी प्रदेशों पर भी

(शेष पृष्ठ १० पर)

पत्रों के दर्पण में

भारत की प्रत्येक भाषा में अनुवाद हो

आपकी 'तूफान के दौर से —पंजाब' पुस्तक मैंने शुरू से आखीर तक पढ़ी। पंजाब के सम्बन्ध में बहुत कुछ नया और उपयोगी मैंने जाना—सीखा। आपने जिस शोध, श्रम, सूझबूझ, साथ ही जिस बेबाकी और निर्भीकता से यह पुस्तक लिखी है, उसके लिए आपकी जितनी प्रसंसा की जाय, कम होगी। पंजाब की समस्या जो भी समझना चाहे, उसे आपकी पुस्तक पढ़नी ही चाहिए। पंजाब की समस्या को जो भी समाधान होगा उससे सारा भारत वर्ष प्रभावित होगा। इसलिए प्रत्येक जागरूक भारतवासी का यह कर्तव्य हो जाता है कि वह इस समस्या को समझे। जैसे उपचार से पूर्व निदान, उसी प्रकार समाधान के पूर्व समझदारी बहुत जरूरी है और इसे देने में आपकी पुस्तक बहुत सहायक होगी।

मैं समझता हूं कि इस पुस्तक का अनुवाद भारत की प्रत्येक भाषा में होना चाहिए; पंजाबी, उर्दू और अंग्रेजी में तो तुरन्त होना चाहिए। संभव हो तो उसे पेपर बैक में भी निकलवाना चाहिए जिससे यह अधिक से अधिक जनता तक पहुंच सके।

—हरिवंशराय बच्चन, 'सोपान', बी-7, गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली—110049

अग्नि-पथ का पथिक

महात्मा हंसराज दिवस विशेषांक में आपका "अग्नि-पथ का पथिक" शीर्षक (21 अप्रैल) अग्र लेख पढ़कर मैं तो भाव विभोर हो गया। जिस साहित्यिक और विद्वत्ता पूर्ण ढंग से आपने अपनी बात कही है, वह दुर्लभ है। हिन्दी के साहित्यकारों मे अब इस प्रकार साहित्यिक ढंग से लिखने वाले साहित्यकार दृष्टि गोचर नही होते। मेरी ओर से बहुत-बहुत बधाई और धन्यवाद स्वीकार करें।

—रतन लाल जोशी (भू० पू० सम्पादक दैनिक हिन्दुस्तान,)
12—फिरोजगान्धी मार्ग, लाजपत नगर, नई दिल्ली—24

आर्य समाज का रूप बदलें

उक्त शीर्षक का आपका सम्पादकीय (31 मार्च) पढा। उसमें एक वाक्य आपने लिखा है—"आर्य समाज दिन-प्रतिदिन अभिजात वर्गीय लोगो की बपौती बनता जा रहा है और समाज के पिछड़े वर्ग उससे परे हटते जा रहे हैं।" यह आप किसके लिए लिख रहे हैं और किसको पढ़वाना चाह रहे हैं? आपकी सुनने वाला कौन है? मैं जानता हू कि आपको लोक सभा या राज्य सभा का टिकट नही चाहिए और सत्ता पक्ष से भी आपको अपना कोई स्वार्थ सिद्ध नहीं करना है। इसीलिए आपने इतनी खरी बात लिख दी है। परन्तु मैं उन आर्य नेताओं से पूछता हूं जो पिछड़े वर्गों के हितों के बारे मे मंचो से खूब लम्बी-लम्बी घोषणाएं करते हैं, परन्तु व्यवहार में उनकी सदा उपेक्षा करते हैं। मैं स्वयं शोषित पीड़ित समाज से सम्बन्धित हूं और आर्यसमाजी हूं तथा दिन रात आर्य समाजियों के बीच में रहता हू, इसलिए मेरे मन को यह बात बहुत कचोटती है। गुण-कर्म परक वर्ण व्यवस्था का समर्थक होते हुए भी आर्य समाज अभी तक जन्म जाति के चक्कर से नहीं निकल पाया है। यह बात क्या आर्य समाज के लिए शोभा के योग्य है? आप कितने ही अग्रलेखों में जात-पांत को छोडने पर बल देते रहे हैं, पर आर्य समाज का पतनाला वहीं है।

—मामचन्द्र रिवारिया, (सदस्य हरिजन कल्याण बोर्ड, दिल्ली प्रशासन), 6441 —चौक हौजकाजी, दिल्ली—110006

महात्मा हंसराज—ऐतिहासिक महापुरुष

परम पूज्य महात्मा हंसराज जी ऐतिहासिक महापुरुष थे। उन्होंने धर्मप्रचार, शिक्षा प्रसार तथा समाज सुधार के क्षेत्र में जो कार्य किये हैं, वे सदा स्वर्णाक्षरों में अंकित रहने चाहिए। वे वास्तव में वीतराग महात्मा थे। मैं बाल्यावस्था से ही उनकी प्रशंसा सुना करता था और जब दर्शन मिले तब तो उनके प्रति अगाध श्रद्धा हो गई। जब-जब साक्षात्कार का सौभाग्य प्राप्त होता, तब तब उनकी पवित्र वाणी से उत्तमोत्तम उपदेश सुनने का अवसर भी उपलब्ध होता।

मेरे स्व० अग्रज राजकुमार श्री रणवीर सिंह जी भी महात्मा हंसराज जी के अनन्य भक्त थे और उनके आदर्श कार्यों का अनुकरण करना उन्होंने आजन्म अपना कर्तव्य समझा। अग्रज महोदय ने एक जेब घड़ी मंगवाई थी, जिसमें एक मिनट में 4 महापुरुषों के चित्र दृष्टिगत होते थे। वे चित्र इस प्रकार थे—महर्षि दयानन्द सरस्वती प० लेखराम जी, प० गुरुदत्त जी तथा महात्मा हंसराज जी।

—राजा रणंजय सिंह, भू० पू० संसद सदस्य (संस्थापक रणवीर—रणंजय स्नातकोत्तर महाविद्यालय) भूपति भवन, अमेठी, सुलतानपुर (उ० प्र०)—227405

दुर्भाग्य-पूर्ण वक्तव्य

पंजाब समस्या के समाधान के लिए केन्द्रीय सरकार ने अकाली नेताओं को कारागार से मुक्त करके जिस सद् भावना का प्रदर्शन किया, अकाली नेताओं ने उसका उचित उत्तर नहीं दिया। भारत की जनता को विश्वास था कि श्री लोंगोवाल रिहा होने के बाद भारत की एकता व अखण्डता तथा परस्पर सद्भाव को सुदृढ़ बनाने का महान कार्य करेंगे और सिखों को सही मार्ग दिखाकर उन्हें राष्ट्रीय धारा में जोड़ने का पुण्य प्राप्त करेंगे। परन्तु श्री लोंगोवाल के वक्तव्यों से सारी आशाओं पर पानी पड़ गया। उनकी भाषा में भिंडरावाले की भाषा की गन्ध आ रही है। श्री लोंगोवाल को चाहिए था कि वे स्वार्थ-परक संकीर्ण राजनीति से ऊपर उठकर महान गुरुओं के आदेशों का पालन करते हुए सिख भाईयों को सही सलाह देते। परन्तु वे खुद उसी साम्प्रदायिकता मे बह गये जिसने अकालियों को राष्ट्रद्रोह के लिए प्रेरित किया। —

—राधेश्याम आर्य एडवोकेट, मुसाफिरखाना सुल्तानपुर (उ० प्र०)

स्वप्न को यथार्थ बनाओ

टंकारा के बारे में आप जो स्वप्न देख रहे है उसे केवल स्वप्न ही न रहने दें। टंकारा को एक आदर्श नगर बनाना अत्यन्त आवश्यक है। मेरे विचार मे आर्यसमाज पर यह ऋषि दयानन्द का ऋण है, जो उसे उतारना ही चाहिए।

"आर्य जगत्" के कुछ लेख तो ऐसे होते हैं जिनको पढ़कर अपना मन तो प्रसन्न होता ही है, मन मे यह भी आता है कि ऐसे लेख आर्य जगत् के पाठकों के अलावा अन्य लोग भी पढ़ें तो कितना अच्छा हो। ऐसे सार-गर्भित लेख अन्य दैनिक पत्रों में भी आने चाहिए जिससे आम जनता को पता चले कि वास्तव में आर्य समाज क्या है और वह क्या चाहता है।

—शान्ति स्वप्न मेहन, होजरी रीपोर्ट, दिल्ली— 110006

वार्षिक मूल्य में वृद्धि उचित

ऋषि दयानन्द के दिव्य सन्देश "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" को घर घर पहुंचाने तथा लोगों में सही राष्ट्रवाद की चेतना उत्पन्न करने में 'आर्य जगत्' बडी महत्व पूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। इसमें प्रकाशित होने वाले लेख तथा अन्य बहुमूल्य सामग्री ऐसे उच्चकोटि के लेखकों तथा विद्वान् विचारकों द्वारा भेजी जाती है जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्र में विशेष उपलब्धियां प्राप्ति की हैं। सामाजिक कुरीतियो, अन्ध विश्वासों, पाखण्डों को समाप्त करने और मनुष्यमात्र की शारीरिक और आध्यात्मिक उन्नति का रास्ता बताने तथा युवा वर्ग के चरित्र निर्माण की ओर इस पत्र मे विशेष रूप से ध्यान दिया जाता है। समाज में नारी जाति को समुचित स्थान दिलाने मे जितनी सेवा इस पत्र ने की है, उतनी शायद ही किसी अन्य आर्य पत्र ने की हो।

अप्रैल मास से आपने इसका वार्षिक मूल्य 20 रु० से बढ़ाकर 25/-रु० और आजीवन सदस्यता शुल्क 201/-रु० से बढाकर 251/-रु० करके उचित ही किया है। पिछले तीन वर्षों मे कागज के मूल्य बेहद बढ़ गये है। प्रिंटिंग और डाक खर्च आदि में भी कई गुना वृद्धि हो जाने के कारण पत्र पर पड़ने वाले बोझ को कुछ हल्का करने के लिए यह मामूली सी वृद्धि आपत्तिजनक नही, बल्कि स्वागत योग्य है। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि सारे देश में आर्य जगत् साप्ताहिक ही एकमात्र ऐसा मुख्य आर्य पत्र है जिसका मूल्य अन्य आर्य पत्रों की अपेक्षा कही कम है। मेरी समस्त आर्य समाजों और आर्य संस्थाओं से तथा आर्य बन्धुओं से अपील है कि वे डी०ए०वी० शताब्दी वर्ष में 'आर्य जगत्' के अधिक से अधिक ग्राहक बनाकर इस पवित्र यज्ञ में अपनी विशेष आहुति दें।

—राजकुमार कपूर, मंत्री—आर्य युवक परिषद,
पट्टी, अमृतसर—153416

भेंट के लिए हिन्दी पुस्तकें

जन्म, विवाह तथा इसी प्रकार के अन्य विशेष अवसरों पर जहाँ विभिन्न प्रकार की वस्तुएं भेंट की जाती हैं, वहां सुरुचि सम्पन्न लोग पुस्तकें देना पसंद करते हैं। वातावरण के प्रभाव के कारण अंग्रेजी पुस्तकें भेंट करने की प्रथा चल निकली है। कई बार चाहने पर भी अवसर के अनुकूल उपयुक्त हिन्दी पुस्तकें नही मिल पाती और जो मिलती हैं, उनकी छपाई आकर्षक नही होती तथा सामग्री भी उच्च स्तर की नहीं होती। लेकिन ऐसा नही कि ऐसी पुस्तको का सर्वथा अभाव है। अच्छी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं पर उनकी जानकारी जनता को नहीं है। उदाहरण के रूप में भारतीय ज्ञानपीठ से "प्रणय पत्रिका" तथा 'जीवेम् शरदः शतम' आदि उच्च स्तर की पुस्तकें छपी हैं जो विवाह तथा जन्म आदि के अवसरों पर भेंट करने योग्य हैं। पाठकों को इस प्रकार की हिन्दी में अन्य सामग्री छपी दिखाई पड़े तो वे निम्न पते पर सूचित करने की कृपा करें। इससे समाज में अंग्रेजी की ओर भागने की प्रवृत्ति को बदलने में सहायता मिल सकेगी।

—हरिबाबू कंसल महामंत्री, हिन्दी व्यवहार संगठन, डी-३५, साउथ एक्सटेंशन, भाग-एक, नई दिल्ली-११००४९

सामाजिक जगत्

फ्रांसीसी युवती की शुद्धि और विवाह

आर्यसमाज अजमेर में 30 वर्षीय फ्रांसीसी युवती मिस बिजीत बलाजी की शुद्धि की गयी। हिन्दु नाम कु० बीना रखा गया। पश्चात् पुष्कर के लोटस होटल मे सेवारत श्री भगवान दास के साथ श्री आचार्य गोविन्द सिंह ने वैदिक विधि से विवाह कराया। समाज के मंत्री श्री रासासिंह ने आशीर्वाद देते हुए समाज की ओर से अंग्रेजी भाषा में वैदिक साहित्य भेंट किया।

श्रीमती शान्तिदेवी का स्वर्गवास

आर्य समाज बस्ती हरफूल सिंह की भू० पू० मन्त्राणी-श्रीमती शान्तिदेवी धर्म पत्नी श्री मेलाराम भाटिया का उनके निवास स्थान-सी-48 इन्द्रपुरी, नई दिल्ली में स्वर्गवास हो गया। 21-4-85 को सायं 5 बजे उनके निवास स्थान पर अन्तिम दिवस एवं शोक सभा हुई। भिन्न-भिन्न संस्थाओ के लोगों ने उनको श्रद्धांजलि अर्पित की।

आर्यसमाज अनारकली का वार्षिक अधिवेशन

आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली का वार्षिक अधिवेशन एवं नव निर्वाचन रविवार—9 जून 1985 को प्रात: 10-30 बजे से आर्य-समाज भवन में होगा।

पलवल में प्रशिक्षण शिविर

सार्वदेशिक आर्य वीर दल पलवल के तत्वावधान मे दयानन्द बाल विद्यालय पाल्ली गेट पलवल में 20 से 30 जून तक आर्य वीर दल प्रशिक्षण-शिविर और वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया है जिसमे अनेक विद्वान और शिक्षकगण भाग लेंगे।—अजीत कुमार आर्य

पं० हरिशंकर वानप्रस्थी बने

श्रीमद् चन्द्रवली गुरुकुल विद्यालय, वासदेवपुर, मझवलिया, देवरिया (उ० प्र०) के संस्थापक प० हरिशंकर शर्मा को 6 अप्रैल को गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोलाझाल, मेरठ के आचार्य विवेकानन्द ने वानप्रस्थ की दीक्षा दी। उनका अब नया नाम महात्मा शंकर मुनि हो गया है। इस अवसर पर 4 से 7 अप्रैल तक सामवेद पारायण-यज्ञ का आयोजन किया गया।—डा० हलधर प्रसाद

कण्वाश्रम में युवक प्रशिक्षण शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद, दिल्ली प्रदेश की ओर से 14 से 23 जून तक गुरुकुल कण्वाश्रम कलालघाटी और कोटद्वार पौढी गढ़वाल में युवक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है।

—आर्यसमाज, कालपी, जालौन का वार्षिकोत्सव 12 से 14 मार्च तक सोत्साह मनाया गया जिसमें अनेको विद्वान और और उपदेशकों ने भाग लिया।

हीरो होण्डा फैक्टरी में शाला कर्म-यज्ञ

वैशाखी के अवसर पर गुड़गांव अलवर रोड पर दिल्ली से 70 कि० मी० दूर जापान के सहयोग से मोटर साईकिल बनाने का नया कारखाना खुला है। विश्व विख्यात जापानी होण्डा कम्पनी द्वारा स्थापित यह भारत का अनूठा कारखाना है। इस अवसर पर शाला कर्मयज्ञ किया गया जिसका आचार्यत्व ब्रह्मदत्त स्नातक ने किया। इसमे श्री सत्यानन्द मुंजाल, श्री बृज विहारी लाल मुंजाल, श्री ओमप्रकाश मुंजाल एवं उनके परिवार के सदस्यो के अतिरिक्त अन्य विशिष्ट व्यक्ति भी सम्मिलित हुए।

आर्यसमाज सोहन गंज

आर्य समाज, सोहन गंज, दिल्ली का वार्षिकोत्सव 27-28 अप्रैल को सोत्साह मनाया गया। जिसमें वेद कथा, महिला सम्मेलन और वाद-विवाद प्रतियोगिता का भी आयोजन हुआ। श्री शिवकुमार शास्त्री, श्रीराम किशोर वैद्य, श्री अशोक विद्यालंकार, स्वामी आनन्द वेश, श्रीमती शान्ति देवी अग्निहोत्री, आचार्य हरिदेव व श्री वेदव्यास आदि उपदेशकों ने भाग लिया।—मंत्री

उपदेशक और भजनोपदेशक चाहिए

राजस्थान की आर्यसमाजो मे वेद प्रचार के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान को विद्वान उपदेशक और भजनोपदेशकों की आवश्यकता है। इच्छुक व्यक्ति श्री जेठमल आर्य मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उपकार्यालय आबूरोड-307026 के पते से संपर्क करें।

श्रद्धांजलि-पर्व

महर्षि दयानन्द होम्योपैथिक परिषद 112 स्पीकर कोर्नर, 88 नेहरु प्लेस, नई दिल्ली की ओर से 5 मई को विट्ठल भाई पटेल भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली में महर्षि दयानन्द और डा० सेमुअल हैनिमन को श्रद्धांजलि दी जायेगी जिसमे देश-विदेश के लोक प्रिय होम्योपैथिक चिकित्सक एवं अन्य धार्मिक नेता भाग लेंगे। इस अवसर पर परिषद द्वारा "अन्तर्राष्ट्रीय होम्योपैथिक स्मारिका" का विमोचन होगा।—सुभाष गर्ग

आर्यसमाज केरावत का उत्सव

आर्यसमाज, केरावत का वार्षिकोत्सव 6 से 9 अप्रैल तक श्री उमाशंकर आर्य, समाज प्रधान की अध्यक्षता में सोल्लास मनाया गया जिसमे श्री शिवकुमार शास्त्री, स्वामी मोक्षानन्द, श्री उत्तम चन्द शरर, ठाकुर महिपाल सिंह श्री जगदीश प्रसाद, श्री पारसनाथ आदि विद्वान और उपदेशकों ने भाग लिया।—रामनारायन आर्य

आर्य अनाथालय में वैशाखी पर्व

प्रबन्धक प्रि० पी० डी० चौधरी के निवास पर आर्य अनाथालय, फिरोजपुर मे वैशाखी का पर्व उत्साह पूर्वक मनाया गया। श्री मनमोहन शास्त्री के आचार्यत्व में बृहद्‌यज्ञ का आयोजन हुआ जिसके यजमान प्रि० पी० डी० चौधरी सपत्नीक थे। यज्ञ के बाद प्रि० चौधरी की अध्यक्षता मे एक सभा का आयोजन हुआ जिसमें, कार्यकर्त्तागण, छात्र-छात्राओ के अतिरिक्त अनेक विशिष्ट लोगों ने भाग लिया, प्रि० चौधरी और श्री मनमोहन शास्त्री ने वैशाखी पर्व की महत्ता पर प्रकाश डाला।

प्रवेश-सूचना

आर्य कन्या विद्यालय, शिक्षा मार्ग, भिवानी (हरि०) मे रत्न एवं प्रभाकर का (केवल कन्याओ के लिए) 1 जुलाई 85 से प्रवेश आरम्भ है। योग्य व अनुभवी अध्यापिकाओ की व्यवस्था है। इच्छुक छात्रायें उपरोक्त पते से संपर्क करें।—फूलचन्द शर्मा 'निडर'

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय का कुलपति कौन हो ?

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के नये कुलपति के सम्बन्ध में कई नामो की चर्चा चल रही है। हरयाणा सरकार को हमारा सुझाव है कि इस विश्वविद्यालय का कुलपति किसी ऐसे शिक्षा शास्त्री को नियुक्त किया जाये जो महर्षि दयानन्द के सिद्धातो का ज्ञाता हो, जिससे कि विश्वविद्यालय की स्थापना का उद्देश्य पूर्ण हो सके।

गुरुनानक विश्वविद्यालय अमृतसर का कुलपति गुरुनानक के सिद्धांतो का ज्ञाता तथा अलीगढ विश्वविद्यालय का कुलपति इस्लाम के सिद्धांतों का ज्ञाता रहा है। इस विश्वविद्यालय मे भी यही परम्परा चालू करनी चाहिए।

इस विषय मे मैंने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का उपमन्त्री होने के नाते हरयाणा के राज्यपाल तथा हरयाणा को भी तार दिया है।—केदार सिंह आर्य

कन्या गुरुकुल के लिए आचार्य चाहिए

कन्या गुरुकुल गणियार, तहसील नारनौल, जिला-महेन्द्रगढ़ (हरियाणा) के लिए प्राज्ञ, विशारद, शास्त्री परीक्षाओं के लिए योग्यतापूर्वक शिक्षण के लिए एक सुयोग्य आचार्य की आवश्यकता है। अपनी शैक्षिक योग्यता एव अनुभति आदि का उल्लेख करते आवेदन भेजें अथवा व्यक्तिगत सम्पर्क करें। मासिक दक्षिणा 500/- के अतिरिक्त भोजन, आवास आदि की सब सुविधा हैं।

—कलावती आचार्या,

टंकारा उपदेशक विद्यालय में प्रवेश

टंकारा में महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय मे नये सत्र के लिए विद्यार्थियो का 1 जुलाई 1985 से प्रवेश प्रारम्भ है। प्रवेश की अन्तिम तिथि 15 जुलाई है। चारवर्ष के प्रशिक्षण काल मे विद्यार्थियो को ट्रस्ट की तरफ से भोजन, आवास, वस्त्र व पुस्तकादि समस्त आवश्यक वस्तुए नि.शुल्क प्रदान की जाती हैं।

प्रवेशार्थी की योग्यता: कम से कम हाईस्कूल [मैट्रिक] उत्तीर्ण और 16 से 24 वर्ष की आयु एवम् उत्तम स्वास्थ्य होना अनिवार्य है। नियमावली नि.शुल्क मगायें। आचार्य, उपदेशक महाविद्यालय टंकारा राजकोट [सौराष्ट्र] पिन—363650

आर्य समाज सराय लोका

आर्य समाज, सराय लोका (जौनपुर) का वार्षिकोत्सव विराट् धार्मिक समारोह के रूप मे 15-16 अप्रैल को उत्साह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर स्वामी मोक्षानन्द (मथुरा), श्री सूर्यबलि पाण्डेय के उपदेश, श्री कुंवर महीपाल सिंह (बलिया) के भजनोपदेशक और गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय सिराथू (इलाहाबाद) के ब० कमलमित्र शास्त्री और श्री बलमित्र शास्त्री का यौगिक प्रदर्शन हुआ। श्री विजयप्रताप सिंह एडवोकेट ने समारोह का उद्‌घाटन किया और समापन समारोह मे श्री अर्जुन यादव विधायक ने भाग लिया। —धर्मपाल आर्य

पाणिनि कन्या विद्यालय वाराणसी का उत्सव

आर्य कन्या महाविद्यालय वाराणसी का वार्षिकोत्सव 31 मई व 1-2 जून को धूमधाम से मनाया जायेगा। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी रोचक और चित्ताकर्षक कार्यक्रम होंगे जिसमे अनेक महात्मागण और विद्वान पधार रहे हैं।

—कु० माधुरी तर्कपुका

श्री अम्बिका प्रसाद दिवंगत

आर्य समाज लल्लापुरा, वाराणसी मे आर्य जगत् के युवा विद्वान, रणञ्जय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अमेठी मे संस्कृत विभाग मे प्राध्यापक श्री पं० ज्वलन्त कुमार शास्त्री के पूज्य पिता श्री अम्बिका प्रसाद के निधन पर श्रद्धाजलि सभा में शोक प्रस्ताव पारित किया गया। सभा की अध्यक्षता श्री मेवालाल ने की।

—बुद्धदेवार्य

—महाशय हीरालाल गुरुकुल किशनगढ़-घासेड़ा का वार्षिकोत्सव 4-5 मई के सोल्लाह मनाया जायेगा जिसमें प्रसिद्ध संन्यासी उपदेशक और विद्वान भाग लेंगे

गुरुकुल कांगड़ी में दीक्षान्त भाषण

(पृष्ठ 7 का शेष)

अपना झंडा फ़हराते हुए रघु ने महेन्द्र पर्वत पर अधिकार जमाया। इस तरह से पूर्वीय भारत पर विजयपताका फहरा कर वे दक्षिण दिशा की तरफ समुद्रतट के साथ-साथ चले। कावेरी नदी के सब भूभागो को—पाण्ड्य राजाओं सहित— वशवर्ती करते हुए केरल प्रदेश को जीतकर वे भारत के सम्पूर्ण पश्चिमी प्रदेश पर छा गए। उधर से स्थल मार्ग से ही पारस देश (पर्शिया) मे प्रविष्ट होकर उसके बड़े भाग को समेटते हुए सिन्धु नदी के पश्चिमी प्रदेशो में उन्हे प्रवेश किया, जहा अपगणस्थान (अफगानिस्थान) के कम्बोज या काबुल के राज्य को अपने साथ मिलाया। इसके बाद हिमालय के महान् प्रदेशो मे सब राज्यो को वशवर्ती करते हुए अपने पराक्रम का सिक्का बिठा दिय। हिमालय की लौहित्य (ब्रह्मपुत्र) नदी को पार कर वे प्राग्ज्योतिष या आसाम में आ पहुंचे थे। एक तरह से महाभारत भूमि की पूरी परिक्रमा विजय द्वारा स्थापित कर उनका स्थायी मानचित्र बना दिया गया था। इस तरह से आर्य साम्राज्य की पूर्ण स्थापना कर वे वापिस अयोध्या मे आ गए थे। विकेन्द्रित भारत एक महान् केन्द्रित(Integrated) महाभारत मे बदल कर 'रामराज्य' में चरमोत्कर्ष पर पहुंचा। जिसका वर्णन महाभारत के शान्तिपर्व में "रामे राज्ये प्रशासति" प्रकरण मे देखा जा सकता है। इन सब विजयो मे रघु ने आर्य मर्यादाओ का कभी त्याग नही किया। जिसे जीता उसे सन्मार्ग पर लगा कर राज्य उसे ही सुराज्य स्थापना के लिए दे दिया। कोई बदले की भावना न थी। कोइ ईर्ष्या या द्वेष न था। रघु ने विशाल स्वराज्य या धर्मराज्य को पैदा किया और राम ने 'सुराज्य' रूप परमार्थता का दर्शन दिया। साम्राज्य स्थापना मे दिग्विजय के बाद रघु ने 'विश्वजित्' यज्ञ किया ओर "परोपकाराय सतां विभूतय·" "सर्वभूतहिते रता" के वैदिक आर्य उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सब कुछ दक्षिणा रूप मे दान मे देकर उन सब राजाओं को सम्मानित किया जो रघु से युद्ध मे हार जाने से अपने को लज्जित तथा तिरस्कृत समझते थे। सभी को पूर्ववत् मान-मर्यादा देते हुए स्वयं एक तपस्वी, निर्धन, वानप्रस्थी बन कर ऋषि आश्रमों में चले गए, क्यो कि "योगेनान्ते तनुत्यजाम्' का उद्देश्य जो पूरा करना था।

इस तरह से मैंने भारत की प्राचीन गौरव गाथा आपके सामने रखी है।र इससे ससार की महान् शक्तियों को बहुत कुछ सीखने को मिल सकता है। रघुवी और यदुवीर भारत के सदा चमकते सूर्य और चाद की तरह प्रकाश और जीवन देने वाले हैं। महर्षि दयानन्द के सामने भारत की यह गौरव गाथा सदा ज्योति—स्तम्भ की तरह भविष्य का पथ प्रदर्शन करने वाली रही है।

भारत मे बहुत से साम्राज्य आए और उजड गए। उनमे भिन्न-भिन्न संस्कृतियां या सभ्यतायें बनी और उजड़ती रहीं। परन्तु आर्यत्व की महिमा पर और उसके उच्च आदर्शों पर कभी आंच न आ सकी। शरीर मर गया, परन्तु आत्मा सदा अपनी अमरता का सन्देश देती रही। ऐसी भावना को ही हमें गुरुकुल संस्थाओ मे फिर से धीमे-धीमे पनपानी है। हमारे शिक्षा-केन्द्र या गुरुकुल, शिक्षा की व्यापारी दुकान न बनें, परन्तु पुण्यभूमिया बनें; जहां पहुंचते ही मनुष्य को सुख, शांति, साहस, धैर्य और ईश्वरीय जीवन का आनन्द मिलता हो, जहा मनुष्य नतमस्तक होकर आता हो और अपनी झोली को 'दैवी संपत्' से भर कर ससार मे यह सपत् बाटता हो या बिखेर देता हो। यही हमारी लक्ष्मी पूजा है, इसी में हमारी सरस्वती वन्दना है और पुण्यभूमि की अर्चना है—"इड़ा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुव: "।

वैदिक धर्म और आर्य समाज

इस सब के बाद मुझे आपको वैदिक धर्म, आर्यसमाज तथा महर्षि दयानन्द के विषय मे भी कुछ कहना है। यद्यपि ये तीनो अलग-अलग हैं परन्तु तीनो मे एक समन्वय भी है।

वैदिक धर्म हमारी सभ्यता, संस्कृति,दर्शन, आचार, मर्यादाओं आदि का आधार है, जिसके बिना हम खडे नहीं हो सकते। आर्यसमाज या आर्य राष्ट्र एक समाज-रचना या राष्ट्र-रचना का विशिष्ट विधान है जो सब संसार को, प्राणिमात्र के उपकार के उद्देश्य से, मानव को मानव से भाईचारे में जोड देता है। यहा। "वसुधैव कुटुम्बकम्" का आदर्श सामने आ जाता है। इस दिशा को दिखाने वाला महान नेता दयानन्द है, जिसने हमें अपने भूत, वर्तमान और भविष्य के लिए उद्बोधित किया है। हम औरों की दृष्टि मे बहुत पिछड गए प्रतीत होते हैं। इसी से जागरूक होने की आवश्यकता है। हमारे आर्य नेता जागरूक नही, इसी से कहता हू —"वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता:", "अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु", "देवसेना: सूर्यकेतव: प्रचेतस अमित्रान् नो जयन्तु", "कृतं (सत्य) मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहित:" इत्यादि

निरुक्त मे महर्षि यास्क ने, जो एक पारसी ऋषि थे, हमे परमात्मा के दो विशेष वैदिक नामो का परिचय दिया है— प्रथम 'राष्ट्री' और द्वितीय 'अर्य'। ब्रह्माण्ड राष्ट्र का राष्ट्रपति राष्ट्र परमात्मा है और 'अर्य' अर्थात् संसार का स्वामी या मालिक। "अर्यस्यापत्य.',आर्य: अर्थात् ईश्वरपुत्र, हम 'अर्य' परमात्मा के पुत्र हैं। इसीसे आर्य मानव हैं। सारा संसार हमारे पिता का राष्ट्र है, इसी से सब संसार हमारा राष्ट्र है। उसके उत्तराधिकारी हम 'राष्ट्रीय आर्य हैं।इसी से कहता हूं.—

शृण्वन्तु विश्व अमृतस्य पुत्रा:। कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।

आर्यत्व में भद्रता है, उच्च चारित्र्य(Nobility) है। संसार को इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है। भौतिक विज्ञान की तरक्की ने लौकिक अभ्युदय में महान् सिद्धियों को प्राप्त करते हुए अभ्युदय का मार्ग प्रशस्त किया है,। परन्तु आर्यत्व या नि.श्रेयस् नही दिया है। यही अब भारतीय संस्कृति में पोषित शिक्षणालयों से अपेक्षित है।

इस समय हमको शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उन्नति के मार्ग पर चलना है। हमारे कुछ स्नातकों को जर्मनी, फ्रांस, इटली आदि प्रदेशो में मान्यता मिली थी, जिससे स्नातक बनने के बाद कुछ स्नातको ने सीधे ही उन प्रदेशों के विश्वविद्यालयों से उच्चतम उपाधिया प्राप्त की थीं। अब हमें भारत सरकार से मान्यता प्राप्त होने से दूसरे देशों में भी मान्यता प्राप्त हो रही है। इसमें अधिकारिवर्ग धन्यवाद के पात्र हैं। हमारा उद्देश्य महान् होना चाहिए। हमारा विश्वविद्यालय "सार्वभौम आर्य विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगडी" के रूप में पनपे। ससार के सब देशो के विश्वविद्यालयों से हमारा सम्पर्क बढ़े, उनसे सहायता प्राप्त करने में संकोच न होना चाहिये। संसार की भिन्न-भिन्न राज्य-संस्थाओं और राज्याधिकारियो को भी सम्मानित कर उनसे सब तरह की सहायता लेनी चाहिए। प्रत्येक देश की अपनी विशाल शाला (Wing) हो, जिसमें उस देश की सर्वोत्कृष्टता को ग्रहण करने मे कभी संकोच न हो, उनकी भाषा, दर्शन, विज्ञान आदि सहज में प्राप्त होते हो। संसार के बड़े परोपकार कृत्यों को करने वाले सस्थानों (Foundations) से सम्पर्क कर उनसे विशिष्ट आर्थिक सहायता भी हमे लेनी चाहिए, क्योंकि हमारे उद्देश्यों में 'सारे ससार का उपकार करना' भी एक है। इसमे, संक्षेप से, उन्नतिपथ की तरफ आपका ध्यान खींच रहा हूं, आशा है, आर्यसमाज तथा गुरुकुल के अधिकारीगण इस पर विशेष ध्यान देंगे।

जब हम गुरुकुल में पढ़ते थे तो जामिया मिलिया, देवबन्द आदि विद्यालयों के विद्यार्थी हमारे यहां आते थे, हम उनके स्थानों पर जाते थे, आपस में वाक्प्रतियोगितायें होती थीं, कभी कोई प्रथम होता था, कभ कोई। कभी कोई वैमनस्य पैदा नहीं हुआ। क्या यह प्रथा अब अपनी विशालता को पनपा नही सकती? हमको समन्वयात्मक धर्म, संस्कृति, सभ्यता आदि को सार्वभौम दृष्टि से पैदा करना है—"एष आदेश, एष निर्देश: एष सन्देश, एषा वैदिकी उपनिषद्।"

प्रिय नवस्नातको! अन्त मे "सत्य वद", "धर्मं चर" के ऋषियों के सनातन शिक्षा-आदेश या दीक्षा की तरफ ध्यान दिलाते हुए यह कह कर समाप्त करता हूं कि "सत्यस्वरूप परमात्मा के विषय में प्रवचन करना और चिन्तन करना, सत्य के दर्शन से धर्म के स्वरूप को समझते हुए उससे कभी निरपेक्ष न होना, परन्तु सदा उस पर आचरण करते रहना" यही "सत्यं शिव सुन्दरं" का प्रशस्त मार्ग है। यह तुम्हें सदा प्राप्त होता रहे। अपने प्रेम, सद्भावना, सहृदयता तथा शिक्षा-सस्थान (गुरुकुल) की उन्नति में सदा अग्रसर रहने में सहायक होना—यह कहते हुए तुम्हारा सस्नेह अभिनन्दन करता हूं। गुरुकुल विश्वविद्यालय के सब अधिकारिवर्ग तथा गुरु-जनों के सामने नतमस्तक होकर अपनी श्रद्धा के सुमन उपस्थित करता हूं। स्वामी श्रद्धानन्द जी की आत्म-ज्योति आपको सदा प्रकाश देती रहे। प्रभु का सब पर सदा वरद हस्त बना रहे।

हिमालय की सुपुत्री पार्वती कहू। या गंगामाता के नाम कुलमाता को याद करू—कुछ भी हो—अपनी भावभीनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हुए कहना चाहूंगा—

जन्म यहीं मत्यु यही खेलूं यही आ आ कर।
हंसना रोना हो यहीं माता तेरे चरणों में॥

समाप्त करने से पूर्व 'कुलमाता की पताका' पर ध्यान दिलाता हू यह सूर्यज्योति से उज्वलित है। यही 'ओ३म' की सच्ची ध्वजा है—"सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।" इसका सदेश भी सामने रक्खो। इसमें श्रद्धा प्राप्त करो, सविता या सूर्यदेव के गुरुमन्त्र का भी मनन करो। इसे हम 'वेदमाता' के नाम से पुकारते हैं। यही हमारी 'वन्देमातरम् है।

"श्रद्धया सत्यमाप्यते।"
"सत्यमेव जयते नानृतम्॥

ओ३म शम्! ओ३म स्वस्ति!! ओ३म शान्ति:!!!

☆

भौतिकवाद से अध्यात्मवाद----

(पृष्ठ १ का शेष)

चेतना का सचार किया जिसके फलस्वरूप आज देश मे लगभग ३०० डी० ए० वी० संस्थाएं चल रही हैं। महात्मा हसराज जी को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए उन्होने अपने व्यक्तिगत अनुभव सुनाये और कहा कि १९२३ मे महात्मा हंसराज जी के नेतृत्व में लगभग ४ लाख मल्काने राजपूतों की शुद्धि की गई और हर्ष की बात यह है कि आज तक वे राजपूत अपने धर्म पर आरूढ है।

आर्य जगत् के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश जी द्वारा अध्यक्ष पद ग्रहण करने के पश्चात् प्रसिद्ध आर्य विद्वान प्रो० रतन सिंह ने अपने भाषण मे कहा कि किसी आदर्श व्यक्तित्व के लिए जितने सद्गुण अपेक्षित होते हैं, वे सब महात्मा हंसराज मे उपस्थित थे। महात्मा हंसराज जी की अन्तिम कामना यह थी कि डी० ए० वी० कालेज कमेटी मे आर्यसमाजी व्यक्तियों की सख्या मे वृद्धि हो और आर्य समाज का संगठन अधिक सशक्त बने। उन्होने कहा कि देश की अखण्डता व एकता की की रक्षा के लिए आर्य समाज को और अधिक शक्तिशाली बनाना आवश्यक है।

'आर्य जगत्' के यशस्वी सम्पादक, ओजस्वी वक्ता, श्री क्षितीश वेदालंकार ने कहा कि महात्मा हंसराज के समान महान व्यक्तित्व इतिहास में मशाल लेकर ढूढने पर मुश्किल से मिलता है। महात्मा जी युवावस्था में ही सब प्रकार की भौतिक समृद्धि की इच्छाओ का त्याग कर लोकहित कार्य मे कूद पड़े। वे किसी भी लोभ या भय से अपने मार्ग से तनिक भी विचलित न हुए। महर्षि दयानन्द द्वारा बतलाये गये संसार के उपकार अर्थात् शारीरिक, आध्यात्मिक व सामाजिक उन्नति के लक्ष्य के प्रति महात्मा हंसराज जी सर्वात्मना समर्पित रहे और इसी उद्देश्य की पूर्ति का आधार उन्होने डी०ए०वी० आन्दोलन को बनाया।

डी० ए० वी० कालेज चण्डीगढ के प्रिंसिपल श्रीकृष्ण सिंह आर्य ने कहा कि शिक्षा क्षेत्र मे महात्मा जी का योगदान अद्वितीय है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल वानप्रस्थ ने कहा कि वर्तमान मे आर्य समाज के पास साधन तो बहुत है, परन्तु त्यागी व्यक्तियो की कमी है। हमे महात्मा हसराज के जीवन से त्याग की प्रेरणा लेनी चाहिए। आपने भारत सरकार से अनुरोध किया कि जो सुविधाएं अल्प संख्यक वर्ग की शिक्षण संस्थाओ को प्राप्त है, वे ही सुविधाए डी० ए० वी० शिक्षण संस्थाओ को मिलनी चाहिए।

श्री प० शिवकुमार शास्त्री ने शिक्षण सस्थाओ मे व्याप्त अनुशासन हीनता पर चिन्ता प्रकट करते हुये कहा कि डी० ए० वी० सस्थाओ के छात्रो मे अपने गुरुजनों के प्रति जो आदर भाव देखने को मिलता है, वह अन्य संस्थाओं के लिए अनुकरणीय है।

इस अवसर पर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि स० के मन्त्री रामनाथ सहगल का आर्य समाज के प्रति की गई सेवाओ के लिए अभिनन्दन किया गया। साथ ही प्रिंसिपल शान्ति नारायण, प्रि० आर० एन० मेहता, श्री कंवल सूद, श्री वी०वी० गक्खड़, श्री तिलकराज गुप्ता, प्रि० आत्मा राम शर्मा का डी०ए०वी० आन्दोलन के प्रति की गई विशिष्ट सेवाओं के लिए अभिनन्दन किया गया और स्वर्ण पदक भेट किये गये। डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के महामन्त्री डा० धर्मपाल सेठ ने सम्मानित महानुभावो का परिचय प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के अन्त मे हंसराज माडल स्कूल पजाबी बाग व कुलाची हंसराज माडल स्कूल अशोक विहार के छात्र-छात्राओ ने महात्मा हसराज जी के जीवन की घटनाओ से सम्बन्धित कलापूर्ण प्रभावशाली नाटक प्रस्तुत किये जिनसे जनता भाव-विभोर हो गई।

पं० भूदेव शास्त्री का निधन

अजमेर स्थित महर्षि दयानन्द निर्माण न्यास के पूर्व मत्री भूदेव शास्त्री एम० ए० एम० एड० सिद्धान्त शिरोमणि (69 वर्ष) का हृदय गति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। वे विद्वान, ओजस्वी वक्ता और मिशनरी कार्यकर्ता थे। उन्होने गुरुकुल वृदावन मे आर्य सिद्धान्तो का विशेष अध्ययन किया और सन् 1938 मे मेरे साथ ही स्नातक हुए थे। बलवन्त राजपूत कालेज आगरा, केन्द्रीय हिंदी सस्थान आगरा और प० जियालाल ट्रेनिंग कालेज अजमेर मे वे प्राध्यापक रहे। आर्य साहित्य का प्रकाशन और भारत तथा विदेश मे प्रचार करने की उनकी योजना थी। सस्कृत हिंदी और अग्रेजी तीनो भाषाओ मे वे निष्णात् थे। उनके पीछे उनकी पत्नी व बच्चे हैं। सब पुत्र योग्य एव कार्यरत है। केवल एक शिक्षित एम० ए०, बी० एड० कन्या का विवाह होना शेष था। भगवान उनकी आत्मा को सद्गति व परिवार के सान्त्वना प्रदान करे।-ब्रह्मदत्त स्नातक

हरजेंद्र नगर कानपुर का उत्सव

आर्य समाज, हरजेन्द्र नगर, कानपुर का वार्षिकोत्सव 10 से 12 मई तक मनाया जायेगा जिसमें पं० सत्यदेव शास्त्री प्रो० उत्तमचन्द 'शरर', श्री जयप्रकाश आर्य (पूर्व मौलाना खुर्शीद आलम), श्री वीरेन्द्र, श्री हरिसिंह, पं० ओम्प्रकाश तिवारी तथा डा० आशा रानी राय आदि पधार रहे हैं।—गंगाराम आर्य

अशोक विहार—१ का उत्सव

आर्य समाज, अशोक विहार, दिल्ली का उत्सव 6 से 12 मई तक ए ब्लाक के बस स्टाप के पिछे वाले पार्क मे मनाया जायेगा। प्रात 6 से 8 तक यज्ञ और कथा रात्रि 9 से 10 बजे तक प० जैमिनी शास्त्री की होगी। 12 मई को विशेष व्याख्यान आचार्य पुरुषोतम एम० ए० और आचार्य विक्रम एम० ए० के तथा भजन श्री गुलाब सिंह राघव के होगे।

बालेश्वर का उत्सव

वैदिक सत्संग आश्रम, छन्दासाहि (बालेश्वर) उडीसा का वार्षिकोत्सव 23 मार्च को स्वामी ब्रह्मानन्द जी की अध्यक्षता मे मनाया गया जिसमे आचार्य शिलिवास पाठी, प० नकुलदेव आर्य, प० प्रकाशानन्द, प० घनेश्वर और मणिचरण आदि ने भाग लिया। पूर्णाहुति के दिन हजारो नर-नारी उपस्थित थे।

जगदीश चन्द्र तलवार दिवंगत

आर्य अनाथालय, फिरोजपुर के, अवैतनिक अधिष्ठाता (भूतपूर्व) श्री जगदीश चन्द्र तलवार का 10 अप्रैल को उनके निवास स्थान 83A कीर्ति नगर नई, दिल्ली मे देहावसान हो गया। श्री तलवार ने बडी निष्ठापूर्वक (1970-1978) 8 वर्ष तक संस्था की सेवा की। उनके निधन पर एक शोक सभा आर्य अनाथालय, फिरोजपुर मे प्रि० पी० डी० चौधरी की अध्यक्षता मे हुई जिसमे शोक प्रस्ताव के बाद समस्त डी० ए० वी० शिक्षण संस्थाये बन्द कर दी गयीं। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति व सद् प्रदान गति करे।

आर्य समाज, फुलहरा का उत्सव

आर्यसमाज, फुलहरा (कटिहार) का वार्षिकोत्सव 4 से 6 अप्रैल तक सोत्साह मनाया गया। जिसकी अध्यक्षता श्री चमकलाल साहु ने की। प्रातः यज्ञ के बाद भजन और उपदेश हुए जिसमे ब्र० व्यासनन्दन विद्यारत्न, श्री सरयुग प्रसाद, श्री गोविन्द आर्य ने भाग लिया। कबीर मत के महन्त श्री हरिदास ने आर्य समाज की प्रशसा की और उत्सव मे सम्मिलित हुए।

ग्रीष्मकालिक साधना-शिविर

वेद सस्थान सी-22 राजौरी गार्डन नई दिल्ली (फोन-502316) मे ग्रीष्मकालिक साधना शिविर 20 से 26 मई तक लगाया जा रहा है जिसमे स्वामी दयानद विदेह, महात्मा दयानद डा० अभयदेव शर्मा, डा० बद्रीप्रसाद पंचोली, डा० फतहसिंह, डा० सुषमापाल मल्होत्रा और श्रीमती उषा शास्त्री आदि भाग ले रहे है। —चैतन्य मुनि

कबड्डी मे प्रथम

अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष के उपलक्ष्य मे आयोजित मदीर आर्य स्मृति कबड्डी चैम्पियन शिप प्रताप नगर से डी० सी० एम० टीम ने २—० से जीत ली। सेमीफाइनल मे प्रतापनगर ने किशान नगर को हराया। तरुण वर्ग मे बाग कडेवा ने मंगोलपुरी व सब्जीमण्डी को हराया। पुरस्कार वितरण आर्य समाज, प्रताप नगर मे हुआ। विजेताओ को श्री नरेन्द्र गुप्त ने शील्ड प्रदान की। अध्यक्षता श्री कुलानन्द भारतीय ने की। —चन्द्रमोहन आर्य

यज्ञ-परीक्षा-पुरस्कार

आर्य समाज, ताडीखेत, अल्मोडा मे 9 अप्रैल को महात्मा भक्तमुनि की अध्यक्षता मे 'राहुल सास्कृत्यायन-यज्ञ' प० प्रेमदेव शर्मा के ब्रह्मत्व मे हुआ। स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी ने 154 पुस्तकों के लेखक श्री राहुल के साहित्य पर आर्य समाज का प्रभाव' पर प्रकाश डाला।

इस समाज द्वारा आयोजित सत्यार्थरत्न परीक्षा मे नन्दावल्लभ प्रथम, चन्द्र शेखर पन्त द्वितीय एव कु० राधा पाण्डेय तृतीय रही। परिवार कल्याण उपलब्धि पुरस्कार प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र मे व्यक्ति रूप मे बसन्ती देवी दाई प्रथम, हीरादेवी दाई द्वितीय, भागीरथी विष्ट स्वास्थ्य निरीक्षिक तृतीय, श्यामसिंह नेगी स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता चतुर्थ तथा क्षेत्र गतरूप से यशोदा त्रिपाठी स्वास्थ्य निरीक्षिका प्रथम, भागीरथी विष्ट द्वितीय, बी० आर० आर्य तृतीय एव पूरनचन्द्र जोशी चतुर्थ स्थान पर रहे। उपरोक्त व्यक्तियो को 6 अप्रैल को पुरस्कृत और सम्मानित किया गया। डा० कच्चाहारी ने जन सख्या स्थिरता हेतु 'हम दो-हमारे दो' के सूत्र पर बल दिया। —त्रिलोक रावत

—आर्य समाज, कालपी, जालौन का वार्षिकोत्सव १२ से १४ मार्च तक सोत्साह मनाया गया। जिसमे महात्मा आर्य भिक्षु, डॉ० वीरेन्द्र बहादुर, श्री धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री और वेदपाल भजनोपदेशक आदि सम्मिलित हुए। —श्री प्रकाश जेतली

यू० १०३/१०८ लायसेंस द पोस्टबिदाउट प्रीपेमेन्ट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११९३/७२ डी० सी० 409

हिन्दुओं में विवाहित लड़कियों का जलना कैसे बन्द हो ?

शायद ही कोई दिन खाली जाता होगा, जब भारत में हिन्दू घरो मे एक या दो विवाहित लडकी जलकर न मरती हो, या न मारी जाती हो। वहुत से लडके-लड़किया शादो करने के लिए उत्सुक ता होते है, परन्तु कर नही कर सकते, क्योकि उनकी जन्म-जाति में कन्या वर नही मिलते। फलत: व्यभिचार बढता है। इसका उपाय केवल एक है कि लडके-लड़कियों में अन्तर्जातीय विवाह को प्रोत्साह न दिया जावे।

यह ठीक है कि विवाह गुण, कर्म स्वभाव के अनुसार होना चाहिए। हमारे पूर्वजो में ऐसी शादिया होती थी और हिन्दू समाज मे आदर की दृष्टि से देखी जाती थी। इसके उदाहरण निम्नलिखित है :—

(क) विदुषी विद्योत्तमा का विवाह कालिदास से हुआ जो एक गड़रिया (अनुसूचित जाति के) थे और बाद मे महाकवि कालिदास के नाम से विख्यात हुए।

(ख) कु० अक्षमाला (अनुसूचित जाति) का विवाह वशिष्ठ (ब्राह्मण) से हुआ। सन्दर्भ ३-२३-मनुस्मृति

(ग) कु० सत्यवती (मल्लाह की कन्या) का विवाह शान्तनु (क्षत्रिय राजा) से हुआ जिसने व्यास को जन्म दिया जो महाभारत के रचयिता विख्यात हुये। सन्दर्भ—भविष्य पुराण अ० ४२ श्लोक २२, २३ और २४

(घ) कु० श्वपाकी (अनुसूचित जाति) का विवाह पाराशर (ब्राह्मण) से हुआ। पाराशर गोत्र ब्राह्मणो में अभी तक प्रचलित है।

(ङ) उलूकी (अनुसूचित) देवी ने कणाद ऋषि को जन्म दिया। कणाद ऋषि ने छ शास्त्रो मे एक, जिसका नाम वैशेषिक दर्शन है, निर्माण किया।

(च) शुकी (अनुसूचित जाति) ने शुकदेव को जन्म दिया जिन्होंने भागवत पुराण की रचना की। ऋग्वेद मे स्पष्ट लिखा है, "अज्येष्टासो अकनिष्ठास एते स भ्रातरो वावृधु सौभगाय—अर्थात् मनुष्यो में न कोई बड़ा है न छोटा है। सब आपस मे बराबर के भाई है।

—डा० मदनपाल वर्मा, अधिष्ठाता, अन्तर्जातीय विवाह विभाग आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

विश्व आर्य सम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका की ओर से १४, १५, १६ दिसम्बर १९८५ को हीरक महोत्सव और विश्व आर्य सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है जिसके लिए सार्वदेशिक सभा की अनुमति मिल चुकी है। हम आशा करते है कि भारत से और अन्य देशो से अधिक से अधिक व्यक्ति यहाँ आकर इसे सफल बनायेंगे। इसके लिए आप अभी से निम्नलिखित तैयारियां चालू कर देवे —

१. अपना पासपोर्ट बनवा लेवें। उसमे प्रयास करके अन्य देशो के साथ साउथ अफ्रीका का नाम अवश्य लिखवा लेवें। सामान्यतया साउथ अफ्रीका के लिए भारत सरकार अनुमति नही देती है। पासपोर्ट के सम्बन्ध मे स्थानीय विदेश सर्विस के एजेंट आप को मार्गदर्शन दे सकेंगे। आप हमे भी लिखे, जिससे हम यहा का वीसा (Visa) फार्म आपको भेज सकें।
२. भारत की प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाएं सार्वदेशिक सभा से सम्पर्क स्थापित करें। सम्भव है कि उन्हे यात्रियो का अधिक कोटा न मिले, तो आप स्वतन्त्र रूप से प्रयत्न करे।
३. अन्य भाई वहन भी स्वतन्त्र रूप से पासपोर्ट की और यहा प्रवेश पाने की अनुमति का प्रयत्न करे।
४. अपने मार्ग व्यय और वास के लिए आवश्यक धनराशि इकट्ठी करें और एक्सचेंज के नियमो के अनुसार काम करें।
५. इस सम्बन्ध मे हम से भी शीघ्र पत्र-व्यवहार चालू कर देवें, जिससे हम आपको आवश्यक परामर्श और मार्गदर्शन दे सकें।

श्री एस० रामभरोस
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, साउथ अफ्रीका

पं० नरदेव वेदालंकार
सभापति
वेद निकेतन, साउथ अफ्रीका

३५ क्रास स्ट्रीट, ४००० १ डरवन, साउथ अफ्रीका।

महात्मा हंसराज जी का त्यागय जीवन हमें सदा प्रेरणा देता रहे

पूज्य महात्मा हंसराज जी द्वारा स्थापित

हंसराज महिला महाविद्यालय (लाहौर) जालंधर शहर

शुभकानाओं सहित

कु० कमला खन्ना प्राचार्या

योग्य वर चाहिए

२१ वर्षीय, एम० एस० सी० कर रही, सुन्दर सुशील, रंग साफ, नैन नक्श तीखे, स्लिम, कद ५ फुट ६ इंच, पंजाबी आर्य कन्या के लिए योग्य वर चाहिए। सम्पर्क करें:—रामनाथ सहगल, मंत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली। (P)

आर्य अनथालय फिरोजपुर छवनी

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के कर कमलों द्वारा स्थापित और आर्य प्रादेशिक सभा द्वारा संचालित

भारतवर्ष का पुराना और उत्तरी भारत का प्रमुख अनाथालय

कुशल प्रशासक शैक्षिक ज्ञाता, उदार हृदय प्रबन्धकों की देखरेख में बालक-बालिकाओ के पालन-पोषण, शिक्षा आदि का उचित प्रबन्ध है।

आप सभी दानी महानुभाव इस पुनीत कार्य मे दान देकर पुण्य के भागी बने।—प्रि० पी०डी० चौधरी, मैनेजर आर्य अनाथालय, फिरोजपुर छवनी।

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स ७११७/१८ पहाड़ी धीरज, दिल्ली से छपवा कर कार्यालय, 'आर्य जगत्,' मन्दिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व— आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य-२५ रुपये | विदेश में ३० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४८, अंक २०, रविवार, १२ मई, १९८५ | दूरभाष : ३४३७१८

आजीवन सदस्य-२५१ रु० | इस अंक का मूल्य —६० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८५, दयानन्दाब्द १६० | ज्येष्ठ कृष्णा ८, २०४२ वि०

सुप्रीम कोर्ट ने भी फैसला दे दिया

देशभर में समान आचार-संहिता लागू हो

(विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

'मुसलमान पति जो कि साधन-सम्पन्न है, उसे अपनी साधन-विहीन परित्यक्ता पत्नी के गुजारे की व्यवस्था करनी होगी।" दिनाक २३-४-८५ को भारत के सर्वोच्च न्यायालय के पाँच न्यायमूर्तियों की बैंच ने मियां मोहम्मद खान की दण्ड संहिता की धारा १२५ के आधार पर की गई याचिका को रद्द करते हुए उक्त निर्णय दिया है। न्यायमूर्तियों ने मत व्यक्त किया है कि खान का यह कथन गलत है कि मुसलमानो पर यह धारा लागू नही होती क्योकि दण्ड सहिता की धारा १२५ सभी मतावलम्बियो पर समान रूप से लागू होती है और यह धारा 'परसन-लॉ' की परिधि से ऊपर है।

न्यायमूर्तियों ने इस बात को भी अस्वीकार कर दिया कि 'परसनल-लॉ' के आधार पर केवल सीमित अवधि तक ही गुजारे की व्यवस्था का प्रावधान है। उन्होने स्पष्ट मत व्यक्त किया कि जब तक परित्यक्ता पत्नी स्वयं अपना निर्वाह करने की स्थिति मे नही होती तब तक उसकी व्यवस्था उसके पति को ही करनी होगी। उन्होंने इस सम्बन्ध मे कुरान की कुछ आयतो की ओर भी सकेत किया। उन्होने मेहर की राशि को निर्वाह-राशि से सर्वथा असम्बद्ध घोषित किया। मेहर राशि के सम्बन्ध मे उनका मत था कि दण्ड संहिता की धारा १२३ [३] (बी) के आधार पर मेहर वह राशि है जिसे पत्नी विवाह के आधार पर प्राप्त करने की अधिकारिणी है।

इस सम्बन्ध मे विद्वान् न्यायमूर्तियो ने उन संस्थाओ और व्यक्तियो के प्रति खेद व्यक्त किया जो परसनल-लॉ की वकालत करने आगे आए। उन्होंने इस बात पर भी खेद व्यक्त किया कि सम्पूर्ण भारत देश मे समान आचार-संहिता का लागू होना मात्र कागजो और विचारों का ही विषय रह गया है, अत. राज्य का यह कर्तव्य है कि वह उसे लाग करने की समुचित व्यवस्था करे।

अकाली सिख विभाजन के कगार पर

विगत सप्ताह अकाली जगत् मे पर्याप्त हलचल रही। जहाँ एक ओर आतंकवादी संत भिंडरावाले के पिता के नेतृत्व मे सभी अकाली दलो को निलंबित कर एक तदर्थ समिति के गठन की घोषणा की गई वहाँ दूसरी ओर "मजहबी" सिखो ने एक समानान्तर "अकाल तख्त" निर्माण की घोषणा भी की।

तदर्थ समिति के गठन का एक अकाली नेता आत्मा सिंह ने प्रभावी शब्दों में समर्थन किया तो दूसरी ओर संत लोंगोवाल के शिविर से घोषणा की गई कि न तो उन्होने अकाली दल के नेतृत्व से त्यागपत्र दिया है और न उन्होने सरदार जोगिन्दर सिंह से किसी तदर्थ समिति के निर्माण की प्रार्थना ही की थी। उन्होंने पुनः इस बात को दोहराया है कि १७ मई ८५ को बुलाई गई दल की बैठक अपने निर्धारित कार्यक्रमानुसार की जा रही है।

भिंडरावाले के भाई जगजीत सिंह रोडे का कहना है कि संत लोगोवाल ने उनके पिता को पत्र लिख कर कहा था—पंथ के हित मे आप जो भी कदम उठायेंगे, वह हमे मान्य होगा। अकाली दल के दूसरे घटक के नेता सरदार तलवंडी ने भी नवगठित तदर्थ समिति का समर्थन किया है। सम्भावना यही है कि वे नई समिति में से संत लोंगोवाल, प्रकाशसिंह बादल और तोहड़ा को निकाल देने का प्रस्ताव करे।

वरिष्ठ अकाली नेताओं द्वारा भिंडरावाले के पिता सरदार जोगिन्दर सिंह की घोषणाओ पर प्रश्न-चिन्ह लगाए जाने के साथ ही अकाली राजनीति में भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो गई है।

बोकारो मे डी० ए० वी० शताब्दी प्रशिक्षण शिविर

डी० ए० वी० शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य मे ५ से १२ मई तक डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल सैक्ट-४ बोकारो स्टील सिटी मे वैदिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमे बोकारो, जवाहर विद्या मदिर राची, धूर्वा राची, भुवनेश्वर, दुर्गापुर, बासल, पतरातू, बरौनी, आग्रकुजू, बीना, अलकुसा, कुमुण्डा झरिया खूंटी आदि डी.ए वी. स्कूलो के १०० छात्रो ने भाग लिया। शिविर का उद्घाटन प्रो० वेदव्यास जी ने किया। श्री दरबारी लाल मुख्य अतिथि थे। प्रो० रत्न सिंह, पं० जयमगल शर्मा, डा० वाचस्पति कुलवन्त, डा० सूर्यप्रकाश स्नातक, और मेजर सच्चिदानन्द आदि ने अपने विचार रखे।

बनारसीदास चतुर्वेदी दिवंगत

हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार और भूतपूर्व सासद तथा स्वतन्त्रता सेनानी श्री बनारसी दास चतुर्वेदी का २ मई १९८५ को निधन हो गया। उनकी आयु ९३ वर्ष थी, एक सप्ताह पूर्व चिकित्सा के लिए उनको अस्पताल मे भर्ती कराया गया था, वही उनका निधन हुआ।

चतुर्वेदी जी ने हिन्दी में रेखाचित्र शैली की एक नई परम्परा डाली। क्रान्तिकारियो, स्वतन्त्रता-सेनानियो के लिए उनके मन मे बड़ा आदर था। उन्होने स्वतन्त्रता संग्राम के शहीदो की जीवनियो का सम्पादन प्रकाशन, उनके परिवारो की सहायता करने-कराने का यथाशक्ति प्रयत्न किया। वे १९५२ से १९६४ तक राज्य सभा के सदस्य रहे। वह नियमित रूप से डायरी भी लिखते थे। उनका पत्राचार हिन्दी की अमूल्य निधि है। भारत तथा विदेशो के अनेक महापुरुषो से उनका पत्र-व्यवहार था। अपने जीवन मे उन्होने एक लाख से ऊपर पत्र लिखे होगे।

भारत-प्रेमी विदेशी विद्वानो—जैसे थोरो, इमर्सन, रोमारोलां, टालसटाय, सी० एफ० एण्ड्रूज आदि का हिन्दी जगत् मे परिचय कराने का श्रेय उन्ही को है। प्रवासी भारतीयो के लिए भी उन्होने बहुत काम किया। आर्य विद्वानो से भी उनका अच्छा सम्पर्क था। श्रमजीवी पत्रकारो की स्थिति सुधारने मे उनका योग अविस्मरणीय है। 'विशाल भारत' के माध्यम से उन्होने अनैतिकता अभियान चलाया था, वह भी बहुत चर्चित रहा।

आओ सत्संग में चलें

साधक (ऋषि) और सिद्ध (देवता) की मन्त्रणा

—मनोहर विद्यालंकार—

सुमन्मा वस्वी रन्ती सूनरी।
सामः १६५४

सरूप वृषन्नागहीमो भद्रौ धुर्यावभि।
ताविमा उप सर्पत ।
सामः १६५५

नीव शीर्षाणि मृदवं मध्य आपस्य
तिष्ठति। शृङ्गेभिर्दशभिर्दशन्॥
सामः १६५६

ऋषि:-आजीगर्तिः शुनः शेपः। देवता-इन्द्र आपः। छन्द.--विराट। (स्वामी नंगेश्वरानन्द गायत्री सातवलेकर।)

शब्दार्थ—दुःख और निराशा के गर्त मे गिरा हुवा, सुख की कामना वाला साधक, सर्वव्यापक, सर्वसमर्थ और सब ऐश्वर्यों के स्वामी इन्द्र की स्तुति करता है कि—आप (सुमन्मा) सब ज्ञान विज्ञानो के सागर, सर्वज्ञ हो, (वस्वी) दुःख दारिद्रय पर आवरण डालने वाले सब प्रकार के धनो के स्वामी और सबके बसाने वाले हो, (रन्ती) सब तरह से (आनन्द) करने वाले और आनन्द के स्वरूप हो (सूनरी) सब का सुगमता से मार्ग दर्शन करने वाले हो, फिर मुझ पर आपकी कृपा क्यो नही है?

इस स्तुति और प्रार्थना के उत्तर मे वे प्रेरणा देते है —

हे साधक निराश मत हो, अपने स्वरूप को पहचान, तू (सरूप) मेरे समान चेतन, ज्ञानी, और आनन्द स्वरूप है (वृषन्) सब वसुओ को प्राप्त करने मे समर्थ है। (इमौ) ये दोनो (भद्रौ) सब प्रकार से कल्याण और सुख देने वाले (धुर्यौ) जीवन के लिये आवश्यक वस्तुओं को धारण करने वाले प्राण-पान अथवा ज्ञानेन्द्रिय रूप अश्व (उप सर्पतः) तेरे पास सदा उपस्थित रहते है (तो इमौ) इन दोनो को पहचान और इन का उपयोग कर और इनकी सहायता से (अभि आगहि) मेरे समीप आ, अर्थात् गुणो की दृष्टि से मेरे समान बन। परिणामत तेरे सब दुःख दूर होगे, निराशा समाप्त होगी ।

साधक कहता है-मैं तो यही चाहता हूं, इसका प्रयत्न भी कर रहा हू परन्तु मुझे मार्ग नही दिखाई देता। आप ही बताए, मैं क्या करु? भगवान उत्तर देते हुए उपाय बताते है —

(नीव) निराश (संकुचित) होने के बदले स्थूल (आशावादी) बन; इन्द्रियो को प्रकृतरूप मे ला, इन्हे विकृत मत होने दे। (शीर्षाणि मृद्वम्) अपने सिर मे स्थित इन इन्द्रियाश्वो के केन्द्रों को पवित्र और समर्थ बना, तब तू अनुभव करेगा कि वह सर्वव्यापक ऐश्वर्यशाली प्रभु (दशभि शृङ्गेभि दिशन्) इन दस इन्द्रियो के माध्यम से दसो दिशाओ मे मार्ग दर्शन करता हुवा (आपस्य मध्ये तिष्ठति) प्रत्येक कर्म के बीच मे सदा विद्यमान रहता है और मार्ग दर्शन करता है, लेकिन हम अपनी इन्द्रियो की अपवित्रता के कारण उसके निर्देशो को अनुभव नही करते ।

निष्कर्ष—१ मनुष्य को न कभी निराश होना चाहिये, न अपने को हीन या तुच्छ समझना चाहिये। वेद के अनुसार 'मो सम कौन कुटिल खल कामी' जैसी उक्ति अनुचित है। वेद तो "अहमिन्द्रो न पराजिग्ये कदाचन" मैं परमेश्वर सदृश ऐश्वर्य शाली हूं, मैं कभी पराजित और निराश नही होऊंगा, आदि भावनाओ को दृढ बनाने का संकेत करता है। हीन और निराशा मनुष्य के मनोबल को घटाती है, उसकी प्रकृष्ट गति मे बाधा पहुचाती है।

२ मनुष्य को कभी अपने को असहाय तथा निराश्रित नही समझना चाहिये। क्योंकि भगवान, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक और सर्व समर्थ है। 'स नः पितेव सूनवे' वह तो पिता की तरह कृपालु है, सर्वत्र, सदा मार्ग दिखाता और संकेत देता रहता है, उसे समझने और सुनने का अभ्यास करना चाहिये।

३. 'नीव मृद्वम्' का अर्थ श्री सातवलेकर जी ने किया है—अपने सिर को झुका कर, नम्रता पूर्वक समर्पण द्वारा उसके निर्देशो को समझ कर उस का साक्षात करना चाहिये। अर्थात् निराशा के साथ अहंकार का भी त्याग करना चाहिये। क्योंकि 'अहंकार' सबसे शक्तिशाली आवरण है, जो उसके निर्देशो को सुनने से वञ्चित करता है। नम्रता मनुष्य को निर्मल बनाती है।

४. मनुष्य को किसी काम को नीचा या ऊंचा नही मानना चाहिये, क्योंकि सब कामो के मध्य वह विराजमान है। अपने कर्तव्य को पहचान कर, उस के साधनो की पवित्रता को बनाए रख कर सदा कर्मों मे लगे रहना चाहिये। इसके साथ ही यह भी समझना चाहिये कि इस समय आने वाले दुःख और निराशा भी हमारे अपने कर्मों का फल है।

५ इन्द्रियाश्वो-या प्राणशक्ति की कभी उपेक्षा नही करनी चाहिये। इन की सहायता के बिना यात्रा पूरी नहीं हो सकती। लेकिन इन पर पूरा नियन्त्रण रखना आवश्यक है; अन्यथा ये ही हमें निराशा और दुःखो के गर्त मे गिरा देते है।

विशेष—इस त्रिक के ऋषि, देवता और छन्द शब्दो के अर्थ मिलकर संकेत करते है कि यदि मनुष्य निराशा और दुःखो के गर्त मे गिरने के बाद भी सुख की कामना करते हुए परमेश्वर को न भूलकर उस की स्तुति करता है, और स्तुति के अनुरूप, उस सर्वव्यापक ऐश्वर्यशाली के गुणो को धारण करने का प्रयत्न करता है तो वह प्रभु उसकी रक्षा करते हैं, उसे पुन दीप्त और विस्तृत विराट बना देते हैं।

पता—५२२ ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली—६

बहराइच के धर्मान्तरित मुसलमानों का पुनरावर्तन हो

सार्वदेशिक सभा की उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री से मांग

बहराइच के मुस्लिम बहुल क्षेत्र मे अपढ निर्धन नटो एवं कलन्दरो के सामूहिक धर्मान्तरण के सदर्भ मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री नारायणदत्त तिवारी को एक ज्ञापन भेजकर माग की है कि इस धर्मान्तरण को निरस्त करने और इसकी पुनरावृत्ति को रोकने के लिए समुचित प्रशासनिक कदम उठाये जायं और इसे रोकने के लिए आवश्यक कानून भी बनाया जाय।

उन्होने मुख्यामन्त्री को लिखा है कि अब यह स्पष्ट हो गया है कि भय, प्रलोभन व बल प्रयोग द्वारा किए गए इस प्रकार के धर्मान्तरण का लक्ष्य धार्मिकता को बढ़ाना नही अपितु राजनीतिक प्रभाव को बढाना है। यह भारत को मुस्लिम बहुल बनाने की व्यापक योजना का अग है जो खाडी के देशो से आए पेट्रो डालर की मदद से चलाई जारही है। उन्होने भारत सरकार को भी इस कुचक्र से सावधान किया है। लोक सभा के चुनावो के शीघ्र बाद ही यह काड हुआ है, इससे इसका राजनीतिक उद्देश्य और स्पष्ट हो जाता है।

श्री शालवाले ने उत्तर प्रदेश एवं भारत सरकार को देश की एकता, व अखण्डता की रक्षा के लिए उठाए जाने वाले पगो की सफलता के लिए आर्य समाज का पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया।—

सच्चिदानन्द शास्त्री, प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

युवा वर्ष

—कविवर प्रणव शास्त्री एम० ए० महोपदेशक—

आया-आया परम सुहावन युवा वर्ष यह आया है।
धरती माता ने प्रमोदमय स्वागत साज सजाया है॥ १॥

नई प्रेरणा नई चेतना जन-मन-गण में नाच उठी।
कर्म कसौटी कुशल कला से स्वर्णिम जीवन जांच उठी।
स्नेह, सत्य, सद्भाव उदधि मे उन्नति लहरे साच उठी।
महा बोध का वारि समुज्ज्वल घट-घट में उमड़ाया है॥ २।

युवा शक्ति की जागृति का है, उज्ज्वल वरद विहान सजा।
निशा निराशा भगे दिवस की, आशा का आह्वान सजा॥
सहयोगी बन पथ प्रशस्त कर गति का गौरव गान सजा।
श्रद्धा साहस, शुचि, संयम का शुद्ध संदेशा लायाँ है॥ ३॥

उठो-उठो हे युवको! आलस तन्द्रा दूर भगाओ तुम।
वैर विषमता त्याग आज समता के दीप जगाओ तुम।
राष्ट्र-प्रेम सत्संग रंग में मन को शीघ्र रंगाओ तुम।
त्याग याग की रचना का यह अनुपम अवसर पाया है॥ ४।

दुर्गुण, द्वेष, दोष, दुविधा का रूढ़िवाद का पतझर हो।
मन क्षेत्र में "प्रणव" उदारता का उगता नव अंकुर हो।
करुण कोकिला-कुल कूजित तरुवर पर पंचम स्वर हो।
तब समझो वासन्ती ने सुख शृंगार सजाया है॥ ५

गंगा की धारा सी निर्मल होवे जीवन-धारा हे!
मातृभूमि की रक्षा का ही ध्येय बने ध्रुव तारा हे!
सर्वांगीण विकास देश का सदा रहे बस नारा है!
मानवता का मान मनोहर सबको ही प्रिय भाया है॥ ६।

सु भाषित

अर्पण

कार्टेंगे, हम मां के बंधन काटेंगे
यह जीवन-बाती इसी हेतु निबटेगी
बांटेंगे, हम सब मा के दुख बाटेंगे
यह पूत प्रतिज्ञा कभी नही टूटेगी
अपनी प्रतिभा से मां की प्रतिभा चमके

अपनी तरुणाई मां की शक्ति बनेगी
वह ही शिक्षा जो मां के सपने पूरे
वह ही दीक्षा जो दुश्मन से जूझेगी
मेरे थे सब सखा, स्नेही, साथी
समिधा समान इस ध्येय के लिए आहुत

बाजी प्रभु बन बलिपथ पर बढ़ आए
बलिवेदी तरुण रक्त से सिंचित
ये ध्येय-सिद्धि-सोपान, सफलता-साक्षी
जागा फिर भारत, भारतवासी जागा
हर्षित, हृत्तन्त्री-नाद-विभोर आज मैं

आसेतु हिमाचल निरातक, भय-भागा
हे मातृभूमि! यह मन अर्पित है तुझको
वाणी-वैभव सब विद्या तुझ--समर्पित
है विषय वाङ्मय का अनन्य तू जननी!
यह मेरा नवरस काव्य तुझे ही अर्पित

—वीर सावरकर (मराठी से भावानुवाद बचनेश त्रिपाठी)

यह पत्र-कविता वीर सावरकर ने अपनी भाभी को उस समय लिखी थी जब उनके पति अण्डमान मे बन्दी थे। कविता बहुत लम्बी है, उसके कुछ अ श का ही भावानुवाद यहां प्रस्तुत किया जा रहा है। आशा है हमारे पाठकों में इससे समर्पण की भावना जागृत होगी।

सम्पादकीयम्

भिंडरावाले का भूत

श्री लोंगोवाल, श्री तोहड़ा, श्री तलवंडी और श्री बादल ने जेलों से छूटने के बाद जिस प्रकार के वक्तव्य दिये हैं, उनसे ऐसा नही लगता कि वे पंजाब की समस्या को सुलझाने में किसी भी दृष्टि से सहायक हो सकेंगे। उनके प्रति अत्यन्त सहानुभूति पूर्ण रुख अपनाने पर भले ही यह कहा जाय कि क्रोधाविष्ट सिख समाज में अपने [illegible] को पुनः सुस्थापित करने के लिए और उग्रवादियो के कोप से अपन आपको [illegible] के लिए उन्होने यह नीति अपनाई है। क्योकि इन सब नेताओ के बारे मे सिख [illegible] में यह धारणा फैली हुई थी कि इन सबने सेना के सामने आत्म समपण करके [illegible]का परिचय दिया है। इसलिए अपने आपको पुन सुर्खरू साबित करने के लिए वे इस प्रकार के बयान दे रहे हैं। परन्तु इस प्रकार के बयानों से उनकी बहादुरी सिद्ध नही होती, बल्कि उनकी कायरता पर बुजदिली का ठप्पा लग जाता है। नेता का काम जनता का सही मार्ग दर्शन करना होता है न कि जनता से डर-कर उसकी रौ में बह जाना। अकाली राजनीति शुरू से जिस प्रकार के नेतृत्व के सकट की शिकार रही है, वही परम्परा ज्यो की त्यो कायम है। अकाली नेता आज तक कभी भी दुमु ही बातो से और दो नावों पर सवार होने की नट बाजी से बच नहीं पाये।

यह ठीक है कि दिल्ली में आकर श्री लोंगोवाल ने जितनी सभाओं में भाषण दिये और प्रैस कान्फ्रेंन्सों में जो बयान दिये, उनसे काफी सजीदगी का आभास होता है। परन्तु इतने मात्र से यह नहीं समझा जा सकता कि इन अकाली नेताओं में कालोचित अक्ल के अभाव की बात अब नहीं रही। कुछ बुनियादी बातें ऐसी हैं, जिनके बारे में लोंगोवाल या तोहरा और बादल जब तक स्वय अपने मन में स्पष्ट नहीं हो जायेंगे, तब तक वे अपने अनुयाईयो को भी बरगलाते ही रहेंगे। उदाहरण के लिए स्वर्ण मन्दिर में सैनिक कार्यवाही को वे सिखो का अपमान मानते हैं और यह भी कहते हैं कि अकाल तख्त ने हमेशा दिल्ली के तख्त का मुकाबला किया है। इस दिल्ली के तख्ते से मुकाबले की चर्चा करते हुए वे उदाहरण मुगलकालीन तख्त का देते हैं। वे यह नहीं जानते कि अब दिल्ली का तख्त किसी गुलाम देश में सामन्त-वादी या साम्राज्यवादी सत्ता का तख्त नहीं है, प्रत्युत वह आजाद भारत के जनतत्र में जनता के द्वारा निर्वाचित सरकार का तख्त है।

आश्चर्य की बात यह है कि चाहे अकाल तख्त के मुख्य पन्थी हों, चाहे लोंगो-वाल आदि अन्य नेता हो, वे दिल्ली तख्त की चर्चा करते हुए कभी भी अंग्रेज कालीन दिल्ली तख्त की चर्चा नहीं करते। जिन अंग्रेजो के दिल्ली तख्त के सामने इन सिख-नेताओं ने "राज करेगा खालसा" वाली गुरवाणी का पाठ करना बन्द कर दिया था, जिनके चरण-चुम्बन को अपनी बहादुरी बताकर वे आज तक उसके गीत गाते नही थकते, और उसी कथाकथित बहादुरी के कारण वे अब भी ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ और ब्रिटेन की प्रधान मत्री श्रीमती थैचर को अपने साथ हुए काल्पनिक [illegible]था के निवारण के लिए मेमोरेण्डम देने में गर्व अनुभव करते हैं, उस दिल्ली तख्त की चर्चा क्यों नहीं करते ?

पर हम यहां एक और तख्त की ओर ध्यान खींचना चाहते हैं, जिसके कारण दिल्ली तख्त को या अकाल तख्त को भी मान्यता प्राप्त होती है। अगर वह तख्त न हो तो न दिल्ली का कोई अस्तित्व होगा और न अकाल तख्त का। उस तख्त का नाम है—"भारत तख्त"। यह तख्त कहीं और नहीं, भारत के ७० करोड निवासियो के अन्तःकरण में विराजमान है। यह तख्त राष्ट्रीय एकता और अखण्डता का समर्थन करता है और जब कभी राष्ट्रीय एकता या अखण्डता पर सकट की घड़ी उपस्थित होती है तो इस भारत तख्त का एक-एक पुर्जा अपने तन-मन-धन को वार कर भी उसकी रक्षा के लिए सन्नद्ध हो जाता है। भारतीय जन-मन-गण के इस तख्त की अनुमति के बिना न दिल्ली के तख्त का अस्तित्व है और न ही अकाल तख्त का। श्री लोंगोवाल तथा अन्य अकाली नेता यदि अकाल तख्त को इस भारत तख्त के विरोध में खड़ा करना चाहेंगे तो यह अपने मन में ये निश्चय पूर्वक समझ लें कि जब तक भारत का एक-एक राष्ट्र भक्त मौजूद है, तब तक वह इस भारत तख्त को न लांछित होने देगा और न ही अपमानित होने देगा।

इसके साथ ही दूसरी बात जो जुडी हुई है, उसका समाधान भी अपने आप ही हो जाता है। यदि ये सिख नेता स्वर्ण मन्दिर मे सैनिक कार्यवाही को सिखो का अपमान समझते हैं तो क्या उनकी दृष्टि मे आतकवादियो द्वारा किया गया भारत का अपमान सिखो के अपमान से छोटा है। इनको प्रत्येक बात में सिखो का अपमान तो दिखाई देता है परन्तु अपने द्वारा किया गया भारत का अपमान दिखाई नही देता क्योकि उसके करने वाले उनके सिख बन्धु हैं। हम यह जानते हैं कि समस्त सिख समाज के लिए यह बात सही नहीं है। और न ही सिखो का ८० प्रतिशत वर्ग उस भारत तख्त का अपमान सहने को तैयार है जिसका हमने ऊपर जिक्र किया है। परन्तु ये २० प्रतिशत लोग सारे देश की कनपटी पर अपनी पिस्तौल तानकर अपनी उचित अनुचित सभी प्रकार की मांगें मनवाना चाहते हैं। आश्चर्य तो तब होता है, जब एक ओर तो अकाली नेता यह कहते हैं कि हम हिंसावाद के समर्थक नही हैं और कोई सच्चा सिख कभी हिंसा नही कर सकता, क्योकि गुरुनानक का सन्देश तो आपस मे प्रेम करना सिखाता है। पर यही अकाली नेता इन्दिरा गाधी के हत्यारे बेअन्त सिंह को शहीद कहते और सतवन्त सिंह को सरोपा भेंट करते नही शरमाते। अगर वे सच्चे सिख नहीं थे, तो तुम्हारा उनसे क्या वास्ता!

जब लोंगोवाल जैसे जिम्मेवार नेता यह कहते हैं कि आपरेशन ब्लू स्टार के दौरान दोनो तरफ से गोलिया सेना ही चला रही थी और वहा जो भी लोग थे सब निहत्थे थे और परिसर में जो टनो गोलाबारूद और हथियार मिले वे खुद सेना ने वहा रख दिये थे, तो दूसरे नेताओं से सत्य की क्या आशा की जा सकती है? गनी-मत यही है कि अभी तक किसी अकाली नेता ने यह नही कहा कि इन्दिरा गाधी ने स्वय बेअन्त और सतवन्त को अपने ऊपर गोली चलाने का आदेश दिया था। ये अकाली नेता जिस तरह अपने बयान बदलते रहे हैं, उससे उनकी विश्वसनीयता सर्वथा समाप्त हो चुकी है और उनकी अपनी आतरिक कमजोरी तथा भीरुता प्रकट हो चुकी है। अगर तोहरा या लोंगोवाल ने कुछ भी दृढता दिखाई होती तो भिंडरा-वाले को भस्मासुर का रूप ग्रहण करने का अवसर न मिलता और न ही पजाब की समस्या सारे देश को बेचैन करने वाली समस्या बन जाती। एक तरफ गाधी जैसा नेता था जो चौरी-चौरा काण्ड के कारण सत्याग्रह आन्दोलन को स्थगित कर सकता था, भले ही उसके अपने ही साथी इससे कितने ही खिन्न क्यो न हुए हो, दूसरी ओर लोंगोवाल और तोहडा जैसे नेता हैं जो भिंडरावाले का और उसके उग्रवादी अनुया-ईयों का कभी खुलकर विरोध नही कर सके। अगर भिंडरावाले को स्वर्ण मन्दिर से निकालने के लिए लोंगोवाल या तोहडा ने आमरण अनशन की घोषणा की होती तो क्या पजाब का पासा पलट नही सकता था? अब भी अगर लोंगोवाल इस प्रकार की घोषणा करें कि जब तक आतकवाद समाप्त नही होगा, तब तक मैं समस्त अकाली आदोलन को वापस लेता हू तो क्या उससे पजाब की समस्या के समाधान का उचित रास्ता नहीं निकल सकता?

वास्तव में इन अकाली नेताओ की भीरुता का ही यह परिणाम है कि उनको अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए भिंडरावाले के भूत का सहारा लेना पडता है। उनकी इसी कमजोरी को भाप कर उग्रवादियों ने भिंडरावाले के ८५ वर्षीय वृद्ध पिता श्री जोगेन्द्र सिंह को माध्यम बनाकर अकाली दल के दोनो धडों को समाप्त करने की घोषणा करवा दी और ६ व्यक्तियो की तदर्थ समिति बनाकर पुन अकाली आंदोलन की सारी कमान बदनाम आतंकवादी नेताओं को सौंपने की तैयारी कर ली। अब श्री लोंगोवाल को अपनी भीरुता के इस परिणाम की भयकरता का आभास हुआ, तभी उन्होंने कहा कि मैंने कोई इस्तीफा नहीं दिया और अकाली दल भग भी नहीं हुआ, बल्कि वह बरकरार है। मजेदार बात यह है कि तलवंडी ग्रुप जोगेन्द्र सिंह के साथ है और वह राजनीति से सर्वथा शून्य इस बूढ़े आदमी को अपनी गोटी बनाकर लोंगोवाल को मंच से हटाने पर तुले हैं। किसी अकाली नेता में आत्मिक बल हो तो रास्ता निकल सकता है, नहीं तो भिंडरावाले का यह भूत अकालियों का सर्वनाश करके छोड़ेगा।

१० मई १८५७ की कहानी

—बी. पी. सारस्वत—

सन् १८५७ का महान संघर्ष भारत में अंग्रेजी कम्पनी सरकार का अन्त करने के लिए सामूहिक तथा व्यवस्थित रीति से मुक्ति के लिए प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम था। इसका उद्देश्य भारत से अंग्रेजों को सशस्त्र क्रांति के माध्यम से देश से निकालने का था। इस वस्तुस्थिति को लगभग सभी इतिहासकर स्वीकार कर चुके हैं। ब्रिटिश सेना के भारतीय सैनिकों ने इस समय योजनाबद्ध तरीके से विद्रोह करके इसमें सक्रिय हिस्सा लिया था। इसलिए अंग्रेजी शासन ने इसे 'सिपाही गदर' का नाम दे दिया और छोटे रूप में इसे गदर के नाम से पुकारा जाने लगा।

भारत के हिन्दू व मुसलमान उस समय जिस प्रकार के स्वतन्त्र राज्य की कल्पना कर रहे थे, उसे इतिहास कभी नहीं भूल सकेगा। जब भी हम साम्प्रदायिकता पर प्रहार करने का संकल्प दोहराते हैं, या भारत के राष्ट्रीय गौरव की बात करते हैं तो देश के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के अपने अमर शहीदो के प्रति श्रद्धांजलि अर्पण करने मे हमें गर्व का अनुभव होता है। १८५७ में आम जनता के चितेरों को कुचल दिया गया। कही उनसे भी कुछ भूले हुई, तो अग्रेजों के कुचक्र इसके लिये जाल बिछाये हुए थे। कुछ हमारे ही लोगो ने जाने अनजाने विश्वासघात भी किया और भारत माता फिर से गुलामी की जंजीरो से जकड़ दी गई।

१८ जनवरी सन् १८५८ को एक सीताराम बाबा ने मैसूर के जुडिशियल कमिश्नर के समक्ष बयान मे यह कबूल किया था कि नाना साहब ने उस समय क्रांति की एक योजना बनाई थी। सबसे पहले सिन्धिया राजमाता से सम्पर्क स्थापित किया गया था। उत्तर भारत से हैदराबाद तक के राजाओं से सम्पर्क स्थापित किया गया, पत्र लिखे गये थे। पत्र १८५५ के वर्ष मे लिखे गये थे ऐसा सीताराम बाबा ने बयान दिया था। बादशाह बहादुर शाह से भी सम्पर्क किया गया था। १८५७ के विषय मे महाराष्ट्र राज्य सरकार अब प्रकाशित सामग्री के खण्ड १ मे भी इस बात के संकेत मिलते हैं जिनसे इस प्रकार के सम्पर्क की पुष्टि होती है।

नाना साहब के सलाहकार व वकील अजीमुल्ला खा लंदन भेजे गये थे। अजीमुल्ला अंग्रेजी, उर्दू भाषा के विद्वान थे तथा फ्रांसीसी भाषा का भी समुचित ज्ञान रखते थे ब्रिटेन मे ये मलिका विक्टोरिया तक से मिले थे। नाना साहब के मामले में उसी तरह उन्हे निराश होना पड़ा जैसे उनके साथ सतारा के वकील रंगोजी बापू को भी इसी हाल मे लौटना पड़ा था। ऐसे ही झांसी की रानी का भी मामला नही सुलझा था। वाजिद अली शाह के भेजे हुए लोग भी पहले इसी तरह लौट कर आ चुके थे।

अजीमुल्ला खा लन्दन की ऊंची सोसायटी में बहुत प्रसिद्ध हुए। लन्दन से लौटने पर उनके पास वहां स्त्री पुरुषों के पत्र आते रहते थे। लौटते समय वे फ्रांस, इटली, रूस व टर्की होते हुए आये थे। क्रीमिया की लड़ाई उन्होंने पास से देखी थी जहां वे रसेल के कैम्प में रात भर रहे भी थे। उनकी डायरी में, जो बाद को मिली है, ऐसी बातों का जिकर है। पत्रकार रसेल ने भी उनके विषय में लिखा है। पश्चिमी जीवन, शासन, राजनैतिक गतिविधि तथा समाचार जगत से वे प्रभावित हुए। स्वभावतः भारतीय क्रांति की पृष्ठ भूमि वे इसी दौरान बना लेने की मनस्थिति में हो चुके थे।

नाना सहब, तात्या टोपे व अजीमुल्ला खां सारी परिस्थितियों के बीच भारतीय क्रांति की भूमिका बनाकर व्यक्तिगत सम्पर्क के लिए तीर्थ यात्रा के नाम से भारत के विभिन्न स्थानों पर घूमते रहे। तीर्थ यात्रा के साथ साथ नाना साहब भारत के प्रमुख नगरों में गये और जहां छावनियां थी वहां पर रुके भी। मेरठ मे नाना साहब मकान किराये पर लेकर रहे। छावनी के अंग्रेजों से भी दोस्ती की। बाद में कई अंग्रेज गवाहों ने यह कबूल किया है कि अमुक अंग्रेज अधिकारी नाना साहब के घोड़े पर चढ़ना पसन्द करता था।

तात्या टोपे बड़ी चतुराई से ब्रिटिश सेना के भारतीय सैनिक अधिकारियों से मिल रहे थे। सौभाग्य से इन्हें मद्रास प्रान्त के अर्काट नगर के मौलवी अहमद उल्लाह शाह जैसे धार्मिक आधार के लोग भी मिल गये जो कि मिशनरी की हैसियत से अंग्रेजों को भारत से निकालने का संकल्प लिये हुए थे। उनके गुरू ने मौलवी से ऐसा ही वचन लिया था। मौलवी उर्दू, फारसी, अरबी, अंग्रेजी आदि भाषाओ के ज्ञाता थे। उन की सवारी के आगे झण्डा और नगाड़ा चलता था। बाद को यह फैजाबाद के मौलवी के नाम से प्रसिद्ध हुए। कर्नल मैलेसन लिखता है कि मौलवी ने अवध के अंग्रेजी राज्य में मिलाये जाने पर आगरा, देहली, मेरठ, पटना व कलकत्ता के चक्कर लगाए। उन पर मुकदमा चला और प्राणदण्ड की सजा हुई। लेकिन उसी दिन फैजाबाद में विद्रोह होने से उन्हें जेल से छुड़ा लिया गया।

हरिद्वार का कुम्भ मेला 1856 में हुआ था जहां चंडी मन्दिर में दयानन्द के स्थान पर स्वामी दयानन्द ठहरे थे। वहीं नाना साहब, तात्या टोपे व अजीमुल्ला भी उनसे मिले थे। झांसी की रानी लक्ष्मी बाई ने भी स्वामी जी के दर्शन किये थे, और उन्हें भेंट दी थी। स्वामी दयानन्द ने अन्य लोगों से भी जो भेंट मिली सभी मिलाकर नाना साहब को क्रान्ति के कार्य के लिए दे दी थी।

स्वामी दयानन्द को विरजानन्द के गुरु पूर्णानन्द ने सन्यासियों की क्रान्ति-कार्य की गुप्त बैठक का संकेत दिया था। इधर अंधे गुरू विरजानन्द मथुरा के पास जंगलों में हिन्दू साधुओं व मुसलमान फकीरों तथा राजा जमींदारों के बीच नाना साहब, अजीमुल्ला, बादशाह के लड़के आदि से सन् 1856 भादों मास में मिले थे जिसका जिकर मीर मुश्ताक मीरासी के उपलब्ध पत्र से मिलता है।

जाहिर है कि जनता के सभी वर्ग अंग्रेजों से दुखी थे। व्यापारी किसान, जागीरदार, सैनिक, कारीगर, हिंदू, मुसलमान आदि। जनता में इस प्रकार का प्रचार था कि प्लासी की लड़ाई जून 1757 को हुई थी। अब सौ साल के बाद अंग्रेजों के दिन पूरे हो गये हैं, इसलिए इन्हें भगाने के कार्य मे सभी को लग जाना चाहिए। यह आम चर्चा का विषय था तथा गुप्त सभाओं मे इस पर विचार होता था। ये तथ्य आबू से अजमेर-दिल्ली-हरिद्वार की पैदल यात्रा द्वारा कुम्भ के मेले में जाते हुए स्वामी दयानन्द ने उजागर किये हैं।

गांव गाव व नगरों मे चपाती भेजना तथा छावनियों में लालकमल भेजना और मिलने पर इसी तरह उसे आगे भेज देने का क्रम बना हुआ था। यह तैयारी का गुप्त संदेश सब जगह मिल रहा था। चपातियों के बारे में बाद कई अंग्रेज अधिकारियों ने लिखित सूचना दी। गुप्त व्यवहार पर भी लेफ्टिनेन्ट जनरल इनेस ने लिखा है। कप्तान कीटिंज ने चपातियों के सम्बन्ध मे लिखा है।

लार्ड केनिंग ने कानून बना दिया कि हिंदुस्तानी सैनिक समुद्र पार भेजे जा सकते हैं। समुद्र पार जाने में भारतीय सैनिक उस समय में धर्म की हानि समझते थे। दूसरी ओर सर जान केय ने लिखा है कि इसमें सन्देह नहीं कि कारतूसों के मसाले में गाय व सूअर की चर्बी का प्रयोग हुआ था। इस स्थिति ने पिसते भारतीय किसानों के बेटों में जो फौज में भर्ती थे, और भी आग में घी डालने का काम किया।

क्रांतिकारियों की योजना थी कि 31 मई 1857 को सभी स्थानों पर एक साथ क्रांति हो। आस पास की सारी सेना दिल्ली पर कब्जा कर ले। वहां बादशाह की पताका लाल किले पर फहराकर 23 जून 1857 को कलकत्ता पर कब्जा कर लिया जाय जो अंग्रेजों की राजधानी बना हुआ था। 23 जून का दिन प्लासी की लड़ाई की शताब्दी का दिन था। सभी केन्द्र व छावनियां बड़ी बेकरारी से 31 मई 1857 के दिन का इन्तजार कर रही थीं। बहुत से स्थानों पर ठीक 31 मई के दिन ही क्रांति प्रारम्भ की गई।

मेरठ में तजरुबे के तौर पर 6 मई 1857 को 90 भारतीय सवारों की तीसरी रेजीमेंट की एक कंपनी को ये कारतूसें दी गईं। 85 सवारों ने कारतूसों को दांत से काटने से मना कर दिया। फौजी अदालत में केस चला और 9 मई को इन्हें दस-दस साल की कैद हो गई। इन्हें हथकड़ी-बेड़ी डालकर घुमाया गया। इस घटना को देखने छावनी के सभी सिपाही बुलाये गये। उम्मीद थी कि सख्त सजा देख सिपाही काबू में आ जावेंगे। यह घटना सुबह घटी तो बाद में क्रोध में भरे सिपाही गुप्त बैठकों में जोश मे भर गए। उनके नेता शांति से काम लेने के लिए समझा रहे थे कि 31 मई आ जाने दो और सब्र से काम लो।

शाम को सिपाही शहर में घूमने निकले। मुरादाबाद का तत्कालीन जज लिखता है कि शहर मे नारियों ने सैनिकों को यह कह कर लांछना दी—छिः तुम्हारे भाई जेलखाने में हैं और तुम बाजार में मक्खी मार रहे हो। तुम्हारे जीने पर धिक्कार है।

सैनिकों के लिए अब धीरज रखना असंभव हो गया। वे 31 मई का ध्यान खोकर उतावले हो उठे। सैनिक व मेरठ के नागरिकों ने मिलकर 10 मई 1857 को ही जेलखाना तोड़ दिया तथा अपने कैदी छुड़ा लिए। मेरठ भारत की मुख्य छावनियो मे से थी। अंग्रेजी सेना मेरठ छावनी मे बहुत कम थी। ऐसी परिस्थिति में वे कुछ नही कर सके। 10 मई 1857 की रात्रि को ही छावनी छोड़कर सारी फौज के भारतीय सैनिक दिल्ली की ओर चल दिये। 1857 की राज्य-क्रांति में 10 मई अविस्मरणीय है।

गंगापुर में आर्यवीर दल शिविर

आर्य उप प्रतिनिधि सभा, जिला सवाई माधोपुर की ओर से आर्य समाज, गंगापुर सिटी में आर्य वीर दल शिक्षण शिविर १० से २६ जून तक लगाया जायगा।

—मदन मोहन आर्य

—श्री नरेन्द्र कुमार सपुत्र श्री देवराज (तलवण्डी) का शुभ विवाह २१ अप्रैल को महात्मा प्रेम प्रकाश जी वानप्रस्थी ने सम्पन्न कराया वर पक्ष की ओर से श्री चिरंजीलाल ने १०१) रु० वानप्रस्थाश्रम [illegible] को दान दिया।

महात्मा हंसराज और डी० ए० वी० संस्थायें : समय की लहर और उसके नए तकाजे

—स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती—

महात्मा हंसराज जी का जन्म दिवस १९ अप्रैल १८६४ है। इस वर्ष दिल्ली नगरी के तालकटोरा स्टेडियम के भव्य भवन में उनका जन्म-समारोह २१ अप्रैल १९८५ को मनाया गया, जिसकी अध्यक्षता मैंने की थी, और भारतीय शासन के शिक्षा-मंत्री श्री कृष्णचन्द्र उसके मुख्य अतिथि थे। श्री कृष्णचन्द्र जी पन्त लखनऊ विश्वविद्यालय के स्नातक हैं, और उन्होने रसायन शास्त्र में एम. एस-सी. किया है। उनके पिता आदरणीय श्री गोविन्द वल्लभ पन्त प्रयाग विश्वविद्यालय के स्नातक थे, जिस विश्वविद्यालय में रसायन शास्त्र का अध्ययन और अध्यापन किया। प्रयाग विश्वविद्यालय और लाहौर विश्वविद्यालय— ये दोनों १८८७-८८ में स्थापित हुए थे।

महात्मा हंसराज, उनके सहपाठी पं० गुरुदत्त विद्यार्थी और लाला लाजपतराय जी ने १८८५ ई० में बी० ए० की उपाधि ली थी अतः स्पष्ट है कि हंसराज जी की उपाधि कलकत्ता विश्वविद्यालय की रही होगी, क्योंकि १८८५ में तीन ही विश्वविद्यालय देश में थे—कलकत्ता, बम्बई और मद्रास के। लाहौर का कालेज कलकत्ता विश्वविद्यालय से संबद्ध रहा होगा। पंजाब के विद्यार्थियों में गुरुदत्त का स्थान सर्वप्रथम था, और हंसराज जी प्रथम श्रेणी में तृतीय स्थान पर थे। इन तीनों सहाठियों में लाला लाजपतराय जो सबसे अधिक विख्यात रहे। महर्षि दयानन्द की मृत्यु १८८३ में हुई, उस अवसर पर गुरुदत्त विद्यार्थी अजमेर में उनके पास थे।

१८८५ ई० ऋषि दयानन्द की पुण्य स्मृति में लाहौर की आर्यसमाज ने दयानन्द विद्यालयों (D.A.V.) की स्थापना की आयोजना हाथ में ली। महात्मा हंसराज ने अपना जीवन इस शिक्षा कार्य के लिए अर्पित किया। हमारे देश के अनेक समाज सेवी नेता प्रारम्भ में अध्यापक रहे हैं। महाराष्ट्र के महात्मा गोपाल कृष्ण गोखले और बंगाल के ईश्वरचन्द्र विद्यासागर उन व्यक्तियों में से थे जिन्होंने अध्यापकों के वर्ग को गौरवान्वित किया। सर डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् भी जीवन भर अध्यापक रहे। महात्मा हंसराज ने आदर्श अध्यापक का जीवन व्यतीत किया। उनका समस्त जीवन शिक्षा-सेवा के लिए समर्पित था। डी. ए. वी० संस्थाओं द्वारा जो उन्होंने सेवायें की उनके लिए वे इतिहास में अमर रहेंगे। ऐसे महान् शिक्षा विद का न तो कोई प्रामाणिक जीवन चरित्र हमने प्रकाशित किया, न उनके लेखों, ग्रन्थों, और पत्रों को हमने सुरक्षित रखा है। दयानन्द-विद्यालयों की शती के अवसर पर हिन्दी और अंग्रेजी में हंसराज जी के लेखों, व्याख्यानों और पत्रों की बृहद् ग्रन्थावली प्रकाशित होनी चाहिए। यह काम डी० ए० वी० स्नातकोत्तर कक्षाओं के अध्यापकों से कराया जा सकता है—पर हमने अब तक इस कार्य की उपेक्षा ही की। अगर और कोई राष्ट्र होता, तो हंसराज ऐसे युग पुरुष के सम्बन्ध में बड़ा सुन्दर भव्य साहित्य कब का छप गया होता।

१९४७ मे हमारा देश स्वतंत्र हुआ। इस वर्ष से पूर्व हमारे देश के उदीयमान युवक और तरुण देश के उत्थान के लिए समर्पण की भावना से कार्य क्षेत्र में उतरते थे। भारतीय युवकों का यह स्वर्ण युग था। राष्ट्रीय विकास के प्रत्येक क्षेत्र में युवक सेवा की भावना से आगे आये। ये युवक सपनों पर जीवित थे। वे देश और मानवता के कल्याण के सपने देखते थे, और युवा काल में उन्होने अनेक प्रयोग भी किए।

महात्मा हंसराज के सामने क्या सपना था जिसके लिए उन्होंने अपनी तरुणाई और भविष्य के समस्त सामान्य अरमान समर्पित कर दिए? मेरा अपना विचार है, कि उनका सपना एक तो था कि शिक्षा की दिशा में मोड़ देना। साधारणतया दो प्रकार के विद्यालय थे एक तो सरकारी, और दूसरे, ईसाइयों के। हंसराज जी स्वयं आधुनिक तंत्र की शिक्षा के स्नातक थे— मेट्रिकुलेशन, एफ. ए., बी० ए०, आदि तंत्र वाली शिक्षा के इस तंत्र की शिक्षा के वे सर्वांग विरोधी न थे। उस तंत्र की पद्धति में कुछ सुधार चाहते थे— (१) नैतिकता और सदाचार, (२) विलासहीन सादगी, (३) राष्ट्र-प्रेम और भारतीय परम्परा के प्रति आदर, (४) शिक्षा में विज्ञान और तकनीकी का समावेश। संयोग से स्वामी दयानन्द की शिक्षा और उपदेश भी इसी दिशा में थे।

स्वामी दयानन्द की वेद, वेदांग, उपांग और उपवेद संबंधी जो आस्थायें थीं, वे भी इन्ही बातों का पोषण करती थी। देश में जो ईसाई स्कूल या मिशनरियों की संस्थायें थीं, वे परोक्ष और प्रत्यक्ष रूप से भारतीय परम्पराओ के विरुद्ध थी। भारतीय संस्कृति का ये निरादर करती थीं, और ये स्पष्ट रूप से भारतीयों को ईसाई बनाने के लिए उद्यत थी। स्वामी दयानन्द पहले भारतीय थे, जिन्होने आर्यावर्त्त के लोगों का मुसलमान या ईसाई बनाना राष्ट्र और राष्ट्रीयता के लिए घातक समझा। हंसराज जी और उनके सहयोगी भी इसी भावना के पोषक थे। ईसाई होना युरोपीय राष्ट्रों के पराधीन होने का पर्याय माना जा सकता है, और मुसलमान होना अरब, मुगल, तुर्क और फारस की पराधीनता का।

डी० ए० वी० संस्थाओं के माध्यम से महात्मा हंसराज (१) स्वामी दयानन्द के स्थापित मिशन आर्य समाज का पोषण करना चाहते थे, (२) देश के अशिक्षित वर्गों मे शिक्षा का प्रसार हो— गरीब से गरीब बालक भी गरीबी के कारण शिक्षा से वंचित न रहे, (३) डी. ए. वी. संस्थाओ मे शिक्षित विद्यार्थी अन्धविश्वासों और रूढ़ियो से मुक्त हों, और साम्प्रदायिकता से दूर रहें, क्योंकि नाना सम्प्रदायों ने ही देश की संघटित शक्ति को समाप्त कर दिया है। (४) दीनहीन और पीड़ियों की सेवा के प्रति डी. ए. वी. के अध्यापक और विद्यार्थी सदा उद्यत रहें।

दरिद्र भारत के प्रतीक

महात्मा हंसराज ने अपने जीवन का उत्सर्ग जिन स्वप्नों के साकार करने के लिए किया, उसके लिए आवश्यक था, कि वे अपने लिए दरिद्रय का वरण करे। उनका रहन-सहन, उनका घर, उनका दफ्तर, उनकी वेशभूषा, और उनका आहार इस बात का प्रमाण है। स्मरण रखना चाहिए, कि जिस समाज, संस्था या देश के नेता अमीर और विलासी होते हैं, वह समाज, संस्था और देश गरीब और मुहताज हो जाता है, और जिस समाज, संस्था या देश के पुरोधा, नेता गरीब, तपस्वी, और समर्पित होते हैं, वह समाज, संस्था और देश सम्पन्न, समृद्धिवान् और सशक्त होता है। महात्मा हंसराज ने जिस दयानन्द विद्यालय में दारिद्रय अंगीकार कर सेवायें की, उस विद्यालय का विद्यार्थी उनके तपोमय जीवन से अनुप्रेरित होकर देश के उत्थान का कारण बना।

तब के डी ए वी. कालेज और विद्यालय और आज की डी. ए. वी संस्थायें। तब और अब में कितना अन्तर है? इस प्रश्न पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए। दोनों मे अन्तर अवश्य है, स्वीकार करना होगा। पहले दरिद्र विद्यार्थी पढ़ता था, थोड़ी-सी फीस देने की भी उसमें क्षमता नहीं थी। आज अमीर विद्यार्थी पढता है, फीस बहुत लम्बी-चौडी, खर्चा बहुत, फिर भी एडमिशन मिलना कठिन। १९४७ के के भारत-स्वातन्त्र्य के बाद देश में एकदम इतनी अमीरी आ गयी!! अमीरी बुरी चीज नहीं है, यदि यह वास्तव में देश की समृद्धि की सूचक हो। महात्मा हंसराज के स्कूल के लिए रुपयों की हमेशा तंगी थी। भीख की झोली लेकर दान मागने के लिए निकलना पड़ता था, खर्च में कटौती करनी पड़ती थी, तब मुश्किल से विद्यालय का खर्चा निकलता था। किन्तु आज स्कूलों का खोलना भी अच्छा व्यवसाय बन गया है। कई वर्ष हुए, मैं मारिशस गया था। वहां मेरे पुराने परिचित मिले, जो प्रयाग विश्वविद्यालय में पढते थे। मैने बड़ी आत्मीयता से पूछा कि आप मौरिशस में क्या करते हैं। उत्तर मिला—दो स्कूल चलाता हूं। पहले तो मै नहीं समझा—पर बाद में मुझे अपने मित्र के उत्तर का अभिप्राय समझ में आया—स्कूल खोलना और चलाना मेरे मित्र की रोजी का साधन है। स्कूल खोल लो- यदि चल जाये, तो ये आपका और आपके परिवार का भरण-पोषण कर सकेंगे। वर्तमान युग मे बच्चों और तरुणों के विद्यालय जीवन के धन्धे बन गए हैं। यह है—शिक्षा का व्यापारीकरण। बैंको से कर्जा लीजिए, विद्यार्थियो के अमीर अभिभावकों का स्नेह प्राप्त कोजिए, विद्यार्थियों के जीवन स्तर को आधुनिकतम बनाइए। आपके विद्यालयों को धन का अभाव नहीं रहेगा। पिछले बीस वर्षों में बच्चों के उत्कृष्टतम विद्यालय इसी सिद्धान्त पर पुष्पित और पल्लवित हुए हैं। १८८५ और १९८५ के दयानन्द हाईस्कूलों में यही बड़ा अन्तर आ गया है। दरिद्र हंसराज इन सम्पन्न दयानन्द विद्यालयों का आज भी

(शेष पृष्ठ १० पर)

परोपकारिणी सभा के संरक्षण में ऋषि दयानन्द का सामान

—म० प० आचार्य विश्वश्रवा व्यास एम० ए० वेदाचार्य—

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मोक्ष प्रयाण से पूर्व २३ सज्जन पुरुषो की परोपकारिणी के नाम से अपनी उत्तराधिकारिणी सभा नियत करके उसके अधिकार मे सब चल-अचल सम्पत्ति कर दी। धन तथा वैदिक मन्त्रालय के अतिरिक्त पाँच प्रकार का अन्य सामान सौ वर्ष से परोपकारिणी सभा के पास है।

सार्वदेशिक सभा, किसी प्रान्तीय सभा, किसी आर्य नेता या किसी आर्य विद्वान् ने यह जानने की इच्छा नही की कि वह सामान क्या है। इसका परिणाम यह हुआ कि अनेक भूलें महर्षि के मिशन को चलाने में हुई।

दीवान बहादुर बा० हरविलास जी शारदा महर्षि के समय के व्यक्ति थे। वे कहते थे कि महर्षि ने मेरे कन्धे पर हाथ रख कर कहा था कि बेटा! मेरे बाद मेरा काम सभालना। यह कहते हुए उनकी आखो मे आसू आ जाते थे। वे जीवन भर परोपकारिणी सभा के मन्त्री रहे। शाहपुराधीश आदि कई व्यक्ति उनके काल मे परोपकारिणी सभा के प्रधान रहे। पर सदा दीवान बहादुर साहब की बात चलती थी। एक बार म० कृष्ण जी परोपकारिणी सभा के प्रधान थे। उनकी इच्छा हुई कि वे महर्षि के ग्रन्थो के हस्तलेखो को गुरुकुल कागडी ले जावें। दीवान बहादुर साहब ने कहा कि मेरी जिन्दगी मे एक पन्ना भी बाहर नही जा सकता।

पर आज यह स्थिति नही है। आज ऋषि के हस्तलेख फोटो स्टेट की दुकानो पर देखे गये और अजमेर से बाहर भी ले जाये जाते हैं।

दीवान बहादुर साहब को उन पण्डितो से बडी घृणा थी जो ऋषि के ग्रथो मे सशोधन चाहते थे। वे कहते थे कि हम उत्तराधिकारी हैं, सशोधक नही। मेरे लेख उन्होने पढे थे कि मैं स्वामी जी की कोई भूल नही मानता। तार देकर मुझे बुलाया और सब महर्षि का सामान समझाया। उसका वर्णन मैं इस लेख मे करता हू।

महर्षि का पाँच प्रकार का सामान

विशाल मुद्रित ग्रथ संग्रह

महर्षि के पास मुद्रित ग्रन्थों का बहुत बडा सग्रह था। अपने ग्रथ तथा मतमतान्तरो के जिन मतो का उन्होंने खण्डन किया। सब ग्रन्थ महर्षि के सग्रह में विद्यमान थे। अल्मारिया भरी हुई हैं और अब उन पर धूल जमी हुई है। कोई विषय वार सूची आज तक नही बनी है। एक रजिस्टर पुस्तको का बनाया गया। पर वह अपूर्ण है। महर्षि निर्वाण शताब्दी पर बाघमारे जी ने धूल झाड़-झाड कर ऊपर अलमारियों पर पालिश करके प्रदर्शनार्थ रख दीं। जो कोई कहता है कि सूची सब पुस्तको की पूर्ण बनी है वह ठीक नही है। यहा तक स्थिति रही है कि हमारे पूर्वज जो ऋषि के सामान को सभालने वाले थे, उनकी हर प्रकार की योग्यता होते हुए भी 'स्कालरली' योग्यता नहीं थी। मैं इस का एक ही उदाहरण देता हू। पुस्तको की सूची मे लिखा चला आता है—"गुजराती सस्कार विधि" उस समय गुजराती सस्कार विधि कोई न थी। वह था—"वेदोक्त सस्कार प्रकाश" जो सस्कार विधि से पूर्व का ग्रन्थ है और वाला जी का बनाया हुआ है सत्यार्थ प्रकाश—सस्कार विधि—ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका जैसे ग्रथ तीनो महर्षि से पूर्व बन चुके थे। महर्षि ने बाद मे लिखे हैं। अब वे छापे जा रहे हैं। जिस के कारण कुछ मिथ्या भ्रान्तिया होंगी अत उन पर मुझे विस्तार से लिखना पडेगा। स्वामी जी मुद्रित ग्रथो की सूची किसी स्कालर को बनानी चाहिये। यह भी एक कला है। परोपकारिणी सभा के पास कोई ऐसा व्यक्ति नही है।

इन मुद्रित ग्रन्थो की रक्षा अत्यावश्यक है। वे ही ग्रन्थ जो अब छप रहे हैं, उनके पाठो मे पर्याप्त अन्तर है। कुछ पाठ निकाले गये हैं, कुछ की भाषा बदली है। यदि उस काल के छपे ग्रन्थो मे से कोई भी ग्रन्थ खो गया तो अन्य लोग महर्षि पर आरोप लगावेंगे कि उस ग्रन्थ के नाम से झूठे प्रमाण स्वामी दयानन्द ने दे दिये हैं। मुझे यह डर है, पर इसकी चिन्ता किसी को नहीं है।

विशाल प्राचीन हस्तलेखो का सग्रह

जो ग्रन्थ उस काल में नही छपे या छपे भी थे, उनके प्राचीन हस्तलेख महर्षि ने संग्रह किये थे। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती आजकल की भाषा मे महान् 'रिसर्च स्कालर' थे। वे सब हस्तलेख पृथक्-पृथक् बस्तो मे बंधे रखे हुए हैं और बस्तों के ऊपर हस्तलेख का नाम लिखा हुआ है। ये सब हस्तलिखित ग्रन्थ बहुत मोटे दो लकड़ी के तख्तों के बीच में रखे गए हैं और ऊपर से बस्ता बाँध दिया गया है, प्रबन्धक लोग बस्ते गिनते रहें। वे लकड़ी के तख्ते इतने मोटे हैं कि अगर कोई व्यक्ति उसमे से हस्तलेख निकाल ले और दो तख्तो को ही बाँधकर रख दे तो पता भी नही चले, गिनने वाले ये तख्ते ही गिनते रह जावें। मैंने प्रत्येक बस्ता खोल कर देखा है।

इन हस्तलेखो की रक्षा भी अत्यन्त आवश्यक है क्योकि महर्षि ने अपने ग्रथो मे प्रमाण इन हस्तलेखो से ही दिये हैं। आजकल के मुद्रित ग्रथो मे पाठ-भेद हो गया है। निरुक्त मेरा प्रधान विषय है। महर्षि ने निरुक्त को वेदभाष्य विषय मे सर्वप्रथम स्थान दिया है। महर्षि को छोडकर कोई भाष्यकार निरुक्त को नही समझा। इस पर मैं 'निरुक्त महाभाष्यम्' ग्रन्थ लिख रहा हू। आजकल डा० लक्ष्मण स्वरूप सम्पादित निरुक्त को सब प्रामाणिक मानते हैं। इस आधार पर आर्यसमाज के पण्डितो ने महर्षि के वेदभाष्य मे दिये निरुक्त के प्रमाणो के पाठों को डा० लक्ष्मण स्वरूप वाला पाठ वाला कर दिया, जो अत्यन्त 'अनस्कालरली' है। महर्षि के वेदभाष्य की ऐतिहासिकता नष्ट हो गई। परोपकारिणी सभा उत्तराधिकारिणी है, सशोधक नही।

यदि ये हस्तलेख गुम हो गए तो स्वामी जी झूठ साबित होंगे। यह मैंने एक ही उदाहरण दिया। इन परिस्थितियो के आधार पर मैं कई बार यह लिख चुका हू कि आर्यसमाज अनुसधान विभाग परोपकारिणी सभा मे ही खुल सकता है। पर वर्तमान परोपकारिणी सभा अपनी इस योग्यता को अनुभव नही करती या यह कहें कि धनदाताओ को इसकी बुद्धि नहीं कि कौन-सा काम कहा हो सकता है। 'अनुसन्धान-विभाग' आर्यसमाज मे एक तमाशा है। जो इसका अर्थ भी नहीं समझता वह भी अनुसन्धान विभाग की अपील कर रहा है और दाता दान दे रहे हैं। बीस वर्ष से मैं ये अपीलें देख रहा हू, पर हुआ कुछ नहीं। यह मस्तिष्क तो प० भगवद्दत्त रिसर्च-स्कालर (लाहोर) का था, जो ससार से चला गया। आर्यसमाज मे जो कोई भी इस लाइन पर चला, उसने प० भगवद्दत्त से ही सीखा है।

महर्षि के अपने ग्रंथों के हस्तलेख

तीसरा सामान स्वामी जी का वह है जिसमें उनके अपने ग्रथों और वेद भाष्यों के हस्तलेखो का संग्रह है। परोपकारिणी सभा ने परिश्रम करके—(१) इन सब का फोटो कराया। (२) फिल्म बनवाई और मूल कागजो का भी पटलीकरण किया। परोपकारिणी सभा का यह कार्य अति प्रशसनीय है। पर इसका अब दुरुपयोग प्रारम्भ हो गया है।

हमारे साथियो ने निश्चय किया कि स्वामी जी का पत्र व्यवहार छापा जावे। मैं इसके पक्ष में नहीं था। पर मैं उस समय सबसे छोटी आयु का था अत मेरी चली नहीं। उस पत्र-व्यवहार का बाजार में बिकने का परिणाम यह हुआ कि—

१—एक पडित बोले कि स्वामी जी के वेदभाष्य की आर्यभाषा पडितों की बनाई हुई है, स्वामी जी की नहीं।

२—दूसरे पण्डित बोले कि 'ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका' की भी आर्यभाषा पण्डितो की बनाई है, स्वामी जी की नहीं।

३—तीसरे डा० भवानीलाल भारतीय ने स्वामी श्रद्धानन्दकृत 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' उर्दू अनुवाद की भूमिका मे प० लेखराम जी और श्रद्धानन्द जी के हवाले से जो छापा उस का अर्थ यह है कि पच-महायज्ञविधि की आर्यभाषा भी पण्डितो की है, स्वामी जी की नहीं।

४—अब वाला जी का 'वेदोक्त सस्कार प्रकाश' छप रहा है जो शीघ्र आने वाला है। उससे सिद्ध होगा कि सस्कारविधि की भी भाषा स्वामी जी की नहीं है।

५—एक कोई पण्डित निकलेगा जो एक ऐसा पत्र छाप देगा कि सत्यार्थ प्रकाश की भाषा भी पण्डितो की है, स्वामी जी की नहीं। बस हो गया 'सर्वं वै पूर्णं स्वाहा' फिर आर्यसमाज के पास मीनाक्षीपुरम् ही बचेगा।

हमारी दृष्टि में ये सब लोग अदूरदर्शी महात्मा लोग हैं। यह तो हुआ पत्र-व्यवहार आदि छापने का दुष्परिणाम अब आगे सुनो।

महर्षि के ये हस्तलेख पाउरेब की अलमारी में लोहे के छोटे-छोटे बक्सो मे रखकर हमने दीवान-बहादुर साहब के समय में तीन तालो में बन्द कराए थे। मैं भी अब वहां जाता तब दो व्यक्तियों को साथ लेकर उस संग्रह में जाता था। और वे तीनों चाबियाँ

(शेष पृष्ठ ८ पर)

पंजाब समस्या अंधी गली में

—प्रो॰ शेरसिंह अध्यक्ष, हरयाणा रक्षावाहिनी

पंजाब की समस्या के समाधान का रास्ता ऐसा लगने लगा है कि फिलहाल जैसे बन्द सा हो गया है। अकालियों में वैसे तो दलों की घनी दलदल है, परन्तु एक बार यदि उन में से किसी धड़े का अगुवा कोई उग्रवादी या अतिवादी बात कह देता है तो उसकी होड़ में सब अपने-अपने ढंग से वही बात बोलने लग जाते हैं। यदि सिमरनजीत सिंह मान ने पंजाब में मई से पहले विधान सभा के चुनाव की बात कहदी तो माने हुए नरम पन्थी नेता जनरल अरोड़ा ने भी वही बात कह डाली और बादल के साथियों ने भी पीछे रहना ठीक नहीं समझा। बादल, बरनाला और अरोड़ा अच्छी तरह जानते हैं कि आतंकवादियों के सामने आज की अवस्था में वे टिक नहीं सकते और इस माहौल में वही चुनकर आएंगे जिनको आतंकवादी चाहेंगे। इनने के बाद वे क्या बोली बोलेंगे, यह तो सिमरनजीत सिंह मान अभी से बोल गए। वे कह रहे हैं कि पंजाब में जनमत संग्रह करवाया जाए यह जानने के लिए कि पंजाब भारत का अंग रहना चाहेगा कि नहीं। यदि इनके साथियों का बहुमत आ जाए तो वे उसी को जनमत संग्रह मानकर मनचाही घोषणा कर सकते हैं।

यह सब जानते हैं कि पंजाब के सिख और हिन्दू पंजाब को भारत का अभिन्न अंग मानते हैं और सदा मानते रहेंगे। परन्तु आतंक और भय के कारण जन साधारण के लिए निर्भय होकर मतदान करना सम्भव नहीं। तब क्या इस निहत्थी जनता को बन्द हथियारबन्द पथभ्रष्ट नवयुवकों के रहम पर छोड़ना उनके साथ और देश के साथ विश्वासघात नहीं होगा? क्या मूक अधिमस्यक जनता को भय और आतंक के कारण मुखर न हो पाने की इतनी बड़ी सजा देना उचित होगा? यह सब जानते हुए भी तथाकथित नरमपन्थी अकाली नेता यदि राष्ट्रपति शासन की अवधि बढ़ाए जाने और हालात सुधरने तक चुनाव न करवाने का समर्थन करने से डरते हैं, तब सरकार किस से बात करे और कोई समाधान कैसे निकले। जो समाधान निकले भी तो उसके कार्यान्वियन का जिम्मा किसको सौंपें? समाधान का रास्ता अन्धी गली जैसा है आगे अंधेरा नजर आता है और गली भी बन्द नजर आती है।

उधर पाकिस्तान ने जम्मू कश्मीर और पंजाब में पाकिस्तान घुसपैठियों तथा पंजाब और कश्मीर के दिशा भ्रमित तथा उनके द्वारा जबरदस्ती उठाए हुए नवयुवकों को प्रशिक्षित करने और उनको हथियार तथा दूसरे साधन देकर इन इलाकों के बेकसूर लोगों को तथा सुरक्षा दलों के जवानों को मारने के लिए हजारों की संख्या में भेजा जा रहा है। सब प्रमाण उपस्थित करने पर भी अमरीका अभी यह मानने को तैयार नहीं कि पाकिस्तान भारत के आन्तरिक मामलों में दखल ही नहीं दे रहा, बल्कि उसने भारत के विरुद्ध गुरेला युद्ध छेड़ रखा है। पाकिस्तान के रवैये के विरुद्ध पाकिस्तान के दूतावास के सामने हिन्दू और सिख मिलकर प्रदर्शन कर रहे हैं तथा प्रधानमंत्री भी पाकिस्तान को अपनी शत्रुता की गतिविधियों से बाज आने की चेतावनियां भी दे चुके हैं। अमरीका स्वयम् तो हथियारों से और अरबों रुपए से मदद कर ही रहा है, रूस को मध्यस्थ बनाकर भारत की मदद करने से एक प्रकार से रोक ही रहा है और उसे तटस्थ करने की कोशिश कर रहा है।

पंजाब में आतंकवादियों के साथ-साथ सिमरनजीत सिंह मान का धड़ा भी भारत पाक युद्ध छिड़ने पर यदि अन्दर से तोड़-फोड़ की नीति अपना ले तो भारत के लिए मुसीबत खड़ी कर सकता है। पाकिस्तान में मियां नवाज शरीफ मुख्यमन्त्री पंजाब रावल पिण्डी में प्रशिक्षण केन्द्र चलाकर कश्मीर और पंजाब के हजारों नवयुवकों को प्रशिक्षण देने में लगा हुआ है। वह एक तरफ भारत की ओर दूसरी तरफ बेनजीर भुट्टो को युद्ध के लिए मजबूर करने में लगा हुआ है। इस स्थिति का लाभ उठाकर ही शायद सिमरनजीत सिंह मान नित नई शर्तें पेश करता जा रहा है। अपनी गतिविधियों से उसने बातचीत का रास्ता एक ढंग से बन्द कर दिया है। यदि प्रकाशसिंह बादल तोहड़ा और बरनाला आदि मिलकर पूरी शक्ति के साथ सिख जनता को मजबूत नेतृत्व देने के लिए खुलकर मैदान में उतर आए और आतंकवादियों और सिमरनजीत सिंह मान को सिख जनता से अलग थलग करने में जी जान से जुट जायें तो वे पंजाब का प्रतिनिधित्व करके बातचीत करके हल निकालने के रास्ते को खोल सकते हैं।

क्या वे निकट भविष्य में ऐसा करने के लिए अपने आपको और सिख जनता को तैयार कर पाएंगे, इसमें सन्देह है। जब तक यह सन्देह की स्थिति बनी रहेगी तब तक पंजाब समस्या अंधी गली से बाहर नहीं निकल पाएगी।

हरयाणा के आर्यसमाजों के उत्सव

आर्यसमाज असावटा जिला फरीदाबाद ५, ६ मई
बालानाथ योगाश्रम आदमपुर डाढ़ी जि॰ महेन्द्रगढ़ ६ से ६ मई
आर्यसमाज नारग (हिमाचल प्रदेश) ११ से १३ मई
" लोहारू जि॰ भिवानी १२, १३ "
" नारायणगढ़ जि॰ अम्बाला १७ से १६ मई
" भुगारका जि॰ महेन्द्रगढ़ १८ से २० मई
" क्योडक गेट कैथल १८ से २० मई
" मंवाना जि॰ रेवाड़ी १८ से २० मई
" कोण्डल जि॰ फरीदाबाद १८ से २० मई
मा॰ ताराचन्द आर्य नारनौल (अभिनन्द समारोह) २४ से २८ मई

सत्यवीर शास्त्री वेदप्रचाराधिष्ठाता

शराब के ठेके को लेकर रोष

(नवभारत टाइम्स)

हांसी २५ अप्रैल (निस)। निकटवर्ती गाव सिसाय में शराब के ठेके को लेकर ग्रामीणों में अत्यधिक रोष व्याप्त है। पिछले दिनों उक्त गाव की दोनों पचायतों ने सर्वसम्मति से गाव में ठेका खुलवाने का विरोध किया था। इसी विषय में गाव की दोनों पंचायतों के प्रतिनिधि मुख्यमन्त्री ओमप्रकाश चौटाला से ७ अप्रैल को हिसार में भी मिले थे। मुख्यमन्त्री जी ने जाच करवाने का आश्वासन दिया था। पता चला है कि जिला पुलिस अधिक्षक ने भी गाव की पचायत बुलाई थी। शराब का ठेका वैसे तो बन्द है, परन्तु ठेकेदार ग्रामीणों पर अपने पैसे वापस करवाने के लिए दबाव डाल रहा है।

ग्रामीणों में रोष है कि सरकार ग्रामीणों के न चाहते हुए भी दारू का ठेका खुलवाने के लिए अड़ी हुई है। ग्राम पचायत के एक प्रतिनिधि ने सवाददाता से बातचीत करते हुए बताया कि ठेके को लेकर पूरे गाव का माहौल बिगड़ा हुआ है। उनका आरोप है कि ठेकेदार राजनैतिक रूप से प्रभावी है। सरकार सिसाय गांववासियों के इतना विरोध के बाद भी ठेका हटाने का छोटा सा निर्णय नहीं दे पाई है।

पटवारी की आवश्यकता

हरयाणा भर में स्थित सम्पत्तियों की सुरक्षा करने तथा उर्दू से हिन्दी में रिकार्ड तैयार करने हेतु एक सेवा निवृत पटवारी की आवश्यकता है। इच्छुक महानुभाव शीघ्र सम्पर्क करें।

—सूबेसिंह सम्पत्ति सुरक्षाधिकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक
फोन : ७३५५३ – ७४८१२

स्व० क्रांतिकारी धनराज——

(पृष्ठ २ से आगे)

'हे उमरी के भामाशाह ! इतिहास तुम्हें चाहकर भी न भुला सकेगा। मां भारती की नजरों में तुम सदा गौरवान्वित रहोगे। तुम्हारे त्याग का ऊंचा आदर्श आनेवाली नस्लों को सदा मार्गदर्शन करता रहेगा।' महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध समीक्षक प्राध्यापक नरहर कुरुंदकर के अनुसार —"समस्त भारत के लगभग शतवर्षीय स्वातन्त्र्य आंदोलन में इस बेंक प्रकरण के समानांतर अन्य कोई दूसरा प्रकरण नहीं है। जिन स्थानों पर भारतीय स्वयमेवकों ने थाने अथवा बेंक लूटने का प्रयत्न किया उनमें से लगभग प्रायः सारे प्रयत्न असफल हो गए। किसी न किसी कारण से उन्हें बेंक का पैसा बाहर निकालने मे असफलता प्राप्त हुई दो-चार स्थानों पर यदि उन्हे यह पैसा अपने कब्जे मे लेने में यश प्राप्त भी हुआ, पर कब्जे में आया पैसा कभी-कभी वे सुरक्षित स्थान पर नही पहुंचा पाये। आखिर तक यह पता नही चल पाया कि उस राशि का क्या हुआ क्योंकि उसका हिसाब कभी आने वाले समय में प्रस्तुत नही किया जा सका, पर उमरी बैंक की उक्त घटना इन सब घटनाओं की तुलना मे अपवादात्मक रूप में हमारे सामने उभरकर आती है। पुणे की एक लेखा निरीक्षक कपनी ने इस हिसाब की जाच की और कांग्रेस के तत्कालीन महासचिव शंकरराव देव के समक्ष उन्होने 'प्रत्येक पैसे का हिसाब है' का प्रमाण-पत्र प्रदान किया। प्रमाणित हिसाब की एक प्रति लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल को भी दी गई।[९]

हैदराबाद के इस सशस्त्र युद्ध के लिए महात्मा गाधीजी ने अपनी अहिंसा को ताक में रखकर, अपवादात्मक रुप में क्यों न हो, अपनी अनुमति प्रदान कर दी थी। यह एक सयोग ही था कि जिस दिन महात्मा गांधी शहीद हुए उसी दिन उमरी बैंक कांड सम्पन्न हुआ। महात्मा जी की शहादत के कारण इस उमरी कांड की घटना को तत्कालीन समाचार पत्रों में विशेष उल्लेखनीय स्थान नहीं मिल पाया।

स्वाधीनता के यज्ञ मे अपना सर्वस्व होम देने वाले आजादी के परवाने धन जी पुरोहित की स्वातन्त्र्योतर काल मे आर्थिक दृष्टि से बहुत ही दुर्वस्था हुई। जिनके पास लाखों की संपत्ति थी, उनके पास अब केवल तन-बदन पर धारण किये सो कपड़े ही शेष रह गये। जीविकोपार्जन के लिए ट्रक-होटल चलाने, रूई का व्यापार तथा वस्त्रादि बेचने के अनेक उपाय किये, पर कुछ न कुछ ऐसे कारण बनते गये कि व्यापारिक दृष्टि से उन्हे सफलता न मिल पायी। प्रा. नरहर कुरुंदकर के शब्दों में—"दस-बारह लाख की सपत्ति रखने वाला यह आर्यसमाजी पूर्णतया निर्धन हो गया[१०]" एक बार जो गाड़ी पटरी पर से उतरी तो फिर ठीक ढग से पटरी पर न आ पायी। खानाबदोश हो उन्होंने कलकत्ता, गुजरात और राजस्थान की खाक छानी, पर फिर भी कभी अपने स्वाभिमान पर आच न आने दी।

स्वाधीनता संग्राम की रजत जयंती के अवसर पर धन जी पुरोहित को उत्तर भारत से उमरी बुलाया गया और वहा उनका प्रकट सम्मान किया गया। पर उनका यह कहना रहा कि— आप लोगों द्वारा दी जाने वाली निधि मैं नही लूंगा। मे लाखों रुपये कमाने वाला और कार्यकर्त्ताओ को संभालने वाला व्यक्ति रहा हू। मेरे भाग्य ने पलटा खाया है, मैं अब अपने गाव में रहकर मेरा होटल चलाते हुए शेष जीवन बिताऊंगा, मुझे किसी और चीज की आवश्यकता नही है, और न हो मेरी कोई राजनैतिक महत्त्वाकांक्षा है।' एक अन्य समारोह मे भी उमरी परिषद् की ओर से महाराष्ट्र सरकार के तत्कालीन मन्त्री माननीय श्री शकरराव जी चव्हाण के करकमलों द्वारा 'उमरी बैंक एक्शन के सूत्रधार' के रूप में श्री धन जी पुरोहित को सम्मानित एवं प्रमाणित किया गया।

धन जी पुरोहित का जन्म हरयाणा प्रांतीय हिसार जिले के बाल समंद गांव में सन् १९१४ में हुआ था। उमरी स्थित एम्प्रेस मिल के मैनेजर श्री हीरालाल के रिश्तेदार होने के कारण इन्होंने भी उमरी को अपनी कर्मभूमि बनाया। हीरालाल जी के असामयिक निधन के बाद एकमात्र रिश्तेदार होने के कारण अनायास ही आप उनकी सपत्ति के मालिक बन गए। लगभग इसी समय आपने हिसार के शिवदत्त राय फतहचद की आढत की दुकान का भी उमरी में एक पार्टनर के रूप में सचालन किया। शास्त्रीय आदेश है-शतहस्त समाहार: सहस्रहस्त सकिर.=सैंकड़ों हाथों से कमाओ और हजारों हाथों से बांट दो। पुरोहित जी ने इस वेदादेश को अपने जीवन में क्रियात्मक रूप प्रदान किया। जिस प्रकार भामाशाह की सहायता ने महाराणा प्रताप को अत्याचारी यवनों से सघर्ष करने की क्षमता प्रदान की थी, उसी प्रकार धन जी पुरोहित की उदार सहायता ने भी हैदराबाद मुक्ति आंदोलन के सैनिकों को निजामी आतक से टकराने का अटट धैर्य और अद्भुत बल प्रदान किया था।

खेद है कि ऐसे उदार महामानव का २७ जनवरी १९९० को सूर्यास्त के समय दुःखद निधन हो गया। वे ७६ वर्ष के थे। उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम क्षण—'बी—२१३—जनता कालोनी, जयपुर (३०२००४), राजस्थान मे बिताए।' उन के परिवार में अब उनकी ३ संतानें विद्यमान है—अमरनाथ, राजेन्द्र और पुष्पा।

दुनियादार व्यक्ति धन जी पुरोहित जैसे व्यक्तियों को जल्दबाज, अधीर, आदर्शवादी, लुटेरे, डाकू न जाने किस नाम और किस गाली से विभूषित करना चाहें, पर मैं तो इतना ही कहूंगा वे खाने-पीने, पहनने-ओढने की वस्तुओं का ही व्यापार करने वाले व्यापारी नहीं थे। अपितु वे स्वातंत्र्य के आदर्श उपासक और अपना सर हथेली पर लेकर चलने वाले उदार, जांबाज, बलिदानी व्यापारी थे। काश एक बार तुम उन्हें देख भी लेते तो कृतकृत्य हो जाते। उमरी बैंक प्रकरण के सूत्रधार क्रांतिकारी स्व. धनराज ईश्वरदास पुरोहित को राष्ट्रकवि रामधारी सिंह जी दिनकर के शब्दों में हार्दिक श्रद्धाजलि और नमन।

"दुःखी स्वयं जग का दुःख लेकर, स्वयं रिक्त सबको सुख देकर,
जिनका दिया अमृत जग पीता, कालकूट उनका आहार।
नमन उन्हे मेरा शत बार।
वीर, तुम्हारा लिये सहारा, टिका हुआ है भूतल सारा,
होते तुम न कही, तो कब का उलट गया होता संसार।
नमन उन्हें मेरा शतबार।"

९- हैदराबाद विमोचन आणि विसर्जन . नरहर कुरुंदकर : पृ० १८४
१०- ,, ,, ,, ,, १८५

कर्मयोगी श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को सन्देश

किसका कौन सम्बन्धी अर्जुन, यू ममता का घेरा सै।
आंख खोलकर देख लिये कति, आवागमन का फेरा सै।
शरीर तो यू नाशवान् दखे, जीव अनादि हो सै।
किये कर्म का फल भोगे, पर करने में आजादी हो सै।
पांचा तै बरवादी हो सै, तूं कित विचार लेरा सै।१।
मोह में फंस ग्या बिना ज्ञान तेरे लायक कहानी कोन्या।
सयम में रहके करते जाना तनै बात पिछानी कोन्या।
मतलब लाभ व हानि कोन्या करना फर्ज तेरा सै।२।
फल इच्छा को छोड़ तोड़ जो भ्रम कोट का ताला सै।
धम अधम की तरफ निगाह कर तू समझ ले आड़ा सै।
सब योग जोग या है माला से कर विश्वास कहन मेरा सै।३।
कपडे की ढाला चोला बदल दे न्यू जीव कम गत हो सै।
एक शरीर छोड़ ले धार दूसरा या बाणी सदा सत हो सै।
कहत जयसिंह किसकी मरगत हो से संयोग वियोग सेहरा सै।४।

परोपकारिणी सभा के.....

(पृष्ठ ६ का शेष)

परोपकारिणी सभा के मन्त्री के पास रहती थीं। आज स्थिति यह है कि कोई एक सदस्य अकेले चाबियां ले लेता है और हस्तलेखों को अपने घर ले जाता है और फोटो करा-करा कर अपने स्थान पर जमा कर रहा है। इसका भयंकर दुष्परिणाम किसी समय होगा।

दीवान बहादुर साहब बहुत दबंग व्यक्ति थे। उनसे बात करते भी डर लगता था। वे जज रह चुके थे, अति शक्तिशाली थे। इसके बाद युग परोपकारिणी सभा में डा० मानकरण शारदा का आया। वे बहुत गम्भीर थे। उनके आगे भी किसी की नहीं चलती थी। वे सब बातों के पूर्ण संरक्षक रह गये। उनके बाद अब श्रीकरण शारदा का युग है। इन पर कुछ लोग हावी हो गए हैं और अनुचित रवैया इस्तेमाल करके ये हस्तलेख इधर-उधर किये जा रहे हैं। मेरी संमति कौन सुनता है। पर मैं कहता हूं कि किसी व्यक्ति के स्थान पर हस्तलेखों का फोटो करा कर संग्रह नहीं होना चाहिए। जहाँ भी यह संग्रह किया गया है वहाँ से अनुशासनात्मक शैली से सब वापिस ले आने चाहिए और जो व्यय किसी का हुआ हो वह वापिस दे देना चाहिए। किसी एक स्थान पर ही यह सब संग्रह रहना चाहिए या परोपकारिणी के पास या सरकार के पास अन्यथा जो स्वामी के पत्रों को बाजार में बेचने का परिणाम हुआ, वही दुष्परिणाम इन हस्तलेखों को घर-घर रखने का होगा। पछताओगे, मत सुनी इस समय।

कुछ अप्रकाशित ग्रन्थ

स्वामी जी के संग्रह में चौथा सामान है महर्षि के कुछ अब तक अप्रकाशित ग्रन्थ। कुछ मनचले यह यह कहते हैं कि अब कोई ग्रन्थ अप्रकाशित नहीं है। वे अज्ञानी हैं। स्वामी जी के सारे सामान को केवल चार व्यक्तियों ने अक्षरशः देखा था और सब ऊपर से थोड़ा-सा देखकर छोड़ देते हैं। न किसी को उस ढंग की अक्ल है और न लगन। वे चार व्यक्ति जो स्वामी जी के सब सामान को समझते रहे हैं वे हैं—

१—पं० भगवद्दत्त जी रिसर्च स्कालर [लाहौर]।

२—श्री पं० ब्रह्मदत्तजी जिज्ञासु।

३—पं० युधिष्ठिरजी मीमांसक।

४—तथा मैं

दो का स्वर्गवास हो गया। मैं और मीमांसक जी शेष हैं। मीमांसक जी कह दें कि अब कोई महर्षि का अमुद्रित ग्रन्थ शेष नहीं है। किसी ग्रन्थ के प्रारम्भ में छपी विषय सूची से उस ग्रन्थ का लगभग भाष्य हो जाता है। आज जो शतपथ ब्राह्मण, ताण्डय-महाब्राह्मण आदि सायण भाष्य के छपे हुए हैं उनकी सूची वह है जो उस ग्रन्थ को सायण ने समझा। महर्षिकृत कई ग्रन्थो की विषय सूचियां मुख्य हैं जिनके अध्ययन से यह पता चलेगा कि महर्षि ने इन ग्रन्थों को किस रूप में समझा था। पर यह किसे समझाऊं। छन्दों के तीन सप्तकों में अन्तिम सप्तक की स्थिति महर्षि के अनुसार समझ नहीं आती। महर्षि का बनाया बहुत बड़ा छन्दों का चार्ट महर्षि के संग्रह में हमने देखा था। वह अब नहीं मिल रहा है। कहीं स्थानान्तरित है, या खो गया। उसको छाप देना चाहिए। इस प्रकार जो अमुद्रित महर्षिकृत ग्रन्थ हैं उनमे न जाने क्या-क्या रत्न छिपे पड़े हैं। आखिर चतुर्वेद विषय-सूची छापी गई या नहीं। कुछ सदस्यों का यह कहना है कि वह बिकती नहीं। यह व्यापार का विषय नहीं, ऋषिकृत साहित्य की रक्षा का प्रश्न है। आर्यसमाजियों ने तो पढ़ना ही छोड़ दिया। यह दौर्भाग्य का विषय ही है। ५) रु० मूल्य की चतुर्वेद विषय-सूची को आर्यजन नहीं खरीदना चाहते।

महर्षि के उपयोग के सामान

पांचवां सामान है महर्षि के उपयोग की वस्तुएं वस्त्र, पात्र आदि। हमारे पूर्वज बड़े उदार पर अदूरदर्शी थे। स्वामी जी के मोक्ष पधारने पर स्वामी जी के वस्त्र आदि लोगो को बांटे। श्रद्धालुओं ने धन देकर भी उनको लिया। पर हमारे पूर्वजों ने यह नहीं सोचा कि ये सब वस्तुएं ऐतिहासिक महत्व की हैं। क्या कहें उन्हें।

मथुरा जन्म-शताब्दी पर महर्षि के वस्त्र स्वामी श्रद्धानन्द जी मथुरा ले गये। वे लौट कर नहीं आये। मैंने स्वयं महात्मा नारायण स्वामी जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी के पुत्र पं० इन्द्रजी विद्यावाचस्पति से पूछा। वे कुछ न बता सके। अब जो भी शेष है, शाल, खड़ाऊं, आदि उनकी भी एक सूची प्रकाशित कर देनी चाहिए।

सार्वदेशिक सभा का महत्व

सार्वदेशिक सभा आर्य जगत् की यदि शिरोमणि सभा है तो क्या आर्यसमाज की इमारतों के विवादों की ही शिरोमणि सभा है या सब कार्य-कलापों की। उसका कर्तव्य है कि यह पांचो प्रकार का सामान रहे परोपकारिणी सभा के ही संरक्षण में, पर उसकी एक सूची सार्वदेशिक सभा को भी अपने पास रखनी चाहिए ताकि महर्षि का क्या-क्या सामान संसार में है, यह विदित रहे।

परोपकारिणी सभा का कर्तव्य है कि जिस प्रकार विश्वविद्यालयों के कैटेलाग छपे रहते हैं, वैसे ही महर्षि का जो यह पांचों प्रकार का सामान है उस की सूची छापकर समग्र आर्य जग के सामने रख दें, कि यह हमारे पास है। उन वस्तों को भी खोलकर देखें कि जिस हस्तलेख का नाम कवर पर लिखा है वह हस्तलेख उनके अन्दर है या केवल तखते ही बंधे रखे हैं। उन्हे देखकर सूची बनावे।

ज्योतिषी समाज को.....

[पृष्ठ ७ का शेष]

मैं कुछेक बहुत मामूली सवाल पूछूंगा—ऐसे सवाल कि जिनके जवाब देने का दावा मामूली-सें-मामूली ज्योतिषी भी कर लेता है। मसलन, मैं अपने साथ दस व्यक्तियो को लाऊंगा। ज्योतिषी यह बता दे कि उनमें से किसने विदेश-यात्रा की है और किसने नहीं की। मैं दस शहरों के नाम दूंगा। ज्योतिषी यह बता दे कि बरसात के इस मौसम में, उन शहरों में, कितना पानी गिरेगा। मैं कोई नवविवाहिता प्रस्तुत कर पूछूंगा कि यह कब मां बनेगी, इसकी निश्चित तारीख ज्योतिषी निकाल कर बता दे। प्रसव किस शहर या गांव में होगा, यह बता दे। इसी तरह के बहुत मामूली प्रश्न मैं पूछूंगा और यदि ज्योतिषी सचमुच अपनी विद्या का प्रमाण देता है, तो तीन लाख रुपए उस पर न्योछावर कर दूंगा। न केवल इतना, बल्कि स्वयं भी इस विद्या का लोहा मान लूंगा, और इसके विरुद्ध मैंने जो धर्म-युद्ध छेड़ रखा है, उसे स्थगित कर दूंगा।

ज्योतिष (मेरे अनुसार) केवल अनुमान-शास्त्र है। यह सत्य अथवा अर्ध-सत्य भी नहीं है। यह केवल संयोग-सत्य है। केवल संयोग से किसी की भविष्यवाणी सत्य निकल आती है और उस ज्योतिषी की वाह-वाह होने लगती है। वाह-वाही के ऐसे प्रत्येक किस्से का ज्योतिषी की ओर से जम कर प्रचार किया जाता है, किन्तु ज्योतिषी झूठा कहां-कहां निकला, इसका प्रचार कौन करे? मैं नहीं कहता कि सब ज्योतिषी इरादे के साथ धूर्तता करते हैं। कुछ ज्योतिषी अपनी विद्या को सचमुच विद्या ही मानते हैं और उससे अभिभूत रहते हैं। वे जनता को धोखा देने से पहले अपने-आपको धोखा देते हैं। उन्हें केवल एक तीव्र आघात की आवश्यकता होती है-जैसा आघात नीमगांव के बलदेव प्रसाद को लगा था।

फिर उनकी आंखे खुल जाती हैं, किन्तु यह भी विडम्बना है कि अधिकांश ज्योतिषियों को ऐसा आघात जीवन मे कभी नहीं मिल-पाता। वे जीवन-भर अन्धकार में रहते हैं और दूसरों को अंधकार में धकेलते हैं।

दूसरी ओर, ऐसे ज्योतिषियों की संख्या इस देश में बहुत बड़ी है, जो इस तथाकथित विद्या के अत्यन्त रहस्यमय जानकार होने का वातावरण बना कर बाकायदा इरादे के साथ फांद कर, जनता से लाखों क्या, करोड़ों लूटते रहते हैं। ये पाखंड राजनीति मे घुस कर देश की सत्ता मे ही हिस्सेदारी रखने लगते हैं। ज्योतिषियों की कपट-लीला के अनेक सत्य उदाहरण मेरी जानकारी मे और आते जा रहे हैं। देश की जनता को ऐसे दुश्चक्र से छुटकारा दिलाने के लिए मैं इन दिनो ज्योतिष का पाखंड नामक पुस्तिका का प्रकाशन करने मे व्यस्त हूं, जिसकी हजारो प्रतियां छाप कर, केवल लागत मूल्य पर, एक प्रति के लिए केवल दो रुपये लेकर, गाव-गाव मे सभाओं का आयोजन कर, मैं बेचने वाला हू।

विशेष आक्रोश मुझे इस कारण भी है कि जब कोई ज्योतिषी, अथवा उसका सम्पूर्ण ज्योतिष-शास्त्र झूठा साबित होता है, तब वह अपने शास्त्र का त्याग क्यों नही करता? उसी से चिपका क्यो रहता है? नीमगाव के बलदेव प्रसाद जैसी ईमानदारी उसमे क्यों नही होती? ऐसी ईमानदारी का अभाव ही अपने-आप साबित करता है कि ज्योतिषी के इरादो मे कोई खोट है। पेट भरने के लिए इस दुनिया मे हजारो धंधे हैं। क्यो नही ये ज्योतिषी अपने पोथो को जला कर बलदेव प्रसाद की तरह जनता को लूटने के इस धंधे को सदा का नमस्कार कर लेते? पेट भरने के लिए ये ज्योतिषी रेलवे-स्टेशनो में कुलीगिरी कर सकते हैं। सड़को पर ये रिक्शे भी चला सकते हैं।

['पंजाब केसरी' से साभार]

महात्मा हंसराज और डी० ए० वी०........

(पृष्ठ ५ का शेष)

प्रेरणा-स्रोत है। अगले पचास वर्षों में क्या स्थिति होगी, इसकी कल्पना करना कठिन है।

मैं जब पंजाबी बाग का हंसराज माडल स्कूल देखता हू, और उसकी तुलना उस दयानन्द हाई स्कूल से करता हूं, जिसके हैडमास्टर लाला हंसराज थे, तो दोनों में जमीन-आसमान का अन्तर प्रतीत होता है। मुझे उस डी० ए० वी० हाई स्कूल की भी याद है, जिसमें मेरे पिता १९१८ ई० में सरकारी नौकरी से त्याग पत्र देकर हैडमास्टर होकर आये थे। यह स्कूल प्रयाग की आर्य कुमार सभा के कुछ दरिद्र कुमारों ने खोला था, और उसके लिए जमीन एक आर्य समाजी किशोर ने सनातन धर्मी माता से हठ और आग्रह करके दिला दी थी। खपरैल के कुछ कमरों में हाई स्कूल चला। सन् १९१८ और १९८५ में कितना अन्तर हो गया है। दरिद्र स्कूल में आर्य समाज की सेवा करने का अच्छा अवसर मिलेगा, इस छोटी-सी भावना पर पिताजी ने वड़े साहस से सरकारी नौकरी भरी जवानी में छोड दी थी। उत्तर प्रदेश के अनेक डी० ए० वी० स्कूलो की ऐसी ही कहानी है।

इतना स्पष्ट अन्तर होते हुए भी एक दूसरा पक्ष है। पुराने डी० ए० वी० स्कूल दरिद्र थे, और संचालको की तपस्या और निष्ठा के परिणाम थे। दिल्ली के माडल स्कूल सम्पन्न और सुन्दर हैं। दीन-हीन गरीब स्कूलों का होना हमारी मुहताजी की निशानी हैं। स्कूलों का वैभवशाली होना शिक्षा-दीक्षा दोनो ही दृष्टि से लाभ कर है। १९४७ मे देश स्वतंत्र हो गया किन्तु हमारी मनोवृत्ति भी इसके साथ बदल गयी। ईसाइयों के स्कूल अमरीकी और यूरोपीय आर्थिक सहायता के कारण अति आकर्षक बन गए। विदेशों से इन ईसाई कान्वेण्ट स्कूलों के लिए रुपया इतनी बड़ी मात्रा में आने लगा। सन् १९५० तक ही देश की मनोवृत्ति ऐसी बदली, कि साधारण सम्पन्नता के भारतीय भी ईसाई स्कूलों मे बच्चों को शिक्षा दिलाने में गौरव अनुभव करने लगे। शिक्षा का ज्यो-ज्यों प्रसार हुआ—अमीरी और गरीबी की भावना भी बढ़ी। उसका शीघ्र परिणाम यह हुआ कि जो जनता के साधारण स्कूलों में बच्चों को पढाता उसका जीवन-स्तर नीचा माना जाने लगा, और जो ईसाइयो के कॉन्वेष्ट स्कूलों में पढ़ाते उसकी प्रतिष्ठा समाज में बढ़ गयी।

ऐसा युग आया कि कोई आपसे पूछे कि आपका बच्चा कहाँ पढ़ता है, और आप कहें कि बच्चा आर्य-विद्यालय या कन्या पाठशाला में पढ़ता है, तो आपको नीचे स्तर की भावना से देखा जायगा, और यदि आप कहें कि लड़का सैण्ट जोसेफ् में पढ़ता है, और लड़की सैण्ट मेरी कान्वेण्ट में, तो आपको प्रतिष्ठित माना जायगा। पिछले बीस वर्षों में इसका दुष्परिणाम दो रूपों में अभिव्यक्त होने लगा—(१) हिन्दी माध्यम से शिक्षा देने वाले स्कूलों को हेय दृष्टि से देखा जाने लगा, और अंग्रेजी माध्यम वाले स्कलों को गौरव की भावना से, (२) ईसाइयों के स्कूलों को ऊंचे स्तर का, और शेष सब स्कूलों को नीचे स्तर का। अफसरों, मिनिस्टरों और धनिक पूंजीपतियों के लड़के अंग्रेजी माध्यम वाले ईसाई स्कूलो में पढ़ने लगे। इस प्रकार समाज में नये प्रकार की एक वैषम्यभावना उत्पन्न हो गयी।

पिछले १०-१५ वर्षों में पंजाब की डी०ए०वी० कालेज कमेटी ने इस नये चैलेंज को स्वीकार किया। इस चैलेंज को स्वीकार करने में वे यथेष्ट सफल हुए। इस दृष्टि से जब मैं दिल्ली के हंसराज मॉडल स्कूल, कुलाची स्कूल और नित्य नये खुलने वाले स्कूलो को देखता हूं, तो प्रसन्नता होती है। अमृतसर, चण्डीगढ़, अम्बाला, शोलापुर आदि के स्कूलो को देखकर भी अच्छा लगता है। बड़े मनोयोग और कुशलता से इन स्कूलों को उनके प्रिंसिपलों ने चलाया है। उनकी सफलता देखकर आनन्द होता है। इस प्रकार मॉडल स्कूलों की श्रृंखला देश के अन्य प्रान्चलों में भी विस्तृत हो रही है। इन स्कूलों में बच्चों का एडमिशन बड़ी कठिनता से होता है। लोग धन-राशि दान देकर अपने बच्चों को इन दयानन्द स्कूलों में दाखिल कराने में गौरव का अनुभव करने लगे हैं।

प्रसन्नता की बात है, कि इन स्कूलों की भूमिका निभाने में हमारे अनेक युवक प्रिंसिपलों ने कन्धे से कन्धा मिलाकर डी० ए० वी० के संचालको के साथ प्रशंसनीय कार्य किया है। इन स्कूलों में अनुशासन भी है, कला और अभिनय की उत्कृष्टता भी है, और इनका रूप बड़ा आकर्षक और मोहक है। उच्चस्तरीय शिक्षा में आगे चलकर ये बच्चे कितनी प्रतिभा प्रदर्शित कर सकेंगे, इसका अनुमान लगाना कठिन है।

महात्मा हंसराज जी को अन्त तक एक ग्लानि रही—डी० ए० वी० संस्थाओं के संचालकों में आर्यसमाजी व्यक्तियों का अनुपात कम होता जा रहा है। आर्य समाज आज युवकों को आकर्षित करने में असमर्थ है। यदि आर्य समाज से युवकों का सम्बन्ध न रहा, तो डी०ए०वी० संस्थाओं में आर्य समाज-परिवार के अध्यापक भी नहीं मिलेंगे। शनैः-शनैः वह दिन आवेगा कि डी०ए०वी० संस्थाएं तो रहेंगी—पर दयानन्द और वैदिक ये दोनों शब्द इन संस्थाओं के प्रसंग में निरर्थक हो जावेंगे।

इधर एक नई लहर इस प्रसंग में चली है। डी०ए०वी० ये तीन संकेताक्षर 'दयानन्द एंग्लो वैदिक' के पर्याय थे। अंग्रेजों के चले जाने के बाद 'एंग्लो' शब्द निरर्थक हो गया। कुछ दिनों इंगलिश मीडियम की महिमा रहेगी, पर इंगलिश मीडियम लेकर हम वर्मा, थाइलैण्ड और इण्डोनीशिया में नही जा सकते हैं, और शायद २५-३० वर्ष बाद हमको माध्यम संबन्धी अपनी नीति फिर बदलनी पड़ेगी। अपने इन विद्यालयों को हम क्या दयानन्द विद्यालय कहना चाहेंगे।

पंजाब से बाहर

महर्षि दयानन्द के सबसे उत्तम स्मारक दयानन्द विद्यालय थे। दुर्भाग्य से पंजाब में आर्य समाज की दो शाखायें हो गयीं, और डी. ए. वी. संस्थाएं जिस सभा के संचालन में रही उनका संबन्ध आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा से रहा। पंजाब के बाहर अन्य प्रान्तों में पंजाब की तरह दो प्रतिनिधि सभाएं नहीं बनी। आर्य समाज विघटन से बचा रहा। आज दर्जनों दयानन्द स्कूल, उत्तर प्रदेश, मध्य भारत, राजस्थान, बिहार बंगाल में ऐसे हैं, जिनका संबन्ध न तो पंजाब की डी० ए० वी० कालेज कमेटी से है, और न प्रादेशिक सभा से। इनके संचालकों की आस्था गुरुकुलों में भी है, स्कूल और कालेजों में भी और कन्या गुरुकुलों या आर्य कन्या पाठशालाओं में भी। इन प्रदेशों के आर्यसमाजियों में महात्मा हंसराज और स्वामी श्रद्धानन्द या स्वामी श्रद्धानन्द या स्वामी दर्शनानन्द इन सभी के प्रति एक-सी आदर-भावना है।

इधर गत पांच-सात वर्षों से दिल्ली की डी० ए० वी० कमेटी अपनी श्रृंखला के स्कूल पंजाब से बाहर के क्षेत्रों में खोलती आ रही है। रांची, बोकारो, भुवनेश्वर, शोलापुर और अनेक स्थान हैं जिनमें उच्च स्तरीय दयानन्द माडल स्कूल आरम्भ कर दिए गए हैं। ये स्कूल सुप्रबन्ध के लिए अच्छी ख्याति प्राप्त कर रहे हैं। स्कूलों के खोलने का कार्य बड़ा श्रेयस्कर है, किन्तु एक सावधानी पंजाब के क्षेत्रों के बाहर बरतनी पड़ेगी। इन प्रदेशों की आस्था दयानन्द में है, आर्य-समाज में है, पर पंजाब वाले भेदभाव की दो प्रकार की आर्यसमाजों में नहीं है। इतिहास के चरण निराले ढंग से आगे बढ़ते हैं। प्रादेशिक सभा द्वारा संचालित डी०ए०वी० संस्थायें देश-विदेश में फैलनी ही चाहिए, पर थोड़ी सावधानी यह रखनी पड़ेगी, कि आर्य समाजों के संगठनों में विभेद उत्पन्न न हों। यह बात मैं संकेत से कहना चाहता हूं।

आजकल तीन वर्गों की दयानन्द संस्थाएं हैं—(१) मॉडल स्कूल जिनका माध्यम अंग्रेजी है, और जिनकी परीक्षाएं केन्द्रीय संस्थान से सम्बन्धित हैं। (२) वे हायर सैकण्डरी स्कूल जो अपने-अपने प्रदेशों के बोर्डों से सम्बद्ध हैं, और सरकारी सहायता पर अवलम्बित है। (३) यूनिवर्सिटियों से सम्बद्ध डिग्री कालेज। मेरे देखने में आया है कि अन्तिम दो पर आर्य समाज का प्रभाव लुप्त होता जा रहा है, और सरकार का शासन उन पर बढ़ता जा रहा है। उन पर महात्मा हंसराज के व्यक्तित्व की न तो छाप है, और न ऋषि दयानन्द के व्यक्तित्व की।

शायद शीघ्र ऐसा अवसर आयेगा, जब आर्य समाज को अपनी शिक्षा-नीति पर फिर गम्भीरता से सिंहावलोकन करना पड़ेगा।

हरयाणा सरकार हिन्दी को प्राथमिकता दे

—नत्थूसिंह यादव गणक, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

केन्द्र तथा राज्यों में सत्ता परिवर्तन के बाद, विशेषकर उत्तर भारत में हिन्दी के विषय में एक बार फिर बहस छिड़ गयी है। भारत के सबसे बड़े प्रान्त उत्तरप्रदेश से इसकी शुरुआत हुई है, प्रारम्भ से ही इस प्रदेश का राजनीति में वर्चस्व रहा है, उसी कड़ी में वहां के मुख्यमन्त्री श्री मुलायमसिंह यादव ने बड़ी दृढ़ता के साथ सरकार का सभी कार्य हिन्दी में करने के निर्देश दिए है, अहिन्दी राज्यों के पत्र व्यवहार उनकी मातृभाषा में तथा साथ में हिन्दी अनुवाद लगाने के भी आदेश दिए हैं।

उत्तरप्रदेश के साथ साथ मध्यप्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री सुन्दर लाल पटवा ने भी ऐसी घोषणा की है। मध्यप्रदेश देश में भूभाग की दृष्टि से सबसे बडा राज्य है, और इसे देश का हृदय भी कहते है। हरयाणा से लगता राज्य हिमाचल जिसके मुख्यमन्त्री श्री शान्ता कुमार ने भी हिन्दी में कार्य करने का अपनी सरकार का सकल्प किया है, उपरोक्त सभी सरकारें बधाई की पात्र है जिन्होंने उपेक्षित राष्ट्रभाषा का गौरव बढाया है।

हरयाणा राज्य इस सत्ता परिवर्तन का मुख्य रहा है, और यहा के पूर्व मुख्यमन्त्री चौ: देवीलाल आज केन्द्र में उपप्रधानमन्त्री पद पर आसीन है। हरयाणा हिन्दी राज्य भी है लेकिन आश्चर्य की बात है यहा के मुख्यमन्त्री चौ० ओमप्रकाश चौटाला ने किसी प्रकार की घोषणा हिन्दी के पक्ष में नही की, हां उनके सहयोगी शिक्षामन्त्री मा० हुकमसिंह ने अवश्य हिन्दी की वकालत की है। हरयाणा का उदय ही हिन्दी के कारण हुआ था। तत्कालीन मुख्यमन्त्री प्रताप सिंह कैरों ने समस्त पजाब में (जिसमें वर्तमान हरयाणा भी शामिल था) शिक्षा का माध्यम गुरमुखी (पंजाबी) बना दिया था, जिसके विरोध में जन-आदोलन चल पडा। इस आन्दोलन में सर्वश्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज, सिद्धान्ती जी, प्रो० शेरसिंह जी, स्वामी रामेश्वरानन्द जी आदि नेताओं ने भाग लिया था। इस आन्दोलन के परिणामस्वरूप कैरों सरकार को झुकना पड़ा और वर्तमान हरयाणा मे शिक्षा का माध्यम हिन्दी बना दिया बाद में यही हिन्दी क्षेत्र हरयाणा राज्य बना।

जिस राज्य का उदय ही हिन्दी से हुआ हो और उस राज्य के राजनीतिज्ञ इस सच्चाई को न माने इससे बडा आश्चर्य क्या होगा? इसमे समय रहते हरयाणा सरकार को अविलम्ब हिन्दी में काम करने की घोषणा करके हरयाणावासियो का गौरव बढाये।

आर्यसमाज चरखी दादरी का वार्षिकोत्सव

महाशय सुमेरसिंह स्वरूपगढिया की अध्यक्षता मे १३, १४ व १५ अप्रैल को बडी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस उत्सव मे राष्ट्र-रक्षा सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, धर्म सम्मेलन एव राष्ट्रभाषा सम्मेलन आदि अनेक सम्मेलनों का आयोजन किया गया। महाशय बेगराज, आर्या कोकिला राजबाला तथा कविवर बेचैन के शिक्षाप्रद भजनों तथा कविताओं ने श्रोताजनों के मन को मोह लिया। हरयाणा प्रतिनिधि सभा के वेदप्रचार अधिष्टाता श्री सत्यवीर शास्त्री ने धर्म सम्मेलन में अपने भाषण में कहा कि महाभारत के युद्ध के उपरान्त भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं वैदिक धर्म प्राय नष्ट हो चुका था। यहा पर धर्म के नाम पर यज्ञो मे पशु बलि ही नही अपितु मनुष्य तक की बलि दी जाने लगी थी। युगपुरुष महर्षि दयानन्द ने पुनः वैदिक धर्म के सच्चे स्वरूप को ससार के सामने प्रकट किया।

अन्त मे श्री शास्त्री ने अपने व्याख्यान मे, उत्सव मे आये विशेष अतिथि हरयाणा सरकार के शिक्षा मन्त्री माननीय चौ० हुकमसिंह से अपील की कि वैदिक शिक्षा के बिना धर्म के सच्चे स्वरूप को समाज अपना नही सकता एव इसी प्रकार वैदिक शिक्षा के बिना समाज में बढती बुराइयो को नही रोका जा सकता है और वैदिक शिक्षा सस्कृत भाषा के बिना प्राप्त नही की जा सकती है।

शिक्षा मन्त्री महोदय ने उपस्थित आर्य सभासदों को आश्वासन दिलाया कि हरयाणा शीघ्र ही अंग्रेजी की अनिवार्यता को समाप्त करके उसकी जगह राष्ट्रभाषा हिन्दी को देने जा रही है तथा हमारी सरकार सस्कृत भाषा के उत्थान के लिए भी कृतसकल्प है।

१५ अप्रैल को हरयाणा के राज्यपाल माननीय धनिकलाल मडल जी ने आर्यसमाज के उत्सव पर बोलते हुए कहा कि एक आर्यसमाज पर ही ससार की नजर लगी हुई है क्योंकि इस समाज ने देश की आजादी के लिए अनेक कुर्बानिया दी है और सैकड़ों वर्षों से सामाजिक बुराइयों के खिलाफ लडाई लड़ रहा है।

—मन्त्री आर्यसमाज

श्री लालमन निबन्ध ...

इस प्रतियोगिता मे दो विषय थे 1— ...न्द के सपनो का भारत" तथा "वर्तमान-चारित्रिक संकट समस्या और समाधान", जिसमे देश भर से 276 प्रतियोगियो ने भाग लिया। इन निबन्धो का मूल्यांकन आर्यसमाज के तीन प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा किया गया, जिनके नाम इस प्रकार से हैं :—

1- श्री क्षितीश कुमार जी वेदालंकार, "सम्पादक आर्य जगत्"
2- श्री डा० वाचस्पति जी उपाध्याय "दिल्ली विश्वविद्यालय"
3- श्री डा० धर्मपाल जी, "प्रधान सम्पादक आर्य सन्देश"

इस निबन्ध प्रतियोगिता मे जिन व्यक्तियो को पुरस्कृत किया गया, जिनके नाम निम्नलिखित हैं :—

प्रथम पुरस्कार संयुक्त विजेता :—
1- श्री कृष्ण देव शास्त्री, पाणिनि महाविद्यालय बहालगढ, सोनीपत,
2 श्री महेश कुमार कौशिक, 8- जीवन भवन, देवपुरा आश्रम, हरिद्वार,

द्वितीय पुरस्कार . संयुक्त विजेता .—
1- श्री डा० सूर्यप्रकाश विद्यालकार—के० एच०-157 कविनगर, गाजियाबाद,
2- श्री मिश्रीलाल मीना ग्रा० मउ खेडा, वाया-विवाई, जयपुर,

तृतीय पुरस्कार : संयुक्त विजेता :—
1- श्री विनोद कुमार, क्वाटर न० 769/11/111/टाउनशिप, बी० एच० ई० एल० हरिद्वार,
2- कुमारी अख्तर उन्निसा, म० न०-25 हमीदिया अस्पताल के पीछे, भोपाल,

मूल्यांकन के हिसाब से 10 प्रतियोगियो को सान्त्वना पुरस्कार दिये गये, जिनके नाम इस प्रकार से हैं :—
1- श्री राजवीर सिंह मलिक, छपरौली मेरठ,
2- श्री शिवपुरी गोस्वामी, रातानाडा, जोधपुर,
3- श्रीमती गार्गी माथुर, हनुमान चौक, जोधपुर,
4- श्री कृष्ण बिहारी लाल, प्रवक्ता, जवाहरनगर, हाथरस,
5- डा० जयदत्त उप्रेती शास्त्री, अध्यक्ष संस्कृत विभाग, कुमाऊ वि० वि० परिसर, अल्मोडा
6- श्री कैलाश बिहारी वर्मा, अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश, सिविल कोर्ट (बिहार)
7- सुश्री सुनीता वासवानी, कोतवाली के पास, भोपाल,
8- श्री मोहम्मद असलम, 199—रामनगर, मेरठ,
9- श्री सत्येन्द्र शर्मा, आर्य नगर, सतना,
10- सुश्री शकुन्तला श्रीवास्तव, बालाघाट, म० प्र०

स्व० श्री लालमन आर्य जयन्ती

प्रसिद्ध दानवीर, स्वतन्त्रता सेनानी, कर्मठ आर्य पुरुष, महर्षि दयानन्द एवं वैदिक धर्म के अनन्य उपासक श्री स्वर्गीय लालमन आर्य के 74 वे जन्म दिवस पर 17 अप्रैल को एक विशाल समारोह हंसराज माडल स्कूल पंजाबी बाग मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री लालमन आर्य की पुण्य स्मृति मे एक सगमर्मर की भव्य यज्ञशाला, जिसमें वेद मन्त्रो का अंकन किया गया है, उनके सुपुत्र श्री गजानन्द आर्य, श्री प्रकाशानन्द आर्य श्री सत्यानन्द आर्य ने यज्ञ याग आदि पवित्र कार्य हेतु हंसराज माडल स्कूल को समर्पित की। इसका उद्घाटन आर्य सन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश जी ने किया।

श्री लालमन आर्य आदर्श ईश्वर भक्त एवं कवि थे उनके भक्तिरस में डूबे गीतो का एक कैसेट जिसको श्री गुलाबसिंह राघव ने स्वर दिया, उसका विमोचन किया गया।

प्रो० वेदव्यास की अध्यक्षता मे एक श्रद्धाञ्जलि सभा भी की गई जिसमें प्रसिद्ध आर्य नेता श्री रामगोपाल शालवाले तथा अन्य आर्य विद्वानो ने श्री आर्य के आदर्श जीवन पर प्रकाश डाला।

श्री लालमन आर्य निबन्ध प्रतियोगिता के प्रतियोगियो को भी पुरस्कृत किया गया।

योग्य वर चाहिए

३१ वर्षीय, अविवाहित, पजाबी ब्राह्मण कन्या, बी. ए. प्रथम वर्ष पास, कद, ५ फुट १ इंच गृह कार्य मे दक्ष के लिए ३४ से ३६ तक की आयु का आर्य विचारो का योग्य वर चाहिए। जाति बन्धन नही। सम्पर्क करें:—
अन्तर्जातीय विवाह विभाग, आर्य समाज मन्दिर, (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, रजिस्ट्रेशन नं० ४०१

स्व० श्री लालमन जी आर्य का प्रेरक जीवन

श्री लालमन आर्य का जन्म राजस्थान के शेरडा गाव मे वि० सं० 1968 की चैत्र शुक्ला द्वितीया को हुआ। बाल्यकाल गाव के गरीब किसानों मे बीता, लेकिन जीवन के साधन क्षेत्र बने—उत्तरी बंगाल तथा कलकत्ता जैसे नगर। सम्पन्नता एवं सादगी, देशानुराग तथा दानशीलता एवं मानवीय मूल्यो के प्रति दृढ़ आस्था का दीप जलाकर कल्याण मार्ग के पथिक बन गए।

ऋषि दयानन्द एवं महात्मा गाधी उनके आदर्श महापुरुष थे। यतिवर दयानन्द के उपदेशो से प्रेरणा ग्रहण कर मनक श्राद्ध मूर्तिपूजा का प्रबल विरोध किया तथा विधवा विवाह का सशक्त समर्थन किया। स्वदेशी आन्दोलन के प्रति आकृष्ट हुए। अकाल एव बाढ़ आदि से पीडितो की तन, मन, धन से सहायता की। वि० सं० 2040 की ज्येष्ठ शुक्ला दशमी के दिन उनकी इहलीला समाप्त हुई।

स्व० आर्य जी ने अपने जीवन मे सैकडो कविताए गीत, भजन आदि लिखे। उन्ही मे से कुछ प्रभुभक्ति एव आत्मोत्थान से सम्बद्ध गीतो का चयन से श्री आर्य जी की स्मृति मे उनके धर्मानुरागी आत्मजो, सर्वश्री गजानन्द आर्य, श्री प्रकाशानन्द आर्य एव श्री सत्यानन्द आर्य, ने जनता की सेवा मे समर्पित किया।

उन्होने एक कर्मठ योगी की तरह समाज सुधार एवं धर्मोद्धार के क्षेत्र मे कार्य किया। उनके कार्यो का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

- दहेज-आडम्बर, परदा-प्रथा, बाल-विवाह, छुआछूत, मृतक-भोज आदि कुप्रथाओ का सोदाहरण प्रबल विरोध
- विधवा-विवाह व स्वदेशी वस्तुओ के प्रयोग का सोदाहरण समर्थन
- सरोवर, कुंओं, औषधालय, धर्मशाला आदि का निर्माण
- बाढ़, दुर्भिक्ष, महामारी जैसी दैवी आपदाओं मे सहायता
- सरपंच पद पर रहते हुए ग्राम सुधार व विकास के अनेक कार्य
- अपने लिखे सैकडो भजनो व गीतों के माध्यम से आर्यसमाज का प्रचार व दुर्व्यसनो तथा अन्धविश्वास का खण्डन
- गरीब विद्यार्थियो, विद्वानो व प्रचारको को आर्थिक सहयोग

सेवा व्रत को ध्येय बनाकर अनेक धार्मिक, सामाजिक और शैक्षणिक संस्थाओं को महयोग देते रहे। कुछ संस्थाओ का उल्लेख इस प्रकार है—

- दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार
- दयानन्द कालेज, हिसार
- जगन्नाथ आर्य कन्या विद्यालय, हिसार
- विरजानन्द वैदिक साधना आश्रम, मथुरा
- विधवा विवाह सहायक सघ
- गुरुकुल, घीरणवास
- आर्यट्रस्ट, आर्यसमाज बडा बाजार, कलकत्ता

प्रतिष्ठान :
- भारत टेक्सटाइल
- इकोनोमिक ट्रांसपोर्ट आर्गेनाइजेशन
- आर्य स्टील्स प्रा० लि०

भूल सुधार

'आर्य जगत्' की टंकारा रजत जयन्ती स्मारिका मे डी. ए. वी. कालिज प्रबन्धकर्त्री सभा द्वारा संचालित शिक्षा संस्थाओं की सूची में हिन्दी पुत्री पाठशाला (हायर सै० स्कूल) खन्ना व हिन्दी माडल स्कूल खन्ना का नाम छपने से छूट गया है। पाठक अंकित कर लेवें। —मंत्री सभा

प्रो० रामसिंह स्मृति दिवस

माननीय स्वर्गीय प्रो० रामसिंह जी की स्मृति मे आर्य समाज, नया बांस, दिल्ली में १२ मई को, प्रातः ६ से १२ वजे तक राष्ट्र रक्षा सम्मेलन होगा जिसके अध्यक्ष स्वामी विद्यानंद सरस्वती तथा वक्ता श्रीमती राकेश रानी, श्री बनारसी सिंह एम. ए. और श्री दयाल सिंह बेदी होंगे।

—शिवकुमार मंत्री —ओमप्रकाश प्रधान

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स ७११७/१८ पहाड़ी धीरज, दिल्ली से छपवा कर कार्यालय, 'आर्य जगत्,' मन्दिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

भारत सरकार द्वारा रजि. न २३२०७/७३   रजि. नं. P/RTK ४९

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभा मन्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम ए.   वैसाख २४, २०४७ वि०

वर्ष १७ अंक २२   ७ मई १९९०   वार्षिक शुल्क २५)   आजीवन शुल्क २५१)   विदेश में ८ पौंड)   एक प्रति ६० पैसे

आर्यसमाज क्या है ?

—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष, वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उ०प्र०)

किसी संस्था को समझने के लिए उसके संस्थापक को समझना अत्यावश्यक है। यही बात आर्यसमाज के विषय में भी चरितार्थ होती है। आर्यसमाज को समझना हो तो पहले आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती को समझना पड़ेगा। महर्षि दयानन्द को समझे बिना आर्यसमाज को नहीं समझा जा सकता।

महर्षि दयानन्द को समझने के लिए आवश्यक है, उनके मन्तव्यों को समझना। किसी व्यक्ति को चाहे वह साधारण हो अथवा असाधारण—तब तक नहीं समझा जा सकता, जब तक उसके मन्तव्यों को न समझ लिया जाय।

जिन महापुरुषों ने अपने पीछे अपना कुछ साहित्य छोड़ा है, उन्हें समझने के लिए उनके साहित्य का अध्ययन करना अत्यावश्यक है। उनके साहित्य में उनका दृष्टिकोण होता है और वह दृष्टिकोण उनके ग्रन्थों के अध्ययन से अध्ययन करने वाले को प्राप्त होता है।

यदि किसी महापुरुष का साहित्य उपलब्ध न हो, उसने साहित्य रचना की ही न हो तो उसका जीवन चरित्र भी उस महापुरुष के मन्तव्यों की जानकारी करा देता है। परन्तु तब—जब किसी निष्पक्ष लेखक के द्वारा वह लिखा गया हो। यदि किसी पक्षपाती तथा मतवादी स्वार्थी लेखक के द्वारा वह लिखा गया हो तो उसमें लेखक द्वारा स्व-मान्यताओं का मिश्रण कर दिया होगा तथा स्व-स्वार्थों की सिद्धि के लिए उसमें अनेक बातें अनर्गल बातें भर दी गयी होंगी। ऐसी स्थिति में कभी-कभी तो वास्तविकता का पता लगाना और तथ्य को जानना तथा समझ पाना अत्यन्त कठिन हो जाता है।

महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के विषय में ऐसी बात नहीं है। एक तो उसका प्रारम्भिक कुछ अंश स्वयं महर्षि द्वारा वर्णित है। दूसरे जो महर्षि-चरित्र के सर्वप्रथम लेखक थे, वह न तो कभी महर्षि दयानन्द के सम्पर्क में आए थे और न उनके द्वारा संस्थापित आर्यसमाज के विषय में कोई जानकारी भी नही थी।

महर्षि दयानन्द के देह-त्याग के पश्चात् ब्राह्मसमाज के नेता श्री केशवचन्द्र सेन बंगाली ने उन्हें महर्षि के विषय में तथा उनके कर्तव्य और व्यक्तित्व के विषय में कुछ बातें बतायी थीं, जिन्हें सुन कर ऋषि के विषय में विशद जानकारी प्राप्त करने की धुन सवार हुई थी। उस धुन में उस बंगाली युवक ने अपनी जीवन भर की अर्जित की हुई समस्त सम्पत्ति होम दी। जहां-जहां ऋषि के जाने और जिस-जिस से भेंट व वार्ता करने का उसे पता चलता गया, वह युवक वहीं-वहीं गया और उन लोगों से मिला, जिनसे महर्षि की भेंट और वार्तालाप हुआ था। इस प्रकार उसने तथ्यों की जानकारी प्राप्त कर ऋषिवर की जीवन-गाथा का संकलन किया, यद्यपि इस कार्य में उसके स्वास्थ्य का भी विनाश हो गया। जिस व्यक्ति ने अपना स्वास्थ्य और जीवन भर की कमाई इस कार्य के लिए होम दी, वह स्वार्थी तो हो नहीं सकता। ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज से उसका सम्बन्ध तो क्या परिचय भी नहीं था, इसलिए पक्षपाती भी वह नहीं था। उस धुन के धनी युवक का नाम था देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय।

ऐसी स्थिति में—जब लेखक का न तो स्वार्थ हो और न उसमें पक्षपात हो—जीवन चरित्र में न तो वह अपनी मान्यतायें भर सकता है, और न अनर्गल बातों का प्रवेश कर सकता है। वह तो सत्य को खोज करने वाला होता है। अतः सत्य का ही वर्णन करता है। हां कभी-कभी किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा किसी बात को अपने स्वभाव के अनुसार बढ़ा-चढ़ा कहने के कारण कुछ भ्रान्तियां हो जाना सम्भव हो सकता है, किन्तु ऐसी सम्भावनायें कम ही होती हैं और कुछ हो भी जायें तो भी उनसे भी तथ्य पर पर्दा नहीं पड़ सकता अपितु ध्यानपूर्वक आद्योपान्त पढ़ने से तथ्य उजागर हो ही जाता है।

इतने पर भी ऋषि दयानन्द का विपुल साहित्य उपलब्ध है, जिसका अधिकांश भाग उनके जीवन काल में ही प्रकाशित हो चुका था। सहस्रशः पृष्ठों और विविध विषयों के अनेक ग्रन्थों के रूप में लिखे गए उनके साहित्य के अध्ययन से उनके मन्तव्यों का पता लग जाता है। उन मन्तव्यों के अनुसार ही आर्यसमाज का कार्यक्रम है, अभिप्राय यह है कि उन मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार के लिए ऋषिवर ने अपने उत्तराधिकारी के रूप मे आर्यसमाज की स्थापना की थी। इस प्रकार से आर्यसमाज अपने संस्थापक महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार का संस्थान है और उसे इसी रूप में समझा जाना चाहिए। जो लोग आर्यसमाज को इस रूप में नहीं समझते, वह भूल करते हैं—महती भूल, ऐसी भूल जो न तो उनके स्वयं के लिए हितकारक है और न मानव समाज की हित-साधक।

यदि आर्यसमाज के सदस्य बन जाने वाले भी इस भूल में फंसे हैं तो और भी खेदजनक बात है और साथ ही भय यह है कि ऐसे लोगों की संख्या वृद्धि के साथ-साथ आर्यसमाज पथभ्रष्ट हो जाएगा। वर्तमान समय में ऐसा परिलक्षित भी होने लगा है और उसका कारण है उपर्युक्त प्रकार के सदस्यों की संख्या वृद्धि।

इस प्रकार के सदस्यों की संख्या वृद्धि हो जाने से समाजों की संख्या की वृद्धि हो जाएगी, किन्तु वह ऋषिवर दयानन्द की आर्यसमाजें न होंगी। वह या तो मतवादियों की, साम्प्रदायिक दृष्टिकोण वालों की समाजें होंगी और या फिर ऐसे लोगों की समाजें जिन्हें कहीं न कहीं, किसी न किसी प्रकार एकत्र होकर समय बिताना था और किसी नाम से न सही—आर्यसमाज के नाम से सही। एक क्षेत्र मिला, नेतागिरी भी मिली और इस प्रकार व्यापक रूप से मनबहलाव होने लगा। न स्वयं के जीवन में सुधार आया और न स्वपरिवार के—समाज की तो बात ही क्या कहनी? (शेष पृष्ठ ४ पर)

आओ सत्संग में चलें

कोहरा दूर करके उसे देखो

डा० सुद्युम्नाचार्य, व्याकरणाचार्य, एम. ए. [लब्ध स्वर्णपदक]
संस्कृत विभाग डी. फिल्.

न तं विदाथ य इमा जजान
यद्युष्माकमन्तर बभूव।
नीहारेण प्रावृता जल्प्या
चासुतृप उक्थशासश्चरन्ति ॥
—ऋग्वेद १०।८२।७

शब्दार्थ—जिसने इस विश्व के पदार्थों को उत्पन्न किया उसे नही जानते हो। वह तुम्हारे अन्दर (अहं इस अनुभूति के अलावा) कुछ अन्य ही है। कोहरे मे ढके हुए वे लोग, जो अनृत बोलते तथा समझते है तथा अपने प्राणों के पोषण में ही लगे रहते हैं, वे कुछ भौतिक यज्ञों की प्रशंसा करते हुए इस धरती पर घूमते हैं।

व्याख्या – विश्व के समस्त पदार्थों में प्राप्त होने वाले रहस्य को हम प्रायः नही जान पाते। उसका यह उतना अच्छा कारण नही कि वह सूक्ष्म है। क्योकि उसे सूक्ष्म से सूक्ष्म के साथ ही एक साथ महान् से महान् भी माना गया है। उसका एक मुख्य कारण यह है कि वह सदा हमारे सामने रहता है। यह तथ्य अचरज-भरा लगता है कि कोई वस्तु सदा आंखो के सामने रहकर भी न दिखाई दे। पर इसमें सचाई है। हम इन अक्षरो को तभी देख पाते हैं, जब एक मात्रा को देखकर अन्य क्षण मे अन्य मात्रा को देख सके। यदि मेरी दृष्टि एक ही मात्रा की ओर सदा के लिये स्थिर हो जाये, तो मुझे वह वस्तु दिखनी बन्द हो जायेगी। दृष्टि-भ्रम की व्याख्या करने वाले विद्वान् एक ही रेखा के सामने आँखें गड़ाना सिखाकर आँखों से उस रेखा को अदृश्य कर देते है।

कहना यही है कि जो भी कार्य सदा हो रहा है, निरन्तर उसी रूप मे मेरे सामने दृश्य है, उसका अनुभव कर पाना मेरे लिए असम्भव हो जाता है। हवा का अनुभव मुझे केवल इसीलिये है, क्योकि उसकी गति की तीव्रता बदलती रहती है। पृथ्वी के वेग को मैं अनुभव नही कर पाता क्योकि उसकी चाल की तीव्रता मे कभी कोई अन्तर नही आ पाता। यदि एक क्षण के लिये भी पृथ्वी का चलना रुक जाये, या उसकी तीव्रता में परिवर्तन हो जाये, तो मैं तत्काल उसका अनुभव कर लूंगा। मेरे जीवन के सबसे अन्तरतम अपने प्राण को मैं प्रायः भूल जाता हू। क्योकि वे समरस होकर मेरे पास हैं। पर प्राणायाम के समय मुझे अनुभव हो पाता है कि उनका चलना क्या है तथा कितना महत्व रखता है।

सभी पदार्थों में व्याप्त रहस्य मेरी आँखो के सामने सदा कार्यशील होने के कारण अदृश्य हो गया है।

मंत्र के दूसरे चरण में कहा है कि इसे न जान पाने का एक प्रमुख कारण मेरा अहंकार है। यह जानकर अचरज होता है कि सही वस्तु को न जान पाने में अहंकार की इतनी बड़ी भूमिका है। प्राचीनकाल के ज्योतिष मे पृथ्वी के चारो ओर सूर्य घूमने के सिद्धान्त के विकसित न होने का कारण केवल मानव का अहंकार ही था। उस समय लोग यह सोच भी नही पाते थे कि वे स्वयं किसी बडी शक्ति से परिचालित होकर किसी के चारो ओर घूमेगे। उनके लिये यह सोचना सर्वथा स्वाभाविक था कि उनके ही चारो ओर सब कुछ घूम रहा है। यह सहज ही उनके अहकार के कारण था।

इसी प्रकार हर वस्तु को देखते समय, हर कार्य करते समय, मेरा अहंकार यह मानने को विवश करता है कि मैं तथा एकमात्र 'मैं' ही देखता तथा कार्य करता हूं। आज प्रत्येक मानव गम्भीर समस्याओं तथा चिन्ताओ से ग्रस्त है। क्या उसके पीछे यही एकमात्र कारण नहीं है? मानव यह सोचता है कि मैं ही इस कार्य को पूरा करूंगा। मैं ही इस कार्य का विधाता हू। सभी समस्याओं तथा चिन्ताओ का भार मुझ पर ही है। उसकी स्थिति ठीक उसी प्रकार होती है, जैसे कोई मनुष्य सिर पर बोझा रखकर रेलगाड़ी में चढ़े। वह रेल के डिब्बे मे चढ़कर भी अपना बोझा सिर पर ही रखे रहा। अन्य सहयोगियो ने उससे कहा कि वह बोझे को नीचे गाडी पर रख दे। पर उसने यह मानने से इन्कार कर दिया। उसका कहना था कि मैंने अपना टिकट खरीदा है, बोझ का नही। अत: बोझे को मैं स्वयं उठाऊंगा। रेलगाड़ी को बोझ का कष्ट नही दूंगा।

वास्तव में हम सभी बोझा उठाए हुए रेलगाडी मे बैठे व्यक्ति के सदृश हैं। अहंकार के कारण हम सभी समस्याओं को अपने ऊपर ओढ़े बैठे हैं। हम यह भूल बैठे हैं कि हमारी समस्याओं को क्या, स्वयं हमको एक अन्य महाशक्ति चला रही है।

तत्वत: इस प्रकार के अहंकार के लिये कोई स्थान नहीं है। आधुनिक विज्ञान मे भी इस प्रकार के अहकार से परिचालित सिद्धान्तों को अमान्य कर दिया गया है।

मन्त्र के तीसरे चरण मे कहा है कि हम सभी कोहरे से ढके हुए मनुष्य के समान हैं। यह स्थिति भी बड़ी विचित्र है। कोहरे से ढका हुआ हर मनुष्य यह सोचता है कि मेरे चारों ओर प्रकाश है। बाकी सब लोग कोहरे के अन्धकार से ढके हुए हैं। गजब है! हर आदमी अपने लिए ऐसा ही सोचता है तथा दूसर को अन्धकारावृत्त मानता है।

इस प्रकार अहंकार का कमाल तो देखिये। हर आदमी इस अहंकार के घेरे में कैद है। वह बाकी सब को भ्रान्त तथा अपने को संभ्रान्त मानता है। सही अर्थो मे तो सम्यक् रूप से भ्रान्त वही है। जब उसका कोई भ्रम टूटता है, तब वह पहले को भ्रान्त तथा नई स्थिति को सही समझ लेता है। वह यह कभी नही सोचता कि वह एक भ्रमपूर्ण घेरे से छूट कर दूसरे इसी प्रकार के घेरे में प्रविष्ट हो गया है।

सम्भवत. इसी प्रकार कोहरे मे ढके हुए मनुष्य के लिये दर्शनशास्त्र मे दृष्टि सृष्टिवाद का सिद्धान्त प्रचलित हुआ था। उसके अनुसार सृष्टि वैसी तथा उतनी है, जितनी तथा जैसी हमारी सृष्टि है। एक बच्चे तथा बूढ़े का संसार निश्चित रूप से भिन्न है। पर किसी बूढे को बच्चे के निश्छल तथा वात्सल्यपूर्ण ससार को गलत कहने का क्या कारण होना चाहिए। वास्तव में दोनो मे ही कुछ सचाई है।

अत: वेद का कहना है कि कोहरे के इस घेरे में कैद होना बन्द करें। पूर्ण भ्रान्त सपना देखने वाला भी सपना देखते समय यह कभी नही सोचता है कि मैं भ्रम में हू। इसी प्रकार इस दुनिया में रहते हुए भी पूरी तरह सचाई को समझ लेने का दावा करने का अधिकार किसी को नही है।

मंत्र के चौथे चरण में कहा है कि इस प्रकार अहंकार के कारण सचाई का दावा करने वाले लोग 'जल' अर्थात् अनृत भाषण करने वाले हैं। वे केवल सांसारिक कार्यों की पूर्ति के लिए यज्ञ की प्रशसा भर करते है। वे अपने प्राणों को तृप्त करने मे ही लगे रहते हैं। सदा सुख-सुविधाओं के साधन जुटाने में ही तल्लीन रहते हैं। इन्हे वेद मे एक अति सुन्दर शब्द 'असुतृप:' प्रदान किया गया है। वे अपने प्राणो को तृप्त करने वाले, अपने आप में मस्त, पर सचाई से दूर हैं।

इस प्रकार के लोग यथार्थपरक नही है। अत. इस जीवन में सही उन्नति के लिए इस मन्त्र मे अपने चारो ओर फैले कुहरे को दूर करने का अति सुन्दर सन्देश दिया गया है।

पता—मु० म० टाउन पोस्ट ग्रेजुएट डिग्री कालेज, बलिया (उ० प्र०)

मीमाँसक जी का अभिनन्दन और ७५,००० रु० की थैली भेंट

१९ मई को प्रातः ९ बजे आर्य विद्या मंदिर बान्द्रा सभा गृह में आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध एवं मूर्धन्य विद्वान, वैदिक अनुसंधान कर्ता, ७५ वर्षीय, पूजनीय प० युधिष्ठिर जी मीमांसक का आर्य समाज सान्ताक्रूज की ओर, से अभिनन्दन किया गया। वैदिक अनुसंधान के हेतु समर्पित जीवन के प्रति कृतज्ञता के प्रतीक स्वरूप उन्हें पदक, शाल एवं ७५,०००-०० रु० की थैली भेंट की गई। इस राशि का उपयोग वे अपने अप्रकाशित ग्रंथों के प्रकाशन में करेगे। लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ ने समारोह की अध्यक्षता की और प्रो० वेदव्यास जी मुख्य अतिथि रहे।

—कैप्टिन देव रत्न आर्य

कण्वाश्रम में शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के तत्वाधान मे आर्य युवकों व आर्य समाज के अधिकारियों की एक विशेष बैठक 27 मई सोमवार सायं 6.30 बजे "ग्रीष्मकालीन आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर" के सम्बंध मे आयोजित की गई है, जिसमे आर्य प्रादेशिक सभा के महासचिव श्री राम नाथ सहगल विशेष रूप से आमंत्रित है। —चन्द्रमोहन आर्य

सम्पादकीयम्

नया खुमैनी : नया तख्त

उपनिषत्कार ऋषियों ने कहा था—

नायमात्मा बलहीनेन लभ्य :

बलहीन व्यक्ति आत्मा को प्राप्त नही कर सकता। आत्मा का अर्थ परमात्मा भी और अपना आप भी। इन दोनों की प्राप्ति के लिए जिस प्रकार के बल की आवश्यकता है, वह शारीरिक बल नहीं, बल्कि आत्मिक बल ही है। यदि सूक्ष्म दृष्टि से सोचा जाय तो मानसिक संकल्प के बिना शारीरिक बल प्राप्त करना भी सम्भव नहीं है। इस समय अकाली दल के नेता आत्मिक बल से हीन हैं। मानसिक संकल्प की दृष्टि से वे सर्वथा कोरे हैं, कापुरुषता के शिकार हैं, इसलिए वे अपने आप को प्राप्त करने और आप को संभालने में असमर्थ हैं। पंजाब सरकार ने उनकी सुरक्षा की व्यवस्था करके अपने कर्तव्य का पालन ही किया है, परन्तु इससे किसी में आत्मिक बल का इंजेक्शन नहीं दिया जा सकता।

अकाली नेताओं की आत्मिक बल से हीनता की यह पराकाष्ठा है कि अपने आपको जीवित रखने के लिए उन्हें भिंडरावाले के भूत का सहारा लेना पड़ रहा है। जो किसी मृतक व्यक्ति के सहारे से जीवित रहना चाहे, उसे जीवित कहने को कौन तैयार होगा? जिस बेचारे जोगिन्दर सिंह का आज तक राजनीति से कभी कोई वास्ता नहीं रहा, और जो भिंडरावाले के विचारों से भी पूरी तरह सहमत नहीं था, अब उस 85 वर्ष के निरीह व्यक्ति से भिंडरावाले का बाप होने की कीमत वसूल की जा रही है। और जगह बाप के मरने पर बेटे के सिर पर पगड़ी बंधती है, यहां बेटे के मरने पर बाप के सिर पगड़ी बंधी है। पगड़ी बंधने के पश्चात् इस बुजुर्ग व्यक्ति ने उस पगड़ी की लाज रखने के लिए जिस "फण्डमेंटलिज्म" को आधार बनाया है, उसके सहारे उसके मन में धीरे-धीरे ईरान का खुमैनी बनने की महत्वाकांक्षा पनप जाय तो आश्चर्य नहीं।

ईरान के खुमैनी ने जिस तरह शिया होकर अपने से भिन्न विचारधारा को मानने वाले ईराक को सुन्नी होने के कारण सबक सिखाने का ठेका लिया है, वह जहां शिया और सुन्नियों के चिरकालीन "काकोलूकीय" का प्रमाण है, वहां इस बात का भी प्रमाण है कि दोनों देश इस्लाम के अनुयायी होने पर भी एक-दूसरे को फूटी आंखों नहीं सुहाते। क्या पारस्परिक घृणा का यह विष-बीज ही संसार को इस्लाम की देन है? इस्लाम ही क्यों, ईसाईयत के विभिन्न सम्प्रदाय भी इसी प्रकार आपसी घृणा के शिकार हैं। उसका उदाहरण ब्रिटेन और आयरलैंड हैं। एक प्रोटेस्टेंट है तो दूसरा रोमन कैथोलिक। और चिर काल से ये दोनों एक ही पैगम्बर ईसामसीह के अनुयायी होने पर भी कभी आपस में शान्ति पूर्वक नहीं रह सके। जो अपने से इतनी घृणा करते हैं, उनका परायों के प्रति क्या रवैया होगा?

सेमेटिक मजहबों की यह घृणा की परम्परा अब अकाली दल ने अपनाई लगती है। जहां बाबा जोगिन्दर सिंह मन ही मन खुमैनी बनने के स्वप्न देखने लगे होंगे, वहां उनको पगड़ी पहनाने वाले उनके आतंकवादी चेले अब उन सब सिखों को ही अपनी घृणा का शिकार बनाने पर तुल जायें, तो आश्चर्य नहीं, जो उनके आतंकवाद का समर्थन करने के लिए किसी भी कीमत पर तैयार नहीं। अगर लोंगोवाल, बादल या तोहड़ा में कुछ भी आत्मिक बल होता तो वे कभी भी अपने सिर के ऊपर इस नये खुमैनी को न बैठने देते।

अब नये खुमैनी आ गये हैं तो उनके सिंहासन के लिए तख्त भी नया चाहिए। जब भिंडरावाले अकाल तख्त की शरण में गये थे तब श्री तोहड़ा ने कहा था कि भिंडरावाले तो बादशाह हैं, वे कहीं भी रहें, उनको कौन रोक सकता है। पर अब तो बाबा जोगिन्दर सिंह के रूप में उस तथाकथित बादशाह का साक्षात बाप ही मौजूद है, तो उसके लिए उस तख्त से कैसे काम चलेगा जिस तख्त पर उसका बेटा बादशाह बनकर बैठ चुका हो। शायद इसीलिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी ने अकाल तख्त को तोड़कर उसे फिर से बनाने का फैसला किया है।

तोहड़ा तो जब से छूट कर आये हैं, तभी से यह बात कह रहे हैं। अब तो शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी ने भी अकाल तख्त को तोड़ने का फैसला कर ही लिया है। अकाल तख्त किस तारीख को तोड़ा जायेगा और कार सेवा कौन संचालित करेगा, इसका फैसला कमेटी ने नहीं किया। इन दोनों मसलों पर फैसले का अधिकार कमेटी के अध्यक्ष गुरुचरण सिंह तोहड़ा को सौंपा गया है। परन्तु जिस दिन यह फैसला हुआ, उसी दिन शाम को श्री तोहड़ा ने कमेटी के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया। अब इन दोनों मसलों का फैसला कौन करेगा, भगवान जाने।

वर्तमान अकाल तख्त को स्वीकार करने में सबसे बड़ी बाधा यह है कि उसको बुड्ढा दल के नेता निहंग बाबा सन्तासिंह ने दिन-रात एक करके पहले से भी अधिक भव्य रूप में खड़ा कर दिया है। सन्तासिंह के द्वारा निर्मित अकाल तख्त को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी क्यों स्वीकार नहीं कर सकती, इसमें भी एक रहस्य है। कारण केवल यह नहीं है कि सन्तासिंह को पन्थ से निकाला गया है। बल्कि उनको पंथ से निकालने के पीछे भी एक रहस्य है। वह रहस्य यह है कि सन्तासिंह मजहबी सिख हैं। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति के सब ग्रन्थी उस अभिजात वर्गीय अभिमान के शिकार हैं जो इतिहास में ब्राह्मणवाद के नाम से मशहूर रहा है। जिस तरह पौराणिक ब्राह्मणों की दृष्टि में किसी हरिजन के स्पर्श की तो बात ही क्या, उसके दर्शन मात्र से देव मूर्ति अपवित्र हो जाती है, उसी तरह इन ग्रन्थियों की दृष्टि में बाबा सन्तासिंह के स्पर्श से अकाल तख्त अपवित्र हो गया है। क्योंकि एक मजहबी (हरिजन) सिख ने उसे छू दिया है। इसी रहस्य का एक खुलासा यह भी है कि आज तक अकाल तख्त के ग्रन्थियों ने जिनको भी तनखईया घोषित किया, वे सब गैर-जाट मजहबी सिख ही हैं। आज तक किसी गैर मजहबी सिख को ग्रन्थियों ने कभी तनखईया घोषित नहीं किया। अकाल तख्त के निर्माण के बाद इन्हीं ग्रंथियों ने को कहने को छूआछूत नहीं मानते, इस अकाल तख्त को सन्तासिंह की छूत से हुई अपवित्रता से बचाने के लिए पहले दूध से धोया और उसके बाद सरोवर के जल से धोया। परन्तु सन्तासिंह का वह स्पर्श कैसा विचित्र था कि इतने महीनों तक ग्रंथियों ने उस अकाल तख्त को पवित्र माना, पर अब अचानक वह फिर अपवित्र होकर अस्वीकरणीय हो उठा।

बाबा सन्तासिंह ने यह घोषणा की है कि बुड्ढा दल और मजहबी सिख अपना अलग अकाल तख्त बनायेंगे। इस विषम परिस्थिति में हमारा एक विनम्र सुझाव है। वह सुझाव यह है कि स्वर्ण मन्दिर में विद्यमान अकाल तख्त को तोड़ो मत, यह मजहबी सिखों को सौंप दो, जिससे उनको अपना अलग अकाल तख्त न बनाना पड़े। अपने आपको अभिजात वर्गीय मानने वाले अकाल तख्त के वर्तमान ग्रंथियों से हमारा करबद्ध अनुरोध है कि इस अकाल तख्त को ज्यों का त्यों रहने दो तथा एक और नया अकाल तख्त बनाओ, पर वह अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर में नहीं, बल्कि लाहौर के के पास ननकाना साहब में। गुरुनानक के जन्म स्थान से बढ़कर पवित्र स्थान और कौन-सा हो सकता है जब अकाल तख्त वहां बन जायेगा तो उसकी पवित्रता को और चार चांद लग जायेंगे।

यह कोई खाम खयाली का सुझाव नहीं है। सिख जन-मानस चिर काल से ननकाना साहब को वैटिकन सिटी (रोम की पोप नगरी) का दर्जा देने की आकांक्षा पालता रहा है। बंग्लादेश के युद्ध के दिनों में खालिस्तान के स्वयं भूनेता जगजीत सिंह चौहान अपने हाथ में ननकाना साहब की चाबियां लेकर पाकिस्तान के रेडियो और टेलीविजन पर उन चाबियों को दिखाते हुए भारत के विरुद्ध और पाकिस्तान के पक्ष में प्रचार करते रहे हैं। चाबियां उनके हाथ में होने का उद्देश्य जनता को यह बताना था कि पाकिस्तान की सरकार ननकाना साहब को वैटिकन सिटी का दर्जा देने के लिए नीम रजामन्द है। परंतु बंग्लादेश की लड़ाई समाप्त होते ही पाकिस्तान के टेलीविजन पर न वे चाबियां दिखाई दीं, न चौहान साहब दिखाई दिये। शायद तब पाकिस्तान को उनकी जरूरत नहीं रही थी।

हमारे सुझाव का एक ऐतिहासिक आधार भी है। देश के विभाजन के समय जिन ऐतिहासिक गुरुद्वारों को सिख बंधु पश्चिमी पंजाब में छोड़कर आये थे, प्राय: उन सभी गुरुद्वारों के साथ उनके सचालनार्थ बड़े-बड़े भूखण्ड लगे हुए थे। मास्टर तारा सिंह ने सन् 1955 में यह कहा था कि उन तमाम भूखण्डों के बदले पाकिस्तान शिरोमणि गुरुद्वार प्रबंधक कमेटी को रावी नदी के दूसरे किनारे पर स्थित करतार पुर के गुरुद्वारा डेरा बाबा नानक के आस-पास का, जहां गुरुनानक का देहांत हुआ था, लगभग 40 वर्गमील का टुकड़ा दे दे। मास्टर जी का सुझाव था कि इस 40 वर्गमील में रहने वाले मुसलमान पाकिस्तान के अन्य गुरुद्वारों के भूखण्डों पर जा बसें और इस 40 वर्गमील की भूमि को फसल पैदा करके या बाग लगाकर उसकी आय से अन्य गुरुद्वारों का संचालन किया जाए। यह 40 वर्गमील का भूमिखण्ड पाकिस्तान का ही रहेगा और इसकी आमदनी भी पाकिस्तान में ही खर्च होगी। परन्तु उस पर नियंत्रण शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का रहेगा। मास्टर जी के सुझाव पर उस समय किसी पाकिस्तानी ने कोई आपत्ति नहीं की थी, प्रत्युत कुछ मुस्लिम नेताओं ने इस सुझाव का तत्काल स्वागत किया था।

अब हमारा निवेदन है कि वह नया अकाल तख्त अमृतसर के बजाय पाकिस्तान स्थित ननकाना साहब में बनाया जाय। हमें विश्वास है कि भारत की समस्त जनता ग्रंथियों के इस अभियान में सहायक होगी, नये खुमैनी का नया तख्त भी बन जायगा।

संस्थाएं आर्य समाज के प्रचार का साधन

डी० ए० वी० शताब्दी वैदिक प्रशिक्षण शिविर समारोह सम्पन्न

बोकारो इस्पात नगर:—डी० ए० वी० आन्दोलन शताब्दी के उपलक्ष्य में पूर्वी क्षेत्र की डी० ए० वी० संस्थाओं की ओर से स्थानीय डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल में ५ मई से १२ मई १९८५ तक वैदिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें बोकारो जवाहर विद्या मन्दिर रांची, धुर्वा रांची, दुर्गापुर, नन्दराज रांची तथा कोयला क्षेत्र स्थित, राजरप्पा प्रोजेक्ट, ढोरी फुसेरो, झाकड़ी बीना, अल्कुसा कुसुण्डा, मुनीडीह (धनबाद) के डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल के एक सौ छात्रों ने भाग लिया। ५ मई को प्रातःकाल यज्ञोपरान्त १०० छात्रों का सामूहिक उपनयन संस्कार किया गया। इस अवसर पर डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति नई दिल्ली के प्रधान प्रो० वेद व्यास जी तथा संगठन सचिव श्री दरबारी लाल जी ने छात्रों के ऊपर पुष्प वर्षा की। छात्रों को आशीर्वचन देते हुए प्रो० वेद व्यास जी ने यज्ञोपवीत की आवश्यकता एवं इसके महत्व पर सारगर्भित संक्षिप्त उपदेश दिया। छात्रों के दीर्घ आयुष्य, स्वास्थ्य एवं सुख की कामना करते हुए प्रो० साहब ने कहा आज इस शुभावसर पर यज्ञोपवीत धारण कर आप एक भारी दायित्व अपने ऊपर ले रहे हैं। यज्ञोपवीत के तीन सूत्र आपको देवऋण-ऋषि ऋण एवं पितृ ऋण का स्मरण कराते रहेंगे। आज आप सब वैदिक धर्म प्रचार का व्रत धारण करें और डी०ए०वी० संस्थाओं में अध्ययन पूर्ण करने के उपरान्त कार्य क्षेत्र में प्रवेश कर देश में व्याप्त भ्रष्टाचार, अन्धकार व अविद्या को दूर करने का संकल्प लें।

श्री दरबारी लाल जी ने इस समारोह में उपस्थित भारी जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि अनेक भाई हम से यह प्रश्न पूछते हैं कि आर्य समाज तो अपने प्रारम्भिक काल से गुरुकुल व हिन्दी माध्यम के स्कूलों व कालेजों के द्वारा हिन्दी का प्रचार करता रहा है, आज ये लोग अंग्रेजी माध्यम से स्कूल क्यों खोल रहे हैं? मैं इस प्रश्न के उत्तर में कहना चाहता हूं कि अंग्रेजी भाषा का हमें आग्रह नहीं है, आज देश में अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में अपने बच्चों कोप ढ़ाने की लोगों में एक सनक हो गई है। अंग्रेजी के प्रति लगाव की एक बाढ़ आई हुई है। ईसाइयों ने स्थान-स्थान पर कान्वैण्ट स्कूल चला रखे हैं जिनमें पढ़ कर हमारे बच्चे भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति से विमुख होकर पाश्चात्य सभ्यता के पुजारी बन रहे हैं। इस स्थिति को देखते हुए विवश होकर हमें अंग्रेजी माध्यम स्कूल खोलने पड़ रहे हैं। हमारे स्कूलों में बच्चों को राष्ट्रीयता, भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति तथा वैदिक धर्म की शिक्षा विशेष रूप से दी जाती है। इस प्रकार डी०ए०वी० संस्थाओं के द्वारा बच्चों को ईसाइयत के अराष्ट्रीय जाल से बचाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

श्री दरबारी लाल ने आगे बड़े जोरदार शब्दों में करतल ध्वनि के बीच कहा कि हमारा मुख्य लक्ष्य आर्यसमाज का प्रचार व प्रसार करना है। डी०ए०वी० शिक्षण संस्थाएं उस प्रचार का साधन मात्र हैं।

आर्यसमाजी शिक्षकों का प्रभाव—

शिविर में प्रशिक्षण देने के लिये आमन्त्रित वैदिक विद्वान् प्रो० रत्नसिंह ने कहा कि 'डी०ए०वी० कालेज प्रबन्ध समिति के अधिकारियों की इच्छा तथा प्रयत्न के बावजूद डी०ए०वी० संस्थाओं में वांछित धर्म-शिक्षा अध्यापन नहीं हो पा रहा है। इसका मुख्य कारण आर्यसमाजी अध्यापकों व प्रिंसिपलों का उपलब्ध न होना है। इस कमी को दूर करने के लिये समय-समय पर अध्यापकों, प्रिंसिपलों व छात्रों के लिए वैदिक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करने का कार्यक्रम अपनाया गया है। उसी श्रृंखला के अन्तर्गत आज यहां डी०ए०वी० स्कूलों के छात्रों एवं अध्यापकों के प्रशिक्षण का आयोजन किया गया है।

समापन समारोह—

१२ मई को प्रशिक्षण समापन समारोह में प्रिंसिपल नारायण दास ग्रोवर ने कहा कि भविष्य में इस प्रकार के शिविरों का आयोजन प्रत्येक डी०ए०वी० स्कूल में करने का विचार है जिनमें अधिक संख्या में छात्रों व अध्यापकों को प्रशिक्षित किया जा सकेगा। शिविर की व्यवस्था श्री ग्रोवर साहब ने की और डा० वाचस्पति कुलवन्त, प्रो० सूर्यप्रकाश स्नातक, श्री लज्जाराम, श्री वासुदेव शास्त्री तथा श्री कृष्ण देव शास्त्री ने संचालन में पूर्ण सहयोग दिया। डी०ए०वी० स्कूल बोकारो सिटी के प्रिंसिपल श्री रामचन्द्र मुंजाल ने सभी उपस्थित जनों को धन्यवाद दिया।

गरीब छात्रों के लिए आवास—

इसी अवसर पर उपेक्षित वर्ग के मेधावी छात्रों के लिए सर्वथा निःशुल्क छात्रावास की प्रो० वेद व्यास जी द्वारा आधार शिला रखी गई और बोकारो स्टील-प्लाण्ट के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री तरफदार ने समारोह की अध्यक्षता की।

राजीव गांधी और भजन लाल की......

(पृष्ठ १ का शेष)

जिस होटल मे वे ठहरे हुए थे, वहा आतंकवादी संदिग्ध अवस्था में घूमते हुए पकड़े गये। जिस पंजाबी रेस्तरा में वे 3 मई को खाना खाने के लिए जाने वाले थे, वहां भी 5 आतंकवादी सिख रेस्तरां के पास घूमते हुए पाये गये उनके पास से श्री भजन लाल होटल के जिस कमरे मे ठहरे हुए थे, उस कमरे का नम्बर, भजन लाल का चित्र, कुछ ओटोमैटिक हथियार और जिस अस्पताल में उनका आपरेशन होना था, उसका नक्शा और अन्य कागजात भी बरामद हुए हैं।

कहा जाता है कि श्री भजन लाल को इस बारे में कुछ पता नहीं था। उनको प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी से ही टेलिफोन पर बातचीत से यह सब पता लगा। प्रधानमंत्री ने ही श्री भजन लाल की पूरी सुरक्षा के लिए अमेरिकी सरकार से आग्रह किया। श्री भजन लाल को मारने के लिए कनाडा, न्यूयार्क और वाशिंगटन से सिख आतंकवादियो के गिरोह न्यूऔलियंस पहुंचे हुए थे। वे भजन लाल को मारने के अवसर के फिराक में थे। अमेरिकी गुप्तचर विभाग ने 20 सिख आतंकवादियों को गिरफ्तार किया है।

अब यह भी पता लगा है कि बब्बर खालसा ने एक नई हिट लिस्ट तैयार की है जिसमें पत्रकार अरुण शोरी, रिटायर्ड चीफ मार्शल अर्जुन सिंह, रिटायर्ड लेफ्टिनेंट जगजीत सिंह अरोड़ा, इन्द्र कुमार गुजराल और हिंदुस्तानी आन्दोलन के संयोजक मधु मेहता के नाम भी शामिल हैं।

जब से लोंगोवाल, तोहड़ा और बादल ने अकाली दल से इस्तीफा दिया है, तब से आतंकवादियों ने उनका भी सफाया करने का फैसला कर लिया है। दिल्ली पुलिस ने दिल्ली में विभिन्न स्थानों पर ट्रांजिस्टर बम रखकर निरीह और निर्दोष लोगों को मौत के घाट उतारने के लिए जिम्मेवार जिन लोगो को गिरफ्तार किया है, उनसे इस रहस्य का पता लगा है।

दिल्ली तथा अन्य स्थानों के सिखों ने आतंकवादियों की वहां कड़ी निन्दा की है, वहां उनसे लोहा लेने का संकल्प भी व्यक्त किया है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल वानप्रस्थ, जैन मुनि आचार्य सुशील कुमार, सनातनधर्मी नेता श्री प्रेमचन्द गुप्त, दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के कार्यकारी अध्यक्ष सरदार जसवन्त सिंह कालका तथा बौद्ध-ईसाई-मुस्लिम नेताओं और भारत साधु समाज द्वारा एक संयुक्तवक्तव्य में इन आतंकवादियों की कड़ी निन्दा करते हुए उनको किसी भी प्रकार शरण देना या उत्साहित करना देश द्रोह बताया गया है। उन्होंने सभी धर्मावलम्बियों से अनुरोध किया है कि वे देश में धर्म स्थानों को आतंकवादियों का केन्द्र न बनने दें।

हरयाणा सरकार को खुली चिट्ठी

—दीपचन्द आर्य कासनी

सरकार ने अपनी आय हेतु तीन सरकारी कारखाने शराब के चालू कर रखे हैं। इनसे काफी आय होती है। धन यह सब हरयाणा के लोगों का ही जाता है। यह धन गरीब किसान मजदूर के घर को बर्बाद कर रहा है। मात्र धन की हानि होती तो कोई चिन्ता की बात नहीं थी। यह तो एक जगह से उठा कर दूसरी जगह रखने मात्र ही कार्य था। एक घर से चला जाता दूसरे घर में आ जाता।

१- मैंने स्वयं दो तीन मास लगातार शराबियों के घरों को देखा है उन घरों में सब से बड़ी हानि कलह की होती है। यह चौबीस घण्टे की कलह पड़ौसियों को भी हानि पहुँचाती है। गाली-गलोच इतना बेहूदा होता है कि सुना नहीं जा सकता, इस प्रकार सामाजिक पतन पूरे क्षेत्र का हो रहा है।

२- कलह के अतिरिक्त घर में बच्चों को भय लगा रहता है। बच्चे घर से दूर छिपे रहते हैं उनकी पढ़ाई सब खटाई में पड़ जाती है इस प्रकार विकास शराबी परिवारों का रुक जाता है।

३- शराबी मनुष्य शराब पीने पर गलतान हो जाता है वह लड़ने को तैयार रहता है। अन्य पाप करने से नहीं हिचकता। दूसरों के घरों में वार सवेर बड़ जाता है।

४- सब बुराइयों की जड़ बुद्धिहीनता है। शराब का पहला आक्रमण बुद्धि पर होता है। शराबी अपने घर वाले मनुष्य, पशुओं को बुरी तरह मारता है। मैंने स्वयं देखा एक शराबी ने अपनी बड़े अच्छे दूध वाली गाय को मार कर सदा के लिए दूध से खो दिया।

५- शराबी का धन आधे मोल पर जाता है। वह चोरी छिपे घर के जेवर को काफी हानि उठा कर बेच जाता है।

६- शराबी का खानदान विकास नहीं कर पाता, उनकी सहायता कोई भी नहीं करना चाहता, क्योंकि वहां से वापिस धन पाने की गुंजाईश नहीं रहती।

७- लगातार शराब पीने से शरीर में अनेक रोग पैदा हो जाते है। शरीर में आलस्य भरा रहता है। अपना कोई धन्धा नहीं चला सकता। इस प्रकार अधमौत मरता है। बच्चे उभर नहीं पाते। बर्बाद हो जाते है।

८- शराब भ्रष्टाचार की जननी है। इसी की बदौलत शिक्षा जैसा पवित्र महकमा आज शराब के दुर्व्यसन में फंस गया है। परीक्षकों और निगरानी करने वालों को खुली शराब पिलाई जाती है।

९- दिन छिपने के बाद हर बस में शराबी ही यात्रा करते है। उस समय बहिन बेटियों को यात्रा करना दुर्लभ हो जाता है। दुर्घटना शराबी ड्राइवर ही करते हैं।

१०- शराब के कारण चोरी बढ़ती है और लाचार हो व्यभिचारी बन जाता है। बच्चे भिखारी बन जाते हैं। बेईमानी और वेश्यावृति खुली चलती है।

इस सब प्रकार से विनाश करने वाली मदिरा के कारखाने खोल कर देश का विकास कोई भी हकूमत नहीं कर सकती। अतः राम राज्य तो कभी आ ही नहीं सकता। जब तक शराब रहेगी तब तक विकास हो नहीं सकता। अतः अब तो जनता को स्वयं चेतना होगा। आर्यसमाज जो अपने को क्रांतिकारी कहता है उसे सब धार्मिक संस्थाओं को जागृत कर देवियों को चेतावनी दे शराब से आय करने वाली हकूमत को जड़ से उखाड़ देना चाहिए। शराब से गरीब का विनाश हो रहा है। धनी और राज्य कर्मचारी मौज से उन्नति कर रहे हैं। आर्यसमाज को चाहिए जिस प्रकार कुण्डली का बूचड़खाना उखाड़ कर एक घण्टे में फैंक दिया था इसी प्रकार शराब के कारखानों को उखाड़ कर फैंक दे। गरीब देवियों और बच्चों की पिसी हुई आत्माएं आपको आशीश देगी।

अंग्रेज चले गए पर अंग्रेजी नहीं गई

—अशोक कुमार मन्त्री आर्यसमाज सिरसल कैथल

अंग्रेज चले गए, लेकिन अंग्रेजी नहीं गई। बाबूजी चले गए लेकिन बाबूजियत नहीं गई। बन्दर चले गए, मगर अपने पीछे नकलची छोड़ गए, सांप चला गया लकीर रह गई। आज भारतवर्ष की सम्पूर्ण संस्थाओं पर अंग्रेजी का भार लदा हुआ है। विद्यार्थियों को अनिवार्यतः अंग्रेजी का अध्ययन करना पड़ता है। तोते की तरह रटने पर भी विद्यार्थी अंग्रेजी को भली भांति ग्रहण नहीं कर पाते। कैसी विडम्बना है। अंग्रेजी को जबरदस्ती थोंपकर विद्यार्थी की स्वतन्त्र विचारधारा पर कुठाराघात किया गया है।

मैकाले ने क्लर्क पैदा करने के लिए अंग्रेजी को अनिवार्य बना कर भारतवासियों पर जबरदस्ती लादने की योजना बनाई थी। उनका उद्देश्य था—भारतवासियों पर अंग्रेजी भाषा तथा अंग्रेजी सभ्यता और संस्कृति को लाद कर उन्हें मानसिक रूप से गुलाम बनाना खैर सन् १९४७ में देश आजाद हुआ। अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए तथा अपना विकास करने के लिए अनेक योजनाएं बनाई गई। देश की राष्ट्रभाषा क्या हो? यह ज्वलन्त समस्या थी। संविधान निर्माताओं ने संविधान की ३४३ वीं धारा के अनुसार हिन्दी को राष्ट्रभाषा का पद दिया तथा १४ सितम्बर १९४९ को हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा घोषित किया गया।

उपरोक्त बातों को व्यतीत हुए आज लगभग २८ वर्ष हो चुके हैं। क्या हिन्दी राष्ट्रभाषा पर आसीन हुई? क्या इसे प्रत्येक राज्य में अनिवार्य विषय बनाया गया? १९६५ तक हिन्दी ही भारतसंघ की राजभाषा होगी—इस प्रकार की बातों ने भारतीय जनता को आशा की किरणों से आनन्दित किया। आशा निराशा में हो परिवर्तित हुई। आज भी हिन्दी भारत संघ की राजभाषा न बन सकी? कतिपय राज्यों को छोड़कर हिन्दी की वही दशा है जो पहले थी।

आज देश स्वतन्त्र है। उसका स्वतन्त्र झण्डा है, उसका स्वतन्त्र राष्ट्र-गीत है। उसी प्रकार उसको राष्ट्रभाषा भी स्वतन्त्र और अपनी भाषा होनी चाहिए। जिस प्रकार तिरंगा झण्डा देश का गौरव है उसी प्रकार हिन्दी का राष्ट्रभाषा होना देश का गौरव है। हिन्दी राष्ट्रीय एकता की घड़ी तथा पारस्परिक सद्भावना की प्रेरक है।

यद्यपि भारत जैसे बहुभाषा भाषी देश में अनेक उपभाषायें और बोलियां प्रचलित है लेकिन हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जो सम्पर्क भाषा के रूप में सर्वत्र प्रयुक्त हो सकती है। यह भाषा पारस्परिक विचाराभिव्यक्ति, अन्तः प्रांतीय व्यवहार, पारस्परिक लेन-देन में सुन्दर सम्पर्क स्थापित करने में अपना योग दे सकती है।

इतना सब कुछ होते हुए भी हिन्दी के मार्ग में अनेक बाधायें और रुकावटें हैं जो हिन्दी को दीन-हीन बनाए हुए है। दक्षिण भारत के कतिपय प्रांत हिन्दी के मार्ग में रुकावट है। इन प्रांतों में तमिल, तेलगू, कन्नड, मलयालम आदि भाषाओं का प्रचार-प्रसार है। ये प्रांत हिन्दी को राष्ट्रभाषा पद देने के पक्ष में नहीं हैं। सरकार प्रयास कर रही है कि इन प्रांतों के लोग हिन्दी को धीरे धीरे सीखें तथा उसे अपनाने का प्रयास करें।

हिन्दी के मार्ग में पुराने अफसर भी रुकावट डालने का प्रयास करते हैं। क्योंकि वे कई वर्षों से अंग्रेजी के भक्त हैं। उन्हें तनिक भी हिन्दी नहीं आती और न ही वे हिन्दी सीखने का प्रयास करते है। फलतः वे हिन्दी के प्रति उपेक्षापूर्ण भाव रखते है। वे प्रत्यक्ष रूप से अंग्रेजी का ही समर्थन करते हैं।

हिन्दी के मार्ग में भी वे बाधक हैं जो हिन्दी में संस्कृतनिष्ठ शब्दों को जबरदस्ती ठूंसते है। इस से हिन्दी अत्यन्त क्लिष्ठ बन जाती है। फलतः ऐसी हिन्दी को लोग नहीं समझते है। तथा वे विरोध प्रकट करते हैं। (शेष पृष्ठ ६ पर)

महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत

—कृष्णदेव शास्त्री—

पुरातन काल में भारत वर्ष आर्यावर्त के नाम से जाना जाता था। यह बड़ा ही शक्तिशाली एवं धन वैभव से परिपूरित, सत् शिक्षाओं से विभूषित था। प्रकृति की सुन्दर छटाओं से विभूषित यही वह देश है, जिसे कभी लोग सोने की चिड़िया के नाम से पुकारा करते थे, और यही वह प्रकृति का पुण्य लीला स्थल है जहां मनोहर हिमालय अपनी विस्तृत भुजाओं सहित उन्नत मस्तक किये सजग प्रहरी सा खड़ा है। विधाता ने इसी भारतवर्ष में ही सर्वप्रथम नर सृष्टि का सृजन करके अपने विमल वेद ज्ञान को प्रसारित किया। किसी समय यही ऋषि-भूमि, यही वृद्ध भारत संसार का सिरमौर था, विद्या, बल, कला कौशल में सर्वाग्रगण्य माना जाता था। इसी देश में ऋषि मुनियों के शांतिदायक मधुर उपदेशों से दिशाएं गुञ्जायमान रहती थीं। क्षत्रियों की चमचमाती तलवारें शत्रुओं को व्याकुल सा कर देती थीं। कृषिबलों के सुप्रयत्न से यह शस्य श्यामला भारतमही लहलहाती हरी-भरी खेतियों से शोभायमान होती थी। गृहस्थों के यहां प्रत्येक घर में दैनिक हवन होता था, जिससे सुरभित सोमसुधा सौरभ, निर्मल गगन को भी बादलों से आच्छादित सा कर देता था। वेदवेदाङ्गविद विप्रमुनियों के विमल आश्रम होते थे। जहां सिंहादि हिंसक पशु भी वैर भाव त्यागकर मृगादि पशुओं के साथ परस्पर प्रीतिपूर्वक निवास करते थे। इस प्रकार के दिव्य ज्ञान विज्ञान से आलोकित था भारत वर्ष का अतीत।

महर्षि दयानंद का उद्भव और भारतवर्ष

जब भारत की पावन वसुन्धरा परतंत्रता की जञ्जीरो से जकड़ी हुई थी, तब एक तरफ तो मुसलमान व भारतद्रोही भारत की भोली-भाली जनता पर अनेक अत्याचार ढा रहे थे, और दूसरी तरफ अधर्म भी कुरीतियों व पाखण्डों की सशक्त सेना को तैनात किए आक्रमण कर चुका था। कहीं नास्तिको का जमघट, कही पोप पाखंडियो की लीला, कहीं विधवाओं का हाहाकार, तो कहीं दीन-दुःखियो का करुण क्रन्दन, कही बाल विवाह का पनपता हुआ भयंकर रोग, कहीं नारी जाति का भयानक अपमान, कहीं गोमाता की—"त्राहि माम् त्राहि माम्" की हृदय द्रावक करुण पुकार, कहीं वेदादि सत्यशास्त्रों का विनाश, और कही महापुरुषों का तिरस्कार, इस प्रकार चारों ओर अत्याचार, विघटन, पाप-पाखण्ड व कुरीतियों का साम्राज्य हो गया था।

सन् 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में असफलता हाथ लगने पर सर्वत्र निराशा की लहर दौड़ उठी। भारत मां को स्वतन्त्र कराने के लिए सतत प्रयत्नशील शूरवीर भी यह अनुभव करने लगे कि अब मां की लाज बचाना असम्भव है। जब भारत के गगन मण्डल पर आतंक व विद्रोह की काली घटाएं छा गई तब प्यारी भारत मां मानो वेद दर्शन उपनिषद् आदि आभूषणों को छाती से लगाकर, दुष्ट विधर्मियों से अपनी लाज बचाने के लिए व्याकुलता से छटपटाती हुई अपने वीर सपूतो को आह्वान कर रही थी कि हे मेरे वीर सपूत नौजवानो! आज मेरी इज्जत लूटी जा रही है, हृदय विदीर्ण हो रहा है, सीना जल रहा है, आओ युवको! मेरी लाज बचाओ, मेरी रक्षा करो। लगता था मानो उस समय विधाता ने भी मां की दर्द भरी पुकार सुनकर अनसुनी सी कर दी हो। परन्तु घनघोर अन्धेरी निशा का साम्राज्य आखिर कब तक रह सकता है। जब महान् प्रकाश पुञ्ज के लिए तेजस्वी भव्य दिवाकर का उदय होता है तब निर्भयता से पैर जमाए बैठा अन्धकार भी पल भर में चूर-चूर हो जाता है। बस फिर क्या था—

यदा यदा हि धर्मस्य
ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य
तदाऽऽत्मानंसृजाम्यहम्॥

अर्थात्—जब-जब भी इस संसार में धर्म का ह्रास व अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब ही कोई न कोई महापुरुष इस धरणी पर जन्म लेता है। मानो गीता की इस उक्ति को चरितार्थ करने के लिए ही दिव्य पुरुष महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ।

अल्पायु में ही घर बार व समस्त सांसारिक सुख त्याग कर घोर तपस्या की भट्टी में अपने आपको तपाकर वेदादि आर्ष ग्रन्थों का पठन-मनन-चिन्तन कर तथा गुरु विरजानन्द की क्रांतिकारी विचारधारा से ओत-प्रोत होकर वे मुक्ति की खोज में निकले। वेदज्योति के परवाने, मस्ताने फकीर ने अपनी मुक्ति को भी ठुकरा दिया और विलुप्त हो रहे वैदिक धर्म को पुनः स्थापित करने का दृढ़ संकल्प लिया। उसके हृदय में करुणा का सागर तरङ्गित हो उठा "कि करोमि क्व गच्छामि, को वेदानुद्धरिष्यति" के इस जटिल प्रश्न ने उनकी आत्मा को झंझोड़ डाला। संकटों से कराह रही भारत मां की रक्षा के लिए वे व्याकुल हो उठे। उनकी मस्ती का स्थान चिंता ने छीन लिया, आनन्द का स्थान व्यग्रता ने छीन लिया। उस दीवाने के करुण नयनों में नींद कहां? हृदय की विह्वलता के उत्तरोत्तर बढ़ने पर भी वह अपनी दृढ़व्रती प्रतिज्ञा व संकल्प पर अडिग रहकर इन जटिल समस्याओं से निरन्तर जूझता रहा।

आर्य समाज की स्थापना तथा कार्य

महर्षि ने राष्ट्रहित को ध्यान में रखते हुए अपने काम को आगे बढ़ाने के लिए "आर्य समाज" नाम के एक निश्चित सुसंगठित संगठन की स्थापना सन् 1875 में बम्बई में की। आज यह संगठन भारत में ही नहीं, विश्व के प्रत्येक देश में फैला हुआ है। जिसका उद्देश्य निर्धारित किया था—"संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।" स्वामी जी के इस आर्य समाज संगठन ने उनके प्रारम्भ किए कार्य को सुचारु रूप से आगे बढ़ाया। अछूतोद्धार, विधवा विवाह निषेध, बाल प्रथा, बहुदेवोपासना, मूर्तिपूजा, अन्धविश्वास और अविद्या आदि कुरीतियों पर जमकर प्रहार किया। ईसाई मिशनरियों तथा इस्लाम द्वारा निरन्तर किये जा रहे घातक प्रहारों से देश को बचाया। दूसरे मतावलम्बियों को, विशेष कर उन लोगों को जो किन्हीं कारणों से ईसाई या मुसलमान हो चुके थे, शुद्ध करके पुनः वैदिक धर्म में सम्मिलित करने की सूझ-बूझ भी आर्य समाज की ही थी। आज देश में "आर्य समाज" एक ऐसी जीती जागती संगठित संस्था है जो देश की हर छोटी-बड़ी बुराइयों का निर्भीकता से विरोध करती है। हैदराबाद सत्याग्रह चलाकर उस मतान्ध नवाब को जो भारतीय संस्कृति व सभ्यता को समाप्त करने पर तुला हुआ था आर्य समाज ने ही उसको मार्ग दिखाया। हिन्दी सत्याग्रह, गोरक्षा सत्याग्रह, मोपला कांड देश में दुर्भिक्ष तथा सन्तप्त जनों की सहायता इस आर्य समाज ने ही की थी। आजकल भी डी० ए० वी० विद्यालयों के प्रधान प्रो० वेदव्यास आदि सभ्य व्यक्तियों ने पंजाब कांड तथा भोपाल गैस कांड से पीड़ित जनों के लिए जनता से अपील की है कि वे इनकी भरपूर सहायता करें। तथा स्वयं भी इस कार्य में वे अहर्निश संलग्न हैं। जब भी देश के ऊपर संकट आया है तभी सबसे आगे आर्य समाज ने अपना झण्डा लहराया है। इस आर्य समाज ने श्याम जी कृष्ण वर्मा, स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द, भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, पं० लेखराम आदि क्रांतिकारी वीरों को जन्म दिया है। इस प्रकार आर्य समाज के आरम्भिक कार्यकलापों को तीव्रगति से बढ़ता हुआ देखकर सारे विश्व में हलचल मच गई।

जेक्सन की दृष्टि में आर्य समाज

सुदूर अमेरिका में बैठा हुआ एक योगी एण्ड्रो जेक्सन डेविस हर्ष विभोर होकर पुकार उठा "मुझे एक आग दिखाई पड़ती है, जो हर वस्तु को जलाकर साफ कर रही है। अमेरिका के समतल मैदानों, अफ्रीका के विस्तृत देशों, एशिया के प्राचीन पर्वतों तथा यूरोप के विशाल साम्राज्यों पर मुझे इस अतिदाहक अग्नि की लपलपाती हुई लपटें दिखाई देती हैं। इस असीम आग को देखकर जो निश्चित ही राजाओं, सम्राटों तथा विश्व भर की राजनीतियों व बुराइयों को पिघला देगी। मैं अति हर्ष विभोर होकर एक उत्साहपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहा हूं।'''यह आग प्राचीन आर्य धर्म को असली पवित्र अवस्था में लाने के लिए एक भट्टी है जिसे "आर्य समाज" कहते हैं। यह आग भारत वर्ष के परमयोगी दयानन्द सरस्वती के हृदय में आविर्भूत हुई है। हिंदू व मुसलमान इस विश्व दाहक आग को बुझाने के लिए चारों ओर तीव्रगति से दौड़ रहे हैं, परन्तु यह आग ऐसी तीव्रगति से फैल रही है कि जिस तीव्रता की उसके संस्थापक दयानन्द को कल्पना भी नहीं थी। और ईसाइयों ने भी एशिया के इस नये प्रकाश को बुझाने के लिए हिंदू और मुसलमानों का साथ दिया। परन्तु यह प्रचण्ड अग्नि और भी भड़क उठी, और विस्तृत हो गई। समस्त दुर्गुणों का समूह सदा पवित्र करने वाली भट्टी में जलकर भस्म हो जायेगा, और रोग के स्थान पर स्वास्थ्य, अज्ञान के स्थान पर विज्ञान, घृणा की जगह प्रेम, शत्रुता की जगह मित्रता, नरक की जगह स्वर्ग, दुःख के स्थान पर सुख, भूतप्रेतों के स्थान पर परमेश्वर और प्रकृति का राज्य होगा। मैं इस आग का हृदय से स्वागत करता हूं। जब यह अग्नि इस सुन्दर भूमि को नया जीवन प्रदान करेगी तो सार्वभौम शांति, समृद्धि और प्रसन्नता का युग शुरू होगा।"

आधुनिक आर्यसमाज तथा भारत की अवस्था

जो आर्य समाज कभी विपुल उत्कर्ष को प्राप्त कर चुका था वह आज प्रतिदिन अधोगति पर चलायमान दृष्टिगोचर हो रहा है। आज हमारा कोई भी क्षेत्र पूर्णतया सन्तोषजनक नहीं है। शिक्षा के क्षेत्र में, राजनीति के क्षेत्र में, कला कौशल, और सामाजिक क्षेत्र में, हम अन्य जनों की अपेक्षा बहुत पीछे हैं। जिस आर्य समाज ने भारत ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण विश्व को सुखमय, शांतिमय तथा समृद्धिशाली बनाने का उद्घोष किया था वह आज न जाने कहां विलुप्त सा होता जा रहा है। जो भारत विश्व गुरु था वह भी आज पतन के कगार पर

स्व० लालमन आर्य की स्मृति में आयोजित प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त निबन्ध

→

है। आज इस देश में पाश्चात्य शिक्षा, दुर्भिक्ष, दहेज, व्यभिचार, बलात्कार, रिश्वतखोरी के काले मेघ मण्डरा रहे हैं। चारों तरफ ही हाहाकार मचा हुआ है। इन परिस्थितियों को सुधारने के लिए आज आवश्यकता है महर्षि दयानन्द के सिद्धांतों को स्थापित करने की।

अब हमारे सामने प्रश्न है कि इस स्थिति का किस प्रकार सुधार करें? किस प्रकार यह एक सुदृढ़ संगठन भारत की उन्नति तथा विकास का साधन बने? किस प्रकार हम इस समाज के द्वारा ऋषि दयानन्द के सपनों के भारत का नव निर्माण कर सकें? कैसे हमारा यह सुदृढ़ संगठन महर्षि के सिद्धांतों का प्रचुर प्रचार और प्रसार इस भारत में करे? इत्यादि प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत लेख में करने का यत्न किया जायेगा।

महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत कैसे बने?

किसी भी राष्ट्र या जाति को यदि हम बदलना चाहते हैं तो उसकी शिक्षा में ही सर्वप्रथम परिवर्तन कर देना चाहिए। किसी भी देश की मूल नींव शिक्षा होती है। शिक्षा के माध्यम से ही विदेशियों ने हमारे ऊपर दासता का राज्य किया। लार्ड मैकाले की शिक्षा नीति ने हमारी समस्त भारतीयता को विनष्ट कर दिया। लार्ड मैकाले को अपनी शिक्षा विषयक नीति की सफलता में पूर्ण विश्वास था। तभी तो अपने पिता को 1836 ई० में लिखे गए एक पत्र में उसने यह विश्वास व्यक्त किया :—

"जब हिंदु अंग्रेजी शिक्षा ग्रहण कर लेता है वह अपने धर्म के प्रति सच्ची श्रद्धा और विश्वास खो बैठता है। कुछ केवल उसे दिखावे के रूप में मानते हैं, कतिपय अन्य ईसाई हो जाते हैं। यह मेरा सुनिश्चित विश्वास है कि यदि शिक्षा की हमारी यह योजना पूरी तरह काम में लाई गई तो अब से तीस वर्ष पश्चात् बंगाल के कुलीन वर्ग में कोई मूर्त्तिपूजक (हिंदु) नहीं रहेगा। थोड़े दिनों में ही ये आकृति से केवल हिंदु और विचारों से पूर्णतया अंग्रेज दिखाई देंगे।"

अब हम ऋषि दयानंद के सपनों को, भारत में साकार रूप देने के लिए, पाश्चात्य शिक्षा को समूल विनष्ट करने के लिए, निम्न विषयों पर क्रमशः विचार करेंगे। (1) शिक्षा पर विचार (2) राजनीतिक सिद्धांत (3) कला कौशल तथा शिल्प (4) सामाजिक कार्य। पहले हम शिक्षा के विषय में विचार करते हैं।

(१) शिक्षा

महर्षि दयानन्द की शिक्षा प्रणाली

शिक्षा के क्षेत्र में महर्षि दयानन्द क्या चाहते थे, उनके शिक्षा सम्बन्धी क्या विचार थे, उनका संक्षेप से वर्णन करते हैं।

(1) विद्यार्थी का मुख्य प्रयोजन ज्ञानाभ्यास के साथ चरित्र निर्माण है। चरित्र निर्माण की शिक्षा गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में ही सम्भव है। अतः प्राचीन रीतिनीति के गुरुकुलों की स्थापना आवश्यक है। (2) पाठ्यपुस्तकों में उन्हीं पुस्तकों का समावेश होना चाहिए जो साक्षात्कृतधर्मा मन्त्रद्रष्टा ऋषियों की कृतियां हैं। अनार्ष ग्रंथों को पठन-पाठन क्रम में समाविष्ट नहीं करना चाहिए। (3) संस्कृत शास्त्रों और ईश्वरीयज्ञान वेद की शिक्षा को ही सर्वोपरि प्राथमिकता दी जानी चाहिए। (4) शास्त्र के साथ प्राविधिक कला कौशल की शिक्षा भी जीवनयापन की दृष्टि से आवश्यक है। (5) शिक्षा का माध्यम स्वदेशी भाषा हो (6) बालक, बालिकाओं की सह शिक्षा चरित्र विघातक, फलतः हानिकारक है। (7) कन्या शिक्षा भी उतनी ही आवश्यक है, जितनी बालकों की शिक्षा। (8) शिक्षा के क्षेत्र में राजा और रंक, गरीब अमीर का भेदभाव अवाञ्छनीय है। प्रत्येक छात्र को अपनी योग्यता के अनुसार शिक्षा प्राप्त करने का समान रूप से अधिकार मिलना चाहिए (9) अवसर और अनुकूलता होने पर विदेशी भाषाएं सीखना भी वाञ्छनीय है। (10) शिक्षा के द्वारा स्वाभिमान, स्वदेशप्रेम, ईश्वर भक्ति और स्वावलम्बन जैसे गुणों का विकास किया जाना अपेक्षित है।

आर्य विश्वविद्यालय की स्थापना

ऋषि दयानन्द के इन शिक्षा संबंधी सिद्धांतों को भारत में देदीप्यमान करने के लिए एक आर्य विश्वविद्यालय की स्थापना करनी चाहिए। उस विश्वविद्यालय में भारत के सभी प्रांतों के बच्चों को शिक्षा देने के लिए प्रवेश देना चाहिए। सभी प्रांतीय भाषाओं की शिक्षण व्यवस्था उसमें हो। वहां पर स्वामी दयानन्द द्वारा लिखित आर्ष ग्रंथों का पठन-पाठन किया जाय। कलाकौशल, संगीत, नृत्य, नाटक आदि विषयों के अध्ययन को भी प्राथमिकता दी जाये। विद्यालय में एकरूपता के लिए सबको तुल्य वस्त्र, खान-पान और तुल्य आसन दिये जायें। चाहे वे राजकुमार या राजकुमारी हों, चाहे दरिद्र की सन्तान हों सबको तपस्वी होना आवश्यक है। इस प्रकार की व्यवस्था तथा अनुशासन में रहकर जब वे छात्र विद्या अध्ययन करके पूर्ण रूप से स्नातक बन जायें तो उन सबको भी इसी प्रकार के विद्यालय चलाने की प्रेरणा देनी चाहिए।

प्रत्येक प्रान्त में आर्य विद्यालय का निर्माण

अब वे छात्र अपने-अपने प्रांतों में जाकर दयानन्द द्वारा प्रदर्शित शिक्षा प्रणाली के विद्यालयों का निर्माण करें। उस विद्यालय में उसी प्रांत के छात्रों को प्रविष्ट करें, जिससे वे छात्र अपने प्रांतीय वातावरण के अनुकूल होने से, तथा भाषा की सरलता के कारण और स्वस्थ रहकर शीघ्र ही उन्नति कर सकें। जब वे विद्यार्थी पूर्णरूपेण स्नातक हो जायें तो सभी अपने-अपने जिले में जाकर इसी प्रकार के विद्यालय की स्थापना करें। इस प्रकार से प्रत्येक तहसील, तथा प्रत्येक गांव में क्रमश. हमारे शिक्षा के केन्द्र होंगे। जो योग्य छात्र हों उनको प्रभूत पारितोषिक देने की व्यवस्था भी हो। समय-समय पर विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन भी होना चाहिये। स्त्रियों को शिक्षा देने के लिए भी इसी प्रणाली के अनुरूप विद्यालयों की स्थापना होनी चाहिए, जिससे स्त्रियां भी पूर्ण विदुषी बनें। ऐसे थोड़े ही दिनों में महर्षि दयानन्द के शिक्षा-विषयक विचार भारत को साकार रूप दे सकते हैं।

शिक्षा का सबको अधिकार

मध्यकालीन युग में कुछ लोगों तथा धर्माचार्यों ने उद्घोष किया कि "स्त्री शूद्रौ नाधीयताम्" अर्थात् स्त्री और शूद्रों को पढ़ने का अधिकार नहीं है। परन्तु महर्षि दयानन्द ने गार्गी, मैत्रेयी, आदि विदुषियों का उदाहरण देकर कहा कि— वेद विद्या, तथा शिक्षा ग्रहण करने का सबको समान अधिकार है। उन्होंने वेद का प्रमाण हमारे सामने प्रस्तुत किया कि—"यथेमां वाचं कल्याणीं" यह वेद का ज्ञान, विज्ञान सभी स्त्री तथा शूद्रों के लिए परमेश्वर ने दिया। महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा—"राजनियम और जातिनियम होना चाहिए कि पांचवें अथवा आठवें वर्ष से आगे कोई भी अपने-अपने लड़कों और लड़कियों को घर में न रख सके, पाठशाला में अवश्य भेज देवे, जो न भेजे वह दण्डनीय हो? इससे यह प्रतीत होता है कि ऋषि दयानन्द का सभी को शिक्षा युक्त करने का विचार था। वे चाहते थे कि मेरे देश में कोई भी अनपढ़, मूर्ख न रहे। जब सब सुशिक्षित जन होंगे तभी हमारा देश पूर्ण समृद्धिशाली बनेगा।

अनुसन्धान केन्द्र तथा साहित्य सृजन

आज हम देखते हैं कि कहीं पर भी विशाल अनुसन्धान केन्द्र नहीं है, जहां पर ऋषि दयानन्द का समस्त साहित्य एकत्रित हो। इसलिए एक विशाल अनुसन्धान केन्द्र का निर्माण होना चाहिए। यह किसी दिल्ली, बम्बई, वाराणसी, पुणे जैसे बड़े नगरों में होवे तो अत्युत्तम होगा। इस अनुसन्धान केन्द्र में महर्षि दयानन्द का सारा साहित्य विविध भाषाओं मे व्याख्या युक्त होना चाहिए। वहां पर ही निवास, भोजन आदि का प्रबन्ध भी हो, जिससे कोई अनुसंधित्सु एक या दो मास रहकर गवेषणा कर सके। इस केन्द्र में हमारे दस या बीस विद्वानों का संगठन बैठकर ऋषि दयानंद के साहित्य तथा वेद, दर्शन, कलायन्त्र, ज्योतिषादि विषयो पर नव साहित्य का सृजन करे। इसके साथ ही बृहद् पुस्तकालय का होना भी अत्यावश्यक है। इस पुस्तकालय में सभी आर्य विद्वानों और वेद के विषय मे जिन्होंने अनुसंधान किया हो उन सभी के ग्रंथों का सुन्दर संग्रह हो। ऋषि दयानंद ने भी लेखन तथा प्रचार पर काफी बल दिया है। लेखन प्रणाली से भी जनजाति मे एक नवचेतना जागृत होती है। इस प्रकार हम अनुसन्धान और पुस्तकालय के माध्यम से ऋषि के विचारों को जन-जन तक पहुंचाने में सफल होंगे।

प्रचार के साधन—पत्र और पत्रिकाएं

महर्षि के सिद्धांतों को विकसित तथा जन-जन तक पहुंचाने के लिए पत्रिकाओं तथा ट्रैक्टों का प्रकाशित होना भी बहुत आवश्यक है। आजकल जैसे धर्मयुग, जनज्ञान, सम्राट्, आर्य जगत् पत्रिकाएं हैं, वैसी होनी चाहिए, हमारी पत्र और पत्रिकाएं। और सम्पादक होवें श्री क्षितीश जी वेदालंकार जैसे, जो जन-जन को जागरूक करते रहें। हम एक वर्ष में, एक विशाल शोध पत्रिका निकालें, जिसमें सब मिलकर चिंतन, मनन और पर्यालोचन करें कि आज हम दयानन्द के सिद्धांतों को फैलाने मे कितने प्रगतिशील हैं।

दस या बीस पृष्ठों में ऋषि दयानंद के सिद्धांतों के बारे में सरल तथा सारगर्भित लघु ट्रैक्टों को भी प्रकाशित कर, बिना मूल्य सम्मेलनों, उत्सवों, यात्राओं में वितरित करें। इस प्रकार ट्रैक्टों से प्रचार का बहुत सुन्दर कार्य हो सकता है। साथ ही प्रत्येक व्यक्ति हमारे सिद्धांतों से परिचित भी होगा, तथा बुद्धिजीवी व्यक्ति हमारे विचारों का अनुमोदन करेंगे।

पुरोहित और उपदेक विद्यालय

आज हम देखते हैं कि कहीं पर भी ऋषि दयानन्द के पूर्ण सिद्धातानुसार उपदेशक, या पुरोहित शिक्षण केन्द्र नहीं हैं। कुछ हैं तो वे राजस्थान के खण्डहर की तरह विराजमान हैं। इसलिए एक उपदेशक विद्यालय की स्थापना होना अनिवार्य है। जिसमें सच्चे, त्यागी, देशभक्त, कर्त्तव्यनिष्ठ, योग्य उपदेशक तैयार किये जा सकें। उपदेशकों को विविध भाषाओं का जानना अपरिहार्य हो। बीस-बीस

(शेष पृष्ठ ९ पर)

पत्रों के दर्पण में

मानसरोवर और हंस

21 अप्रैल के महात्मा हंसराज विशेषांक में आचार्य दीनानाथ जी का लेख पढ़ा लेख बहुत अच्छे ढंग से लिखा है। हंस की धवलता और उसके नीर क्षीर विवेक के गुण का भी सुन्दर विवेचन हुआ है। मैं तो मानसरोवर गया नहीं। परन्तु वहां गये एक स्वामी जी की मानसरोवर' नामक पुस्तक मैंने पढ़ी है। उन्होंने लिखा है कि मानसरोवर में हंस नहीं दिखते। मेरे विचार से मानसरोवर में हंसों की विद्यमानता वैसी ही कवि कल्पना है जैसे हंसों का मोती चुगना और हंसों का नीर-क्षीर विवेक भी कवि-कल्पना है। -प्रेमनाथ चतुर्वेदी ब-4, अर्जुन मुहल्ला मौजपुर, दिल्ली-110053

[बन्धुवर प्रेमनाथ जी का कथन हमारी दृष्टि में सही नहीं है। हंसो का मोती चुगना और नीर-क्षीर विवेक की बात बेशक कवि-कल्पना हैं, हंसों का मानसरोवर निवास कवि कल्पना नहीं, तथ्य है। हमने स्वय १९३८ मे कैलाश मानसरोवर की यात्रा की है और हमारे पास मानसरोवर मे तैरते हंसो की फोटो भी अभी तक विद्यमान है। हंस मानसरोवर मे सारे वर्ष नही रहते, ग्रीष्म ऋतु में ही रहते हैं। सर्दियो में वे भी भरतपुर के घाना अभयारण्य मे चले आते हैं—जैसे साइबेरिया के पक्षी वहां आ जाते हैं। संस्कृत साहित्य में राजहंस के जो लक्षण दिए गए हैं, वे मानसरोवर मे होते हैं या केवल सामान्य हंस होते हैं—इस पर विद्वानो मे मतभेद है। —सम्पादक]

भारत में बढ़ती अंग्रेजी व गिरती हिन्दी

भारत में कुछ समय पहले तक हिन्दी को प्रोत्साहन दिया जाता था। अंग्रेजी तो बहुत कम लोग जानते थे। किन्तु अब अंग्रेज नहीं रहा है और भारत स्वतन्त्र हो गया है। तब से अंग्रेजी बढ़ती जा रही है। जहा देखो वहां अंग्रेजी ही है। लोग हिंदी बोलना तो जैसे अपमान समझते हैं। मुझे एक ऐसी ही घटना याद आती है। एक बार मैं अपनी पोती के साथ उसके विद्यालय में उत्सव देखने गई। वहां पर पोती की एक सहेली अंग्रेजी में बोल रही थी। जब बात बात में एक सहेली ने उसे हिन्दी में बात करने को कहा, तो वह बोली 'अंग्रेजी पढ़े लिखों की और हिन्दी गंवारों की भाषा है, क्या यह हिन्दी का अपमान नहीं जबकि हिंदी हमारी भाषा है और अंग्रेजी अंतर्राष्ट्रीय भाषा। अंग्रेज जबकि आज हिंदी अपनाते जा रहे हैं, हिंदी पढ़ना पसंद करते हैं। जापान में तो कितनी ही हिंदी व संस्कृत की यूनिवर्सिटी खोली जा रही हैं। और भारत में अंग्रेजी को बढ़ावा दिया जा रहा है। अब तो कहीं साक्षात्कार देना है तो अंग्रेजी मे दो, प्रार्थना पत्र अंग्रेजी में लिखो। भारत की केवल चालीस-प्रतिशत जनता ही ऐसी है जो अंग्रेजी जानती है। लेकिन वे लोग थोड़ी अंग्रेजी जानते हैं क्या करें? जो लोग हिंदी मे बोलते हैं वो बीचबीच मे अंग्रेजी भी बोलते हैं पर अंग्रेजी बोलते समय हिंदी कोई नहीं बोलता।

मैं भी मानती हू कि अंग्रेजी बोलना बुरा नहीं पर हर बात मे नहीं। फिर भी हिंदी की दुर्दशा कब तक होगा।

—श्रीमती भगवती देवी 376 रामनगर, गाजियाबाद—2010009

पंजाब केसरी लाला लाज-तराय के संस्मरण

प्रात स्मरणीय, पंजाब केसरी लाला लाजपतराय का परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। जैसा सर्व विदित है वे महान् देशभक्त, दूरदर्शी राजनेता, राष्ट्रहित के सजग प्रहरी, स्वतन्त्रता आंदोलन के अमर शहीद, प्रखर विचारक, कुशल सम्पादक, ख्याति प्राप्त लेखक, ओजस्वी वक्ता, प्रगतिशील शिक्षाशास्त्र आर्थिक विकास के प्रबल उन्नायक, संगठित श्रम आंदोलन के जनक, तथा समाज सुधारक थे। उनके अनेक जीवन चरित्र उपलब्ध हैं जिनमें उनके जीवन तथा सर्वतोमुखी कार्य-कलापों का विशद विवरण मिलता है। पर उनके संस्मरण प्रधान कोई पुस्तक नही मिलती। संस्मरण व्यक्ति के व्यक्तित्व तथा चरित्र की सूक्ष्म तथा अंतरंग विशेषताओं को उद्घाटित करते हैं।

मैं लाला लाजपतराय के संस्मरण संकलन के कार्य मे गत अनेक वर्षों से लगा हुआ हू तथा इस कार्य में पर्याप्त सफलता भी मिली है। देश विदेश के लगभग १३० व्यक्तियों के संस्मरण-प्रधान लेख प्राप्त हो चुके हैं। संस्मरण लिखने के वे ही अधिकारी हो सकते हैं जिनका लाला जी से व्यक्तिगत सम्पर्क रहा हो—यह सम्पर्क निकट का रहा हो अथवा दूर का—जिन्होंने उनके सान्निध्य में रहते हुए उन्हें देखा-समझा हो। जिन महानुभावों से लाला जी का सम्पर्क रहा हो उनसे मेरा विनम्र आग्रह है कि वे अपना संस्मरण-प्रधान लेख भेजने का कष्ट करें। उन महानुभावों के नाम तथा पते की सूचना के लिए भी निवेदन है जो लाला जी के विषय में व्यक्तिगत जानकारी रखते हैं।

आशा है पंजाब केसरी की स्मृति में समर्पित इस पुनीत कार्य में सब सज्जनों कासहर्ष तथा पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

—विष्णु शरण प्रसून' एल-175 कोटरा सुलतानाबाद भोपाल-4620003 (म.प्र.)

मुस्लिम महिला और कानून

सर्वोच्च न्यायालय ने तलाकशुदा मुस्लिम महिला को उसके भूतपूर्व पति द्वारा दी जाने वाली गुजारे की रकम के सिलसिले में एक ऐसा फैसला किया है जिससे न सिर्फ हजारों सताई हुई मुस्लिम औरतों को राहत मिलेगी बल्कि एक समान सिविल कोड के आन्दोलन को भी बल मिलेगा। अपने दूरगामी निर्णय में सर्वोच्च न्यायालय खंडपीठ ने कहा है कि हालांकि कुरान की 241 और 242 वीं आयतों में यह लिखा गया है कि मुस्लिम पति अपनी तलाकशुदा पत्नी को मेहर के अलावा लम्बे समय तक गुजर-बसर के लिए खर्च देने पर बाध्य नहीं है और मुस्लिम पर्सनल ला के तहत पति को तलाक के बाद इद्दत के चालीस दिनों की मियाद तक ही गुजारे की रकम देनी पड़ती है। लेकिन भारतीय दण्ड प्रक्रिया संहिता की धारा 125 के अन्तर्गत मुस्लिम पति को भी अपनी पत्नी को जीवन यापन के लिए एक वाजिब मासिक रकम देनी ही होगी। न्यायालय की व्याख्या है कि इस धारा के अन्तर्गत पत्नी का अर्थ परित्यक्ता पत्नी भी होता है और चूंकि मुस्लिम महिलाओं को इसके दायरे से परे नहीं रखा गया है, इसलिए मुस्लिम पर्सनल ला में ऐसे मामले की जो भी व्याख्या हो, पर धारा 125 के प्रावधान ही उस पर लागू समझे जायेंगे।

मुस्लिम पर्सनल ला के तहत मुस्लिम स्त्रियों के अधिकारों को लेकर पिछले कुछ वर्षों में असन्तोष की भावना बढ़ी है। शहनाज शेख जैसी प्रबुद्ध मुस्लिम महिला ने सर्वोच्च न्यायालय में एक याचिका प्रस्तुत की है जिसमें उन्होंने अपने तलाक के संदर्भ में मुस्लिम पर्सनल ला की संवैधानिक वैधता को चुनौती दी है। एक ओर नई पीढ़ी की हजारों पढ़ी-लिखी मुस्लिम महिलाएं हैं, जो इन्साफ के लिए जद्दो-जहद कर रही हैं और दूसरी ओर दकियानूस उलेमा हैं जिन्हें हमेशा दीन खतरे में नजर आता है। यह भी कम हैरत अंगेज नहीं है कि एक प्रबुद्ध मुस्लिम न्याया-मूर्ति की ही अध्यक्षता मे अल्पसंख्यक आयोग ने मुस्लिम पर्सनल ला को सर्वगुण सम्पन्न माना और यह व्यवस्था दी है कि उसके साथ कोई भी वैधानिक दखल अन्दाजी न की जाए। इस संदर्भ में सर्वोच्च न्यायालय की यह टिप्पणी बहुत सारगर्भित और आंखें खोल देने वाली है कि धारा 125 मे एक नैतिक सिद्धांत प्रतिपादित किया गया है कि कोई भी समर्थ व्यक्ति अपने आश्रितों को कंगाली और लावारिसी के हवाले नहीं कर सकता और इस नैतिकता को किसी भी धर्म से नहीं जोड़ा जा सकता। खण्डपीठ ने सख्ती से कहा है कि भारतीय संविधान का अनुच्छेद 44 मुर्दे की तरह पड़ा हुआ है, जिसके अन्तर्गत यह प्रतिज्ञा की गई थी कि सरकार सारे देश में एक जैसा सिविल कोड बनाने का यत्न करेगी।

चूंकि इस बात की कोई उम्मीद नहीं कि मुस्लिम कानूनदां अपने अपने कानूनों को स्वयं ही अपनी महिलाओ के लिए मानवीय बना लेंगे, इसलिए अदालतों को ही सुधार का बीड़ा उठाना पड़ेगा। पर न्यायालय ने दुःख के साथ कहा है कि अदालतें भी ऐसे हर नए मामले के साथ रोज एक नई व्यवस्था नहीं दे सकतीं। इसलिए समूचे देश की सारी जनता के लिए एक ही कानून होना चाहिए। समान कानून से राष्ट्रीय एकता आए या न आए, पर निरीह और सताई गई औरतों को जिन्स या ढोर-डंगर नहीं समझा जाएगा।

बहरहाल न्यायालय का फैसला, मुस्लिम महिलाओं की एक महत्वपूर्ण विजय है। अब यह साहस सरकार को बटोरना है कि वह सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय में निहित भावना और हिदायत को देशव्यापी समान सिविल कोड में बदले।

—नवभारत टाइम्स (25-4-85)

दूरदर्शन तथा आकाशवाणी में हिन्दी

हिन्दी व्यवहार संगठन का एक प्रतिनिधिमण्डल सूचना तथा प्रसारण मंत्री को मिला तथा उनसे निम्नलिखित बातों के विषय में चर्चा करके ज्ञापन भी प्रस्तुत किया —

(1) दूरदर्शन के केन्द्रों से हिन्दी कार्यक्रम प्रसारित करते समय लिखित सूचनाएं, वक्तव्यों के नाम आदि भी हिन्दी में दिखाए जाएं, अंग्रेजी में नहीं।

(2) दूरदर्शन तथा आकाशवाणी के जो केन्द्र हिन्दी-भाषी क्षेत्रों में स्थित हैं, वे अपना समस्त पत्र-व्यवहार हिन्दी में करें तथा उनके महानिदेशालयों के बीच भी समस्त पत्र-व्यवहार हिन्दी में हो।

(3) दिल्ली दूरदर्शन से प्रादेशिक भाषाओं की फिल्मों के संवादों आदि के उप-शीर्षक हिन्दी में देने की व्यवस्था की जाए।

(4) आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के जो समाचार हिन्दी-भाषा क्षेत्रों से प्राप्त होते हैं, उन को मूलतः हिन्दी में भेजने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

—हरिबाबू कंसल महामंत्री, हिन्दी व्यवहार संगठन डी—35, साउथ एक्सटेंशन, भाग एक नई दिल्ली—110049

महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत

(पृष्ठ ७ का शेष)

उपदेशकों को भारत के एक-एक प्रान्त में भेजें, वे केवल उसी प्रांत में दत्तचित्त होकर प्रचार करें। इस प्रकार अल्पकाल में ही सम्राट् अशोक के पुत्र महेंद्र और पुत्री संघमित्रा के समान सकल भारत में घूम-घूम कर हमारे प्रचारक वैदिक धर्म की ध्वजा फहरायेंगे और शीघ्र ही इस मही को महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत बनायेंगे।

(२) राजनीति

राजनीति के समर्थक महर्षि दयानन्द

आजकल हम लोग स्वामी जी को केवल समाज सुधारक मानकर ही अपनी बुद्धि का संकुचित परिचय देते हैं। महर्षि वेदों के ज्ञाता, संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित ही नहीं अपितु राजनीति के महान् विशेषज्ञ थे। महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में राजनीति के विषय में जो विचार प्रकट किये हैं वे बड़े अद्‌भुत, क्रांतिकारक, सार्वकालिक एवं सर्वजनोपयोगी हैं। यह एक सामान्य धारणा बनी हुई है कि प्रजातन्त्र का आविर्भाव सम्भवत: आधुनिक युग में ही हुआ है, पहले तो केवल स्वच्छन्द राजा ही हुआ करते थे। परन्तु महर्षि ने वेदादि सत्य शास्त्रों तथा इतिहास के आधार पर प्राचीन भारतीय राज्य व्यवस्था का जो प्रजातांत्रिक स्वरूप प्रकट किया है, उससे यह धारणा नितांत भ्रान्त प्रतीत होती है।

तीन प्रमुख राज्य सभाएं

स्वामी जी ने जिस वैदिक राजनीति का उल्लेख अपने ग्रन्थों में किया है, उसका मुख्य केंद्र बिंदु राज्य सभाओं को माना जाता है। राज्य व्यवस्था के समुचित सञ्चालनार्थ वे राज्य सभाओं के निर्माण पर पुष्कल बल देते हैं। राज्य रक्षा का यथावत् प्रकार निर्दिष्ट करते हुए ऋग्वेद के मन्त्र द्वारा सभाओं का कर्त्तव्य बताते हैं। "त्रीणि राजाना विदथे पुरूणि परि विश्वानि।" अर्थात् तीन प्रकार की सभाओं को ही राजा मानना चाहिए, एक मनुष्य को कभी नहीं। वे तीनों ये हैं—पृथक् राज्य प्रबंध के लिए एक "राजार्य्यसभा" जिससे विशेष करके सब राजकार्य ही सिद्ध किये जायें। दूसरी "विद्यार्य्य सभा" जिससे सब प्रकार की विद्याओं का प्रचार होता जाये। तीसरी "धर्मार्य्यसभा" जिससे धर्म का प्रचार होता रहे।

सभाओं का स्वरूप तथा राज्याधिकार

सभाओं के स्वरूप का प्रतिपादन करते हुए स्वामी जी ने लिखा है—"महाविद्वानों को विद्या सभाधिकारी, धार्मिक विद्वानों को धर्मसभाधिकारी, प्रशंसनीय धार्मिक पुरुषों को राजसभा के सभासद् और उन सब में सर्वोत्तम गुणकर्म स्वभाव युक्त महान् पुरुष को ही उस सभा का पति रूप मान के सब प्रकार की उन्नति करते रहें।" न्यून से न्यून दस विद्वानों की सभा होनी चाहिए। देश, काल के अनुसार इसका सम्बन्ध है। इन सभाओं के अधीन ही राजा की व्यवस्था होनी चाहिए। एक को स्वतंत्र राज्य का अधिकार कभी नहीं देना चाहिए। किंतु राजा को सभापति तदधीन सभा, सभाधीन राजा, राजा और सभा प्रजा के अधीन और प्रजा राज सभा के अधीन रहे।

राजा के लक्षण और कर्त्तव्य

"जो विद्या, न्याय, जितेन्द्रियता, शौर्य, धैर्य आदि गुणो से युक्त होकर अपने पुत्र के समान प्रजा के पालन में श्रेष्ठों की यथा योग्य रक्षा और दुष्टों को दण्ड देकर, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति से युक्त होकर, अपनी प्रजा को कराकर आनन्दित रहता और सबको सुख से युक्त कराता है वह 'राजा' होता है।"

राजा के कर्त्तव्य का उल्लेख करते हुए महर्षि ने कहा है—"राजाओं का प्रजा पालन करना ही परम धर्म है। यही राजा का सर्वश्रेष्ठ सन्ध्योपासनादि कर्म है जो रात दिन राजकार्य में प्रवृत्त रहना और कोई राजकाम कदापि बिगड़ने न देना।" (सत्यार्थ प्रकाश षष्ठ समु०)

स्वराज्य तथा एकमत

स्वामी जी ने अपने ही देश का स्वतंत्र राजा होना चाहिए, इस प्रकार का उल्लेख अपने ग्रन्थों में किया है। यथा—"कोई कितना ही करे जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम अथवा मतमतान्तर के आग्रह से रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य, प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नही है।" श्री बालगंगाधर तिलक का कहना है कि स्वराज्य के सर्वप्रथम उद्‌घोषक महर्षि दयानन्द ही हैं। उन्होंने अपने ग्रंथों में स्वराज्य स्थापना को प्रथम स्थान दिया है।

उदयपुर में निवास करते समय स्वामी जी ने पं० मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या के समक्ष अपना विश्वास व्यक्त किया—"जब तक इस देशवासियों में एक धर्म, एक भाषा, एक सा आचार-विचार तथा परमेश्वर के पूजा की एक ही प्रणाली का प्रचार नहीं होगा तब तक आर्यजाति विधर्मियों तथा विदेशियों द्वारा त्रस्त, अपमानित और पददलित होती रहेगी ऐसा मेरा सुनिश्चित विचार है।"

(३) कला-कौशल एवं शिल्प

कला-कौशल तथा विज्ञान सम्बन्धी ऋषि के विचार

महर्षि दयानन्द ने देश की दुरवस्था के लिए जहां देश में व्याप्त धार्मिक अंधविश्वास एवं पाखण्डों को कारण माना वहां उनकी सूक्ष्म मेधा ने यह भी अच्छी तरह समझ लिया था कि कला कौशल (उद्योग-धन्धों) का समुचित विकास न होना भी इसका एक प्रधान कारण है। जब अंग्रेज यहां कला कौशल को नष्ट भ्रष्ट कर अपने साम्राज्य की जड़ें गहरी करने का प्रयास कर रहे थे, तब महर्षि शिल्प विद्या के विकास द्वारा भारतीय जनता की सर्वांगीण उन्नति का स्वप्न देख रहे थे।

महर्षि ने शिल्प विद्या के अध्ययन-अध्यापन पर पर्याप्त बल दिया। सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में लिखा—"अर्थवेद" कि जिसको "शिल्प विद्या" कहते हैं, उसका पदार्थ-गुण विज्ञान क्रिया कौशल, नानाविध पदार्थों का निर्माण पृथिवी से लेकर आकाशपर्यन्त की विद्या को यथावत् सीख के अर्थ अर्थात् जो ऐश्वर्य को बढ़ाने वाला है उस विद्या को सीख के दो वर्ष मे ज्योतिषशास्त्र, सूर्य-सिद्धांतादि जिसमें बीजगणित, अंक, भूगोल, खगोल और भूगर्भ विद्या है इसको यथावत् सीखें, तत्पश्चात् सब प्रकार की हस्तक्रिया यन्त्र कला आदि को सीखें।"

विज्ञान केन्द्र की स्थापना

सम्प्रति आवश्यकता है कि हम महर्षि द्वारा प्रदर्शित विज्ञान प्रणाली के माध्यम से इस विज्ञानशील देश को उन्नति पथ पर ले जायें। उसके लिए एक विशाल विज्ञान केन्द्र की स्थापना अनिवार्य है। जिसमे छात्र इन कलाओं को सीखकर वैज्ञानिक क्षेत्र मे भी पूर्ण प्रवीण हों। महर्षि दयानन्द ने इसके लिए प्रभूत प्रयत्न किया था जो कि उनके पत्रव्यवहार से विदित होता है। मूलराज जी एम० ए० के नाम लिखे गये पत्र मे अपने विचारों को इस प्रकार प्रकट करते हैं—"अब यह स्पष्ट है कि बहुत से पढ़े-लिखे लोगो को भी नौकरी नही मिलती, या वे जीवन निर्वाह का प्रबन्ध नही कर सकते ऐसी अवस्था देखकर मैं एक "कला कौशल के स्कूल" की आवश्यकता विचारता हूं। प्रत्येक पुरुष को अपनी आय का 100वा भाग प्रस्तावित संस्था को देना चाहिए। उस धन से चाहे तो विद्यार्थी कलाकौशल के लिए जर्मनी भेजे जायें या वहां से अध्यापक यहां बुलायें।" वे मूलराज जी को पुन: लिखते हैं "अब समय है कि आप ला० श्रीराम को कला-कौशल सीखने के लिए इंगलैण्ड भेज दें। जर्मनी से पत्र आ रहे हैं।" ज्ञातव्य है कि प्रो० जी० एलवर्टस, स्ट्रीट बेडन, जर्मनी के साथ स्वामी जी का पत्रव्यवहार भारतीयों को कलाकौशल सिखाने के विषय में हुआ था। इससे यह प्रतीत होता है कि महर्षि इस विद्या के लिए भी विपुल बल देते थे।

(४) सामाजिक क्षेत्र

वर्णाश्रम और दहेज प्रथा

स्वामी जी ने आश्रम व्यवस्था के लिए सत्यार्थप्रकाश के चतुर्थ और पञ्चम समुल्लास में विचार किया है। वे मानते थे कि स्वस्थ, सबल और सच्चरित्र मानव समाज की स्थापना सच्चे अर्थों में वर्ण और आश्रम व्यवस्था के परिपालन से हो सकती है। वर्णव्यवस्था गुणकर्म स्वभाव से मानी जाये, न कि जन्मना जाति से। इसी प्रकार आश्रम व्यवस्था भी अपनी-अपनी परिधि मे होवे। सब यह नियम पालनीय है कि सभी क्रमश: ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास की दीक्षा ग्रहण करें। जिससे हम सच्चरित्र, जितेन्द्रिय और पूर्ण ज्ञानयुक्त होवें। धन, मान, पद और यश में न लिपटे रहें यही आश्रम प्रणाली सिखलाती है। ब्रह्मचर्य सभी आश्रमों का आधार है। आधार जितना सुदृढ़ होगा शेष आश्रमों का जीवन भी उसी अनुपात में सुखकर और उन्नति शील होगा। साथ ही यह भी ध्यातव्य है कि विवाह की आयु युवक की 25 वर्ष और युवती की 16 वर्ष की हो, तभी पाणिग्रहण करें। विवाह के अवसर पर कोई भी आर्यगृहस्थी दहेज न ले। आजकल देश में दहेज ने प्रचण्ड रूप धारण कर लिया है, इसको समाप्त करने के लिए पूर्णरूपेण प्रयत्न होना चाहिए। दहेज के कारण आज हमारी लाखों बहनें मृत्यु का आलिंगन करती हैं। अत: इस भीषण रोग का उपचार होना अपरिहार्य है। लाखों बहुएं सताए जाने पर पति का घर छोड़कर वेश्यालयों की शरण लेती हैं। स्त्री जाति के कल्याण हेतु दहेज प्रथा सर्वथा वर्जनीय हो।

शुद्धि प्रचार एवं मूर्त्तिपूजा

आर्य जाति संकीर्णता, अज्ञान और पाखण्ड के कारण दिन प्रतिदिन छोटी होती गई। अछूत के नाम पर अपने ही भाई विधर्मी होने लगे और धीरे-धीरे अनार्यों की संख्या बढ़ने लगी। महर्षि ने इस भूल को समझा और इसके शमनार्थ दो कार्य किये। एक तथा कथित अछूतों, पथ भ्रष्टों और असहायों को शुद्ध करके अपने में मिलाया तो दूसरी ओर बहुत दिनो से बने विधर्मियों को गले लगाया। भविष्य मे ऐसी गलती न हो सके, इसके लिए उन्होंने स्त्रियो, शूद्रों तथा अतिशूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार दिया। आज देश में, विशेषकर दक्षिण देशों में ईसाई मिशनरी घूम-घूमकर भारतीयो को ईसाई बना रहे हैं। इसके लिए शुद्धि का चक्र तीव्रगति से चलाना चाहिए।

मूर्तिपूजा हिंदुओं का एक भयंकर रोग है। जिसके कारण ही विदेशियों ने हमारी सम्पत्ति का अपहरण किया। इसी पिशाचिनी के कारण ही सोमनाथ का मन्दिर लुट गया। इसका समूलोन्मूलन करके इसके स्थान पर परमेश्वर की ही पूजा होनी चाहिए। आज भी मूर्तिपूजा पर लाखो रुपये बर्बाद किये जाते हैं। यह धन यदि राष्ट्रहित मे लगे तो देश की महती उन्नति होगी।

गोशाला, अनाथालय तथा आर्यवीर

महर्षि का आविर्भाव जब इस धरा धाम पर हुआ था तब देश में दुर्भिक्ष,

(शेष पृष्ठ 10 पर)

महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत

(पृष्ठ ९ का शेष)

गोहत्या, अकाल और दुखीजनों की भरमार थी। आज भी वही स्थिति सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रही है। इसके लिए महर्षि ने काफी स्थानों पर अनाथालयों की स्थापना की, परतु यह स्थिति तेजी से बढ़ती ही गई। वर्तमान काल में इस स्थिति को सुधारने के लिए प्रत्येक नगर में अनाथालयो का निर्माण हो। उनके लिए सामर्थ्यानुसार कुछ शिक्षण की व्यवस्था भी हो। यहा पर यह ध्यान देने योग्य बात है कि बच्चों के अनाथ घर पृथक् और लूले-लंगडे, बूढ़े, स्त्रियों के पृथक् अनाथालय हो। उनकी अवस्था अनुसार ही उनको शिक्षा, कला कौशल, शिल्प आदि कार्यों की सुचारु व्यवस्था होनी चाहिए। ऐसे हमारा पिछड़ा हुआ जनसमाज प्रचुर प्रगति कर सकता है तथा सुखी और समृद्ध हो सकता है। गाँवों तथा नगरों में गोशालाएं होनी चाहिए। गोवध सर्वथा अवरुद्ध हो। गो की रक्षा ही देश की रक्षा है।

किसी भी राष्ट्र के भावी कर्णधार उस देश के बच्चे और नौजवान होते हैं। इनका निर्माण यदि सुन्दर ढग से हो जाये नो देश का भी निर्माण हो जायेगा। जिस देश के बच्चे अच्छे होते हैं वह देश भी अच्छा और गौरवशाली होता है। आज हम देखते हैं कि बच्चों का चरित्र प्रतिदिन गिरता जा रहा है। सिनेमाघर, गदे चित्र, नाच, शराब, नशे की वस्तुओ ने मेरे देश के नवयुवको को पतन के गर्त में गिरा दिया है। महर्षि ने कहा भी है कि—प्रत्येक माता-पिता और गुरु का यह परम कर्त्तव्य है कि वे बालक और बालिकाओं का निर्माण सुन्दर ढग से करें। क्योंकि ये ही भावी राष्ट्र के उज्ज्वल नक्षत्र हैं। इन्होने ही आगे चलकर अपनी विद्या, बल और तेजस्वी प्रताप से सकल भूमण्डल को आलोकित करना है। इसलिए हमको प्रत्येक गाँव और नगर मे "आर्यवीर दल" की स्थापना करनी चाहिए। इनको नैतिक शिक्षा का पाठ प्रतिदिन पढ़ाया जाये। युवको को कुश्ती, कबड्डी, आसन, दण्ड, बैठक और विदेशी व्यायाम सिखायें। व्यायाम से सबका स्वास्थ्य सुदृढ और बलवान होगा। नोजवान राष्ट्र की रीढ़ होते हैं। इनका शरीर जितना मजबूत होगा, उतनी ही राष्ट्रीय दीवारें शक्तिशाली बनेगी।

उपसंहार

इस लघु लेख में हमने महर्षि दयानंद के मुख्य सिद्धांतों पर अनुशीलन किया है। उनके मुख्य विचार क्या थे? वे राष्ट्र को क्या नवीन दिशा प्रदान करना चाहते थे? इत्यादि प्रश्नों पर संक्षेप से गम्भीर पर्यालोचन किया है। इन विचारों को यदि सच्ची ईमानदारी और कर्त्तव्य निष्ठा से कार्य प्रणाली में परिणत किया जाये तो आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि महर्षि दयानद के जो दिव्य स्वप्न थे वे अवश्य ही पूर्ण होगे। अत मे फिर हम एक स्वर मे मिलकर गायेंगे :—

कहेगा इक स्वर में
　　फिर विश्व सारा।
वही वृद्ध भारत गुरु है हमारा॥

पता—पाणिनि महाविद्यालय,
बहालगढ, सोनीपत

श्री रामचन्द्र महाजन का भारत आगमन

आर्य समाज के प्रसिद्ध कार्यकर्ता एव प्रादेशिक सभा के आनरेरी महोपदेशक श्री रामचन्द्र जी महाजन आजकल ह्यूस्टन से भारत (दिल्ली) आये हुए हैं। वे (अमेरिका) में उत्साह पूर्वक वेद प्रचार कार्य मे रत हैं। उनकी आयु इस समय 80 वर्ष है, पर कार्य क्षमता एवं शक्ति युवकों के समान है। वे प्रादेशिक सभा एव "आर्य जगत" के लिए आर्थिक सहायता भी भेजते रहते हैं। पंजाब के शहीद सैनिकों के परिवारों के लिए भी उन्होने ह्यूस्टन से काफी आर्थिक सहायता भेजी थी। मैं प्रादेशिक सभा एव आर्य संस्थाओ की ओर से उनके भारत आने का हार्दिक स्वागत करता हूं। —रामनाथ सहगल, सभा मन्त्री।

'निशिचर हीन करों मही' का प्रण लो : गोहाटी के शिविर में उद्बोधन

गोहाटी, 18 अप्रैल। आर्य समाज गोहाटी के तत्वावधान और असम आर्य प्रतिनिधि सभा के संरक्षण में सार्वदेशिक आर्य वीर दल गोहाटी प्रशिक्षण शिविर 18 अप्रैल से 28 अप्रैल तक सम्पन्न हुआ। शिविराध्यक्ष का उत्तरदायित्व श्री प० बालदिवाकर हंस प्रधानसंचालक आर्य वीर दल नई दिल्ली ने किया। दीक्षान्त भाषण भी विशिष्ट अतिथि के रूप में उन्होंने ही किया। समारोह की अध्यक्षता श्री ओमप्रकाश त्यागी ने की। व्यायाम प्रशिक्षण का उत्तरदायित्व श्री ब्र० सत्यव्रत सत्यम गुरुकुल चित्तौड (राजस्थान) ने सम्भाला। कन्याओं के शिविर का सचालन सुश्री मधुस्मृति सिंह ने किया।

श्री हंस ने अपने ओजस्वी दीक्षान्त भाषण में आर्य वीरों को आह्वान करते हुए कहा—मेरी दृष्टि में महर्षि दयानन्द और देश के शहीदों को यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी कि जैसे भगवान् राम ने दोनों भुजा उठाकर कहा था 'निशिचर हीन करों मही' उसी तरह आप भी यह प्रण लें। उन्होंने कहा—डा० नारायणदास, ओ३म् प्रकाश आनन्द एवं श्री संजय कुमार के साथ उनके परमसहयोगी प्यारेलाल आर्य (दम्पति) श्री अरुण शर्मा के अपूर्व सहयोग से जैसे यह शिविर सफल हुआ है, वैसे ही सारे असम मे आर्यवीर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर जन-जागरण करेंगे, यह मुझे आशा है।

आर्य वीरो ने प्रशिक्षण काल में सीखे व्यायामों का हृदय ग्राही प्रदर्शन किया। असम सरकार के दूरदर्शन विभाग ने व्यायाम के भिन्न-भिन्न कौशलों की फिल्म ली, जो समस्त असम मे दिखाई जायेगी।

आर्य वीरों एवं आर्य वीरागनाओ के कौशल पूर्ण सुभाषणों और व्यायाम प्रदर्शनों का सर्वसाधारण पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं मंत्री ने श्री हंस जी से निकट भविष्य में पुन: असम के लिए समय देने का अनुरोध किया।—मधुस्मृति

बोकारो में वैदिक प्रशिक्षण शिविर की एक झांकी

बोकारो (बिहार) में वैदिक प्रशिक्षण शिविर मे सम्मिलित छात्रो और अध्यापकों के साथ डी० ए० वी० प्रबन्धकर्त्री सभा के प्रधान प्रो० वेदव्यास, श्री दरबारी लाल, प्रि० नारायण दास ग्रोवर और प्रो० रत्नसिंह (कुर्सी पर बैठे हुए।) दूसरे चित्र मे प्रो० वेदव्यासजी और श्री दरबारी लाल जी शिविरार्थियो को आशीर्वाद दे रहे हैं—साथ मे पुष्प लिये खड़े हैं शिविर व्यवस्थापक डा० वाचस्पति कुलवन्त। तीसरे चित्र मे प्रो० वेदव्यास जी उपेक्षित वर्ग के मेधावी छात्रों के लिए छात्रावास का शिलान्यास कर रहे है। समारोह के अध्यक्ष थे श्री मनीषचन्द्र दे तरफदार, डायरेक्टर बी० एस० एल। पूर्वांचल मे डी० ए० वी० स्कूलो के निदेशक प्रिसिपल नारायणदास ग्रोवर भी चित्र मे दिखाई दे रहे हैं।

डी० ए० वी पब्लिक स्कूल अम्बाला का वार्षिक, समारोह
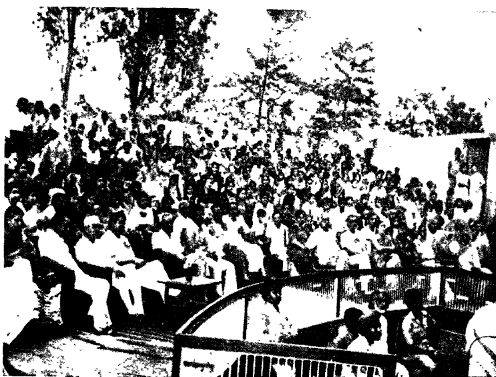
हरियाणा के शिक्षामन्त्री श्री जगदीश नेहरा की अध्यक्षता में डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल अम्बाला का वार्षिक समारोह मनाया गया। वे जनता को सम्बोधित कर रहे हैं। दूसरे चित्र में डी० ए० वी० हायर सेकण्डरी स्कूल चंडीगढ़ के प्रिंसिपल श्री बी० बी० गक्खड़ श्रोताओं सम्बोधित कर रहे हैं

यू० १०३/१०८ लायसेंस टु पोस्ट विदाउट प्री-पेमेन्ट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११६३/७२ डी० सी० 409

तपोवन में आन

एक लाख रुप

देहरादून, 5 मई। वैदिक साधन आश्रम तपोवन में बृहद यज्ञ का पूर्णा... के दिन दिल्ली से पधारे हुए आर्य नेता मलिक रामलाल जी ने अपने मित्रों और सहयोगियो को आह्वान किया कि वे आश्रम मे आवास की कठिनाई को कम करने के लिए एक-एक कमरा बनवाने के लिए दान दे। श्री मलिक की प्रेरणा से उनके मित्र श्री रामभज बत्रा ने 25,000/-रुपए दान की घोषणा की। अन्य कई मित्रों ने भी साढ़े बारह हजार रुपए प्रति कमरे के हिसाब से कमरे बनवाने की घोषणा की। अनेक छोटी राशियो की भी घोषणा हुई। तपोवन ट्रस्ट के मंत्री श्री देवदत्त बाली ने बताया कि इस योजना पर कुल सात लाख रुपए व्यय का अनुमान है। ट्रस्ट को दिया जाने वाला दान आय-कर अधिनियम के अन्तर्गत कर मुक्त है। दानी इसका लाभ उठा सकते हैं।

तपोवन आश्रम के आजीवन संरक्षक सदस्य महात्मा दयानन्द जी के ब्रह्मत्व में वृहद् यज्ञ सम्पन्न हुआ। स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती, स्वामी सत्यपति जी, महात्मा आर्यभिक्षु जी, स्वामी ओमानन्द जी और आचार्य राम प्रसाद वेदालंकार ने अपने प्रवचनो द्वारा श्रोताओं को उपकृत किया। योग-साधना का निदेशन स्वामी सत्यपति जी के अधीन रहा।

तपोवन विद्या निकेतन के बच्चों ने वेद-मन्त्र उच्चारण, संस्कृत श्लोक पाठ, गीता के श्लोको का पाठ तथा साथ-साथ उनका अंग्रेजी रूपान्तर भी प्रस्तुत किया। उपस्थित जनो ने प्रसन्न होकर विद्यालय के लिए 570/-रु० दान दिये।

इस वर्ष बाहर से पधारने वाले श्रद्धालु जनो की संख्या अधिक रही। दिल्ली के आर्य जन मलिक रामलाल जी की प्रेरणा से तीन विशेष बसें लेकर पधारे।

—वेददत्त बाली, मंत्री—वैदिक साधना आश्रम सोसायटी, तपोवन

विशाल आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर

आर्य समाज की प्रतिशील नव युवक संस्था, केंद्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश ने महर्षि कण्व की तपोभूमि गुरुकुल कण्वाश्रम, कलालघाटी, कोटद्वार, पौढ़ी गढवाल मे 14 से 23 जून तक एक विशाल आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया है जिसके संयोजक श्री अनिल कुमार आर्य और अध्यक्ष ब्रह्मचारी आर्य नरेश होगे। इन्ही दिनो स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती के सानिध्य मे योग साधना शिविर का भी आयोजन किया जा रहा है।

शिविर मे आसन, प्राणायाम, दण्ड बैठक, लाठी, जूडो कराटे व फ्री स्टाइल कुश्ती का प्रशिक्षण देने के साथ-साथ प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर ऐतिहासिक एव धार्मिक पर्यटन स्थलो का भ्रमण तथा युवको को मचान पर बैठा कर शेर, हाथी, भालू, हिरण, नील गाय आदि हिंसक-अहिंसक वन्य जीव जन्तुओ के अवलोकन के रोमांचकारी अवसर भी सुलभ होगे।

14 जून शुक्रवार को शिविर के उद्घाटन के अवसर पर उत्तर प्रदेश के राजस्व मंत्री श्री बलदेव सिंह, ससद सदस्य श्री सजय सिंह व अन्यान्य आर्य नेताओ के पधारने की सम्भावना है। इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क करे

—चन्द्र मोहन आर्य, आर्य समाज, कबीर बस्ती दिल्ली—11000

ऋतु अनुकूल हवन समग्री

हमने आर्य प्रेमियों के आग्रह पर संस्कार विधि के अनुसार हवन सामग्री का निर्माण हिमाचल की ताजी जड़ी-बूटियों से प्रारम्भ कर दिया है, जो उत्तम कीटाण-नाशक, सुगन्धित एवं पौष्टिक तत्वो से युक्त है। वह आदर्श हवन सामग्री अत्यन्त अल्प मूल्य पर प्राप्त है। थोक मूल्य ४ रु० प्रति किलो है।

जो यज्ञ प्रमी हवन सामग्री का निर्माण करना चाहें वह सब ताजी हिमालय की वनस्पतियां हमसे प्राप्त कर सकते हैं, वे चाहे तो कुटवा भी सकते हैं। वह सब सेवा मात्र है।

योगी फार्मेसी, लकसर रोड

डाकघर गुरुकुल कांगड़ी—२४०००४ (उ० प्र०) हरिद्वार

डा० ब्रह्मदत्त शर्मा स्वदेश वापिस

गुरुकुल कांगड़ी के यशस्वी स्नातक, तिब्बिया कालेज, नई दिल्ली और जामनगर (सौराष्ट्र) के आयुर्वेदिक कालेजो के भूतपूर्व प्रिंसिपल डॉ० ब्रह्मदत्त शर्मा आयुर्वेदाचार्य अमेरिका से हृदय के सफल आपरेशन के बाद भारत वापस आ गये हैं। व इस समय सी-4/बी/13/285 जनकपुरी, नई दिल्ली मे हैं, उनका फोन नं० 551862 है।

श्री प्रकाशार्य दिल्ली में

आर्य समाज के क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त कलाकार श्री प्रकाशार्य 'संग्राम' जो एक वर्ष पूर्व तक हैदराबाद मे थे अब पुन: आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग नई दिल्ली में आ गये हैं। उन्होने आर्य नेताओ, ऋषियो, महर्षियो के चित्र और ओ३म के झण्डे बनाने प्रारम्भ कर दिये हैं। रेट निम्न प्रकार से हैं—ध्वज छोटा एक रु० और बड़ा डेढ रुपया (कपड़ा आपका)। चित्र आर्य नेताओं के (आईल पेंट्स) शीशा फ्रेम सहित 160 रु० में, साइज $1\frac{1}{2}\times2$ फुट। बड़ा चित्र 4×3 वाला 315 रुपये मे। बैनर वाटर पेंटिंग तीन मीटर वाला 20 रु० मे और दो मीटर वाला 15 रु० मे। सपर्क सूत्र—प्रकाशार्य कलाकार, आर्य समाज, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली, दूरभाष—343718 है।

आर्य साहित्य शोध न्यास की स्थापना

उडुपि (कर्नाटक) मे सागोपाग वेद, आयुर्वेद, एव योग के शोध हेतु आर्य साहित्य शोध न्यास नाम से एक ट्रस्ट की स्थापना की गयी है। डा० नारायण राव, आचार्य मजुनाथ शास्त्री, प्रो० ज्येष्ठ वर्मन, प्रो० सुकुमार शास्त्री आदि इसके सदस्य है। यह ट्रस्ट साहित्य निर्माण के साथ-साथ प्रकाशन कार्य भी करेगा। सुदूर दक्षिण मे वैदिक धर्म प्रचार के लिए ट्रस्ट का निर्माण एक सशक्त कदम है। दानियो एवं धार्मिक सस्थाओ से उदारता पूर्वक दान की अपील की जाती है। दान राशि पर आयकर की छूट है।

मथुरा में दयानन्द बलिदान शताब्दी

मथुरा मे महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी विरजानन्द वैदिक साधनाश्रम, वेद मंदिर (चमेली देवी कालेज के सामने) में 7 से 9 जून तक समारोह पूर्वक मनायी जायेगी। वैदिक साधनाश्रम की रजत जयन्ती और आर्य प्रतिनिधि सभा, मथुरा की स्वर्ण जयन्ती के अलावा इस अवसर पर प्रौढ वैदिक मिशनरी शिविर, अथर्व वेद पारायण यज्ञ, वैदिक मिशनरी एवं युवा कार्यकर्ता शिविर, आर्य वीर दल शिविर आदि का भी आयोजन किया गया है।

—श्यामसुन्दर आर्य

रंगीन स्लाइडों से प्रचार

आर्य समाजो मे फिल्म द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार करने हेतु रंगीन स्लाइड द्वारा अपने आर्य समाज मे प्रचार कराये। इसमे दहेज, मांस, मदिरा को छुड़वाने के उपायो के अतिरिक्त शहीदो के बलिदान व जोशीले गीत भी सुन सकेंगे। संपर्क करे—आशानन्द भजनीक, सन्यास आश्रम, दयानन्द नगर, गाजियाबाद (उ० प्र०)

योग्य वर चाहिए

26 वर्षीय, कद 5 फुट, बी० ए० पास, स्टेनोग्राफर, सरकारी नौकरी, वेतन 1200/-रु० मासिक, कन्या के लिए योग्य वर चाहिए। —पिता आर्मी रिटायर्ड कैप्टिन है, पीतम पुरा मे अपनी निजी कोठी है। सम्पर्क करें आर्य समाज, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली—1 पि० नं० 407

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स ७११७/१८ पहाड़ी धरीज, दिल्ली से छपवा कर कार्यालय, 'आर्य जगत्, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य-२५ रुपये | विदेश में ३० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४८, अंक २३, रविवार, २ जून, १९८५ | दूरभाष : ३४३७१८

आजीवन सदस्य-२५१ रु० | इस अंक का मूल्य —६० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८५, दयानन्दाब्द १६० | ज्येष्ठ शुक्ला १४, २०४२ वि०

डी ए वी शताब्दी का प्रथम समारोह लाहौर में

आर्य प्रादेशिक सभा के वार्षिक अधिवेशन में सुझाव

प्रो० वेदव्यासजी पुनः प्रधान निर्वाचित : कालिज कमेटी का १२।। करोड़ का बजट पारित

(विशेष प्रतिनिधि द्वारा)

नई दिल्ली, 26 मई। देश भर से आए लगभग तीनसौ प्रतिनिधियों की उपस्थिति में आर्यसमाज अनारकली, मन्दिर मार्ग मे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन अत्यन्त उत्साहपूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हुआ।

निर्विरोध चुनाव की अपनी परम्परा का पालन करते हुए इस वर्ष भी प्रो० वेदव्यास जी सर्व सम्मति से प्रधान चुने गए और कार्यकारिणी के निर्माण का अधिकार उन्हे दिया गया। अन्य सभाओं में चुनावो को लेकर जिस प्रकार अखाडे बाजी होती है, उसका यहाँ सर्वथा अभाव देखकर जो प्रतिनिधि पहली बार सभा के अधिवेशन मे आए थे, वे बड़े चकित हुए।

ह्यूस्टन (अमरीका) से आए श्री रामचन्द्र महाजन और मौरीशस से आए श्री हरिश्चन्द सूब का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया गया। विभिन्न प्रतिनिधियों ने आर्य समाज के गत वर्ष के और आगामी वर्षों के कार्यकलाप के सम्बन्ध में अपने आलोचनात्मक और रचनात्मक सुझाव रखे। जब श्री नारायणदास ग्रोवर ने पूर्वांचल मे प्रादेशिक सभा और डी ए वी कमेटी द्वारा किए जा रहे शानदार कार्य का विवरण दिया तो प्रतिनिधिगण उत्साह से भर उठे।

सभा का वार्षिक विवरण और बजट प्रस्तुत किया गया, जो स्वीकृत हुआ। उससे पहले दिन डी० ए० वी० कालिज कमेटी की बैठक मे सब प्रिंसिपलो की उपस्थिति में कमेटी का 12।। करोड़ रु० का बजट पारित हुआ। कालिज कमेटी के प्रधान प्रो० वेदव्यास जी ने डी ए वी शताब्दी के उपलक्ष्य में किए जाने वाले कार्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला। हरियाणा मे दयानन्द अकादमी, होश्यारपुर मे शोधसस्थान और ग्राम विकास तथा पिछडे वर्गों की उन्नति के लिए अपनाई गई वृहत परियोजनाओं से डी ए वी आन्दोलन की व्यापकता का पता लगता था।

सम्पादकीय देखिए

डी ए वी शताब्दी के सम्बन्ध मे आर्यजगत् के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालकार ने जब यह सुझाव दिया कि शताब्दी सम्बन्धी प्रथम समारोह लाहौर के उसी स्थान पर होना चाहिए जहा अबसे सौ वर्ष पूर्व डी ए वी स्कूल की स्थापना हुई थी, तब सब प्रतिनिधि हर्ष-विभोर हो उठे। देर तक करतल ध्वनि करके तथा वैदिक धर्म की जय के नारे लगाकर प्रतिनिधियो ने इस सुझाव का स्वागत किया।

सभा के इस वार्षिक अधिवेशन को सम्बोधित करने वालों मे प्रमुख व्यक्ति हीरो साइकिल्स उद्योग, लुधियाना के मालिक श्री सत्यानन्द मुंजाल, सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह, ह्यूस्टन से आए श्री रामचन्द्र महाजन, नैतिकशिक्षा परामर्श दाता प्रो० रत्नसिह तथा अन्य महानुभाव थे। शास्त्रार्थमहारथी श्री अमरस्वामी जी महाराज ने आशीर्वाद के रूप मे प्रादेशिक सभा के कार्यकर्ताओ को निष्ठापूर्वक आर्यसमाज के कार्य में निरन्तर गतिशील बने रहने की प्रेरणा दी। सभा मन्त्री श्री रामनाथ सहगल, डी ए वी समिति के संगठन सचिव श्री दरबारी लाल तथा प्रो० वेदव्यास जी की कर्मठता की प्रशंसा करते हुए नई आशा और नया उत्साह लेकर प्रतिनिधिगण विदा हुए।

मधुशाला की स्वर्ण जयन्ती पर

हिन्दी के अत्यन्त लोक प्रिय कवि ड० हरिवंश राय बच्चन ने अपनी 'मधुशाला' की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर 'आर्य जगत्' के पाठकों के लिए एक नव-निर्मित रुबाई भेजी है, जो इस प्रकार है—

सिर के केशों-वेशों ने कब मन का भाव बदल डाला ?
गुरुद्वारों या मंदिर में कब बदला कब अल्ला-ताला ?
कड़वी मीठी जीवन-मदिरा साथ सदा हम पीते हैं,
पागल ही कहलाएंगे जो अलग बसाएं मधुशाला।

—बच्चन

२६.४.८५

यूरोप में तीस लाख हिंदुओं के लिए खतरा

सारे यूरोप मे हिन्दुओ के अस्तित्व को खतरा उत्पन्न हो गया है। एक वर्ष पहले यूरोपीय आर्थिक समुदाय की संसद ने इस रिपोर्ट का समर्थन किया था कि हिन्दूमंच सम्बन्धी आचार विचार के पालन को गैर कानूनी करार दिये जा सकता है। जब इस संसद ने एक ऐसी रिपोर्ट स्वीकार की जिसमे हरेकृष्ण सम्प्रदाय को खतरनाक संगठन घोषित किया गया था, तब सारे यूरोप मे इसके विरुद्ध शोर मचा, क्यों कि यूरोप मे हरे-कृष्ण सम्प्रदाय के अनुयायियो की संख्या दिन प्रतिदिन बढती जा रही है।

हालाकि यूरोपीय आर्थिक समुदाय की इस संसद को कानून बनाने का कोई अधिकार नही है, परन्तु कभी यूरोपीय देशो के नेता ईसाइयत के आग्रह के वशीभूत होकर खास तौर से हिन्दू सम्प्रदायो के विरुद्ध नीतियो को सरकारी नीतियो मे शामिल कर लेते हैं।

विचार-स्वातंत्र्य के नाम पर हिंदुत्व की रक्षा के लिए हाल मे ही पेरिस मे हिन्दू संगठनो की एक यूरोपीय परिषद् (यूरोपीयन कौंसिल आफ हिन्दू आर्गनाइजेशन्स—ECHO) बनी है। जब, पेरिस मे इस परिषद् का उद्घाटन हुआ, तब १६ यूरोपीय देशो के हिन्दू नेता उसमे शामिल हुए। बाद मे लन्दन मे एक पत्र प्रतिनिधि सम्मेलन मे इस परिषद् के निर्माण की और इसके उद्देश्यो की घोषणा की गई। प्रेस कान्फ्रेंस मे इस परिषद् के अध्यक्ष श्री विद्यासागर आनन्द ने यूरोप के समस्त हिन्दुओ का आह्वान किया कि वे निर्भीक होकर अपनी धार्मिक मान्यताओ के अनुसार आचरण करें।

(शेष पृष्ठ १० पर)

परामर्शदाता-अमरस्वामी सरस्वती | सम्पादक-क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक-रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

व्यक्ति और समष्टि को सुखी बनाने वाला यज्ञ-विज्ञान

—श्री पं० वीरसेन वेदश्रमी वेद विज्ञानाचार्य—

वेद मे विविध प्रकार का विज्ञान है। यह विज्ञान यज्ञों के माध्यम से हमारे देश मे किसी न किसी रूप मे आज भी प्रचलित है। महर्षि दयानन्द ने यज्ञ को रूढि-वादी गर्त मे निकाल कर विज्ञान के सिहासन पर वैठा दिया। यज्ञ की वैज्ञानिक उपयोगिता का अनुसन्धान अब योरोप और अमेरिका मे भी होने लगा है।

वेद मे यज्ञ को विश्वभिषक् कहा है। अर्थात् इसके द्वारा समस्त रोगो तथा उनके कारणभूत प्रदूषणों का निवारण भी होता है। अतः किस परिस्थिति मे कौन सा यज्ञ किस प्रकार करे, इसका विचार करने से ही पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। यज्ञ के ३ प्रधान अंग है:—१ सकल्प २ मन्त्र और ३. आहुति। संकल्प के बिना यज्ञ नही हो सकता, मन्त्र के विना भी यज्ञ नही हो सकता, और अग्नि मे हव्य पदार्थो की आहुति दिये विना भी यज्ञ नही हो सकता। इन तीनो का समन्वित कार्य यज्ञ है। सकल्प ही यज्ञ का आधार है। वेद कहता है—आ नो भद्रा ऋतवो यन्तु विश्वत। (यजुर्वेद २५/१४१) अर्थात् कल्याणकारी, यज्ञ करने के विचार सब ओर से प्राप्त हो। जब विचारो मे निमग्न चित्त उसे क्रियान्वित के लिये उद्यत हो जाता है तो वह संकल्प बन जाता है।

लौकिक व्यवहार मे मन्त्र का अर्थ वेद के ही मन्त्रो से ग्रहण किया जाता है। मन्त्र ध्वन्यात्मक होते है। ध्वनि का प्रभाव जड़-चेतन जगत् पर अवश्य होता है। लोक मे प्रत्यक्ष है कि विकृत ध्वनियो से मानसिक विकृतियाँ उत्पन्न होती हैं। वीर रस की ध्वनियो से वीरता का संचार, प्रेम रस की ध्वनियो से प्रेम, शान्त रस की ध्वनियो से शान्ति, शोक ध्वनियो मे शोक का प्रसारण होता है और वह प्राणियो के मन पर प्रभाव करता है। मन के प्रभावित होने पर तदनुवर्ती वृत्तियो की उत्पत्ति होती है और वृत्तियो के अनुरूप ही कर्मों मे प्रवृत्ति होती है। अत शुभ विचार-पूर्ण मन्त्रो से विश्व म कल्याण अवश्यम्भावी है।

मन्त्र छन्दोमय हैं—वेद की प्रत्येक पक्ति व सम्पूर्ण मन्त्र छन्दोमय है। उनमें सर्वशक्तिमान परमात्मा की गुप्त सामर्थ्य निहित है। छन्द नियत या मात्राओ मे निवद्ध होते है। नियत अक्षरो, छन्दो के नियत स्वरो के ध्वन्यात्मक आवर्तन से ध्वनि मण्डल की उत्पत्ति — आवर्तन चक्र या जप से, चाहे वह जप मानसिक हो या ध्वन्यात्मक, उसका मण्डल उत्तरोत्तर घनत्वपूर्ण तथा गतिमय होकर विशालता को प्राप्त होता है जिससे प्राणियों मे वैसी प्रवृत्तियो का प्रवाह चलने लगता है।

छन्द यद्यपि प्रधान रूप से ७ हैं परन्तु इन सातो छन्दों को भी प्रमुखता से तीन विभागो में विभक्त किया है। ये तीन विभाग ही भूः भुव —स्वः हैं। छन्द परिभाषा मे ये गायत्र मण्डल, त्रिष्टुप् मण्डल और जागत मण्डल है। इन्हीं मण्डलात्मक प्रभावो की वृद्धि के लिये—'गायत्रं छन्दमारोह त्रैष्टुभं छन्दमारोह—जागतं छन्दमारोह-- अथवा—गायत्रेण त्वा छन्दसा साधयामि, त्रैष्टुभेन त्वा छन्दसा साधयामि, जागतेन त्वा छन्दसा साधयामि— अथवा--गायत्रेण त्वा छन्दसा मन्थामि-त्रैष्टभेन त्वा छन्दसा मन्थामि, जागतेन त्वा छन्दसा मन्थामि—की प्रक्रिया का यजुर्वेद मे अनेक स्थानो पर उपदेश है। इस प्रक्रिया के द्वारा पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्युलोक में मनोवांछित विचारों की व्याप्ति की जाती है।

इन मण्डलो में अग्नि, वायु एव सूर्य देवतत्व हैं। इनको भी सतेज करने के लिए अग्नि को दूत बनाकर 'अग्निं दूतं पुरोदये-(यजुर्वेद २२।१७) यथार्थ अग्नि की स्थापना अपने सम्मुख भुर्भुवः स्वः मन्त्र से त्रिलोकी को प्रभावित करने के लिए करनी पड़ती है। पुन उक्त प्रवृद्ध यज्ञाग्नि मे तीनों महाव्याहृतियों से उनके देवता तत्वों के साथ उनसे संबन्धित प्राण, अपान और व्यान रूपी विश्व, प्राणो के लिये आहुतियां दी जाती है। अर्थात् यज्ञ द्वारा समस्त ब्रह्माण्ड या त्रिलोकी के प्राणों को क्रियाशील, शुद्ध एवं पुष्ट किया जाता है। इसलिये वेद ने यज्ञ को विश्वधा असि (यजुर्वेद १-२) कहा है—अर्थात् यज्ञ संसार का धारण पोषण-कर्ता है। यही यज्ञ का प्रधान लक्ष्य है। जिस यज्ञ मे महाव्याहृतियो, उनके दैवत तत्वों और उनके विश्व प्राणो के लिये आहुति नहीं, वह यज्ञ व्यर्थ ही है।

यज्ञ का त्रिलोकी में गमन—यज्ञ की यह प्रत्यक्ष एवं अत्यन्त गूढ़ स्थिति है कि वह दृष्ट, अदृष्ट अर्थात् सूक्ष्म अतिसूक्ष्म एव व्यापक रूप से समस्त विश्व मे व्याप्त हो जाता है। यजुर्वेद अध्याय ५ के १५ वें मन्त्र में यज्ञ की इस स्थिति को प्रकट किया गया है। वहां कहा गया है कि—'इदं विष्णुः विचक्रमे—अर्थात् यज्ञ प्रारम्भ होने पर वह यज्ञ क्रमशः उत्तरोत्तर गति करता हुआ त्रेधा-निदधे पदम्—पृथ्वी, अंतरिक्ष और द्युलोक मे अपने स्थान को प्राप्त करता है अर्थात् स्थिति को प्राप्त होता है। 'समूढमस्य पासुरे—अर्थात् यज्ञ की यह स्थिति गायत्र मण्डल त्रिष्टुप् मंडल, जागत मण्डलो मे या भू-र्भुवः स्वः लोको मे अत्यन्त गुप्त एवं अनुमानगम्य है। तात्पर्य यह है कि यज्ञ को केवल धूम की ऊंचाई से भी नही जाना जा सकता। विद्युत, सूर्य, रश्मि और प्रकाश के समान उसकी व्यापक स्थिति को जाना जा सकता है।

यज्ञ से सुख की प्राप्ति—यज्ञ किये जाने पर यद्यपि वह तीनों लोको में व्याप्त हो जाता है परन्तु वह उन स्थानों से पुनः शक्तिशाली होकर हमे सुख प्रदान करता है। ऐसा वेद मे स्पष्ट बताया है—'यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नम्(यजुर्वेद अध्याय ८, मंत्र ४१)अर्थात् विद्वानों द्वारा आयोजित यज्ञ सुख को लाता है और आदित्यासो भवतामृडयन्तः—वह सूर्यादिलोक एवं सूर्यप्रकाश मे स्थित होकर हम सबको सुख प्रदान करता है। इसी प्रकार—पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णापुनरापत—(यजु० ३-४९) अर्थात् यज्ञ मे भरकर आहुति देने से वह और अधिक पूर्ण होकर प्राप्त हो जाता है।

यज्ञ का महान् फल—यजुर्वेद अध्याय १३ के २७ से २९ वे मन्त्रो में बताया है कि यज्ञ के सम्पन्न होने से माधुर्य गुणयुक्त अर्थात् अनुकूल वायुओं का प्रवाह चलने लगता है। नदियों में, झरनों में मधुर रस का सचार होता है और अन्न, वृक्ष, वनस्पति, वनादि विष रहित, होकर जीवनदायी हो जाते हैं। यज्ञ करने से रात्रि और दिन, संध्या और उषा सुखकारी हो जाते हैं। पृथ्वी के कण-कण मे, मधुरता उत्पन्न होती है। मधुरता उत्पन्न होने से धूल मे जो विश्रृंखलता है वह नष्ट होकर रेगिस्तान समाप्त होने लगता है। विश्व की वनस्पतियां अन्न, वृक्ष, फल, मूलकन्द एवं वन तथा समस्त पर्याबरण मधुर बन जाता है। सौर शक्तिया भी माधुर्य गुणयुक्त, अनुकूल हो जाती है और गो आदि पशु भी अमृतमय दिव्य दूध के देने वाली हो जाती हैं। अतः यज्ञ से समस्त पर्यावरण अपने अनुकूल बन जाता है ऐसा सुन्दर यज्ञ का विज्ञान है।

यजुर्वेद अध्याय २, मन्त्र २५ में बताया है कि जगती छन्द के मन्त्रों से यज्ञ करने पर द्युलोक में पहुंचता है। त्रिष्टुप् छन्द के मन्त्रों से यज्ञ अन्तरिक्ष में पहुचता है और गायत्री छन्द मन्त्रो से यज्ञ पृथ्वी में फैलता है। पुनः इन्ही स्थानों से वह और सूक्ष्म एवं विभक्त होकर सबको फल प्रदान करता है। जगती छन्द के मन्त्रों से किया यज्ञ द्युलोक पर सूर्यप्रकाश को प्राप्त होकर जगत् को तृप्त करता है। अन्तरिक्ष मे पहुचकर वहाँ से जल विभाग को प्राप्त होता है तो वायु और वर्षा जल की शुद्धि करता है और पृथ्वी पर पहुचा यज्ञ विविध प्रकार के सुख की वृद्धि करता है। अर्थात् यज्ञ जब पृथ्वी पर किया जाता है तो उत्तरोत्तर आरोहण क्रम से सूक्ष्म तो हो जाता है, परन्तु उन तीनो स्थानो से और भी सूक्ष्म एवं सामर्थ्यवान् होकर एक नये जीवनीय पर्यावरण का निर्माण करता है। इसी को यजुर्वेद अध्याय ८, मन्त्र ६० मे निम्न प्रकार कहा है य द्युलोक मे पहुचकर दिव्य भोगो को प्रदान कराता है उससे हमें द्रविण धन, सुख, ऋत्वनुकूल भोग प्राप्त होवे। यह यज्ञ अन्तरिक्ष मण्डल और मनुष्यो को प्राप्त होकर उक्त फल प्रदान करता है। जिस किसी भी लोक में पहुचता है वहां हमारा कल्याण ही करता है। यज्ञ करने से पदार्थ नष्ट नही होते और न क्रिया ही निष्फल होती है—अपितु सब ओर से कल्याण ही होता है।

अग्नि द्रव्य वाहक है अतः इच्छित फलों की प्राप्ति के लिए द्रव्य पदार्थों का ज्ञान आवश्यक है। रोग, प्रदूषण, विकार आदि निवारक कार्यों में किन हव्य द्रव्यों से लाभ होता है, वायुमण्डल की पुष्टि किन द्रव्यों से होती है, अतिवृष्टि, अनावृष्टि किन द्रव्यों से दूर होता है, इत्यादि हव्य पदार्थों का ज्ञान आवश्यक है। तभी यज्ञ कार्य विशेष फलदायक होता

(शेष पृष्ठ १० पर)

सुभाषित

(वीर सावरकर के बड़े भाई श्री बाबाराव सावरकर को देश भक्ति पूर्ण साहित्य की रचना के आरोप में बन्दी बनाकर अण्डमान भेज दिया गया था। लार्ड मिण्टो की हत्या के प्रयास में उनके छोटे भाई बाल सावरकर को भी बन्दी बना लिया गया था। उस अवसर पर वीर सावरकर ने अपनी पूज्य भाभी यमु वहिनी को, जिन्हें वे अपनी सहयोगिनी, मार्गदर्शक और मां सभी का सोहार्दपूर्ण सामंजस्य कहते थे, लन्दन से एक मार्मिक पत्र लिखा। शीर्षक था—'सांत्वना'। सौ० कुसुम बाबे द्वारा किया गया उस पत्र का काव्यमय रूप यहां प्रस्तुत है।]

सांत्वना

जिसको तुमने सुत सा पाला
मां का अभाव भी भर डाला,
हे भाभी वत्सल, सुमंगला !
वह भाई वन्दन करता है ।।
यह देश हमारा दिव्य, धन्य,
ईश्वर के ही हम अंश मान्य,

या राम भक्ति का फल अनंय,
मानवी रूप धर आता है ।।
उपवन में फूल कई खिलते,
खिलकर बस मिट्टी में मिलते,
उनका महत्व क्या ? मुरझाते,
क्या कोई गणना करता है ?

पर जिसको तोड़ा गजेंद्र ने
श्री हरि पद पर अर्पण करने
वह कमल पुष्प प्रेरणा बने,
चिरकाल अमर पद पाता है ।
ऐसे ही खिलकर सभी सुमन
श्री राम-चरण में हों अर्पण ।

कुछ सार्थक हो यह नश्वर तन,
मन यही कामना करता है ।
जो स्वदेश को प्राणार्पण कर
निर्वंश हुआ वह वंश अमर
जन-सेवा का सौरभ सुन्दर ।
वह दिग्-दिगन्त में भरता है ।।

सम्पादकीयम्

एक विनम्र सुझाव

इस समय देश में तीन शताब्दी समारोह चल रहे हैं। पहला है—दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह, दूसरा है—कांग्रेस शताब्दी समारोह और तीसरा है—डी० ए० वी० शताब्दी समारोह। तीनों ही शताब्दी समारोहों ने अपने अपने ढंग से जनता को प्रभावित किया है और भविष्य में प्रभावित करने वाले हैं।

निर्वाण शताब्दी समारोह अब से दो वर्ष पूर्व अजमेर से प्रारम्भ हुआ था और उसके बाद भारत भर में विभिन्न स्थानों पर तत्सम्बन्धी समारोह हो रहे है। गत सप्ताह ही मेरठ में निर्वाण शताब्दी का शानदार समारोह हुआ है जिसमें उत्तर प्रदेश के सभी आर्य जनों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया और अपनी संगठन शक्ति का परिचय दिया। उससे पिछले सप्ताह कर्नाटक में निर्वाण शताब्दी समारोह हुआ और अगलेसप्ताह 7 से 9 जून तक ऋषि दयानन्द की दीक्षाभूमि मथुरा में बलिदान शताब्दी समारोह हो रहा है। कांग्रेस का शताब्दी समारोह 6 मई को प्रातः दिल्ली के इन्दिरा स्टेडियम और सायं रामलीला मैदान में विशाल जनसभाओं से प्रारम्भ हुआ। डी० ए० वी० शताब्दी का अभियान भी प्रारम्भ हो गया है और उसके सम्बन्ध में विभिन्न समारोहों की शृंखला निकट भविष्य में प्रारम्भ होने वाली है।

निस्सन्देह, पिछले सौ वर्ष भारत वर्ष के इतिहास में बड़े महत्वपूर्ण रहे हैं। राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और शैक्षणिक—सभी क्षेत्रों में जो नवजागरण की लहर चली उसका सबसे प्रबल वेग शुरू के 50 वर्षों में रहा और बाद के 50 वर्षों में उसका सफल दृष्टिगोचर होने लगा। आधुनिक भारत वर्ष जो भी कुछ है, इन्हीं पिछले सौ वर्षों की उपज है और 21 वी सदी मे पदार्पण करने वाला भी वही भारत वर्ष होगा जो पिछले सौ सालों में तैयार हुआ है। गत शताब्दी के इसी नवजागरण का एक सर्वश्रेष्ठ फल देश की स्वतंत्रता है। यदि सभी क्षेत्रों में नव-जागरण की यह लहर न चली होती तो सन् 1947 मे हम भारत के भाग्य-गगन पर स्वातंत्र्य- सूर्य का उदय भी न देख पाते।

जिन तीन आंदोलनों की शताब्दियों की चर्चा हमने ऊपर की है उनमें दो का सम्बन्ध आर्य समाज से है। ये तीनों आन्दोलन एक दूसरे के पूरक रहे हैं। इन्हे एक दूसरे से अलग समझने की भूल नहीं करनी चाहिए—भले ही इनकी दिशाएं और कार्य क्षत्र अलग दीखते हो। असल में जैसे शरीर का स्वास्थ्य किसी एक अंग के पुष्ट होने पर नहीं, बल्कि सम्पूर्ण शरीर के पुष्ट होने पर निर्भर होता है, वैसे ही किसी राष्ट्र का स्वास्थ्य भी केवल राजनीति, केवल धर्म, केवल समाज सुधार या केवल शिक्षा पर निर्भर नहीं हुआ करता। एक भी अंग के दुर्बल होने पर राष्ट्र सबल नहीं हो सकता।

स्पष्ट रूप से कांग्रेस ने केवल राजनीति की दिशा पकड़ी, आर्यसमाज ने धार्मिक पाखण्डों के निराकरण और सामाजिक सुधार की दिशा पकड़ी, और डी० ए० वी० आन्दोलन ने शिक्षा की दिशा पकड़ी। इन तीनों आन्दोलनों ने गत सौ वर्षों में अपनी अपनी दिशा में नए कीर्तिमान स्थापित किए।

कांग्रेस कुछ अंग्रेज-भक्त वकीलों से प्रारम्भ हुई, पर धीरे धीरे वह दादा भाई नौरोजी, लोक मान्य तिलक, महात्मा गांधी और नेहरू के माध्यम से आजादी के लिए संघर्ष करने वाला सबसे प्रबल आन्दोलन बनती गयी। उसमें सभी वर्गों, सभी विचारों और सभी रंगों के लोग शामिल हुए। कहना न होगा कि आजादी के लिए आन्दोलन करने वाली कांग्रेस में आर्य समाजियो का योगदान सर्वाधिक रहा क्योंकि राष्ट्रप्रेम आर्य समाज की घुट्टी में है और खुले आम यह घोषणा की जा सकती है कि जो राष्ट्रभक्त नहीं, वह आर्य समाजी नहीं।

डी० ए० वी० का आन्दोलन भी आर्य समाज का ही आन्दोलन था और ऋषि के निर्वाण के पश्चात् हताश आर्य बन्धुओ ने ऋषि के स्मारक के रूप में इस आन्दोलन को खड़ा करके जैसे नया जीवन पा लिया। अपने प्रारम्भिक दिनों में इस आन्दोलन के पुरस्कर्ताओं को किन किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, इसकी कल्पना करना आज कठिन है, परन्तु यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि सारे पंजाब को ईसाई-बहुल बनाकर ब्रिटेन का शासन भारतवर्ष में में अक्षुण्ण रखने का जो स्वप्न अंग्रेजो ने देखा था उस स्वप्न को किसी ने तोड़ा तो डी० ए० वी० आंदोलन ने। डी० ए० वी० आन्दोलन की सफलता से परेशान होकर ही बाद मे अंग्रेजों ने अलीगढ़ में मुस्लिम कालिज और अमृतसर में खालसा कालिज खोल कर इस देश में मुस्लिम सम्प्रदायिकता और सिख साम्प्रदायिकता की दागबेल डाली, जिसका दुष्परिणाम देश को भुगतना पड़ा।

उसी डी० ए० वी० आन्दोलन की शताब्दी के अवसर पर हम एक विनम्र सुझाव देना चाहते हैं। देश विभाजन के पश्चात्, जिस लाहौर में सबसे पहले डी० ए० वी० स्कूल और डी. ए. वी. कालेज की स्थापना हुई थी, वह लाहौर पाकिस्तान मे चला गया। जो कभी अपना देश था, वह पराया देश बन गया। जो पीढ़ियो से पुश्त-दर पुश्त वहां रहते आऐ थे, उन्हें अंग्रेजों की कूटनीति के कारण अपना वतन छोड़कर आना पड़ा। पर इससे इतिहास तो नहीं मिट जाता। यह इतिहास तो बदस्तूर कायम है कि डी. ए. वी. आन्दोलन की शुरुआत लाहौर से हुई। डी. ए. वी. स्कूल और डी. ए. वी. कालेज की इमारतें भी वहां मौजूद हैं ही। अभी तक हमने पाकिस्तान में छूटे समाज मन्दिरों और अपने स्कूल कालेजों की कोई खोज खबर नहीं ली। इस शताब्दी के अवसर पर तो कुछ करें। कमसे कम इतना तो कर ही सकते हैं कि डी. ए. वी. शताब्दी का प्रथम समारोह लाहौर में उसी स्थान पर हो जहां सबसे पहले यह आंदोलन कार्यरूप मे परिणत हुआ था।

कितने ही बुजुर्ग मुस्लिम बुद्धिजीवी पाकिस्तान में आज भी जीवित होंगे जो कभी डी. ए. वी. शिक्षा संस्थाओं में पढ़े होंगे। सर सिकन्दर हयात खां और सर शहाबुद्दीन ने महात्मा हंसराज जी को अपना गुरु मानते हुए जो भावपूर्ण श्रद्धाजलि व्यक्त की थी, उसकी सार्थकता का अवसर आ गया है। यदि लाहौर में होने वाले डी. ए. वी. शताब्दी आंदोलन के प्रथम समारोह का उद्घाटन पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल जिया उल हक करें, तो कहना ही क्या ! इससे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों में एक नया अध्याय प्रारम्भ हो सकता है और दोनों ओर के मानसिक तनावों की बहुत बड़ी बाधा दूर हो सकती है।

क्या आर्य जनता और डी. ए. वी. शताब्दी समारोह के संचालक गण इस विनम्र सुझाव पर ध्यान देंगे ?

उजाले उनकी यादों के

—विष्णु प्रभाकर—

मनुष्य सपने देखता है। यह उसका स्वभाव है। एक सपना है उसका काल की सीमा पार करके सदेहभूत भविष्य में पहुंच जाने का। काश ! वह पूरा हो चुका होता तो मैं तुरत पचास-पचपन वर्ष पूर्व के लाहौर में पहुंच जाता और उसके उपनगर, कृष्णनगर में तलाश करते-करते जातपात तोड़क मण्डल के प्राण, उस समय के श्री संतराम बी० ए० को ढूंढ लेता...

सन्तराम बी० ए० ही क्यों ?

क्योंकि अभी कुछ दिन पूर्व, एक मित्र ने सूचना दी है कि जातपात तोड़क मण्डल वाले सन्तराम बी० ए० आजकल दिल्ली के नवजीवन विहार में, अपनी बेटी के पास ठहरे हैं। उनके घुटने में चोट आ गई है और आयु है सत्तानवे वर्ष। चलना फिरना असम्भव जैसा हो गया है। उनसे मिल कर उनके लिये कुछ कर सको तो...

सन्तराम बी० ए० सत्तानवे वर्ष की आयु कृष्णनगर, लाहौर...जातपात तोड़कमण्डल...समर्थ की यह असमर्थता ! सब कुछ गड्ड-मड्ड हो गया मेरे मस्तिष्क में और उसको आवृत करती अनेक उजली-सांवली यादें उभरने लगी।

उजाले अपनी यादों के
हमारे साथ रहने दो।
न जाने जिन्दगी की किस
गली में शाम हो जाए।।

यादें उन नायाब मोतियों की तरह हैं जिनका मूल्य आंकने वाली कसौटी का मनुष्य अभी तक निर्माण नहीं कर पाया। कभी वे प्रशान्त महासागर की तरंगों की तरह मन को थपकियां देकर सुलाती प्रतीत होती हैं, कभी तूफानी सागर की उद्वेलित उत्तेजित लहरों की तरह किनारों पर सिर पटकती रहती हैं, कभी रौद्ररूप धारण करके सब कुछ को नष्टभ्रष्ट कर देती हैं...

मेरे भीतर भी बहुत कुछ नष्टभ्रष्ट हो गया था। एक गहरी पीड़ा आवृत किये थी उन भग्नावशेषों को। अवसाद से भरे-भरे उनको पत्र लिखा। तुरंत उत्तर आया उनकी बेटी का, पिता जी को लिखा आपका पत्र मिला। पढ़कर सुनाया। बहुत प्रसन्न हुए कि आपने उन्हें स्मरण किया और मिलने आने का कष्ट करेंगे। पिता जी कहा करते हैं कि मेरे जीवन के सबसे सुखद क्षण वे होते हैं जब मैं निस्वार्थ भाव से किसी दूसरे की सेवा कर पाता हूं और जब मुझे अपने विचारों का मित्र मिल जाता है, चाहे वह मुझसे सहस्रों मील दूर ही क्यों न बैठा हो और चाहे उसके साथ मेरा पत्र व्यवहार का ही परिचय क्यों न हो...

'उन्हें दिखाई नहीं देता, स्मृति भी काफी धुंधली पड़ गयी है। घुटने में चोट के कारण चलने या खड़े हो पाने में असमर्थ हो गये हैं पर देश से जातिभेद के महारोग को मिटाने, हिन्दी एवं हिन्दुओं की उन्नति की लगन उतनी ही युवा है जैसा कि युवाकाल में रही होगी।'

पत्र पाकर जहां एक ओर प्रसन्नता का अनुभव हुआ वहीं दूसरी ओर मन पीड़ा से भर उठा। इस दुनिया से जाने से पहले क्या अशक्त—असमर्थ हो रहना अनिवार्य है। क्या कर्म-कुकर्म, पाप-पुण्य का मोहजाल मनुष्य को इस स्थिति तक पहुंचा देने के लिए जिम्मेदार नहीं हैं...

बहुधन्धी हूं। तुरन्त दर्शन नहीं कर सका। लेकिन जब किये तो सचमुच, दर्द के बावजूद, एक तीर्थ यात्रा करने जैसा आनन्द पाया।

एक नातिदीर्घ स्वच्छ कमरा। उत्तर की ओर एक चारपाई पर लिहाफ से आवृत एक जराजीर्ण काया, आखें न जाने किस शून्य में झाकती सी, चेहरे पर एक करुण मुस्कान, एक साथ सौम्यता और दृढ़ता का परिचय देती। गार्गी बहन ने ऊंचे स्वर में मेरा नाम बताया। बोले, कौन ?

फिर बताया।

कौन विष्णु प्रभाकर !

हां, हां, विष्णु प्रभाकर !!

जैसे उल्लास फूट पड़ा चेहरे पर। गार्गी बहन ने सहेज कर चाय का प्याला उनके हाथों में थमा दिया। कांपे पर दूसरे ही क्षण दृढ़ता से थाम लिया। और घूंट भरते-भरते बातें करने लगे। बीच-बीच में यादों में खो जाते। मेरे मन के द्वार पर भी अतीत दस्तक दे रहा था। मैंने देखा मेरे सामने के वृद्ध सतराम की काया को आवृती करती पैंतालीस वर्षीय क्रूसेडर सन्तराम की मूर्ति उभर आयी है...

सन् 1932, आधी शताब्दी पूर्व का लाहौर, उत्तर भारत का सबसे जीवन्त, सबसे सुन्दर नगर, सुधारकों-क्रान्तिकारियों का गढ़, नारी-मुक्ति का केन्द्र। वैसा ही सुन्दर स्वच्छ प्रशस्त उपनगर कृष्णनगर। मेरे बहनोई ज्योतिप्रकाश जी मुझे उनके मकान पर ले गये। मैं बीस साल का नवयुवक, क्रांतिकारी विचारों में विश्वास करने वाला आर्य समाजी। बहुत बातें हुई जातपात तोड़क मण्डल के कार्यकलापों की, आर्य समाज की, हिन्दी की...

ढाई हजार वर्ष से भी अधिक का समय बीत गया जब भगवान बुद्ध ने जातिपाति के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की थी। तबसे न जाने कितने महापुरुष आये और गये, कितने आन्दोलन उठे और गिरे पर जाति पांति का नासूर अभी भी हमारे जीवन रक्त को, विषाक्त किये है। स्वतंत्र भारत में यह नासूर और भी गहरा हुआ है। ऐसी स्थिति में आज से पचास साठ वर्ष पूर्व उसके विरुद्ध जहाद बोलना कितना संकटप्रद रहा होगा, इसकी कल्पना करना बहुत आसान है।

लेकिन जितना संकटप्रद, उतना ही चुनौती भरा और जो चुनौतियां स्वीकार करना जानता है उसमें कैसा उत्साह और उल्लास होता है यह मैं जान सका था उस युग के सन्तराम बी० ए० को देख कर दीर्घ काया, गौर वर्ण, पाजामा कोट, साफा, ठेठ पंजाबी पोशाक, वाणी में कैसी दृढ़ता आस पास का वातावरण उत्साह से कैसा उमगा-उमगा, बोलते तो विद्रोह अंगड़ाई लेने लगता। लिखते तो प्रतिपक्षी सहम जाते। सचमुच उनका मण्डल युवकों में प्राण फूंक रहा था। मेरे आकर्षण का केन्द्र भी तो वही था। बिना पूर्ण समर्पण के यह सम्भव नहीं हो सकता। मैंने निश्चय किया कि मैं जात पात तोड़ कर विवाह करूंगा...झट उनके पास पहुंचा, बोला, मेरे लिये कोई विजातीय कन्या बताइये।

हम दोनों ने मिल कर कई फाइल टटोले पर उपयुक्त कन्या नहीं मिली। पत्र व्यवहार होता रहा। वे एक हिन्दी

मासिक 'युगान्तर' का प्रकाशन भी करते थे। हिन्दी के प्रति अदम्य आस्था थी उनमें। कई हिन्दी मासिकों का सम्पादन किया है उन्होंने, उषा, युगान्तर, क्रान्ति, भारती आदि। कितनी ही पुस्तकें लिखीं, निबन्ध, कहानियां, कविताएं। इनमें उल्लेखनीय है—अल-बरूनी का भारत हुत्सिग की भारत यात्रा तथा आत्म प्रेक्षा (निबन्ध)। मैं सरकारी नौकर था इसलिये 'प्रेम बन्धु' के छद्मनाम से कई कहानियां उनके लिये लिखी मैंने। आज मेरे पास न वे कहानियां हैं, न उनके पत्र ही। जून, 1940 की बड़ी तलाशी में बहुत कुछ खो गया मेरा...

सबसे बड़ी त्रासदी यह हुई कि मैं जातपात तोड़ कर शादी भी न कर सका। मां किसी भी तरह तैयार नहीं हुई...

और वह कहानी मेरी है। मेरे सामने अब फिर वही वृद्ध सन्तराम बी० ए० हैं। धीरे-धीरे चाय की घूंट भरते। फिर शून्य में टटोल कर बोलते, हां, हां, युगान्तर, युगान्तर मैंने निकाला था, हां, हां, कहानियां छापी थीं आपकी...। 1932 में आये थे आप ओह 1932 में आये थे आप। कितने बरस बीत गये...

सच ! कितने वर्ष बीत गये पर उनका वह मकान अब भी मेरी यादों में वैसे का वैसा खड़ा है। दो तीन पौड़ियां चढ़ कर, फिर एक गैलरी में से होकर चौक में पहुंचा। एक महिला बरतन मांज रही थी या दाल बीन रही थी। वह उनकी दूसरी पत्नी थी, महाराष्ट्रीय महिला। कुछ बातें हुईं उनसे। फिर हम ऊपर जा बैठे थे। कमरा बहुत सादा, बहुत थोड़ा सामान, याद नहीं दूध या लस्सी पी पर यह याद है कि काफी देर तक फाइलों में वधू की तलाश करते-करते हमने बहुत बातें की थीं विशेष कर उनमें और आर्य समाज के बीच पैदा हुए मत-भेदों को लेकर। सन्तराम बी० ए० आर्य समाज की वर्ण व्यवस्था की धारणा को भी नहीं मानते थे। वे कहते थे कि स्वामी दयानन्द ने स्वयं वर्ण व्यवस्था को मरण व्यवस्था कह दिया था। हम क्यों चिपके रहें उससे...

मैं फिर वर्तमान में लौटा। वृद्ध सन्तराम बी० ए० अब भी चाय के घूंट भर रहे हैं। गार्गी बहन उनकी सहायता करती हैं। सहसा बातें करते करते जैसे उनका उत्स खुल जाता है। सन्तराम बी० ए० यादों के धुंधलके से बाहर सब कुछ स्पष्ट देखने लगते हैं। बंटवारे की याद उन्हें तड़पा जाती है। कांपती आवाज में वह बोल उठते हैं...

"सोचा भी न था कि लाहौर चला जाएगा। अब भी याद आता है (कृष्ण नगर) मकान के बाहर बैठना। सोचा था पाकिस्तान बना तो बना हम यहीं रहेंगे। मुसलमान बादशाहों के जमाने में भी तो रहते थे पर बेईमानों ने मारना शुरू कर दिया। लाहौर से अमृतसर के लिए चला। रास्ते में मारकाट मची थी। लौटा, फिरोजपुर गया। फिर होशियारपुर आया।"...

मैं शब्दों के पीछे की पीड़ा को अनुभव करता हूं। साधारण इन्सान के नहीं इन्सानी रिश्ते को समझने वाले व्यक्ति के शब्द हैं ये। लाहौर से आकर वे होशियारपुर में अपने जन्म स्थान पुरानी बस्सी ही रहते थे। कई बार उसी पते पर पत्र व्यवहार हुआ उनसे। भेंट उनसे इससे पहले बस भोपाल में हुई थी। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा का वार्षिक उत्सव था। समिति हर वर्ष एक हिन्दीतरभाषी लेखक को उसके, हिन्दी साहित्य और भाषा को, विशेष योगदान के लिए पुरस्कार देती है। उस वर्ष (1959) उन्हें दिया था। इससे पूर्व संयुक्त पजाब की सरकार भी उन्हें दो बार पुरस्कृत कर चुकी थी पर इस पुरस्कार का विशेष महत्व था।

मैं साक्षी हूं। वही वेषभूषा, कोट पाजामा और साफा। व्यक्तित्व में वही दृढ़ता। पास आने पर उन्होंने मेरी ओर देखा। मैंने नाम बताया तो लपक कर छाती से लगा लिया। लगाये रहे, बोले, "अब तो बड़ा नाम है तुम्हारा।"

शुरू तो युगान्तर से ही किया था।

हंस पड़े। पीठ थपथपाई।...

(शेष पृष्ठ ११ पर)

'ईसाइयत और इस्लाम की आंधी को आर्य समाज ही रोक सकता है'

—मनुदेव अभय विद्यावाचस्पति—

जिन चालीस हजार हिन्दुओं को उन्होंने ईसाई बनाया था उनमें से ६० प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र तथा १० प्रतिशत नगरीय क्षेत्र के निवासी थे। इस विशाल धर्म-परिवर्तन का एक-मात्र कारण धार्मिक, सामाजिक तथा आर्थिक था। इसमे भी आर्थिक कारण अपना विशिष्ट महत्व रखता है। विश्व के समस्त ईसाई सगठन "पिता ईश्वर तथा पुत्र ईसा' के नाम पर सम्पूर्ण ससार को ईसाई बनाने के लक्ष्य को लेकर चल रहे हैं। भारत स्थित विभिन्न ईसाई सगठन विश्व के अनेक ईसाई देशो से प्रतिवर्ष करोड़ों रुपये धर्म-परिवर्तन के लिए नियमित रूप से मगाते रहते हैं। यह अपार धनराशि भारत में वे समाज कल्याण के नाम पर व्यय करते हैं। प्रोटेस्टेन्ट सम्प्रदाय के समान रोमन कैथोलिक ईसाई सगठन भी आर्थिक रूप से सम्पन्न है। पश्चिमी जगत के समस्त सेमैटिक सम्प्रदाय भारत से हिन्दू धर्म को समाप्त कर देना चाहते हैं।

किन्तु ईसाइयत में इस शक्ति को घुटन अनुभव हुई तो वे शान्ति की खोज में इस्लाम स्वीकार कर बैठे। इस प्रसग में उनका कहना है—

"मैं सत्य के अन्वेषण के लिए निकला हू। यद्यपि मेरे एव मेरे परिवार का परिवेश ईसाइयत से ढका हुआ था, फिर भी मेरा मन एकाएक इस्लाम की ओर झुका। मैंने इस्लाम का साहित्य पढ़ा और मेरा मन मुसलमान बन जाने को बेचैन हो उठा। इस्लाम का अर्थ शाति होता है। शाति की तह मे सत्य का होना अनिवार्य है। शायद सत्य यहा मिल जाय और मेरी आत्मा को शाति मिल जाय, इसी भावावेश में मैंने धर्म परिवर्तन कर 'इस्लामी' अर्थात् मुसलमान बनने की घोषणा बम्बई में करदी। मैंने सन् १९७३ के मई माह में बम्बई की जामा मस्जिद में बाब्ल असम (बार-दरवाजा), (अल उसम-ज्ञान) के रेक्टर मौलाना मोहम्मद तारीक तैयब साहब से इस्लाम की दीक्षा ली। मुझे केवल कलमा पढ़ाया गया।

"मेरे इस धर्म-परिवर्तन समारोह के अवसर पर न केवल भारत अपितु विश्व के २० मुस्लिम राष्ट्रों के धार्मिक प्रतिनिधि उपस्थित थे। एक बड़ा भव्य आयोजन (रिसेप्शन) ताज महल होटल में किया गया था। कहना चाहूंगा कि इस समारोह की तैयारी दो माह पूर्व कर दी गई थी। एक प्रसिद्ध ईसाई पादरी, जिसे भारत में हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन करवाने की कला का ज्ञान हो, को मुसलमान बना लेने को संभवत: भारत के कुछ मुस्लिम संगठन अपनी महान सफलता समझते रहे थे। उन्होंने देश के अनेक मुस्लिम बहुल प्रदेशों में मेरा अनेक बार स्वागत अभिनंदन कराया।"

इस्लाम में दीक्षित करने के पश्चात् उन्हें बड़ा महत्वपूर्ण कार्य सौंपा गया। उनसे स्पष्ट रूप से कहा गया कि गुजरात एव महाराष्ट्र के निचले वर्गों को मुसलमान बनाना है। सन् १९७३ से १९८२ तक उन्होंने जी-तोड़ परिश्रम किया और गुजरात राज्य मे सूखे से पीड़ित प्राय. २५ हजार व्यक्तियों को मुसलमान बना लिया। इस्लामी जगत मे यह सफलता बहुत महत्वपूर्ण आंकी गई। इस के पश्चात् उन्हें दक्षिण भारत के दक्षिण-पूर्व के क्षेत्र सौंपे गये। जिस मीनाक्षीपुरम् की धर्म-परिवर्तन की घटना ने सम्पूर्ण हिन्दू समाज और विशेषकर आर्य समाज को हिला दिया था, उस रोमाचकारी घटना की पृष्ठभूमि में उनकी ही योजना कार्य कर रही थी।

के सभी मुस्लिम राष्ट्र अपने उपरावत विश्वास के कारण सम्पूर्ण भारत को इस्लाम के झण्डे के नीचे लाना अपना पैदाइशी अधिकार तथा कुरान पाक के प्रति वफादारी मानते हैं।

पैलेस्टाइन के समस्त मजहब सेमेटिक परिवार के मजहब हैं। ये सभी इस्लाम के दर्शन से प्रभावित हैं। कहना न होगा कि जूडाइज्म का परिष्कृत रूप इस्लाम' है। सारे ससार को इस्लाम के छाते के अन्दर लाना इसका मुख्य नारा है। यदि भारत की गरीबी, अशिक्षा तथा छुआछूत की समस्याएं ऐसी ही रहीं, तो यह कहने में कोई सकोच नहीं है कि पूरा भारत एक बार पुन: इस्लाम की गोद मे बैठ जायगा।

> 'ईसाइयत और इस्लाम की आंधी को आर्यसमाज ही रोक सकता है'—यह उद्‌गार उस व्यक्ति का है जिसमे स्वय ४० हजार हिन्दुओ को ईसाई बनाया और २५ हजार हिन्दुओ को मुसलमान बनाया था। वह व्यक्ति हैं—डा० मित्र जीवन जो पहले जब रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय के अनुयायी थे तो रेवरंड फादर पाल (द एपोसल आफ इंडिया) कहलाते थे, फिर जब मुसलमान बने तो मौलाना डा० नासिरूद्दीन कमाल कहलाये। इस समय वे सत्य की खोज करते-करते ईसाइयत और इस्लाम दोनों को छोड़कर आर्यसमाज और हिन्दूजाति के गौरव हैं।

भारत पर ही कृपा क्यों ?

आचार्य मित्र जीवन की मान्यता है कि भारत को मुस्लिम राष्ट्र बनाने का राजनीतिक कारण की अपेक्षा धार्मिक महत्व अधिक है। स्वतन्त्र हो जाने के पश्चात पश्चिम ईसाई राष्ट्रों को भारत से कोई लगाव नहीं रहा। फिर भी वे 'क्रिश्चियन इण्डियाना' स्वप्न का देखते रहते हैं। परन्तु इस्लाम ने भारत को अनिवार्य रूप से जोड़ लिया है। इस्लाम और भारत के इस जोड़ का यह रहस्य है कि मुस्लिम जगत् में सर्वत्र यह माना जाता है कि 'आदम' भारत में अवतरित हुआ था। चूंकि इस्लाम 'आदम' को पहला महान् व्यक्ति मानता है, इसलिए भारत मुसलमान राष्ट्र होना चाहिए। आदम के इस देश में काफिर और कुफ्र कैसा? विश्व के इस्लामी देश भारत को गैर मुसलमान मुल्क देखना सहन नहीं कर सकते। इस [illegible]

आंधी का मुकाबला

इस देश को इस्लाम से सर्वाधिक खतरा है। विश्व के सभी मुस्लिम राष्ट्रों ने अब भारत को अपना लक्ष्यबिन्दु बना कर 'दारे इस्लाम' तथा तबलीग (धर्म परिवर्तन) का आन्दोलन छेड़ दिया है। आर्य समाज को इस दिशा मे ठोस कदम उठाना होगा। आश्चर्य की बात है कि यहां की औसत चर्चा केवल राजनीति बन गई है। यह बड़ा खतरनाक सकेत है। हां, राजनीति एक विद्या हो सकती है, परन्तु समग्र विद्या नहीं हो सकती। समग्र विद्या तो धर्म है। विश्व मे इस समय इस्लाम सैन्योन्मुख आक्रामक (मिलिटेंट) बन कर छा गया है। वह आंधी बनकर भारत पर छा जाना चाहता है। सन् 2000 तक इस्लाम का सैनिक रूप विश्व को श्मशान बनाकर रख देगा। शायद वह भारत को कुफ्र के रूप में

भयावह रूप है। इस आंधी का सामना केवल आर्य समाज और स्वामी दयानन्द का मिशन कर सकता है। आर्य समाज के सर्वाधिकारियों को तन-मन धन से इस नाशवान आंधी के विरोध मे ऐसी ही आंधी उठाने की महान् आवश्यकता है। हम आर्यों को यह कार्य युद्ध स्तर पर करना होगा'। केवल सत्संग व्याख्यान अथवा सम्मेलन कर अपने कर्तव्यों की इतिश्री नही समझना चाहिये। ध्यान रखिये, आर्य समाज एक आदोलन है, एक सस्था मात्र नही।

पता—13 अ, सुदामा नगर, इन्दौर म.प्र.

बम्बई में महात्मा हंसराज जन्म दिवस

आर्य समाज, सान्ताक्रुज, बम्बई में २१ अप्रैल को महात्मा हंसराज जन्म दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया जिसकी अध्यक्षता प्रो० बलराज मधोक ने की और सभा का संयोजन कैप्टिन देवरत्न आर्य ने किया। प्रात यज्ञ प्रार्थना के पश्चात् आचार्य सोमदेव, श्री कृष्णदत्त शर्मा समाज के प्रधान श्री देवेन्द्र कपूर आदि ने अपने विचार रखे। अध्यक्षीय भाषण मे प्रो० मधोक ने महात्मा हंसराज को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि लार्ड मैकाले की जिस शिक्षा-पद्धति के विरोध मे महात्मा जी ने अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया आज वह शिक्षा-पद्धति पहले से भी अधिक अपनायी जा रही है। इसमे आमूल चूल परिवर्तन की आवश्यकता है।

श्री चतुर्वेदी को श्रद्धांजलि

विश्व भारती अनुसन्धान परिषद, ज्ञानपुर (वाराणसी) मे एक शोक सभा का० आयोजन करके व्योवृद्ध पत्रकार श्री बनारसी दास चतुर्वेदी के निधन पर डा० कपिलदेव द्विवेदी, डा० विभु मिश्र, डा० भारतेन्दु आदि उन्हें अपनी श्रद्धाञ्जलि। अर्पित की। दिवगत आत्मा की सद्‌गति और शांति के लिए प्रार्थना की गयी

अब्दुल्ला की शुद्धि

आर्य समाज मोच्छा (उ० प्र०) में जिला सभा के तत्वावधान में एक मुस्लिम परिवार की शुद्धि की गयी। अब्दुल्ला का नाम ससार मणि, पत्नी फातिमा बेगम का नाम कमला और पुत्र सलीम का सुनील कुमार नाम रखा गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व विधायक श्री ईश्वर शरण ने की।

—सार्वदेशिक आर्य वीर दल बिहार की ओर से आर्य समाज हजारी बाग, बिहार में १५ से ३० मई तक आर्य वीर दल शिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

आर्य समाज सम्बन्धी मिथ्या प्रचार

पंजाब में अलगाववाद का जहर कैसे फैला

—ब्रह्मदत्त स्नातक—

'पंजाब में अलगाववाद का जहर कैसे फैला' शीर्षक से श्री राजीव सक्सेना का साप्ताहिक हिन्दुस्तान में एक लेख २० अप्रैल ८१ के अंक में प्रकाशित हुआ है। इस सम्बन्ध में लेखक ने, सिक्ख सम्प्रदायवादियों ने जो कुछ लिखा है उसको ही प्रमाण मानकर हिन्दू-सिख समस्या के लिए आर्य समाज को उत्तरदायी ठहराया है। यह वास्तविकता और इतिहास दोनों दृष्टियों से तथ्यों के विरुद्ध है।

महाराजा रणजीत सिंह के काल में ही अंग्रेजों ने अपने समर्थक और लाहौर दरबार तथा भारतीय एकता के शत्रु सिखों के एक प्रभावशाली वर्ग को अपनी ओर कर लिया था। यह वही वर्ग है जिसके वंशजों का आज शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी और अकाली दल पर वर्चस्व है। इसी वर्ग ने जलियांवाला बाग में गोली चलवाने वाले जनरल डायर को स्वर्ण मन्दिर में सरोपा भेंट किया था। सिखों के अंग्रेज समर्थक वर्ग ने यह काम करके अपने धर्म और देश का खुला अपमान किया था। इससे पहले मैकालिफ नामक एक अंग्रेज ने सिविल सर्विस (इम्पीरियल सर्विस) के अधिकारी पद से इस्तीफा देकर सिख मान्यताओं को हिन्दू विरोधी रूप में चित्रित करना शुरू कर दिया था। बाद में कनिंघम ने भी सिख युद्धों के इतिहास का विवरण देते हुए यही दृष्टिकोण रखा।

हम हिन्दू नहीं कब छपी ?

सरदार काहन सिंह की जिस पुस्तक—'हम हिन्दू नही हैं' को आर्य समाज अथवा स्वामी दयानन्द सरस्वती की प्रतिक्रिया स्वरूप लिखित बताया जाता है, वह काहनसिंह मैकालिफ का क्रीतदास था। अंग्रेज भक्त सिक्खों के षड्यन्त्र का पर्दाफाश इसी तथ्य से हो जाता है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना १८७५ में की थी। काहनसिंह ने 'हम हिन्दू नहीं' पुस्तक सन् १८७३ में लिखी थी-- अर्थात् आर्य समाज के जन्म से भी दो वर्ष पूर्व। फिर उसे आर्यसमाज की प्रतिक्रिया कैसे बताया जा सकता है ? सम्प्रदायवादी सिख इतिहासकार इसी असत्य का प्रचार करते आ रहे हैं। पंजाब में तो ऋषि और भी बाद में वहां के लोगों के आग्रह पर [illegible]

सिखों को हिन्दुओं से विलग करने का अभियान पूरी तरह चला चुके थे।

सिखों का सहयोग

जात-पात और अस्पृश्यता के निवारण के अलावा एक ईश्वर की उपासना आर्य समाज और सिख पंथ दोनों को जोड़ती थी। इसीलिए पंजाब में आर्य समाज की स्थापना के आरम्भ के दिनों में सिक्खों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया था। बाबा छज्जूसिंह सिक्ख होते हुए भी एक आर्य समाजी पत्रकार थे। उन्होंने स्वयं सत्यार्थ प्रकाश का अनुवाद किया था। शहीद भगतसिंह के बाबा अर्जुनसिंह सिक्ख होते हुए भी नित्य हवन करते थे। भगतसिंह के पिता

कि पंजाब में आर्य समाज का प्रवेश और स्वामी दयानन्द का आगमन उसके बाद की घटनाएं हैं।

यह बिल्कुल स्पष्ट है कि सिंह सभाएं अंग्रेजों के इशारे पर चलती थीं तथा उनका सदस्य अंग्रेज तो हो सकता था; परन्तु सहजधारी अर्थात् हिन्दू नहीं। यह वही काल है जब राष्ट्रीय-धारा से सिखों और मुसलमानों को अलग करने के लिए अलीगढ़ और अमृतसर में दो अंग्रेजों को प्रिंसिपल बनाकर इस्लामियां और खालसा कालेजों की स्थापना की गई। नामधारी या कूका सिखों और राष्ट्रीय विचार धारा वाले सिखों को सिंह सभा वाले पथभ्रष्ट बताया करते थे। १९२० में इन सिंह

> अनेक सिख इतिहासकार तथा उनकी देखा-देखी अनेक गैर सिख इतिहासकार भी, निरन्तर यह लिखते चले आ रहे हैं कि पंजाब में अलगाववाद का जहर आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द के कारण फैला है। परन्तु यह तथ्यों के सर्वथा विपरीत और जानबूझकर आर्य समाज को बदनाम करने की चाल है। लेखक ने कुछ सही तथ्यों का उल्लेख यहां किया है जिन पर इतिहासकारों को ध्यान देना चाहिए।

सरदार किशनसिंह बाकायदा आर्यसमाज के प्रचारक थे, जिन्होंने अपनी पत्नी (विद्यावती जी) को भी आर्यसमाज की शिक्षा में दीक्षित किया था। अपनी माता से ही भगत सिंह को आर्य समाजी संस्कार मिले थे। इसी प्रकार अमृतसर में प्रसिद्ध वस्त्र-व्यवसायी बाबा प्रद्युम्नसिंह आर्य समाज के सक्रिय सदस्य रहे। यह कहना कि 'सिक्खों को आर्य समाज में प्रवेश के समय शुद्ध किया जाता है' सरासर गलती है। ऐसा कोई उदाहरण आज तक देखने को नहीं मिला।

श्री खुशवन्तसिंह तथा अन्य सिक्ख लेखकों का कहना है कि आर्य समाज के कारण काहनसिंह की पुस्तिका—'हम हिन्दू नहीं' प्रकाशित हुई और हिन्दू-सिक्ख विद्वेष फैला। इन बेचारों को यह पता नहीं कि आर्य समाज की बम्बई में स्थापना से पहले १८७३ में काहनसिंह की पुस्तक प्रकाशित हो चुकी थी, जब [illegible]

सभाओं के मुकाबले में ही अकाली दल की स्थापना हुई थी। परन्तु शनैः शनैः बड़े-बड़े जमींदार राजा महाराजा अकाली दल पर छा गए। आज शिरोमणि कमेटी और अकाली दल इन्हीं निहित स्वार्थों के अड्डे बने हुए हैं। दूसरों की रक्षा में शहीद हो जाने वाले लोगों के बजाय अब निरीह और बेबस लोगों की हत्या करने वालों को शहीद और सन्त की उपाधियां दी जा रही हैं। यह पतन की पराकाष्ठा नहीं तो क्या है ?

आर्य समाज और सिखों के आपसी सहयोग का इससे बड़ा उदाहरण क्या होगा कि आर्य समाज के मूर्धन्य नेता स्वामी श्रद्धानन्द गुरु का बाग सत्याग्रह में सिक्खों के धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिए जेल गये थे। १९३८ में लाहौर की शहीदगंज मस्जिद का मुकद्दमा पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान दीवान बहादुर बद्रीदास ने सफलतापूर्वक लड़ा और विजय प्राप्त की। इस सेवा के उपलक्ष्य में अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी और मास्टर तारासिंह ने दीवान बद्रीदास को सरोपा भेंट किया। साथ ही तीस हजार रुपया भेंट किया जिसे उन्होंने यह कह कर लौटा दिया कि मैंने अपने ही शहीद पूर्वजों के सम्मान की रक्षा के लिए यह निष्काम सेवा की है।

आर्य समाज के वार्षिक उत्सवों और सत्संगों में देश और धर्म पर मर मिटने वाले महाराणा प्रताप और छत्रपति शिवाजी महाराज के साथ गुरु गोविन्दसिंह का नाम भी सदा सम्मान पूर्वक लिया जाता रहा है। स्वामी दयानन्द की भांति गुरु नानक ने भी अपने समय की धार्मिक कुरीतियों का बलपूर्वक खंडन किया था। जब स्वामी दयानन्द ने स्वयं हिन्दुओं की कुरीतियों का खण्डन किया तब उन्हें तथा आर्य समाज को सिखद्वेषी बताना सरासर गलत बयानी है।

वेदभाष्य की पृष्ठभूमि और ऋषि दयानन्द की विशेषता

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

—श्री धर्मेन्द्र पाल शास्त्री—

आर्यों के जीवन में वेदों का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है, प्राचीनकाल से ही वेद ईश्वरीय ज्ञान के रूप में श्रद्धा व आदर की भावना से स्वीकार किये जाते रहे हैं। परन्तु वेद मन्त्र अत्यन्त गूढ़ एवं रहस्यमय हैं। इनकी एक विशिष्ट छन्द रचना है, जो सनातन ज्ञान को अपने में संजोये रहती है। वेद मन्त्रों की इसी गम्भीरता तथा विशिष्ट छन्द रचना के कारण साधारण तो क्या संस्कृत भाषा में पारंगत विद्वानों के मस्तिष्क भी इनके रहस्यों को नहीं समझ पाते। इसी कारण प्राचीनकाल से ही वेदों के भाष्य करने की पद्धति पायी जाती है। परम्परा के अनुसार रावण वेदों का सर्व प्रथम भाष्यकार माना जाता है, परन्तु उसका वेदभाष्यपूर्ण रूप से प्राप्त नहीं है।

पश्चात् वर्ती भाष्यकारों में स्कन्द स्वामी, उद्‌गीथ, वररुचि, भट्टभास्कर, महीधर, उव्वट व सायण प्रसिद्ध भाष्यकार हैं। इन भाष्यकारों में सायण का भाष्य सर्वाधिक प्रसिद्ध है। इन्होंने चारों वेदों का भाष्य किया है। सायण के भाष्य का प्रभाव उनके पश्चात् होने वाले भाष्यकारों पर स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। परन्तु सायण के वेद भाष्य में वेद की आत्मा व विचारधारा का सही विकास नहीं हुआ। इनका भाष्य कर्मकाण्ड परक है। वे वेद मन्त्रों के कर्मकाण्डात्मक भाष्य की धुन में मन्त्रों के यथार्थ अभिप्राय—"जो मूलरूप में सनातन ज्ञान विज्ञान का परिचायक है" को भूल जाते हैं। फलस्वरूप सायण का भाष्य ऐसा है, जिसमे मन्त्रों के अभिप्राय को इतना संकुचित कर दिया गया है कि वह वेद की महान् प्रतिष्ठा के अनुरूप सिद्ध नहीं होता।

सायण के वेद भाष्य के आधार पर ही योरोपीय विद्वानों ने 19वीं शताब्दी में वेद के विषय में एक नवीन विकासवादी मत का प्रतिपादन किया। उनके अनुसार वेद आर्य जाति की प्रारम्भिक अवस्था से विकास की घटना है। उन्होंने प्रकृति परक व्याख्या की जो सायण भाष्य में प्राप्त होने वाले प्रकृतिवादी विचारों से ली गई। यद्यपि वे प्रतिभाशाली, साहसी और कल्पना की उड़ान में स्वछन्द थे, फिर भी वेद की गम्भीर पहेलियों को सुलझाने में वे असमर्थ रहे। वे वेद की भाषा, छन्द रचना व काव्य रूप को नहीं समझ पाये। उन्होंने अपने भाष्यों में वेदों के वर्णन को ब्राह्मणों, उपनिषदों, पुराणों में प्राप्त गाथाओं व ऐतिहासिक तथ्यों से सम्बद्ध बताकर वैदिक गाथाशास्त्र के रूप में नवीन मत खड़ा कर दिया। इस निष्कर्ष पर पहुंचने के तीन कारण थे (1) उन्हें वैदिक परम्परा व साहित्य का ठीक-ठीक ज्ञान नहीं था तथा उन्होंने प्राचीन ऋषियों की नैरुक्तिक प्रणाली को छोड़ दिया था। (2) सायण का भाष्य इनका मार्ग दर्शक था। (3) पश्चिमी विद्वानों की वेद के प्रति कोई आन्तरिक निष्ठा नहीं थी।

पाश्चात्यों की राय

पाश्चात्य विद्वानों के मतानुसार वेद आर्य जाति के आदिमकाल से उपनिषद् काल तक की मानसिक स्थिति या अवस्था का लेखा जोखा है, जिसे वैदिक कवियों ने छन्द बद्ध कर दिया। उसमें कहीं उच्च दार्शनिक विचार नहीं हैं। वे असभ्य गडरियों के गीत मात्र हैं। वेद रचने वाले प्रकृति की शक्तियों की पूजा करते थे और उनके प्रकोप से बचने के लिए यज्ञ किया करते थे। वैदिक ऋषि मूर्ख परन्तु श्रद्धालु उपासक थे। वेद केवल गाथा शास्त्र है जिनमें मांस भक्षण है, यज्ञ में पशुबलि का विधान है, जुआ है, और सोम के रूप में सुरा है।

महर्षि दयानन्द के आविर्भाव तक वेद के सम्बन्ध में ये सभी विचार सामने आ चुके थे। स्वामी दयानन्द ने देखा कि वेद के सम्बन्ध में अनेक भ्रान्तियां हैं और भ्रांत अर्थों का प्रचार किया जा रहा है।

ऋषि दयानन्द की राय

प्रतिक्रिया के फलस्वरूप, उन्नीसवीं शताब्दी के महान् सुधारक, सामाजिक क्रांति के अग्रदूत एवं वैदिक वाङ्मय के मन्थन एवं योग साधना की भट्टी में तपे कुन्दन सदृश महर्षि दयानन्द ने सत्य, निर्भ्रान्त, सार्वभौम एवं प्राणिमात्र के उपकार की भावना से वेद के विषय में एक तीसरी विचार धारा का सृजन किया। वे वेद को न तो केवल कर्मकाण्ड की पुस्तक मानते थे, न आदिम जाति के गीत। वेद के विषय में प्रमुख रूप से उनकी दो मान्यतायें थीं—(1) वेदों के ज्ञान का प्रकाश ईश्वर ने सृष्टि के आरंभ में अग्नि, वायु, आदित्य, अङ्गिरा नामक चार ऋषियों के अंतःकरणों में मानव जाति के कल्याण के लिए किया। (2) सनातन सर्वज्ञ परमात्मा का ज्ञान होने से वेद में सारा ज्ञान विज्ञान बीज रूप में वर्तमान है, इसी से वेद स्वतः प्रमाण है। उनकी ये मान्यतायें वैदिक साहित्य के गम्भीर अध्ययन पर आधारित थीं।

वेद ईश्वरीय ज्ञान है, दयानन्द की इस मान्यता का विवेचन हम दो प्रकार से करते हैं —(1) वैदिक साहित्य, ब्राह्मण, उपनिषद, दर्शनों (दर्शन ग्रन्थ) में प्राप्त प्रमाणों के आधार पर, (2) तर्क की कसौटी पर। वैदिक साहित्य का जहां तक प्रश्न है, सारा वैदिक साहित्य दयानन्द के मंतव्य की पुष्टि करता है। वेद का प्रकाश ईश्वर ने सृष्टि के आदि में ऋषियों के शुद्ध अंतःकरणों में किया। शतपथ ब्राह्मण कहता है—'तेभ्यस्तप्तेभ्यस्त्रयो वेदा अजायन्ताग्नेः ऋग्वेदो वायोर्यजुर्वेदः सूर्यात्सामवेदः' (11-4-2-3) अर्थात् ऋग्वेद का प्रकाश अग्नि पर, यजुर्वेद का वायु पर, सामवेद का सूर्य नामक ऋषि पर हुआ। इसी प्रकार अन्य उपनिषद् दर्शन, मनुस्मृति आदि सभी एक स्वर में वेदों को ईश्वर से उत्पन्न हुआ मानते हैं। इसी से वेद को स्वतः प्रमाण कहते हैं।

महर्षि दयानन्द का वेद के सम्बन्ध में दूसरा दावा है कि वेदों मे समस्त ज्ञान विज्ञान है। इसी संदर्भ मे स्वामी जी का कथन है कि सर्व प्रथम वेद ईश्वर का ज्ञान होने से अपने आप में पूर्ण हैं। और ईश्वर ने यह ज्ञान मनुष्यों के ज्ञान व कल्याण के लिए दिया। अतः उसमें मनुष्योपयोगी समस्त ज्ञान विज्ञान होना चाहिए। स्वामी जी ने वेद मे निहित ज्ञान राशि को प्रमुख रूप से चार विषयों में विभक्त किया है (1) विज्ञान अर्थात् सब पदार्थों को यथार्थ जानना। (2) उपासना (3) कर्म (4) ज्ञान।

महर्षि दयानन्द का विज्ञान से तात्पर्य ज्ञान की उस प्रणाली से है, जिसमें ज्ञान, कर्म, उपासना इन तीनो के समुचित उपयोग से लेकर तृण-पर्यंत समस्त पदार्थों का साक्षात् बोध होता है और मानव-जाति के अभ्युदय निःश्रेयस् की प्राप्ति में यथावत् उनका उपयोग होता है। स्वामी जी ने विज्ञान को भी दो रूपों मे मान्यता दी है—(1) ईश्वर का यथावत ज्ञान व उसकी आज्ञाओं का पालन, (2) पदार्थ विद्या का ज्ञान अर्थात पदार्थों के गुणों व उपयोग को जानना।

उपासना—अर्थात् परमेश्वर की प्राप्ति के उपाय करना।

कर्म— ऐसा कर्म काण्ड जिससे जीवन में परमार्थ व लोक व्यवहार की सिद्धि होती है। स्वामी जी का कर्म काण्ड से तात्पर्य केवल यज्ञयाग से नहीं हैं, वे उसमें जीवन की समस्त क्रियाओं को सम्मिलित कर लेते हैं।

ज्ञान—ज्ञान का अर्थ पृथ्वी पर तृण से लेकर समस्त प्रकृति पर्यंत पदार्थों के गुणों के ज्ञान से ठीक-ठीक कार्य सिद्ध करना। इसे हम आधुनिक विज्ञान के अर्थ में प्रयुक्त कर सकते हैं। वेद की भाषा में विज्ञान-विशेष ज्ञान ईश्वर आत्मा आदि के ज्ञान को कहते हैं, जबकि ज्ञान, प्राकृतिक विज्ञान के अर्थ में प्रयुक्त होता है। (ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका)

वेद में पदार्थ विद्यायें हैं या नहीं, यह गम्भीर और अनुसंधान का विषय है। अभी तक वेदों में से वैज्ञानिक सूत्रों की खोज का नियम पूर्वक गम्भीर प्रयास नहीं हुआ। अतः हमारे सामने कोई ठोस प्रमाण नहीं है। तथापि महर्षि दयानद सरस्वती ने अपनी ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे वैदिक मन्त्रों से विद्युत, तार विद्या, विमान, विद्या खगोल विद्या, भूगोल विद्या, आदि का प्रतिपादन किया है। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में यूरोप में भी इनमें से अनेक विद्याओं का विकास नहीं हुआ था। ऐसी अवस्था में स्वामी दयानंद सरस्वती का ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में विमान विद्या का प्रतिपादन करना इस बात का स्पष्ट संकेत करता है कि वेदों में पदार्थ विद्यायें बीज रूप में निहित हैं। परंतु भौतिक विज्ञान के प्रत्यक्ष रूप को विकसित करने के लिए गम्भीर अन्वेषण की आवश्यकता है। वर्तमान युग के महान् विद्वान महर्षि अरविन्द तो स्वामी जी के दावे से आगे बढ़कर कहते हैं—"मैं तो यहां तक कहूंगा कि वेदों में कुछ वैज्ञानिक सत्य ऐसे हैं जिन्हें आधुनिक विज्ञान जानता तक नहीं।" यहां अरविंद का संकेत मनोविज्ञान से है। वैदिक मनोविज्ञान वास्तव में अपने आप में अनुपम है तथा भविष्य में विकासमान योग विद्या का बीज है।

वेद वास्तव में अपने आप में पदार्थ विद्या ही नहीं, अपितु नीति, धर्म, राज धर्म, समाज धर्म, आदि अनेक विद्याओं का प्रतिपादन करता है। इन समस्त चर्चाओं के पश्चात हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि वेद मे समस्त ज्ञान विज्ञान बीज रूप में निहित है तथा बाद के वैदिक ग्रन्थों में ऋषि महर्षियों ने उसी का विकास किया है।

स्वामी दयानंद के इस महान प्रयास के फलस्वरूप जो वेद अब तक सायण के हाथ में केवल कर्म कांड की पुस्तकें थीं, तथा पाश्चात्य विद्वानों के मत से जिनमे प्रकृति की शक्तियों की पूजा और आर्य जाति के आदि विकास का वृतांत था, या जो गडरियों के गीत थे, अब एक आध्यात्मिक तथा ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तकें बन जाती हैं। वेदों मे ऐसे वैज्ञानिक धर्म का वर्णन है, जो मनुष्य मात्र के लिए है, जिसमें मनुष्यमात्र की आध्यात्मिक एवं सांसारिक उन्नति का सही मार्ग बतलाया गया है —जो अभ्युदय और निःश्रेयस दोनों का मार्ग प्रशस्त करता है।

पता—आर्य समाज आर्यपुरा, सब्जी मण्डी दिल्ली—7

पत्रों के झरोखे में

औरतें मर्दों की पोशाक और खेतियाँ

बहन जहाँ आरा बेगम का पत्र प्रधान मन्त्री राजीव गांधी के नाम पढ़ा। उनका यह कहना कि शरियत में औरतों को मर्दों की पोशाक और खेतियाँ बताया गया है, कहां तक ठीक है, यह प्रसंग सहित जानने के बाद ही फैसला करना चाहिए।

सर्व प्रथम तो मोहम्मद साहब जिस जमाने में और जिन लोगों के बीच में भेजे गये थे उनके विचार विवाह और स्त्रियों के विषय में क्या थे ? यह जानना बहुत जरूरी है। मोहमम्द-कालीन अरब में पत्नियों की संख्या पर कोई रोक नहीं थी तथा किसी वृद्ध व्यक्ति के मरणोपरान्त उसके उत्तराधिकारी जिनमे पुत्र गण भी शामिल होते थे अपने समान आयु की उसकी युवा पत्नियों को बांट लेते थे ओर बेखटके इस्तेमाल में लाते थे।

एक समय में चार से ज्यादह बीबिया नहीं होनी चाहिए का मतलब यह लगाया गया है कि तलाक देकर नई पत्निया चाहे कितनी ही बार बदल लो और साथ ही दासियो के रूप में कितनी भी औरतों को भोगा जा सकता है। इस प्रकार एक मुसलमान अपने जीवन काल मे कितनी औरतों से शारीरिक सम्बन्ध बना सकता है इसकी कोई सीमा ही नहीं है। यह बात उसकी शारीरिक एवं आर्थिक स्थिति पर निर्भर है।

एक दिन रसूलुल्लाह मोहम्मद साहब के ससुर हजरत उमर सुबह-सुबह आये तथा कहा "या रसूलुल्लाह मैं मारा गया।" इस पर मोहम्मद साहब ने पूछा "क्या हुआ ?" जवाब मिला" रात को मैंने अपनी पत्नी को औंधा कर कर लिया था।" इस पर नबी करीम ने इरशाद फर्माया था "औरतें तुम्हारी खेतियाँ हैं चाहे जिधर से आओ जाओ।" यह वाक्य कुरान शरीफ सूर-ऐ-बकर के २८ वें रूकु में संकलित है तथा ऊपर वर्णित कहानी तफसीर खाजन भाग १ (बुखारी) में लिखी पड़ी है।

इसी प्रकार के वर्णन तफसीर कबीर भाग २ हुज्जतु ल्लालिस पृष्ठ २३४ तथा फतहुल बयान भाग १ निसाउकुम हर्सु नलकुम की व्याख्या पृष्ठ २४८ में भी मिलते हैं। साथ ही फतहुल मबीनमय तन्बीहुल वहाबीन, दुर्रे-मन्सूर सैय्युतिकृत, उमतुलकारी शरह बुखारी किताबुल तफसीर तहजीब इब्ने हजर अस्कलानी तंबीहुल अन्वाब प्रभृति में भी ऐसे अनेक वर्णन आये हैं।

कुरान व सुन्नत को खंगाल ने से ऐसे बहुत से हुक्मों का पता चलता है जो केवल रसूल साहब के लिये विशेषतया कहेगये हैं। जैसे चार से ज्यादा बीवियां रखना तथा उनसे बराबरी का व्यवहार न भी करना, आत्म समर्पित किसी भी औरत से शारीरिक सम्पर्क कर सकना, आपकी (नबी की) पत्नियाँ बाकी लोगों के लिये निषिद्ध, चचेरी, तायरी, ममेरी, फुफेरी, मौसेरी, बहनों से विवाह कर लेना आदि (कुरान प्रबोध की व्याख्या 'कान्ति' साप्ताहिक का अक्तूबर १६७६ का अंक)

मोहम्मद साहब ने एक नेक बीवी के लिये यह भी कहा है कि जब कोई मर्द अपनी बीबी को बिस्तर पर अपनी जरूरत के लिये बुलाए तो उसे फौरन अपने पति के पास चला जाना चाहिये चाहे उस समय औरत चूल्हे पर खाना ही क्यों न पका रही हो। (कांति १६-१०-७७)

सम्भवतः संसार के वर्तमान धर्मों मे एकमात्र इस्लाम ही ऐसा धर्म है जो बहुपत्नीवाद को धार्मिक नियमों द्वारा पुष्ट करता है। पैतृक-सम्पत्ति मे मुस्लिम बेटियों का कोई अधिकार नही होता।

कुरान मे स्वर्ग का जो चित्रण मिलता है उसमें चिर यौवनाओं की कल्पना प्रमुख है। वहा प्रत्येक मुसलमानमर्द को ७०-७० कमसिन छोकरियां अता किये जाने की खुशखबरी है।

मुसलमान औरतों को क्या मिलेगा ? इसका कोई उल्लेख नहीं है। हाँ यह जरूर लिखा मिलता है कि नरक में सर्वाधिक संख्या औरतों की ही होगी। (हदीस संख्या २५.५१५, १२८५, १५२०)

मुस्लिम विद्वानों का मत है कि कुत्तों व गधों के अलावा यदि औरत भी सामने से गुजर जाए अथवा छू जाए तो नमाज टूट जाती है, वजू टूट जाती है (सीरत—ए—आयशा पृष्ठ २६८) [यद्यपि माता आयशा जी ने इस नियम का विरोध किया था।

हदीस १४६८ में रसूल का कथन है कि मर्दों को ज्यादा तकलीफ देने वाली चीज औरत के सिवा कुछ नहीं है।

सीरत-ए-आयशा में ही मशहूर मुहद्दिस [illegible] का कथन है कि मोहम्मद साहब के अनुसार तीन चीजें मनहूस हैं—घोड़ा, घर और स्त्री। (पृष्ठ २६८)

इन बातों से यह निष्कर्ष निकलता है कि औरतो के मुताल्लिक जो नियम पर्सनल ला में रखे गए हैं वे १४०० वर्ष पूर्व के अरबी समाज के लिये बताये गये थे। आज १४०० वर्षों के लम्बे अन्तराल में भारतीय समाज में उन पर पूर्ण रूप से अमल संभव नहीं है। मुसलमान मर्द विभिन्न राजनैतिक, सामाजिक व धार्मिक कारणों से अपने लिये कुछ विशेष सुविधाएं प्राप्त करके उन्हें बनाये रखने की कोशिशों में लगे हुए हैं। लेकिन बहन जहानआरा के शब्दों में हम भी यह पूछना चाहते हैं कि कितने मुसलमान अपराधी हैं जो शरियत के कानूनों के तहत हाथ कटवाने की या संगसार होने की सजा भुगतने को तैयार हैं ?

—भूपसिंह, राजपूत भवन, लाल सड़क. हांसी।

हिन्दू समाज और राष्ट्र प्रतिष्ठा का प्रश्न

१६ मई के 'आर्य जगत्' के सम्पादकीय 'निष्ठा एवं अहंवाद का देश-घातक द्वन्द्व' के लिए आप साधुवाद के पात्र हैं। स्थिति का विश्लेषण और राष्ट्रीय संगठन के निर्माण के सम्बन्ध में आपके विचार यथार्थ-परक और सामयिक हैं। सत्तारूढ़ दल की हिन्दू विरोधी मानसिकता और हिन्दुत्ववादी राष्ट्रीय प्रभावी दल का अभाव होने के कारण राष्ट्र विरोधी तत्त्वों और आतंकवादियों का रुख दिनानुदिन अधिकाधिक आक्रामक होता जा रहा है। इस प्रकार हिन्दुस्तान मे ही हिन्दू समाज के अस्तित्व के लिए निरन्तर खतरा बढ़ता जा रहा है। अतः जब तक इस देश में एक प्रबल हिन्दुत्ववादी राष्ट्रीय संगठन खड़ा नहीं होता तब तक हमारी आवाज 'नक्कार खाने में तूती की आवाज' की तरह प्रभावशून्य रहेगी। जैसा कि आपने लिखा है इस प्रकार के संगठन के उभरने के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा निष्ठा पर अहंवाद का भारी पड़ना है। मेरा मत है कि इस द्वन्द्व को दूर करके राष्ट्रहित के मार्ग की ओर हिन्दू समाज को ले जाने में आर्य-समाज और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रमुख भूमिका निभा सकते हैं। इस समय प्रश्न पद या व्यक्तिगत प्रतिष्ठा का नहीं, अपितु समस्त हिन्दू समाज का और हिन्दू राष्ट्र की प्रतिष्ठा का है। उसके लिए सभी राष्ट्रवादियों को छोटे-मोटे मन-मुटावों और पूर्वाग्रहों को छोड़कर एक सूत्र में बंधकर काम करना चाहिए। मैं स्वयं इस कार्य के लिए हर सम्भव प्रयत्न करने के लिये तत्पर हूं।

—बलराज मधोक, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-६०

बाल ठाकरे का खतरनाक खेल

शिव सेना के नेता बाल ठाकरे का गैर मराठों को बम्बई से खदेड़ने का दृष्टिकोण अलगाववादी नारे का परिचायक है। महान् हिन्दू संगठन-कर्ता स्वातन्त्र्य वीर सावरकर के चिन्तन से प्रभावित बाल ठाकरे यह क्यो नहीं समझते। उनका यह खतरनाक खेल हिन्दुत्व और राष्ट्र की भावात्मक एकता के प्रतिकूल है। कुछ समय पूर्व बाल ठाकरे ने कहा था—'पंजाब के हिन्दू अपने को अकेला न समझें, आतंकवादियों से निपटने व उनकी रक्षा के लिए शिव सेना तन-मन-धन से तैयार हैं। उनके इस वक्तव्य का सर्वत्र स्वागत हुआ था। लोगों ने उनकी वाणी मे महान हिन्दू हितैषी की भावना के दर्शन किये थे। उन्हें राष्ट्र को अखण्डता व एकता के लिए इस नाजुक दौर में आगे आना चाहिए। वे छत्रपति शिवाजी, वीर सावरकर के दृष्टिकोण को न भूलें।—नरेन्द्र अवस्थी आर्य समाज श्री निवास पुरी, नई दिल्ली-११००६५

गलत इतिहास न पढ़ाये

आजकल स्कूलों में जो गलत इतिहास पढ़ाया जा रहा है उसका बच्चों पर बहुत कुप्रभाव पड़ रहा है। जैसे आर्य बाहर से आए और यहां आकर बस गए। आर्य यहां के मूल निवासी नहीं हैं और वे प्राचीन-काल में मांस खाते थे। यह सब पाश्चात्य इतिहासलेखकों की अंधी नकल है और सरासर गलत है। आर्यसमाज को चाहिये कि स्कूलों के इस पाठ्यक्रम को अपने हाथ में ले और बच्चों को सही इतिहास पढ़ाये।

देश की आजादी में समाज का बड़ा योगदान है, स्वतंत्रता की बलिवेदी पर कितने आर्यसमाजी शहीद हो गए और आज भी यह राष्ट्र की विघटनकारी शक्तियों से किस प्रकार लोहा ले रहा है इसका उल्लेख भी इतिहास होना चाहिये—[illegible] सिंह आर्य, [illegible] [illegible], देहरादून।

28 मई जिनका जन्म दिवस था

अनुपम क्रान्तिकारी स्वातन्त्र्य वीर सावरकर

—नरेन्द्र अवस्थी—

क्रान्तिकारियों के मुकुट मणि, राष्ट्र-भक्ति के धधकते ज्वाला मुखी स्वातन्त्र्यवीर सावरकर का व्यक्तित्व असाधारण था जो अदम्य साहस, प्रखर राष्ट्रवादिता का पर्यायवाची बन गया था। उनके महान त्याग और तपस्या के समक्ष सभी नतमस्तक थे। विश्व के उस अद्वितीय क्रान्तिकारी, महान दिशानायक एवं राष्ट्रनिर्माता का बचपन से लेकर मृत्यु-पर्यन्त एक-एक क्षण राष्ट्र भक्ति, समाज सेवा, साहित्य साधना एवं हिन्दू राष्ट्र के पुनरुत्थान के लिए संघर्ष में ही व्यतीत हुआ।

भारत के ही नहीं, विश्व के इस अनूठे क्रान्तिकारी जिसने अपने महान त्याग से स्वराज्य एवं स्वधर्म को सजीवता प्रदान की, भारत पुनर्जागरण में ठोस चिन्तन प्रदान करने वाले ये युग पुरुष जीवन के हर क्षेत्र मे अग्रणी रहे हैं।

क्रान्ति के पथद्रष्टा श्री विनायक दामोदर सावरकर प्रभावशाली वक्ता, कवि, नाटककार, इतिहासकार आदि बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। देश के लिए उनको कुछ भी अगम नहीं था, स्वतन्त्रता के लिए बड़े से बड़ा कष्ट उन्होंने हंसते-हंसते झेला था।

अण्डमान में असहनीय अमानवीय यातनाओं ने उनके मन, वाणी तथा शरीर को वज्रपूत बना दिया और उसके बाद जीवन भर वह संस्कार न कभी टूट सका न झुक सका।

महान ध्येयवादी सावरकर जी उन दूरदर्शी राजनीतिज्ञों में थे जो पहले ही समय के प्रवाह को अच्छी तरह समझ जाते हैं। अपने देश में जब भारत विभाजन की चर्चा चल रही थी तो भारत विभाजन के बाद क्या-क्या परिस्थितियां इस देश को देखनी होंगी, उनको इसका अनुमान पहले से ही था और स्थान-स्थान पर जाकर उन्होंने अपने भाषणों में और अपनी पुस्तकों के माध्यम से इस का संकेत दिया और देश को सावधान किया कि भारत विभाजन का दुष्परिणाम किस रूप में देश को भुगतना पड़ेगा।

भारत को तीसरी क्रांति के रूप में उभर कर आने की कल्पना उनके जीवन की सबसे बड़ी साध थी। 28 मई 1958 को बम्बई के कमला नेहरू पार्क में अपने अमृत महोत्सव के अवसर पर आयोजित एक समारोह में स्वातन्त्र्य वीर सावरकर ने कहा था "मेरी अब एक ही ... शेष जी

अण्डमान जेल मे वीर सावरकर को कोल्हू चलाने की सजा दी गई थी। सिपाही सिर पर सवार रहता था कि कोल्हू जरा सा रुके तो वह हंटर बरसावे।

है और वह है भारत को रूस के सामान बलशाली राष्ट्र के रूप मे देखना। आज विश्व में अमरीका और रूस इन दो राष्ट्रों का ही बड़े राष्ट्रों के नाते उल्लेख किया जाता है। उनका यह बड़ापन उनके आकार अथवा क्षेत्रफल के कारण नही अपितु उनके पास के परमाणु एवं अणु-बमों के कारण है। किसी भी राष्ट्र की महानता उसकी सैनिक शक्ति पर निर्भर करती है। भारत को चाहिए कि वह शक्ति सम्पादन करे।"

अखण्ड भारत के स्वप्नद्रष्टा वीर सावरकर जी के बारे मे श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने उन्हें श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए एक रोचक व प्रेरक सस्मरण सुनाया —"उनके अंतिम दिनों में, जब वे बहुत बीमार थे मैं उनसे मिला था। यह कामना प्रकट करने पर भी कि आप अभी बहुत दिनों तक हमारे बीच रहेंगे और शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएगे, उन्होंने कहा था हां मैं जीवित तो रह सकता हूं— अगर कोई यह वादा करे कि मेरे जीवन काल में ही भारत अखण्ड बन जाएगा। सिन्ध, पश्चिम पजाब और पूर्वी बंगाल फिर से भारत में एक हो रहेगे।—कोई भी उनसे यह वायदा नही कर सका और वे चले गए सदा के लिए। सावरकर जी की इस अभिलाषा में और इस तरह देह-त्याग मे, उस महान क्रातिकारी की पूरी जिंदगी का मर्म मुखरित है।"

चौदह साल तक अण्डमान में नारकीय यातनाएं सहने के बाद जब लौटे तो अलीपुर जेल के पश्चात रत्नागिरि मे नजरबन्द रहे। 10 मई 1937 को छूटे तो देश की परिस्थिति बदल चुकी थी, अंग्रेजों से मिलकर मुस्लिम लीग देश विभाजन की साजिश मे लगी—इसलिए उन्होंने अपनी शक्ति हिन्दू संगठन को बलशाली करने में लगाई और हिन्दु राष्ट्र की स्थापना अपना लक्ष्य बनाया। रत्नागिरि के नजरबन्दी काल में हिन्दुत्व नामक ग्रन्थ लिखा। इसकी प्रशंसा में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने लिखा था—'वीर सावरकर मे वेदो की अभिव्यक्ति करने वालों की कोई आदि ऋषि की आत्मा अवतरित हुई है।' जब तक शरीर ने साथ दिया वे हिंदु राष्ट्र के लिए कर्मरत रहे, देश के तत्कालीन नेतृत्व ने चूंकि इस ध्येय के प्रति उपेक्षा और निन्दा का दृष्टिकोण रखा, इसलिए देश स्वतंत्र होते-होते भी खण्डित हो गया।

सावरकर किसी व्यक्ति विशेष का नाम न होकर त्याग, तपस्या, तत्वनिष्ठा, लोकोत्तर धैर्य, अदम्य विश्वास, अद्वितीय स्वातन्त्र्य प्रेम का पर्यायवाची है। सैनिकीकरण की रणभेरी बजाकर जिन्होंने सुसुप्त, मरणोन्मुख और अकर्मकता के प्रमाद में ग्रस्त तथा नपुंसकता की मूर्च्छना में पड़ी हिंदू जाति में प्राण प्रवाहित किए, जिन्होंने अहिंसा के अतिरेक से ग्रस्त हिंदू जाति को जीवन दिया उन्हें हिंदू जाति कैसे भुला सकेगी? भारत के आधुनिक इतिहास के एक अन्यतम श्रेष्ठ एवम् स्वाधीनता संग्राम के रूप मे वीर सावरकर चिरकाल तक ही श्रद्धा सहित स्मरण किए जाते रहेंगे।

—7/38, नेहरू नगर नई दिल्ली—110065

मालवीय नगर में शुद्धि

आर्य समाज, मालवीय नगर, नई दिल्ली में श्री हंसराज पोस्टमैन के प्रयत्न से एक परिवार की शुद्धि की गई जिनके नाम श्री रमेश चन्द्र, श्रीमती लज्जावन्ती और पुत्रियों के नाम कु० पूनम और सोनिया रखे गये। श्री रमेश ग्राम फतहपुर बेरी, महरौली नई दिल्ली में रहते हैं। —डी० आर० ग्रोवर

—आर्य समाज सिरखेत (रानीखेत) का वार्षिकोत्सव ३ से ५ मई तक पं० धर्मदत्त के संयोजकत्व में सोत्साह मनाया गया जिसमें स्वामी गुरुकुलानन्द, डा. राम सिंह, डा० जयदत्त उप्रेती, श्री मदन मोहन जोशी, डा० हरिशचन्द्र वर्मा ने अपने विचार व्यक्त किये।

ध्यान योग शिवर

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी योग-धाम ज्वालापुर में ध्यान योग शिविर ३ से ९ अप्रैल तक सम्पन्न हुआ। स्वामी नारायण मुनिश्चतुर्वेद: द्वारा यज्ञ, स्वामी दिव्यानन्द जी द्वारा प्रशिक्षण, और स्वामी आत्मानन्द योगतीर्थ व श्री राजपाल योगाचार्य के प्रवचन हुए।

—आर्य समाज, अल्मोड़ा के पुस्तकाध्यक्ष एवं सिद्धहस्त चित्रकार श्री रामगोपाल सिंह का विवाह कु० माधुरी से २३ अप्रैल को श्री उदयवीर आर्य, और श्री प्रज्ञादेव वानप्रस्थी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। —विशनसिंह

आर्य समाज समस्तीपुर

आर्य समाज रेलवे कालोनी, समस्तीपुर का प्रथम वार्षिकोत्सव २९ मई से २ जून तक सोत्साह मनाया गया। इससे पूर्व २७-२८ मई को योग शिविर का आयोजन किया गया।—पंचदेव पाण्डेय

श्री सहगल के अभिनन्दन पर प्रसन्नता

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री रामनाथ सहगल का २१ अप्रैल को महात्मा हंसराज दिवस पर उनकी आर्य समाज के प्रति की गई निष्काम सेवाओं के लिए अभिनन्दन किया गया जिसके लिए आर्य युवक परिषद पट्टी के समस्त अधिकारी व सदस्यों ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उनकी दीर्घायु और स्वास्थ्य की कामना की है।

लाला मुलखराज मेहता दिवंगत

हमें यह सूचित करते हुए महान् दुःख होता है कि आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता ला० मुलकराज जी मेहता—का ६-४-८५ को देहावसान हो गया है, मेहता जी किशोरावस्था से ही आर्य समाज की सेवा में संलग्न रहे। सरकारी सेवा मे रहते हुए भी उन्होंने समाज सेवा से कभी मुख नहीं मोड़ा। सरकारी सेवा से निवृत्त होने के उपरान्त लाला जी ने ठेकेदारी आरम्भ की और सफलता पूर्वक जीवन यापन करते हुए विधवाश्रमों, अन्ध विद्यालयों, कुष्ट आश्रमों, अनाथालयों आदि के संचालन में मुक्त हस्त से आर्थिक सहायता प्रदान की।

मेहता जी महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के जन्म स्थान टंकारा की प्रगति और आर्य समाज के प्रचार के लिए दिल खोलकर स्वयं दान करते थे तथा अपने सहयोगियों से भी दान दिलवाते थे।

अपने यौवन काल में मेहता जी देश की स्वतंत्रता के लिए जूझने वालों की प्राण पण से सहायता करते थे। वे स्वयं खादी पहनते थे और अपने साथियों तथा सहयोगियों को सदा इस के लिए प्रेरित करते थे। मेहता जी ने गौरक्षा आन्दोलन में भी बढ़-चढ़ कर भाग लिया था।

मेहता जी यथा समय वानप्रस्थ आश्रम मे प्रविष्ट हुए और ज्वालापुर के वानप्रस्थ आश्रम मे रहते हुए आर्य समाज

की सेवा में ही अपना जीवन व्यतीत करते रहे।

वे अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं। हम परम पिता परमात्मा से उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करते हैं।

—शोक संतप्त पत्नी, पुत्र, पुत्रियां, पौत्र, दामाद और पुत्रवधुएं—

यूरोप में तीस लाख

(पृष्ठ १ का शेष)

उन्होंने कहा "यह परिषद् पूर्व और पश्चिम के बीच एक आध्यात्मिक सेतु का निर्माण करेगी। भौतिकवाद की दलदल में फंसे लोगों को यह परिषद् आध्यात्मिकता की नई रोशनी देगी।" इस संस्था का एक उद्देश्य इस मिथ्या बात का भंडाफोड़ करना भी होगा कि हिन्दुत्व से चिपके रहने वाले किसी ऐसी चीज के उपासक हैं जिसका मूल सत्य नहीं है।

परिषद की प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया है। कि—१. यूरोप की सरकार यह स्वीकार करे कि यूरोप में ३० लाख लोग हिन्दू जीवन पद्धति का अनुसरण कर रहे हैं। इन हिन्दुओं में अधिकांश एशियाई मूल के हो सकते हैं, किन्तु अब जो दिन प्रतिदिन यूरोप में हिन्दुओं की संख्या बढ़ती जा रही है वे एशियाई और यूरोपीय दोनों माता-पिताओं की सन्तान हैं। २. यह स्वीकार किया जाए कि हिन्दू जीवन पद्धति कोई नवीन पद्धति नहीं है, बल्कि यह संसार की प्राचीनतम पद्धति है उन नई जीवन पद्धतियों से इसकी कोई तुलना नहीं की जा सकती जिनका मूल इतिहास में नहीं है। इसलिए यूरोप में इस जीवन पद्धति को भी जीने का उतना ही अधिकार है जितना ईसाइयत, यहूदियत या इस्लाम को है।

विज्ञप्ति में यह भी कहा गया है कि हिन्दुओं को यूरोप में अपनी शिक्षा संस्थाएं खोलने, यूरोपीय कलेंडर में हिन्दू त्योहारों की मान्यता दिलाने, अपने मंदिर बनाने और सामुदायिक केन्द्र स्थापित करने तथा दूर दर्शन और आकाशवाणी जैसे संचार,साधनों में समान समय और समान प्रतिनिधित्व पाने का अधिकार है।

इस परिषद् की स्थापना से यूरोप के हिन्दुओं में नया उत्साह पैदा हो गया है। इस सम्बन्ध में कोई पाठक विशेष जानकारी चाहें तो वे इस पते पर पत्र-व्यवहार कर सकते है। —श्री कृष्णानन्द, सेक्रेटरी E,CH,O,10,SOHO, LONDON, WIB, 5, DA., ENGLAND,

व्यक्ति और समष्टि......

(पृष्ठ २ का शेष)

है। यज्ञ का विज्ञान, यज्ञ पद्धति, इष्ट कार्यानुकूल कर्मकाण्ड तथा द्रव्य पदार्थों के ज्ञान पर आश्रित है। बिना इस ज्ञान के यज्ञ करने मात्र से इष्ट फल प्राप्ति संभव नहीं। प्राचीन ऋषि महर्षि वेदों से अनेक प्रकार के यज्ञ करते थे और उनसे फल प्राप्ति होती थी इसलिये उन्होंने कहा था--'सर्वेभ्यो हि कामेभ्यो यज्ञः प्रयुज्यते—अर्थात् यज्ञ की सब कामों के लिये उपयोगिता है।

यज्ञों का विभाजन—यज्ञों का विभाजन निम्न प्रकार है—

१. कालकृत विभाग से संबंधित, २. व्यक्ति संबंधित, ३. राष्ट्र-संबंधित ४. [illegible]यिक आवश्यकतानुसार।

किसी यज्ञ से किसी भी फल की प्राप्ति मान लेना यज्ञ विज्ञान का तिरस्कार करना है, विविध प्रकार के यज्ञों में सामान्य प्रणाली तो आधारभूत एक हो सकती है परन्तु प्रधान याग में तो मन्त्र-भेद, द्रव्य-भेद एवं क्रिया-भेद पृथक् होते हैं।

कालकृत विभाग से संबंधित यज्ञों में दैनिक अग्निहोत्र सायं, प्रातः की काल संधियों में पक्ष यज्ञ अमावस्या और पूर्णिमाओं में, चातुर्मास्य याग, अयनयाग, सांवत्सरिक याग, पर्वयाग, नवरात्रयाग ये सब कालकृत संधियों से संबंधित यज्ञ हैं। इनसे प्राकृतिक पदार्थों में भौतिक और आध्यात्मिक शक्तियों की वृद्धि होती है।

व्यक्ति या राष्ट्र सम्बन्धी यज्ञ—इन यज्ञों का आयोजन व्यक्ति विशेष की आयु से संबंधित होता है। जैसे विवाह संस्कार, यज्ञोपवीत, वेदारंभ, गर्भाधानादि षोडश संस्कारार्थ यज्ञ होते हैं। ये व्यक्तियों से संबंधित हैं। राष्ट्र से संबंधित यज्ञ राजसूत, अश्वमेधादि हैं। व्यक्तिगत कामना एवं सामूहिक कामनाओं की पूर्ति के लिये जाने वाले यज्ञ काम्य यज्ञ हैं। व्यक्ति कामना रोग,-कष्ट-निवारण, बल-ऐश्वर्य-प्राप्ति निमित्त काम्य यज्ञ होते हैं और सामूहिक कामना जैसे वृष्टि कराने, अतिवृष्टि निवारणार्थ आंधी, तूफान आदि की शान्त्यर्थ, सर्वसौख्यप्रद यज्ञ आवश्यकतानुसार भिन्न-भिन्न प्रकार के यज्ञ कल्प पद्धति से होते हैं। तभी उनका लाभ होता है। अर्थात् श्रौतयागों का फल अलग है—स्मार्तयागों का फल अलग है और काम्य यज्ञों का फल अलग है। यह स्पष्ट समझना चाहिये। प्राकृतिक प्रदूषण वैचारिक प्रदूषण तथा वैज्ञानिक औद्योगिक, रासायनिक प्रदूषण इन सभी की शान्ति यद्यपि यज्ञ से ही कल्पना पूर्वक होगा, तभी सफलता होगी।

प्रधान हव्य द्रव्य—घृत—यज्ञ के हवि द्रव्यों में घृत प्रधान है। यदि घृत गौ का हो तो सर्वाधिक श्रेष्ठ और प्रभावकारी है। घृत का नाम आज्य है। आज्य का अर्थ है—आ समन्तात् लोकान् जयति अनेन—अर्थात इसके द्वारा लोक-लोकान्तरों के प्रदूषण रूपी असर तत्वों पर, आंधी, तूफानों पर विजय प्राप्त होती है। घृत की आहुतियों से समस्त पर्यावरण का शोधन होता है। घृत नाम इसका इसलिये है कि यज्ञ में इसकी आहुतियाँ विशेष प्रमाण में देने से वर्षा तथा कामनाओं की पूर्ति करता है। इससे दीप्ति होती है और वैद्युतिक नभोमण्डल में व्याप्त विद्युत शक्ति को प्रदीप्त करता है। घृत का नाम सर्पि भी है। तब यह यज्ञ में प्रयुक्त होकर अन्तरिक्ष में गति करता है तो इसकी गति सर्प की गति के सदृश तीव्र होती है और अपने साथ हव्य के अंश को भी विविध लोकों में ले जाता है। तेल या भैंस, बकरी आदि के घृत में तीनों लोकों में फैलने की शक्ति नही है। केवल गायत्र मण्डल तक ही व्याप्ति की सामर्थ्य गौ के अतिरिक्त अन्य घृत एवं तेलों में है।

पता—वेद सदन, महारानी पथ, इन्दौर४५२००७

अजमेर में प्रवासी गुरुकुल महाविद्यालय का निर्माण

महर्षि दयानन्द की पुण्य भूमि अजमेर में प्रवासी गुरुकुल महाविद्यालय का निर्माण प्रारम्भ हो गया है। जिसका शिलान्यास महात्मा आर्य भिक्षु जी ने 20 जनवरी को किया। निर्माण कार्य यज्ञशाला से आरम्भ हो चुका है, राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री हरिदेव जोशी ने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया है। आर्य भाई भी धन आदि से सहयोग करने का कष्ट करें। मनीआर्डर चैक ड्राफ्ट आदि धर्मानन्द सरस्वती, अधिष्ठाता, प्रवासी गुरुकुल महाविद्यालय आदर्श नगर, नसीराबाद रोड, अजमेर (राज०) के पते पर भेज सकते हैं।

गुरुकुल महाविद्यालय सिराथू में प्रवेश

गुरुकुल महाविद्यालय, सिराथू (इलाहाबाद) में 15 जुलाई से प्रवेश आरम्भ है इस गुरुकुल में प्रथमा (कक्षा-6) से आचार्य (एम० ए०) तक सभी विषयों का अध्ययन कराया जाता है। मेधावी छात्रों को छात्र वृत्ति भी दी जावेगी। —डा० रामाश्रित आचार्य

□

स्त्री आर्य समाज माडल टाऊन

स्त्री आर्य समाज, माडल टाऊन, दिल्ली का वार्षिकोत्सव 11 मई को महिला सम्मेलन के रूप मे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया, जिसमें अनेक विदुषी महिलाओं के उपदेश और गीत हुए।

—शकुन्तला दीक्षित

शिक्षक प्रशिक्षण शिविर

गुरुकुल झज्जर (रोहतक) में 14 से 23 जून तक सार्वदेशिक आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिक्षक शिविर का आयोजन किया गया है जिसकी अध्यक्षता डा० देवव्रत व्यायामाचार्य करेंगे।

डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल अम्बाला का वार्षिक समारोह

डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल अबाला का 9 मई को तृतीय वार्षिक समारोह मनाया गया जिसमे हरियाणा के शिक्षा मंत्री श्री जगदीश नेहरा मुख्य अतिथि थे। 3 मई 82 को मुख्यमंत्री श्री भजन-लाल ने इस स्कूल का उद्घाटन किया था। श्री नेहरा ने तीन साल की अल्प अवधि मे ही स्कूल की इतनी प्रगति के लिए प्रबन्धको और शिक्षकों को धन्यवाद दिया। ऋषि दयानन्द के जीवन से संबद्ध नाटक और श्रीकृष्ण से सम्बन्धित नृत्य नाटिका को सबने खूब सराहा। श्री नेहरा ने राज्य सरकार की ओर से स्कूल को सब प्रकार की सहायता का आश्वासन दिया। श्री नेहरा स्वयं डी० ए० वी० स्कूल की उपज हैं, यह जानकर सबको बड़ी प्रसन्नता हुई। मुख्य अतिथि ने बच्चो को पुरस्कार दिए और तीन शिक्षको—श्रीमती रीना नागरथ, कुमारी मीनाक्षी और श्री सन्तोष राज डोगरा को संस्था की विशिष्ट सेवाओ के लिए पुरस्कृत किया। स्कूल के मैनेजर डा० बी० के० कोहली और चण्डीगढ डी० ए० वी० हायर सेकण्डरी स्कूल के प्रिंसिपल श्री बी० बी० गक्खड ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया।

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय में प्रवेश प्रारम्भ

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार मे प्रवेशारम्भ हो चुका है। भोजन, निवास, पुस्तक, वस्त्रादि का प्रबंध नि.शुल्क है। प्रवेशार्थी को मैट्रिक पास, २२/२३ वर्ष की उम्र और अविवाहित होना आवश्यक है। प्रवेश २५ जुलाई तक है। —आचार्य सत्य प्रिय

गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबंध लागू हो

राष्ट्रीय गोरक्षा संघ के छठे अधि-वेशन में भारत सरकार से अविलम्बे पूर्णरूपेण गोवश की हत्या पर प्रतिबंध लगाने और भारत के समस्त बूचडखाने बन्द करने की अपील की गई।

—स्वामी जनादन देव

प्रो० विश्वनाथ विद्यालंकार का सम्मान

उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी ने वेदोपाध्याय पं विश्वनाथ जी विद्यालंकार को अथर्ववेद के काण्ड संख्या ११,१२ व १३ के भाष्य पर सम्मानित कर प्रशास्ति पत्र भेंट किया यह पुस्तक राय बहादुर चौ. नारायण सिंह प्रताप सिंह धर्मार्थ न्यास करनाल मे छप रही है। पूज्य पंडित जी आयु इस समय ९६ वर्ष है। पं० जी की आथर्ववेद के ११ से २० काण्डत क का भाष्य और सामवेद का आध्यात्मिक भाष्य कर चुके है।

ब्र०आर्य नरेश की प्रचार यात्रा

आर्य समाज के प्रसिद्ध प्रचारक ब्र० आर्य नरेश आजकल, बरनाला, गिदडवाहा अबोहर, फिरोजपुर, फरीदकोट, लुधियाना, जालन्धर और चण्डीगढ़ आदि स्थानों पर प्रचार यात्रा पर हैं।

आर्य समाज चम्बा

आर्य समाज, चम्बा (हि० प्र०) निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर है जिसके अन्तर्गत एक नि शुल्क प्राइमरी पाठशाला और एक कन्या संस्कृत महाविद्यालय चल रहा है। छात्राये प्रातः सायं यज्ञ हवन और साप्ताहिक सत्सग मे समस्त अध्यापक अध्यापिकाओ के साथ भाग लेती हैं। आर्य समाज चम्बा का चुनाव स्वामी सुमेधानन्द जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ जिसमे श्री भगवती प्रसाद पंत सहायक अभियन्ता प्रधान, प्रो० शामलाल सलोत्रा मंत्री, श्री विश्वजीत महाजन कोषाध्यक्ष और श्री सूरतराम शर्मा प्रचार मंत्री चुने गये।

महिला शिक्षण केन्द्र का उत्सव

श्रीमद्दयानन्द महिला शिक्षण केन्द्र का उत्सव १७ से १९ मई तक समारोह पूर्वक मनाया गया जिसमे अनेक विद्वान व भजनोपदेशको ने भाग लिया। इस केन्द्र मे प्रौढ़ महिलाओ को अक्षर ज्ञान और सिलाई आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है। बालिकाओ को आधुनिक पद्धति की शिक्षा के साथ साथ वेदोक्त धार्मिक शिक्षा भी दी जाती हैं।

—ब्रह्मदत्त

खन्ना में आर्य युवक सभा

आर्य समाज, खन्ना मण्डी (लुधियाना) मे आर्य नवयुवको की एक सभा १२ मई को हुई जिसकी अध्यक्षता श्री हरिदेव चौधरी ने की। यज्ञादि के बाद आर्य युवक सभा पजाब के सयोजक श्री रोशन लाल शर्मा के अतिरिक्त श्री सुधीर भाटिया, श्री विनोद बंसल तथा श्री यशपाल आर्य ने युवको को सम्बोधित किया।

गुरुकुल करतारपुर में प्रवेश

गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर जिला-जालंधर (पंजाब), मे, जो गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार से स्थायी मान्यता प्राप्त है, नये छात्रो का प्रवेश १५ जून से आरम्भ हो रहा है। प्रवेशार्थी छात्र उपरोक्त पते पर सपर्क करें।

—आर्य समाज हुबली (धारवाड) कर्नाटक मे १२ से १४ मई तक महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी महोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया।

श्री बलवीर सिंह को श्रद्धाञ्जलि

आर्य समाज बी ब्लाक जनकपुरी, नई दिल्ली मे श्री बलवीर सिंह चौधरी की निर्मम हत्या पर एक सार्वजनिक सभा करके श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गयी और सरकार से माग की गयी कि वह उग्रवादियो से सख्ती से निपटे। श्री चौधरी प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता, धर्म-परायण और सच्चे ऋषि भक्त थे। दिवंगत आत्मा की सद्गति हेतु प्रार्थना की गई।

सम्मान स्थगित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के प्रधान श्री रामगोपाल वानप्रस्थ का अभिनन्दन १-२ जून को होना निश्चित हुआ था, किन्तु कतिपय कारणो से यह अभिनन्दन समारोह स्थगित किया जा रहा है। निश्चित तिथि की घोषणा शीघ्र ही की जायेगी। —डा० आनन्द प्रकाश

दिल्ली आर्य वीर दल कार्यकर्ता

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश का कार्य-कर्त्ता सम्मेलन २७ अप्रैल को आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली मे सार्वदेशिक आर्य वीर दल के उपप्रधान सचालक डा० देवव्रत की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। १४७ आर्य युवको ने दल को सक्रिय करने का सकल्प लिया। दिल्ली आर्य वीर दल के संचालक श्री नरेन्द्र अवस्थी व डा० देवव्रत ने अपने विचार व्यक्त किये। सभा का सचालन श्री महेश चन्द्र ने किया।

काजल मसीह की शुद्धि

आर्य समाज, दसुया (पंजाब) मे साप्ताहिक सत्सग के बाद अब्दुलपुर निवासी श्री काजल मसीह की शुद्धि करके ईसाई मत से वैदिक धर्म में प्रवेश कराया गया।

उजाले उनकी यादों के......

(पृष्ठ ४ का शेष)

उसके बाद अब देख रहा हूं बूढे शेर को। मैंने कहा, आपको याद है डा० अम्बेडकर जातपात तोडक मण्डल के एक सम्मेलन के अध्यक्ष चुने गये थे पर...

बोल उठे, "हां, हां अम्बेडकर मेरे बडे मित्र थे। मेरे घर पर खाना खाया था उन्होंने...एक नबाव थे। बोले, "मेरे घर खाना खाओगे।" मैंने खाया। बहुत बहुत खुश हुए।"

बातों का तारतम्य फिर उलझ गया। बाल सुलभ सरलता झलक आई थी आखो मे। गार्गी बहन बोली, "अब तो सब खाते हैं। जातपात तोड़ कर शादी भी करते हैं।"

मैंने कहा, "हां, हां, तब मैं नहीं कर सका था। अब मेरे परिवार में कई ऐसी शादियां हुई हैं अन्तरजातीय, अन्तरप्रान्तीय भी।

सुनते हैं, वाणी मे फिर उदासी उभर आती है जैसे किसी मसीहा की आवाज, 'हिन्दूहो किसी को पता नही सकते। नफरत करते है। जातपात इन्हें खा जायेगी।"

जीवन भर जिसने जातपात के खिलाफ जिहाद छेड़े रखा वह बूढा शेर जिंदगी की शाम मे कैसा कडवा सच बोल रहा है।

वही सच बोलने वाला आज सत्तानवे वर्ष की आयु मे मृत्यु की पदचाप सुनता बेटी के घर मे असहाय बनकर पडा है। "बस जाने को तैयार हूं। आयेगा सो जाएगा राजा रंक फकीर।"

ये भी उन्ही के शब्द हैं पर इनमे जरा भी तलखी नही लेकिन जातपात की बात सुनते ही सब कुछ कड़वा हो उठता है उनके भीतर। जीवन का मिशन था उनका वह।

फिर कई क्षण बैठा-बैठा उन्हे चाय पीते देखता रहा। सोचा देर तक बैठू गा तो फिर यादो मे डूब जायेंगे और वे उनका मन जितना उजाले से भरेगी उससे अधिक तडपायेगी।

उठा, विदा मागी। हाथ उठा कर आशीर्वाद दिया। तब आँखो मे चमक थी चेहरे पर उल्लास था।

अच्छा लगा। उनसे मिल सका पर भीतर मेरे भी सब कुछ टूट गया था। लग रहा था मेरे भीतर भी वे यादे तूफानी समन्दर की लहरो की तरह किनारे तोडने को सर पटक रही है। सन्तराम बी० ए० भी जीवन भर सर पटकते रहे जात पात की चट्टान पर.

मोती लाल नेहरू ने कहा था, "जात-पात मिटा दो, स्वराज कल मिल जाएगा।"

सन्तराम बी० ए० कहते हैं, तुम नफरत करते हो जात पात तुम्हें खा जाएगी।

काश हम इस बूढे योद्धा की चेतावनी का अर्थ समझ सकें। बाहर आकर गार्गी बहन बोली, "शुभ चिंतक मित्र पिता जी के लिए धन इकट्ठा करना चाहते हैं। मैं कहती हू, इनकी देख भाल मैं करूगी। तभी तो अपने पास ले आई हूं। मुझे पैसा नही चाहिए। इनके प्रति किसी की श्रद्धा है आदर है तो इनका साहित्य छापें। इनके सपने पूरा करे...

सपने पूरे होते हैं पर जीवन्त जातियो के, बुतपरस्तो के नही। हम बुतपरस्त हैं। बुतो की पूजा कर सकते हैं। उनके सपने पूरे नही कर सकते।

अन्तरजातीय और अन्तरप्रान्तीय शादी-विवाहो के युग मे भी इस जातिवाद ने हमारी राजनीति और हमारे शासन को नपु सक बना दिया है।

इस नपु सकता के नासूर को मिटाने का सार्थक प्रण करना ही सन्तराम बी० ए० के प्रति सच्चा श्रद्धाजलि हो सकता है।

काश कोई यह चुनौती स्वीकार करे। काश...

पता—818, कुण्डेवालान, अजमेरीगेट, दिल्ली-110006

यू० १०३/१०८ लायसेंस टु पोस्ट विदाउट प्री-पेमेन्ट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११६३/७२ डी० सी० 409
२ जून, १९८५

Hans R[illegible]

Punjabi bagh, New [illegible]
AGAIN IN THE FOREFRONT
In All-India Senior School Certificate Examination
(Class XII), 1985.
HIGHLIGHTS

1. Out of 84 students in Sciance Group. 76 got first Class with 20 students getting more then 80% marks. Prominent among them being Jayanti Abrol—356/400, Poonam Chawla —356/450, Rgjneesh Lamba—354/400 and Raj Kumar Batra 353/400

2 Total number of distinctions in various subjects in Science Group—159 with 14 students getting distinction in the four subjects.

3 In P. C. M. 33 students got marks above 80% with the maximum of 96% scored by Raj Kumar Batra.

4 Maximum marks subject-wise—Rajneesh 100/100 in Maths, Dinesh Seth 98/100 in Physics, Jayanti Abori 96-100 in Biology, Poonam Chawla 94/100 in Chemistry and Gurpreet 82/100 in English.

5. In Humanities Group, out of 38 students, 22 get first class with Nishi Tuteja getting 81 5% marks.

Heartiest congratulations to the dedicated staff and Principal T. R Gupta who deserves all the credit and high commendation for this remarkable performance.

D. P. SETH GENERAL SECRETARY,
D A.V. College Managing Committee,
CHITRA GUPTA ROAD, New Delhi

D.A.V. MODEL SCHOOL

Block between A K. & A.L., Shalimar Bagh, Delhi-110052
WANTED Well qualified traird, with Public School backgro-und proficient in English, Teachers and other staff preferably female as given below

(1) Trained Graduate Teachers:
English, Hindi, Maths , Science, Social Studies and Music/Dance.
Grade Rs- 440-750 plus allowances Total (Rs 1100.25)
Minimum qualifications B. A B. Sc , M A M Sc. II Class, B.E.d.

(2) Primary Teachers:
English, Hindi, Mathe, Geography, Physical Education and Music/Dance.
Grade- Rs. 330-560 plus allowances Total (Rs. 876.20)
Minimum qualifications B. A B Sc , M. A M Sc B. Ed

(3) Nursery Trained Teachers:
B- A. /B.Sc , M. A. /M Sc , with 2 years diploma course
Grade, Rs. 330-560 plus allowances Total (876.20)

(4) Doctor/Nurses;
Qualified Doctor/Nurses with experience Salary negotiable

(5) Adviser (Education) :
Salary negotiable.

(6) Clerk-cum-typist:
B A , B.Com. knowing typing & Accoun's with 5 years experience. Grade Rs. 260-400 with allowances Total (867 90)

(7) Security Officer-cum-caretaker:
Salary negotiable.

(8) Supervisor (Building):
Salary negotiable

(9) Trained Graduate Teachers.
For Primary & Middle Classes for our 2nd shift Hindi Medium Classes, B A./B Sc & M A /M Sc /B Ed. II Class in the subjects of English, Hindi, Social Studies, Science. Dance/music, P. T. I. & Sanskrit

Grade- Rs. 330-560 Total (Rs. 605 00).

Higher start possible in case of exceptionally qualified and dedicated candidates. Free education upto two children and benefit of Provident Fund & Gratuity etc.

Apply to Manager on prescribed form available from the school office by paying Rs. 10/- per from on or before 5th June. 1985

MANAGER

Wanted
PRINCIPALS

Applications are invited for the posts of Principal for various DAV Public Schools in India. Candidates should possess a brilliant academic record with a Master's Degree and training qualiiications from a recognised university.

Administrative experience of five to six years in a reputed Public School and the ability to organise various Physical and co-corricular activities are essential

Those selected will be placed in the scale of Rs. 1100-1600 plus admissible allowances as approved by the Central Govt Free unfurnished residence also offered. Candidates will be liable for transfer to any D. A. V Public School in india.

Only candidates having faith in the Vedic Philosophy and a strong awareness of indian thought, tradition and culture need apply Send complete bio-data alongwirh a recent passport photograph,within 25 days, to :

The Organising Secretary
D. A V. College Managing Committee,
CHITRA GUPTA ROAD, NEW DELHI-110055

D. A. V. PUBLIC SCHOOL

R6/157, Raj Nagar, Ghaziabad
(Under the direct control of D. A V. Managing Committee, Chitra Gupta Road, New Delhi)
WANTED

(I) TEACHERS IN THE FOLLOWING SUBJECTS :
Science (Physics/Maths), Biology, English, Hindi/Sanskrit, Music/Dance, Art & Crafts, Social Studies (History & Civics, Geography) Nursery trained teachers also required.
Minimum qualifications B A. B Sc., B. Ed- with at least 5 years experience of teaching in a Public Scool Proficiency in English essential.
Grade : Rs 300-560 plus admissible allowances.

(II) T.G T MATHS & ENGLISH
Grade : Rs 440 750 plus allowances

(III) ACCNUNTS/TYPIST CLERK
With 5 year's experience
Grade : Rs- 260-400 plus allowances.

Preference will be given to highly qualified female teachers. Apply on prescribed from obtainable from the School on payment of Rs. 10/-,on or before 10th June1985.

PRINCIPAL

D. A. V. PUBLIC SCHOOL

571. Sector 15 Faridabad

Applications are invited from candidates with prescribed qualifications for the undermentioned posts. *Candidates should be fluent in English with a flier for* sports and extra curricular activities.

Persons with missionary zeal and experience of work in good English Medium school should apply on the prescribed proforma (available from the School Office @ Rs. 10-each) before 10th June, 1985.

1 Trained Teachers to Teach English, Hindi, Sanskrit, Maths, Gen. Science and S. Studies to Primary and Middle Classes.

2. Nursery Trained Teachers—PTI, Music/dance. Arts and Crafts.

3 Accounts Clerk/typist B A/B. Com. with Experience.

Qualifications : B A B Sc. M A /M Sc. B.Ed. in at least 2nd Division.

Grades : Rs. 330-560 & 440-750 plus allwances as admissible.

MANAGER

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स ७११७/१८ पहाड़ी धीरज, दिल्ली से छपवा कर कार्यालय, 'आर्य जगत्, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य-२५ रुपये | विदेश में ३० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४८, अंक २४, रविवार, ९ जून, १९८५ | दूरभाष . ३४३७१८
आजीवन सदस्य-२५१ रु० | इस अंक का मूल्य —६० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८५, दयानन्दाब्द १६० | ज्येष्ठ कृष्णा ७, २०४२ वि०

बांग्लादेश में तूफान से ४० हजार मरे

बांग्ला देश मे शुक्रवार 24 मई की रात्रि को जो महाविनाशक तूफान आया उसमे 40 हजार से अधिक व्यक्तियो के मरने तथा हजारो लोगो के लापता होने समाचार हैं। विगत एक दशक मे सब से अधिक भीषण बताये जाने वाले इस तूफान ने दक्षिणी तट पर स्थित 5 जिलो और बंगाल की खाडी मे छितराये लगभग एक हजार द्वीपो पर मृत्यु और विनाश का खेल खेला है। कुछ लोग तो यहा तक कहते है कि मरने वालो की संख्या एक लाख से कम नही है। दो अरब रु० से अधिक की सम्पत्ति नष्ट हुई है। सान-द्वीप और पीर बक्स द्वीप तो समुद्र मे डूब गए है। तूफान से प्रभावित द्वीपो से पूरी तरह सम्पर्क कट गया है।

भारत सरकार ने इस समय पडोसी के नाते सभी प्रकार की सहायता देने का आश्वासन दिया है तथा एक करोड की सहायता की घोषणा तो तुरन्त ही कर दी है। प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी श्रीलंका के राष्ट्र पति को साथ ले कर स्वयं तूफान ग्रस्त क्षेत्रो का दौरा करके आए हैं। इससे भी पीडित लोगो के मनो को कुछ तो राहत मिलेगी कि वे एक दम असहाय और अनाथ नही है।

घल्लूघारा के आतंक से उत्तर भारत में सेना सतर्क

अकालियो द्वारा एक जून से मनाये जा रहे "घल्लूघारा" सप्ताह के अंतर्गत पाकिस्तान से भारत मे आतंकवादियो के भारी संख्या मे अवैध प्रवेश की सम्भावना को देखते हुए भारत सरकार ने पंजाब, राजस्थान और जम्मू कश्मीर से पाकिस्तान के साथ लगी सीमा को बन्द कर दिया है। सीमा से आधा किलोमीटर के अन्तर पर शाम से लेकर प्रात काल तक किसी के भी चलने फिरने पर रोक लगा दी गई है। इस आज्ञा का उल्लंघन करने वाले को गोली से उडा देने के आदेश दिए गए है। उत्तर भारत के राज्यो मे सेना को सतर्क कर दिया गया है।

पिछले कुछ महीनों मे सीमा सुरक्षा बल ने 70 से अधिक आतंकवादियो को पाकिस्तान से भारत मे घुसते हुए पकडा है। इन लोगो से बडी मात्रा मे राइफल, पिस्तौल, बन्दूक तथा कारतूस आदि बरामद हुए है। कुछ आतंकवादी डर के मारे पाकिस्तान वापिस भाग गए है।

भारत सरकार सब प्रकार से सावधान है और नागरिको का पूर्ण सहयोग उसको प्राप्त है।

श्री शालवाले को ११ लाख की थैली भेंट की जाएगी

सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले के अभिनन्दन के अवसर पर उन्हे ११ लाख रुपये की थैली भेंट करने का निश्चय अभिनन्दन समिति ने किया है। धन संग्रह हेतु समिति ने २६ मई की बैठक मे एक धन संग्रह समिति का गठन किया है, जिसमे निम्न आर्य जन है—

संयोजक—श्री सोमनाथ मरवाह, सह-संयोजक—श्री इन्द्र नारायण सदस्य—सेठ प्रतापसिह शूर जी वल्लभदास श्री ओम्प्रकाश त्यागी, श्री सत्यदेव वेदालंकार, प्रो० वेदव्यास, महाशय धर्मपाल, श्री सत्यानन्द मुंजाल, श्री गजानन्द आर्य, श्री इन्द्रराज, श्री रामलाल मलिक, श्री सूर्यदेव, श्री ओम्प्रकाश गोयल, श्री रामनाथ सहगल, श्री कैप्टन देवरत्न आर्य, श्री वी० किशन लाल, श्री रतन प्रकाश गुप्ता, श्रीमती कौशल्या देवी।

—डा० आनन्द प्रकाश
संयोजक अभिनन्दन समिति

आर्य प्रादेशिक सभा के वार्षिक अधिवेशन की एक झाँकी

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के वार्षिक अधिवेशन मे उपस्थित मंच पर बैठे विशिष्ट महानुभाव – सार्वदेशिक सभा और प्रादेशिक सभा के उपप्रधान श्री मुल्खराज भल्ला, सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह एडवोकेट, श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी, डी० ए० वी० प्रबन्धकर्त्री सभा के महासचिव श्री धर्मपाल सेठ, श्रद्धानन्द ट्रस्ट के मंत्री श्री नवनीत लाल एडवोकेट, ह्यूस्टन से आए वैदिक मिशनरी श्री रामचन्द्र महाजन, हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह।

परामर्शदाता-अमर स्वामी सरस्वती | सम्पादक-क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक-रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

व्यवहार-शुद्धि के बिना आर्य कैसा ?

—पिशोरी लाल 'प्रेम'—

महर्षि स्वामी दयानन्द ने व्यवहार की शुद्धि के लिए एक मात्र ग्रन्थ 'व्यवहार भानु' लिखा है। आर्यों का व्यवहार कैसा होना चाहिए—इस की शिक्षा इस ग्रन्थ से मिलती है। जब तक मन, वचन और कर्म की एकता न हो तब तक सत्य का अनुसरण नही हो सकता। और जब तक सत्य का अनुसरण न हो तब तक व्यवहार की शुद्धि नही हो सकती और जब व्यवहार की शुद्धि न हो तो तब न चरित्र निर्माण हो सकता है और न ही वेद प्रचार हो सकता है। केवल मात्र लम्बे-चौडे व्याख्यान देने से अथवा समाचार पत्रो मे बडे बडे लेख छपवाने से वेद का प्रचार नही हो सकता जब आर्यो का अपना व्यवहार शुद्ध होगा, साधारण जनता से उनका चरित्र ऊंचा होगा, और वह अपने सद्व्यवहार से जनता को प्रभावित कर सकेगे, तभी वेद का प्रचार हो सकेगा।

एक आर्य चाहे लोक सभा का सदस्य हो अथवा राज्य सभा का, चाहे वह प्रातीय विधान सभा का सदस्य हो या नगर निगम का, चाहे वह केन्द्रीय मत्री हो अथवा प्रान्तीय मत्री मण्डल मे हो, चाहे वह किसी गाव की पंचायत का प्रधान हो या सदस्य ही हो, उसकी प्रत्येक बात, उसका प्रत्येक कार्य सत्य पर आधारित हो। उस की सम्मति लोक हित के लिए और सत्यानुकूल हो। उसका सब सदस्यो से प्रेम और मित्रता का व्यवहार हो। वह सदा निष्पक्ष और निस्वार्थ हो कर अपनी सम्मति दे। नेतृत्व की योग्यता होते हुए भी अपने आप को जनता का सेवक समझे। सब से नम्रता और प्रेम का व्यवहार करे।

यदि वह सरकारी कर्मचारी है, किसी विभाग मे साधारण क्लर्क है, तो वह अपने काम को ईमानदारी से करता रहे। अपने कर्त्तव्य को अच्छे प्रकार से निभाता रहे। कभी भी किसी से रिश्वत न ले और अपने विभाग के अन्य कर्मचारियो को भी रिश्वत से बचने की प्रेरणा दे। अपने अधिकारी के साथ निष्पक्षता और नम्रता का व्यवहार करे और उसकी झूठी प्रशंसा (चाटुकारिता) कभी न करे। अपने सहयोगियो से भी यथा योग्य प्रीति पूर्वक व्यवहार करे। यदि वह स्वय उस विभाग का अधिकारी हो तो अपने आधीन कर्मचारियो से प्रेम और सहानुभूति का व्यवहार करे। इस प्रकार वह अपने सद्व्यवहार से सब को प्रभावित कर सकेगा।

आर्य समाजी दुकानदार को चाहिए कि वह न तो वस्तुओ मे मिलावट करे और न असली वस्तु के स्थान पर नकली वस्तु बेचे। नाप तोल मे किसी को कम न दे और न किसी से अधिक ले। उचित लाभ कमाए। सब वस्तुओ का मूल्य निश्चित हो और सब ग्राहकों के लिए एक ही मूल्य हो। न्यून अधिक किसी के लिए न हो। जो वस्तु जैसी हो वैसी ही ग्राहक को बताए। किसी वस्तु की झूठी प्रशसा कभी न करे। जहा तक सम्भव हो सके, न किसी को उधार दे और न उधार ले। यदि उधार लेना ही पडे तो शीघ्र चुकाने का यत्न करे। और यदि स्वय किसी को उधार दे तो ब्याज का लोभ न करे। सबके साथ मीठा और सत्य बोले। आर्यो की दुकान पर जो ग्राहक एक बार भी आ जाए तो उन के सद्व्यवहार से प्रभावित होकर लौटे। जनता मे इस बात की प्रसिद्धि हो कि यह आर्य समाजी दुकानदार है। इस लिए इस का व्यवहार सच्चा है। जो आर्य समाजी इस प्रकार अपना व्यवहार शुद्ध रखेगा वह मौन रह कर भी आर्यसमाज का अधिक से अधिक प्रचार कर सकेगा।

जो आर्य समाजी दस्तकारी करते है, वह अपने ग्राहको को अच्छा काम करके दे और उचित पारिश्रमिक ले। कभी भी अधिक पारिश्रमिक लेने का लोभ न करें। जो समय जिसके साथ निश्चय करें उसी समय पर काम तैयार करके दें। वचन भग कभी न करे।

कहते है अपने व्यवसाय मे सब चोर हैं। मुझे इस वाद विवाद में नही पडना। मेरा निवेदन तो यह है कि यदि किसी ने अपने व्यवसाय मे कोई चोरी सीखी हो तो वह उसे त्याग दे। यदि आर्य समाजी व्यवसाय में चोरी के इस कलक को दूर न करेगे तो और कौन करेगा ? जनता को यह स्वीकार करना पडे कि आर्य समाजी अपने व्यवसाय मे सत्य का पालन करते हैं।

मजदूर यह चाहता है कि वह श्रम कम करे और मजदूरी अधिक ले और काम कराने वाला अधिक काम करा कर मजदूरी कम देना चाहता है। आर्यत्व यह है कि जितनी मजदूरी मिलती है उतना काम अवश्य किया जाए और एक आर्य जो किसी मजदूर से काम कराता है उसकी मेहनत से उसे कुछ अधिक मजदूरी दे, कम मजदूरी देना बुरी बात है।

मैंने केवल चार पाच बातो का वर्णन किया है। क्योकि प्रत्येक बात का वर्णन करना सम्भव नही है। कोई भी ऐसा विभाग नही, कोई भी ऐसा व्यवसाय नही, और कोई ऐसा स्थान भी नही है जहा कोई आर्य समाजी न हो। इस लिए जहा, जिस विभाग मे, जिस व्यवसाय मे, जो भी आर्य समाजी हैं उन सब को अपना व्यवहार शुद्ध रखना चाहिए। केवल आर्य समाज का सदस्य अथवा पदाधिकारी बन जाने से, या केवल मात्र आर्य समाज मंदिर में संध्या हवन कर लेने से कोई आर्य नही बन जाता। आर्य समाज के विषय मे व्याख्यान देने या लेख लिखने से भी कोई आर्य नही बनता, अपितु निस्वार्थी हो कर परोपकार करने से, सत्य को ग्रहण करने से, व्यवहार को शुद्ध रखने से व्यक्ति आर्य बनता है।

जब मैं आर्य समाजी नेताओ के, उन के ही दैनिक समाचार पत्रों मे वैदिक सिद्धातों के विरुद्ध प्रकाशित लेखो को, सिनेमा और फलित ज्योतिष के विज्ञापनो को, अभिनेताओ और अभिनेत्रियो की तसवीरो से भरे हुए फिल्मी विशेष अंको को, देखता हू तो मुझे अति दु:ख और आश्चर्य होता है। मैं सोचता हू कि हमारे आर्य नेता अपने स्वार्थ के लिए जनता के चरित्र का नाश कर रहे हैं और जब उन से पूछा जाता है तो वह कहते हैं कि यह तो हमारा व्यवसाय है। मैं अति नम्रता पूर्वक इन नेताओ से पूछना चाहता हूं कि वे कृपा करके बताए कि क्या व्यवसाय मे, वेद-विरुद्ध सिद्धातो का प्रचार करना, असत्य, असभ्य, अशिष्ट कार्य करना अधर्म नही होता। क्या महर्षि दयानन्द ने व्यवसाय अथवा व्यवहार मे असत्य और अधर्म की आज्ञा दी हैं ? यदि हम आर्य समाजी, नही-नही आर्य समाज के नेता भी अपने व्यवसाय मे सत्य का आचरण नही कर सकते तो साधारण जनता और आर्यों में अन्तर ही क्या हुआ ? हम किस मुख से वेद का, सत्य का, धर्म का, तप-त्याग-परोपकार और सदाचार का प्रचार करेंगे ? मेरे विचार मे तो इन नेताओ ने महर्षि दयानन्द के पवित्र ग्रन्थ व्यवहार भानु को नही पढा। यदि पढा होता तो फिर वे कैसे कहते कि यह तो व्यवसाय है। अधिक क्या लिखूं। यदि हमारे ये आदरणीय नेता अपने व्यवहार को शुद्ध करने का यत्न करें तो साधारण आर्य जनता भी इन का अनुसरण करेगी और तब हम सच्चे आर्य बन कर वेद प्रचार करने मे समर्थ हो सकेगे।

पता—ददाहू, नाहन, हि० प्र०

अनुपम कमल का साहसिक कार्य

नई दिल्ली ४ मई। प्रात सवा दस बजे आर्य युवक अनुपम कमल अपने स्कूटर पर कश्मीरी द्वार से रेलवे पुल की ओर आ रहे थे। उन्होने देखा कि एक स्कूटर सवार और साइकल सवार की टक्कर मे साइकल सवार घायल होकर गिर पड़ा और मूर्च्छित हो गया है। अनुपम कमल तुरन्त अपने स्कूटर से उतरा और उसने घायल किशोर का प्राथमिक उपचार आरम्भ कर दिया। कृत्रिम श्वास देकर उसके हृदय की धड़कन को, जो बन्द हो गई थी, पुन: चालू किया। जब कोई भी व्यक्ति सहायता के लिए आगे नही आ रहा था, यातायात पुलिस का सिपाही भी खड़ा तमाशा देख रहा था, 'कमल' ने यह अनुपम साहसिक कार्य किया। उसने घायल किशोर का प्राथमिक उपचार करने के उपरान्त उसको रिक्शा पर बैठा कर कुछ लोगो के साथ उसके घर भिजवा दिया।

अनुपम कमल डी० ए० वी० सीनियर सेकेण्डरी स्कूल चित्रगुप्त रोड का १२ वी कक्षा का छात्र है और आर्य स्त्री समाज, अनारकली, मंदिर मार्ग की मंत्रिणी—डॉ० चन्द्रप्रभा तथा डा० हंसराज कमल का सुपुत्र है।

श्री लोढ़ा को धमकियां

हिंदु महासभा के नेता डा० सुरेन्द्र सिंह लोढ़ा को बब्बर खालसा ने धमकी भरा पत्र भेजा है जिसमे डा० लोढा को मारने की धमकी दी गयी है। इससे पूर्व भी उन्हे एक पत्र मिला था। उग्रवादियो से सरकार सख्ती से पेश आये, ऐसी हिंदु महासभा ने माग की है।

—जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा श्री गंगा नगर के वार्षिक अधिवेशन में सरक्षक स्वामी सुमेधानन्द, प्रधान श्री रमणीक कुमार आर्य, मन्त्री श्री शुद्धबोध आर्य, कोषाध्यक्ष श्री अशोक सहगल और वेदप्रचार अधिष्ठाता श्री किसनाराम वानप्रस्थी चुने गये।

सुभाषित

"भले को कोई इस कारण क्षमा नहीं करता कि वह भला है। यदि वह जीना चाहता है तो उसे भले के अतिरिक्त शक्ति-सम्पन्न भी होना चाहिए। यह शक्ति इतनी होनी चाहिए कि वह आततायियों के आक्रमण को रोक सके और जो कोई उसके उचित अधिकारों के प्रति अपराधी हो उसे दण्ड दे सके।"

(स्व० इन्द्र विद्यावाचस्पति कृत "जीवन संग्राम" से)

प्रेषक . प्रा० धर्मेन्द्र धींग्रा, ओंकार कुंज, खारीवाव रोड वडोदरा—390001

सम्पादकीयम्

घल्लूघारा और राष्ट्रीय एकता

एक सरकस की बात याद आती है।

अटपटी और जनता को हंसाने वाली पोशाक पहने एक जोकर (विदूषक) सरकस के शामियाने के नीचे बने क्रीडाक्षेत्र मे एक घोडा साथ लेकर आता है। थोडी देर बाद ही दूसरा जोकर आता है। वह पहले जोकर से घोड़े की ओर इशारा करके पूछता है— 'यह क्या है।' पहला जोकर कहता है— 'घोड़ा है।' दूसरा जोकर पूछता है— 'इस घोड़े को बेचोगे ?' पहला जोकर—'हा बेचेंगे।' दूसरा जोकर—'खरीदने से पहले इसकी जाँच कर लें कि यह ठीक ठाक है या नही।' पहला जोकर—'खूब अच्छी तरह जांच लो, बिलकुल खरा माल है।' तब दूसरा जोकर घोड़े के एक एक अंग पर हाथ फेरता जाता है और पूछता जाता है कि यह क्या है, यह क्या है। पहला जोकर बारी बारी से बताता है—'यह घोड़े की पीठ है, यह घोड़े की गर्दन है, यह गर्दन की अयाल है, यह मुंह है, यह पूंछ है, यह पेट हैं, ये टांगें हैं।' तब दूसरा जोकर हक्का-बक्का होकर पहले जोकर से कहता है—'तुमने मुझे यह तो बता दिया कि यह घोड़े की पीठ है, यह गर्दन है, यह मुंह है, यह पेट है, ये टांगें हैं, यह नहीं बताया कि घोड़ा कहा है। मुझे तो घोडा खरीदना है, उसके ये अलग-अलग अंग थोड़े ही खरीदने हैं।' तब पहला जोकर उसकी पीठ पर हाथ मार कर कहता है— 'अरे पगले, इन सब अंगो को मिलकर ही तो घोडा बनता है। घोड़ा कहीं इनसे अलग थोड़े ही है।'

यही बात राष्ट्र के साथ भी है। जिन भिन्न भिन्न प्रदेशों को मिलाकर राष्ट्र बनता है, यदि वे सब अलग अलग अपनी अहमियत बघारें तो राष्ट्र नही रहता। जब तक वे भिन्न भिन्न प्रदेश अपने आपको एक ही अंगी का अंग मानते हैं तभी तक वह एक राष्ट्र रहता है, अन्यथा भूखण्ड और धरातल ज्यो का त्यो सुरक्षित रहने पर भी वह एक राष्ट्र नही रह सकता। बिलकुल मनुष्य के शरीर और उस शरीर के विभिन्न अंगों वाली स्थिति है। जब तक शरीर मे चेतना रहती है तब तक शरीर के सब अग एक दूसरे के दुःख-दर्द से प्रभावित होते हैं। एक अग में चोट लगे, तो सारा शरीर कराह उठता है। शरीर में आत्मा का अस्तित्व या चेतना ही उस एकत्व की अनुभूति की जनक है, यदि चेतना निकल जाए तो मुर्दे के एक एक अंग को काट डालने पर भी शरीर को कोई कष्ट नहीं होता। एकत्व की जनक चेतना जो चली गई।

इसी प्रकार राष्ट्रीय एकता की आंतरिक भावना ही राष्ट्र के एकत्व का बोध कराती है। यदि वह भावना न रहे तो अपने या पराये राष्ट्र मे कोई अन्तर नहीं रहेगा। केवल भूखण्ड से राष्ट्र नही बनता। उस भूखण्ड के निवासियो की एकात्म भावना से ही राष्ट्र बनता है। यह ठीक है कि समान सुख-दुःख, समान जय-पराजय, समान इतिहास, समान पूर्वज, समान संस्कृति और समान विचारधारा भी राष्ट्रीय ऐक्य के निर्माण मे सहायक होती है, परन्तु बड़े युद्धों के परिणाम स्वरूप जब राष्ट्रो की सीमाए बदल जाती है तब उस बदली हुई सीमाओ वाले भूखण्ड को ही हम राष्ट्र मानने लगते है। उदाहरण के लिए जब पाकिस्तान भारत का भाग था तब उस पर आक्रमण करने वाले का मुकाबला करना भारतीय सेना अपना कर्तव्य समझती थी। पर पाकिस्तान बन जाने के पश्चात्, जब स्वदेश का ही एक भाग पराया देश बन गया, तो भारत की सेना को पाकिस्तान की सेना के साथ भी युद्ध करने में कोई संकोच नही हुआ। जब तक वह भूखण्ड हमारे साथ था। हमारी राष्ट्रीय भावना उसके साथ थी, पर जब वह हमसे अलग हो गया तो उसके साथ हमारी एकात्मता की अनुभूति भी जाती रही।

इस राष्ट्रीय भावना का एक पहलू और है। जिस राष्ट्र को हम अपना समझते हैं उसकी रक्षा के लिए और उसकी समृद्धि के लिए व्यक्तिगत, जातिगत और दलगत स्वार्थों से ऊपर उठ कर राष्ट्र के व्यापक हितों के लिए कुर्बानी करते हैं। किसी परिवार के सभी सदस्य अपना श्रम, अपनी कमाई और अपना सब प्रकार का सहयोग जब तक प्रदान करते हैं, तभी तक वह परिवार ऐश्वर्यबद्ध होकर उन्नति के शिखर तक पहुंचता है। आपाधापी से जैसे परिवार नष्ट होते हैं वैसे ही राष्ट्र भी। मुख्य बात है—समष्टि के लिए व्यष्टि का त्याग। मनुष्य की सामाजिकता और राष्ट्र की नागरिकता तभी सार्थक होती है।

राष्ट्रभक्ति की पहचान यह है कि राष्ट्र हरेक नागरिक अपने आप से यह पूछे कि मैंने राष्ट्रहित के लिए क्या किया है अर्थात् अपने संकुचित स्वार्थों का किस हद तक परित्याग किया है। स्वतन्त्रता आन्दोलन के दिनो मे राष्ट्र के नागरिको मे इस बात की होड रहती थी कि कौन राष्ट्र के लिए अधिक से अधिक कुर्बानी करता है। आज जमाना बदल गया है। आज लोग यह नहीं बताते कि हमने राष्ट्र के लिए क्या किया है, पर यह अवश्य पूछते हैं कि राष्ट्र ने हमारे लिए क्या किया है। वे समझते हैं कि राष्ट्र उनसे भिन्न कोई अलग ईकाई है। वे नहीं जानते कि इन सब व्यक्तिगत इकाइयो का समुच्चय ही राष्ट्र कहलाता है। राष्ट्र के लिए निष्काम भक्ति ही असली राष्ट्रभक्ति है। जो सशर्त या सकाम राष्ट्रसेवा करता है, वह भक्ति नही, व्यापार करता है।

1 जून से घल्लूघारा सप्ताह की घोषणा करने वालो मे राष्ट्रीय भावना का कितना अभाव है, यह कहने की आवश्यकता नही। न उन्हें सिख पंथ के अलावा, सिख पंथ ही क्यों—केवल अकालीदल के अलावा, कोई अन्य राष्ट्रवासी नजर आता है, न पंजाब के बाहर उनकी दृष्टि जाती है, न अकालतख्त की चहारदीवारी के बाहर उनकी दुनिया है। उनका पूरा राष्ट्र और पूरी दुनिया इस देश के स्वल्पतम वर्ग तक ही सीमित है। इसी संकुचित दृष्टिकोण ने उनको सही राष्ट्रीय भावना से वंचित कर दिया है। और तो और, उन्हें पंजाब के बाहर रहने वाले अपने अन्य सिख बन्धुओं की भी चिन्ता नही है। इसी दिवान्धता के कारण वे आतंकवाद की निन्दा नही कर पाते, इसी कायरता के कारण वे उग्रवादियो को हिंसा से विरत नहीं कर पाते। अपनी रुग्ण मानसिकता के कारण, सारा राष्ट्र जिनको शहीद मानता है उनको शहीद मानने के बजाय वे उन लोगो को शहीद मानते हैं जिन्होंने कभी राष्ट्रहित के लिए कुछ नही किया। घल्लूघारा सप्ताह की घोषणा मानसिकता की उस पगडंडी की ओर ले जाती है जिसके सिरे पर राष्ट्र प्रेम नही, राष्ट्रद्रोह लिखा हुआ है।

श्री हरबंससिंह खेर अध्यक्ष

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल की एक बैठक २६ मई रविवार को सायं ५ बजे आर्य समाज, मालवीय नगर में हुई जिसमे दक्षिण दिल्ली की लगभग ५० आर्य समाजो के १०० के लगभग प्रतिनिधियो ने भाग लिया। बैठक मे वर्ष १९८४-८५ का विवरण आय-व्यय एवं अगले वर्ष का बजट स्वीकृत हुआ।

आर्य समाज के प्रसिद्ध समाज-सेवी श्री हरबंससिंह खेर को दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मडल का अध्यक्ष सर्व सम्मति से चुना गया। श्री खेर आर्यसमाज सफदर जंग के प्रधान हैं, सफदरजंग इन्क्लेव क्लब के अध्यक्ष है, महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट के प्रतिष्ठित सदस्य है, हिन्दू शुद्धि सभा के ट्रस्टी हैं। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक आर्य संस्थाओ के प्रतिष्ठित सदस्य हैं।

दिल्ली मे आर्य समाज का कोई भी कार्य हो, वह सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। वह कार्य चाहे सार्वदेशिक सभा, प्रादेशिक सभा, या प्रतिनिधि सभा द्वारा हो सबको अपना सहयोग देते हैं। १९८३ में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर में मनाई गई उसमे भी वे कई समितियों के संयोजक थे। दक्षिण दिल्ली वेदप्रचार मंडल उनके नेतृत्व मे प्रगति करेगा। बैठक में श्री रामशरणदास आर्य महामन्त्री निर्वाचित हुए जो पिछले कई वर्षों से मंडल के महामन्त्री चले आ रहे हैं।

महर्षि दयानंद और आर्यसमाज की पहचान

—श्री स्वामी विद्यानन्द सरस्वती—

शारीरिक बनावट में सबके एक जैसा होने पर भी प्रत्येक मनुष्य में कुछ ऐसी विलक्षणता होती है जिसके कारण वह अलग से पहचाना जाता है। पीछे से देखकर भी जब हम किसी को पहचानकर पुकार बैठते हैं, तो स्पष्ट है कि हमें उसमें कुछ ऐसा दीख पड़ता है जो औरों में नहीं होता।

दयानन्द की पहचान है? निश्चय ही उनका वैशिष्टय उस गुण के कारण माना जायेगा, जो और महापुरुषों में न पाया जाता हो। इसमे सन्देह नहीं कि उन्होने समाज सुधार के क्षेत्र में बड़ा सराहनीय कार्य किया। किन्तु यह कार्य तो अपने अपने ढ़ग पर कबीर, नानक, राममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर आदि अनेक महापुरुषों ने किया था। हिन्दी की वकालत स्वामी जी के प्राय: समकालीन भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, राजा लक्ष्मणसिंह, श्रद्धाराम फिल्लोरी आदि ने भी की थी, देश की स्वाधीनता के लिए तो न जाने कितने ही लोगो ने अपने जीवन खपा दिये। गीता, उपनिषद् रामायण, महाभारत, दर्शनों आदि के भी बड़े-बड़े आचार्य हुए, जिन्होने इन महान् ग्रन्थो के प्रचार द्वारा लोगों के जीवन को प्रभावित किया। इसलिए इसके कारण दयानन्द की पहचान नही बन पाती, हां, एक बात ऐसी अवश्य है जिसे पिछले हजारो वर्षो मे न पहले कभी कहा और न आज कोई महापुरुष कहता है और वह है—"वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" यदि ऋषि दयानन्द के जीवन मे से यह निकाल दिया जाय तो दयानन्द अन्य समाज सुधारकों में से एक हैं। इसलिए दयानन्द की पहचान उन बातों के कारण है जो उन्होने वेद के सम्बन्ध मे कहीं या कीं। उन्ही के कारण वे ऋषि कहाते हैं।

सन् १८७५ में जब महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की, तो उन्होंने लिखा—"इस समाज का मुख्य उद्देश्य यह है कि वेदविहित धर्म तत्त्व प्रत्येक सभासद मान्य करें और उनका प्रसार देश-विदेश मे करवाने का यथा शक्ति प्रयत्न करें।" स्पष्ट है कि आर्यसमाज की स्थापना महर्षि दयानन्द ने वेद के प्रचार व प्रसार के लिए की थी।

आर्यसमाज अपने आप में एक संगठन है। संगठन स्वयं में साध्य नहीं, साधन मात्र होता है। अनेक आर्यसमाजियो से मिल कर आर्यसमाज बनता है। आर्यसमाजी कौन होता है? वह जो आर्यसमाज के नियमों को स्वीकार करतया है। आर्यसमाज के १० नियम हैं। यदि केवल सात नियम होते—नियम ४ से १० तक—तो मुझे विश्वास है कि संसार के सभी ५ अरब मनुष्य आर्यसमाज के सस्दय बन जाते। ये ऐसे सार्वभौम नियम हैं कि जिनके मानने में किसी को आपत्ति नही हो सकती। यदि इन सात में पहला नियम जोड़ दिया जाये तो कुछ थोडे से अनीश्वरवादियों को छोड़ कर अन्य सभी—कम से कम साढ़े चार अरब—आर्यसमाज के सदस्य बनने के लिए तैयार हो जाते हम आर्यसमाजी तो 'सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका ही आदिमूल' परमेश्वर को मानते हैं। किन्तु अन्य ईश्वर विश्वासी तो हमसे भी आगे बढ़े हुए हैं। वे तो सत्यासत्य के झगड़े में न पड़ कर जो भी कुछ है सबका आदि मूल परमेश्वर को मानते हैं।

अब जरा दूसरे नियम को जोड़कर यदि नौ नियम कर दें तो भी विशेष अन्तर नही पड़ता है, कहा जा सकता है कि करोड़ों सनतान धर्मी तो नौवे नियम के अनुसार ईश्वर को निराकार या अजन्मा नहीं मानते। किन्तु वास्तव में वे भी ईश्वर को स्वरूप से तो निराकार ही मानते हैं। वे केवल कभी कभी आवश्यकता पड़ने पर उसका कुछ काल के लिए सकाय होना मानते हैं। परन्तु जैसे ही हम तीसरे नियम को जोड़ते हुए 'वेद' शब्द का उच्चारण करेंगे वैसे ही ईसाई, मुसलमान, सिख, यहूदी आदि अरबों लोग वैदिक बन जायेंगे, हां, सनातनधर्मी हमारे पास बने रहेंगे लेकिन जैसे ही हम थोड़ा सा आगे बढ़ कर कहेंगे—"वेद का पढ़ना पढ़ाना, सुनना सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है" वैसे ही उनमें से बहुत से खिसकने लगेंगे।

इस विवेचन से स्पष्ट है कि आर्यसमाज की पहचान भी वेद से है। काम तो और भी बहुत हैं किन्तु उनके करने वाले भी बहुत हैं। वेदसम्बन्धी कार्य ऐसा है जिसके करने वाला अन्य कोई नहीं है। इसलिये उसकी सारी शक्ति वेद पर लगनी चाहिये। आदरणीय डा० रामशंकर भट्टाचार्य के शब्द में "अब आर्यसमाज केवल एक ही उपाय से जीवत रह सकता है—वैदिक दृष्टि को यथावत् जानना, वैदिक नियमों का तत्त्वज्ञान प्राप्त करना तथा आधुनिक नवीन शिक्षित व्यक्तियों को यह सिखाना है कि वेद विद्या ही सारे वैयक्तिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन को सुखी एवं बलवान् बना सकती है। जब तक यह न दिखाया जायेगा आर्यसमाज का अपना वैशिष्टय कुछ नहीं रहेगा।" वेद आर्यसमाज की आत्मा है। उसके निकल जाने पर उसकी मृत्यु अवश्यंभावी है।

परन्तु आर्यसमाज अपने रास्ते से भटक गया है। वह एक आन्दोलन न रह कर संस्था बन कर रह गया है, जो हानि, विनाश और प्रलय का पर्याय है। अब उसका कार्य स्कूल और औषधालय खोलने, अकाल और बाढ़ पीड़ितों की सहायता करने, सिलाई सिखाने, जल्सों और जलूसों का आयोजन करने, राजनैतिक नेताओं की चाटुकारिता करने, और उन सब कामों को करने तक सीमित हो गया है जिनके करने से वाहवाही मिले, पैसा मिले और आर्य सभ्यता, संस्कृति, भाषा, वेषभूषा आदि का नाम तक मिट जाये। इन कार्यों की सफलता के लिए जिस प्रकार के लोगों की आवश्यकता होती है, वे भी आर्यसमाज पर छाये हुए हैं। जब वेद से विमुख हो गये तो वेदज्ञों की आवश्यकता ही क्या है? परिणामत: आर्यसमाज के संगठन के सभी स्तरों पर—स्थानीय समाजो से लेकर प्रान्तीय तथा सार्वदेशिक स्तर तक ऐसे लोग पदासीन हैं जो वेदादिशास्त्रों मे कृत. भूरिश्रम' की कौन कहे, हिन्दी भी भली प्रकार नहीं लिख पढ़ सकते। वेदादि के ज्ञाताओं के अविच्छिन्न रूप से बने रहने की आशा करना बेकार है। अब तो वैदिक विद्वान् अपनी सन्तान को वसीयत कर जाते हैं—यदि समाज में सम्मान पाना चाहाते हो तो पंसारी की दूकान कर लेना और चार पैसे चन्दा दे दिया करना या म्युनिसिपल कमेटी के मेम्बर बन जाना। आर्यसमाजें तुमसे यज्ञशालाओं के, समाज मन्दिरों के बड़े-बड़े उत्सवों का उद्घाटन करायेंगी, वेद पढ़ोगे तो कोई नहीं पूछेगा। अन्तत: वही होगा जो भगवान् मनु ने कहा है—

अपूज्या: यत्र पूज्यन्ते।
पूज्यानांतु व्यतिक्रम: ।।
त्रीणि तत्र भविष्यन्ति।
दुर्भिक्षं मरणं भयम् ।।

पता—डी-१४/१६, मॉडल टाउन, दिल्ली—९

आन्ध्र के आर्य विद्वान् पं० गोपदेव शास्त्री सम्मानित

पं० गोपदेव जी शास्त्री का जीवन आर्य समाज एवं आर्य शास्त्रों के प्रति समर्पित है। वे विगत ४० वर्ष से निरन्तर आर्य समाज की सेवा में संलग्न हैं। यद्यपि दर्शनशास्त्र उनका प्रमुख विषय है फिर भी उन्होंने अनेक विषयो पर लेखनी उठाई है। वे तेलगु के धाराप्रवाह वक्ता हैं।

शास्त्री जी का जन्म सन् १९०० में आंध्र प्रदेश के जिला गुंटूर के कुचिपुडि ग्राम में हुआ था। आरंभिक शिक्षा के उपरान्त उच्च शिक्षा के लिए शास्त्री जी को काशी विद्यापीठ और पोटोहार गुरुकुल में भेजा गया। स्नातक बनने के उपरान्त अपना जीवन उन्होंने समाज सेवा के लिए समर्पित कर दिया। जो दान-दक्षिणा उन्हें प्राप्त होती रही है उस धन से उन्होंने अपनी जन्मदात्री के नाम पर 'अम्बा दर्शन ग्रन्थ-माला' की स्थापना की और उसके अन्तर्गत अपने ग्रन्थों का प्रकाशन किया तथा आज भी निरन्तर कर रहे हैं। ये सारे प्रकाशित ग्रंथ आर्य समाज कुचिपुडि की सम्पत्ति हैं।

शास्त्री जी ने अब तक ४६ पुस्तकों का प्रणयन किया है जिनमें ३२ मूल तथा १४ अनुवाद हैं। इनकी कुछ कृतियों के एकाधिक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। शास्त्री जी ने जहां तेलगु में स्वामी जी का जीवन-चरित लिखा वहां सभी उपनिषदों और गीता का भाष्य भी किया है। आत्म-चरित लिखने के साथ-साथ उन्होंने 'ईसा-मसीह का रहस्य जीवन' भी लिखा है। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के तेलगु में अनुवाद को विद्वानों ने सराहा है। आंध्र-विश्वविद्यालय की ओर से मानद 'डाक्टरेट' की उपाधि प्रदान की गई है। इस प्रकार शास्त्री जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं।

१२ मई को सिकन्दराबाद के वार्षिकोत्सव के अवसर पर उन्हें श्री स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती ने शाल, नकद-राशि, प्रशस्ति-पत्र और स्वर्ण-पदक देकर सम्मानित किया। श्री क्षितीश वेदालंकार ने उन्हें निर्वाण शताब्दी पर प्रकाशित ऋषि स्मृति ग्रन्थ (कम्मेमोरेशन वाल्यूम) भेंट किया। अजमेर में निर्माण शताब्दी के अवसर पर जिन विद्वानों का सम्मान किया गया उनमें आपका नाम भी था। पर रोगाक्रान्त होने के कारण आप उस अवसर पर नहीं पहुंच सके थे।

परोपकारिणी सभा विषयक कुछ तथ्यों का स्पष्टीकरण

—डॉ० भवानीलाल भारतीय—
(संयुक्त मंत्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर)

आर्य जगत् के 12 मई के अंक में आचार्य विश्वश्रवा का लेख 'परोपकारिणी सभा के संरक्षण मे ऋषि दयानन्द का सामान' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। आचार्य विश्वश्रवा जी की सभा विषयक जानकारी—प्रशंसनीय है तथापि कुछ स्पष्टीकरण आवश्यक है। सभा के भूतपूर्व मंत्री तथा प्रसिद्ध लेखक दीवान बहादुर हरविलास सारडा ने स्वामी जी विषयक अपने सस्मरण दो ग्रन्थों मे लिखे हैं—(1) 1933 ई० मे ऋषि का निर्वाण अर्ध शताब्दी के अवसर पर प्रकाशित दयानन्द कम्मैमोरेशन वोल्यूम मे तथा (2) स्वामी जी की वृहद् अंग्रेजी जीवनी की भूमिका मे। दोनों मे कही उन्होने यह नही लिखा कि "महर्षि ने मेरे कधें पर हाथ रखकर कहा था कि बेटा, मेरे बाद मेरा काम संभालना।" शायद आचार्य जी की यह मन. कल्पना ही है कि उन्होने स्वामी जी के मुख से उपर्युक्त शब्द कहलवा दिये हैं। जिज्ञासु पाठक उपर्युक्त ग्रन्थों के प्रासंगिक स्थलों को देखे।

ग्रन्थों का संशोधन

अब बात आती है स्वामी जी के ग्रंथो के संशोधन की। यह तो सत्य है कि परोपकारिणी सभा ऋषि के ग्रन्थो की उत्तराधिकारिणी है, आज स्वामी जी के ग्रन्थों को शुद्ध तथा दोष मुक्त रीति से छपाना भी उसका ही कर्त्तव्य है। यह बात नहीं कि उसने अतीत मे ऐसा नही किया। 1890 ई० के अधिवेशन में सभा ने एक प्रस्ताव स्वीकार किया था जिसके अनुसार स्वामी विश्वेश्वरानन्द तथा ब्रह्मचारी नित्यानन्द से प्रार्थना की गई थी कि वे सत्यार्थ प्रकाश व संस्कार विधि की अशुद्धियो (मुद्रण जन्य अथवा लेखक प्रमाद जन्य) को लिखकर मंत्री को भेज दें। इससे पूर्व 1887 ई० के अधिवेशन में पं० लेखराम ने स्वयं उपस्थित होकर सत्यार्थप्रकाश मे मुद्रण की भूलो तथा ग्रथों के प्रमाण देने में हुए व्यतिक्रम की ओर सभासदों का ध्यान आकृष्ट किया था। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर 1895 ई० के अधिवेशन में प्रस्ताव संख्या 15 के आधार पर सभा मंत्री को आदेश दिया गया कि वह सत्यार्थप्रकाश की भूलो तथा उद्धरणों में निर्दिष्ट असावधानियो की जानकारी प्राप्त करे तथा इस सम्बन्ध में पं० लेखराम से भी पत्राचार करे ताकि एतद् विषयक उचित कार्यवाही की जा सके। (द्रष्टव्य —परोपकारिणी सभा के अधिवेशनों की रिपोटों का संग्रह पृ० 141) अतः विश्वश्रवा जी का यह कहना कोई अर्थ नहीं रखता कि सभा को स्वामी जी के ग्रन्थों के सुधार व परिष्कार का कोई अधिकार नहीं है।

अभी कुछ वर्ष पूर्व ही सभा ने सत्यार्थप्रकाश के पाठ निर्धारण के लिए विद्वानों की एक समिति गठित की थी तथा इस समिति के तत्वावधान में ही सत्यार्थप्रकाश के उपलब्ध हस्तलेखो के आधार पर वास्तविक पाठों का निर्धारण किया गया था। तब से अब तक प्रकाशित सस्करण इसी संशोधन के आधार पर छापे जा रहे हैं। आचार्य जी का यह लिखना तो आत्मवंचना मात्र है कि वे स्वामी जी के ग्रन्थो मे कोई भूल नही मानते। आर्य समाज के विद्वानो तथा शोधकर्ताओ के समक्ष व्यक्तिगत वार्तालाप मे वे प्रायः इस आशय के विपरीत बात ही कहा करते हैं। हा यह अवश्य है कि लेखो मे और मंच से वे यह दुहाई बराबर देते रहे हैं कि वे स्वामी जी के लेख मे बिन्दु, विसर्ग, मात्रा तक की भूल नहीं मानते और ऐसा मानने वालो को प्रायः ललकारते भी है।

अब स्वामी जी के पाच प्रकार के सामानों पर आइए यह सत्य है कि परोपकारिणी सभा के पुस्तक सग्रह मे अनेक दुर्लभ ग्रंथ भी है जो उन्हे भेटरूप मे मिले थे—यथा पादरियों द्वारा भेट की गई बाइबिल की पुरानी प्रतिया, बम्बई के सेठ मथुरादास लवजी द्वारा भेंट अमेरिका मे मुद्रित अथर्ववेद संहिता आदि। इस संग्रहालय मे जैन मत के वे दुर्लभ ग्रथ भी हैं जिन्हे आधार बनाकर स्वामी जी ने जैन मत की आलोचना की थी। यहा वल्लभाचार्य मत की आलोचना मे लिखी तथा इस सम्प्रदाय के महाराजो (मठाधीश गोस्वामियों) के दुराचारो का भण्डाफोड़ करने वाली वे गुजराती पुस्तकें भी हैं जो स्वामी जी के प्रथम बम्बई प्रवास के समय उनके अनुयायी भाटिया सेठ लक्ष्मीदास खीमजी ने उन्हें दी थी। यह सत्य है कि सभा के पुस्तकालय को बहुत प्रयत्न करने पर भी व्यवस्थित नही किया जा सका है। जब मैं अजमेर था तो मैंने सभी पुस्तको को विषयानुक्रम से रजिस्टर में अंकित करने का प्रयास किया था। तथापि समयाभाव के कारण मैं इस कार्य को पूर्ण नहीं कर सका। परन्तु स्वामी जी के ग्रन्थों के प्रायः सभी संस्करण सभा के पुस्तकालय मे पूर्णतया सुरक्षित हैं।

हस्तलेखों की सुरक्षा

अब हस्तलेखों की बात करें। स्वामी जी के ग्रन्थों के सभी लेख पूर्ण व्यवस्थित ढंग से रजिस्टर मे अंकित क्रम से पृथक् पृथक् लौह मंजूषाओं में सुरक्षित हैं। अपने अजमेर प्रवास काल के समय मैं स्वयं एकाधिक बार सभा के कर्मचारियों के साथ इन्हे माइक्रोफिल्मिंग तथा पटलीकरण के लिए दिल्ली के राष्ट्रीय अभिलेखागार में ले गया हूं तथा वहां से सुरक्षित लौटा कर इन हस्तलेखो को यथास्थान रखवाया भी है। यह अलग बात है कि हस्तलेखो की सूचिया भी यदि दुबारा बनाई जाये तो शोधकर्त्ताओ को उन्हे देखने मे अधिक सुविधा होगी। परोपकारिणी सभा मे अनुसंधान विभाग खुले इसमे तो दो राय हो ही नही सकती किन्तु तब तक शोधार्थियों को स्वामी जी के हस्तलेख देखने और प्रतिलिपि करने की सुविधा न मिले, इससे सहमत होना कठिन है।

ऋषि का पत्र व्यवहार

आचार्य जी के कुछ विचार बड़े अनोखे हैं। वे ऋषि के पत्र व्यवहार को प्रकाशित करने के विरोधी रहे है। उनका यह विचार असगत माना जाएगा उन्हे यह पता नही कि स्वामी जी के पत्र व्यवहार के प्रकाशित होने से उनके जीवन पर किस प्रकार नवीन प्रकाश पडा है तथा उनके जीवन की अनेक ग्रन्थियो को सुलझाने मे सहायता मिली है। पत्र व्यवहार के प्रकाशन के अनिष्टो को आचार्य जी ने इस प्रकार गिनाया है—

उनके अनुसार विद्वानो का एक वर्ग ऐसा है जो वेद भाष्य की आर्य भाषा (हिंदी) को पण्डितो की बनाई मानता है स्वामी जी की नही। अब आचार्य जी को कौन समझाये कि वेद भाष्य की आर्य भाषा का प्रश्न भावना का नही, तथ्यो का है। वेद भाष्य की हिंदी के कारण शोधकर्ताओ को जो कठिनाईआती है उसे भुक्तभोगी ही समझता है। मेरे विभाग के दो शोधकर्ताओ ने निम्न विषयो पर पी एच. डी. हेतु कार्य सम्पन्न किया है—

डा० वेदपाल ने "दयानन्दीय यजुर्वेद भाष्य का शतपथ ब्राह्मण से तुलनात्मक अध्ययन" तथा डा० श्रीमती वसुंधरा रिछारिया ने "दयानन्दीय यजुर्वेद भाष्य में देवता तत्व का विवेचन"। इन दोनों शोधार्थियो के समक्ष वेद भाष्य की आर्य भाषा की अस्पष्टता के कारण जो कठिनाइया आई है, उन्हें ये ही जानते हैं। केवल व्याख्यान मचो से ही वेद भाष्य की आर्य भाषा को स्वामी जी की भाषा कहने वाले लोग इन कठिनाइयो को नही समझेंगे।

वेद भाष्य की हिंदी

मैंने एकाधिक बार इस तथ्य को सिद्ध करने के लिये प्रमाण दिये हैं कि वेद भाष्य का सस्कृत भाग ही दयानन्द प्रणीत है और उसका आर्य भाषानुवाद वेतन भोगी पण्डितो द्वारा किया गया है। किन्तु ऐतिहासिक साक्ष्यो की अवहेलना करने के अतिरिक्त आचार्य जी ने अपनी बात की पुष्टि मे कोई प्रमाण नही दिया जिससे यह सिद्ध हो सके कि वेद भाष्य की भाषा भी स्वामी दयानन्द निर्मित ही है। स्वामी दयानन्द के ग्रन्थो का एक सामान्य पाठक भी जानता है कि सत्यार्थप्रकाश की हिन्दी तथा वेद भाष्य में प्रयुक्त हिन्दी मे जमीन आसमान का अन्तर है। सत्यप्रकाश की हिन्दी जहा स्पष्ट, प्रवाह युक्त तथा प्रसाद गुण युक्त है वहा वेद भाष्य की हिन्दी अस्पष्ट, प्रवाह रहित तथा जटिल है। इस पर भी वेद भाष्य की आर्य भाषा को दयानन्द प्रणीत कहना दुराग्रह की पराकाष्ठा है। अपनी बात की पुष्टि मे परोपकारिणी सभा की प्रथम बैठक, जो स्वामी जी के निधन के ठीक दो मास पश्चात ही मेयो कालेज, अजमेर मे मेवाड दरबार की कोठी मे 28 दिसम्बर 1883 को हुई थी, उसके प्रस्ताव संख्या पाच को यहा उद्धत करता हू—"एक पत्र इस विषय का पढ़ा गया कि स्वर्गवासी स्वामी जी ऋग् और यजुर्वेद का कौन कौन सा भाग समाप्त और असमाप्त छोड गये हैं। प्रतीत होता है कि यजुर्वेद का समग्र और ऋग्वेद का सप्तम मण्डल तक भाष्य स्वामी जी पूर्ण कर गये है। सब की सम्मति से यह स्वीकृत हुआ कि प० ज्वालादत्त प्रूफ शोधने तथा सस्कृत भाष्य का हिन्दी में अनुवाद करने के कार्य पर नियुक्त किये जायें, और प्रति व्यक्ति को 25 रुपए मासिक वेतन मिले।"

सभा के इस प्रस्ताव से स्पष्ट है कि दोनो पण्डितो के जिम्मे ही वेद भ ाष्य की सस्कृत को हिन्दी मे अनूदित क .. का कार्य सौपा गया था। वर्षों पूर्व जब मैने यही बात परोपकारिणी सभा के तत्कालीन सदस्य प० श्याम जी कृष्ण वर्मा तथा स्वामी श्रद्धानन्द की साक्षी से टंकारा पत्रिका मे लिखी थी तो आचार्य जी ने कोई युक्ति युक्त उत्तर न देकर यही लिख दिया था कि स्वामीजी के वेद भाष्य को समझने की सामर्थ्य उन्हे छोड़ कर किसी मे नही है। किन्तु सचाई पर पर्दा डालना कठिन है। जब सभा स्वय ही वेतन देकर पण्डितो से भाषार्थ करा रही है तो वेद भाष्य की हिन्दी को स्वामी जी को बताना कहा तक उचित है?

इसी प्रसंग मे आचार्य जी मेरे द्वारा प्रेषित उस लेख का भी संकेत करते हैं जो मैंने वेदवाणी में प्रकाशित कराया था। वह लेख तो महात्मा मुन्शीराम जिज्ञासु कृत ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के उर्दू अनुवाद की भूमिका का एक अंश था। यदि इस लेख मे महात्मा मुन्शीराम ने पचमहायज्ञ विधि की आर्य भाषा के

(शेष पृष्ठ 9 पर)

साहित्य समीक्षा

आचार्य महीधर और महर्षि दयानन्द

—ले० डा० प्रशस्यमित्र शास्त्री,—

आचार्य महीधर और महर्षि दयानन्द का माध्यंदिन भाष्य
प्रकाशक-अक्षयवट प्रकाशन, २६ बलरामपुर हाऊस, इलाहाबाद, पृ० सख्या २४८, मूल्य साठ रुपये।

शुक्ल यजुर्वेद (माध्यन्दिन शाखा) पर जो भी उपलब्ध साहित्य है, उसमें महीधर और उव्वट के भाष्य और महर्षि दयानन्द का अभूतपूर्व प्रयास ये दो ही परम उल्लेखनीय हैं। परम्परा की दृष्टि से महीधर के भाष्य की अवहेलना नही की जा सकती, किन्तु आज के युग में यदि यजुर्वेद के द्वारा मानवता को अनुप्राणित करना हो, तो दयानन्द की आस्थाओं को छोड़कर और कोई आलोक देने वाला मार्ग नहीं है। महीधर की प्रक्रियाओं को समझना है, तो शतपथ ब्राह्मण और कातीय श्रौतसूत्र को छोड़ा नहीं जा सकता। इनकी प्रक्रियाओं का इतिहास कितना ही पुराना क्यो न हो, उनको यजुर्वेद के साथ सम्बद्ध कर लिया जाय, तो आज के जनजीवन में यजुर्वेद का कोई मूल्य नही रह जाता।

यदि इस दृष्टि से हम मूल्यांकन करें, तो दयानन्द के ऋषित्व के समक्ष महीधर का उद्भट आचार्यत्व फीका पड़ जाता है। महीधर के आचार्यत्व में अथवा उसके पाण्डित्य में किसी को भी सन्देह नहीं हो सकता। शतपथ ब्राह्मण के समय से ही प्रसूत समस्त याज्ञिक कर्मों की परम्परा महीधर के पाण्डित्य की पुष्टि करती है—यह समस्त समर्थन ही महीधर के भाष्य का सम्बल है, किन्तु फिर समस्त यजुर्वेद आज के युग में निरर्थक भार के रूप में साहित्य का केवल तिरस्करणीय या उपेक्षित अंग बनकर रह जायगा। वेद के जिस ज्ञान से हम जनता को आलोकित करना चाहते हैं, वह थोथी-सी कल्पना ही रह जायगी, डा० प्रशस्यमित्र शास्त्री के इस आलोचना ग्रन्थ को पढ़ते समय ऋषि दयानन्द और महीधर के इन दोनों सर्वथा भिन्न दृष्टिकोणों को सामने रखना चाहिए। प्रशस्यमित्र जी के ग्रन्थ का मैं इस दृष्टि से स्वागत करता हूं। महीधर की दृष्टि से उन्होने दयानन्द की विवेचना की। निश्चय है कि गत दो तीन सहस्र वर्षों से चली आयी परम्परा दयानन्द के विरुद्ध ठहरती है, महीधर के पक्ष की पुष्टि करती है। किन्तु याज्ञिक परम्परा के अतिरिक्त एक पुरानी और भी परम्परा है, जो वैदिक संहिताओं में आस्तिकता की भावना रहती है, और उसके शाश्वत मानव मूल्यों में (यथेमां वाचं कल्याणीम्) विश्वास करती है, उस परम्परा को फिर से गौरवान्वित करने वालों में दयानन्द का स्थान युगों तक शीर्षस्थ बना रहेगा।

प्रशस्यमित्र जी ठीक कहते हैं, कि दयानन्द का भाष्य परम्परागत मापदण्ड से 'भाष्य' नहीं है, टिप्पणियां मात्र है, वेदार्थकोष है। बहुधा पढ़ने वालों को ऐसी विकट स्थिति में लाकर छोड़ देना है कि वे निराश हो जाते हैं। पर यदि वे इन टिप्पणियों, या वेदार्थकोष को लेकर स्वत: विचार करें, तो उन्हें उचित दिशा अवश्य मिल जायगी।

विश्वविद्यालयों के शोध-प्रबन्धों की अपनी एक शैलो होती है। प्रस्तुत ग्रन्थ भी उसी शैली में है। शोध-प्रबन्ध के लेखक को कभी भी किसी विषय के साङ्गोपाङ्ग विवेचन का अवसर नहीं मिलता है। शोध शास्त्र आदर का भाव रखते हुए अपने सीमित क्षेत्र में कुछ सामग्री प्रस्तुत करने की चेष्टा करता है। उत्तरवर्ती छात्रों से अपेक्षा की जाती है, कि वे पूर्ववर्ती की सामग्री की सहायता लेकर विषय का और अधिक गहन अध्ययन करें। इसी सम्यक् दृष्टि से प्रशस्यमित्र जी ने आचार्य महीधर को और ऋषि दयानन्द दोनों को आंकना चाहा है।

समस्त शोध-प्रबन्ध को आठ अध्यायों में विभाजित किया है—(१) दयानन्द और महीधर परिचय और जीवन वृत्त, (२) वेदों का रचनाकाल, संज्ञा, ऋषि, देवता, (३) स्वर-छन्द, (४) विविध वेदार्थ प्रक्रियायें, (५) मन्त्रार्थी का तुलनात्मक अध्ययन, (६) इतिहास-आख्यान, (७) स्वर और व्याकरण प्रक्रिया (८) दयानन्द की दृष्टि में महीधर।

महीधर और दयानन्द दोनों ही वेदों को अपौरुषेय और सृष्टि के आदि में बना मानते हैं। स्वामी दयानन्द परमात्मा से (अर्थात् यज्ञ से) [तस्माद् यज्ञात् ३१।७] वेदों की उत्पत्ति मानते हैं—यज्ञ का अर्थ स्वामी दयानन्द परमेश्वर करते हैं। महीधर लिखता है—'ऋग्यजुःसांमभिश्छन्दोभिश्च बिना यज्ञ न सिध्यन्ति'। इस वाक्य में महीधर वेद और यज्ञ के सम्बन्ध में दूरस्थ सम्बन्ध ही स्थापित करता है। उवट अधिक स्पष्ट है—एवमात्मयज्ञे प्रणवेन दीपिते स्वयमेवज्ञानादधिष्ठितानि भवन्ति'—आत्मयज्ञ में प्रणव द्वारा उद्भूत प्रकाश के माध्यम से ऋषियों के हृदयों में वेदज्ञान का प्रस्फुरण हुआ।

लेखक ने सभी बातों पर तुलनात्मक सामग्री अपने ग्रन्थ में इकट्ठी की है। महीधर क्या मानते हैं, और दयानन्द क्या मानते हैं, दोनों को यथा-रूप समझने में इस तुलनात्मक सामग्री से यथेष्ट सहायता मिलेगी। यह स्मरण रखना चाहिए कि यास्क की निरुक्तियो का दोनों भाष्यकारों ने यथासम्भव आश्रय लिया है। (यद्यपि यास्काचार्य अधिकतर ऋग्वेद तक ही अपने को सीमित रखते हैं) विनियोगों की दृष्टि से महीधर ने सूत्रों और शतपथ ब्राह्मण का आधार लिया है। स्वामी दयानन्द ने कातीय सूत्रों के विनियोगों को 'वेद भाष्य' में कहीं स्वीकार नहीं किया है। शतपथ ब्राह्मण के आधार पर शब्दों का निर्वाचन अवश्य किया है, जो कहीं समीचीन भी नहीं प्रतीत होता—(यज्ञो वै संवत्सरः। यज्ञो वै विष्णुः। यज्ञो वै पुरुषः। यज्ञो वै प्रजापतिः। आदि वाक्यों को देखकर यज्ञ = प्रजापति = पुरुष = विष्णु — सब पर्यायवाची शब्द मान लिए जावें)। ऋषि दयानन्द ने शतपथ के विनियोगों को वेदभाष्य में स्वीकारा नहीं है। किन्तु इन ग्रन्थों को नकारा भी नहीं। कर्मकाण्ड परक वे अर्थ करते तो शायद अनेक स्थलों पर इन ग्रन्थों के विनियोगों को वे स्वीकार भी करते (जैसे 'संस्कार-विधि में स्वामी दयानन्द ने गृह्यसूत्रों में दिये गए वेदमंत्रों को विनियोग के रूप में स्वीकार भी किया है। (जैसे अन्नप्राशन संस्कार अन्नपते ऽन्नस्य नो देहि-११।८३ को अन्नप्राशन के संबंध में, और भद्रं कर्णेभिः—को कर्णवेध के प्रकरण में)। स्वामी दयानन्द ने देवयज्ञ से लेकर अश्वमेध पर्यन्त यज्ञों की मान्यता स्वीकार की है। यदि वे दर्शपूर्ण मास, अग्निष्टोम, वाजपेय, सौत्रामणि, अश्वमेध, पुरुषमेध आदि यज्ञ-कर्मों की कोई विधि रचते, तो संभवतया वे भी यजुर्वेद के मंत्रों का इन यज्ञों में अपनी दृष्टि के अनुसार विनियोग करते। हां, उनके विनियोगों में पशुबलि और महीधर द्वारा प्रयुक्त परम्परागत यज्ञ-सम्बन्धी कतिपय अनैतिकताओं का दूषित समावेश न होता।

स्वामी दयानन्द का वर्तमान वेदभाष्य इसी दृष्टि से अधिक श्रेयस्कर है। उनके भाष्य से जीवन को प्रेरणा मिलती है। संसार में पुरुषार्थ की आवश्यकता है। यही नहीं, मानव के लिए आचार्य महीधर के भाष्य का कोई भी मूल्य नहीं है। स्वामी दयानन्द का ऋषित्व इसी में है कि वे पाणिनि और पतंजलि को, कात्यायन के सर्वानुक्रम सूत्रों को नकारते भी नहीं हैं, किन्तु उनको सर्वत्र और सर्वथा अपना आधार भी नहीं बनाते। इसीलिए कहीं-कहीं उनके निर्वचनों में और परम्परागत निर्वचनों में भेद भी मिलता है। कहीं-कहीं महीधर के निर्वचन इस दृष्टि से अधिक शास्त्रीय प्रतीत होंगे, किन्तु महर्षि दयानन्द के भूल से नहीं, सोद्देश्य परम्परागत निर्वचनों से भिन्न निर्वचन किये हैं।

लेखक ने इस प्रकार के अनेक स्थलों की ओर संकेत किया है। हमें लेखक का इसके लिए ऋणी होना चाहिए। देवता, ऋषि, छन्द और स्वरों को स्वामी दयानन्द ने पूर्ण मान्यता दी है, और महीधर ने भी, पर दोनो ने अपनी-अपनी बारी पर अनेक स्थलों पर इनकी अवहेलना भी की है। यजुर्वेद के भाष्य में स्वामी दयानन्द काण्डिका को ही पूरा मंत्रमानते हैं, पर कतिपय अन्य आचार्य कहीं-कहीं एक-एक कण्डिका के अन्तर्गत कई मंत्रों का होना स्वीकार भी करते हैं जैसे इषे त्वा (१) ऊर्जेत्व (२), वायवस्थ (३) इस प्रकार इस एक काण्डिका में ५ मंत्र माने गए हैं। पूरी काण्डिका में ८० अक्षर हैं।) स्वामी दयानन्द ने अपने भाष्य में पूरी कण्डिका को एक मंत्र मानकर अर्थ किया है। किन्तु छन्दों का निर्देश करते समय उन्होंने पूरे मंत्र को दो भागों में विभक्त किया—३८ अक्षरों का स्वराट् बृहती, और फिर ४८ अक्षरों का ब्राह्मी उष्णिक्। स्वामी दयानन्द ने अक्षरों की गिनती के अनुसार सभी मंत्रों के छन्द दिए हैं (चाहे वे ऋचायें हों, या यजूंषि), पर महीधर ने छन्दों के नाम वही दिए हैं जिनका छन्द यजुः सर्वानुक्रम सूत्र में दिया गया है।

मंत्रार्थ करते समय छन्द, और स्वर दोनों पर विचार रखना चाहिए (विशेषतया स्वरों पर), पर दयानन्द और महीधर दोनों ने अनेक स्थानों पर स्वरों की चिन्ता नहीं की। मंत्रों के अर्थों के लिए छन्दों का ज्ञान

(शेष पृष्ठ ९ पर)

क्या योग विद्या गरीबों के लिए भी है ?

—डा० स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती—

योग विद्या भारतीय संस्कृति की सर्वोपरि प्रख्यात विद्या है। वैदिक काल से ही इसका उत्कृष्ट रूप जनमानस को प्रभावित कर समुन्नत करता रहा है। परन्तु महाभारत काल के पश्चात् योग विद्या से अवैदिक स्वरूपों की अनेक धारायें निकलीं। कुछ धारायें जन-मानस की अन्तः एवं बाह्य वृत्तियों को शान्त करती हैं, उन्हीं में से किसी-किसी धारा में पड़कर साधक नितांत भ्रमित हो जाता है। परन्तु सच्चे योगाभ्यासी को शारीरिक मानसिक तथा आत्मिक विकास का लाभ अवश्य प्राप्त होता है। इसी शाश्वत उपयोगिता के कारण योग की इस भौतिकवादी युग में लोक-प्रियता बढ़ती जा रही है।

पाश्चात्य देशों में इसके प्रति रुचि अधिक प्रतीत होती है। इसी विद्या में प्रवीणता के कारण भारत संसार का आज भी गुरु है। जब से पाश्चात्य देशों में इस विद्या के प्रति आकर्षण हुआ है तब से भौतिकवादी जीवन जीने वाले भारत के लोगों में भी इसके प्रति लगाव अधिक प्रतीत होता है। देश के महानगरों तथा नगरों में आराम का जीवन व्यतीत करने वालों में योग के प्रति रुचि अधिक बढ़ती जा रही है। जो नर-नारी दिन में सारे समय बठे-बैठे जीविकोपार्जन के साधनों में लगे रहते हैं, वे शरीर की निष्क्रियता के कारण अनेक रोगों के शिकार बनते हैं। इन रोगों से मुक्त होने का सरलतम तथा अन्तिम उपाय, योग के अंगों का प्रतिदिन पालन करना ही है। आज तो वैद्य और डाक्टर भी असाध्य रोगों में यौगिक क्रियायें करने का परामर्श देते हैं। इन्हीं कारणों से योग नगरों के अनेक परिवारों में विशेषों लोकप्रिय हो रहा है।

इसके विपरीत भारत के अशिक्षित गरीब तथा पाखण्ड पूर्ण रूढ़ियों में फंसे व्यक्तियों में या ग्रामों में तथा आदिवासियों में योग विद्या की लोकप्रियता नहीं के बराबर है। इस स्थिति को देखकर हमारे प्रबुद्ध चिन्तक, साधक तथा नेता प्रश्न करते हैं कि "क्या योग गरीबों के लिए भी है ?"

प्रस्तुत प्रश्न के प्रत्युत्तर में हमारा समाधान है कि केवल शारीरिक रोगों से मुक्त रहने के लिए या शारीरिक शक्ति को विकसित करना योग का नितान्त सामान्य उपयोग है। वास्तविकरूप से चित्त-वृत्तियों को एकाग्र करके आत्मिक विकास करना तथा आत्मस्वरूप के बाद परमात्मस्वरूप में अवस्थित होने का प्रयत्न करना ही योग का प्रमुख उद्देश्य है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए जिन साधनों की आवश्यकता है, उन साधनों की याचना विज्ञान काण्ड के प्रतिपादक अथर्ववेद में स्पष्ट रूप से विस्तार पूर्वक की गई है।

योग के लिए तत्पर एक योगाभिलाषी प्रारम्भ में जगन्नियन्ता, आराध्य देव, परमात्मा से तारस्वर में प्रार्थना करता है—

अष्टा विंशानि शग्मानि,
सहयोगं भजन्तु मे।
योगं प्रपद्ये क्षेमञ्च,
क्षेमं प्रपद्ये योगञ्च।
नमो होरात्राभ्यामस्तु ॥
अथर्व०

अर्थात्—हे पूजनीय सविता देव ! मैं आपसे मिलने वाली अहर्निश कल्याणकारी अभिप्रेरक प्रेरणाओं से प्रेरित हो, आपकी प्राप्ति के लिए योग का अनुष्ठान प्रारम्भ करने के लिए तत्पर हो रहा हूं। मेरे योग में सहायक (अष्टाविंशानि) अठ्ठाईस (शग्मानि) सुखकारी साधन—१० प्राण—१० इन्द्रियाँ मन — बुद्धि — चित्त — अहंकार, शरीर—बल —विद्या — स्वभाव — (सहयोगं भजन्तु) इनके साथ में योग का सेवन करूं, ये साधन मेरे सहायक हों। जिससे मैं (योगं प्रपद्ये) योग को विधिवत प्राप्त कर सकूं। उस प्राप्त किए हुए योग के द्वारा (क्षेमञ्च) अपनी एवं संसार की यथाशक्ति रक्षा कर सकूं। उन रक्षित साधनों से आगे भी—(क्षेमं प्रपद्ये योगं च) योग की साधना—उपासना यावज्जीवन करता रहूं। इसी उपास्य ब्रह्मन् (नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु) प्रातः सायं सन्धि बेला में हम आपको श्रद्धा और भक्ति से विशेष नमस्कार करते हैं।

योगसिद्धि में परम सहायक सम्पूर्ण साधनों का उल्लेख उक्त मन्त्र में बड़ी दूरदर्शिता से किया गया है। इन साधनों में भौतिक—बाह्य साधनों ने—भूमि—भवन, वाहन या धन-सम्पत्ति की याचना नहीं की गयी है। इससे सिद्ध होता है कि योग का धन के होने न होने से कोई सम्बन्ध नहीं। योग का सम्बन्ध तो अन्तःकरण की शुद्धि से है तथा संस्कारों एवं वासनाओं की परिसमाप्ति से है।

गरीब कौन है ?

आज की परिभाषा में गरीब वह कहा जाता है, जिनके पास रोटी-कपड़ा और मकान की कमी हो। जीवन को सुखी रखने वाले इन साधनों में से कोई ऐसा नहीं जो परमात्मा की केवल स्तुति—प्रार्थना या उपासना से मिलने वाला हो। ईश्वर ने मानव शरीर में विभिन्न प्रकार की क्षमताएँ तथा बुद्धि का संयोग दिया है, जिसको विद्या विज्ञान तथा योग से बढ़ाकर मानव सुख के सभी साधनों को प्राप्त करके मुक्ति के आनन्द की भी प्राप्ति कर सकता है।

वास्तव में गरीब वही है, जो आलसी-प्रमादी होकर अपने कर्त्तव्य से गिर जाता है या सामाजिक और राजनैतिक नियमों में उलझ कर निर्धन हो गया है। इसी प्रकार बुद्धि या विवेक से रहित व्यक्ति भी गरीब की कोटि में आता है।

योग के अनुसार जीवन चलाने से परमात्मा उसकी आत्मा मे विशेष प्रकार की सहन शक्ति, प्रबलता और वाणी मे अमोघ शक्ति प्रदान करता है जिससे वह व्यक्ति सामान्य जीवन जीते हुए भी समाज में विशेष क्रान्ति पैदा करके राजनैतिक शक्ति को भी अपने अनुकूल बना लेता है। फिर वह गरीब कैसा ? इसके विपरीत धन-सम्पत्ति से परिपूर्ण तथा विशिष्ट पदों पर स्थित होकर भी दुर्व्यसनो में फंसा हुआ है, वह गरीब है, दया के योग्य है।

योग के अनुष्ठान से शारीरिक शुद्धि, आरोग्य तथा सात्विकता प्राप्त होती है, जिससे साधक साधारण भोगी व्यक्ति की अपेक्षा शतगुणी—शक्ति से सम्पन्न होकर कार्य करने में समर्थ हो जाता है। इसी कारण थोड़े समय में ही वह पर्याप्त कार्य करने में सक्षम होता है।

योग से नैतिक उन्नति

योग के आचरण से मानसिक वृत्तियाँ शान्त एवं निरुद्ध होकर प्राप्तव्य लक्ष्य की ओर ही अग्रसर होती हैं। प्रज्ञा-विवेक के उदय से योगी चिन्त्य विषय का सफल चिन्तन कर लेता है। वह किंकर्त्तव्य विमूढ़ नहीं होता। साधक यौगिक शक्ति का सहयोग जिस कार्य में करता है उसी में अनायास सफलता प्राप्त करता है। यह प्रयोक्ता पर निर्भर करता है कि वह प्राप्त हुई मानसिक शक्ति का प्रयोग ब्रह्म-चिन्तन में करता है, या सासारिक ऐश्वर्यों की प्राप्ति में। इतना निश्चय है कि मानसिक तन्मयता कर्म की सफलता में परम सहायक है।

प्रेय एवं श्रेयमार्ग

संसार में जो व्यक्ति खाने-पीने तथा भोग विलास का सामान इकट्ठा करने में ही अपने लक्ष्य की इतिश्री समझते हैं, शास्त्रों में ऐसे भौतिकवादियों को प्रेयमार्ग का पथिक बताया है। दूसरे जन जीवित रहने के लिए भौतिक साधनों का प्रयोग करते हुए भी सदैव आध्यात्मिक विषयों को महत्व देते हैं अर्थात् ब्रह्मसाक्षात्कार को अपना लक्ष्य बनाते हैं। वे श्रेयमार्गानुगामी होते हैं।

श्रेयमार्ग का पथिक भौतिक साधनों को प्राप्त कर उनसे उच्च लक्ष्य के लिये लाभ लेता है। परन्तु प्रेय मार्ग का पथिक केवल भौतिक साधनो में ही जीवन समाप्त कर देता है। भौतिक तृष्णा किसी की आज तक पूरी नहा हुई अतः उन्हीं वासनाओं के कारण प्रेयमार्गी संसार के जन्म मरण चक्र में बार-बार फंसता रहता है।

ऋतम्भरा बुद्धि

योगाभिलाषी साधक की परिपक्वावस्था में ऋतम्भरा प्रज्ञा का उदय होता है। ऐसी बुद्धि से साधक सत्य एव यथार्थ का ही स्वाकार करता है, असत्य-अयथार्थ को स्वीकार नहीं करता। इससे शक्ति, समय, सम्पत्ति का दुरुपयोग नही होने देता, और सामान्य जनों से वह आगे निकल जाता है।

विज्ञान के सफल प्रयोगों से विभिन्न प्रकार के अन्वेषण करके वैज्ञानिक मानव जाति को सम्पन्न एवं सुखी बनाने में सहायक होता है। सफल साधक भी अपनो साधना के प्रभाव से समाज में नैतिकता का प्रसार करता है जिससे युवक-युवतियां तथा प्रौढ़ और वृद्ध सभी पवित्र कार्यों की धार में पड़कर अपने जीवन को सफल बनाते हैं तथा सन्तति के लिए आदर्श बन जाते हैं। इसके विरुद्ध असमाहित-वृत्तियों वाला अश्लील चिन्तन तथा पापमय कार्यों से अपना तथा समाज का नैतिक पतन करता है और समाज में कुवासनाओं का पर्वत खड़ा करता है। ऐसा दरिद्र समाज के लिए भाररूप है।

आत्मिक बल का महत्त्व

योगमयचर्या के कारण जब साधक आत्मसमर्पण की भावना से अपने आत्म स्वरूप को प्रबुद्ध कर लेता है तब वह सामान्य शारीरिक शक्ति रखते हुए भी अपने आत्मिक बल से बड़े-बड़े सम्राटों को अनैतिकता या अन्याय के अवसर पर फटकार देता है। अन्यायी आततायी शासक के सामने अमोघ वाणी से प्रबलतर प्रभाव छोड़कर संघर्ष में वह कभी पीछे कदम नहीं हटाया। महर्षि दयानन्द, अरविन्द, सुकरात जैसे अनेक योगी देश विदेश में हो चुके हैं जिन्होंने अपनी आत्मिक शक्ति से अन्यायियों को नीचा दिखाया है। (शेष पृष्ठ १० पर)

पत्रों के दर्पण में

पत्र का सही उत्तर

आपने सर्वप्रिय साप्ताहिक आर्य जगत् के १२ मई ८५ के अंक में सार्वदेशिक सभा के प्रधान के नाम लिखे गये श्री जयदयाल डालमिया के पत्र के प्रत्युत्तर में नपे-तुले शब्दों में जिस प्रकार आर्य समाज के दृष्टिकोण का प्रतिपादन किया है; उसे पढ़कर मुझे महर्षि दयानन्द एवं उनके बाद आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वान् पं० रामचन्द्र देहलवी की अद्भुत तर्क शैली का स्मरण हो आया जिससे वे अवैदिक मतों के तथा-कथित धुरंधर विद्वानों के तर्कों को कुछ ऐसी विलक्षणता से काट कर रख देते थे कि विपक्षी हतप्रभ रह जाते थे और श्रोता वाह-वाह कर उठते थे। आशा है आपके तर्कों को हृदयंगम करते हुए श्री जयदयाल डालमिया आर्य समाज के दृष्टिकोण से सहमत होकर हिन्दू धर्म के अनेकानेक मतावलंबियो मे व्याप्त अंधविश्वासो एवं अश्रद्धा को दूर करने में सहायक होंगे।

—धर्मदेव चक्रवर्ती १९ माडल बस्ती दिल्ली-५

(२) श्री डालमिया द्वारा किए गए आक्षेप का आपने जिस ढंग से उत्तर दिया, वह सराहनीय है। श्रद्धा की व्याख्या एवं वट वृक्ष का उदाहरण आपके अपने ज्ञान की खोज है। आर्य जन ऐसे तर्क संगत उत्तर से काफी प्रसन्नता अनुभव कर रहे हैं। आर्य समाज में ऐसे कर्मठ और विद्वान जनों की कभी-कमी न होने पावे, यही प्रभु से प्रार्थना है।

—अनिल प्रकाश मिश्र पुरोहित आर्यसमाज आर्य नगर पहाड़ गंज नई दिल्ली

अंग्रेजी मोह कब तक ?

बहुत लोग अपने या दूसरों के नाम लिखने में भी अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करते हैं। आपके पत्र में भी जैसे डी० सी० एम० (ता० ५ मई) आता है। मेरे मतानुसार इसका संक्षिप्त रूप दि० क० मि० (दिल्ली क्लाथ मिल्स) होना चाहिए। दयानन्द ऐंग्लो वैदिक का अग्रेजी मे अनुवाद हुआ और उसका छोटा रूप D. A. V का हिन्दी अनुवाद डी. ए. वी. चल रहा है। मेरी समझ से यह द. ऐ. वै. होना चाहिए। लेकिन डी. ए. वी. तो इतना प्रचारित हो गया है, कि अब हिन्दी रूप चलना मुश्किल लगता है। पर हम ठीक काम की शुरूआत कभी भी कर सकते हैं। अपना नाम एस. पी. शर्मा को जगह स. प्र. शर्मा नाम की पट्टी बनवा सकते है। मैं अनुरोध करती हूं कि नाम पूर्ण रूप से हिन्दी में हो।

—कृष्णा गर्ग ३२ ए/६ भगत सिह मार्ग नई दिल्ली-११०००१

आर्य नेता और महात्मा हंसराज

महात्मा हंसराज विशेषाक मे प्रकाशित सम्पादकीय जिस ओजस्वी भाषा मे लिखा गया है वह वयस्को में भी युवा रूप संचार करने में सक्षम है। आज आर्य समाज में निष्ठावान् समर्पित जीवन वाले कर्मठ व्यक्तियों की संख्या नगण्य होती जा रही है। अपनी शिथिलता एवं निष्क्रियता पर पर्दा डालने के लिये उत्सव, सम्मेलन, आदि का आयोजन करके आर्य समाज के अस्तित्व की रक्षा करने में ही कर्त्तव्य की इति श्री मानी जा रही है। ऋषि दयानन्द की भावना के प्रतिकूल अनेक प्रकार के भवनों का निर्माण करके उन्हें दयानन्दस्मारक का रूप दिया जा रहा है। जबकि उनके द्वार प्रारम्भ किये हुए समाज सुधार कार्य उपेक्षा के शिकार बनकर समाप्त प्राय होते जा रहे है। गौरक्षा, धर्मान्तरण रोकना एवं शुद्धि करना तथा गुरुजनों की समुचित व्यवस्था आज आर्य समाज के कार्यक्रमों मे स्थान नही पा रहे। क्या हमारे मूर्धन्य नेता महात्मा हंसराज के जीवन से प्रेरणा लेकर कुछ रचनात्मक सुधार कार्यों को प्रमुखता देकर स्वामी जी के उद्देश्य की पूर्ति की दिशा मे अग्रसर होगे ? यदि ऐसा वे कर सकें तो यही कार्य ऋषि के सच्चे स्मारक सिद्ध होंगे।

—वीरेन्द्र सिंह पमार आयुर्वेद शास्त्री
२८, यू बी. जवाहर नगर दिल्ली-७

देशद्रोहियों के प्रति ढिलाई नहीं

होशियारपुर के जन जीवन की रीढ़ की हड्डी, लोकदल के नेता, चौ० बलबीर सिह की हत्या पुन: आन्तकवादियो के सिर उठाने और सरकार की ओर से ढिलाई बरतने का परिणाम है। सरकार ने अकाली नेताओं को बिना किसी शर्त रिहा करके अच्छा नहीं किया। अकालियों की हठधर्मी सारे देश के सिखों के लिए खतरनाक सिद्ध होगी। यदि अकालीदल को सन्तुष्ट करने के लिए हरियाणा के साथ अन्याय किया गया तो हरियाणा वासी कभी शांत नहीं बैठेंगे। केन्द्रीय सरकार की तुष्टिकरण की नीति छोड़ कर सख्ती से देशद्रोहियों से पेश आना चाहिए। जब भारत का विशाल बहुमत भारत सरकार के साथ है, तब वह न्यायपूर्ण बात को मनवाने के लिए दण्ड का प्रयोग क्यो नही करती। राजा के लिए तो 'दण्डं धर्मं विदुर्बुधा:'—दण्ड ही धर्म है।

चन्द्रसेन आर्य, ११/५३९, दिल्ली रोड, सोनीपत

मुस्लिम परसनल लॉ में परिवर्तन

तारीख २९ अप्रैल का "महात्मा हंसराज विशेषांक" प्राप्त हुवा। इस अंक में पृष्ठ ९ पर समान आचार संहिता हेतु प्रधानमंत्री के नाम लिखा हुआ पत्र प्रकाशित हुवा है। इस विषय में मैं आपका ध्यान उर्दू साप्ताहिक 'अखबारे नौ' की ओर दिलाना चाहता हूं। ता० १९ ता० २९ अप्रैल के अंक मे उर्दू भाषा के प्रसिद्ध कवि सरदार जाफरी से भेंट वार्ता प्रकाशित हुई है। मुस्लिम व्यक्तिगत विधि के संबंध मे पूछे गये प्रश्न पर सरदार जाफरी फरमाते हैं—

"जहां तक मुस्लिम पर्सनल लॉ का ताल्लुक है, यह मुस्लिम दीन के बुनियादी अर्कान में से नही है। मसलन रोजा, नमाज, हज्ज, रसालत, तौहीद वगैरा, इसलिए मुस्लिम पर्सनल ला में भी हर समाज के मुताबिक तब्दाली हो सकती है। दुनियां के बाज दूसरे मुमालिक में तब्दीली हुई है। हम इस हद तक महदूद क्यों रहें कि सऊदी अरब में क्या है या पाकिस्तान में क्या है। मुतालिआ करना चाहिये कि तुर्की में क्या है, मिस्र में क्या है। इसे अपनी जरूरत के मुताबिक तब्दील किया जा सकता है।"

—वा० रा० जहागीरदार सोनपेठ जि० परभणी, महाराष्ट्र

आर्य समाज स्थापना का मार्ग

मुसलमान रातों रात एक कबर बना देते हैं, दूसरे दिन कोई मुल्ला उसके चारों और कुछ स्थान पर झाड़ू लगा कर बैठ जाता है। तीसरे दिन उस कबर पर एक चादर डाल दी जाती है चौथे दिन वहाँ एक दीया जला दिया जाता है। और कालान्तर मे वहां मस्जिद खड़ी हो जाती है। दिल्ली के लालकिले के सामने परेड ग्राउन्ड मे बनी दमियों कबरे तथा लक्ष्मी नगर के ग्रीन बेल्ट डी० डी० ए० के नीचे तथा पुराने यमुना पुल से निकलते ही पटरी पर बनी मस्जिदें इस सत्य का मुंह चिड़ा रही है और किसी की हिम्मत नही होती है कि इस विषय में मुंह खोले। इसी टेकनीक की नकल करते हुए और भारत सरकार की विवशता को ध्यान में रखते हुए सिख लोग भी पंथ की सेवा करने लगे हैं। वह किसी भी स्थान पर निशान साहब गाड़ देते हैं। एक निहंग को उस जगह पर झाड़ू देने हेतु बिठा देते हैं तीसरे रोज गुरु ग्रन्थ साहब का पाठ शुरू हो जाता है और इस प्रकार धींगामस्ती में एक गुरुद्वारे का शिलान्यास हो जाता है।

परन्तु आर्य समाज में शिक्षित लोग होने के कारण वे इस टेकनीक का प्रयोग नहीं करना चाहते हैं। वह तो वैध तरीकों से प्राप्त भूमि पर ही आर्य समाज मन्दिर खड़ा करना चाहते हैं। आजकल दिल्ली तथा प्रत्येक जिले और बड़े-बड़े नगरों मे बढ़ती हुई जनता तथा जनता की बढ़ती हुई मकानों की मांग की पूर्ति में सर्वत्र विकास बोर्ड जमीनें विकसित कर रही हैं। जब कालोनी काटी जाती है तब वहा जमीन २५ या २० रुपये गज उपलब्ध होती है परन्तु उस समय न वहाँ व्यक्ति होते हैं और न मकान। जब वहां मकान और व्यक्ति होते हैं तो वहां प्लाट नही होते हैं और गरीब आर्य भाइयों के लिये दो चार सौ गज जमीन खरीदना बहुत भारी होता है और जीवन का अधिक काल भीख मांगने में निकल जाता है।

अत: इस समस्या के समाधान हेतु निम्न सुझाव हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अपने अन्तर्गत एक आर्य समाज स्थापना निधि चालू करे। इस निधि में जिन आर्य समाजों की भवन से प्राप्त किराया की आय एक हजार रुपये मासिक से अधिक हो उस अधिक आय का ३०% रुपया इस निधि में जमा करवाने की व्यवस्था करे।

आर्य प्रतिनिधि सभाएं दूरदर्शिता से काम लेते हुए जहां भी वह उचित समझे दो चार सौ गज जमीन का सौदा करे तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से धन लेकर प्लाट की रजिस्ट्री करा एक बल्ली में ओ३म् ध्वज लगाकर गाड़ दें। कालान्तर में समाज मन्दिर उस कालोनी के घटक बनाएं।

प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाएं भी प्रत्येक कोलोइजर से सम्पर्क स्थापित कर आर्य समाजों के लिये बिना मूल्य या कुछ रुपया देकर जगह छुड़वा सकते हैं।—ओम् प्रकाश गुप्ता, शकरपुर मोड़, दिल्ली-९२

परोपकारिणी सभा......

(पृष्ठ 5 का शेष)

के सम्बन्ध में कोई निष्कर्ष निकला है तो इसका दायित्व मुझ पर कैसे आ गया ? परन्तु आचार्य जी का अभिप्राय तो यही है कि किसी भी पुराने ऐतिहासिक अभिलेख को प्रकाशित न किया जाय और इसी से हमारी असहमति है। पत्र व्यवहार तथा महर्षि विषयक अन्य अभिलेखों को शोध की दृष्टि से प्रकाशित कराना दोषावह नहीं है।

आचार्य जी ने स्वामी जी के हस्त लेखों की सुरक्षा का जैसा आडम्बर पूर्ण चित्रण किया है वह उन लोगों को पर्याप्त रोचक लगेगा जिन्होंने स्वामीजी की इन पाण्डुलिपियो को नहीं देखा है अथवा उनके रख-रखाव से परिचित नही हैं। आचार्य जी ने तो कई दशाब्द पूर्व इन ग्रन्थों को देखा होगा, किन्तु मैं तो परोपकारिणी सभा का संयुक्त मंत्री तथा उस की विद्वत् समिति का संयोजक होने के नाते निरन्तर बारह वर्षों तक इन हस्त लेखो की देख रेख ही नहीं अपने निर्देशन में इन ग्रन्थों से मिलान पूर्वक स्वामीजी के ग्रन्थों का मुद्रण व प्रकाशन भी कराता रहा हूं। बल्कि सत्य तो यह है कि 1970-80 दशक मे स्वयं आचार्य जी मुश्किल से एक दो बार अजमेर आये होंगे। मात्र पुराने संस्मरणों पर जीवित रहना ही पर्याप्त नही है।

अब प्रश्न रहता है हस्तलेखों के उपयोग का। यह सत्य है कि जिस युग में फोटोस्टेट आदि की सुविधा नहीं थी, उस जमाने में शोधार्थी स्वयं पुस्तकालयों में जाकर ग्रन्थों का यथेच्छ लाभ उठाते थे। आज जब कि फोटोस्टेट की सुविधा उपलब्ध है तो क्यों नहीं शोधकर्ताओं को स्वामीजी के हस्तलेख उपलब्ध कराये जायें। किसी सामग्री के वृथा गोपन तथा उस पर रहस्यात्मकता का आवरण डालने को हम अच्छा नही समझते। संसार का प्रत्येक विश्वविद्यालय अपनी एकत्रित सामग्री की फोटोस्टेट कराने की सुविधा शोधार्थी को देता है तो परोपकारिणी सभा का ग्रन्थालय ही इसका अपवाद क्यों हो ? स्वामीजी के अप्रकाशित ग्रन्थों (विशिष्ट ग्रन्थों की सूचियां आदि) के सम्बन्ध में पं० विश्वश्रवा जी ने जो लिखा है, वह बहुत कुछ निरपवाद ही है।

अन्तिम बात। आचार्य विश्वश्रवा जब आर्यसमाज की विद्वन्मण्डली में बैठते हैं तब यथार्थवादी बन जाते हैं, किन्तु जब वे मंच पर व्याख्यान देने लगते हैं तो ऐसा लगता है मानो ऋषि भक्ति एकमात्र उनके हिस्से मे ही आई है। उदाहरणार्थ वे यदा कदा कहते रहते हैं कि "ऋषि को पता था कि वे ४०० वर्ष जीवित रहेंगे अतः उन्होंने निश्चय किया कि प्रत्येक वेद के भाष्य पर १००-१०० वर्ष लगायेंगे। किन्तु बाद मे उन्हें अपनी आसन्नमृत्यु का आभास हो गया तो उन्होने अपनी भाष्य शैली को बदल कर सक्षिप्त कर डाला आदि। यह बात उन्होंने दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर आयोजित वेद सम्मेलन के मंच से कही थी। हमारा निवेदन यह कि ऐसी बातें जनसाधारण को प्रभावित भले ही करलें, किन्तु विद्वानों को प्रभावित नही करती। इधर 'आर्य संदेश' में भी आचार्यजी ने सभा के विषय में एक लेख लिखा है जिसमें इस बात पर जोर दिया है कि स्वामीजी ने परोपकारिणी सभा मे राजा-महाराजाओं को ही रक्खा, वैदिक साहित्य के किसी "उनके अनुसार पंडित को नहीं रक्खा पडितों का स्वभाव ग्रन्थों को विकृत करने का होता है अतः सभा को विद्वान् पंडितो को नहीं रखना चाहिए। यदि सचमुच सभा आचार्य जी के इस परामर्श को स्वीकार करले तब तो ग्रन्थों के प्रकाशन में और भी अराजकता आ जायगी।

पता— पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

आचार्य महीधर और......

(पृष्ठ ६ का शेष)

उतना आवश्यक नहीं है, जितना कि देवता और स्वर का ज्ञान।- छन्द स्वर का संबंध एक दृष्टि से अवश्य महत्व का है। "अनुदात्तं सर्वमपादादौ" (पाणिनि" ८।१।१८) के अनुसार जब क्रियापद पाद के आरम्भ में प्रयुक्त होता है, तो वह उदात्तस्वर वाला होता है, किन्तु यह क्रियापद पाद के मध्य या अन्त मे हो तो अनुदात्त होता।

लेखक ने सप्तम अध्याय में स्वर और व्याकरण प्रक्रिया की दृष्टि से दोनों भाष्यकारों की तुलना की है प्रशस्य जी के ५-७ अध्याय वेद में रुचि रखने वाले विद्वानों के लिए विशेष महत्व के हैं। आचार्य महीधर ने यजुर्वेद के प्रथम मंत्र में स्वर एवं व्याकरण प्रक्रिया विस्तार से दी है, पर सम्भवतया विस्तार-भय से वे इस शैली को निभा न पाये। स्वामी दयानन्द ने किसी भी मन्त्र में इस विस्तार की व्याकरण प्रक्रिया या स्वर प्रक्रिया नहीं दी (जिज्ञासु जी और युधिष्ठिर मीमांसक ने इस कमी को दूर करने का प्रयास किया है।)

प्रशस्यमित्र जी लिखते हैं— "आचार्य महीधर द्वारा प्रदत्त मंत्र गत पदो को व्याकरण एवं स्वर प्रक्रिया के सूक्त अध्ययन से यह स्पष्ट प्रतीत होता है, कि इसमें अनेक अशुद्धियाँ हैं; तथा स्वामी दयानन्द की अपेक्षा इसमें अधिक दोष है। कुछ शब्द ऐसे भी हैं, जिनका अर्थ करते समय उन्होंने उनके स्वर की उपेक्षा की। है।"

मैं लेखक को इस उत्तम ग्रंथ लेखन के निमित्त बधाई और आशीर्वाद देता हूं। पाठकों से मेरा आग्रह है, कि वे संयमपूर्वक इस ग्रंथ को पढ़ें। उनके ज्ञान में बहुत कुछ श्रेयस्कर वृद्धि होगी। परम्परागत आचार्यों में महीधर की उपेक्षा नहीं की जा सकती, पर वेदों के संबंध में नया आलोक देने वालो में ऋषि दयानन्द युगों तक अग्रणी रहेंगे। दोनों की तुलना करना और निर्णय देना कि कौन विद्वान् था और कौन नही इस वितण्डा मे नही पडना चाहिए। शास्त्रीय त्रुटियाँ दोनों की रचनाओं मे हैं, दोनो के पाण्डित्य मे भी कमी नही। किन्तु वह युग गया जब यजुर्वेद को महीधर या कात्यायन की आखो से देखा जाता था। मैं तो यह भी कहूंगा कि वह युग भी गया जब यजुर्वेद को शतपथ ब्राह्मण की आखों से देखा जाता था। अब यदि वेद को हमें देखना है, तो उसे दयानन्द की आखों से देखना होगा। महीधर महान् उद्भट पंडित और आचार्य था, किन्तु दयानन्द ऋषि था—समग्र क्रान्तियों का अग्रदूत, जिसके लिए वेद के मंत्र प्रेरणा-स्रोत थे, और वेद को अनेक बद्ध-सीमाओं से बाहर निकालने का प्रथम-प्रयास किया, और जिसके आधार पर उसने मानवता को एक सूत्र में वैभव और शान्ति के लिए संघटित करने का प्रयास किया।

इस ग्रंथ से आपको जो वेदाध्ययन सम्बन्धी मूल्यवान् दिशायें मिलेंगी उनसे लाभ उठावें। पुस्तक रचियता का उद्देश्य न किसी की प्रशंसा करना है, और न किसी की टीका-टिप्पणी करना। गम्भीर अध्येता की दृष्टि से उन्होंने हमें उचित और यथेष्ट सामग्री भेंट की है, इसके लिए हमें उनका आभार मानना चाहिए।

—स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

स्वामी योगेश्वरानन्द जी दिवंगत

लगभग सौ वर्ष पूर्व एक पुण्य आत्मा ने पार्थिव शरीर धारण किया जिसे बलदेव नाम दिया गया। यह बलदेव 14 वर्ष की किशोर अवस्था में ही गृह त्याग कर सत्य की खोज में निकल पड़ा। हरिद्वार काशी आदि अनेक स्थानों पर विद्वानों से विद्या ग्रहण करते रहे और अनेक कष्ट उठाए। एक दिन श्रीनगर हजूरी बाग में एक अवधूत महात्मा से भेंट हुई, जिसने इन्हें योग साधना की प्रेरणा दी। यह उनके साथ चल दिये। एक दिन जब अपने गुरु के साथ नदी में स्नान करने गए तो गुरु जी को नदी से बाहर निकलता न देखकर जोर-जोर से चिल्लाने लगे, जिसके कारण एक धार्मिक गुरु को बाहर निकाला [illegible] [illegible] असन्तुष्ट हो गये और रात्रि में इन्हें सोता छोड़कर गायब हो गये। अपने गुरु की तलाश में भटकते हुए ये हरिद्वार पहुंचे। कुम्भ के मेले में एक महात्मा से इनका सम्पर्क हुआ तो उसने इन्हें बताया कि गंगोत्री के मार्ग में हरसिल के पास एक महात्मा तिब्बत से आये हुए हैं उनके पास जाओ अनेक कष्ट सहन करके ये हरसिल पहुंचे। उस महात्मा ने इनकी सच्ची लगन देखकर अपना वरद हस्त इनके सिर पर रखा और योग अभिलाषियों को योग साधना कराने का आदेश दिया। वर्षों तक आप स्वर्गाश्रम मुनि-की-रेती, गंगोत्री, उत्तरकाशी, पहलगाम आदि स्थानों पर अनेक साधकों को योग [illegible] भ्रमण कर योग का नाद बजाया। आपने योग पर एक दर्जन पुस्तकें लिखी हैं जिनमे से कई का अंग्रेजी मे भी अनुवाद हुआ है। साहित्य प्रकाशन के लिए दिल्ली के पंजाबी बाग मे भी आश्रम की स्थापना की। अपने जीवन काल मे ही अपना उत्तराधिकारी स्वामी मुक्तानन्द जी को नियत कर दिया था। इस वर्ष 23 अप्रैल को सायं सात बजे उन्होंने अपना पार्थिव शरीर छोड़ दिया। 25 अप्रैल को प्रात: दस बजे शिष्यों ने बिलखते हुए अन्त्येष्टि संस्कार किया। जीवन भर योग विद्या के प्रकाश से अनेक आत्माओं को प्रकाशित करके योग का यह प्रकाशस्तम्भ विलीन हो गया।

—प्रीतमचन्द्र विज

हिंदू सिख एकता नष्ट न करें

जालना। सिखो को मुसलमान बनने की प्रेरणा देने वाले मुस्लिम अखबारो की आलोचना करते हुए वैदिक सत्संग समिति की अध्यक्षा श्रीमती सविता देवी ने इस षड्यंत्र से सावधान रहने की अपील की। उन्होने हिन्दू सिख एकता के ऐतिहासिक महत्व पर प्रकाश डाला श्रीमती सविता-देवी ने एक अन्य वक्तव्य में श्री राजीव गांधी के पुन. प्रधानमन्त्री निर्वाचित होने पर बधाई दी और आर्य जनता से उन्हें पूरा सहयोग देने की अपील की।—कुलदेव कार्यालयाध्यक्ष

—आर्य समाज टाण्डा, फैजाबाद के निर्वाचन में प्रधान श्री मिश्रीलाल आर्य; मंत्री श्री विश्वमित्र शास्त्री और कोषाध्यक्ष श्री लुकमन आर्य चुने गये।

क्या योग विद्या......

(पृष्ठ ७ का शेष)

योग की साधना से मृत्यु का भय (अभिनिवेश-क्लेश) हट जाता है। अपार सहनशक्ति बढ़ जाती है और प्राणार्पण से कार्य को सफल करने में लगा रहता है। वह शारीरिक या मानसिक कठिनाइयों में घबराता नहीं, बल्कि संकटों का स्वागत कर अपने तपोबल की परीक्षा करता है। ऐसे धैर्यशील धर्मात्मा के सामने झुक जाता है। वह कुछ भौतिक पदार्थ न रखते हुए भी आध्यात्मिक सम्पत्ति का धनी है। उसके सामने सारे संसार के धनिक क्या मूल्य रखते हैं। अविद्या अज्ञान तथा आत्महीनता के कारण अधिकतर मानव जाति अनेक प्रकार के दुःखों से दुःखी है। अज्ञानी जिस संकट को रो-रोकर काटता है, ज्ञानी उसका कारण जानकर उसके निवारण का उपाय खोजता है। पुनः पुरुषार्थ करके हंस कर दुःख को भुला देता है। यह है सुख दुःख का गुप्त रहस्य। इसे जो समझ लेता है वह गरीबी में भी हंसता है। संकटों मे धैर्य धारण कर वह परमात्मा की कर्मफल व्यवस्था को धन्यवाद देता है।

धनैश्वर्य का उपयोग

वैदिक संस्कृति में मानव जीवन धर्म, अर्थ काम तथा मोक्ष (पुरुषार्थ चतुष्टय) के लिए लगाना ही उचित माना है। इसके अनुसार मानव का कर्त्तव्य है कि सर्व प्रथम धर्म का आचरण करे। धर्म पूर्वक ही धन का संचय करे। इस पवित्र धन से परिवार—समाज—राष्ट्र तथा धर्म के कार्यों को पूरा करे। अन्तिम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति का ध्यान सदैव रखें। अन्त का सम्पूर्ण जीवन इसी निमित्त लगाकर शरीर का धारण करना सार्थक बनता है। इस पद्धति से धन, योग प्राप्ति में साधक ही होता है। बाधक नहीं।

वेदों में स्पष्ट किया गया है कि परमात्मा उपासक को सब प्रकार के धनों से तृप्त करता है। धनैश्वर्य को प्राप्त करके धनिक का कर्त्तव्य है कि लोभ-लालच त्याग कर, सत्पात्रों में दान दे तथा लोकोपकारी कार्यों में व्यय करे। धन में आसक्त न हो, ब्रह्मप्राप्ति को ही अपना धन समझे। वैदिक काल का इतिहास साक्षी है कि—अश्वपति तथा जनक जैसे व्यक्ति राजा होते हुए भी धनैश्वर्य में आसक्त नहीं रहे, वरन् ब्रह्मज्ञानी बने।

धन की आसक्ति बाधक

जो धनाभिलाषी यह विचारते हैं कि छल-कपट-असत्य साधनों से जैसे-तैसे खूब धन इकट्ठा करके, अच्छे भवन तथा मोटरकार आदि सुख के साधनो से सम्पन्न होकर निश्चिन्त जीवन व्यतीत करेंगे, समय मिलने पर प्रभु भक्ति भी करेंगे, वे शेखचिल्ली हैं। ऐसे विचारों से परमात्मा की भक्ति या परमसुख की आशा दुराशा मात्र है। पुराणों में धन की देवी (लक्ष्मी) की कल्पना की गई है, उस लक्ष्मी का वाहन उल्लू रखा गया है। इस कल्पना के द्वारा एक सत्य को स्पष्ट किया गया है कि जिसके घर लक्ष्मी देवी का आगमन होता है, वहां लक्ष्मी की सवारी (उल्लू) के पग पहले पड़ते हैं। इससे वह धनवान उल्लू के समान ज्ञान-मय प्रकाश को अच्छा नहीं समझता अर्थात् अविद्या अज्ञान को अपनाने लगता है। ऐसा व्यक्ति प्रभु कृपा को भूलकर अहंकारवश अन्याय तथा भोगविलास में फंसकर जीवन को नष्ट करता है। अतः धन-सम्पत्ति से मोक्ष की कामना करना व्यर्थ है।

छान्दोग्योपनिषद् में याज्ञवल्क्य ऋषि अपनी विदुषी पत्नी मैत्रैयी के यह पूछने पर कि क्या धन के द्वारा मैं अमृतत्व को पा सकूंगी, याज्ञवल्क्य स्पष्ट करते हैं—'अमृतत्वस्य तु नाशोस्ति वित्तेन' अमृतत्व-मोक्ष-की आशा धन से पूर्ण नहीं हो सकती। उससे धनिकों जैसा साधनों से सम्पन्न भौतिक जीवन तो हो सकता है, मोक्ष नहीं।

संकट में ईश्वर-स्मरण

सामान्यतया लोक में यह देखा जाता है कि संकट के समय, आपत्तियों से घिरे होने पर, धन-सम्पत्ति, भूमि, भवन नष्ट हो जाने पर ही व्यक्ति अशरण की शरण जाकर उसकी कृपा का भिखारी बनता है। वही व्यक्ति जब किसी प्रकार साधन सम्पन्न हो जाता है, तो उस दयानिधि की दया को भूलकर अहंकारी बन जाता है।

इस विवेचन का तात्पर्य यह है कि धन-सम्पत्ति आदि जीवनोपयोगी साधनों की आसक्ति को समाप्त करके ही साधना हो सकती है। आशय यह है कि पूर्ण पुरुषार्थ करने के उपरान्त व्यक्ति को फलस्वरूप जो प्राप्त होता है, उसे परमेश्वर की कृपा समझ कर उसकी न्याय-व्यवस्था पर पूर्ण विश्वास करते हुए, सन्तोष पूर्वक जीवन व्यतीत करे। धन सम्पत्ति की वृद्धि की लालसा में ही जीवन शक्ति का अपव्यय न करे।

यह दृष्टिकोण सामान्य गृहस्थ-मात्र के लिए है। जो विविध सांसारिक धन्धों में फँसे रहने पर भी मन को बुराइयो से बचाकर उपासना का आश्रय लेते हैं, उन्हे भी अनेक विध लाभ मिल जाते हैं। पर जिनके जीवन का उद्देश्य ही परमात्मा की प्राप्ति हो, उनका तो मार्ग ही निराला है। वे तो सर्वस्व त्याग कर ही इस मार्ग के पथिक बनते हैं।

सृष्टि के प्रारम्भ से ही बहुत से ऋषि-महर्षि, त्यागी-तपस्वी हुए, जो सर्वस्व त्याग कर, सामान्य जीवन व्यतीत करते हुए, परमात्म प्राप्ति तथा आत्म-चिन्तन में तत्पर रहे। वैदिक काल में प्रायः सभी ऋषियों की यही पद्धति रही। दर्शनों के निर्माता गौतम—कपिल—कणाद-पतञ्जलि आदि इसी कोटि के योगी हुए।

त्यागवृत्ति का द्वितीय उदाहरण भी उपनिषद् काल में अश्वपति तथा जनक जैसे राजाओं में मिलता है। यही परम्परा रघुवंशीय नृपों की रामायण काल तक रही जिसकी चर्चा कवि कुल गुरु कालिदास ने—'वार्धक्ये मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुः त्यजाम्" के द्वारा रघुवंश में की है। मध्य काल में भर्तृहरि साम्राज्य को त्याग कर ही योगी बने। महात्मा बुद्ध एक राजकुमार ही तो थे। महर्षि दयानन्द का त्याग भी सामान्य कोटि का नही था। महिला वर्ग में भी वैदिक ऋषिकन्याएं तथा मैत्रेयी, गार्गी एवं मध्यकाल में मीराबाई आदि अनेक स्त्रियाँ भोगमय जीवन को त्याग कर योग मार्ग पर अग्रसर हुईं।

अतः निष्कर्ष निकला कि योग में भौतिक अभाव बाधक नही, बल्कि यमों में "अपरिग्रह (अधिक संग्रह का निषेध) है। योग में बाधक व्याधि, संशय, प्रमाद, आलस्य आदि नौ तत्त्व माने हैं, गरीबी नहीं। साथ ही काम, क्रोध, लोभ, मोहादि बाधक हैं। भोगविलासमय जीवन योग में बाधक है, गरीबी नहीं।

—योगधाम ज्वालापुर, हरिद्वार

डा० भारतीय सम्मानित

आर्य समाज, बडा बाजार, कलकत्ता का वार्षिकोत्सव 2 से 5 मई तक सोत्साह मनाया गया। जिसमे श्री चादरतन दमानी, डा० भवानी लाल भारतीय, महात्मा आर्य भिक्षु, प्रो० विष्णु कात शास्त्री ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान और वैदिक शोध कर्त्ता डा० भवानीलाल भारतीय को उनकी साहित्यिक सेवाओ के लिए सम्मानित किया गया। डा० भारतीय को 1500 रु० नगद, ऊनी शाल तथा अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया। डा० ज्वलन्त प्रसाद, महात्मा आर्य भिक्षु प्रो० उमाकांत उपाध्याय, आदि विद्वानों ने भारतीय जी की साहित्यिक सेवाओ की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उत्सव की सफलता का श्रेय समाज के प्रधान श्री कन्हैया लाल आर्य और मंत्री श्री खुशहाल चन्द्र और श्री चांदरतन दमानी को है।

'लोकनायक श्रीकृष्ण' ट्रैक्ट का विमोचन

नई दिल्ली, २६ मई—श्री कृष्ण महान् योगी, विद्वान तथा ईश्वर के परम भक्त थे। उनकी एक मात्र धर्मपत्नी रुक्मिणी थी। राधा और १६,००० रानियो से उनका कोई सम्बध न था। यह उद्गार आर्य समाज के वयोवृद्ध संन्यासी महात्मा अमर स्वामी जी ने आर्यसमाज मन्दिर मार्ग में "लोकनायक श्री कृष्ण" सचित्र ट्रैक्ट का विमोचन करते हुए कहे। श्री कृष्ण को आर्य समाज आदर्श युगपुरुष मानता है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश व लाला राम चन्द्र अनाजवाले धर्मार्थ ट्रस्ट के संयुक्त तत्वाधान में देश के युवकों को महापुरुषों के जीवन का सचित्र परिचय देने की योजनाबनाई गई। २५ रुपये सैकड़ा तथा २०० रुपये हजार की दर से ट्रैक्ट निम्न पते से मंगवायें।—चन्द्र मोहन आर्य, [illegible]

आर्य प्रादेशिक सभा का वार्षिक अधिवेशन

आर्य प्रादेशिक सभा के वार्षिक अधिवेशन मे उपस्थित प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए श्री सोमनाथ मरवाह, श्री सत्यानन्द मु जाल, प्रि० नारायणदास ग्रोवर और श्री रामनाथ सहगल ।
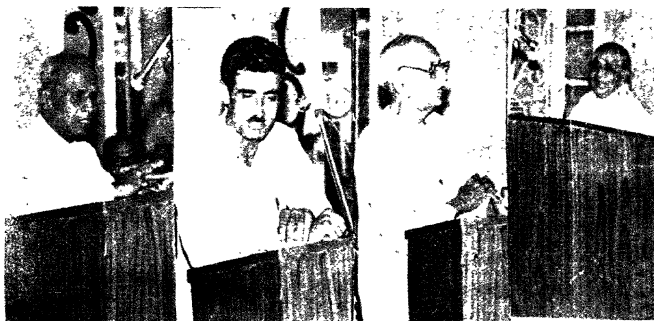
प्रतिनिधियो को सम्बोधित करते हुए श्री क्षितीश वेदालंकार, श्री वेद सुमन वेदालंकार, श्री रामचन्द्र महाजन और दिल्ली आर्य महिला सभा की प्रधाना श्रीमती सरला मेहता ।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के वार्षिक अधिवेशन मे उपस्थित प्रतिनिधि और अन्य आर्य ।

स्व० श्री मिहिर चन्द धीमान के प्रति

सौम्य, सभ्य, सरल, शिष्ट
दानों, ज्ञानी नेता विशिष्ट
मृदुता का मूर्त्त रूप
स्थितप्रज्ञ, कर्त्तव्य निष्ठ
सुपठित, स्वाध्यायशील
अध्ययन-चिंतन में अनुरक्त
आर्य समाज का सेवक अदम्य
ऋषि दयानन्द का परमभक्त

—शैलेन्द्र बिहारी लाल एम. ए.
आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल
४२ शंकर घोष लेन, कलकत्ता-६

यू० १०३/१०८ लायसेस ट पोस्ट विदाउट प्री-पेमेन्ट
स्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११६३/७२ डी० सी० 409
६ जून, १६८५

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स ७११७/१८ पहाड़ी धरीज, दिल्ली से छपवा कर कार्यालय, 'आर्य जगत्, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व— आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य-२५ रुपये | विदेश में ३० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४८, अंक २५, रविवार, १६ जून, १९८५ | दूरभाष : ३४३७१८
आजीवन सदस्य-२५१ रु० | इस अंक का मूल्य—६० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८५, दयानन्दाब्द १६० | आषाढ कृष्णा १३, २०४२ वि०

'आर्यजगत्' के २५ हजार ग्राहक बनाने का अभियान

डी ए वी शताब्दी वर्ष में संकल्प फिर दुहराइए

डी० ए० वी० शताब्दी वर्ष की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि जहा अन्य मोर्चों पर नए उत्साह और लगन से काम किया जाए, वहा 'आर्य-जगत्' के भी अधिक से अधिक ग्राहक बनाए जाए। 'आर्य जगत्' इस समय आर्यसमाजी और गैर-आर्यसमाजी क्षेत्रो मे समान रूप से लोकप्रिय है। देश के विशाल बहुमत के साथ होने वाले अन्याय और अत्याचार का यह प्रबल विरोध करता है और विशुद्ध राष्ट्रवादी दृष्टिकोण से हिन्दू हितो का प्रबल समर्थन करता है। आर्यसमाज के प्रत्येक मोर्चे पर तो यह सदा सबसे आगे ही है। अजमेर के ऋषि निर्वाण शताब्दी सम्बन्धी ऐतिहासिक समारोह मे 'आर्य-जगत्' की भूमिका को पाठक भूले नही होगे।

डी०ए०वी० शताब्दी वर्ष मे जो नए कार्यक्रम अपनाए जा रहे हैं और डी०ए०वी० आन्दोलन की जो दिन दूनी रात चौगुनी गतिविधिया हैं, उनसे जनता को अधिक से अधिक परिचित करवाने का माध्यम 'आर्य जगत्' ही है। इस पत्र ने ग्राहक-सख्या की दृष्टि से आर्यपत्रो के के अभीतक के सारे लेखे तोड दिए हैं। फिर भी, यह सत्य है कि २५ हजार ग्राहक बनाने का हमारा सकल्प अभी तक पूरा नही हो पाया है। डी० ए०वी० आन्दोलन से किसी भी रूप मे सब लोगो का इस विषय मे विशेष दायित्व है। इस लक्ष्य को पूरा करने मे आर्य जनता भी पूरा सहयोग देगी यह हमे विश्वास है।

डी०ए०वी० वर्ष मे 'आर्य जगत्' को अधिक भव्य, अधिक पठनीय और अधिक सग्रहणीय बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है। साथ ही, पाठको की सुविधा के लिए कुछ नई योजनाओ की घोषणा भी की जा रही है। देखिए, कौनसी योजना आपके अनुकूल पडती है। उसी के अनुसार 'आर्य जगत्' के अधिक से अधिक ग्राहक बनाकर २५ हजार की सख्या तक पहुचाने के सकल्प को फिर दुहराइए। वे नई योनाए इस प्रकार है—

१ दस नए ग्राहक बना कर एक वर्ष तक और २५ नए ग्राहक बनाकर तीन वर्ष तक 'आर्य जगत्' मुफ्त पढिये।

२ एक बार मे १०० रु० देकर ५ वर्ष तक 'आर्य जगत्' मुफ्त पढिए।

३. २५१ रु देकर 'आर्य जगत्' के आजीवन सदस्य बन जाइए। यदि यह पत्र आपको नही जचता तो एक वर्ष बाद अपनी पूरी राशि हमसे वापिस ले लीजिए।

आशा है, इन योजनाओ से आपको इस नए अभियान मे अवश्य सफलता मिलेगी।

प्रयाग उच्च न्यायालय में संस्कृत में निर्णय

संस्कृत प्रेमी आर्य जनता को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि दिनाक 17-5-85 को प्रयाग उच्च न्ययालय के न्यायमूर्ति श्री बनवारीलाल यादव ने एक 'वाद' मे अपना निर्णय संस्कृत भाषा में देकर न केवल न्यायपालिका अपितु स्वतंत्र भारत के इतिहास मे एक सर्वथा नवीन अध्याय जोड़ दिया है। आर्य जगत् इसके लिए उनका कृतज्ञ है। आर्य युवक व्यायाम शाला, लखनऊ ने उन्हें पत्र भेजकर कृतज्ञता ज्ञापित की है। अन्य संस्थाओं एवं व्यक्तियो को इसका अनुसरण करना चाहिए।

शालवाले सम्मान निधि में ११ हजार का दान

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री राम गोपाल शालवाले के अभिनन्दन के निमित्त सम्मान-निधि मे अभिनन्दन समिति के कोषाध्यक्ष श्री लाला इन्द्र नारायण ने ११ हजार रु० दान दिया है। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने 10 मई की अन्तरग सभा की बैठक मे उक्त सम्मान-निधि के लिए उत्तर प्रदेश से 1 लाख रु० सग्रह करने का फैसला किया है।

इस सम्मान-निधि का उद्देश्य यह है कि अभिनन्दन समारोह के उपलक्ष्य मे एक ऐसे स्थायी कोष की स्थापना की जाए जिसके ब्याज से आर्य समाज के प्रचारको, वृद्ध उपदेशको विधवाओ एवं निराश्रित महिलाओ तथा सुयोग्य छात्रों की सहायता की जा सके। गोरक्षा के लिए तथा धर्मान्तिरण को रोकने के लिए ठोस योजना कार्यान्वित की जा सके। इस स्थायी कोष का निर्माण सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत होगा।

—अभिनन्दन समारोह समिति

बापू साहब बाघमारे दिवगत

महाराष्ट्र प्रतिनिधि सभा के प्रचार अधिष्ठाता बापू साहब बाघमारे की 2[illegible] मई [illegible] अस्पताल मे कैंसर से मृत्यु हो गई। बाघमारे जी ने पुलिस इस्पेक्टर के रूप मे सामाजिक जीवन आरम्भ किया और पुलिस अधीक्षक पद से निवृत्त होने के अनन्तर वे आर्य समाज की सेवा मे जट गए। उन के निधन से न केवल महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा अपितु समस्त आर्य जगत की महान क्षति हुई है। वे महाराष्ट्र के प्रसिद्ध आर्य परिवार जो बाघमारे परिवार के नाम से प्रसिद्ध है, से सम्बद्ध थे। उनके बडे भाई श्री शेषराव ने अपनी जवानी के दिनो मे कुश्ती मे एक बाघ को पछाड दिया था, इसीलिए उनके परिवार के साथ 'बाघमारे' विशेषण जुड गया। शेषराव जी बाद मे महात्मा आनन्द मुनि बनकर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान बने। श्री बापूराव बाघमारे हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी तीनो भाषाओ मे बहुत अच्छे भाषण देते थे, जीवन के अन्तिम दिनो मे वे अहर्निश वैदिक धर्म के प्रचार मे ही सर्वथा लगे रहते थे।

'आर्यजगत्' के नए ग्राहक

हरियाणा उपसभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता प्रो० वेद सुमन वेदालंकार ने आर्य जगत् के अच्छी संख्या ग्राहक बनाये। आर्य जनता सूचित करते हुये प्रसन्नता हो[illegible] है कि आर्य प्रादेशिक प्रतिनि[illegible] उपसभा के वेद प्रचार अधिष्ठा[illegible] प्रो० सुमन जी ने विभिन्न स्थान[illegible] ६५ के लगभग 'आर्य जगत्' ग्राहक बनाये है। उन्होने भ[illegible] मे भी और ग्राहक बनाने का संकल्प लिया है। मैं उनका धन्यवाद करता हूं। मेरी अन्य कार्य-कर्त्ताओ से [illegible] प्रार्थना है कि वे आर्य जगत् ग्राहक बनाने का संकल्प लेवें। आर्य जगत् के ग्राहको की प्रगति [illegible] सकती है।

—रामनाथ सह[illegible]
मंत्री सभा

परामर्शदाता-अमर स्वामी सरस्वती | सम्पादक-क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक-रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

वरुण देव का स्वरूप और उससे प्रार्थना

—मनोहर विद्यालंकार—

स्वरूप — 1. सर्वं तद्राजा वरुणो विचष्टे यदन्तरा यत्परस्तात् । अथर्व 4-16-5

इस द्यावा पृथिवी के मध्य और इसके परे जो कुछ है उस सबको राजा वरुण विशेष रूप से जानता है। वरुण सर्वज्ञ तथा सर्वव्यापक परमेश्वर का प्रतिनिधि होने से उसी के सदृश शक्तिशाली है।

2 वरुणो ऽपामधिपति स मावतु । अथर्व 5-24 4

वरुण कर्म व्यवस्थापक और संसार सागर का अधिष्ठाता है। उस की दृष्टि और पकड़ से कोई बच नही सकता। वह मुझ पर कृपा करे।

3 हृत्सु क्रतु वरुणो अप्स्वग्नि दिवि सूर्यमदधात्सोममद्रौ। ऋक् 5-85-2

हृदय मे संकल्प, जल मे अग्नि, निराधार द्युलोक मे सूर्य और पर्वत पर सोम औषध जैसी श्रेष्ठ और विचित्र वस्तुओ की स्थापना भी उसी वरुण ने की है।

4. न मे दासो नार्यो महित्वा व्रत मीमाय यदहं धरिष्ये। अथर्व 5-11-3

मेरे व्रतो का, दास या आर्य कोई भी अपनी महत्ता से उल्लघन नही कर सकता।

प्रार्थना—1 अहेलमानो वरुणेह बोधि उरुशंस मा न आयु प्रमोषी ॥ ऋक् 1-24 11

हे बहुप्रशसित वरुण, हम अबोधो को विना क्रोध किये बोध दे, और हमारी आयु को मत चुरा - कम मत कर।

2. स्तेनो वा यो दिप्सति नो वृको वा त्वं तस्माद्वरुण पाह्यस्मान्। ऋक् 2-28-10

हे वरुण, कोई तस्कर या रिश्वत खोर मुझे दुख देना चाहता हो तो उससे मेरी रक्षा कर।

3 शतेन पाशैरभिधेहि वरुणैनं मा ते मोच्यनृतवाङ् नृचक्ष अथर्व 4-16-7

हे सर्व द्रष्टा वरुण, तुझ से कोई असत्यवादी छूट न जावे। उन्हे अपने किसी न किसी बन्धन मे जकड़ ले।

4. यदेमि प्रस्फुरन्निव दृतिर्न ध्मातो अद्रिवः। मृला सुक्षत्र मृलय। ऋक् 7-89-2

मैं वायु पूरित धौकनी के समान जब अभिमान से भरकर फड़फड़ाने लगूं, तब हे आदृत और समर्थ वरुण, मुझे मसल कर शान्त और सुखी कर। (मृडक्षोदे सुखेच)।

5 देहि नु मे यन्मे अदत्तो असि युज्यो मे सप्तपद सखासि ॥ अथर्व 5-11-9

हे वरुण ! मुझे अब तक जो कुछ नही दिया है वह दे। क्योकि तू मेरा सप्तपदी के बाद बने पति पत्नी के सदृश, अन्तरंग, अटूट और संयुक्त सखा है।

मित्र व वरुण का संयुक्त स्वरूप

स्वरूप – 1. ऋतस्य गोपावधि तिष्ठथो रथं सत्यधर्माणा परमे व्योमनि। यमत्र मित्रावरुणावथो युवं तस्मै वृष्टिर्मधुमत्पिन्वते दिवः ॥ ऋक् 5 63-1

सत्य धर्म वाले और ऋत के रक्षक प्राणापान जिसके शरीर मे अधिष्ठित रहकर उसे बढाते है उस पर सदा द्युलोक से मधुर वर्षा होती है, और वह फलता फूलता रहता है।

2. कस्तद्वां मित्रावरुणा चिकेत। ऋतं पिपर्त्यनृतं नितारीत। ऋक् 1-152-3

हे मित्रा वरुण ! आपके इस स्वरूप को कौन जानता है ? कि आप मे से एक ऋत को धारण करता है, और दूसरा अनृत को निकालता है।

3 धर्मणा मित्रावरुणा विपश्चिता व्रता रक्षेथे असुरस्य मायया। ऋतेन विश्वं भुवनं विराजथः सूर्यमाधत्थो दिवि चित्र्यं रथम्। ऋक् 5-63-7

हे मित्रावरुण ! आप स्वभाव से विवेचक और प्रज्ञा से प्राणी के व्रतो के रक्षक हो। ऋत के द्वारा विश्व के राजा हो, और सूर्य को आपने विचित्र रथ पर स्थापित किया हुआ है।

4 विश्वस्य हि प्रचेतसा वरुण मित्र राजथः। ईशाना पिप्यत धियः ॥ ऋक् 5 91-2

हे मित्रा वरुण ! आप विश्व के प्रकृष्ट ज्ञाता व राजा हो। इसलिये बुद्धि युक्त कर्मो को बढ़ाते हो।

प्रार्थना—1. आ मा मित्रावरुणेह रक्षतम्- मा मा पद्येन रपसा विदत्सक.। ऋक् 7-50-1

हे मित्रा, वरुण (प्राणापान) मेरी रक्षा करो, मुझे आचरण सम्बन्धी अपराध के कारण कोई छद्मगामी रोग न लगे।

2 ऋतस्य मित्रावरुणा पथा वामपो न नावा दुरिता तरेम। ऋक् 7-61-7

हे मित्रा वरुण ! आपके द्वारा प्रदर्शित ऋत के पथ से चलने वाले हम जैसे नदी को नाव से वैसे ही, सब दुरितो (रोगो) को तर जावे।

3. राया वयं ससवांसो मदेम-ता धेनु मित्रावरुणा युवं नो धत्तमा। यजु 7-10

हे मित्रा वरुण ! आप ऐसी धारण शक्ति दीजिये, जिससे हम धन द्वारा प्राप्त भोगो को भोगते हुए सदा प्रसन्न व सुखी रहे।

4 स्वधास्तु मित्रावरुणा विपश्चिता प्रजावत्क्षत्रं मधुनेह पिन्वतम्। बाधेथा दूरं निर्ऋतिं पराचैः कृतं चिदेनः प्रमुमुक्तमस्मत् ॥ अथ 6-97-2

हे विद्वन् मित्र और वरुण ! मैं आपके लिये स्वधा प्रस्तुत करता हूं, अर्थात् अपने अन्दर आप दोनो को धारण करता हूं। आप मुझे प्रजोत्पादन समर्थ वीर्य से और माधुर्य से सिंचित कर दीजिये। आप हम से कष्टो और दुखो को दूर रखिये, और यदि कोई अपराध हो गया है तो उससे मुक्त कीजिये।

मित्र वरुण और अर्यमा के सामञ्जस्य का परिणाम

1. ते न सन्तु युज सदा वरुणो मित्रो अर्यमा। वृधासश्च प्रचेतस। ऋ० ८-83-2

हे वरुण मित्र और अर्यमा देव, सदा मेरे सहयोगी बने रहे, क्योकि इनकी चेतना प्रकृष्ट है, और ये सबको बढाने मे समर्थ है।

2 न तमंहो न दुरितं देवासो अष्ट मर्त्यम्। सजोषसो यमर्यमा मित्रो नयन्ति वरुणो अति द्विष ॥ ऋक् 10-126-1

अर्यमा, मित्र और वरुण सहयोगी बनकर जिसे रोगो और शत्रुओ से बचाकर ले जाते है, हे ज्ञानी तथा अनुभवी लोगो ! उस मनुष्य को न तो कोई दुराचरण और न कोई रोग या पाप छू सकता है।

3 विश्वे हि विश्ववेदसो वरुणो मित्रो अर्यमा। व्रता पदेव सश्चिरे पान्ति मर्त्यं रिषः ॥ ऋक् 5-67-3

4 ते हि सत्या ऋतस्पृश ऋतावानो जने जने। सुनीथास सुदानवोऽंहोश्चिदुरुचक्रय ॥ ऋक् 5-67-4

ये वरुण-मित्र-अर्यमा तीनो सत्य और ऋत से सम्पन्न तथा सर्वविद् है, प्रत्येक जन मे रहकर उसके ऋत को स्वीकार करते है। प्रत्येक कर्म मे संयुक्त होकर उसे आवश्यक वस्तु प्रदान करते है, मार्ग दर्शन करते हैं, बड़े-बड़े कार्यों की प्रेरणा करते हैं, और हिंसा तथा पाप एवं रोग तथा दोष से रक्षा करते है।

5 तद्वार्यं वृणीमहे वरिष्ठं गोपयत्यम्। मित्रो यत्पान्ति वरुणो यदर्यमा ॥ ऋक् 8 25-13

हम उस वरणीय, श्रेष्ठ रक्षण और धन की याचना करते है, जिसकी वरुण, मित्र और अर्यमा मिलकर रक्षा करते है। यदि यह रक्षण पूर्ण रूप से मिल जाए तो अन्य वस्तु की कामना के विना ही सब प्रकार की सिद्धि हो जाती है।

पता—५२२, ईश्वर भवन खारी बावली, दिल्ली-६

सरदार स्वर्णसिंह का वक्तव्य राष्ट्र-विरोधी

—प्रो० शेरसिंह

सरदार स्वर्णसिंह जैसे पुराने राष्ट्रवादी कहे जाने वाले लोग भी आतकवादियो द्वारा की गई हत्याओ के बारे मे कहे कि ५ प्रतिशत आतकवादियों द्वारा और ९५ प्रतिशत पुलिस द्वारा की गई तो आश्चर्य भी होता है और दुख भी। उन्होने भिंडरवाला की प्रशसा भी की। सरदार खुशवतसिंह भी दोनो तरह की बोलिया बोलते रहते हैं आतंकवाद तथा राष्ट्रद्रोह की निन्दा भी और दूसरे ही क्षण उसको प्रोत्साहन भी ! अमृतसर मे आप्रेशन ब्लू स्टार के पश्चात् सेना से हथियार और वाहन लेकर भागने वाले सैनिको को आजाद हिन्द फौज के सैनिको के समकक्ष बनाकर क्या वे साम्प्रदायिक विद्रोहियो को स्वतन्त्रता सेनानी घोषित नही कर रहे ? अकाली नेतृत्व के लिये जो संघर्ष चल रहा है, उसमे किसी धड़े से भी तर्क सगत रवैये की अपेक्षा करना गलत होगा। पजाब के बाहर बसे हुए सिखो को पजाब मे आने की दावत देकर सन्त लौंगोवाल ने खालिस्तानी विचार की पुष्टि की है। स० जोगिन्द्रसिंह और लौंगोवाल सभी हत्याओ का दोष सरकार पर डाल रहे हैं। उनमे से किसी से भी बात करना आतंकवाद को बढ़ावा देना है।

सुभाषित

भगवती-जागरण का आडम्बर

उत्तर भारत के किसी भी प्रदेश का कोई भी नगर अथवा कस्बा ऐसा नहीं जहां नित्य किसी न किसी मोहल्ले में भगवती जागरण न हो। इसके लिए बड़ा आडम्बर रचा जाता है। देवी का दरबार सजाया जाता है और देवी-देवता के नाम पर न जाने किस-किस की मूर्ति अथवा चित्र रखे जाते हैं। इसका खूब प्रचार किया जाता है और श्रद्धालु भक्त उसमें भारी संख्या में सम्मिलित होते हैं। उल्लेखनीय बात यह है कि इसमें पूजा कथा और भजन के लिए जिनको बुलाया जाता है वे अध्यात्म-विद्या में निरक्षर-भट्टाचार्य होते हैं, किन्तु अपनी गले बाजी अथवा कथा-वाचन में कुशलता के कारण श्रद्धालुओं को भ्रमित करने में सफल हो जाते हैं। गायक लोग प्रायः शराब पीकर रातभर शोर मचाते हैं। अन्धाधुंध धन एकत्रित होता है। रात्रिभर ध्वनि प्रसारक यन्त्रों के माध्यम से मोहल्ले भर की नींद हराम होती है। इस आडम्बर का कोई सामाजिक लाभ भी नहीं। एक मात्र शराबी गवैयों को आर्थिक लाभ होता है। प्रायः इस प्रकार के आयोजनों में मुख्य भूमिका तस्करों और कालाबाजारियों की होती है। नागरिकों को धर्म के नाम पर इस पाखण्ड को रोकने के लिए सन्नद्ध होना चाहिए।

—डा० वेद प्रकाश, मेरठ

सम्पादकीयम्

राष्ट्रीय एकता की बुनियादें : (१)

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् हमारे संविधान निर्माताओं ने समस्त राष्ट्र को एकता के सूत्र में आबद्ध करने के लिए संविधान में ऐसी धाराएं रखी थीं जिन पर अमल किया जाता तो काफी हद तक राष्ट्र को विघटनकारी प्रवृत्तियों की ओर बढ़ने से रोका जा सकता था। परन्तु जिनके हाथ में राष्ट्र की बागडोर थी उन्होंने उन धाराओं पर आचरण नहीं किया हालांकि उनका सारा जीवन राष्ट्रीय एकता के लिए संघर्ष करते हुए ही बीता था। हमें अपने उच्चतम न्यायालय का इस बात के लिए धन्यवाद करना चाहिए कि उसने समस्त देशवासियों का इस असंगति की ओर ध्यान खींचा है।

पिछले दिनों शाहबानो बेगम के केस में उच्चतम न्यायालय ने जब यह फैसला दिया कि किसी भी तलाकशुदा औरत को अपने पति से इद्दत की अवधि बीत जाने के पश्चात् भी भरण-पोषण का खर्च पाने का हक है, तब जनता पार्टी के मंत्री सैयद शहाबुद्दीन से लेकर संसत्सदस्य श्री सुलेमान सेठ तक लगुडहस्त होकर उच्चतम न्यायालय के विरुद्ध जिहाद का नारा लगाने लगे कि इस प्रकार का फैसला मुस्लिम पर्सनल ला में हस्तक्षेप है। परन्तु उच्चतम न्यायालय ने तो न्यायालय द्वारा दिए गए इसी प्रकार के पहले दो फैसलों की पुष्टिमात्र की थी। इस बार के फैसले में न्यायाधीशों ने जो एक [illegible] बात कही है उसके लिए तो राष्ट्रीय एकता के समस्त पुजारियों को न्यायाधीशों का विशेष धन्यवाद करना चाहिए। न्यायाधीशों का कहना है कि संविधान का 44 वां अनुच्छेद निर्देशात्मक सिद्धान्तों का भाग है। इस अनुच्छेद के अनुसार सरकार का यह कर्तव्य है कि वह समान नागरिक संहिता लागू करे, परन्तु इस ओर ध्यान नहीं दिया गया इसलिए अब न्यायालय को ही सुधारक की भूमिका भी निभानी पड़ेगी।

आश्चर्य की बात यह है कि नेहरू जी जैसे राष्ट्रीय एकता के समर्थक और सामाजिक सुधारों के प्रबल पक्षधर व्यक्ति ने भी अपने शासनकाल में समान आचार संहिता की दिशा में कोई विशेष प्रयत्न नहीं किया। राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद के तीव्र विरोध के बावजूद उन्होंने हिन्दू कोड बिल तो पास करवाया, परन्तु इंडियन कोड बिल नहीं, जब कि जरूरत इंडियन कोड बिल की थी। नेहरू जी के बाद अन्य कोई प्रधान मंत्री भी उस विषय में ध्यान नहीं दे पाया। यदि सामाजिक रीति रिवाजों में सुधारों की आवश्यकता थी तो वह सभी सम्प्रदायों के लिए थी, केवल हिन्दुओं के लिए ही थोड़ी थी।

नेहरू जी या अन्य नेता समान आचार संहिता की ओर कारगर कदम नहीं उठा सके तो उसका कारण सम्भवतः संविधान में उक्त अनुच्छेद के पारित होने के समय कुछ मुस्लिम नेताओं द्वारा उसका विरोध किया जाना था। उस समय संविधान सभा के 5 मुस्लिम सदस्यों ने उसका विरोध करते हुए कहा था कि समान आचार संहिता वाले अनुच्छेद (44) से संविधान के ही एक दूसरे अनुच्छेद (19) का उल्लंघन होता है जिसके अन्तर्गत प्रत्येक नागरिक को अपने अन्तःकरण और अपने विचारों की स्वतंत्रता का, किसी भी धर्म को मानने का और उसके प्रचार की स्वतन्त्रता का हक है। तर्क यह दिया गया था कि यदि 44 वां अनुच्छेद मान लिया जाए, तो 19 वें अनुच्छेद में प्राप्त अधिकार छिन जाएगा। एक मुस्लिम सदस्य ने तो साफ साफ कहा था कि सारे देश में समान आचार संहिता लागू करने का क्या यह अर्थ है कि आप सब पर मिताक्षरा और दायभाग लागू करना चाहते हैं? परन्तु अन्त में सब मुस्लिम नेताओं ने इस बात पर सहमति व्यक्त की कि "एक समान नागरिक संहिता हमारा लक्ष्य होना चाहिए। परन्तु यह धीरे धीरे और उससे प्रभावित होने वाले लोगों की रजामंदी से लागू होनी चाहिए।"

तब श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी ने यह स्पष्ट किया था कि संविधान के उक्त दोनों अनुच्छेद में विरोध नहीं है, क्योंकि सामाजिक कल्याण के सम्बंध में कानून बनाने का अधिकार मूलतः संसद को रहेगा ही। उन्होंने कहा कि ब्रिटिश शासन के समय जब गुजरात में शरियत कानून लागू किया गया तो खोजा और कच्छी मेनना उससे असंतुष्ट थे, क्योंकि वे पीढ़ियों से हिन्दू रीति रिवाज मानते आ रहे थे। परन्तु केन्द्रीय धारा सभा के मुस्लिम नेताओं के आग्रह के कारण खोजा और कच्छी समुदाय को अनिच्छापूर्वक उसे मानना पड़ा।

इसके अलावा प्रमुख विधि वेत्ता श्री अल्लादि कृष्ण स्वामी अय्यर ने कहा कि अंग्रेजों ने अपराधों के सम्बन्ध में हिन्दू और मुसलमान पर समान रूप से ताजीरात हिन्द लागू किया। उन्होंने इस विषय में कुरान के कानून की परवाह नहीं की। तब किसी मुस्लिम नेता ने ताजीरात हिन्द का विरोध नहीं किया था।

संविधान निर्माण में सबसे अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले डा० अम्बेडकर ने यह रहस्योद्घाटन भी किया कि ब्रिटिश काल में मुस्लिम शरियत कानून सब मुसलमानों पर लागू नहीं था। सन् 1935 तक सीमा प्रान्त के मुसलमानों पर भी हिन्दू कानून लागू होता था। सन् 1939 में केन्द्रीय धारा सभा ने वहां भी शरियत कानून लागू कर दिया। उन्होंने यह भी बताया कि सन् 1937 तक उत्तर प्रदेश, बम्बई तथा अन्य अनेक क्षेत्रों में उत्तराधिकार के मामले में मुसलमानों पर भी हिन्दू कानून ही लागू होता था। उत्तर मलाबार में, जो मातृसत्ता-प्रधान है, वहां वही कानून हिन्दुओं और मुसलमानों, दोनों पर समान रूप से लागू होता था। अन्त में उन्होंने निष्कर्ष रूप में यह सुझाव दिया कि सबके लिए समान नागरिक संहिता बननी चाहिए, पर संसद यह प्रावधान कर सकती है कि यदि कोई मुसलमान सरकारी अधिकारी के सामने जाकर व्यक्तिगत रूप से यह बयान दे दे कि मुझ पर शरियत कानून लागू होना चाहिए, तो उसके बाद उस पर और उसके उत्तराधिकारियों पर शरियत कानून ही लागू होगा, समान नागरिक कानून नहीं। सन् 1937 में उत्तर पश्चिमी सीमा प्रान्त में यही व्यवस्था की गई थी।

डा० अम्बेडकर के इस व्यवहारिक सुझाव को बड़ी आसानी से लागू किया जा सकता है। राष्ट्रीय एकता के लिए यह आवश्यक है कि राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक के लिए समान आचार संहिता लागू हो। यदि कोई व्यक्ति उसे अपने ऊपर लागू नहीं करवाना चाहता, शरियत वाला कानून ही लागू करवाना चाहता है, तो वह सरकारी अधिकारी के सामने अपना हलफिया बयान दे, और भविष्य में उस पर तथा उसके उत्तराधिकारियों पर, जब तक उत्तराधिकारी उसके विरुद्ध और समान आचार संहिता के पक्ष में अपना बयान न दर्ज करवाएं, तब तक मुस्लिम शरियत वाला कानून ही लागू हो जिसमे चोरी करने पर हाथ काटने और व्यभिचार करने पर संगसार करने की बात भी शामिल है।

मिस्र भी मुस्लिम देश है, पर वहां पहली पत्नी और न्यायालय की अनुमति के बिना कोई दूसरा विवाह नहीं कर सकता। ट्यूनीशिया ने एक ही प्रहार से बहु पत्नी विवाह पर रोक लगा दी है। अब वहां कोई भी तीन बार तलाक शब्द का उच्चारण करके इकतरफा तलाक नहीं दे सकता। पाकिस्तान ने भी परिवारिक कचहरियों की स्थापना करके तलाक को अब इतना आसान नहीं रहने दिया है। इसका अर्थ यह है कि जिसे मुस्लिम पर्सनल ला कहा जाता है, वह इस्लाम धर्म का अंग नहीं, केवल ऐसा 'पर्सनल' विधान है जिसमें समय और आवश्यकता के अनुसार परिवर्तन किया जा सकता है। इसलिए राष्ट्रीय एकता के लिए बुनियादि शर्तों में समान आचार संहिता के महत्व को समझते हुए शरियत के तथाकथित कानून को उसमें बाधक नहीं बनने देना चाहिए।

इस पर समझदार मुस्लिम बन्धु सोचें, सरकार भी सोचे, और राष्ट्रीय एकता के उपासक समस्त राष्ट्रवादी भी सोचें।

पाक-आक्रमण की संभावना मिथ्या नहीं

कांग्रेस के राष्ट्रवादी विकल्प की आवश्यकता

—प्रो० बलराज मधोक—

[२५-२६ मई को अ० भा० जनसंघ के भिलाई में हुए राष्ट्रीय अधिवेशन के अध्यक्ष पद से दिए गए भाषण का सारांश]

पिछले दो वर्षों में हिन्दुस्तान में बहुत उथल-पुथल हुई है। पंजाब में राष्ट्र विरोधी हिंसक तत्वों के दमन के लिये सैनिक कार्रवाई करनी पड़ी। प्रतिशोध रूप में ३१ अक्टूबर १९८४ को प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की हत्या कर दी गई। श्रीमती गांधी के स्थान पर उनके पुत्र राजीव गांधी प्रधानमंत्री बने। उन्होने दिसम्बर १९८४ में लोकसभा के चुनाव कराए। इस चुनाव में विपक्ष का सफाया हो गया और तेलगू देशम् दल लोकसभा में सबसे बड़े विरोधी दल के रूप में सामने आया। कांग्रेस ने ५०८ में से ४०१ स्थानों पर विजय प्राप्त करके अपने सारे पुराने रिकार्ड तोड़ दिये।

गत दिसम्बर के चुनाव में कांग्रेस की जीत का प्रमुख कारण राष्ट्रवादी हिन्दुओं द्वारा उसका भरपूर समर्थन था। राष्ट्रविरोधी मुसलमान तथा केशधारी सिक्ख कांग्रेस के विरुद्ध एकजुट हो गए थे। पंजाब और कश्मीर में अकाली तथा मुस्लिम उग्रवादी देश की एकता और अखंडता को खुली चुनौती दे रहे थे। केन्द्र में अस्थिरता की स्थिति पैदा होने की आशंका हो गई थी। इस लिए जिन मतदाताओं ने गत ३५ वर्षों में कांग्रेस को कभी समर्थन नहीं दिया था, पहली बार कांग्रेस के पक्ष में मतदान किया।

इससे यह बात स्पष्ट हो गई कि देश में राष्ट्रवाद की भावना अभी जीवित है। संकट के समय में राष्ट्रवादी लोग दलगत भावना पर राष्ट्रीय हितों को वरीयता देने की सूझबूझ रखते हैं। कांग्रेस राष्ट्रवादी नारो के बल पर जीती अवश्य परन्तु उसका नेतृत्व इसकी नीतियों को राष्ट्रवादी दिशा देने में फिर असमर्थ सिद्ध हुआ है।

आज देश में कांग्रेस के राष्ट्रवादी विकल्प के निर्माण के रास्ते में "आर्य जगत्" के यशस्वी सम्पादक के शब्दों में प्रमुख कारण राष्ट्रवादी संगठनों और उनके कुछ नेताओं की "निष्ठा और अहंवाद का द्वन्द्व" है। इस सम्बन्ध में उनका निम्न विश्लेषण विचारणीय है; "विगत ३८ वर्षों में केन्द्रीय शासन जिस दिशा की ओर अग्रसर है उसकी वह दिशा यदि न बदली गई तो इसमें सन्देह नही कि इस देश में कम्यूनिज्म अथवा जड़वाद के साथ-साथ इस्लाम और ईसाइयत का अधिपत्य हो जाएगा। तब राष्ट्रवाद को साम्प्रदायिकता समझ कर उसे समूल नष्ट करने का प्रयत्न किया जाएगा। उस अशुभ घड़ी को न केवल टालने अपितु उसको न आने देने के लिये ही राष्ट्रीय संगठन की आज नितान्त आवश्यकता है। अतः भारतवासियों का, विशेषतया हिन्दुओं का, यह परम कर्तव्य है कि वे इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर गंभीरता से विचार करें। ऐसा राष्ट्रीय संगठन आवश्यक है जो आकल्पान्त भारत की सनातन परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रख सके तथा पथभ्रष्ट शासकों को भी सन्मार्ग पर ला सके।

"ऐसा सुदृढ़ राष्ट्रीय संगठन ही वर्तमान तथा भावी सभी समस्याओं का समाधान प्रस्तुत कर सकता है। उस संगठन के आधार पर ही हमारी जाति शक्ति सम्पन्न हो उन्नति के शिखर पर आरूढ़ हो सकती है। अन्यथा आज इस देश में जिस अवसरवादिता के साथ-साथ साम्प्रदायिकता का नग्न नृत्य हो रहा है वह इसको रसातल में ले जाने में सहायक हो सकता है, किसी प्रकार के उद्धार में नहीं। इस अवसरवादिता को खत्म करना ही आज की प्रथम आवश्यकता है। यह काम निष्ठावान् व्यक्ति ही कर सकता है, अहंवादी अथवा "ईगोइस्ट" नहीं। वह निष्ठा हिन्दू के अतिरिक्त अन्य किसी में कितनी है, यह किसी से छिपा नहीं है।

"फिर क्या कारण है कि सभी हिन्दुत्वनिष्ठ दल एक मंच पर एकत्र नही हो सकते ? इसका एक ही उत्तर है, वह है—अहं भावना। यह अह्‌म ही विघटन के लिए उत्तरदायी है। आज निष्ठा और अहं में द्वन्द्व हो रहा है। स्पष्ट है कि आज के तथाकथित अग्रणियों में अहं का जितना जमाव है निष्ठा का उतना ही अभाव है। अतः ऐसे तथाकथित अग्रणियों एवं अहंवादियों का तिरस्कार एवम् बहिष्कार कर निष्ठावान लोगों को प्रतिष्ठित करना ही इस समय देशवासियों का परम कर्त्तव्य है।"

सभी राष्ट्रवादियों का कर्त्तव्य है कि वे इस उद्धरण पर गंभीरता से विचार करें, अहम् भाव से छोटे-मोटे मनमुटावों, पूर्वाग्रहों व दुराग्रहों से ऊपर उठें और समय रहते एक राष्ट्रीय विकल्प प्रस्तुत करें और यदि ऐसे राष्ट्रवादी संगठन को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्व-हिन्दू परिषद् और आर्य समाज जैसी संस्थाओं का नैतिक समर्थन मिले और उसके नेतृत्व की छवि निर्मल हो, तो ऐसा संगठन कुछ ही महीनों में देश पर छा सकता है। यदि चिन्तन राष्ट्रवादी होगा तो ऐसे राष्ट्रीय विकल्प की विचारधारा और नीति-रीति तय करने में कोई कठिनाई नहीं होगी।

राष्ट्रवादी विकल्प की नीतियां

आर्थिक क्षेत्र में राष्ट्रवादी विचारधारा का उद्देश्य देश के जन-जन का कल्याण होगा। इसके लिये आवश्यक है कि जनता में सरकारी वैसाखी के बिना अपने पांव पर खड़ा होने और स्वावलम्बी बनने का भाव जगे। हमारी आर्थिक नीतियां इस उद्देश्य में साधक हों, बाधक नहीं। समाजवाद सारी आर्थिक शक्ति सरकार के हाथ में केन्द्रित कर हर व्यक्ति को सरकार पर निर्भर कर देता है। इसलिये जन कल्याण और लोकतंत्र दोनों के लिये समाजवाद घातक होता है। इसलिये राष्ट्रवादी विकल्प को समाजवाद के नारे का मोह छोड़ कर व्यावहारिक नीतियां अपनानी होंगी।

आंतरिक नीति के क्षेत्र में राष्ट्रवादी विकल्प का पहला उद्देश्य देश में राष्ट्रवाद की भावना को सबल बनाना होगा। हमारे देश में अनेक भाषाएं, पंथ और उपजातियां हैं, यह एक वास्तविकता है। इसके विघटनकारी प्रभाव को काटने का एकमात्र कारगर उपाय जोड़ने वाले तत्वों को, जिन्हें सामूहिक रूप में राष्ट्रवाद कहा जाता है, प्राथमिकता देना है। बल एकता और समानता पर होना चाहिए, भेद और विविधता पर नहीं।

लोकतंत्र का मूल ग्राम पंचायतें और अन्य छोटी इकाइयां हैं। इसलिये राजनैतिक सत्ता का ग्राम तक विकेन्द्रीकरण करना आवश्यक है। मुख्य प्रश्न केन्द्र और राज्यों के बीच अधिकारों का बंटवारा नहीं, अपितु राज्यों और उनके अन्तर्गत नगर-निगमों, नगर—पालिकाओं जिला परिषदों और ग्राम पंचायतों में अधिकारों और साधनों का समुचित बंटवारा है।

भारत में संसदीय लोकतंत्र का वर्तमान रूप, इसकी चुनाव-पद्धति और चुनावों में जाति-बिरादरी, सम्प्रदाय, धन और सरकारी तंत्र के दुरुपयोग के कारण अति विकृत हो चुका है। इस पर भारत की आवश्यकताओं, परम्पराओं और राष्ट्र की एकता को बनाए रखने का ध्यान रखते हुए पुनर्विचार करना आवश्यक हो गया है।

सम्प्रदाय-निरपेक्षता

भारत में सम्प्रदाय-निरपेक्षता की दुहाई देना भारतीय परम्परा और इतिहास का उपहास करना है। हिन्दू राज्य कभी मजहबी राज्य नहीं हुआ। इसलिए हिन्दुओं को 'सेक्यूलरवादी' बनने की बात कहना उनका अपमान करना है। मुसलमान और ईसाइयों का मजहब सेक्यूलरवाद का विरोधी है। वे सर्व पंथ समभाव में विश्वास नहीं रखते। इसलिये आवश्यकता है कि वे सर्वधर्म-समभाव को अपनाएं। इस दिशा में अभी तक कुछ नहीं किया गया। मुसलमानों के लिये मजहब के नाम पर अलग सिविल कानून को कायम रखने और वोटों के लिये उनके तुष्टीकरण से उनमें सम्प्रदाय-निरपेक्षता का भाव पैदा होने की बजाय सम्प्रदायवाद और अलगाववाद का भाव जोर पकड़ गया है। इसीलिए वे खुलकर वर्तमान खंडित हिन्दुस्तान को भी पाकिस्तान की तरह का इस्लामी राज्य बनाने की बात करने लगे हैं। फलस्वरूप कांग्रेस का सम्प्रदाय-निरपेक्षवाद हिन्दुस्तान के इस्लामीकरण का माध्यम बन गया है।

राष्ट्रवादी विकल्प इस सेक्यूलरवाद के स्थान पर भारतीय उद्गम वाले सभी पंथों के प्रति समभाव की

(शेष पृष्ठ ६ पर)

परिवार कल्याण में भी भेदभाव

क्या गरीबी व बेकारी ऐसें दूर होगी ?

—ओमप्रकाश त्यागी—

भारत सरकार ने स्वतंत्रता के पश्चात् अनेक जन हित की घोषणाएं की हैं जिनमें से सबसे सुन्दर घोषणा यह है कि सरकार देश से गरीबी और बेकारी को दूर करेगी ताकि सभी लोग सम्मान पूर्वक जीवन व्यतीत कर सकें। इसी लिए सरकार ने पाकिस्तान की नकल कर भारत को हिन्दू राष्ट्र नहीं बनाया, बल्कि इसे सम्प्रदाय-निरपेक्ष देश घोषित किया ताकि भारत के किसी निवासी को अपने पूजा पाठ और नमाज आदि में बाधा न हो। सरकार ने अपनी घोषणा के अनुसार गरीबी और बेकारी को दूर करने का कम प्रयत्न नही किया। परन्तु समस्या इतनी बड़ी है कि अभी तक उसका पूरा समाधान सम्भव नहीं देश में गरीबी और बेकारी निरन्तर बढ़ते जाने का मुख्य कारण यह है कि यहाँ की जनसंख्या वृद्धि के साथ शिक्षा-संस्थाओं की सहायता से ग्रेजुएटों की संख्या भी बढ़ी है। इसके अतिरिक्त गांवों के नवयुवक अब गांवों में न रहकर शहरों में रहना चाहते हैं। जो गांवों में रह भी रहे हैं उनके पास पर्याप्त भूमि न होने के कारण उनका निर्वाह नहीं हो सकता है। इसीलिए वे शहरों में आकर नौकरी करते हैं। नौकरी न मिले तो समाज विरोधी कार्यों में फंस जाते हैं। डकैतों में अब अनपढ़ नहीं, पढ़े-लिखे लोग ही अधिक शामिल हैं।

गरीबी और बेकारी को बढ़ाने वाली जन-वृद्धि को सरकार ने परिवार-नियोजन के कार्यक्रम से रोकना चाहा। परन्तु खेद इस बात का है कि सरकार मुसलमानों से डर गई और देश की जनता के लिए एक जैसी आचार संहिता नहीं बनी। मुसलमानों ने कह दिया कि यह उनके धर्म के विरुद्ध है। सरकार ने यह जानने का प्रयत्न नहीं किया कि इस्लाम के कौन से विधि विधान का उससे खण्डन होता है।

अब पाकिस्तान, बंगलादेश तथा इण्डोनेशिया अपने यहाँ परिवार नियोजन का कार्यक्रम चला सकते हैं तो भारत सरकार को सभी धर्मों और सम्प्रदायों पर समान रूप से इसे लागू करने में अड़चन क्यों होती है। परन्तु सरकार ने ऐसा नही किया। इसका कुपरिणाम यह हुआ यह कार्यक्रम केवल हिन्दुओं पर लागू हुआ। सभी पढ़े-लिखे और बे पढ़े हिन्दुओं ने इसे स्वीकार कर लिया। गरीब लोग धन के लोभ में आ गए।

परिवार नियोजन के द्वारा केवल हिन्दुओं की ह्रास लीला देख आर्य समाज जैसे संस्था ने भी इसका विरोध किया। आर्य नेताओं का मुख्य आग्रह इस बात पर था कि यह कार्यक्रम देश के सभी वर्गों पर लागू होना चाहिए। परन्तु वर्तमान समय मे मात्र हिन्दुओं पर कार्यशील होने के कारण भारत का हिन्दू समुदाय संख्या की दृष्टि से ह्रास की ओर अग्रसर है। अतः सरकार को सबके लिए एक सा कानून बनाना चाहिए।

सरकार का एक पूरा विभाग परिवार कल्याण के इसी काम मे लगा हुआ है। सरकार के समस्त संचार साधन केवल हिन्दुओं को प्रभावित करते हैं, अन्य को नहीं। यही कारण है कि यह कार्यक्रम विफल हो गया है। परिणाम यही है कि देश में गरीबी और बेकारी बढ़ जाने पर देश में एक नही, अनेक समस्याएं पैदा होंगी। गरीबी और बेकारी की समस्या हल करने के लिए चीन सरकार ने एक से अधिक बच्चे की अनुमति नही दी। यह नियम चीन की समस्त जनता पर लागू है। परिणाम यह हुआ कि चीन को सरकार ने जनता की वृद्धि पर नियन्त्रण पा लिया है और गरीबी तथा बेकारी को दूर करने में काफी हद तक सफलता पाई है।

यदि सरकार ने देश के सभी वर्गों के लिए परिवार कल्याण सम्बन्धी समान कार्यक्रम नही बनाया तो देश के लिए हानिकारक होगा। यदि यह खेल ऐसे ही चलता रहा तो २१ वीं सदी के आने तक देश के नक्शे में भारी फेरबदल हो जाएगा। सरकार की इस अदूरदर्शिता के कारण हमें उस कथन में सत्यता मालूम पड़ती है जो—भारत के मुस्लिम संसद सदस्य हज की यात्रा के समय अन्य देशों में शीघ्र ही हम भारत में मुस्लिम सरकार बनायेंगे। क्या भारत सरकार और इस देश का विशाल हिन्दू समाज उस दुर्दिन को इतनी आसानी से आने देगा ? इसलिए सरकार को तुरन्त ही अपनी भूल सुधार कर परिवार कल्याण कानून सब पर लागू करना चाहिए और जो इसका विरोध करे उसे दंडित करना चाहिए।

बनारसीदास चतुर्वेदी के प्रति

काव्यमय श्रद्धाञ्जलि

—आचार्य पं० ओंकार मिश्र "प्रणव"—

पूजा प्रभु की रही जगत् की सेवा करना,
जनता में सद्भाव, सुजनता, शुचिता भरना।
नील गगन हिन्दी के उज्ज्वल बने सितारे,
यतिवर तुमने तन-मन-धन करुणा पर वारे ॥ १ ॥

पंकिल पथ से दूर कमल-सा नियम निभाया,
डिगा न कोई सका कदम जो जहाँ बढ़ाया।
तत्व ज्ञान के बीहड़ वन मे कलम लगाई,
श्री चरणों की तभी लेखनी दासी भाई ॥ २ ॥

बलिदानी वीरो की गीता रहे सुनाते,
नारायण का नाम सदा ही मन में ध्याते।
रहा सर्वदा ध्यान शहीदो परिवारो का,
सीमित सुविधा प्राप्त उन्हीं के घर द्वारों का ॥ ३ ॥

दाम्पत्य का यज्ञ यद्यपि रहा अधूरा,
सुज-वज बुद्धि प्रकाश राम ने पूरा, पूरा।
जीवन का उद्देश्य राष्ट्र का अर्चन भाया,
चन्द्र किरण सम वर 'विशाल भारत' चमकाया ॥ ४ ॥

तुमने देश विदेशो मे सेवा की शहनाई,
रम्य रसीली 'आर्य मित्र, वन खूब बजाई।
वेश अटपटा किन्तु विचार के तुंग हिमालय,
दीन बन्धु सम बने सुखद साहित्य महालय ॥ ५ ॥

कीर्ति-कोकिला गावेगी कल्पान्त तराने,
स्मृतियों के भी भरे रहेंगे शुभ्र खजाने।
तिल भर पल भर भी न घटा बापू से पाया,
मेंहदी सा जो रंग सत्य शान्ति का अपनाया ॥ ६ ॥

श्रद्धा, हे श्रद्धेय ! राष्ट्र का निष्ठा प्यारी,
अंतर से स्वीकार करो हे स्वर्ग-विहारी।
जन-मन दादा जी के तप से आशिष पायें,
लिखे निरन्तर प्रणव-लेखनी गुरु-गाथायें ॥ ७ ॥

पता—शास्त्री सदन, रामनगर (कटरा) आगरा-६

वेद की कुञ्जी —प्रथम समुल्लास

—प्रा० भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य—

यह एक सर्वमान्य बात है कि संसार के पुस्तकालय की वेद प्राचीनतम पुस्तकें हैं। जो कि भारतीय साहित्य, धर्म और जीवन के मूल आधार हैं। सारा भारतीय साहित्य बडे आदर के साथ वेदो को स्मरण करता है। न केवल सस्कृत साहित्य मे अपितु उसके आधार पर बने आधुनिक भारतीय भाषाओ के साहित्य मे भी वेदो की चर्चा मिलती है। गुरुग्रन्थ मे सौ से अधिक बार वेद का नाम ही नहीं आता, अपितु इसके साथ वेद की महिमा भी अनेक स्थानो पर मिलती है। सस्कृत का वैदिक वाङ्मय तो वेद के अन्त बाह्य स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए ही बनाया गया है। भारतीय साहित्य की तरह भारतीय धर्म का सर्वस्व वेद ही हैं। क्योकि भारतीय धर्म का आचार और सिद्धान्त पक्ष जहाँ वेद के अनुरूप है, वहा कर्मकाण्ड की पूजा, यज्ञ, सस्कार, व्रत वेदमन्त्रो द्वारा ही सम्पन्न होते हैं।

जब एक वेदप्रेमी श्रद्धा से भर कर वेद का अध्ययन करता है, तो वह वेद पढ़ कर कई बार उलझन मे पड जाता है कि वेदो मे कही अग्नि को तो कही इन्द्र को लक्ष्य मे रख कर सैकडो मन्त्र आते हैं। किसी प्रकरण मे सोम को, कही वरुण को सम्बोधित करके वर्णन किया गया है। अर्थात् वेदो मे अग्नि, इन्द्र आदि की ही स्तुति और वर्णन है। इनको देवता कहते हैं। इसी लिए यजुर्वेद का अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता वसवो देवता वरुणो देवता १४,२ मन्त्र इस दृष्टि से बहुत ही प्रसिद्ध है। निरुक्त के दैवत काण्ड मे देवता की परिभाषा बताने के बाद स्पष्ट शब्दो मे कहा है कि तिस्रएव देवता अग्नि पृथिवीस्थान वायुर्वा इन्द्रो वा अन्तरिक्षस्थान, सूर्यो द्युस्थान ७,२,१।

इतिहास की पुस्तको मे भी प्राय यही पढ़ाया जाता है कि आर्य अनेक देवी, देवताओ को मानते थे और वेदो मे अग्नि, इन्द्र आदि की स्तुति भरी हुई है। ऐसी स्थिति मे वेद का पढने वाला असमञ्जस मे पड जाता है और ऐसी कुञ्जी ढूढ़ना चाहता है जिस से वेद की वास्तविक स्थिति का पता चल सके।

इस प्रकार की उलझन मे उलझे हुए पाठको को वेद की कुञ्जी' सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास से प्राप्त हो सकती है। सत्यार्थप्रकाश मे सही-सही अर्थो का प्रकाश करते हुए अन्य सैकडो बातो की चर्चा की गई है। जिससे पाठक सही ज्ञान प्राप्त करके अपने जीवन को अच्छा बना सकें। वहा ईश्वर की भी पर्याप्त चर्चा है और वेद को ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध करते हुए कहा है कि ईश्वर का मुख्य नाम 'ओ३म्' है जो व्याकरण और निरुक्त की प्रक्रिया के अनुसार पूर्ण रूप से ईश्वर का ही वाचक सिद्ध होता है। (विस्तार के लिए देखिए लेखककृत 'ओम् शब्द पर एक विचार') ईश्वर के गुण, कर्म और स्वभाव अनन्त हैं। अत अग्नि, इन्द्र, वरुण, सोम आदि अनेक ईश्वर के नाम हैं। अग्नि आदि किस आधार पर [अर्थात् शब्द निर्माण और उपपत्ति के अनुसार] ईश्वर के वाचक हैं, इसका सुन्दर विश्लेषण प्रथम समुल्लास मे किया गया है। ऋग्वेद का इन्द्र मित्र वरुण—१ १६४,४६ मन्त्र इसका स्पष्ट प्रमाण है। इसमें निर्देश है—एक सद् विप्रा बहुधा वदन्ति—अर्थात् एक सत्ता को ही बुद्धिमान् अनेक प्रकार (नामो) से कहते हैं। इसी मन्त्र मे उदाहरणरूपेण नौ शब्द आए हैं। यही बात यजुर्वेद के तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायु (यजु० ३२/१) मन्त्र से भी पुष्ट होती है। महर्षि ने यहा सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति (कठ २.१५) और मनुस्मृति के अनेक प्रमाण देकर इस ओर विशेष ध्यान आकर्षित किया है।

इसके साथ महर्षि ने यहा स्पष्ट शब्दों मे लिखा है कि अग्नि सूर्य, सोम आदि वर्दो में जहा ईश्वर वाचक मिलते हैं, वहाँ भौतिक पदार्थो और जीव आदि के लिए भी आए हैं। वेद मे अग्नि, इन्द्र आदि कहाँ ईश्वर के वाचक हैं और कहाँ अन्य पदार्थों के वाचक हैं, इसका निर्णय वहाँ प्रकरण और विशेषण से ही होता है। अत वेद को समझने की कुञ्जी देते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास मे लिखते हैं—

'क्योंकि ओ३म् और अग्न्यादि नामो के मुख्य अर्थ से परमेश्वर का ही ग्रहण होता है। जैसे कि व्याकरण, निरुक्त, ब्राह्मण, सूत्रादि (ऋषि मुनियों) के व्याख्यानों से परमेश्वर का ग्रहण देखने मे आता है, वैसा ग्रहण करना सबको योग्य है। परन्तु 'ओ३म्' यह तो केवल परमात्मा का ही नाम है और अग्नि आदि नामो से परमेश्वर के ग्रहण मे प्रकरण और विशेषण नियमकारक हैं। इससे क्या सिद्ध हुआ कि जहा-जहाँ स्तुति, प्रार्थना, उपासना सर्वज्ञ, व्यापक, शुद्ध, सनातन और सृष्टिकर्ता आदि विशेषण लिखे हैं, वहीं-वहीं इन नामो से परमेश्वर का ग्रहण होता है।" (सत्यार्थप्रकाश स्वा० वेदानन्द सम्पादित समुल्लास १, पृ० १०-११)

'जहाँ-जहाँ उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय, अल्पज्ञ, जड़, दृश्य आदि विशेषण भी लिखे हो वहा वहां परमेश्वर का ग्रहण नहीं होता, वह उत्पत्ति आदि व्यवहारों से पृथक् है।' १-११।

'और जहाँ-जहाँ इच्छा, द्वेष प्रयत्न, सुख, दुख और अल्पज्ञादि विशेषण हो वहा-वहां जीव का ग्रहण होता है। ऐसा सर्वत्र समझना चाहिए। क्योकि परमेश्वर का जन्म-मरण कभी नही होता। इससे विराट् आदि नाम और जन्मादि विशेषणों से जगत् के जड और जीवादि पदार्थों का ग्रहण करना उचित है।"१-११

प्रथम समुल्लास की ये पंक्तिया वेद को समझने के लिए कुञ्जी का कार्य करती हैं। सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास आदि मे क्रमश: होने वाली चर्चा सामान्य पाठक की समझ मे आती है। इसलिए बहुत से कहते हैं कि पहले द्वितीय समुल्लास से से पढ़ना प्रारम्भ करना चाहिए क्योंकि वह चर्चा जीवन से जुड कर के क्रमश: चलती है। पर वास्तविक स्थिति यह है कि महर्षि दयानन्द वेदों को परम प्रमाण मानते थे और वेद के आधार पर ही सारा विवेचन किया है। प्रथम समुल्लास के प्रथम मन्त्र 'शन्नो मित्र श वरुण —मन्त्र में अनेक नाम आए हैं। वेद की इसी भावना को समझाने के लिए प्रथम समुल्लास में इस रूप में वर्णन है, जो कि मूल भावना को समझे बिना स्पष्ट नहीं हो सकता। उदाहरण के रूप में, १०० से अधिक नामो का व्याकरण और निरुक्त प्रक्रिया से विवेचन किया गया कि वे किस प्रकार परमात्मा के वाचक हैं।

महर्षि का यह विचार केवल कल्पना ही नहीं, अपितु वेद आदि शास्त्रो से सुसगत है। अत इन्द्र मित्र वरुणमग्निमाहु (ऋ० १ १६४४६) सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति (कठ०२ १५) तथा मनुस्मृति के अनेक श्लोक वहाँ उद्धृत किए हैं। इसी लिए ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में भी स्पष्ट शब्दो में लिखा है—तत्रापि ईश्वरानुभवो मुख्योऽस्ति। तत्रापि सर्वेषां वेदाना तात्पर्यमस्ति' (वेद विषय विचार)।

पता साधु आश्रम, होशियापुर

वैदिक धर्म के ...

(पृष्ठ ७ का शेष)

तथा उनके मतानुयायियों के अनुसार 'सोम' शब्द के अशुद्ध अर्थों ने वेद की महिमा को बहुत हानि पहुचाई है। उन के मतानुसार वेद में 'सोम' शब्द का एक ही अर्थ है। वह अर्थ है 'अर्यमा आप' जिन्हें न्यूट्रोन पार्टिकल्स् कहते हैं। सोम के साथ 'पवस्व' शब्द के प्रयोग के विषय में उनका कहना है कि यहाँ पीने से अभिप्राय ग्रहण करना, आत्मसात् करना है।

इस के अनन्तर उन्होंने गीता पर सरल सुबोध भाषा-भाष्य लिख कर प्रकाशित करवाया गीता अध्यात्म विद्या का ग्रथ म ना जाता है। गीता के अनुसार किसी भी कार्य को करने से पूर्व धर्माधर्म का विचार अवश्य कर लेना चाहिए। श्री कृष्ण हिंसा-अहिंसा का विचार छोड कर कर्म के उद्देश्य को सर्वोपरि मानते हैं। उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए गीता निष्काम भाव से, अपने स्वार्थ की सिद्धि का विचार छोड कर कर्म करते रहने की प्रेरणा देती है। गीता के विषय में उनका यह कहना है—'इस गीता को भारतीय साहित्य का अद्वितीय ग्रन्थ मानते हैं। इसमें मानव जीवन की प्रत्येक दिशा के लिए पथ प्रदर्शन मिलता है। चारो वर्णों और चारों आश्रमों में रहते हुए जीवन भर मानव के पथ प्रदर्शन का यह एक अद्वितीय ग्रन्थ है। समाज के भी प्रत्येक आयोजन में इससे पथ प्रदर्शन प्राप्त होता है।'

गुरुदत्त जी की ये कुछ विचार-प्रधान पुस्तकें हैं, जिन पर हमने दृष्टिपात किया है। इन के अतिरिक्त भी उन्होंने ऐसे अनेक ग्रन्थों की रचना की है। यथा न्याय-दर्शन (भाषा), वेद प्रवेशिका, सायस और वेद, षड्दर्शन परिचय, धर्म तथा समाजवाद, राष्ट्र राज्य और संविधान, हिन्दुत्व की यात्रा आदि-आदि।

गुरुदत्त जी इस समय ९१ वर्ष के हैं और इस आयु में भी वे इस प्रकार के ग्रन्थों की रचना करते हुए समाज का पथ प्रदर्शन करने के शुभ कार्य में संलग्न हैं। उनकी अजस्रस्रोत प्रवाहित लेखनी चिरकाल तक मानव समाज को उपकृत करती रहे, यही कामना है।

संस्कृति और आस्था के प्रहरी

वैदिक धर्म के अनन्य चितेरे -वैद्य गुरुदत्त

—क्षितीश वेदालंकार—

वर्तमान युग में उपन्यास-जगत् में लोकप्रियता प्राप्त करने वाले उपन्यासकारों में श्री गुरुदत्त अग्रणी उपन्यासकार हैं। अब तक उनके ढाई-सौ से अधिक उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। युनेस्को की रिपोर्ट के अनुसार वे हिन्दी के सर्वाधिक पढ़े जाने वाले उपन्यासकार हैं। उनके उपन्यासों की लोकप्रियता के तीन कारण मुख्य हैं। उनमे प्रथम है उपन्यास का कथानक, दूसरा है उनकी वर्णन शैली और तीसरा है 'हिन्दुत्व' का प्रतिपादन। उनका कोई भी उपन्यास ऐसा नहीं जिसमें हिन्दुत्व, भारतीय परम्परा, अध्यात्म का प्रतिपादन न किया गया हो।

उपन्यास-लेखक के अतिरिक्त भी उनका एक अन्य रूप है—चिन्तक का रूप। अपने सुचिन्तन का परिणाम उन्होंने अनेकानेक पुस्तकों के माध्यम से प्रकट किया है। दो दशाब्द से तो वे उपन्यास लेखन कम करके चिन्तन-परक पुस्तकों का ही प्रणयन कर रहे हैं। पिछले 2-4 वर्ष से उन्होंने उपन्यास-लेखन लगभग छोड़ ही दिया है।

अध्यात्म के क्षेत्र में वे स्वयं को ऋषि दयानन्द का अत्यन्त आभारी मानते हैं। इसका उल्लेख वे स्थान-स्थान पर करते भी हैं। सन् 1971 में प्रकाशित उनकी रचना—"ब्रह्मसूत्र"—सरल सुबोध भाषा भाष्य के आभार प्रकरण में उन्होंने लिखा है—(बॉक्स में देखिये)

यह पुस्तक दो खण्डों मे विभक्त है दोनो खण्डो की पृष्ठ संख्या मिलाकर 720 है। इस पुस्तक के माध्यम से उन्होंने त्रैतवाद का प्रतिपादन किया है। उनकी यह सुदृढ़ धारणा है कि व्यास कृत ब्रह्मसूत्र भी त्रैतवाद का ही मण्डन करने वाला ग्रन्थ है।

तदन्तर 1972 में उनकी एक अन्य विचारोत्तेजक पुस्तक प्रकाशित हुई—'विज्ञान और विज्ञान।' उनका अभिप्राय है—भारतीय विज्ञान और पाश्चात्य विज्ञान। ज्ञान और विज्ञान की परिभाषा में उन्होंने भगवद् गीता के सातवें अध्याय के 2, 4, 5, 6, और 7 वें श्लोको को उद्धृत किया है। उनका कहना है कि "हम भारतीय ज्ञान विज्ञान और पाश्चात्य विज्ञान मे विरोध नहीं देखते। जहा कही भी विरोध दिखता है वह वैज्ञानिको और भारतीय तत्त्वदर्शियों में भ्रान्ति के कारण है। सत्य तो एक ही है और जहां तक ज्ञान-विज्ञान का सम्बन्ध है, वह सत्य का निरूपण ही है। इस कारण जो सत्य, ज्ञान और विज्ञान है, वे दो हो ही नही सकते।"

'सांख्य दर्शन' की बड़ी महत्ता है। गुरुदत्त जी ने उसका भी सरल सुबोध भाषा भाष्य किया है। यह ग्रन्थ सन् 1976 में प्रकाशित हुआ था और इसकी पृष्ठ संख्या 438 है। सांख्य के विषय में अपना मत व्यक्त करते हुए उन्होंने लिखा है—"छहों दर्शन शास्त्रों में सबसे अधिक निन्दा तथा भ्रम इस सांख्य दर्शन पर की गई प्रतीत होती है। यह इस दर्शनशास्त्र की सर्वश्रेष्ठता का प्रमाण है। जब कोई कथन अथवा लेख इतना श्रेष्ठ अथवा युक्तियुक्त होता है कि उसको विलक्षण ढग से मानने वाले उसका खण्डन नहीं कर सकते तो कुछेक उसकी महिमा को कम करने के लिए रचयिता के अज्ञात होने, उस ग्रन्थ के लिखे अथवा कहे जाने के काल के विषय मे भ्रम उत्पन्न करने तथा उस ग्रन्थ के मूल पाठ को अपभ्रंश करने का यत्न करने लगते हैं।......

...अन्य दर्शनशास्त्रों के विषय में मतभेद इतना प्रबल नहीं था कि उनमे गडबड करने का कष्ट किया जाता, परन्तु सांख्य तो भ्रान्तिकारो की जडो मे ही तेल देने वाला ग्रन्थ था। इस कारण इस शास्त्र को भ्रंश करने का विपुल यत्न किया गया।

...हमारा यह मत है कि जब से मनुष्य ने जगत को देखा है, यह उसके अध्ययन का विषय बना हुआ है। यह आज तक भी एक रहस्य बना चला आता है। इस रहस्य को अनावरण करने की कुंजी वेद में है। यही प्रतीत होता है कि उस कुंजी से ही कपिल मुनि ने इस रहस्य को खोलकर सांख्य दर्शन मे लिखा है।"

इसके अनन्तर सन् 1977 में उनकी एक अन्य विचार प्रधान कृति प्रकाशित हुई—'सृष्टि रचना' इस पुस्तक में उन्होंने "सृष्टि" और उसकी "रचना" दोनों पर गम्भीरता से विचार किया है। उनका कहना है—'सृष्टि का शाब्दिक अर्थ है—जो सृजन किया गया है, जिसका निर्माण हुआ है। अत सृष्टि रचना का अर्थ है उस वस्तु के बनने का वृत्तान्त, जो बनी है। इसमे सृष्टि मे दिखाई देने वाले पदार्थ भी हैं और वे पदार्थ भी हैं जो इन्द्रियों से नहीं जाने जा सकते। अत उन सब पदार्थों की, जो इन्द्रियों से जाने जा सकते हैं और जो नही जाने जा सकते, सब जो बने हैं, उनकी रचना की यह कथा है।' इस पुस्तक मे उन्होंने सप्रमाण सिद्ध किया है कि 'सृष्टि की रचना करने वाला परमात्मा है।'

सन् १९८१ मे उन की अगली विचार प्रधान पुस्तक प्रकाशित हुई—यजुर्वेद और गृहस्थ धर्म, [इस विषय मे उनका कथन है—'कर्म से युक्त करने वाले विधि विधान को यजु कहते हैं।...... अत यजुर्वेद इस ससार में रहते हुए प्राणी को किस-किस परिस्थिति मे कैसा व्यवहार करना चाहिए, यह बताता है।.. ..... यजुर्वेद की शिक्षा मानव-समाज के लिए है। ....इतना ही नहीं वरन् चारों वर्णों से बाहर वालो के लिए भी है। यजुर्वेद (२६ २) मे कहा है कि वेद-वाणी मानव-मात्र के लिए है। यदि ऐसा है तो वह मानव के आचरण करने के लिए भी है। इस पुस्तिका मे गुरुदत्त जी ने यजुर्वेद के आधार पर गृहस्थ धर्म की विशद व्याख्या की है।

सन् १९८१ मे गुरुदत्त जी के मुण्डक और माण्डूक्य उपनिषदो का भाष्य प्रकाशित हुआ सरल। सुबोध भाषा मे दोनो उपनिषदों के विषयो का स्पष्ट प्रतिपादन इन में किया गया है।

"मैं महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित किये बिना नही रह सकता। जिन्होंने वेदों की महिमा प्रकाशित करने का एक विपुल प्रयास किया था। मुख्यत उनके प्रतिपादित सिद्धान्तों से प्रेरित होकर ही इस भाष्य (ब्रह्मसूत्र=भाषा भाष्य) को करने में मैं समर्थ हो सका हू।"

सन् १९८२ मे इन्होंने प्रश्न और ऐतरेय, इन दो उपनिषदों पर सरल सुबोध भाषा में अपना भाष्य लिख कर प्रकाशित करवाया है। प्रश्नोपनिषद के विषय में उनका स्पष्ट उल्लेख है कि यह किसी ब्राह्मण ग्रन्थ का का अश नही हैं। ऐतरेपोपनिषद ऋग्वेद के ऐतरेयारण्य के द्वितीय आरण्य के क ४५ और ६ अध्याय ही हैं। ऋषि-शिष्यो के परिवारों ने अपने-अपने वेद विभाग पर टिप्पणिया भी लिखी। ये टिप्पणिया ही आरण्यक कहलाये। इस प्रकार ऐतरेय ऋषि द्वारा रचित आरण्यक उस ऋषि के नामपर ऐतरेय आरण्यक नाम से उपलब्ध है।

ऐतरेपेपनिषद का विषय जगत की रचना है, इसकी विशद व्याख्या लेखक ने की है। सन् १९८२ में ही वैद्य जी ने ईश, केन ओर कठ उपनिषद् का भाषा-भाष्य करके सयुक्त रूप में प्रकाशित किया इन सब उपनिषदो का सामूहिक निष्कर्ष यही है कि जगत सत्य है। इसका ज्ञान ही सत्य ज्ञान है। और इस जगत मे तीन अक्षर पदार्थ प्रतिष्ठत हैं। इन तीन अक्षर पदार्थों के अतिरिक्त ब्रह्म के जानने वाले भी इस परम सत्य में सम्मिलित हैं। वह परम सत्य परम ब्रह्म है। यजुर्वेद का मुख्य विषय है कि मनुष्य को किस प्रकार जीवन व्यतीत करना चाहिये। इस का उपसहार ही यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय मे दिया गया है। यही 'ईशावास्योपनिषद्' है।

केनोपनिषद् सामवेदीय तलवकार ब्राह्मण से लिया गया है। केन' नाम से यह इस कारण विख्यात हुआ क्योंकि इसका प्रथम शब्द 'केन' है। जिसका अभिप्राय है—किससे यह सृष्टि रचना हुई?

कठोपनिषद् में प्राणी के शरीर, जीवात्मा ओर परमात्मा के परस्पर सम्बध का वर्णन किया गया है। कुछ भाष्यकारो का विचार है कि इसमे वर्णित कथा का मूल वेद (ऋ० १०-१४ १,२) में है, किन्तु गुरुदत्त जी इससे सहमत नही।

तैत्तिरीय उपनिषद् की व्याख्या गुरुदत्त जी ने सन् १९८३ में प्रकाशित करवाई। उनके अनुसार तैत्तिरीय उपनिषद् सभी उपनिषदो मे उत्कृष्ट है। उन का कहना है कि वर्तमान काल में शिक्षा-विभाग जिनके आधीन है उनको तैत्तिरीयोपनिषद् की प्रथम वल्ली, जो शीक्षा वल्ली है, उसका अध्ययन अवश्य करना चाहिए। अध्यात्म को भी शिक्षा का विषय बनाया जाना चाहिए।

सन् १९८३ मे श्री शुचिव्रत लखनपाल के सहयोग से उन्होंने 'वेदो में सोम' नामक पुस्तक का प्रणयन किया। लेखकद्वय का कहना है—"मध्यकालीन भारतीय विद्वानो और स्वामी दयानन्द में वेदविषयक मतभेदो मे 'सोम' विषयक मतभेद विशेष महत्त्वपूर्ण है। स्वामी जी

(शेष पृष्ठ ९ पर)

पत्रों के दर्पण में

धर्म शिक्षाध्यापक का स्थान

आर्य जगत् १२ मई के अंक में स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जी का डी० ए० वी० संस्थाओं के विषय पर लेख बड़ा सामयिक है। उन्होंने ठीक ही पूछा है कि तब के डी० ए० वी० कालेज और विद्यालय और आज की डी० ए० वी० संस्थाओं में कितना अन्तर है।

आर्य समाज को गौरव प्राप्त है कि महात्मा हंसराज, प्रिंसिपल दीवानचन्द, पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय जैसे कुछ डी० ए० वी० संस्थाओं के प्रिंसिपल /मुख्याध्यापक शिक्षा और समाज दोनों के क्षेत्र में त्यागपूर्वक काम करते रहे, प्रचार कार्य किया और लेखन कार्य को आगे बढ़ाया। पर अब कितने अध्यापक उस भावना से शिक्षा संस्थाओं में काम कर रहे हैं ?

मुझे भी १० मास तक जीवन में सीनियर कैम्ब्रिज तक शिक्षा देने वाले एक ऐसे आवासीय पब्लिक स्कूल (विकास विद्यालय रांची) में कार्य करने का अवसर मिला, जिसके संस्थापक ट्रस्टी एक सनातनी सेठ स्व० नेपाणी जी थे, उन्होंने मेरा स्थान और मर्यादा प्रिंसिपल के बराबर (ऊंची से कुछ ही कम) दे रखी थी। वे मेरे आने पर स्वयं खड़े होते थे और मुझे यूनीफार्म की पश्चिमी वेशभूषा से छूट मिली हुई थी। वहां मेरा विषय नैतिक शिक्षा संस्कृत और हिन्दी थी। रिटायर होने के बाद लगभग दो वर्ष तक फीजी में पं० विष्णुदेव मेमोरियल स्कूल में भी धर्म शिक्षा पढ़ाने का मुझे अवसर मिला। वहां आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी प्रिंसिपल से ऊंचा स्थान धर्म शिक्षाध्यापक को (मुझे) स्थान देते थे। आज यदि उपयुक्त व्यक्तियों को संस्थाओं में उचित सम्मान मिले तो उससे संस्थाओं की विशेषता स्वतः स्पष्ट हो जायेगी। निर्धन परन्तु प्रतिभावान् छात्र-छात्राएं और शिक्षक अपने चरित्र और उदाहरण से आर्य समाज का नाम ऊंचा कर सकेंगे। धर्म शिक्षाध्यापक उस प्रक्रिया की धुरी होना चाहिए।

—ब्रह्मदत्त स्नातक एम० ए०

आर्य बन्धुओं से निवेदन

श्रीमती माधवी देवी निष्ठावती और कर्मठ आर्य महिला हैं। आर्य समाज के प्रचार के लिए उन्होंने लन्दन तक की यात्रा भी की है। लन्दन में वैदिक प्रचार से लौटने के उपरान्त वे सहसा बोन-टी०बी० से ग्रस्त हो गईं। उनके एक मात्र पुत्र का भी सहसा निधन हो गया तो उन्होंने एक बालक को गोद ले लिया। पति का स्वर्गवास पहले ही हो चुका था। ऐसी कर्मठ और लगनशील आर्य महिला इस समय अस्वस्थ और अभाव ग्रस्त है। जो आर्य महानुभाव इस विपद की घड़ी में उनकी कुछ भी सहायता करेंगे वही उनके लिए बहुमूल्य होगी। उनका पता है=श्रीमती माधवी देवी, द्वारा मतिया मुसम्मात, सालिमपुर अहरा, पो० कदमकुंआ, पटना-३

सभा अधिवेशन और चुनाव

इस बार आर्य प्रा० प्र० सभा के अधिवेशन पर मात्र डी० ए० वी० शताब्दी पर विचार आमन्त्रित किए गए। बजट एवं अन्य विषयों पर विशेष चर्चा नहीं हुई। पहले सदा यह कहा जाता रहा है—'और कोई कुछ कहने वाला है ?' इस बार यह भी न कहा गया। दोपहर से पहले ही चुनाव करवाने से बाद में हाल खाली हो गया। भविष्य में चुनाव के आईटम को बिल्कुल अन्त में रखें तो अच्छा रहे।

—ओमप्रकाश 'अंशु' वकील करनाल

कहां एक लाख और कहां ग्यारह सौ !

करपात्री जी द्वारा लिखित वेदार्थ पारिजात पर संस्कृत एकेडेमी ने १ लाख रुपया देकर धन के दुरुपयोग का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है। इसका मुंहतोड़ उत्तर देने वाले व्याकरण साहित्याचार्य विशुद्धानन्द जी कुलपति वृन्दावन गुरुकुल को केवल ११११ रुपये स्वामी ओमानन्द जी ने दिये हैं। सार्वदेशिक सभा अभी इन्हें क्या दिया जाय यही निश्चय करने में लगी है। 'गुरु बैठें चौपार में खीर खरिन्दा खाय' आर्य समाज अपने विद्वान् का क्या सत्कार करती है, यह देखना है।

—रमेश वाचस्पति, आचार्य रुद्रपुर, तिलहर, शाहजहांपुर

मन्दिरों के धन का सदुपयोग

एक तरफ करोड़ों रुपया मंदिरों को सजाने या नये मंदिर बनाने में खर्च हो रहा है और दूसरी तरफ हमारे हरिजन भाईयों तथा आदिवासियों का बड़ी संख्या में धर्म-परिवर्तन हो रहा है. मेरे विचार में मन्दिरों और मठों में दान में प्राप्त करोड़ों की धनराशि को यदि हरिजनों के उत्थान, शिक्षा स्वास्थ्य और कुटीर उद्योग पर खर्च की जाय तो उनके धर्म परिवर्तन को रोका जा सकता है।—विष्णुसिंह, कंचन कृपा, मुलुण्ड, बम्बई-८०

हिन्दुओं का अपमान

मुगल शासन और अंग्रेजों के शासन के समय तो हिन्दुओं को अपमानित होना ही पड़ा, कांग्रेस के शासन में भी वही हाल है।

हालांकि हिन्दू इस देश में बहुत संख्या में हैं, परन्तु उनके हक में कोई बात नहीं होती। जो भी बात होती है हिन्दुओं के विरुद्ध ही होती है। शायद नई सरकार को पता नहीं कि यदि हिन्दू अल्पमत में आ गया तो आज के शासक भी सुरक्षित नहीं रहेंगे अरब देशों से भारत में आने वाले मुसलमानों की संख्या कितनी थी। बहुत थोड़े लोग ही बाहर से आये थे। बाकी सब लोग हिन्दुओं से ही मुसलमान बने हैं। हिन्दुओं के अलावा अन्य मतों में वह उदारता नहीं है। इसलिए हिन्दुओं के अल्पमत में होते ही देश में न सम्प्रदाय निरपेक्षता रहेगी और न प्रजातन्त्र रहेगा।

—जयदेव गोयल, जींद।

एक राष्ट्रीय धर्म की घोषणा हो

इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमारे राष्ट्र भक्त नेताओं की सुन्दर योजनाओं के कारण भारतवर्ष में चहुंमुखी उन्नति हुई है। लेकिन इतनी उन्नति होते हुए भी देश की जनता प्रसन्न नहीं है। मनों में शान्ति नहीं है। इसीलिए चहुंमुखी उन्नति के साथ बेरोजगारी, रिश्वतखोरी, चरित्रहीनता, सरकारी कार्यालयों में निष्ठा व सेवा भाव से कार्य न करना, उच्चपदासीन अधिकारियों द्वारा पद का दुरुपयोग, न्यायालयों में न्याय प्रक्रिया का ठीक न होना, पुलिस की सम्पन्न व्यक्तियों व बदमाशों से सांठ-गांठ तथा गरीबों का सताया जाना तथा अयोग्य व्यक्तियों का शासन तन्त्र में भरती करना जारी है। इसके मुख्य दो कारण हैं—(१) वोट के लिए तुष्टीकरण की नीति। (२) धर्मनिरपेक्षता।

शासक दल व अन्य दल केवल वोट के लिए धर्मनिरपेक्षता का नारा लगाते हैं और धार्मिक संस्थाएं धर्म को आधार बनाकर अलग राज्य की मांग करती हैं अथवा धर्म के नाम पर अलगाबाद की नीतियां अपनाती हैं। लेकिन विचारना यह है कि समस्या का समाधान क्या है। धर्म कहते किसे हैं जबकि धर्म से अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है, जो मानव जीवन का उद्देश्य है। धर्म से ही न्याय प्राप्त होता है जो राजा का कर्तव्य है। पर आजकल संकीर्ण साम्प्रदायिकता को ही धर्म समझा जा रहा है।

विपक्षी दल भी जनता की समस्याओं का समाधान न देकर केवल शासक दल पर कीचड़ उछालने में ही अपने कर्तव्य की समाप्ति समझते हैं। हमारा विचार है कि जब तक सभी सम्प्रदायों के विद्वानों को बुलाकर शास्त्रार्थ अथवा सहमति से अच्छी बातों को लेकर राष्ट्रीय धर्म की घोषणा नहीं की जाती, तब तक इस समस्या का समाधान नहीं हो सकता। यह किसी के विचारों को ठेस पहुंचाने वाली नहीं, बल्कि राष्ट्र हित की बात है। राष्ट्र से रूढ़िवादिता को दूर करना बहुत ही आवश्यक है। यह कार्य कठिन अवश्य है लेकिन असम्भव नहीं। यदि सरकार समस्या का समाधान चाहती है तो उसे एक धर्म मन्त्रालय बना कर उसके जिम्मे यह काम सौंपना चाहिए। तब न भाषा का झगड़ा होगा, न धर्म का, न सम्प्रदाय का, न जातियों का, और न अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक का। चारों तरफ शान्ति होगी, केवल शान्ति।—पं० बुधराम शर्मा तिलपत, प्रेस कालोनी, फरीदाबाद

कांग्रेस के राष्ट्रवादी विकल्प......

(पृष्ठ ४ का शेष)

नीति अपनाएगा। हिन्दुस्तान कोई धर्मशाला नहीं, एक देश और राष्ट्र है। जो तत्व इसकी संस्कृति, परम्परा, कानून और इसके व्यापक हितों की अवहेलना करके पाकिस्तान या अन्य विदेशी ताकतों का खेल खेल रहे हैं, उनके प्रति सम्प्रदाय निरपेक्षता के नाम पर किसी प्रकार की ढील बरतना राष्ट्रघाती होगा।

असम समस्या १९४७ के बाद आए मुस्लिम घुसपैठियों से पैदा हुई है। वे विदेशी हैं। उन्हें असम से निकालना आवश्यक है। उनमें से जिनका नाम प्रमादवश मतदाता सूची में डाल दिया गया है, उसे निकालना होगा। बंगला देश से आए हिन्दू शरणार्थियों की तुलना मुस्लिम घुसपैठियों के साथ करना गलत है। इन हिन्दू शरणार्थियों को बसाने के लिए बंगला देश से भूमि की मांग करनी होगी। वे सारे भारत की जिम्मेदारी हैं और पूरे राष्ट्रवादी भारत को उनके प्रति अपनी जिम्मेदारी को निभाना चाहिये। उन्हें बंगला देश में भेजने का प्रश्न नहीं उठता।

कश्मीर और पंजाब

कश्मीर समस्या का स्थायी हल जम्मू-कश्मीर राज्य का पुनर्गठन करना, कश्मीर घाटी को पाकिस्तान और पाक अधिकृत क्षेत्र से अलग-थलग करना तथा ३७० की अस्थाई धारा संविधान में से निकालना है। जम्मू और लद्दाख क्षेत्रों को कश्मीर घाटी के लिये बलि का बकरा बनाने की नीति राष्ट्रघाती है। कश्मीर घाटी में पाक-परस्त तत्वों की शक्ति लगातार बढ़ रही है। उनके साथ सख्ती से निपटना होगा। लोकतंत्र द्वारा प्रदत्त अधिकारों की दुहाई देने का और सरकार द्वारा उस पर कान देने का कोई औचित्य नहीं है।

पंजाब समस्या सत्ता प्राप्ति के लिये अकालियों की अलगाववादी राजनीति का और कांग्रेस सरकार द्वारा राष्ट्रहित के बजाय दलगत स्वार्थों के लिये कार्यरत रहने का परिणाम है। पाकिस्तान इस अलगावबाद को योजनाबद्ध ढंग से बढ़ावा दे रहा है। तथाकथित आतंकवादी अकाली पाकिस्तान का ही खेल-खेल रहे हैं। कितने ही मुसलमान भी दाढ़ी और केश रखकर उन्हें अपना सक्रिय सहयोग दे रहे हैं।

पंजाब का बहुमत आज भी राष्ट्रवादी है। परन्तु वह असंगठित है। उसका कोई राजनैतिक अस्तित्व नहीं है। पंजाब समस्या के स्थायी हल के लिए वहां एक क्षेत्रीय राष्ट्रवादी दल का गठन अनिवार्य हो गया है। यह देश-व्यापी राष्ट्रवादी दल के साथ-साथ तालमेल रख सकता है। अकाली दल की काट कोई सबल राष्ट्रवादी क्षेत्रीय दल ही कर सकता है।

कश्मीर और पंजाब की समस्याएं अब पाकिस्तान समस्या का अंग बन चुकी हैं।

अणुबम बनाने की झोंक में पाकिस्तान भारत को अणुबम बनाने का समय नहीं देगा। इसलिये पाकिस्तान की ओर से निकट भविष्य में एक और आक्रमण की सम्भावना वास्तविक है। अब की बार, भारत के अन्दर उसके मुस्लिम एजेण्ट और कुछ उग्रवादी सिक्ख भी उसका साथ दे सकते हैं। राष्ट्रवादी हिन्दू समाज को जानमाल की भारी क्षति उठानी पड़ेगी। परन्तु अन्ततोगत्वा विजय भारत की होगी और पाकिस्तान का विघटन होकर रहेगा। तब भारत को स्वतंत्र पश्चिमी पंजाब और सिंध राज्यों के साथ शान्ति की बातचीत करनी होगी, पाकिस्तान के साथ नहीं। तभी कश्मीर और पंजाब की समस्याएं भी हल होंगी। तब तक राष्ट्रवादी हिन्दुस्तान को कश्मीर और पंजाब की समस्याओं के साथ जीना होगा।

कुछ अन्य समस्याएं

शिक्षा क्षेत्र में नई नीति की बातें की जा रही है। १९६६ में शिक्षाविदों की समिति ने शिक्षामंत्री डा० त्रिगुण सेन की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय शिक्षा नीति तय की थी। इसका अनुमोदन संसद ने भी किया था। आज आवश्यकता नई नीति बनाने की नहीं, अपितु उस राष्ट्रीय शिक्षा नीति को कार्यान्वित करने की है।

सुप्रीम कोर्ट द्वारा तलाक शुदा मुस्लिम औरतों को निर्वाह खर्च देने के फैसले और कलकत्ता हाईकोर्ट में कुरान सम्बन्धी याचिका को लेकर मुस्लिम सम्प्रदायवादी देश मे कटुता और साम्प्रदायिक अशान्ति पैदा करने का प्रयत्न कर रहे हैं। वे चाहते हैं कि संविधान में से सबके लिए समान सिविल कानून वाली धारा ही निकाल दो जाय। यह सभी राष्ट्रवादियो के लिये चनौती है।

गोवंश की हत्या पर पाबन्दी और अयोध्या जैसे पवित्र स्थानों की वापसी के मामले में सरकार बहुमत की उपेक्षा कर रही है। अब समय आ गया है कि हिन्दू इन मामलों में अनुनय-विनय की नीति छोड़कर देश के स्वामी जैसा आचरण करना सीखें और जो तत्व उनकी उचित मांगों की उपेक्षा करते हैं उन्हें उखाड़ फेंकने की क्षमता पैदा करें।

आरक्षण का प्रश्न भी राष्ट्रीय हिन्दू समाज के विघटन का कारण बन रहा है। मुसलमान और अन्य अराष्ट्रीय तत्व इसका लाभ उठाने का प्रयत्न कर रहे हैं। आवश्यकता है कि गत ३० वर्षों के अनुभव के आधार पर आरक्षण की नीति पर पुनर्विचार करने के लिए एक उच्च स्तीय आयोग का गठन किया जाये। सभी राष्ट्रवादियों को मिलकर समय रहते इस आवश्यकता को पूरा करना चाहिए।

'मेव' भी गो-हत्या बन्दी के लिए कटिबद्ध

"गोरक्षा का विषय बहुमत की भावनाओं से सम्बन्धित है। पड़ोसी होने के नाते मेवों को हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं का सम्मान करना चाहिए। हमारा यह कर्तव्य है कि हम मेवों की ओर से पंचायत बुला कर सभी वर्गों के व्यक्ति सम्मिलित हों और गोहत्या बन्दी का निर्णय करें।" ये शब्द दि० ५-५-८५ को भादस में सम्पन्न गोरक्षा पंचायत में छिड़कलौतपाल के पंच तथा हरियाणा विधान सभा के वर्तमान सदस्य चौधरी अजमल खां ने कहे। चौधरी जी के आह्वान पर मेवों ने १७ जुलाई, १९८५ को नूह में पंचायत बुलाने का निर्णय किया और आश्वासन दिया कि उसमे सभी वर्गों के प्रतिनिधियों को आमन्त्रित किया जायेगा। चौधरी अजमल खा ने हरियाणा सरकार की ओर से भी आश्वासन दिया कि जनभावना का विचार करते हुए फिरोजपुर झिरका बूचड़खाना बन्द होना चाहिए।

इस पंचायत में गुड़गांव, फरीदाबाद, अलवर, मथुरा, भरतपुर आदि जिलों के सभी प्रमुख पालों के सरदारों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। सभा का संयोजन श्री पं० बालदिवाकर जी हंस प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्यवीर दल ने किया। उन्होंने पंचायत के उद्देश्यों को स्पष्ट कर हुए कहा कि गोरक्षा का प्रश्न बिना किसी साम्प्रदायिक और भौगोलिक भेद के सुलझाया जाना चाहिए। जो भी व्यक्ति गाय के प्रति आर्थिक अथवा धार्मिक दृष्टिकोण से आस्था बनाए हुए हैं, उनकी भावनाओं का आदर किया जाना चाहिए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने स्पष्ट किया कि कुरान-शरीफ गोहत्या के लिए प्रेरणा नहीं देती। उन्होंने कहा हजरत मुहम्मद साहब गाय के गोश्त को रोग का मूल और गाय के दूध को रसायन मानते थे। श्री राधाकृष्ण बजाज ने गो और गोवंश की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए संत विनोबा भावे के निर्वाण की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया और कहा कि जो काम सरकार नहीं करती उसे जन बल कर सकता है।

इस अवसर पर अन्यान्य पंचायत प्रमुखों के अतिरिक्त भू० पू० विधायक चौधरी राजेन्द्र, श्री सुतीक्ष्ण मुनि, स्वामी अमरानन्द आदि अनेक महानुभावों ने अपने विचार व्यक्त करते हुए गो-हत्या बन्दी की प्रभावी शब्दों में अपील की। सभी ने विश्वास व्यक्त किया कि जुलाई में संपन्न होने वाली महत्वपूर्ण पंचायत में इस विषय पर अन्तिम निर्णय हो जायेगा।

ऋषि दयानन्द आधुनिक काल के सर्वश्रेष्ठ मनीषी

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल की ओर से कलकत्ता में आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह बड़े धूमधाम से मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता प्रसिद्ध समाज सेवी श्री गजानन्द आर्य ने की और इसके मुख्य अतिथि प्रसिद्ध पत्रकार श्री विश्वम्भर नेवर थे। समारोह का उद्घाटन करते हुए साहा इन्स्टीट्यूट ऑफ न्यूक्लियर फिजिक्स के डा० अर्धेन्दु शेखर चक्रवर्ती ने कहा—आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती आधुनिक काल के उन तीन सर्वश्रेष्ठ मनीषियों में प्रथम स्थान पर प्रतिष्ठित किए जायेंगे जिन्होंने विश्व मानवता को उपलब्ध प्राचीनतम सस्कृत वाङ्मय की दृढ़ भित्ति पर खड़ा कर वैदिक ईश्वरवाद और अध्यात्म का विज्ञान के साथ अटूट सम्बन्ध स्थापित कर दिया। स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनन्तर स्वामी विवेकानंद और अरविंद की सेवाएं स्मरणीय हैं।"

इस अवसर पर बोलते हुए प्रो० उमाकान्त उपाध्याय ने आज राष्ट्र के समक्ष उपस्थित संकटों का विवेचन करते हुए कहा कि इस सकट की घड़ी मे आर्य समाज महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। मुख्य अतिथि श्री नेवर ने आर्य समाज के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए उसके और सक्रियता से अग्रसर होने की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम के संयोजक श्री चादरतन दंभाणी ने आर्य जनों का आह्वान करते हुए देश के सम्मुख उपस्थित समस्याओं के निराकरण के लिए एक सांझे मंच की स्थापना पर बल दिया।

वैदिक मिशनरी तैयार करने की योजना

मथुरा में दयानन्द बलिदान शताब्दी

स्वामी विरजानन्द वैदिक साधना आश्रम, मथुरा में जो महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी मनाई जा रही है, उस की अपनी ही विशेषता है।

हिन्दू समाज और महान् भारत राष्ट्र की रक्षा के लिए यह नितान्त आवश्यक है कि शत-सहस्राधिक समर्पित जीवन (मिशनरी) आगे आयें, वे प्रशिक्षण प्राप्त करें तथा अपना सारा जीवन तप, त्याग और बलिदान की भावना से समाज और राष्ट्र की रक्षा के लिए लगायें। इस विचार से वैदिक मिशनरी निर्माण केन्द्र, मथुरा में प्रारम्भ किया गया है। ऐसे समर्पित-जीवनों को कार्य-क्षेत्र में आवश्यक सुविधायें प्रदान करने की व्यवस्था होनी चाहिए जिससे कि वे निश्चिन्त और निर्द्वन्द्व हो कर अपना कार्य कर सकें।

वैदिक मिशनरियों के लिए इस प्रकार का एक प्रशिक्षण शिविर वैदिक साधना आश्रम में २६ मई से ९ जून तक आयोजित किया है। इन्हीं तिथियों में आर्यवीर दल शिविर का आयोजन भी किया गया है। इस अवसर पर वेद मन्दिर भवन का उद्घाटन भी होगा। आर्य किसान मेले का भी आयोजन किया है तथा विद्वानों, बलिदानियों एवं विशिष्ट कार्यकर्ताओं का अभिनन्दन और एम. ए. हिन्दी एवं संस्कृत विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वालों को पुरस्कृत भी किया जायेगा।

भविष्य के लिए पंचवर्षीय कार्यक्रम की रूपरेखा भी प्रस्तुत की जायेगी आप इसमें जो भी सहयोग दे सकें, अवश्य दें।

ऋग्वेद के उर्दू अनुवाद का विमोचन

पं० आशुराम आर्य कृत ऋग्वेद के उर्दू अनुवाद के प्रथम भाग का विमोचन 18 अप्रैल को लोक सभा के अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ ने अपने कार्यालय में किया। इस अवसर पर उन्होंने वेदों की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए उर्दू अनुवाद की उपयोगिता का उल्लेख किया। पण्डित जी ने इस अवसर पर सामवेद का हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं में अनुवाद करने की घोषणा की। ऋग्वेद के उर्दू अनुवाद की सर्वत्र चर्चा और प्रशंसा हुई है। इच्छुक सज्जन पण्डित जी को सैक्टर-7-सी चण्डीगढ़—19 के पते पर पत्र लिख कर प्रतियां मंगवा सकते हैं।

—आर्य समाज पश्चिम बिहार के वार्षिक निर्वाचन में श्री डी० ऐन० चौधरी—प्रधान, श्री धर्म वीर शास्त्री—मंत्री और श्री हरिश्चन्द्र जयरथ—कोषाध्यक्ष चुने गए।

वैदिक यति मंडल

वैदिक यति मंडल के सब सदस्य महानुभावों से निवेदन है कि मान्यवर श्री महात्मा दयानन्द जी तपोवन आश्रम देहरादून को प्रतिष्ठित सदस्यों के परामर्श से मैंने वै०य० मंडल का कार्यकर्ता अध्यक्ष बना दिया है। अतः वैदिक यति मडल सम्बंधी पत्र व्यवहार उन्हीं से करें —सर्वानन्द (पूर्व अध्यक्ष वैदिक यति मंडल)

स्वामी देवानन्द जी दिवंगत

आर्य जगत् के त्यागी तपस्वी संन्यासी स्वामी देवानन्द जी का दि० 20 मई को एक दुर्घटना में देहावसान हो गया। वे गुरुकुल आर्य नगर (हिसार) तथा कन्या गुरुकुल वेद-मन्दिर, फतेहाबाद के संस्थापक थे। यौवन काल मे उन्होंने स्वतन्त्रता आन्दोलन में कारावास की यातना भी सही थी।

कण्वाश्रम में प्रशिक्षण शिविर

ग्रीष्मकालीन अवकाश में १४ जून २३ जून तक गुरुकुल कण्वाश्रम, कोटद्वार जिला पौढ़ी गढ़वाल मे विशाल पैमाने पर आयोजित केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के दस दिवसीय आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर में ३०० नौजवान भाग लेंगे।

इस शिविर में योगासन, दण्ड-बैठक, जूडो-कराटे, फ्री स्टाईल कुश्तियों का योग्य व्यायाम शिक्षको द्वारा कुशल प्रशिक्षण दिया जाएगा। यह शिविर-स्थल हिमालय की सुरम्य घाटियों के बीच मालिनी नदी के तट पर महर्षि कण्व की तपोभूमि पर लगेगा। शिविराध्यक्ष ब्रह्मचारी आर्य नरेश होंगे तथा स्वामी जगदीश्वरानन्द युवको को बौद्धिक शिक्षण देंगे।

शिविर मे भाग लेने के इच्छुक युवक कार्यालय आर्यसमाज कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मंडी, दिल्ली-७ के पते पर सम्पर्क करें।

—चन्द्र मोहन आर्य

हरियाणा उप-सभा द्वारा वेद सप्ताहों का आयोजन

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हरियाणा १ जुलाई से ३१ अगस्त तक दो मास में वेद सप्ताह मना रही है। जो आर्य समाजें इन दो मासों में वेद सप्ताह मनाना चाहें वे उपसभा हरियाणा के साथ निम्न लिखित पते पर पत्र व्यवहार करें, ताकि समयानुसार उन समाजों के लिये विद्वानों एवं भजन मंडलियों का प्रबन्ध हो सके—

प्रा०, वेद सुमन वेदालंकर वेदप्रचार अधिष्ठाता, उपसभा हरियाणा, डी० ए० वी० महिला कालेज, करनाल हरियाणा

मूर्तियों की पुनः प्रतिष्ठा के लिए अनशन

तमिलनाडु के परिविपुर गांव की महिलाओं ने वरदराजा मन्दिर में श्री राम, सीता, लक्ष्मण एवं हनुमान की मूर्तियों की पुनः प्रतिष्ठा न होने तक अनशन का संकल्प किया है।

ये चारों मूर्तियां पहले चोरी हो गई थीं बाद में मिल गईं तो इन्हें पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए मन्दिर को नया रूप दिया गया। अब मूर्तियों को पुन प्रतिष्ठित करने की तैयारी पूरी हो गई तब उन्हें अमेरिका से लाया गया। इससे स्थानीय धार्मिक जनता में असन्तोष है।

डा० जयपाल विद्यालंकार को पितृ शोक

संस्कृत के विद्वान् तथा हंसराज कालेज के संस्कृत विभागाध्यक्ष श्री जयपाल विद्यालंकार के पिता श्री सुरजनसिंह जी का २२ मई को देहावसान हो गया, वे अन्त तक पूर्ण स्वस्थ थे, उन्हें किसी प्रकार का कष्ट अथवा रोग नहीं था। समाचार सुनते-सुनते उनका शरीरांत हुआ। श्री सुरजनसिंह जी आर्य समाज शताब्दी समारोह के अतिरिक्त अनेक बार टंकारा की तीर्थ यात्रा में भी सम्मिलित हुए थे। वे गांव तथा आस-पास के युवको को आर्य समाज की ओर उन्मुख करने मे यत्नशील रहते थे। आर्य जगत् की ओर से उनके शोक संतप्त परिवार के लिए हार्दिक समवेदना।

डा० कोहली पुनः निर्वाचित

आर्य समाज डी० ए० वी० कौलेज मार्ग अम्बाला के वार्षिक निर्वाचन में डा० डी० के० कोहली प्रधानाचार्य सोहन लाल डी० ए० वी० कौलेज अम्बाला सर्वसम्मति से पुनः अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं।

आर्य समाज अशोक विहार में नई यज्ञशाला का उदघाटन
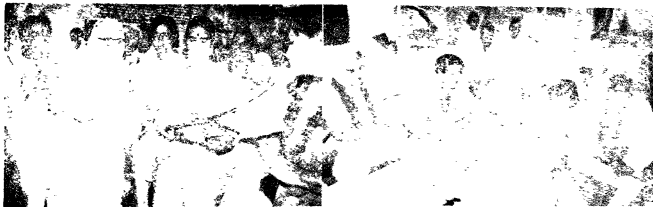
प्रथम चित्र श्री सुधीर सचदेव, श्रीमती पुष्पा सचदेव, मंत्री विजय भूषण आर्य श्रीमती प्रेमशील महेन्द्र, मंत्रिणी श्रीमती पद्मा तलवाड। द्वितीय चित्र – सचदेव परिवार यज्ञ करते हुए। आर्य समाज अशोक विहार मे सचदेव परिवार द्वारा बनवाई गई भव्य यज्ञशाला का उद्घाटन हुआ।

आर्य समाज अशोक विहार, फेज-I दिल्ली के विशाल प्रांगण मे नव निर्मित यज्ञशाला का विधिवत् रूप से उद्घाटन ६ मई को श्रीमती पुष्पा जी सचदेवा के करकमलो से सम्पन्न हुआ। उदघाटन समारोह की अध्यक्षता आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् श्री जैमिनी जी शास्त्री ने ब्रह्मा के रूप मे की। यज्ञशाला के निर्माण हेतु श्रीमती सचदेवा ने २५०००/- रुपये की राशि अपने स्व० पति श्री तिलक राज सचदेवा की पुण्य स्मृति मे दान रूप मे दी। इस यज्ञशाला के निर्माण का संकल्प लगभग १२ वर्ष पूर्व सचदेवा परिवार ने किया था। चिरकाल का यह स्वप्न अब साकार हुआ है।

सगमरमर पर अंकित वेद सूक्तियो से सुशोभित यह यज्ञशाला दर्शनीय है देश-विदेश की सभी आधुनिक यज्ञशालाओ मे उच्चकोटि की बनी है। इसका श्रेय आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओ की अनथक सेवा को जाता है। इनमे प्रधान श्री० के० वी० राय, श्री० हरप्रकाश आहलूवालिया तथा भूतपूर्व प्रधान श्री० चमनलाल के नाम उल्लेखनीय है। इस समाज का १३ वा वार्षिकोत्सव यज्ञशाला के उद्घाटन से ही आरंभ किया गया। जो सप्ताह भर चला। उत्सव मे यज्ञ प्रेमी जनता ने बहु कुण्डीय यज्ञ किये। रात्रि का कार्यक्रम वी-ब्लाक के पार्क मे आयोजित किया गया। पं० जैमिनी शास्त्री की कथा मे पूर्व युवा मन्त्री श्री विजय भूषण आर्य और श्री गुलाब सिंह राघव के मनोहर भजन हुए। १० मई को महिला सम्मेलन एव ११ मई को बच्चो की गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

१२ मई को पूर्णाहुति के पश्चात् आचार्य विक्रम जी के प्रवचन हुए। बाद मे ऋषि लगर का आयोजन श्री अविनाश जी कपूर की तरफ से हुआ। श्री इन्द्रभान जी कालड़ा ने यज्ञ का सारा खर्च दिया।

—विजय भूषण आर्य, मंत्री

आर्यसमाज फिरोजपुर में वेद सप्ताह
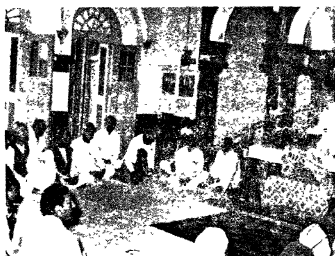
आर्यसमाज फिरोजपुर शहर (कालिज विभाग) मे जो वेद सप्ताह मनाया गया उसमे आचार्य विजय शास्त्री के प्रवचन हुए तथा श्री हरिदेव जी के भजनोपदेश हुए श्री रामचन्द्र आर्य ने इस कार्यक्रम का आयोजन किया। चित्र मे समाज के अन्य अधिकारी भी दिखाई दे रहे है।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस जिला (अलीगढ़) उ० प्र०

1 जुलाई 1985 से नया वर्ष। शिशु कक्षा से बी० ए० स्तर एवं आचार्य तक की निःशुल्क शिक्षा। गुरुकुल पद्धति पर निःशुल्क छात्रावास। सबका सीधा-सादा एकसा रहन-सहन, कड़ा अनुशासन, गाव-नगर से दूर स्वास्थ्यप्रद जलवायु। सामान्य विषयो के अतिरिक्त धर्म, सगीत, नैतिकता, गृहकार्यों की भी अनिवार्य शिक्षा। देशी घी, दूध, नाश्ता सहित भोजन शुल्क 100-00 रु० मात्र।

नियमावली मंगवायें। मुख्याधिष्ठात्री

जो पढ़ता है प्रशंसा करता है

वेदाध्ययन के सोपान के रूप मे लिखा गया प्रो० राम विचार का ग्रन्थ वेद सन्देश वेदाभ्यासियो के लिए अत्यन्त उपयोगी है। लेखक ने वेदमहोदधि से 13 मन्त्र चुने है तथा उनकी सरल, भावपूर्ण तथा लोकरंजन शैली मे व्याख्या की है। व्याख्या करते समय लेखक ने इस बात का ध्यान रखा है कि मन्त्र का अभिप्राय स्पष्ट करने के साथ मन्त्रगत प्रतिपाद्य से सम्बन्धित अनेक महत्वपूर्ण तथ्य भी पाठक को अवगत कराये जा सके। फलत उसने विभिन्न शास्त्रो, काव्यो तथा अन्य ग्रन्थों के प्रामणिक उद्धरण देकर मन्त्रो के व्याख्यान को और भी रोचक तथा ज्ञानवर्धक बना दिया है। यह पुस्तक वेद के स्वाध्यायशील जनो के लिये तो उपयोगी है ही, कथावाचको तथा उपदेशको के लिए भी लाभप्रद है। प्रत्येक पुस्तकालय तथा आर्य परिवार मे इस ग्रन्थ की एक प्रति अनिवार्य रूप से होनी चाहिये। ग्रन्थ का मूल्य 20 रुपये वी० पी० पी० डाक खर्च 9 रुपये = कुल 29 रुपये भेजकर प्रो० राम विचार, देवी भवन कालोनी, हिसार, हरियाणा से प्राप्त करे।

डा० भवानीलाल भारतीय,
प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, दयानन्द चेयर, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

श्री रामचन्द्र महाजन का अभिनन्द करते हुए प्रो० रत्नसिंह श्री विजयभूषण तथा श्रीमती सुषमा भजन प्रस्तुत करते हुए।

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स ७११७/१८ पहाड़ी धीरज, (फोन : 516518) दिल्ली से छपवा कर कार्यालय, 'आर्य जगत्, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित । स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, (फोन : 343718) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली ।

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य जगत्
साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य-२५ रुपये | विदेश में ३० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४८, अंक २७, रविवार, ३० जून, १९८५ | दूरभाष : ३४३७१८
आजीवन सदस्य-२५१ रु० | इस अंक का मूल्य—६० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८५, दयानन्दाब्द १६० | आषाढ शुक्ला १३, २०४२ वि०

उ०प्र० में उर्दू की आड़ में फारसी लिपि लादने का आग्रह

प्रो० वासुदेव सिह की दृढ़ता पर उर्दू अकादमी के अधिकारियों का त्यागपत्र

उत्तर प्रदेश मे उर्दू को प्रदेश की द्वितीय राजभाषा बनाने का विवाद पुन उठ खड़ा हुआ है। प्रदेश के खाद्य आपूर्ति मंत्री प्रो० वासुदेव सिंह ने इस अवसर पर केवल इतना ही कहा था कि सरकारी संस्था उर्दू अकादमी के अधिकारी जिस प्रकार उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने का प्रश्न खड़ा कर प्रदेश के वातावरण को दूषित कर रहे हैं उसी प्रकार यदि हिन्दी अकादमी वाले उसका उत्तर देने के लिए तत्पर रहते हैं तो वे किसी प्रकार की अनधिकार चेष्टा नहीं करते। किन्तु उर्दू अकादमी के हठी अधिकारी उन्हे यह अधिकार देने को उद्यत नही हैं।

जहा तक प्रदेश मे उर्दू की स्थिति का प्रश्न है उसके पठन-पाठन के लिए सरकार अत्यधिक धन राशि व्यय कर रही है। इस के लिए पाच हजार अध्यापकों की नियुक्ति भी हो चुकी है। प्रो० वासुदेव सिंह ने सरकार के इन निर्णयो का कभी कोई विरोध नही किया। हिन्दी उर्दू की गगा-जमनी भाषा और देवनगरी लिपि प्रदेश मे इतनी रचपच गई है कि पाकिस्तान से आए एक लेखक के अनुमार पाकिस्तानी भी इस लिए देवनागरी लिपि में हिन्दुस्तानी पढ़ते हैं ताकि हिन्दुस्तान से आने वाले अपने रिश्तेदारो के पत्रो को पढ सके।

प्रो० वासुदेव सिंह केवल यही कहते हैं कि जब प्रदेश के प्रत्येक व्यक्ति ने अपनी बोली को लिपिबद्ध करने के लिए देवनागरी लिपि को एक मात्र लिपि मान लिया है, तब उन पर किमी दूसरी लिपि का बोझ लादने का क्या अभिप्राय है? उर्दू भाषा तो प्रदेश मे चन रही है, देवनागरी लिपि के माध्यम से बढती हुई हिन्दी-उर्दू की गगा-जमनी धारा को बाटने के दुष्प्रयत्न का विरोध वह प्रत्येक नागरिक करेगा जो देश की एकता का पोषक है। सभी देश भक्त देश वासी इस सघर्ष मे प्रो० वासुदेव सिंह के साथ हैं, और आर्य समाज तो इस मे सदा की भाति अग्रणी रहेगा ही। यदि प्रो० वासुदेव सिंह को उर्दू के पक्षधरो ने मत्री मडल से त्याग-पत्र देने के लिए बाध्य किया तो यह आदोलन भयंकर रूप धारण कर लेगा। अत समय रहते विभाजन की इस घातक प्रवृत्ति को समाप्त कर देना ही प्रदेश एव केन्द्र की सरकार के लिए श्रेयस्कर है।

लेखकों से निवेदन

'आर्य जगत्' की दिन प्रतिदिन बढ़ती लोकप्रियता के कारण उसमें छपने के लिए भेजे जाने वाले लेखों की संख्या भी काफी बढ़ गई है। लेखकों से विनम्र निवेदन है कि लेख भेजने से पहले निम्न बातों का ध्यान रखें—

१. कम से कम एक या डेढ़ इन्च का हाशिया छोड़ कर लिखे। कागज के दूसरी ओर न लिखें।
२. व्यक्तिगत स्तुति-निन्दा-परक लेख भेजने का कष्ट न करें।
३. अनावश्यक विवाद बढ़ाने वाले लेख न भेजें।
४. टंकित लेख की मूल प्रति ही भेजे कार्बन कापी न भेजें।
५. अक्षर सुपाठ्य हों, इस बात का ध्यान रखे।
६. अन्तर्देशीय लिफाफे में घिचपिच करके पूरा लेख लिखना कम्पोजिटरों के लिए कष्टदायक होता है।
७. एक ही कार्ड में एक से अधिक विषयों पर सम्पादक के नाम पत्र न लिखें।
८. शिक्षा संस्थाओं के प्राचार्य गण से प्रार्थना है कि अपने समाचार अंग्रेजी के बजाय हिन्दी में भेजें।

'आर्य जगत्' आपका अपना पत्र है। इसकी उन्नति के लिए आपके सुझावों का सहर्ष स्वागत होगा। कृपया यह भी ध्यान रखिये कि आप इसके जितने अधिक ग्राहक बनाएंगे उतने ही अधिक लोगों तक आपके विचार पहुंच सकेंगे।

पोप की भारत यात्रा का पूर्वाभ्यास

तिरूनलवेली (तमिलनाडू) से शंकर नकोइल तहसील के कदयालुरुत्ती गाँव में ईसाई मिशनरी द्वारा संचालित प्रायमरी स्कूल मे हिन्दू विद्यार्थियों को स्कूल में आने से इसलिए मनाही कर दी गई कि वे अपने मस्तक पर तिलक लगाये हुये थे। ईसाई मिशनरियों द्वारा हिन्दू बच्चों को तिलक पोंछने के लिए मजबूर करने की यह घटना अत्यंत शोचनीय है।

भारत में ईसाईयों के पोप की यात्रा अभी होनी है और ईसाईयों ने हिन्दुओं के रीति-रिवाज तथा मान्य धार्मिक परम्पराओ मे बाधा पहुंचाने के रंग ढग में तेजी शुरू कर दी है। ईसाईयों की ये हरकते जारी रही तो आश्चर्य नही कि वे हिन्दू विद्यार्थियों को नाम बदलने के लिए भी मजबूर करें। ईसाई पंथ में असहिष्णुता बहुत पुरानी बात है। हिन्दू धर्म के प्रति वे घृणा भी फैलाते हैं। पोप के आगमन के अवसर पर बढ़ रही यह असहिष्णुता घृणा उनके भारत दौरे से और अधिक मजबूत होने वाली है।

इसी का एक उदाहरण यह भी है कि केरल में निलाक्कल शिव मंदिर के क्षेत्र में चर्च की स्थापना की गैरकानूनी मांग को फिर से उठाया जा रहा है। इस के लिए ईसाई चर्चों की ओर से २ करोड़ रुपये एकत्रित करने की मंशा घोषित हो चुकी है। ईसाईयों की इन हरकतो से सम्पूर्ण देश में असन्तोष व्याप्त है।

इसलिए हमारी सरकार को गम्भीरता पूर्वक यह सोचना चाहिये कि इस पवित्र देश मे विदेशी ईसाई पोप की यात्रा को अनुमति देना कहाँ तक उचित है? भारत स्वयं महान् धार्मिक देश है। हमारे यहाँ मानव कल्याण के लिए बड़े-बडे साधु-सन्त हुये हैं और आज भी विद्यमान हैं। भारत में उपदेश देने के लिए हमें विदेशी प्रचारकों की कोई आवश्यकता नहीं है।

परामर्शदाता-अमर स्वामी सरस्वती | सम्पादक-क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक-रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

जीवन में विशिष्टता चाहते हो तो शीलावान बनो

—आचार्य दीनानाथ सिद्धांतालंकार—

महाभारत शान्तिपर्व राजधर्म प्रकरण अध्याय 124 मे दुर्योधन और धृतराष्ट्र का परस्पर सवाद है, जो श्रेष्ठ मानव जीवन के निर्माण मे 'शील' के महत्व पर प्रकाश डालता है।

इस संवाद का प्रारम्भ धृतराष्ट्र द्वारा दुर्योधन को सतप्त देख इस प्रश्न से होता है—'तुम्हारे इस प्रकार संतप्त होने का क्या कारण है जबकि तुम्हारे पास लौकिक सुख समृद्धि के सब साधन उपस्थित हैं ?' दुर्योधन स्वभावत पाण्डवो से बडी ईर्ष्या करता था। उसने कहा—'युधिष्ठिर के घर मे हजारों स्नातक स्वर्णपात्रों में भोजन करते हैं जबकि मेरे महलो में कुछ ही स्नातक भोजन करने आते हैं।' इसी प्रकार दुर्योधन ने वस्त्र, अश्व इत्यादि अन्य कई जड चेतन वस्तुओं का और पशु-पक्षियों का भी उल्लेख किया। धृतराष्ट्र ने पुत्र को ईर्ष्या द्वेष के त्याग का उपदेश देते हुए कहा—'हे पुत्र ! यदि तू युधिष्ठिर सदृश वैभव प्राप्त करना चाहता है तो शीलवान् बन।' दुर्योधन ने उस समय पूछा—'यह शील क्या है ?'

धृतराष्ट्र ने प्राचीन काल का इतिहास सुनाते हुए लक्ष्मी के निम्न कथन के प्रमाण से शील के अङ्गो का वर्णन किया—

धर्मः सत्यं तथा वृत्तं चैव लक्ष्मी।
शीलमूला महाप्राज्ञ सदा नास्त्यत्र संशयः ॥

अर्थात्—धर्म, सत्य, सदाचार, और लक्ष्मी, हे बुद्धिमान ! ये चारो शील के मूल है। इसकी अधिक व्याख्या करते हुए धृतराष्ट्र कहता है—किसी के भी प्रति मन-वाणी-कर्म से द्रोह न करना, दया करना, यथा शक्ति दान देना यह शील कहा जाता है।

प्राचीन काल के भर्तृहरि, विदुर, चाणक्य इत्यादि नीतिकारो ने "शील" का विस्तार से विवेचन किया है। इनके कुछ वचनो को हम यहा प्रस्तुत करते है।

शीलवान् व्यक्ति के गुण

भर्तृहरि के अनुसार—(1) मन, वचन, और शरीर से सत्कर्म रूपी अमृत से पूर्ण होकर तीनो लोको को अपने उपकारो से तृप्त करने वाले तथा दूसरो के परमाणु सदृश छोटे से गुणो को भी पर्वत के सदृश मानकर अपने हृदय मे सदा प्रसन्न होने वाले शीलवान् उत्तम पुरुष संसार मे बिरले ही होते हैं।

(2) तृष्णा का त्याग, क्षमा, मद का त्याग, पाप मे प्रीति का त्याग, सत्य बोलना, सज्जनो के मार्ग का अनुकरण विद्वानो की सेवा, पूजनीय व्यक्तियो का आदर, शत्रुओ के प्रति भी नम्र व्यवहार, अपने गुणो को छिपाना, अपने यश की रक्षा, दुखियो के प्रति दया—यह सत्पुरुषो के लक्षण हैं।

सर्वश्रेष्ठ भूषण है:—(3) धन सम्पत्ति की शोभा—सज्जनता, शूर वीरता की शोभा—वाक् सयम, ज्ञान की शोभा—शान्ति, विद्या की शोभा—नम्रता, धन की शोभा—सुपात्र को दान, तप की शोभा—क्रोध न करना, प्रभुता की शोभा—क्षमा और धर्म का भूषण निश्छल व्यवहार है। पर इन सबका मूल शील—सदाचार—सर्व श्रेष्ठ है।

नीति निपुण व्यक्ति चाहे निन्दा करे या प्रशंसा, धन ऐश्वर्य आये अथवा चला जाय, आज ही मृत्यु हो चाहे दीर्घ काल के बाद, पर धीर पुरुष न्याय के मार्ग से एक पग भी इधर उधर नही होते।

विदुर नीति के आधार पर

(1) जो शान्त हुए वैर को नहीं भडकाता, न घमंड करता है, अपने को हीन नहीं जताता, 'दुर्गति में पड़ा हूं' ऐसा कहकर अकार्य नही करता उसे परम आर्य शील कहते हैं।

(2) अपने सुख मे बहुत हर्ष नही करता और नही दूसरे के दुख मे प्रसन्न होता है, जो देकर पश्चाताप नही करता वह सत्पुरुष आर्य शील कहलाता है।

(3) इस संसार मे शील ही मनुष्य का मुख्य धन है, जिसका यह धन नष्ट हो जाता है उसका न तो जीने का प्रयोजन है और न भौतिक धन से उसे कोई लाभ होगा।

(4) जितेन्द्रिय पुरुषो की गति सत्पुरुष हैं, सत्पुरुषो का गति भी सत्पुरुष ही हैं। किंतु असत्पुरुष सत्पुरुषों की गति कभी नही होते।

(5) विद्यामद, धनमद तथा देश अथवा कुल का मद होता है। अहंकारियो के लिए यह मद उन्माद कारक होते हैं। किन्तु सज्जनो के लिए यही दमन का साधन होते हैं

चाणक्य नीति के आधार पर

(1) रूप की शोभा गुण से, कुल की शोभा शील से, विद्या की शोभा सफलता से और धन की शोभा उसके प्रयोग से होती है।

(2) गुण हीन व्यक्ति का रूप, शील हीन का कुल, प्रयोग मे न आने से विद्या और व्यवहार मे न आने से धन का नाश होता है।

(3) जिनके पास विद्या नही, तप नही, दान नही, शील नही, गुण नही, धर्म नही, ऐसे मनुष्य इस पृथ्वी पर भार रूप में पशुओ के समान विचरते हैं।

[महाभारत के राजधर्म प्रकरण के अतिरिक्त कालान्तर मे जन्मे नीतिविद् आचार्य चाणक्य का धृतराष्ट्र और दुर्योधन के सवाद से सीधा सम्बन्ध नही है, केवल विषय-सापेक्ष होने से ही इन को यहा उद्धृत किया गया है।]

धृतराष्ट्र अपने पुत्र दुर्योधन को अंत मे कहते है—हे पुत्र ! यदि तू युधिष्ठिर से भी विशिष्ट होना चाहता है तो इस प्रकार जीवन का तत्त्व जानकर शीलवान् बन।'

पता—के० सी० 37/ बी, अशोक विहार, दिल्ली-52

महाराणा प्रताप जयन्ती

खडवा आर्य समाज मे 31 मई को श्री गगाचरण मिश्र (पूर्व विधायक) की अध्यक्षता मे महाराणा प्रताप जयन्ती मनाई गई। मुख्य अतिथि श्री राजनारायण सिंह विधायक, श्री एन० एस० वर्मा प्राध्यापक, ठा० ब्रजेन्द्र सिह, श्री राघवेन्द्र राव मडलोई, डा० जगदीशन्द्र, श्री गेहीराम और श्री हीरा लाल ने अपने अपने ढग से महाराणा प्रताप के जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही। वक्ताओ ने सरकार से माग की कि शिवाजी और महाराणा प्रताप के जीवनो से सम्बद्ध पाठ छात्रो की पाठ्य पुस्तक मे रखे जाए।

गुरकुल करतारपुर

गुरुकुल करतार पुर मे 1 जुलाई से टाईपिंग, बुककीपिंग और अकाउंटैंसी सिखाने की व्यवस्था की जा रही है। अब इस विद्यालय के छात्र स्कूलो मे शिक्षक के रूप मे, कर्मकाण्ड कराने मे पुरोहित के रूप मे, धार्मिक सस्थाओ मे प्रचारक के रूप मे तो कार्य कर ही सकेंगे, इसके अतिरिक्त सरकारी कार्यालयो मे, बैंकों मे औद्योगिक संस्थानों मे टाईपिस्ट के रूप मे तथा अकाउण्टैण्ट के रूप मे भी कार्य कर सकेंगे।

गुरुकुल मे नया प्रवेश 15 जून से आरम्भ हो चुका है। छात्र का हिन्दी माध्यम से कक्षा 5 पास होना जरुरी है।

टंकारा आर्य वीर दल

आर्य समाज टंकारा द्वारा सचालित आर्य वीर दल की शाखाएं नियमित रूप से चल रही हैं। 24 मई से 1 जून तक तृतीय शिविर का भी आयोजन किया गया। समाज की ओर से प्रतिदिन पौष्टिक नाश्ते की व्यवस्था की गई। दड बैठक, आसन, जिमनास्टिक, कुश्ती, स्तूप निर्माण आदि का प्रशिक्षण दिया गया। धागधा आर्य वीर दल के नायक श्री चौहान और श्री चाण्डा ने प्रशिक्षण दिया।—हसमुख परमार।

सातरोड कलां में शिविर

वहन करुणा शास्त्री ट्रस्ट के आर्थिक सहयोग से हाई स्कूल के प्रागण मे 1 से 7 जून तक ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर मे युवको ने भाग लिया। महात्मा चेतन देव ने ओमध्वज का आरोहण किया। आचार्य समर सिंह ने व्यायाम प्रशिक्षण दिया। प्रो० राम विचार डा० मदन गोपाल और श्री सुखदेव शास्त्री आदि ने बौद्धिक प्रशिक्षण दिया। प० ब्रजलाल ने भोजन की व्यवस्था की। सैकडो युवको ने यज्ञोपवीत धारण किया और शराब, मास, बीडी-सिगरेट आदि दुर्व्यसनो को छोडने और दहेज न लेने का निर्णय किया।

आर्य समाज कवारी के प्रधान श्री अतर सिंह आर्य के ताऊ की कन्या आयुष्मती सुशीला का विवाह श्री ओम् प्रकाश के साथ 4 जून को श्री भरतलाल एम० ए० के पौरोहित्य मे वैदिक विधि से सपन्न हुआ। आडम्बर रहित इस विवाह से जनता पर अच्छा असर पडा।

विश्व प्रेमी अभिनन्दन

आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री इन्द्रसेन विश्व प्रेमी के 50 वर्ष की आयु पूरी होने पर 7 जून से 10 जून तक उनके निवास स्थान (एच० 245, न्यू कविनगर, गाजियाबाद) पर यज्ञ सत्सग का कार्यक्रम हुआ और उनके मित्रो और प्रशसको ने उनका अभिनन्दन किया। बुजुर्ग मनीषियों ने उनको आशीर्वाद दिया।

आर्य समाज चबूतरो

आर्य समाज चबूतरो का वार्षिकोत्सव 10 से 12 मई तक उत्साह पूर्वक मनाया गया। अनेक युवको ने यज्ञोपवीत धारण कर दुर्व्यसनो को छोडने की प्रतिज्ञा ली। इलाके की 15-16 आर्यसमाजो की सम्मिलित बैठक श्री वीर सिंह आर्य की अध्यक्षता मे हुई जिसमे अनेक उपयोगी प्रस्ताव पास किये गए। खजौर पुर जाटान, खारवन, और किसन पुरा माजरा के भी उत्सव मई मास मे उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुए।

—आर्य समाज केसरगंज मे ब्यावर-निवासी श्री जगदीश सिंह राठौड का विवाह कु० चन्द्रकान्ता चैधा से श्री गोविन्द सिंह जी के पौरोहित्य मे वैदिक विधि से बिना दहेज व आडबर के 28 मई को सम्पन्न हुआ।—मत्री आर्य समाज

—आर्य समाज गुजोटी (धाराशिव) महाराष्ट्र के निर्वाचन मे प्रधान श्री रामराव गुंडाजी सूर्यवंशी, मत्री श्री रावजी शिवजी राव भोसले और कोषाध्यक्ष श्री रमेश तुलसीराम ठाकुर चुने गये।

आर्यसमाज सम्प्रदाय नहीं है

—प्रो० शेरसिंह प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

आर्यसमाज के मन्तव्यों को पूरी तरह न समझने वाले अज्ञानी तथा अलग-अलग सम्प्रदायों को मानने वाले बहुत से लोग आर्यसमाज को भी एक सम्प्रदाय कह डालते हैं। दुःख की बात यह है कि कुछ आर्यसमाजी भाई भी जो किसी कारण आर्यसमाज के संगठन से कटे हुए हैं या अपना वर्चस्व स्थापित नहीं कर पाए हैं, वे भी सीधे न कहकर घुमा फिराकर यह कहने से नहीं हिचकते कि विश्व के कई देशों में फैला हुआ हजारों शाखाओं वाला आर्यसमाज का संगठन साम्प्रदायिक हो गया है इसलिए सभी मतों के अनुयाइयों को मिला कर एक नए भारतीय आर्यसमाज का गठन करना चाहिए।

इसलिए कई प्रकार के लोगों द्वारा आर्यसमाज के सम्बन्ध में जो भ्रम जानबूझ कर या अनजाने फैलाया जा रहा है उसका प्रतिकार करना और वस्तुस्थिति सब के सामने रखना आवश्यक जान पड़ता है।

आर्यसमाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द ने 'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश' में स्पष्ट शब्दों में लिखा है— 'मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूँ कि जो तीन काल में सबको एकसा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतांतर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु जो सत्य है उसको मानना मनवाना और जो असत्य है उसको छोडना छुडवाना मुझको अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्यावर्त्त में प्रचारित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता।"

सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में महर्षि लिखते है:—क्योकि मैं भी जो किसी एक का पक्षपाती होता तो जैसे आजकल के स्वमत की स्तुति मण्डन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा, हानि और बंध करने में तत्पर होते हैं, वैसे मैं भी होता। परन्तु ऐसी बातें मनुष्यपन से बाहर हैं। 'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश' में मनुष्य किसको कहते हैं यह स्पष्ट किया है।

'मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दुःख और हानि-लाभ को समझे। जहां तक हो सके वहां तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करे। इस काम मे चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें परन्तु इस मनुष्यरूप धर्म से पृथक् कभी न होवे।'

महर्षि सारे जगत् का पूर्ण हित चाहते थे, इसलिए उनकी यह हार्दिक तमन्ना थी कि विभिन्न मतों के विद्वान् 'पक्षपात छोड सर्वतंत्र सिद्धांत अर्थात् जो जो बातें सबके अनुकूल सब में सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक दूसरे के विरुद्ध बातें है, उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्तें वर्तावें तो जगत् का पूर्ण हित होवे।'

इस पृष्टभूमि में आर्यसमाज की स्थापना स्वामी दयानन्द ने की थी। इसलिए यह सबको समझ लेना चाहिए कि यही नही कि आर्यसमाज कोई सम्प्रदाय नहीं है, बल्कि आर्यसमाज साम्प्रदायिकता और सम्प्रदायवाद का डटकर विरोधी है। आर्यसमाज जन्म के आधार पर जात-पांत ऊंच-नीच या मजहब आदि का भेदभाव नही मानता है। आर्यसमाज की मान्यता है कि जन्म से ही कोई न ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्रादि होता है और न ही हिंदू, मुसलमान, ईसाई, यहूदी, पारसी आदि।

जन्म के आधार पर लोगों को वर्गों और सम्प्रदायों में बांटना मानव समाज का सबसे बड़ा अभिशाप है। मानव की अधिकतर समस्याओं का मूल जन्म के आधार पर लोगों को वर्गों और सम्प्रदायों में बांटना है। सब बच्चों को समुचित शिक्षासे मानव समाज के एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित होने का समान अवसर मिले ताकि वे मानव समाज के हित के लिए समर्पित और कृत संकल्प हों। यही स्वामी दयानन्द की परिकल्पना थी।

आर्यसमाज के नियम :

आर्यसमाज के दस नियम स्वामी दयानन्द ने सोच समझकर कर बनाए थे ताकि इन नियमों का पालन करने वाले आर्यसमाज के सदस्य अपनी सामाजिक जिम्मेदारी को समझ कर ऐसा आचरण करें जिससे मानव समाज में वैमनस्य की जगह प्रेम, स्पर्धा की जगह सहयोग बढे और सब की उन्नति में ही वे अपनी उन्नति देखें और समझें। जो इन नियमों को हृदयंगम करेगा वह साम्प्रदायिक तो हो ही नही सकता, वह सम्प्रदायों के द्वारा मानव समाज को बांटने का विरोध करेगा और जो सर्वमान्य सिद्धात हैं उनके द्वारा सबको मिला कर मानव समाज का दुःख दर्द समाप्त करने में लग जाएगा।

आर्यसमाज का सदस्य बनने के लिए किसी विशेष जाति या सम्प्रदाय में जन्म लेना आवश्यक नही है। सदस्यता के फार्म में इस प्रकार का कोई उल्लेख नही है। वह किसी भी तथाकथित जाति या सम्प्रदाय मे जन्मा हो, बिना भेदभाव के आर्यसमाज का सदस्य बन सकता है यदि वह नियमों का पालन करे। आर्यसमाज का द्वार सब के लिए खुला है। इसलिए आर्यसमाज में ऐसा संगठन बनाने की बात करना जिसमें हिंदू - मुसलमान - ईसाई आदि सम्प्रदायों के लोग भर्ती हो सकें व्यर्थ का शोशा है। आर्यसमाज राजनैतिक दल तो है नहीं कि इसमें सभी सम्प्रदायों के लोग साम्प्रदाकि भावनायें रखते हुए भी शामिल हो सके और फिर अन्दर बैठकर अपने अपने सम्प्रदायों की लडाई लडते रहे। आर्यसमाज तो एक सार्वभौम सगठन है और सब प्रकार के भेदभाव भुलाकर मानव समाज की सेवा करने मे विश्वास रखता है। यह संगठन किसी जाति विशेष - सम्प्रदाय विशेष या देश विशेष का नही हो सकता। सभी क्षेत्रों में काम करने के लिए उसकी शाखाये तो सब जगह खुलनी चाहियें परन्तु वह है विश्व कल्याण के लिए विश्वव्यापी सगठन। वह संगठन बना हुआ है काम कर रहा है। उसके काम में कमी हो सकती है, उसमें अधिक से अधिक मे अधिक कर्मठ लोग शामिल होकर काम करें और महर्षि के मंतव्यों के अनुसार काम करें। आर्यसमाज की शिक्षा सस्थाएं साम्प्रदायिकता से बहुत ऊपर रही हैं। कन्या गुरुकुल देहरादून से १० मुस्लिम कन्याए स्नातिका बनकर निकली है। दयानन्द कालेज जालन्धर में शिक्षा प्राप्त करने वाले स्नातक अभी पाकिस्तान में छुआछूत के विरुद्ध आदोलन चला रहे है। लाहौर मे १९८८ में उन्होंने मुझे बताया जब मै उनके घर पर भोजन करने गया।

शुद्धि आंदोलन का स्वरूप :

प्रश्न उठ सकता है कि शुद्धि आदोलन के रहते सम्प्रदायों में सौमनस्य कैसे उत्पन्न होगा। मानव समाज का यह दुर्भाग्य है कि वह सम्प्रदायों और मतमतांतरों में बट गया है। हर सम्प्रदाय अपने आपको बढिया और दूसरों को घटिया बताता है। परन्तु तथाकथित हिन्दू सम्प्रदाय ऐसा है कि उसके तथाकथित धर्माचार्य छुआछूत, ऊंचनीच के भेदभाव को अपने धर्म या सम्प्रदाय का अग मानते है ? वे अपने सम्प्रदाय के भी अधिकतर लोगों को अपवित्र मानते है और दूसरे सम्प्रदाय के लोगों को भी। यदि तिरस्कृत होने के कारण या भय अथवा प्रलोभन के कारण कुछ लोग हिन्दू सम्प्रदाय को छोड़कर दूसरे सम्प्रदाय में चले जाते हैं, तो वे उनको हमेशा के लिए अपवित्र मान लेते है और उसकी 'शुद्धि' किसी हालत में सभव नही। आर्यसमाज उसत्य और पाखण्ड तथा सम्प्रदायों के लोगों को पवित्र, अपवित्र और घटिया, बढिया नही मानता। कोई व्यक्ति किसी सम्प्रदाय में चला जाए तो वह उनके लिए बढिया और दूसरों के लिए घटिया हो जाता है या अपवित्र माना जाता है। अपवित्रता का दाग मिटाने के लिए 'शुद्धि' शब्द उपयोग किया गया है। तथाकथित छोटी जाति के लोग किसी भी सम्प्रदाय में जाये वह जाति

(शेष पृष्ठ ६ पर)

जरूरत है भय को अभय में बदलने वाले वीरों की

—जगदीशराज आर्य—

यहाँ ऐसे युवक के विचार उद्धृत किए जा रहे हैं जो पिछले लगभग १५ वर्ष से अपने सुख सुविधा सम्पन्न परिवार का तथा स्वय इजीनियर के पद पर नियुक्त होते हुए भी उस का परित्याग करके २२ वर्ष की अवस्था मे वैदिक धर्म की दुन्दुभि बजाने के लिए घर से निकला। अब इस युवक का जीवन सर्वात्मना वैदिक धर्म के प्रति समर्पित है। यहाँ तक कि विगत २ मई को जब उनके पिता—तुल्य बडे भाई का दुखद देहावसान हुआ तो वे घर पर ही थे। साय काल उन्होने उसी नगर मे अपना प्रवचन किया। ३ मई को जब उनके भाई के पार्थिव शरीर को चिता को समर्पित किया गया तो वहा उपस्थित परिजन एव इष्ट-मित्र शोकाकुल हो रुदन कर रहे थे, पर उस समय भी यह युवक—ब्रह्मचारी आर्य नरेश श्मशान-स्थल पर ही शरीर की नश्वरता का वर्णन करता हुआ उन्हें इस प्रकार समझा रहा था—

"आत्मा का शरीर से मिलने का नाम जन्म तथा शरीर से अलग होने का नाम ही मृत्यु है। आत्मा कभी नही मरता और शरीर पहले ही निर्जीव अर्थात् मरा हुआ है। जीवन ओम् से शुरू होता है और स्वाहा पर शान्त होता है। जो व्यक्ति प्रतिपल प्रतिदिन सर्वव्यापक ईश्वर का सामने रखता हुआ उसकी वेदाज्ञा के अनुसार शरीर तथा आत्मा की उन्नति करता हुआ समाज की सेवा करता रहता है उसे मौत दुखी नही करती। क्योकि एक पूरा काम करने वाले विद्यार्थी की तरह उसे गुरु जी के पास जाते डर नही लगता। किसी के मरने पर आप पहली बार ही दुखी नही होते क्योकि इससे पहले भी आप अनेक बार जन्म लेकर मौत का दुख देख चुके हैं। यदि आप मरना नहीं चाहते तो पैदा होना छोड दें अर्थात् आप वेद की आज्ञा से ऐसे निष्काम कर्म करें कि दुबारा जन्म न लेकर आपको मुक्ति मिले। यही ससार के दुःख से छूटने का एक मात्र उपाय है। दाह सस्कार के पश्चात् गगा आदि मे हड्डिया ले जाना व तेहरवीं मनाना या गरुड पुराण बचवाना अज्ञान जन्य कर्म है। हर आत्मा की सद्गति परमात्मा उसके कर्मानुसार करता है।"

"मृत्यु आयेगी कुछ भी साथ न जायेगा सब कुछ परमात्मा का समझ कर देश व धर्म के लिये बढकर त्याग करो और अपने बच्चो को प्ररणा दो। वहाँ याद रह जायेगा जो परोपकार किया है वही साथ जायेगा जो परमात्मा का नाम लिया है।"

लोग चकित थे कि जिसको हमे सान्त्वना देनी चाहिए, वह स्वित प्रज्ञ हमे शान्ति और सान्त्वना का संदेश दे रहा है।

पजाब प्रवास

इस प्रकार अपना प्रवचन पूर्ण कर ब्रह्मचारी आर्य नरेश श्मशान-स्थल से ही पजाब के दौरे पर चल दिए और वहा विचरण करते हुए ३० मई तक उन्होने अपना पजाब का प्रवास पूर्ण किया। उस प्रवास मे स्थान स्थान पर उन्होंने जो विचार व्यक्त किए उनका ही सार सक्षेप यहाँ दिया जा रहा है। उनका कहना था—"आज देश को उन पुराने आर्यों की जरुरत है जो स्वामी श्रद्धानन्द के शब्दों मे सर हथेली पर लेकर आर्य समाज मे आयें। वेद व शास्त्रानुसार वर्ण-आश्रम धर्म का पालन करो। जाति-पाति की दीवारो को तोड कर गुण-कर्म स्वभावानुसार विवाह करो। प्रतिदिन घर पर पञ्च-महायज्ञ करो। जिससे कि तुम्हारे पीछे भी आर्य धर्म चल सके। पचपन के पश्चात् पूरा जीवन समाज को देकर घर घर, नगर नगर, ग्राम ग्राम वेद की ज्योति जलाओ जिससे कि अन्दरे मे विदेशी षडयन्त्रकारियो, गद्दारो तथा उग्रवादियो की दाल न गल सके। गुरुकुल आदि सस्थाओ को जीवन दान दो जिससे कि उनकी दशा सुधर कर योग्य प्रचारको और आदर्श गृहस्थों का जन्म हो सके।

"ईश्वर एक है, हम सब उसके पुत्र हैं। जो ईश्वर को मानता है वह किसी भी प्राणी की बिना कारण हत्या करना तो दूर अपितु उसे कष्ट देना भी पाप समझता है। ईश्वर को प्राप्त करने व धार्मिक होने का पहला सूत्र अहिंसा है। अहिंसा समाधि तक पहुचने का पहला कदम है। सच्चा ईश्वर भक्त अपने शरीर को परमपिता परमात्मा का मन्दिर समझता है। वह अपने शरीर रूपी मन्दिर से ऐसा कोई कार्य नही करता कि जिससे शरीर गदा हो वा बदनाम हो।"

यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय की व्याख्या करते हुए बरनाला में उन्होंने कहा— अधिक दुख व अधकार मे वे नही गिरते जो अज्ञानी हैं अपितु वे लोग गिरते हैं जो ज्ञान व साधन होते हुये भी कर्मशील नहीं होते। इसलिये निराशा को छोड कर उठो और त्याग पूर्वक सगठित होकर अन्याय को कुचल कर रख दो।"

फरीदकोट में उन्होंने कहा—"जीवन का उद्देश्य केवल पैसा या भौतिक पदार्थों का भोग करना नहीं है। आज तक कोई भी व्यक्ति धन तथा इन्द्रिय भोग को भोगता हुआ तृप्त नही हो सका। बुद्धिजीवी इन्सान का कर्त्तव्य है कि वह धर्म-पूर्वक अर्थ को सिद्ध करे, उस अर्थ से मोक्ष तक पहुचा सकने वाली कामनाओं को कमा कर मुक्ति को प्राप्त करे जो कि शरीर तथा समाज के सुरक्षित व सुदृढ होने पर ही मिल सकती है।"

'सुख और शान्ति प्राप्त करने का यही मुख्य उपाय है कि हम सब की उन्नति मे अपनी उन्नति समझते हुये वेद एव अपने आत्मा के तुल्य सबसे व्यवहार करें। पति पत्नी एक दूसरे के स्थानपर अपने आपको रखकर विचारे, मालिक नौकर बनकर विचारे पुत्र पिता व पुत्री मा बनकर विचारे, मालिक ग्राहक बनकर विचारे कि यदि मैं इनके स्थान पर होता तो

मण्डी गोविन्द गढ़ में उन्होंने कहा—यदि प्रत्येक व्यक्ति वेदानुसार चलता हुआ अपने-अपने स्थान पर कर्त्तव्य का पालन करे तो संसार में सभी सुखी रहें। घर मे माताओं को चाहिये कि वे २४ घन्टों में कम से कम आधे घण्टे का समय अपनी सन्तान को धर्म तथा देश भक्ति की शिक्षा देने मे लगायें तो राष्ट्र में फूलन देवी के स्थान पर दुर्गा देवी, बिल्ला-रगा की जगह लव कुश, रावण के स्थान पर राम, कस के स्थान पर कृष्ण, अकबर के स्थान पर प्रताप, हत्यारे औरगजेब के स्थान पर छत्रपति शिवाजी व उग्रवादियों के स्थान पर भगतसिंह पैदा हों। अच्छी सन्तान के लिये माता-पिता को चाहिये कि वे पहले स्वय अण्डा, [illegible] मछली, गदे उपन्यास गदी फि[illegible] शराब व तम्बाकू को छोड़कर सयमी बनें। तभी उनकी सन्तान अच्छी बन सकती हैं।

इसके बाद धुरी सगरूर, राजपुरा में प्रवचन देते हुए वे चण्डीगढ पहुचे। वहा कहा—आज यदि देश तथा धर्म को बचाना है तो सबको भी उन के सकेत के अनुसार एक एक सन्तान धर्म

पंजाब के विभिन्न नगरो में ब्र० आर्य नरेश के प्रवचन

कैसा व्यवहार करता या चाहता? चोर कातिल, जेबकतरे व हत्यारे तथा बदमाश यह सोच लें कि यदि यही व्यवहार उनके व उनके परिवार के साथ होता तो उन्हें कैसा लगता? जो अपने लिए अच्छा नही लगता तो दूसरो के साथ न करें। यही धर्म का पहला पग है।

'सेवा और साधना' ही ईश्वर मिलने के दो चप्पू हैं। इन्हीं के द्वारा मनुष्य भवसागर से तर सकता है। पर ध्यान रहे कि सेवा शक्ति और त्याग के बिना नही हो सकती और साधना बिना शुद्धता और बिना एकाग्रता के सम्भव नहीं। ये दोनों कार्य ज्ञान पूर्वक ही होने चाहिये ताकि सेवा से समाज उठे और साधना से सच्चे परमात्मा के दर्शन हों। यदि आप ईश्वर को पाना चाहते हैं यो सेवा के लिये शरीर एव शास्त्र की शक्ति को जोड़कर समाज की रक्षा करो और अत्याचार को कुचल कर साधना के लिए शान्त वातावरण बनाओ।

प्रचार में लगाना चाहिये। ब्रह्मचारी जी का कहना है कि जिस प्रकार से देश की सेना मे भरती हुये बिना देश की रक्षा नहीं हो सकती, ठीक वैसे ही धर्म-सेना में अपनी सन्तानों को भरती किये बिना धर्म व संस्कृति की भी रक्षा नहीं हो सकती आवश्यकता है इस प्रकार के सिर पर कफन बाध कर प्रचार करने वाले योग्य प्रचारकों की जो कि भय को अभय में तथा निराशा को आशा मे बदल सकें।

पता—आर्य समाज, कालेज रोड, बरनाला।

के अनुसार एक-एक सन्तान धर्म प्रचार में लगानी चाहिये और ५५ व ६० के पश्चात् अपना शेष जीवन देश धर्म के कार्यों में ही अर्पित करना [illegible]

आर्य समाजों के चुनाव

—काशी आर्य समाज, बुलानाला, वराणसी के श्री कैलाशनाथ सिंह प्रधान, श्री राम जी आर्य मन्त्री और श्री [illegible] प्रसाद आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज, धर्मपुर (सोलन) का वार्षिकोत्सव १० से १२ मई तक सोत्साह मनाया गया, जिसमें अनेक विद्वानों ने भाग लिया। इस समाज के चुनाव में श्री केसीराम प्रधान, और श्री [illegible] [illegible]

वर्तमान चारित्रिक संकट : समस्या और समाधान

—मिश्री लाल मीना—

भारतीय सम्यता और संस्कृति अपनी आलीशान पृष्ठ भूमि एवं विशाल वैभव के लिए विश्व विख्यात है। क्या इसके कभी गदले और अपवित्र पानी में अपने पावन चरण पखारे हैं? क्या यह पुरातन काल में अननुकरणीय पथ पर चली है? क्या इसके उज्ज्वल श्वेत वसन पर कभी कालिख के धब्बे लगे हैं? इन प्रश्नों का उत्तर हमें भारतीय सम्यता और संस्कृति के इतिहास से पूछना पड़ेगा, क्योंकि तथ्यपरक वर्तमान का भूतकाल के साथ जो सम्बन्ध है वही सम्बन्ध वर्तमान का तथ्यपरक भविष्यत् काल के साथ है। अर्थात् सूर्य भूतकाल में भी पूर्व से उगता था और भविष्य में भी उगता रहेगा।

पतनोन्मुख मानव

मैं जनहित, यथार्थ और दार्शनिकता के लिए न चाहते हुए भी वह कटु सत्य कह रहा हूं जिसे जन सामान्य सुनना नहीं चाहता। दशरथ पुत्र राम और जनक पुत्री सीता जन मर्यादाओं के निर्माता थे। समाज के लिए आदर्श थे। परन्तु अपनी सास कौशल्या के लाख मना करने पर भी सीता राम के साथ वन में गयी। क्योंकि वह पतिव्रता थी। तो आज की औरत व बहू अपनी इच्छानुसार अपने पति के साथ क्यों न रहे। वह सीता की दलील देकर अपने प्रेमी के साथ भागने को तत्पर रहती है और वह समाज को छोड़कर वहां रहना चाहती है जहां उसका प्रेमी या पति रहे. चाहे वह स्थान होटल हो या क्लब। इसे चारित्रिक पतन कहें या मानसिक पतन पर ये रास्ते हैं पतनोन्मुख।

जुआ चोरी बेईमानी, छल-छप, बलात्कार, छीना झपटी ये आधुनिक युग के ही व्यसन नहीं हैं धर्मराज कहलाने वाले युधिष्ठर भी मात्र थोथी प्रतिष्ठा के लिए अपनी धर्मपत्नी द्रोपदी को ही जब दांव पर लगा देते हैं और आज का युवक युधिष्ठिर की दलील देकर अपनी पत्नी के जेवर आदि बेच देता है तो शायद बुरा तो करता है पर "धर्मराज" से कम। "इन्द्र चन्द्रमा बनाम यह ऋषिरानी अहिल्या' वाद भी प्रतिवादी गौतम के लिए चारित्रिक संकट है।

माना कि ये बातें काल्पनिक अधिक वी सत्य कम। परन्तु तुलसीदास जी, वेदव्यास जी और मनुजी ने वही तो लिखा है जो उस समय यथार्थ में होता था। मेरा ध्येय जगज्जननी सीता और ब्रह्मस्वरूप श्री कृष्ण के चरित्रों की व्याख्या गलत ढंग से करना न होकर अज्ञान अदूरदर्शी व्यक्तियों की धारणाओं को उजागर करना है, फिर भी मैं क्षमा प्रार्थी हूं। इसमें भी तनिक झूठ नहीं है कि जो व्यक्ति चारित्रिक पतन की ओर उन्मुख होते हैं उनमें अज्ञान, अशिक्षा अदूरदर्शिता मुख्यतया पायी जाती हैं क्योंकि कानून का ज्ञाता कभी सीधे ही खून नहीं करेगा जबकि गंवार व्यक्ति जिद पर आ जाय तो सरे आम खून कर देता है क्योंकि वह परि-[illegible]

ऋग्वेदकालीन व आर्य सभ्यता व्यभिचारों से लाखों कोस दूर थी गुरु, शिष्य, माता-पिता, पिता पुत्र, पैतृक सम्बन्ध गङ्गा के नीर के समान पवित्र थे। नियमित दिनचर्या, आदर-सत्कार अतिथि पूजा व ब्रह्म भक्ति सामाजिक उच्चादर्शों को परिलक्षित करती है। सोलह संस्कारों, चार आश्रमों में जीवन व चार वर्णों में वर्ग विभाजित थे। वर्ण कर्म के अनुसार विभाजित होते थे किसी पर थोपना या उसे किसी कर्म विशेष को विवश करना अपराध था। अपराधी को समाज दण्ड देता था जिसे वह सहर्ष स्वीकार करता था।

मौर्य कालीन और गुप्त कालीन सभ्यता विशाल भारत के वैभव की प्रतिष्ठा थी। लोग घरों पर ताले नहीं लगाते थे अर्थात् वैयक्तिक व्यभिचार बिल्कुल नहीं था। पंचायती राज की शुरूआत यहीं से होती है। समाज व्यक्ति प्रधान होते हुए भी नारी शोषण या नारी अत्याचार को हेय समझता था। किसी भी वाद पर घर के मुखिया का निर्णय मान्य होता था। इसे ही हम भारत का स्वर्ण युग कहते हैं। प्रत्येक भारतीय को अपनी भारतीयता पर गर्व था।

सम्राट हर्ष वर्धन के पश्चात् ही राजपूत काल, जो प्राय: 750 ई० से शुरू हुआ, से चारित्रिक पतन की बू आने लगी थी। इसके उदाहरण खजुराहों और अजन्ता एलोरा की गुफा मे है जो नग्न चित्रण से उनकी नग्न मानसिकता का उदाहरण पेश करती हैं।

ये गुफायें इसी काल में निर्मित की गयी थी। राजपूत शासन का पतन ही सुरा सुन्दरी और शबाब के कारण हुआ। "रोम जल रहा था तब नीरो वंशी बजा रहा था।" वाली कहावत इस युग पर पूर्ण रूपेण चरितार्थ होती है। सारांशत: चारित्रिक पतन की आधारशिला इसी काल में रखी गयी।

आन, बान और शान के मतवाले राजपूतों के बाद मध्ययुगीन सभ्यता ने पदार्पण किया। मुस्लिम शासको ने इस्लाम धर्म को बढ़ाने के लिए हिन्दु धर्म को नेस्तनाबूद करना चाहा और एक आतंक को जन्म दिया, जिसमें सभ्यता के नाम पर सिर्फ झूठी हमदर्दी थी। ये लोग अपने राज प्रासादों में ही दिल, दौलत और दुनियां देखते थे। भारतीय सभ्यता की कर्कश चीख को ये जाम का प्याला या छनछुन छनछुन छनकने वाली घुंघरुओं की आवाज समझते थे। दासी और हेव-[illegible]

महिलाओ की सप्लाई, हिन्दु मुस्लिम का भेदभाव, राजनीतिक व्यभिचार, डोली मँगवाना, सरे आम बलात्कार करना विलासिताओ व रुबाइयों में ही जीवन तलाश करना, इन मुस्लिम शासको का चारित्रिक पतन का चरमोत्कर्ष ही था। जो दशा भारतीय सभ्यता की इस युग में थी वो वास्तविक रूप से हृदय विदारक थी। ये लोग भारतीय सभ्यता को जामों में उड़ेल कर पी गये और उसके पैरों मे जबरन घुघरू बांधकर इसे तबले की तान पर थिरकने को मजबूर कर दिया और भारतीय सस्कृति को इनकी बेगमे पान मे रखकर चबा गयी।

सन 1500 ई० मे एक गोरी सभ्यता आयी यह देखने मे तो गोरी थी पर अंतस से काली स्याह थी। यह आयी तो दूब उगाने थी पर उपवन लगा बैठी यह पाश्चात्य सस्कृति स्कर्ट और पतलून पहने हुए थी जिसमें स्त्री-पुरुष का भेद करना ही बडी मुश्किल बात थी। भारतीय सभ्यता अपनी सौत से बाजी न मार सकी और वह अपने ही घर मे दासी की हैसियत से रहने लगी। फिर वर्ण संकर औलादें पैदा हुई जो अब तक नही मिटी। उदाहरण स्वरूप बहुत मिलेंगे ऐसे जो आधी अग्रेजी एवं आधी हिन्दी अर्थात वर्ण संकर भाषा बोलते हैं। बहुत से लोगों का तो एक भी वाक्य ऐसा नहीं होता जिसमे एक दो शब्द अंग्रेजी के न हों। इस सभ्यता से फैशन परस्ती लिपिकीय शिक्षा सामाजिक बन्धनो का खण्डन, अन्तर्जातीय विवाह चरित्र निर्माण की ओर कम ध्यान देना, आर्थिक शोषण, दासता, बंधुवा मजदूरी व सामाजिक व्यभिचार को बढावा मिला। हां इस सभ्यता से छूआछूत व अन्तर्जातीय विवाह बाल विवाह एव सती प्रथा का अन्त, विधवा विवाह जैसी कुरीतियो का अन्त होकर अच्छाई की ओर समाज का ध्यान जाने लगा। पर 1834 में लार्ड मैकाले ने ऐसी शिक्षा हमे दी जो मात्र क्लर्क पैदा कर सकती है।

महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव

जब भारतीय सभ्यता राजपूतो, मुगलो, ईसाइयों व अंग्रेजों से डरकर घने जङ्गलों में जा छुपी तो गुजरात के मोरवी क्षेत्र के निकट टङ्कारा ग्राम में एक धनी एवं सम्पन्न परिवार में सन् 1824 ई० मे स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म हुआ। जो कि वैदिक धर्म एवं संस्कृति को उन [illegible]

जनता के मध्य लाये। सभ्यता एवं संस्कृति के उद्धार हेतु ही इन्होंने 10 अप्रैल 1875 को "आर्य समाज" की स्थापना की। उस समय चारित्रिक व्यभिचार की नृत्य लीला भारतीय समाज मे इतनी विकराल आकार मे थी कि शब्दो मे वर्णन सम्भव नही। आर्य समाज के अवतरण से इस्लाम व ईसाइयों के अन्धविश्वासो का भण्डा-फोड हुआ। रामधारी सिंह दिनकर ने आर्य समाज को "जागृत हिंदुत्व का समरनाद" बतलाया और कहा कि 'रणारूढ़ हिंदुत्व के निर्भीक नेता जैसे स्वामी दयानन्द हुए वैसा कोई नही हुआ'। आर्य समाज के महान् कार्यों में हम वैदिक धर्म का पुनरुद्धार, समाज सुधार, शुद्धि, जातिभेद उच्छेद, अछूतोद्धार, राष्ट्रीय शिक्षा-पद्धति, हिन्दी-प्रसार और राष्ट्रीय जागरण का उल्लेख कर सकते हैं। नैतिक सामाजिक व चारित्रिक संकट को नष्ट करने में स्वामी दयानन्द जी का इतना योगदान रहा है कि जो वर्णन नहीं किया जा सकता। हमारा समाज उनसे उऋण नहीं हो सकता।

उच्च चारित्रिक भवन के निर्माण मे रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य, निम्बार्क, वल्लभाचार्य, रामानन्द, कबीर, नानक, चैतन्य, नामदेव, दादू, रैदास, मीराबाई, आदि का भक्ति-आंदोलन स्वरूप सहयोग रहा तो राजा राम मोहन राय, महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर, केशवचन्द्र, स्वामी जी, श्रीमती एनीबीसेन्ट, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, तिलक, गांधी, एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर का समाज सुधारक एवं दार्शनिक क्षेत्र मे अविस्मरणीय योगदान रहा, दिनकर, निराला, बच्चन, महादेवी वर्मा, अज्ञेय, अश्क, वियोगी हरि, प्रसाद भारतेन्दु, प्रेमचन्द आदि अपनी लेखनी से इस भव्य कंगूरे में स्वर्ण ईंटे लगा गये व अभी भी लगा रहे हैं।

ऐतिहासिक विवेचन के बाद अब हम वर्तमान धरातल पर उतरते हैं। आज चारों तरफ हाहाकार मचा हुआ है। हत्या, खून, लूट-पाट, बन्द, बलात्कार चोरी, बेईमानी, छल-कपट, ईर्ष्या द्वेष, धमकिया, आतंक, व्यभिचार, बेरहमी, दहेज, आत्म-हत्या, अनुशासन-हीनता, हडताल, ताला-बन्दी, वेश्या-वृत्ति, अनुदारता, संकुचित विचारधारा आज आम बात हो गयी है। फैशन परस्ती, रिश्वतखोरी, प्रशासनिक दमन-चक्र, सिर चढ़कर नंगा नाच कर रहे हैं। कौन उत्तरदायी है इन सबके पीछे? वो देखो! एक अबला अपने ससुराल वालों के अत्याचारों से विवश होकर आत्म हत्या कर रही है। वो देखो! चन्द चांदी के टुकड़ों के लिए किसी निर्दोष की हत्या कर रहा

आकर आत्महत्या करली। वो देखो, कुछ शराब के लिए अपने देश की सुरक्षा की चाबी को विदेशियों के हाथ सौंप रहा है। अरे! भाई, ये किसी मिल के भोंपू की आवाज नहीं है। यह तो किसी युवती के साथ सामूहिक बलात्कार किया जा रहा है उसी की दर्द भरी चीख है। वेश्यावृत्ति उसका शौक नहीं है वह तो अपना पेट भरने के लिए या गलत आदमियों व दलालों के चंगुल में फंसकर इस कुकर्म के लिए विवश है। प्रशासन अपने कानों पर ठीकरी रखकर सो जाय तो बन्द, हड़ताल और घेराव के बाद और कोई रास्ता ही नहीं है। ये छात्र अगर अनुशासनहीनता या उदण्डता कर रहे हैं तो यह इनका दोष थोड़े ही है ये बातें तो लार्ड मैकाले की आधुनिक शिक्षा की देन हैं। तुम भी मूर्ख हो; अगर रिश्वत नहीं लें तो कोई अधिकारी कार, बंगला व सोसायटी मेंटेनेन्स नहीं कर सकता। चाहे वह आई० ए० एस० ही क्यों न हो। लगातार निर्दोष हिन्दुओं की हत्या शुरू करदो अपने आप धर्म विवाद खड़ा हो जायेगा। तुम घबराते क्यों हो भाई दुःख में सहायता करने के लिए हम हैं ही। फिर पाकिस्तान बना किस लिए है। अगर मुस्लिमों के नाम पर पाकिस्तान बन सकता है तो सिखों का नाम पर खालिस्तान क्यों नहीं बन सकता। मगर शर्त यह है कि निरंतर हत्या, लूटपाट, आदि से एक आतंकवादी वातावरण बनाना पड़ेगा।......ये सब बातें मेरी कलम की उपज नहीं है। ये तो आम घटनायें हैं जो आज अभ्यस्त सी हो गयी हैं आपके पास सबूत नहीं हो तो मेरे पास हजारों हैं।

ये सब बातें मानवी चारित्रिक पतन के कारण उत्पन्न हुई हैं। मुझे आश्चर्य है इन बातों पर कि जहां स्त्रियों को देवी मानकर पूजा की जाती थी वहीं अब सामूहिक बलात्कार किये जाते हैं। जहां भगत सिंह, आजाद, वीर सावरकर जैसे देश भक्त लोग पैदा हुए हैं वहीं आज ऐसे देशद्रोही पैदा हो गये जो देश के टुकड़े टुकड़े करना चाहते हैं। और—

कितनी करीब ?
कितनी अजीब ?
दास्तां है।
ये कि—
वो—(देशद्रोही)
घर के—
द्वार पर ही—
घर बनाये बैठे हैं।

यहाँ तक कि जहां गाय को मां के समान मानकर गौवध का निषेध माना गया वहीं अब रोजना हजारों गायें कटती हैं। जिस देश से विदेशी धन धान्य लूट खसोट कर ले जाते थे वही देश अब विदेशों से ऋण लेकर निर्वाह कर रहा है। जिस देश की शस्य-श्यामला भूमि पर सब धर्मों के, सभी सम्प्रदायों के लोग हिलमिलकर गौरव गीत गाते थे वहीं अब धर्म, सम्प्रदाय, जाति के नाम पर अलगाववाद के

वर्तमान चारित्रिक संकट....

स्व० श्री लालमन आर्य की स्मृति में आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त निबन्ध

(पृष्ठ ५ का शेष)

मानसिक एवं चारित्रिक पतन ही उत्तरदायी है। आइये इन कारणों पर हम विस्तृत रूप से चर्चा करें कि किन कारणों के उत्तरदायित्व स्वरूप व्यक्ति का चारित्रिक पतन होता है व इसके पीछे कौन उत्तरदायी है :—

दार्शनिक प्रवृति का अभाव

आज का जन जीवन दार्शनिक प्रवृत्ति की ओर अरुचि रखता है। वह समझता है कि ये बातें आज के यथार्थ से कोसों दूर हैं, परन्तु ऐसा नहीं है। भारतीय विचारकों ने जीवन के चार पुरुषार्थों की कामना की —धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इनमें मोक्ष अन्तिम लक्ष्य है और अन्य तीन पुरुषार्थों में धर्म का प्रधान स्थान है। परन्तु जब सामान्य दार्शनिकता के अभाव मे धर्म को किसी निश्चित धार्मिक विश्वास, कर्मकाण्ड या धार्मिक क्रियाओं के संकुचित अर्थ को ग्रहण करता है। जबकि धर्म का अर्थ एक व्यापक जीवन पद्धति का बोध कराता है अत. धर्म वह विश्व व्यापी नैतिक तथा भौतिक व्यवस्था है जो लोक जीवन की धारणा करती हैं। विशेष अर्थ में धर्म व्यक्ति के कर्तव्य आचार की संहिता है। महाभारत के कथन के अनुसार,— "जीवन मे अर्थ और काम का इस प्रकार सेवन करो कि धर्म का उलङ्घन न हो।" इस निर्देश द्वारा भारतीय संस्कृति ने जीवन के आध्यात्मिक और भौतिक पक्षों के बीच समन्वय स्थापित किया है जो व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। परंतु आज व्यक्ति को अपने जीवन की सार्थकता का ही ज्ञान नहीं है। अत: वह ऐसे कर्म कर बैठता है कि उसका चारित्रिक पतन हो जाता है और चारित्रिक संकट की समस्या उत्पन्न होती है।

इतिहास के प्रति अरुचि

आज वैज्ञानिक युग है। इस युग में जन सामान्य की नजरें आणविक विध्वंस पर टिकी हुई हैं। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के इतिहास में शान्ति-सन्देश भरे पड़े हैं यह समस्त विश्व को आणविक खतरे से मुक्त कर सकता है। पर जन सामान्य की ऐसी अवधारणाएं हो गयी हैं कि इतिहास मे मरे मुर्दे उखाड़ने पड़ते हैं यह भी सर्व सत्य है कि लोग कंगूरे की ओर देखते हैं नींव की ईंट की तरफ नहीं। अत: इतिहास की अमूल्य शिक्षाओं, अविस्मरणीय आदर्श चरित्र से वह वञ्चित रह जाता है और बुरे कर्म करने को तत्पर रहता है। अतः चारित्रिक

नैतिक मूल्यों का ह्रास

समाज वह क्षेत्र है जहां सभ्य एवं सुसंस्कृत व्यक्तियों का समूह रहता है। वह समूह समाज के बनाये हुए नैतिक मूल्यों के प्रति भी उत्तरदायी होता है। अगर उस समूह में से कोई भी व्यक्ति नैतिक मूल्यों की अवहेलना करके कर्म करता है तो नैतिकता के साथ उस व्यक्ति का चारित्रिक पतन शुरू होता है। चोरी डकैती, बलात्कार, आदि अपराध वैयक्तिक नैतिक मूल्यों के ह्रास के परिणामस्वरूप ही होते हैं। जब व्यक्ति की इच्छा उसकी आत्मा पर अपना अधिकार कर लेती है तो वह समाज से कटकर स्वैच्छिक आचरण करने लगता है। अतः नैतिक मूल्यों को भूलकर कुकर्म करना सबसे बड़ा चारित्रिक संकट है। ऐसा व्यक्ति या तो अशिक्षा या आक्रोश या मानसिक तनावों के कारण करता है।

संकुचित विचारधारा

चारित्रिक पतन व अमानवीय कृत्यों के पीछे संकुचित विचारधारा भी एक उत्तरदायी कारण है। आम आदमी जीवन का अर्थ धन—दौलत, रुपया-पैसा, ऐशो-आराम ही समझता है। येन-केन-प्रकारेण वह ऐश्वर्ययुक्त जीवन को प्राप्त करना चाहता है। अत. वह अपने सत्कर्म को छोड़कर दुष्टकर्म की ओर अग्रसर होकर चला जाता है। चाहे वह प्रशासनिक अधिकारी हो या मन्त्रालयिक कर्मचारी, चाहे पुरुष हो या स्त्री, करीब-करीब ९० प्रतिशत व्यक्ति संकुचित विचारधारा से ग्रसित हैं। अतः चारित्रिक पतन का मुख्य कारण ही यही हो सकता है, क्योंकि वेश्यावृत्ति, वे काल-गर्ल कोठावृत्ति, एक्सट्राफेण्ड आदि वृत्ति अगर इसी की ओर मुड़ी हुई है तो बलात्कार, चोरी, डकैती, लूटपाट आदि भी इसी ओर इशारा करती हैं अत: संकुचित विचार- धारा चारित्रिक पतन का मुख्य बिन्दु है।

कर्म सिद्धांत की व्याख्या

किसी चीज की रूप रेखा को जाने बिना हम उस चीज के बारे में कुछ हासिल करना चाहते हुए भी कुछ हासिल नहीं कर सकते। श्रीमद्भगवत् गीता में श्री कृष्ण ने कर्म सिद्धान्त की पूर्ण विवेचना की है जिससे मनुष्य अपने चारित्रिक संकट से उबर सकते हैं। परन्तु जन सामान्य के बीच ऐसा कोई वातावरण या ऐसा कोई विज्ञापन सूत्र नहीं हैं जिससे आम व्यक्ति 'कर्म सिद्धांत' की महत्ता समझते हुए अपना चारित्रिक यथार्थ का बहुत ही प्रगाढ़ सम्बंध है परन्तु—

नल टोंटी मसके बिना पानी पिया न जाय—लेकिन जब हम नल की टोंटी को ही खोलना नहीं जानें तो नल को भी हम यह कह कर आगे बढ़ जायेंगे कि यह तो लोहे का पाइप जमीन में गाड़ रखा है। अत: कर्म सिद्धांत की उचित व्याख्या और अनभिज्ञता की सही ढंग से जानकारी न होने के कारण भी चारित्रिक संकट पैदा होता है।

प्रशासनिक अत्याचार

हमारे स्वतंत्र भारत में स्त्री पुरुष को समान दर्जा व सुविधाएं प्राप्त हैं। प्रशासन चाहता है कि उसकी कर्मकुशलता बढ़े और अराजकता न फैले, परन्तु प्रशासनिक व्यक्ति स्वयं कभी कभी निरंकुश होने के कारण व्यभिचार एवं अराजकता से ग्रसित हो जाते हैं। वो स्वयं सुन्दर स्मार्ट लचीले बदन, कटीले गठीले शारीरिक सौष्ठव उम्र 18 वर्ष से 25 वर्ष तक की युवतियों की विमान परिचायिका या पी० बी० एक्स० ऑपरेटर्स के लिए मांग कर बैठते हैं। यह क्या स्त्रियों को हीन भावना से देखना नहीं? क्या यह सुन्दर और सुशील किशोरियों के साथ अप्रत्यक्ष रूप से बलात्कार नहीं है? क्या इन पदों पर पुरुष काम नहीं कर सकता? क्या ऐसी लड़कियां (करीब 80%) गलत रास्ते पर नहीं मुड़ती? इन सब प्रश्नों का उत्तर प्रशासन भी वही देता है जो एक कोठे की मालकिन देती है कि हम अपने ग्राहक बढ़ाने के लिए ऐसा करते हैं। यह भी अर्थात् प्रशासनिक अत्याचार भी चारित्रिक संकट का एक मुख्य कारण है। दूसरी ओर होना तो यह चाहिये कि—वीणा के तारों को इतना मत कसो कि वो टूट जायें और इतना ढीला भी मत छोड़ो कि वो बजे नहीं। परन्तु ये वीणा के तारों को इतना कस देते हैं कि वो टूट जाते हैं और हड़ताल, तालाबन्दी, लूटपाट आदि चारित्रिक संकट के कारण उपस्थित हो जाते है।

उच्च वर्ग में भ्रष्टाचार

निम्न और मध्यम वर्ग अपनी रोजी रोटी की तलाश में भटकता है तो उच्च वर्ग अपने कुत्तों को दूध की झारियां पिलाता है। सब एक ही मिट्टी के बने हैं। सबके खून का रंग लाल ही होता है शायद। पर कुछ भ्रष्टाचार के सहारे घिरोंडीराम से किरोड़ीमल बन जाते हैं। और कुछ उनसे ईर्ष्या-स्पर्धा करते करते जीवन राम से हत्या राम, लिछमन से लाखन सिंह बन जाते हैं। उच्च वर्ग में भ्रष्टाचार इस तरह व्याप्त होता है कि वो जिस तरह शराबी शराब के बिना नहीं जी सकता उसी तरह वो भ्रष्टाचार के बिना नहीं जी सकते। वेश्यावृत्ति कालगर्ल ओपन, सैक्स, गर्ल फ्रैंड, होटलें, क्लबस आदि चीजें उच्च वर्ग ही तो देता है निम्न वर्ग या मध्यम वर्ग के लिए वे सब बातें दायरे से बाहर की हैं। अत: उच्च वर्ग की भ्रष्टता चारित्रिक संकट को जन्म देने में अग्रणी है।

इन्दौर में अंग्रेजी हटाओ सम्मेलन

हम सब जानते ही हैं कि हमारा देश अभी भी अंग्रेजी का गुलाम है। हमारी केन्द्रीय सरकार अंग्रेजी की गुलामी से मुक्त होने के लिए विचार भी नहीं कर रही है। लेकिन कुछ प्रान्तीय सरकारें उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, हरयाणा ने भाषाई गुलामी से स्वतन्त्र होने के लिए प्रयत्न प्रारम्भ कर दिए हैं, किन्तु शेष प्रान्तों को एवं केन्द्र सरकार को विदेशी भाषा की गुलामी से स्वतन्त्र होने के लिए प्रेरित करना होगा। हमें जनता की मानसिकना को भी बदलना होगा कि वह दैनिक व्यवहार में अंग्रेजी को हटाकर केवल अपनी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा को ही व्यवहार में लाने का अभ्यास करें। इसके लिए सम्पूर्ण देश में एक साथ निरन्तर प्रचार एवं संघर्ष करने की तैयारी करने के लिए इन्दौर में अखिल भारतीय सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

हमारी मातृभाषायें तमिल, तेलगू, मलयालम, कन्नड़, मराठी, गुजराती, बंगला, असमिया, उड़िया, पंजाबी, सिंधी, कश्मीरी, उर्दू, संस्कृत और हिन्दी अपने सपूत बेटे, बेटियों से ४२ वर्षों से आशा लगाए हुए हैं कि अब तो हमें अंग्रेजी की गुलामी से मुक्त हो जाना चाहिए। हम तो अपने पूर्वजों के बलिदान का लाभ उठाकर राजा बन स्वतन्त्रता का सुख भोग रहे हैं। हमारी मातृभाषायें अंग्रेजी की दासी बनकर गुलामी की बेडियों में जकडी हुई हैं। इस दासत्व के कलंक से हमारी मातृभाषाओं को स्वतन्त्र कराना हमारा राष्ट्रीय कर्त्तव्य है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी को राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित कराने और हमारी मातृभाषाओं को अपने अपने प्रांतों मे विदेशी भाषा अंग्रेजी के स्थान पर प्रतिष्ठित कराने के लिए सर पर कफन बांधकर संकल्प करने के लिए समर्थकों व साथियों सहित इन्दौर अवश्य पहुंच कर भावी योजना तैयार करने में सहयोग करें। कृपा कर इस सम्बन्ध में आप अपनी योजना लिखित में भेजने का कष्ट करें।

इन्दौर सम्मेलन में आपके निवास व भोजन की निःशुल्क व्यवस्था रहेगी।

२८ से ३० जुलाई अंग्रेजी हटाओ सम्मेलन में मुलायमसिंह जी यादव (मुख्यमन्त्री उत्तरप्रदेश), सुन्दरलालजी पटवा (मुख्यमन्त्री मध्यप्रदेश) शान्ताकुमारजी (मुख्यमन्त्री हिमाचल प्रदेश), बनारसी दास गुप्ता (मुख्यमन्त्री हरयाणा), रविरायजी (अध्यक्ष लोकसभा), देशरत्न डा० चन्द्रशेखरन (केरल) तथा आचार्य राममूर्ति आदि को आमन्त्रित किया गया है।

संकल्प करें

१- अपने हस्ताक्षर अंग्रेजी में नहीं करेंगे। अपनी मातृभाषा या राष्ट्रभाषा हिन्दी में करेंगे।

२- अपने पत्रों पर पता अंग्रेजी में नहीं लिखेंगे। अपनी मातृभाषा या राष्ट्रभाषा हिन्दी में करेंगे।

३- शासन से पत्र व्यवहार अंग्रेजी में नहीं करेंगे। अपनी मातृभाषा या राष्ट्रभाषा हिन्दी में करेंगे।

४- दैनिक व्यवहार में अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग नहीं करेंगे। अपनी आदत बनावेंगे कि मातृभाषा व राष्ट्रभाषा हिन्दी के शब्दों का प्रयोग करेंगे।

५- हम व्यापारी अपनी पावती व हिसाब अंग्रेजी में नहीं लिखेंगे। अपना समस्त कार्य मातृभाषा या राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखेंगे।

६- हम कारखानेदार हमारे द्वारा निर्मित सामान पर और उसके डिब्बों पर गुलामी की निशानी अंग्रेजी नहीं लिखेंगे। प्रत्येक प्रांत की भाषा व राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखेंगे।

७- हम चिकित्सक, अभिभाषक, यन्त्री, शासकीय सेवक अपनी आदत बनावेंगे कि अंग्रेजी का व्यवहार बन्द कर मातृभाषा या राष्ट्रभाषा हिन्दी का व्यवहार करेंगे।

८- अपने बालकों को अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में नहीं भेजेंगे। मातृभाषा या राष्ट्रभाषा हिन्दी माध्यम के विद्यालय में भेजेंगे और अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों के संचालकों से आग्रह करेंगे कि अंग्रेजी माध्यम को हटाकर राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही पढ़ावें। अंग्रेजी पढ़ाकर हमारे बालकों को विदेशी नहीं बनाकर राष्ट्रभक्त बनावें।

९- हम अपने बच्चों से डैडी, मम्मी, अंकल, आंटी बुलवाना बन्द करेंगे और पिताजी, माताजी बुलवाने की आदत डालेंगे।

१०- समस्त अभिनन्दन पत्र एव निमन्त्रण पत्र अंग्रेजी में नही भेज कर हिन्दी में ही भेजेंगे।

११- हमारे नामपट पर और विज्ञापन पर अंग्रेजी में नही लिखवायेंगे।

१२- हम अपने बच्चों को विदेशी संस्कृति में नहीं ढालेंगे। अपनी भारतीय संस्कृति में ढालेंगे।

—जगदीशप्रसाद वदिक, अध्यक्ष

उठो धरा के अमर सपूतो

सिंह-नाद कर उठो जवानो, समय नहीं है सोने का।
भारत मां घनघोर कष्ट में, अवसर नही है खोने का॥
पुण्य धरा पर भीष्म जी ने, अपना प्रण निभाया था।
हस्तनापुर की रक्षा में ही, वीर साहसी पाया था॥
कृष्ण जी ने कंस मारकर, अत्याचार हटाया था।
अपने हाथों उग्रसेन को, मथुरा नृप बनाया था॥
घोर अन्धेरा भारत में, दयानन्द जी आए थे।
अन्धकार से हटा हमें, प्रकाश के पथ दर्शाए थे॥
उठो धरा के अमर सपूतो, कौशल आज दिखाना है।
अपने पूर्वजों की भांति, फिर से ध्वज फहराना है॥
जन्म लिया है जीना सीखो, मृत्यु से क्या घबराना।
महेश यह तो सत्य आखिरी, मौत सभी को ही आना॥

—महेश चन्द्र आर्य, पन्हैडा खुर्द,
बल्लभगढ़, फरीदाबाद (हरयाणा)

यज्ञ सम्पन्न

१६ जून को आर्य निवास नलवा (हिसार) में यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ महाशय महावीर प्रसाद प्रभाकर जी के ब्रह्मत्व में हुआ। प्रभाकर जी ने बड़े ही सरल एवं मार्मिक शब्दों में वेदमन्त्रों के हवाले से हवन की व्याख्या की तथा यज्ञ का वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी रखा। यज्ञ पर स्कूली बच्चों ने भाग लिया।

—अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, सभा उपदेशक

पत्रों के दर्पण में

[डी०ए०वी० शताब्दी समारोह का प्रारम्भ लाहौर के उसी स्थान से हो, जहाँ सर्वप्रथम १ जून १८८५ को डी०ए०वी० स्कूल की स्थापना हुई थी—इस सुझाव के संबन्ध में पाठकों की खट्टी-मीठी प्रतिक्रियाएं यहाँ दी जा रही हैं। अन्य पाठक भी इस विषय में अपने विचार भेजें तो उनका सहर्ष स्वागत होगा।]

डी०ए०वी० शताब्दी और लाहौर

आपका लाहौर में डी०ए०वी० शताब्दी मनाने का सुझाव अत्यन्त सामयिक तथा औचित्यपूर्ण है। यदि हजारों सिखों को प्रतिवर्ष ननकाना साहब और पंजा साहब जाने की अनुमति मिलती है, और अब तो हिन्दू लोग भी पाकिस्तान स्थित कटासराज तीर्थ जाने लगे हैं, तो कोई कारण नहीं कि लाखों आर्यसमाजियों को लाहौर स्थित उन डी०ए०वी० संस्थाओं के भवनों को एक बार पुनः देखने की अनुमति न दी जाय।

गत अंक में विष्णु प्रभाकर का सन्तराम जी पर लिखा लेख, भाव-प्रवण शैली में लिखा गया है। यह स्मरणीय है कि स्वामी दयानन्द ने वर्ण व्यवस्था को मरण व्यवस्था कभी नहीं कहा। यह जात-पांत तोड़क मण्डल वालों की कल्पना मात्र है। इस आशय का स्वामी दयानन्द के द्वारा लिखा गया एक जाली पत्र भी यदा-कदा प्रचारित किया जाता है।

श्री ब्रह्मदत्त स्नातक के लेख में बाबा छज्जूसिंह का सत्यार्थ प्रकाश का अनुवादक बताया गया है। वस्तुतः बाबा छज्जूसिंह ने १९०३ में स्वामी जी की एक वृहद् जीवनी अंग्रेजी में लिखी थी। सत्यार्थ प्रकाश का अनुवाद पं० दुर्गाप्रसाद ने किया था। डा० भवानीलाल भारतीय

सैरे हमत पढ़वाइये

२ जून के सम्पादकीय में कहा गया है—

१. डी०ए०वी० शताब्दी समारोह का प्रारम्भ लाहौर में होना चाहिए। २. समारोह का उद्‌घाटन पाकिस्तान के राष्ट्रपति करें। ३. इससे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों में एक नया अध्याय प्रारम्भ हो सकता है।

समारोह के लाहौर में किये जाने सम्बन्धी सुझाव का सभी स्वागत करेंगे। इस विषय में इतना और जोड़ देना चाहिये कि यह समारोह १ जून को हो, क्योंकि उसी दिन सबसे पहले डी० ए० वी० कालिज की लाहौर में स्थापना हुई थी। जहाँ तक पाकिस्तान के राष्ट्रपति द्वारा उसका उद्‌घाटन कराये जाने और उसके फलस्वरूप हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के सम्बन्धों के मैत्रीपूर्ण होने का प्रश्न है, मैं समझता हूं कि यह सब व्यर्थ होगा। जिस पाकिस्तान की नींव ही घृणा पर रक्खी गई हो, जिसका लक्ष्य येन-केन-प्रकारेण हिन्दुस्तान को दारुल इस्लाम बनाना हो उस सम्बन्धों में सुधार की आशा करना मृगतृष्णा से अधिक कुछ नहीं है—'ईं ख्यालस्त मुहालस्त जनूं।' आचार्य चाणक्य ने यूं ही नहीं कह दिया—"अनन्तरप्रकृतिः शत्रुः' पड़ोसी देश से मित्रता की आशा कभी नहीं करनी चाहिये।

इस अवसर पर कर्त्तव्य भावना से एक सुझाव देना चाहता हूं। डी० ए० वी० आन्दोलन का सम्बन्ध शिक्षा क्षेत्र से है। अतः उसके समारोहों में राजनेताओं को नहीं, उदात्त चरित्र वाले वैदिक विद्वानों एवं शिक्षा शास्त्रियों को ही महत्व मिलना चाहिए। सन् १९३६ में डी०ए०वी० कालिज लाहौर की स्वर्ण जयन्ती मनाई गई थी। मैं उस समय डी०ए०वी० कालिज से इंगलिश में एम० ए० कर रहा था। मुख्य समारोह में एक कुर्सी पर त्यागमूर्त्ति महात्मा हंसराज जी और दूसरी पर ऋषिकल्प पं० मदनमोहन जी मालवीय विराजमान थे। उनके बराबर बैठने वाला तीसरा कोई नहीं था। उस सुन्दर दृश्य को मैं आज भी नहीं भूल पाया हूं। आज उन जैसे तपस्वी नेता तो ढूंढे से भी नहीं मिलेंगे, किन्तु उस स्तर के न सही, उस वर्ग के निष्कलंक श्रेष्ठतम व्यक्तियों को ही अध्यक्ष, मुख्य अतिथि आदि के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, माडल टाउन, दिल्ली-९

असंभव कार्य

२ जन के अंक में वीर सावरकर का जो सुभाषित दिया था, बहुत उत्तम था। वह राष्ट्रभक्ति के साथ-साथ हिन्दुत्व को भी प्रकट करता था। सम्पादकीयम् में डी०ए०वी० शताब्दी समारोह के बारे में जो सुझाव दिया है कि प्रथम समारोह लाहौर में हो, उत्तम है। लेकिन यह एक असंभव कार्य है। क्योंकि पाकिस्तान एक घोषित इस्लामी राष्ट्र है। वहाँ आर्यसमाज से सम्बन्धित इस समारोह को मनाने की इजाजत मिल जायेगी इसमें सन्देह है।

ऐ रू सियाह ! तुझसे तो इतना न हो सका !

डी० ए० वी० शताब्दी का प्रथम समारोह लाहौर में उसी स्थान पर हो जहां सर्वप्रथम डी० ए० वी० स्कूल की स्थापना हुई थी, इस सुझाव को पढ़ कर आर्य जनों के मन तो झूम उठे। जब से कटासराज तीर्थ के दर्शन के लिए लगभग ७०० हिन्दुओं ने पाकिस्तान की यात्रा की है, तब से इस सुझाव के कार्यान्वित होने की आशा और बढ़ गई है। कोई कारण समझ मे नहीं आता कि इस प्रकार के गैर-राजनीतिक और भारत-पाक-सहयोग के नए द्वार खोलने वाले प्रस्ताव को पाकिस्तानी सरकार अनुमति क्यों नहीं देगी। यदि हमारे ही प्रमाद वश इतना सुन्दर सुझाव अमल में नहीं आ सका, तो मैं इतना ही कहूंगा—

सौदा खुमारे-इश्क में, खुसरो से कोहकन,
बाजी अगरचे ले न सका, सर तो खो सका।
किस मुंह से अपने आपको कहता है इश्कबाज,
ऐ रू सियाह ! तुझसे तो इतना न हो सका॥

—आशानन्द भजनोपदेशक, संन्यास आश्रम गाजियाबाद।

ऐतिहासिक स्थानों का महत्व

"एक विनम्र सुझाव" शीर्षक सम्पादकीय पढ़ कर पुराने इतिहास की याद ताजा हो गई। इस महत्वपूर्ण सुझाव के लिए आपको धन्यवाद देता हूं। जो देश, समाज तथा संस्थाएं अपने आदर्श पुरुषों और ऐतिहासिक स्थानों को भूल जाते हैं, वे इतिहास के पन्नों से हट जाते हैं। आज सिखों, मुसलमानों तथा ईसाइयों ने इसी लिए संसार में गौरव पूर्ण स्थान बनाया हुआ है क्योंकि इन्होंने अपने ऐतिहासिक महापुरुषों एवं स्थानों से किसी न किसी तरह का सम्बन्ध बना रखा है और उनके प्रति निष्ठा कायम रखी है। उदाहरण के तौर पर हजरत बल (कश्मीर) में रखा पैगम्बर मोहम्मद का बाल, पाकिस्तान में ननकाना साहिब तथा पंजा साहब आदि स्थान एवं ईसाइयों की बेबिलोन तथा रोम में ईसा मसीह की यादगारें श्रद्धा के स्थान बने हुए हैं।

आपके सुझाव से मैं शत प्रतिशत सहमत हूं कि डी० ए० वी० शताब्दी समारोह का शुभारम्भ उसी स्थान से हो जहां पर लाहौर में सबसे पहला डी० ए० वी० स्कूल महात्मा हंसराज जी ने स्थापित किया था।

मैं सभी अधिकारियों तथा संस्थाओं से प्रार्थना करता हूं कि वे इस महत्त्वपूर्ण समारोह को सफल बनाने में डी० ए० वी० प्रबन्धकों को तन, मन, धन से सहयोग देकर लाहौर में ही इस कार्यक्रम को शुरू करने की प्रेरणा दें। —मामचन्द रिवारिया, महामंत्री अ० भा० खटीक समाज, ३४३९, चौक हौजकाजी, दिल्ली-६

प्रशंसनीय सुझाव

आपने आर्य जगत् में सुझाव दिया है कि डी० ए० वी० शताब्दी वर्ष का प्रारम्भ सबसे पहले लाहौर से होना चाहिये। मेरा कहना है कि डी० ए० स्कूल, डी०ए०वी० कालिज व महात्मा हंसराज जी का मकान—इन सब की यात्रा होनी चाहिये। आपका सुझाव बहुत अच्छा है और मैं पूर्णतया इसका समर्थन करता हूं। शायद अधिकारियों ने इस प्रस्ताव पर सजींदगी से विचार नहीं किया। —प्रतापसिंह चौधरी, ५७ एल, माडल टाउन करनाल-१

यह अन्याय कब तक चलेगा

इतिहास गवाह है कि मोपले मुसलमानों ने ब्रिटिश शासन के दौरान बगावत की थी। उस बगावत में उन्होने हिन्दुओं के साथ जबरदस्ती की, उनको मुसलमान बनाया, उनकी नौजवान लड़कियों के साथ बलात्कार किया गया और पत्नियो का अपमान किया गया। फिर भारत सरकार उन मुसलमानों को पेंशन दे रही है जबकि आर्य समाजी सत्याग्रहियों के प्रति सौतेली मां का सा सलूक किया जा रहा है। हजारों आर्यजन जेलों में गए और निजाम हैदराबाद की सरकार को रास्ते पर लाए। किन्तु उनको कोई पेंशन नहीं। यह अन्याय नहीं तो और क्या है ? यह अन्याय कब तक चलेगा

वर्तमान चारित्रिक.........

(पृष्ठ ७ का शेष)

जैसे :—धन लोलुपता, देश भक्ति भावना की कमी, प्रदूषित वातावरण, विश्व युद्ध एवं परमाणवीय खतरे का भय, आपसी राष्ट्रों का एक दूसरे पर दोषारोपण एवं तनाव, सहृदयता की कमी, विश्व-बन्धुत्व की भावना का अभाव, आदि कारण ऐसे हैं जो कि वर्तमान में समाज एवं उसके आसपास जड़ फैलाये बैठे हैं।

कहते हैं हर मर्ज की दवा होती है। अगर उपरोक्त कारण चारित्रिक संकट खड़ा करने के लिए उत्तरदायी हैं तो हमें उन कारणों का भी विवेचन करना होगा जिनसे यह तीव्र गति से फैलने वाला विष समाप्त किया जा सके। अतः निम्न मुख्य तथ्यों में चारित्रिक निर्माण की विवेचना करना मैं अपना उत्तरदायित्व समझूंगा।

दर्शन के प्रति रुझान

कोई भी दर्शन हो वह यथार्थ में खरा उतरता है। अगर हम सांख्य दर्शन को ही मुख्य प्रवृत्तियों को अच्छी तरह जान लें तो चारित्रिक संकट का खतरा पैदा ही नहीं हो सकता। चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग, त्रिरत्न समुत्पाद प्रत्युत्पुत्पाद, मोक्ष मात्र जैसे विवेचन कोई कठिन नहीं हैं पर हमारी दर्शन के प्रति रुचि न होने के कारण हम उससे दूर भागते हैं। अतः जन सामान्य में भारतीय एवं विश्व दर्शन के प्रति रुझान पैदा करना चाहिये। जिससे नव जीवन का निर्माण उन्नत तरीके से किया जा सके।

ऐतिहासिक बोध

भारतीय इतिहास में भारत को विशाल एवं भव्य सभ्यता एवं संस्कृति का झण्डा फहरा रहा है परन्तु लोग इतिहास को मात्र अतीत की वस्तु समझकर छोड़ देते हैं। जबकि आर्य एवं आर्येत्तर संस्कृति आज भी एक आदर्श एवं उपदेशक संस्कृति है। अतः ऐतिहासिक बोध अगर जन सामान्य को हो तो वह स्त्री को समान दर्जा दे और नये सिरे से से चरित्र निर्माण में जुट जाय।

नैतिकता का पालन

समाज में नैतिकता व्यक्ति को ऐसा दायरा प्रदान करती है जिसमें वह हंसता फूलता जी सकता है। इज्जत और सम्मान पा सकता है। अपनी आजीविका चला सकता है। अगर सन्तोषप्रद एवं सदाचारी बने रहे तो चारित्रिक हनन का प्रश्न ही नहीं उठता। अतः उच्चादर्शशील चरित्र के लिए नैतिकता का पालन करना आवश्यक है।

संकुचितता का त्याग

मानसिक दबाव या मनोवैज्ञानिक परिस्थिति में व्यक्ति के विचार संकुचित हो जाते हैं। जबकि जीवन का अर्थ ऐशो आराम व विलासिता या कुकर्मी बन से नहीं बल्कि परोपकार एवं निरन्तर सत्कर्म से है। हमारे जीवन के ... दुःख पहुंचाना नहीं सिखाते। मानवता के लिए राष्ट्रहित में मरें और विश्व बन्धुत्व की भावना के साथ सहृदयता से रहें तो 'निश्चल अविछल' पुष्प की तरह जीवन खिल उठेगा। अतः हमें संकुचित विचार धारा का त्याग कर देना चाहिये।

कर्म-सिद्धांत

व्यक्ति महान कर्म से बनता है धन दौलत से नहीं। यह जीवन त्रिगुणात्मक माया में बसता है। समस्त सृष्टि इसी माया के वश में होकर अपना नित्य कर्म करती है। समस्त सृष्टि इस विशाल ब्रह्म प्रकृति से जन्म लेकर माया के वश में होकर इसी प्रकृति में लीन हो जाती है। हां अगर हमारे कर्म सत्व गुण से युक्त होंगे तो हमें उनका फल अवश्य ही मिलेगा। सत्, रज, तम में सत्त्व ही मोक्षकारक है अतः माया के सत्व गुण का ग्रहण कर हमें कर्म करना चाहिये। हमें हमेशा एकाग्र चित्त होकर सत्कर्म करते रहना चाहिये जिससे नये सिरे से चरित्र निर्माण किया जा सके।

भ्रष्टाचार निवारण

उच्च वर्ग में भ्रष्टाचार मुंह बाये बैठा है। वो पैसे से पैसा कमाते हैं। यह कोई बुरी बात नहीं है कि पैसे से पैसा क्यूं कमाये ऐसा तो होना ही चाहिये परन्तु वो पैसे के पीछे इस तरह अन्धे होकर पड़े हैं कि सारे रिश्ते-नाते, कुटुम्ब कबीला, भाई-बन्धु सबको भूलकर बस पैसा ही उन्हें दिखाई देता है। चोरी, बेइमानी, कालाबाजारी, रिश्वतखोरी, स्मगलिंग के पीछे ये लोग दीवाने होकर पड़े होते हैं। अतः उनका और इनमें सम्पर्कशील व्यक्तियों का चारित्रिक पतन होता है। अतः समाज को इनका सामाजिक बहिष्कार करना चाहिये। और ये स्वयं समझें कि "दुनिया में से दुनिया साथ गांठ बांध कोई ना ले जाय।" अतः इतने द्वन्द्व फन्दों में पड़ना बेकार है एवं चारित्रिक नुकसान है। अतः वो स्वयं चरित्र निर्माण को उतरें।

वर्गवाद को नष्ट करें

सब के खून का रंग लाल है। सब एक ही मिट्टी के पुतले हैं। सबका उत्पत्ति स्थान एक ही है और गमन लक्ष्य भी एक। फिर नाहक ये ऊंच-नीच छोटा-बड़ा, छूत-अछूत की बीमारी हो क्यों? उच्च वर्ग एवं निम्न वर्ग में मात्र पैसे का अन्तर रहता और कुछ नहीं। अतः वर्गवाद से बचना चाहिये। इस वर्गवाद से बचकर ही हम उच्चतम शैली से चरित्र निर्माण कर सकते हैं। आओ वर्गवाद से जन आकांक्षाओं का दबने न दें।

आदर्श लेखन

मर्यादा एवं आदर्श जीवन के दो उच्च पहलू हैं। इनके बिना जीवन अधूरा एवं उचित दिशा निर्देश करता है। निराशाओं, मानसिक तनावों आदि से मुक्ति के लिए हमें उच्चकोटि के आदर्श एवं यथार्थ साहित्य सृजन को बढ़ावा देना चाहिये जिससे युवा एवं आगन्तुक पीढ़ी अपना चारित्रिक निर्माण कर सके।

समाचार पत्रों की भूमिका

आग उगलने से आग नहीं बुझती, आग तो पानी से शान्त होती है। अतः समाचार पत्र आग उगलने के स्थान पर शान्ति एवं निर्मल सत्य का आश्रय लें तो भड़काऊपन एवं तनावयुक्त वातावरण खत्म हो सकता है एवं चरित्र निर्माण के नये रास्ते खुल सकते हैं।

राजनीति एवं यथार्थ

राजनैतिकवाद एवं राजनेता देश की इज्जत एवं सामाजिक न्याय व्यवस्था के हेतु हैं। उन्हें अपना हेतुत्व ईमानदारी एवं निष्ठापूर्वक निभाना चाहिए। वे निरंकुश न बनें। अत्याचार और भ्रष्टाचार से दूर रहें तो भारत सोने की चिड़िया ही नहीं हीरों का हार बन सकता है। एवं चरित्र निर्माण की ओर कदम बढ़ता है।

मिश्रित अर्थव्यवस्था

पूंजीवाद एवं समाजवाद दुनिया के विशालतम लोकतन्त्र के लिए अनुपयुक्त हैं अतः मिश्रित अर्थव्यवस्था का प्रचलन होना चाहिये। परन्तु आज मिश्रित अर्थव्यवस्था के नाम पर पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की ओर हमारा स्पष्टतः झुकाव है। यह भविष्य एवं वर्तमान दोनों के लिए ही अधिकतर है। अगर हमें जन मानस के चरित्र को कलुषित होने से बचाना है तो हमें पूंजीवाद से हटना पड़ेगा।

संचार माध्यम और चरित्र

फिल्म रेडियो एवं दूरदर्शन मात्र मनोरंजन एवं फिल्मी प्रचार प्रसार के लिए ही नहीं हैं। इन माध्यमों द्वारा हम जनता में आदर्श एवं कर्म प्रधान गीत ठूस ठूस कर भर सकते हैं। अतः यहां उच्च कोटि के कार्यक्रम प्रसारित किये जायें।

विज्ञापन

आज की दुनिया विज्ञापनों के पीछे दौड़ रही है। इस चकाचौंध में सामाजिक नैतिक मूल्य ताक पर न रखे जाय। नारी समाज की धुरी है उसे भौंडे विज्ञापनों से दूर रखें। समाज को विज्ञापनों द्वारा राह दिखायी जाय न कि उसे गुमराह किया जाय। विज्ञापनों में भारतीय सभ्यता और संस्कृति का अगर ध्यान रखा जाये तो विज्ञापन सम्पर्कीय व्यक्तियों में चरित्र निर्माण की चाह बढ़ेगी।

नये कार्यक्रमों का समावेश

अनाथालयों, छात्रावासों, विद्यालयों महिलाश्रमों में चारित्रिक निर्माण के साप्ताहिक कार्यक्रमों का समावेश किया जाय। तथा समाज कल्याण विभाग निष्पक्ष एवं उत्तरदायित्वपूर्ण भूमिका निभाये तो युवा चरित्र निर्माण में चार चांद लग सकते हैं।

नयी शिक्षा व्यवस्था

इस दिशा में भारत के प्रधानमन्त्री का योगदान महत्वपूर्ण है। यूनिवर्सिटीज एवं डिग्री को नकारना व्यवहारिकता की ओर अच्छा कदम है। यह पेड़ विदेशियों का लगाया न होकर सम्पूर्ण भारतीय होगा जिससे लोग चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगे।

रोजगार के अवसर

बेरोजगारी की समस्या भारत के सामने एक महत्वपूर्ण समस्या है। रोजगार के चक्कर में लोग चाकुओं के चक्कर एवं चोरी व चिमन्दोरी तक कर बैठते हैं। अतः अधिक से अधिक रोजगार के अवसर प्रदान कराये जायें तो चरित्र निर्माण की ओर सराहनीय कदम होगा।

अन्य उपाय

उपरोक्त तथ्यों के अतिरिक्त अन्य भी कई तथ्य ऐसे हैं जो चरित्र निर्माण में अपना अहम् रखते हैं। कुछ मुख्य ये हैं। देश भक्ति की भावना, ऐश्वर्य युक्त जीवन से विरक्ति, शांति एवं सद्भाव के प्रयास उग्रवाद को दबाना, हर समस्या को शांतिपूर्वक सुलझा कर हल निकालना, परमाणवीय विभीषिका से मुक्ति, आपसी छींटाकशी एवं दोषारोपण से पृथक रहना आदि।

आदर्शयुक्त चरित्र निर्माण के अनेक उपाय एवं अनेक कर्म हैं। परन्तु हम आत्मा का स्वरूप समझकर अपने आप पर नियन्त्रण करें तो हमारे प्रभाव व सम्पर्क में आनेवाले व्यक्ति भी अपने चरित्र निर्माण की ओर अग्रसर होंगे। फिर किसी के कहने से या बाध्य करने से कोई वस्तु ग्राह्य नहीं होती। वही नियम व तथ्य ग्राह्य होते हैं जो स्वयं की आत्मा को ग्राह्य हों। सघनता एवं गहनता प्रत्येक वृक्ष की प्रकृति है पर उसकी सघनता एवं गहनता का जन सामान्य प्रयोग करें तो सार्थक है वर्ना सूर्य रोजाना पूर्व में उगता है और दोपहर को सिर पर चमकने के बाद सांय पश्चिम में छिप जाता है। यह क्रम में अनवरत चलता रहेगा। आवश्यकता दृढ़ निश्चय और आत्म विश्वास की है कि हम रोजाना के सूर्य में एक आदमी के चरित्र निर्माण में कुछ सहयोग करें तो शायद हमें काफी अच्छे परिणाम मिलें। फिर परिश्रम तो करना है क्योंकि—

परिश्रमेण हि सिद्धयन्ति
कार्याणि न मनोरथैः
नहि सुप्तस्य सिंहस्य
प्रविशन्ति मुखे मृगाः।

पता—द्वारा श्री प्रीतमसिंह 172, भगवतीनगर करतारपुरा, रावजीकाबाग, टोंक फाटक, जयपुर—302006

"इति"

—आर्य समाज शाहगंज, आगरा के वार्षिक चुनाव में प्रधान श्री राजेन्द्र प्रसाद कुलश्रेष्ठ, मंत्री श्री ताराचन्द आर्य और कोषाध्यक्ष श्री मदन मोहन वर्मा चुने गये। इसी तरह स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती किरन देवी आर्या, मन्त्री श्रीमती राजकुमारी आर्या और कोषाध्यक्ष उमादेवी गोयल चुनी गयीं।

आर्यो सावधान !

स्वामी अग्निवेश और आर्यसमाज

पं० फूलचन्द शर्मा 'निडर' भिवानी

दिनांक ३ जून १९९० के सार्वदेशिक पत्र के मुख्य पृष्ठ पर स्वामी अग्निवेश के वक्तव्य पर जो उन्होंने जयपुर में एक प्रेस कांफ्रेंस में दिया है कि "शीघ्र ही एक 'भारतीय आर्यसमाज' की स्थापना की जाएगी, जिसमें हिन्दुओं के अतिरिक्त ईसाई, मुसलमान सिख तथा बौद्ध आदि भी सम्मिलित हो सकेंगे।" स्वामी अग्निवेश के इस वक्तव्य पर डा. श्री भवानीलाल भारतीय ने जो आपत्ति की है उससे मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है। परन्तु स्वामी अग्निवेश ने जयपुर में जो कुछ कहा है उसे पढ़कर मुझे बड़ा ही दुःख हुआ है।

स्वामी अग्निवेश सन्यास लेने से पूर्व घण्टाघर आर्यसमाज भिवानी में लगभग ६ मास मेरे पास रहे। तब उनके कुछ आर्य समाजी विचार थे। मेरी उनकी परस्पर खूब बातें होतीं और तब हम दोनों मिलकर 'भिवानी' में प्रभात फेरी भी करते थे। परन्तु उनके रोहतक में संन्यास लेने पर ज्यों-ज्यों वे आगे बढ़ते गए उनके विचारों में अन्तर आता चला गया। अब वे और चाहे जो हो परन्तु आर्यसमाज से कुछ नहीं होते है। जो आर्यसमाज उन्हे बुलाकर आर्यसमाज के मंच पर उनके भाषण करवाते हैं वे बडी भूल करते है आगे कोई आर्यसमाज उन्हें अपने उत्सवादि में बुलाने की भूल न करे। स्वामी अग्निवेश जी की इच्छा अब यह है कि वे भारत के ही नही अपितु सारी दुनिया के प्रमुख महापुरुषों में हों। उनकी यह इच्छा तो भगवान् जाने वह पूरी करेगा या नही, पर वे जितने भी हाथ-पांव मारते हैं वे होते है उनकी इसी इच्छा के लिए। स्वामी दयानन्द विवेकानन्द आदि जो महापुरुष हुए वे सब हिन्दुओं के महापुरुष कहलाए और भारत के महापुरुष कहलाए किन्तु स्वामी अग्निवेश चाहते हैं कि वे सारी दुनिया के और हिन्दू, मुसलमान, सिख तथा ईसाई आदि सबके महापुरुष कहलायें। वे कभी हरिजनों को लेकर उन्हें नाथद्वारे के मन्दिर में घुसेड़ना चाहते हैं, कभी अयोध्या की राम जन्मभूमि के मन्दिर तथा मुसलमानों की मस्जिद की एक सम्मिलित दीवार होने के गीत गाते हैं, इत्यादि और अब जयपुर में उन्होने यह कहकर कमाल ही कर दिया कि "शीघ्र ही एक भारतीय आर्यसमाज की स्थापना की जाएगी जिसमें हिन्दुओं के अतिरिक्त मुसलमान, ईसाई, सिख तथा बौद्धादि सभी सम्मिलित हो सकेंगे।"

मैं स्वामी जी के इस वक्तव्य पर उनसे कुछ प्रश्नों का उत्तर चाहता हूं। जो इस प्रकार हैं:—

१- क्या यह आर्यसमाज जिसके संस्थापक महर्षि दयानन्द हुए अभारती (विदेशी) आर्यसमाज है। आप जिस आर्यसमाज की स्थापना करेंगे वही भारतीय होगी ?

२- यह जो महर्षि दयानन्द का आर्यसमाज है वह भी मुसलमान, ईसाइयों आदि को शुद्ध करके तो उन्हे आर्यसमाज में सम्मिलित करता ही है और वे अपनी पूर्व की मान्यताओं को मानने लगते हैं। क्या आप जिस आर्यसमाज की स्थापना करना चाहते हैं उसमें मुसलमान, ईसाई आदि भी रहेंगे और आर्य भी बन जायेंगे। यदि आपका बनाया आर्यसमाज ऐसा होगा तो मैं आपसे जानना चाहूंगा कि:— (क) दयानन्द के आर्यसमाज का तीसरा नियम यह है कि "वेद का पढ़ना/पढ़ाना और सुनना/सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" इसके स्थान पर आपके आर्यसमाज का क्या नियम होगा ? मुसलमानों की मान्यतानुसार यह नियम कुरान का पढ़ना/पढ़ाना और सुनना/सुनाना तथा ईसाइयों का 'बाईबिल का पढ़ना/पढ़ाना - होना चाहिए। दयानन्द के आर्यसमाज का सातवा नियम है कि सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।' तो क्या आपके समाज का यह नियम होगा कि काफरों को मारो लूटो, उनके घरों में आग लगा दो आदि ? स्वामी जी ! आप महापुरुष तो इतने बड़े बनना चाहते हैं कि आप से पहले इतना बड़ा सारी दुनिया में हुआ न हो परन्तु आप इतना भी नहीं जानते कि दो परस्पर विरोधी बातें दोनों ठीक कदापि नहीं हो सकती। (ख) आपके नए आर्यसमाज की स्थापना के बारे में आगे कुछ ऐसी साधारण बातें पूछना चाहता हूं जिनका आपसे कोई उत्तर न बन सकेगा।

(१- आपके समाज में जो मुसलमान आर्य बनेगा वह नमाज पढ़ेगा या संध्या करेगा या दोनों ? २- चोटी रखेगा या नहीं ? ३- मांस खाएगा या नहीं ? ४- सगोत्र विवाह करेगा या नहीं ? ५- यज्ञोपवीत रखेगा या नहीं ? क्या है कोई आपके पास इन प्रश्नों का कोई उत्तर।)

महाराज ! अब हमारी और आपकी इसी में भलाई है कि यदि आर्यसमाजी बनना चाहते हैं तो शुद्ध होकर इमानदारी से पुन: आर्यसमाज में आ जाये और किसी ढोंग तथा महापुरुष बनने की इच्छा को त्याग दें। अथवा अखिलानन्द और भीमसेन की भांति आप भी आर्यसमाज को कोसते रहें और महर्षि दयानन्द को गालियां देते रहें। तथा दूसरों की चमचागिरि करते रहें। वरना आप जिस आर्यसमाज की स्थापना करने जा रहे हैं उसकी स्थापना तो क्या होनी थी आपको पागलखाने में भेजना होगा।

धन और धर्म

पूरा जीवन स्वार्थ में है, परमार्थ का ध्यान नहीं।
धनके पीछे लगे हुए हैं, जीवन का भी ज्ञान नहीं॥
भाई बन्धु कुटुम्ब कबीला, नाते बिल्कुल दूर किए।
किसी तरह से आना चाहिए, धन के पीछे लगे हुए॥
धन भी जरूरी है जीवन में, इसके बिना नहीं काम चले।
लेकिन धर्म छोड़कर धनसे, कभी न सच्चिदानन्द मिले॥
धन का संग्रह किया यदि, धन पति पुकारे जाओगे।
लेकिन जीवन सार मोक्ष से, वंचित ही रह जाओगे॥
राज-पाठ और धन-वैभव को, गौतम बुद्ध ने ठुकराया।
कितने ही महापुरुषों ने यहां, त्याग अनोखा दिखलाया॥
अंधकार को दूर करें, प्रकाश हमें लाना होगा।
भारत की इस पुण्य धरा पर, अमृत बरसाना होगा॥
भगवान मानते हैं पैसे को, यह तो भारी मूर्खता।
धन के पीछे भूल गए, जो है सृष्टि का रचियता॥

—महेशचन्द्र आर्य पन्हैड़ा खुर्द बल्लभगढ़ फरीदाबाद

शराब का ठेका नहीं रहा

अम्बाला, २० जून (निस) अम्बाला छावनी के सब एरिया कमाण्डर एवं ब्रिगेडियर कैन्टोमेंट बोर्ड के अध्यक्ष श्री ए०पी०एस० चौहान के प्रयासों से अम्बाला छावनी क्षेत्र में अब कोई शराब का ठेका नहीं रहा।

पिछले दिनों अम्बाला छावनी के प्रसिद्ध एडवोकेट एवं हरयाणा प्रदेश कांग्रेस (स) के प्रधान श्री ओमप्रकाश मलिक द्वारा श्री ए०पी० एस० चौहान के सहयोग से 'ठेका शराब' आबादी से बाहर आंदोलन चलाया था, जिसके फलस्वरूप छावनी क्षेत्र के सभी ठेकों को आबादी से उठाकर बाहर कर दिया गया है।

शराब हटाओ

देश बचाओ

नैनीताल में वृद्धों का सम्मान

अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष के उपलक्ष में नव युवक मंडल नैनीताल द्वारा आर्य समाज नैनीताल के 111 वें वार्षिक उत्सव पर 26 मई को श्री के० एस० वाल्दिया, भूगर्भ शास्त्री एवं कुलपति कुमायूं विश्व विद्यालय की अध्यक्षता मे वृद्ध सम्मान समारोह शालीनता से सम्पन्न हुआ। नगर के लगभग 55 वृद्धो ने, जिनकी आयु 80 से 95 वर्ष तक पधार कर नव युवकों द्वारा सम्मान स्वीकार किया। सम्मानित व्यक्तियो को ऊनी शाल, एक छडी तथा मोमबत्ती एवं स्टैंड भेंट किया गया। पं० शिवकुमार शास्त्री भूतपूर्व सासद एवं पं० इन्द्रराज प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश इस अवसर पर विशेष रूप से आमन्त्रित थे।

राज्य के मुख्य मन्त्री से एक वृद्धाश्रम नैनीताल मे स्थापित करने की प्रार्थना की गई।—मंत्री, आर्य समाज नैनीताल-

डा. दिनेश जयन्त की हत्या

डा० दिनेश जी जयंत—ग्राम—अरनिया जि० बुलन्दशहर (उत्तर प्रदेश) के निवासी थे और प्रसिद्ध उपदेशक—आचार्य शिवराज सिंह जी शास्त्री "अरबी फाजिल" के सगे भतीजे थे। उनके पिता—श्री रणजीत सिंह शास्त्री बम्बई मे रहते हैं। उनके नाम से बम्बई मे "जयन्त नगर" नाम की एक बस्ती भी है। डा० दिनेश जी बहुत अच्छे चिकित्सक थे और सौजन्य की मूर्ति थे। उनकी तथा उनके नौकर की गडासे से हत्या करने वाले महापापी हैं।

—अमर स्वामी सरस्वती गाजियाबाद

अमर स्वामी प्रकाशन-विभाग की दुर्दशा

यह प्रकाशन-विभाग विगत 16 वर्ष से जिस स्थान पर कार्य कर रहा था उस स्थान को उसके समीपस्थ आश्रम अधिकारियो ने तहस नहस कर दिया है। प्रकाशन-विभाग के साथ लगी एक दुकानदार की दुकान को भी नष्ट कर दिया गया। यह सब कार्य तब हुआ जब प्रकाशन विभाग के संचालक गाजियाबाद से बाहर गए हुए थे।

श्री दीनानाथ सिद्धान्तालंकार अस्वस्थ

आर्य समाज के वयोवृद्ध विद्वान् तथा गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के पुराने स्नातक आचार्य दीनानाथ जी सिद्धान्तालकार विगत 2 मास से अस्वस्था होने के कारण आर्य समाज की सेवा करने में असमर्थ हैं। आर्य-जगत् के पाठकों का आचार्य जी से निकट का सम्पर्क है, क्यों कि समय-समय पर उनके खोज एव विद्वत्ता पूर्ण लेख प्रकाशित होते रहते है। उन्हे शीघ्र ही स्वास्थ्य लाभ हो, आर्य जगत् की यही कामना है।

—हरिकृष्ण लाल सुनेजा, मन्त्री आर्य समाज, अशोक विहार।

आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हरियाणा करनाल के तत्वावधान मे 26 मई से 2 जून तक कैमला में आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन ब्र० रामस्वरूप आर्य ने किया। इसमे 100 के लगभग आर्यवीरो ने भाग लिया। ब्र० रामस्वरूप आर्य पं० जगदीश चन्द्र वसु ने आर्य वीरों को प्रशिक्षण दिया। शिविर के साथ साथ आर्य समाज कैमला का उत्सव भी हुआ। जिसमे अनेक सम्मेलनो का आयोजन किया गया।

ग्राम वासियो पर इस शिविर का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। हर वर्ष कैम्प लगाने का सर्व सम्मति से निर्णय किया गया। —प्रा० वेदसुमन वेदालकार अधिष्ठाता।

चरखी दादरी महाविद्यालय मे प्रवेश

आर्य हिन्दी सस्कृत महा विद्यालय चरखी दादरी (भिवानी) मे जो महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय रोहतक से सबंधित है हिन्दी की प्रभाकर एवं सस्कृत की विशारद व शास्त्री कक्षाओ का प्रवेश एक जून 1985 से प्रारम्भ हो चुका है। छात्राओ के लिये छात्रावास का पूर्ण प्रबंध है और उन्हे छात्रों से अलग रखकर ही पढाया जाता है। —ऋषिपाल आर्य

गुरुकुल आमसेना में शिविर

26 मई से 30 मई तक गुरुकुल आमसेना मे स्वामी धर्मानन्द सरस्वती की प्रेरणा से स्कूलो के विद्यार्थियो को ब्रह्मचर्य एवं वैदिक धर्म की शिक्षा देने के लिए शिविर का आयोजन किया गया जिसमें छात्रो ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। शिविर का संचालन स्वामी व्रतानन्द परिव्राट् एवं चन्द्रशेखर शास्त्री ने किया। बौद्धिक शिक्षा के साथ विद्यार्थियो को नियमित दिनचर्या, योगासन, प्राणायाम, लाठी चालन, सन्ध्या, यज्ञादि का क्रियात्मक ज्ञान दिया गया।

मुख्याध्यापक महाविद्यालय गुरुकुल आम सेना, उत्कल

लुधियाना में गुरु अर्जुन देव बलिदान दिवस

आर्य युवक सभा लुधियाना द्वारा रविवार 26 मई को आर्य समाज फील्ड गंज मे गुरु अर्जुन देव बलिदान दिवस मनाया गया। यज्ञ के पश्चात् श्री किरपा राम आर्य, श्रीमती शकुन्तला देवी, एवं श्रीमती कृष्णा देवी ने देश भक्ति के गीत गाए। इस अवसर पर अनेक विद्वानो ने अपने विचार व्यक्त किए। श्री कैलाश शर्मा ने गुरु अर्जुन देव जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमे आपसी सद्भावना, साम्प्रदायिक एकता, देश की एकता और अखण्डता के लिए सतत प्रयास करते रहना चाहिए। महापुरुषो द्वारा दी गई शिक्षाओ पर आचरण करना ही सच्चा धर्म है।— अरुण भारद्वाज, आर्य युवक सभा, लुधियाना।

पलवल में आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर

आर्य वीर दल हरियाणा के तत्वावधान मे एक प्रशिक्षण शिविर डी० जी० खान हिन्दू हायर सैकेण्डरी स्कूल, रेलवे-रोड, पलवल मे 20 जून से प्रारंभ हो रहा है जिसमे दो सौ आर्यवीरो के भाग लेने की सम्भावना है। शिविर का उद्घाटन आर्य विद्वान एवं शिक्षा शास्त्री श्री कन्हैयालाल महता अध्यक्ष दयानन्द शिक्षा सस्थान फरीदाबाद करेगे। ३० जून को दीक्षात भाषण सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरियाणा के सचालक प्रो० उत्तम चन्द्र शरर देगे।

—आर्य समाज, आदर्श नगर, दिल्ली के चुनाव मे श्री अर्जुन देव सोनी प्रधान, श्रीमती इन्द्रमती गोयल मन्त्री और श्री अर्जुन देव श्रीधर कोषाध्यक्ष चुने गए।

उदगीर में ईंजीनियरिंग कालेज

श्यामलाल स्मारक आर्य शिक्षण सस्था, उदगीर, जिला लातूर मे इस वर्ष इंजीनियरिंग व पौलिटैकनिक कालेज प्रारम्भ किया जा रहा है। इस के प्रारंभ होने से आर्य युवको के लिए यांत्रिक शिक्षा की बहुत बडी कमी की पूर्ति होगी। प्रवेशार्थी आर्य शिक्षण सस्था से सम्पर्क स्थापित कर अपनी आवश्यकता की पूर्ति करें।

ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर

आत्म शुद्धि आश्रम बहादुर गढ़ में 24 जून से 30 जून तक ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। इस का उद्घाटन 24 जून को सायंकाल 4 बजे होगा। शिविर मे उच्च कोटि के विद्वान् यौगिक क्रियाओं का प्रशिक्षण देंगे। 30 जून को शिविर के समापन के अवसर पर यज्ञोपरान्त राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया है। इस की अध्यक्षता संसद सदस्य श्री धर्मपाल मलिक करेंगे और मुख्य अतिथि चौ० प्रियव्रत ठेकेदार होंगे। श्री मेहरसिंह राठी, पं० ऋषिप्रकाश उप पुलिस अधीक्षक तथा प्रकाश ट्यूब के मुख्य प्रबन्धक श्री एम० एल० पारीक भी शिविर के सम्मानित विशिष्ट अतिथि होंगे।

छात्रों को धार्मिक शिक्षा के लिए प्रेरणा

डी ए वी कालिज प्रबन्धकर्त्री सभा के नैतिक परामर्शदाता प्रो० रत्नसिंह अमृतसर के बी. बी. के. डी ए. वी. हाई स्कूल के छात्रों और अध्यापकों के समक्ष 'आधुनिक भौतिकवादी युग मे नैतिक शिक्षा का महत्व' विषय पर भाषण देते हुए।

यू० १०३/१०८ लायसेंस टु पोस्ट विदाउट प्री-पेमेन्ट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११६३/७२ डी० सी० 409

साहित्य वाचस्पति

पं० युधिष्ठर जी मीमांसक का जन्म लगभग ७५ वर्ष पूर्व हुआ था। उनके पूज्य पिता श्री स्वयं प्रकाण्ड पंडित थे अतः आरम्भिक जीवन मे ही ये देववाणी के अध्ययन की ओर प्रवृत्त हुए। आचार्य प्रवर पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु, महामहोपाध्याय पं० चिन्न स्वामी शास्त्री, पं० पट्टाभिराम शास्त्री प्रभृति ख्याति प्राप्त विद्वानों से मीमांसा, श्रौत, न्यायादि दर्शन तथा व्याकरण का उन्होने गंभीर अध्ययन किया तथा शोध-प्रवीण पं० भगवद्दत्त जी के सान्निध्य मे रहकर आधुनिक शोध प्रणाली का प्रशिक्षण प्राप्त किया। किशोरावस्था से ही मीमांसक जी के शोधपूर्ण लेख हिन्दी तथा संस्कृत की प्रतिष्ठित पत्रिकाओ मे प्रकाशित होते रहे।

अपने अध्ययन काल मे मीमांसक जी ने विभिन्न विश्वविद्यालयों के अनेक शोध छात्रो का मार्ग दर्शन किया। लाहौर, चण्डीगढ़, दरभंगा तथा वाराणसी स्थित अनेक विश्वविद्यालयो ने इनको व्याकरण, निरुक्त, वेद आदि विषयो के विशेषज्ञ के रूप मे सम्मान प्रदान किया। इनकी मौलिक शोध पूर्ण रचनाएं हैं—**संस्कृत व्याकरण का इतिहास, वैदिक स्वर मीमांसा, वैदिक छन्दोमीमांसा, ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का इतिहास** और **ऋग्वेद की ऋक् संख्या**। इन शोध पूर्ण ग्रन्थों पर प्रादेशिक संस्कारों तथा विभिन्न संस्थाओ ने इनको पुरस्कृत किया तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने आपको 'साहित्य वाचस्पति' की उपाधि से विभूषित किया।

मीमांसक जी ने **निरुक्त समुच्चय, भागवृत्ति संकलन, दशपाद्युणादि वृत्ति, क्षीरतरंगिणी, माध्यंदिन पद-पाठ, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका**, तथा **ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन** का संपादन भी किया है। दयानन्द स्मारक टंकारा के अनुसंधान विभाग के अध्यक्ष रहते हुए उन्होने ऋषि दयानन्द रचित चालीस ग्रंथो तथा उनके व्याख्यानों से पच्चीस सहस्र वचनों की सूची तैयार की तथा ऋषि रचित ग्रंथों को शोधपूर्ण व्याख्यात्मक टिप्पणियो से अलंकृत कर उन्हें आधुनिकतम संस्करणो में प्रकाशित करवाया। सम्प्रति रामलाल कपूर ट्रस्ट के अध्यक्ष पद को सुशोभित करते हुए मीमांसक जी की लेखनी वैदिक साहित्य सृजनो में अजस्र रूपेण प्रवहमान है।

सम्पादन कला में प्रवीण, शोध कार्य में कभी न थकने वाले, ऋषि के अनन्य भक्त, स्वभाव से अत्यन्त सरल, जीवन और रहन-सहन में सादगी की मूर्ति, अहर्निश स्वाध्याय में रत ऐसे विद्वान् मनीषी द्वारा अपने जीवन के ७५ वसन्त पूर्ण कर लेने पर बम्बई में आर्यसमाज सान्ताक्रुज के प्रयत्न से समस्त आर्य समाजों की ओर से उनका अभिनन्दन किया गया (जिसका विवरण पिछले अंक मे दिया जा चुका है) और उन्हें ७५ रु० हजार की थैली भेंट की गई। पूज्य पं० जी ने वह सारी राशि पुणे में खुलने वाले आर्यशोध संस्थान के लिए दान कर दी। तीन करोड के बजट वाले इस संस्थान की स्थापना की घोषणा करते हुए लोकसभाध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ ने अपनी ओर से संस्थान को सब प्रकार के सहयोग का आश्वासन दिया।

आदरणीय श्री पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक के इस अमृत महोत्सव के अवसर पर 'आर्य जगत्' भी आर्य जनता की ओर से उनका अभिनन्दन करता है और उनके चिरायुष्य की प्रभु से प्रार्थना करता है।

—सम्पादक

स्वाध्याय के लिए वैदिक साहित्य

नाम पुस्तक	मूल्य रु०-पै०
१. वेदोपदेश	४-५०
२. मुण्डकोपनिषद्	४-००
३. ऋषि सन्देश	२-००
४. चरित्र निर्माण मे रुकावटें	२-००
५. सनातन वैदिक धर्म	२-००
६. आर्य समाज की देन	०-२०
७. श्रद्धा के पुष्प पत्र	२-००
८. आर्य वीर दल	२-००
९. वैदिक सन्ध्या	२-००
१०. दयानन्द, हिज लाइफ एण्ड वर्क	५-००

प्राप्ति स्थान—
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

आर्य वधू चाहिए

२६ वर्षीय, कद ५ फुट ४ इंच, गौरवर्ण, स्वस्थ सुन्दर, आर्य समाज के कार्य में अति सक्रिय, १५०० रु० मासिक वेतन पाने वाले आर्य परिवार के होनहार युवक के लिए एक आर्य परिवार और आर्य विचारो की कन्या चाहिए। दिल्ली निवासी अध्यापिका को प्राथमिकता दी जाएगी। जाति और दहेज का कोई बन्धन नहीं। विवाह अत्यन्त सादगी से होगा। सम्पर्क करे—

पो० बा० १११, अन्तर्जातीय विवाह विभाग, आर्यसमाज, मन्दिर मार्ग, नईदिल्ली—१

बच्चन जी की पैरोडी

२ जून, के अंक "मधुशाला की स्वर्ण जयन्ती पर" डा० बच्चन जी की नव निर्मित रुबाई छपी है। मैंने भी उक्त रुबाई पर पैरोडी लिखी है जो इस प्रकार है—

सिर के केशों-वेशों ने अब लिंग भेद मिटा डाला,
पाश्चात्य डिस्को संस्कृति ने सर का बोझ हटा डाला।
मंदिर मस्जिद या गुरुद्वारे शरण कातिलों को देते हैं,
मीठी कड़वी जीवन मदिरा खींचेगी नई मधुशाला।

—दिलचस्प, चूरू ३३१००१ (राजस्थान)

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स ७११७/१८ पहाड़ी धीरज, (फोन : 516518) दिल्ली से छपवा कर कार्यालय, 'आर्य जगत्, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, फोन (343718) मार्ग, नई दिल्ली।

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य-२५ रुपये | विदेश में ३० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४८, अंक २८, रविवार, ७ जुलाई, १९८५ | दूरभाष : ३४३७१८

आजीवन सदस्य-२५१ रु० | इस अंक का मूल्य—६० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८५, दयानन्दाब्द १६० | आषाढ कृष्णा ५, २०४२ वि०

आतंकवादियों का एक और जघन्य कार्य

बम विस्फोट से विमान के ३२९ यात्री मारे गए

आतंकवादियो ने एक और ऐसा जघन्य कृत्य किया है जिसका उदाहरण संसार भर में कहीं नही मिलेगा। कनाडा से चला एयर इंडिया का विमान 'कनिष्क' लन्दन पहुंचने से पहले ही आयरलैंड के पास तहस-नहस होकर समुद्र में गिर पड़ा और उसमें 329 व्यक्ति-जिनमें विमान चालक भी शामिल हैं—मर गए। मरने वालों में 70 बच्चे भी हैं। अभी तक काफी खोज बीन के पश्चात् केवल 140 शव ही मिल पाए हैं। मरने वालो के कुछ रिश्तेदार अपने सम्बन्धियो के शव की शनाख्त के लिए आयरलैंड पहुच चुके [।] शव भारत लाए जा रहे है

ऐसी भयकर दुर्घटना कैसे हो गई, [इ]सकी जाच चल रही है, परन्तु अभी तक प्राप्त सभी तथ्यो से यह पता लगता है कि विमान की किसी यांत्रिक खराबी के कारण नहीं, बल्कि आतंकवादियों द्वारा एक सूटकेस मे रखे बम के विस्फोट से ही यह अनर्थकारी दुर्घटना हुई।

अब यह भी पता लगा है कि जिन लोगों ने प्रधानमंत्री राजीव गाधी की अमरीका-यात्रा के समय उनकी हत्या की योजना बनाई थी और जिसे अमरीक गुप्तचर विभाग ने पहले से पता लगाकर विफल कर दिया था, उन्ही लोगो का इस कुकर्म में हाथ है। उनके नाम अमन्दसिह और लालसिह बताए गए हैं। इन दोनो को अभी गिरफ्तार नही किया जा सका है। अमरीकी गुप्तचर विभाग तभी से इनकी तलाश में है। अब इन दोनों के बारे मे किसी भी तरह सुराग देने वाले को इनाम देने की घोषणा की गई है। इन्ही व्यक्तियो ने जापान से भारत आने वाले एयर इडिया के एक अन्य विमान को भी उडाने की योजना बनाई थी, पर वह सफल नही हो पाई।

कनाडा की सरकार ने सिखो के सम्बन्ध मे अब तक जिस ढिलाई का परिचय दिया है, उसी का यह दुष्परिणाम है।

आतंकवाद कितना खतरनाक है, अब यह सारे ससार ने जान लिया है। इसलिए आतकवाद को समाप्त करने मे सभी देशो की सरकारो को सजग होने का अवसर आ गया है। अपने देश मे तो आतकवाद को किसी भी प्रकार से प्रश्रय देने वालो का कोई भविष्य नही है, यह स्पष्ट हो गया है।

वार्ता में हिन्दू भी शामिल हों

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र ने कहा है कि पंजाब की समस्या का सम्बन्ध केवल सिखो के साथ नही, हिन्दुओ के साथ भी है, इसलिए भविष्य मे केवल अकालियो से पजाब की समस्या के समाधान के लिए तब तक कोई बात न की जाए जब तक उसमे हिन्दू भी शामिल न हो।

पंजाब में नजरबन्दों की रिहाई

प्रत्येक मृतक पर २० हजार का मुआवजा

पंजाब मे स्थिति सामान्य करने के लिए सद्भावना के रूप मे राज्यपाल श्री अर्जुनसिंह ने प्रधानमत्री से परामर्श करने के पश्चात् उन नजरबन्दो को रिहा करने की घोषणा की, जिनके विरुद्ध कोई आपराधिक मामले नही है। अभी तक 152 नजरबन्द रिहा हो चुके हैं। अगस्त 1982 के बाद पंजाब मे हुए विभिन्न आन्दोलनों में मरे प्रत्येक मृतक पर 20 हजार रु० का मुआवजा देने की भी घोषणा की है।

पंजाब के राज्यपाल ने 28 जून को अमृतसर में महाराजा रणजीत सिंह की 20 फुट ऊंची सात टन वजन की प्रतिमा का अनावरण किया और पंजाब के किसी विश्वविद्यालय मे महाराजा रणजीत सिंह के नाम पर चेयर स्थापित करने के निश्चय की घोषणा की।

श्री लोंगोवाल और श्री तोहड़ा ने सरकार के इस कदम का तो स्वागत किया है किन्तु अभी तक वे अपनी अन्य मांगों को मानने के आग्रह को नही छोड़ पाए हैं।

अपनी अवधि समाप्त हो जाने के कारण पंजाब विधान सभा भंग कर दी गई है। 5 अक्तूबर को राज्य मे राष्ट्रपति शासन की अवधि भी समाप्त हो रही है, इसलिए उससे पहले पंजाब मे आम चुनाव करवाने होगे। राष्ट्रपति शासन की अवधि और बढ़ाने के लिए संविधान मे सशोधन करना होगा। यदि चुनाव हुए तो उसकी घोषण डेढ़ मास पूर्व अर्थात् 15 अगस्त के आस पास तक करनी होगी।

चुनावों के अनुकूल वातावरण तैयार हो सके, इसी दृष्टि से सरकार अपनी ओर से प्रयत्नशील है। 'कनिष्क' की भयंकर दुर्घटना से सारे संसार मे आतंकवाद के विरुद्ध जो वातावरण बना है, उसमें अकालियों को भी सक्रिय भूमिका निभानी है।

डी ए वी मौडल स्कूल दुर्गापुर की उपलब्धियां

दस वर्ष पूर्व अपनी स्थापना से आरम्भ करके आज तक इस स्कूल के विद्यार्थियो ने सैकण्डरी स्कूल परीक्षा मे उच्च अक प्राप्त कर उत्तीर्ण होने की परम्परा को इस वर्ष तक निरन्तर स्थिर रखा है। 1985 में 30 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी और सभी उत्तीर्ण घोषित किए गए, जिसमे 27 छात्रो ने प्रथम श्रेणी प्राप्त की। इसमे अनिर्बन मिश्रा ने 84% शेखर ने 8३6% अंक तथा 7 अन्य छात्रो ने 75% से अधिक अक प्राप्त किए। दुर्गापुर के नागरिको के अतिरिक्त वहां के स्टील प्लाट के अधिकारी भी स्कूल की प्रगति मे रुचि ले रहे हैं। इस के परीक्षा परिणामो से प्रभावित होकर अभिभावक वर्ग इसे बारहवी कक्षा तक करने के लिए आग्रह कर रहा है।

वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है

आर्य समाज, नयाबास, दिल्ली के तत्त्वावधान मे 23 जून से 30 जून तक प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु के विद्वत्तापूर्ण प्रवचन हुए। इस अवसर पर उन्होने वेद, ईश्वर, सदाचार आदि के अतिरिक्त महर्षि के जीवन के कुछ मार्मिक प्रसग तथा आर्य समाज के गौरवपूर्ण इतिहास के कुछ गुप्त पृष्ठो पर सारगर्भित प्रवचन किए। श्री हरिदत्त शास्त्री के भजनोपदेश इस अवसर पर विशेष आकर्षक रहे।

हरियाणा में विज्ञान और गणित के अध्यापको का पुन:प्रशिक्षण

3 जून से 12 जून तक सोहनलाल डी० ए० वी० कॉलेज अबाला मे 10+2 के फिजिक्स, कैमिस्ट्री, बायोलोजी और गणित के अध्यापको के पुनर्प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस का उद्घाटन शिक्षा निदेशक श्री प्रेम प्रशान्त ने किया और समापन समारोह की अध्यक्षता प्रसि[द्ध] धार्मिक नेता एव उद्योगपति श्री राजेन्द्र नाथ ने की। ये पाठ्यक्रम डी० ए० वी० कालेज के प्रिंसिपल तथा सेमिनार [के] निदेशक डा० बी० के० कोहली के कुश[ल] मार्गदर्शन मे संचालित हुए।

परामर्शदाता-अमर स्वामी सरस्वती | सम्पादक-क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक-रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

प्रदूषण निवारण का सर्वोत्तम उपाय— यज्ञ, केवल यज्ञ

—पं० वीरसेन वेदश्रमी, वेद विज्ञानाचार्य—

यज्ञों का प्रचार आवश्यक है तथा आज की परिस्थिति में तो परम आवश्यक है। यज्ञाग्नि आयु देने वाली है। यह रहस्य समस्त विश्व में प्रसारित कर देना चाहिये। वर्तमान समय में जीवन मृत्यु के संघर्षमय प्रदूषित पर्यावरण में, वायु मण्डल में प्राण एवं जीवनीय अमृत प्रदाता शक्ति का निरन्तर विनाश हो रहा है। देश देशान्तर में प्रदूषित वायु को शुद्ध करने वाले यज्ञ को मत छोड़ो। ऐसा वेद का स्पष्ट आदेश है।

भोपाल के वायु प्रदूषण से मनुष्य मरे भी, बीमार भी पड़े। पशु पक्षी, जलीय प्राणी मरे। जो बचे उनमें भी न्यूनाधिक विकार हुए और हो रहे हैं। वृक्ष, वनस्पति, अन्न, फल, शाक सब्जी नष्ट हुई—विषयुक्त हो गई और उनके सेवन से रोग न्यूनाधिक फैल रहे हैं। गर्भस्थ शिशुओं पर भी अनेक प्रकार के दुष्परिणाम प्रकट होने लगे हैं। ये सब कुप्रभाव पर्यावरण के दूषित होने से हुए। अतः दूषित पर्यावरण के शोधन के लिये विशाल रूप से यज्ञ अवश्य करना चाहिये। कारखाने बन्द नहीं हो सकते। मोटर, कार ट्रक, रेल, हवाई जहाज चलने बन्द नहीं हो सकते। पर्यावरण को शुद्ध पवित्र, निर्विष करने के लिये उसमें जीवनीय, रोग निवारक एवं पुष्टि प्रदाता तत्वों का प्रसारण यज्ञ के द्वारा सरलता से सम्भव है। अतः वर्तमान समय में यज्ञ ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है।

आज के समय में यज्ञ के सुगम एवं विज्ञानयुक्त कर्म को वर्तमान भारतीय वैज्ञानिक हृदय से अंगीकार करते हुए भी सार्वजनिक रूप से व्यवहार में लाने में अपनी प्रतिष्ठा की हानि अनुभव करते हैं और वैदेशिक वैज्ञानिकों की ओर मार्गदर्शन की प्रतीक्षा में रहते हैं। वे जो उपाय करें, वैसा ही हम भी अनुसरण करें, तो अपनी प्रतिष्ठा है। परन्तु विदेश के वैज्ञानिकों को यज्ञ का ज्ञान ही नहीं है। भारतवासी तो जानते है। भारत के वैज्ञानिकों को इस समय पर्यावरण शोधन कार्य में संसार के वैज्ञानिकों का मार्गदर्शन करने में अग्रसर होना चाहिए। इस यज्ञ कार्य को प्राथमिकता प्रदान करनी चाहिए।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने संसार के महान् उपकार के लिये प्राणिमात्र के जीवन के लिये यज्ञ करना अति आवश्यक बताया। पर्यावरण को शुद्ध करने के लिये और जीवनीय बनाने के लिये वायुमण्डल को शुद्ध करने, वृष्टि, जल आदि की शुद्धि तथा उसे सुसंस्कृत कर समस्त देश देशान्तरों एवं पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्युलोक में फैलाने के लिये लक्षाहुति के यज्ञों का विधान किया। अर्थात् एक लाख या अधिक आहुति वाले यज्ञ कुण्ड और उनके लिये विविध प्रकार के हव्य पदार्थों का विधान किया। ऐसे लक्षाहुति कुण्ड चार-चार हाथ लम्बे, चौड़े, गहरे तथा दो लाख आहुतियों के लिये छः हाथ के कुण्डों के निर्माण का विधान किया। दो मीटर—तीन मीटर लम्बे चौड़े कुण्डों में विशाल परिमाण में बड़े-बड़े यज्ञ होने चाहिये, तभी पर्यावरण के प्रदूषण शान्त होंगे।

ये लक्षाहुति कुण्ड दैनिक अग्नि होत्र के लिये नहीं है। किसी श्रौत याग व इष्टि के लिये नहीं है और षोडश संस्कारों के लिये भी नहीं है। अपितु सार्वभौम प्रदूषित पर्यावरण के नाश तथा अनुकूल पर्यावरण बनाने के लिये ही हैं। ऋग्वेद दशम मण्डल के सूक्त ९८ के मन्त्र दसवें एवं ग्यारहवें में ९९ हजार आहुति का उल्लेख वृष्टि यज्ञ के लिये है। अतः पर्यावरण शोधन, ऋतु सुधार, अवर्षण रोक कर वृष्टि करने, उत्तम कृषि, मेघों की वृद्धि, आदि के लिये बड़े-बड़े यज्ञों का करना परम आवश्यक है। इससे अति वृष्टि, अनावृष्टि, तूफान आदि भी शान्त होंगे। ऐसे लक्षाधिकाहुति यज्ञ अनेक स्थानों पर होने चाहियें। एक कुण्ड निर्माण के द्वारा अथवा अनेक बड़े-बड़े कुण्डों में यज्ञ हो परिस्थिति विशेष में ही इनका आयोजन होता है। आज के समय में जब पृथ्वी, अन्तरिक्ष, सर्वत्र प्रदूषण ही प्रदूषण फैल रहा है, तो इनका अनुष्ठान करना परम आवश्यक एवं हितकारी है। अन्य कोई उपाय है ही नहीं।

उस यज्ञ की अग्नि को घृतादि की आहुतियों से बढाते हैं। (यज. ३-३) यज्ञ का प्रधान द्रव्य घृत है। आवश्यकता अनुसार उसमें चार प्रकार के होम द्रव्य सुगन्धित, रोग नाशक, मिष्ठ पदार्थ और पुष्टिकर्ता पदार्थों की भी आहुति होती है। ये ही पदार्थ पर्यावरण को निर्विष करते हैं, शुद्ध, पुष्ट और रोगनाशक बनाते है। प्रकृति के रोग या उपद्रव अतिवृष्टि, अनावृष्टि आंधी, तूफान आदि का भी निवारण करते हैं। घृत को आयुर्वेद में विषशामक बताया है। अनेक विष, उपविषों का शोधन घृत, दुग्ध, तक्रादि से होता है। सांप काटने पर या संखिया आदि विष खा लेने पर घृत पिला कर ही चिकित्सा की जाती थी। अर्थात् जिस प्रकार घृत को पिलाने से शरीर निर्विष हो जाता है उसी प्रकार पर्यावरण के प्रदूषणों के शमनार्थ वायु मण्डल को घृताहुति के धूम्र से पूर्ण कर देने से आश्चर्यजनक लाभ अवश्य होगा। पर्यावरण जीवनप्रद बनेगा। अतः यज्ञ परम आवश्यक है। यज्ञान्त के मन्त्र में—**सर्वान्नः कामान्त्समर्धय** शब्द है। अर्थात् यज्ञों से सब कामनाओं की पूर्ति होती है। **यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु**—मन्त्र में है। उससे भी आहुति यज्ञान्त में होती है। अतः यज्ञ सब कार्यों की सफलता का प्रबल साधन है।

पता—वेद सदन, महारानी पथ, इन्दौर

छोटा नागपुर आदिवासी क्षेत्र में दयानंद फाउन्डेशन

डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी दिल्ली के तत्वावधान में दयानन्द फाउन्डेशन नामक संस्था छोटा नागपुर आदिवासी क्षेत्र में आदिवासी कल्याण के महत्व पूर्ण कार्य कर रही है। प्रिं० नारायणदास ग्रोवर के मार्गदर्शन में हरियाणा के डी० ए० वी० कालेज हिसार एवं नन्यौला आश्रमशाला के प्राध्यापकों (डा० वाचस्पति 'कुलवन्त', डा० सूर्य प्रकाश स्नातक, लज्जाराम मंत्री) ने ग्रामों में जाकर आदिवासियों की समस्याओं का अध्ययन किया। रांची के उपमण्डल खूंटी में स्थित स्वामी श्रद्धानन्द सेवाश्रम को केन्द्र बनाकर विगत वर्षों से जो कार्य चल रहा है उसे आगे बढाने में महत्वपूर्ण सहयोग दिया। दयानन्द फाउन्डेशन धीरे-धीरे अपना क्षेत्र बढा रहा है। बोकारो डी० ए० वी० स्कूल के साथ आदिवासी विद्यार्थियों को समुचित शैक्षणिक एवं आवासीय सुविधा उपलब्ध कराने के लिए "उपेक्षित प्रतिभा छात्रावास" का उद्घाटन प्रो० वेदव्यास जी द्वारा हो चुका है। दयानन्द फाउन्डेशन के प्रयासों के परिणाम स्वरूप ही स्वामी श्रद्धानन्द सेवाश्रम खूंटी में बिजली लगी। दयानन्द फाउन्डेशन मुफ्त चिकित्सालय चला रहा है जो पं० देवदत्त जी की अनथक साधना से सम्भव हुआ है। फाउन्डेशन के तत्त्वावधान में आर्ष पाठविधि से आदिवासी बच्चों को पढाकर क्षेत्र के सशक्त कार्यकर्त्ता तैयार करने की योजना चलायी जा रही है। 25 आदिवासी लडके लडकियों को फिरोजपुर आर्य आश्रम में भेजा गया है जहां बच्चों ने अन्य छात्रों के साथ सभी क्षेत्रों में सन्तोष जनक उन्नति की है।

आदिवासी क्षेत्र के ग्रामों में फाउन्डेशन इतना लोकप्रिय होता जा रहा है कि आदिवासी माता पिता अपने बच्चों को हरियाणा, पंजाब राजस्थान, दिल्ली में अध्ययनार्थ भेजने के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। चण्डीगढ के प्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक डा० ए० डी० ग्रोवर अपनी पूरी टीम के साथ एक जुलाई 1985 से नेत्र-शिविर लगाने के लिए खूंटी पहुंच चुके हैं। नेत्र हीन आदिवासियों का मुफ्त अपरेशन किया जा रहा है।

—वाचस्पति कुलवंत

ध्यान योग तथा वेद प्रचार

चण्डीगढ में 1 जून से 13 जून तक ब्रह्मचारी आर्य नरेश की अध्यक्षता में योग शिविर तथा वेदचतुराह सम्पन्न हुआ। श्रीमती सावित्री देवी प्रधान आर्य समाज का इसमें पूर्ण सहयोग रहा। इस शिविर में अनेक युवक युवतियों के अतिरिक्त अन्य महानुभावों ने भी भाग लिया तथा उन्होंने मांस-भोजन त्याग का संकल्प लिया।

—दिसाल सिंह आर्य

सुभाषित

दण्ड नीति

नित्यमुद्यतदण्डः स्यान्नित्यं विवृतपौरुषः ।
अच्छिद्रश्छिद्रदर्शी स्यात्परेषां विवरानुगः ॥

नित्यमुद्यतदंडाद्धि भृशमुद्विजते जनः ।
तस्मात्सर्वाणि कार्याणि दण्डेनैव विधारयेत् ॥

राजा नित्य दण्ड देने में तत्पर रहे। सदा पुरुषार्थ में रत रहे। स्वयं छिद्र रहित होकर पराये छिद्रों (दोषों-न्यूनताओं) का ज्ञान प्राप्त करे। शत्रु के छिद्रों को जान कर अपनी नीति का निर्धारण करे। जो राजा दण्ड देने में प्रमाद नहीं करता, लोग उसी से डरते हैं और अनुशासन में रहते हैं। अतः राजा को चाहिए कि वह सब कार्यों का दण्ड-नीति से ही सचालन करे।

—आचार्य कणिक

सम्पादकीयम

राष्ट्रीय एकता की बुनियादें (४)

राज्यों की स्वायत्तता का प्रश्न

केनोपनिषद् में एक कथा आती है—

"एक बार देवताओं को अपनी शक्ति का अभिमान हो गया और वे यह समझने लगे कि सृष्टि का निर्माण करने वाले और उसकी रक्षा करने वाले हम ही हैं, हमसे बड़ी और कोई शक्ति नहीं हैं। तब देवताओं के इस अभिमान को तोड़ने के लिए वहां यक्ष उपस्थित हुआ और उसने पहले अग्नि देवता की परीक्षा ली। यक्ष ने अग्नि से पूछा कि अग्नि देव! आपकी क्या विशेषता है। अग्नि देव ने गर्व पूर्वक कहा कि मैं संसार की प्रत्येक वस्तु को भस्म कर सकता हूं। यक्ष ने अग्नि देव के सामने एक तिनका रखा और कहा कि इसको भस्म करके दिखाइये। अग्नि देव ने बड़ा ज़ोर लगाया पर वे उस छोटे से तिनके को भस्म नहीं कर सके।

उसके बाद पवन देव की परीक्षा का प्रसंग आया। वे भी जब यक्ष के सामने साक्षात्कार के लिए उपस्थित हुए तो यक्ष ने पूछा कि—आपकी "क्वालिफिकेशन" क्या है? पवन देव ने अपना जीवन परिचय (बायोडेटा) प्रस्तुत करते हुए कहा—कि मैं संसार की प्रत्येक चीज को उड़ा सकता हूं। यक्ष ने उनके सामने भी एक तिनका रखा और कहा कि इसे उड़ा कर दिखाइये। परंतु पवन देव अपना पूरा बल लगाकर भी उस तिनके को नहीं उड़ा सके।"

तब देवताओं के राजा साक्षात् इन्द्र आये। इन्द्र को आता देख यक्ष अपने आसन से उठकर चले गये। तब वहां उमा नाम की एक परिचारिका—उसे यक्ष की निजी सचिव कह लीजिए—उपस्थित हुई। इन्द्र ने उससे पूछा कि यह यक्ष कौन था और अब कहां चला गया। तब उमा ने बताया कि यहीं तो साक्षात् ब्रह्म था। इसी की शक्ति से सब देवताओं को शक्ति प्राप्त होती है। यदि इसका आधार न रहे तो सब देवता भी शक्ति-शून्य हो जाएं।

जिस तरह की बात देवताओं और यक्ष के साथ है, बहुत कुछ वैसी ही बात विभिन्न राज्यों और राष्ट्र के साथ भी है। जब प्रादेशिक भाषाओं के आधार पर निर्मित राज्य अपनी स्वायत्तता का राग अलापने लगते हैं तो उनके मन में अपने आपको अलग राष्ट्र समझने का अहं भाव उत्पन्न होने लगता है और वे यह भूल जाते हैं कि राज्यों की असली शक्ति उस केन्द्रीय सत्ता से आती है, जो राष्ट्र का सचालन करती है। अगर राज्य राष्ट्र की केन्द्रीय शक्ति की अवहेलना प्रारंभ कर दें तो राष्ट्र की एकता और अखडता सुरक्षित नहीं रह सकती।

राज्यों के अहं का सबसे ताजा उदाहरण हाल मे ही असम और नागालैंड की सैनिक टुकडियों की आपसी मुठभेड है। हालांकि ये दोनो राज्य एक ही राष्ट्र की केन्द्रीय सत्ता के अधीन हैं और दोनों राज्यो मे कांग्रेस (आई) की ही सरकार शासनारूढ है। फिर भी वोखा—गोलाघाट की अन्तर्राज्यीय सडक की चौकी के पास मेरापानी नामक स्थान पर दोनों राज्यो के सैनिक आपस मे इस तरह लड़े जैसे दो शत्रु देश लड़ते हैं। असम सीमा मे ढाई हजार सैनिक और दूसरी ओर भी लगभग इतने ही सैनिक अपने-अपने अहं भाव के वशीभूत होकर इतने नृशंस हो गये, कि वे यह भूल गये कि हम एक ही राष्ट्र के निवासी हैं। असम की सशस्त्र पुलिस के 26 व्यक्ति मारे गये, 90 व्यक्ति घायल हुए और 15 अभी तक लापता हैं। इसके अलावा नागालैण्ड की सशस्त्र टुकड़ी ने मशीनगन और बमों का प्रयोग किया और 7 हजार घर तथा दुकानें जला दीं। मेरापानी के आस-पास बसने वाली आबादी के 25 हजार लोग अपने घरों को छोड़कर भाग गये। हालांकि अब वहां स्थिति शांत है और दोनों राज्यों की सरकारों के मुख्यमंत्रियों ने आपस में मिलकर बातचीत के द्वारा यह भी समझौता किया है कि भविष्य में ऐसी वारदात न हो। परन्तु कौन कह सकता है कि दोनों राज्यों के अहं मे फिर उबाल नहीं आयेगा? क्या किसी एक राष्ट्र के अंगभूत अलग-अलग घटकों में इस प्रकार की नृशंसता की कल्पना सहज है?

हम पहले भी कह चुके हैं कि राष्ट्र के सब घटक मिलकर जब तक अपने अहं की कुछ कुर्बानी राष्ट्र की अस्मिता के लिए नहीं करते तब तक राष्ट्र के अस्तित्व की कोई सार्थकता नहीं होती। यदि शरीर के सब अंग आपस मे लड़ने लग जायें और एक दूसरे के सुख-दुःख में शामिल न हों, संवेदना शून्य हो जायें, तो देहधारी को सजीव नहीं, केवल निर्जीव ही कहा जाएगा। देहधारी के सजीव होने का लक्षण यही है कि पांव मे कांटा लगे तो पांव से सर्वथा भिन्न दूरस्थ अंग आंख में पीड़ा-जन्य अश्रु छलक आवे और साथ ही उस कांटे को निकालने के लिए इस शरीर रूपी राष्ट्र का दूसरा घटक—हाथ—तुरन्त आगे आकर कांटे को निकाल कर ही दम ले और शरीर को पीड़ा-मुक्त करे।

जहां राष्ट्र के विभिन्न घटकों का यह दायित्व है कि वे अपने अहं का एक अंश राष्ट्रीय ऐक्य के भण्डार में जमा करवा के राष्ट्र को सशक्त और समृद्ध बनावें, वहां राष्ट्र की केन्द्रीय शक्ति का भी यह दायित्व है कि वह किसी भी घटक को चाहे वह कितना ही दूरस्थ और कितना ही निकटस्थ क्यों न हो, उपेक्षा की दृष्टि से न देखे और सब घटकों के साथ समान बर्ताव करे। वही शरीर के अंगों वाली बात। यदि शरीर के केन्द्र मे स्थित हृदय शरीर के प्रत्येक अंग मे समान रूप से रक्त का प्रवाह न पहुचाये या मुख से खाया गया अन्न पेट में पचकर रस बनने के बाद प्रत्येक अंग को पोषित न करे, तो शरीर स्वस्थ नहीं रह सकता, वैसे ही राज्यों की उपेक्षा करके राष्ट्र भी सुरक्षित नहीं रह सकेगा। राज्यो को अपना अंग समझकर उनके पोषण मे राष्ट्र कहीं कमी न आने दे और राज्य अपने मिथ्या अहं में पड़कर राष्ट्र की प्रभु सत्ता को चुनौती न दें, तब राज्यो में और राष्ट्र की केन्द्रीय सत्ता मे सामंजस्य स्थापित हो सकता है।

यहीं यह भी कह देना आवश्यक है कि राष्ट्र को राज्यो के मन मे यह भावना पैदा नहीं होने देनी चाहिए कि केन्द्रीय सत्ता अधिनायकवादी बन गई है, या एक ही परिवार को सत्ता सौंपे रखने के लिए समस्त राजनीतिक चालें चली जा रही हैं। अपने-अपने क्षेत्र में प्रत्येक राज्य को यथा सम्भव उतनी स्वतन्त्रता मिलनी ही चाहिए जो केन्द्रीय स्वतंत्रता में बाधक न बने। हरेक राज्य का केन्द्रीय सत्ता मे भी कुछ न कुछ प्रतिनिधित्व होना चाहिए। जिन मामलो में राज्यो को स्वायत्तता दी जा सकती हो उसे देने मे संकोच नहीं करना चाहिए। मुख्य बात यह है कि राज्यो को दी गई स्वायत्तता राष्ट्रीय प्रभुसत्ता के लिए चुनौती न बने, बल्कि उसकी पूरक बने। तभी राष्ट्र की एकता फलती-फूलती है। इस दृष्टि से किसी भी राज्य के साथ किया गया पक्षपात अन्य राज्यो के विद्रोह का कारण बन सकता है।

उदाहरण के लिए हम यहां कश्मीर राज्य मे लागू 370 वें अनुच्छेद का उल्लेख करना चाहेंगे। जब अन्य देशी रियासतो की तरह जम्मू-कश्मीर का भी भारतीय संघ मे पूर्ण विलय हुआ है और संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद मे इस प्रश्न पर जब भी बहस हुई है, तब-तब भारत सरकार के प्रतिनिधियों ने हमेशा पूर्ण विलय की बात को ही दुहराया है, फिर 370 वें अनुच्छेद के माध्यम से जम्मू-कश्मीर को अलग दर्जा क्यो? इसीलिए डाक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जम्मू-कश्मीर के अलग संविधान, अलग झंडे और अलग राज्याध्यक्ष का विरोध किया था। उन्होंने सारे देश में यह नारा गुंजाया था—"एक देश में दो विधान, एक देश मे दो निशान, एक देश में दो प्रधान, नहीं चलेंगे, नहीं चलेंगे।" जब तक कश्मीर मे यह स्थिति रहेगी, तब तक सिखो को अलग विधान, अलग निशान और अलग प्रधान की मांग करने से कैसे रोका जा सकता है? एकता का तकाजा है कि सब राज्यों को सभी दृष्टियों से समान अधिकार दिये जायें, किसी को कम या किसी को अधिक नहीं। पक्षपात विद्रोह को जन्म देता है और विद्रोह राष्ट्र की प्रभुसत्ता के लिए चुनौती बन जाता है। इसलिए राज्यों की स्वायत्तता के सम्बन्ध मे समानता के आधार पर निर्णय किया जाना चाहिए।

१४ मई को श्री स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने केन्द्रीय शिक्षामन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पंत से भेंट करके उनका ध्यान इस अत्यन्त आवश्यक विषय की ओर खींचा है। आर्य नेताओं का, और खास तौर से शिक्षा संस्थाओं का, इस विषय में विशेष दायित्व है। संगठित रूप से इस विषय में आन्दोलन किया जाना चाहिए।

शिक्षा मंत्री से निवेदन

यह झूठ कब तक फैलाया जाता रहेगा ?

—स्वामी विद्यानन्द सरस्वती—

"Why amongst those arrested for selling India's defence secrets to France and, through that; allegedly to the American C I.A. there is not a single Muslim or Christian ? It is because they love this land. Because this land belongs to them They are its original inhabitants and hence its rightful owners. Most of India's Muslims and Christians are converts from these sons of the soils. They are either Dalits or tribals. In all foreign invasions it is these people who shed their blood and defended India.

And why these people who lecture to us on patriotism always betray this country ? Because, they don't belong this country and hence don't love India. As Aryans, they are also India's first foreigners. It is these foreigners who call Muslims and Christians as foreigners and hence anti-national. If Muslims and Christians are foreigners and must get out of India, as India's first foreigners the Aryans are duty-bound to get out first. Those, who came first, must leave first."

—Muslim India, March 1985

अर्थात्—"क्या कारण है कि फ्रांस और उसके द्वारा अमरीकी सी-आई-ए को देश की सुरक्षा सम्बन्धी रहस्यों को बेचने वालों में एक भी मुसलमान या ईसाई नहीं है ? इसलिये क्योंकि वे इस देश को प्यार करते हैं, क्योंकि यह देश उनका है। वे इसके मूल निवासी हैं और इसलिये वे इसके वास्तविक मालिक हैं। मुसलमानों और ईसाईयों में अधिसंख्या इन्हीं दलितों और जन जातियों में से हैं। जब कभी भी इस देश पर विदेशी आक्रमण हुए हैं तो इन्हीं लोगों ने अपना खून बहा कर भारत की रक्षा की है।

"और क्यों वे लोग, जो हमें देश भक्ति का पाठ पढ़ाते हैं, सदा इस देश के साथ विश्वासघात करते रहे हैं ? क्योंकि वे इस देश के रहने वाले नहीं हैं, इसलिये वे भारत को प्यार नहीं करते। ये आर्य लोग भारत में आने वाले सबसे पहले विदेशी हैं। यही वे लोग हैं जो स्वयं विदेशी होते हुए मुसलमानों और ईसाइयों को विदेशी बताते हैं और इस आधार पर उन्हें राष्ट्र विरोधी कहते हैं। यदि मुसलमानों और ईसाइयों को भारत से इसलिये निकल जाना चाहिये क्योकि वे विदेशी हैं तो भारत में सबसे पहले विदेशी होने के नाते आर्यों का यह कर्तव्य है कि पहले वे निकल जायें। जो सबसे पहले आये, उन्हीं को सबसे पहले जाना चाहिये।"

भारत में किसी पत्र-पत्रिका के 'Muslim India' नाम से प्रकाशित होना ही क्या इस बात का प्रमाण नहीं है कि द्विराष्ट्रवाद फिर से सिर उठा रहा है और पहले से कहीं अधिक भयंकर रूप से। १९४७ से पहले इस विघटनवादी प्रवृत्ति को विदेश सरकार का सहारा था तो आज स्वतंत्र भारत में तथाकथित देशभक्त भारतीयों का समर्थन मिल रहा है। पाठकों को यह जान कर आश्चर्य हुए बिना न रहेगा कि 'Muslim India' के सम्पादक मण्डल में भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री एवं रूस में भारत के राजदूत इन्द्रकुमार गुजराल, प्रधान मन्त्री जवाहरलाल नेहरू के पूर्व प्रधान सचिव तथा नाइजीरिया में भारत के हाई कमिश्नर पी० एन० हक्सर, राज्यसभा के सदस्य खुशवन्त सिंह, भारतीय जनता पार्टी के जनरल सेक्रेटरी और भूतपूर्व संसद् सदस्य सैयद शहाबुद्दीन, अल्पसंख्यक अयोग के भूतपूर्व अध्यक्ष जस्टिस अंसारी, अनेक देशों में भारत के राजदूत तथा अलीगढ़ यूनिवर्सिटी के भूतपूर्व वाइस चांसलर बदरूद्दीन तैयबजी, पूर्व संसद् सदस्य प्रोफेसर रशीदुद्दीन खां जैसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हैं।

४ सितम्बर १९७७ को फ्रैंक एन्थोनी ने पार्लियामेण्ट में माग की—

"Sanskrit should be deleted from the 8th schedule (India's national language) of the constitution because it is a foreign language brought to this country by foreign invaders, the Aryans"

अर्थात्—"देश के संविधान के अन्तर्गत आठवें परिशिष्ट में परिगणित भारतीय भाषाओं में से संस्कृत को निकाल देना चाहिये क्योंकि यह विदेशी आक्रान्ता आर्यों द्वारा लाई गई विदेशी भाषा है।"

पुनः जब हमारे देश की ओर से पहला उपग्रह 'आर्यभट' छोड़ा गया तो तमिलनाड् से संसद् सदस्य के० लक्ष्मणन ने पार्लियामेण्ट मे माग की कि इस उपग्रह का 'आर्यभट' नाम बदल कर कोई भारतीय नाम रखा जाना चाहिये।

भारत की राष्ट्रीयता, एकता, अखण्डता और स्वाधीनता के लिये घातक इन सब बातों का मूल इस मान्यता में है कि आर्यों के आने से पहले भारत में कुछ और लोग बसते थे जिन्हे आदिवासी के नाम से पुकारा जाता है। आज से लगभग चार हजार वर्ष पूर्व ईरान अथवा मध्य एशिया से आने वाले आर्यों ने इस देश पर आक्रमण किया। यहां के मूल निवासियों में से कुछ को उन्होने मार डाला, कुछ को गिरफ्तार करके दास बना लिया और कुछ जान बचा कर जंगलों और पहाड़ों में जा छिपे। 'फूट डालो और राज्य करो' की भावना से यह विचार सबसे पहले 'Cambridge History of India' में डाला गया। इस विचार धारा का प्रचार-प्रसार करने के लिये बनारस और लाहौर में केन्द्र बनाये गये। बनारस के बनारस कालिज से और लाहौर के ओरियण्टल कालिज से संस्कृत के एम० ए० उत्तीर्ण छात्रों (विशेषकर ब्राह्मणो) को ऊंची छात्रवृत्ति देकर आक्सफोर्ड भेजा जाता था और जो छात्र वहां से शिक्षा प्राप्त करके लौटते थे उन्हें प्रिंसिपल अथवा प्रोफेसर बनाया जाता था। लाहौर और बनारस के इन कालिजों के यूरोपियन प्रिंसिपल एम० ए० में वेद की कक्षाओ मे स्वयं पढ़ाते थे। वहां पाठ्यक्रम की पद्धति वही थी जो आक्सफोर्ड में चालू थी। परिणाम यह हुआ कि भारतीय विद्वानों ने भी वही राग अलापना आरम्भ कर दिया जो उन्होंने अपने गौराग महाप्रभुओं से सीखा था।

आर्यों के बाहर से आकर इस देश में बसने की मान्यता का प्रचार कितना योजनाबद्ध ढंग से हुआ, इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि लोकमान्य तिलक जैसे विद्वान और देशभक्त भी इससे प्रभावित हुए बिना न रहे। 'मानवेर आदि जन्म भूमि' के लेखक उमेशचन्द्र विद्यारत्न ने लिखा है—"तिलक महोदय का मत (आर्यो के मूल स्थान के विषय में) संशोधन करने के लिये जब हम उनके घर गये तो उन्होने सरलरतापूर्वक हमसे कह दिया कि—'आमि मूलवेद अध्ययन करि नाई'। आमि साहब अनुवाद पाठ करिया छे' " अर्थात् हमने मूलवेद नही पढ़े हमने तो साहब लोगो (यूरोपियन विद्वानो) का अनुवाद पढा है।

इस मिथ्या धारणा की ओर सबसे पहले महर्षि दयानन्द का ध्यान गया और इसका प्रत्याख्यान करते हुए उन्होने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा—"किसी संस्कृत के ग्रन्थ वा इतिहास में नही लिखा कि आर्य लोग ईरान से आये और यहां के जंगलियों को लड़कर, जय पाके, निकाल के इस देश के राजा हुए। पुनः विदेशियों का लेख कैसे माननीय हो सकता है ?"

सन् १९४७ में अंग्रेज भारत छोड़ कर चले गये। परन्तु भारतीय विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों (यहां तक कि डी.ए.वी. तथा आर्य समाज की अन्य संस्थाओं में भी) आज भी वही पढ़ाया जा रहा है कि आर्य लोग इस देश के मूल निवासी न होकर बाहर से आकर बलात् अधिकार कर लेने वाले विदेशी शासक हैं। यदि अंग्रेजो द्वारा स्थापित यह मान्यता ठीक है तो मुसलमानों और अंग्रेजो की तरह आर्यों के यहां रहते भारत को स्वतन्त्र हुआ नहीं माना जा सकता। इसलिये जब तक इस भ्रान्त धारणा को समूल नष्ट नहीं किया जाता तब तक इस देश की अस्मिता, एकता, अखण्डता और स्वतन्त्रता को खतरा बना रहेगा।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

—डा० जयदेव आर्य्य—

यह वार्ता आकाशवाणी दिल्ली से प्रसारण के लिए लिखी गई थी। १६ जून ८५ रविवार को प्रातः ७ बजकर २० मिनट पर 'बी' केन्द्र से यह प्रसारित की गई। आर्यजगत' के पाठ कों के लिए उसका मूल रूप से लिखित अविकल पाठ यहां प्रस्तुत है :—

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा उसकी उन्नति और अवनति में उसके चारों ओर फैले हुए सामाजिक परिवेश का प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में महान् योगदान रहता है। इसलिए कोई व्यक्ति चाहे कितना ही आत्मकेन्द्रित और अन्तर्मुखी क्यों न हो, किसी-न-किसी सीमा तक वह अपने समाज का ऋणी अवश्य होता है। उसकी इसी समाजोन्मुखी प्रवृत्ति का फल है 'राष्ट्र'। अकेले-अकेले रहने की बजाय एक राष्ट्र के रूप में संघटित होकर और अपनी आत्मिक चेतना, आत्मीयता, सहानुभूति का वहां तक विस्तार कर उसने अपने को सुरक्षित अनुभव किया है। उसने समाज और राष्ट्र की उन्नति, दृढ़ता और सुरक्षा में ही अपने हित को निहित माना है। अपने चिन्तन के स्तर पर इसी भावना को साहित्य के रूप में अभिव्यक्ति प्रदान कर वह स्वयं मर्त्य होकर भी राष्ट्र के माध्यम से अमर हो गया है।

संसार भर के साहित्य में संस्कृत साहित्य का स्थान और महत्त्व अप्रतिम है। इसका कारण यह है कि मानव-जीवन का कोई भी पक्ष ऐसा नहीं है, जिस पर संस्कृत-साहित्य में कुछ-न-कुछ प्रकाश न डाला गया हो। तब मानव-समुदाय की सामूहिक चेतना, (राष्ट्रीय चेतना) जैसे महत्त्वपूर्ण विषय की उपेक्षा का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

भारत-राष्ट्र के धर्म, दर्शन, सभ्यता और संस्कृति के मूल उत्स वेदों में ही हमे राष्ट्रीयता के सभी तत्त्वों का साङ्गोपाङ्ग उल्लेख उपलब्ध हो जाता है और तब से लेकर वर्तमान काल तक के संस्कृत साहित्य में प्रखर राष्ट्रीय चेतना को जगाने वाले भावों की अभिव्यक्ति अविच्छिन्न रूप से होती चली आई है।

राष्ट्र क्या है ? उन लोगों का समुदाय, जो सांझे धर्म, भाषा, संस्कृति और सभ्यता, इतिहास, जातीयता, जीवन-दर्शन, पारस्परिक हित आदि में से किसी एक या अनेक आधारों पर भावात्मक रूप से एकसूत्र में बंध जाते हैं, किसी छोटे-बड़े भूखण्ड को सामूहिक रूप से अपनी मातृभूमि स्वीकार करते, उसकी उन्नति और [illegible]ा के लिए त्याग और बलिदान की भावना रखते तथा उसकी विजय और पराजय को अपनी विजय और पराजय मानते हैं। वेद ने राष्ट्रीयता के इन सभी तत्त्वों को लक्षित कर मनुष्यों को अनेक सुन्दर उपदेश दिये हैं। हे मनुष्यो ! तुम इकट्ठे चलो, मिल कर बोलो, तुम्हारे मन आपस में मिले हों—'सं गच्छध्वं, सं वदध्वं, सं वो मनांसि जानताम् ।' तुम्हारा विचार एक हो, सभा एक हो, मन और चित्त एक हों—'समानो मन्त्रः समितिः समानी, समानं मनः सह चित्तमेषाम् ।' तुम्हारा सकल्प समान हो—'समानी व आकूतिः'। इसी प्रकार से तुम्हारा सहअस्तित्व बना रह सकता है—'यथा वः सुसहासति ।' तुम्हारी प्याऊ सांझी हो और तुम्हारा भोजन एक साथ हो; मैं तुम्हें सांझे लक्ष्य के एक जुए मे एक साथ जोड़ता हूं—'समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः, समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि ।'

इस प्रकार की एकात्मकता की भावना जितने विशाल मानव-समाज में अपना स्थान बना पायेगी, उतना ही बड़ा मानव समाज एक राष्ट्र की सीमा में समा जायेगा। सब श्रेष्ठ मनुष्यो का कर्तव्य है कि वे एक विश्व-राष्ट्र की कल्पना को साकार रूप प्रदान करने के प्रयत्न करते रहे। वेद का आदर्श एक ऐसा ही विश्व-राष्ट्र है। इस राष्ट्र के नागरिक की दृष्टि में सारी भूमि ही उसकी माता है और वह उसका पुत्र है। अथर्व वेद के 12 वें काण्ड के भूमि सूक्त में इसी भाव की अभिव्यक्ति की गई है—'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।' मिट्टी और पत्थर की भूमि को जब मानव माता के रूप में ग्रहण करता है, तो वह भूमि उसके लिए दूध को नदियां बहाती है—'सानो भूमिर्विसृजतां माता पुत्राय मे पयः ।' सोना उगलती है—'शिला भूमिरश्मा पांसुः सा भूमिः संधृता, धृता । तस्यै हिरण्यवक्षसे पृथिव्या अकरं नमः ॥'

राष्ट्र की उन्नति के लिए आवश्यक है कि उसके अधिक-से-अधिक नागरिक जागरूक हों और मिलकर घोषणा करें कि हम राष्ट्र के पुरोहित, उसके नेता, उसके हित को प्रमुखता देने वाले जाग रहे है और कोई व्यक्ति राष्ट्र को हानि पहुचाने का दुस्साहस न करे—'राष्ट्रे वयं जागृयाम पुरोहिताः ।' उस राष्ट्र की रक्षा के लिए हमने महान्, बलशाली, जितेन्द्रिय शासक को चुना है, जो प्रमादरहित होकर उसकी रक्षा करता है— 'ब्रह्मचर्येण ह राजा राष्ट्रं विरक्षति ।' उत्तम राष्ट्र में तेज और बल का होना आवश्यक है—'सा नो भूमिस्त्विषिं बलं राष्ट्रे दधातूत्तमे ।' राष्ट्र में इतना सामर्थ्य हो कि वह अपने से द्वेष करने वाले, आक्रान्ता, मन और शस्त्रबल से दास बनाने के इच्छुक शत्रु को कुचल दे—'यो नो द्वेषत्पृथिवि यः पृतन्याद्योऽभि दासान्मनसा यो वधेन, तंनो भूमेरन्धय पूर्वकृत्वरि ।' ऐसी रक्षित मातृभूमि ही अपने नागरिकों को प्रतिष्ठा और कल्याण दे सकती है 'भूमे मातर्नि धेहि मा भद्रया सप्रतिष्ठितम् ।' यहीं ऋषियों की अमर वाणी झंकृत होती है—'मत्यां पूर्वे भूतकृत ऋषयो गा उदानृचुः ।' इसी वैदिक सत्य को संस्कृत के एक कवि ने स्पष्ट करते हुए लिखा था, 'शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्र चिन्ता प्रवर्तते ।' हमारा यह कर्तव्य है कि हम अपनी मातृ-भूमि के लिए तन, मन और धन की बलि देने के लिए सदा उद्यत रहे—'वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम ।' हम राष्ट्र की हिंसा न करें और राष्ट्र हमारी हिंसा न करे—'पृथिवि मातर्मा मा हिंसीर्मो अहं त्वाम् ।

इस प्रकार वेदों में राष्ट्रीय चेतना से भरपूर मन्त्र बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं। अथर्ववेद में 63 मन्त्रो का पृथ्वी सूक्त तो एक सर्वश्रेष्ठ राष्ट्रगीत का निदर्शन है। वेदो के प्रकाण्ड विद्वान प० सातवलेकर ने सन् 1908 मे जब इस सूक्त की व्याख्या प्रकाशित की थी, तो इस से घबराकर ब्रिटिश सरकार ने प्रकाशक को तीन वर्ष के कठोर कारवास का दण्ड दिया था। यजुर्वेद के 22 वें अध्याय में आया मन्त्र 'आ ब्रह्मन् ब्राह्मणों ब्रह्मवर्चसी जायताम्। आ राष्ट्रे राजन्य 'एक श्रेष्ठ राष्ट्र प्रार्थना का रूप है। वैदिक विवाह-सस्कार तक में राष्ट्रभृत् यज्ञ' का विधान कर राष्ट्र भक्ति को गृहस्थ के धर्म के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है।

वेद-सहिताओं के पश्चात् ब्राह्मण ग्रन्थों मे राजसूय और अश्वमेध आदि यज्ञो के प्रसंग में 'राष्ट्र' का उल्लेख हुआ है। 'राष्ट्रं वा अश्वमेधः' कह कर अश्वमेध यज्ञ को राष्ट्र की अस्मिता का पर्याय ही घोषित किया गया है। राष्ट्र मे प्रचलित विभिन्न प्रकार की राज्य प्रणालियों और सीमा-विस्तार के आधार पर ऐतरेय ब्राह्मण मे "साम्राज्य, भौज्य, स्वाराज्य, वैराज्य, महाराज्य, समन्तपर्यायी और एकराट्' आदि अनेक प्रकार के राज्यों का उल्लेख किया गया है। अनेक चक्रवर्ती राजाओं के नाम भी ब्राह्मण ग्रन्थो मे उपलब्ध हैं। मनुस्मृति में ससार-भर के लोगो को इस देश मे उत्पन्न विद्वानों से अपने-अपने चरित्र और आचार की शिक्षा लेने का आह्वान किया गया है तथा पूर्व-पश्चिम मे समुद्रों और उत्तर दक्षिण में हिमालय तथा विन्ध्याचल पर्वतो के बीच के भू-भाग को आर्यावर्त के नाम से अभिहित किया गया है। महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश मे स्पष्ट किया है कि यहां विन्ध्य पर्वत से अभिप्राय रामेश्वर पर्यन्त फैली पर्वतमालाओं से है। वाल्मीकि रामायण में भी दक्षिण समुद्र के किनारे के पर्वत को विन्ध्य कहा गया है—'दक्षिणस्योदधेः तीरे विन्ध्योऽयमिति निश्चितः ।' उपनिषदों मे राजा अश्वपति ने इस बात पर गर्व किया है कि उसके राज्य में कोई भी चोर, कंजूस, शराबी, यज्ञ न करने वाला, मूर्ख और व्यभिचारी व्यक्ति नहीं है। यह एक आदर्श राष्ट्र का मानदण्ड स्वीकार किया गया है।

'वाल्मीकि रामायण में भगवान् राम ने जननी और जन्मभूमि को स्वर्ग से बढ़कर घोषित किया है—'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।' उनका राज्य भी एक आदर्श राष्ट्र का रूप है जिस में सारी पृथ्वी 'धनधान्य समृद्धिनी' है। प्रतिदिन अपने सब भाइयों के साथ राम नियमित रूप से स्वयं कार्यों का निरीक्षण करते हैं। महाभारत के शान्ति तथा अन्य कई पर्वों में भी आदर्श राष्ट्र के लक्षणों का बड़े ही विस्तार से वर्णन किया गया है और भारत का गुणकीर्तन भी—'सर्वेषामेव राजेन्द्र ! प्रियं भारत भारतम ।' महाकवि भास ने अपने नाटकों के भरतवाक्य मे अखण्ड भारत राष्ट्र में एकछत्र राज्य की कामना की है—'इमां सागरपर्यन्तां हिमवद् विन्ध्यकुण्डलाम् । महीमेकातपत्राङ्कां राजसिंहः प्रशास्तु नः ॥' महाकवि कालिदास ने अपने मेघदूत और रघुवंश नामक काव्यो में अखण्ड भारत का मानचित्र प्रस्तुत करते हुए पाठकों को समग्र राष्ट्र का दिग्दर्शन करवाया है। संस्कृत का साहित्यकार तो देवताओं से भी भारत-राष्ट्र की स्तुति करवाने से नही चूका—

'गायन्ति देवाः किल गीतकानि,
धन्यास्तु ये भारत भूमिभागे ।
स्वर्गापवर्गस्य च हेतुभूते,
भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात् ॥'

संस्कृत के कवि की भावनाओं के साथ तादात्म्य स्थापित करते हुए भारत वासियों ने तो प्रतिदिन प्रातःकाल ही अपने कुए' या तालाब के नहीं, अपितु

(शेष पृष्ठ ६ पर)

चाय को प्याली में तूफान

कुरान पर प्रतिबंध की याचिका रद्द क्यों ?

—डा० रामप्रसाद मिश्र, एम० ए०, पी० एच-डी०, डी० लिट्

पिछले दिनों चाय की प्याली में एक तूफान उठा जो सौभाग्य से अब कुछ बैठ गया है। यह तूफान था कलकत्ता हाईकोर्ट में कुरान पर प्रतिबंध लगाने की याचिका के संबंध में। कश्मीर घाटी में जहां मुसलमान अधिक हैं और बंगलादेश में जो अब इस्लामी देश बन चुका है, इस तूफान ने तो हिंसक रूप धारण कर लिया था।

इस्लाम और प्रतिबंधों का गहरा संबंध है। संसार के लगभग सभी इस्लामी देशों में मूर्ति पूजा पर, मन्दिर बनाने पर, पुराने मन्दिरों की मरम्मत पर, और खुले रूप में कथा-कीर्तन करने पर प्रतिबंध है। बहुत से इस्लामी देशों में दाह संस्कार पर भी प्रतिबंध है। अनेक ऐसे देश हैं जिनमें गीता, उपनिषद् आदि धार्मिक पुस्तकें ले जाने पर भी प्रतिबंध है। तुर्की और ईरान ने गीता और उपनिषद् पर भी प्रतिबंध लगाया था। दांते की "डिवाइन कामेडी" पर जिसमें हजरत मुहम्मद और हजरत-अली को नरक में रोता हुआ दिखाया गया है, सभी इस्लामी देशों में प्रतिबन्ध है।

कालिन और लेपियर की हाल में प्रकाशित पुस्तक "फ्रीडम एट मिडनाइट" पर पाकिस्तान में प्रतिबंध है। क्योंकि उसमें जिन्नाह के सुअर का मांस खाने का उल्लेख है। मजे की बात यह है कि हिन्दुस्तान जैसे धर्मनिरपेक्ष राज्य में भी मुसलमानों के दबाव के कारण श्री ए० घोष की अमेरीका मे प्रकाशित पुस्तक "कुरान एण्ड द काफिर", श्री बिशन स्वरूप गोयल की दिल्ली से प्रकाशित पुस्तिका "काश ! गांधी जी ने कुरान पढ़ा होता।" और डा० अमरेश आर्य की पुस्तिका "मैंने इस्लाम क्यों छोड़ा ?" पर प्रतिबंध लगा हुआ है। जिस मजहब के अनुयायी प्रतिबंध के इतने शैदायी हैं, वह कुरान पर प्रतिबंध लगाने संबंधी याचिका से इतने उद्विग्न हो गये, यह आश्चर्य की बात है।

याचिका की कहानी भी बड़ी रोचक है। श्री सी० एम० चोपड़ा नामक एक सज्जन ने, जो कई फर्मों के कानूनी सलाहकार हैं अप्रैल १९८५ में कलकत्ता हाईकोर्ट में एक याचिका पेश की, जिसमें मांग की गई थी कि अरबी में लिखे कुरान और उसके अनुवादों पर प्रतिबंध लगाया जाय क्योंकि उसमें बहुत-सी ऐसी बातें लिखी हुई हैं जो कि भारतीय संविधान की धारा १५३-ए का स्पष्ट उल्लंघन करती हैं और गैर-मुसलमानों के प्रति विद्वेष और हिंसा का प्रतिपादन करती हैं। याचिका मे कुरान के ऐसे अनेक उद्धरण भी दिये गये थे। न्यायमूर्ति श्रीमती पद्मा खास्तगीर ने इसे विचारार्थ स्वीकार कर लिया और पश्चिमी बंगाल की सरकार को नोटिस दिया कि वे इस संबंध में अपना पक्ष रखे और याचिका पर विचार करने के लिए २७ मई की तिथि तय कर दी।

याचिका रद्द क्यों ?

इस बीच मुस्लिम वकीलों और संस्थाओं के विरोध के कारण यह याचिका किसी अन्य जज को देने की बात उठी। मुख्य न्यायाधीश ने इसे न्यायमूर्ति बासक को दे दिया। न्यायमूर्ति बासक ने सुनवाई की तिथि २७ मई के स्थान पर १३ मई कर दी। श्री चोपड़ा को इस परिवर्तन की सूचना १२ तारीख की रात को दी गई। फिर भी वे १३ मई को अदालत में पेश हुए और उन्होंने याचिका के पक्ष में बड़ा तर्क-संगत और तथ्यपूर्ण वक्तव्य दिया। न्यायमूर्ति बासक ने उनके किसी तर्क का खंडन किये बिना केवल यह कहकर याचिका रद्द कर दी कि कुरान एक पवित्र पुस्तक है इसलिए वह कानून और न्यायपालिका की परिधि में नही आती। समाचार पत्रों में छपी रिपोर्टों के अनुसार केंद्रीय विधि मंत्री श्री ए० के० सेन और अटार्नी जनरल भी उस दिन कलकत्ता में थे। संभवतः उन्हीं के कहने पर पहले तिथि बदली गई और बाद में याचिका को उसके गुण दोषों पर विचार किये बिना रद्द कर दिया गया।

इस प्रकार सचाई की परख किये बिना उसे दबा दिया गया। भारत में सत्य को इस प्रकार दबाया जाना जिसका ध्येय वाक्य "सत्यमेव जयते" है, क्या उचित है ?

परन्तु इस याचिका के पेश होने से एक लाभ अवश्य हुआ है। बहुत-लोगों को पहली बार ही यह पता लगा कि कुरान में कुछ ऐसी बातें भी लिखी हैं जो कानून और मानवता से सुसंगत नहीं हैं। इस्लाम के प्रवक्ता भी बचाव में खड़े हो गये हैं। वे याचिका में उठाई गई बातों का तो खंडन कर नहीं पा ये। भारत के कुछ तथाकथित प्रगतिवादी और धर्मनिरपेक्ष लेखकों और बुद्धिजीवियों की भी इससे बड़ी हेठी हुई है। उनमें से बहुतों ने कुरान को पढ़ा नहीं है इसलिए वे तथ्यों के आधार पर तो इस याचिका का विरोध कर नहीं सकते थे। फिर भी उन्होंने इस याचिका का विरोध करके जिस मनोवृत्ति का परिचय दिया है, वह न प्रगतिवाद की निशानी है, न "सेकुलरवाद" की।

संसार का इतिहास इस बात का साक्षी है कि इस्लाम और कुरान के नाम पर गत १४,०० वर्षों में बहुत मारकाट हुई है। हिन्दुस्तान को भी गत हजार वर्षों से इसका कटु अनुभव है। आवश्यकता है कि हिन्दुस्तान के लेखक और विचारक इस मारकाट की प्रेरणा देने वाले मूल कारणों को समझने के लिए खुले दिल से कुरान का अध्ययन करें और सफेद को सफेद और स्याह को स्याह कहने की हिम्मत करें। भारत और हिन्दुओं की परंपरा तो विचार स्वतंत्रता की सदा रही है। यहां हर प्रकार की पूजा, विचार और मत भिन्नता की पूरी छूट रही है, और आज भी है। हिन्दू चिन्तकों का विश्वास रहा है कि सत्य छिप नहीं सकता। इसलिए उन्होंने हर विषय पर खुले दिल से विचार कर और खुली बहस का प्रतिपादन किया है। इस दृष्टि से कुरान पर प्रतिबंध लगाने की मांग हिन्दु परंपरा के तो सर्वथा प्रतिकूल है। परन्तु कुरान में क्या लिखा गया है और इसमें कौन-सी बातें कानून और मानवता के विरुद्ध हैं, उनको जानना और उसके संबंध में सही तथ्यों को पेश करना एक स्वस्थ लोकतांत्रिक परम्परा है।

संस्कृत साहित्य में.....

(पृष्ठ ५ का शेष)

अखण्ड भारत राष्ट्र की सभी प्रमुख नदियों के जल से स्नान करने की भावना को हृदयङ्गम किया है—

गङ्गे च यमुने चैव
गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि
जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु॥

प्राचीन काल मे ही नही, बीसवीं शती में भी संस्कृत का साहित्यकार राष्ट्रीय चेतना जगाने मे अग्रणी रहा है। भारतीय राष्ट्रीयता के अग्रदूत महाराणा प्रताप, शिवाजी, गुरु गोविन्द सिंह, राजा राम मोहन रॉय, महर्षि दयानन्द सरस्वती स्वा० विवेकानन्द, रामकृष्ण परमहंस, वीर सावरकर, महात्मा गांधी और जवाहर लाल नेहरू आदि पर संस्कृत में प्रभूत साहित्य की रचना हुई है। भारतीय राष्ट्रीयता के सर्वाधिक प्रखर प्रवक्ता महर्षि दयानन्द पर कई महाकाव्यों की रचना हुई है। इन राष्ट्रपुरुषो पर लिखे गये सभी काव्य राष्ट्रीयता के भावो से आप्लावित हैं। पं० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय के 'आर्योदयम्' इन्द्र विद्यावाचस्पति के 'भारतेतिहासम्' तथा द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री के 'स्वराज्य विजयम्' आदि काव्यों में भारत के अतीत गौरव, मध्यकाल के पतन तथा वर्तमान काल के पुनर्जागरण आदि का पूरा इतिवृत्त वर्णित हुआ जो पाठकों के हृदय में राष्ट्रीय चेतना का संचार करता है। डा० रामकांत शुक्ल का खण्डकाव्य 'भाति मे भारतम्' भारत राष्ट्र की वन्दना करता है।

इस प्रकार अपने उष काल से लेकर अधुनिक काल तक के संस्कृत साहित्य में हमें राष्ट्रीय चेतना जगाने वाली पुष्कल सामग्री उपलब्ध होती है।

पता—द्वारा मित्तल आटो एजेंसी, 57 ए गुरु नानक मार्केट, कश्मीरी गेट, दिल्ली।

फ्रांस के कसाई-घर से भारत के गो-सदन तक

—राम आधार हजेला—

यजुर्वेद का प्रथम मंत्र 'यजमानस्य पशून् पाहि' पर आधारित हमारे पथप्रदर्शक ऋषि दयानन्द सरस्वती ने स्वरचित पुस्तक 'गो-करुणानिधि' में गऊओं की महत्ता का वर्णन किया है। वेदों में तो गऊ के हत्यारे को पातकी और अपराधी माना है।

महात्मा गांधी व सन्त विनोवा भावे गोहत्या बन्दी का स्वप्न देखते-देखते स्वर्गवासी हो गये। करोड़ों देशवासी चिल्ला-चिल्ला कर पुकार रहे हैं कि संविधान निर्देशक सिद्धान्त के अनुच्छेद ४८ में कहा गया है—गाय, बछड़े और अन्य दूध देने वाले पशुओं के वध पर प्रतिबन्ध लगे'। परन्तु गत ३७ वर्षों से उसका उल्लंघन होता आ रहा है।

गणित के आधार पर एक गाय उसकी ६ बछियां व ६ बछड़े से एक पीढ़ी में ४,१०,४४० मनुष्यों का एक दिन का पालन होता है। उसकी छै बछियों की पीढ़ी से असंख्य मनुष्य भोजन पा सकते हैं और उसके मांस से केवल अस्सी मनुष्यों की क्षुधा शांत होती है।

मनु स्मृति के पंचम अध्याय में ५१ श्लोक में निम्न लोगों को गो हत्या का अपराधी माना गया है—

अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रय विक्रयी संस्कर्ता चोपहर्ता च खादकश्चेति घातकाः

अर्थात् जिसकी अनुमति से मारते है, जो अंगों को काटकर अलग-अलग करता है, जो स्वयं मारता है, जो खरीदता है, बेचता है, उसका मांस पकाता है, परोसता है तथा खाता है—ये सब पापी हैं।

हमारे योजना निर्माताओ की सलाह पर सरकार खाद्यान्न, खाद्य तेल, शकर, दवायें, खाद, कैमीकल्स, पैट्रोल, मिट्टी का तेल व अन्य आवश्यक वस्तुएं आयात करने मे बहुमूल्य विदेशी मुद्रा खर्च कर रही है। अरब व अन्य पाश्चात्य व सम्पन्न देशो में गो मास २५०) रुपये प्रति किलो के भाव से बेचने के लिए नए कसाई घर खोल रही है। शासकीय आंकड़ो से विदित होता है कि भारत, में प्रति-वर्ष ४, ३०, ००,००० (चार करोड़ तीस लाख) पशु मारे जाते हैं जिससे २८००० कसाईयों का जीवन निर्वाह होता है। गणित के हिसाब से हम उपरोक्त संख्या में केवल ३० लाख गायें ही मान लें तो गत ३७ वर्षों में हम आजाद भारत में ग्यारह करोड़ दस लाख गायें खत्म कर चुके हैं।

आयुर्वेद के ज्ञाता यह प्रतिपादित करते हैं कि जैसा खायेंगे अन्न वैसा बनेगा मन। और जैसा मन बनेगा वैसी ही बुद्धि और जैसी बुद्धि वैसा शासक और वैसा ही शासित वर्ग बनेगा। हमारे युवा प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी शासन की डोर सम्भालने के उपरान्त कितनी बार कह चुके हैं कि देश में दुराचार, भ्रष्टाचार, रिश्वत, घूसखोरी, शराबखोरी, कत्ल, डाके, आदि भयानक रूप में बढ़ रहे है। पर यह सब क्यों हो रहा है ? "इसका एकमात्र कारण [गाय मार कर उसका मांस विक्रय कर कमाये डालरों से उपलब्ध भोजन ही है।"

देश में शकर आवश्यक मात्रा में उपलब्ध है और यहां कारखानों में उर्वरक भी आवश्यकता के अनुरूप तैयार हो रहा है, फिर भी हमारा राज्य व्यापार निगम करोड़ों रुपये के आर्डर देकर चीनी आयात कर रहा है। १३-५-८५ के 'इण्डियन एक्सप्रेस' के अनुसार ५ लाख टन शकर ११५ करोड़ रुपये मूल्य देकर मंगाई है। इसी प्रकार रासायनिक खाद का आयात भी किया जा रहा है। जिन वस्तुओं का आयात हो रहा है, उनका पेमेन्ट डालरों मे किया जायेगा और डालर प्राप्ति के लिये गोवध अवश्यम्भावी है। कैसा विचित्र दूषित चक्र है ?

गत ३७ वर्षों से हम खाद्यान्न का भी आयात कर रहे हैं और डालरों के लिए गोवंश समाप्त कर रहे हैं। ६ पंचवर्षीय योजनाओ में करोड़ों रुपया पानी की तरह बहाकर अरबों-खरबों का विदेशी ऋण का भार अपने सिर पर लेकर बैठे हैं। जब तक शासन अपनी निर्यात तथा आयात नीति भारत की यथार्थ परिस्थिति पर आधारित नहीं करता, तब तक न हमारी आर्थिक समस्या हल हो सकती है और न देश की गरीबी दूर हो सकती है।

"उत्पादन बढाओ" के नारे के अन्तर्गत हमने अन्य वस्तुओं को छोड़कर केवल कपड़ा उत्पादन पर ध्यान दिया। हमारी सैकड़ों मिलों, और हजारों थोक व खुदरा व्यापारियों के पास में लाखों मीटर कपड़ा भरा पड़ा है। कपड़े की क्वालिटी में आश्चर्यजनक विकास हुआ है। मिल मालिकों व व्यापारियों ने मुनाफा ही मुनाफा कमाया है। अमीर और अमीर बने व गरीब और गरीब बने। कपड़े का इतना भण्डार होते हुए भी जनता की वस्त्र पूर्ति नहीं हुई। अधिकांश व्यक्ति क्रयशक्तिहीन हैं। मध्यम वर्ग अगर अपनी प्राथमिक आश्यकता अन्न भोजन से कुछ बचाकर बाजार में आये तो प्रति मीटर कपडे का भाव इतना ऊंचा है कि वह क्रय करने का साहस नही कर सकता।

दूध हमारी खाद्य समस्या का आवश्यक अंग है, अतः इसकी कमी की पूर्ति करना हमारा परम कर्तव्य है। इसके लिए भारत में श्वेत क्रांति अनिवार्य है। सारे भारत में डेयरी उद्योग का जाल बिछ जाना चाहिए। वह भी पश्चिम की नकल पर नहीं, अपनी परिस्थितियो के अनुरूप स्वदेशी ढंग से फांस में ५ लाख गाय अधिक होने से दिसम्बर ८५ अन्त तक कसाइयो द्वारा काटी जावेंगी। उनके काटे जाने से केवल ३०-३५ हजार व्यक्तियों के एक या दो बार के भोजन की तृप्ति हो सकेगी। अतः फ्रास की सरकार ने ये गायें पड़ौसी मुल्को को स्थानान्तरित करने की सलाह दी है। प्रधानमन्त्री ने २० हजार गायों की मांग की है, जो अक्तूबर ८५ मे भारत में पदार्पण करेगी। वास्तव में भारत की ७० करोड आवादी को देखते हुए ५ लाख गाये भी प्रायः नगण्य ही है फिर भी वे पूरी ५ लाख अन्यथा और भी अधिक गाये उपलब्ध हों तो उनको भारत में अवश्य लाये। कम से कम उन ५ लाख गायों की जान तो बचाये ही।

विदेशी गायों के बारे में भ्रम

विदेशी गायो के सम्बन्ध में कुछ भ्रम-सा फैल गया है और हमारे किसान भाई विशेष रूप से आतंकित हैं। सारे विश्व की सब गायें एक-सी हैं। केवल स्थान व वायुमण्डल के प्रभाव से कुछ अन्तर हो जाता है। जैसे हम मनुष्य वर्ग में देखते हैं। जब मनुष्य संसार के किसी कोने में जाकर वहाँ के स्थानीय वातावरण से प्रभावित हुए बिना नही रह सकता तो गाय तो ऐसा पशु है कि थोड़ा-सा उसके स्वास्थ्य के प्रबन्ध का ध्यान रखकर अगर हार्दिक प्रेम उस पर दर्शाया जाए तो वह आसानी से परिवर्तित वातावरण के अनुकूल अपने को बना लेगी।

२६-५-८५ के 'इंडियन एक्सप्रेस' में 'लुकिंग गिफ्ट काऊज इन दी माऊथ' शीर्षक से श्री क्लाऊड अलवारिस ने इन विदेशी गऊओं से भयभीत होकर एक विशाल विदेशी गऊशाला का फोटो देते हुए उनके रहने के स्थान, बीमारी, खाद्य सामग्री, मशीन से दूध निकालने की क्षमता तथा मिक्सिंग व क्रास ब्रीडिंग आदि के खतरे दर्शाते हुए उनको भारत मे न लाने की बड़ी दृढ़ सलाह दी है और यहां तक कह डाला है कि इन विदेशी गायों के आने से हमारी गायों पर घातक प्रभाव पड़ेगा अतः इनको भारत न मंगाकर यही उचित है कि इन्हे कसाइयों द्वारा फ्रास ही मे अपना जीवन का अन्त करने दिया जाये। इनका भारत लाने में जो खर्चा होगा वह बेकार होगा और वह किसी अन्य कार्य पर व्यय किया जा सकेगा।

अलवारिस महोदय ने जिन कठिनाइयों का वर्णन करके अपना मत निर्धारित किया है उन क्षुद्र कठिनाइयों को दूर करने के भारत में सरलता से उपाय उपलब्ध हैं।

रहा सवाल खाद्य पदार्थों का, वह अलवारिस साहब ने ही लिखा है कि भारत के मनुष्य जैसा भोजन खाते हैं वैसा भोजन आवश्यक होगा। उसका उत्तर तो सरल है, जब भारत ७० करोड़ निवासियों को खाद्यान्न खिलाता है तब लाखों टन दूध देने वाले पशुओं को खिलाने का प्रबन्ध न कर सकेगा, यह मानने लायक बात नहीं। कठिनाई मशीन से दूध निकालने की अवश्य है, पर इसके लिये हमारे पास अपार जन-शक्ति है। ३ व्यक्ति प्रति गाय यानी १५ लाख लिटर दूध निकालने के अनुपात से ५ लाख गायों के लिए १५ लाख व्यक्तियों को रोजगार मिल सकेगा। अतः उनके सभी सुझाव भारत के आर्थिक लाभ के समक्ष कोई विशेष महत्व नहीं रखते।

पता—उलफत निवास, शिवाजी गंज, ग्वालियर

आर्य समाजों के चुनाव

—आर्य समाज, रेल्वे रोड, अम्बाला के चुनाव में, डा० वेद प्रकाश प्रधान, श्री नन्दलाल वर्मा मंत्री और रामेश्वर दास कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज लक्ष्मी नगर दिल्ली के चुनाव मेंसर्वसम्मति से पं० पुरुषोत्तम शर्मा प्रधान, श्री सुरेन्द्र कुमार वर्मा मंत्री और श्री सत्यदेव शर्मा कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज, पंजाबी बाग, नई दिल्ली के प्रधान श्री गिरधारीलाल मुलाटी, मंत्री श्री वेदप्रकाश छत्वाल और कोषाध्यक्ष श्री धर्मवीर निर्वाचित हुए।

—आर्य समाज, होली मोहल्ला, करनाल के चुनाव में श्री नरदेव शास्त्री प्रधान, श्री वैद्य रत्तीराम मंत्री और श्री ब्लियाराम एडवोकेट कोषाध्यक्ष चुने गये।

पत्रों के दर्पण में

डी० ए० वी० शताब्दी समारोह लाहौर में

इस सम्बन्ध में आपका सुझाव पढ़ा। आप किस प्रकार आर्यसमाज को नई दिशा और उद्‌बोधन देकर गतिशील बनाते हैं, यह हम अजमेर में हुई निर्वाण शताब्दी के प्रसंग में बखूबी देख चुके हैं।

डी० ए० वी० आन्दोलन के जन्म-स्थान लाहौर में कुछ कठिनाइयां हैं। प्रथम तो लाहौर, अब विदेश बन गया है और किसी ने आज तक पाकिस्तान में छोड़े समाज मन्दिरों, कालिजों, स्कूलों तथा अन्य संस्थाओं के भव्य भवनों, रिकार्डों और पुस्तकालयों की कोई सुध नहीं ली। संभव है कि कुछ अमूल्य रिकार्ड, पुस्तकें, पुरातन चित्र तथा अन्य सामग्री वहां के लोगों ने अब भी किसी कमरों या अलमारियों में बन्द कर रखे हों। पाकिस्तान में इतने वर्ष पश्चात् पहला डी० ए० वी० समारोह वहां की सरकार को शायद अखरे। लाहौर के डी० ए० वी० स्कूलों एवं कालिजों में मुसलमान विद्यार्थी नहीं थे। सर शहाबुद्दीन (स्पीकर पंजाब असेम्बली) महात्मा जी के गवर्नमैन्ट कालेज में सहपाठी थे। वे महात्मा हंसराज जी के प्रशंसक थे वे और मियां अब्दुल हई तत्कालीन शिक्षा मन्त्री, डी०ए०वी० समारोह में भाग लेना अपना मान समझते थे। श्री अब्दुल हई की महात्मा जी की मृत्यु पर डी० ए० वी० कालेज में हुई शोक सभा में दी गई श्रद्धांजलि अब भी मेरे कानों में गूंजती है। वे लोग तो अब नहीं रहे। अब तो एक शिष्ट मण्डल वहां जाकर वहां के भव्य भवनों, डी० ए० वी० कालेज, स्कूल और उनके विशाल बोर्डिंग हाउसों एवं अन्य संस्थानों के चित्र तथा वहां से मिली अमूल्य कृतियों को यहां ले आवे जिससे आधुनिक युवा पीढ़ी को डी०ए०वी० के इतिहास का पूरा पता लग सके।

लाहौर में कोर्ट स्ट्रीट, होतुसिंह रोड, सादा रोड से घिरा सारा क्षेत्र जो दिल्ली के अशोक विहार के फेज एक से कम न होगा, डी०ए०वी० कालेज, कालेज बोर्डिंग हाउस, स्कूल बोर्डिंग के आकाश चुम्बन भवन उस समय की निर्माण कला के सुन्दर प्रतीक थे। कालेज के लालचन्द पुस्तकालय के सामने वाले पुलिस मुख्यालय पर शहीद भगतसिंह ने सांडर्स पर गोली चलाई थी। साथ ही डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धक कार्यालय, जीवनदानी सदस्यों का आवास एवं इन्डस्ट्रियल स्कूल था। उधर कालेज के सामने विशाल डी०ए०वी० हाईस्कूल था जिसमें सांईदास क्रीड़ा भवन, देवीदयाल हाल, एवं नया पुस्तकालय इस स्कूल की शोभा बढ़ाते थे। पुलिस दफ्तर के पीछे टिब्बा बाबा फरीद पर महात्मा हंसराज जी का निवास स्थान था जहां उन्होंने अपने प्राण त्यागे। गवर्नमेंट कालेज के साथ डी०ए०वी० मिडिल स्कूल तथा विस्तृत भूमि थी जहां आर्य समाज के वार्षिक उत्सव होते थे। पंजाब सरकार के सचिवालय के आगे ब्राह्म महाविद्यालय के सुन्दर भवन थे। चौबुर्जी के पास हंसराज महाविद्यालय था। इसके अतिरिक्त गणपत रोड पर अनारकली आर्यसमाज थी। ऐसे ही पंजाब के प्रत्येक जिले में डी० ए० वी० स्कूल प्रमुख स्थान रखते थे जिनमें मुलतान और लायलपुर विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। हम इन स्थानों का निरीक्षण करें और वहां के चित्रों तथा प्राप्त विशेष सामग्री का एक संग्राहालय बनावें।

—खेमचन्द महता, सी-३९, निजामुद्दीन पूर्वी, नई दिल्ली

संचालकों के वश में

'एक विनम्र सुझाव' पढ़ा। इस लेख में आप द्वारा दिए गए सुझाव कि डी० ए० वी० शताब्दी समारोह लाहौर में मनाया जाए एक अच्छा सुझाव है। यह बहुत ही अच्छा होगा कि डी० ए० वी० शताब्दी समारोह के संचालक गण आप द्वारा दिए गए सुझाव पर विचार करते हुए, यह शताब्दी समारोह लाहौर में मनाने का निर्णय लेवें।

—राकेश्वर कुमार आर्य कृष्णनगर पुराना अस्पताल कपूरथला

आर्यसमाज शिथिलता छोड़ें

उन्नीसवीं शताब्दी में युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द तथा उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज ने सम्पूर्ण राष्ट्र में नव जागृति का मंत्र फूंक कर, देश की सोती मानवता को अंगड़ाई लेने के लिए बाध्य कर दिया था। फलस्वरूप भारत में स्वाधीनता के महान संग्राम का सूत्रपात हुआ। आर्य समाज से ज्योति प्राप्त कर, नौजवान स्वाधीनता की बलिवेदी पर अपनी हवि चढ़ाने के लिए आतुर हो उठे। आजादी की लड़ाई में अपने प्राणों की आहुति देने वाले अधिकांश क्रान्ति वीरों ने आर्यसमाज से ही प्रेरणा प्राप्त की थी। स्वामी श्रद्धानन्द, लेखराम, गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय प्रभृति मनीषियों के सक्षम नेतृत्व में आर्यसमाज के कदम अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ने लगे। आर्यसमाज समस्त राष्ट्र की आशाओं का पर्याय बन गया।

लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के अनन्तर आर्यसमाज की गति में शिथिलता आ गई। आर्यसमाज में भी पदलोलुप तथा स्वार्थी तत्वों का प्रवेश हो गया। त्याग और परोपकार की भावनाएं लुप्त होने लगीं। आर्यसमाज देश तथा समाज को अभीष्ट दिशा न दे सका। परिणाम स्वरूप आज चारों ओर दानव-प्रवृत्तियों का ताण्डव नर्तन हो रहा है। समाज में विभिन्न प्रकार की भयंकर बुराइयों की जड़ें गहरी होती जा रही हैं, धार्मिक उन्माद बढ़ रहा है। अनैतिकता, अराजकता, अनीति का बोलबाला है।

इन विषम परिस्थितियों में, आर्यसमाज जैसे क्रान्तिकारी आन्दोलन को न केवल पुनः गतिशील ही होना है, अपितु तूफानी गति से आगे बढ़कर मानवता की रक्षा करनी है। वर्तमान में आर्यसमाज को अपनी सारी शक्ति सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध संघर्ष करने में लगानी चाहिए।

—राधेश्याम आर्य एडवोकेट, मुसाफिर खाना, सुलतानपुर।

क्या मुसलमान भारत के नागरिक नहीं ?

संविधान की धारा ५१ में भारतीय नागरिकों के लिए मूलभूत कर्त्तव्यों का निरूपण किया गया है। इसमें सर्वप्रथम कर्त्तव्य यह बताया गया है कि प्रत्येक नागरिक संविधान के अनुसार चलेगा तथा उसके आदर्श व संस्थाओं का सम्मान करेगा। भारत के मुसलमान भारतीय नागरिक हैं या नहीं ? यदि हैं तो संविधान की समस्त धारा-उपधाराओं के प्रति प्रतिबद्धता उनका भी मूलभूत कर्तव्य है। धारा ४४ कोई अपवाद नहीं। मत भूलिए कि इस धारा के लिए मौलाना आजाद व किदवई जैसे नेताओं की पूरी सहमति थी।

समय आ गया है कि देश भर के लिए एक समान नागरिक संहिता लागू की जाए। हां इसे अनिवार्य के स्थान पर प्रारम्भ में ऐच्छिक रखा जा सकता है। जिन कट्टर पंथियों को मजहबी पर्सनल ला छोड़ना कुफ्र लगता हो, उन्हें उससे चिपके रहने की छूट मिली रहे। पर रोशन दिमागों को यह आजादी तो हो कि वे समान सिविल कोड अपना सकें।

अजय कुमार मित्तल, खन्दक मेरठ।

शिक्षा का सर्वोत्तम माध्यम-मातृ भाषा

वर्तमान युग की आवश्यकता को देखते हुए स्कूलों में अन्य विषयों के साथ एक विषय के रूप में अंग्रेजी भी पढ़ाई जाए, वह तो ठीक है, किन्तु छोटे-छोटे बच्चों को प्रारम्भ से ही अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दी जाए वह बात समझ में नहीं आती। सभी शिक्षाविद् यह मानते हैं कि शिक्षा का सर्वोत्तम माध्यम मातृभाषा होता है। अंग्रेजी माध्यम से हम नन्हें बालकों के मस्तिष्क पर अनावश्यक भार डाल रहे हैं तथा उनके मानसिक विकास को अवरुद्ध कर रहे हैं। दुर्भाग्य से आर्यसमाज से सम्बन्धित संस्थाएं भी अंग्रेजी के मोह से अप्रभावित नहीं रह पाईं। दासता के समय में उन्होंने अंग्रेजियत का डटकर सामना किया, किन्तु देश के स्वाधीन हो जाने पर अंग्रेजी की दासता ने इन्हें जकड़ लिया। समाज में क्रान्ति लाने वाले आर्य समाज की यदि यह अवस्था हो जाए तो सामान्यजन से राष्ट्रीय स्वाभिमान बनाए रखने के सम्बन्ध में क्या आशा की जा सकेगी। मैं अंग्रेजी अथवा किसी भी अन्य भाषा का एक विषय के रूप में पढ़ाए जाने का कतई विरोधी नहीं हूं। वह पढ़ाई जाए। किन्तु सामान्य शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से दी जाए, यह हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान की पुकार है तथा हमारी संस्कृति की रक्षा के लिए भी आवश्यक है।

—हरिबाबू कंसल, वसन्त विहार, नई दिल्ली-५७

स्वतंत्रता सेनानी क्यों ?

देव दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की भारत सुधार, वेद प्रचार और वैदिक संस्कृति को जीवित रखने हेतु। उन्होंने आर्य समाज को निष्काम सेवा और खुद्दारी का पाठ पढ़ाया। देव दयानन्द ने आर्यों को मरना सिखलाया परन्तु किसी के आगे भीख मांगना नहीं सिखलाया। कितनी खेद की बात है कि महर्षि का अनुयायी अपनी सेवाओं की मान्यता और पैन्शन के रूप में उन सेवाओं का मुआवजा मांगे। कांग्रेसियों की देखा देखी आर्य समाजी भी स्वतंत्रता सेनानी की मान्यता के इच्छुक हैं। ऐसी भावना आर्य समाजी के लिए अच्छी नहीं लगती। निष्काम सेवा ही तो आर्य समाज का प्राण है।—गोवर्द्धन दास आर्य, नाभा।

आप भी 'आर्यजगत्'-के आजीवन सदस्य बनिए

'आर्यजगत्'—आपका अपना पत्र है। आप जानते हैं कि वैदिक धर्म का सन्देश अधिकतम लोगों तक पहुंचाने का यह सबल साधन है। इसी भावना से आप इसके ग्राहक बनते हैं। हर वर्ष हम आपको वार्षिक शुल्क की याद दिलायें और फिर डाकखाने जाकर आप मनीआर्डर करवायें, यह झंझट है। इस झंझट से बचने का सीधा उपाय यह है कि एक बार २५१ रु० मनीआर्डर चैक या ड्राफ्ट से भेज दीजिए और फिर आजीवन निःशुल्क 'आर्यजगत्' पढ़िये। और हां अब तो हमने यह व्यवस्था भी कर दी है कि यदि 'आर्यजगत्' से आपकी मानसिक सन्तुष्टि और वैचारिक उद्बोधन न हो, तो एक वर्ष के बाद आप चाहे जब अपनी दी हुई पूरी राशि वापिस भी ले सकते हैं। फिर आपको आजीवन सदस्य बनने में बाधा क्या है? आज ही २५१ रु० भेजिये और आगामी सूची में अपना नाम भी छपा हुआ देखिए। इससे पहले ६ जनवरी के अंक में आजीवन सदस्यों की सूची छप चुकी है। उसके बाद बने सदस्यों की सूची यहां दी जा रही है।

702—भगवती सेठ 41/4१, बनारसीदास एस्टेट, लखनऊ रोड, दिल्ली
703—डॉ० रमेश कपूर कोट बाजार, बस्ती शेख, जालन्धर (पंजाब)
704—डा० सुमन प्रभा म० नं०—1, सैक्टर—16, चण्डीगढ
705—श्री आदित्यपाल सिंह एफ—5/52, चार इमली, भोपाल (म० प्र०)
706—अग्रवाल ब्रदर्स सी—147, मानसरोवर गार्डन, निकट-मायापुरी चौक, नई दिल्ली-15
707—श्री आर० के० अरोड़ा 1439/ए, इकबाल मार्किट, पान मण्डी, सदर बाजार, दिल्ली-6
708—श्री डी० एस० वर्मा 156—एन, माडल टाऊन, हिसार—125005
709—श्री एस० के० टण्डन "टण्डन निवास" मिलाप चौक, जालन्धर
710—श्री डी० के० सखूजा जी म० नं०—324, स्ट्रीट नं०-7, सेंट्रल टाऊन, जालन्धर (पंजाब)
711—श्री गिरजा शंकर साव जी, 86/1-बी अहीरी टोला स्ट्रीट, कलकत्ता—5
712—प्रो० चितरंजन दयाल कौशल, शरदोधानम् कुरुक्षेत्र (हरियाणा)
713—श्री सोमदेव पुरी, बी-106, विवेक विहार, दिल्ली-32
714—विष्णु प्लास्टिक्स 279-जी० आई० डी० सी० ओढ़व, अहमदाबाद
715—श्री शान्ति स्वरूप अशोक कुमार आर्य (खरंटा वाले) थोक वस्त्र विक्रेता, हिण्डौन सिटी (राज०)
716—श्री रामस्वरूप आर्य द्वारा अग्रवाल इलैक्ट्रिक स्टोर एण्ड रिपेयरिंग वर्क्स, व्यानिया पाडा हिण्डौन सिटी-322230
717—श्री सत्य प्रकाश आर्य द्वारा कलुवा राम हरगोविंद, बजाजा बाजार, हिण्डौन सिटी (राज०)
718—श्री हरिओम कुमार आर्य द्वारा अग्रवाल जनरल स्टोर, हिण्डौन सिटी
719—श्री व्यवस्थापक जी श्री घूड़मल आर्य वाचनालय, आर्य समाज, हिण्डौन सिटी
720—श्री पटेल गंगाराम कृष्ण भाई द्वारा अम्बिका फर्टिलाईजर्स, मु०-विजय फार्म, दहेगाम, अहमदाबाद
721—श्री जयसिंह राव सार्वजनिक वाचनालय, कोठी चार रास्ता, बडौदरा
722—श्रीमती ऊषा एम० सेठ, 95-स्टेट बैंक कालोनी, जी० टी० रोड० दिल्ली-33
723—श्री सतीश वत्स जी, ए-9, सरिता दर्शन, आश्रम रोड, अहमदाबाद
724—श्री नेकी वत्स 59/349, विजय नगर सोसायटी, नारायणपुरा, अहमदाबाद
725—श्रीमती ललिता सूर्य प्रकाश कपूर, 45-सासून रोड, पूना-1
726—श्री रविशंकर ओम प्रकाश आर्य, गांव-मसनहेल, रोहतक
727—श्री मंत्री आर्य समाज, फतेहाबाद (आगरा) उ०प्र०
728—श्री देवीदास भालदार आर्य ग्रन्थालय, नामदारगंज, पो० अचलपुर सिटी, अमरावती (महा०)
729—श्री गोपाल दास कुमार द्वारा कुमार क्लाथ स्टोर, अशोक नगर, गुना (म०प्र०)
730—श्री मंत्री आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग, पोरबन्दर (गुजरात)
731—कौशल्या भण्डारी 595-कर्म सिंह कालोनी, माल रोड, सैक्टर-3, करनाल (हरियाणा)
732—श्री संजय कुमार पाहवा पुत्र श्री मंदलाल पाहवा, 162-ए, आर्य निवास, गली नं०-4 बापरनगर, मेरठ (उ०प्र०)
733—वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून (उ०प्र०)
734—श्री मंत्री आर्य समाज, पंजाबीबाग, ईस्ट, रोड नं०-33 के पास, नई दिल्ली
735—श्री मंत्री आर्य समाज, अमृत क्षेत्र पो०-निरोणा (कच्छ)
736—श्री इन्द्र मोहन मेहता 3/28, विभो, आगरा (उ० प्र०)
737—श्री दर्शन लाल नागपाल सी-21, ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली-110048
738—श्री राम कुमार शर्मा प्रोजेक्ट इंजीनियर्स, इंजीनियरिंग एण्ड डिवप-लेमैंट, द्वारा-आई० टी० सी० जमशेदपुर (बिहार)
739—श्री नरदेव कुण्डू पुत्र श्री वीरेन्द्र शास्त्री, ग्राम-पो० टिटौली, रोहतक
740—स्नेह नरेश द्वारा वेलानी माउल्ड इण्डस्ट्रीज, रामवाड़ी टैगौर रोड, थाणे (महाराष्ट्र)
741—श्री विमलकांत शर्मा पुत्र श्री चिरंजी लाल शर्मा, 984-तिमारपुर, दिल्ली-7
742—श्री अशोक चाण्डक 203 अम्बुपति बिल्डिंग; चिंचोली मार्ग, 2 रा माला, मलाड़ वैस्ट, बम्बई-64
743—श्री ओम प्रकाश 361-आर्य भवन, सरवाल चौक, जम्मू
744—श्री लक्ष्मी कांत जायसवाल 19-1-डी, गोबा बागान स्ट्रीट, नई मार्किट कलकत्ता-6
745—श्री करसन भाई पटेल 25-मातृ शक्ति बिल्डिंग, सुभाष रोड, डोम्बी, फल (वैस्ट) कल्याण (थाणा)
746—श्री एस० पी० बब्बर 8/4, साऊथ पटेल नगर, नई दिल्ली-8
747—श्रीकृष्णानन्द आचार्य सैक्रेट्री आर्य सैन्ट्रल स्कूल; आर्य कुमार आश्रम, सत्तोम, त्रिवेन्द्रम-4
748—श्री विनोद कुमार वालिया, 500/जी-डी, 2-ए, गली न-7, विश्वास नगर, दिल्ली-32
749—श्री मंत्री जी आर्य समाज, बाजार सीताराम, दिल्ली-110006
750—प्रिंसिपल—डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, फरीदाबाद (हरियाणा)

हिन्दुओं का राजनैतिक घेराव

आर्य संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृति है। भारत की महान् सुपुत्री इन्दिरा की निर्मम हत्या के बाद यह साफ हो गया है कि हमारे दिल और दिमाग खरीदे जा रहे है। गम्भीरता से विदेशी गतिविधियों पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि हिन्दू धर्म का राजनैतिक घेराव हो रहा है। जिस तरह अंग्रेज छद्म वेश मे व्यापारी बनकर राजाओं के रजवाड़ों में प्रवेश कर एक दिन हिन्दुस्तान के मालिक बन गए थे ठीक उसी प्रकार कुछ विदेशी ताकतें विभिन्न रूपों में भारतीय जन जीवन में प्रवेश कर आजादी को खतरे में डालने की कोशिश कर रही हैं। आतंकवाद, स्वर्ण मन्दिर की घटना, इन्दिरा जी की हत्या इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। इसके अतिरिक्त हिन्दुओं के भोलेपन और भावुकता से फायदा उठाकर कुछ गुरुदेव भी सक्रिय हो गए हैं। उनके शिष्यों मे राष्ट्रीयता व धार्मिकता का अन्त एवं गुरुओं के प्रति अगाध श्रद्धा से संदेह की उत्पत्ति होती है।

हमें समय रहते सचेत हो जाना चाहिये। यदि गफलत में रहे तो एक दिन सबको पछताना पड़ेगा चाहे वह आर्य समाजी हो चाहे सनातनी। स्वामी दयानन्द ने सत्य उद्घाटन किया था और आज हिन्दुत्व की रक्षा हेतु ऐसे ही किसी सत्य वक्ता की आवश्यकता है। हिन्दू मात्र का यह परम कर्त्तव्य है कि धर्म की रक्षा के लिये गाय की खाल में छिपे उन भेड़ियों का, तथाकथित भगवानों का, इन गद्दारों का पता लगाए जो देश के सर्वनाश पर तुले हुए हैं।—जयदयाल शर्मा, २०५, रवीन्द्र सरणी, कलकत्ता-७

सामाजिक समाचार

खूंटी में डी० ए० वी० शताब्दी पब्लिक स्कूल

छोटा नागपुर क्षेत्र में स्थित खूंटी उपमण्डल में जनता की मांग पर डी० ए० वी० शताब्दी पब्लिक स्कूल खोला गया है। स्वामी श्रद्धानन्द सेवाश्रम खूंटी में स्थित यह स्कूल एक जुलाई से कार्य प्रारम्भ कर चुका है। पूर्वांचल क्षेत्र के डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल्स के डायरेक्टर प्रि० एन० डी० ग्रोवर का इसमे विशेष हाथ है। इस क्षेत्र में इस प्रकार के स्कूल की बहुत आवश्यकता अनुभव की जा रही थी क्योंकि इसाई स्कूलों में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं पर धीरे धीरे ईसाई सस्कार पड़ रहे थे और आदिवासियो पर मिशनरियो का प्रभाव बढ़ता जा रहा था। दयानन्द फाउन्डेशन ने डी० ए० वी० शताब्दी पब्लिक स्कूल खोलकर उस धारा को उलटने का प्रयास किया है।

—डा० वाचस्पति 'कुलवन्त'

वीर युवक राष्ट्रसेवा के लिए आगे आयें

कण्वाश्रम में आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर

"देश की वर्तमान परिस्थितियो में युवा वर्ग पाश्चात्य संस्कृति के कारण विलासिता की ओर अग्रसर है। आज राष्ट्र में ऐसे नौजवानों की प्रबल आवश्यकता है जो बिना किसी प्रलोभन के नि:स्वार्थ भाव से समाज में अपनी सेवा दें।" ये शब्द प्रसिद्ध पत्रकार व आर्य विद्वान् श्री क्षितीश वेदालंकार ने केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान मे गुरुकुल कण्वाश्रम, (कोटद्वार) में आयोजित विशाल आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर मे कहे।

शिविर मे आर्य सन्यासी स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती, ब्र० विश्वपाल जयन्त, ब्रह्मचारी आर्य नरेश ने युवकों को दीक्षान्त समारोह मे चारित्रिक विकास, सामाजिक कुरीतियो से संघर्ष करने, समाज सेवा की प्रतिज्ञाएं करवाई।

दिल्ली, हरियाणा, फरीदाबाद, हिमाचल प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तर प्रदेश तथा चण्डीगढ़ के 140 युवको ने युवा वर्ष के उपलक्ष्य मे राष्ट्रीय एकता व अखण्डता की रक्षा का व्रत लिया श्री मुन्नालाल, श्री महेन्द्र पाल, श्री वीरेन्द्र, श्री दुर्गेश, श्री धर्मपाल ने युवको को जूडो-कराटे, बॉक्सिंग, कुंग्फू, फ्री-स्टाईल कुश्तियां, लाठी, दण्ड-बैठक का शारीरिक शिक्षण दिया।—चन्द्र मोहन आर्य

महर्षि बलिदान शताब्दी समारोह

पंजाब प्रांतीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 5 और ६ अक्टूबर को अमृतसर में महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह मनाने का निश्चय किया गया इस दिशा में परिषद ने कार्य आरंभ कर दिया है। आयोजकों ने संबंधित संस्थाओं तथा व्यक्तियों से ओरदार शब्दों में अपील की है कि इसकी सफलता के लिए अभी से लग जाएं। अपनी सभी तरह की गतिविधियों की सूचना कार्यालय में अवश्य दे ताकि आगामी गतिविधियों से अवगत कराया जा सके।—वेद प्रकाश आर्य

मातृ-मन्दिर कन्या गुरुकुल में प्रवेश प्रारम्भ

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल, डी० 45/129 नई बस्ती, रामापुरा, वाराणसी में नये वर्ष के लिए प्रवेश खुले हैं। आर्य पद्धति पर आधारित संस्कृत अष्टाध्यायी वेद विज्ञान आदि पाठ्य विषय। पी० एच० डी० तक की सुविधाएं उज्ज्वल भविष्य के लिए अपनी कन्याओं को आज ही प्रवेश दिलायें। उग्रपंथी अत्याचारों से पीड़ित परिवारों की पुत्रियों को नि:शुल्कता में वरीयता दी जायेगी। सम्पर्क करें :—डा० पुष्पावती अध्यक्षा।

गुजरात के पर्वतीय-स्थल पर वैदिक धर्म का प्रचार हो

गुजरात सरकार सापुतारा मे पर्वतीय पर्यटन-स्थल का निर्माण कर रही है। उस स्थान के निकटवर्ती निवासी मूलतया 'डागी' हैं। जिनमे ईसाई और बहाई अपना प्रचार करते हैं। आर्य समाज को वहा एक एकड़ भूमि प्राप्त है जिसमे यज्ञशाला और एक हॉल बना लिया गया है। यदि एक लाख रुपए का और प्रबन्ध हो जाय तो वहां पांच क्वार्टर बन सकते हैं, जिसमें आर्य संन्यासी तथा वानप्रस्थी आकर रहे और वैदिक धर्म का प्रचार करें। वैदिक धर्म मे रुचि रखने वाले दान-दाता श्री आनद प्रिय पंडित आर्य कुमार महासभा, बडौदरा—18 से सम्पर्क स्थापित कर इस धर्म यज्ञ के होता बन सकते हैं।

ईसाई युवती की शुद्धि एवं विवाह

आर्य समाज सुभाषनगर, फैजाबाद के तत्वावधान मे 18 वर्षीय ईसाई युवती कु० रानी थोमस को वैदिक धर्म में संस्कारित कर सुधा आर्या नाम रखा गया तथा 21 वर्षीय वैदिक धर्मी उत्साही युवक राकेश कपूर के साथ वैदिक रीति से उसका विवाह भी किया गया। समाज के प्रधान तथा नगर के प्रतिष्ठित नागरिको ने वर-वधू को आशीर्वाद दिया।

मुसलमान राजपूतों का प्रत्यावर्तन

आर्य समाज उत्तरौला (गोंडा) में 16 जून को 11 राजपूत पुन: वैदिक धर्म में परिवर्तित करके उनका तदनुरूप नाम करण किया गया और उन्होंने यज्ञोपवीत धारण किया। यह कार्य हिन्दू शुद्धि संरक्षणीय समिति हरियाणा के महामंत्री स्वामी सेवानन्द तथा श्री संसार मणि आर्य के प्रयत्नों से सम्भव हो पाया। आर्य समाज के अधिकारियों ने इस कार्य मे बडे उत्साह से भाग लिया।

डा० देवशर्मा संस्कृत विभागाध्यक्ष

आर्य समाज शिक्षा सभा अजमेर ने दयानन्द महाविद्यालय के संस्कृत स्नातकोत्तर विभाग के अध्यक्ष पद पर गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक डा० देवशर्मा वेदालंकार को नियुक्त किया है। श्री वेदालंकार अच्छे वक्ता, उच्चकोटि के विद्वान् तथा अत्यन्त मधुरभाषी हैं। आपके पिता श्री रामनारायण जी शास्त्री (बिन्दकी कानपुर) आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वानों मे से थे।

हरियाणा प्रान्तीय आर्य वीर महासम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरियाणा का प्रान्तीय महासम्मेलन इस वर्ष 20, 21, 22 सितम्बर को कैथल मे होना निश्चित हुआ है। इतमें हरियाणा के लगभग दो हजार आर्य वीर पूर्ण गणवेश में भाग लेंगे तथा राष्ट्र रक्षा एवं सेवा का व्रत लेंगे। इस अवसर पर आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान एवं संगीतकार भी पधारेंगे। युवा आर्य वीर व्यायाम प्रदर्शन करेंगे तथा नगर मे विशाल शोभा यात्रा भी निकाली जायेगी।

सम्मेलन के मुख्य आकर्षण आर्य वीर गोष्ठी, आर्य वीर सम्मेलन, वेद सम्मेलन तथा राष्ट्र सेवा सम्मेलन होंगे।

तूफान पीड़ितों की सहायता

11 मई को उत्कल के सम्बलपुर जनपद के कुछ ग्रामों मे भयकर तूफान आने से अनेक ग्राम-वासी बेघर हो गए तथा खेती का नाश हो गया। उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द सरस्ती की प्रेरणा से तूफान-प्रभावित ग्रामों का सर्वेक्षण किया गया और महात्मा प्रेम प्रकाश के प्रयत्नो से वस्त्र संग्रह किया गया। गुरुकुल आमसेना के ब्रह्मचारियों ने उन ग्रामों मे जाकर छ: सौ से भी अधिक ग्राम-वासियों को वस्त्र वितरित किए।

यज्ञोप वीत समारोह

आर्य समाज नेमदारगंज, नवादा मे पं० देवेन्द्र सत्यार्थी के प्रयत्न से यज्ञोपवीत समारोह आयोजन किया गया। इससे प्रभावित हो कर नौ नए व्यक्तियों ने यज्ञोपवीत धारण किए। इसके निकटवर्ती ग्राम बरेव मे भी प्रचार कार्य किया गया। स्थानीय जनता में इस का अच्छा प्रभाव पड़ा।

आर्य समाज लक्ष्मण छपरा

आर्य समाज लक्ष्मण छपरा, बलिया का प्रथम वार्षिकोत्सव 7 से 9 जून तक समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ जिसमें बिहार तथा उसके बाहर से भी अनेक महोपदेशक तथा भजनोपदेशकों के ओज पूर्ण प्रवचन और भजन हुए। लक्ष्मण छपरा तथा निकटवर्ती स्थानों से पर्याप्त संख्या में पधार कर आर्य भाइयों ने इसका लाभ उठाया।

शाहाबाद मारकण्डा की ओर से दस हजार का दान

इस वर्ष टंकारा में मनाये गये ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष्य में आर्य समाज शाहाबाद मारकण्डा की ओर से एकत्रित कर श्री भानुराम गुप्ता ने दस हजार रु० का बैंक ड्राफ्ट श्री राम नाथ सहगल, मंत्री टंकारा ट्रस्ट को भेंट किया। श्री स[illegible] जी ने स्वतन्त्रता सेनानी और सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री भानुराम गुप्ता, का धन्यवाद करते हुये आशा व्यक्त की कि भविष्य में भी वह इसी तरह का सहयोग प्रदान करते रहेंगे। श्री गुप्ता ने टंकारा यात्रा के दौरान गुरुकुल चित्तौड़गढ़ को एक लाउड स्पीकर भेजने का वचन भी दिया।

श्री जगतराम की सुपुत्री दिवंगत

श्री जगतराम आर्य भजनोपदेशक (आर्य प्रा० सभा हरि०) की विवाहिता नवयुवती सुपुत्री के आकस्मिक दु:खद निधन पर आर्य समाज, प्रेम नगर, करनाल में वेद प्रचार सप्ताह उत्सव के अवसर पर शोक प्रस्ताव पारित करते हुए दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं सद्गति के लिए तथा शोक संतप्त परिवार को इस दारुण-दुख को सहन करने की सामर्थ्य प्रदान करने के लिए भगवान से प्रार्थना की गई। —शमशेर कुमार आर्य, मंत्री

स्व० कुंवर चाँदकरण शारदा की स्मृति में बाल विद्यालय बनाने का सुझाव

अजमेर नगर आर्य समाज के तत्वावधान में देशभक्त स्व० कुंवर चांदकरण शारदा की 97वीं जयन्ती 4 जून को दयानन्द आश्रम मे वैद्यराज पं० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी की अध्यक्षता मे समारोह पूर्वक सम्पन्न हुई। इस अवसर पर अनेक व्यक्तियों ने श्री शारदा जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी समाज सेवा और देश भक्ति के कार्यों का उल्लेख किया। इनमें श्री आर्य भिक्षु जी, प्रो० धर्मवीर श्री नाथूसिंह तंवर मुख्य थे। कुमारी सरला शारदा ने उनके जीवन की अनेक घटनाएं संस्मरणों के रूप मे सुनाई। श्री पन्नालाल बाहेती ने उन्हें काव्यात्मक श्रद्धांजलि अर्पित की। अन्त में अध्यक्ष महोदय ने उनकी स्मृति में आदर्श बाल विद्यालय की स्थापना का सुझाव दिया।

—धर्मसिंह कोठारी

यह झूठ कब तक......

(पृष्ठ ४ का शेष)

ईरान में उल्टी बात

यहा इस तथ्य पर भी ध्यान देना आवश्यक है कि जहा हमारे विद्यालयों में यह पढाया जा रहा है कि ईरान से आर्य लोग आकर भारत में बसे वहा ईरान के स्कूलों मे यह पढाया जाता रहा है कि भारत से आर्य लोग जाकर ईरान में बसे। इस प्रसग मे यह उद्धरण द्रष्टव्य है—

"चन्द हजार साल पेश अज जमाना माजीरा बुजुर्गी अज निजाद आर्या अज कोह हाय कफ काज गुजिस्त: बर सर जमीने कि इमरोज मस्कने मास्त कदम निहादन्द। ब चू आबो हवाय ई सर जमीरा मुआफिक तब अ खुद यापतन्द दरी जा मस्कने गुजीदन्द व आरा बनाम खेश ईरान खयादन्द।"

—देखो जुगराफिया पंज किताअ बनाम तदरीस दरसाल पंजुम इब्तदाई सफा ७८, कालम १, मतब अ दरसनहि तेहरान सन् हिजरी १३०६, सीन अव्वल व चहारम अज तर्फ विजारत मुआरिफ व शरशुद।

इस विषय में अतिरिक्त जानकारी प्राप्त करने का बार २ अनुरोध करने पर भी, खेद है, डा० वेद प्रताप वैदिक का सहयोग हमे न मिल सका। तथापि इतना ज्ञातव्य है कि ईरान के शाह अब तक भी अपने नाम के साथ 'आर्यमेहर' (मेहर का अर्थ सूर्य है) की उपाधि लगाते रहे है, क्योकि वे अपने को सूर्यवंशी आर्य मानते थे।

गड़बड़ी की शुरुआत

द्रविड़, कोल, भील, संथाल आदि को भारत के मूल निवासी होने और आर्यो के ईरान से आकर यहा बसने को कल्पना का आधार भौगोलिक सकेत की प्रतीति कराने वाले कतिपय वैदिक शब्द हैं। इस अनर्थ की जड़ मे कुछ जान बूझ कर और कुछ अनजाने मे किया गया दूषित वेदार्थ है। वस्तुत. इस मान्यता का कोई आधार कही उपलब्ध नही है। इस विषय मे 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के ३१ अक्तूबर १९७७ के अक मे प्रकाशित यह समाचार अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है—

'There is no conclusive evidence of Aryan migration into India from outside, according to Indian historians, linguists, and archaeologists who participated in the recent international seminar in Dushambe, the capital of Soviet Republic of Tadjikistan Dr N R Bannerjee, Director of the National Museum and a member of the Indian delegation said that Indian scholars made out this point as the seminar and the papers presented by them were very much appreciated. The seminar was held under the aegies of UNESCO to discuss the problem of ethnic movement during the second millenium B C. Ninety delegates from the Soviet Union, West Germany, Iran, Pakistan and India attended The seven member Indian delegation was led by Prof B B Lal, Director of the Indian Institute of Advanced studies It was pointed out by Indian scholars that the archaeological material associated with Aryans in different resions and periods in India did not show any clear links with the archaeological survival of the Aryans in Afghanistan, Iran or central Asia"

भाव यह है कि भारत सरकार का रूस में सम्पन्न अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी मे प्रतिनिधित्व करने वाले इतिहासविदो, भाषावैज्ञानिको तथा पुरातत्ववेत्ताओ के सात सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल ने आर्यो के ईरान, अफगानिस्तान, मध्य एशिया आदि से आकर भारत मे बस जाने विषयक मत का एकमत होकर खण्डन किया। निश्चय ही इतिहासविदों के इस निष्कर्ष से आर्यो के भारत के मूल निवासी होने विषयक मान्यता को बल मिला है।

शिक्षा मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त से भेट करके मैने एक ज्ञापन देकर शिक्षा विभाग मे संबन्धित कई महत्त्वपूर्ण विषयो पर बातचीत को। किन्तु जिस विषय पर मैने विस्तार से बाते की वह इस लेख मे प्रस्तुत किया है। मैने सबसे अधिक बल इस बात पर दिया कि जब स्वय भारत सरकार द्वारा देश भर के विश्वविद्यालयों मे से चुने हुए इतिहासविदो की समिति ने यह घोषणा कर दी कि आर्य लोग भारत के मूल निवासी हैं और उनके बाहर से आने का कोई प्रमाण नही है तो इतिहास की पुस्तकों मे से विदेशी शासको द्वारा स्थापित मिथ्या कल्पना को क्यो नही निकाला जाता? यह प्रसन्नता की बात है कि शिक्षा मन्त्री ने सारी बाते सुन कर बाद मे विचार करने का आश्वासन न देकर, तत्काल संबद्ध अधिकारियो से मेरी भेट कराके आवश्यक कार्यवाही करने का आदेश दे दिया। सबद्ध अधिकारियो ने भी उसी समय कार्यवाही चालू करदी।

पता-१४/१६ डी माडल टाउन दिल्ली-९

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन (द० अफ्रीका) सम्बंधी सूचनाएं

दक्षिण अफ्रीका में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में सम्मिलित होने वाले दर्शकों के लिए ३० दिन की बजाय ९० दिन ठहरने की अनुमति भारत सरकार से पाने की दिशा में सार्वदेशिक सभा कार्य-रत्त रही करेगी। वैसे विदेश जाने वालों को पासपोर्ट में सामान्यतया दक्षिण अफ्रीका जाने की अनुमति नही दी जाती। फिर भी सरकार से पत्र व्यवहार हो रहा है।

२. वीसा के प्रार्थना पत्र का फार्म ठीक तरह से भरने पर, उनके कथनानुसार विशेष कठिनाई की संभावना नही है। (आवेदन-पत्र के इच्छुक वीसा फार्म की कापी सभा से प्राप्त कर सकते हैं।)

३ (१) वीसा फार्म के साथ पासपोर्ट के पहले चार पृष्ठो की फोटोस्टेट कापी, जिसमे पासपोर्ट नैम्बर, व्यक्ति की पहचान सार्वदेशिक सभा में प्रवेश करने की अनुमति आदि हो, वह भेजना जरूरी है। पासपोर्ट भेजने की आवश्यकता नहीं है। हर एक व्यक्ति के दो फोटोग्राफ होने चाहिए जिसके पीछे उसके हस्ताक्षर स्पष्ट अक्षरो में अंग्रेजी में पूरा नाम तथा जन्म (तारीख लिखी हो।)

(२) ट्रेवल एजेन्ट से जॉच करके पीतज्वर तथा हैजे के जरूरी सर्टिफिकेट वीसा के फार्म के साथ भेजे जाय।

(३) पास पोर्ट में साउथ अफ्रीका प्रवेश पर निषेध लिखा रहता है। इसको रद्द करवाना आवेदक के लिए जरूरी है। अगर डर्बन पहुंचने पर पासपोर्ट फीस भरनी होगी तो आपकी ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा साउथ-अफ्रीका फीस भर देगी।

४. भारत सरकार से दक्षिण अफ्रीका में प्रवेश की अनुमति दिलाने में संभावित विलम्ब को देखकर सुझाव दिया जाता है कि पासपोर्ट के पहले चार पृष्ठों की फोटो कापी एवं वीसा फार्म पहले भेज देना चाहिये। दक्षिण अफ्रीकी सरकार वीसा फार्म पर यह मानकर स्वीकृति देती है कि वहां रहने के समय तक पासपोर्ट पर भारत सरकार की अनुमति मिल जायेगी।

खतरों का सामना करने के लिए वैदिक विचार धारा

"स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत मे निरन्तर नैतिक मूल्यो का ह्रास होता जा रहा है। जीवन मे प्रत्येक क्षेत्र मे व्याप्त भ्रष्टाचार से देश की सुरक्षा, एकता तथा अखण्डता को खतरा उत्पन्न हो रहा है। इस खतरे का सामना हम सच्चरित्रता, नैतिकता एव धार्मिक निष्ठा से ही कर सकते है।" ये शब्द—प्रो० रत्नसिंह ने डी० ए० वी० कालिज चण्डीगढ द्वारा आयोजित नैतिक प्रशिक्षण शिविर मनाली मे छात्रो को सम्बोधित करते हुए कहे। उन्होने कहा कि मत मतान्तर वालो ने धर्म के नाम पर जो पाखण्ड रचा है, आर्य समाज ने आरम्भ से ही उस का घोर विरोध किया है। बाह्य आडम्बर का नाम धर्म नही है। वैशेषिक दर्शन के अनुसार जिस आचरण से सासारिक ऐश्वर्य और अभ्युदय की प्राप्ति होती है, उस आचरण को धर्म कहते है। मनुष्य का विकास जिसके द्वारा हो उसे धर्म कहते है।

पजाब में आतंकवादियो द्वारा निरपराध नागरिको की हत्या का उल्लेख करते हुए उन्होने कहा कि आज इन आतंकवादियो की करतूतों से अनेक धर्म स्थल गुरुद्वारे अनाचार के अड्डे बने हुए हैं। इन व्यक्तियों के आचरण को देखकर ग्लानि व घृणा उत्पन्न होती है। इसमे दोष धर्म का नही वरन् धर्म के नाम पर होने वाले ढोंग का है। इस स्थिति मे आर्य समाज की यह जिम्मेदारी है कि वह जनता के सामने धर्म का वास्तविक रूप प्रस्तुत करे और देश के सगठन को सुदृढ करने मे योग प्रदान करे। इस दिशा मे हमारे डी० ए० वी० कालिज के छात्र बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है।

इस शिविर के समापन समारोह मे बोलते हुए डी० ए० वी० कालिज चण्डीगढ के प्राचार्य श्री कृष्ण सिह आर्य ने कहा कि इस शिविर के माध्यम से यदि मेरे कालिज के 10 विद्यार्थी भी आर्य समाज के सिद्धातो के प्रति आकर्षित होकर आर्य समाज द्वारा चलाये जा रहे जन उपयोगी कार्यो मे सक्रिय भाग लेना आरम्भ करते है तो मैं इस शिविर के आयोजन को सफल समझूगा। मुझे इस बात पर गर्व है कि डी० ए० वी० सस्थाओ के छात्रो का चरित्र व राष्ट्र के प्रति निष्ठा अन्य संस्थाओ के छात्रो के इन गुणों से श्रेष्ठ है और इसका प्रमुख कारण हमारी सस्थाओं मे दी जाने वाली वैदिक धर्म शिक्षा है। मेरा पूर्ण विश्वास है कि देश की एकता व अखण्डता के लिए वैदिक विचार धारा आवश्यक है।

यू० १०३/८१ लायसेंस टु पोस्ट विदाउट प्री-पेमेन्ट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११६३/७२ डी० सी० 409

अपने बालक को ?

गुरुकुल चि[illegible] ...श कराइये

गुरुकुल चित्तौड़गढ़ अरावली की सुन्दर पहाड़ियो की तलहटी मे गम्भीरी नदी के तट पर अवस्थित है। शिक्षा यहां नि.शुल्क है, गुरुकुल के विशाल भवनों में आवासोचित सभी सुविधाएं भी नि.शुल्क हैं। कम व्यय मे दुग्ध व भोजनादि की उत्तम व्यवस्था के साथ आश्रम प्रणाली यहां की विशेषता है। सुयोग्य एव विद्वान् गुरुओ की देखरेख मे बालको का सर्वाङ्गीण विकास मुखरित होता है। वेद, वेदाङ्गों सस्कृत साहित्य, व्याकरण, दर्शन, उपनिषद् आदि की पढ़ाई को यहा मुख्यतया दी जाती है।

यह संस्था सस्कृत शिक्षा राजस्थान से सहायता व मान्यता प्राप्त है। यहां का बालक बाहर के किसी भी विद्यालय मे यहा के प्रमाण पत्र से प्रवेश पाने की पात्रता रखता है। शिक्षा सत्र 1, जुलाई से प्रारम्भ होता है। प्रवेश के समय बालक की आयु 8 वर्ष से 12 वर्ष तक की होनी चाहिए। बड़ी आयु के बालक को आचार्य की अनुमति से स्वीकार किया जा सकता है। प्रवेश पाने वाला छात्र शरीर से स्वस्थ होना चाहिए।

पहली से आठवी तक संस्कृत (विशेष) के साथ अर्वाचीन सभी विषय पाठयक्रम मे हैं। बनारस सस्कृत विश्व विद्यालय की आर्ष पद्धति पर आधारित प्राचीन व्याकरण तथा वेदनैरुक्त प्रक्रिया से मध्यमा, शास्त्री व आचार्य तक की परीक्षा की व्यवस्था है। परीक्षा परिणाम अति उत्तम रहा है। मध्यमा, शास्त्री व आचार्य कक्षा के छात्रो के लिए छात्रवृत्ति का प्रावधान भी है।

गुरुकुल मे सभी प्रान्तो के बालक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं बिना किसी भेद भाव के अमीर गरीब सबके साथ भोजनादि में तुल्य व्यवहार किया जाता है। संस्था आप सभी से पूर्ण सहयोग की कामना करती है। प्रवेश [illegible] के लिए कृपया पत्र व्यवहार व सम्पर्क कीजिये—

प्रतापसिंह शूरजी वल्लभदास, प्रधान — यज्ञदेव वेदवागीश, मुख्याधिष्ठाता

आवश्यक सूचना

—अमरस्वामी सरस्वती—

मैंने एक विज्ञप्ति पहले भी दी थी कि मेरे पास जीवन भर की एकत्रित की हुई सैद्धान्तिक सामग्री है, उसका सग्रह "शास्त्रार्थ संग्रह" के रूप में छप रहा है। जिसमे हमारे सभी पूर्वज शास्त्रार्थ कर्त्ताओ के शास्त्रार्थ सग्रहीत होगें। ऐसी उत्तम सामग्री वाला ग्रन्थ आने वाले समय में आप दिन मे चिराग लेकर भी ढूंढना चाहेगे तो नही मिलेगा। मेरी आयु इस समय 92 वर्ष की हो चली है, जीवन का कोई भरोसा नही है। कहीं यह सामग्री मेरे शरीर के साथ ही न चली जाये, इस लिए अपने जीवन काल मे ही समाज को सौंपना चाहता हू। आप सभी लोगो से मेरा पुन अनुरोध है कि आप इस ग्रथ के अधिक से अधिक ग्राहक बनें व बनावें, एवं सामर्थ्यानुसार इस ज्ञान यज्ञ मे अपना आर्थिक सहयोग भिजवावें।

इस ग्रन्थ का मूल्य एक सौ रुपया होगा। ग्रन्थ दिसम्बर 1985 तक छाप कर दे दिया जावेगा। परन्तु जो सज्जन सितम्बर मास तक अपनी प्रतियां सुरक्षित करा लेंगे उन्हे पचास रुपये मे दिया जाएगा। चैक या ड्राफ्ट "अमर स्वामी — गाजियाबाद" के नाम निम्न कार्यालय के पते पर भेजें—

पता— प्रबन्धक शास्त्रार्थ संग्रह कार्यालय, 1058, विवेकानन्दनगर गाजियाबाद 201001 (उ०प्र०)

स्व० बापू साहेब बाघमारे

श्री बापू साहेब बाघमारे के आकस्मिक निधन का समाचार पढ़कर हृदय को गहरा आघात पहुंचा। वे वैदिक सिद्धान्तों की वैज्ञानिक व्याख्या बड़ी सरल भाषा मे प्रस्तुत करते थे। पुलिस विभाग की सरकारी नौकरी में रहते हुए भी लगभग प्रतिदिन शिक्षण संस्थाओं मे जाकर वैदिक धर्म का प्रचार किया करते थे। सेवा निवृत्त होने के बाद एक दिन आराम से घर पर नहीं बैठे। वैदिक धर्म प्रचार की लगन ने उन्हे घर न बैठने दिया।

एक वर्ष पूर्व उनके ज्येष्ठ भ्राता श्री शेषराव बाघमारे का देहान्त हुआ था जिसके कारण मराठवाड़ा के आर्य समाजों को अपार क्षति पहुंची थी। और अब बापू साहेब के निधन से तो मराठवाड़ा की आर्य समाजें अनाथ हो गई हैं। निकट भविष्य में इस अपार क्षति की पूर्ति की सम्भावना प्रतीत नहीं होती। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति व शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे।

—प्रो० रत्नसिंह, बी० 21, गांधी-नगर, गाजियाबाद।

कविराज बनवारीलाल शादां नहीं रहे

हमे यह सूचित करते हुए अपार दु.ख हो रहा है कि आर्य समाज मौडल बस्ती, दिल्ली के भूतपूर्व प्रधान एवं प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता कविराज बनवारी लाल "शादां" का 15 जून की रात्रि मे आकस्मिक निधन हो गया। आर्य समाज मौडल बस्ती के साप्ताहिक सत्संग में दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी आत्मा की शांति के लिए भगवान से प्रार्थना की गई।

—धर्म देव चक्रवर्ती

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स ७११७/१८ पहाड़ी धीरज, (फोन : 516518) दिल्ली से छपवा कर कार्यालय, 'आर्य जगत्, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली। फोन (343718)

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य-२५ रुपये | विदेश में ३० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४८, अंक ३२, रविवार, ४ अगस्त, १९८५ | दूरभाष : ३४३७१८

आजीवन सदस्य-२५१ रु० | इस अंक का मूल्य — ६० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८५, दयानन्दाब्द १६० | अधिक श्रावण कृष्णा ३, २०४२

सरकार और अकालियों में समझौता

चण्डीगढ़ पंजाब को, हिन्दी भाषी प्रदेश हरियाणा को

राजस्थान और हरियाणा असंतुष्ट : सितम्बर में चुनाव की सम्भावना

नई दिल्ली, 24 जुलाई । चार मर्मान्तक वर्षों के उपरान्त पंजाब में चलने वाला तूफान का दौर समाप्त हो गया है । दो दिन की लगातार बातचीत के बाद केन्द्र सरकार और अकाली-दल के मध्य समझौते पर हस्ताक्षर हो गए ।

इस समझौते के अन्तर्गत चंडीगढ़ पंजाब को दिया जायेगा और उस के बदले में पंजाब के हिन्दी-भाषी क्षेत्र हरियाणा को दिए जाएंगे और उसके लिए एक आयोग गठित किया जायेगा । यह काम 26 जनवरी 1986 तक पूर्ण हो जायेगा । केन्द्र और राज्यों के संबंधों पर विचार करने के लिए गठित सरकारिया आयोग अकाली दल के आनन्दपुर साहब प्रस्ताव पर भी विचार करेगा । इसी प्रकार रंगनाथ मिश्र आयोग जो नवम्बर 1984 में दिल्ली में हुए दंगों की जांच कर रहा है वह अब कानपुर और बोकारो में हुए दंगों की भी जांच करेगा । नदी-जल विवाद उच्चतम न्यायाधीश की अध्यक्षता में स्थापित न्यायाधिकरण द्वारा 6 मास की अवधि के भीतर निपटा दिया जायेगा । इस बीच पंजाब, हरियाणा और राजस्थान के कृषक 1 जुलाई 1985 को जितने पानी का प्रयोग कर रहे थे, उतना वे करते रहेंगे । 1 अगस्त 1982 के बाद पंजाब आंदोलन के सिलसिले में मृत निर्दोष व्यक्तियों के परिवारों को अनुदान राशि दी जायेगी । जिन लोगों को सेना से निलम्बित कर दिया गया है उनके पुनर्वास के प्रयत्न किए जायेंगे । सेना में योग्यता के आधार पर सभी नागरिकों को समान रूपेण भरती किया जायेगा । वर्तमान में गठित विशेष अदालतें केवल देश के विरुद्ध युद्ध छेड़ने और विमान-अपहरण के अपराधों पर ही विचार करेंगी । एक अखिल भारतीय गुरुद्वारा कानून बनाया जायेगा । इसके लिए सभी सम्बद्ध पक्षों की सहमति से और संवैधानिक आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद संसद में विधेयक लाया जायेगा । सतलुज-यमुना नहर का निर्माण 15 अगस्त 1986 तक पूरा किया जायेगा ।

सम्पादकीय देखिए—
'बोलबाला, मगर किसका ?'

इस समझौते से संत हरचन्दसिंह लोंगोवाल अकाली राजनीति में एक साहसी नेता के रूप में उभरे हैं । भूतपूर्व मुख्यमंत्री प्रकाशसिंह बादल तथा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के अध्यक्ष श्री गुरुचरण सिंह तोहरा की स्थिति दुर्बल हुई है । श्री बादल और तोहरा ने इस समझौते पर किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया प्रकट नहीं की है जबकि संयुक्त अकालीदल के अध्यक्ष स० जोगिन्दर सिंह ने इस समझौते को अस्वीकार करने की घोषणा कर दी है ।

अलगाववादियों की हार

विभिन्न राजनीतिक दलों तथा संगठनों एवं प्रमुख व्यक्तियों और प्रशासकों ने समझौते का स्वागत करते हुए इसे अलगाववादियों की हार बताया है । समझौते का स्वागत करने वालों में प्रमुख हैं—सर्वश्री बख्शी जगदेवसिंह—दिल्ली अकालीदल के प्रवक्ता, जोगिन्दर सिंह साहनी—चण्डीगढ़ अकाली दल के अध्यक्ष, बलदेव प्रकाश—पंजाब भाजपा के अध्यक्ष, श्री राजेश्वरराव—भाकपा के महासचिव, विक्रम सावरकर—हिन्दू महासभा के अध्यक्ष, शहाबुद्दीन और बापू कालदाते—जनता पार्टी के महासचिव, तरविन्दर सिंह मरवाहा—नेशनल सिख यूथ फैडरेशन आफ इण्डिया के अध्यक्ष, रणवीर सिंह रीन—खालसा बिरादरी के महासचिव । सभी केन्द्रीय मंत्रियों, प्रदेशों के मुख्य मंत्रियों, राज्यपालों एवं राजनीतिक दलों के प्रमुख नेताओं ने समझौते का स्वागत किया है । विदेशों से भी समझौते के स्वागत के समाचार हैं । पश्चिमी देशों के सिखों के प्रमुख आध्यात्मिक नेता योगी भजन ने न्यूयार्क में इस का हार्दिक स्वागत करते हुए कहा—मैं इसी बात की प्रतीक्षा कर रहा था । उन्होंने प्रधान मंत्री का धन्यवाद किया । उत्तरी-अमेरिका अकालीदल के अध्यक्ष डा० सुखमिन्दर सिंह ने भी समझौते का स्वागत किया । अमेरिका के प्रमुख सिखों और सिख संगठनों ने गंगा सिंह ढिल्लों आदि की भर्त्सना की है

सितम्बर में चुनाव की सम्भावना

पंजाब में वर्तमान में प्रचलित राष्ट्रपति शासन की अवधि 6 अक्टूबर को समाप्त हो रही है । उसे जारी रखने के लिए संविधान में संशोधन करना आवश्यक होगा । इस स्थिति में निर्वाचन करा लेना ही उपयुक्त समझा जा रहा है । केन्द्रीय सरकार जहां समय पर चुनाव संपन्न कराने का विश्वास व्यक्त करती है वहां चुनाव आयोग ने भी अपनी ओर से पूरी तैयारी बताई है । राज्यपाल श्री अर्जुनसिंह का कहना है कि 15 अगस्त तक राज्य प्रशासन चुनाव आयोग को अपने निर्णय से अवगत करा देगा ।

हरियाणा और राजस्थान में असन्तोष

हरियाणा के मुख्य मंत्री ने यद्यपि इस समझौते पर हर्ष व्यक्त किया है तदपि विरोधी दलों के नेता डा० मंगल सैन और चौ० देवीलाल ने इसे हरियाणा के साथ अन्याय बताया है । चौ० देवीलाल का कहना था कि यदि हरियाणा को फाजिल्का और अबोहर नहीं सौंपे गए तो विरोधी दलों के सदस्य विधान सभा और लोक सभा से त्याग पत्र दे देंगे और प्रबल आन्दोलन करेंगे । इसी प्रकार राजस्थान में भी प्रतिक्रिया विपरीत ही हुई है । स्वयं राजस्थान के मुख्य मंत्री ने नदी-जल विवाद और सीमा विवाद पर अपनी विपरीत प्रतिक्रिया प्रकट कर प्रदेश की ओर से असन्तोष व्यक्त किया है ।

दानवीर चौ० प्रतापसिंह दिवंगत

आर्य जनता को सूचित करते हुए बड़ा दुःख हो रहा है कि हरियाणा आर्य जगत के प्रसिद्ध दानवीर आर्य नेता श्री चौधरी प्रताप सिंह जी का 83 की आयु में 27 जुलाई शनिवार को प्रात. 5 बजे उनके निवास स्थान 57 एल माडल टाउन करनाल में स्वर्गवास हो गया । वे हरियाणा प्रादेशिक उपसभा के प्रधान थे । यह सूचना मिलते ही दिल्ली प्रादेशिक सभा के कार्यालय में सबने एकत्र होकर उनको श्रद्धांजलि अर्पित की और दिल्ली से सूचना पाते ही आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मंत्री—श्री रामनाथ सहगल, आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज, "आर्य जगत्" के सम्पादक श्री क्षितीश कुमार वेदालंकार और टंकारा सहायक समिति के मंत्री श्री रामशरणदास आहूजा करनाल रवाना हो गए और उनकी अन्त्येष्टि में सम्मिलित हुए । अंत्येष्टि उसी दिन सायं 4 बजे हुई जिसमें करनाल एवं अन्य स्थानों के सैकड़ों व्यक्ति सम्मिलित हुए । उनकी स्मृति में शोक सभा 8 अगस्त बृहस्पतिवार को "जरनैल कोठी" करनाल में सायं 3 बजे होगी ।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

परामर्शदाता-अमरस्वामी सरस्वती | सम्पादक-क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक-रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

कर्म करना ही जीवन है, निष्क्रियता ही मृत्यु है

—अखिल विनय—

आलसी और प्रमादी व्यक्ति मे कभी इच्छा शक्ति जागृत नही हो सकती और इच्छा शक्ति के बिना कर्म-शक्ति का उदय नही हो सकता। टैगोर कहते हैं कि जब हमारा जन्मदाता ईश्वर प्रति क्षण कर्म करने मे तल्लीन रहता है तो आदमी भी अपने मालिक की इच्छानुसार चेतनशील रहते हुए कर्मयोगी बने। कर्म से जीवन की आन-बान-शान कायम है। कर्म से ही स्वर्ग मिलता है। कर्म करने का नाम जीवन है तो निष्क्रियता मृत्यु है। उर्दू कवि ने ठीक ही कहा है.—

तलातम जिन्दगी है तो
सकू को मौत कहते है।
जिन्हें जीना है जिन्दगी में
वे कब खामोश रहते हैं॥

रूसी विद्वान् टालस्टाय के निम्न शब्द ध्यान देने योग्य हैं।—"मनुष्य को आलस्य पसन्द है और बिना किसी तरह का शारीरिक कष्ट उठाये वह अपनी अभिलाषाओ को पूरा करना चाहता है। लेकिन उसका अथवा सम्पूर्ण जाति का जीवन केवल परिश्रम और कष्ट सहिष्णुता से कायम रह सकता है।" इसी प्रकार डॉ० एल्फ्रेड एडलर ने कहा था "जीवन का अर्थ है सम्पूर्णता मे अंश प्रदान करना जीवन का अर्थ है सहयोग। जीवन की हर समस्या को मानव समाज की चौखट के अन्दर कसना चाहिए, जिस से मानव की प्रगति हो सके।"

इसके लिए, हम क्या करे? यह प्रश्न स्वाभाविक है। जब तक तुम्हारा शरीर पचमहाभूतो मे विलीन न हो जाए तब तक तुम निरन्तर परिश्रम करके, पसीना बहा कर अपनी जीविका चलाओ। युवावस्था परिश्रम और उद्यम की अवस्था है, आलस्य की नही। चरित्र को उज्ज्वल बनाने के लिए स्वाभिमान की भावना अनिवार्य है और वह तभी उत्पन्न होगी जब हम बाहुबल से कुछ पैदा करेंगे। आत्म निर्भरता से चरित्र निर्माण का आरम्भ होता है।

हमारी सबसे बड़ी कमजोरी है, किसी काम के न करने का बहाना ढूढना। इतिहास बताता है कि इस दुनिया मे वे लोग ही कुछ कर पाये हैं जिनमे इच्छाशक्ति की दृढता थी। जो सचमुच कुछ करना चाहते थे। गरीब से गरीब व्यक्ति अपने पुरुषार्थ से विद्वान् बन गये, नेता बने, धनवान बने और ससार को समृद्ध बना सके। बहाना ढूंढने वाले व्यक्ति को कभी भी अवसर नही मिलता उसे यह विश्वास नहीं होता कि उसे भी उन्नति का अवसर मिल सकता है। आरामतलब सुविधा ढूढने वाला व्यक्ति कभी भी अपना सुधार नही कर सकता। बहानेबाज अपनी सूझ-बूझ की शक्ति को क्षीण कर देता है और उससे कर्तृत्व-शक्ति धीरे-धीरे समाप्त होने लगती है। चार्ल्स फ्रास्ट नामक एक मोची रोज एक घन्टा अध्ययन करके सयुक्त राष्ट्र अमरीका का एक महान् गणितज्ञ बन गया। नेपोलियन तथा जान हटर केवल चार घण्टे सोते थे। महान् आविष्कारक टामस एडीसन केवल तीन घण्टे सोता था।

आलसी व्यक्ति शीघ्र निर्णय नहीं ले सकता। वह अनिश्चितता का शिकार बन जाता है और यह उसके विकास को अवरुद्ध कर देती है। आलसी व्यक्ति तब तक हर एक समस्या को टालता जाता है जब तक कि समस्या इतनी उग्र नही हो जाती कि सिवा निराशा और निरुत्साह के और कुछ नही बचता। आलस्य का एकमात्र इलाज है—यह प्रतिज्ञा करना कि इसी क्षण से आलस्य-विरोधी तत्परता, उत्साह कर्मठता को अपनाऊंगा। निश्चित समय पर उठूंगा। कार्यालय जाऊंगा या जो भी कार्यक्रम निश्चित कर लिया, उसे पूरा करूंगा। कोई काम कल के लिए नही छोड़ूगा—आज का काम आज पूरा करूगा।

आप अपना रास्ता बनाइए। अमेरिका के भाग्य विधाता अब्राहम लिंकन अत्यन्त गरीब घर के थे, स्कूल मे शिक्षा तक नही मिली थी, पर अपने कार्यों से वे मानव-जाति की प्रशसा के पात्र बन सके। जेम्स ए० गार्फील्ड सत्ताइस वर्ष की उम्र मे अमेरिका के राष्ट्रपति बने कैसे? अपनी शक्ति और योग्यता के बल पर।

गैलिलियो का पिता उसे डाक्टर बनाना चहाता था, पर उसे तो एक गणितज्ञ बनना था। वह शरीर शास्त्र की पुस्तको के नीचे गणित की पुस्तकें छिपा कर पढ़ता था। फल यह हुआ कि अठारह वर्ष की उम्र में ही उसने पेंडुलम के सिद्धांत का आविष्कार किया। आप रास्ता बनाइए—अपनी रुचि के अनुसार अपना काम ढूढ़िए। कोई मनुष्य जो कुछ भी बन सकता है, वह आप भी बन सकते हैं। अब एक भारतीय अन्तरिक्ष यात्रा पर जा चुका है। यह गर्व और गौरव का विषय है। किन्तु आप उसकी इच्छा-शक्ति का अनुमान लगायें। अस्सी भारतीय दक्षिण गंगा पर (दक्षिण ध्रुव पर) भारतीय शिविर की स्थापना के लिए गये जिनमे दो महिलाएं भी थी। इन पंक्तियों के लेखक को खुशी है कि इनमें से एक डॉ० कुमारी अदिति पत उनकी छात्रा रही है।

स्वेट मार्डेन ने कहा था, "प्रकृति मनुष्य को बनाने के लिए कौन सी कीमत नही चुकाती? वह अपनी रचना को त्रुटिहीन बनाने के लिए उसे अनुशासन के कठोरतम विद्यालय मे रखेगी, उसे वर्षों तक अनुभव के महान् विश्वविद्यालय मे प्रेरणा देगी।" आप भी प्रकृति से पाठ पढ़ें। प्रकृति सब के लिए प्रेरणा का स्रोत है, सब के लिए ज्ञानदायिनी, शीतलधारा है, सब के लिए जीवनदायिनी है, सबके हृदय को स्पर्श करने वाली और प्रेरणा देने वाली है।

जीवन मे भय, चिंता, निराशा से दूर रहे। प्रकृति की गोद में चिंता कैसी? प्रकृति स्वयं हमारा ध्यान रखेगी। प्रकृति ने हमे बुद्धि दी है, मन दिया है, भावनाए दी हैं। प्रकृति से बढ कर हमारा हितैषी कोई नही है। बर्टेण्ड रसेल ने कहा था "मूलभूत सुख और आनन्द सब से अधिक इस बात पर निर्भर है कि आप मे दूसरो के प्रति कितनी मैत्री भावना और ममता है।" इस तराजू पर आप अपने को तोल कर देखिएगा।

डी० ए० वी० विद्यालयों में आर्यसमाज की स्थापना अनिवार्य

आपको विदित है, कि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली का जो वार्षिक अधिवेशन 26 मई 1985 को आर्य समाज (अनारकली) मे हुआ था, उसमे यह निश्चय हुआ था कि भारत भर मे हमारे जितने भी डी० ए० वी० के विद्यालय हैं, उन सब मे आर्य समाज का होना आवश्यक है। उस विद्यालय मे जो आर्य समाज होगी, विद्यालय के सभी कर्मचारी आर्य समाज के सदस्य होगे। इस पत्र के साथ आपको आर्य समाज की सदस्यता के 50 फार्म भिजवाये जा रहे हैं। आप अपने विद्यालय का एक स्टैम्प बना लेवे जो निम्न प्रकार का होगा:—

"आर्य समाज
डी० ए० वी०............"

ये स्टैम्प आप सब फार्मो पर लगा दे तथा अपने स्टाफ के सब सदस्यो और कर्मचारियो से ये फार्म भरवाले। प्रिंसिपल महोदय 5/ रु०, टीचर एवं कार्यालय लिपिक आदि 2/- रु० तथा सेवक, चौकीदार व अन्य कर्मचारी 1/- रु० मासिक चन्दा

कालिज कमेटी की ओर से सब प्रिंसिपलों को निर्देश

देवे। ये फार्म डुप्लीकेट भरे जायेंगे। एक फार्म आपके यहाँ रहेगा एवं एक फार्म उपर्युक्त सभा के पते पर भिजवा देवें।

आपके विद्यालय का जहा अकाउन्ट हो, वहा आर्य समाज का अकाउण्ट भी खोल लेवें और एक अन्तरग सभा बना लेवे तथा उसकी बैठक कर लेवे। जिसमे ये प्रस्ताव करें कि—"बैंक अकाउण्ट को प्रधान, मत्री एवं कोषाध्यक्ष मे से कोई दो व्यक्ति आपरेट कर सकेंगे।"

सप्ताह मे एक बार आपको अपने विद्यालय की आर्य समाज में किसी भी दिन साप्ताहिक सत्सग करना होगा। जिसमे आपके स्टाफ से तथा बाहर से किसी विद्वान का उपदेश होगा। हम इस सम्बन्ध में आर्य समाज के नियम उपनियम तथा साप्ताहिक-सत्संग में क्या-क्या होना चाहिए आदि साहित्य जल्दी ही भिजवा रहे हैं। आपको इस सबध मे जो भी कठिनाई हो, हमसे सम्पर्क करके बतावें ताकि उसे दूर किया जा सके।

आपके विद्यालय मे जो धर्म शिक्षा का टीचर होगा, वही आपकी आर्य समाज का पुरोहित होगा। आप हर मास चन्दा एकत्र करके बेंक मे जमा करेंगे। साप्ताहिक सत्संग मे जो खर्चा आयेगा, वह उसी राशि मे से कर सकेंगे।

भवदीय
दरबारीलाल
कार्यकर्ता प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा
एवं
संगठन सचिव-डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी

सुभाषित

तपस्वियों की वाणी

नैता ते देवा अददुस्तुभ्यं नृपते अत्तवे ।
मा ब्राह्मणस्य राजन्य गां जिघत्सो अनाद्याम् ॥
अक्षद्रुग्धो राजन्यः पाप आत्मपराजितः ।
स ब्राह्मणस्य गामद्यात् अद्य जीवानि मा श्वः ॥

हे राजन् ! देवताओं ने ब्राह्मण की यह वाणी रूपी गौ तुझे इसलिए नही दी है कि तू इसे खा डाले। हे क्षत्र शक्ति युक्त राजन् ! तू इस त्यागी तपस्वी विद्वान् की वाणी का निरादर मत कर, इसको व्यर्थ नष्ट न होने दे। जो राजा अजितेन्द्रिय और अपनी आत्मा से ही पराजित होता है, वही राष्ट्रभक्त निस्वार्थ विद्वानों की वाणी का निरादर करता है। वह नहीं जानता कि आज भले ही वह जीवित है, पर कल नही रहेगा।

—अथर्ववेद, ब्रह्मगवीसूक्त

बोलबाला, मगर किसका ?

24 जुलाई का दिन भारत के इतिहास में विशेष रूप से स्मरणीय रहेगा क्योंकि उस दिन एक ऐसी त्रासदी कामदी (कॉमेडी) मे बदल गई जिस त्रासदी (ट्रेजेडी) ने पिछले 4 साल से केवल पंजाब को ही नही, बल्कि सारे देश को उद्वेलित कर रखा था। अकालियों के साथ प्रधानमंत्री ने जो समझौता किया उसका देश के अधिकांश क्षेत्रों मे स्वागत ही हुआ है। हरियाणा और राजस्थान में विसवादी स्वर भी काफी उग्र रूप में सुनाई दिये, परन्तु आशा करनी चाहिए कि धीरे-धीरे वह पंचम स्वर भी मल्हार में परिणत भले ही न हो, परन्तु उसमें से कर्ण-कटुता का अंश समाप्त हो जायेगा। यह दुराशा भी हो सकती है। परन्तु जन साधारण की समझदारी पर हमें कभी शंका नहीं रही। इसलिए विश्वास है कि प्रधानमंत्री ने हरियाणा और राजस्थान के मुख्यमंत्रियों को जो आश्वासन दिया है कि इन दोनों राज्यो के हितों की अवहेलना नही की जायेगी, वह आश्वासन पूरा होगा और इन दोनों राज्यो के विरोधी दल देश के व्यापक हित में इतनी मुश्किल से सामने आई समझदारी को अपने दलीय हितो की वेदी पर बलि नही चढ़ायेंगे।

यह आरोप सही है कि जिस प्रकार का समझौता हुआ है वह अब से तीन साल पहले भी हो सकता था। पर जो काम तीन साल में नही हुआ वह अब दो दिनो मे हो गया, यह क्या अपने-आप मे कोई कम चमत्कार की बात है ? असल मे पिछले सालो की घटनाओ ने सरकार को और अकालियों को दोनो को आत्म विश्लेषण के लिए मजबूर किया। घटनाओं की गर्मी ने दोनों तरफ का लोहा पिघलाया और यह पिघला हुआ गर्म लोहा एक-जुट हो गया। इससे उन लोगो को भले ही निराशा हुई हो जो यह माने बैठे थे कि अकालियो और सरकार मे कभी समझौता नही होगा, क्योंकि अकाली कभी ब्लू स्टार आपरेशन को माफ नही करेगे और सरकार कभी इन्दिरा गाधी की हत्या को माफ नहीं करेगी। परन्तु संसार में अनहोनी घटनायें भी होती ही हैं और उनका होना देश और समाज हित के लिए आवश्यक भी होता है। सबसे भारी निराशा आन्तकवादियों को, भिंडरांवाले के बाप बाबा जोगिन्दर सिंह को और बादल और तोहड़ा को हुई जो यह समझते थे कि हमारी इच्छा के बिना अकाली दल का पत्ता भी नही हिल सकता।

सच बात तो यह है कि पंजाब की इस भयकर त्रासदी मे मूल कारण अकाली नेताओं की आपसी होड, व्यक्तिगत नेतागिरी की हविश और एक दूसरे को नीचा दिखाने की जोड-तोड की नीति रहा है। राग और द्वेष से अभिभूत इन संकीर्ण-हृदय अकाली नेताओं ने अपने निकृष्ट व्यक्तिगत स्वर्थो के लिए सारे पंजाब को आग की भट्ठी में झोंक दिया। ये नेता लोग आपसी प्रतिद्वंद्विता की खातिर कितने निचले स्तर तक उतर सकते हैं, उसका प्रमाण सात वरिष्ठ अकाली नेताओं द्वारा दिया गया वह वक्तव्य है जिससे उनकी पूरी कलई खुल जाती है। ये सात वरिष्ठ नेता हैं—सर्व श्री आत्मासिंह, उजागरसिंह सेखवा प्रकाशसिंह मजीठा, मोहिन्द्र सिंह साहियावाला, रणजीत सिंह, ब्रह्मपुरा, इकबालसिंह ढिल्लो और गुरुदेव सिंह शान्त। इन नेताओं ने अपने बयान मे कहा है कि लोगोवाल और तोहड़ा ने प्रकाशसिंह बादल को, जो उस समय पंजाब के मुख्यमंत्री थे, राजनीतिक दृष्टि से नीचा दिखाने के लिए अकाली विधायको को त्याग-पत्र देने के लिए प्रेरित किया और इन नेताओं ने ही बादल के जनाधार को समाप्त करने के लिए और उन्हें हिन्दुओं से दूर करने के लिए संविधान के 25वें अनुच्छेद के विरुद्ध चलाये गये आन्दोलन का नेतृत्व करने के लिए विवश किया। यह एक अत्यन्त गम्भीर आरोप है। क्या इससे यह स्पष्ट नहीं होता कि हिन्दू और सिखो के बीच जो खाई पैदा हुई वह इन अकाली नेताओ के आपसी कलह की उपज है। आज तक अकाली नेता हमेशा यह कहते रहे कि कांग्रेस ही हिन्दू और सिखो के बीच दरार पैदा करत रही है। परन्तु इस बयान से स्पष्ट हो जाता है कि दरार की जड कहाँ हैं। निशाना था प्रकाशसिंह बादल, बेड़ा गर्क हुआ पंजाब का और हिन्दू और सिखों के बीच में खाई को और चौड़ा करने के लिए आतकवाद का दुधारा चला।

इस काण्ड का एक दुखद पहलू यह भी है कि बादल जैसा हिन्दू सिख सौहार्द का प्रतीक, राष्ट्रीय अखडता का उपासक और सब अकाली नेताओ से अधिक असाम्प्रदायिक समझा जाने वाला सुशिक्षित व्यक्ति भी आत्मिक बल की दृष्टि से इतना कमजोर निकला कि सब कुछ समझते हुए भी अपने विरुद्ध दुरभिसधि करने वालों के सामने कभी डटकर खडा होने की हिम्मत नहीं कर सका। यही मानसिक कमजोरी अकाली नेताओं की सबसे बड़ी कमी रही। लौंगोवाल और तोहड़ा भी इसी आत्म बल की कमी के कारण भिंडरावाले का खुलकर विरोध नहीं कर सके। बादल और तोहड़ा अब भी दुविधा मे हैं और समझौते का स्वागत करने को तैयार नहीं हैं क्योंकि उनको अपने ऊपर विश्वास नही है। लोगोवाल की विशेषता यही है कि अब तक भले ही वे भी अपनी आत्मिक बल की हीनता का परिचय देते रहे हो, पर जब पहली बार उन्होने अपने मन की दुविधा को परे फेंक कर आत्म-बल का परिचय दिया तो समझौता होते देर नही लगी आखिर अकालियों मे भी तर्क सगत बात समझने और कहनेवाले लोगो की कमी नहीं है। पर वे स्वयं मृत्यु के डर से आतंकवादियोके समक्ष हमेशा साष्टाग दण्डवत की मुद्रा मे खडे होते रहे या मौन साधे रहे। उधर आतकवाद का भस्मासुर बढ़ता गया। लौंगोवाल ने पहली बार तोहड़ा के विरोध मे वक्तव्य दिया। तोहडा कहते रह गये कि—भारतीय संविधान के अन्तर्गत और आनन्दपुर साहब प्रस्ताव को माने बिना कोई बात नहीं हो सकती। परन्तु लौंगोवाल ने खुलकर भारतीय सविधान के अन्तर्गत समस्या का समाधान तलाश करने की बात पर जोर दिया। लौंगोवाल के इसी आत्म बल ने यह समझौता करने मे सहायक भूमिका अदा की।

सम्पादकीयम्

अकाली नेताओ की यह संकीर्णता अभी समाप्त नही हुई है। बाबा जोगिंदर सिंह ने और सिख छात्र संघ ने जिस तरह समझौते का विरोध किया है उससे यह भी स्पष्ट है कि आतंकवाद का विषधर चाहे जब फिर फण फैला सकता है। सरकार तो अपनी ओर से सेना और पुलिस के बल द्वारा पहले भी उस विषधर के फण को कुचलने मे तत्पर थी। पर अकाली नेताओ की कमजोरी के कारण धर्म, राजनीति और समाज मे आतकवादियो के प्रति जो सहानुभूति का वातावरण पैदा हो गया, उसी ने देश को त्रासदी मे झोका। अब भी आतकवादियो से निपटने मे लोगोवाल की दृढ़ता ही काम आयेगी। अगर उन्होने कही कमजोरी दिखाई तो अकाली नेताओ की यह आपसी होड़ उनको निगल जायेगी और अगर वे दृढ संकल्प के साथ डटे रहे तो सारे देश का अपूर्व विश्वास प्राप्त करेंगे। इसलिए सबसे कड़ी परीक्षा अब श्री लोंगोवाल की ही है।

पंजाब मे चुनाव होंगे, इसकी पूरी सभावना है। चुनावो में जहां राजनीतिक दल एक-दूसरे पर कीचड उछालेंगे, वहाँ अकाली नेता भी अपनी आपसी प्रतिद्वंद्विता की होड मे न जाने किस स्तर तक उतर आवें। श्री बादल दो बार मुख्यमन्त्री रह चुके हैं और पंजाब के बड़े जाट किसानो का वे प्रतिनिधित्व करते है। प्रशासन व नौकरशाही पर भी उनका काफी असर है। दूसरी तरफ पार्टी के सगठन पर तोहड़ा की पकड सबसे अधिक है। तभी तो वे जेल मे रहते हुए भी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के अध्यक्ष चुन लिये गये। चुनाव शुरू होने पर हो सकता है लोगोवाल बरनाला को आगे बढ़ाये और बादल और तोहडा अपने आपको या अपने प्रतिनिधियो को घोडो पर बिठाये। अकालियों की यह भी विशेषता रही है कि जब सरकार के विरोध मे लडते हैं, तब उनमे एकता हो जाती है और जब सत्ता का प्रश्न आता है तो उसके बंटवारे पर उनमे लड़ाई-झगड़ा होता है। अपनी इस फितरत पर अकाली नेता कब विजय प्राप्त कर सकेंगे, यह कहा नहीं जा सकता।

अनेक लोग पूछते हैं कि यह समझौता कब तक चलेगा ? जो अकालियो के पुराने इतिहास को जानते हैं, उनके लिए यह प्रश्न स्वाभाविक है। क्योंकि किसी भी समझौते से मुकर जाना और कोइ भी नया मुद्दा निकालकर उस पर धर्मयुद्ध के नाम से आंदोलन शुरू कर देना उनका इतिहास रहा है। लोगों को अब भी शका है कि उनकी मानसिकता मे कोई परिवर्तन आया है। लोगोवाल का नरम दल और बाबा जोगिन्दर सिंह का गरम दल ये दोनो एक ही लक्ष्य से प्रेरित हैं। समझौते से जो मिल रहा है, उसे ले लो और उसके बाद नरम और गरम दोनो तरीको से खालिस्तान की प्राप्ति के लिए आगे बढो। यही उनकी रणनीति है। इसमे सदेह नही कि इस प्रकार का अविश्वास अकालियो के इतिहास की विरासत है। इसलिए हो सकता है कि इस समय जो खुशगवार सुखद वातावरण बना है और पंजाब मे शान्ति और अमन-चैन की जो आशा बधी है, वह किसी दिन व्यर्थ ही हो जाय। परन्तु हम फिर जनता की समझदारी मे विश्वास की बात दुहराते हैं। स्वयं लोगोवाल भी राजशक्ति के बजाय लोकशक्ति मे आस्था प्रकट कर चुके हैं। अब उस लोकशक्ति को ही जगाने का काम लोंगोवाल को करना है। अगर लोगोवाल उसमे सफल हो गये, तो पजाब मे अन्धकार को चीरकर प्रकाश की जो नई किरण दिखाई पड़ी है, उसका सबसे बड़ा सेहरा उन्ही के सिर बन्धेगा। हम आशा करते हैं कि अब सिखों के बोलबाले के बजाय आपसी सद्भाव और देश की एकता और अखण्डता का बोलबाला शुरू होगा। पिछले 4 साल से पजाब इसी बोलबाले की आखे बिछाये प्रतीक्षा कर रहा है।

निर्धन कन्याओं की समस्या

आर्य युवक बिना दहेज के विवाह की प्रतिज्ञा करें

—पिशोरी लाल प्रेम—

महर्षि स्वामी दयानन्द के आगमन से पूर्व स्त्री जाति अति दीन हीन अवस्थाओं मे थी। दयालु दयानन्द ने स्त्री जाति का उद्धार किया और उसे पुरुषो के समान अधिकार दिलाए। परन्तु आज यदि किसी निर्धन के घर कन्या का जन्म होता है तो वह चाहे प्रत्यक्ष रूप में कितनी भी प्रसन्नता क्यों न प्रकट करे, किन्तु अन्दर से उसका मन दु:खी होता है। कन्या के जन्म के साथ ही कन्या के अन्धकारमय भविष्य की चिन्ता आरंभ हो जाती है।

उसके दु:ख का कारण है दहेज की बुरी रस्म। धनवान की कन्या से विवाह करने के लिये तो कई नवयुवक लालायित होते हैं, क्योंकि उन्हें धनवान के घर से अधिक दहेज मिलने की आशा होती है। परन्तु निर्धन की कन्या से विवाह करने के लिये कोई भी युवक तैयार नही होता। यदि किसी प्रकार कोई युवक तैयार भी हो जाये तो उसके माता-पिता नही मानते। युवक के माता-पिता यह नहीं देखते कि कन्या सुन्दर, सुशील पढ़ी-लिखी, गुणवान और विदुषी, गृह कार्यों मे चतुर, सेवा भाव और सरल सुभाव वाली मधुर भाषी है। अपितु यह देखते हैं कि इसके साथ दहेज कितना मिलेगा। भले ही कन्या का गुण, कर्म, स्वभाव अच्छा न हो, उसमें किसी प्रकार की योग्यता न हो, परन्तु उसके साथ दहेज अधिक से अधिक मिलना चाहिये।

भारत में धनवान व्यक्ति तो बहुत कम हैं। अधिक सख्या तो निर्धन व्यक्तियों की है। जो क्लर्क, छोटे दुकानदार मजदूर, किसान आदि हैं। ये लोग तो अपनी रोटी कपड़े आदि का गुजारा भी कठिनता से चलाते है। ये निर्धन लोग अपनी कन्याओं के विवाह के लिये हजारो रुपये दहेज के लिये कहा से लाएं। वे भी चाहते हैं कि अपनी प्रिय पुत्रियो को अधिक दहेज दे। परन्तु जब अपना ही गुजारा कठिन हो तो दहेज के लिये धन कहां से लाएं।

लगभग तीस वर्ष पहिले की बात है। एक सज्जन पुरुष की आठ लड़कियां थी और केवल एक ही छोटा-सा लड़का था जो कि प्राथमिक पाठशाला में पढ़ रहा था। उसकी बड़ी लड़की अच्छी शिक्षित थी। छोटी लड़कियां भी शिक्षा पा रही थीं। वह व्यक्ति अच्छे कुल का था परन्तु उसकी आर्थिक अवस्था अच्छी नही थी। दहेज का प्रबन्ध कर पाना उसके लिये अत्यंत कठिन था। इस लिये उसे अपनी लड़कियों के लिये योग्य वर मिलना भी कठिन लग रहा था एक बार उस सज्जन पुरुष ने बहुत दु:खी होकर कहा कि अब में हिन्दू समाज से निराश हो गया हू। अब तो मुझे ईसाई बन कर अपनी लड़कियो के विवाह ईसाई लड़कों से करने पड़ेंगे। काश कि हिन्दू समाज में इस प्रकार दहेज की यह बद रस्म न होती जिसके कारण हजारों लाखों निर्धन व्यक्ति चिन्ता सागर मे डूबे रहते हैं।

भारत में बहुत अधिक संख्या में ऐसे सफेद पोश व्यक्ति हैं जिनके घरों में कन्यायें विवाह योग्य हो गई हैं। उन्होंने बड़े लाड़ चाव से इन कन्याओं का पालन पोषण किया है। भारी कष्ट सह कर इन्हें अच्छी शिक्षा भी दिलाई है। किंतु अब इनके लिये संसार में निराशा ही निराशा है, इन्हे योग्य वर नहीं मिल रहे। मिलें भी कैसे, जब कि मैट्रिक पास ऐसा युवक भी जिसकी अपनी तनख्वाह पांच छ: सौ रुपये से अधिक नही है, उसका दिमाग भी आकाश पर चढा रहता है। वह भी हजारों रुपये का दहेज चाहता है। लोगों ने विवाह जैसे पवित्र सम्बन्ध को भी व्यापार समझ रखा है। जो अधिक बोली दे उसकी कन्या से विवाह के लिये तैयार हो जाते हैं। अर्थात् हमारे निर्लज्ज युवक अपने आपको नीलाम करने पर तुले हुए हैं। मनुष्य जाति का इससे अधिक पतन और क्या हो सकता है?

कन्या की योग्यता और गुणों की ओर ध्यान न देकर जो लोग केवल धन का लोभ करते हैं। वे कभी सुखी नही हो सकते। इन्हें यह याद रखना चाहिये कि ईश्वर न्यायकारी है। वह इन्हें इस अत्याचार का फल अवश्य देगा। इनके घर भी लड़कियो का जन्म हो सकता है। वे भी दहेज के कारण इसी प्रकार दु:खी हो सकते हैं।

साधारण जनता का तो कहना ही क्या, अच्छे विद्वान, समाज सुधारक और कई आर्य समाजी भी दहेज का लोभ करते हैं जो अपने आप को महर्षि दयानन्द का अनुयायी कहते हैं और उसका अभिमान भी करते हैं। जिस दयानन्द के त्याग की प्रशंसा सारा संसार करता है उसी के अनुयायी कई आर्य समाजी किसी आर्य कन्या को केवल इसी लिये ठुकरा देते हैं कि उस कन्या के साथ अधिक दहेज मिलने की आशा नही होती। ऐसे आर्य समाजी घोर पाप करते है। ऐसा घोर पाप जिसका प्रायश्चित नहीं हो सकता है। इस से अधिक निर्लज्जता की बात और क्या होगी। एक आर्य युवक दहेज का लोभ क्यों करे? क्या वह इतना निकम्मा और निखट्टू है कि वह अपने निर्वाह के लिये स्वयं धन नहीं कमा सकता? आर्य वीरों को तो इतना पुरुषार्थी होना चाहिए कि स्वयं कमा कर दूसरो को खिलाएं, निर्धनों की सहायता करें, न कि स्वयं दूसरों की कमाई की तमन्ना करें। और फिर दहेज के धन और सामान से आयु भर का निर्वाह तो नही हो सकता। फिर यह घोर पाप क्यों किया जाए? क्यों न दहेज का लोभ त्याग कर पुण्य के भागी बनें।

आर्य समाज आगे बढ़े

भारत के कोने-कोने में इस दहेज की कुप्रथा के कारण जिस प्रकार अनेक देवियों का बलिदान हो रहा है, मैं इन का वर्णन नहीं करना चाहता। ऐसी दर्दनाक और खून के आसू रुलाने वाली घटनाओ को लिख कर मै पाठको के मन को दु:खी नही करना चाहता। मैं तो इस लेख में आर्य समाज के बड़े-बड़े विद्वानो और नेताओं की सेवा में यह निवेदन करना चाहता हूं कि जिस प्रकार आर्य समाज सैकड़ों संस्थायें चला रहा है—जिन पर लाखों करोड़ो रुपये खर्च हो रहा है, इसी प्रकार आर्य समाज को बड़े-बड़े नगरो मे ऐसी संस्थायें भी खोल देनी चाहियें जो निर्धन कन्याओं के विवाह का प्रबन्ध करें जिससे ऐसी कन्याओं को भी योग्य वर मिल सकें जिनके माता-पिता दहेज नहीं सकते।

मेरे विचार से अन्य संस्थाओं की अपेक्षा इन संस्थाओं के द्वारा साधारण जनता आर्य समाज की ओर अधिक आकर्षित होगी। इस प्रकार यह वैदिक विवाह सभा, आर्य विवाह सभा, या आदर्श विवाह सभा (नाम चाहे कुछ भी रखें) यह सभा युवक और युवतियों के गुण कर्म स्वभाव के अनुसार कम से कम खर्च में, बिना दहेज के, सादे और सरल ढंग से विवाह करवाए। वर्तमान समय में आर्य समाज के कर्तव्यों में यह भी एक आवश्यक कर्तव्य होना चाहिए, जिससे हिजारों लाखों सफेद पोश लोगों की चिन्ता और दु:ख दूर हो सकें।

कानून पर्याप्त नहीं

भारत सरकार ने तो दहेज विरोधी कानून बना रखा है। परन्तु इस कानून से भी कुछ सुधार की आशा नहीं है। क्योंकि जिनको दहेज देना पड़ता है वे कानून का सहारा नहीं ले सकते। उन्हें यह भय रहता है कि यदि हमने कानून का सहारा लिया तो हमारी लड़कियों को सुसराल वाले अधिक तंग करेंगे, इसलिये वे चुप रहते हैं। इसलिए दहेज लेने वालों को कानून का कोई भय नहीं रहता और वह निरंकुश होकर अपनी मन मानी करते हैं। इस लिये इस विषय में सुधार करने के लिये, अर्थात दहेज प्रथा को बन्द करने के लिये, ऐसी सभाओं या संस्थाओं का होना अत्यंत आवश्यक है जो बिना दहेज के विवाह करवाये।

अन्त में मैं भारत के समस्त आर्य वीरों से नम्र निवेदन करना चाहता हूं कि आप सच्चे अर्थों में आर्य वीर बन कर दिखाएं। जहां आपको अविद्या, अभाव और अन्याय के विरुद्ध लड़ना है, ईसाइयों के गलत प्रचार को रोक कर निर्धन निर्बल हिन्दुओ को ईसाई बनने से रोकना है, भारत से गौ हत्या को पूर्णत: बन्द कराना है, हर प्रकार के भ्रष्टाचार को मिटाना है, सत्य सनातन वैदिक धर्म का प्रचार करना है, अन्य कई प्रकार की कुरीतियों और अन्ध विश्वासों को दूर करना है, वहां दहेज की इस भयंकर कुप्रथा को भी मिटाना आपका परम कर्तव्य है। आप इस कुप्रथा के विरुद्ध न केवल संघर्ष करें अपितु स्वयं भी लोभ को त्याग कर यह प्रतिज्ञा करें कि वे बिना दहेज के निर्धन कन्याओं से विवाह करेंगे और माता-पिता भाई बहिन अथवा अन्य सम्बन्धियो की ओर से चाहे कितना भी आग्रह क्यों न हो, परन्तु आप दृढ़ता से दहेज न लेने की प्रतिज्ञा को पूरा करेंगे।

पता—पो० ददाहू, रेणुका,
जि० सिरमौर (हिमाचल प्रदेश)

■

राष्ट्रीय शिक्षा-नीति के आधारभूत तत्व

—डा० जयदत्त उप्रेती, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, कुमाऊं विश्व-विद्यालय, अल्मोड़ा

राष्ट्रीय शिक्षापद्धति का उद्देश्य यह होना चाहिये जो भारत राष्ट्र के प्रति प्रेम, समर्पण, एकत्व, सुरक्षा और देशभक्ति की ऐसी भावना शिक्षार्थियों में जगा सके, जिससे राष्ट्र सब प्रकार से शक्तिशाली, सम्पन्न और उन्नत हो। साथ ही, भारत का पुरातन आध्यात्मिक और सांस्कृतिक गौरव क्षीण न होने पावे, प्रत्युत उत्तरोत्तर उत्कर्ष को प्राप्त हो।

उक्त उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये राष्ट्रीय शिक्षा-नीति में निम्नांकित बातें आधारभूत तत्व के रूप मे स्वीकार की जानी चाहिये:—

1—प्रत्येक भारतवासी के लिए एक समान शिक्षा-पद्धति हो। यह पद्धति समाज और राष्ट्र की उन्नति की भावना लिये हुये व्यक्ति की शारीरिक, बौद्धिक और आत्मिक उन्नति मैं विशेषत., और आर्थिक उन्नति में सामान्यतः, सहायक होनी चाहिये।

शारीरिक उन्नति का तात्पर्य है—ब्रह्मचर्य, संयम, सात्विक भोजन तथा व्यायामादि के द्वारा शरीर को सर्वांग दृढ, स्वस्थ और नीरोग रखने के उपाय बताये जाय और तदनुसार आचरण कराया जाय।

बौद्धिक उन्नति का तात्पर्य है—सामान्य व्यवहारोपयोगी विषयों की जानकारी तो अनिवार्यतया सबको मिले ही, परन्तु मेधावी तथा विशेष प्रतिभाशाली छात्रों को अपनी रुचि के अनुकूल विषय में अधिकाधिक ज्ञान और योग्यता अर्जित करने मे विशेष सहायता दी जाये।

आत्मिक उन्नति का तात्पर्य है—मनुष्य के जीवन की सफलता न केवल अपने कल्याण मे निहित है, अपितु सबके कल्याण में है—इस प्रकार की भावना का उदय ही आत्मिक उन्नति का प्रथम सोपान है। अतः ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिये जो प्राणिमात्र के प्रति दया और प्रेम की भावना जगावे, परस्पर प्रेम, सौहार्द, मैत्री, और बन्धुत्व की भावना जगा सके। सब प्रकार की हिंसा, चाहे वह मनुष्यों से सम्बन्धित हो अथवा अन्य पशु, आदि प्राणियों से रोकी जा सके। अपने प्राणों की रक्षा के महत्व के समान दूसरे के प्राणों की रक्षा के महत्व की भावना बढ़ाई जाए।

2—सह-शिक्षा की प्रथा दोषपूर्ण होने से समाप्त की जानी चाहिये और कक्षा पांच से आगे बालक और बालिकाओं की शिक्षा की पृथक् पृथक् व्यवस्था होनी चाहिये।

3—बालिकाओं को अन्य सामान्य शिक्षा के साथ गृह-कार्य जैसे, पाकशाला, सिलाई, बुनाई, कढ़ाई, संगीत, आदि तथा आयुर्वेद सम्बन्धी व्यावहारिक ज्ञान विशेषतः दिया जाना चाहिये।

4—आठ या दस वर्ष की आयु के बाद अथवा कक्षा पांच उत्तीर्ण होने के अनन्तर आगे की शिक्षा के लिये बालक तथा बालिकाओं के निवासार्थ विद्यालय के समीप ही छात्रावास होना चाहिये जिसमें उनके रहन-सहन, खान-पान, चाल-चलन, आदि की अच्छी तरह देखभाल हो। उन छात्रावासों मे यथासम्भव प्रातः सायं सन्ध्या-प्रार्थना, हवन की व्यवस्था होनी चाहिये, जिससे विद्यार्थियों मे चारित्रिक गुणों का विकास हो सके। यम-नियमों का पालन छात्र के भावी जीवन के लिये लाभप्रद है।

5—प्रत्येक विद्यालय और महाविद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों और छात्राओं की वेषभूषा एक समान होनी चाहिये। इससे धनी-निर्धन के भेद को दूर करने मे बड़ी सहायता मिलती है। दूसरा, सहपाठियों में पारस्परिक प्रेम बढ़ता है।

6—विविध कक्षाओं मे प्रवेश, परीक्षा, अध्ययन-अध्यापन, आदि के सम्बन्ध मे समान नीति-नियम होने चाहिये। किसी भी छात्र के साथ किसी भी प्रकार का भेद या पक्षपात अनुचित है। आरक्षण की प्रथा समाप्त होनी चाहिये। योग्यता तथा प्रतिभा को महत्व दिया जाना चाहिये, न कि कुल-विशेष को। हां, निर्धनों, अनाथों, और असहायों, की चाहे वे किसी भी कुल में क्यों न पैदा हुये हों, सब प्रकार से सहायता की जानी चाहिये।

7—वर्तमान मे महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय स्तर पर घटित होने वाले छात्र-संघो पर रोक लगा दी जानी चाहिये। क्योंकि इन छात्र-संघो से प्रायः रचनात्मक कार्य कम और विध्वंसात्मक कार्य ही अधिक होते हैं। आये दिन राजनीतिक कलह होते हैं, जिससे विद्यालयो का शान्त वातावरण भंग होता है और अन्ततः अध्ययन-अध्यापन पर कुप्रभाव पडता है। यदि उनका किसी प्रकार का संगठन वांछनीय हो तो शैक्षिक संगठन अथवा विषयानुसार परिषदें होनी चाहिये, जिनमे साहित्यिक, सांस्कृतिक अथवा बौद्धिक और शारीरिक उन्नति सम्बन्धी कार्यक्रम हो।

8—छात्रावासो के सभी प्रयोगशालाओं का भी प्रबन्ध होना चाहिये, जिससे विद्यार्थियो को दुग्ध, घृत, आदि पदार्थ उपलब्ध हो सकें।

9—व्यावसायिक क्षेत्र मे शीघ्र जाने के इच्छुक छात्रों की कक्षा 10 या 12 की परीक्षा के साथ साथ रुचियों की जांच की जानी चाहिये, उनके पश्चात् उन्हें उस व्यावसायिक अथवा प्राविधिक प्रशिक्षण मे भेजा जाए। उच्चशिक्षा मे प्रवेश नियन्त्रित कर उसमे केवल योग्य प्रतिभाशाली छात्रों को ही प्रवेश देना चाहिये, जिससे शिक्षा का स्तर उन्नत हो सके।

10—योग्य छात्रों को अपनी बुद्धि और प्रतिभा का पूर्ण विकास करने का अवसर मिलना चाहिये। कला, विज्ञान, प्रविधि, साहित्य, कृषि, वाणिज्य, क्रीड़ा, अनुसन्धान, आदि विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढने के पूर्ण अवसर होनहार छात्रों को देने चाहिये।

11—समस्त देश में राष्ट्रभाषा हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन होना चाहिये। देश को एकसूत्र मे बांधने के लिये समूचे राष्ट्र की एक सम्पर्क भाषा नितान्त आवश्यक है। सारे देश की एक भाषा उसकी एकता की सूचक है। हिन्दी के साथ साथ भारत की गौरवमयी भाषा संस्कृत का अध्ययन भी माध्यमिक स्तर तक अनिवार्य तथा उसके आगे वैकल्पिक किया जाना चाहिये। तृतीय स्थान पर प्रादेशिक भाषा और चतुर्थ स्थान पर उर्दू, अंग्रेजी तथा अन्य विदेशीय भाषायें वैकल्पिक अध्ययन के विषय होने चाहिये।

12—भारतवर्ष का इतिहास, विशेष रूप से प्राचीनकाल से सम्बन्धित, नयेरूप से लिखा जाना आवश्यक है, जिससे छात्रों

तुम्हारे पद चिन्हों पर

—विश्वमित्र गुप्त—

मिटाने जगती का तमतोम
धरा पर उतरा दिव्य प्रकाश।
गहन तम को एकाकी चीर
तमस का जिसने किया विनाश॥

× × ×

राष्ट्र सेवा के व्रत में लीन, राष्ट्र का करने को उद्धार।
किया दलितों का बेड़ापार, शक्ति लेकर के अपरम्पार॥
देव! उस दयानन्द पर आज, चढ़ाता हूं श्रद्धा फूल।
शुद्धि का देकर हमको मंत्र, हटाये आर्य, पन्थ के शूल॥
हुए तुम शंकर के अवतार, हलाहल पिया अनेकों बार।
सत्य पर चले अभय निर्द्वन्द, भीत कर सकी नही तलवार॥
तुम्हींने स्वतंत्रता का मंत्र, फूंक कर किया शक्ति संचार।
दिलाकर निज गौरव का ज्ञान, कांपते कर में दी पतवार॥
दासता की जंजीरें तोड़, भरा तुमने नूतन उत्साह।
पढ़ा कर मानवता का पाठ, दिखाई सीधी-सच्ची राह॥
पताका खण्ड-खण्डनी, गाड़ मिटाया घना अन्ध विश्वास।
नये युग का करकै निर्माण, मिटाते रहे मनुज का त्रास॥
ज्ञान का वह अक्षय भण्डार, दिया हमको सत्यार्थ प्रकाश।
गये थे निज गौरव जो भूल, कराया उसका ही आभास।
मिटाया जाति-पाति का भेद कर्म का वतलाया था मर्म।
कर्म से बनता व्यक्ति महान्, कर्म ही है जीवन का धर्म॥
विषमताओं के दुर्गम दुर्ग-ढहाते चले गये अविराम।
वेद! का पावन-मय सन्देश, दिया भूमंडल को वेदाम॥
किया आजीवन ही संघर्ष, सत्य करने हेतु प्रचार।
धर्म ध्वज को करके उत्तुंग, किया मानवता का उद्धार॥
मिट रहा था जब वैदिक धर्म, मिटाये जाते थे जब आर्य।
ईश का लेकर शुचि सन्देश, किया तुमने फिर अद्भुत कार्य॥
तुम्हारी वाणी को सुन आर्य, उठे सोये से सहसा जाग।
जागरण का सुन के वह मंत्र, उठा जन-जन आलस को त्याग॥
देव! है नमन तुम्हें सौ बार, सृष्टि के हो तुम ही श्रृंगार।
तुम्हारे पद चिन्हों पर विश्व, शांति सुख का पाता है संसार॥

धर्म की प्रवह-मान वह धार
आज भी बहती है अविराम।
विश्व के वंदनीय युग पुरुष!
तुम्हें है बारम्बार प्रणाम॥

ऋषि दयानन्द की प्रारम्भिक जीवनी (१)

जन्मस्थान विषयक भ्रम का निवारण

प्रो० दयालजी भाई आर्य, प्राध्यापक, आयुर्वेदिक कालेज, जामनगर।

अनुवादक, संशोधक व सम्पादक—डा० भवानीलाल भारतीय

ऋषि दयानन्द की प्रारम्भिक जीवनी और वंश के विषय में विद्वानों द्वारा निबन्ध व पुस्तकें प्रकाशित होती रहती हैं। अनुसंधान के नाम पर शोध प्रबन्ध भी लिखे जाते हैं। इनमे लेखक गण कहीं-कहीं भ्रमवश या प्रमादवश भूल कर बैठते हैं। जैसे विष प्रकरण की चर्चा चल रही है, उसी प्रकार ऋषि के जन्म-स्थान, माता-पिता का नाम, शिवरात्रि की उपासना का मन्दिर आदि विषयों में जो भ्रम फैल रहे हैं उनका निवारण करने की दृष्टि से मैंने जो कुछ जानकारी प्राप्त की है, उसका विवरण यहां प्रस्तुत कर रहा हूं।

ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर टंकारा आने वाले आर्यों में कुछ समय से चर्चा सुनाई पड़ती है कि ऋषि की जन्मभूमि टंकारा ही है या जीवापुर? कई भावुक व्यक्ति तो जीवापुर देखने भी आते हैं। वर्तमान में प्रसिद्ध आर्य विद्वान् डा० भवानी-लाल भारतीय द्वारा लिखित जीवन-चरित 'नवजागरण के पुरोधा-दयानन्द सरस्वती' के परिशिष्ट 2 में श्री मेधार्थी स्वामी के कथनानुसार जीवापुर के जन्मस्थान होने का निर्देश किया है तथा इसका खण्डन भी किया है। तथापि इस सम्बन्ध में निम्न वक्तव्य आवश्यक है—

स्वामी मेधार्थी अब हमारे बीच नहीं हैं। किसी व्यक्ति के देहान्त के बाद उसकी आलोचना करना अच्छा नहीं, फिर भी प्रसंगवश इतना कहना आवश्यक है कि मेधार्थी जी स्वामी दयानन्द स्मारक महालय टंकारा मे कुछ काल तक रहे थे और निजी महत्त्वाकांक्षाओ की पूर्ति न होने के कारण टंकारा ट्रस्ट की प्रवृत्तियों के विरोधी बन गए थे। आगे चलकर उन्होंने 'जीवापुर ज्योति' नामक पत्रिका निकाली और उसके माध्यम से प्रचारित करते रहे कि ऋषि की जन्मभूमि टंकारा नहीं, अपितु जीवापुर है। इस बात का प्रतिपादन करने और अपनी मान्यता को सिद्ध करने के लिए जीवापुर के श्री जालिमसिंह जाडेजा नामक व्यक्ति को अपना शिष्य बनाकर उन्होंने ऋषि के वंश की नामावली भी प्रकाशित की।

मेधार्थी जी द्वारा प्रस्तुत जो वंशवृक्ष बताया गया है वह उपर्युक्त से भिन्न है और निम्न प्रकार है—

श्री देवेन्द्र बाबू का प्र[illegible]ण—

इस विषय की आलोचना करने से पूर्व हम यहां देवेन्द्र बाबू के विचार लिखेंगे जिन्होंने वर्षों तक कठिन परिश्रम कर सामग्री एकत्रित की तथा टंकारा के ऋषि का जन्मस्थान होने को अनेक प्रमाणों द्वारा प्रतिपादित किया एवं ऋषि के पूर्वजों और पिता आदि का विवरण दिया। यही सत्य और प्रामाणिक भी है। इसलिए प्रथम तद-नुसार ऋषि के वंश का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कर रहा हूं। देवेन्द्र बाबू के अनुसार ऋषि के पूर्वज उत्तर भारत से गुजरात मे आए और कच्छ मे रहे। कच्छ के ठाकुरो ने जामनगर और मोरवी राज्यों की स्थापना की वे अपने साथ ब्राह्मणों को भी लाये थे। तदनुसार मोरवी राज्य के ठाकुर रायाजी के साथ आने वाले ब्राह्मणो में सामवेदी औदीच्य ब्राह्मण भी थे। वे प्रथम भुज (कच्छ) से इन्टारिया (कच्छ का एक गाव) में होकर मोरवी राज्य के वर्षा मेड़ी गांव में आये। वहां से दो शाखाओं में विभक्त हो गए। एक शाखा बड़ाल में और दूसरी मोरवी में आई। मोरवी वाली शाखा के लोग टंकारा मे आकर निवास करने लगे और बड़ाल वालों का वंश निस्सन्तान रह गया।

टंकारा मे आकर जो औदीच्य ब्राह्मण बसे, उनमें मेघजी त्रिवेदी नामक एक पुरुष थे। उनके दो पुत्र विश्रामजी और डोसा जी नामक हुए। जीवा मेहता ने जब 1778 विक्रम मे जीवापुर ग्राम बसाया तो उन्होंने इन्हीं विश्राम जी को प्रचुर भूमि देकर वहां पर आबाद किया। वर्तमान में जीवापुर में सामवेदी औदीच्यों के जितने घर हैं वे इन्हीं विश्राम जी के वंशज हैं। विश्राम जी तो जीवापुर जाकर बस गये और डोसा जी टंकारा में ही रहने लगे। डोसा जी के पुत्र कुंवर जी और कुंवर जी के वेलजी नामक पुत्र हुआ। इन वेलजी के साथ ऋषि दयानन्द के पिता कर्सन जी त्रिवेदी का कुछ सम्बन्ध था। टंकारा के पोपटलाल और उनकी बुआ वेणी बाई के मुख से हमने सुना है कि वे वेलजी कर्सनजी के चाचा का पुत्र था। देवेन्द्र बाबू के अनुसार मेघजी तिवारी का वंशवृक्ष निम्न है—

जीवापुर से प्राप्त वंशावली—

मेधार्थी जी कथित वंशावली की आलोचना से पूर्व वर्तमान में जीवापुर में स्थित भाईशंकर (मेधार्थी स्वामी द्वारा प्रकाशित वंशवृक्ष के अनुसार विश्वनाथ के पुत्र) से प्राप्त वंशवृक्ष पर दृष्टिपात करें—

उपर्युक्त में गिरिजाशंकर और भाईशंकर आज भी जीवापुर में विद्यमान हैं।

→

श्री लाभशंकर से प्राप्त वंशावली—

उपर्युक्त तीन वंशावलियों के अतिरिक्त पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक को उनके टंकारा निवास के समय मोरवी के पं० लाभशंकर शास्त्री ने जो वंशवृक्ष (तथा अन्य सामग्री प्रदान की, जिसकी चर्चा हम आगे करेंगे) बताया था, उसके अनुसार मीमांसक जी ने ऋषि दयानन्द का भ्रातृवंश और स्ववंश नामक पुस्तक लिखी। इसमें उपर्युक्त वंशवृक्ष इस प्रकार है—

मैंने यहां इस वंशवृक्ष का विषय से सम्बन्धित उपयुक्त अंश ही लिखा है, शेष छोड़ दिया है। (विस्तार के लिए उक्त पुस्तक द्रष्टव्य) इनमे से त्र्यम्बक लाल हड़मतिया ग्राम (टंकारा से सड़क से ८ मील तथा पगडण्डी से ५ मील) में तथा लाभशंकर मोरवी मे रहते हैं।

उक्त वंशावलियों की भिन्नता और अप्रामाणिकता—

इन चारों वंशावलियों में भिन्नता है और ऋषि दयानन्द के सम्बन्ध मे देवेन्द्रनाथ प्रदत्त वंशावली को छोड़कर अवशिष्ट तीन न तो प्रामाणिक हैं और न विश्वसनीय। मेधारथी जी ने जीवापुर को स्वामी जी का जन्मस्थान सिद्ध करने मे पूरे वंशवृक्ष की खिचडी बनाकर पेश कर दी है। देवेन्द्र बाबू के अनुसार पोपटलाल की साक्षी से डोसा जी के पुत्र कुंवरजी और तत्पुत्र वेलजी जो टंकारा निवासी करसनजी (दयानन्द के पिता) का चचेरा भाई था उन्हें जीवापुर के विश्रामजी के वंश मे जोड़ दिया।

मैंने श्री लाभशंकर और भाईशंकर को प्रत्यक्ष पूछा तो उन्होंने कहा कि वेलजी नाम का उनका कोई पूर्व पुरुष था, ऐसा उन्होंने कभी नही सुना और मेधारथी जी ने अपनी मनमानी करके विश्राम जी के भाई डोसा जी को, जो टंकारावासी थे, इनका पुत्र बताया है। इस प्रकार ऋषि जीवन से सम्बन्धित ऐतिहासिक तथ्यों को विकृत करने का प्रयास किया है। भाई शंकर और लाभशंकर द्वारा प्राप्त वंशावलियो में भिन्नता है और वे अविश्वसनीय हैं। मेरे पूछने पर उपर्युक्त दोनों ने बताया कि वे अपने पितामहों के अतिरिक्त उनके पीछे के वंश पुरुषों के नामों से अनभिज्ञ हैं तथा भाई शंकर के अनुसार करसन जी के पुत्र का नाम कुवर जी है या कल्याण जी, यह भी स्पष्ट नहीं है, क्योंकि वह इन दोनों को दो पृथक् स्थानवासी तथा पृथक् व्यक्ति बताते हैं। इसके विपरीत पं० लाभशंकर ने करसन जी के चतुर्थ पुत्र का नाम कानजी बताया है और आगे कानजी के वंश में तीन पुत्रियां और चतुर्थ विश्वनाथ नामक पुत्र बताया है तथा विश्वनाथके पुत्र का नाम हेमशंकर लिखा है। ये वंशावलियां सत्य नहीं हैं। इनकी अधिक निरसन हम आगे करेंगे।

वंशावलियों की साम्यता—

इन वंशावलियों की साम्यता पर विचार किया जाय तो सर्वसम्मत नाम विश्रामजी का है। इन्हीं विश्राम जी को १७७८ वि० में मोरवी के दीवान (महामंत्री) जोबा येहता जीवापुर ग्राम की स्थापना के समय वहां ले गये और वहीं बसा दिया। देवेन्द्रनाथ के अनुसार मेघजी के प्रथम पुत्र विश्रामजी जीवापुर जा बसे और सम्प्रति इस ग्राम में जो सामवेदियों के घर हैं वे सभी विश्राम जी के वंशज ही हैं। मेघजी के द्वितीय पुत्र डोसा जी टंकारा में रहे। उनके पुत्र लालजी हुए जो स्वामी दयानन्द के पिता करसन जी के पिता थे।

दो करसन जी—

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि मेघजी के वंशज त्रिवेदी कुटुम्ब में करसन जी नामक दो व्यक्ति हुए हैं। एक जीवापुर में विश्रामजी का पुत्र और दूसरा टंकारा में लाल जी का पुत्र। इन दोनों में एक पीढ़ी का स्पष्ट अन्तर है क्योंकि मेघजी के जीवापुर स्थित पुत्र विश्राम जी के पुत्र करसन जी हुए और उधर उन्हीं के टंकारा स्थित पुत्र डोसा जी के पुत्र लाल जी और लाल जी के पुत्र करसन जी हुए। इस प्रकार जीवापुर स्थित करसन जी मेघजी के पौत्र तथा टंकारा स्थित करसन जी प्रपौत्र थे।

पर्यालोचना—

प्रथम वंश की पीढ़ी और आयु के वर्ष लगाने से मेधारथी जी ने जिन जीवापुर स्थित करसन जी के पुत्र को दयानन्द बताया है वह अपने आप में गलत ठहरता है क्योंकि संवत् १७७८ वि० में विश्राम जी जब जीवापुर गये तब उनकी आयु यदि न्यूनातिन्यून पच्चीस या तीस वर्ष मानी जाए तभी उस समय उनके यहां पुत्र करसन जी का जन्म होना सम्भव है। इस प्रकार जीवापुर निवास के बाद अधिकतम दस या बीस वर्ष बाद भी यदि संवत् १८०० वि० मे करसन जी का जन्म माना जाय और उधर मूलशंकर का जन्म १८८१ वि० मे हुआ था, ऋषि की आत्मकथा के अनुसार इनके दो छोटे भाई और दो बहिनें और थीं। इस हिसाब में करसन जी की ८० या १०० वर्ष से अधिक आयु मे मूलशंकर और अन्य सन्तानों का जन्म होना माना जाएगा, जो सर्वथा असम्भव है। इसलिए मेधारथी जी द्वारा जीवापुर निवासी करसन जी को मूलशंकर का पिता बताना सर्वथा गलत है।

द्वितीय, प० लाभशंकर शास्त्री प्रदत्त सामग्री के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए दिनांक १४ सितम्बर १९५९ को मैं पं० युधिष्ठिर जी के साथ हड़मतिया गया था तब वहां के वयोवृद्ध सुतार (बढ़ई) तेजाजी ने यह बताया था कि १८४५ वि० में हड़मतिया गाँव मे कूप निर्माण हेतु मुहूर्त देखने के लिए जीवापुर से करसनजी को बुलाया गया था। यह भी जीवापुर निवासी करसन जी के ४५ वर्ष या इससे अधिक आयु के होने से मेल खाती है जो टंकारा निवासी करसनजी की वय से मेल नहीं रखती। (इन करसन जी की वय की चर्चा हम आगे करेंगे)।

तृतीय, ऋषि के पिता पौरोहित्य एवं भिक्षावृत्ति नहीं करते थे इसलिए इनके द्वारा मुहूर्त देखने का प्रश्न ही नहीं उठता। चतुर्थ, देवेन्द्रबाबू ने ऋषि की आत्मकथा के अनुसार ऋषि के पिता की कसौटी मे प्रथम उनका सर्राफ होना, द्वितीय, जमींदार होना, तृतीय जमेदार (दण्ड नायक) होना चतुर्थ उनके पुत्र का गृह त्याग करना, तथा अन्तिम उनका कट्टर शिवभक्त होना, ये पाँच बातें बताई हैं जो जीवापुर के करसनजी में नही मिलती और टंकारा के करसनजी मे मिलती हैं। देवेन्द्रनाथ ने ऋषि के जन्म-स्थान के लिए सात गाँव (१) टोल (२) मिताणा (३) जीवापुर (४) सज्जनपुर (५) रामपुर (६) टीकर और (७) टंकारा को कसौटी पर रखकर टंकारा की पुष्टि मे एकाधिक प्रमाण प्रस्तुत किए हैं। विस्तारभय से उन्हे यहा नही लिखा जाता। जिज्ञासु लोग इन्हें स्वामी दयानन्द के जीवन-चरित भाग २ (पं० घासीराम द्वारा सम्पादित) के परिशिष्ट तथा दयानन्द जन्मस्थानादि निर्णय (पं० विजयशंकर सम्पादित) में देख सकते हैं। पञ्चम हेतु यह है कि ये मेधारथी जी ने वंशावली मे टंकारा निवासी डोसाजी के पौत्र करसन जी से आगे का वंश क्यों नहीं बताया? इनके वंशज कौन हैं, कहा हैं? वस्तुत: यही करसन जी ऋषि के पिता थे जो पीढ़ी और वय के अनुसार ठीक मेल खाते हैं।

छठा मेधारथी जी ने ऋषि का जन्मस्थान जीवापुर होने के विषय में कोई प्रमाण या आधार प्रस्तुत नही किया। जब उनसे पूछा गया तो उन्होने जीवापुर के एक वृद्ध सज्जन जालिम सिंह जाड़ेजा से मिलने के लिए कहा। श्री जालिम सिंह से मैं छोटी आयु से ही परिचित हूं। उनका अधिकांश जीवन अफ्रीका मे व्यतीत हुआ है। वे जब-जब अफ्रीका से जीवापुर आते थे टंकारा में मेरे पिता जी से मिलने और कपड़े सिलाने अवश्य आते थे। जीवापुर मे जालिमसिंह के बड़े भाई मालू भा रहते थे। वे भी मेरे पिता जी के निकट के मित्र और समवयस्क थे। हमारे ग्राहक होने के कारण मैंने भी उनके कपड़े सिये हैं। मालूभा जब किसी काम के लिए जीवापुर से टंकारा आते थे तब अपना घोड़ा हमारे घर पर ही बांधा करते थे। इन मालूभा से मेरे पिता जी तथा मैंने ऋषि के वंश के बारे में अनेक बार पूछा तो उन्होंने कुछ नहीं बताया। तब इनसे दस साल छोटे तथा विदेश में अपना जीवन व्यतीत करने वाले जालिमसिंह के पास ऋषि के बारे में क्या जानकारी हो सकती है? केवल टंकारा स्मारक से द्वेष रखने के कारण मेधारथी जी ने ऋषि की जन्मभूमि जीवापुर में घोषित की और इस मिथ्या बात को प्रचलित करने के लिए जालिमसिंह को अपना शिष्य बनाया।

इसके अतिरिक्त हम आगे ऋषि के भ्रातृवंश के भ्रम-निवारण के प्रसंग में भी यह देखेंगे कि ऋषि के पिता करसन जी टंकारा के थे, जीवापुर के नहीं और न वे जीवापुर से टंकारा आये थे। इस भ्रम का निवारण भी टंकारा के जीवापुर मोहल्ला विषयक चर्चा में आगे करेंगे। अन्ततः ऋषि की जन्मभूमि टंकारा ही है जीवापुर नहीं, यही सिद्ध होता है।

[अगली किस्त में पढ़ें ऋषि के भ्रातृवंश का विवरण] (क्रमशः)

पत्रों के दर्पण में

महर्षि दयानन्द और १८५७ का विद्रोह

आर्य समाज के क्षेत्र में कुछ दिनों से यह विवाद खड़ा है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १८५७ के विद्रोह में भाग लिया था या नहीं। एक पक्ष है उनका जो कहते हैं कि उनने भाग नहीं लिया। दूसरा पक्ष यह स्पष्टतया स्वीकार करता है कि महर्षि ने उक्त विद्रोह में भाग लिया था।

महर्षि के जीवनवृत्त का अध्ययन करते समय यह स्वीकार करना पड़ेगा कि उसमें अनेक स्तर हैं। घर से निकल कर स्वा० पूर्णानन्द जी तक पहुंचने तक प्रथम स्तर है। स्वा० पूर्णानन्द जी के पास से कुंभ के मेले तक दूसरा स्तर। तीसरा स्तर कुम्भ मेले से लेकर स्वा० विरजानन्द जी के पास पहुचने तक का है। इसी में महर्षि की उत्तराखण्ड यात्रा, वापसी, १८५७ के विद्रोह का काल (जिसे अज्ञात काल कहते हैं) भी समाविष्ट है। चतुर्थ स्तर है स्वा० विरजानन्द जी से लेकर कलकत्ता निवास तक का काल। पंचम स्तर अंतिम है—कलकत्ता से वापसी से महाप्रयाण तक का। कलकत्ता से लौटने पर हम महर्षि को सभी रूढ़ियों के विरुद्ध खड्गहस्त पाते है।

आज हम स्वामी जी के जीवन वृत्त के पंचम तथा कुछ-कुछ चतुर्थ स्तर की चर्चा करते हैं। कोई महामानव एक दिन में नहीं बनता। उसके जीवन में क्रम विकास का क्रमिक होता है। महर्षि का जीवन भी अपवाद नहीं है। अतः आवश्यक है कि इस प्रश्न को अनुसंधान का विषय बनाया जाय। दिल्ली से लेकर कलकत्ता तक ईस्ट इण्डिया कंपनी के समय के जो कागजात पुरानी कमिश्नरियों के रिकार्ड रूमों में हैं तथा उनमें गुप्तचर विभाग की जो सूचनाएं दबी पड़ी हैं, उनका अध्ययन नितान्त अपेक्षित है। किसी प्रकार के पूर्वाग्रह को छोड़कर प्रतिबद्ध व्यक्तियों की एक समिति बने जो सभी प्रकार की सामग्रियों की खोज करे तथा उनका अध्ययन कर स्वामी जी की जीवनी तथा आर्य समाज के इतिहास के विषय में अपना प्रतिवेदन उपस्थित करे। तब किसी वाद को स्वीकार करना तथा अस्वीकार करना युक्तिसंगत होगा साथ ही उसी प्रतिवेदन के आधार पर लिखी गयी जीवनी किवा इतिहास प्रामाणिक होगा।

—आचार्य देवेन्द्र दत्त द्विवेदी

क्या महर्षि के वेद भाष्य की हिन्दी पंडितों की बनाई हुई है ?

चिरकाल से आर्य समाज के विद्वानों के सामने यह विवाद चला आ रहा है कि क्या महर्षि के वेद भाष्य की आर्य भाषा (हिन्दी) पण्डितों की बनाई हुई है या महर्षि की स्वयं की बनाई हुई है। इस प्रश्न पर 'आर्य जगत्' २१ जुलाई के अंक में आचार्य विश्वश्रवा जी का खोज पूर्ण लेख प्रकाशित हुआ है। आरम्भ से ही आचार्य जी का मत यह रहा है कि वेद भाष्य की आर्य भाषा महर्षि की बनाई हुई है। लेख के अन्त में आचार्य जी लिखते हैं—"मेरी ८१ वर्ष की आयु है। पता नहीं कि किस दिन शरीर छूट जाये। यह घिस-घिस मिटाकर ही मरूं, तो अच्छा है।"

मैं भी चाहता हूं कि आर्य विद्वान् इस प्रश्न के बारे में परस्पर मिल कर एक बार अन्तिम निर्णय ले लें। आचार्य जी के मत के विरोधियों को आचार्य जी की शास्त्रार्थ चुनौती को स्वीकार करना चाहिए। शास्त्रार्थ के लिए सभी प्रकार की सुविधाओं का दायित्व मैं अपने ऊपर लेने को तैय्यार हूं। शास्त्रार्थ दिल्ली अथवा गाजियाबाद में भी होसकता है।

—प्रो० रत्नसिंह एम० ए०, बी-२१ गांधी नगर गाजियाबाद (उ० प्र०)।

ऋषि का स्वप्न साकार कैसे होगा ?

विश्व को आर्य बनाना, वेद को विश्व-धर्मग्रन्थ बनाने का दिव्य-स्वप्न महर्षि ने अपने जीवनकाल में साकार करने का संकल्प किया था। किन्तु वर्तमान में अधिकतम आर्य बन्धु बहुरूपियों की भांति आर्य संस्थाओं में कुण्डली लगाये बैठे हैं। जनसेवा के नाम से स्वयं अपना घर भरने में लगे हैं। लोकेषणा और वित्तैषणा के मायाजाल में फंसे पड़े हैं। आजीवन मन्त्री आदि पदों का आसन छोड़ने को राजी नहीं। इसके अतिरिक्त अनेक उच्चकोटि के विद्वान् अपने घरों से चिपके बैठ हैं, ऋषि कार्यों से विमुख हो गए है, गुरुकुलों, विद्यालयों, महाविद्यालयों में अवैदिक पाठ-विधि का अनुकरण किया जा रहा है। इस स्थिति में किस प्रकार ऋषि का स्वप्न साकार होगा ?

—स्वामी वेदानन्द सरस्वती, आर्यसमाज पाली

आर्य समाज का नेता कौन ?

१४ जुलाई के अङ्क में प्रकाशित पत्र 'आर्य समाज का नेता कौन ?' पढ़ा। प्रश्न का उत्तर किस के पास है ? परन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्वप्न की वह आर्य समाज है कहां ? केवल रविवारीय सत्संग आर्य समाज नही है। बन्द पुस्तकालय, वाचनालय, शास्त्रार्थ के अभाव वाली यह वर्तमान आर्य समाज, वह 'आर्य समाज' नहीं है जिसका उल्लेख महर्षि ने किया था। चुनाव के समय आपसी टकराव तथा आंतरिक राजनीति से पीड़ित संस्था आर्य समाज नहीं हो सकती। कुछ लोग आजकल इसे विवाह संपन्न करने की संस्था कहने लगे हैं। अपने अन्तःकरण से पूछें कि क्या कोई महात्मा हंसराज पं० लेखराम या पंडित रामचन्द देहलवी आर्य समाज में पुनः उत्पन्न हुआ ? क्या कोई महात्मा आनन्दस्वामी पुनः निकला ? इस प्रश्न का उत्तर यही है कि आर्य समाज का कोई नेता नहीं। सार्थक योजनाओं के अभाव से हम निर्धारित लक्ष्य तक कैसे पहुंच सकेंगे ? जिन्हें आर्य समाज को "आर्य समाज" बनाने की रुचि है उन्हें वर्तमान अधिकारी आगे आने नहीं देते। यही कारण है कि आर्यसमाज के पास कोई नेता नहीं है।

—बलदेव खत्री 'जीवनदीप' २२३, ग्यारहवां रास्ता खार—बम्बई ५२

हिन्दुओं के देश में गो-वध क्यों ?

७ जुलाई के अंक में गो-वध सबन्धी मेरा लेख प्रकाशित करने के लिए हार्दिक धन्यवाद। 'आर्य जगत्' की प्रतीक्षा बनी रहती है। आते ही उसे पूरा पढ़कर आपके विचारों से स्वयं को धनी बनाने में अपना सौभाग्य समझता हूं।

गो-वध सम्बन्धी अपने प्रस्ताव की प्रतियां मैंने देशभर की अनेक हिन्दू संस्थाओं, संगठनों तथा सभी शंकराचार्यों की सेवा में भेजी थीं। किन्तु बड़े दुःख के साथ लिखना पड़ रहा है कि भारत के सारे शंकराचार्य मेरे प्रस्ताव पर मौन हैं। केवल पुरी के शंकराचार्य ने गोहत्या बन्द के कानून न होने से गोरक्षा में अपनी असमर्थता प्रगट की, पर वास्तव में मेरा सारा प्रयत्न तो हमारे युवा प्रधानमन्त्री को निर्देशक सिद्धांत का उपयोग कर इस कार्य को कराना ही है। दुर्भाग्य है कि किसी हिन्दू संस्था व बड़े-२ मन्दिरों के सनातनधर्मी विचारधारा रखने वाले किसी व्यक्ति ने उत्तर देने का कष्ट नहीं किया। समस्त पार्टी नेताओं के बारे में तो क्या लिखूं सब के सब जयचन्द बने हैं। व्याख्यानों व थैली एकत्रित करना व कटु आलोचना के सिवा भारत की समस्या का हल केवल बातों से ही करना चाहते हैं। —रामआधार हजेला, उल्फत निवास, ग्वालियर।

हरियाणा आर्यवीर दल की दुर्दशा ?

गत अक्तूबर मास में करनाल में प्रादेशिक सभा द्वारा आयोजित निर्वाण शताब्दी के अवसर पर आर्य युवक सम्मेलन के अध्यक्ष पद को लेकर जो जबरदस्त हंगामा हुआ उस समय के दृश्य को देखकर प्रत्येक आर्यवीर के हृदय में यह भावना जाग्रत हुई कि आज के हमारे नेताओं में कितनी पद-लोलुपता है ? उस हंगामे का आर्य जनता पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। वर्तमान समय में जीवनी शक्ति के अभाव में ही आर्य समाज अपने महान् उद्देश्यों के बावजूद शिथिलता का अनुभव कर रहा है। निराशा और घुटन का माहौल बना हुआ है। आर्यसमाज की पुरानी पीढ़ी धीरे-धीरे जा रही है, नई पीढ़ी आ नहीं रही। यदि नई पीढ़ी आगे आना भी चाहती है तो पुरानी पीढ़ी उसे उत्साहित नहीं करती, उसे अपनी गद्दी के छिन जाने का भय रहता है। हरियाणा आर्यवीर दल की यही दशा है। इस स्थिति में आर्यवीर दल के सेनापति महोदय से मेरी प्रार्थना है कि वे हरियाणा प्रान्त में किसी दीक्षित आर्यवीर नवयुवक को संचालक बनाकर दल की दशा सुधारने में सहायक बनें।

—जगदीशचन्द्र बसु, महोपदेशक, आर्य प्रा० प्र० सभा हरियाणा

आर्य विद्वानों को पुरस्कृत कीजिये

कैप्टन श्री देवरत्न आर्य द्वारा विज्ञापित समाचार द्वारा अति हर्ष हुआ कि आर्यसमाज सान्ताक्रूज "वेद वेदांग पुरस्कार" का श्रीगणेश कर रहा है। वस्तुतः यह एक श्लाघनीय प्रयास है। ऐसा ही प्रयास सार्वदेशिक सभा को भी करना चाहिए।

मेरे विचारानुसार प्रथम बार इस पुरस्कार के पात्र अमर स्वामीजी गाजियाबाद वाले ही हो सकते हैं। वह महाविद्वान् तो हैं ही, चूंकि वे सर्वाधिक वयोवृद्ध हैं, अतः इस बारे में अविलम्ब निर्णय लेना चाहिए इसके अतिरिक्त उन्हें धनराशि की इस समय महती आवश्यकता है। कैप्टन साहिब को इस सद्प्रयास के लिए कोटिशः साधुवाद।

—ओम्प्रकाश 'अंशु' एडवोकेट, करनाल

'राष्ट्र को ऐसे युवकों की आवश्यकता है'

—अनिल आर्य, सम्पादक 'युवा उद्घोष'—

कोटद्वार, 23 जून "देश की वर्तमान परिस्थितियों में युवा वर्ग पाश्चात्य संस्कृति के कारण विलासिता की ओर अग्रसर है। आज राष्ट्र में ऐसे नौजवानों की प्रबल आवश्यकता है जो बिना किसी स्वार्थ के समाज को अपनी सेवाएं दें" —ये शब्द प्रसिद्ध पत्रकार आर्य जगत् के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालंकार ने केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, दिल्ली प्रदेश द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय युवा वर्ष पर गुरुकुल कण्वाश्रम, कोटद्वार में आयोजित दस दिवसीय शिविर के समापन समारोह में अपने अध्यक्षीय भाषण में कहे।

उन्होंने युवकों से कहा कि आपने इस शिविर में जो कुछ सीखा है उसे अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनायें, तभी आयोजकों का पुरुषार्थ सफल होगा। उन्होंने कहा कि इस शिविर को अगर तुम भुलाना भी चाहो तो नहीं भुला पाओगे। सोये हुए भी तुम्हारे कानों में अपने शिक्षक की सीटी की आवाज गूंजती रहेगी।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के इस शिविर में इस वर्ष कई अन्य उपलब्धियां भी जुड़ी। युवकों के वन भ्रमण का कार्यक्रम भी रखा गया, जहां कई वन्य जीव जन्तुओं को देखने का अनुभव मिला। वन अधिकारी श्री चन्द्र सिंह रावत ने वन के पेड़—पौधों, आयुर्वेदिक वनस्पतियों व जन्तुओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी। तीन दिन शिविर स्थल (गुरुकुल) के निकट 2 बजे रात तक शेर भी दहाड़ता घूमता रहा। शिविरार्थियों के लिए यह रोमांचकारी अनुभव था।

शिविर उद्घाटन से एक दिन पूर्व ही 13 जून को लगभग 110 शिविरार्थी आर्य समाज कोटद्वार पहुंच गए थे। शेष 14 जून प्रातः 6-30 बजे रेल द्वारा आए। सारा सामान ट्रक पर गुरुकुल भेज दिया गया और 125 आर्य युवकों का काफिला गणवेश में कोटद्वार के गली कूचों व बाजारों को जयघोष से गुंजाता चल पड़ा। स्थानीय विधायक श्री नेगी ने युवकों को उद्बोधन दिया। 13 किलोमीटर पैदल चल कर आर्ययुवक दोपहर कण्वाश्रम, कलालघाटी पहुंचे, जहां सायंकाल शिविर का उद्घाटन ब्रह्मचारी आर्य नरेश जी ने किया। सभी आर्य युवकों को महापुरुषों के नाम पर अलग अलग वर्ग बनाकर बांट दिया गया।

युवकों के अतिरिक्त "योग साधना शिविर" भी आयोजित किया गया, जिसकी एक ही स्थान पर अलग से व्यवस्थित दिनचर्या चली। शिविर में ही किशोरों-युवकों व साधकों की भाषण व लेख प्रतियोगिताएं आयोजित की गई तथा विजेताओं को पुरुस्कृत किया गया। अंतिम दिन सभी शिविरार्थियों की अपने-अपने विषय के शिक्षकों ने परीक्षा ली तथा उसी के अनुरूप प्रमाणपत्र दिये गए। शिविर में महर्षि दयानन्द वर्ग प्रथम रहा तथा द्वितीय स्थान 'महाराणा प्रताप वर्ग' को मिला। सम्पूर्ण शिविर में शाहदरा (दिल्ली) के श्री संजय आर्य प्रथम, व श्री भूपतसिंह टंकारा (गुजरात) के द्वितीय तथा त्रिनगर (दिल्ली) के श्री ब्रजेश आर्य तृतीय रहे, जिन्हें समापन समारोह में अध्यक्ष महोदय ने पुरस्कृत किया। भाषण प्रतियोगिता में श्री विजय कुमार आनन्द ने अपने पिता श्री मुलखराज आनन्द की पुण्य स्मृति में तीनों प्रथम पुरस्कार अपनी ओर से दान दिये।

शिविर की एक विशेषता यह भी रही कि बाहर से कोई भी व्यायाम शिक्षक नहीं बुलाया गया। अपितु शिक्षण का सारा कार्य परिषद् के ही पुराने अनुभवी आर्य युवकों ने व्यवस्थित रूप से सम्भाला।

दीक्षांत समारोह में आर्य युवकों ने अपनी बुराइयां छोड़ने की प्रतिज्ञा ली व यज्ञोपवीत ग्रहण कर राष्ट्र रक्षा का संकल्प लिया। समापन समारोह में आर्य युवकों के योगासन, दण्ड बैठक, लाठी, स्तूप, जूडो कराटे, बाक्सिंग, शरीर सौष्ठव, कांच पीसना आदि व्यायाम प्रदर्शन हुए, कार्यक्रम में पहली बार सम्मिलित फ्री स्टाइल कुश्ती के रोमांचक मुकाबले को देखते देखते लोग भावावेश में शोर मचाते अखाड़े तक जा पहुंचे। कोटद्वार के प्रतिष्ठित आर्य बन्धु, सरकारी अधिकारी तथा आस पास के क्षेत्रों से भारी संख्या में जनता अपनी जीपों, ट्रकों, ट्रैक्टर ट्रालियों व बसों द्वारा समापन समारोह देखने पहुंची। सभी के लिए विशाल ऋषि लंगर का प्रबन्ध किया गया था।

स्वामी जगदीश्वरानन्द जी व ब्रह्मचारी आर्य नरेश जी ने दसों दिन अपने प्रेरक विचार दिये। ब्रह्मचारी विश्वपाल जयन्त को केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् ने एक तलवार व 101/-रु० नकद सम्मानार्थ भेंट किये। श्री धर्मपाल आर्य, श्री महेन्द्र आर्य, श्री मुन्नालाल आर्य, श्री दुर्गेश आर्य, श्री सुनील कुमार, श्री वीरेन्द्र आर्य ने शारीरिक शिक्षण दिया। व्यवस्था व कार्यालय प्रबन्ध श्री विश्वनाथ, श्री राजकुमार व श्री वीरेन्द्र आहूजा ने किया।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज का निःशुल्क नेत्र शिविर

पौने दो लाख की रुग्णवाहिका का दान

आर्य समाज सान्ताक्रुज ने आर्य मेडिकल रिलीफ, मिशन के तत्वावधान में नि.शुल्क नेत्र चिकित्सा एवं आपरेशन कैम्प का आयोजन किया। शिविर का उद्घाटन महाराष्ट्र सरकार के स्वास्थ्य परिवार कल्याण राज्य मन्त्री डा० अनिल वरहाडे ने किया। आर्य समाज के योग केन्द्र को वातानुकूलित आपरेशन थियेटर में परिवर्तित किया जिसका उदघाटन भी मंत्री महोदय ने किया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप-प्रधान श्री गजानन्द जी आर्य मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

इस अवसर पर श्री सत्य प्रकाश जी आर्य ने अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठान इकनामिक-कान्सरर्ट आर्गेनाइजेशन की ओर से आर्य मेडिकल रिलीफ मिशन को लगभग पौने दो लाख की एक नवीन रुग्णवाहिका दान स्वरूप भेंट की।

इस कैम्प में लगभग 400 रोगियों के नेत्रों का परीक्षण किया गया एवं लगभग 50 रोगियों की आंखों का आपरेशन किया गया। ऐसे गरीब व्यक्तियों की आंखों का आप्रेशन हुआ जो इलाज का व्यय तो दूर दो समय अपना पेट भी नहीं भर सकते थे। आप्रेशन के पश्चात् रोगी एक सप्ताह आर्य समाज भवन में ही रहे, जहां उनकी देख भाल की गई। उनके भोजन व दवाई की व्यवस्था एवं स्वास्थ होने पर उन्हें चश्मा आदि का वितरण नि.शुल्क किया गया।

डा० वरहाडे ने कहा मैं आर्य समाज के इस कार्य से बहुत प्रभावित हूं। आर्य समाज यदि इस प्रकार के परोपकार का कार्य जन साधारण के लिए करता है तो मैं सरकार की ओर से पूर्ण सहायता करने को तैयार हूं। उन्होंने कहा मैं अस्पताल के लिए बम्बई उपनगर में सरकार की ओर से जमीन भी देने को तैयार हूं। श्री सत्यप्रकाश आर्य ने कहा यदि सरकार हमें जमीन दे तो हम दो करोड़ की लागत से अस्पताल के निर्माण हेतु बिल्कुल तैयार हैं।

आर्य मैडिकल रिलीफ मिशन के संस्थापक स्वामी रामानन्द जी ने अपने वक्तव्य में कहा कैप्टिन देवरत्न आर्य के अथक प्रयास से इस मिशन की स्थापना हुई और हमने पिछले एक वर्ष में पूरे महाराष्ट्र में लगभग 500 आपरेशन और 30,000 रोगियों का नि.शुल्क परीक्षण किया।

समारोह का संयोजन महामन्त्री कैप्टिन देवरत्न आर्य ने किया। प्रधान श्री देवेन्द्र जी कपूर ने डाक्टरों एवं नर्सों का जिनकी निःशुल्क सेवा प्राप्त हुई, एवं कार्यकर्ताओं का, धन्यवाद किया।
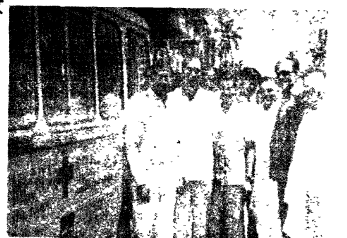
आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई की ओर से लगाए गए निःशुल्क नेत्र शिविर के अवसर पर रुग्णवाहिका (एम्बुलेंस) सहित (बाएं से)—डा० अनिल वरहाडे, श्री सत्यप्रकाश आर्य, श्री गजानन्द आर्य (उपप्रधान सार्वदेशिक सभा, दिल्ली), कैप्टिन देवरत्न आर्य (महामंत्री आर्य समाज सान्ताक्रुज) श्री जयदेव आर्य (प्रधान आर्य समाज चेम्बूर) खड़े हैं।

पं० सत्यकेतु विद्यालंकार गुरुकुल कांगड़ी के कुलाधिपति नियुक्त

प्रसिद्ध इतिहासकार, राजनीति के पण्डित, उपन्यासकार तथा लेखक डा० सत्यकेतु विद्यालंकार को आगामी तीन वर्षों के लिए गुरुकुल कांगड़ी, विश्वविद्यालय का कुलाधिपति नियुक्त किया गया है, इससे पूर्व भी वे इस विश्वविद्यालय के कुलपति पद पर रह चुके हैं। आशा है उनके कुलाधिपतित्व में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर रहेगा। इस समय वे 'आर्य समाज के इतिहास' को सात खण्डों में पूरा करने की अत्यन्त महत्वपूर्ण बृहत् योजना में लगे हैं। इसके चार खण्ड निकल चुके हैं।

साहित्य समीक्षा

ईश्वर उपासना क्यों और कैसे ?

मानव-समाज की वर्तमान दु:खद स्थिति का मूल कारण है उस का वेदमार्ग से हट कर अन्य मार्गों पर चलना। अन्यान्य मार्ग उसे शारीरिक-दासता की ओर ले जाते हैं। इन दुर्गुणों के कारण मनुष्य पशुओं से भी निकृष्ट हो गया है। तब प्रश्न उत्पन्न होता है कि ये कैसे समाप्त हो अथवा इनसे किसी प्रकार बचा जाय। समालोच्य पुस्तक के लेखक का कथन है कि उसने यह पुस्तक इसी उद्देश्य से लिखी कि इसे पढ़ कर अधिक से अधिक नर-नारी ईश्वर के सच्चे उपासक बनें, अन्ध विश्वास से बचें, एवं अपने जीवन को पवित्र व सादा बना सकें।

लेखक का कहना है—"इस पुस्तक में मेरा कुछ नहीं है। सब वेद-उपनिषद् आदि सद्ग्रंथों तथा महापुरुषों का है। मैंने तो केवल ज्ञान को इकट्ठा कर के सब के हितार्थ लिख दिया है।...... पुस्तक को लिखने का उद्देश्य केवल सत्य को प्रकट करना तथा सत्य का मार्ग दिखाना है।"

पुस्तक के प्रतिपाद्य विषय हैं—मानव जीवन-रहस्य, ईश्वर का सर्वोत्तम नाम, ईश्वर का अस्तित्व, प्रसिद्ध वैज्ञानिको की दृष्टि मे ईश्वर, क्या ईश्वर अवतार लेता है ? ईश्वर उपासना क्यों, उपासना के विविध रूप, उपासना के लाभ, उपासना ईश्वर की या मूर्ति की आदि-आदि।

पुस्तक के आशीर्वचान में श्री अमर स्वामी सरस्वती लिखते हैं—"इस पुस्तक को पढ़ने से इस के पाठको को अवश्य बहुत लाभ होगा, ऐसा मेरा विश्वास है। मैं चाहता हूं कि इस महान् ग्रंथ का घर-घर मे प्रचार और प्रसार किया जाय।" स्वामी जी के ये वचन पुस्तक की उपादेयता को सिद्ध करते हैं।

मेरठ कालेज के दर्शन विभाग के प्राध्यापक लेखक ने विश्वास व्यक्त किया है कि "यह पुस्तक विद्वानो के साथ-साथ सामान्य जानता के लिए विशेष लाभ कारी होगी। अपने ही धर्म को न जानने वाले अनेक भाई इससे उपासना की विधि व अन्य अनेक बातें सरलता से जानकर लाभ उठायेगे।"

पुस्तक की छपाई और साज-सज्जा भी उत्तम है।

वैदिक भगवद्गीता (दोहों में)

योगीराज श्रीकृष्ण के उपदेश जो श्रीमद्भगवद् गीता नामक ग्रन्थ में संकलित हैं, उनका अत्यन्त सरल किन्तु सरस दोहों में यह भावानुवाद स्वामी आत्मानन्द जी द्वारा रचित "वैदिक गीता" के आधार पर किया गया है अत: स्पष्ट है कि इसमें प्रक्षेप और मिलावट के लिए कोई स्थान नहीं है। जो नर-नारी संस्कृत नहीं जानते तथा गद्य में लिखी व्याख्या को कंठस्थ नही कर सकते, उनके लिए तो यह पुस्तक बहुत ही उपयोगी है। सभी नर-नारी गीता को दोहो में कंठस्थ कर सकते हैं, लय मे गाकर ईश्वर भक्ति के सागर में गोते लगा सकते हैं, तथा जीवन में छाए अज्ञान व अन्धविश्वास को दुर भगाकर अपने जीवन को सफल बना सकते हैं।

अनुवादक ने अपने पुरोवाक् में स्वयं यह लिखा है—"भगवदगीता संस्कृत भाषा का काव्य है, जो संस्कृत न जानने वाले जन-साधारण की समझ में नहीं आती······यही कारण है कि अधिकांश व्यक्ति, विशेष रूप से अधिकांश युवक-युवतियाँ गीता को पढ़ना छोड चुके हैं, यह बड़े दुर्भाग्य की बात है, मैंने 'गीता' को हिन्दी के सरल दोहो में इसलिए लिखा है कि जनसाधारण मे गीता का वैदिक ज्ञान पुन: अपना महत्वपूर्ण स्थान बना सके तथा श्रीकृष्ण का ज्ञानोपदेश जन-जन के हृदय को आलोकित कर सके।"

इस गीता मे काव्यानुवादक ने उन सब श्लोकों को छोड़ दिया है, जिन्हें प्रक्षिप्त माना जाता है। अत: केवल 53 पृष्ठों में ही गीता का प्रतिपाद्य विषय समा गया है। पुस्तक की भाषा इतनी सरल है कि अशिक्षित व्यक्ति भी यदि उसे सुने तो वह भी समझ सकता है। पुस्तक प्रत्येक घर की शोभा बनने योग्य है।

चरित्र निर्माण में रुकावटें

यह शीर्षक स्वय ही स्पष्ट कर रहा है कि इसके अन्तर्गत लेखक ने उन सब विषयों और कारणों का उल्लेख किया होगा जो मनुष्य के चरित्र-निर्माण में बाधक बनते हैं। लेखक महोदय ने सिनेमा, दूर-दर्शन, सह-शिक्षा, मदिरा पान, मांसाहार, धूम्रपान, धन की पूजा, व्यवसाय मे अपवित्रता, आदि-आदि रुकावटों पर इस छोटी-सी ३६ पृष्ठ की पुस्तिका में गहनता से विचार किया है। स्थान-स्थान पर उन्होने चरित्र-रक्षा के उपायो पर भी अपने विचार व्यक्त किए हैं। अपने प्राथमिक शब्दों मे लेखक ने स्वयं कहा है—"मनुष्य जन्म बड़ी कठिनाई से मिलता है······शुभ कर्म केवल चरित्रवान् व्यक्ति ही कर सकते हैं। सर्व प्रथम मनुष्य को अपने चरित्र का निर्माण करना चाहिए, परन्तु उसमें बड़ी-बड़ी रुकावटें हैं, जिनका वर्णन इस पुस्तक में किया गया है और पुस्तक के अन्त में इनको दूर करने का एक सरल उपाय भी लिख दिया है।"

पुस्तक की भूमिका में प्रसिद्ध पत्रकार श्री क्षितीश वेदालंकार ने इसकी प्रशंसा मे कहा है—"बहुत थोड़े शब्दो में बड़ी बात कह कर 'प्रेम' जी ने गागर मे सागर को समेट दिया है।" इसी प्रकार 'दो शब्द' के अन्तर्गत पुस्तक के प्रकाशक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने आशा व्यक्त की है—"प्रस्तुत पुस्तिका मानव को पतन के गर्त में गिरने से रोकने में अत्यन्त सहायक सिद्ध होगी, इसी उद्देश्य से हम इसको प्रकाशित कर रहे हैं।"

—अशोक कौशिक

महान शिक्षा शास्त्री महात्मा हंसराज

आलोच्य पुस्तक की यह विशेषता है कि जहा अन्य लेखक मात्र अपने चरित नायक के जीवन पर प्रकाश डालते हैं वहां इस पुस्तक के लेखक डा० पाराशर ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाया है। आधी पुस्तक मे शिक्षा पद्धतियों एवं शिक्षा तथा विविध शिक्षा शास्त्रियों के शिक्षा सम्बन्धी विचारो पर प्रकाश डाला है। इनके परिप्रेक्ष्य में महात्मा हंसराज का जीवन (व्यक्तिगत तथा सामाजिक) एवं शिक्षा शास्त्री स्वरूप प्रदर्शित किया है। विषय विभाजन की दृष्टि से पुस्तक आठ शीर्षकों मे विभक्त की गई है। प्रथम शीर्षक है 'प्राचीन भारत की शिक्षा परम्परा और शिक्षा जिसे लार्ड मैकाले नष्ट करना चाहता था। इसी पद्धति ने कपिल, कणाद, पतञ्जलि जैसे विद्वान् उत्पन्न किये। लेखक ने यहां सत्रह विषय गिनाये हैं जिनका अध्यापन किया जाता था। दूसरा शीर्षक "वैदिक शिक्षा का स्वरूप" है जिसमें चरित्र निर्माण एवं शिक्षा की व्यवस्था का निरूपण है। तीसरा शीर्षक "भारतीय शिक्षा का प्रारंभ" है जिसमें मुस्लिम कालीन शिक्षा व्यवस्था का संक्षिप्त वर्णन है। चौथा शीर्षक "उन्नीसवीं शताब्दी तक शिक्षा का स्वरूप" है। इसका आरम्भ ईस्ट इंडिया कम्पनी से है। इन विद्यालयों का उद्देश्य कम्पनी के कर्मचारियों और जनसाधारण को शिक्षा देना था, साथ ही ईसाई धर्म का प्रचार करना था। पांचवां तथा छठा शीर्षक "आर्य समाज और शिक्षा" तथा "गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का स्वरूप" जिनमें ऋषि दयानन्द एवं आर्य समाज के शिक्षा सम्बन्धी विचार, शिक्षा का माध्यम मात भाषा चरित्र निर्माण व स्वा० श्रद्धानंन्द जी द्वारा तपस्या, समता मूलक गुरुकुल शिक्षा पद्धति का सफल एवं अदभुत प्रयोग। पुस्तक के दूसरे खण्ड में देश-विदेश के शिक्षा शास्त्रियों के विचार प्रस्तुत है जिनमें रूसो, मांटेसरी, हरबर्ट, ह० स्पेसर, पेस्टालॉजी, लार्ड मैकाले, महर्षि दयानन्द, महात्मा श्रद्धानन्द, स्वामी विवेकानन्द, पं० मदन मोहन मालवीय, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, महात्मा गाधी के विचार कुशलता पूर्वक प्रतिपादित किए हैं। आठवा शीर्षक "महान शिक्षा शास्त्री महात्मा हंसराज" के अन्तर्गत महात्मा जी के शैशव से लेकर प्रौढ़त्व की घटनाओं का वर्णन है। डी० ए० वी० हा० स्कूल एवं डी० ए० वी० कालेज के लिए स्वजीवनदान। (अवैतनिक प्रिंसिपल के रूप में) तथा ज्येष्ठ भ्राता द्वारा अपना आधा वेतन महात्मा जी को देने का रोमांचकारी वर्णन है। जीवन में अत्यन्त सादगी, समय की पाबन्दी, सकटो में भी धैर्य धारण, समाज सेवा, छूतछात का विरोध, विधवा विवाह समर्थन, नारी-शिक्षा, बीकानेर, कांगड़ा गढ़वाल, उड़ीसा, बिहार, क्वेटा के दैवी संकटों में आर्य स्वयं सेवकों द्वारा सेवा कार्य की परम्परा महात्मा हंसराज जी को महामानव के उच्च पद पर समासीन करती हैं। सभी शिक्षा प्रेमियों, राष्ट्र भक्तों एवं पुस्तकालयों द्वारा संग्रहणीय है।

—देवेन्द्रनाथ शास्त्री 15, आर्य कुटी नरेला, दिल्ली

समालोच्य पुस्तकें

१—"ईश्वर उपासना क्यों और कैसे ?"
लेखक—डा० वेदप्रकाश
प्रकाशक—वैदिक धर्म रक्षा सभा, ४६८, ब्रह्मपुरी, मेरठ, पृ० संख्या २२४, मूल्य ६ रुपए।

२—"वैदिक भगवदगीता"
लेखक प्रकाशक उपरिलिखित, पृ० सं० ७४, मूल्य—३ रुपए।

३—"चरित्र निर्माण में रुकावटें"
लेखक—किशोरीलाल 'प्रेम'
प्रकाशक—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ पृ० संख्या ३६, मूल्य २ रुपए।

—महान् शिक्षाशास्त्री महात्मा हंसराज
लेखक—डा० भक्तराम पाराशर
प्रकाशक—आर्य प्रकाशन मंडल, गांधीनगर-दिल्ली ३१, पृष्ठसंख्या ८०, मूल्य १५ रु०।

सामाजिक जगत्

अमृतसर के डी.ए.वी. छात्रों की शानदार सफलता

गुरु नानकदेव यूनिवर्सिटी की प्रि-यूनिवर्सिटी (आर्ट) परीक्षा में डी० ए० वी० कालेज अमृतसर के विद्यार्थियो ने न केवल पिछली परम्परा को स्थिर रखा अपितु अनेक प्रकार के नए कीर्तिमान भी स्थापित किए। दो विद्यार्थी यूनिवर्सिटी में प्रथम और द्वितीय स्थान पर रहे तथा तीन विद्यार्थी में तृतीय, चतुर्थ और पंचम स्थान पर रहे। कालेज के १२ विद्यार्थी मैरिट लिस्ट में आये, ३१ छात्रों ने प्रथम श्रेणी मे परीक्षा उत्तीर्ण की। यूनिवर्सिटी के ३६.७ प्रतिशत उत्तीर्ण प्रतिशत में इस कालेज का उत्तीर्णता का प्रतिशत ६४.६ रहा।

डी०ए०वी० मल्टीपरपज हा० सेकण्डरी स्कूल, अमृतसर के छात्रो ने हायर सेकेन्डरी, मैट्रिकुलेशन तथा मिडिल की १९८५ वर्षीय परीक्षा परिणामो में भी न केवल पिछली परम्परा को स्थायी रखा अपितु इस वर्ष कुछ नये कीर्तिमान भी स्थापित किए। हायर सैकन्डरी का परीक्षा परिणाम ८४.८ प्रतिशत, १२ विद्यार्थी जिले मे सर्वप्रथम तथा ११७ विद्यार्थी प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण हुए। मैट्रिक का परीक्षा परिणाम ८६.२ प्रतिशत रहा। ८ विद्यार्थी मैरिट लिस्ट में आए तथा ३२८ प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण हुए जो कि सारे प्रदेश में उच्चतम संख्या है। इसी प्रकार मिडिल परीक्षा का उत्तीर्ण प्रतिशत ७४.५, मैरिट लिस्ट में ३ तथा प्रथम श्रेणी मे ६३ छात्र उत्तीर्ण हुए।

टंकारा के नये आचार्य डा० धर्मवीर विद्यालंकार

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पुराने स्नातक और मुख्याधिष्ठाता, आर्य समाज के उत्साही कार्यकर्ता 50 वर्षों से भी अधिक आर्य समाज की सेवा करने वाले डा० धर्मवीर विद्यालंकार को उपदेशक महाविद्यालय टंकारा का आचार्य नियुक्त किया गया है। उन्होंने अपना कार्य 12 जुलाई से सभाल लिया है। आशा है उनके आचार्यत्व मे विद्यालय दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करेगा। आर्य जनता से प्रार्थना है कि महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा मे चल रहे समस्त कार्यों हेतु दान देना कभी न भूलें। —रामनाथ सहगल मंत्री टंकारा ट्रस्ट।

आर्य समाज गिलौला बहराईच का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव

आर्य समाज, गुरुकुल गिलौला, बहराईच (उ०प्र०) का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव 24 से 28 अक्तूबर तक बड़े समारोह पूर्वक आर्य समाज के प्रांगण मे मनाया जायेगा। सभी आर्य जनो से अनुरोध है कि इस महोत्सव मे सम्मिलित हो कर तन-मन-धन से सहयोग देने की कृपा करे, समारोह हेतु आर्थिक योगदान निम्नलिखित पते पर भेजे—कोषाध्यक्ष आर्य समाज, गिलौला-271835 जिला-बहराइच (उ०प्र०)

पाठक जी की स्मृति मे स्थिर निधि

सार्वदेशिक साप्ताहिक के सह-सम्पादक श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक के दिवगत हो जाने पर २१ जुलाई को दीवानहाल मे हुई शोकसभा में उनकी स्मृति मे एक स्थिर निधि स्थापित करने की घोषणा की गई। इसके लिए सार्वदेशिक सभा कार्यालय, दिल्ली को अपनी राशि भेजे। इस निधि से पाठक जी की पुस्तको और लेखो का प्रकाशन किया जाएगा। अब तक निम्न राशियों की घोषणा हो चुकी है—

१—दयानन्द सेवाश्रम संघ ५०००), २—श्री राम गोपाल शाल वाले, ३—श्री सूर्यनारायण शर्मा १०००), ४—श्री केशवचन्द पाठक १०००), ५—आर्यसमाज दीवानहाल, ६—श्री ब्रह्मदत्त स्नातक २०१), ७—श्री राधाकृष्ण वर्मा २०१), ८—श्री कमलेशकुमार १०१)।

आर्य नेता के पुत्र की हत्या

हैदराबाद के प्रसिद्ध आर्यसमाजी नेता, अनेक सामाजिक सस्थाओ के कर्मठ कार्यकर्ता तथा 'धर्मध्वजम्' तेलगू मासिक पत्रिका के सम्पादक श्री आर० रामचन्द्र आर्य के किशोर सुपुत्र कक्षा ८ के मेधावी छात्र आर० रघवीर की अज्ञात असामाजिक तत्वों द्वारा १४-७-८५ को विनायक सागर (हुसेन सागर) में डुबाकर हत्या कर दी गई। इस हत्या के विरोध में हैदराबाद तथा सिकन्दराबाद की अनेक सामाजिक सस्थाओं ने सभाये आयोजित कर इस जघन्य-कृत्य की भर्त्सना करते हुए प्रदेश मे बढती हुई गुण्डागर्दी की स्थिति पर चिन्ता व्यक्त की और प्रशासन से इस स्थिति के निराकरण की जोरदार शब्दों में मांग की गई।

—दशरथराव आर्य, मंत्री आर्यसमाज शाली बण्डा, हैदराबाद।

विद्रोही और कर्मठ युवक कन्हैयालाल दिवंगत

कन्हैयालाल आर्य एक ऐसा युवक था जिसने सामाजिक रूढियो, राजनैतिक भ्रष्टाचार तथा अंग्रेजियत की दासता से सदा विद्रोह किया। सन् 1958 के रूढ़िवादी समाज की सकीर्ण व्यवस्थाओ को तोड कर उसने एक विधवा कन्या को धर्मपत्नी के रूप मे स्वीकार किया। सम्पन्नता की चरम सीमा प्राप्त कर के भी उसके खान-पान रहन-सहन तथा पहनावे की सादगी मे कोई अन्तर न आया। उसका जन्म 31 मई, सन् 1936 में हरयाणा के गुरेरा नामक गाव मे हुआ था। कलकत्ता मे स्कूली शिक्षा प्राप्त करते समय जब वह छठी कक्षा मे था को उसे धुन सवार हुयी सस्कृत सीखने की। दोस्तो ने बडा समझाया कि यह युग अंग्रेजी सीखने का है, लेकिन भारतीय संस्कृति के अनन्य भक्त इस किशोर ने संस्कृत का ही अध्ययन चुना। सामाजिक क्षेत्र मे कार्य करने की लगन उसे आर्य समाज के सम्पर्क मे आकर लगी। सुरीले स्वर से भजन गा कर गाव के बच्चो को स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करना उसकी आदत थी। जीवन की यह मस्ती मृत्यु पर्यन्त चलती रही। 25 वर्ष की अवस्था मे उसने कलकत्ता के अपने कपडे के व्यापार को भी संभालना शुरू किया। अपने कर्मचारियो के साथ उसका व्यवहार मानवता की पूजा का एक विलक्षण उदाहरण था। छुट्टी के दिन साथ बैठकर खेलना, मैदान में ले जाकर कबड्डी खेलना, समय समय पर फल, मिठाई आदि मगवाकर साथ बैठाकर खाना-खिलाना और इस प्रकार के अनेक उदाहरण है जिन्हे जय भारत फैबरिक्स के परिवार समस्त कर्मचारीगण शायद कभी न भूल पायेगे।

पंजाब मे सन् 1957 के हिन्दी रक्षा आन्दोलन मे कन्हैयालाल ने बहुत रुचि ली और अथक कार्य किया। जो उसे अपनी मातृभाषा से गहरा लगाव जो था। धार्मिक

पुस्तको का स्वाध्याय उसके मुक्त समय का नियमित कार्यक्रम था। गुरेरा गाव मे इस आर्य परिवार द्वारा बनाये गये हाई स्कूल, कन्या पाठशाला, अस्पताल, कुएं आदि के निर्माण मे उसका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

1984 के सत्र मे आर्य-समाज, बडा-बाजार के प्रधान पद के लिये उनका नाम मनोनीत किया गया। बड़ी विनम्रता से यह पद लेने से उन्होने इन्कार कर दिया, किन्तु अन्तत कुछ वरिष्ठ सदस्यो तथा परम मित्रों के अनुरोध को वह ठुकरा न पाये। आर्य समाज, बडाबाजार ऐसे जोशीले युवक को अपने प्रधान पद पर आसीन कर के कुछ क्रान्तिकारी कार्यों की आशा कर ही रहा था कि नियति ने अपनी लीला दिखा दी। 13 जून सन् 1985 को दोपहर मे, 49 वर्ष की अल्पायु मे, मस्तिष्क के स्नायुओ मे रक्तस्राव हो जाने से, उनकी जीवन यात्रा समाप्त हो गई।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति......

(पृष्ठ ५ का शेष)

को भारत के गौरवपूर्ण अतीत की सही जानकारी दी जा सके। वर्तमान मे पढाया जा रहा इतिहास या तो तथ्यो को छूता ही नहीं, अथवा इतिहास की सही जानकारी नही बतलाता। प्राचीन इतिहास मे वैदिक काल के नाम से तथ्यो को गलत ढंग से पेश किया गया है। वेद, उपनिषद्, आदि भारत के प्राचीनतम वाङ्मय के आगे के बारे मे जो कुछ नही जानते वे भी उन पर अपनी लेखनी चलाते हैं। जहा वेदो का एक एक शब्द आज भी वेदज्ञ विद्वानो के लिये गूढार्थक होने से पहेली बना हुआ है, वहां सर्वथा अवेदज्ञ लोग वेद मे खोखलापन देखें यह कैसे सत्य हो सकता है। इसी प्रकार रामायण तथा महाभारत की कथाओं को कल्पित मानने के कारण तत्सम्बन्धी इतिहास या तो लिखा ही नहीं गया या काल-गणनादि की दृष्टि से अयथार्थ लिखा गया है। इस को विशेषज्ञ विद्वानो की सहायता से पुन यथार्थ रूप मे लिखे जाने की आवश्यकता है।

13—धर्मशिक्षा का भी माध्यमिक स्तर तक की कक्षाओ मे प्रविधान होना चाहिये। वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, महाकवियों, सन्तों तथा महापुरुषों के सुभाषितो से मानवो के हित को सिद्ध करने वाली मुख्य मुख्य बातो के सकलन से धर्मशिक्षा पर पुस्तकें तैयार की जानी चाहिये, जिनके अध्ययन से विद्यार्थी सच्चरित्र बन सकें। वर्तमान मे धर्मशिक्षा का प्रचलन न होने से व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र का चारित्रिक स्तर नीचे गिरते जा रहा है।

'सर्वहितकारी' के आजीवन सदस्यों की सूची

1 सर्वश्री बनारसीदास आर्य, लौहड चौपटा भिवानी
2 ताराचन्द आर्य खरीटा फार्म (इण्डस्ट्रीयल इस्टेट के पीछे) माडल टाऊन हिसार
3 सुखदेवसिंह सुपुत्र श्री लालचन्द गांव-पो० मनसरवास (कैरू) जिला भिवानी
4 जगन्नाथ जी, ए-26 रोहितकुंज डाकखाना रानीबाग, दिल्ली-110034
5 चौ. चन्दगीराम हुड्डा गांव-पो. घसोला तह० चरखी दादरी जि० भिवानी
6 प्रभुदयाल आर्य गांव-पो० दरियापुर जिला भिवानी
7 सन्तकुमार सुपुत्र श्री चन्दनसिंह गांव-पो. रानी खेड़ा दिल्ली
8 मन्त्री आर्यसमाज मन्दिर सोनीफलिया महर्षि दयानन्द मार्ग सूरत (गुजरात)
9 स्वामी सुरेन्द्रानन्द जी सरस्वती वेदमन्दिर परमाणु जिला सोलन (हि.प्र.)
10 अनिल कुमार गुप्ता म नं 359 लालकुर्ती बाजार अम्बाला छा०
11 मा. पूर्णसिंह आर्य पाना मामुरपुर नरेला दिल्ली-7
12 कर्मवीर वैद्य, यू-45 आर्य हस्पताल नरेला, दिल्ली
13 जगदीशलाल एण्ड ब्रादर्स प्लाट नं. 10300 मोतिया खान नई दिल्ली
14 रणसिंह आर्य यादव जीपवाला गांव सांपल वाया कलानौर जिला रोहतक
15 हरदास पहलमल अरोडा द्वारा आदर्श मैडिकल स्टोर्स आगरा रोड़ धूलिया (महाराष्ट्र)
16 प्रिंसिपल, दयानन्द पब्लिक कालेज नेहरू ग्राऊण्ड फरीदाबाद
17 प्रिंसिपल, दयानन्द पब्लिक हाई स्कूल सैक्टर 2 फरीदाबाद
18 प्रिंसिपल, दयानन्द पब्लिक हाई स्कूल सक्टर 23 फरीदाबाद
19 प्रिंसिपल दयानन्द कन्या महाविद्यालय नेहरू ग्राऊण्ड फरीदाबाद
20 सेठ रामनिवास जिन्दल गांव बालावास डा० कंवारी जिला हिसार—द्वारा अत्तरसिंह आर्य
21 प्रिंसिपल दयानन्द पब्लिक प्राईमरी स्कूल सैक्टर 18 फरीदाबाद
22 डा. भीमसैन जी स्मृति डा हिम्मतराय गांव-पो. पिनगवा जिला गुडगांव
23 श्री आचार्य जी संस्कृत भारतीय शिक्षा कालेज खन्ना कालोनी दिल्ली रोड़ सोनीपत
24 जगदीश बत्रा म. नं. 410 सैक्टर 14 सोनीपत
25 मन्त्री आर्यसमाज नेपीयर टाऊन जबलपुर (म. प्र.)
26 जगदीश मित्र स्मृति स्व० प्राणनाथ कुमार 89 आदर्श नगर जबलपुर (म. प्र.)
27 सुरेश कुमार सुपुत्र श्री बनारसीदास गांव-पो. बोन्दकला भिवानी
28 विश्वमित्र सत्यार्थी, 3सी/244 फरीदाबाद टाऊन
29 प्रिंसिपल, दयानन्द पब्लिक स्कूल बन. ई 44 फरीदाबाद
30 मुख्याध्यापिका, दयानन्द पब्लिक स्कूल सैक्टर 16 फरीदाबाद
31 मुख्याध्यापिका दयानन्द पब्लिक स्कूल सैक्टर 5 फरीदाबाद
22 मुख्याध्यापिका दयानन्द पब्लिक स्कूल सक्टर 7 फरीदाबाद
3ɔ मुख्याध्यापिका दयानन्द पब्लिक स्कूल सैक्टर 3 फरीदाबाद
34 मुख्याध्यापिका दयानन्द पब्लिक स्कूल सैक्टर 22 फरीदाबाद
35 मुख्याध्यापक जनता हाई स्कूल गन्नौर जिला सोनीपत
36 दौलतराम सेतिया 24/11 मोतीनगर नई दिल्ली
37 मन्त्री आर्यसमाज नेहरू ग्राऊण्ड फरीदाबाद
38 मन्त्री आर्यसमाज पश्चिम सान्ताक्रुज बम्बई-54
39 खेमलाल राठी एडवोकेट ए-9/32 वसन्त विहार नई दिल्ली-57
40 विजय कुमार बत्रा सुपुत्र श्री फतेहचन्द बत्रा 12/477 ऋषिनगर सोनीपत
41 के. सी. अरोड़ा बी 141 डी.डी.ए. कालोनी नारायणा दिल्ली
42 सत्यदेव आर्य वस्त्र लोक 2643 मुख्य बाजार शादीपुर नई दिल्ली
43 नन्दलाल लूथरा इंजिनियरिंग वर्क्स दिल्ली रोड़ सोनीपत
44 वेदपाल आर्य एक्सीयन बिजली बोर्ड कोठी नं० 14 हाऊसिंग बोर्ड कालोनी झाडसा मार्ग गुड़गांव
45 श्यामलाल आर्य एस. डी. ओ. म. न० ए.ई. 2 पावर हाऊस कालोनी फरीदाबाद
46 महाराष्ट्र मेडिकल स्टोर धूलिया (महा०)
47 डा० देशराज आर्य खीरवाट 290 इन्दिरा कालोनी रोहतक
48 चौ० सत्यदेव सिंह पूर्व पुलिस अधीक्षक, कलेर भवन पीपली रोड कुरुक्षेत्र
49 प० फूलचन्द शर्मा निडर प्रधान आर्यसमाज घण्टाघर भिवानी
50 मा० ताराचन्द प्रधान आर्यसमाज सब्जी मण्डी नारनौल शहर
51 बलदेव कृष्ण आर्य मुलतान ट्रेडर्स जी. टी. रोड़ करनाल
52 श्री भूषण जी द्वारा श्री मनीराम चुनाकला निर्माण उद्योग यमुनानगर
53 रामफल सिंह इन्चार्ज पशु हस्पताल गांव-पो० हैबुआना तह० डबवाली जिला सिरसा
54 प्रो० गोपीचन्द आर्य म० नं 7 डिफेन्स कालोनी हिसार द्वारा अत्तरसिंह आर्य
55 बहादुरराम यादव प्रधान आर्यसमाज रामसरा वाया अबोहर जिला फिरोजपुर (पंजाब)
56 ब्र० जीतेन्द्रदेव मलिक गांव-पो. जसराणा जिला सोनीपत
57 भरतसिंह शास्त्री कन्या गुरुकुल पंचगांव डा गोपी जि. भिवानी
58 सत्यवीर सिंह दलाल 312/21 डी. एल. एफ. कालोनी रोहतक
59 महेश्वरसिंह शास्त्री गांव-पो. सींक जिला करनाल
60 मन्त्री आर्यसमाज सिलारपुर तोताहेड़ी पो.करोता जि. महेन्द्रगढ़ द्वारा म. जयपालसिंह आर्य
61 पुस्तकालयध्यक्ष रामजीलाल सोनी एवं श्रीमती गिंदोडी देवी सोनी यादगार पुस्तकालय गांव मुंगारका जि. महेन्द्रगढ़ द्वारा मुरारीलाल बेचैन
62 बलबीरसिंह मलिक म. नं. 382 सैक्टर 10 फरीदाबाद द्वारा मुरारीलाल बेचैन
63 दयानन्द सुपुत्र श्री भगवानसिंह गांव सांघी जिला रोहतक
64 मन्त्री आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत
65 श्रीमती सविता बजाज प्राध्यापिका आर्य गर्ल्ज कालेज अम्बाला छावनी द्वारा पं० शेरसिंह आर्य
66 प्राचार्य आर्य गर्ल्ज कालेज अम्बाला छावनी द्वारा पं. शेरसिंह आर्य
67 मन्त्री आर्यसमाज पुरानी मण्डी फिरोजाबाद (उ. प्र.) द्वारा मुरारीलाल बेचैन
68 महाशय मदनलाल नम्बरदार ग्वाल पहाड़ी वाले द्वारा डा. राकेश दूबे गाव-पो. मांडी दिल्ली-47 द्वारा मुरारीलाल बेचैन
69 रामेश्वरदयाल सरपंच गांव लूलवाडी पो. रसूलपुर जि. फरीदाबाद द्वारा मुरारीलाल बेचैन
70 ओमप्रकाश मन्त्री आर्यसमाज कालांवाली जिला सिरसा द्वारा मुरारीलाल बेचैन
71 मुख्याध्यापक आर्य विद्या मन्दिर डबवाली मण्डी जिला सिरसा द्वारा मुरारीलाल बेचैन
72 प्रिंसिपल आर्य सिनि. सैकण्ड्री स्कूल सिरसा द्वारा मुरारीलाल ब
73 नौरंगसिंह एडवोकेट 102 द्वारकापुरी सिरसा— द्वारा मुरारी लाल बेचैन
74 मुख्याध्यापिका आर्य कन्या हाई स्कूल सिरसा द्वारा मुरारीलाल बेचैन

(शेष पृष्ठ ६ पर)

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य-२५ रुपये | विदेश में ३० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४८, अंक ३४, रविवार, १८ अगस्त, १९८५ | दूरभाष : ३४३७१८

आजीवन सदस्य-२५१ रु० | इस अंक का मूल्य—६० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८५, दयानन्दाब्द १६० | श्रावण शुक्ला २, २०४२ वि०

मुस्लिम पर्सनल ला को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती

अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के अध्यक्ष श्री विक्रम नारायण सावरकर ने भारतीय सविधान की धारा 32 के अनुसार सर्वोच्च न्यायालय में एक याचिका प्रस्तुत की है जिसमे राज्यो के संघ को संविधान की धारा 44 की व्यवस्था के अनुसार भारत के सभी नागरिकों के लिए एक समान नागरिक संहिता लागू करने के लिए उपयुक्त आदेश निर्देश जारी करने की प्रार्थना की गई है।

याचिका में कहा गया है कि जब संसद में समान नागरिक संहिता लागू करने के सम्बन्ध में प्रश्न पूछा गया तो शासन की ओर से बताया गया कि वह मुसलमानों के व्यक्तिगत विधि-विधान तथा धर्म में हस्तक्षेप करना नही चाहता। देश में समान नागरिक सहिता लागू न होने देने के लिए देश के राजनीतिक नेता ही उत्तरदायी हैं, क्योंकि बुद्धिजीवी मुसलमान तथा अधिकाश मुस्लिम महिलाए अविलम्ब समान नागरिक संहिता लागू करने के पक्ष मे विचार व्यक्त कर चुके हैं।

याचिका मे यह भी कहा गया है कि केन्द्रीय शासन संविधान की धारा 44 के मन्तव्यों के अनुसार समान नागरिक सहिता लागू करने मे असफल रहा है। विवाह के सम्बन्ध में हिन्दुओ और मुसलमानो के लिए किसी समान धारा का निर्णय नही किया गया। मुसलमानो मे प्रचलित बहुपत्नीवाद देश के सविधान की धारा 95 का उल्लंघन है। मुस्लिम पत्नी की सम्मति के बिना पति द्वारा तलाक का एक पक्षीय उद्घोष विभेदात्मक है। मुस्लिम पर्सनल लॉ मे जो उत्तराधिकार का प्रकरण है उससे संविधान की धारा 14 एवं 15 का स्पष्ट उल्लंघन होता है।

9 अगस्त को लोक सभा मे मुस्लिम लीग के जी० एम० बनातवाला द्वारा प्रस्तुत निजी विधेयक पर जिसमे तलाक शुदा मुस्लिम महिला के निर्वाह के सबंध मे शरीयत की दुहाई दी गई, जब विचार होने लगा तो सदन के सभी मुस्लिम सदस्यो ने, वे चाहे किसी भी दल के क्यो न हो, एक स्वर से सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय का जोर दार शब्दों मे विरोध किया। इस बहस मे बेगम आबिदा अहमद सब से अधिक मुखर थी जब कि कांग्रेस के ही मूलचन्द डागा, प्रियरंजन दास मुन्शी और एस० एन० सिनहा आदि ने कहा कि सर्वोच्च न्यायालय ने मुस्लिम परसन लॉ की किसी प्रकार भी अवहेलना नही की है, अपने कथन के समर्थन मे उन्होने जस्टिस बहारुल इस्लाम के एक लेख का भी उल्लेख किया। उन्होने बनातवाला से पूछा कि कुरान की किस आयत मे इद्दत की अवधि तक ही निर्वाह राशि देने का उल्लेख है? सदस्यो का कहना था कि इस प्रकार नारी के मौलिक अधिकारो का हनन किया जा रहा है। केवल 'तलाक' शब्द के उच्चारण मात्र से तलाक होने की प्रक्रिया का भी विरोध किया गया।

इस परिप्रेक्ष्य मे श्री सावरकर द्वारा प्रस्तुत याचिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होने के साथ साथ नितान्त सामयिक भी है।

"आओ ! हम लें दृढ़ संकल्प"

स्वतंत्रता का दिवस पुण्य है
प्राणों से भी प्यारा,
इसके हित
लाखों युवको ने
हंस-हस कर
अपनी इच्छा से
भारत मा की बलिवेदी पर
अपना शीश उतारा।
भगत सिंह-बिस्मिल-से अनगिन
स्वतंत्रता दीवानो ने
सुभाष-तिलक-आजाद सरीखे
लाल-बाल औ पाल-गोखले
गाधी नेहरू-जय प्रकाश ने
इसी स्वतन्त्रता हेतु समर्पित
किया स्वजीवन सारा।
ऋषिवर दयानन्द स्वामी ने
अलख जगाया नव जागृति की
अरुणायी की, तरुणायी की,
कण-कण को ललकारा।
अगणित वीरो के बलिदानो—
त्याग-तपस्या- आहुतियों का
यह प्रतिफल है।
आओ ! ऐसे शुभ्र दिवस पर
करें प्रतिज्ञा—
"दूर करेंगे दानवता हम
बेकारी—भुखमरी—गरीबी
भ्रष्टाचार—अनाचार सब
पाखंडों को, अन्धविश्वासों
को आगे बढ़ नष्ट करेंगे।
सारे भारत मे समता का
सुख-समृद्धि-समरसता का
श्रोत सुपावन बहे निरन्तर
ऐसा हमे प्रयास करना है।
मानवता का दारुण क्रन्दन
आज हमें करना है।"
बढ़ो जवानो ! राष्ट्र प्रेम का
दानवता से टकराने का
लें दृढता संकल्प।
ऋषि मुनियों की पावन संस्कृति
की, करनी हमें सुरक्षा,
राम-कृष्ण की अमृत संतति
उठो ! धरा पर अब लानी है
शाति-सुघर, सुव्यवस्था,
और गुँजानी है जय ध्वनि—
'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'
'जयति जय वैदिक धर्म'
'सर्वे भवन्तु सुखिनः'
'वसुधैव कुटुम्बकम्'

—राधेश्याम आर्य एडवोकेट,
मुसाफिर खाना, सुल्तानपुर

श्रीमती हाण्डा द्वारा टकारा ट्रस्ट को १५ हजार रुपये का दान

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के पूर्व मैनेजिंग ट्रस्टी स्व० श्री जी० आर० मेहता की सुपुत्री श्री स्नेहलता हाडा ने इस वर्ष टंकारा मे चले कार्यों के लिए 15 हजार रुपये एकत्रित करके दिये है। श्रीमती हाडा के समान ही कुछ लगन शील महिलाये टकारा हेतु कार्य करे तो यहा का कार्य सुचारु रूप से चल सकता है। दानी महानुभावो से निवेदन है कि टंकारा हेतु दान एकत्रित करके और अपनी ओर से राशि मनीआर्डर, चैक, ड्राफ्ट आदि निम्न पते पर भेज सकते हैं— महर्षि दयानन्द जन्म स्थान, टकारा जिला—राजकोट (गुजरात) पिन-363650। —रामनाथ सहगल, मन्त्री टकारा ट्रस्ट

परामर्शदाता-अमर स्वामी सरस्वती | सम्पादक-क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक-रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

जिसमें इन्सान को इन्सान बनाया जाए

—श्री रामचन्द्र थापर—

भरी मर्दुम से गो यह सरजमी है।
वले देखने को भी इसां नही है ॥

1925 ई० मे टेन्निस्सी (Tennessee) अमरीका मे जब डारविन के विकास वाद (theory of evolution) के अनुसार एक विद्यालय में यह पढ़ाया जाने लगा कि मनुष्य जाति के आदि पूर्वज बन्दर थे, तो न्यायालय मे मुकदमा दायर किया गया जो स्कोप्स ट्रायल (Scopes trial) के नाम से प्रसिद्ध है। इस सिद्धांत को स्वीकार करने वाले पक्ष ने कहा कि यह तो गर्व और प्रसन्नता की बात है कि हम उन्नति करते-करते बन्दरो से सर्वोच्च जाति के मनुष्य बन गये। विपक्ष ने कहा कि हम यह अपमान-वाद स्वीकार करने को कदापि तैयार नही कि हमारे पूर्वज वृक्षो से लटका करते थे। कहते हैं उस समय बन्दरो का एक प्रतिनिधि मण्डल भगवान के पास गया और कहा कि इन मनुष्यों मे अनेक अवगुण हैं—यथा झूठ बोलना, धोखा देना चोरी, लूट-मार, व्यभिचार, निर्दोष पशुओ की हत्या करना, इत्यादि। और ये लोग अपने को हमारा सम्बन्धी बता कर हमारा अपमान करते हैं।

यह प्रतिनिधि-मण्डल तो काल्पनिक ही है किन्तु क्या यह सत्य नही कि आज हम शुद्ध दूध, घी, और शहद के लिए गाय, भैंस और मक्खियो पर विश्वास कर सकते हैं, पर मनुष्यों पर नही ! कोई समय था कि मनुष्य हिंसक जानवरों को मारने के लिए शस्त्र बनाता था। परन्तु अब बहुत घातक बम्ब आदि बना रहा है क्योंकि आज उसका शत्रु उसकी अपनी ही जाति-मनुष्य है। पशु पेट भरने के लिये हत्या करते हैं, किन्तु मनुष्य जिह्वा के स्वाद और खालो से घर सजाने के लिये हत्या करते रहते हैं। यह है पशुओ से गिरी हुई मानवता जिस पर हम गर्व करते हैं।

परमात्मा ने तीन जातिया बनाई हैं : मनुष्य, पशु और पक्षी। तथा मनुष्यो से कहा "मनुर्भव"। पशुओं को 'पशुर्भव' नही कहा क्योकि केवल मनुष्यों को ही विवेक बुद्धि प्रदान की है जिस से वह सोच विचार कर काम कर सकता है। पशुओ के पास सहज बुद्धि ही है अत वह सोच नही सकते, तर्क वितर्क और बहस-मुबाहसे नही कर सकते।

स्वामी दयानन्द ने कहा कि "मनुष्य उसी को जानना जो मननशील होकर आत्मवत, अन्यो के सुख-दुख और हानि-लाभ सोच कर काम करे।" कवि ने [illegible] है:

मनुष्य ता को जानिये जाहि विवेक विचार।
जाहि विवेक विचार नही, सो नर ढोर गंवार ॥

हमारा जीवन किस काम का यदि हम एक दूसरे की कठिनाइयां कुछ कम नही कर सकते।

यही है इबादत यही दीन-ओ ईमां।
कि काम आये दुनियाँ में इंसां के इंसां ॥

स्वामी विवेकानन्द का कथन है कि 'मनुष्य का धर्म एक है न कि दो वा तीन और वह है सारी दुनिया को एक अविभाज्य परिवार मे पिरोना"। पर आज गोरे कालो से और एक धर्म के दूसरे धर्म वालों से नफरत करते दिखाई देते हैं। दुनिया मे आज तक जितने व्यक्ति धार्मिक युद्धो मे हताहत हुए प्राकृत कारणों से अर्थात् आंधी तूफान से और महामारियो से नही हुए।

सदिया गुजर गईं, मगर इंसा है बे निशा।
हिंदू कोई है, कोई मुसलमान आज भी ॥

मनुष्य ने धर्म से एक दूसरे के साथ द्वेष करना सीखा है, प्यार करना नहीं। सद्व्यवहार से रहित धर्म महात्मा गांधी के विचार मे घंटे-घड़ियाल के समान है जो शोर मचाने या सिर फोड़ने के काम ही आ सकता है।

कितने खेद की बात है कि आज के समृद्ध देश अपने कारखानो को चालू रखने के लिए अविकसित देशो का खून निचोडते हैं, उनका शोषण करते हैं और दुनियां मे असमानता दिन-ब दिन बढ़ती जा रही है। एक धर्मात्मा का उपदेश स्मरण रखने योग्य है :—

धन माल अपार बटोर भले पर इतना ध्यान अवश्य रहे।
घर अपना बसाने की खातिर घर औरों के बरबाद न कर ॥

अंगरेजी राज्य मे भारत वासी इस प्रकार निचोड़े गये कि आज भी लाखो को पेट भर खाना दुर्लभ है।

यह अच्छा है खुदा के हाथ में रोजी है ऐ 'सूफ़ी'।
अगर यह हक भी इंसां को मिला होता तो क्या होता !!

आज कल सब पंच वर्षीय योजनाएं बनाते हैं जिन का उद्देश्य भौतिक उन्नति ही होता है, किन्तु अच्छे मानव बनाने के लिए कोई योजना नहीं बनाई जाती। इस का परिणाम यह है कि मनुष्य ने आकाश मे उड़ना सीख लिया, समुद्र की छाती पर तैरना भी, तथा भूमि के गर्भ में से बहुमूल्य पदार्थ निकाल डाले, किन्तु खेद है कि धरती पर रहना नहीं सीखा ! मानवता की कसौटी धन की मात्रा व ऐश्वर्य भोगने की मात्रा नही, किन्तु यह है कि किसी देश के नागरिकों में मनुष्यत्व कितना है। अच्छा मानव बनने के लिए बहुत विद्या की आवश्यकता नहीं, क्योकि सार्वभौमिक और मुख्य सच्चाइया इतनी थोड़ी हैं कि एक मामूली कार्ड पर लिखी जा सकती हैं। आदर्श पुरुष बनने के लिये एक ही विचार काफी है जबकि भाषण देने के लिए सैंकड़ो पुस्तकें भी अपर्याप्त होती हैं।

एक शिक्षाप्रद प्रसिद्ध कहानी है कि एक चचल बालक अपने पिता के काम में बार-बार बाधा डाल रहा था। उस से छुटकारा पाने के लिए पिता ने दुनिया का नक्शा दिखा कर और उसके टुकडे करके आदेश दिया कि इन को जोड़कर पहले जैसा नक्शा बना लाओ। पिता चकित हो गया जब बच्चा शीघ्र ही जोड़ लाया। पूछने पर उसने कहा कि कुछ टुकडों की दूसरी ओर मनुष्य शरीर के कुछ अंग देख कर मनुष्य शरीर पूरा कर दिया, और उलटा कर देखा तो दुनिया का नक्शा पूर्ण हो चुका था।

अत: जबकि सारी दुनिया को धर्मात्मा बनाना किसी भी एक व्यक्ति की सामर्थ्य से बाहर है, इस का एक कोना हर कोई आदर्श बना सकता है और वह है उसका अपना आप। अथवा यदि प्रत्येक नागरिक ऐसा करने लग जाये तो सार्वभौम सुख शांति का राज्य स्वत: बन जाये।

अब तो मजहब भी कोई ऐसा चलाया जाये।
जिस में इंसान को इंसान बनाया जाये ॥

पता—558 माडल टाउन, जालन्धर—144003

चौ० प्रतापसिंह जी को श्रद्धाँजलि
शोकसभा मे ६५ संस्थाओं के प्रतिनिधि : २७ संस्थाओं को दान

करनाल, 8 अगस्त—चौधरी प्रताप सिंह की पुण्य स्मृति में एक विशाल श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इसमें न केवल हरयाणा अपितु पंजाब, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश एव दिल्ली की विभिन्न संस्थाओं के अनेक पदाधिकारी सम्मिलित हुए। 70 से.मी. अधिक संस्थाओं की ओर से उनको श्रद्धांजलि अर्पित की गई। सभी वक्ताओं ने दिवंगत चौधरी जी द्वारा विभिन्न व्यक्तियो, संस्थाओं, समाजों, विद्यालयो आदि के साथ देश के प्रति की गई सेवाओं का उल्लेख किया। दिल्ली की विभिन्न संस्थाओं की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों मे प्रमुख थे—सर्व श्री स्वामी सत्य प्रकाश जी स्वामी दीक्षानन्द जी जी प्रो० वेद व्यास जी, दरबारी लाल जी, प्रो० शेरसिंहजी, पं० शिवकुमार जी शास्त्री, रामनाथ सहगल, मुलखराज भल्ला रामभज बत्रा, रामलाल मलिक, मामचन्द रिवारिया, शान्ति प्रकाश बल एवं तिलकराज कोहली।

उनकी दानशील परम्परा को जारी रखते हुए इस अवसर पर उनके परिवार के सदस्यों ने, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, परोपकारिणी सभा, टंकारा ट्रस्ट, डी० ए० वी० एजुकेशन सोसाइटी, श्रद्धानन्द अनाथालय सनातन धर्म सभा, गुरुद्वारा, महावीर दल अस्पताल आदि 27 विभिन्न संस्थाओं को दान की घोषणा की।

उनको श्रद्धांजलि देने के लिए 65 से अधिक संस्थाओं के प्रतिनिधि सभा में उपस्थित थे।

सुभाषित

यत्कर्म कुर्वतोऽस्य स्यात् परितोषोऽन्तरात्मन: ।
तत्प्रयत्नेन कुर्वीत विपरीतं तु वर्जयेत् ।।
न सीदन्नपि धर्मेण मनोऽधर्मे निवेशयेत् ।
अधार्मिकाणां पापानामाशु पश्यन् विपर्ययम् ।।

जिस कर्म को करने से अन्तरात्मा को पूर्ण सन्तोष हो उसे प्रयत्न-पूर्वक करना चाहिए। जो कार्य इसके प्रतिकूल हो (अर्थात् अन्तरात्मा को सन्तोष न हो), उसको त्याग देना चाहिए। धर्म के अनुसार कार्य करने पर कष्ट का अनुभव होने पर भी अधर्म में मन को नहीं लगाना चाहिए, क्योंकि पापरत अधार्मिक लोगों का पतन होते देर नही लगती।

राजनीति और धर्म

—शहीद भगत सिंह—

अप्रैल १९२८ की बैशाखी पर पंजाब में राजनीतिक सम्मेलन के साथ नौजवान सभा का भी सम्मेलन हुआ था जिसमें शहीद क्रान्तिकारी भगत सिंह ने धर्म और आजादी की लड़ाई के सम्बन्ध में अपने विचार रखे थे। ये विचार आज भी प्रासंगिक हैं। इनसे भगतसिंह की अध्ययनप्रियता और विचारशीलता का पता लगता है। इस बार के स्वतंत्रता दिवस पर उन्ही विचारो को लेख के रूप में दे रहे हैं। इस लेख में धर्म की जिन बुनियादी बातों का उल्लेख है, वेद उन्ही को धर्म के रूप में स्वीकार करता है। अन्य मत-मतान्तर बाह्य कर्मकाण्ड को और अपने मत प्रवर्तक पर ईमान को अधिक महत्व देते हैं, यही कलह की जड़ है। धर्म का अर्थ मत या पन्थ नहीं है।

अमृतसर में ११-१२-१३ अप्रैल को पंजाब राजनीतिक सम्मेलन हुआ और साथ ही नौजवानों का सम्मेलन हुआ। दो तीन सवालो पर बहुत झगडा और बहस हुई। उनमें से एक सवाल धर्म का भी था। वैसे तो धर्म पर कोई सवाल न उठता, लेकिन सांप्रदायिक संगठनों के खिलाफ प्रस्ताव पेश हुआ और धर्म के बहाने उन संगठनो का पक्ष लेने वालों ने खुद को बचाना चाहा। वैसे तो यह सवाल कुछ और देर दबा रहता, लेकिन इस तरह सामने आ जाने से खुली बातचीत हो गई और धर्म की समस्या के हल का विचार भी उठा। प्रांतीय सम्मेलन की सब्जेक्ट कमेटी में भी मौलाना जफर अली साहिब द्वारा पांच-सात बार 'खुदा-खुदा' करने पर पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा कि इस मंच से आप 'खुदा-खुदा' न करें। आप धर्म के मिशनरी हैं तो मैं धर्म-हीनता का प्रचारक हूं। बाद में लाहौर मे भी, नौजवान भारत सभा ने इसी विषय पर एक बैठक की। कई भाषण हुए और धर्म के नाम का लाभ उठाने वाले और इस सवाल के उठने से झगड़ा होने से हटने वाले सज्जनों ने कई तरह की नेक सलाहें दी।

सबसे ज्यादा बात जो बार-बार कही गई है और जिस पर श्रीमान अमर सिंह जी झबाल ने खास जोर दिया, वह यह थी कि धर्म के सवाल को छेड़ा ही न जाए। बड़ी नेक सलाह है। यदि किसी का धर्म बाहर लोगों के सुख-चैन मे कोई रुकावट पैदा न करता हो तो किसी को भी उसके खिलाफ आवाज उठाने की क्या जरूरत हो सकती है? लेकिन सवाल यह है कि अब तक का अनुभव क्या बताता है। पिछले आंदोलन में भी धर्म का यही सवाल पैदा हुआ और हर किसी को पूरी आजादी दे दी गई। यहां तक कि कांग्रेस के स्टेज तक से आयतें और मंत्र पढ़े जाने लगे। उन दिनों धर्म में पीछे रहने वाला कोई भी आदमी अच्छा नहीं समझा जाता था। पूर्वग्रह बढ़ने लगे।

जो बुरा परिणाम सामने आया वह किसी से छिपा है क्या? अब कौमपरस्त या स्वतंत्रता-प्रेमी धर्म की वास्तविकता समझ गए थे और वे ही अब उसे अपने रास्ते का रोड़ा समझते थे।

बात यह है कि क्या धर्म घर मे रखते हुए लोगो के दिलो मे भेदभाव नहीं पड़ता? क्या उसका देश की पूर्ण स्वतंत्रता तक पहुंचने में कोई असर नहीं पड़ता? इस समय पूर्ण स्वतंत्रता के उपासक सज्जन धर्म को दिमागी गुलामी का नाम देते हैं। वे तो यह भी कहते हैं कि बच्चों को यह बताना कि ईश्वर ही सर्वशक्तिमान है और मनुष्य कुछ भी नहीं, मिट्टी का पुतला है, बच्चे को सदा के लिए कमजोर बनाना है, उसके दिल की ताकत और उसकी आत्मविश्वास की भावना को नष्ट कर देता है। लेकिन इस बात पर बहस न भी करे और सीधे अपने सामने दो सवालों पर ही विचार करें तो भी हमे दिखाई देता है कि धर्म हमारे रास्ते मे एक बड़ा भारी रोड़ा है। मसलन, हम चाहते हैं कि सब लोग एक समान हों। इनमें ऊंच-नीच, छूत अछूत का कोई विभाजन न रहे। लेकिन सनातन धर्म इस भेदभाव के पक्ष में है। बीसवीं सदी में पंडित जो भंगी के लड़के से हार डलवा कर कपड़ों सहित स्नान करते हैं और अछूतों को जनेऊ तक देने से इनकार करते हैं, अगर इसी धर्म के खिलाफ कुछ न कहने की सौगंध से लें तो चुपचाप घर बैठ जाना चाहिए। नहीं तो धर्म का विरोध होगा। लोग यह भी कहते हैं कि इन बुराइयों का सुधार किया जाए। बहुत खूब! छूत-अछूत को जिस स्वामी दयानंद ने मिटाया, वे भी चार वर्णों से आगे न जा सके। भेदभाव तो फिर भी रह गया। गुरुद्वारे में जाकर 'राज करेगा खालसा' गाने और बाहर आकर पंचायती राज की बातें करने का क्या मतलब होगा?

धर्म तो कहता है कि इस्लाम पर यकीन न लाने वाले काफिरों को तलवार के घाट उतार दिया जाना चाहिए और इधर जो एकता की दुहाई दी जाए तो नतीजा क्या होगा? हम जानते है कि अभी कई और ऊंची भावनाओं की आयतें और मंत्र पढ़ कर खींचतान करने की कोशिश की जा रही है। लेकिन सवाल यह है इस पूरे झगड़े से छुटकारा क्यों न हासिल किया जाए? धर्म का पहाड़ तो हमें सामने खड़ा नजर आ रहा है। मान लें कि भारत में आजादी की जंग छिड़ जाए। सामने-सामने सेनाएं बंदूकें लिए खड़ी हों, गोली चलने ही वाली हो और अगर उस समय मुहम्मद गोरी की तरह—जैसे कि कहावत बताई जाती है—आज भी हमारे सामने गाए, सुअर, वेद, कुरान, गुरुग्रंथ साहिब आदि चीजें खड़ी कर दी जाएं तो हम क्या करेंगे? अगर पक्के धार्मिक होंगे तब तो अपना बोरिया-बिस्तर लपेट कर घर बैठ जाएंगे। धर्म के होते हुए हिंदू या सिख गाय पर और मुस्लमान सुअर पर गोली नही चला सकते। धर्म के बड़े पक्के व्यक्ति तो उस समय सोमनाथ के कई हजार पंडों की तरह ठाकुरों के आगे दंडवत होते रहेंगे। दूसरे लोग धर्महीन या धर्म रहित काम करते जाएंगे। फिर हम किस परिणाम पर पहुचते हैं? धर्म के खिलाफ ही सोचना पडता है। लेकिन यदि धर्म के पक्ष वालो के तर्क सोचे जाएं, तो वे यही कहते हैं कि दुनिया में अंधेर हो जाएगा। पाप बढ़ जाएगा। बहुत अच्छा, इसी बात को लें लें।

रूसी महात्मा टाल्सटाय ने अपनी पुस्तक, 'एशसेज एंड लेटर्स, में धर्म पर चर्चा करते हुए उसके तीन हिस्से किए हैं:

1. 'इसेंसियल्स ऑफ रिलीजन' यानी धर्म की बुनियादी बातें कि सच बोलो, चोरी न करो, गरीबो की सहायता करो, प्यार से रहो, आदि।

2. 'फिलासाफी ऑफ रिलीजन' यानी जन्म, मुत्यु, पुनर्जन्म, ससार रचना आदि का दर्शन। इसमे आदमी अपनी मर्जी के अनुसार सोचने और समझने की कोशिश करता है।

3. 'रिचुअल्स ऑफ रिलीजन' यानी संस्कार, रस्मो-रिवाज आदि।

पहले हिस्से मे सब धर्म एक हैं। सभी कहते हैं कि सच बोलो, झूठ न बोलो, प्यार से रहो। इन बातो को कुछ सज्जनो ने निजी धर्म कहा। इस पर झगड़े का सवाल ही नहीं उठता। बल्कि ये नेक विचार हर आदमी मे होने ही चाहिए। दूसरा फिलासफी का सवाल है। वास्तव मे तो कहना पड़ता है कि 'फिलासफी इज द आउटकम ऑफ ह्यूमन वीकनेस' यानी फिलासफी आदमी की कमजोरी का परिणाम है। जहा तक आदमी देख सकता है, वहा तक कोई झगडा नही। जहां कुछ नजर न आया, वहा दिमाग लडाना शुरू कर दिया और खास-खास परिणाम निकाल दिए। वैसे तो दर्शन बहुत जरूरी चीज है, क्योंकि इसके बिना प्रगति नही हो सकती। लेकिन इसके साथ-साथ शांति भी जरूरी है। हमारे बुजुर्ग कह गए हैं कि मरने के बाद भी पुनर्जन्म होता है। ईसाई और मुसलमान इस बात को नहीं मानते। बहुत अच्छा, अपना-अपना विचार है। आएं, प्यार के साथ बैठ कर बहस करें। एक दूसरे के विचार सुनें। लेकिन एकता के मामले पर बहस होती है और हिन्दुओं और मुसलमानों मे लाठिया चल जाती हैं। बात क्या है? दोनों पक्ष दिमाग को, बुद्धि को सोचने-समझने की शक्ति को ताला लगा कर घर रख जाते हैं। वे समझते हैं कि वेद भगवान में परमात्मा ने इसी तरह लिखा है और सच है। वे कहते हैं कि कुरान-शरीफ मे खुदा ने यों लिखा है और यही सच है। अपनी तर्क-शक्ति की व्यक्तिगत राय से अधिक कोई महत्व न रखती हो और एक खास फिलासफी मानने के कारण अलग गुट न बने, तो इसमे किसी को क्या शिकायत हो सकती है। [फिलासफी तो तर्क की ही उपज है। —सं०]

अब आती है तीसरी बात संस्कार और रस्मोरिवाज। सरस्वती पूजा के दिन सरस्वती की मूर्ति का जुलूस निकालना जरूरी है और उसके आगे-आगे बाजा बजाना भी जरूरी है। लेकिन हैरिसन रोड के रास्ते पर एक मस्जिद भी पड़ती है। इस्लाम धर्म कहता है कि मस्जिद के आगे बाजा न बजे। अब क्या होना चाहिए। नागरिक अधिकार कहते हैं कि बाजार मे से बाजा बजाते हुए भी जा सकते हैं, लेकिन

(शेष पृष्ठ ९ पर)

हरयाणा ने सदा खोया ही खोया है

—प्रो० शेरसिंह, प्रधान हरियाणा रक्षावाहिनी—

आतंकवादी अलगाववादी तथा देश-द्रोही तत्त्वों की हिंसक गतिविधियों के कारण राष्ट्र की एकता को खतरा उपस्थित हो गया था, और पंजाब देश की मुख्य धारा से अलग होने की राह पर था। ऐसी अवस्था में इस चक्रव्यूह को तोड़कर पंजाब को राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ना सरल काम नहीं था। प्रधानमंत्री की सूझबूझ और पहल पर जो समझौता हुआ है, वह उनकी महान् उपलब्धि है और हरियाणा रक्षावाहिनी इस सफलता पर उनको हार्दिक बधाई देती है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि राष्ट्रहित सर्वोपरि है। पृथकतावादी शक्तियां अभी समाप्त नहीं हुई हैं और इस सद्भावना और एकता के वातावरण को बिगाड़ने में लगी हुई हैं। इसलिए राष्ट्र प्रेमी शक्तियों को उनके इरादों को नाकाम करने के लिए सजग और सक्रिय रहना पड़ेगा।

आतंकवादियों और राष्ट्र विरोधी शक्तियों से खुलकर विरोध करना सन्त लोंगोवाल के साहस का परिचायक है और वे बधाई के पात्र हैं।

यह सत्य है कि इस समझौते में हरयाणा ने कुछ खोया है और आने वाले छः महीने में और भी खोने की सम्भावना है। हरियाणा की इस शोचनीय अवस्था के लिए हरियाणा की जनता और नेता बहुत हद तक जिम्मेदार हैं। यह एक कटु सत्य है कि चेतना, संगठन और बलिदान की भावना के बिना न्याय भी नहीं मिलता यदि अकालियों की अनुचित मांगे मानी गईं और हरियाणा को टुकड़े फेंकने जैसी बात हुई तो इसके लिए स्वयं हरियाणा के लोग ही जिम्मेदार हैं। राजनीति में तो सब तुलकर मिलता है। जितना बड़ा जिसका बाट है उतना ही सामान तुलकर उसे मिलेगा। किसी देश या संगठन का बाट तो उसकी चेतना, संगठन-शक्ति और बलिदान की भावना ही होते हैं। यह मानना पड़ेगा कि हरियाणा का बाट छोटा है। इसलिए जब न्याय तुलता है तो वह सदा कुछ खो देता है।

इस फैसले के अनुसार फाजिल्का-अबोहर का मामला खटाई में पड़ गया है और रावी-व्यास के पानी में हरियाणा को उचित भाग मिलने की सम्भावना प्रायः समाप्त हो गई है। सतलुज यमुना-लिंक नहर बनाने का वायदा तो किया गया है परन्तु पानी के बिना नहर केवल एक लम्बा चौड़ा गढ्ढा ही हो सकती है। उससे हरियाणा के खेतों की प्यास नहीं बुझ सकती है। देखना यह है कि इतना गवां कर भी हरियाणा जागता है कि नहर और न्याय पाने की जो थोड़ी बहुत सम्भावना बची है उसका लाभ उठाता है कि नहीं।

धार्मिक उन्माद का सहारा लिए बिना हरियाणा के हितों की रक्षा के लिए हरियाणा रक्षा वाहिनी ने हमेशा अपनी आवाज बुलन्द रखने की चेष्टा की है। लेकिन अकालियों की तरह हमने हिंसा, अलगाववाद और संविधान विरोधी रेख कभी नहीं अपनाया। यही नहीं बल्कि इसे राष्ट्र विरोधी और घृणित तरीका समझा है। यदि इसी कारण हरियाणा को न्याय नहीं मिलेगा तो वह देश का दुर्भाग्य होगा।

हरियाणा रक्षा वाहिनी का यह निश्चित मत है कि क्षेत्रों और पानी के फैसले करते समय हरियाणा को शामिल न करना हरियाणा के साथ घोर अन्याय है। जिस फैसले में हरियाणा शामिल नहीं उसे वह मानने के लिए बाध्य नहीं। इस संबन्ध में हरियाणा के मुख्यमन्त्री का रवैया निन्दनीय है। विरोधी दल के विधायक अपने निश्चय पर कायम हैं, इसलिये वे बधाई के पात्र हैं। कांग्रेस दल के विधायकों को भी अपना वचन निभाना चाहिए।

प्रधान मन्त्री ने आश्वासन जरूर दिया है कि समझौते पर अमल करते समय वे हरियाणा व राजस्थान को पूरा न्याय देंगे। आने वाला समय ही बतायेगा की हरियाणा को कितना न्याय मिलता है।

हरियाणा की जनता से ...ी प्रार्थना है कि इस आश्वासन से आश्वस्त होकर फिर न सो जाये। सोये हुए शेर के मुंह में प्रविष्ट होकर मृग उसकी भूख कभी नहीं मिटाते।

हरयाणा में सिखों की स्थिति

—मेजर दरियावसिंह, माडल टाउन रोहतक—

१८ जून १९८५ को अवकाश प्राप्त लेफ्टीनेंट जनरल जगजीतसिंह अरोड़ा अखिल भारतीय विद्या परिषद के निमन्त्रण पर हरयाणा के रोहतक नगर में हिन्दू कालेज के प्रांगण में आयोजित एक विशेष सभा मे मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। इस सभा की अध्यक्षता का अवसर मुझे प्राप्त हुआ। आशा के विपरीत जनरल अरोड़ा जैसे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के अनुभवी व्यक्ति के विचार सुनकर खेद नहीं आश्चर्य भी हुआ। जनरल अरोड़ा ने अपने भाषण में स्पष्ट रूप से हरयाणा की जनता पर सिखों के साथ दुर्व्यवहार करने के निर्मूल आरोप लगाये। उन्होंने यहा तक कहा कि हरयाणा में न केवल सिखों को द्वितीय श्रेणी का नागरिक समझा जाता है, उन्हें आतंकवादी समझ कर हर सिख का अपमान किया जाता है। प्रतिष्ठित वक्ता के इस प्रकार के दुर्भाग्यपूर्ण उद्गार सुनकर अध्यक्ष पद की गरिमा रखते हुए मैं केवल सकेत के रूप में अपनी निराशा प्रकट कर सका, अन्यथा वक्ता के रूप मे श्रोताओं का ध्यान मैं निम्नलिखित तथ्यों की ओर आकृष्ट कराना चाहता था, जिनसे जनरल अरोड़ा की धारणा निर्मूल सिद्ध हो जाती है।

पंजाब में हिन्दू व सिख जनता का अनुपात ४७ : ५३% का है। परन्तु समस्या के मोर्चे में एक भी हिन्दू शामिल नहीं है। इसलिये पंजाब समस्या या तो केवल सिख समस्या ही है, या फिर ४७% हिन्दू जनता को पंजाब की नागरिक ही नहीं समझा जाता।

जनरल अरोड़ा का आरोप है कि हर सिख को आतंकवादी समझ लिया जाता है, विचारणीय है। पहली बात तो यह है कि जितने भी पंजाब की समस्या से जुड़े आतंकवादी अब तक जनता के सम्मुख आये, वे सब सिख वेशभूषा में थे अतएव हर अपरिचित सिख पर सन्देह होना स्वाभाविक ही है। यह मान भी लिया जावे कि तथा कथित आतंकवादी सिख नहीं थे, किन्तु सिख वेश में अन्य कोई तत्त्व थे और सिख धर्म स्थलों मे जाकर छुपे रहते थे। तब क्या यह समस्त सिख सम्प्रदाय का कर्त्तव्य नहीं कि उन्हें पकड़कर कानून के हवाले करें और अपने धर्म की मर्यादा व छवि धूमिल होने से बचाए?

सिखों के साथ नाइन्साफी का सवाल निर्मूल व सर्वथा असत्य है। सर्वप्रथम तो भारतवर्ष ही पूरे विश्व में ऐसा देश है जहाँ पर एक सम्प्रदाय लोगों को बिना लाइसेंस हथियार रखने की इजाजत है, पर दूसरों को नहीं। क्या सिख लोग धर्म के नाम पर लटकाई हुई कृपाण का प्रयोग किसी निहत्थे आदमी के साथ परस्पर झगड़ा होने के बाद नहीं करते?

समस्त विश्व में कोई ऐसी धार्मिक या सामाजिक जगह नहीं है जहां आवश्यकता पड़ने पर कानून व्यवस्था लागू करने वाली एजेंसी प्रवेश कर जांच पड़ताल न कर सके। यदि ऐसा है तो फिर गुरुद्वारों में पुलिस या सेना के प्रवेश पर यह हंगामा क्यों?

जिस प्रकार पंजाब के कुछ भूतपूर्व सैनिकों ने आतंकवादियों को प्रशिक्षित किया, उस तरह हरयाणा या अन्य राज्य के तो किसी भूतपूर्व सैनिको ने अपने कर्त्तव्य की अवहेलना नहीं की?

उपर्युक्त तथ्यो से स्पष्ट हो जाता है कि हरयाणा की जनता पर लगाए गए आरोप संतुलित व विवेक पूर्ण नहीं हैं।

(दैनिक ट्रिब्यून से साभार)

अकालियों से रियायत : हरयाणा से अन्याय

महाशय भरतसिंह, संयोजक हरयाणा रक्षा वाहिनी

प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी ने अकालियों के हिंसक आन्दोलन से भयभीत होकर उनके साथ समझौता करके हथियार डाल दिये हैं। उन्होंने श्रीमती इन्दिरा गांधी के १९७० के ऐवार्ड को रद्दी की टोकरी में फेंकते हुए अबोहर तथा फाजिल्का के हिन्दी भाषी क्षेत्र हरयाणा को दिये बिना चण्डीगढ पंजाब को देने की घोषणा करके राष्ट्र भक्त तथा शान्ति-प्रिय हरयाणा के साथ घोर अन्याय किया है। जल विवाद तथा हिन्दी भाषी क्षेत्रों के मामलों के निपटारे का निर्णय आयोग को सौंप कर हरयाणा के आंसू पोंछने का यत्न बेशक किया है। परन्तु इसकी क्या गारन्टी है कि अकाली नेता पूर्व की भान्ति आयोग के निर्णय को मान लेंगे? पहले भी अकालियों के साथ कई बार समझौते हुए हैं, परन्तु अकाली कोई न कोई बहाना बनाकर उनसे मुकरते रहे हैं। उन्होंने अपने पवित्र अकाल तख्त पर ह...णा के नेताओं के साथ चण्डीगढ़ के बदले अबोहर फाजिल्का हरयाणा को देने का वचन देकर सन्त फतेहसिंह को जल मरने से बचाया था, परन्तु थोड़े ही दिन के पश्चात् वे चण्डीगढ़ के साथ अबोहर फाजिल्का को भी पंजाब मे रखने का हठ करने लग गये। अब भी भिण्डरांवाले के पिता जोगेन्द्रसिंह के अकाली दल तथा सिख छात्र संघ ने इस समझौते को मानने से इन्कार कर दिया है।

अपने वक्तव्य के अन्त में महाशय भरतसिंह ने कहा कि प्रधान मन्त्री ने अकालियों के साथ समझौता करते समय हरयाणा की जनता के साथ घोर अन्याय किया है।

काश ! मैं पति होती ?

—सुशीला विद्यालंकृता—

मैं आकाशवाणी के लिए वार्त्ता लिख रही थी। एक सज्जन मेरे पास बैठे थे। कहने लगे—'वाह, बहिन जी ! अब आप पति बनने के सपने देखने लगीं ? मैं चौंक उठी ! मैंने उत्तर दिया—'घबरा क्यों रहे हैं साहिब ? मैं लिंग परिवर्तन करके पति बनने के स्वप्न नहीं देख रही। मैं तो चाहती हूं कि इस पुरुष प्रधान समाज में जो अधिकार और शक्तियां पुरुषों को प्राप्त हैं, काश, वे हमे मिल जाती तो हम पृथ्वी को स्वर्ग बना देते !

उन्होंने जोर का ठहाका लगाया और कहने लगे कि आप जानती हैं—स्त्री है क्या ? सुनिये, स्त्री है जोड, घटाना, गुणा और भाग। जब वह शादी करके वधू बन कर घर में प्रवेश करती है तो पति की चिन्ताओं का जोड़ शुरू हो जाता है। फिर वह घर में बसना शुरू करती है तो पति की शक्तिया, धन-धान्य सब घटने लगता है। साल दो साल बाद बच्चों का गुणा (मल्टीप्लिकेशन) शुरू हो जाता है। फिर वह ऐसे तिरिया चरित्र दिखाती है कि घर के सब संबन्धियो का भाग (विभाग) शुरू हो जाता है।

मैंने भी उन्हें कसकर जवाब दिया कि श्रीमान् जी ! इसी बात को हम इस तरह से कह सकते हैं कि शादी के बाद नन्हीं गुलाब की कली-सी वधू ससुराल मे प्रवेश करती है तो पति उसके लिये जोड़, घटाना, गुणा और भाग बनकर सामने आता है। कैसे ? सुनिये। सीधी-साधी वधू जानती भी नहीं थी कि चिन्ता होती क्या है ? ससुराल में कदम रखते ही सास, ससुर, ननद, भावजों, के ताने सुनते-सुनते उसकी चिन्ताओं का जोड़ होने लगता है। पति ने उसकी शक्तियो को घटाना आरम्भ कर दिया। हर साल बच्चों के गुणा होने लगे। अपने माता-पिता से उसका भाग हो गया।

एक व्यक्ति ने एक पुस्तक लिखी। What men know about women ? बड़ी आकर्षक जिल्द। अच्छा कागज। छपाई बढ़िया। उस पर लिखा—Dedicated to my wife. शानदार ढंग से पुस्तक का विमोचन किया गया। लोगो ने खरीदी। खोल कर पढ़ना शुरू किया। तो सारे पृष्ठ खाली। एक भी अक्षर नही था उसमे। पुस्तक थी कोरा कागज। संस्कृत में श्लोक है—

स्त्रियश्चरित्रं पुरुषस्य भाग्यम्।
देवो न जानाति कुतो मनुष्यः ?

स्त्री का चरित्र याने मन की बात तो देव भी नहीं जान सकते तो मनुष्य क्या जानेगा ? पुरुष सिर्फ स्त्री के बाह्य रूप से परिचित है, अन्तःस्वरूप से नहीं। स्त्री वही नहीं जो दिखाई देती है। उसका स्वरूप बड़ा गम्भीर है।

जब हम छोटे थे, सहेलियां मिलकर पति की परिभाषा किया करती थीं।

पति कौन ? जो पत्ते खेले, पियक्कड़ हो।

पति कौन ? जो पातशाही करे। रौब गांठे।

पति कौन ? जो पत रखे।

पति कौन ? जो पतवार थामे।

तो कैसा पति बनने की अभिलाषा है ? पत्ते खेलने वाला और पियक्कड़ पति की कमाई जूए, शराब ने खाई। बीबी-बच्चे रो-रो कर दिन काटें ऐसे पतियों को क्या चिन्ता है घर की। कितने घर बरबाद कर दिये हैं इस जूये और शराब की लत ने। गरीबों की झोंपड़ियों में जाइये, रात के समय। शराब पी-पीकर मदहोश, बीबी बच्चों की दुर्गति करते हुये नर पशु दिखाई देंगे। ऐसे पतियों की बीवियां भी कभी-कभी सोचती हैं कि हे भगवान्, काश हम पति होतीं तो इन पियक्कड़ों को बता देती कि बीबी-बच्चों की देखभाल का कर्तव्य इन नारकीय व्यसनों से बहुत ऊंचा है।

क्या पति कौन ? जो पातशाही करे। बात-बात मे रोब जमावे ? ऐसा पति बनना चाहती हो ? न बाबा न। माफ करो। ऐसे पति भी पत्नी की नींद हराम कर देते हैं। जरा दाल मे नमक ज्यादा हो गया कि झिड़कियां, गालियों का अम्बार खडा कर दिया। ऐसे पतियों की बीवियां भी कभी न कभी चाहती ही हैं कि यदि भगवान् मुझे भी पति की शक्ति प्रदान करे तो पति को सीधा करके रख दूं। आजकल गुस्सा, गालियां तो नौकर भी नहीं सहते। गुस्सा करके तो देखिये। फौरन काम छोडने को धमकी देकर चले जायेंगे। फिर दूसरा नौकर ढूंढ़ना और पाना आसान काम नही। हां तो हमारा समाज पुरुष प्रधान है इसलिये ऐसे गुस्सैले और पियक्कड़ पति भी मुंछो पर ताव दिये बड़ी शान से घूमते हैं उनकी पत्निया घरों में भीगी बिल्ली बनी दबी सिकुड़ी किस्मत को रोती रहती हैं। उनके दिलो के भी किसी न किसी कोने से कभी न कभी यह आवाज उठती ही है काश ! मैं पति होती। शक्ति होती तो इन सिरफिरों को सबक सिखा देती।

वस्तुत: पति वह जो पत राखे। घर की लाज बचाये। पत्नी को जीवन संगिनी, जीवन के हर मोड़ पर साथ देने वाली समझे। गृहस्थी की पतवार थामकर घर संसार की नौका को पार लंघा दे। मैं राजनैतिक, सामाजिक, सभी क्षेत्रों मे कार्य करती रही हूं। आजकल आये दिन समाचार पत्रों में स्त्रियों के साथ बलात्कार, स्त्रियों के आत्मदाह आदि के समाचार पढ़कर दिल दु:खी हो उठता है। बहुत-सी बहिनें मेरे पास अपना-अपना दुखड़ा रोने आया करती हैं। सो एक दिन मैंने 'क्रांतिकारी महिला परिषद्' की एक सभा बुलाई। उसमें राजनैतिक, सामाजिक, गांधीवादी आर्यसमाजी सनातनी सभी विचार धारा की महिलाओं को आमंत्रित किया। हाल खचाखच भरा था। मैंने उनसे कहा कि आपको मैंने एक गम्भीर विषय पर विचार करने तथा अपने-अपने विचार अभिव्यक्त करने के लिये बुलाया है। विषय है काश ! मैं पति होती ? हाल हंसी के ठहाको से गूंज उठा। शान्ति रखिये। शान्ति रखिये। सभा आरम हुई। अध्यक्षता मैंने की। प्रार्थना के साथ 'सबको सम्मति दे भगवान्' कार्रवाई आरम्भ हुई। सबसे पहिले पुराने विचारों की सासनुमा महिला अपने विचार प्रकट करने उपस्थित हुई। बहिनो। मैं क्या बोलूं ? काश ! मैं पति होती ! तो क्या करती ? कैसे बताऊं। मैं बक-बक तो बहुत करती हूं परन्तु स्टेज पर बोलना तो आता नहीं। पर इतना बता देती हूं कि मैं भी बहुत दिलजली हू। बड़ी तकलीफें सही हैं मैंने भी। जब शादी करके ससुराल आई, बहुत छोटी थी। मैं क्या जानू पति क्या होता है। सबने मुंह दिखाई की। पैसे दिये बड़ा अच्छा लगा। फिर मैं मैके चली गई। जब दूसरी बार ससुराल आई चार साल बाद, तो बहिना ! कुछ मत पूछो। सास, ननद उनके इशारों पर नाचने वाले मेरे पति, सबने मिलकर समय-समय पर मेरी कितनी दुर्गति की। भगवान झूठ न बुलावे कई बार मर जाने का मन हुआ। पर मरने के लिये भी तो साहस चाहिये ? आप लोगो के साथ रहकर आज मुझ मे हिम्मत आ गई है। मैं भी सोचने लगी हूं कि यदि मैं पति होती तो बहू के साथ यह अन्याय न होने देती।

आपको कैसे बताऊं कि मैंने क्या-क्या दु:ख भोगे। कितनी मार खाई ? कितने अपमान सहे। कभी मुंहमांगा दहेज न लाने के कारण सास, ननदों और पति के विष बुझे शब्दो के वाण सहे। कभी लड़कियां पैदा करने के कारण गालियां सही। बहिनो, बेटियो, जरा मेरे दिल पर हाथ रख कर देखो, कितने घाव हैं इसमें। कितना कंपन है। मैं पति होती तो विश्वास रखो ऐसा कभी न होने देती। आखिर बहू भी तो किसी की बेटी है। किसी के जिगर का टुकडा है। क्यों वह ससुराल में प्रताड़ना सहे ? मैं तो सास से, ननद से पक्की तरह से कह देती कि बहू घर की रानी बन कर आई है, इसे प्यार से रखना। इसे इतना सुख देना कि इसे भूल कर भी अपने मायके की याद न आये। हाल तालियों से गूंज उठा।

अब नाम पुकारा गया एक गांधीवादी महिला का। वह बहिन जी टाइप की महिला थीं। गांधीवादी विचारधारा के रंग में रंगी। दिन गरीबी मे काटे थे। वैष्णव जन तो तैने रे कहिये जे पीर पराई जाने रे। वह भी गरीबी की पीर से परिचित थी। बोली—बहिनो ! यदि मैं पति होती तो सबसे पहला काम यह करती कि सबके हाथों मे चर्खा और तकली पकड़ा देती। सबको अपने पांव पर खड़ा रहना सिखा देती। छोटे-छोटे और भी उद्योग चलाती जिससे सब स्वावलम्बी बनें। कोई घर ऐसा न रहे जहां चूल्हा न जले।

अब नाम पुकारा गया एक सेठानी जी का। खूब अच्छी सिल्क की साड़ी। गले में हार। आभूषणो से लदी। बोली। बहिनो ! मैं तो एक ही बात जानती हूं कि यदि मैं पति होती तो पत्नी को खूब ही ऐश कराती। जो कुछ भी वह मांगती जेवर, साडियां, टी.वी., फ्रिज, वी. डी. ओ. सब चीजो से घर भर देती। पत्नी की हर मांग पूरी करती। खूब सैर-सपाटे, सिनेमा, सभी कुछ कराती। मेरे पति ने भी तो मुझे बहुत लाड लड़ाये हैं न ! मैं तो उससे भी ज्यादा लाड़ लड़ाती पत्नी रानी के। लोग देखते ही रह जाते।

इसके बाद आई आधुनिका। नाम था लिली। अप्टुडेट। ओठों पर लिपस्टिक। विदेशी काटका पारदर्शी गाउन। कृत्रिम साज-सिंगार देखकर ही व्यंग्य व हंसी के फुव्वारे छूटने लगे। कहने लगी—काश ! मैं पति होती। तो इन छोकरे लोगो को ठीक कर देती—क्या समझते हैं अपने आपको ? हम औरतों को तो अपने नाच-रंग का साथी व मन बहलाव का साधनमात्र समझते हैं। हमे उनके लिए कमर लचकती बलखाती सजी-धजी गुडिया बनना पड़ता है। आप शायद समझती होगी कि सब शृंगार करना हमें अच्छा लगता है। नहीं, यह सब हमे अपने पतियो को मुट्ठी मे रखने के लिये करना पड़ता है। नही तो वह कहीं और ताक-झाक, डोरे डालना शुरू कर देंगे। सीधी-सादी सती साध्वी पत्नियां उनके मन को नही भाती। काश ! मैं पति होती, तो उन छोकरा लोगो को बताती कि पत्नी सिर्फ सज-धज कर उनके मन बहलाने या भोगने की चीज नही। उसका अपना भी अस्तित्व है। स्वतंत्र व्यक्तित्व है। इच्छायें हैं। आकांक्षायें हैं। यह बनावटी जीवन आखिर कब तक जिया जा सकता है। हमारे अन्दर भी माता का दिल है। हमे भी अपनी गरिमा बनाये रखने की अभिलाषा है। हम भी कभी-कभी बैठकर सोचती हैं यह ऊपरी टीपटाप हमें कहां ले जाकर पटकेगी ? बहिनो ! हमे उड़ती फिरती तितलियां मत समझो। यह तो हमारा बाह्य छलावा मात्र है। यदि मैं पति होती तो यह सारी धोखे की पट्टी नेस्तनाबूद करके रख देती। और एक सुन्दर प्यार के सूत्र में बंधा एक नया घर

(शेष पृष्ठ १० पर)

वेदमाता और श्रावणी-पर्व का सम्बन्ध

—डा० धर्मचन्द विद्यालंकार 'समन्वित'

ओम् स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।
आयु प्राणं प्रजां पशुं-कीर्ति द्रविणं ब्रह्मवर्चसं मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्॥

उपरोक्त वेद-मन्त्र हमें रह-रह कर वेद के स्वाध्याय के लिए अनुप्राणित कर रहा है। इस मन्त्र का सारांश है कि 'विद्वानों को पवित्र करने वाली वेदमाता का नित्यप्रति स्वाध्याय करके जो उसका स्तवन करना है वेदरूपी यह ममतामयी मां उसे प्रसन्न हो कर के सात दिव्य वरदान देती है—दीर्घ स्वस्थ जीवन, प्राण शक्ति का अभिनव संचार, सुसन्तान, यश, द्रव्य धनधान्य और ब्रह्मज्ञान। इन सबको पाकर जीव अमरता और पूर्णता की ओर अग्रसर होता है। लेकिन एक बात का विशेष ध्यान यह रहे कि वेदमाता के सुस्वाध्याय और सदाचरण से जहां ये उत्तम वरदान मिलते हैं, वहीं वेदरूपी कल्याणी वाणी मानव के उद्धार के लिए अन्त में इनके त्याग की भी पावन प्रेरणा देती है। क्योंकि एक सीमा पर पहुंचकर ये सब साधक भी बाधक बन जाते हैं। सारे ऐहिक ऐश्वर्य भोग-विलास के साधन जहां पर मानव मात्र की जीवन यात्रा के साधक हैं: मोक्ष के मार्ग में जाकर वहीं बाधक भी बन जाते हैं, अतएव त्याज्य हैं।

साधक क्यों ?

जिन सात वरदानों की प्राप्ति की वेदानुकूल विचार और आचरण से प्राप्ति की बात ऊपर की गई है, उनमें सर्वप्रथमतः आयु है। आयु का अर्थ जीवन है। जब मानव के पास आयु ही नहीं होगी तो इस विश्व का ही अर्थ और अस्तित्व शून्य है। इसलिए दुनिया में यदि सबसे बडा दिव्य वरदान या आशीर्वाद अथवा उपहार है तो वह जीवन का है। जीवन का अर्थ स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन से है। वह वेदानुकूल आचरण से प्राप्त होता है। वैदिक विद्वान दामोदर पाद सातवलेकर का उदाहरण हमारे सम्मुख है। उन्होंने जब यह मन्त्र पढ़ा और समझा कि वेद के स्वाध्याय और तदनुसार आचरण से सुदीर्घ जीवन मिलता है, तो उन्होंने नित्यप्रति वैदिक साहित्य का सुस्वाध्याय किया और १०८ वर्ष की लम्बी आयु भोगी।

दूसरी चीज प्राण है। प्राण का अर्थ जीवनी ऊर्जा से है। जिस मानव में यह शक्ति जितनी अधिक मात्रा में होती है, वह मानव उतना ही प्राणवान्, साहसी और संकल्प का स्वामी होता है। उसकी इच्छाशक्ति अजेय होती है। ऐसे व्यक्ति ही सदाचार द्वारा जीवनी-शक्ति पाकर महानतम सिद्ध होते हैं।

प्रजा: तीसरी बात प्रजा, सन्तान प्राप्ति की है। हम अपनी सन्तानों को वेदों का स्वाध्याय कराके और उसके अनुकूल आचरण कराकर उन्हें सुसभ्य मानव बना सकते हैं। वेद में कहा गया है कि भाई भाई से प्रेमपूर्ण वर्ताव करे, बहन बहन से द्वेष न करे, पति पत्नी के अनुरूप आचरण करे, मां अपनी सन्तान को नवजात बछड़े को जैसे स्नेह करती है वैसे ही प्रेम करे। अनुव्रत पितु पित्रो, माता भवतु संमना—पुत्र पिता का आज्ञाकारी हो, मां का भी भक्त हो। जहां पर ऐसी उत्तम शिक्षा होगी, वहां पर सन्तान कैसे सुसंस्कृत नहीं बनेगी। अतएव वेद का स्वाध्याय मानव निर्माता भी है।

अगला चौथा वरदान पशुं-कीर्ति और द्रविणम् बताए हैं। वेदानुकूल आचरण से ईमानदारी से अर्थोपार्जन की पुनीत प्रेरणा मिलती है। पवित्र अर्थ ही सब सांसारिक कामनाओं का सुसाधक होता है। अधर्म (बेईमानी) से अर्जित अर्थ तो बाधक ही होता है। अन्तिम वरदान ब्रह्मवर्चस को बतलाया गया है। ब्रह्मवर्चस का अर्थ ब्रह्म-तेज और आध्यात्मिक ज्ञान है। इससे ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। अतएव गायत्री के गुरुमन्त्र में भी- 'वरणीय भर्ग' की प्राप्ति की कामना की गई है। वेद कहता है—'ऋते ज्ञानान्न मुक्ति' अर्थात् ज्ञान के बिना मुक्ति, मोक्ष, अपवर्ग, कैवल्य - जोकि मानव की पूर्णता का प्रतीक और परमपुरुषार्थ है, प्राप्त होता है। लेकिन यह अन्ततः उपरोक्त वरदानों के त्याग से ही सम्भव है।

श्रावणी उपाकर्म :

ग्रीष्म के असह्य उत्ताप के उपरान्त वर्षा का सुखद सुकाल आता है। इसमें देव दिवाकर की तापकारी किरण-निकर को सावन के नव जलधर की घनी मेघ मालाएं आच्छादित कर देती हैं। मन्द-मन्द फुहार रह-रह कर बरसती रहती हैं। मानव का तन-मन तृप्त हो जाता है। मन शान्त होकर धार्मिक कृत्यों की ओर उन्मुख होता है। एक लोक धारणा इस श्रावणी-उपाकर्म से यह जुडी हुई है कि इस दिन से देव सो जाते हैं। अतएव शादी-विवाहादि के लौकिक कर्म इस काल में त्याज्य होते हैं। इसका कारण यह है कि पुराने जमाने में वर्षा अच्छी होने से आवागमन-यातायात के सारे मार्ग अवरुद्ध हो जाते थे, क्योंकि तब रास्ते कच्चे होते थे। उनमें पानी भर जाने के कारण युद्ध और व्यापार दोनों ही लगभग अवरुद्ध हो जाते थे। तब राजा और श्रेष्ठि लोग अपने यहां पर चार माह तक चातुर्मास-यज्ञों का आयोजन करते थे, जिनमे सारे विद्वान्, पण्डित और पुरोहित समारोह पूर्वक भाग लिया करते थे। इसका प्रबल प्रमाण यह है कि यज्ञ का एक पर्यायवाचक शब्द सत्र भी है, जिस प्रकार आजकल हमारी संसदों और विधानसभाओं के शरद-कालीन और वर्षाकालीन सत्र होते है, उसी प्रकार से उस समय राजा महाराजाओं के यहां पर यज्ञीय सत्र अथवा 'ज्ञान-यज्ञ' चलते थे, जिनमें ज्ञान की गहन गुत्थियों को पारस्परिक संवादों और शास्त्रार्थों के माध्यम से सुलझाए जाते थे। महाराज जनक के दरबार में याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी के शास्त्रार्थ, जनक और अष्टावक्र के संवाद हमारे कथन के जीवन्त प्रमाण हैं। विद्वानों को ही उस जमाने में देव कहा जाता था। उनके यज्ञीय कार्यों में व्यस्त होने के कारण विवाहादि के लौकिक कर्म इस काल में वर्जित थे। अन्यथा देव कभी सोते नहीं हैं। वे तो निद्राजित्, आलस्य प्रमाद रहित होकर अपने अध्ययन, मनन और लेखन के कार्य में व्यस्त रहते हैं।

दूसरा एक मुख्य कारण श्रावणी पर्व के महनीय महत्त्व का यह भी है कि वर्षाकाल के इसी दिन से (श्रावण की पूर्णिमा को) ऋषि-आश्रमों और गुरुकुलों में नवीन विद्यार्थियों को प्रवेश दिया जाता था। आजकल भी इन्हीं दिनों में कालेजों में प्रवेश चलते हैं। लेकिन उस समय के प्रवेश-पर्व का अपना ही महत्त्व था। ब्रह्मचारी विद्यार्थी समित्पाणि (समिधा हाथ में लेकर) गुरु के सम्मुख अपने को नूतन निर्माण के लिए प्रस्तुत करता था। इसीलिए गुरुकुल में शिक्षित विद्यार्थी को ही द्विज (दो जन्मों वाला) कहा जाता था। वहां पर उसका यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न होता था। तदोपरान्त वेदों के पठन-पाठन की प्रक्रिया अनवरत रूपेण चलती थी।

श्रावणी-पर्व का वर्तमान स्वरूप :

पौराणिक और मध्यकालीन युग में आकर श्रावणी पर्व को एक ऐतिहासिक वृत से जोड़ दिया गया। जैसे कि होली के शस्येष्टि यज्ञ को प्रह्लाद और हिरण्यकशिपु के भक्ति भावापन्न कथानक रूपक से व्यक्त किया गया। क्योंकि ऐसे रूपक या आध-बिम्ब अथवा इतिवृत्त सामान्य जन द्वारा सहज रूप से ग्राह्य होते है। अतएव श्रावणी पर्व के साथ ही पौराणिक कहानी यह जोड़ दी गई कि एक बार

(शेष पृष्ठ १० पर)

ऋषि के वंश-वृक्ष की......

→

की बताई तथा पुत्र का नाम विश्वनाथ बताया। विश्वनाथ के एक पुत्र का नाम हेमशंकर बताया किन्तु दूसरे का नाम वे नहीं बता सके। जीवापुर स्थित विश्वनाथ के पुत्र भाईशंकर (वर्तमान में विद्यमान हैं) प्रदत्त पूर्वोक्त वंशावलि के अनुसार तथा जीवापुर के वृद्ध व्यक्तियों से प्राप्त जानकारी के अनुसार देखा जाए तो लाभशंकर द्वारा बताए गए करसन जी के चतुर्थ पुत्र कानजी का ही नाम कुंवरजी अथवा कल्याणजी था और इनके पुत्र मकनजी और शामजी थे और मकनजी के वल्लभजी तथा विश्वनाथ दो पुत्र थे तथा विश्वनाथ के भाईशंकर आदि चार पुत्र जीवापुर में हैं।

अब लाभशंकर ने कानजी की प्रथम पुत्री का नाम देवबाई बताया। वह विश्वनाथ जी के बड़े भाई वल्लभ जी की [illegible]ी का नाम था। इनके कोई पुत्र न था किन्तु रेवा बाई नामक पुत्री थी। इनका विवाह टंकारा में प्रभाशंकर रावल नामक व्यक्ति से हुआ था। रेवा बेन की दो पुत्रियां वर्तमान में जामनगर में हैं।

लाभशंकर ने कानजी की दूसरी पुत्री का नाम कडवी और तीसरी का नाम वेला बताया है तथा चौथी सन्तान पुत्र विश्वनाथ बताया है। वास्तव में यह भी कानजी का पुत्र नही था अपितु उपर्युक्त करसन जी के पौत्र मकन जी का पुत्र था यह हम पहले चर्चा कर चुके हैं कि यह विश्वनाथ करसन जी की चौथी पीढ़ी में जीवापुर स्थित वंशज है और लाभशकर से आयु मे बड़ा होते हुए भी समानान्तर पीढी का है। इतना स्पष्ट होते हुए लाभशंकर इनको कानजी का पुत्र बताते हैं और आगे उसका पुत्र हेमशकर बताते हैं। किंतु यह हेमशंकर विश्वनाथ का पुत्र ही नही है।

प्रसगानुकूल इस बात को अधिक स्पष्ट करने के लिए तथा विस्तृत जानकारी लेने के लिए जब मैं 20 अगस्त 1964 को इनसे मिलने गया तब इन्होंने [illegible]से कहा कि मैं वर्तमान मे जामनगर में रहने वाले हेमशंकर से भेंट करूं, उससे बहुत जानकारी मिलेगी। इस पर मैं हेमशंकर से मिलने जामनगर गया जो वहा आयुर्वेदिक कालेज में अध्यापक थे। जब उनसे परिचय हुआ तो उन्होने लाभशंकर जी के इस कथन पर आश्चर्य प्रकट किया कि जिसे वे विश्वनाथ का पुत्र हेमशंकर बता रहे हैं वे वही हेमशंकर तो हैं और जीवापुर निवासी ब्राह्मण भी हैं। किंतु त्रिवेदी उपगोत्र के न होकर 'व्यास' हैं। उन्होंने यह भी बताया कि इनके दादा नत्थूराम तथा विश्वनाथ के पिता मकनजी दोनों एक दूसरे से सम्बंध मे मामा के और बुआ के पुत्र-भाई होते थे। लाभशंकर द्वारा प्रदत्त इस गलत सूचना से ही यह सिद्ध होता है कि उनकी यह सारी जानकारी कितनी दोषपूर्ण है।

जामनगर आयुर्वेदिक कॉलेज में अध्यापक बनकर मैं 1969 में आया। हेमशंकर जी भी इसी कॉलेज में अध्यापक थे। इसलिए उनसे इस विषय में बराबर जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न भी करता रहा। मैं अध्यापन के साथ अपने विषय काय-चिकित्सा के अनुरूप हस्पताल मे चिकित्सक का कार्य भी करता था। उसी में विश्वनाथ के पुत्र भाईशंकर भी 'हिसाब-लेखक' थे। इसलिए इन दोनों 'जीवापुर' वासियो से अधिकाधिक जानकारी सम्भव थी जो सरलता से प्राप्त भी हुई। उन्होने संबंधित गाव और व्यक्तियो से मिलने पर अधिक वृत्त प्राप्त होने का संकेत दिया था। मैं वहा गया, सम्पर्क किया तथा पूरी जानकारी अपने पास भी रखी, किंतु मुख्य विषय से सम्बद्ध कुछ अधिक प्राप्त नही हुआ। इसलिए उसका विवरण देना अनावश्यक है, किंतु विषय से सम्बद्ध दो बातें यहा प्रस्तुत करता हू।

हेमशंकर के अनुसार विश्वनाथजी कहा करते थे कि वे दयानन्द के कुटुम्बी हैं और उनके पास पूरा वंश वृक्ष भी है। किन्तु ऋषि दयानन्द के विषय में उस समय ऐसा भ्रम फैल गया था कि विधर्मी हो गए इसलिए उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द से भी सत्य बात छिपाई।

विश्वनाथ के सम्बन्ध मे हेमशंकर एक अन्य प्रसंग बताते हैं कि दयानन्द जन्मशताब्दी के अवसर पर जब स्वामी श्रद्धानन्द टंकारा आए थे तो एक दिन सायं जीवापुर आए और विश्वनाथ से मिले। तब स्वामी जी ने विश्वनाथ से पूछा कि क्या उनके कुटुम्ब का कोई लड़का भाग गया था। किन्तु विश्वनाथ ने जान बूझ कर गलत उत्तर दिया कि उनके कुटुम्ब से मूलशकर नामक कोई लड़का नहीं भागा और जो लड़का घर से भागा था वह हरिजनों के ब्राह्मण का लड़का था। यह सुनकर स्वामी श्रद्धानंद, जिनका विचार रात्रि में जीवापुर रुकने का था, तुरन्त वापिस टंकारा चले गए। हेमशंकर अपनी सेवा से निवृत्त होने के बाद जामनगर मे ही रह रहे हैं। उन्होंने मुझसे एकाधिक बार इस घटना की चर्चा की और स्वामी श्रद्धानंद जी के डीलडौल और व्यक्तित्व के बारे मे भी बताया। संक्षेप में, उस समय स्वामी जी के परिजनों में उनके बारे में गलत धाराणाएं प्रचलित थीं इस कारण किसी ने सत्य बात बताई ही नहीं। यदि बता दी होती तो इस विवाद के लिए न तो स्थान रहता और न आगे शोध की आवश्यकता।

जामनगर में दूसरा प्रयत्न :

एक गुजराती भाषी स्वामी ओंकारानंद संन्यासी पौराणिक विचार के थे, तथापि ऋषि के प्रति उनकी श्रद्धा थी और वे ऋषि-जीवनी तथा वंश से सम्बन्धित जानकारी भी रखते थे। वे टकार में मुझे बार-बार मिलते रहते थे। एक बार जामनगर आकर उन्होंने मुझे बताया कि जामनगर राज्य के बाबरा गाव के त्रिवेदी ब्राह्मण ऋषि के कुटुम्ब हैं और उनके पास डोसाजी का पूरा वंश वृक्ष है।

मैंने इस विषय में खोज की तो पता चला कि बाबरा के सब ब्राह्मण राजकोट और जामनगर चले गए हैं। जामनगर मे एक वृद्ध और विद्वान् पंडित मणिशंकर हैं। इन मणिशंकर को आर्य समाज में यजुर्वेद पारायण यज्ञ मे वेद पाठी के रूप में निमन्त्रित किया गया था, इसलिए उनसे मेरा परिचय था। मैं उनके घर पर जाकर उनसे मिला। इनके पास अपनी दस पीढ़ियों के वंश वृक्ष का चित्र शाखा और पत्रो मे नाम के साथ विद्यमान था। मैंने उसकी प्रति कर ली, किन्तु जब इस वंश-वृक्ष से जीवापुर या टंकारा के त्रिवेदी कुटुम्ब के नामों के साथ मिलान किया तो कोई नाम नही मिला और न हरिभाई त्रिवेदी का नाम मिला। यह मणिशंकर भाई भी औदीच्य साम वेदी ब्राह्मण हैं। दालभ्य गोत्र और पंच प्रवर के भी हैं यह सब बातें ऋषि की जाति और गोत्र से मिलती हैं। किन्तु प्रतीत होता है कि ये दूर के कुटुम्बी हैं। इस प्रकार जानकारी प्राप्त करने का यह प्रयत्न भी निष्फल रहा।

एक और प्रयत्न :

जीवापुर मोरवी और मेधारथी जी, की उक्त वंशावलिया अपूर्ण और अविश्वसनीय हैं। इसलिए इस दिशा में अधिक प्रयत्न व्यर्थ था। किन्तु हेमशंकर जी ने बताया कि जीवापुर के दरबारी जमींदार श्री जदुमा पथुभा जाड़ेजा के पास कुछ लिखा हुआ मिलेगा। जब जानकारी प्राप्त की तो पता लगा कि वे बड़ौदा चले गए हैं। जब मैं अपने कालेज की मौखिक परीक्षा लेने बड़ौदा (25 मई 1984 को) गया तो उनसे मिला। उन्होने बताया कि जीवापुर गांव और खेती की जमीन का स्वामित्व तीन भागों में बांटा हुआ था। एक भाग हमारे पूर्वजो के पास था। उस बही में यह उल्लेख था कि करसनजी त्रिवेदी पहले तो जमीन के प्रथम स्वामी के भाग में रहते थे बाद में वे हमारे हिस्से वाले भाग मे रहने आए। उन्होंने यह भी कहा कि जब मैं जीवापुर जाऊंगा तो आपको सूचित करूंगा और आप जीवापुर आएगें तो यह लेख आपको बताऊंगा। इस बात-चीत के बाद से वे जीवापुर नहीं आए हैं और यह उल्लेख भी जीवापुर के करसनजी से संबंधित होगा। इससे ऋषि जीवनी का कोई सम्बंध नहीं है इसलिए हमारे लिए इसका अधिक उपयोग भी नही है। तथापि इसमें जीवापुर के करसन जी के संवत् का उल्लेख मिल सकता है।

एक और अपूर्ण प्रयत्न

सौराष्ट्र और राजस्थान मे एक बारोट (चारण या बारहट) कौम होती है। उसके पास राजाओं और अपने अन्य यजमानो की नामावलि की बही होती है। ये लोग प्रति वर्ष यजमानों से दक्षिणा लेने निकलते हैं और बही में नये जन्मे बच्चों का नाम भी लिखते रहते हैं। इस कारण उनके पास यजमानो के वंशों की आरम्भ से लेकर अद्यतन नामावलि उपलब्ध रहती है। जब मैंने यह पता किया कि क्या ऋषि के कुटुम्ब का कोई बारोट है तो पता चला कि 50-60 वर्ष पूर्व तक त्रिवेदियो के एक वृद्ध बारोट जीवापुर मे पाटण (गुजरात) से आया करते थे। उनका नाम पथा भाई बारोट था। अधिक खोज करने पर ज्ञात हुआ कि उनका देहान्त हो गया है। उनके कोई पुत्र नही था, केवल एक पुत्री थी जिसका विवाह सिद्धपुर मे हुआ था।

इस जानकारी के आधार पर मैंने आर्यसमाज पाटण के मन्त्री को 26 नवम्बर 1983 को इस विषय मे खोज करने के लिए लिखा। पत्राचार होता रहा किन्तु अब तक कुछ प्राप्त नही हुआ यह कार्य कठिन है क्योकि प्रथमत: सम्बन्धित व्यक्ति को ढूढ़ना पड़ता है। यदि व्यक्ति मिल जाए तो यह पता करना होगा कि उसके पास पुरानी बहिया हैं या नहीं। यदि हैं तो उनमे इच्छित वंश वृक्ष है या नहीं। इस सब जानकारी के लिए कुछ अधिक समय चाहिए। मैं स्वयं अनुकूलता प्राप्त होने पर वहाँ जाकर यह कार्य करना चाहता हू, किन्तु यदि कोई संस्था या निकटवर्ती व्यक्ति इस कार्य को करे तो अधिक सफलता मिल सकती है।

शोधकर्त्ताओं से निवेदन :

ऋषि जीवनी शोध करने वाले विद्वानों से भी एक निवेदन है—सौराष्ट्र के धन-सम्पन्न लोग तीर्थ यात्रा जरूर करते हैं। ऋषि के पिता सम्पन्न थे और मूलशंकर के गृह-त्यागी होने तथा छोटे पुत्र वल्लभजी के छोटे आयु में देहान्त होने से व्यथित हृदय करसन जी ने भी तीर्थ यात्रा जरूर की होगी और अकाल मे मृत्यु प्राप्त वल्लभ जी का श्राद्ध भी जरूर किया होगा। देवेन्द्र बाबू ने तो यह भी वर्णन किया है कि करसन जी ने अपना अवशिष्ट जीवन तीर्थाटन में ही व्यतीत किया था। तीर्थस्थानों में प्रत्येक जाति के पृथक्-पृथक् पण्डे होते हैं और तीर्थ पर आने वाले यजमानों का तथा परिवारो के सदस्यों का नाम भी बहियों में लिखते हैं। हरिद्वार मथुरा आदि स्थानों मे पण्डो के पास ऐसी नामावलि और वंशावलि प्राप्त होने की सम्भावना है। अतः आर्य जगत् के अन्वेषकों तथा विद्वानों और तीर्थस्थानों पर स्थित आर्य समाजों से मेरा निवेदन है कि वे इस सम्बन्ध में कुछ प्रयत्न करें तो कुछ सफलता मिल सकती है।

(क्रमशः)

पत्रों के दर्पण में

हिन्दुस्थान में ही हिन्दी की दुर्दशा

मैंने स्नातकोत्तर अभियांत्रिकी की ग्रेड प्रवेश परीक्षा हिन्दी में दी। जिसका परिणाम यह हुआ कि मेरी हिन्दी मे लिखित उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन किये बिना ही मुझे अनुत्तीर्ण कर दिया गया। उल्लेखनीय है कि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान "आई-आई-टी" द्वारा ली जा रही उक्त ग्रेड परीक्षा के संचालकों ने परीक्षा के विषय में नियम बनाया है कि परीक्षा केवल अंग्रेजी में ही दे सकते हैं। मैंने इस विषय में सर्वोच्च न्यायालय के अधिवक्ता श्री एस०के० बिसारिया की सलाह ली। उन्होंने आई-आई-टी द्वारा हिन्दी पर लगये गये प्रतिबन्ध को संविधान की धारा 29-2-,343, 351 का उल्लंघन बताया। इस आधार पर मैंने दिल्ली उच्च न्यायालय में याचिका दायर की। किन्तु दिल्ली उच्च न्यायालय ने बिना कारण बताये याचिका रद्द कर दी। अब हमारे उक्त हिन्दी प्रेमी अधिवक्ता हमारी जीत पर पूर्ण विश्वास रखते हुए याचिका सर्वोच्च न्यायालय में दायर करने के लिये कह रहे हैं। धीरे धीरे याचिका सर्वोच्च न्यायालय में दायर करने की 3 माह की अवधि भी अर्थ व्यवस्था के अभाव में बीतती जा रही है। संविधान की इस प्रकार होने वाली अवहेलना के निराकरण के लिए कौन आगे आयेगा? यही प्रश्न है? —मुकेश जैन 3314, बैकस्ट्रीट, दिल्ली-5

आर्य समाज की प्रगति क्यों नही?

मैं आर्य समाज के निकट १९११ में आया। सरकारी नौकरी ३७ साल की। उसमें भी आर्य समाज से सम्बन्ध बना रहा। अवकाश प्राप्त करने पर समाज सेवा व्रत लिया, किसी ने प्रेरणा नहीं दी थी। २५ साल इधर-उधर भटकने के बाद अब ८० वर्ष आयु होनेपर आर्य समाज की भूत और वर्तमान दशा पर दृष्टि डालता हूं तो मन मसोस कर रह जाता हूं कि आर्य समाज का भविष्य क्या होगा। कई सज्जन कहते हैं कि निराशा की कोई बात नहीं है, परन्तु इस से बात बनने वाली नहीं है। जरा वर्तमान का अपने उज्जवल भूत से मुकाबला करें, जब प्रत्येक आर्य समाजी एक चलता-फिरता उपदेशक होता था। उसकी करनी व कथनी एक होती थी। हर आर्य समाजी अपने परिवार, अपनी सन्तान पर अपनी छाप छोड़ता था। साप्ताहिक सत्संग में नागा बहुत बुरी समझी जाती थी। समाजों में संस्कार कराने का महत्त्व था शुद्धि में बड़ी रुचि होती थी। विधवा विवाह पर बड़ा बल दिया जाता था। सभासदों में आपसी भातृप्रेम होता था। हर सभासद् नए सभासद् बनाने में तत्पर रहता था। उपदेशक गण पैदल चल कर ग्रामों में प्रचार करते थे। परस्पर धन का महत्त्व नहीं था। सेवा भाव आगे था। पदलोलुपता नहीं थी। चरित्र पर बड़ा बल दिया जाता था। उपदेशक वर्ग, भजनीकों, नेताओं, महात्माओं सन्यासियों का बड़ा आदर मान होता था।

आवश्यकता है कि हम पुरानी बद पड़ी समाजों को जगाएं नई खोलें।

सन्यासी व नेता दान दक्षिणा के लोभी न होते थे। सम्मेलनों में हाजरी बहुत ज्यादा होती थी। एक से एक बढकर विद्वान् और शास्त्रार्थ महारथी थे। आज हमारा सारा बल भवन बनाने में लगा हुआ है। दफ्तरी कारवाई बढ़ गई है। कार्य कर्त्ताओं का अभाव है। शिक्षा संस्थाएं दिन-प्रतिदिन खुल रही हैं जो केवल नौकरी के अभिलाषी पैदा कर रही है कोई इन से प्रचारक नहीं बनता, अध्यापक, दृढ़ आर्य समाजी नहीं होते, फिर शिष्य कहां होंगे। पहिले की तरह जीवन दानी नहीं। वानप्रस्थ व संन्यास प्रथा लुप्त हो चुकी है। कोई प्रचारक बनने को तैयार नही। किसी को ऋषि ऋण उतारने का फिकर नहीं। जनता की आंखें आर्य समाज की ओर हैं और आर्य समाज अपनी ख्याति खो रहा है।

—स्वामी सुबोधानन्द, दीनानगर

ला० हंसराज गुप्त के पिता

२१ जुलाई ८५ के "आर्य जगत्" में स्वर्गीय लाला हंसराज गुप्त को श्रद्धांजलि देने के प्रसंग में प्रथम ६७ पर प्रदत्त श्रद्धांजलि में यह छपा है कि लाला हंसराज गुप्त उस योग्य पिता के सुयोग्य पुत्र थे, जिसे महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने स्वयं परोपकारिणी सभा की सदस्यता प्रदान की थी।

यह भ्रम पूर्ण है। क्योंकि लाला श्री हंसराज जी के पिता श्री गुलराज गोपाल गुप्त २९ दिसम्बर १९१२ को परोपकारिणी सभा के सभासद् चुने गये, जब कि महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण ३० अक्टूबर, १८८३ ई० को ही हो गया था। ऐसी अवस्था में महर्षि द्वारा उन्हें चयन करने का प्रश्न ही नहीं उठता।—धर्मसिंह कोठारी, कार्यालय सचिव, परोपकारिणी सभा, अजमेर

उर्दू द्वितीय राजभाषा नहीं बनेगी

आर्य जगत् में श्री वासुदेव सिंह का लेख पढ़ा। लेखक ने बहुत ही सुन्दर ढंग से उर्दू समस्या को पाठकों के सामने रखा है। उन्होंने उर्दू विरोध को संविधान सम्मत सिद्ध किया है। उम्मीद है कि जब तक वासुदेव सिंह उत्तर प्रदेश सरकार में हैं तब तक उर्दू दूसरी राजभाषा नहीं बन सकती और जब तक भारतवासी श्री सिंह के साथ हैं उन्हें सरकार से अलग नहीं किया जा सकता। अगर श्री सिंह उर्दू अकादमी के नाजायज विरोध के कारण सत्ता से अलग कर दिये गये तो पूरे देश में प्रबल जन आन्दोलन उठ खड़ा होगा और श्री सिंह को राष्ट्रीय नेता के रूप में खड़ा कर दूंगा। —ज्ञानचन्द गोयल, उपमन्त्री आर्य युवक परिषद् मालब (मेवात)—१२२१०७

प्रत्येक आर्य सत्यार्थ प्रकाश पढ़े।

मैं कितना अभागा हूं कि मैंने ११५ साल से जन्म लिया। अगर ११५ साल पूर्व मैं जन्म लेता तो मुझे "महर्षि दयानन्द सरस्वती" के दर्शन होते। परंतु इतना जरूर भाग्यशाली हूं कि मैंने जिस धरती पर जन्म लिया वो धरती महर्षि दयानन्द सरस्वती की है। और इससे अधिक यह कि मैं आर्य समाजी हूं और नित्य "यज्ञ" करता हूं और प्यारा ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" के सिद्धांत पर चलता हूं। मैंने जिंदगी में सत्य पाया तो केवल सत्यार्थ प्रकाश से। मैं पहले मूर्ति पूजा के अंध विश्वास में फंसा था सत्यार्थ प्रकाश ने मेरी आंखें खोल दीं। हर आर्य जन को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ना चाहिए।—मणिलाल जेठालाल पटेल।

पुराना किला में
ध्वनि प्रकाश कार्यक्रम चालू हो!

मैं आपका ध्यान पुलिस कोतवाली चांदनी चौक की ओर दिलाना चाहता हूं जिसे भारत सरकार ने गुरुद्वारा शीशगंज प्रबन्धक समिति को दे दिया क्योंकि उनकी माँग यह थी कि श्री गुरु तेगबहादुर को मुगल बादशाह औरंगजेब ने उस स्थान पर कैद करके रखा था। दूसरे हुमायू के मकबरे के पीछे गुरुद्वारा दमदमा साहिब बनाया क्योंकि वहाँ एक बार गुरु गोविंद सिंह जी ने पड़ाव डाला था। निश्चित रूप से अपने पूर्वजों, महापुरुषों को सम्मान देने का यह एक अच्छा उदाहरण है। मथरा रोड पर पुराना किला जो पाण्डवों के किले के नाम से जाना जाता है, वहाँ महान राजीतिज्ञ श्रीकृष्ण पाण्डवों से मंत्रणा करने अवश्य आते रहे होंगे जो मंत्रणा उन्होंने अर्जुन को दी उसी का नाम श्रीमद्भागवद्गीता है। अतः पुराने किले को "मूलरूप से गीता प्रवचन स्थल" घोषित करवाना चाहिए और उस स्थान पर 'सत्यार्थ-प्रकाश' पर ध्वनि एवं प्रकाश लाल किला शैली में दिखाना चाहिये।
—रमेश प्र० मिश्र १८१३ वजीर सिंह स्ट्रीट, पहाड़गंज, नई दिल्ली-११००५५

गुरुकुल कांगड़ी की वर्तमान स्थिति

'गुरुकुल कांगड़ी की मूल समस्या और उसका हल' (२८ जुलाई का अंक) में प्रो० वर्मा ने पर्याप्त गहराई और विस्तार से मनन किया है। उनका यह कहना सर्वथा उपयुक्त है कि वर्तमान में गुरुकुल के दिशा निर्देशकों में एक भी एसा नहीं है जो पूर्वादर्शों से परिचित और प्रेरित हो' तथा गुरुकुल को पुनः प्रतिष्ठित करने की सामर्थ्य भी रखता हो। आज गुरुकुल को आवश्यकता है प्रबुद्ध दिशा निर्देश की, न कि उसके प्राणों को जैसे तैसे बचाए रखने की। क्या अधिकार की लड़ाई का स्थान आदर्शों की चिन्ता ले सकेगी। मैं लेखक से सहमत हूं और उसके विचारों के लिए बधाई देता हूं।
—आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार, दिल्ली ३७/बी, अशोक विहार, दिल्ली-५२

आचार्य उदयवीर शास्त्री का अभिनन्दन

आर्य समाज के वयोवृद्ध विद्वान् आचार्य श्री उदयवीर जी शास्त्री के अभिनन्दनार्थ का उनके प्रशसकों एव हितचिन्तकों ने मिलकर एक अभिनन्दन समिति का गठन किया है। यह समिति शास्त्री जी के ९२ वें जन्म दिवस पर ४ जनवरी १९८६ को उन्हें एक अभिनन्दन ग्रन्थ तथा कुछ धनराशि भेंट करेगी। एतदर्थ अभिनन्दन समिति ने लेख तथा धनराशि एकत्रित करने का कार्य आरम्भ कर दिया है, तथा शास्त्री जी के शुभचिन्तकों से प्रार्थना की जा रही है कि वे यथा शक्ति सहयोग प्रदान कर आयोजन को सफल बनाने में सहायक बनें। इस समिति के अध्यक्ष सेवानिवृत्त व कंपनी अधिकारी श्री के० सी वर्मा हैं और मन्त्री तथा कोषाध्यक्ष एम० एम० एच० कॉलेज गाजियाबाद के संस्कृत के रीडर तथा विभागाध्यक्ष डा० महेश भारतीय हैं। लेख तथा धनराशि उनके II-ए, २२०, नेहरू नगर, गाजियाबाद—२०१००१ पते पर भेजी जा सकती है।

गुरुकुल वृन्दावन की सहायता करिए

स्वामी दयानन्द की शिक्षा प्रणाली को प्रचारित करने के लिए स्वामी दर्शनानन्द और महात्मा नारायण स्वामी ने गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन की स्थापना की। यह विद्यालय अब जर्जर अवस्था में है। अध्यापकों को कई मास से वेतन नहीं मिल पाया है। गुरुकुल पर एक लाख रुपये से भी अधिक का ऋण है। इस कठिन अवसर पर उदार आर्यजनो से सहायता की अपील है। दान की राशि इस पते पर भेजें—आचार्य गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन (मथुरा), उ०प्र०

दयानन्द बलिदान - शताब्दी

पंजाब प्रान्तीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान मे महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह 19-20 अक्टूबर को गोल बाग मैदान, अमृतसर में धूमधाम से मनाया जायेगा।—ओमप्रकाश आर्य प्रधान, वेदप्रकाश आर्य मंत्री

हरयाणा में प्रचार कार्य

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हरियाणा की ओर वेद प्रचार निम्न स्थानो पर हुआ—आर्य समाज जगाधरी, आर्य समाज भरवाई, आर्य स्त्री समाज, सदर बाजार करनाल, आर्य समाज माडल टाउन, हिसार आर्य समाज कैथल। निम्न स्थानो पर प्रचार होगा—आर्य समाज तरावडी 13 से 18 अगस्त तक, 19 से 25 अगस्त तक आर्य समाज पंजाबी मोहल्ला, अम्बाला, 27 अगस्त से 1 सितम्बर तक आर्य समाज पूण्डरी, 1 से 7 सितम्बर तक आर्य समाज, माडल टाउन गुडगाव, 30 अगस्त से 7 सितम्बर तक आर्य समाज माडल टाउन गुडगाव, 2 से 8 सितम्बर तक आर्य समाज डाहा 13 से 15 सितम्बर तक आ० स० अर्बन स्टेट करनाल 16 से 22 सितम्बर तक वैदिक साधनाश्रम गुरुदासपुर 20 से 22 सितम्बर तक आर्य वीर दल कैथल, 23 से 29 सितम्बर तक आर्य समाज माडल टाउन पानीपत और आ० स० रामनगर करनाल। प्रो० वेदसुमन

आर्य वीर दल का मासिक शिविर

आर्य वीर दल बम्बई का मासिक शिविर 21 जुलाई को प्रात: से सायं तक गुरुकुल घाटकोपर मे आर्य समाज, घाटकोपर के सहयोग से दल के संचालक श्री गुलजारीलाल आर्य की देखरेख में लगाया गया। गुरुकुल सिराथू के कुलपति श्री विश्वमित्र ने आर्य वीर दल की आवश्यकता पर बल दिया। शिविर को प्रो० एम० वेंकटराव, श्री त्रिभुवनसिंह आर्य, पं. धर्म धर शास्त्री, श्री ओमप्रकाश आर्य और ब्र० नचिकेता ने सम्बोधित किया। आर्य वीर दल के मंत्री श्री अम्बालाल पटेल ने प्रत्येक मास शिविर लगाने की घोषणा की।

दुर्व्यसन मुक्ति अभियान

आर्य समाज टंकारा द्वारा संचालित आर्य वीर दल के युवको ने दुर्व्यसन मुक्ति अभियान चलाया जिसके फल स्वरूप आर्य वीर दल के प्रमुख कार्यकर्ता एवं पुलिस कांस्टेबल श्री भूपतसिंह झाला की प्रेरणा से टकारा थाने के आठ पुलिस जनो ने स्थानीय आर्य समाज मे यज्ञ हवन करके समस्त दुर्गुण त्यागने का व्रत लिया।

गप्प मारो प्रतियोगिता

सरदार भगतसिंह सेवा समिति (रजि०) पिलखुवा, ने एक विचित्र हास्य से परिपूर्ण एवं रोचक 'गप्प मारो प्रतियोगिता' का आयोजन किया है। इस प्रतियोगिता मे सभी भाग ले सकते हैं, कोई भी काल्पनिक गप्प 250 शब्दों मे 15 सितम्बर तक श्री सुधीर कुमार गोयल गाधी बाजार, पिलखुवा जि० गाजियाबाद के पते पर भेजें। विजयी लोगों को पुरस्कार दिये जायेंगे गप्प के साथ 50 पैसे का डाक टिकट भी भेजें।—शिवकुमार गोयल

जबलपुर में शुद्धि और विवाह

आर्य समाज, 289 सतना बिल्डिंग, गोल बाजार, राइट टाउन, जबलपुर में निम्नलिखित शुद्धिया करके विवाह भी सम्पन्न कराये गये:—कु० एस्तररानी, नया नाम मधु आर्य —विवाह परवीन गांधी से, कु० सैलीना डाडेस, नया नाम रमादेवी—विवाह नारायण वाकलवार से, कु० शान्ति मणी, नया नाम रीतू आर्य —विवाह दिगपालराव से, राजपारकर, नया नाम राजेन्द्र आर्य—विवाह गीता जोहर से, सतीश सागर, नया नाम सतेन्द्र आर्य—विवाह सुषमा आर्य से, कलकलता, नयानाम किरण आर्य विवाह जी०पी० पाठक से उपरोक्त शुद्ध हुए व्यक्ति सभी ईसाई थे। कु० लियाकत आरा मुसलमान की शुद्धि करके नया नाम रेखा आर्य रखा गया, पश्चात् रमेश कुमार सोनी से विवाह सम्पन्न हुआ—रामलाल आर्य

तिलक पुण्यतिथि

आर्य समाज, खंडवा (म०प्र०) मे 1 अगस्त को लोकमान्य तिलक की पुण्यतिथि मनाई गयी, इस अवसर पर छात्र-छात्राओ की भाषण प्रतियेगिता हुई जिसकी आइल मिल के मैनेजर श्री सिन्हा ने प्रशसा की। श्री घनश्यामदास, श्री कैलाशचन्द, श्री मगलेश्वरी, सुश्री कृष्णा, सुश्री रक्षा, कु० संगीता, श्री रूपसिंह, श्री लोकेश, श्री राकेश आदि ने लोकमान्य तिलक के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। सभा संचालन श्रीमती सुधाव्यास ने किया।

स्व० पं० गणपति शर्मा की स्मृति में

लोक संस्कृति शोध सस्थान, नगर श्री, चूरू के माहेश्वरी भवन मे चूरू के सपूत शास्त्रार्थ महारथी स्व० पं० गणपति शर्मा की प्रतिमा स्थापना एवं उनके जीवन वृत्त सम्बन्धी विशेषाक का विमोचनोत्सव समारोह 28 जुलाई को हुआ। मुख्य अतिथि आचार्य सत्य प्रिय और अध्यक्षता प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु ने की।—सुबोध कुमार अग्रवाल

ब्र० आर्य नरेश द्वारा प्रचार

वैदिक यति मण्डल की ओर से ब्र० आर्य नरेश ने अगस्त मास मे हिमाचल और पंजाब में मसूरी, लुधियाना, फिरोजपुर, फरीदकोट, जालन्धर मुकेरिया, गुरुदासपुर आदि मे वेद प्रचार कार्य करेंगे।—जगदीश मुनि वानप्रस्थी

आर्य समाज की स्थापना

जिला आर्य सभा बठिण्डा की वार्षिक मीटिंग मुच्चो मण्डी मे 28 जुलाई को सम्पन्न हुई इसी स्थान पर नये आर्य समाज की स्थापना की गयी जिसके प्रधान श्री अमरचन्द, उपप्रधान श्री ब्रजलाल, मन्त्री महाशय चतरुराम आर्य और कोषाध्यक्ष श्री लभाराम माहेश्वरी चुने गये।

बाल्मीकि परिवार की शुद्धि

सिरोली खुर्द का बास तिजारा निवासी श्री रामसिंह बाल्मीकि ने अपनी पत्नी और दो पुत्रों सहित विधर्मियो के षड्यन्त्र और लालच मे आकर धर्म परिवर्तन कर लिया था और उनके दोनो पुत्रों को किसी अज्ञात स्कूल में भेज दिया गया था। रामसिह के छोटे भाई श्री रामस्वरूप ने आर्य समाज, तिजारा से प्रार्थना की कि इनका बचाया जाय आर्य समाज ने स्थानीय पुलिस और विश्व हिन्दू परिषद के सहयोग से इनको पुन: हिन्दू धर्म मे दीक्षित किया और दोनो बालकों को भी बरामद कर लिया। 29 जुलाई को आचार्य सत्यप्रिय ने उनको शुद्ध किया।—किशनदास आर्य

राजनीति और धर्म

(पृष्ठ ३ का शेष)

धर्म कहता है नही। इनके धर्म में गाय का बलिदान जरूरी है और दूसरे मे गाय की पूजा लिखी हुई है अब क्या हो? पीपल की शाखा काटते ही धर्म में अन्तर आ जाता है फिर क्या किया जाए? और यह फिलासफी और रस्मोरिवाज वाले छोटे-छोटे भेद बाद में जाकर राष्ट्रीय धर्म बन जाते हैं और अलग-अलग संगठन का कारण बन जाते हैं। नतीजा हमारे सामने है।

यो अगर धर्म पिछली तीसरी और दूसरी बात के अन्धविश्वास मिलाने का नाम है तो धर्म की कोई जरूरत नहीं। कल को नही आज ही इसे उडा देना चाहिए। अगर पहली और दूसरी मे स्वतंत्र विचार मिलाकर धर्म बनता है तो मुबारक है धर्म। [वैदिक धर्म यही तो कहता है।—सं०]

लेकिन अलग-अलग सांप्रदायिक गुटबंदी और खाने पीने का भेदभाव हर सूरत में मिटाना जरूरी है। छूत-अछूत शब्दो को जड से उखाड़ना होगा। जब तक हम अपनी तंगदिली छोड़ एकजुट न होंगे, तब तक हमारे बीच वास्तविक एकता नही हो सकती। इसलिए उपरोक्त बातों पर चलने से ही हम आजादी की ओर बढ़ सकते है। आजादी का मतलब सिर्फ अंग्रेजी चंगुल से छुटकारा पाने का नाम ही नहीं, वह पूर्ण आजादी का नाम है, जब लोग आपस में घुलमिल कर रहेंगे और दिमागी गुलामी से भी आजाद हो जाएंगे। ["जनसत्ता" से साभार]

संस्कृत साहित्य में नैतिकता

आचार्य दयानन्द शास्त्री एम. ए., हिसार

(गतांक से आगे)

यथा—

"मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा।"
"जाया पत्ये मधुमति वाचं वदतु शान्ति वाम्।"

भाई-भाई से द्वेष न करे और बहिन-बहिन से। पत्नी पति के लिए मधुभरी शान्तियुक्त वाणी बोले-आदि नतिकता का सन्देश संस्कृत साहित्य की उत्कृष्ट देन है।

महर्षि मनु का यह उपदेश भी हमारे लिये आदेश रहा है कि—

मातृवत्परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्।
आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पश्यति ॥

इसमें कहा गया है कि पराई स्त्री को माता के समान समझो, पराया धन हमारे लिए मिट्टी के ढेले के समान हो और सभी प्राणियों में अपने जैसा ही जीवात्मा समझो। अहा! कितना मार्मिक उपदेश है? कितनी पवित्र नैतिकता है?

रघुवंश में महाकवि कालिदास ने राजा और प्रजा की नैतिकता के सम्बन्ध में लिखा है—

प्रजानां विनयाधानात् रक्षणात् भरणादपि।
सः पिता पितरस्तासां केवल जन्महेतवः ॥

अर्थात् सच्चे अर्थों में रघु अपनी प्रजा का पिता (रक्षक) था, दूसरे पिता तो केवल जन्म के ही कारण थे।

करों के सम्बन्ध में भी तत्कालीन राज्यव्यवस्था का वर्णन करते हुए महाभारत में लिखा है—

आदाय बलिषड्भाग यो राष्ट्रं नाभिरक्षति।
प्रतिगृह्णाति तत्पापं चतुर्थेन भूमिपः ॥

अर्थात् छठा हिस्सा कर लेकर भी जो राजा राष्ट्र की रक्षा नहीं करता वह प्रजा के पाप के चौथे हिस्से का भागी होता है। मुगल शासकों तक ऐसे उदाहरण आते हैं जब राजा अपना निर्वाह-व्यय स्वयं निकालते थे और प्रजा का कर प्रजाहित में ही व्यय करते थे। संस्कृत साहित्य में नैतिकता के सन्दर्भ में राजा शब्द की व्याख्या की है—"राजा प्रकृतिरञ्जनात्" अर्थात् प्रजा को सन्तुष्ट करने वाला ही व्यक्ति राजा हो सकता था। राज्य संचालन के लिए योग्यता और क्षमता दोनों ही सम्पादन की जाती थी। राजकुमारों को नीतिशास्त्र की शिक्षा के लिए वशिष्ट, व्यास, चाणक्य और विष्णु शर्मा जैसे पण्डित नियत होते थे। प्राचीन राजा न कभी अपक्व अवस्था में और न कभी वृद्धावस्था मे गद्दियों से चिपके रहते थे—

शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवनेविषयैषीणाम्। वार्धक्ये मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम् ॥

यह है संस्कृत साहित्य की नैतिकता जिसमें अन्य नौकरियों में रिटायरमेण्ट की भांति राजनैतिक नेताओं की भी आयु निर्धारित होती थी।

सादा जीवन और उच्च विचार का साक्षात् प्रतिनिधि, महाराजा चन्द्रगुप्त का प्रधानमन्त्री-चाणक्य, जिनके बारे में नीतिशास्त्र का विद्वान् कामन्दक लिखता है—

वंशे विशालवंशानामृषीणामिव भूयसाम्।
अप्रतिग्राहकाणां यो बभूव भुवि विश्रुतः ॥

उक्त वंशपरम्परा के ब्राह्मणकुल उत्पन्न चाणक्य का वर्णन करते हुए विशाखदत्त कवि ने 'मुद्राराक्षस' नाटक में लिखा है—

उपलशकलमेतद् भेदकं गोमयानां,
वटुभिराहृतानां बर्हिषां स्तोम एषः।
शरणमपि समिद्भिः शुष्यमाणाभिराभिः,
विनमित पटलान्तं दृश्यते जीर्णकुड्यम् ॥

अर्थात् मौर्य साम्राज्य के प्रधानमन्त्री, भारत के महान् राजनीतिज्ञ, दूरदर्शी शासक चाणक्य का ऐसा ठाठदार बंगला था कि जिसका छप्पर यज्ञीय समिधाओं के भार से बीच से कुछ झुका हुआ था, कहीं उपले तोड़ने के पत्थर के टुकड़े पड़े थे। इस प्रकार वह अपनी सादगी से अपने भीतर रहने वाली महान् विभूति का परिचय देता था जिसमें विचारों की उच्चता झांकती थी।

गृहस्थाश्रम के नैतिक मूल्यों के सम्बन्ध में संस्कृत साहित्य के महाकवि कालिदास ने "अभिज्ञानशाकुन्तलम्" नाटक में लिखा है कि महर्षि कण्व के आश्रम से जब शकुन्तला अपने पतिगृह (राजा दुष्यन्त के घर) जाने लगी तब—जबकि आंखों में आंसू भरकर प्रायः लडकियां पूछती ही हैं, बोली—पिता जी! अब मुझे कब बुलाओगे? पर वाह रे भारतीय आदर्श, महर्षि कण्व उत्तर देते हैं—

भूत्वा चिराय सदिगन्तमहीसपत्नी,
दौष्यन्तिमप्रतिरथ तनयं प्रसूय।
तत्सन्निवेशितधुरेण सहैव भर्त्रा,
शान्त्यै करिष्यसि पदं पुनराश्रमेऽस्मिन् ॥

अर्थात् शकुन्तले! राजमहिषी बनकर जब कुछ काल पर्यन्त तू राज्यसुख का पूर्ण उपभोग कर चुकेगी और अद्भुत पराक्रमी दुष्यन्त-पुत्र को राज्यभार सौंप चुकेगी तब न केवल तू अकेली अपितु दुष्यन्त और तुम दोनों वानप्रस्थी का जीवन मालिनी के तट पर मेरे इस आश्रम में आकर बिताना।

इन्हीं नैतिक गुणों के कारण उन राज्यों में रहने वाली प्रजा राजा के मुख पर ही नही, परोक्ष में भी बैठकर उनका स्तुति गान किया करती थी। कालिदास ने रघु के लिए लिखा है—

"इक्षुच्छायानिषादिन्यः शालिगोप्त्यो जगुर्यशः"

अर्थात् महाप्रतापी रघु सम्राट का राज्य प्रजा के लिए इतना शान्तिदायक था जिससे धानों की रखवाली करने वाली ग्रामीण कन्यायें ईख की छाया में बैठकर भी उसका यशोगान करते हुए दिन व्यतीत करती थीं।

नैतिकता की आवश्यकता अनुभव करते हुए गीता में श्रीकृष्ण भगवान् ने लिखा है—'कर्मण्येवाधिकारस्ते' अर्थात् कर्त्तव्य पालन धर्म है। स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती इसकी व्याख्या इस प्रकार करते हैं—"जिस गली या मुहल्ले में तुम रहते हो, यदि वहां की गलियां दुर्गन्धी से युक्त हैं, मच्छर सड़ते हैं, गरीबी, शोषण, अत्याचार, अन्याय, अज्ञान से लोग दुःखी हैं, तुम उस दूषित वातावरण को यदि स्वस्थ वातावरण में बदलने का प्रयास नहीं करते हो तो कदापि तुम धर्मात्मा नहीं हो। यदि तुम्हारी सन्ध्या ने, तुम्हारी नमाज ने, तुम्हारी मन्दिर की आरती ने, घण्टे-घड़ियाल ने, तुम्हारे कीर्तन, तुम्हारी अर्दास ने तुम्हें उस अवस्था परिवर्तन के लिए विवश नहीं किया तो तुम धर्म को लेशमात्र भी नहीं जानते।" यहां धर्म की कितनी स्पष्ट परिभाषा की है। यही तो व्याख्या है नैतिकता की।

संस्कृत साहित्य बड़ा विस्तृत साहित्य है। उपनिषदों में तो बहुत उच्चकोटि की नैतिकता निहित है। औरंगजेब के बड़े भाई दाराशिकोह ने उपनिषदों की नैतिकता से प्रभावित होकर संस्कृत पढ़ी और सैंकड़ों उपनिषदों का संस्कृत से अरबी-फारसी भाषा में अनुवाद करके मानवमात्र का कल्याण किया।

संसार के प्रत्येक राष्ट्र में यज्ञ हवन जैसे कर्मकाण्ड को बड़ी ख्याति है। ये यज्ञ केवल भौतिक अग्नि में स्वाहा बोल कर घी-सामग्री की आहुति देने तक सीमित नहीं हैं। वस्तुतः इनका मूल भी उच्च कोटि की नैतिकता ही है। ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ,

(शेष पृष्ठ ७ पर)

श्री रामचन्द्र महाजन के स्वागत की एक झाँकी
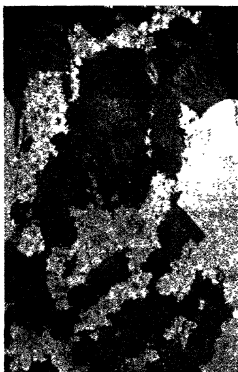
ह्यूस्टन (अमरीका) मे वैदिक धर्म के अवैतनिक प्रचारक श्री रामचन्द्र महाजन का दो अगस्त को आर्य समाज अनारकली में जो भव्य स्वागत हुआ उसकी एक झलक प्रथम चित्र—पुष्पमालाओ से लदे श्री महाजन द्वितीय चित्र—श्री महाजन अपने उद्गार प्रकट करते हुए।

सामाजिक जगत्

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० का निर्वाचन

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के वार्षिक निर्वाचन की कर्यवाही २८ जुलाई को डी० ए० वी० कालेज, लखनऊ मे प्रारम्भ हुई-। सर्व प्रथम सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने सम्बोधित करते हुए इस विषय पर चिन्ता व्यक्त की कि उ० प्र० के आर्थिक रूप से पिछड़े इलाकों में विदेशी धन द्वारा बलातहिन्दुओं का धर्म परिवर्तन किया जा रहा है। उन्होने सभी हिन्दू संगठनों से अनुरोध किया कि वे जातिवाद की संकीर्णता से ऊपर उठ कर मिलजुल कर काम करें। श्री इन्द्रराज जी ने सभा को ओर से वेदार्थ कल्प द्रुम के लेखक आचार्य विशुद्धानन्द को बारह सौ रुपये भेंट कर अभिनन्दन किया। इसके पश्चात् सर्व सम्मति से प्रधान:-श्री इन्द्रराज जी, मंत्री: श्री मनमोहन तिवारी जी, कोषाध्यक्ष. श्री बलदेवकृष्ण महाना जी चुने गये।

१७ अगस्त को हरितृतीया

१७ अगस्त शनिवार प्रातः दस बजे से सायं पांच बजे तक बुद्ध गार्डन में हरितृतीय पर्व (तीज) हर्षोल्लास से मनाया जाएगी। सभी बहिनों से अनुरोध है कि यथा समय पहुंच कर पर्व की शोभा बढाएं तथा मनोरंजन का आनन्द उठाएं।—सभा मंत्रिणी प्रकाश आर्या, न्यूरोहतक रोड नई दिल्ली-५

आर्यकेन्द्रीय सभा की बैठक

आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य को साधारण सभा की बैठक रविवार १८ अगस्त को साय ३-३० बजे आर्यसमाज मन्दिर हनुमान रोड नई दिल्ली- १ मे होगी। विचारणीय विषय इस प्रकार है— १—शोक प्रस्ताव, २—गत बैठक की कार्यवाही की सम्पुष्टि। ३—वार्षिक विवरण रिपोर्ट ४—गत वर्ष के आय-व्यय का ब्यौरा ५—नये वर्ष के लिए अधिकारियों एवं अन्तरंग सभा का निर्वाचन ६—अन्य विषय !

भवदीय आर्यबन्धु:

१ – सहयुक्त सदस्यों से विनम्र अनरोध है कि वे अपना सदस्यता शुल्क ५/-रुपए कार्यालय में जमा करा दें अथवा १८ अगस्त को साथ लेते आवे !

२ – जिन समाजो ने अभी तक ८५-८६ का संबंध शुल्क ३०-/ रुपए और दो प्रतिनिधियों के नाम, घर के पते सहित, सदस्ता शुल्क १०-/ रुपए अभी तक नही भेजा है, वे सभी कार्यालय मे जमा करा दें अथवा साधारण वार्षिक अधिवेशन मे साथ लेते आवे ! —सूर्य देव महामंत्री

आर्य समाज डिफेंस कालोनी

दिनांक २८-७-८५ को आर्य समाज डिफेंस कालोनी नई दिल्ली का निर्वाचन हुआ जिसमें प्रधान—श्री डी० आई० एस० साहनी, मन्त्री —श्री एन० डी० सैनी सहमंत्री —श्री अजय सहगल और कोषाध्यक्ष —श्री मेजर के. एल. नारंग चने गए।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद का वार्षिक अधिवदन

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश का वार्षिक अधिवेशन रविवार 25 अगस्त को आर्य समाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली मे दोपहर बाद 2 बजे सम्पन्न होगी जिसमे दिल्ली, फरीदाबाद, सोनीपत, गुडगाव आदि की शाखाओं के 500 युवक सम्मिलित होगे। इससे पूर्व अन्तरग सभा का अधिवेशन 11 से 1 बजे तक होगा जिसकी अध्यक्षता श्री रामनाथ सहगल करेंगे। श्री अमर स्वामी, श्री क्षितीश वेदालंकार, स्वामी जगदीश्वरानन्द, ब्र० आर्य नरेश, व ब्र० विश्वपाल जयन्त सभा को संम्बोधित करेंगे।—

डा० सूर्यप्रकाश स्नातक का नया पता

डा० सूर्य प्रकाश स्नातक अबतक अम्बाला मे रहते थे और डी० ए० वी० कालेज नन्योला मे प्रोफेसर थे, अब उनकी नियुक्ति हसराज कालेज, दिल्ली मे हो गयी है उनका नया पता निम्न प्रकार है —डा० सूर्य प्रकाश स्नातक, A-26 राम मार्ग, आदर्श नगर, दिल्ली-33, फोन 7128080 –(2516747 कालेज, हिन्दी विभाग)

मीठापुर में शुद्धि

आर्य समाज, मीठापुर पटना के डा० अख्तर जमाल की 27 जून को शुद्धि की गयी उनका अभय जीवन आर्य नाम रखा गया। पश्चात् स्व० श्री रामचन्द्र प्रसाद की सुपुत्री सुश्री शीला के साथ उनका वैदिक रीति से विवाह सम्पन्न हुआ। पौरोहित्य पं० बनारसीसिंह 'विजयी' ने किया उपस्थित जन समूह ने वर वधू को आशीर्वाद दिया।—राम किशनसिंह

एम. एड. में प्रथम कु. अरुणा मायर

सोहन लाल डी ए वी कालिज अम्बाला की छात्रा कु० अरुणा मायर ने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की एम. एड परीक्षा में ७५० में से ५०६ अंक प्राप्त करके प्रथम स्थान प्राप्त किया।

मालवीय नगर मे शुद्धि

आर्य समाज, मालवीय नगर, नई दिल्ली मे श्री हंसराज आर्य के प्रयत्न से फतहपुर बेरी निवासी श्री रमेशचन्द्र मसीह ने अपनी पत्नी और दो पुत्रियो सहित वैदिक धर्म स्वीकार किया। इसी तरह 15 जुलाई को श्री रविन्द्र मसीह और कु० प्रोमिला की उनकी मर्जी से शुद्धि करके विवाह सम्पन्न कराया गया। पौरोहित्य प० तुलसी दास ने किया। —डी० आर० जुनेजा

यू० १०३/८१ लायसेंस टू पोस्ट विदाउट प्री-पेमेन्ट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११६३/७२ डी० सी० 409

महात्मा हंसराज साहित्य विभाग

पुस्तक का नाम	लेखक	मूल्य
1 मानसिक चित्रावली	—प्रि० दीवान चन्द्र	6-00
2. महर्षि दर्शन—	"	7-00
3. दयानन्द शतक—	"	5 00
4. वेदोपदेश—	"	4-50
5. मंडूक उपनिषद—	"	4-00
6. प्रार्थना और चिन्तन	—स्वामी सत्यप्रकाश	6-00
7. आस्तिकवाद	—गंगा प्रसाद उपाध्याय	15-00
8. वैदिक धर्म और समाज	"	6-00
9. वैदिक मान्यतायें	"	6-00
10. योगी की डायरी	—एन० डी० कपूर	10-00
11. भगवत गीता (दोहों में)	—डा० वेद प्रकाश	3-00
12. ईश्वरोपासना (क्यों कैसे)	"	6-00
13. आर्य समाज	—गंगाप्रसाद उपाध्याय	6-00
14. सामवेद (उर्दू) भाष्य	—आशुराम आर्य	50-00
15. महर्षि दयानन्द	—इन्द्र विद्यावाचस्पति	6-00
16. सुखी जीवन	—डा० कपिलदेव द्विवेदी	7-00
17. " परिवार—	"	8-00
18. " समाज—	"	8-00
19. " गृहस्थ—	"	8 00
20. काव्यकृति उद्बोधन	—प्रकाश वीर व्याकुल	5-00
21. The Sulb Sutras (बोधायन, कात्यायन आपस्तम्ब और मानव)	स्वामी सत्यप्रकाश	45 00
22. Bakhshali Manuscript (प्राचीनतम अंक गणित)	"	50-00
23. Speaches Writings and Addresses—	"	
Vol—I—Vincit Veritas—	"	25-00
Vol—II—The Arya Samaj A. Renaissance		30-00

महात्मा हंसराज साहित्य विभाग, आर्य समाज (अनारकली)
मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली—1
अध्यक्ष—कु० विद्यावती आनन्द

टंकारा के लिए १८ सौ रुपए की छात्र वृत्ति

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के मैनेजिंग ट्रस्टी श्री ओंकारनाथ जी ने सूचना दी है कि आर्य समाज सान्ताक्रूज (बम्बई) ने 1985-86 के लिए एक छात्र की छात्रवृत्ति 1,800/-रु० दिये हैं जिसके लिए हम आर्य समाज सान्ताक्रूज के अधिकारियों का धन्यवाद प्रकट करते हैं। उन्होंने सूचित किया है कि बम्बई की अन्य आर्य समाजें भी उपदेशक विद्यालय के लिए एक-एक छात्रवृत्ति देने के लिए तैयार हैं।

इस समय टंकारा मे नये आचार्य डा० धर्मवीर विद्यालकार जी की नियुक्ति की गई है। उन्होंने अपना कार्य आरम्भ कर दिया है। उपदेशक विद्यालय के स्तर को ऊंचा उठाने तथा गौशाला के कार्य मे वे विशेष रुचि ले रहे हैं।

मेरा समस्त ऋषि भक्तो से प्रार्थना है कि वे अपनी-अपनी आर्य समाजो से उपदेशक विद्यालय के लिए एक एक छात्रवृत्ति दिलाने की कृपा करे तो टंकारा का बोझ काफी हल्का हो जायेगा। कुछ व्यक्ति निजी तौर से भी एक छात्र की छात्रवृत्ति के लिए 18 सौ रुपए दे तो टंकारा ट्रस्ट उसे सहर्ष स्वीकार करेगा।

रामनाथ सहगल,
मन्त्री-महर्षि दयानद स्मारक ट्रस्ट टंकारा

हिमाचल की आर्य यात्रा

इस यात्रा में दैनिक सत्संग की व्यवस्था होगी। आप इस यात्रा में देखेंगे रोहतांग पास [रोहतांग पास यात्री मनाली से अपने व्यय से जायेंगे क्योंकि यहाँ बस नहीं जा सकती]। कुल्लू मनाली, मनीकरण, शिमला, कुफरी, पिंजोर गार्डन, चण्डीगढ़, करनाल झील। आप केवल 290/-रु० मार्ग व्यय देकर 7 दिन हिमाचल की पहाड़ियों का आनन्द उठायें। निम्न स्थानो पर सीट रिजर्व करा सकते हैं—

1. श्री नरेन्द्र आर्य टंकारा प्रिंटिंग प्रैस, सब्जी मंडी, गुड़गाँव फोन 2607 पी० पी०
2. श्रीमती पदमा तलवाड़, I-508, अशोक विहार, नई दिल्ली फोन : 7122217
3. श्री प्राण नाथ धई, D-5 कैलाश कालोनी, नई दिल्ली-48 फोन : 6419914
4. श्री गजेन्द्र मालवीय, आर्य समाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली फोन : 343718

प्रस्थान	पहुंच
14-9-85 रात्रि 10 बजे दिल्ली से	15-9-85 प्रातः रोपड़
15-9-85 प्रातः 9 बजे रोपड़ से कुल्लू होकर	सायं 4 बजे मनाली
15-16 व 17 को मनाली में	
18-9-85 प्रातः 7 बजे मनाली से	11 बजे मनीकरण
19-9-85 प्रातः 6 बजे मनीकरण से	सायं 3 बजे शिमला
19 व 20 को शिमला मे	

21-9-85 प्रातः 6 बजे शिमला से पिंजौर, चण्डीगढ, करनाल झील देखकर रात्रि दिल्ली

हमारे पास केवल 42 सीटे हैं।

—राम चन्द्र आर्य
466, भीम नगर, गुड़गाव, फोन दिल्ली 615195

वेद प्रचार सप्ताह के लिए उपदेशक

समस्त आर्य समाजें वेद प्रचार सप्ताह अगस्त-सितम्बर मे अपनी-अपनी आर्य समाजों मे वेद कथा करके मनाती हैं। इस वर्ष भी आप यह कार्यक्रम अवश्य रखें। इस उपलक्ष्य मे आपको किसी विद्वान की आवश्यकता हो तो आप तुरन्त हमे सूचित करने की कृपा करें। प्रादेशिक सभा की आर्य समाजें श्रावणी अथवा रक्षा बन्धन से लेकर जन्माष्टमी तक वेद कथा सप्ताह मनाती हैं। अच्छा तो यह रहेगा कि श्रावणी से एक सप्ताह पहले व दो सप्ताह बाद भी यह प्रोग्राम बनाया जाए। इसके निमित्त हम आपको अच्छे विद्वान उपलब्ध करा सकते हैं। दिल्ली की आर्य समाजों और स्त्री आर्य समाजो मे हर रविवार को सत्संग होते हैं। अगर रविवार या किसी अन्य दिन के लिए आपको उपदेशकों/भजनोपदेकों की आवश्यकता हो तो सभा कार्यालय को सूचित करने की कृपा करें।

—आचार्य पुरुषोत्तम एम० ए० वेद प्रचार-अधिष्ठाता
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस०नारायण एण्ड सन्स७११७/१८ पहाड़ी धीरज, (फोन : ५१६५१८) दिल्ली से छपवा कर कार्यालय आर्य जगत्, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली। फोन (343718)

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य जगत्
साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य-२५ रुपये | विदेश में ३० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४८, अंक ३५, रविवार, २५ अगस्त, १९८५ | दूरभाष : ३४३७१८
आजीवन सदस्य-२५१ रु० | इस अंक का मूल्य—६० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८५, दयानन्दाब्द १६० | श्रावण शुक्ला ११. २०४२ वि०

२२ सितंबर को पंजाब में चुनाव

अकालियो के साथ पंजाब सम्बन्धी समझौते के बाद अब भारत सरकार ने आगामी 22 सितम्बर को वहां चुनाव करवाने की घोषणा कर दी है। अभी तक वहा राष्ट्रपति शासन लागू है, जिसकी अवधि 5 अक्तूबर को समाप्त हो रही है। यदि सितम्बर मे चुनावों की घोषणा न की जाती, तो सरकार को राष्ट्रपति शासन को और अभी जारी रखने के लिए स विधान मे सशोधन करना पड़ता। वह काम भी 23 अगस्त से पहले ही करना पडता। पर अब उसकी नौबत नही आएगी।

पजाब की 117 विधान सभा सीटों के लिए 22 सितम्बर को मतदान होगा। इस प्रकार 5 अक्तूबर से पूर्व ही लोकप्रिय सरकार के गठन का मार्ग प्रशस्त हो जाएगा और पजाब भी आतंकवाद की छाया से निकल कर लोकतंत्र की लीक पर चल पडेगा। सन्त लोंगोवाल के दल ने चुनाव मे भाग लेने का निश्चय किया है। इस दौरान, बादल, तोहडा, तलवडी और जोगिन्दर सिंह का क्या रुख रहता है, इस पर पंजाब की शान्ति या अशान्ति निर्भर है

असम समस्या का भी समाधान

चार हजार से भी अधिक मानवो की निर्मम हत्या, करोडो रु० की हानि तथा आपसी वैमनस्य के घाव का दाग छोडने के बाद असम समस्या का अन्ततः समाधान हो ही गया। प्रधान मंत्री ने स्वतन्त्रता दिवस के अपने प्रथम भाषण मे जब यह घोषणा की कि असम आन्दोलनकारियो और सरकार के मध्य समझौता हो गया है, तो देशवासियो ने अन्त करण से उसका स्वागत किया। 15 अगस्त के भोर से कुछ पहले, रात को पौने तीन बजे, काफी ऊहापोह और उतार-चढाव के बाद समझौते पर हस्ताक्षर हुए।

इस समझौते के अनुसार 1966 के बाद आए विदेशी व्यक्तियो को दस वर्षों तक मतदान का अधिकार नही होगा, मार्च 1971 के बाद आए विदेशियों को असम से निष्कासित किया जायेगा। सरकारी कर्मचारियो के विरुद्ध कार्यवाहियो को समाप्त कर दिया जायेगा तथा असम बांग्लादेश सीमा पर काटेदार तार और उसके समानान्तर पूरी सीमा पर पक्की चौकसी की जाएगी। इस समझौते के अनुसार 19 अगस्त को विधान-सभा भग हो गई और कामचलाऊ सरकार बन गई।

ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचार के लिए व्यापक योजना : गाजियाबाद में १० एकड़ भूमि उपलब्ध

गाजियाबाद 11 अगस्त "आर्य समाज ने अपने प्रारम्भिक काल मे नगरो व गावो, दोनो क्षेत्रों मे प्रचार कार्य किया, किन्तु पिछले कुछ दिनो से ग्रामीण प्रचार की उपेक्षा की जा रही है। इस कमी को दूर करने के लिए डी० ए० वी० कालिज प्रबन्धक समिति की ओर से यहा डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल के साथ ही एक ग्रामीण प्रचार केन्द्र स्थापित किया जायेगा जिसमे प्रशिक्षण प्राप्त कर नव युवक आस पास के ग्रामीण क्षेत्रो मे वैदिक धर्म प्रचार कार्य करेंगे।" इस घोषणा के साथ यहा से लगभग 5 मील की दूरी पर राजेन्द्रनगर कालोनी मे आवटित 10 एकड़ भूखण्ड पर प्रो० वेदव्यास ने वृक्षारोपण किया। श्री दरबारीलाल व प्रिंसिपल तिलकराज गुप्त ने भी एक एक पौधा लगाया।

गाजियाबाद विकास प्राधिकरण की ओर से सस्ती दर पर डी० ए० वी० कालिज प्रबन्धक समिति को यह विशाल भूखण्ड स्कूल व कालिज खोलने के लिए दिया गया है।

प्राधिकरण से भूखण्ड ग्रहण करने के उपलक्ष्य मे यहा एक सादा समारोह हवन के साथ प्रारम्भ हुआ। इस अवसर पर प्रो० रत्नसिंह ने यज्ञ महिमा पर सक्षिप्त प्रवचन दिया। श्री दरबारीलाल ने भावी योजना पर प्रकाश डालते हुए राजेन्द्रनगर के नागरिको के सहयोग की अपील की। आयोजन मे उपस्थित जन समुदाय ने हर्ष ध्वनि के बीच पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल गाजियाबाद के प्रिंसिपल श्री चावला तथा वहा की अध्यापिकाओ ने आयोजन की सम्पूर्ण व्यवस्था की।

डी ए वी शताब्दी: विशेष बैठक

समस्त आर्य जगत की ओर से डी ए वी शताब्दी 1985-86 मे बडे समारोह पूर्वक मनाई जा रही है। इस उपलक्ष्य मे विचार करने हेतु एक विशेष बैठक रविवार 25 अगस्त को साय 5-30 बजे आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली मे रखी गई है। समस्त आर्य जनता से प्रार्थना है कि वे इस बैठक मे अवश्य पधारे। अगर किसी विशेष कारण वश न पधार सके तो इस शताब्दी के उपलक्ष्य मे अपने सुझाव लिखित रूप मे भिजवाने की कृपा करे।

—रामनाथ सहगल मंत्री,
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

पद्मभूषण सिद्धेश्वर वर्मा दिवंगत

सुप्रसिद्ध भाषा विज्ञानी अनेक भाषाओ के पंडित, पद्मभूषण डा० सिद्धेश्वर वर्मा का दि० 17-8-85 को सैनिक अस्पताल मे निधन हो गया है। डा० वर्मा कुछ दिनो से अस्वस्थ हो कर अस्पताल मे चिकित्सा करा रहे थे। उनकी आयु 98 वर्ष थी उन्होने 50 वर्ष तक विश्वेश्वरानन्द वैदिक संस्थान की अवैतनिक सेवा की थी। केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के वे सर्वप्रथम निदेशक थे। वे उर्दू, सस्कृत, तामिल आदि अनेक भाषाओं के सुलझे हुए विद्वान थे और उनका शोधकार्य सब के लिए प्रामाणिक समझा जाता था।

महात्मा दयानन्द नहीं, महात्मा देवानन्द

मैं (महात्मा दयानन्द) एतद् द्वारा सूचित कर रहा हू कि मैंने अपना नाम बदल कर महात्मा देवानन्द योगी रख लिया है। मैं महर्षि दयानन्द के बराबर कभी नही पहुच सकता। मैंने सुना है कि प्रत्यक्षतया लोग मेरा सम्मान करते हैं किन्तु परोक्ष मे मेरी आलोचना करते है। मेरी सभी आर्यजनो से प्रार्थना है कि भविष्य मे मुझे देवानन्द योगी के नाम से ही सम्बोधित किया जाए और इसी नाम से पत्र व्यवहार भी किया जाय।

महात्मा देवानन्द योगी, तपोवन,
देहरादून

परामर्शदाता-अमर स्वामी सरस्वती | सम्पादक-क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक-रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

सब ओर अभय ही अभय

चलना सरल नहीं इस पथ पर

—सुरेशचन्द्र वेदालंकार—

अभय न . करत्यन्तरिक्षमभय द्यावा पृथिवी उभे इमे ।
अभय पश्चादभय पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु ।।

(न·) हम सब के लिए (अन्तरिक्ष) अन्तरिक्ष (अभय) अभय साधक (करति) होवे और (इमे उभेद्यावापृथिवी) ये दोनो द्यावा पृथिवी (अभय) अभयदात्री हो (पश्चात् अभय) पीछे से अभय (पुरस्तादभयं) सामने से अभय (उत्तरादभय) ऊपर से अभय और (अधरादभय) नीचे से अभय (न. अस्तु) हम सब के लिए हो।

मनुष्य का सबसे बडा शत्रु भय है। यह सदा मनुष्य के मस्तिष्क को विकृत करता रहता है। इस भय ने लाखो मनुष्यो को असमय मे हो वृद्ध कर दिया है। हजारो मनुष्य इस भय के वश मे होकर अकाल ही काल कवलित हो गए। यदि हम ससार मे आयु, धन विद्या और बल चाहते है तो इस भयकर रोग को, भय को अपने मन से हमे दूर कर देना होगा। ससार मे किसी भी क्षेत्र मे हमारी असफलता का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से यह भय ही कारण होता है।

इस मत्र मे कहा गया है कि अन्तरिक्ष लोक द्युलोक और पृथ्वीलोक हमारे लिए अभय हो। अन्तरिक्ष मे विचरण करते हुए हमे किसी प्रकार के भय की शका न हो अथवा अन्तरिक्ष से हमे किसी की हानि न हो। हम निडर होकर अन्तरिक्ष मे विचरण कर (विमानो द्वारा)। हम निडर होकर के अन्तरिक्ष के अपने कार्यो को करते चले। फिर यह द्युलोक अर्थात् सूर्यादि लोक हमे किसी प्रकार की क्षति न पहुचाये मार्ग मे किसी प्रकार का विघ्न उपस्थित न कर। 'द्यौ शान्तिरन्तरिक्ष शान्ति" मत्र मे कहा गया है कि द्युलोक शान्ति कारक हो। द्यौ एक चीज का नाम नही। आसमान मे अनेक लोक लोकान्तरो का सामूहिक नाम है द्यौ। ये लोक-लोकान्तर अपनी धुरियो पर और अपने अपने मार्ग मे घूमते है। कभी कभी ज्योतिषियो को सूक्ष्म यत्रो से देखने से ऐसा लगता है मानो अमुक दो तारे टकरा जायेगे। जैसे आप कभी-कभी रेल के स्टेशन पर आकर दो आती हुई गाडियो को देखे तो वे टकराती सी लगती हुई भी नही टकराती है। इसे कहते है शाति अर्थात् समन्वित होना।

मत्र कहता है सूर्यादि लोक तो अभय करे ही पृथिवी भी अभय करे। अपने चारो ओर अभय की कामना करता हुआ व्यक्ति कहता है कि मेरे आगे, पीछे, ऊपर-नीचे आमने-सामने और चारो ओर अभय रहे। वास्तव मे मनुष्य के मन मे जब भय का सचार हो जाता है तब ससार की कोई शक्ति इसे आगे नही बढा सकती-उसका कार्य नही करवा सकती। जीवन मे आगे बढने के लिए निर्भयता प्रथम वस्तु है।

आनन्द की श्रेणी मे जो स्थान उत्साह का है, दुख की श्रेणी मे वही स्थान भय का है। हम भविष्य मे आनन्द की प्राप्ति की आशा कर किसी काम को बडे उत्साह से करने को प्रवृत्त हो जाते हैं। परन्तु, जब हमे भविष्य मे किसी कार्य को करने से दुख की सभावना होती है तो हम उस दशा मे भयभीत हो कर कार्य करना बन्द कर देते है। अर्थात् जिस प्रकार उत्साह कार्य को आगे बढाकर मनुष्य को विकसित करता है, वैसे ही भय कार्य को अवरुद्ध कर मनुष्य के जीवन मे आगे बढने के मार्ग को रोक देता है। यही कारण है कि इस मत्र मे चारो ओर अभय का वातावरण निर्माण करने की प्रार्थना की गई है।

यदि हम भय का विश्लेषण करें तो हमे ज्ञात हो जाएगा कि क्लेश, अनिष्ट, आपत्ति की कल्पना ही भय है। हम सोचते हैं कि ये विपत्तिया हमारे ऊपर कल या निकट भविष्य मे आयेंगी और उनके आने की चिन्ता से हम सूखने रहते हैं। पर वे कभी नही आती।

हमारा निर्बल मन बहुत सी घटित ज्ञात, परिचित बातो को अनिष्टकारी मान कर उनसे तो भयग्रस्त होता ही रहता है, साथ ही भविष्य मे आने वाले अनिष्ट की आशका से भी भयपीडित बना रहता है 'आगे न जाने क्या होगा' मेरे इस कार्य में सिद्धि होगी या नही? कहीं इसका फल या परिणाम बुरा न निकले' यह जो हम मे भय रहता है, बडा ही आत्मघातक है। इसीलिए कहा गया है कि जीवन मे सफलता प्राप्त करने के लिए सबसे आवश्यक वस्तु है—निर्भयता स्वामी रामतीर्थ ने लिखा है—"एक ही दृष्टि से शेरो को अपने वश मे किया जा सकता है। एक ही नजर डाल कर शत्रु को शांत किया जा सकता है। निर्भयता के एक ही प्रहार से विजय पाई जा सकती है।"

स्वामी दयानन्द के जीवन मे एक घटना आती है। जब वे नर्मदा नदी के स्रोत की ओर गिरि-गह्वरो मे एकान्तवासी योगियो से भेट की आशा से जा रहे थे तो जगल मे रास्ता न मिलने के कारण वे दुविधा मे थे कि सामने से मुह फैलाये मृत्यु रूप बहुत बड़ा काला रीछ आता दिखाई दिया। वह गुर्राता हुआ इनके सामने आकर खडा हो गया परन्तु निर्भीक दयानन्द जरा भी नही घबराये और उस पर उन्होने अपनी सीधी निर्भय नजर डाली। दृष्टि का मिलन हुआ। स्वामी जी ने अपना डडा उसे मारने को उठाया। रीछ डरकर वापिस भाग गया। रीछ की आवाज सुनकर कुछ लोग वहा आ गए उन्होने स्वामी जी को आगे जाने से मना किया परन्तु, वे नही माने और आगे बढने का निश्चय किया। उन्होने स्वय अपनी आगे की यात्रा का वर्णन करते हुए लिखा "असख्य वृक्षो और अनेक प्रकार की कटीली झाडियो से वह जगल भरा हुआ था। किसी ओर भी उसमे से निकलने का मार्ग नही था। वहा से छुटकारा पाना मेरे लिए कठिन हो गया। कुछ दूर तक बैठे बैठे, कुछ दूर तक घुटनो के बल चलना पड़ा। थोडी देर के बाद यद्यपि मैंने इस नई विपत्ति से अपने आपको मुक्त कर लिया, परन्तु मेरे वस्त्र धज्जी धज्जी हो गए। काटे लगने से मेरे शरीर के बहुत से स्थानो से रक्त की धारा बहने लगी।" थकावट और भूख से अवसन्न शरीर, परन्तु प्रभु पर अटल विश्वास। वे चलते ही रहे। अन्त मे जगल के पार हो गए।

निर्भयता क्या है? आत्मा की शक्ति को समझना निर्भयता है। आत्मा के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान और उस पर निश्चल विश्वास निर्भयता है। हमारे समीप भय तभी आता है जब हम अपने आपको भय का घर मानते है। शरीर सदा ही चिन्ता-चीटियो का भक्ष्य है। हर प्रकार के कष्ट और पीडा दर्द उसे बीध सकते है। जब हम इस शरीर से ऊंचे उठ जाते है, तभी भय से छुटकारा पाते है। परमेश्वर मे अटूट विश्वास उत्पन्न कीजिए, उसको पूरी तरह हृदय मे धारण कीजिए, तब आपको ससार का कोई पदार्थ नही डरा सकता। हृदय से भय दूर हो जाएगा।

याद रखिए—"आपत्ति के भय से बढकर कोई आपत्ति नही होती। मौत के डर को मनमे जगह देने के बजाय मर जाना बेहतर है। योगी कवि के शब्दो मे हम भी कहेंगे —

पग-पग काटे रोड़े पत्थर,
पल-पल महायुद्ध गजन स्वर
बस विना स ारे इकले ही,
बढना, करते युद्ध निरन्तर।
चलना सरल नही इस पथ पर।।
नही किसी पर हो तुम निर्भर,
आओ, अपने घर से बाहर
इस पथ के सब यात्री चलते,
उठा उठा कर अपना विस्तर
चलना सरल नही इस पथ पर।।
निर्भयता के इस शुभ पथ पर
पग पग जीवन का मुखरित स्वर
स्वागत उसका जो आए ...
लानत! मागे जो कि सहारा,
यहाँ किसी से फैला कर कर।
चलना सरल नही इस पथ पर।।

पता—जीवन शक्ति फार्मेसी
आर्यसमाज मार्ग (वरुणीपुर)
गोरखपुर-273001

वार्षिक निर्वाचन

—आर्य समाज, रानी बाग शकूर बस्ती, दिल्ली के श्री ओम प्रकाश मनचन्दा प्रधान, श्री कुल भूषण आर्य मत्री और श्री कृष्ण कुमार साहनी कोषाध्यक्ष चुने गये।

—स्त्री आर्य समाज सी-१३ हरि नगर, घटाघर, नई दिल्ली के चुनाव मे प्रधाना श्रीमती प्रकाश वती वर्मा, उपप्रधाना श्रीमती ज्ञान देवी खन्ना, मत्रिणी श्रीमती राज रानी सूदन और कोषाध्यक्षा श्रीमती सत्या चौधरी चुनी गई, इसी तरह पुरुष आर्य समाज के प्रधान श्री विश्वमित्र भल्ला, मंत्री श्री आनन्द प्रकाश वर्मा और कोषाध्यक्ष श्री हरिश्चन्द्र वर्मा चुने गये।

—आर्यसमाज अशोक विहार-I दिल्ली के वार्षिक निर्वाचन में प्रधान श्री के० बी० राय, मत्री श्री विजय भूषण आर्य कोषाध्यक्ष श्री हरप्रकाश अहलूवालिया चुने गये।

—आर्यसमाज, पश्चिम विहार ब्लाक, ए-३ नई दिल्ली वार्षिक चुनाव मे श्री बी० एन० चौधरी प्रधान, धर्मवीर शास्त्री मन्त्री और श्री हरिश्चन्द्र जयरथ कोषाध्यक्ष चने गये।

—आर्य समाज सैठा का रामगढ़ के श्री सोहनलाल जडिया प्रधान, श्री लक्ष्मण सिंह वैद मन्त्री और श्री मोहनलाल जडिया कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज बड़ा बाजार पानीपत के चुनाव में निम्न अधिकारी चुने गये। प्रधान श्री रामानंद सिंहल, मन्त्री श्री ठाकर दास बत्रा और कोषाध्यक्ष श्री कुल भूषण। चुनाव श्री दिलीपसिंह को अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

चिता से निकालकर लाश की माटी खराब कर गया बाबा

कुरुक्षेत्र २७ जुलाई (देवेन्द्र)। लेकिन चमत्कार नहीं हो सका २५ वर्षीय जरनैलसिंह का शव इतना विकृत हो गया था कि जलाने के काबिल भी नहीं रहा था। अन्ततः उसे शमशान में दफना दिया गया। कल वीरवार जरनैलसिंह के शव को उसके सम्बन्धी दाह क्रिया के लिए दिन में लगभग ११ बजे शमशान घाट में ले गए थे। जब चिता को अग्नि दी जा रही थी तभी चन्द्रपाल नामक एक फकीर ने वहां पहुंच कर दावा कर दिया कि वह जरनैलसिंह को पुनः जीवित कर सकता है। रोते धोते परिवारजनों ने शव पर से लकड़ियां हटाई और फकीर चन्द्रपाल के कहने के अनुसार दौड़धूप में लग गए।

युवा मजदूर जरनैलसिंह एक आटा चक्की पर मजदूरी करता था। गत मंगलवार की रात को तीन बजे उसने अपने पेट में सख्त दर्द की शिकायत की। घर वाले उसे एक स्थानीय डाक्टर के पास ले गए। आराम नहीं आया तो उसे एक प्रमुख चिकित्सक डा० सोन्ती को दिखाया गया। डा सोन्ती ने उसके शरीर में किसी प्रकार का विष फैलने की आशंका जाहिर की और उन्हें तत्काल जरनैलसिंह को पीजीआई ले जाने का मशवरा दिया, ताकि सही इलाज हो सके।

लेकिन मिलने जुलने वालों ने जरनैलसिंह की मदद के बजाय उसके परिवार को गरीबी याद दिलाई और 'टोटकों' की सलाहें दे दी। बुधवार का सारा दिन व रात इन्हीं टोटकों में बीत गई और आखिर जरनैलसिंह ने दम तोड दिया।

इसी बीच बुधवार को घर से एक सांप निकला। सबको यही शक हुआ कि सांप ने काटा होगा। ढाई फुट लम्बे उस सांप को वहीं मार दिया गया। किसी ने सलाह दे दी कि हरिद्वार में एक बाबा है वह इसे ठीक कर सकता तो एक विशेष व्यक्ति हरिद्वार भेजा गया। उस बाबा ने सारी घटना सुनकर अपनी असमर्थता प्रकट की, फिर भी सान्त्वनावश गले में डालने के लिए कुछ मनके दे दिए।

मृतक जरनैल सिंह के शव को जब चिता में से निकाला गया तो फकीर चन्द्रपाल ने उसे पुनर्जीवित करने की प्रक्रिया के लिए एक लोहे का विशाल टब विशेष रूप से बनवाया। चन्द्रपाल के आदेश पर जरनैल सिंह के परिवार वालों ने दो-दो क्विंटल दूध तीन बार अर्थात छह क्विंटल दूध का बन्दोबस्त किया।

जरनल सिंह का बूढा बीमार बाप गांवों में फेरी लगाकर चूड़ियां बेचता है, तब जाकर कहीं पेट भर भोजन जुट पता है। जरनैल सिंह विवाहित था और उसके दो बच्चे हैं।

पुनर्जीवित करने का यह तमाशा देखने के लिए हजारों लोग जिनमें उच्च पुलिस व प्रशासनिक अधिकारी भी थे, आते रहे। जरनैल सिंह के बूढ़े बाप की किसी ने आर्थिक मदद नहीं की। इतने व्यापक चमत्कार आयोजन का सारा खर्च मृतक के परिवार पर एक कर्ज बन कर रह गया।

युवा जरनैल सिंह के शव को चिता की आग भी नसीब न हो सकी। सारी घटना एक प्रश्नचिन्ह छोड़ गई है कि क्या गरीब जरनैल सिंह को मदद देकर समय रहते पी.जी.आई. ले जाता तो निर्धन परिवार का सहारा बच न जाता? मृतक का धर्म भीरू और टूटा हुआ बाप इस सारे चमत्कार-चक्र के लिए कोसता है तो सिर्फ अपने नसीब को। (प०के०)

अंग्रेजी हटाओ देश बचाओ।

संस्कृत साहित्य में नैतिकता........

[पृष्ठ २ का शेष]

अतिथियज्ञ और बलिवैश्वदेवयज्ञ ये पांच यज्ञ प्रतिदिन करते रहने का अभिप्राय भी उपनिषद् का यही नैतिक उपदेश है कि कर्म करना और बांटकर खाना।

इस प्रकार संस्कृत साहित्य में नैतिकता भरी पड़ी है। इसका जितना अधिक प्रचार प्रसार होगा इससे समाज में सद्व्यवहार, आदर्शभावना, सदाचार, अनुशासन, पवित्रता, सत्यभाषण, सबका आदर आदि गुण विकसित होंगे और आजकल जो पथराव, हड़ताल आगजनी, परीक्षाओं का बहिष्कार, छुरेबाजी, चोरी, अपहरण आदि बातें हो रही हैं उन पर परोक्ष अंकुश बन सकेगा तथा हम सब कह सकेंगे—

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥

हरयाणा के अधिकृत बिक्रेता

१. मैसर्ज परमानन्द साईंदितामल, भिवानी स्टैंड, रोहतक।
२. मैसर्ज फूलचन्द सीताराम गांधी चौक, हिसार।
३. मैसर्ज सन-अप-ट्रेडर्स सारंग रोड, सोनीपत।
४. मैसर्ज हरीश एजेंसीज 499/17 गुरुद्वारा रोड, पानीपत।
५. मैसर्ज भगवानदास देवकानन्दन सर्राफा बाजार पुराना, करनाल।
६. मैसर्ज घनश्यामदास सीताराम बाजार, भिवानी।
७ मैसर्ज कृपाराम गोयल रुड़ी बाजार, सिरसा।
८ मैसर्ज कुलवन्त पिकल स्टोर्स शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन० आई० टी० फरीदाबाद।
९ मैसर्ज सिंगला एजेंसीज सदर बाजार, गुड़गांव।

धर्म व राज के ठेकेदारों से

मानवता से अन्याय देश की हत्या !!!

ब्र० आर्य नरेश वैदिक प्रवचन

तथाकथित जातिवाद एवम् छुआछूत ने भारत तथा भारतीय संस्कृति की अब तक जितनी हानि की है उतनी शायद अन्य किसी चीज ने नही की। जलता हुआ गुजरात इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। वैदिक-दर्शन के अनुसार कोई भी व्यक्ति जन्म-जाति से छोटा अथवा बड़ा न होकर कर्मों से ही छोटा बड़ा होता है। जैसे कोई व्यक्ति जन्म से प्रिंसिपल या ब्रिगेडियर व कैशियर नहीं हो सकता वैसे ही जन्म से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र भी नहीं हो सकता।

आज भी भारत के अनेक ग्रामों में शूद्र न तो मन्दिरो में जा सकते हैं, और न ही कुंओं पर पानी भर सकते हैं। शूद्र को हरिजन की संज्ञा देने से न तो समस्या कभी सुलझी है और न ही सुलझ सकती है। सरकार को विचारना चाहिए कि क्या श्री जगजीवनराम का परिवार अब भी हरिजन है और आरक्षण का अधिकारी है ? साथ-साथ सरकार को विचार करना चाहिए कि अब तक सरकारी सहयोग प्राप्त करने के ३८ वर्ष पश्चात् कितने हरिजन परिवार दलित वर्ग को छोड़ कर सम्पन्न वर्ग की रेखा में आये हैं। जिन्होने अब अपने पैरों पर खड़ा होना सीख लिया है उन्हें सरकारी सहायता की बैसाखी किस लिए ?

शास्त्र में शूद्र का अर्थ अछूत व अधर्मी किसी शास्त्र मे नही लिखा न ही शूद्रों को नशा, मास, शराब, जूआ तथा गन्दे कार्यों में लगे रहकर अपने आर्य-धर्म से गिरना चाहिए, उन्हें शीघ्र बौद्धिक व आर्थिक उन्नति करके व्यापारी, सैनिक व विद्वान् बनकर शूद्रता व आरक्षण से मुक्ति लेनी चाहिए।

शूद्र का अर्थ ऐसे धार्मिक देश-भक्त आर्य से है जो पढाने से भी विशेष ज्ञानी न हो सकने से केवल श्रम कर सकता है। आजकल की भाषा मे उसे चतुर्थ श्रेणी का कर्मचारी श्रमिक, या मजदूर भी कह सकते हैं। यजुर्वेद ($\frac{31}{11}$) में वर्ण व्यवस्था गुण कर्म व स्वभाव ही मानी गई है।

क्या कभी चतुर्थ श्रेणी वालों को अछूत समझा जाता है ? यदि नही, तो फिर शूद्र को ही क्यों ? शूद्र का वास्तविक अर्थ (आशु द्रवति) शीघ्र अनुसरण करने वाला, या पिघलाने वाला है; जो नम्रता एवं सेवा भावना से राष्ट्र के विद्वानो, सेना-अध्यक्षों तथा राष्ट्र पालक व्यापारियों का सहयोगी होकर देश की उन्नति करे।

वेदार्थ पारिजात

परन्तु खेद है कि इस वैज्ञानिक युग में भी कुछ लोग वेद एव दर्शन से विरुद्ध पौराणिक अधविश्वासो को पकड़े हुए है। प्रसिद्ध पौराणिक पण्डित स्व० श्री करपात्री जी द्वारा प्रकाशित 'वेदार्थ पारिजातम्' नामक ग्रन्थ के दूसरे भाग के पृष्ठ १८२४ से २१४१ तक निम्न बातें लिखी हैं—

(i) शूद्रो एव स्त्रियो को वेद पढ़ने का अधिकार नही।

(ii) स्त्रियों का घोड़ो से विवाह

(iii) विधवा होने पर स्त्री को सती होना चाहिए।

(iv) यज्ञो मे पशु बलि उचित तथा बाल विवाह भी उचित है।

इसके साथ ही 'मीमासा न्याय प्रकाश' के पूर्वार्द्ध में लिखा है कि स्त्री और शूद्र को वेद पढने का अधिकार नही है। गौतम धर्म सूत्र १२-४ में लिखा है यदि वे वेद को सुन लें अथवा बोल दें तो उनके कान मे गर्म रागा भर दें तथा जिह्वा को काट दे। ऐसी ही मानवता विरुद्ध बातें शांकर साहित्य व सायण तथा महीधर के वेद भाष्यों में भी है ये विद्वानों के लक्षण नहीं। जब तक पौराणिक ग्रन्थो में 'यास्क' आदि प्राचीन ऋषियो की मान्यताओ के विरुद्ध ऐसी बातें रहेंगी तब तक न तो हिन्दू जाति एक हो सकेगी और न ही विधर्मी होने से बच सकेगी मनुस्मृति के अनुसार भी शूद्र को ब्राह्मण($\frac{10}{65}$) बनने का अधिकार है।

धर्म प्रेमी सज्जनों को यह जानना आवश्यक है कि यजुर्वेद २६-२ में स्त्री और शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार दिया गया है। छा० उपनिषद् ४-१ में 'जानश्रुति' नाम के शूद्र की 'रैक्वमुनि' से वेद पढ़ने की चर्चा है और बृहदा० उपनिषद् के तीसरे अध्याय में वेदज्ञा गार्गी द्वारा याज्ञवल्क्य से शास्त्रार्थ करने की बात लिखी है। शास्त्र मे स्त्री को भी यज्ञोपवीत का अधिकार है।

हिन्दुओ! विचारो कि तुम कैसे बचोगे ? तुम्हारे घरो में साथ बैठ कर एक कुत्ता, तो तुम्हारे हाथ से भोजन व वस्त्र प्राप्त कर सकता है, परन्तु एक इन्सान कहलाने वाला शूद्र, नही!!! अतः हमारा सभी सनातनी पण्डितो से नम्र निवेदन है, कि इन ग्रथो मे शीघ्र संशोधन करके शूद्रो तथा स्त्रियों के प्रति उगले गये विष को निकाल कर हरिजनो को धर्म परिवर्तन से बचाये।

जाति को आधार न बनाये

परस्पर की फूट समाप्त करके एकता व शान्ति लाने के लिए यह परम आवश्यक है कि भारत सरकार अपने सभी प्रकार के कार्यों, पदो व चुनावो के लिए जाति को आधार न बनाकर आर्थिक स्थिति तथा योग्यता को ही आधार बनावें। इसके साथ-साथ चुनावों व अन्य चतुर्थ श्रेणी से लेकर राष्ट्रपति तक के कार्यों में सलग्न लोगों को नियम पूर्वक उपजाति सूचक शब्दों के प्रयोग पर कठोर प्रतिबध लगायें।

यदि ऐसा कदम शीघ्र न उठाया गया तो सारा राष्ट्र गुजरात बन कर जल उठेगा और एक भारतीय दूसरे भारतीय के खून का प्यासा हो जायेगा। एक ओर तो तथाकथित धर्मान्धता के कारण वेद विरुद्ध ग्रन्थों से धर्मध्वजी लोगों ने फूट पैदा की और दूसरी ओर सरकार ने इसका गलत समाधान करके इस फूट को दवा दी। बिना योग्यता के पदोन्नति व आरक्षण से जो व्यक्ति योग्य होते हुए भी ऊपर नहीं उठ पाते, वे ऊपर उठे हुये उन अयोग्यों से कभी भी सद् भावना नही बना पाते। इस बात के जिन्दा उदाहरण भारत के कई विद्यालय महाविद्यालय चिकित्सालय व अन्य संस्थान हैं जहाँ कार्य करने वाले अधिकारी अथवा अनुचर आपस में झगड़ते रहते हैं। उनमें परस्पर ताल मेल न होने से सारे विभागो व संस्थानों का भट्ठा बैठता जाता है।

अतः सरकार को चाहिये कि वे योग्यता के अनुसार न्यायोचित अधिकार दे। लोगो को चाहिये कि वे वेदानुसार चल कर सबसे अपने आत्मा के तुल्य व्यवहार करें और देश के विद्वानों को चाहिये कि भेद-भाव पैदा करने वाली वेद विरुद्ध बातो को ग्रन्थो से निकाल कर सर्वत्र मानवता का प्रचार करें तथा सभी स्थानो पर योग्यतानुसार सब को परमात्मा का पुत्र समझ कर समान अधिकार दें।

यदि देश की युवा पीढी जाति-पाति, प्रान्तवाद तथा छुआछूत एवं दहेज की कुप्रथा को छोड़ कर आर्य समाज के सहयोग से वैदिक विधि के अनुसार स्वयंवर विवाह करे तो राष्ट्र शीघ्र ही संगठित एवं उन्नत होगा।

पता—४९ ज्ञानसदन, माडल-बस्ती दिल्ली—५

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद का वार्षिक अधिवेशन

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद, दिल्ली प्रदेश का छठा वार्षिक अधिवेशन 25 अगस्त को आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग नई दिल्ली मे होगी, जिसका उद्घाटन प्रो० वेद व्यास एडवोकेट करेंगे। मुख्य अतिथि श्री रामचन्द्र विकल और लाला इन्द्र नारायण हाथी दात वाले होगे। यह अधिवेशन 11 से 1 बजे और 2 से 5 तक बजे तक श्री यशपाल सुधांशु की अध्यक्षता मे होगा। सभा को श्री अमर स्वामी, श्री क्षितीश वेदालंकार और श्री रामनाथ सहगल आदि सम्बोधित करेंगे, और श्री मुलख राज मल्ला पुरस्कार वितरण करेंगे।

मन्त्र प्रतियोगिता और वेद प्रचार दिवस

प्रान्तीय आर्य महीला सभा, दिल्ली के तत्वाबधान मे वेद प्रचार दिवस और मन्त्र पाठ प्रतियोगिता 9 सितम्बर को दयानद वाटिका मे 11 से 4-30 बजे तक आयोजित की गयी है। जिसकी अध्यक्षता बहिन ईश्वर देवी करेंगी। प्रतियोगी बहनें अपना नाम एक सप्ताह के अन्दर निम्न पते पर भेज दें।—प्रकाश आर्य 30/31 न्यू रोहतक रोड, नई दिल्ली फोन—581393

योग प्रशिक्षण एवं दर्शनाध्यापन का आयोजन

पूज्यपाद स्वामी सत्यपति जी द्वारा चैत्र शुक्ला प्रतिपदा वि० सं० २०४३ तदनुसार मार्च १९८६ से निरन्तर दो वर्ष तक चुने हुए, प्रतिभा सम्पन्न, मेधावी, दस ब्रह्मचारियों को ऋषि-शैली मे छहो दर्शनों के अध्यापन के साथ-साथ क्रियात्मक वैदिक योग का गहन शिक्षण-प्रशिक्षण दिया जावेगा। इस अवधि मे सभी ब्रह्मचारियो के लिये आवश्यक सुविधाओं से युक्त आवास, भोजन वस्त्र तथा पाठ्य-सामग्री आदि का पूर्ण प्रबन्ध निःशुल्क होगा।

इस रचनात्मक आयोजन का उन ब्रह्मचारियों को अवश्य ही लाभ उठाना चाहिये, जो एक मात्र पवित्र वैदिक धर्म प्रचार में अपने सम्पूर्ण जीवन को लगाने के लिये कृत-संकल्प हो। दर्शन पाठ्यक्रम से पूर्व कुछ निर्देशित शास्त्रों के प्रार्थी ब्रह्मचारियों द्वारा पूर्वाध्ययन सुविधापूर्ण होगा। अतः अभिलाषी ब्रह्मचारी निम्न पते पर २८ अक्तूबर १९८५ तक पत्र व्यवहार करें। —स्वामी सत्यपति परिव्राजक २-एफ, कमला नगर, दिल्ली-११०००७

वेदार्थ पारिजातम्

सामाजिक कुरीतियों का समर्थन करने वाली पुस्तक का बहिष्कार हो या उसे पुरस्कार दिया जाए

—डा० सुद्युम्नाचार्य, व्याकरणाचार्य, M.A.
लब्धस्वर्ण पदक D.Phil. प्रवक्ता संस्कृत विभाग,
मु० म० टाउन पोस्ट ग्रेजूएट डिग्री कालेज, बलिया, (उ० प्र०)

कुछ दिन पूर्व स्वामी हरिहरानन्द करपात्री जी द्वारा लिखित महाग्रन्थ "वेदार्थ पारिजातम्" के लिये उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा एक लाख रुपये का पुरस्कार प्रदान किया गया। इस ग्रन्थ में प्राचीन भारतीय सिद्धान्तों का विशदता के साथ प्रतिपादन किया गया है। यह प्रतिपादन पूर्व-लिखित 'वेदों का स्वरूप और प्रामाण्य' आदि पुस्तको द्वारा भी किया जा चुका है। इस ग्रन्थ की मुख्य विशेषता यह है कि इसमे हजारों पृष्ठो का उपयोग करके बाल विवाह, बहुपत्नी विवाह, सती-प्रथा, जाति-प्रथा, ऊंच नीच, छुआछूत आदि का जम कर समर्थन किया गया है तथा विधवा विवाह, आदि का पूरी शक्ति से विरोध किया गया है। इस प्रकार यह पुस्तक समाज-सुधारकों द्वारा इन कुप्रथाओं के विरोध मे किये गए तमाम प्रयत्नो की ओर अंगूठा दिखाती है।

इस पुस्तक पर उ० प्र० सरकार द्वारा एक लाख का पुरस्कार सहज ही इसका परोक्ष समर्थन प्रतीत होता है। सरकार का यह रवैया अचरज भरा है। प्रसिद्ध उपन्यासकार फणीश्वर नाथ "रेणु" कहा करते थे कि जब हम सघर्ष तथा क्रान्ति की बातें पुस्तको मे लिखते हैं तो सरकार हमें पुरस्कार देती है। पर जब हम क्रान्ति करते हैं तो वह हमे जेलों में डाल देती है। यहाँ भी इसी प्रकार इन कुरीतियों के समर्थन मे लिखने पर पुरस्कार प्राप्त होता है। पर इनका समाज में प्रचार करने पर जेल के अलावा जगह न मिलेगी।

इस प्रकार तमाम कुरीतियो का सैकडों तर्कों, और प्रमाणों से समर्थन करने वाली इस पुस्तक की पुरस्कार योग्य मुख्य विशेषता इसका सस्कृत मे लिखा जाना है। इसमें जरा भी सन्देह नहीं कि यदि इसे अन्य भाषाओं मे लिखकर तथा छोटे-छोटे भागो में विभक्त कर समाज में प्रचारित किया जाय तो यह सम्मान नहीं प्राप्त कर सकेगी तथा सरकार भी इसे पुरस्कार योग्य नही मानेगी। पर यह ग्रन्थ चूंकि संस्कृत मे है, अत. इसे आम लोग समझते नहीं। केवल इसके विशाल आकार तथा उसे मान्यता प्राप्त व्यक्ति द्वारा लिखित जानकर इसका सम्मान करते हैं। जो लोग इसे समझते हैं, वे इस विषय मे कुछ बोलना नही चाहते। अतः यह अनायास ही सम्मानित हो रहा है।

यह अतीव दुखद है कि धर्म की उच्चतम सीमा को जानने वाले व्यक्ति ने इस पुस्तक में ऐसे समाज की परिकल्पना की है जो समाज को गहरे गड्ढे में डालने वाला है। जिस भयंकर जाति प्रथा आदि के विनाशकारी परिणाम पिछली शताब्दियों में हम देख चुके हैं, उसी ओर ढकेलने वाली है यह पुस्तक-क्योकि इसमें सभी कुरीतियो का हर तर्क-प्रमाण के साथ समर्थन है।

यह सच है कि हमारे देश में, प्रमुख रूप से मध्ययुग मे, शक्ति सम्पन्न लोगो के कारण इस प्रकार की कुरीतियाँ उत्पन्न हुई। सामन्ती चरित्र को विकसित करने के लिये निम्न तथा निर्बल वर्ग से विद्वेषकारी प्रथाएं उन लोगो को आवश्यक प्रतीत हुई। 'शक्ति के चारो ओर सब कुछ घूमता हैं,—इस उक्ति को चरितार्थ करते हुए उस समय के धर्माचार्यों ने इन प्रथाओं को धार्मिक रूप दिया। यह दुर्भाग्य का विषय है कि उन धर्मध्वजी लोगो ने धर्म का उपयोग इन्ही कुप्रथाओं का संरक्षण तथा बढ़ावा देने मे किया क्योकि इससे उन्हे शक्ति सम्पन्न लोगो से हर तरह की सुविधा प्राप्त होती थी।

अनार्ष ग्रन्थों के प्रमाण

इन्ही धर्माचार्यों के प्रमाणो तथा तर्कों का उपयोग इस "वेदार्थपारिजातम्" नामक ग्रन्थ में किया गया है। यह जानना दिलचस्प है कि इस पुस्तक में मध्यकालीन स्मृतियों, पुराणो, भागवत आदि के प्रमाण ही मुख्य रूप से दिये गए है जो महाभारत के बाद की रचनाएं हैं। महाभारत से पूर्व ये कुप्रथाए नही थी। अत. इस पुस्तक मे उससे पूर्व के प्रमाण भी बहुत कम हैं। इस सन्दर्भ मे भारतरत्न डा० पाण्डुरग वामन काणे की "धर्मशास्त्र का इतिहास" एक आदर्श तथा अतिप्रशंसनीय पुस्तक है। क्योकि उसमे अतीव निष्पक्षता के साथ प्रचीन ग्रन्थों में समर्थन तथा विरोध मे जो भी कुछ कहा गया है, उसे उपस्थित कर दिया गया है। पर इस "वेदार्थपारिजातम्" में तो कुरीतियों के समर्थन में ही प्रमाण दिये गए हैं। विरोध मे प्राप्त प्रमाण या तो दिये नहीं, या उन्हें तुच्छ बताया है।

यह अतीव दुखद है कि जिन गम्भीर कुरीतियो के कारण यह देश शताब्दियों तक पराधीन रहा तथा विदेशी आक्रमणो को सहता रहा, उन्हीं परिस्थितियो को लाने का गर्हित षड्यन्त्र इस पुस्तक मे किया गया है। यह पुस्तक समाज के सभी वर्गों मे फूट डालने वाली है, निम्न वर्ग के लोगो को नीचा दिखाने वाली है, महिलाओ का घोर अपमान करने वाली है। यह उसी मानसिकता से ओतप्रोत है जिसमे महिला को जिन्स, समझा जाता था तथा निम्न वर्ग पर तरह-तरह के अत्याचार किये जाते थे। यह समाज को निरन्तर पतन की ओर ले जाने वाली है।

कुछ उदाहरण

इस पुस्तक में अनीति तथा अन्याय के समर्थन में जो ओछे तर्क दिये गए हैं, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं:—

"विधवा विवाह नही होना चाहिये। क्योकि यदि इस विधवा-विवाह को नही रोकेंगे तो विधवाएं काम से आक्रान्त होकर विवाह के लोभ में सन्तान की हत्या पर ही उतारू हो जाएंगी। इस प्रकार भ्रणहत्या, बालहत्या बढ जायेगी"। वेदार्थ पारिजात पृ० १७६५

यह विलक्षण तर्क विधवा विवाह के विरोध करने का है। क्या इस पुस्तक के लेखक विधवा विवाह होने पर बालहत्या का उदाहरण ढूढ सके हैं। दूसरे—रोकने पर यह लोभ बढेगा या न रोकने पर? तीसरी मुख्य बात यह है कि ये सभी आशकाएं तथा प्रतिबन्ध केवल महिलाओ के लिये हैं, पुरुषो के लिये नही। विधुर के विवाह की अनुमति मे न तो वे काम से आक्रान्त होते हैं, न ही उनसे बालहत्या की आशंका उपस्थित होती है। इस प्रकार सभी समस्याओं से मुक्त हैं ये पुरुष लोग!! क्योकि वे आगे लिखते हैं:—

"पर पत्नी के मर जाने पर पुरुष को पुनर्विवाह करने में कोई वाधा नही है। क्योंकि पुरुष को अग्निहोत्रादि कर्म का विधान है, जो कि पत्नी के बिना सम्भव नही है। अतः पुरुष पुनर्विवाह कर सकता है"।

(पृ० १७९८)

यह विलक्षण तर्क पुरुष के पुनर्विवाह के समर्थन मे है। यहां आश्चर्य की बात यह है कि पत्नी के बिना पुरुष का अग्निहोत्र सम्पन्न नही हो पाता फिर भी स्त्री को अग्निहोत्र का अधिकार नहीं है। क्योकि वे आगे लिखते हैं:—

"पति के मर जाने पर स्त्री को अग्निहोत्रादि नही करना है। क्योकि उस स्त्री को पति के साथ मर जाने या ब्रह्मचर्य पालन का ही विधान किया गया है।"

यह मध्ययुग मे सती प्रथा के समर्थको द्वारा प्रोत्साहित विकृत चिन्तन का परिणाम है। वेदो मे बार-बार
अग्निहोत्र के अधिकार
बावजूद तथा सती प्र
न होने पर भी इसे म
अन्याय की इस
आगे भी अधिकार
समय राजा लोग कई
अत धर्माचार्यों को उनके
बनाना ही था, क्योकि वे
जो ठहरे। अतः इस पुस्तक

पुरुष खूटा : स्त्री

"एक पुरुष के कई
सकती हैं पर एक स्त्री के
नहीं हो सकते। क्योंकि एक प्राचीन प्रमाण के आधार पर तर्क यह है कि एक यज्ञ के खूटे मे कई रस्सियां बांधी जा सकती हैं, पर एक ही रस्सी कई खूटों में नहीं बाधी जाती।" पृ० १४२९ आदि अनेक स्थानो पर।

इस विलक्षण चिन्तन के अनुसार पुरुष खूटा तथा स्त्री रस्सी है। खूंटे के सभी कार्य पुरुष मे तथा रस्सी के सभी कार्य स्त्री मे लागू होगे। इसी प्रकार कन्याओ के वेदाध्ययन पर गजब का तर्क देते हुए लिखा है—

"कन्याओ को वेदाध्ययन का अधिकार नहीं है। क्योकि यदि यह अधिकार मानेगे तो घोड़े, बैल आदि के प्रति भी यह अधिकार मानना होगा।"

(पृ० १४८७)

इससे स्पष्ट सिद्ध है कि पुस्तक के लेखक की दृष्टि में कन्याएं घोडे, बैल आदि पशुजाति की ही हैं। तभी उनसे तुलना सम्भव है। अन्यत्र पुनः अपने विकृत तर्क का उपयोग करते हुए उन्होने लिखा है:—

"ईश्वर से निर्मित वेद पर सबका समान अधिकार नही है। क्योंकि यदि ऐसा मानेंगे तो ईश्वर से निर्मित कन्या पर भी सबका समान अधिकार क्यो न माना जावे"। पृ० १६४१

यहा पूछना चाहिये कि यदि ईश्वर से निर्मित वस्तु पर सबका अधिकार नही, तो हवा, पानी पर सबका अधिकार क्यो माना जावे उसके लिये भी परमिट जारी होना चाहिये।

इतना ही नही, इस ग्रन्थ मे आधुनिक वैज्ञानिको की अत्यन्त सुपुष्ट मान्यताओं को तोडते हुए उन्ही मध्ययुगीन स्थापनाओ को मान्यता दी है। जैसे:—

पृथ्वी नहीं घूमती ?

"यह पृथ्वी घूमती नहीं है। क्योंकि यदि वह घूमती तो झण्डे का मुंह सदा पश्चिम की ओर होता तथा [illegible] ने सदा आंधी चला करती।"

(पृ० १२५५)

पुराने ज्योतिषियो के तर्क
भी नया नही है। इनका
क उपायो से भली प्रकार
जा चुका है।
मे ये कुछ उदाहरण दिये
अ अरों पृष्ठो मे किए गए

टंकारा के जीवापुर

प्रो० दयालजी भाई आर्य, प्राध्यापक,
अनुवाद, संशोधन व सम्पादन—

ऋषि दयानन्द की प्रारम्भिक जीवनी

वर्तमान में आर्य विद्वानो के अनेक अनुसन्धान सम्बन्धी लेख प्रकाशित होते रहते हैं। और विश्वविद्यालयो में भी अनुसन्धान कार्य सम्पन्न होते हैं। पी० एच-डी० उपाधि के लिए जो शोध ग्रन्थ तैयार किए जाते हैं उनमे भी कभी शोधार्थी को वास्तविक तथ्य उपलब्ध न होने अथवा किन्ही अन्य कारणों से अनेक प्रकार की भूलें रह जाती हैं। ऋषि निर्वाण शताब्दी अजमेर में जब मैं पंडित युधिष्ठर मीमासक से मिला तो उन्होने मुझे दो संन्देहास्पद बातो पर विशेष जानकारी प्राप्त करने को कहा। प्रथम, टंकारा मे जीवापुर मुहल्ले का नाम क्यो पडा ? द्वितीय, टकारा और जीवापुर के शिवालयो में समानता का क्या कारण है? यहा मैं क्रमश: इन्ही बातो पर विचार प्रस्तुत करता हू।

जीवापुर मुहल्ला

'नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती' के विद्वान् लेखक डा० भवानी लाल 'भारतीय' ने राजस्थान के पाली नगर के जोधपुरियावास आदि मुहल्लों के नामकरण का उदाहरण देकर यह स्थापना की है कि सम्भवत: जीवापुर से आकर टकारा मे बस जाने वाले औदीच्य ब्राह्मणो ने अपने पूर्व निवास के गाँव के अनुकरण पर टकारा के इस मुहल्ले का नाम भी जीवापुर रख लिया होगा। भारतीय जी द्वारा दिया गया दृष्टान्त निर्मूल तो नही है किन्तु जीवापुर के प्रसंग में यह नहीं घटता। किसी प्रसिद्ध व्यक्ति की स्मृति को सुरक्षित रखने के लिए भी गाव या मुहल्लो के नाम रखे जाते हैं अथवा गांव और मुहल्लो को बसाने वालो के नाम पर भी नाम रखे जाते हैं। तदनुसार ही टंकारा के जीवापुर मुहल्ले का नामकरण किया गया है। तथ्य यह है कि मोरवी के दीवान के पद पर जीवा महेता नामक एक प्रभावशाली व्यक्ति थे। जाति से वैश्य होने पर भी उन्होने अनेक युद्ध किए थे। उन्ही के नाम पर 1778 वि० मे जीवापुर गाव की स्थापना हुई थी और उसी समय वे टकारा से मेघजी त्रिवेदी के पुत्र विश्रामजी को वहा ले गए थे, यह वर्णन हम पूर्व ही कर आए हैं।

द्वितीय, टकारा गाँव मे चारो ओर जो परकोटा है उसे सवत् 1778 में जीवा महेता ने ही बनवाया था। इस प्राचीर के निर्माण के समय वे स्वय टंकारा में कुछ दिन रहे थे।...

उन्होने जामनगर राज...

नाम से आज भी विद्यमान है। सारांश यह है कि मोरवी के इन्ही दीवान जीवा महेता ने जीवापुर की स्थापना की, टंकारा के परकोटे का निर्माण किया तथा पड़धारी की लड़ाई के समय जब वे टंकरा मे रहे होगे, उसी समय इस मुहल्ले का नाम जीवापुर दिया गया। जिस समय जीवापुर गाव की स्थापना भी नही हुई थी उससे पहले ही टंकारा के इस मुहल्ले का जीवापुर नामाभिधान हो गया था।

यहां एक और बात भी द्रष्टव्य है कि पूर्व समय में टकारा की आबादी वर्तमान से प्राय: दुगनी 8000 से भी अधिक थी। टंकारा के इतिहास से ज्ञात होता है कि इस गाव के आस-पास सात गाव बसाए गए थे और वहा की अधिकांश आबादी टकारा से ही गई थी। इसलिए जीवापुर या अन्य किसी गाँव से टकारा मे आने अथवा उस गाव के आधार पर टकारा के किसी मुहल्ले का नामकरण किये जाने की सम्भावना नहीं है! निष्कर्ष रूप मे कहा जा सकता है कि जिस प्रकार जीवा महेता के नाम से मोरवी मे अनेक स्मृति चिन्ह हैं, उसी प्रकार टंकारा के इस मुहल्ले का नाम उक्त महेता जी के नाम पर ही किया गया।

यहाँ एक और ध्यान करने योग्य बात है कि पडित श्रीकृष्ण शर्मा ने अपनी पुस्तक 'महर्षि दयानन्द सरस्वती का वंश परिचय' में पृष्ठ 11 पर जीवा महेता को टंकारा का नगराध्यक्ष बताया है जिससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि महेता जी टंकारा निवासी थे। किन्तु वस्तुत: जीवा महेता टंकारा के नगराध्यक्ष या नगर सेठ नही थे। नगराध्यक्ष का पद वश-परम्परा के अनुसार पिता के बड़े पुत्र को ही दिया जाता है। जबकि जीवा महेता और उनके पूर्वज इस गाँव के रहने वाले न होकर मोरवी राज्य के चमनपुर गाव के रहने वाले थे। द्वितीय कारण यह भी है कि मोरवी राज्य के महामत्री पद पर रहने वाला व्यक्ति कालातर मे टंकारा के नगराध्यक्ष जैसे छोटे पद पर रहे, इसकी सम्भावना भी नही। शर्मा जी ने उपर्युक्त पुस्तक मे और भी अनेक अप्रामाणिक तथा अविश्वसनीय बातें लिखी हैं। स्वामी जी का प्रारम्भिक जीवन वृत्तान्त अत्यल्प मात्रा मे उपलब्ध होता है इसलिए उनके जीवन ... कार्य करने वाले अनेक विद्वान् शर्मा ...ग्री का उपयोग ...भूले कर बैठते हैं।

...ासना मंदिर
...भ्रम निवारण

...अनुसार मूलशंकर ...सना बाकानेर राज्य

की सीमा पर स्थित जड़ेश्वर महादेव के मन्दिर में की थी। इस की पुष्टि में उन्होने ऋषि की आत्मकथा तथा पोपट लाल की बुआ बेणी बाई का साक्ष्य प्रस्तुत किया है। जब हम ऋषि के लिखित और पूना व्याख्यान मे कथित आत्मकथा को देखते हैं तो हमे निम्न विवरण प्राप्त होता है—"और जब चतुर्दशी की सन्ध्या हुई तो बस्ती के बड़े-बड़े रईस अपने पुत्रो के साथ मन्दिरों मे जागरण करने के लिए गए। वहाँ मैं भी अपने पिता के साथ गया और प्रथम प्रहर की पूजा भी की, दूसरे प्रहर की पूजा करके पुजारी लोग बाहर निकल कर सो गए......मैं अपनी आंखो पर जल के छींटे देकर जगता रहा।" पुन: व्याख्यान का पाठ इस प्रकार है—"मेरे यहां नगर के बाहर एक बड़ा देवल है, वहा शिवरात्रि के दिन रात के समय बहुत लोग एकत्रित होते हैं और पूजा करते हैं। मेरे पिता और मैं और बहुत मनुष्य वहां एकत्रित थे। पहले पहर की पूजा की, दूसरे पहर की पूजा की और जब यह पूजा समाप्त हो गई तो रात के बारह बज गए, धीरे-धीरे लोग आलस्य के कारण जहाँ तहां झुकने लग गए। पुन: चूहे की घटना घटी। मैंने पिता को जगाया। जब पिता से समाधान न हुआ तो मैं घर चला गया माता से भोजन मांगा। माता ने भोजन दिया और उसे खाकर मैं एक बजे सो गया।"

ऋषि के उपर्युक्त शब्दों पर विचार करने से पूर्व देवेन्द्र बाबू के तर्क पर विचार करना उचित है। वे लिखते हैं "दयानन्द जिस मन्दिर में व्रत के उद्यापन के लिए गए थे वह मन्दिर उनके शहर के बाहर था, बड़ा था और उस मन्दिर के निकट कोई बरामदा आदि का आश्रय स्थान नहीं था। अत: मन्दिर के पुजारी और मन्दिर में आये व्रतधारियों के लिए सोने का स्थान कहाँ से आया ? कुबेरनाथ का मन्दिर इन लक्षणो से युक्त नही है, क्योंकि वह शहर के बाहर नही, भीतर है। उसके पार्श्व मे या उसके निकट कोई ऐसा आश्रय स्थान नही है जिसमें दो से अधिक मनुष्यो के सोने की जगह हो।"

देवेन्द्र बाबू के तर्क के अनुसार शिवालय का नगर से बाहर होना, बडा होना और व्रतधारियो के सोने का आश्रय-स्थान होना ये तीनो बातें टंकारा स्थित कुबेरनाथ के मन्दिर मे नही हैं और जडेश्वर के मन्दिर मे हैं। इसलिए उन्होने जडेश्वर मन्दिर को ही शिवरात्रि की उपासना का स्थान बताया है। अब हम नगर से बाहर होने, बडा होने और आश्रय स्थान रहने विषयक बातों की समीक्षा करेंगे।

मन्दिर का ग्राम से बाहर होना

श्री देवेन्द्र नाथ ने ऊपर उद्धृत वाक्यों में जो यह लिखा है कि शहर से बाहर नहीं बल्कि भीतर है, इस पर हम अपनी ओर से कुछ न लिख कर देवेन्द्रनाथ के ही अन्यत्र उद्धृत वाक्यों को प्रस्तुत करते हैं "करसनजी ने टकारा के बाहर थोड़ी सी दूर पर शिवजी का एक मन्दिर भी बनवाया था जिसका नाम कुबेरनाथ का मन्दिर है......यह मन्दिर टंकारा के राजकोट द्वार से बाहर निकलते ही बाईं ओर डेमी नदी के घाट पर दृष्टि गोचर होता है।" यही वाक्य 'स्वामी दयानंद के जन्म स्थान आदि का निर्णय' शीर्षक पुस्तक मे भी है। अन्यत्र भी उन्होने लिखा था "करसन जी ने डेमी नदी के तट पर एक शिव मंदिर भी बनवाया था।" देवेन्द्र बाबू के उपर्युक्त परस्पर विरुद्ध वाक्यों के विषय मे किसी शोधकर्त्ता ने कुछ नहीं लिखा, यह आश्चर्य की बात है।

विचार करने से प्रथम वाक्य का पाठ भी शुद्ध उद्धृत नहीं लगता और वाक्यो का पूर्वापर संबंध भी मेल नही खाता। अत: बहुत अधिक विस्तार मे न जाकर भी हम यही कहेंगे कि कुबेरनाथ का मदिर टंकारा की सीमा के बाहर है, यह तो प्रत्यक्ष ही है। इसलिए ऋषि द्वारा प्रयुक्त 'शहर से बाहर' शब्दों से टंकारा का यही मन्दिर सिद्ध होता है।

'शहर से बाहर, शब्द से जड़ेश्वर के मन्दिर का ग्रहण कभी नही हो सकता। क्योकि यह मन्दिर टंकारा से छ. मील दूरी पर है। जगल मे होने से इसे नगर के बाहर भी नहीं कहा जा सकता। इसलिए 'मेरे नगर के बाहर' वाक्यांश का प्रयोग जड़ेश्वर के मन्दिर के लिए प्रयुक्त नही हो सकता।

'बडा' शब्द पर विचार करने से पूर्व यह लिखना आवश्यक है कि शिवालय का वर्णन 'थियोसोफिस्ट' मे प्रकाशित आत्मकथा मे तो नहीं है किन्तु पूना व्याख्यान मे है। ये व्याख्यान स्वामी जी ने हिन्दी में दिए थे जिन्हे मराठी लेखको ने लिखकर सर्वप्रथम मराठी में ही प्रकाशित किया। अब अनुसन्धानकर्त्ताओ के प्रयत्न से मराठा के मूल बारह व्याख्यान प्राप्त हो चुके है तथापि आत्मवृत्तान्त प्रस्तुत करने वाला अन्तिम पन्द्रहवा व्याख्यान तो मराठी में भी प्राप्त नहीं हुआ। वर्तमान मे उपलब्ध हिन्दी व्याख्यान तो मराठी मे भी प्राप्त नहीं हुआ। वर्तमान में उपलब्ध हिन्दी व्याख्यानों का आधार क्या है ?

विशेष लेखमाला (४)

मुहल्ले से सम्बन्धित तथ्य

आयुर्वेदिक कालेज, जामनगर।
डा० भवानीलाल भारतीय

यह भी अज्ञात है। इसलिए 'बड़ा' शब्द ऋषि द्वारा प्रयुक्त किया गया या लेखक की ओर से जुड़ गया या अनुवाद में आ गया अथवा मुद्रण दोष से प्रविष्ट हो गया, इस पर कुछ कहना सम्भव नहीं। इसलिए थियोसोफिस्ट में प्रकाशित आत्म-कथा को ही अधिक प्रमाणिक मानकर हम यहां यह वाक्य उद्धृत कर रहे हैं "पुजारी लोग बाहर निकल कर सो गए।" यदि जड़ेश्वर के मन्दिर मे गए होते तो उस मन्दिर के विशाल गर्भ-गृह में ही लोग बैठे-बैठे सो जाते। बाहर निकलने की आवश्यकता ही नही रहती। इससे सिद्ध होता है कि वह मन्दिर टकारा के बाहर का ही था। उस मन्दिर में अधिक लोगो का समावेश न होने के कारण बाहर निकल कर सोये, क्योकि बाहर का प्रागण बड़ा है।

द्वितीय, लिखित आत्मकथा के अनुसार "बस्ती के रईस अपने पुत्रो सहित मंदिरों में जागरण करने के लिए गए, वहां मैं भी अपने पिता जी के साथ गया।" यहां 'मदिरों' शब्द का बहुवचन में प्रयोग पाण्डुलिपि में भी मिलता है। इससे यह भाव भी प्रकट हो सकता है कि सब लोग टंकारा के भिन्न-भिन्न मंदिरों में गए थे, उसी प्रकार मूलशंकर पिता जी के साथ स्वनिर्मित कुबेरनाथ के मंदिर में गया था। त्रिवेदी परिवार के लोग वही इकट्ठे हुए होंगे। इससे यहा इतनी भीड़ नही हुई होगी कि शिवालय में समा न पाएं।

आश्रय-स्थान

देवेन्द्र बाबू का तीसरा हेतु यह है कि टंकारा के शिवालय में सोने की जगह नहीं है। वस्तुत: टंकारा के शिवालय का प्रांगण इतना छोटा तो नही है कि जहाँ लोग समा न सकें। एक बात यह भी है कि लोग वहां सोने के लिए नही गए थे, वहा तो जागरण करने वाले व्रतधारी ही गए थे। यह तो संभव है कि शिवरात्रि के दिन चार प्रहर मे चार बार पूजा होती है। इस काल मे लोग बैठे जप करते होंगे, कुछ निद्रावश झोंके खाते होगे, तो कुछ अन्य सो भी गए होगे। इसलिए केवल सोने के लिए किसी आश्रय-स्थान की आवश्यकता ही नही थी। एक बात यह भी है कि केवल सोने के लिए छ. मील दूर जड़ेश्वर के मन्दिर में लोग जाएगे ही क्यो?

चूहे के बिल :

उपर्युक्त तीनों बातो का परिहार करने के पश्चात् एक और बात भी द्रष्टव्य है। जड़ेश्वर का मन्दिर बड़ा जरूर है, सुन्दर और पक्का भी है तथा उसके आगे का चौक बहुत दूर तक मे लिखा है "मंदिर मे बिल से चूहे बाहर निकले।" जड़ेश्वर के सुदृढ़, पक्के मंदिर में चूहे के बिल हो नहीं सकते और आगे का भाग बहुत दूर तक पक्का होने से वहां भी बिल होने सभव नही। इसके विपरीत टंकारा का शिवालय बहुत पक्का न होने से चूहे के बिलों की सम्भावना यहां हो सकती है। इस विचार से भी जड़ेश्वर का मन्दिर उपासना का स्थान नही हो सकता।

वेणी बाई का वचन :

श्री देवेन्द्र नाथ ने जड़ेश्वर मंदिर ही मूलशकर का उपासना स्थल था, इस बात की पुष्टि के लिए पोपट लाल की बुआ वेणी बाई के वचन उद्धृत किए हैं "हमारे पिता और भाई शिवरात्रि को कभी जड़ेश्वर और कभी कुबेरनाथ के मंदिर मे जाया करते थे।" प्रथम तो वेणी बाई का 'कभी' शब्द्र सन्देहास्पद है। इससे यह पुष्ट नही होता कि उस वर्ष की शिवरात्रि-उपासना मूलशंकर ने जड़ेश्वर के मंदिर मे की थी। द्वितीय बात यह है कि ब्राह्मण लोग जड़ेश्वर के मन्दिर में श्रावण मास में जाते हैं और पूरे एक मास तक वहां रह कर पूजा करते हैं! शिवरात्रि के दिन प्राय: वहां नहीं जाते। ऐसा मेरा और अन्य टंकारा निवासियो का अनुभव है।

जड़ेश्वर की मूर्त्ति की कल्पना :

देवेन्द्रनाथ ने ऋषि की आत्मकथा का आधार लेकर एक और कल्पना की है कि जब शिव-प्रतिमा पर चूहे को दौड़ता देखकर मूलशकर सोचने लगा क्या यह वही वृषारूढ़ देवता है जो मेरे सामने उपस्थित है? जड़ेश्वर में शिवजी की एक चांदी की मूर्ति है जिससे श्रावण मास या शिवरात्रि के दिन शिव-पिण्डी के पास रखा जाता है। इसी मूर्ति के सामने बैठकर मूलशंकर ने "जो मेरे सामने उपस्थित है" जैसे भाव व्यक्त किए होगे। ऋषि का लेख भी ऐसा ही है। इससे जड़ेश्वर मन्दिर की सिद्धि होती है, यह देवेन्द्रनाथ की कल्पना है। किन्तु वास्तव मे आत्मकथा मे ऐसे शब्द हैं ही नही, वहा तो इस प्रकार लिखा गया है .....जिस की मैंने कथा सुनी थी वही यह महादेव है या अन्य कोई.... इत्यादि प्रकार का महादेव मैंने कथा में सुना था, तब पिता को मैंने जगा कर पूछा कि यह कथा का महादेव है या अन्य कोई .....इसके एक दिन पहले मैं शिवरात्रि की कथा सुन ही चुका था, उसके (शिव के) विषय में बहुत कुछ सुन चुका था।" ऋषि के उपर्युक्त वाक्यों से यही भाव निकलता है कि उन्होंने उस महादेव की कल्पना कथा में पंक्तियों में यह कथन तीन बार आया है और पुन: व्याख्यान में भी कथा में सुनने का दो बार उल्लेख है। इन वाक्यों से यह नहीं झलकता कि शिवलिंग से भिन्न कोई अन्य मूर्ति मूलशंकर के समक्ष उपस्थित थी और न इस प्रकार का भाव ही निकलता है। अत: जडेश्वर की चांदी की मूर्ति के सामने बैठने की कल्पना करना निराधार ही है। स्वयं देवेन्द्र बाबू के शब्द भी वद तो व्याघात रूप मे प्राप्त होते हैं यथा "जिस महादेव की शांत, पवित्र मूर्ति की कथा, महादेव के प्रचण्ड पाशुपतास्त्र की कथा और महादेव के विशाल वृक्षारोहण की कथा, मूलशंकर ने गतदिवस व्रत के वृत्तान्त मे सुनी थी" देवेन्द्र बाबू के इन शब्दो से ही चादी की मूर्ति की कल्पना स्वत. ही खण्डित हो जाती है।

आत्म कथा के अनुसार अन्य विचार

देवेन्द्र बाबू के तर्कों का निवारण करने के पश्चात् हम ऋषि की आत्म-कथा के प्रमाण से और अन्य युक्तियो से यह सिद्ध करेंगे कि मूलशंकर ने शिव-रात्रि की उपासना कुबेरनाथ के मदिर में की थी न कि जड़ेश्वर के मंदिर मे!

प्रथम 'मेरे नगर के बाहर" और "पुजारी लोग बाहर निकल कर सो गए" ऋषि के इन वाक्यों की चर्चा हम कर चुके हैं। इनसे टंकारा स्थित मंदिर का ही ग्रहण होता है। आत्म कथा के अनुसार "दूसरे प्रहर की पूजा भी हो गई अब बारह बज गए......अपनी आंखों पर जल के छींटे मार कर जगता रहा......पिता से पूछा कि घर जाता हूं......खाकर एक बजे सो गया।" दूसरा पहर बारह बजे पूरा होता है उसके बाद पूजा विधि में बीता समय पूजा के बाद तुरन्त नहीं किंतु सब लोग धीरे-धीरे सोए यह अवधि, सबके सोने के बार स्वय के नीद से बचने के लिए कितनी ही बार छीटे मारने का समय, उसके बाद चूहे की घटना का घटित होना, घटना को देखना, विचार मथन का चलना, पुन: पिता को जगाना, उनसे शंका करना, पिता से वार्तालाप, घर जाने की तैयारी, घर पहुचना, माता से बात करना, तत्पश्चात् भोजन करके एक बजे सो जाना।

सोचने की बात है कि उपर्युक्त सब क्रियाओ मे समय लगाने के पश्चात् क्या जडेश्वर से छ. मील दूर टंकारा आना केवल एक घटे मे सम्भव है? कदापि नही। क्योकि पैदल चल कर आने मे ही दो घण्टे लग जाते हैं। घोड़े से चल कर आना भी सम्भव नही। यह सब प्रसंग तो टंकारा स्थित कुबेरनाथ के मन्दिर से चलकर घर आने से ही मेल खाता है अत: जड़ेश्वर के मन्दिर में

एक अन्य बात। पिता जी कट्टर शिव भक्त थे, वे व्रत कराने में भी कड़े थे और व्रत की अवधि में भोजन करने के सख्त खिलाफ थे। इसलिए उनकी दृष्टि में तो मूलशकर को भेज कर कुछ घन्टे सोने के लिए ही कहने की बात थी। जड़ेश्वर मे तो सोने की व्यवस्था भी सम्भव थी। यदि वे चाहते तो पुत्र को भी वहीं सुला देते और प्रातःकाल होने पर अपने साथ ही उसे घर ले आते, किन्तु ऐसा नही हो सका। इस दृष्टि से भी जड़ेश्वर की कल्पना युक्ति संगत नहीं है।

मूलशकर के इस वाक्य से कि 'मैं घर जाता हूं' ध्वनि निकलती है कि मूलशंकर शायद अकेले ही घर जाने के लिए तैयार हुए, किन्तु पिता जी ने सिपाही साथ ले जाने को कहा। पिता अपने पुत्र की प्रकृति को जानता है कि बारह वर्ष के बालक को डर लगेगा और जड़ेश्वर से छ, मील दूर रात्रि के अन्धकार मे टंकारा आने की तो कल्पना भी नही हो सकती क्योकि गृह-त्याग के बाद 21 वर्ष की आयु में भी सायला की घटना के प्रसग मे स्वामी जी कहते हैं—"रात को एक वृक्ष के नीचे बैठ गया तो वृक्ष के ऊपर घू-घू बोलने लगा। उसकी आवाज सुनकर मुझे भूत का भय हुआ। मैं मठ के भीतर घुस गया" इस बात से भी जड़ेश्वर से आधी रात के समय टकारा आना अकल्पनीय है।

जड़ेश्वर से टकारा आने के लिए जल से परिपूर्ण नदी को पार करना पडता था। माग मे घना जंगल था, जंगल में हिंसक पशुओ का डर था। कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी की अन्धकारपूर्ण मध्य रात्रि के भयकर समय में अश्वारोही होकर सिपाही के साथ आना भी सभव नही था और पिता के अपने पुत्र की मानसिक प्रकृति से परिचित होने के कारण केवल सोने के लिए ही टकारा आन की आज्ञा दे दी हो, यह भी सम्भव नही है। अन्तिम बात पर युधिष्ठिर मीमासक के शब्दो मे "करसनजी तिवारी ने टंकारा मे ही नदी के तट पर कुबेर-नाथ महादेव का मन्दिर बनवाया था उस स्वनिर्मित शिवालय को छोडकर बस्ती से छ-सात मील दूर जडेश्वर के मन्दिर मे जाना युक्ति संगत प्रतीत नही होता।"

जड़ेश्वर का मन्दिर

इस प्रसग मे कुछ और चर्चा आवश्यक है। जडेश्वर का मन्दिर जगल में है, इसकी स्थापना 1869 मे हुई और मूल-शकर का शिवरात्रि व्रत 1893 या 94वें में हुआ। इस प्रसंग मे देवेन्द्र नाथ लिखते हैं, "पहले जड़ेश्वर का मन्दिर जंगल से पूर्ण रहा हो, परन्तु उस व्रत के

पत्रों के दर्पण में

ये हत्यारे हैं, केवल हत्यारे

'ये हत्यारे हैं केवल हत्यारे' अग्रलेख पढ़ा। लेख अत्यावश्यक तथा समयानुकूल है। आप समयानुकूल लिखते हैं और ऐसा लिखते हैं कि वह बहुत सूझबूझ से लिखा हुआ लेख हृदयों में पैठता चला जाता है। मैं—"आततायिनमायान्तं हन्यादेव अविचारयन्" को लक्ष्य करके लेख लिखने की बहुत दिनों से सोच रहा था पर मेरी कई कठिनाइयां हैं। इच्छा रहते हुए भी देर तक न लिख सका। आपका लेख पढकर चित्त प्रसन्न हो गया अब लिखने की आवश्यकता नहीं रही।

आततायी कौन होता है इस पर यह श्लोक है—

अग्निदो गरदश्चैव, शस्त्रपाणिर्धनापहा।
क्षेत्रदारहरश्चैव षडेते ह्याततायिनः॥"

—आग लगाने वाला, विष देने वाला, मारने के लिये हाथ हथियार थामे हुए, धन लूटने वाला, भूमि छीनने वाला और स्त्री का अपहरण करने वाला ये छै आततायी हैं, इनको बिना विचारे (बिना मुकदमा चलाये) "हन्यात् एव" मार ही देना चाहिये। यह श्लोक कभी मनुस्मृति में रहा होगा। शुक्रनीति में तो है ही। जो लोग बम आदि लिये पकड़े जाते हैं उनको तत्काल मार दिया जाय, तो सब हत्यारे समाप्त हो जावें।

दण्डः शास्ति प्रजा सर्वा, दण्ड एवाभिरक्षति।
दण्डः सुप्तेषु जागर्ति दण्डं धर्मं विदुर्बुधा॥ मनु०॥

—दण्ड ही सारी प्रजाओ पर शासन करता है, दण्ड ही रक्षा करता है दण्ड सोये हुओ में जागता है बुद्धिमान् लोग—दण्ड को धर्म बताते हैं और दण्ड को ही धर्म जानते हैं।—अमर स्वामी सरस्वती, प्रधान सार्वदेशिक दयानन्द संन्यासी वानप्रस्थ मण्डल, ज्वालापुर

स्वर्गीय श्री प्रतापसिंह जी चौधरी

यह जान कर कि श्री प्रतापसिंह जी चौधरी का स्वर्गवास हो गया है, चित्त बहुत व्यथित हुआ। उनका और मेरा परिचय सन् १९३५ मे हुआ, और पारस्परिक सौहार्दभाव दिनों दिन बढता गया। मेरी शरीरिक निर्बलता का ध्यान कर श्री प्रतापसिंह जी, परिवार समेत मुझे मिलने कई बार देहरादून पधारे। वे मुझे बडा भाई और अपने को छोटा भाई कहा करते थे वे धर्मात्मा-प्रकृति के पुरुष थे। उदार ऋषि भक्त, दृढ़ आर्य समाजी तथा वेदो के प्रसार में निष्ठावान् थे। वे आर्य प्रादेशिक उप सभा, हरयाण के प्रधान तथा परोपकारिणी सभा, अजमेर के उपप्रधान थे। वैदिक साहित्य और वेदाङ्गो के प्रसार मे वे मुक्त हस्त होकर धनदान करते थे। इस निमित्त परोपकारिणी सभा को उन्होने दस हजार रुपये प्रदान किये। ऋग्वेदादि भाष्य भूमि का तथा महर्षिकृत ऋग्वेद-भाष्य का प्रथम खण्ड, उणादि कोष, तथा अथर्व परिचय, अथर्व वेद भाष्य के चार खण्ड, तथा पाचवां पण्डुलिपि खण्ड, यजुर्वेद स्वाध्याय तथा पशु यज्ञ समीक्षा,शतपथ ब्राह्मणस्थ-अग्नियन समीक्षा"-पुस्तको को प्रकाशित करना। समय-समय पर वे वैदिक विद्वानों को भी आर्थिक सहायता देते रहे हैं। परमेश्वर उन की पवित्रात्मा का सद्-गति प्रदान करें। बिछुड़े परिवार के व्यक्तियों को परमेश्वर धैर्य और शान्ति प्रदान करे, यह मेरी हार्दिक प्रार्थना है।

—प्राफेसर विश्वनाथ, विद्यालकार ६१ कांवली रोड़, देहरादून

सत्यार्थ प्रकाश का अधिकाधिक प्रचार हो

शासकीय शिक्षायें वर्तमान में राजनीति का केन्द्र बनी हुई हैं तथा उनमें धर्म निरपेक्षता की दुहाई देने वाली हमारी सरकार 'नैतिक शिक्षा' को भी आवश्यक नही समझती। दूसरी ओर शिक्षा सस्थाओ में शिक्षक-शिक्षिकाओ को अपर्याप्त वेतन मिलने के कारण वे शिक्षण कार्य के प्रति अपना दायित्व इच्छा होते हुए भो नहीं निभा पाते। शिक्षण संस्थाओं के पास इतना धन नहीं होता कि शासकीय संस्थाओ के बराबर वेतन दे सकें। परिणाम स्वरूप शिक्षा का स्तर दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा है। आज की पीढ़ी अपनी अमूल्य सस्कृति से सर्वथा अनभिज्ञ होती जा रही है। शिक्षा संस्थाओं में सस्कारवान शिक्षक-शिक्षिकाओं का अभाव है। आज आर्य समाज द्वारा संचालित शिक्षा संस्थायें भी बच्चों मेंउचित संस्कार नहीं दे पा रही हैं। इसलिए सत्यार्थ प्रकाश को पाठ विधि में शामिल करना व इस महान ग्रंथ का अधिकाधिक प्रचार करना परम आवश्यक है।

—श्रीमती सुधा अग्रवाल, एम० ए० (संस्कृत) एम० एड० शोध छात्रा शह डोल (म० प्र०)

'तूफान के दौर से पंजाब' धारावाहिक छापिए

हैदराबाद से प्रकाशित पत्रिका "वर्णाश्रम पत्रक" के मई-जुलाई १९८५ के अंक में आपकी पुस्तक कासार-सक्षेप पढ़ा। अकाली आन्दोलन की पृष्ठ भूमि और उसमें छिपी अकालियों की मनोवृत्ति का सुपुष्ट प्रमाणों एवं अकाट्य तर्कों के साथ आपने जिस प्रकार पक्षपात रहित हो कर, पर्दाफाश किया है वह स्तुत्य है, यदि इस पुस्तक का अंग्रेजी संस्करण भी साथ ही छप गया होता तो निस्सन्देह देश-विदेश में तहलका मच गया होता। क्या ही अच्छा हो, यदि आप इस पुस्तक को धारावाहिक रूप में "आर्य जगत्" में छाप दें जिससे कि जो लोग पुस्तक नहीं खरीद सकते वे भी आपकी लौह लेखनी का प्रसाद प्राप्त कर सकें।

—धर्मदेव चक्रवर्ती, मोडलबस्ती, दिल्ली

[इसी मास के अन्त तक पुस्तक का अंग्रेजी संस्करण पाठकों को उपलब्ध हो सकेगा।—सम्पादक]

दहेज दानव के बढ़ते कदम

आज हमारे समाज में दहेज रूपी दानव का स्वरूप भयंकर होता जा रहा है। समाज के प्रत्येक वर्ग मे, शहर में, गाव में, दहेज की राशि बढ़ती ही चली जा रही है। दहेज पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए सरकार द्वारा कानन बनाया गया है, लेकिन यह कानून न जाने कहाँ लुप्त हो गया है। कई सामाजिक व धार्मिक संगठन दहेज के विरुद्ध आन्दोलन करने का दावा करते हैं। लेकिन दहेज का दानव तो सुरसा के मुंह की तरह बढ़ता ही जा रहा है। एक प्रतिशत भी तो अंकुश इस भयंकर बुराई पर लगता नही दिखायी दे रहा है। परिणाम स्वरूप समाज तथा सार्वजनिक जीवन मे कुंठा भ्रष्टाचार, घूसखोरी, स्वार्थान्धता, धोखाधड़ी बेतहासा बढ़ रही है और मानवता के स्थान पर पाशविक प्रवृत्तियों का साम्राज्य फैलता जा रहा है। दहेज न केवल एक अभिशप्त सामाजिक बुराई हैं, बल्कि हमारे मानवतावादी दृष्टिकोण पर एक अमिट कलंक भी है। दहेज दानव की बलिवेदी पर प्रति वर्ष न जाने कितनी बहनें भेंट चढ़ जाती हैं और हम किंकर्त्तव्य विमूढ़ से देखते रहते हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि शासन, दहेज से संबंधित कानून का कठोरता से अनुपालन कराए तथा सामाजिक संस्थाए व बुद्धिजीवी इस भयकर दानव के विरुद्ध युद्ध घोषणा करें।

—राधेश्याम 'आर्य' एडवोकेट मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर

महर्षि के वेद भाष्य की भाषा—

आचार्य विश्वश्रवा जी का २१ जुलाई के आर्यजगत् में प्रकाशित लेख मैंने मनोयोग पूर्वक पढ़ लिया है। मुझे कुछ अधिक वक्तव्य भी नहीं है। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के प्रारम्भ में स्वामी जी लिखते हैं—

'संस्कृत प्राकृताभ्यां यद् भाषाभ्यां अन्वित शुभम्' तथा वेद भाष्य के अन्त में (ऋग्वेद के मण्डल, अष्टकादि की समाप्ति पर तथा यजुर्वेद के प्रत्येक अध्याय की समाप्ति पर) 'दयानन्द सरस्वती स्वामिना विरचिते संस्कृतार्यभाषाभ्यां विभूषिते' आदि। इस संबन्ध में तो यही निवेदन है कि इस प्रकार के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ के लेखक के रूप मे तो प्रधान लेखक ही का नाम जाता है। सायण ने अनेक संहिताओ के भाष्य लिखे निश्चय ही उनमें अनेक पण्डितो का सहयोग रहा होगा किन्तु भाष्यकार के रूप में प्रधानतया सायण (माधव) का ही नाम जायेगा। ग्रन्थ का समग्र दायित्व लेखक का होता है। एक उदाहरण दूं। मैं अपने किसी ग्रन्थ में पादटिप्पणियों के नियोजन, परिशिष्ट अनुक्रमणिका निर्माणादि में अपने किसी शोध छात्र की सहायता लेता हूं, किन्तु ग्रन्थकार के स्थान पर मेरा ही नाम जायेगा। यही बात स्वामी जी के भाष्य की हिन्दी के बारे मे है। मेरा अपराध (?) यदि है तो इतना ही की मैंने इतिहास के पन्नों को टटोल कर कुछ ऐसे अकाट्य साक्ष्य प्रस्तुत किये हैं जिनसे ज्ञात होता है कि महाराज के निर्वाण के पश्चात भी प० भीमसेनादि को वेतन देकर सस्कृत भाष्य का हिन्दी अनुवाद कराया जाता रहा परोपकारिणी सभा के रेकार्ड से यह पता चलता है कि ऋषि के देहान्त के समय अमुक वेद के अमुक अंश तक का ही हिन्दी अनुवाद हो सका था। अवशिष्ट हिंदी अनुवाद ३०, अक्टूबर १८८३ के बाद हुआ। इसे ऋषि कृत कैसे कहेंगे। इसमें शास्त्रार्थ जैसी कोई बात नही है, यह तो इतिहास सिद्ध तथ्य है। हाँ आचार्य जी का यह कहना तो सत्य है कि जब वे ऋषि के ग्रथों को संभाल रहे थे उस समय मैं स्कूल का विद्यार्थी ही था। मेरी आयु उनसे २५ वर्ष कम है।

—डा० भवानीलाल भारतीय, चण्डीगढ़

टंकारा के जीवापुर मुहल्ले...

(पृष्ठ ७ का शेष)

समय नहीं था।" देवेन्द्र बाबू का यह तर्क ठीक नहीं, क्योंकि मन्दिर एक टेकरी पर है, इसके बगल-बगल मे यदि साफ किया हो तो भी नीचे का भाग और रास्ता तो जगल से पूर्ण ही था। श्रावण के द्वितीय सोमवार को इस मन्दिर में मेला लगता है और पास-पड़ोस के गाँव से, टंकारा से भी, बहुसंख्यक लोग इसमे सम्मिलित होते हैं। जब सड़क नहीं बनी थी और बस की सुविधा नही थी उस समय पैदल या बैलगाड़ी से जाना पड़ता था। इन पंक्तियो का लेखक भी दशाधिक बार पैदल या बैलगाड़ी से जा चुका है। जब 40 वर्ष पूर्व ही मन्दिर के मार्ग मे और वहाँ के नीचे के भाग में घने जंगल थे तथा बडे बड़े पत्तो वाले ताखाड़ आदि के वृक्ष थे और उस स्थिति मे टेढी पगडण्डियो के कारण थोड़ी दूर वाला या खड़ा व्यक्ति भी दिखाई नहीं पड़ता था तो फिर यह कहना कि मूलशंकर के समय यह रास्ता निष्कंटक था, प्रत्यक्ष के विरुद्ध है और युक्तिसंगत भी नही है। क्योंकि उस समय तो मन्दिर को बने 25 वर्ष भी नहीं हुए थे।

दूसरे जड़ेश्वर का मन्दिर जगल से घिरा हुआ था और उसमें हिंसक पशु भी रहते थे। इसका एक प्रमाण मन्दिर के महन्त के शब्दों मे ही प्रस्तुत करता हूं। एक बार टंकारा के शिवरात्रि के ऋषि मेले में महात्मा प्रभु आश्रित आए थे। उनकी इच्छा जड़ेश्वर के मन्दिर को देखने की थी। परिचित व्यक्ति के रूप मे मैं उनके साथ गया। जब हम वहाँ के महन्त से मिलने उनके कमरे मे गए तो वहाँ दीवार पर लटकती हुई बन्दूकें देखी। इस पर प्रभु आश्रित जी ने पूछा कि साधु होकर ये शस्त्र क्यो रखते है। उत्तर मे महन्त ने कहा कि कुछ वर्ष पूर्व तक यहाँ घना जंगल था और उसमे हिंसक पशु भी रहते थे। इसलिए स्वरक्षार्थ इन शस्त्रो का संग्रह किया गया है। उपर्युक्त तथ्यों से सिद्ध होता है कि मूलशंकर के व्रत के समय तो यहाँ घना जंगल रहा होगा जो हिंसक पशुओ से परिपूर्ण था। जब देवेन्द्र बाबू जड़ेश्वर गए होंगे तब भी मार्ग मे उन्होंने यही अनुभव किया होगा, तथापि उन्होंने मूलशंकर के इसी मन्दिर मे शिवोपासना करने की धारणा बना ली और इसके प्रतिपादन मे यह भी लिख दिया कि टंकारा का कुबेरनाथ का मन्दिर नगर के भीतर है जबकि वह प्रत्यक्षतया नगर के बाहर है। ऐसा ही मन्तव्य उन्होंने जंगल के बारे में भी प्रकट किया है।

इस विषय को समाप्त करने के पूर्व मैं यह लिखना उचित समझता हू कि देवेन्द्र बाबू के वर्षों के परिश्रम और शोध के कारण ही ऋषि की वर्तमान में उप-लब्ध जीवनी प्राप्त हो सकी है। उनके प्रति मेरे हृदय में परम आदर भी है, फिर भी यह देखकर आश्चर्य होता है कि सत्य के इस अन्वेषक ने जड़ेश्वर की सिद्धि के लिए प्रत्यक्ष के विरुद्ध ऐसा क्यों लिखा? हमारा तो यह अनुमान है कि पूना व्याख्यान में प्रयुक्त 'बडा' शब्द को पकड़ कर वे आगे बढ़े और ऋषि की आत्म कथा के अन्य वाक्यो पर उन्होने अधिक ध्यान नही दिया। बहुत सावधानी रखने पर भी मनुष्य से भूल हो जाना स्वाभाविक ही है। देवेन्द्र बाबू की चर्चा के प्रसंग मे पण्डित युधिष्ठिर जी मीमांसक की एक भूल की ओर भी ध्यान जाता है। वे आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् और ऋषि भक्त हैं। कुछ काल तक मैंने उनसे टंकारा मे संस्कृत भी पढ़ी थी। जब लाभशंकर ने उन्हे यह बताया कि करसन जी की दो पत्नियाँ थी, तो उसी जानकारी के आधार पर उन्होंने ऋषि का 'भ्रातृ वंश और स्वसृ वंश' नामक पुस्तिका लिख डाली। इस विषय में अधिक जानकारी के लिए जब वे हडमतिया गए थे तब मैं भी उनके साथ था और मैंने उनसे निवेदन भी किया था कि पुस्तक लिखने मे वे जल्दी न करें, लेकिन वहाँ करसन जी के विषय मे उन्हे जो कुछ जानकारी मिली उसी के आधार पर उन्होने उक्त पुस्तक लिख डाली और ऋषि की जीवनी को लेकर एक नया विवाद खड़ा हो गया।

टंकारा और जीवापुर का शिवालय :

युधिष्ठिर जी ने मुझे इस बात का पता करने के लिए कहा था कि टंकारा और जीवापुर के शिवालय मे समानता क्यो है? इस विषय मे यही अनुमान किया जा सकता है कि टंकारा स्थित ऋषि के पिता करसनजी और जीवापुर स्थित विश्रामजी के वंशज एक ही कुटुम्ब के थे। एक ही परिवार के लोगो मे एक ही जैसे भवन या मन्दिर बनाने की प्रवृत्ति होती है। सम्भवतः जब एक मन्दिर निर्मित हुआ तो उसी के अनुकरण पर दूसरा भी बनाया गया। परन्तु यह कहना शक्य नही है कि इन भवनो मे से कौन सा पहले बना! क्योकि इन मंदिरो मे कोई शिलालेख नही है। परन्तु इतना निश्चित है कि टंकारा का शिवमन्दिर ऋषि के पिता करसनजी त्रिवेदी ने बनाया था और मौरवी नरेश पृथ्वीराजजी ने उस की पूजा के लिए 1887 वि० पौष शुक्ला चतुर्दशी बुधवार को एक दान पत्र लिख कर बारह बीघा जमीन प्रदान की थी। इस आशय का एक लेख मिलता है। मन्दिर सम्भवत. इस तिथि से कुछ दिन पूर्व बना होगा, ऐसा अनुमान होता है। किन्तु जीवापुर के शिवालय के निर्माण की तिथि विषयक कोई सूचना नहीं मिलती। मैं जीवापुर कई बार हो आया हूं, परन्तु इस विषय पर लिखने से पूर्व 4 नवम्बर 1984 को मैं वहां विशेष रूप से गया। सूक्ष्म निरीक्षण से यह पता लगा कि दोनों शिवालयों की रचना समान होने पर भी टंकारा के मन्दिर से जीवापुर का मंदिर कुछ छोटा है। टंकारे के मंदिर का फर्श जमीन से समानान्तर है। जबकि जीवापुर का मन्दिर जमीन से छः फुट ऊंचा उठाकर बना गया है।

एक निवेदन :

जीवापुर के शिवालय की चर्चा के प्रसग में यह निवेदन आवश्यक है कि मेधार्थी स्वामी ने जीवापुर को ऋषि का जन्मस्थान बताया है। हम एतद्-विषयक भ्रम का निवारण कर आए हैं। किन्तु एक बात की ओर ध्यान आकृष्ट करना आवश्यक है कि जीवापुर के शिवालय की दक्षिण दिशा मे बाहर की दीवार पर मेधार्थी जी ने एक शिलालेख लगवाया है जिसमे इस बात का उल्लेख है कि मूलशकर ने इसी शिवालय में शिवरात्रि की थी। यदि 100-50 वर्ष बाद कोई व्यक्ति इस शिलालेख को देखेगा तो वह यही धारणा बना लेगा कि मूलशंकर की उपासना का यही वास्तविक स्थान रहा होगा। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि इस मिथ्या शिलालेख को वहां से अविलम्ब हटाया जाए। स्वामी दयानन्द की उत्तराधिकारी परोपकारिणी सभा तथा उसके प्रधान स्वामी ओमानंद जी से हमारा इस कार्य हेतु निवेदन है। यहां यह बताना भी आवश्यक है कि जीवापुर मे इस शिवालय के सामने मेधार्थीजी ने एक यज्ञशाला का कमरा बनाया है तथा उसमें भी एक शिलालेख लगा कर जीवापुर को ही स्वामी दयानंद की जन्मभूमि बताने का दुष्प्रयत्न किया है। इस यज्ञशाला मे यज्ञवेदी भी नहीं है और शिवालय के पुजारी ने इसे पशुओ की घास का गोदाम बना रखा है। यह शिलालेख भी भविष्य मे भ्रम का कारण बन सकता है।

मेरा एक निवेदन यह भी है कि जिस प्रकार पुष्कर के ब्रह्ममन्दिर में स्वामी जी के निवास की स्मृति मे शिलालेख लगाया जा सकता है तो मूलशंकर की शिवरात्रि उपासना की ऐतिहासिकता को दृष्टि में रखकर टंकारा के कुबेरनाथ महादेव के शिवालय मे भी एक शिलालेख लगाना चाहिए। जिससे भावी पीढ़ियों को जन्मस्थान और शिलालेख के संबंध में किसी प्रकार की शका अथवा भ्रम न रहे। (क्रमशः)

पंजाब के बाद कश्मीर की चिन्ता करो

श्री मधोक द्वारा कश्मीर में राष्ट्रपति शासन का सुझाव

पंजाब के सम्बन्ध में अकाली दल से समझौता होने के उपलक्ष्य में भारतीय जनसंघ तथा हिन्दुस्तान हिन्दु संघ के अध्यक्ष प्रो० बलराज मधोक ने प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी को एक विस्तृत पत्र लिख कर बधाई दी है। उन्होंने कहा है कि चूंकि पंजाब और कश्मीर मे पाकिस्तान की अंगुलि बड़ी गहरी पैठी हुई है, अत पंजाब मे शीघ्र ही सामान्य स्थिति की आशा करना भूल होगी। फिर भी इस समझौते से शान्ति का वातावरण स्थापित होगा और आतंकवादियों को दूर धकेला जा सकेगा।

प्रो० मधोक ने लिखा है कि समझौते के कारण चण्डीगढ़, हरियाणा और राजस्थान मे काफी खलबली मची है। उन्होने चन्डीगढ़ के सम्बन्ध मे अपने कुछ सुझाव भी दिए हैं। जिनमें चण्डीगढ़ विश्वविद्यालय को केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनाना, सिविल सर्विस में उचित अनुपात देना, सम्मिलित उच्च न्यायालय को बनाए रखना, पंजाबी को देवनगरी लिपि में लिखने की छूट देना आदि-आदि हैं।

कश्मीर के सम्बन्ध में चिन्ता व्यक्त करते हुए प्रो० मधोक ने लिखा है कि संविधान की धारा ३७० ने वर्षों से अकालियों के मस्तिष्क को प्रभावित कर रखा है। उधर पाकिस्तान नहीं चाहता कि पंजाब और काश्मीर में शान्ति स्थापित हो, भले ही प्रत्यक्षतया वह भारत के साथ मैत्री की बात करता हो। पाकिस्तान में जब भी किसी सैनिक अधिकारी की पदोन्नति होती है उसे शपथ दिलाई जाती है कि वह १६७१ में भारत के हाथों हुई पराजय का बदला चुकायेगा। अत: अविलम्ब हमें जम्मू और कश्मीर में अपनी स्थिति सुदृढ़ कर लेनी चाहिए।

उन्होंने यह भी लिखा है कि शाह और फारुख में कोई विशेष अन्तर नहीं है। वे दोनों ही भारत के पक्ष में नहीं हैं। जहां एक ओर पाकिस्तान ने काश्मीर में अपनी सैन्य शक्ति बढ़ा ली है वहां दूसरी ओर जमाते- इस्लामी ने घाटी के भीतर लगभग सभी ग्रामों में अपने केन्द्र स्थापित कर लिए हैं। कश्मीर प्रशासन मे पाक-समर्थक तत्वो का बाहुल्य है।

प्रो० मधोक ने सुझाव दिया है कि वहा तुरन्त राष्ट्रपति शासन लागू किया जाय। धारा ३७० समाप्त की जाय। राज्य का पुनर्गठन कर उसे तीन भागों में विभक्त किया जाय, तीनों भागों का सम्मिलित राज्यपाल, उच्च न्यायालय और विकास प्राधिकरण बनाया जाय आदि। इससे कश्मीर में पाकिस्तान की स्थिति दुर्बल होगी तथा वहां के निवासियों में आत्म विश्वास जागेगा और वर्षों से चली आ रही उलझन धीरे-धीरे सुलझ जायेगी।

मत या पंथ को धर्म समझने से ही समस्याएं उलझी हैं

—बिशनस्वरूप गोयल—

धर्म की गलत व्याख्या के कारण आज देश में अनेक समस्याएं पैदा हो गयी हैं। विडम्बना यह है कि मानव को जोड़ने वाले इस सूत्र ने मानव को तोड़ने में सबसे बड़ी भूमिका निभाई है। इसके कारण दुनियां मे बड़े-बड़े युद्ध और नर-संहार हुए हैं और आज भी धर्म के बारे में भ्रांति के कारण ही विश्व में अनेक समस्याएं पैदा हो रही हैं। उदाहरण के लिए पाकिस्तान में शिया सुन्नी और कादियानी संघर्ष, ईरान और इराक युद्ध, श्रीलंका में तमिल और सिंहली बौद्ध संघर्ष तथा अब भारत में अकालियों द्वारा धर्म के नाम पर अलगाववाद के नारे धर्म के नाम पर ही बुलंद किये जा रहे हैं। किन्तु वास्तव में धर्म का इन संघर्षो से कोई सरोकार नही है और ये सब धर्म है भी नही। किन्तु इन्हें धर्म समझने की भ्रांति के कारण आम आदमी में धर्म के नाम से वितृष्णा हो गई है। साम्यवादी प्रचारक कार्ल मार्क्स ने इस भ्रांति का शिकार होकर धर्म को अफीम तक कहा, उसके अनुसार धर्म आदमी को मदांध बनाता है।

किन्तु वास्तविकता कुछ और ही है। "धर्म" शब्द का दुरुपयोग कर इसे जाने-अनजाने कलंकित किया गया है और इससे विश्व का भारी अहित हुआ है। खासकर धर्म के बारे में ये भ्रांत धारणाएं उत्पन्न होने से भारत का तो सर्वाधिक अहित हुआ है क्योकि भारत की महानता और श्रेष्ठता का आधार ही धर्म रहा है और भ्रांतिवश इसके प्रति अनास्था के कारण यहा धर्म का ह्रास हुआ।

धर्म के बारे मे यह सुनियोजित भ्रांति उत्पन्न की थी अंग्रेजो ने। वे जानते थे कि धर्म जैसी महान अवधारणा दुनिया मे किसी के पास नही है, केवल हिन्दू जाति के पास ही यह विरासत है इसलिए हिन्दू समाज की श्रेष्ठता की भावना को समाप्त करने के लिए उन्होने धर्म की गलत व्याख्याएं प्रचारित की, और "रिलिजन" शब्द को धर्म कहा। इस प्रकार धर्म के अन्तर्गत उन्होने रिलिजन, पंथ और मत को रखकर धर्म का अवमूल्यन तो किया ही, इसके प्रति अनास्था भी पैदा कर दी। मजहब, पंथ और मत किसी भी रूप मे धर्म के समानार्थी नही हैं।

धर्म क्या है ?

फिर धर्म क्या है ? यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है। धर्म मानवीय कर्त्तव्य बोध का परिचायक है। यह जाति, संप्रदाय, मत और संघो से ऊपर है। धर्म वह तत्वज्ञान है जो मनुष्य को पशुओं से भिन्न उसे विराट ईश्वरीय—सत्ता का प्रतिनिधि बताता है और उस का दिशा निर्देश करता है। धर्म का चरम लक्ष्य मुक्ति कहा गया है। मुक्ति का निर्देशक धर्म कदापि युद्धों, संघर्षो और संहारो का कारण नहीं हो सकता, वह तो ईश्वरीय प्रेम की सरिता बहाकर मानव मात्र को जोड़ने का साधन ही बन सकता है। इसी कारण हमारे मनीषियों ने हमारी समाज रचना को सुदृढ बनाने के लिए धर्म की अवधारणा के सीमेन्ट को सर्वोपरि-महत्व दिया था। 'आत्मवत् सर्वभूतेषु,' अर्थात् सबको अपने समान जानो। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' अर्थात् सब सुखी हों तथा "वसुधैव कुटुम्बकम्" अर्थात् सारा विश्व एक परिवार है। जैसे उद्घोषों से स्पष्ट है कि धर्म संघर्ष का कारण नही, अपितु यह तो मानव मात्र को जोड़ने की प्रेरक शक्ति है।

इस कसौटी पर परखा जाय तो मात्र वैदिक धर्म ही एक मात्र धर्म है, शेष सभी मत या पंथ हैं। पूजा-उपासना को पद्धति केवल कर्म काण्ड का भाग है, धर्म का नहीं। वैदिक धर्म ने विचार स्वातंत्र्य का सदा सम्मान किया है। शैव; शाक्त, वैष्णव, लिंगायत आदि विविध उपासना पद्धतियां ही हैं और जैन, बौद्ध आदि विविध विचार-धाराएं हैं जो जीवन-पद्धति की एक विशिष्ट शैली की ओर निर्देश करती हैं। किन्तु महान मानव मूल्यों की ओर इंगित करने वाला वदिक धर्म सबको समान प्रेरणा है इसलिए इन सब मत, पंथो और उपासना पद्धतियों का लक्ष्य यही है—

मनुष्यो को जोड़ना। किन्तु विदेशों से घुसपैठ करके आए इस्लाम और ईसायत जैसे मतो ने संघर्षो और अलगाववादी आँदोलनों को जन्म दिया। इसलिए तथाकथित धर्म के नाम पर होने वाले सारे झगडे इन सैमेटिक मतो के कारण ही दिखाई देते हैं। जहा तक वर्तमान में सिख पंथ की ओर से होने वाले अलगाव-वादी आन्दोलन का प्रश्न है, वह भी सैमेटिक पंथों के प्रभाव से ही परिचालित है। ईसाई अंग्रेजी शासको ने सिख समाज मे राजनीतिक स्वार्थ जगा कर उसे पृथक अस्तित्व देने की निरंतर कोशिश जारी रखी। क्योकि उनका उद्देश्य भारत को जोड़ने की बजाय अधिक से अधिक तोडकर शासन करना ही था और वे इस मामले में काफी हद तक सफल रहे। इस राजनीतिक कारणो से ही सिख समाज के कुछ नेतागण पृथकता की वकालत करने लगे और इस प्रकार राष्ट्र की मुख्यधारा से अलग होने का अभियान चलाया गया। किन्तु इसमें दोष कहीं भी धर्म का नही है।

[इसके विपरीत, धर्म की सही अवधारणा प्रस्तुत करने पर इन मत-पंथो को जोड़ने मे कोई कठिनाई नही हो सकेगी। इस्लाम और ईसाइयत धर्म पंथ और मजहब हैं ईमान प्रधान हैं, व्यक्ति प्रधान हैं कर्म प्रधान नहीं। जहां तक हिन्दुत्व का सम्बन्ध है, वह एक जीवन पद्धति और संस्कार प्रणाली है जो सभी की सांझा संपत्ति है। इसलिए इन पंथों के विचारक भी यदि निजी स्वार्थों से ऊपर उठकर सोचें तो वे मतों और उपासना पद्धति की भिन्नता के बावजूद राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ने वाले धर्म-सूत्र में बंधकर राष्ट्र के व्यापक हितों में सहभागी बन सकते हैं। किन्तु विडम्बना यह है कि छोटे-मोटे भौतिक और राजनैतिक स्वार्थ उन्हें सत्य से विमुख कर रहे हैं।

मानवता एक है इस लिए उसका धर्म भी एक है। वह सर्वसामान्य है जिन बातो मे धर्म के दस लक्षण इस प्रकार हैं आपस में मतभेद हो वह धर्म का अंग नहीं हो सकती।

धृतिः, क्षमा, दमो अस्तेयम्,
शौचमिन्द्रिय निग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो
दशकं धर्म लक्षणम् ॥ (मनु ॥

—अर्थात् धैर्य, क्षमा, मन का संयम, अस्तेय चोरी न करना शौच, (तन, मन और वाणी की पवित्रता) इन्द्रियनिग्रह, बुद्धि-विवेक से काम लेना, विद्या अर्थात् तत्व ज्ञान की प्राप्ति तथा सत्य और अक्रोध - ये धर्म के दस लक्षण है। स्पष्ट है कि धर्म इस कल्याणकारी स्वरूप में किसी भी जाति, पंथ या सप्रदाय से बिल्कुल भिन्न है। कोई भी मत या पंथ इन दसों बातो को धर्म का अंग होने से इन्कार नहीं कर सकता हैं। यही विशेषता इनकी सर्व सामान्यता (यूनिवर्सल कामन फैक्टर) है। इसके विपरीत इस्लाम और ईसाइयत आदि पंथ ही हैं। जो किसी एक व्यक्ति और पुस्तक पर विश्वास रखने को ही धर्म मानते हैं। विश्वासो और आस्थाओ की यह विभाजन रेखा धर्म नही है, ये जोडने वाले सूत्र नही हो सकते। अत: आवश्यक है कि मत, पंथ और धर्म की सही दृष्टि का प्रचार हो।

सत्यार्थ प्रकाश को परीक्षाएं

मानव जीवन, सद्गृहस्थ, सद्नागरिक और राष्ट्र निर्माण के कार्य मे अत्यन्त उपयोगी सत्यार्थ प्रकाश की चार प्रकार की परीक्षाएं गत दो दशको से पूरे भारत में आर्य युवक परिषद दिल्ली (रजि०) द्वारा कराई जाती हैं। इस वर्ष ये परीक्षा में 22 सितम्बर को होगी। ऋषि के सपनो को साकार करने हेतु इस वर्ष अधिक से अधिक युवा, बाल वृद्ध, स्त्री-पुरुष इस परीक्षा मे बैठें आयु सीमा नही है। अन्य जानकारी हेतु —चमन लाल एम०ए० परीक्षा मंत्री H-64 अशोक विहार, दिल्ली –52 से संपर्क करें।

स्वामी समर्पणानन्द जन्मदिवस

वेदो के मूर्धन्य विद्वान स्वामी समर्पणानन्द जी (प० बुद्धदेव विद्यालंकार) का 91 वां जन्मदिवस शोध संस्थान गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोलाझाल (मेरठ) मे धूमधाम से सम्पन्न हुआ वक्ताओ ने पंडित जी के कार्यों की सराहना की, अध्यक्षता श्री इन्द्रराज ने की। इस अवसर पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियो द्वारा सचालित त्रैमासिक हस्तलिखित पत्रिका अनन्तविजय का स्वामी विवेकानन्द ने विमोचन किया। उन्ही की अध्यक्षता में एक शोध संगोष्ठी हुई। अगली संगोष्ठी 3 नवम्बर को होगी।

हनुमान रोड का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव 7 से 13 अक्टूबर तक मनाया जायेगा। इस अवसर पर प्रसिद्ध विद्वान पं० मदनमोहन विद्यासागर की कथा होगी। 13 अक्टूबर को 9-30 से 1 बजे तक विशेष समारोह होगा।

—आर्य समाज शक्ति नगर, अमृतसर में 11 से 18 अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। पं० सत्यपाल पथिक द्वारा यजुर्वेद पारायण यज्ञ और पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक श्री शिवराजसिंह का व्याख्यान हुआ।

—राकेश मेहरा

—आर्य समाज गुलबर्गा मे 11 जुलाई को एक मुस्लिम महिला कासिम बीब (30वर्ष) की शुद्धि करके उसका नाम काशी बाई रखा गया। पश्चात् श्री हणमंतका गुत्तेदार के साथ उसका विवाह पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

—आर्य समाज, उज्जैन में सायरा बानो की 13 जुलाई को शुद्धि की गयी। उसका नाम रेखा रखा गया। तदनन्तर पूनमचन्द के साथ उसका विवाह सम्पन्न हुआ। पौरोहित्य पं० देवीलाल शर्मा ने किया।

दानवीर भसीन परिवार

५१ लाख रु० के दान से भसीन फाउण्डैशन की स्थापना

बांए से दाए—प्रो० वेद व्यास जी भाषण करते हुए, : सर्वश्री हेमन्त भसीन, श्रीमती विनोद भसीन, प्रो० एम० जी० के० मेनन, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया के प्रबन्धक तथा श्री शिवि भसीन।

"श्रीमती विनोद भसीन एवं स्व० जी ओमप्रकाश भसीन उन दानवीरो मे से है जिन्होंने विदेशों में अर्जित धन को अपने देश के कल्याण-कार्यों में दान करने का संकल्प करके भामाशाह की परम्परा को आगे बढाया है।" ये शब्द प्रो० वेद व्यास ने 'ओमप्रकाश भसीन फाउण्डेशन, द्वारा आयोजित प्रेस कार्फ्रेस मे कहे। प्रो० साहब ने भसीन परिवार से अपने पुराने परिचय का उल्लेख करते हुए बताया कि सर्वप्रथम उनका सम्पर्क कुवैत मे हुआ था, जहा श्री भसीन अपना व्यापार चलाते थे। प्रथम भेंट के अवसर पर ही भसीन दम्पति ने अपनी-इच्छा व्यक्त की थी कि वे भारत मे साइस और टैक्नोलौजी की उन्नति के लिए अपनी कमाई का कुछ भाग व्यय करना चाहते है। उस अवसर पर प्रो० साहब ने उन्हे भारत आकर इस विषय मे विचार विमर्श करने का निमन्त्रण दिया। भारत आकर भसीन दम्पति ने तत्कालीन प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी से भेंट की और उनके "गरीबी हटाओ" अभियान मे सक्रिय भाग लेने की इच्छा व्यक्त की। इस के लिए उन्होने 51 लाख का एक ट्रस्ट बनाकर वैज्ञानिकों एवं शोधकर्ताओ की सहायता करने का अपना सकल्प दोहराया, जिससे कि भारत की गरीबी के कारणो की खोज कर उसका निवारण करने मे कुछ योगदान हो सके।

दुर्दैव से नवम्बर 1981 मे श्री भसीन का देहान्त हो गया। श्रीमती भसीन एव उनके सुपुत्रो ने उनकी भावना का सम्मान करते हुए उनकी स्मृति मे अगस्त 1984 मे "ओ० पी० भसीन फाउण्डेशन" के नाम मे एक ट्रस्ट का निर्माण कर उसे पजीकृत कर लिया। इस धनराशि का उचित उपयोग तथा उचित वितरण एवं आय-व्यय रखने का उत्तरदायित्व स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया को सौंपा गया। उस आधार पर 5 लाख की वार्षिक आय से सात सुयोग्य वैज्ञानिको, शोधकर्ताओ, विद्वानो तथा इजीनियरो आदि को जिन्होने विगत तीन वर्षों मे कृषि तथा उससे सम्बन्धित क्षेत्रो और परिवहन तथा सचार उपग्रह आदि के क्षेत्रो मे, सुरक्षा उत्पादनो मे, परमाणु ऊर्जा तथा विद्युत-उत्पादन आदि के क्षेत्रो मे उल्लेखनीय योगदान किया हो उन्हे नकद पुरस्कार प्रदान किया जायेगा।

इस समारोह की अध्यक्षता प्रो० एम०जी० के० मेनन ने की और वक्ताओ मे प्रो० वेद व्यास जी के अतिरिक्त श्री जी० एम० कौल, ऐडमिरल नय्यर और स्टेट बैंक के प्रबन्धक शामिल थे। समारोह का सचालन एव पत्रकारो के प्रश्नो का समाधान स्वय श्रीमती विनोद भसीन ने किया।

श्रीमती विनोद भसीन मुक्तहस्त से दान करने वाली महिला हैं। इस फाउण्डेशन मे नियोजित धन राशि के अतिरिक्त भी श्रीमती भसीन विभिन्न सस्थाओ को समय समय पर दान देती रहती हैं। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मे सम्बन्धित सस्थाओ को उन्होने लगभग एक लाख रुपया दान दिया है।

फाउण्डेशन के सदस्य प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाधी से भी उनके निवास स्थान पर मिले और उन्हे फाउण्डेशन की गतिविधियो से अवगत कराया। प्रधान मंत्री महोदय ने उनके कार्य के प्रति अत्यन्त प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उनके कार्य को अन्य विदेश स्थित भारतीयो के लिए भी अनुकरणीय बताया।

डी ए वी पब्लिक स्कूल में ध्वजारोहण

नई दिल्ली, १४ अगस्त। डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, सेक्टर-९, आर० के० पुरम् नई दिल्ली मे स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में स्कूल के आगन मे प्रसिद्ध आर्य नेता श्री सोमनाथ मारवाह ने ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर स्कूल के बच्चो ने सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये, जिसकी सबने मुक्तकठ से सराहना की। मरवाहजी का स्कूल के स्टाफ की ओर से पुष्पमालाओ द्वारा स्वागत किया गया। स्कूल की प्रिंसिपल मिसेज विजय अरोडा एवं मैनेजर—श्री रामनाथ सहगल ने उनका स्वागत किया। मरवाह जी ने कहा कि बच्चो को देखकर मुझे भी आज से लगभग ६५-७० वर्ष पूर्व के अपने विद्यार्थी जीवन की याद आ रही है। मुझे खुशी है कि डी ए वी कालेज मैनेजिंग कमेटी ने ऐसे विद्यालय खोल कर बच्चो मे राष्ट्रीयता की भावना भरने का सुन्दर प्रयास किया है। ये बच्चे बड़े होकर देश का कार्य तो करेंगे ही, आर्य समाज के लिए भी काफी उपयोगी होगे। —रामनाथ सहगल मैनेजर, डी० ए०वी० पब्लिक स्कूल,

धर्म शिक्षक चाहिए

डी० ए०वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी द्वारा 3 डी० ए० वी० पब्लिकस्कूल-हैदराबाद मे व एक विशाखापत्तनम मे खोले गये है। इन तीनो मे धर्म-शिक्षक की आवश्यकता है। आवेदन पत्र पूर्ण विवरण सहित श्री दरबारी लाल, सगठन सचिव, डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी, चित्र गुप्ता मार्ग, नई दिल्ली-110055 के पते राम शीघ्र भेजे। रामनाथ सहगल, मत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मन्दिर मार्ग नई दिल्ली।

अम्बाला में वेद प्रचार सप्ताह

"आर्य समाज पंजाबी मुहल्ला, अम्बाला छावनी मे १९ अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह" मनाया जा रहा है। इस अवसर पर पडित जगदीश चन्द्र वसु वेद कथा करेंगे। इनके अतिरिक्त ठाकुर दुर्गासिहजी 'तूफान' भजनो द्वारा कार्यक्रम को सुशोभित करेंगे।

—राजकुमार भारद्वाज मंत्री

आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग राजकोट (गुजरात) के वार्षिक निर्वाचन मे श्री पोपटलाल प्राग जी चौहान प्रधान, श्री माधुसिह प्राग जी कामलिया मन्त्री और श्री माधवदास नगीनादास पाऊ कोषाध्यक्ष चुने गये।

श्रीमद्दयानन्द महिला शिक्षण केन्द्र शाहपुरा, भीलवाडा (राज०) के द्विवर्षीय निर्वाचन मे श्रीमान् राजाधिराज श्री सुदर्शन देव आजीवन संरक्षक श्री रामस्वरूप बेली प्रधान श्री भंवरलाल आर्य मन्त्री और श्री वंशीलाल छिवा कोषाध्यक्ष चुने गये।

ऋतु अनुकूल हवन सामग्री

हमने आर्य प्रेमियो के आग्रह पर संस्कार विधि के अनुसार हवन सामग्री का निर्माण हिमाचल की ताजी जडी-बूटियो से प्रारम्भ कर दिया है, जो उत्तम, कीटाणु-नाशक, सुगन्धित एव पौष्टिक तत्वो से युक्त है। यह आदर्श हवन सामग्री अत्यन्त अल्प मूल्य पर प्राप्त है। थोक मूल्य ४ रु प्रति किलो है।

जो यज्ञ प्रेमी हवन सामग्री का निर्माण करना चाहे वह सब ताजो हिमालय की वनस्पतिया हमसे प्राप्त कर सकते हैं, वे चाहें तो कुटवा भो सकते हैं। यह सब सेवा मात्र है।

योगी फार्मेसी, लकसर राड

डाकघर गुरुकुल कांगड़ी—२४९४०४ (उ० प्र०) हरिद्वार

यू० १०३/८१ लायसेंस टु पोस्ट विदाउट प्री-पेमेन्ट
रजिस्ट्रेशन न० आर० एन० आई० ११६३/७२ डी० सी० 409
आर्य जगत, नई दिल्ली
N. D P.S.O. ON 22-8-1985. २५ अगस्त, १९८५

द० अफ्रीका के आर्य वाले यात्रियों के लि[illegible] सूचना

दिसम्बर १९८५ मे होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय आय महासम्मेलन के वारे में विस्तृत जानकारी पहले ही दी जा चुकी है। इस विषय मे सार्वदेशिक सभा ने भारत सरकार से अनुरोध किया था कि उक्त सम्मेलन मे भाग लेने के लिए दक्षिण अफ्रीका जाने के इच्छुक आर्य बन्धुओं को उनके पास पोर्ट पर विशेष अनुमति दी जाय, क्योकि सामान्य अवस्था मे भारत सरकार भारतीय नागरिको को दक्षिण अफ्रीका मे प्रवेश की अनुमति नही देती है।

यह सूचित करते हुए हर्ष है कि भारत सरकार ने हमारी प्रार्थना स्वीकार करते हुए सैद्धातिक रूप से उन आर्य बन्धुओ को जोअन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मे भाग लेने डरबन जाना चाहते हैं, दक्षिण अफ्रीका मे प्रवेश के लिए विशेष आज्ञा देने का निर्णय ले लिया है, किन्तु यह आज्ञा सामूहिक रूप से किसी सस्था या व्यक्तियो के किसी भी संगठन को नहीं दी जायेगी। इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को स्वतन्त्र रूप से अपने क्षेत्रीय पास पोर्ट अधिकारी को आवेदन पत्र देना होगा। वह प्रार्थना पत्र भारतीय विदेश मंत्रालय को विशेष अनुमति प्राप्त करने के लिए भेज दिया जाएगा।

उन समस्त आर्य बन्धुओ से, जो आर्य महा सम्मेलन में भाग लेने दक्षिण अफ्रीका जाना चाहते हो अनुरोध है कि वे तुरन्त अपने क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी से सम्पर्क करके उन्हे अपना प्रार्थना पत्र दे दे। जो आर्य समाज तथा आर्य सस्थाए अपने प्रतिनिधि डरवन भेजना चाहते हो, वे भी अपने प्रतिनिधियो को व्यक्तिगत रूप से तदनुसार कार्यवाही करने का परामर्श देवे।

प्रार्थना पत्र मे यह अवश्य लिखा जाय कि मैं आर्य समाज से सम्बद्ध हू और दक्षिण अफ्रीका जाने का मेरा एक मात्र उद्देश्य अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मे भाग लेना ही है।

ओम्प्रकाश त्यागी,
महामंत्री—सार्वदेशिक आर्य
प्रतिनिधि सभा
दिल्ली

वधू चाहिए

मेरे बेटे श्री प्रबोधकुमार खत्री मैट्रिक पास, ३६ वर्षीय है, तलाकशुदा लडके के लिए वधू चाहिए। लड़का स्कूल मे सर्विस मे है ८००/-रु० वेतन लेता है। जनकपुरी में अपना मकान है। सपर्क करे:—श्री चिरंजी लाल फ्लैट—सी—५—सी/४२—बी, जनकपुरी, नई दिल्ली—११००५८

DAV Centenary College. Faridabad

NH-3 Chimnibai Dharamshala
Seats Ovaieaoble in
IX (Arts & Commerce)
(B A . B Com Part-I)
Extended upto 26-8-85
Contact the Principal immediately-
—PRINCIPAL (P K BANSAL)

वर की आवश्यकता

२४ वर्षीय, गौर वर्ण, सुन्दर, स्वस्थ इकहरा शरीर गृह कार्य मे निपुण, कद ५ फुट ३½ इंच, लेडी श्रीराम कौलेज से स्नातिका कन्या के लिए उपयुक्त वर की आवश्यकता है। पत्रव्यवहार अथवा सम्पर्क करें—मेहता, बी—२०, पश्चिमी निजामुद्दीन, नई दिल्ली (फोन—६१५२८२)

वर्षा ऋतु में डी ए वी फार्मेसी जालन्धर के

१. लवण भास्कर चूर्ण
२. हिंग्वाष्टक चूर्ण
३. लशुनादि वटी

प्रयोग करें।

पत्र व्यवहार के लिए—
डो. ए. वी. फार्मेसी जी. टी. रोड, जालन्धर
फोन-72792

नोट--विस्तृत जानकारी के लिए सूची-पत्र मुफ्त मंगवाएं।

योग्य वधू चाहिए

एक लडका जिसका कद ५ फुट ८ इंच, आयु २६ वर्ष, एम० ए० है, दो भाई एव दो बहिने हैं। एक बहिन की शादी हो गई है, एक बहिन पढ रही है। एक भाई गवर्नमेंट सर्विस में है। लड़का स्वयं १६००/—रु० वेतन लेता है। लडकी पजावी खत्री हो। सम्पर्क करे—श्री एन०सी० आनन्द, डब्लू जैड.—१०१, वीरेन्द्र नगर, नई दिल्ली—११००५८

आर्यसमाज के कैसेट

मधुर एव मनोहर संगीत मे आर्यसमाज के ओजस्वी भजनोपदेशको द्वारा गाये गये ईश्वरभक्ति, महर्षि दयानन्द एव समाज सुधार से सम्बन्धित उच्चकोटि के भजनो के सर्वोत्तम कैसेट मगवाकर-
आर्यसमाज का प्रचार जोरशोर से करें।

कैसेट नं. 1. पथिक भजन सिन्धु- गीतकार एव गायक सत्यपाल पथिक का सर्वाधिक लोकप्रिय कैसेट।
2. सत्यपाल पथिक भजनावली- सत्यपाल पथिक का दूसरा नया कैसेट।
3. श्रद्धा- प्रसिद्ध फिल्मी गायिका आरती मुखर्जी एव दीपक चौहान।
4. आर्य भजनावली- फिल्मी संगीतकार एव गायक वेदपाल वर्मा।
5. वेदगीताञ्जलि- गीतकार एव गायक- सत्यकाम विद्यालंकार
6. भजन सुधा- आचार्या प्रज्ञादेवी वाराणसी की शिष्याओं द्वारा गाये गये श्रेष्ठ भजन।

मूल्य प्रति कैसेट : से 3.30रु. तथा 4 से 6. 35रु. है। डाक व्यय अलग विशेष- 5 या अधिक कैसेटो का अग्रिम धन आदेश के साथ भेजने पर डाक व्यय फ्री। वी पी पी. से भी मगा सकते है।

प्रतिष्ठान- आर्यसिन्धु आश्रम 141, मुलुण्ड कालोनी बम्बई- 400082

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के कर कमलों द्वारा स्थापित और आर्य प्रादेशिक सभा द्वारा संचालित

भारतवर्ष का पुराना और उत्तरी भारत का प्रमुख अनाथालय कुशल प्रशासक शैक्षिक ज्ञाता, उदार हृदय प्रबन्धको की देखरेख में बालक-बालिकाओ के पालन-पोषण, शिक्षा आदि का उचित प्रबन्ध है।

आप सभी दानी महानुभाव इस पुनीत कार्य में दान देकर पुण्य के भागी बनें। प्रि० पी० डो० चौधरी, मैनेजर आर्य अनाथालय, फिरोजपुर।

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस०नारायण एण्ड सन्स७११७/१८ पहाडी धीरज, (फोन : ५१६५१८) दिल्ली से छपवा कर कार्यालय आर्य जगत, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित । स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली। फोन (343718)

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य-२५ रुपये | विदेश में ३० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४८, अंक ३६, रविवार, १ सितम्बर, १९८५ | दूरभाष : ३४३७१८

आजीवन सदस्य-२५१ रु० | इस अक का मूल्य—६० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८५, दयानन्दाब्द १६० | भाद्र पद कृष्णा २, २०४२ वि०

लोंगोवाल की हत्या : पंजाब में चुनाव होंगे

24 जुलाई को पंजाब के बारे में हुए समझौते को अभी एक मास भी नहीं बीता था कि 20 अगस्त को आतंकवादियों ने सगरूर के निकट शेरूपुरा में सन्त लोंगोवाल की निर्मम हत्या कर दी। 20 अगस्त प्रधानमंत्री श्री राजीव गाधी का जन्मदिवस भी था। क्या आतंकवादियो ने यह दिन जानबूझ कर चुना था ?

जब से अकालीदल के अध्यक्ष के नाते श्री हरचन्द सिंह लोंगोवाल ने प्रधान मंत्री के साथ पजाब समझौते पर हस्ताक्षर किए थे, तब से सिखो का एक वर्ग उनका प्रबल विरोधी हो गया था और उसने हिट लिस्ट में सबसे ऊपर उनका नाम रख दिया था। सन्त जी सारे पजाब में घूम-घूम कर उस समझौते के पक्ष मे प्रचार कर रहे थे और हिन्दू सिख एकता पर बल दे रहे थे।

वे यद्यपि पजाब में तुरन्त चुनाव कराने के बजाय अगले वर्ष फरवरी मे चुनाव के पक्ष मे सार्वजनिक बयान दे चुके थे, पर जब भारत सरकार ने 22 सितम्बर को चुनावो की घोषणा कर ही दी तो उन्होने इसे चुनौती की तरह स्वीकार कर चुनावों मे सभी सीटो पर अकाली उम्मीदवार खड़े करने का फैसला कर लिया था।

बादल, तोहड़ा, तलवन्डी और जोगिन्दर सिंह पंजाब समझौते से स्वय को अन्यथा सिद्ध पाकर उसके विरुद्ध थे, परन्तु पजाब के अन्दर और पंजाब के बाहर के सिखो मे तथा हिन्दुओं मे भी श्री लोंगोवाल की लोक प्रियता जितनी बढती जा रही थी उतने ही ये सब स्वार्थान्ध सिखनेता उनके विरुद्ध होते जा रहे थे। परिस्थितियो से विवश होकर 20 अगस्त को सवेरे ही बादल और तोहडा ने चुनावो के सम्बन्ध मे लोंगोवाल से अपने मतभेद समाप्त होने की घोषणा की थी, परन्तु भिडरावाले के अनुयायी नापाक इरादे पूरे करने से बाज नही आए। अपने आदर्शों और भारत की एकता के लिए सन्त जी शहीद हो गए।

सन्त लोंगोवाल की हत्या से एक बार तो यह शंका पैदा हो गई थी कि अब पंजाब मे चुनाव हो पाए गे या नहीं। सारे विरोधी दल कह रहे थे कि अब चुनाव स्थगित कर देने चाहिए। पर प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी ने अपने प्रधानमन्त्रित्व का सबसे जोखिमभरा खतरा मोल लेकर पंजाब मे चुनाव स्थगित नही किए। केवल इतना परिवर्तन किया कि अब 22 के बजाय 25 सितम्बर को मतदान होगा।

अपने इस निर्णय को उचित बताते हुए श्री राजीव गाधी ने ससद मे कहा :

"इस समय बुनियादी सवाल यह है कि क्या कुछ आतंकवादियो को यह छूट दी जाए कि वे जनता के लोकतांत्रिक अधिकार को छीन ल। इसके सही उत्तर पर ही भारत मे लोकतत्र का भविष्य निर्भर है। इसलिए सरकार के साथ समस्त जनता का भी यह कर्तव्य है कि वह आतंकवाद के सामने घुटने टेकने के बजाय एकजुट होकर उसका सामना करे और पंजाब मे शान्तिपूर्ण ढग से चुनाव करवा के लोकतन्त्र केदीप को प्रज्वलित रखा जाए।"

अकाली दल के जत्थेदारो ने काफी वाद-विवाद के पश्चात भूतपूर्व केन्द्रीय मत्री श्री सुरजीत सिंस बरनाला को दल का कार्यवाहक अध्यक्ष और श्री अजीत सिंह को संसदीय बोर्ड का अध्यक्ष चुना है।

अनेक महत्वपूर्ण योजनाओं का श्री गणेश

डी ए वी शताब्दी समारोह की हलचल शुरू

नई दिल्ली, 25 अगस्त। सन् 85 के उत्तरार्ध मे और सन् 86 के पूर्वार्ध में धूमधाम से मनाए जाने वाले डी ए वी शताब्दी के विशाल समारोह की हलचल प्रारम्भ हो गई है। यह समारोह अनेक नगरो मे अनेक रूपो मे मनाया जाएगा।

कांगडा, चण्डीगढ़, अमृतसर, अम्बाला, जालन्धर आदि स्थानो से आए डी ए वी कालिजो के प्रिंसिपलो ने अपने यहाँ मनाए जाने वाले कार्यक्रमों की रूपरेखा और उनके लिए अब तक की गई तैयारी का विवरण आज आर्यसमाज अनारकली मे साय 5-30 बजे हुई बैठक मे प्रस्तुत किया। इस बैठक मे डी ए वी शिक्षा संस्थाओ के प्रचार्यों के अलावा दिल्ली की प्रमुख समाजो और सभाओ के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे। समाजो और सभाओ के अधिकारियों ने अपनी ओर से शताब्दी कार्यक्रमो मे पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

पंजाब और दिल्ली के अलावा ये समारोह उडीसा, महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश और तमिलनाडु मे भी—जहा जहा डी ए वी सस्थाएं है—मनाए जाएंगे।

विशाल पैमाने पर एक शिक्षा सम्मेलन और कम से कम दस हजार विद्यार्थियो का एक प्रशिक्षण शिविर भी शताब्दी समारोह का अंग होगा। उसकी तैयारी अभी से प्रारम्भ हो गई है आगामी 5 वर्षों मे वैदिक वाङमय और भारतीय संस्कृति से सम्बद्ध विषयों पर प्रामाणिक ग्रन्थ प्रकाशित करने की योजना है। शताब्दी के अवसर पर कम से कम 100 पिछडे ग्रामों मे विकास कार्यों के साथ चिकित्सा सुविधा जुटाने, 100 गरीब प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति देकर निश्शुल्क शिक्षा देने, 100 दयानद सेवा सदन खोलने की भी योजना है। वैदिक अनुसंधान के लिए दयानन्द फाउंडेशन की स्थापना की गई है।

डी ए वी शताब्दी के उपलक्ष्य मे इन सब योजनाओ को पूरा करने के लिए 5 करोड रु० एकत्र करने का निश्चय किया गया है जिसके लिए डी० ए० वी० से सम्बद्ध तथा उसके प्रशसक व्यक्ति अहर्निश प्रयत्नशील।

मुख्य शताब्दी समारोह के अवसर पर दिल्ली मे अभूतपूर्व विशाल शोभा यात्रा निकालने का निश्चय किया गया।

शताब्दी के अवसर पर श्री क्षितीश वेदालंकार के सम्पादकत्व मे एक भव्य स्मारिका प्रकाशित करने का भी निश्चय किया गया।

शताब्दी समारोहो की शृंखला का प्रारम्भ भारत की राजधानी दिल्ली से होगा—जिसके उद्घाटन के लिए भारत के प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी से प्रार्थना की जा रही है।

शब्द ब्रह्म का उपासक कर्मयोगी चला गया

दिव स्पृशति भूमि च
शब्दः पुण्यस्य कर्मण·।
यावत् स भूमि स्पृशति।
तावत्पुरुष उच्यते॥

—महर्षि व्यास

जब तक पुण्यशाली कर्म का शब्द आसमान तथा भूमि को छूता है और जब तक उस शब्द का भूमि पर जय जय कार होता रहता है, तब तक पुरुष पुरुष कहलाने योग्य होता है।

महर्षि व्यास के उपरोक्त शब्द वर्माजी की जीवन लीला को सार्थक बनाते है। 17 अगस्त को उनके निधन की खबर दूर दर्शन, आकाशवाणी तथा दिल्ली के समाचार पत्रो मे जैसे ही छपी, उनके शिष्यो तथा भक्तो को गहरा धक्का लगा। शतायु होने मे केवल 15 महीने ही शेष थे।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

परामर्शदाता-अमर स्वामी सरस्वती | सम्पादक-क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक-रामलाल मलिक

हरयाणा और स्वराज्य की लड़ाई : कुछ भूली-बिसरी रोचक घटनाएं

(गतांक से आगे)

तम्बाकू की खिलाफत :

बात सन् 1938 की है। इस वर्ष कई जगहों पर अकाल पड़ गया था। अतः गांधी जी ने किसानों से अपील की कि 'कहर पड़ रहा है, इसलिए सब किसान अनाज की फसलें बोएं।

तम्बाकू आदि नशीली फसलों के तो पास भी न जाएं।' श्योकन्द गांधी जी के इस ऐलान को गांव-गांव पहुंचा रहे थे। एक दिन वह आसन गांव पहुंचे। वहां चौधरी के यहां ठहरे। अच्छे,बड़े जमींदार थे। १२ बीघे तम्बाकू बो रखी थी। श्योचन्द ने समझाया : 'चौधरी, गांधी जी का हुकम सै तम्बाकू जैसी नशीली चीज न बोवो। चौधरी बोला 'भई श्योकन्द गांधी जी का हुकम हो ठीक से पर मेरे यार इसी फायदे की चीज के छोडी जा सै।' श्योकन्द को बड़ा दुःख हुआ और उन्होंने खीझ कर कहा: 'चौधरी जे इस तै भी फायदे की बात बता दूं तो तम्बाकू बोणी छोड देगा?' भई पक्का वायदा रहया, चौधरी ने आश्वासन दिया। 'चौधरी तेरे दो छोरी सैं। उन ने बेच दे। बारह बीघे की तम्बाकू तै दस गुणा ज्यादा दाम मिलेंगे।' श्योकन्द का तर्क था।

बड़ा भारी झगड़ा हो गया। गांव वाले आ गए, मुश्किल से छूट छटाव हुआ। पर इस घटना ने श्योकन्द की लगन उसकी अपने उद्देश्य के प्रति समर्पितता और अपने कर्त्तव्य के प्रति निष्ठा के दर्शन करा दिए।

सरकार की कमजोरी :

बात 1941 की है। व्यक्तिगत सत्याग्रह जोरों से चल रहा था। कृपाराम बरौदा गांव के एक दुबले, पतले वैश्य परिवार से सम्बद्ध सज्जन थे। उन्होंने सरकार के विरुद्ध, युद्ध के खिलाफ नारे लगाए और गिरफ्तारी दी। मुकद्दमा चला। मजिस्ट्रेट ने सरकार से बगावत करने व कानून तोड़ने के जुर्म में लाला जी को सजा दे डाली। लाला जी ने मजिस्ट्रेट का धन्यवाद किया और कहा,'मजिस्ट्रेट साहब,सजा तो आपने दे दी। मैं जेल भेज दिया। पर के तूने सरकार के कानून और इसकी हिफाजत कर ली? जो सरकार इतनी कमजोर सै, कि मेरा जिसा 70 वर्ष कमजोर सा बाणिया उनके चिथड़े-चिथड़े कर दे तो उस सरकार और उसके कानून ने तो भगवान भी नहीं बचा सके, तूं तो चीज के सै।'

वास्तव में कृपाराम की बात सही निकली। कमजोर सरकार को कोई नहीं बचा पाया।

गरीबराम का तर्क

भारत छोडो आंदोलन चल रहा था। सरकार ने कुछ लोगों को गिरफ्तार किया,कुछ को नजरबंद कर दिया, और कुछ पर गाव या जिला न छोडने की पाबंदी लगा दी। पुरखास के चौधरी गरीबराम पर बाद वाली पाबंदी आपद थी अर्थात वह जिला रोहतक नहीं छोड़ सकता था। पर जब देश में आग लग रही हो तो चौधरी गरीबराम घर में कैसे बैठे? उन्होंने जिला छोड़ दिया और करनाल जिले मे गाव-गाव घूम कर लोगों को स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूदने के लिए प्रेरित करने लगे, एक दिन एक अंग्रेज परस्त व्यक्ति ने चौधरी पर फब्त कर दो: दूसरा न तो जेल भिजवाव सै, अर आप छुपता फिरै सै।' चौधरी के बदन में आग लग गई और उन्होंने फैसला किया कि गिरफ्तारी दूंगा और वह भी खूब शान से। एक दिन बहुत सवेरे चौधरी जूंडला नामक गाव में जा पहुंचा। गांव में गली-गली खुद मुनादी की. भाईयो, बहनो आज दिन के बारह बजे, गाव की चौपाल में कांग्रेस का जलसा होगा। उसमें जिला रोहतक के मशहूर नेता चौ. गरीबराम जी आए गे और गांधी जी का 'ताजा सन्देश' देंगे। गांव के पटवारी ने तुरन्त थाने में खबर कर दी। थानेदार और चार सिपाही आ गए 'चौधरी गरीबराम को आज पकड़ना है। बड़े दिनों से जिले में छुप-छुप कर उत्पात कर रहा था।

बारह बजे कुछ लोग जो खुले तौर पर कांग्रेस के साथ थे चौपाल में आ गए। अन्य दूर से तमाशा देखने लगे। किसी ने एक छोटी सी मेज और दो कुर्सियां दे दी। बस जलसे की 'स्टेज' बन गई। चौधरी ने एक कुर्सी के पीछे झंडा बांध दिया और उस पर स्वयं बैठ गया। दूसरी खाली छोड दी-'चौधरी गरीबराम' के लिये।

12 बजकर 10 मिनट पर चौधरी जी खड़े हुए और बोले: 'सज्जनों,देवियों गरीबराम जी जल्दी ही आने वाले हैं। जब तक वह नहीं आए मैं जलसे की कार्यवाही चलाता हूं। पहले झंडे का अभिवादन हुआ:

तिरंगा झंडा है शान हमारी।
इसकी पूजा करो नर-नारी।।

फिर पूरे एक घन्टे का भाषण हुआ। सब कुछ कहा गया। पुलिस चौकस खड़ी रही कब गरीबराम आए और घर दबोचें।

अन्त में चौधरी जी ने कहा:'भाइयो यह सरकार ज्यादा दिन तक नही चलने वाली। इसका बखत आ लिया। यो अंधी सै। मैं गरीबराम सूं। सरकार के सामने खड़ा सूं। अर ये 'गरीबराम ने' ढूंढ रहये सैं। गरीबराम को तुरन्त पकड़ लिया गया। मुकद्दमा चला-रोहतक में, श्री लक्ष्मीचन्द वशिष्ठ की अदालत में। मुकद्दमे के शुरू होते ही गरीबराम ने पूछा: मजिस्ट्रेट साहब मेरा कसूर के सै? तुम्हें पता नही? मजिस्ट्रेट कडके। तुम्हें लिखित में आदेश दिए गए थे कि तुम जिला रोहतक की सीमाओं से बाहर नहीं जा सकते। तुमने जिला करनाल में आकर कानून तोड़ा है। चौधरी साहब ने मजिस्ट्रेट को बीच में ही टोकते हुए कहा: जरा ठहरियो मजिस्ट्रेट साहब! पढ़योड़ सो! नक्शे वक्शे भी देखें होंगे एक बात बताओ: इंग्लेंड अर भारत में कितना अन्तर से? 'बहुत ज्यादा', मजिस्ट्रेट ने कहा! हां सात समुंदर बीच में पड़ें सै. चौधरी ने बात आगे बढाते हुए दूसरा प्रश्न दागा: अर जिला रोहतक अर जिला करनाल में? बहुत थोड़ा, मजिस्ट्रेट का उत्तर था। न्यू कह ना मजिस्ट्रेट जी अक सीम तै सीम लागै से। म्हारा एक दूसरां तै जन्म जन्मातरां का संबंध सै।

भला जब मेरे रोहतक तै करनाल जिले में आण तैं कानून टूट गया तो इन सात समन्दर तैं भी परे तैं. विदेशी अंग्रेजां के आड़े आणे तैं भी तो टूटा होगा। इन नैं तू कुछ भी ना कहै, ये के तेरे फूफा लागै से?

मजिस्ट्रेट आग बबूला हो उठा और एक वर्ष की कैद की बामुसक्कत की सजा दे डाली। चौधरी ने सजा सुनकर एक फब्ती और कसी "बस बचा ली सरकार?"

ऊपर हमने कुछ मामूली सी दीखने वाली रोचक घटनाओं की चर्चा की है। पर वास्तव में ये मामूली घटनाएं नहीं हैं, और न ही इनकी रोचकता केवल मात्र रोचकता है। इनमें बड़े गहरे तत्व छिपे हुए हैं। इनसे हमारे स्वतन्त्रता आन्दोलन के सगठन, कार्यविधि और रणनीति आदि विषयों पर तो काफी प्रकाश पडता ही है पर इसके साथ-साथ इस बात का भी पता चलता है कि उन दिनों हमारे गांवों में रहने वाले, सामान्य अनपढ़ लोग किस मनोवैज्ञानिक मानसिकता को लिए हुए मुक्ति संग्राम की सामाजिक पृष्टभूमि को विस्तृत कर रहे थे।

—डा० के० सी० यादव

(जनसत्ता से साभार)

सुभाषित

कृत्वा पापं न गूहेत गुह्यमानं विवर्धते ।
स्वल्पं वाथ प्रभूतं वा धर्मविद्भ्यो निवेदयेत् ।।
वेद वेदांगविदुषां धर्मशास्त्रं विजानताम् ।
स्वकर्मरत विप्राणां स्वकं पापं निवेदयेत् ।।

पाप करके उसे छिपाना नहीं चाहिए, क्योंकि छिपाने से वह और बढ़ता है। पाप चाहे थोड़ा हो या अधिक, धर्मवेत्ता विद्वानों के समक्ष उसे बता देना चाहिए। जो वेद वेदांग के ज्ञाता हैं, धर्मशास्त्र के पंडित हैं और निरन्तर शुभकर्मों में रत विद्वान् व्यक्ति हैं, उनके समक्ष अपने पाप का स्पष्टीकरण करके भविष्य में वैसा कभी न करने का संकल्प करना चाहिए।

—पाराशर स्मृति

सम्पादकीयम्

"लौंग लिव" लोंगोवाल !

आखिर वही हुआ, जिसकी आशंका थी। संत लोंगोवाल की गुरुद्वारे में गुरु ग्रन्थ साहब के सामने मत्था टेकते हुए हत्या कर दी गई। अपना सारा जीवन पंथ की सेवा में लगाने वाले संत की शहादत के लिए इससे अच्छा स्थान और इससे अच्छी घड़ी नहीं हो सकती। गत मास 5 जुलाई को संगरूर में उन्होंने भाषण देते हुए कहा था—कि 'हिन्दू और सिख एक ही मां-बाप की सन्तान हैं। यदि कोई सिख किसी हिन्दू की हत्या करता है तो समझना चाहिए कि वह गुरु तेग बहादुर की हत्या करता है।' इसी भाषण से संत-लोंगोवाल के आत्म बल का परिचय मिला। शायद 10 महीने तक कारावास का एकान्त भोगते हुए उन्हें आत्म चिन्तन का जो अवसर मिला उसी का यह परिणाम था कि जेल से छूटने के बाद सिखों में पुनः अपनी प्रतिष्ठा स्थापित करने के लिए वे शुरू में उत्तेजक बयान देते रहे, परन्तु धीरे-धीरे उनके सामने यह स्पष्ट हो गया कि आतंकवाद का खुलकर मुकाबला करने के सिवाय न देश के लिए और न हीं सिखों के लिए और कोई चारा है। जब भिंडरांवाले के वृद्धपिता जोगिन्दर सिंह की चुनौती का मुकाबला करने में वे सफल हो गये और अकाली दल ने पुन. सर्व-सम्मति से उन्हें ही अध्यक्ष चुन लिया तो उनमें भी आत्मविश्वास बढ़ गया और वे आतंकवाद के विरोध में तथा हिन्दू-सिख एकता के पक्ष में खुलकर सामने आ गये। अगर यह आत्मबल उनमें पैदा न होता तो पंजाब समझौता भी न होता। क्योंकि वे जानते थे कि भिंडरांवाले के अनुयायियों ने सिखों में एक ऐसा वर्ग तैयार कर दिया है जो किसी भी तरह का कोई समझौता सरकार के साथ करने को तैयार नहीं है। जिस संगरूर में पहली बार उन्होंने आत्म-बल का स्पष्ट परिचय दिया उसी संगरूर के शेरपुरा गांव में उनकी हत्या हो गई।

हम अर्से से यह कहते आये हैं कि सिखों में कोई ऐसा नेता नहीं है जो भय मुक्त हो और सच्चाई के लिए गर्दन तानकर खड़ा होने को तैयार हो। सिखों का आज तक यही सबसे बड़ा दुर्भाग्य रहा है। जब तक उनका नेतृत्व किसी राष्ट्रवादी नेता के हाथ में रहा, तब तक वे भी राष्ट्रीय धारा से केवल जुड़े ही नहीं रहे, बल्कि सफरमैना की तरह सबसे आगे रहे। किन्तु आजादी के पश्चात् ऐसे अवसर बहुत कम आये। अधिकतर उनका नेतृत्व साम्प्रदायिक नेताओं के हाथ में रहा। इसीलिए वे राष्ट्रीय धारा से कटते चले गये और धीरे-धीरे अलगाववाद की उस सीमा पर पहुच गये जिसके एक सिरे पर भिंडरांवाले था और दूसरे सिरे पर "ब्लू स्टार आपरेशन" दोनों स्थितियां बहुत स्वाभाविक नहीं थी। जब आतंकवाद की पराकाष्ठा ने भिंडरा-वाले को भस्मासुर बना दिया तब उसके लिए "ब्लू स्टार" आपरेशन केवल इन्दिरा गांधी की नहीं, बल्कि भारत के हरेक प्रधान मंत्री की मजबूरी होती। क्योंकि देश को खंडित होने से बचाने का सबसे अधिक उत्तरदायित्व उसी पर होता है। श्रीमती इन्दिरा गांधी ने प्रधान-मंत्री के नाते अपने कर्तव्य का पालन किया। भले ही इसके लिए उन्हें अपने प्राणों की बलि देनी पड़ी। जब किसी प्रधान मंत्री को अपने लोगों के विरुद्ध बड़े पैमाने पर सैनिक कार्रवाई करनी पड़े तब सचमुच ही वह अस्वाभा-विक और दुःखद स्थिति होती है। परन्तु जो आत्मबल लोंगोवाल ने सन् 1985 के जुलाई मास में प्रकट किया, वही आत्म बल भिंडरावाले के काल में प्रकट किया होता तो देश को ब्लू स्टार आपरेशन और उसके बाद नवम्बर के दंगों के हादसों से न गुजरना पड़ता। हो सकता है कि यदि यह आत्म बल लोंगोवाल ने तब प्रकट किया होता तो तभी उनकी हत्या हो जाती। अब भी सिख नेतृत्व के सामने यह बहुत बड़ी चुनौती है जो लोंगोवाल की हत्या के बाद और बढ़ गई है,—कि जो भी कोई संपूर्ण सिख समाज को आत्मघात के मार्ग पर चलने से बचाने के लिए, हिन्दू सिख एकता के लिए, और राष्ट्र की सुरक्षा के लिए अपनी आवाज बुलन्द करेगा उसकी वही गति होगी जो संत लोंगोवाल की हुई है।

संत लोंगोवाल ही क्यों, सत्य के पुजारियों के लिए विधाता ने यही नियति निर्धारित की है। या तो सुकरात की तरह और दयानन्द की तरह उसे जहर का प्याला पीना पड़ेगा, या सरमद की तरह सूली पर चढ़ना पड़ेगा। परन्तु विधाता की सृष्टि का इससे बढ़कर सौभाग्य और क्या होगा कि सत्य के पुजारियों के लिए यह नियति निर्धारित होने पर भी संसार में हमेशा कोई न कोई ऐसा सत्य का पुजारी प्रकट होता ही रहता है जो शास्त्र के "सत्यमेव जयते नानृतम्" के वचन को अपने रक्त की साक्षी से सही सिद्ध करता है। संसार ऐसे ही सत्य के पुजारियों के आधार पर टिका है। सत्य का गला घोटने वाले आतंकवादी हत्यारों के बल पर नहीं।

संत लोंगोवाल की इस हत्या ने कुछ ऐसे सवाल खड़े कर दिये हैं जिनका उत्तर देने के लिए सिख समाज को अपनी आत्मा में झांकना पड़ेगा। सबसे पहला सवाल तो यह है कि क्या गुरुद्वारे में ग्रन्थ साहब के सामने मत्था टेकता हुआ कोई सन्त भी सुरक्षित रह सकता है या नहीं। अब तक सिख नेता यह कहते रहे हैं कि सेना ने स्वर्ण मंदिर में प्रवेश करके उसकी पवित्रता भंग की और भिंडरांवाले उसकी रक्षा करते हुए मारे गये इसलिए वे और उनके साथी पंथ के शहीद हैं। कुछ लोग उनका नाम अरदास में भी शामिल करना चाहते थे। कहा जाता है कि यही सिख परम्परा है। परन्तु क्या गुरुद्वारे में ग्रंथ साहब के सामने मत्था टेकते हुए संत को मारना भी सिख परम्परा है? अगर गुरुद्वारे जैसे धार्मिक स्थान में भी किसी संत का जीवन सुरक्षित नहीं रह सकता और गुरुद्वारों को राजनीति का अखाड़ा और अस्त्रागार बनाया जा सकता है तब क्या सिर-फिरे लोग किसी भी और व्यक्ति को कहीं भी सुरक्षित रहने देंगे?

जिन लोगों की इन्दिरा गांधी की हत्या करने वालों की निन्दा करते हुए जबान दुखती थी, जो बेअन्त सिंह को शहीद घोषित कर रहे थे और सतवंत सिंह के परिवार को "सरोपा" भेंट कर रहे थे, वे अपनी छाती पर हाथ रख कर बतायें कि शहीद कौन है? लोंगोवाल शहीद हैं या उनको मारने वाले हत्यारे शहीद हैं? भिंडरावाले को शहीद कहने वालों को फिर से सोचना पड़ेगा कि शहादत का मान दण्ड क्या होना चाहिए? जिन लोगों ने लोंगोवाल की हत्या पर खुशी मनाई, या मिठाई बांटी (परमात्मा करे, यह खबर झूठी हो!) उनको यह सोचना होगा कि कल को इसी स्थिति का सामना उन्हें भी करना पड़ सकता है। क्या सिख समाज में कोई सत्य का पुजारी फिर पैदा नहीं होगा?

अकाल तख्त के ग्रथियों के सामने यह खुला सवाल है कि वे आतंकवादियों के विरुद्ध और गुरुद्वारे में कृपाण के अलावा कोई भी और हथियार लेकर आने के विरुद्ध "हुक्मनामा" जारी कर सकते हैं या नहीं। जो ग्रंथी धर्म के नाम पर तोहड़ा और तलवंडी जैसे राजनीति के खिलाड़ियों की शतरंज के मोहरे बने रहे, क्या लोंगोवाल की हत्या से उनकी आखों में आंसू की एक भी बूंद आई? अगर उनकी आंखें खुशी से चमक उठीं तो समझना चाहिए कि सिख समाज को आत्मघात की ओर ले जाने में सबसे बड़ा हाथ इन ग्रंथियों का ही होगा। अकाल तख्त के जो ग्रंथी स्वर्ण मंदिर में भिंडरावाले और उनके आतंकवादी साथियों को अपनी राष्ट्रविरोधी कार्रवाईयां करने से नहीं रोक सके, वे कैसे धर्म ठेकेदार हैं? जिनमें सबसे अधिक आत्मिक बल होने की आशा की जा सकती थी वे सबसे अधिक कमजोर निकले। धर्म के नाम पर अधर्म को प्रश्रय देने वाले इन ग्रंथियों को 'तनखैया" कौन घोषित करेगा?

सरकार ने संत लोंगोवाल के साथ, सारे सिख समाज को अलगाव से बचाने के लिए काफी झुक कर जो समझौता किया वह उसके प्रति ईमानदार है। यह इसी से स्पष्ट है कि उसने अपनी ओर से चंडीगढ़ पंजाब को मिल जाने के पश्चात् जो हिन्दी भाषी प्रदेश हरियाणा को मिलने हैं उनके बारे में विचार करने के लिए आयोग की नियुक्ति कर दी है। अब देखना यह है कि सिख समाज उस समझौते के प्रति कितना ईमानदार है? संत लोंगोवाल के रहते यह विश्वास किया जा सकता था कि वे बादल, तोहड़ा, तलवंडी और जोगिन्दर सिंह द्वारा समझौते का विरोध किये जाने के बावजूद सिख समाज को समझाकर सही रास्ते पर ले जा सकेंगे। उनकी हत्या के बाद अब यह जिम्मेवारी सुरजीत सिंह बरनाला के ऊपर आयी है। पंजाब समझौते के सम्बन्ध में उनकी भी उतनी ही बड़ी जिम्मेवारी है। हम आशा करते हैं कि लोंगोवाल ने इतने मानसिक संघर्ष के पश्चात् जो आत्म-दीप की ज्योति जलाई थी वही ज्योति बरनाला की आत्मा को भी प्रकाशित करेगी और इस प्रकार लोंगोवाल मर कर भी अमर हो जायेंगे। 'लौंग लिव' लोंगोवाल!

ऋषि के ग्रन्थ और परोपकारिणी सभा

—प्रो० ज्वलन्त कुमार शास्त्री— रणवीर रणञ्जय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमेठी—

'आर्यजगत्' 12 मई तथा 9 मई जून के अंक मे क्रमश: आचार्य विश्वश्रवा: जी तथा डा० भवानी लाल भारतीय के लेख परोपकारिणी सभा के सम्बन्ध में छपे हैं। उक्त दोनों लेखो के सन्दर्भ में मेरे विचार इस प्रकार हैं—

परोपकारिणी सभा, ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों की उत्तराधिकारिणी है। स्वामी जी के ग्रन्थों को शुद्ध या दोषमुक्त रीति से छपाना उसका कर्त्तव्य है। परन्तु तथ्य यह है कि अभी तक सभा ने स्वामी जी के किसी भी ग्रन्थ का प्रामाणिक संस्करण नही छापा, जिसे आदर्श कहा जा सके। मुद्रणजन्य त्रुटियो को छोड भी दिया जाए तो विभिन्न संस्करणो में क्रमश: पाठभेदो की बहुलता तथा अपपाठो की भरमार चिन्त्य है।

प० युधिष्ठिर मीमांसक के परिश्रम पूर्ण प्रयास से सम्पादित ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ यदि रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित न हुए होते तो आर्य जगत् को ऋषि के ग्रन्थो का आदर्श सस्करण भी प्राप्त न होता। विस्तार भय से परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित ग्रन्थों की त्रुटियों को यहां प्रदर्शित करना सम्भव नही है। जिन्हें देखना हो पं० युधिष्ठिर मीमासक द्वारा प्रकाशित ऋषि ग्रन्थो का सम्पादकीय पढ़ना चाहिए। आर्य विद्वानों के निरन्तर अनुरोध से परोपकारिणी सभा ने 'चतुर्वेद विषय सूची' छापी है, जिसके सम्पादक स्वयं डा० भवानी लाल भारतीय रहे हैं। परन्तु हस्तलेखों के सम्पादन का अनुभव न होने के कारण उक्त ग्रन्थ भी बहुत ही अशुद्ध छपा। आचार्य विश्वश्रवा: जी ने यद्यपि (डॉ० भारतीय के अनुसार) "महर्षि के समस्त ग्रन्थो के हस्तलेखों को कई दशाब्द पूर्व ही देखा है और अपने उन्ही पुराने सस्मरणों पर वे जीवित हैं," तथापि यदि उनका सहयोग 'चतुर्वेद विषय सूची' के प्रकाशन में लिया गया होता तो उक्त ग्रन्थ का दोषपूर्ण सम्पादन नही होता। अब पं० युधिष्ठिर मीमासक के प्रयास से यह ग्रन्थ शुद्ध रूप में उपलब्ध हो गया है। (द्रष्टव्य-दयानन्दीय लघु ग्रन्थ संग्रह के अन्तर्गत 'चतुर्वेद विषय सूची'—रामलाल कपूर ट्रस्ट का प्रकाशन)।

डॉ० भारतीय ने अपने लेख में "सत्यार्थ प्रकाश के वास्तविक तथा शुद्ध पाठ-निर्धारण के लिए विद्वत् समिति का गठन, उसके तत्त्वावधान मे सत्यार्थ प्रकाश के हस्तलेखो के आधार पर वास्तविक पाठ का निर्धारण और तदनुसार सत्यार्थ प्रकाश का संशोधित सस्करण परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशन किए जाने का उल्लेख किया है।" परन्तु परोपकारिणी सभा द्वारा अद्यावधि प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश के किसी भी संस्करण में हस्तलेखो के आधार पर वास्तविक पाठ का निर्धारण किया गया हो, ऐसा प्रतीत नही होता। यदि ऐसी बात होती तो रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश (आर्य समाज स्थापना शताब्दी सस्करण में निर्धारित साधु पाठ) के विपरीत पाठ या अपपाठ परोपकारिणी सभा के प्रकाशन में न होते। मेरे विचार से डॉ० भारतीय परोपकारिणी सभा के संयुक्त मन्त्री होने के नाते परोपकारिणी सभा द्वारा नियुक्त विद्वत् समिति के संयोजक भले ही रहे हों, स्वामी जी के सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि आदि प्रसिद्ध ग्रन्थो के पाठ-निर्धारण मे उनकी कोई भूमिका नहीं रही। वस्तुत: यदि उन्होने शुद्धतम पाठ-निर्धारण मे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई होती तो पं० युधिष्ठिर मीमांसक सम्मत अधिकाश पाठ परोपकारिणी सभा के प्रकाशन मे भी होते। डॉ० भारतीय ने 'पूना प्रवचन या उपदेश मजरी' नामक ग्रन्थ परोपकारिणी सभा से अवश्य प्रकाशित किया, जिसमे पं० युधिष्ठिर मीमांसक द्वारा निर्धारित अधिकांश पाठ उन्होंने स्वीकार कर लिया। संस्कार विधि के 25वें संस्करण (परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित) के सम्पादक या नियामक श्री धर्मसिंह कोठारी थे और उन्होंने इस संस्करण में पं० युधिष्ठिर मीमासक तथा आचार्य विश्वश्रवा· व्यास द्वारा बहुश: मना किए जाने पर भी स्वस्तिवाचन तथा शान्तिकरण के कतिपय मन्त्रों को अर्थ सहित प्रकाशित किया जो पूर्व संस्करणों मे नहीं थे।

यद्यपि रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित ऋषि के ग्रन्थो में भी शुद्ध पाठ की दृष्टि से कतिपय विचारणीय स्थल हैं, तथापि यह निस्सङ्कोच कहा जा सकता है कि ऋषि के जो ग्रन्थ विभिन्न प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित हुए हैं, (जिनमे परोपकारिणी सभा भी सम्मिलित है) उनमे रामलाल कपूर ट्रस्ट का प्रकाशन सर्वाधिक शुद्ध है।

सत्यार्थ प्रकाश के दो विचारणीय पाठ

(1) ओ३म् सच्चिदानन्देश्वराय नमो नम:।

('भूमिका' का प्रारम्भिक वाक्य)

(2) इत्यादि नामों का ग्रहण अकार मात्र से होता है। इत्यादि नामार्थ उकारमात्र से ग्रहण होते हैं। इत्यादि नामार्थ मकार से गृहीत होते हैं।

(प्रथम समुल्लास)

ऐसा ही पाठ सत्यार्थ प्रकाश के सभी संस्करणो (सभी प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित) मे प्राप्त होता है। सत्यार्थ प्रकाश में द्वितीय सस्करण से ही यह अपपाठ प्रकाशित हो रहा है। इसके स्थान पर शुद्ध पाठ यह होना चाहिए—

(1) ओ३म् सच्चिदानन्दायेश्वराय नमो नम:।

(2) 'अकारमात्र' 'उकार मात्र' के स्थान पर 'अकार मात्रा' 'उकार मात्र' पाठ होना चाहिए। इसका कारण क्रमश: यह है—'ओ३म्' के अङ्गभूत अकार, उकार, मकार की व्याख्या ऋषि दयानन्द ने माण्डूक्योपनिषद् के आधार पर की है। माण्डूक्योपनिषद् का तत्सम्बन्धित स्थल, सत्यार्थ प्रकाश का अग्रिम पाठ—'एक-एक मात्रा से' तथा औचित्य के आधार पर भी यह निश्चित होता है कि यहां अकार मात्रा, उकार मात्रा पाठ होना चाहिए। मकार कोई मात्रा नहीं है अत: ऋषि ने केवल "मकार" से गृहीत होते हैं" ऐसा लिखा है। अन्यथा यदि अकार मात्र उकार मात्र पाठ साधु हो तो मकार मात्र क्यों नहीं?

सत्यार्थ प्रकाश के हस्तलेख में सच्चिदानन्दायेश्वराय' पाठ है। 'ये' अंश हाशिये मे बढ़ाया गया है। ऋषि के ग्रन्थों की यह शैली है कि वे परमात्मा के नामों के साथ नमस्कार-निवेदन में समस्त पद का व्यवहार नहीं करते। यथा—'नमो सर्वविधात्रे जगदीश्वराय।' (विस्तार के लिए द्रष्टव्य —पं० युधिष्ठिर मीमांसक कृत 'ऋषि दयानन्द के ग्रन्थो का इतिहास' में ऋषि-ग्रन्थो के आरम्भिक संस्करणो के मुख पृष्ठ की प्रतिलिपि) अत: सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय संस्करण की ऐकान्तिक प्रामाणिकता का आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा डिण्डिम घोष करना अविचारित रमणीय है।

ऋषि ग्रन्थों का सुधार या परिष्कार

ऋषि-ग्रन्थों के सुन्दर सम्पादन तथा शुद्धतम संस्करण के लिये पूर्वसंस्करणों की मुद्रणजन्य त्रुटियों का परिशोधन तथा लेखक प्रमाद जन्य सामान्य भूलों को ठीक करना आवश्यक है। एवंविध कार्य को मेरी दृष्टि से ऋषि ग्रन्थों में सुधार या परिष्कार नहीं कहा जा सकता। यह कार्य शुद्ध सम्पादन के अन्तर्गत ही आता है। अत: आचार्य जी का यह मत कि 'परोपकारिणी सभा को स्वामी जी के ग्रन्थों में सुधार या परिष्कार का कोई अधिकार नही है' समीचीन ही है। इस सन्दर्भ में निवेदन है कि आचार्य जी के उक्त वचन को श्रीमती परोपकारिणी सभा पर आक्षेप नही (क्योंकि सभा ने इस प्रकार का कोई कार्य किया ही नहीं है) अपितु सभा के अधिकार का परिसीमन समझना चाहिए।

यह एक तथ्य है कि आचार्य जी स्वामी जी के ग्रन्थों में स्वामी जी की कोई भूल नहीं मानते। मेरी जानकारी के अनुसार उन्होंने व्यक्तिगत वार्त्तालाप में किसी भी विद्वान् या शोधकर्ता के समक्ष इस आशय के विपरीत बात नहीं कही है। आचार्य जी की ऋषि-भक्ति के कारण ही उनके विषय मे यह अतिशयोक्ति प्रसिद्ध हो गई है कि वे स्वामी जी के लेख में बिन्दु, विसर्ग, मात्रा तक की भूल नहीं मानते। किन्तु इस प्रकार की दुहाई उन्होंने अपने लेखों तथा मंचों से दी है, कहना प्रामाणिक नहीं है।

हस्तलेखों की सुरक्षा

डॉ० भारतीय ने लिखा है—"स्वामी जी के ग्रन्थों के सभी लेख पूर्ण व्यवस्थित ढग से रजिस्टर में अंकित क्रम से पृथक्-2 लौह मंजूषाओ में सुरक्षित हैं।" आचार्य विश्वश्रवा: जी ने लिखा था— ऋषि के विभिन्न ग्रन्थों के विभिन्न हस्तलेख पृथक्-2 काष्ठ फलकों के अन्तर्गत रखे हुए हैं और उसके ऊपर कपड़े के बन्धो से बांधे गये हैं। काष्ठ फलकों की स्थूलता के कारण यदि कोई हस्तलेख के कतिपय पन्नों को इन प्रतियो से निकाल ले तब भी यह पता नहीं लगेगा कि उसके कुछ पन्ने गायब हो गये। आचार्य जी ने मुझसे व्यक्तिगत वार्तालाप में (बरेली मे अपने निवास स्थान पर) यह बताया था कि इसी तरीके से हस्तलेख के कुछ पन्ने कुछ लोगों द्वारा गायब कर दिए गए हैं। अत: यह कहना कि सम्पूर्ण हस्तलेख अथ से इति तक पूर्णतया सुरक्षित हैं—सत्य नही है। अस्तु, जो भी अब उपलब्ध है, उन्हें पूर्णतया सुरक्षित रखना चाहिए। परोपकारिणी सभा ऋषि के समग्र हस्तलेख को माइक्रोफिल्मिंग तथा पटलीकरण कराले। व्यवहार में फोटो प्रति का ही उपयोग ले तथा हस्तलेख की मूल प्रति की सुरक्षा की व्यवस्था अन्य हस्तलेख पुस्तकालय की सुरक्षा-शैली के अनुसार करे।

परोपकारिणी सभा और अनुसन्धान विभाग

ऋषि-ग्रन्थों का वस्तुगत याथातथ्य परिज्ञान परोपकारिणी सभा मे सुरक्षित हस्तलेख तथा पुस्तकालय की सहायता के बिना नही हो सकता। अत: अनुसन्धान विभाग परोपकारिणी सभा मे खुले, इसका प्रयत्न परोपकारिणी सभा को करना चाहिए। फिलहाल परोपकारिणी सभा दो कार्य अविलम्ब अपने हाथ में ले। (1) सभा के पुस्तकालय को व्यवस्थित करना। (2) हस्तलेखों की सूचियों का पुनर्निर्माण क्योंकि सभा के सयुक्त मन्त्री डा० भारतीय ने स्वयं लिखा है—"यह सत्य है कि सभा के पुस्तकालय को बहुत प्रयत्न करने पर भी व्यवस्थित नहीं किया जा सका है।...हस्तलेखों की सूचियां भी यदि दुबारा बनाई जाएं तो शोधकर्त्ताओं को उन्हें देखने में अधिक सुविधा होगी।"

(शेष पृष्ठ १० पर)

मानव शरीर के प्रत्येक ऐच्छिक कार्य-कलाप का आधार जैसे कोई मानसिक प्रक्रिया होती है, उसी प्रकार संसार के प्रत्येक सामाजिक संगठन का भी कोई न कोई दार्शनिक आधार होता है और उसके गुण दोषों के अनुसार उसी अनुपात से कार्य-कारण सरणि द्वारा कार्यों में गुण-दोषों का प्रतिबिम्ब परिलक्षित होता है। हिन्दुओं के पुराण, मुसलमानों का कुरान, ईसाइयों की बाईबिल, सिखों का गुरुग्रंथ साहब, बौद्धों का धम्मपद आदि तथा कम्यूनिस्टों का 'केपिटल' आदि ग्रंथ उन-उन के दार्शनिक आधार हैं। उन्हीं के गुण-दोषों के अनुसार उनके अनुयायियों के क्रिया-कल्प भी होते हैं। आर्य समाज इसका अपवाद नहीं। उसका भी कुछ दार्शनिक आधार है। किन्तु आर्य समाज के दार्शनिक आधार तथा अन्यों के दार्शनिक आधार में बहुत बड़ा अन्तर है। अन्यों के दार्शनिक आधार प्रायः उन मतों के संस्थापकों द्वारा प्रणीत ग्रंथ हैं, जबकि आर्य समाज का मूलाधार महर्षि कृत सत्यार्थ प्रकाश नहीं, अपितु वेद हैं। ऐसा क्यों है ?

प्रश्न महत्वपूर्ण है। महर्षि को अपने द्वारा प्रवर्तित संगठन आर्य समाज का मूलाधार सत्यार्थ प्रकाश रखना चाहिये था, किन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया और वेद को उसका मूलाधार घोषित कर दिया। आर्यों द्वारा पूछे जाने पर कि हम अपना मत क्या बतावें, महर्षि का सुस्पष्ट उत्तर था कि "तुम सब का वेद मत है। यदि ऐसा कहोगे कि हम दयानन्द स्वामी के मत में हैं तो कोई तुम से पूछेगा कि दयानंद स्वामी और उस के गुरु का क्या मत था तो तुम उत्तर नहीं दे सकोगे।" यदि विचार पूर्वक देखें तो पता चलता है कि महर्षि को आर्य समाज का मूलाधार सत्यार्थ प्रकाश रखना अभीष्ट भी नहीं था। इसी लिए उन्होंने वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना आर्यों का परम धर्म उद्घोषित किया था। यह इस लिए कि उन्होंने आर्य समाज की स्थापना कर के भी कोई नवीन मत नहीं चलाया था। उनकी घोषणा थी कि—"मेरा कोई नवीन कल्पना वा मत मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसको मानना-मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना-छुड़वाना मुझको अभीष्ट है।" (स्व मन्तव्या मन्तव्य प्रकाश) जब कोई नवीन मत नहीं तो फिर कोई ग्रंथ आधार के लिए क्यों हो ? हम श्रीयुत क्षितीश वेदालंकार के निम्न कथन से पूर्णतया सहमत हैं—"आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती ने कोई नई बात नहीं कही प्रत्युत ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्त

वेद के प्रचार में होवें सभी पुरुषार्थी

—यशपाल आर्य बंधु—

प्राचीन ऋषि महर्षि जो कुछ कहते आये, काल-क्रम से उस पर पड़े आवरण को हटाकर उन्होंने उद्घोष को दुहराया और वेद-प्रतिपादित, शाश्वत सत्य सनातन धर्म की रक्षा के लिए ही आर्य समाज की स्थापना की। इस दृष्टि से आर्यसमाज को कोई पृथक मत, मजहब या सम्प्रदाय न कहकर एक ऐसा आन्दोलन कहना चाहिए जो बुद्धिवाद का आश्रय लेकर वैदिक धर्म के शुद्ध स्वरूप को जनता के सामने उपस्थित करता है। इस लिए यदि आर्यसमाज को समझना हो तो वेदादि सत्यशास्त्रों में प्रतिपादित सच्चाइयों को समझना पर्याप्त है।" (आर्य समाज की विचारधारा पृष्ठ ३) यही कारण है कि आर्यसमाज का मूलाधार भी वेद ही है। आर्यसमाज की स्थापना इसी के प्रचार-प्रसार के लिए की गई थी।

आर्यसमाज का मूलाधार वेद इस लिए भी है कि वेद नित्य-निभ्रांति ईश्वरीय ज्ञान है। यह ऐसा ज्ञान है जो मानवीय कल्पना से उत्पन्न नहीं हुआ। ऐसे शाश्वत ईश्वरीय ज्ञान को छोड़कर किसी मानवकृत ग्रन्थ को मूलाधार क्यों बनाया जावे ? वेद स्वतः प्रमाण हैं जबकि अन्य सभी ऋषिकृत ग्रन्थ परतः प्रमाण हैं। वेद का स्थान कोई भी अन्य ग्रन्थ नहीं ले सकता। महर्षि के शब्दों में—"जो स्वयं प्रमाणरूप हैं कि जिनके प्रमाण होने में किसी अन्य ग्रंथ की अपेक्षा नहीं। जैसे सूर्य वा प्रदीप अपने स्वरूप से स्वतः प्रकाशक और पृथिव्यादि के भी प्रकाश होते है।" (स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश) ऐसे वेदज्ञान को छोड़कर अन्य किस को मूलाधार के रूप में रखा जा सकता था ? फिर वेद ऐसी पुस्तक है कि जिसमे मानव के लिए उपयोगी सभी विषयों का उल्लेख हुआ है। संसार में वेद के अतिरिक्त अन्य कोई भी ऐसा पुस्तक नहीं कि जिसमे मानवोपयोगी सभी विषयों का एक साथ समावेश हो। और फिर जिसमे भ्रांति का कहीं भी कोई अवकाश न हो। ईश्वर चूंकि सर्वज्ञ है अतः उसका ज्ञान निभ्रान्त है। वह अपने में पूर्ण है। इसमे मानव के अभ्युदय एवं निःश्रेयस की पूर्ण विधि निहित है। वेद की शिक्षायें भी किसी वर्ग, जाति, अथवा देश या काल विशेष के लिए नहीं अपितु सभी कालों के, सभी देशों के, सभी मानवों के लिए समान रूप से उपयोगी हैं। इसलिए मूलाधार के लिए वेद के अतिरिक्त अन्य कौन सी पुस्तक उपयोगी हो सकती थी ? महर्षि स्वयं सत्य के उपासक थे और वेद सब सत्य विद्याओं का ही पुस्तक है इस लिए महर्षि ने सत्य विद्याओं के पुस्तक वेद को आर्यसमाज का मूलाधार मानकर अपनी अनन्यतम सत्य-निष्ठा का परिचय दिया है। यह महर्षि की विशेषता है कि उसने आर्यसमाज की स्थापना शाश्वत सत्य वेदवाणी की नींव पर की है।

आर्य समाज का मूलाधार वेद है तो आर्य समाज को भी वेद का प्रचार-प्रसार करने के लिए सर्वदा, सर्वथा समुद्यत रहना ही चाहिये। आज मिथ्या मतवादी अपना प्रचार जोर-शोर से कर रहे हैं, किन्तु आर्यसमाज इस दिशा में पिछड़ रहा है। यह ठीक है कि आर्यसमाज में अंधा जोश नहीं है, होश भी है, पर ऐसा न हो कि केवल होश ही होश रह जाये और जोश सर्वथा समाप्त हो जाये। कभी आर्य जन एक गीत गाया करते थे कि—"वेद के प्रचार में होवें सभी पुरुषार्थी।" किन्तु आज यह ध्वनि आर्य समाज मन्दिरों से सुनाई नहीं देती। कितना सार भरा है इस छोटी सी पंक्ति में ? अतः वेद प्रचार सप्ताह के अवसर पर प्रत्येक आर्य सोचे कि आज क्यों वलवले खामोश हैं ? आज क्यों उत्साह शान्त है ? क्या ऋषि ऋण चुक चुका है ? क्या अब कोई कर्त्तव्य शेष नहीं ? नहीं ! नहीं !! अभी तो कुछ भी नहीं हुआ। अभी तो बहुत कुछ करना शेष है। अतः आर्यसमाज को पहले से भी अधिक सक्रिय होने की आवश्यकता है। आइये ! श्रावणी के पावन पर्व पर हम वेद के प्रचार के लिए एक बार फिर प्रतिज्ञाबद्ध होवें और फिर वही गीत गायें कि—

"गुंजायेंगे वेदों को हम गीत गा कर
दिखायेंगे दुनिया पुरानी बना कर।"

पता—आर्य निवास, चन्द्र नगर
मुरादाबाद-२४४०३२

भरा जिनमें जीवन संदेश

—विश्वमित्र गुप्त—

भरा जिनमें जीवन संदेश, ज्ञान का जो अक्षय भण्डार।
वेद हैं आदि शक्ति के मूल, ईश का सर्व प्रथम उपहार॥
दूर जो करते हैं अज्ञान, सभी मानव हैं एक समान।
सिखाया करते जो सौहार्द, सूक्तियाँ सुन होता कल्याण॥
न कोई पा पाया है पार, दर्शनों के होते संवाद।
मनीषी ! करते हैं दिन-रात, बाँचते शोधित वाद-विवाद॥
व्यथित मानव का करते त्राण, सुख का बतलाते जो भेद।
जगत के सब धर्मों के स्रोत, हमारे हैं ये पावन वेद॥
वेद हैं सब धर्मों के मूल, सृष्टि के प्रथम-पुण्य-मय ग्रन्थ।
दिया ईश ने हमको यह ज्ञान, दिखाया मानवता का पन्थ॥
ज्ञान के जो हैं अक्षय पुंज, बिखेरा करते हैं आलोक।
जगत में जिनकी पावन ज्योति, मिटाया करती मन का शोक॥
शान्ति का देते जो उपदेश ! गूढ़ है जिसमें तत्व विशेष।
आर्य हो जाए सारी सृष्टि ! विषमता रहे न जग में शेष॥
कर्म को देते सदा महत्व, कर्म में बाँटें सारे वर्ण।
मनुज जाति है सारी एक, नहीं है कोई वर्ण-कुवर्ण।
ज्ञान की बहती निर्मल गंग ! नहाते उसमें जन जो विज्ञ।
दिया करते पावन संदेश, उजाला देते रहते दिव्य॥
पढ़ाते मानवता का पाठ, नहीं है ऊंच-नीच का भेद।
परस्पर करो सभी से प्रीति ! यही बतलाते मेरे वेद॥

पता—दिलेर गंज, शाहबाद, हरदोई।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के कार्यक्रम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद, दिल्ली के तत्वावधान में श्री कृष्ण जनमाष्टमी आर्यसमाज डी० सी० एम० रेलवे कालोनी में श्रीमती सरला मेहता की अध्यक्षता में और गणेश लाईन डी० सी० एम० रोड़ स्थित मैदान किशनगंज रेलवे स्टेशन के समीप पं० राकेश रानी की अध्यक्षता में मनायी जायेगी। वीर अर्जुन के सम्पादक श्री अनिल नरेन्द्र और प्रेमचन्द्र गोयल मुख्य अतिथि होंगे।

विशेष लेखमाला (५)

ऋषि के स्वसृ वंश सम्बन्धी तथ्य तथा एतद् विषयक भ्रम निवारण

करसनजी का दौहित्र वंश : यह हम जानते हैं कि मूलशंकर के गृह त्याग और अपने छोटे पुत्रों के देहान्त के कारण करसनजी की सम्पति का स्वामित्व उनकी पुत्री प्रेमबाई को ही प्राप्त हुआ था। प्रेमबाई का विवाह मंगलजी रावल के साथ हुआ था। मंगलजी के पुत्र का नाम बोघा था। बोघा का पुत्र कल्याण जी, और कल्याणजी का पुत्र पोपट लाल हुआ। इस प्रकार पोपटलाल करसनजी के दौहित्र के वश मे तथा ऋषि की बहन के वश में आते हैं।

वर्तमान लेखको मे एक व्यर्थ का विवाद चल पड़ा है कि पोपटलाल और प्रभा शंकर एक ही व्यक्ति के दो नाम हैं या ये दोनो पृथक् नामो वाले दो भाई थे। हमारी दृष्टि में यह विवाद निरर्थक ही है क्योंकि स्वामी जी की जीवनी से इसका सीधा सम्बन्ध नही है, तथापि भ्रम निवारणार्थ इस सम्बन्ध मे विचार करना आवश्यक है। वर्तमान लेखको को पोपट लाल और प्रभाशकर को लेकर जो भ्रम हुआ है उसका कारण उपलब्ध साहित्य में एतद्विषयक उल्लेख है जिनकी जानकारी आवश्यक है।

ऋषि दयानन्द की प्रारम्भिक जीवनी

प्रथम : देवेन्द्रनाथ द्वारा सग्रहीत तथा पं घासीराम द्वारा सम्पादित दयानंद चरित का प्रथम भाग तथा द्वितीय भाग का प्रथम परिशिष्ट, जिसमे ऋषि के जन्मस्थान, वश और प्रारम्भिक जीवन से सम्बन्धित घटनाओ का प्रामाणिक वर्णन है। परिशिष्ट भाग मे दिए गए व्यक्तियों एवं गांवो के नाम प्राय अशुद्ध छपे हैं।

द्वितीय देवेन्द्रनाथ लिखित ऋषि दयानन्द के जन्मस्थानादि का निर्णय जो बंगाली से गुजराती मे अनूदित होकर प्रकाशित हुआ है प्राय. मुद्रण दोष रहित, शुद्ध और प्रामाणिक है।

तृतीय : विजय शकर द्वारा प्रकाशित दयानन्द जन्मस्थान निर्णय हिन्दी ग्रन्थ है। मुद्रण दोषो के अतिरिक्त इसमें परस्पर विरुद्ध कथन भी हैं। पोपटलाल विषयक भ्रांति का कारण भी यही पुस्तक है। चतुर्थ : श्री कृष्ण शर्मा ने 'महर्षि दयानन्द का वंश-परिचय' नामक पुस्तक हिन्दी मे लिखी है। इसकी अधिकाश सामग्री उपर्युक्त पुस्तकों से ही ली गई है, तथापि अनेक अनुमानो और परिकल्पनाओ से परिपूर्ण एवं मुद्रण दोषो से युक्त यह पुस्तक भी पाठकों मे भ्रम पैदा करती है। पोपटलाल विषयक भ्रम इस पुस्तक के कारण भी उत्पन्न हुआ है। वर्तमान चर्चा में इन्ही पुस्तकों के आधार पर हम विवेचना करेंगे, इसीलिए इन ग्रथो का परिचय दिया गया है।

'नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती' ग्रंथ के लेखक डॉ० भारतीय ने पृष्ठ 4 पर लिखा है "बोघा के पुत्र कल्याणजी हुए और कल्याणजी के दो पुत्र पोपटलाल और प्रभाशकर रावल थे।" आगे इसी ग्रन्थ के परिशिष्ट मे डॉ० भारतीय लिखते हैं "दयानन्द जन्मस्थान निर्णय (विजयशकर मूलशकर) तथा श्री कृष्ण शर्मा के अनुसार निर्णय पोपट लाल बड़े तथा प्रभाशकर छोटे थे। किन्तु देवेन्द्रनाथ ने प्रेमबाई का एक ही प्रपौत्र माना है प्रभाशंकर कल्याणजी रावल। वे पोपटलाल को ही प्रभाशकर का पुकारने का नाम मानते हैं। हमारे विचार से प्रभाशकर तथा पोपटलाल पृथक्-पृथक् हैं (पृ० 547)। भारतीय जी के देवेन्द्र बाबू से सहमत न होने तथा इस विषय मे भ्रम होने का कारण दयानन्द जन्मस्थान निर्णय के दो स्थलों के मुद्रण दोष तथा श्री कृष्ण शर्मा की उपर्युक्त पुस्तिका है। इसलिए हम पूर्वोक्त सभी पुस्तको के प्रासगिक उद्धरण यहाँ दे रहे हैं।

1. देवेन्द्रनाथ लिखते हैं इस प्रपौत्र का नाम प्रभाशकर कल्याणजी रावल है, परन्तु साधारणत: पोपट रावल के नाम से परिचित है।

2. कल्याणजी का पुत्र उपर्युक्त प्रभाशंकर वा पोपट रावल हुआ।

दयानन्द जन्मस्थानादि निर्णय मे निम्न उद्धरण मिलते हैं। इस पुस्तक के पृष्ट 22 और 23 के बीच में पोपटलाल के वक्तव्य की एक फोटो प्रति है जिसमे लिखा है "तेना दीकरा कल्याणजी तेना दीकरा पोपट लाल तथा प्राणशकर।"

स्वामी जी के बाल सखा इब्राहिम (टकारा मे गुजराती उच्चारण के अनुसार। अभराम बापा नाम से प्रख्यात थे) ने अपने वक्तव्य में कहा था: "जिस मकान मे इस समय पोपटलाल के भाई प्राणशंकर रहते हैं वही स्वामी दयानन्द का जन्म गृह है (पृ० 22)!

3. आज उनकी सन्तान के ही हाथ मे करसनजी की सम्पत्ति विद्यमान है। वर्तमान मे पोपटलाल तथा प्राणशकर इसका उपयोग कर रहे है (पृ 100)।

4. 'जन्मस्थानादि निर्णय' गुजराती पुस्तक में पोपटलाल का एक आवेदन पत्र उद्धृत किया गया हैं "तेनो दीकरो छू अर्जदार प्रभाशकर उर्फ (यह अरबी शब्द संस्कृत 'वा' का पर्याय है) पोपट नामे छूं" (पृ० 25)।

उपर्युक्त एकाधिक स्पष्ट प्रमाणो के होते हुए भी भ्रम का कारण उपर्युक्त पुस्तको मे ही है। यथा-दयानद जन्मस्थान निर्णय मे अशुद्ध पाठ निम्न हैं—

"इनका पुत्र मैं पोपटलाल रावल तथा प्रभाशकर रावल हैं।" (पृ० 81.)

यहा उर्दू के 'उर्फ' शब्द का गुजराती अनुवाद अशुद्ध हो गया तथा 'उर्फ' को 'वा' के स्थान पर और (तथा) का पर्याय मान लिया। इसी पुस्तक मे अन्यत्र लिखा है "कल्याणजी के दो पुत्र हुए-पोपटलाल तथा प्रभाशकर। वर्तमान मे इन्ही प्रभाशंकर व पोपट के हाथ में करसनजी की सब मलकियत है (पृ० 84)। यहा भी 'तथा' के स्थान 'अथवा' चाहिए और 'व' के स्थान मे 'वा' या 'अथवा' चाहिए। यह मुद्रण दोष या अनुवाद दोष का कारण है। आश्चर्य की बात है कि एक ही पुस्तक मे तीन स्थानों पर पोपटलाल का अपर नाम प्रभाशकर बताया गया है और दो स्थलो पर मुद्रण या अनुवाद दोष से इसके विपरीत बताया गया है तथापि सम्पादक ने इस पर कोई टिप्पणी नही लिखी। इसी का यह परिणाम निकला कि वर्षो पश्चात् स्वामी जी की जीवनी लेखको को भ्रम हुआ तथा इस सब की आलोचना का प्रसंग उपस्थित हुआ।

दयानन्द चरित, द्वितीय भाग, द्वितीय आवृत्ति, पृ० 372 मे भी कल्याणजी का पुत्र पोपट रावल हुआ, ऐसा छप गया है। दोनों नामो के बीच मे मुद्रण दोष के कारण 'वा' छूट गया। इसी कारण यह भ्रम उत्पन्न हो गया। गुजरात से दूर के लेखकों की बात तो क्षम्य मानी जा सकती है किन्तु राजकोट निवासी श्री कृष्ण शर्मा भी इसी भ्रम के शिकार हुए। उन्होने लिखा है "मंगलजी के पुत्र बोघा रावल थे, उनके ज्येष्ठ पुत्र कल्याणजी तथा उनके पुत्र पोपटलाल रावल और कनिष्ठ प्रभाशंकर रावल हुए।" उपर्युक्त उद्धरणो से सिद्ध है कि पोपटलाल का ही अपर नाम प्रभाशंकर था। अर्थात् उनका मूल नाम प्रभाशकर था किन्तु वे पोपटलाल के नाम से जाने जाते थे। देवेन्द्रनाथ का यह कथन सत्य है।

प्रत्यक्ष प्रमाण . मैं स्वयं अपनी साक्षी से कह सकता हू कि पोपटलाल का अपर नाम प्रभाशकर था और प्राणशंकर उनके छोटे भाई थे। इन दोनों के साथ मेरा निजी परिचय था। पोपटलाल के तृतीय पुत्र जयन्तीलाल तथा प्राणशंकर के तृतीय पुत्र प्रभुलाल मेरे सहपाठी थे। पारस्परिक मित्रता के कारण हम एक दूसरे के घर जाया करते थे। टकारा आर्य समाज के तत्वावधान मे चलने वाले पारिवारिक सत्संगो के प्रसंग में हम इन दोनो भाइयों के घर कई बार गए हैं। पोपट लाल का निधन सम्भवत. 1947 में हुआ था। तब, तक वे प्रतिदिन बाजार से निकलते समय हमारी दर्जी की दुकान पर कुछ समय बैठा करते थे। जब दोनो भाइयो की सम्पति का बंटवारा हुआ तो ऋषि का जन्मस्थान छोटे भाई प्राणशकर के हिस्से मे गया। उपर्युक्त विवेचन से यह सिद्ध होता है कि प्रभाशकर का नाम ही पोपटलाल था और प्राणशंकर उनसे छोटे थे। इन दोनों के वशज आज भी विद्यमान हैं।

इस विषय का समापन करने से पूर्व एक बात लिखना आवश्यक है कि लेखक या अन्वेषक को अपने निष्कर्ष को प्रकट करने से पूर्व अपने विषय की पूर्णतया आत्मसात् कर लेना चाहिए अन्यथा वे स्वय भ्रमित होते हैं और पाठको को भी भ्रमित करते हैं। स्वामी दयानन्द

प्रो० दयालजी भाई आर्य,
प्राध्यापक, आयुर्वेदिक कालेज,
जामनगर।
अनुवाद, संशोधन व सम्पादन—
डा० भवानीलाल भारतीय

के जीवन के विषय में पहले से ही अनेक विवादास्पद मुद्दे हैं, उनमे अपने अज्ञानवश नए मुद्दो का प्रवेश नहीं कराना चाहिए।

प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु ने 'दयानन्द सन्देश' दिल्ली के एक अंक में 'नवजागरण के पुरोधा' की समीक्षा करते हुए लिखा है : "पृष्ठ 4 पर शैशव और अध्ययन के अध्याय मे ऋषि की बहिन के वशजों पोपटलाल तथा प्रभाशंकर की चर्चा की गई है। पुन: पृ० 547 पर देवेन्द्र बाबू के अनुसार दोनो को एक ही व्यक्ति बनाया गया है। इससे भ्रम उत्पन्न होता है। टंकारा में अब भी ऐसे व्यक्ति जीवित हैं जिन्होने इन दोनों को देखा था तथा दोनो के वंशज आज जीवित हैं।" जिज्ञासु जी दो वर्ष पूर्व शिवरात्रि (1983) पर टंकारा में मुझ से मिले थे। उस समय इस विषय के साथ-साथ लाला भक्त, जामनगर द्वार से ऋषि का टकारा त्याग आदि विषयों पर मैंने उन्हे अपने विचारो से अवगत कराया था। उस समय उन्होंने ये बातें अपनी डायरी मे नोट भी कर ली थीं। सम्भवतः 'दयानन्द सन्देश' की उपर्युक्त पंक्ति में

(शेष पृष्ठ ९ पर)

श्रुति सुधा का सुखद पर्व

श्रावणी

—आर्या मीरा यति—

हमारे यहाँ पर चार मुख्य त्योहार होते हैं श्रावणी, विजयदशमी, दीपावली और होलिकोत्सव। जो क्रमशः ज्ञान-बल, ऐश्वर्य और श्रम के द्योतक हैं। किसी भी समाज को समुन्नत होने के लिए इन चारों की ही आवश्यकता है। इनमें से किसी एक को निकाल देने से समाज सुख विहीन हो जाता है किसी राष्ट्र में बल, धन व प्रेम तो है, किन्तु वह राष्ट्र ज्ञान शून्य है तो आप देखेंगे कि उस राष्ट्र की कभी उन्नति नहीं हो सकती। इसी प्रकार ज्ञान-धन और प्रेम होने पर भी अगर शक्ति नहीं है तो वहां भी सुख नहीं हो सकता है। क्योंकि "वीर भोग्या वसुन्धरा" इस उक्ति के अनुसार संसार वीरों के लिए बना है। धनाभाव में हम आर्यावर्त्त के वीर शिरोमणि महाराजा प्रताप को वनवासियों जैसा जीवन बिताते देखते हैं। इसी प्रकार ज्ञान, बल और धन होने पर भी जहां प्रेम और श्रम नहीं है, वहाँ भी ईर्ष्या-द्वेष की आग धधकती रहती है और लोग उसमें जलते रहते हैं।

श्रावणी का पर्व ज्ञान का सन्देश लेकर आता है। परमेष्ठी ने भी जब आदि सृष्टि में मानव को उत्पन्न किया, तब उन्हें ज्ञान-विज्ञान की धरोहर के रूप में वेद प्रदान किया। विना ज्ञान के मनुष्य का जीवन बेकार है। जिस मनुष्य को ज्ञान होता है वह देवत्व को प्राप्त करता है,और ज्ञानहीन मनुष्य बिना सींग और पूंछ के पशु माना जाता है। इसीलिए तो श्रावणी के पर्व को उपाकर्म भी कहते हैं। जिसका तात्पर्य है आज के दिन सब लोग वेद पढ़ना प्रारम्भ करें और वर्ष भर वेद का स्वाध्याय करते रहें : जितना आप वेद को पढ़ेंगे उतनी ही ज्ञान की वृद्धि होगी। उतना ही जीवन का सुधार होगा।

वेद जैसा पावन ग्रन्थ अन्य कोई नहीं। इसका एक-२ मन्त्र शिक्षाप्रद है। सबसे प्रथम ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र को ही देख लीजिए।

'**अग्निमीडे पुरोहितम्**'—भक्त भगवान से सविनय निवेदन करता है—हे अग्नि स्वरूप! परमेश्वर मैं तेरी स्तुति करता हूं क्योंकि तू प्रकाश का पुञ्ज है, सारे संसार को प्रकाश देने वाला है, तेरी चमक से यह सारा संसार चमचमा रहा है मेरे हृदय के अन्दर भी तो तू ही प्रकाशित हो रहा है। हे अग्नि मैं तेरी स्तुति क्यों न करूं। फिर अन्य मन्त्र देख लीजिए-

स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव"—हे प्रभो हम कल्याण के पथ पर चलते रहे, जिस तरह सूर्य—चन्द्रमा चलते है। फिर सामवेद के अन्दर एक मन्त्र में भगवान से क्या मांगते हैं—"**मा प्रगाम पथोवयम्**"—प्रभो हम सुपथ पर चलें, कुपथ पर कभी भूलकर भी पाव न रक्खें। इसी प्रकार स्तुति प्रार्थनोपासना के अन्तिम मन्त्र में कहते हैं—"**ओं अग्ने नय सुपथा राये**"(यजु०)—हे अग्नि स्वरूप परमेश्वर! हमें सुपथ की ओर ले चलो। इसी प्रकार से "विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव॥" (यजु० ३०३)—हे समस्त संसार को उत्पन्न करने वाले देव! मैं याचना करता हूं कि मेरे जीवन के दुर्गुण, दुर्व्यसन को दूर कर दो।

वेद माता स्वाध्याय करने वाले की झोली में क्या-क्या भर देती है यह हम स्वयं मां से ही पूछ लेते हैं। "स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्ता पावमानी द्विजानाम्। आयुः प्राणं प्रजा पशु कीर्ति द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्। (अथर्व० १९-११-१) मैंने वेद माता की स्तुति की है। वह आयु, बल, सन्तान, पशु, यश, धन, ब्रह्मचर्यस् वेदाभ्यास का तेज इत्यादि क्या-२ दे देती है।

इस प्रकार से चारों वेदों में एक से एक बढ़िया मन्त्र हैं। हम जब इनका स्वाध्याय करते है तो बहुत आनन्द आता है। और जीवन भी उन्नत होता है। वेद माता है इसी लिए वह अपनी पवित्र ऋचाओं द्वारा शिक्षा देती है—

"उद्यानं ते पुरुष नावयानम्"

—हे मेरे प्यारे पुत्रो! तुम्हारा उत्थान हो, पतन न हो। तुम इस धरती पर उन्नति करने के लिए आये हो इसीलिए वही कार्य करो जिससे तुम्हारा जीवन मनुष्य योनि से भी ऊपर उठकर ऋषित्व, देवत्व की कोटि को प्राप्त करे।

जब तक वेद का स्वाध्याय नहीं करेंगे तब तक ज्ञान की प्राप्ति कैसे हो सकती है। आजकल अधिकतर लोग जो अपने आपको आर्य कहते हैं वह भी वेद का स्वाध्याय नहीं करते उनकी भी रुचि उपन्यास पढ़ने में रहती है। इसलिए प्रत्येक आर्य नर-नारी से मेरी प्रार्थना है कि वह रक्षा-बन्धन से लेकर जन्माष्टमी तक वेद सप्ताह मनाते हुए प्रतिज्ञा करें कि हम वर्ष में वेद का स्वाध्याय करेंगे। यदि अधिक नहीं हो सकता तो कम से कम प्रतिदिन स्वामी दयानन्द जी महाराज की लिखी हुई आर्याभिविनय में १०८ मन्त्रों की जो माला पिरोई हुई है, उसका एक मन्त्र प्रतिदिन अर्थ सहित अवश्य पढ़ें। इसी प्रकार से आचार्य अभयदेव जी की लिखी हुई वैदिक विनय में ३६५ दिनों के लिए एक-एक मन्त्र की व्याख्या लिखी हुई है। उसको व्याख्या सहित पढ़ें तो देखो कितना लाभ होगा। इससे हम ऋषि की आज्ञा का भी पालन कर सकेंगे, जिन्होंने आर्य समाज के तीसरे नियम मे लिखा है।

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है।

महर्षि दयानन्द जी महाराज का हमारे लिए एक बहुत बड़ा मार्ग दर्शन है। नहीं तो उनसे पहले हम भागवत सप्ताह ही मनाकर मुक्ति द्वार खुला हुआ समझते थे।

इस प्रकार मानव वाणी के पीछे तो हमारे सप्ताह पर सप्ताह व्यतीत होते थे। किन्तु दैवी वाणी को कोई नहीं जानता था। यह उसी देव की देन है कि आज हम मानव वाणी का सप्ताह न मनाकर देव वाणी (वेद-वाणी) का सप्ताह प्रत्येक आर्यसमाज में मना रहे हैं। दैवी वाणी वेद तो सदैव ही कल्याण ही कल्याण करती है।

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्य.

मध्य काल में यह पर्व भाई-बहन के पवित्र प्रेम का प्रतीक भी बन गया था। इस दिन सब बहिनें अपने भाइयों के हाथ में प्रेम का प्रतीक राखी का धागा बांधा करती थीं और भाई-बहिन की रक्षा के लिए अपने को पूर्ण समर्पित कर दिया करते थे। इसका महत्व न केवल हिन्दुओं में अपितु मुसलमान बादशाहों तक माना जाता रहा है। महारानी कर्मवती ने जब हुमायूं को राखी भेजकर अपना भाई बनाया था तब उसके मन में एक क्षण के लिए भी हिन्दू मुसलमान का भाव नहीं था, अपितु विशुद्ध भाई बहन का भाव था। हुमायूं ने भी महारानी कर्मवती की सहायता के लिए एक क्षण की भी देरी नहीं लगाई। यद्यपि वह जानता था कि कर्मवती का जिसके साथ युद्ध है वह मुसलमान है। किन्तु भाई-बहन के विशुद्ध प्रेम में मत-पन्थ आड़े नहीं आ सकते। इसलिए उसने अपनी परवाह न करके इन राखी के धागों का सम्मान करते हुए अपनी बहन की लाज और मान-सम्मान बचाने के लिए जो किया जा सकता था किया।

आज भी राखी के यह धागे उसकी पावन परम्परा का निर्वाह करते हैं। और हर भाई अपनी बहन के सुख-दुख में सदैव साथी रहता है। इस कारण इस पावन परम्परा के अनुसार जो पर्व मनाये जाते हैं उनसे हमें अवश्य शिक्षा प्राप्त करनी चाहिये।

पता—आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर

हंसराज मौडल स्कूल पंजाबी बाग के बढ़ते चरण

विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी हंसराज मौडल स्कूल के छात्रों ने परीक्षाओं में अभूतपूर्व सफलता अर्जित करके अपनी परम्परा को स्थिर रखा। अ० भा० सीनियर स्कूल सर्टीफिकेट परीक्षा में विज्ञान ग्रुप में ८४ में से ७६ छात्र प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। दो छात्राओं, ज्योति अब्रोल और पूनम चावला, ने ८५ प्रतिशत अंक प्राप्त कर उच्च स्थान प्राप्त किया। विज्ञान ग्रुप के १५९ छात्रो ने विशेष योग्यता प्राप्त की। १४ छात्रों ने तो चारों विषयों में विशेष योग्यता अर्जित की। पी० सी० एम० में ३३ छात्रों ने ८०% से ऊपर अंक अर्जित किए जिसमें राजकुमार बत्रा ने अधिकतम ९६% प्रतिशत अंक प्राप्त किये ह्यूमैनिटीज ग्रुप में ३८ छात्रों में से २२ प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण हुए, जिसमें निशि तनेजा ने ८१.५% अंक प्राप्त किए। इसी प्रकार कामर्स ग्रुप में भी ५० छात्र प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण हुए। गणित में रजनीश ने शतप्रतिशत, फिजिक्स में दिनेश सेठ ने ९८%, तथा बायोलौजी में ज्योति अब्रोल ने ९६% अंक अर्जित किए।

आलइंडिया सैकेन्डरी स्कूल परीक्षा में १५१ छात्रों ने भाग लिया जिनमें अधिकांश प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए और कोई भी अनुत्तीर्ण नहीं हुआ। इस स्कूल के अनेक छात्र आई० आई० टी०, इंजीनियरिंग कौलेज, मैडिकल कौलेज आदि की प्रवेश परीक्षाओं मे उत्तीर्ण होकर सम्बन्धित कालेजों में प्रवेश प्राप्त कर चुके है। यह स्कूल इसी प्रकार प्रगति करता हुआ विद्या-दान के क्षेत्र में अग्रणी बने। यही सबकी कामना है।

पत्रों के दर्पण में

मुझे तलाश है आर्य परिवार की

मैं इसे अपना सौभाग्य समझता हूं कि मैं स्वयं तथा मेरा परिवार आर्य समाजी हैं। हमारे घर पर नित्य प्रति संध्या हवन होता है। हम सब महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों को दृढ्य से स्वीकार करते हैं। मेरे तीन पुत्र हैं। तीनो स्वस्थ, सुन्दर, सुपठित और सुस्थापित है। दो बड़े पुत्र इंजीनियर हैं तथा तीसरा फ्लाइट ऑफिसर है। हमारी यह प्रबल इच्छा है कि तीनों का विवाह किसी 'आर्य परिवार, की कन्या से हो। कन्या का सुपठित, सुन्दर और स्वस्थ होने के साथ-साथ आर्य विचारो का होना आवश्यक है। मेरे बड़े पुत्र की आयु २६ वर्ष है तथा वह बड़ौदा मे कौम्पटन ग्रीव्स में मार्केटिंग इंजीनियर के पद पर २४००/-वेतन ले रहा है। सर्व प्रथम उसके विवाह की चिन्ता है। तदनन्तर छोटे पुत्रों का विवाह भी इसी प्रकार आर्य परिवार की आर्य कन्या के साथ करना चाहूगा। पौराणिक परिवारों की सुयोग्य कन्यांओ के लिए तो बहुत आग्रह हो रहे हैं, किन्तु आर्य परिवार की सुयोग्य कन्या अभी तक उपलब्ध नही हो पाई। अन्तर्जायीप विवाह संस्था भी मेरी समस्या सुलझा नहीं पाई है। मूलतया हम हरयाणा (गुड़गांव) के निवासी हैं किन्तु पर्याप्त समय से बड़ौदा में बस गए हैं। दोनों स्थानों पर चल और अचल सम्पत्ति है। क्या कही से मुझे कुछ ऐसे आर्य परिवारों के पते सुलभ होंगे ?

—एम० आर० शर्मा, ६८०, शरद नगर, तरसालीरोड़, बड़ौदा,–३९०००९

राष्ट्र निर्माण का संकल्प लें

हमने अपने स्वाधीनता दिवस की अड़तीसवी वर्षगाठ मनाई। नि: सन्देह हमने भौतिक क्षेत्र में असीमित प्रगति की है। निर्माण, विज्ञान टैक्नालाजी, सेना व खाद्यान्न के क्षेत्रो में आश्चर्य जनक विकास हुआ है। राष्ट्र का बाह्य स्वरूप पूर्णतया परिवर्तित हो गया है। उद्योग की प्रगति भी कम गौरव की बात नही है। लेकिन इसके विपरीत उसी गति से राष्ट्रीय चरित्र का पतन हुआ है ऋषि मुनियों की पवित्र संस्कृति के देश में आज मानवता कराह रही है। सारे देश में निम्न स्तर से लेकर उच्च स्तर तक, प्रत्येक क्षेत्र में भीषण भ्रष्टाचार, अकर्मण्यता, स्वार्थान्धता का साम्राज्य है। भाई-भाई के खून का प्यासा हो गया है। साम्प्रदायिक तनाव, अराष्ट्रीय गतिविधियां राष्ट्र के माथे पर कलंक बनी हुई है। घूस-खोरी का बाजार गर्म है। तस्करी, कालेघन की बहुतायत है अपहरण, बलात्कार डकैती, हत्या आज के युगमें साधारण सी बात है, दहेज के नाम पर हत्याएं निरन्तर हो रही हैं। व्यवस्था, शान्ति की जिम्मेदार पुलिस स्वयं भ्रष्टाचार के शिकंजे में फंसी हुई है। भौतिकता, मानवीयता, सच्च-रित्रता, सद्भावना लुप्त होती जा रही है। यदि इन्सान की इन्सानियत नही रहेगी तो इस भौतिक विकास का क्या होगा ?

आइये ! हम एक महान् राष्ट्र के निर्माण का और भारत में फैल रही दानवी प्रवृत्तियो को समाप्त करने का संकल्प लें यही स्वाधीनता के लिए मर मिटने वालो के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

—राधेश्याम, आर्य, ऐडवोकेट,—मुसाफिरखाना, सुलतानपुर

शाहपुरा नरेश का हिन्दी प्रेम और हम

११ अगस्त के अंक में "शाहपुरा के आर्य नरेश का हिंदी के लिए योगदान" पढ़ा। शाहपुर नरेश ने उस समय जब देश में अंग्रेजों का शासन था तथा रियासतो में उर्दू का बोलबाला था, अपने राज्य के कार्यालयों में हिंदी को स्थान दिया। उन्हे इसकी प्रेरणा महर्षि दयानन्द के सम्पर्क में आने से मिली। एक ओर शाहपुर नरेश का आदर्श हमारे सामने है जिन्होने विपरीत परिस्थितियो मे भी हिंदी को महत्व दिया, किन्तु आज जब भारत स्वाधीन हो चुका है, अनेक राज्यो की राजभाषा हिंदी है और संविधान के अनुसार केन्द्रीय सरकार की भी राजभाषा हिंदी है, हममें से कितने ऐसे व्यक्ति हैं जो अपने कार्यालयों या व्यापारिक प्रतिष्ठानों तथा धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं का कार्य हिंदी में कर रहे हैं। आज ऐसी अनेक आर्य समाज हैं जिनका लेखन सामग्री अंग्रेजी में छपी है, उनका पत्र व्यवहार अग्रेजी में होता है, बैठकों की कारंवाई अंग्रेजी में लिख जाती है, नये भवन बनने पर दानदाताओं के नाम का पत्थर अंग्रेजी में लिखवाया जाता है। क्या हम स्वामी दयानन्द के प्रति अपनी श्रद्धा इसी रूप में व्यक्त करना चाहते हैं। स्वामी दयानन्द के नाम पर देश मे सैकड़ों शैक्षिक संस्थाए चल रही हैं। स्वाधीनता से पूर्व उनके नाम की संस्थाओं में हिंदी को आज की अपेक्षा कही ऊंचा स्थान प्राप्त था, वह स्थान आज नही है।

—हरिबाबू कंसल ई ६/२३, वसन्त विहार, नई दिल्ली-५७

आर्य समाज अपना रेडियो स्टेशन चलाए

११ अगस्त के अंक में श्री ज्ञानचन्द गोयल का "आर्य समाज अपना रेडियो स्टेशन" चलाए, एक सराहनीय सुझाव है। फिलहाल भारत में एक अति शक्तिशाली रेडियो स्टेशन की स्थापना के लिए तन, मन, धन से शीघ्र प्रयास किया जाना चाहिए। ईसाइयों द्वारा भारत में ईसाइयत के प्रचार के लिए मालद्वीप (हिन्द महासागर) में शक्तिशाली रेडियो स्टेशन है जिससे भारत के ग्रामीण, वनवासी एवं सीमान्त क्षेत्रों हेतु सभी भारतीय भाषाओं में प्रति दिन प्रचार किया जाता है। रेडियो स्टेशन से वेदवाणी, भारतीय धर्म एव संस्कृति के प्रचार हेतु भारत सरकार अनुमति देगी इसमें सन्देह है। इसका एक मात्र विकल्प है कि विश्व का एकल हिन्दू राष्ट्र नेपाल अपने यहां वेदवाणी, हिन्दू धर्म एवं संस्कृति के प्रचारार्थ एक अति शक्तिशाली रेडियो स्टेशन की स्थापना के लिए कदम उठाये। धन के लिए सभी राष्ट्रीय समाचार पत्रों में अपील की जाय।

—वि० मणि भट्ट ज्योतिर्मठ (हिमालय)

(२) भारत का भूत वर्तमान तथा भविष्य वैदिक मूल्यों से बंधा है। गाय, गंगा तथा गीता का देश भारत संपूर्ण विश्व को मानवता का मार्ग दिखा सकता है। परन्तु यह तब संभव है जब इस भारत मे अंधविश्वासों के विरुद्ध सामाजिक क्रान्ति होगी। और यह क्रान्ति तब होगी जब आर्य समाज जागेगा आधुनिक संचार माध्यमों के द्वारा आर्य समाज घर घर पहुंचने का प्रयास करे, यह समय की मांग है। आर्य समाज स्वतंत्र टासमीटर लगाने की अनुमति भारत सरकार से मागे और उस पर सभी भाषाओं में वेद प्रचार किया जाय। श्री लंका से बाईबल का प्रचार हो सकता है तो भारत से वेद-प्रचार क्यो नहीं ?

—बलदेव खत्री, २२३, जीवनदीप ११वा रास्ता खार, बम्बई ५२

(३) श्री ज्ञान चन्द गोयल के इस रहस्योद्घाटन से कि भारत में ईसाइयों का रेडियो स्टेशन है और वह ३४० मीडियम वेव तथा २५/३१ शार्ट वेव में प्रतिदिन प्रसारण करता रहता है सारे आर्यजगत् को हैरत मे डाल दिया है। पिछले दिनों सिखों ने इस ओर पर्याप्त परिश्रम किया और स्वर्ण मन्दिर में मशीनरी भी ले आये, परन्तु भारत सरकार ने इस प्रसारण केन्द्र की अनुमति प्रदान नहीं की। भारत में रेडियो एक सरकारी संस्था है। अनेक बार संसद में विरोधी दलों ने इसे स्वायत्त सस्था बनाने का प्रयत्न किया परन्तु सरकार ने वह स्वीकार नही किया।

श्री गोयल ने लिखा कि ईसाइयों के नई दिल्ली में दो और झांसी में दो रेडियो स्टैशन हैं। क्या यह भारत के रेडियो विभाग की जानकारी में नहीं है या यह सब प्रायोजित कार्यक्रम का भाग है और सरकारी सहयोग से चल रहा है? आर्य नेता तथा सभी अधिकारी सूचना एवं प्रसारण मन्त्रीसे भेंट कर इस मामले पर स्पष्टीकरण प्राप्त कर जनता को वास्तविक तथ्यो से सूचित करें।

—ओ३म् प्रकाश गुप्त, २३, वीर सावरकर ब्लाक, शकरपुर, दिल्ली।

(४) श्री ज्ञान चन्द गोयल को विशेष रूप से धन्यवाद देता हूं कि उन्हों ने इतना उपयोगी विचार जनता के सामने रखा। आर्य भाईयों से अपील करता हूं कि इस सुझाव को कार्यान्वित करने की और ध्यान दे।

—शशिकान्त आर्य, अनुपम टेलर्स टिम्बर मार्किट सुमेरपुर-३०६९०२

(५) ११ अगस्त के अंक में श्री गोयल के विचार पढे जिसमे ईसाई रेडियो स्टेशन का जिक्र किया गया था। इस रेडियो की आवाज मेरे गाव में जो कि जि० कुरुक्षेत्र की अम्बाला जिले की सीमा के साथ है, साफ सुनाई देती है। यह रेडियो स्टेशन कई जगह से प्रसारण करके भारत विरोधी जन मत तैयार कर रहा है। इनसे अधिकतर महिलाएं ही प्रसारण कार्य करती हैं जिनकी मीठी व मोहक आवाज में बडी ही लच्छेदार भाषा मे ईसा का प्रचार होता है। इन पर हर कार्यक्रम के आरम्भ व अन्य में कहा जाता है प्रभु ईशु आपका भला करे। अपने गुनाहो से मुक्ति के लिए प्रभु ईशु की शरण मे आइए इत्यादि।"

कितने दु:ख की बात है कि हम आर्य जन सोए हुए हैं। अब जागने का वक्त है। आर्य समाज को भी अपना 'आर्य रेडियो स्थापित करना चाहिए। समारोहों पर अनाप शनाप किया जाने वाला खर्च सीफति कर 'आर्य रेडियो स्टेशन' की स्थापना जल्दी से जल्दी करनी चाहिए। जिसमें शक्तिशाली ट्रांसमीटर लगाने चाहिए। ईसाईयों के देश द्रोही दुष्प्रचार को रोकने का यही एक मात्र उपाय है। सभी आर्य जनों एवं अन्य देश भक्तों को चाहिए कि वे इस पवित्र कार्य हेतु आर्य नेताओं का इस ओर ध्यान आकृष्ट करें।

—जयदेव आर्य, गुन्दियाना, कुरुक्षेत्र

पंजाब समझौते से अबोहर फाजिल्का में असन्तोष

२४ जुलाई को अकाली और केन्द्र सरकार के समझौते के बाद हिन्दी भाषी क्षेत्र को हरयाणा में शामिल करने के लिए अबोहर फाजिल्का के क्षेत्र में गतिविधियां बढ़ गई हैं। अबोहर क्षेत्र के भूतपूर्व एम० एल० ए० मा० तेगाराम तथा अन्य कार्यकर्त्ताओं के विशेष निमन्त्रण पर हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी, स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, आदि अनेक आर्य नेता ४ अगस्त को प्रातः ६ बजे बिश्नोई मन्दिर अबोहर के एक जलसे में पधारे। प्रो० शेरसिंह ने हिन्दी भाषी क्षेत्र के बारे में और स्वामी ओमानन्द जी ने हरयाणा की सीमाओं तथा इतिहास के सम्बन्ध में बताया। सभा में अबोहर के सभी वर्गों के व्यक्तियों ने भाग लिया। सभी ने एक स्वर से हरयाणा क्षेत्र में मिलने के लिए जो प्रस्ताव पास किया उस में कहा गया है:

पंजाब के संबन्ध में जो समझौता हुआ, उसमें एक पक्ष अकाली दल को ही विश्वास में लिया गया। दूसरे पक्ष हरयाणा व हिन्दी भाषी अबोहर—फाजिल्का क्षेत्र से सलाह नहीं की गई। अतः एक पक्षीय समझौता हरयाणा के अबोहर फाजिल्का क्षेत्र को कदापि स्वीकार नहीं है। इस समझौते से इस क्षेत्र के साथ घोर अन्याय किया गया है, क्योंकि प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने अपने २९ जनवरी १९७० के अवार्ड में स्पष्ट घोषणा की थी कि चण्डीगढ़ पंजाब को दिया जावे और उसके बदले में हरयाणा को हिन्दी भाषी ११५ गांव तथा अबोहर फाजिल्का क्षेत्र हस्तांतरित किये जावें। अतः यह सभा क्षेत्र की जनता को आह्वान करती है कि वह चण्डीगढ़ के बदले में हिन्दी भाषी अबोहर फाजिल्का क्षेत्र प्राप्त करने के लिए शान्तिपूर्वक प्रबल आन्दोलन करें।

अबोहर के उपरान्त ये सभी आर्य नेता हरियाणा के विभिन्न कस्बों और ग्रामों में जा कर जनमत को जाग्रत करते रहे। रामसरा ग्राम में स्वामी ओमानन्द जी ने दयानन्द बस्ती का उद्घाटन किया। आर्य नेताओं के इस प्रवास से हरयाणा के निवासियों में जागृति आई है इनकी प्रेरणा से प्रत्येक हरयाणा वासी अपने अधिकार की रक्षा के लिए तैयार हो गया है। आर्य प्रतिनिधि सभा ने भी ग्राम-ग्राम में उपदेश और भजन मण्डली भेज कर प्रचार करने की योजना बनाई है, हरयाणा के आर्य बन्धु अबोहर—फाजिल्का के साथ अन्यान्य ११५ हिन्दी भाषी ग्रामों को हरयाणा में सम्मिलित करने के लिए कृत संकल्प हैं।

—केदारसिंह आर्य, दयानन्द मठ, रोहतक

ऋषि के स्वसृ वंश...........

(पृष्ठ ६ का शेष)

उन्होंने मेरी ओर ही संकेत किया है। जिज्ञासु जी जब डॉ० भारतीय के ग्रन्थ की गहराई में जाकर समीक्षा कर रहे थे तब उन के जैसे प्रबुद्ध लेखक का यह लिखना ठीक नहीं है कि "देवेन्द्र नाथ का विचार ठीक नहीं।" स्वकथन की पुष्टि में उन्होंने कोई प्रमाण नहीं दिया। पुनः स्पष्ट कर दूं कि देवेन्द्रनाथ का कथन ठीक है कि पोपटलाल और प्रभा शंकर एक ही व्यक्ति थे। उन्होंने यह कहीं नहीं लिखा कि पोपट लाल का दूसरा भाई नहीं था।

श्री गणपति केशवराम शर्मा के पत्र से उत्पन्न भ्रम निवारण:

श्री गणपति केशवराम शर्मा ने 22 सितम्बर 1911 को आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के मन्त्री को गुजराती भाषा में एक पत्र लिखा। इसके कुछ वाक्यों का अभिप्राय था—"मैंने सुना है कि कल्याणजी के पिता बोघा रावल स्वामी दयानन्द की बहिन की पुत्री के पुत्र थे। जब स्वामी जी के गृहत्याग पर उनके पिता का कोई उत्तराधिकारी नहीं रहा तो उन्होंने अपनी सम्पत्ति का अधिकार अपनी पुत्री को दिया। जब वह पुत्री भी बिना पुत्र के मर गई तो उसकी सम्पत्ति का स्वामित्व उसकी पुत्री के पुत्र बोघा रावल को प्राप्त हुआ। इन्हीं बोघा के पुत्र कल्याणजी और कल्याणजी का पुत्र पोपट लाल वर्तमान में टंकारा में है।" उक्त पत्र से यह निष्कर्ष निकलता है कि कल्याणजी के पिता बोघा रावल स्वामी जी की बहिन प्रेमबाई के दौहित्र (पुत्री के पुत्र) थे।

यहां हमने पत्र का कुछ अंश ही उद्धृत किया है। पत्र लम्बा है और उसमे लेखक ने अपने शोधकार्य की कठिनाइयों तथा इस कार्य मे लोगों के सहयोग न मिलने का भी उल्लेख किया है। वस्तुतः यह पत्र लेखक की प्रारम्भिक शोध थी और उन्होंने इस सम्बन्ध में जो कुछ सुना उसी के आधार पर लिख दिया। इसलिए बोघा रावल को प्रेम बाई का दौहित्र बताना मात्र किंवदन्ती पर ही आधारित है। यदि बोघा रावल प्रेमबाई की पुत्री का पुत्र होता तो उसका 'रावल' उपगोत्र नहीं हो सकता क्योंकि मंगलजी का गोत्र रावल था और वे अपनी पुत्री का इसी गोत्र में विवाह कैसे कर सकते थे? इसलिए यही मानना चाहिए कि बोघा रावल मंगल जी के ही पुत्र थे। उपर्युक्त ग्रन्थों मे भी सर्वत्र बोघा रावल को ऋषि की बहन का पुत्र तथा उनका वंशज पोपट लाल बताया गया है तथा इसकी सिद्धि मे अनेक विधि प्रमाण भी दिए गए हैं। इसलिए अधिक विस्तार करना अनावश्यक है। अन्त में एक बात और ध्यातव्य है। जिस पुस्तक में गणपति केशव शर्मा का पत्र छपा है उसी के पूर्व पृष्ठों में यह छप चुका है कि बोघा प्रेम बाई का पुत्र था। इस प्रकार यदि सम्पादक एक ही पुस्तक मे प्रकाशित होने वाले इन परस्पर विरोधी वाक्यों पर कोई टिप्पणी दे देता तो भावी लेखकों को इससे भ्रमित होने की शंका ही नहीं रहती।

(क्रमशः)

पं० ब्रह्मदत्त शुक्ल का निधन

श्री पं० ब्रह्मदत्त शुक्ल का जन्म सन् १८९० में भावल खेड़ा ग्राम-शाहजहांपुर में हुआ था। इनके पिता श्री नन्द किशोर देव, गुरुकुल वृन्दावन के आचार्य थे। अपने समय के वे प्रसिद्ध तार्किक एवं महोपदेशक थे। उनकी यह तर्कशक्ति श्री पं० ब्रह्मदत्त जी को विरासत में मिली थी। उनके छोटे भाई श्री पं० रामदत्त शुक्ल एम० ए०, एडवोकेट, वैदिक वाङ्मय के प्रतिष्ठित विद्वान थे। भारतविद्या के अधिकारी विद्वान स्व० वासुदेवशरण अग्रवाल उनको अपना गुरु मानते थे। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के वे अनेक वर्षों तक मन्त्री के पद पर सुशोभित रहे। सभा के नव-निर्माण में उनका योगदान सदा स्मरणीय रहेगा। आर्य समाज, लखनऊ डी० ए० वी० कालेज लखनऊ आदि अनेक संस्थाओं के वे प्राण स्वरूप थे। श्री पं० ब्रह्मदत्त शुक्ल जी की शिक्षा-दीक्षा गुरुकुल वृन्दावन में हुई थी। अपनी लगन निष्ठा, सेवा, कर्त्तव्य परायणता तथा निःस्वार्थ त्याग भावना के परिणाम स्वरूप वे सदा समाज में सम्मान पाते रहे।

वे अपने जनपद के प्रमुख व्यक्ति थे, कांग्रेस के अध्यक्ष रहे। आर्य समाज के प्रधान रहे। आयुर्वेद के अच्छे ज्ञाता थे। बिना शुल्क लिए हुए वह जटिलतम रोगों का उपचार किया करते थे। काकोरी केस के समस्त व्यक्तियों से उनका सम्पर्क था। वे प्रतिदिन यज्ञ करते थे। स्वस्थ शरीर, दृढ़ आत्मबल तथा उत्साह के धनी पंडित जी को अंतिम दो वर्ष पक्षाघात का दारुण कष्ट भोगना पड़ा और १ जुलाई १९८५ को मृत्यु के हाथों ही उनके शरीर तथा शारीरिक कष्ट का अन्त हुआ। परमपिता परमात्मा दिवगत आत्मा को शाश्वत शान्ति प्रदान करें और उनके परिवार को इस दारुण कष्ट को सहन करने की क्षमता प्रदान करें। —ब्रह्मदत्त स्नातक

गुमशुदा की तलाश

अमरनाथ आर्य, कद 5 फुट 3 इंच, आयु 21 वर्ष, रंग सांवला और शरीर स्वस्थ। 5 जुलाई 1985 से घर से चले गये हैं। जिस किसी को उनके बारे में जानकारी हो वे निम्न पते पर सूचित करने या पहुंचाने का कष्ट करें। सूचित करने वाले या पहुंचाने वाले को उचित इनाम तथा आने-जाने का मार्ग व्यय भी दिया जायेगा।

प्रिय अमर, जब से तुम गए हो तब से सारे परिवार मे उदासी छा गयी है। तुम्हारी माता जी एक दिन रोते-रोते फर्श पर गिर गयीं और उनके बाएं हाथ की हड्डी टूट गयी। उनकी दशा पागलों की सी हो गयी है। चाहे रात हो दिन, जिस समय तुम्हारी याद आ जाती है उसी समय घर से बाहर निकल जाती हैं और किसी से भी पूछने लगती हैं, "तुमने हमारा मुन्नू तो नहीं देखा।" बेटे! अगर तुम अपने परिवार को बर्बादी से बचाना चाहते हो तो तुरन्त घर चले आओ। अगर तुमने देर करदी तो आशंका है कि तुम्हें अपनी मा इस दुनियां में नहीं मिलेगी। हम वही करेंगे जो तुम चाहते हो। सोमेन्द्र बीमार है और हर समय तुम्हें याद करता है, रोज शाम को पूछता है कि मुन्नू भैय्या कब आयेंगे। मैं उसे यह कहकर बहला देता हूं कि सवेरे को आ जायेंगे। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम हम सब को निराश नहीं करोगे।

तुम्हारा शुभेच्छु पिता—बनवारी लाल प्रवक्ता-हिन्दी, राजकीय इन्टर कालेज, मुरादाबाद (उ० प्र०)।

ऋषि के ग्रन्थ....

(पृष्ठ ४ का शेष)

यदि इन दोनों कार्यों को सम्पन्न कराने मे अजमेर मे रह रहे दो युवा विद्वान् मेरे मित्र प्रो० धर्मवीर (प्राध्यापक संस्कृत विभाग, डी० ए० वी० कालेज, अजमेर) तथा डॉ० कृष्णपाल सिंह (दयानन्द शोध पीठ डी० ए० वी० कॉलेज, अजमेर) अपना समय लगावें तो सभा को बहुत अधिक व्यय वहन भी न करना पड़ेगा। उक्त दोनों विद्वान् कुछ दिनों तक श्री मीमासक जी के पास रहकर हस्तलेखों को पढ़ना तथा सम्पादन की रीति भी सीख लें।

इन दोनों कार्यों मे आचार्य विश्वश्रवा: जी के सहयोग से भी परोपकारिणी सभा लाभ उठा सकती है। क्योंकि सभा के संयुक्त मंत्री डॉ० भारतीय भी यह मानते ही हैं कि—'आचार्य विश्वश्रवा: जी की सभाविषयक जानकारी प्रशंसनीय है।··· स्वामी जी के अप्रकाशित ग्रन्थों (विशिष्ट ग्रन्थों की सूचियां आदि) के सम्बन्ध में पं० विश्वश्रवा: जी ने जो लिखा है, वह बहुत कुछ निरापद (अर्थात् अपवाद रहित) ही है।"

'शोधार्थियों को स्वामी जी के हस्तलेख देखने और प्रतिलिपि करने की सुविधा न मिले, इससे सहमत होना कठिन है।' ऐसा सभा के संयुक्त मन्त्री डॉ० भारतीय ने लिखा है। हम श्री भारतीय जी के इस विचार से सर्वथा सहमत हैं। पर पता नहीं क्यों, परोपकारिणी सभा के पूर्व अधिकारियों ने स्व० पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु को कालान्तर में हस्तलेखों को देखने तथा प्रतिलिपि करने पर रोक लगा दी थी? तथा श्री पं० युधिष्ठिर मीमासक के साथ भी कुछ अंशो तक एवंविध प्रतिबन्ध रहा। (द्रष्टव्य—पं० युधिष्ठिर मीमासक कृत-'ऋषि दयानन्द के ग्रन्थो का इतिहास)' परन्तु अब सभा के सयुक्त मन्त्री जी का इस प्रकार का वक्तव्य प्रशंसनीय है। हस्तलेखो को देखने तथा प्रतिलिपि करने मे हस्तलेख का कोई भी पृष्ठ नष्ट या चोरी न हो जाए, इसकी सतर्कता सभा को विशेष रूप से रखनी होगी। अच्छा तो यही रहेगा कि सम्पूर्ण हस्तलेखो को माइक्रोफिल्मिंग करा लिया जाए और उसकी फोटोकॉपी को ही शोधार्थियों के लिए उपलब्ध कराया जाए। ऋषि के अप्रकाशित ग्रन्थो को भी प्रकाशित करने का प्रयास करना परोपकारिणी सभा का काम है। पिछले दिनो 'आर्य जगत्' के यशस्वी सम्पादक श्री क्षितीश वेदालंकार ने ऋषि-निर्वाण शताब्दी से पूर्व दिल्ली मे आयोजित 'शताब्दी' सम्बन्धित गोष्ठी मे ऋषि के अप्रकाशित पुस्तकों को यथाशीघ्र प्रकाशित करने का सुझाव दिया था।

ऋषि के पत्र और विज्ञापन

ऋषि दयानन्द के पत्रों और विज्ञापनों को प्रकाशित करने के आचार्य विश्वश्रवा: जी विरोधी रहे हैं और अब भी हैं। इस सम्बन्ध मे डा० भारतीय जी के विचार से हम सर्वथा सहमत हैं कि ऋषि के पत्रो तथा विज्ञापनो को प्रकाशित करना अत्यावश्यक है। आचार्य जी का कहना है कि ऋषि के पत्रो का अन्यथा अर्थ लगाया गया है। मेरा निवेदन है कि यदि ऋषि के पत्रों का अन्यथा अर्थ किसी ने लगाया है तो आचार्य जी का कर्त्तव्य है कि वे उसका वास्तविक अर्थ बतावें। परन्तु ऋषि के पत्रों को कोई अन्यथा अर्थ लगाएगा, इसलिए उन्हें प्रकाशित नहीं करना चाहिए, यह मानने योग्य नहीं है। आचार्य जी बहुधा यह उदाहरण देते हैं—कि ऋषि का विज्ञापन यह छपा मिलता है—'संस्कार का पुस्तक बनाने के लिए एक पण्डित की आवश्यकता है।' इससे यह अर्थ निकलेगा कि संस्कार विधि ऋषि-रचित नही है।

परन्तु ऋषि-पत्रों के सम्पादक तथा प्रकाशक महात्मा मुंशीराम, (स्वामी श्रद्धानन्द) पं० भगवद्दत्त तथा पं० युधिष्ठिर मीमांसक इन तीनों मे से किसी ने यह नहीं माना कि संस्कार विधि ऋषि दयानन्द की रचना नहीं है। उक्त वाक्य का वास्तविक अर्थ उस काल की भाषा शैली के अनुसार यह हो सकता है—

संस्कार विधि पुस्तक की प्रेस कॉपी बनाने के लिए एक पण्डित की आवश्यकता है अथवा संस्कार विधि पुस्तक लिखाने के लिए (स्वामी जी बोलें और उसे कोई दूसरा लिखे) एक पण्डित की आवश्यकता है।

इसी प्रकार "इस भाष्य की भाषा को पण्डितो ने बनाई और संस्कृत को भी उन्होंने शोधा है।" यह पंक्ति ऋषि दयानन्द की मृत्यु के बहुत काल के बाद वेदभाष्य के अंकों पर छपती थी। यह पंक्ति भी आर्य विद्वानों में बहुत अधिक विवादास्पद रही है। इस सन्दर्भ मे मेरा निवेदन है—

यह वाक्य महर्षि का नही है और जिसने भी इस वाक्य को वेद भाष्य के अंकों पर प्रथमत: छापा, उसका तात्पर्य यह था—"ऋषि के संस्कृत भाष्य का आर्यभाषानुवाद करने और संस्कृत भाष्य का प्रूफ देखने का कार्य पण्डितो ने किया है।' आचार्य विश्वश्रवा: जी के अनुसार "इस भाष्य की भाषा को पण्डितो ने बनाई" का तात्पर्य 'पण्डितो द्वारा वेदभाष्य के हिन्दी अनुवाद की प्रेस कॉपी तैयार करना था।"

इसी प्रकार गत वर्ष ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन (द्वितीय संस्करण) के प्रथम पत्र की कथित सिद्धांतहीनता पर श्री प० वैद्यनाथ शास्त्री ने प्रश्न उठाया था और उसका उत्तर श्री पं० वीरेन्द्र शास्त्री तथा श्री पं० युधिष्ठिर मीमांसक जी ने दिया था। पं० वैद्यनाथ जी द्वारा सिद्धांतहीनता का आक्षेप का कारण यह था कि 'पत्र और विज्ञापन' (द्वितीय संस्करण) के सम्पादकों ने अपनी टिप्पणी में स्वयं उस पत्र को सिद्धात युक्त नहीं समझा था। इसी प्रकार अन्य भी पत्रों और विज्ञापनों पर प्रश्न उठ सकते हैं। ऋषि के पूना प्रवचन और उनकी जीवनी के भी कई प्रसंग विवादास्पद रहे हैं। परन्तु इस विवाद के भय से उसे प्रकाशित न करना उचित नही माना जा सकता। विरोध प्रतीत होने पर उसकी संगति या सामञ्जस्य बिठाने का प्रयास करना चाहिए। असामञ्जस्य की स्थिति मे ऋषिग्रंथो की प्रामाणिकता ही सर्वोपरि होगी, ऋषि की जीवनी, प्रवचन, पत्र तथा विज्ञापन ऋषि के ग्रन्थो के समान प्रामाणिक नही माने जा सकेंगे।

वेद भाष्य की हिन्दी—

ऋषि दयानन्द के ऋग्वेद तथा यजुर्वेद भाष्य की हिन्दी ऋषिकृत नहीं है, यह कहा जाता है। वस्तुत: इस सम्बन्ध में पूर्णतया स्थिति इस प्रकार है—स्वामी दयानन्द कृत ऋग्वेद तथा यजुर्वेद के भाष्य पहले अंकों में छपते थे। स्वामी जी के देहावसान के बाद भी दोनो वेदों के भाष्य अंकों में क्रमश: छपते गए और इसमें वर्षों लगे। स्वामी दयानन्द के जीवन काल में वेद भाष्य के जितने अंक छपे, उसमें हिन्दी-भाष्य की पूरी प्रामाणिकता है। स्वामी जी के जीवित रहते जितने अंशों के हिन्दी अनुवाद हो चुके थे, किंतु छप नहीं पाये थे, उसके भी दो स्तर हैं—(1) प्रथम अंश वे हैं, जिनका निरीक्षण स्वामी जी ने कर लिया था और उन अंशों पर स्वामी के हाथ के संशोधन वर्तमान हैं। शेष अंश बिना सशोधन का है।(2) उसके बाद भी ऋग्वेद तथा यजुर्वेद के बहुत अंश हिन्दी अनुवाद रहित ही हैं जिसका अनुवाद परोपकारिणी सभा की बैठक मे पास किए गए प्रस्ताव के अनुसार स्वामी जी के सहयोगी पण्डितो द्वारा कराया गया।

ऐसी स्थिति में स्वामी जी के वेद-भाष्य के जिन अंशों का अनुवाद पण्डितों द्वारा किया गया है, वे सर्वथा अप्रामाणिक ही होंगे—ऐसा निश्चयेन नहीं कहा जा सकता। आज जो ऋषि के वेद भाष्य के हिन्दी अनुवाद किए जा रहे हैं, उसमे भी विद्वानो ने त्रुटियां लक्षित की हैं। यथा—पं० सुदर्शन देव कृत 'अश्मन्वती रीयते (यजुर्वेद 35/10) मन्त्र का हिन्दी भाषानुवाद (आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली का प्रकाशन)। अत: अस्मदादि कृत हिन्दी अनुवाद पूरी तरह प्रामाणिक ही होगा, इनकी क्या गारण्टी है? स्वामी जी की शैली से परिचित और उनके कार्यों के सहयोगी पण्डितो के हिन्दी अनुवाद मे यदि अस्पष्टता तथा जटिलता है तो उसका मुख्य कारण आज से सौ वर्ष पूर्व की हिन्दी भाषा है।

कुछ लोगों को स्वामी जी के सत्यार्थ-प्रकाश तथा आर्याभिविनय की भाषा भी अस्पष्ट प्रतीत हुई है और उसके कुछ अंशों का आधुनिक हिन्दी की रीति में स्पष्ट करने का प्रयास भी हुआ है। (द्रष्टव्य—पं० भूदेव शास्त्री सिद्धान्त शिरोमणि कृत सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास का आधुनिक हिन्दी अनुवाद)। अत: पण्डितों द्वारा किये गए स्वामी जी के वेद भाष्य के हिन्दी भाग को सर्वथा अनुपयोगी नही माना जा सकता। भाषा की अस्पष्टता को कोई दूर करना चाहे तो करे, परन्तु उस मूल भाषा को पृथक् करना ऐतिहासिक दृष्टि से उचित नहीं माना जाएगा। यदि हिन्दी-भाग में संस्कृत भाग से विरोध तथा सिद्धान्त हीन तथ्यों को कोई प्रस्तुत करे तो उस पर विचार विमर्श किया जा सकता है।

इसी सन्दर्भ में डॉ० भवानी लाल भारतीय की एक बात समझ में नहीं आई। जब ऋषि के वेद भाष्य मे हिन्दी भाग का उत्तरदायित्व ऋषि दयानन्द पर है नही और न उसमे संस्कृत भाग से कोई वैशिष्ट्य ही है, तब उनके दो शोध-शिष्यो को स्वामी जी के वेद-भाष्य के हिन्दी भाग से क्या लेना देना था जिसमें उन्हे कठिनाइयां आईं? जब स्वामी दयानन्द का सम्पूर्ण कथ्य उनके संस्कृत भाष्य तक ही पर्यवसित हो जाता है तब उसके हिन्दी-भाग में माथापच्ची करने की उन्हें क्या आवश्यकता पड़ी जिसका कर्तृत्व ही ऋषि दयानन्द को प्राप्त नहीं है।

उर्दू ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका की भूमिका

महात्मा मुंशीराम कृत 'उर्दू ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका की भूमिका' नामक लेख जिसका हिन्दी अनुवाद डॉ० भारतीय ने 'वेदवाणी' में छपाया था, पूरी तरह भ्रामक है। महात्मा मुंशीराम ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के जिन अंशों (संस्कृत तथा हिन्दी भाग) को परस्पर विरोधी समझा है, वस्तुत: वे विरोधी नहीं हैं। 'पञ्चमहायज्ञविधि: की आर्य भाषा भी स्वामी दयानन्द रचित नहीं है।' ऐसा महात्मा मुंशीराम जी का कहना भी ठीक नहीं है। मैंने डॉ० भारतीय के उस लेख को बड़ी ही सावधानी से पढ़ा है और उसकी समीक्षा भी लिखी है। यदि कोई आर्य पत्र छापने के लिए तैयार हो तो उसे मैं भेज सकता हूं।

एकैकस्य शतादुपरि काल:

और अन्त में अन्तिम बात। महर्षि रचित 'चतुर्वेद विषय सूची' के हस्तलेख के मुख पृष्ठ पर स्वामी दयानन्द ने तीन वाक्य लिखे हैं—एकैकस्य शतादुपरि काल:। शतावध्यागन्तुको मृत्यु:। नाकाले म्रियते कश्चित्। इन तीन वाक्यो का क्या अर्थ हो सकता है? यह विचारणीय है। आचार्य जी ने अपनी पुस्तक 'ऋग्वेद महाभाष्यम्' मे इन पंक्तियों का अर्थ किया है, जिसकी चर्चा आचार्य जी अपने लेखो तथा भाषणों मे करते हैं। आचार्य जी के अनुसार इन वाक्यों का अर्थ निम्न प्रकार है—एकैकस्य शतादुपरि काल:—वे (ऋषि दयानन्द) प्रत्येक वेद के भाष्य पर 100-100 वर्ष लगायेंगे। (बाल-ब्रह्मचारी और योगी होने के नाते उन्हें 400 वर्ष जीवित रहने का अनुमान था।) परन्तु बाद में, उन्हे यह आभास हो गया कि उनकी आयु 100 वर्ष के अन्दर ही समाप्त होने वाली है—शतावध्यागन्तुको मृत्यु:। क्योकि किसी की अकाल मृत्यु नहीं होती—नाकाले म्रियते कश्चित्।

इस पर डॉ० भवानी लाल भारतीय का आक्षेप है—'ऐसी बातें जन साधारण को प्रभावित भले ही कर लें, किन्तु विद्वानों को प्रभावित नहीं करती।'

ऋषि के इन वाक्यों का तात्पर्य क्या है, यह भी अनुसंधान का विषय है। इसमें से अन्तिम वाक्य 'नाकाले म्रियते कश्चित्' के सम्बन्ध में सामान्य विचार पं० युधिष्ठिर मीमांसक ने रामलाल कपूर ट्रस्ट से प्रकाशित 'चतुर्वेद विषय सूची' की भूमिका में प्रस्तुत किया है। अन्य भी आर्य विद्वानों को इस पर विचार करना चाहिए।

पता—रामनगर, अमेठी
पिन—226405 (उ० प्र०)

डेनमार्क में द्वितीय यूरोपियन हिन्दू सम्मेलन

२६ से २८ जुलाई, १९८५ को डेनमार्क की राजधानी कोपनहेगन मे सम्पन्न द्वितीय हिंदू कान्फ्रेंस १६ देशो से ४५० प्रतिनिधियो ने भाग लिया। कान्फ्रेंस का उद्घाटन डेनमार्क के सांसद तथा भूतपूर्व न्यायाधीश श्री ओल एसपसंन ने किया तथा समापन भाषण श्री विष्णुहरि डालमिया का हुआ। यह सम्मेलन विदेशों मे बसे हुए हिन्दुओं विशेषतः यूरोप और स्कडेनेवियन देशों में बसे हुए हिंदुओ के जीवन में एक ऐतिहासिक घटना थी। इससे भिन्न-भिन्न देशो से आये हुए प्रतिनिधियो को आपस में मिलने और विश्व के भिन्न-भिन्न देशों में बसे हुए हिन्दुओं की समस्याओं पर विचार करने का अवसर मिला। सम्मेलन के अलग-अलग सत्रों में ध्यान, तनाव को रोकना, स्वास्थ्य के लिए योग, युवा पीढ़ी के सामने समस्याएं, हिंदू विचारधारा और विश्व शान्ति जैसे विषयों पर विचार गोष्ठियां हुई। वास्तव मे इस कान्फ्रेंस का मूल विषय था—"वसुधैव कुटुम्बकम्" अर्थात विश्व बन्धुत्व या विश्व एक परिवार है। सम्मेलन में अखण्ड भारत, श्रीराम जन्म भूमि मुक्ति, हिंदुओं के साथ मध्य एशिया, बंगलादेश और अन्य देशों मे भेदभाव और अन्याय की नीति विश्वशान्ति और सब भाषाओं की जननी संस्कृत के प्रचार-प्रसार के संबंध में प्रस्ताव पारित हुये।

आर्यसमाज ही हिन्दू हितो की रक्षा में समर्थ है

फरीदाबाद मे नगर आर्य समाज की वेद प्रचार समिति द्वारा आयोजित जनजागरण के आयोजन के अवसर पर दिल्ली के प्रमुख व्यवसायी, हिन्दुत्ववादी विचारों के पौषक तथा आर्य समाजी श्री विशन स्वरूप गोयल ने आर्य समाज के कार्यकर्ताओं का आव्हान करते हुए कहा की १५ अगस्त १९४७ का वश दुर्भाग्यपूर्ण दिन था जब इस देश का स्वतंत्रता के नाम पर दो राष्ट्र के आधार पर विभाजन हुआ था उन्होने कहा कि यहाँ पर कितने ही आक्रान्ता आये, किन्तु किसी ने भी इस देश का विभाजन नही किया। भले ही ऐसी स्वतंत्रता न मिलती किन्तु देश का विभाजन न होता जिसके कारण हिंदुस्थान का ही एक भाग पाकिस्तान बन कर उसका सब से बड़ा शत्रु तो न पैदा होता और न ही लाखो लोगो का नरसंहार और करोड़ो की सम्पत्ति ही नष्ट होती। आज हिंदू अपने ही देश मे पराया और यतीम हो गयाहै। धर्म निरपेक्षता की नीति के कारण आज हिंदू बहुमत को अल्पमत में परिवर्तित करने का एक विशेष और सुनियोजित षडयंत्र चल रहा है मुसलमान कुरआन और शरीयत की आड़ लेकर चार-चार बीवियां रखकर जनसख्या मे जोर-शोर से वृद्धिकरने मे लगे हैं। जो गति इस समय ईसाई और मुसलमानो की जनसख्या मे वृद्धि की चल रही है उससे भविष्य मे शीघ्र ही देश का पुनः विभाजन हो सकता है। अतः विभाजन को रोकने और इस देश के हिंदू समाज को बचाने के लिए अब आर्य समाज को राजनीति में प्रवेश कर एक देशव्यापी जन-आन्दोलन खड़ा करना चाहिए क्योकि इस समय आर्य समाज ही एक ऐसा शक्तिशाली संगठन है जो हिंदू हितों और अपने देश की सुरक्षा मे अग्रसर हो सकता है।

शब्द ब्रह्म का उपासक ......

(पृष्ट १ का शेष)

शुक्रवार 23 अगस्त को आर्यसमाज मन्दिर मर्ग में अन्तिम शोक सभा हुई जिसमें दिल्ली तथा जम्मू आदि से आए अनेक भक्त तथा प्रशसक भारी सख्या मे उपस्थित थे। प्रादेशिक सभा के प्रधान, प्रो०वेदव्यास, प्रो० चारुदेव, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के अधिकारी श्री राजमणि तिवारी, डा. व्यासडा. रागड़ा, नदा परिवार, श्री शामलाल शर्मा और उनकी धर्मपत्नी आदि अनेक गण्यमान्य व्यक्ति सभा में उपस्थित थे।

हवन के बाद गुरुकुल गौतमनगर के दो ब्रह्मचारियो ने ईशावास्यपोनिषद् के मन्त्रों का सस्वर पाठ किया। श्री अभिविनय भारथी ने अपने प्रवचन में भस्मान्तं शरीरम् की व्याख्या करते हुए कहा : "सारे सांसारिक पदार्थ नश्वर है। जब दाहसंकार किया जाता है तो बड़े छोटे का भेद मिट जाता है। परमेश्वर की सृष्टि में सब समान हैं। हा, केवल कर्म भेद से ऊंचे और नीचे का फर्क बना रहता है और यही भेद सृष्टि को सार्थक बनाता है।'

इसके अनन्तर विद्यावयोवृद्ध प्रो० वेद व्यास जी ने दिवंगत आत्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि दी। उन्होंने कहा : 'जब मैंने एम० ए० की परीक्षा दी थी तो डॉ० वर्मा का यशोगान पंजाब भर में गूंजता था। वे यद्यपि लाहौर से दूर जम्मू में प्रोफेसर थे, परन्तु उनकी ज्ञानरश्मियां लाहौर को भी आलोकित करती थीं। उन्होंने बहुत लिखा परन्तु बहुत कम छपा है। हम चाहेंगे कि उनके अप्रकाशित ग्रन्थो का प्रकाशन हो। हम उनके अनुरूप स्मारक बनाएंगे ताकि ज्ञान का दीप उसी तरह जलता रहे।

80 वर्षीय प्रो० चारुदेव जी ने कहा: 'ऐसे पुरुष संसार में कम आते हैं जो आने वाली पीढियो के लिए प्रकाश स्तम्भ का काम करें। वे उदारता के सागर थे और शब्द ब्रह्म के अविचल सार्थक और उपासक थे। श्री राजमणि तिवारी तथा डा० रागड़ा ने भी अपने कार्यालय के संस्मरण सुनाते हुए कहा कि वे गुणो से ही आगे बढ़े। 1951-52 में जब देश मे केन्द्रीय हिन्दो निदेशालय के लिए निदेशक की खोज की गई तो सबका ध्यान अनेक भाषाओ के पंडित डा० सिद्धेश्वर वर्मा की ओर ही गया।

वे राष्ट्रीय एकता के अवतार थे जिन्होने 60 वर्ष की आयु मे तमिल भाषा पर विशेष अधिकार प्राप्त किया।

जम्मू मे डोगरी शोध संस्थान के निदेशक श्री शामलाल शर्मा ने अपने संस्मरण सुनाते हुए कहा कि वे ज्ञानोपार्जन अपने में पल-पल का योगी की तरह उपयोग करते थे। छोटे-बड़े सभी उन से प्रेम करते थे। उनके गुणों के कारण प्रशासन ने कई बार उन्हे प्रिंसिपल बनाने की पेशकश की परन्तु वे कहा करते थे मैं प्रोफेसर ही ठीक हूं मुझे प्रिंसिपल बनने पर ज्ञानोपर्जन का रस छोड़ना पड़ेगा। डा० वर्मा के प्रियशिष्य, जम्मू से आए श्री खजूरिया ने, डा० साहब के कुछ ग्रन्थो की प्रदर्शनी भी इस अवसर पर लगाई।

पद्मभूषण डा० सिद्धेश्वर वर्मा 30 भाषाओं के पंडित थे। कार्यक्रम का संचालन डा० सीताराम सहगल ने किया।

आर्यसमाज सफदर जंग एनक्लेव

आर्यसमाज सफदर जग इनक्लेव (बी ब्लाक, निकट मदर डेरी) का छठा वार्षिकोत्सव और जन्माष्टमी पर्व धूमधाम से मनाया जाएगा। 4 सितम्बर से 8 सितम्बर तक के कार्यक्रम मे प्रातः 7 से 9 तक यज्ञ होगा जिसके ब्रह्मा डा० वाचस्पति उपाध्याय होगे। रात को 9 से 10 तक वेदकथा श्री यशपाल सुधांशु की होगी। 7 सितम्बर मध्यान्ह 2 बजे श्रीमती प्रभातशोभा की अध्यक्षता मे महिला सम्मेलन और 8 सितम्बर को 10 बजे ध्वजारोहण श्री ला० इन्द्रनारायण द्वारा और जन्माष्टमी पर्व डा० सत्यकेतु विद्यालंकार की अध्यक्षता में मनाया जाएगा।—मत्री सूरजप्रकाश मलिक

आर्यसमाज सीताराम बाजार

आर्य समाज, बाजार सीताराम, दिल्ली मे वेद प्रचार सप्ताह 30 अगस्त से 7 सितम्बर तक मनाया जायेगा, प्रातः यज्ञ और रात्रि 8-30 से 9-30 तक प० वाचस्पति उपाध्यक्ष द्वारा वेद कथा होगी।—बाबूराम आर्य

आर्यसमाज पंजाबीबाग

आर्य समाज, पजाबी बाग, दिल्ली मे श्रावणी के उपलक्ष्य मे अथर्ववेद पारायण यज्ञ पं० पृथ्वीराज शास्त्री के ब्रह्मत्व मे 1 से 8 सितम्बर तक प्रातः 6 से 8 बजे तक होगा। श्री यादराम के भजन होगे। रविवार को पूर्णाहुति 7 से 10 बजे तक सम्पन्न होगी।

यू० १०३/८१ लायसेंस टु पोस्ट विदाउट प्री-पेमेण्ट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११६३/७२ डी० सी० 409
STED IN N. D P.S.O. ON 31-8-1985. १ सितम्बर १९८५

महात्मा आर्य भि

आर्य समाज भेल (B H E L) हरिद्वार के परिसर में नव-निर्मित महात्मा आर्य भिक्षु सत्सग भवन का उद्घाटन सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल वानप्रस्थ ने किया। पंचपुरो के गण्यमान्य नागरिक इस अवसर पर अच्छी सख्या मे उपस्थित थे। मुख्य अतिथि थे कारखाने के ग्रुप मैनेजर श्री चन्द्रमोहन। उनके साथ उनकी धर्म पत्नी भी थीं। गुरुकुल कागड़ी के भूतपूर्व आचार्य पं० प्रियव्रत वेदवाचस्पति ने भी इस अवसर पर अपने उद्गार प्रकट किए। इसके पश्चात महात्मा आर्य भिक्षु जी का धर्म और विज्ञान विषय पर महत्वपूर्ण भाषण हुआ। स्थानीय आर्य समाज की ओर से प्रीतिभोज की भी व्यवस्था थी जिसका प्रबन्ध श्री दयानन्द त्यागी ने किया। —तेजसिह सेंगर, मन्त्री आर्यसमाज

आर्य वैदिक पाठशाला में ध्वजारोहण

अ० भा० श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा की ओर से संचालित आर्य वैदिक पाठशाला आर्य नगर पहाड़गंज में १४ अगस्त को प्रातः ८॥ वजे श्रीमती विनोद भसीन (कुवैत) ने राष्ट्रीय ध्वज का आरोहण किया। इससे पूर्व बैड वादन और वेदमन्त्रों से मान्य अतिथि का स्वागत किया गया और वाद में बालक-बालिकाओं ने सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।
—रामलाल मलिक, प्रधान।

धर्म शिक्षक चाहिए

डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी ने भारत भर के भिन्न-भिन्न स्थानों में अब तक १०५ डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल खोल दिये हैं। इस समय पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश उत्तर प्रदेश, बिहार, उड़ीसा, नागालैण्ड, मणिपुर, हिमाचल प्रदेश तथा तमिलनाडु आदि प्रान्तों में डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल चल रहे हैं तथा कुछ अन्य स्थानों पर खोलने जा रहे हैं। हर स्कूल में आर्य समाज का भी निर्माण हो रहा है। इसलिए हर स्कूल में धर्म शिक्षक की आवश्यकता है। अब तक लगभग ६० स्कूलों में धर्म शिक्षक नियुक्त हो चुके हैं। अन्य स्कूलों में भी धर्म-शिक्षक नियुक्त करने हैं। इच्छुक सज्जन अपनी आवेदन-पत्र श्री दरबारी लाल जी, सगठन सचिव—डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी, चित्र गुप्त, मार्ग, नई दिल्ली-११००५५ को प्रेषित करें। —रामनाथ सहगल, मन्त्री—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा।

नोट:—दिल्ली में इस समय धर्म शिक्षक का कोई भी स्थान रिक्त नहीं है।

पुरोहित चाहिए

आर्य समाज, ऊधमपुर (जम्मू-कश्मीर) के लिये ऐसे पुरोहित की आवश्यकता है जो भजनोपदेशक भी हो और सभी संस्कार करा सके। रहने के लिये आवास निःशुल्क। परिवार वाले को प्राथमिकता। तुरन्त सपर्क करें —लाला दशराज महाजन मन्त्री आर्य समाज ऊधमपुर (जम्मू-कश्मीर)

वैवाहिक विज्ञापन

दिल्ली के आर्य परिवार के २४॥ वर्षीय, कद ५ फुट ११ इन्च, एम. बी. बी. एस. डाक्टर युवक के लिए डाक्टर / लैक्चरार सुन्दर कन्या की आवश्यकता है। पूर्ण विवरण सहित पोस्ट वाक्स नं० ६५७४ नई दिल्ली-३७ के पते पर लिखें। (P)

सुयोग्य वधू चाहिए

२५ वर्षीय, हाउसिंग बोर्ड हरयाणा में जूनियर सिविल इंजिनीयर पद पर कार्यरत, कद ६ फुट, आर्य परिवार के युवक के लिए सुन्दर, सुयोग्य बी० ए० आर्य कन्या चाहिए जिसका न्यूनतम कद ५ फुट ४ इन्च हो, आयु २१ वर्ष से अधिक न हो। दहेज और जाति-बन्धन नहीं। पूरे विवरण तथा फोटो सहित निम्न पते पर सम्पर्क करें। —एन० एस० सूद, ६३ कैलाश-नगर, माडल टाउन, अम्बाला शहर हरियाणा (P)

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस०नारायण एण्ड सन्स७११७/१८ पहाड़ी धीरज, (फोन : ५१६५१८, ५२७३३५) दिल्ली से छपवा कर कार्यालय आर्य जगत्, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली। फोन (343718)

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य-२५ रुपये | विदेश में ३० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४८, अंक ३७, रविवार, ८ सितम्बर, १९८५ | दूरभाष: ३४३७१८

आजीवन सदस्य-२५१ रु० | इस अंक का मूल्य—६० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८५, दयानन्दाब्द १६० | भाद्र पद कृष्णा ८, २०४२ वि०

तुला दान

—स्व० पं० चमूपति एम० ए०—

श्रीकृष्ण रणक्षेत्र से विजय प्राप्त करके लौट रहे हैं, यह समाचार मिलते ही रुक्मिणी भावविभोर हो उठी और श्रीकृष्ण के स्वागत की योजना बनाने लगी। अन्तत: विचार आया कि क्यों न श्रीकृष्ण के बराबर के रत्न तोलकर दान करूं। रुक्मिणी के उन भावों को 'तुलादान' कविता में आबद्ध किया है स्व० श्री पं० चमूपति एम० ए० ने।

निज प्राण प्रिया की आंखों के प्यारे मोहन मेहमान हुए,
रह गई सती चित्रित सी जब सम्मुख प्राणों के प्राण हुए।
था दिनकर के आ जाने से वह भवन कमल सम खिला हुआ,
शुभ द्युति के उमड़ रहे सोते से अणु अणु का मुख था मिला हुआ।
बेसुध कानों ने पंकज वन अलि मुख से शब्द सुधा पाली,
विस्मित अंखियां रस की प्यासी रस में डूबीं रस से खाली।
था प्रश्न रुक्मिणी के मन में किस विध प्रियतम का मान करूं,
घर आये निज परदेसी का कर तुलादान सम्मान करूं।

झट तुला मंगाई सोने की धर रत्न दिये उसमें लाकर,
पलड़ा था स्वर्ण तुला का क्या था एक सुनहरा रत्नाकर।
थे मणिमाणिक हीरे पन्ने नीलम पुखराज भरे उसमें,
बन साज दूसरे पलड़ का बाके घनश्याम लगे हँसने।
थी मग्न रुक्मिणी भरभर कर शुभ थाल मोतियों का लाती,
हां रत्नराज हो सफल आज, कह मणि मणि को मुख सहलाती।
कर खाली गृह भाण्डार, राज्य के रत्नागार उधार लिये
निजतन के भूषण पर्वत से, पलड़े का शेखर बना दिये।

विस्मय की हद न रही मृदुतम, प्रिय का पलड़ा न उठा, न उठा,
इन भारी रत्नागारों से, हलका सांवर न तुला, न तुला।
थक गई रुक्मिणी ला लाकर, हा हा कठोर मणि थे कितने,
कर कमलो पर दीखे छाले, थे स्वर्ण तुला पर मणि जितने।
भ्रुव देख तुला के कांटे को, अबला की छाती बिंधती थी,
दृग गड़े हुए थे धरणी में, सांवर से आंख न मिलती थी।
रह गया अधूरा तुलादान, कुछ लाज हुई कुछ रोष हुआ,
झट लगी पटकने मणियों को, यह कंकरियों का कोष हुआ।

झर रहा पसीना था तुषार, रह-रह कर लाल कपोलों पर,
वह ओले गिरते शोलों पर, वह शोले, लपके ओलों पर,
बेबस अबला की आंखों से, दो आंसू बरबस टपक पड़े।
थी दो बूंदों की महिमा क्या, झट अचल सावरे उचक पड़े,
थे एक एक आंसू में मोहन, आभा के मिस घुले हुए।
थे पलक पलक के कांटे पर, मोहन आसू बन तुले हुये,
अब एक नहीं चटपट अनेक, हो जाते तुलादान क्षणक्षण,
अनछिदे मोतियों ने आंखों के तोल दिये लाखों मोहन।

कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम्।
अनार्यं जुष्ट मस्वर्ग्यमकीर्ति कर मर्जुन ॥
क्लैब्यं मा स्म गम: पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते।
क्षुद्रं हृदयदौर्लबंय त्यक्त्वो त्तिष्ठ परन्तप ॥

हे अर्जुन ! इस विषम परिस्थिति में, अनार्यों द्वारा सेवित, स्वर्ग को ओर न ले जाने वाली और अपयशकारी यह कायरता पूर्ण मनोवृत्ति तुझ में कहां से आकर उपस्थित हो गई ? हे पार्थ ! यह तुझे शोभा नही देती, क्लीबता को मत प्राप्त हो। हृदय की इस क्षुद्र दुर्बलता को छोड़ और उठकर खड़ा हो, युद्ध कर।

यह अंक १६ पृष्ठों का है। ऋषि की प्रारम्भिक जीवनी की छठी किस्त आगामी अंक में।

प्रधानसंरक्षक-अमर स्वामी सरस्वती | सम्पादक-क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक-रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

कलाओं का मानदण्ड

षोडश कलावतार श्रीकृष्ण

—स्व० श्री वासुदेव शरण अग्रवाल—

इस देश के विचारशील जीवन-चरित्र लेखकों ने श्री कृष्ण को सोलह कलाओ का अवतार कहा है। इस विशेषण से उनका क्या अभिप्राय था, मनुष्य से या भगवान से सोलह कलाओ का क्या सबन्ध है और कृष्ण मे कौन-सी सोलह कलाए थी ? ये प्रश्न स्वभावत. बहुत रोचक है।

यहा का दार्शविक सिद्धात है। जो आत्माएं विशेष ऐश्वर्य, विभूति, तेज और ज्ञान आदि गुणो से युक्त होती हैं वे पुरुषोत्तम सज्ञा प्राप्त करती है। चैतन्य की प्रबल धारा के साथ उनका सम्पर्क रहता है और विश्व-चक्र के विधान मे किसी विशेष कार्य की सिद्धि के लिए उनका आगमन हुआ करता है। ऐसा सदा से होता आया है और भविष्य मे यथा समय यह चक्र चलता रहेगा। कृष्ण के समय की राजनैतिक परिस्थिति ने उनके जैसे दैवी विभूति से सम्पन्न व्यक्ति को जन्म दिया। आज भी जगत् मे अनेक निमित्त को पाकर दैवी मनुष्य जन्म लेते रहते है। यहां के मनीषी लेखको ने साधारण मनुष्य और विशेष चमत्कार से युक्त दैवी मनुष्य के जन्म मे अतर माना है। एक की साधारण उत्पत्ति है, दूसरे की सज्ञा पुरुषोत्तम है। श्रीराम और श्रीकृष्ण आदि महानुभाव इसी दूसरी कोटि मे हैं।

मानवी जगत् मे भिन्न-भिन्न वस्तुओ के नाप के लिए मनुष्य के द्वारा कल्पित अनेक नाप-तोल है। दूसरी लम्बाई और वजन के लिए हम ततसम्बन्धी मापदण्ड का साहरा लेते हैं। वैज्ञानिक अनुसधान के युग मे बिजली और किरण जैसी सूक्ष्म और इन्द्रियातीत वस्तुओ को नापने के लिए अनेक प्रकार के अति विचित्र मापदण्डो की कल्पना की गई है। प्रश्न यह है कि क्या आत्मा की विभूति और विकास शक्ति के नापने के लिए इस प्रकार कोई मापदण्ड है।

इसके उत्तर मे हम कह सकते है कि आत्मशक्तियो की पूर्णता को बताने केलिए ही कलाओं के मानदण्ड की कल्पना की गई थी। प्रकृति मे हमारे सामने चन्द्रमा का प्रत्यक्षउदाहरण है। चन्द्रमा प्रतिदिन एक-एक कला बढता रहता है। बढ़ते-बढ़ते पूर्णिमा को अपनी सम्पूर्ण कलाओ के साथ विकसित होकर हमारे सामने आता है। पन्द्रह दिंन की पन्द्रह कलाएं रहती हैं और एक कला जो अप्रकट रहती है वह अमावस्या के अधकार मे से चंद्रमा में प्रविष्ट होती है। यदि अमावस्या में यह कला न रहे तो पुन. कलाओ का उदय नही हो सकता। इसी एक गुप्त या वैदिक शब्दो मे 'अनिरुक्त' कला के बीज से वृद्धि को प्राप्त होकर शुक्लपक्ष का चन्द्रमा पूर्णिमा बनकर हमारे सामने आता है। समस्त कलाओं से युक्त होने के कारण इसे सकल (कलाओं सहीत) कहते है, यह चन्द्रमा का 'कृत्स्न' रूप है, पूर्ण रूप है। ठीक इसी प्रकार कृष्ण में भी आत्मा के 'सकल' या 'कृत्स्न' का दिग्दर्शन होता है। मनुष्य का मस्तिष्क पूर्णता के जिस जिस स्वरूप की कल्पना कर सकता है वह सब हमे कृष्ण में मिलता है। युद्ध विद्या मे चक्रधर कृष्ण का कोई प्रतिद्वन्द्वी नही था। ज्ञान-विज्ञान के विश्लेषण मे उनके मस्तिष्क का लोहा आज भी माना जाता है। अध्यात्म-तत्त्व के दर्शन और चिन्तन मे कृष्ण का अधिकार उनके विराट् रूपदर्शन से ही प्रकट हो जाता है। वाग्मिता या वाक्शक्ति उनके दौत्यकर्म से सिद्ध होती है। कुरुराज दुर्योधन की सभा मे सन्धिचर्चा के लिए दिया हुआ उनका व्याख्यान आज भी मनन करने योग्य है।

भारतीय राजनीति की परिभाषा के अनुसार दूत तीन तरह के होते हैं, नि:सृष्टार्थ: जो देश-काल के अनुसार राज-कार्य को बनाने का सब अधिकार रखते हैं; सन्दिष्टार्थ : जो उक्तमात्र (Definite instructions) को जाकर कह सकते हैं; और शासनहर : जो लिखित पत्र आदि ले जाते हैं। इनमें कृष्ण के बुद्धि-बल पर सोलह-आने भरोसा करके पांडवो ने कृष्ण को प्रथम कोटि का अर्थात् नि:सृष्टार्थ दूत बनाकर एवं कर्तुमन्यथाकर्तुम् के सब अधिकार समर्पित करके भेजा था। कृष्ण की राजनीतिक बुद्धिमत्ता जिसके द्वारा जरासन्ध, बाणासुर, नरकासुर, शिशुपाल, दुर्योधन जैसे एक राजसत्ताधारी बात-की-बात में उखड गए, आज भी भारत के लिए सोचने और अनुकरण का विषय है। अवश्य ही हमारे राजनीति के विश्वविद्यालयो मे इस दृष्टि से एक दिन कृष्ण के मस्तिष्क का अध्ययन किया जाएगा।

शारीरिक सौन्दर्य, स्वास्थ्य और समस्त अवयवों का यथास्थान सुन्दर सन्निवेश, यह भी मानवी पूर्णता का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। कृष्ण का सौन्दर्य जगत् में अनुपम था, महाभारत काल के सबसे बड़े ब्रह्मचारी भीष्म से जब उनकी अंतिम इच्छा पूछी गई तो उन्होंने कहा कि मैं कृष्ण के सौन्दर्य को जानता हूं, मेरी अभिलाषा यह है कि एक बार उनके उस मोहक रूप को देखकर ही आखें बन्द करूं। परिवार, स्त्री, पुत्र, पौत्र, आदि का वैभव एव धन-धान्यआदि का ऐश्वर्य तो कृष्ण की जीवन कथाओ मे प्रसिद्ध ही है। नृत्त, गीत, और वादित्र इन ललित कलाओ मे कृष्ण ने जो पूर्णता प्राप्त की थी उसके कारण आज भी भारतीय सगीत अनुप्राणित है। कभी यमुना के तटवर्ती वनो में स्वच्छन्द नृत्य करते, कभी वेणु के मधुर संगीत से कुंजों को गुंजाकर प्राणी-मात्र के ऊपर अपनी मोहनी डाल देते, कभी गोपों को साथ लेकर नाना प्रकार की मल्ल-क्रीड़ाओं का अभ्यास करते, कभी मार खाते, और कभी मारते, कभी गायको के साथ सुन्दर वनों की सैर करते। निदान उनका जीवन विशाल उन्मुक्त प्रकृति के साथ तन्मय हो गया था। आत्मा और शरीर के विकास ने इस प्रकार के वन-विहार के आनन्द पूर्ण जीवन से कितनी सहायता मिली होगी, इसका केवल अनुमान किया जा सकता है।

भारतवर्ष की राष्ट्रलक्ष्मी के रथ के दो प्रधान पहिए हैं, एक कृषि और दूसरा गोपालन। इसमें गो-वंश की वृद्धि और विकास कृषि का मूल है। कृष्ण ने गौओं की सेवा के लिए जो आदर्श रखा है वह आज भी अनुकरणीय है। अपने राष्ट्र के भावी निर्माण के कार्यक्रम मे कम से कम इस बात के लिए तो हम अवश्य ही कृष्ण का स्मरण करेंगे। दूध, मक्खन, नवनीत, दही इन दिव्य पदार्थों का जितना उपयोग बालपन में कृष्ण ने किया उतना शायद ही संसार के दूसरे व्यक्ति ने अपने बालपन मे किया हो। कृष्ण के नैतिक गुणो की तो कहानिया ही बन गई हैं। सुदामा के साथ उनका विनम्र मैत्री व्यवहार, गुरु सान्दीपिनि के साथ उनका उपकार, विदुर के यहां आतिथ्य-सत्कार यह सब उनके उन्नत हृदय की विशालता को प्रकट करता है। जगत और परिवार के सम्बन्ध में वे राग-द्वेष से बिल्कुल परे थे। यशोदा जैसी माता से अलग होते हुए एवं यादवो के नाश को अपनी आंखो से देखते हुए भी, उन्होंने तिलमात्र उन्हे विचलित नही किया। गीता के शब्दों में वे पूर्ण 'धीर' थे। ऐसे मनुष्य विकारों के बीच में रहकर भी विकृत नहीं होते और न कभी मोह को प्राप्त होते हैं।

इस दृष्टि से कृष्ण के अतिमानवी चरित्र का जितना भी अध्ययन किया जाये; हमे इनमें पूर्णता की उतनी ही अधिक प्रतीति होती है। इसीलिए यहां के साहित्यकारो ने कृष्ण की पूर्णता को व्यक्त करने के लिए उनको सोलह कलाओ का प्रतिनिधि माना है। कालिदास के शब्दो में कृष्ण आज भी मानवी पूर्णता के मापदण्ड की तरह स्थित हैं।

क. प्रश्नोपनिषद् और सोलह कलाएं —
1-प्राण, 2-श्रद्धा, 3-आकाश, 4-वायु, 5-ज्योति, 6-जल, 7-पृथिवी, 8-इन्द्रिय, 9-मन, 10-अन्न, 11-वीर्य, 12-तप, 13-मन्त्र, 14-कर्म, 15- लोक 16-नाम।

ख. जैमिनीय उपनिषद् और सोलह कलाएं —
सत्-असत्-2, असत्-सत्-4, वाक्मन-6, मन-वाक्-8, चक्षु:-श्रोत्र-10, श्रोत्र-चक्षु:-12, श्रद्धा-तप-14, तप-श्रद्धा-16।

ग. जैमिनीय उपनिषद ब्राह्मण और [प्रजापति की] सोलह कलाएं —
1-भद्रम्, 2-समाप्ति:, 3-आभूति:, 4-सम्भूति:, 5-भूतम्, 6-सर्वम, 7-रूपम् 8-अपरिमितम्, 9-श्री:, 10-यश:, 11-नाम, 12-अग्रम्, 13-सजाता, 14-पय:, 15-महीया, 16-रस।

घ. बृहदारण्यक उपनिषद् और [मन की] सोलह कलाएं —
1-काम, 2-संकल्प, 3-विचिकित्सा, 4-श्रद्धा, 5-अश्रद्धा, 6-धृति, 7-अधृति, 8-ह्री, 9-श्री:, 10-भी:, 11-प्राण, 12-अपान, 13-व्यान, 14-उदान, 15-समान, 16-शब्द।

ङ. छन्दोग्य उपनिषद् और [चतुष्पाद ब्रह्म की] सोलह कलाएं —
1-प्राची, 2-प्रतीची, 3-दक्षिणा, 4-उदीची, [दिक्कलाएं] 5-पृथिवी, 6-अन्तरिक्ष, 7-द्यौ., 8-समुद्र, [अनन्तवान्नाम कलाएं] 9-अग्नि:, 10-सूर्य:, 11-चद्र:, 12-विद्युत् [ज्योतिष्मान् कलाएं] 13-प्राण, 14- चक्षु:, 15-श्रोत्र, 16-मन, [आयतनवान् कलाएं]

च. वैदिक सन्ध्या और [मानव की] सोलह कलाएं —
1-2-वाक्-वाक्, 3-4 प्राण:, 5-6चक्षु: चक्षु:, 7-8 श्रोत्रंश्रोत्रम् 9-नाभि; 10-हृदय, 11-कण्ठ, 12-शिर, 13-14-दोनों भुजाएं 15-16 दोनों हाथ।

—स्वामी दीक्षानन्द

सुभाषित

क्षुत्क्षामोऽपि जराकृशोऽपि शिथिलप्रायोऽपि कष्टां दशाम्
आपन्नोऽपि विपन्नदीधितिरपि प्राणेषु नश्यत्स्वपि ।
मत्तेभेन्द्र विभिन्नकुम्भपिशितग्रा सैकबद्धस्पृह :
किं जीर्णं तृणमत्ति मानमहतामग्रेसर . केसरी ॥

भर्तृहरि शतक

क्षुधाक्षीण अरु जीर्ण जरा से, शिथिल अंग पाता अति कष्ट ।
तेजहीन अरू अतिशय दुर्बल, होने पर भी प्राण विनष्ट ॥
मत्त करी के कुम्भ मास की करता है जो नित अभिलाष ।
वह अभिमानी सिंह कभी क्या खा सकता है सूखी घास ?

—गोपालदास गुप्त

सम्पादकीयम्

श्रीकृष्ण के इस स्वरूप को कौन पहचानेगा ?

योगेश्वर श्रीकृष्ण से लेकर "चोर जार-शिखामणि" तक श्रीकृष्ण के इतने रूपों का चलन है कि हरेक पर ग्रन्थो की भरमार है। परन्तु आश्चर्य है कि श्रीकृष्ण के जिस रूप की सबसे अधिक चर्चा होनी चाहिए, वही रूप सबसे अधिक उपेक्षित है। शायद इसका कारण यह है कि भारतीय जनता ने श्रीकृष्ण को ईश्वर का अवतार मानकर मनुष्य की कोटि से बाहर कर दिया और अपने मन में यह समझ लिया कि उनकी सारी लीलाएं अलौकिक थी इसलिए इस लोक मे किसी भी मनुष्य के लिए उनका अनुकरण करना सभव नही है। परन्तु महाभारत मे श्रीकृष्ण का जैसा चरित्र-कीर्तन किया गया है, उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वे कोई अलौकिक शक्ति संपन्न देवता या ईश्वर नहीं, बल्कि मनुष्य ही थे। स्वय श्रीकृष्ण कहते हैं—

अहं हि तत् करिष्यामि पर पुरुषकारत: ।
दैवं तु न मया शक्य कर्म कर्तुं कथचन ॥

—"मनुष्योचित जो भी प्रयत्न है वह सब यथा साध्य मैं कर सकता हूं, परंतु दैव के कार्यों मे मेरा कुछ भी वश नहीं है।" महाभारत से और ऐसे अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं, जिनसे श्रीकृष्ण की मानवीयता सिद्ध की जा सकती है। रामायण और महाभारत जैसे आर्ष महाकाव्यों के प्रणेता अपने चरित्र नायकों को "नर" संज्ञा से अभिहित करते हैं। परन्तु परवर्ती पुराण कर्ता इन नरों को "नारायण" बनाकर उन्हें अपार्थिव धरातल पर प्रतिष्ठित करने से बाज नहीं आते।

महाभारत के समय इस देश में धन-जन सब कुछ था, शक्ति और साहस भी था, परन्तु जन सामान्य में अकर्मण्यता थी। समाज के तथा कथित उच्च वर्ग मे आपसी महत्वाकांक्षाओ का टकराव इस सीमा तक पहुंच गया था कि संभवत: देश टूटने के कगार पर होता, यदि श्रीकृष्ण न आते। यह ठीक है कि आर्य जीवन का सर्वांगीण विकास जैसा कृष्ण चरित्र मे दिखाई देता है, वैसा अन्यत्र कही नहीं। और यह भी सही है, स्व०—कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी के शब्दो मे—"इतिहास की रंगभूमि पर ऐसे व्यक्ति जब अवतरित होते हैं तब दूसरे तत्व पुरुषार्थ-विहीन हो जाते हैं। इतिहास-क्रम रुक जाता है। समय-शक्तियों का मान भूलकर दर्शको का मोह उसके आसपास लिपट जाता है।" परंतु उस समय गान्धार से लेकर सह्याद्रि पर्वत माला तक क्षत्रिय राजाओ के छोटे-छोटे किन्तु निरंकुश राज्यो की भरमार थी। उन्हें एकता के सूत्र मे पिरो कर समग्र राष्ट्र को एक सुदृढ़ शासन व्यवस्था के अन्तर्गत लाने वाला कोई नही था। उस समय की स्थिति का आभास महाभारत के इस श्लोक से भली भांति हो सकता है—

देशे-देशे हि राजान: स्वस्य-स्वस्य प्रियकरा: ।
न च सम्राज्यमाप्तास्ते सम्राट् शब्दोहि कृच्छ्रभाक् ॥

—"छोटे-छोटे प्रदेशों पर अपनी अपनी सत्ता जमा कर राजा कहाने वाले तो अनेक थे पर सब अपने-अपने स्वार्थों में लिप्त थे। साम्राज्य की किसी को कल्पना नहीं थी और सम्राट् शब्द से सम्बोधित किया जा सकने योग्य कोई व्यक्ति नही था। ऐसी स्थिति मे सबसे अधिक प्रतापी राजा मगध का जरासन्ध था और वह समग्र भारत का सम्राट बनने के स्वप्न देख रहा था। राजगृह से लेकर मथुरा तक उसका प्रभाव क्षेत्र था। मथुरा-नरेश कंस उसका सगा दामाद था। चेदि देश का शिशुपाल और सिन्धुदेश का जयद्रथ और हस्तिनापुर का दुर्योधन—ये सभी जरासन्ध के मित्र और वशंवद थे और उसके सम्राट बनने में बाधक बनने के बजाय अपनी अशक्ति के कारण साधक ही अधिक थे। पूर्व की मगधधुरी और हस्तिनापुर की कुरुधुरी ये दोनों तत्कालीन राजनीति के मुख्य सूत्रधार थे।

इस मगध-कुरु-धुरी की एक विशेषता तत्कालीन राजनीति की प्रचलित विचार-धारा भी थी जिस के कारण राजा को वंशानुगत और दैवी गुणो से युक्त समझा जाता था। "राजा परं दैवतम्" उस समय की बद्धमूल मान्यता थी और यह समझा जाता था कि एक बार अगर किसी व्यक्ति ने किसी तरह राज्य हस्तगत कर लिया तो उसके विरोध में आवाज उठाना अनुचित है। प्रजा को हर हालत में राजा का अनुगत ही होना चाहिए। यह विचार धारा इतनी रूढ़ थी कि भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य और कृपाचार्य जैसे मनीषी और बुजुर्ग लोग भी दुर्योधन के किसी भी अनुचित काम के विरुद्ध कुछ भी कहने की हिम्मत नहीं करते थे। उस समय इन बुजुर्गों का यही शिष्टाचार था। इस विचारधारा के चलते राजा को निरंकुश और अत्याचारी होने की पूरी छूट थी। इसी विचार धारा के कारण जरासन्ध अन्य अनेक मांडलिक राजाओं को परास्त करके गिरफ्तार कर चुका था और उनके राज्यो को अपने राज्य मे मिला चुका था। दुर्योधन आदि अन्य मित्रो की सहायता से एक दिन वह भारत का चक्रवर्ती सम्राट बनने का स्वप्न देखता था।

जहां जरासन्ध साम्राज्यवादी विचार धारा का पोषक था वहा श्रीकृष्ण गण-तंत्रीय प्रणाली के पोषक थे क्योंकि उनके यादव और वृष्णि कुल मे गण राज्य की पुरानी परपरा चली आ रही थी। जब से मथुरा में कंस राजा बना, उसने गणतंत्रीय प्रणाली समाप्त करके तानाशाही स्थापित कर दी और प्रजा पर साम्राज्यवादी पंजा पक्का कर दिया। उसने अपने से पूर्ववर्ती गण-प्रमुख महाराज उग्रसेन को बन्दी बना लिया। इससे सारी प्रजा अन्दर ही अन्दर घुटन महसूस कर रही थी और विद्रोह के अवसर की प्रतीक्षा में थी। श्रीकृष्ण ने कंस को मार कर जनता के विद्रोह का नेतृत्व किया और एक तरह से मगध-धुरी के सूत्रधार जरासन्ध को अपनी ओर से पहली चुनौती दी। निश्चय ही जरासन्ध इस अपमान को अमृत की घूट की तरह नही पी सकता था। इसलिए उसने बारम्बार मथुरा पर आक्रमण किये। पर हर बार श्रीकृष्ण जनता के सहयोग से छापामार युद्ध द्वारा उसे अकृतकार्य करते रहे। अन्त में जब जरासन्ध ने एक विदेशी राजा कालयवन को लेकर मथुरा पर चढ़ाई की तब कृष्ण ने उतनी बड़ी सेना के सामने किसी भी तरह सफलता की आशा न देखते हुए मथुरा छोडकर भारत के ठेठ पश्चिम में स्थित, समुद्र तटवर्ती द्वारिका को राजधानी बनाया। मगध धुरी को समाप्त कर भारत को पश्चिम से पूर्व तक एक सूत्र मे बांधने के स्वप्न की पूर्ति का ही यह अग रहा होगा।

इधर कुरु वंश में न्याय और अन्याय के आधार पर दो टुकड़े हो गये थे और दुर्योधन का अन्यायी पक्ष मगध धुरी के साथ जुड़ा हुआ था। तब स्वभावत. ही श्रीकृष्ण ने अन्याय पीडित और अभावग्रस्त पाण्डवों को अपने उस विराट स्वप्न को चरितार्थ करने का माध्यम बनाया।

उसके बाद जिस प्रकार बिना सैन्य बल के प्रयोग के भीम के साथ मल्लयुद्ध द्वारा जरासन्ध को समाप्त करवाया, वह कृष्ण की कंस वध के पश्चात् दूसरी सबसे बड़ी विजय थी। इस प्रकार मगध धुरी की कमर टूट जाने के पश्चात् श्रीकृष्ण ने मणिपुर की राजकुमारी चित्रांगदा से अर्जुन का और नगाप्रदेश की राजकुमारी हिडिम्बा से भीम का तथा अरुणाचल की राजकुमारी रुक्मिणी से अपना विवाह करके पूर्वी सीमान्त के इन प्रदेशो के साथ, जो अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण हमेशा डावांडोल रहने को बाध्य रहते हैं, अपने रक्त सम्बन्ध जोड़े और उत्तर पश्चिम धुरी के साथ उनको एकाकार कर दिया।

परन्तु अभी हस्तिनापुर के अन्दर आपसी विवाद को समाप्त करवाने के लिए महाभारत होना शेष था, अनिवार्य भी। क्योंकि उसके बिना दुर्योधन सुई की नोंक के बराबर जमीन देने को भी तैयार नही था। परन्तु इस महाभारत से पहले श्रीकृष्ण ने पांचाली [द्रौपदी] के साथ पांडवों के विवाह द्वारा पाण्डवों के साथ पाचाल नरेश द्रुपद का गठ-बन्धन करा के पाण्डवो को कौरवो से लोहा लेने मे समर्थ बना दिया। पाण्डवो की विजय का मुख्य आधार जहां यह कुरु-पाचाल की वज्र सन्धि थी, वहीं कृष्ण की अपनी रणचातुरी भी थी। यदि कृष्ण की नीतिमत्ता न होती तो पाण्डव किसी भी हालत में महाभारत मे विजय नही प्राप्त कर सकते थे।

महाभारत की विजय का सारा श्रेय श्रीकृष्ण को है। महाभारत के असली सूत्रधार वही हैं। पर इतने बड़े महायुद्ध के बिना जो उनका विराट स्वप्न था, पूर्व से लेकर पश्चिम तक—मणिपुर से लेकर द्वारिका तक—समस्त भारत को एक दृढ़ केन्द्र के अधीन करना, वह पूरा नही हो सकता था। संभवत: श्रीकृष्ण ने आगे भविष्य में होने वाले शकों और हूणों आदि विदेशियो के आक्रमणो की कल्पना करके भी इस महान भारत देश को एक दृढ केन्द्र के अधीन करने की योजना बनाई थी। उसी का यह परिणाम था कि आगे लगभग 4 हजार साल तक, जब तक यह देश दृढ़ केन्द्र के अधीन रहा, कभी विदेशी आक्रान्ता सफल नहीं हो सके। जब केन्द्र कमजोर हो गया तो उसको चारो ओर से नोंचने वाले भी सफल होते दिखाई दिये।

महाभारत का अर्थ केवल महायुद्ध ही नही, बल्कि महान भारत और बृहत्तर भारत भी है। भारत के इस विराट् रूप को चरितार्थ करने वाले दिव्य पुरुष श्रीकृष्ण की इस राजनीतिक दिव्य महिमा को समझने वाले कितने लोग हैं ?

—अशोक कौशिक—

कृष्ण महाभारत काल के ऐतिहासिक पुरुष हैं। किन्तु इससे भी पूर्व ऋग्वेद में कृष्ण का उल्लेख पाया जाता है। ऋग्वेद के ये कृष्ण अष्टम मण्डल चौहत्तरवें सूक्त के प्रणेता हैं। एक ऋचा मे ऋषि ने स्वयं को कृष्ण कहा है। वैदिक अनुक्रमणिका के प्रणेता उस ऋषि को अंगिरस कृष्ण मानते हैं। 'कौशीतकी ब्राह्मण' में भी अंगिरस कृष्ण का संकेत मिलता है। पाणिनि ने गणपाठ मे कृष्ण का उल्लेख किया है। छान्दोग्योपनिषद् 3-16-6 में सर्व प्रथम देवकी पुत्र कृष्ण का नाम आया है। कुछ लोगों की धारणा है कि महाभारत काल मे आकर तीनों कृष्ण मिल कर एक हो गये। यहां तक तो कृष्ण एक पुरुष अथवा महापुरुष ही प्रतीत होते हैं। जैनागमों और बौद्ध जातकों मे भी मानव-कृष्ण की कथा प्राप्य है। इस सबसे यही निष्कर्ष निष्पन्न होता है कि कृष्ण अपने समय के प्रसिद्ध महापुरुष थे।

पुराण-युग तक आते आते कृष्ण का व्यक्तित्व अलौकिकता के रंग में ही नहीं रंग उठा, अपितु उसमें कुछ उच्छृंखलता का समावेश भी हो गया। महाभारत में वर्णित रुक्मिणी-हरण, सत्यभामा का प्रसंग, इसी प्रकार महा उमंगजातक मे उल्लिखित ऋक्ष-कन्या जाम्बवती पर कृष्ण की कामासक्ति आदि प्रसंगों ने उनके व्यक्तित्व की रसिकता लोक जीवन के साथ साथ साहित्य में भी विकसित की। 'गाहासतसई' की कई गाथाओं में इसी प्रकार की रसिकता का वर्णन पाया जाता है। कृष्ण की ऐश्वर्यपूर्ण विलास-लीलाओं का नग्न चित्रण सर्व प्रथम 'हरिवंशपुराण' में आया है। गोपालकृष्ण का संक्षिप्त निरूपण विष्णु पुराण में भी हुआ है। श्रीमद्भागवत महापुराण ही ऐसा पुराण है जिसमें कृष्ण के जन्म से आरम्भ कर उनके गोलोकवास तक की कथा का विस्तार से वर्णन किया गया है। मध्यकालीन हिन्दी भक्ति-काव्य को लीला पुरुषोत्तम कृष्ण के विविध रूप इसी पुराण से मिले हैं।

कृष्ण का माखन-चोर रूप :

कृष्ण का बाल्यकाल गोकुल में व्यतीत हुआ। नन्द और यशोदा के संरक्षण में वे इकलौती सन्तान के रूप में पालित पोषित हुए। वर्णन कवियों ने उनकी उस काल की उच्छृंखलताओं का वर्णन किया है। धनी और मुखिया परिवार की इकलौती सन्तान को पारिवारिक प्यार उच्छृंखल बना देता है। उसी काल में उनकी माखन चोरी से सम्बन्धित अनेक घटनाओं का वर्णन है। हमारी दृष्टि में यह उच्छृंखलता, वह माखन चोरी आदि बालकृष्ण का प्रारम्भिक विद्रोह था। गोकुल का माखन उस मथुरा में बिकने जाता था जहां कृष्ण के माता-पिता पर अत्याचार हुआ था। कृष्ण यह कैसे सहते। अपने घर का पौष्टिक तत्व शत्रु की पुष्टता के लिये उपलब्ध कराया जाय? असम्भव!

इसी से प्रेरित होकर कृष्ण ने अपना अखाड़ा खोला था। इससे कंस पक्ष निर्बल हुआ और कृष्ण के ग्वाले सुपुष्ट होने लगे।

रसिक (?) कृष्ण :

कृष्ण पर यह आरोप लगाया जाता है कि वे स्नान करती गोपिकाओं के वस्त्रों का अपहरण कर लिया करते थे। हम समझते हैं कि यहां पर अलंकार का प्रयोग किया गया है। सार्वजनिक स्थलों पर नग्न स्नान किसी की भक्ति का परिचायक नहीं माना जा सकता। नारियों को इस प्रकार की भक्ति से विरत करना ही चीर-हरण का प्रारूप हो सकता है। कृष्ण की बाल बुद्धि मे इससे उत्तम उपाय कदाचित न समाया हो।

रुक्मिणी हरण की घटना में भी उनकी रसिक-प्रियता का नहीं कर्त्तव्य परायणता का रूप ही फिर निखरा है। नारी के सतीत्व की रक्षा उनका कर्त्तव्य था जिसका उन्होंने पालन किया। यह घटना इस ओर स्पष्ट संकेत करती है कि नारी अधिकार में माता-पिता की इच्छा ही सर्वोपरि नहीं, कन्या की स्वीकृति भी अपेक्षित है। सुभद्रा हरण के अवसर पर भी इसी उदारता का परिचय श्रीकृष्ण ने दिया। भौमासुर द्वारा बन्दी बनाई गई सोलह हजार एक सौ राजकन्याओं को भी कृष्ण ने ही अपने पराक्रम से मुक्त कराया था। राक्षसराज के बन्दी गृह में महीनों बन्द रहने वाली कन्याओं को छुड़ाने का प्रयास करना तो दूर, छूटने पर उन्हें अपनाने के लिये भी कोई तैयार नहीं था। उनके माता-पिता भी नहीं। इस अवस्था में उन असहाय नारियों को समाज में अपनी पत्नियों जैसा उच्च आदर का स्थान दिला कर कृष्ण ने अनुपम समाज सुधारक के कर्त्तव्य का पालन किया। अन्यथा कृष्ण की तो एक ही पत्नी थी, रुक्मिणी। उन्होंने कोई अन्य विवाह नहीं किया था।

त्याग की प्रति मूर्ति :

कृष्ण के मन में मथुरा के विरुद्ध बाल्यकाल से ही विद्रोह पनप रहा था। मथुरा को विजय करना उनका प्रथम लक्ष्य था। उसके लिये उन्होंने सैन्य शक्ति का संग्रह किया और अवसर पाते ही कृष्ण ने कंस को पराजित कर अपने नाना के कष्टों का ही अन्त नहीं किया, अपितु उनको उनका राज्य वापस दिलाया और मथुरावासियों की विपत्ति का अन्त किया। मथुरा तब कृष्ण का विक्रमार्जित राज्य था, किन्तु उस पर वे स्वयं आरूढ़ नहीं हुए, अपितु उसके उचित अधिकारी महाराजा उग्रसेन को उन्होंने वह राज्य सौंपा। यही त्याग कृष्ण चरित्र की प्रमुख विशेषता है। हम समझते हैं कि यह त्याग राम के राज्य त्याग से कहीं अधिक है। राम ने तो परिस्थितियों के वश हो कर चौदह वर्ष के लिए ही वनवास भोगा, किन्तु कृष्ण ने तो कभी राज्य का वरण किया ही नहीं। यादव गणराज्य के भी वे संघ प्रमुख ही थे, राजा अथवा महाराजा नहीं।

कंस मगधराज जरासन्ध का जामाता था। कंस के मारे जाने के बाद जरासन्ध ने अपने समस्त सैन्य बल से मथुरा पर आक्रमण कर दिया। कृष्ण ने स्थिति को आंका और जब समझा कि जरासन्ध के सैन्यबल के सम्मुख उनका ठहर पाना सम्भव नहीं, तो उन्होंने मथुरा छोड़ कर पर्वत प्रदेशों में जाना ही उचित समझा। वहां से उन्होंने एक प्रकार से छापामार युद्ध करके जरासन्ध को छकाया। जरासन्ध ने तब विदेशी राजा कालयवन को मथुरा पर आक्रमण के लिये उकसाया और उसको साथ लेकर पुनः मथुरा पर आक्रमण किया। कृष्ण को जब यह विदित हुआ तो वे तुरन्त समझ गये कि इस प्रकार तो यह देश एक विदेशी राजा के चंगुल में फंस जायेगा। अतः उचित यही है कि "रणछोड़" बन जांय। कृष्ण समझते थे कि उनके इस प्रकार चले जाने से जरासन्ध शान्त हो जायेगा और मथुरा विदेशी कालयवन की काली छाया से बच जायेगा। बस, फिर क्या था, 'रणछोड़दास' ने मथुरा छोड़ी और द्वारका जा बसाई। देश के लिये इतना महान त्याग कृष्ण जैसा लोकोत्तर पुरुष ही कर सकता था कोई सामान्य राजा-महाराजा नहीं।

नीति निपुणता :

महाराज युधिष्ठर ने जब राजसूय यज्ञ करने का विचार व्यक्त किया तो कृष्ण ने उन्हें बताया कि जरासन्ध इसमें बाधक होगा, और जब तक उसको मार्ग से न हटाया जाय यह यज्ञ सफल होना सम्भव नहीं। सेना द्वारा आक्रमण कर उसको मिटाना न समयोचित था और न सम्भव ही। कृष्ण ने नीति से काम लिया। अर्जुन और भीम को साथ लेकर स्नातक वेश में जरासन्ध की नगरी में प्रविष्ट हुए। उन्होने किस प्रकार जरासन्ध के सन्देह को, कि वे ब्राह्मण नहीं क्षत्रिय हैं और 'सत्यं राजसु शोभते' के उत्तर में उसको बताया कि वे स्नातक हैं और स्नातक ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य कोई भी हो सकता है। उन्होंने जरासन्ध को यह भी बताया कि उसने बलि के लिए राजाओं को बन्दी बनाया हुआ है, अतः अपराधी होने के कारण वह उनका शत्रु है। उस समय उन्होंने घोषणा की—'वयं हि शक्ता धर्मस्य रक्षणे धर्मचारिणः'। धर्म के मार्ग पर चलने वाले हम लोग धर्म की रक्षा करने में समर्थ हैं। अन्त में उन्होंने कह ही दिया—शौरिरस्मि हृषिकेशः मैं शूरसेन का नाती हृषीकेश कृष्ण हूं, और ये पांडव हैं। अन्त में जरासंध और भीम का युद्ध हुआ, उस समय श्री कृष्ण ने नीति शास्त्र का परिचय दे कर जरासन्ध को परलोक पहुंचा दिया।

जरासन्ध के राज्य को उन्होंने आत्मसात् नहीं किया अपितु उसके पुत्र को राज्य सौंपा, बन्दी राजाओं को मुक्त कराया और सब राजाओं को लेकर राजसूय यज्ञ में पहुंच गये। जरासन्ध के प्रबल समर्थक और सहायक शिशुपाल का जिस प्रकार उन्होंने वध किया, वह भी उनकी नीतिमत्ता का अनुपम उदाहरण था।

गीता का उपदेश :

महाभारत युद्ध के अवसर पर मोह-ग्रस्त अर्जुन के भ्रम का किस प्रकार उन्होंने निवारण किया वह गीता-ज्ञान के नाम से विख्यात है। गीता को यदि महाभारत से अलग कर दिया जाय तो वह बिना प्राण के देह समान ही रह

(शेष पृष्ठ १५ पर)

जहां श्रीकृष्ण, वहीं विजय

प्रेमचन्द श्रीधर एम०ए०

देखो। श्री कृष्णजी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण कर्म स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा। और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाए हैं। दूध, दही मक्खन आदि की चोरी और कुब्जा दासी से समागम, पर स्त्रियों से रास मण्डल, क्रीड़ा आदि मिथ्या दोष श्री कृष्ण जी में लगाए हैं। इसको पढ़-पढ़ा, सुन-सुना के अन्यमत वाले श्री कृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्री कृष्ण जी के सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्यों कर होती ?

—सत्यार्थ प्रकाश एकादश समुल्लास

अपने ग्रन्थ 'कृष्ण चरित्र' की उपक्रमणिका मे श्री बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय लिखते हैं—

''कृष्णस्तु भगवान् स्वयम्'' यही जनता का विश्वास है। तो सदा-सर्वदा कृष्णाराधना, कृष्णनाम कृष्णकथा धर्मोन्नति की साधक है। सब समय ईश्वर का स्मरण करने की अपेक्षा मनुष्य का मंगल और क्या हो सकता है? परन्तु ये लोग भगवान के किस स्वरूप की भावना करते हैं? जो बाल्यकाल में चोर है, दधि और नवनीत चुरा कर खाता है, जो किशोरावस्था में पर-स्त्रीगामी है, असंख्य गोपियों को पतिव्रत धर्म से भ्रष्ट करता है, जो प्रौढ़ आयु में वञ्चक और शठ है, धोखा देकर द्रोण आदि का प्राण हरण कराता है? भगवान का चरित्र क्या ऐसा ही होता है? जो स्वयं शुद्ध सत्वरूप है जिनसे सब प्रकार की शुद्धि उद्भूत है, जिनका नाम लेने से अशुद्धि और अपुण्य दूर हो जाता है। मनुष्य देह धारण करके क्या यह समस्त पापाचरण क्या उस भगवत चरित्र में संगत है ?''

फिर वे लिखते हैं—''भगवान श्री कृष्ण के किस प्रकार के चरित्र का पुराणेतिहास में वर्णन वस्तुतः हुआ है—यह जानने के लिए मैंने यथा सम्भव पुराणेतिहास का विमर्श किया है। और मैं इस परिणाम पर पहुंचा हूं कि कृष्ण सम्बन्धी जो समस्त पाप कथा जन समाज में प्रचलित हो गई है वह समस्त निर्मूल है और मनगढ़न्त कथाओं को बाहर निकाल देने पर कृष्ण चरित्र में जो कुछ शेष बच जाता है वह अति विशुद्ध, परम पवित्र एवं अतिशय महान है। लगता है कि ऐसा सर्वगुण सम्पन्न, समस्त पाप स्पर्श शून्य, आदर्श चरित्र अन्यत्र कहीं भी नहीं है। न किसी देश के इतिहास में और न किसी देश के काव्य में।''

भारतवर्ष के समस्त प्राचीन ग्रन्थों में केवल महाभारत और रामायण को इतिहास का मान प्राप्त है। किन्तु दुर्भाग्य से आज महाभारत का जो स्वरूप उपलब्ध है उसमे कथा का इतना विस्तार हुआ है कि उसका बहुत सा भाग अनैतिहासिक लगता है।

अनुक्रमणिका अध्याय के 102 वें में लिखा है कि महर्षि व्यास देव ने डेढ़ सौ श्लोकों की अनुक्रमणिका लिखी थी—

ततोऽध्यर्द्धशतं भूयः
संक्षिप्तं कृतवानृषि:।
अनुक्रमणिकाध्यायं
वृत्तान्तानां सपर्वणाम् ॥

अब अनुक्रमणिका अध्याय में कुल 262 श्लोक पाये जाते हैं। अत. पर्व संग्रह अध्याय के लिखे जाने के उपरान्त इस अनुक्रमणिका मे ही 122 श्लोक अधिक हो गए। ये सब प्रक्षिप्त हैं। इस प्रकार एक लाख श्लोको की कथाओं में प्रक्षेपों की भरमार है। महाभारत को बार-बार पढ़ने के बाद श्री चट्टोपाध्याय ने महाभारत को तीन स्तरो में विभक्त किया है।

पहले स्तर में पाण्डवादि का वृत्तांत एवं प्रसंग प्राप्त श्री कृष्ण की कथा है।

दूसरे स्तर पर जो किसी अन्य कवि की रचना जान पडता है, काव्य चातुर्य की कमी नहीं है, परन्तु इस स्तर को यदि महाभारत से निकाल भी दें तो मूल कथा की कोई क्षति नही होती। स्पष्ट है कि यह भाग प्रक्षिप्त है।

पहले और दूसरे मे मुख्य अन्तर यह है कि पहले में श्री कृष्ण के चरित्र का वर्णन ईश्वर अथवा विष्णु के अवतार के रूप में नहीं हुआ। वे स्वयं भी देवत्व को स्वीकार नहीं करते और मानवी से भिन्न दैवी शक्ति द्वारा किसी कर्म को सम्पन्न नहीं करते। परन्तु दूसरे में स्पष्टतः विष्णु का अवतार अथवा नारायण कहकर परिचित एवं चर्चित हैं। वे स्वयं अपने ईश्वरत्व की घोषणा करते हैं। और कवि उनके ईश्वरत्व का प्रतिपादन करने के लिए प्रयत्नशील है।

तीसरे स्तर की रचना तो अनेक शताब्दियों में हुई। तब इसे पञ्चम वेद का नाम दे दिया गया ताकि जन सामान्य की श्रद्धा बढ़ जाए और इस नए रूप में ग्राह्य हो। श्रीमद्भागवत के प्रथम स्कन्ध में आया है—

स्त्रीशूद्रद्विज बन्धुनां
त्रयी न श्रुति गोचरा।
कर्म्मश्रेयसी मूढानां
श्रेय एवं भवेदिह ॥
इतिभारतमाख्यानं
कृपया मुनिना कृतम्

(१ स्कन्ध, ४ अ०-२५)

इन तीनों स्तरों में से केवल प्रथम [illegible] मौलिक और ऐतिहासिक मानना पड़ेगा।

जहां तक श्री कृष्ण के चरित्र के लिए अन्य ग्रन्थों का प्रश्न है, महाभारत के अतिरिक्त ब्रह्म पुराण, विष्णु पुराण भागवत और ब्रह्मवैवर्त मे वह प्राप्य है। इसके अतिरिक्त हरिवंश मे जो कि महाभारत का परवर्ती ग्रन्थ है श्रीकृष्ण की कथा का वर्णन है। परन्तु पुराणों में श्री कृष्ण के जीवन को कल्पनापूर्ण तथा अतिरञ्जित रूप मे प्रस्तुत किया गया है।

बंकिमचन्द्र लिखते हैं—'महाभारत के पश्चात् विष्णु पुराण को देखना होगा। हमने पहले देखा है कि विष्णु पुराण, हरिवंश और भागवत पुराण मे कथा की उत्तरोत्तर वृद्धि होती जाती है। ब्रज गोपीतत्व महाभारत में नही पाया जाता विष्णु पुराण में इस प्रसंग मे पवित्रता है, हरिवंश मे कुछ विलासिता का समावेश हुआ है, फिर भागवत मे आदि रस का विस्तार हुआ है, अन्त में ब्रह्मवैवर्त में तो उसका प्रवाह बन गया है।

— कृष्ण चरित्र पृष्ठ 84

जहाँ तक भागवत का सम्बन्ध है महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास मे स्पष्ट किया है कि इसके रचयिता बोपदेव हैं जो गीत गोबिन्द' के लेखक जयदेव के भाई थे। ये देवगिरी के राजा 'हिमाद्रि' के सभासद् थे। इनका काल त्रयोदश शताब्दी माना गया है।

इससे यह भी स्पष्ट है कि भागवत की रचना तेरहवीं शताब्दी में [अर्थात् लगभग सात सौ वर्ष पूर्व :—स०] हुई। इस भागवत मे श्री कृष्ण के चरित्र को अतिरंजित कर दिया गया है। भागवत के इसी अतिरञ्जित प्रचार के कारण श्री कृष्ण के चरित्र पर अनेक अनुचित दोष लगाए गए हैं।

श्री कृष्ण के चरित्र का स्वरूप

श्री कृष्ण लोकनायक हैं, राष्ट्र नायक हैं जिन्होंने भारत मे महाराज युधिष्ठिर के चक्रवर्ती राज्य की स्थापना की। महा कवि माघ के एक श्लोक पर ध्यान दीजिए—

सा विभूतिरनुभाव सम्पदां
भूयसी तवयदायतायति।
एतदूढ गुरु भार! भारतं
वर्षमद्य मम वर्तते वशे ॥

—शिशुपाल वध १४.५.

—हे भारी भार संभाले श्रीकृष्ण आपकी कृपा का यह कितना चमत्कार है कि आज सारा भारत वर्ष मेरे अधिकार में है।

शिशुपाल वध में युधिष्ठिर ने श्री [illegible] किया है इस संक्षिप्त से सम्बोधन में श्री कृष्ण के व्यक्तित्व का सारा सार आ गया है। वे ही सारे भारत का भार संभालने वाले महापुरुष थे।

दुर्योधन के शब्दो मे—

त्वञ्च श्रेष्ठतमो लोके
सतामद्य जनार्दन।

उद्योग पर्व ६.१४

— हे जनार्दन। आप ही लोक में श्रेष्ठतम व्यक्ति हैं।

विवाह के पश्चात् पति पत्नी द्वारा पुत्र प्राप्ति के बारह वर्ष ब्रह्मचर्य-पूर्वक हिमालय के आश्रम मे तपस्या करना गार्हस्थ्य जीवन का आदर्श संयम है।

सौप्तिक पर्व के 12. 30-31 श्लोकों पर ध्यान दीजिए—

ब्रह्मचर्यं महद् घोरं
चीर्त्वा द्वादश वार्षिकम्।
हिमवत् पार्श्वमभ्येत्य
यो मया तपसार्जित ॥
समान व्रत चारिण्याँ
रुक्मिराया योऽन्वजायत।
सनत्कुमारस्तेजस्वी
प्रद्युम्नो नाम वै सुतः ॥

हमारे कृष्ण सुदर्शन चक्र धारी हैं। अर्जुन को मोह पाश से मुक्त कराने वाले महान ज्ञानी हैं। तभी तो गीता के उपदेश के बाद अर्जुन कह उठा—

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा
त्वत् प्रसादन्मयाच्युत।
स्थितोऽस्मि गत सन्देह :
करिष्ये वचनं तव ॥

—गीता अ० १८ श्लोक ७३

हम ऐसे योगेश्वर लोक नायक, राष्ट्रनायक, ज्ञान और श्री के भण्डार कृष्ण को उनके पावन जन्म दिवस पर श्रद्धा से स्मरण करते हैं।

सञ्जय ने सच कहा था—

यत्र योगेश्वरः कृष्णो
यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूति-
र्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥

''जहा योगेश्वर कृष्ण हैं, जहां धनुर्धर अर्जुन है, वहां लक्ष्मी है, विजय है, स्थिर नीति है। यह मेरी दृढ धारणा है।'',

पता-यशोदा निकेतन 36-ई, रणजीत सिंह मार्ग, आदर्शनगर, दिल्ली-33

श्री अमर सिंह, श्री जगतराम व श्री बस्तीराम द्वारा प्रचार.

श्री अमर सिंह श्री जगतराम और श्री बस्तीराम द्वारा जिन जगहों पर प्रचार किया गया वे जगह निम्न हैं—आर्य समाज कोट, आर्य समाज रायपुर राम, आर्य समाज भूरेवाला, आर्यसमाज कोलर (हि० प्र०) आर्य समाज माजरा, आर्य समाज पौन्टा। सभी उपदेशकों का सब जगह अच्छा मान सम्मान

वेद और महर्षि दयानन्द सरस्वती

भगवानदेव 'चैतन्य' सुन्दरनगर (हि० प्र०)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का कार्यक्षेत्र बहुआयामी था। वास्तव में उनकी पैनी दृष्टि ने समाज की प्रत्येक बुराई को गहराई से परखकर उसका समाधान दृढ़ता के साथ घोषित किया। उनके उपदेश भी उनके व्यक्तित्व के समान सरल और स्पष्ट थे। दोहरी बात या लीपापोती के सिद्धान्त की उनके पास कोई जगह नहीं थी क्योंकि वे स्वयं के नहीं बल्कि मनुष्यमात्र के हितैषी थे। उन्होंने देखा कि समस्त बुराइयों की जड यही है कि व्यक्ति ने ज्ञान और धर्म की कसौटी अपने स्वार्थों के वशीभूत होकर अलग-अलग निर्धारित कर रखी है। उन्होंने व्यक्ति एवं समाज की चतुर्दिक उन्नति के लिए सार्वभौमिक ज्ञान की खोज आरम्भ की जो उन्हें वेद के रूप में उपलब्ध भी हो गई। जिस प्रकार इस सृष्टि का आधार ईश्वर है उसी प्रकार समस्त ज्ञान का भण्डार ईश्वरकृत वेद हैं। वेद के प्रति महर्षि की इतनी अधिक आस्था थी कि वे उसके प्रति मन, वचन और कर्म से समर्पित हो गए। जिस प्रकार श्री रामचन्द्र जी का नाम धनुर्धारी, श्री कृष्णचन्द्र जी का नाम चक्रधारी आदि पडा उसी प्रकार महर्षि जी 'वेदावाले' के नाम से प्रसिद्ध हुए। यह वह समय था जब वेदों के बारे में लोगों में तरह-तरह की भ्रान्तियां फैली हुई थी। कोई उन्हें गडरियों के गीत कहता था तो कोई जगलियों का विधान। आश्चर्य की बात तो यह थी कि वेदों के बारे में ये फतवे उन्हें गहराई से समझे बिना ही दिए जाते थे। बड़े-बड़े वेद निन्दकों ने वेदों को देखा तक नहीं था। बस केवलमात्र सुनी सुनाई बातों पर ही अटकलें लगाई जाती थी। महर्षि दयानन्द एक ऐसे प्रतिभाशाली व्यक्ति थे कि उन्होंने सुनी सुनाई बातों पर विश्वास नहीं किया बल्कि स्वय वेदज्ञान गहराई से परखा और फिर ससार के लोगों को एक अमर वाक्य दिया 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है'। उन्होंने अनेक प्रमाणों के आधार पर वेद को ईश्वरीय ज्ञान घोषित किया और ऐसे अकाट्य तर्क दिए कि लोगों को इस तथ्य को स्वीकार करना पड़ा कि वास्तव में ही वेद प्राचीनतम और ईश्वरीय है। वेदज्ञान लुप्तप्राय हो गया था तथा सत्य और असत्य की परख की कोई भी कसौटी नहीं रही थी। मगर महर्षि दयानन्द ने पुन: मनु महाराज के इस अमर वाक्य का कार्यान्वयन किया, "धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः'। मनु २-१३१

महर्षि दयानन्द ने वेदों के बारे में फैली भ्रान्तियों को दूर करने के लिए उनका गहन अध्ययन किया। उन्होने अनेक भाष्यकारों के भाष्य भी पढे मगर वे पूर्वाग्रहों से ग्रसित किए गए भाष्य कितने अनिष्टकारी तथा वेदों के बारे में ही भ्रान्तियां फैलाने वाले थे। यह देखकर महर्षि जी को अत्यधिक दुःख और आश्चर्य हुआ। अन्तत: उन्होंने स्वय वेदभाष्य करने का बीडा उठाया। अब तक उवट, महीधर, सायण तथा मैक्सम्लर और मैक्डूमल आदि ने वेदों के भाष्य किए थे। मगर ये सभी पूर्वाग्रहों से ग्रसित होने के कारण भ्रान्तियुक्त थे। कुछ विद्वानो ने मात्र कर्मकाण्ड को लेकर अपने भाष्य किए तो कुछ पाश्चात्य विद्वानों के सामने विकासवाद को येन केन प्रकारेण सिद्ध करने का पूर्वाग्रह था, अत: वेदो का सार्वभौमिक स्वरूप लुप्तप्राय: हो गया था। महर्षि दयानन्द की मानव जाति के प्रति यह महानतम कृपा है कि उन्होने अपने भाष्य के द्वारा वेदों का सार्वभौमिक एव वास्तविक स्वरूप लोगों के समक्ष प्रकट किया। इस सम्बध मे श्री अरविन्द जी ने लिखा है 'वेदो का अन्तिम तथा प्रमाणिक भाष्य चाहे कुछ भी हो, दयानन्द का स्थान उपयुक्त शैली के प्रथम आविष्कारक के रूप मे सर्वोच्च है। उसने अपनी दिव्य दृष्टि मे पुराने ज्ञान के द्वार को जो समय ने बन्द कर रखा था, उसकी चाबी को उसने पा लिया" अरविन्द आगे एक अन्य स्थान पर लिखते हैं कि पाश्चात्य एव भारतीय भाष्यकारो ने पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर ही वेदों का भाष्य किया मगर दयानन्द की विशेषता यह थी कि इस सम्बंध में उन्होंने कोई भी पूर्वाग्रह नहीं पाला था। पूर्वाग्रहों से ग्रसित इन विद्वानों ने ऐसे-ऐसे अनर्थकारी एवं अश्लील भाष्य कर डाले थे जो न केवल अविश्वसनीय थे बल्कि निन्दनीय भी थे। महर्षि ने तमाम रुढ़ियों को त्यागकर वेदों के यौगिक अर्थ किए। उन्होंने यह घोषित किया कि मंत्रों के अर्थ दो तरह से हो सकते हैं- पारमार्थिक तथा व्यावहारिक। उनका भाष्य विभ्रान्ति और सार्वभौमिक दृष्टिकोण से परिपूर्ण है। यह भाष्य निरुक्त के दृष्टिकोण के अनुरूप है। मंत्रों के अर्थों को निरुक्तकार ने तीन भागों में बांटा है—प्रत्यक्ष परक, परोक्ष परक तथा आध्यात्मक परक। उसी को महर्षि ने सरल करके दो भागों में बांटा है—व्यावहारिक तथा पारमार्थिक।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का कोई भी नया मत या मजहब चलाकर मनुष्य जाति को और अधिक छिन्न-भिन्न करने का मन्तव्य नहीं था। उनका लक्ष्य था कि सब संप्रदाय, मत तथा मजहब समाप्त होकर एक मात्र वैदिक धर्म की शरण में आ जायें जो स्वयं परमात्मा द्वारा निर्देशित है। आज अनेकता में एकता का राग अलापा जाता है मगर सम्प्रदायवाद तथा मजहबवाद किस प्रकार खूनी होली खेल रहा है यह हम सभी प्रत्यक्ष देख रहे हैं। आश्चर्य तो इस बात से होता है कि शांति स्थापित करने वाले इन सम्प्रदायों मतों तथा मजहबों को बढ़ावा देकर व तुष्टिकरण की नीति अपना कर समस्या को और भी अधिक जटिल बना रहे हैं। मानवीय एकता स्थापित करने के लिए महर्षि ने धार्मिक एकता का नारा देते हुए कहा था कि वेदों की ओर लौटो। जब तक हम एक धर्म और एक विचार को नहीं अपनायेगे तब तक एकता और शांति के प्रयास दिवास्वप्न मात्र बनकर रह जायेंगे। मत, मजहब और सम्प्रदाय शक्ति पाकर और अधिक सक्रियता के साथ मानवतावादी विचार-धारा का गला घोट रहे हैं—ऐसे में महर्षि जी द्वारा पुनःप्रतिपादित वैदिक अर्थात् मानवतावादी विचारधारा ही हमें बचा सकती है। लोग वेद के अमर संदेश को भली प्रकार समझकर उसे आत्मसात् कर सके। इसीलिए महर्षि ने वेदों का हिंदी में सरल भाष्य किया तथा उसका प्रचार-प्रसार करने के लिए 'आर्यसमाज' की स्थापना की। उन्होंने वेदों को कितनी गहराई से समझा था यह उनका साहित्य पढ़कर प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। हम तो श्री अरविन्द जी के शब्दों को यहां देकर इस बात की पुष्टि करना चाहते हैं, "जहां तक वेदों के समझने का प्रश्न है, दयानन्द को इस बात के लिए स्मरण किया जाएगा कि वे पहले व्यक्ति थे जिनके हाथ में वेदों का ठीक-ठीक अर्थ जानने की कुंजी आ गई थी। वेदों के अर्थों के विकास में सदियों से जो अव्यवस्था, अस्पष्टता तथा अज्ञान फैला हुआ था, उस सबको भेदकर उन्होंने अपनी पैनी दृष्टि से अज्ञानान्धकार को भेदकर सत्य पर अपनी दृष्टि जमा दीं थी"।

आर्यसमाज मन्दिर २२ सैक्टर चण्डीगढ़ का चुनाव

संरक्षक—डा. इन्द्रराज शर्मा, प्रधान—श्री रामरतन महाजन, उपप्रधान—वरिष्ठ श्री नरेन्द्रनाथ तहसीलदार, श्री ओमप्रकाश सेठी, श्री ब्रह्मदेव बहल, मन्त्री—श्री प्रेमचन्द मनचन्दा उपमन्त्री—श्री बुधराम, श्रीमती सतोष चौहान, कोषाध्यक्ष—श्री गुलशन कालड़ा, लेखा निरीक्षक—श्री विश्वामित्र महाजन।

समुद्र गर्भ में आश्चर्य

श्रीकृष्ण की राजधानी द्वारिका की खोज

भारत में चिरकाल से यह माना जाता रहा है कि मथुरा के बाद द्वारिका श्रीकृष्ण की दूसरी राजधानी थी। यदि महाभारत में इस पुरातन शहर के वर्णन पर विश्वास किया जाय तो यह भी पता लगता है कि गोमती के मुहाने पर नगर मे एक बन्दरगाह भी था। परन्तु अब उस नगर और बन्दरगाह का कोई भी अवशेष दिखाई नहीं देता।

प्रसिद्ध पुरातत्व वेत्ता डा० एस० आर० राव ने जब गुजरात मे लोथल बन्दरगाह की खोज की और यह स्थापित किया कि उसका सबंध हड़प्पा कालीन सभ्यता के साथ था, तो अधिकांश इतिहास वेत्ता यह कहते थे कि ईसा से ३ सौ साल पहले और लोथल तक के काल के बीच में कोई विकसित सभ्यता वहां नही थी। इतिहास के विद्वान् महाभारत को ईसा से १४ सौ वर्ष पहले की घटना मानते हैं। तब आखिर श्रीकृष्ण की वह राजधानी कहा गई? इस बारे में एक संकेत महाभारत मे दिया गया है। वहा श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि यादवो के इस प्रदेश को समुद्र लील जायेगा। और तब अर्जुन नगर को खाली करने की तैयारी करते हैं। अब समुद्र तल मे व्यापक खोज के पश्चात् पुरातत्व वेत्ता इस ऐतिहासिक तथ्य का समर्थन करने को तैयार हैं।

श्रीकृष्ण की जल-निमग्न इस राजधानी की पुरातात्विक खोज सन् १९७९ में बडे असामान्य तरीके से हुई। द्वारिका मे एक सरकारी इमारत थी जिससे द्वारिकाधीश के प्रसिद्ध मन्दिर को देखने में रुकावट पडती थी। यह इमारत जब गिरा दी गई तब उसके नीचे एक मन्दिर मिला जिसका निर्माण दो स्तरों पर हुआ था। पहली बार बारहवी और तेरहवी सदी में उसके बाद १५वी सदी मे। यह खुदाई भारत सरकार के पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अनुदान से डा० राव द्वारा कराई गई।

परन्तु पुरातत्व वेत्ताओं के लिए और अधिक आश्चर्य तो अभी पिछे पड़े थे। इस मन्दिर के नीचे तीन और मन्दिर निकले। सबसे पहले ९वी सदी मे बना एक विष्णु मन्दिर और सबसे नीचे जो मन्दिर निकला वह ईसा से एक सदी पूर्व बना हुआ था। वहा जो सिक्के और मिट्टी के बर्तन मिले उनसे उनके कालो का निर्धारण हुआ।

जो सबसे पहला मन्दिर सबसे नीचे निकला उसी के नीचे सबसे बड़ा आश्चर्य छिपा हुआ था। डा० राव ने १६ अप्रेल १९८५ को नई दिल्ली में भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान-अकादमी में भाषण देते हुए कहा कि उस मन्दिर के नीचे दो नागरिक बस्तियों की विद्यमानता का और उनके समुद्र में डूब जाने का पक्का प्रमाण मौजूद है। पुराकाल की जो दो बस्तिया खुदाई में मिली उनमे प्राप्त लाल चमक वाले मिट्टी के बर्तनो से यह स्पष्ट होता है कि वे बस्तिया ईसा से पूर्व १५वीं और १४वीं सदी में रही होंगी। उससे ऊपर की बस्ती ईसा से लगभग एक हजार वर्ष पूर्व की रही होगी। मिट्टी के इन पात्रो पर समुद्र की लहरों की खोचें पड़ी हुई थी और उनके अन्दर रेत भर गया था। परन्तु उनके काल के निर्धारण के पश्चात् यह स्पष्ट हो गया कि यह श्रीकृष्ण की पुरानी राजधानी की बस्ती हो सकती है।

इस बात की पुष्टि के लिए समुद्र के नीचे खोज करने की आवश्यकता थी और १९८३ के प्रारम्भ में यह खोज करने का निश्चय किया गया। इसके लिए दो स्थान चुने गये:-एक समुद्रनारायण (जिसे वरुण देवता भी कहते थे) के प्राचीन मन्दिर के पास जो कि गोमती के मुहाने पर था। इस दृष्टि से यह बन्दरगाह इसके सामने पड़ता होगा। दूसरा स्थान जो चुना गया वह द्वारिका से २ किलो मीटर दूर बेट द्वारिका का टापू था जिसका चुनाव महाभारत मे श्रीकृष्ण की राजधानी के वर्णन के आधार पर किया गया था।

इससे पहले बेट द्वारिका टापू मे जो खोज की गई थी उससे भी दो नागरिक बस्तियों की सूचना मिली थी। जिसमें एक बस्ती ईसा से १४ वर्ष पूर्व की समझी गई थी। टूटी-फूटी दीवार के खण्डहरो के पास प्राग् ऐतिहासिक काल के मिट्टी के बर्तन भी मिले थे।

डा० राव और उनके साथी पुरातत्व वेत्ताओ के दल ने जो विज्ञान की राष्ट्रीय संस्थाओ से सम्बद्ध थे अब इस आधार पर काम करना शुरू किया कि १४ सौ ई०पू० मे बेट द्वारिका का टापू मुख्य भूमि से जुड़ा हुआ था। बाद मे समुद्र के तुफान से वह अलग हो गया। डा० राव का कहना है कि उसके बाद से समुद्र मे बार-बार तुफान आने से अब तक लगभग ५ मीटर का फर्क पड़ गया है।

१९८४ मे बेट द्वारिका टापू के पास जो खोज की गई थी, उसका उद्देश्य यह देखना था कि तट के पास समुद्र के नीचे जो दीवार पाई गई थी वह बेट द्वारिका तक पहुंचती है या नही। उस दीवार के बेट द्वारिका तक पहुंचने के प्रमाण तो हैं, पर धन की कमी के कारण अभी वहा तक पूरी खुदाई नही हो पाई।

गत् वर्ष दिसम्बर मास मे फिर यह अभियान प्रारम्भ हुआ और पुरातत्व वेत्ताओ ने इस प्राग् ऐतिहासिक काल की बस्ती के अवशेष समुद्र के गर्भ में पता लगाने का प्रयत्न किया। यह स्पष्ट हुआ कि वहा दो नगर थे और दोनो समुद्र में डूब गये। पहला नगर १५ सौ ई०पू० में रहा होगा और दूसरा १४ सौ ई०पू० में।

डा० राव का कहना है कि जो सबसे पहले की बस्ती है वह संभवत. पुराकालीन कुशस्थली है, जिसके अवशेषो पर श्रीकृष्ण ने द्वारिका बसाई होगी, जैसा कि महाभारत मे वर्णन है। समुद्र गर्भ मे बड़ी-बडी बिल्डिगो के ब्लाक मिले हैं जो स्पष्ट रूप से दो किलो के दीवारो के परकोटे रहे होगे।

[यहाँ एक बात और उल्लेख कर देना आवश्यक है कि द्वारिका के समुद्र में जब ज्वार आता है तो पूरी गोमती नदी ऊपर तक भर जाती है और जब पुनः भाटा प्रारम्भ होता है तो सारी नदी उसी प्रकार देखते-देखते खाली भी हो जाती है। अब से लगभग १० वर्ष पहले दिल्ली के छात्रों का एक दल द्वारिका की यात्रा पर गया था। उस समय समुद्र के ज्वार के कारण गोमती नदी भरी हुई थी छात्रों के उस दल के चार विद्यार्थी और एक अध्यापक नदी में तैरने का आनन्द लेने की इच्छा से नदी के पानी में कूद पड़े परन्तु कुछ ही क्षण बाद ऐसे तीव्र वेग से भाटा आया कि नदी का सारा पानी वापस समुद्र की ओर खिचता चला गया और वे छात्र और वह अध्यापक समुद्र में डूब गये। वहाँ के समुद्री उत्पात की यह छोटी सी घटना एक उदाहरण मात्र है। द्वारिका के वर्तमान निवासी इस समुद्री उत्पात से परिचित हैं। इसलिए ज्वार के पानी से भरी गोमती मे तैरने की गलती वे नहीं करते। परन्तु बाहर से आने वाले लोग इस बात को नही जानते इसलिए वे इस प्रकार की दुर्घटनाओं में फंस जाते हैं। सं०]

भारत अखण्ड है

—सरदार स्वर्ण सिंह—

एक सौर मण्डल में ग्रह हैं अनेक जैसे,
ईश्वर सत्ता एक और एक ब्रह्माण्ड है।

असंख्य ग्रन्थ, वेद मुख्य, ठीक कहा नानक ने,
वैदिक धर्म एक ही शेष सब पाखण्ड है॥

संस्कृत भाषा एक जिसके रूप हैं अनेक,
मानव की जाति एक भिन्न भिन्न खण्ड है।

सकल वनस्पति पौधे हैं अनेक जैसे,
भिन्न-भिन्न रूप छिपी अग्नि प्रचण्ड है।

जैसे हलवाई ने बनाये हाथी घोडे शेर,
खण्ड खण्ड रूप में अखण्ड सभी खण्ड है।

ईश्वर एक ही है, सम्प्रदाय हैं अनेक जैसे,
प्रान्त खण्ड खण्ड हैं पर भारत अखण्ड है।

—गाजियाबाद अमर स्वामी जी द्वारा प्रेषित

राष्ट्रधर्म के क्रान्तिकारी पुरस्कर्ता इतिहास पुरुष श्रीकृष्ण

—क्षितीश वेदालंकार—

आर्यावर्त में राम और कृष्ण दो ऐसे महापुरुष हुए हैं, जिन्हें राष्ट्रपुरुष और इतिहास-पुरुष की दृष्टि से अद्वितीय कहा जा सकता है। राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं और श्रीकृष्ण लीला पुरुषोत्तम। पुरुषोत्तम दोनो हैं। पुरुषोत्तम, अर्थात् उत्तम पुरुष, अर्थात् आर्य। आर्यत्व की दृष्टि से जीवन को उत्तमता की पराकाष्ठा तक ले जाने वाले ये दोनो ऐसे अनुकरणीय महापुरुष हैं जिनसे युग-युगान्त तक मानव जाति प्रेरणा ग्रहण करती रहेगी।

परन्तु इनकी स्तुति और भक्ति से ओत-प्रोत मानव हृदय ने अपनी कल्पनाशील बुद्धि के चमत्कार द्वारा इन दोनो ही महापुरुषो को मानवोत्तर से इस प्रकार मानवेतर बना दिया है कि तथाकथित आधुनिक बुद्धिवादी लोग इन दोनो ही इतिहास-पुरुषो को अनैतिहासिक कहने मे आधुनिकता मानने लगे हैं। परन्तु भारतीय जन-मानस ने अपने हृदय के सिंहासन पर इन दोनो इतिहास पुरुषो को इतने दृढ भाव से विराजमान किया है कि उनको अपने परिवारो या स्वय अपने निज के अस्तित्व से भी अधिक इन इतिहास-पुरुषो की ऐतिहासिक सत्यता पर आस्था है।

ये दोनो इतिहास-पुरुष महान स्वप्नद्रष्टा भी थे और दोनो ने ही अपने अपने स्वप्न को अपने जीवन काल मे चरितार्थ करके दिखा दिया। सामान्य व्यक्ति महान स्वप्न नही देखा करते। और कभी उत्साह मे आकर वैसा कर भी बैठें तो उनके स्वप्न उनकी सीमाओ के कारण और ससार की विपरीत परिस्थितियो के कारण केवल शेख चिल्ली के स्वप्न बनकर रह जाते है। इन दोनो महा-पुरुषो के जहा स्वप्न विराट थे, वहाँ इनके कर्तृत्व भी विराट थे और उन स्वप्नो की पूर्ति भी उतनी ही विराट् थी। ससार का इतिहास असफल स्वप्न-द्रष्टाओ के स्वप्न भगो की कहानियों से भरा पडा है। उन असफलताओ के महासागर मे इन दोनो महनीय महापुरुषो का स्वप्न-साफल्य अद्‌भुत ज्योतिस्तम्भ बन कर खडा है।

सक्षिप्त मे कहना हो तो यह कहा जा सकता है कि श्री राम ने नेपाल के सीमावर्ती प्रदेश मिथिला से लेकर राक्षसाधिपति रावण की लका तक—ठेठ उत्तर से लेकर ठेट दक्षिण तक—सारे भारत को एक सूत्र मे आबद्ध किया था, तो श्री कृष्ण ने द्वारिका से लेकर मणिपुर तक—ठेट पश्चिम से ठेट पूर्व तक—सारे भारत को एक सूत्र मे आबद्ध करके एक दृढ केन्द्र के आधीन किया और समस्त राष्ट्र को इतना बलवान् और इतना ऐक्यबद्ध करके इतना अपराजेय बना दिया था कि महाभारत के पश्चात् लगभग 4 हजार वर्ष तक अनेक विदेशी शक्तिया बार-बार प्रयत्न करने पर भी आर्यावर्त को पद-दलित नही कर सकीं।

आश्चर्य की बात यही है कि इन दोनो राष्ट्र-पुरुषो के अन्य अवान्तर रूप की चर्चा से जहा ग्रन्थ के ग्रथ भरे पडे हैं, वहा इस राष्ट्र-निर्माता रूप की चर्चा नगण्य ही रह गई है। यह हमारी कूप मण्डूकता, राष्ट्र के प्रति उदासीनता और मानसिक दृष्टि से बौनेपन की निशानी नही तो और क्या है! ये महापुरुष जितने विराट् थे,—स्वप्न की दृष्टि से भी और उसकी पूर्ति की दृष्टि से भी—हमारे लेखक और कवि उसकी तुलना मे उतने ही वामन रह गये।

राम और कृष्ण में अन्तर

जिस स्वप्न की हम चर्चा कर रहे हैं, उसका बीज मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के मन मे ऋषियो द्वारा बोया गया था, जबकि योगेश्वर श्रीकृष्ण का यह स्वप्न स्वोपज्ञ था राम का जीवन आदि से अन्त तक ऋषियो की योजना, उनके निर्देश और उनके अनुशासन से सचालित था और इसीलिए ऐसे सरोवर की तरह मर्यादित था, जिसमे कभी ज्वार नही आ सकता। परन्तु श्रीकृष्ण क्योंकि जीवन के प्रत्येक क्षण मे होश सभालने के बाद, अपनी अन्तरात्मा से प्रेरित थे, इसलिए उनका जीवन एक ऐसी बरसाती पहाडी नदी के समान है जो उछलती-कूदती, चट्टानों को तोडती, दुर्गम उपत्यकाओ मे अपना मार्ग बनाती और बरसात मे अपने कूल किनारों की मर्यादाओ को भग करती लगातार आगे बढती चली जाती है।

विचारको ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम को द्वादश कलावतार और श्री कृष्ण को षोडस कलावतार कहा है। उसका अभिप्राय एक को दूसरे से बड़ा या छोटा कहने से नही, प्रत्युत राम क्योंकि सूर्यवंशी थे और सूर्य की गति ज्योतिष के हिसाब से बारह राशियों के अदर होती है, इसलिए राम को भी उन्होने द्वादश कलाओ के अवतार के रूप मे संबोधित कर दिया। और श्री कृष्ण क्योंकि चन्द्र वंशी थे और चन्द्रमा की कृष्ण पक्ष से शुक्ल पक्ष तक सोलह कलाएं मानी जाती हैं इसलिए श्री कृष्ण को षोडश कलावतार कह दिया।

परन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि राम को जिस युग में और जिन परिस्थितियो में अपने विराट् स्वप्न को पूर्ण करने का सौभाग्य मिला, कदाचित् वे परिस्थितिया उतनी जटिल नही थी, जितनी श्री कृष्ण के समय थी। रामायण कालीन समाज भी काफी कुछ मर्यादा मे बंधा हुआ था और कृष्ण कालीन समाज मर्यादाओ के होते हुए भी उनको तोडने मे ही अधिक शान समझता था। जिन परिस्थितियो मे श्री कृष्ण ने सफलता प्राप्त की, उस युग मे और उन परिस्थितियो मे मर्यादा पुरुषोतम कितने कृत कार्य होते, या रामायण काल में योगेश्वर श्री कृष्ण होते तो उनका व्यवहार क्या होता—यह केवल कल्पना का ही विषय है।

धर्म और तत्व ज्ञान

हम मे से अधिकाश लोग इतना तो जानते हैं कि हमारा एक राष्ट्र है और अतीत काल में उसके जीवन का आधार धर्म रहा है। किन्तु मानव जीवन को सब पुरुषार्थों की प्राप्ति का लक्ष्य मानकर तदनुसार समाज व्यवस्था का निर्माण करके जो राष्ट्र धर्म तैयार होना चाहिए, उसकी रूप रेखा क्या हो, उसके बारे मे सिवाय भटकन के और क्या है? राष्ट्र जब जीवित रहते हैं, तो उनका आधार उनकी निश्चित जीवन प्रणाली और उनके जीवन के उद्देश्य के रूप में उनका तत्वज्ञान रहता है। राष्ट्र के महापुरुष इसी तत्वज्ञान के आधार पर समय-समय पर इहलोक और परलोक की नीति, शत्रु—मित्र व्यवहार, आदर्श और क्रियात्मकता की आचरणीय सीमा और व्यक्ति तथा समाज के आपसी सम्बन्धो को निर्धारित करते हैं। सर्व साधारण उन महापुरुषों के आचरण और उनके द्वारा निर्धारित नीति का ही अनुगामी होता है। अमुक सिद्धात क्यों ग्रहण करने योग्य हैं, अथवा अमुक निश्चित सिद्धांतो को त्याग देने से समाज का कौन सा अहित होगा,—आदि प्रश्नो की मीमासा विचारवान् लोग निरन्तर करते रहते हैं। वे बताते हैं कि राष्ट्र और समाज का हित अमुक सिद्धातों का पालन करने से किस प्रकार प्राप्त होगा। विचारवान् पुरुषों द्वारा इस प्रकार निर्धारित सिद्धांत ही उस राष्ट्र का तत्व ज्ञान बन जाते हैं। उदाहरण के लिए हिटलर कालीन जर्मनी का राष्ट्रीय तत्वज्ञान एक भिन्न प्रकार का था जो आर्यन रक्त की श्रेष्ठता पर निर्भर था, तो स्टालिन कालीन रूस का तत्वज्ञान रक्त पर अवलम्बित न होकर समाज की सस्कृति को आर्थिक आधार पर नियमित करना चाहता था।

महाभारत जीवित इतिहास

इस दृष्टि से भारत के राष्ट्रीय तत्व ज्ञान का निर्धारण करने वाला महाभारत जैसा और कोई ग्रन्थ दृष्टि-गोचर नही होता। यह अद्वितीय राष्ट्र ग्रन्थ है। वेदादि अन्य शास्त्र भी महान् ग्रन्थ हैं। परन्तु वे तो सृष्टि के आदि में होने के कारण ज्ञान विज्ञान के मूल स्रोत हैं ही, किन्तु भारतीय समाज के सभी वर्गों, सभी जातियो और सभी आबाल वृद्ध नर-नारियो का जैसा समावेश इस ग्रन्थ मे है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। हमारे आचरण, विचार, गृह-व्यवस्था, नीति, कल्पना, व्यक्तिगत और सामाजिक व्यवहार यहा तक कि रक्त के प्रत्येक कण में महाभारत के संस्कारो की छाया परिलक्षित होती है। इसलिए हम इसको भारत के राष्ट्र धर्म का प्रतिपादक ग्रन्थ कह सकते है। यह ग्रन्थ किन्हीं काल्पनिक कथाओं का पिटारा न होकर—जैसे कि पुराण हैं—उनसे भिन्न एक जीवित इतिहास ग्रथ है। अतीत की सत्या-गाथा, भविष्य की थाती और वर्तमान का आधार—सम्पूर्ण इतिहास इसमे समाहित है।

यह सत्य है कि इतिहास के साथ-साथ यह काव्य भी है और काव्य में हीनोक्ति, वक्रोक्ति अन्योक्ति या अत्युक्ति अलंकार का रूप ग्रहण करती है। इसलिए इस महान ग्रन्थ मे कुछ अद्‌भुत, अमानवीय और अलौकिक घटनाओ का भी वर्णन मिलता है। इस अलौकिकता के चक्कर मे हमारी कितनी ही ऐतिहासिक कथाएं दूषित भी हुई हैं, किन्तु सूक्ष्म निरीक्षण किया जाय और काव्य के अलंकारो को छोड़कर खरे इतिहास का ज्ञान प्राप्त किया जाय तो कठोरतार दृष्टि से जांचने पर हमारा गर्वशाल प्रामाणिक इतिहास भी महाभारत में विद्यमान है।

जय से महाभारत तक

सबसे पहले यह कहना आवश्यक है कि महर्षि व्यास ने जो ग्रन्थ सुगुम्फित किया था, उसका नाम "जय" था और उसमें केवल आठ हजार श्लोक थे। उसके बाद उनकी शिष्य परम्परा में महर्षि वैशम्पायन ने इस ग्रथ का विस्तार करके इसके श्लोको की संख्या तीन गुनी अर्थात् चौबीस हजार तक पहुंचा दी। "जय" नामक ग्रन्थ में यदि केवल एक ही कुल की जय और पराजय पर ध्यान केन्द्रित

→

किया गया था, तो वैशम्पायन के समय "भारत" नाम से जो ग्रन्थ तैयार हुआ, उसमें समूचे भरत-वंश का इतिहास समाविष्ट हो गया। परन्तु भारतीय मनीषा यहीं नहीं रुकी, वह लगातार राष्ट्र की आवश्यता के अनुरूप अपने विचारों के पंख फैलाती रही। वैशम्पायन के पश्चात् उनकी शिष्य परम्परा के सौति और लोमहर्षण ने इस ग्रन्थ का विस्तार करके इसकी संख्या एक लाख श्लोकों तक पहुंचा दी। तब इसका नाम महाभारत पड़ा।

"महाभारत" शब्द में ही हमें एक व्यंजना दिखाई देती है। इसमें बृहत्तर भारत की ध्वनि है। ऐसा लगता है। कि "जय" में जहां एक कुल की संघर्षमय कथा थी, और "भारत" में समस्त भारत के राजवंशों और भरत वंशियों के इतिहास का समावेश था, वहां "महाभारत" में भारत की भौगोलिक सीमाओं के बाहर जहां-जहां भरतवंशीय लोग गये, उन सब देशों की भी लोक कथाओं और लोक मर्यादाओं की छाया विद्यमान है। इसलिए कभी-कभी मन में यह भी आता है कि सुदूर पूर्व के जिन प्रदेशों में जाकर भारतीयों ने अपने साम्राज्य का विस्तार किया, और उन प्रदेशों की परिस्थितियों के अनुरूप अपनी आर्य विचार धारा को ढाला। उन प्रदेशों के जीवन की छाया भी इस ग्रन्थ में होनी चाहिए। शायद यही कारण है कि— इण्डोनेशिया, मलेशिया, थाइलैंड, और इण्डोचीन आदि देशों में महाभारत की कथा उतनी ही लोकप्रिय है, जितनी भारत में है। आश्चर्य होता है कि— इण्डोनेशिया और मलेशिया के निवासी अब अधिकतर इस्लाम को अंगीकर कर चुके हैं किन्तु उनके मनों से आज भी महाभारत की कथा का जादू नहीं उतरा।

राष्ट्र धर्म से अभिप्राय

धर्म को केवल मोक्ष प्राप्ति का साधन मानकर उसको आध्यात्मिक में आबद्ध करने से वेद प्रतिपादित धर्म का सही रूप दृष्टिगोचर नहीं होता। आचार-व्यवहार के जिन नियमों से, केवल व्यक्ति या साधना पथ पर चलने वाला मोक्षाभिलाषी साधक ही नहीं, बल्कि पूरा समाज और सम्पूर्ण राष्ट्र टिका रहता है, वह भी तो धर्म है। उसी को हम राष्ट्र धर्म कहते हैं। तभी "धारणाद् धर्म इत्याहु:" की परिभाषा सार्थक होती है। इसलिए महर्षि जैमिनी ने धर्म की परिभाषा करते हुए निःश्रेयस, अर्थात् मोक्ष के साथ-साथ बल्कि, उससे पहले, "अभ्युदय" को रखा है। "यतोऽभ्युदय निःश्रेयससिद्धिः सधर्मः" केवल अभ्युदय या केवल निःश्रेयस की बात करने से धर्म भी पंगु बन जाता है। ऐसा एकांगी धर्म बहुआयामी मानव जीवन के साथ कैसे सुसंगत होगा। हमारा कहना यह है कि महाभारत केवल हमारी राष्ट्रीय अस्मिता, या राष्ट्रीय जिजीविषा का ही प्रतिपादक ग्रंथ नहीं है, प्रत्युत वह भारत राष्ट्र का विस्तार करके किस प्रकार उसे बृहत्तर अर्थात् महान भारत बनाया जा सकता है, अभ्युदय की ऐसी नीति सुझाने वाला भी है। इस नाते से महाभारत भारत के राष्ट्रीय तत्वज्ञान का विश्वकोश कहा जा सकता है। महाभारत के सम्बन्ध में यह उक्ति सर्वथा सही है—

न तदस्ति ही लोकेस्मिन्
भारते यन्न दृश्यते।
यदिहास्ति तदन्यत्र।
यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्।

—जो कुछ महाभारत में है, वही अन्य ग्रन्थों में और जो इसमें नहीं है वह और कहीं भी नहीं है। लोक में तत्वज्ञान सम्बन्धी ऐसी कोई सामग्री नहीं है, जो महाभारत में विद्यमान न हो।

श्री कृष्ण का महत्व

महाभारत के रचनाकार भले ही कृष्ण द्वैपायन व्यास या उनकी उत्तरवर्ती उनकी शिष्य-परम्परा रही हो, परन्तु उसके सूत्रधार केवल श्री कृष्ण हैं। जिस राष्ट्र धर्म की ओर संकेत करना चाहते हैं, उसका मूल आधार महाभारत और उसके द्वारा प्रतिपादित श्री कृष्ण का चरित है। पुराणों ने "चोर-जार-सिखा-मणि" के रूप में जिस कृष्ण का चित्रण किया है, उसका अनुमोदन महाभारत में नहीं है। वह केवल पुराणों की लीला है। और उसके पीछे व्यक्तिगत वासनाओं की पूर्ति के लिए अवचेतन में छिपी मनोग्रन्थियों का काव्यात्मक चोले में विकृत प्रोद्वलन मात्र है। यह देश का कितना बड़ा दुर्भाग्य है कि कृष्ण का वह विकृत रूप तो घर-घर में प्रचलित है, और जो महाभारत वर्णित सही रूप है, जो राष्ट्र के लिए अक्षय प्रेरणा का स्रोत बन सकता है, उसकी चर्चा कोई नहीं करता।

महाभारत का प्रमुख सिद्धांत यह है कि ऐतिहासिक वैभव का चरमोत्कर्ष होने पर भी निःश्रेयस की प्राप्ति हो सकती है। इस प्रमुख सिद्धांत के होते हुए भी, धर्म शास्त्र, समाज शास्त्र, व्यवहारनीति

अर्जुन का व्यामोह और गीता का उपदेश

इसलिए महाभारत को "कार्ष्ण वेद" (अर्थात श्री कृष्ण का वेद) कहा जाता है, जो सर्वथा यथार्थ है। श्री कृष्ण के समान प्रगल्भ बुद्धिशाली, कर्तृत्ववान्, प्रज्ञावान व्यवहार-कुशल, ज्ञानी एव पराक्रमी पुरुष आज तक संसार में नहीं हुआ। यह कथन अतिशयोक्ति नहीं माना जाना चाहिए। वे ध्येयवादी के साथ व्यवहारवादी भी थे और इन दोनों की सीमाओं के निपुण-ज्ञाता थे। सत्यनिष्ठा के समान ही वे कुटिल राजनीति अर्थात् उचित राजधर्म के भी उपदेष्टा थे। वे गृहस्थ जीवन के प्रेमी होने के साथ-साथ अत्यन्त संयमी योग-विद्या-पारंगत योगेश्वर भी थे। संक्षेप में यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि भारत की संस्कृति और राष्ट्रीय अस्मिता तथा राष्ट्र धर्म के मूर्तिमन्त प्रतीक थे श्री कृष्ण।

और प्रवृत्ति धर्म विषयक जो विचार महाभारत में अंकित हैं, वे कहीं-कहीं प्रमुख सिद्धांत के विरोधी भी दिखाई दे सकते हैं। परन्तु उनको भारतीय तत्वज्ञान या राष्ट्र धर्म की कोटि में नहीं गिना जा सकता। विभिन्न मतों का प्रतिपादन होते हुए भी महाभारत के वे ही विचार राष्ट्र धर्म की कोटि में आ सकते हैं, जिन पर श्री कृष्ण की राज मुद्रा अंकित हो।

महर्षि व्यास सारे महाभारत में एकमात्र श्री कृष्ण को ही ऐसे व्यक्तित्व के रूप में चित्रित करते हैं, जो न कभी टूटता है, न झुकता है। कृष्ण न पछताते हैं, न रोते हैं और न कभी जय-पराजय की चिन्ता करते हैं। परन्तु अपने पुरुषार्थ, कर्तव्य और नीतिमत्ता में विश्वास उन्हें इतना अधिक है, कि वे [illegible] देते हैं, कि मेरी योजना में और विश्व रूप की व्यापकता में भीष्म, द्रोण, दुर्योधन, कर्ण और दुःशासन आदि सब पहले से ही मरे पड़े हैं, हे अर्जुन, तुम्हें तो केवल निमित्त मात्र बनना है।

महाभारत कार व्यास केवल किसी तात्कालिक कथा की रचना करना नहीं चाहते, वे तो हर युग में रहने वाले मानव में विद्यमान सत्य की और अधर्म पर धर्म की विजय का चित्रण करना चाहते हैं। इनके अधिकांश पात्र मोह और आसक्ति से भरे हुए हैं और इसी लिए उनकी पीड़ा का अन्त नहीं है। एक तरह से सारा महाभारतकालीन समाज सामूहिक भय और सामाजिक त्रास से ग्रस्त है। परन्तु श्री कृष्ण इन सबसे ऊपर हैं। वे जैसे पानी में रहकर भी कमल की तरह हैं। युधिष्ठिर से लेकर धृतराष्ट्र और भीष्म पितामह तक सभी लोग टूटते हैं। परन्तु कृष्ण कभी नहीं टूटते। वे अनासक्त भाव से घटनाओं के द्रष्टा और स्रष्टा हैं। पीड़ा से मुक्ति पाने के लिए मनुष्य में जिस नरत्व की आवश्यकता है, वह कृष्ण में साक्षात अवतरित हुआ है। इसीलिए वे नर से नरोत्तम, पुरुष से पुरुषोत्तम और नर से नारायण बनने की क्षमता रखते हैं।

यज्ञ और योग के नए अर्थ

भीष्म पितामह ने शान्ति पर्व में राजधर्म को सबसे उत्तम विद्या, सबसे उत्तम योग, सबसे उत्तम कर्म और सबसे उत्तम धर्म माना है। "सर्वे योगा राजधर्मेषु: चोक्ता"। स्वयं श्रीकृष्ण ने भी गीता में "योग कर्मसु कौशलम्" कहकर योग को रूढ़िजन्य अर्थों से निकाल कर एक नया अर्थ प्रदान किया है। इस प्रकार आध्यात्मिक दृष्टि के अलावा राज धर्म की दृष्टि से भी "योगेश्वर" के विशेषण को जितनी सार्थकता श्री कृष्ण प्रदान करते हैं, उतना अन्य कोई व्यक्ति नहीं करता। श्रीकृष्ण ने अपने समय में प्रचलित सामाजिक रूढ़ियों को जिस प्रकार चुनौती देकर तोड़ा, वह उनके अद्भुत क्रान्तिकारी स्वरूप का दिग्दर्शन कराता है। उस युग का अन्य कोई महापुरुष उनकी जैसी क्रान्ति करने में समर्थ नहीं था।

जहां उन्होंने योग शब्द को नया अर्थ दिया, वहां वैदिक कर्म काण्ड के सबसे अधिक प्रिय यज्ञ शब्द को भी नया अर्थ दिया। श्रीकृष्ण से पूर्व स्वर्ग प्राप्ति की इच्छा से स्वर्ग कामो यजेत यज्ञ करने की रूढ़ परम्परा थी और उसमें सकामता सर्वथा स्पष्ट थी। परन्तु श्री कृष्ण ने यज्ञ को परमात्मा द्वारा रचे गये सृष्टि यज्ञ के साथ जोड़कर उसके साथ ही निष्कामता इस प्रकार जोड़ दी कि आगे चलकर विद्वानों ने स्वार्थ रहित समाज सेवा के कर्म को ही यज्ञ मानना स्वीकार कर लिया।

साम्राज्य, मगर कैसा ?

महाभारत में जरासन्ध एकसत्तात्मक साम्राज्य का प्रतिनिधि है और दुर्योधन "राजा परं दैवतम्" के अभिमान में मस्त होकर अपने आप को सबसे बड़ा

है कोई ऐसा नीति विशारद !

—यज्ञदत्त आर्य—

वीर प्रसविनी शस्य श्यामला पवित्र भारत भूमि पर यथा समय अनेक पवित्र आत्मायें जन्म लेकर देश मे बढ़ते हुए अन्याय एवं अत्याचार को हटा कर पुनः वेद की पवित्र ज्योति से आलोकित करती रही हैं। इन्ही महान आत्माओ में से योगिराज श्री कृष्ण भी एक थे। उन्होने बचपन से ही निरीह प्राणियों पर होने वाले अत्याचारो का डट कर विरोध किया, और न्यायकारी सदाचारी, सत्यवादी, धर्मात्मा का पक्ष लिया।

आज भारत में उग्रवाद सिर उठा रहा है। भाई का भाई शत्रु बन रहा है। भारतीय संस्कृति की रक्षार्थ जीवन दान देने वाले बलिदानियो के कुछ तथाकथित शिष्य ही उनके महान् कार्यों को लांछित कर रहे हैं। उनके अनुकरणीय पवित्र उपदेशों की अवहेलना करके विदेशी शकुनियों के चंगुल में फंसते जा रहे है। उनको देशहित की बात बिल्कुल नही सुहाती। इन दुराग्रहियो पर तो 'पर से प्रेम; द्रोह अपने से' की उक्ति अक्षरशः चरितार्थ होती है।

कुलघाती दुर्योधन ने श्री कृष्ण के समक्ष यह स्वीकार किया था कि मैं धर्म को जानता हू परन्तु मेरा मन नही करता कि मैं न्यायाचरण करूं और अधर्म को भी समझता हूं परन्तु उससे मेरा छुटकारा नहीं, क्योंकि कोई पाई शिक्षा मेरे हृदय में इस प्रकार घर कर चुकी है कि उससे छुटकारा पाना कठिन है। वह जैसे कराती है, मैं वैसा ही करता चला जा रहा हूं।

समय रहते इस घातक विष-वल्ली को समूल नष्ट न किया गया तो विनाशकारी ताण्डव नृत्य अवश्यम्भावी है। कुशिक्षा मानव को पथ भ्रष्ट करके इतने विनाशकारी गर्त में डाल देती है कि पुनः उससे उद्धार होना कठिन हो जाता है। महाभारत काल मे जब दुर्योधन शकुनि के जाल मे इतना फंस गया कि पाण्डवो को उनका अधिकार देना तो दूर, निर्वाह मात्र से लिये पाच ग्राम भी देने को तैयार न हुआ। उसने अभिमानपूर्ण शब्दों मे यहा तक कह दिया कि :—सूच्यग्रं नैव दास्यामि बिना युद्धेन केशव। भावी प्रलयंकारी युद्ध की विभीषिका को योगिराज श्री कृष्ण जी भलीभाति समझते थे, परन्तु वह दुराग्रही दुर्योधन टस से मस होने को तय्यार न था। राज दरबार में भीष्म-कतराते हैं। राज दरबार की शान्ति को देखकर योगिराज श्री कृष्ण अपने सत्प्रयत्नों पर पानी फिरता देखकर वापिस चलने लगे तब भीष्म-पितामह का मौन टूटा और उन्होने बड़े आर्त स्वर मे कहा :—

> न देवोदण्डमुद्यम्य
> शिरः कृन्तति कस्यचित्

पितामह, धृतराष्ट्र एवं गुरुवर द्रोणाचार्य जैसे नीति विशारद विद्यमान थे, परन्तु सब मौन थे। ठीक आज भी वही दशा है। हिट-लिस्ट मे आने के भय से बड़े २ नीति के पडित हस्तक्षेप करने से

> कालस्य बलमेतावत्
> विपरीतार्थ दर्शनम्॥

अर्थात् मनुष्य के जब दुर्दिन आते हैं तो दुर्भाग्य उसको डण्डा लेकर नही मारता। अपितु उसकी बुद्धि की गति उल्टी हो जाती है। उसे हित की बात नही सुहाती और उल्टे मार्ग पर अग्रसर हो जाता है। 'विनाश काले विपरीत बुद्धिः" ठीक वही दशा आज है। हितकारी देश भक्तों की शिक्षा को न मान कर, देश में पारस्परिक वैमनस्य का बीजारोपण किया जा रहा है।

ऐसी विकट परिस्थिति में सत्य और न्याय का पक्षधर योगिराज श्री कृष्ण के समान कोई नीति विशारद इन पथ भ्रष्ट बन्धुओ को स्वदेश भक्ति का पाठ पढ़ा कर होने वाले दुष्परिणाम से अवगत कराकर सन्मार्ग पर ले आवे तो उत्तम रहेगा अन्यथा महाराज मनु के कथनानुसार दण्ड शास्ति प्रजाः सर्वा.'— देश हित को यदि कोई सिरफिरा बातो से न माने तो दण्ड प्रयोग आवश्यक है। समय रहते यदि दुर्योधन के लिये भी यह नीति अपनाई गई होती तो वह विनाशकारी युद्ध टल जाता, जिसकी क्षतिपूर्ति आज तक नही हो सकी है।

कुशिक्षा तो सर्पवत् देखने में सुन्दर एवं मनमोहक प्रतीत होती है, परन्तु परिणाम तो विषयुक्त ही होगा।

समय रहते इन दिग्भ्रमित बन्धुओं को सीधे मार्ग पर न लाया गया तो महाभारत की पुनरावृत्ति अवश्यंभावी है।

प्रभु कृपा करे भारतीय संस्कृति की रक्षार्थ योगिराज श्री कृष्ण सरीरवा नीति विशारद भारत पर छायी इस कपट कालिमामयी काली घटा को युक्ति के द्वारा छिन्न-भिन्न करके भारत भूमि को पुनः खण्डित होने से बचाये। अन्यथा इसका दुष्परिणाम हमारी आने वाली सन्तति को भोगना पड़ेगा, और वह हमें किस रूप में याद करेगी, यह तो आने वाला समय ही बतायेगा।

पता—२६० मियांवली कालोनी
गुड़गावा हरियाणा-१२२००१

जिन अंधेरो से तुम परेशान

—विजय प्रेमी—

चन्द स्वासों का कर्ज है हम पर,
रफ्ता रफ्ता इसे चुकाना है।
गम ये अश्कों में ना बिखर जाये,
कतरा कतरा इसे बचाना है।
दिल मे ढूंढ़ो तो सही बन्धु मेरे,
रोशनी का यही खजाना है।
जिन्दगी दर्द से रिश्ता ही सही,
जान देकर इसे निभाना है।
क्या सवारेंगे हम जमाने को,
जब इरादा ही बेईमाना है।
जिन अंधेरों से तुम परेशान हो,
वो उजालों का ताना-बाना है।
रोज लड़ते हैं धर्म को लेकर,
धर्म का मर्म किसने जाना है।

पद्मभूषण डा० सिद्धेश्वर वर्मा

जिसकी जिंदगी ही खुद बन्दगी थी

—डा० सीताराम सहगल—

२ नवम्बर 1887 को रावलपिण्डी मे जन्मे डा० सिद्धेश्वर वर्मा का 17 अगस्त 1985 को दिल्ली में देहावसान हो गया। डॉ० वर्मा का आरम्भिक नाम पिण्डीदास था (माता पिता ने इस तरह रावलपिण्डी में उनके जन्म को चिरस्मरणीय बनाना चाहा होगा।) यह तथ्य शायद ही किसी को ज्ञात हो। डा० वर्मा स्वयं अपने सिद्धेश्वर नाम का संक्षिप्त रूप 'सिद्ध' का पत्र व्यवहार आदि मे प्राय: किया करते थे। डा० वर्मा फोरमैन क्रिश्चियन कालेज लाहौर से इतिहास विषय मे एम० ए० करने के उपरान्त हिन्दू स्कूल गुजरांवाला में मुख्याध्यापक बने। उसी काल मे उनकी रुचि संस्कृत की ओर हुई और उन्होने पं[illegible] विश्वविद्यालय से शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की। तदनन्तर प्रिंस और वेल्स कौलेज, जम्मू में संस्कृत के प्राध्यापक बने।

डॉ० वर्मा में भाषाओं के ज्ञानार्जन की असीम पिपासा थी। अपनी इस ज्ञान पिपासा की तृप्ति के लिए उन्होने विभिन्न विदेशी भाषाओं का अध्ययन आरम्भ किया और ग्रीक जर्मन, फ्रेंच तथा रशियन भाषाएं सीखीं। इसी काल में डॉ० वर्मा को विदेश में जाकर अध्ययन करने के लिए छात्र वृत्ति मिली तो लन्दन के स्कूल ऑफ ओरियन्टल स्टडीज मे जाकर उन्होने पी० एच० डी० के लिए शोध कार्य शुरू किया जिसका विषय था—'वर्णोच्चारण शिक्षा तथा प्रतिशाख्य की समीक्षा'। शोध कार्य मे इतनी मौलिकता थी कि परीक्षकों ने एक मत से पी० एच० डी० के स्थान पर 'डी०लिट' की उपाधि से इन्हे अलंकृत किया। सन् 1967 में उन्हें पंजाबी यूनिवर्सिटि पटियाला ने डी० लिट की मानद उपाधि-प्रदान करके अपने को सम्मानित किया।

इसी काल में प्रोफेसर वर्मा ने फ्रांस की यात्रा भी की और डा० ब्लाख से मिले। उस फ्रांसीसी विद्वान ने उन्हें बतलाया कि शोध कार्य के तुलनात्मक अध्ययन में गहराई भी चाहिए, केवल पंसारी की तरह संग्रह मात्र ही अपेक्षित नहीं होता। आजकल के शोधकर्ता प्रायः संकलन को ही अनुसंधान समझते हैं।

ग्रीष्मावकाश में वे कश्मीर की घाटियों में भाषा विषयक अभियान किया करते थे जिसके फलस्वरूप उन्हें वहां की 21 उपभाषाओं की जानकारी मिली इस महत्वपूर्ण खोज मे उन्हें विश्व-ख्याति प्रदान की। [illegible] के प्रोफेसर जी० मोर्गेन्स्टीर्न ने उनके शोध की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इसके फलस्वरूप जम्मू काश्मीर सरकार ने उन्हें 'खिलअत' से सम्मानित किया।

१६ खंडो में वैदिक कोश पदानुक्रम

सन् 1930 से उनका सम्बन्ध विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान और डी० ए० वी० कालेज, लालचन्द रिसर्च लाइब्रेरी लाहौर से स्थापित हुआ जो आजीवन रहा। इस 55 वर्ष के काल खंड में डा० वर्मा ने समय-समय पर संस्थान का अवैतनिक सारस्वत सेवा की। विभाजन के बाद एक बार उन्हें वैदिक संस्थान ने होशियारपुर के वार्षिक अधिवेशन में बुलाया जहां पंजाब के मुख्यमंत्री श्री कैरों भी विद्यमान थे। जब आचार्य विश्वबन्धु जी ने डा० वर्मा का परिचय दिया तो मुख्यमन्त्री ने भावपूर्ण मुद्रा में उनके चरणों पर अपना शीश नवाया और यह घोषणा भी की कि आज से संस्थान को [illegible] लाख रु० की धन राशि अनुदान के रूप में मिला करेगी। विश्वेश्वरानन्द वैदिक संस्थान विश्व में एक मात्र ऐसी संस्था है जिस में सारे वैदिक साहित्य के पदानुक्रम कोश [illegible] खंडों के 11 हजार पृष्ठों में पचास लाख [illegible] की प्रक्रिया से प्रकाश [illegible] के लिए [illegible] कई वर्षों तक प्रतिदिन 10 घण्टे काम करना पड़ा था। इस काम से भारत का संसार में यश बढ़ा। परन्तु यह लिखने में कोई संकोच नहीं कि इस शोध कार्य का भारत के वैदिक विद्वानों द्वारा उचित सम्मान नहीं हुआ। यदि इस शोध कार्य में अंग्रेजी भाषा का माध्यम अपनाया जाता तो प्रशंसा के स्वर अभी तक तीव्र रूप में उभर कर सुनाई देने लगते। परंतु ऐसा करना राष्ट्रीय हित में न होता भारतीय भाषाओं की जननी संस्कृत ही चिरकाल से साहित्य इतिहास, काव्य, नाटक, व्याकरण आयुर्वेदादि सब ज्ञानों के विस्तार के लिए माध्यम रही है। विदेशों में भी संस्कृत के ज्ञाता हैं। इसी राष्ट्रीय संकल्प को स्वीकार कर आचार्य विश्वबन्धु जी ने संस्कृत भाषा में ही लिखना श्रेयकर समझा।

ज्ञानयोगी डा० सिद्धेश्वर वर्मा
[illegible] (95 वर्ष की आयु में)

अभिनन्दन

डा० वर्मा सन् 1950 में जब षष्टि पूर्ति में पांव रखा तो आचार्य विश्वबन्धु जी ने अभिनन्दन ग्रन्थ द्वारा उनका सम्मान किया। इस कार्य में संसार के 100 निबन्ध हैं। ग्रन्थ दो भागो में छपा है। सन् 1947 से पूर्व यह छपकर तैयार हो चुका था परन्तु विभाजन के कुचक्र ने सब कुछ अस्तव्यस्त कर दिया संस्थान की सारी सामग्री बोरों में भर कर पाकिस्तानियों की आखों से ओझल रख ट्रकों से अमृतसर भेजी गई। सन् 1950 में डा० वर्मा का सम्मान 'सिद्ध भारती' नामक अभिनन्दन ग्रन्थ से किया गया।

नियमित जीवनचर्या

डा० वर्मा का जीवन सूर्य और चन्द्रमा की तरह नियमित रूप से चलता रहा। जीवन मे किसी रविवार की छुट्टी नही मनाई। उनके लिए छुट्टी का दिन वही होता था जब हाथ में लिया काम समाप्त हो जाए। सायंकाल ठीक समय पर घर पहुंचना और प्राय. ठीक समय घर से निकल कर बस मे बैठ जाते थे ठीक आठ बजे उनका तमिलभाषा का अध्यापक केन्द्रिय सचिवालय में उनके कमरे में प्रवेश करता और वे तमिल पढ़ते। अध्यापक को मासिक दक्षिणा दी जाती थी। तमिल सीखने के बाद उन्होंने 'पुननारुरु' नामक ग्रंथ के पद कोष की सूक्ष्मता से समीक्षा की तो उन्हें उसमें कई हजार स्खलितियां मालूम पड़ीं। पदकोष के लेखक को पत्रों द्वारा उनकी सूचना भेजते रहे। लेखक ने उन गलतियों को स्वीकार किया। डा० वर्मा शायद उत्तर भारत के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने तमिल का इतना गहन अध्ययन किया था।

डा० वर्मा दिन में लगभग 11 घंटे अध्ययन में लीन रहते थे। सोमवार को पाणिनि व्याकरण का अध्ययन करते मंगल और शुक्र को आधुनिक भाषाओं का, बुधवार तमिल भाषा का दिन होता था, बृहस्पति को रूसी भाषा का अध्ययन करते थे शनि को आचार्य भरत का और आदित्य वार को आचार्य चरक का अध्ययन करते थे। उन्होंने कभी आशुलिपिक की सहायता नहीं ली जीवन भर हाथ से लिखा। उनके पत्र देश के कई भागों में तथा विदेशों मे सम्मान्य होते थे। किसी ने उन्हें कभी क्रोध करते व पर निन्दा करते नही देखा। वे किसी की निन्दा सुनते भी नही थे। उनका जीवन गीता के समान सरल भी था, गहन भी था।

उनकी मान्यता थी कि प्रकृति सबका स्वयं मानदण्ड निर्धारित करती है। इसलिए जो कुछ प्राकृतिक है, वह स्वाभाविक है। हमारे सारे विचार सारी अभिव्यक्तियां और सारी प्रतिक्रियाए प्रकृति द्वारा संचालित होती हैं। इसलिए जहां कहीं व जब कभी प्रकृति के मानदंड से कमी या अधिकता हो, समझ लीजिए कि सत्य की अवहेलना हुई है।

फ रीदाबाद में डी० ए० वी० शताब्दी कालेज के शिक्षा सत्र का उद्घाटन
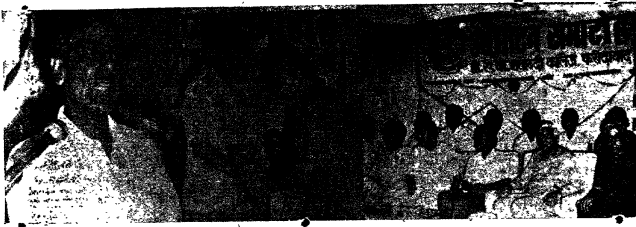
महर्षि दयानन्द विद्यालय रोहतक के कुलपति डा० रामगोपाल महाविद्यालय के शिक्षासत्र का उद्घाटन करते हुए। महाविद्यालय के प्राचार्य श्री बंसल कुलपति महोदय का स्वागत कर रहे हैं। मंच पर विराजमान हैं—श्री दरबारी लाल, प्रो० वेदव्यासजी, डा० रामगोपाल (कुलपति), श्री जगदीश नहरा (शिक्षा राज्यमंत्री, हरयाणा) एवं विधायक श्री ए० सी० चौधरी।

फ़रीदाबाद। 'उन्नीसवीं शताब्दी के महान् समाज सुधारक एवं नारी-जाति का उद्धार करने वाले धार्मिक क्षेत्रों में अग्रणी स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रभाव से उत्तर भारत और विशेष रूप से हरियाणा अछूता न रह सका। यह प्रदेश ऋषिवर की कार्यस्थली रहा'—ये शब्द थे हरियाणा के शिक्षा राज्य मन्त्री श्री जगदीश नहरा के जिन्होने ७ अगस्त १९८५ को स्थानीय डी० ए० वी० शताब्दी कॉलिज के उद्घाटन की अध्यक्षता करते हुए कहे। उन्होने डी ए वी मैनेजिंग कमेटी के अधीन चलाए जा रहे डी ए वी कॉलेजो के कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

स्थानीय एम० एल० ए० श्री ए० सी० चौधरी ने, जिनके अनथक परिश्रम से इस कॉलेज की स्थापना सम्भव हो सकी, कहा कि यह संस्था न केवल कला और विज्ञान तक सीमित रहेगी अपितु धीरे-धीरे इसमें कई अन्य संकाय जोड़े जाएंगे। इस कॉलेज की अनुमति देने के लिए उन्होंने हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल को धन्यवाद दिया।

महाविद्यालय के शिक्षा सत्र १९८५-८६ का विधिवत उद्घाटन महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के कुलपति श्री रामगोपल के कर कमलो से हुआ। उन्होंने कहा कि डी ए वी समिति की सुख्याति के कारण सस्थाओं को दान देने वाले भी आश्वस्त रहते हैं कि उनके धन का सदुपयोग ही होगा। अपने विश्वविद्यालय के साथ प्रथम डी० ए० वी० शताब्दी कॉलेज के सम्मिलन पर उन्होने प्रसन्नता व्यक्त की।

प्रो०वेदव्यास जी ने आशीर्वाद देते हुए इस कॉलेज के मंगलमय भविष्य की कामना की। तथा सायंकालीन मैनेजमेंट कक्षाएं आरम्भ किए जाने की घोषणा की। श्री दरबारी लाल जी ने कॉलेज के प्राचार्य को 'टीम का कैप्टन' बताते हुए कहा कि इस कालिज के लिए मुझे प्रिंसिपल बंसल सरीखे कुशल प्रशासक की ही खोज थी मुझे आशा है कि अब कालिज दिन दूनी रात चौगनी उन्नति करेगा।

समारोह का आरम्भ यज्ञ के अनुष्ठान से किया गया।

— धर्मवीर 'धीर'

आचार्य सोमदेव शास्त्री पी. एच. डी. की उपाधि से सम्मानित

"वैदिक संहितापाठ और पदपाठो का विश्लेषण एव मूल्यांकन" विषय पर आचार्य सोमदेव शास्त्री को राजस्थान विश्व विद्यालय जयपुर ने पी. एच. डी. की डिग्री प्रदान की है। उन्होने पाणिनीय महाविद्यालय बनारस मे अध्ययन करते हुए सस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से आचार्य परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की, विक्रम विश्व विद्यालय उज्जैन से सस्कृत मे एम. ए. परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। अध्ययन के साथ संस्कृत प्रचार आपके जीवन का आवश्यक अग रहा। 1973 से 1979 के बीच राजस्थान और मध्य प्रदेश के विविध नगरो मे सस्कृत शिविरो का संचालन करते रहे। साथ ही शोध विषयक सामग्री का भी सकलन करते रहे। 1980 से 1983 तक आर्य समाज सान्ताक्रुज में संस्कृत कक्षाओ का संचालन किया। इस बीच आर्य समाज सान्ताक्रूज से ही इनका स्वर सिद्धान्त नामक शोध ग्रन्थ प्रकाशित हुआ। इस समय आप आर्य समाज सान्ताक्रूज बम्बई द्वारा स्थापित आर्य विद्या मन्दिर में अध्यापन कर रहे हैं।

दिया गया है। ऋग्वेद की शाकल संहिता के प्रथम मण्डल की ऋचाओं की तुलना उपलब्ध समस्त संहिताओं से की है जिसमें लगभग 200 ऋचाए ऐसी हैं जिनमें पाठ-भेद है। वेदों की रक्षा में अष्टविध पाठों का अभूतपूर्व योगदान रहा है।

शोध प्रबन्ध मे 8 अध्याय हैं, इसके प्रथम अध्याय में संहिता-पद-क्रम जटादि पाठो का वर्णन शाकल संहिता की प्रथम ऋचा अग्निमीडे पुरोहितम्—के समस्त पाठ, विविध पाठों के क्या नियम हैं तथा इस विषयक समस्त उपलब्ध साहित्य का परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में उपलब्ध संहिताओं पदपाठों और प्रातिशाख्यों का वर्णन है। 3-4 अध्याय में पाणिनीय व्याकरण तथा निरुक्त के योगदान का उल्लेख है। 5 वा अध्याय अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसमे उपलब्ध, समस्त पदपाठों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। छठे अध्याय में पदपाठों के नियमों का पालन वेदभाष्यकारों ने कहां तक किया है तथा ऋषि दयानन्द की इस विषय में क्या मान्यता है, यह स्पष्ट किया गया है।

कुछ वर्षों से शोध क्षेत्र में यह विचार जोर पकड़ रहा है कि संहिता पाठ का

7 वें अध्याय में इन आक्षेपों का तर्क एवं प्रमाणों द्वारा खण्डन करके यह मान्यता प्रतिष्ठापित की गई है कि वेदमन्त्र ही समस्त पाठों के आधार हैं, प्रारम्भिक एवं आदि कालिक है 8 वें अध्याय में उपसंहार करते हुए प्रबन्ध के निष्कर्ष हैं।

परीक्षकों ने शोध प्रबन्ध को अत्युपयोगी समझकर विश्व विद्यालय की ओर से प्रकाशित करने की घोषणा की है। वेद संस्थान अजमेर के अध्यक्ष डा० अभयदेव शर्मा तथा प्रसिद्ध वैदिक विद्वान श्री युधिष्ठिर मीमांसक के निर्देशन में शोध प्रबन्ध तैयार किया गया है।

(कैप्टिन देवरत्न आर्य)
महामन्त्री, आर्य समाज

आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

दयानन्द जूनियर हाई स्कूल, शास्त्री नगर, सुल्तानपुर, (उ०प्र०) में २९ अक्तूबर से ३ नवम्बर तक आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर श्री राम किशोर त्रिपाठी के संरक्षण में लगेगा। शिविर शुल्क मात्र ५ रुपये होगा। अन्य जानकारी हेतु उपरोक्त पते पर सम्पर्क करें।

— प्रयागदीन जायसवाल

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य का निर्वाचन

सार्वदेशिक सभा के प्रधान ला० रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता में आर्य केंद्रीय सभा का निर्वाचन सर्वसम्मति से किया गया, जिसमें महाशय धर्मपाल प्रधान और श्री अशोक कुमार सहगल महामंत्री निर्वाचित हुए। प्रधान और महामंत्री को कार्यकारिणी के गठन का अधिकार दिया गया। निर्वाचन से पूर्व श्री शालवाले ने सभा को सम्बोधित करते हुए सामूहिक और सम्मिलित प्रयास के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने निर्वाचन के अवसर पर शान्ति, सद्बुद्धि और एकता से काम लेने का आग्रह किया।

पत्रों के दर्पण में

ऋषि दयानन्द की प्रारम्भिक जीवनी

इस लेखमाला के 'शोधकर्त्ताओं से निवेदन' शीर्षक अनुच्छेद के प्रसंग में निवेदन है कि मैं ७ मई को डा० वेदव्रत आलोक के साथ वाराणसी के दशाश्वमेध घाट पर जाकर गुजरातियों के पण्डे श्री अंजनी नन्दन मिश्र (कचौरीगली, पशुपति शिवमन्दिर के पास) से मिला था। उस समय उन्होंने बताया था कि यद्यपि उनके पास कई सौ वर्ष पुरानी बहियां हैं जिन्हें उन्होंने पिछले २५ वर्षों से खोला तक नहीं है तथापि उन्होंने अपने उपयोगार्थ पिछले ७०-८० वर्षों का Index २५ हजार रुपए व्यय करके बनवा लिया है। ऐसी ही दो Index पुस्तिकाएं निकाल कर उन्होंने हमें दिखाई जिनमें जीवापुर और टंकारा से आए व्यक्तियों के नाम अंकित थे किन्तु वे संवत् १९६० वि० के आस-पास से शुरू होते थे। उन्होंने बताया कि 'यदि शुद्ध चैतन्य (स्वामी दयानन्द सरस्वती के पिता या अन्य पूर्वज वहां आए हों तो उनका नाम उनकी बहियों में अवश्य मिल सकता है। लेकिन जिन बहियों को उन्होंने पिछले २५ वर्षों से खोला तक नहीं है, उन्हें निकालकर हमारे प्रश्नों का समाधान करवाना तत्काल सम्भव नहीं है।' आवश्यकता इस बात की है कि वाराणसी का कोई अनुसंधान प्रेमी व्यक्ति श्री अंजनी नन्दन मिश्र से मिलकर इन बहियों को काफी समय एवं धन लगाकर देखे और ऋषि दयानंद के पूर्वजों के विषय में जानकारी प्राप्त कर, आर्यजगत् के सम्मुख रखें।

—आदित्यपाल सिंह आर्य एफ-५/५२ चार इमली, भोपाल (म०प्र०)

(२)

इस खोज पूर्ण लेखमाला की चौथी कड़ी में बड़े ही विस्तार से मन्दिर के विषय में प्रकाश डाला है। मैं १९८३ को शिवरात्री पर टंकारा गया तो सम्बन्धित मन्दिर के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त की। जिस कुबेर नाथ मन्दिर का हवाला लेखक ने दिया है उसके वर्तमान पुजारी से भी मैंने विस्तार से बात की थी, यह पुजारी तत्कालीन पुजारी का वंशज है। और काफी दीन-हीन दशा में रहता है। शिवरात्री की रात को मैंने वहां पूजा का भी दृश्य देखा और बकरे की बलि होते हुए भी देखी। कुबेर नाथ का यह मन्दिर टंकारा की सीमा के बाहर है अतः टंकारा का यही मन्दिर जो डेमी नदी के तट पर स्थित है वास्तव में वही है जहां ऋषि को बोध हुआ था वहां से ऋषि को तथाकथित घर तक पैदल जाने में पच्चीस मिनट लगते हैं, चूंकि ऋषि छोटी अवस्था एवं निद्रा के प्रभावाधीन थे रात्री का समय था अतः लगभग तब घण्टा लग गया होगा और फिर तब घड़ियों का भी प्रचलन न था। अतः इसे अन्दाजा मात्र ही समझना चाहिए। यह वही पुराना मन्दिर है जिसके अन्दर केवल दो तीन व्यक्ति बैठ सकते हैं, लेकिन प्रांगण में लगभग पचास व्यक्ति बैठ सकते हैं। इस मन्दिर के अगल बगल में भी कई मन्दिर हैं। लेखक का प्रयास तथ्यपूर्ण और प्रशंसनीय है।

—ओमप्रकाश 'अंशु' ऐडवोकेट करनाल—१३२००१

व्रजेन्द्र कुसुम प्रज्ञाचक्षु से सावधान !

उक्त समाज सेवक जनता से यह कहकर धन बटोर रहा है कि महर्षि दयानन्द कृत "आर्याभिविनय" ग्रन्थ को इतिहास में प्रथम बार नेत्रहीनों के लिए ब्रेल लिपि में प्रकाशित करायेंगे या करा लिया है। वस्तुतः स्थिति यह है कि आर्य समाज बड़ा बाजार, पानीपत ने गत वर्ष अपनी शताब्दी के अवसर पर श्री व्रजेन्द्र जी के माध्यम से यह ग्रन्थ प्रकाशित कराया। इसकी कुछ प्रतियां उन्होंने अपने पास भी रख लीं जिसे वह अब जनता को दिखा कर धन बटोर रहे हैं। हमने यह पुस्तक देशभर के सभी अन्धविद्यालयों को निःशुल्क भेज दी है। इस ग्रन्थ की पर्याप्त प्रतियां हमारे पास शेष हैं। जहां कहीं आवश्यकता हो, हम इसे निःशुल्क भेज सकते हैं। इसलिए जनता से आग्रह है कि अपने धन को किसी की स्वार्थपूर्ति में नष्ट न करें।—ठाकर दास बत्ता, मन्त्री, आर्य समाज, बड़ा बाजार, पानीपत, हरयाणा

डी ए वी संस्थाओं में वेद प्रचार हो

यह ज्ञात कर हर्ष हुआ कि डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति, द्वारा सभी सम्बन्धित डी. ए. वी. स्कूलों व कालेजों को अपने यहां आर्य समाज स्थापित करने का आदेश दिया है। यह सराहनीय बात है। क्या ही अच्छा हो कि यह समिति देश के सभी डी. ए. वी. संस्थाओं को वेद प्रचार संबंधी आदेश दे इसके साथ ही यह आदेश भी जारी करें कि इन संस्थानों में नियुक्त किए जाने वाले कर्मचारी वैदिक विचार धारा के मानने वाले हों। आप अपने पत्र तथा प्रभाव से इस सुझाव को लागू करने का प्रयत्न करें—भूपाल सिंह आर्य तथा जगदीशचन्द्र मयोक M.A.; M.ed मण्डलपति, आर्य वीर दल, करनाल

युवा वर्ष और आर्यसमाज

२१ जुलाई के अंक में सम्पादकीय लेख पढ़ा। मुझे प्रसन्नता इस बात की है कि हमारे होनहार राष्ट्र के नौजवानों के प्रति भविष्य और वर्तमान समय में कुछ चिन्ता प्रकट की। इसके लिए धन्यवाद। युवा वर्ष का आठवां माह समाप्त होने को है। चार माह बाकी रह गये हैं, अभी तक सार्वदेशिक सभा या किसी प्रतिनिधि सभा ने कोई ठोस कार्यक्रम युवको के लिए नहीं बनाया।

राजीव गांधी हमारे देश के युवा प्रधान मंत्री हैं और इतने थोड़े समय में उन्होंने कई साल पुरानी 'पंजाब समस्या' का हल निकाल दिया। उन्होंने राजनीति की धारा बदल दी। आर्य समाजों के कर्णधारों को भी चाहिए कि नौजवानों को आगे लावें और अपनी कार्य प्रणाली में परिवर्तन करें।

—अशोक आर्य टैलीफोन आपरेटर, मोरवी, गुजरात

आर्य विद्वानों को उपेक्षा

आर्य समाज तथा अन्यान्य आर्य संस्थाएं आर्य विद्वानों का यथोचित सम्मान नहीं करती। स्व० पं० गणपति शर्मा की स्मृति में सन् १९८० में चुरू में जो समारोह किया गया था उनका आयोजन श्री सुबोध कुमार ने किया था। वे उस समय ७-८ आर्य समाजों में गए और येन-केन प्रकारेण कुछ सामग्री एकत्रित कर पाए थे जबकि इसका आयोजन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा जैसी संस्थाओं को करना चाहिए था। आर्य विद्वानों की स्मृति बनाए रखना, उनकी प्रेरणाप्रद जीवनियां प्रकाशित करना आदि का दायित्व सभाओं को सम्हालना चाहिए। इसके विपरीत पं० गणपति शर्मा की स्मृति में लोक संस्कृति शोध संस्थान, चुरू ने जो आयोजन किया सभाओं ने उसको सहयोग तक नहीं दिया। यह बड़े दुःख और लज्जा की बात है। —ब्रह्मदत्त, बी/४६, गणेश मार्ग, जयपुर—१५

आर्यसमाज मन्दिर किसलिए ?

एक बार हमारे साथी आदरणीय विरजानन्द दैवकरणि गुरुकुल झज्जर से पुस्तक प्रकाशनार्थ दिल्ली आये कारणवश उन्हें २-४ दिन रुकना पड़ गया तो आर्यसमाज माडल बस्ती में वे अपने सम्बन्धी और पुरोहित श्री रामतीर्थ शास्त्री के पास ठहरे। इस पर पुरोहित जी को इस आर्यसमाज के प्रधान का कोप भाजन बनना पड़ा। यह कहने पर कि श्री विरजानन्द जी आर्य समाज के कार्यालय ही में वहां ठहरे हैं, विद्वान् व्यक्ति हैं, वेद शास्त्र, उपनिषद् आदि ग्रन्थ [illegible] रहते हैं। इनसे आर्यसमाज को किसी प्रकार की हानि की संभावना नहीं है। प्रधान जी ने कहा 'लेकिन यह कोई [illegible] थोड़े ही है। कोई पूछे कि यह आर्यसमाज का भवन केवल स्कूल चलाने के लिये ही है। किसी विद्वान, [illegible] और [illegible] व्यक्ति को ठहरने का भी अधिकार नहीं है ? क्या आर्यसमाज के अधिकारियों का यह व्यवहार उचित है ?

—[illegible] (पुरोहित) [illegible], [illegible] (दिल्ली)

[illegible]

[illegible], धार्मिक और सांस्कृतिक संस्थाओं के मंच पर प्रत्येक राजनैतिक दल का व्यक्ति बिना किसी संकोच और भेदभाव के आ सकता है उसका सदस्य बन सकता है। पदाधिकारी भी बन सकता है परन्तु कोई सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक संस्था यदि किसी एक राजनैतिक दल का, चुनाव में समर्थन करती है तो उस संस्था में अन्य राजनैतिक दलों से संबंधित जो सदस्य हैं, वे इसे सहन नहीं कर सकते। जैसे आर्य समाज को ही लीजिए। सार्वदेशिक सभा के अध्यक्ष ने चुनाव की राजनीति में कांग्रेस (ई) का समर्थन किया विगत चुनाव में आर्यसमाज की सभी संस्थाओं को कांग्रेस (ई) का समर्थन करने को कहा। इससे आर्यसमाज के बहुत से ऐसे सदस्य जो कांग्रेस (ई) से भिन्न राजनैतिक संस्थाओं में हैं, वे नाराज हो गये। दूसरे राजनैतिक दल भी आर्यसमाज से नाराज हो गये। इस प्रकार के आचरण से संस्था सामाजिक या धार्मिक न रह कर राजनैतिक बन जाती है। मेरे विचार से राजनैतिक नेताओं को यह नहीं चाहिए कि वे सामाजिक और धार्मिक संस्थाओं को अपनी लालसा पूरी करने का साधन बनावें। राजनैतिक नेताओं ने राजनीति का जो खेल खेलना है वह उन्हें राजनैतिक संस्थाओं के मंच पर खड़े होकर अथवा नया राजनैतिक मंच बनाकर ही खेलना चाहिए। सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक मच को इस खेल में नहीं घसीटना चाहिए। —रामेश्वरदास गुप्त, डी—३५, साउथ एक्सटेंशन, भाग—एक, नई दिल्ली—११००४९

डी ए वी शताब्दी पब्लिक स्कूल खूंटी के उद्घाटन की झाँकी
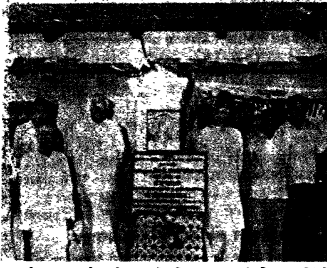
स्वामी श्रद्धानन्द डी ए वी शताब्दी पब्लिक स्कूल खूटी (जिला रांची) के उद्घाटन समारोह पर भवन निर्माण के लिए २५ लाख रु० की अपील की गई। (प्रथम चित्र) भारत के प्रसिद्ध लाह उद्योगपति श्री सोहनलाल बहल अछर राम कालखाफ कम्पनी (शैलक) प्राइवेट लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर द्वारा उद्घाटन के समय उनके साथ खड़े हैं। उपस्थित अन्य व्यक्ति हैं—कुमारी कैलेण्ड—हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में शोध छात्रा, रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय कलकत्ता के कुलपति डा० रमारंजन मुखर्जी। (द्वितीय चित्र) यज्ञ की पूर्णाहुति के समय उपस्थित मुख्य अतिथि एवं कुलपति श्री मुखर्जी। (तृतीय चित्र)—बाईं ओर हैं श्री सोहनलाल के सपुत्र श्री कुलदीप बहल, एल. एम. सी. के प्रधान श्री गोविन्द चन्द महतो, डी० ए० वी जवाहर विद्यामन्दिर रांची के प्रिंसिपल राय इकबाल सिंह तथा अन्य व्यक्ति जो उद्घाटन शिला के अनावरण के समय उपस्थित थे।

आर्यसमाज सफदरजंग ऐन्क्लेव

वार्षिकोत्सव एवं कृष्ण जन्माष्टमी समारोह 4 सितंबर से 8 सितंबर तक धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस में प्रातः काल यज्ञ तथा रात्रि मे वेद कथा होगी। यज्ञ के ब्रह्मा वाचस्पति उपाध्याय तथा कथावाचक श्री यशपाल सुधांशु होंगे। 7 ता० को 2 बजे महिला सम्मेलन की अध्यक्षता श्रीमती प्रभात शोभा करेंगी। 8 सितंबर को जन्माष्टमी के अवसर पर ध्वजारोहण लाला इन्द्र नारायण करेंगे तथा समारोह की अध्यक्षता पं० सत्यकेतु विद्यालंकार करेंगे।

—सूरजप्रकाश मलिक, मंत्री

इतिहास-पुरुष श्रीकृष्ण......

(पृष्ठ ९ का शेष)

मानने पर कटिबद्ध है। भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य और कृपाचार्य भी राजा को देवता मानने के उस समय की सामाजिक मान्यता के सिद्धांत को छोड़ने को तैयार नहीं होते। परन्तु श्री कृष्ण इस सिद्धांत को चुनौती देते हैं और राजा को देवता का प्रतिनिधि मानने के बजाय जनता का प्रतिनिधि मनवाते हैं। वे जरासन्ध वाले, अन्य राज्यों और राजाओं को सर्वथा समाप्त कर अपना अत्याचारी साम्राज्य स्थापित करने के विरोध में हैं। वे ऐसे आत्म निर्णय मूलक आर्य साम्राज्य (कामन वैल्थ) के प्रतिपादक हैं जो आगे चलकर समस्त राजनैतिक तत्ववेत्ताओं का आदर्श बनता है। वैदिक संस्कृति इसी प्रकार के साम्राज्यवाद की पोषक है। औरों के अस्तित्व को समाप्त करने वाले अत्याचारी साम्राज्य (एम्पायर) की समर्थक नहीं है।

जन्म परक वर्ण व्यवस्था के विरोध में भी संघर्ष श्री कृष्ण ने किया। वह भी उस युग में क्रांति का प्रतीक है। जब कर्ण कहता है—

सूतो वा सूत पुत्रो वा
यो वा को वा भवाम्यहम्।
दैवायत्तं कुले जन्म।
मदायत्तं तु पौरुषम् ॥

—मैं चाहे सूत होऊं, या सूत पुत्र होऊं, चाहे कोई भी होऊं, मेरा जन्म किस कुल में हुआ है, यह क्यों पूछते हो। क्योंकि मेरा जन्म दैव के आधीन था। मेरे आधीन तो केवल मेरा पौरुष है। इसलिए मुझसे तो पौरुष की बात करो।

कर्ण की यह उक्ति जहां जन्म-परक जाति व्यवस्था पर सबसे करारा आघात थी, और वह जन्म भर इसी अभिशाप से पीडित होकर मानसिक यंत्रणा भोगता रहा, वहाँ श्री कृष्ण ने कर्ण को इस अभिशाप से निकाल कर उसको न्यायानुकूल सामाजिक प्रतिष्ठा दिलाने का अपनी ओर से पूरा प्रयत्न किया। परन्तु तब कर्ण अपनी निराशा में इतना आगे बढ़ चुका था कि श्रीकृष्ण का कथन स्वीकार करके उसने युधिष्ठर के बड़े भाई के रूप में साम्राज्य का अधिपति बनने की बात को भी लात मार दी।

श्री कृष्ण स्वयं दैव को स्वीकार करते हैं, परन्तु पौरुष को उससे अधिक महत्व देते हैं और उनका यह विश्वास उनके जीवन मे पल-पल पर उद्घाटित होता है। वे कौरवों की सभा में धृतराष्ट्र को सम्बोधित करते हुए कहते हैं—"इस समय भारत का भाग्य एक आपके आधीन है, और दूसरे मेरे। आप कौरवों को समझाइये, मैं पाण्डवों को समझा दूंगा। यदि आप अपनी न्याय परायणता से पाण्डवों को अपने पक्ष में कर लें तो संसार में कोई आपको जीतने वाला नहीं रहेगा।" श्री कृष्ण का यह आत्मविश्वास दैव से अधिक पुरुषार्थ को ही प्राथमिकता देने पर निर्भर है।

इस ग्रन्थ के लेखक लेखनी और वाणी के समान रूप से धनी थे, किन्तु मूल रूप से कवि थे। और इसलिए महाभारत के काव्य रूप में से वे खरे इतिहास की खोज करने में समर्थ हुए क्योंकि वे कवि होने के नाते से काव्योचित वर्णनों की विविध भंगिमाओं को पहचानते थे। सम्भवत. महाकवि माघ के शिशुपाल वध मे वर्णित "एतद्‌ गुरुभार" विशेषण से ही श्रीकृष्ण के इस रूप को खोजने की उन्हें प्रेरणा मिली हो। एक कवि ही दूसरे कवि को अच्छी तरह से समझ सकता है। इस दृष्टि से "भारी भार संभाले" इस विशेषण में श्रीकृष्ण के कन्धों पर वह कौन सा भार था, इसकी खोज वे सतर्कता पूर्वक कर सके। इस ग्रन्थ के कुछ अध्यायों में तो उनकी काव्य चेतना ने सचमुच ही चमत्कार किया है। उदाहरण के लिए 'विश्वरूप' नामक उन्नीसवां अध्याय, 'पुत्र वध का बदला' शीर्षक बाईसवां अध्याय 'मनस्विनी प्रतिज्ञा' शीर्षक पच्चीसवां अध्याय और 'एक हताश जीवन का अन्त' शीर्षक छब्बीसवां अध्याय रखा जा सकता है। यों भी स्थान-स्थान पर उनके कवित्वपूर्ण संकेत सहृदय रसिकों को आप्लावित किए बिना नहीं रहेंगे। जहां तक लेखक की गवेषणात्मक बुद्धि का प्रश्न है, वह भी अद्भुत है, इसका उदाहरण इक्तीसवें अध्याय "महाभारत का युद्ध प्रकार" में देखा जा सकता है। इस प्रकार अपनी गवेषणा और कवि-सुलभ कल्पना शक्ति और तर्क बुद्धि का समन्वय करके लेखक की लेखनी का यह अद्भुत प्रसाद पाठकों तक पहुंच रहा है। लगभग 54-55 साल पहले लिखे गये इस ग्रन्थ की भूमिका में लेखक ने लिखा था—"पाठक, परख निष्पक्ष होकर परख निर्दय होकर परख रत्न तेरे सम्मुख है इसे आंच इसे आंक खरा हो तो ले जा, नहीं तो स्वर्णकार को लौटा दे।"

लेखक के परिश्रम से यह ग्रन्थ केवल सोना नहीं, बल्कि कुन्दन बनकर पाठक के हाथ मे उपस्थित है। समर्पण शोध संस्थान को इस बात का श्रेय है कि जो ग्रन्थ पिछले लगभग 36 साल से अप्राप्य हो गया था, उसके द्वारा उसका पुनरुद्धार हो रहा है। इसके लिए प्रत्येक पाठक उसका कृतज्ञ होगा।

[स्व० श्री पं० चमूपति एम०ए० द्वारा लिखित 'योगेश्वर कृष्ण' नामक अनुपम ग्रन्थ के नए संस्करण की भूमिका]

खूँटी (राँची) में निश्शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर की झाँकी

खूंटी में दयानन्द फाउंडेशन द्वारा आयोजित निश्शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर मे आपरेशन के लिए आए मरीजों के साथ चंडीगढ़ के डा० अजुनदास ग्रोवर तथा उनके साथी। द्वितीय चित्र में राँची के सिविल सर्जन जो समारोह के मुख्य अतिथि थे। तृतीय चित्र में राँची के डिप्टी कमिश्नर श्री मदन मोहन झा एक मरीज को चश्मा प्रदान कर रहे हैं।

लोकोत्तर चरित्र के......

(पृष्ठ ४ का शेष)

जायेगा। इसी प्रकार द्रौपदी के चीर-हरण प्रकरण मे भी कृष्ण के लोकोत्तर चरित्र की झाँकी प्राप्त होती है। महाभारत का कारण कुछ भी रहा हो, उस का नायक कोई भी मान लिया जाय, किन्तु यदि कृष्ण न होते तो महाभारत मे पाडवों की विजय न होती इसमें तनिक भी सन्देह नही।

आरम्भ मे कृष्ण सात्वत वृष्णि जाति के पूज्य पुरुष रहे, तदन्तर वे पूज्य देव बने। सात्वत अशु के पुत्र थे। यदुवश के अन्धक और वृष्णियो के साथ सात्वतो का भी उल्लेख पाया जाता है। कृष्ण को ही वासुदेव कहा गया है। गीता के दसवे अध्याय के छत्तीसवे श्लोक मे स्वय कृष्ण के मुख से कहलाया गया है—'वृष्णीना वासुदेवोऽस्मि' पाणिनि ने 'वासुदेव' का शब्दार्थ वसुदेव और वसुदेव-पुत्र इन दोनो रूपो मे ग्रहण किया है। वीर पूजा के जन-सिद्धात ने कृष्ण को बाद मे देवत्व एवं अवतार की गरिमा प्रदान की।

निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि कृष्ण ने ऐसे कृष्णत्व (आकर्षण) को जन्म दिया है जो कभी मलिन नही हो सकता। उनके लोकोत्तर चरित्र तथा लोकतन्त्र के उन्नायक रूप को न तो आवृत किया जा सकता है और न सीमित ही। हम भी भक्ति भाव से नत मस्तक होकर कहते हैं।

—'कृष्णं वन्दे जगद्-गुरुम्।'

पता—7 एफ कमला नगर दिल्ली-7

कैलाशचन्द्र तिवारी का निधन

आर्य समाज ताड़ीखेत अल्मोड़ा के सक्रिय सभासद श्री कैलाशचन्द्र तिवारी का ८ अगस्त को बिजली पोल पर कार्य करते हुए निधन हो गया। महात्मा भक्त मुनि की अध्यक्षता और पं० प्रेमदेव शर्मा के पौरोहित्य में शांति यज्ञ हुआ। स्वामी गुरुकुलानन्द ने श्री तिवारी के कार्यों की प्रशंसा की। —त्रिलोक रावत

—आर्य समाज ताड़ीखेत अल्मोड़ा में यज्ञादि के पश्चात् महात्मा भक्तमुनि की अध्यक्षता में भारत छोड़ो की ४३ वीं वर्ष गाठ मनाई गयी। इसका आयोजन श्री ध्यानसिंह नाथ मिष्ठान्नलोक ने किया। स्वामी कच्चाहरी ने उपरोक्त विषय पर अपने विचार रखे।

कृष्णा कपूर दिवंगत

चण्डीगढ़ की प्रसिद्ध आर्य कर्त्री और आर्य संगीतकार देवी कृष्णा कपूर की अचानक मृत्यु से नगर की सभी समाजों के कार्यक्रम स्थगित कर श्रद्धाञ्जलि सभा आयोजित की गयी। —आशुराम आर्य

आर्ययुवक समाज सेवा का कार्य

पंजाब के बाढ़ग्रस्त इलाके जैमल नगर, बलदेव नगर, अजीत नगर [illegible] गाधी नगर में आर्य युवक समाज, साई दास ए. एस. हायर से. स्कूल, जालन्धर के दस सदस्य और अध्यापक श्री बंसल श्री किशोरचन्द्र और मन्त्री अर्जुनदेव ने दूध और बिस्कुट बाँट कर सेवाकार्य किया।

समाज प्रधान दुर्घटना में घायल

आर्य समाज, उदयपुर की प्रधाना श्रीमती मालती अग्रवाल ३ अगस्त की रात्रि में चरक छात्रावास के पास कार टकरा जाने से घायल हो गयी। वे अब आपरेशन व चिकित्सा के बाद स्वस्थ हैं।

—ज्ञान प्रकाश गुप्त

चतुर्वेद पारायण यज्ञ

यज्ञ भवन, जवाहर नगर दिल्ली में वेद सप्ताह के उपलक्ष्य में चतुर्वेद पारायण यज्ञ २१ अगस्त से १ सितम्बर तक सोत्साह स्वामी जीवनानन्द और श्री लखपति शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ।

उषा गौतम पी. एच. डी. से अलंकृत

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के कार्य समिति के सक्रिय सदस्य वैद्य श्री निरंजनलाल गौतम की सुपुत्री डा० उषा गौतम को राजस्थान विश्वविद्यालय ने 'अपतंत्रक परिचय एवं महावात विध्वंसन योग की अवश्यकता' नामक शोध प्रबंध पी० एच० डी० की उपाधि से अलंकृत किया है। डा० उषा गौतम राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान जयपुर से अपतंत्रक रोग पर किये गये शोध कार्य पर आयुर्वेद वाचस्पति (एम. डी.) की उपाधि प्राप्त करने वाली आयुर्वेद जगत् की प्रथम महिला हैं।

चौ. प्रताप सिंह शोक-संदेश

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, हरयाणा के प्रधान राय साहब चौ० प्रताप सिंह अनेकों संस्थाओं के प्रधान और उपप्रधान रहे। चौ० साहब बडे दानी और उदार व्यक्ति थे। निधन पर निम्नलिखित व्यक्तियों और संस्थाओं ने अपने शोक संदेश भेजे हैं जो इस प्रकार है—(१) रामनाथ वेदालकार, वेद मन्दिर, ज्वालापुर, (२) विश्व भारती अनुसंधान परिषद् ज्ञानपुर (वाराणसी) (३) डा० विद्या सागर स्मारक समिति आर्य समाज प्रधाना मोहल्ला रोहतक की सभी आर्य संस्थाओं की ओर से (४) आर्य समाज दयालपुर करनाल (५) श्रद्धानन्द अनाथालय करनाल (६) अमर शहीद पं० लेख राम स्मारक मण्डल कादियां (७) आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, कागड़ा (हि० प्र०) आदि।

यू० १०३/८१ लायसेंस टु पोस्ट विदाउट प्री-पेमेन्ट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११९३/७२ डी० सी० 409
आर्य जगत् नई दिल्ली POSTED IN N. D P.S.O. ON 5-9-1985. ८ सितम्बर, १९८५

कुंभ पर हरिद्वार में ऋषि मेला

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली और वैदिक मोहन आश्रम ट्रस्ट (भूपतवाला, हरिद्वार) 1 अप्रैल से 14 अप्रैल 1986 तक हरिद्वार मे विशाल ऋषि मेले का आयोजन कर रहे हैं। कार्यक्रम की विस्तृत रूप रेखा बाद मे भेजी जायेगी। मुख्य सम्मेलन निम्न होंगे :—

1—महर्षि दयानन्द ने 1866 के कुम्भ-मेले मे इसी स्थान पर पाखण्ड खडनी पताका गाड़ी थी। उनकी पुण्य स्मृति में स्वामी जी की आयु के अनुरूप 59 फुट ऊंचा सगमरमर का "दयानन्द कीर्ति स्तम्भ" स्थापित किया जा रहा है। इस अवसर पर एक स्मृति सम्मेलन होगा। स्तम्भ के लिए श्री "विज पंजवानी (स्वर्ण पदक प्राप्त आर्कीटेक्ट, हरिद्वार) की सेवाएं प्राप्त की गई हैं।

2—डी० ए० वी० आन्दोलन के 100 वर्ष पूर्ण होने पर डी० ए० वी० शताब्दी सम्मेलन।

3—"वेद सम्मेलन" में देश भर के उत्तम विद्वानों को विधिवत् आमन्त्रित किया जायेगा और उनके उपदेशामृत का लाभ मिलेगा।

4—भारत-एकता सम्मेलन।

5—सत्यार्थ प्रकाश के 14 समुल्लासों के आधार पर भ्रम, ढोग, अज्ञानता आदि के निवारण के लिए 14 दिन का विशेष कार्यक्रम।

6—विशाल गायत्री यज्ञ।

आश्रम के विशाल प्रागण और उसके साथ संलग्न आश्रम की विस्तृत भूमि पर निवास, भोजन और प्रचार की व्यवस्था की जा रही है ऋषि लगर निरन्तर चलेगा। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली के विद्वान एवं उपदेशक तथा अधिकारी कार्य मे पूर्ण सहयोग देंगे।

आर्य समाजो, आर्य संस्थाओ तथा आर्य सज्जनो से निवेदन है कि अभी से शिविर आदि लगाने के लिए अपने स्थान सुरक्षित कर ले क्योकि कुम्भ के अवसर पर भीड़ [illegible] के कारण तुरन्त स्थान का प्रबन्ध कठिन हो जाता है।

इन कार्यों के लिए अपनी ओर से तथा समाजो की ओर से दान और ऋषि लंगर के लिए अन्न आदि भिजवाने की कृपा करें। दान और अन्न—"मन्त्री-वैदिक मोहन आश्रम ट्रस्ट भूपतवाला-हरिद्वार-240410 के नाम भेजा जाये। यह दान आय कर धारा-80-जी के अधीन आय कर से मुक्त है।

—निवेदक—

तिलकराज गुप्ता	खेम चन्द मेहता	वेद व्यास	दरबारी लाल	रामनाथ सहगल
महामन्त्री	मन्त्री	प्रधान	संगठन-मंत्री	मन्त्री
वैदिक मोहन आश्रम ट्रस्ट हरिद्वार		डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध कर्त्री सभा		आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

आर्य नेताओं के सुन्दर फ्रेम जड़े पेंटिंग चित्र

आर्यसमाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में प्रसिद्ध कलाकार—श्री प्रकाश आर्य जी हैदराबाद से आये हुए हैं। पिछले वर्षों में भारत भर मे जितनी भी शताब्दियां मनाई गई, चाहे दिल्ली मे, बम्बई मे, चाहे अजमेर मे, चाहे अमृतसर, मेरठ, वाराणसी आदि में, उन सबमें चित्रों और मंच-सज्जा आदि का सारा कार्य उनका ही होता था। सन् 83 में अजमेर में जो निर्वाण शताव्दी मनाई गई, वहां 6 महिने पहले से जाकर उन्होने ही चित्र आदि बनाये थे। वे सिर्फ आर्य समाज के नेताओ के ही चित्र बनाते हैं। इस समय उनके पास गुरू विरजानन्द, स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, तथा महात्मा हंसराज एवं अन्य आर्य नेताओ के सुन्दर "फ्रेम" जड़े हर साईज मे बने चित्र तैयार हैं। जो सज्जन खरीदना चाहे वे उनसे आर्यसमाज अनारकली मन्दिर मार्ग मे आकर ले सकते हैं।

—गजेन्द्र प्रसाद मालवीय, कार्यालयाध्यक्ष

MATRIMONAIL

Wanted a suitable match for a Arora, Widower 39/170/2100, working on an administrative post in Hans Raj College Malka Ganj Delhi—110007, having four daughters. Own house With Rental Income. Issueless Widow/Divorcee/barren may be acceptable. Contact—Mahinder Kumar Raswant Senior Personal Assistant to Principal, Hans Raj College, Malka Gahj, Delhi-7 or House No : Mukerji Nagar, Delhi-9.

लेख भेजिये

देश विदेश के उच्च-कोटि के विद्वानों से निवेदन है कि वे निम्नलिखित तीन विषयों पर अपने अमूल्य लेख हमें भेजें—

१. शास्त्रानुसार गृहस्थी की जीवन-चर्या।
२. शास्त्रानुसार वानप्रस्थी की जीवन-चर्या।
३. शास्त्रानुसार संन्यासी की जीवन-चर्या।

इन अमूल्य लेखों पर "आर्य पथ" की ओर से निम्नलिखित तीन पुरस्कार अर्पित किये जावेंगे—

पहला पुरस्कार ५०० रुपये
दूसरा पुरस्कार ३०० रुपये
तीसरा पुरस्कार २०० रुपये

लेख भेजने की तिथि ३१ अगस्त से बढ़ाकर अन्तिम ३० सितम्बर १९८५ कर दी गयी है।

सब लेखों को "आर्य पथ" में प्रकाशित करने का हमें अधिकार होगा।
सम्पादक "आर्य पथ" का निर्णय अन्तिम व मान्य होगा।
लेख तीनों विषयों पर लिखें जायेंगे अर्थात् हर विद्वान् लेखक तीन लेख भेजेगा।

संचालक—"आर्य पथ" मासिक
सेठी बिल्डिंग, विजय चौक, कृष्ण नगर दिल्ली-५१

"आर्य पथ" पिछले पाँच वर्षों से देश-विदेश में धार्मिक प्रचार-प्रसार कर रहा है। "आर्य पथ" के सदस्य बनकर अपने जीवन के एक अच्छे उद्देश्य की पूर्ति करें।

"आर्य पथ" मासिक

पिछले पांच वर्षों से देश विदेश में धार्मिकता का प्रचार प्रसार करने वाली इस पत्रिका के, जिसकी उच्चतम कोटि की धार्मिक मासिक पत्रिकाओं में गणना है, अवश्य आजीवन या मासिक सदस्य बन वैदिक धर्म के प्रचार में अपना योगदान दीजिये।

वार्षिक सदस्यता ३०/- रुपये, आजीवन सदस्यता ३००/-रुपये
संचालक "आर्य पथ", सेठी बिल्डिंग, विजय चौक, कृष्ण नगर, दिल्ली-५१

सुयोग्य वधू चाहिए

३४ वर्षीय, कद ५ फुट ६ इंच, तलाकशुदा, बी० ए० एल० एल० बी०, शाकाहारी, बैंक में क्लर्क मासिक वेतन १७०० से १८००/-के बीच है के लिए पढी, लिखी, मृदुभाषिणी, सुन्दर व सुशील कन्या चाहिए। जाति बन्धन नही। पत्र व्यवहार का पता :—बाल कृष्ण 'आर्य' मकान नं० ३६१ गली नं० १० नवां कोट, अमृतसर १४३००१

जिसकी जिन्दगी ही......

(पृष्ठ ११ का शेष)

दीर्घायु का रहस्य

वे शाहकारी थे। गीता मे उपदिष्ट 'युक्ताहार विहारस्य युक्त चेष्टस्य कर्मसु' पर यदि कोई टीका लिखनी हो, तो उनका जीवन उसकी एक बेजोड़ मिसाल थी। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के कार्य काल मे प्रातराश में पनीर की मात्रा अधिक, फलों का रस तथा टमाटर, पालक का साग और थोड़ा सा अन्न लेते थे। कार्यालय जाने से पूर्व उनकी सुपुत्री सुमित्रा वर्मा उनके साथ कुछ फल बांध देती थी। कार्यालय मे नियमित समय पर वे जल का गिलास लेते थे। दुपहर मे फलों का सेवन करते थे। शाम को घर लौट कर फिर प्रातः काल वाले भोजन के पदार्थ उसी रूप में लेते थे। प्रातः 3 बजे उठ कर नियमित पाणिनि के एक सूत्र का अध्ययन अवश्य करते थे। उसे वे शब्द ब्रह्मोपासना कहा करते थे।

कार्यालय से जब कभी किसी पार्टी में सम्मिलित होते तो वे वहा ने बस फल व जल का गिलास ही लिया करते थे। स्वभाव से हंस मुख थे। दृढ़ प्रतिज्ञ थे। शिव संकल्पी थे। प्राकृतिक नियमों के पालक थे।

एक बार मैंने इस ज्ञान योगी से पूछा—डाक्टर साहिब, आप ईश्वर का कब स्मरण करते है? उत्तर मे उन्होंने उर्दू का शेर पढ़ा—

मेरी हर नफ्स एक सिजदा है आहिद
मेरी जिंदगी ही मेरी बन्दगी है।!!

—पता W/43, राजौरी गार्डन
नई दिल्ली—27

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस०नारायण एण्ड सन्स७११७/१८ पहाड़ी धीरज, (फोन : ५१६५१८, [illegible]) दिल्ली से छपवा कर कार्यालय आर्य जगत्, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली। फोन (343718)

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य-२५ रुपये | विदेश मे ३० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४८, अक ३८, रविवार, १५ सितम्बर, १९८५ | दूरभाप : ३४३७१८
आजीवन सदस्य-२५१ रु० | इस अक का मूल्य—६० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८५, दयानन्दाब्द १६० | भाद्रपद शुक्ल १, २०४२ वि०

सुप्रीम कोर्ट की मानहानि के विरुद्ध याचिका

मुस्लिम लीग के प्रधान को गिरफ्तार करने की मांग

उच्चतम न्यायालय के पाच न्यायमूर्तियो की बेच ने शाहबानो के केस मे तलाक के बाद निर्वाह भत्ता देने के सम्बन्ध मे जो फैसला दिया था और समस्त भारतीयो के लिए समान आचार सहिता बनाने के लिए सरकार को प्रेरित किया था, उससे मुस्लिम लीगी नेताओ मे खलबली मच गई। इस निर्णय के विरुद्ध जिहाद छेड दिया और 14-6-85 को अखिल भारतीय स्तर पर 'शरियत दिवस' मना कर मुसलमानो से कहा गया कि वे इस निर्णय को न माने। यह स्पष्ट रूप से अदालत की तौहीन थी कलकत्ता के भारतीय राष्ट्रीय वकील संघ के और पूर्वांचल जनसघ के महामत्री श्री दुर्गादत्त अग्रवाल ने उच्चतम न्यायलय मे याचिका प्रस्तुत कर मुस्लिम लीग के प्रधान श्री सुलेमान सेठ और केरल के उपमुख्यमत्री को न्यायालय की इस मानहानि के कारण गिरफ्तार करने और उचित दण्ड देने की माग की है।

केरल के मुस्लिम लीगी उपमुख्यमत्री का वक्तव्य 4-8-85 के अंग्रेजी दैनिक 'स्टेट्समेन' कलकत्ता मे छपा है। याचिका मे सुलेमान सेठ और उपमुख्यमत्री के वक्तव्यो के हवाले देकर उन्हे कठोर दण्ड देने की माग की है जिससे देश मे कानून और व्यवस्था सुरक्षित रह सके और भविष्य मे कोई उच्चतम न्यायलय के निर्णय की अवहेलना न न कर सके।

विज्ञापनदाताओं के लिए स्वर्ण अवसर

डी ए वी शताब्दी समारोह पर भव्य स्मारिका

सन् 1986 के आरम्भ मे डी ए वी शताब्दी समारोह भारत व्यापी स्तर पर मनाया जा रहा है। इस अवसर पर होने वाले विभिन्न आयोजनो के लिए समितिया गठित हो गई हैं और वे आयोजनो की रूपरेखा तैयार कर रही है।

इस अवसर पर एक भव्य स्मारिका भी प्रकाशित की जाएगी जिसमे डी ए वी आदोलन के विविध पहलुओ पर, शिक्षा की राष्ट्रीय समस्या पर, तथा राष्ट्र, समाज एव परिवार को प्रगति पथ पर ले जाने से सम्बन्धित अनेक विषयो पर सुविज्ञ अधिकारी विद्वानो के लेख होगे।

बढिया छपाई, बढिया कागज, गेट अप और भारी संख्या मे छपने के कारण यह स्मारिका चिरस्मरणीय और चिर सग्रहणीय होगी और लाखो लोगो तक पहुचेगी—क्यो कि भारत के सभी राज्यो मे और भारत के बाहर विदेशो मे भी डी ए वी से सम्बद्ध उसके प्रशसको की कमी नही है। छात्रो, अभिभावको, व्यापारियो, और सभी वर्गों के लोगो के हाथो मे यह स्मारिका जाएगी।

इसलिए विज्ञापनदाताओ के लिए यह स्वर्ण अवसर है। इसके अलावा, विज्ञापनो से होने वाली सारी आय उन जनहितकारी कार्यों मे व्यय होगी जिन्हे डी ए वी प्रबध कर्त्री समिति शताब्दी समारोह से शुरू करने वाली है।

प्रसिद्ध पत्रकार श्री क्षितीश वेदालंकार से स्मारिका के सम्पादन का दायित्व वहन करने का अनुरोध किया गया है।

स्मारिका 23×36× 8 के आकार मे छपेगी।

विज्ञापन दरें इस प्रकार होगी—

1. पूरा पृष्ठ (रगीन) रु० 2,500/-
   आधा पृष्ठ " " 1,500/-
2. पूरा पृष्ठ (सादा) रु० 1,500/-
   आधा पृष्ठ" " 800/-
3. अतिम आवरण पृष्ठ रु०6,000/-
   अन्त. आवरण पृष्ठ " 4,000/-
4. प्रथम आवरण ————
   अन्त' आवरण पृष्ठ 5,000/-

विज्ञापन इस पते पर भेजे—
डी ए वी शताब्दी समारोह समिति
द्वारा डी ए वी कालेज प्रवन्धकर्त्री समिति
चित्रगुप्त रोड, नई दिल्ली—110055

अभिनन्दन समारोह

डा० सत्यकेतु विद्यालकार के गुरुकुल विश्वविद्यालय कागडी, हरिद्वार के कुलाधिपति [चासलर] और डा० सत्यकाम वर्मा के कुलपति [वाइस चासलर] एव डॉ० सत्यव्रत के प्रो० सस्कृत, यूनीवर्सिटी दिल्ली, बनने के उपलक्ष्य मे आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा और डी. ए. वी कालेज मैनेजिग कमेटी की ओर से आर्य समाज [अनारकली], मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली मे शुक्रवार १३ सितम्बर को सायं ५-३० वजे उनके अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया है।

उच्चतम न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता और सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह समारोह की अध्यक्षता करेगे। सार्वदेशिक सभा के प्रवान श्री रामगोपाल शालवाले और गुरुकुल विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा [विजिटर] डॉ सत्यव्रत सिद्धान्तलकार एव प्रो० डॉ० चारूदेवा शास्त्री मुख्य अतिथि होगे। इस समारोह मे आप अपनी उपस्थिति से कृतार्थ करे।

दरबारी लाल	वेद व्यास	रामनाथ सहगल
कार्यवाहक अध्यक्ष	प्रधान	मंत्री
और सगठन सचिव	आ प्रा. प्र. सभा	आ. प्रा प्र. सभा
डी.ए.वी कालेज मैनेजिग कमेटी		

कालड़ी में संस्कृत विश्वविद्यालय

हैदराबाद, 25 अगस्त। "आद्य जगद्गुरु शकराचार्य के जन्मस्थान कालडी (केरल) मे शृगेरी मठ के पीठाधीश श्री भारती तीर्थ के आशीर्वाद से एक सस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना की जायेगी"—करतल ध्वनि एव हर्षध्वनि के मध्य से केन्द्रीय सुरक्षा मत्री श्री पी वी० नरसिह राव ने शृगेरी मठ मे आयोजित चार दिन की विचार गोष्ठी के उद्घाटन के अवसर पर घोषणा की। यह विचार गोष्ठी शकराचार्य श्री भारती तीर्थ के सान्निध्य मे हुई।

श्री नरसिंह राव ने बताया कि वाराणसी सस्कृत विश्वविद्यालय के समान आध्र-प्रदेश मे भी एक सस्कृत विश्वविद्यालय स्थापित करने का प्रस्ताव था, किन्तु वह कार्यान्वित नही किया जा सका। शृगेरी मठ के शकराचार्य इन दिनो हैदराबाद मे अपना चातुर्मास्य कर रहे हैं।

परामर्शदाता-अमर स्वामी सरस्वती | सम्पादक-क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक-रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

वैदिक धर्म की विशेषता

लोक और परलोक में मानव कल्याण

—नरेन्द्र विद्यावाचस्पति

विश्व में अनेक धर्म प्रचलित हैं, परन्तु वे सब अधिकतर किन्हीं व्यक्तियों या पैगम्बरों से सबंधित होने के कारण सम्प्रदाय या पथ अधिक कहे जा सकते है, उन्हे सच्चा मानवीय धर्म कहना उचित नही होगा। वेद विश्व मानव के सबसे प्राचीनतम पुस्तकालय के सबसे प्राचीन ग्रन्थ है। वेदो मे किसी सम्प्रदाय या पथ के पैगम्बर या किसी भी व्यक्ति विशेष का उल्लेख नही है। वेदो मे कहा गया है कि यह पृथ्वी हमारी माता और हम इस पृथ्वी माता के पुत्र हैं। (माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या ।।) वैदिक प्रार्थनाओं मे किसी प्रदेश या राष्ट्र विशेष की समृद्धि के लिए प्रार्थना नही की गई प्रत्युत वहां प्रार्थना की गई है समुद्र, नदियां और जल से भरी पूरी यह पृथ्वी हमे भरपूर फसल दे, अनाज दे, जिससे यह प्राणवान् ससार तृप्त हो, हमारी यह पृथ्वी माता प्राणी मात्र को अन्न-रस से परितृप्त करे। वहां कहा गया है

यस्या समुद्रं उत सिन्धुरापो यस्यामन्न कृष्टय सवभूवु ।
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत् सा नो भूमि पूर्वं पेये दधातु ।।

इतना ही नहीं, वेद मे कहा गया है कि अनेक धर्मों और भाषाओं वाले मनुष्यो को धारण करने वाली यह पृथ्वी अडिग धेनु गौ की न्याई नाना प्रकार की सम्पदा की अभिवृष्टि करे।

जन बिभ्रती बहुधा विवाचस नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम् ।
सहस्र धारा द्रविणस्य मे दुहा ध्रुवेव धनुरनपफुरन्ती ।।

स्वभावत जिज्ञासा होती है कि वेदो का यह मानव धर्म क्या है? वहां यह तो स्पष्ट कहा गया है— हे मानव, तू मननशील हो (मनुर्भव)। वेदो मे सच्चा क्रान्त-दर्शी ऋषि वह है जो मानवो के लिए हितकारी है (ऋषि स या मनुर्हित) वेदो मे केवल सार्वजनिक कल्याण की बात नही कही गई है, वहा पाचजनो जन-जन के कल्याण, सम्पूर्ण मानव समाज के अभ्युदय की आकाक्षा की गई है। ये विस्तीर्ण मार्ग मानवमात्र के लिए कल्याणकारी हो, मरुभूमियां मानव का कल्याण करें, जल से परिपूर्ण क्षेत्र मगलकारी हो, घनी बस्तियां हमारा कल्याण करें। वहां कहा गया है—

स्वस्तिन पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति ।
स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन ।।

यह भूमिमाता सब के लिए एक समान है वह सबसे समता का व्यवहार करती है। पांचों प्रकार की मानव श्रेणियां उसी पृथ्वी की सन्तान हैं (तवेमे पृथिवि पंचमानवाः) वहा प्रत्येक मानव से अपेक्षा की गई है कि हम सभी प्राणियो के साथ मित्रवत आचरण करें। प्रत्येक व्यक्ति सकल्प करे कि मैं सभी प्राणियो को मित्र के रूप मे देखूगा। सभी प्राणी मुझे भी अपना मित्र समझें।

मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे ।।

वैदिक चिन्तन मे आकाक्षा की गई है कि भाई भाई से वैर न करे, बहन भाई आपस मे शत्रुता न करें, सब भाई मिलकर उत्साह से कार्य करे, सबकी क्रियाशक्ति अच्छी रहे, सब लोग मधुर्यभरा सद्व्यवहार करे।

मा भ्राता भ्रातर द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा ।
सम्यञ्च: सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया ।।

वैदिक विचारधारा मे आकाक्षा की गई है कि सभी मानव भलीप्रकार मिल जुल कर रहे। सब लोक प्रेमपूर्वक आपस मे बात करे। सबके मन एकता के विचार से ओत-प्रोत हों। सब प्रगतिशील ज्ञान के तत्व प्राप्त करें। विद्वान लोग जिस प्रकार सदा से ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त कर उपासना मे तल्लीन रहे है, उसी प्रकार तुम भी ज्ञान और उपासना मे निरतर संलग्न रहो। सबके सकल्प एक सरीखे उच्च हो, सबके निश्चय एक जैसे हो सबके भाव एक जैसे हो, सबके मन-मस्तिष्क मे एक जैसी ऊंची भावना हो। सब लोग एक दूसरे से सहयोग करते हुए भली प्रकार अपने कार्य पूर्ण करे। वेदो मे संयुक्त प्रार्थना की गई है—

संगच्छध्वं संवदध्वं सं व मनासि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे स जानाना उपासते ।।
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि व ।
समानमस्तु वो मनो यथा व सुसहासति ।।

वैदिक मानव इच्छा करता था कि हमे सब ओर से कल्याण करने वाली भावनाएं उपलब्ध हो, उनमे किसी प्रकार का छल-छिद्र या धोखा न हो, फलत हम अपने कानो से भला ही सुने अपनी आखो से कल्याणकारी भला ही देखें हमारा प्रत्येक अग स्थिर-मजबूत हो, हमारे पार्थिव शरीर सम्पूर्ण आयु पर्यन्त स्वस्थ, निरोग एव सबल रहे।

भद्रं कर्णेभि: शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्रा ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ।।

वैदिक धर्म की सच्ची कसौटी यही रही है कि रागद्वेष रहित विद्वान सज्जन लोगों द्वारा किए सत्कर्म तथा हृदय और आत्मा जिन्हे सच्चा कर्तव्य माने वही सच्चा मनन के योग्य तथा आचरण के उपयुक्त धर्म कहा जा सकता है। सच्चा मानव धर्म वही है जिससे लौकिक कल्याण परोपकार आदि के माध्यम से अलौकिक पारमार्थिक सुख या मोक्ष मिल सकता है— यतोऽभ्युदय नि श्रेयससिद्धिः स धर्म ।

वैदिक ऋषि सामान्य जीवन व्यवहार के प्रति भी उदासीन नही थे। उनकी आकांक्षा थी कि मानव समुचित ढग से अपना विकास करे। हमारे चारो ओर आनद का अनन्त कोष बिखरा पडा है, उसका अधिकतम सदुपयोग करे। हम सदा आनंदित रहे। हमारा आयुष्य कम से कम सौ वर्ष तक अवश्य रहे। हमारे मन स्वस्थ रहे, हमारी वाणियां सदा पवित्र रहे। हम सबके साथ मिल जुल कर स्नेहपूर्ण जीवन व्यतीत करें। हमारे परिवारों का जीवन 'स्वस्ति' एव 'शाति' से परिपूर्ण हो।

वेदो मे जीवन का तत्व भरा पडा है, उसमें आत्मा-परमात्मा, प्रकृति, [illegible] जीवन के सघर्ष का ही केवल उल्लेख नही है, उसमे कर्म-यज्ञ के साथ आनन्दपूर्ण जीवन बिताने का परामर्श दिया गया है तो वहा यह सब कुछ 'इदं न मम' कहकर परोपकार से परिपूर्ण शिवसंकल्पो से भरा जीवन व्यतीत करने का परामर्श भी दिया गया है।

पता—अभ्युदय, बी० 22, गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली-110049

आर्य समाज, डिफेन्स कालोनी में स्वास्थ्य केन्द्र

आर्य समाज डिफैंस कालोनी नई दिल्ली में दयानन्द स्वास्थ्य केन्द्र का उदघाटन आर्य समाज के संरक्षक व प्रसिद्ध दानवीर श्री जीवनदास जी के करकमलो द्वारा हुआ है। यह स्वास्थ्य केन्द्र प्रातः १० बजे से १२ बजे तक खुला रहेगा। इसमे योग्य डॉक्टर की व्यवस्था की गई है। यह डिस्पैंसरी ऐलोपैथिक होगी तथा इसमे सब रोगियो को नि.शुल्क दवाइया दी जायेगी। स्वास्थ्य केन्द्र का संचालन दयानन्द मेडिकल मिशन द्वारा किया जा रहा है।

—एन डी. सैनी मन्त्री आर्य समाज डिफैंस कालोनी,

अभिविनय भारथी दुर्घटनाग्रस्त

वेदोद्धारिणी के सम्पादक श्री पं० अभिविनय भारथी दुर्घटनाग्रस्त होकर शय्या पर पड़े हैं, उनकी चिकित्सा चल रही है। इस कारण इस बार वेदोद्धारिणी का नया अंक पाठको तक पहुंचने में विलम्ब के लिए खेद है। —देवेश भिक्षु

हरितृतीया पर्व

२७ अगस्त को प्रान्तीय आर्य महिला सभा की ओर से बुद्ध उद्यान मे हरितृतीया पर्व मनाया गया जिसमें १०० से अधिक बहनो ने भाग लिया। अध्यक्षता श्रीमती विद्यालंकृता ने की। बच्चों की किलकारियो ने पर्व को मेले का रूप दे दिया। सब बहने अपने साथ विविध पकवानों समेत भोजन लेकर आई थी जिसे आपस में बांटकर खाने से आनन्द में वृद्धि हो गई। सभा प्रधाना सरला मेहता, सुशीला आनन्द, तारा वैद्य और चादरानी का सहयोग उल्लेखनीय रहा।

श्रीमती करतार देवी का निधन

रामगली आर्य समाज, हरिनगर नई दिल्ली के कर्मठ सदस्य श्री रोशन लाल भाटिया व श्री बलवीर भाटिया की पूज्यमाता श्रीमती करतार देवी भाटिया का १६ जुलाई को निधन हो गया। २ जुलाई को सप्ताहिक सत्संग के बाद दिवंगत आत्मासद्गति हेतु प्रार्थना की गयी।

सुभाषित

कायेन कुरुते पापं मनसा सम्प्रधार्य तत् ।
अनृतं जिह्वया चाह त्रिविधं कर्मपातकम् ॥
यदीच्छसि वशीकर्तुं जगदेकेन कर्मणा ।
परापवादसस्येभ्यो गां चरन्तीं निवारय ॥

कर्म सम्बन्धी पाप तीन प्रकार के हैं—पहले आदमी मन में पाप की धारणा बनाता है, फिर अपनी काया से उसे करता है, उसके बाद उसे छिपाने के लिए जिह्वा से झूठ बोलता है। यदि किसी एक ही कर्म से संसार को अपने वश में करना चाहता है तो पर निन्दा की हरी-हरी घास चरने से अपनी वाणी रूपी गाय को रोक ॥

सम्पादकीयम्

देवता, मगर किस लोक के ?

वैदिक धर्म में मनुष्य के जीवन का लक्ष्य पुरुषार्थ चतुष्टय अर्थात् धर्म, अर्थ काम और मोक्ष को बताया गया था। इन चारों की साधना के लिए तीन साधन बताये गये थे—ज्ञान, कर्म और उपासना। चारों पुरुषार्थों में से किसी एक के वरण का विकल्प नहीं था। और न ही तीनों साधनों में से किसी एक के अनुसरण का अधिकार। स्वभावतः मनुष्य विशेषोन्मुख होता है, पर संतुलित जीवन के लिए आवश्यक है कि सामान्य की उपेक्षा न की जाय। ऐसा न होने पर जीवन में अतिवाद आ जाता है जो समाज में अव्यवस्था उत्पन्न कर देता है।

वैदिक जीवन का आदर्श संतुलन ही था। यह संतुलन केवल चारों पुरुषार्थों में ही नहीं, बल्कि उनकी प्राप्ति के तीनों साधनों में भी। जब याज्ञिक कर्म-काण्ड की अति हो गई तो उस अति का खंडन करने के लिए बौद्ध और जैन मत सामने आये। पर जब राजसत्ता के सहयोग से उनके विहार त्याग और तपस्या के केन्द्र न रहकर विलासिता के केन्द्र बन गये और धीरे-धीरे वज्रयान, तन्त्रयान और सहजयान के माध्यम से वे वामाचार को सदाचार बताने लगे तब उनकी इस अति के निराकरण के लिये आचार्य शंकर आये और उन्होंने पुनः ज्ञान-काण्ड की दुन्दुभि बजाई।

ज्ञान मार्ग और कर्म मार्ग कभी सामान्य-जन-सुलभ नहीं रहे। इन दोनों ने इस लोक की उपेक्षा करके परलोक पर अधिक बल दिया। ज्ञान मार्ग ने संसार को मिथ्या बताया और कर्म मार्ग ने केवल यज्ञ को स्वर्ग प्राप्ति का साधन बताया। रहा उपासना मार्ग, तो वह भी इस लोक से परे किन्हीं अपार्थिव देवों की उपासना में अपनी सार्थकता समझने लगा। इस प्रकार जब ज्ञान, कर्म और उपासना इन तीनों मार्गों ने भारतीय जनता को इस लोक से पराङ्मुख करके किसी अन्य लोक की ओर उन्मुख कर दिया तब ऐहिक जीवन को सार्थकता प्रदान करने के लिए किसी ऐसे महापुरुष की आवश्यकता थी, जो परलोक के बजाय इसी लोक को जीने के योग्य बनाने में विश्वास रखता हो। श्रीकृष्ण एक ऐसे ही महापुरुष थे। अगर उनमें भी दिव्यता का आधान करना हो तो उनके लिए सबसे अच्छा विशेषण यह होगा कि उन्हें 'लोक देवता' की उपाधि से विभूषित किया जाय।

इस विशेषण को स्वीकार करने के पश्चात् श्रीकृष्ण के सारे जीवन की घटनाओं की बहुत सुन्दर संगति लग जाती है। कृष्ण शास्त्रों के द्वारा या किसी अन्य राज शक्ति के द्वारा आरोपित देवता नहीं, बल्कि जनता-जनार्दन द्वारा स्वीकृत देवता थे। देवता को भी हम गलत अर्थ में न लें। बल्कि यह समझें कि श्रीकृष्ण का लोकदेवतापन उनके लोकनायकत्व में चरितार्थ होता है। वे सही मायनों में अभावग्रस्त, पददलित, समाज के धुरंधरों की दृष्टि में हीन समझे जाने वाले, और सत्ता सम्पन्न लोगों के अन्याय के नीचे पिसते हुए जन साधारण के आराध्य देव हैं। जिसने किसानों, ग्वालों तथा अपने श्रम के द्वारा रोजी-रोटी कमाने वालों को उनके वास्तविक स्वरूप से परिचित करवाया और उनको समझाया कि तुम्हीं राष्ट्र की सम्पदा और सुरक्षा का मेरु दण्ड हो, वे यदि निरन्तर अपने सुख-दुख के साथी और सखा श्रीकृष्ण को अपना देवता न मानें तो क्या मानें। श्रीकृष्ण की मुरली और उनका मुरलीधर रूप श्रम के साथ आनंद को जोड़ने का प्रतीक है। अगर श्रम करते हुए किसी को आनंद की अनुभूति नहीं होती तो वह श्रम उनके लिए धीरे-धीरे कष्टदायक बन जाता है। श्रम के प्रत्येक कार्य के साथ अगर वंशी की धुन के आनंद स्वर मुखरित हो जायें तो वही कष्टहारी बन जाता है। "जोर लगाओ हे इस्सा"—इस समवेत आनंद पूर्ण स्वर के बिना क्या कभी जन-समुदाय कोई जोर लगा सकता है ?

आज हमारे विकास कार्यों की विफलता का रहस्य क्या है ? सबसे पहले तो यही कि वे विकास कार्य ऊपर से थोपे जाते हैं, आम जनता की उनमें कोई भागीदारी नहीं होती। और विकास कार्यों पर जितना धन निर्धारित किया जाता है, वह नौकरशाही के लावलश्कर के लवाजमे में और अनुत्पादक कामों में ही इतना अधिक व्यय हो जाता है कि वास्तविक विकास कार्यों के लिए धन बचता ही नहीं। हमारे श्रमिक अपने पर्वों, त्यौहारों और उत्सवों आदि के द्वारा अपने जीवन में भले ही कभी आनंद के कुछ क्षण बटोर लेते हों, पर उनके दैनिक जीवन में श्रम के साथ वंशी की ध्वनि कहां है ? इस आनंद के लिए हम आकाशवाणी या दूरदर्शन को माध्यम बनाना चाहते हैं, परंतु इन माध्यमों द्वारा दिया गया तामसिक आनंद वंशी-रव के सात्विक आनंद की तुलना नहीं कर सकता। जिस श्रम को करते आनंद की अनुभूति नहीं होती, वह भार बन जाता है और मुरलीधर की मुरली के संयोग से ग्वाल-बालों का वही श्रम जीवन का हार बन जाता है। आज हमारा श्रमिक श्रम के भार को ढोते ढोते राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य को पहचानने के बजाय अपने अधिकार की पुकार पर जोर देता है। बिना कर्तव्य के अधिकार नैतिकता विहीन समाज के निर्माण में सबसे अधिक सहायक होता है।

जब व्रजभूमि में बाढ़ आई तो कृष्ण ने सरकार के पास बाढ़ निवारण के लिए प्रार्थना-पत्र नहीं भेजा और न ही अखबारों में अपील प्रकाशित करवाई। बल्कि समस्त आबाल वृद्ध नर-नारी को बाढ़-निवारण के अभियान में संयोजित किया और सबको ले जाकर गोवर्धन पर्वत पर शरण दिलायी। तभी वे गोवर्धन गिरधारी कहलाये। इस गोवर्धन पर्वत को संभालने में अकेले कृष्ण की अंगुली ही नहीं, बल्कि प्रत्येक व्रजवासी जन-जन की अंगुली उनके साथ लगी हुई थी। तभी 84 कोस की परिक्रमा वाला यह विशाल पर्वत इस प्रकार अनायास धारण किया जा सका और व्रजवासियों को जीवनाधार बन सका।

राजस्थान के मरु स्थल के साथ लगी व्रज भूमि में जब रेत की आंधियां आयीं अर्थात् तृणासुर ने हमला किया, तब भी श्रीकृष्ण ने जन-बल का ही सहारा लिया और सारे व्रज में वृक्षारोपण का इतना बड़ा अभियान चलाया कि सारी व्रजभूमि अपनी हरियाली के लिए और हरे-भरे चारागाहों के लिए प्रसिद्ध हो गई। बाढ़ के प्रकोप से और आंधी के प्रकोप से बचाने में जनता को समर्थ बनाकर श्रीकृष्ण ने आकाश के देवता इन्द्र और मरुत को चुनौती दी कि इस लोक के जय जवान और जय किसान की भावना से अनुप्राणित जन-जन जब एकजुट हो जायें तो आसमान के देवता भी उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। परलोक के देवताओं से इस लोक के देवता कहीं अधिक समर्थ हैं।

श्रीकृष्ण के इस लोकनायक रूप की एक और बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने अपना सारा जीवन समाज में से आतंक और आतंकवादियों को मिटाने में लगाया। उनका बचपन और किशोरावस्था जहां पूतना राक्षसी, वृषासुर, अश्वासुर, धेनुकासुर और वृकासुर जैसे ग्रामवासियों को आतंकित करने वाले आसुरीवृत्ति के प्राणियों को समाप्त करने में बीता वहां उनका यौवन कंस, जरासंध और शिशुपाल जैसे प्रजा-द्रोही, स्वार्थी और आतंक के बल पर शासन करने वाले राजाओं को समाप्त करने में बीता। यही प्रक्रिया उनकी प्रौढ़ावस्था में भी चलती है। दुर्योधन, दुःशासन और जयद्रथ जैसे आतंक और अन्याय पर पलने वाले राजाओं को उन्होंने महाभारत के युद्ध में समाप्त किया। कहने को भले ही महाभारत का युद्ध पाण्डवों ने जीता हो, पर उस महायुद्ध की महान् विजय का सारा श्रेय यदि किसी को दिया जा सकता है तो केवल लोकनायक श्रीकृष्ण को।

आज भी आतंकवाद ने सहस्र फणों वाले विषधर के समान सारे भारत की जनता को ग्रस रखा है। उस आतंक के कारण शासन तंत्र ही नहीं, जवान और किसान भी कम आतंकित नहीं हैं। पुनः 'जय जवान और जय किसान' का नारा लगाने की आवश्यकता है और आतंकवाद की समाप्ति के लिए समस्त जनता को एकजुट करने की आवश्यकता है। और श्रम के साथ आनन्द को जोड़ने की आवश्यकता है। श्रीकृष्ण के रूप में लोकदेवता के आराधना की यही निष्पत्ति है और इसी पर भारत का भविष्य निर्भर है।

उस लोकदेवता ने परलोक के देवताओं के स्थान पर जिस लोक को देवता के रूप में प्रतिष्ठित किया, उसी लोक की आराधना में यह जीवन व्यतीत हो—आज अपने जीवन के 70 वें वर्ष में प्रवेश करने पर मन की एकमात्र यही कामना है।

राष्ट्रभाषा का अपमान कौन करते हैं ?

राष्ट्रभाषा की उपेक्षा भारत के किसी एक प्रदेश या क्षेत्रविशेष में नहीं, वरन् सम्पूर्ण देश में, देश के शासन व जनता दोनों द्वारा हो रही है। आइये इस उपेक्षा पर थोड़ा गम्भीरतापूर्वक विचार करें—

(अ) शासन द्वारा उपेक्षा

देश का शासन राष्ट्र-भाषा की उपेक्षा दो प्रकार से कर रहा है—

(१) १४ सितम्बर १९४९ को भारतीय संविधान-निर्माताओं ने १२ के विरुद्ध ३१२ मतों से देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी को भारतवर्ष की राजभाषा स्वीकार किया था। साथ ही यह आश्वासन भी दिया था कि जिस प्रकार हम अंग्रेजी शासन से स्वाधीन हो गए, उसी प्रकार अंग्रेजी भाषा से भी स्वाधीन हो जाएंगे। पर हम भारतीयों का यह दुर्भाग्य है कि हम आज तक भी अंग्रेजी की दासता से मुक्त नहीं हो पाए तथा देश के शासकों ने संविधान के आश्वासन को आज तक पूरा नहीं किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के सैंतीस वर्षों के बाद भी हम अपनी एक सम्पर्क भाषा तक विकसित नहीं कर ।

आज भी देश के शासन का सम्पूर्ण कार्य अंग्रेजी में होता है। अधिकांश राजकीय सेवा-परीक्षाएं तथा उनके लिए साक्षात्कार प्रायः अंग्रेजी में ही होते हैं, जिसका दुष्परिणाम यह होता है कि धनवानों के अथवा अंग्रेजी-माध्यम से शिक्षा-प्राप्त बच्चे ही इन सेवाओं में आते हैं, निर्धन अथवा हिन्दी-माध्यम से शिक्षा पानेवाले बच्चे अधिकाशतः बेरोजगार भटकते फिरते हैं। जब हमारे देश की राष्ट्र-भाषा हिन्दी है, तो परीक्षाएं अंग्रेजी मे क्यों ली जाती है ?

(२) हिन्दी-भाषी राज्यों की सरकारें उर्दू को द्वितीय राजभाषा घोषित कर देश से हिन्दी को मिटाने का षड्यन्त्र रच रही हैं। बिहार के १५ जिलों मे तो उर्दू को द्वितीय राजभाषा बना ही दिया गया, उत्तरप्रदेश में तैयारी है। उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने का अर्थ यह कदापि नही है कि राज्य-सरकारें उर्दू से प्रेम करती हैं। वे तो इस कार्य से केवल मुसलमानों के मत प्राप्त करना चाहती हैं।

उर्दू का द्वितीय राजभाषा बनाने के जो दुष्परिणाम होगे, वे इस प्रकार हैं—

(१) जिस राज्य में भी उर्दू को द्वितीय राजभाषा घोषित किया जाएगा वहा के शासन उर्दू को विश्वविद्यालय बनाना पड़ेगा। उत्तरप्रदेश के अकेले मुरादाबाद नगर में उसके दोनों ओर दो मुस्लिम विश्वविद्यालय बनाये जा रहे हैं, जबकि अभी तो उत्तर-प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाया भी नहीं गया।

(२) सभी विद्यालयो मे उर्दू के अध्यापक रखने होंगे। उत्तर-प्रदेश के अनेक प्राथमिक विद्यालयों मे उर्दू के हजारो अध्यापक नियुक्त किये गए हैं, जबकि अनेक विद्यालयों में उर्दू पढ़नेवाला एक भी विद्यार्थी नही है। सरकार इन अध्यापकों को खाली बैठाकर व्यर्थ में ही वेतन दे रही है।

(३) सरकार को प्रत्येक विषय का माध्यम उर्दू बनाना पड़ेगा तथा सभी पाठ्य पुस्तकें उर्दू में भी प्रकाशित करनी होंगी।

(४) प्रत्येक मेंविभाग उर्दू के लिपिक व निर्देशक रखने होंगे।

(५) सभी प्रकार की शासकीय पाठ्य सामग्री (पत्र-प्रपत्र आदि) उर्दू में प्रकाशित होगी।

(६) रेलगाड़ी व मोटरों के टिकट तक उर्दू में प्रकाशित करने पड़ेंगे।

(७) प्रत्येक राजकीय कर्मचारी को न चाहने पर भी उर्दू सीखनी पड़ेगी।

(८) शासन को प्रत्येक सूचना उर्दू में भी निकालनी पड़ेगी।

(९) राज्य का व्यय दुगुना हो जाएगा।

(१०) सभी अध्यापकों को अनिवार्य रूप से उर्दू सीखनी होगी, अन्यथा वे उर्दू-माध्यम में लिखी उत्तर पुस्तिकाओं की जाँच नही कर सकेंगे।

(११) सभी परीक्षाओं के प्रश्न-पत्र उर्दू में प्रकाशित करने पड़ेंगे।

(१२) सभी विद्यालयों में कक्षा १ से ही उर्दू पढना व फारसी-लिपि सीखना अनिवार्य कर दिया जाएगा।

(१३) विधान-सभा तथा विधान-परिषद् में प्रश्न भी उर्दू मे किए जाएंगे तथा मन्त्रियों को उनके उत्तर उर्दू मे ही देने पड़ेंगे। साथ ही इन सभाओं की कार्यवाही उर्दू में लिखनी व प्रकाशित करनी पड़ेगी।

(१४) समस्त शासकीय विज्ञप्तियाँ, बजट, रिपोर्ट, आदेश, राज्यपाल का भाषण आदि सभी का प्रकाशन उर्दू भाषा तथा फारसी लिपि में भी करना होगा।

(१५) देश के ९६% हिन्दीभाषियों के बालकों को विवश होकर उर्दू पढ़नी तथा फारसी लिपि सीखनी होगी। क्या हिन्दी-भाषी माता-पिता इसके लिए तैयार होंगे ?

(१६) राज्य-भर में हिन्दी से उर्दू में तथा उर्दू से हिन्दी में अनुवाद करने वाले बहुत बड़ी संख्या में रखने होंगे।

(१७) सरकार वर्तमान व्यय को तो वहन कर नही पा रही फिर उर्दू के कारण होनेवाले करोड़ों रुपये के अतिरिक्त व्यय को कैसे वहन करेगी ?

(१८) फारसी लिपि के अक्षर ढाले नहीं जा सकते, उसका टाईप राईटर भी नहीं बनाया जा सकता। अतः उर्दू में कुछ भी टंकित (टाइप) नही कराया जा सकता।

(१९) उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनवाने के पश्चात् मुसलमानों द्वारा अपनी जनसंख्या के आधार पर मुस्लिम जिलों और इस के बाद

डा० वेद प्रकाश
प्रवक्ता हिन्दी विभाग, मेरठ—

उर्दू प्रान्त की मांग की जाएगी। इसके लिए आन्दोलन और दंगे होंगे, जिनके फलस्वरूप मुसलमानों को प्रसन्न कर मत खरीदनेवाली सरकार को पृथक् उर्दू-राज्य बनाना पड़ेगा।

(२०) हिन्दुस्थान के विभाजन का कारण उर्दू ही थी। इसी प्रकार पाकिस्तान के विभाजन का कारण भी उर्दू ही थी। विभिन्न प्रदेशों में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाकर देश के पुनर्विभाजन को कैसे रोका जा सकेगा ?

इस प्रकार राज्य-सरकारों द्वारा उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने का कार्य निन्दनीय तथा देश के लिए घातक है।

उर्दू हिन्दी के विरोध को समाप्त करने का एक बड़ा ही सरल उपाय है। उर्दू हिन्दी की ही एक शैली है। अतः जिस प्रकार हिंदी की अन्य बोलियां देवनागरी लिपि में लिखी जाती हैं, उसी प्रकार उर्दू को भी देवनागरी लिपि में लिखा जाना चाहिए। इससे हिन्दी व उर्दू का झगड़ा ही समाप्त हो जाएगा, क्योंकि मूल झगड़ा लिपि का है। उर्दू की फारसी लिपि विदेशी है तथा दासता का चिह्न है।

(आ) जनता द्वारा उपेक्षा

यह देखना है कि हम अपने दैनिक जीवन में जान-बूझकर किस प्रकार हिंदी का अपमान करते हैं—

(१) आप प्रत्येक नगर व कस्बे में अंग्रेजी माध्यम के अनेक विद्यालय खुल चुके हैं। अनेक केन्द्रीय विद्यालयों तथा ईसाई विद्यालयों में तो पूर्णतः अंग्रेजी में शिक्षा दी ही जाती है, पर अब तो नगरों व कस्बों की गली-गली में भी अंग्रेजी विद्यालय खुल गए हैं। आज सभी माता-पिता अपने बालकों को अंग्रेजी-माध्यम के विद्यालयों में पढ़वाने में गौरव मानते हैं। यह उनकी बड़ी भारी भूल है। हम बच्चों से घर में तो हिंदी में वार्तालाप करते हैं, पर इन विद्यालयों में हमारे बच्चों से पूर्णतः अंग्रेजी में ही वार्तालाप किया जाता है। इस प्रकार बच्चा दो परस्पर विरोधी वातावरणों मे फंस जाता है।

इन विद्यालयों में सभी विषय अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाये जाते हैं। छोटे-छोटे बच्चे जो हिन्दी भी अच्छी प्रकार नहीं समझते, वे विशुद्ध अंग्रेजी को (अंग्रेजी में) कैसे समझ सकते हैं ? बच्चे अंग्रेजी व अन्य स... विषयों को अंग्रेजी में केवल रट लेते हैं समझ नहीं पाते। इन विद्यालयों में पढ़नेवाले बच्चे हिन्दी में २० तक गिनती भी नहीं गिन सकते, पहाड़ों का तो प्रश्न ही नहीं उठता। इन विद्यालयों में बच्चों को हिंदी का नाममात्र का ही ज्ञान कराया जाता है। इस प्रकार बच्चे न तो हिंदी सीख पाते हैं और न ही अंग्रेजी। वे कहीं के भी नहीं रहते।

इन विद्यालयों में एक कार्य तो वास्तव में सिखाया जाता है, और वह है—अंग्रेजी ढंग की वेशभूषा में खूब सज-संवरकर रहना। विद्यालयी वेशभूषा का विशेष ध्यान रखा जाता है। इन विद्यालयों में बच्चों को बचपन से ही फांसी का फंदा (टाई) बाँधना अनिवार्य है। इसके बिना बच्चा विद्यालय में घुस नहीं सकता। यह फांसी का फंदा विदेशी तथा ईसाईपन का चिह्न है। हम तो आर्य हैं, हिंदू हैं, भारतीय हैं। हमारे गले की शोभा तो यज्ञोपवीत है। इन अंग्रेजी विद्यालयों में प्रार्थना भी ईसा की करायी जाती है, जिससे भारतीय उपासना-पद्धति को ये बच्चे पूर्णतः विस्मृत कर चुके हैं, यहां तक कि उन्हें सकल जगत् के ईश्वर का नाम 'ओ३म्' तक याद नहीं रहा।

इन अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में (ईसाइयों के विद्यालयों में तो विशेष रूप से) लड़कियों की वेशभूषा स्कर्ट (घुटनों से ऊपर तक की अंग्रेजी घघरिया) है। जब इस घघरिया को पहनकर किशोरियाँ साइकिल चलाती हुई या रिक्शा में बैठकर भरे बाजारों में से जाती हैं, तो वे जंघाओं तक नंगी दिखाई देती हैं। यदि कोई छात्रा, इस अंग्रेजी घघरिया को न पहनना चाहे तो वह विद्यालय में पढ़ नहीं सकती। यह भौंडा वेश तुरन्त बन्द होना चाहिए। इसके लिए

(शेष पृष्ठ ९ पर)

हिन्दी साहित्य के सन्दर्भ कोश : श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन'

—रामकृष्ण भारती—

श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन' को पिछले दिनों हिंदी साहित्य सम्मेलन के गाजियाबाद अधिवेशन में 'साहित्य वाचस्पति' की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। इससे पूर्व राष्ट्रपति जी ने उन्हे 'पद्मश्री' की उपाधि प्रदान की थी। वे हिंदी के पुराने सेवक, साहित्यकार, कवि आलोचक तथा स्वतन्त्रता सेनानी हैं। गत कुछ वर्षों से वे 'दिवंगत हिंदी सेवी' ग्रन्थ माला के सम्पादन में जुटे हैं। इस ग्रन्थ के दो भाग प्रकाशित हो चुके हैं तथा अवशिष्ट भागों का सम्पादन हो रहा है। कई अन्य संस्थाओं से भी उन्हें कई उपाधियों से समय-समय पर सम्मानित किया गया है। साहित्य अकादमी के प्रकाशन अधिकारी के रूप में उन्होने 24 वर्षों तक जो सेवा कार्य किया, उसे नहीं भुलाया जा सकता।

लाहौर में सक्रिय

सन् 1940 अथवा उससे भी कुछ प[ूर्व] से ही राष्ट्रभाषा प्रचार संघ लाहौर की मासिक/पाक्षिक साहित्य-गोष्ठियों का लाहौर में अच्छा चलन था। उन दिनों श्री सुमन जी दैनिक 'हिंदी मिलाप' के सम्पादकीय विभाग में कार्य करते थे। हिंदी मिलाप के सम्पादक तब श्री आत्म स्वरूप थे। सम्भवत: उन्हीं दिनों श्री लेखराम ने सम्पादन का उत्तरदायित्व सम्भाला था। तब तक लाहौर से दैनिक उर्दू 'प्रताप' का प्रकाशन भी हो चुका था और श्री छैल बिहारी दीक्षित 'कंटक' उसके सम्पादक होकर लाहौर आए थे। उक्त समाचार पत्र शीघ्र ही बन्द हो गया और बाद में श्रीमती सम्मोदेवी ने दैनिक हिंदी 'शक्ति' का लाहौर से प्रकाशन आरम्भ किया तथा श्री कृष्ण कात मालवीय उसके मुख्य सम्पादक नियुक्त किए गए। श्री मोहन सिंह सेंगर उक्त पत्र के समाचार सम्पादक थे। श्री उपेन्द्रनाथ 'अश्क' तथा मुझ भी उक्त पत्र के सम्पादकीय विभाग में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ था। श्री सुमन जी उससे पहले गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के स्नातक होकर निकले थे और एक दो पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन कार्य कर चुके थे। लाहौर के फतेहचन्द कालेज फार विमेन के हिन्दी विभाग मे भी उन्होंने कार्य किया। उन दिनों लाहौर में पंजाब विश्व विद्यालय की हिंदी परीक्षाओं का अत्यधिक प्रचार था। श्रीमती रजनी पनिक्कर भी उन्हीं दिनों श्री सुमन की शिष्या रहीं।

लाहौर उन दिनों राजनीतिक गतिविधियों का भी केन्द्र था। नवयुवकों में विशेषरूप से इस कार्य में रुचि रहती थी। श्री बलराज, श्री रणवीर, श्री यश श्री देवदत्त 'अटल', श्री शिवकुमार भारता आदि नवयुवक अमर शहीद भगत सिंह की परम्परा को जारी रखे हुए थे। लाहौर में विभिन्न प्रांतों के बहुत से नवयुवक तथा साहित्यकार वहां रहकर अपनी साहित्य-साधना में लगे हुए थे। सर्वश्री [illegible] हरिकृष्ण प्रेमी, [illegible] शर्मा विकल, रामेश्वर करुण आदि महानुभाव अपने-अपने कार्य क्षेत्र में कार्यरत थे।

द्वितीय महायुद्ध के प्रारम्भ होते ही देश के राजनीतिक मंच पर गतिविधियां तेज हुई और कुछ अन्य कार्यकर्त्ताओं के साथ श्री सुमन जी भी अंग्रेज सरकार के कोप भाजन बने। उन्हें कुछ काल तक बन्दी होकर जेल में रहना पड़ा।

जेल से मुक्त होने पर वे अपने गाव बाबूगढ़ में नजरबन्द कर दिए गए। उक्त कस्बा जिला गाजियाबाद की हापुड़ तहसील मे स्थित है। कालान्तर में देश स्वतंत्र हुआ और इसका विभाजन भी हुआ। सुमनजी, स्वतन्त्र भारत की राजधानी दिल्ली में आ गए और यहीं के स्थायी निवासी हो गए। प्रारम्भ में वे सदर क्षेत्र में हाथी खाना में रहा करते थे और आत्माराम एण्ड सन्स के यहां काम करते थे। कुछ दिन उन्होंने राजकमल प्रकाशन में 'आलोचना' पत्रिका का सम्पादन भी किया। कुछ वर्ष उन्होंने कश्मीरी गेट क्षेत्र में एल्यियन प्रेस मे भी कार्य किया। वे निरन्तर अपनी साधना मे लगे रहे। दिन में वे अपनी आजीविका के लिए कार्य करते और रात्रि में देर तक जागकर वे साहित्य की साधना करते। उनका यह क्रम कई वर्षों तक निरन्तर चलता रहा। वे वर्षों तक निरन्तर बारह पन्द्रह घंटों तक कार्य करते रहे हैं। उनकी प्रारंभिक रचनाओं मे 'बन्दी के गान', 'कांग्रेस का संक्षिप्त इतिहास' आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

भारतीय साहित्य परिचय

उन्होंने उन दिनों एक महत्वपूर्ण कार्य किया—देश की अनेक प्रादेशिक भाषाओं तथा उनके साहित्य पर विभिन्न अधिकारी लेखकों के द्वारा 'भारतीय-साहित्य परिचय' नामक पुस्तक माला का लेखन, सम्पादन तथा प्रकाशन करके उर्दू, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं के साहित्यों के संक्षिप्त इतिहास हिंदी प्रकाशित किये और राष्ट्रभाषा हिंदी का क्षेत्र व्यापक किया। [illegible] पुस्तक [illegible]।

सुमन जी हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि, साहित्यकार, इतिहासकार, आलोचक, निबन्धकार तथा सम्पादक हैं। उनकी कई पुस्तकें कई विश्वविद्यालयों के पाठ्य-क्रमों में स्वीकृत हैं। 'शनिवार समाज' के वे वर्षों संयोजक तथा अधिकारी रहे। मेरठ विश्वविद्यालय तथा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में उन्हें वर्षों अधिकारी तथा सदस्य के रूप मे कार्य करने का सुअवसर मिला। आर्य समाज की शिक्षण-संस्थाओं तथा हिंदी की अनेक संस्थाओं तथा पत्र-पत्रिकाओं से उनका घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। साहित्य अकादमी से 24 वर्षों तक सम्बन्ध रहने पर उन्हें देश में दूर-दूर तक यात्रा करने के अवसर मिले और उन अवसरो का उपयोग उन्होंने हिंदी साहित्य की श्रीवृद्धि करने में किया। वे मारीशस भी गए और वहां अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन के 'कवि सम्मेलन' की अध्यक्षता की।

सन् 1966 मे उनकी पचासवी वर्ष गाँठ पर उनके मित्रों तथा परिचित बंधुओं ने मिलकर सप्रू हाउस, नई दिल्ली मे एक विराट् अभिनन्दन का आयोजन किया था। वह अभूतपूर्व था। तत्कालीन उपराष्ट्रपति डॉ० जाकिर हुसेन के करकमलों द्वारा उन्हें 'एक व्यक्ति: एक संस्था' नामक विशाल अभिनन्दन ग्रंथ भेंट किया गया था। सुमन जी व्यक्ति के साथ साथ एक संस्था के साकार रूप हैं।

आर्य समाज के कवियों का एक कविता-संकलन संपादित कर उसे 'वन्दना के स्वर' नाम से प्रकाशित करके सन् 1975 ई० में आर्यसमाज स्थापना शती के अवसर पर आर्य जनता को भेंट किया।

सुमन जी के जहां कई ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं वहां उन्होंने देश के अन्यान्य प्रदेशों के कई साहित्यिक सम्मेलनों तथा आयोजनों का सभापतित्व भी किया। कवि सम्मेलनों का संयोजन भी उन्होंने सफलता पूर्वक किया। उनका प्रायः सभी साहित्यकारों के साथ सौजन्यपूर्ण व्यवहार रहा है और उनका घर हिंदी का एक तीर्थ स्थान बन गया है। कई वर्ष पूर्व वे हाथीखाना के किराए के मकान से दिलशाद कालोनी मे निर्मित अपने मकान में रहने लगे हैं। उन दिनों राजधानी से उतनी दूर रहना एक समस्या थी। यमुना की बाढ़ का प्रकोप उनके मकान पर भी पड़ा। कई दिनों तक उन्हें अपने मकान की छत पर रहना पड़ा। उनका पुस्तकालय महत्वपूर्ण है। शोध छात्र उनके यहां निरन्तर आते रहते हैं।

वे सदा स्वदेशी वस्तुओ के पक्षपाती रहे और हमेशा खद्दर का ही व्यवहार करते हैं। उनका पारिवारिक जीवन सदैव सादा, सात्विक तथा आनन्दमय रहा है।

राजनीतिक जीवन

स्वतंत्रता सेनानी के रूप मे उनका राजनीतिक जीवन मे महत्वपूर्ण स्थान रहा है। अधिकांश राजनीतिक नेताओं आदि के साथ उनके घनिष्ट सम्बन्ध रहे हैं। पूर्व राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन और वर्तमान राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह उनके प्रशंसक हैं। सन् 1984 में उन्हें भारत सरकार की ओर से 'पदमश्री' उपाधि से सम्मानित किया गया था। दिल्ली प्रशासन तथा उत्तर प्रदेश सरकार उनको तथा उनकी कृतियो को कई बार सम्मानित तथा पुरस्कृत कर चुकी है। भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय की ओर से भी उनको फैलोशिप से सम्मानित किया गया था।

श्री सुमन जी मित्रो के मित्र रहे हैं, उनमें अभिमान तथा दर्प लेशमात्र भी नही है। वे आज के हिन्दी साहित्य के प्रामाणिक जीवित सन्दर्भ कोश हैं। उनके घर मे आपको हिंदी के धुरन्धर विद्वानों के अन्तरंग संस्मरण भी प्राप्त हो सकते हैं। वे अपने सभी साथियो तथा सहयोगियों का सदैव स्मरण करते रहते हैं। उनके परिचितो तथा मित्रो की सख्या आज हजारो नही लाखों मे है। वे हमेशा आपको हंसते-मुस्कराते ही मिलेंगे। आत्मीयता तथा सहृदयता उनके स्वभाव में है। वे खरी बात कहने के अभ्यस्त हैं। डॉ० कमलेश जैसे मित्रों को खोकर उन्हें कभी-कभी जीवन मे खिन्नता का सामना भी करना पडा है। श्री विष्णुदत्त शर्मा, 'विकल' तथा शंभुनाथ 'शेष' के आकस्मिक परलोकवास के अवसर पर उन्होंने उनके परिवारों की सहायता के लिए मित्रों को प्रेरणा दी। वे प्रथम सच्चे मानव हैं, बाद में कुछ और।

यह अत्यन्त हर्ष और सौभाग्य का विषय है कि आगामी 16 सितम्बर को वे 70 वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। भगवान् उन्हें शतायु करे, यही हमारी मंगलकामना है।

पता—जे-78, बालीनगर, नई दिल्ली-15

श्री विश्वनाथ आर्य दिवंगत

आर्य समाज, बक्सर (बिहार) के वरिष्ठ पदाधिकारी और कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री विश्वनाथ आर्य का १० जुलाई को निधन हो गया। वे ८० वर्ष के थे। अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं।

ऋषि की माता का नाम क्या था ?

रुक्मिणी बाई
यशोदा बाई
अमृता बाई

ले०-प्रो० दयाल भाई, संशोधक—डा० भवानी लालभारतीय

स्वामी दयानन्द के जीवन चरित्र में उनकी माता के नाम को लेकर अनेक विवाद हैं। स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी ने माता का नाम यशोदा बताया। आचार्य मेधाव्रत ने स्वरचित दयानन्द दिग्विजय में रुक्मिणी नाम लिखा है। ये दानो नाम कल्पित ही हैं क्योंकि इनकी पुष्टि में ये लेखक न तो कोई प्रमाण प्रस्तुत कर सके हैं और न किसी विश्वसनीय व्यक्ति की साक्षी ही। श्रीकृष्ण शर्मा ने अपनी पुस्तक मे ऋषि की माता का नाम अमृत बाई होने के सम्बन्ध मे निम्न विवरण दिया है 'करसनजी की पत्नी कच्छभुज के एक पुजारी की कन्या थी जिसके पिता का नाम सम्भवत भीमजी था। भीमजी की पुत्री अमृतबाई थी, यही महर्षि जी की जननी थीं।" वे आगे लिखते हैं "मोधी बाई के रिश्तेदार बाला शकर भीमजीभाईदवे देवेन्द्र बाबू से भी मिले थे। उहोने श्री विजय शकर को बताया था कि मोधी बाई के श्वसुर धनाढ्य थे और उनकी सास का नाम

ऋषि की प्रारम्भिक जीवनी

अमृतबाई था। किन्तु उन्होने स्वय इसका उल्लेख नहीं किया। शर्माजी के उपर्युक्त कथन की समालोचना यदि हम कर तो प्रथम बात तो यह निकलती है कि देवेन्द्र बाबू को बालाशकर ने कहा था 'हमने मोधी बाई को अनेक बार कहते सुना कि उसके श्वसुर धनाढ्य थे। परन्तु बालाशकर के इस कथन से स्वामी जी की माता के सम्बन्ध मे स्वय कुछ जानकरी नही मिलती। देवेन्द्रबाबू ने तो स्वय लिखा है कि मूलजी की जननी के विषय में हम कुछ नही जानते। देवेन्द्र बाबू स्वय ऋषि-जीवनी के शोध के लिए पन्द्रह वष निरन्तर घूमे, चार बार सौराष्ट्र आए तथा सूक्ष्मातिसूक्ष्म बातो की जानकारी प्राप्त की, फिर भी ऋषि की माता के सम्बन्ध मे उन्हे कुछ भी जानकारी नही मिली। इसीलिए उहोने अपने अभिप्राय को उपर्युक्त शब्दों मे व्यक्त किया।

दूसरी बात है कि बालाशकर ने विजयशकर को ऋषि की माता का नाम बताया। परन्तु इस सम्बन्ध में स्वय श्रीकृष्ण शर्मा ही लिख चुके हैं कि विजयशकर ने स्वय इसका उल्लेख नही किया है। विजयशकर ने दयानन्द जन्मस्थानादि निणय' का सम्पादन किया है। इस मे उन्होंने मोधी बाई के श्वसुर के धनाढ्य होने का उल्लख तो किया है परन्तु इसके अतिरिक्त और कुछ नही लिखा। उन्होने अन्यत्र भी कहीं इस नाम का सकेत नही दिया और न किसी को बताया। तब यह कैसे माना जाए कि उन्होने केवल श्रीकृष्ण शर्मा को ही बताया और शर्मा जी ने भी पडित विजयशकर के देहान्त के बाद 1964 मे प्रकाशित अपनी उपर्युक्त पुस्तक मे स्वामीजी की माता का यह नाम लिखा। इन पक्तियो का लेखक स्वय 1952 मे बम्बई मे रहता था। उस समय अनेक बार उसकी विजय शकर से मुलाकात हुई परन्तु उन्होने यह बात कभी नही बताई। विजयशकर जैसे ऋषि जीवनी के अन्वेषक तथा प्रबुद्ध लेखक को यदि ऋषि की माता का वास्तविक नाम ज्ञात होता तो वे उसे प्रकट किए बिना नही रहते और ऐसा करने से यशाद, रुक्मिणी आदि नामों का पूर्ण प्रतिवाद भी हो जाता। इमसे यह सिद्ध हता है कि विजयशकर की जानकारी मे स्वामी जी की माता का यह नाम नही था।

श्रीकृष्ण शर्मा ने इस विषय मे दूसरा विवरण प्रस्तुत किया है "मैंने स्वय महर्षि के 102 वर्षीय बालसखा श्री इब्राहीम से टकारा शताब्दी के अवसर पर पूछा था तब उन्होने कहा था कि वे स्वय स्वामी जी की माता को अमूबा (अमृत बाई) कह कर बुलाते थे। इनकी पुष्टि मैंने पोपट लाल रावल से की और 1926 के आस पास आर्यमित्र मे एक लेख लिखा जिसमे स्वामी जी की माता का यही नाम बताया गया था।" इस कथन की समीक्षा करें तो ज्ञात होता है कि टकारा शताब्दी के अवसर पर दिए गए वक्तव्य में स्वामी जी के शरीर का वर्णन, उनके पिता का परिचय, शिवालय आदि का प्रसग तो छपा है परन्तु उसमे माता आदि का नाम कहीं नही है। दूसरी बात यह है कि उस अवसर पर स्वामी श्रद्धानन्द भी आए थे जो ऋषि के जीवन की जानकारी के लिए अत्यधिक प्रयत्नशील थे। इसी प्रसग में वे जीवापुर भी गए थे। यह हम पहले देख चुके हैं। तब यह प्रश्न उठता है कि उन्होंने इब्राहीम से माता का नाम क्यों नहीं पूछा। स्वामी स्वतंत्रतानन्द भी टकारा गए थे। उन्होने भी इस सम्बन्ध मे कोई जानकारी क्यो नहीं प्राप्त की ? यदि श्रीकृष्ण शर्मा को स्वामी जी की माता के इस नाम का पता इब्राहीम से चल गया तो उन्होने यह जानकारी स्वामी श्रद्धानद को क्यो नहीं दी ? यदि उसी समय यह स्पष्टीकरण हो जाता तो स्वामी स्वतत्रानद और आचार्य मेधाव्रत को नए नाम कल्पित नही करने पडते।

इस शताब्दी महोत्सव का एक उद्देश्य यह भी था कि ऋषि जीवनी की सदेहास्पद बातों का निवारण किया जाए और वस्तुस्थिति को सामने रखा जाए। जिस नाम की जानकारी देवेन्द्र बाबू को वर्षों की खाज के पश्चात् भी नही हो सकी यदि उस नाम पता ऐसे अवसर पर लग गया तो भला शताब्दी सभा के मत्री विजयशकर उसे प्रकट किए बिना कैसे रह सकते थे ?

एक और आश्चर्य की बात है कि जब श्रीकृष्ण शर्मा को इस नाम की जानकारी 1926 मे हो गई तो उन्होने उसे प्रकट करने में पूरे दस साल क्यों लगा दिए ? जैसा कि उन्हीं के कथन से ज्ञात होता है 1926 के आस-पास 'आर्य-मित्र' म उन्होने इसे प्रकट किया। इतने लम्बे समय तक उन्होने इस मूल्यवान् रहस्य को क्यो छिपाए रखा ?

उपर्युक्त विवेचन से सिद्ध है कि श्रीकृष्ण शर्मा ने इब्राहीम और पडित विजयशकर के देहान्त के बाद ही इस तथ्य का उद्घाटन किया। इब्राहीम के देहांत के बाद तो उन्होंने 1926 मे इसे 'आर्यमित्र' में प्रकट किया और 1963 में श्री विजयशकर के देहात के बाद उन्होंने उपर्युक्त पुस्तिका प्रकाशित की। अत उनका कथन अप्रमाणिक और अविश्वसनीय है। स्वय इस नाम का कैसे ज्ञान हुआ ? इस सम्बन्ध मे वे स्वय लिखते हैं "महर्षि के कुटुम्ब से सम्बन्धित अभी भी अनेक वृद्ध और वृद्धायें जीवित हैं उनके द्वारा सुनी बातों से स्वामी जी के जीवन प्रसग सबधी अनेक बातो का ज्ञान हुआ है।" इस कथन का अभिप्राय भी यही है कि अमृत बाई का नाम भी किवदन्ती रूप में ही आया होगा और उसे ही एक मान्यता के रूप में श्रीकृष्ण शर्मा ने स्वीकार कर लिया।

नवजागरण के पुरोधा के लेखक ने श्रीकृष्ण शर्मा के प्रमाण तथा श्री कर्मवीर वानप्रस्थी के आधार पर स्वामी जी की माता का यही नाम लिखा है। अतः कर्मवीर वानप्रस्थी के कथन की विवेचना करना भी आवश्यक हो जाता है। कर्मवीर जी जिनका पूर्वाश्रम का नाम श्याम जी भाई था, टकारा के एक निकटवर्ती गाँव के निवासी थे। वे प्राय टकारा आते थे और मेरा उनसे निकट का परिचय भी था। उन्होंने 'आर्य-मर्यादा' और 'सुधारक' पत्रो मे स्वामी जी की माता के नाम का निर्देश करते हुए एक लेख छपाया। उसी के आधार पर डा० भारतीय जी ने अपनी पुस्तक में यह उल्लेख किया है। मुझे इन लेखों को देखने का अवसर नहीं मिला, अत. उन पर कुछ समालोचना करना सम्भव नही है। किन्तु जब जामनगर मे 22 दिसम्बर 1983 को दयानन्द शताब्दी मनाई गई उस समय श्री कर्मवीर जी भी वहा आए थे। तब मैंने उनसे यही बात पूछी कि उन्होने किस आधार पर ऋषि की माता का यह नाम निर्धारित किया है ? इसके उत्तर में जो उन्होंने कहा उसका अभिप्रार्य यह है कि उनके पूर्वज करसनजी के यजमान थे और वे स्वय भी पोपटलाल के यजमान रहे हैं। उन्होने पोपटलाल तथा उसकी बुआ बेणी बाई तथा अन्यो से भी ऋषि की माता का नाम यही सुना है। इसके अतिरिक्त उनके पास कोई अन्य प्रमाण नही है। यदि कर्मवीर जी की बात को तथ्यपूर्ण माना जाए तो प्रश्न यह होता है कि पोपटलाल और उनकी बुआ ने यह बात देवेन्द्र बाबू को क्यो नही बताई तथा शताब्दी समारोह तक स्वामी श्रद्धानन्द और अन्य व्यक्तियो को क्यो नहीं बताई गई ? मेरे पिता और पोपटलाल प्राय समवयस्क थे। हमारा उनसे परि-

विशेष लेखमाला(६)

वारिक परिचय भी था। वे प्राय. प्रतिदिन हमारी दुकान पर आया करते थे तब उन्होने अन्यो को न बताकर कर्मवीर जी को ही यह बात क्यो बताई ? फिर कर्मवीर जी ने ही वर्षों तक इसे प्रकट क्यो नहीं किया ? पोपटलाल के देहान्त के वर्षों पश्चात् वे यह बात कह रहें हैं।

तथ्य तो यह है कि यह एक किंवदन्ती मात्र है, जिसे श्री कृष्ण शर्मा द्वारा प्रचारित किया गया था। यह तो सम्भव है कि श्री कर्मवीर के पूछने पर श्री पोपटलाल ने स्वामी जी की माता के इस नाम का केवल किंवदन्ती मात्र कह कर उल्लेख किया हो। अन्यथा उन्होंने अपने किसी वक्तव्य में अथवा कथन में कभी इस बात का कोई सकेत नहीं दिया। यद्यपि वे स्वय टकारा में आयोजित दयानन्द जन्म शताब्दी समारोह में भी उपस्थित थे तथा उसके पश्चात् भी वे उत्तर में लाहौर तक के आर्य समाजों में घूमते हुए गए थे। उनके इन प्रवासों तथा आर्य नेताओं से उनकी इन भेंटों का वर्णन मैंने स्वयं उन्हीं के मुंह से सुना है। इससे सिद्ध होता है कि

(शेष पृष्ठ [illegible] पर)

भोगी नहीं, महान् योगी और महान् वैज्ञानिक श्रीकृष्ण

धर्मदेव चक्रवर्ती

प्राचीन भारत के इतिहास के सुनहरी पृष्ठों पर भगवान श्रीकृष्ण के जो दो रूप जनमानस को विशेष रूप से आकर्षित करते हैं उनमें एक है योगी का और दूसरा है योगी के साथ-साथ भोगी का। महर्षि व्यास ने भगवद्गीता के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण को एक महान योगी, विलक्षण दार्शनिक एव राजनीति के कुशल चितेरे के रूप मे प्रस्तुत किया है। किन्तु श्रीमद् भागवत में उन्हे सोलह कलाओं में निष्णात, परमात्मा के अवतार, सोलह हजार गोपियो के संग रासलीला में मग्न रहने वाले, यहाँ तक कि जल में विहार करने वाली नग्न बालाओं के नदी तट पर रखे वस्त्र उठाकर उन्हें छकाने वाले विलासी के रूप में चित्रित किया गया है।

भगवान श्रीकृष्ण को महान योगी एवं विलक्षण बुद्धि सम्पन्न महापुरुष के रूप मे देखने वालों की मान्यता है कि विलासिता में मग्न कोई भोगी कभी भी योगी नहीं बन सकता क्योकि योगी बनने की पहली सीढ़ी यह है कि व्यक्ति विषय-भोगो से दूर रखने वाले यम-नियमो का पालन करे एवं मनसा, वाचा, कर्मणा पूर्ण ब्रह्मचर्य धारण करे। उसके विपरीत श्रीकृष्ण को एक साथ योगी और भोगी के रूप में देखने वालों की मान्यता है कि श्रीकृष्ण चूकि परमात्मा के अवतार थे, वह हजारो गोपियो के साथ रमण करते हुए भी सर्वथा निर्विकार रहते थे अत: उन्हें योगी और भोगी दोनों रूपो में देखने में कोई दोष नही।

आर्यसमाज के सस्थापक एवं महान समाज-सुधारक महर्षि स्वामी दयानन्द ने अपने जगद्विख्यात ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में श्रीकृष्ण को एक महान योगी एवं कुशल राजनीतिज्ञ बताया है। स्वामी जी का कथन है कि श्रीकृष्ण को परमात्मा का अवतार मानने एवं उनके उज्ज्वल चरित्र पर, हजारों गोपियो के साथ रमण करने, रासलीला रचाने आदि का कलंक लगाकर अपनी स्वार्थ-सिद्धि करने वाले तथा मास, मीन, मुद्रा, मैथुन व मदिरा का धर्म की आड मे सेवन करने वाले वे वाममार्गी थे जिन्होने महाभारत के काफी बाद श्रीमद्भागवत की रचना की और उसमें श्रीकृष्ण को परमात्मा का अवतार बता कर और सुरा तथा सुन्दरियों मे मग्न रहने वाले एक भोगी के रूप में प्रस्तुत कर वाममार्ग मत के प्रचार व प्रसार का घृणित प्रयत्न किया।

जहा भगवद्गीता के नायक परम-पुरुष योगिराज श्री कृष्ण के अपने उदात्त चरित्र एवं दार्शनिक विचारों द्वारा ससार भर के प्रबुद्ध जनमानस मे अपने प्रति अगाधश्रद्धा का भाव भर दिया है। वहां श्रीमद्भागवत् के नायक श्रीकृष्ण अपने भोग विलासमय जीवन द्वारा केवल मंदिरों, मठों, कथा-कीर्तनों, यत्र-तत्र होने वाली रास-लीलाओं तथा राधाकृष्ण के भौतिक प्रेम-प्रसंगों को दिखाने वाली झांकियों तक सीमित हो कर रह गये हैं। आज भी अनेक विदेशी मनीषी श्रीमद्भगवद् गीता से अपनी आध्यात्मिक-पिपासा शान्त करते हैं। दूसरी ओर श्रीमद्भागवद् के कृष्ण की विलासमय छवि के प्रति अन्य मतावलंबियों में कोई विशेष आकर्षण देखने मे नहीं आता।

एक बात जिसकी ओर बहुत कम विद्वानों का ध्यान गया है वह यह है कि भगवान श्री कृष्ण न केवल महान योगी, नाना विद्याओं के प्रकाड पंडित, राजनीति के कुशल चितेरे तथा राजनीति शास्त्र के धुरधर विद्वान थे, बल्कि वह अपने समय के एक महान वैज्ञानिक भी थे। हस्तिनापुर के समीपस्थ वन मे उनकी एक विज्ञान शाला थी जहा वह अपनी परम विदुषी अर्द्धांगिनी रुक्मिणी एवं अन्य शिष्यों के साथ नाना प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण करते थे।

पाडवो को भगवान कृष्ण जैसे रणनीति के कुशल चितेरे का समर्थन प्राप्त हुआ और वह अर्जुन के सारथी बने। महाभारत का भयानक युद्ध कुल अठारह दिन चला। इसमें देश विदेश के सैकड़ों राजा-महाराजाओ और लाखों सैनिकों ने भाग लिया। इस युद्ध में आग्नेयास्त्रों, वरुण-अस्त्रों तथा शतघ्नी, भुसुण्डी जैसे अनेकानेक शस्त्रो का खुल कर प्रयोग किया गया। वरुणास्त्र के प्रयोग से आख झपकते भयानक तर्जन-गर्जन के साथ आंधी, तूफान व बवंडर के साथ मूसलाधार वर्षा होकर जल-थल एक हो जाता। आग्नेयास्त्र के प्रयोग से आग के बड़े-बड़े गोलो से निकलते शोलो के प्रचण्ड ताप के कारण सैनिको सहित अनेकानेक धातुओं से निर्मित अस्त्र एवं शस्त्र तक पिघल जाते। आकाशवाणी तथा दूरदर्शन द्वारा संचार व्यवस्था पर पूर्ण नियंत्रण रखा जाता। जल-थल एवं आकाश में लड़े गये इस भीषण युद्ध में ऐसा नर सहार हुआ कि उसके बाद कई कई कोस तक एक भी मनुष्य जीवित नहीं बचा। लगता है महाभारत काल में विज्ञान चरम उत्कर्ष पर पहुंच गया था। जब तक विज्ञान पर आध्यात्मिकता का अंकुश रहता है वह प्राणीमात्र के हित में प्रयुक्त होता है। विज्ञान के चरम उत्कर्ष पर पहुंचने के समय चूंकि महाभारत काल में उस पर आध्यात्मिकता का कोई अंकुश न रहा। आजकल की महाशक्तियों की तरह सब अपने अपने स्वार्थ में अन्धे हो गए तो यही विज्ञान एक दुर्दान्त दानव के रूप मे उभरा और समस्त मानवता को लील गया वर्तमान सदी के चौथे दशक मे हुए दूसरे महायुद्ध मे जब एक तरफ हिटलर की जर्मन सेनाएं और दूसरी तरफ जापान की सेनाएं पश्चिमी और पूर्वी राष्ट्रों को पैरो तले बुरी तरह रोद रही थी तो युद्ध का रूप अपनी तरफ मोड़ने के लिए अमेरीका ने जिस तरह जापान के नागासाकी तथा हीरोशिमा को अणुबमो के प्रहार से मिट्टी मे मिला कर जर्मनी और जापान एवं उनके सहयोगियों को आत्म-समर्पण पर विवश कर दिया था, उसी प्रकार अपने शस्त्रों एवं सैनिको के सख्या बल मे मदान्ध कौरवो को परास्त करने एवं युद्ध मे पूर्ण विजय प्राप्त करने के लिए युद्ध का रुख पाडवों की ओर मोड़ने लिए भगवान कृष्ण ने हस्तिनापुर के गहन वनों में स्थापित अपनी अस्त्र-शस्त्रों की प्रयोगशाला मे से दो ऐसे अद्भुत अस्त्रो का कुरुक्षेत्र की समरभूमि की ओर प्रक्षेपण कराया जिससे युद्ध का सारा नक्शा ही बदल गया। कौरवो को पराजय का मुख देखना पड़ा। पाडवो को विजयश्री मिली।

हुआ यह कि युद्ध के नैतिक नियमों की सर्वथा अवहेलना करते हुए कौरवो ने चक्रव्यूह रच कर उसमें अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु का वध कर दिया। इस पर क्रोध के आवेश मे श्रीकृष्ण से सम्मति लिए बिना अर्जुन ने प्रतिज्ञा की कि सायकालीन युद्ध विराम होने एव रात्री सूचक अधकार होने से पूर्व यदि उसने जयद्रथ का वध न कर दिया तो वह चिता पर बैठ कर आत्मदाह कर लेगा। अभिमन्यु का वध कर के प्राण-भय से जयद्रथ कहीं जा छिपा था। अधकार होने से पूर्व उसे खोज पाना असम्भव जान भगवान कृष्ण ने कुरुक्षेत्र की समर-भूमि से आकाशवाणी द्वारा हस्तिनापुर के समीप वनो में अपनी विज्ञान शाला की संचालिका एव अर्द्धांगिनी रुक्मिणी को आदेश दिया कि वह कुरुक्षेत्र की ओर एक अस्त्र विशेष का प्रक्षेपण कर दे। रुक्मिणी ने तत्काल आदेश का पालन करते हुए उस अस्त्र का प्रक्षेपण कर दिया। परिणाम स्वरूप उस अस्त्र के प्रभाव से कुरुक्षेत्र की समस्त रण भूमि एवं आसपास के क्षेत्र पर घने काले धुंए के बादल छा गये। चहुं ओर अन्धकार हो गया और युद्ध विराम हो गया। तब भगवान श्रीकृष्ण ने एक चिता तैयार कराई और अर्जुन को प्रतिज्ञानुसार जयद्रथ का वध न कर पाने के कारण आत्मदाह करने को कहा।

अन्धकार के कारण चूंकि युद्ध विराम हो चुका था और जयद्रथ को अपने वध की आशका न रही थी, अत: वह और कौरवों के अनेक महारथी आत्मदाह देखने चिता के समीप आ जुटे। चिता के पास खड़े अर्जुन का ध्यान जयद्रथ की तरफ आकर्षित हुए श्री कृष्ण ने अर्जुन के कान में कुछ कहा और उसे वहां छोड़ कुछ क्षण के लिए परे खिसक गये। वहां से आकाशवाणी द्वारा उन्होंने रुक्मिणी को अन्धकार भेदी एक अन्य अस्त्र के प्रक्षेपण का आदेश दिया रुक्मिणी ने अपने सहयोगियों की सहायता से तत्काल उस अस्त्र का प्रक्षेपण किया। आंख झपकने की देर थी कि कुरुक्षेत्र की रणभूमि पर से समस्त अन्धकार को लीलता हुआ सूर्य का प्रकाश फैल गया और तब श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा—"अर्जुन ! सम्मुख खड़े जयद्रथ का वध करके अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करो। इस रणभूमि मे हुए अन्धकार और प्रकाश का खेल तो मेरी दिव्य अस्त्रों की माया थी......।" तभी अर्जुन का गाण्डीव की टंकार गूजी और जद्रथ शीश धरती पर लोटने लगा और महाभारत के युद्ध का पासा पाडवों के पक्ष में पलट गया। ऐसे थे महान वैज्ञानिक भगवान श्री कृष्ण !

पता—19 मौडल बस्ती, दिल्ली 5

हां, हम राष्ट्र-निर्माता

—प्रिंसिपल ओमप्रकाश तलवार—

हां, हम शिक्षक निस्सन्देह राष्ट्र निर्माता हैं।
क्योंकि राष्ट्र की निधि-बच्चे,
नित्य हमारे पास आते हैं
और हमारा यह पावन उत्तरदायित्व है
कि हम उन्हे अच्छे नागरिक बनाए ॥

□

हमारा गौरव महान् था।
हमने गुरु की पदवी पाई थी
क्या राजा, क्या प्रजा
हमारा मान करती थी
क्या शासक क्या समाज
हमे श्रद्धा की दृष्टि से देखता था
क्या छात्र, क्या अभिभावक
हमारे प्रति आदर प्रकट करता था ॥

□

तब हमने
अज्ञान को दूर करने,
का व्रत लिया हुआ था।
और, तभी हम—
महर्षि वशिष्ठ, गुरु द्रोणाचाय
समर्थ रामदास, स्वामी विरजानन्द
की श्रेणी के लोगो न
भगवान् राम, वीर अर्जुन
छत्रपति शिवाजी, महर्षि दयानन्द
का निर्माण किया था ॥

□

हम 'आचाय' कहलाते थे।
स्वय अपने चरित्र को
बहुत ऊचे स्तर का बनाकर
राष्ट्र की युवा पीढी के
'चरित्र का निर्माण करना
अपना मुख्य कतव्य समझते थे।
'शिक्षक' 'उस्ताद' 'मास्टर'
के रूप में
हमारा ध्येय
निरीह बालक बालिकाओ को
जीवन का प्रशस्त मार्ग
दिखाना था
अध्यापक 'टीचर' के नाम से
हमें
अबोध बच्चों को
सम्यक् अक्षर ज्ञान सिखाना था।
'उपाध्याय' की सज्ञा से
हमे
शिष्य से
आतरिक सम्पर्क बढ़ाना था ॥

□

सारा मामला ही चौपट हो गया।
क्यों ?
"शिक्षक दिवस" के पुनीत अवसर पर
प्यारे शिक्षक बन्धुओ।
आओ हम भी सोचें
कि क्या हम
राष्ट्र-निर्माता का अपना दायित्व
गुरु का अपना चेतृत्व
आचार्य की अपनी नैतिक निष्ठा
शिक्षक का अपना पथ-प्रदर्शन
अध्यापक की अपनी व्यावसायिक तन्मयता
उपाध्याय की अपनी आत्मीयता
राष्ट्र की सन्तति' को दे रहे हैं ?
सोचें
कि हमने अपना प्रशस्त मार्ग
छोडकर ही कहीं
अपना स्तर स्वय तो नहीं गिरा दिया
और
राजा से, प्रजा से
शासक से समाज से,
विद्यार्थी से, माता-पिता-अभिभावक से,
अपनी प्रतिष्ठा पर
चोट तो नही लगवाई ?

□

शिक्षक का कार्य श्रेष्ठतम है,
क्योकि शिक्षा राष्ट्रोन्नति का मूलाधार है
वह 'ब्राह्मण', 'पडित का प्रतीक है
"यमार्था नाकर्षन्ति"
उसके लिए महाभारत-कार ने कहा था ॥
पर,
वह तो धनलोलुप बन गया
उसने 'व्यापारी' का सा रूप
धारण कर लिया
विद्यालय की क्लास पढ़ाए या न
'बाहर की क्लास अवश्य बडी करनी है'
मानो उसका ध्येय बन गया
छात्र को पास कराने की वह
'ठेकेदारी' करने लग गया
और
उसके जो विध्वसकारी परिणाम हुए
उनस समूचे राष्ट्र मे उच्छृखलता फैल गई ॥

□

हमे मिला था सरकार से
कुछ सच्चा, कुछ झूठा।
देश स्वतन्त्र हुआ
भारत की परम्परा जागी
सौभाग्य से दो प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री
हमारे राष्ट्रपति बने !!
शिक्षक का मान भी बढा, वेतन-मान भी
शिक्षक के कल्याण के लिए
अनेक योजनाए बनीं
उसे 'राष्ट्रीय पुरस्कार' मिलने लगा।
उसके बच्चों की शिक्षा 'नि शुल्क' हुई
और उन्हें 'विशेष छात्र वृत्तियां' मिलने लगीं
उसके लिए 'त्रिलाभ योजना'—
पेंशन, भविष्य निधि, जीवन बीमा
चालू हुई।
'शिक्षण कल्याण प्रतिष्ठान', निर्मित हुआ
शिक्षक दिवस' प्रतिवर्ष
समारोह पूर्वक मनाया जाने लगा !!!

□

आओ।
आज के पवित्र दिन
व्रत ले
कि अपने महान् उत्तरदायित्व को
निभाकर
राष्ट्र-निर्माता अपना वास्तविक रूप
निखारकर
छात्र हित, समाज-हित देश-हित
के सभी कार्यों मे
जी-जान से जुट जाएगे।
हमन
इस युग में भी
ब्रिटिश साम्राज्याशाही से
टक्कर लेते वाले
अमर शहीद भगत सिंह
जैसे वीर
पैदा किए थे ॥
आओ,
फिर सकल्प लें कि
स्वाधीन भारत में
देश द्रोही, समाज विरोधी,
भ्रष्टाचारी, विध्वसकारी
सम्प्रदायवादी, राष्ट्रघाती
तत्वो का विनाश करने के लिए
हजारों भगतसिंह पैदा करेंगे ॥।
इसी में हमारे प्यारे राष्ट्र का कल्याण है।
इसी में हमारी अपनी आन बान शान है ॥

□

दयानन्द फाउन्डेशन द्वारा आयोजित

मुफ्त नेत्र-चिकित्सा शिविर

स्वामी श्रद्धानन्द सेवाश्रम, खूटी (जि० राची) मे १ जुलाई से ३० जुलाई १९८५ तक ग्रामीण आदि वासी जनता के लिए मुफ्त नेत्र-ज्योति शिविर का आयोजन किया गया। इस कैम्प में ११७ आपरेशन किये गये जिनमे अधिकाश ऐसे व्यक्ति थे जो मोतिया बिन्द के कारण दृष्टि विहीन हो गये थे। ये आपरेशन चण्डीगढ के नेत्र-विशेषज्ञ डा० अर्जुन दास ग्रोवर एव उनके दो सहयोगी श्री वसीलाल जी व श्री ईश्वरचन्द्र के माध्यम से सम्पन्न हुऐ।

दयानन्द फाउन्डेशन की गाडी गाव-गाव, घरो के दरवाजो पर जाकर मरीजो को खूटी लाई जहा उनका आपरेशन किया गया। आदि-वासी स्वय सेवको ने व्यवस्था सभाली मरीजो को खाना, आवास, ट्रासपोर्ट, चश्मे, औषधिया अदि मुफ्त दिये गये। इलाज के बाद मरीजो को उनके घर भी गाडी द्वारा पहुचाया गया। आपरेशन के अति-रिक्त, चक्षु सम्बन्धी अन्य रोगो वाले ५७९ रोगियों का इलाज किया गया। कैम्प पर कुल २५००० रु० खर्च आया। दयानन्द फाउन्डेशन की गाड़ी इस कैम्प के लिए लगभग पांच हजार किलोमीटर चली।

डा० विश्वनाथ भगत चीफ मैडिकल आफिसर राची, डा० सिन्हा, मैडिकल आफिसर कैम्प खूटी, का विशेष सहयोग रहा। इस में कई दिल दहला देने वाले केस मिले। ४० वर्षीय श्री कोन्ता मुण्डा (ग्राम डोरमा, खूंटी) बारह वर्ष से दोनों आंखों से ज्योतिहीन था। बडी प्रेरणा के बाद आपरेशन हेतु तैयार हुआ। आपरेशन के बाद जब उसे नेत्र ज्योति मिली तो उसका खुशी से नाचने का दृश्य बड़ा हृदयहारी

(शेष पृष्ठ [illegible] पर)

राष्ट्रभाषा का अपमान...

(पृष्ठ ४ का शेष)

सभी माता-पिताओं को विद्यालयों एवं स्थानीय अधिकारियों को लिखना चाहिए तथा इस स्कर्ट के स्थान पर कुर्ता-सलवार की वेशभूषा अनिवार्य करवानी चाहिए, अन्यथा अपनी बेटियों को इन विद्यालयों से हटा लेना चाहिए ।

(२) आजकल सभी घरों में माता-पिता को मम्मी-पापा, मॉम-पॉप या मम्मी-डैडी, तथा चाचा-चाची, ताऊ ताई, मामा-मामी, फूफा बुआ, मौसा-मौसी आदि को केवल अंकल-आंटी कहने की परम्परा बन गई है जिससे बच्चे अपने सगे-सम्बन्धियों से वास्तविक सम्बन्ध को भी नहीं जान पाते। ये अंग्रेजी शब्द पारस्परिक सम्बन्धों का प्रेम और माधुर्य नष्ट कर रहे हैं।

(३) हम वार्तालाप करते समय अपने प्रत्येक वाक्य में एक-दो शब्द अंग्रेजी के मिलाकर बोलने में अपनी बड़ाई समझते हैं, जबकि हम अंग्रेजी के चार वाक्य भी शुद्ध रूप में नहीं बोल सकते।

(४) हम अपने पत्र, निमन्त्रण-पत्र, शुभकामना-पत्र, परिचय-पत्र, दूकान की धन-प्राप्ति-पुस्तिका (रसीद बही), तिथि-पत्रक तथा दूकान का बिका सामान रखने के लिए कागज के थैले तक अंग्रेजी में छपवाते हैं।

(५) हम अपने नामपट्ट दूकानों के नामपट्ट, कार-स्कूटर-मोटर आदि के नामपट्ट तथा कार्यालयों के नामपट्ट अंग्रेजी में तथा आधे-अधूरे लिखवाते हैं।

(६) हम बच्चों से नमस्ते न कहलवाकर टाटा, या बॉय-बॉय कहलवाते है।

(७) हम पूरा पत्र तो हिंदी में लिखते हैं पर पता अंग्रेजी में लिखने में शान समझते हैं।

(८) हम अपने हस्ताक्षर, दिनांक तथा अन्य अंक तक अंग्रेजी में लिखते हैं।

(९) अध्यापक अंग्रेजी में ही उपस्थिति लेते हैं तथा विद्यार्थियों से अंग्रेजी में ही उपस्थिति बुलवाते हैं।

(१०) विद्यालय तथा विश्व-विद्यालयों के सभी पत्र-प्रपत्र अंग्रेजी में छपते हैं। इनकी सभी सूचनाएं अंग्रेजी में ही प्रसारित होती हैं। अंग्रेजी न जानने वाले विद्यार्थियों तथा अभिभावकों को इससे बड़ी कठिनाई होती है।

(११) बच्चों की आरम्भिक कक्षाओं के नाम तक अंग्रेजी में रखे जाते हैं, जैसे—नरसरी, के० जी० लोवर के०जी०, अपर के०जी० आदि।

(१२) हमने अपनी गलियों, मार्गों, चौराहों, द्वारों, भवनों तक के नाम अंग्रेजी में रख रखे हैं, जैसे—इण्डिया गेट, कश्मीरी गेट, देहली गेट, सोहराब गेट, पी०एल० शर्मा रोड़, नेहरू रोड़ जे०के० टैम्पिल, विक्टोरिया पार्क, सिविल लाईन्स, नेहरू स्टेडियम आदि।

(१३) हम आज भी देश के नगरों, स्थानों के नाम उसी प्रकार अशुद्ध लिखते हैं, जिस प्रकार अंग्रेज लिखते-बोलते थे। जैसे—मेरठ (Meerut=मीरुट), दिल्ली (Delhi=डेल्हि), बम्बई (Bombay=बोम्बे), लखनऊ (Lucknow=लुकनॉव) इलाहाबाद (Allahabad=अलाहाबाद) आदि।

(१४) हम हिंदी में भी अपने नाम अंग्रेजी ढंग से लिखते हैं। जैसे—चन्द्र का चन्द्रा, गुप्त का गुप्ता मिश्र का मिश्रा आदि।

(१५) हम अपनी सभी उत्पादित वस्तुओं (कार, मोटर, टायर, शर्बत, बिस्कुट, कलम, कागज, औषधियों, जूते, वस्त्र आदि सभी कुछ) के नाम अंग्रेजी में ही प्रकाशित कराते हैं।

(१६) सभी व्यावसायिक संस्थाएं अपने नाम अंग्रेजी में रखती व लिखती हैं।

(१७) हिन्दी के चलचित्रों के नाम भी अंग्रेजी में रखे जाते हैं, उनका विज्ञापन भी अंग्रेजी में होता है तथा चलचित्र से सम्बन्धित व्यक्तियों के नाम भी अंग्रेजी में ही दिखाये जाते हैं।

(१८) दूरदर्शन पर हिंदी के कार्यक्रमों के सम्बन्ध में भी अंग्रेजी में ही बताया जाता है, जिससे ऐसा लगता है मानो हिंदी अंग्रेजी के सहारे चल रही हो। दूरदर्शन जिस भाषा का प्रयोग धड़ल्ले से कर रहा है वह घोर असांस्कृतिक और लज्जाजनक है। ऐसी भ्रष्ट भाषा का प्रयोग संसार के शायद ही किसी देश में होता हो।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि आज शासन और जनता दोनों ही राष्ट्रभाषा हिंदी का अपमान या उपेक्षा कर रहे हैं। यदि हमें अपनी संस्कृति और अपने राष्ट्र की रक्षा करनी है तो हमें अपनी भाषा की यह उपेक्षा बन्द करनी होगी, अन्यथा हम पुनः अशान्ति की दलदल में फंस कर अपनी संस्कृति तथा अपने राष्ट्र को खो बैठेंगे—

'धर्म छूटा भाषा छूटी,
छूटा अपना वेश।
एक-एक के छूटते,
छूट चलेगा देश॥"

पता—४६८ ब्रह्मपुरी, मेरठ (उ०प्र०)

मुफ्त नेत्र चिकित्सा......

(पृष्ठ ८ का शेष)

था। एक वृद्धा ने तीन साल बाद अपने बच्चों और पोतों को देखा तो उसने श्री ग्रोवर को सौ बार से कम नहीं चूमा होगा।

शिविर समापन समारोह ३० जुलाई को २ बजे हुआ। सिविल सर्जन रांची मुख्य अतिथि थे तथा डिप्टी कमिश्नर श्री मदन मोहन झा समारोह के अध्यक्ष थे। ५० से अधिक रोगी समारोह में उपस्थित थे। एक एक व्यक्ति की कहानी हर्ष और विषाद का अनोखा मिश्रण थी। डिप्टी कमिश्नर ने ग्रोवर साहब से परामर्श करके जनवरी ८६ में खूंटी एवं लोहरदगा आदिवासी क्षेत्र में फ्री आई कैम्प लगाने की घोषणा की। डिप्टी कमिश्नर व मुख्य अतिथि ने अपने भाषण में दयानन्द फाउन्डेशन, डी० ए०वी० ट्रस्ट एवं आर्यसमाज की बहुत प्रशंसा की तथा अगले कैम्प को हर सम्भव सरकारी सहयोग देने का आश्वासन दिया।

कैम्प के दौरान रांची क्षेत्र के कमिश्नर नरेन्द्रसिंह एवं डिप्टी डिवलेपमैन्ट कमिश्नर श्री सिरोही ने कैम्प का निरीक्षण कर प्रसन्नता व्यक्त की तथा दयानन्द फाउन्डेशन के कार्य को सराहा। रांची आर्यसमाज के प्रधान व अन्य समाज सेवक समापन समारोह में उपस्थित थे। इस अवसर पर रांची के एक उदार दानी ने डायरेक्टर डी०ए०वी० स्कूल्स श्री एन०डी० ग्रोवर को दयानन्द फाउन्डेशन के लिए कोरा चेक दिया हुआ है उन्होंने मरीजों को कण्ठहार पहनाये। इस उदार दानी का नाम है—प्रेम प्रकाश आर्य।

यह एक ऐतिहासिक निःशुल्क नेत्र चिकित्सा कैम्प था जिसमें मरीजों को स्वयं डाक्टर ढूंढकर लाया था। बाद में वापस उन्हें उनके निवास स्थान तक पहुंचाया। इससे पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था।

इस शिविर से छोटा नागपुर आदिवासी क्षेत्र में अब यह विश्वास पनपने लगा है कि क्रिश्चियन मिशनरियों के अलावा आर्यसमाज और डी ए वी भी ऐसी संस्था है जिसके कार्यकर्त्ता आदिवासी कल्याण कार्य को चुनौती के रूप में स्वीकार करके राष्ट्र की सेवा कर सकते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि उत्तरणारित के डी० ए० वी० के प्रोफैसर, अध्यापक अन्य कार्यकर्त्ता पूर्वांचल में आकर डायरेक्टर श्री नारायण दास ग्रोवर की सहायता करें तथा डी० ए० वी० शताब्दी वर्ष की सार्थकता में चार चांद लगावें।

—डा० वाचस्पति 'कुलवन्त'
डी० ए० वी० स्कूल्स पो० हेहल, रांची

ऋषि की माता का......

(पृष्ठ ६ का शेष)

स्वामी जी की माता के नाम की यह किवदन्ती सम्भवतः उन्होंने दूसरों से सुनी होगी। किन्तु वह इसे प्रामाणिक या विश्वसनीय मानते हों, ऐसा प्रमाण नही मिलता। अतः जिस प्रकार स्वामी जी की माता का नाम यशोदा और रुक्मिणी कल्पित किया गया है उसी प्रकार यह अमृतबाई नाम भी काल्पनिक है। अतः हमें देवेन्द्र बाबू के इस कथन तक ही सीमित रहना चाहिए कि ऋषि की जननी के सम्बन्ध में हम कुछ नही जानते और आगे भी कुछ जान सकेंगे इसकी सम्भावना कम है, क्योंकि इस सम्बन्ध की प्रामाणिक जानकारी यदि वर्षों पूर्व देवेन्द्र बाबू को भी प्राप्त नही हो सकी तो अब इसके जानने वाले या बताने वाले शायद ही इस धराधाम पर अवशिष्ट रहे हों।

पता—ए 5, आयुर्वेद कालोनी, जामनगर, गुजरात

(क्रमशः)

वैदिक योग प्रशिक्षण

आर्य वन विकास फार्म ट्रस्ट (अवासर) जि० साबर कांठा, गुजरात में स्वामी सत्यपति की अध्यक्षता में वैदिक योग प्रशिक्षण एवं दर्शनाध्यापन का आयोजन चैत्र शुक्ला प्रतिपदा वि० स० २०४३ तदनुसार मार्च ८६ निरन्तर दो वर्ष तक चुने प्रतिभाशाली छात्रों को ऋषि शैली में छहों दर्शनों के अध्यापन के साथ ही वैदिक योग प्रशिक्षण भी दिया जायेगा। इच्छुक व्यक्ति २८ अक्तूबर ८५ तक निम्न पते पर संपर्क करें—स्वामी सत्यपति परिव्राजक २-एफ कमला नगर, दिल्ली-११०००७

आचार्य रामजीलाल शर्मा दिवंगत

महात्मा रसीला राम वैदिक वानप्रस्थाश्रम, आनन्दधाम, गढ़ी (उधमपुर) जम्मू कश्मीर के महोपदेशक आचार्य रामजीलाल शर्मा का १५ जुलाई को पहाड़ी नदी में बह जाने से निधन हो गया। एक मास की प्रचार यात्रा के बाद आश्रम लौटते वक्त अचानक पैर फिसल जाने से नदी में बह गये। वे आर्यसमाज कन्या महाविद्यालय, चम्बा के वर्षों आचार्य रहे। दिवंगत आत्मा की सद्गति और शान्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गयी।—गोपाल मिश्र
प्रधान

पुस्तकालयों के लिए संग्रहणीय पुस्तकें

महामुनि कृष्णद्वैपायन व्यास जी प्रणीत

महाभारतम्

महाभारत धर्म का विश्वकोश है। व्यासजी महाराज की घोषणा है कि जो कुछ यहाँ है, वही अन्यत्र है, जो यहां नहीं है वह कहीं नहीं है। इसकी महत्ता और गुरुता के कारण इसे पञ्चम वेद कहा जाता है।

वेद को छोडकर सभी वैदिक ग्रन्थों में प्रक्षेप हुए हैं। महाभारत भी इस प्रक्षेप से बच नहीं सका। महाभारत की श्लोक संख्या बढ़ाकर एक लाख पहुंच गई है। इसमें असम्भव गप्पों, अश्लील कथाओं, विचित्र उत्पत्तियों अप्रासाङ्गिक कथाओं को ठूंसा गया। इतने बड़े ग्रन्थ को पढ़ना कठिन हो गया।

आर्यजगत् के ही नहीं भारत के प्रसिद्ध विद्वान्
स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
द्वारा तैयार एक विशिष्ट संस्करण।

इस ग्रन्थ मे असम्भव, अश्लील और अप्रासांगिक कथाओं को निकाल दिया गया है। लगभग १६,००० श्लोकों में सम्पूर्ण महाभारत पूर्ण हुआ है। श्लोकों का तार-तम्य इस प्रकार मिलाया गया है कि कथा का सम्बन्ध निरन्तर बना रहता है।

□ यदि आप अपने प्राचीन गौरवमय इतिहास की, संस्कृति और सभ्यता की, ज्ञान-विज्ञान की, आचार-व्यवहार की गौरवमयी झांकी देखना चाहते हैं,

□ यदि योगिराज कृष्ण की नीतिमत्ता देखना चाहते हैं।

□ यदि प्राचीन समय की राज्य-व्यवस्था की झलक देखना चाहते हैं,

□ यदि आप जानना चाहते हैं कि क्या कौरवों का जन्म घड़ों में से हुआ था? क्या द्रौपदी का चीर खींचा गया था, क्या एकलव्य का अंगूठा काटा गया था, क्या युद्ध के समय अभिमन्यु की अवस्था सोलह वर्ष की थी, क्या कर्ण सूतपुत्र था, क्या जयद्रथ को धोखे से मारा गया आदि।

□ यदि आप भ्रातृप्रेम, नारी का आदर्श, सदाचार, धर्म का स्वरूप गहस्थ का आदर्श मोक्ष का स्वरूप, वर्ण और आश्रमो के धर्म, प्राचीन राज्य का स्वरूप आदि के सम्बन्ध में जानना चाहते हैं, तो एक बार इस ग्रंथ को पढ जाइए।

विस्तृत भूमिका, विषय-सूची, श्लोक-सूची आदि से युक्त इस महान् ग्रन्थ का मूल्य है केवल ४५०) रुपये। तीन भाग।

श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय

आर्यसमाज के मनस्वी विद्वान् श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय ने आर्य-वैदिक साहित्य लिखकर बड़ी सेवा की है। अभी हाल ही में उनकी कृतियों का संकलन करते हुए श्री स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जी को उनके लिखे हिन्दी-शेक्सपियर प्राप्त हुए।

'शेक्सपियर के नाटक'

३७ नाटकों के कथानक तीन भागों में मूल्य १५०.००

पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार की पुस्तकें

भूतपूर्व संसद्-सदस्य तथा उपकुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा रचित एक नई संशोधित अनूठी कृति—

वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार

मूल्य ५०.००

निम्न विषयों को लेखक ने सरल भाषा में समझाया है:

१. मन (भौतिकवादी दृष्टिकोण), २. मन (आध्यात्मिक दृष्टिकोण, ३. चेतना, मन तथा आत्मा, ४. चेतना, ५. ईश्वर, ६. सृष्ट्युत्पत्ति, ७. कर्म, ८. निष्काम कर्म, ९. शिक्षा, १०. जीवन, ११. पुनर्जन्म, १२. मृत्यु।

इस पुस्तक पर लेखक को निम्नलिखित पुरस्कार मिले हैं—

१०,००० रुपये भारतीय विद्याभवन का राजाजी स्मृति पुरस्कार।
११०० रुपये रामकृष्ण हजारीमल डालमिया पुरस्कार।
१२०० रुपये गंगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार।
२५०० रुपये उत्तरप्रदेश सरकार पुरस्कार।

हमारे विशिष्ट प्रकाशन

म० आनन्द स्वामी कृत पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
प्रभु दर्शन	१२.००
तत्त्वज्ञान	१५.००
प्रभुमिलन की राह	१५.००
घोर घने जंगल में	१५ ००
मानव और मानवता	२०.००
उपनिषदों का सन्देश	१२.००
दो रास्ते	१२.००
यह धन किसका है?	१२.००
बोध कथाएं	१२.००
दुनियां में रहना किस तरह	६.५०
मानव-जीवन-गाथा	५.५०
प्रभुभक्ति	५.००
महामन्त्र	५.००
एक ही रास्ता	५.००
भक्त और भगवान्	५ ००
आनंद गायत्री-कथा	४.००
सुखी गृहस्थ	३.००
सत्यनारायणव्रत-कथा	३ ००
शंका और दयानन्द	४.००

श्री रणवीर लिखित

पुस्तक	मूल्य
आनंद स्वामी जीवनी (उर्दू)	१०.००

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती कृत

पुस्तक	मूल्य
महाभारतम् (तीन भागों में)	४५०.००
वाल्मीकि रामायण	१००.००
चाणक्यनीति दर्पण	५०.००
" " (राजसंस्करण)	८०.००
प्रार्थना प्रकाश	४.००
प्रभात वन्दन	४.००
दिव्य दयानंद	६.००
मर्यादा पुरुषोत्तम राम	१०.००
कुछ करो कुछ बनो	८.००
विद्यार्थियों की दिनचर्या	५ ००
ब्रह्मचर्य गौरव	५.००
वैदिक विवाह पद्धति	४.००
आदर्श परिवार	८.००
ऋग्वेद का अक्ष-सूक्त	१.००
ऋग्वेद सूक्ति-सुधा	२५ ००
अथर्ववेद सूक्ति-सुधा	१५.००
यजुर्वेद-सूक्ति-सुधा	१२.००
सामवेद सूक्ति-सुधा	१२.००
ऋग्वेदशतकम्	४.००
यजुर्वेदशतकम्	४.००
अथर्ववेदशतकम्	४.००
सामवेदशतकम्	४.००
भक्ति संगीत शतकम्	३.००
चमत्कारी ओषधियां	५.००
घरेलू ओषधियां	६.००

प्रो० सत्यव्रत सिद्धांतालंकार

पुस्तक	मूल्य
वैदिक विचारधार का वैज्ञानिक आधार	५०.००
वैदिक संस्कृति का संदेश	३५ ००
ब्रह्मचर्य संदेश	१५.००

पं० मदनमोहन विद्यासागर

पुस्तक	मूल्य
संस्कार समुच्चय	४५.००
सत्यार्थ सरस्वती	२५.००
ईश्वर प्रत्यक्ष	९.००

डा० भवानीलाल भारतीय

पुस्तक	मूल्य
श्रीकृष्ण चरित	२५.००
श्यामजी कृष्ण वर्मा	२४.००

स्वामी वेदानन्द सरस्वती

पुस्तक	मूल्य
ऋषि बोध कथा	६.००
ईशोपनिषद्	४.५०

डा० प्रशान्त वेदालंकार

पुस्तक	मूल्य
धर्म का स्वरूप	३५.००

जब प्रकृति की अनमोल दवाइयां आपको आसानी से उपलब्ध हैं तो—गोली, पुड़िया, कैप्सूल या इन्जेक्शन की क्या जरूरत है?

घर का वैद्य

लेखक-सुनील शर्मा

१. घर का वैद्य आंवला	३.५०	११. घर का वैद्य दूध-घी	३.५०
२. घर का वैद्य नीम	३.५०	१२. घर का वैद्य दही-मट्ठा	३.५०
३. घर का वैद्य गन्ना	३.५०	१३. घर का वैद्य नमक	३.५०
४. घर का वैद्य प्याज	३.५०	१४. घर का वैद्य हल्दी	३.५०
५. घर का वैद्य लहसुन	३.५०	१५. घर का वैद्य हींग	३.५०
६. घर का वैद्य नीबू	३.५०	१६. घर का वैद्य बेल	३.५०
७. घर का वैद्य तुलसी	३.५०	१७. घर का वैद्य बरगद	३.५०
८. घर का वैद्य पीपल	३.५०	१८. घर का वैद्य मूली	३.५०
९. घर का वैद्य आक	३.५०	१९. घर का वैद्य गाजर	३.५०
१०. घर का वैद्य सिरस	३.५०	२०. घर का वैद्य अदरक	३.५०

बीसों पुस्तकें चार सुन्दर जिल्दों में १४०.००

गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८, नई सड़क, दिल्ली-६

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के वार्षिक अधिवेशन की झांकी

आर्य युवक परिषद के संरक्षक, ('आर्य जगत्' के सम्पादक) श्री क्षितीश वेदालंकार अधिवेशन के अध्यक्ष श्री यशपाल सुधांशु को शील्ड भेंट करते हुए।

आर्य प्रादेशिक सभा के महामन्त्री श्री रामनाथ सहगल आर्यवीरो को सम्बोधित करते हुए।

आर्य प्रादेशिक सभा के उपप्रधान श्री मुल्खराज भल्ला ब्र० विश्वपाल जयन्त ('आधुनिक भीम') को कर्मठता पुरस्कार प्रदान करते हुए।

आर्य युवक परिषद् के नए-निर्वाचित प्रधान श्री धर्मवीर और महामंत्री श्री अनिल आर्य परस्पर विचार विमर्श करते हुए।

सुप्रीम कोर्ट के मुस्लिम महिला सम्बन्धी निर्णय का स्वागत

मुस्लिम नागरिको के एक प्रतिनिधि-मंडल ने प्रधानमत्री राजीव गाधी से भेंट कर माग की कि तलाकशुदा मुस्लिम औरतो को दिए जाने वाले निर्वाह भत्ते के बारे मे उच्चतम न्यायालय के निर्णय को रद्द करने के लिए सविधान मे सशोधन न किया जाए। प्रधानमंत्री को दिए ज्ञापन मे कहा गया है कि कुछ कट्टरपंथी मुसलमान उच्चतम न्यायालय के इस निर्णय के खिलाफ जनमत भडकाने की कोशिश कर रहे हैं। मुस्लिम महिलाओ को सामाजिक न्याय प्रदान करने वाला यह निर्णय धर्म के खिलाफ नही हो सकता।

प्रतिनिधिमडल के नेता मुस्लिम सत्यशोधक मंडल के महासचिव सैयद भाई ने पत्रकारो को बताया कि श्री गांधी ने उन्हे आश्वासन दिया कि सरकार इस सम्बन्ध में किसी दबाव मे आकर कोई निर्णय नही करेगी। श्री सैयद भाई ने आरोप लगाया कि 1939 का मुस्लिम वैयक्तिक कानून भी पूरी तरह से कुरान के अनुरूप नही है। यह कानून कुरान के आदेशो को तोड-मरोड कर मर्दों के हितो के अनुरूप बनाया गया है। उन्होने कहा कि सभी कौम के लोगो के लिए समान कानून होने चाहिए। उनका कहना था कि तुर्की एवं पाकिस्तान जैसे देशो मे तलाक देना उतना सरल नही है, जितना भारत मे। भारत मे मुस्लिम महिलाओ की दुर्दशा की चर्चा करते हुए उन्होने कहा कि अब मुसलमान युवक भी देहज की माग करने लगे हैं जब कि मेहर अब भी नाम मात्र का होता है। उन्होने कहा कि इस स्थिति मे तलाकशुदा मुस्लिम स्त्रियों को भी अन्य भारतीय स्त्रियो की तरह निर्वाह भत्ता मिलना चाहिए।

श्री सैयद ने कहा कि अन्य संप्रदायो की तरह मुसलमानो के लिए कानून बनाने का हक संसद को है। उनका संगठन चाहता है कि संसद कानून बना कर मुसलमानो मे प्रचलित जबाबी तलाक व बहुविवाह की प्रथा समाप्त करे। इस अवसर पर उपस्थित श्रीमती शाहबानो के पुत्र ने पत्रकारो को बताया कि जमात-ए-इस्लामी जैसे मुस्लिम संगठन उनकी माग पर उच्चतम न्यायालय के निर्णय के खिलाफ बयान देने के लिए दबाव डाल रहे हैं। उन्होने कहा कि ये सगठन उन्हे यह प्रलोभन भी देते हैं कि वक्तव्य देने के बावजूद उनके भूतपूर्व पति से निर्वाह भता दिलाते रहेगे।

श्री सैयद भाई ने बताया कि उनकी पत्नी अख्तर उन्निसा ने बच्चा गोद लेने से सबंधित मुस्लिम वैयक्तिक कानून को चुनौती देते हुए उच्चतम न्यायालय मे याचिका दायर की है। हमारा कोई बच्चा नही है इसलिए हम बच्चा गोद लेना चाहते है पर मुस्लिम वैयक्तिक कानून इसकी इजाजत नही देता। श्री सैयद ने बताया कि ज्यादातर मुस्लिम औरतो को बच्चा न होने के बहाने तलाक दे दिया जाता है अतः यह कानून भी बदला जाना चाहिए।

"यू०' १०३/८१ लायसेंस टु पोस्ट विदाउट प्री-पेमेन्ट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११६३/७२ डी० सी० 409
१२ POSTED IN N. D P S.O. ON 12-9-1985 १५ सितम्बर, १९८५

वैदिक साहित्य प्रचार स्टाल

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के कार्य कर्त्ता ७ सितम्वर को आर्य समाज पुरानी सब्जी मण्डी मंगोल पुरी और विडला मन्दिर मे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर वैदिक जनसाहित्य प्रचार स्टाल लगा कर साधारण को ३३ प्रतिशत की छूट और लागत मूल्य पर आर्य समाज का साहित्य और श्रीकृष्ण सम्बन्धी पस्तकें उपलब्ध करायी गयी।

—सुशील श्रीवास्तव

मस्जिद मोठ मे स्वतंत्रता दिवस समारोह

डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, मस्जिद मोठ, नई दिल्ली मे १७, अगस्त को स्वतत्रता दिवस समारोह समारोह पूर्वक मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री योगानन्द शास्त्री थे। स्कूल के मैनेजर श्री रामनाथ सहगल, प्रधान श्री मुलखराज भल्ला प्रिंसिपल कृष्णा महाजन तथा स्टाफ की ओर से उनका स्वागत किया गया उन्होने ध्वजारोहण किया और भारत की आजादी के लिए कुर्वानी करने वाले वीर शहीदो का स्मरण करते हुए उद्‌वोधक भाषण दिया। विद्यालय के वच्चो ने गीत गाये। मैनेजर ने मुख्य अतिथि का आभार प्रकट करते हुए उनके सामने स्कूल की कठिनाइयो को प्रस्तुत किया। सास्कृतिक कार्यक्रम के वाद श्री योगानन्द शास्त्री ने विश्वास दिलाया कि स्कूल की कठिनाइयो को दूर करने मे पूरी पूरी सहायता करेगे। समारोह मे लगभग तीन सौ अभिभावको ने भाग लिया और वच्चो के सास्कृतिक कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

दयानन्द पब्लिक स्कूल की स्थापना

आर्य समाज, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली के भव्य भवन में महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल की स्थापना की गयी है, जिसका उद्‌घाटन सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री राम गोपाल वानप्रस्थ ने किया। समारोह मे सम्मिलित व्यक्तियो के जलपान की व्यवस्था माता सोमवन्ती आर्या ने की। —नन्द किशोर, मन्त्री

वेद प्रचार और वेद समागम

चण्डीगढ मे श्रावण की पौर्णमासी यज्ञ एव वेद गोष्ठी श्री सुखराम और श्री रत्न गगा अडवानी के परिवारो मे सम्पन्न हुआ। २१ जुलाई को विशाल वेद समागम अनाज मण्डी के मैदान मे समारोह पूर्वक मनाया गया। दोनो कार्यक्रमो को महात्मा अमर स्वामी, ब्र० आर्य नरेश, डा० पुष्पावती, प्रि० वालकृष्ण दीवान वेदालकार, डा० भवानी लाल भारतीय, प्रो० वेद सुमन, डा० गणेश दास ने सम्वोधित किया और ठाकुर दुर्गासिंह व अमर सिंह के मनोहर भजन हुए। —आशुराम आर्य

श्री पाठक हेतु शोक प्रस्ताव

आर्य समाज, दीवानहाल, दिल्ली मे ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त, समाज के निष्ठावान कार्य कर्त्ता, प्रसिद्ध पत्रकार और सुयोग्य [illegible]क पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक [illegible]निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त किया गया। वे सार्वदेशिक सभा के उपमत्री और सार्वदेशिक साप्ताहिक—पत्र के वर्षो सहसम्पादक रहे। समाज की ओर से दिवंगत आत्मा की सद्‌गति हेतु प्रार्थना की गयी ? —सूर्यदेव प्रधान

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल गगन विहार के बढ़ते चरण

तीन वर्ष पूर्व गगन विहार मे स्थापित डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर है। पिछले तीन वर्षों मे ही इसने अपने क्षेत्र के निवासियो मे ख्याति अर्जित कर ली है। यमुना पार के क्षेत्र मे यह स्कूल अपने प्रकार का एक ही है। अभी इसमे नर्सरी से आरम्भ करके पाचवी कक्षा तक के अध्ययन की व्यवस्था है, किन्तु क्षेत्र वासियो की माँग और आवश्यकता को देखते हुए इसे यथाशीघ्र सैकेण्डरी और हायर सैकण्डरी तक करना अनिवार्य हो जायेगा। स्कूल की वर्तमान प्रगति के लिए इसके प्रवन्धक श्री एच० आर० मल्होत्रा तथा आचार्या श्रीमती एम० अरोडा एव सभी अध्यापिकाए बधाई एव धन्यवाद के पात्र है।

श्री ओम्प्रकाश गुप्त का निधन

आर्य समाज, ब्रह्मपुरी, घौंडा, दिल्ली के प्रधान श्री ओम्प्रकाश गुप्त की हृदयगति रुक जाने से अचानक मृत्यु हो गयी। आर्यसमाज ने शोक प्रस्ताव पारित कर दिवगत आत्मा की सद्‌गति हेतु प्रार्थना की। उनके निवास-स्थान ब्रह्मपुरी मे २१ से २८ जुलाई तक उनकी स्मृति में यज्ञायोजन किया गया।

—किशनलाल आर्य

हरयाणा सुरक्षा वाहिनी

११ अगस्त को दयानन्द मठ रोहतक मे हिन्दी भाषी क्षेत्र हरयाणा मे मिलाने तथा प्रदेश के हितो की सुरक्षा के लिए हरयाणा सुरक्षा वाहिनी द्वारा प्रान्तीय उपसमिति का गठन किया गया। इस बैठक मे हरयाणा के कोने-कोने से भारी संख्या मे कार्यकर्ताओ ने भाग लिया। बैठक को महाशय भग्तसिंह वानप्रस्थी, प्रो० शेरसिह आदि आर्य नेताओ ने सम्वोधित किया। स्वामी ओमानन्द सरस्वती को सरक्षक, प्रो० शेरसिंह को अध्यक्ष तथा म० भरतसिंह वानप्रस्थी को समिति का सयोजक नियुक्त किया गया। इनके अतिरिक्त विभिन्न क्षेत्रो से ३३ अन्य व्यक्तियो की नियुक्ति की गई। प्रत्येक जिला मुख्यालय में इस प्रकार की बैठके करके जिला स्तर की समितियो का गठन करने का भी निश्चय किया गया।

शोक समाचार

—आर्य समाज, वडा वाजार, पानीपत (हरि०) मे निम्नलिखित दिवंगत महानुभावो हेतु शोक प्रस्ताव पारित कर उनके आत्मा की शान्ति हेतु प्रार्थना की गयी। दिवगत व्यक्ति है—ला० हसराज गुप्त, श्री नवाव सिंह, गणक, श्री शीतल प्रसाद, श्रीमती लीलावती और श्री वारूराम।

दिल्ली में पुरोहित

दिल्ली की किसी आर्य समाज मे पुरोहित का कार्य करना चाहता हूं। जिन आर्य समाजो को पुरोहित की आवश्यकता है, कृपया मेरे निम्न पते पर सूचित करे। —भगतसिंह शास्त्री, गाव—बैरावास कलाँ, पो०—भोंकर जि०—अलवर (राज०)

योग्य वधू चाहिए

२६ वर्षीय, एम० ए० (इक०), केन्द्रीय सरकार मे सेवारत, वेतन १,१०० रु० मासिक, पिता रिटायर्ड, वहन की शादी हो चुकी, के लिए शाकाहारी, आर्य विचारो की योग्य वधू चाहिए। दहेज और जाति बन्धन नहीं। पत्र-व्यवहार का पता—६७२२, श्री अश्विनी कुमार, ४३, अंसारी रोड, कालका मार्ग, देहरादून (उ० प्र०)

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स ७११७/१८ पहाड़ी धीरज, (फोन : ५१६५१८, ५२७३३५) दिल्ली से छपवा कर कार्यालय आर्य जगत्, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली। फोन (343718)

भारत सरकार द्वारा रजि न १३२०७/७३ रजि नं० ...

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम ए. आश्विन १२, २०४७ वि०

वर्ष १७ अङ्क ४१ २८ सितम्बर १९९० वार्षिक शुल्क ३०) आजीवन शुल्क ३०१) विदेश मे ८ पौंड एक प्रति ७५ पैसे

सर्वखाप पंचायत तथा आर्यसमाज द्वारा मंडल आयोग की सिफारिशों का विरोध

श्री विश्वनाथप्रतापसिंह प्रधानमन्त्री द्वारा अचानक मण्डल आयोग की सिफारिशों को जाति आधार पर लागू करने की घोषणा का भारत के कोने-कोने में जोरदार विरोध किया जा रहा है। इस समस्या पर विचार करने तथा कार्यक्रम तैयार करने के लिए हरयाणा में भी सर्वखाप पंचायतों का आयोजन सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह की प्रेरणा से कई स्थानों पर किया गया है।

सर्वप्रथम बहादुरगढ़(रोहतक) में ८ सितम्बर को सर्वखाप पंचायत के प्रतिनिधियों ने सर्वसम्मत निर्णय किया था कि आरक्षण का क्या रूप होना चाहिए, इस विषय पर विचार-विमर्श करने के लिए हरयाणा भवन नई दिल्ली में २१ सितम्बर को एक बजे सर्वखाप पंचायत, भारतीय किसान यूनियन तथा विश्वविद्यालयों के छात्रों और शिक्षकों के प्रतिनिधियों की बैठक करने का निश्चय किया गया था। इसी कार्यक्रम के अनुसार २१ सितम्बर को हरयाणा भवन नई दिल्ली में एक बैठक सम्पन्न हुई जिसमें आरक्षण के मुद्दों पर खुलकर विचार किया गया। सबने मिलकर अखिल भारतीय मण्डल आयोग विरोधी बलिदान मंच के गठन का निर्णय किया। इसके संरक्षक प्रो० शेरसिंह पूर्व केन्द्रीय मन्त्री, अध्यक्ष चौ० हीरासिंह पूर्व कार्यकारी पार्षद तथा श्री नरेश दलाल जोकि नेता जी सुभाष की आजाद हिन्द सेना के सक्रिय नेता रहे हैं, को मन्त्री बनाया गया है। बैठक में यह भी निश्चय किया गया कि आरक्षण का विरोध करने के लिए लोकसभा तथा विधानसभा के सदस्य अपने त्यागपत्र देकर मैदान में उतरें और इस आंदोलन में खुलकर भाग लेवें। अपने आंदोलन के समर्थन में बोट क्लब नई दिल्ली में एक विशाल रैली के आयोजन की तैयारी का भी कार्यक्रम बनाया गया।

प्रो० शेरसिंह ने पालम तथा बहादुरगढ़ के सर्वखाप पंचायतों के सम्मेलन में प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए बताया था कि आरक्षण ऐसा गम्भीर और संवेदनशील मसला है कि इस पर गहराई से विचार करना चाहिए तथा देश का जिससे अधिक से अधिक हित हो और जाति संघर्ष से देश को बचाया जा सके। आज देश का पढ़ा-लिखा नौजवान सड़कों पर निकल आया है और कई नौजवानों ने गोलियां खानी पड़ी हैं। इस आंदोलन में बहुत से घायल होकर हस्पतालों में पड़े है। राष्ट्र की सम्पत्ति की भी काफी हानि हुई है। बसें और रेलगाड़ी तोड़ी और जलाई गई हैं। भारी संख्या में सड़कों पर पेड़ कटे पड़े हैं। उधर भारत को तोड़ने के लिए पंजाब, कश्मीर, असम आदि में अलगाववादी व आतंकवादी शक्तियां जोर पकड़ती जा रही हैं। ऐसे नाजुक समय में आवेश में आकर राष्ट्र को नुकसान वाले कदम रुकने चाहिये और सारे प्रश्न पर गहराई से विचार करना होगा।

प्रो० शेरसिंह ने मण्डल आयोग पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि इसका दायरा बहुत सीमित है। अनुसूचित जातियों और जनजातियों का आरक्षण तो संविधान में ४० वर्ष से चल रहा है और वह संसद का सर्वसम्मत निर्णय है, वह रहेगा। अवकाश प्राप्त सैनिकों, विकलांगों और स्वतन्त्रता सेनानियों के लिए भी आरक्षण है और यह भी रहना चाहिए। मण्डल आयोग ने तो दूसरे सामाजिक दृष्टि तथा शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े लोगों के लिए आरक्षण के सम्बंध में रिपोर्ट दी है। जिसको लेकर यह विवाद उग्ररूप धारण कर गया है और हुआ यह है कि मण्डल आयोग ने जन्म के आधार पर जातपात के नाम पर कुछ जातियों के लिए २७% आरक्षण की सिफारिश की है। जन्म के आधार पर जात-पात ने देश को गुलाम बनवाया और स्वतन्त्र भारत में फिर से जात-पात के नाम पर आरक्षण करने से जातियों के बीच में संघर्ष होगा जिससे देश कमजोर होगा। यह निर्विवाद है कि भारत के ग्रामों में शिक्षा का स्तर बहुत नीचा है। ३०% स्कूलों में ब्लैकबोर्ड तक नहीं, ४० प्रतिशत में केवल एक अध्यापक है और ४० प्रतिशत में स्कूलों के भवन नहीं हैं। इसलिए जो बच्चे ग्रामों के स्कूलों में पढ़ते हैं वे सभी शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े हुए हैं, वे चाहे किसी भी जाति के हों। इसलिए आरक्षण बिना जात-पात के भेद-भाव से ग्रामों के स्कूलों से पढ़े हुए प्रत्याशियों के लिए होना चाहिए। आज जो आर्थिक दृष्टि से पिछड़ गया है उसका समाज में कोई भी आदर मान नही है। आर्थिक मानदण्ड भी अवश्य रखा जाना चाहिए। जो व्यक्ति सरकार को आयकर देता है और सम्पत्तिकर देता है, प्रथम श्रेणी का या उसके समकक्ष अधिकारी है। २० एकड़ नहरी या ४० एकड़ बरानी जमीन का मालिक है उसे आरक्षण की सुविधा नही मिलनी चाहिए। प्रो० शेरसिंह के आरक्षण पर इन विचारों को ध्यान से सुना और सहमति प्रकट की थी।

इसी प्रकार १० सितम्बर को प्रो० शेरसिंह जयपुर गए और आर्यसमाज द्वारा आयोजित एक बैठक में कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए उन्होंने आरक्षण के सारे प्रश्नों पर विस्तार से चर्चा की और आर्यसमाज का दृष्टिकोण बताया। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज जन्म के आधार पर जात-पात को नहीं मानता और उसे देश के लिए घातक समझता है। आपने स्वामी अग्निवेश द्वारा आर्यसमाज के नियमों के खिलाफ मण्डल आयोग की सिफारिशों का प्रचार करने पर भर्त्सना की। इस पर आर्यसमाज की बैठक में स्वामी अग्निवेश को आर्यसमाज के संगठन से निष्कासित करने का प्रस्ताव पारित किया।

प्रो० शेरसिंह ने उसी दिन जयपुर में विश्वविद्यालय तथा मैडीकल कालेजों के छात्रों को भी संक्षिप्त सम्बोधन मे संयम से काम

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आओ सत्संग में चलें

सुपर्ण और अश्व

—मनोहर विद्यालंकार—

अभि वाजी विश्वरूपो जनित्रं हिरण्ययं बिभ्रदत्कं सुपर्णः ।
सूर्यस्य भानुमृतुथा वसानः परि स्वयं मेथमृज्रो जजान ॥

साम १८४३

ऋषिः आङ्गिरस सुपर्णं. । देवता-सूर्यः । छन्द त्रिष्टुप् ।

शब्दार्थ—(सुपर्ण) ज्ञान तथा कर्म रूप सुन्दर पंखो वाला जीवात्मा (जनित्रम्) जन्म-भर चेष्टारत और (हिरण्यम्) हितकर तथा रमणीय (अत्कम्) देह कञ्चुक को (यिभ्रत्) धारण करके (विश्वरूप वाजी) सृष्टि के सब रूपो को धारण करने मे समर्थ (अभिसम्पद्यते) होता है ।

(ऋतुथा) समय आने पर वह (स्वयम्) अनायास ही (पूर्यस्य भानुम्) अपने उत्पादक और प्रेरक परमात्मा की ज्ञानदीप्ति को (वसान) ओढकर, उससे स्नेह करता हुआ (ऋज्र) पाप, दोष और व्यर्थ के परिग्रह की वस्तुओ को भूनकर हलका और सरल होकर (स्वय मेध जजान) अपने को यज्ञमय बनाले ता है ।

जब तक जीवात्मा ज्ञान और कर्म दोनो का आश्रय न ले, और उपयोग न करे, तब तक उसे सुपर्ण नही कह सकते, क्योकि वह एक पक्ष वाले, एकागी पक्षी के समान होता है ।

जीवात्मा जब तक किसी शरीर को धारण नही करता तब तक वह किसी रूप मे दिखाई नही पडता है ।

परमात्मा का ज्ञान और उससे स्नेह, समय आने पर या पुण्योदय होने पर, या परमात्मा की कृपा होने पर स्वय और अनायास हो जाता है । तब उसके दोष भाड़ मे भुन जाते है, और वह यज्ञरूप हो जाता है, दूसरो के लिये जीता है ।

अप्सु रेत: शिश्रिये विश्वरूप
तेज पृथिव्यामधि यत्सम्बभूव ।
अन्तरिक्षे स्वं महिमान मिमानः
कनिक्रन्ति वृष्णो अश्वस्य रेतः ॥

साम १८४४

ऋषि.—आङ्गिरस सुपर्ज: । देवता-सूर्य । छन्द त्रिष्टुप् ।

शब्दार्थ—यह (सुपर्ण) जीवात्मा (यत्) जब (विश्व रूप तेज) सब रूपो को धारण कराने वाले तेजस्वि (रेत शिश्रिये) वीर्य का आश्रय लेता है तब (पृथिव्यामधि) पार्थिव शरीर मे (सम्बभूव) उत्पन्न होता है, और अनुभव करता है कि सब कामनाओ का साधक सामर्थ्य कर्मों के आश्रय मे स्थित है ।

तदनन्तर जब यह (स्व महिमानम्) अपने माहात्म्य को (अन्तरिक्षे) अपने हृदय या आत्मा में (मिमान) अनुभव करना चाहता या करता है तब (वृष्ण) सुखो के वर्षक आनन्द प्रदाता (अश्वस्य) सर्वव्यापक परमात्मा के (रेत) सामर्थ्य का (कनिक्रन्ति) बडी विकलता से आह्वान करता है ।

निष्कर्ष—जलो के सार वीर्य को माध्यम बनाए बिना, यह जीवात्मा किसी पार्थिव शरीर को धारण नही कर सकता है ।

सब कामनाओ का साधक दिव्य तेज कर्माधीन है । पुरुषार्थ के बिना कोई साधना या कामना सिद्ध नही हो सकती ।

परमात्मा के सामर्थ्य को अनुभव किये बिना, उसकी आकाक्षा और आह्वान के बिना अपनी आत्मा मे, अपने हृदय मे कोई महिमामय नही बन सकता, भले ही सामान्य जन मनुष्य के वैभव को देख कर उसे कितना ही महत्व क्यो न देते हो ।

वीर्य रक्षा के बिना, शरीर मे प्रगति, मन मे शान्ति और आत्मा मे दीप्ति नही आती ।

अय सहस्रा परि युक्ता वसान·
सूर्यस्त भानु यज्ञो दाधार ।
सहस्रदा शतदा भूरिदावा धर्ता
दिवो भुवनस्य विश्पति ॥

साम १९४५

ऋषि—आङ्गिरस सुपर्ण । देवता-सूर्य । छन्द त्रिष्टुप् ।

शब्दार्थ—(अयम) यह सुपर्ण जीवात्मा (यज्ञ) यज्ञ रूप बन कर (परि) अपने इर्दगिर्द रहने वाले (सहस्रा युक्ता वसान) हजारो समकालीन सहयोगियो को बसाने के लिये (सूर्यस्य भानु दाधार) सूर्य की प्रभा और प्रभाव को धारण करके, उन का मार्ग दर्शन करता है । और इस निमित्त (शतदावा) सैकडो प्रकार के (भूरिदावा) प्रभूत मात्रा मे (सहस्रदा) हसी खुशी, मन मे मलिनता लाए बिना दान करने के कारण (भुवनस्य विश्पतिः) सारे भुवन की प्रजाओ का पालक व स्वामी बनकर (दिवो धर्ता) उनमे दिव्यताओ-दिव्य भावनाओ को धारण कराने लगता है ।

निष्कर्ष—जब तक मनुष्य स्वय यज्ञमय और दिव्य भावनाओ से युक्त न हो, अपने सहयोगियो और अभाव ग्रस्तो को अभिमान का मैल मन मे लाए बिना प्रभूत मात्रा मे दान नही कर सकता, प्रजाओ का पालन नहीं कर सकता । जो प्रजाओ का पालन नही कर सकता, उसे प्रजाए हृदय से कभी अपना स्वामी नही समझती ।

जब तक शासक प्रजा के हृदयो पर शासन नही करता तब तक वह प्रजा मे दिव्य भावनाए भी नही भर सकता ।

यज्ञमय बन कर ही मनुष्य, अपने उत्पादक और प्रेरक परमात्मा के प्रकाश को धारण करने मे समर्थ होता है ।

विशेष—श्री सातवलेकर जी ने इस मंत्र के ऋषि और देवता 'अग्नि. पावक'. और 'अग्नि' लिखे हैं । और श्री गगेश्वरानन्द जी ने इस मन्त्र के ऋषि और देवता क्रमश 'आगिरस: सुपर्ण' तथा 'सूर्य.' माने हैं । श्री विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड ने इस त्रिक का अर्थ परमात्मा-परक किया है । स्वामी गगेश्वरानंन्द तथा श्री हरिशरण सिद्धातालकर ने इस त्रिक का अर्थ 'जीवात्मा' परक किया है । श्री सातवलेकर जी ने इस त्रिक का अर्थ 'अग्नि' परक किया है ।

वेद में 'आत्मा' शब्द से जीवात्मा तथा परमात्मा दोनो का ग्रहण होता है । इसी प्रकार यहा 'सुपर्ण' शब्द से भी जीवात्मा और परमात्मा दोनो का ग्रहण हो सकता है । स्वामी दयानन्द ने 'सुपर्ण' का अर्थ चेतनता और पालनादि गुणो से सदृश ब्रह्म और जीव दोनो माना है ।

इस मन्त्र के ऋषि, देवता और छन्द शब्दों के अर्थ संकेत करते हैं कि—मनुष्य के अग अग मे रस धारा न बहती हो, और ज्ञान तथा कर्म रूपी दोनो पखो मे समन्वय न हो, तब तक वह सूर्य के समान दूसरो को प्रकाश और पथ प्रदर्शन नही प्रदान कर सकता ।

साधन रूप मे उसे, काम, क्रोध, लोभ के त्रिक का अवरोध-परित्याग तथा शरीर, मन, आत्मा के त्रिक के 'रेतस्' अर्थात् प्रगति, शाति और दीप्ति का उत्कर्ष प्राप्त करके 'त्रिष्टुप्' बनने का प्रयत्न करना चाहिये ।

पता—५२२ ईश्वर भवन खारी बावली, दिल्ली-६

पं० देवव्रत धर्मेन्दु का स्वर्गवास

नई दिल्ली १६ सितंबर । आर्ययुवक परिषद के संस्थापक प्रधान, आर्य अनाथालय, पटौदी हाउस के मन्त्री और आर्य कुमार परिषद के संचालक श्री प० देवव्रत 'धर्मेन्दु' जी का सामवार की रात हृदयगति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया । वे आर्य समाज से सम्बन्धित अनेक संस्थाओ की जीवन पर्यन्त सेवा व सहायता करते रहे । उनकी आयु ८२ वर्ष की थी । उनके कोई सन्तान नही थी । १७ सितंबर मंगलवार को निगम बोध घाट पर उनकी अन्त्येष्ठि वैदिक रीति से हो गयी । जिसमे सार्वदेशिक सभा के ला० राम गोपाल शालवाले, श्री ओम प्रकाश त्यागी, मन्त्री, आर्य अनाथालय पटौदी हाऊस के श्री महेन्द्र सिंह शास्त्री तथा ला० इन्द्रनारायण, आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सूर्य देव जी, प्रादेशिक सभा के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल, आर्य सन्देश के संपादक श्री यशपाल सुधांशु, सम्राट प्रेस के श्री चन्द्रमोहन शास्त्री, सार्वदेशिक सभा के श्री पृथ्वीराज शास्त्री तथा आर्य समाज पंजाबी बाग के मन्त्री श्री गुलाटी आदि उपस्थित थे ।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा कार्यालय में एक शोक सभा हुई । जिसमें श्री देवव्रत धर्मेन्दु जी को श्रद्धाजलि अर्पित की गई । डी०ए०वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी के कार्यालय में भी श्री दरबारी लाल जी की अध्यक्षता मे एक शोक सभा मे शोक प्रस्ताव पारित किया गया ।

१९ सितंबर सायं ७ बजे उनकी अस्थियां निगम बोध घाट पर विसर्जित की जायेंगी । उसी दिन आर्य अनाथालय पटौदी हाऊस में उनका अंतिम दिवस (उठावनी) सम्पन्न होगी ।

२२ सितंबर को प्रातः आर्य समाज दीवान हाल में विभिन्न संस्थाओं की ओर से एक शोक सभा होगी ।

सुभाषित

ज्यों नैनन में पूतली, त्यों मालिक घर माँहि।
मूरख लोग न जानहिं, बाहर ढूंढन जाहिं ।।
ज्यों तिल मांहि तेल है, ज्यों चेहले में आग ।
तेरा मालिक तुझमें, जाग सके तो जाग ।।

मुल्ला मीनारों क्या चढ़हिं, साईं न बहिरा होय।
जा कारण तूं बांग दे, दिल हो भीतर सोय।
हरि जाना हरिद्वार में, हरि हैं, हिरदे माँहि ।
लागी टाटी कपट की, तातै दीखत नाँहि ।।

चक्र चरण की डायरी का एक पृष्ठ

सम्पादकीयम्

चपल चंचल चित्त, चुस्त चाल, चलने का चस्का ! जीवन पथ पर 16 सितम्बर 1916 से 16 सितम्बर 1985 तक चलते-चलते 69 वर्ष कब पूरे हो गये और 70वां वर्ष कब शुरू हो गया, कुछ पता ही नहीं लगा। बन्धु रे ! रात भर तीव्र ज्वर के ताप में तुम तपते रहे, यह तो 70वें जन्म दिवस की कोई अच्छी शुरूआत नहीं हुई।

कैसा जन्म दिवस और कैसी शुरुआत ! जन्म दिवस तो बड़े लोगों के होते हैं। चक्र-चरण जैसे सामान्य लोगों का कैसा जन्म दिवस ? और तुम शुरूआत की बात कहते हो, तो जन्म दिवस वाला दिन क्या और दिनों से कुछ भिन्न होता है। हरेक दिन अपने-आप में समान महत्व वाला है। तो आज के दिन को कुछ अलग महत्व देने का क्या औचित्य है। रही बात रात भर तीव्र ज्वर में सिकते रहने की, वह तो शरीर का धर्म है। जब शरीर साथ लगा है, तो उसके साथ आधि-व्याधि भी अपने-आप जुड़ी ही रहती है। प्रकृति में जब एकदम परिवर्तन हो जाये और तेज गर्मी के पश्चात् अचानक तेज वारिश और ठण्ड का आलम शुरू हो जाय, तो इस प्रकृति-विपर्यय के साथ संतुलन रखने के लिए शरीर को ज्वर नहीं होगा तो क्या होगा। जैसे यह मौसम का उत्पात क्षणिक है, वैसे ही ज्वर का उत्ताप भी क्षणिक है।

आखिर मनुष्य केवल शरीर ही थोड़े है। उसके साथ मन और आत्मा भी तो लगा हुआ है। शरीर को अगर बुखार ने जकड़ लिया तो जकड़ने दो, मन को बुखार मत होने दो। और सचमुच, बुखार की इस जकड़न के बावजूद मन का हरिण छलांगें लगाने से बाज नहीं आता। अगर छलांगें लगाना छोड़ दे तो वह मन नहीं रहा न !

कहते हैं, स्वप्नदर्शी होना बहुत बुरा है। परन्तु अगर स्वप्न न हो तो मन का हरिण व्याध के जाल में फस कर कब तक अरक्षित रह सकेगा। यह सपनों की ही तो करामात है। कितनी ही विपरीत परिस्थितियां क्यों न हो, किन्तु मन न स्वप्न देखना छोड़ता है और न ही कभी हार मानता है। चिर जीवन के लिए स्वप्नदर्शी होना आवश्यक नहीं है क्या ?

अब से 6 वर्ष पूर्व जब "आर्य जगत्" का भार संभाला था तब कुछ हितैषी मित्रों ने कान में फुसफुसा कर कहा था—"बांधो न नाव इस ठांव बन्धु"। परन्तु तब भी विश्वास था कि हमारी नाव कितनी छोटी क्यों न हो, किंतु जिस बेड़े के साथ हम उसे बाँध रहे हैं, वह कभी डूबने वाला नहीं। उस बेड़े ही का नाम तो आर्य समाज है। जिस तरह कभी स्व० प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने का था—"हम रहे या न रहे, परन्तु हमारा यह राष्ट्र रहेगा।" उन्हीं के स्वर में स्वर मिला कर कहना चाहते हैं कि हमारे जैसी छोटी-छोटी नौकाएं तो रोज डूबती उतराती रहती हैं। भले ही वे रहें या न रहें, परन्तु आर्य समाज तो रहेगा।

बड़े आदमी बड़े स्वप्न लेते हैं। बदले से चक्र चरण ने बहुत छोटे स्वप्न लिये थे। अपनी औकात से बड़े सपने देखने वालों को लोग शेख चिल्ली कहते हैं। परन्तु किसकी औकात कितनी है, इसका फैसला करने वाला पैमाना किसके पास है !

जिस तरह राष्ट्र को एक और अखण्ड करने का स्वप्न हरेक राष्ट्र-भक्त लेता है, उसी तरह, राष्ट्र के प्रतीक के रूप में आर्य समाज को एक और अखण्ड रखने का स्वप्न हमने लिया था। और इसके लिए शुरू में ही यह घोषणा की थी कि आर्य समाज की दो भुजाएं हैं—एक वेद और एक राष्ट्र। केवल वेद-वेद चिल्लाने वाले और राष्ट्र की उपेक्षा करने वाले ठीक उसी तरह आर्य समाज को लंगड़ा-लूला बना कर रख देंगे, जिस तरह केवल राष्ट्र-राष्ट्र चिल्ला कर वेद की उपेक्षा करने वाले लोग। हमने कहा था—वेदों का आविर्भाव आर्यावर्त में हुआ, इसलिए वेद और आर्यावर्त का अविनाभाव सम्बन्ध है। एक के बिना दूसरे की रक्षा नहीं हो सकती। जिस तरह लोकमान्य तिलक ने समस्त महाराष्ट्र में शिवाजी उत्सव और गणेशोत्सव की परम्परा चलाकर समस्त प्रदेश को राष्ट्रभक्ति से सराबोर कर दिया उसी तरह यह आर्य समाज का प्रताप था कि उसने समस्त पुराने देवी-देवताओं के स्थान पर वेद को प्रतिष्ठित करके, विशेष रूप से उत्तर भारत को और सामान्य रूप से उत्तर भारत के अतिरिक्त अन्य प्रदेशों को, राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत कर दिया। यह कोई सामान्य उपलब्धि नहीं थी। फिर इसके अलावा एक ही समय में पनपे ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज और देव समाज से आर्य समाज को पृथक करने वाला व्यावर्तक तत्व कौन सा है ? यही राष्ट्रवाद ही न ! आर्य समाज की समकालीन वे सब संस्थाएं आज अस्तायमान हैं पर आर्यसमाज दिन-प्रतिदिन नित्य नई आभा से प्रदीप्त और प्रसृत होता जा रहा है।

उसके बाद दूसरा स्वप्न लिया था आर्य समाज को समस्त पार्टियों और धड़ों से अलग करके एक एकात्मक सूत्र में संगठित करना। आर्य समाज की सारी शक्ति इन धड़े बाजों ने बिखेरकर रख दी है। अन्यथा आर्य समाज जैसा सुसंगठित, सुसूत्रित अनुशासित और ऐक्यबद्ध संगठन कौनसा है ? परन्तु जब विभिन्न घड़े एक ही रथ को अलग-अलग दिशाओं में खींच रहे हों, तो क्या वह रथ आगे बढ़ सकेगा। जब आर्य प्रादेशिक सभा शिरोमणि सार्वदेशिक सभा की एक घटक बन गई और सार्वदेशिक सभा के चुनाव में बाकायदा हिस्सा लेने लगी तो गुरुकुल पार्टी और कालिज पार्टी का वह चिर कालीन विवाद भी समाप्त हो गया और आर्य समाज का रथ आगे बढ़ने को सन्नद्ध हो गया।

आर्य समाज को इस प्रकार ऐक्यबद्ध होते देखकर विघ्नतोषी भले ही अप्रसन्न हों, किंतु आर्य समाज के हितैषी तो प्रसन्न हुए बिना रह नहीं सकते। इसी एकता के स्वप्न को चरितार्थ करने की फलश्रुति जहां लन्दन के सार्वभौम आर्य महासम्मेलन में हुई, वहीं दूसरी फलश्रुति अजमेर की ऋषि निर्वाण शताब्दी में हुई। अपने उस स्वप्न को चरितार्थ करने में व्यक्तिगत रूप से चक्रचरण को कितना लाछित होना पड़ा, यह उसका मन ही जानता है। परन्तु जिसने कभी व्यक्ति को प्रमुखता न देकर, और अपने-आप को सबसे पीछे रख कर, केवल उद्देश्य की एकनिष्ठता से उपासना की तो उसमें ऐसी सफलता मिली कि अपने-पराये सब उसे देख कर चकित हो गये।

उसके बाद एक छोटा सा स्वप्न और था और वह यह था कि समस्त आर्य जनता की श्रद्धा और आशाओं का केन्द्र गुरुकुल कांगड़ी किसी तरह विवाद के घेरे से निकल कर सही लोगों के हाथों में आ जाय। गुरुकुल कांगड़ी की जितनी दुर्दशा हुई और वहां जितनी उखाड़ पछाड़ चलती रही, उसे देखकर समस्त आर्य जनता चिंतित थी। आखिर गत सप्ताह वह स्वप्न भी पूरा हुआ और अब यह आशा की जा सकती है कि गुरुकुल अपने पुराने गौरव को पुन: प्राप्त करेगा।

इन स्वप्नों की पूर्ति का बखान करने से किसी के मन में यह धारणा बन सकती है कि जैसे आर्य समाज के क्षेत्र में घटित होने वाली सब घटनाओं का नियामक चक्रचरण ही है। परन्तु यह भ्रम उसे नहीं है। कहने को कोई महाकवि अकबर के शब्दों में यह भी कह सकता है—

> बुद्धू मियां भी हजरते गांधी के साथ हैं।
> गो मुश्ते खाक हैं, मगर आंधी के साथ हैं।

सचमुच एक मुट्ठी भर खाक से बढ़ कर चक्रचरण कुछ नहीं। पर क्या यह उसका सौभाग्य नहीं कि वह जिस आंधी के साथ है, उसमें हवा की एक छोटी सी लहर पैदा करने का श्रेय उसको भी है। इसमें किसी को गर्व की गन्ध आ सकती है। पर यह अपने उद्देश्य के प्रति निश्छल रूप से एक निष्ठ होने का पुरस्कार भी तो है।

चक्र चरण ! अब तुमने 70वें वर्ष में प्रवेश किया है। कोई तुम से पूछे कि इतनी सुदीर्घ अवधि में तुमने क्या कमाया। न तुम नेता बने, न कभी किसी संस्था/सभा के अधिकारी बने। न लेखकों में तुम्हारी गणना है, न वक्ताओं में। तुम भले ही अपने आपको तीस मारखां समझते रहो पर तुम्हारी असलियत हमें मालूम है—

> मालूम है हमें सब बुलबुल तेरी हकीकत।
> एक मुस्त उस्त ख्वां पर दो पर लगे हुए हैं।

छोटा-सा कद, डेढ़ पसली का आदमी और बातें बघारने में—अफलातून !

यह सब सही है। पर जीवन के इस चौथेपन में कदम रखते हुए न तो यह कहने की हिम्मत होती है—"आसप्ततियौवनम्" न हफीज जालन्धरी के शब्दों में—यह कि—"अभी तो मैं जवान हूं।"

हरेक उम्र का एक तकाजा होता है। वार्धक्य का भी एक तकाजा है। चक्रचरण ने यह कभी नहीं चाहा कि—वृद्धावस्था न आवे। परन्तु यह जरूर चाहा कि वृद्धावस्था में पनपने वाला लोकैषणा के प्रति मिथ्या मोह उसमें न जागे ? अतीत के राग अलापने में वह शान न समझे, युवकों में अनावश्यक रूप से दोष निकालना अपना अधिकार न समझे और सच्चे उल्लास की उपेक्षा करने की जड़ता वह कभी न दिखावे। ये चीजें कभी न आवें, फिर भले ही वृद्धावस्था कल के बजाय आज आ जाय।

दिन भर के परिश्रम से थक कर भगवान भुवन भास्कर अपने सातों घोड़ों की लगाम खींच कर अस्ताचल की ओर जा रहे हैं। कल फिर नया सूर्योदय होगा। तब हे चक्र चरण ! तुम्हारी आज की डायरी का यह पृष्ठ बासी पड़ जायेगा। कल इसको फाड़ कर फेंक देना।

यही संतोष बहुत है कि अपने से पहली पीढ़ी और अपने से अगली पीढ़ी के बीच की कड़ी के रूप में चक्र चरण की अमरता अक्षुण्ण रहेगी।

१४ सितम्बर—एक ऐतिहासिक दिन

—हरिबाबू कंसल—

देश की अनेक संस्थाएं प्रति वर्ष "हिन्दी दिवस" उत्साह से मनाती हैं। उस अवसर पर विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमो का आयोजन होता है। परतु देखा गया है कि हिन्दी की दृष्टि से १४ सितम्बर का क्या महत्व है उसकी जानकारी बहुत कम व्यक्तियो को है।

स्वाधीनता के संघर्ष के समय स्वतंत्रता सेनानियो के मस्तिष्क मे यह स्पष्ट कल्पना थी कि देश के स्वाधीन होने पर प्रशासन का काम जनभाषाओ में होना चाहिए, प्रान्तीय स्तर पर क्षेत्रीय भाषाओ मे तथा केन्द्रीय स्तर पर हिन्दी में। यह बात सर्वमान्य थी कि स्वाधीन भारत मे प्रशासनिक काम के लिए अग्रेजी का प्रयोग जारी रखना देश की प्रतिष्ठा को आघात पहुचाने वाला होगा।

स्वाधीन भारत का सविधान बनाने के लिए जब संविधान सभा का गठन हुआ तो उसकी प्रारुप समिति ने राजभाषा के सबध मे यह प्रावधान सुझाया कि राज्यो के लिए उस क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा या भाषायें अथवा हिन्दी जैसा भी वहा का विधान मंडल कानून बनाकर तय करे, राजभाषा रहे, तथा सघ के सरकारी प्रयोजनो के लिए देवनागरी लिपि मे लिखित हिन्दी राजभाषा हो, अन्तर्राज्यीय पत्र-व्यवहार मे तथा केन्द्र और राज्यों के बीच होने वाले पत्र-व्यवहार मे संघ की राजभाषा हिन्दी का प्रयोग हो। प्रारंभ के पद्रह वर्षों मे सघ—कार्यों मे अग्रेजी का स्थान पूर्ववत् बना रहना था और जनवरी १९६५ के बाद उन विशिष्ट कामों मे ही उसका प्रयोग हो सकता था जो संसद द्वारा बने कानून मे निर्धारित किए जाए।

इस प्रारूप पर विचार-विमर्श होने के बाद इसे १४ सितम्बर, १९४९ को सविधान सभा ने बिना मत-विभाजन के स्वीकार कर लिया। १४ सितम्बर, १९४९ का यह निर्णय ऐतिहासिक निर्णय था। यह दिन हिन्दी के लिए ही नही, सभी भारतीय भाषाओ के लिए चिरस्मरणीय है। इस निर्णय के अनुसार प्रशासन के सभी क्षेत्रो मे केवल हिन्दी ही नही सभी अन्य भारतीय भाषाओ को भी अपना महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करना है। राज्यो मे यह स्थान सबधित क्षेत्र की भाषाओ को और केन्द्र में तथा अन्तर्राज्यीय कार्य व्यवहार के लिए हिन्दी को यह स्थान प्राप्त करना है।

उक्त प्रारूप कुशल तथा अनुभवी प्रशासक श्री एन० गोपाल स्वामी आयगर ने तैयार किया था संविधान सभा के अधिकाश सदस्य इसके पक्ष मे थे, कुछ सदस्य इसके कुछ पहलुओं के बारे में भिन्न मत रखते थे, जैसे अंग्रेजी का प्रयोग जारी रखने की अनुमति १५ वर्ष के लिए दी जाए अथवा उससे कम अवधि के लिए, राजभाषा का नाम हिन्दी हो अथवा हिन्दुस्तानी, अंक देवनागरी के रहे अथवा अन्तर्राष्ट्रीय रूप के। इन विकल्पों से सबधित संशोधन स्वीकृत नही हुए और प्रारूप मूल रूप में अपना लिय गया।

१४ सितम्बर, १९४९ के उस निर्णय और सविधान के अनुच्छेद ३४३ तथा ३४५ के अनुसार हिन्दी संघ की तथा हिन्दी-भाषी राज्यो की राजभाषा है। राजभाषा अधिनियम १९६३ के अनुसार अग्रेजी का प्रयोग हिन्दी के साथ-साथ किया जा सकता है, पर हिन्दी को हटा देने की वात किसी भी स्तर पर नही सोची गयी।

१४ सितम्बर को "हिन्दी दिवस" मनाते समय इस दिन के ऐतिहासिक महत्व पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि हिन्दी-भाषी राज्यो का सारा काम तथा केन्द्रीय सरकार का अधिकाश कामकाज, विशेषत: हिन्दी-भाषी क्षेत्रो में, हिन्दी मे हो।

राजभाषा अधिनियम के प्रावधान

राजभाषा अधिनियम १९६३ के अंतर्गत जो नियम १९७६ मे बने हैं उसके अनुसार केन्द्रीय सरकार के विभिन्न विभागों, सरकारी उपक्रमो, राष्ट्रीयकृत बैंको आदि का काफी कामकाज हिन्दी मे होना अपेक्षित है। हम सबका कर्तव्य है कि इन नियमो को भली-भाति समझें और उनके कार्यान्वयन मे अपना योगदान दें। इन नियमो के प्रमुख प्रावधान निम्नलिखि है :—

(१) केन्द्रीय सरकार के कार्यालयो से हिन्दी-भाषी राज्यो को (जिन्हे "क" क्षेत्र के राज्य कहा जाता है) या ऐसे राज्यो मे किसी भी व्यक्ति को, पत्रादि हिन्दी मे भेजे जाएंगे। यदि किन्ही असाधारण दशाओ मे कोई पत्र उन्हे अंग्रजी में भेजा जाए तो उसके साथ-साथ उसका हिन्दी अनुवाद भी भेजा जाएगा।

(२) केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से पजाब, गुजरात महाराष्ट्र, राज्यो और चंडीगढ़, अडमान निकाबार द्वीपसमूह के प्रशासनों को (जिन्हे 'ख' क्षेत्र कहा गया है) पत्र आदि हिन्दी मे भेजे जाएंगे। यदि उन्हें भी कोई पत्र अंग्रेजी मे भेजा जाएगा तो साथ-साथ उसका हिन्दी अनुवाद भी भेजा जाएगा। इन राज्यो के किसी व्यक्ति को भेजे जाने वाले पत्र हिन्दी या अंग्रेजी मे भेजे जा सकते है। अन्य राज्यो (जिन्हें "ग" क्षेत्र कहा गया है) की सरकारों या व्यक्तियो को पत्र अग्रेजी मे भेजे जाएंगे।

(३) केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग और दूसरे मंत्रालय या विभाग के बीच पत्राचार हिन्दी या अग्रेजी मे हो सकता है। लेकिन केन्द्रीय सरकार के मत्रालय/विभाग और "क" क्षेत्र मे स्थित सलग्न और अधीनस्थ कार्यालयो के बीच पत्राचार सरकार द्वारा निर्धारित अनुपात मे हिन्दी मे होगा। वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार यह अनुपात ६६.६ प्रतिशत निर्धारित किया गया है।

(४) "क" क्षेत्र में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयो का परस्पर पत्राचार हिन्दी में होगा।

(५) केन्द्रीय सरकार के 'ख' तथा 'ग' क्षेत्रों में स्थित केन्द्रीय सरकारी कार्यालय पत्राचार हिंदी अथवा अग्रेजी में हो सकता है।

(६) हिंदी मे प्राप्त हुए पत्रों के उत्तर हिंदी में ही दिए जाएंगे। यदि आवेदन, अपील या अभिवेदन हिंदी मे किया जाए या उसमें हिंदी में हस्ताक्षर किए जाएं तो उनका उत्तर भी हिंदी में दिया जाएगा।

(७) राजभाषा अधिनियम १९६३ की धारा ३ (३) के अनुसार संकल्पो, अधिसूचनाओं, समान्य आदेशो, रिपोर्टों, लाइसेंसों, परमिटो, सविदाओ, करारों, टेंडर नोटिसो तथा प्रेस विज्ञप्तियो आदि मे हिंदी और अंग्रेजी दोनो ही भाषाओ का प्रयोग जरूरी है। ऐसे दस्तावेजो पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्ति का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह यह सुनिश्चित कर ले कि ऐसे दस्तावेज हिंदी-अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में जारी किए जाते हैं या तैयार किए जाते हैं।

(८) केन्द्रीय सरकार का कोई कर्मचारी जिसे हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान है किसी हिन्दी दस्तावेज का अंग्रेजी अनुवाद सामान्यतः नहीं मांगेगा।

(९) केन्द्रीय सरकार का कोई कर्मचारी किसी फाइल पर अपनी टिप्पणी हिन्दी में या अंग्रेजी में लिख सकेगा और उससे यह अपेक्षा नही की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करे।

(१०) जिन व्यक्तियों ने डिग्री स्तर तक हिन्दी एक विषय के रूप मे पढ़ी है अथवा मैट्रिक परीक्षा हिंदी माध्यम से पास की है, उन्हें हिंदी में प्रवीणता प्राप्त व्यक्ति माना जाएगा और अधिसूचित कार्यालयों में उन्हें यह आदेश दिया जा सकेगा कि वे अपना सारा अथवा कुछ विशिष्ट काम हिंदी में ही करे।

(११) जिन कार्यालयों में ८० प्रतिशत अथवा उससे अधिक कर्मचारी हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखते हैं उनके नाम गजट में अधिसूचित कर दिए जाएंगे।

(१२) केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबधित सभी मेनुअल, संहिताएं तथा अन्य प्रक्रिया संबंधी साहित्य हिंदी और अंग्रेजी दोनों में द्विभाषिक रूप मे तैयार किया जाएगा। सभी फार्म और रजिस्टरों के शीर्ष, नामपट्ट, सूचनापट्ट तथा स्टेशनरी आदि की अन्य मदें हिंदी और अग्रेजी में होंगी।

(१३) प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक अध्यक्ष का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह यह सुनिश्चित करे कि राजभाषा अधिनियम और उन नियमो का समुचित रूप से अनुपालन किया जाता है।

हमारा दायित्व

हम अपने विभाग या प्रतिष्ठान में बडे पद पर हों या छोटे पद पर, यदि सभी यह निश्चय करें कि मेरे माध्यम से होने वाला काम हिन्दी में होगा, हिन्दी में काम करने की शुरूआत के लिए मैं दूसरे का मुंह नही ताकूंगा, उसकी पहल स्वयं करूंगा, तब थोड़े समय में ही भाषा संबन्धी वातावरण बदलता नजर आएगा और हमारा "हिंदी दिवस" मनाना सार्थक होगा।

वेदोक्त यज्ञ संस्कृति : स्वरूप और भावना

—डा० सत्यकाम वर्मा कुलपति गुरुकुल विश्वविद्यालय—

प्राय : यज्ञ को वदिक संस्कृति का मूलाधार कहा जाता है। यज्ञ से ही इस सृष्टि की उत्पत्ति बताई जाती है। परम चेतन तत्व पुरुष को भी अनवरत एक यज्ञ क्रिया में रत बताया गया है। 'पुरुष' और 'प्रकृति' के बीच आदान-प्रदान इसी यज्ञ के माध्यम से होता है। जीवात्मा या शरीरी पुरुष का तो जीवनाधार ही इस यज्ञ प्रक्रिया पर स्थित है। वास्तव में जीवन स्वयं ही एक यज्ञ है और ऋग्वेदादि में तो यज्ञ को समस्त प्रवर्तमान सृष्टि की 'नाभि' कहा गया है।

यह 'यज्ञ' क्या है और इसकी मूल भावना क्या है ?

'पुरुष' और 'यज्ञ'

ऋग्वेद के दशम मण्डल के पुरुष सूक्त (10.90) और यजुर्वेद एवं अथर्ववेद में उसके पुन: पठित रूप मे यज्ञ को प्रकृष्टतम देवो का प्रथम धर्म बताते हुए कहा गया है कि सृष्टि प्रकिया के रहस्य को जानने की इच्छा से देवो ने एक यज्ञ का आयोजन किया। उसमें उन्होने अपनी परिज्ञात सभी ज्ञानसामग्री की आहुति देनी आरम्भ की। यही उनका सर्वहुत यज्ञ था। इस यज्ञ में उन्होने सर्वव्याप्त परम पुरुष तक को 'आहुति' के रूप मे प्रयुक्त किया। किन्तु परम आश्चर्य की बात है कि इस ज्ञानयज्ञ या सृष्टियज्ञ में जो तत्व उभरकर सर्वप्रथम उनके सामने आया वह यही सर्वव्यापक 'पुरुष' तत्व ही था। ज्योंही उन्होने इसका विचार आरंभ किया, उन्हे यह व्यापक से व्यापकतर होता दिखाई दिया। यहां तक कि भूत-वर्तमान-भविष्य की समस्त प्रक्रियायो मे सर्वत्र यही तत्व व्याप्त दिखाई दिया। उन्होंने इस यज्ञ मे ही यह पहचाना कि समस्त सृष्टिरचना इस पुरुष के माध्यम से ही होती है। ऋतु, काल, लोक-लोकान्तर, प्राणिमात्र, सभी ज्ञानप्रकार, आदि का आविर्भाव इसी परम चेतन के उदर में ही अथवा उसमें से ही होता है। प्रकृति का अचेतन रूप इसके उदर के भीतर ही इससे सक्रियता और प्रेरणा ग्रहण करके विविध निर्माण में लगता है। विस्तार की दृष्टि से यदि इस भौतिक ससार का अस्तित्व एक चौथाई माना जाए तो इसे परिव्याप्त करने वाला परम चेतन तत्व 'पुरुष' इससे चार गुना विस्तार का कहा जा सकता है। उसके केवल एक-चौथाई विस्तार के भीतर यह निर्मित संसार स्थित है। अन्यथा उसका तीन-चौथाई भाग तो निर्माण में बिना प्रवृत्त हुए केवल दिव्य रूप में ही स्थित रहता है। अत यह कहा जा सकता है कि पुरुष मे और पुरुष से ही यह सब संसार या सृष्टि प्रसृत होती है और वह स्वयं ही इस सृष्टि में प्रमुखतम तत्व के रूप में प्रधान बनकर प्रकट होता है। इसीलिए यह पुरुष स्वयं ही यज्ञ है, यही इस सर्वहुत यज्ञ का कर्ता है, और वह स्वयं ही इस यज्ञ-प्रक्रिया का उद्देश्य है।

दूसरे शब्दो में : यह समस्त सृष्टि इस परम चेतन तत्व के परम विस्तार के भीतर ही सदा एक अनवरत प्रक्रिया के रूप में चलती रहती है। यह चेतन तत्व ही इसका प्रवर्तक है और यह स्वयं भी इस यज्ञ के परिणाम या उद्देश्य के रूप में विद्यमान रहता है। अर्थात् — उन देवो ने जो यह सर्वहुत यज्ञ किया इसमे साध्य भी यज्ञमय यह पुरुष ही था, साधक भी और साध्य भी।

यज्ञ: भुवन की नाभि

क्योंकि यज्ञ को ही सृष्टि-प्रक्रिया का प्रतीक माना गया है अत: यज्ञ को भुवन की नाभि के रूप मे भी कहा गया। उधर एक अन्य मन्त्र मे विष्णु को, तथा एक और मन्त्र मे 'सूर्य' को, भुवन की नाभि कहा गया। इस प्रकार यज्ञ 'विष्णु' अर्थात् परम चैतन्य, परम पुरुष, एव विश्वव्याप्त प्रकाश के प्रतीक 'सूर्य' का प्रतिनिधि ठहरता है। सविता के रूप मे सूर्य को समस्त प्रेरणा और गति का स्रोत माना गया है : गतिविधि के प्रेरक के रूप मे : अत. यज्ञ स्वयं सब प्रकार की क्रियाशीलता का प्रतिनिधि और स्रोत कहा जा सकता है। क्योकि यह क्रियाशीलता ही जीवन का पर्याय है, अत: यज्ञ ही स्वयं जीवन का आधार भी है और जीवन का पर्याय भी। इसीलिए भौतिक रूप में उसी सृष्टि यज्ञ के प्रतीक रूप मे यज्ञाग्नि द्वारा सम्पादित किये जाने वाले वेद मन्त्राश्रित इस यज्ञ को वेदानुयायी जनों ने मानव जीवन के लिए एक शाश्वत और नित्य धर्म का स्तर दिया : तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

अत: यज्ञ केवल ईश्वरोपासना की दृष्टि से विहित नहीं किया गया है। उसके लिए तो सन्ध्यादि का नियम विधान है ही। यज्ञ को तो व्यक्ति-जीवन और समष्टि-जीवन के बीच एक कड़ी के स्मृति-चिन्ह के रूप में विहित है। अर्थात् यज्ञ व्यष्टि चेतना को निरन्तर स्मरण कराता रहता है कि वह समष्टि चेतना का ही एक अंग है। अत: उसे समष्टि चेतना को सदा ध्यान में रखकर ही—अर्थात् सार्वभौम जीवन को ध्यान मे रखकर ही अपना जीवन यापन करना चाहिए। यज्ञ यही याद दिलाता है कि जिस प्रकार वह परम चैतन्य इस समस्त सृष्टियज्ञ को चलाता है, उसी प्रकार हम भी यज्ञ के द्वारा अपने जीवन-यज्ञ को प्रज्वलित और क्रियारत रखते रहें। जीवन भले ही हम व्यष्टि रूप मे जीते हों, किन्तु एक प्रक्रिया के रूप मे समस्त सृष्टि में जीवन विशाल प्रक्रिया का नाम है।

यज्ञ : तीन मुख्य लक्षण

वैदिक आर्यों की यह मूल भावना इस बात से स्पष्ट होती है कि उन्होंने यज्ञ मे तीन प्रतिज्ञाओ या वायदों का समावेश किया। ये तीन वायदे थे : (1) इदं न मम, (2) सर्वं वै पूर्णं स्वाहा, और (3) द्विपदे चतुष्पदे। इन्ही तीनों को केन्द्र बनाकर सम्पूर्ण वैदिक संस्कृति प्रवर्तित है।

(1) इदं न मम—इसका शाब्दिक अर्थ है—'यह जो कुछ है, यह केवल मेरा नही है, समष्टि जीवन को ही एक पूर्ण इकाई मानने वाला व्यक्ति अपने एकाकी जीवन को पूर्ण इकाई कैसे मान सकता है। फिर वह यह भी जानता है कि 'यह जो सब कुछ है एक ही ईश्वर' या परम चैतन्य से व्याप्त एव उसकी देन है। इस पर उस सब का अधिकार है, जिसका प्रवर्तन उस परम चैतन्य के कारण हुआ है। इसीलिए ईशोपनिषद् के प्रथम वेद-मन्त्र मे कहा गया—'त्यागपूर्वक भोग करो।' यही बात 'इदं न मम' में भी कही गई है। अर्थात्, जो आहुति आदि मैंने दी है, उस पर केवल मेरा ही अधिकार नही है। मेरी सम्पदा या आहुति में सभी प्राणिमात्र समान रूप से भागीदार और अधिकारी हैं। अत यज्ञ व्यक्ति द्वारा निष्पादित होकर भी समष्टि चेतना के प्रति उसके मौलिक कर्त्तव्य को याद दिलाने एवं उस सम्बन्ध को पुनरुज्जीवित करने का एक माध्यम है। भौतिक साम्यवाद की अपेक्षा यह चैतन्याधारित साम्यवाद का उद्घोषक है—महर्षि-दयानन्द द्वारा प्रतिष्ठापित आर्यसमाज के छठे, नौवें और दसवें नियम का मूलाधार यही भावना है। सर्वहितकारी नियमो का पालन करके ही व्यक्ति के हित का भी निष्पादन हो सकता है।

(2) सर्वं वै पूर्णं स्वाहा—यज्ञ की पूर्णाहुति देते हुए हम इस बात को बार-बार दोहराते हैं कि व्यक्ति जीवन अकेले मे पूर्ण नही है। सम्पूर्ण समष्टि जीवन मिलकर ही पूर्ण बनता है। इस मन्त्राश का ही एक अर्थ यह भी है कि जीवन या सृष्टि प्रक्रिया के केवल एक अग को देख कर ही उसे पूर्ण न समझे बल्कि चारो ओर व्याप्त सम्पूर्ण जीवन को एक समग्र इकाई मानकर ही पूर्णतामय जीवन या जीवन की पूर्णता का आभास और ज्ञान पा सकते हैं। इसका ही एक अर्थ यह भी है कि उस परम चैतन्य या परम पूर्ण पुरुष की जो भी कृति है, वह स्वयं में अपूर्ण या अधूरी नही है, बल्कि वह भी उस पूर्ण की भांति स्वत पूर्ण है। अत. किसी भी प्रक्रिया या जीवनाश को अपूर्ण न मानकर उसमे से ही झलकने वाली पूर्णता को देखने का प्रयास करना चाहिए। इस प्रकार यज्ञ हमे व्यष्टि जीवन के सीमित दायरे से निकाल कर एक बृहत्तर पूर्णता से साक्षात्कार कराने का माध्यम बनता है।

(3) द्विपदे-चतुष्पदे—यज्ञ के जो पाच भेद भारतीय परम्परा मे स्वीकार किये गए हैं वे भी व्यष्टि और समष्टि जीवन मे इसी ऐक्य का स्मरण कराने वाले हैं। अतिथि यज्ञ एवं बलिवैश्वदेवयज्ञ व्यक्ति के समाज के प्रति तथा प्राणिमात्र के प्रति कर्त्तव्य को सूचित करते हैं। केवल ब्रह्मयज्ञ या सन्ध्योपासन ही उसकी व्यक्ति निष्ठा का द्योतक कहा जा सकता है। 'दो पाये और चौपाये' को बहुधा साथ-साथ ही स्मरण किया गया है। शान्ति कामना करते हुए भी 'शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे' कहा गया है। रुद्र से प्रार्थना करते हुए भी 'विश्वं पुष्टमस्मिन् ग्रामे अनातुरम्' कहा गया है। अर्थात्, हमारे प्राणिसमुदाय मे सभी प्राणिमात्र पुष्ट एवं नीरोग हो। सच तो यह है कि 'भूः, भुव. और स्व. की तीन महाव्याहृतियो से आरम्भ होने वाला यज्ञ समस्त ब्रह्माण्ड की आधिभौतिक, आधिदैविक एव आध्यात्मिक कल्याण कामना से प्रेरित होता है—अर्थात् पृथिवीतत्व, अन्तरिक्षतत्व एवं बाह्याकाशतत्व की मगल कामना एवं उसमें हो रही समस्त क्रिया का प्रतिनिधित्व इस यज्ञ के द्वारा ही होता है। और इसी उद्देश्य को पूर्णाहुति के भी बाद 'ओ३म् द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष शान्ति.'··· आदि के द्वारा कहा गया है। वहा शान्ति का अर्थ उपद्रवहीनता ही नही है, बल्कि सर्वविध कल्याण भी है।

वैदिक संस्कृति प्रतिनिधि : यज्ञ

इसीलिए वैदिक संस्कृति जब यज्ञ पर बल देती है, तब वह जीवन की सबसे बड़ी सच्चाई को जानने और समझने पर बल देती है। इसके माध्यम से वह प्रकृति और परमात्मा तथा जीव के परस्पर संबंध को समझने मे समर्थ बनाती है—तथा यज्ञ के द्वारा वह मनुष्य को एक छोटे से देह की सीमाओ से बन्धन मुक्त करके उसे सान्त से अनन्त, मरणधर्मा से अमृत (या अमरणधर्मा), अन्धकार ग्रस्त से सर्वत: प्रकाशित बना देती है। यही है वह यज्ञादर्श जिसे इन तीन अमर वाक्यो मे यों कहा गया है—असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, और मृत्योर्मा अमृतं गमय। इसीलिए सत्य, अमरता और ज्योति के प्रतीक 'अग्नि' को यज्ञ का माध्यम और केन्द्र बनाया गया है।

अग्नि: माध्यम

'अग्नि' को माध्यम बनाने का कारण आरम्भिक प्रकरण से ही स्पष्ट हो जाना चाहिए। फिर भी यह स्पष्ट कर देना उचित होगा कि अग्नि मूलत क्रिया, ऊर्जा, ताप, प्रकाश और गति का प्रतीक है। भारतीय वैदिक परम्परा तो इसे सृष्टि ऊर्जा के प्रतीक के रूप मे स्वीकार करती है। एक ओर जहां इसी सृष्टि ऊर्जा के तीन भौतिक रूप—पार्थिव अग्नि,

(शेष पृष्ठ ७ पर)

विशेष लेखमाला(७)

ऋषि के भाई-बहन व चाचा के नामों के विषय में भ्रम-निवारण

ले०-प्रो० दयाल जी भाई,
संशोधक—डा० भवानीलाल भारतीय

ऋषि की प्रारम्भिक जीवनी

श्रीकृष्ण शर्मा ने जिस प्रकार ऋषि की माता के नाम की कल्पना की उसी प्रकार उन्होने ऋषि के भाई-बहन व चाचा के नाम की भी कल्पना की है। इस सम्बन्ध मे वे अपनी पुस्तक में लिखते हैं—'महर्षि के आत्म-चरित में लिखा है कि मुझसे छोटी एक बहिन (रत्नबा), फिर उनसे छोटा एक भाई, फिर एक बहन (प्रेमबा) और एक भाई (नबल शंकर) हुए थे। अर्थात् दो भाई और दो बहन थे। कोष्ठक के अन्दर जो नाम लिखे हैं वे मैंने पता लगाकर लिखे हैं, वे महर्षि द्वारा बतलाए गए नहीं हैं' (महर्षि का वश परिचय)। शर्मा जी का यह वाक्य अर्ध-सत्य है, क्योकि ऋषि के एक भाई का नाम वल्लभ जी तथा एक बहन प्रेमबाई के नाम का पता स्वयं देवेन्द्र बाबू ने लगाया था। किन्तु करसन जी की अन्य दो सन्तानों के बारे में उन्होने यही लिखा था कि दूसरे के नाम का पता नहीं चल सका।

यहां हम यह भी पूछना चाहते हैं कि रत्नबा तथा नवलशंकर इन नामों का पता शर्मा जी को कैसे लगा, कहा से लगा, इसका आधार क्या है? इस सम्बन्ध में उन्होने कही कुछ विवेचना नही की। यहा यह भी ध्यातव्य है कि रत्नबा तथा प्रेमबा आदि नाम जिनके पीछे 'बा' लगा है, सौराष्ट्र की परम्परा के अनुसार गलत हैं। सौराष्ट्र में गरासिया, क्षत्रिय जाति में पुरुषों के नाम के पीछे 'भा' या 'सिह' लगाया जाता है उसी प्रकार स्त्रियो के नाम के पीछे 'बा' लगाने का प्रचलन है, किन्तु ब्राह्मणो मे यह प्रथा नहीं है। वहाँ स्त्रियो के नाम के पीछे बाई लगाया जाता है। बगाली होते हुए भी देवेन्द्र बाबू को इस बात का ज्ञान था। इसीलिए उन्होने स्वग्रन्थ में प्रेमबाई, मोंघीबाई तथा वेणीबाई आदि नाम सौराष्ट्र की प्रथा के अनुसार ही लिखे हैं। भाई और बहन के नामो की ही भाति शर्मा जी ने स्वामी जी के चाचा के नाम की भी कल्पना की है। इस प्रसंग मे वे लिखते हैं—लालजी तिवारी के दो पुत्र थे। बड़े श्री माव जी और छोटे करसन जी। यह मावजी नाम उन्होंने किस आधार पर लिखा और ये करसन जी के बडे भाई थे यह भी उन्होने कैसे जाना, इस सब का कोई सकेत शर्मा जी ने नही दिया न इसका आधार ही प्रकट किया है। अत: यही कहा जा सकता है कि या तो यह नाम सुनकर लिखे गए हैं अथवा कल्पना के आधार पर लिखे गए हैं। मात्र किवदन्ती को ऋषि जीवनी जैसे ऐतिहासिक विषय में स्वेच्छानुसार जोड देना उचित नहीं है।

यह सकेत करना इसलिए आवश्यक है कि आर्यजगत् के सभी विद्वानों को इस सम्बन्ध मे सावधानी बरतनी चाहिए। मेरे कथन का सार इतना ही है कि श्रीकृष्ण शर्मा ने इन नामो के लिए कोई प्रमाण या आधार नही बताया।

श्रीकृष्ण शर्मा ने अपनी पुस्तक मे कुछ अन्य कल्पनाए भी की हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं—(1) जीवा मेहता टंकारा के नगराध्यक्ष थे तथा प्रभाशंकर पोपटलाल का भाई था। इन दोनों भ्रमों का निवारण हम कर चुके हैं। शर्मा जी ने लालजी तिवारी को डोसा जी का लघु भ्राता बताया है। वास्तव में लालजी डोसा जी के पुत्र थे। शर्मा जी ने यह भी कल्पना की है कि करसन जी के श्वसुर का नाम भीमजी था जो एक पुजारी थे और मोरवी मे रहते थे। उनकी यह कल्पना भी मिथ्या है कि मूलशंकर का जन्म अपने नाना के घर मोरवी में हुआ था। वस्तुत श्रीकृष्ण शर्मा ने यह पुस्तक पण्डित युधिष्ठिर जी की पुस्तक 'ऋषि दयानन्द का भ्रातवश और स्वसृवंश' के खण्डन मे लिखी थी। परन्तु वे कर नहीं पाए, क्योंकि बिना शोध किए ही उन्होने लिख दिया कि विश्रामजी के पौत्र का नाम करसन जी था। वास्तव में यह विश्रामजी जी का पुत्र था। इस प्रकार के और भी कई गलत अनुमान कर उन्होने ऋषि जीवनी जैसे ऐतिहासिक विषय मे नाना प्रकार के भ्रम और विवाद उत्पन्न किए हैं। शर्मा जी की भूलों का कुछ नमूना हम आगे भी सायला के प्रसंग मे देखेंगे। मेरा प्रयोजन उनकी पुस्तक की समालोचना करना नही है; केवल विषय से सम्बन्धित प्रसंगो के सम्बन्ध में शर्मा जी द्वारा उत्पन्न किए भ्रमों का निवारण करना ही है।

इस प्रसंग को समाप्त करने से पूर्व यह लिख देना आवश्यक है कि श्रीकृष्ण शर्मा तो पोपटलाल के समकालीन थे और उन्हें जानते भी थे। फिर भी यह आश्चर्य होता है कि वे पोपटलाल के दो नाम विषयक तथ्य को नही जानते थे। जब समकालीन व्यक्ति के सम्बन्ध में इतना अज्ञान हो सकता है तो सौ, सवासौ वर्ष पूर्व के ऋषि के नाना, माता, भाई-बहन और चाचा आदि के नामों के विषय मे उनको तथ्यात्मक भ्रम हो सकता है? यों तो ऋषि ने अपनी आत्मकथा में यह भी लिखा था कि 'मेरे पिता ने मुझ से कहा कि अगले वर्ष में तेरा विवाह भी होगा क्योंकि लड़की वाले नही मानते।' यदि शर्मा जी की कल्पनाशक्ति प्रबल हो जाती तो वे उक्त कथन के आधार पर मूलशंकर की वाग्दत्ता लड़की का नाम, उसके पिता और गाँव का नाम आदि भी कल्पित कर लेते और आर्यसमाज मे इन नामो को आँख मूंद कर स्वीकार कर लिया जाता। यह हमारे लिए दुर्भाग्य की बात है कि ऋषि जीवनी पर जिसने जैसा चाहा उसने वैसा लिख दिया। इसीलिए किसी ने संशोधन के नाम पर, तो किसी ने अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए, तो किसी ने अपने अज्ञानवश तथा किसी अन्य ने अपनी धारणा अथवा कल्पना के बल पर अप्रमाणिक, असत्य और अविश्वसनीय बातों को जीवनी मे मिला दिया है। इस पर किसी का नियन्त्रण भी नही है। (क्रमशः)

पता—5 A आयुर्वेद कालोनी जामनगर (गुजरात)

हिन्दी का सम्मान कैसे करें

—डा० वेद प्रकाश—

हम राष्ट्रभाषा हिंदी का सम्मान कैसे करे? इसके लिए—

(१) प्रदेशो की सरकारों को अपने राजकाज की भाषा हिंदी बना देनी चाहिए। उर्दू को द्वितीय राजभाषा नही बनाया जाना चाहिए।

(२) हिन्दी प्रदेश के सभी विद्यालयो में हिंदी-माध्यम से ही शिक्षा दी जानी चाहिए। अंग्रेजी को कक्षा छह से ऐच्छिक विषय के रूप मे पढाया जाए।

(३) सम्पूर्ण देश में पहली कक्षा से बारहवी कक्षा तक हिंदी व संस्कृत अनिवार्य विषयो के रूप में पढ़ाई जानी चाहिए।

(४) विज्ञान, वाणिज्य आदि की शिक्षा भी हिन्दी मे ही दी जानी चाहिए। इन विषयों के विद्वान् परिश्रमपूर्वक सरल हिंदी में इनकी पाठ्य-पुस्तके तैयार कर सकते है।

(५) हिन्दी में वार्तालाप करते समय हमें अंग्रेजी के शब्दो का प्रयोग नही करना चाहिए।

(६) अखिल भारतीय परीक्षाएं तथा साक्षात्कर हिन्दी में ही होने चाहिए।

(७) हमें अपने निमन्त्रण-पत्र, बधाई-पत्र, तिथि-पत्रक, धन-प्राप्ति पुस्तिका (रसीद बही), परिचय-पत्र, बस्तुओ के नाम व उनके विवरण हिन्दी (देवनागरी लिपि) में ही प्रकाशित कराने चाहिए।

(८) हमे अपनी दुकानों, कार, मोटर, स्कूटर, मोटर साईकिल आदि तथा अपने नामपट्ट हिन्दी (देवनागारी लिपि) में ही लिखवाने चाहिए।

(९) हमें अपना नाम सदैव पूरा व शुद्ध हिन्दी में ही लिखना चाहिए, आधा-अधूरा नही।

(१०) हमें अपने हस्ताक्षर, दिनाक, संख्या, पता आदि सभी कुछ हिन्दी (देवनागरी लिपि में) लिखने चाहिए।

(११) अध्यापको को उपस्थिति हिन्दी में लेनी चाहिए तथा विद्यार्थियो से भी हिन्दी में बुलवानी चाहिए।

(१२) हमें अपने नगरो, भवनो, मार्गों, चौराहों, बाजारों, स्मारको, आदि के नाम शुद्ध हिन्दी में ही रखने चाहिए।

(१३) विद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के सभी कार्य हिन्दी में होने चाहिए।

(१४) हमें बच्चों से मम्मी-पापा के स्थान पर माताजी-पिताजी, तथा अंकल-आण्टी के स्थान पर चाचा-चाची, ताऊ-ताई, मामा-मामी, फूफा-बुआ आदि ही कहलवाना चाहिए।

(१५) बच्चों से भूलकर भी टाटा व बॉय-बॉय न कहलवाएं और न स्वयं कहे। उनके मिलते-बिछड़ते समय, उनसे सदैव हाथ जोड़कर नमस्ते या प्रणाम ही कहलवाएं।

(१६) हिन्दी के चलचित्रों के नाम, विज्ञापन हिन्दी में ही होने चाहिए, अंग्रेजी में नहीं।

(१७) दूरदर्शन पर हिन्दी के कार्यक्रमो की सूचना शुद्ध हिन्दी में ही दी जानी चाहिए, अंग्रेजी की खिचड़ी में नहीं।

(१८) हिन्दी के समाचार-पत्र-पत्रिकाओ की भाषा शुद्ध हिन्दी होनी चाहिए।

(१९) हिन्दी के व्यवहार एवं प्रचार-प्रसार के लिए सभी नगरों में समितियो या हिन्दी सेवी संस्थाओं का गठन, हिन्दी की उपेक्षा के विरोध में जन-सभाओं का आयोजन तथा प्रदर्शन होने चाहिए।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि हम सभी मिलकर उपर्युक्त ढंग से हिन्दी का प्रयोग तथा उसके प्रति उपेक्षा को रोकने का कार्य करें तो हमारी राष्ट्रभाषा, हमारी संस्कृति और हमारा भारत तीनों समृद्ध होंगे।

पता—४६८ ब्रह्मपुरी, मेरठ (उ.प्र.)

९२ वर्ष के वृद्ध, आर्यसमाज के पितामह श्री अमर स्वामी जी महाराज ने, जो हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के प्रमुख सेनानी थे, अपने हृदय की मर्म व्यथा इस लघुलेख में अंकित की है। आश्चर्य है, अदने से अदने कांग्रेसी ठप्पे वाले जेलयात्री तो स्वतन्त्रता सेनानी बन गए और जिन आर्य सत्याग्रहियों ने निजाम के छक्के छुड़ाकर उस रियासत के भारत में विलय का मार्ग प्रशस्त किया, वे आज तक वैसे ही उपेक्षित हैं जैसे अंग्रेजों के राज में थे। राष्ट्रद्रोही मोपलाओं को स्वतन्त्रता सेनानी मानने वाली सरकार यदि अब भी राष्ट्रभक्तों और राष्ट्रद्रोहियों में अन्तर नहीं पहचानती, तो एक दिन राष्ट्रद्रोही ही उस पर हावी हो जाएंगे पर 'तब पछताए होत क्या ...'!

आखिरी वक्त में क्या खाक मुसलमां होंगे ?

—श्री अमर स्वामी सरस्वती—

सन् 39 में हैदराबाद सत्याग्रह 'निजाम की तानाशाही' के विरुद्ध हुआ था। वह न किसी सम्प्रदाय के विरुद्ध था न किसी एक सम्प्रदाय के पक्ष में था।

मेरे गले में—पुस्तकों के समान आकार के चार थैलों में चार पुस्तकें थीं—[1] यजुर्वेद [2] गीता [3] पंजग्रन्थी (सिक्खों की पुस्तक) [4] कुरान। हमारा 528 सत्याग्रहियों का दल गुलबर्गा मे सत्याग्रह करता गिरफ्तार किया गया था। प्रत्येक व्यक्ति के पृथक्-पृथक् बयान लिखाये गये थे। मुझसे पूछा गया—आपने सत्याग्रह क्यों किया ?

मैंने उत्तर दिया—वेद मुकद्दस, भगवद्गीता, ग्रन्थ साहिब और कुरान शरीफ को स्वतन्त्र कराने के लिए मैंने सत्याग्रह किया।

मजिस्ट्रेट ने मेरा बयान लिखा—

वेद मुकद्दस, गीता, पंजग्रंथी और धर्म शरीफ को आजाद कराने के लिए।

मुझको कहा—अपने बयान पर दस्तखत करिये!

मैंने कहा—धर्मशरीफ नहीं, कुरान शरीफ, लिखिये।

मजिस्ट्रेट ने कहा—आपका कुरान शरीफ से क्या ताल्लुक है ? मैंने कहा—मेरा हर मजहबी किताब से ताल्लुक है। आप कुरान शरीफ लिखियें। मैं तब दस्तखत करूंगा।

मजिस्ट्रेट ने कुरान शरीफ लिखा, मैंने तब दस्तखत किये।

जूते और कपड़े हमारे जेल की ड्योढ़ी मे जमा हो गये। पुस्तकें मैंने नहीं दी वह अपने पास ही रक्खी।

एक घड़ी और एक सोने की अंगूठी 8 माशे की शोलापुर सत्याग्रह के दफ्तर मे जमा करा दी थी। जेल में जो जमा था वह वहां से छूटने पर मिल गया। सत्याग्रह के दफ्तर में जो जमा था वह कुछ भी न मिला। सारी आयु मे वही एक सोने की अंगूठी बनी थी वह भी गिन्नी दक्षिणा मे मिली थी, सो भी गई। जेल मे मुझको तोला गया। मेरा भार पूरे दो मन था। भाई साहिब कु० सुखलाल जी का भार डेढ़ मन से भी कम था, इसलिये उनको 'मामूली मशक्कत' दी गई। मेरा भार बहुत था इसलिये 'सख्त मशक्कत' दी गई।

ज्येष्ठ का महीना था जूते हमारे छीन लिये गये थे। जेल से दो मील दूर तक गर्म रेत में दोपहर को नगे पाव ले जाकर पुलिस लाइन जंगल मे बई बन रही थी वहां हम 80 सत्याग्रहियो को फावड़े से मिट्टी खोदने का काम दिया गया। हमारे साथ अलीपुर जिला मुजफ्फरगढ़ के श्री मनोहर लाल जी 'शहीद, वकील प्रसिद्ध शायर थे। महाशय सत्यपाल जी भजनोपदेशक थे। गर्म रेत में नंगे पांव चलना पड़ा, नंगे पांव कभी चले नहीं थे उस दिन जितना कष्ट हुआ उतना सारी आयु में कभी नहीं हुआ था।

शिकोहाबाद जिला मैनपुरी उत्तर प्रदेश के छोटेलाल शर्मा तो उसी रात्रि मे मृत्यु के ग्रास हो गये। उनको उस धूप और गर्मी से सनस्ट्रोक हो गया। इस रोग का रोगी अधिक से अधिक 24 घंटे तक ही जी सकता है। उनकी मृत्यु 12 घंटे में ही हो गई। मुझको भयकर शिरोभ्रम रोग हो गया। जेल के हस्पताल मे भी कुछ चिकित्सा हुई।

उस समय के प्रायः सभी समाचार पत्रों मे मुझको मृत्यु शैया पर पड़ा हुआ लिखा गया। सिविल हस्पताल मे (जेल से बाहर) भी चिकित्सा हुई वह रोग वर्षों कष्ट देता रहा और भार तो फिर कभी दो मन हुआ ही नही।

इस सत्याग्रह को अब 46 वर्ष हो गये। जिन लोगो ने सत्याग्रह किया था उनमे से कई हजार सत्याग्रही वीर (स्वतन्त्रा सेनानी) मृत्यु का ग्रास हो गये। मेरे जैसे कुछ लोग जो शायद प्रतिशत 10 दश भी नहीं होंगे, अब तक बचे होंगे। मैं भी मृत्यु की ओर दौड़ा जा रहा हू, मेरी आयु इस समय बयानवें वर्ष है।

लोग कहते हैं बुढापे में
नजर आता नहीं।
मुझको तो मौत मेरी
साफ नजर आती है।

अब सुना जाता है कि हैदराबाद के सत्याग्रहियो को 'स्वतन्त्रता सेनानी' माना जाय—इसकी चर्चा चल रही है' उस सत्याग्रह से 8 वर्ष पीछे तक तो अंग्रेजी राज्य रहा। उसने हमको बागी माना। 38 वर्ष से स्वदेशी राज्य है, इसमें जिनके नाम कांग्रेसियों में गिने गये उनको 'स्वतन्त्रता सेनानी' मान लिया गया। उनको पेंन्शन मिलती है।

हैदराबाद का सत्याग्रह एक जालिम हुकूमत के विरुद्ध था जो देश की स्वतंत्रता में हिमालय जैसी बड़ी दीवार थी। उसको गिराने में सत्याग्रहियों का बड़ा बलिदान था। अब तक बहुत से मर गये, बहुत निर्धनता में जी रहे हैं। आगे क्या होगा, पता नहीं। सारी आयु निर्धनता मे कटी। सत्याग्रह से पहले मैं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का प्रतिष्ठित उपदेशक था। सन 31 से 39 तक 'अमर दवाघर' नाम से मेरा औषधालय भी लाहौर मे चलता था। उसको बन्द करके सत्याग्रह मे गया था। आकर फिर खोल न सका।

अब मृत्यु की गोद मे हू।

हलक् में मुर्दे के क्या
दारू उतारा जायगा।'
उम्र सारी तो कटी
इश्के बुतां में मोमिन्।
आखिरी वक्त में क्या
खाक मुसलमा होंगे ?

हमारी शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अब नींद खुली है। सरकार का तो कुछ पता नहीं। उन सत्याग्रहियों में से जो बचे हैं, उनके लिए यदि कुछ सरकार की ओर से हो जाय तो समझना चाहिये कि—बालू मे तेल निकल आया।

श्री पं० ब्रह्मदत्त स्नातक इसके लिए प्रयत्नशील हैं। उनका धन्यवाद है। किमाधिकम्।

पता—वेदमन्दिर, विवेकानन्द नगर गाजियाबाद।

वेदोक्त यज्ञ संस्कृति......

(पृष्ठ ५ का शेष)

अन्तरिक्षीय विद्युत, एवं द्युलोकस्थ सौर ऊर्जा या ब्रह्माण्ड ऊर्जा एक 'अग्नि' के ही विविध रूप हैं, जो भूः भुवः और 'स्वः' के आधार पर विविध परिवेश मे विविध रूप धारण कर लेते हैं, वहां दूसरी ओर इसी त्रिविध अग्नि का मूल उत्स उस चैतन्य मे निहित है, जिसे हम 'आत्मा' के रूप में सृष्टि के कण-कण में और प्राणिमात्र के हृदय मे भी स्थित पाते हैं। वास्तव में उस चैतन्य या परम पुरुष की सक्रियता का ही भौतिक रूप यह त्रिविध अग्नि है, जो भौतिक होने के कारण उत्पत्ति-स्थिति और प्रलय के बन्धन में भी पड़ता है तथा उसका कारण भी बनता है। किन्तु जिस मूल उत्स से यह अपना पूर्वोक्त त्रिविध पाचभौतिक रूप ग्रहण करता है, वह चैतन्य स्वतः उत्पत्ति-स्थिति-प्रलय का प्रेरक या नियन्ता होकर भी स्वतः परम शाश्वत और नित्य रहता है। इसीलिए वह अजन्मा, अनादि, और अनन्त होने के साथ पाँच भौतिक बन्धन से स्वतः मुक्त होने के कारण अकाय, अव्रण, शुद्ध, ज्योतिष्मान् आदि रूप में माना जाता है। अत. स्वयं को अनन्तता की इन विशेषताओ से हीन पाकर 'जीव' या 'शरीरी आत्मा' अपने मूल उत्स को जानने के लिए स्वय भौतिक शरीर में आने पर इस भौतिक अग्नि को ही उस परम चैतन्य का प्रतीक मानकर उसे जानने और पाने का प्रयास करता है।

अतः यज्ञाग्नि को प्रदीप्त करने वाले आर्य को 'अग्निपूजक' लोगों से भिन्न स्तर पर समझने का प्रयास करना चाहिए। जहा हम अग्निपूजकों के लिए 'पागान' या 'अज्ञानी' आदि विशेषणों का प्रयोग करते हैं, वहा यज्ञ संस्कृति को मानने वालो को हम केवल परम वैज्ञानिक ही कह सकते हैं। वे तथाकथित अग्निपूजकों की भांति इस भौतिक अग्नि के प्रकोप से भयभीत होकर [illegible] के लिए अग्नि की पूजा नही करते, बल्कि अग्नि को विश्वऊर्जा या सृष्टि ऊर्जा का प्रतिरूप मानकर उसके भी मूल उत्स को जानने और पाने के लिए उसके भौतिक रूप को केवल एक माध्यम के रूप में प्रयोग करते हैं। वेद का कथन है—देवो ने यज्ञ (यज्ञाग्नि) के माध्यम से यज्ञ (यजनीय परम चैतन्य) को ही पाने के लिए यज्ञ का आयोजन किया। इसीलिए इस यज्ञ को उन्होने प्रथम या प्रकृष्टतम धर्म के रूप मे स्वीकार किया। (यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः।) अत यह यज्ञाग्नि अपने भौतिकी रूप मे उतनी प्रमुख नहीं है, जितनी यह विश्व या सृष्टि की समस्त क्रियाशीलता और उसके स्रोतभूत परम चैतन्य के प्रतीक रूप मे। इस प्रकार वेदानुयायी 'पागान' नही, 'परम वैज्ञानिक' सिद्ध होता है।

अतः यज्ञ वैदिक संस्कृति का मूलाधार है—ऐसा कहने का अभिप्राय यह है कि वेदानुयायी इस भौतिक यज्ञाग्नि के माध्यम से सर्वव्याप्त जीवन एवं चेतना को परम सत्य स्वीकार करते हैं और उसे ही सदा जानने का प्रयास करते हैं। दूसरे शब्दो मे वैदिक संस्कृति सदा ही मानव को जीवन और जगत् के परम वैज्ञानिक सत्य के प्रति उन्मुख और जागरूक रखती है—जीवन एकांगी होकर नहीं चल सकता, उसे सम्पूर्णता पाने के लिए सम्पूर्ण को जानना एवं मानना होगा। और यज्ञ इस समग्रता को पाने और जीवन को परम आनन्दमय बनाने का एक सर्वोत्तम और परम वैज्ञानिक माध्यम है।

[लेखक की अंग्रेजी पुस्तक 'वैदिक स्टडीज' के एक लेख पर आधारित मूल पुस्तक के प्रकाशक—भारतीय प्रकाशन, ९ ए/८, डब्लू० ई०ए०, करोल बाग, नई दिल्ली—[illegible]

पत्रों के दर्पण में

अनूठी पुस्तक के लिए सजा ?

आपने 'तूफान के दौर से पंजाब' अद्भुत पुस्तक लिखी है। मै जब भी उस पुस्तक को पढ़ता हू तब कोई न कोई अद्भुत खोज और आपकी चमत्कार युक्त सूझ उसमें दिखाई देती है। पुस्तक में अनूठी खोज ही नहीं आपकी सूझ भी अनूठी ही है। आपके परिश्रम तथा आपकी बुद्धि की भी जितनी प्रशंसा की जाय वह थोड़ी ही है। भविष्य के लिये जो कुछ आपने लिखा था, वह एक एक अक्षर सत्य सिद्ध हुआ, हो रहा है और होगा भी पर आपकी यह पुस्तक मेरे लिये मुसीबत बनी हुई है। पुस्तक थोड़े से समय में दो बार चुराई जा चुकी है।

फिर पुलिस की तरह खोज की गई, तब मुश्किल से मिली। इस प्रकार दूसरी बार भी हुआ। मुझे लगता है कि इसमें चोर के बजाय आप का ही दोष अधिक है। न आप इतनी अच्छी पुस्तक लिखते न वह बार-बार चोरी होती। इस अपराध मे आपको क्या सजा दी जाए ?

—अमर स्वामी सरस्वती, वेद मन्दिर, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद।

[आदरणीय स्वामी जी महाराज ! आप और आर्य जनता जो भी सजा तजबीज करे, हम सहर्ष स्वीकार करेंगे।—सं०]

मैंने नाम का परिवर्तन नहीं किया

२५-८-८५ के आर्य जगत् में अपने नाम परिवर्तन की सूचना पढ़कर मुझे आश्चर्य हुआ क्योकि मैंने आज तक भी अपने नाम परिवर्तन की चर्चा किसी से नही की और न ही नाम का परिवर्तन चाहता हू। यह किसी बोगस ईर्ष्यालू व्यक्ति का गलत पत्र आपके पास भेजा गया है। कृपया इस का प्रतिवाद प्रकाशित कर दीजिए।

(महात्मा) दयानन्द, तपोवन, देहरादून

ऋषि के जन्म-स्थान का निर्धारण

ऋषि की जीवनी से सम्बन्धित लेखमाला की तीसरी किश्त में लेखक ने बताया है कि 'बारोट' जाति के एक व्यक्ति की पुत्री के पास ऋषि जन्म-स्थान विषयक प्रमाण मिल सकता है। मै सार्वदेशिक सभा से आग्रह करूंगा कि वह इस दिशा में तुरन्त कदम उठाकर उस बारोट की खोज करे और उससे वास्तविकता का पता लगा कर उन तथ्यों को प्रकाशित करे जिससे कि इस सम्बन्ध में अब तक जो अनिश्चय की स्थिति रही है उस का निराकरण हो सके। यह कार्य अविलम्ब किया जाना चाहिए।

—ज्ञानचन्द गोयल, आर्य युवक परिषद्, मालव गुरुग्राम

धर्म की वरीयता

"राजनीति और धर्म" विषय पर शहीद भगतसिह का लेख दैनिक 'जनसत्ता' से उद्धत करने की अपेक्षा यदि आर्य जगत् के सम्पादक श्री क्षितीश जी अपना लेख प्रकाशित करते तो वह इसकी अपेक्षा अधिक सशक्त और तथ्यपूर्ण होता। क्रान्तिकारी भगतसिह धर्म और मजहब में भेद नही कर पाए। मजहब का आधार सामान्यतया किसी विशिष्ट व्यक्ति के विचार, तत्कालीन सामाजिक परिस्थिति, ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि, रिवाज इत्यादि होते हैं। इसके सर्वथा विपरीत धर्म तो शाश्वत सत्यो और सिद्धान्तो पर ही आधारित होता है। प्राचीन मनीषियों ने गहन चिन्तन के उपरान्त धर्म के विषय में मौलिक सिद्धान्त निश्चित किए हैं। वैशेषिक दर्शनकार के शब्दो में **यतोऽभ्युदय निःश्रेयससिद्धिः स धर्मः** अर्थात्—धर्म वह है जिससे इस जीवन में उत्थान और कल्याण की प्राप्ति हो। मनुस्मृति में इस विषय पर विचार किया गया है। उसमें धर्म और अधर्म के प्रतिफलन का भी वर्णन किया है। किन्तु आज का तथाकथित बुद्धिवादी मात्र इन सब को मिथ्या, ढोंग और निराधार कहकर उपेक्षा करता है। उसका ही परिणाम है कि आज मनुष्य का जीवन अशान्त और समस्या पूर्ण है।—आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार, के० सी० ३७/बी, अशोक विहार-ii दिल्ली-५२

महर्षि को श्रद्धांजलि

हम लोग विदेशी संस्कृति और आडम्बर में विलीन होते जा रहे हैं। इसी कारण दिन प्रतिदिन हम अपनी भारतीय संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। जब तक हम अपनी सामाजिक बुराइयो को दूर नहीं करेंगे तब तक महर्षि दयानन्द को दी गई श्रद्धाजलि अधूरी रहेगी।

—डा० रामजी दास खन्डूजा, माजरा—१७३०२१ जिला सिरमौर (हि० प्र०)

'किसान से कसाई तक'

जुलाई १९८५ के "गोधन" में पृष्ठ ७-८ पर 'किसान से कसाई तक' शीर्षक अंतर्गत 'आर्य जगत्' से उद्धृत लेखांश की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। प्रारम्भ मे देश में गौ के प्रति सुन्दर भावनायें व्यक्त करते हुये उसकी महानता, उपयोगिता दर्शायी गई है और आज की अवनत अवस्था पर दुःख प्रकट किया गया है। परन्तु क्या हमारी उच्चतम देशी नस्लों की अधोगति का कारण आज भी छिपा हुआ है? केवल "गोधन" में ही नहीं उसके अलावा और भी कई जगह सारे भारत में कुछ वर्षों से इन कारणों पर तीव्र प्रकाश डाला जा रहा है जिनमें मुख्य है जन-साधारण से लगाकर शासन तक हमारी "गोमाता" के प्रति घोर अनादर और उद्योगपतियों की धनलोलुपता जिसके लिये हमारी गाय को भूखी रख कर उसे निकम्मा और अनार्थिक करार देकर उसके हाड़-मास का बढ़ती मात्रा में निर्यात कर विदेश से इस शर्मनाक व्यापार से अपनी तिजोरियां भरी जा रही हैं। आर्य जगत् को यह ज्ञात नही है कि श्वेत क्रान्ति के नाम से, विदेश से लाये हुये मुफ्त चूर्ण के बूते पर भारत में दूध की नदियाँ बहाने वाले हमारे देश को कितना धोखा दे रहे हैं; न वे हमें दूध ही दे पायेंगे और न कृषि और ढुलाई योग्य बैल, जिनसे हमारा कृषक हमारे लिये अन्न उगाता है। "सौ से लेकर एक हजार" विदेशी गायों की भीख मांग कर अपने गोवंश के प्रति न केवल तिरस्कार व्यक्त करेंगे वरन् आने वाले वर्षों में होने वाले गोवध की मात्रा में वृद्धि करने में सहायक होंगे। दयानन्द... ने अपने अनुयाइयों से इस नादानी की आशा नही की थी। सन्मति से काम लें। —मो. या. मंगरूलकर [गोधन" मासिक पत्र में 'आर्य जगत्' के अग्र लेख की प्रतिक्रिया]

यज्ञोपवीत का दुरुपयोग

आर्य सज्जनों के पुत्र यज्ञोपवीत को केवल दिखावे के लिए पहनते हैं। ऐसी घटनाएं मैंने अपनी आंखो देखी हैं। एक लड़का गले में जनेऊ रखता है और आर्य वीर शिविरों में भी भाग लेता रहा है और मांस भी खाता है। मेरे विचार से ये सभी दोष पश्चिमी सभ्यता के कारण हैं। जिसने हमे अन्धा बना दिया है

डाक्टर लोग मांस, मछली और अण्डों में प्रोटीन और विटामिन्स बताते हैं। लेकिन इन विटामिन और प्रोटीन के लिए मास मछली और अन्डे ही क्यों खाएं क्योकि सबसे ज्यादा प्रोटीन सोयाबीन में होती है। यह मछली से दो या तीन गुना अधिक होती है। फिर किसी जीव को तड़पाना कहां तक उचित है ?

कुछ लोगों को मांस, शराब, सिगरेट आदि छोड़ने के लिए कहते हैं, तो वे उत्तर देते हैं कि आदत पड़ गई है, छूट नहीं सकती। लेकिन कोशिश करने से प्रत्येक काम हो सकता है—

वह कौन-सा उकदा है, जो हल हो नही सकता।
हिम्मत करे इन्सा तो, क्या हो नहीं सकता।।

—प्रदीप कुमार आर्य, आर्य नगर (भिवानी)।

परिवार नियोजन के लिए ब्रह्मचर्य

आजकल देश में परिवार नियोजन के वास्ते सरकार करोड़ों रुपया व्यय कर डालती है, उससे पूर्ण लाभ नहीं होता। संयम का पाठ न पढ़ा कृत्रिम उपकरणों का प्रयोग बताया जाता है।

जो पुरुष ब्रह्मचर्य पूर्वक जीवन बिताते हैं वे परिवार नियोजन के प्रबल पोषक हैं। सरकार को चाहिए कि नैष्ठिक ब्रह्मचारियों को मासिक भत्त व अन्य सुविधाएं देकर परिवार नियोजन व चरित्र रक्षा में सहायक बने तो निश्चय ही देश में जनसंख्या वृद्धि की समस्या हल हो सकती है।

—ब्रह्मचारी सन्तोष कुमार आर्य, आर्य समाज सकरावा, फर्रुखाबाद (उ० प्र०)

गुणों की खान चौधरी जी

चौधरी प्रताप सिंह में अनेक महान् गुण विद्यमान थे। १९८३ में महर्षि निर्वाण शताब्दी अजमेर में उन्होंने देश-विदेश के वैदिक विद्वानों को सम्मानित करके आर्य जनता के सामने आदर्श प्रस्तुत किया है। वे दानवीर थे चाहे कोई विद्वान व्यक्ति हो या ब्रह्मचारी या निर्धन छात्र हो, कुछ न कुछ देते ही रहते थे। ऐसे महापुरुष को कोटि-कोटि प्रणाम ! परमपिता परमात्मा से हम सार्वदेशिक दयानन्द सन्यास वानप्रस्थ मण्डल ज्वालापुर हरिद्वार के सदस्य गण प्रार्थना करते हैं कि इनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे। – ब्र० नन्दकिशोर एम० ए० विद्यावाचस्पति उपाचार्य—सार्वदेशिक दयानन्द सन्यास वानप्रस्थ मण्डल ज्वालापुर (हरिद्वार)

आर्य वीर महासंमेलन

कैथल में सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरियाणा का नौंवा प्रान्तीय महासम्मेलन २० से २२ सितंबर तक सोत्साह मनाया जायेगा। २१ सितबर को सायं १००० आर्य वीरों की भव्य रैली और प्रतिनिधियों की शोभा यात्रा विशेष दर्शनीय होगी। सम्मेलन की अध्यक्षता लाला राम गोपाल वानप्रस्थ करेंगे।—अजित कुमार आर्य

चम्बा में प्रशिक्षण शिविर

हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी सुमेधानन्द के सरक्षण मे दयानन्द मठ चम्बा में २२ से २९ सितंबर तक आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। दीक्षान्त भाषण श्री राम गोपाल वानप्रस्थ का होगा। पं० बाल दिवाकर हंस और डा० देवव्रत व्यायामाचार्य प्रशिक्षण देंगे। अंतिम दिन मठ का वार्षिकोत्सव मनाया जायेगा।—महावीर मन्त्री

डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल—आर्य समाज, वेस्ट पटेल नगर

जहां-जहा डी०ए०वी पब्लिक स्कूल खुले हैं, उन सब मे आर्य समाज की स्थापना हो चुकी है। इन समाजो में सोमवार से शनिवार तक किसी एक दिन साप्ताहिक सत्संग होता है। जिसमें स्कूल के सारे अध्यापक कार्यालय के सदस्य तथा छात्र सम्मिलित होते हैं। डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, आर्य समाज वेस्ट पटेल नगर मे शनिवार १४ सितंबर को ११-०० से १-०० बजे तक हुआ जिसमे प्रादेशिक सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता आचार्य पुरुषोत्तम का सुन्दर उपदेश हुआ जिसका सब पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा। - घनश्याम आर्य निडर,

श्री मामचन्द्र रिवारिया दिल्ली प्रशासन की जनजाति कल्याण परिषद के सदस्य मनोनीत

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के सह-मन्त्री एव कर्मठ सामाजिक कार्यकर्ता श्री मामचन्द रिवारिया को दिल्ली प्रशासन द्वारा पुनर्गठित अनुसूचित जाति व जनजाति कल्याण परिषद का सदस्य मनोनीत किया गया है। इससे पूर्व भी परिषद मे श्री श्री रिवारिया जी सदस्य रह चुके हैं और उस काल मे उन्होने अनेक जनों को सहायता प्रदान करवाने में सहयोग किया है। आर्य जगत को पूर्ण आशा है कि इस बार भी श्री रिवारिया जी अपने कर्तव्य के प्रति सजग रहकर आर्यजगत को प्रतिष्ठा प्रदान करायेंगे। हम उनके इस मनोनयन पर उन्हें बधाई देते हैं।

—के०के० सेठ, कार्यालयाध्यक्ष

हंसराज महिला महाविद्यालय जालन्धर

इस वर्ष कु० सीमा ने एम० ए० हिन्दी, कु० सुमिता डावरा ने बी० ए० अंग्रेजी औनर्स, कु० अनीता ने बी० ए० संगीत औनर्स, कु० अंजु महाजन ने प्रि० युनिवर्सिटी ह्युमैनिटीज, कु० रूप कमल ने बी० ए० प्रथम वर्ष मे विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्ण-पदक अर्जित किए। चार छात्राओ ने विश्वविद्यालय में द्वितीय स्थान प्राप्त किया तथा दो छात्राओं ने तृतीय स्थान प्राप्त किया एवं २८ छात्राओ के नाम मैरिट लिस्ट में आए। यहाँ से उत्तीर्ण छात्राएं विभिन्न कालेजो के विभिन्न विषयों मे सम्मान के साथ प्रविष्ट हुई। इस प्रकार महाविद्यालय निरन्तरवर्षानुवर्ण प्रगति पर अग्रसर है।

जनकपुरी में वेद कथा

आर्य समाज जनकपुरी में ३० सितंबर से ६ अक्टूबर तक स्वामी मुनीश्वरानन्द जी सरस्वती की वेद कथा प्रातः काल ५-३० से ७ बजे तक तथा सायं काल ८ बजे से ९.३० तक होगी। योगेश चन्द्र, मन्त्री आ० स० जनकपुरी

आर्य युवक परिषद, पट्टी की अपील

आर्य युवक परिषद, पट्टी के पदाधिकारी तथा सदस्यो ने सन् १९८६ में देश व्यापी स्तर पर मनाए जाने वाले डी० ए० वी० शताब्दी समारोह की सफलता के लिए सभी आर्य समाजों तथा विभिन्न सस्थाओ के कार्यकर्त्ताओ से सहयोग की जोरदार अपील की है।—राजकुमार कपूर, आ० यु० परिषद

आर्य समाज गिलौला की स्वर्ण जयन्ती

आर्य समाज, गुरुकुल, गिलौला, बहराइच (उ०प्र०) का स्वर्ण जयन्ती समारोह २४ से २८ अक्टूबर तक सोत्साह आर्य समाज के प्रागण मे मनाया जायेगा। जिसमें स्वामी सत्य प्रकाश, स्वामी ओमानन्द, श्री पन्ना लाल पीयूष, सारस्वत मोहन मनीषी डा० मित्र जीवन, श्री ओम्प्रकाश शास्त्री, श्रीमती उषा शास्त्री श्रीमती सावित्री देवी आदि विद्वान और उपदेश भाग ले रहे हैं। समारोह हेतु आर्थिक योगदान निम्न पते पर भेजें—कोषायक्ष-आर्य समाज, गिलौला बाजार—२७१८३५ जिला-बहराइच (उ०प्र०)। -यज्ञ प्रकाश आर्य

स्मृति-यज्ञ

गुरुकुल करतारपुर के ट्रस्टी श्री शिवलाल की स्मृति मे उनके परिवार द्वारा बाबा बस्ती खेल कपूरथला रोड जालन्धर में शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें श्री जगदीश मुनि व ब्र० आर्य नरेश के प्रवचन हुए।—प्रेम कमार

वेद प्रचार की धूम

अगस्त मास में वेद प्रचार सप्ताहों को बड़ी धूम धाम के साथ मनाया गया साथ ही श्रावणी उपाकर्म भी जगह-जगह सम्पन्न हुए—समाजों के नाम निम्नलिखित हैं—(1) आर्य समाज, चूनामण्डी, पहाड़ गंज, नई दिल्ली (2) आर्य समाज, लाजपतनगर, नई दिल्ली (3) आर्य समाज, आर्य पुरा, सब्जी मण्डी दिल्ली (4) आर्य समाज, उदयपुर (5) ग्राम—केहरवाला, गंगानगर (6) आर्य अनाथालय फिरोजपुर (7) आर्य समाज, मदसौर आर्य समाज, अजमेर और पं० जियालाल जन्म जयन्ती समारोह आर्य समाज, किल्ले धारुर, जिला बीड इन कार्यक्रमो मे श्री प्रेमचन्द श्रीधर, पं० रामप्रसाद, श्री विजय भूषण, शिव कुमार शास्त्री, पडित क्षितीश वेदालंकार, श्री गुलाब सिह राघव, पं० धर्मेन्द्र पाल शास्त्री, डा ब्रजमोहन, डा० प्रेमचन्द गुप्त, स्वामी कृष्णानन्द पं० पन्नालाल पीयूष, श्री रामचन्द्र आर्य, वैद्य सीताराम शर्मा, श्री इन्द्र जीत सिंह, प्रि० पी० डी० चौधरी, स्वामी शिवानन्द, श्री रामावतार शर्मा, डा० प्रेमसिंह, आचार्य गोविन्द्र सिंह, प्रो० बुद्धि प्रकाश, प्रि० दत्तात्रेय, प्रो० देव शर्मा, श्री अमर सिह, श्री पन्नालाल माहेश्वरी पं० सुभाष चन्द्र शास्त्री, श्री ओमप्रकाश वर्मा आदि के प्रवचन और भजन हुए।

स्वतंत्रता दिवस समारोह

15 अगस्त को 39 वा स्वतंत्रता दिवस समारोह ध्वजारोहण के साथ हर्षोउल्लास सहित निम्नलिखित जगहों पर मनाया गया।

(1) आर्य समाज, फतेहपुर (2) आर्य समाज, आशा पार्क कल्याण सभा, नई दिल्ली (3) डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, फतेहाबाद (पंजाब) (4) आर्य समाज फतेहाबाद (5) बिड़ला आर्य गर्ल्स सीनियर सैकेंडरी विद्यालय बिडला लाइन्स, दिल्ली (6) आर्य समाज, खंडवा आदि। इन सस्थाओ द्वारा योगासन, यज्ञायोजन एव अन्य कार्यक्रम सोत्साह सम्पन्न हुए।

योग एवं संस्कृत प्रशिक्षण

विश्व भारत अनुसन्धान परिषद ज्ञानपुर वाराणसी द्वारा शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार के सहयोग से आयोजित १५ दिवसीय योग और सस्कृत प्रशिक्षण शिविर का समापन डा० रामकरण शर्मा (कुलपति सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी) द्वारा सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता भू० पू० उच्च शिक्षा निदेशक डा० बाल मुकुन्द श्रीवास्तव ने की। संस्थान के निदेशक डा० कपिल देव द्विवेदी, अध्यक्ष डा० भारतेन्दु द्विवेदी, ने सभा को सम्बोधित किया।

आर्य यात्रा का कार्यक्रम

दार्जिलिंग, सिक्किम, नेपाल

इस आर्य यात्रा के कार्यक्रम मे दैनिक सत्संग की विशेष व्यवस्था है।

प्रस्थान		पहुंच	
१-१०-८५	सायं ३ बजे आर्य समाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली।	२-१०-८५	प्रात: अयोध्या रात्रि गोरखपुर
३-१०-८५	प्रात ७ बजे गोरखपुर	३-१०-८५	साय पोखरा
३-१०-८५	रात्रि पोखरा से	४-१०-८१	प्रात. काठमाडू
४-१०-८५ व ५ ५-१०-८५ काठमाडू (नेपाल) मे			
६-१०-८५	प्रात: ६ बजे काठमाडू से	६-१०-८५	रात्रि जनकपुर
७-१०-८५	प्रात: जनकपुर से	७-१०-८५	साय सिलिगुडी
८-१०-८५	प्रात. ७ बजे सिलिगुडी से	८-१०-८५	प्रात: १० बजे
८-१०-८५ व ९-१०-८५ दार्जिलिंग मे			
१०-१०-८५	प्रात. ६ बजे दार्जिलिंग से		साय ४ बजे गगटोक (सिक्किम)
१०-१०-८५ व ११-१०-८५ सिक्किम में			
१२-१०-८५	प्रात: ८ बजे सिक्किम से	१२-१०-८५	१ बजे सिलिगुडी
१३-१०-८५	प्रात. ६ बजे सिलीगुडी से	१३-१०-८५	रात्रि पटना
१४-१०-८५	प्रात: ६ बजे पटना से	१४-१०-८५	साय वाराणसी
१५-१०-८५	प्रात ६ बजे वाराणसी से प्रयाग होकर	१५-१०-८५	रात्रि कानपुर
१६-१०-८५	प्रात: ६ बजे कानपुर से	१६-१०-८५	रात्रि देहली

आज ही ६१०/-प्रति यात्री देकर अपनी सीटे श्री गजेन्द्र मालवीय आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली से बुक करायें। यह केवल मार्ग व्यय है।

फोन : 343718.

नोट:—खरीदी हुई टिकट वापिस न होगी। आधी सवारी को सीट न मिलेगी। जहां निवास का प्रबन्ध आर्य समाजो की ओर से न होगा, यात्री सभी व्यय स्वयं करेंगे।

हमारे पास केवल ४५ सीटें हैं।

रामचन्द्र आर्य
४६६, भीम नगर, गुडगांव-१२२००१

रक्षा बन्धन अर्थात् समाज और व्यक्ति की सुरक्षा का पर्व

'मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है'। इस सिद्धान्त के अनुसार मानव जीवन का छोटे से छोटा कार्य भी बिना सामाजिक सहयोग के पूर्ण नही हो सकता। चाहे वह भोजन, वस्त्र, शिक्षा, भवन निर्माण रूपी कार्य हो या फिर दुनियां का कोई भी अन्य कार्य। इसीलिए मनुष्य को जन्म लेने के साथ ही समाज को अपनाना पड़ता है और जब तक उसका शरीर पंचतत्व को प्राप्त नही हो जाता तब तक वह सम्पूर्ण रूप से पूरे समाज पर ही आश्रित रहता है। निर्बल हो या सबल, धनी हो या निर्धन, बुद्धिमान् हो या अज्ञानी सब ही समाज की किसी न किसी प्रकार से अत्यन्त उपयोगी इकाई होते हैं। परस्पर सहयोग ही जीवन का सही रूप है।

इसी प्रकार जब परस्पर रक्षाभावना का प्रश्न खड़ा होता है तब भी हमे समाज को ही सम्मुख रखना पडता है। समाज ठीक प्रकार से सुरक्षित होगा तभी व्यक्ति सुरक्षित रह सकेगा। समाज हमेशा व्यक्ति से ज्यादा महत्वपूर्ण होता है। विशेषतया जब समाज के अन्दर विकार पैदा हो रहा है। समाज को कुछ तत्व हानि पहुंचा रहे हैं तथा समाज की उत्तम भावना लडखडाने लग रही है, तब तो सामाजिक रक्षण का दायित्व बहुत बढ़ जाता है। परन्तु वर्तमान मे हो इसके विपरीत ही रहा है। समाज के तथाकथित स्तम्भ ही समाज पर कुठाराघात करने से जरा भी नही चूकते। स्वार्थों के वशीभूत होकर वे सम्पूर्ण समाज को महत्वहीन बना देते हैं तथा समाजरूपी सुन्दर, आश्रयदाता व फलदाता वृक्ष की जडे काट देते हैं। वे समाज की अपेक्षा स्वार्थ को प्राथमिकता देते हैं। समाज मानसिकता के विकास का साधन बनना चाहिए, चरित्र का प्रतिबिम्ब बनना चाहिए। काश ! ऐसा हो पाता। काश ! समाज सत्यं-शिवं-सुन्दरं बन पाता।

नारी का महत्व

नारी का समाज में वही स्थान होता है जैसा शरीर में हृदय का स्थान है। यह एक कटु सत्य है कि शिक्षा के इतने विस्तार के पश्चात् भी यदि अभी तक समाज की कोई इकाई उपेक्षित व प्रताड़ित है, तो वह स्त्री ही है। इस बारे मे विस्तृत विवरण देने की शायद आवश्यकता इसलिए नही क्योकि प्रतिदिन समाज में घटने वाली बातो से सभी अच्छी प्रकार परिचित हैं। रक्षाबन्धन का सम्बन्ध सभी स्त्री जाति से जोड़ते हैं। तब तो यह बात और भी महत्वपूर्ण हो जाती है कि जगत् निर्मात्री, प्रेरणाशक्ति प्रदान करने वाली तथा समाज की पूज्य स्त्री जाति को भली भाति सुरक्षित किया जाए। यह एक वास्तविकता है कि यदि स्त्री जाति सुरक्षित व सुशिक्षित हो जावे तो पूरा समाज सुघटित व दृढ़ हो सकता है।

उपेक्षित वर्ग की रक्षा

दूसरा वे निम्न वर्ण स्वल्प आय वर्ग के लोग हैं जो समाज के सभी महत्वपूर्ण कार्यों मे प्रभावपूर्ण भाग तो अदा करते हैं, परन्तु समाज में अपना उचित स्थान प्राप्त नही कर पाते। जैसे बुनकर चर्मकार, काश्तकार तथा वे लोग जो इन से भी निम्न श्रेणी के कार्य करते हैं। कभी कल्पना करके देखिये कि यदि मेहतर, धोबी, तरखान आदि महत्वपूर्ण कार्य करने वाले एक दिन भी न आयें तो क्या बीतेगी हमारे ऊपर। किस प्रकार अस्त व्यस्त हो जायेगा हमारा प्रतिदिन का कार्यक्रम। किस कदर पंगु बन जावेंगे हम लोग। इनके भी उचित रक्षण का पूर्ण दायित्व समाज पर है। यदि ये सब सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेगे तभी हमारा समाज शक्ति तथा सम्पन्नता को प्राप्त हो सकेगा। क्योंकि ये सब मानव समुदाय के लिए बहुत ही उपयोगी हैं। कभी हम भी उनके सुख मे सुखी और इनके दु.ख में दु खी होवे तो मन में कितनी उच्चता और सात्विकता का संचार होता है। यदि ये बातें वास्तविक रूप मे क्रियान्वित हो जावें तो खुशहाली और प्रेम का पार न रहे।

रक्षा बन्धन के अन्दर छिपी हुई सार्वत्रिक रक्षण की विशुद्ध भावना को भी सही अर्थों मे लेने की आवश्यकता है। यह रक्षा बुद्धियुक्त तथा कल्याण के लिए होनी चाहिए। वही समाज अधिक समय तक जीवित तथा सुप्रतिष्ठित रह सकता है जो जितना ज्यादा जन कल्याण को महत्व दे। रक्षा के कई पहलू हैं, जैसे ज्ञान का, विद्या के आदान प्रदान द्वारा, धन सम्पत्ति द्वारा रक्षण तथा शक्ति व प्रेरणाएं प्रदान करके रक्षण की भावना का सुदृढ़ करना।

वर्तमान मे हमारा समाज एक बहुत बड़ी बीमारी से त्रस्त है, वह है हिंसा और आतकवाद। चारों तरफ हिंसा का बाजार गर्म है। लोग एक दूसरे से यहां तक कि अपने सायों से भी डरते हैं। ऐसे

प्रि० पी०डी० चोधरी, अधिष्ठाता, आर्य अनाथालय
फिरोजपुर कैन्ट

सार्वत्रिक रक्षण

प्रभु की अपार कृपा से हमारे प्राचीन ऋषि मुनियो तथा समाज रचनाकारो ने पर्वों को भी यथा समय तथा समाज के अनुरूप स्वरूप प्रदान किया है। अब रक्षाबन्धन को ही ले लें। इसका कितना सुन्दर स्वरूप है समाज के हित मे, कम से कम वर्ष में एक बार तो सभी के हित को सम्मिलित होकर परस्पर रक्षण के बारे में, फिर चाहे वह राष्ट्र, समाज या मानवता का रक्षण हो या फिर व्यक्तिगत, खूब विस्तार से सोचना चाहिए। रक्षण के नए-नए प्रकार सुझाने चाहिए तथा नई पीढ़ी के मस्तिष्क मे इस पवित्र भावना को विकसित करना चाहिए।

वातावरण में हमे हमारे समाज के लिए परस्पर एकता, भाईचारा तथा साम्प्रदायिक सद्भावना और परस्पर प्रेम की उच्चतम भावना को बलवान बनाना है तथा समाज मे से हिंसा तथा भ्रष्टाचार रूपी राक्षस को मार भगाना है। हमारा समाज एक दूषित तालाब के समान हो गया है। इसके सारे गन्दे और विषाक्त पानी को बाहर निकालकर इसे शुद्ध व साफ करके अच्छा पानी भरने की आवश्यकता है। परमेश्वर हमें ऐसी शक्ति व सामर्थ्य तथा सद् प्रेरणा प्रदान करे जिससे हम रक्षाबन्धन की वास्तविक भावना को अपनाकर सामाजिक जीवन को आदर्श बना सकें।

—आर्य अनाथालय, फिरोजपुर कैन्ट

फिरोजपुर छावनी में श्री कृष्ण जन्माष्टमी

फिरोजपुर आर्य अनाथालय व स्थानीय डी०ए०वी० शिक्षण संस्थानों की ओर से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का समारोह बड़ी श्रद्धा व उत्साहपूर्वक आर्यसमाज फिरोजपुर छावनी में विशेष यज्ञ के साथ प्रारम्भ हुआ जिसमें आर्य अनाथालय व डी.ए.वी. शिक्षण संस्थानों के प्रबन्धक तथा समाज के प्रधान प्रि० पी०डी० चोधरी सपत्नीक यजमान बने। यज्ञ पं० मनमोहन शास्त्री ने सम्पन्न करवाया। सभा की अध्यक्षता भी प्रि० चोधरी ने की। डी०ए०वी० शिक्षण संस्थानों के अध्यापक व छात्र-छात्राएं तथा आर्य अनाथालय के बालक-बालिकाएं व पदाधिकारीगण एवं समाजों के प्रतिनिधि बड़ी सख्या में उपस्थित थे।

वक्ताओं ने श्रीकृष्ण के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। छात्रों ने मधुर भजन-कवितापाठ तथा प्रभावी भाषण दिए। डी०ए०वी० गर्ल्स हायर सेकेण्डरी स्कूल, डी०ए०वी० माडल स्कूल फिरोजपुर छावनी, आर्य अनाथालय, दयानन्द माडल स्कूल, एच०एम० डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल फिरोजपुर शहर के विद्यार्थियों ने इन कार्यक्रमों में दिये गये भाषणो, भजन व कविताओं के लिये श्रीमती सन्तोष चोधरी के हाथ से पुरस्कार प्राप्त किये। सभा का संचालन प० मनमोहन शास्त्री कर रहे थे।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री चोधरी ने महाभारत के युद्ध को धर्मयुद्ध, बताते हुये कहा—यह महाभारत वैसे तो पांच हजार वर्ष पूर्व रचा गया था, परन्तु यह तो युगों-युगों से चला आ रहा एक ऐसा जीवन संग्राम है जिसमें मानव, समाज में प्रचलित कुरीतियों, विकृतियों और भ्रष्ट आचरणों से टक्कर लेता चला आ रहा है। समाज तभी जीवित तथा विकसित हो सकता है जब इसमें रहने वाली बुराइयां समाप्त होवें। श्रीकृष्ण ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे जिसका आधार न्याय, परस्पर एकता, शांति तथा उत्तम आचरण बन सके। हम सभी को उस सच्चे कर्मयोगी व कुशल राजनीतिज्ञ से अपने अपने जीवन में प्रेरणा लेनी चाहिए।

शिक्षक वर्ग को सम्बोधित करते हुये उन्होंने कहा कि 'हमारे राष्ट्र को वर्तमान में जिस साम्प्रदायिक सद्भावना परस्पर प्रेम और सहयोग तथा न्याय की आवश्यकता है उसके लिए सामाजिक उत्तम चरित्र की सबसे अधिक आवश्यकता है। यह कार्य एक अध्यापक ही प्रभावपूर्ण ढंग से कर सकता है। बालकों में अपने गौरवपूर्ण इतिहास तथा आदर्श जीवनों की प्रेरणा भरने वाले शिक्षक धन्यवाद के पात्र हैं। ऐसे शिक्षक और छात्र ही मिलकर श्रीकृष्ण के सपनों के समाज का निर्माण कर सकेंगे। मानव समुदाय 'सत्यं-शिवं और सुन्दरं' की उत्तम भावनाओं से अनुप्राणित हो, यह हमारा प्रयत्न होना चाहिए।

पुरस्कार वितरण तथा मिष्ठान्न व फल वितरण के साथ सभा का विसर्जन हुआ।

आर्य अनाथालय फिरोजपुर मे श्रावणी पर्व तथा डिस्पेन्सरी के उद्घाटन की सचित्र झांकी

आर्य अनाथालय फिरोजपुर में श्रावणी के शुभ अवसर पर प्रस्तुत भव्य सास्कृतिक कार्यक्रमों पर पधारे हुए मुख्य अतिथि डिप्टी कमिश्नर फिरोजपुर श्री सरदार इन्द्रजीत सिंह जी I. A. S. तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती चरण जीत कौर बैंस द्वारा नवनिर्मित लाजवन्ती फ्री डिस्पेन्सरी के उद्घाटन, आदि के चित्र। इस अवसर पर उपस्थित अन्य विशिष्ट नागरिको ने भी दिल खोलकर सस्था को उपहार प्रदान किए। डी. सी. साहब ने इस अवसर पर संस्था तथा फ्री डिस्पेन्सरी के कार्य पर अत्यन्त प्रसन्नता प्रकट करते हुए १००००/- (दस हजार रुपए) अनुदान की घोषणा की।

चित्र १. प्रि० पी० डी० चौधरी अधिष्ठाता आर्य अनाथालय व स्थानीय डी० ए० वी० शिक्षण संस्थान पुष्प माला से मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए। चित्र २. श्री व श्रीमती चौधरी शहर के गणमान्य व्यक्तिओ के साथ मुख्य अतिथि दम्पती चित्र ३. मुख्य अतिथियो को नव निर्मित लाजवती फ्री डिस्पेन्सरी का उद्घाटन हेतु ले जाते हुए। चित्र-४. श्रीमती चरण जीत कौर 'लाजवन्ती फ्री डिस्पेंसरी' का उद्घाटन करते हुए। चित्र ५. डी० ए० वी० गर्ल्स हायर सेकेण्डरी स्कूल फिरोजपुर की कन्याए स्वागत गीत प्रस्तुत करते हुए। चित्र ६ आश्रम की कन्याए मुख्य अतिथि व अन्य विशिष्ट व्यक्तिओ को रक्षा-सूत्र (राखी) बाधते हुए। चित्र ७. श्रीमती चरणजीत कौर दयानन्द मॉडलस्कूल के बच्चो को उनके प्रशसनीय एकांकी नाटक 'कुदरत दे सब बन्दे' में उत्तम अभिनय कुशलता के लिए पुरस्कार भेट करते हुए। चित्र ८. श्रीमतीचरण जीत कौर H M D A V Public School फिरोजपुर की बालिकाओ को सुन्दर नृत्य व वेशभूषा के लिए पुरस्कृत करते हुए। चित्र ९. श्री ओ० के० खुल्लर एडवोकेट प्रधान लायन्स क्लब फिरोजपुर ग्रेटर अपने सहयोगियो के साथ आश्रम के बच्चो केकल्याणार्थ प्रि० पी० डी० चौधरी को उपहार भेंट करते हुए। चित्र १०. श्री शुभरतन मडिया (प्रधान रोटरी क्लब) की ओर से संस्था के लिए उपहार भेट करते हुए। चित्र ११. श्री बजभूषण सामलका प्रधान लायन्स क्लब आश्रम के लिए उपहार भेट करते हुए। चित्र १२ सरदार इन्द्रजीत सिंह डिप्टी कमिश्नर अपने अध्यक्षीय भाषण मे प्रस्तुत कार्यक्रम व आश्रम की उन्नति की प्रशसा करते हुए। चित्र १३. प्रि० पी० डी० चौधरी समारोह मे पधारने वाले सभी सज्जनो के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करते हुए।

आर्य अनाथालय फिरोजपुर में रक्षाबन्धन श्रावणी पर्व उत्साह व श्रद्धा से सम्पन्न

30-8-85 को आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी की भव्ययज्ञशाला मे श्रावणी के विशेष यज्ञ के पश्चात् प्रातःकाल की शुभ वेला मे आश्रम के हरेभरे व सुन्दर प्रांगण से जो सुन्दर शामियानो और रंग बिरगी ध्वज पताकाओ से सज्जित था रक्षाबन्धन के पवित्र पर्व पर अत्यन्त मनोहारी कार्यक्रमो का विशेष आयोजन माननीय डी० सी० साहब फिरोजपुर की अध्यक्षता मे किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन आर्य अनाथालय व समस्त स्थानीय डी० ए० वी० शिक्षण संस्थाओ की ओर से किया गया था जिसमे शहर के गणमान्य विशिष्ट नागरिक प्रसिद्ध उद्योगपति, समाज सेवी व डी० ए० वी० शिक्षण सस्थाओ के अध्यापक, अभिभावक व छात्र भारी संख्या में उपस्थित थे।

सर्व प्रथम मुख्य अतिथि सरदार इन्द्रजीत सिंह जी I. A. S. और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती चरणजीत कौर बैंस का आर्य अनाथालय तथा स्थानीय शिक्षण संस्थाओं के प्रबन्धक प्रि० पी० डी० चौधरी व श्रीमती सन्तोष चौधरी ने स्वागत किया। सर्व श्री ओ० के० खुल्लर एडवोकेट प्रधान लायन्स क्लब फिरोजपुर ग्रेटर, श्री चन्द्र मोहन एडवोकेट अध्यक्ष डी० ए० वी० महिला कालेज स्थानीय समिति श्री शुभरतन मडिया प्रधान रोटरी क्लब, श्री बृजभूषण सामलका प्रधान लायन्स क्लब, प्रसिद्ध वस्त्र विक्रेता व कर्मठ नेता लाला रामचन्द्र आर्य, श्री द्वारका नाथ वर्मा, डा० कमल कान्त, डा० वीरेन्द्र शर्मा, प्रि० ललिता देवी, प्रि० त्रिलोकचन्द गुप्ता, प्रि० रमन, वाईस प्रि० श्रीमती शुक्लासोनी, श्री अतुल शर्मा आदि के साथ मिलकर पुष्पगुच्छको व पुष्प हारो से भव्य स्वागत किया। आर्य समाज सिकरी बाजार भटिण्डा के प्रधान श्री रामचन्द्र भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

डी० सी० साहब व उनकी धर्मपत्नी ने नव निर्मित लाजवन्ती फ्री डिस्पेन्सरी का उद्घाटन किया। इस नि.शुल्क चिकित्सालय से आश्रम के सदस्यों के अतिरिक्त बाहरी क्षेत्र के भी एक हजार के लगभग विद्यार्थी लाभ उठाते हैं। इस कार्य पर आश्रम का कई हजार रुपया मासिक खर्च आता है। इस कार्य को अनुभवी डा० श्री के० सी० अरोडा B. A. M. S. M. I. M. S. संभालते थे जो प्रति दिन सायं आकर बच्चो का पूर्ण निरीक्षण करते है। इस समाज सेवा के कार्य से डी० सी० साहब व उनकी धर्मपत्नी बहुत प्रभावित हुए।

सभा स्थल पर पहुचने पर डी० ए० वी० गर्ल्स हायर सेकेण्डरी स्कूलकी छात्राओ ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। वाइस प्रिंसीपल श्रीमती शुक्ला सोनी ने सस्थाओं का परिचय दिया तथा इनके विकास का श्रेय प्रि० पी० डी० चौधरी व श्रीमती सन्तोष चौधरी के तप-त्याग व कुशल निर्देशन को दिया। इसके पश्चात् आश्रम की कन्याओ ने मान्य डी०सी० साहब व अन्य विशिष्ट व्यक्तिओ को 'राखी' बाधी और आशीर्वाद प्राप्त किया। इसी अवसर पर भव्य और मनोहारी सांस्कृतिक रगारग कार्यक्रमो का आयोजन किया गया जिसमें लोक नृत्य, लोकगीत एकाकी नाटक व कविताए आदि प्रमुख थे। सबसे भावनात्मक एकाकी 'कुदरत दे सब बन्दे' दयानन्द माडल स्कूल के छोटे छोटे बच्चो ने राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक सद्भावना, अखण्डता आदि के गुणो से युक्त अभिनय द्वारा सभी आगन्तुको का मन मोह लिया। इस नाटक के द्वारा भारत के माननीय प्रधानमन्त्री के विचारो को घर घर पहुचाने में काफी सफलता प्राप्त हुई। डी० ए० वी० गर्ल्स हायर सेकेण्डरी स्कूल तथा एच० एम० पब्लिक स्कूल के बच्चो ने सुन्दर रगबिरंगी पोशाको से सजी तितलियो के समान नृत्यो द्वारा पजाबी लोक नृत्य गिद्धा व हरियाणवी नृत्य प्रस्तुत किए जिन्हे बहुत ही पसन्द किया गया। दयानन्द माडल स्कूल व एच० एम० हायर सेकेण्डरी स्कूल के बालको ने हास्य व्यग के कार्यक्रमो द्वारा स्वस्थ व सरस मनोरञ्जन किया।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

यू० १०३/८१ लायसेंस टु पोस्ट विदाउट प्री-पेमेण्ट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११६३/७२ डी० सी० 409

आर्य समाज पर डी. डी. ए. का आक्रमण

दिल्ली विकास प्राधिकरण का मकान गिराने वाला दस्ता २ अगस्त को आर्य समाज, मयूर विहार को यज्ञशाला को ध्वस्तकर उस पर लगे 'ओ३म' के झडे को फाडकर फेंक गया। मयूर विहार निवासियों की ओर से पिछले तीन वर्ष से इस भूमि पर आर्य समाज मन्दिर की स्थापना के लिए पत्र-व्यवहार तथा भेंट वार्ता निरन्तर चल रही है। दि० १५-१२-८३ को दि० वि० प्रा० ने पत्र सख्या F ८ (४२) /८२—एल-एस-बी (I) द्वारा सूचित किया कि उनके प्रार्थना-पत्र पर सहानुभूति पूर्वक विचार किया जा रहा है। मयूर विहार निवासी इस विषय पर दिल्ली के उपराज्यपाल तथा क्षेत्र के सासद एव केन्द्रीय मत्री श्री भगत से मिलकर उनसे भी आश्वासन प्राप्त कर चुके है। उसके बावजूद दि० वि० प्रा० की यह कार्यवाही न केवल अवैधानिक है अपितु जनता की भावना से खिलवाड भी है। समाज की ओर से इसके विरोध में आवश्यक कार्यवाही की जा रही है। आशा है आर्य जनता मयूर विहार निवासी आर्य समाजियो के इस संघर्ष में उनको नैतिक-सहायता प्रदान करेगी।

—ठाकुरदत्त खन्ना, मंत्री आर्य समाज मयूर विहार

दहेज के कोढ़ को मिटाइए

आजकल दहेज प्रथा विकराल रूप धारण कर गई है। जो माता-पिता दहेज देने मे असमर्थ हैं, प्राय: उनकी कन्याये कुवारी बैठी रहती। मेरे पास ऐसे अनेक केस आते हैं, जिनमे कन्याओ की आयु ३०-३५ वर्ष तक की हो गई है, परन्तु दहेज के कारण उनके विवाह न हो सके। जन्म से जाति-पाति का बन्धन समाप्त हो जाये तो दहेज की समस्या बहुत हद तक सुलझ जायेगी। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१ मे एक दहेज रहित अन्तर्जातीय विवाह विभाग खोल रखा है।

मिलने का समय
सायकाल ५ बजे से ७ बजे तक (रविवार छोडकर)

डा० मदनपाल वर्मा मैनेजर
मैनेजर अन्तर्जातीय विवाह विभाग
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1

योग्य वधू चाहिए

३० वर्षीय, कद ५ फुट ११ इच, बी० एस० सी०, गौर वर्ण, राजनैतिक व सामाजिक कार्यकर्ता, गाव में ८० एकड़ सिंचित भूमि, वार्षिक आय लाखो में, युवक के लिए सुन्दर, सुशील, कन्या की आवश्यकता है। शासकीय सेवा मे कार्यरत कन्या को प्राथमिकता। पत्र-व्यवहार का पता—रमेश चन्द्र पाटीदार, सेण्ट्रल सर्विस, बागली, जि० देवास (म० प्र०)

"आर्य पथ" मासिक

पिछले पाच वर्षों से देश विदेश में धार्मिकता का प्रचार प्रसार करने वाली इस पत्रिका के, जिसकी उच्चतम कोटि की धार्मिक मासिक पत्रिकाओं में गणना है, अवश्य आजीवन या मासिक सदस्य बन वैदिक धर्म के प्रचार में अपना योगदान दीजिये।

वार्षिक सदस्यता ३०/- रुपये, आजीवन सदस्यता ३००/-रुपये
संचालक "आर्य पथ", सेठी बिल्डिंग, विजय चौक, कृष्ण नगर, दिल्ली-५१

एम० जी० डी० ए० वी० कालेज, भटिण्डा

शिक्षा वर्ष १९८४-८५ मे इस कालेज के छात्रों ने न केवल गत वर्षों की परम्परा को स्थिर रखा अपितु इस वर्ष उन्होने और भी अनेक कीर्तिमान स्थापित किए। इस वर्ष मेडिकल ग्रुप में कु० सिमरित कौर ग्रेवाल विश्वविद्यालय में प्रथम रही। नौन-मेडिकल ग्रुप में छात्राओं में कु० अनीता रानी प्रथम रहीं। गौतम गर्ग ने कौमर्स ग्रुप में प्रथम तथा गौतम नेवटिया ने द्वितीय स्थान प्राप्त किए। इंजीनियरिंग में सलिल चौधरी और विकास दीप ने उच्च स्थान प्राप्त किए।

(पृष्ठ ११ का शेष)

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी.....

आश्रम के बालक बालिकाओ ने भी रक्षाबन्धन के अवसर पर कविता पाठ व निबन्ध पढे। इस कार्यक्रम के तुरन्त बाद डिप्टी कमिश्नर साहब की धर्मपत्नी ने सभी कलाकार बच्चो को प्रसन्नता से पुरस्कार बाटे। विशिष्ट व्यक्तियों के द्वारा आश्रम की उन्नति को दृष्टि मे रखकर प्रवचन किए गए। लायन्स क्लब के ग्रेटर के प्रधान श्री ओ०के० खुल्लर एडवोकेट ने अनाथालय को अनाथ बच्चो की भलाई का एक सर्वश्रेष्ठ केन्द्र बताते हुये प्रि० पी० डी० चौधरी व श्रीमती चौधरी के कुशल निर्देशन की भूरि-भूरि सराहना की। रोटरी क्लब के प्रधान श्री शुभरतन मडिया, लायन्स क्लब के प्रधान श्री ब्रजभूषण सामलमा तथा इनके सहयोगियों ने आश्रम के कार्यों को समाज सुधार का महत्वपूर्ण कार्य बताते हुए आश्रम के बच्चो के लिए वस्त्र, बर्तन, खाद्य सामग्री आदि बड़ी संख्या मे उपहार प्रदान किये। श्री ओ० के० खुल्लर तथा श्री सतीशचन्द्र एडवोकेट ने बार एसोसियेशन की ओर से 501/- रुपए दान दिये। आर्य समाज सिरकी बाजार भटिण्डा के प्रधान श्री रामचन्द्र जी ने 1000/- दान दिए। डा० वेदप्रकाश पूर्व प्रधान लायन्स क्लब ने भी आश्रम की उन्नति को सराहते हुये भविष्य मे भी आश्रम की तन-मन-धन से मदद करने का वचन दिया।

माननीय अध्यक्ष डी०सी० साहब ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे इस आर्य-अनाथालय की खुशहाली और उन्नति को स्पष्ट शब्दों मे स्वीकार करते हुये कहा कि वर्तमान में इस आश्रम को वह गौरव प्राप्त है जो पहले शायद कभी भी न रहा हो। अब इस स्थान के बालक व बालिकाए अनाथ व कष्टमय जीवन नहीं बिताते वरन् एक मध्यम आय वर्गीय परिवार के समान सुखी व सन्तुष्ट जीवन-यापन करते हैं और इस सब कार्य की श्रेष्ठता का पूर्ण श्रेय कुशल प्रबन्धक व निर्देशक प्रि० पी०डी० चौधरी व श्रीमती सन्तोष चौधरी को है। यह आश्रम एक तीर्थ स्थान के समान पवित्र व महत्वपूर्ण बन गया है। मैं आश्रम की उन्नति व कार्यक्रमो से बहुत प्रभावित हुआ हूं। उन्होंने आश्रम के कल्याण व फ्री डिस्पेंसरी के विकास तथा राखी बधवाने पर कन्याओ की शुभकामनाएं करते हुये अपने रेडक्रास सोसायटी फण्ड मे से 10000/- (दस हजार रु०) देने की घोषणा की तथा भविष्य मे भी सहायता करते रहने का विश्वास दिलाया।

अपने धन्यवाद भाषण मे प्रि०डी०पी० चौधरी ने मान्यवर डी०सी० साहब को कुशल प्रशासक, विद्वान् व सहृदय उच्च व्यक्तित्व वाला अधिकारी और योग्य दिशा निर्देशक बताते हुए कहा कि इनसे भविष्य में भी बहुत आशाएं हैं तथा मैं इनके स्वास्थ्य व दीर्घायु की कामना करता हूं। माननीया बहन श्रीमती चरणजीत कौर बैंस का भी बहुत आभार प्रकट करते हुए उन्होने कहा कि इन्होंने भी बालको का बहुत उत्साहवर्द्धन किया है तथा हमारे इस समारोह पर आशीर्वाद की वर्षा की है।

इस सारे कार्यक्रम के दौरान सभी आगन्तुकों के लिए शिकंजिवी-शर्बत आदि शीतल पेय का बड़ा व्यवस्थित प्रबन्ध था। अतिथि सत्कार का श्रीमती सन्तोष चौधरी स्वयं निर्देशन कर रही थीं।

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस०नारायण एण्ड सन्स७११७/१८ पहाड़ी धीरज, (फोन : ५१६५१८, ५२७३३५) दिल्ली से छपवा कर ... प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली। फोन (343718)

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

क मूल्य-२५ रुपये | विदेश में ३० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४८, अंक ४०, रविवार, २९ सितम्बर, १९८५ | दूरभाष : ३४३७१८
वन सदस्य-२५१ रु० | इस अंक का मूल्य—६० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८५, दयानन्दाब्द १६० | आश्विन कृष्णा १ २०४२ वि०

जर्मन गौओं के शीघ्र आयात की संभावना

जर्मनी की राजकुमारी इरीन द्वारा प्रस्तावित तथा राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड तथा जर्मनी के कुछ उच्च राजनीतिज्ञो द्वारा समर्थित जर्मन गायो का भारत मे आयात अब इस विषय मे रुचि रखने वाले लोगो के प्रयास से संपन्न होने की संभावना बढ़ गई है। इस से पूर्व यह 'गऊ उपहार' योजना खटाई मे पड़ गई थी क्योकि जर्मनी की सरकार उन गायो को जो कि वहाँ के कसाई-घरो मे भेजे जाने के लिए निर्धारित थी, हवाई जहाज से भारत भेजने के लिए विदेशी मुद्रा की सहायता देने के लिए तत्पर नही थी। तब यह निश्चय किया गया कि यदि भारत सरकार उन गायो के वायुयान द्वारा परिवहन की स्वयं व्यवस्था कर सकती है तो वह उन्हें ले जा सकती है।

अब यह सूचित किया गया है कि [illegible] सरकार ने इस निमित्त पचास लाख भारतीय मुद्रा का प्रबन्ध कर दिया है जो कि कम से कम पन्द्रह सौ गायो के वायु परिवहन का व्यय भार तो हो ही सकता है। आरम्भिक योजना तो यह थी कि २५ हजार होल्स्टीन और फ्रिसियन नस्ल की गायो को लिया जाय किन्तु दोनो देशो के विदेश विभाग ने इसे अनावश्यक व्यय समझकर उस योजना को स्थगित कर दिया था। किन्तु पिछले कुछ महीनों मे इस दिशा मे फिर जर्मनी में भागदौड होने लगी और स्पेन की ओर से भी जोर दिया जाने लगा। यो भी जर्मनी की सरकार अभी भी इस विषय मे अधिक उत्सुक नही दीखती क्योकि यह विषय विकास से असम्बद्ध तथा निम्न वरीयता का है। जर्मन लोगो की यह धारणा है कि गायो का आयात एक प्रकार से राजनीतिक है। संबंधित अधिकारियो से हुई बातचीत से यह विदित हुआ कि अनेक उच्च राजनीतिज्ञ इस विषय मे राजकुमारी इरीन को, जिन्होने कांचीपुरम के शंकराचार्य का शिष्यत्व स्वीकार कर लिया है, सहायता करने मे रुचि रखते थे। अन्यथा सारे योरोप मे दशाब्दो से गाए कसाई-खाने जाती ही थी, अतः कुछ और अधिक गाए चली जाती तो इससे किसी प्रकार का अन्तर पडने वाला नही था।

इसी प्रकार योरोपियन देश भारत को कृत्रिम गर्भाधान के लिए पशुओ का वीर्य निर्यात करते ही थे, जिसमे व्यय भी कम होता था और परिणाम भी अब तक अच्छा ही होता रहा था। किन्तु जब भारतीय राजनीतिज्ञ इसमे रुचि रखते हैं तो जर्मनी वालो को उन्हे रुष्ट करने का कोई कारण इसमें दिखाई नही दिया।

यह याद रखना होगा कि इस वर्ष के आरम्भ में जब इस प्रस्ताव को सर्व प्रथम भारत सरकार सम्बन्धित मन्त्रालयो के समक्ष रखा गया था तो उनपशुओ के स्वास्थ्य के संबंध मे सन्देह व्यक्त किया गया था और यह शंका व्यक्त की जा रही थी कि वास्तव मे वे दुधारू हैं अथवा नही या भारत मे इतनी अधिक संख्या मे क्रौस-ब्रीडिंग कारगर सिद्ध भी होगा अथवा नही।

श्री अमरनाथ यात्रा में असामाजिक तत्व सक्रिय

प्रधान-मन्त्री से हस्तक्षेप की अपील

पवित्र अमरनाथ-गुफा से लौटे हुए तीर्थयात्रियो के एक दल ने, जिसमें अधिकांश साधु-सन्त थे, प्रधान मन्त्री महोदय से भेंट करके उन्हें सूचित किया कि श्री अमरनाथ की यात्रा मे तीर्थ यात्रियो को बहुत त्रस्त किया जाता है। उन्होने प्रधान मंत्री से निवेदन किया कि कम से कम तीर्थयात्रा के लिए जाने वाले भक्तों के जान-माल तथा इज्जत की रक्षा का समुचित सुप्रबन्ध किया जाना चाहिए। प्रधान मंत्री स्वयं इस विषय में हस्तक्षेप करें तभी यह सम्भव हो सकता है। अपनी व्यथा-कथा सुनाते हुए सन्तो ने बताया कि श्रीनगर मे न केवल उनको लूटा गया अपितु अनेक साधुओ को पीटा भी गया। उनका कहना था कि तीर्थ-यात्री किसी भी प्रकार अमरनाथ यात्रा के लिये न जा सकें इसके लिए असामाजिक तत्वो द्वारा सुनियोजित षडयन्त्र चलाया जा रहा है और इस प्रक्रिया में न केवल यात्रियो को लूटा जाता है अपितु महिला यात्रियो का अपमान भी किया जाता है। किसी भी शासन के लिए यह नितान्त अशोभनीय है, किन्तु जम्मू-कश्मीर मे यह जघन्य कृत्य निरन्तर हो रहा है और प्रशासन इस ओर आँखे मूंदे हुए है। यात्रियो ने प्रधानमंत्री महोदय से याचना की कि वे इस विषय मे स्वयं हस्तक्षेप कर तुरन्त कार्यवाही करे।

टंकारा के उपदेशक विद्यालय में नए आचार्य

गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगडी के पूर्व मुख्याधिष्ठाता श्री धर्मवीर विद्यालंकार टंकारा के अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय के नए आचार्य नियुक्त हुए हैं और उन्होने अत्यन्त उत्साह और लगन से कार्य प्रारम्भ कर दिया है। चित्र मे उनके साथ उनकी पत्नी आचार्याणी श्रीमती पुष्पा विद्यालंकृत भी है जो अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द श्री महाराज की पोती और प० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति की पुत्री है। इन दोनो के वहां पहुच जाने से संस्था मे नवजीवन आ गया है।

परामर्शदाता-अमर स्वामी सरस्वती | सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक रामनाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

छोड़ नटनागर तुम्हें जाऊँ कहां

—सुरेशचन्द्र वेदालंकार—

न ह्यङ्ग नृतो त्वदन्यं विन्दामि राधसे।
राये द्युम्नाय शवसे च गिर्वण ॥
ऋ० २-२४-१२

(अङ्ग) हे प्रिय ! (नृतः) नाचने वाले ! (राधसे) साधना की सिद्धि के लिए तुझे छोड़कर किसी अन्य को नहीं पाता हूं। (गिर्वण:) हे वाणी से भजनीय (राये द्युम्नाय शवसे च) धन, तेज और बल के लिए (अन्य किसी को नहीं पाता)

क्या तुम पूछते हो कि हम किसकी उपासना करें, किसे अपनी श्रद्धा और भक्ति की भेंट चढ़ायें ? यह देखो—यह विशाल सूर्य, ये नक्षत्र, ये ऊंचे-ऊंचे पहाड़, ये गंभीर और दूर से दूर तक फैले हुए समुद्र, ये अनन्त दिशायें जिसके इशारे से नाच रही है, भला बताओ उससे उपयुक्त, उससे श्रेष्ठ, उससे महान् कौन-सी शक्ति हो सकती है जिसके चरणों में अपनी श्रद्धा की भेंट चढ़ा सकें ? सम्पूर्ण विश्व का वह प्रजापति है, वह नटनागर है, हम सब उसी की प्रजायें है। जीवन की दुःख की घड़ियों में उसी का नाम हमें शक्ति, विश्वास, अभय और बल देता है, वह प्रभु ही हमारी रक्षा करता है, हमें कष्टों से बचाता है। पाप मार्ग से विमुख करता है। उस महान् प्रभु का आश्रय पाकर ये पृथ्वी आदि पदार्थ अपने प्राणवत्ता को, सामर्थ्य को प्राप्त कर रहे हैं। इतने सामर्थ्यवान् होते हुए भी इनको वह प्रभु जिस तरह नाचः है, ये नाचते हैं, उसके इशारे प चलते हैं। तो बताओ कि हे वाणी सभजनीय देव ! धन, तेज बल लिए मैं और कहाँ जाऊं—किस पास जाऊं ? किससे जाकर प्रार्थना करूं ? किसके चरणों में आत्म की भेंट रखूं ? मुझे तो तुम्हा सिवाय कोई अन्य नहीं दिखाई देता

हिन्दी का एक कवि कहता है :-
छोड़ नट नागर तुम्हें जाऊं कहा
तुम सा वरदाता भला पाऊं कहाँ
कीर्ति दो, धन दो, प्रभो ! बल दो
पूर्ण हो सब कामना फल दो मुझे
गा रही सब वाणियाँ तुमको यहाँ
भेंट मैं अन्यत्र प[illegible] कहा

पता—६ ए० इ० १, ओवरा मिर्जापुर (उ० प्र०)

'वेदार्थ पारिजात' का खण्डन करने वाले 'वेदार्थ कल्पद्रुम' के सम्बन्ध में सम्मति

(मूलं संस्कृते)

पौराणिक जगति विश्रुताना दशाधिकविदुषा साहाय्येन श्रीमता करपात्रिस्वामिना महर्षि दयानन्द विरचितस्य ऋग्वेदादिभाष्यभूमिकाग्रन्थस्य खण्डनाय प्रणीतं 'वेदार्थपारिजाताख्यं' ग्रन्थं पर्यालोचयितुं 'वेदार्थ कल्पद्रुम' इति नाम्ना गीर्वाणवाण्या व्यरचि ग्रन्थरत्नं श्रीमता मनीषिमिश्रेण विशुद्धानन्दमिश्रेण शास्त्रिव्याकरणाचार्येण।

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिकायाँ प्रतिपादितमृषिदयानन्दमतन्निराकर्तुं स्वग्रन्थस्यादावयं यति करपात्री या घोषणा सगर्वं व्याजुघोष, तामयं विद्वद्धौरेयो विशुद्धानन्दमिश्रः सखेलं प्रतिपदं शकलीकृत्य श्री दयानन्दर्षिमतं सुतरां श्रुतिशास्त्रसम्मतमिति सुस्पष्टं प्रत्यपादयत्।

प्रायेण वैयाकरणा जटिलान्नीरसा च भाषा प्रयुञ्जते। परमयमाचार्यवर्यो यादृशी ललितललिता खण्डनेऽपि मधुमती भाषा प्रायुङ्क्त, तया नूनं सहृदयचेतांसि प्रसादयिष्यति।

क्व तत्र चतुर्थाश्रमस्थस्य रागद्वेषविनिर्मुक्तस्य करपात्रिणः पाषाणशकलकर्कशा अशोभना ऋषि दयानन्द लक्ष्यीकृत्य प्रयुक्ताः शब्दाः, क्व चायमर्यादाव्रतपालनपरस्याचार्यवर्यस्य याथार्थ्यं प्रतिपादयित्री गंभीरा शैली।

ग्रन्थममुं रचयन्नाचार्यवर्यो विशुद्धानन्दो न केवल शास्त्रीयविषयविवेचने नैजं प्रागल्भ्यं प्राकाशयत्, अपित्वधुनातने समयेऽपि संस्कृतगद्यलेखने बाणदण्डिसदृशी क्षमतामदर्शयत्।

ग्रन्थारम्भे विविधेषु छन्दःसु रचितानि चेतोहराणि भावभूयिष्ठानि पद्यानि नूनं सहृदयमनःप्रसादकानि, प्रकाशयन्ति च लेखकस्य पद्यरचनायामपि वैदग्ध्यम्।

किं बहुना, वेदार्थ कल्पद्रुममम्मुं ग्रन्थं पाठंपाठं हर्षभरेण मनसानुजतुल्यं प्रबुद्धप्रवरं विशुद्धानन्दं स्नेहरससिक्ताभिः शुभकामनाभिर्वर्धयामि भूयोभूयः।

मङ्गलाभिलाषी—
शिवकुमारः शास्त्री (पूर्वलोकसभासदस्य)

अन्यच्च—
सौभाग्यशालिन्यै, विद्याविद्योतितचारुचरितायै, स्तन्येन साकं सन्ततिस्वान्तेषु संस्कृतसंभाषण बीजान्निर्वपन्त्यै, वेदार्थकल्पद्रुमस्यार्यभाषानुवादिकायै विदुष्यै निर्मलायै अपि सस्नेह साधुवादं व्याहरामि।

ज्येष्ठभ्रातृकल्पः—
शिवकुमारः शास्त्री

(हिन्दी अनुवाद)
वेदार्थ कल्पद्रुम के विषय में सम्मति

पौराणिक जगत् में विख्यात दशाधिक विद्वानों की सहायता से श्री स्वामी करपात्री जी ने महर्षि दयानन्द जी द्वारा विरचित ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका के खण्डनार्थ 'वेदार्थ पारिजात' नामक ग्रन्थ लिखा। इस वेदार्थ पारिजात की समालोचना के लिए आर्य विद्वद्वर श्री विशुद्धानन्द मिश्र शास्त्री व्याकरणाचार्य ने 'वेदार्थकल्पद्रुम' नाम का ग्रन्थ रचा है।

ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में ऋषि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों की धज्जियां उड़ाने की गर्वोक्ति श्री करपात्री जी ने वेदार्थ पारिजात में बड़े दर्प से की है। आर्य विद्वद्वर श्री विशुद्धानन्द जी ने अनायास ही करपात्री जी की प्रत्येक युक्ति के टुकड़े-टुकड़े करके उनकी दर्पोक्ति को निरस्त कर ऋषि दयानन्द की स्थापना वेदशास्त्रानुमोदित है—यह स्पष्ट सिद्ध कर दिया है।

प्राय: व्याकरण के विद्वान् जटिल और नीरस संस्कृत लिखते हैं। किन्तु आचार्यवर विशुद्धानन्द जी ने वेदार्थ कल्पद्रुम में ऐसी ललित और खण्डन करते हुए भी ऐसी मधुर भाषा लिखी है कि सहृदय व्यक्ति उस शैली पर मुग्ध हुए बिना नहीं रह सकते।

कहाँ तो राग-द्वेष विनिर्मुक्त संन्यासाश्रमी श्री करपात्री जी, जिन्होंने ऋषि दयानन्द की आलोचना में अशोभन शब्दमय पाषाण फेंके हैं और कहाँ आर्य मर्यादाव्रती आचार्य विशुद्धानन्द की गौरवशालिनी शैली, जिसमें कहीं भी स्तरहीन शब्दों को नहीं आने दिया।

इस ग्रन्थ की रचना करते हुए श्री आचार्य विशुद्धानन्द जी ने केवल शास्त्रीय विषय विवेचन में ही अपना नैपुण्य नहीं प्रकट किया, अपितु आज भी संस्कृत गद्य लिखने में बाण और दण्डी की टक्कर के विद्वान् विद्यमान हैं, यह भी सिद्ध कर दिया है।

ग्रन्थ के प्रारम्भ में विभिन्न छन्दों में बड़ी ही मनोहारिणी पद्यरचना आचार्यवर्य ने प्रस्तुत की है, इससे पद्यरचना में भी उनकी गहरी पैठ का पता चलता है।

किं बहुना, इस ग्रन्थ रत्न को पढ़कर प्रफुल्लचित्त से स्वानुजतुल्य प्रबुद्धप्रवर आचार्य विशुद्धानन्द जी को स्नेहरससिक्त शुभ कामना अर्पित करता हूं।

—मंगलाभिलाषी
शिवकुमार शास्त्री (पूर्व सांसद, लोकसभा)

अन्यच्च—
सौभाग्यवती विद्याविभूषिता, बच्चों के हृदय और मस्तिष्क में अपने दूध के साथ ही देववाणी में भाषण के बीज बोने वाली, वेदार्थ कल्पद्रुम की भाषानुवादिका विदुषी बहन आचार्या निर्मला को भी सस्नेह साधुवाद देता हूं।

ज्येष्ठ भ्राता तुल्य—
शिवकुमार शास्त्री, काव्य-व्याकरणतीर्थ

सुभाषित

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा
सदसि वाक्पटुता युधि विक्रम. ।
यशसि चाभिरुचि व्यसन श्रुतौ
प्रकृति सिद्धमिद हि महात्मनाम् ॥

विपत्ति मे धैर्य धारण करना, सासारिक समृद्धि पा जाने पर क्षमाशील होना, सभा-सोसायटी मे सदा कुशलतापूर्वक वाणी का प्रयोग करना, युद्ध के अवसर पर पराक्रम प्रदर्शित करना, अपने यश को कभी कलकित न होने देना, वैदिक ग्रन्थों के स्वाध्याय में अनुराग रखना—महान् आत्माओं के ये गुण स्वाभाव-सिद्ध होते है। —भर्तृहरि

विदेशी गायों का आयात

सम्पादकीयम्

5 मई के 'आर्यजगत्' मे हमने 'किसान से कसाई तक' जो अग्रलेख लिखा था उसकी काफी चर्चा रही। हिन्दी के लगभग 25-30 समाचार-पत्रो से उसे अविकल या आशिक रूप से प्रकाशित किया। कई गो भक्तो ने उसके पक्ष-विपक्ष मे टिप्पणिया की। इस सम्बन्ध मे विश्व हिन्दू परिशद् के कोषाध्यक्ष श्री सदाजीवनलाल ने अपने अनुभव के आधार पर एक सतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है जिसे महाराष्ट्र गो-पालन समिति, बम्बई ने प्रचारित किया है। हम यहा "गोधन" नामक सहयोगी मासिक पत्रिका से उसे उद्धृत कर रहे है। आशा है कि इस विषय मे रुचि रखने वाले समस्त भारतवासी इन सुझावो पर ध्यान देगे। 'विदेशी गायो के आयात से पूर्व सावधानियो की आवश्यकता' शीर्षक से वे लिखते है :

"भारत प० जर्मनी से बीस हजार दुधारू (होलस्टीनफ्रीजियन) गायो का आयात करेगा। इन गायो का पाच हजार का पहला जत्था अक्तूबर मे भारत पहुचेगा, जिन्हे नैनीताल जिले के तराई क्षेत्र सितारगज मे रखा जायेगा। इस फार्म की पाच हजार एकड जमीन मे चारा पैदा किया जायेगा। फार्म को इस क्षेत्र में विशेदज्ञता प्राप्त करने वाले पतनगर विश्वविद्यालय का भरपूर सहयोग मिलेगा। उत्तर प्रदेश सरकार ने सब बीस हजार गायो को उन्ही बीस जिलो मे रखने की इच्छा व्यक्त की है, जो पतनगर विश्वविद्यालय क्षेत्र मे आते है।

भारत को ये गायें नि शुल्क (मात्र लाने का खर्चा वहन करने की शर्त पर) दिलाने का श्रेय स्पेन की राजकुमारी इरीन को है, जो जगदगुरु शकराचार्य कांची कामकोटि पीठ की शिष्या है। उनकी प्रार्थना पर यदि फ्रांस, बेल्जियम, हालैण्ड आदि देश भारतीय प्राथना पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करने को तैयार हो गये, तो उसे ऐसी दो लाख गायें, जिनका इस वर्ष इन देशो मे दूध के आधिक्य के कारण वध किया जाने वाला था, मिल सकेगी। भारत मे इस समय सवा 18 करोड के करीब गायें हैं।

कुछ जानकार आलोचको ने निम्न कारणो से यह आशका व्यक्त की है कि ये गाये भारतीय अवस्थाओ के उपयुक्त नही होगी, और शीघ्र ही उसी तरह मर जायेगी, जिस प्रकार आस्ट्रेलिया से आई विदेशी गायो का एक झुण्ड 'रिन्डर पेस्ट' (पशुओ के एक रोग) का टीका लगने ही समाप्त हो गया था। आलोचको की आशका के कारण निम्न है —

(1) चूकि भारत की अवस्थाए इन विदेशी गायो के अनुकूल नही है, और भारत के पास वे साधन उपलब्ध नही है, जिनकी वे अभ्यस्त है, इसलिए वे उतना दूध नही दे पायेगी, जितना वे विदेशो मे देती थी। इसका प्रभाव उनकी सेहत पर पड सकता हैं।

(2) इन गायो मे रोग-प्रतिरोधक-शक्ति कम होती हैं, और इस कारण उनके रोग-ग्रस्त होकर कभी भी मर जाने का भय सदा बना रहेगा।

(3) यूरोपीय देश, जो सदा अपना घटिया, फालतू माल ही तीसरे विश्व के देशो पर थोपने को तैयार रहते हैं, शायद अपनी अच्छी से अच्छी गाये न भेज कर निकृष्टतम गायें ही भेजेगे।

(4) वे शायद हमे उनकी सेहत का पूरा ब्यौरा भी नही भेजेगे, जिनके अभाव मे हमारे लिए उनकी सही देखभाल करना कठिन हो जायेगा।

(5) इन सब गायो को यूरोपीय देशो मे मशीनो से दुहा जाता था, और भारत मे यह सुविधा उपलब्ध नही है, इसलिए उनके द्वारा दिए जाने वाले दूध की मात्रा, हाथ से दूध निकालने से निश्चित ही कम हो जायेगी। मशीन की कीमत एक विदेशी गाय की कीमत से दस गुना अधिक है।

(6) इन गायो की पहली खेप अक्तूबर मे भारत आने वाली है। उनके सम्बन्ध मे सब आवश्यक सूचनाए इतने कम समय मे भारत को देना प० जर्मनी के लिए कठिन होगा, और इन सूचनाओ के अभाव मे अच्छी देखभाल मे कमी आ सकती है। इसका असर उनकी सेहत पर पड सकता है।

(7) इन गायो के आयात का प्रभाव भारतीय नस्लो की गायो पर भी अवश्य पडेगा, यदि उन्हे उनसे पृथक न रखा गया।

गोपालन और गोरक्षा मे गहरी रुचि होने के कारण, मैंने इस समस्या पर काफी गहराई से विचार किया है। इस विचार के बाद, मै जिन निष्कर्षों पर पहुचा हू, वे अपने कुछ सुझावो के साथ, आगे इस स्कीम से सबधित सभी व्यक्तियो के विचारार्थ प्रस्तुत है।

हम इस स्कीम को सफल बना सकते हैं, बशर्ते कि हम इन गायो की देखरेख मे वे पूरी सावधानिया बरतें, जो अपेक्षित हैं। हमारे पास सबसे बडा साधन है जन-शक्ति का, जो हमारे पास अपरिमित है। प्रशिक्षित, कर्मठ और निष्ठावान् कार्यकर्त्ता उत्तम और कुशल प्रबधक तथा उन स्थानो का सही चुनाव, जहा इन गायो को रखा जायेगा—इन बातो का पूरा ध्यान रखकर ही हम इस स्कीम को सफल और यशस्वी बना सकेंगे।

चूकि भारत मे क्रास ब्रीडिग के प्रयोग सफल नही रहे हैं, अत यह बहुत जरूरी है कि इन विदेशी गायो से उत्पन्न साडो का प्रयोग भारतीय गायो के साथ क्रास ब्रीडिग के लिए हरगिज न किया जाये, बल्कि उन्हे देशी गायो से बिलकुल अलग रखा जाये।

मेरी राय मे इन गायो के लिए आदर्श स्थल हैं—हिमाचल प्रदेश में किन्नौर लाहौल-स्पिती, कुल्लू, और चबा, उत्तर प्रदेश मे गढवाल, कुमायू और पिथौरागढ जैसे क्षेत्र, तथा प० बगाल, जम्मू कश्मीर, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश तथा मणिपुर जैसे राज्यो के वे स्थान जो काफी ऊचाई पर स्थित हैं, मगर जहा घास बहुतायत से उपलब्ध हैं। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए कि वे सब स्थान सडकों से जुडे हो, ताकि वहा उत्पन्न दूध, तथा दूध से बनी वस्तुओ—घी, मक्खन, पनीर, दुग्ध-चूर्ण आदि को नगरो और महानगरो मे बिक्री के लिए पहुचाया जा सके। और पिछडे व उपेक्षित इलाके भी आर्थिक उन्नति की दौड मे आगे बढ सके।

ये गाये जिन डेयरियो मे रखी जाये, उनमे उनकी देखभाल के लिए भूतपूर्व सैनिको तथा मन से डेयरी का धधा अपनाने वाले निष्ठावान मेहनती और स्वस्थ व्यक्तियो को जो गरीबी की रेखा के आसपास का जीवन बिता रहे हो, रखा जा सकता है। इससे देश को दुहरा लाभ होगा। ये लोग अधिक से अधिक दुग्ध-उत्पादन करने मे अपनी जान लगा देंगे, और पडोसी देश चीन से सघर्ष होने की स्थिति मे अपने देश का बचाव भी करेंगे।

इन गायो के गोबर का उपयोग उन स्थानो पर गोबर-गैस सयत्र लगाने के लिए भी किया जा सकता है। ये संयत्र डेयरियो मे काम करने वालो को मुफ्त बिजली और चूल्हो के लिए गैस प्रदान करने के अलावा, प्राकृतिक खाद्य भी प्रदान करते रहेंगे।

भारत को इन देशो से होलस्टीन-फ्रीजियन या रेड डेन गायो के स्थान पर जर्सी गायो की माग करनी चाहिए, क्योकि जर्सी गाय के दूध मे अधिक वसा होती है, और रोगो का सामना भी वे बेहतर ढंग से कर सकती हैं। भारत को इन गायो को देने वाले देशो से यह भी माग करनी चाहिए कि वह इन गायो को दिया जाने वाला विशेष 'फीड' भी उचित मूल्यो पर देते रहे तथा वे मशीने भी सुलभ मूल्यों पर दे, जिनसे विदेशो मे उनका दूध निकाला जाता था। और बाद मे उस विशिष्ट चारे और दूध दुहने वाली मशीनो का उत्पादन भारत मे ही सरलता पूर्वक किया जा सकता है।

सक्षेप मे, भारत को इन गायों की अच्छी देखभाल करके, तथा उनका अच्छे से अच्छा उपयोग करके, ई०ई०सी० और आक्स के प्रवक्ताओ के इस भय को दूर करना होगा कि "यूरोप की डेयरियो की उच्चकोटि की गायो का भारत मे जीवित रहना दूभर हो जायेगा।" इन विदेशी नस्लो के बछडे जो बैल के रूप मे भारत की गरम मैदानी आबोहवा मे खेती के लिए अनुपयुक्त प्रमाणित हुए हैं, वे हमारे ही देश के ऊचे व ठडे प्रदेशो मे बडे उपयोगी प्रमाणित होगे। क्योकि शारीरिक बल मे वे हमारे बैलो से बढे चढे होते हैं।

बडी सख्या मे भूतपूर्व सैनिको एव निष्ठावान गोपालको को घने बसे मैदानो से उठाकर सीमावर्ती ऊंची पहाडियो पर बसाने से देश के कई भागों की बस्ती की सघनता और अतीव गरीबी व बेरोजगारी की समस्या भी हल हो जायेगी।

यह सच है कि भारत मे अज्ञान तथा गरीबी की वजह से गाये उपेक्षित हैं, या आवारा की तरह घूमने के लिए छोड दी जाती है, और भाति-भाति के रोगो से पीडित होकर असमय मे ही मर जाती है। मगर उनकी रक्षा हम सिर्फ उनकी पूजा करके नही कर सकते, इसके लिए हमे उन तरीको को सीखना होगा, जो विदेशी अपनी गायो को स्वच्छ रखने, तथा उनके अधिक से अधिक दूध प्राप्त करने मे काम मे लाते हैं। विदेशो से आने वाली ये हजारो गायें हमे इन तरीको को सीखने का सुनहरी अवसर प्रदान करती हैं। हमे इस अवसर का अधिक से अधिक लाभ उठाने का प्रयास करना चाहिए।"

अल्पसंख्यकों को विशेषाधिकार अनैतिक, गैरकानूनी और राष्ट्र-विरोधी हैं

—श्री विशन स्वरूप—

धर्मनिरपेक्ष राज्य की सकल्पना ने इस देश का भारी अहित किया है। वास्तव मे अग्रेजी शब्द "सैक्यूलर" का अर्थ ही गलत ढग से लिया गया है योरोपीय देशो की विशेष परिस्थितियो मे "सैक्यूलर" शब्द की उत्पति हुई थी। मजहब के नाम पर वहा भारी नरसहार हो रहे थे। जिस देश का जो राजकीय मजहब होता उसमे दूसरे मजहब के मानने वालो पर वर्बर अत्याचार होते थे और कई वार तो ऐसा भी देखने मे आया कि दूसरे मजहब वालो को जिन्दा ही हिंसक पशुओ के सामने फैक दिया जाता था। इन वर्बर अत्याचारो ने ही 'सैक्यूलर" राज्य की सकल्पना को जन्म दिया। स्पष्ट है कि 'सैक्यूलर" राज्य की कल्पना नकारात्मक थी जिसकी उत्पत्ति मजहवी राज्यो के विरोध मे हुई थी। इसका अर्थ यह हुआ कि "सैक्यूलर" राज्य मे राज्यो के नागरिको के साथ मजहव के नाम पर कोई भेदभाव नही किया जायगा। किन्तु इसका यह अर्थ कदापि नही था कि राज्य मे "सैक्यूलरिज्म" के नाम पर धम का वहिष्कार होगा और इस का यह भी अर्थ नही था कि "सैक्यूलरिज्म" के नाम पर किसी मजहवी समुदाय को विशेष अधिकार दिये जायेंगे।

भारत मे सैक्यूलरिज्म

किन्तु दुर्भाग्य से पश्चिमी देशों की इस सकल्पना को हमारे देश मे गलत रूप मे अपनाया गया और उस से राष्ट्र का इतना अहित हुआ है कि जिसकी कल्पना भी नही की जा सकती। "सैक्यूलरिज्म" की छाया मे उगे और पनपे विषैले वृक्षो पर इतने जहरीले फल लगे कि जिन से सारे राष्ट्र का वातावरण विषाक्त हो गया। विडम्वना यह है हमारे शासको ने 'सैक्यूलरिज्म ', साथ के एक अल्पसख्यक शब्द की सकल्पना कर देश के जीवन मे विष घोल दिया। अगर "सैक्यूलर' राज्य है तो मजहव के नाम पर अल्पसंख्यको के अधिकारो का क्या अर्थ है!

जब कोई राज्य अपना विशेष मजहव घोषित करता है तब अन्य मजहव वाले अल्पसख्यक हो जाते है तथा उन्हे वहुमत के मजहव वालो से सरक्षण मिलना आवश्यक हो जाता है, इसके विपरीत "सैक्यूलर" राज्य मे सभी मजहवो को समान दृष्टि से देखा जाना है। 'सैक्यूलर" राज्य की अवधारणा को स्वीकार करने और उसके वाद भी अल्पसख्यक मत और पथो को विशेष अधिकार देने से विसगति उत्पन्न हो जाती है। ऐसा ही यहा हुआ है।

सैक्यूलरिज्म और अल्पसख्यक

सामान्यत अन्यत्र कही भी अल्पसख्यक अधिकार जैसी कोई वात नही है। उदाहरण के लिए इगलैण्ड मे इस्लाम मजहव के लोग अल्पसख्यक है किन्तु उन्हे वहा चार पत्निया रखने का कोई विशेष अधिकार नही है। जो अधिकार वहा के अन्य सम्प्रदायो के लोगो को है वही मुसलमानो को भी है। ऐसी स्थिति मे उनकी शरीयत और कुरआन वहा आडे नही आते। इसलिए इस प्रश्न पर नये सिरे मे पुर्न विचार करने की आवश्यकता है। इस समय अल्पसख्यक अधिकारो ने मुस्लिम तथा ईसाईयो को जितना सशक्त कर दिया है उतनी ही अधिक हिंदुओ को हानि उठानी पड रही है। इसके अतिरिक्त जहा तक विशेष अधिकारो का प्रश्न है, कोई भी अल्पसंख्यक उन अधिकारो का उपयोग करने के अधिकारी कै हो सकते है जो बहुसंख्यक समाज को उपलब्ध नही है। यही वात नागरिको मे भेदभाव और नफरत उत्पन्न करती है।

इस भेदभाव के अनेक उदाहरण देखे जा सकते है जैसे मठ, मन्दिर, आश्रम जैसी हिन्दू धार्मिक सस्थाओ का नियन्त्रण सरकार द्वारा निर्वाचित या मनोनीत समितियो द्वारा होता है जवकि इसके विपरीत मुसलमानो के वक्फ वोर्ड और ईसाइयो के गिरजा घरो के लिए ऐसी वात नही है। अल्पसख्यको के विशेष अधिकारो के कारण सरकार गैर हिंदू मजहवो की सस्थाओ मे कोई हस्तक्षेप नही करती हिंदुओ को इस राजनैतिक हस्तक्षेप के कारण हानि उठानी पड रही है और अपने धार्मिक केन्द्रो का समुचित रूप से विकसित करने मे वाधाओ का सामान करना पडता है, वहा इसके विपरीत गैर हिन्दुओ अर्थात् मुसलमानो और ईसाईयो को अपने मजहवी केन्द्रो का अपने मनमाने ढग से विकास करने की पूरी स्वतत्रता है इसी प्रकार मुसलमानो को मुस्लिम 'परसनल ला" के कारण एक साथ चार चार पत्निया रखने का अधिकार प्राप्त है जवकि हिन्दुओ को दूसरी पत्नी रखना भी कानूनी अपराध है और उसके लिए उसे सात साल के दण्ड का प्रावधान है। इस प्रकार मुसलमान चार औरते रखकर अधिक सन्ताने पैदा कर अपनी जनसख्या की वृद्धि मे लगे हुए है जिसका परिणाम यह होगा कि अभी तो वह अल्पसख्यक होने का लाभ, विशेष अधिकारो के रूप मे उठा रहे है और जनसख्या वढने पर १९४७ की भाति अपने लिए पुन: अलग 'होमलैण्ड' की माग करेंगे। मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान वनाने की माग की थी उस समय मुसलमानो की जनसख्या देश की कुल जनसंख्या का २२ प्रतिशत ही था उक्त कारण से ही मुसलमान परिवार नियोजना का यह कर नही अपनाते कि यह हमारी शरीयत और कुरआन के खिलाफ है। असल मे इस बहाने वे अपनी राजनीतिक आकाक्षाओ की पूर्ति करने के स्वप्न देखते है।

हिन्दू क्योकि इस देश को अपना देश मानता है और इसके प्रति निष्ठावान है इसलिए वह सभी राष्ट्रीय योजनाओ का ईमानदारी से पालन करता है। परिवार नियोजन का भी वह पूरी तरह पालन कर रहा है जिसके परिणाम स्वरूप हिन्दुओ की जनसख्या का ह्रास होता जा रहा है और उन का वहुमत धीरे धीरे समाप्ति की ओर अग्रसर है। परिवार नियोजन का पालन हिन्दू समाज के बुद्धिजीवी ही विशेष कर अपना रहे है इस कारण हिन्दू समाज का वौद्धिक ह्रास भी होता जा रहा है। इसी प्रकार अल्पसख्यको के नाम पर केशधारी हिन्दू अर्थात सिखो को भी विशेष अधिकार दिये गये है। यदि एक पजावी वाप के दो वेटे है और उनकी परम्परा के अनुसार एक वेटा केशधारी सिख वन जाता है तो उसे ३ फुट की तलवार ले कर चलने का अधिकार मिल जाता है और उसी वाप का दूसरा बेटा जो केशधारी नही है, उसे ६ इच का चाकू लेकर चलने का भी अधिकार नही होता।

हिन्दू- धर्म मजहब नहीं

हिन्दू धर्म की इस्लाम या ईसाई मजहवो के साथ तुलना करना एक भूल है। हिन्दू धर्म मुस्लिम और ईसाई मतो की तरह मजहब या मत नही है। यह तो जीवन पद्धति है जो नैतिक और दार्शनिक सिद्धातो पर आधारित है। हिन्दू अनेक पथ, मत और सम्प्रदायो का एक महासघ या समुदाय है। इनमे प्रत्येक की अपनी अलग अलग उपासना पद्धति है। ये सभी हिन्दुस्तान मे विकसित हुए हैं इसी नाते हिन्दू कहलाते है।

हिन्दू मे एकमात्र अन्तर यह है कि हिन्दू अपने धार्मिक और आध्यात्मिक नेतृत्व के लिए हिन्दुस्थान के बाहर किसी अन्य देश की ओर नही झाकता। जवकि इस्लाम और ईसाई मजहव के लोगो का उद्गम वाहर के देशो मे होने के कारण वे अपनी प्रेरणा और मार्ग दर्शन वारह से प्राप्त करते है। दूसरे शब्दो मे यह कह सकते है कि यह जानने के उपरान्त भी कि वे हिन्दुस्थान के पूर्वजो की ही सन्ताने है और इसी राष्ट्र के अग है, अपने मजहवो का स्रोत हिन्दुस्थान से वाहर होने के कारण उनकी निष्ठा, आस्था और वफादारी उन विदेशो के साथ है, न कि हिन्दुस्थान के साथ जव मजहवी भावना अधिक वलवती हो जाती है, तो राष्ट्रीय हितो की उपेक्षा का कारण बनती है। यही वात हमारे देश के लिए खतरा बनी हुई है। जब तक तथाकथित अल्पसंख्यक यह नही सोचेगे कि मजहबी वर्गीकरण के वावजूद वे जातीय और राष्ट्रीय दृष्टि से हिन्दुस्थानी है तथा वे भारत के धार्मिक और आध्यात्मिक नेतृत्व के अतिरिक्त वारह के किसी भी नेतृत्व पर ध्यान नही देगे और अपने आपको अन्य नागरिको के समक्ष समझेगे, तव तक यह विषमता वनी ही रहेगी।

एक ओर संरक्षण दूसरी ओर विनाश

अल्पसख्यक अधिकारो का प्रयोग करते हुए ईसाई तथा मुसलमान व्यावहारिक रूप से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे विशेष स्थान प्राप्त कर रहे है। उनकी अधिकाश गलत मागो और ज्यादतियो को भी इसीलिए सरक्षण दिया जाता है क्योकि वे अल्पसंख्यक है। परिणाम स्वरूप इस प्रक्रिया मे हिन्दू अपने उचित अधिकारो से भी वचित हो जाते है। इस प्रकार अल्पसंख्यको को दिये गये विशेष अधिकार सरक्षण मात्र न रह कर हिन्दू समाज के लिए विनाशकारी वन गए हैं। इनसे अल्पसंख्यक केवल सरक्षण ही प्राप्त नही करते, वल्कि विशेष अधिकार प्राप्त समुदाय वनते जा रहे हैं।

अल्पसख्यक विशेष अधिकारों की व्यवस्था अनैतिक कानून और न्याय के सिद्धान्तो के विपरीत एव राष्ट्रीयता की भावना के विरुद्ध है। इस प्रवृत्ति के कारण विश्वव्यापी आधार पर भी हिन्दू अल्पसख्यक वनते जा रहे है और ईसाई तथा मुस-

(शेष पृष्ठ ९ पर)

क्या गोरक्षा के लिए आर्य समाज को फुरसत है ?

—वीरेन्द्रसिंह पमार, आयुर्वेद शास्त्री—

महर्षि दयानन्द ने हिन्दू समाज की सर्वतोन्मुखी उन्नति के लिये अनेक सुधार का सूत्रपात किया। अज्ञान के अन्धकार मे डूबते हुए समाज के लिये ज्ञान के प्रकाश का द्वार खोला। सामाजिक कुरीतियो पर तीव्र प्रहार किया। अन्ध विश्वासो से भ्रमित जनता को पोप-पुजारियो के चगुल से छुडाने का अभियान चलाया और साथ ही देश की अर्थ व्यवस्था पर घातक प्रहार स्वरूप गोवध के विरोध मे गोरक्षा अभियान चलाकर जनमत तैयार किया।

स्वामी जी के सुधार कार्यों मे गोरक्षा का प्रमुख स्थान था। उन्होने तत्कालीन ब्रिटिश सरकार से गोहत्या बन्द करने की जोरदार अपील की। दो करोड हस्ताक्षरो का एक ज्ञापन भी सरकार को भेजा और स्वयं भी अजमेर स्थित गवर्नर जनरल के एजेन्ट कर्नल ब्रुक्स से मिले ओर गौरक्षा के सम्बन्ध मे तर्क पूर्ण आग्रह किया। 'गो करुणानिधि' पुस्तिका लिखकर जनमत जाग्रत करने का प्रयत्न किया और सिद्ध किया कि गोवध से देश की कितनी बडी आर्थिक हानि हो रही है।

स्वामी जी ने जिन सुधार कार्यों का सूत्रपात किया था, उन सभी के सम्बन्ध मे तर्क सगत लिखित सामग्री तैयार की और वह सब उत्तराधिकार मे आर्यसमाज के लिये छोड गए ताकि यह संस्था उन सभी कार्यो को आगे बढाये और समाज तथा देश की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती रहे।

आर्य समाज की भूमिका

देखना यह है कि गौरक्षा की दिशा मे आर्यसमाज ने क्या कुछ किया है। आर्यसमाज ने जिस लगन और उत्साह से [illegible]ा के क्षेत्र मे तथा समाज सुधार के क्षेत्र मे कार्य किया है, वह प्रशसनीय है। परन्तु गौरक्षा के सम्बन्ध मे आर्य समाज उदासीन ही रहा है। गुरुकुलो मे गौशालायें रखने के अतिरिक्त गौरक्षा के लिये अन्य कोई अभियान चलाने का उदाहरण नही मिलता। आर्यसमाज के सदस्यो द्वारा भी व्यक्तिश. गोपालन पर जोर दिया गया हो, ऐसा भी सुनने-देखने को नहीं मिला। महात्मा गाधी ने गौरक्षा के सम्बन्ध मे जनमत जाग्रत किया था। ला० हरदेव सहाय तथा कुछ अन्य व्यक्तियो ने भी गौरक्षा आन्दोलन चलाये। परन्तु कोई ऐसा गोहत्या विरोधी आन्दोलन, जिसका नेतृत्व केवल आर्यसमाज ने ही किया हो, दृष्टिगोचर नही हुआ। 5 मई के 'आर्य जगत्' के सम्पादकीयम् 'किसान से कसाई तक' मे इस प्रकरण को जोरदार शब्दों मे आर्य समाज के सदस्यों के समक्ष रखा गया है। इस लेख मे जर्मनी द्वारा भारत को मुफ्त दी जाने 20,000 गायो की भी चर्चा की गई है। आर्यसमाज को उत्साहित किया गया है कि इनमे से कुछ सौ गायें लेकर उन्हे गौशाला के रूप मे रख कर गोपालन का आदर्श उपस्थित किया जाये।

कसाई तक क्यों ?

गोरक्षा और गोपालन ये दोनो शब्द भिन्न अर्थों मे प्रयुक्त हो रहे हैं। आज जिस भीषण परिमाण मे गोहत्या हो रही है और जिसे रोकने के लिये समाज मे तीव्र गौरक्षा अभियान चलाया जाना चाहिये, क्या वह केवल सौ दो सौ गायो को अच्छी तरह रखकर पूरा किया जा सकेगा ? गोहत्या के कारणो पर जाना होगा और यह पता लगाना होगा कि किसान की गायें कसाई तक क्यो पहुचती है। किसान गोपालक है। उसका धन्धा, उसकी रोजी-रोटी भी पशुपालन ही है। गोपालन पर ही उसकी खेती निर्भर करती है। फिर भी वह अपने गाय और बैल कसाई को बेचता है। वह किसान जिसने गाय के दूध से अपने परिवार का पालन किया है और जिसके बछडो से अपनी खेती को समृद्ध किया है, वही आज स्वयं उस परोपकारी पशु को कसाई के सुपुर्द कर रहा है। ऐसा क्यो ? यह एक आर्थिक प्रश्न है और इसका आयाम इतना बडा है कि इसका समाधान आन्दोलनो से नही हो पायेगा। इसके लिए देशव्यापी योजना बनानी होगी जिसकी सफलता केवल सरकारी सहयोग और प्रबन्ध पर निर्भर है।

किसान अपने गाय बैल कसाई को क्यों बेचता है इसका प्रत्यक्ष उदाहरण जर्मनी द्वारा 20,000 गाये भारत को दान करना है। यह एक अत्यन्त गम्भीर विषय है और इस निष्कर्ष को अनर्गल प्रलाप भी कहा जा सकता है। परन्तु विचार करने के बाद संभवत. विवेकशील अनुभवी व्यक्ति इस अभिमत से सहमत होगे। प्रश्न यह है कि जर्मनी की यह उदारता क्यो है ? और इसके लिये भारत ही क्यो चुना गया है ? जर्मनी के पास 20,000 गायें अतिरिक्त है जिनकी उसे आवश्यकता नही है, अर्थात् इन गायों को रखकर वह अपने देश की अर्थ व्यवस्था पर बोझ नही डालना चाहता। ये गाये दूध देगी वह दूध जर्मनी विदेशो मे दुग्ध-चूर्ण के रूप मे बेच सकता है। फिर भी वह इन गायो को नही रखना चाहता। वास्तविकता यह है कि यूरोप के देश तथा अमेरिका उन्नत किस्म की गायें ही रखते हैं जो अधिक से अधिक दूध देने वाली होती हैं। गाय सात-आठ साल बाद अपनी दुग्धोत्पादन शक्ति खो बैठती है। उसके रख रखाव पर होने वाला खर्च यथापूर्व रहता है, परन्तु उससे मिलने वाला लाभ अर्थात् दूध बहुत कम हो जाता है। इसलिये गोपालक ऐसी गायो को अपने चरागाह मे मुक्त कर देता है अथवा उनका उपयोग मास के लिये करता है। इस प्रक्रिया को कलिंग (culling) कहते हैं और यह प्रतिवर्ष की जाती है। नवीन गाये पुरानी गायो का स्थान लेती रहती है, इस प्रकार आवासीय व्यवस्था तथा खाद्य व्यवस्था पर प्रभाव नही पडता और गोपालक की आर्थिक दशा भी अप्रभावित रहती है। इसी प्रक्रिया के अन्तर्गत जर्मनी की ये 20,000 गाये है जिन्हे वह अपने देश मे नही रखना चाहता। भारत मे दूध की कमी तथा गौ के प्रति पूजाभावना को दृष्टि मे रखकर जर्मनी के राजनीतिज्ञ इन गायो को मुफ्त देकर भारत को जर्मनी की उदारता का ऋणी बनाकर अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे लाभ उठाना चाहते है।

इन गायो को रखने की व्यवस्था भारत कहा और कैसे करेगा, यह भी एक समस्या है। यहाँ के बडे-बडे गोपालन केन्द्र इतनी बडी सख्या को कैसे रख सकेगे। विदेशी जलवायु की अभ्यस्त और विशेष आहार पर पलने वाली गायो की उसी प्रकार की व्यवस्था हो सकेगी ? अनेक वर्षों के परीक्षणो से यह सिद्ध हो चुका है कि शीतप्रधान देशो की उन्नत किस्म की गाये भारत मे उपयोगी सिद्ध नही हुई हैं। फिर भी यदि भारत सरकार छंटनी की हुई गायो को लेकर रखना चाहती है तो यह एक नया सिर दर्द होगा। परन्तु यदि सरकार देश के किसानो को उपहार स्वरूप अथवा नाममात्र मूल्य पर दे दे, तो एक-दो वर्ष मे ही इनका अन्त वही होगा, जो किसान की गायो का आज हो रहा है। जर्मनी की तरह ही यहा का किसान भी अनुपयोगी गायो को औने-पौने मूल्य पर बेचकर अपनी अर्थव्यवस्था को सन्तुलित रखने का प्रयत्न करता है। कभी-कभी तो उसे आकस्मिक आवश्यकता की पूर्ति के लिये अपना अच्छा पशुधन भी बेचना पडता है।

किसानों की वर्तमान दशा को देखकर ही हमे गोपालन, गोरक्षा अथवा गोहत्या विरोधी नीति बनानी होगी। अनेक राज्यो की सरकारो ने गोहत्या विरोधी कानून बनाए हुए हैं। परन्तु इस पर भी लाखो गायों का वध हो रहा है। सामान्यतः यह देखा गया है कि कानून द्वारा सामाजिक बुराइया दूर नही होती, उनके लिये आन्दोलनो द्वारा समाज मे जागृति करनी होती है और समाज की मनोवृत्ति मे परिवर्तन करना होता है। कहने और लिखने मे यह जितना आसान लगता है, प्रयोग मे यह उससे कही अधिक दुष्कर है। यदि आर्यसमाज गोवध निरोध जैसे महत्वपूर्ण कार्य को हाथ मे लेकर स्वामी दयानन्द के एक महत्वपूर्ण उद्देश्य की पूर्ति करना चाहता है, तो उसे इसके लिये संगठित प्रयास करना होगा। इस कार्य के लिये आवश्यक कुछ सुझाव अपने अनुभव के आधार पर देना उचित रहेगा।

कुछ उपयोगी सुझाव

1. इस कार्य के लिये एक अलग सगठन बनाया जाये, जो ग्रामीण क्षेत्रो मे किसानो तथा अन्य पशुपालको मे गोरक्षा के प्रति प्रबल भावना जाग्रत करे—

2 आर्य समाज के उपदेशक अपने प्रवचनो मे इस कार्य की महत्ता पर जनमानस से उद्वेलित करे।

3. मेलो मे, उत्सवो मे तथा पर्वों पर एकत्रित जनसमूह को गोरक्षा के प्रति सन्नद्ध किया जाय।

4. अनुपयोगी गायो के निमित्त गोसदन बनाने के लिये राज्य सरकारो तथा केन्द्रीय सरकार से आग्रह किया जाये।

5. गोसदन बनाकर किसानो की अनुपयोगी गायो को—बैलो को भी—नाममात्र मूल्य पर खरीद कर, गोसदनो मे रखा जाये। [वह मूल्य कसाइयो द्वारा दिए जाने वाले मूल्य से अधिक होना चाहिए। —स०] गोसदन दूरस्थ निर्जन स्थानो मे बनाये जाये। इनके लिये सबसे उपयुक्त क्षेत्र पर्वतो की उपत्यकाये हैं। यहाँ एक बडे क्षेत्र मे तारो की बाड लगाकर उन्हे वन्यजन्तुओ से सुरक्षित कर दिया जाये और इन अनुपयोगी पशुओ को उस क्षेत्र मे स्वतत्र रूप से चरने-विचरने को छोड दिया जाये। किसानो के यहाँ भी इस प्रकार के पशुओ को मैदान में घूमकर अपना चारा तलाश करना पडता है। पर्वतीय क्षेत्रो मे उन्हे काफी चारा मिल जायेगा, जिससे उनका अनायास पालन हो सकेगा। [क्या पर्वतीय पशुओ का भी उस चारे से पालन हो पाता है ? —स०] ऐसे पशु कालान्तर मे स्वय प्राण त्याग देगे। सरकार उन क्षेत्रो में एक छोटा-सा दल ऐसे व्यक्तियो का रखे जो इनकी खाल और हड्डियो को एकत्र कर उनका उपयोग कर सके। यह कार्य कोई प्राइवेट संस्था नही कर सकती

(शेष पृष्ठ 7 पर)

विशेष लेखमाला(८)

ऋषि के महाभिनिष्क्रमण के सम्बन्ध में भ्रम-निवारण

ले०-प्रो० दयालजी भाई आर्य,
संशोधक—डा० भवानीलाल भारतीय

ऋषि की आत्म कथा मे आता है कि बहिन और चाचा की मृत्यु से उनमे वैराग्य भावना जागृत हो उठी और सायला जाने का निश्चय कर उन्होने गृह त्याग किया। लगता है कि सायला ही मूलशकर का प्रथम गन्तव्य स्थान था। इस सम्बन्ध मे देवेन्द्रनाथ लिखते हैं—"अत सन्ध्या समय टंकारा त्याग करके उन्होने सायला की ओर प्रस्थान किया।" 'टकारा के बाकानेर द्वार से जाना हो तो दक्षिण की ओर जाना चाहिए परन्तु मूल जी ने ऐसा नही किया। वे जामनगर द्वार से होकर पश्चिम की ओर गए थे। यदि यह प्रश्न हो कि इस बात का क्या प्रमाण है कि वे पश्चिम की ओर से गए थे तो इसका उत्तर यह है कि टंकारा से चलने के बाद की घटना के सम्बन्ध मे दयानन्द ने लिखा है कि चार कोस दूर एक ग्राम मे मैंने रात्रि बिताई, अगले दिन बहुत सवेरे उठ कर मैं चल दिया। थोडी दूर पर एक हनुमान के मन्दिर मे पहुचा और कुछ देर आराम किया।' आत्मकथा का यह उद्धरण देकर देवेन्द्र बाबू लिखते हैं—"प्रथम रात्रि के बाद थोड़ी देर चल कर हनुमान के मन्दिर मे कुछ देर आराम किया। यह हनुमान का मदिर बड़ा, ठहरने के लायक, खान-पान की सुविधा युक्त होना चाहिए। ऐसा बड़ा रामपुर का मदिर है, इसलिए वहा विश्राम किया था।" इसी की पुष्टि करते हुए टकारा के वृद्ध पुरुष प्रभुराम आचार्य ने देवेन्द्र बाबू को कहा था कि वे रामपुर मे ही ठहरे थे। इसमे एक तर्क यह भी दिया गया है कि सिद्ध पुर मे पिता के द्वारा पकड़े जाने पर मूलशकर ने उन्हे यह अवश्य बताया होगा कि घर छोडकर वे कहा कहा गए? सिद्धपुर से लौटकर करसन जी ने यही बातें अपनी पुत्री प्रेमबाई को बताई होगी और प्रेमबाई ने प्रभुराम को।

श्री देवेन्द्रनाथ के वर्णन से ज्ञात होता है कि उन्होंने यह सब विवरण आत्मकथा के आधार पर लिखा है, किन्तु आत्मकथा का लिखित शुद्ध रूप जैसा आज उपलब्ध होता है वैसा प्रयत्न करने पर भी स्वयं देवेन्द्र बाबू को उपलब्ध नही हुआ था। द्वितीय, करसन जी से चली हुई यह अनुश्रुति कर्णानुकर्ण प्रभुराम आचार्य तक आई अतः इसकी परख आवश्यक है। एक कारण यह भी बताया गया है कि किसी परिचित व्यक्ति से भेंट न हो जाए और अन्य कोई व्यक्ति ढूंढ न सके, इसीलिए वे उल्टे रास्ते से चले और नगर के पश्चिम की ओर चले गए।

यहा समीक्षा रूप मे हम आत्मकथा के अनुसार टंकारा से स्वामीजी के निष्क्रमण प्रसंग को लिखते हैं। "फिर गुपचुप सवत् १९०३ वर्ष के घर छोडकर संध्या के समय भाग गया। चार कोश पर एक ग्राम था वहाँ जाकर रात्रि को ठहर कर दूसरे दिन प्रहर रात्रि से उठ-कर १५ कोश चला, परन्तु प्रसिद्ध ग्राम, सडक और जानकारो के ग्रामो को छोड कर बीच-बीच में नित्य चलने का प्रारम्भ किया। तीसरे दिन मैंने किसी राजपुरुष से सुना कि फलाने का लडका घर छोड़ कर चला गया उसको खोजने के लिए सवार और पैदल आदि भी यहाँ तक आए थे।" पुन व्याख्यान मे निम्न पाठ मिलता है "मैं एक दिन शौच के मिस से एक धोती लेकर निकल पडा" मैं एक पास के गांव मे गया "इसी रात को चार घडी के तडके मैं गाव से निकल कर आगे चल दिया और अपने गाव से दस कोस के अन्तर पर एक गाव के हनुमान के मन्दिर मे ठहरा, वहा से चलकर सायला योगी के पास गया।" उपर्युक्त उद्धरणो से निम्न पाच बाते स्पष्ट होती हैं—(१) सायला जाने का निश्चय था। (२) प्रथम रात्रि टकारा से चार कोस दूर के गाव मे ठहरे। (३) विशेषकर दूसरे दिन प्रसिद्ध गाव, सडक और जानकार लोगो के गाव को छोड़कर चले। (४) इस कारण प्रथम रात्रि के चार कोस और दूसरे दिन के पन्द्रह कोस चलने पर भी दूसरी रात्रि टकारा से दस कोस दूरी के गाव मे पहुचे और वहा हनुमान मदिर मे ठहरे। (५) तीसरे दिन खोजने वाले निकले थे ऐसा समाचार मिला और वे सायला के लिए चल पडे।

ऋषि वाक्य के अनुसार सम्भावना

प्रथम रात्रि को देर तक प्रतीक्षा करने से उसी रात्रि मे तो उन्हें ढूढने के लिए निकलने की सम्भावना कम थी। करसन जी तिवाड़ी के प्रसिद्ध व्यक्ति होने से टंकारा विस्तार (एक्सटेंसन) के आस-पास के गाँव के लोग मूलशंकर को पहचानते होगे तथा दूसरे गाव के ब्राह्मण और सम्बन्धी भी पहचानते होंगे। इससे निपटने के बहाने से निकलने का एक मात्र यही उपाय था कि मोरवी राज्य की सीमा पार कर बाकानेर राज्य की सीमा मे चले जाएं, स्वामी जी को यही अभिप्रेत था।

ऋषि लिखते हैं. चार कोस चलकर रात्रि एक गाव में ठहरा। टकारा से चार कोस चलने पर मोरवी राज्य की सीमा पार हो जाती हो ऐसे केवल पूर्व दिशा की ओर के ही गाव हैं। शेष तीनो दिशाओं पर आठ-दस या अधिक कोस तक मोरवी राज्य की सीमा है और यह सब राजस्व व्यवस्था की दृष्टि से टकारा के अन्तर्गत हैं। अर्थात् करसन जी व मूलशकर से भी परिचित गाव थे। इस लिए अनुमान होता है कि टंकारा की पूर्व दिशा के बाकानेर द्वार से निकल कर इसी दिशा मे आगे बढे तो तीन या चार कोस की दूरी पर बांकानेर राज्य के गाव आ जाते हैं तथा उसी राज्य की सीमा मे पहुचा जा सकता है। इसलिए मूलशकर ने टकारा से पूर्व दिशा से निकलकर चार कोस दूर के बाकानेर राज्य के किसी गांव मे रात बिताई, यही सम्भावना अधिक उचित है क्योकि उनके गन्तव्य स्थान सायला जाने की दिशा और रास्ता भी वही था। दूसरे दिन बाकानेर राज्य के गाव मे भी ढूढने पर पकड़े न जाएं, इस सावधानी

ऋषि की प्रारम्भिक जीवनी

के लिए मुख्य-मार्ग छोडकर इधर-उधर चलते हुए पन्द्रह कोस की यात्रा कर ली। इसमे प्रथम रात्रि के चार कोस की यात्रा भी मिला लें तो १९ कोस चलने पर भी वे टकारा से दस कोस की दूरी के गाव तक ही पहुंचे और वहा हनुमान के एक मन्दिर मे ठहरे। तीसरे दिन सायला के लिए चल पडे। यही सम्भावना युक्ति-युक्त और आत्मकथा से मेल खाती है।

द्वितीय, सायला जाने के निश्चय का किसी अन्य को पता नही था इसलिए पूर्व दिशा मे उसी रात को तुरन्त ढूढ़ने निकलने की सम्भावना भी नही थी इस लिए पश्चिम में उल्टे रास्ते चलने की आवश्यकता ही नही थी।

तृतीय, भौगोलिक दृष्टि से पश्चिम मे चार कोस जाकर दूसरे दिन सायला जाने के लिए फिर पूर्व में आना जरूरी है इसलिए दक्षिण और उत्तर दिशा पार करना आवश्यक था और इन दोनो दिशाओ में यदि टेढ़े-मेढ़े रास्ते पर भी चलते तो भी टकारा के अन्तर्गत पूर्वोक्त आठ-दस कोस के सब गाव आ जाते। इस गाव मे परिचित होने से या करसन जी के जमेदार पद पर रहने के कारण इन गावो के सिपाहियो को भी सूचना दे दी गई होगी। इसलिए पकड़े जाने का पूरा भय था। विशेषकर दूसरे दिन तो ढूढने वालो का अधिक भय था। इसलिए पूर्व दिशा से निकलकर आगे बढकर मोरवी अर्थात् टकारा के अन्तर्गत गांवो की सीमा पार कर बांकानेर राज्य के अपरिचित व्यक्तियों के गावों में प्रथम रात्रि का ठहरना युक्तिसंगत होने से पश्चिम की ओर जाने की कल्पना करना युक्ति-युक्त नही है।

अब रामपुर ठहरने की समीक्षा करे तो प्रथम कहना होगा कि भौगोलिक दृष्टि से रामपुर टकारा से वायव्य दिशा में है तथा इसकी टकारा से दूरी केवल दो अढाई कोस है। इसलिए देवेन्द्र बाबू के अनुसार प्रथम चार कोस पश्चिम मे जाकर फिर दुसरे दिन प्रात काल वापिस आकर टकारा से अति निकट और अति परिचित (टंकारा के उपनगर जैसा) रामपुर गांव मे विश्राम करना सम्भव नही है।

द्वितीय बात, रामपुर से सायला जाने के लिए टंकारा की बगल मे ही गुजरना होता है। अतः दूसरे दिन यह होना सम्भव नहीं है। तीसरी बात, ऋषि की आत्मकथा के अनुसार प्रथम रात्रि टंकारा से चार कोस की दूरी के गांव में ठहरे, परन्तु रामपुर केवल दो ही कोस दूर होने से वहा जाना शक्य नहीं है।

→

हम दयानन्द के दीवाने

—हरिश्चंद्र शर्मा—

हम रुकना झुकना क्या जाने।
हम बढते है सीना ताने॥
हम सैनिक वीर शहीदो के।
पर हित मे जिनके शीश कटे॥
हम दयानन्द के दीवाने...
जो गया राज में नेहरु के।
हम वीर हैं वीर सुमेरु के॥
हम वेद ज्योति के परवाने...
हम हंस हंस के दुःख झेलेंगे।
सर्वस्व धर्म को दे देंगे॥

हम लेखराम से मस्ताने...
हम कर्म वचन के सच्चे हैं।
हम धुन के भी तो पक्के है॥
तब दुनियां भी हम को माने...
दुख आता है तो आने दो।
सुख जाता है तो जाने दो॥
हम वीर हैं डरना क्या जाने।
हम रुकना झुकना क्या जानें॥

पता—दाहोद, गुजरात

ऋषि के......

चतुर्थ, दूसरी रात्रि टंकारा से दस कोस दूर हनुमान के मन्दिर वाले गाव मे ठहरे थे, इसलिए टकारा से दो कोस की दूरी पर हनुमान के मन्दिर वाले रामपुर गाव मे उनका प्रातःकाल विश्राम करना सम्भव ही नही है।

हनुमान मंदिर कौनसा ?

इस प्रकार प्रभुराम आचार्य द्वारा अनुश्रुति से सुनी बात तथा देवेन्द्र बाबू का तर्क, दोनों ऋषि की आत्मकथा से स्वत. ही निर्मूल हो जाते हैं। ऋषि के उपर्युक्त शब्दों से ही स्पष्ट है कि वे टंकारा से दस कोस दूर के गाव मे हनुमान के मन्दिर में ठहरे थे। इससे रायपुर का हनुमान मन्दिर इस प्रसग में नही आता। फिर भी भ्रम निवारणार्थ यह स्पष्ट करना आवश्यक है। कि मैं एकाधिक बार रामपुर गया हूं और इन पंक्तियो के लिखने से पूर्व मन्दिर का सूक्ष्म निरीक्षण करने के लिए पाच नवम्बर 1984 को भी वहा गया था। इस मन्दिर का परिचय इस प्रकार है—बड़े रामपुर गाव के बाहर यह मन्दिर स्थित है। मन्दिर के प्रधान देवता का नाम नारायणिया हनुमान है। मन्दिर के बीच के स्थान मे बडी मूर्ति है। स्थान इतना छोटा है कि यहा बैठने की जगह भी नही है। इसलिए सोने की बात तो सोची भी नही जा सकती। इसकी बगल मे ऐसा ही छोटा सा एक दूसरा राम मन्दिर भी है। उपर्युक्त वर्णन वाले मन्दिर को बडा या विश्राम लायक समझना युक्ति सगत नही है।

इस मन्दिर के पुजारी मोहन दास तुलसी दास लश्करी हैं। इन से मन्दिर का इतिहास पूछने पर कोई विशेष जानकारी नही मिली। इसका आगे का भाग तथा विश्राम की सुविधा तो संवत् 2039 मे ही बनी है और दाता का नामयुक्त शिलालेख भी लगा है। अत देवेन्द्र बाबू के अनुसार यहा रहने की सुविधा होना और मन्दिर का बडा होना तथ्यों से सिद्ध नही होता। उपर्युक्त विवेचना का साराश यही है कि मूलशकर का गृह-त्याग करके पश्चिम की ओर जाना सम्भव नही है और रायपुर के हनुमान मन्दिर से भी इस घटना का कोई सम्बन्ध नही है।

फिर ऋषि कहां ठहरे थे :

अब प्रश्न यह है कि निष्क्रमण की पहली रात्रि या दूसरी रात्रि को ठहरने के गाव के विषय मे जानकारी प्राप्त करना प्राय. असम्भव है, क्योंकि मोरवी राज्य के सीमात अथवा वाकानेर राज्य के कुछ गाव टकारा से चार कोस पूर्व दिशा में हैं और ऋषि ने इस गाव के विषय मे कुछ विशेष निर्देश नही किया है। दूसरी रात्रि वाला गाव टंकारा से पूर्वदिशा मे दस कोस दूर हनुमान के मन्दिर वाला होना चाहिए। इस गाव की खोज का हमने प्रयत्न किया है और संभावना है कि इसमे हमे सफलता मिलेगी। तथापि, जब तक विश्वसनीय जानकारी न मिल जाए, तब तक कुछ लिखना ठीक नही। क्योकि ऋषि जीवनी जैसे पवित्र विषय मे एक और विवाद खडा करना गुरुद्रोह के तुल्य है। यदि ऋषि की आत्मकथा के अनुसार इस गाव की खोज हो गई तो पूरी जानकारी प्राप्त कर भविष्य मे उसे प्रकट करूंगा।

इस विषय का समापन करते हुए यह निवेदन करना है कि मैंने ऋषि के निष्क्रमण की सम्भवना की जो विवेचना की है, इस विषय मे देवेन्द्र बाबू का अनुसरण करने वाले विद्वान् तथा अन्य लोग भी विचार करें और मेरी किसी सम्भावित त्रुटि की ओर ध्यान आकृष्ट करें। इसी प्रयोजन से मैंने गत (1983) शिव-रात्रि पर टकारा मे पधारे श्री राजेन्द्र जिज्ञासु से इस विषय पर बातचीत की थी, परन्तु उन्होंने 'नवजागरण के पुरोधा' की समीक्षा करते हुए 'दयानन्द सन्देश' मासिक में इतना मात्र ही उल्लेख किया कि स्वामी जी जामनगर द्वार से न निकल कर पूर्वी द्वार से निकले थे। उन्होंने इस विषय की पूरी समीक्षा न कर इस विषय को विद्वानो के विचारार्थ छोड दिया।

[आगामी अक मे समाप्य]

इस लेखमाला या उसके किसी भी अंश के सम्बन्ध में कोई भी पाठक लेखक से पत्र-व्यवहार करना चाहें, तो उनके आवास का पता इस प्रकार है—श्री दयाल जी आर्य, ए/५, आयुर्वेद कालोनी, जामनगर पिन-३६१००८

संस्कृत दिवस

आर्य समाज, मेरठ शहर मे श्रावणीपर्व पर डा० कर्ण सिंह अध्यक्ष संस्कृत विभाग, मेरठ कालिज की अध्यक्षता मे 30 अगस्त को संस्कृत दिवस मनाया गया। श्री इन्द्रराज जी संयोजक थे। श्री राम निवास विद्यार्थी, श्री प्रेम प्रकाश, डा० ओम शरण, श्री केशवदेव शास्त्री, डा० गणेश दत्त तथा श्री इन्द्रराज आदि ने सभा को सम्बोधित किया। सभी वक्ताओ ने संस्कृत को सभी भाषाओ की जननी कहा और प्रस्ताव पास किया कि संस्कृत ही वेदादि शास्त्रो तथा ज्ञान-विज्ञान आदि की जन्मदात्री है। और भारत की सर्वांगीण उन्नति तथा विश्व शान्ति की स्थापना सस्कृत साहित्य की उदार भावनाओ द्वारा ही की जा सकती है।

निश्शुल्क वैवाहिक सेवा

आर्य समाज, रमेश नगर, नई दिल्ली में विवाह योग्य लड़के और लड़कियो का रजिस्ट्रेशन प्रतिदिन सायं 6 से 7 बजे तक होगा। मिलने का समय-रविवार प्रात 10 से 11 बजे है —सुरेन्द्र महाजन मत्री

होशंगाबाद में वेद प्रचार

आर्य समाज, होशंगाबाद (म०प्र०) में 25 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया जायेगा। जिसमें श्री यगेन्द्र आर्य द्वारा वेदकथा और श्री सुरेन्द्र पाल सिंह आर्य तूफान के सुन्दर भजन होंगे। —गिरीश उपाध्याय

आर्य समाज लोहगढ

आर्य समाज, लोहगढ, अमृतसर का वार्षिकोत्सव 27 अकटूबर से 3 नवम्बर तक सोत्साह मनाया जायेगा। जिसमें अनेको विद्वान और उपदेशक भाग लेंगे। प्रो० एम० एल० तनेजा

वेद पारायण-यज्ञ

वेद संस्थान सी-22 राजौरी गार्डन, नई दिल्ली मे चतुर्वेद पारायण-यज्ञ 16 से 29 अगस्त तक सम्पन्न हुआ। वेदपाठ श्री द्विजेन्द्र शास्त्री और श्री हंसराज गुप्त द्वारा तथा समापन समारोह महात्मा दयानन्द की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम मे निकटवर्ती कालोनियो के भाई बहिनो ने भारी संख्या मे भाग लिया।-नरेन्द्रार्य

श्रावणी व जन्माष्टमी

आर्य समाज होशंगाबाद मे श्रावणी पर्व और श्रीकृष्ण जन्माष्टमी सोत्साह मनाया गया। जिसमें गुरुकुल होशंगाबाद के छात्र व आर्य समाज के सदस्यो ने भारी संख्या में भाग लिया, इस अवसर पर प्रभात फेरी निकाली गयी और नये छात्रो का वेदारम्भ सस्कार सम्पन्न हुआ। गुरुकुल के आचार्य श्री धर्म वीर और वक्ताओ ने सभा को सम्बोधित किया।—गिरीश उपाध्याय

वैदिक सत्य नारायण-कथा

जिला आर्य समाज, वैतूल (म०प्र०) के वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री विजय आर्य 'स्नेही' ने ग्राम खंजनपुर में श्रीधनराज मालवीय के परिवार मे वैदिक सत्य नारायण व्रत कथा और यज्ञादि का आयोजन किया जिसमे अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियो ने भाग लिया।

व्यायामशाला का उद्घाटन

हमला पुर बैतूल (म०प्र०) में १५ अगस्त स्वतन्त्रता दिवस पर ग्राम के उत्साही नवयुवको एवं ग्राम वासियो के सहयोग से दयानन्द महावीर व्यायामशाला का शुभारम्भ किया गया। भूमिपूजन का कार्य श्री विजय कुमार आर्य 'स्नेही' के पौरोहित्य और प्राथमिक शाला के अध्यक्ष श्री जगदीश प्रजापति के यजमानत्व में सम्पन्न हुआ। ध्वजगान और राष्ट्रीयगानन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

यतिमण्डल की बैठक

वैदिक यति मण्डल की एक विशेष बैठक महर्षि दयानन्द मठ, दीनानगर हरियाणा में २४-२५ अगस्त को सम्पन्न हुई जिसमे अनेक महत्वपूर्ण विषयो पर विचार किया गया। वैदिक यतिमण्डल के सस्थापक त्यागमूर्ति स्वामी सर्वानन्द सरस्वती के अभिनन्दन हेतु ११ लाख रुपये शीघ्र ही एकत्रित करके स्वामी जी का अभिनन्दन किया जायेगा। इसके अतिरिक्त पाखंडो को दूर करने हेतु है टैक्ट प्रकाशित किये जायेंगे। सभी वानप्रस्थियों व सन्यासियों यति मण्डल द्वारा प्रमाण पत्र दिया जायेगा। यह बैठक स्वामी ओमानन्द, महात्मा दयानन्द और ब्र० आर्य नरेश के तत्वावधावन मे सम्पन्न हुई।

डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, वेस्ट पटेल -नगर में नया आर्य समाज

आर्य जनता को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल वेस्ट पटेल नगर में आर्य समाज की स्थापना हो गई है। आरम्भ में इसके ३० सदस्य बने है। साप्ताहिक सत्संग हर शनिवार को १ से २ बजे तक और दूसरे शनिवार को ११ से १२ बजे तक होगा।—ग० प्र० मालवीय

क्या गोरक्षा के लिए......

(पृष्ठ 5 का शेष)

यह तो सरकारी प्रबन्ध द्वारा ही किया जा सकेगा। [सरकारी प्रबन्ध में भ्रष्टाचार की अधिक सम्भावना है।—सं०]

यदि आर्यसमाज गोसदनों का प्रबध देश भर मे करा सके तो गोएथ स्वय ही बन्द हो जायेगा, क्योंकि किसानो के सामने अनुपयोगी पशुओं के पालन की समस्या सबसे अधिक विकट है।

सरकार इन पशुओ को नाममात्र के मूल्य पर खरीदे और उन्हे उन दूरस्थ क्षेत्रो मे बने गोसदनो मे पहुचा दे तो इससे समाज कल्याण की दिशा मे एक बहुत बडा कार्य होगा। सरकार समाज कल्याण पर करोडो का व्यय करती है, यदि इस रकम मे से थोडा धन इस दिशा मे भी व्यय किया जाये तो गोरक्षा का कार्य बहुत कुछ सम्पन्न हो जायेगा।

क्या आर्य समाज इस कार्य को लेकर पुण्य का भागी बनेगा ?

28 यू० बी० जवाहर नगर, दिल्ली-7

पत्रों के दर्पण में

डी. ए. वी. शताब्दी के अवसर पर यह भी हो

१ सितम्बर के अंक मे 'डी ए वी शताब्दी समारोह की हलचल शुरू" शीर्षक समाचार पढा जिसमे अनेक महत्व पूर्ण योजनाएं जैसे—शिक्षा सम्मेलन, कम से कम दस हजार विद्यार्थियो को एक साथ प्रशिक्षण शिविर, वैदिक वाङमय और भारतीय संस्कृति से सबद्ध विषयो पर प्रामाणिक ग्रन्थो का प्रकाशन, १०० पिछडे ग्रामो के विकास एव गरीब प्रतिभाशाली छात्रो को छात्रवृत्ति देकर नि. शुल्क शिक्षा देने, १०० दयानन्द सेवा सदन खोलने, एव वैदिक अनुसंधान के लिए दयानन्द फाउडेशन की स्थापना करने आदि का लक्ष्य निर्धारित किया गया ।

इन सभी महत्वपूर्ण योजनाओं के साथ-साथ मेरा यह सुझाव है कि कम से कम १०० सुयोग्य पुरोहितो एव १०० ऐसे वानप्रस्थियो के, जो अच्छे विद्वान् एव वैदिक विचारधारा से युक्त हो, निमार्ण की योजना भी शामिल की जाए। आज आर्य समाज के पास संस्कारो को सही एवं उचित ढग से कराने वाले पुरोहितो का अभाव है। सस्कारो के माध्यम से हम प्रत्येक घर-परिवार मे पहुचकर वैदिक की विचारधारा को प्रचारित कर सकते हैं। इसी प्रकार से विद्वान् वानप्रस्थी भी ग्राम- ग्राम मे घूम घूम कर यज्ञ के माध्यम से आर्य समाज का कार्य करेगे। यह योजना सुनियोजित ढंग से तैयार की जावे, जिससे हमारा लक्ष्य पूरा हो सके ।

—गोविन्द प्रसाद आर्य मूंत पाडा, आटा चक्की के पास गगापुर सिटी-३२२२०१

यह कैसे आर्य समाजी !

२३ जून के अक मे यह कैसे आर्य समाजी' शीर्षक से छपे पत्र मे मेरे "ऊपर छटाकशी की गई है कि मैं दहेज और धन का लोभी हू और अपनी सतान की शादी धन के प्रलोभन से ही करना चाहता हू। मैं पत्र-लेखक महोदय को विश्वास दिलाता हू कि मै बिना किसी लेन-देन के, अत्यन्त सादगी से किसी भी आर्य समाज मन्दिर मे अपने ज्येष्ठ पुत्र का विवाह-सस्कार पूर्ण वैदिक रीति से करने को तैयार हू—अन्तर्जातीय या अन्तर प्रान्तीय भी, बशर्ते कि कन्या आर्य परिवार की हो, गुरूकुल की पढी हुई हो, तो उसे प्राथमिकता । साथ ही मेरा कहना यह भी है कि केवल अपने आप को आर्य कहने या लिखने से या अदालत मे शपथ पत्र भरने से भी कोई आर्य नही होता प्रत्युत गुण कर्म स्वभाव मे ही आर्यो की पहचान होती है।—रामचन्द्र आर्य, आर्य समाज गरूलिया, पो० गरूलिया, २४ परगना (प० बंगाल)

संसार को 'अनार्य' बनाओ ?

अग्रेजी दैनिक "इंडियनएक्सप्रेस" के २ अगस्त के अक मे "इ डियन अनार्य समाज, जूहू बम्बई" के सयोजक येसूवादियान का एक पत्र छपा है, जिसका साराश है——

"भारत में जातिवाद वैदिक आर्य लाये थे। यद्यपि यह स्थिति दुखद है किन्तु भारत में जातिवाद अब एक तथ्य है। इससे अनार्यो को कठिनाई होती है और वे दृढ निश्चय तथा सुधारवाद की भावना से सम्मना भी करते हैं। यदि जातिवाद भारत के 'आर्य-करण' का प्रसाद है तो भारत के 'अनार्य करण' में इस का उपाय निहित है। भावुकता का प्रतिफलन अच्छा नही होता। अनार्यों द्वारा किए गए सुधार कार्य ही इस अति प्राचीन रोग का उपचार है। यह कार्य अभी ही प्रारम्भ हुआ है हमें धैर्य से इन के सुखद परिणाम की प्रतीक्षा करनी चाहिए।"

पत्र स्वयं मे स्पष्ट है। क्या सोई हुई आर्य जाति मे इससे कुछ चेतना आयेगी ?

—चितरंजन वत्स, १०४, गगन विहार, दिल्ली—१५

टंकारा के शिवालय में शिलालेख

'आर्यजगत' मे प्रकाशित ऋषि की प्रारम्भिक जीवनी सम्बन्धी लेख माला मे जिस शिवालय का निर्माण ऋषि के पूज्य पिता श्री करशन जी तिवारी ने करवाया था वहा इस सम्बन्ध में शिलालेख लगवाने का सुझाव दिया गया है। आर्य जनता को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि श्री श्याम जी भाई (टंकारावालों) ने अपने स्वर्गीय पिता जी की स्मृति मे वैसा शिलालेख बनवाकर वहा लगवा दिया है। अब प्रत्येक यात्री शिवालय के मुख्यद्वार पर लगे उस शिलालेख को देख सकेगा। —हसमुख परमार, मंत्री आर्यसमाज टंकारा (गुजरात)

प्रधानमन्त्री से गोरक्षा की अपील

आपने १५ अगस्त को स्वतंत्रता की वर्ष गांठ पर देशवासियो को सदेश दिया कि "भारतीय सभ्यता और संस्कृति की रक्षा के बिना देश का सारा भौतिक विकास व्यर्थ होगा, अत भारतीयता की रक्षा करना है।" आपके ये उद्गार स्वागत योग्य है। भारतीय सभ्यता व संस्कृति की रीढ गाय है। भारत की ८५ प्रतिशत धर्मप्राण हिन्दू जनता गाय को माता मानती है। ॥मातरः सर्व भूताना गावः सर्व सुखप्रदा. ॥ ॥गावो विश्वस्य मातरः॥ शासन द्वारा प्रतिदिन हजारों गायो का वध कराया जाता है जो भारतीय जनता की भावनाओ और धार्मिक मान्यताओ पर करारी चोट है। जब तक भारत मे गोहत्या बन्द नही होती तब तक भारत स्वतत्र है ऐसा मानना एक छलावा है। अतएव आप से निवेदन है कि तथाकथित स्वतंत्रता को गोहत्या बन्द कराकर यथार्थ स्वतंत्रता की प्राप्ति कराए । भारत माता के माथे से गोहत्या का कलंक सदा के लिए मिटा दे।

—रामराज शर्मा, (आर्य प्रतिनिधि सभा म. प्र. व विदर्भ) पोस्ट कूरा, जि. रायपुर. (म. प्र)

साम्यवादियों की सनक

भारतीय मार्क्स वादी साम्यवादी दल के उन देश द्रोही तत्वो को जब से असम समझौता हुवा है, नींद नही आरही है। असम के युवाओं ने अवैध रूप से बगला देश से घुस आये विदेशियो को बाहर निकालने की माग मनवा कर देश भक्ति का सुन्दर उदाहरण पेश किया है। विदेशी लोगो के प्रति हमदर्दी बताना, उनके लिये आदोलन चलाना व केन्द्र सरकार का विरोध करना राष्ट्रद्रोह है यदि ये कम्युनिस्ट देश द्रोहियो की इस प्रकार की वकालत रूस, चीन, आदि मुल्को मे करते तो इन्हे चौराहे पर खडा करके गोली से उडा दिया जाता। भारत के बंगालियो को असम मे कोई खतरा नही है। खतरा तो उन बंगला देश से आये हुवे विदेशियों को है जो वहा की सस्कृति को बंगला सस्कृति की अपेक्षा इस्लामी संस्कृति में रंग देने के उद्देश्य से सीमा पार करके जबरन भारत मे घुस आये है। ये ही साम्य वादी जो बगाल की हुकमत पर कब्जा जमाये बैठे है। सैकडों वर्षो से कलकत्ता में रह रहे मारवाड़ियो को विदेशी कहते है । वाह रे। खूब है साम्यवादियो की दूर दृष्टि। विदेशी देशी है। और देशी विदेशी है।

—जे० पी० भारद्वाज, जय जनरल स्टोर्स, भानपुरा (मन्दसौर) म० प्र०

दूर दर्शन पर आर्ष ग्रन्थ

प्रधानमत्री ने दूर दर्शन के अधिकारियो को कहा है कि दूर दर्शन केवल मनोरंजन का साधन नही है, इस मे शिक्षाप्रद र कार्य क्रमो को भी उचित स्थान मिलना चाहिए। रामायण और महाभारत के बारे में धारावाहिक कार्य क्रम प्रसारित किए जाने चाहिए। मैं इस में यह जोड़ना चाहूगा कि वेदो और उपनिषदों जैसे धार्मिक ग्रन्थो मे क्या है, इस से सम्बन्धित कार्य क्रम भी होना चाहिए। आज की युवा पीढी इन से सर्वथा अनभिज्ञ है। वह प्रत्येक फिल्म के नायक नायिका का नाम तो जानती है, किन्तु यदि उन से वेदो के केवल नाम ही पूछे जाय तो वे बगले झाकने लगेगे एक दो को छोड़कर चारो वेदो का क्रमशः नाम बता पाना इस पीढी के लिए शक्य नही है। —ब्रह्मदत्त, बी / ४६, गणेश मार्ग, जयपुर—१५

मणिकर्ण की दयनीय दशा

मणिकर्ण देश का गौरव पूर्ण तीर्थ स्थान है। परन्तु आज यहा के निवासी अत्यन्त गरीबी की दशा मे जीवन बिता रहे है। इतना पिछड़ा पन है कि देश के स्वाधीन होने तक का इन्हें पता नहीं। शासन की ओर से इनकी गरीबी दूर करने की ओर ध्यान नहीं दिया गया न ही सेवा भावी संस्थाओ की ओर से कोई सुधारक पहुंच पाया। इस ग्राम की सीमा चार किलो मीटर है, पास ही पार्वती नदी बहती है जो व्यास नदी में मिलती है। मण्डी से कुलू को जाने वाले मार्ग पर भुन्तर में हवाई पट्टी है जहा से लगभग २५ किलो मीटर पर मणिकर्ण स्थित है। मार्ग अति रमणीय और सुहावना है। यहा यात्री निवास और टूरिस्ट बगला बनवाये जाये तो पर्यटको के आने से इस प्रदेश की गरीबी दूर करने में सहायता मिल सकती है। यदि सरकार ने इस ओर ध्यान न दिया तो विदेशी मिशनरी इससे लाभ उठायेगे।

—डा० कमलसिंह उज्जैन

डी ए वी शताब्दी स्मारिका

सन् १९८६ के आरम्भ मे डी ए वी शताब्दी समारोह भारत व्यापी स्तर पर मनाया जा रहा है। इस अवसर पर होने वाले विभिन्न आयोजनो के लिए समितिया गठित हो गई है और वे आयोजनो की रूप-रेखा तैयार कर रही है।

इस अवसर पर एक भव्य स्मारिका भी प्रकाशित की जाएगी जिसमे डी ए वी आदोलन के विविध पहलुओ पर, शिक्षा की राष्ट्रीय समस्या पर, तथा राष्ट्र, समाज एव परिवार को प्रगति पथ पर ले जाने से सम्बन्धित अनेक विषयो पर सुविज्ञ अधिकारी विद्वानो के लेख होगे।

प्रसिद्ध पत्रकार श्री क्षितीश वेदालकार से स्मारिका के सम्पादन का दायित्व वहन करने का अनुरोध किया गया है।

बढिया छपाई, कागज, गेटअप और भारी सख्या मे छपने के कारण यह स्मारिका चिरस्मरणीय और चिर संग्रहणीय होगी और लाखो लोगो तक पहुचेगी —क्यो कि भारत के सभी राज्यो में और भारत के बाहर विदेशो मे भी डी ए वी से सम्बद्ध उसके प्रशंसको की कमी नही है। छात्रो, अभिभावको, व्यापारियो, और सभी वर्गो के लोगो के हाथो मे यह स्मारिका जाएगी।

इस प्रसग मे डी ए वी विद्यालयो के प्राचार्यो एव प्राध्यापको, (विशेषतया हिन्दी और सस्कृत के आध्यापको) तथा डी ए वी स्कूलो के प्रधानाचार्यो से निवेदन है कि वे निम्नलिखित विषयो सूची के आधार पर अथवा सम्बन्धित विषयो पर अपने विद्वत्ता पूर्ण लेख भेज कर डी ए वी आन्दोलन को अपने अमूल्य सहयोग से कृतार्थ करे। अन्य जो भी विद्वान् इन विषयो पर लेख भेज सके उनका भी स्वागत होगा।

विषय सूची

१ प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली, २. शिक्षा राष्ट्रीय चरित्र, ३ सामाजिक क्रान्ति मे शिक्षा का स्थान, ४. शिक्षा और जीवन-मूल्य ५ शिक्षा और मानव सभ्यता का भविष्य, ६ शिक्षा मे स्वावलम्बन, ७ नैतिक शिक्षा का महत्व, ८ डी ए वी का स्वतन्त्रता सग्राम मे योगदान, ९ डी ए वी का वैदिक धर्म के प्रचार मे योगदान, १० दैवी विपत्तियो मे डी ए वी की जनसेवा, ११ स्त्री शिक्षा मे डी ए वी का योग, १२. शिक्षा प्रसार मे डी ए वी का योग १३ डी ए वी का वर्तमान विस्तार, १४. भावी पीढी और डी ए वी०, १५. डी० ए वी के पुराने महारथी, १६. डी ए वी के वर्तमान महारथी, १७. डी ए वी और पाश्चात्य सस्कृति, १८. आधुनिकता बनाम पश्चिमकी नकल, १९. तकनीकी शिक्षा और ग्राम विकास, २०. प्रस्तावित नई शिक्षा प्रणाली का विश्लेषण।

❋

दयानन्द बलिदान शताब्दी

आर्य युवक परिषद पजाब के तत्त्वावधान मे महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह १९-२० अक्टूबर को अमृतसर म गोल बाग मैदान मे समारोह पूर्वक मनाया जायेगा।

ईसाई महिला की शुद्धि

आर्य समाज, दयानन्द मार्ग, उदयपुर मे एक ईसाई महिला साफिया की शुद्धि की गयी, महिला का नाम सरिता रखा गया। सुश्री सरिता प्राथमिक स्वास्थ्य के रैलमगरा मे स्टाफ नर्स है। पौरोहित्य कार्य श्री राम गोपाल आर्य ने किया।

—ज्ञानप्रकाश गुप्त

आर्य समाज डी० ए० वी० शताब्दी स्कूल

१० सितम्बर १९८५ को डी० ए० वी० शताब्दी स्कूल रोहतक में आर्य समाज की स्थापना यज्ञादि के साथ सम्पन्न हुआ। श्री मोहन लाल गुप्ता प्रधान एवं श्रीमती ऊषा वक्शी मत्री चुने गये। प्रारम्भ मे २२ सदस्य बने हैं।

श्री आर्य मुनि वानप्रस्थ द्वारा प्रचार कार्य

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, जौनपुर के प्रधान श्री आर्य मुनि वानप्रस्थी ने 10 से 24 अगस्त तक आर्य समाज, जफराबाद, सुल्तानपुर, बदलापुर, सुजानगज, फरीदाबाद, आर्य समाज, पाण्डेयपुर, सिकरारा बाजार, आर्य समाज मछली शहर, आर्य समाज जमालापुर, सिरसोनी, केराकत आदि जगहो पर प्रचार और व्यक्तिगत सपर्क किया। श्री बटेश्वर नाथ के सहयोग से सुजानगज मे नये आर्य समाज की स्थापना हुई जिसके प्रधान श्री बटेश्वर नाथ, मत्री श्री ब्रह्मप्रसाद और कोषाध्यक्ष श्री गगा प्रसाद चुने गये। 9 व 10 अक्टूबर को इस समाज का प्रथमोत्सव मनाया जायेगा। आर्य समाज, पाण्डेयपुर का उत्सव 11-12 अक्टूबर को, आर्य समाज, सिकरारा बाजार का उत्सव 13-14 अक्टूबर को और आर्य समाज, सिरसोनी का उत्सव 5-6 अक्टूबर को सोत्साह मनाया जायेगा।

आर्य समाज की स्थापना

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, जौनपुर के प्रधान श्री आर्य मुनि वानप्रस्थी के सहयोग से सिकरारा बाजार में आर्य समाज की स्थापना हुई जिसके प्रधान श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह, मत्री श्री इन्द्रजीत मौर्य और कोषाध्यक्ष श्री रघुराज मौर्य निर्वाचित हुए।

भाषा ऐसी हो कि सबकी समझ में आए : राजीव गांधी

(निज सम्वाददाता द्वारा)

नई दिल्ली 19 सितम्बर। प्रधान मत्री ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार मे तेजी लाने की आवश्यकता पर जोर दिया है। उन्होने कहा है कि सरकारी कार्यो मे जितनी जल्दी हिंदी आ जाए, उतना ही अच्छा है। भारत एक बहुभाषी देश है और यहाँ हिन्दी को राजभाषा का रूप केवल इसलिए नही दिया गया है कि वह अधिसख्य लोगो द्वारा बोली और समझी जाती है, बल्कि इसलिए भी कि उसका एक अपना इतिहास है, एक परम्परा है।

श्री राजीव गाँधी आज विज्ञान भवन मे आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन को सम्बोधित कर रहे थे। श्री गाँधी ने कहा राजभाषा के प्रचार-प्रसार को हमे जन-आंदोलन का रूप देना होगा और यह तभी हो सकता है जब इस कार्य के लिए सभी वर्गो का सहयोग मिले। इसके लिए सरकार पूरा प्रयास तो करेगी लेकिन सरकार के साथ-साथ इसमें देश के विभिन्न वर्गो का सहयोग भी आवश्यक है।

प्रधानमत्री ने कहा: वर्तमान युग मे विज्ञान और तकनीकी के विकास के साथ ही स्वय अनेक नए-नए शब्द प्रयोग मे आते जा रहे है। हिन्दी के विकास मे हमे उन प्रचलित शब्दो को उदारतापूर्वक लेने से नही घबराना चाहिए। इससे हिन्दी भाषा का भण्डार बढेगा ही देश के वैज्ञानिको, तकनीशियानो को नई जानकारी प्राप्त करने मे आसनी भी होगी। हमे इस बात पर गहराई से विचार कर लेना चाहिए कि हमे किन विदेशी शब्दो को अपना लेना है और किन शब्दो को नया रूप देने की आवश्यकता है।

हमे हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना है, किन्तु हमे यह भी देखना है कि जिन लोगो को हिन्दी नही आती, उन्हे किसी प्रकार की कठिनाई न हो। हमे ऐसी भाषा का प्रयोग ज्यादा से ज्यादा करना चाहिए, जो आम जनता की समझ में आ सके।

अल्पसख्यकों को ...... (पृष्ठ ४ का शेष)

लमान अपने बहु सख्यक होने के नाते विशेष स्थान प्राप्त करते जा रहे है।

हिन्दू की स्थायी-अस्मिता

निष्कर्ष यह है कि अनेक विपरीतताओ के बावजूद हमारा अस्तित्व हजारो साल मे इसलिए बना रहा है क्योंकि हमारी एक मूलभूत सास्कृतिक और चारित्रिक विशेषता रही है। इसी के कारण हम विपरीत परिस्थितियो पर विजय प्राप्त करते रहे है। परन्तु 'सेक्यूलरिज्म" के नाम पर अल्पसख्यको को दिये गये विशेष अधिकार हिन्दुस्थान की इसी जीवनी शक्ति को धीरे धीरे समाप्त करते जा रहे है।

इसी कारण देश में आज सिख, जैन, निरकारी, ब्रह्मकुमारी, बौद्ध आदि सभी हिन्दू समाज के जो विभिन्न मत है वे भी स्वय को अल्पसख्यक घोषित कराने की माग करने लगे है और सिखपन्थ जो हिन्दू समाज का ही एक अभिन्न अग है अभी कुछ सालो से स्वय को हिन्दू मे अलग घोषित कर चुका है।

मजहबी दगे क्यो

क्योकि हिन्दुस्थान मे किसी मजहब विशेष के हाथ मे सत्ता नही है और न ही राज्य सत्ता का अपना या धर्मनिरपेक्ष राज्य की आवश्यकता क्यो पडी। यहा का बहुसख्यक समाज तो "वसुधैव कुटुम्बकम्," तथा "सर्वे सुखिनः भवन्तु" अर्थात् सारा विश्व एक परिवार है और सब सुखी रहे, एवं जीयो और जीने दो के आधारभूत सिद्धान्तो का पालन करता है और वह किसी भी अन्य सम्प्रदाय से नफरत नही करता, यहा तो जब कभी मजहब के नाम पर दगे होते है तो वे उन्ही स्थानो पर अधिक होते है जहा मुसलमान आक्रमण करने की स्थिति मे होते है फिर चाहे वह अलीगढ, भिवण्डी हो या हैदराबाद। आज तक जितने भी मजहबी दगे हुए है उन सभी की जांच रिपोर्ट के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वे मुसलमानो ने ही शुरू किये, हिन्दुओ ने नही। आज तक जाच के बाद एक भी ऐसा दगा प्रमाणित नही हुआ जो हिन्दुओ ने शुरू किया हो। यह तो साधारण बुद्धि वाला व्यक्ति भी समझ सकता है कि यदि हिन्दू मुसलमानो को मारना चाहे तो वे यह दगे वहा करेंगे जहा मुसलमान बहुत कम सख्या में हो। जहा मुसलमान सख्या मे अधिक है वहा हिन्दू झगडा क्यों करेंगे। पता—पटवारी जी कार्नर,

श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु

कुछ कह देने वाले तो बहुत होते है, लेकिन कह कर कार्य रूप देने वाले समार मे चन्द लोग ही होते है। प० देवव्रत धर्मेन्दु उन लोगो मे से थे जो कहकर उसे कर देने की क्षमता रखते थे।

मेरी उनसे अन्तिम भेट जन्माष्टमी पर्व, मृत्यु (16 सितम्बर) से कोई दस दिन पूर्व हुई। वह लगनशील और कर्मठ व्यक्ति थे। वे स्वय एक चलती-फिरती सस्था थे।

सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार मे जितना पुरुषार्थ धर्मेन्दु जी ने किया, उतना किसी ने नही किया। उनका कई आर्य सस्थाओ से सम्बन्ध था। प्रति वर्ष भाषण प्रतियोगिता एव विभिन्न विषयो पर लेख आमन्त्रित कर के फिर उनको पुस्तक रूप मे छपवाते थे और उचित मूल्य पर वितरित करते थे। इस बार उन्होने दो अनमोल पुस्तके प्रकाशित करवाई। (1) आर्य समाज का प्रचार कैसे हो (2) जीवन सुधा। जीवन सुधा बहुत ही उपयोगी और सुन्दर पुस्तक है जिसमे लगभग डेढ सौ भजन है और सन्ध्या एव हवन मन्त्र भी है। दोनो पुस्तके मात्र पाच रुपए मे मिल सकती हैं।

आजकल वह उन कविताओ का सग्रह कर रहे थे जो सीधे धर्मेन्दु जी से सम्बन्धित हो। मेरी प्रार्थना है कि पाठक गण उनसे सम्बन्धित कविताए शीघ्र भेजें ताकि उनकी यह इच्छा भी पूर्ण हो सके और इन्हे पुस्तक रूप मे श्रद्धाजलि के रूप मे छापा जा सके। आशा है, उनकी सस्था (आर्य युवक परिषद्) उनके अधूरे कार्यों को पूर्ण करेगी।

—ओमप्रकाश अग्रु, एडवोकेट
कचेहरी, करनाल-132001

अमरनाथ विद्यालंकार दिवंगत

पजाब के भूतपूर्व शिक्षा और श्रम मंत्री, लाला लाजपतराय द्वारा सस्थापित लोक सेवक सघ के आजीवन सदस्य, स्वतन्त्रता सेनानी, पूर्व ससत्सदस्य, श्रमिक नेता के रूप मे अन्तर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन (जेनेवा) मे भारत का प्रतिनिधित्व करने वाले, पजाब केसरी के भूतपूर्व सम्पादक, गुरुकुल कागडी के सुयोग्य स्नातक श्री अमरनाथ विद्यालकार का 21 सितम्बर को स्वर्गवास हो गया। उनकी आयु 83 वर्ष थी। उसी दिन निगमबोध घाट पर वैदिक रीति से उनकी अन्त्येष्ठि हो गई। शवयात्रा मे अनेक स्वतन्त्रता सेनानी काग्रेसी नेता और गुरुकुल के स्नातक बन्धु अच्छी सख्या मे शामिल थे। वे पिछले कुछ दिनो से बीमार थे और अ० भा० मेडिकल इस्टीट्यूट मे भर्ती थे।

सत्यार्थ प्रकाश को घर घर पहुंचावें

श्री धर्मेन्दु जी को श्रद्धांजलि

नई दिल्ली, 22 सितम्बर। आज आर्यसमाज दीवानहाल मे दिवगत श्री प० देवव्रत जी धर्मेन्दु की श्रद्धांजलि सभा मे अनेक वक्ताओ ने इस बात पर जोर दिया कि श्री धर्मेन्दु जी की यह हार्दिक इच्छा थी की सत्यार्थप्रकाश घर घर पहुचे, इसके लिए उन्होने सत्यार्थ प्रकाश सम्बन्धी परीक्षाओ का व्यापक स्तर पर आयोजन किया। इस लिए उन्हे सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम इस दिशा मे हम सब दत्तचित्त होकर कार्य करें। अनेक वक्ताओ ने उनके आर्योचित वेष, रहन-सहन, खान-पान तथा दृढ सकल्प की चर्चा की। वक्ताओ मे श्री सोमनाथ मरवाह, श्री नवनीत लाल एडवोकेट, चौधरी बीरेश प्रताप, श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री और श्री मामचन्द रिवारिया शामिल थे। आर्यसमाज दीवानहाल के प्रधान श्री सूर्य देव जी ने सभा का सचालन किया।

—मामचन्द रिवारिया, सहमन्त्री
आ० प्रा०प्र० स०

ऋषि मन्त्रदृष्टा हैं, मन्त्रकर्त्ता नहीं

वेदगोष्ठी में आचार्य विशुद्धानन्द का शोध प्रबन्ध

१४ सितम्बर को नई दिल्ली कटवारिया सराय मे लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ मे हुई वेद-गोष्ठी मे गुरुकुल वृन्दावन के कुलपति आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र ने "ऋषि मन्त्रद्रष्टा है, मन्त्रकर्त्ता नही" विषय पर शोध प्रबन्ध पढा। गोष्ठी का आयोजन वैद्य रामगोपाल शास्त्री स्मारक समिति की ओर से किया गया था। उच्चतम न्यायालय के भूतपूर्व न्यायाधीश श्री हसराज खन्ना इस आयोजन के मुख्य अतिथि थे। गोष्ठी प्रारम्भ होने से पूर्व 'आर्यजगत्' के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालकार ने खन्ना जी का स्वागत किया और अभ्यागतो से उनका परिचय कराया।

गोष्ठी के अन्त मे श्री हंसराज खन्ना ने समिति की ओर से विशुद्धानन्द जी को शाल, नारियल और ५०० रुपये का पुरस्कार भेट किया। खन्ना जी ने अपने भाषण में उदधरण देकर बताया कि अनेक विदेशी विद्वान् वेदो के गहन ज्ञान से प्रभावित थे।

अगले दिन (१५ सितम्बर को) आर्यसमाज मन्दिर, करौल मे बाग इस शोध प्रबन्ध पर विस्तृत रूप से विचार हुआ। इसमे मुख्यत दर्शन-शास्त्रो के विद्वान् आचार्य उदयवीर शास्त्री और विशुद्धानन्द जी के गुरु दशरथ श्रोत्रिय ने अपने विचार प्रकट किये।

दोनो दिन गोष्ठी का सचालन श्रद्धानन्द कालेज (अलीपुर) के प्राध्यापक प्रो० वेदव्रत 'आलोक' ने किया।

दयानन्द और अश्वमेध

डा० प्रह्लाद कुमार की जयन्ती पर भाषण

डा० प्रह्लाद कुमार की 40 वी जयन्ती के अवसर पर "दयानन्द भाष्य मे। अश्वमेध-प्रकरण" विषय पर वेदो के प्रसिद्ध विद्वान जयपुर निवासी डॉ० सुधीर कुमार गुप्त का सारगर्भित व्याख्यान हुआ जिसमे उन्होने यह प्रतिपादित किया कि महर्षि दयानन्द ने यजुर्वेद भाष्य मे अश्वमेध की युक्ति सगत व्याख्या करके यह सिद्ध किया है कि इसमे पशुवलि का कोई स्थान नही है। उव्वट और महीधर ने इस प्रसग के अनेक मत्रो के अश्लील अर्थ अज्ञानवश किये है। कार्यक्रम की अध्यक्षता महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के संस्कृत विभागाध्यक्ष डा० जयदेव विद्यालकार ने की।

इस अवसर पर डा० मधुबाला की "पुस्तक भाष्यकार उव्वट" का विमोचन डा० सत्यव्रत जी ने किया। उन्होने एक जटिल विषय को कुशलता पूर्वक प्रतिपादित करने पर डा० मधुबाला को साधुवाद दिया।

डा० सत्यव्रत शास्त्री ने एम० ए० सस्कृत मे वेद विकल्प लेकर अध्ययन करने वाले छात्रो को छात्र-वृत्ति वितरण भी किया। अन्त मे समिति के अध्यक्ष डा० सत्यदेव चौधरी ने अभ्यागतो और प्रमुख अतिथियो के प्रति आभार व्यक्त किया।

—डा० कृष्ण लाल

शुद्धि और विवाह

आर्य समाज, ग्रेटर कैलाश-II नई दिल्ली मे कु० कि० मैरी मरफी की स्वेच्छा से शुद्धि करके उनका नाम कविता रखा गया, पश्चात् श्री गिरीश सोबती के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। रघुनन्दनगुप्त

आर्य अनाथालय फिरोजपुर में शिक्षक दिवस सम्पन्न

आर्य अनाथालय, फिरोजपुर मे डी०ए०वी० शिक्षण संस्थाओ की ओर से सस्थान के डायरेक्टर प्रि० पी०डी० चौधरी की अध्यक्षता मे शिक्षक दिवस मनाया गया, प्रि० चौधरी ने शिक्षको को सम्बोधित करते हुए डी०ए०वी० की परम्परा को निरन्तर आगे बढाने का आह्वान किया। उन्होने डी०ए०वी० शताब्दी समारोहो को सफल बनाने के लिए शिक्षको के योगदान को महत्त्वपूर्ण बताते हुए उन्हे निरन्तर कार्यरत रहने के लिए भी प्रेरित किया।

श्री ज्ञानचन्द चौधरी दिवंगत

आर्य समाज के प्रसिद्ध कार्य कर्त्ता श्री जे० एन० चौधरी के चाचा श्री ज्ञानचन्द चौधरी (जामपुर निवासी) का 18 सितम्बर को स्वर्गवास हो गया वे आर्यसमाज के सत्संग और यज्ञ के बडे प्रेमी थे। अपनी डेरावाल बिरादरी मे उनका बडा सम्मान था वे अपने पीछे पत्नी, एक लडका और दो लडकिया छोड गए है। रविवार 22 सितम्बर को 2 बी ब्लाक, लाजपतनगर II मे उनका चौथा और पगडी की रस्म हुई। उनके सुपुत्र श्री सुभाष चौधरी को पगडी पहनाई गई। आचार्य पुरुषोत्तम एम० ए० ने पौरोहित्य किया।

वेद-रहस्य-पुस्तक

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के अवसर पर प्रकाशित 'वेद रहस्य' दयानन्द निर्वाण शताब्दी उपहार-ग्रन्थ नामक पुस्तक 416 पृष्ठो की है जिसके लेखक श्री रामसिंह है, उक्त पुस्तक प्लास्टिक कवर सहित है उक्त किताब 15 रुपये भेजकर निम्नलिखित पते से मगवा सकते हैं—राम सिंह आर्य, 17-गाधी नगर, आगरा-3।

श्री भारद्वाज का सुयश

आर्य समाज और आर्य वीर दल के सक्रिय कार्यकर्त्ता श्री रामनिवास भारद्वाज ने सिंगापुर मे आयोजित बुजुर्ग लोगो की एशियाई खेल कूद प्रतियोगिता मे 5 किलो मीटर की शीघ्र चलने की प्रतियोगिता मे प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक प्राप्त किया। इससे पूर्व रामपुर मे आयोजित प्रतियोगिता मे भी स्वर्ण पदक प्राप्त किया था। आप शाकाहारी हैं और प्राकृतिक चिकित्सा तथा योगासन के प्रेमी हैं। विदेशो मे आपने सत्यार्थ प्रकाश आदि वैदिक साहित्य भी लाइब्रेरी और लोगो मे वितरित किये।

श्री अयोध्या प्रसाद दिवंगत

आर्य समाज, नगरा, झासी के वर्तमान प्रधान श्री अयोध्या प्रसाद शर्मा का निधन 65 वर्ष की आयु मे हो गया। श्री शर्मा वैदिक कर्मकाण्डो के प्रकाण्ड पण्डित और वेदज्ञ थे। आप वर्षों इस समाज के मत्री रहे। दिवगत आत्मा की सद्गति हेतु पं० मदन मोहन शास्त्री की अध्यक्षता मे श्रद्धाजलि अर्पित की गई। —महेश श्रीवास्तव

गुरुकुल कांगड़ी के अधिकारियों के स्वागत की सचित्र झाँकी
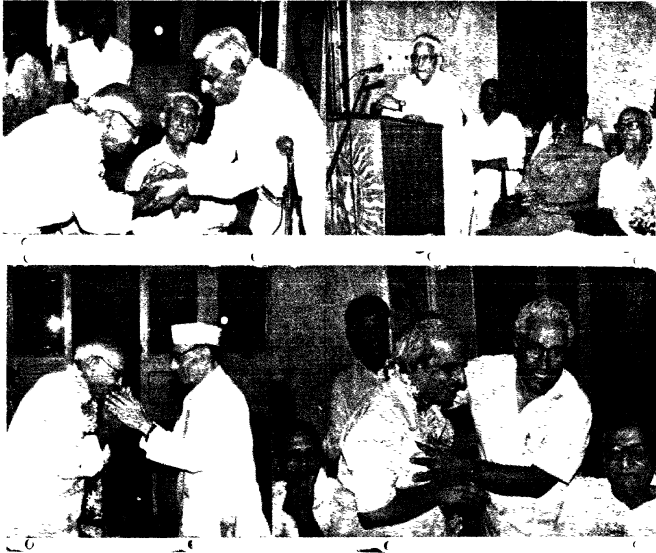
१३ सितम्बर को आर्यसमाज अनारकली मे आर्य प्रादेशिक सभा और डी ए वी कालिज प्रबन्धकर्त्री सभा की ओर से गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगडी के कुलाधिपति डा० सत्यकेतु विद्यालकार और कुलपति डा० सत्यकाम वर्मा का जो भव्य अभिनन्दन किया गया उसकी सचित्र झांकी यहां प्रस्तुत है। प्रथम चित्र मे आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान प्रो० वेद व्यास जी डा० सत्यकेतु जी का अभिनन्दन कर रहे हैं। द्वितीय चित्र मे समारोह के अध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह आर्य जनता को सम्बोधित कर रहे हैं। तृतीय चित्र मे सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले सत्यकेतु जी का अभिनन्दन कर रहे हैं। चतुर्थ चित्र मे डी ए वी कालिज कमेटी के सगठन सचिव श्री दरबारी लाल जी डा० सत्यकाम वर्मा का अभिनन्दन कर रहे हैं।

यहां भी धूम्रपान निषिद्ध हो

अमरीका के लॉस एंजिल्स नामक क्षेत्र मे लिफ्टो, रेस्ट हाउसो और नर्स स्टेशनो आदि स्थानो को 'धूम्रपान निषिद्ध है" वाले क्षेत्र घोषित कर दिया गया है, और धीरे-धीरे अधिकाश क्षेत्रो को भी ऐसे ही क्षेत्र घोषित किया जाने वाला है। दो तिहाई कारखानो और कार्यालयो के रेस्तराओ, लाउन्जो आदि की पुनर्रचना इस ढंग से की जा रही है कि वहां-धूम्रपान संभव न हो सके। इस सम्बन्ध मे एक ऐसा क्षेत्र बनाने से १२० दिन पहले एक अध्यादेश जारी किया गया था, जिसके अनुसार "कार्यालयो और कारखानो के मालिको को ऐसी धूम्रपान न करने की नीतियो का विकास करने को कहा गया, जो उनके कर्मचारियो को कार्य स्थलो पर धूम्रपान करने से रोक सके।

बहुत से कार्यालयो और कम्पनियो ने तो अपने कर्मचारियो को हिदायत दे दी है कि वे धूम्रपान कतई न करें। धूम्रपान न करने की नीतियो का विकास न करने वाले मालिकों पर एक हजार डालर का दंड तथा कार्यस्थल पर धूम्रपान करने वाले कर्मचारियो पर पचास से सौ डालर का दण्ड किया जायेगा।

भारत सरकार क्यों नहीं लॉस एंजल्स की नकल कर कार्यालयो और कारखानों को ऐसे क्षेत्र घोषित करे जहां धूम्रपान पूरी तरह निषिद्ध हो।

इन्द्रप्रस्थ विश्व हिन्दू परिषद् (महिला विभाग), दिल्ली की अपील

परहित सरिस धर्म नहि भाई। पर-पीडा सम नहि अधमाई॥

परिषद् के महिला विभाग ने सफदरजंग अस्पताल के कैंसर वार्ड, स्पाइनल इन्जरी वार्ड तथा अन्यान्य वार्डो मे प्रविष्ट निर्धन एवं असहाय रोगियो की सहायता के लिए अस्पताल मे एक सेवा-केन्द्र आरम्भ किया है। इस केन्द्र मे रोगियो को औषधि, वस्त्र तथा खाद्य सामग्री दी जाती है। जले हुए रोगियो को प्रति-सप्ताह नारियल का तेल दिया जाता है। रक्तदान की भी व्यवस्था की जा रही है। बाहर से आए रोगियो तथा उनके सम्बन्धियो को धर्मशाला मे खाद्य-सामग्री तथा अन्य आवश्यक वस्तुओ का प्रबन्ध किया जाता है।

परिषद का महिला विभाग देश के, विशेषतया दिल्ली निवासी, सभी धनी एवं सपन्न समाज सेवी भाई-बहिनो से अपील करती है कि इस सेवा कार्य मे तन-मन तथा धन से सहयोग कर, पुण्य के भागी बनें।

निवेदिका—कृष्णा पुंज, A-49 डिफेंस कोलोनी, नई दिल्ली 24 (फोन 616228)

समाज कल्याण केन्द्र, सफदरजंग अस्पताल (फोन : 665060/264)

[हर संकट की घड़ी मे आर्य-जन सहायता और सहयोग कार्य मे सदा अग्रणी रहे है। हमे विश्वास है कि इस कार्य मे भी वे पीछे नही रहेगे। यही हमारी कामना है।—सं०]

□

अनुकूल वधू की आवश्यकता

एक 30 वर्षीय सुन्दर स्वस्थ, गौर वर्ण, कद 5 फुट 4 इंच, जम्मू निवासी खत्री अविवाहित, डिफेंस डिपार्टमैंट मे सर्विस आय रु० 1500/- मासिक, पूर्ण शाकाहारी आर्य परिवार, माता पिता जीवित, (पिता डिफेंस डिपार्टमैंट में गजेटिड आफिसर, अपनी चार मंजिला कोठी, परिवार मे केवल इस युवक और एक छोटा भाई जो बी० ए० मे पढ़ रहा है को छोड कर सभी भाई बहन विवाहित हैं और सर्विस तथा बिजनैस करते हैं), पारिवारिक बोझ से सर्वथा स्वतंत्र, आर्य युवक के लिए योग्य वधू चाहिए। परन्तु शर्त यह है कि लडकी बाँझ अर्थात् सन्तान उत्पत्ति के अयोग्य हो। दहेज और जाति पाति का बंधन नही। पत्र व्यवहार सर्वथा गोपनीय। पत्र व्यवहार या सम्पर्क का पता—मंत्री आर्य समाज, चूना मंडी, पहाड़ गंज, नई दिल्ली-110055

अधीक्षक चाहिए

बाल सेवा आश्रम (अनाथालय) भिवानी के लिए योग्य, अनुभावी प्रौढ़, आर्यसमाजी व्यक्ति की अधीक्षक के रूप मे आवश्यकता है। प्रार्थना-पत्र निम्न पते पर भेजे—व्यवस्थापक, बाल सेवा आश्रम (अनाथालय), भिवानी, हरयाणा

"आर्य पथ" मासिक

पिछले पाच वर्षो से देश विदेश में धार्मिकता का प्रचार प्रसार करने वाली इस पत्रिका के, जिसकी उच्चतम कोटि की धार्मिक मासिक पत्रिकाओं में गणना है, अवश्य आजीवन या मासिक सदस्य बन वैदिक धर्म प्रचार मे अपना योगदान कीजिये।

वार्षिक सदस्यता ३०/- रुपये, आजोवन सदस्यता ३००/-रुपये
संचालक "आर्य पथ", सेठी बिल्डिंग, विजय चौक, कृष्ण नगर, दिल्ली-५१

अखिल भारतवर्षीय श्रद्धानंद दलितोद्धार सभा,
आर्यनगर, पहाड़गंज, नई दिल्ली—55
के तत्वावधान मे

आर्य विदेश यात्रा

इस यात्रा मे दिल्ली से रवाना होकर बैंकाक, पटाया, सिंगापुर और हांगकांग का अवलोकन होगा।

पहली यात्रा 11 अक्टूबर, 85 को दिल्ली पालम हवाई अड्डे से रात को 9 बजे प्रारम्भ होगी और 21 अक्तूबर 85 को दिल्ली मे ही समाप्त होगी।

दूसरी यात्रा भी पालम हवाई अड्डे से 11 अक्तूबर को प्रारंभ होगी, पर 19 अक्तूबर को दिल्ली वापिस आकर समाप्त हो जायेगी। दूसरी यात्रा मे हांगकांग शामिल नही होगा।

पहली यात्रा का किराया	975/-0
दूसरी यात्रा का किराया	7250/-

[किराये में विमान यात्रा का व्यय, रात को होटल में निवास, रात का खाना, सुबह का नाश्ता, ऐतिहासिक और दर्शनीय स्थानो के लिए बसो का प्रबन्ध शामिल है। सीट रिजर्व करवाने के लिए आर्यसमाज करौल बाग (फोन न० 567458) पर सम्पर्क करे। विशेष जानकारी के लिए मिलें—रामलाल मलिक फोन नं० 562510

ADMISSION NOTICE

DAYANAND SCHOOL OF MANAGEMENT & VOCATIONAL STUDIES
ON THE PREMISES OF D A V SECONDARY SCHOOL
(BHAGAT SINGH MARG (GOLE MARKET),
NEW DELHI PH 324012

The D. A. V College Managing Committee, New Delhi is happy to announce the opening of

One Year Diploma Course in Nursery Teachers' Training for women graduates from 5th October, 1985 Timings 3 p m to 6 p m. Prospectus available 3 p m to 8 p. m Apply by 23rd September. Interview 27th September 3 p m

ऋत अनुकूल हवन सामग्री

हमने आर्य प्रेमियो के आग्रह पर संस्कार विधि के अनुसार हवन सामग्री का निर्माण हिमाचल की ताजी जड़ी-बूटियों से प्रारम्भ कर दिया है, जो उत्तम, कीटाणु-नाशक, सुगन्धित एवं पौष्टिक तत्वो से युक्त है। यह आदर्श हवन सामग्री अत्यन्त अल्प मूल्य पर प्राप्त है। थोक मूल्य ४ रु० प्रति किलो है।

जो यज्ञ प्रेमी हवन सामग्री का निर्माण करना चाहें वह सब ताजी हिमालय की वनस्पतियां हमसे प्राप्त कर सकते हैं, वे चाहें तो कुटवा भी सकते हैं। यह सब सेवा मात्र है।

योमी फार्मेसी, लकसर रोड
डाकघर गुरुकुल कांगड़ी—२४९४०४ (उ० प्र०) हरिद्वार

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के कर कमलों द्वारा स्थापित और आर्य प्रादेशिक सभा द्वारा संचालित

भारतवर्ष का पुराना और उत्तर भारत का प्रमुख अनाथालय

कुशल प्रशासक शैक्षिक ज्ञाता, उदार हृदय प्रबन्धको की देखरेख में बालक-बालिकाओ के पालन-पोषण, शिक्षा आदि का उचित प्रबन्ध है।

आप सभी दानी महानुभाव इस पुनीत कार्य में दान देकर पुण्य के भागी बनें प्रि० पा० डो० चौधरी, मैनेजर आर्य अनाथालय, फिरोजपुर।

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस०नारायण एण्ड सन्स७११७/१८ पहाड़ी धीरज, (फोन : ५१६५१८, ५२७३३५) दिल्ली से छपवा कर कार्यालय आर्य जगत, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली। फोन (343718)

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य-२५ रुपये | विदेश मे ३० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४८, अंक ४१, रविवार, ६ अक्तूबर, १९८५ | दूरभाष : ३४३७१८

आजीवन सदस्य-२५१ रु० | इस अंक का मूल्य—६० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८५, दयानन्दाब्द १६० | आश्विन कृष्णा ७, २०४२ वि०

आतंकवादियों के मंसूबे पूरे हुए नहीं

आखिर अकाली दल लोकतन्त्र की डगर पर

प्रधानमंत्री की नीति को सफलता : बरनाला मुख्यमंत्री बने

25 सितम्बर को हुए पंजाब विधान सभा के चुनावो मे अकाली दल की भारी विजय को प्रधान मंत्री राजीव गाधी ने "भारत माता की विजय" की संज्ञा दी है। श्री गाँधी ने कहा कि भले ही पंजाब मे उनकी पार्टी की पराजय हुई है, किन्तु पार्टी ने देश की एकता और अखण्डता की लड़ाई जीत ली है। प्र धान मत्री ने पंजाब की वीर और देश भक्त जनता का लोकतान्त्रिक मूल्यों मे उसकी निष्ठा के लिए धन्यवाद किया। उन्होने कहा कि यह पृथकतावादी तत्वो की करारीहार और पंजाब समझौते के समर्थको तथा लोकतन्त्र मे विश्वास रखने वालो की विजय है।

अकाली दल के विधायकों ने श्री सुरजीत सिह बरनाला को सर्वसम्मति से अपना नेता चुना। पंजाब के भूत-पूर्व मुख्यमंत्री प्रकाशसिह बादल ने उनके नाम का प्रस्ताव किया और भूतपूर्व शिक्षा मन्त्री श्री सुखजिन्दर सिह ने उसका समर्थन किया। बैठक मे श्री बरनाला ने श्री बादल के कार्यों एव सहयोग की भूरि-भूरि प्रशसा करते हुए कहा कि उन्होने राज्य की जो सेवा की है वह सदा याद रहेगी। इस अवसर पर स्वर्गीय सन्त हर चरण सिह लोगोवाल को भी बार-बार स्मरण किया गया।

नवनिर्वाचित नेता श्री सुरजीतसिह बरनाला अपने सन्तुलित दृष्टिकोण के लिए प्रसिद्ध हैं। वे दिवगत अकाली नेता सन्त हरचंद सिह लोगोवाल के निकट एक सहयोगी रहे हैं। जनता पार्टी के शासन काल मे वे केन्द्रीय मन्त्री परिषद के सदस्य रह चुके हैं। उससे पूर्व वे पंजाब के प्रथम अकाली मत्री मडल के सदस्य और अकाली दल के महासचिव पद पर भी रह चुके हैं। सन्त लोगोवाल की हत्या के बाद उनको दल का कार्य बाहक अध्यक्ष चुना गया था। अब उन्होने मुख्यमत्री पद की शपथ ग्रहण करके नए मत्रिमंडल का निर्माण कर लिया है।

विदेश में भी स्वागत

लन्दन के एक दैनिक पत्र ने कुछ दिन पूर्व अपने सम्पादकीय मे इसे "पराजय के बावजूद राजीव की विजय" बताया। लन्दन के ही "गार्जियन" ने इसे पजाब समझौते पर जनता की मोहर बताया है। उसका कहना है कि चुवाव मे भाग लेकर मतदाताओ ने जहा एक ओर यह घोषणा कर दी है कि वे उग्रवादियो के साथ नही हैं वहा उन्होने स्वर्ण मदिर मे सेना भेजने के काग्रेस सरकार के निर्णय के विरुद्ध भी अपना मत व्यक्त कर दिया है।

लन्दन के ही 'टाइम्स' ने लिखा है कि श्री गाधी अपनी पार्टी की हार से सन्तुष्ट होगे क्योकि अब आतकवादियो से निपटने की जिम्मेदारी अकालियो की है। सरदार जोगिन्दर सिह के संयुक्त अकाली दल द्वारा चुनावो के बहिष्कार के बावजूद लोगों ने मतदान मे भारी सख्या मे हिस्सा लिया। लोगोवाल की हत्या के बाद आम हिन्दू जनता ने भी अकाली दल के उम्मीदवारो को वोट देना उचित समझा। तभी विधान सभा की 115 सीटो मे से 73 सीटो पर अकालियो को सफलता मिल सकी।

*

भारत में उपद्रव कराने के लिए पाकिस्तान की शह

गुप्तचर एजेंसियो ने केन्द्र सरकार को सूचित किया है कि पाकिस्तान न केवल पजाब मे अपितु उत्तर भारत के कुछ अन्य क्षेत्रो मे भी उपद्रव करने के उद्देश्य से कट्टर पंथी मुस्लिम नेताओं और सगठनो को व्यापक स्तर पर आर्थिक सहायता दे रहा है। इस प्रसग मे पाकिस्तान सरकार ने 'वीसा' देने की उदार नीति के नाम पर बडी सख्या मे भारत के मुस्लिम नेताओ, व्यापारियो और संदिग्ध व्यक्तियो को पाकिस्तान आने की सुविधा दे दी है। पाकिस्तान इन लोगो के माध्यम से भारत मे 'मुस्लिम पर्सनल ला' और इस्लाम की रक्षा के नाम पर मुस्लिम समुदाय को भारतीय समाज से अलग-थलग करने का कुप्रचार तथा दगे करवाने का इरादा रखता है।

विदेशो में भारत विरोधी षड्यंत्र पर नजर रखने वाले गुप्तचर संगठन ने अपनी रिपोर्ट में जामा मस्जिद के इमाम मौलाना अब्दुल्ला बुखारी द्वारा सितम्बर के प्रारभ मे की गई पाकिस्तान यात्रा का भी उल्लेख किया है। शाही इमाम ने पाकिस्तान के नेताओ और पत्रकारो के बीच जाकर कहा : 'भारत मे हिन्दू, मुसलमानो और सिखो पर बुरी तरह अत्याचार कर रहे हैं। भारतीय मुसलमानो के पास इन जुल्मो के विरुद्ध सघर्ष करने के आवश्यक साधन नही हैं। इस काम के लिए पाकिस्तान सरकार और जनता को लडाई लड़ने के लिए आर्थिक और अन्य सहायता करनी चाहिए।' इमाम बुखारी ने खुले-आम यह भी कहा कि हम पाकिस्तान को ताकतवर देखना चाहते हैं। उन्होने असम में 50 हजार और मुरादाबाद मे पाच हजार मुसलमानो को मारे जाने तथा भारत मे मुसलमानो के पर्सनल लॉ के कुछ प्रावधानो के विरुद्ध अदालती फैसलों का उल्लेख करते हुए इस्लामी परम्पराओ की रक्षा की दुहाई भी दी। पाकिस्तानी नेताओ ने इमाम को हर संभव सहायता के वायदे किए हैं।

गुप्तचर एजेंसियां पाकिस्तान के इरादो को विफल करने के लिए भारत मे सक्रिय अन्य धार्मिक नेताओ की गतिविधियो पर भी कडी नजर रखे हुए हैं।

बताया जाता है कि आजमगढ के इमाम मौलाना ओबेदुल्ला खान के एक कट्टर साम्प्रदायिक ओर उत्तेजक भाषण के टेप को मुस्लिम क्षेत्रो मे सुनवाने और मुफ्त बटवाने की रिपोर्ट भी सरकार को दी गई है। राजस्थान के पाली कस्बे की मिल्लत मे दिए गए इस भाषण मे मौलाना ओबेदुल्ला खान ने उच्चतम न्यायालय के फैसले का कडा विरोध करने और पर्सनल लॉ के लिए खून की नदिया बहा देने की पुरजोर अपील की है। इस भाषण मे मौलाना ओबेदुल्ला खान ने कहा है कि मुस्लिम किसी कोर्ट के पाबन्द नही हैं। वे किसी कोर्ट मे सफाई देने नही जाएंगे, लेकिन कुरान या पर्सनल लॉ के खिलाफ कोर्ट मे जाने वालो का सफाया कर दिया जाएगा। यदि पर्सनल लॉ बदलने की कोशिश हुई तो बाला साहेब देवरस, अटल बिहारी वाजपेयी और राजीव गाधी को भी कलमा पढने के लिए मजबूर होना पड सकता है।

शंकराचार्य भी राहे-रास्त पर

पुरी पीठाधीश्वर श्री निरजनदेव तीर्थ ने अपनी कलकत्ता यात्रा के अवसर पर सुप्रसिद्ध कालीमन्दिर और भैरव मन्दिर मे पूजा करके स्वर्गीय करपात्री जी द्वारा लगाए गए उस प्रतिबन्ध को निरस्त कर दिया जिसके आधार पर जिन मन्दिरो मे हरिजनो का प्रवेश हो चुका हो उनमे शकराचार्य तथा अन्य आचार्यों का प्रवेश वर्जित घोषित कर दिया गया था। स्वामी श्री निरजन देव तीर्थ के इस साहसिक एवं क्रान्तिकारी पग की सर्वत्र सराहना की जा रही है।

परामर्शदाता-अमर स्वामी सरस्वती | सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

ब्रह्मचर्य के द्वारा सौ वर्ष से भी अधिक आयु प्राप्त करें

—स्वामी रामेश्वरानन्द—

यदि खाया हुआ भोजन अच्छी तरह पच जाये तो उसका रस बन जाता है। रस का रक्त, मास और मज्जा बनते-बनते अन्त मे वीर्य बनता है। यह वीर्य सारे शरीर मे व्याप्त रहता है अस्थियों के ऊपर शरीर खडा है और वीर्य अस्थियो के भी पीछे बनता है। इसीलिए वीर्य रक्षा पर विशेष ध्यान रखना होता है

यदि भोजन का उचित पाचन नही होता तो रस रक्तादि नही बनेंगे। फिर सभी धातुएं विकृत हो जायेंगी। जन्म से आठ वर्ष तक माता-पिता बालक को शिक्षा दें और उसे आठो प्रकार के मनुस्मृति-वर्णित मैथुनो से बचाने का यत्न करे, क्योकि आज कल प्राय बालको को बाल्य काल मे ही भ्रष्ट कर दिया जाता है। बालक जैसा सुनता और देखता है। वैसा ही बन जाता है। बहुधा माता-पिता भी घर मे अश्लील चेष्टा करते रहते है और बालक देखते रहते हैं। छोटे होने के कारण वह कुछ कह नही पाते, किन्तु विषय वासना के सस्कार उनमे पड जाते हैं। जब वे बडे होकर बाहर निकलते है, तो अनायास भ्रष्ट लोगों के फन्दे मे पड जाते है। इसलिए माता-पिता बालको को कुचेष्टाओ से बचाने के लिए पूर्ण प्रयत्न वीर्य करे। रक्षा मे आनन्द और वीर्य के नाश मे दुःख होता है, यह भी जनादें। वीर्य रक्षा होने पर मनुष्य सदा निरोग, बुद्धि बल पराक्रम से युक्त तथा सुखी होता है। वीर्य रक्षा की उत्तम यही रीति है कि विषयो की कथा न सुने, विषयी लडके-लडकियो से दूर रहे, स्त्रियो के संसर्ग मे एकान्त मे न रहे। सिनेमा थियेटर न देखे और अश्लील किताबें न पढे न ही इनकी कहानी सुने।

जिसके शरीर मे वीर्य नही होता वह नपुंसक महा कुलक्षणी और रोगी होकर निस्तेज, निर्बुद्धि, उत्साह साहस, धैर्य, बल, पराक्रम आदि गुणो से रहित होकर अल्प काल मे ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। बचपन मे यदि वीर्य रक्षा मे चूक गए तो इस जन्म मे उत्तम समय नही मिलेगा यह शरीर, सबसे उत्तम रतन है। इसकी एक ऊंगुली भी विश्व के बाजार मे किसी भी मूल्य पर नही मिलेगी। इसलिए यह शरीर अमूल्य है। रुपये से और सब चीजे मिल सकती हैं किन्तु यह शरीर दुबारा नही मिलेगा।

अमूल्य के साथ-साथ यह शरीर चौबीस घटे अर्थात् जीवन भर का सेवक भी है। ऐसा सेवक और कोई नही है। तथा महत्वपूर्ण इतना है कि जब तक यह शरीर है, तभी तक गृह सम्बन्ध माता-पिता भाई-बन्धु धन-जन अपना है। जब शरीर नही रहेगा, तब सब सम्बन्ध छूट जायेंगे। इसलिए इस शरीर की सुरक्षा के लिए, वीर्य रक्षा अति आवश्यक है। यह शरीर ही धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष का साधन है। इसे विषय वासना के चक्कर में पड कर नही गवाना चाहिए। ब्रह्मचारी निश्चय जाने की यह शरीर यज्ञ है। चौबीस वर्ष से पहले जो वीर्य का लोप करेगा, उसकी आयु क्षीण होगी।

यदि उसको कोई चौबीस वर्ष से पहले ब्रह्मचर्य व्रत को भ्रष्ट करने की बात करे तो उसे डाँट दे। स्वामी दयानन्द जी के शब्दो मे यदि कोई इस सर्वोत्तम धर्म से गिराना चाहे तो उसको ब्रह्मचारी उत्तर दे। "अरे छोकरो के छोकरे। मुझ से दूर रहो। तुम्हारे दुर्गन्ध रूप भ्रष्ट वचनों से मैं दूर रहता हू। मैं इस उत्तम ब्रह्मचर्य का लोप कभी न करूंगा। इसको पूर्ण करके सर्व रोगो से रहित सर्वविद्यादि शुभ गुण, कर्म, स्वभाव सहित होऊंगा। इस मेरी शुभ कामना को परमात्मा अपनी कृपा से पूर्ण करे।"

सर्वोत्तम ब्रह्मचर्य अडतालीस वर्ष का है। जो इसका पालन करेगा, वह पूर्ण आयु को प्राप्त कर सकेगा। जो अडतालीस वर्ष पूरे करके गृहस्थी बनेगा, उसका शरीर नीरोग और शुभ गुणो का भण्डार होगा। और आयु भी उसकी पूर्ण अर्थात् सौ वर्ष होगी।

ब्रह्मचर्य से रहने के लिए उचित मपा तुला भोजन करना होगा। आवश्यकता से अधिक एक तोला भोजन भी नही होगा और उसे अच्छी प्रकार चबाना चाहिए नियमित व्यायाम और प्राणायाम अवश्य करना चाहिए। उचित समय पर शयन करे, और सोते समय दृढ संकल्प करे कि मै कोई स्वप्न नही आने दूँगा और 'यज्जाग्रतो' आदि मन्त्रो को सोते समय पाठ करे, ताकि कोई स्वप्न न आये। स्वप्न से शरीर की हानि होती है। कम से कम सौ वर्ष जीने का संकल्प रखें, और अधिक से अधिक आयु बढाने प्रयत्न करे।

त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य० ..... (यजु अ० 3 म० 62) —: त्र्यायुषम् इस पद की चार-चार आवृत्ति होने से सौ वर्ष पर्यन्त भी आयु का ग्रहण किया है। इस की प्राप्ति के लिए परमेश्वर की प्रार्थना करके अपना पुरुषार्थ करना उचित है। प्रार्थना इस प्रकार करनी चाहिए— "हे जगदीश! आपकी कृपा से जैसे विद्वान् लोग विद्या, धर्म और परोपकार के अनुष्ठान से आनन्द पूर्वक तीन सौ वर्ष पर्यन्त आयु को भोगते हैं वैसे ही तीन प्रकार के ताप से रहित, शरीर मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार रूप अन्तःकरण इन्द्रिय और प्राणादि को सुखी करने वाले विद्या विज्ञान सहित आयु को हम लोग प्राप्त होकर तीन सौ वा चार सौ वर्ष पर्यन्त सुख पूर्वक भोगे।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि० (यजु अ० 4 मं०2) मनुष्य आलस्य को छोडकर देखने हारे न्यायाधीश परमात्मा और करने योग्य उस की आज्ञा को मान कर शुभ कर्मों को करते हुए और अशुभ कर्मों को छोडते हुए ब्रह्मचर्य के सेवन से विद्या और अच्छी शिक्षा को या उपस्थेन्द्रिय के विकारो को रोकने से पराक्रम को बढा के अल्प मृत्यु को हटाये युक्ताहार विहार से सौ वर्ष की आयु को प्राप्त होवे। इस मे जो व्यतिक्रम करेगा वह पहले भी मर सकता है। इस प्रकार अनेक मन्त्र हैं जिसमे सौ या उससे अधिक वर्ष तक जीने की प्रार्थना और विधान है। जैसे→

जीवेम शरदः शतम्।
(यजु० अ० 36 मं०34)
शतं जीवन्तु शरदः
(यजु० अ० 35 मं० 15)

परमेश्वर इस मन्त्र मे मनुष्यो को आज्ञा देता है कि सौ शरद ऋतुओं तक जीवो और ज्ञान और ब्रह्मचर्य आदि से मृत्यु को कुचल दो।

शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा :।
(यजु० अ० 25 मं० 22)
माभिमंस्था शतायुषं कृणुहि चीयमान
(यजु० अ० 13 मं० 41)
पवित्रेण शतायुषा०।
(यजु० अ० 19 मं० 37)
ये सामाना समनसो
(यजु० अ० 19 म०46)
शतमानम आयु
(यजु० अ० 19 मं० 93)
शतं हिमाः (यजु० अ०2 म० 27)
इन्धानास्त्वा शतं (यजु अ० 3मं०18)
शतशारदायायुष्मान् :
(यजु अ० 34 मं० 53)
वर्धनामि शतशारदायायुष्मान्
(यजु अ० 34 मं०52)

इत्यादि अनेक मन्त्र हैं चारो वेदो मे जिसमें सौ वर्ष से भी अधिक जीने का विधान है। ब्राह्मण ग्रन्थ आदि मे भी इसी प्रकार का विधान है। सौ वर्ष से पहले मरने के आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक कारण है। जिस तरह से ससार का कोई कारीगर अपनी रचना को स्वयं नही बिगाडता इसी तरह परमात्मा भी किसी को नही मारता। अपनी गलतियो से ही लोग सौ वर्ष से पूर्व मरते हैं सौभाग्यशाली हैं। वे लोग जो सौ या उससे अधिक वर्षों तक जीवित रहते हैं।

पता—गुरुकुल घरोडा, करनाल (हरि०)

तीन क्विंटल चावल दान

जालन्धर लायन्स क्लब के जिला गवर्नर श्री डी० सी० राय अन्य पदाधिकारियों के साथ पिछले दिनों आर्य अनाथालय फिरोजपुर में पधारे और आश्रम की व्यवस्था से प्रसन्न होकर तीन क्विंटल चावल दान दिया। चित्र में प्रि० पी० डी० चौधरी के साथ श्री राय, श्री अनूप कौड़ा और लायन्स क्लब के अन्य पदाधिकारी गण दिखाई दे रहे हैं।

सुभाषित

सचमुच ही मैंने अंधकार के अन्तरतम को देखा है, किन्तु उसके सुन्न कर देने वाले प्रभाव को अपने पर हावी नही होने दिया। मैं मन से उस समुदाय के साथ हू, प्रभात जिसके पावो में है। आदमी के मन मे आने वाले काले उदास क्षण मेरे पथ में पतझड के पत्तो की तरह उड-उड कर आये—मुझे इसकी चिन्ता नही है। मेरे से पहले, इसी पथ से दूसरे भी गुजरे हैं और मैं जानती हू कि रेतीले मरुस्थलो के बीच से आने वाला रास्ता ही उसी तरह प्रभु के पास ले जाता है, जिस तरह हरे-भरे खेतो और बगीचों से होकर जाने वाला मार्ग।" कई बार आशावादी और निराशावादी तक ऐसे तोल कर मेरे सामने रखे जाते हैं कि केवल आत्मा की सारी ताकत लगाकर ही मैं जीवन के व्यावहारिक और जीवित दर्शन का छोर पकडे रह पाती हू। मैं अपनी आत्मशक्ति को काम मे लाती हू, जिन्दगी चुनती हू और उसके विरोधी तत्व—शून्यता—को अस्वीकार कर देती हू।

—हेलेन केलर

सम्पादकीयम्

अंधेरी गली में सूरज की किरण

पजाब मे चुनाव सकुशल सम्पन्न हो गया, इसमे बहुतों को हैरानी हो सकती है और कुछ को अफसोस भी हो सकता है। पर वास्तव में यह भारतीय जनता के अन्तस्तल में विद्यमान उस बद्धमूल एकता की धारा की विजय है जिसे प्राय पाश्चात्य इतिहासकार जान-बूझ कर अनदेखा कर देते हैं। पिछले चार साल से पजाब अलगाववाद के खतरे से घिरा था। भस्मासुर के उदय के पश्चात् जो आतकवाद की लहर चली उसने सारे देश को कपा रखा था। परन्तु कोई आखिर अपने-आप-से कब तक लडता रहेगा। बीच मे तो एक बार ऐसा लगा भी कि भिंडरावाले अपने जीते-जी जो नही प्राप्त कर सका अपने मरने के बाद उसकी प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त कर गया। पर नहीं, आतकवाद की विजय न होनी थी, न हुई। बल्कि आतकवाद की छाती पर चढ कर इस चुनाव के द्वारा लोकतन्त्र ने अपनी विजय का परचम लहराया है।

ससार का ऐसा कोई लोकतन्त्रीय देश नही होगा जिसमे किसी न किसी मात्रा में आतकवाद का अस्तित्व न हो। पर आज तक ससार के किसी देश मे लोकतन्त्र और आतकवाद चुनाव का मुद्दा नही बना था। पजाब के चुनाव मे सबसे बडा मुद्दा यही बन गया और सयुक्त अकाली दल के—जो न सयुक्त है, न अकाली है और न बाकायदा कोई दल है—नये खुमैनी द्वारा पजाब समझौते का विरोध करने, लोगोवाल को पथ का गद्दार कहने और चुनाव का बहिष्कार करने के बावजूद इतनी बडी सख्या में जनता ने मतदान में हिस्सा लिया, जितनी बडी सख्या मे इससे पहले कभी हिस्सा नही लिया था।

यह ठीक है कि यह चुनाव फौजी साये मे हुआ है। फौजी साये मे ही चुनाव असम में भी हुआ था। पर वहाँ आम जनता ने चुनाव का बहिष्कार किया था इसलिए कितने ही मतदान केन्द्रो पर लोग अपना वोट डालने ही नही आये। पर पजाब में चुनाव के बहिष्कार का नारा ऊपर से लादा गया था जो जनता के सर्वथा प्रतिकूल था। पजाब की जनता शान्ति चाहती थी। प्रत्येक उम्मीदवार भी अपनी जान जोखिम में डाल कर ही चुनाव के मैदान में उतरा था। इस चुनाव का शान्ति पूर्वक निपट जाना आतकवाद के विरुद्ध लोकतन्त्र के पक्ष में जनमत का द्योतक है।

इस चुनाव की एक विचित्रता यह भी है कि जीतने वाले तो प्रसन्न है ही, हारने वाले भी कम प्रसन्न नही हैं। इसीलिए अकाली दल के कार्यवाहक अध्यक्ष और अब नये मुख्यमन्त्री बने सुरजीत सिंह बरनाला ने अपनी विजय पर यह कह कर प्रसन्नता व्यक्त की है कि अब अंधेरी दास्ता और टकराव का युग खत्म हो गया और प्रेम्री सौहार्द का नया युग प्रारम्भ हुआ है। वहा काग्रेस के अध्यक्ष और भारत के प्रधानमन्त्री श्री राजीव गाधी ने पजाब में काग्रेस की हार पर प्रच्छन्न प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा है कि काग्रेस ने हारकर पजाब मे लोकतन्त्र और धर्म निरपेक्षता की लडाई जीत ली है। इसका भी मुख्य कारण यही है कि चाहे कांग्रेस हो, चाहे अकाली दल—दोनों का निशाना आतकवाद था। इस चुनाव ने आतकवादियों के मसूबों को धूल में मिलाकर नीतिकारों के इस कथन को सत्य सिद्ध किया है—

सर्पाणा च खलाना च परद्रव्यापहारिणाम्।
अभिप्राया न सिद्धयन्ति तेनेद वर्तते जगत्॥

—सांपों के, दुष्टों के और पराये जान-माल का अपहरण करने वालो के इरादे कभी पूरे नहीं होते, इसीलिए यह दुनिया टिकी हुई है। आतकवादियो का मनचीता नहीं हुआ, इस चुनाव की यही सबसे बडी उपलब्धि है।

परन्तु इससे यह नहीं समझना चाहिए कि भिंडरावाले से लेकर "आपरेशन ब्लू स्टार" और इन्दिरा गाधी की हत्या तथा नवम्बर के दगों से गुजरती हुई अंधेरी गली एकदम समाप्त हो गई है। वह इतना आसान काम नहीं है। पर हां, इस चुनाव मे उस अंधेरी गली में एक सूरज की किरण दिखाई है। अभी अरुणोदय हुआ है, सूर्योदय नहीं हुआ।

श्री बरनाला के नेतृत्व में जिस मन्त्रीमण्डल ने शपथ ग्रहण की है उसके सामने कठिनाइयों की कमी नहीं है। सबसे पहले तो उसे अपने अंदरूनी झगड़ों से ही निपटना होगा। अकालियों के चरित्र की यह विशेषता रही है कि वे किसी मोर्चे के नाम पर भले ही सगठित हो जायें, पर जब सत्ता और स्वार्थों का प्रश्न आता है तो वे एक दूसरे की टाग खींचने मे भी कभी पीछे नही रहते। श्री प्रकाश सिंह बादल और श्री गुरुचरण सिंह तोहडा अभी भले ही दब गये हो परन्तु वे कब तक चुप रह सकेंगे, यह देखना बाकी है। फिर तलवडी और बाबा जोगिन्दर सिंह तो चुप भी नही हुए। उनकी नही चली, यह अलग बात है। परन्तु इस प्रकार जनता द्वारा दूध की मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दिये जाने से क्या उनकी खीझ और नहीं बढेगी? आखिर उनके दातो के साथ लगी साम्प्रदायिकता के विष की ग्रन्थियां उनको कब तक शान्त होकर बैठने देंगी? जब तक लोगोवाल थे तब तक यह आशा की जा सकती थी वे अकाली दल के विरोधी महारथियो को किसी तरह अकुश मे रख सकेंगे। क्योंकि अपने आत्मिक बल के द्वारा उन्होंने अकाली और गैर अकाली जन समुदाय मे ऐसा शीर्ष व्यक्तित्व प्राप्त कर लिया था जिसके सामने अन्य सब अकाली नेता बौने हो गये थे। अब लोगोवाल के अभाव मे क्या श्री बरनाला इस आंतरिक कलह के मदमत्त हाथी पर अकुश लगाकर उसे साध सकेंगे?

अब तक अकाली पार्टी निहायत सकीर्ण स्वार्थों से ग्रस्त होकर विशुद्ध सांप्रदायिक पार्टी बनी रही है। वह नाम पजाब का लेती रही, परन्तु उसने पजाबियों की तो क्या कभी गैर अकाली सिखो की भी परवाह नहीं की। भारतीय सविधान की दृष्टि से सम्प्रदाय-निरपेक्ष राष्ट्र मे किसी साम्प्रदायिक राजनीतिक दल को मान्यता देना एक बुनियादी भूल है। भविष्य मे अकाली पार्टी को अपना साम्प्रदायिक खोल उतार कर गैर-अकाली सिखो को ही नहीं बल्कि पजाब के हिन्दुओ को भी उसमे शामिल करना होगा। तभी वह सारे पजाबियो की आवाज बन सकेगी। अभी तक अकाली दल के रवैये से पजाब मे सामाजिक टूटन ही अधिक आयी है। जब तक उसे नहीं मिटाया जायेगा, तब तक उसका कोई भी कदम सही होने वाला नहीं है।

अब तक अकाली दल धर्म और राजनीति का घालमेल करके अकाल तख्त के माध्यम से अपनी राजनीति चलाता रहा है। क्या भविष्य में बरनाला भी अपनी सरकार के समस्त निर्णयो को लागू करने से पहले अकाल तख्त के ग्रन्थियो की अनुमति लेंगे? यदि अनुमति नही लेगे तो क्या धीरे-धीरे अकाल तख्त फिर भारत तख्त के मुकाबले मे खडा होने का प्रयत्न नही करेगा? अकाली दल ने विजय प्राप्त करते ही विभिन्न अपराधो मे बन्दी बनाये गये लोगो को आम माफी देने की बात उठाई है। उनमे से अधिकाश पर हत्या और राजद्रोह के अभियोग हैं। बहुतो पर वे अभियोग सिद्ध भी हो चुके हैं। यदि उन सबको छोड दिया जाय तो देश द्रोही और देशभक्त में क्या अन्तर रह जायेगा। इसके अलावा भगोडे सैनिको का भी सवाल है। इसके साथ जहा सिखों की भावना जुडी है, वहीं सेना का अनुशासन भी जुडा है। यदि एक बार इस अनुशासन-हीनता को माफ कर दिया गया, तो समस्त सेना के अनुशासन की दृढ दिवार मे दरार नही पड जायेगी?

यदि बरनाला की सरकार आतकवादियो के दमन के लिए कुछ भी कडा कदम उठाने का प्रयत्न करेगी तो तलवडी और बाबा जोगिन्दर सिंह इस सरकार को भी 'पथ का गद्दार' कहने से नही चूकेंगे। फिर भारत के विघटन मे रुचि रखने वाले सीमा पार के देश और लन्दन मे बैठे खालिस्तान के स्वयभू राष्ट्रपति जगजीत सिंह चौहान और अमेरिका मे बैठे गगा सिंह ढिल्लो क्या अपना धन्धा इतनी आसानी से समाप्त हो जाने देंगे? यदि बरनाला केन्द्र और कांग्रेस से ज्यादा दोस्ती जतायेंगे तो आतकवादियों की गुट बन्दी और बढ सकती है। और अगर केन्द्र से असहयोग का रास्ता अपनायेंगे तो टकराव का युग समाप्त कैसे होगा?

श्री बरनाला ने सचमुच ही काटो का ताज पहना है। पर हमें आशा करनी चाहिए कि बादल, तोहडा, तलवडी और जोगिन्दर सिंह समय की नजाकत को और जनता की नब्ज को पहचानेंगे और पजाब मे चारो तरफ सूर्योदय का प्रकाश फैलने में बाधक नही बनेंगे। पजाब की जनता बहुत अंधेरा झेल चुकी है। सूरज की इस एक किरण को पकड कर वह पूर्ण सूर्योदय की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रही है। उसकी प्रतीक्षा व्यर्थ न हो, एकमात्र यही कामना है। □

वी.पी. सिंह इस्तीफा दें : पंचायत की मांग

७ अक्तूबर सन् १९९० को गांव मायना, जिला रोहतक में सतगामा खाप तपा बालन्द की एक पंचायत हुई जिसमें निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास किए गये। इसकी अध्यक्षता रिटौली गांव के कप्तान रिसालसिंह ने की।

१. पंचायत यह जोरदार मांग करती है कि ७ अगस्त सन् १९९० को प्रधानमन्त्री श्री वी० पी० सिंह ने सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े जिन वर्गों के लिये जातिगत आधार पर जो २७% आरक्षण घोषित किया है वह जातिगत आधार पर न होकर आर्थिक आधार पर किया जाये क्योंकि प्रधानमन्त्री के इस फैसले से देश में भयंकर जातिगत लड़ाई की चिंगारी फूट पड़ी है और देश एक प्रकार से गृहयुद्ध की ओर बढ़ रहा है। आज हम देख रहे हैं कि इसी गलत आरक्षण की नीति के कारण हमारे देश का युवावर्ग इतना निराश, क्रुद्ध और क्षोभ में भरा हुआ है कि जिसके फलस्वरूप वह आत्मदाह, आत्महत्या और आत्मबलिदान के क्रूर रास्ते की ओर बढ़ गया है और सैंकड़ों बहुमूल्य जानें इसके कारण जा चुकी हैं। हमारी यह पंचायत युवा छात्रों से यह अपील करती है कि वे आत्मदाह और आत्महत्या जैसे महाक्रूर रास्ते को छोड़कर शांतिपूर्वक तथा बिना किसी सरकारी सम्पत्ति को हानि पहुँचाए अपने इस आंदोलन को उन राजनीतिज्ञों के घेराव की ओर मोड़ें जोकि हमारी वोटों से विधायक व सांसद बने बैठे हैं और अपने वोट की राजनीति की खातिर सारे देश को जातिगत आधार पर बांटकर लड़ा रहे हैं।

पंचायत मांग करती है कि प्रधानमन्त्री श्री वी० पी० सिंह तुरन्त अपने पद से त्यागपत्र दें तथा इस जातिगत युद्ध की आग को भड़काने वाले अपने दो मन्त्रियों—कपड़ा मन्त्री-शरद यादव और श्रममन्त्री श्री रामविलास पासवान को तुरन्त बर्खास्त करके उनपर मुकद्दमा चलाएं।

पंचायत इस सम्बन्ध में गलत आरक्षण नीति के विरोध में अपनी संसदसदस्यता से त्यागपत्र देनेवाले भरतपुर के पूर्व सांसद और भरतपुर के महाराजा सूरजमल के पड़ौते श्री विश्वेन्द्रसिंह का धन्यवाद करती है और उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा करती है और आशा करती है कि और भी बहुत से विधायक व सांसद इसी रास्ते पर चलेंगे अन्यथा उसका सामाजिक बहिष्कार किया जायेगा।

२. पंचायत यह महसूस करती है कि आजकल कानूनी लड़ाई और अदालती न्याय बहुत महंगा होगया है। इसलिए सभी आपसी झगड़े व मुकद्दमें लोग पंचायतों के माध्यमों से सुलझाने की कोशिश करें और सतगामा पंचायत उनकी इस मामले में पूरी पूरी मदद करेगी ताकि वकीलों के पास लुटना-पिटना कम हो।

३. पंचायत यह भी महसूस करती है कि आजकल शराब का बेहद प्रचलन होगया है और जिसके कारण हमारे लोगों का शारीरिक आर्थिक और नैतिक विनाश हो गया है। किसी भी युवक के मुख पर पहले जैसी लाली दिखाई नहीं देती। हमें चाहिए कि हम घर-घर में इस शराब के प्रयोग को बन्द करें और हम सरकार से भी यह जोरदार मांग करते हैं कि वह हमारे गांव से शराब के सभी ठेके उठाले अन्यथा पंचायत उन्हे जबरदस्ती बन्द करवाने को मजबूर होगी।

४. पंचायत यह भी महसूस करती है कि आजकल विवाह-शादियों पर बेतहाशा महंगाई के बावजूद बेतहाशा फिजूलखर्ची की जा रही है और अमीर लोगों की देखा-देखी गरीब लोग भी दहेज की बीमारी में फंसते जा रहे हैं। सभी लोग पांच या पच्चीस से ज्यादा बाराती न लायें न ले जाएं तथा एक या एक सौ एक से अधिक दान दहेज न दें। दहेज की नुमायश न लगाएं। दहेज की लम्बी लिस्ट बनानी व सुनानी बन्द करें। एक ही नारा लगायें—"बेकार टी० वी० कुर्सी-मेज है, दुल्हन ही दहेज है।"

५. इन नौ गांवों की पंचायत ने सतगामा का तपा बालन्द को ही देने की सर्वसम्मति से पुष्टि की। पहले झगड़ा यह था कि सुनारियां सतगामा का तपा लेना चाहती थी मगर वह न तो इस पंचायत में आप आई और न ही इन नौ गांवों के नौ व्यक्तियों द्वारा बुलाने पर ही आई। इसलिए इन नौ गांवों ने इनको सतगामे से अलग छोड़ दिया और तपा बालन्द गांव को दे दिया। नौ गांव ये थे—मायना, छिमली, करौंथा, कन्हैली, बालन्द, रिटौली, गरणावठी, माड़ौदी, ककराना।

गुरुकुल महाविद्यालय शुक्रताल

शुक्रताल का वार्षिक महोत्सव कार्तिक शुक्ला द्वादशी से पूर्णिमा तक तदनुसार ३० अक्तूबर से २ नवम्बर, १९९० तक बड़े धूम-धाम से मनाया जायेगा।

महोत्सव में अनेक विद्वानों, महात्माओं, भजनोपदकों केन्द्रीय एवं प्रान्तीय नेताओं तथा गणमान्य अधिकारियों को आमंत्रित किया गया है।

आचार्य इन्द्रपाल
(प्रधानाचार्य)

राष्ट्रीय गोशाला धड़ौली (जीन्द) का शिलान्यास

दीपावली के शुभ पर्व पर आचार्य श्री बलदेव जी गुरुकुल कालवा के करकमलों द्वारा १० एकड़ भूमि पर गोशाला का शिलान्यास हुआ। इस अवसर पर स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती गाजियाबाद, स्वामी गोरक्षानन्द उचाना, स्वामी रत्नदेव कन्या गुरुकुल खरल, स्वामी जगतमुनि, स्वामी रुद्रवेश व हरयाणा राज्य गोशाला संघ के उपाध्यक्ष ब्र० ओमस्वरूप संचालक गुरुकुल डिकाडला उपस्थित थे। यज्ञ के पश्चात् सैंकड़ों गोप्रेमियों की उपस्थिति में शिलान्यास सम्पन्न हुआ। गुरुकुल कालवा ने दो एकड़ भूमि तथा ३५ हजार रुपये गोशाला को दानस्वरूप दिये। क्षेत्रीय जगत् में अपार उत्साह था। हरयाणा की ये ९३वीं गोशाला है।

मेला कपाल मोचन पर वेदप्रचार शिविर का आयोजन

प्रतिवर्ष की भांति हरयाणा प्रदेश के प्रसिद्ध मेला कपाल मोचन निकट जगाधरी में १ से ३ नवम्बर तक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से वेदप्रचार शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर प्रातः यज्ञ तथा शेष समय सभा के उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों द्वारा वेदप्रचार किया जावेगा। इसका प्रबन्ध स्वामी सदानन्द जी, श्री जयपाल आर्य, श्री गेन्दाराम आर्य तथा पं० शेरसिंह आर्य भजनोपदेशक कर रहे हैं। आर्यसमाजों से निवेदन है कि इस शुभ कार्य में सहयोग प्रदान करें।

—वेदप्रचार अधिष्ठाता

शोक समाचार

अति शोक का समाचार है कि श्री रणबीर जी शास्त्री, ग्राम आसन के सुयोग्य एवं होनहार पुत्र श्री रवीन्द्रकुमार जो महाविद्यालय की कक्षा तेरहवीं में पढ़ रहा था, उसकी १५-१०-९० को असामयिक मृत्यु हो गई जिससे समस्त आर्यपरिवार शोकाकुल है। भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि भगवान् शोकसंतप्त परिवार को कष्ट सहन करने की शक्ति प्रदान करे। शांतियज्ञ २६-१०-९० प्रातः ९-०० बजे ईश्वर कालोनी, बवाना, दिल्ली-३९ में होगा। —चन्द्रपालसिंह राणा

शोक सभा

आर्यसमाज नरेला, श्री रवीन्द्र सुपुत्र श्री रणवीरसिंह शास्त्री (आसनवाले) के होनहार सुयोग्य एवं अतिसुशील ज्येष्ठ पुत्र के दिनांक १५-१०-९० को दुर्घटना में असामयिक असह्य एवम् दर्दनाक निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त करता है।

श्री रणवीरसिंह जी शास्त्री बड़े ही उत्साही आर्य कार्यकर्त्ता, बड़े विद्वान् तथा सभी को हर कार्य में पूर्ण सहयोग देनेवाले श्रेष्ठ आर्य हैं। प्रभु इनको इस बिछोह को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—मा० पूर्णसिंह आर्य,
मन्त्री

आर्यसमाज क प्रति समर्पित व्यक्तित्व

सरलमना श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक

—सुरेशचंद्र पाठक—

स्वर्गीय श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक मेरे चाचा थे। अपने माता-पिता की छः सन्तानो—पांच भाई और एक बहिन—में उनका नंबर तीसरा था। उनका जन्म सन् १९०१ में बिजनौर (उ० प्र०) जिलान्तर्गत ग्राम महमूदपुर में एक बड़े कुलीन ब्राह्मण परिवार मे हुआ था जिसका पुश्तैनी पेशा वैद्यक था।

इनके पिता श्री प० लालमणि शर्मा संस्कृत के अध्यापक होकर निकटवर्ती कस्बे सिवहारा मे चले गये थे। उन्होंने वैद्यक भी पढ़ी थी। यहीं वे आर्य समाज के सम्पर्क में आये और आजन्म समाज की सेवा करते रहे। वे अनेक वर्षों तक आर्य-समाज सिवहारा के मन्त्री व प्रधान रहे।

सिवहारा मे ही पाठक जी की प्रारम्भिक शिक्षा हुई। इसके पश्चात् काठ [मुरादाबाद] के हाई स्कूल तथा चन्दौसी [मुरादाबाद] के कालेज में शिक्षा प्राप्त की। सन् १९२४ मे यू०पी० बोर्ड से हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण की थी। इस परीक्षा में इन्हे हिन्दी में 'डिस्टिंक्शन' प्राप्त हुआ था जो उन दिनो विरलो को ही प्राप्त होता था।

पाठक जी ने सन् १९२५ में मथुरा में हुई महर्षि दयानन्द जन्म-शताब्दी मे भी भाग लिया। इनके बड़े भ्राता (मेरे पिता) स्वर्गीय श्री शंकरदेव पाठक मथुरा शताब्दी मे शताब्दी सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तको के बिक्री विभाग के इन्चार्ज थे। पाठक जी ने उन्हे वहाँ इस कार्य में सहयोग दिया। शंकरदेव जी पाठक गुरुकुल वृन्दावन के छात्र रहे और मृत्यु पर्यन्त गुरुकुल की सेवा मे निरत रहे। वर्षो तक सहायक मुख्या-धिष्ठाता का कार्य भी किया। उन्होंने ही महात्मा नारायण स्वामी जी की प्रेरणा पर सत्यार्थ प्रकाश का सस्कृत अनुवाद करके प्रकाशित कराया था। वे सस्कृत के धुरन्धर विद्वान् थे। सन् १९१६ में उनका अन्तर्जातीय विवाह येवला (नासिक) निवासी श्री सेठ जगजीवन राम सोमचन्द पटेल की पुत्री तथा आर्य कन्या महा-विद्यालय बड़ौदा के भूतपूर्व आचार्य और संस्कृत के महाकवि श्री मेधाव्रत कविरत्न की छोटी बहिन जानकी देवी (मेरी माता) के साथ हुआ था। ब्राह्मण परिवार के एक युवक का वैश्य कुलोत्पन्न कन्या के साथ विवाहका होना उनदिनों एक अनहोनी घटना थी जिसके कारण पाठक जी के परिवार को कुटुम्बियों एवं बिरादरी द्वारा बहिष्कार की सजा भुगतनी पडी थी। श्रीमती जानकी देवी ने शंकरदेव जी की मृत्यु के बाद उनकी हजारो रुपयो की पुस्तको का संग्रह, जिसमें संस्कृत के अनेक अलभ्य ग्रन्थ भी थे, सार्वदेशिक सभा के पुस्तकालयो को दान कर दिया।

सन् १९२५ में मथुरा शताब्दी के बाद जब पुस्तक विभाग और कार्यालय सार्वदेशिक सभा मे आये तो श्री महात्मा नारायण स्वामी जी के आग्रह से पाठक जी सार्वदेशिक सभा की सेवा में आये। वस्तुतः नारायण स्वामी जी ने, जो उन दिनो सार्वदेशिक सभा के प्रधान भी थे, पंडित शकरदेव पाठक को पुस्तकाध्यक्ष नियुक्त करके दिल्ली मे ही रखने का आयोजन किया था, परन्तु यह कार्य उनकी रुचि के अनुकूल न होने के कारण उन्हे ग्राह्य न हुआ। फलत. उन्होने अपने कनिष्ठ भाई रघुनाथ प्रसाद पाठक को इस पद पर नियुक्त कर दिया और वे स्वयं गुरुकुल लौट गए। रघुनाथ प्रसाद जी को यद्यपि उन दिनो एक बहुत अच्छी सरकारी नौकरी मिल रही थी फिर भी उन्होने आर्यसमाज के प्रति आकर्षण के कारण स्वेच्छा से सभा की सर्विस को वरीयता प्रदान की। यदि पाठक जी किसी सरकारी सर्विस में होते तो न जाने कितने ऊँचे पद पर पहुंचे होते।

कार्य के प्रति निष्ठा

पाठक जी १९२५ से लेकर मृत्यु-पर्यन्त निरन्तर सभा की सेवा मे ही रहे। सभा के कार्यालय की सुव्यवस्था और विस्तार मे उनका सर्वोच्च हाथ रहा। जब वे सभा की सर्विस में आए तो सभा का अस्तित्व नाम मात्र का था। सुव्यवस्थित कार्यालय की बात सोचना उस समय अकल्पनीय ही था। पाठक जी ने कठिन परिश्रम और अपनी संगठन क्षमता से सभा के कार्यालय को उसके वर्तमान रूप में स्थापित किया। आज सार्वदेशिक सभा का कार्यालय जिस सुदृढ़ आधार पर जमा हुआ है उसका श्रेय पाठक जी को ही है।

पाठक जी को सार्वदेशिक सभा से और सार्वदेशिक सभा को पाठक जी से अलग करके सोचा ही नहीं जा सकता। मैंने जब से होश सभाला तब से उनके देहावसान तक मैंने पाठक जी को सार्वदेशिक सभा से पृथक् कभी नही जाना। यद्यपि वे सभा की सर्विस से रिटायर हो चुके थे फिर भी 'सार्वदेशिक' और 'वैदिक लाइट' पत्रों का सम्पादन बराबर करते रहे। वृद्धावस्था, तथा शारीरिक कृशता के कारण उन्हे कार्यालय तक आने-जाने में कुछ कष्ट तो अनुभव होता था किन्तु अपने कार्य के प्रति निष्ठा के कारण वे इसकी परवाह नही करते थे। मै अक्सर घर पर उनसे मिलने जाया करता था। एक बार मैंने उनसे कहा भी कि वे अब सभा का काम छोडकर घर पर ही विश्राम करें। अब उनकी शारीरिक अवस्था इस योग्य नही कि वे इतना परिश्रम करे। इसका उत्तर उन्होने दिया—'जब तक मेरे हाथ-पैर चलते हैं, सभा का कार्य छोडना मेरे लिए सम्भव नही है। इतनी अगाध निष्ठा थी सभा के प्रति उनकी। अपने कार्य के प्रति इतना समर्पित व्यक्ति मैंने आज तक नही देखा। वास्तव में पाठक जी एक सच्चे कर्मयोगी थे। निरन्तर कार्य करते रहना ही उनका धर्म था "चरैवेति चरैवेति" चलते रहना उनके लिए जीवन था, स्थिरता मृत्यु ? वे मृत्यु पर्यन्त चलते ही रहे।

सयम और सरलता

पाठक जी की पत्नी का देहान्त अप्रैल १९४४ में हो गया था। उस समय उनकी आयु मात्र ४४ वर्ष की ही थी। परिवार वालों ने दूसरा विवाह करने का सुझाव दिया, किन्तु पाठक जी ने इसके लिए स्पष्ट शब्दो मे मना कर दिया। उन्होने कहा—'अपने सुख के लिये मैं अपने बच्चो का भविष्य नही बिगाडना चाहता।' बच्चे उस समय छोटे थे। उनके लालन और शिक्षा-दीक्षा में पाठक जी को बहुत कठिनाइयो का सामना करना पडा किन्तु वे अपने दूसरा विवाह न करने के निश्चय पर दृढ़ रहे। वे बड़े दृढ़ निश्चयी और आत्म-संयमी थे।

पाठक जी का स्वभाव बड़ा सरल था। किन्तु वे अपने सिद्धान्तों के बहुत पक्के थे। क्रोध अहंकार उनको छू तक नही गया था। मैंने कभी उन्हे उत्तेजित या क्रोधित होते हुए नही देखा। कठिन मे कठिन परिस्थिति मे भी वे अविचलित रहते थे। दूसरे की कटु बात को भी वे हंसकर टाल दिया करते थे। गृहस्थी थे, इसलिए पुत्रैषणा की बात तो मैं नही कह सकता, यह होनी तो स्वाभाविक थी, पर वित्तैषणा और लोकैषणा उनमें नाममात्र को भी नही थी। यदि वे चाहते तो सार्वदेशिक सभा की सर्विस छोड़कर कही भी अच्छे वेतन की सर्विस पा सकते थे। किन्तु उन्होंने इस तरफ कभी ध्यान तक नही दिया। सभा से जो भी वेतन मिलता रहा, उसी मे वे सन्तुष्ट होकर अपना और अपने बच्चो का लालन-पालन करते रहे।

अंग्रेजी और हिन्दी के लेखक

वे हिन्दी और अंग्रेजी के सिद्ध-हस्त लेखक थे। उन्होने अनेक पुस्तकें और ट्रैक्ट लिखे। उनके लेख व पत्रादि हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स-विशाल-भारत, जनसत्ता, विश्वमित्र, माडर्नरिव्यू, हिन्दू, हिन्दुस्तान टाइम्स इण्डियन एक्सप्रेस, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, ट्रिब्यून आदि अनेक समाचार पत्र-पत्रिकाओ मे छपते रहे।

पाठक जी अपने जीवन में जितने शांत, धीर और गम्भीर रहे, मृत्यु के समय भी वे उतने ही शात थे। मृत्यु से केवल ३-४ दिन पहले ही वे कुछ अस्वस्थ हुए थे। गले और जीभ पर पक्षाघात का हल्का-सा प्रभाव हुआ था। जिससे पानी तथा कोई भी तरल पदार्थ लेने में वे असमर्थ हो गये थे। डाक्टरी इलाज होता रहा। उससे कुछ लाभ दिखाई दिया। परिवार वालों को आशा हुई कि शायद संकट टल गया। मिलने आये हुए व्यक्तियो को वे पहचान लेते थे। कुछ बोलने का प्रयत्न भी करते थे। १५ जुलाई १९८५ को प्रात: उनके स्वास्थ्य में कुछ और सुधार दिखाई दिया। सब लोग कुछ आश्वस्त हुए। लेकिन यह शायद बुझते दीपक की अन्तिम लौ थी। अचानक ही दोपहर बाद तीन बजे एक हल्की-सी खाँसी उठी और उसके बाद वे निश्चेष्ट हो गये।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द का एक अनन्य भक्त और आर्य समाज का एक कर्मठ और समर्पित कार्यकर्ता अपनी जीवन यात्रा पूर्ण करके चिरनिद्रा मे लीन हो गया।

पता—कार्यालय सचिव, सार्वदेशिक सभा, दयानन्द भवन, आसफअली रोड, नई दिल्ली-२

लाला भक्त योगी योगी नहीं थे

ले०-प्रो० दयालजी भाई आर्य,
संशोधक—डा० भवानीलाल भारतीय

विशेष लेखमाला(६)

प्रो० देवेन्द्र नाथ ने सायला निवासी लाला भक्त, उनके पूर्वजों तथा परिवार का सुन्दर और विस्तृत परिचय दिया है तथा यह भी सिद्ध किया है कि लाला भक्त योगी नहीं थे। फिर भी वर्तमान लेखकों में लाला भक्त के योगी होने का भ्रम पैदा हुआ। इसका कारण ऋषि के पूना व्याख्यानों मे प्रकाशित एक वाक्य हो सकता है जिसकी विशेष विवेचना देवेन्द्र बाबू ने नहीं की। यहाँ हम पूना व्याख्यान का वह वाक्य दे रहे है—"वहाँ से चलकर सायला योगी के पास गया परन्तु वहाँ पर मुझे शान्ति नहीं मिली और लोगो से सुना कि लाला भक्त नामी एक योगी हैं तब उनकी ओर चल पड़ा।" इसके पश्चात् एक वैरागी से भेंट होने और उसके द्वारा अगूठी आदि ले लिए जाने का वर्णन है। इसके पश्चात् वे पुन. सायला प्रसंग मे कहते हैं "लाला भक्त के पास जाकर मैं योग साधना करने लगा। रात को एक वृक्ष के नीचे बैठ गया तो वृक्ष के ऊपर घूघू बोलने लगा। उसकी आवाज सुनकर मुझे भूत का भय हुआ और मैं मठ के भीतर घुस गया।" उपर्युक्त वाक्यो मे लालाभक्त को योगी कहा गया है तथा उनके निकट जाकर योग साधना करने की बात भी कही गई है। परन्तु इन वाक्यो के सन्दर्भ मे पूर्व सम्बन्धित घटनाओ को देखें तो ज्ञात होता है कि मूलशकर ने अमर होने के लिए मित्रो की सलाह से योगाभ्यास करने का विचार किया था और इसी शोध मे उन्होने गृहत्याग किया था। उस समय सामान्य जन मन्दिर बनाकर भक्ति करने वाले भक्तजनो के नाम पर कई चमत्कारपूर्ण बातें जोड देते थे और भक्त को ही योगी के रूप मे समझते थे। इसकी पुष्टि ऋषि के निम्न शब्दो से होती है—"लोगो से सुना था कि लाला भक्त नामक एक योगी हैं।" जैसे भक्त को योगी माना जाता था इसी प्रकार राम-नाम जपना, माला फेरना, भजन गाना आदि कार्य भी योगाभ्यास के अन्तगत माने जाते हैं। इसलिए प्रचलित अर्थ मे लालाभक्त को योगी कहा गया है। यदि वे वस्तुत: योगी होते और पातञ्जल अष्टाग योग के द्वारा साधना करते होते तो मूलशकर की इच्छा वही पूरी हो जाती। किन्तु ऐसा नही हुआ, यह आत्मकथा से ही प्रकट होता है—"परन्तु वहाँ पर मुझे शान्ति नही मिली।" यह वाक्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है, क्योकि इससे लालाभक्त के योगी होने और योगसाधना करने के भ्रम का निवारण हो जाता है। जिस योग की आकाक्षा लेकर मूलशकर वहाँ गए थे वैसा उन्हें लालाभक्त मे नही मिला। यह स्पष्ट हो जाता है, और इससे यही निष्कर्ष निकलता है कि लालाभक्त वास्तविक अर्थों मे योगी नही थे।

यदि लालाभक्त योगी होते और योगाभ्यास सिखाते तो मूलशकर इनके शिष्य बनकर इनसे दीक्षा लेते, किन्तु ऐसा नही हुआ। इसके विपरीत ऋषि की स्वलिखित आत्म कथा देखें—"फिर लालाभक्त की जगह जो सायले शहर में है वहा बहुत साधुओ को सुनकर चला गया। वहाँ एक ब्रह्मचारी मिला उसने मुझसे कहा कि तुम नैष्ठिक ब्रह्मचारी हो जाओ। उसने मुझको ब्रह्मचारी की दीक्षा दी और शुद्ध चैतन्य नाम रखा।" इन पक्तियो से स्पष्ट होता है कि लालाभक्त के योगी न होने का पता चलने पर मूलशंकर ने अन्य योगियो की तलाश आरम्भ की होगी तथा इन्ही मे से किसी से ब्रह्मचर्य की दीक्षा ली होगी। इससे सिद्ध होता है कि पूना व्याख्यान में लालाभक्त को योगी कहना लोक-प्रचलित मान्यता के अनुसार ही था, वास्तविक नहीं। अब तो ऋषि की आत्मकथा हस्तलिखित रूप मे भी उपलब्ध है, जो पूर्णतया प्रामाणिक और विश्वसनीय है। यहाँ निम्न पक्ति अंकित है—"फिर लाला भक्त की जगह जो कि सायले शहर मे है वहाँ बहुत साधुओ को सुनकर चला गया।" इससे सिद्ध होता है कि सायला मे केवल लालाभक्त की जगह—मन्दिर मे किसी साधु यात्री या योगी से मिलाप हो जाए, इसी सम्भावना से वे वहाँ गए थे। इससे लाला भक्त का योगी होना और योग साधना का निर्देश करना सिद्ध नही होता। वस्तुत: उन्होने किसी ब्रह्मचारी से ही ब्रह्मचर्य की दीक्षा ली थी।

अब पूना प्रवचनों के पन्द्रहवें व्याख्यान को देखे जो आत्मकथा प्रधान है। हम प्रथम निर्देश कर आए है कि पूना प्रवचन हिन्दी मे दिए गए थे, जिन्हे मराठी मे लिख कर प्रकाशित किया गया। यह पूना व्याख्यान भी पूर्ण नही, साराश मात्र है। इसलिए यह मानना तो अत्युक्ति ही होगी कि ऋषि के बोल हुए वाक्यो को शब्दश लिख लिया गया है। इन व्याख्यानो का पाठ कई स्थानो पर त्रुटि पूर्ण भी है और कई स्थानो पर वाक्य रचना पूर्वापर सम्बन्ध से रहित भी है। इसका प्रथम सम्पादन पण्डित युधिष्ठिर मीमासक ने प्रत्येक पृष्ठ पर टिप्पणी देते हुए किया है। इन पक्तियो का लेखक सम्प्रति पूना प्रवचन का गुजराती भाषानर कर रहा है इसलिए इसका भी ऐसा ही अनुभव है।

आत्मकथा के प्रवचन मे ऊपर उद्धृत वाक्य को ध्यानपूर्वक देखें तो यह वाक्य भी पूर्वापर सम्बन्ध रहित है। क्योकि प्रथम सायला जाने का लिखा और वहां का कुछ भी वर्णन करने से पूर्व यह लिख दिया कि वहाँ पर मुझे शान्ति नही मिली। वस्तुत: यह अन्त में चाहिए, फिर लोगों से सुनने का लिखा और बीच मे वैराग्य वाला पूरा प्रसंग लिखा, फिर बाद मे योगसाधना करने और घूघू की आवाज से डरने का वर्णन किया।

ऐसे अन्य भी कई उदाहरण प्राप्त होते हैं जिन्हे विषयान्तर के भय से हम विस्तार पूर्वक नही लिखते। पूना व्याख्यान की भाषा का एक-एक शब्द या वाक्य ऋषिकृत है, यह मानना अतिशयोक्ति होगी। इसलिए लालाभक्त का योगी होना आदि का प्रसग लेखक के शब्द भी हो सकते हैं क्योकि यह भी सम्भव है कि लेखक ने भक्त शब्द को योगी का पर्याय मान लिया हो या अनुवादक ने भक्त शब्द का अनुवाद योगी कर दिया हो तथापि निश्चित रूप से कुछ भी नही कहा जा सकता।

हमारे यहाँ ऐसे विद्वानो की भी कमी नही है जिनकी मान्यता है कि, ऋषि के नाम पर छपे ग्रन्थो मे एक-एक शब्द और वाक्य उनका ही है इसलिए उन्ही को दृष्टि मे रख कर मैंने पूर्व पक्तियो में इस पन्द्रहवे व्याख्यान के एक-एक वाक्य को लेकर यह विवेचना की है। इससे भी सिद्ध होता है कि लाला भक्त योगी नही थे।

एक और युक्ति

लाला भक्त का मूल नाम लालजी था, उनके पीछे लगा भक्त शब्द ही उनके योगी होने का खण्डन करता है। क्योकि भक्त और योगी मे स्पष्ट अन्तर होता है, दोनो की साधना का मार्ग भी पृथक् होता है। भक्तगण नाम-जप, भजन-गान, कण्ठी-माला धारण तथा मूर्तिपूजा आदि कर्मों मे लिप्त रहते हैं तथा गृहस्थी भी होते हैं। लाला भक्त की जीवनी देखने से ये सब लक्षण उनमे मिल जाते हैं। देवेन्द्र बाबू ने इनका व सौराष्ट्र के अन्य भक्तो का विस्तार से परिचय दिया है। इस विषय में विद्वान और गवेषक अधिक विचार करें। इसी दृष्टि से मैंने गत शिवरात्रि पर प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु से कुछ चर्चा की थी। किन्तु उन्होने 'नवजागरण के पुरोधा' की समीक्षा लिखते समय दयानन्द सन्देश के अंक में इतना ही लिखा—"श्री भारतीय जी ने लाला भक्त नामक योगी की विशेष ख्याति थी, ऐसा लिखा है, यह ठीक नही।" जिज्ञासु जी का इतनी-सी टिप्पणी करना समस्या का पूर्ण समाधान नही है।

जब हम लाला भक्त, सायला और ऋषि जीवन के सम्बन्ध मे चर्चा करते हैं तब हमे श्रीकृष्ण शर्मा द्वारा लिखित पुस्तक महर्षि दयानन्द का वंश-परिचय की निम्न पक्तिया ध्यान में आती हैं' "लाला भक्त, के मन्दिर के पुराने रिकार्ड से मुझे मालूम हुआ कि महर्षि वहाँ कार्तिक सवत् 2902 के आषाढ़ और श्रावण मास मे लगभग डेढ़ मास तक ठहरे थे" — (पृष्ठ 28.) ऋषि की जन्म तिथि भाद्र पद शुक्ला नवमी की सिद्धि के प्रसंग मे शर्मा जी ने उक्त पक्तियाँ लिखी हैं। प्रथम विचार करे तो हम यह जानते हैं कि यदि किसी अन्वेषक को सौ या सवा सौ वर्ष पुराना मूल्यवान् रिकार्ड प्राप्त हो जाता है तो स्वभावत: वह यह जानने का यत्न करता है कि इस रिकार्ड का आरम्भ कब से हुआ। अन्वेषक की वाञ्छित सामग्री रिकार्ड के किस पृष्ठ पर अंकित है तथा इस रिकार्ड के मूल शब्द क्या हैं। वह मूल रिकार्ड के प्रासंगिक स्थलो कि प्रतिलिपि अत्यन्त सावधानी पूर्वक करता है। परन्तु शर्मा जी ने यहाँ ऐसा कुछ नहीं किया। यदि हम यह मान भी ले कि उक्त रिकार्ड मे वर्ष तथा मास का उल्लेख मिला, परन्तु तिथि का उल्लेख न मिलने से यह ज्ञान कैसे होगा कि स्वामी जी वहाँ डेढ मास ठहरे थे। डेढ मास शब्द से पहले प्रयुक्त 'लगभग' शब्द ही अनिश्चितता दर्शाता है। क्या अनिश्चितता सूचक इस 'लगभग' शब्द का प्रयोग मूल रिकार्ड मे किया गया है?

ऋषि की प्रारम्भिक जीवनी

यदि विचार करे तो ज्ञात होता है कि प्राय: मन्दिरों में जो प्रतिदिन साधु, यात्री और दर्शनार्थी बाहर के गाँवो से आते रहते है इन सब का रिकार्ड रखने की प्रथा किसी मन्दिर में नही है और सायला का यह मन्दिर तो बहुत प्रख्यात था, इसलिए रेल यात्रा आरम्भ होने से पहले द्वारिका की ओर जाने वाले अन्य प्रान्तीय यात्रियों के संघ भी इसी ओर से जाते होगे इसलिए यहाँ बड़ी भीड रहती होगी। क्या उन सब यात्रियों का रिकार्ड रखना सम्भव नहीं था?

एक सदी पूर्व सौराष्ट्र में इतनी निरक्षरता थी कि एक गांव मे दो-तीन से अधिक साक्षर व्यक्तियों का मिलना भी कठिन था। ब्राह्मण पौरोहित्य के लिए और बनियें व्यापार के लिए साधारण तौर पर पढ़ते थे, अत: रिकार्ड लिखने वाले लिपिक

पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती—एक आदर्श राजनीतिज्ञ

पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जी की पुण्यस्मृति प्रत्येक विजयदशमी (दशहरा) के अवसर पर मनाकर हरयाणा आर्यप्रतिनिधि सभा एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक कृतज्ञता का पुण्य कार्य कर रही है। स्वर्गीय श्री सिद्धान्ती जी के साथ हिन्दी आन्दोलन १९५८ के दौरान बोस्टल जेल हिसार में तथा १९६२ में चुनाव प्रचार आदि अनेक अवसरों पर मुझे उनके अत्यन्त निकट रहने का लम्बा शुभ अवसर मिला है, जिससे उनके अनेक अद्भुत विशेष गुणों ने मेरे मन पर अमिट छाप छोड़ी। यहां मैं उनके राजनीतिक जीवन की कुछ विशेषताओं का उल्लेख करके उनके स्मृति-महायज्ञ में अपनी श्रद्धा की आहुति डालना चाह रहा हूं।

जनवरी १९६२ में मैं बनारस से मीमांसा दर्शन पढ़कर अपने कुल गुरुकुल झज्जर में आया ही था कि हरयाणा में विधानसभाओं और लोकसभा के चुनाव घोषित होगये। प्रो० शेरसिंह जो उन दिनों हरयाणा प्रान्त को पंजाब से अलग करके एक स्वतन्त्र प्रदेश बनाने की मांग करके वस्तुतः एक नया इतिहास निर्माण कर रहे थे, उन्होंने "हरयाणा लोकसमिति" बनाकर अनेक उम्मीदवारों को विधानसभा के लिये खड़ा किया। श्री सिद्धान्ती जी उसी पार्टी से लोकसभा का चुनाव लड़ने के लिये खड़े हुए।

पूजनीय आचार्य भगवान्देव (वर्तमान स्वामी ओ३मानन्द जी महाराज) ने मुझे चुनाव प्रचार में कूदने का आदेश दिया। प्रो० शेरसिंह जी का विधानसभा का हल्का झज्जर था और श्री सिद्धान्ती जी का लोकसभा का क्षेत्र रेवाड़ी से लेकर राई (सोनीपत) तक था। मुझे इसी हल्के में काम करने को कहा गया। हरयाणा लोकसमिति का वास्तविक मुद्दा और घोषणा-पत्र हिन्दी और हरयाणा ही थे अतः समूचा प्रचार इन्हीं दो विषयों पर लोगों को जागरित करने के लिये था। उन दिनों के श्री सिद्धान्ती जी के भाषण यदि टेपरिकार्ड किये मिल जायें तो यह भी महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक कार्य है। मुझे स्मरण है, श्री सिद्धान्ती जी के भाषणों में पंजाब के वर्तमान आतंकवाद और खालिस्तान की मांग के भविष्य के खतरों का स्पष्ट वर्णन होता था और इस दिशा में जनता और सरकार को कड़ी चेतावनी हुआ करती थी।

रेवाड़ी में एक रात्रि को चुनाव प्रचार का कार्यक्रम रखा। प्रो० शेरसिंह जी से पहले श्री सिद्धान्ती जी का भाषण हुआ। श्री सिद्धान्ती जी ने रेवाड़ी की वीर जनता को गरजते हुवे ललकार कर कहा—"राव तुलाराम के वीरसैनिको! एक लड़ाई आपने १८५७ में भारत की स्वतन्त्रता के लिये लड़ी थी, दूसरी लड़ाई आपने अब वीर हरयाणा की स्वतन्त्रता के लिये लड़नी है।" इसी प्रकार के भाषणों का परिणाम यह हुआ कि चुनाव का दिन आया, हरयाणा लोकसमिति का निशान उगता हुआ सूर्य था जिसके झण्डे के नीचे श्री सिद्धान्ती जी लोकसभा का चुनाव लड़ रहे थे। चुनाव के दिन सूर्य के उदय के साथ श्री सिद्धान्ती जी के नाम के आगे 'सूर्य' पर मोहर लगाकर लोगों ने मतपत्रों से मतदान पेटियां भरनी प्रारम्भ करदी। मतगणना हुई, श्री सिद्धान्ती जी की विजय भारी बहुमत से हुई, यद्यपि पार्टी के अन्य अनेक उम्मीदवार उस समय हार गये थे।

श्री सिद्धान्ती जी के मुकाबले में स्वर्गीय श्री प्रतापसिंह दौलता खड़े थे। चुनाव हारने के बाद श्री दौलता जी ने श्री सिद्धान्ती जी की चुनावी विजय के विरुद्ध याचिका दायर की। श्री दौलता जी स्वयं हाईकोर्ट के वरिष्ठ वकील थे, अतः उन्होंने तो अपनी याचिका की अगुवायी स्वयं ही करनी थी, किन्तु श्री सिद्धान्ती जी भी तर्क शास्त्र (न्याय-दर्शन) के उद्भट विद्वान् थे, अतः उन्होंने भी अपना केस बिना वकील की सहायता के स्वयं लड़ा। परिणाम विदित है, श्री सिद्धान्ती जी के मुकाबले में श्री दौलता जी के सारे वकीली पैंतरे विफल होगये और याचिका का निर्णय श्री सिद्धान्ती जी के पक्ष में हुआ।

श्री सिद्धान्ती जी चुनाव के पश्चात् याचिका भी जीतकर बड़े बड़ल्ले से लोकसभा पहुंचे और १९६२ से १९६७ तक पूरा काल लोकसभा के सदस्य रहे। मैं १९६३ से दिल्ली में आगया था और श्री सिद्धान्ती जी का लोकसभा का जीवन बड़े निकटता से देखता था। लोकसभा में वे अनेक राजनीतिकरूप समस्याओं पर बोले। सामाजिक और शैक्षिक समस्या उनके प्रखर रूप में मुखर होने का प्रमुख कारण रहती थी। शिक्षा के सम्बन्ध में सरकार की डावांडोल नीति और योजनाहीन दिशाहीनता को लेकर श्री सिद्धान्ती जी अत्यन्त उग्रवादी हो उठते थे, यद्यपि सामान्य जीवन में वे अत्यन्त व्यावहारिक और नम्र थे।

एक बार उनके हल्के के कुछ लोग उनसे उनके निवास स्थान पहाड़ीधीरज पर मिलने आये। श्री सिद्धान्ती जी आदर्श त्याग और अपरिग्रहवृत्ति के थे। इसलिए उन्होंने सरकारी आवास लेने से यह कहकर इन्कार कर दिया था कि मेरे पास अपना निजी आवास है अतः सरकारी आवास की मुझे आवश्यकता नहीं है। इलाके के लोगों ने श्री सिद्धान्ती जी को कहा कि राजनीतिक जीवन में सफलता का एक ही गुर (मन्त्र) है कि चाहे लोगों के लिये कुछ भी न करो परन्तु लोगों से मिलते रहो, उनसे मौखिक सहानुभूति जताते रहो, अतः आप भी ऐसा ही कुछ करते रहो। श्री सिद्धान्ती जी ने उत्तर दिया; ऐसी सस्ती नेतागिरी मुझे नहीं चाहिये। तुम बताओ कि जब सीमा पर लड़ाई चल रही हो क्या तब सिपाही को अपने घर होना चाहिये या सीमा पर? आपके अधिकारों की लड़ाई जब लोकसभा में चल रही है तो मुझे वहां होना चाहिये या केवल चातुरीपूर्ण औपचारिकता दिखाने के लिये और केवल सहानुभूति प्रकट करने के लिये इलाके में घूमता रहूं? उनका यह निश्छल और निष्काम उत्तर सुनकर सब चुप रह गये। यही था श्री सिद्धान्ती जी का आदर्श राजनीतिक जीवन, जो झूठी सहानुभूति जताकर सस्ती लोकप्रियता जीतनेवाले और लोकसभा में लोगों के हितों के लिये अपने ठाठ बन्द रखनेवाले अवसरवादी राजनीतिज्ञों के प्रति जनता को सावधान करता रहेगा और राजनीतिज्ञ और जनता के लिये सर्वदा प्रकाशस्तम्भ का काम करता रहेगा।

– ले० डा० महावीर
ए-३/११, पश्चिम विहार, देहली-११००६३

हैदराबाद आर्यसत्याग्रहियों का सम्मान समारोह

हैदराबाद आर्यसत्याग्रह १९३८—३९ में जिन भाइयों ने सक्रिय भाग लिया था और हैदराबाद जेल में गये थे आर्य-प्रतिनिधि सभा हरयाणा ऐसे सब सत्याग्रहियों को तारीख २४-११-९० को अपने वार्षिक अधिवेशन से एक दिन पूर्व सम्मानित करेगी। इसी सिलसिले में सभा हैदराबाद आर्यसत्याग्रह १९३८-३९ का एक इतिहास भी लिख रही है जिसमें हरयाणा के तमाम सत्याग्रहियों के फोटो और संक्षिप्त जीवन परिचय होगा। अतः सबसे निवेदन है कि अब तक जिन्होंने अपना संक्षिप्त जीवन एवं पासपोर्ट साइज का फोटो नहीं भेजा है वे यह सूचना मिलते ही अपना एक पासपोर्ट साइज का फोटो और ६-७ लाइन का जीवनपरिचय तुरन्त सभा को भेजने की कृपा करें ताकि उनका नाम इतिहास में लिखा जा सके।

जीवनपरिचय का प्रारूप

१- सत्याग्रही का नाम, पिता का नाम, ग्राम, जिला।
२- किसके जत्थे में थे।
३- कहां सत्याग्रह किया, वहां कितनी सजा हुई और कितने दिन जेल में रहे।
४- जेल में कोई विशेष घटना हुई हो तो संक्षिप्त रूप में लिखें।

महाशय भरतसिंह
संयोजक हैदराबाद स्वतन्त्रता सैनिक सम्मान पेंशन समिति
दयानन्दमठ रोहतक

पत्रों के दर्पण में

हैदराबाद के सत्याग्रहियों की दुरवस्था

श्री बलवीरसिंह (७५ वर्ष) आर्य समाज किशनगंज दिल्ली के सदा से सक्रिय कार्यकर्त्ता रहे हैं। वे १९३९ में महाशय कृष्ण जी के जत्थे में, जिसमे छः सौ सत्याग्रही थे, हैदराबाद सत्याग्रह मे गए थे। उन्हे वहा ४॥ वर्ष सपरिश्रम कारावास को सजा हुई। किन्तु २॥ मास के पश्चात् समझौता होने पर छोड़ दिये गये थे। वहाँ से लौटने पर देहली क्लाथ मिल्स मे ला० श्रीराम जी के कहने पर पुनः वे काम पर ले लिए गये। अब रिटायर्ड हैं और नागलोई समाज में हरिजन बस्ती तथा जाटों में समाज का प्रचार कर रहे हैं। सत्याग्रह में उनके साथ मिल से गये दसो व्यक्ति मर चुके हैं। केवल चौ० धर्मसिंह उनके जेल के साथियों मे हैं जो मिल में अब भी कंपाउंडर है। जेल में उनको कठोर यातनायें दी गई थीं।

उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के भू० पू० भजनीक धर्मराजसिंह तथा एक अन्य स्कूटर ड्राइवर भी बड़ी विपन्न अवस्था में हैं।

केन्द्रीय एवं राज्य सरकारो द्वारा इन सब को स्वाधीनता सेनानी का सम्मान देने के लिए सार्वदेशिक सभा पूरा प्रयत्न करने में लगी है।

—ब्रह्मदत्त स्नातक, सार्वदेशिक अवै० प्रेस एवं जनसंपर्क सलाहकार, आर्य प्रतिनिधि सभा।

हिन्दी बोलने पर दण्ड

हिन्दी भाषी मध्य प्रदेश के आदिवासी जिले जगदलपुर मे एक ऐसा कान्वेट स्कूल है जहा कोई छात्र हिन्दी का शब्द भी बोलता है तो उसे पच्चीस पैसे प्रति शब्द का दण्ड दिया जाता है। यह स्वतंत्र भारत के स्वाभिमानी नागरिको के मुंह पर खुला तमाचा है।

भारत में कान्वेन्ट स्कूल कोढ की तरह फैल रहे हैं - और इस कोढ़ के विस्तार मे मानसिक रूप से गुलाम उन पूंजीपतियो और अधिकारियो का हाथ है जो अपने बच्चों को ऊंचे पदो पर बिठाना चाहते है। नई शिक्षा नीति में हिन्दी के प्रचार प्रसार और विकास पर बल देते हुए अंग्रेजी को मूल से समाप्त करने का प्रयास तो करना ही चाहिये, साथ ही हिन्दी भाषा का इस तरह अपमान करने वालों को दण्डित करना चाहिये।

यह भारत वर्ष ही है जहा कुछ मुट्ठी भर स्वार्थी तत्वों के द्वारा राष्ट्र-भाषा अपमानित की जाती रही है। यदि पाकिस्तान या अन्य किसी इस्लामी मुल्क में उर्दू, फारसी के खिलाफ ऐसा कुछ किया जाता तो चौराहे पर कोड़े लगाए जाते।

हिन्दुस्तान की राष्ट्र भाषा हिन्दी है। वोटो की खातिर किसी दूसरी भाषा को कोई भी दर्जा देना हिन्दी के साथ अन्याय होगा।

—जे० पी० भारद्वाज, जय जनरल स्टोर्स, भानपुरा (मन्दसौर) म० प्र०

अनुकरणीय सत्साहस

"आपने-अपने अग्रलेख मे आतंकवाद का मुंहतोड़ जवाब देकर जो अनुकरणीय सत्साहसपूर्ण कार्य किया है वह इतिहास की एक मिसाल बनी रहेगी।" इसके लिये आप बधाई के पात्र है।

'आर्य जगत्' में दूसरे भी रोचक लेख, प्रेरकवार्त्ता एवं चरित्र निर्माण सम्बन्धी लेख पढ कर श्रेष्ठ पत्रकारिता का परिचय प्राप्त होता है।

मेरा सुझाव है कि आप इसमे "बाल जगत्" कथामाला के रूप मे क्रान्तिकारियों के प्रेरक प्रसग दें। यह कथामाला आर्य वीरो में सत्साहस पैदा करेगी और आर्य वीर भी उन कहानियो को पढकर लाभ उठायेंगे।

हम आपकी लौह लेखनी, राष्ट्रीय दृष्टिकोण एवं कार्यों के लिये हार्दिक बधाई भेजते हैं। —ब्र० सुधीर कुमार आर्य C/o सोमनाथ शंकरप्पा आर्य किल्लेधारूर. जि० बीड (महाराष्ट्र) पिन-४३११२४

केवल पुष्पमालाएं नहीं

सत्संग के समय तालिया बजाना तथा अतिथिगणों का पुष्पमालाओं के साथ स्वागत करना कहा तक उचित है? जब हम मूर्तिपूजा को नही मानते तो इस प्रकार पुष्पमालाएं अर्पित करने मे भी क्या तर्क हो सकता है। आर्य समाजो को चाहिए कि विद्वानो की आर्थिक मदद कर, वैदिक अनुसंधान कार्य पर खर्च करे, छोटे-छोटे ट्रैक्ट छपाकर घर-घर पहुंचावें तथा अपने-अपने नगर की समास्याओ को लेकर सेवा भावना से आर्य समाज को लोकप्रिय बनाने का कार्य करे। समय की कसौटी तो यह कहती है कि हम नींद से जागे और उसी मार्ग पर तीव्र गति से चले जिस पर हमारे पूर्वज चले थे। —बलदेव खत्री, २२३ जीवन दीप, ११ वा रास्ता, खार, बम्बई-५२

पूर्ण मद्य निषेध पर पुनर्विचार हो

श्री राजीव गांधी द्वारा सार्वजनिक जीवन से भ्रष्टाचार समाप्त करने का आह्वान करने से निसन्देह नैतिक मूल्यों में अभी भी प्रगाढ आस्था रखने वालो को कुछ राहत मिली है। वास्तव में जब तक हमारी सरकारें शराब बेचकर धनोपर्जन करती रहेंगी तब तक सार्वजनिक क्षेत्र से भ्रष्टाचार दूर करने का प्रश्न ही नही पैदा होता। यही कारण था, आजादी के पूर्व वह व्यक्ति कांग्रेस का सदस्य नहो बन सकता था, जो शराब पीता हो। महात्मा गाँधी ने स्वयं कहा था कि स्वतंत्र भारत की सरकार का पहला कार्य शराब की सारी दुकानों को बन्द करने का होगा। शराब पीने से राष्ट्र की वर्तमान व भावी पीढ़ी बर्बाद हो रही है। एक जन कल्याणकारी सरकार जिसने भारतीय संविधान मे उल्लिखित नीति निर्देशक सिद्धातों पर अमल करने की शपथ ली हो, यदि शराब को प्रोत्साहित करती है, तो इससे बड़ा देश का दुर्भाग्य और क्या होगा? भारत को इक्कीसवी सदी के स्वर्णिम प्रभात की ओर ले जाने की घोषणा करने वाली श्री राजीव गांधी की सरकार इस दिशा में संकल्पबद्ध होकर पुनर्विचार करेगी और गांधी जी के स्वप्नो का रामराज्य लाने के लिए समस्त देश मे एक साथ पूर्ण मद्य निषेध की नीति लागू करेगी। —राधेश्याम आर्य एडवोकेट, मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर।

आर्य समाज और रेडियो स्टेशन

श्री ज्ञानचन्द गोयल के इस रहस्योद्घाटन से कि भारत में ईसाइयों के रेडियो स्टेशन है, आर्य जनता मे एक नयी चेतना का सचार हुआ है और सभी ओर से आवाज आने लगी है कि 'भारत मे आर्यों का भी रेडियो स्टेशन हो।' यह माग व्यवहारिक प्रतीत नही होती। भारत मे आकाशवाणी सरकारी संस्था है। ईसाईयो की भाति आर्य भी लाखो रुपया 'आकाशवाणी' को देकर कुछ भी प्रसारण कर सकते हैं। यह व्यय साध्य योजना आर्यसमाज के बस की बात नही है।

आर्य वाणी के प्रसारण के उद्देश्य पूर्ति हेतु आर्य समाजों, आर्य संस्थाओ एवं सम्पन्न आर्य परिवारो द्वारा टेपरिकार्डर व लाउडस्पीकर के योग से कुछ आर्य संस्थाओ द्वारा निर्मित कैसेट के माध्यम से प्रातः ५-६ बजे तक मधुर साज संगीत का प्रसारण कर इस उद्देश्य की पूर्ति की जा सकती है।

कैसटो की माग बढ़ने पर निर्मातृ कम्पनियों को नये-नये कैसेट तैयार करने का उत्साह मिलेगा।

मैं प्रतिदिन अपने निवास से उपरोक्त सुझावानुसार पिछले १० वर्ष से आर्ष वाणी का प्रसारण करता चला आ रहा हू जिसकी क्षेत्र मे भूरि-भूरि प्रशसा हुई और इस कार्यक्रम का स्वागत हुआ है। —ओ३म् प्रकाश गुप्त, ३-वीर सावरकर ब्लाक, शकरपुर दिल्ली-९२

घृणा किसने फैलाई?

दैनिक ट्रिब्यून से उद्धृत, 'हरियाणा मे सिखों की स्थिति' लेख में अवकाश प्राप्त लेफ्टिनेंट जनरल जगजीतसिंह अरोड़ा की धारणा को निर्मूल सिद्ध करने वाले मेजर दरियावसिंह के सटीक विचारो से मैं एक घटना का उल्लेख करना चाहता हूं जिससे यह स्पष्ट हो जायेगा कि जिन सिखो को पहले सारा राष्ट्र जाबांज बहादुर मानता था, उन्होंने बच्चे-बच्चे के मन में अपनी छवि स्वयम् ही धूमिल की है। इसके लिए सिर्फ वे ही खुद जिम्मेदार है। पिछले दिनों मेरे मामा हरियाणा से यहाँ गौहाटो भ्रमण के लिए सपरिवार पधारे थे। उनका एक दस वर्षीय पुत्र है। काफी बुद्धिमान, प्रतिभाशाली, होनहार है। एक दिन मैं इन सबको घुमाने के लिए स्टीमर से ब्रह्मपुत्र नदी के उस पार ले गया। घूमने के बाद एक मन्दिर (दोल गोविन्द) मे जाकर वृक्ष की छाया में बैठ गये और वहीं हमने भोजनादि किया। उसी मन्दिर में घूमने के ही इरादे से पधारे थल सेना मे कार्यरत एक सिख बन्धु से हमारी भेंट हुई। बातचीत होती रही। जब हम शाम को वापिस लौटने के लिए स्टीमर की प्रतीक्षा में बैठे थे तो सिख बन्धु ने अपने हैंडबैग से दो टॉफियाँ निकालकर मेरे मामा के लड़के को दीं। टॉफिया उसने पकड तो ली पर बेमन से। यह मैं स्पष्ट रूप से देख रहा था। थोडी देर के बाद जब वह सिख बन्धु इधर-उधर हुए तो मामा के लड़के ने 'यह टॉफियाँ सरदार ने दी हैं, कहीं इनमे जहर न हो' कहते हुए ब्रह्मपुत्र के गहरे जल मे फेंक दी। यह देखकर मुझे आश्चर्य तो बहुत हुआ, पर फिर इसके तुरन्त बाद जो पहला विचार मेरे मस्तिष्क में आया वह था—उग्रवाद से उग्रवाद जन्म लेता है, घृणा से घृणा फैलती है। सिखों के विरुद्ध फैली इस घृणा का जिम्मेदार कौन है? क्या स्वयम् सिख समाज नहीं? — नरेश बाली, जोगीपाड़ा, गौहाटी-७८१०७१

लालबहादुर शास्त्री

—राजकुमार कपूर—

भारतवर्ष ऋषियों, मुनियों तथा शूरवीर महापुरुषों की जन्मभूमि है। यहां पर मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगिराज श्रीकृष्ण, गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी, प्रणवीर प्रताप, छत्रपति शिवाजी, गुरु गोविन्द सिंह, महात्मा गांधी जैसी महान् विभूतियों का समय-समय पर प्रादुर्भाव हुआ जिन्होंने इस देश की मान मर्यादा को स्थिर रखने का प्रयास किया। लालबहादुर शास्त्री जी भी ऐसे ही एक महामानव थे जिन्होंने समय की पुकार—"पाकिस्तानी आक्रमण का डटकर मुकाबला किया जाये' को सुना और पूरी शक्ति और साहस के साथ उत्तर दिया। पाकिस्तानी तानाशाहों को नाकों चने चबाये और सारे संसार में भारतवर्ष की ऐसी धाक जमा दी। बड़ी-बड़ी शक्तियों को यह मालूम हो गया कि भारत एक शांतिप्रिय देश होने के नाते जहाँ वह शांति और अहिंसा का पुजारी है वहाँ वह अपनी स्वतन्त्रता और अखंडता की रक्षा करना भी जानता है।

जनवरी 1964 ई० मे कांग्रेस के भुवनेश्वर अधिवेशन के अवसर पर जब नेहरु जी पर अचानक पक्षाघात का आक्रमण हुआ तब सारा राष्ट्र स्तब्ध रह गया। देशवासियों को इस बात की चिन्ता घुन की तरह खाये जा रही थी कि नेहरु जी के बाद क्या होगा? इस देश का क्या बनेगा? ऐसा कौन-सा युग पुरुष प्रकट होगा जो कि नेहरु जी का स्थान ले सके? ऐसे प्रश्न उन दिनों आम भारतीयों की जबान पर थे।

नेहरु जी के देहान्त के पश्चात् तत्कालीन कांग्रेसाध्यक्ष श्री कामराज इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि नेहरु जी के बाद यदि कोई व्यक्ति राष्ट्र को सही नेतृत्व प्रदान कर सकता है तो वह श्री लाल बहादुर शास्त्री ही हैं। उन्हें सर्व सम्मति से देश के प्रधानमंत्री के पद के लिए चुन लिया गया।

शास्त्री जी जब प्रधानमन्त्री के पद पर विराजमान हुए उस समय राष्ट्र के सामने बहुत सारी समस्याएं थीं। अन्न संकट, हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने के प्रश्न पर दक्षिण भारत से तीव्र विरोध का सामना, श्री लंका की सरकार का भारतीय मूल के लोगों को अपने देश से निष्कासित करना और पाकिस्तानी आक्रमण। इन सभी समस्याओं का शास्त्री जी ने पूर्ण साहस, दृढ़ता और बुद्धिमत्ता के साथ सामना किया।

शास्त्री जी अपने 18 मास के अल्प शासन काल मे अत्यन्त लोकप्रिय हो गये थे। उनकी क्रियाशीलता, कर्मठता, तत्परता और दृढ़-निश्चय की झलक किसी अंग्रेजी कवि की निम्नलिखित पंक्तियों मे हमें स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है—

"Small man he who was
Full of actions and directions.
He listened the call of time 'well'
And 'well' he replied.
'Lal' was a diamond for all
Now whom should we call ?"

पता—आर्य युवक परिषद्, पट्टी (अमृतसर)

जापान की शिक्षा पद्धति का अध्ययन

श्री दरबारीलाल और प्रि० तिलकराज विदेश रवाना

(निज सम्वाददाता द्वारा)

नई दिल्ली—25 सितम्बर। "भारत वर्ष का प्राचीन इतिहास गौरवमय रहा है, परन्तु खेद है कि पाश्चात्य सभ्यता की चकाचौंध में आज हमारे देशवासी विदेशी सभ्यता ग्रहण करने में गौरव अनुभव करने लगे हैं।" डी०ए०वी० कालिज प्रबन्धकर्त्री समिति के संगठन सचिव श्री दरबारी लाल ने ये उद्गार आज यहाँ एक स्वागत समारोह में व्यक्त किए। वे और प्रि० तिलकराज जापान सरकार के निमन्त्रण पर वहाँ की शिक्षण संस्थाओं का अध्ययन करने जाने वाले थे। उन्होंने कहा कि वहाँ की शिक्षण पद्धति में कोई उपयोगी बात मिलेगी तो उसे हम अपने यहाँ लागू करने पर विचार करेंगे।

डा० धर्मपाल सेठ ने समारोह की अध्यक्षता की। प्रिंसिपल तिलकराज गुप्त ने डी०ए०वी० आन्दोलन की संक्षिप्त चर्चा करते हुए इस बात पर बल दिया कि आर्य समाज व डी०ए०वी० आरम्भ से ही राष्ट्रीय आन्दोलन रहे। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने विदेशों में आर्यसमाज द्वारा किए गये कार्य का संक्षिप्त विवरण देते हुए आशा प्रकट की कि श्री दरबारी लाल व प्रिंसिपल तिलकराज अपने जापान प्रवास में जापानियों को आर्यसमाज का परिचय देंगे।

नैतिक शिक्षा परामर्शदाता प्रो० रत्नसिंह ने प्रो० वेदव्यास, श्री दरबारीलाल व प्रिंसिपल तिलकराज गुप्त की जापान यात्रा पर हर्ष प्रकट करते हुए उनकी यात्रा के मंगलमय होने की कामना की।

इस समारोह का आयोजन डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल गाजियाबाद व फरीदाबाद की ओर से किया गया। प्रारम्भ मे इन स्कूलों के प्रध्यापको तथा अन्य अनेक महानुभावो ने जाने वाले महानुभावों को माल्यार्पण किया।

के० आ० यु० परिषद् का चुनाव

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली का वार्षिक अंतरंग अधिवेशन श्री रामनाथ सहगल जी (मंत्री आ० प्रा० प्र० सभा, मन्दिर मार्ग) की अध्यक्षता में आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली मे सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री धर्मवीर अध्यक्ष, व श्री अनिलकुमार आर्य महामन्त्री निर्वाचित हुए। तत्पश्चात निम्न प्रकार उन्होंने नियुक्तियां कीं—

वरिष्ठ उपाध्यक्ष—ब्रह्मचारी विश्वपाल जयन्त व श्री विश्वनाथ आर्य मंत्री—श्री राजकुमार आर्य, उपमन्त्री—श्री वीरेन्द्र आहूजा, कोषाध्यक्ष—श्री यशपाल रेलन, बौद्धिकाध्यक्ष—पं० सुधीराम शर्मा संगठन मन्त्री—श्री राजपाल आर्य पुस्तकालयाध्यक्ष व उपकार्यालय मन्त्री—श्री रणवीर सिंह आर्य, प्रधान शिक्षक—श्री धर्मपाल आर्य, शिक्षक—श्री महेन्द्र आर्य, लेखा निरीक्षक—श्री रामनाथ सहगल सहशिक्षक—श्री बृजेश आर्य, श्री दुर्गेश आर्य, श्रीमुन्नालाल आर्य, श्री विश्वमोहन आर्य श्री वीरेन्द्र आर्य, श्री अरूण आर्य, श्री वीरभद्र आर्य तथा श्री रन्तिदेव आर्य संरक्षक मण्डल मे 11 सदस्य लिए गये—

(1) स्वामी सत्यपति जी महाराज (2) स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती (3) श्री क्षितीश वेदालंकार (4) श्री ब्रह्मचारी आर्य नरेश (5) श्री यशपाल 'सुधांशु' (6) श्री रत्नचन्द सूद (7) श्री मुल्खराज भल्ला (8) श्री हीरालाल चावला (9) श्री ईश्वर चन्द्र आर्य (10) श्री योगेश्वर आर्य (11) श्री रामलाल मलिक। इसके अतिरिक्त मण्डल व शाखाधिकारियों की नियुक्तियां की गईं।

—आर्य पुरोहित सभा पंजीकृत संघ राज्य सभा, दिल्ली-प्रदेश के वार्षिक चुनाव मे प्रधान—पं० यशपाल सुधांशु, उपप्रधान—पं० विक्रम सिंह, उपप्रधान—पं० हरिदत्त शास्त्री, मन्त्री—पं० मेघश्याम वेदालंकार उपमन्त्री पं० बलजीत शास्त्री, कोषाध्यक्ष—पं० हरिदत्त शास्त्री, लेखा निरीक्षक—पं० नरेन्द्र अवस्थी चुने गये।

ददाहू में वेदप्रचार

ददाहू जिला—नाहन (हि० प्र०) में श्री अमर सिंह जी की मण्डली द्वारा 18 से 22 अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया जिसमें ग्राम के और सनातन धर्म सभा के प्रधान श्री मदन लाल तथा ग्रामवासियों ने भारी संख्या में भाग लिया।—पिशोरी लाल प्रेम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद, दिल्ली प्रदेश के सभी अन्तरंग सदस्यों, शाखाधिकारियों और प्रमुख कार्यकर्ताओं की एक आवश्यक बैठक ६ अक्तूबर को सायं ४ बजे आर्य समाज, मेन बाजार, रानी बाग, शकूर बस्ती, दिल्ली में होगी।

—अनिल आर्य

फल्गु मेला

कुरुक्षेत्र में सम्पन्न होने वाला फल्गु मेला इस बार 12 से 14 अक्तूबर तक होगा। उपसभा हरियाणा इस अवसर पर विशाल वेद प्रचार शिविर का आयोजन कर रही है। निःशुल्क ऋषि लंगर की व्यवस्था। शिविर 10-10-85 को प्रारम्भ होगा। आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वानों के प्रवचन की व्यवस्था की गई है।—प्रा० वेदसुमन वेदालंकार, अधिष्ठाता।

धर्मशिक्षा अध्यापन पुनश्चर्या शिविर १९८५

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी आर्य विद्या सभा की ओर से धर्मशिक्षा अध्यापन पुनश्चर्या शिविर (Refresher Seminar) का नवम्बर मास में दिल्ली में आयोजन किया जा रहा है। डी०ए०वी० संस्थाओं से प्रार्थना की गई है कि वे कम से कम ऐसे दो अध्यापकों को अपनी संस्था की ओर से इस शिविर में भाग लेने के लिए भेजें जो धर्मशिक्षा पढ़ाते हैं अथवा इसमें रुचि रखते हैं। नाम भेजने की अन्तिम तिथि 20-10-1985 है। प्रवेशार्थी का नाम, योग्यता, आयु आदि विस्तृत विवरण भेजना आवश्यक है। शिविर में भाग लेने वाले अध्यापकों का द्वितीय श्रेणी का रेल अथवा बस का भाड़ा विद्या सभा की ओर से चुकाया जायेगा। भोजन एवं निवास की व्यवस्था निःशुल्क होगी। ऋतु अनुकूल वस्त्र एवं बिस्तर का प्रबन्ध शिविरार्थियों को स्वयं करना होगा। संस्थाओं के प्राचार्यों से शिविर में सम्मिलित होने की प्रार्थना की गई है।

—युगलकिशोर भारद्वाज, शिक्षा परामर्शदाता, आर्य विद्या सभा, चित्रगुप्त मार्ग, नई दिल्ली-55

'उत्तराखंड टाइम्स' के सम्पादक श्री बिंदल दिवंगत

उत्तराखंड टाइम्स के सम्पादक तथा सामाजिक कार्यकर्ता, मुजफ्फरनगर के प्रतिष्ठित नागरिक श्री मुरारीलाल बिन्दल का 22 सितम्बर को देहावसान हो गया। 25 सितम्बर को शान्ति यज्ञ में श्री बिंदल को मार्मिक श्रद्धांजलि देते हुए उनकी समाज सेवाओं का स्मरण किया गया और उनके असामयिक निधन पर दुःख व्यक्त किया गया। श्री मुरारीलाल 'सार्वदेशिक साप्ताहिक के व्यवस्थापक स्व० लाला चतुरसेन गुप्त के सुपुत्र और आर्यसमाज दीवान हाल के महामंत्री श्री मूलचन्द अग्रवाल के बड़े भाई थे।

गन्धर्वराज पुरी दिवगत

राजौरी गार्डन दिल्ली आर्य समाज के भूत पूर्व मन्त्री, सेवानिवृत्त जन संस्थान के संस्थापक, प्रसिद्ध समाज सेवी, सुप्रसिद्ध लेखक तथा वक्ता श्री गंधर्व राज पुरी का 27-9-85 को प्रातः काल होली फेमिली अस्पताल में निधन हो गया। स्कूटर से गिर जाने पर उनके मस्तिष्क में चोट आ गई थी। डाक्टर प्रयत्न करने पर भी उनको बचाने में असमर्थ रहे। —आर० एल० खन्ना, राजौरी गार्डन, दिल्ली।

विद्वानों के सम्मान के लिए दो लाख रु० का स्थायी कोष

आर्य समाज सान्ताक्रुज की नई अनुपम योजना

आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई के महामन्त्री कैप्टिन देवरत्न आर्य ने आर्य समाज सान्ताक्रुज द्वारा दो लाख रुपये के स्थायी कोष की स्थापना की घोषणा की जिसके ब्याज से 21,000/—रुपया प्रतिवर्ष प्राप्त होगा। यह राशि आर्य समाज के वार्षिक उत्सव पर प्रतिवर्ष "वेद वेदांग पुरस्कार" योजना के अन्तर्गत आर्य जगत् के ऐसे विद्वान को भेंट की जाया करेगी जिसने आर्य समाज के प्रचार तथा अनुसंधान एवं साहित्य सृजन में अपना जीवन समर्पित किया हो।

आर्य समाज मन्दिर हजूरी बाग (श्रीनगर काश्मीर) के विशाल भवन को, जिसमें कन्या विद्यालय भी चल रहा था, देशद्रोही उग्रवादियों ने आग लगाकर पूर्णतया नष्ट कर दिया था। उसके भवन के नव निर्माण के लिए 15000/—रुपये की राशि आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कश्मीर के प्रधान डा० योगेन्द्रकुमार शास्त्री को समारोह के अध्यक्ष श्री सत्यप्रकाश आर्य के हाथों से भेंट की गई।

राष्ट्रीय एकता एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी समारोह की अध्यक्षता प्रसिद्ध उद्योगपति श्री सत्यप्रकाश आर्य ने की। श्री राधेलाल अग्रवाल समारोह के मुख्य अतिथि थे। श्री कृष्ण के जीवन के महत्व पर वक्ताओं ने विचार व्यक्त किये। डा० योगेन्द्रकुमार शास्त्री, श्री नरेन्द्र वेदालंकार श्री देवेन्द्र कुमार कपूर तथा कैप्टिन देवरत्न आर्य ने विशाल जन समूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि देशद्रोही अराष्ट्रीय तत्व हमारी एकता को छिन्न-भिन्न कर देना चाहते हैं हमें उनकी चुनौतियों का सही प्रत्युत्तर देना है।

आर्य समाज सान्ताक्रुज में दिनांक 1-9-85 से 8-9-85 तक वेद प्रचार सत्र का आयोजन किया गया। डा० योगेन्द्रकुमार शास्त्री के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद महायज्ञ प्रतिदिन होता रहा, तथा नित्य सायंकाल वेद प्रवचन हुए। श्री सुखपाल आर्य तथा उनकी भजन मण्डली के मधुर भजन हुए। 8-9-85 को महायज्ञ की पूर्णाहुति हुई जिसमें हजारों आर्य नरनारियों ने भाग लिया।

अन्त में समारोह में पधारे विद्वानों वेदपाठियों तथा अन्य विशिष्टजनों का अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर प्रसिद्ध भजनोपदेशक स्वर्गीय कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर के कैसेट का विमोचन भी किया गया। प्रतिभोज के साथ कार्यवाही समाप्त हुई।

—कैप्टिन देवरत्न महामन्त्री

स्कूल डी० ए० वी०, दुर्गापुर की उपलब्धियाँ

अखिल भारतीय सांस्कृतिक परिषद द्वारा आयोजित तुलसी जयन्ती अन्तः—स्कूल भाषण प्रतियोगिता तथा कवित पाठ' में डी० ए० वी० माडल स्कूल, दुर्गापुर के छात्र-छात्राओं ने अपने भाषण कला तथा सुन्दर कविता पाठ का अच्छा प्रदर्शन किया। परिषद द्वारा घोषित कुल 12 पुरस्कारों में 8 पुरस्कार डी० ए० वी० माडल स्कूल के विद्यार्थियों ने प्राप्त किये। इस प्रतियोगिता में दुर्गापुर स्टील प्लान्ट द्वारा चलाये जा रहे सात स्कूल तथा स्थानीय सात पब्लिक स्कूलों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। डी० ए० वी० माडल स्कूल को श्रेष्ठ स्कूल घोषित किया गया। पुरस्कारों का विवरण निम्न प्रकार है—

कक्षा नवम तथा दशम वर्ग: (भाषण प्रतियोगिता) प्रथम कुमारी सुस्मिता राय चौधरी, द्वितीय श्री राजीव अग्रवाल, तृतीय श्री पीयूष रंजन, चतुर्थ श्री आलोक कुमार।

कक्षा सप्तम तथा अष्टम वर्ग: (भाषण प्रतियोगिता) द्वितीय श्री मनीष कुमार सिंह, तृतीय, श्री रंजन मुस्तकी।

कक्षा पंचम तथा षष्ठ वर्ग: (कविता पाठ) तृतीय कुमारी रूची अग्रवाल, सान्त्वना पुरस्कार, कुमारी नूर जहाँ बेगम। —वासुदेव भट्टाचार्य

वेद सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज, 22-1-428 1 अंबरून चादरघाट, हैदराबाद में वेद प्रचार कार्यक्रम 17 अगस्त से 14 सितम्बर तक रखा गया। जो कि सभी सदस्यों के घर पर पारिवारिक सत्संग के रूप में मनाया गया।

—ब्र० देवदास

राजौरीगार्डन में उपनिषद कथा

आर्य समाज, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली में वेद सप्ताह के उपलक्ष में 9 से 15 सितम्बर तक प्रो० रत्नसिंह एम० ए० की उपनिषद कथा हुई तथा पं० सत्यदेव रेडियो कलाकार के भजन हुए।

—नन्दकिशोर मंत्री।

आर्यसमाज पंखारोड में वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज पंखारोड, जनकपुरी द्वारा "वेद प्रचार सप्ताह" श्रावणी से जन्माष्टमी तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर स्वामी मुनीश्वरानन्द जी के प्रातः एवं सायं विभिन्न विषयों पर प्रवचन हुए "जन्माष्टमी समारोह" की अध्यक्षता डी ए वी मैनेजिंग कमेटी के संगठन मन्त्री तथा आर्य प्रादेशिक सभा के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री दरबारी लाल जी ने की। श्री मुल्खुखदास ग्रोवर ने समाज मन्दिर के निर्माण हेतु १००१/-रुपये दान दिया।

अध्यक्षीय भाषण में श्री दरबारी लाल जी ने योगीराज श्री कृष्ण की महाभारत कालीन उपदेशों का स्मरण कराते हुए कहा अब समय कर्म करने का है न कि भाषण देने का जो कुछ हम कहें कर के दिखायें। जहां कभी गुरुगोविन्द सिंह जी तथा स्वामी दयानन्द स्वामी श्रद्धानन्द महात्मा हंसराज वीर लेखराम ने प्रेम और सौहार्द का वातावरण बनाया था और जगह जगह आर्य स्कूलों डी ए वी स्कूलों-कालेजों की नींव रखी थी आज उस पंजाब का स्वरूप विकृत हो रहा है। ऐसे समय में हमें एक जुट होकर विघटनकारी तत्वों को समाप्त करने के लिए योगिराज श्री कृष्ण और मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन से प्रेरणा लेनी है। जो हमारे आदर्श महान पुरुष थे अन्य प्रमुख वक्ता थे—स्वामी मुनीश्वरानन्द जी, डा० राधाकृष्ण ठाकुर और श्री शिवकुमार शास्त्री

—वैद्य महेन्द्रपाल सिंह आर्य, मंत्री

श्री कृष्ण जन्माष्टमी

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व सितम्बर को किशनगंज रेलवे स्टेशन के गणेश लाइन मैदान में आयोजित किया गया समारोह के मुख्य अतिथि स्वामी शक्तिवेश जी थे सभा में पण्डिता राकेत रानी, श्री ओम-प्रकाश, श्री जी. आर. गुप्ता, श्री पी. पी. पुरवानी, श्री जे. पी. पाठक, श्रीमती प्रकाश आर्या, और श्रीमती कृष्णा चड्ढा के उपदेश और भाषण हुए। इसके अतिरिक्त आर्य समाज, डी. सी. एम. रेलवे कालोनी, किशनगंज मील एरिया, नयाबास, पुलबंगश कबीर बस्ती, राणा प्रताप बाग सदर बाजार, आर्य पुरा आदि में भी जन्माष्टमी का पर्व समारोह पूर्वक मनाया गया।

—आर्य समाज, चिटगुप्पा में श्रावणी पर्व और वेद प्रचार सप्ताह १२ से १४ सितम्बर तक मनाया गया। जिसमें प० वेगराज और श्री सुखवीर सिंह एम. ए. के भजन और उपदेश हुए।

अन्तर्जातीय विवाह

आर्य समाज, होशंगाबाद में श्री श्याम कुमार वर्मा आत्मज श्री सीता प्रसाद वर्मा का कु० सुषमा ठाकुर आत्मजा श्री रामलाल और श्री ध्रुव कुमार रघुवंशी आत्मज श्री घासीराम का कु० मधुरिमा शर्मा का शुभ विवाह क्रमशः १५ अगस्त और ३ सितम्बर को सम्पन्न हुआ। जिसमे गणमान्य व्यक्तियों ने वर-वधू को आशीर्वाद दिया। यह दोनों अन्तर्जातीय विवाह थे। पौरोहित्य श्री यज्ञेन्द्र आर्य ने किया।—गिरिश उपाध्याय मन्त्री

आर्य वीर दल-बूढ़ा

आर्य वीर दल, बूढ़ा, जिला मन्दसौर के चुनाव में श्री जगदीश चन्द्र पाटीदार नगर, संचालक, श्री काशीराम पाटीदार उपनगर संचालक श्री तुलसीराम आर्य संरक्षक श्री राम निवास पाटीदार सचिव श्री प्रकाश चन्द्र पाटीदार सहसचिव श्री रामेश्वर पाटीदार कोषाध्यक्ष, श्री भंवर लाल पाटीदार शाखा नायक, श्री कान्तीलाल पाटीदार उपशाखा नायक चुने गये।

उड़ीसा के मुख्यमंत्री के सान्निध्य में श्रावणी-यज्ञ

आर्य समाज, भुवनेश्वर में दश दिवसीय श्रावणी यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें पूर्णाहुति के दिन राज्य के मुख्यमंत्री श्री जानकी बल्लभ पटनायक और उनकी धर्म पत्नी श्रीमती जयन्ती पटनायक संसद सदस्या ने भाग लिया। श्री पटनायक ने महर्षि दयानन्द की प्रशंसा करते हुए उनके विश्व निर्माण की योजना को क्रियान्वित करने में सतत प्रयत्नशील श्री प्रियव्रत दास की प्रशंसा की, साथ ही आर्य समाज के सम्मुख वाले सड़क का नाम 'महर्षि दयानन्द मार्ग' रखने की घोषणा की इस यज्ञ में स्वामी विश्व मित्रानंद और श्री प्रियव्रत के उपदेश हुए।

—प्रियव्रत दास

योग साधना शिविर

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक व गुरुकुल करतारपुर का वार्षिकोत्सव 6 से 13 अक्टूबर तक मनाया जायेगा। उत्सव के अन्तर्गत योग साधना शिविर, सामवेद पारायण-यज्ञ, महिला सम्मेलन, शोभा यात्रा आदि का आयोजन किया गया है। स्वामी योगेश्वरानन्द, स्वामी मुक्त चन्द, आचार्य गौतम, श्रीमती कमला आर्या, श्रीमती चांद रानी, श्री श्याम सुन्दर स्नातक, श्रीमती नर्मला देशपाण्डे, महात्मा आर्य भिक्षु, महात्मा प्रेम प्रकाश, श्री वीरेन्द्र आदि विद्वान उत्सव में पधार रहे हैं।—शिवचन्द प्रधान, चतुर्भुज मित्तल मंत्री।

आर्यसमाज फिरोजपुर में जन्माष्टमी महोत्सव

आर्य समाज मन्दिर फिरोजपुर छावनी के विशाल प्रागण मे प्रि० पी० डी० चौधरी की अध्यक्षता में जन्माष्टमी महोत्सव धूमधाम से मनाया गया जिसमे स्थानीय डी ए वी शिक्षण-सस्थाओ की अध्यापिकाओ, छात्राओ तथा आर्य अनाथालय के कर्मचारियो ने उत्साह से भाग लिया। यज्ञ के पश्चात् छात्रो ने गीत और कविताएं प्रस्तुत की। प्रि० चौधरी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सब को कर्मयोगी बनने की प्रेरणाये दी। श्रीमती सन्तोष चौधरी ने कार्यक्रम मे भाग लेने वाले छात्रो को पारितोषिक वितरण किये। तत्पश्चात् मिष्ठान्न व फल वितरित किये गए (चित्र १) प्रि० पी० डी० चौधरी अध्यक्षीय भाषण करते दिखाई दे रहे है। (चित्र २) श्रीमती सन्तोष चौधरी छात्राओं को परितोषिक वितरण कर रही है। (चित्र-३) उत्सव मे सम्मिलित अध्यापिकाओ व छात्राओ की एक झलक। (चित्र ४) डी० ए०वी० से० स्कूल की छात्राये देश भक्ति का गीत प्रस्तुत कर रही हैं।

गृहस्थी होते हुए भी......

(पृष्ठ 7 का शेष)

थे। यह बात उन लोगो को स्पष्ट हो जाती थी जो अन्तरंग सभा मे किसी रूप में भी उपस्थित होते। मुझे मुख्याधिष्ठाता के तौर पर अन्तरंग सभा में सम्मिलित होना होता था, तब मैं अनुभव करता था कि असली प्रधान पं० विश्वंभरनाथ जी थे। इसका मुख्य कारण यह था कि वे दिन-रात सभा के लिये समर्पित थे। उन्होने अपने जीवन के सब बधन काट दिये थे, मानो सभा के लिए उन्होंने अपना जीवन न्यौछावर कर दिया था।

सभा पर जब कोई सकट आया, सब की आंखें प० विश्वम्भरनाथ जी की तरफ जाती थी। समय आया जब गुरुकुल कांगड़ी को संभालने वाला कोई नहीं दिखता था। प० विश्वम्भरनाथ जी अपने सब काम-धंधे, छोड़कर, सिर्फ अपना बिस्तर बगल में दबाकर गुरुकुल पहुच गये और सालो गुरुकुल को संभालते रहे।

गुरुकुल आने पर मेरा उनसे कुछ निकट का संबंध हुआ। गुजरावाले में लाला रलाराम का एक गुरुकुल था जिसका उत्सव होने को था। लाला रलाराम जी और प० विश्वम्भरनाथ जी के विचारो मे काफी मेल था। रलाराम जी ने पडित जी को उत्सव मे कोई स्नातक भेजने को लिखा। पडित विश्वम्भरनाथ जी ने मुझे भेज दिया। मेरा पहला व्याख्यान हो चुकने के दूसरे दिन लाला दल।राम जी ने कहा कि हमने भिन्न-भिन्न धर्मो पर बोलने वाले सज्जन विकसित किये हैं, ईसाई, मुसलमान, जैनी हिन्दू—आपको वैदिक-धर्म का प्रतिनिधित्व करना होगा। मैंने रात बैठकर वेद तथा ईश्वर पर एक निबन्ध लिख डाला और अगले दिन सभा मे पढा। मेरे इस तत्काल निबन्ध लिखने तथा बोलने से प्रभावित होकर लाला जी ने पंडित जी को लिखा कि अगर आपके यहा ऐसे व्यक्ति पैदा होते हैं, तो ऐसे एक से ही गुरुकुल पूरी तरह सफल है। पडित जी ने मुझे वह पत्र सुनाया और शाबासी दी। तब से उन्होंने मुझ मे विशेष रुचि लेनी शुरू की। वे मुझे बुलाकर बडे प्रेम से देर तक बातें किया करते थे और वैदिक-धर्म की सेवा के लिए प्रेरणा देते रहते थे। मैं समझता रहा कि पंडित जी का मुझ से ही विशेष प्रेम है। पीछे मैंने देखा कि प्रत्येक स्नातक को वे अपने पुत्रवत् समझते थे और सबसे वैसा ही व्यवहार करते थे। जो भी स्नातक उनके निकट आया वह उनके घर का अग बन गया। प० इन्द्र जी तक से वे अपने ज्येष्ठ पुत्र का-सा बर्ताव करते थे और वे भी उनका इसी प्रकार आदर करते थे।

मेरा श्री पं० विश्वम्भरनाथ जी से बहुत निकट का सबध तब हुआ जब मैं रोगी होकर इलाज कराने लाहौर गया और वहा लगभग एक मास अपने मित्र प० भीमसेन जी के यहा रहा। पडित जी का आग्रह था कि दोपहर का भोजन मैं उनके यहा करू और दोपहर का समय उन्ही के यहा बिताऊ। मैं प्राय यह समय उन्ही के घर पर बिताता था। मैं देखता था कि वे सस्कृत का ज्ञान न होते हुए भी स्वामी अभयदेव जी की रचित 'वैदिक विनय' को बडे ध्यान से पढते थे और बीच-बीच मे मुझ से चर्चा करते रहते थे। तब मुझे अनुभव हुआ कि वे स्नातको से कितना प्यार करते थे और समाज के कार्य को करते हुए भी जीवन के आध्यात्मिक पक्ष को सामने रखते हुए अपने जीवन को अध्यात्ममय बना चुके थे। उन्हे इस प्रकार निकट से देखकर मुझे स्पष्ट हो गया कि वे संसार मे रहते हुए भी ससार से अलग थे, गृहस्थी होते हुए भी संन्यासी का जीवन बिता रहे थे।

पता—डब्ल्यू-77 ए, ग्रेटर कैलाश II
नई दिल्ली-110048

श्रीराम के सम्बन्ध मे भी विशेष अक दीजिए

जन्माष्टमी के अवसर पर प्रकाशित अंक बडा ही ज्ञान-वर्धक था। उसमे योगिराज श्रीकृष्ण के जीवन के विविध पहलुओ पर बहुत उत्तम लेख थे। कृपया इस परम्परा को बढाते हुए विजय-दशमी के अवसर पर मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के बारे मे इसी प्रकार का सुन्दर अक उपलब्ध कराने की व्यवस्था कीजिए। —ज्ञानचन्द गोयल, आर्य युवक परिषद् मालव, गुड़गाव।

हरयाणा के लिए गम्भीर चुनौती

प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी

पंजाब में राष्ट्रपति शासन की अवधि और ६ महीने के लिये बढ गई है, अब चुनाव मई १९९१ के पहले सप्ताह में अवश्य होने चाहिए। यह निश्चित ही जान पडता है कि अब राष्ट्रपति शासन की अवधि और नही बढ़ाई जा सकेगी, क्योंकि एक ओर जहां लोकसभा के मध्यावधि चुनाव होना तय लग रहा है जिसके कारण नई लोक सभा अप्रैल से पूर्व गठित नहीं हो पायेगी, वहां दूसरी ओर यदि लोक सभा भग न की हो तो भी दो तिहाई मत प्राप्त होना भी असम्भव सा ही लगता है। यदि मार्च के अन्तिम सप्ताह में पंजाब विधानसभा के चुनाव हों, जिसकी पूरी पूरी सम्भावना है तो पंजाब में चुनाव जीतने के लिये तथाकथित पंजाब समस्या का पूरा नही तो अधूरा हल तो निकालना ही पड़ेगा। पंजाब की समस्या का हल निकालने की प्रक्रिया शुरू होते ही एक बहुत बड़ी चुनौती हरयाणा के लिये उपस्थित हो जायेगी। समस्या के अधूरे हल के लिये भी चण्डीगढ़ तो पंजाब को देना ही पड़ेगा और उस समय यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से खडा होगा कि चण्डीगढ़ के बदले में हरयाणा को फाजिलका अबोहर का इलाका मिले या नही।

मैथ्यू आयोग तथा वैंकटरमैया आयोगो ने जो रिपोर्ट दी है उन्होंने इस प्रश्न को पूरी तरह सुलझाया नही। मैथ्यू आयोग ने दो बातें तो मान ली एक यह कि फाजिलका अबोहर के ८५ गांव हिन्दी भाषी हैं और उनसे घिरे हुये दस गांव भी उनके साथ ही रखने पड़ेंगे और दूसरी यह कि १९८१ की जनगणना गलत थी, १९६१ की जनगणना ही सही साबित हुई। ये दोनो बातें मानकर हरयाणा को दे देना या दूसरा आयोग बिठाना यह बात भारत सरकार को सोप दी यह कहकर कि एक पजाबीभाषी गांव कन्दूखेड़ा बीच में पड़ने से फाजिल्का अबोहर के हिन्दीभाषी ग्राम हरयाणा की सीमा से नहीं जुड़ सके। मैथ्यू कमीशन की इस सिफारिश मे तथा उनकी अपनी मान्यता जो उन्होने खुले रूप मे घोषित की, विरोधाभास है। जब अकालियों ने पेशकश की कि वे ११ हिन्दी भाषी गांव पटियाला जिले मे से हरयाणा को राजधानी बनाने के लिये देने को तैयार है और वे ११ गाव हरयाणा से सीधे जुडे हुए है, तब न्यायमूर्ति मैथ्यू ने स्पष्ट कहा कि वे गांव तो हरयाणा के साथ जुड़े होने का कारण सीमा समायोजन के लिये राजीव लौंगोवाल समझौते की धारा ७ ४ के अनुसार गठित आयोग हरयाणा को देने के लिये पाबन्द है, इसी प्रकार के और गांव होगे तो आप बताइये वे भी हरयाणा को धारा ७.४ के तहत आयोग के द्वारा को वैसे ही मिल जायेंगे। चण्डीगढ के बदले में तो हरयाणा को ऐसे ग्रामों से अलग गाव देने पड़ेगे और वे गाव धारा ७.२ के तहत फाजिल्का अबोहर क्षेत्र के ग्रान ही हो सकते हैं। यह तो सहज बुद्धि का तकाजा था कि जब हरयाणा की सीमा से जुड़े हुये हिन्दीभाषी गाव धारा ७.४ के तहत सीमा समायोजन के लिये हरयाणा में तत्सम्बन्धी आयोग को देने ही पडेंगे और चण्डगढ़ के बदले में दिये जानेवाले ग्रामो से धारा ७.२ के अन्तिम वाक्य के अनुसार अलग होने चाहिये तब फाजिल्का अबोहर के ८५ हिन्दीभाषी गांव और उनके बीच में फसे हुए करीब दस गाव चण्डीगढ के बदले में हरयाणा को दिये जाने चाहिये। कन्दूखेड़ा (पजाबी भाषी गाव) क्योंकि उन ९५ ग्रामो के हरयाणा की सीमा से जुड़ने मे रुकावट है, इसलिये ये ९५ गांव सीमा समायोजन के लिये दिये जानेवाले ग्रामों से अलग श्रेणी के गांव हो जाते है और इसीलिये यही गाव हरयाणा को चण्डीगढ़ के बदले मे दिये जाने चाहियें।

सीमा समायोजन के लिये दिये जानेवाले गांव चण्डीगढ के बदले मे दिये जानेवाले ग्रामों से अलग होने चाहियें, यह बात वैंकटरमैया आयोग ने भी मानी है, इसीलिये उस आयोग ने हरयाणा की सीमा से जुड़े हुये ३२ हिन्दीभाषी गांव चण्डीगढ़ के बदले में देने से इन्कार कर दिया और सिफारिश की कि इन ग्रामो को छोड़कर (जो सीमा समायोजन के लिए वैसे ही हरयाणा को मिलनेवाले हैं) ७०,००० एकड़ भूमि के दूसरे गांव देने पड़ेंगे। मेरे इस तर्क को उस समय के प्रधानमन्त्री श्री राजीव गान्धी ने ठीक माना और इसलिये चौ० बंसी लाल को कहा कि शायद ये फाजिल्का अबोहर के हिन्दीभाषी गांव ही हरयाणा को देने पड़ेंगे। इसके बाद ही चौ० बन्सीलाल ने अपना रुख बदला और वैंकटरमैया की सिफारिश जिसका वे समर्थन मुख्यमन्त्री बनते ही कर चुके थे उससे हटकर बात करने लगे।

कोई भी प्रधानमन्त्री हो या सरकार हो इस सच्चाई से नहीं भाग सकते, और यदि हरयाणा डटकर अपने अधिकारों की रक्षा के लिये खड़ा हो जाये तो ये गांव हरयाणा को देने ही पड़ेगे। यह चुनौती आने वाली है और सभी हरयाणावासियों को एकजुट होकर तथा दलगत राजनीति से ऊपर उठकर अपनी सब प्रकार से उचित मांग को मनवाना चाहिये। यह दोहराना आवश्यक है कि चण्डीगढ के बदले हरयाणा को फाजिल्का अबोहर के गांव देने की पेशकश स्वयं अकालियों के नेता संत फतेहसिंह ने की थी, जिसके कारण श्रीमती इन्दिरा गांधी ने जनवरी १९७० में अपना निर्णय दिया था। सन्त लोंगोवाल भी अपनी हत्या से एक सप्ताह पहले सिद्धान्त रूप में इस निर्णय को मान चुके थे और उन्होंने सार्वजनिक रूप से इसकी घोषणा फिरोजपुर में की थी।

हरयाणा की वर्तमान सरकार तो बनी ही न्याययुद्ध के आन्दोलन के फलस्वरूप और उसमें फाजिल्का अबोहर और रावी व्यास के पानी के मुद्दे ही न्याययुद्ध के प्राण थे। इसलिये इस सरकार को तो आगे बढ़कर इस चुनौती का मुकाबला करना ही चाहिये और मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह अपना कर्तव्य निभायेगी।

रावी व्यास का पानी :-

रावी व्यास के पानी के बारे में इराडी पंचाट का फैसला अप्रैल १९८७ में आगया था। मार्च १९७६ के फैसले के अनुसार हरयाणा को ३५ लाख एकड़ फुट के अलावा जितना भी अतिरिक्त पानी आगे चलकर उपलब्ध होगा वह मिलेगा और पंजाब को किसी हालत में ३५ लाख एकड़ फुट से अधिक पानी नही मिलेगा। परन्तु इराडी पंचाट ने १८ लाख फुट से कुछ अधिक अतिरिक्त पानी उपलब्ध होने की संभावना के आधार पर पंजाब को ५० लाख एकड़ फुट से कुछ अधिक और हरयाणा को ३८ लाख २० हजार एकड़ फुट पानी दिया है, परन्तु यह स्पष्ट नही किया कि यदि अतिरिक्त पानी इससे कम मिले या बिल्कुल न मिले उस अवस्था में किसको कितना मिलेगा? वर्तमान हरयाणा सरकार ने १९८७ में ही इराडी पंजाट के पास पंजाब की तरह ही निगरानी की हुई है। तीन वर्ष बीतने पर भी उसका अभी तक कोई फैसला इराडी पंचाट ने नहीं किया है।

हरयाणा सरकार को सक्रिय होकर निगरानी का फैसला शीघ्र से शीघ्र करवाना चाहिये। राजीव लौंगोवाल समझौते के अन्तर्गत १५ अगस्त १९८६ तक सतलुज यमुना लिंक नहर पंजाब सरकार को बना देनी चाहिये थी, परन्तु उसके बाद भी ४ साल बीतने पर अभी लिंक नहर के निर्माण का काम अधूरा पड़ा है और मार्च १९९१ तक बनाने के वायदे पर भी भरोसा नहीं जमता। उधर कभी कांग्रेसी और कभी अकाली लिंक नहर में मिट्टी डालकर नहर को भरने की बात एक दूसरे से बढ़ चढ़कर करते रहते हैं। कभी राजनैतिक नेता और कभी पंजाब के पूर्व इन्जीनियर श्री पालसिंह ढिल्लो आदि रावी व्यास का पानी हरयाणा को दिये जाने से इन्कार करते रहते हैं। अकाली तो स्वयं आयोग और पंचाट की बातें करते हैं और फिर उनके फैसलों को मानने से इन्कार कर देते हैं। यह तो उनके लिए छोटी बात है, वे तो स्वयं अपनी पेशकश पर किये गये फैसलों, अकाल तख्त पर बैठकर किये गये फैसलों और अपने हस्ताक्षरों के द्वारा माने

(शेष पृष्ठ ६ पर)

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य-२५ रुपये | विदेश मे ३० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४८, अंक ४२, रविवार, १३ अक्तूबर, १९८५ दूरभाष : ३४३७१८
आजीवन सदस्य-२५१ रु० | इस अंक का मूल्य—६० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८५, दयानन्दाब्द १६० आश्विन कृष्णा १४, २०४२ वि०

हिन्दुओं की संख्या घटी तो प्रदेश भारत से कटा

अल्पसंख्यकों के तुष्टिकरण के विरुद्ध 'संगम' का आह्वान

"इतिहास हमे सिखाता है कि देश जिस भाग मे भी हिन्दू अल्पसंख्यक हुए वह भाग हिन्दुस्थान से कट गया। यदि हम चाहते हैं कि इस देश की सीमाएं और अधिक छोटी न हो तो हिन्दुओं को सुसंगठित व शक्तिशाली हो कर अपने सामाजिक जीवन को निर्दोष बनाना होगा। हिन्दू नहीं बचा तो देश भी नही बचेगा।"

राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ के सर संघचालक श्री बालासाहेब देवरस ने, ये विचार 2 अक्तूबर को दिल्ली के रामलीला मैदान में आयोजित विशाल हिन्दू संगम में व्यक्त किए। उन्होने कहा कि हिन्दू सदा से सम्प्रदाय-निरपेक्ष रहे हैं, उन्होंने कभी किसी की उपासना पद्धति में दखल नहीं दिया। इस देश मे कभी अल्पसंख्यकों के साथ अन्याय नही हुआ इसलिए अल्पसंख्यक आयोग की देश को आवश्यकता नही है। यदि किसी आयोग के गठन की आवश्यकता है तो वह है 'मानवाधिकार' आयोग।

मुस्लिम शरियत

सर्वोच्चन्यायालय द्वारा तलाकशुदा मुस्लिम महिला को जो निर्वाह भत्ते का अधिकार दिया गया है उस सम्बन्ध में मुस्लिम सम्प्रदाय द्वारा उठाये गए बवंडर को अनुचित बताते हुए उन्होने कहा कि अल्जीरिया, मोरक्को आदि मुस्लिम देशो तक में शरियत-कानून में आवश्यक परिवर्तन किए जा रहे हैं, फिर भारत मे यह विरोध क्यो ?

आरक्षण नीति

आरक्षण की नीति के विषय मे उनका कहना था कि स्वतन्त्रता के 38 वर्ष बाद भी यदि आरक्षण मागने वालो की संख्या बढ रही है तो सात पंच-वर्षीय योजनाओं की अवधि मे सरकार क्या करती रही। आरक्षण की भी यदि आज किसी को आवश्यकता है तो वह केवल वनवासी और आदिवासी वर्ग के लोगो को ही है।

आतंकवाद

श्री देवरस ने कहा कि आज देश बाहर और भीतर दोनो ओर संकट से घिरा हुआ है। देश के भीतर अलगाववादी और आतंकवादी तत्व सक्रिय हैं उन्हे निर्मूल करने के लिए हमें संगठित होना ही होगा। पंजाब मे जो कुछ विगत वर्षों मे बीता वह एक दुःस्वप्न था। हमे खेद है कि दिग्भ्रमित युवको द्वारा पजाब मे हिन्दुओ की निर्मम हत्याये की गई और वहा के अधिसंख्य लोगो ने इस की निन्दा भी नही की। भविष्य मे ऐसा न होने पाए और देश की एकता स्थिर रहे, सरकार को ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए।

अनुच्छेद 370

जम्मू काश्मीर का उल्लेख करते हुए उन्होने कहा कि वहा सविधान के अनुच्छेद 370 मे तुरन्त परिवर्तन करने की आवश्यकता है। उन्होने स्मरण कराया कि कालान्तर मे स्वय प० नेहरू इस विषय मे चिन्ता व्यक्त करने लगे थे।

अनुच्छेद 370 के कारण ही पंजाब, मिजोरम अथवा नागालैंड विशेषाधिकारो की माग करते हैं।

पोप को निमन्त्रण ?

पोप की प्रस्तावित भारत यात्रा का उल्लेख करते हुए उन्होने कहा कि सरकार द्वारा पोप को आमन्त्रित किया जाना गलत परम्परा आरम्भ करना है। क्या कभी किसी देश ने सरकारी तौर पर हमारे धार्मिक नेताओ अथवा शकराचार्यों को आमन्त्रित किया है ? उन्होने आशा व्यक्त की कि भारत मे आकर पोप सर्वधर्म समभाव का ही प्रचार करेंगे और किसी धर्म विशेष की विशिष्टताओ का उल्लेख करना उनके लिए अनुपयुक्त होगा।

यह कैसा 'सेक्युलरिज्म' !

ओखला में गोविन्द वल्लभ पंत पालीटेकनीक दिल्ली प्रशासन के तहत चलता है। इसकी ओर से अगस्त में एक विज्ञापन छपा कि कम्युनिटी पालीटेकनीक स्कीम में 19 अगस्त तक केवल अल्पसंख्यक समुदाय के युवक दाखिला के लिए दरखास्त दें। दाखिला फार्म प्राचार्य के दफ्तर से मुफ्त बाँटा गया।

लोकसभा चुनावो को मद्दे नजर रखकर इंका ने तमाम वर्गों को पर एहसान जताने के इरादे से जो सुविधाएं दीं उनमें एक यह भी थी। अल्पसंख्यों को शासक दल के हक मे करने के लिए ऐसे पालीटेकनीकों की योजना (पूर्व प्रधान मंत्री) के निर्देश पर तैयार की गई थी। लेकिन इस काम मे भी कई कागजी चूकें सामने आई हैं।

शिक्षा मंत्रालय के दस्तावेज बताते है कि 11 मई 1983 को प्रधानमंत्री ने अल्पसख्यको को टेकनीकल शिक्षा देने के लिए विशेष प्रबंध के निर्देश दिए। शिक्षा मत्रालय मे इस पर अमल के लिए एक कार्यकारी दल बनाया। "चुनावी पालीटेकनीको" के लिए हुई बैठक मे कुछ अफसरो ने यह मुद्दा उठाया कि नए संस्थान अखिल भारतीय प्राविधिक शिक्षा परिषद की सिफारिश पर ही खोले जाने चाहिए। पालीटेकनीक राज्य सरकार के दायरे में आते हैं। पर इन बातों को दरकिनार कर दस पालीटेकनीक खोलने की योजना बनाई गई। हालांकि शिक्षा मत्रालय की कम्युनिटी पालीटेकनीक स्कीम के तहत गावों के नजदीक 36 पालीटेकनीक पहले से ही चल रहे है। कोई उनमें भी दाखिला पा सकता है।

कार्यकारी दल ने जिन दस पालीटेकनीको की सिफारिश की उनमे दिल्ली में दो हैं। बाकी मुरादाबाद, अलीगढ, लखनऊ, अजमेर, भोपाल, राची, गोआ और रामनाथपुरम मे खोले गए। केन्द्र सरकार ने इन्हे तीन-तीन लाख रुपए का अनुदान दिया। इन सस्थानो को अनुदान पहले जारी किया गया और दिशा-निर्देश बाद मे शिक्षा मंत्रालय के पत्र संख्या एफ 10-53/84-टी-3 से 1 अक्तूबर 1984 को अनुदान दिल्ली के दोनो पालीटेकनीकों को जारी किए गए। लेकिन इन्हें दिशा-निर्देश 29 नवबर को भेजे गए। साफ है कि कागजी खानापूरी बाद मे हुई।

इस दिशा-निर्देश से पहले ही संस्थानो मे दाखिले किए गए। शिक्षा मंत्रालय ने 18 और 19 सितबर 1984 को सस्थानो के प्राचार्यों की बैठक शास्त्री भवन में बुलाई। उसमे सारी बाते मौखिक तौर पर तय की गई। यह भी कि इनमे दाखिले इंका नेताओ की सिफारिश पर किए जाएं। प्राचार्यों को निर्देश दिए गए कि वे मुसलिम सामाजिक और धार्मिक नेताओ की भी दाखिले में मदद लें। क्या तकनीकी शिक्षा पाने का अधिकार भी मुस्लिम छात्रो के लिए सुरक्षित है ? भारत सरकार की यह कैसी संप्रदाय-निरपेक्षता है ! क्या इसी तरह 'सेक्युलरिज्म' के सिद्धान्त का पालन होना है ?

परामर्शदाता-अमर स्वामी सरस्वती | सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

पूर्वाग्रह रहित सत्यान्वेषी में देवता निवास करते हैं

—मनोहर विद्यालंकार—

नम: सखिभ्य: पूर्वसद्भ्यो नम साकनिषेभ्य । युञ्जे वाचं शतपदीम् ॥
साम १८२८

युञ्जे वाच शतपदी गाये सहस्रवर्तनि । गायत्र त्रैष्टुभं जगत् ॥
साम १८२९

गायत्रं त्रैष्टुभ जगत् विश्वारूपाणि संभृता । देवा ओकासि चक्रिरे ॥
साम १८३०

ऋषि: —काश्यपा असित मृगा । देवता—विश्वेदेवा. । छन्द :—गायत्री । गणेश्वरानन्द ।

ऋषि .—देवता-अग्नि . । छन्द ·—गायत्री । मानव लेकर ।

शब्दार्थ—(जगत) यह जगत् (गायत्रम्) पृथ्वी लोक (त्रैष्टुभम्) अन्तरिक्ष लोक से और (जगत्-जागतम्) द्युलोक मिलकर पूर्ण इकाई बनता है, इस जगत् मे (विश्वा रूपाणि सभृता) रूप धारण करने वाले सब पदार्थों यथा-स्थान रखे हुए हैं। और (देवा) सूर्य चन्द्र, अग्नि आदि सब देव (ओकासि चक्रिरे) अपने-अपने घर बनाकर स्थित हैं।

(सहस्रवर्तनि जगत्) सहस्रो मार्ग वाले इस त्रिविध जगत् में जब मे (शपदी वाचं युञ्जे) असख्यात मार्गो और उन पर चलने का ज्ञान देने वाली दिव्य वेदवाणी का उपयोग करता हू तभी (गाये) उस सर्वाधार सनातन अग्नि के गुणो और कृतियो को समझकर उनका गान करता हूं और उसमे निर्दिष्ट उपदेशो तथा कर्त्तव्यों का अनुगमन-आचरण करता हूं।

(वाच शतपदी युञ्जे) वरदा वेदवाणी का उपयोग करने के अनन्तर अपनी क्षमता को जानकर (पूर्वसद्भ्य सखिभ्य) अपने समान गुण वाले पूर्ववर्ती सखाओ के प्रति (नम.) आभार प्रदर्शनार्थ प्रणत होता हू। और (साक निषेभ्य. सखिभ्य:) अपने साथ काम करने वाले सहयोगियो तथा समकालीन जनो के प्रति (नम.) नम्रता पूर्वक अन्नदान द्वारा सहयोग करता हू तथा विघ्नकारको और विघ्नों को (नम) वज्रप्रयोग द्वारा समाप्त करता हू। परिणामत (देवा ओकांसि चक्रिरे) सब देवता या दिव्यगुण मुझमे आकर अपना निवास बनाते है।

निष्कर्ष—1. यह सम्पूर्ण जगत् और इसके सब पदार्थ त्रिविध गुणो का समन्वय हैं, क्योकि इनका मूल कारण प्रकृति तीन गुणो वाली है। इसलिये इसे गायत्र त्रैष्टुभं जगत् कहा है। यहा जगत् शब्द रखने का कारण यह है कि इससे जगत् और जागतम् दोनो का ग्रहण किया जा सके।

जगत् मे 84 लाख योनिया हैं, तो जीवन के मार्ग भी दो चार न होकर असख्यात हैं। प्रत्येक योनि और उसके जीवन के अनुरूप समस्त पदार्थ इस जगत् मे यथा स्थान रखे हुए हैं, और प्रत्येक जीव उनका अपने सामर्थ्य और योग्यता के अनुसार उपभोग करता है।

इन पदार्थों के अतिरिक्त अग्नि, वायु, जल, सूर्य, चन्द्र आदि देव भी अपने देव भी अपने स्थानो मे रहते हुए सब प्राणियो को लाभ देते रहते हैं।

मनुष्य समाज भी एक पृथक् जगत् है। इसमे ब्राह्मण, राजन्य, और वैश्य ही गायत्र, त्रैष्टुभ और जागत है। विद्वान्, सैनिक और कृषक तथा श्रमिक सब देव अपने-अपने स्थान मे बैठे हुए समाज को लाभ पहुचा रहे हैं।

शरीर भी स्वतन्त्र रूप मे जगत् है। प्राण, जल, जाठराग्नि तथा आस आदि रूप धारण करके सब देव इसमे निवास किये हुए हैं। और शैशव, यौवन, वार्धक्य अथवा प्रात: कालीन, माध्य दिन और सायकालीन सवन ही गायत्र, त्रैष्टुभ और जागत है।

2. जब मनुष्य भगवान् द्वारा प्रदत्त शतपदी वरदा वेदवाणी का उपयोग करता है, तभी उसमे देवो, दिव्य गुणो का निवास होता है। वह भगवान् की अपरिमितता, शक्ति और सृष्टि को पहचान कर उसकी स्तुति करता है, उसका सखा बनने के लिए इष्ट गुणो को अपने आचरण द्वारा जीवन मे उतारने का प्रयत्न करता है।

स्तुति और तदनुकूल प्रयत्न के अनन्तर परमात्मा की अहेतुकी कृपा स्वयमेव दृष्टि गोचर हो जाती है। उसकी सब तरह से रक्षा करती है। उसे दूसरो के लिये अग्नि के समान प्रकाश देकर मार्ग दर्शन करने वाला बनाती है।

3. वेद वाणी के उपयोग और दिव्यगुणो के धारण के बाद ही मनुष्य नम: (यथायोग्य व्यवहार) करने मे समर्थ बनता है। क. बडो के प्रति पूज्य भाव और आभार मान कर सदा नम्र बने रहना, ख. समवयस्को तथा अभाव ग्रस्तों को अन्नदान, धनदान तथा दूसरी तरह सहयोग करना और ग. विघ्नो तथा विघ्न कारक दुष्टो का वज्रप्रहार द्वारा नाश करना ही यथायोग्य व्यवहार है, और ये तीनो अर्थ नम: शब्द मे निहित हैं।

विशेष—इन मन्त्रो का ऋषि प्राय: पुरानी सहिताओ तथा भाष्यो में नहा मिलता है। स्वामी गणेश्वरानन्द जी ने अपने भाष्य मे 'काश्यपाः असित्तमृगा दिया है। देवता-विश्वेदेवा लिखा है। सातवलेकर जी ने देवता-अग्नि. छापा है, और ऋषि छापा ही नही है। छन्द तो गायत्री है ही। इस मन्त्र के ऋषि, देवता और छन्द शब्दो का अर्थ मिलकर सकेत करते है कि—

सब प्रकार के पूर्वाग्रहो से मुक्त (असिता:) रहकर, विचक्षणता के साथ सब वस्तुओ का निरीक्षण करते हुए "काश्यपा." जो सत्य के अन्वेषण मे मे लगे रहते हैं (मृगा), उन्ही पर विश्व-की दिव्य शक्तिया (विश्वेदेवा) कृपा करती हैं; और वे अग्नि के समान स्थान (सखा) बन कर, जिज्ञासुओ का मार्ग दर्शन करते हुए [अग्नि] प्रभु के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये उसका स्तुतिगान करते है, एव प्रभु के गुणो को अपने जीवन मे चरितार्थ करने का प्रयत्न करते हैं। प्रभु उनकी सब प्रकार से रक्षा करते है। पता—522, ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली-6

शराब बन्दी में सफलता

आर्य प्रतिनिधि हरयाणा के उपदेशको तथा भजनोपदेशको ने प्रान्त भर मे घूम-घूम कर शराब के सेवन विरुद्ध प्रचार किया। आर्यसमाजो ने अपने उत्सवो पर शराब बन्दी सम्मेलन का आयोजन करके शराब के विरुद्ध जन मत तैयार करने का प्रयत्न किया। बालावास शराब के ठेके के सामने धरना लगाया। इस अवसर पर स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने स्वयं उपस्थित होकर आर्यजनता का मार्ग दर्शन किया। दूर-दूर आर्यसमाज के प्रचारक साधु तथा वानप्रस्थी वहा पहुचने लगे और शराब की हानियो से ग्राहकों को सावधान किया। फलस्वरूप शराब की बिक्री बन्द हो गई।

जिला सोनीपत के दहिया गोत्र के प्रसिद्ध ग्राम नाहरी मे भी वहां के आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओ ने भी पंचायत के सहयोग से शराब के ठेके पर इसी प्रकार शान्तिपूर्वक धरना दिया सभा के नवयुक्त विद्वान् उपदेशक ब्रह्मचारी महेन्द्र सिंह ने ग्राम झाड़सा (जिला गुड़गांव) मे सहयोगियों के साथ शराब के ठेके पर धरना देने का कार्यक्रम बनाया इसमे भी आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं को तीसरी बार सफलता मिली।

—सत्यवीर शास्त्री, दयानन्द, मठ. रोहतक-124001

विश्व प्रसिद्ध मन्दिर मे बम विस्फोट

इंडोनेशिया मे बोरो बुदूर बौद्ध मन्दिर विश्व का एक अत्यन्त प्राचीन प्रसिद्ध मन्दिर तथा भारतीय कला, सस्कृति और विरासत का अप्रतिम प्रतीक है। हाल ही मे कुछ उग्रपंथियो ने बम विस्फोट कर इस मन्दिर के नौ विशाल स्तूपो को ध्वस्त कर दिया। विश्व हिन्दू परिषद ने एक प्रेस वक्तव्य जारी कर इस बर्बर कृत्य की निन्दा की है और इन्डोनेशिया सरकार से अपील की है कि वह इस मामले की जाँच करे तथा ऐसा जघन्य अपराध करने वाले व्यक्तियो को कठोर दण्ड दे। यूनेस्को की ओर से इस विश्व प्रसिद्ध मन्दिर की मरम्मत का काम किये जाने की सम्भावना है।

सुभाषित

ईश्वर की सिद्धि

दर्शनों में ईश्वर की सिद्धि पांच प्रकारों से की है, वे प्रकार निम्न हैं —

[1] जीवों के कर्मों का कोई फलप्रदाता होना चाहिए।
[2] समस्त जगत् का ज्ञाता "सर्वज्ञ" होना चाहिए।
[3] सर्व जगत् का कर्ता "सर्वकर्ता" होना चाहिए।
[4] वेद शास्त्र में ईश्वर का वर्णन है।
[5] सर्वदा सर्वथा प्रत्यक्ष सत्ता ईश्वर ही है।

"ईश्वर ही कर्मफल देने वाला है, अन्य नहीं"

क्योंकि—

[1] जीव स्वयं अनिष्ट फल भोगने को प्रवृत्त नहीं होता और इष्टफल थोड़े कर्म से अधिक लेना चाहता है।

[2] प्रकृति भी कर्मफल नहीं दे सकती उसके जड़ होने से, जड वस्तु फल के देश, काल, परिमाण और स्वरूप को जानने मे समर्थ नही हो सकती।

[3] कर्म भी स्वयं फल नही भुगा सकता क्योकि वह अस्थिर है, चल है, अपने क्षण के अनन्तर नही रहता।

[4] फल तो कर्म के पश्चात् ही मिल सकता है, नष्ट या मृत वस्तु सुख दु:ख फल देने मे समर्थ नहीं। (स्वामी ब्रह्ममुनिकृत दार्शनिक अध्यात्म-तत्व से)।

—प्रेषक :—प्रा धर्मेन्द्र धीग्रा, ओंकार कुंज
खारीवाव रोड, बडोदरा—390001

सम्पादकीयम्

इक्कीसवीं सदी का स्वर्ग

चिरकाल से मनुष्य जाति को स्वर्ग की कल्पना मुग्ध करती रही है। जो सुख और ऐश्वर्य मनुष्य इस पृथ्वी पर प्राप्त करना चाहता है और प्राप्त नहीं कर पाता, उसे यथार्थ में बदलने के लिए उसने स्वर्ग की कल्पना की और स्वर्ग का ऐसा मनमोहक चित्र खींचा कि आम आदमी भी उससे आकर्षित होकर ऐसे स्वर्ग का प्रलोभन देने वाले आचार्यों के पीछे आंख बन्द करके चल पड़ा।

एक समय ऐसा भी था जब ईसाई पादरी अपने भक्तों से स्वर्ग के नाम हुण्डी लिखवाया करते थे। वे अपने भक्तों से कहते थे कि तुम को स्वर्ग में ऐश और आराम के जो-जो साधन चाहिए उनकी सूची बनाओ और इस लोक में ऐश के उन साधनो को प्राप्त करने के लिए जितना पैसा खर्च होता है, वह सारा पैसा चर्च में जमा करवा दो। पादरी बाकायदा उस राशि की हुण्डी देगा। हुण्डी की एक नकल चर्च मे रखी जायेगी और जब वह अमुक धर्म का अनुयायी दफनाया जायेगा तब ताबूत मे उस हुण्डी की दूसरी नकल उस मृत व्यक्ति के सिरहाने रखी जायेगी। आखिर कयामत का दिन आयेगा। तब सब मुर्दे कब्रों में से निकल कर खुदा के सामने हाजिर होंगे। उनके हाथ में अपने सिरहाने रखी हुण्डी की नकल होगी। वह नकल खुदा के सामने पेश की जायेगी और खुदा उस हुण्डी के अनुसार उस श्रद्धालु धार्मिक भक्त के लिए उन सब चीजों की व्यवस्था स्वर्ग में कर देंगे जिनके लिए चर्च में पैसा जमा करवाया जा चुका है।

बाइबिल में, कुरान में, या पुराणों में स्वर्ग का जैसा वर्णन आता है उनमें विशेष अन्तर नहीं है। उस स्वर्ग की प्राप्ति के लिए नाना सम्प्रदायों ने अपने भक्तो के लिए तरह-तरह के कर्म काण्डों की और नियम-कायदों की व्यवस्था की है। इस स्वर्ग के प्रलोभन मे ही भक्त लोग अनेक प्रकार की तपस्या और जटिल कर्म-काण्ड की विधियों को भी विधान के अनुसार पालन करने का पूरा प्रयत्न करते हैं। जिन लोगों ने स्वर्ग की कामना से यज्ञ का विधान किया था, शायद उन याज्ञिकों के मन में भी किसी ऐसे स्वर्ग की कल्पना रही होगी। ऐसा लगता है कि वही कल्पना कालान्तर में पुराण, कुरान और बाइबिल में रूपान्तरित होती हुई चलती चली आई। शायद इस धरा पर जीवन संघर्ष से घबरा कर और अल्प श्रम से अधिकतम लाभ प्राप्त करने की पलायनवादी मानसिक वृत्ति के कारण मनुष्य जाति में स्वर्ग प्राप्ति की यह लालसा बद्धमूल होती चली गई।

इक्कीसवीं सदी का स्वर्ग कैसा होगा इसकी कल्पना वैज्ञानिक और साहित्यकार उपन्यासकार कर पायें या न कर पायें, पर आचार्य रजनीश ने ऐसा स्वर्ग इस धरा धाम पर ही तैयार कर दिया है। अब से 4 वर्ष पूर्व, जब पुणे में उनके आश्रम का विरोध सीमा पार कर गया, राज्य सरकार की भी उन पर वक्र दृष्टि हो गई, स्वयं उनके आश्रम में ही उनके अनुयायियों ने बगावत कर दी और उन पर प्राणघातक हमला तक हो गया, तब वे एक दिन चुपचाप भारत छोड़कर चले गये। कहां? पहुंचे अमेरिका। अपने कुछ अनुयाइयों के साथ जिस स्थान पर उन्होंने शरण ली उस स्थान मे भेड़ पालक ईसाइयों का बाहुल्य था। उन ईसाई मतावलम्बी सीधे-सादे देहाती लोगों ने साक्षात् भगवान को अपने बीच पाकर अपने आप को धन्य माना होता। पर ऐसा नहीं हुआ। जिस प्रकार पुणे वासियों ने इस भगवान का अपने यहां जीना दूभर कर दिया, उसी प्रकार उस देहाती बस्ती के लोगों ने भी इस भगवान की असलियत को पहचान लिया और वहां भी उनको नहीं रहने दिया। तब भगवान ने सघन रेगिस्तानी प्रदेश में, पोर्ट लैण्ड से 200 मील दूर, 64 हजार एकड़ का एक भूमि खण्ड खरीदा और उसमें रजनीश पुरम् नामक नया नगर आबाद किया। इसी का दूसरा नाम ओरेगन है।

आचार्य रजनीश ने इसी नये नगर को इस सदी का नहीं, बल्कि अगली सदी का स्वर्ग बनाने का प्रयत्न किया है। ऐसा स्वर्ग जिसकी कल्पना बड़ी दिमागी उड़ान भरने वाले लोगो के लिए भी मुश्किल होगी। इस नगर के निर्माण पर भगवान रजनीश ने 15 करोड़ डालर खर्च किये हैं और प्रति वर्ष इस पर लगभग 5 करोड़ डालर और खर्च होता है। इस नगर में रजनीश के अनुयायियों के सिवाय कोई और नहीं रह सकता। लगभग 5 हजार चेले-चेलियों के साथ भगवान यहां विराजते हैं।

स्वर्ग सुख की कल्पना करने वालों के लिए इतना बता देना ही काफी है कि यहाँ 5 सितारो वाले नहीं बल्कि 6 सितारो वाले होटल मौजूद हैं। शानदार जलपान गृह हैं। अत्याधुनिक फैशन की पोशाकें तैयार करने वाले डिजाइनर हैं, नग्न बस्तियां हैं, डिस्को नृत्यो की व्यवस्था है और काम वासना की तृप्ति के सब साधन सुलभ हैं। सही मायनों में 'कामरूप' प्रदेश कोई है तो यही है। यही ऐसी विशेषता है जिसके कारण दूर-दूर से चेले-चेलिया बंधे हुए यहा चले आते हैं। भगवान के ठाट-बाट का जहा तक प्रश्न है, उनके पास 5 हवाई जहाज हैं और 91 रोल्स रोयस कारें हैं (रोल्स रोयस कार सबसे महगी मानी जाती है)।

परन्तु इस स्वर्ग की एक विचित्रता भी है। सब निवासी संन्यासी हैं या संन्यासिनिया हैं। सब महगे गुलाबी परिधान पहनते हैं और सिर पर चमकदार नीले रंग की टोपी धारण करते हैं। हरेक के गले मे भगवान रजनीश के नाम के ताबीज वाली माला है। भले ही इन चेले-चेलियों की आंखो में काम वासना झलकती हो, परन्तु "रजनीश पुरम्" की रक्षा के लिए जिस प्रकार की किले बन्दी की गई है वह भी इन संन्यासियों के माध्यम से ही की गई है। संन्यासी और हाथ में बन्दूक? पर "रजनीश पुरम्" की यही विशेषता है। सारे नगर में क्लोज सर्किट के टेलीविजन लगे हुए हैं। सब तरफ निगरानी के लिए चौकिया बनी हुई हैं। कोई भी यात्री यदि वहां जाना चाहे तो बंदूक धारी संन्यासियों के पहरे में ही उसे जाना पड़ता है और यह पहरेदार एक क्षण के लिए भी दर्शक का साथ नहीं छोड़ते। मशीनगनों से लैस हैलिकोप्टर लगातार ऊपर घूमते रहते हैं। स्थान-स्थान पर पिल बाक्स बने हुए हैं और सारे नगर के चारों ओर कांटेदार तारें लगी हुई हैं, जिनमें निरन्तर बिजली की धारा प्रवाहित होती रहती है। उस तार को छूने का अर्थ है क्षण भर में मौत का आह्वान। इतनी तैयारी किस लिए है? यह सारा एक जासूसी उपन्यास जैसा दृश्य लगता है।

जब से पुणे से पलायन किया तब से पिछले चार वर्षों में रजनीश बिल्कुल अलग थलग रहे। कहा जाता है कि उनके गले में कैंसर था। उसीका इलाज करवाने अमेरिका गये थे। परन्तु यह निश्चित है कि पिछले 4 वर्षों से उनका बोलना बन्द था। किसी से बात नहीं करते थे। अपने निकटतम व्यक्तियों से भी नही। दर्शन भी सर्वथा बद। पर अब 4 साल के बाद वे बोले हैं और बोलते ही पत्रकारो के समक्ष उन्होने घोषणा की है कि मैं भगवान नहीं हूं। मेरा कोई वाद नहीं है। इससे पहले तो यह भी खबर थी कि वे अपना अलग "रजनीश-सम्प्रदाय", अलग धर्म पुस्तक, अलग चर्च और अपने अनुयाइयों के लिए बिल्कुल एक अलग धार्मिक-विधान तैयार कर रहे हैं। पर अब अचानक उन्होंने स्वयं अपने पुराने रिकार्ड पर पानी फेर दिया।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

महर्षि दयानन्द की दृष्टि में वैदिक वाङ्मय का महत्व

—आचार्य भद्रसेन, होशयारपुर—

महर्षि दयानन्द की सारी शिक्षा संस्कृत भाषा मे हुई और उन्होने अपने सभी ग्रन्थों को संस्कृत के आधार पर ही लिखा है। उनकी हिन्दी भी सस्कृत की अनुवर्तिनी है। महर्षि की यह दृढ धारणा थी, कि जीवनोपयोगी सभी प्रकार का ज्ञान संस्कृत शास्त्रो मे प्राप्त होता है। तभी तो वे लिखते हैं: -

"(पूर्व) सस्कृत विद्या में पूरी-पूरी राजनीति है वा अधूरी ? (उत्तर०) पूरी है, क्योकि जो जो भूगोल मे राजनीति चली और चलेगी वह सब संस्कृतविद्या से ली है।" समुल्लास 6, पृ० 150

(स्वा० वेदानन्द सम्पादित सत्यार्थ प्रकाश वृहत्सस्करण)

"और जितनी विद्या भूगोल मे फैली है वह सब आर्य्यावर्त देश से मिश्रवालो, उन से यूनानी, उन से रोम और उस से यूरोप देश मे, उस से अमेरिका आदि देशो मे फैली है।" स०11,पृ०238

"देखो ! कि एक 'जेकालियट' साहब पैरिस अर्थात् फ्रास देश निवासी अपनी 'बायबिल इन इण्डिया' मे लिखते है कि सब विद्या और भलाईयो के भण्डार आर्यावर्त देश से फैले हैं।" स० ।। पृ० 239

"दारा शिकोह बादशाह ने भी यही निश्चय किया था कि जैसी पूरी विद्या संस्कृत मे है वैसी किसी भाषा में नही। वे ऐसा उपनिषदों के भाषान्तर मे लिखते है कि मैने अर्बी आदि बहुत सी भाषा पढी परन्तु मेरे मन का सन्देह छूट कर आनन्द न हुआ। जब सस्कृत देखा और सुना तब निस्सन्देह होकर मुझ को वडा आनन्द हुआ।" स० 11 पृ० 239

महर्षि ने जहा संस्कृत की भर पूर प्रशसा की है वहा उनके ग्रन्थों को पढने से यह भी स्पष्ट होता है कि वे सस्कृत साहित्य की प्रत्येक पुस्तक और उन की प्रत्येक पक्ति को सत्य नही मानते थे। महर्षि ने सस्कृत के अनेक ग्रन्थो और उनके विचारो की तीखी आलोचना भी की है तथा ऐसे ग्रन्थो को सर्वथा त्याज्य कहा है। 'भ्रान्तिनिवारण' में महर्षि ने स्पष्ट लिखा है, कि "मैं अपने निश्चय और परीक्षा के अनुसार ऋग्वेद से लेके पूर्व मीमासा पर्यन्त अनुमान से तीन हजार ग्रन्थों के लगभग मानता हू।" (दयानन्दीय लघु ग्रन्थसग्रह पृ० 198)

ग्रन्थों की सत्यता और असत्यता के परीक्षण के सम्बन्ध मे महर्षि के ये शब्द विशेष ध्यान देने योग्य हैं। "अब जो जो पढना पढाना हो वह अच्छे प्रकार परीक्षा करके होना योग्य है।" स० 3, पृ० 53

इसी भावना से महर्षि ने सारे संस्कृत साहित्य को समीक्षा करके आर्ष ग्रन्थो को पढने पढ़ाने का विशेष निर्देश किया है। आर्ष ग्रन्थों का ही दूसरा नाम वैदिक वाङ्मय है। "अब पढने-पढाने का प्रकार लिखते है. प्रथम पाणिनि मुनिकृत शिक्षा जो कि सूत्र हैं ......। तदनन्तर व्याकरण अर्थात् प्रथम अष्टाध्यायी .... धातु पाठ अर्थ सहित। धातु पाठ के पश्चात उणादिगण ...। तदनन्तर महाभाष्य पढावें। ' व्याकरण को पढ़ के यास्क मुनिकृत निघण्टु और निरुक्त ''। तदनन्तर पिङ्गलाचार्य कृत छन्दोग्रन्थ, तत्पश्चात् मनुस्मृति, वाल्मीकीय रामायण और महाभारत '' तदनन्तर पूर्व मीमासा, वैशेषिक न्याय, योग साख्य और वेदान्त अर्थात् जहा तक बन सके वहा तक ऋषिकृत व्याख्या सहित अथवा उत्तम विद्वानो की सरल व्याख्यायुक्त छः शास्त्रो को पढ़ें-पढ़ावे। परन्तु वेदान्त सूत्रों के पढने से पूर्व ईश,केन कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, छान्दोग्य और बृहदारण्यक इन दश उपनिषदों को पढके...। पश्चात् चारो ब्राह्मण अर्थात् ऐतरेय, शतपथ, साम और गोपथ ब्राह्मणो सहित चारो वेदो को स्वर, शब्द, अर्थ, सम्बन्ध तथा क्रिया सहित पढना योग्य है।

इस प्रकार सब वेदो को पढ के आयुर्वेद अर्थात जो चरक, सुश्रुत आदि ऋषि मुनिकृत वैद्यक शास्त्र है, उन को अर्थ, क्रिया, शास्त्र, वेदन, भेदन, लेप, चिकित्सा, निदना, औषध, पथ्य, शरीर, देश,काल और वस्तु के गुण ज्ञान पूर्वक । तदनन्तर अर्थात् जो राज सम्बन्धी काम करना है '। गन्धर्व वेद कि जिसको गान विद्या कहते हैं। और नारद सहिता आदि जो जो आर्ष ग्रन्थ हैं उन को पढ़ें। ... अथर्ववेद जिस को शिल्प विद्या कहते हैं उस को पदार्थ, गुण विज्ञान, क्रिया कौशल, नानाविध पदार्थो का निर्माण, पृथिवी से ले के आकाश पर्यन्त की विद्या को यथावत् सीख के... ज्योतिष शास्त्र सूर्य सिद्धान्तादि जिस मे बीज गणित, अङ्क, भूगोल, खगोल और भूगर्भ विद्या है इस को यथावत् सीखें। तत्पश्चात् सब प्रकार की हस्त क्रिया, मन्त्रकला आदि को सीखें।" स० 3, पृ०. 62-66

ऋषि प्रणीत ग्रन्थों को पढ़ने पर ही महर्षि ने अत्यधिक बल दिया है। तभी तो लिखा है।—"ऋषि प्रणीत ग्रन्थो को इस लिये पढ़ना चाहिये कि वे बड़े विद्वान् सब शास्त्रवित् और धर्मात्मा थे और अनृषि अर्थात् जो अल्प शास्त्र पढ़े हैं और जिन का आत्मा पक्षपात सहित है उन के बनाये हुए ग्रन्थ भी वैसे ही हैं।" 3, 66

"क्योंकि जो महाशय महर्षि लोगो ने सहजता से महान विषय अपने ग्रन्थो मे प्रकाशित किया है वैसा इन क्षुद्राशय मनुष्यों के कल्पित ग्रन्थो मे क्योकर हो सकता है ? ऐसे लोगो का आशय जहा तक हो सके वहा तक कठिन रचना करनी जिस को बडे परिश्रम से पढ़ के अल्प लाभ उठा सके, जैसे पहाड़ का खोदना कौडी का लाभ होना। और आर्ष ग्रन्थो का पढ़ना ऐसा है कि जैसा एक गोता लगाना बहुमूल्य मोतियों का पाना। 3, 64

"सब ऋषि मुनि के किये ग्रन्थ हैं, इनमें भी जो जो वेद-विरुद्ध प्रतीत हो उस को छोड देना, क्योंकि वेद ईश्वर कृत होने से निर्भ्रान्ति स्वतः प्रमाण अर्थात् वेद का प्रमाण वेद से ही होता है। ब्राह्मण आदि सब ग्रन्थ परतः प्रमाण अर्थात् इन का प्रमाण वेदाधीन है।" 3, 66

इस सारे विवेचन से स्पष्ट होता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेद के महत्त्व को ध्यान में रख कर वैदिक वाङ्मय की ओर विशेष ध्यान आकर्षित किया है, क्योंकि इस वेद के अन्तः बाह्य स्वरूप को स्पष्ट किया गया है।

इक्कीसवीं सदी का ...... (पृष्ठ 3 का शेष)

अचानक यह परिवर्तन क्यो हुआ है, यह कहना मुश्किल है। परन्तु रजनीश के आश्रम में हमेशा उनकी संन्यासिनी शिष्याओ को लेकर बगावत होती रही है। पुणे मे जब माँ योग लक्ष्मी की जगह माँ आनन्दशीला को गद्दी पर बिठाया गया था, तब बगावत हुई थी और अब माँ शीला को हटाकर किसी और नई को गद्दी पर बिठाया गया है तब यह परिवर्तन हुआ है। आनन्दशीला को रजनीश पुरम् से निकाल दिया गया है या वह छोडकर चली गयी है। वह हमेशा अपने साथ रिवाल्वर रखती थी। कहा जाता है कि वह भगवान को मारने पर उतारू थी इसीलिए उसे आश्रम से निकाल दिया गया। वह बारंबार यूरोप के देशो की यात्रा करती थी और हर बार नशीली दवाइयों की तस्करी के आरोप मे हवाई अड्डों पर पुलिस उसकी तलाशी लेती थी। अब इस आनन्दशीला ने और उसके कुछ संगी साथियों ने भगवान पर अदालत में मुकद्दमा किया है जिसमे यह आरोप लगाया गया है कि करोडों रुपया जो भगवान को कर्ज के तौर पर दिया गया था वह उन्होने हड़प कर लिया है। इधर महर्षि महेश योगी पर भी उनके शिष्यो ने 9 करोड़ रुपए का दावा ठोका है।

क्या इक्कीसवी सदी इन भगवानों के लिए प्रलयंकारी सिद्ध होगी और रजनीश ने पहले ही इसलिए अपने भगवान के पद से त्याग पत्र दे दिया ? अब इस इक्कीसवी सदी के स्वर्ग का क्या होगा ?

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से कम नहीं

विश्व मानव परिषद लखनऊ के तत्वावधान में हिन्दी दिवस की पूर्व सध्या दिनांक 13 सितम्बर को उ० प्र० हिन्दी संस्थान लखनऊ में महर्षि दयानन्द सरस्वती का हिन्दी प्रसार मे योगदान विषय पर एक सगोष्ठी सम्पन्न हुई। प्रमुख वक्ता माननीय खाद्य एवं आपूर्ति मन्त्री उ० प्र० शासन श्री वासुदेव सिंह ने अपने भाषण मे कहा, "महर्षि दयानन्द देशों में भाषा का राष्ट्रीय करण करना चाहते थे। उनकी पैनी दृष्टि ने अनुभव किया कि जन भाषा की एकमात्र अधिकारणी हिन्दी ही है। उसे उन्होंने राष्ट्र भाषा के सिंहासन पर प्रस्थापित करते हुये एक भाषा और एक लिपि की आवाज उठाई उनका कार्य हिन्दी साहित्य को नये साचे में ढालने वाले भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र से कम न था गोष्ठी को डा० लक्ष्मी नारायण गुप्ता एवं डा० श्रीमती शान्ति देव बाला ने भी सम्बोधित किया। सगोष्ठी के अध्यक्ष डा० शिवमंगल सिंह सुमन अध्यक्ष उ० प्र० हिन्दी संस्था ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि उस युग के जितने भी महान व्यक्ति, लेखक एव कवि हुये हैं सभी ने महर्षि से प्रेरणा लेकर ही इतना ऊंचा स्थान प्राप्त किया है।

—जयदेव शर्मा मन्त्री।

भारत सरकार द्वारा रजि न २३२०७/७३   रजि न P/R1K ४६   फ्रम   [illegible]

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री सभामन्त्री   सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम ए   कार्तिक २०४७ वि०

वर्ष १७   अंक ४७   ७ नवम्बर १९९०   वार्षिक शुल्क २०)   आजीवन शुल्क २०१)   विदेश [illegible] पौंड   एक प्रति ७५ पैसे

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, प. जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ गोहाना रोड, रोहतक

साधारण सभा के सदस्यो की सेवा में वार्षिक साधारण सभा की बैठक का एजेण्डा

माननीय प्रतिनिधि महोदय, सादर नमस्ते ।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन दिनांक 25 नवम्बर, 1990 रविवार को प्रात. 11 बजे सभा कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक मे होना निश्चित हुआ है । सभा के प्रतिनिधियों से निवेदन है कि यथासमय पधारें ।

विचारणीय विषय :

1. गत वर्ष दिवगत हुए आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ताओ को श्रद्धाजलि ।
2. गत सभा अधिवेशन 21 मई 1989 की कार्यवाही की सम्पुष्टि ।
3. सभा कार्यालय, वेदप्रचार विभाग, सर्वहितकारी साप्ताहिक, आर्य विद्या परिषद्, गुरुकुल कुरुक्षेत्र, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर, दयानन्द धमार्थ औषधालय अम्बाला, महर्षि दयानन्द वैदिकधाम कुरुक्षेत्र आदि के गत वर्ष के कार्य वृत्तान्त तथा आय-व्यय की सम्पुष्टि एव आगामी वर्ष के प्रस्तावित आनुमानिक आय-व्यय (बजट) की स्वीकृति ।
4. वेदप्रचार, शराबबन्दी गोरक्षा तथा आर्यसमाज के सगठन को सुदृढ करने पर विचार ।
5. प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, प० रघुवीरसिंह शास्त्री यज्ञशाला, स्वामी श्रद्धानन्द वैदिक पुस्तकालय भवन निर्माण को पूरा करने पर विचार ।
6. आगामी वर्ष के लिए सभा के अधिकारियों, अन्तरग सदस्यो, आर्य विद्या सभा हरयाणा, विद्या सभा गुरुकुल कागडी, राजार्य सभा, न्याय सभा तथा सार्वदेशिक सभा के लिए प्रतिनिधियो आदि का निर्वाचन ।

अन्य आवश्यक विषय सभापति की अनुमति से ।

विशेष ज्ञातव्य

1. प्रतिनिधियों को प्रवेश पत्र 25 नवम्बर को प्रात 6 से 10 30 बजे तक सभा कार्यालय रोहतक मे प्राप्त हो सकेंगे ।
2. सभापति को विचारणीय विषयो के क्रम मे आवश्यक परिवर्तन करने का पूर्ण अधिकार होगा ।
3. भोजन की व्यवस्था सभा की ओर से होगी ।
4. यदि कोई प्रतिनिधि अपना सुझाव अथवा प्रस्ताव अधिवेशन मे रखना चाहता है तो लिखितरूप से 20 नवम्बर तक कार्यालय मे भेज देवे ।
5. अधिवेशन से एक दिन पूर्व 24 नवम्बर को दोपहर पश्चात् हरयाणा प्रदेश के हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियों को सम्मानित किया जावेगा ।

वेदव्रत शास्त्री
सभामन्त्री

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक अधिवेशन २५ नवम्बर को रोहतक में होगा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन २५ नवम्बर १९९० रविवार को सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक मे होगा। वार्षिक अधिवेशन मे हरयाणा प्रदेश मे आर्यसमाज के प्रचार का विस्तार करने का कार्यक्रम तैयार किया जावेगा तथा आगामी वर्ष के लिये सभा के अधिकारियो तथा अन्तरग सदस्यो आदि का चुनाव किया जावेगा। इस अधिवेशन मे सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजो के स्वीकृत प्रतिनिधि भाग लेंगे।

—वेदव्रत शास्त्री
सभामन्त्री

हरयाणा के हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियो का सम्मान समारोह

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वार्षिक अधिवेशन से एक दिन पूर्व 24 नवम्बर को दोपहर पश्चात् सभा के कार्यालय सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक मे हरयाणा प्रदेश के जिन आर्य सत्याग्रहियो ने हैदराबाद आर्य सत्याग्रह मे जेलयात्रा की थी, उन्हें सम्मानित किया जावेगा। अत सभी सत्याग्रहियो से निवेदन है कि वे अपने पहुचने की सूचना यथाशीघ्र सभा को भेजने का कष्ट करें। इस अवसर पर सभा की ओर से हैदराबाद आर्य सत्याग्रह पर एक विशेष स्मारिका भी प्रकाशित की जा रही है।

—सभामन्त्री

टंकारा के ऋषि जन्मस्थान को विश्वदर्शनीय बनानें के लिए दान देंने वालों की सूची

श्री लाला जगन्नाथ जी (पानीपत) के नेतृत्व मे हरियाणा टंकारा सहायक समिति, जिसका मुख्य कार्यालय पानीपत मे था, संगठिन की गई थी। इस समिति मे निश्चय किया गया था कि महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टकारा को विश्व दर्शनीय बनाया जाये। जन्म-स्थान को लेने के लिए ट्रस्ट प्रयत्न कर रहा है। आधा स्थान ट्रस्ट को मिल गया है और आधा स्थान जल्दी ही मिलने वाला है। इस सम्बन्ध में हरियाणा टंकारा सहायक समिति को जिन प्रतिष्ठित सदस्यो ने लाला जगन्नाथ जी को सहयोग दिया उनमे—श्री लक्ष्मणदास बजाज—पांच भाई साबुन वाले, श्री भगवानदास गुगलवानी—पानीपत, श्री डा० सत्यपाल—घरोडा, श्री हंसराज कुमार—मन्त्री आर्य समाज बरेली, श्री कस्तूरी लाल—मंत्री आर्य समाज खैल बाजार, पानीपत, श्री जगदीश चन्द्र मनोचा—प्रधान आर्य समाज पटेल नगर पानीपत; श्री रालचन्द्र—माडल टाउन पानीपत, श्री ओम्प्रकाश अरोडा कलकत्ता, श्री चौ० किशनचन्द्र मैनेजर—धनवन्तरी पाठशाला रोहतक, श्री कन्हैयालाल मेहता—फरीदाबाद, श्री डा० सुखदयाल भूटानी-दिल्ली, श्री सोमनाथ भूटानी—दिल्ली, श्री सत्यपाल आर्य—पानीपत आदि प्रमुख हैं।

लगभग 1 लाख 25 हजार रुपए इस मद मे एकत्र हो चुका है। दान दाताओ की दो किस्तें 'आर्य जगत्' मे प्रकाशित हो चुकी हैं। तीसरी किस्त अब प्रकाशित की जा रही है। मेरी आर्य जनता से प्रार्थना है कि महर्षि दयानन्द जन्म-स्थान टकारा को विश्वदर्शनीय बनाने हेतु जो भी सज्जन दान देना चाहे, वे हरियाणा टंकारा सहायक समिति, अमर भवन चौक, पानीपत—132103 अथवा महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, टंकारा, जिला—राजकोट, पिन-363650 के नाम चैक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा भिजवाने की कृपा करें। टंकारा ट्रस्ट को दिये गये दान में आय-कर से पूर्णतः मुक्ति है। चैक या मनीआर्डर प्राप्त होने पर रसीद तथा आयकर मुक्ति का प्रमाण-पत्र भिजवा दिया जायेगा।—रामनाथ सहगल

दानियों की सूची

श्री रामदित्ता मल गंगाराम, करनाल	1100
„ राम दित्तामल गंगाराम, कुरुक्षेत्र	1100
„ ट्रेड गुरुप, चण्डीगढ	1100
„ रामप्रकाश जी जुनेजा, बड़ौदा	1100
श्रीमती कुमारी ममता सुपुत्री श्री देशबन्धु भूटानी, पानीपत	500
श्री गजानन्द आर्य, कलकत्ता	1100
„ दास बाबू, कलकत्ता	1100
„ धनीराम अग्रवाल, कलकत्ता	1101
„ के० पी० सिंह, कलकत्ता	1101
„ गोयल इलैक्ट्रीकल्ज, कलकत्ता	1100
„ ओम्प्रकाश अरोडा, कलकत्ता	5501
„ रावल पिण्डी फ्लोर मिल्ज, मुरादाबाद	1000
„ अनिल कुमार नागपाल, करनाल	1000
आर्य समाज नागोरीगेट हिसार	1100
वैदिक यज्ञ समिति सोनीपत	2100
परिवारिक सत्संग समिति, सिकन्दराबाद	1500
श्री आदित्य प्रकाश पानीपत द्वारा	400
श्रीमती राजकुमारी अहलुवालिया, विवेक विहार देहली	1100
श्रीमती कैलाशरानी आनन्द, विवेक विहार दिल्ली	1000
आर्यसमाज माडल टाऊन, पानीपत	1000
श्री द्वारिका नाथ कपूर, देहली	251
श्री राधेश्याम गुप्ता पानीपत	51
„ राम प्रकाश रेलन पानीपत	25
„ ओम्प्रकाश सखूजा देहली	100
„ कन्हैया लाल महता फरीदाबाद द्वारा	11000
„ श्री लज्जा राम कुरुक्षेत्र	200
श्रीमती पद्मावती पानीपत	31
„ शकुन्तला देवी पटियाला	20
श्री मनोहर लाल मलिक देहली	101
„ रामप्यारा मल भूटानी देहली	101
श्रीमती राधादेवी माडल टाउन पानीपत	51
श्री रामचन्द सिन्दवानी माडल टाउन पानीपत	40
श्रीमती माता सुलक्षणा „ „ „	21
चौ० किशन चन्द मैनेजर धनवन्तरी आर्य पुत्री पाठशाला रोहतक द्वारा	1079
आर्य समाज शिवाजी कालोनी रोहतक	51
स्त्री समाज „ „ „	51
आर्य समाज शिवाजी कालोनी रोहतक द्वारा	255
श्री डाक्टर ठाकर दास नागपाल झज्झर	101
श्रीमती सोहन देवी लाजपत नगर देहली	51
श्री रामप्यारा चावला जमशेदपुर	101
„ राम अवतार दुआ „	101
„ सीताराम सचदेव „	101
„ सचदेवा आटो मोबाईलज „	51
„ कृष्णलाल टाटानगर	50
„ दौलतराम „	101
„ रलाराम बलदेव राज आहूजा टाटानगर	150
„ सुरेन्द्रकुमार टाटानगर	51
श्री कृष्ण लाल सखूजा टाटानगर	101
„ राजपाल मोंगी „	250
„ सुदेश कुमार „	101
„ हिन्दोस्तान सेल्ज एजेंसीज टाटानगर	101
„ जगदीशचन्द्र सखूजा „	101
„ चूनीलाल निरुला „	101
„ राजकुमार बजाज कलकत्ता	202
श्रीमती आर्य सुन्दरा देवी जनकल्याण ट्रस्ट हावड़ा	501
श्री खुशहाल चन्द मन्त्री आर्य समाज बडा बाजार कलकत्ता	251
„ दीनदयाल आर्यसमाज बडा बाजार कलकत्ता	251
„ चादरत्न „ „ „ „	51
„ सत्यनारायण „ „ „ „	21
„ रलिया राम कलकत्ता	250
„ जगदीश तिवारी „	51
„ पुष्कर लाल आर्य „	151
„ कन्हैया लाल „ „	501
„ एन डी भाटिया धर्म तालाब कलकत्ता	551
„ एस पी खट्टर „	551
„ एन आर अग्रवाल „	701
„ धाम इलैक्ट्रीक्ल „	101
„ सोमनाथ आर्य मलिक बाजार „	101
„ आर पी एम इलैक्ट्रीक्लस „	101
„ अशोक कुमार „	51
„ कमल नाथ रंगवाले „	201
„ रघुनन्दन प्रसाद „	51
„ हरकृष्ण लाल „	100
श्री बनारसी दास अरोड़ा कलकत्ता	201
„ मोहन लाल अग्रवाल „	251
„ सुरेन्द्र कुमार चौधरी पानीपत	101
श्रीमती माता लाजवन्ती करनाल	100
„ प्रकाश कालड़ा करनाल	50
श्री जसोदा देवी करनाल	50
„ सोमावन्ती „	50
श्री आर के गोमका कलकत्ता	501
श्री मदन लाल धर्मल प्लान्ट पानीपत द्वारा	101
श्री मदन लाल दुर्गा आयल एण्ड राई मिल छोटूवापुर	300
„ हरकृष्ण लाल जुनेजा मुरादाबाद	15
„ मनोहर लाल गाधी मेरठ	250
„ ओम्प्रकाश गुलाटी माडल टाउन पानीपत	201
„ मास्टर प्रकाश लाल बजाज पानीपत	151
„ किशनचन्द खुराना	51
„ सुभाष चन्द्र मदान	21
श्रीमती लक्ष्मी देवी कबाटड़ा पानीपत	51
श्री बसत राम मलिक „	51
„ वीरेन्द्र गुगलानी „	21
„ जीवन दास परुथी „	51
„ जगदीश लाल आहूजा „	21
श्रीमती रामदेवी „	31
श्री वैद्य नारायण दत्त „	51
गुप्तदान समालखा	31
श्री तिलक नारायण समालखा	21
„ जयहिन्द आयरन फाउण्डरी समालखा	52
श्री पी०डी० फैक्टरी समालखा	50
श्री छबीलदास समालखा	101
„ मोहन लाल समालखा	151
„ लाजपत राय खुराना पानीपत	31
„ ओम्प्रकाश कटारिया „	101
„ गिरधारी लाल एन्ड ब्रादर्ज चौरा बाजार	201
श्रीमती गायत्री देवी धर्मपत्नी श्रीरामप्रसाद गुप्ता मुरादाबाद	101
श्री चमन लाल निझावन मुरादाबाद	50
„ हरबंश लाल कुमार „	51
श्रीमती किरण बाला „	50
श्री विजय कुमार कोछड़ „	31
„ भगवान दास गाधी „	251
„ हरकृष्ण लाल जुनेजा „	200
श्रीमती पुष्पावती आर्य „	100
श्री सरदारी लाल सचदेव „	21
„ राम प्रकाश मनोहरलाल „	21
„ सुन्दर लाल „	101
„ सोमनाथ „	101
„ रामप्रकाश सिरोत्रा „	101
„ सुरता राम गोपाल दास „	101
„ ओम्प्रकाश नागपाल करनाल	100
„ रामचन्द्र करनाल	100
श्री लाजवन्ती खेड़ा „	100
पांच सौ वाली टिकटें 2101 से 2117	85
श्री कुलबीर सिंह हिसार	50
„ राजबीर सिंह „	50
„ बलदेव राज तायल „	100
„ सार भूर्मसिंह „	21
श्री हरिसिंह हिसार	101
स्वामी देवानन्द आचार्य गुरुकुल आर्यनगर हिसार	51
श्रीमती कृष्णदवी नेहरू जीन्द	101
सूद पी०एन० बैंक पानीपत	860
श्री भीमसेन „	20
श्री एम० डी० बोहरा „	51
डा० रमेशचन्द्र जी छाबड़ा „	101
श्री दुखभंजन लाल कावड़ा „	50

→

→

नाम	राशि
श्री रमेश चन्द्र भाटिया ,,	50
,, ओम्प्रकाश बहल ,,	51
,, डी एम तलवाड़ प्रिंसिपल सोनीपत	501
,, सुशील कुमार कल्याण नगर ,,	251
,, देवराज सपड़ा राज हस्पताल ,,	101
,, शिवलाल कुमार ,, ,,	101
,, महिला आर्य समाज गन्नौर	101
श्री मास्टर अशोक कुमार सपड़ा सोनीपत	201
श्री सुरेशचन्द गुगलानी पानीपत	51
डा० जयदयाल रामनगर करनाल	101
श्री बसन्त लाल गुगलानी ,,	50
,, गोविन्द लाल मदान ,,	50
,, मदन लाल माडल टाउन पानीपत	31
,, मलिक नन्दलाल जी अमृत कुटीर अमृतसर	501
,, रामनारायण चावला करनाल	21
श्रीमती राजरानी मेहरा करनाल	50
आर्य समाज माडल टाऊन करनाल	101
श्री सत्यदेव भण्डारी पानीपत	51
श्री यशपाल नागपाल पानीपत	100
,, जसवन्तराय नागपाल चण्डीगढ़	20
,, लछमन दास आर्य बल्लभगढ़	112
,, सुखदयाल भूटानी देहली	50
श्रीमती अमृत लाल बतरा पानीपत	51
आर्य समाज खैल बाजार पानीपत	101
श्री ओम्प्रकाश नागपाल करनाल	100
श्री मदान माडल टाऊन पानीपत	21
,, जितेन्द्र कुमार ,,	101
,, ग्लोब मैटल इण्डस्ट्रीज मुरादाबाद	501
श्री आर्य समाज बंगा	101
,, केसर दास लूठड़ा देहरादून	501
,, रूपचन्द ,,	151
,, तेजभान कालड़ा ,,	501
,, रामदास ,, ,,	151
श्रीमती सरला ठाकुर सोनीपत	101
श्री सतीश कुमार आर्य ,,	101
श्री भोलाराम लूठड़ा देहरादून	201
,, प्रेमप्रकाश कालड़ा ,,	100
श्रीमती वेद मदान सोनीपत	50
श्री प्रधान हिन्दू मंच सोनीपत	101
,, हरदयाल ऋषि नगर ,,	101
,, रामकृष्ण आठ मरला कालोनी सोनीपत	200
आर्य समाज माडल टाउन सोनीपत	101
श्री एम०एल० ठकराल पानीपत	50
श्री ओबराये सिकन्दराबाद	20
श्रीमती कुमारी मधुका गौरी ,,	74
श्री कृष्णपुरी सिकन्दराबाद	21
,, डाक्टर चपर वाल ,,	21
,, अकुल राजेश गुप्ता ,,	25
,, रविनन्द शर्मा ,,	101
,, टैलकन ऐड्ज ,,	250
आर्य समाज ,,	100
श्री रामप्रसाद मोहनकुमार सिकन्दराबाद	51
,, हरनारायण राठी ,,	101
,, वसुदेवा ,,	101
,, बी०बी० चढ़ा साहिल ,,	51
श्री ओम्प्रकाश आर्य पानीपत	200
,, स्वर्गीय जे आर. अरोड़ा सन्त नगर देहली, द्वारा श्री सत्यपाल आर्य सोनीपत	1100
श्रीमती सावित्री देवी छबील दास सचदेव देहरादून	101
श्री राधा देवी 5°0 आर० माडल टाउन पानीपत	100
रिवरें 2/-, 5/- वाली द्वारा श्री भगवान दास गुगलानी	100
श्री विद्याव्रत शास्त्री रोहतक	50
,, गुलाब सिंह आर्य गोहाना	21
,, ब्रह्मस्वरूप भाटिया ,,	21
,, चमन लाल मलहोत्रा ,,	101
,, चन्योट पुस्तक भण्डार ,,	21
,, बिशम्भर लाल मेन बाजार	21
,, भगवानदास सेटिया ,,	51
,, सुदर्शन सोप फैक्टरी ,,	31
,, ओम्प्रकाश मुन्शीराम ,,	100
,, डाक्टर नन्दलाल ,,	100
श्री अमर नाथ विज गोहाना	51
,, मोहन लाल ,, ,,	51
,, जयप्रकाश आर्य विवेक विहार देहली	2101
,, रेमलदास अरोड़ा विवेक विहार देहली	101
,, श्री कन्हैयालाल महता फरीदाबाद द्वारा	5100
सूद पंजाब नेशनल बैंक से	2088
श्री रामस्नेही जयश्री टैक्सटाईल्ज पानीपत	51
,, डाक्टर रमेशचन्द्र छाबड़ा पानीपत	100
,, जगदीश चन्द्र कस्तूरी लाल ,,	20
,, मेघराज आर्य पानीपत	25

आज तक जो धन एकत्रित हुआ उसका जोड़ रु० 122367.40 है — पहले दो किस्तें छप चुकी हैं—

जगन्नाथ रंग वाला,
प्रधान हरियाणा टंकारा सहायक समिति, पानीपत

भगवान वेंकटेश्वर के लिए साढ़े आठ करोड़ का मुकुट

लगभग 27 किलो वजन का सोने का मुकुट, जिसमें 31 हजार हीरे जड़े होंगे, तिरुमल मन्दिर के भगवान वेंकटेश्वर को सुशोभित करने के लिए तिरुपति मे बनाया जा रहा है। इस मुकुट का मूल्य लगभग साढ़े आठ करोड़ रु० होगा। यह आगामी जनवरी मास तक बन कर तैयार हो जायेगा। तिरुमल तिरुपति देवस्थानम् के एस० लक्ष्मी नारायण ने आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री के उस कार्यशाला में जाने पर जहां मुकुट बनाया जा रहा है, बताया कि मुकुट में सोने का काम तथा कसीदाकारी का काम पूर्ण हो गया है तथा हालैंड से आयातित 26 हजार हीरे जड़ने का कार्य 3 अक्टूबर को प्रारम्भ हो जायेगा।

दहेज के लोभियों को लेने के देने

फरवरी 16, 1980 को अशोक विहार दिल्ली के लक्ष्मण कुमार ने सुधा नाम की कन्या का पाणिग्रहण किया, विवाह के बाद से ही लोभी पति तथा सास सुधा को पीड़ित करते रहे। उसी वर्ष दिसम्बर में जबकि सुधा 9 मास की गर्भवती थी उसके पड़ोसियों ने उसे "बचाओ, बचाओ" चीखते हुए सुना तो उसे बचाने के लिए दौड़े। किन्तु मकान का द्वार न केवल भीतर से बन्द मिला अपितु सुधा का देवर सुभाष उसकी रखवाली के लिए खड़ा मिला। बड़ी कठिनाई से सुधा के पड़ोसी भीतर घुसे तो उन्होंने सुधा को जलने की स्थिति में पाया। किसी प्रकार उसको टैक्सी मे डालकर उसे अस्पताल ले गए। सुधा ने बताया कि उसकी सास ने उसके कपड़ों मे मिट्टी का तेल डाला और आग लगा दी। न्यायालय में अभियोग चलने पर सत्र-न्यायाधीश ने सुधा के पति, सास तथा देवर को प्राणदण्ड का निर्देश दिया था किन्तु अपराधियों द्वारा उच्चन्यायालय मे अपील किये जाने पर तीनों को निर्दोष घोषित किया गया। पुन. सर्वोच्च न्यायालय में अपील की गई और न्यायमूर्ति ए०एन०सेन एवं न्यायमूर्ति मिश्र ने दिल्ली उच्च न्यायालय के निर्णय को निरस्त कर सत्र-न्यायाधीश के निर्णय की पुष्टि करते हुए सुधा के पति लक्ष्मण कुमार और सास श्रीमती शकुन्तला को प्राणदण्ड का विधान किया, किन्तु देवर सुभाष को दोष-मुक्त घोषित कर दिया।

कन्या गुरुकुल नरेला

आर्ष कन्या गुरुकुल, नरेला की छात्राओं ने इस वर्ष महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक की शास्त्री परीक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थियों की योग्यता सूची में आठ में से प्रथम पाँच स्थान प्राप्त किये साथ ही एक स्वर्ण पदक प्राप्त कर कीर्तिमान स्थापित किया। गुरुकुल के कुलपति स्वामी ओमानन्दजी और आचार्य सुमित्रा जी इस श्रेय के भागी हैं।

रजनीश के पाँच चेले धोखा-धड़ी में फँसे

पुणे के रजनीश आश्रम के पांच संन्यासियों को स्थानीय आय-कर अधिकारियों ने तीन करोड़ रु० के आय-कर के झूठे कागजात प्रस्तुत कर धोखा देने का अपराधी घोषित किया है। आश्रम के प्रबन्धन्यासी ने अधिकारियों के सम्मुख एक समान पत्र प्रस्तुत करते हुए कहा था कि दिल्ली-मुख्यालय ने आय-कर की भारी राशि माफ कर दी है। किन्तु जब स्थानीय अधिकारियों ने मुख्यालय से पूछताछ की तो उन्हें विदित हुआ कि ऐसा कोई आदेश नहीं दिया गया। पुलिस सूत्रों का कहना है कि यदि मुख्यालय ने उन पत्रों को स्वीकार कर लिया होता तो देय कर मे से जो 15 लाख रु० का आंशिक रूप में भुगतान किया जा चुका है उसको वापस करने की मांग आश्रम की ओर से की जाती।

आर्य समाज हांसी

आर्य समाज, हांसी (हिसार) का वार्षिकोत्सव 20 से 22 सितम्बर तक सोत्साह मनाया गया। स्वामी जीवनानन्द, ब्र० आर्य नरेश प्रो० रामबिचार, पं० आशानन्द, पं० प्रभुदयाल, श्री वीरेन्द्र वीर धनुर्धर श्री सुल्तान सिंह आर्य और पं० खुशीराम आदि विद्वान् और उपदेशकों ने इसमें भाग लिया। उत्सव से पूर्व 15 से 19 सितम्बर तक स्वामी मुनीश्वरानन्द द्वारा वेद कथा हुई।

—जयकिशनदास आर्य

वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज, निराला नगर, लखनऊ मे 30 अगस्त से 7 सितम्बर तक वेद-प्रचार सप्ताह मनाया गया, जिसमे यज्ञ, भजन व विद्वानों के उपदेश हुए।

—देवी प्रसाद आर्य

मानव-जागृति-यज्ञ

आर्य समाज, आर्यपुरा, सब्जी मण्डी, दिल्ली मे मानव जागृति यज्ञ 23 से 29 सितम्बर तक आचार्य धर्मेन्द्रपाल शास्त्री के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ। यज्ञ प्रेमियों ने भारी संख्या मे भाग लिया।

कृष्ण जन्माष्टमी

आर्य गर्ल्स हाई स्कूल, लोहगढ़, अमृतसर मे कृष्ण जन्माष्टमी सप्ताह 9 से 14 सितम्बर तक मनाया गया। कु० लज्जा खोसला मुख्याध्यापिका, श्री रतनचन्द्र केसर के उपदेश और भजन हुए।

शकुन्तला आर्य का अभिनन्दन

सुप्रसिद्ध समाज सेविका दिल्ली प्रदेश भाजपा की उपाध्यक्षा सामाजिक संगठनों की सक्रिय कार्यकर्त्री श्रीमती शकुन्तला आर्य का स्त्री आर्य समाज, लाजपत नगर, नई दिल्ली की ओर से अभिनन्दन कर उन्हें प्रशस्ति पत्र भेंट किया। श्रीमती सरला मेहता, श्रीमती प्रकाश आर्या, सरस्वती शर्मा, सरस्वती आर्या आदि ने उनके कार्यों की प्रशंसा की।

—मेघश्याम वेदालंकार

पत्रों के दर्पण में

चक्रचरण की डायरी का एक पृष्ठ

२२ सितम्बर के अक मे 'चक्र चरण' नाम देखते ही कुछ स्मरण आया और फिर सारा पत्र छोडकर पहले 'सम्पादकीयम्' ही पढा। एक बार पढा, दो बार पढा, तसल्ली नही हुई तो तीसरी बार पढा। हम सब निश्चय ही 'मुरते खाक' हैं। अगर आर्य समाज के वायु मण्डल की गहरी छाप न लगी होती तो हम कहा होते। इतना सुन्दर, भावपूर्ण, और जीवन-दर्शन की वास्तविकता से भरा लेख तुम भी तभी लिख सके जब म्हारा ७० वा जन्मदिवस आ गया।—सत्यदेव शर्मा एन-३१, ग्रेटर कैलाश I नई दिल्ली-४८

(२) 'चक्रचरण की डायरी का एक पृष्ठ' शीर्षक से एक बढिया साहित्यिक निबन्ध पढने को मिला। दिल बाग बाग हो गया। 'आर्य जगत' के सम्पादक को यायावर के नाम से तो जानता था। इससे एक नए नाम का ज्ञान हुआ। आपकी लेखनी जहा दिलो को जोडती है वहा आर्य समाज के दिलो को भी जोडती है, यह खुशी की बात है। 'एकला चलो रे—अपने मार्ग पर बढते रहिए।

—ब्रह्मदत्त स्नातक, ६/१४४, रामकृष्ण पुरम, नई दिल्ली २२

(३) चक्रचरण की डायरी का एक पृष्ठ पढने का सौभाग्य मिला। ४५ साल पुरानी स्मृतिया उभर आई, जब आपसे पहली बार क्वेटा (बिलोचिस्तान) मे भेंट हुई थी। तब से यह सम्पर्क अटूट है। आपका एकमात्र उपन्यास 'स्वेतलाना' जिसके एक मास मे दो सस्करण हुए थे और जिसका गुजराती मे भी अनुवाद हुआ था, अभी तक मेरे पास सुरक्षित है। भगवान आपको दीर्घायु करे। —रामकृष्ण भारती, जी ७८ वालीनगर, नई दिल्ली-१५

(४) मैं 'आर्य जगत' का सामान्य पाठक हू और आर्य समाज का एक अदना कार्यकर्ता। महर्षि निर्वाण शताब्दी के समय अजमेर मे जब मैंने एक छोटे से कद के दुबले-पतले व्यक्ति को मच पर चुस्ती से सब व्यवस्था करते देखा तो परिचय की उत्कण्ठा जाग उठी और मैं मच पर पहुच गया। परिचय पाया तो निकले महाशय जी! इतने छोटे से शरीर मे शक्ति का इतना पुज देखकर हैरान रह गया। पता नही था कि यही चक्रचरण अपनी कुशाग्र बुद्धि से अपनी लेखनी को सुदर्शन चक्र बना कर घटनाओ को इस प्रकार मोड देने वाला सिद्ध होगा। ७० वे वर्ष मे प्रवेश पर बधाई। —ब्रह्मदत्त, बी-४६, गणेश मार्ग, बापूनगर, जयपुर-१५

(५) चपल चचल चित्त, चुम्बन चाल, चलने का चसका!
चम्पक चमेली की गध मे चमकता सितारा चमन का!!
'चक्रचरण'—यह नाम किसका?

—सुधीर कुमार बसल, बैक आफ इण्डिया, भरतपुर (राज०)

(६) मैं तो आपको लेखनी का चमत्कारी कर्ता मानता हू। जब तक 'आर्य जगत' का सम्पादकीय नही पढ लेता, पिपासा शान्त नही होती। कभी-कभी तो कई-कई बार पढता हू। कुछ स्थल तो इतने महत्वपूर्ण और व्यजना-परक होते है कि मन और मस्तिष्क दोनो प्रफुल्लित हो उठते हैं। आपकी चमत्कार-पूर्ण लखनी इसी प्रकार जन हित मे निरन्तर लगी रहे, यही प्रभु से प्रार्थना है। —यज्ञदत्त आर्य २६०-सी, मियावाली कालोनी, गुडगावा।

(७) १६ सितम्बर को आपने ६९ वर्ष पूरे कर लिये, यह जानकर आश्चर्य भी हुआ, प्रसन्नता भी। अब आप बुजुर्गों की श्रेणी में आ गए मैं चिरकाल से आपकी लेखनी और वाणी का प्रशसक हू। प्रभु से प्रार्थना है कि आप नीरोग और स्वस्थ रहकर इसी प्रकार देश और धर्म की चिरकाल तक सेवा करते रहे।—ओम्प्रकाश गोयल, १२ मुनीरिका मार्ग, बसन्त विहार, नई दिल्ली-५७

(८) आप 'चक्रचरण' भी हैं, यह तो पता ही नही था। इतने वर्षों बाद साहित्यिक ओज से परिपूर्ण एक बढिया प्रबन्ध पढने को मिला। आपकी कर्मठता को देखकर हम नही मानते कि आप सत्तरसाला हो चले हैं।

—रतनलाल जोशी, १२ फिरोज गाधी मार्ग, लाजपतनगर, नई दिल्ली-२४

(९) यह आपने कैसे कह दिया कि आप न नेता हैं, न लेखक हैं, न वक्ता हैं। जो इन बातो मे आपको आदर्श मान कर चलते हैं, उनकी क्या गति होगी? उनके प्रति इतने निष्ठुर मत बनिये। —चिन्तामणि, हरिजन निवास किंग्सवे कैम्प, नई दिल्ली-९

(१०) हृदय गद्गद् हो गया। आपकी डायरी के इस एक पृष्ठ मे जो मार्मिकता छिपी है उसे शायद सब लोग न पकड पाए। परन्तु जो निकट से आपको जानते हैं और घटनाचक्र का अध्ययन करते रहते हैं वे इस बात को स्वीकार करेंगे कि किस प्रकार आपने व्यक्तिगत मान अपमान से परे रह कर आर्य समाज के और हिन्दू जाति के लिए निरन्तर सघर्ष किया है और उसमे सफलता पाई है। —वीरेन्द्र सिंह पमार, २८, यू० बी० जवाहर नगर, दिल्ली-७

'आर्य जगत्' सर्वोत्कृष्ट साप्ताहिक

"आर्य जगत्" साप्ताहिक पत्र को जिस उत्तम प्रकार से आप उन्नति पथ पर ले जा रहे हैं, उसके लिये आपका जितना धन्यवाद दिया जाय, कम है। यों तो 'आर्य जगत्' का प्रत्येक अक उपयोगी लेख सामग्री तथा आपके विद्वत्ता एव प्रेरणा से पूरित सम्पादकीय से अनुप्राणित होने से रुचिकर और पठनीय रहता है, तथापि श्री कृष्ण जन्माष्टमी (८-९-८५) का अंक अत्युपयोगी, विभिन्न विद्वानो के खोजपूर्ण श्री कृष्ण विषयक लेखों के साथ स्व० डॉ० सिद्धेश्वर वर्मा के प्रेरणाप्रद सक्षिप्त जीवन वृत्त से समन्वित होने से महत्त्वपूर्ण बन गया है। इस सब का श्रेय आप तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली के माननीय अधिकारियो को ही जाता है। जो बधाई तथा धन्यवाद के पात्र हैं। प्रभु 'आर्य जगत्' को वस्तुत 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का सशक्त माध्यम सिद्ध करे।—डा० जयदत्त उप्रेती शास्त्री, मत्री आर्य समाज, अल्मोडा।

वेदार्थ पारिजात पर प्रतिबन्ध लगे

२५ अगस्त ८५ के अक मे वेदार्थ-परिजात विषयक छोटे से लेख को देखते हुए पता लगता है कि सम्पूर्ण ग्रथ इसी प्रकार पाखण्ड, वेद विरुद्ध बातो से भरा है। ग्रन्थ के रचयिता श्री करपात्री जी एक विद्वान होते हुए भी मूर्ख साबित हुए यह उनका ग्रन्थ ही सिद्ध कर रहा है। इनका ग्रथ लिखने का एकमात्र उद्देश्य यही था कि महर्षि स्वामी दयानन्द और आर्य समाज को लाछित करे, सो उन्होने यह ग्रथ लिखवाकर अपनी इच्छा पूर्ण कर ली। इस ग्रथ को भारत सरकार शीघ्र जब्त करे और इसके लिए सार्वदेशिक सभा बाकायदा कार्रवाई करे।—जगन्नाथ प्रसाद आर्य सस्कार शास्त्री, पो० डेहरी ओनसोन, जिला—रोहतास (बिहार) ८२१३०७

आर्यसमाज के कार्यक्रम आयोजको से

प्राय आर्यसमाजो के उत्सवो तथा अन्य समारोहो के अवसर पर कार्यक्रम का सचालन करने वाले महानुभावो के समक्ष कुछ कठिनाइयाँ आती हैं। विशिष्ट सम्मेलनो अथवा आयोजनो मे विशिष्ट वक्ताओ को बोलने के लिये आमन्त्रित किया जाता है। होना तो यह चाहिए कि जिस विषय के जानकार विद्वान को विशिष्ट विषय पर बोलने के लिये आमन्त्रित किया जाय उसे इतना समय भी दिया जाय कि वह अपने विषय के साथ न्याय कर सके ताकि श्रोता भी पूर्णतया लाभान्वित हो। किन्तु होता इससे बिल्कुल ही भिन्न है। स्थानीय वक्ताओ की सूची ही इतनी लम्बी हो जाती है कि आगन्तुक विद्वान् को बोलने के लिये अत्यल्प समय मिल पाता है। ऐसी स्थिति मे कार्यक्रम सचालक को दृढ़ता दिखानी चाहिए स्थानीय वक्ताओ पर अकुश लगाकर स्पष्ट कह देना चाहिए कि समारोह के प्रमुख वक्ता को यदि पूरा समय नहीं दिया जायगा तो वे मुख्य विषय का प्रतिपादन नही कर पायगे। स्थानीय वक्ताओं को बोलने के अवसर तो मिलते ही रहते हैं किन्तु विशिष्ट आमन्त्रित वक्ता को ही पूरा अवसर न मिले तो बुलाना ही व्यर्थ है।—डा० भवानीलाल भारतीय, पजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ।

सरकारी परीक्षाओं में हिन्दी माध्यम

प्रति वर्ष लाखों विद्यार्थी विभिन्न सरकारी नौकरियो की भर्ती की परीक्षाओं मे बैठते हैं। अधिकाश उम्मीदवारो की धारणा है कि उन परीक्षाओं का माध्यम केवल अग्रेजी ही है, जबकि केन्द्रीय सरकार की अनेक परीक्षाओ मे अब हिन्दी माध्यम की छूट दी जा चुकी है। भारतीय प्रशासनिक सेवा जैसी उच्च स्तर की परीक्षा में भी अग्रेजी के अलावा कई विषयों के उत्तर हिन्दी माध्यम से देने की छूट पिछले कई वर्षों से मिली हुई है। अब विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने जूनियर फैलोशिप परीक्षा के लिए भी हिन्दी माध्यम की छूट दे दी है। कितना अच्छा हो कि उन परीक्षाओ मे बैठने वाले व्यक्ति हिन्दी माध्यम का लाभ उठाए। उससे वे अपने विचारों को अच्छी प्रकार व्यक्त कर सकेंगे और परीक्षा मे अधिक अच्छे अक प्राप्त करने में सफल होगे। इन परीक्षाओ की तैयारी कराने के लिए अनेक नगरो मे प्रशिक्षण केन्द्र हैं। वे केन्द्र भी यदि हिन्दी माध्यम से परीक्षा की तैयारी कराने की व्यवस्था करें तो उनके क्षेत्र के प्रत्याशी उसका स्वागत करेंगे। हिन्दी-सेवी सस्थाओं को भी इस विषय मे आगे आना चाहिए।

हरिबाबू कसल, महामत्री, हिन्दी व्यवहार सगठन, डी-३५, साउथ एक्सटैंशन भाग एक, नई दिल्ली-११००४९

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार के बढ़ते चरण

सन् 1886 मे वैदिकाश्रम के नाम से स्थापित इस विद्यालय को सन 1921 मे वर्तमान नाम और रूप में परिवर्तित किया गया। इस संस्थान के आचार्यत्व को आर्य जगत् के मनीषी विद्वानो द्वारा सुशोभित किया जाता रहा है। वर्तमान में पं० श्री सत्यप्रिय शास्त्री, एम ए, सहित्याचार्य इस पर प्रतिष्ठित हैं। विद्यालय मे देश के सभी प्रदेशो से लगभग 40 छात्र अध्ययन कर रहे हैं। विद्यालय में निःशुल्क शिक्षा ही नही, अपितु उनके भोजन वस्त्रादि की भी निःशुल्क व्यवस्था की जाती है। संस्था गुरुपद्धति पर आधारित है। साप्ताहिक सभा का आयोजन किया जाता है जिसमे छात्रों को भाषण-कला का भी अभ्यास कराया जाता। समय समय पर विद्यालय के प्राध्यापक तथा छात्र देश के विभिन्न प्रदेशो मे वैदिक धर्म के प्रचार के लिए जाते रहते हैं। विद्यालय के स्नातक देश भर से प्रचारक तथा पुरोहितों के रूप मे वैदिक धर्म की प्रशंसनीय सेवा कर रहे हैं।—सत्यप्रिय शास्त्री, प्राचार्य।

आर्य समाज दरियागंज का स्वर्ण जयन्ती-उत्सव

आर्य समाज, दरियागज, नई दिल्ली का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव 12-13 अक्तूबर को सोत्साह मनाया जायेगा। 7 अक्तूबर से पं० शिवकान्त उपाध्याय द्वारा वेदकथा का आयोजन हुआ। समारोह मे श्री रामगोपाल वानप्रस्थ और श्री हंसराज खन्ना के अतिरिक्त अन्य विद्वान् भाग ले रहे है।—बी॰बी॰ सिहल

आर्यसमाज हडसन लाइन

आर्य समाज हडसन लाइन [गुरु तेगबहादुर नगर नई दिल्ली] का वार्षिकोत्सव 7 से 13 अक्तूबर तक होगा। यज्ञ श्री सत्यकाम वेदालकार द्वारा, कथा श्री यशपाल सुधांशु द्वारा, शनिवार को महिला सम्मेलन, दोपहर को आर्य युवक सम्मेलन श्री अजय सहगल की अध्यक्षता में और रविवार को श्री देशराज बहल की अध्यक्षता में राष्ट्र रक्षा सम्मेलन होगा।

—आर्य समाज, ईश्वर नगर, माण्डुप, बम्बई मे श्रावणी तथा वेद प्रचार सप्ताह 30 अगस्त से 8 सितम्बर तक धूमधाम से मनाया गया। श्री प्रदीप शास्त्री के उपदेश और श्री सुरेन्द्रपाल आर्य के सुन्दर भजन हुए।—बी॰डी॰ गुप्त

—मातृ मदिर (कन्या गुरुकुल) डी 45/129 नई बस्ती, रामापुरा, वाराणसी मे राखी समारोह संस्कृत दिवस और यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन 18 से 25 अगस्त तक सोत्साह सम्पन्न हुआ। वेदपाठ गुरुकुल की छात्राओ ने किया।—डा० पुष्पावती

—आर्य समाज, 989 मतनाविल्डिग गोल बाजार, राइट टाउन, जबलपुर म० प्र० के श्री आचार्य राम लाल आर्य प्रधान, श्री सी० डी० दुबल मन्त्री और और श्री डी० के० श्रीवास्तव एडवोकेट कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली के अधिवेशन मे श्री द्वारकानाथ सहगल प्रधान, श्री शादीलाल मन्त्री और श्री ओमप्रकाश आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये। अध्यक्षता श्री शिवालय वासुदेवा ने की।

—आर्य समाज, विनय नगर, नई दिल्ली के चुनाव मे डा० विजय कुमार सहगल प्रधान, श्री आत्मदेव मंत्री और श्री मुल्कराज कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज अल्मोड़ा में श्रावणी उपाकर्म से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक वेदप्रचार सप्ताह का आयोजन किया गया। 7 सितम्बर से आर्य समाज मे वेद और संस्कृत प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। डा० जयदत्त उप्रेती प्रशिक्षक और श्री मथुरादत्त पन्त मुख्य अतिथि थे।

—आर्य समाज, कृष्ण नगर, दिल्ली मे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी और वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन 9 से 14 सितम्बर को सम्पन्न हुआ। सभा को श्री रामगोपाल वानप्रस्थ, श्री सूर्यदेव, श्री शिवकुमार शास्त्री, माटस्तर ओ३म्प्रकाश आर्य और आचार्य नरेन्द्र व श्री अशोक विद्यालंकार ने सम्बोधित किया। श्री आशानन्द भजनीक के मनोहर भजन हुए।

—अशोक पठानिया

—आर्यसमाज विवेक विहार दिल्ली के चुनाव मे श्री इन्द्र जीत भाटिया प्रधान श्री आर. सी. कथूरिया मंत्री और श्री राम प्रकाश बिन्द्रा कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज, ग्रीन पार्क नई दिल्ली के प्रधान श्री लाला इन्द्र नारायण, मंत्री श्री हीरालाल वर्मा चुने गये।

—आर्यसमाज, मोलपरा, राजकोट (गुज०) के वार्षिक चुनाव मे श्रीमती मधुबेन आर्य प्रधान श्रीमती ज्योत्सना बेन दवे मन्त्री और श्री मुकश भाई खजाँची चुने गये।

—आर्य समाज, शेखपुरा, मुंगेर बिहार के चुनाव में प्रधान श्री ज्ञान प्रकाश शास्त्री, मन्त्री श्री सुधीर कुमार गुप्त आर्य और कोषाध्यक्ष श्री बच्चु प्रसाद आर्य चुने गये।

—जिला आर्य सभा, बठिण्डा का चुनाव श्री शिवचन्द्र जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री बजीर चन्द्र प्रधान श्री ओम प्रकाश वानप्रस्थी मंत्री और श्री तरसेम कुमार कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज किंग्जवे कैंप, दिल्ली चुनाव मे श्री ठाकर दास सपड़ा प्रधान, श्री गोपाल आर्य मंत्री और श्री देवराज नारंग कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज, आयुध निर्माणी, मुरादनगर, गाजियाबाद के चुनाव में श्री रघुवीर सिंह प्रधान, श्री देवेन्द्रप्रकाश मंत्री और श्री ओम्प्रकाश कोषाध्यक्ष चुने गये।

महात्मा हंसराज साहित्य विभाग

पुस्तक का नाम	लेखक	मुल्य
1 मानसिक चित्रावली	—प्रि० दीवान चन्द्र	6-00
2. महर्षि दर्शन—	"	7-00
3. दयानन्द शतक—	"	5-00
4. वेदोपदेश—	"	4-50
5. मडूक उपनिषद—	"	4-00
6. प्रार्थना और चिन्तन	—स्वामी सत्यप्रकाश	6-00
7. आस्तिकवाद	—गगा प्रसाद उपाध्याय	15-00
8. वैदिक धर्म और समाज	"	6-00
9. वैदिक मान्यतायें	"	6-00
10. योगी की डायरी	—एन० डी० कपूर	10-00
11. भगवत गीता (दोहो में)	—डा० वेद प्रकाश	3-00
12. ईश्वरोपासना क्या कैसे	"	6-00
13. आर्य समाज	—गंगाप्रसाद उपाध्याय	6-00
14. सामवेद (उर्दू) भाष्य	—आशुराम आर्य	50-00
15. महर्षि दयानन्द	—इन्द्र विद्यावाचस्पति	6-00
16 सुखी जीवन	—डा० कपिलदेव द्विवेदी	7-00
17 " परिवार—	"	8-00
18. " समाज—	"	8-00
19. " गृहस्थ—	"	8 00
20 काव्यकृति उद्बोधन	—प्रकाश वीर व्याकुल	5-00
21. The Sulb Sutras (बोधायन, कात्यायन आपस्तम्ब और मानव)	स्वामी सत्यप्रकाश	45-00
22. Bakhshali Manuscript (प्राचीनतम अंक गणित)	"	50-00
23. Speaches Writings and Addresses—	"	
Vol—I—Vineit Veritas—	"	25-00
Vol—II—The Arya Samaj A. Renaissance		30-00

महात्मा हंसराज साहित्य विभाग, आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली—1

अध्यक्ष—कु० विद्यावती आनन्द

दयानन्द इन्स्टीट्यूशन्स शोलापुर द्वारा डी० ए० वी० शताब्दी समरोह का आयोजन

दयानन्द इन्टीट्यूशन्स शोलापुर की ओर से जनवरी 1986 मे डी०ए०वी० शताब्दी समारोह के लिए स्वागत-समिति का गठन किया जा चुका है जिसके अध्यक्ष महाराष्ट्र सरकार के वित्त एवं सांस्कृतिक गतिविधि मंत्री श्री सुशील कुमार शिंदे नियुक्त किए गए हैं। स्वागत समिति न्यायमूर्ति एम०एस० जामदार सहित 60 से अधिक गण्यमान्य व्यक्ति सदस्य के रूप में हैं। इस अवसर पर अनेक गोष्ठियो एवं प्रदर्शनियों का भी आयोजन किया जा रहा है। स्वागत समिति प्रबल वेग से समारोह को सफल बनाने के लिए कार्यरत है।

—देवराज गुप्त, सयोजक

—आर्य समाज, पट्टी (अमृतसर) के निर्वाचन मे श्री रत्न दास आर्य प्रधान और मत्री व कोषाध्यक्ष श्री राज कुमार कपूर चुने गये।

—आर्य समाज, प्रधान मोहल्ला, रोहतक के चुनाव में प्रधान श्री सेठ हर किशन लाल, मत्री श्री गुरुदत्त आर्य और कोषाध्यक्ष श्री भवानी दास नागिया चुन गये।

—डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, आर्य समाज, प्रधान मोहल्ला, रोहतक के प्रो० हंसराज भसीन प्रधान, श्री मददयानन्द धर्मार्थ अस्पताल के प्रधान श्री शिवचरण दास चावला चुने गये।

—आर्य समाज, दयानन्द मार्ग नारायण गढ़, मन्दसौर (म०प्र०) का चुनाव श्री राज गुरु आर्य की अध्यक्षता मे श्री यशपाल आर्य की उपस्थिति में और श्री अजय कुमार के निर्देशन में सम्पन्न हुआ जिसमें श्री तुलसी राम चौधरी प्रधान, श्री रामचन्द्र पथिक मंत्री और श्री वंशीलाल आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

दीपावली पर लक्ष्मी पूजन चांदी के सिक्के से कीजिए

१५०/- की पुस्तकों का आदेश ३०-१०-८५ तक दीजिए और दस ग्राम चादी का रुपया, जिसका बाजार मूल्य लगभग ४०/- है, उपहार मे लीजिए। पुस्तकें भेजने का खर्च हम देंगे। आर्डर के साथ ५०/-अगाऊ मनी-आर्डर भी भेजिए।'

राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ और ब्रेन वाशिंग	प० लेखराम	१०-००
राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ : अतीत और वर्तमान	गंगाधर इंदूरकर	२५-००
गाधी-वध और मैं	गोपाल गोडसे	३०-००
गाधी-वध क्यों ?	गोपाल गोडसे	१२-५०
भारतीय जनता पार्टी के नीति-निर्धारक	डॉ० रामलाल वर्मा	२०-००
राष्ट्रीय विकल्प : भाजपा	डॉ० रामलाल वर्मा	७-५०
हिन्दू पद पादशाही	वीर सावरकर	१६-००
भारत मे मुस्लिम सुल्तान-१	पी० एन० ओक	३०-००
भारत में मुस्लिम सुल्तान-२	" " "	२०-००
कौन कहता है अकबर महान् था ?	" " "	२६-००
लखनऊ के इमामबाड़े हिन्दू राजभवन हैं	" " "	१२-००
ताजमहल मंदिर भवन है	" " "	२०-००
विश्व इतिहास के विलुप्त अध्याय	" " "	१६-००
गंगा मैया मे जब तक के पानी रहे	मुजफ्फर हुसेन	१२-००
मैं हिन्दू हूं	गुरुदत्त	१०-००
स्व-अस्तित्व की रक्षा	" "	१२-००
महाभारत	" "	१०-००
भारत गाधी नेहरू की छाया मे	" "	२०-००
देश की हत्या	" "	१०-००
दो लहरों की टक्कर (८ भागों में)	" "	८०-००
परिस्थिति जन्य (सामाजिक कथाएं)	पुष्पाजी	१०-००
यात्रिक धार्मिक उपन्यास)	श्यामविमल	१०-००
छोटी बहू (सामाजिक उपन्यास)	रोशनलाल	१२-५०
बदलते चेहरे (कथाएं)	नारायण चन्द्र भारती	१०-००
हिन्दू धर्म का क ख ग	तनसुखरामगुप्त	८-००
हिन्दुत्व के प्रेरक	" "	८-००
मेरा रंग दे बसन्ती चोला	" "	८-००
पं० दीनदयाल उपाध्याय : महाप्रस्थान	" "	८-००
मानस-मंथन	" "	१०-००
सर संघ चालक द्वय	" "	४-००
जीवन के कुछ क्षणों में	" "	७-५०
१७५ हिन्दी निबन्ध	" "	३०-००
स्वातन्त्र्य सेनानी : तात्या टोपे	सत्य शकुन	१५-००
मेवाड़ का सूर्य : महाराणा प्रताप	" "	८-००
क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद	" "	८-००
झांसी की रानी : लक्ष्मी बाई	" "	८-००
आर्य समाज के दो रत्न	अशोक कौशिक	१०-००
हम हिन्दू हैं	विराज	१२-००
हिन्दू स्वराज्य संगीत	रामदास कालिया	१०-००
सुदामा चरित	डॉ० सुषमा गुप्ता	५-००
श्री मद्भगवद् गीता सार	डॉ० पी० डी० अग्रवाल	१२-५०
साहित्यिक-निबन्ध (८१ निबन्ध)	डॉ० सुषमा गुप्ता	२५-००
जीवात्माओं के अद्भुत रहस्य	कन्हैयालाल सरस	२०-००
विश्व के अद्भुत रहस्य	कन्हैयालाल सरस	२०-००
८४ सचित्र योगासन एवं स्वास्थ्य	योगीराज	८-००
भोजन द्वारा स्वास्थ्य एवं चिकित्सा	डॉ० ओ पी गोयल	१०-००
स्वातन्त्र्य वीर सावरकर	प्रेमचन्द शास्त्री	१८-००
वीरांगनाएं राजस्थान की (तीन भाग)	डॉ० मेनारिया	१५-००

ध्यान रखिए—५०/- या अधिक के आर्डर पर ही पुस्तकें भेजने का खर्च हम देते हैं, ५०/ से कम के आर्डर पर ५/- डाक व्यय आपको देना होगा। अतः ५०/- से कम का आर्डर न भेजिए।

सूर्य प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली-११०००६

Whatever you wanted to know about Sciences in ancient India...

Read about them all in this rare book

"Founders of Sciences in Ancient India" two volumes.

An exhaustive book by a learned Scientist-Philosopher-Sanyasi, who holds a Doctorate in Chemistry, has been teaching and researching for over 4 decades and has since 1971 been immersed in the study of scriptures and ancient works as a Sanaysi

This book takes you on a fascinating trip through the scientific achievements, ages ago in the fields of astronomy, biology, medicine, atomic theory, mathematics, engineering and so on!

Contents:
Atharvan — The First Discovere of Fire Fire Leads to Mechanical Devices. **Dirghatamas** — The Discoverer of the Vedic Era **Gargya** — The First Enumerator of Constellations **Bharadvaja** Presides Over the First Medicinal Plants Symposium **Atreya** Punarvasu and His Academy of Medicine **Susruta** — The Father of Surgery **Kanada** — The First Expounder of Realism, Law of Causation and Atomic Theory. **Medhatithi** — First Extend Numerals to Billions **Aryabhata** Lays Foundations of Algebra. **Lagadha** — The First to Rationalize Astronomy. **Latadeva & Srisena** Introduce Greek Astronomy to India **Baudhayana** — The First Great Geometer.

By: Svami Satya Prakash Sarasvati
Price Rs. 500/-

At a very attractive Pre-Publication Price Rs. 300/- for the first hundred buyers only.

Offer open upto 15th Nov. '85.
Book will be ready by the end of Nov. '85.

GOVINDRAM HASANAND

2/3 B, Ansari Road, New Delhi-110002

सामाजिक जगत्

प्रान्तीय आर्य महिला सभा

प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली राज्य की ओर से वेद प्रचार दिवस श्रद्धा, निष्ठा, यज्ञ स्तुति-प्रार्थना-गीत-भजन मंत्र प्रतियोगिता और प्रेरणादायक वेदोपदेशों के साथ सम्पन्न हुआ। यह कार्यक्रम बहिन ईश्वर देवी की अध्यक्षता मे दयानन्द वाटिका मे हुआ।

—प्रकाश आर्या

सत्यवती स्मारक भवन का उद्घाटन

आर्य समाज, बाई ब्लाक, सरोजिनी नगर, दिल्ली मे स्थापित रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल के सत्यवती स्मारक भवन का 2 अक्तूबर को श्री रतनचन्द सूद के सुपुत्र श्री जे० आर० सूद ने उद्घाटन किया। मुख्य अतिथि श्री धर्मदत्त प्रशासक (नई दिल्ली नगर निगम) थे। रतन चन्द सूद आर्य पब्लिक स्कूल के छोटे-छोटे बच्चो ने वैदिक विचार धारा से ओत-प्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। उद्घाटन समारोह मे श्री रामगोपाल वानप्रस्थ, श्री रामलाल मलिक, श्री एच०एस० खेर, डा० धर्मपाल, श्री रामनाथ सहगल, श्री राजेन्द्र दुर्गा, और श्री सूद के परिवार के समस्त सदस्यो ने भाग लिया। 14 कमरो का भवन निर्माण लगभग 5 लाख रुपये की लागत से श्री चन्द्र सूद ने अपनी पत्नी की स्मृति मे करवाया है। श्री धर्मदत्त प्रशासक ने इस स्कूल को शीघ्र ही मान्यता दिलवाने की घोषणा की। —रोशन लाल

आर्य समाज सान्ताक्रुज का स्थापना दिवस

आर्य समाज सान्ताक्रुज [पश्चिम] बम्बई मे ध्यान योग शिविर 29 सितम्बर से 5 अक्तूबर तक स्वामी सत्यपति जी संचालन मे आयोजित किया गया, आर्यसमाज सान्ताक्रुज का 41 वा स्थापना दिवस 2 अक्तूबर को मनाया गया। इस अवसर पर महाराष्ट्र राज्य के विधि न्याय एवं तान्त्रिक शिक्षण राज्यमंत्री श्री रामचन्द्र राव पाटिल का बम्बई की समस्त आर्य समाजो की ओर से अभिनन्दन किया गया। —कै० देवरत्न आर्य

—आर्य समाज, सालवन, करवाल मे वेदप्रचार सप्ताह 1 से 7 सितम्बर तक धूमधाम से मनाया गया। अथर्ववेद यज्ञ श्री सुरेश कुमार शास्त्री पौरोहित्य मे हुआ, अध्यक्षता श्री रणवीर शास्त्री थे।

निःशुल्क नेत्र आपरेशन शिविर

शम्भूदयाल दयानन्द वैदिक सन्यास आश्रम, दयानन्द नगर, गाजियाबाद मे श्री नन्दलाल बोहरा, की ओर से 13 से 20 अक्टूबर तक निश्शुल्क नेत्र आपरेशन शिविर का आयोजन किया गया है। आपरेशन केवल 13 अक्टूबर को ही होगे। आपरेशन सिद्धहस्त नेत्र विशेषज्ञ डा० सतीश चन्द्र गुप्ता करेगे।

श्री देवीदास आर्य का अभिनंदन

हरिद्वार—यहाँ की आर्य समाजो, सनातन धर्म सभा, गुरु सिंह सभा, विश्व हिंदु परिषद्, महिला समाज, राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ, कर्मचारी यूनियन, वानप्रस्थ आश्रम, सन्यास आश्रम, अनेक शिक्षण व सामाजिक संस्थाओ व नागरिको द्वारा प्रसिद्ध महिला उद्धारक, आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य, कानपुर का बी०एच० ई०एल० आर्य समाज हाल मे महिला उद्धारक के रूप मे नागरिक अभिनन्दन किया गया।

समारोह की अध्यक्षता श्री बी०एल० वर्मा तथा सचालन श्री हरिहर दुबे ने किया। —मंत्री

आर्य समाज सुमेरपुर

आर्य समाज सुमेरपुर मे वेद प्रचार सप्ताह 14 से 22 सितम्बर तक आयोजित किया गया। जिसमे अथर्ववेद का पाठ किया गया। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष स्वामी चेतनानन्द और मुख्य अतिथि स्वामी धर्मानन्द सरस्वती थे। श्री अमरसिंह के भजन और श्री भूदेव शास्त्री के व्याख्यान हुए। —शशीकान्त आर्य

आर्य समाज बालावास

आर्य समाज, बालावास का प्रथम वार्षिकोत्सव 18-19 सितम्बर को सोत्साह मनाया गया। जिसमे स्वामी ओमानन्द, प्रो० शेरसिंह, डा० सुदर्शनदेव, दादा गणेशी लाल, मास्टर शेरसिंह, श्री खेमसिंह, प० ईश्वर सिंह आदि के उपदेश और भजन हुए। —अतर सिंह आर्य

श्रीमती हाण्डा का नया पता

'आर्य जगत्' की हजारो ग्राहक बनाने वाली, टकारा ट्रस्ट को हर वर्ष हजारो रुपये दान देने वाली, निस्स्वार्थ भाव से सेवा करने वाली कर्मठ सामाजिक कार्यकर्त्री श्रीमती स्नेहलता हाण्डा का नया पता इस प्रकार है—श्रीमती स्नेहलता हाण्डा, 42/2 सी न्यू पलासिया, 'ओ३म् शान्ति भवन' के पास, इन्दौर [म० प्र०] फोन—22993

डा० ए० वी० आन्दोलन पर सचित्र ट्रैक्ट

डी०ए०वी० शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में दयानन्द ऐंग्लो वैदिक स्कूल—कालेजो से सम्बन्धित महापुरुषो की 'सचित्र जीवन-गाथा' डी०ए०वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी और केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् संयुक्त रूप से प्रकाशित करेगे। सभी विद्वानो शोधकर्ताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं से अनुरोध है कि इस सम्बन्ध में अपना सुझाव और डी०ए०वी० से सम्बन्धित नेताओ के दुर्लभ चित्र आदि शीघ्र भेजें। संपर्क सूत्र-सुशील श्रीवास्तव, 6996 बेरी वाला बाग, आजाद मार्केट, दिल्ली-110006।

स्वामी काव्यानन्द दिवंगत

आर्य जगत् के प्रसिद्ध सन्यासी-उपदेशक स्वामी काव्यानन्द जी का 7 सितम्बर को अजमेर मे स्वर्गवास हो गया। स्वामी जी सम्प्रति चित्रकूट मे गायत्री वेद मन्दिर के निर्माण कार्य मे संलग्न थे।

आर्य समाज सफदर जंग

आर्य समाज, सफदर जग एन्कलेव, नई दिल्ली के वार्षिक चुनाव मे श्री बी०डी० भण्डारी प्रधान, श्री जे०एल० आजाद उपप्रधान, श्री रामचन्द्र गुप्त मत्री, श्री के० कुमार उपमन्त्री और श्री बी०डी० जसूजा कोषाध्यक्ष चुने गए। चुनाव श्री रामशरण दास को अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज पूण्डरी

आर्य समाज, पूण्डरी [कुरुक्षेत्र] का वार्षिकोत्सव 4 से 6 अक्तूबर तक हुआ। उत्सव मे प० जगदीश चन्द्र विद्यावाचस्पति, डा० गणेश दास, प्रो० वेद सुमन, चौ० शिवराम वर्मा, प्रो० अमर सिंह, श्री जगतराम, श्री बस्तीराम आदि उपदेशक और भजनोपदेशको ने भाग लिया।

ध्यान योग शिविर

योग धाम आर्य नगर, ज्वालापुर [हरिद्वार] मे ध्यान योग शिविर का आयोजन नारायण मुनिश्चतुर्वेद की अध्यक्षता मे 27 अक्तूबर से 2 नवम्बर तक लगाया जायेगा।

—दिव्यानन्द सरस्वती

श्रीमती पुष्पा दिवंगत

आर्य समाज, राणा प्रताप बाग, दिल्ली के प्रधान श्री जसवन्त राय साही की धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पा साही का 29 सितम्बर को निधन हो गया। आर्यसमाज की ओर से दिवगत आत्मा की सद्गति और शान्ति हेतु प्रार्थना कर शोक प्रस्ताव पारित किया। श्रीमती साही समाज की कर्मठ सदस्या थी।

—जगदीश आर्य

—आर्यसमाज, कैन्टूनमेन्ट, सदर बाजार, लखनऊ मे 15 अगस्त को हिन्दी दिवस और 30 अगस्त को श्रावणी उपाकर्म समारोह पूर्वक मनाया। जिसमे यज्ञ आचार्य आजम सिंह के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। श्री शिवसिंह सरोज (पूर्व सम्पादक स्वतन्त्र भारत दैनिक) का हिन्दी दिवस पर व्याख्यान हुआ।

—डा० त्रिलोकी नाथ गुप्त

—आर्य समाज, तिमारपुर दिल्ली मे 16 से 22 सितम्बर तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ एव वेदकथा का आयोजन किया गया। यज्ञ श्री सत्यप्रिय जी के ब्रह्मत्व में और कथा श्री प्रेमचन्द श्रीधर द्वारा हुई। श्री सत्यदेव स्नातक और ज्योति प्रसाद के मनोहर भजन हुए।

—विमलकान्त शर्मा

आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति का सम्मान

हिण्डोन सिटी स्थानीय आर्य समाज हाल मे 30 अगस्त से 6 सितम्बर, तक वेद प्रचार सप्ताह स्वामी ओमानन्द जी के आचार्यत्व मे सम्पन्न हुआ। जन्माष्टमी के पावन पर्व पर श्री प्रहलाद कुमार आर्य द्वारा अपने पूज्य पिताजी की पुण्य स्मृति मे स्थापित "श्री घूडमल आर्य पुरस्कार" आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् गुरुकुल कागडी विश्व विद्यालय के भूतपूर्व कुलपति वेदमार्तण्ड आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति को उनके सर्वथा अनूठे ग्रन्थ" वेदो के राजनीतिक सिद्धातो" (तीन खण्ड) पर सम्मान भेट किया गया। पुरस्कार के रूप मे अभिनन्दन-पत्र एक शाल एवं 1501/—रुपये की राशि समर्पित की गई। समारोह का सचालन डा० ओमप्रकाश वेदालकार एम० ए०, पी० एच० डी० हिंदी विभागाध्यक्ष (भरतपुर) ने किया। अनेक आर्य समाजो के प्रतिनिधियो ने भी आचार्य जी को माल्यार्पण कर नागरिक अभिनन्दन में भाग किया। अन्त मे प्रीतिभोज का आयोजन किया गया। —सचिव, श्री घूडमल आर्य पुरस्कार समिति,

दयानन्द अनुसंधान पीठ चंडीगढ़ की प्रगति

1. डा० वेदपाल वर्णी (शतपथ ब्राह्मण तथा महर्षि दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य का तुलनात्मक अध्ययन) पर पी-एच उपाधि प्राप्त की है 2 डा० राजपाल सिंह (भारतीय षड्दर्शन को आर्यसमाज की देन) 3. डा० धर्मदेव शर्मा (स्वामी दयानन्द रचित संस्कार विधि का गृह्यसूत्रों से तुलनात्मक अध्ययन) इससे पहले डाक्टरेट की डिग्री प्राप्त कर चुके हैं। इस समय दयानन्द अनुसधान पीठ के अध्यक्ष डा० भवानीलाल भारतीय के निर्देशन मे सम्पन्न उक्त शोध कार्यो के अतिरिक्त सम्प्रति स्वामी दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य मे देवता तत्व,' 'स्वामी दयानन्द की संस्कृत व्याकरण शास्त्र को देन,' पुनर्जागरण आन्दोलनो की दार्शनिक पृष्ठ भूमि' आदि विषयो पर भी शोध कार्य किये जा रहे है।

भोपाल में यज्ञ द्वारा जल वायु की शुद्धि

विषाक्त गैस के प्रभाव से भूपाल मे वायु दूषित हुई। हजारो व्यक्ति एवं पशु मरे आज भी उस का कुप्रभाव बना हुआ है जिसे दूर करने हेतु 28.10 85 सायं से 3.11.85 प्रात तक वैदिक यति मण्डल के तत्वावधान मे गायत्री बृहद यज्ञ करने का निश्चय किया गया है।

जिन्हे यज्ञ व गायत्री मे निष्ठा हो, और जन कल्याण की भावना हो, वह पत्र व्यवहार करके स्वीकृति लेकर यज्ञ मे सम्मिलित हो सकते हैं।

—महात्मा दयानन्द, संचालक तपोवन आश्रम, देहरादून —248008

यू० १०३/८१ लायसेंस टु पोस्ट विदाउट प्री-पेमेन्ट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११६३/७२ डी० सी० ४०६

आर्य समाज अनारकली का वार्षिकोत्सव

आर्य प्रादेशिक सभा की सबसे प्रमुख, आर्य समाज अनारकली नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव १८ नवम्बर से २४ नवम्बर तक मनाया जाएगा। जिसमें श्री प० शिवकुमार शास्त्री की कथा, गायत्री महायज्ञ, २२ नवम्बर को स्त्री आर्य समाज का वार्षिकोत्सव तथा २३ नवम्बर को डी ए वी शिक्षण संस्थाओं का सांस्कृतिक कार्यक्रम मुख्य है। २४ नवम्बर रविवार को यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् प्रात. १० बजे से १ बजे तक स्वामी सत्य प्रकाश जी, प० शिवकुमार जी, प्रो० रत्न सिंह जी, आचार्य पुरुषोत्तम जी और श्री क्षितीश कुमार जी के विशेष प्रवचन होंगे। प्रीतिभोज के पश्चात् दोपहर दो बजे से अ० भा० आर्य युवक सम्मेलन होगा। —रामनाथ सहगल, मंत्री

आर्य समाज हनुमान रोड का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज हनुमान रोड का वार्षिकोत्सव ६ से १३ अक्तूबर तक मनाया जाएगा जिसमें सामवेद पारायण महायज्ञ, श्री मदन मोहन विद्यासागर की कथा, १२ अक्तूबर को राकेश कला भाषण प्रतियोगिता, रात को श्री ओम्प्रकाश (खतौली) का भाषण, १३ अक्तूबर रविवार को प्रातः राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन और १२॥ से १॥ बजे तक आर्य युवक प्रदर्शन का मुख्य कार्यक्रम है। —के० एल० भाटिया, मंत्री

योग्य वर चाहिए

२६ वर्षीय, सुन्दर स्वस्थ गौरवर्ण, कद ५ फुट ३॥ इन्च, इकहरा बदन, एम० ए० (संस्कृत), बी० एड० टीचर कन्या के लिए सेवारत, स्वस्थ सदाचारी शाकाहारी योग्य वर चाहिए। पत्रव्यवहार का पता—रामनारायण गुप्त, रिटायर्ड हैडमास्टर, डडवाडा, कोटा जंकशन, कोटा (राजस्थान)

(२) २५ वर्षीय, कद ५ फुट, बी० एस-सी, बी० एड०, बैंक मे सर्विस, वेतन १००० रु० मासिक, कन्या के लिए सुशिक्षित शाकाहारी योग्य वर चाहिए। जाति बन्धन नही। पत्रव्यवहार का पता—श्री मदन मोहन, चीफ बुकिंग अफसर, रेलवे स्टेशन, करतार पुर (जिला जालन्धर)

(३) २८ वर्षीय सुन्दर नाक नक्श, गौरवर्ण, स्लिम, कद १५० सें० मी०, बी० ए०, प्राइवेट नर्सरी स्कूल मे अध्यापिका, गृहकार्य मे दक्ष, कन्या के लिए योग्य वर चाहिए। दहेज नही, जातिबन्धन नही। पत्र व्यवहार का पता—राजेश गुप्त, बी-७६, डी डी ए जनता फ्लैट्स, कालकाजी, नई दिल्ली-२७ [P]

श्रीमती श्री देवी (धर्म पत्नी प्रो० वेद सुमन वेदालंकार) का निधन

श्रीमती श्री देवी, धर्म पत्नी प्रो० वेद सुमन वेदालंकार (सुपुत्री स्व० श्री पं० त्रिलोकचन्द शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रादेशिक सभा) का ३० सितम्बर को रोहतक मेडीकल कालेज अस्पताल मे देहावसान हो गया। उनकी रस्म क्रिया शुक्रवार ४-१०-८५ को दोपहर बाद २-३० बजे डी० ए० वी० कालेज फार गर्ल्स, करनाल हुई जिसमें हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, हिमाचल तथा अन्य प्रदेशो के सैकडो आर्यजनो ने भाग लिया। दिल्ली से प्रादेशिक सभा के मंत्री—श्री रामनाथ सहगल तथा आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान प० शिव कुमार शास्त्री जी भी वहाँ पहुचे और दिवगत आत्मा की शोक सभा में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। शोक सभा मे श्री शान्ति प्रकाश—शास्त्रार्थ महारथी, चौ० शिवराम वर्मा, श्री केदारनाथ साहनी—एडवोकेट: चौ० किशन लाल—चंडीगढ़, ला० जगन्नाथ रंगवाले, पानीपत आदि बहुत से गण्यमान्य आर्य जन भी उपस्थित थे। डा० गणेशदास आर्य ने लगभग दो सौ आर्य समाजो, स्त्री आर्य समाजो तथा डी० ए० वी० संस्थाओं की ओर से आयु शोक प्रस्ताव पढ कर सुनाये।

महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह

अमृतसर में

१९-२० अक्तूबर १९८५ को

अमर शहीद लाला जगतनारायण नगर
(गोल बाग में)

सभी धर्म प्रेमी भाईयो से प्रार्थना है कि इस समारोह में पहुंचकर स्वामी जी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करे एवं तन-मन धन से सहयोग करें।

प्रधान	प्रचार मन्त्री	महामन्त्री
ओमप्रकाश आर्य	राजकुमार कपूर	वेद प्रकाश आर्य

पंजाब प्रान्तीय आर्य युवक परिषद्
(कार्यालय—आर्य समाज लक्ष्मणसर अमृतसर)

सरदार पटेल जयन्ती पर आशु निबन्ध प्रतियोगिता

नागरिक परिषद् दिल्ली की ओर से सरदार पटेल जयन्ती के उपलक्ष्य मे आशु निबन्ध प्रतियोगिता रखी गई हैं जिसमें स्कूलों और कालेजों के छात्र भाग ले सकेंगे। प्रतियोगिता बुधवार ३० अक्तूबर को साय ३ बजे कान्स्टियूशन क्लब, रफी मार्ग, नई दिल्ली में होगी। प्रतियोगिता में विजयी छात्रो के लिए ६,००० रु० के पुरस्कार निर्धारित किए गए हैं। प्रवेश शुल्क ५ रु० है। स्कूल या कालेज के प्रधानाचार्य से फार्म प्राप्त करके १२ अक्तूबर तक नागरिक परिषद् के कार्यालय—कमरा नं० २७, नार्थ एण्ड काम्प्लैक्स, रामकृष्ण आश्रम मार्ग पंचकुइयां रोड, नई दिल्ली भेज दें। टेलीफोन . ३५१३३६ —नाम चन्द रिवारिया, सदस्य कार्यकारिणी नागरिक परिषद

पुरोहित एवं धर्म शिक्षक चाहिए

आर्य समाज वजीरबाग श्रीनगर के लिए एक पुरोहित एवं आर्यसमाज द्वारा चल रहे विद्यालय के लिए एक धर्म शिक्षक की शीघ्र आवश्यकता है। अपना प्रार्थना पत्र—श्री आर० के० गजू, ४७—गोग्रजी बाग, श्रीनगर (काश्मीर) के पते पर भेजें।

पुरोहित चाहिए

आर्य समाज, डिफेन्स कालोनी (कस्तूरबा नगर) नई दिल्ली के लिए एक विद्वान पुरोहित की शीघ्र आवश्यकता है। सपरिवार रहने की व्यवस्था नही है। ब्रह्मचारी वानप्रस्थी को वरीयता। इच्छुक विद्वान उपरोक्त पते से सम्पर्क करें।—मन्त्री

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के कर कमलों द्वारा स्थापित और आर्य प्रादेशिक सभा द्वारा संचालित

भारतवर्ष का पुराना और उत्तरी भारत का प्रमुख अनाथालय कुशल प्रशासक शैक्षिक ज्ञाता, उदार हृदय प्रबन्धकों की देखरेख में बालक-बालिकाओं के पालन-पोषण, शिक्षा आदि का उचित प्रबन्ध है।

आप सभी दानी महानुभाव इस पुनीत कार्य में दान देकर पुण्य के भागी बनें। प्र० डी० पी० चौधरी, मैनेजर आर्य अनाथालय, फिरोजपुर

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स ७११७/१८ पहाड़ी धीरज, (फोन : ५१६५१८, ५२७३३५) दिल्ली से छपवा कर कार्यालय आर्य जगत्, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित । स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली । फोन (343718)

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य-२५ रुपये | विदेश मे ३० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४८, अक ४३ रविवार, २० अक्तूबर, १९८५ दूरभाष : ३ ४ ३ ७ १८
आजीवन सदस्य-२५१ रु० | इस अक का मूल्य—६० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८५, दयानन्दाब्द १६० आश्विन शुक्ला ७, २०४२ वि०

विजय दशमी

प्रणव शास्त्री

यह विजय का पर्व आया
मानवो के मानसो मे मधुर मन उल्लास लाया । १ ।

सत्यता की ध्रुव धरोहर पर न कोई हाथ डाले
यह जगत् का नियम शाश्वत न्यायकारी न्याय पाले

निहित जन-हित है इसी मे पाठ यह सब को पढ़ाया । २ ।
आसुरी अघ-वृत्तिया ये माग सिन्दूरी सजाये
सृष्टि के नेपथ्य-पथ में आ नही आसन जमाये

हो न नर्तन नग्न इनका ध्यान इसका है दिलाया । ३ ।
देव असुरों का सदा संग्राम होता ही रहा है
दैत्य-दल संहार का आयाम होता ही रहा है
भूत ने भावी जगत् को आज फिर से है जगाया । ४ ।
रौद्र रावण-वृत्तियो के दीप भी जलने न पायें
कंस या शिशुपाल याहया फूलने फलने न पाये

सत्य जय की धारणा ने है जिया इनका सफाया । ५ ।
आत्म जेता ही धरा पर जीत का डंका बजाते
संयमी हनुमान ही तो पाप की लंका जलाते

विश्व के इतिहास में भी यह सुभग सन्देश छाया । ६ ।
काम से ही राम का शुभ नाम अमृत में सना
दे रहा है प्रेरणा नित तनिक भी सशय बिना

कर्म कञ्चन-दण्ड पर ही यह विजय ध्वज लहलहाया । ७ ।
अतुल अत्याचार को आचार ने मुंह की खिलाई
मृत्यु मुख मे जा रही थी जो कि मानवता जिलाई
युग-युगो से तथ्य यह निर्भ्रान्त जन-मन मे समाया । ८ ।

महत्त्वपूर्ण समाचार

ब्रिटेन में राजीव गाँधी की हत्या करने की साजिश : १५ व्यक्ति गिरफ्तार

भारत के प्रधानमंत्री श्री राजीव गाधी की ब्रिटेन-यात्रा के समय हत्या करने की एक साजिश का ब्रिटिश गुप्तचर विभाग ने पता लगाया है और १५ व्यक्तियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार व्यक्तियों में कश्मीर मुक्ति मोर्चे के कुछ सदस्य, कुछ पाकिस्तानी और कुछ उग्रवादी सिख शामिल हैं। ब्रिटिश प्रधानमन्त्री श्रीमती थैचर ने कहा है कि किसी भारत-विरोधी सिख को वे ब्रिटेन मे नही रहने देगी। पर साथ ही उनकी सरकार ने राजीव गाधी के विरोध में प्रदर्शन करने की अनुमति सिखों को दे दी है। विश्वस्त सूत्र से विदित हुआ है कि श्री राजीव गाँधी के ब्रिटेन पहुंचने से पहले एक बड़ा पोस्टर छाप कर बाँटा गया है जिसमें उन्हें ४० हजार सिखो का हत्यारा कहकर सम्बोधित किया गया है।

धर्म परिवर्तन करने पर अनुसूचित जनजातियों को सरकारी सुविधा नहीं

आर्य समाज चिरकाल से यह माग करता आ रहा है कि जो हरिजन धर्म-परिवर्तन करके ईसाई या मुसलमान बन जाते है उन्हे सरकार की ओर से आरक्षण या विशेष सुविधाएं नही मिलनी चाहिएं। प्रसन्नता की बात है कि उच्चतम न्यायालय ने अनुसूचित जनजाति से सम्बन्धित संविधान के आदेश की सवंधानिकता को बरकरार रखा है। संविधान के इस अंश मे कहा गया है कि हिन्दू और सिख धर्म के लोगो के अलावा किसी अन्य धर्म के लोगो को अनुसूचित जाति का सदस्य नही माना जाएगा। एक चर्मकार हरिजन ने ईसाई बनने पर सरकारी सुविधाओं की माँग के लिए उच्चतम न्यायालय मे याचिका दी थी। उसे खारिज करते हुए माननीय न्यायाधीशो ने कहा था कि संविधान का उक्त अश सर्वथा सही है और उसमे कही पक्षपात नहा है।

परामर्शदाता-अमर स्वामी सरस्वती | सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक-रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

प्रभो ! मुझे कर्म से अनुप्राणित कर दो !

—सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम. ए. एल. टी —

इन्द्र क्रतुं न आभर पिता पुत्रेभ्यो यथा।
शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत यामनि,
जीवा ज्योतिरशी महि। ऋ 7. 32 49

भावार्थ—हे प्रभो ! तू हमारी नस-नस मे 'कर्म' को भर दे। हमें कर्म की शिक्षा दे जिससे कि हम इस जीवन सग्राम मे जीवित जागृत रहते हुए ज्योति को प्राप्त कर सकें। यह शिक्षा हमे इस प्रकार दे जैसे पिता अपने पुत्रों को शिक्षा देता है, और शिक्षा के साधन भी जुटाता है।

'कर्म' और 'ज्ञान' परस्पर सबन्धित हैं। इस ससार मे कर्म का सम्बन्ध प्रत्येक मनुष्य और प्राणी से है। कर्म ज्ञानपूर्वक भी हो सकता है, अज्ञानपूर्वक भी। यह भी संभव है कि हम आलस्य मे पड़कर कर्म का त्याग ही कर दे। वेद का यह मंत्र कहता है कि हे प्रभु ! तू हमे ज्ञान-युक्त कर्म दे। ज्ञान उत्तम वस्तु है। पर, कर्म के बिना ज्ञान हमे व्यावहारिकता, लौकिकता और जीवन का वास्तविक मार्ग नही बता सकेगा। कर्म के बिना ज्ञान लगड़ा हो जाएगा। चल न सकेगा। और जब उस ज्ञान का उपयोग न होगा तो वह ज्ञान हमे अन्धकूप मे ले जाने वाला होगा। इसलिए मत्र कहता है 'जिनके हाथ मे 'कर्म' नही है, उन्हे जीवन मे ज्योति के दर्शन नहीं होते, उन्हें तो चारो ओर अधकार ही अधकार दिखाई देता है। उन्हे अपने जीवन मे सुनहले दिन देखने को नही मिलते, उन्हे तो सर्वत्र निराशा ही निराशा दृष्टिगोचर होती है। इसी लिए वेद का स्तोता कहता है कि प्रभो ! तू मुझे कर्म से अनुप्राणित कर दे।'

जीवन की ज्योति को जागृत करने के लिए श्रम या कर्म का बहुत महत्व है। इसलिए इस मत्र मे कहा गया है कि "इन्द्र क्रतुं न आभर" हे इन्द्र ! तू हमे कर्म की शिक्षा दे। यह कर्म की शिक्षा हमारे जीवन को उन्नत करेगी।

हम आपको कर्म करने के सम्बंध मे कुछ आवश्यक बाते बताते हैं—

1. प्रत्येक सरल कार्य को इस प्रकार कीजिए कि जैसे आप किसी कठिन कार्य को करने के लिए कटिबद्ध है और कठिन कार्य को इस प्रकार करें जैसे आप कोई बहुत सरल कार्य कर रहे हैं।

2 किसी निर्णय पर पहुचने के बाद जब उसके अनुसार कार्य आरम्भ कर दें तब सारी शकाओ और कुशकाओ को मन से निकाल दे और परिणाम की प्रतीक्षा करे।

3 कार्य को उपेक्षापूर्वक करने से कार्य का मूल्य घटता है और कार्य मे असफलता मिलती है।

4. प्रत्येक कर्म को इस विश्वास से करे कि असफल होना असभव है।

5 काम के स्थान से हटने के बाद उस काम को मस्तिष्क से निकाल दें। काम से छुट्टी ले लेने से दिमाग को ताजगी मिलती है, वह काम को दिमाग मे लटकाए रखने के लाभ से अधिक मूल्यवान् है।

सदा इस बात से डरते रहना कि कार्य करते हुए कोई भूल न हो जाय, जीवन की सबसे बड़ी भूल है।

7 सोने से पहले कार्य की चिन्ता को मस्तिष्क से बिल्कुल निकाल दें। निश्चिन्त होकर सोना कार्य करने की अधिक शक्ति देगा। श्रम पूर्वक काय करने से नीद भी अच्छी आती है।

आइए, इन बातो को ध्यान मे रख कर हम खूब परिश्रम करें। प्रभु हमे सफलता देगा, और अधिक कर्म करने की शक्ति भी देगा।

पता—9-ए० ई०-1 ओबरा, मिर्जापुर

बलिदान शताब्दी के अवसर पर

महर्षि दयानन्द के उपकार

—राजकुमार कपूर एम०ए०—

महर्षि स्वामी दयानन्द जी स्वतन्त्रता के एक ध्वजवाहक थे। 1857 ई० के प्रथम स्वतन्त्रता सग्राम मे उन्होने ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध एक जुट होकर सघर्ष करने का आह्वान किया। वे विवेकानन्द, तिलक, लाला लाजपतराय, और महात्मा गाधी जैसी अनेक हस्तियो के प्रेरणा स्रोत थे। उनकी ओजस्वी वाणी मे केवल भारत ही नही, अपितु समस्त विश्व आन्दोलित हो उठा था।

स्वामी दयानन्द राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार तथा विकास के लिए आयु पर्यन्त कार्यरत रहे। गुजरात मे जन्म लने और गुजराती भाषी होते हुए भी उन्होने राष्ट्रभाषा के रूप मे हिन्दी को स्वीकार किया। हिन्दी के माध्यम से ही उन्होने वेदों का सन्देश आम जनता तक पहुंचाया।

वे पश्चिमी सभ्यता और वेशभूषा के विरुद्ध थे। उन्होने विशुद्ध भारतीय सभ्यता और सस्कृति का समर्थन किया और भारतीयो को इसका अनुसरण करने की प्रेरणा करके उनमे स्वाभिमान की ज्योति जगाई।

मनुष्य जन्म से और प्रभु की दृष्टि से एक समान है। कोई ऊंचा या नीचा नही। इसीलिए उन्होने जात-पात और छुआ-छात का तीव्र विरोध किया। स्त्रियो की शिक्षा तथा उनके सामाजिक उत्तर-दायित्व के लिए उन्होने कठोर सघर्ष किया। श्री अरविन्द ने स्वामी जी की प्रशंसा करते हुए कहा था, 'उनकी आत्मा मे ईश्वर था, उनके नेत्रो में दूरदर्शिता और उनके हाथो मे शक्ति थी। वे प्रकाश के अग्रदूत थे और मानव शिल्पी थे।" गाधी जी द्वारा चलाये गये 'अछूतोद्धार' आन्दोलन के पीछे भी उनकी प्रेरणा शक्ति ही कार्य कर रही थी।

श्रीमती इन्दिरा गाधी ने आर्यसमाज शताब्दी डाक टिकट विमोचन समारोह के अवसर पर स्वामी जी को श्रद्धाजलि भेट करते हुए कहा था—"स्वामी दयानन्द जी के हृदय मे एक आग थी, लेकिन वह दाहक नही, पावक थी और पावन थी। ऐसे व्यक्ति उन सस्थाओ से महान् होते है जिनका वे निर्माण करते है या जो उनकी स्मृति मे उनके सदेश के प्रचार के लिए स्थापित होती है।'

स्वामी दयानन्द के दिव्य गुणो की गिनती नहीं की जा सकती। प्रो० त्रिलोकचन्द महरूम के शब्दो मे —

गिने जाएं मुमकिन है सहरा के जर्रे,
समन्दर के कतरे फलक के सितारे,
दयानन्द स्वामी मगर तेरे अहसा
न गिनती मे आएं कभी हमसे सारे।

आर्य समाज लक्ष्मणसर, अमृतसर जो कि पजाब प्रातीय आर्य युवक परिषद् का मुख्य कार्यालय है स्वामी जी के सपनो को साकार करने के लिए काफी लम्बे समय से कार्यरत है। इसने समाज सुधार के कार्यक्रमो पर अमल करके महत्वपूर्ण कार्य किया है।

टंकारा में ऋषिलंगर हेतु थालियां

टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टियो एव प्रतिष्ठित सदस्यो की एक बैठक आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली मे हुई। उसमे ट्रस्टियो की अपील पर निम्न-लिखित प्रतिष्ठित व्यक्तियो एव आर्य समाजो ने अपनी ओर से टंकारा मे हर वर्ष शिवरात्रि पर लगने वाले ऋषि मेले पर आयोजित ऋषिलगर के लिए एक हजार थालिया (स्टेनलैस स्टील की) दान मे दी। वैसे तो हमे दो हजार थालियो की आवश्यकता है। जो सज्जन टंकारा के लिए थालिया दान देना चाहे, वे जितनी थालियां देना चाहे उतनी राशि का चेक/ड्राफ्ट महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा, जिला राजकोट-363650 (गुजरात) के पते पर अथवा इसके उपकार्यालय-महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली, के पते पर भेज सकते है। एक थाली की कीमत लगभग 25/-रु० है। थालियो के पीछे दाताओ के नाम तथा पते लिख दिये जायेंगे।

अब तक प्राप्त थालियो का विवरण निम्न लिखित है —

1. श्री ला० जगन्नाथ जी रगवाले-पानीपत 200, 2. श्री ओ०पी० गोयल 100, 3 श्री विद्याप्रकाश सेठी 100, 4 श्री शान्तिप्रकाश बहल (आर्य समाज ग्रेटर कैलाश की ओर से) 100, 5 देशराज बहल 100, 6. श्री नवनीतलाल एडवोकेट 50, 7. श्री बालमुकुन्द विग (आर्य समाज, पटेल नगर की ओर से) 50, 8 श्री शान्तिलाल सूरी (आर्य समाज, मन्दिर मार्ग की ओर से) 50, 9 श्री रामलाल मलिक (आर्य समाज, करौलबाग की ओर से) 50, 10 श्री मुलखराज भल्ला 50, 11. श्री हरवंश खेर 25, 12 श्री नन्दकिशोर भाटिया (आर्य समाज राजौरी गार्डन) 25, 13 श्री ओमप्रकाश कपड़े वाले (आर्य समाज नया बास की ओर से) 25, 14. श्री तिलकराज कोहली आर्य समाज बस्तीहरफूल सिंह की ओर से—25, 15. श्रीमती सरला मेहता—25, 16. श्री रामसिंह शर्मा 10।

—रामनाथ सहगल, (मन्त्री-टंकारा ट्रस्ट)

भजन पार्टी की आवश्यकता

ला० रामशरणदास स्थिर स्मारकनिधि वेद प्रचार मण्डल हांसी के लिए वेद प्रचारार्थ भजन पार्टी की आवश्यकता है जो देहात प्रचार मे कुशल एवं जनसम्पर्क बनाने मे रुचि रखते हैं। पार्टी मे 3 व्यक्ति हों। वेतन, योग्यता अनुसार देय होगा।

—मंत्री आर्य समाज, हांसी, जिला—125033

सुभाषित

रामो राजमणि: सदा विजयते रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहम्।
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर ॥

इस श्लोक की विशेषता यह है कि व्याकरण की सातों विभक्तियों और सम्बोधन का एक ही श्लोक में प्रयोग हुआ है। राम का भक्त कहता है—राजाओं के मुकुट मणि राम सदा विजयी होते हैं (प्रथमा)। सीतापति राम की मैं वन्दना करता हूं (द्वितीया)। राम ने ही राक्षसों की सेना का हनन किया (तृतीया)। उस राम के लिए नमस्कार है (चतुर्थी)। राम से बढ़कर कोई और धर्मपरायण तत्व नहीं है (पंचमी)। मैं तो राम का दास हूं (षष्ठी)। मेरा चित्त सदा राम में रमा रहे (सप्तमी)। हे राम! मेरा उद्धार करो (सम्बोधन)।

सम्पादकीयम्

राष्ट्र धर्म के पुरस्कर्ता श्रीराम

हमने योगेश्वर श्रीकृष्ण और मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को सदा राष्ट्र पुरुष कहा है। राष्ट्र धर्म द्वारा राष्ट्रीय विजय का जैसा अद्भुत उदाहरण इन दोनों महापुरुषों ने प्रस्तुत किया, ऐसा इतिहास के पृष्ठों में दुर्लभ है। अपने चरित्र के द्वारा वे केवल सामान्य मनुष्य नहीं रहे, प्रत्युत लोकोत्तर चरित्र के भी धनी बनकर व्यष्टि से उठकर समष्टि के और समस्त राष्ट्र के प्रतीक बन गये। यही उनका देवत्व है। श्रद्धालु जनों ने इसी देवत्व को ईश्वरत्व की कोटि तक पहुंचा दिया और यह मान लिया कि उनके जैसा अलौकिक पुरुषार्थ मानव के वश का नहीं है। इस भावना से भक्ति का विस्तार तो हो सकता है, परन्तु जीवन में पुरुषार्थ की प्रेरणा नहीं मिल सकती।

महर्षि वाल्मीकि ने राम के गुणों का वर्णन करते हुए जहां उन्हें साक्षात धर्म का अवतार, वेद वेदांग-तत्वज्ञ और रघुवंश शिरोमणि कहा है, वहां उनकी प्रशस्ति में यह भी कहा है—

समुद्र इव गाम्भीर्ये धैर्येण हिमवानिव।

—अर्थात् वे गंभीरता में समुद्र के समान हैं और धैर्य में हिमाचल के समान हैं। इस एक ही श्लोक में हिमालय और समुद्र के एक साथ वर्णन में हमें यह व्यंजना प्रतीत होती है कि महर्षि वाल्मीकि अपनी रामायण में जिस व्यक्ति का वर्णन कर रहे हैं, वह केवल दशरथ-सुत और अयोध्या का राजकुमार नहीं है, बल्कि वह हिमालय से लेकर समुद्र पर्यन्त इस समस्त आर्यावर्त का प्रतीक है। यदि अयोध्या के राजकुमार का वर्णन ही महर्षि वाल्मीकि को अभीष्ट होता तो कदाचित् वे उपमा के रूप में हिमालय और समुद्र का उल्लेख न करते, क्योंकि अयोध्या के पास न हिमालय है, न समुद्र है। हिमालय और समुद्र दोनों प्रकृति की इतनी विराट रचनाएं हैं, कि न तो इन्हें अनायास किसी एक व्यक्ति की श्रेष्ठता के लिए प्रस्तुत किया जाना चाहिए और न ही किसी लघु भूखण्ड के लिए। छोटे-छोटे प्रदेशों पर राज्य करने वाले राजाओं के लिए तो हरगिज नहीं। हिमालय और समुद्र का एक साथ वर्णन आते ही तुरन्त उत्तर से दक्षिण तक फैले आर्यावर्त का विशाल भौगोलिक भूखण्ड सामने आता है और ऋषि वाल्मीकि को यही अभिप्रेत है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि श्रीकृष्ण ने यदि इस आर्यावर्त को पश्चिमी छोर से लेकर पूर्वी छोर तक—अर्थात् समुद्र—तटवर्ती द्वारिका से लेकर बर्मा की सीमा से लगे ठेठ मणिपुर तक—इस देश को एक सूत्र में आबद्ध किया था तो मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम ने उत्तर से दक्षिण तक—अर्थात् नेपाल के सीमावर्ती प्रदेश जनकपुर से लेकर ठेठ दक्षिण में हिन्द महासागर के अन्तर्गत लंका के टापू तक इस देश को एक दृढ़ सूत्र में आबद्ध किया। इन दोनों महापुरुषों का यही राष्ट्र पुरुषत्व है। इतना बड़ा चमत्कार आज तक किसी अन्य महापुरुष के द्वारा सम्पन्न नहीं हुआ। इसलिए भारत का जन जन इन दोनों महापुरुषों का नाम आते ही भक्ति और श्रद्धा से विह्वल हो उठता है, तो आश्चर्य ही क्या है।

जब यह आर्यावर्त्त चारों ओर राक्षस साम्राज्य से घिरा हुआ था तब राम ने ऋषियों के मार्ग दर्शन में राक्षसों के साम्राज्य को छिन्न-भिन्न करके आर्यराज्य का विस्तार किया और उत्तर से दक्षिण तक आर्यों की सत्ता को कण्टक-विहीन बना दिया। उस समय पूर्व में ताडका और सुबाहु, उत्तर पश्चिम में बाणासुर और दक्षिण में स्वयं लंकाधिपति रावण आर्यराज्य को निगलने को तैयार बैठे थे। रावण की सेनाएं दण्डकारण्य तक और जन-स्थान तक पहुंच चुकी थी। आर्य राज्य पर आये इस भीषण संकट के निवारण में दशरथ अपने-आपको असमर्थ पा रहे थे। तब मन्त्रद्रष्टा ऋषियों ने उस संकट के निवारण की योजना बनाई और अपनी योजना की पूर्ति के लिए मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम को वैदिक धर्म और आर्यजीवन के आदर्श के रूप में सांचे में ढालकर तैयार किया।

श्री राम शुरु से आखिर तक ऋषियों के परामर्श और उनके पथ-प्रदर्शन में जीवन-यापन करते हैं। एक तरह से वे ऋषियों की ही कृति हैं। और इसीलिए ऋषियों के समक्ष वे जो "निसिचर हीन करौं महि भुज उठाय प्रण कीन्ह" —की प्रतिज्ञा करते हैं उसका पूर्णतः पालन करते हैं। हरेक तरह के पारिवारिक संकट उनके सामने आते हैं। उन्हें राजगद्दी भी छोड़नी पड़ती है और 14 वर्ष का वनवास भी स्वीकार करना पड़ता है, परन्तु जीवन की विषम से विषम परिस्थितियों में भी उन्होंने अपने सामने जो लक्ष्य निर्धारित किया था, उसे ओझल नहीं होने देते। पृथ्वी को निशिचर विहीन करने की इस योजना में वशिष्ठ, विश्वामित्र, भारद्वाज और अगस्त्य आदि सब ऋषि शामिल हैं और इन ऋषियों के आश्रम ही उस योजना के—जिसे गोपनीयता की दृष्टि से और राष्ट्रहित की दृष्टि से "मन्त्र" कहना चाहिए—असली सूत्रधार हैं। प्रदेश विशेष नहीं, जाति विशेष नहीं, वर्ग विशेष नहीं और वर्ण विशेष नहीं, प्रत्युत आसेतु-हिमाचल समग्र राष्ट्र की ओर जन-जन के हित की योजना बनाने वाले ऋषि 'मंत्र द्रष्टा' नहीं तो और क्या हैं। वे सर्वथा निःस्वार्थभाव से आर्य राज्य के विस्तार की ओर राष्ट्रहित की योजना बनाते हैं और अयोध्या के राजकुमार के कान में विजय का मंत्र फूंक देते हैं।

वेद ने कहा है—"अहं भूमि अददाम् आर्याय"—अर्थात् मैंने यह भूमि आर्यों को प्रदान की है। सारे संसार की भूमि की बात जाने भी दें तो भी आर्यावर्त्त की भूमि पर तो आर्यों का एकच्छत्र राज्य होना ही चाहिए। जब राम सीताहरण के पश्चात् किष्किन्धा पहुंचते हैं और वानराधिपति सुग्रीव के दूत बनकर महाबलि हनुमान राम का परिचय पूछने आते हैं तब राम उत्तर देते हैं—

इक्ष्वाकूणामियं भूमिः सशैलवनकानना।
तां पालयति धर्मात्मा भरतः सत्यवानृजु ॥
तस्य धर्मकृतादेशा वयमन्ये च पार्थिवाः।
चरामो वसुधा कृत्स्ना धर्मसन्तानमिच्छवः ॥

—अर्थात् पर्वतों नदियों और वनों समेत यह सारी आर्यावर्त्त की भूमि इक्ष्वाकुओं की है और धर्मात्मा भरत इसके पालक हैं। हम आर्य राज्य के स्वामी उसी भरत के धर्मादेश से अपने आर्य धर्म का विस्तार करने की इच्छा से इस पृथ्वी पर विचरण कर रहे हैं। आपने "इक्ष्वाकुणामियम् भूमिः" इस पर ध्यान दिया है? वही "अहं भूमि अददाम् आर्याय" वाली बात है या नहीं? दोनों का अर्थ स्पष्ट है कि आर्यावर्त्त की भूमि आर्यों की है और उस पर उन्हीं का शासन चलना चाहिए।

यहां रावण के सम्बन्ध में भी कुछ भ्रमों का निवारण कर लेना चाहिए। राक्षस राज के नाते हम उनमें समस्त ऐबों का आरोप करते हैं परन्तु सच तो यह है कि उसका सबसे बड़ा दोष एक ही था और वह यह कि वह आर्य राज्य को समाप्त कर इस आर्यावर्त्त पर राक्षस राज्य स्थापित करना चाहता था। कोई भी आर्य राजा इस बात को कैसे सहन कर सकता था। रावण भी उसका असली नाम प्रतीत नहीं होता, बल्कि यह लंका की गद्दी पर बैठने वाले राजा का खिताब रहा होगा, जिस तरह अफगानिस्तान के बादशाह "अमीर" और रूस के बादशाह 'जार' कहलाते रहे हैं, उसी तरह लंका की गद्दी पर बैठने वाला राजा रावण कहलाता होगा।

इस राक्षस राज्य को आर्य राष्ट्र का मित्र-राष्ट्र बनाने के लिए ही राम का यह विजय अभियान था। इस अभियान की सफलता के लिए राम ने अयोध्या की सेना का प्रयोग नहीं किया। बल्कि आन्ध्र, कर्नाटक और द्रविड़ देश के वनवासियों को अपने साथ मिलाया। अभी तक हम जिन्हें "वानर" कहते आये हैं, वे बन्दर नहीं थे और न ही हनुमान, सुग्रीव या जामवन्तादि की कोई पूंछ थी। वे वनों में रहने के कारण ही वानर कहलाते थे। वानर और वनवासी का एक ही अर्थ है। राम के 14 वर्ष के वनवास का अधिकतम काल इन्हीं वनवासियों से सम्पर्क साधकर उन्हें आर्य राज्य की विजय का माध्यम बनाने में व्यतीत हुआ था। बिना वनवास ग्रहण किये इन वनवासियों से संपर्क संभव नहीं था। इन वनवासियों को अपने साथ मिलाना राम का इतना बड़ा और महान् राष्ट्रीय कार्य था कि उसकी तुलना नहीं की जा सकती।

क्या आज भी हम नहीं देखते कि हमारे सारे समाज का सबसे उपेक्षित यह आदिवासी और वनवासी समाज है। विधर्मियों का सबसे बड़ा चरागाह यह आदिवासी समाज ही तो है। राम के बाद इन वनवासियों को अपनाने की दूरदर्शिता और किसी राजनेता ने नहीं दिखाई। इसीलिए राम की वह लंका विजय केवल सैनिक विजय नहीं थी, बल्कि राष्ट्र धर्म की सांस्कृतिक विजय भी थी, जिसमें समस्त राष्ट्र के वासियों का समान सहयोग था। इन वनवासियों को मिलाकर और नगरों तथा ग्रामों की जनता के साथ उनको एकाकार करके ही आर्य राज्य की रक्षा की जा सकती है। लंका-विजय के उदाहरण के रूप में राष्ट्र-धर्म की इस विजय के लिए सतत जागरूक रहना ही विजयदशमी का संदेश है।

रामायण के स्थानों का भौगोलिक परिचय

—क्षितीश वेदालंकार—

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के चरित्र को और रामायण कथा की ऐतिहासिकता को तब तक ठीक ढंग से हृदयंगम नहीं किया जा सकता जब तक वाल्मीकि रामायण में आने वाले स्थानों का भौगोलिक परिचय न हो। रामायण में आए स्थानों का परिचय यहां दे रहे हैं। कई स्थानों के परिचय के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद हो सकता है। पर इस विवरण से इतना अवश्य स्पष्ट हो जाएगा कि उत्तर से दक्षिण तक और पूर्व से पश्चिम तक भारत के भूगोल से और उसकी आत्मा से श्रीराम किस तरह जुड़े हुए हैं।

अगस्त्य आश्रम—नासिक से दक्षिणपूर्व में 24 मील दूर।

आनर्त—उत्तरी गुजरात

अंग—गगा और सरयू के सगम पर बिहार स्थित प्रदेश

अवन्ती—मालवा की प्राचीन राजधानी, उज्जैन।

अयोध्या—सरयू के दक्षिणी तीर पर अवध की पुरानी राजधानी

भारद्वाज आश्रम—प्रयाग में

बिन्दुसर—गंगोत्री से दो मील दक्षिण मे स्थिल ताल जहा भागीरथ ने तपस्या की थी।

ब्रह्मावर्त—सरस्वती और दृषद्वती (सिन्धु और ब्रह्मपुत्र) के बीच का प्रदेश

चन्द्रभागा—चिनाव नदी जो चन्द्रा और भागा नामक दो धाराओ से मिलकर बनती है।

चर्मण्वती—चम्बल नदी।

चम्पा—भागलपुर के निकट अंगदेश की राजधानी

चित्रकूट—बुन्देलखण्ड मे कामतानाथ गिरि जो मन्दाकिनी या पयास्विनी के तट पर स्थित है।

दक्षिणापथ—दक्षिण भारत। नर्मदा के दक्षिण का प्रदेश।

दण्डकारण्य—चित्रकूट से गोदावरी तक, पार्जिटर के अनुसार बुन्देलखड से कृष्णा नदी तक, फैला जंगल प्रदेश। अन्य नाम-जनस्थान। बस्तर रियासत जो अब मध्यप्रदेश का आदिवासी इलाका है।

धर्मारण्य—मगध (दक्षिणी बिहार) मे।

गान्धार—काबुल नदी का तटवर्ती प्रदेश जिसमे रावलपिण्डी और पेशावर के जिले शामिल थे। इसी प्रदेश की होने के कारण धृतराष्ट्र की पत्नी गाधारी कहलाई।

गौतम आश्रम—जनकपुर (तिरहुत) से 24 मील पर अहियारी गाव के पास अहल्या स्थान।

गिरिव्रज रामगृह, जो महाभारत के समय जरासंध की राजधानी थी। बौद्ध साहित्य में प्रसिद्ध।

गोकर्ण—गगोत्री से 14 मील पर गोमुख।

हस्तिनापुर—कौरवो की राजधानी मेरठ से 22 मील पर।

हिरण्यवाह—सोन नदी।

इक्षुमती—कालिन्दी नदी जो कुमायूं रुहेलखंड और कन्नौज मे होकर बहती है।

इन्द्रप्रस्थ—दिल्ली का पुराना नाम।

इरावती—रावी नदी।

कालिन्दी—यमुना।

कलिंग—उड़ीसा के दक्षिण और द्रविड़ देश के उत्तर में स्थित।

कामरूप—असम।

कम्बोज—हिन्दुकुश और कश्मीर के उत्तर में, पामीर का प्रदेश।

काम्पिल्य—कम्पिल, फर्रुखाबाद जिले मे फतेहगढ से 28 मील उत्तरपूर्व में।

कांची—काजीवरम्, द्रविड़ देश की राजधानी।

कान्य कुब्ज—कन्नौज, गाधिपुत्र विश्वामित्र का जन्मस्थान।

कर्णाट—कर्नाटक।

कारुपथ—सिन्ध के पश्चिमी तट पर अटक के पास कालाबाग नामक स्थान। अब पाकिस्तान में।

कौशाम्बी—इलाहबाद से 32 मील दूर, यमुना के दक्षिणी तट पर कोसम ग्राम।

कौशिकी—कोसी नदी।

केकय—चिनाब और झेलम का मध्यवर्ती प्रदेश, कैकेयी का जन्मस्थान जम्मू कश्मीर मे।

मद्र—रावी और चिनाब का मध्यवर्ती प्रदेश अब पाकिस्तान में।

मगध—दक्षिण बिहार, जिसकी पश्चिमी सीमा सोन नदी है।

मागधी—सोन नदी।

महेन्द्र पर्वत—पूर्वी घाट।

माहिष्मती—महेश्वर, नर्मदा के दक्षिणी तट पर इन्दौर से 40 मील दक्षिण मे स्थित।

महोदधि—बंगाल की खाड़ी।

महोदय—कन्नौज।

मलयगिरि—पश्चिमी घाट का दक्षिणी भाग।

मालिनी—सरयू की सहायक नदी चूका, जहा कण्व ऋषि का आश्रम था।

मल्लदेश—मुलतान, जिसे लक्ष्मण के पुत्र चन्द्रकेतु ने बसाया था। कुछ लोग मुलतान को प्रल्हाद द्वारा बसाया मानते हैं। अब पाकिस्तान में।

माल्यवान्—तुगभद्रा के तट पर अनागुंडी पर्वत।

केरल—मलाबार तट।

किरात—भारत का पूर्वी भाग, नेपाल।

कोसल [उत्तर]—अवध।

कोसल [दक्षिण]—छत्तीसगढ।

कृष्णवेणी—कृष्णा और वेणी नदी की सयुक्त धारा।

कुरु-जागल—पाचाल के पश्चिमोत्तर मे सम्भवत: कुरुक्षेत्र और थानेसर वाला हरियाणा-क्षेत्र।

लंका—सिहल द्वीप, कईयो के मत मे मध्यप्रदेश मे अमरकंटक, मैडेगास्कर, आस्ट्रेलिया और अरबसागर मे स्थित मालदीव टापू।

लवपुर—लाहौर, जिसे राम के पुत्र लव ने बसाया अब पाकिस्तान में।

लौहित्य—ब्रह्मपुत्र नदी।

मधुमन्त—दण्डकारण्य।

मधुपुरी—मथुरा, जिसे शत्रुघ्न ने बसाया।

मध्य देश—हिमालय और विन्ध्य का मध्यवर्ती प्रदेश।

मन्दाकिनी—ऋष्यवान् पर्वत से निकल कर चित्रकूट से होती हुई यमुना मे मिलती है। अन्य नाम पयस्विनी।

मत्स्य—अलवर भरतपुर।

मिथिला—जनकपुर, तिरहुत।

नैमिषारण्य—नीमसर गोमती के तट पर सीतापुर से 20 मील और लखनऊ से 45 मील उत्तर पश्चिम मे।

नलिनी—पद्मा या ब्रह्मपुत्र।

नन्दि-ग्राम—अवध मे फैजाबाद से 9 मील दक्षिण मे नन्दगाव।

पम्पा हम्पी (कर्नाटक) के उत्तर में एक सरोवर। इसी नाम की नदी भी है

पांचाला—रुहेलखड, गगा से हिमालय की तलहटी तक फैला प्रदेश। द्रोपदी इसी प्रदेश की होने के कारण पाँचाली कहलाई।

पचवटी—नासिक।

पाण्ड्य—तिन्नवेल्ली और मदुराई जिला, तमिलनाडु।

पर्णाशा—बनास नदी।

पावनी—घग्घर नदी।

प्राग्ज्योतिषपुर—गोहाटी असम की राजधानी।

प्रलम्ब—बिजनौर से 8 मील उत्तर मे मण्डावर।

प्रस्रवण—तुंगभद्रा की तटवर्ती पर्वतशृंखला।

प्रयाग—इलाहाबाद।

पुष्कलावती—गांधार की राजधानी, पेशावर से 18 मील दूर आधुनिक चारसद्दा नामक स्थान, जहाँ सीमान्त गांधी खान अब्दुल गफ्फार खाँ का जन्म हुआ।

राजगृह - दक्षिणी बिहार में मगध की पुरानी राजधानी।

रामगिरि—रामटेक, नागपुर से 24 मील उत्तर में।

रसातल—पश्चिमी तातार प्रदेश तुर्कस्तान और कैस्पियन सी (कश्यपसागर) का उत्तरी भाग शामिल था।

रत्नाकर—पश्चिमोदधि या अरब सागर।

ऋष्यमूक—तुगभद्रा के तट पर अनागुण्डी मे 8 मील दूर स्थित पर्वत जहाँ राम की हनुमान और सुग्रीव से भेंट हुई थी। यही स्थान बाद मे (16 वी 17 वी सदी मे) विजयनगर हिन्दू राज्य का केन्द्र बना जिसके भव्य अव शेष आज भी 12 मील तक फैले पड़े हैं।

ऋष्यशृंग आश्रम—भागलपुर से पश्चिम में 28 मील दूर ऋषिकुंड।

सदानीरा—राप्ती नदी जो सरयू की सहायक नदी है।

सह्याद्रि—पश्चिमी घाट।

शालमली—चिनाब की सहायक नदी।

सांकाश्य—सीता के पितृव्य राजा कुशध्वज की राजधानी, इक्षुमती नदी के तट पर सकिशाग्राम।

सरस्वती—घग्घर नदी जो कभी हिसार के पास बहती थी।

सरयू—घाघरा नदी जो हिमालय के आन्तरिक प्रदेश मे घौली गंगा कहलाती है।

शतद्रु—सतलुज नदी, जो मानसरोवर से निकलती है और जिस पर गोविन्दसागर तथा भाखड़ा बांध बना है।

सौराष्ट्र—काठियावाड़।

सौवीर—उत्तर सिन्ध, कच्छ और खम्भात की खाडी से लगता प्रदेश।

सिद्धाश्रम—शाहबाद जिले में बक्सर के पश्चिम की ओर।

सिन्धु—सिन्धु नदी और उसका तटवर्ती उत्तरी प्रदेश। अब सिन्ध प्रदेश पाकिस्तान में है।

श्रावस्ती—राप्ती क तट पर सहेत महेत गाँव। बौद्ध साहित्य में बहुचर्चित।

शृंगवेरपुर प्रयाग से 18 मील दूर गंगा के तट पर स्थित सिंगरौर।

सुतीक्ष्ण आश्रम—मन्दाकिनी के उद्गम के आसपास कोई स्थान।

[शेष पृष्ठ 9 पर]

जो न होत जग जनम भरत को। सकल धरम धुरधर निधरत को।।

—चमनलाल, भूतपूर्व प्रधान आर्यसमाज अशोक विहार—

वाल्मीक रामायण का हमारे प्राचीन संस्कृत साहित्य में और तुलसी के रामचरित मानस का हिन्दी साहित्य में प्रमुख स्थान है। वाल्मीकि ने राम को महात्मा, आर्य रघुकुल भूषण, राघव, राजेन्द्र, मानवेन्द्र आदि अनेक सार्थक नामों से पुकारा है; जबकि तुलसी ने उनको विष्णु भगवान, आदि ईश्वरीय नामों से सम्बोधन किया है। श्रीराम का यशोगान हम प्रतिवर्ष विजय दशमी के शुभ अवसर पर उत्साहपूर्वक करते हैं। परन्तु रामायण कुछ ऐसे प्रेरणा के स्रोत का पात्र भी हैं जिन्हे रामायण-शास्त्रियो ने जनता के सम्मुख वास्तविक रुप ये प्रदर्शित नही किया। यह अन्याय है।

ऐसा ही एक मुख्य पात्र साधुस्वभाव भरत है जिसको राम ने स्वयं महात्मा कहकर पुकारा है। तुलसी भी भरत के चरित्र से प्रभावित हुए हैं और उनको रामभक्ति का सर्वोत्कृष्ट आदर्श मानते हैं। रामचरित मानस के अयोध्याकाण्ड के उत्तरार्ध मे भरत सवत्र ऐसे छाये हुए दीखते हैं मानो हम रामायण न पढ़कर 'भरतायन' पढ़ रहे हों। तभी तो इसे 'भरतचरितकर नेम तुलसी जे सादर सुनहिं, कहा है। भरत का चरित जितना पावन है उतना गम्भीर भी है। इस गम्भीरता का पता न अयोध्यावासियों को मिला और न ही जनकपुर वासियों को मिला। उन्होंने विशुद्ध त्याग और दुष्कर तपस्यायुक्त सेवाधर्म का जो ऊंचा आदर्श ससार के सामने रखा, वह अनन्त काल तक प्राणिमात्र के लिए प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा और जन-मानस को अनुप्राणित करता रहेगा; इसमे लेशमात्र भी सन्देह नही है।

वास्तव में महात्मा भरत के गुण महाराज दशरथ का स्वर्गवास होने के बाद ही विशेष रूप से प्रकट हुए। दशरथ भी राम के बाद भरत को ही बडे प्यार और स्नेहभरी दृष्टि से देखते थे। वे भरत के सद्गुणों से प्रभावित होकर उनको 'कुलदीप' कहा करते थे। यह बात महाराज महारानी कौसल्या से भी प्राय: कहा करते थे। यही बात महारानी कौसल्या ने जनक राजमहिषी सुनयना से चित्रकूट में उनसे भेंट होने पर कही थी—

जानेउ सदा भरत कुल दीपा।
बार बार मोहि कहेउ महीपा।।

तुलसी ने उनके गुणों का वर्णन करते हुए एक स्थान पर कहा है—

भरत सील गुन विनय बड़ाई।
भायप भगति भरोस भलाई।।
कहत सारदहु कर मति हीचे।
सागर सीप कि जाहिं उलीचे।।

रामायण काल के महान् तत्ववेत्ता ब्रह्मज्ञानी जनक के भी भरत के प्रति इसी प्रकार के ऊंचे विचार थे। उनके गुणों की चर्चा करते हुए उन्होंने अपनी धर्मपत्नी सुनयना से एक बार इस प्रकार कहा था—

धरम राज, नय ब्रह्म विचारू।
इहां जथामति मोर प्रचारू।।
सोमति मोर भरत महिमा ही।
कहै काह छल छु अति नछाँही।।

—अर्थात् धर्मशास्त्र, राजनीति और ब्रह्मज्ञान के सम्बन्ध में मेरी बुद्धि प्राय. अप्रतिहत है, किन्तु मेरी बुद्धि छल से भी भरत की महामहिमा की छाँह भी नही छू सकती।

भरत का राम के प्रति अगाध प्रेम था और वे राम को पिता तुल्य समझते थे। मानस मे एक स्थान पर भरत पिता की मृत्यु पर विलाप करते हुए कहते हैं—

चलत न देखन पायउँ तोही।
तात न रामहि सौंपेउ मोही।।

—अर्थात् हे महाराज! मैं आपको जाते हुए नहीं देख सकता। हे तात! आप मरते समय मुझे राम को सौंप न सके। भरत की यह लालसा उनको जीवन भर सताती रही। वह राज्य का अधिकारी अपने बडे भाई राम को ही मानते थे। पिता की मृत्यु का समाचार पाकर अपनी ननिहाल से वापिस आने पर अपनी माता कैकेयी से कहा था— मैं बन जाकर राम को वापिस लाऊँगा और उनका दास बनकर रहूंगा। भरत राम के प्रेम में इतने व्याकुल थे कि उनको अपना जीवन भी भार रूप प्रतीत हो रहा था और राम के दर्शन के बिना उनको एक पल भी चैन नही था।

जब भरत राम को वापिस अयोध्या लाने हेतु चित्रकूट को चले, तो वह नंगे पाँव चले थे। इस कारण उनके कोमल पावो मे छाले पड़ गये। जिसका तुलसी ने यों वर्णन किया है—

झलका झलकत पायन कैसे।
पंकज कोस ओस कन जैसे।।

—भरत के पैरों के फफोले ऐसे लगते हैं जैसे कमल के कोष में ओस के कण झलकते हो। चित्रकूट जाते हुए मार्ग में एक रात्रि भरत ने भारद्वाज ऋषि के आश्रम मे विश्राम किया था। भरत को दुखी देखकर ऋषिवर के एक प्रश्न के उत्तर में भरत ने अपने मन की वेदना इस प्रकार प्रकट की थी—

राम लखन सिय बिनु पंगे पनहीं।
करि मुनि वेष फिर ही वन-वन ही।।
अजिन वसन फल असन महिसयन
डासि कुस पात।
बसि तरु तर नित सहत हिम
आतप वरषा बात।।
एहि दुख दाहें दहइ दिन छाती।
भूख न बासर नींद न राती।।
एहि कुरोग कर औषधु नाही।
सोधेउं सकल विस्व मन माहीं।।

—अर्थात् राम, लक्ष्मण, सीता बिना जूतों के मुनियो का भेष धारण कर वन-वन मारे-मारे फिर रहे हैं। मृगचर्म धारण कर वन के कन्द मूल फल खाते हैं और किसी वृक्ष के नीचे समतल भूमि मे कुशपात बिछा कर सोते हैं। सर्दी-गर्मी, आंधी, बरसात का दुख सहन करते हैं। उनके इस दुख का स्मरण होने पर मेरी छाती जलने लगती है। दिन मे भूख नही लगती, रात को नीद नही आती। इन कुरोग की कोई औषधि भी तो नही है जिससे मेरे इस रोग का शमन हो।

वास्तव मे भरत राम-चरण-कमल के मधुकर थे—

राम चरन पंकज मन जासू।
लुबुन्ध मधुप इव तजइ न पासू।।

राम का भी भरत के प्रति प्रेम कम नही था। वह भरत के गुणों से भली-भाति परिचित थे, यद्यपि लक्ष्मण को इसका बोध बहुत देर बाद हुआ। राम ने एक प्रसंग मे भरत के सम्बन्ध मे लक्ष्मण से कहा था—

सुनहु लखन भल भरत सरीसा।
विधि-प्रपंच महु सुना न दीसा।।

—अर्थात् भरत जैसा उज्ज्वल चरित्र 'नही सुना नहीं देखा।' अयोध्या का राज्य तो बहुत छोटा है, यदि भरत को और कोई बडे से बडा राज्य भी प्राप्त हो जावे तो भी उसको राजमद छू तक नही सकता। भरत क्षीर सागर के समान गम्भीर है। अत: अवध के राज्य की थोडी-सी कांजी उस क्षीर सागर को विकृत नहीं कर सकती।

भरतहि होइ न राजमदु,
विधि हरि हर पद पाइ।
कबहुं कि कांजी सी करणी,
छीर सिंधु बिनसाइ।।

अनायास इतना बड़ा राज्य पाने पर भी भरत बड़े दुखी थे। अन्तत: उन्होंने स्वयं राम की तरह बनवासी बनकर मुनिवेश धारण करके, शहर से बाहिर, चौदह वर्ष तक एक कुटिया मे तपस्वी का जीवन बिताने का निश्चय किया। मानस में तुलसी ने लिखा है—दशरथ का अन्तिम संस्कार जैसे-तैसे दुखी मन से भरत ने किया। इसके उपरान्त गुरु वशिष्ठ ने भरत के राज्याभिषेक का प्रस्ताव रखा तो भरत ने व्यथित होकर कहा— मैं पहिले ही कुटिल ग्रहो से ग्रस्त हू, अनर्थकारी, घटनाएं घटित हो रही हैं और मैं वात के वश मे होकर पागल के समान अंट-संट बातें भी करता हू। इन सब के कारण मेरे सारे शरीर मे बिच्छू के डंक-की सी पीडा हो रही है। इतने पर भी आप मुझे राजमद रूपी वारुणी (मदिरा) पिलाकर मदहोश करना चाहते हैं? भला बताइए, फिर मेरा क्या हाल होगा।

ससार के इतिहास मे ऐसा उदाहरण और कही देखने को नही मिलेगा।

भरत के निष्पाप और धर्म प्रधान गुणों का वर्णन करते हुए स्वय राम से तुलसी ने यो कहलवाया है—

जो न होत जग जनम भरत को।
सकल धरमधुर धरमि धरत को।।

स्वार्थ, लोभ और झूठी मानप्रतिष्ठा की दहकती अग्नि मे जलते संसार को शान्ति पहुचाने का केवल एक ही उपाय है कि भरत के निस्स्वार्थ, निर्लोभ और आत्मत्याग के उदाहरण को क्रियान्वित करे।

प्रादेशिक उपसभा द्वारा प्रचार कार्य

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, करनाल (हरियाणा) के माध्यम से निम्न-लिखित जगहों पर वार्षिकोत्सव मनाये गये—

सितम्बर मास में—13 से 15 आर्य समाज, अर्बन स्टेट, करनाल, 20 से 22 आर्य समाज, ऋषि नगर, सोनीपत, 27 से 29 आ० स०माडलटाउन, पानीपत, 27 से 29 आर्य समाज, राम नगर, करनाल अक्तूबर मास 4से 6 आर्य समाज, पुण्डरी, 11 से 13 आर्य समाज दयालपुरा, करनाल, 10 14 फल्गू मेला, कुरुक्षेत्र, 18 से 20 आर्य समाज, ढाहा (करनाल)। और इन जगहों पर मनाया जायेगा—31 अक्तूबर से 3 नवम्बर तक आर्य समाज, नारायणगढ़ (अम्बाला) 1 से 3 नवम्बर आर्य समाज, नागोरी गेट, हिसार 8 से 10 नवम्बर तक आर्य समाज शक्तिनगर, सोनीपत।

—वेद सुमन वेदालकार

नि:शुल्क नेत्र, कान, नाक का आपरेशन

आर्य समाज बुढाना गेट, मेरठ की ओर से नि.शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन 29 अक्तुबर से 2 नवम्बर तक शर्मा स्मारक मैदान मेरठ में किया गया है इस अवसर पर डा० आर० एन० सहाय जयपुर आखो का तथा डा० प्रकाश मुलेचा नाक, गला, कान का नि:शुल्क आपरेशन करेंगे। इस शिविर का उद्घाटन मेरठ मण्डलायुक्त श्री० पी० के० गोस्वामी तथा समापन श्री एल० आर० सिंह जिलाधिकारी करेंगे।

—इन्द्र राज मंत्री

भारत की शिक्षा प्रणाली

—ओम्प्रकाश 'त्यागी महामन्त्री,

देशविभाजन मजहब के आधार पर हुआ था। मुसलमानो ने अपने लिए पृथक् देश की माग की। इस आधार पर भारत मे दो वर्ग स्वीकार किये गये हिन्दू और मुसलमान तथा उसी आधार पर देश का विभाजन हुआ। भारत-विभाजन के पश्चात् मुस्लिम लीग के अध्यक्ष मि० जिन्ना ने महात्मा गाधी से कहा कि दोनों देशों के हिन्दु मुसलमानों के तबादले की बात मान ली जाय। महात्मा गाधी को यह स्वीकार नही था। तदपि हुआ वही जो जिन्ना चाहते थे। दोनों तरफ लाखो व्यक्ति मारे गये, बहिनो का अपमान हुआ और अरबो की सम्पत्ति लूट ली गयी। भारत विभाजन के पश्चात् मुसलानो ने अपने देश (पाकिस्तान) को इस्लामिक देश बना दिया, और वहा के हिन्दुओ के अधिकारो को समाप्त कर दिया। भारत भी अपने देश को "हिन्दू राष्ट्र" घोषित कर सकता था, परन्तु इसने ऐसा नही किया। इसके नेताओं ने अपने देश को सम्प्रदाय निरपेक्ष घोषित किया और यहा के सभी निवासियो को सभी क्षेत्रों में समान अधिकारो की छूट दी। इसका किसी ने भी विरोध नही किया। परन्तु जनता को उस दिन अजीब सा लगा कि जब सरकार ने मुस्लिम लीग पर प्रतिबन्ध न लगाकर उसके साथ मिलकर केरल में सरकार बनाई।

जब सम्प्रदाय निरपेक्षता के विरुद्ध देश मे हिन्दुओं के लिए "हिन्दू कोड बिल" बनाया तब जनता सतर्क हो गयी और उसको यह लगा कि 'सैक्यूलर' नाम केवल दिखाने के लिए है, कांग्रेस सरकार की नीति पुरानी ही है। इसके विरोध मे देश भर मे सभाएं आयोजित कर इस ओर सरकार का ध्यान आकर्षित किया गया कि उसे सभी देशवासियो के लिये एक ही कानून बनाना चाहिये। परन्तु वैसा नहीं हुआ।

देश को सबसे बड़ा आश्चर्य उस दिन हुआ जब देश मे लार्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली को समाप्त कर उसके स्थान पर भारत की शिक्षा पद्धति चालू न करते हुए उसे उसी रूप में स्वीकार कर लिया। सबसे बड़ा अपराध तो उस दिन हुआ जब भारत में अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक वर्ग मानकर दो कानून बनाये गये। अल्पसंख्यक वर्ग में मुसलमान और ईसाई थे। देश की ८० प्रतिशत आर्य [हिन्दू] जनता थी। सरकार ने अल्पसंख्यकों को अपने स्कूल चलाने, शिक्षक नियुक्त करने या निकालने, और धार्मिक शिक्षा की छूट दी पर बहुसंख्यक वर्ग को यह अधिकार नहीं दिया गया। इसका कुपरिणाम यह हुआ कि बहुसंख्यक वर्ग शिक्षा की दृष्टि से हिन्दू भले ही आगे हो, परन्तु उसके विद्यार्थी भारतीय संस्कृति तथा देश भक्ति से शून्य होते गये जब कि अल्पसंख्यक वर्ग के स्कूलो मे घोर साम्प्रदायिक बच्चे तैयार होने लगे।

शिक्षा के लिए अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक वर्ग पर अलग कानून लागू करना गलत है। समस्त यूरोप तथा अमरीका मे सब के लिए एक ही कानून है परन्तु अपने देश को 'सैक्यूलर' घोषित करने वाले स्वयं आचरण में साम्प्रदायिक है। जब सरकार का आचरण ही साम्प्रदायिक हो, तो फिर देश के नवयुवको को साम्प्रदायिकता, हिंसा, अलगाववाद के नारो से कैसे हटा सकती है। उसने जो कार्य किया है उसका परिणाम उसको भुगतान ही पड़ेगा।

भारत को शिक्षा व्यवस्था दोषपूर्ण है। इसे सम्प्रदाय निरपेक्षता के अनुकूल होना चाहिये।

देशभक्ति का पाठ

हमारी शिक्षा संस्थाओ से विद्यार्थी भारी सख्या में निकल रहे है। परन्तु सस्कारो के अभाव के कारण वे देश भक्ति शून्य हैं। इसी कारण वे स्वार्थ पूर्ण कार्यो में संलग्न हैं, और देश के लिये समस्या बने हैं। भारत सरकार को देश की दृष्टि से यह निर्णय करना होगा कि देश का युवावर्ग कैसा हो। इसी आधार पर वह देश की शिक्षा पद्धति चालू करे। संसार के विद्वान मानते हैं कि देश सुचारु रूप से चलाने के लिए सदाचारी, संस्कारी, देश-भक्त तथा विद्वान नवयुवक-नवयुवतियां चाहिये। सरकार को इसकी घोषणा तुरन्त करनी होगी, ताकि शिक्षा में लगे लोग अपने ध्येय को पहचानें। शिक्षा संस्थायें भी इस प्रकार के विद्यार्थियों को ही अपने यहाँ तैयार करे। भारत मे अल्प संख्यक वर्ग और बहुसंख्यक वर्ग न होकर एक ही कानून सभी के लिये हो। सभी को बता दया जाय कि इस प्रकार के नवयुवक-नवयुतियां तैयार करने में और जो पुस्तके निर्धारित हैं वही पढ़ाई जाय। विद्या के क्षेत्र में छूट हो, सदाचार, संस्कार, तथा देश भक्ति को पुस्तके सरकार बनावे और प्रत्येक शिक्षा संस्था में इन्हें लागू करें। सरकार को घोषणा करनी होगी कि स्कूलों में धर्म के नाम पर सम्प्रदायिकता उत्पन्न नहीं होने दे। साम्प्रादायिकता ने देश का विभाजन कराया और वर्तमान समय में भी झगड़े चल ही रहे हैं। मैट्रिक तक सभी बालक पढ़े, परन्तु उसके बाद विशेष योग्यता के बच्चे ही आगे जांय शेष बच्चे व्यावसायिक पढ़ाई करें। धंधे की पढाई करने के पश्चात् बच्चे जब निकले तो सरकार उनके रोजगार की व्यवस्था करे।

पाठ्य पुस्तकों मे देश भक्ति के नाम पर सरकार उनके सम्मुख देश का सही ढाचा रखे। देश की आर्थिक, सामाजिक राजनीतिक स्थिति पहले क्या थी और आगे क्या होगी। तात्पर्य यह है कि बच्चे देश भक्ति से पूर्ण बन जाय। देश का सही भूगोल और सही इतिहास पढ़ाया जाए। इस प्रकार देश भक्ति से पूर्ण बन जाने पर विद्यार्थियो को शेष सस्कार का भी ज्ञान हो। अपने देश को सही बनाकर हम दूसरे देशो की उन्नति में सहायक हो, उनसे शिक्षा लें और जहां आवश्यकता पड़े उसे अपने देश में दें। इसके पीछे "वसुधैव कुटुम्बकम्" का नारा हो।

जब हमारी शिक्षा संस्थाये अपने यहाँ से सदाचारी, सांस्कारिक, देश-भक्त तथा विद्वान नवयुवक तैयार करेंगी—तभी सरकार हिम्मत के साथ कह सकेगी कि हमारा देश एक है और सुरक्षित है। देश में बिखराव करने वाले नारे नहीं होंगे। देश में एकता की शक्ति बढ़ेगी।

सरकार शिक्षा-संस्थाओं का निरीक्षण करें और गलत चलने वाली संस्थाओं को ठीक करे। साम्प्रदायिकता पैदा करने वाली संस्थाओं को बन्द कर दे। तभी लोग हृदय से शिक्षा-संस्थाओं का आदर करेंगे और इनका सहयोग करेंगे। सरकार भी इन्हें अपनी समस्त योजना का आधार मानेगी और इसके संचालनार्थ सरकार लगावेगी। देश के नवयुवकों का मूलाधार ऐसी शिक्षा संस्थायें होंगी, तो प्रत्येक नागरिक इन पर गर्व करेगा।

संस्कृति और संस्कृत

भारत की एकता का मूल स्रोत था यहाँ की संस्कृति और सस्कृत साहित्य। संस्कृति और संस्कृत साहित्य ने भारत की जनता को एक रखा। जैन और बौद्ध काल में जब वेद का विस्मरण हुआ, तब शंकराचार्य ने वेद का झण्डा उठाया और समूचे देश मे वैदिक धर्म की ज्योति जगा दी। भविष्य मे देश की एकता बनी रहे, इसलिये उन्होंने देश के चारो कोनों पर अपने मठ बनाये, और वहाँ के मठाधिपति वेद शास्त्र के विद्वान ही हों, ऐसी व्यवस्था की तब से ही चारों केन्द्रों पर नियुक्त शकराचार्य विद्वान व्यक्ति ही होते चले आये हैं।

ऋषि दयानन्द ने भी भारत की एकता के सूत्र वेद को पकड़ा और घोषणा की कि "वेद" ईश्वरीय ज्ञान है, और मानव जाति के कल्याणार्थ सृष्टि के आदि मे इसकी रचना हुई। अपने क्रान्तिकारी कार्यक्रम के लिये उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की।

देश की आजादी की लड़ाई जब चल रही थी तब अधिकांश लोगों का यह विश्वास था कि आजादी के पश्चात् भारत में सस्कृति और सस्कृत साहित्य का आदर होगा और इन्हें स्कूलों में अनिवार्य बनाया जायगा। किन्तु देश की आजादी के पश्चात् भारत में हमारी सस्कृति दोगली बन गयी। संस्कृत भाषा अनिवार्य होने के बजाय ऐच्छिक विषय बना दिया है। भारत में ऐसा समय भी आवेगा जब संस्कृत भाषा को पाठ्य विषय सूची से बाहर कर दिया जायेगा, यह किसीने नहीं सोचा था।

संस्कृति की बात भी सरकार के सामने आई, परन्तु वर्तमान समय में संस्कृति के नाम पर केवल गाने-नाचने वाली टोलियां विदेशों की जनता को खुश कर रही हैं। संस्कृति का मौलिक लक्ष्य कहाँ है? उसकी ओर कौन ध्यान देता है?

में क्या सुधार होने चाहिए

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा—

भारत की शिक्षा प्रणाली में क्या दोष है? सबसे पहले तो यह कि स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् हमने अंग्रेजों द्वारा जारी की गई शिक्षा प्रणाली ज्यों की त्यों अपना ली। दूसरा दोष यह है कि शिक्षा के क्षेत्र में अल्पसंख्यकों को इस विशेषाधिकार की छूट दे दी कि वे अपनी संस्थाओं में अपने ढंग से शिक्षा दे सकते हैं, जिसका परिणाम यह हुआ कि उन सस्थाओं ने कट्टर साम्प्रदायिकता को बढ़ावा दिया। बहुसंख्यकों की संस्थाओं में नैतिक शिक्षा की व्यवस्था न होने से छात्रों में अनैतिकता तेजी से पनपने लगी। तीसरा दोष यह है कि धर्म के असाम्प्रदायिक सत्य स्वरूप का प्रतिपादन करने वाले वेदों को और समस्त भारत को एकता के सूत्र में जोड़ने वाले संस्कृत साहित्य को उपेक्षा हो गई। चौथा दोष यह कि भारत का गलत इतिहास पढ़ाया जा रहा है। पाँचवाँ दोष यह है कि हिन्दी के राष्ट्रभाषा घोषित हो जाने पर भी महत्व निरन्तर अंग्रेजी को दिया जा रहा है। लेखक का कहना है कि इन दोषों का निराकरण किए बिना भारतीय शिक्षा प्रणाली को सही दिशा नहीं दी जा सकती।

→ देश की राजनीति का ढांचा जो भी हो, परन्तु देश की एकता और सुरक्षा बनी रहे। इसको बनाने वाले हैं भारत की संस्कृति और संस्कृत साहित्य। सरकार को इन्हें आदर देना ही होगा। इसके अतिरिक्त भारत की 80 प्रतिशत आर्य (हिन्दू) जनता का यह सर्वस्व है। इसके समाप्त हो जाने पर हिन्दूजाति मिट जायगी। इस विशाल समुदाय के अधिकार के लिए भी सरकार को इन्हें जीवित रखना होगा।

आर्य बाहर से नहीं आए

प्रत्येक देश की सरकार अपने राष्ट्र की जनता को बताती है कि वह वहा की नागरिक है। परन्तु समूचे भारत की शिक्षा-संस्थाओं में एक ही बात पढ़ाई जा रही है कि आर्य जाति विदेशों से भारत में आई और यहां के मूल निवासियों को मारकर भगाया। किन्तु उन्हीं विदेशी विद्वानो में एक श्री पार्गिर ने सिद्ध किया कि आर्य लोग भारत के ही निवासी हैं। उसने अनेक प्रमाण दिये। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बताया कि हिमालय के त्रिविष्टप (तिब्बत) में आदि सृष्टि हुई और यही से आर्य जाति के लोग भारत मे आये और यहा बसे।

संसार में दो प्रकार के विद्वान है—उनमें से एक आर्य जाति को भारत मे बाहर से आया मानते है, और दूसरे विद्वान आर्य जाति को तिब्बत मे उत्पन्न मानते है। परन्तु सरकर ने अंग्रेजों से प्रभावित विद्वानों की राय मानी और आर्यो को भारत में विदेशी बना दिया। सरकार की अदूरदर्शिता का कुपरिणाम यह हुआ कि अपने ही देश मे आर्य लोग विदेशी बन गये और देश के शत्रु अपने को स्वदेशी कह रहे है। इन्होंने बड़े-बड़े ग्रन्थ इसी विषय पर लिखे हैं। उसका परिणाम क्या होगा, यह भविष्य ही बतायेगा।

सरकार को अपनी शिक्षा नीति बनाने से पूर्व कम से कम इन बातों की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है—

1. आर्य लोगों के भारत आने से पूर्व इस देश, पहाड़ों, नदियों और शहरों के नाम क्या थे?
2. आर्य लोग बाहर से भारत में आये होते तो इनकी विजय का वर्णन इस देश के प्राचीन ग्रंथों मे भी होता। परन्तु वह कही नहीं है।
3. भाषा की दृष्टि से संस्कृत भाषा संसार की प्राचीनतम भाषा है और अधिकाश भाषाओं की जननी है, यह सभी विद्वान स्वीकार कर रहे है।
4. आर्य जाति का धर्म, सभ्यता, सस्कृति, इतिहास जैसा है वैसा अन्य किसी देश का नही है।
5. भारत को छोड़ कर अन्य कौन सा देश है जहा का भोजनाच्छादनादि आर्यो के अनुकल कहा जा सकता हो।

हिन्दी का महत्व

संसार भर में भारत ही ऐसा देश है जहाँ राष्ट्र भाषा "हिन्दी" घोषित हो जाने पर भी सरकार के किसी विभाग में इसका कोई स्थान नहीं है, परन्तु अंग्रेजी ही प्रचलित है। हां जनता की मांग पर पत्रों के उत्तर हिन्दी में चले जाते हैं। संसद् में उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान जैसे हिन्दी भाषी प्रदेशों के अंग्रेजी में बोलते हैं। उन से पूछने पर ज्ञात हुआ कि अग्रेजी में बोलने पर मंत्रियों पर प्रभाव पड़ता है और समाचार पत्र सरलता से उनकी बातों को छापते हैं।

दूसरे राष्ट्रों के लोग जब भारत में आते हैं तो ये सब अपनी भाषा में बोलते हैं परन्तु भारत सरकार के लोग अंग्रेजी की छीछालेदर करते रहते हैं। जब संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे अन्तर्राष्ट्रीय मन्च पर अपने लोग अंग्रेजी मे बोलते हैं, तो दूसरे देशो के लोग भारत की इस दयनीय व्यवस्था पर हसते हैं। अंग्रेजी जानने वाला सीधा सरकारी नौकरी पाता है परन्तु हिन्दी जानने वाले चक्कर खाते-फिरते है। दुर्भाग्यवश बड़े-बड़े व्यक्तियो तथा परिवारो के बच्चे अग्रेजी पढ़ रहे हैं, जब कि छोटे लोगो के बच्चे अपनी भाषा में पढते हैं। इसका परिणाम यही है बड़े लोगो तथा परिवारो के बच्चे ऊंची सरकारी नौकरी पाते है, और छोटे लोगो के बच्चे मामूली कार्यालयो में क्लर्की करते हैं।

भारत की शिक्षा नीति के दूषित होने का सबसे पहला कारण यही है कि जिन लोगो के हाथो में शासन आया उनकी शिक्षा इग्लैण्ड आदि देशों में हुई थी इसलिए उनका लगाव अंग्रेजी से था। दूसरा कारण तमिल नाडु जसी प्रादेशिक सरकार है जो हिन्दी को पसन्द हा नहो कर रही है। सरकार के अधिकारी बार-बार तमिल नाडु को आश्वस्त करते हैं कि उनकी मर्जी के बिना हिन्दी भाषा नहो आयेगी। भारत की शिक्षा नीति का कुपरिणाम यह हुआ है कि समूचे भारत में यदि कहीं लोग जमा हों तो कोई व्यक्ति अपनी बाते अंग्रेजी में कर सकता है, जबकि अंग्रेजी भारत में केवल दो प्रतिशत जनता जानती है। बाहर की शक्तिया इसी विघटन को बढा रही हैं।

लोग सरकार से जानना चाहते है कि जब हिन्दी भाषा ही राष्ट्र भाषा है यह शिक्षा संस्थाओं में अनिवार्य क्यों नहीं? कौन सा कानून भारत सरकार को ऐसा करने से रोक रहा है? यदि सरकार उन विरोधी शक्तियो से भयभीत है तो फिर ईमानदारी से घोषणा करे कि हिन्दी भाषा दिखाने मात्र को है, परन्तु वास्तव में राष्ट्रभाषा अंग्रेजी ही है। वर्तमान समय मे विद्यार्थियों का समय व धन दुविधा में क्यो नष्ट किया जाए?

सरकार इस बात को समझ ले कि हिन्दी राष्ट्र भाषा होने से देश का भविष्य उज्वल होगा और अंग्रेजी केवल कुछ व्यक्तियों को तो ऊचा चढ़ा देगी, परन्तु देश नीचे चला जाएगा।

देश का कल्याण अपनी राष्ट्र भाषा, अपनी सस्कृति, अपना साहित्य तथा अपना इतिहास से ही होगा।

मद्य-निषेध

वैसे तो नशा कई प्रकार का होता है। जैसे ताकत, कुर्सी, जवानी, दौलत, चरस, भांग, गांजा, स्मैक, शराब इत्यादि। परन्तु शराब का प्रचलन आजकल अमीर तथा गरीब में एक फैशन सा बन गया है। पश्चिमी सभ्यता के अनुकरण ने ही शराब सेवा को बढ़ावा दिया है। खुशी या गमी के सभी अवसरों पर इसका बोलबाला रहता है तथा इससे हर वर्ग का मनुष्य प्रभावित हो चुका है। हमारा समाज अभी तक विकसित मानसिकता पर नहीं पहुंच सका है। यहां पाप से नहीं पापी से घृणा की जाती है। हमारे समाज में वैचारिक क्रांति की कमी पाई जाती है। इसका परिणाम पूरा परिवार भोगता है।

दुर्भाग्य से यदि परिवार का मुखिया ही शराब पीने लगता है तो उसकी पत्नी और बच्चे भी सामाजिक अवहेलना का शिकार बन जाते हैं और उन्हें अपमानित होना पड़ता है। शराब का सेवन करने वाले की दिनचर्या अनियमित रहती है। परिवार के सदस्य उनके समय पर घर न लौटने से चिंतित रहते हैं। पीने वाले के साथ दुर्घटना व लड़ाई-झगड़े की सम्भावना बनी रहती है। शराबी व्यक्ति अपनी पत्नी की मनोव्यथा का कभी अनुमान भी नहीं लगा पाता। शराबी अपने अवगुणों को छुपाने के लिए पत्नी को सार्वजनिक रूप से अपमानित करता है। जब पीने से रोकती है तो कहता है कि अपनी कमाई की पीता हूं तेरे बाप की नहीं पीता। कभी-कभी अपनी दुर्बलता को ढापने के लिए पत्नी के चरित्र पर भी दोषारोपण करता है। नशे में पत्नी पर हाथ भी उठाता है।

नशे करने वाले व्यक्ति की आय का एक बड़ा भाग शराब इत्यादि पर व्यय हो जाता है। फलस्वरूप परिवार में आर्थिक अभाव बने रहते हैं। उधार न दे पाने पर परिवार को समाज में अपमानित होना पड़ता है। रहन-सहन का स्तर भी ऊंचा नहीं रह पाता। धनाभाव के कारण परिवार के सदस्य गलत मार्ग भी अपना लेते हैं। नशे से पत्नी, परिवार, बच्चों व समाज पर बुरा असर पड़ता है। पत्नी व निरीह बच्चों को अपमानित करनेवाला समाज यदि शराबी व्यक्ति को ही सही तस्वीर दिखाए तो शायद कुछ परिवर्तन आ सके। वे मित्र, सम्बन्धी, पति जिनका आदर करता है उसे समझाएं, परिवार को साहस बंधाये तो शायद कुछ सुधार आए।

ऋग्वेद के अनुसार "एक शराबी व्यक्ति पापी है।" दयानन्द जी का कहना है कि शराब मनुष्य को राक्षस बना देती है। शराब एक धीमा जहर भी है।

शराब पीना अपने पैरों पर कुल्हाड़ी के समान है तथा चरित्र भी गिर जाता है। किसी ने ठीक ही कहा है कि जब धन गया तो कुछ नहीं गया, जब स्वास्थ्य गया तो कुछ गया लेकिन अगर चरित्र गया तो सब कुछ चला गया।

शराबी से नाखुशी प्राप्त होती है और वह व्यक्ति स्वयं, परिवार समाज तथा राष्ट्र के लिए कुछ नहीं कर सकता। सभी धार्मिक ग्रंथों ने नशे का खंडन किया है। शराब दिल तथा जिगर को बुरी तरह प्रभावित करती है। नशा शरीर की आन्तरिक तथा बाहरी बिमारियों को पैदा करता है। शराब पीने से मनुष्य स्वार्थी, भावुक, शक्की तथा गुस्सैला बन जाता है। शराब आंखों पर भी प्रभाव डालती है तथा व्यक्ति अपनी सतर्कता खो बैठता है। शराब का आदी मनुष्य अपनी स्मरण शक्ति भी खो बैठता है। भगवान् कृष्ण ने 'भगवद् गीता' में कहा है कि जब स्मरण शक्ति कमजोर होती है तो मनुष्य अपने श्रेय साधन से गिर जाता है। शराबी व्यक्ति विलासी बन जाता है। सुरा है तो उसे सुन्दरी भी चाहिये। कभी-कभी तो शराबी मनुष्य Leg, Peg and Egg की नीति में ही विश्वास करने लग जाता है। नशा सेवन परिवार, समाज व कलान्तर में देश के लिए दुर्भाग्य पूर्ण है। महात्मा गांधी ने कहा था कि शराब शरीर और आत्मा दोनों का नाश करती है परन्तु तिरस्कार व उपहास इस समस्या का निदान नहीं है। इस अभिशाप से मुक्ति पाने का उपाय चिकित्सा क्षेत्र में है क्योंकि शराब पीना भी एक प्रकार की लत या बिमारी है। यह एक ऐसा भयानक रोग है जिससे पूरा परिवार तबाह हो जाता है। बहुत सी दुर्घटनाएं, अपराध, हत्याएं इसी वजह से होती हैं।

मद्य-निषेध के लिए समय-समय पर प्रयास हुए हैं पर वे विशेष कारगर साबित नहीं हुए। इसका प्रमुख कारण भारतवासियों में संयम का अभाव तथा सरकार की ढीली नीति है। कुछ राज्यों ने अवश्य ही मद्य-निषेध को अपने क्षेत्र में प्रभावी बनाया है। जनता सरकार का प्रतिनिधित्व करनेवाले प्रधानमन्त्री श्री मोरार जी देसाई मद्यपान के प्रबल विरोधी थे। उन्होंने तो यहां तक कह दिया था—"अगर नशाबंदी करने से सरकार गिरती है तो मुझे इसका जरा भी अफसोस न होगा।" परन्तु अफसोस तो इस बात का है कि ठेकों की मात्राएं अधिक बढती जा रही हैं तथा अवैध शराब का धंधा भी जोरों पर है। सरकार की तरफ से ऐसा कठोर कानून बनाया जाए जिसके अन्तर्गत शराब सेवन करनेवालों के लिए कठोर दण्ड की व्यवस्था हो। शराब का निर्माण करनेवाले कारखाने बन्द कर दिये जाएं तथा चोरी-छिपे शराब बनानेवालों को कड़ी सजाएं दी जाएं। समाज-सेवी संस्थाओं को इस ओर पूरा ध्यान देना चाहिये तभी भारत मद्यपान जैसे रोग से मुक्त हो सकता है।

नशाखोर व्यक्ति सहानुभूति का पात्र है प्रताड़ना का नहीं। उसके परिवार को अपमानित करना स्वस्थ मानसिकता का परिचायक नहीं है। शराब सेवन का दृढ़तापूर्वक विरोध करना चाहिये पर पत्नी व बच्चों का नहीं। उन्हें स्वाभिमानपूर्वक जीने का अधिकार है।

राव सुबेसिंह एम० ए०, एल० एल० बी०
१६२ अर्बन इस्टेट कुरुक्षेत्र

लुधियाना में पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह सम्पन्न

आर्य युवक सभा पंजाब का पं० मुनिवर गुरुदत्त जी विद्यार्थी शताब्दी समारोह का आयोजन स्थानीय आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द बाजार में ११.११.१९९० को सम्पन्न हुआ। यज्ञ में २५ यजमान एवं अन्य जनता ने श्रद्धापूर्वक भाग लिया। इसके पश्चात् ध्वजारोहण श्री मनोहरलाल आर्य मन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब ने किया।

समारोह को सम्बोधित करते हुए आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यालय मन्त्री सरदारीलाल आर्यरत्न ने युवकों का आह्वान किया कि जाति-पांति को समाप्त करने, दहेज जैसी सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने के लिए संघर्ष करें। उन्होंने आशा व्यक्त की कि युवकों के सहयोग से पंजाब में आर्यसमाज के प्रचार तथा प्रसार का कार्य तेजी से बढ़ेगा। समारोह के मुख्य अतिथि श्री जे.बी. गोयल, पी.सी.एस. अतिरिक्त उपायुक्त लुधियाना ने कहा कि आर्यसमाज ने शिक्षा के क्षेत्र में, सामाजिक उत्थान एवं अन्धविश्वास समाप्त करने, देश को आजाद कराने के लिए सराहनीय भूमिका निभाई है। आज की विषम परिस्थितियों में आर्य युवकों को रचनात्मक भूमिका निभानी चाहिए।

श्री सतीशचन्द्र नन्दा प्रिंसीपल ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों पर चलते हुए यदि सभी को शिक्षा के समान अवसर दिये जायें तो मण्डल कमीशन की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती है। उन्होंने युवकों को चरित्र निर्माण तथा भेदभाव को समाप्त करने के लिए प्रेरित किया है।

इस अवसर पर देश की एकता और अखण्डता और साम्प्रदायिक सद्भाव बनाये रखने तथा युवकों को सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करने के लिए अमृतसर से डा० हरभगवान् आर्य, लुधियाना से गरीब दास, ललित जसवाला, महेंद्रप्रताप आर्य, राजेन्द्र महेन्द्रू, सुरेशकुमार चड्ढा, वीरेन्द्र ढींगरा, बरनाला से रामशरण दास गोयल, सतीश सिंधवानी, फिरोजपुर से ललित बजाज, तपा से चांदराम विद्यालंकार, मलेरकोटला से रमेश कौशल, तलवाड़ा से मनोहरलाल आर्य, पटियाला से श्री गुलाबसिंह आर्य, प्रकाशचन्द्र शास्त्री अहमदगढ़ को आर्य युवक सभा पंजाब की ओर से सम्मानित किया गया।

सामाजिक जगत्

राष्ट्र-भाषा का अपमान

उत्तर प्रदेश में लम्बे समय से उर्दू को द्वितीय राज-भाषा बनाने का षड़यन्त्र चल रहा है भूतपूर्व मन्त्री एवं हिन्दी के अनन्य उपासक प्रो॰ वासुदेव सिंह निरन्तर इस षड़यंत्र का दृढ़ता पूर्वक विरोध करते रहे हैं। उर्दू समर्थक साम्प्रदायिक लोगों की दृष्टि में प्रो॰ वासुदेव सिंह निरन्तर काटें की तरह खटकते रहे और वे उन्हें मन्त्री मण्डल से निकालने की मॉग करते रहे। अब उत्तर प्रदेश मंत्री मण्डल के पुर्नगठन पर मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति के कारण राष्ट्र-भाषा के इस महान पुजारी को मन्त्री मण्डल से पृथक रखा गया है। मन्त्री मण्डल में उनका न लिया जाना राष्ट्र-भाषा का घोर अपमान है। आर्य जनता इसका डटकर विरोध करती है। —इन्द्रराज प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ॰प्र॰

शुद्धि और विवाह

अ॰ भा॰ महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में कु॰ नजमा और कु॰ अमनी दयाल नामक युवतियों की शुद्धिकर हिन्दू नाम क्रमशः कु॰ नीलम और कु॰ राधा दयाल रखा गया। पश्चात कु॰ नीलम का विवाह श्री लखनपाल के साथ और कु॰ राधा का विवाह श्री जगपाल रावत के साथ प॰ रामप्रसाद मिश्र के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ।

—सौ॰ सिन्धु गोडसे

आर्य समाज का कार्यक्रम आकाशवाणी से प्रसारित

आर्य समाज, कोटद्वार, गढवाल में वेद प्रचार सप्ताह 30 अगस्त से 8 सितंबर तक आयोजित किया गया। प॰ राम प्रकाश 'सरस' द्वारा वेद प्रवचन और यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। ब्र॰ आर्य नरेश के व्याख्यान और श्री हरिसिंह आर्य व श्री विद्यारत्न आर्य के भजन हुए। पूर्णाहुति का कार्यक्रम आकाशवाणी, नजीबाबाद केन्द्र से भी प्रकाशित किया गया। —रमेश कुमार गोयल

आर्य वीर दल का शिविर

पूर्वी उत्तर प्रदेश के आर्य वीरो का एक शिविर 29 अक्तूबर से 3 नवम्बर 85 तक दयानन्द जूनियर हाई स्कूल शास्त्री नगर सुलतानपुर मे लगाया जाएगा।

शिविर का शुभारंभ श्री मनमोहन तिवारी मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ॰प्र॰ करेंगे तथा समापन श्री बालदिवाकर हंस द्वारा होगा। —रामकिशोर त्रिपाठी,

—आर्य समाज, लारेंस रोड दिल्ली के श्री अश्विनी कुमार पाठक प्रधान, श्री धर्मवीर मदान मंत्री और श्री आर. सी. गुप्ता कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्य समाज आशापार्क

आर्यसमाज, आशापार्क, नई दिल्ली मे 26 से 28 सितम्बर तक प्रचार कार्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचार वाहन द्वारा हुआ जिसमे उपदेश श्री राम किशोर जी के और भजन स्वामी स्वरूपानन्द और श्री सत्यदेव स्नातक के हुए।

—निरंजन देव

आर्य समाज समालखा

5 अक्तूबर से प्रातः यज्ञ से आर्यसमाज समालखा का उत्सव प्रारम्भ हुआ। ध्वजारोहण और शोभायात्रा के उपरान्त रात्रि मे दोनों दिन स्वामी रामेश्वरानन्द, डा॰ रामप्रकाश, आचार्य हरिकेशदत्त साहित्यालंकार, पं॰ रणवीर शास्त्री, आचार्य देवव्रत शास्त्री, आचार्य प्रद्युम्नकुमार, चौ॰ नत्थासिंह, पं॰ ताराचन्द वैदिकतोप, म॰ चिरंजीलाल, म॰ मुंशीलाल एवं बहन कलावती आदि के भाषण हुए। इस अवसर पर कस्बे के लगभग एक सौ युवको ने यज्ञोपवीत धारण किये।

—मंत्री, आर्यसमाज समालखा

—आर्य समाज झण्डेवाला एक्सटेंशन 2 ई-23 प्रथम मंजिल, नई दिल्ली के चुनाव मे श्री अशोक कुमार सलूजा प्रधान, श्रीमती कृष्ण देवी रसवन्त मंत्री और श्री आर्य भूषण आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, कबाडी बाजार अम्बाला छावनी के श्री जय प्रकाश आर्य प्रधान श्री जगदीश आर्य मंत्री और श्री वेद प्रकाश शर्मा कोषाध्यक्ष चुने गये।

—आर्य समाज तरावडी (करनाल) के वार्षिक निर्वाचन मे चौ॰ इन्द्र सिंह आर्य संरक्षक, चौ॰ हीरानन्द आर्य प्रधान श्री कंवर भान आर्य मंत्री और श्री हरी चन्द्र आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

—युगविधाता महर्षि दयानन्द द्वारा निर्देष्ट आर्ष पाठ विधि पर आधारित नि.शुल्क शिक्षा केन्द्र महर्षि दयानन्दार्य गुरुकुल कृष्णपुर मन्नाना, फर्रूखाबाद (उ॰ प्र॰) की आर्य कुमार सभा का निर्वाचन कुलपति श्री आचार्य चन्द्रदेवजी शास्त्री की अध्यक्षता मे निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ।

प्रधान : ब्र॰ मनुदेवार्य उपप्रधान ब्र॰ शिवदेवार्य : मन्त्री : सोमदेवार्य : उपमंत्री : वेद प्रकाशार्य : कोषाध्यक्ष : ब्र॰ अभयदेवार्य : सहकोषाध्यक्ष : ब्र॰ रामदेवार्य : पुस्तकाध्यक्ष : ब्र॰ दयानन्दार्य : सहपुस्तकाध्यक्ष : ब्र॰ रमेशचन्द्रार्य : संरक्षक : ब्र॰ वेदानन्दार्य :

—आर्य समाज, हिलसा, नालन्दा के चुनाव में श्री नथुन साहू आर्य प्रधान, श्री देवेन्द्र कुमार शशि कर मंत्री और श्री हरदेवप्रसाद आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

आर्यसमाज मेरठ में गांधी जयन्ती

मेरठ शहर आर्यसमाज मे गाधी एवं शास्त्री जयन्ती बड़े समारोह पूर्वक मनाई गई। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री इन्द्रराज ने महात्मा गाधी एव श्री शास्त्री जी के जीवन पर प्रकाश डाला। समारोह मे संगीत, कविता तथा भजनो द्वारा देशभक्ति की प्रेरणा दी गई।

—इन्द्रराज, मंत्री, आर्यसमाज मेरठ

—आर्य समाज, राधेश्याम मन्दिर, बुराही गाव, दिल्ली का निर्वाचन स्वामी सत्यवेश की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ जिसमें श्री स्वामी सत्यवेश प्रधान, श्री राम किशन त्यागी मत्री और श्री ब्रजलाल आर्य कोषाध्यक्ष चुने गये।

रामायण के स्थानों...

(पृष्ठ 4 का शेष)

सुमागधी—सोन नदी।

शूर—मथुरा का निकटवर्ती प्रदेश जो शौरसेनी प्रदेश भी कहलाया।

सुवर्णद्वीप—जावा।

स्यन्दिका—गंगा और गोमती के बीच बहती कोसल देश की दक्षिण सीमा बनाने वाली सई नदी।

तक्षशिला—भरत के पुत्र तक्ष द्वारा बसाई गई नगरी अब पाकिस्तान मे रावल पिण्डी के पास। यहां का विश्वविद्यालय प्रसिद्ध था।

तमसा—टोस नदी जो आजमगढ से होकर बलिया के पास गंगा में मिलती है

ताम्रपर्णी—तिन्नवेल्ली मे ताम्बारी नदी।

त्रिकूट—सिंहलद्वीप (सीलोन) का एक पर्वत।

उशीनर—दक्षिणी अफगानिस्तान।

उत्कल—उडीसा।

उत्तरकुरु—तिब्बत और पूर्वी तुर्किस्थान।

उत्तरगा—रामगगा नदी।

वाल्हीक—बलख, पश्चिमोत्तर पाकिस्तान।

वाल्मीकि आश्रम—तमशा (टोस) नदी के तट पर प्रयाग से 20 मील दूर कुछ लोग कानपुर से 14 मील दूर बिठूर को वह स्थान मानते है। सन 18 57 में नानाजी पेशावा का यह क्रांति-केंद्र रहा।

वनायु—प्रचीन अरब देश।

वंग—बगाल।

वाराणसी-काशी राज्य की राजधानी।

वत्स—इलाहबाद के पश्चिम का प्रदेश जिसकी राजधानी कौशाम्बी थी।

वेदश्रुति—तमसा और गोमती के मध्य बहने वाली अवध मे स्थित बेइता नदी।

वेत्रवती—बेतबा नदी।

विदर्भ—बरार, जो इस समय महाराष्ट्र का भाग है। महाराज नल इसी प्रदेश के राजा थे।

विदेह—तिरहुत, जनक का राज्य।

विदिशा—भेलसा। शत्रुघ्न के पुत्र ने इसे बसाया था। बौद्ध साहित्य में बहुचर्चित। भोपाल से लगभग 30 मील दूर।

विपाशा—व्यास नदी जो रटांग दर्रे से निकल कर कुल्लू होकर बहती है। हिमाचल प्रदेश मे इसी पर अब थीन बांध बन रहा है।

विशाला—हाजीपुर से 18 मील उत्तर मे गण्डक नदी के तट पर मुजफ्फरपुर के पास। बाद मे बौद्ध साहित्य में यही स्थान वैशाली गणराज्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ जिसमें लिच्छवि गण का शासन था।

विश्वमित्र आश्रम—आधुनिक बक्सर के पास कोसी नदी के तट पर कोई स्थान।

निराला सन्त—महर्षि दयानन्द

भारत की पुण्य भूमि पर एक सन्त निराला आया।
मानवता का प्रहरी बन जिसने सोया देश जगाया।।टेक।।
झूठे शिव से नाता तोड़ धर्म को पहचान लिया।
मूर्तिपूजा फिजूल समझा ईश्वर निराकार जान लिया।
पाखण्डवाद हटाने खातिर चार वेदों का ज्ञान दिया।
मिथ्या कलंक हटा जिसने रामकृष्ण को सम्मान दिया।
अद्भुत किया उपकार ऋषि ने सत्य सनातन वेद बताया ।।१।।
जात पात की आन्धी हटा कर्मप्रधान बताया।
वर्णव्यवस्था कायम कर छुआछूत मिटाया।
बिछड़ गये थे भाई-भाई इन्हें मिलाया।
सोई पड़ी थी हिन्दू जाति ऋषि ने आन जगाया।
आजादी की प्रेरणा दे वीरों को उकसाया ।।२।।
ओ३म् पताका ली हाथ पोपों को दी ललकारी।
सत्यार्थप्रकाश लिख ऋषि ने पोल खोली सारी।
पोप पुजारी पण्डे सारे भागे दे किलकारी।
विधवा विवाह चला के किया उपकार भारी।
शिक्षा को अधिकारी बता नारी सम्मान दिलाया ।।३।।
नाम सन्त का दयानन्द था वो पक्का वीर ब्रह्मचारी।
सारे जग का भला करण की उसने बात विचारी।
पर दानवता के आगे एक मानवता थी हारी।
बहकावे में जगन्नाथ ने पाप किया भारी।
विष दिया उस माली को जिन चमन गुलजार बनाया ।।४।।
रामचन्द्र भूल सके ना कितने थे परोपकारी।
कर-कर के उपदेश किया जग उपकार भारी।
धर्म का रखवाला बन के सही बात उचारी।
वैदिक धर्म को जिन्दा कर दिया ज्यां अमृत वारि।
वेद की जोत जलती रहे आर्यसमाज बनाया ।।५।।

ले०—मा० रामचन्द्र आर्य, नलवा (हिसार)

आर्य वीरो जागो

अभी समय है यदि जागना चाहो जागो।
जाग गये तो बच जाओगे शोर मचा है भागो।
आतंकवाद की आग फैल रही है तेजी से।
उग्रवाद भी वार मार रहा है पीछे से।
इसकी लपटों से बचने को नींद को त्यागो।
अभी समय है......
बेईमानी व भ्रष्टाचार का है धुंआ छाया।
दूषित वातावरण होगया दम घुट आया।
इसे मिटाने की सोचो, आलस्य को त्यागो।
अभी समय है......
बलात्कारी रिश्वतखोरी भी सीमा को लांघ चुकी हैं।
दानवता मानवता को मजबूती से पीस रही है।
दुष्टों से टक्कर लेने को हे आर्य वीरो जागो।
अभी समय है......
पति-पत्नी की, भाई-भाई की छल कपट से मार रहा है।
खत्म हुआ विश्वास परस्पर जड़ें निरन्तर काट रहा है।
जीना चाहो यदि खुशी से, प्रेम बढ़ाओ, स्वार्थ को त्यागो।
अभी समय है......

—देवराज आर्य,
प्रचारमन्त्री आर्यसमाज
बल्लभगढ़

शोक समाचार

श्री दयाराम आर्य पूर्व खजांची आर्यसमाज मुसलाना जिला जींद का मार्च १९९० में स्वर्गवास होगया। श्री दयाराम जी आर्य आर्यसमाज मुसलाना के साथ-साथ कन्या गुरुकुल मोर-माजरा (पानीपत), आर्यसमाज सफीदों, सालवण, डिडवाड़ा तथा मडलौडा के कार्यक्रमों में भी भाग लेते थे।

हैदराबाद सत्याग्रह संग्राम

रचयिता—पं० पन्नालाल "पीयूष" सिद्धान्तशास्त्री
स्वतन्त्रता सेनानी उदयपुर

हैदराबाद नवाब ने पूजा यज्ञों पर प्रतिबन्ध लगाया।
आर्य हिंदु वीरों ने जा वहां क्रांति का बिगुल बजाया।।
निजाम के अत्याचारों से आर्य हिन्दू तंग आ गये।
भाई बन्सीलाल श्याम जी करने उनसे जंग आ गए।।
सार्वदेशिक सभा दिल्ली के प्रधान को भेजा सन्देशा।
जुल्म, ज्यादती, कोड़े गोली चलने का भेजा अन्देशा।।
हैदराबाद नवाब ने जब पूजा पर प्रतिबन्ध लगाया।
आर्य, हिन्दू वीरों ने तब सत्याग्रह संग्राम मचाया ।।१।।
यज्ञ हवन घड़ियाल शंख मन्दिरों में बजना बन्द कराया।
कथा कीर्तन भजन गीत उपदेशों पर प्रतिबन्ध लगाया।।
तुर्की टोपी पहने हर हिन्दू, था यह फरमान सुनाया।
मन्दिरों की मरम्मत, आरती भी करना बन्द कराया।।
नारायण स्वामी जी ने तब धर्मयुद्ध का शंख बजाया।
आर्य हिन्दू वीरों ने तब सत्याग्रह संग्राम मचाया ।।२।।
शोलापुर महाराष्ट्र में तब सत्याग्रह कैम्प लगाया।
स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को उसका सेनापति बनाया।।
प्रथम डिक्टेटर महात्मा नारायण स्वामी को है बनाया।
चांद करण शारदा दूसरे, तीसरे खुशहालचन्द को पाया।।
अजयमेरी जियालाल पंडित ने ये कर्त्तव्य दिखाया।
राजगुरु ध्रुवेन्द्र, स्पेशल ट्रेन ले करके भिजवाया।।
प्रकाशचन्द्र कविरत्न के प्रचार ने ऐसा रंग लाया।
दूसरी स्पेशल ट्रेन देवेन्द्रनाथ जी द्वारा पहुंचाया।।
आर्य हिन्दू वीरों ने तब सत्याग्रह संग्राम मचाया ।।३।।
महाशय कृष्ण, ज्ञानेन्द्र नेता, पंजाब से ये बनकर आये।
कितनों ने बलिदान दे दिये धर्म पे अपने प्राण गंवाये।।
निजामशाही कांप उठी अब आर्यवीरों का दल आया।
नवाब ने अपने घुटने टेके नीचे अपना शीश नवाया।।
ओ३म् पताका फहराई, "पीयूष" विजय का शंख बजाया।
हैदराबाद नवाब ने जब पूजा पर प्रतिबन्ध लगाया।
आर्य हिन्दू वीरों ने तब सत्याग्रह संग्राम मचाया ।।४।।

ऋषि गुणगान

(रागमांड, ताल कहरवा)

स्वामी धर्म प्रचारक देश सुधारक बेगा आज्यो जी ।। टेर ।।
सुख सांसारिक त्याग के जी, विद्या पढ़ो चितलाय।
वैदिक सूर्य प्रकाश के जी, दियो तिमिर मिटाय।।
स्वामी बेगा आज्यो जी ।।१।।
योग्यां ने योगी जच्या जी, गुणियां नै गुणवान्।
धर्म्यां ने धर्मि ऋषि थे, बलियां नै बलवान्।।
स्वामी बेगा आज्यो जी ।।२।।
त्याग्यां ने त्यागी जच्या जी, धनियां नै धनवान्।
फकड़ां ने निर्भय ऋषि थे, भक्तां ने भगवान्।।
स्वामी बेगा आज्यो जी ।।३।।
पाखण्ड्यां ने काल समजो, छलियां नै यमराज।
दीना नै रक्षक जच्या जी, कवियां ने कविराज।।
स्वामी बेगा आज्यो जी ।।४।।
धर्म कारणे ऐ ऋषि जी, आप लियो अवतार।
धर्म ही जीवन जान धर्महित, दियो प्राण विसार।।
स्वामी बेगा आज्यो जी ।।५।।
वैदिक नैया समंद बीच जी, रहो है गोता खाय।
कर दया-दयानन्द भेजियो प्रभु, आकर पार लगाय।।
स्वामी बेगा आज्यो जी ।।६।।
द्वेष ईर्ष्या त्याग "जगन" थे, गावो ऋषि गुणगान।
विपत्ति समय में धर्म को जी, निज ऊंचो कियो जी निशान।।
स्वामी बेगा आज्यो जी ।।७।।

—स्वामी केवलानन्द सरस्वती
वैदिक सत्संग आश्रम पुष्कर

यू॰ १०३/८१ लायसेंस टु पोस्ट विदाउट प्री-पेमेन्ट
रजिस्ट्रेशन नं॰ आर॰ एन॰ आई॰ ११९३/७२ डी॰ सो॰ ४०६
POSTED IN DP S O ON 17-10-1985 २० अक्तूबर, १९८५

आचार्य महीधर और माध्यन्दिन यजुर्वेद-भाष्य

लेखक—डॉ॰ प्रशस्यमित्र शास्त्री

मूल्य 60।—

इस ग्रन्थ मे अत्यन्त प्रामाणिक ढंग से स्वा॰ दयानन्द के यजुर्वेद-भाष्य की मध्ययुगीन वेदभाष्य-पद्धतियो के चरम प्रतीक आचार्य महीधर के वेदभाष्य के साथ तुलनात्मक अध्यन प्रस्तुत करते हुए स्वा॰ दयानन्द और आर्यसमाज द्वारा मान्य वेदोत्पत्ति, वेद-सज्ञा, ऋषि, देवता अ दि विवादास्पद विषयो पर तर्कसगत ग्राह्य एवं प्रामाणिक विचारो की स्पष्ट प्रस्तुति के साथ ही स्वा॰ दयानन्द की वेदभाष्य पद्धति, यौगिक प्रक्रिया पर आश्रित उनके विभिन्न मन्त्रार्थों के गुण-दोषो, उनके द्वारा मन्त्रो मे स्वीकृत छन्द एवं अलकारो की कल्पनाओ तथा व्याकरण एवं स्वर-प्रक्रिया की प्रामाणिकता आदि विषयो पर बडे ही स्पष्ट पूर्वाग्रह-रहित और युक्तिसंगत रूप मे वेबाक विस्तृत समीक्षा प्रस्तुत की गई है।

दयानन्द-भाष्य पर इतने अधिक विभिन्न आयामो मे व्यापक अध्ययन आज तक प्रकाशित किसी भी शोध-ग्रन्थ मे उपलब्ध नही है। वेदभाष्यो, मुख्यत: दयानन्द-भाष्य की विविध विधाओ पर कार्य करने वाले प्रत्येक अनुसन्धाता के लिए यह एक संग्रहणीय ग्रन्थ है।

मनी आर्डर द्वारा ५५/- अग्रिम भेजने वालों को डाकव्यय नही, पुस्तक-विक्रेताओं को २५% छूट।

प्राप्तिस्थान —प्रशस्यमित्र शास्त्री, बी 29 आनन्द नगर (जेलरोड) रायबरेली-229001

अन्तर्जातीय विवाह विभाग की स्थापना

यह आवश्यक है कि हिन्दू अपनी सन्तानो की शादिया गुण- कर्म-स्वभाव के आधार पर करे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग मे एक अन्तर्जातीय विवाह विभाग की स्थापना की गई है। इस बात का ध्यान रखा जाता है कि विवाह मे दहेज बाधक न हो। अब तक लगभग ८० अन्तर्जातीय विवाह सम्पन्न हो चुके है और सब दम्पति सुखी हैं। आफिस का समय ११ से ५ बजे तक है। साय ५ बजे से ७ बजे तक व्यक्तिगत बातचीत के लिए सुरक्षित है। विवाह इच्छुक युवक/युवती अथवा उनके संरक्षक निम्न पते पर सपर्क करें —

डा॰ मदनपाल वर्मा, अधिष्ठाता-अन्तर्जातीय विवाह विभाग, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली १

आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विचारक, चिन्तक तथा उपन्यासकार गुरुदत्त की अन्यतम रचना

दो लहरों की टक्कर

आठ भागो में पेपर बैक संस्करण मूल्य ८० रुपये

भारत में अंग्रेज़ी राज की प्रतिक्रिया में दो लहरें उठी, ब्रह्मसमाज तथा महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज। इन दोनो लहरो का टकराव हो गया। पिछले ११० वर्षों मे हुए राजनैतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रो मे, इस टकराव की कहानी है—

दो लहरों की टक्कर

ऐसा अनूठा चित्रण प्रसिद्ध उपन्यासकार गुरुदत्त की लेखनी का ही कमाल है।

श्री गुरुदत्त की कुछ अन्य विचार प्रधान रचनाएं—

श्रीमद्भगवद्गीता (भाष्य)	३०-००	ब्रह्मसूत्र (भाष्य)	६४-००
साख्य दर्शन (भाष्य)	४०-००	न्याय दर्शन (भाष्य)	४५-००
वेद प्रवेशिका	२०-००	सृष्टि रचना	१२-००
विज्ञान और विज्ञान	१२-००	वेदो मे सोम	६-००
भारत गान्धी नेहरू की छाया मे (राजनीति)			२०-००

भारती साहित्य सदन सेल्स

३०/९० कनाट सरकस (मद्रास होटल के नीचे) नई दिल्ली-११०००१

दीपावली पर लक्ष्मी पूजन चांदी के सिक्के से कीजिए

१५०/- की पुस्तको का आदेश ३०-१०-८५ तक दीजिए और दस ग्राम चादी का रुपया, जिसका बाजार मूल्य लगभग ४०/- है, उपहार मे लीजिए। पुस्तकें भेजने का खर्च हम देंगे। आर्डर के साथ ५०/-अगाऊ मनी-आर्डर भी भेजिए।

पुस्तक	लेखक	मूल्य
राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ और ब्रेन वाशिंग	प॰ लेखराम	१०-००
राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ . अतीत और वर्तमान	गंगाधर इंदूरकर	२५-००
गाधी-वध और मैं	गोपाल गोडसे	३० ००
गाधी-वध क्यो ?	गोपाल गोडसे	१२-५०
भारतीय जनता पार्टी के नीति-निर्धारक	डॉ॰ रामलाल वर्मा	२०-००
राष्ट्रीय विकल्प भाजपा	डॉ॰ रामलाल वर्मा	[illegible]
हिन्दू पद पादशाही	वीर सावरकर	१६-[illegible]
भारत में मुस्लिम सुल्तान-१	पी॰ एन॰ ओक	३०-००
भारत मे मुस्लिम सुल्तान-२	" " "	२०-००
कौन कहता है अकबर महान् था ?	" " "	२६-००
लखनऊ के इमामबाडे हिन्दू राजभवन हैं	" " "	१२-००
ताजमहल मंदिर भवन है	" " "	२०-००
विश्व इतिहास के विलुप्त अध्याय	" " "	१६-००
गंगा मैया मे जब तक के पानी रहे	मुजफ्फर हुसेन	१२-००
मैं हिन्दू हूं	गुरुदत्त	१०-००
स्व-अस्तित्व की रक्षा	" "	१२-००
महाभारत	" "	१०-००
भारत गाधी नेहरू की छाया मे	" "	२०-००
देश की हत्या	" "	१०-००
दो लहरो की टक्कर (८ भागों में)	" "	८०-००
परिस्थिति जन्य (सामाजिक कथाएं)	पुष्पाजी	१०-००
यान्त्रिक (धार्मिक उपन्यास)	श्यामविमल	१०-००
छोटी बहू (सामाजिक उपन्यास)	रोशनलाल	१२-५०
बदलते चेहरे (कथाए)	नारायण चन्द्र भारती	१०-००
हिन्दू धर्म का क ख ग	तनसुखरामगुप्त	८-००
हिन्दुत्व के प्रेरक	" "	८-००
मेरा रंग दे वसन्ती चोला	" "	८-००
प॰ दीनदयाल उपाध्याय : महाप्रस्थान	" "	८-००
मानस-मंथन	" "	१०-००
सर संघ चालक द्वय	" "	४-००
जीवन के कुछ क्षणो में	" "	७-५०
१७५ हिन्दी निबन्ध	" "	३०-००
स्वातन्त्र्य सेनानी · तात्या टोपे	सत्य शकुन	१५-००
मेवाड का सूर्य महाराणा प्रताप	" "	८-००
क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद	" "	८-००
झांसी की रानी : लक्ष्मी बाई	" "	८-००
आर्य समाज के सौ रत्न	अशोक कौशिक	१०-००
हम हिन्दू हैं	विराज	१२-००
हिन्दू स्वराज्य संगीत	रामदास कालिया	१०-००
सुदामा चरित	डॉ॰ सुषमा गुप्ता	५-००
श्रीमद्भगवद्गीता सार	डॉ॰ पी॰ डी॰ अग्रवाल	१२-५०
साहित्यिक-निबन्ध (८१ निबन्ध)	डॉ॰ सुषमा गुप्ता	२५-००
जीवात्माओ के अद्भुत रहस्य	कन्हैयालाल सरस	२०-००
विश्व के अदभुत रहस्य	कन्हैयालाल सरस	२०-००
८४ सचित्र योगासन एवं स्वास्थ्य	योगीराज	८-००
भोजन द्वारा स्वास्थ्य एवं चिकित्सा	डॉ॰ ओ पी गोयल	१०-००
स्वातन्त्र्य वीर सावरकर	प्रेमचन्द शास्त्री	१८-००
वीरागनाए राजस्थान की (तीन भाग)	डॉ॰ मेनारिया	१५-००

ध्यान रखिए – ५०/- या अधिक के आर्डर पर ही पुस्तकें भेजने का खर्च हम देते हैं, ५०/ से कम के आर्डर पर ५/- डाक व्यय आपको देना होगा। अत: ५०/- से कम का आर्डर न भेजिए।

सूर्य प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली-११०००६

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस॰नारायण एण्ड सन्स७११७/१८ पहाड़ी धीरज, (फोन : ५१६५१८, ५२७३३५) दिल्ली से छपवा कर कार्यालय आर्य जगत्, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित । स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिरमार्ग, नई दिल्ली। फोन (343718)

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य-२५ रुपये | विदेश मे ३० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४८, अंक ४१, रविवार, २७ अक्तूबर, १९८५ दूरभाष : ३ ४ ३ ७ १८

आजीवन सदस्य-२५१ रु० | इस अक का मूल्य—६० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८५, दयानन्दाब्द १६० आश्विन शुक्ला १४, २०४२ वि०

डी ए वी की नई उपलब्धि

भारत और जापान में छात्रों और शिक्षकों का विनिमय

नई दिल्ली, 16 अक्तूबर । आज यहा चेम्सफोर्ड क्लब मे जापान की यात्रा से लौटे शिष्ट मंडल के स्वागतार्थ रात्रि-भोज का आयोजन किया गया। शिष्टमडल का नेतृत्व डी ए वी कालेज कमेटी के प्रधान प्रो० वेदव्यास जी ने किया था। उनके साथ अन्य महानुभाव थे डी ए वी कमेटी के संगठन सचिव श्री दरबारी लाल और पजाबी बाग हसराज माडल यह है कि भविष्य मे जापान और भारत के छात्रो और शिक्षको के परस्पर आदान-प्रदान का निश्चय किया गया है। साथ ही जापान के सहयोग से एक अत्यत आधुनिक तकनीकी मस्थान खोलने का निश्चय भी किया गया है। यह कहने की आवश्यकता नही कि तकनीकी की दृष्टि से आज सारे ससार मे जापान की धाक है। इसके अलावा जापान के ग्राम-विकास के जो शिक्षाशास्त्री भारत आए थे वे डी ए वी सस्थाओ के सुचारु संचालन अनुशासन और शिक्षा स्तर से इतने प्रभावित हुए कि उन्होने स्वयं डी ए वी के शिष्टमडल को जपान आने का निमत्रण दिया। युवा वर्ष और पर्यावरण सुधार वर्ष के उपलक्ष्य मे जापान मे जो विश्व सम्मेलन हुआ और जिसमे ससार भर के देशो के लगभग दस हजार प्रतिनिधियो रांष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की व्यवस्था और कार्यक्रमो मे सहायता के लिए सार्वदेशिक सभा की ओर से डरबन जा रहे थे। वे वहा तीन मास रहेगे। आर्य महासम्मेलन के अलावा वे दक्षिण अफ्रीका मे भारतीयो की स्थिति का भी अध्ययन करेगे।

डी ए वी शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य मे डी ए वी कालिज कमेटी के प्रधान

चित्र परिचय बाएं से—श्री तिलकराज गुप्त प्रिंसिपल हंसराज माडल स्कूल पजाबी बाग, श्री दरबारी लाल संगठन सचिव डी०ए०वी० कालिज कमेटी, प्रो० वेदव्यास प्रधान डी०ए०वी० कालिज कमेटी। श्री मुल्कराज भल्ला प्रो० वेदव्यास जी को माल्यार्पण कर रहे है। श्री ब्रह्मदत्त स्नातक अपने डरबन जाने का उद्देश्य बता रहे है।

[illegible]गी। [illegible]सिपल श्री तिलकराज गुप्त। अनेक [illegible] के प्रिंसिपलो, आर्यसमाजो के अधिकारियो और भारत जापान सहयोग संस्था के पदाधिकारियों की ओर से पुष्पमालाओ द्वारा उक्त महानुभावो का स्वागत किया गया। उसके बाद तीनो महानुभावो ने सक्षेप से अपनी यात्रा की उपलब्धियो का वर्णन किया।

इस यात्रा की सबसे बडी उपलब्धि और कृषि-विशेषज्ञ भी भारत आएंगे और इन विषयो मे विशेष रुचि रखने वाले भारतीय कृषि-विज्ञ जापान जाएंगे।

खास बात यह है कि सब काम गैर-सरकारी स्तर पर शैक्षणिक और सामाजिक संस्थाओ की मार्फत होगा और भारत मे इन सब गति-विधियो का माध्यम डी ए वी संस्थाएं होगी। जापान ने भाग लिया, उस सम्मेलन मे भी इस शिष्टमडल ने भाग लिया।

शिष्टमंडल के साथ ही सार्वदेशिक सभा के प्रैस परामर्शदाता, सरकारी सूचना सेवा से कार्य-निवृत्त और इस समय वेदो के अग्रेजी अनुवाद के संपादन मे निरत श्री ब्रह्मदत्त स्नानक का भी अभिनन्दन किया गया। वे दक्षिण अफ्रीका मे इस वर्ष दिसम्बर मे होने वाले अन्त-श्री वेदव्यास जी की प्रेरणा से बाली, बैंकाक, सिंगापुर और मलेशिया मे इन देशो के साथ सास्कृतिक सहयोग-केन्द्र स्थापित करने की भी योजना है।

इस स्वागत-भोज का आयोजन नोएडा, गुडगाव, बहादुर गढ रोहतक और सोनीपत डी ए वी संस्थाओं के प्राचार्यों की ओर से किया गया।

✻

दीपावलि पर 'आर्यजगत्' का भव्य विशेषांक

आप 'आर्य जगत्' के विशेषाको की परम्परा से परिचित हैं। हो सकता है, अभी तक कोई विशेषाक आपकी नजर न पड़ा हो, पर आपने उसकी चर्चा अवश्य सुनी होगी और उसके प्रति मन में उत्सुकता भी हुई होगी। लीजिए, उसी परम्परा में नई कडी—

दीपावलि पर नया विशेषांक

जिसकी साज-सज्जा और सामग्री दोनों आपको मुग्ध कर लेगी और आप उसे संभालकर रखना चाहेंगे और मित्रो को भेंट करना चाहेंगे।

२०×३०×८ की पत्रिका के आकार में १०० पृष्ठो का यह विशेषाक 'आर्य जगत्' के ग्राहकों को सर्वथा नि शुल्क मिलेगा। ९ नवम्बर से पहले नए ग्राहक बनने वालो को भी नि:शुल्क। क्यो न आप भी तुरन्त २५ रु० भेजकर ग्राहक बन जाएं और यह विशेषाक नि शुल्क प्राप्त करें—वर्ष भर प्रति सप्ताह राष्ट्र-उद्बोधन के विचारो मे सहयोगी बनें।

यह विशेषाक १० नवम्बर को प्रकाशित होगा इससे पूर्व ३ नवम्बर तथा पश्चात् १७ नवंबर के अंक प्रकाशित नही होंगे।

परामर्शदाता-अमर स्वामी सरस्वती | सम्पादक क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

कबिरा गर्व न कीजिये

—श्री रामचन्द्र थापर—

काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहकार—ये आत्मिक उन्नति मे पाच बाधाये मानी गई है। इन मे अहकार महाबली है और बाकी चार दोषो का जनक है। हम देखते हैं कि बच्चा पैदा होते ही अहंभाव साथ लाता है और ज्यो-ज्यो बडा होता है, उस मे अहंकार की मात्रा बढ़ती जाती है। वह समझने लगता है कि सारा ससार उस के लिये ही बना है और उसकी प्रत्येक माग पूरी होनी चाहिये, उस के अपने भाई, बहिन को कुछ मिले वा न मिले। एक माग पूरी होने पर दूसरी कर देता है अथवा लोभ और मोह पैदा हो जाए तो जो खिलौना उसे पसद आये उसे छोड़ना नही चाहता। कोई माग पूरी न हो तो क्रोध करता है। कवि ने ठीक ही कहा है

लोभ, मोह, अहंकार, क्रोध और काम भी।
पाच किस्मे है ये दिल के मैल की॥

यदि यह वृत्ति रोकी न जाये वा लाड प्यार से इसे प्रोत्साहन मिलता रहे, तो वह भयकर रूप धारण कर लेती है। व्यक्ति सारे संसार की सतुष्टि की कसौटी अपनी सतुष्टि समझने लग जाता है। अपनी सम्पत्ति, अधिकार और प्रभाव को बढाने की चेष्टा मे पागलों जैसा व्यवहार कर बैठता है और अत मे दुख उठाता है।

यूनान के बादशाह सिकन्दर को कुछ विजय प्राप्त होने पर अहकार होगया कि वह सारी दुनिया को पराजित कर सकता है। उसने भारतवर्ष पर भी आक्रमण कर दिया। पर जेहलम से आगे न बढ सका और बीमार हो कर यूनान लौट गया। कुछ अर्से बाद जब लूट-मार का धन यही छोड कर मृत्यु की ओर जाने लगा तो मरते समय कह गया कि मेरे दोनो खाली हाथ कफन से बाहर रहे ताकि दुनिया देखले कि सिकन्दर अपने साथ कुछ नही ले जा सका। तुलसी दास ने कहा था

तुलसी इस ससार मे भूपति भये अनेक।
मैं-मेरी करते गये, ले न गये तृण एक॥

एक उर्दू शायर ने सिकन्दर की मृत्यु पर लिखा था

ऐ सिकन्दर न रही तेरी भी आलमगीरी।
कितने दिन आप जिया किस लिये दारा मारा॥

यही दशा जर्मनी के हिट्लर की हुई। उसे पोलड और फास पर विजय के पश्चात् अहकार हो गया कि वह रूस को भी पराजित कर सकता है। परन्तु अपने हजारो सैनिक मरवा कर उसे लौटने पर मजबूर होना पडा और अत मे आत्म हत्या कर के परलोक सिधार गया।

हो के सरकश गिर पडा, फव्वारा आखिर सिर के बल।
झुक के चलना चाहिये, या सिर उठाना है मना॥

एक संन्यासी कहा करते थे कि मैंने संकल्प कर लिया है कि मुझे 500 वर्ष जीना है और मनुष्य मात्र को वैदिक धर्मी और सस्कृत को उन की मातृ भाषा बना कर मरना है। परन्तु 80 के भी नही हो पाये थे कि एक दिन प्रभात के तारे की भाति देखते-देखते विलीन हो गए।

इस जीवन का गर्व क्या, क्या शरीर की प्रीत।
बात कहत गिरजात है बालू की सी भीत॥
आगाह अपनी मौत से, कोई बशर नहीं।
सामान सौ बरस का, कल की खबर नहीं॥

इगलेंड ने 1914 मे टाईटनक नामक समुद्री जहाज बनाया था जो उस समय दुनिया मे सबसे बडा था। वह 1100 यात्री लेकर पहली बार अमरीका को रवाना हुआ। गतव्य बन्दरगाह तक पहुचने से थोडी दूर पहले एक आइस वर्ग से टकरा कर डूब गया।

इस पर महाकवि अकबर ने लिखा था—

टाइटनक टुकडे हुआ एक टुकडे आइसबर्ग से।
दब गया साइस योरप का पयामे-मर्ग से॥

जब इगलेंड दुनिया की सब से बडी समुद्री शक्ति होने की डींग मार रहा था, तो कवि गा रहा था

कबिरा गर्व न कीजिये, रक न हंसिये कोय।
अभी तो नाव समुद्र मे, न जाने क्या होय॥

एक महात्मा से पूछा गया कि क्या परमात्मा कभी हसता है। उस ने उत्तर दिया कि हा, जब कोई वैद्य किसी रोगी की नाडी पर उंगली रख कर कहता है कि मैं इसे शर्तिया रोगमुक्त कर दूगा, तब परमात्मा खिल-खिला कर हस पडता है। मनुष्य भूल जाता है कि जीवन देने और लेने का अधिकार परमात्मा ने अपने हाथ मे ही रखा हुआ है।

"मैं जो चाहू कर सकता हू" समझने वाले व्यक्ति को नास्तिक कहना गलत नही होगा, इसके विपरीत आस्तिकता का अर्थ है "मैं नही, सब कुछ करने कराने वाला भगवान ही है।" अत विवेकी पुरुष 'मैं, मैं' करने की बजाय यह जानने के लिये प्रयत्न शील रहते है कि "मैं" क्या हू और 'मेरी औकात क्या है', 'मैं क्या कर सकता हू' और तब पूर्णतया विनम्र हो कर व्यवहार करते हैं। स्वामी दयानन्द को जब लोग बहुत बडा विद्वान और ऋषि कहने लगे तो उन्होने कहा था यदि मैं कपिल और कणाद जैसे ऋषियों के समय मे होता तो उनके विद्यालय का साधारण विद्यार्थी ही माना जाता। इसी प्रकार जब न्यूटन को दुनिया का सब से बडा वैज्ञानिक कहा गया तो उसने कहा था अभी तो मैं ज्ञान सागर के तट पर ककर पत्थर ही इकट्ठे कर रहा हू।

प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात कहा करता था कि मैं इतना ही जानता हू कि मैं कुछ नही जानता।

मुहम्मद साहब ने एक बार अपने शिष्यो से पूछा कि तुम ने क्या कुछ पढा है और क्या जानते हो? एक शिष्य ने कहा कि मैं 'उम्मी' हू, अर्थात् कुछ नही जानता कहते हैं, मुहम्मद साहब ने उसकी नम्रता को देख कर उसे गले लगा लिया।

विद्या पढ कर यदि किसी मे विनयशीलता नही आई तो समझना चाहिये कि वह यो ही पुस्तको का बोझ उठाये फिरता रहा है। नीतिकारो ने कहा है—

यथा खरश्चन्दन भार वाही।
भारस्य वेत्ता न तु चन्दनस्य॥

—अर्थात् जैसे अपनी पीठ पर लदे चन्दन के भार को ही गधा जानता है, चन्दन के गुणो को नही वैसे ही बिना विनय के केवल पुस्तको का बोझ ढोने वाले की हालत होती है।

विनम्रता का एक आदर्श उदाहरण अब्दुर-रहीम खानखाना के जीवन से मिलता है। वह दान देते समय आखे नीचे ही रखा करते थे। किसी ने कहा:

ऐसी कहा रहीम जू सीखे देनी देन।
ज्यो ज्यो कर ऊंचो उठे त्यो त्यो नीचे नैन॥

रहीम जी का अनुकरणीय उत्तर था

देने वाला और है जो देता दिन रैन।
लोग भरम मुझ पर करें या विध नीचे नैन॥

शिवाजी को एक दुर्ग पर विजय करके अहकार हो गया कि हजारो लोग मेरे कारण जीवन निर्वाह कर रहे है। गुरु राम दास ने उनके अहकार को भाप कर एक दिन एक पत्थर के नीचे एक कीडे के मुह मे चावल का दाना दिखा कर उन से पूछा—उस कीडे का भोजन कौन पहुचाता है?

एक शायर ने खूब कहा है.—

न था कुछ तो खुदा था, कुछ न होता तो खुदा होता।
डुबोया मुझ को होने ने, न मै होता तो क्या होता॥

ईसा मसीह का कथन है "Empty thyself and I will fill thee", अर्थात् तुम अहकार त्याग दो तो मैं प्रभु कृपा से तुम्हे भर दूगा। उन्होने यह भी कहा जो तुम मे से अपने आप को सब से छोटा समझता है वही सबसे महान बनेगा।

महात्मा गान्धी ने कहा था कि जब तक तुम नन्हे बच्चे जैसा अपने आप को अनुभव नही करते, तब तक भगवान के दरबार मे प्रवेश नही पा सकते। भगवान सहायता करता है जब हम अपने आप को अपने पावो की धूल से भी अधिक विनम्र बना लेते है।

भगवद्‌गीता (9 27) मे मनुष्य मात्र के कल्याण के लिये अति उत्तम उपदेश है: "तू जो कुछ करता है, जो कुछ खाता है, जो कुछ यज्ञ-हवन करता है, जो कुछ दान देता है और जो कुछ तपस्या करता है, उस सब को भगवान के अर्पण करता जा ऐसा करने से मनुष्य निमित्तमात्र रह जाता है।" जैसे किसी कम्पनी का कोई एजेट सब काम अपने स्वामी के आदेशानुसार करे तो सारे नफा-नुकसान की जिम्मेवारी स्वामी की होती है, न कि एजेट की। इसी प्रकार यदि मनुष्य सब काम भगवान की आज्ञानुसार इच्छानुसार करे और सब उसी को समर्पण कर दे तो उसे कर्म लपेटते नही बन्धन मे नही डालते। फिर फल भोगने की चिन्ता स्वयमेव नष्ट हो जाती है। निष्काम भाव से अनासक्त होकर कर्म करना ही मनुष्य जीवन का उद्देश्य है।

इस लिये सदैव प्रार्थना करते रहना चाहिये—

जो कुछ करूं जहा मे, तेरा ही काम समझ।
न हो गर्व कर्तापन का, न अहंकार की कोई बू॥

पता—ए०85, ईस्ट आफ कैलाश, नई दिल्ली-110065

सुभाषित

सूनु: सच्चरित: सती प्रियतमा स्वामी प्रसादोन्मुख:
स्निग्धं मित्रमवञ्चक: परिजनो नि:क्लेशलेशं मन: ।
आकारो रुचिर: स्थिरश्च विभवा विद्यावदातं मुखं
तुष्टे विष्टपहारिणो हरौ सम्प्राप्यते देहिनाम् ।।

—भर्तृहरि

सच्चरित्र सुत, सती प्रियतमा, स्वामी भी अत्यन्त उदार ।
प्रेमी मित्र, अवंचक परिजन, क्लेश रहित मन विगत विकार ।।

सुन्दर रूप, अचल वैभव अरु, विद्या से शोभित वाणी ।
जिन पर होते हैं प्रसन्न हरि, पाते हैं वे ही प्राणी ।।

—गोपालदास गुप्त

पहले टेप सुनिए फिर फैसला कीजिए

सम्पादकीयम्

भारत पर से संकट के बादल पूर्णतया तो कभी नही छट पाए । सदा कहीं न कहीं से कुछ संकट छाया ही रहता है । किन्तु विगत कुछ वर्षों से बाह्य सकट के साथ साथ आन्तरिक संकट गहन होता दिखाई दे रहा है । देश के पुर्नविभाजन का षड्यन्त्र रचा जा चुका है । विघटनकारी शक्तिया किस तीव्र गति, उत्साह और उन्माद से षड्यन्त्र मे लगी हैं उसका एक उदाहरण हम यहा पर एक भाषण के टेप के सारांश रूप मे प्रस्तुत कर रहे हैं । कृपया उसे सुनिए (पढिए) और फिर अपनी स्थिति एव अपने कर्तव्य का स्वयं निर्णय कीजिए ।

लीजिए पहले टेप सुनिए:—

"क्या आसबाब थे पाकिस्तान बनने के कि, इन लोगों ने पाकिस्तान बनवाया । तारीख के परदे से अगर ये हिजाबात हटाए जाय तो अच्छे से अच्छे भारत रतन नगे नजर आयेंगे । सिर्फ जिन्ना जिम्मेदार नही थे पाकिस्तान बनवाने के, पटेल भी जिम्मेदार थे पाकिस्तान बनवाने के सिर्फ पाकिस्तानी मुसलमान जिम्मेदार नहीं थे पाकिस्तान बनवाने के हिन्दुस्तानी गैर मुस्लिम भी जिम्मेदार थे, पाकिस्तान बनवाने के । जिन्होंने पाकिस्तान का नारा लगवाया था वे पाकिस्तान चले गये ।...हमने भारत की आजादी का मुतालबा किया था । भारत आजाद हुआ । भारत किसी के बाप की जागीर नहीं है । हम भारत मे रहेंगे, जाने वाले चले गये । जब हमारे कुछ नौजवानों के जाने की मजिल आई तो हमारे मोहितबाने वतन ने कहा, कहा जा रहे हो । गरीब नवाज का मजार तुम से पुछ रहा है, हमें छोड कर कहा जाओगे ।···

"आज रक्षको के जरिये बाडी गार्ड के जरिये इन्दिरा गाधी का कत्ल हुआ है । हमे गद्दार कहने वालो, हम पर पाबन्दी लगाने वालो, हमारे कुरान पाक पर नजर रखने वालो, अगर इंदिरा गाधी के रक्षक हम होते तो यह दिन आज देखने को न मिलता ।...इन्दिरा गाधी से लेकर महात्मा गाधी तक जरा गद्दारों की फहरिस्त का खुलासा कर लीजिए और फिर ४५ से ८५ तक वफादारो की भी सीरीज मुलाहिजा कर लीजिए । किस जुर्म की सजा हमें दी जा रही है । हमारी किताब पर पाबन्दी, हमारे मुस्लिम "पर्सनल लॉ" पर पाबन्दी, हमारे जिगरों-नजर पर पाबन्दी, कहीं ऐसा न हो कि तारीख अपने को दोहरा दे और बाला साहब देवरस को कलमा पढ़ना पड़े, अटल बिहारी वाजपेयी को कलमा पढ़ना पड़े, मिस्टर राजीव गान्धी को कलमा पढ़ना पड़े । तारीख दोहरायेगी अपने को········ ।

"आज कुरान पर रिट दाखिल हुई है । कल गीता की इज्जत महफूज नही रहेगी । कल सीता की इज्जत मैहफूज नहीं रहेगी । गुरू ग्रन्थ साहिब के खिलाफ भी बोला जायेगा । मैं पूछना चाहता हूं कि मजहबी किताबों की असमत को मजरूह करने का काम किसने किया । मुसलमान किसी मजहब पर हमला नहीं करता । क्योंकि उसका मजहब सच्चा है । और जिन लोगो को अपने मजहब मे शुबहा है वे दूसरा मजहब पर हमला करते हैं·· मुसलमान कुरान की तरफ से जिफा करेगा, मुसलमान कुरान की सच्चाई साबित करने कोर्ट मे जायेगा, याद रखना कि मुसलमान कुरान का जिफा करने नहीं आयेगा अदालत में । मुसलमान कुरान की हिफाजत के लिए सर से कफन बाध कर निकलेगा । जिफा उसका किया जाय, जिसमे कोई कमजोरी हो । हम कुरान में कोई कमजोरी नहीं समझते । कुरान हमारी वकालत के लिए आया है हम कुरान की वकालत के लिए नहीं हैं । कुरान के हम मुवक्किल हैं । कुरान हमारा मुवक्किल नहीं···। "अगर कुरान की असमतो को चुनौती दी गई तो कुरान का फैसला नही होगा । कुरान के खिलाफ बोलने वालो का फैसला होगा । हम वो जबानें काट लेंगे जो जबानें कुरान के खिलाफ बोलेंगी । हम वो खालें खीच लेगे जो खालें कुरान के खिलाफ कांपते हुए नजर आयेंगी । मुसलमान की जान ली जा सकती है मुसलमान का कुरान नहीं लिया जा सकता·········कुरान नही रहेगा तो कोई नही रहेगा, यह याद रखिये । जबड़े से निकाल लेंगे हम अपना हक । आप समझते हैं कुरान पर पाबन्दी लगाने से कुरान खत्म हो जायेगा ।·········

"अगर हिन्दुस्तान का कोई वफादार है तो वह कुरान का गुलाम मुसलमान है । कैसे ? हम भी मरे । जिन्दगी भर भारत में रहे, मरने के बाद क्या हुआ ? पवित्र अग्नि के हवाले कर दिया गया, दूसरा काम क्या हुआ त ? गा मैया मे बहवा दिया गया । जिन्दगी भर भारत रतन रहा । दरिया का कोई और-छोर है ? यहां से बहे और सीधे पाकिस्तान पहुंच गये । राख उड़ाई गयी और सीधे पाकिस्तान की सरहदों में आराम करने लगी । जिन्दगी भर तो हिन्दुस्तानी रहे और मरने के बाद पाकिस्तानी हो गये । हमें देखिये, आप चले गये तो भारत माता को कोई फिक्र नही और हम ज्यो ही मरे तो मादरे-वतन ने कहा—मेरे लाल मेरी गोद मे वापस नही आयेगा ? जिन्दा रहा मेरे ऊपर, मरेगा मेरी गोद में । मिट्टी से मिट्टी हम मिलाते हैं । धरती मे हम अपना वजूद देते हैं । और मादरे-वतन अपना कलेजा खोलकर कहती है—आजा तू मेरा सपूत ।······

"सोते हुए शेर को जगाने वाली लोमडी अपनी खैर मनाये और गीदड की जब मौत आती है तो वह शहर की तरफ भागता है । कुरान को चेलेज देने वाला होशियार रहे । या तो उसको मुसलमान होना पडेगा या उसके बाप को या उसकी औलाद को ।······इसलिए मुसलमानो, इन तमाम मकासिद के लिए आप सरफरोशी की तमन्ना रखिये । कुरान की असमतों पर कुर्बान होने के लिए अगर वक्त पडे, हम दौलत की कुर्बानी दें, वक्त पडे हम इज्जत की कुर्बानी दें, वक्त पड़े हम जान-माल औलाद की कुर्बानी दें ।......"

टेप का यह सार सक्षेप आजमगढ मस्जिद के इमाम मौलाना उबेदुल्ला खाँ के पाली (राजस्थान) मे मिल्लत मे दिए गए भाषण का है । ऐसे हजारो टेप आज भारत की मुस्लिम बस्तियो मे फ्री बाटे और सुने जा रहे हैं । हमारी सरकार को इसकी आधिकारिक जानकारी नही है । उच्चाधिकारी बड़े सहजभाव से कह देते हैं, "हाँ, उड़ती-उड़ती खबर सुनी है कि ऐसा कोई टेप है ।"

पंजाब और असम की समस्या से अभी हम उबर नहीं पाये थे कि एक और नया शैतान बोखला उठा । खून की नदियां बहाने की धमकी दी जा रही है । इससे देश के बहुसंख्य समुदाय पर चोट के साथ ही साथ देश में अशान्ति फैलाकर नई विभाजन की भी प्रक्रिया है । इसका हर देशभक्त को डटकर विरोध करना चाहिए । मौलाना उबेदुल्ला खाँ जैसे मतान्ध जोश मे आकर होश खो रहे हैं । उनसे हम कहना चाहते हैं कि आपके घर की औरतें ही मुस्लिम पर्सनल ला से तग आकर न्यायालय का दरवाजा खटखटाती हैं । मौलाना खान को भारतीय संविधान और न्यायालय मे विश्वास नही है । उसको तो अपनी पाकिस्तानी इस्लामी तलवार मे विश्वास है ।

राजीव गांधी, देवरस, वाजपेयी को कलमा पढ़ाने वाला, गीता गुरू ग्रन्थ साहब को मिटाने वाला अभी पैदा नहीं हुआ और न कभी होगा । खान का कहना है कि श्रीमती इन्दिरा गाधी का अंगरक्षक कोई मुसलमान होता तो उसकी हत्या नहीं होती तो क्या भारत मे अंग्रजो के पैर जमाने वाला मीर जाफर मुसलमान नहीं था ? महारानी लक्ष्मीबाई का तोपची जो अंग्रेजो से मिल गया था, वह खुदा बख्श क्या मुसलमान नही था ? मौलाना कहते हैं कि हम पिछले इतिहास को दुहरायेंगे । पिछला इतिहास हमे भी याद है । लग भग ७ सौ वर्ष पूर्व एक विदेशी लुटेरे मुहम्मद गजनवी को सम्राट पृथ्वीराज चौहान ने १७ बार माफ किया था । पिछले इतिहास मे ऐसे एक नही, अनेक उदाहरण विद्यमान हैं ।

भारत के मुस्लिम नेता इस ताक में रहते हैं कि कब उन्हें कोई मौका मिले और वे मुसलमानो को उभारें । यदि देश में जिसमे कि एक बड़ी संख्या मे मुसलमान भी बसते हैं और समान नागरिक के रूप मे बसते हैं, उनके लिए समान नागरिक सहिता की बात की जाय तो वह उन्हे इस्लामी कानून के विरुद्ध क्यों लगती है ? भारत में रहेगे, पर इनके लिए भारत के संवैधानिक कानून नही, तो जो कुछ इनके मुल्ला-मौलवी-इमाम-काजी कहेगे क्या वही कानून होगा ? और यदि इस बात को देश न माने तो बस लडाई या कत्लेआम का बिगुल बज उठेगा । कौन बजाने जा रहा है यह जिहाद का बिगुल ? सैयद शहाबुद्दीन, इब्राहीम सुलेमान सेट, गुलाम मुहम्मद बनातवाला, मुहम्मद कोया, हैदराबाद के मुस्लिम मुशावरत के डिक्टेटर सलाउद्दीन ओवेसी, जामा मस्जिद दिल्ली के शाही इमाम अब्दुल्ला बुखारी और तस्कर सम्राट् हाजी मस्तान, मियां करीम लाला तथा प्रसिद्ध फिल्म स्टार दिलीप कुमार उर्फ यूसुफ मियां आदि-आदि ।

हमारे देश में अनगिनत मस्जिदों और ईदगाहो पर जो तकरीरें होती हैं, उनमें गुप्तचर विभाग वाले सामान्यतया नहीं होते । वहां क्या कुछ कहा जाता होगा, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि जब गुप्तचरों की उपस्थिति मे मौलाना ओबेदुल्ला खां दावे के साथ उन्हें रिपोर्ट लिखने को आगाह करते हैं । जैसा कि टेप में कहा गया है । मुस्लिम मतान्धता का यह एक उदाहरण मात्र हमने प्रस्तुत किया है, अन्यथा आज भारत के कोने-कोने में इस प्रकार का धमकी भरा गर्जन नित्य ही होता रहता है । फैसला अब आपके हाथ में है ।

साम्प्रदायिक दंगे समाप्त हो सकते हैं, मगर कैसे ?

—विशन स्वरूप गोयल—

हमारे देश में प्राय. साम्प्रदायिक दंगों के नाम से जो मुस्लिम-हिन्दू दगे होते हैं उन्हे स्वतन्त्रता के ३८ सालो बाद भी रोका नही जा सका है। यदि हमारे सत्ता धारी एवं अन्य राजनीतिक दलो के नेताओ ने इन दगों की गहराई मे जाने का प्रयत्न किया होता तो उन्हे पता लग जाता कि इन दगो के पीछे कौन सी भावना काम करती है। जब किसी रोगी या समस्या के कारणो का पता लग जाता है तब उसका समाधान भी सरल हो जाता है।

इस्लाम और दगे

इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब इस्लाम का इस विश्व मे अस्तित्व नहीं था उस समय कुछ दगे आपसी सम्पत्ति, राजसत्ता आदि हथियाने के मामले मे तो होते थे किन्तु मजहब के नाम पर मार काट नहीं होती थी। किन्तु मजहब के नाम पर दंगो की पहल इस्लाम के अस्तित्व के बाद हुई है। इस्लाम के प्रवर्तक हजरत मुहम्मद साहब ने जब अपने मजहब की नीव डाली और कुरआन शरीफ में अपने अनुयायियों को उस पर चलने का आदेश दिया गया तब से इन दंगों की शुरूआत हुई। इसी सन्दर्भ मे मुस्लिम लोग के अनन्य नेता मुहम्मद अली जिन्ना ने तो एक बार यहाँ तक कहा था कि जब तक विश्व में कुरआन रहेगी तब तक विश्व में शांति स्थापित नही की जा सकती। क्योंकि कुरआन मुसलमानों को गैर मुसलमानो के साथ शाति पूर्वक न रहने देने के लिए है।

प्रश्न यह है कि आखिर कुरआन शरीफ में ऐसा क्या है जिसमे मुसलमान दंगों की ओर अग्रसर होते हैं। कुरआन में ११४ सूरा, ३० पार और ६०७१ आयतें हैं इन आयतो मे से लगभग ८०% ऐसी हैं जिन मे विश्व को दारूल इस्लाम अर्थात समस्त विश्व पर इस्लामी हुकूमत स्थापित करने की शिक्षा है।

बेतिया के इमाम के शब्दो मे : हजरत मुहम्मद ने कहा था कि हे मुसलमानों ! अगर तुम जन्नत हासिल करना चाहते हो तो तुम्हार सब से पहला काम यह है कि हिन्दुस्थान को विजय करो और उसे दारूल इस्लाम बनाओ। तुम्हारे लिए सब से अधिक पुण्य का काम यही है।"

वास्तव में कुरआन को न तो सभी मुसलमान पढते हैं और न ही गैर मुस्लिम लोग। मुसलमान भी जो पढ़ते हैं वे भी इसे "कलामे-पाक" मान कर पुण्य का काम समझ कर पढ़ते हैं। या बहुत कम लोग कुरआन की अरबी आयतो का अर्थ समझते होंगे या उन पर गहराई से विचार करते होगे। कट्टरपन्थी मुल्ला इसी अज्ञान का लाभ उठा कर शरीयत के नाम पर पेशेवर शरारती तत्वों को भड़का देते हैं, जिसके परिणाम स्वरूप देश मे चाहे जहां मुस्लिम-हिन्दू दंगे शुरु हो जाते हैं। वास्तव में तो कुरआन अरब के निवासियो के लिए उस समय के वातावरण के अनुकूल लिखी गयी थी जिसका यहा हिन्दुस्थान के वातावरण से कोई मेल नहीं फिर भी अल्लाह की इबादत वाली आयतों पर भी मुसलमानो को अमल करने का विशेष अधिकार है। क्योंकि कुरआन के अनुसार ही सारी दुनिया अल्लाह ने ही बनायी है और सब का पालन करने वाला भी वही है। फिर अल्लाह की पैदा की हुई चीज को अल्लाह के मानने वाले ही नष्ट करें इसमें क्या तुक है? यदि वह ऐसा करता है तो वह अल्लाह की इबादत नहीं करता।

मुस्लिम परसनल लॉ

शरीयत और मुस्लिम परसनल ला भी अरब देशों के लिये ही हैं। कुरान अरबी भाषा में इस लिए लिखी गयी थी। अर्थात-वह केवल अरबी भाषियों के लिए है, गैर-अरबी या गैर अरबो के लिए नही भारत के मुसलमानों को इस बात पर विचार करना चाहिए। हिन्दुस्तान में हिन्दुस्तान की सभ्यता और संस्कृति के अनुसार कानून चलना चाहिए, न कि अरब की संस्कृति और सभ्यता के अनुसार दुनियां के किसी भी देश में संस्कृति और सभ्यता को आधार मानकर कानून बनते हैं, न कि किसी विदेशी सभ्यता के अनुसार। क्या पाकिस्तान मे वहा रहने वाले हिन्दुओं के लिए हिन्दू परसनल लॉ को मानने की बात की जा सकती है ? वहां के मुसलमानों ने तो कभी पाकिस्तान के हिन्दुओ को यह अधिकार दिलाने के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा।

शाहबानो के केस में सुप्रीम कोर्ट के फैसले को लेकर मैं आजमगढ़ (उत्तर-प्रदेश) का इमाम ओबेदुल्ला खाँ के एक भाषण का उल्लेख करना आवश्यक है। उन्होने राजस्थान के पाली नगर मे एक मिल्लत में भाषण देते हुए कहा था "मुस्लिम किसी कोर्ट के पाबन्द नही हैं, वे किसी कोर्ट में सफाई देने नहीं जायेंगे लेकिन कुरान या परसनल ला के खिलाफ कोर्ट में जाने वालों का सफाया कर दिया जाएगा परसनल ला बदलने की कोशिश हुई तो रा. स्व. संघ के सरसंघ चालक बाला साहेब देवरस, भाजपा के अध्यक्ष अटलबिहारी वाजपेयी और प्रधानमंत्री श्री राजीव गाधी को भी "कलमा" पढ़ने के लिए मजबूर होना पड़ सकता है।" इस प्रकार के धर्मान्ध लोग ही एक इनसान को दूसरे इनसान के खिलाफ भड़काते हैं। क्या जनाब ओबेदुल्लाह खाँ यह नहीं जानते कि वे हिन्दुस्तान में रह रहे हैं, अरब मे नहीं। भारत की संस्कृति तो मानव को मानव से जोड़ने की बात कहती है, तोड़ने की नही। यहां तो कहा गया है "वसुधैव कुटुम्बकम्" सारी दुनिया एक परिवार है, सभी सुखी रहे। यहां का हिन्दू समाज किसी अन्य समाज से द्वेष भाव रखता ही नहीं, उसका तो आधार मानव का मानव से प्रेम है। फिर नफरत फैलाने का उद्देश्य क्या है। हजारों बेगुनाहों और मासूमों की जानो से खिलवाड़ कराने वालों के बहकावे में न आ कर यहां के मुसलमानों को राष्ट्र की मुख्य धारा में समरस हो कर इस देश को अपनी मातृ भूमि मान कर इसकी एकता और अखण्डता के लिए काम करना चाहिये, न कि इसे तोड़ने की इंगलैण्ड में जो मुसलमान रहते हैं उन्हें वहां कुरआन या शरीयत के अनुसार कोई कानून अलग से नहीं दिया गया है। इसीप्रकार व चीन, न रूस, न अमेरिका आदि देश में कोई सुविधा दी गई है। हमारी सरकार को भी कुरआन की उन आयतों की ओर ध्यान देना चाहिए जिनके कारण देश में मुस्लिम-हिन्दू दगे होते हैं। तभी इन दंगों को रोका जा सकेगा। हमारी सरकार को अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक के भेद भाव को समाप्त कर सब के लिये समान सिविल कानून बनाना चाहिये और मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति छोडकर सर्वपन्थ समभाव की नीति अपना कर देश से इन दंगों को सदा के लिए समाप्त कर देना चाहिये।

३३१४, बैंक स्ट्रीट, करोल बाग, नई दिल्ली-११०००५

वैदिक धर्म प्रचार हेतु ठोस कदम : डी. ए. वी. नैतिक शिक्षा संस्थान की स्थापना

इस समय देश-विदेश मे आर्य समाज द्वारा जितनी शिक्षण संस्थाओ का सचालन किया जा रहा है, उनमे लगभग 300 शिक्षण संस्थाएं अकेले डी. ए. वी. कालिज ट्रस्ट एवं प्रबन्ध समिति के आधीन चल रही हैं ! इन संस्थाओ की स्थापना कुछ निश्चित आदेशों और उददेश्यो को सम्मुख रख कर की गई है। सभी डी. ए. वी. शिक्षा संस्थाओं मे वैदिक धर्म शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता रहा है। पिछले कुछ वर्षों से देश की वर्तमान स्थिति को देखते हुए डी. ए. वी. प्रबन्धक समिति की ओर से पूरे देश में अंग्रेजी तथा हिन्दी माध्यम के एक सौ से ऊपर डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल खोले जा चुके हैं। इन सभी स्कूलों में धर्म शिक्षा को पाठ्यक्रम का अनिवार्य विषय स्वीकार किया हुआ है। परन्तु यह कटु सत्य है कि योग्य धर्म शिक्षक उपलब्ध न होने के कारण वाछित फल की प्राप्ति नही हो पा रही है। योग्य धर्म शिक्षकों को तैयार करने के लिए डी. ए. वी. ट्रस्ट व प्रबन्धक समिति ने नई दिल्ली मे "डी. ए. वी. नैतिक शिक्षा संस्थान" नामक शिक्षण संस्थान खोलने का निर्णय लिया है। एक भारी कमी को दूर करने का यह एक महत्वपूर्ण निर्णय है। और डी. ए. वी. शताब्दी समारोह के आरम्भ में इस संस्था का खोलना एक बहुत बड़ी उपलब्धि सिद्ध होगा।

इस संस्थान मे प्रशिक्षण प्राप्त कर उत्तीर्ण छात्रो को डी. ए. वी. संस्थाओं में प्रशिक्षित-स्नातक वेतन मान में धर्म शिक्षक पद पर नियुक्त करने का यथा संभव प्रयत्न किया जायेगा और अपने विद्यालयों में अन्य विषयों में नियुक्त करते समय इस संस्थान से उत्तीर्ण छात्रों को अधिकार दिया जायेगा।

: संस्थान के कुछ नियम :

1. अध्ययन काल केवल एक वर्ष का रहेगा।
2. प्रवेशार्थी की न्यूनतम शिक्षा योग्यता किसी विश्वविद्यालय से संस्कृत, हिन्दी व अंग्रेजी विषयों सहित स्नातक (ग्रेजुएट) अथवा अंग्रेजी भाषा में दक्षता प्राप्त किसी गुरुकुल का स्नातक या शास्त्री एम. ए. तथा आचार्य को वरीयता दी जायगी।
3. 20 वर्ष और उस से अधिक आयु के सदाचारी दुर्व्यसन रहित विद्यार्थी प्रवेश के योग्य होंगे।
4. छात्रावास मे रहना प्रत्येक विद्यार्थी के लिए अनिवार्य होगा।
5. शिक्षा, आवास, पानी व बिजली सभी नि:शुल्क होंगे।
6. केवल निर्धन मेधावी छात्रों का भोजन नि:शुल्क होगा।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्यसमाज के इतिहास के लुप्त गुप्त पृष्ठों का अनावरण

जब पं० लेखराम ने सिखों की रक्षा की

प्राध्पयाक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

सिख इतिहासकार व पत्रकार श्री खुशवन्त सिह तथा उन जैसे और भी कई अकाली विचारधारा (भले ही वे अकाली दल मे न हो) के सिख बंधु आजकल आर्यसमाज के विरुद्ध लिखने का कोई भी अवसर हाथ से जाने नही देते। पिछले दिनो श्री खुशवन्त सिह का एक लेख 'पंजाब केसरी' छपा। इसमे श्री शिवव्रत लाल (राधा स्वामियो के गुरु दाता दयालजी) पर कुछ लिखते हुए यह महानुभाव आर्य समाज पर चोट करने से न चूके। आर्यसमाज पर चोट करने का तो कइयो को चाव रहता है, परन्तु आर्यसमाज आत्म-रक्षा करते हुए जब उत्तर दे तो उसे खिलाड़ी की भावना से लेने वाले कितने है ?

इन सिख भाइयो को आर्यसमाज से विचार भेद का अधिकार है। परन्तु, आर्य समाज के उपकारो का स्मरण करके इन्हे कभी कृतज्ञता का भी प्रकाश करना चाहिए। सिख विद्वान् श्री भाई गुरदास जी ने आर्य नीतिकारो के स्वर से स्वर मिलाते हुए कृतघ्नता को सबसे घिनौना पाप माना है। आर्यसमाज ने अनेक सिख युवको वा सिख परिवारो को मुसलमान वा ईसाई होने से बचाया। इतिहास की ऐसी बीसियो घटनाए मैं कभी किसी लेख मे दूगा। लेखराम नगर (कादिया) मे मिर्जाइयो ने दो तीन सिख युवको को मिर्जाई बनाया तो आर्यसमाज के प्रमुख नेता ला० देवी चन्द जी एम० ए० ने वहा ओजस्वी व्याख्यान देकर हिन्दुओ और सिखो को जगाया। यह १९१८ ई० की घटना है। इन दो सिखो के मिर्जाई के बनने के कारण ही १९१९ ई० मे लेख-राम नगर मे डी० ए० वी० स्कूल स्थापित हुआ। इस स्कूल के लिए इसी कारण स्वामी श्रद्धानन्द जी, महात्मा हंसराज जी वा प० मदन मोहन मालवीय जी ने अपील की थी। मैंने वह अपील स्वय पढ़ी थी। ऐसी सैकड़ो घटनाएं घटी।

आर्यसमाज के इतिहास [सम्भवत: द्वितीयखण्ड] के पृष्ठ १३०-१३१ पर डा. सत्यकेतु विद्यालकार ने मेरे जन्म स्थान मालोमहे [पश्चिमी पंजाब] के शुद्धि के गौरव-पूर्ण इतिहास व आर्यों के प्रचण्ड विरोध की कुछ चर्चा की है। मेरे पूर्वजो का प्रचण्ड बहिष्कार किया गया था इसमे भी प्रमुख कारण एक सिख जाट की रक्षा था। उसने एक इसाई महिला से विवाह किया। आर्य समाज ने उसे ईसाई न होने दिया, बल्कि उस देवी को ही शुद्ध कर लिया। उस जाट को सिख ही रखा। वह पडोसी ग्राम का था।

मुसलमान होने से बचाया

प्रणवीर प० लेखराम जी के जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना पाठको के सामने रखता हूं। इन दिनो खोज करते हुए प० जी के जीवन की पर्याप्त नई सामग्री मैंने खोज निकाली है। महात्मा मुन्शी राम जी वाले जीवन चरित्र मे भी यह घटना नही, और न ही मेरे द्वारा लिखित प० जी के जीवन चरित्र मे यह घटना है यह घटना फरवरी १८९४ ई० की है। स्याल कोट छावनी मे बारहवी पलटन के दो सिखो ने मुसलमान बनने का निश्चय कर लिया। वे मुसलमान बन जाते यदि आर्य समाजी भाग दौड करके वीर-वर पं० लेखराम को खोज कर उन्हे स्याल कोट मे न लाते।

२ मार्च १८९४ ई० को ये दोनो सिख मत परिवर्तन से पूर्व सिह सभा स्याल कोट के पास पहुंचे। सिह सभा वाले सिख मत सम्बन्धी उनके सशय निवारण न कर सके और उनको इस्लाम की ओर प्रवृत्त होने से न रोक सके। सिख सेना—अधिकारियो ने उन्हे रोकने का यत्न किया तो एक ने सेना से ही त्याग पत्र दे दिया। दूसरा सेना मे रहते हुए ही डट गया कि मैं तो मुसलमान बनूंगा। इतने मे आर्य समाजियो को यह सूचना मिल गई।

स्याल कोट के आर्य पुरुष ला० देवी सहाय जी ने आर्यसमाज के उप मंत्री ला० मथुरादास जी को आठ मार्च के दिन बुलाकर कहा कि आप कही से भी पं० लेखराम जी को खोज कर यहा लावे। 'आर्य पथिक' के तो पाव मे चक्कर रहता ही था। वह कहा हैं, यह कौन बतावे ? मथुरादास महात्मा मुन्शी राम जी सभा प्रधान के पास जालधर गये। उन्ही को पता हो सकता था कि पं० जी इस समय कहा हैं।

आठ मार्च को रात्रि ग्यारह बजे प० जी को तार द्वारा स्यालकोट पहुचने की विनती की गई। वह दस मार्च १८९४ ई० को प्रात दस बजे वहा पहुच गये। नगर के निवासी (हिन्दु सिख सभी) तथा आर्य भाई उनको धड़कते दिलो से प्रतीक्षा कर रहे थे। तुरन्त नगर वा छावनी मे इश्तहार वितरित किए गये। सांय 5॥ बजे धर्मवीर का व्याख्यान रखा गया। विषय था, "सच्चा धर्म"।

प्रणवीर पं० लेखराम अपने मित्र श्री बाबू लाभा मल वकील, मन्त्री आर्य समाज के यहां ठहरे। यह महाशय लाभा मल कौन थे ? आर्यसमाज के निष्ठावान् सेवक व शिक्षा शास्त्री प्राचार्य रमेश चन्द्र जीवन की माता श्रीमती कृष्णा देवी इन्ही लाभा मल जी की सगी पौत्री हैं।

सरदार लालसिह जी महाशय लाभा मल के निवास स्थान पर पहुचे सरदार लाल सिह के साथ सरदार सुन्दर सिह भी था यह सुन्दर सिह ही मुसलमान बनने वालों मे से एक था। ये दोनों सिख सज्जन पं० जी को व महाशय लाभा मल को छावनी मे सिख पलटन मे ले गये। वहा से यह चार बजे आर्य समाज मन्दिर मे लौटे। इसका अर्थ यह हुआ कि प० जी नहा धोकर भोजन करके सीधे छावनी पहुचे। कैसी लगन थी। मैं दो साल स्याल कोट रहा हू, अत जानता हूं कि महाशय लाभा मल के घर से छावनी तीन मील से कुछ ऊपर है। यह भी स्मरण रहे कि स्याल कोट के आर्य मन्दिर की भूमि महाराजा रणजीत सिह के पौत्र श्री जगजोध सिह ने दान मे दी थी।

आर्य समाज का मन्दिर पांच बजने से पूर्व ही खचा खच भरगया। जन समूह उमड घुमड कर आ रहा था साढे पाच बजे तक सरदार सुन्दर सिह जी आवागमन व मुक्ति के विषय पर शङ्का समाधान करते रहे। प० लेखराम जी ने शान्ति से सब प्रश्नो के उत्तर देकर सुन्दर सिह जी को सन्तुष्ट किया।

इसके बाद पं० जी की ज्ञानमयी वाणी से लोगो ने 'सच्चा धर्म' विषय पर व्याख्यान सुना। आपने कहा—सच्चा धर्म वेद ही है। यही मुक्ति देने वाला है। सभा में श्रोता ८॥ बजे तक लगातार तीन घण्टे मन्त्र मुग्ध होकर पं० जी का व्याख्यान सुनते रहे। अन्त मे सूचना दी गई कि कल फिर प० जी का व्याख्यान यही ५॥ बजे होगा।

अगले दिन भी समाज मन्दिर खचा-खच भरा हुआ था। सेना के सिख जवान व अधिकारी भारी सख्या मे पहुचे थे। "सच्चे धर्म की दृढ शिला" विषय पर पं० जी का व्याख्यान आरम्भ हुआ। आज का व्याख्यान आरम्भ होने से पूर्व ही पहले दिन के व्याख्यान के प्रभाव से दो डाक्टरो तथा सेना के एक अधिकारी ने आर्य समाज का सदस्य बनने के लिए प्रार्थना पत्र दिया।

अगले दिन अर्थात् १२ मार्च को सुन्दर सिह जी का और प० जी का शास्त्रार्थ डेढ बजे से चार बजे तक हुआ। सुन्दर सिह ने अन्त मे प० जी से तीन बातें कहीं (१) मुझे सध्या सिखाने और (२) आर्य भाषा पढाने का प्रबध करें ताकि मैं आपके धर्म ग्रन्थो की छान बीन कर सकू। (३) मुझे कुछ विज्ञान पढाया जावे ताकि मैं विज्ञान के सिद्धान्तो के साथ धार्मिक विचारो का मिलान कर सकू'

किसी शास्त्रार्थ के परिणाम स्वरूप ये तीन मागे सर्वथा नई थी। अन्त में प० जी ने सरदार सुन्दर सिह के कहने पर शास्त्रार्थ बन्द कर दिया। अमरीकन मिशन स्कूल आर्य के अध्यापक गोकुल चन्द्र जी ने कहा, 'मैं विज्ञान पढाऊगा। श्री राधा किशन उप प्रधान समाज ने सध्या सिखाने, आर्य भाषा पढ़ाने व अपने निजी पुस्तकालय से धार्मिक ग्रंथ देने का वचन दिया।

अगले दिन भी पं० जी का व्याख्यान "सच्चा धर्म और उसका फल" विषय पर हुआ।

श्री प० लेखराम के पाण्डित्य, उनकी लगन व वाणी के रस की सब ओर चर्चा होने लगी। हिन्दू सिखो के बच्चे बच्चे की जिह्वा पर प० लेखराम का नाम था। यह सब वृत्तान्त 'सद्धर्म प्रचारक' उर्दू में तब छपा था। उनकी कृपा से ये सिख भाई मुसलमान होने से बच गये। श्री सुन्दर सिह ने बाद मे धार्मिक क्षेत्र मे बडी प्रसिद्धि पाई। स्याल कोट जिले मे तो वह प्रसिद्धि थे ही, पजाब के अन्य नगरों मे भी वे अत्यन्त सम्मान से देखे जाते थे। उनके मन मे सत्य की खोज व सत्य को ग्रहण करने की एक तड़प थी। वह पं० लेखराम जी के प्रति सदा कृतज्ञता प्रकट किया करते थे। जब तक पं० जी जीवित रहे सरदार सुन्दर सिह उनका व्याख्यान सुनने के लिए दूर दूर पहुंच जाया करते थे।

निष्पक्ष सिख बन्धु भी इस घटना से कुछ सीखेगे, यह हमे आशा है।

वेद सदन अबोहर—152116

'क्या करें' बच्चा बिगड़ गया है, न जानें उसमें कहां से दुर्गुण आते जा रहे हैं ?

—डॉ० हंसा प्रदीप कुमार—

आज नारियां सुशिक्षित तो होती जा रही हैं, ऊंची से ऊंची एव हर क्षेत्र की शिक्षा मे योग्यता प्राप्त कर रही हैं, किन्तु शिक्षा का उद्देश्य बिल्कुल बदल गया है। आज नारी ने उच्च शिक्षा ग्रहण करके अपने सनातन कर्तव्य को भुला दिया है। वे अपने उच्चतम पद से नीचे उतर कर पुरुषो की होड़ करने मे जुट गई हैं। वे भी पुरुषो के समान उच्च पदो की नौकरियां करने लग गई हैं। अपनी ईश्वरदत्त "सृष्टि" (बालक) का सुयोग्य जतन करके उसे सुफलित करने का भार वेतनभोगी अनपढ नौकरों पर छोड दिया है और इस तरह वह अपने आप ही उच्च आसन से नीचे उतर आई हैं। अब वह कहती है कि पुरुप हमें आदर-मान नही देता, हमारा अनादर करता है। तो यह स्थिति स्वाभाविक ही है। 'स्त्री' यदि 'पुरुप' की 'माता' न रह कर 'दोस्त' बनना चाहती है तो वह पुरुष के समकक्ष पर ही रहेगी। स्त्री स्वयं नीचे उतरी है, अब वह चाहती है पुरुप उसे ऊपर उठाए, तो यह कैसे सम्भव होगा ?

आज नारी का, उच्च शिक्षा ग्रहण करके केवल ऊंची नौकरियां पाना अथवा अच्छे अमीर 'वर' पाना ही उद्देश्य रह गया है। पुरुष का भी दृष्टिकोण बदल गया है, संकुचित हो गया है। वह सुशिक्षित पत्नी इसलिए पसन्द करता है कि उसके साथ क्लब सोसायटी आदि मे बराबर 'सैट' हो सके। वह शिक्षित नारी इसलिए नही पसन्द करता कि उससे 'गृहस्थी' सुन्दर बने, उसकी सन्तान सस्कारी हो।

आदर्श जननी

स्वामी दयानन्द का नारी शिक्षा का जो उद्देश्य था वह इससे बिल्कुल विपरीत था। उनके विचारों से मनुष्य की प्रथम पाठशाला परिवार है और इस पाठशाला की शिक्षिका 'माता' है। उनके अनुसार माता को वेद, व्याकरण, वैद्यक, धर्म, गणित और शिल्प विद्या का ज्ञान होना आवश्यक है। क्योंकि आदर्श गृहस्थी के लिए इन सारे विषयो के ज्ञान की आवश्यकता है।

"नारी के कर्तव्य की पूर्ति आदर्श सन्तान की जननी बन कर, सम्पूर्ण सासारिक रहस्यो का समझाकर उसे कर्म क्षेत्र मे संघर्ष करने के लिए तैयार करने मे निहित है।" —यही महर्षि के विचार थे। उनकी मान्यता थी कि जो शिक्षा, जो सस्कार बच्चो को माता से प्राप्त होते है, वे ही स्थायी होते हैं। माता स्तनपान तथा लोरी द्वारा जिन सस्कारो का अपने शिशु मे सींचती है वे ही सस्कार आगे जाकर बालक के व्यक्तित्व के सुन्दर विकास के मूल आधार बनते है। इसीलिए हमारे वेद पुराण और धर्म सूत्रो ने नारी-शिक्षा के लिए अत्यन्त आग्रह किया है। ऋग्वेद मनुस्मृति, आश्वलायन गृह्य सूत्र, गोभिल गृह्यसूत्र, हारित धर्म सूत्र आदि सभी ने बालक के सुसस्कार, गठन तथा उसके सुन्दर पालन-पोषण के उद्देश्य से ही नारी शिक्षा पर जोर दिया है।

कहने का तात्पर्य यह है कि हमारे वेद-पुराण-शास्त्रो ने नारी को आर्थिक स्वावलम्बन हेतु शिक्षित होने का निर्देश नही किया है, किन्तु सुशिक्षित माता अपने शिशु मे सुसस्कारो के, शिक्षा के बीज बो सकने मे समर्थ होगी, इसी हेतु को समक्ष रखा था।

मनोविज्ञान के अनुसार मानव-जीवन के प्रथम दो से पाच वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि इस समय बालक पर पडे हुए संस्कार उसके आगे के जीवन के मूल आधार बनते है। महर्षि दयानन्द ने भी यही कहा है। 'सत्यार्थ प्रकाश' के द्वितीय समुल्लास मे इसकी चर्चा है।

बालक के व्यक्तित्व के विकास मे माता के प्रबल विचारो का प्रभाव इसी आयु मे पडता है। बालक का अवचेतन मन सदा कार्यशील रहता है। बाल मानस पर पडा बाह्य प्रक्रियाओ का प्रभाव उसके विकास के साथ-साथ उसके स्वभाव में उभरता जाता है। जो बच्चा सघर्षमय स्थिति मे बडा होता है वह आक्रमणकारी हो जाता है। काम की अधिकता के कारण माता जल्दी मे शिशु को स्तनपान कराती है और सन्तोष होने से पहले ही उसे स्तनो से हटा लेती है, तब कम समय मे अधिक से अधिक दुग्ध पान करना बालक सीख जाता है। बालक और माता की इस कशमकश मे बालक के गले में ठसका लगता है, उसे खांसी उठती है तब उसकी बडी दयनीय स्थिति हो जाती है। इस सघर्षमय स्थिति मे बडा होने पर उसका स्वभाव आक्रमणकारी बन जाता है।

शिशु की अनुकरणशीलता

सिद्ध मनोवैज्ञानिक मेकडुगल के अनुसार प्राणी मात्र मे कुछ जन्मजात प्रवृत्तियां होती है। अनुकरणशीलता भी उसमे से एक है। जन्म के बाद कालानुक्रम से बच्चा घर मे प्रयुक्त भाषा का एक एक शब्द, एक एक उच्चारण, परिवार के सदस्यो का व्यवहार उठने-बैठने-चलने के ढग आदि अनुकरण करते हुए ही सीखता जाता है। उसे सुलाते समय माता, आ—आ—ऊं—ऊं—ध्वनियो से लोरी आरभ करती है तब बच्चा भी माता के साथ अनुकरणात्मक ढंग से उनीदी आखो से ऊं ऊ—' करने लगता है। यह सब सीखते जाने का मूल आधार उसका अवचेतन मन ही होता है। शुरू में जो छाप उसके अवचेतन मन पर पडती है उसे व्यक्त करने मे या समझने में तत्काल तो बालक असमर्थ होता है, मगर उस अबोध मन पर पडी हुई छाप समयानुसार बाह्य रूप से उसके व्यवहार में अभिव्यक्त होती जाती है।

ऐतरेय उपनिषद के अनुसार नारी आत्मा पर पडा प्रत्येक सस्कार पुत्र की आत्मा पर प्रभाव डालता है। अथर्ववेद मे भी पति अपनी सगर्भा पत्नी को प्रसन्न चित्त व शिव संकल्पो वाली रहने के लिए उपदेश देता है। क्योंकि गर्भावस्था से ही मा प्रत्येक विचार एव क्रिया कलाप का प्रभाव सन्तान पर पडना प्रारम्भ हो जाता है।

कुछ उदाहरण

१. महाभारत के पात्र अभिमन्यु में माता के सुदृढ विचारो का प्रभाव तो सर्व विदित है।

२ मार्कण्डेय पुराण मे राजा ऋतुध्वज की रानी मदालसा का उपाख्यान भी प्रसिद्ध है। रानी ने अपने छहो बेटो को तत्वज्ञान से परिपूर्ण लोरियां सुनाई थी। परिणाम यह हुआ कि युवावस्था तक पहुचते २ वे संन्यासी हो गये। राजा ने वही लोरी अपने सातवें बेटे को सुनाने से रोक दिया था क्योंकि वे स्वयं अब उसे राज्य का भार सौंपकर सन्यास ग्रहण करना चाहते थे।

३. इतिहास की ओर मुडकर देखेंगे तो शिवाजी और बनराज चावडा के दृष्टान्त मिलेगे जिन पर माता के सात्विक व शौर्य भरे तीव्र विचारो का असर स्पष्ट दिखाई पडता है। जगत भर के इतिहास से ऐसे कई उदाहरण प्राप्त किये जा सकते हैं।

४ माता के अनेक प्रयासो के बावजूद भी गर्भपात न होने पर 'गीटू' का जन्म हुआ। उसी 'गीटू' ने बड़े होकर अमरीका के राष्ट्रपति गारफील्ड की हत्या की। गर्भस्थ शिशु की हत्या के विचारों के प्रभाव का परिणाम यह हुआ कि वह शिशु जन्म के बाद वयस्क होने पर हत्यारा ही बना।

५. नेपोलियन की मा को गर्भावस्था मे सैनिको की परेड देखने का व युद्ध गीतो के सुनने का बड़ा शौक था। फलतः नेपोलियन महान सेनानी बना।

६. बिस्मार्क की माता गर्भावस्था के समय फ्रान्स से बदला लेने के विचारो से ओत प्रोत रहा करती थी। परिणाम स्वरूप बिस्मार्क ने बड़े होने पर फ्रान्स से बदला लिया।

(श्री सत्यव्रत सिद्धातालंकार की "हेरीटेज आफ वैदिक कल्चर" पुस्तक में ऐसे कई उदाहरणो का उल्लेख किया गया है।)

हमने देखा कि गर्भावस्था मे ही जब बच्चे पर संस्कारों का प्रभाव पड सकता है, तब फिर उसके जन्म के बाद गायी जाने वाली लोरियों का कितना गहरा प्रभाव उसके मानस पर पड़ेगा। कहने का तात्पर्य यही है कि गर्भस्थ शिशु पर भी बाह्य सस्कारो की व वतावरण की छाप पड जाती है। जन्म के बाद की लोरियों का एवं पारिवारिक वातावरण का असर, और भी अधिक गहरा होता है। और यदि माता के विचार सात्विक हो, धार्मिक हो, देशभक्ति से रगे हुए होगे, तब ये ही सस्कार बालक के भावी जीवन के लिए नीव के समान बन जाते हैं। उसके व्यक्तित्व मे इन सुसंस्कारो का प्रभाव स्पष्ट रूपेण झलक उठता है। जन्म लेने वाली आत्मा के पूर्व-संस्कारो मे माता पिता के सद्विचारो द्वारा ऐच्छिक परिवर्तन लाया जा सकता है। वेद ने भी मनुष्य को पूर्व जन्म के कर्मों की शृंखला से मुक्त कराने के लिए सोलह संस्कारों का निर्देश किया है। गर्भाधान के समय से ही इन संस्कार का आरम्भ हो जाता है। इन्हीं सब विधियो के कारण नवमाता अपनी सन्तान मे अपने मन की प्रसन्नता और आनन्द स्तनपान द्वारा सींचती रहती है जिसका प्रभाव बालक पर अव्यक्त रूप से पडता है।

बाल—मन पर सुसंस्कार

बालक के कोमल और चचल मस्तिष्क पर माता के सस्कारों की छाप स्थायी रूप से तब पडती है। जब उसका मन शात व निर्मल होता है। और जब बालक सोने के प्रयास मे होता है उस समय मन शात व निर्मल होता है। उस समय माता शात, मधुर, लयवाली, सार्थक लोरियां गाकर अपने नन्हे शिशु को सुलाने का यत्न करेगी, तो चारो ओर के बाहरी शोर से हटकर बच्चे का मन माता की लोरी पर केन्द्रित होगा।

मैं जब लोरी संग्रह का कार्य कर रही थी उस समय मुझे एक महिला ने लोरी की माग के उत्तर मे कहा—"अरे बहन जी, हमे लोरी वोरी गाने का समय ही कहा होता है ? हम तो पाजी को दो चाटे जमा देती हैं तो साला रो रूआकर सो जाता है" सम्भवतया यही स्थिति अधिकाश नारियो की है। यह सच है कि बिना लोरी गाये भी बच्चा थककर सो जाता है। किन्तु ऐसे मे उसके मन को शान्ति न मिलने के कारण वह बेचैन होकर सोता है अतः उसके अन्तरमन पर सोते समय पडे हुए बाधक स्वरो की छाप स्थिर हो जाती है जैसे जैसे वह बड़ा होता

(शेष पृष्ठ ७ पर)

महर्षि दयानन्द सरस्वती के वेदभाष्य आदि के सम्बन्ध में

"आर्य भाषां शरणं गच्छामि"

म. म. आचार्य बिश्वश्रवा : व्यास, वेदाचार्य, एम० ए०,

मैं आजकल संस्कृत में निरुक्त महाभाष्यम् लिख रहा हू यदि अवकाश मिला तो आर्य भाषानुवाद भी कर दूंगा। निरुक्त के भाष्यकार दुर्ग स्कन्द निरुक्त श्लोक वार्तिक कर्त्ता और वररुचि सब ही निरुक्त की परम्परा को भूल गये हैं। उन पर आश्रित होकर आगे के विद्वानों महामहोपाध्याय मुकुन्द आदि ने तथा आर्य विद्वानों ने भी निरुक्त पर टीकाएं लिखी है। कुछ विद्वान् आर्य समाज में ऐसे भी हैं जिन्होने निरुक्त पर टीका तो नही लिखी पर हर बात में निरुक्त के प्रमाण देने का उन्हे शौक है। पर वे भी अधिकतर निरुक्त के मौलिक सिद्धातों के विषय मे दुर्ग पर ही आश्रित हैं। मुझे यह विश्वास हो गया कि दुर्ग आदि के भाष्य आदि से अन्त तक सब गलत है। उन्होने गलत सिद्धान्तो की स्थापना करके सब को भ्रान्ति मे डाल दिया जैसे—'धात्वन्यत्वम् अर्थैकत्वम्" यह मूर्खता का सिद्धात है। दुर्ग प्राकरणिक व प्रासङ्गिक सन्दर्भो को मिला देता है। इस प्रकार दुर्ग आदि द्वारा निर्धारित सिद्धान्त भ्रान्ति पूर्ण है। आर्य विद्वानों को सावधान करने के लिये "वेदोद्धारिणी" पत्रिका में विस्तार से लिखूंगा।

मेरे लिखने का प्रकार यह है कि एक शब्द पर यास्क जितना लिखता है, सब अर्थो पर विस्तृत लिख कर अन्त मे 'महर्षि भाष्यं चात्र द्रष्टव्यम्' प्रकरण लिखता हू। यह मेरा 'निरुक्तमहाभाष्यम्' महर्षि के समस्त वेद भाष्य का की ग्रंथ होगा। एक दिन में निरुक्त चर्चित अंशु शब्द लिख रहा था। सब लिख कर जब 'महर्षि भाष्यं चात्र द्रष्टव्यम्' लिखने बैठा तो यन्त्रवद्ध होकर रह गया। स्वामी जी ने अशु का अर्थ 'वेग' लिखा है। वह वन न सका। पं० राजवीर शास्त्री, आचार्य सुदर्शन देव, श्री धर्मपाल व्याकरणाचार्य ने महर्षि के दिखाये सब वैदिक शब्दों पर एक ग्रथ 'वैदिक कोष' लिखकर महान् उपकार किया है। वह हमारा सहारा है। उस कोष मे 'अशु' का अर्थ 'वेग' स्वामी जो के नाम से छपा है।

पं० धर्म देव विद्यामार्तण्ड ने स्वामी जी के वेदभाष्य का अंग्रेजी अनुवाद किया जो सार्वदेशिक सभा ने छापा है, उसमें भी अशु का अर्थ Speed लिख दिया। आश्चर्यजनक बात है कि महान् रिसर्च स्कालर आचार्य विश्व बन्धु शास्त्री ने जो वैदिक शब्दार्थ पारिजात का एक भाग छापा उसमें भी स्वामी दयानन्द के नाम के अंशु का अर्थ वेग छपा है। इस प्रकार सर्वत्र भून हुई है। स्वामी जी के वेद भाष्य की आर्यभाषा की शरण में गया वहा (अंशवे) विभागार्थ पाठ है। अब समझ मे आ गया कि संस्कृत मे (अंशवे) विभागार्थ रहा होगा, 'भा' निकल गया रह गया "विगाय" फिर पण्डितो ने सोचा होगा कि विगाय का कुछ अर्थ नही हो सकता, अतः विगाय को वेगाय कर दिया! स्वामी जो के वेद भाष्य के हस्त लेखो मे "(अंशवे विभागाय)" पाठ है। पर हस्तलेख सब के पास नही। आर्य भाषा के विरुद्ध विषैला वातावरण कुछ लोगो ने बना दिया है, जो अत्यन्त खतरनाक सिद्ध हुआ है।

प्रामाणिक पुरुप

एक व्यक्ति रो रहा था। पूछा, क्यो रोते हैं ? बोला, मेरी स्त्री विधवा हो गई। फिर कहा—भाई, तू जीवित बैठा है। स्त्री विधवा कैसे हो सकती है ? बोला, इतनी बुद्धि तो मुझ मे भी है, पर जो समाचार लेकर आया है वह इतना प्रमाणीक पुरुष है कि उसकी बात असत्य नही हो सकती।

इस प्रकार एक प्रमाणिक युरुष की दुहाई देकर ए महान् लेखक का लेख छपा जिसका साराश यह था कि पञ्च महायज्ञ विधि की आर्य भाषा भी पण्डितो की है। स्वामी जी के वेद भाष्य आदि मे कही गलती नजर आ जावे तो 'पुत्रोत्सवं मन्यन्ते' वाले कुछ लोग हैं। वे वोले—जो आर्य भाषा को भी स्वामो जी की भाषा मानते है वे आखे खोलकर इस को पढे। हम ने दोनो आखे खोलकर देखा तो पता चला—"यावच्चर्यं च दारु च" ही लेख है। हम चैलेञ्ज करते कहते हैं कि पंच महायज्ञविधि को आर्य भाषा यदि स्वामो जी की नही है तो कोई माई का लाल संस्कृत भाष्यमात्र से मनसा परिक्रमा के मन्त्रो का अर्थ करके दिखा दे।

इसी का परिणाम यह है कि सौ वर्ष से अधिक के इतिहास में किसी विद्वान् की समझ मे मनसा परिक्रमा मन्त्रो के अर्थ नही आये। ये मन्त्र अथर्व वेद के है। अथर्ववेद भाष्यकार पं० क्षेमकरण दास त्रिवेदी ने इन मन्त्रो के अर्थ उसी प्रकार मनगढन्त किये जिस प्रकार अन्यो ने। एक ब्रह्मास्त्र तो है कि एक मन्त्र के अनेक अर्थ होते है। एक हमारा भी सही। क्या स्वामी जी ने ठेका लिया है और अर्थ हो नही हो सकता। अरे गृहे गृहे भाष्यकारो! तुम इन मन्त्रो में तीन वातो का समाधान अपने अर्थ में करके दिखा दो।

१—अधिपति—रक्षिता—इषु तीन को नमस्कार है पर नमः चार हैं: चौथा किसको ? २—मन्त्र मे अधिपतिभ्यो नमः' का विशेषण 'तेभ्यः' है और 'इषुभ्यः' का विशेषण 'एभ्यः' है। पर 'रक्षितभ्यो नम.' का विशेषण न तेभ्यो' न 'एभ्यो'। इस का कारण क्या है ? ३—'योऽस्मान् द्वेष्टि' से पुरुष लिया जावेगा, द्वेष कैसे लें लिया ? 'इह ब्रवीतु य उतच्चिकेतत्"

—१०६, वेद मन्दिरम् बरेली

क्या करे बच्चा बिगड़ गया है......(पृष्ठ ६ का शेष)

जाता है वैसे वैसे वह अधिकाधिक चचल उपद्रवी और शैतान होता जाता है। आज की अधिकाश दादी-नानी या सासो को कहते सुना आता है कि आजकल बच्चे न जाने क्यों इतने शैतान पैदा होते हैं ? हम तो आठ-आठ, दस-दस बच्चो को सरलता से पाल लेती थी वे हमे इतना परेशान नही करते थे।

परिवार का परिवर्तित परिवेश

मेरी मान्यता है कि बच्चे तो वैसे ही हैं जैसे कृष्ण के जमाने में थे, किन्तु स्थितिया बदल गई हैं। जीवन के तौर तरीके बदल गए हैं। कौटुम्बिक जीवन विभक्त होता जाता है, बिखरता जा रहा है जिससे हर मां को सदा अवकाश की समय की कमी बनी रहने लगी है। हमारे पास अब उसकी निर्दोष, मीठी शैतानियो को सहने का, उससे आनन्द उठाने का धैर्य नही बचा है। बच्चा हमारी व्यस्त जिन्दगी के लिए बोझ बन गया है। इतना ही नही जब वह सोना है तब भी उसके चित्त की शाति मे अवरोध पैदा होते जाते है। सोते समय भी वह चारो ओर की मिली जुली ध्वनियों से आक्रान्त होकर सोता है। और तब उसके मस्तिष्क की कोमल शिराओ को वह शोरगुल भरी ध्वनिया अनजाने ही अस्त-व्यस्त करती रहती हैं। परिणाम [illegible]

विकास अवरुद्ध हो जाता है। भीतरी तहो में उतर कर विचार किया जाए तो बालक के मानस व शरीर के अधोगामी परिणामो के मूल मे आधुनिक सत्रास ही है। समूचे सामाजिक जीवन मे ज्वालामय, सत्रस्त, पेचीदा वातावरण हमे दिखाई देती है। आज का बालक बडा होने पर अत्यधिक चंचल व अस्थिर मानस का युवक बनता है, क्योकि बचपन से ही उसके दिमाग में तूफानों के विविध थपेडे जाल बुनते रहते हैं।

कहना यही है कि बालक के स्वास्थ्य शारीरिक व मानसिक विकास के लिए उसके निकटतम व्यक्ति को, और खास करके माता को चाहिए कि वह अपने अन्तर से उभरते हुए वात्सल्य रस से सराबोर धीमी मधुर, शात लयवाली, सुन्दर अर्थो वाली लोरियाँ गाकर, धीमी धीमी स्नेह सिक्त थपकियो द्वारा उसे सुलाये। यदि बालक तीन चार वर्ष का हो जाये तो उसे ऐसी ही धार्मिक, पौराणिक अथवा कुछ संस्कार प्रधान या बुद्धि-प्रधान कहानिया सुनाये। ऐसे मे उसके अवचेतन मानस पटल पर वे ही सारी अच्छी बातें, अच्छे गुण, अच्छे विचार स्थायी रूप से जम जाते हैं, जैसे जैसे व बड़ा होता जाता है, उसके व्यक्तित्व में, में उसके व्यवहार में उभरती हुई इन सब [illegible]

नौकरी पेशा नारी

आज स्त्रियाँ नौकरी करती है, भले ही करे। किन्तु बच्चा तीन महीने का नही होता कि पुन सर्विस पर चली जाती है, यह गलत है। आजकल एक या दो बच्चो की ही तो समस्या रह गई है। अतः दोनो बच्चे कम से कम छ सात वर्ष के न हो जाये तब तक नौकरी न करें। जैसे ही स्कूल जाने लगे, तब नौकरी कर सकती है। और यदि किन्हीं कारणो से नौकरी की आवश्यकता है ही, तो परिवार के निकटतम व्यक्ति की निगरानी मे बच्चे को छोडकर जा सकती हैं। जहा तक हो सकें अपने जीवन स्तर को कुछ सालो तक नीचा रखते हुए मा स्वयं ही अपने अश को वात्सल्य दे और अपने बच्चो मे सुन्दर संस्कारो के व अपने ज्ञान के बीज बोये तो अच्छा है। पशु—पक्षी भी अपने शिशु की देखभाल स्वय करते हैं। प्रकृति का यही नियम है। माता का निस्वार्थ वात्सल्य बालक को बहुत ऊपर उठा सकता है। कुछ काल अपनी भौतिक आवश्यकताओ को त्याग देना चाहिए। माता का यह त्याग उसकी वृद्धावस्था मे अपने बेटे मे भी नजर आये बिना नही रहता। ऐसे सुसस्कारो का पाला बेटा अपने मां-बाप को वृद्धावस्था मे छोडकर कभी नहीं जायेगा वह भी अपने वृद्ध माता-पिता की सेवा [illegible]

जीवन मे सभी आनन्द प्राप्त करना है तो, जीवन का सच्चा सुख पाना है तो अपने बच्चे के जीवन के सतत निकट रह कर उसके बाल कौतुक को बारीकी से निहारना चाहिए। बाह्य मनोरजन, नाटक सिनेमा आदि तो अस्थायी होते है। यही एक मात्र स्वर्गीय सुख है। वे माताएं जो दो ढाई मास के अपने शिशु को घर पर नौकरो के भरोसे छोड़कर बाह्य क्षेत्र मे जाना अधिक आवश्यक समझती हैं, वे जिन्दगी का सर्व श्रेष्ठ सुख खो देती हैं। यही स्वर्गीय सुख हैं क्योकि ईश्वर स्वयं बालक के रूप मे माता की गोद मे, माता के वात्सल्य-सुख का अनुभव करने अवतरित होते हैं। और यही कारण है कि अपना बच्चा कैसा भी होगा—काना-कुबडा, काला-कलूटा, लूला-लगडा तब भी माता के लिए वह ससार भर मे सर्वश्रेष्ठ होता है, सुन्दरतम होता है, अपना आराध्य होता है। यदि माता इसी देव-स्वरूप निरीह बालक की, मात्र भौतिक सुख के कारण अवहेलना करती है, उपेक्षा करती तो उसमे उतरे हुए देवी गुण शीघ्र ही विलीन हो जाएगे। फिर उसके स्वरूप मे पधारे हुए प्रभु शीघ्र ही अदृश्य हो जाएंगे उसके भावी विकास के दरम्यान हमें उसके व्यक्तित्व मे दाग नजर आने लगते हैं और हम कहते है, "बच्चा बिगड गया, न जाने कैसे कैसे दुर्गुण उसमे आ रहे हैं ?—" आखिर इसमे दोष किसका है ?

पता—3/124, रामझरोखा, अंधेरी

पत्रों के दर्पण में

हैदराबाद सत्याग्रह के सत्याग्रही

पूज्य अमर स्वामी सरस्वती जी का इस सम्बन्ध में लिखा मार्मिक लेख पढ़ने को मिला। अच्छा होता कि स्वामी जी के स्थान पर देशभर की आर्य समाजें इस सम्बंध मे जोरदार आन्दोलन करती कि २७ जुलाई १९४८ को गृह मंत्रालय की स्वाधीनता सेनानी समिति ने हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह को स्वाधीनता संग्राम का अंग मानकर उन सत्याग्रहियों को भी वही सम्मान देने का जो निश्चय किया था केन्द्रीय मंत्रिमंडल द्वारा उसकी अविलम्ब पुष्टि की जावे। स्वामी जी द्वारा इस सम्बंध मे गुहार करना आर्य समाज की निष्क्रियता और हैदराबाद के सत्याग्रहियों की उपेक्षा का ज्वलन्त प्रमाण है। मैंने सार्वदेशिक सभा द्वारा और व्यक्तिगत रूप से भी इस संम्बध मे बहुत प्रयत्न किया है। भूतपूर्व निजाम रियासत के सांसदो से भेट की, लेख लिखे और ज्ञापन दिए, परन्तु गतवर्ष के बाद इस सम्बध में कोई प्रगति नहीं हो पाई है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान ने भारत सरकार को इस सम्बंध मे अनेक पत्र लिखे हैं। परन्तु अभी तक कोई परिणाम नही निकला।

मेरा स्पष्ट मत है कि यदि आर्य समाजें अपने यहाँ निश्चय करके सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत एक प्रतिनिधि मंडल प्रधान मंत्री के पास भेज कर माग करें कि ग्रह मन्त्रालय के निश्चय की मंत्रिमंडल द्वारा सम्पुष्टि की जावे, तो शायद कुछ सफलता मिले। अभी तक केवल व्यक्तिगत प्रयत्न ही हुआ है, सामूहिक और संगठित रूप से कोई प्रयत्न नही हुआ। —ब्रह्मदत्त स्नातक, प्रेस परामर्शदाता, सार्वदेशिक सभा

अमृतसर में महर्षि जहाँ ठहरे

अभी हाल की अपनी अमृतसर यात्रा के अवसर पर मैंने मियां मुहम्मद जान की उस कोठी को देखने की इच्छा व्यक्त की जहाँ स्वामी दयानन्द १८७७ ई० के जुलाई मास में ठहरे थे। यह स्थान सरदार दयाल सिंह मजीठिया (ट्रिब्यून पत्र के संस्थापक) ने विशेषतः स्वामीजी के निवास हेतु किराये पर लिया था। जब मैं उक्त स्थान पर पहुचा तो पता चला कि वह पुराना भवन कभी का ध्वस्त होकर भूमिसात् हो चुका है। अब तो वहाँ भैंसो को बाँधने का एक छप्पर दिखाई दे रहा था। मुझे बताया गया कि अमृतसर के आर्य नेता स्व० पिण्डीदास जी ज्ञानी ने मिया मुहम्मद जान की कोठी को अधिकृत करने के प्रयास किए थे ताकि उसे स्वामी दयानन्द के स्मारक का रूप दिया जा सके। किन्तु वे कृतकार्य नही हुए और अब तो उस पर पुरानी कोठी का कोई अवशेष ही नही बचा है। काश, आर्य समाज मे इतनी जागरूकता होती कि वे स्वामी जी से सम्बद्ध स्थानो को ऐतिहासिक स्मारक बनाने की किसी योजना को क्रियान्वित करते अथवा ऐसे स्थानो पर इस आशय का शिलालेख ही लगवा देते कि अमुक स्थान को अमुक समय मे युगविधाता दयानन्द ने अपने चरणो से पवित्र किया था। —डा० भवानीलाल भारतीय, दयानन्द पीठ, चण्डीगढ़

टंकारा को विश्व दर्शनीय बनाइए

शिवरात्रि वाले दिन विश्व के कोने-कोने से श्रद्धालू भक्त टंकारा जाते है। इस स्थान को देखकर निराश लौटते हैं क्योंकि इस जन्म-गृह का रंग रूप अभी तक नही बन पाया है। स्वामी दयानन्द जी का जन्म जिस घर में हुआ था वह पूर्ण रूपेण प्राप्त नही हुआ है। हम दूसरो के स्थानो को देखकर प्रभावित होते हैं परन्तु हम अपने गुरु के जन्म-स्थान को अभी तक सुन्दर नही बना सके।

सन् १९७५ मे जब प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी महर्षि के जन्म-स्थान को देखने गई थी तो उन्होने कहा था कि ऋषि दयानन्द जैसे महापुरुषो का जन्म-स्थान किसी एक व्यक्ति की सम्पत्ति नही बन सकता प्रेरणा पाकर स्व० प्रकाशवीर शास्त्री जी ने श्री कान्ह जी चक्कू भाई द्वारा भाग अधिकरण का प्रयत्न किया, परन्तु अभी तक यह प्रयत्न सफल नही हो पाया है। अगर हम सभी ऋषि भक्त एक स्वर से आवाज को उठाये तो यह हो ही नही सकता कि यह ऋषि जन्म-स्थान न मिले।

जिस ऋषि दयानन्द ने हमारे लिए ईंट पत्थर खाये तथा कई बार विषपान किया अगर ऋषि हमारे मध्य न होते तो राष्ट्र को आजादी नही मिलती अतः हमे ऋषि के उपकारो को नही भुलाना चाहिए। चाहे हम कितने बड़े उत्सव मनायें जब तक हम ऋषि की जन्म भूमि को मुक्त नहीं करा लेते हमारे सभी स्वप्न अधूरे हैं। —स्वामी धर्मानन्द परिव्राजक, आर्यसमाज बड़ा बाजार, पानीपत

बातें कम काम ज्यादा

१ सितम्बर, १९८५ का आर्य जगत् पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई। मुझे [१] वेद के प्रचार में होवे सभी पुरुषार्थी [२] आर्य समाज अपना रेडियो स्टेशन चलाए के बारे में कुछ निवेदन करने की आज्ञा दें। जब कभी प्रचार की बात होती है तो हम इसाई धर्म के प्रचार की तुलना अपने ढंग से करते हैं। यदि आप ईसाई धर्म के फैलने की सफलता पर गहराई से विचार करे तो, ईसाइयों का त्याग यानी विदेश से सुविधाजनक जीवन छोड़कर भारत मे कठोरता का जीवन व्यतीत करना तथा भारत की भाषा सीखना, विदेश से पानी की तरह भारत में धन व्यय करना है।

अब आप तस्वीर का दूसरा रुख देखें! जब हिन्दी आन्दोलन तथा गौ रक्षा के लिये ललकार उठती थी तो जो आर्य उस समय संसद में थे, वे न केवल चुप-चाप सत्याग्रहियों को जेल जाते देखते थे, अपितु पूरी तरह से भारत सरकार का समर्थन भी करते थे। यदि उस समय वह चाहते तो यह कार्य बहुत आसानी से हो सकता था, उनमे से कुछ सज्जन भारत सरकार में मन्त्री भी थे जो कि तुरन्त अपनी लेखनी को आर्य समाज का रेडियो स्टेशन खोलने के लिए प्रयोग कर सकते थे! किन्तु उन्हे कर्तव्य से सत्ता अधिक प्यारी थी। आज यह सभी प्रतिष्ठित सज्जन राजनीति से रिटायर होकर आर्यसमाज के ऊपर झपटे और बड़े-बड़े पदो पर सुशोभित हैं। आज भी भारत सरकार की नीति में हिन्दू के प्रति वही घृणा है जो लाला रामगोपाल जी की गर्जना मे मैंने बहुत वर्ष पहले सुनी थी, परन्तु आज लाला जी का हर शब्द भारत सरकार के हक में निकलता है और हिन्दुओं के प्रति भारत सरकार की नीति का समर्थन करता है।

वेद प्रचार की आवश्यकता विदेश मे अधिक है। क्या कभी आर्य समाज ने इस विषय में सोचा है। यदि विदेश में बैठे मुट्ठी भर आर्य थोडा साहस करते भी हैं तो उन से भारी धन की माग की जाती है, टिकट के रूप मे, दान के रूप में और फिर जाते हुए व्यक्तिगत लूट के रूप मे! विदेश मे रहने वाले ईसाइयों को भारतवासियो ने निमन्त्रण नहीं दिया था और न ही विदेश से जाने वाले ईसाई प्रचारकों ने भारतवासियों से टिकट की माँग की थी।

मै रेडियो स्टेशन खोलने का दृढता से समर्थन करता हू और निवेदन करता हूं कि कुछ प्रचारक जो अंग्रेजी तथा हिन्दी के विद्वान् हो, पूरे संसार का टिकट देकर विदेश में एक साल के लिये भेजे जाये जो कि कुछ चुने हुए देशों में थोड़ा-थोड़ा समय रह कर प्रचार करें। वह सज्जन कम आयु के सन्यासी हो और अधिकारी कदापि न हो। उनका व्यय भार विदेशी सहन करेगे। —मदन गुप्ता, मन्त्री, आर्य समाज, सदर्न कैलिफोनिया, अमेरिका

गोरक्षा और आर्यसमाज

आर्य जगत् दिनांक २९-९-८५ के अंक मे मेरे "क्या गोरक्षा के लिए आर्य समाज को फुरसत है", लेख मे प्रस्तावित कुछ सुझावो पर सम्पादक महोदय ने प्रश्नचिह्न लगाए है। उनका समाधान आवश्यक समझकर निम्नांकित पंक्तियो द्वारा प्रस्तुत कर रहा हू।

१. "अनुपयोगी पशुओ का मूल्य कसाइयो द्वारा दिए जाने वाले मूल्य से अधिक होना चाहिए।" यह सुझाव उत्तम है परन्तु इसमे व्यावहारिक कठिनाइया हैं। अनुपयोगी पशुओं का मूल्य पशु की शारीरिक दशा, चतुर व्यापारी (कसाई) की व्यवहार कुशलता एवं विक्रेता किसान की आर्थिक आवश्यकता पर निर्भर करता है। मूल्य अधिक है या कम यह प्रतिस्पर्धा होने पर ही पता लगता है। सरकार द्वारा खरीद करने पर यह निश्चित करना कि मूल्य कम है, कठिन कार्य है। इसलिए यदि मूल्य निर्धारण का कार्य सरकार पर ही छोड़ दिया जाय तो ठीक रहेगा। जिस प्रकार अनाज की खरीद निश्चित मूल्य पर की जा रही है, उसी प्रकार शारीरिक दशा के अनुसार पशु मूल्य निर्धारित कर खरीद करना व्यावहारिक रहेगा। सरकारी कर्मचारियो पर मूल्य निर्धारण कार्य छोडना अव्यवस्था को जन्म देगा।

२. अनुपयोगी पशु किसान के पास जिस दशा में रहते हैं वह दयनीय है—चारागाह के अभाव में पशु घास-फूस और तिनको पर ही जीवित रहते है। पर्वत की उपत्यकाओ में चरने के लिए विस्तृत भूभाग मिलेगा। वहां वे अन्य वन्य प्राणियो के साथ ही अपना पेट भर लेंगे। उनकी दशा गोसदनों में किसान के घर रहने की दशा से बदतर नही होगी।

३. गो सदनो का प्रबन्ध सरकार के अलावा कोई समाज कल्याण संस्था ले सकती है। परन्तु क्या कोई ऐसी संस्था है जो इस कार्य के लिए आगे आयेगी? क्या आर्यसमाज यह पुण्य कार्य करने को तैयार है? यदि नही तो फिर सरकार से ही आग्रह किया जाए कि वह गोसदन बनाए और अनुपयोगी पशुओं को वहां रखने का प्रबन्ध करे। यदि भ्रष्टाचार अथवा कुछ अव्यवस्था रहे, तो भी पशुओं को स्वतन्त्रतापूर्वक चरने का और कंकाल शेष शरीर की रक्षा करने का अवसर तो मिलेगा और हमारा समाज गोवध के कलक से बच जायेगा। इस आशंका से यह आवश्यक कार्य रोकना उचित नही कहा जा सकता।

—वीरेन्द्र सिंह पमार, आयुर्वेद शास्त्री 28. यू०बी०जवाहर नगर, दिल्ली-७

सामाजिक जगत्

टंकारा ट्रस्ट की स्थिर-निधि

आर्य जनता को यह सूचित करते हुए बड़ा हर्ष हो रहा है कि टंकारा-ट्रस्ट को निम्नलिखित तीन स्थिर निधि निम्न दानी महानुभावों द्वारा प्राप्त हुई हैं। ये निधियां टंकारा ट्रस्ट की ६-१०-८५ को बैठक में स्वीकार की गई—

१. श्री जगदीश चन्द्र प्रवासी ५०,००० रु०

२. श्रीमती कृष्णा धर्मवीर गुलाठी ५,००० रु०

३. श्री जेठा भाई कानजी डोडिया श्री एवं श्रीमती मणिबेन जेठा भाई डोडिया ५,००० रु० ५,००० रु०

हम उपर्युक्त तीनों दानियों का आभार एवं धन्यवाद प्रकट करते हैं। मेरी समस्त आर्य जनता से प्रार्थना है कि महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में जो कार्य चल रहे हैं, उनको सुचारु रूप से चलाना हमारा कर्तव्य है। जिस प्रकार उपर्युक्त स्थिर निधियां टंकारा को प्राप्त हुई हैं, उसी प्रकार सबसे प्रार्थना है कि टंकारा के लिए स्थिर निधियां देने की कृपा करें। —रामनाथ सहगल मन्त्री टंकारा ट्रस्ट

भव्य ऋषि मेला

श्रीमती परोपकारिणी सभा, अजमेर की ओर से १६-१७-१८ नवबंर को ऋषि उद्यान पुष्कर रोड अजमेर में ऋषि मेला सोल्लास मनाया जायेगा। दिनाक १५ से यजुर्वेद पारायण यज्ञ प्रारम्भ होगा जिसमें स्वामी ओमानन्द सरस्वती, स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती, श्री पं० सत्यप्रिय जी शास्त्री हिसार, डा० भवानीलाल जी भारतीय चण्डीगढ़, श्री वेगराज आदि विद्वान और उपदेशक पधार रहे हैं।—श्रीकरण शारदा

आर्य महासम्मेलन सिंगापुर

महर्षि दयानन्द होम्योपैथिक परिषद पंजीकृत १/५२९६ बलबीर नगर एक्सटेंशन, शाहदरा दिल्ली के तत्त्वावधान मे दक्षिण-पूर्व एशिया अन्तर्राष्ट्रीय आर्य एवं होम्योपैथिक चिकित्सा विज्ञान का ६ जनवरी से १२ जनवरी तक सिंगापुर में विश्व स्तर का महासम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। धार्मिक, सामाजिक, रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं तथा होम्योपैथिक के चिकित्सकों के लिए यह सम्मेलन एक अभूत-पूर्व अवसर है जहां वे इसके माध्यम से विश्व मंच पर अपने-अपने क्षेत्र के अनुभवों को व्यक्त कर सकेंगे।

—आर्य समाज रेलवे कालोनी समस्तीपुर में ६ से १५ सितम्बर तक पं० सुरेशचन्द्र वेदालंकार की कथा हुई जिसमें पारिवारिक सत्संगों का

दक्षिण अफ्रीका में अन्तर्राष्ट्रीय वेद सम्मेलन

डर्बन (दक्षिण अफ्रीका) में अंतर्राष्ट्रीय वैदिक कांफ्रेंस और विश्व आर्य सम्मेलन में भाग लेने और वहा कार्यक्रमो को आयोजित करने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से पंडित ब्रह्मदत्त स्नातक शीघ्र ही इस मास में भारत से रवाना हो रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक सम्मेलन (14-17 दिसम्बर 1985) में देश-विदेश के प्रतिनिधि भारी संख्या में पहुंच रहे हैं। सम्मेलन की अध्यक्षता प्रसिद्ध वैज्ञानिक स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती करेंगे। —सुरेशचन्द्र पाठक कार्यालय सचिव, सा० आ० प्र० सभा।

डी० ए० वी० शताब्दी समारोह

डी० ए० वी० कालेज, अमृतसर मे 6 अक्तूबर को डी० ए० वी० समारोहों का उद्घाटन डा० भवानी लाल भारतीय ने किया। इस अवसर पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया। गया विजयी छात्रों को ट्राफियां एवं प्रमाण पत्र दिये गये। डा० भारतीय का प्रिं० पसरीचा ने स्वागत किया। कार्यक्रम के संयोजक श्री डी० बी० पसरीचा थे।—राजकुमार कपूर

मुस्लिम युवक हिन्दू धर्म में

आर्य समाज मन्दिर गोविन्दनगर कानपुर, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के वरिष्ठ उपाध्यक्ष तथा केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर के अध्यक्ष श्री देवीदास आर्य ने एक ३० वर्षीय शिया मुस्लिम युवक श्री लालमियां पूर्व जमींदार को उनकी इच्छानुसार वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) में प्रवेश कराया। उनका नाम लालसिंह यादव रखा गया। श्री लालसिंह ने बताया कि मुझे हिन्दू धर्म की उदारता, धार्मिक स्वतन्त्रता ने सबसे अधिक प्रभावित किया।

वैदिक धर्म प्रचार

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा जौनपुर के द्वारा १ व २ अक्तूबर जफराबाद में ३ व ४ अक्तूबर पतरही में वैदिक धर्म प्रचार किया गया। इस अवसर पर श्री आर्य मुनि वानप्रस्थ पं० क्षेमचन्द्र व पं० पारसनाथ शास्त्री आदि विद्वानों के भजन, व्याख्यान हुए।—छोटेलाल आर्य

स्व० विक्रान्त शान्तियज्ञ

आर्य समाज मन्दिर ताड़ीखेत अल्मोड़ा में ११ अक्तूबर को पं० प्रेमदेव शर्मा के पौरोहित्य, महात्मा भक्त मुनि की अध्यक्षता मे डा० निरूपण जी विद्यालंकार के सुपुत्र विक्रान्त की दिवंगत आत्मा हेतु शान्तियज्ञ संपन्न हुआ। स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी ने दिवंगत आत्मा की शान्ति तथा परिजनों के धैर्य हेतु परमात्मा

शेख अमीरुद्दीन की शुद्धि

आर्य समाज बड़ाबाजार द्वारा शेख अमीरुद्दीन, पुत्र शेख लतीफुद्दीन लालदीघी पार (पूर्व) पो० व थाना० चन्दननगर, जि०—हुगली (पं०बगाल) के आवेदन पर उनकी शुद्धि प० ईश्वरदत्त वेद के पौरोहित्य मे की गयी जिसमें समाज के मत्री श्री खुशहालचन्द आर्य तथा समाज के विशिष्ट सहयोगियो सहित आम जनता भारी सख्या में उपस्थित हुई। शुद्धि के उपरान्त उनका नया नाम अमरजीत रखा गया। समाज के प्रधान श्री चादरतन दम्माणी ने आशीर्वाद देते हुए जीवन में उनकी सफलता की कामना की। —खुशहालचन्द्र आर्य, मंत्री, आर्य समाज बड़ा बाजार

खूटी (रांची) में वेद सप्ताह

पं० महावीरप्रसाद तार्किक एवं श्री रामविलास आर्य ने अगस्त मास मे नौ दिन तक स्वामी श्रद्धानन्द आश्रम एव निकट के आदिवासी ग्रामो मे प्रचार कर आर्य समाज का सन्देश उन तक पहुचाने में सहयोग प्रदान किया। इस अवसर पर वेद-सप्ताह का भी आयोजन किया गया। —नारायण दास ग्रोवर, राची

खूंटी में गांधी जयन्ती

2 अक्तूबर को स्कूल के प्रागण में गाधी जयन्ती समारोह का आयोजन किया गया। इसके मुख्य अतिथि खूंटी उपमण्डल के अधिकारी श्री ध्रुवज्योति प्रसाद सिंह थे जिन्होने स्कूल की गतिविधि से प्रसन्न होकर अपनी ओर से सब प्रकार की सहायता देने का वचन दिया। निदेशक नारायणदास ग्रोवर चेयरमैन गोविदचन्द महतो, डा० कुलवत आदि ने अपने भाषणो मे गाधी जी के 'सादा जीवन उच्च विचार' की विस्तार से व्याख्या की। श्री महतो ने 5100/-, श्री विनय तिवारी ने 2100/-रुपए दान स्वरूप प्रदान किए और श्री मोतीलाल जैन ने बिस्कुटो के एक सौ पैकेट बच्चो को उपहार स्वरूप प्रदान किए। श्रीमती सिंह ने बच्चो में मिठाई वितरित की और प्राचार्य मदन शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।—मदन शर्मा, आचार्य

श्री वासुदेवसिंह मन्त्री मण्डल से बाहर क्यों ?

आर्य स्त्री समाज, मेरठ शहर बुढ़ाना गेट, मेरठ की ओर से निम्न प्रस्ताव पारित किया गया—उत्तर प्रदेश मन्त्रिमण्डल की नव नियुक्त मन्त्रि परिषद मे राष्ट्र भक्त, कर्मठ एवं वरिष्ठ भूतपूर्व मन्त्री श्री वासुदेव सिंह को मन्त्रि-परिषद से बाहर रखने के निर्णय से उत्तर प्रदेश की राष्ट्र भक्त जनता अत्यन्त विक्षुब्ध है और यह सभा उनको अकारण ही मन्त्रि परिषद से बाहर रखने के निर्णय की कठोर शब्दों में निन्दा करती है। —शकुन्तला गोयल प्रधाना,

श्री देशराज गुप्ता सम्मानित

स्वतन्त्रता सेनानी व आर्य जगत के वरिष्ठ जनसेवी, परोपकारिणी यज्ञ समिति के संरक्षक श्री देशराज गुप्त का दिल्ली नगर निगम रगशाला के सुसज्जित मंच पर आर्यपुरा सोहनगज ब्लाक युवक कांग्रेस (आई) द्वारा इन्दिरा मार्किट मे सम्मान किया गया। श्री गुप्त आर्य समाज दीवान हाल व आर्य बाल गृह पटौदी हाउस दरिया गंज की प्रबधक कमेटी के सदस्य हैं। कमल किशोर आर्य

डा० त्रिलोकीनाथ दीर्घायु हों

आर्य समाज, कैंटूनमेंट, सदर बाजार, लखनऊ, के डा० त्रिलोकी नाथ गुप्त इस समाज के वर्तमान प्रधान पद पर निरन्तर सेवा करते आ रहे है। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के 99वे वृत्तान्त में पृष्ठ 2 पर 49वें नम्बर के अनुसार वे दिवंगतो की सूची में हैं। यह समाचार गलत और निराधार है। डा० त्रिलोकी नाथ गुप्त दीर्घायु हों, यह प्रभु से प्रार्थना है।

आर्य युवा सम्मेलन

आर्य समाज (अनारकली) मंदिर मार्ग, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव 22 से 24 नवम्बर तक मनाया जायेगा, जिसमें श्री पं० शिवकुमार शास्त्री की वेदकथा 18 नवम्बर से होगी। इस अवसर पर अखिल भारतीय आर्य युवा सम्मेलन 24 नवम्बर को होगा।—चन्दमोहन आर्य

डा० सूर्या के लिए प्रार्थना

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के ट्रस्टी श्री नारायणदास कटारिया की सुपुत्री डा० सूर्या (कन्या आयुर्वेद महाविद्यालय बडोदरा) का 9 सितम्बर को निधन हो गया। प्रभु दिवंगत आत्मा को सद्गति दें और श्री कटारिया जी के परिवार को धैर्य और सहन शक्ति प्रदान करें।

—गन्धर्व सेन खोसला

रजत जयंती समारोह

आर्य कन्या इन्टर कालेज गोविन्द नगर, कानपुर का रजत जयन्ती समारोह एवं आर्य समाज गोविन्द नगर स्त्री आर्य समाज गोविन्द नगर का 37वां वार्षिकोत्सव दिनाक 7 से 10 नवम्बर तक कालेज प्रागण में समारोह पूर्वक मनाया जायेगा।

पता—देवीदास आय प्रधान

आर्य समाज होशंगाबाद

25.9.85 से 2.10.85 तक स्थानीय आर्य समाज द्वारा वेद प्रचार सप्ताह बहुत उत्साह व धूमधाम के साथ मनाया गया। इसमें श्री यज्ञेन्द्र आर्य, श्री पं० अमृतलाल जी शर्मा तथा ब्रह्मचारी जगतदेव नैष्ठिक, द्वारा वेदकथा की गई।

—गिरीश उपाध्याय, मंत्री

कश्मीर में राष्ट्रपति शासन लागू हो : श्री मधोक का ज्ञापन

भारतीय जन संघ के अध्यक्ष श्री बलराज मधोक ने देश की एकता एवं सुरक्षा की ओर भारत सरकार, विशेषतया राष्ट्रपति का ध्यान आकर्षित करते हुए कहा है कि देश को पूर्व और पश्चिम दोनो ओर से सकट है। पश्चिम में पाकिस्तान की ओर से निरन्तर खतरा बना हुआ है। विशेषतया पाकिस्तानी जासूस जम्मू-कश्मीर में सक्रिय हैं और वर्तमान कश्मीर सरकार उनकी गतिविधियो पर अकुश लगाने में असमर्थ रही है। इस प्रसग में भारत सरकार को चाहिए—

1. अल्पकाल के लिए जम्मू-कश्मीर में राष्ट्रपति शासन लागू करे जिससे राज्य का प्रशासन कारगर बन कर पाकिस्तान समर्थक तत्त्वो को बाहर खदेड सके।

2. सविधान के अनुच्छेद 370 को समाप्त करे।

3. जम्मू-कश्मीर राज्य का पुनर्गठन कर जम्मू और कश्मीर को दो पृथक राज्यो मे विभक्त कर दिया जाए, लद्दाख को केन्द्र प्रशासित क्षेत्र बना दिया जाए और तीनों का एक ही राज्यपाल, एक उच्च न्यायालय और एक ही संयुक्त विकास परिषद् हो।

4. उडी और टिथवाल जैसे गैर-कश्मीरी क्षेत्रो को कश्मीरी घाटी से अलग कर उन्हे सीधे केन्द्र के आधीन किया जाए जिससे पाकिस्तानी तथा पाक अधिकृत घुसपैठियो से घाटी सुरक्षित रह सके।

पाकिस्तानी मुसलमान बहुत बडी संख्या मे राजस्थान और गुजरात मे भी घुस गए हैं और सीमा के आस-पास उन्होने अपने ठिकाने बना लिए हैं। सुरक्षा की दृष्टि से यह आवश्यक है कि कम से कम सीमा से पाच मील की परिधि ऐसे सन्देहास्पद लोगों से मुक्त रखी जाए।

इसी प्रकार पूर्व दिशा मे बंगलादेश से घुसपैठ करने वालों से खतरा बढ़ता जा रहा है, यह तथ्य सर्वविदित है कि बंगलादेश की आखें असम प्रदेश पर लगी हैं। अभी हाल मे असम के आन्दोलन कर्त्ताओ और सरकार मे समझौता हुआ हैं उसमे सरकार ने मुसलमान घुसपैठियो तथा हिन्दु शरणार्थियों को एक ही श्रणी में रख कर गलत कार्य किया है। हिन्दू शरणार्थी हमारी सहानुभूति के पात्र हैं। दस लाख फिलिस्तीनी शरणार्थियों की 'होम-लैंड' की माग की अपेक्षा एक करोड़ बंगलादेशी बौद्धो की 'होमलेंड' की मांग अधिक तर्कसगत और महत्वपूर्ण है। जो भारत सरकार पी० एल० ओ० (फिलस्ती लिबरेशन आर्गनाइजेशन) के आन्दोलन का समर्थन करती है वह बगला लिबरेशन और्गनाइजेशन (बी० एल० ओ०) को कम से कम उतना तो समर्थन दे।

आर्य समाज एक सार्वभौम संगठन : रामनाथ सहगल

"आर्य समाज एक सार्वभौम सगठन है, जिसका सम्बन्ध किसी देश विशेष, वर्ग विशेष तथा सम्प्रदाय विशेष नहीं है। सभी व्यक्तियो के लिए इसके द्वार खुले हुए हैं। इसके नियमो को स्वीकार करने वाला प्रत्येक व्यक्ति इसका सदस्य बन सकता है।" इन शब्दो के साथ डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल गाजियाबाद मे आर्य समाज की स्थापना के अवसर पर उपस्थित जन समुदाय को सम्बोधित करते हुए आ० प्रा० प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने आर्य समाज के इतिहास व उसकी महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि शिक्षा सुधार के अतिरिक्त अन्य अनेक लोकहितकारी कार्यों को आर्य समाज अपने प्रारम्भिक काल से करता चला आ रहा है। कई अनाथालय और गोशालाएं चल रही हैं। अन्धविश्वासों का उन्मूलन करने मे भी आर्य समाज का भारी योगदान रहा है। अपने भाषण के अन्त मे श्री सहगल ने इस बात पर बल दिया कि देश की एकता व अखण्डता के लिए आर्य समाज को सशक्त करना आवश्यक है।

—प्रधानाचार्य, डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, गाजियाबाद।

श्री जगन्नाथ विद्यालंकार परिणय-सूत्र में बंधे

गुरुकुल के स्नातक श्री जगन्नाथ विद्यालंकार का विवाह संस्कार १५ अक्तूबर ८५ को आर्य समाज मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में आयुष्मती प्रभावती के साथ सपन्न हुआ। श्री विद्यालंकार खादी ग्रामोद्योग आयोग में अनुवादक के पद पर कार्यरत होने के साथ-साथ भारतीय संस्कृति एवं वैदिक विषयो पर भी लिखते हैं और वेद प्रतिष्ठान की योजना मे अनुवाद का कार्य भी वे ही कर रहे हैं। आयुष्मती प्रभावती जी हिन्दी एम० ए० हैं। गत कई वर्षों से वे मलयाली समाजम् स्कूल जबलपुर में मुख्याध्यापिका के पद पर कार्य कर रही हैं। विवाह संस्कार में स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज, खादी आयोग के उपाध्यक्ष श्री लक्ष्मी रमण आचार्य डा० प्रशान्त वेदालंकार श्री राम सरण दास आहूजा, श्री रामनाथ सहगल व आर्य समाज के कई सदस्य तथा उनके परिवार के सदस्यों ने उपस्थित होकर नव दंपतीको मंगल कामनाएं दीं। विवाह संस्कार पं० घनश्याम आर्य ने संपन्न कराया।

हंसराज मौडल स्कूल पंजाबीबाग, दिल्ली का प्रशंसनीय कार्य

सेना शिक्षा निदेशक मेजर जनरल पी० डी० शर्मा, ए० वी० एस० एम० ने 26-8-85 को हंसराज मौडल स्कूल का दौरा किया। स्कूल की गतिविधियो से प्रभावित होकर उन्होने स्कूल के प्रधानाचार्य श्री तिकलराज गुप्त को 28-8-85 को उत्साहवर्द्धक पत्र लिखा है जिसका हिन्दी अनुवाद निम्न लिखित है—

आपने मुझे 26-8-85 को अपने स्कूल का दौरा करने का जो अवसर प्रदान किया उसके लिए मैं आभारी हू।

मुझे जिन अनेक सस्थाओ का दौरा करने का अवसर प्राप्त हुआ है उनमे से आप की संस्था सर्वोत्तम है। आपके सभी शिक्षको पर आपके व्यक्तित्व का प्रभाव परिलक्षित होता है। आपके छात्रो ने जिन शैक्षिक, अर्धशैक्षिक तथा अतिरिक्त गतिविधियो मे भाग लिया उसमे उन्होने उत्कृष्टता का प्रदर्शन किया। छात्रो और अध्यापको मे जैसी तन्मयता मैंने देखी वैसी मैंने इससे पूर्व नही देखी थी, मैं आपको ऐसे सुयोग्य एवं प्रसन्न साथियो की टीम का नेतृत्व करने के लिए बधाई देता हू। हसराज मौडल स्कूल का निरीक्षण मेरी आखे खोलने वाला था।

श्री आनन्द, श्रीमती अहलूवालिया तथा श्री सेठी को मेरी ओर से धन्यवाद दीजिए जिन्होने इस निरीक्षण के समय मेरे साथ रह कर सस्था की विभिन्न गतिविधियो के बारे मे मुझे विस्तार से बताया और प्रसगोचित परिचय दिया। इस अवसर पर मैं डा० मनचदा के सुयोग्य निर्देशन मे सचालित 'आई साइट इम्प्रूवमेट प्रोजैक्ट' का भी विशेष उल्लेख करना चाहता हू। स्कूल के चिकित्सालय ने वास्तव में मुझे बहुत प्रभावित किया।

हसराज मौडल स्कूल के परिसर मे जो निष्ठा, परिश्रम और उत्साह दृष्टिगोचर होता है वह नगर के सभी स्कूलो के लिए प्रेरणा का स्रोत हो सकता है।

सत्यव्रती परिव्राजक दिवंगत

आर्य समाज के सुप्रसिद्ध संन्यासी स्वामी सत्यव्रती जी का 18 अक्तूबर को साय 4 बजे निधन हो गया। वे कुछ मास से अस्वस्थ चल रहे थे। उन्होने अपनी आयु के 100 वर्ष पूरे कर लिये थे। श्री परिव्राजक जी आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के प्रधान एव प्रतिष्ठित आर्य नेता श्री शान्ति लाल सूरी के पूज्य पिता थे। 19 ता० को प्रात 11 बजे पचकुइया श्मशान भूमि पर वैदिक रीति से उनका दाह संस्कार किया गया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के कार्यालय मे सम्पन्न शोकसभा मे समस्त सदस्यो एव कर्मचारियो ने एक मिनट मौन धारण कर अपनी श्रद्धाजलि समर्पित की।

21 अक्तूबर को साय 4 बजे आर्य समाज (अनारकली) हॉल मे एक विशाल शोक सभा मे दिल्ली एव बाहर के सैकडो की सख्या मे उपस्थित लोगो ने अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की। शोकसभा मे प्रो० वेद व्यास, श्री रामचन्द्र विकल संसद सदस्य, श्री यशपाल कपूर ससद सदस्य तथा अन्य कई गण्य-मान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इस शोकसभा मे विभिन्न प्रतिष्ठित जनो एव विभिन्न सस्थाओ की ओर से लगभग अढाई सौ शोक प्रस्ताव आये।

—रामनाथ सहगल मन्त्री, आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली

स्त्री आर्य समाज अनारकली

स्त्री आर्य समाज (अनारकली) मंदिर मार्ग नई दिल्ली मे करौलबाग महिला मण्डल के तत्वावधान मे 20 सित० को वेद प्रचार दिवस मनाया गया जिसमे, यजुर्वेद शतक का महायज्ञ शान्ति देवी अग्निहोत्री ने कराया। ध्वजारोहण माता पद्मावती साहनी ने किया। उत्सव मे दिल्ली की 17 स्त्री आर्य समाजो ने भाग लिया। ओंकार स्तोत्र का पाठ डा० चद्र प्रभा ने किया प्रमुख वक्ता उषा शास्त्री थी। शकुन्तला साहनी की ओर से प्रसाद वितरण किया गया।—कृष्णा रसवन्त, मंडल मन्त्रिणी

प्रान्तीय आर्य महिला सभा द्वारा वेद प्रचार दिवस

प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली के तत्वावधान मे 7 सितम्बर को यजुर्वेद के 35 वे अध्याय के मन्त्रो की प्रतियोगिता हुयी जिसमे प्रथम पुरस्कार डा० चन्द्र प्रभा, द्वितीय कु० विभा, तृतीय प्रेरणा आर्या, चन्द्रकला को दिए गए। कृष्णा रसवन्त, राम बाई सैनी एवं वीरा वाली को विशेष पुरस्कार दिये गये। प्रतियोगिता मे भाग लेने वाली सभी बहिनो को वैदिक साहित्य भेट किया गया।—प्रकाश आर्या मन्त्रिणी

कवि सम्मेलन

आर्यसमाज, सेवा सदन, वल्लभ गढ (फरीदाबाद) के वार्षिकोत्सव के अवसर पर 29 सितम्बर को कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता श्री पी० के० बंसल आचार्य और सचालन श्री सारस्वत मोहन मनीषी ने किया। डा० सरल, श्री गुलाव सिह राघव, श्री मुन्नवर, श्री पदम चौधरी, प्रो० धर्मवीर धीर श्री बलवीर सिह करुण, प्रो० क्रान्तिकारी, एवं श्री शंकर आदि कवियों ने भाग लिया।

अग्रोहा हरियाणा की राजधानी बनायी जाय।

अ० भा० अग्रवाल सम्मेलन से सम्बन्धित सारे देश की 500 से अधिक सस्थाओ ने प्रधानमंत्री श्री राजीव गाधी एवं हरियाणा के मुख्यमत्री श्री भजनलाल को पत्र एव तार भेजकर अनुरोध किया है कि वे अग्रोहा को ही हरियाणा की नयी राजधानी बनावे। उन्होने अपने पत्रो में उन कारणो का उल्लेख किया है जिसके आधार पर अग्रोहा ही राजधानी के लिए उपयुक्त स्थान है।

आर्यसमाज अनाथालय फिरोजपुर में गांधी मेला

2 अक्तूबर को आर्य अनाथालय मे गाधी जयन्ती समारोह का आयोजन किया गया तदनन्तर पं० मदनमोहन शास्त्री जी ने महात्मा गाधी और श्री लालबहादुर शास्त्री के जीवन पर प्रकाश डालते हुए विद्यार्थियो एव अध्यापको को उन दोनो के सादा जीवन उच्च विचार, समता की भावना तथा अपरिग्रह के व्रतो का परिचय कराया। इस अवसर पर प्रि० चौ० का सदेश भी पढकर सुनाया गया।--मैनेजर आर्य अनाथालय,

गाधी जयन्ती यज्ञ

आर्य समाज, ताडीखेत अल्मोडा मे 2 अक्टूबर को महात्मा भक्त मुनि की अध्यक्षता मे 'महात्मा गाधी का 116 वा जयन्ती यज्ञ' सम्पन्न हुआ। स्वामी गुरुकुलानन्द कचचाहारी ने गाधी जी के कार्यों की प्रशसा की।—प्रमदेव शर्मा

—आर्य समाज, बडा बाजर, 1 मुशी सदरुद्दीन लेन, कलकत्ता के वार्षिक अधिवेशन में श्री धनश्याम दास गोयल संरक्षक, श्री चान्द्ररतन दमाणी प्रधान, श्री खुशहाल चन्द्र आर्य मत्री और श्री दीनदयाल गुप्त कोषाध्यक्ष चुने गये।

श्री शिवलाल का निधन

ऋषि भक्त श्री शिवलाल जी सिद्धवानी (बम्बई) का 9-10-85 को आकस्मिक निधन हो गया। वे आर्य समाज सान्ताक्रुज के सदस्य तथा पुरानी पीढी के आर्यसमाजी थे। वे टकारा-ट्रस्ट को हर मास 200-/रु० एक विद्यार्थी की छात्रवृत्ति दिया करते थे। यह समाचार सुनते ही टकारा-ट्रस्ट के उपकार्यालय-आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली मे एक शोकसभा हुई तथा दिवगत आत्मा को श्रद्धाजलि अर्पित की गई।

रामनाथ सहगल मत्री-टंकारा-ट्रस्ट

विविध समाचार

—योग निकेतन ट्रस्ट ३०ए/७८ पजाबी बाग नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव २७ अक्तूबर को स्वामी मुक्तानन्द जी की अध्यक्षता मनाया जाएगा १३ अक्तूबर को आसन, प्राणायाम और योग साधना सत्र आयोजित होगा। प्रशिक्षक कु० अरुणा एवं ललिता होगी।

—आर्य समाज, यमुना विहार, दिल्ली मे २ से ६ अक्तूबर तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। जिसमे श्री रामचन्द्र स्वामी कृष्णानन्द, पं० अखिलेश, प० नानकचन्द, श्री भूदेव आदि विद्वानो ने भाग लिया।

वैदिक धर्म प्रचार हेतु......

(पृष्ठ ४ का शेष)

संस्थान का पाठ्यक्रम

प्रथम प्रश्न पत्र —

वेद

1 यजुर्वेद अध्याय 31, 32 व 40 (महर्षि दयानन्द कृत भाष्य)।

2 ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका प्रथम 12 अध्याय (सृष्टि विद्या विषय तक) तथा ग्रन्थ प्रामाण्याप्रमाण्य से प्रश्नोत्तर विषय तक।

3 दर्शनानन्द ग्रन्थ सग्रह (वेद परिचय खण्ड)।

प्रकाशक—सत्य प्रकाशन मथुरा

द्वितीय प्रश्न पत्र —

दर्शन

1. भारतीय दर्शन —लेखक दत्त व चटर्जी

2 न्याय दर्शन (उदय वीर शास्त्री) अध्याय 1 व 2

तृतीय प्रश्न पत्र.—

धर्म व सिद्धान्त

1. पच महायज्ञ।

2 सस्कार विधि (नामकरण, मुण्डन, उपनयन व विवाह सस्कार)।

3 सत्यार्थ प्रकाश (समुल्लास 12 व 16 के अतिरिक्त सम्पूर्ण)।

चतुर्थ प्रश्न पत्र—

ऋषि जीवन व आर्य समाज इतिहास

1. महर्षि दयानन्द जीवन (दोनो भाग) लेखक—पं० घासीराम

2. आर्यसमाज का इतिहास (प्रथम भाग) लेखक—पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति

3. आर्य समाज का इतिहास (भाग तीन) अध्याय 1 से 6 तथा 10 व 18 लेखक—डा सत्यकेतु विद्यालकार

आर्य समाज के प्रसिद्ध सन्यासी स्वामी सत्य प्रकाश जी व प्रो० रत्न सिह जी क्रमश सस्थान के सरक्षक व सलाहकार पद पर कार्य करेगे। सस्थान के लिए अनुभवी योग्य अध्यापको की नियुक्ति की जा रही है। स्थायी अध्यापकों के अतिरिक्त समय-समय पर अध्यापन हेतु पूज्य अमर स्वामी जी महाराज, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती (पूर्व श्री लक्ष्मीदत्त दीक्षित-प्रिंसिपल आर्य कालेज पानीपत) डा० कृष्ण लाल, प्रो० दिल्ली विश्व विधालय, डा० प्रशान्त वेदालकार तथा प्रो० रत्न सिह (पूर्व अध्यक्ष दर्शन शास्त्र विभाग एम. एम एच कालिज गजियाबाद) की सेवाये उपलब्ध रहगी।

सस्थान मे छात्रो की प्रवेश तिथि की घोषणा बाद । अपने नाम का पजीकरण कराने के लिए प्रवेशार्थी एक सादे कागज पर अपना पूर्ण विवरण लिखकर डी ए वी कालिज प्रबन्धक समिति कार्यालय चित्र गुप्त मार्ग, नई दिल्ली भेज सकते है।

—दरबारी लाल, सगठन सचिव, डी ए वी. कालिज प्रबन्धक समिति चित्र गुप्त रोड, नई दिल्ली-55

यू० १०३/८१ लायसेंस टु पोस्ट विदाउट प्री-पेमेन्ट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११६३/७२ डी० सी० ४०६

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी का निरीक्षण

कुछ दिन पूर्व फिरोजपुर छावनी स्थित आर्मी हेड क्वाटर्स की फील्ड रेजिमेंट आदि के उच्चाधिकारियों की धर्मपत्नियां आश्रम तथा तत्सम्बन्धित विद्यालयों के निरीक्षणार्थ,आर्य अनाथालय में पधारी। उस अवसर पर वे तीनों विद्यालयों के अतिरिक्त बाल आश्रम, कन्या आश्रम, चिकित्सालय, यज्ञशाला, गौशाला, वाटर वर्क्स तथा कार्यालय आदि का निरीक्षण करती हुई इन स्थानों की गतिविधि तथा कार्य प्रणाली से अत्यन्त प्रभावित हुई। उन्होंने, अध्यापन, अधिकारी, कर्मचारी तथा छात्र-छात्राओं के आचरण, अनुशासन, सद्व्यवहार तथा निष्ठा आदि-आदि की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने आश्रम के प्रशासक अधिष्ठाता प्रि० पी० डी० चौधरी तथा अधिष्ठात्री श्रीमती सन्तोष चौधरी की कर्तव्यनिष्ठा व कार्यकुशलता की सराहना करते हुए 'आर्मी वैलफेयर एसोशियेशन' की ओर से प्रचुर-मात्रा में खाद्यसामग्री, वस्त्र, मिष्ठान्न तथा धनराशि भेंट की तथा भविष्य में भी सहायता करते रहने का आश्वासन दिया। चित्र में वे सभी बहन, कन्याओं, कार्यकर्त्ताओं तथा विद्यालय की प्रधानाचार्या के साथ खड़ी हैं।

आर्ष ध्यान योग केन्द्र का उद्घाटन

आर्य समाज मन्दिर, सान्ताक्रुज, बम्बई में स्वामी सत्यपति परिव्राजक आर्ष ध्यान योग केन्द्र का उद्घाटन करते हुए। पास खड़े हैं—गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक महाराष्ट्र के राज्यमंत्री श्री रामचन्द्रराव पाटिल, श्री चन्द्रमोहन आर्य, मुख्य अतिथि, तथा समाज के महामंत्री कैप्टन देवरत्न।

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के कर कमलों द्वारा स्थापित और आर्य प्रादेशिक सभा द्वारा संचालित

भारतवर्ष का पुराना और उत्तरी भारत का प्रमुख अनाथालय

कुशल प्रशासक शैक्षिक ज्ञाता, उदार हृदय प्रबन्धकों की देखरेख में बालक-बालिकाओं के पालन-पोषण, शिक्षा आदि का उचित प्रबन्ध है।

आप सभी दानी महानुभाव इस पुनीत कार्य में दान देकर पुण्य के भागी बनें। प्रि० पी० डी० चौधरी, मैनेजर आर्य अनाथालय, फिरोजपुर

टंकारा में ऋषि मेला

७, ८, ९ मार्च १९८६ को

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा में ट्रस्टियों एवं प्रतिष्ठित सदस्यों की एक बैठक ६ अक्तूबर को श्री रतन चन्द सूद, प्रधान की अध्यक्षता में हुई जिसमें निश्चय हुआ कि हर वर्ष की भांति ७, ८, ९ मार्च १९८६ को ऋषि मेला टंकारा में समारोह पूर्वक मनाया जाये।

मेरी भारत भर की समस्त आर्य समाजों, स्त्री आर्य समाजों, डी. ए वी संस्थाओं, गुरुकुलों, आर्य संस्थाओं से एवं आर्य जनता से प्रार्थना है कि वे यह तिथियां अभी से अंकित कर लें और टंकारा अवश्य पहुंचे। विस्तृत कार्यक्रम बनाया जा रहा है, जिसकी सूचना आर्य पत्रों में दे दी जायेगी।

आर्य जनता से निवेदन है कि अपने-अपने नगरों में आर्य समाजों की बैठक बुलाकर टंकारा के लिए स्पेशल बसें ले जाने की व्यवस्था करें। इससे भारत भर से आने वाले ऋषि भक्तों को सुविधा रहती है। दिल्ली से भी बसें चलाने की योजना बनाई जा रही है, जिसकी सूचना बाद में दी जायेगी। जो लोग दिल्ली से टंकारा तथा टंकारा से दिल्ली वापस रेल द्वारा यात्रा करना चाहें, उनके लिए रेल में शायिका (स्लीपिंग बर्थ) आरक्षण की व्यवस्था की जा रही है। जो रेल से सीट बुक करवाना चाहें, उनसे प्रार्थना है कि एक मास पहले अपना नाम—पता तथा जाने-आने की तिथि एवं किराया २५०/- रु० भिजवा देवें। उनके लिए दिल्ली से राजकोट और राजकोट से दिल्ली तक की सीटें आरक्षित करवा दी जायेंगी। राजकोट से टंकारा ४० किलोमीटर एवं मोरवी से २० किलोमीटर है। दोनों स्थानों से बसों की व्यवस्था रहती है। विस्तृत जानकारी के लिए ट्रस्ट के उपकार्यालय आर्य समाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१ के पते पर संपर्क कर सकते हैं।—रामनाथ सहगल, मंत्री, टंकारा-ट्रस्ट।

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस०नारायण एण्ड सन्स७११७/१८ पहाड़ी धीरज, (फोन : ५१६५१८, ५२७३३५) दिल्ली से छपवा कर कार्यालय आर्य जगत्, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित । स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिरमार्ग, नई दिल्ली। फोन (343718)

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य-२५ रुपये | विदेश में ३० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४८ अंक ४७ रविवार, २४ नवम्बर, १९८५ दूरभाष : ३ ४ ३ ७ १८
आजीवन सदस्य-२५१ रु० | इस अंक का मूल्य—६० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८५, दयानन्दाब्द १६० कार्तिक शुक्ला १२, २०४२ वि०

हैदराबाद के आर्य सत्याग्रहियों का सम्मान

भारत सरकार ने उन्हें भी स्वतंत्रता सेनानी माना

१ अगस्त, १९८० से पेंशन का अधिकार : राज्यों को सूचना

आखिर ४६ वर्ष के संघर्ष के पश्चात् सन् ३८-३९ में निजाम हैदराबाद के सत्याग्रह मे भाग लेने वाले सत्याग्रहियो को भारत सरकार ने स्वतंत्रता सेनानी घोषित कर दिया। भारत सरकार की ओर से जो विज्ञप्ति ३० सितम्बर, ८५ को सब राज्य सरकारो को इस विषय में भेजी गई है उसमें कहा गया है कि सत्याग्रह मे भाग लेने वालो को १ अगस्त सन १९८० से सम्मान-पेंशन प्राप्त करने का अधिकार होगा। स्वतंत्रता सेनानियो की विधवाओ को भी यह पेंशन मिल सकेगी। १ जून १९८५ से पेंशन की राशि बढाकर ५०० रु० प्रतिमास कर दी गई है। दिवंगत स्वतंत्रता सेनानियो के वैधानिक उत्तराधिकारियो को ताम्रपत्र देने का प्रस्ताव भारत सरकार ने स्वीकार नहीं किया।

इस सम्बन्ध मे आन्दोलन तो काफी समय से चल रहा था, किन्तु सन् १९८३ मे अजमेर में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के अवसर पर पं॰ ब्रह्मदत्त स्नातक और लातूर (हैदराबाद) के एडवोकेट, महाराष्ट्र प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री श्री एन॰ एस॰ होलीकर के प्रयत्न मे उस विशाल जन-समुदाय के समक्ष सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया गया। तत्कालीन उद्योगमत्री श्री नारायण दत्त तिवारी की मार्फत प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी से भी इस विषय मे चर्चा की गई। श्रीमती गाधी ने सहानुभूति-पूर्वक विचार का आश्वासन दिया। तब से केन्द्रीय मत्रिमंडल ने इस विषय पर सक्रिय रूप से विचार करना प्रारम्भ किया।

इधर सार्वदेशिक सभा की ओर से भी सरकार के साथ निरन्तर पत्राचार जारी रहा। आर्य जनता उत्सुकता से निर्णय की प्रतीक्षा करती रही। पर सरकारी नौकरशाही के रवैये के कारण मामला लटकता चला गया। अन्त मे वर्तमान प्रधानमंत्री श्री राजीव गाधी ने इस विषय मे व्यक्तिगत रुचि ली। विश्वस्त सूत्रो से यह भी विदित हुआ है कि प्रधानमंत्री को हैदराबाद आर्य सत्याग्रह का उसके राष्ट्रीय स्वरूप का और देशव्यापी महत्त्व का परिचय देने में महाराष्ट्र के मुख्यमन्त्री श्री शिवराज पाटिल निलंगेकर ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस निर्णय के लिए सार्वदेशिक सभा ने समस्त आर्य जनता की ओर से भारत सरकार के प्रति आभार प्रकट किया है।

हैदराबाद आर्यसत्याग्रह में ६ मास का कारावास भुगतने वाले सत्याग्रही अपने गिरफ्तार होने की तिथि, दण्ड के अदालती आदेश, कारावास में रहने की अवधि और जेल से छूटने की निश्चित तिथि के सम्बन्ध में सम्बद्ध जेलो से प्रमाणपत्र प्राप्त करके उसकी सत्यापित प्रतिलिपि के साथ केन्द्रीय गृहमत्रालय के लोकनायक भवन (सुजानसिह पार्क, नई दिल्ली, के निकट) मे स्थित स्वतत्रता सेनानी प्रभाग मे सम्मान पेंशन पाने के लिए आवेदन कर सकते है।

भारत सरकार की ओर से जारी की गई मूल विज्ञप्ति यहां प्रकाशित की जा रही है।

लातूर निवासी श्री एन॰ एस॰ होलीकर एडवोकेट जिन्होने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री के साथ हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के सत्याग्रहियो को स्वतंत्रता सैनिक मनवाने की दिशा मे विशेष प्रयत्न किया।

No. 8/32/84-FF (P)
Government of India, Bharat Sarkar
Ministry of Home Affairs/Grih Mantralaya.

New Delhi-110003 the 30th Sep 1985

To
Chief Secretaries of all State
Govts /U T Administrations, (as per list attached).

Sub:
Grant of pension from Central Revenues to freedom fighters and their families under Swatantrata Sainik Samman Pension Scheme

Sir,

I am directed to state that certain proposals based on the recommendations of the Non-Official Advisory Committee at the Central level have been under consideration of the Government for some time The Government have taken the following decisions in respect of the Freedom fighter's Pension Scheme, 1972 now renamed as Swatantrta Sainak Samman Pension Scheme :

(i) Arya Samaj Movement of 1938-39 which took place in the former Hyderabad State has been recognised as part of the freedom struggle for the purpose of Samman Pension under the liberalised pension scheme effective from 1-8-80

(ii) The quantum of monthly pension admissible to freedom fighters and the widows of the deceased freedom fighters has been raised to Rs 500 p m. with effect from 1st June, 1985. The enhanced rates of pension of Rs 500 p m will also be admissible to the widows of the deceased freedom fighters. The unmarried daughters of the widows who have been sanctioned family pension under the scheme will now not be entitled for additional pension of Rs 50 Separate general instructions are being issued to all the Accountants General to revise the Pension payment Orders in pursuance of this decision

2 The Government have also considered the under mentioned proposals but have not accepted them for the purpose of pension under Swatatrata Sainak Samman Pension Scheme :

(i) Award of Tamsapatras to the legal heirs of martyrs/deceased freedom fighters

(ii) Grant of pension to such ex-INA personnel (from civilian side) who are in receipt of State pension in relaxation of the existing provisions

(iii) The question of recognition of

(a) Cochin Police Strike-1942-Kerala.

(b) Kerivellur Struggle- Kerala

3 The State Governments are requested to bear in mind the above decisions of the Government while verifying the claims of applicants for Samman Pension under Swatantrata Sainik Samman Pension Scheme

Yours faithfully,
sd/-
(K N Singh)
Under Secretary to the Govt of India

C for information to

1 All the Branch Officers and Processing Sections of the freedom fighters Division

2 DS (FF)/PS to JS (F)/PS to Dir (FF)

3r Cabinet Secretariat (Sh H R Goel Dy. Secy with ref to his letter No. 27/CM/85 (1) dt. 11/9/85.

(K.N Singh)
Under Secy to the Govt of India

परामर्शदाता—अमर स्वामी सरस्वती | सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

सोम की ऊर्ध्व गति के परिणाम

—मनोहर विद्यालकार—

अया रुचा हरिण्या पुनानो विश्वा द्वेषासि तरति स्वयुग्वभिं सूरो न स्वयुग्वभि ।
धारा सुतस्य रोचते पुनानो अरुषो हरि.। विश्वा यद्रूपा परियाति ऋक्वभि. सप्तास्येभि -
ऋक्वभि ।।१।।

त्वं त्यत्पणीना विदो वसु स मातृभिर्मर्जयसि स्वे दमे ऋतस्य धीतिभिरा दमे ।
परावतो न साम तद् यत्रा रणन्ति धीतय । त्रिधातुभिररुषीभिर्वयोदधे रोचमानो
वयोदधे ।।२।।

पूर्वामनु प्रदिश याति चेकितत् स रश्मिभिर्यतते दर्शतो रथो दैव्यो दर्शतो रथ ।
अग्मन्नुक्थानि पौंस्येन्द्रं जैत्राय हर्षयन् । वज्रश्च यद्भवथो अनपच्युता समत्स्वन-
पच्युता ।।३।।

ऋषि —अनानतः पारुच्छेपि । देवता—पवमान. सोमः। छन्द.—अत्यष्टि.। ऋक् ९-१११ —१ से ३।

इन मन्त्रो का शब्दार्थ इस प्रकार है—यह पवमान सोम (अया हरिण्या रुचा) इस हरित वर्ण दीप्ति से (अरुष) दीप्त तथा (हरि) रोगो और दुखो को हरने वाला (स्वयुग्वभि) स्वप्रयुक्त दीप्तियो से (पुनान) पवित्र होकर गति करता हुआ (विश्वा द्वेषासि तरति) सब द्वेषादि दुष्ट भावो को वैसे ही तर जाता है, नष्ट कर देता है (न) जैसे (सूर) सूर्य (स्वयुग्वभिः) स्व-प्रसृत किरणो से सब अन्धकारो को नष्ट कर देता है, अथवा जैसे (सूर) शूर योद्धा (स्वयुग्वभि) अपने तेजो से (विश्वा द्वेषासि तरति) अपने सब शत्रुओं को नष्ट कर देता है। यह सोम जब (सप्तास्येभि ऋक्वभिः) सात मुख रूपी इन्द्रियो द्वारा (विश्वारूपा) सब विषयो को (परियाति) वैसे ही व्याप्त कर लेता है जैसे (सप्तास्येभि ऋक्वभि) सात मुखरूपी छन्दो से प्रकट ऋचाओं द्वारा वेद, विश्व के सब रूपात्मक ज्ञान को व्याप्त कर लेता है। उस समय (सुतस्य धारा रोचते) प्रस्रवित होते हुए इस सोम की धारा, प्राणी को खूब उत्साहित और आनन्दित करती है।१।

हे सोम (त्वम्) तू (पणीना वसु) व्यवहार कुशलजनों द्वारा राग द्वेषादि के समर्थन द्वारा अपहृत वसु-धन को (मातृभि धीतिभि) निर्मात्री तथा धात्री शक्तियो द्वारा (स्वे दमे) अपने शरीर रूपी गृह को (मर्जयसि) शुद्ध कर लेता है और शरीर को निवास योग्य बनाने वाले सामर्थ्य को (विद) पुन प्राप्त कर लेता है, जैसे (दमे) सयम मे निवास करने वाले योगी साधक (ऋतस्य धीतिभि) नियम पालन की धात्री शक्तियो द्वारा अपने अन्त करण को शुद्ध करके परम-वसु परमात्मा को प्राप्त कर लेते हैं। वह परमात्मा (परावतो न साम) दूर से सुनाई देने वाले साम घोष के समान मनोरम है, (यत्रा रणन्ति धीतय) जिस परमात्मा मे ध्यानी जन आनन्दित होते है। उस स्थिति मे पहुच कर (त्रिधातुभि: अरुषीभि) वात, पित्त, कफ अथवा शरीर, मन, आत्मा तीनो को धारण कराने वाली दीप्त शक्तियो द्वारा (रोचमान) आरोचमान साधक (वयो दधे) अपने जीवन को निरायास धारण करता है, जैसे (रोचमान) सूर्य (त्रिधातुभि अरुषीभि) त्रिलोकी को धारण कराने वाली अपनी प्रदीप्त किरणो द्वारा (वयो दधे) प्राणो मात्र के जीवन को धारण करता है।२।

यह सोम (रश्मिभिः) शरीर व्यापिनी शक्तियों द्वारा (चेकितत्) शरीर की चेतना को चेतन करता हुआ (पूर्वादिशं अनुप्रयाति) आगे बढ़ने वाली प्राची दिशा की ओर चलता है। परिणामस्वरूप प्राणी का (रथ.) देहरूप रथ (दर्शतः) दर्शनीय हो जाता है, यदि वह (सयतते) सयमपूर्वक चलता रहे, जैसे (दैव्य रथ.) सूर्य का दिव्य रथ सयत गति के कारण (दशत.) सदा दर्शनीय रहता है। और सम्पूर्ण जगत मे चेतना उत्पन्न करता है। इस सोम द्वारा उत्पन्न (उक्थानि पौस्या) प्रशंसनीय पुरुषार्थ (इन्द्रम्) ऐश्वर्य सम्पन्न प्राणी को (जैत्राय हर्षयन् अग्मन्) विजय प्राप्ति के लिये उत्साहित और हर्षित करते हुए गतिमय बने रहते है। और उसका शरीर कर्मण्यता के कारण (वज्र) वज्र तुल्य बन जाता है। इस प्रकार यह वीर्य-वान् सोम- इन्द्र और इसका वज्र तुल्य शरीर दोनो (समत्सु) सघर्षों और सग्रामो मे (अनपच्युतौ) वाह्य तथा अन्तर दोनो शत्रुओं से अपराजित रहते है (अनपच्युतौ) निश्चय ही अपराजित रहते हैं।३।

निष्कर्ष पवमान साम-क्षरित होता हुआ वीर्य, प्राणी को कर्मण्य तथा चैतन्य बनाता है, हर्षित (मस्त) रखता है, और आनन्द प्रदान करता है। यह इसका स्वभाव है। यदि इसे शरीर से बाहर निकाले तो भी आनद देता है, किन्तु यह आनन्द और मस्ती क्षणिक है, और इसके साथ शक्ति भी क्षरित हो जाती है। यदि इसे शरीर मे ही खपा दिया जाए तो यह चिरस्थायी आनन्द प्रदान करता है, और शक्ति भी कायम रहती है।

यह सोम (वीर्य) सूर्य की तरह निराशा की बदलियो को छिन्न-भिन्न करता है। द्विविधा के अन्धकार को नष्ट करके मार्ग को प्रशस्त करता है।

इस सोमपान (वीर्यरक्षा) से देहरथ दिव्य बन जाता है और जीवन यात्रा सुगमता से पूर्ण होकर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेती है।

जैसे सामध्वनि मनुष्य को मन्द मन्द मोद प्रदान करती है, वैसे ही सोमपान से मस्त मनुष्य स्वात्मानन्द मे गुनगुनाता रहता है।

यह अन्तर्युक्त सोम सातो ऋषियों (इन्द्रियो) को व्याप्त करके उन्हें सशक्त तथा सातो मुखो से भोग करने वाला भोक्ता बना देता है। उसकी कोई इन्द्रिय जीवन पर्यन्त अक्षम नही होती।

यह सोम, वात, पित्त, कफ तीनो धातुओ को समस्वर बनाये रखता है। शरीर, मन, आत्मा तीनो को धारण करके, प्राणी के जीवन को स्पृहणीय, आशावादी तथा आनन्दित बनाये रखता है।

सोम का अन्तर्भोग, सोमपायी इन्द्र को सदा हर्षित रखता है, इसके शरीर को वज्र तुल्य बना देता है। परिणामत. दोनो ही जीवन मे अपराजेय बने रहते हैं।

आधिभौतिक दृष्टि से समाज या राष्ट्र मे स्वास्थ्य विभाग का अध्यक्ष ही सोम देवता है। उसके दो सहायक विभाग हैं—चिकित्सा और शल्यक्रिया। इन्हे पृथक्-पृथक् अश्विनौ सभालते हैं।

'सोमो वनस्पतीना मित्र'। यजु ९-३९ और सोमो वीरुधामधिपति.। अथर्व ५-२४-७ दोनो प्रमाण सोम के स्वास्थ्य विभागाध्यक्ष होने की पुष्टि करते हैं।

आधिदैविक दृष्टि से सोम चन्द्रमा है। औषधि वनस्पतियों में इसी के द्वारा रस शान्तिदायक बनते है। सूर्य जीवनी शक्ति का निर्माता है, और चन्द्रमा शान्तिदायक रसो का उत्पादन करता है।

जैसे शरीर मे सोम (वीर्य) जीवनी शक्ति और शान्ति को स्थिर करके आनन्द प्रदान करता है, वैसे राष्ट्र में स्वास्थ्य विभाग जीवन के लिये आवश्यक जलवायु की आपूर्ति करता है, और उन्हे प्रदूषण रहित करके जनता के सुख और आनन्द की वृद्धि करता है। शरीर मे प्राणापान ही अश्विनौ है।

आधिदैविक जगत् मे चन्द्रमा के समान सोम औषधि भी औषधियों मे सर्वश्रेष्ठ है। यह नपुंसक को भी पौरुष प्रदान करती है। "त्व वीरुधा श्रेष्ठतमाभिश्रुतास्योषधे। इम मे अद्य पूरुष क्लीबमोपशिन कृधि ।। अथर्व ६-१३८-१"

आध्यात्मिक दृष्टि से शरीर मे पान (रक्षण) किया हुआ सोम (वीर्य) रोगो के आक्रमण को निरर्थक करके, मनुष्य को आनन्दित करता है।

"अपाम सोमममृता अभूम, किं नूनमस्मान्कृणवदराति: ।"

ऋक् ९-४८-३

'इन्द्र ते रसो मदिरो ममत्तु ।

ऋक् ९-९६-२१

विशेष—सूक्त के ऋषि, देवता और छन्द से ग्रहण करने योग्य संकेत। सामान्य जन छन्द के शब्दार्थ मे निर्दिष्ट उपाय को अपना साधन बना ऋषि तुल्य आचार वाला बन सकता है। ऋषि तुल्य बनने के बाद मन्त्र के देवता का सखा बनकर उसकी कृपा प्राप्त करना सुगम हो जाता है। इसी तरह देवता की कृपा प्राप्त किये बिना ऋषित्व पूर्ण नही होता।

पारुच्छेपि अनानत —अर्थात् पोर पोर मे निर्मात्री शक्ति को संगृहीत करके अपने व्रत (निश्चय) या स्वीकृत मन्तव्य पर अविचल रहने वाला; दूसरे शब्दो मे किसी प्रलोभन या भय के दबाव से अपने व्रत को न छोड़ने वाला ऋषि ही आनन्द और शान्ति के देवता सोम का सखा बनकर, उसका कृपापात्र बनता है।

इसी तरह जिसने सोम को सिद्ध नही किया अर्थात् उसका अन्तर्भोग (पान) नही किया अथवा जिस पर सोम की कृपा नही हुई, वह अनानत—अविचल—अथर्वा या दृढ सकल्प नही बन सकता है और उसके परु परु (पोर-पोर) में निर्मात्री शक्ति प्रशस्त नही हो सकती।

इस मन्त्र का छन्दार्थ संकेत करता है कि कर्मण्यता द्वारा दीप्ति ग्रहण करने का इच्छुक ही अनानत और पारुच्छेपि बनता है।

पता—५२२ ईश्वर भवन, खारी बावली, दिल्ली-६

सुभाषित

परिक्षीण: कश्चित्स्पृहयति यवानां प्रसृतये
स पश्चात्सम्पूर्णो गणयति धरित्रीं तृणसमाम् ।
अतश्चानैकान्त्याद्गुरुलघुतयार्थेषु धनिना-
मवस्था वस्तूनि प्रथयति च संकोचयति च ॥
—भर्तृहरि

वही चाहता निर्धन होने पर तो बस मुट्ठी भर अन्न ।
तृण समान गिनता पृथ्वी को वह ही होने पर सम्पन्न ॥
अहो बनाती लघु गुरु जन को ये दोनों ही दशा विशेष ।
वही वस्तुओं को सिकोड़ती, अरु फैलाती हैं सविशेष ॥
—गोपालदास गुप्त

देर आयद दुरुस्त आयद

अब से 46 वर्ष पहले का एक दृश्य याद आता है।

सन् 1939 के फरवरी मास का प्रथम सप्ताह निजाम हैदराबाद की अदालत में, तरुणाई की देहरी पर खड़ा, गुरुकुल कांगड़ी के 15 विद्यार्थियों का पहला जत्था।

ये सभी विद्यार्थी गुरुकुल में अपनी पढ़ाई छोड़कर अपने सेनापति, आर्य सत्याग्रह के प्रथम सर्वाधिकारी श्री नारायण स्वामी जी महाराज के आह्वान पर उनके साथ प्रथम जत्थे में शामिल होने के लिए आए थे। पर निजाम की पुलिस ने उस तपोमूर्ति को हैदराबाद में सत्याग्रह नहीं करने दिया, बल्कि पकड़ कर रियासत की हद के बाहर शोलापुर पहुंचा दिया। तब जिस दिन शोलापुर से गुलबर्गा जाकर स्वामी जी ने अपने चंद साथियों के साथ आर्य सत्याग्रह का शुभारम्भ किया, उसी दिन गुरुकुल के इन विद्यार्थियों ने हैदराबाद के सुलतान बाजार में आर्य सत्याग्रह का प्रथम शंखघोष किया।

मजिस्ट्रेट ने पहला प्रश्न किया—'आप सब लोग विद्यार्थी हैं ?' उत्तर मिला—'जी हां।' फिर अगला प्रश्न—'तब तो आप सब पढ़े-लिखे हैं इसलिए सबने हिन्दुस्तान का नक्शा तो देखा ही होगा ?' 'अवश्य।' फिर अगला प्रश्न—'उसका रंग क्या है ?' उत्तर दिया—'लाल।' तब मजिस्ट्रेट ने शायद हम सबके खद्दर के कपड़े देख कर कहा—'मगर हमारी लड़ाई तो लाल रंग से है, फिर आप यहां पीले रंग में क्यों आ गए ?'

पाठकों को याद दिलाने की आवश्यकता नहीं कि उस जमाने में ब्रिटिश भारत का रंग नक्शे में लाल रहता था और सब देसी रियासतों का रंग पीला हुआ करता था। मजिस्ट्रेट के उक्त कथन में जो गहरी बात छिपी थी उसे सोचकर हम दंग रह गए। शायद किसी देसी रियासत का मजिस्ट्रेट ही ऐसी बात कह सकता था।

मैंने अपने जत्थे के दलपति की हैसियत से उस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा—'मजिस्ट्रेट साहब। आपने जो पते की बात कही है उसके लिए आपका बहुत बहुत धन्यवाद। पर हम लाल रंग को छोड़कर यदि पीले रंग में आए हैं तो उसका कारण यह है कि हमें लाल रंग में जो धार्मिक और नागरिक अधिकार प्राप्त है वे अधिकार यहां इस पीले रंग में प्राप्त नहीं हैं। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि हम यहां सत्याग्रही बन कर इसलिए नहीं आए हैं कि यह एक मुस्लिम रियासत है अंग्रेजी राज्य के बजाय देसी रियासतों को हम अधिक अपना समझते हैं, इसलिए यह आशा करते हैं कि जो अधिकार अंग्रेजी राज्य में प्राप्त हैं कम से कम उतने अधिकार तो इन देसी रियासतों में भी नागरिकों को प्राप्त होने ही चाहिए। माननीय मजिस्ट्रेट साहब ! यदि आपको हमारे इस सत्याग्रह में साम्प्रदायिकता की गन्ध आती हो, तो आपकी सेवा में अपने सब साथियों की ओर से इतना निवेदन और करना चाहता हूं कि जिस प्रकार निजाम की मुस्लिम रियासत में नागरिक और धार्मिक अधिकारों का हनन हुआ है, यदि वैसा ही हनन कश्मीर में होता, तो हम सत्याग्रह करने के लिए पहले वहां जाते हालांकि वह हिन्दू रियासत है।'

उसके बाद मैंने विस्तार से बताया कि किस प्रकार निजाम रियासत में मूलभूत मानवीय अधिकारों का हनन हुआ है। जब मैंने आंकड़े देते हुए बताया कि पिछले पांच सालों में इस रियासत में इतने मंदिर गिराए गए, इतनी यज्ञ शालाएं ढहाई गईं, इतने स्कूल बन्द किये गए, इतने सामाजिक सत्संगों और उत्सवों पर प्रतिबन्ध लगे, तो अदालत में बैठी भीड़ कमर सीधी करके और गर्दन ऊंची करके मेरी ओर देखने लगी। स्वयं मजिस्ट्रेट साहब भी एक-टक मेरी ओर देखते रहे।

उसके बाद हम पर प्रतिबन्ध तोड़ कर जलसा और जलूस निकालने, जनता को भड़काने, विद्रोहात्मक पर्चे बांटने और राजद्रोह की कार्रवाइयों में भाग लेने के आरोप लगाए गए। (कानून की परिभाषा में धारा 126, 122, 15 और 28) हमने इन सब आरोपों का खण्डन किया और कहा कि हमने इनमें से एक भी कार्य नहीं किया, पर हां, सत्याग्रह अवश्य किया है। जो हमने किया है, उससे मुकरेंगे नहीं, जो नहीं किया है उसे स्वीकारेंगे नहीं। हमने अपने कर्तव्य का पालन कर दिया, अब आप अपने कर्तव्य का पालन करिए।

तब मजिस्ट्रेट ने हरेक धारा में हमें 6-6 मास की सजा दी और अपनी ओर से यह रियायत कर दी कि वे सब सजाएं एक साथ चलेंगी—अर्थात् 6 मास में चारों सजाएं समाप्त हो जाएंगी। इस सजा की घोषणा करते हुए मजिस्ट्रेट ने अपने फैसले में लिखा—"हिन्दुस्तान के इन बहादुर लड़कों को सजा दी जाए।"

सम्पादकीयम्

लगभग आधी सदी पहले घटी इस घटना को स्मृति के कोष में से निकालकर पाठकों के समक्ष उपस्थित करने का अभिप्राय केवल इतना ही है कि उस आर्य सत्याग्रह को जो राजनेता साम्प्रदायिक कहकर कलंकित करने की कोशिश करते रहे, वे कितने भारी भ्रम में थे। सच तो यह है कि आर्यसमाज के चिन्तन में हिन्दू या मुस्लिम जैसी सम्प्रदाय-बोधक शब्दावली को स्थान ही नहीं है। हिन्दू शब्द का भी जब हम समर्थन करते हैं तब उसके राष्ट्र-वाचक अर्थ में ही करते हैं। ऋषि दयानन्द की दृष्टि में मानव जाति एक है, उसी के दो वर्ग हैं—एक आर्य और एक अनार्य। यहां आर्य और अनार्य भी जातिवाची या नस्लवाची न होकर केवल गुणवाची शब्द हैं। आर्य का अर्थ है—श्रेष्ठ आचरण वाला और अनार्य का अर्थ है—कुत्सित आचरण वाला। सारे संसार को आर्य बनाने का अभिप्राय भी इतना ही है कि हम सारे संसार को श्रेष्ठ आचार विचार वाला बनाना चाहते हैं। यही वैदिक धर्म के 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के जयघोष का प्रयोजन है।

आर्यसमाज की धार्मिक चेतना कभी राष्ट्रीय चेतना से अलग नहीं रही। उसका धर्म और उसका राष्ट्र सदा हाथ में हाथ डालकर कदम व कदम एक साथ आगे बढ़ते रहे। जिन्होंने आर्यसमाज को एक सम्प्रदाय के रूप में देखा, उन्होंने कभी आर्यसमाज के साथ न्याय नहीं किया।

हमने स्वयं आर्य सत्याग्रह में जेल जाने से पूर्व महात्मा गांधी को व्यक्तिगत पत्र लिखकर उनकी सेवा में निवेदन किया था कि किन परिस्थितियों में आर्य नेताओं को सत्याग्रह शुरू करने की घोषणा करनी पड़ी। हो सकता है, महात्मा गांधी के मन में शुरू में इस सत्याग्रह के प्रति कुछ विरक्ति या उदासीनता का भाव रहा हो। पर जब उन्होंने देखा कि आर्यसमाज का सत्याग्रह सारे दौर में सर्वथा अहिंसक बना रहा, तब उस अहिंसा के पुजारी को भी कहना पड़ा कि इतना शान्तिपूर्ण सत्याग्रह मैंने इससे पहले नहीं देखा। साम्प्रदायिकता के कट्टर शत्रु प० जवाहरलाल नेहरू को जब यह पता लगा कि 15000 व्यक्ति आर्यसत्याग्रह में निजाम की जेलों में निरन्तर कष्ट सहते रहे, पर किसी सत्याग्रही ने कभी पलट कर हिंसा का आश्रय नहीं लिया, तो वे भी आर्यसमाज के इस आत्मिक और नैतिक बल के आगे नत मस्तक हुए बिना नहीं रहे।

उस पीढ़ी के कांग्रेसी नेता अब नहीं रहे। नहीं रहे वे आर्य नेता भी जिन्होंने लगभग आधी सदी पहले के उस आर्य सत्याग्रह का उद्यापन किया था और उसमें सक्रिय भूमिका निभाई थी। काल का चक्र सबको लील गया। जो थोड़े बहुत सत्याग्रही बचे भी हैं उनमें से कोई भी अब अपनी आयु के छठे और सातवें दशक से कम में नहीं होगा।

जो सरकार केरल के मोपला कांड में शामिल होने वाले साम्प्रदायिकता के शिकार विशुद्ध अपराधियों को स्वतन्त्रता सेनानी का दर्जा देती रही, उसकी नजर यदि अब तक विशुद्ध राष्ट्रवादी आर्यसत्याग्रहियों पर नहीं पड़ी, तो इसमें आश्चर्य ही क्या है।

आखिर अब सरकार के कान पर जूं रेंगी है और उसने हैदराबाद के आर्य सत्याग्रहियों को स्वतन्त्रता सेनानी घोषित किया है। मन में आता है कि कहें—'देर आयद दुरुस्त आयद।' पर फिर यह कहावत भी ध्यान आती है—'जस्टिस डिलेड, जस्टिस डिनाइड' जब न्याय मिलने में विलम्ब हो जाय, तो समझना चाहिए कि न्याय देने से इन्कार कर दिया गया। फिर भी हम भारत के युवा प्रधानमंत्री को धन्यवाद देते हैं कि इस अन्याय के परिमार्जन का श्रेय भी उन्हीं को मिला है। जो काम उनकी जननी और उनके नाना नहीं कर सके, वह काम उन्होंने कर दिखाया। उन सब लोगों के प्रति भी आर्य-सत्याग्रहियों की ओर से शतश: आभार जिनके प्रयत्न से इस अभियान में सफलता मिली। यदि बचे-खुचे कुछ लोग भी इस निर्णय से लाभान्वित हो सकें, और अपने वार्धक्य में कुछ राहत की सांस ले सकें तो उनकी आत्मा की ओर से निकलने वाला आशीर्वाद ही इस निर्णय के कर्ताओं का सबसे बड़ा पुरस्कार होगा।

पर क्या सरकारी नौकरशाही इन वृद्ध स्वतंत्रता सेनानियों को आसानी से राहत की सांस लेने देगी ? इसका उत्तर स्वयं सरकार को ही देना होगा। अन्यथा यह वरदान भी केवल अभिशाप बनकर रह जाएगा।

जब प्रकाश भी में अन्धकार हो

—ब्रह्मप्रकाश शास्त्री विद्यावाचस्पति—

जब ऋषि दयानन्द आये तब किसी को यह विश्वास नहीं होता था कि वेद भारत मे विद्यमान हैं। वेदों को तो शंखासुर पाताल मे ले गया है। ऋषि ने जर्मनी से वेद मंगवाकर दक्षिण के विद्वानों को बुलाकर जनता के सामने सुनवाया, तब कुछ विश्वास हुआ कि वेदो की, ब्राह्मणों ने कठस्थ कर उस कठिन समय मे रक्षा करके महान् उपकार किया। जब वेद शास्त्रो को जलाया जा रहा था, ऋषि ने वैदिक नाद बजाया और रावण, उव्वट, महीधर तथा विदेशी विद्वानों की गलत अर्थ परम्परा को बदल कर अपने वेद-भाष्य द्वारा सार्थक क्रान्ति की धूम मचा दी, तभी तो इस युग के योगी और महर्षि अरविन्द ने कहा है कि ऋषि दयानन्द के समान आज तक किसी भी विद्वान् ने वेदभाष्य नही किया है, यह थी ऋषिवर दयानन्द की सबसे बड़ी विजय, जिसके कारण ऋषि दयानन्द ही इस युग के वेदोद्धारक हैं।

सामाजिक कुरीतियों का उच्छेदन

मानव जीवन की नींव ब्रह्मचर्य आश्रम पर निर्भर करती है, बाल-विवाह की कुत्सित प्रथा से भारतीय समाज जीर्ण क्षीण हो चुका था, अष्ट वर्षा भवेद् गौरी, इत्यादि अवैदिक विचार भारतीय समाज को खाये जा रहे थे, ऋषि ने इन विचारों का डटकर विरोध किया, जिसके परिणाम स्वरूप श्रद्धानन्द दर्शनानन्द आदि ऋषि के शिष्यों ने गुरुकुलों की स्थापना करके ब्रह्मचर्य आश्रम का पुनरुद्धार किया। नारी जाति को वेद पठन-पाठन का अधिकार दिलाकर, जो बाल विधवाएं हाहाकार और चीत्कार कर रहीं थी, उनके लिए ऋषि ने प्रबल आन्दोलन तथा तत्पश्चात् आर्यसमाज द्वारा विधवा तथा अनाथ आश्रमों की स्थापना से विधवा विवाह के विरोधी भी प्रबल समर्थक बन गये।

अछूतोद्धार

इसी प्रकार ईसाई और मुसलमान आर्य जाति को भेड बकरियों की तरह मूंड रहे थे। अकबर बादशाह ने हिन्दू धर्म से प्रभावित होकर जब बीरबल से हिन्दू बनने की इच्छा प्रकट की तो एक दिन बादशाह के साथ सैर को गये हुए बीरबल ने यमुना तट पर एक गधे की पीठ पर खुरैरा फेरना आरम्भ किया, और अकबर ने पूछा कि बीरबल यह क्या कर रहे हो, तो बीरबल ने उत्तर दिया कि जहाँपनाह इसकी गाय बना रहा हूं। उस समय बादशाह ने कहा कि कहीं गधे से भी गाय बन सकती है, इस पर बीरबल का उत्तर था कि जिस प्रकार गधे गाय नहीं बन सकती है, उसी प्रकार मुसलमान से हिन्दू भी नहीं बन सकता है। इस प्रकार के दूषित विचार भारत के जन-जन में व्याप्त हो गये थे। यदि कोई व्यक्ति मुसलमान का छुआ पानी पी लेता था, तो उसे तत्कालीन ब्राह्मण समाज के विरोध से कोई भी अपनाने को तैयार नही होता था। ऋषि दयानन्द ने डटकर शुद्धि और अछूतोद्धार करके इस कार्य को क्रियात्मक रूप दिया। ऋषि के पश्चात् स्वामी श्रद्धानन्द पं० लेखराम आदि अनेक ऋषि के शिष्यों ने भारत भर में विशेषकर उत्तर भारत में शुद्धि का डंका बजाकर मौलवियों तथा पादरियों के छक्के छुड़ा दिये, और आज वह दिन है जबकि सभी शंकराचार्य और सनातन धर्म सभायें शुद्धि और अछूतोद्धार का प्रबल समर्थन करती हैं। यह ऋषि दयानन्द की विजय नही तो किसकी विजय है।

'नमस्ते' का प्रचलन

इस प्रकार ऋषि दयानन्द का आर्यसमाज अन्य अनेक दिशाओं में भी विजय प्राप्त कर चुका है। जैसे वैदिक अभिवादन का शब्द नमस्ते भारत ही नही संपूर्ण विश्व में जहाँ कही भी हिन्दू बसते हैं, व्याप्त हो चुका है। भूत प्रेत का अन्धविश्वास इतना अधिक व्याप्त था कि गाँव के बाहर पीपल आदि के पेडों तथा श्मशानों में भूत-प्रेतों का वास समझा जाता था यह विश्वास भी सत्यार्थ-प्रकाश तथा आर्य उपदेशकों ने नष्ट प्रायः कर दिया है। इसी प्रकार और भी अनेक उपलब्धियों का ताज ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज को पहनाया जा सकता है।

ऋषि दयानन्द के समय में अज्ञान-अविद्या और पाखण्ड का जबरदस्त बोलबाला था, ऋषि को मतमतान्तरों तथा पाखण्डों से जबरदस्त टक्कर लेनी पड़ी थी, और अनन्तकाल तक यह संघर्ष चलता रहा था। परिणाम स्वरूप विरोधी पाखन्डी दल थर्रा गया था। सन् १९२४ ई० महर्षि जन्म शताब्दी मथुरा तक आर्यसमाज पाखण्डों के उन्मूलन में प्रगति करता रहा, परन्तु फिर इसे क्या साँप सूघ गया शिथिलता आनी आरम्भ हो गई, और यह शिथिलता अब चरम सीमा पर पहुंच चुकी है। स्वतन्त्रता से पूर्व जहाँ आर्य प्रतिनिधि सभाओं में उपदेशकों की संख्या पचास साठ तक होती थी, वहाँ अब पाँच छ या अंगुलियों पर गिनने लायक भी नहीं रही है। शास्त्रार्थ बन्द हो चुके हैं। इसीलिए पाखण्ड बढ़ रहा है। नये-नये मत-मतान्तर जन्म ले चुके हैं। धर्म के ठेकेदारों और भगवानों की फौज बढ़ती चली जा रही है।

आर्यसमाज का कर्तव्य

विद्युत के प्रकाश और आश्चर्य में डालने वाले अद्भुत आविष्कारों से मानव का मस्तिष्क अपनी चरम सीमा पर पहुचता चला जा रहा है। पुनरपि अन्ध-विश्वासों का दास बनता चला जा रहा है। झूठे भगवानों की तरह ही देवियों तथा भगवतियों की भी भयंकर बाढ़ आ गई है। कुछ वर्ष पहले तक वैष्णों देवी की बहुत कम चर्चा थी, परन्तु अब यह देवी भारत व्यापी बन गई है। अनेक झूठी नई-नई देवियों का प्रचार बढ़ रहा है, जैसे सन्तोषी माता की उत्पत्ति हिन्दुओं की अक्ल का लाभ उठाकर हुई है। सब कुछ आर्य नेताओं तथा आर्य जनता के सामने हो रहा है, और हम बुतों की तरह सब कुछ देखते हुए भी इसे नजरअन्दाज कर रहे हैं। अब हमारा कार्य केवल जयकारों तथा कभी-कभी हवन कर लेने तक ही सीमित होता चला जा रहा है। दिन-प्रतिदिन वेदप्रचार घट रहा है। हमारे वार्षिकोत्सव मैदानो से सिमट कर आर्य समाज मन्दिरों तक ही सीमित होते चले जा रहे हैं। याद रक्खो। ऋषि ऋण नही उतारा तो सर्वनाश हो जावेगा, अब भी समय है आर्य-संस्कृति को केवल आर्य समाज ही बचा सकता है।

पता—शास्त्री सदन ११/१२४ पश्चिम आजाद नगर दिल्ली-५१

आर्य समाज मन्दिर मार्ग का उत्सव

आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग का 61वां वार्षिकोत्सव दिनांक 22,23 तथा 24 नवम्बर 1985 को बडे समारोह के साथ मनाया जा रहा है। समारोह का शुभारम्भ 18 नवम्बर प्रात. काल गायत्री महायज्ञ से होगा जो 24 नवम्बर तक प्रतिदिन प्रात काल 7 से 8 बजे तक होगा। 18 नवम्बर को रात्रि साढ़े सात से आठ बजे तक भजन कीर्तन होगे और आठ बजे से नौ बजे तक प्रतिदिन आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान प० शिवकुमार जी शास्त्री का वेद प्रवचन होगा। यह कार्य क्रम 23 नवम्बर तक चलेगा। 22 नवम्बर को मध्याह्न 12 बजे से सायं काल पाच बजे तक स्त्री—समाज का वार्षिकोत्सव होगा। इस अवसर पर वेद सम्मेलन का भी आयोजन किया गया है, जिसमे उद्घाटन भाषण श्रीमती प्रकाश शर्मा तथा अध्यक्षीय भाषण श्रीमती प्रकाशवती बुग्गा करेगी। 23 नवम्बर को प्रात: साढे नौ बजे से डेढ बजे तक छात्र-छात्राओ की भाषण प्रतियोगिता एव सास्कृतिक कार्यक्रम होगे, जिसकी अध्यक्षता श्रीमती संतोष तनेजा करेंगी। इसी दिन मध्याह्न ढाई बजे से पाच बजे तक केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के समस्त मण्डल एव प्रान्तीय अधिकारियो की बैठक होगी। 24 नवम्बर को प्रात: काल यज्ञ की पूर्णाहुति होगी और प्रसाद वितरण के उपरान्त 10 बजे से 1 बजे तक श्री दरबारीलाल जी के संयोजकत्व मे सर्वश्री प० शिवकुमार जी शास्त्री, प० क्षितीश जी वेदालंकार, प्रो० रत्नसिंह जी, आचार्य पुरुषोत्तम जी, आचार्य हरिदत्त जी शास्त्री, आदि के विशेष प्रवचन तथा पुष्किन जी एव हंसराज जी के भजन होगे। मध्याह्न 1 बजे से 2 बजे तक ऋषि लगर होगा और तदुपरान्त 2 से 5 बजे तक आर्य युवा महासम्मेलन का आयोजन किया गया है।

ऋषि निर्वाण दिवस तथा ज्योतिपर्व दीपावली

आर्य अनाथालय फिरोजपुर की भव्य विशाल यज्ञशाला में प्रात:काल दीपावली का वृहद्-विशिष्ट यज्ञकार्य श्री व श्रीमती चौधरी के यजमानत्व मे श्रीमन मोहन शास्त्री ने सम्पन्न करवाया। उन्होने दीपावली का ऐतिहासिक महत्व समझाया। भगवान महावीर तथा महर्षि दयानन्द के अहिंसा-सत्य तथा राष्ट्रप्रेम व परस्पर भ्रातृत्व भावना को तथा मर्यादा पुरुषोत्तम राम की उत्तम मर्यादाएं तथा अनुशासन व प्रजापालन भावना को अपनाने का सभी से आग्रह किया। अपने अध्यक्षीय भाषण में चौधरी साहब ने सभी आमन्त्रितों व बच्चो को अपनी तथा संस्था की ओर से हार्दिक शुभाशीष तथा शुभकामनाएं अर्पित करते हुए महर्षि दयानन्द तथा भगवान महावीर की अहिंसा, सत्यप्रियता, स्वतन्त्रता की प्राप्ति व रक्षण की उत्तम भावना तथा विवेकपूर्ण कार्यक्षमता तथा शारीरिक व आत्मिक व मानसिक संयम व विकास भावना को जीवन में अपनाने को महत्व दिया। शान्तिपाठ व मिष्ठान्न वितरण के साथ ही सभा विसर्जित हुई।

आर्य समाज-अमर कालोनी

आर्य समाज कालोनी, ऋषि दयानन्द मार्किट नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव 8 से 10 नवम्बर तक मनाया गया। इससे पूर्व 1 से 7 नवम्बर तक पारायण यज्ञ और वेद कथा का आयोजन किया गया जिसमें कथा वाचक और ब्रह्मा महात्मा राम किशोर वैद्य थे। उत्सव में प्रसिद्ध विद्वान और उपदेशकों ने भाग लिया।

नेपाल में आर्य सामाजिक जागृति के सूत्रधार

पं० माधवराज जोशी

—डा० भवानीलाल भारतीय—

नेपाल में आर्य समाज विषयक जागृति का श्रेय इतिहासज्ञ पं० शुक्रराज शास्त्री के पिता पं० माधवराज जोशी को जाता है। जोशीजी का परिवार राज-सेवकों (ज्योतिषियों) का परिवार था। इनके पिता का नाम श्रीकण्ठराज तथा पितामह का नाम विघ्नराज था। ये अपने पिता के दूसरे पुत्र थे। इनका जन्म ज्येष्ठ कृष्णा 2 बुधवार 1916 वि० को हुआ था। 1876 ई० मे इन्हे स्वामी दयानन्द से काशी में भेंट करने का अवसर मिला था। स्वामी दयानन्द के इस साक्षात्कार से इनके विचारो में आमूल चूल परिवर्तन आया और वे वैदिक धर्म के प्रति कट्टर आस्थावान होकर स्वदेश लौटे। प्रचलित परिपाटी के अनुसार बारहवें वर्ष मे यज्ञोपवीत के तुरन्त बाद ही उनका विवाह भी हो गया।

सत्रह वर्ष की आयु मे ये काशी आये उस समय स्वामी दयानन्द उत्तमगिरी के बगीचे मे निवास करते थे। माधवराज ने स्वामी जी से भेंट की तथा उनसे विभिन्न शकाओ का समाधान प्राप्त कर सतोष अनुभव किया। स्वदेश लौटकर वे नेपाल के राणाओं की सेवा मे लग गये। पं० माधवराज की आस्था अद्वैतवाद मे घनीभूत हो गई थी। उन्होने योगवासिष्ठ का अध्ययन नितान्त गम्भीरता से किया था। किन्तु एक दिन काशी में जब उनका कमाण्डिग जनरल रणवीरजग से अद्वैतवाद विषयक वार्तालाप हुआ तो उन्हें इस सिद्धात में व्याप्त खामियो का ज्ञान हुआ। फलत: शङ्कर अद्वैत मत के प्रति उनकी आस्था समाप्त हो गई और वे द्वैतवादी (जीवेश्वर भेद को स्वीकार करने वाले) बन गये।

पं० माधवराज के विचारों मे आमूल चूल परिवर्तन का कारण बना सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन। इस ग्रन्थ की प्राप्ति का भी एक रोचक इतिहास है। जिस समय वे पोखरा (नेपाल) मे निवास कर रहे थे, उस समय उनकी भेंट एक सज्जन चिनिया वैद्य से हुई जो जोशी जी के निकट अपना जन्म पत्र दिखाने आये थे। यहां यह स्मरणीय है कि माधवराज जोशी वंश परम्परा प्राप्त ज्योतिषी का व्यवसाय करते थे। प्रसंग उपस्थित हुआ तो चिनिया वैद्य और जोशी जी के बीच अद्वैतवाद पर वाद-विवाद छिड गया। इसी बीच वैद्यजी के पुत्र ने आकर कहा पं० माधवराज अद्वैतवाद के खण्डन मे जिस युक्तिक्रम को उपस्थित कर रहे हैं वह एक पुस्तक में लिखा है जो उनके पास है। जोशीजी के मांगने पर वैद्य पुत्र ने धून से सनी वह पुस्तक लाकर उन्हें दी, जिसे आद्योपान्त पढ़ने से प० माधवराज के विचारों मे क्रातिकारी परिवर्तन हुआ और वे वैदिक धर्म के प्रति अनन्य आस्थावान बन गये। यह घटना 1952 वि० (1895 ई०) की है और वह पुस्तक थी सत्यार्थप्रकाश।

जोशी जी इस ग्रन्थ का अध्ययन और मनन निरन्तर 2-3 वर्ष तक करते रहे। जब आर्यसमाज के सिद्धांतों के प्रति उनकी निष्ठा दृढ़ हो गई तो उन्होंने आषाढ़ कृष्णा 2. सं० 1953 वि० के दिन पोखरा नगर में आर्यसमाज की स्थापना की। अब उन्होंने स्वामी प्रेस मेरठ के संस्थापक पं० तुलसीराम स्वामी से पत्र व्यवहार किया और स्वामी दयानन्द के सभी ग्रन्थों को मंगा कर उनका गम्भीर अनुशीलन किया। जोशी जी के ही प्रयत्नो से पौष शुक्ला 5 सं० 1955 वि० के दिन पाटन (ललितपुर) मे भी आर्य समाज की स्थापना हुई। जिन दिनों जोशी जी नेपाल मे आर्यसमाज का प्रचार कर एक महान् धार्मिक क्राति का सूत्रपात कर रहे थे, उन दिनों नेपाल धार्मिक एवं सामाजिक दृष्टि से अत्यन्त पिछड़ा हुआ था। हिन्दू राष्ट्र कहलाने वाले इस देश मे नाना देवी देवताओ की पूजा, देवताओ के नाम पर पशुबलि, छुआछूत आदि कुप्रथायें प्रचलित थी। जब जोशी जी ने बिना जाति भेद की परवाह किये आब्राह्मण शूद्र पर्यन्त नेपाल वासियों को वेद पढाना आरम्भ किया तो कट्टर पंथी ब्राह्मणो ने तत्कालीन राणा शासको से उनकी शिकायत की। पूछे जाने पर जोशीजी ने निर्भीक भाव से उत्तर दिया कि स्वयं वेदों में ही यह आदेश दिया गया है कि परमात्मा की इस कल्याणी वाणी का प्रचार आब्राह्मण चाण्डाल पर्यन्त मनुष्यों मे होना चाहिए। उन्होंने यजुर्वेद के 'यथेमां वाच' मंत्र को उद्धृत किया।

1958 वि० में पं० माधवराज जोशी ने नेपाल देश की राजधानी काष्ठमण्डप (प्रचलित नाम काठमाण्डो) मे साहु लाल बहादुर के घर आर्यसमाज की स्थापना की। इस समय जोशी जी द्वारा वैदिक धर्म प्रचार तथा नेपाल मे प्रचलित वाम-मार्ग पशुबलि मूर्तिपूजा आदि अनाचारों का द्रुत गति से खण्डन होने लगा। लोग बड़ी संख्या में उपस्थित होकर उनके स्फूर्तियुक्त वचनों को सुनते। 26 जून 1901 को चन्द्र शमशेरजंग राणा, नेपाल के प्रधान मंत्री के पद पर प्रतिष्ठित हुए। उनके शासन काल में आर्यसमाज का प्रचार हुआ। राणावंश के अनेक लोग भी इस धर्मोपदेश को सुनने के लिये आते। शंकासमाधान करने में भी लोग संकोच नही करते। हर्षजंग राणा के साथ जोशी जी लगभग सात मास रहे और वहा भी वैदिक धर्म का प्रचार किया। इन्हीं दिनो उन्होने स्वामी दयानन्द कृत यजुर्वेद भाष्य का मनन किया और सैकडो मंत्रो को भावार्थ सहित कण्ठस्थ कर डाला।

1961 वि० (भाद्रपद) में जोशी जी की माता का निधन हो गया उन्होने वैदिक-रीति से माता की अन्त्येष्टि क्रिया संपन्न की। पौराणिक पाखण्डों के क्रीडास्थल नेपाल में इस वैदोक्त अन्त्येष्टि रीति से शव दाह प्रथम बार ही हुआ था। अत: पुराणपंथियों में खलबली मच गई। इसी बीच उनके पिता तथा ज्येष्ठ पुत्र की भी मृत्यु हो गई। उनके सस्कार भी उन्होंने वेदोक्त रीति से ही किये। इस पर पौराणिकों का उद्विग्न होना स्वाभाविक ही था। लोगो ने जोशीजी को नास्तिक कहा तथा श्मशान मे होम करने वाला नास्तिक' कहकर उन्हे बदनाम किया। यहां तक कि पिता की तेरहवी के दिन जोशी जी ने प्रचलित रिवाज के अनुसार मासाहार का आयोजन करने से इंकार कर दिया। जिसके फलस्वरूप उनके परिजनो ने भी उनका विरोध किया। विरोधियो का यह विरोध इतना तीव्र हुआ कि उन्होने राजगुरु प्रयागराज के पास जाकर माधवराज की शिकायत की। उनका कहना था कि इसने अपने पिता का दाह संस्कार जिस रीति से किया है वह नेपाल के ब्राह्मणो मे प्रचलित प्रथा के प्रतिकूल है और अब वह तेरहवीं के दिन मासाहार का आयोजन करने से भी इन्कार करता है। राजगुरु ने उन्हे विश्वास दिलाया कि वे जोशी के विरुद्ध उचित कार्यवाही करेंगे।

जब बहुत कुछ डराने, धमकाने और समझाने पर भी माधवराज अपने न्यायोचित मार्ग से विचलित नही हुए तो राजगुरु ने उन्हों श्रावण कृष्णा 11 स० 1962 के दिन राज दरबार में उपस्थित होकर सनातनधर्मी पण्डितो से शास्त्रार्थ के लिये आहूत किया। निर्भीकता की प्रतिमा जोशीजी अकेले ही दरबार मे चले गये। उनसे शास्त्रार्थ करने वालो मे प० विश्वनाथ शास्त्री, पं० गंगादत्त शास्त्री, पं० कालिदास सुब्बा आदि 30-40 पंडित थे जिन्होने घेरा डाल कर ठीक मध्य मे जोशीजी को स्थान दिया। राजपुरोहित भी उनके समक्ष आकर बैठ गये। प्रथम पडित विश्वनाथ शास्त्री से उनका मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ हुआ। मूर्तिपूजा, वर्णव्यवस्था आदि पर भी चर्चा चली। माधवराज ने अपने पक्ष को अत्यन्त प्रबलता से प्रस्तुत किया जिसके कारण विपक्षी पंडितो को निरुत्तर होना पड़ा। इस प्रकार प्रथम दिन का शास्त्रार्थ-विचार सामाप्त हुआ। दूसरे दिन-श्रावण कृष्णा 12 को जोशी जी पुन: राज दरबार में उपस्थित हुए। उस समय सभा मे नेपाल नरेश महाराजाधिराज पृथ्वी वीर विक्रम शाह देव, प्रधान मंत्री चंद्र शमशेर राणा, प्रधान सेनापति भीम शमशेर तथा अन्य उच्च पदासीन व्यक्ति उपस्थित थे। शास्त्रार्थ में पं० माधवराज की सहायता के लिये पंजाब के निवासी श्री गुरुदयाल बी० ए० भी उपस्थित थे। ये महानुभाव आर्यसमाजी थे और दुर्गा-शमशेर राणा के पुत्रो को अग्रेजी पढ़ाने के लिये नियुक्त थे। आज शास्त्रार्थ द्विजेतर जातियो को वेद पढ़ाने के औचित्य से आरम्भ हुआ। बीच में मूर्ति-पूजा तथा मृतक श्राद्ध की चर्चा चली। जब पण्डितगण जोशी जी के प्रश्नो का समाधान कारक उत्तर नही दे सके तो महाराज चन्द्र शमशेर ने उनसे विभिन्न विषयो पर प्रश्नोत्तर किये जिनका उन्हें सन्तोषजनक उत्तर मिला।

जब माधवराज जोशी ने अपने वैदुष्य से सभी पण्डितो और स्वयं प्रधान मंत्री को भी प्रभावित कर मौन धारण करने के लिये विवश किया तो उपस्थित पौराणिक मण्डली मे खलबली मच गई। जब थोडी देर के लिये सभा मे शान्ति छा गई तो जोशी जी ने पंजाब-निवासी मास्टर गुरुदयाल से कहा कि वे ईश्वर विषय पर कुछ प्रवचन करे। जोशी जी की प्रेरणा से मास्टर जी बोलने के लिये खड़े हुए और अथर्ववेद के 'यस्य भूमि: प्रमा:' आदि मंत्रो की व्याख्या कर निर्भीक शब्दो मे कहा—"उस सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सर्वज्ञ ब्रह्म के स्थान मे सोना, चादी, ताबा, पीतल, कांसा, लोहा, पत्थर, काठ, मिट्टी आदि में ईश्वरभाव रख कर उपासना करना बिलकुल निषिद्ध है।" इतना सुनते ही राजगुरु प्रयागराज ने झट अपनी टोपी उतारी और रोनी सूरत बना कर प्रधान मंत्री की ओर अभिमुख होकर कहा—"महाराज हमारे पशुपतिनाथ महादेव को पत्थर बताने वालों को कूट पीट करने पाऊं, नही तो हम लोग जितने पवतीय ब्राह्मण है, यहां नेपाल में नहीं रहेंगे।" राजगुरु के मुख से इन कातर वचनों को सुनते ही महाराज चन्द्रशमशेर ने 'आज्ञा दे दी कि इन लोगो की पिटाई करो। तैयारी तो ये लोग पहले ही करके आये थे। अब इशारा मिलते ही उदण्ड पंडितों का यह समूह बेचारे जोशी जी तथा पंजाबी मास्टर पर टूट पड़ा। जब बहुत अधिक मार पड़ी तो चन्द्रशमशेर के हस्त-क्षेप पर यह अनाचार बन्द हुआ।

नेपाली पंडितों को नेपालदेशीय पं० माधवराज जोशी को तो पीटने में कोई संकोच नही हुआ किन्तु उन्हे भय था कि पंजाबी मास्टर गुरुदयाल तो भारत के नागरिक हैं। यदि उनका अनिष्ट हुआ तो ब्रिटिश सरकार नेपाल के प्रति अपना विरोध प्रकट कर सकती है। यही समझ कर मास्टर गुरुदयाल को स्वल्प दण्ड देने के पश्चात् शासक वर्ग ने उन्हे नेपाल से निष्कासित करने का आदेश दे दिया।

माधवराज जोशी के पुत्र पं० शुक्रराज शास्त्री ने इस वृतांत को लिखने के प्रसग में यह स्पष्ट किया है कि उन्हे तथा उनके पिता को कालान्तर मे मास्टर जी

(शेष पृष्ठ 9 पर)

अविस्मरणीय समाज सेवक गन्धर्वराज पुरी

—डा० सीताराम सहगल—

विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ पञ्चतन्त्र में लिखा है—"नीच लोग विघ्न के भय से कोई कार्य नही करते, मध्यम श्रेणी के लोग कार्य को आरंभ करके विघ्न पड़ने पर बीच में ही छोड़ देते हैं, किन्तु उत्तम लोग बार-बार विघ्नों को झेलते हुए आरम्भ किए हुए काम को बीच मे नहीं छोड़ते, उसे सफल बनाकर ही दम लेते है।" उनके साहस में प्रतिभा का निखार, अपूर्व शक्ति और संमोहक जादू पैदा होता है। दूसरों के लिए वे उदाहरण बन जाते हैं।

ऐसे ही एक उदाहरण थे श्री गन्धर्वराज पुरी। 1972 मे रक्षा-मन्त्रालय से सेवा-निवृत्त होकर उन्होने राजौरी गार्डन आर्यसमाज में सेवा शुरू की। उन्होने अपने व्यवहार, विद्या तथा अनुभव से साथियों का हृदय जीत लिया। विदेह जी के वेद संस्थान मे भी सेवा आरम्भ की। कई लोगो को सदस्य बनाया। वहां भी अपनी प्रशासनिक योग्यता से वैदिक प्रचार-प्रसार को गति प्रदान की।

सेवा निवृत्त जनसंस्थान की नींव

परन्तु उन्हें इतने मात्र से भी सन्तोष न मिला। वे चाहते थे कि सेवा निवृत्तजनो को सगठित किया जाए और उनके साथ मिल कर वानप्रस्थ आश्रम का आधुनिकीकरण हो। जब उनके प्रस्ताव का अनुमोदन समानधर्माओं ने हृदय से किया तो उन्होंने 1976 में सदस्यता का आन्दोलन शुरू कर दिया। चरित्रवान् लोगों ने जब इसका शंखनाद सुना तो वे स्वयं सेवा के लिए आगे बढ़े।

यह पहली संस्था थी जिसने अपने सदस्यों में विश्वास, आस्था और निष्ठा की छाप छोड़ी थी।

श्री पुरी स्वभाव के सात्त्विक, वाणी के मधुरभाषी, व्यवहार में चतुर, स्वास्थ्य मे दुर्बल परन्तु रोगग्रस्त शरीर को भी योगासनों द्वारा स्वस्थ रखने में निष्णात, राग द्वेषादि से दूर निर्लोभ, निर्मोह, निर्मत्सर, स्वाध्यायरत, वैदिक धर्म में निष्ठावान्, दूसरो के दुख मे समवेदनाशील व्यक्ति थे। स्वभावत: अजातशत्रु थे। इन्ही गुणों ने सबको चुम्बक की तरह आकर्षित किया।

डी०ए०वी० कालेज का प्रभाव

पुरी जी छात्रावस्था में मेधावी छात्र थे। उनकी शिक्षा दयानन्द एंग्लोवैदिक कालेज जालन्धर में ही हुई। जहाँ से उन्होंने 1932 में बी० ए० किया। आर्यसमाज का तब अवैतनिक काम भी करते रहे। उस समय तक जालन्धर शिक्षा का प्रधान केन्द्र था, केवल वहाँ ही बी०ए० की शिक्षा का प्रबन्ध था। सन् 1918 में इसकी स्थापना हुई जिसके प्रिंसिपल पं० मेहरचन्द थे। उन्होने महात्मा हंसराज के पद-चिह्नो पर चलकर 1918 से 1944 तक अवैतनिक सेवा की। श्री पुरी ऐसे वातावरण में फले-फूले जिसकी छाप उनके हर काम पर अचूक थी। बी० ए० में उन्होंने इतिहास के साथ, दूसरे विषय में संस्कृत साहित्य का अध्ययन किया था जिसके प्रख्यात अध्यापक थे प्रो० रामचन्द्र शर्मा जिनमें आर्यसमाज की सत्यवादिता और निश्छलता मूर्तरूप मे पाई जाती थी। वे छात्रों मे आदर्श जीवन निखारने मे पारखी थे। बी० ए० के बाद लॉ कालेज लाहौर से एल एल० बी० परीक्षा मे सफलता प्राप्त की। कुछ समय तक होशियारपुर मे वकालत करते रहे।

बाद मे वकालत छोड़कर वे रक्षा मंत्रालय की सरकारी नौकरी मे चले गए जहाँ से वे 1972 में सेवा निवृत्त हुए।

समाज सेवा बनाम आध्यात्मिकता

हक्सले ने अपनी पुस्तक—'मैन इन दि माडर्न वर्ल्ड' में लिखा है कि मनुष्यों के समाज में वृद्ध ही नेता होता है। सिंह भैंसो आदि पशुओ में बूढ़ा नेता नही बनता। मनुष्यों में 80 साल का चर्चिल, लंगड़ा-लूला रूजवेल्ट, गांधी, विनोबा, नेहरू नेता बन सकते है क्या ये लोग किंगकाग थे? नहीं। मनुष्य की जीवविज्ञान की दृष्टि से एक विशेषता है—बुद्धि और मनुष्य की शक्ति का स्थल बुद्धि ही है—बुद्धिर्यस्य बलं तस्य। बस, इसी विशेषता के धनी थे हमारे श्री पुरी जी।

वेदान्त शास्त्र में लिखा है कि 'तत्त्वमसि'—तू ब्रह्म है। अह ब्रह्मास्मि'—मैं भी ब्रह्म हू। यानी तेरे में 'तू पन' मिथ्या है और मेरे में 'मैं पन' मिथ्या है। दोनों की समानता ही सत्य है। सब कुछ सत्य है जिसे वेद में 'ऋतं च सत्यं च' कहा है। यही से सामाजिकता, नैतिकता का चरित्र भी शुरू होता है। चरित्र की शुरूआत अकेले में नही होती। भला जंगल मे बैठे हुए को चरित्र की क्या जरूरत? जहां एक-दूसरे के साथ सम्बन्ध होता है वही से सामाजिकता व नैतिकता शुरू होती है। इसी से 'आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पश्यति' की नैतिकता आरम्भ होती है। पड़ौसी से प्रेम करो। इसका जवाब न ईसा के पास है और नाही नीतिकार के पास। अगर है तो वह अध्यात्म-शास्त्र के पास है—क्योंकि पड़ौसी और मैं एक हैं इसलिए प्रेम शुरू होता है। यह कैसे जाना? क्योंकि दूसरे के दुख में दुःखी और सुख में सुखी होना मनुष्य के स्वभाव में है। ईश्वर की सृष्टि में 'सत्यं शिवं सुन्दरं' की झाकी दीखती है। केवल इसका अनुभव होना चाहिए। माता-पिता अपनी सन्तान से और सन्तान अपने माता-पिता से लड़ाई-झगड़ा नहीं करता किन्तु आपस में प्रेम ही प्रेम बरसाते हैं। झगड़ा अज्ञानावस्था में ही होता है यही भारतीय साम्यवाद है। इसी वाद से प्रेरित थे श्री पुरी जी। इनका जन्म 31 मई 1912 को हुआ और जन्म-स्थान पट्टी होशियारपुर है। निधन होली फैमिली दिल्ली के अस्पताल में 27-9-85 को हुआ। इनके दो पुत्र है—बड़ा इन्जीनियर तथा छोटा दिल्ली में प्रोफैसर है।

जीवन में उन्होने दधीचि ऋषि की तरह अस्थिदान नहीं अपितु नेत्र दान का संकल्प किया था जो उनके परिवार ने पूरा कर दिया। भर्तृहरि ने उनके जीवन पर एक रचना पहले ही कर दी थी—

ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता
शौर्यस्य वाक्संयमो।
ज्ञानस्योपशमः कुलस्य
विनयो वित्तस्य पात्रे व्ययः।
अक्रोधस्तपसः क्षमा बलवता
धर्मस्य निर्व्याजता।
सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं
शीलं परं भूषणम्॥

ऐश्वर्य का भूषण सज्जनता, शूरता का वाक्संयम, ज्ञान का शांति, कुल का विनय, धन का सुपात्र के लिए व्यय, तपस्वी का भूषण क्रोध न करना, बलवान् का क्षमा, धर्म का निश्छलता और सब गुणों का आभूषण केवल शील है।

डब्ल्यू—४३, राजौरी गार्डन,
नई दिल्ली-२७

*

आर्य बाडी-बिल्डिंग सैन्टर

दिल्ली, 27 अक्तूबर (रविवार) केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् पश्चिमी दिल्ली ने बृज विहार निकट पीतम पुरा में "आर्य बोडी-बिल्डिंग सैन्टर" की स्थापना की गई है, व्यायाम प्रशिक्षक श्री वेदप्रकाश आर्य (पहलवान) ने कहा कि यहा नौजवानो को योग-आसन, दण्ड-बैठक, शरीर-सौष्ठव का निः शुल्क प्रशिक्षण दिया जायेगा।—चन्द्र मोहन आर्य

पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना के सहयोग से आर्य युवक सभा लुधियाना की ओर से 3 नवम्बर को श्रीराम शक्ल यादव के निवास पर पारिवारिक सत्संग का आयोजन किया गया। यज्ञ प० सुरेन्द्र कुमार शास्त्री ने कराया। श्री किरपाराम, श्री यशपाल, श्री ज्ञानप्रकाश, श्रीमती रोजेश्वरी, ज्ञानी गुरदयाल सिंह, श्री नवनीत लाल टीपरा आदि के भजन और व्याख्यान हुए।

—रोशन लाल शर्मा

वाल्मीकि प्रकटोत्सव

आर्य समाज, फतेहआबाद (पंजाब) मे महर्षि वाल्मीकि प्रकटोत्सव धूम-धाम से मनाया गया। जिसमे श्री निवास शर्मा और हरिजन नेता श्री राजपाल ने भाग लिया, इस अवसर पर डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल के बच्चों का सास्कृतिक कार्य-क्रम हुआ।—बृजमोहन भंधारी

निर्वाणोत्सव

आर्य समाज, लोधी रोड़ (जोर बाग नई दिल्ली मे महर्षि दयानन्द निर्वाणोत्सव 10 नवम्बर को श्री सोमनाथ मरवाह की अध्यक्षता और श्री राजेन्द्र सच्चर के मुख्य अथितित्व में सम्पन्न हुआ। सभा को श्री यशपाल कपूर और आचार्य भगवान देव ने सम्बोधित किया।

■

चत्वारो मूर्ख पण्डिताः

—म०म० आचार्य विश्वश्रवा व्यास वेदाचार्य एम०ए०—

एक कथा प्रसिद्ध है।

अपि शास्त्रे कुशला लोकाचार विवर्जिताः।
सर्वे ते हास्यता प्राप्ताश्चत्वारो मूर्ख पण्डिताः॥

चार उच्च कोटि के विद्वान सब शास्त्र पढ़कर पोथी पत्रा साथ मे लेकर काशी से अपने घर को चले। रास्ते मे श्मशान पडा। वहा एक गधा लेटा हुआ था उस को देख कर एक पण्डित ने पोथी खोलकर पढ कर सुनाया—

राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः

अर्थात्-राजद्वार और श्मशान में जो स्थित होता है वह बन्धु होता है। यह गधा जो श्मशान मे पडा है हमारा बन्धु है यह कहकर सब उस गधे को गले लगने लगे।

तब तक एक ऊंट बहुत तेजी से जा रहा था उस को देख कर दूसरे पण्डित ने किताब खोलकर पढ़ा—

धर्मस्य त्वरिता गतिः।

अर्थात् - धर्म की चाल बडी तेज होती है। यह ऊट धर्म है, क्योकि तेज दौड रहा है।

तीसरे पण्डित ने पुस्तक खोलकर पढ़ा—

'इष्टं धर्मेण योजयेत्'

अर्थात्—बन्धु को धर्म के साथ जोड देना चाहिये। यह ऊंट धर्म है और यह गधा बन्धु है। यह कहकर उन्होने गधे को ऊट की गर्दन में बांध कर लटका दिया।

अब ये मूर्ख पण्डित आगे चले तब एक नदी आई उस मे पत्ते बहे चले जा रहे थे। तब चौथे पण्डित ने शास्त्र वचन पढ़ कर सुनाया—

'आगमिष्यति यत् पत्रं तदस्मान् तारयिष्यति।'

अर्थात् शास्त्रो में लिखा है कि पत्रा आवेगा वह हम को पार कर देगा। अतः ये पत्ते हम को नदी पार कर देंगे यह कह कर चारों पण्डित एक एक पत्ते पर गिरकर नदी मे डूब गये।

यही स्थिति वेदो के भाष्यकारों की है। प्रधान वेद भाष्यकार चार हैं—

1. कृष्ण यजुर्वेद का भाष्यकार भट्ट भास्कर महापण्डित है उसके पाण्डित्य पर हम सब मोहित हैं।

2. शुक्ल यजुर्वेद का भाष्यकार महीधर प्रसिद्ध ही है।

3. शेष सब वेदो ब्राह्मण आरण्यक ग्रन्थों का भाष्यकार सायण के पाण्डित्य को कौन नही जानता। सब भाष्यकार सायण के भाष्यों के ही इर्दगिर्द घूमते दिखाई देते हैं

4. वेदों का अर्थ सिखाने वाला एक मात्र ग्रन्थ निरुक्त है। जिस पर बहुत भाष्य हैं। पर सब भाष्य दुर्ग के आश्रित होकर ही अपना भाष्य करते हैं। ये चारो महापण्डित हैं इस मे सन्देह नही है। पर है ऐसे कि —

भट्ट भास्कर दुर्गोहि सायणश्च महीधरः।
पदव क्य प्रमाणज्ञा आसन् सर्वे त्वबुद्धयः॥

अर्थात्—भट्ट भास्कर दुर्ग सायण महीधर ये सब पद वाक्य प्रमाणज्ञ थे पद व्याकरणम्। वाक्यं मीमासा। प्रमाण तर्कः। ये चारों व्याकरणादि सब शास्त्रो के प्रकाण्ड विद्वान् थे पर ये बुद्धिहीन। उदाहरण देखो वेदो मे लिखा है कि—

अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।

अर्थात् संसार के मनुष्यों। अ+श्व+त्थ = जो कल नही रहेगा ऐसे अनित्य संसार मे तुम्हारा निवास है और तुम्हारी वसती पत्ते के समान क्षण भङ्गुर चञ्चल शरीर मे है। यह भगवान् ने वेदो को उपदेश दिया है।

पर ये पद वाक्य प्रमाणज्ञ वेद भाष्यकार अर्थ करते हैं कि अश्वत्थे-पीपल पर तु रहती है और तुझमे पत्ता लगा हुआ है ऐसी जहू।

2. दूसरा वेद वचन है—

कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः।

अर्थात्- कर्म मेरे दाहिने हाथ मे है तो विजय बांए हाथ में है। पर ये पद वाक्य प्रमाणज्ञ अर्थ करते हैं जुए के पासे मेरे हाथ मे हैं तो जीत द्यूत में मेरी है।

3. वेद कहता है कि

पुनश्च्यवानं चक्रतुर्युवानम्।

अर्थात्- अश्विनौ प्राणापान-प्राणायाम वृद्ध को युवा बना देता है। पर ये पद वाक्य प्रमाणज्ञ अर्थ करते हैं कि स्वर्ग के अश्विनी कुमारों ने च्यवन ऋषि को युवा बना दिया।

4. अश्विनौ का अर्थ है—

अश्विनौ नासिका प्रभवौ बभूवतुः।

अर्थात्—अश्विनौ ने कहाते है जो नासिका से निकलते हैं प्राण अपान पद वाक्य प्रमाणज्ञ अर्थ करते हैं कि अश्विनी कुमार नाक से पैदा हुए थे।

5. वेद कहता है—

उतासि मैत्रा वरुणो वसिष्ठ

अर्थात् मित्रम् ब्रह्म और वरुण क्षत्र दोनों मिलकर वसिष्ठ अर्थात् नेता राजा होता है जैसे कहा है कि—

"यत्र ब्रह्मच क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुवः"

अर्थात्—जहाँ ब्रह्म और क्षत्र दोनो मिले रहते हैं उस राष्ट्र की शोभा है। पर हमारे पद वाक्य प्रमाणज्ञ अर्थ करते हैं कि वसिष्ठ जी के दो बाप थे एक मित्र देवता और दूसरे वरुण देवता। दो बापो ने मिलकर वसिष्ठ को पैदा किया। हमने बाप में सन्देह तो सुना है कि इस का यह बाप है या वह, पर दो पिता मिलकर एक बेटा पैदा करे ऐसा उदाहरण अभी तक नही सुना गया।

उन चार मूर्ख पण्डितों ने जो शास्त्र वचन सुनाये थे उनके वे अर्थ भी हैं जो उन्होने किये पर सत्य अर्थ इस प्रकार थे—

1. राजद्वार मुकदमे के समय या मृत्यु हो जाने पर जो श्मशान तक साथ देते हैं वे अपने बान्धव हैं।

2. धर्म की चाल तेज है अर्थात् धार्मिक काम को जल्द प्रारम्भ कर देना चाहिए।

3. अपने बन्धु को धार्मिक कामों मे लगावे।

4. जो पत्र = जहाज आवेगा उस से हम पार हो जायेंगे।

उन मूर्ख पण्डितों के लिये अर्थ में भी शास्त्र वचनो में व्याकरण आदि की कोई अशुद्धि नही थी। वैसे ही सायणादि के अर्थों मे कोई शास्त्रीय त्रुटि नहीं पर वेद कहता है कि—

"सरस्वती सह धीभिरस्तु"

अर्थात्—विद्या बुद्धि के साथ हो।

इस प्रसङ्ग मे हम उपसहार मे यह कह कर समाप्त करते हैं। हमने सब वेद भाष्यकारो के भाष्य पढ़े हैं और सब हमारे पुस्तकालय में हैं। दो कल्पनाएं सर्वत्र हैं

1. कोई एक स्वर्ग लोक है जहा देवता रहते हैं और इन्द्र भी। वह इन्द्र यज्ञो में हवि भक्षण करने और सोम दान करने आता है। और अग्नि आदि देवता भी यज्ञों में हवि ग्रहणार्थ आया करते हैं।

2. ये अग्नि वायु सूर्य चन्द्र आदि देवता मनुष्यो के समान चेतन हैं हमारी बात सुनते हैं और अनुग्रह करते हैं।

ये दोनो गप्पें हैं। यदि ये दोनों बातें असत्य हैं तो समस्त वेद भाष्य गपोड़ा मात्र है। उनके वेद भाष्यों में ये ही बातें भरी हुई हैं आज के श्रौत यागों में ये ही सब भरा हुआ है। सुनो—

ते सोमादो हरी इन्द्रस्य निंसते ऽशु युहन्तो अध्यासतेगवि तेभिर्दुग्धं पपिवान्त्सोम्यं मध्विन्द्रो वर्धते प्रथते वृषायते

(ऋ 10|94|9)

अर्थात्—सोम कटने के पत्थर इन्द्र के घोडो को बुलाते हैं जो पत्थर गोचर्म पर रखे हैं सोम निचोड़ने के लिये वे इन्द्र के घोडो को कहते हैं कि लेकर आओ। इन्द्र सोम पान करे और तुम घोड़ों ऋजीष सोम के फोकस को खाना पत्थरों से निचोड़े हुए सोम को जब इन्द्र पियेगा तब सोम पीकर इन्द्र भी ताजा और बलवान हो जावेगा।

(दुर्ग सायणादि सब भाष्यकार)

यह है आज कल के श्रौतयाग। ये हजारों साल से बन्द हो गये इन्द्र को सोम पीने को मिला नहीं होगा। तब पता नहीं वह इन्द्र मर नही गया होगा तो अधमरा तो हो ही गया होगा।

वेदो की इस दुर्दशा में महर्षि का जन्म हुआ और उन्होने वेदों का सही भाष्य किया। पर हा कालकराल तु यह सहन न कर सका और महर्षि को तूने उठा लिया। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपने एक पत्र मे लिखा है कि यदि मुझे दो डेढ़ वर्ष का समय और मिल जावे तो मैं चारो वेदों का भाष्य पूरा करलूं। पर यह न हुआ। और न वे संस्कार विधि ग्रह्य सूत्रो का परिमार्जन करके बनाने के बाद श्रौतयागो की पद्धति ही बना सके। हमें आश्चर्य है कि आर्य समाज के भी कुछ विद्वान सायण महीधर पर विश्वास करते हैं और इन पोपलीला वाले वतमान श्रोतयागों का डंका पीटते थकते नही हैं। कोई व्यक्ति श्रौत यागो की शुद्ध पद्धति बनाने मे समर्थ नहीं हैं। पहले उन मन्त्रो का अर्थ करके बतावे जिस को इन वेद भाष्यकारो के अर्थानुसार पोपलीला भरी है और कौन आर्य विद्वान् ऐसा होगा जो कल्पित स्वर्ग लोक को मानता होगा और आग हवा को चेतन। यदि दो बातें असत्य हैं तो समस्त वेद भाष्य कारों के भाष्य। आकाशात् रसातलं गताः एव।

पता—103, मोतीबाजार, वेद मंदिर, बरेली

पत्रों के झरोखे में

रामायण के स्थलों का भौगोलिक परिचय

"आर्य जगत् के २०-१०-८५ के अंक में प्रकाशित" रामायण के स्थानों का भौगोलिक परिचय" एक महत्वपूर्ण लेख है। प्राचीन स्थानों के विषय में अनभिज्ञता रामायण की ऐतिहासिकता में सन्देह को उत्पन्न करती है। इसलिये रामायण में उल्लिखित स्थानों के सही वर्तमान नाम एवं उनकी स्थिति से रामायण का वास्तविक रूप स्पष्ट हो जावेगा। इतिहास की अल्पज्ञता के कारण मुझे कुछ नामों के विषय में शंका है—

ब्रह्मावर्त—सरस्वती (सिन्धु) और दृषद्वती (ब्रह्मपुत्र) का मध्यवर्ती देश। आर्यवित्त को भी मनु ने इन दोनों नदियों के बीच का प्रदेश बताया है। क्या ब्रह्मावर्त और आर्यावर्त पर्यायवाची हैं?

कम्बोज—हिन्दुकुश और कश्मीर से दक्षिण पूर्व में कम्बोज की स्थिति बताते हैं। इसके अतिरिक्त कुछेक कम्पूचिया (कम्बोडिया) को कम्बोज देश मानते हैं। इनमें से कौन-सा प्रदेश कम्बोज है?

मद्र—रावी और चिनाव के बीच का प्रदेश। गान्धार के राजा की पुत्री गान्धारी की तरह ही यदि मद्राधिपति की कन्या को माद्री समझा जाये तो स्वामी दयानन्द के अनुसार वह ईरान देश के राजा की कन्या थी। कुछेक मैड्रिड (स्पेन) को मद्र का अपभ्रंश देखकर उसे मद्र देश मानना चाहते हैं। यह भी समाधान चाहता है।

आशा है इतिहास वेत्ता इस सम्बन्ध में कुछ स्पष्टीकरण करके उक्त शंकाओं का निवारण करने की कृपा करेंगे। —वीरेन्द्र सिंह पमार आयुर्वेद शास्त्री, २८, यू. बी. जवाहर नगर दिल्ली-११०००७

(२)

मैं समझता हूं कि "आर्य जगत्" में यह विस्तृत और ब्यौरेवार भौगोलिक परिचय रामकथा की प्रमाणिकता के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण और संग्रहणीय है और शायद हिन्दी में प्रथम प्रयास ही है। इसकी प्रामाणिक खोज और विवेचन के लिए क्षितीश जी का जितना धन्यवाद किया जाए, उतना ही थोड़ा है। इसके लिए सुयोग्य लेखक शतशः वन्दनीय हैं।

पता—आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालंकार के. सी. ३७/बी अशोक बिहार, दिल्ली-५२

पहले टेप सुनिए

"आर्य जगत" का प्रत्येक अंक आपके कुशल सम्पादन में ढेर सारी जीवनोपयोगी सामग्री लेकर निकल रहा है। मेरे लिए तो प्रत्येक अंक संग्रहणीय ही होता है। विशेषकर आपके सम्पादकीय तो बहुत ही उच्चकोटि के होते हैं इस बार के अंक में "पहले टेप सुनिए फिर फैसला कीजिए" के अंतर्गत आपने बहुत ठोस और चिन्तनीय सामग्री प्रस्तुत की है। प्रत्येक भारत-वासी को यह चुनौती के रूप में स्वीकार करना पड़ेगा। अन्यथा वर्तमान मोहनिद्रा का भविष्य में हमें बहुत बड़ा मूल्य चुकाना पड़ेगा। सरकार को भी इस समय मुसलमानों की इस चाल को समझ लेना चाहिए और उपयुक्त कार्यवाही करके भारत के अस्तित्व की रक्षा करनी चाहिए। वोट की राजनीति एवं गद्दी बचाओ की नीति का परिणाम बहुत भयंकर होता चला जा रहा रहा है। अब भी यदि नहीं संभले तब तो मैं एक कवि के शब्दों में यही कहूंगा :—

वक्त की फिक्र कर नादां मुसीबत आने वाली है,
तेरी बर्बादियों के मशविरे हैं आसमानों में।
न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दोस्तां वालो,
तुम्हारी दास्तां तक भी न होगी दास्तानों में॥

पता—भगवान 'चैतन्य' एम० ए० साहित्यालंकार, २८१/एस-२ सुन्दर नगर-४ जिला मण्डी (हि० प्र०)-१७४४०२

(२)

आपका सम्पादकीय विशेष रुचिकर लगा। आपने मुस्लिम साम्प्रदायिकता की पोल खोलकर रख दी। आपने मुस्लिम नेताओं को बे-नकाब करने के साथ ही सरकार व गुप्तचर विभाग की अकर्मण्यता भी दर्शायी है। इसी अकर्मण्यता के कारण देश गुलाम हुआ था। अतः हमें इसी अकर्मण्यता से बचना होगा। लेख के लिए पुन बधाई।

— ज्ञानचन्द गोयल, आर्य युवक परिषद्, मालव, मेवात।

(३)

'आर्य जगत्' का प्रत्येक अंक असाधारण विशेषता रखता है परन्तु २७ अक्तूबर मे प्रकाशित, देश के पुनर्विभाजन के भयानक षड्यन्त्रों को नङ्गा करने वाला तथा चौंका देने वाला सम्पादकीय लेख पढ़कर किसका हृदय नही खौलने लगेगा? निस्सदेह हमारा देश इस समय बाह्य एवं आन्तरिक सङ्कटो मे भीषण रूप में घिरा हुआ और विघटनकारी शक्तियों के षडयन्त्रों का शिकार हो रहा है। परन्तु हमारी सरकार सब कुछ देखती हुई इसके विरुद्ध कोई ठोस पग न उठाते हुए, न केवल तमाशा देख रही है अपितु देश के टुकड़े करने वाली शक्तियों को विशेष अधिकार, आरक्षण एवं संरक्षण देकर उन्हें अधिक शक्तिशाली बना रही है। दूसरी ओर देश और देश की संस्कृति की रक्षक हिन्दू जाति सरकार द्वारा सौतेली मां का सा व्यवहार होने के कारण अनाथों जैसा जीवन व्यतीत करती हुई विधर्मियों के अत्याचारों का शिकार हो रही है। विपक्षीदल भी अपने स्वार्थों में फसे हुए, आधुनिक परिस्थितियों का सामना करने में असमर्थ दिखाई दे रहे हैं। इतिहास से शिक्षा लेते हुए हमें समय रहते इस जटिल तथा भयावह परिस्थिति का मुकाबला करने के लिये कटिबद्ध होना होगा। इस विकट-तम स्थिति से देश को बचाने की शक्ति है तो केवल आर्य समाज में है। आर्य नेताओं को परस्पर मिलकर शीघ्र कोई योजनाबद्ध कार्यक्रम बनाना चाहिये जिससे देश और जाति के शत्रुओं की कुचालें निष्फल हो सकें। महर्षि की कृपा से हमारे पास शुद्धि, शास्त्रार्थ तथा संगठन रूपी ऐसे अनुपम एवं अनुभूत शस्त्र विद्यमान हैं जिनका सामना कोई न कर सकेगा। इनके द्वारा आर्य समाज पहले भी दिग्विजय प्राप्त कर चुका है और अब भी कर सकता है।

—रुद्रदत्त शर्मा "लक्ष्मण वाटिका" ७१२-एल माडल टाउन पानीपत

बन-वासियों को ईसा की भेड़ बनने से बचाइए

जनवरी १९८६ में ईसाई धर्मगुरु पोप भारत आ रहे हैं। उनके स्वागत के लिए ईसाई पूरे उत्साह से भारत को यीशु की भेड़ों मे शामिल करने मे लगे हुए हैं। अन्य लोग चिन्ता प्रकट करके ही चुप हो जाते हैं किन्तु महर्षि दयानन्द का उत्तराधिकारी आर्य समाज कैसे चुपचाप बैठ सकता है?

क्योंकि उडीसा में भी ईसाई मुसलमान की अकल्पनीय वृद्धिचिन्तनीय बन गई है अतः यहां भी जब तक नागालैण्ड, मिजोरम, आसाम जैसी विषम स्थिति बने उससे पहले ही इस पर नियन्त्रण करना जरूरी है और यह कार्य आर्य समाज ही कर सकता है इसलिये उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा ने उडीसा के आर्थिक दृष्टि से कमजोर और ईसाइयत से प्रभावित क्षेत्रों में विशाल रूप मे शुद्धि एवं वेद प्रचार कार्य शुरू किया है। जहां शुद्धि की जाती है, वहां आर्य समाज की स्थापना कर दी जाती है।

सभी वेद प्रेमी देश भक्तों से मेरा नम्र निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग देकर भारतीय संस्कृति एवं देशराष्ट्र रक्षा का पुण्य लाभ लें। नये मोटे वस्त्र, साड़ी एवं धोती, प्रचार के साधन माइक सैट, टेपरिकार्डर आदि सामान भी आभार पूर्वक स्वीकार किये जायेंगे।—धर्मानन्द सरस्वती, प्रधान, उत्कल आर्य प्रति० सभा गुरुकुल आश्रम आमसेना कालाहाडी (उड़ीसा)

हैदराबाद के सत्याग्रही—यह भेदभाव क्यों?

हैदराबाद के आर्य सत्याग्रहियों को सरकार ने स्वतंत्रता सेनानी मान लिया है, यह जान कर परम सन्तोष हुआ। परन्तु इसके साथ जो कम से कम ६ मास की जेल की सजा काटने की शर्त रखी है, वह उचित प्रतीत नही होती। यदि यह शर्त लागू रही, तो केवल पहले या दूसरे जत्थे में जाने वाले सत्याग्रही ही पेंशन के अधिकारी होंगे, अन्य सत्याग्रही नहीं, क्योंकि वह सत्याग्रह सन् १९३९ के जनवरी-फरवरी मास में शुरु हुआ था और उसी वर्ष अगस्त में निजाम सरकार से समझौता हो जाने के कारण सब सत्याग्रही छोड़ दिए गए थे। जो लोग शुरू-शुरू के जत्थों में सत्याग्रही बनकर गए, उनके साहस की तो प्रशंसा करनी ही चाहिए, पर बाद के जत्थों मे जाने वाले सत्याग्रहियों ने भी कम कष्ट नहीं सहे। फिर पीछे जाने वाले सत्याग्रहियों से यह भेदभाव क्यों?

एक बात और भी ध्यान रखने की है। उस समय की ब्रिटिश भारत की जेलों और निजाम की जेलों में जमीन आसमान का फर्क था। ब्रिटिश भारत की जेलो में राजनीतिक बन्दियों के साथ सदा सम्मानपूर्ण और शिष्टतापूर्ण व्यवहार किया जाता था। पर निजाम की जेलों में राजनीतिक सत्याग्रहियों के साथ भी चोर-डाकुओं और अन्य क्रिमिनलों जैसा व्यवहार किया जाता था।

तीसरी बात यह है कि पंजाब और उत्तर प्रदेश जैसे दूरस्थ प्रदेशों से जो लोग सत्याग्रही बन कर गए थे, वे तो अपनी ओर से पूरी सजा काटने की तैयारी के साथ ही गए थे। वे माफी मांग कर तो नहीं छूटे थे। फिर यदि उन्हें ६ मास की अवधि से पहले ही छोड़ दिया गया, तो इससे उनकी कुर्बानी में तो कमी नही आती। होना यह चाहिए कि जिन सत्याग्रहियों को कम से कम ६ मास को सजा मिली हो फिर भले ही जेल में वे कितने ही समय तक रहे हों, उन्हें पेंशन का अधिकारी माना जाए। न्याय का तकाजा यही है।

— कविराज रतनलाल आनन्द, घुमान, बटाला—१४३५१४

पं० माधवराज जोशी

(पृष्ठ 5 का शेष)

का कोई वृत्तान्त उपलब्ध नही हुआ। यहां तक कि उन्होंने स्वय लाहौर मे भी मास्टर जी का पता किया किन्तु उनके विषय मे कोई समाचार नही मिल सका। शास्त्री जी ने यह सभावना प्रकट की थी कि सम्भवत: उन्हें नेपाल से भारत भेजते समय रास्ते में ही समाप्त कर दिया होगा। क्योंकि यदि वे सुरक्षित भारत पहुंच जाते तो उन पर नेपाल में किये गये अत्याचारों की चर्चा भारत मे अवश्य होती और आर्यसमाज जैसी जागरूक सस्था कभी यह सहन नहीं करती कि उसके अनुयायी पर केवल इसीलिये अत्याचार किये जायें क्योकि वह अपनी मान्यताओ से विचलित होने के लिये न तो तैयार था और न उनका प्रतिपादन करने में ही सकोच करता था।

इस सर्वथा अप्रसिद्ध मास्टर गुरुदयाल को उनके धर्म प्रेम के लिये श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए पं० शुक्रराज शास्त्री ने भाव विह्वल होकर लिखा था—"हे पंजाब तुम वीरप्रसू हो। श्रीमान मास्टर गुरुदयाल बी० ए० जैसी सन्तानो को जब तक तुम उत्पन्न करोगे तब तक तुम्हारे नाम को सुन कर ही बड़े बड़े घमण्डी योद्धाओं के छक्के छूट जावेंगे।" निश्चय ही आर्यसमाज के गौरव व यश को बढ़ाने में मास्टर गुरुदयाल जैसे न जाने कितने अज्ञात और अप्रख्यात लोगो ने आत्म-बलिदान किये हैं। ये सभी हमारे प्रणम्य हैं।

पं० माधवराज तथा उनके साथियो की पिटाई होने से ही उनका छुटकारा नहीं हुआ। शासको ने आर्यसमाज के सभी अनुयायियों और शुभ चिन्तको को भी पकड़ लिया तथा प्रधान मंत्री के समक्ष उन्हें पेश किया गया। उन्हें थाने ले जाया गया और एक सकीर्ण कोठरी मे बंद कर दिया। यहाँ भी इन लोगो पर अनेक प्रकार के पाशविक अत्याचार किये गये। अन्तत. सब आर्य-पुरुषो, को अलग अलग सजायें सुनाई गई। साहू लाल-बहादुर को जिनके घर में आर्यसमाज के अधिवेशन होते थे, दण्ड दिया गया कि वे नित्यप्रति पशुपतिनाथ के दर्शन कर उनका प्रसाद लाया करें। माधवराज को 2 वर्ष का कारागार दण्ड और उसके पश्चात् देश के निष्कासित करने का आदेश दिया गया। दण्ड का यह आदेश भाद्रपद शुक्ला 13 सं 1962 वि० के दिन सुनाया गया। जब जोशी जी को कारावास मे भेजा गया तो विरोधी पक्ष ने समाज में यह प्रचलित कर दिया कि इन्हे जाति से पतित कर दिया गया है। जोशीजी का अपराध यही था कि वे आर्यसमाजी थे और सत्य को कहने मे संकोच नही करते थे।

पं० माधवराज जोशी के जेल चले जाने पर उनके परिजनों पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा। उनके पुत्रों की पढ़ाई बन्द हो गई यहां तक कि भोजन के भी लाले पड़ गये अन्त मे जब देखा कि नेपाल में रहने पर विपत्तियों का अन्त नहीं है तो माधवराज जोशी की पत्नी अपनी सन्तान को लेकर वीरगज चली गई। कारागार में जोशी जी को कैसे दुख उठाने पड़े सडक कूटने तक का काम उनसे करवाया गया, इस सबका विवरण उनके पुत्र शुक्रराज शास्त्री ने अपने पिता के जीवन चरित्र में विस्तारपूर्वक उल्लिखित किया है।

दो वर्ष की सजा समाप्त होने से पूर्व ही माधवराज जोशी ने कारागार से भाग निकलने की योजना बनाई और येन केन प्रकारेण इसमे सफल भी हो गये। वे नेपाल की सीमा पार कर गोरखपुर पहुचे और आर्यसमाज में ठहरे। इस समय तक इनके परिवार के लोग भी इनसे आकर मिल गये। वहां से लखनऊ आये और आर्यसमाज गणेशगंज मे ठहरे। कुछ दिन यहा ठहर कर पं० माधवराज जोशी सपरिवार देहरादून पहुचे तथा आर्यसमाज मे निवास किया।

पं० माधवराज जोशी की स्वामी दयानन्द के सिद्धांतो के प्रति अडिग आस्था थी। अपनी सन्तान की शिक्षा की समुचित व्यवस्था कर वे वीरगंज लौटे और ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका के अध्ययन मे संलग्न हो गये। एक पौराणिक ब्राह्मण उनके पास आया और जोशी को भूमिका पढ़ते देख कर व्यग्य भाव से बोला, "लो अब भी उसी नास्तिक के बनाये वेद भाष्य को पढ़ता है। सरकार के द्वारा इतना कठिन दण्ड भोग चुका। अब भी तुम्हारी समझ में नहीं आई।" जोशी जी ने उक्त ब्राह्मण को फटकारते हुए कहा—"तुम लोगो ने तो ब्राह्मण होते हुए भी वेद पढ़ना छोड़ दिया। अब यदि तुम्हारे लिये पीर बबर्ची भिश्ती खर वाली आजीविकायें ही रह गई हैं तो इस में किसी का क्या दोष?" "उनके इस दृढ़ उत्तर को सुनकर ब्राह्मण मौन हो गया।

वीरगंज से चल कर वे कलकत्ता आये तथा कुछ काल रह कर दार्जिलिग चले गये। अब प० माधवराज जोशी ने दार्जिलिग को ही अपना कार्यस्थल बनाया। यहा नेपाली मूल के लोग पर्याप्त संख्या मे रहते हैं। अत. एक किराये की कोठरी लेकर वही आर्यसमाज की स्थापना कर दी गई तथा नियमित रूप से साप्ताहिक सत्सग होने लगे। यदा कदा वे समीपवर्ती कर्सियांग आदि स्थानों मे भी प्रचारार्थ जाते। इन्ही दिनों आर्यसमाज के प्रसिद्ध शास्त्रार्थी विद्वान् पं० भोजदत्त शर्मा दार्जिलिग आये। शर्मा जी को नेपाल मे आर्यसमाज के समस्त वृतान्त का ज्ञान स्वयं जोशी जी ने कराया। यहा पर उन्होने बल बहादुर क्षत्रिय नामक एक उत्साही पुरुष को आर्य-धर्म में दीक्षित किया और आस-पास के इलाके मे प्रचारार्थ जाने की प्रेरणा दी।

1968 वि० में पं० माधवराज जोशी गुरुकुल सिकन्दराबाद के उत्सव मे सम्मिलित होने के लिये गये। वहाँ उनकी भेंट प्रसिद्ध आर्यसन्यासी स्वामी दर्शनानन्द जी से हुई। स्वामी जी ने जोशी जी से नेपाल में आर्यसमाज के प्रचार का संपूर्ण इतिवृत्त जाना और कहा कि यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि नेपाल जैसे पिछड़े देश में भी स्वामी दयानन्द के वैदिक सिद्धांत प्रचार पा रहे हैं। यहां से चल कर जोशी जी पंजाब आये और लाला लाजपतराय तथा स्वामी श्रद्धानन्द से भेंट की। उसी अवसर पर वे गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के उत्सव पर भी गये। यहा से दिल्ली आये और स्वामी विवेकानन्द जी से भेंट की। पुन: गुरुकुल वृन्दावन होते हुए पुन: दार्जिलिग लौटे।

सिक्किम निवासी एक कालूराम नामक आर्य पुरुष की प्रेरणा से जोशी जी सिक्किम पहुचे और वहा धर्म-प्रचार किया। यहा से उनको हटाने के प्रयत्न पुराण-पन्थियों ने किये किन्तु उक्त श्री कालूराम की सहायता एवं सहयोग से वे इस पर्वतीय प्रान्त मे वैदिक धर्म का प्रचार करते रहे। सिक्किम के बाद वे पुन: दार्जिलिग आये और यहां के मारवाड़ी सेठो के सहयोग से पुन. धर्मप्रचार मे लग गये। यहां उन्होंने दो बौद्ध लामाओ की शुद्धि की और उन्हे वैदिक धर्म की दीक्षा देकर बोधानन्द एवं कृपानन्द नाम दिया। जोशी जी की प्रेरणा से ये दोनो व्यक्ति समीपवर्ती क्षेत्रो मे आर्यसमाज का प्रचार करने लगे। इसी प्रकार उन्होंने कुछ कबीर पन्थियों को भी वैदिक धर्म की दीक्षा दी।

पं० माधवराज जोशी को स्वदेश त्याग किये पर्याप्त समय हो गया था। अब बड़े प्रयत्न के पश्चात् उन्हे पुन: नेपाल में प्रवेश करने की आज्ञा मिली। तदनुसार वे 1972 वि० मे पुन: स्वदेश पहुचे।

अब जोशी जी ने नेपालस्थ आर्यबन्धुओं से मंत्राणा कर पुन: आर्य समाज का कार्य आरम्भ कर दिया। उनके पुत्र पं० शुक्रराज शास्त्री भी गुरुकुल सिकन्दरा बाद से विद्याभूषण की उपाधि ग्रहण कर नेपाल आ गये। जब वे चन्द्र शमशेर के दरबार में उपस्थित हुए तो महाराज ने उनसे राजगुरु प० हेमराज से मूर्तिपूजा पर शास्त्रार्थ करने के लिये कहा। जब पर्याप्त देर तक विचार विमर्श होता रहा तो चन्द्रशमशेर ने शास्त्रार्थ बद करने के लिये कहा। शास्त्री जी महाराज से अनुज्ञा लेकर घर चले आये।

प० शुक्रराज शास्त्री को नेपाल सरकार ने कारागार मे डाल दिया और उन पर देश द्रोह का आरोप लगाया। इससे दुखी होकर प० माधवराज ने घर का त्याग किया और संन्यासी हो गये।

जोशी जी का स्वर्गवास 1943 ई० मे दीपावली के दिन हुआ। यद्यपि उनकी इच्छा थी कि उनकी अन्त्येष्टि वैदिक रीति से हो तथा उनके शव का दाह किया जाय, किन्तु नेपाल राज्य मे प्रचलित परिपाटी के अनुसार संन्यासी का शवदाह नही किया जा सकता। अत: उनके शव को भूमि मे गाड दिया गया। इस प्रकार पौराणिक धर्म की क्रीडास्थली नेपाल मे आर्य सन्यासी की वैदिक विधि से अन्त्येष्टि भी नही की जा सकी।

पता—दयानन्द शोध पीठ, जी—3
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

अखिल भारतीय आर्य युवा महासम्मेलन

राष्ट्रीय एकता, चरित्र निर्माण, सामाजिक कुरीतियो के निवारण, समाज व राष्ट्रनिर्माण मे युवा शक्ति की मुख्य भूमिका का राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम बनाने के उद्देश्य से केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश आगामी २४ नवम्बर १९८५ को मध्यान्ह २ बजे से ५ बजे तक नई दिल्ली स्थित आर्यसमाज मन्दिर मार्ग मे 'अखिल भारतीय आर्य युवा महासम्मेलन' कर रहा है। इस सम्मेलन में दिल्ली के अतिरिक्त आसपास के राज्यों से भी सैकडों आर्य युवक प्रतिनिधि भाग ले रहे है। डी० ए० वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी के सगठन मन्त्री श्री दरबारी लाल जी महासम्मेलन के स्वागताध्यक्ष हैं तथा इसकी अध्यक्षता आर्य युवा नेता ब्रह्मचारी आर्य नरेश जी करेंगे। विभिन्न प्रान्तों के युवा नेता सम्मेलन को सम्बोधित करेंगे। राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित 'आधुनिक भीम' ब्रह्मचारी विश्वपालजयन्त इसमें मुख्य होंगे। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० धर्मपाल आर्य सम्मेलन का उद्घाटन करेंगे। ध्वजारोहण आर्य नेता श्री देशराज बहल करेंगे। सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री क्षितीश वेदालकार विशिष्ट अतिथि व संसद सदस्य श्री रामचन्द्र विकल मुख्य अतिथि होगे। दिल्ली प्रातीय आर्य महिला सभा की प्रधाना श्रीमती सरला मेहता भी सम्बोधित करेंगी। महासम्मेलन के प्रारम्भ मे आर्य युवको द्वारा योगासन, लाठी, तलवार, जूडो-कराटे, बाक्सिग, शरीर शौष्ठव का सुन्दर व्यायाम प्रदर्शन का कार्यक्रम होगा।

—चन्द्रमोहन आर्य, प्रचार मन्त्री

—वेद प्रचारक मण्डल चान्दपुर (बिजनौर) के तत्वावधान मे यज्ञ महोत्सव सप्ताह का आयोजन किया गया। महोत्सव का उद्घाटन प्रसिद्ध महिला उद्धारक श्री देवीदास आर्य ने किया। उत्सव में महात्मा दयानन्द और महात्मा बलदेव वानप्रस्थी ने भाग लिया।

आर्य समाज-दरियागंज

आर्य समाज, दरियागंज, नई दिल्ली का स्वर्ण जयन्ती समारोह 12-13 अक्तूबर को मनाया गया। इससे पूर्व 7 से 11 अक्तूबर तक वेद कथा और भजनों का आयोजन किया गया। 12 अक्तूबर को ध्वजारोहण श्री ओम्प्रकाश त्यागी ने किया। उत्सव में आर्य महा सम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलन और वेद गोष्ठियों का कार्यक्रम रखा गया। इस अवसर पर स्मारिका का प्रकाशन हुआ। व्यवस्था हेतु समाज के प्रधान श्री बी०बी० सिंहल धन्यवाद के पात्र हैं।

समारोह में श्री प० शिवाकान्त जी उपाध्याय आचार्य सत्यप्रिय जी, डा० रघुनन्दन सिंह जी, श्री प्रेमचन्द जी, श्री आचार्य विक्रम जी, महात्मा देवेश भिक्षु जी, श्रीमती सरला मेहता जी आदि के प्रवचन तथा श्री गुलाब सिंह जी राघव के भजन हुए।—दिनेश त्रिपाठी

महाशय चुन्नी लाल धर्मार्थ ट्रस्ट

महाशय चुन्नी लाल धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा संचालित वेद प्रचार विभाग का उत्सव (एम०डी०एच०) कीर्ति नगर नई दिल्ली में 27 अक्तूबर को श्री राम गोपाल वानप्रस्थ की अध्यक्षता में मनाया गया।—महाशय धर्मपाल

आर्य समाज-केशव पुरम्

आर्य समाज, केशव पुरम् (लारेंस रोड) दिल्ली का वार्षिकोत्सव 4 से 10 नवम्बर तक धूमधाम से मनाया गया। जिसमें, यज्ञ, कथा, दयानन्द बलिदान उत्सव, सांस्कृतिक कार्यक्रमादि का आयोजन किया गया। उत्सव में महाशय धर्म पाल, श्री वीरेन्द्र कुमार शास्त्री, श्री मुरारी लाल बेचैन, श्री वेदपाल आर्य, श्री साहब सिंह वर्मा, पं० प्रकाश चन्द्र शास्त्री आदि ने भाग लिया।

आर्य समाज-कुण्डा

आर्य समाज, कुण्डा, प्रतापगढ़ (उ० प्र०) का उत्सव 15 से 18 नवम्बर तक सम्पन्न हुआ। जिसमें महात्मा नारायण स्वामी क्रान्तिकारी, श्रीमती शान्ति देव बाला, श्री पन्ना लाल पीयूष, प० आशानन्द भजनीक, श्री वेदपाल आर्य, श्री पुन्नू लाल आर्य और श्री आनन्द सुमन आदि विद्वान और उपदेशकों ने भाग लिया।

आर्य समाज पलवल

आर्य समाज, जवाहर नगर, पलवल (हरियाणा) का वार्षिकोत्सव 1,2,3, नवम्बर को समारोह पूर्वक मनाया गया। जिसमें अनेको सम्मेलन व अन्य कार्य क्रम हुए। उत्सव में स्वामी दर्शनानन्द, प्रो० रत्न सिंह एम०ए०, डा० प्रशान्त वेदालंकार, पं० हरिदेव, प० लक्ष्मण सिंह, प० चुन्नी लाल और प० मुरारी लाल बेचैन आदि ने भाग लिया।

आर्य समाज मन्दिर को भूदान

आर्य समाज कथारी के प्रधान अत्तर सिंह आर्य क्रान्तिकारी के विशेष आग्रह से आर्य समाज मन्दिर हेतु ग्राम पंचायत ने डेढ एकड जमीन हाई स्कूल के पास हिसार तोशाम रोड पर दान दी है। उसके लिये पंचायत का बहुत-बहुत धन्यवाद। इस जगह स्वर्गीय पं० तालेराम आर्य की स्मृति में एक विशाल भवन बनाया जायेगा।

—अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी प्रधान

आर्य समाज-लोहगढ़

आर्य समाज, लोहगढ़, अमृतसर का वार्षिकोत्सव 27 अक्तूबर से 3 नवम्बर तक मनाया गया। वेद कथा प्रो० द्वारिकादत्त शर्मा द्वारा सम्पन्न हुआ। महोत्सव की अध्यक्षता श्री यश जी ने और आर्य महिला सम्मेलन माता आज्ञावन्ती की अध्यक्षता में हुआ।

गुरुकुल कांगड़ी से सम्बद्ध रानीखेत के चिकित्सा-वैज्ञानिक

रानीखेत। भारत सरकार द्वारा प्रायोजित "अखिल भारतीय मलेरिया-चिकित्सा अनुसन्धान वैज्ञानिक सम्मेलन" 27 से 29 सितम्बर. 1985 को 'सेठ जे० पी० सरकारी आयुर्वेद कालेज-भावनगर (गुजरात)' में सम्पन्न हुआ। दो चिकित्सा वैज्ञानिकों डा० डी० एन० तिवारी (प्रभारी सहायक निदेशक) एवं डा० ज्ञानेन्द्र पाडेय गुरुकुल कांगड़ी से सम्बद्ध (अनुसन्धानाधिकारी) ने संयुक्त अनुसंधान संस्थान ताड़ीखेत (रानीखेत) से उक्त सम्मेलन में भाग लेकर शोधपत्र प्रस्तुत किये। सी० सी० आर० ए० एस० द्वारा आविष्कृत मलेरिया की आयुर्वेदीय औषधि "आयुष-64" के वैज्ञानिक पक्षो पर प्रकाश डाला गया। प्रमुख सम्मानित अनुसन्धान वैज्ञानिकों में डा० ज्ञानेन्द्र पाडेय को तकनीकी विशेषज्ञ के रूप में कई सत्रो में तथा समापन सत्र में भाषण हेतु आमन्त्रित किया गया।

दोनों वैज्ञानिकों की वापसी पर आय समाज मन्दिर ताड़ीखेत में स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी द्वारा साधुवाद दिया गया। —गुरुकुलानन्द सरस्वती

वैदिक गायत्री महायज्ञ

आर्य समाज, तात्या टोपे नगर, भोपाल के तत्वाधान में "वैदिक गायत्री महायज्ञ" का विशाल आयोजन 28 अक्टूबर से 3 नवम्बर तक महात्मा दयानन्द वानप्रस्थी, तपोवन आश्रम देहरादून के संचालन में सम्पन्न हुआ। जो भोपाल नगर की जलवायु-शुद्धि, लोक कल्याण एवं विभिन्न दैनिक प्रकोपों की शांति के लिये किया गया है।

21 से 23 दिसम्बर को आर्य समाज तात्या टोपे नगर, भोपाल की स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण करने के उपलक्ष्य में रजत जयन्ती एवं वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया।—जानकी मोहन चौधरी

कपाल मोचन मेले में प्रचार

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हरियाणा की ओर से कपाल मोचन मेले के अवसर पर वेद प्रचार शिविर का आयोजन किया जायेगा जिसमे नि शुल्क ऋषिलंगार का प्रबंध होगा। यज्ञ के ब्रह्मा पं० जगदीश चन्द्र वसु और प्रबधक उपसभा के पुराने उपदेशक श्री अमर सिंह जी होंगे।

—प्रो. वेदसुमन

—आर्य समाज धूरी, पंजाब मे 16 से 20 अक्तूबर तक वेद प्रकार कार्यक्रम रखा गया। जिसकी अध्यक्षता महात्मा प्रेमप्रकाश वानप्रस्थी ने की। जिसमे—यज्ञ, खेलकूद प्रतियोगिता, शोभा यात्रा आदि का आयोजन किया गया। वेद प्रचार कार्य में स्वामी मनीषानन्द, पं० शिवराज शास्त्री, श्री सीता राम, पं० अमर सिंह, पं० जगतराम आदि के भजन और उपदेश हुए—सतीश आर्य

आर्यसमाज—विवेक विहार

आर्य समाज, विवेक विहार, दिल्ली मे 24 से 29 अक्तूबर तक वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया गया। जिसमें पं० वीरसेन वेदश्रमी, स्वामी स्वरूपानंद पं० यशपाल सुधांशु, श्री गुलाब सिंह राघव आदि के भजन और उपदेश हुए।

—रूप चन्द कपूरिया

आर्य समाज की स्थापना

जिला आर्य उप प्रतिनिध सभा जौनपुर के द्वारा 5-6 अक्तूबर को सिरकोनी बाजार में वैदिक धर्म प्रचार किया गया इस अवसर पर श्री आर्य मुनि वानप्रस्थ श्री पं० ओ३म् नारायण जी श्री पं० क्षेम चंद्र व श्री पारसनाथ शास्त्री आदि विद्वानों के भजन व्याख्यान हुए जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा। 8 अक्तूबर को यज्ञ के बाद एक बैठक हुई जिसमे सर्व सम्मति से आर्य समाज की स्थापना हुई जिसके अधिकारी चुने गये— (1) प्रधान—श्री रामाराज जी (2) मंत्री—श्री पारसनाथ (3) कोषाध्यक्ष—श्री सत्य व्रत जी। —छोटेलाल आर्य मंत्री

राष्ट्र की अखंडता को चुनौती

आर्य समाज लाजपत नगर के वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयोजित राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसको सर्वश्री रामगोपाल शालवाले, पं० शिवकुमार शास्त्री, डा० धर्मपाल, देवराज शास्त्री प० नरेन्द्र अवस्थी, पं० वेदप्रकाश शास्त्री, पं० यशपाल सुधांशु, पं० मेघश्याम वेदालकार आदि अनेक महानुभावों ने संबोधित करते हुए देश की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला और आतंकवादी तथा पृथकतावादी तत्वों को अखंडता के लिए चुनौती बताते हुए उनको निर्मूल करने की माग की, इस अवसर पर समान नागरिक कानून, पोल पॉल के आगमन धर्मान्तरण न होने देने तथा राष्ट्रविरोधी संस्थाओं को प्रोत्साहन न मिलने सम्बन्धी प्रस्ताव भी पारित किए गए।—मेघश्याम वेदालंकार. आर्य समाज लाजपत नगर, दिल्ली,

आर्य समाज—मालवीय नगर

आर्य समाज, मालवीय नगर, नई दिल्ली में 28 अक्तूबर से 3 नवम्बर तक वेद कथा का आयोजन किया गया। वेद कथा आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रीय के और भजन श्री तुलसी देव और श्री पुष्किन के हुए। यज्ञ के ब्रह्मा डा० तीर्थ राज शास्त्री थे।—देशराज जुनेजा।

कच्चाहार दिवस यज्ञ

उडुपि (कर्नाटक)। विश्वहिन्दू परिषद् द्वितीय धर्मसंसद अधिवेशन के अवसर पर करवाचौथ (1 नवम्बर) को पं० संजीव कामथ (कन्नड सत्यार्थप्रकाश प्रकाशक) के आश्रम मे स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी ने "23वां कच्चाहार दिवस यज्ञ" सम्पन्न करके कच्चाहार के 24वें वर्ष तथा जीवन के 51वे वर्ष मे प्रवेश किया। उक्त यज्ञ के अवसर पर सर्व श्री स्वामी वरुणवेश, पं० मंजुनाथ शास्त्री, आर्यमुनि (आर्य समाज उस्मानाबाद-महाराष्ट्र), पं० शिवकुमार शास्त्री (नवयुवक परास्नातक गुरुकुल कांगडी), लक्ष्मणदेव ब्रह्मचारी (उत्तरप्रदेश) आदि ने विश्व-शान्ति हेतु मानव धर्म पर विचार विमर्श किया।

—गुरुकुलानन्द सरस्वती

सामाजिक जगत्

वार्षिकोत्सवों की धूम

आर्य समाज-ग्रेटर कैलाश

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-I नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव 30 नवम्बर से 2 दिसम्बर तक मनाया जायेगा। इससे पूर्व 25 से 29 नवम्बर तक आचार्य पुरुषोत्तम एम० ए० की वेद कथा होगी। उत्सव मे वेद सम्मेलन, सगीत सम्मेलन, आर्ययुवक महा सम्मेलन आदि का आयोजन किया गया है। जिसमें डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, स्वामी दयानन्द 'विदेह, प० शिवकुमार शास्त्री, स्वामी ओमानन्द, श्री रामगोपाल वानप्रस्थ आदि विद्वान और नेता भाग ले रहे हैं। स्त्री आर्य समाज का उत्सव 2 दिसम्बर को दोपहर 12 से सायं 5 बजे तक मनाया जायेगा।

गुरुकुल शुक्रताल

वैदिक योगाश्रम गुरुकुल, शुक्रताल (मुजफ्फर नगर) का वार्षिकोत्सव 24 से 27 नवम्बर तक सोत्साह मनाया जायेगा। जिसमे अनेक सन्यासी, विद्वान और उपदेशक भाग लेगे।—स्वामी आनन्द वेद

आर्य समाज-अशोक विहार

आर्य समाज, अशोक विहार-1 दिल्ली का वार्षिकोत्सव 18 से 24 नवम्बर तक मनाया जायेगा। जिसमे वेदकथा और बृहदयज्ञ श्री यशपाल सुधाशु सम्पन्न करायेंगे। आर्य महिला सम्मेलन और सास्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया है।—जसवन्त लाल मदान

आर्य समाज-अजमेर

आर्य समाज, अजमेर का वार्षिकोत्सव 24 से 26 नवम्बर तक मनाया जायेगा। जिसमे स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती, प० शिवकुमार शास्त्री प० वगराज, श्री ओमप्रकाश रेडियो सिगर, स्वामी कतव्यानन्द और ब्र० आय नरेश आदि विद्वान और उपदेशक भाग ले रहे है।—रासा सिंह मत्री

आर्य समाज पटेल नगर

आर्य समाज पटेल नगर, नई दिल्ली वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य मे 24 अक्तूबर से 2 नवम्बर तक प० यशपाल 'सुधांशु' की वेद कथा और यजुर्वेद पारायण यज्ञ प० प्रेमचन्द्र 'श्रीधर' के ब्रह्मात्व मे हुआ। —बालमुकुन्द विग

फल्गू मेला में प्रचार

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हरियाणा की ओर से फल्गू मेला मे वेद प्रचार केम्प लगाया गया जो कि 8 से 14 अक्तूबर तक हुआ। इस अवसर पर सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें सैकड़ो लोगो ने भाग लिया। ऋषि लगर का सारा खर्च लाला टेक चन्द आढ़ती कुरुक्षेत्र ने वहन किया इस सारे कार्यक्रम का संचालन पं० अमर सिंह आर्य (अध्यक्ष अम्बाल कुरुक्षेत्र मडल) ने किया।

वैदिक साधना शिविर

श्री विरजानन्द साधनाश्रम, वृन्दावन मार्ग, मथुरा मे 15 से 17 नवम्बर तक वैदिक परिवार साधना शिविर एवं आर्य महिला कार्य कर्त्री शिविर का आयोजन किया गया। जिसमे यज्ञ और संगोष्ठी का आयोजन किया गया।—प्रेमभिक्षु वानप्रस्थ

पं० प्रभुदयाल आर्य का प्रचार कार्य

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हरियाणा के उपदेशक और हिमार मण्डल के अधिष्ठाता श्री प्रभुदयाल आर्य प्रभाकर ने सितम्बर मास मे आर्य समाज खरकडा (रोहतक) आर्य समाज निडाना आर्य समाज टिटोली, आर्य समाज, पुलानी मण्डी, जिन्द आदि मे वेद प्रचार सप्ताह के कार्यक्रमो मे भाग लिया, श्री प्रभाकर जी का सर्वत्र प्रचार कार्य प्रशसनीय रहा।

आर्य समाज-पटियाला

आर्य समाज घिन्नोडी गेट, पटियाला मे 27 से 30 सितम्बर तक वेद प्रचार का आयोजन किया गया। इस कार्य क्रम मे डा० जयदेव गुरुकुल कागडी, स्वामी सत्यानन्द, माता मीरा यति, श्री द्वारकादास और श्री निरंजन देव आदि ने भाग लिया

आर्य समाज—अम्बाला नगर

आर्य समाज डी०ए०वी० कालेज मार्ग, अम्बाला नगर का वार्षिकोत्सव 8 से 10 नवम्बर तक धूमधाम से मनाया गया। उत्सव मे स्वामी जगदीश्वरानन्द, कर्नल एम० देशपाण्डे, डा० राम प्रकाश, डा० भवानी लाल भारतीय, प्रो० रत्न सिंह प्रि० पी० एन० कौल, प्रि० शान्ता मल्होत्रा, प० ज्योति स्वरूप, प० नरेन्द्र शास्त्री, और श्री प्रेमचन्द्र शर्मा आदि विद्वानो ने भाग लिया।—डा०वी०के० कोहली प्रधान, प्रो ऋषि राम भारद्वाज मत्री।

आर्य समाज-बैतूल

आर्य समाज, बैतूल (म०प्र०) का वार्षिकोत्सव 24-25 अक्तूबर को सोत्साह मनाया गया। मच की अध्यक्षता श्री मदन मोहन शर्मा और मचसंचालन लक्ष्मी नारायण शर्मा और श्री लालमन पटवारी ने किया। उत्सव मे श्री सियाराम निर्भय (बिहार) स्वामी ब्रह्मानन्द (चबा) श्री मोतीलाल और श्री घनश्याम भजनोपदेशक आदि विद्वान और उपदेशको ने भाग लिया।—विजय कुमार आर्य स्नेही।

कार्य दीजिये

प्रज्ञाचक्षु अनाथ शिक्षित विद्यार्थी, जो वाद्यवृंद मे प्रवीण है सायकालीन कार्य चाहता है, पता श्री हरि लाल अ० विद्यालय संलग्न ओबेराय होटल नई दिल्ली—110003,

हिन्दी सेवियों का सम्मान

१९८५ के हिन्दी-दिवस के उपलक्ष्य मे प्रसिद्ध संस्था साहित्यसंगम (जनकपुरी) द्वारा निम्नलिखित हिन्दी सेवियो का सम्मान किया गया—डा० सुरेशचन्द्र गुप्त, डा० मोतीलाल जोतवाणी, श्री श्यामरुद्र पाठक, डा० रमेशचन्द्र मिश्र। डा० रवीन्द्रनाथ दरगन, तथा डा० मस्तराम कपूर। अभिनन्दन समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ गाधीवादी विचारक तथा साहित्यकार श्री यशपाल जैन ने की तथा सयोजन किया डा० ओम्प्रकाश शर्मा 'प्रकाश'।

अध्यक्ष पद से बोलते हुए श्री यशपाल जैन ने कहा कि एक राष्ट्र-भाषा बनाना देश के लिए हितकर है और वह हिन्दी ही हो सकती है। क्योंकि हिन्दी तोड़ती नही, जोडती है। और नागरी को नकारना राष्ट्र-द्रोह है। हिन्दी-सेवियो के सम्मान से हिन्दी के विकास को निश्चय ही बल मिलता है। सम्प्रति हमारा कर्तव्य है कि हिन्दी के विषय मे चिन्ता कम और चिन्तन अधिक करें।

—डा० ओमप्रकाश शर्मा 'प्रकाश'
सचिव, साहित्य संगम

आर्य समाज,निर्माण विहार

आर्य समाज निर्माण विहार, दिल्ली का वार्षिकोत्सव 28 अक्तूबर से 2 नवम्बर तक समारोह पूर्वक मनाया गया। जिसमे सामवेद महायज्ञ पं० जैमिनी शास्त्री के ब्रह्मात्व मे और चरित्र निर्माण सम्मेलन लाला राम गोपाल वानप्रस्थ की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। सम्मेलन के मुख्य आतिथि श्री विद्या प्रकाश सेठी थे। सभा को रमेश चन्द्र शास्त्री दर्शनाचार्य प० क्षितीश वेदालकार, श्री सूर्य देव, श्री सत्यपाल वेदार आदि ने सम्बोधित किया।

आर्य समाज-नारायण गढ

आर्य समाज (कालेज विभाग) नारायणगढ (अम्बाला) का वार्षिकोत्सव 31 अक्तूबर से 3 नवम्बर तक मनाया गया। इस साल का उत्सव आर्य वीर दल बौद्धिक प्रशिक्षण शिविर समारोह के रूप मे मनाया गया। स्वामी निगमानन्द की अध्यक्षता मे राष्ट्र रक्षा सम्मेलन बहन सच्चिदानन्द आर्या की अध्यक्षता मे आर्य महिला सम्मेलन और श्री जयप्रकाश चौहान की अध्यक्षता मे आर्य युवक सम्मेलन आयोजित हुआ। जिसमे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हरियाणा के प० जगतराम व बस्ती राम की मण्डलियो ने भाग लिया। —किशोरी लाल आर्य

—आर्य समाज-41 टेगरा रोड, कलकत्ता मे विजयोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया। श्री रामलाल चौबे के सभापतित्व मे सभा का आयोजन किया गया जिसमें श्री राजकरण सिंह, श्री सहदेव शर्मा और श्री भगवान दीन आदि ने भाग लिया।—मोती शर्मा

५०० ईसाई परिवार पुनः वैदिक धर्म में

आर्यसमाज कुमुण्डे (बलागीर) की विशाल यज्ञशाला मे 25 अक्टूबर को 500 से अधिक इसाई परिवार पुन. अपने प्राचीन हिन्दू धर्म मे दीक्षित हुए। शुद्धि सस्कार उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त मन्त्री श्री प० विशिकेशन साहित्याचार्य स्व० श्री अखिलेश आचार्य गुरुकुल आमसेना ने कराया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमत्री श्री पृथ्वीराज जी शास्त्री शुद्ध होने वाले बन्धुओ को आशीर्वाद देने के लिए सम्मिलित हुए।

दीक्षित होने वाले सज्जनो को नये वस्त्र पहनकर यज्ञशाला में बैठाया गया पश्चात् विधिवत् वेदमन्त्रोच्चारण के साथ यज्ञोपवीत और गायत्री मन्त्र के साथ अछूत और विधर्मी मौन जानने वाले हजारो व्यक्तियो के मुख से वेद मंत्रोच्चारण करवा के शुद्ध किया गया। यह सारा कार्यक्रम उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द सरस्वती गुरुकुल की प्रेरणा एव अत्यन्त परिश्रम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेक आर्य बन्धुओ के साथ कन्या गुरुकुल आम, सेना की आचार्या बहन कौशल्या देवी गुरुकुल आमसेना के मुख्याध्यापक, डा० वामदेव जी एवं अनेक विद्वान उपस्थित हुए।

अमूल्य हीरा हरिकिशनसिंह मलिक

दिल्ली के सेवानिवृत्त न्यायधीश एवं कर्मठ तथा निष्ठावान् आर्य समाजी श्री हरिकिशन सिंह मलिक की निर्मम एव जघन्य हत्या पर हरियाणा प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता मे रविवार दि० 10-11-85 को प्रात. काल आर्य समाज दीवान हाल मे एक शोक सभा का आयोजन किया गया। आर्यसमाज के प्रसिद्ध सन्यासी ओमानन्द जी ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उन्हे आर्यजगत् का एक ऐसा हीरा बताया जिसका मूल्य आका नही जा सकता। आ० प्रा० प्र० सभा के सहमन्त्री श्री माम चन्द रिवारिया ने निष्ठावान, प्रचार से विमुक्त, सादगी पसन्द तथा कर्मठ आर्यसमाजी बताया। आर्यजगत् के सम्पादक श्री क्षितीश जी ने भी उन्हे भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए उनके गुणो की प्रशसा की। अन्त मे सभाध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए बताया कि वे घर-घर मे सत्यार्थ प्रकाश पहुचाना चाहते थे।

इस सभा मे सुझाव दिया गया कि उनकी सम्पत्ति का जनता के हित में प्रयोग हो और सरकार से माग की गई कि इस नृशंस हत्या की गुप्तचर विभाग द्वारा जाच कराकर अपराधियों को दंडित किया जाय।

यू० १०३/८१ लायसेंस टू पोस्ट विदाउट प्री-पेमेन्ट
रजिस्ट्रेशन नं० आर० एन० आई० ११९३/७२ डी० सी० ४०६
POSTED AT D. P. S. O. ON 21-11-1985 २४ नवम्बर, १९८५

आर्य समाज कलकत्ता। स्थापना शताब्दी समारोह

आर्य समाज कलकत्ता का स्थापना शताब्दी समारोह 21 दिसम्बर से 29 दिसम्बर तक कलकत्ता मैदान में आयोजित किया जा रहा है। इसमे आर्य जगत् के महान् विद्वान्, संन्यासी, उपदेशक एवं भजनोपदेशक भाग लेंगे। इस अवसर पर अनेक महत्वपूर्ण सम्मेलन एवं विद्वानो की विचार-गोष्ठियां भी आयोजित की जाएगी। आर्य महिला शिक्षा मण्डल ट्रस्ट द्वारा "नारी उत्थान और आर्य समाज" विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया है, जिसमे क्रमश: 15 सौ, 13 सौ और 11 सौ के प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार दिए जायेंगे। शताब्दी समारोह स्थल पर महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत ग्रन्थो, वेद एवं वेद-भाष्यो की एक सुन्दर प्रदर्शनी का आयोजन भी किया जायेगा।

इस अवसर पर अनेक स्थायी एव दूरगामी प्रस्ताव वाले महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने का भी निश्चय किया गया है। जिनमे प्रमुख है— आर्य समाज कलकत्ता का शतवर्षीय इतिहास प्रकाशन, ऋषि की जीवनी एवं पूना प्रवचन का बंगला मे प्रकाशन, हिन्दी-बंगला मे कर्मकाड का प्रकाशन तथा स्वास्थ्य एवं स्वाध्याय केन्द्र की स्थापना के साथ-साथ अनेक अन्य उपयोगी हिन्दी-बगला प्रकाशन।

टंकारा के लिए थालियाँ

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, टकारा की बैठक अक्टूबर में आर्य समाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली मे हुई थी उसमे निश्चय हुआ था कि टकारा मे प्रति वर्ष जो ऋषि बोधोत्सव होता है उसके ऋषि लंगर के लिये स्थाई रूप से 2 हजार थालियो का प्रबन्ध किया जाये। हमे अभी तक एक थाली की कीमत 25 रुपये के हिसाब से निम्नलिखित व्यक्तियो से उल्लिखित धनराशि प्राप्त हो चुकी है—

1 प्रांतीय आर्य महिला सभा दिल्ली—500, 2. आर्य समाज नया बांस, दिल्ली—625, 3 श्री विद्याप्रकाश सेठी, दिल्ली—2500, 4. सूरजचन्द सूद, नई दिल्ली—250, 5 श्रीमती श्यामादेवी सद, नई दिल्ली—250, 6. श्री रामसिह शर्मा, नई दिल्ली—250, 7. श्रीमती कृष्णा वर्मा, नई दिल्ली—50, 8. आर्य समाज पटेलनगर, नई दिल्ली—1250, 9. नवनीतलाल सत्यप्रिया धर्मार्थ ट्रस्ट, निजामुद्दीन—1250, 10 श्री शाति स्वरूप मेहन, दिल्ली—500, 11. श्रीमती विद्यावतीदेवी पानीपत—500, 12. आर्य समाज ग्रेटर कैलाश-I नई दिल्ली—2000, 13. श्री त्रिलोकचन्द मेरठ—25, 14. डा० काशी खुराना मेरठ—25, 15 श्रीमती कृष्णाकुमारी मेरठ—25।

इस पुण्य कार्य के लिए जो व्यक्ति थालियों के लिए दान देना चाहें वे महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट के उपकार्यालय, आर्य समाज, अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 के पते पर भिजवाने की कृपा करें, जैसे-जैसे थालियो की राशि प्राप्त होती जायेगी। हम आर्य जगत् मे उनके नाम प्रकाशित करते जायेगे। जिन दानियो ने थालिया देने के लिये अपने नाम दिये थे उनमे मेरी प्रार्थना है कि वे अपनी राशि भिजवाने की कृपा करे।

—रामनाथ सहगल, मंत्री, टंकारा ट्रस्ट

योग्य वरों की शीघ्र आवश्यकता

गृह कार्य मे दक्ष, सुन्दर, सुशील तथा मैट्रिक पास, आश्रम की तीन सुयोग्य कन्याओ के लिए, जिनका कद लगभग 5"-2"/3", आयु 19/20 वर्ष है, सुयोग्य-स्वस्थ तथा अच्छी आमदनी वाले, शिक्षित वरो की आवश्यकता है। आर्य विचारधारा वाले नवयुवको को प्राथमिकता। शीघ्र विवाह। कृपया पूर्ण पारिवारिक और आवश्यक विवरण तथा नवीन चित्र (फोटोग्राफ्स) सहित निम्नलिखित पते पर पत्र व्यवहार करें—प्रि० पी० डी० चौधरी, मैनेजर आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी-152001 (पंजाब)

कार्यालयाध्यक्ष चाहिए

आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार, (दाल बाजार) लुधियाना को एक सुयोग्य कार्यालयाध्यक्ष की आवश्यकता है। वैदिक संस्कार कराने में योग्यता रखने वाले को वरीयता दी जायेगी। —बलदेवराज सेठी

डी०ए०वी० शताब्दी की शोभा यात्रा, रविवार १६ फरवरी ८६

१६ फरवरी ८६ रविवार को प्रात: ११ बजे से डी०ए०वी० शताब्दी की शोभा यात्रा लाल किला मैदान से आरम्भ होकर चाँदनी चौक, फतेहपुरी, हौजकाजी अजमेरी गेट, मिण्टो रोड, कनाट प्लेस पार्लियामेंट स्ट्रीट, गोल डाकखाना, होती हुई मन्दिर मार्ग मे समाप्त होगी।

मेरी आर्य जनता से प्रार्थना है कि उक्त तिथि अभी से अंकित कर लेवे और उस दिन कोई अन्य कार्यक्रम न रख कर, शोभा यात्रा में सम्मिलित होवें। विस्तृत कार्यक्रम तैयार किया जा रहा है।

—रामनाथ सहगल संयोजक शोभा यात्रा

हिन्दी स्टेनो की शीघ्र आवश्यकता है

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के लिये एक हिन्दी स्टेनो की तुरन्त आवश्यकता है। सम्पर्क करें।

—रामनाथ सहगल, मन्त्री

वर चाहिए

30 वर्षीय, एम०ए०, बी०एड० दिल्ली नगर निगम के स्कूल में अध्यापिका वेतन 1300 रु० मासिक कद 5 फुट 4½ इन्च, इकहरा बदन, गौर वर्ण, सुशिक्षित परिवार, गृह कार्य में दक्ष, कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए।

सम्पर्क करें—श्री आर० सी० मनचन्दा, टेलीफोन 712 4179, के०यू०—151 पीतमपुरा दिल्ली-34 [पी]

पुरोहित चाहिए

आर्य समाज, मह (म० प्र०) को एक सुयोग्य पुरोहित चाहिए जो कि साथ ही आर्य विद्यालय में अध्यापन कर सके। रहने के लिए आर्य समाज में नि:शुल्क व्यवस्था। मासिक आय 800 रु० से 1000 रु० तक। पूर्ण विवरण सहित उपरोक्त पते पर सम्पर्क करे।

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाड़ी धीरज, (फोन : 516518, 527335) दिल्ली से छपवा कर कार्यालय आर्य जगत्, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली। फोन (343718)

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य-२५ रुपये | विदेश में ३० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४८ अंक ४८, रविवार, १ दिसम्बर, १९८५ दूरभाष : ३ ४ ३ ७ १८
आजीवन सदस्य-२५१ रु० | इस अंक का मूल्य—६० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८५, दयानन्दाब्द १६० मार्ग शीर्ष कृष्णा ४, २०४२ वि०

एक लाख आदिवासियों का धर्मान्तरण होगा

पोप पाल के भारत में स्वागत की अभूतपूर्व योजना

भारत के समस्त पूर्वी अंचल मे आज कल सर्वत्र यह चर्चा है कि आगामी मास पोप पाल के भारत आगमन पर विदेश पादरी छोटा नागपुर के लगभग एक लाख आदिवासियो का धर्म परिवर्तन करके उन्हे ईसाई बनायेगे और इस प्रकार अभूतपूर्व ढंग से पोप पाल का स्वागत करेंगे।

स्वतंत्र भारत मे ईसाईकरण का जो व्यापक षडयन्त्र चल रहा है, उसकी ओर देश के भूतपूर्व प्रधानमत्री, लोकदल के अध्यक्ष, श्री चौ०चरण सिंह ने विजयदशमी के आसपास समस्त राष्ट्रवासियों का ध्यान खींचा था और सरकार से विदेशी मिशनरियों को भारत से निकालने की माग की थी। ईसाई मिशनरी जिस अन्तर्राष्ट्रीय दावपेचो में पटु हैं उसके कारण वे भारत मे निरन्तर अपने षड्यन्त्रो की पूर्ति मे कामयाब होते रहते हैं और सरकार को उसके षड्यन्त्रों का आभास नही हो पाता। केन्द्रीय सरकार शुरू से ही इस विषय मे बहुत लापरवाही बरतती रही है।

पिछले दिनो हजारीबाग (बिहार) में सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने आर्य वीर दल के शिविर के दीक्षान्त समारोह मे घोषणा की कि आर्य समाज किसी प्रकार की भारत विरोधी गतिविधियो को सफल न होने देने के लिए कटिबद्ध है।

इस शिविर मे छोटा नागपुरक्षेत्र के उराव और मुंडा आदिवासी 40-50 मील दूर तक से आकर भारी संख्या मे शामिल हुए थे। श्री शालवाले ने भारत सरकार से यह मांग की कि देश के पूर्वी अचल में ईसाई पादरियो के आतकपूर्ण वर्चस्व को समाप्त करने के लिए वह सक्रिय कदम उठावे।

इससे पहले सर सघचालक बाला साहब देवरस भी इस विषय मे भारत सरकार को आगाह कर चुके हैं। पर अभी तक भारत सरकार ने इस विषय में कोई कदम उठाया हो, ऐसा प्रतीत नही होता।

आम जनता मे यह सवाल भी बार-बार पूछा जा रहा है कि पोप पाल एक धर्माध्यक्ष हैं, कोई राष्ट्राध्यक्ष नहीं। धर्मनिरपेक्ष भारत सरकार यदि किसी एक धर्माध्यक्ष को बुलाकर स्वागत करे, तो उसकी धर्मनिरपेक्षता कहा रहेगी? क्या किसी हिन्दू धर्माध्यक्ष या मुस्लिम धर्माध्यक्ष का भी इसी प्रकार स्वागत किया जाएगा? या क्या कोई विदेशी ईसाई सरकार किसी भारतीय हिन्दु धर्माध्यक्ष को बुलाकर उसका सरकार की ओर से स्वागत करेगी या उसे ईसाइयो के धर्मान्तरण की छूट देगी?

पच्चीस हजार आर्य युवकों को तैयार करने का संकल्प

आर्यसमाज अनारकली के वार्षिकोत्सव से युवकों मे उत्साह को नई लहर

इस वर्ष आर्यसमाज अनारकली के वार्षिकोत्सव पर अ०भा० आर्ययुवक महासम्मेलन के आयोजन के कारण सारे उत्सव पर युवकोचित उत्साह और उमंग का वातावरण छाया रहा। गुरुकुल कण्वाश्रम (कोटद्वार) के आचार्य, आधुनिक भीम ब्र० विश्वपाल जयन्त ने आर्य केन्द्रीय युवक परिषद की ओर से 25,000 आर्य वीरों को तैयार करने का संकल्प फिर दुहराया।

उन्होने गत कुछ मास में ही उत्तर प्रदेश मे एक हजार नए आर्य वीर तैयार किए हैं और उनकी कर्मठता से युवक परिषद की स्थान स्थान पर नई शाखाएं खुल रही हैं। नवयुवक बडे उत्साह से शाखाओ मे शामिल हो रहे हैं। उसी अनुभव के आधार पर उन्होने कहा कि आगामी एक वर्ष मे तो नही, पर पाच वर्षों मे हम पच्चीस हजार, नए आर्य युवक ऐसे तैयार कर सकेंगे जो ऋषि दयानन्द के मिशन को पूरा करने के लिए बड़े से बडा बलिदान करने को कटिबद्ध हो, इसका हमे पूरा विश्वास है।

युवको के इस उत्साह को देखकर पुराने और बुजुर्ग आर्यसमाजियों की नसो मे भी नए रक्त का संचार होने लगा और जो लोग सदा यह शिकायत करते रहते हैं कि अब आर्यसमाज में युवक नही आते उनके मुंह पर ताले लग गए। (आर्यसमाज अनारकली के वार्षिकोत्सव का सचित्र विस्तृत विवरण अगले अक मे पढ़िए।)

डी०ए०वी० शताब्दी समारोह शोभा यात्रा

आर्य जनता को सूचित किया जा रहा है कि डी०ए०वी० शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य मे एक विशाल शोभा-यात्रा का शनिवार 15 फरवरी 1986 को (16 फरवरी अवकाश होने के कारण तिथि में परिवर्तन किया गया है।) भारत की राजधानी दिल्ली में आयोजन किया गया है। यह शोभा यात्रा प्रात: 11 00 बजे लालकिला मैदान से आरंभ हो कर चांदनी चौक, घण्टाघर, नईसडक, चावड़ीबाजार, काजीहाऊस, अजमेरीगेट, मिन्टो रोड़, कनाट सरकस, रीगल बिल्डिंग, पार्लियामैंट स्ट्रीट, सरदार पटेल चौक, गोलडाकखाना, बिडलामन्दिर से होती हुई सायं 5-00 बजे आर्य समाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली मे समाप्त होगी।

भारत की समस्त आर्य समाजो, डी०ए०वी० सस्थाओ, स्त्री आर्य समाजो व अन्य आर्य-संस्थाओ से प्रार्थना है कि वे अभी से इस आयोजन मे पधारने का निश्चय कर के उस दिन अपने-अपने 'मोटो" एव ओ३म् के झण्डे लेकर इस शोभा-यात्रा मे अवश्य सम्मिलित हो यात्रा का विस्तृत कार्यक्रम तैयार किया जा रहा है। दिल्ली भारत की राजधानी होने से हमें आर्य सस्थाओ एवं डी०ए०वी० संस्थाओ की शक्ति का प्रदर्शन करना है।

दिल्ली से बाहर से आने वाले संस्थाओ के प्रतिनिधियो के निवास एवं भोजन का प्रबन्ध डी०ए०वी० शताब्दी समारोह समिति की ओर से किया जायेगा।

भारत की ऐसी कोई भी आर्य सस्था नही होनी चाहिए जो कि इस शोभा-यात्रा मे प्रतिनिधित्व न करे। इस उपलक्ष्य मे किसी भी जानकारी के लिए श्री दरबारी लाल जी, आर्गेनाइजिंग सैक्रेट्री-डी०ए०वी० कालेज मैनेजिंग कमेटी चित्र गुप्त मार्ग, नई दिल्ली-55 एवं जनरल सैक्रेट्री-आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 से सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं।

—रामनाथ सहगल, सयोजक, शोभा-यात्रा

परामर्शदाता—अमर स्वामी सरस्वती सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार

आओ सत्संग में चलें

प्रभो ! हम अमरत्व को प्राप्त करें

—रामप्रसाद वेदालंकार—

ओ३म् यस्त्वा हृदा कीरिणा मन्यमानोऽमर्त्यं मर्त्यो जोहवीमि ।
जातवेदो यशो अस्मासु धेहि प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्याम ॥
ऋ० ५-४१-१०

अन्वयार्थ —(यः मर्त्यं अमर्त्यं मन्यमान)जो में मरण धर्मा मनुष्य तुझको अमरणधर्मा मानता हुआ (कीरिणा हृदा जुहोमि) स्तुतिमय हृदय से पुन पुनः पुकारता हूं। (जातवेद ! प्रजाभि. अस्मासु यश. धेहि) हे सर्वज्ञ ! हे वेदोत्पादक ! हे कण-कण में विद्यमान रहने वाले भगवान् ! प्रजाओ के द्वारा हमें यश प्रदान कर, (अग्ने ! अमृतत्वम् अश्याम) हे प्रकाशस्वरूप ज्ञानस्वरूप प्रभो ! हम अमृतत्वमोक्ष को प्राप्त होवें।

मनुष्य मर्त्य है, नश्वर है, अनित्य है और भगवान अमर्त्य, अमरणधर्मा, अविनश्वर एवं नित्य है। यह सत्य जब मनुष्य को ज्ञात हो जाता है तो वह अपनी वास्तविकता को समझने लगता है और फिर वह कहने लगता है "वास्तव मे मै मर्त्य हू।" उसको यह भासने लगता है कि सदा उसकी एक सी स्थिति न रही है और न रहेगी। मनुष्य को जब अपनी इस अस्थिर अवस्था का बोध होने लगता है तो फिर यह मर्त्य किसी अमर्त्य का, अविनश्वर का, आश्रय लेना चाहता है। इस प्रसंग मे उसको जहां तनिक भी—इस अविनाशी तत्त्व का थोड़ा सा ज्ञान होने लगता है वहा वह उस तत्त्व के सम्बन्ध मे और अधिक से अधिक स्वाध्याय, श्रवण मनन चिन्तन और निदिध्यासन करने लगता है। श्रद्धा भक्ति से प्रार्थना करते हुए कहने लगता है—"मैं अस्थिर-विनाशी तुझ को स्थिर-अविनाशी, परम-परमेश्वर मानता हुआ अनुरागपूर्ण हृदय से, स्तुतिपूर्ण हृदय से पुनः पुन. पुकारता हू।" मै तुझ से याचना करता हू "हे सर्वज्ञ ! वेदोत्पादक, कण-कण मे विद्यमान रहने वाले प्रभो ! तू हमे यश प्रदान कर, प्रजाओ को यश प्रदान कर।"

यह निश्चित है कि प्रभु की वेद आज्ञा के अनुरूप एवं हृदयस्थ प्रभु-प्रेरणा के आधार पर जीवन में आचरण करने पर सर्वत्र हमे स्नेह, सम्मान यश आदि प्राप्त होगे। किन्तु हम उसमे इतना न डब जाय कि अपने वास्तविक लक्ष्य को भी भुला बैठे, इसलिए यह मर्त्य प्रार्थना करता है—हे प्रकाशस्वरूप प्रभो ! हम इस जगत् मे उपलब्ध होने वाले 'यश' आदि मे कभी इतने लीन न हो जाय कि हमें इसके अतिरिक्त कुछ और दिखाई न देवे, वरन् हम इस यशोमय सरोवर मे कमल की भाँति जल मे रह कर भी जल के ऊपर तैरते हुए तेरे पावन प्रकाश में वर्तमान रहते हुए सदा खिले रहे और अन्त मे अमरत्व को, मोक्ष को, प्राप्त करें।

इस मन्त्र का अभिप्राय यह है कि हम सदा स्वय को मर्त्य समझते रहें, ऐसी दशा मे फिर यह हमारा शरीर भी हमारा नही रहेगा और न यह धन-वैभव, पुत्र-कलत्र। मर्त्य को चाहिए कि वह किसी अमर्त्य का आश्रय ग्रहण करे और जब हमें उस अमर्त्य का ज्ञान हो जाय तो उसे मानते हुए, बुद्धि से स्वीकार करते हुए, उसकी स्तुति उपासना करते हुए उसका आह्वान करे। किस लिए ? इसलिए कि वह प्रभुदेव हमे प्रजाओ के साथ-साथ अन्नादि साधन एवं पेय पदार्थ प्रदान करे। फिर हम उन सन्तानो का उस प्रभु के संरक्षण मे उत्तम पालन-पोषण कर जगत् में ऐसा उत्तम बनाकर खड़ा करे कि जिससे हमे स्थान-स्थान पर यश मिले।

अपने कार्यो के आधार पर मिलने वाले इन मान-सम्मानों में, इन स्वागत समारोहो मे, इन सेवा-शुश्रूषाओ में, भेट पुरस्कारों में फंसकर कभी अपने अन्तिम उद्देश्य को, अपने परम लक्ष्य को भूल न जायं। हमारा चरम लक्ष्य ही हमसे ओझल न हो जाय। अत. यह सब प्राप्त करते हुए भी अपने लक्ष्य के प्रति सदा जागरूक बने रहे और आपकी शरण मे आकर पुरुषार्थ पूर्वक यह प्रार्थना करे—हे प्रकाश स्वरूप परमात्मन् ! हम तुझको अपना सच्चा स्वामी मान कर तेरे पावन नेतृत्व मे इस संसार में जहाँ यश पावें वहाँ मोक्ष को भी प्राप्त कर सके, ऐसी हमें शक्ति और भक्ति प्रदान करो।

निष्कर्षतः जो भी संसार के इस मान-सम्मान मे न फस कर, इसमें न डूब कर अपने जीवन के चरम लक्ष्य के प्रति सदा सजग रहता है, उसे फिर भगवान् वह प्रसाद देता है कि जिसके सम्मुख यह सब कुछ तुच्छ भासता है, नगण्य लगता है। अत. अन्तिम उद्देश्य के प्रति भक्त को सजग रहना चाहिए।

पता—कर्म कुटीर, आर्यनगर,
ज्वालापुर (सहारनपुर)

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के बारें में सूचना

जब से हैदराबाद आर्य सत्याग्रह (1938-39 मे भाग लेने वालो को स्वाधीनता सेनानी सम्मान दिये जाने की घोषणा हुई है, तबसे अनेक लोगो के पत्र इस सम्बन्ध मे सार्वदेशिक सभा के कार्यालय मे आ रहे है। सबका अलग-अलग उत्तर देना सभा के लिए मुश्किल है। ऐसे लोगो को 3 नवम्बर के अंक मे प्रकाशित सूचना को ध्यान से पढना चाहिए।

गृहमंत्रालय मे सम्पर्क करने से ज्ञात हुआ है कि जेलो के प्रमाणपत्र यदि आवेदन कर्ता सरकारी सूत्रो से लेकर भी आवेदन करेंगे, तब भी सरकार उनके दावे को तब तक स्वीकार नही करेगी जब तक कि वह स्वय सम्बन्धित सरकार से आवश्यक प्रमाणपत्र पाकर सन्तुष्ट न हो ले। इसलिए आवेदन कर्ताओ के लिए आवश्यक है वे अपने गिरफ्तार होने की तिथि, सजा की अवधि और रिहाई की तिथि और जिन-जिन जेलो मे रहे उसका पूरा विवरण सरकारी अधिकारी के पास नई दिल्ली भेजे। बिना पूरे विवरण के आवेदन करने पर सम्पुष्टि न होने से मामला निपटाना मुश्किल होगा।

सत्याग्रहियो को उपराक्त कार्यालय मे से निर्धारित फार्म मगाकर आवेदन करना चाहिए। जो लाग दिवगत हैं उनकी पत्नी भी नियमानुसार स्वाधीनता सेनानी सम्मान के लिए अधिकृत माना जायेगा। उनके सम्बन्धियो, आर्य समाजो एव आर्य प्रतिनिधि सभा को इस विषय मे पूरी सहायता करनी चाहिये।

[illegible] वर्तमान मे तीन राज्यो मे बटी हुई है अलग-अलग राज्यो मे हैं, तब उनको अलग-अलग राज्यो से कारावास का विवरण प्राप्त करना होगा।

केन्द्र सरकार द्वारा सामान्यतः छः मास तक कारावास मे रहने वाले (जो अवधि 5 मास से ऊपर होनी चाहिए) केन्द्रीय सरकार की पेन्शन योजना के अधिकारी होते है। एक दो या तीन मास कारावास मे रहने वालो के लिए राज्य सरकारो के अपने-अपने नियम है और उनकी पेन्शन की राशि भी भिन्न-भिन्न है।

इसके अतिरिक्त यदि किसी ने अन्य प्रकार के त्याग या कष्ट उठाये है तो उनके केस पर भी सरकार प्रमाणो और गुणावगुण के आधार पर विचार कर सकती है।

ब्रह्मदत्त स्नातक, जनसम्पर्क सलाहकार, सार्वदेशिक सभा

भूल सुधार

टंकारा के लिए थालियों की सूची में क्रम नं० 1 पर 500 रु० प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली भूल से छप गया है, यह राशि श्रीमती सरला मेहता जी दिल्ली की ओर से दी गई है। पाठक भूल सुधार करले।

—मन्त्री टंकारा ट्रस्ट

सुभाषित

सुजीर्णमन्नं सुविचक्षणः सुतः
सुशासिता स्त्री नृपतिः सुसेवितः।
सुचिन्त्य चोक्तं सुविचार्य यत्कृत
सुदीर्घ कालेऽपि न याति विक्रियाम् ।।

—हितोपदेश

यदि अन्न अच्छी तरह पच जाये, यदि पुत्र बुद्धिमान और व्यवहार-कुशल हो, स्त्री यदि आज्ञानुवर्तिनी हो, राजा की यदि अच्छी प्रकार सेवा की हो, बात मुंह से निकालने से पहले अच्छी तरह सोच लिया हो, और सुविचार-पूर्वक जो कार्य किया गया हो—तो वे चिरकाल के पश्चात् भी विकार को प्राप्त नहीं होते।

सम्पादकीयम्

ये ताकतें फिर सिर उठाने लगीं।

पिछले दिनों दो ऐसे चिंताजनक समाचार मिले हैं जिनके परिणाम को देखते हुए समस्त राष्ट्रवासियों को सावधान होने की आवश्यकता है।

पहला समाचार तो यह है कि आगामी वर्ष ईसाई धर्माध्यक्ष पोप पाल के भारत आगमन पर पूर्वांचल के पादरियों ने एक लाख आदिवासी बन्धुओं का धर्मान्तरण कर और उन्हें ईसाई बना कर पोप पाल को भेंट करने का निश्चय किया है। इतनी बड़ी संख्या मे 'नई भेड़ें' पाकर कौन 'गड़रिया' खुश नही होगा ?

ईसाई पादरियो ने यह महत्त्वाकाक्षी अद्भुत स्वागत-योजना किस बूते पर बनाई है, यह कहने की आवश्यकता नहीं। उनके पास न धन की कमी है, न अन्य साधनों की। अन्तर्राष्ट्रीय रेडक्रास सोसायटी की ओर से बाढ़ आदि संकटों में सहायता के नाम पर जितनी सामग्री और धन आता है, उसका कितना बड़ा भाग गरीब आदिवासियो के धर्मान्तरण के काम आता है, यह जानकार लोगो से छिपा नही है। मदर टेरेसा की उदारता का और निष्काम सेवा का ढोल जिस प्रकार सारे संसार में पीटा जाता है और उनके पास सभी ओर से धन खिचा चला आता है, उसकी भी अन्तिम परिणति अपने रोगियों के ईसाई-करण मे होती है, इसके प्रमाण अनेक बार सामने आ चुके हैं।

इसके अलावा इस राजनीतिक पहलू को भी नजरन्दाज नही किया जा सकता कि जब अमरीका के राष्ट्रपति रीगन प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी से वार्तालाप के बाद उन्हें और उनकी मार्फत पूरे भारत को पूरी तरह अपना वशवद नहीं बना सके, तब उन्होने भारत पर दबाव डालने के लिए पाकिस्तान को अत्यन्त आधुनिक नए हथियार देकर कश्मीर की सियाचिन अधित्यका में आक्रमण के लिए उकसाया, और साथ ही चीन को भी पाकिस्तान की सहायता के लिए सन्नद्ध किया। पाकिस्तान द्वारा परमाणु बम बनाए जाने के विरुद्ध उन्होने चेतावनी पाकिस्तान के बजाय भारत को दी और कहा कि पाकिस्तान से जल्दी से जल्दी समझौता कर लो, अन्यथा कही बहुत देर न हो जाए। इसी अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक परिस्थिति के सन्दर्भ में पोप पाल के भारत आगमन को और पूर्वांचल के पादरियो द्वारा एक लाख आदिवासियो के धर्मान्तिरण को देखा जाना चाहिए और तब उसके भयावह परिणाम का अनुमान लगाना चाहिए। तभी यह समझा जा सकता है कि अन्दर ही अन्दर कैसा भीषण षड्यंत्र चल रहा है।

एक तरफ यह भीषण षडयंत्र है, दूसरी ओर 'मोतियों वाली' हमारी भोली भारत सरकार पोप पॉल के स्वागत मे पलक-पावड़े बिछाए उनकी सरकारी मेहमानवाजी को आतुर है। पोप पॉल आएं, हमारे सिर आंखो पर, भारत अपने परम्परा-प्राप्त आतिथ्य-प्रेम से पीछे हटने वाला नही है। पर यदि घर मे आया कोई मेहमान उस घरके निवासियों की अपने धर्म और राष्ट्र के प्रति वफादारी ही बदलने की कोशिश करे, तो वह कैसा मेहमान ! भारत अतीत मे भी ऐसी भोली बेवकूफियां कर चुका है और उसका दुष्परिणाम भुगत चुका है। क्या अब भी हमको अक्ल नही आएगी।

दूसरा समाचार यह है कि जिस 75 वर्षीया मुस्लिम खातून इन्दौर वासी, शाहबानो की याचिका पर फैसला देकर उच्चतम न्यायालय ने समस्त मुस्लिम महिलाओ को अत्याचारो से बचाने के लिए अपना सुविचारित फैसला दिया था, उस फैसले के विरुद्ध 'बनातवालों, और 'जमातवालों' ने कोहराम मचाकर 'इस्लाम खतरे मे' का नारा लगाया और अहले इस्लाम के अनुयायियो को भडकाया। उसके दबाव में शाहबानो भी आगई और अब उसने उच्चतम न्यायालय से अपील की है कि वह अपना फैसला वापिस ले ले। गोया उच्चतम न्यायालय भारत की सर्वोच्च न्यायपीठ न होकर शाहबानो का बंधुआ मजदूर है, जो उसके इशारे पर ही काम करता है। क्या देश का कानून मियां-बीबी के झगड़े की तरह 'आज कलह-कलसुलह' की तरह भावनाओं के ज्वार और भाटे की तरह चलता है ? जिस निर्णय की देश के सभी बुद्धिजीवियों ने और प्रगतिशील-मुसलमानों ने भी, प्रशंसा की थी, जिस निर्णय से सभी मुस्लिम औरतों ने शाहबानों को अपना मुक्तिदाता माना था, और जिस निर्णय के समर्थन में केन्द्रीय राज्यमंत्री श्री मुहम्मद आरिफ खान ने संसद में अपने तर्कों से बनातवालों और जमातवालों के मुह बंद कर दिए थे, अब उसी निर्णय को वापिस लेने का आग्रह और वह भी स्वयं शाहबानो की तरफ से ? जरूर दाल में कुछ काला है।

शाहबानो ने प्रेस कान्फ्रेंस मे कहा तो यह है कि मैं किसी दबाव में आकर यह वक्तव्य नही दे रही हूं, पर जिस प्रकार वह वक्तव्य देने के समय मुस्लिम कठमुल्लों से घिरी हुई थी, उसी से पता लगता था कि वह किसी दबाव मे हैं या नही। दाल में काला इससे भी पता लगता है कि शाहबानो ने अपना केस उच्चतम न्यायालय से वापिस नही लिया है और उसके भूतपूर्व खाविन्द मोहम्मद अहमद खान ने कहा है कि मैं तो सुप्रीम कोर्ट के निर्णय से बंधा हुआ हूं और उस निर्णय के अनुसार जितनी रकम मुझे शाहबानो को देनी है वह मैं दे रहा हू। इससे यह स्पष्ट होगया कि कठमुल्लों ने शाहबानो के पति को समझाया कि तुम क्यों अनावश्यक बखेड़ा खड़ा करते हो, अदालत जितनी रकम देने को कहती है वह दे-दा के नक्की करो, और इधर शाहबानो को समझाया कि तुझे तो इतनी रकम मिल ही रही है, तेरा उद्देश्य पूरा हो गया फिर तू शरियत के मामले मे क्यों टाग अड़ाती है, शरीयत पर हमारा ही कब्जा रहने दे—आखिर हमे भी अपनी रोजीरोटी चलानी है।

शाहबानो विचारी बुढिया ! उसे दया आगई। और वह अपने ही वमन किए हुए को दुबारा निगलने को तैयार हो गई। पर शाहबानो यह भूल गई कि आज जो कठमुल्ले अल्लाह और रसूल की दुहाई देकर मजहब के ठेकेदार बन रहे हैं, उनमें से एक भी उस समय अल्लाह और रसूल के नाम पर उसकी तरफदारी करने नहीं आया था जब 43 साल पहले उसके पति ने तीन बार 'तलाक तलाक तलाक' कह कर उसे घर से निकाल दिया था और उसकी किसी भी प्रकार की आर्थिक सहायता करने से इन्कार कर दिया था। तब शरियत कहां गई थी ?

सच बात तो यह है कि मुस्लिम समाज की, खास तौर से भारतीय मुस्लिम समाज की, बागडोर सदा ऐसे कठमुल्लो के हाथ मे रही है, जो मुस्लिम समाज को कभी बीसवी सदी के प्रकाश में नही आने देना चाहते। क्योंकि इससे उन्हीं के अस्तित्व पर आंच आती है। इसीलिए वे अपने कठमुल्लेपन को राजनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल करते हैं और बनातवाले और जमातवाले इन्ही कठमुल्लों के भरोसे अपनी राजनीति चलाते हैं। क्या पाठकों को यह याद दिलाने की आवश्यकता है कि इन्ही कठमुल्लो ने कभी सर सैयद अहमद खा का और उनके द्वारा अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के खोले जाने का विरोध किया था, क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि मुसलामानों की नई पीढ़ी आधुनिक शिक्षा से दीक्षित हो ? खास तौर से उन्हें अंग्रेजी और विज्ञान की पढ़ाई से दुश्मनी थी। आज यह बात आश्चर्यजनक लग सकती है, पर इतिहासविदो से यह बात छिपी नही है। आज पाकिस्तान के जितने भी वैज्ञानिक, इंजिनीयर, डाक्टर और उच्च शिक्षा प्राप्त लोग हैं वे प्रायः सबके सब अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालल की ही देन हैं (पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल जियाउल हक दिल्ली के सेंट स्टीफेंस कालेज की देन हैं)।

विज्ञान की कसौटी पर जिनका धर्म खरा नही उतरता, वे लोग सदा विज्ञान की रोशनी से घबराते हैं। ईसाइयत और इस्लाम का इतिहास विज्ञान-विरोधी मान्यताओ के कारण किए गए अत्याचारों सें भरा पडा है। अरब के शाहजादे को भी अन्तरिक्ष में उड़ान भरने पर ही 'ऊपर से पृथ्वी गोल दिखती है' कहने का साहस हुआ, क्योंकि जमीन पर बैठकर कठमुल्ले लोग उसकी बात को नही सुनने देते।

जब किसी धर्म को मानवीयता, सहज प्राकृतिक न्याय और देश के संविधान से ऊपर मान लिया जाता है, तब वह धर्म अपने अनुयायियो को मानव-द्रोह न्याय-द्रोह और देश-द्रोह की ओर अनायास प्रेरित करने लगता है। ऐसा धर्म एक समानान्तर कानून व्यवस्था बनाकर धर्मराज्य स्थापित करना चाहता है और इस तरह अपने अनुयायियों को कठमुल्लेपन के गढ़े से उबरने नहीं देता। बम्बई मे दो लाख मुसलमानों द्वारा उच्चतम न्यायालय के निर्णय के विरोध मे विशाल प्रदर्शन मुस्लिम समाज के इसी अभिशाप का द्योतक है।

अब इस्लाम और ईसाइयत की ऐसी ताकतें फिर सिर उठाने लगी हैं।

हिन्दुत्व की रक्षा के लिए लोहे से लोहा बजाने वाला

लौह पुरुष वीर बन्दा वैरागी

—सुन्दरदास—

भारतवर्ष का इतिहास वीर पुरुषों की क्रान्तिकारी गाथाओं से भरा पड़ा है। इन महापुरुषों में वीर बंदा वैरागी का स्थान बहुत ऊँचा है। वैरागी कोई साधारण व्यक्ति न थे, इनका सैनिक के तौर पर ऊंचा स्थान ही नही वे ईश्वर भक्ति, ज्ञान और धार्मिक शक्ति से भरपूर थे और राजसत्ता लेने पर भी उन्होंने वैराग्य को नहीं छोड़ा इसीलिए वे वैरागी नाम से प्रसिद्ध हुए।

वीर वैरागी का जन्म कश्मीर के पुछ जिले के राजौरी गांव में डोगरा राजपूत श्री रामदेव के घर २७ अक्तूबर सन् 1670 ई० को हुआ।

इनका जन्म का नाम लक्ष्मण देव रखा गया। इनका क्रीड़ास्थल गृह आगन न रहकर जंगल बना। जब यह 14 वर्ष के हुए तो एक दिन हिरनी का शिकार करने गए। हिरनी की मौत हो गई। उसके पेट में से दो बच्चे निकले जो उस समय तड़प-तड़प कर मर गये। यह दृश्य देखकर लक्ष्मण देव को बहुत दुख हुआ। इन्होंने घर-बार छोड़ दिया। वैराग्य से भरे हुए साधु वैरागी जानकी दास के पास जाकर दीक्षा ली और इनका नाम माधो दास वैरागी रखा गया। इन्होने वैराग्य भक्ति में तीन साल तपस्या की। इसके बाद वह तीर्थ यात्रा के लिए हरिद्वार, बद्रीनाथ काशी आदि होते हुए दक्षिण भारत में गोदावरी नदी के किनारे पर स्थित नादेड़ पहुंचे। वहां अपना आश्रम बनाया। इनकी तपस्या का प्रभाव इतना बढ़ गया कि इनका नाम सारे क्षेत्र में फैल गया। वहाँ के लोगों में इनके प्रति अटूट श्रद्धा हो गई।

सन् 1708 ई० में गुरु गोबिन्द सिंह जी की श्री वैरागी से भेंट हुई। आपसी वार्तालाप होने के बाद गुरु जी ने पंजाब और उत्तर भारत में मुस्लिम अत्याचारो से अवगत कराया और उत्तर भारत की तरफ जाने के लिए कहा। गुरु जी ने इन्हें पच्चीस व्यक्ति, एक तलवार और पाँच तीर दिये। वह राजपूताना के भरतपुर से होते हुए पंजाब आये। पंजाब पहुंच कर बन्दा ने अपना विजय-अभियान प्रारम्भ किया। फतेहाबाद, सिरसा, कैथल, भिवानी और सोनीपत पर विजय प्राप्त की। इसके बाद सरहिन्द की ईंट से ईंट बजाई और गुरुजी के साहबजादों का बदला लिया। वहाँ सूबेदार वजीर खां और दीवान सुच्चानन्द को समाप्त किया क्योंकि वजीर खा ने ही श्री गुरु गोविन्द सिंह जी के पुत्रों को दीवार में चुनने की आज्ञा दी थी। दीवान सुच्चानन्द ने ही सूबेदार को सलाह दी थी कि दुश्मन के बच्चों को समाप्त करना अच्छा है जिससे आगे भी शत्रु से भय न रहे। इसके बाद वैरागी ने जलालुद्दीन के गांव में हमला किया। फिर सढोरा के लोगों के साथ घोर युद्ध हुआ क्योंकि सरदार उस्मान खां ने बुद्धशाह को मारा था। जबकि बुद्धशाह ने गुरु गोविन्द सिंह की सहायता की थी। वैरागी ने बुद्धशाह की हत्या का बदला लिया।

वीर वैरागी ने आठ साल लगातार युद्ध किया और शत्रुओं के दांत खट्टे किये। सन् 1716 ई० में हिमाचल के चम्बा के राजा उदयसिंह की लड़की से शादी की। शादी करने पर भी इन्होने धर्मयुद्ध जारी रखा। जब दिल्ली के बादशाह फर्रुखसियर ने देखा कि बन्दा ने पंजाब में अपनी शक्ति बढ़ा ली है और छोटे-छोटे क्षेत्र फतेह करता जा रहा है तो बादशाह को भय हुआ कि कहीं वीर वैरागी दिल्ली पर हमला न कर दे। इस भय को दूर करने के लिए उसने अपने दरबारियों को बुलाया और कहा कि जो वैरागी को पकड़ लायेगा उसको बहुत बड़ी जागीर दूंगा। लेकिन किसी की हिम्मत न हुई। तब बादशाह परेशान हो गया।

अन्त में यह निश्चय किया कि वैरागी के साथियों में फूट डाली जाये। अन्त में फर्रुख सियर वीर वैरागी के साथियों में फूट डालने में सफल हो गया। इससे वैरागी की शक्ति कम हो गई। वैरागी ने इन साथियों को बहुत समझाया कि बादशाह सबको मारेगा, जिससे देश की भारी नुकसान होगा। पर वे लोग लोभ के जाल में फंस चुके थे। वीर वैरागी का बना बनाया काम बिगड़ गया। घर की फूट से सारे राष्ट्र की तबाही का सामना करना पड़ा। अन्त में वीर वैरागी पकड़े गये और दिल्ली में इनको कैदी बनाया गया। उन्हें अमानवीय कष्ट दिये गए। उनके बच्चे का कलेजा निकाल कर उनके मुँह पर मारा। लेकिन उनके मुँह से उफ तक न निकली।

योद्धा के साथ सन्त

आज इसे 300 वर्ष से भी ऊपर हो चुके हैं। लेकिन इस वीर योद्धा का इतिहास साक्षी है कि जहाँ वे संन्यासी तपस्वी, त्यागी और वैरागी थे, वहाँ वे महान् समाज सुधारक भी थे। उन्होंने जागिरदारी को खत्म किया। सरहिन्द को फतेह करके लोहगढ़ किले को अपनी राजधानी बनाया। उम्र भर कभी मांस न खाया। सभी इतिहासकार इनको वीर योद्धा मानते हैं। इन्होंने देशवासियों को विदेशी हकूमत से आजाद कराने के लिये जैसे को तैसा वाली नीति अपनायी। उन्होंने जीवन भर हिन्दुत्व की रक्षा के लिए संघर्ष किया।

अन्त में इस वीर योद्धा ने अपने सात सौ चालीस साथियों के साथ दिल्ली के चांदनी चौक में अपना बलिदान देकर जीवन सार्थक किया। इनके बलिदान से राष्ट्र में नई जागृति आई। ऐसे महापुरुषों के बलिदान से हमारा भारत स्वतन्त्र हो सका।

—मन्त्री, वीर बन्दा वैरागी, समिति नई दिल्ली-15

27 अक्तूबर को रमेशनगर में वीर बन्दा वैरागी के जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में मनाए गए समारोह में प्रो० वेदव्यास जी भाषण दे रहे हैं।

वीर बन्दा वैरागी का स्मारक बनाया जाए

सनातन धर्म मन्दिर, रमेश नगर के हाल में 27-10-85 को वैरागी का जन्म दिवस सार्वजनिक समारोह के रूप में सम्पन्न हुआ। समारोह का उद्घाटन करते हुए डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध समिति के प्रधान प्रो० वेद व्यास ने कहा कि वीर बन्दा वैरागी के जीवन आदर्शों की आज बहुत आवश्यकता है। जिस प्रकार उन्होंने हिन्दू धर्म को बचाने और भारत की एकता को मजबूत करने के लिए अपना व अपने बच्चे का बलिदान कराया, देशवासियो को इसकी जानकारी न के बराबर है। वीर बन्दा वैरागी का पूर्ण जीवन का इतिहास शिक्षा संस्थाओं में पढ़ाया जाना चाहिए ताकि बच्चों को अपने पूर्वजो के इतिहास की सही जानकारी प्राप्त हो सके।

भारतीय जनता पार्टी के मंत्री श्री कृष्ण लाल शर्मा ने अपने भाषण में कहा कि वीर बन्दा बहादुर का हिन्दू धर्म के संस्कारो पर अडिग रहते हुए गुरु गोबिन्द सिंह के बच्चों के वध का बदला लेकर अपने ही धर्मानुयायियों की गद्दारी के कारण अपने पुत्र सहित बलिदान हुआ। उनकी यादगार को जीवित रखने के लिए वीर बन्दा वैरागी का स्मारक स्थापित होना चाहिए।

डा० नन्द किशोर खोसला, महामंत्री, विवेकानन्द मैडीकल मिशन ने वीर बन्दा वैरागी के जीवन की छोटी-छोटी घटनाओं का वर्णन किया और कहा कि उनके बलिदान जैसी घटना आज तक संसार में नहीं मिलती। हिन्दुओं में उनके आदर्शों को प्रचारित करने के लिए वीर बन्दा वैरागी का स्मारक बनाना नितान्त आवश्यक है।

वीर बन्दा वैरागी समिति के प्रधान श्री ओम्प्रकाश लाम्बा तथा मंत्री श्री सुन्दर दास ने समारोह में आये सभी लोगों का धन्यवाद किया। समारोह के अन्त मे लगभग 2 हजार लोगो ने लंगर का प्रसाद ग्रहण किया।

—सुन्दर दास, मन्त्री

स्वामी विवेकानन्द का एक दुर्लभ लेख

आचार का आधार है आहार

आचार को शास्त्रों ने परम धर्म कहा है। पर उस आचार को सात्विक बनाने के लिए आहार का कितना महत्व है, इस बात को आज का तथाकथित सुशिक्षित समुदाय भी नहीं समझता। आम तौर पर लोग तर्क करते हैं—खान-पान से आचार का क्या सम्बन्ध है ? इस विषय में पूर्व और पश्चिम की विचारधारा में जो अन्तर है, उसकी सुन्दर अभिव्यक्ति इस लेख में हुई है। यह विवेचना भी किसी सामान्य व्यक्ति ने नहीं, हिन्दू जाति के जागृति-मन्त्रदाता स्वामी विवेकानन्द ने की है। पढ़िये यह दुर्लभ लेख।

'आचार' प्रथमो धर्मः
मनु १/१०८

आचार ही पहला धर्म है। आचार की पहली बात है सब विषयो मे साफ-सुथरा रहना। आचार-भ्रष्ट से क्या कभी धर्म होता है? अनाचारी का दुख नही देखते हो, देखकर भी नही सीखते हो? इतनी महामारी हैजा, मलेरिया! किसके दोष से होता है? हमारे दोष से, हमी महा अनाचारी है।

आहार शुद्ध होने से मन शुद्ध होता है। मन शुद्ध होने से आत्मा सम्बन्धी स्मृति होती है – इस शास्त्र-वाक्य को हमारे देश में सभी सम्प्रदायो ने माना है। फिर भी शंकराचार्य ने आहार शब्द का अर्थ 'इन्द्रिय' और रामानुजाचार्य ने भोज्य द्रव्य किया है। सर्ववादी-सम्मत सिद्धात यही है कि दोनो ही अर्थ ठीक हैं। विशुद्ध आहार न होने से सब इन्द्रियां ठीक-ठीक काम कैसे करेंगी? खराब आहार से सब इन्द्रियो की ग्रहण-शक्ति का ह्रास होता है। जिसको पकड़कर चलाना पड़े, खिलाना पड़े, वह तो जीवित रोगी है – हतभाग्य है! इसी तरह कोई विशेष भोजन किसी विशेष शारीरिक एवं मानसिक अवस्था को उपस्थित करता है, यह भी कई बार सिद्ध हो चुका है। हमारे समाज मे जो इतना खाद्य अखाद्य का विचार है उसकी जड़ मे भी यही तत्त्व है, यद्यपि हम अनेक विषयों मे मुख्य वस्तु को भूलकर सिर्फ छिलके को ही लेकर बहुत कुछ उछलकूद मचाते हैं।

आहार के तीन दोष

रामानुजाचार्य ने खाद्य पदार्थ के सम्बन्ध मे तीन दोषो से बचने के लिए कहा है। जाति-दोष अर्थात् जो दोष खाद्य पदार्थ का जातिगत हो, जैसे प्याज-लहसुन आदि उत्तेजक पदार्थ खाने से मन मे चंचलता आती है अर्थात् बुद्धि भ्रष्ट होती है। आश्रय-दोष—अर्थात् जो दोष व्यक्ति विशेष के स्पर्श मे आता है। दुष्ट लोगों का अन्न खाने से ही दुष्ट बुद्धि होगी और भले आदमी का अन्न खाने से भली बुद्धि का होना इत्यादि। निमित्त-दोष—अर्थात् मैला, दूषित, कृमि-कीट युक्त अन्न खाने से भी मन अपवित्र होता है।

इनमे से जाति-दोष और निमित्त-दोष से बचने की चेष्टा सभी कर सकते हैं, किन्तु आश्रय-दोष से बचना सबके लिए सहज नही है। इसी आश्रय-दोष से बचने के लिए ही हमारे देश मे छुआछूत का विचार है। अनेक स्थानों पर इसका उल्टा अर्थ लगाया जाता है और असली अभिप्राय न समझने से यह एक कुसंस्कार भी हो गया है। यहां लोकाचार को छोड़कर लोक-मान्य महापुरुषो के ही आचार ग्रहणीय हैं। श्री चैतन्य देव आदि जगद्गुरुओ के जीवनचरित्र को पढ़कर देखिए—वे लोग इस सम्बन्ध में क्या व्यवहार कर गये हैं। जाति-दोष से दूषित अन्न के सम्बन्ध में भारतवर्ष जैसा शिक्षा-स्थल पृथ्वी पर इस समय और कही नहीं है। समस्त संसार में हमारे देश के सदृश पवित्र द्रव्यों का आहार करने वाला और दूसरा कोई भी देश नही है। निमित्त-दोष के सम्बन्ध में इस समय बड़ी भयानक अवस्था उपस्थित हो गई है। हलवाइयो की दूकान, बाजार मे खाना, आदि सब कितना महा अपवित्र है, देखने ही हो। अनेक प्रकार के निमित्त-दोष से दूषित वहा के कपड़े और सामग्री होती है। यह जो घर-घर मे अजीर्ण होता है वह इसी हलवाई की दूकान का फल है। गाव के लोगो को तो अजीर्ण और पेशाब की इतनी बीमारी नही होती। इसका प्रधान कारण है पूरी, कचौड़ी और विषाक्त लड्डुओं का अभाव।

जहर क्या है ?

पाश्चात्य देशो मे यह विवाद हो रहा है, मास खाने से रोग होता है, या निरामिष भोजन करने से रोग होते हैं। एक पक्ष कहता है कि मांसाहारी रोगी होता है। दूसरा दल कहता है कि यह सब झूठ बात है। यदि ऐसा होता तो हिन्दू नीरोग होते और अंग्रेज, अमेरिकन आदि प्रधान मांसाहारी जातियां इतने दिनो मे रोग के कारण मटियामेट हो गई होतीं। एक पक्ष कहता है कि बकरा खाने से बकरे जैसी बुद्धि हो जाती है, सूअर खाने से सूअर जैसी बुद्धि होती है, मछली खाने से मछली जैसी होती है। दूसरा पक्ष कहता है, गोभी खाने से गोभी जैसी बुद्धि होती है, आलू खाने से आलू जैसी बुद्धि होती है और भात खाने से भात-बुद्धि होती है—जड़ बुद्धि की अपेक्षा चैतन्य बुद्धि होना अच्छा है। एक पक्ष कहता है कि जो भात-दाल है वही मास भी है। दूसरा पक्ष कहता है कि हवा भी तो वही है, फिर तुम हवा खाकर क्यो नही रहते। सब पक्षों की राय जान-सुनकर मेरी तो यही राय होती है कि हिन्दू ही ठीक रास्ते पर हैं। अर्थात् हिन्दुओ की यह जो व्यवस्था है कि जन्म-कर्म के भेद मे आहार आदि में भिन्नता होगी, यही ठीक सिद्धान्त है। मांस खाना अवश्य असभ्यता है। निरामिष भोजन ही पवित्र है। जिनका उद्देश्य धार्मिक जीवन व्यतीत करना है, उनके लिए निरामिष भोजन ही अच्छा है।

तली हुई चीजें असली जहर हैं। हलवाई की दूकान यम का घर है। घी और तेल गरम देश मे जितना कम खाया जाए, उतना ही अच्छा है। घी की अपेक्षा मक्खन जल्दी हजम होता है। मैदे में कुछ भी सार नही है, देखने ही मे सफेद है। जिसमे गेहूं का सार भाग हो वही आटा खाना चाहिए। हमारे बंगाल देश में इस समय भी दूर के छोटे-छोटे गावो मे जो भोजन का बन्दोबस्त है, वही अच्छा है। किस प्राचीन बगाली कवि ने पूरी-कचौडी का वर्णन किया है? यह पूरी-कचौडी तो बाहर से आई है। वहाँ भी लोग बीच-बीच में ही उन्हे खाते हैं, हर रोज 'पक्की रसोई' खाने वालो को तो मैंने नही देखा है। मथुरा के चौबे कुश्तीबाज होते हैं। लड्डू और कचौडी उन्हे अच्छी लगती है। दो ही चार वर्षों मे चौबेजी की पाचन शक्ति का सर्वनाश हो जाता है, फिर तो चौबेजी चूर खा-खाकर गुजारा करते है।

गरीबों को भोजन नहीं मिलता, इसलिए वे भूखे ही मरते हैं और धनी अखाद्य पदार्थ खाकर मरते हैं। हलवाई की दूकान पर खाने लायक कोई चीज नही होती, वहा के सब पदार्थ एकदम विष हैं। पहले अशिक्षित लोग ही इन्हे खाते थे, इस समय तो शहर के लोग—विशेषकर वे ग्रामीण लोग जो शहर में वास करते हैं—इन्हे ही खाते हैं। इनसे अजीर्ण होकर यदि अकाल मृत्यु हो जाय, तो इसमे आश्चर्य ही क्या है? मुफ्त मे मिलने पर भी कचौड़ी-जलेबी को फेंककर एक पैसे की लाई मोल लेकर खाइये। किफायत भी होगी और कुछ खाया, ऐसा भी होगा। भात, दाल, रोटी, तरकारी और दूध यथेष्ट भोजन है, किन्तु दाल दक्षिणियों जैसी खाना उचित है अर्थात् दाल मे पानी काफी होना चाहिए। दाल बहुत पुष्टिकर खाद्य है, किन्तु बहुत देर मे हजम होती है। हरी मटर की दाल बहुत जल्दी हजम होती है और खाने मे भी बहुत स्वादिष्ट होती है। फ्रांस की राजधानी पेरिस मे हरी मटर का सूप बहुत विख्यात है। कच्ची मटर की दाल को खूब पकाकर फिर पीसकर जल मे घोल लो। फिर एक दूध छानने की छननी की तरह की तार की चलनी से छान लेने से ही भूसी वगैरह निकल जाएगी। इसके बाद हल्दी, मिर्च, धनिया, जीरा, काली मिर्च तथा और चीजें डालना हो उन्हे डालकर छौक लेने मे उत्तम स्वादिष्ट सुपाच्य दाल बन जाती है।

बीमारियो का कारण

देश मे पेशाब की बीमारी की जो इतनी धूम है, उसका अधिकाश कारण अजीर्ण ही है। यह बीमारी दो-चार आदमियो को अधिक मानसिक परिश्रम से होती है, बाकी सबको बदहजमी मे। खाने का अर्थ क्या पेट भरना ही है? जितना हजम हो जाए, उतना ही खाना चाहिए। तोंद का बढ़ना बदहजमी का पहला चिह्न है। सूख जाना या मोटा होना दोनो ही बदहजमी है। पैर का माँस लोहे की तरह सख्त होना चाहिए। पेशाब मे चीनी या

(शेष पृष्ठ ६ पर)

तुम नहीं, तो और कौन ?

युवा वर्ष पर आर्य युवकों का आह्वान

—डा० प्रशान्त कुमार वेदालंकार—

इस समय विश्व का प्रत्येक राष्ट्र इस वर्ष को अन्त:राष्ट्रीय युवा वर्ष के रूप मे मना रहा है। हमारे देश मे भी ११ जनवरी १९८५ को स्वामी विवेकानन्द के जन्म दिवस पर हमारे युवा प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी ने युवावर्ष का उद्घाटन किया था और ११ जनवरी को युवा दिवस भी घोषित किया। उस समय यह आशा बंधी थी कि हमारी सरकार युवा-वर्ग को एक रचनात्मक दिशा देगी और युवा शक्ति का देश के विकास के लिए उपयोग करेगी। पर अत्यन्त दु ख है कि युवा-वर्ष समाप्त होने को है, पर अभी तक देश मे न युवको को कोई रचनात्मक दिशा दी जा सकी है, न देश के विकास के लिए उनका कोई सदुपयोग किया गया है और न उनको लक्ष्य करके कोई ऐसी योजना बनी है, जिससे वे लाभान्वित हों।

युवा वर्ष के नाम पर इस देश के कुछ युवक मास्को मे आयोजित युवा-समारोह में भाग लेने के लिए गये थे, पर वहाँ पर इन युवको ने अपनी जिस तामसिक वृत्ति का परिचय दिया उससे हमारे देश की प्रतिष्ठा पर आंच आई। नवम्बर मास मे दिल्ली विश्वविद्यालय की ओर से निर्गुट देशो के युवकों का एक सम्मेलन बुलाया गया। पर यह सम्मेलन भी युवको के लिए किसी रचनात्मक योजना पर विचार नही कर सका।

जवानी किसको कहते हैं ?

मैने बचपन मे एक कविता पढ़ी थी जिसकी पहली पक्ति थी—

"बताए तुम्हें जवान,
जवानी किसको कहते हैं।
दे जग को जीवन दान,
जवानी उसको कहते हैं।"

इस पक्ति मे यौवन को किसी आयु विशेष के साथ नही बाधा गया, वरन् उसे एक पवित्र और ऊची भावना के साथ सम्बद्ध किया है। युवक वह है जो स्वार्थों को तिलाजलि देकर नि.स्वार्थ और परोपकार की भावना से राष्ट्र, नही-नही विश्व के कल्याण के लिए आत्म-समर्पण की भावना रखता हो। जिस समय महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना करके आर्य-समाज का लक्ष्य ऋग्वेद का यह वाक्य कि—'कृण्वन्तोविश्वमार्यम्' निर्धारित किया था, उस समय वे भी आर्यजनो में यही भावना भरना चाहते थे कि वे अपने स्वार्थों को छोड़ दे और प्रतिदिन विश्व के कल्याण के लिए अपनी आहुति और आत्म-बलिदान की भावना से पूरित होते रहे।

याद रखो, हमे विश्व को आर्य अर्थात श्रेष्ठ गुणो से युक्त बनाना है और संसार में जितना अशिव है, जो कल्याणकारी है, दुष्ट स्वभाव व दुष्ट कर्म हैं, उन सबको नष्ट करना है। ऋग्वेद ने ससार को श्रेष्ठ बनाने की जहाँ प्रेरणा दी वहाँ संसार की दुष्ट प्रवृत्ति को नष्ट करने का आदेश भी दिया।

याद रखो, संसार को श्रेष्ठ बनाना है तो पहले हमें स्वयं श्रेष्ठ बनाना होगा मानवीय दृष्टि से ऊंचा व्यक्ति ही दूसरो को सत्कर्म के लिए प्रेरित कर सकता है। जो स्वयं दुष्ट है वह दूसरों की दुष्टता को दूर करने की बात सोच भी कैसे सकता है ?

व्यक्तित्व की पूर्णता

जब मै कहता हू कि अच्छे बनो, तो मेरा अभिप्राय होता है कि तुम्हारा व्यक्तित्व पूर्ण हो। तुम शरीर से पुष्ट बनो। यदि तुम शारीरिक दृष्टि से अस्वस्थ और दुर्बल हो तो तुम जीने योग्य भी नही हो। तुमने सुना होगा—वीरभोग्या वसन्धुरा—यह पृथ्वी वीरो के भोग के लिए ही है। तुम्हें अपने मे वीरता की भावना भरनी होगी। वीरता के लिए अपनी मासपेशियो को पुष्ट करना होगा। उसके लिए प्रतिदिन कठिन परिश्रम और व्यायाम करने का अपना स्वभाव बनाना होगा। कालिदास ने कहा था—शरीरमाद्य खलु धर्म साधनम्। धर्म का अपने कर्तव्य की पूर्ति का प्रथम साधन है शरीर। यदि तुमने संसार को श्रेष्ठ बनाने का अपना कर्तव्य पूर्ण करना है तो पहले अपने शरीर को पुष्ट बनाओ। वीरता व पुष्ट शरीर से ही तुम निर्बलो व अनाथो की दुष्ट स्वभाव से रक्षा कर सकोगे। वीर व पुष्ट होने का अर्थ किसी को अनावश्यक रूप से दबाना या प्रताड़ित करना नही है।

जब मैं युवको को श्रेष्ठ बनने के लिए कहता हू तब उन्हे अच्छा और तीक्ष्ण मस्तिष्क वाला बनने की भी प्रेरणा देता हू ताकि वे अपनी प्रखर बुद्धि से अपने शरीर का ठीक उपयोग कर सके। युवको का मस्तिष्क ऐसा हो जिसमे नीर क्षीर विवेक की क्षमता हो। सत्य को पहचानने और असत्य को त्यागने की समझ हो। मस्तिष्क इतना पुष्ट हो कि वह ठीक समय पर ठीक निर्णय करे और इतना विकसित हो कि सदा नये-नये ज्ञान को ग्रहण करने मे सक्षम हो। तभी वे समझ सकेंगे कि विश्व मे क्या हेय है और क्या ग्राह्य। संसार के दुष्टो को नष्ट करने का कार्य तो बिना विवेक व ज्ञान के कैसे कर पाओगे। संसार में कौन दुष्ट है और कौन साधु ? यह बात तुम बिना अच्छे मस्तिष्क के नही जान सकते। अपना मस्तिष्क अच्छा पवित्र रखने के लिए सदा अपने माता-पिता, किसी अच्छे गुरु व पथ-प्रदर्शक के सम्पर्क मे रहना होगा ? उनके प्रति आस्था रखनी होगी ? गीता मे कहा है 'श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्'। श्रद्धा व विश्वास से ही मस्तिष्क मे नित नया ज्ञान आता है और विवेक शक्ति बढती है। जो विचारधारा अनास्था का प्रचार करती है वह हेय है। आज संसार मे भौतिकता पर आधारित ऐसी अनेक विचार धाराएं हैं जो व्यक्ति को अनास्था का पाठ पढ़ाकर उनके मस्तिष्क को विकृत कर देती हैं। आर्य युवको को उन सबसे बचना है। मैं कहना चाहता हू —आर्य वीरो! तुम महर्षि दयानन्द के शिष्य हो, ऋषि के ग्रन्थो का मनन करो और उन्ही से अपनी दिशा ग्रहण करो।

पर याद रखो, पुष्ट शरीर और स्वस्थ मस्तिष्क वाले व्यक्ति भी भ्रष्ट आचरण के दोषी देखे गये हैं। इसी लिए साथ मे अच्छा चरित्र भी अत्यन्त आवश्यक है। कोई भी ऐसा काम मत करो जिसे करने पर तुम्हें हर्ष और गर्व न हो। अच्छे चरित्र की निशानी यही है कि व्यक्ति अपने किये हुए काम का वर्णन कर सकता है। यदि तुमने कोई ऐसा काम किया है जिसे तुम किसी को नही बता सकते, तो वह निषिद्ध कर्म है, उससे बचो। तभी चरित्र पुष्ट होगा।

सत्य मार्ग की कठिनाइयां

यह सच है कि आज के युग में सत्याचरण करने व ईमानदारी से रहने में अनेक कठिनाइया आती हैं। पर तुम जिस ऊंची और महान् संस्था से सम्बद्ध हो और जिस देव पुरुष महर्षि दयानन्द की तुम सन्तान हो उनके लिए कुछ भी कठिन नहीं है।

स्मरण रखो, तुमको वही काम करने हैं जो दूसरों के कल्याण के लिए हों। यदि तुम्हारे किसी काम से किसी की हानि होती हो, उसे कभी मत करो। महाभारत में धर्म की परिभाषा—आत्मन: प्रतिकूलानि परेषा न समाचरेत्—के रूप में की गई है। दूसरे के प्रति वही व्यवहार करो जैसा व्यवहार तुम दूसरे से चाहते हो। तुम्हारे किसी काम से किसी का दिल न दुखे। वरन् तुम्हारे कामो से दूसरों का कल्याण होना चाहिए। सन्त तुलसीदास ने 'परहित सरिस धरम नहिं भाई' कहकर मनुष्य को यही प्रेरणा दी थी। महर्षि दयानन्द ने भी अपने ग्रन्थो में बारम्बार यही कहा है कि संसार का उपकार करना आर्यों का परम धर्म है।

मैं यह सब इसलिए कह रहा हूं कि देश का युवा वर्ग आज किंकर्तव्य विमूढ है। वह कुछ करना चाहता है, पर उसे कुछ सूझता नही है। उसके सामने आज कोई आदर्श नही है। मुझे विश्वास है कि दयानन्द के शिष्य अन्य युवको के लिए आदर्श सिद्ध होगे।

ऋषि की प्रेरणा

महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की प्रेरणा से देश को स्वतंत्र कराने के लिए इस देश के हजारों युवकों ने तन-मन की आहुति दी थी। आर्य समाज के सौ वर्षों का इतिहास इस बात का साक्षी है कि आर्य समाज ने देश की स्वतन्त्रता में महान योगदान दिया। श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा ने विदेश में इण्डियन होमरूल लीग की स्थापना करके वैदिक संस्कृति का प्रसार विदेशों मे भी किया, जिससे देश का स्वाभिमान जागा। लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द, सरदार अजीत सिंह, श्री मदनलाल ढींगरा, श्री रामप्रसाद बिस्मिल, श्री गेंदालाल, ठा० रोशन सिंह सरदार भगतसिंह, चौ० मुख्त्यार सिंह, श्री हरविलास शारदा तथा अन्य अनेक स्वतन्त्रता-प्रेमियो ने महर्षि से प्रेरणा प्राप्त कर देश की स्वतंत्रता के लिए अपने को झोंक दिया।

मालाबार के मोपला विद्रोह, राजस्थान व बंगाल के अकाल, बिहार के भूकम्प, देश-विभाजन और स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सन् १९५७ में पंजाब में हिन्दी-रक्षा आन्दोलन आदि द्वारा आर्य समाज

(शेष पृष्ठ ७ पर)

धर्मयुग में प्रकाशित लेख की समीक्षा

स्वामी दयानन्द की मृत्यु का कारण विष ही था

—डा० भवानी लाल भारतीय—

कभी कभी कुछ लोग नई बात कहने की सनक में कुछ ऐसी बातें भी कह जाते हैं जो तथ्यों के विरुद्ध होती हैं। गलती करना मनुष्य का स्वभाव है, पर उसे सुधार लेना सही मानवीयता है, अन्यथा पशु और मनुष्य में अन्तर नहीं रहेगा। जब कुछ लोग जानबूझ कर गलत बात को दुहराते हैं, तब उनके इरादों पर शंका होने लगती है। ऋषि दयानन्द को विष दिया गया और वही उनके लिए प्राणहारक सिद्ध हुआ, इस बात को झुठलाने का प्रयत्न इसी कोटि में आता है। डा० भारतीय ने इस लेख में ऐसे ही एक प्रयत्न की आलोचना की है।

धर्मयुग के दीपावली विशेषांक में प्रकाशित सावित्री परमार का लेख "क्या महर्षि दयानन्द की मृत्यु में नन्हीजान का हाथ था" मुख्यतया नवलगढ़ के कुंवर संग्राम सिह तथा जोधपुर स्थित रसिकबिहारी जी के मन्दिर के पुजारी के वक्तव्यों पर आधारित है। अधिक अच्छा होता यदि लेखिका अपने प्रतिपाद्य को अधिक प्रामाणिक बनाने के लिए स्वामी दयानन्द के कुछ जीवन-चरित्रो के प्रासंगिक स्थलो को भी देख लेतीं। वस्तुतः महर्षि दयानन्द जिस समय जोधपुर आये उस समय महाराजा जसवन्त सिह का सम्पर्क जिस रखैल से था वह नन्ही भगतन एक हिन्दू वेश्या थी जो वैष्णव मत की अनुयायी । मुसलमान वेश्या नन्हीजान इससे न्न थी। इस सम्बन्ध मे राजस्थान प्रख्यात इतिहास लेखक स्व० गदीशसिह गहलोत ने समुचित नकारी प्राप्त कराई है। लेखिका ो इस बात से बड़ी हैरानी हुई है नन्हीजान रही मुसलमान, उसके ारा इन मन्दिरो का निर्माण कैसे ? स्तुतः हिन्दू वेश्या ने ही स्वामी दयानन्द को विष दिलाने के षड्यन्त्र में मुख भूमिका निभाई थी। इस तथ्य ो साक्षी देते हैं—राजस्थान के इतिसकार महामहोपाध्याय पं० गौरीकर हीराचन्द ओझा, प० नानूराम ह्मभट्ट, मुन्शी देवीप्रसाद मुंसिफ ादि वे प्रामाणिक लेखक जिनकी स विषय से सम्बन्धित रचनायें दयानन्द स्मृति ग्रन्थ,' 'चाद' के मारवाडी अक तथा 'सरस्वती' पत्रिका के 1929 के नवम्बर मास के अंक मे प्रकाशित हुई थी।

सावित्री जी के लेख में तथ्य विषयक कुछ अन्य भूलें भी हैं। यथा, वे लिखती हैं कि तख्तसिंह के दो राज कुमार थे। सत्य यह है कि महाराजा जसवन्तसिंह तथा प्रतापसिंह के अतिरिक्त महाराजा किशोरसिंह भी तख्त सिंह के ही औरस पुत्र थे जिनके महल जोधपुर से मण्डोर जाने वाली सडक पर आज भी मौजूद हैं। यह कहना भी उचित नहो है कि स्वामी दयानंद ने राजस्थान की रियासतो मे पैदल घूम-घूम कर धर्म प्रचार किया था। वस्तुतः स्वामी दयानन्द की राजस्थान मे चार बार यात्राए हुई थीं। इनमें से प्रथम 1865 ई० की यात्रा में वे अवश्य ही पैदल भ्रमण करते रहे, किन्तु उनके शेष भ्रमण रेल तथा अन्य साधनों से ही हुए थे। स्वामीजी को जोधपुर के जिस बाग में ठहराया गया था वह पं० शिवदान का बाग नही, अपितु मियां फैजुल्ला खां का बाग था। इसके बीच की कोठी में ही स्वामीजी ने लगभग चार मास तक निवास किया था। यहा यह ज्ञातव्य है कि जोधपुर राज्य की 'हकीकत बही' मे स्वामीजी के जोधपुर आगमन का जो उल्लेख हुआ है उसमे स्पष्ट लिखा है कि जब स्वामी दयानन्द जोधपुर आये तो मियाँ फैजुल्ला खाँ के बाग में उनका डेरा किया गया। 4 जून 1883 के 'मारवाड़ गजट' के अंक में भी इस तथ्य का उल्लेख हुआ है। यह भी स्मरणीय है कि इन्ही मियाँ फैजुल्ला खां के वंशज मियाँ बरकतुल्ला खां के राजस्थान के मुख्य मन्त्रित्व काल में यह कोठी और उस का परिसर स्वामी दयानन्द के निवास की स्मृति के रूप मे एक स्मारक बनाने के लिए आर्य समाज को प्रदान किया गया था। सार्वजनिक रूप से यह घोषणा आर्य महासम्मेलन के अलवर अधिवेशन मे की गई थी।

स्वामीजी के जोधपुर के राजमहल में जाने तथा वहाँ वेश्या नन्ही की पालकी उठाने वाले महाराजा की भर्त्सना करने वाला प्रसंग यद्यपि पर्याप्त चर्चित है, किन्तु स्वामी दयानन्द के प्रामाणिक बंगला जीवन चरित लेखक देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय इससे सहमत नही हैं। राजाओ के रनिवासो या विलासगृहो की व्यवस्था इतनी शिथिल नही होती कि यकायक बिना सूचना दिये कोई भी व्यक्ति वहाँ अनायास प्रविष्ट हो जाये। यदि मान भी लिया जाय कि स्वामीजी का राजमहल में आकस्मिक आगमन हुआ था, तब भी उन्हे राजा के आने तक प्रतीक्षागृह मे बैठाया जा सकता था। यह कथन भी पुष्टि की अपेक्षा रखता है कि स्वामी के महाराजा के नाम लिखे गये पत्रों को नन्ही ने उन तक पहुंचने नहीं दिया। प० भगवद्दत्त द्वारा सम्पादित 'ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन' में सकलित पत्र सख्या 502 द्रष्टव्य है जिसमे स्वामी जी ने 'गुप्त समाचार' शीर्षक से महाराजा को नन्ही का सम्पर्क त्यागने की प्रेरणा की है और लिखा है—"एक वेश्या से जो कि नन्ही कहाती है उससे प्रेम (उसका अधिक सग) और अनेक (विवाहिता) पत्नियो से न्यून प्रेम रखना आप जैसे महाराजो को सर्वथा अयोग्य है।"

जिस रसोइये ने 29 सितबर 1883 की रात्रि को स्वामीजी को दूध मे विष [मखिया] दिया वह शाहपुरा निवासी था और उसका नाम जगन्नाथ न होकर धूला मिश्र [शाहपुरा के श्री सोहनलाल शारदा इनका नाम धूलण मिश्र या धूला जोशी लिखते हैं।—सं०] था। यह सत्य है कि लोक मे विषदाता रसोइये का नाम जगन्नाथ ही प्रसिद्ध है किन्तु स्वामी दयानन्द के जीवन चरित लेखक प० देवेन्द्र नाथ [illegible] किसी जगन्नाथ नामधारी रसोइये का संकेत नही करते। धूड मिश्र को स्वामीजी की रसोई बनाने के लिये शाहपुरा नरेश नाहरसिंह ने भेजा था और उसी ने नन्ही तथा अन्य षड्यन्त्रकारियो के बहकावे मे आकर 29 सितम्बर सन् 1883 की रात्रि को स्वामीजी को विष दे दिया। सूरजमल के पश्चात् जिस डाक्टर को स्वामीजी की चिकित्सा का कार्य सौंपा वह अलीमुद्दीन नहीं किन्तु डा० अलीमर्दान खाँ था जो मूलत एटा जिले का निवासी था। [स्वामी ओमानन्दजी अलीमर्दान खाँ को मूलत सहारनपुर का लिखते हैं।—सं०]

नन्ही भगतन द्वारा जोधपुर के उदय मन्दिर मुहल्ले में निर्मित जो मंदिर है उसके पुजारी का सावित्री परमार को दिया गया यह बयान तो निश्चय ही गलत है कि आर्यसमाजियों ने स्वामीजी को चिर अमर करने के लिए उन्हे विष देने की कथा घड ली है। स्वामीजी की मृत्यु को स्वाभाविक तथा जिगर एव तिल्ली आदि के बिगडने के कारण बताने वाले अन्य लेखकों यथा डा० बी० के० सिंह, प्रो० श्रीराम शर्मा तथा श्री ओंकारसिंह के कथनों का प्रतिवाद समय-समय पर इन्हीं पंक्तियो के लेखक द्वारा किया जा चुका है। इस प्रकरण की विस्तृत एवं तर्क पूर्ण समीक्षा इस लेखक ने अपने शोधपूर्ण ग्रंथ 'नवजागरण के पुरोधा—दयानन्द सरस्वती' मे एक पृथक् अध्याय लिखकर की है।

पता—दयानन्द शोधपीठ
जी-3 पंजाब विश्वविद्यालय
चण्डीगढ़

युवा वर्ष पर......

(पृष्ठ ६ का शेष)

ने सदा अन्याय के विरुद्ध संघर्ष किया है।

देश को स्वतन्त्रता दिलाने मे, देश की शिक्षा-प्रणाली मे भारतीयता का स्वर भरने मे, स्त्री जाति के उद्धार में, दलित एव अछूत कही जाने वाली जातियो के उत्थान में, धर्म का वास्तविक स्वरूप प्रकट करने मे तथा अपने देश के गौरवपूर्ण ऐतिहासिक पृष्ठो को उजागर करने में आर्य युवको का कार्य अविस्मरणीय है।

क्या तुम आर्य समाज के उस गरिमापूर्ण इतिहास को स्मरण करके उसी प्रकार का आदर्श प्रस्तुत नही कर सकते ? निश्चित कर सकते हो। यदि मन में ऊची भावना हो। हृदय मे यौवन हिलोरें ले रहा हो, और मस्तिष्क में उथल-पुथल हो तो सब कुछ हो सकता है।

आज का युवक अपने महापुरुषों से, देश के गौरवपूर्ण इतिहास से, अपनी प्रेरक परपराओ से कट चुका है। आर्य समाज उसी जड से फिर से जोडना चाहता है। पर यह काम केवल उपदेशो से होने वाला नहीं है। उसके लिए क्रियाशील उदाहरण चाहिए। मुझे पूरा विश्वास है कि आर्य युवक औरों के लिए उदाहरण बनेंगे और उनका मार्गदर्शन करेंगे।

युवा वर्ष में भी यदि आर्यवीरो ने यौवन के वास्तविक आदर्शो को अपने जीवन मे धारण कर लिया तो उससे जहा तुम्हारा अपना कल्याण होगा, आर्य समाज का नाम ऊंचा होगा वहाँ राष्ट्र भी समुन्नत होगा। विश्व को एक नई दिशा प्राप्त होगी। आओ ! वीरो, कमर कस लो। एक बार संकल्प करने की आवश्यकता है, फिर मंजिल तुम्हारे कदम चूमेगी।

पता—७१२ रूपनगर, दिल्ली-७

पत्रों के दर्पण में

दीपावली विशेषांक : वाह ! वाह !!

(1)

17 नवम्बर के 'दीपावली विशेषांक' का सम्पादकीय ऋषि के प्रति ठोस श्रद्धांजलि है। कैप्टन देवरत्न जी तथा आपको बहुत बहुत बधाई, धन्यवाद ! —स्वामी दयानन्द विदेह

वेद संस्थान C-22, राजोरी गार्डन नई दिल्ली-110027

(2)

'आर्य जगत्' का दीपावली विशेषाक सचमुच मन को मोहने वाला है तथा स्थायी रूप से रखने योग्य है। विशेषांक वास्तव में सुन्दर एवं आकर्षक है। सभी लेख शिक्षा प्रद एव पठनीय हैं। आपके सम्पादकीय लेख का तो अलग ही महत्व है। बधाई स्वीकार करे।

'आर्य जगत्' आकर्षक एव प्रभावी ढंग से निकल रहा है और निरन्तर अपनी लोकप्रियता की ओर अग्रसर है। सभी लेख शिक्षाप्रद और पठनीय होते हैं। पत्र की लोकप्रियता का श्रेय आपको ही जाता है।

—रामकुमार सोरायण, दुल्लागढ़, गोहाना, सोनीपत।

सक्र-चरण की डायरी का एक पृष्ठ

इस विषय में मुझे बहुत कुछ कहना था, पर स्वास्थ्य दुर्बल होने से लिखने मे असमर्थ रहा। मुख्य बाते सक्षेप से लिखता हू जिनका मैं खुद साक्षी हू—

आपकी हैदराबाद सत्याग्रह मे जेल-यात्रा और फिर वहा से छूटने पर बम्बई मे पं० इन्द्र जी निवास पर आपका स्वागत।

(कोहमरी) अब पाकिस्तान आर्य समाज के उत्सव पर आपके दर्शन। तब मैं पुरोहित था। और पंजाब प्रतिनिधि सभा की ओर से आप उपदेशक के रूप में पधारे थे। समाज के प्रधान श्री कृपाराम साहनी ने सब उपदेशकों को अपनी पसन्द के अनुसार गरम कोट का कपड़ा लेने को कहा और सब ने ले भी लिये, पर आपने प्रधान की भेंट यह कहकर अस्वीकार कर दी—"मैं मुफ्त की चीज नहीं लेता और विदेशी कपड़ा नही पहनता।"

यह सब आपके दृढ़ चरित्र के उदाहरण है। जो मेरे अनुभव मे आए। प्रभु आपको दीर्घायु और यशस्वी बनाए।

—दीनानाथ सिद्धान्तालंकार, अशोक विहार, दिल्ली-५२

भारत की शिक्षा प्रणाली

'आर्य जगत्' मे 'भारत की शिक्षा प्रणाली' शीर्षक लेख अच्छा था। त्यागी जी से अनुरोध है कि आर्य समाज के शिक्षा शास्त्री तथा गुरुकुलो के संचालक तथा स्वामी ओमानन्द जी, प्रो० वेद व्यास जी, श्रीमती प्रज्ञादेवी जी आदि शिक्षा-विदो की गोष्ठी का आयोजन सभा की ओर से करे। उसके निर्णय भारत भर की आर्य संस्थाओ को भेजे जायं और एक तिथि तक उस पर सुझाव मांगे जाय तब फिर एक अन्तिम रूप तैयार कर उसे भारत सरकार को भेजा जाय।

आर्य समाज यदि कटिबद्ध हो जाय तो उसके लिए कोई भी कार्य असम्भव नही। हैदराबाद सत्याग्रहियो का विषय उठाकर उसकी चरम परिणति इसका ज्वलन्त उदाहरण है। वार्षिकोत्सवो में जोशीले भाषण और ऋषिलगर मे ही अपने कर्तव्य की इति श्री न समझे।

—मानकचंद मेहरा, वीरेन्द्र वर्मा पार्क, मुजफ्फरपुर।

यह कैसा कानून ?

हिन्दुस्तान मे अधिकतर हिन्दू वास करते है। विश्व के अनेक देशो की भाति हम भी स्वतंत्र हैं। हमारे देश मे जो भी कानून बनायें वह कानून हिन्दुत्व को ध्यान मे रख कर बनाया गया। हिन्दू कोडबिल पारित होने के बाद अब हिन्दुस्तान मे पिता की संपत्ति मे लड़की का भी लड़के के बराबर अधिकार दे दिया है। जिससे हमारे समाज मे दहेज प्रथा ने विकराल रूप ले लिया है। क्यो कि कोई भी कन्या अपने पिता से धन संपत्ति की लालसा नही रखती, तथा उसके ससुराल वाले भी कन्या के पिता से उसका हिस्सा नही माग सकते। इसलिये दहेज के रूप मे हिस्सा मागा जाता है। जिससे अनेक घटनाएं होती रहती हैं। इस विषय पर गम्भीरता से विचार करने की आवश्यकता है। संविधान निर्माताओं को इस ओर ध्यान देना चाहिये।

—प्रह्लादसिंह नटेरिया, कोर्ट बागली जिला देवास।

धर्म स्थलों में पुलिस प्रवेश

अगर यह मान लिया जाए कि पुलिस प्रवेश से धर्मस्थानों की पवित्रता भंग होती है तो यह भी मानना होगा कि पुलिस प्रवेश से प्रत्येक घर अथवा स्थान की पवित्रता भंग होती है। सवाल यह है कि पुलिस का काम क्या पवित्रता को भंग करना है या पवित्रता को वापिस लाना है। समझा तो यही जाता है कि पुलिस का काम चोर, डाकू, कातिल, बेईमान, व्यभिचारी आदि के अपराधी को पकड़ कर उसे सजा दिलाना और भविष्य मे अपराध न करने के लिए प्रेरित करना है। इस प्रकार पुलिस का काम अपवित्रता छुडाकर पवित्रता की ओर लाना है, न कि पवित्र को अपवित्र करना।

जो लोग कहते हैं कि धर्मस्थलों में पुलिस प्रवेश से उन स्थलों की पवित्रता भंग होती है क्या वे कहना चाहते हैं कि पुलिस प्रवेश से उस स्थान की ईंट, पत्थर, मिट्टी आदि अपवित्र हो जाते हैं या कुछ और ? ईंट, पत्थर, मिट्टी आदि तो बुहारने, झाड़ने और धोने से शुद्ध हो जाते हैं। पुलिसमैनो मे ऐसी कौनसी गन्दगी है जिससे ये लोग खास तौर पर डरते हैं ?

केवल सिखो की माग—समाचारों के पढ़ने और सुनने मे यही आता है कि कुछ सिख, चाहे वे अकाली हो, कांग्रेसी हों या कोई और, वे ही ऐसी माँग कर रहे हैं कि गुरुद्वारो में पुलिस प्रवेश न करे। जब दूसरे लोग आक्षेप करते है कि यह साम्प्रदायिक माग है तो वे कहना शुरू कर देते है कि पुलिस किसी भी धर्मस्थल में प्रवेश न करे। इतिहास बताता है कि सिख गुरुद्वारो मे हथियारो का जमाव होता रहा है तथा वहाँ अपराधियो को शरण दी जाती रही है। अत: सन्देह होता है कि सिख गैर कानूनी हथियारों को और अपराधियो को कानून की नजर से बचाए रखने के लिए ही यह माग कर रहे हैं।

पुलिस गुरुद्वारों मे या धर्म स्थलो में प्रवेश न करे—यह माग जहां अन्यायपूर्ण है और अलगाववादी है वहा राष्ट्रीय कानून का अपमान भी है और राष्ट्रीय कानून का अपमान राष्ट्र का अपमान है। न्याय की माग यही है कि देश का कानून सभी सम्प्रदायो, सभी स्थानों और सभी व्यक्तियों पर समान रूप से लागू हो। देश का कानून ही सर्वोपरि है, मत मतान्तर और मजहब कदापि नही।

कृष्णचन्द्र, 387, सैक्टर 9, पचकूला-134109

आर्य समाज ध्यान दे

'आर्य जगत्' साप्ताहिक के सम्पादकीय लेख 'राष्ट्र धर्म के पुरस्कर्ता श्री राम' बडा ही सुन्दर और विचारणीय था। आप एक स्थान पर लिखते हैं 'विधर्मियो का सबसे बडा चारागाह यह आदिवासी समाज ही तो है। राम के बाद इन बनवासियो को एकत्र करने की दूरदर्शिता और किसी राज नेता ने नही दिखाई'। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण उड़ीसा के बनवासियों में देखने को मिला जो ईसाई मिशनरियो का गढ बना हुआ है। उनका प्रचार का तरीका है · (१) पैसे देकर एजेण्ट रखना और उसके द्वारा स्थानीय लोगों से सम्पर्क बढाना। (२) क्रिश्चियन स्कूलों और कालेजों द्वारा नि:शुल्क शिक्षा देना (३) ईसामसीह से संबन्धित आकर्षित चित्रो से सुसज्जित पुस्तको का मुफ्त वितरण करना तथा ईसा की प्रशसा मे गीत गाना बजाना, (४) धर्मान्तरण के लिए धन एव आकर्षक, वस्तुओ का वितरण करना। अस्पताल कुँआ इत्यादि बनवा देना जिसके माध्यम से गरीब जनता पर दिखावटी उपकार लादना और भीतर से ईसाई बनाने का षडयन्त्र करना।

ऐ मेरे अज्ञानी बन्धुओ, तुम्हें अब किसी विधर्मी के भुलावे में बहकना नही है। यह आर्यावर्त तुम्हारा है, तुम आर्य हो, तुम राम और कृष्ण के वशज हो तुम्हारे कुल मे ऋषि मुनि पैदा हुए हैं। ये विधर्मी साम्प्रदायिक नेता तुम्हारे घर मे मंथरा की तरह घुस कर तुम्हे फोडना चाहते हैं। तुम इन धूर्तों से सतर्क रहो। आर्यसमाज तुम्हारी ही भूली हुई अमानत 'वैदिक संस्कृति' से तुम्हे मिलाने आया है।

—रघुनाथ आर्य, निकल रोड, गरूलिया, (प० बंगाल)

स्मारिका प्रकाशित करने वालों से

आजकल प्राय: आर्य समाजो तथा आर्य सभाओ के समारोहो पर स्मारिकायें प्रकाशित करने की प्रथा चल पड़ी है। एतदर्थ आर्य समाज के लेखकों से लेख मागे जाते है और लेखक भेज भी देते है। किन्तु स्मारिका प्रकाशित करने वाली संस्थाओ को छप जाने पर लेखको को स्मारिका की एक प्रति भेजना भी याद नही रहता। स्मारिकाओं मे प्रकाशित लेखों के लिये पारिश्रमिक देना तो दूर रहा, एक प्रति भी लेखक को न भेजना क्या लेखक के प्रति सम्मान का अभाव नही है ?

—डा० भवानीलाल भारतीय, पजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़।

सामाजिक जगत

ऋषि निर्वाणोत्सव

आर्य समाज—भुवनेश्वर

आर्य समाज भुवनेश्वर में ऋषि निर्वाणोत्सव उत्साह पूर्वक मनाया गया। उत्सव में उड़ीसा के मुख्यमंत्री श्री जानकी वल्लभ पटनायक ने भाग लेकर यज्ञ की पूर्णाहुति दी। श्री पटनायक ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा—कि धरती पर आर्यसमाज ही ऐसी संस्था है जो प्रभु वाणी वेद की सुरक्षा तथा प्रसार का प्रहरी है। उड़ीसा के बड़े-बड़े नगरों में आर्यसमाज निर्माण हेतु राज्य सरकार ने जमीन प्रदान करने की घोषणा की। आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् श्री प्रियव्रत दास ने श्री अपने विचार व्यक्त किये।

आर्य समाज—बीदर

आर्य समाज, मंगलपेट, बीदर में ऋषि निर्वाणोत्सव १२ नवम्बर को धूमधाम से मनाया गया। यज्ञादि के पश्चात् श्री सुरेश आर्य और श्री नरसिंह देव जी शास्त्री के उपदेश और भजन हुए। श्री अशोक आर्य ने आये हुए व्यक्तियों का धन्यवाद किया।

आर्य सभा लुधियान

जिला आर्य सभा, लुधियाना के तत्वावधान में 12 नवम्बर को आर्य समाज, आर्बन बाजार में ऋषि निर्वाणोत्सव मनाया गया। यज्ञादि के बाद आचार्य भद्रसेन, बाल कृष्ण शर्मा, कमला आर्या और शान्ता शर्मा के भजन और व्याख्यान हुए।

आर्य समाज नवादा

आर्य समाज, नेमदारगंज नवादा द्वारा दीपावली के शुभावसर पर 21 व्यावसायिक संस्थानों में हवन भजनादि का कार्यक्रम आयोजित किया गया। —दिलीप कुमार

आर्य समाज फतेहपुर

महर्षि दयानन्द के बलिदान दिवस के अवसर पर आर्य समाज फतेहपुर में 10 से 12 नवम्बर तक खेल का आयोजन किया गया। खेल का उद्घाटन श्री अमर सिंह और संयोजन श्री सुभाष एडवोकेट ने किया। बलिदान दिवस श्री जे०डी० कक्कड़ की अध्यक्षता में और कर्नल इन्द्रजीत के मुख्य अतिथित्व में सम्पन्न हुआ। सभा को श्री धर्मदेव विद्यार्थी ने सम्बोधित किया।

अचलपुर में वेद प्रचार

वैदिक स्वाध्याय केन्द्र, अचलपुर शहर (अमरावती) में 13 नवम्बर को ब्र० धर्मेन्द्र कुमार का प्रवचन हुआ। श्री धर्मेन्द्र दयानन्द शताब्दी समारोह-83 में सामवेद कण्ठस्थ प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक पारितोषिक प्राप्त कर चुके हैं। सभा को श्री रामचन्द्र मालदार और श्री देवी दास आर्य ने भी सम्बोधित किया।

मुस्लिम राजपूतों की सामूहिक शुद्धि

हाथरस तहसील से 20 किलो मीटर दूर अलहैपुर गांव में 23 अक्टूबर को भिन्न-भिन्न क्षेत्रों के नौ मुस्लिम राजपूतों के सामूहिक शुद्धि संस्कार के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने वैदिक धर्म को राष्ट्र धर्म की संज्ञा देते हुए कहा कि क्षेत्र के सभी राजपूत भाई राणा प्रताप और नेपाल नरेश के वंशज हैं। उन्होंने कहा—छत्रपति शिवाजी महाराज को यज्ञोपवीत के तीन धागों को प्राप्त करने के लिए काशी के पंडितों को 7 करोड़ रुपया दक्षिणा में देना पड़ा था किन्तु महर्षि दयानन्द की कृपा से आज वैदिक धर्म के दरवाजे सबके लिए खोल दिये गये हैं। बिना किसी दक्षिणा के पं० धर्मेन्द्र शास्त्री ने इन लोगों को यज्ञोपवीत देकर वैदिक धर्म में दीक्षित किया।

श्री शालवाले ने राजपूत भाइयों से कहा कि अब आप प्रतीक्षा करें कि इस्लामीकरण की विदेशी लहर का जवाब देकर आप भारत माता के राष्ट्र धर्म की रक्षा करेंगे।

इस अवसर पर दूर दूर से आर्य समाज तथा हिन्दू जाति के हितैषी भारी संख्या में उपस्थित थे।

अमृतसर में डी० ए०वी० शताब्दी

डी० ए० वी० कालेज अमृतसर में डी० ए० वी० शताब्दी समारोह का उद्घाटन 6 अक्टूबर को कालेज के सभागार में डा० भवानी लाल भारतीय द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डा० भारतीय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में डी० ए० वी० कालेज की स्थापना का इतिहास वर्णित करते हुए महात्मा हंसराज के तप त्याग की विस्तारपूर्वक चर्चा की। कालेज के प्राचार्य श्री धर्मवीर पसरीचा ने समारोह के अध्यक्ष डा० भारतीय का स्वागत करते हुए उन्हें शताब्दी समारोह का स्मृति रूप चिन्ह भेंट किया। —प्राचार्य

आर्य समाज बीसलपुर

आर्य समाज बीसलपुर (पीलीभीत) का ७२ वां वार्षिकोत्सव १ से ४ नवंबर तक मनाया गया जिसमें आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान डा० जयदेव वेदालंकार महात्मा नारायण स्वामी क्रांतिकारी तथा भजनोपदेशक श्री हरिसिंह, शिवदेव 'बेधड़क' एवं मुरलीधर ने भाग लिया।

—पंचमलाल 'शूल'

प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

पूर्वी उ० प्र० आर्यवीर दल का सप्त दिवसीय शिविर का शुभारंभ दयानन्द जू० हा० स्कूल शास्त्रीनगर सुल्तानपुर में प्रदेशीय आर्य वीर दल के अधिष्ठाता श्री बैचनसिंह, मिर्जापुर द्वारा ध्वजारोहण एवं वैदिक राष्ट्रगान के साथ संपन्न हुआ। इस शिविर में 400 आर्य वीरों ने भाग लिया। शिविर मे राजा रणञ्जय सिंह, श्री अवधबिहारी खन्ना, श्री राम किशोर त्रिपाठी, श्री रामकृष्ण जायसवाल, श्री ओमप्रकाश एडवोकेट पं० राम अभिलाख त्रिपाठी, श्रीसुरेन्द्र सिंह, श्री बाल दिवाकर हंस आदि ने भाग लिया। शिविर की अध्यक्षता राजा रणञ्जय सिंह और उद्घाटन श्री माता प्रसाद त्रिपाठी ने किया। शिविर के पश्चात् सभी युवकों का यज्ञोपवीत संस्कार श्री प्रशस्यमित्र शास्त्री ने कराया।

—प्रयाग नीन जायसवाल

आर्य समाज महू

आर्य समाज, महू (म० प्र०) के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द व्यायामशाला का पांचवां वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। उत्सव के मुख्य अतिथि पूर्व विधायक पं० वल्लभ शर्मा थे। —प्रकाश आर्य

महिला सम्मेलन सम्पन्न

आर्य समाज नामनेर आगरा छावनी का सम्मेलन श्रीमती चन्द्र प्रभा मेहता की अध्यक्षता में २९ अक्तूबर को संपन्न हुआ। जिसमें बड़ी संख्या में महिलाओं ने भाग लिया। इस अवसर पर अमेठी से आये प्रोफेसर डा० ज्वलंत कुमार शास्त्री ने भारतीय सभ्यता व संस्कृति पर प्रकाश डालते हुये कहा कि वैदिक युग से ही नारी को समाज में उच्च-अधिकार प्राप्त थे। मेरठ से पं० बेगराज, ने भजन उपदेश द्वारा पारिवारिक समस्याओं को दूर करने पर बल दिया। इसके अतिरिक्त श्रीमती डा० आर० के० वर्मा, डा० प्रतिभा अस्थाना, श्रीमती शान्ति नागर ने अपने अपने विचार रखे।

आर्य समाज छपरा

आर्य समाज, छपरा का शताब्दी समारोह २७ अक्तूबर से ३ नवम्बर तक मनाया गया जिसमे, यजुर्वेद पारायण महायज्ञ, आर्यवीर सम्मेलन सरस्वती सम्मेलन, महिला सम्मेलन, जिला आर्य सभा संमेलन आदि आयोजन किया गया। उत्सव में अनेको विद्वान और उपदेशको ने भाग लिया।

आचार का आधार है......

(पृष्ठ ५ का शेष)

आलबूमन दिखलाई पड़ते ही हाँफकर मत बैठ जाओ। उसके निवारण का यत्न करो। भोजन की ओर खूब ध्यान दो जिससे अजीर्ण न हो। जहा तक सम्भव हो खुली हवा में रहो। खूब घूमो और परिश्रम करो। धनी होना और आलसियो का बादशाह बनना इस देश में एक ही बात समझी जा रही व विपर्यय हो जाता है, यह बात सबको प्रत्यक्ष है। अजीर्ण दोष से एक चीज को दूसरी समझ कर भ्रम होता है और आहार के अभाव से दृष्टि आदि शक्तियों का ह्रास होता है। जो पूरी की परत को छीलकर खाते हैं, वे तो मानो मर गये हैं। जो एक सांस में दस कोस पैदल नही चल सकता, वह आदमी नही केंचुआ है। यदि रोग अकाल मृत्यु बुला दें, तो कोई क्या करेगा ?

जो पावरोटी है वह भी विष ही है, उसको बिल्कुल मत छूना। खमीर मिलाने से मैदा कुछ का कुछ हो जाता है। कोई खमीरदार चीज मत खाना। इस सम्बन्ध में हम लोगों के शास्त्रों मे जो सब प्रकार की खमीरदार चीजों के खाने का निषेध है, वह बिलकुल ठीक है। शास्त्र में जो कोई मीठी चीज खट्टी हो जाय, उसे 'शुक्त' कहते हैं। वही बहुत ही उपादेय तथा अच्छी चीज है। यदि पावरोटी खाना ही पड़े तो उसे दुबारा आग पर खूब सेंककर खाओ।

हमारे देश में जिनके पास दो पैसे हैं वे अपने बाल-बच्चों को पूरी-मिठाई खिलायेंगे ही। भात-रोटी खिलाना उनके लिए अपमान है। इससे बाल-बच्चे आलसी, निर्बुद्धि हो जाते हैं तथा उनका पेट निकल आता है। तब सचमुच जानवर की शक्ल न हो जायेगी तो क्या ? इतनी बलवान अंग्रेज जाति भी पूरी-मिठाई आदि से डरती है। ये लोग तो बर्फीले देशों में रहते हैं। दिन-रात कसरत करते हैं। हम लोग तो अग्नि-कुंड में रहते हैं। एक जगह से उठकर दूसरी जगह जाना नहीं चाहते और खाना चाहते हैं पूरी कचौड़ी, मिठाई, घी और तैल में तली हुई चीजें पुराने जमाने ये गाँव के जमींदार सहज में दस कोस घूम आते थे, उनके लड़के बच्चे कलकत्ता आकर आँखों पर चश्मा लगाते हैं, पूरी-कचौड़ी खाते हैं, रात दिन गाड़ी पर चढ़ते हैं और पेशाब की बीमारी होने से मरते हैं। कलकतिया होने का यही फल है। वे अपना सर्वनाश करते हैं।

['आर्य पथ' से साभार]

मूले जाटों की शुद्धि

ग्राम बसौदी जिला सोनीपत के अन्तर्गत हरियाणा में यज्ञ हवन का कार्य सम्पन्न हुआ, जिसमें वहाँ के मूले जाटों ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण किया। इस तरह ग्राम बसौदी के ७० मूले जाटों ने इस्लाम मत को त्याग कर, श्री सेवानन्द की अध्यक्षता में पुनः वैदिक धर्म स्वीकार किया। मास्टर सुखबीर सिंह, राजेश दीपचन्द शर्मा तथा बंशीलाल जी, रचना होटल पहाड़ गंज दिल्ली वालों ने पूर्ण सहयोग दिया।

—सेवानन्द सरस्वती

आर्य समाज—भुवनेश्वर में शुद्धि और विवाह

आर्य समाज, भुवनेश्वर में श्री सिराज खां की शुद्धि करके उनका नाम सूरज कुमार रखा गया पश्चात् उनका विवाह कु० किरण अग्रवाल के साथ सम्पन्न हुआ। पौरोहित्य कार्य आर्य प्रतिनिधि सभा उड़ीसा के मन्त्री श्री प्रियव्रत दास ने कि और संस्कार विश्लेषण उनकी पत्नी श्रीमती शन्नोदेवी ने किया। इस संस्कार मे श्री रंजीत महान्ति (भारतीय अधिवक्ता परिषद् के पूर्व अध्यक्ष) और श्री सुकुमार सेन (उडीसा व्यापारिक सघ के अध्यक्ष) तथा विशिष्ठ नागरिकों ने भाग लिया।

दो युवकों की शुद्धि

आर्य समाज, गोविन्द नगर, कानपुर में श्री मोहम्मद इस्लाम और श्री लालमियां की शुद्धि करके उनका नाम क्रमशः श्री महेन्द्र आर्य और श्री लालसिंह यादव रखा गया। ये दोनों ३० वर्षीय युवक सत्यार्थ-प्रकाश के अध्ययन से प्रभावित होकर हिन्दू धर्म में प्रवेश किया। केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने यज्ञोपवीत धारण करा कर गायत्री मन्त्र का उच्चारण करवाया।

शुद्धि और विवाह

आर्य समाज, साकेत, नई दिल्ली में कु० विक्टर निर्मला करुनन ईसाई की शुद्धि करके उनका हिन्दू नाम कु० निर्मला रखा गया पश्चात् हिन्दू युवक श्री एम० के मोहन राव के साथ विवाह सम्पन्न हुआ। पौरोहित्य कार्य डा० तीर्थराज शास्त्री ने किया। लखीराम कटारिया

आर्य समाज हिसार

आर्य समाज, नागोरी गेट, हिसार का वार्षिकोत्सव १ से ३ नवम्बर तक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्यप्रादेशिक सभा के सबसे पुराने उपदेशक पं० प्रभुदयाल आर्य प्रभाकर का अभिनन्दन किया गया। अभिनन्दन में प० प्रभुदयाल जी को २२००० रुपये की थैली भेंट की गयी। —प्रो० वेद सुमन वेदालंकार

स्त्री आर्य समाज लाजपत नगर

स्त्री आर्य समाज, लाजपत नगर का वार्षिकोत्सव श्रीमती विद्यावती विशारद की अध्यक्षता में बड़े समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। जिसमें श्रीमती सरला मेहता, प्रेमशीला, सुशीला वेदप्रिया, ऊषा शास्त्री और गीता शास्त्री ने अपने भाषणों में देश की ज्वलन्त समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए नारी के कर्तव्यों का बोध कराया। अन्त में सम्मेलन की संयोजिका शकुन्तला आर्या ने कहा कि देश की तूफानी समस्याओं को नारी भली प्रकार सुलझा सकती है। नारी ही अपनी कार्यकुशलता एवं क्षमता के आधार पर गृहस्थ के कांटों भरे कलेवर को मोतियों के ताज रूप में परिणत कर सकती है। इस अवसर पर स्त्री आर्य समाज की ओर से श्रीमती रामप्यारी जी, विद्यावती जी, सरस्वती जी एवं गीता शास्त्री जी की ओर से अभिनन्दन किया गया।

आर्य समाज 'बी' जनकपुरी

आर्यसमाज बी ब्लाक-जनकपुरी नई दिल्ली में ऋषि निर्वाणोत्सव धूमधाम से मनाया गया। दिवाली के दिन समाज की ओर सभी सदस्यों ने स्पेशल बस द्वारा रामलीला मैदान के कार्यक्रम में भाग लिया। सायं ४ बजे डा० आर० के० मुन्शी की अध्यक्षता में सभा का आयोजन किया गया जिसमें ऋषि संबन्धी भजन और व्याख्यान हुए। चार दिनों तक प्रातःकाल प्रभात फेरी निकाली गयी जो कि सभी पाकेटों में गयी। —मन्त्री

अखिल भारतीय प्राच्यविद्या परिषद् के अधिवेशन में आर्य विद्वान्

अहमदाबाद में उक्त परिषद् का ३२ वां अधिवेशन ६, ७, ८ नवंबर को गुजरात विश्वविद्यालय के तत्वावधान में संपन्न हुआ। इसमें आर्य समाज के अनेक विद्वान् संमिलित हुए और विभिन्न विषयों पर पत्रवाचन किया। पं० युधिष्ठिर मीमांसक ने पण्डित परिषद में अपना शोध पत्र पढा। डा० सुधीर कुमार गुप्त, डा० भवानी लाल भारतीय, डा० जयदत्त शास्त्री, डा० वेदपाल वर्णी आदि ने अपने पत्र वेद दर्शन परिषदों मे पढ़े। यदि आर्य समाज अपने विद्वानों को संस्थागत रूप में उक्त परिषद् में भेजें तो वे अपने वैदुष्य को अधिक प्रकर्षता से संपूर्ण देश के संस्कृतज्ञों के संमुख प्रस्तुत कर सकते हैं।

—अहमदाबाद के प्रसिद्ध आर्य विचारक श्री नरेन्द्र देव ने गुजरात सरकार के सूचना एवं प्रसार विभाग के आदेश से स्वामी दयानन्द तथा उनके क्रान्तिकारी शिष्य पं० श्याम जी कृष्ण वर्मा से संबन्धित दो लघु वृत्तचित्रों का निर्माण किया हैं। ये वृत्त चित्र गुजरात सरकार के प्रचार व प्रकाशन विभाग से क्रय किये जा सकते हैं।

आर्य समाज श्रीनिवासपुरी

नई दिल्ली, आर्य समाज श्री निवासपुरी का वार्षिकोत्सव सा० ४ नवंबर से १० नवंबर तक बड़ी धूमधाम से संपन्न हुआ। ४ से ८ नवंबर तक पं० प्रकाश चन्द शास्त्री जी की मनोहर कथा व पं० तुलसीराम आर्य के भजन व उपदेश हुये। ९ नवंबर को पं० नरेन्द्र अवस्थी का मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के जीवन पर प्रभावशाली भाषण हुआ। रविवार १० नवबर को भारत सेवाश्रम सघ के संचालक स्वामी विजयानन्द जी की अध्यक्षता में 'राष्ट्र रक्षा संमेलन' हुआ जिसमें सर्वश्री मेघश्याम वेदालंकार, दयालदास वर्मा, नरेन्द्र अवस्थी 'पत्रकार' विद्यार्थी जी आदि के भाषण हुए। समेलन में संस्कृत को द्वितीय राजसभा बनाने, समान नागरिक कानून बनाने, जंमूकश्मीर में धारा ३७० हटाने व आतंकवादियों को सख्ती से कुचलने आदि के प्रस्ताव पारित हुए। श्री प्रभुदयाल जी सभी कार्यक्रमों के सयोजक रहे।

आर्य समाज नकुड़

आर्य समाज नकुड़ [सहारनपुर] का वार्षिकोत्सव दिनांक ३, ४, ५ नवबंर को मनाया गया। जिसमें दिल्ली से आचार्य खुशीराम जी वेद प्रचार अधिष्ठाता तथा भजनोपदेशक श्री रघुराज शास्त्री, श्री ब्रजपाल शर्मा कर्मठ तथा आचार्य मित्र जीवन जी गाजियाबाद ने वैदिक सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला।—भूपेन्द्र कुमार आर्य

—आर्य समाज राजामण्डी आगरा, आर्य समाज माडल टाउन करनाल तथा आर्य समाज खरड़ [जिला रोवड़] के कार्यक्रमों में डा० भवानीलाल भारतीय ने भाग लिया तथा स्वामी दयानन्द एव आर्यसमाज विषक अपने विचार प्रस्तुत किये।

—आर्य समाज शान्ताक्रूज बंबई ने दि० २४ से २७ नवंबर तक आर्य समाज के प्रमुख शोध विद्वान् डा० भवानीलाल भारती[श्री स्वामी दयानन्द विषयक एक भाषणमाला आयोजित की है।

त्रिलोकचन्द्र शास्त्री स्मृति दिवस

आर्य समाज, माडल टाउन, पानीपत में २९ दिसम्बर को स्व० पं० त्रिलोकचन्द शास्त्री का स्मृति दिवस समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। इस आयोजन में हरियाणा पंजाब और दिल्ली के अनेकों महानुभाव भाग लेंगे। प्रो० वेद सुमन

आभार

दुर्भाग्य से ३० सितम्बर को मेरी धर्मपत्नी का निधन हो गया। ४ अक्तूबर को रस्म क्रिया वाले दिन हजारों की संख्या में बन्धु-बान्धवों एवं मित्रगणों ने इस अचानक मृत्यु पर गहरा शोक प्रकट किया। हरियाणा के प्रत्येक जिले से भारी संख्या में आर्य भाई-बहन उपस्थित हुए। दिल्ली, पंजाब आदि प्रान्तों में श्री सज्जन पधारे।

मेरी इस घोर मुसीबत की घड़ी में सभी बन्धु बान्धव मित्रों आर्य बहिन भाईयों ने जो धैर्य एवं सान्त्वना प्रदान की है। उसके लिये मैं सबका धन्यवाद प्रकट करता हूं।

—प्रा० वेद सुमन वेदालंकार

चौ० हमीरसिंह स्थिर निधि

महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, कृष्णपुर (फर्रुखाबाद) को चौ० त्रिलोकसिंह आर्य आगरा निवासी ने अपने पूज्य पिता की स्मृति में चौ० हमीर सिंह स्मारक धर्मार्थ स्थिर निधि के रूप में १० हजार रुपए प्रदान किये हैं जिसके ब्याज से छात्रों की छात्रवृत्ति दी जायेगी। गुरुकुल चौधरी जी का बहुत आभारी है। आचार्य चन्द्रदेव

अर्न्तजातीय विवाह

आर्य समाज बहेड़ी (बरेली) के तत्वावधान मे 20 अक्तूबर को अर्न्तजातीय विवाह का आयोजन किया गया।

श्री रामपाल निवासी ग्राम मुड़िया (बरेली) तथा श्री कन्हैयालाल निवासी कुइयाखेड़ा (बरेली) का शुभ विवाह क्रमशः आयु० बसन्ती (कलकत्ता) एवं आयु० मायादेवी, बुधौली (बरेली) के साथ आर्य समाज के पुरोहित श्री इन्द्रवर्मा के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ।

—रामस्वरूप स्नातक

संस्कृत ही मानव मात्र की आदिम वाणी है

ऋषि निर्वाण दिवस की सभा में श्री जाखड़ के उद्‌गार

प्रथम चित्र—स्वामी विद्यानन्द जी ओ३म् ध्वजारोहण कर रहे है। द्वितीय चित्र—श्री सोमनाथ मरवाह लोकसभाध्यक्ष का स्वागतकर रहे हैं। तृतीय चित्र—श्री बलराम जाखड़ भाषण देते हुए।

१२ नवम्बर को रामलीला मैदान, मे दिल्ली की समस्त आर्य समाजो की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान मे ऋषि निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य मे जो विशाल सभा हुई, उसमे लोकसभाध्यक्ष श्री बलराम जाखड ने ऋषि दयानन्द के प्रति अपनी श्रद्धाजलि व्यक्त करते हुए कहा कि जब संसार के अन्य देश जंगली थे और कन्दराओ मे निवास करते थे, तब आर्यावर्त के ऋषि वेद मन्त्रो का गायन करते थे। संस्कृत तो मानव मात्र की आदिम वाणी है। फिर लोकसभा मे मैं संस्कृत मे शपथ न लेता, तो क्या करता। उन्होने कहा—ऋषि दयानन्द ने ससार के उपकार पर बल दिया था, पर आज के विश्व राज नेता ससार को मारने पर तुले हुए हैं। अन्यथा इतने अणु-बमो का भण्डार किस लिए है? उन्होने कहा कि जिओ और जीने दो का सिद्धान्त ही आर्य सभ्यता की देन है। सभा की अध्यक्षता श्री रामगोपाल शालवाले ने की।

केन्द्रीय राज्यमत्री और काग्रेस के कोषाध्यक्ष श्री सीताराम केसरी ने आर्यसमाज के प्रारम्भिक क्रान्तिकारी स्वरूप की चर्चा करते हुए कहा कि आज के आर्यसमाजियो में वह क्रान्ति भावना नही रही, जो पहले थी। इसीलिए देश मे अनाचार और पाखण्ड बढ रहा है और आए दिन नए-नए भगवानो की बाढआ रही है। आर्य समाज को सामाजिक क्रान्ति मे सबसे आगे होना चाहिए।

संसत्सदस्य कुमारी कुमुदबेन जोशी, सार्वदेशिक सभा के महामंत्री श्री ओम्प्रकाश त्यागी, पजाब सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र, गुरुकुल कागड़ी के कुलाधिपति, डा० सत्यकेतु विद्यालंकार और कुलपति डा० सत्यकाम वर्मा तथा राज्यसभा सदस्य श्री रामचन्द्र विकल ने भी अपने ओजस्वी और व्यवहारोपयोगी विचार प्रकट किए।

वीर बन्दा वैरागी की शहादत की झाँकी

हिसार आर्य समाज के वार्षिक उत्सव पर विभिन्न डी.ए.वी. सस्थाओ ने झाकिया निकालीं। इस अवसर पर स्थानीय दयानन्द कालेज की झांकी 'शहीद बन्दा वैरागी" को सर्वश्रेष्ठ घोषित किया गया। हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभ के प्रधान श्री शिवराम वर्मा ने पुरस्कार बाटे।

—देवेन्द्र उप्पल

श्री पं० ब्रह्मदत्त शर्मा

फिरोजपुर आर्य समाज के प्रधान, आर्य अनाथालय, डी ए वी. कन्या हायर सेकेंडरी स्कल, एव. एम. हायर सेकेंडरी स्कूल, हैप्पी बालबाडी आदि संस्थाओ के विकास में सतत सहयोगी श्री प० ब्रह्मदत्त शर्मा की 25 नवम्बर को पुण्यतिथि मनाई गई।

वेद प्रचार एव वार्षिकोत्सव

आर्य समाज सेक्टर-6, भिलाई नगर, (म० प्र०) मे 22 अगस्त से प्रारम्भ होकर 22 दिसबर तक चलता रहेगा। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रत्येक घर मे प्रतिदिन शाम को पारिवारिक सत्संग आयोजित किया जायगा जिसम हवन तथा भजन क साथ-साथ वेदोपदेश भी होगा।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के साथ 22 से 30 दिसंबर तक वार्षिकोत्सव के रूप मे आर्य-समाज मन्दिर सेक्टर-6, मे आयोजित किया गया है। —मोहनलाल चड्ढा

आर्य समाज हसनपर्ती

आर्य समाज, हसनपर्ती, जिला वरंगल (आ० प्र०) का वार्षिकोत्सव और स्थापना दिवस9 से 15सितबर तक सोत्साह मनाया गया। यज्ञ प० गोपदेव दर्शनाचार्य के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर दयानन्द बलिदान शताब्दी, श्री वी० एस० गुप्ता का सम्मान और वैदिक धर्म प्रचार प्रसार हेतु स्थाई कोष की स्थापना की गई। सभा मे श्री दासारे, प० गोपदेव, श्री के० वेकटराम नरसय्या श्री वेदव्रत मीमांसक, श्री ओमानन्द सरस्वती, श्रीमती यलवर्ती, श्री वेङ्कु कान्तरय्या एडवोकेट, श्री केशवराव, श्री डी० कैनकय्या आदि ने अपने विचार व्यक्त किये।

आर्य समाज पानीपत

आर्य समाज, बड़ाबाजार, पानीपत का वार्षिकोत्सव 22 से 24 नवम्बर तक सम्पन्न हुआ। उत्सव से पूर्व 17 से 21 नवम्बर तक श्री ओमप्रकाश आर्य की कथा हुई। डा०रामनाथ वेदालकार का अभिनन्दन किया गया। उत्सव मे स्वामी विद्यानन्द, डा० प्रशान्त वेदालंकार, डा० महेश चन्द्र, डा० वाचस्पति उपाध्याय, पं० रामकुमार आर्य, श्री वीरेन्द्र, चिरंजी लाल, श्रीमती शकुन्तला दीक्षित आदि के उपदेश और भजन हुए।

—ठाकुरदास बत्रा

यू० 103/81 लाइसेंस टू पोस्ट विदाउट प्री-पेमेन्ट
रजिस्ट्रेशन न० आर० एन० आई० 49/57 डी० सो० 409

आर्य समाज कलकत्ता स्थापना शताब्दी समारोह

आर्य समाज कलकत्ता का स्थापना शताब्दी समारोह 21 दिसम्बर से 29 दिसम्बर तक कलकत्ता मैदान में आयोजित किया जा रहा है। इसमें आर्य जगत् के महान् विद्वान्, संन्यासी, उपदेशक एवं भजनोपदेशक भाग लेंगे। इस अवसर पर अनेक महत्वपूर्ण सम्मेलन एवं विद्वानों की विचार-गोष्ठियां भी आयोजित की जायेंगी। आय महिला शिक्षा मण्डल ट्रस्ट द्वारा "नारी उत्थान और आर्य समाज" विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया है, जिसमें क्रमश: 15 सौ, 13 सौ और 11 सौ के प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार दिए जायेंगे। शताब्दी समारोह स्थल पर महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत ग्रन्थो, वेद एवं वेद-भाष्यो की एक सुन्दर प्रदर्शनी का आयोजन भी किया जायेगा।

इस अवसर पर अनेक स्थायी एव दूरगामी प्रस्ताव वाले महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने का भी निश्चय किया गया है। जिनमें प्रमुख हैं—आर्य समाज कलकत्ता का शतवर्षीय इतिहास प्रकाशन, ऋषि की जीवनी एवं पूना प्रवचन का बंगला में प्रकाशन, हिन्दी-बंगला में कर्मकांड का प्रकाशन तथा स्वास्थ्य एवं स्वाध्याय केन्द्र की स्थापना के साथ-साथ अनेक अन्य उपयोगी हिन्दी-बगला प्रकाशन।

अनुकूल वधू की आवश्यकता

४५ वर्षीय, ५ फुट ६ इंच, ६० किलो, जबलपुर निवासी अरोरा क्षत्रिय एम० ए०, शासकीय सर्विस प्रथम श्रेणी यू० डी० सी० जबलपुर में १३००) रू० मासिक आय अविवाहित, सुन्दर, स्वस्थ पर पैरों से विकलाग, पारिवारिक बोझ से स्वतंत्र, ३ भाई छोटे पढ़े-लिखे, नौकरी धंधे में, खुद का मकान, शान्त युवक को कुआरी, विधवा, या परित्यक्ता, असहाय, सेवा भाव वाली, २५ से ४० वर्ष उम्र की, कुछ शिक्षित, संतान योग्य, वधू चाहिए। दहेज, जाति-पांत बंधन कुछ नहीं। कुछ अंग-विकार व शारीरिक दोष चलेंगे, जैसे आख विकार, हाथ-पैर पुष्ट होने चाहिए। एक दो पुत्र हों तो भी चलेंगे। एक ही बार में पूरा परिचय, विवरण, फोटो व प्रमाण पत्र सहित भेजें। कोई सरक्षक हों तो साथ मे ले आवे। समाज सेवी संस्थायें सम्पर्क करें: पत्र-व्यवहार व सम्पर्क का पता—प्रधान जी, मेरिज ब्यूरो, आर्य समाज २८६, सतना बिल्डिंग राइट टाउन जबलपुर-४८२००२ (मध्य-प्रदेश) [P]

रिटायर्ड आर्य समाजी

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के लिये कुछ रिटायर्ड सेवा भावी आर्य समाजी व्यक्तियों की साधारण आनरेरियम (मानदेय) पर आवश्यकता है। इच्छुक सज्जन तुरन्त संपर्क करे।—रामनाथ सहगल, सभा मंत्री, आर्य समाज, मंदिर मार्ग नई दिल्ली-१

स्व० श्री छोटू भाई लल्लू भाई देसाई स्थिर निधि

स्व० श्री छोटू भाई लल्लू भाई देसाई, कछोली, बलसाड़ की स्मृति में उनके सुपुत्र—श्री प्रताप भाई छोटू भाई देसाई एवं श्री अमृतलाल छोटू भाई देसाई ने ५,०००/- रु० की स्थिर निधि "आर्य जगत्" हिन्दी (साप्ताहिक) को दी है। इस निधि का जो ब्याज आयेगा, वह आर्यसमाज के प्रचार में व्यय किया जायेगा। स्व० श्री छोटूभाई ने बलसाड़ जिले में ८८ वर्ष की उम्र तक आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में पूरी निष्ठा से कार्य किया। वे कछोली के प्रगतिशील किसान थे तथा मृत्यु पर्यन्त आर्य समाज की सेवा मे लगे रहे। — रामनाथ सहगल, मन्त्री।

काषाय परिधान का अपमान

आजकल ऋषियों-मुनियों के गेरुये वस्त्र पहने कोई भी साधु हमारे आप्त पुरुषो, पूर्वजो का तिरस्कार कर रहे हैं। जिसके मन मे आता है वही बिना दीक्षा, गुरुमन्त्र के वस्त्रों को लाल कर लेता है। काषाय परिधान की ओट मे जाने कितने अभद्र मानव अत्याचार अनाचार फैला रहे हैं। इसी कारण वैदिक प्रचार की गति तीव्र नही है। मुसलमान व ईसाई लोग भी हमारे ऋषियों की पोशाक पहन कर अधर्म का प्रचार करने में लगे हैं। अत आर्य समाजें इस बुराई को दूर करने में सावधान होकर जुट जावें।

— नैष्ठिक ब्रह्मचारी सन्तोष कुमार आर्य, मन्त्री आर्यसमाज सकरावा फर्रुखाबाद (उ० प्र०)

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाड़ी धीरज (फोन ...) दिल्ली ...

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य जगत्
साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य-२५ रुपये | विदेश मे ३० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४८ अंक ४६ रविवार, ८ दिसम्बर, १९८५ दूरभाष : ३ ४ ३ ७ १८
आजीवन सदस्य-२५१ रु० | इस अंक का मूल्य —६० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८५, दयानन्दाब्द १६० मार्ग शीर्ष कृष्णा ११, २०४२ वि०

रामकृष्ण मिशन के अनुयायी हिन्दू नहीं हैं ?
कलकत्ता हाईकोर्ट का फैसला सुप्रीमकोर्ट के विचाराधीन

कलकत्ता उच्च न्यायालय की एक खण्डपीठ ने एक अभियोग के प्रसंग मे यह विचार व्यक्त किया है कि रामकृष्ण [परमहस] के अनुयायी हिन्दू नही हैं और रामकृष्णवाद अहिन्दू पन्थ है।

यह धारणा उनके उस निर्णय का अग है जो उन्होने रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द शताब्दी-महाविद्यालय के अध्यापको द्वारा प्रवन्ध समिति के विरुद्ध पश्चिम बगाल कालिज सर्विस कमीशन ऐक्ट तथा पश्चिम बगाल क्षेत्रीय कालेज टीचर्स [सिक्योरिटी और सर्विस] एक्ट के उल्लंघन करने की याचिका के प्रसंग मे दिया है।

न्यायपीठ ने याचिका को यह मानकर अस्वीकार कर दिया कि उक्त कालेज का सचालन पथिक अल्पसंख्यक वर्ग द्वारा किया जाता है और संविधान की धारा 30 के अन्तर्गत आता है, अत इस पर उपरिलिखित दोनो एक्ट लागू नही होते।

रामकृष्ण मिशन ने अपने शपथ पत्र मे कहा है—'जो हिन्दू परम्परा का पोषक है वह स्वय को हिन्दू होने का दावा करता है और वह केवल वेदो मे ही विश्वास करता है, किसी अन्य पन्थ के ग्रन्थो मे नही। किन्तु रामकृष्ण मिशन जिस वाद अथवा पन्थ का अनुयायी है वह कुरान, बाइबल तथा अन्य धर्म-ग्रन्थो को भी सत्य स्वीकार करता है।" उच्च न्यायालय के निर्णय मे उनके इस कथन को स्वीकार कर लिया है।

रामकृष्ण मिशन द्वारा लिखित तर्क प्रस्तुत करते हुए यह स्वीकार किया गया है कि—"हिन्दू धर्म जैसा कि उसके विषय मे घोषित किया जाता है और जिस प्रकार उस पर आचरण किया जाता है उसके साथ रामकृष्ण मत की समानता सिद्ध करना एक प्रकार मे रामकृष्ण मिशन के मूल उद्देश्य को निरस्त करना और उनके मत को झुठलाना होगा।"

न्यायपीठ का कहना है कि—"यह तथ्य कि श्री रामकृष्ण ने कभी हिन्दूधर्म को अस्वीकार नही किया और उनके शिष्य कभी-कभी स्वय को 'हिन्दू सन्यासी' कह देते है, निर्णायक नही कहा जा सकता।

अग्रलेख देखिए—
'आखिर हिन्दू कोई है भी ?'

रामकृष्ण के अनुयायी स्वय को हिन्दुओ का परिष्कृत-पन्थ नही मानते और वे विश्व-धर्म का पालन और आचरण नही करते और न वे जातिप्रथा को मानते है।'

कालेज के अध्यापक न्यायालय की शरण मे इसलिए गए थे क्योकि वे समझते थे कि यदि उपरिलिखित दो एक्ट उनके कालेज पर लागू नही किए गए तो उनका भविष्य सकट मे पड जायेगा। उन्होंने सर्वोच्च न्यायालय मे अपील की है। वहा यह मामला विचाराधीन है। तब तक के लिए अध्यापको की सेवाओ के सम्बन्ध मे मुख्य-न्यायाधीश ने स्थिति को यथावत् बनाए रखने का आदेश दिया है।

यह कालेज 1961 मे सरकार की ओर से आरम्भ किया गया था। कालान्तर मे इसको मिशन की इकाई के रूप मे परिवर्तित कर लिया। 1979 से निरन्तर कालेज के अध्यापको का सघर्ष चल रहा है। 1980 मे जब प्रबन्ध समिति ने रामकृष्ण मिशन के प्रतिनिधि को कालेज का प्रधानाचार्य नियुक्त किया तो अध्यापको को लगा कि इस प्रकार तो पश्चिम बगाल कालेज सर्विस कमीशन एक्ट का उल्लघन होता है। उनका यह भी आरोप था कि अधिकारी वर्ग कालेज के अध्यापको की सेवा सुरक्षा सम्बन्धी एक्ट 1975 के प्रावधानो का जो अध्यापको की भविष्य निधि और पैशन तथा नियुक्तियो मे सम्बन्ध रखते है, उल्लघन कर रहा है।

आर्यसमाज अनारकली के वार्षिकोत्सव पर विद्वानों के भाषण

श्री प० शिवकुमार जी पूर्व ससतसदस्य, श्री क्षितीश वेदालकार सम्पादक 'आर्य जगत्', श्री आचार्य हरिदत्त शास्त्री और प्रो० रत्नसिंह, परामर्शदाता नैतिक शिक्षा डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री सभा, आर्यसमाज अनारकली के वार्षिकोत्सव पर प्रवचन दे रहे हैं। (अन्य चित्र पृष्ठ 2 पर देखिए)

परामर्शदाता—अमर स्वामी सरस्वती | सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

आर्यसमाज अनारकली में यज्ञ और स्त्री समाज के उत्सव का दृश्य

आर्यसमाज अनारकली के वार्षिकोत्सव पर यज्ञ की पूर्णाहुति का एक दृश्य। स्त्री समाज के उत्सव मे पूर्त महिलाओ द्वारा मत्रोच्चारण पूर्वक यज्ञ का आयोजन

अ० भा० आर्य युवक महासम्मेलन की कुछ झाँकियाँ

आर्यसमाज अनारकली के वार्षिकोत्सव पर दिल्ली केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की ओर से आयोजित अ०भा० आर्ययुवक महासम्मेलन के सरक्षक ब्र आर्य नरेश का पुष्पमाला द्वारा स्वागत कर रहे है परिषद् के अध्यक्ष श्री धर्मवीर जी। उनके पास खडे है परिषद् के महामन्त्री श्री अनिल आर्य। द्वितीय चित्र—युवक सम्मेलन के मच पर उपस्थित विशिष्ट अतिथि— श्री रामचन्द्र विकल ससन्सदस्य, श्री रामभज बत्रा प्रधान अ० भा० शुद्धिसभा, श्री क्षितीश वेदालकार सम्पादक 'आर्यजगत्' तथा अन्य।

गुरुकुल कण्वाश्रम के आचार्य आधुनिक भीम, ब्र विश्वपाल जयन्त का स्वागत करते हुए परिषद् के प्रचार मत्री श्री चन्द्रमोहन आर्य। द्वितीय चित्र शरीर सौष्ठव का प्रदर्शन। तृतीय चित्र—आर्यवीरो द्वारा विविध प्रकार के व्यायामो और आसनो का प्रदर्शन।

सत्याग्रहियो के सम्बन्ध में गृहमंत्री को ज्ञापन

दिल्ली 30 नवम्बर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व मे आर्य समाज के शिष्टमडल केन्द्रीय गृहमत्री श्री एस०बी० चव्हाण से भेंट कर उन्हें हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियो के सबध मे एक ज्ञापन पत्र दिया। शिष्टमडल कहा कि हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियो के साम पेंशन प्राप्त कर मे कुछ विशेष कठिनाइया है। 1938-39 मे पश्चिमी पजाब (जो अब पाकिस्तान मे है) के लोगो भी सत्याग्रह मे भाग लिया था। तत्कालीन निजाम स्टेट अब तीन प्रान्तो मे विभाजित हो चुकी है। उस समय जो लोग जेलो मे गये थे, उन्हे निजाम सरकार कोई प्रमाण पत्र नही दिया था। यह आन्दोलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्वावधान मे चला था और सभा सत्याग्रहियो को प्रमाण पत्र भी दिये थे। अधिकाश सत्याग्रही अब तक दिवगत हो चुके है। जो थोडे बहुत लोग इस समय वृद्धावस्था मे जी रहे हैं, उनके पास अब 47 वर्ष के उपरान्त कोई प्रमाणपत्र शेष नही है।

शिष्टमडल ने सरकार से माग की कि जिस प्रकार राष्ट्रीय आन्दोलन के सेनानियो को कांग्रेस के प्रमाण पत्र के आधार पर स्वतन्त्रता सेनानी माना गया था, उसी प्रकार केन्द्र सरकार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा उक्त सत्याग्रह के रिकार्ड के आधार पर प्रमाणित सत्याग्रहियो को स्वतत्रता सेनानी स्वीकार करे और सरकार द्वारा स्वीकृत पेंशन योजना का लाभ प्रदान करे।

गृहमत्री श्री चव्हाण , तुरन्त सभा से सूची भेज के लिए कहा और आश्वासन दिया कि वे राज्य सरकारो से बातचीत करके इसका निर्णय जल्दी करेगे। उन्हो। यह भी बताया कि निजाम हैदराबाद अब आन्ध्र, कर्नाटक, और महाराष्ट्र मे विभाजित हो चुका है।

शिष्टमडल प्रो० शेरसिंह, श्री ओम्प्रकाश त्यागी, प० शिवकुमार शास्त्री, श्री सोमनाथ रमवाह एडवोकेट और श्री लक्ष्मीचन्द आदि सम्मिलित थे।

—सच्चिदानन्द शास्त्री, उपमत्री सभा

सुभाषित

न कूटैरायुधैर्हन्याद्युध्यमानो रणे रिपून् ।
कर्णिभिर्नापि दिग्धैर्नाग्निज्वलित तेजनैः ॥

—मनुस्मृति-७।९

ऐसे शस्त्रों को युद्ध में कभी नही चलाना चाहिये जिन का प्रभाव शरीर पर बहुत भयानक हो, जिनका शरीर से निकलना कठिन हो, जो विषैले हो और जो अग्नि से जला देने वाले हो।

प्राचीन राजनीतिज्ञो के दिल मे युद्ध के समय भी धर्म निवास करता था। क्रोध के समय भी दया रहती थी और सकट के समय भी मनुष्यता को नही भुलाया जाता था।

सदर्भ ग्रथ : 'प्राचीन भारत मे स्वराज्य' ले०—प० धर्मदत्त विद्यालकार, प्रकाशक :—गुरुकुल साहित्य परिषद्, गुरुकुल कागडी, सन् १९८०

प्रेषक—प्रा० धर्मेन्द्र बोग्रा, ओकार कुंज, खारीवाव रोड, वडोदरा-३९०००१

सम्पादकीयम्

आखिर हिन्दू कोई है भी ?

लगभग 3 सप्ताह पहले कलकत्ता उच्च न्यायालय ने निर्णय दिया है कि-रामकृष्ण मिशन के अनुयायी हिन्दू नही है। इस निर्णय से जहा भारत की समस्त जनता चौकेगी वहा इसके दूरगामी परिणाम होने की सभावना है। बात बहुत छोटी सी थी। पश्चिमी बगाल मे राहरा मे एक कालेज है इसका नाम है रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द सेन्टीनरी कालेज। इस कालेज के अध्यापको ने कालेज की प्रबन्ध समिति पर यह अभियोग लगाया कि वह पश्चिमी बगाल के कालेज अध्यापको की सेवा-सुरक्षा के लिए बनाए गए ऐक्ट का उल्लघन कर रही है। उत्तर मे प्रबन्ध समिति यह कहा कि रामकृष्ण सम्प्रदाय के अनुयायी केवल वेदो मे विश्वास नही रखते, बल्कि ससार के सभी धर्म ग्रन्थो को सत्य मानते है इसलिए हम हिन्दू समाज का अग नही हैं और अल्पसख्यक हैं। वह सरकारी कानून हम पर लागू नही होता और हम अल्प सख्यको को मिलने वाली रियायतो के अधिकारी है।

उच्च न्यायालय के न्यायाधीशो ने रामकृष्ण मिशन का तर्क स्वीकार करते हुए यह निर्णय दिया कि रामकृष्ण मिशन के अनुयायी अपने-आपको हिंदुओ का कोई सुधारवादी सम्प्रदाय नही मानते, वे तो विश्व धर्म का प्रचार करते है। वे न तो हिंदू आचार शास्त्र का पालन करते हैं और न ही जाति प्रथा को मानते है। इसलिए इनको हिन्दू मानना उचित नही। भारतीय अदालतो की न्यायप्रियता विख्यात है, इसलिए न्यायाधीशो के निर्णय पर हम कोई आपत्ति नही करते। पर रामकृष्ण मिशन के अनुयाइयो ने अपनी एक छोटी सी शिक्षा सस्था पर अपना स्वेच्छाचार कायम रखने के लिए व्यापक राष्ट्रीय-हित को जिस प्रकार तिलाजलि दे दी है वह देख कर आश्चर्य होता है। महाकवि कालीदास के शब्दो मे —

अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन्
विचार मूढः प्रतिभासिमे त्वम् ॥

छोटे से स्वार्थ के लिए बडे और व्यापक हित की उपेक्षा करना विचार मूढता के सिवाय और क्या है ?

उच्च न्यायालय के निर्णय ने और रामकृष्ण मिशन के अनुयाइयो के तर्क ने कुछ उलझन भरे प्रश्न उपस्थित कर दिये है। सबसे पहला प्रश्न तो यही है कि हिंदू कौन है ? हिन्दू-शब्द की अभी तक कोई सर्वमान्य परिभाषा दृष्टिगोचर नही होती। इसके भी कई ऐतिहासिक कारण है। कभी लोकमान्य तिलक ने हिन्दू की परिभाषा करते हुए "प्रामाण्यबुद्धिर्वेदेषु उपास्यानाम कता।" अर्थात् चारो वेदो को प्रमाण मानना और किसी एक देव के बजाय अनेक इष्ट देवो की उपासना की छूट देना हिंदुत्व का लक्षण बताया था। उसके बाद वीर सावरकर ने—

आ सिन्धु सिन्धु पर्यन्ता यस्य भारत भूमिका ।
पितृभूः पुण्य भूश्चैव स वै हिन्दूरिति स्मृतः ॥

—अर्थात सिन्धु नदी के उद्गम से लेकर हिन्द महासागर तक और पश्चिम सागर से लेकर पूर्व सागर तक भारत भूमि को जो अपनी पितृ भूमि और पुण्य भूमि मानता है, वह हिन्दू है। राष्ट्रीय स्तर पर यह व्याख्या सही हो सकती है, पर जो लोग भारत छोड कर ससार के अन्य देशो मे जा बसे हैं और उन्होने वहा की नागरिकता ग्रहण कर ली है उनके लिए हिन्दुत्व की इस परिभाषा को स्वीकार करना कठिन हो जायेगा।

सच तो यह है कि अब से 7 सौ वर्ष से पूर्व, हमारे किसी ग्रन्थ मे हिन्दू शब्द का उल्लेख नही मिलता। इस शब्द की व्युत्पत्ति को 'सिन्धु' और 'सप्त सिन्धु' के साथ कितना ही जोडा जाय, और भाषा विज्ञान की दृष्टि से फारसी मे स के ह बन जाने वाली बात भी कितनी ही सही क्यो न हो, किन्तु यह भी सही है कि आज तक सिन्धु नदी को किसी ने हिन्दु नदी का नाम नही दिया। 'कुलार्णव तन्त्र' मे और 'बार्हस्पत्य शास्त्र' मे हिन्दु शब्द की जो परिभाषाए की गयी हैं, वे भी निश्चित रूप से अवान्तर कालीन ही हैं प्राचीन ग्रन्थो मे सर्वत्र 'आर्य' शब्द का ही उल्लेख है। स्वय काशी के पौराणिक पडितो ने भी 'हिन्दू' बजाय के आर्य शब्द का समर्थन किया है। इस तथ्य से इन्कार करना कठिन है कि भारत के बाहर से आये लोगो ने हमको हिन्दू नाम दिया और हमारे देशवासियो ने उसे स्वीकार कर लिया। जिस तरह अग्रेजों ने आकर "इण्डिया" और "इण्डियन" शब्द दिये (उनके मूल मे भी हिन्दू शब्द की ध्वनि है), किन्तु जिस प्रकार हमने अग्रेजी भाषा मे अग्रेजो द्वारा दिये गये उक्त दोनो शब्द स्वीकार कर लिये वैसे ही बाहर से आये लोगो द्वारा दिये गये हिन्दू, हिन्दी, हिन्दुस्तान आदि शब्द भी हमने स्वीकार कर लिये। (हिन्दी भाषा के लिए हिन्दी शब्द भी सबसे पहले मुसलमानो ने ही प्रयुक्त किया।) इसका कारण हम अपने देश के निवासियो की उदारता कहे या ऐसी चीजो के प्रति उपेक्षावृत्ति धारण करने का एक सामान्य भारतीय स्वभाव कहे, लेकिन वह है।

इस विवेचन से यह बात भी स्पष्ट होती है कि हिन्दू शब्द किसी सम्प्रदाय विशेष का या धर्म विशेष का द्योतक न होकर इस देश के निवासियो को परिभाषित करने वाली एक समूहवाची या जातिवाची सज्ञा (कलैक्टिव नाउन) है। इस शब्द का सम्बन्ध धर्म के साथ उतना नही था, जितना देश के साथ था। हिन्दू का असली अर्थ हुआ-हिन्द देश का निवासी। पर जब मुस्लिम आक्रमणकारी इस देश मे आये तो उनकी समस्त प्रवृत्तियो का प्रेरणास्रोत उनका इस्लाम मजहब था (जिसका धर्म ग्रन्थ "कुरान" है) और उसी की प्रेरणा से वे दिग्विजय के लिए निकले थे। उनका सारा जीवन मजहब के दायरे मे बधा हुआ था। इसलिए उन्होने इस देश के निवासियो को अपने मे और इस्लाम मे अलग करने के लिए हिन्दू शब्द को भी धर्म के साथ जोड दिया।

हिन्दू शब्द को धर्म के साथ जोडने पर भी एक बात कायम रही और वह यह कि प्रत्येक हिन्दू के मन मे अपने देश के प्रति और अपनी मातृ-भूमि के प्रति एक विशेष लगाव बना रहा। इसी लगाव को वीर सावरकर ने 'पुण्य भू' और 'पितृ भू' के विशेषणो से सम्बोधित किया है। प्रत्येक हिन्दू के मन मे इस देश के प्रति एक विशेष ममता उसके जीवन का अङ्ग है। इसीलिए वह अपनी प्रार्थनाओ मे सप्त नदियो, सप्त पुरियो और सप्त पर्वतो को शामिल करके सारे देश को उसमें समेट लेता है। जब कोई अपने-आपको गैर-हिन्दू कहता है, तब क्या वह यह कहना चाहता है कि इस देश के प्रति उसका उतना ममत्व नही है ? कोई वेद को भले ही अपना धर्म ग्रन्थ न माने, परन्तु यदि वह यह स्वीकार करता है कि वेद के रूप में इस देश के निवासियो को अपने प्राचीन पूर्वजो की महान विरासत प्राप्त हुई है तो वह एक ऐतिहासिक तथ्य को स्वीकार करता है, केवल किसी धार्मिक ग्रन्थ को नही। जो अपने पूर्वजो की इस महान विरासत को उचित आदर देने से इन्कार करता है, वह एक तरह से अपने अस्तित्व से भी इन्कार करता है। क्योकि हमारे पिता-पितामह आदि न होते तो हम भी न होते। और हमारे गुरु और उन गुरुओं के भी गुरु न होते तो आज हम ज्ञानवान् भी न होते। आदि गुरु परमात्मा और आदि ज्ञान वेद ही तो समस्त मानव जाति की अद्भुत और महनीय विरासत है। हम उस विरासत को अस्वीकार करके अपना ही अहित करते है, किसी और का नही।

फिर रामकृष्ण मिशन वाले जिन उपनिषदो पर इतना अधिक बल देते है, क्या बिना वेद को आधार बनाये उन उपनिषदो का कही अस्तित्व रहेगा ? क्या किसी को यह बताने की आवश्यकता है कि सबसे मुख्य उपनिषद-"ईशोपनिषद'-यजुर्वेद का 40 वा अध्याय ही है। जो इस उपनिषद को माने और वेद को न माने, उसको आप क्या कहेंगे ?

जहाँ तक रामकृष्ण मिशन वालो ने अपने आपको हिन्दू आचार शास्त्र को न मानने वाला कहा है, वहा भी वे आत्मवचना मे ग्रस्त प्रतीत होते है। मनुस्मृति आचार शास्त्र का सबसे प्रधान ग्रन्थ है और उसमे धर्म के 10 लक्षण कहे गए हैं—'धृति क्षमा दमोऽस्तेयम्, इत्यादि। हम समझते हैं कि उस धार्मिक आचार का जिस प्रकार निष्ठापूर्वक पालन रामकृष्ण मिशन के सन्यासी करते हैं, उतना अन्य कोई हिन्दू शायद ही करता है।

[शेष पृष्ठ १० पर]

ऋषि दयानन्द की मृत्यु का कारण विष ही था

—श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती, आचार्य गुरुकुल झज्जर—

गत सप्ताह हमने 'धर्मयुग' में छपे लेख के उत्तर में डा० भवानीलाल भारतीय का लेख दिया था। इस बार इसी विषय पर श्री स्वामी ओमानन्द जी का लेख दिया जा रहा है।

एक रिवाड़ी के राव राजा युधिष्ठिर पाखण्डी स्वार्थी ब्राह्मणों के बहकाने से अपने महल से हथियार बांधकर अपने घोडे पर यह निश्चय करके सवार हुये थे कि हमारे देवी देवताओं और गंगा-यमुना आदि पवित्र नदियों का तथा तीर्थों खण्डन स्वामी दयानन्द ने आज अपने व्याख्यानों में किया तो मैं अपनी तलवार मे उनका सिर काट दूंगा। जब व्याख्यान के स्थान पर राव राजा युधिष्ठिर पहुंचे उस समय स्वामी दयानन्द का व्याख्यान गोरक्षा पर हो रहा था। अहंकार के वशीभूत अपने घोडे पर सवार रावराजा दूर से ही उनका व्याख्यान सुनने लगे। जब 6 फुट 9 इंच लम्बे स्वामी दयानन्द की दिव्य मूर्ति के दर्शन किये और स्वामी जी का गोरक्षा पर युक्ति-युक्त प्रभावशाली व्याख्यान सुना तो वज्र हृदय पिघलने लगा और श्रद्धा के अंकुर अंकुरित होने लगे। घोडे से नीचे उतर कर महर्षि के उपदेशामृत का पान करने लगे। आये थे प्राणघातक शत्रु बनकर, किन्तु प्रभावित होकर महर्षि का भक्त व शिष्य बन गये। फलस्वरूप अपने साथियों सहित महर्षि दयानन्द के पवित्र कर-कमलों से यज्ञोपवीत धारण करके शिष्य बनने की दीक्षा ली और सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द की आज्ञानुसार रिवाड़ी में प्रथम गोशाला की स्थापना की।

वर्त्तमान युग में एकमात्र वेद-प्राण पुरुष और आर्षज्ञान का अद्वितीय प्रसारक दयानन्द ही हुए हैं। उनका निश्चय था, "यथा राजा तथा प्रजा" अर्थात् जैसा राजा होता है वैसी ही उसकी प्रजा होती है। यह विचार कर राजाओं के सुधार के लिए उन्होंने राजस्थान की ओर अपना मुख किया था। उनकी धारणा थी कि उदयपुर और जोधपुर आदि प्रदेशों के राजा उनके उपदेश से प्रभावित होकर बदल जाए तो उनके सुधरने से वैदिक धर्म के प्रचार का कार्य शीघ्र हो जायेगा। यही विचार करके देशी राजाओं के सुधार के लिए जयपुर, शाहपुरा, उदयपुर जोधपुर आदि राज्यों मे वे प्रचारार्थ गये। उस समय ये सभी राज्य अंग्रेजों के अधीन तो थे ही। प्रायः सभी बुरी तरह भोग विलास में फसे हुए थे। जोधपुर राज्य को ही ले लीजिए। उस समय के महाराजा यशवन्तसिंह के भाई अपने स्वलिखित जीवन चरित्र में लिखते हैं—मेरे आने से पहले जोधपुर रियासत पर साठ लाख रुपया कर्जा था इसमें से बारह लाख रुपया सूद और काट का था। तीस लाख रुपया ब्रिटिश सरकार का था।

इस प्रकार जोधपुर राज्य कर्जे के नीचे दबा हुआ था। जोधपुर राज्य अजमेर की मशहूर फर्म सेठ सुमेरमल (उमेदमल) से दरबार का लेन-देन किया जाता था। उस पर एक प्रतिशत मासिक सूद देना पड़ता था। इस ऋण वा कर्जे का कारण राजाओं का मूर्खतापूर्ण व्यय ही था।

बीस हजार बराती

सर प्रताप सिंह अपनी जीवनी में लिखते हैं कि उनकी दो बहिनों इन्द्र-कंवर बाई जी और केशवकंवर बाई जी का विवाह जयपुर के महाराजा रामसिंह जी के साथ हुआ। इस अवसर पर जयपुर से बहुत धूमधाम के साथ बारात आई। बीस हजार आदमी इस बारात के साथ थे। राजा रामसिंह जी की सवारी पांच सौ सवारो के साथ आगे चली आ रही थी। वे लिखते हैं रात को नाच रंग, शराब, भांग के दौर शुरु हुए। इस बारात को जब एक मास होने को आया तो दीवान प० शिवदीन जी ने प्रार्थना की कि अब अवकाश लेना चाहिए। बीस हजार आदमी हैं, उनके खाने पीने पर बहुत व्यय हो रहा है। जोधपुर दरबार की ओर से तो कोई कमी नहीं, किन्तु हमें स्वय विचार करना चाहिए कि बीस हजार मनुष्यों के अतिरिक्त हजारों पशु अर्थात् हाथी, घोड़े, ऊँट, बैल आदि भी हैं उनके चारे और खुराक का प्रबन्ध भी जोधपुर को ही करना पड़ता है। जयपुर के महाराजा रामसिंह ने जोधपुर के महाराजा तख्तसिंह जी से जब अवकाश चाहा तो उन्होंने हंसकर यह उत्तर दिया कि आना आपके हाथ मे था, जाना हमारे हाथ में है। प० शिवदीन के बहुत अनुरोध पर यह निर्णय हुआ कि महाराजा रामसिंह दो हजार आदमियों के साथ अभी कुछ दिन और ठहरें। उधर जयपुर से बार-बार सन्देश आते थे कि रियासत के काम में बाधा हो रही है। आप जल्दी पधारें।

इस तरह राजे महाराजे धन का बुरी तरह अपव्यय करते थे। अपनी प्रजा के सुख दुःख का उन्हें कोई ध्यान नहीं था।

सर प्रतापसिंह ने सुधार के कई कार्य किए। वे राजपूतों के विषय में दुःख से कहा करते थे कि उन्हें शराब और वेश्यागमन ने नष्ट कर दिया है। यही दशा मुगलों की थी और यही अवस्था राजपूतों की हो रही है। सर प्रतापसिंह स्वामी दयानन्द की शिक्षा से प्रभावित भी हुए। उनके पांच विवाह हुए थे। इसके अतिरिक्त तीन स्त्रियां पास रखते थे। यह शिकार के बड़े शौकीन थे और मासाहारी थे। ऐसी ही अवस्था इनके बड़े भाई जोधपुर के महाराजा जशवन्तसिंह की थी। इनकी भी बहुत सी रानियां, रखैल और वेश्यायें थीं जिनमें से वेश्या नन्ही भगतिन के षड्यन्त्र से महर्षि दयानन्द को विष दिया गया। कुछ स्वार्थी लोग यह सिद्ध करने का प्रयत्न कर रहे हैं कि महर्षि दयानन्द को जोधपुर में विष नहीं दिया गया, वे रोगी होकर स्वर्ग सिधारे। यह एक योजनाबद्ध कार्य था। जोधपुर का राजघराना भी इसमे मुख्य रूप से भाग ले रहा था। उस समय जोधपुर राज्य के शासक स्वयं भी अपनी लापरवाही के कारण ऋषि की मृत्यु के लिए दोषी थे। अतः इस समय का राज परिवार भी इस कलंक से बचने के लिए प्रत्येक सम्भव ढंग से यत्न कर रहा है।

स्वार्थी लेखक

हाल में ही 'सर प्रतापसिंह और उनकी देन' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई है। इसके लेखक विक्रमसिंह एम ए. हैं जो राजघराने के एक स्कूल चोपासनी(जोधपुर) में अध्यापक हैं। पुस्तक में एक अध्याय इसी विषय पर दिया गया कि स्वामी दयानन्द को जोधपुर में विष नहीं दिया गया। लेखक का जीवन-निर्वाह जोधपुर के राजघराने की सहायता से ही होता है। इसलिए वह राजघराने पर महर्षि दयानन्द की मृत्यु से लगे कलंक धोने का यत्न करता है। किसी स्वार्थ, ईर्ष्या या द्वेष के कारण अन्य भी कई लेखक इस बात पर उतारू हैं कि स्वामी दयानन्द का देहान्त विष देने से नहीं हुआ किन्तु निमोनिया वा दस्तों के लगने से हुआ। जितने भी जीवन चरित्र आज तक लिखे गए उन सबसे यही सिद्ध होता है कि महाराज यशवन्तसिंह की रखैल नहीं भगतिन ने रुष्ट होकर उनके रसोइये के द्वारा दूध में भयंकर विष दिलवाया। जोधपुर निवासी श्री भैरोंसिंह ने अपना सारा जीवन इसी शोध कार्य में लगाया है। उनके पास इसके बहुत अधिक प्रमाण हैं। वे छाती ठोककर कहते हैं कि नहीं भगतिन और रसोइया ही इस पाप के दोषी नहीं थे किन्तु अंग्रेजी सरकार और जोधपुर का राजघराना भी इस षड्यन्त्र मे सम्मिलित थे।

जब अजमेर में महर्षि अर्द्ध निर्वाण शताब्दी हुई तब तक बहुत से ऐसे व्यक्ति जीवित थे जिन्होने महर्षि दयानन्द के दर्शन किये थे। उनमें से कुछ व्यक्ति ऐसे थे जिन्होंने महर्षि की अन्तिम दिनों में रुग्ण अवस्था में श्रद्धापूर्वक सेवा की थी। जिससे भी मैंने पूछ-ताछ की सबके मुख से स्पष्ट यही शब्द निकले कि महर्षि दयानन्द को भयंकर विष दिया गया था। जोधपुर के राजघराने के एक आर्य सज्जन अजमेर में रहते हैं। मैं उनसे श्री दत्तात्रेय बाब्ले के साथ मिला। उनके पास महर्षि दयानन्द का एक हाथ का बनाया हुआ चित्र था। मैं उस चित्र को उनके पास से लाया था। मैंने उससे भी यही प्रश्न पूछा था क्या महर्षि दयानन्द को जोधपुर मे विष नहीं दिया गया तो उन्होंने साफ कहा कि हम जोधपुर राजघराने के लोग महर्षि दयानन्द के मृत्यु के कलंक से बचने के लिए झूठ बोलते हैं। यथार्थ में उनको विष दिया गया था और विष से ही उनकी मृत्यु हुई थी। सभी जीवन चरित्र व इतिहास लेखकों का एक ही मत है कि महर्षि दयानन्द का देहावसान कालकूट विष देने के कारण ही हुआ। जिस डाक्टर अलीमर्दान खां ने जोधपुर के राजघराने की व्यवस्था से स्वामी दयानन्द की चिकित्सा की थी उस नीच ने औषध के स्थान पर स्वामी दयानन्द को घातक औषधि दी जिससे प्रतिदिन उन्हें तीस से भी अधिक दस्त आते रहे।

अलीमर्दान खां और नन्ही भगतिन

रोग बढ़ता गया ज्यों-ज्यों दवा की। महर्षि दयान्द की अवस्था जोधपुर म ही सर्वथा बिगड़ गई थी और वे मरणासन्न हो गये थे। शरीर की सब शक्ति समाप्त हो गई थी। अलीमर्दान खां की चिकित्सा से ऋषिवर काल के गाल में जा रहे थे। मैंने पता लगाया कि यह व्यक्ति कहां का था। वह हस्तिनापुर के पास रहता

[शेष पृष्ठ 9 पर]

क्या भारत का पुनर्विभाजन होगा ?

—बिशन स्वरूप गोयल—

1947 के भारत विभाजन की दु:खद घटना के उपरान्त मिली स्वतंत्रता के बाद देश एक के बाद एक समस्याओं के घेरे में घिरता चला जा रहा है। जो समस्या पैदा हो जाती है वह हल नहीं हो पाती। अपितु उस समस्या को हल करने के लिए की जाने वाली कार्यवाही से एक और नयी समस्या पैदा हो जाती है। इस प्रकार समस्यायें बढ़ती चली जा रही हैं। "दर्द बढ़ता गया ज्यूं ज्यूं दवा की।" ये समस्या विशाल ज्वालामुखी बन कर खड़ी हो गयी हैं जिसमें कभी भी विस्फोट हो कर देश टुकड़ों में बट सकता है। हमारे देश के अल्पसंख्यक सम्प्रदायों द्वारा देश को टुकड़ो में विभाजित करने के लिये उनकी अलगाववादी मनोवृत्ति का दिनानुदिन बलवती होना देश के लिये भयावह स्थिति उत्पन्न करता है।

देश के बटवारे के बाद से ही हमारे राजनेताओं ने अल्पसंख्यक सम्प्रदायों के वोट प्राप्त करने के लिये उनके तुष्टीकरण की जो नीति अपनायी वह सब से अधिक घातक सिद्ध हुई है। इस तुष्टीकरण और भेदभाव की नीति से अल्पसंख्यक सम्प्रदायो और बहुसंख्यक सम्प्रादाय के बीच की खाई निरन्तर चौड़ी होती जा रही है। जिसके कारण न केवल देश की एकता टूट रही है अपितु देश की अखण्डता और सुरक्षा को भी संकट पैदा हो गया है।

अल्पसंख्यक सम्प्रदायों के हितो के संरक्षण के नाम पर हमारी सरकार द्वारा उनके लिये विशेष कानूनों का भी निर्माण किया गया है। उनके लिये हर सरकारी विभाग में नौकरियों आदि में आरक्षण भी प्रदान किया गया है। मुसलमान को कानून की परिधि में आने से बचाने के लिये "मुस्लिम परसनल ला" को निरस्त नहीं किया गया है। उनके लिये अलग से वक्फ बोर्ड गठित है। सिख सम्प्रदाय को कृपाण के नाम पर तीन फुट लम्बी तलवार रखने की छूट दे रखी है। इन को इस प्रकार की सुविधायें उपलब्ध होने के कारण ये तथाकथित अल्पसंख्यक सम्प्रदाय (मुसलमान, सिख तथा ईसाई) अब आंखें दिखाने लगे हैं और पुन: इस देश का बटवारा करने के लिये योजनायें बना रहे हैं।

पंजाब में तो कुछ सिखों ने खालिस्तान लेने के लिये आतक और उग्रवाद का सहारा ले रखा है। इन तत्वों ने गत तीन साल में पंजाब तथा पंजाब से बाहर देश की प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी, प्रमुख पत्रकार लाला जगत नारायण, श्री रमेश चन्द, चण्डीगढ़ के सासंद श्री तिवारी, दिल्ली के सांसद श्री ललित माकन, पार्षद अर्जुन दास तथा अकाली दल के अध्यक्ष सन्त हरचन्द सिंह लोंगोवाल सहित हजारों बेगुनाह लोगों की हत्यायें की हैं। अभी भी आये दिन किसी न किसी को इन उग्रवादी तत्वों का शिकार होना पड़ रहा है।

इसी प्रकार ईसाई भी नागालैण्ड तथा मिजोरम को ईसाई होम लैण्ड बनाने के लिये उग्रवादी रूप धारण करते जा रहे हैं जिसके प्रमुख विद्रोही नेता लालडेंगा अपने अन्य साथियों सहित आतक का वातावरण निर्माण करने मे लगे हैं। ईसाई मिशनरी प्रलोभन तथा भय से हिन्दू समाज के गरीब तथा अनपढ़ लोगो का मत परिवर्तन करने में जोर शोर से कार्यरत हैं। इस प्रकार केशधारी सिख अपने लिये खालिस्तान, ईसाई अपने लिये ईसाई होम लैण्ड तथा मुसलमान अपने लिये इस्लामिस्तान या मुस्लिम इण्डिया के रूप मे इसे चार भागो मे विभाजित करने के मन्सूबे बान्ध रहे हैं। यद्यपि प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाधी ने अपने कार्यकाल के आरम्भ मे ही देश की एकता और अखण्डता बनाये रखने का नारा दिया है। किन्तु शायद वह यह नही जानते हैं कि यह संकट नारो से नही टाला जा सकेगा, इसे टालने या समाप्त करने के लिये सरकार को अपनी उन नीतियों को बदलना होगा जो इस संकट की जनक हैं।

इस सकट को समाप्त करने के लिये इसका सही हल तो राज्य को हिन्दू राज्य घोषित किया जाना है। ऐसा होने से कभी अल्पसंख्यक सम्प्रदाय स्वत: ही अपनी अलगाववादी मनोवृत्ति का परित्याग कर देश की मुख्य धारा से जुड़ जायेंगे। अल्पसंख्यक सम्प्रदायो और बहुसंख्यक सम्प्रदाय के बीच की खाई को भी पाटा जा सकेगा जिससे देश की एकता सुदृढ़ होगी।

यह दुर्भाग्य की बात है कि विभाजन के बाद से ही इस देश की सत्ता जिन महानुभावो के हाथ मे आयी है उन्हें हिन्दू शब्द से ही एलर्जी रही है। इसी कारण इस देश को आज तक हिन्दू राज्य घोषित नहीं किया गया जब कि मुसलमानों ने इसमें से प्राप्त किये भाग को 1947 में मुस्लिम स्टेट या इस्लामी राज्य घोषित कर दिया था। इसके विपरीत हमारे कर्णधारों ने इस देश को सैक्यूलर राज्य घोषित कर दिया जिसकी आड़ में अल्पसंख्यक सम्प्रदायों के हितों के संरक्षण और बहुसंख्यक हिन्दू हितों की उपेक्षा करने की नीति अपना ली ताकि अल्पसंख्यक सम्प्रदायों के वोट सत्ताधारी दल की बपौती बन जायें और इन राजनेताओं की गद्दी सुरक्षित रहे।

यदि देश के पुन बटवारे का सरकार ईमानदारी से रोकना चाहती है और इसको अखण्डता और एकता को बचाना है तो सरकार को इस देश को हिन्दू राज्य घोषित कर देना चाहिये जो देश की सभी समस्याओ का एक मात्र हल है। यदि सरकार अपनी एलर्जी के कारण ऐसा करने में असमर्थ है तो कम से कम सरकार को देश के सभी नागरिकों को समान स्तर पर लाने के लिये अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक के भेदभाव को पूरी तरह समाप्त करने के लिये आवश्यक कदम उठाने होगे। इसके लिये देश के प्रत्येक नागरिक के लिये एक जैसी समान नागरिक संहिता बनायी जाये। मुस्लिम परसनल ला को समाप्त कर दिया जाये और बहुसंख्यक हिन्दू समाज के लिये बनाये गये हिन्दू विवाह तथा हिन्दू विरासत, कानूनों को भी समाप्त कर दिया जायें और सभी के लिये एक जैसा समान सिविल कानून लागू किया जाये ताकि कोई भी मत स्वय को न तो किसी से छोटा समझे और न बड़ा ही समझ सके। इस प्रकार जिस प्रकार अल्पसख्यकों के पूजा स्थानो के लिये उन की अपनी समितिया ही उनकी देखरेख या रखरखाव का काम करती हैं उसी प्रकार की छूट हिन्दुओ को भी अपने पूजा स्थानों की देखरेख करने की दी जाये।

कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाले संविधान का अनुच्छेद 370 को तुरन्त समाप्त कर उसे अन्य राज्यो के समान स्तर पर लाया जाये। इसी धारा के कारण कश्मीर घाटी आज छोटा पाकिस्तान बन चुकी है। इस धारा को समाप्त कर कश्मीर घाटी का मुस्लिम बहुमत कम किया जा सके इसके लिये देश के अन्य भागों से गैर मुस्लिम सम्प्रदायों को बसने के लिये प्रोत्साहन दिया जाये। प्रलोभन तथा भय आदि किसी भी दबाव से मत परिवर्तन को कानूनी अपराध घोषित कर दिया जाये। ईसाई मिशनरियों द्वारा चलाये जाने वाले स्कूलो तथा अन्य संस्थानो का राष्ट्रीयकरण कर केन्द्र सरकार अपने हाथ मे ले ले। इस प्रकार की नीतियो को अपनाने से ही इस देश की एकता, सुरक्षा तथा अखण्डता को बचाया जा सकता है अन्यथा अब देश के टुकड़े होने में अधिक समय नही है। आगामी एक या दो दशक मे ही यह देश पुन: खण्डो मे बंट जायेगा और फिर यहां न कांग्रेस दल और उसके कर्णधारो का शासन रहेगा और जो कांग्रेस के राजनेता चाहते हैं कि देश की बागडोर कांग्रेस के ही हाथ में रहे वह सपना भी अधूरा ही रह जायेगा। यदि कांग्रेस के राजनेता यह चाहते हैं कि इस देश की सत्ता पर कांग्रेस ही रहे तो उन्हें हिन्दू हितों को अपनाना होगा तभी उनकी यह इच्छा पूरी हो सकती है। वरना तो देश के किसी भाग पर सिखों का खालिस्तान होगा, किसी पर ईसाइयों का होम लैण्ड तथा किसी भाग पर मुसलमानो का इस्लामिस्तान या मुस्लिम इण्डिया होगा और कांग्रेस के ये नेता देखते ही रह जायेंगे। फिर वहा न गीता बचेगी न रामायण। इस लिये इस देश की अखण्डता को बचाने के लिये उपरोक्त कार्यवाही को जानी अति आवश्यक है।

—3314 बैंक स्ट्रीट, करोलबाग
नई दिल्ली-110005

आत्मा की नित्यता सिद्ध करने वाली एक घटना

पुनर्जन्म से सम्बद्ध घटनाएं प्राय: प्रकाश मे आती रहती हैं। इसी क्रम में एक अभिनव घटना इस प्रकार है:—

श्री त्रिलोचन जोशी, गाड, भारतीय स्टेट बैंक, बीसलपुर, जिला पीलीभीत, जो कि मूलत: गरुड, जिला अल्मोड़ा के निवासी हैं, की एक तीन वर्ष की पुत्री आशा अपने पूर्वजन्म का वृत्तान्त इस प्रकार सुनाती हैं :—मैं हवाई जहाज की दुर्घटना में मरी हूं। मेरा नाम दीपा है, न कि आशा (वर्तमान नाम)। मेरे माता पिता समृद्ध और धनाढ्य थे। वे बम्बई मे रहते हैं। उनका रग गोरा है। उनके पास हवाई जहाज तथा दो कारें हैं। मेरे पिता व्यवसाय से बनिये हैं। मुझे बम्बई पहुंचाओ। मैं एल०एल०बी० परीक्षा उत्तीर्ण हूं। "अपने वर्तमान माता पिता से वह कहती है कि "तुम मेरे माता पिता नही हो। तुम्हारा घर तो बहुत गन्दा है, जब कि मेरे पिता का घर बहुत साफ सुथरा महल है। इत्यादि।" यह नही ज्ञात हो पाया है कि उक्त बालिका के पूर्वजन्म के पिता का नाम क्या था और बम्बई में उनका मकान कहा पर है। जब बालिका पर्वोक्त रूप से अपनी बात अपने माता पिता से कहती है तो वे भयवश उसको मारने लगते मैं और इधर उधर की बाते कहकर उसके मन से बलात् उस प्रकार की बातें भुलवाने की कोशिश करते हैं। बीसलपुर में श्री त्रिलोचन जोशी के पास जाकर उक्त अबोध बालिका से इस सम्बन्ध में और भी रहस्यपूर्ण बातें ज्ञात हो सकतीहैं।

मेरी बैंकाक और सिंगापुर की यात्रा

—मामचन्द रिवारिया—

विगत वर्षों में योरोप और अफ्रीका के देशों की यात्रा करने के बाद एशियाई देशो की यात्रा का विचार मन में आता रहता था। अचानक एक दिन आर्य संन्यासी और होम्योपैथिक डाक्टर स्वामी चन्द्रवेश जी ने मेरे सम्मुख सिंगापुर में होम्योपैथिक तथा आर्य सम्मेलन करने का कार्यक्रम रखा। काफी समय से वह इस सम्मेलन के लिए पत्र-व्यवहार कर रहे थे।

इस प्रकार यह कार्यक्रम तय हो गया और वृहस्पतिवार २४-१०-८५ को हम पालम हवाई अड्डे से प्रात: ४ बजे बैंकाक के लिए रवाना हुऐ। चार घन्टे की यात्रा के बाद हम बैंकाक हवाई अड्डे पर पहुंचे। वहाँ का मौसम वसन्त जैसा था। भारत और बैंकाक के समय में एक घन्टे का अन्तर है। कस्टम आदि की जाच-पड़ताल के बाद हम टैक्सी द्वारा आर्य समाज बैंकाक के लिये रवाना हुए। हमारे सौभाग्य से आर्य समाज के मन्त्री श्री संग्रामसिंह जी वहाँ मौजूद थे। परिचय देने के पश्चात् उन्होंने हमारे ठहरने की समुचित व्यवस्था कर दी। शाम को भ्रमण के लिये बैंकाक के बाजारों में गये। वहाँ पर थाई लोगों की अपेक्षा चीनियों का व्यापार पर ज्यादा असर देखा। भाषा की वहाँ पर बहुत ही परेशानी है। न कोई हिन्दी समझता है और न ही अग्रेजी। सड़कों, बसों के नाम केवल थाई भाषा में ही हैं। बसों तथा मेटाडोर का किराया २ बाट है जो हमारे एक रुपये के बराबर है। लगभग रात्रि के १० बजे हम वापस समाज पहुचे।

२५-१०-८५ को प्रात:काल जलपान करने के बाद फोराट रोड जिसे इण्डियन मार्किट भी कहते हैं गये। यह मार्किट कपड़े की विशाल मार्किट है। कहते हैं कि वहा पर सिले-सिलाये कपड़े दुनियां में सबसे सस्ते मिलते हैं। हमने भी कुछ कपड़े खरीदे। फिर Nicolise Tocomasi रंगशाला में हमने सांस्कृतिक कार्यक्रम देखे। घूमघाम कर रात्रि ११ बजे समाज में जा पहुंचे।

२६-१०-८५ को Makai बस अड्डा से वातानुकूलित बस द्वारा पटैया के लिये रवाना हुए। पटैया समुद्र के किनारे बसी हुई रमणीक सैरगाह है। वहाँ घूमने के बाद पुन: उसी बस से हम वापिस बैंकाक आ गये और जब हम समाज पहुचे तो पास में ही विष्णु मन्दिर मे भजन गाये जा रहे थे। वहाँ पर भी हम कुछ समय बैठे।

रात्रि के ६ बजे समाज मंदिर में आर्य समाज के प्रधान श्री सहदेवसिंह जी ने हमारे परिचय हेतु समाज के कुछ प्रमुख व्यक्तियों को बुलाया हुआ था। सभी से प्रेमपूर्वक परिचय हुआ। मैंने अपनी दो पुस्तकें 'विदेशों में आर्य समाज' तथा 'Arya Samaj Abroad' और कुछ मधुर प्रकाशन द्वारा प्रकाशित आर्य साहित्य भी भेंट किया। मैंने उन्हें दिल्ली की आर्य समाजों की गतिविधियों से अवगत कराया। प्रधान जी ने बताया कि स्वामी ध्रुवानन्द जी ने यहाँ पर आर्यसमाज का बहुत प्रचार किया। तथा भाई परमानन्द जी भी यहाँ पधारे थे।

२७-१०-८५ को समाज मन्दिर में एक विशेष कार्यक्रम मे बैंकाक स्थित भारत के राजदूत आने वाले थे लेकिन प्रात: ११-४५ पर सिंगापुर के लिये हमारी सीटें आरक्षित थी। अत: चाहते हुए भी हम वहाँ नही रुक सके।

हम Cathay Pacific से 11-55 A.M. पर बैंकाक से उड़े तथा 2 P.M. पर सिंगापुर हवाई अड्डे पर पहुचे। यहाँ का हवाई अड्डा बहुत सुन्दर तथा सुविधाजनक है। Free Port होने के कारण यहाँ पर कस्टम आदि की कोई परेशानी नहीं हुई। टैक्सी द्वारा हम आर्यसमाज मन्दिर पहुंचे। यहाँ की सभी टैक्सी वातानुकूलित हैं। सभी में टेलीफोन तथा रेडियो लगे हुये हैं। टैक्सी वाले मीटर के अनुसार किसी को भी कहीं पर भी ले जाने को मना नहीं करते। सिंगापुर आर्यसमाज के प्रधान श्री ओम्प्रकाश राय जी से भेंट हुई। उन्हें मैंने सत्यार्थ प्रकाश की पांच प्रतियाँ तथा आर्यसमाज का साहित्य भेंट किया। श्री राय एक शिक्षित नवयुवक तथा आर्य समाज के सर्वेसर्वा हैं। आर्य समाज का सारा कार्यक्रम दूसरी मंजिल पर होता है। नीचे तथा पहली मंजिल पर व्यापार के लिए आये व्यक्तियों के कमरे तथा हाल में लोहे के पलंग डाल दिये हैं जिससे समाज को हजारों डालर महीने की आमदनी है। यदि इस मंदिर के पदाधिकारी महर्षि स्वामी दयानन्द के वास्तविक अनुयायी हों तो इस आर्यसमाज मंदिर से South East Asia भर में प्रचार कार्य हो सकता है। हम इस समाज मंदिर में ५ दिन ठहरे लेकिन हमें यहाँ पर आर्य समाज की कोई गतिविधि दिखाई नहीं दी। दिखाई दी तो केवल व्यापारियों की गतिविधियां।

सिंगापुर एक नजर में

सिंगापुर एक द्वीप है जो केवल ६१७ स्क्वेयर-किलोमीटर में फैला हुआ है। १८१९ में ब्रिटिश सरकार ने इस पर अपना आधिपत्य किया और इसका आधुनिक ढंग से विकास किया। समय की बदलती हुई परिस्थियों ने यहाँ के लोगों मे आजाद होने की भावनाओ को जन्म दिया। १९६५ में ब्रिटिश सरकार ने इस देश को आजाद किया। यहां की तीन मुख्य भाषाएं हैं—[१] इंग्लिश, [२] चाईनिज ३] मैंडरिन। व्यापार पर चीनियों का ज्यादा प्रभाव दिखाई दिया। यहाँ की बड़ी-बड़ी इमारतें, होटल तथा बड़े-बड़े स्टोर देखकर लगता था कि हम किसी विकसित योरोपियन देश में घूम रहे हैं।

क्षेत्रफल में छोटा देश होते हुए भी, सिंगापुर मे कई दर्शनीय स्थान हैं जो अनायास ही यात्रियों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

१. चैटियार हिन्दू मन्दिर—यह टैंक रोड पर स्थित है। इस मंदिर के पदाधिकारी भारत-मूल के लोग हैं। इस मन्दिर को १९८१ में तोड़कर दुबारा बनाया गया है। मन्दिर सुन्दर है।

२. हज्जा फतीमा मस्जिद—यह जावा रोड पर स्थित है। यह एक धार्मिक मुस्लिम स्त्री के नाम पर बनी है जिसने १८४५ में अपने व्यक्तिगत धन से इस मस्जिद का निर्माण कराया था।

३. Temple of 1000 Lights—यह रेस कोर्स रोड पर स्थित है। इस मंदिर की विशेषता यह है कि यहाँ पर बुद्ध भगवान की १५ मीटर ऊंची प्रतिमा बनी हुई है जो अनगिनत बल्बों और धार्मिक श्लोकों से सुसज्जित है।

४. Mandai Orchid Garden : यह मनडाई लेक रोड पर स्थित है। सारा पहाड़ी क्षेत्र है और यही पर एक बहुत बड़ी झील भी है जो इसकी सुन्दरता में चार चाँद लगा देती है।

५. Zoological Garden : यह शहर से काफी दूर मनडाई रोड पर स्थित है। हमें यहाँ पहुंचने में काफी समय लगा। प्रवेश टिकट ३।। डालर अर्थात २१) रु० था। पहले तो हमें यहाँ पर आने और इतने अधिक रुपए खर्च करने पर दुख हुआ। लेकिन जू देखने के पश्चात् ऐसा लगा कि यदि यह न देखा होता तो हमारी सिंगापुर यात्रा ही अधूरी रहती। अजीब-अजीब प्रकार के जन्तु तथा उनके खेलों ने हमें आश्चर्य में डाल दिया। पशु किस प्रकार अपने शिक्षक की बात का पालन करते थे, यह देखने वाला दृश्य था।

Museum : यह स्टैम्फोर्ड रोड पर स्थित है। यह राष्ट्रीय संग्रहालय १८८७ में बना था। इस संग्रहालय की मुख्य विशेषता यह है कि यहाँ पर सिंगापुर का पुराने से पुराना इतिहास मिलता है। यहाँ के पुराने शासकों की तस्वीरें उनके द्वारा प्रयोग की गई वस्तुएं सुरक्षित रखी हैं। सिंगापुर के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए यह म्यूजियम बहुत उपयोगी है।

Hotels.—यहां के विशालकाय होटल यहाँ की वैभव, सम्पन्नता का अनायास बोध कराते हैं। इन होटलों में हर प्रकार के मनोरंजन के साधन उपलब्ध हैं, केवल धन पास में होना चाहिए।

Shopping Centre—यहाँ पर दुकानों स्टोरों की चारों तरफ भरमार है। इसका मुख्य कारण इस देश का Free Port होना है। संसार-भर से खरीदार यहाँ आते हैं। यह देश विदेशी मुद्रा कमाने में अग्रणी है। यहाँ की दुकानों और स्टोरों में स्वचालित सीढ़ियां लगी हुई हैं। यहाँ के मर्द-औरत जिस लगन के साथ कमाते हैं, उसी उत्साह के साथ खर्च भी करते हैं। यहाँ की औरतें मर्दों से किसी भी काम में आगे ही दिखाई देती हैं। स्त्री-पुरुष मिलकर कार्य करते हैं। चाईना का प्रभाव यहाँ ज्यादा है। वैसे दक्षिण-भारतीयों तथा उत्तरप्रदेश के लोगों ने भी अपने पाँव यहां जमा लिये हैं।

२९-१०-८५ को मैं सिंगापुर स्थित भारतीय उच्चायुक्त श्री ए. एन.डी. पिल्लै से मिलने गया। वहाँ पर मैंने उच्चायुक्त के प्रथम तथा द्वितीय

[शेष पृष्ठ 9 पर]

दिल से दिल की बात

आप मेरे साथ पूर्ण रूप से सहमत होंगे, और एक स्वर से कहेंगे—

देखा न कोई देवता,
प्यारे ऋषि की शान का।
सर पर सहीं मुसीबतें,
सोचा भला जहान का।।

आप मेरे साथ पूर्ण रूप से सहमत होंगे, कि यदि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती संसार मे न आते तो न जाने हम किन-किन कुरीतियों में फंसे होते। न बहनें वेद के मन्त्रों का गायन कर सकतीं, विधवा हो जाने पर न पुनर्विवाह कर सकतीं, बाल विवाह रुक न सकता, अछूतोद्धार न हो सकता, पाखण्डों के जाल से छुटकारा न मिल सकता। सत्य क्या है और असत्य क्या है, इस का भी स्पष्टीकरण न हो सकता। वेदों को कोई भी न पढ़ सकता। यहां तक कि यदि ऋषि आजादी का नारा न लगाते तो हिन्द आजाद न होता। पाप दिन प्रतिदिन बढ़ते जाते। भोले-भाले लोगो को यदि सीधा रास्ता दिखाया तो ऋषि ने ही दिखाया।

आप मेरे साथ पूर्ण रूप से सहमत होंगे—कि हर मत के प्रवर्तक का जन्म स्थान उनके अनुयायियों के अधिकार में है। वह सुचारु रूप से बना हुआ तथा सुरक्षित है और उस स्थान को देखने से मन प्रसन्न होता है।

आप मेरे साथ पूर्ण रूप से सहमत होंगे कि हम न तो उनके जन्म-गृह को दूसरे के अधिकार से ले सके और न उसका जीर्णोद्धार ही कर सके।

ऊपर की चार बातों पर ध्यान देते हुए क्या आप हृदय पर हाथ रख कर संकल्प करेंगे कि आगामी शिवरात्रि तक हम यह स्थान लेने का भरसक प्रयत्न करेंगे और हर एक समाज अपनी भाषा में बड़ी नम्रता से उस जैनी महोदय को जिन के अधिकार में वह स्थान है Registered पत्र लिखेंगे कि वह स्थान वह आर्य समाज को दान रूप में या मूल्य लेकर देने की कृपा करें—आर्य जगत आप के इस कार्य को सराहेगा—और चांद और सूर्य्य की भांति आपका नाम रोशन रहेगा। अपने पत्र की एक प्रतिलिपि हमें भी भेजें। ताकि हम सब पत्रों को लेकर उनसे मिलें और स्थान लेने का प्रयत्न करें। यदि हम इस कार्य में सफल न हुए तो दूसरा कदम उठाने के लिये फिर आप से प्रार्थना करेंगे। बड़े-बड़े राजे महाराजों से आर्य समाज ने टक्कर ली किन्तु डगमगाये नहीं और सफलता प्राप्त की। अब भी सफलता प्राप्त होगी। इस शर्त पर कि हम आवाज उठायें। आशा है कि आप तन-मन-धन से सहयोग देकर कृतार्थ करेंगे, या यूं कहूं कि अपने पुनीत कर्त्तव्य का पालन करेंगे।

[जैनी महोदय का पता—
श्री कृष्ण जी चक्कू भाई (टंकारा वाले) कृष्ण बा रोड (चौधरी हाई स्कूल की बगल में) राजकोट (गुजरात)]

—जगन्नाथ रंग वाला प्रधान
हरियाणा टंकारा सहायक समिति, पानीपत।

यह औषधि नहीं, विष है

स्थानीय समाचार पत्रों में सातवें विश्व काम-विज्ञान सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए यौन शिक्षा पर राष्ट्र व्यापी अभियान शुरू करने के लिए अपील का समाचार पढ़ा। तदनुसार जनसंख्या वृद्धि की गंभीर समस्या को उचित यौन शिक्षा से ही नियोजित किया जा सकता है। आदि। यह वक्तव्य पढ़कर मुझे हैरानी हुई और साथ ही चिन्ता भी। सरकार स्कूल कालेजों में किस प्रकार की यौन शिक्षा का प्रबन्ध करने का विचार कर रही है, इसकी रूप-रेखा क्या होगी? यौन शिक्षा का युवक समाज द्वारा दुरुपयोग भी हो सकता है। व्यावसायिक सिनेमा, सस्ते और अश्लील सड़क—छाप साहित्य और पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से वह पहले से हो इस विज्ञान में शिक्षित एवं दीक्षित हैं। इसके प्रयोगात्मक परीक्षण की सुविधाओं की कमी सहशिक्षा संस्थाओं ने पूरा कर दी है। इन संस्थाओं में फैल हुए यौन-भ्रष्टाचार से तो शायद आप अपरिचित नहीं होंगे। यौन शिक्षा के इस प्रकार संवैधानिक प्रचार एवं प्रसार से आजकल के युवक और युवतियां दुरुपयोग ही करेंगे और समाज में फैले हुए यौन भ्रष्टाचार को प्रोत्साहन ही मिलेगा। क्या सरकार यह खतरा मोल लेने के लिए तैयार है? क्या यह प्रस्तावित यौन शिक्षा अल्प-संख्यक समुदाय के स्कूलों में भी दी जावेगी? मुझे संदेह है कि वे इस नयी शिक्षा योजना को पसन्द करेंगे। उनकी तरफ से इसका विरोध उसी प्रकार होगा जैसा कि अब तक सरकार के परिवार-नियोजन अभियान के विरुद्ध करते आ रहे हैं। उस दशा में सरकार की क्या प्रतिक्रिया होगी? क्या सरकार एक नया वितंडावाद खड़ा करना चाहती है?

अतः सरकारसे अनुरोध है कि इस मसले पर गंभीरता पूर्वक विचार करने के बाद ही कोई अंतिम निर्णय लिया जाय कहीं ऐसा न हो कि जिसे हम औषधि मानकर अपने युवावर्ग को उनके स्वास्थ्य की कामना से देना चाहते हैं, वही उनके लिए विष सिद्ध हो जाय।

—रामगोपाल शालवाले, प्रधान
सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली

योग जैसी पवित्र विद्या को बदनाम न करो

योग विद्या है, विज्ञान है, ब्रह्मज्ञान है। यह यम आदि साधनों से साधा जाता है। इसका फल समाधि और मुक्ति है। यह विद्या भूति, विभूति और चमत्कारों से भरी पड़ी है। किन्तु ये चमत्कार अनुभूति के लिए हैं, प्रदर्शन के लिए नहीं। ज्यों ही इसका उपयोग लोकेषणा, वित्तेषणा और पुत्रेषणा के लिये किया जाने लगेगा तो यह योग से बदल कर भोग में बदल जायेगा जिसका परिणाम रोग होगा। इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हम सब के सामने हैं। बालयोगेश्वर की मिट्टी पलीद हो रही है। तथा कथित महर्षि महेश योगी पर लाखों डालर के मुकदमे चल रहे हैं। संभोग से समाधि तक पहुंचने वाले भगवान रजनीश को अमरीका से भागना पड़ा है। जय गुरुदेव भी जेलों में रह कर ठण्डे पड़ गए। ताण्डव नृत्य करने वाले प्रभात रंजन सरकार आनन्द मार्गी बाबा की जीवन लीला समाप्त प्राय है। ब्रह्म कुमारियों की करतूतों की पोल खुल चुकी है। इन सब ने इस पवित्र योग विद्या के साथ खिलवाड़ किया है। ऋषि द्रोहियों के साथ यह होना अवश्यम्भावी था। भविष्य में यदि कोई करेगा तो उसे भी इस दण्ड के लिये तैयार रहना चाहिए।

३ नवम्बर को मुझे अखिल भारतीय ग्रामीण योगासन प्रतियोगिता पलवल की अध्यक्षता करने का अवसर मिला। संयोजक प्रताप सिंह डागर और गुरुमेश जी ने मुझे आग्रह पूर्वक आमंत्रित किया मैंने भी उनके इस पवित्र कार्य के लिए पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया। इसी बीच में मुझे सूचना मिली की इन्होंने मोटर साइकिल, टी०वी०, रेडियो, घड़ियां आदि जो भारी इनाम रखा है वे पहले ही सूची बना कर आरक्षित कर दिये हैं। प्रतियोगिता के नाम पर अपने घरों को भर रहे हैं। यह प्रतियोगिता मात्र नाटक होगा। मैं यह देखने और पता करने के लिए उस दिन प्रातः हो आ बैठा। संयोजकों में सब से तेज व्यक्ति, जो स्वयं प्रतियोगी भी था उसने आकर कहा कि स्वामी जी आप तो समय से ही पहले आ गए, हम तो आपको गाजे-बाजे के साथ लाते।

मैंने सारे नाटक को प्रत्यक्ष देखा। देश भर से १२ प्रान्तों से बड़े अच्छे आसन महारथी युवक आये थे। निर्णायकों में बालयोगी-विजयेन्द्र बहुत निष्ठा से प्रतियोगिता करा रहे थे। किन्तु संयोजकों को इन सब में रुचि नहीं थी। ये तो अपने पुरस्कार संभालने के चक्कर में थे। न किसी को ठहरने की व्यवस्था, न भोजन की। पैसे वालों की चापलूसी प्रधान थी। होनहार पुरुषार्थी युवकों की कोई पूछ नहीं थी। मैंने निर्णायकों से जानकारी ली कि कोई गड़ बड़ तो नहीं। उन्होंने कहा-'जी, प्रतियोगिता में नही है। पुरस्कार-वितरण में हम कह नहीं सकते।' एक प्रतियोगी ने तो स्पष्ट कहा 'स्वामी जी ये आपको और हमको मूर्ख बना रहे हैं। इन्होंने तो मोटर साइकिल आदि रिजर्व कर रखी हैं।'

समारोह प्रारम्भ हुआ। इन्होंने हमें कोई सूची नहीं दी। न घोषणा की कि कौन कैसा रहा। चेतीलाल जी वर्मा से पुरस्कार वितरण प्रारम्भ हो गया। इसी बीच बाल योगी विजयेन्द्र जी दोनों हाथ उठाकर चिल्लाने लगे कि यह अन्याय हो रहा है। इन्होंने हमारी सब सूचियां फाड़ दीं और हमें मारने की धमकी दे रहे हैं। गुरुमेश तो सब के गुरु ही निकले उन्होंने अपने भाई को १४ वर्ष के ग्रुप में, अपने को २० से ऊपर और 'योग सम्राट' की मोटर साईकिल को अपने लिये लिखकर सूची बना कर यह कहते हुए संयोजक को थमा दी कि निर्णायक कौन होते हैं, हम जो करेंगे, होगा। इस पर हल्ला हो गया। मुख्य अतिथि भाग निकले। सारे निर्णायक प्रतियोगी उठ खड़े हुए।

थोड़े से लालच के लिये पापियों ने सारा गुड़ गोबर कर दिया। इस प्रकार से इस पवित्र कर्म को जिस तरह कलंकित किया गया वह देखकर भारी दुख हुआ। इसे मैं सहन न कर सका और वहां से उठकर चला आया। आश्चर्य था, उन लोगों में से किसी ने कोई स्पष्टीकरण देने का भी प्रयत्न नहीं किया। कितने उत्साह से लोगों ने इन्हें सत्तर हजार रुपया दिया था, और लोगों को उत्साहित किया था। अब इन्हें टी०वी० और मोटर साईकिल भले ही मिल गई, किन्तु वे अब कहीं मुंह दिखाने योग्य नहीं रह गए।

—शक्तिवेश अध्यक्ष गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ (फरीदाबाद) हरियाणा पो० गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, नई दिल्ली-११००४०

पत्रों के दर्पण में

दीपावलि विशेषांक : गागर में सागर

1. आर्य जगत् का 'दीपावली विशेषांक' पढ़ गया हूं। प्रेरणा और कर्तव्यबोध की इतनी विविध एवं मन-बुद्धि को स्फूर्ति देने वाली सामग्री एक ही स्थान पर एकत्र कर आपने इस विशेषांक को संग्रहणीय बना दिया है। परम्परा और प्रगति का यह समन्वय ही भारतीय संस्कृति का 'चरैवेति' सूत्र है। आपको विद्वता एवं कर्मठता में उत्साह इसी प्रकार तरंगायित रहे, भगवान से मेरी प्रार्थना है। —रतनलाल जोशी १२ फिरोजगाधी रोड लाजपत नगर, नई दिल्ली

2. दीपावलि विशेषांक—आपके द्वारा सम्पादित विशेषांकों की शृंखला में एक नया दीप्तिमान् रत्नवत् जुड गया है। इस सफलता के लिए आपकी जादूभरी कलम को सम्पादन कौशल को बधाई देता हूं। 'सम्पादकीयम्' मे 'एक नई योजना' के अन्तर्गत कैप्टन देवरत्न द्वारा प्रस्तुत आर्य विद्वानो को सम्मानित किए जाने को योजना प्रशंसनीय है। आपने इसको पुष्टि करते हुए आर्य समाज के तपस्वी, निष्ठावान् और अनथक लेखकों, उपदेशकों, भजनोपदेशको का भी जो समावेश किया है, उसके लिए मैं किन शब्दो में धन्यवाद करूं!

क्षितीश जी चूं कि स्वयं आर्य समाज के चोटी के विद्वान् और लेखक के नाते कई वर्षों से यह गुरुतर दायित्व संभाले हैं इसलिए उनका उपर्युक्त सुझाव शतशः वरेण्य है।

इस अंक में प्रकाशित सारस्वतमोहन मनोषी की "कुछ दीपक उनके भी नाम" कविता हृदयस्पर्शी है।—दीनानाथ सिद्धान्तालकार, अशोक विहार, दिल्ली-५२

3. दीपावलि विशेषांक सुन्दर, पठनीय एवं ज्ञानवर्द्धक है। आप का प्रयत्न श्लाघनीय है। धन्यवाद।—ओम्प्रकाश, एडवोकेट, करनाल

हवन में तो पवित्रता बरतिए

1. इस वर्ष ऋषि निर्वाण पर्व पर मैं चण्डीगढ़ के निकटवर्ती एक कस्बे में इस पर्व के उपलक्ष्य में व्याख्यान देने के लिए गया। व्याख्यान के पूर्व समाज के वयोवृद्ध कार्यकर्त्ता यज्ञ करने बैठे। जिन समिधाओं को यज्ञाग्नि में डालना था, वे किसी चीड के खोखे को तोड़कर बनाई गई थीं और लकडी के टुकड़ो से लोहे की कीलें हटाने को तकलीफ भी नहीं की गई थी। यह देखकर बड़ी वेदना हुई कि जिन्दगी भर हवन करने वाले हमारे आर्य-समाजी हवन के प्रति कितनी उपेक्षा दिखाते हैं तथा यज्ञ विषयक सामग्री को तैयार करने में कितने प्रमाद का परिचय देते हैं।

—डा० भवानीलाल भारतीय, चण्डीगढ़

2. हवन हर जीवधारी के लिए लाभकारी होता है। गाय का घी हवन के लिए, उपयोग में लाया जाता है। गाय यज्ञ का मूल साधन है। अतः 'गावो विश्वस्य मातरः' कहा है। गाय के घी बगैर अन्य किसी भी घी का हवन मान्य नहीं है। आज अधिकतर आर्यसमाजियों के यहां जो हवन—नित्य तथा नैमित्तिक—होते हैं उनमें गाय के बजाय भैंस का घी ही प्रयुक्त होता है। भैंस के घी का हवन वेदों को कैसे मान्य होगा?

अतः सभी आयसमाजी भाई बहिनों से विनम्र निवेदन है कि हवन के लिए गाय का ही घी इस्तेमाल करें। गाय के घी के अलावा और किसी घी से हवन करने से तो अच्छा है कि हवन ही न करें।—एक हवन प्रेमी

बंगाल में आर्य ध्वजा लहराइए

आर्य समाज कलकत्ता अपने समाज की शताब्दी समारोह मनाने के हेतु लगभग १५ से २० लाख रु० तक व्यय करने का विचार कर रहा है। इस अवसर पर बंगाल में गुरुकुल कांगड़ी की पाठ विधि द्वारा कलकत्ता यूनिवर्सिटी के समकक्ष एक गुरुकुल विश्वविद्यालय तथा एक कन्या गुरुकुल विश्वविद्यालय की स्थापना होनी चाहिए। आर्य जगत् के जितने भी लेखक, उपदेशक, भजनोपदेशक, वानप्रस्थी, संन्यासी पराश्रित् रहते हों उनके भरण पोषणार्थ मासिक सहायता की व्यवस्था होनी चाहिए एवं एक अतिथिशाला की स्थापना भी होनी चाहिए जिससे बाहर से आने वाले प्रचारक भजनोपदेशक को ठहरने और उनके भरण पोषण की व्यवस्था होनी चाहिए। समस्त वैदिक साहित्य बंगला भाषा मे प्रकाशित करके बंगाल की लाइब्रेरी एसोसिएसन के द्वारा पुस्तकालय में मुफ्त वितरण की व्यवस्था होनी चाहिए। एक उपदेशक महाविद्यालय के द्वारा शास्त्रार्थ महारथी बनाने की व्यवस्था होनी चाहिए। क्योकि वर्तमान काल मे शास्त्रार्थ महारथी का अभाव है। —भगवान दीन गुप्ता, द्वारा डा० अमिय गुप्ता, अजीतनगर प्रताप गढ़, यू० पी० २३०००१

राजनैतिक तुष्टीकरण से देश को बचाओ

भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् भाषा व जनसंख्या के आधार पर पाकिस्तान बटा, किन्तु कांग्रेस की तुष्टीकरण की नीति ने आबादी की अदलाबदली का प्रस्ताव नहीं माना। अब मुसलमानों ने कहना शुरू किया है—हंस के लिया है पाकिस्तान, लड़ के लेंगे हिन्दुस्तान।' इस नीति को सफल बनाने के लिए अरब देश एवं पाकिस्तान की राह से भारत में धर्म परिवर्तन की साजिश शुरू हुई।

अब एक नई समस्या ने जन्म लिया। उच्चतम न्यायालय ने शाहबानो काण्ड में मुस्लिम महिलाओं को गुजरबशर के लिए तलाक के बाद अपना हक लेने का अधिकार दिया। कुछ सिर फिरे एवं देश द्रोही तत्वों ने इस फैसले के विरुद्ध देश भर में एक आन्दोलन चलाया—शरीयत बचाओ। घर की चार दीवारी में बन्द मुस्लिम बहू ने अपनी अभिव्यक्ति के लिए स्वतन्त्र नहीं हैं। मन से तो वे न्यायालय की शुक्र गुजार हैं, किन्तु अपने शौहर व समाज के सामने आने की हिम्मत उनमें नहीं है। मुस्लिम महिलाओं की दशा कुरान के नियमो में बड़ी दयनीय है। आज लोग यह दावा करते हैं कि कुरान पाक आसमानी किताब है, लेकिन इसको प्रमाणित करने की बौद्धिक क्षमता सम्भवतः मुस्लिम विद्वानों में नहीं है। पिछली शताब्दी मे अनेक शास्त्रार्थ हुए। मुस्लिम भाइयों ने आर्य प्रचारको को अपने बहशीपन का शिकार बनाया। राजनतिक स्तर पर एक बात सोचनी होगी कि भारत को एक संविधान व एक नियम में चलाया जाय। जो लोग भारत में रहते हुए भी भारत को अपना राष्ट्र मानने को तैयार नहीं, जो लोग विदेशों के पैसे के लोभ में अपनी मातृभूमि को बेच देना चाहते हैं उनको देश का वफादार कैसे मान लिया जाय। मुस्लिम भाई साम्प्रदायिक भावनाओं को भड़का रहे हैं।

हम केवल एक निवेदन करना चाहते हैं कि जो लोग इस देश के नागरिक हैं उन्हें देश के प्रति वफादारी दिखानी चाहिए। स्त्रियों को पूरा अधिकार है कि वह अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करे। जितने भी विशेष नियम व कानून राजनैतिक तुष्टीकरण के आधार पर हैं उनके लिए आम राय तैयार की जाय। देश के सभी बुद्धिजीवी अपने विचार दें। ३८ सालो में हमने सब कुछ खोया, यदि कुछ बचाना है तो देश को नीतियों में आमूलचूल परिवर्तन करना होगा। विदेशी खूंखार आंखें हमारी उन्नति से ईर्ष्या करती हैं। हम ऐसे किसी भी नियम, वर्ग या व्यक्ति का विरोध करें जो इस देश की मिट्टी को माथे से नहीं लगा सकते जो बन्दे मातरम् नहीं कह सकते। अतः हमारा सभी राजनैतिक, सामाजिक एवं धार्मिक नेताओ से आग्रह है कि वह मानवता की रक्षा हेतु समुचित पग उठायें।—डा० आनन्द सुमन, तपोवन आश्रम, देहरादून-२४८००८

सन्यासियों पर ध्यान दें

यह सच्चाई हम आज आर्य समाज के संन्यासियों की ओर से मुख मोड़ रहे हैं। अन्य मतावलम्बी अपने गुरुओं से इस प्रकार का दुर्व्यवहार नहीं करते, जैसा हम करते हैं। अगर चक्रवर्ती राज्य का अधिकारी सम्राट् होता है, तो सम्राट् का भी अधिकारी परिव्राट (संन्यासी) होता है। सम्राट् चन्द्रगुप्त के समय तक भी संन्यासियों का सम्मान था। जिसने अपना घर परिवार छोड़ा, रुपये पैसे का लालच नहीं, जो कुछ भी हाथ में आया समाज के कल्याण में अर्पण किया, सर्दी, गर्मी-बरसात से जूझते हुए दो वक्त की रोटी को भी परवाह न करे रूखा-सूखा जो मिला उसी पर जीवन निर्वाह किया, मान अपमान की फिक्र नहीं की, ऐसे संन्यासियों से मुख मोड़ना क्या आर्यसमाज के लिए लज्जा जनक बात नहीं है? वह दिन दूर नहीं जब हमें आर्य सन्यासी ढूंढ़ने पर भी न मिलें। अगर आर्य समाज विश्व को एक सूत्र में बांधना चाहता है तो केवल योग्य सन्यासियों के माध्यम से वह सम्भव है।—रघुनाथ आर्य, C/o चिन्तामणियाँ, निकल रोड़, पो०गारुलिया जी० २४ परगना (प० बंगाल)

आर्य राज्य स्थापित कीजिए

आपके सम्पादकीय लेख पढ़कर ही 'आर्य जगत्' का ग्राहक बना था। मेरे विचार से आपके सम्पादकीय लेखों के कारण 'आर्य जगत्' ने इतनी तरक्की की है। आप आर्यों को अपने लेखों द्वारा आर्य राज्य बनाने के लिए प्रेरित करें तो बहुत ही अच्छा हो। आपकी लखनी में शक्ति है। अगर आर्य समाजी अपनी राजनीतिक संस्था न बनाकर दूसरी संस्थाओं में पड़े रहे तो वह दिन दूर नहीं जब आर्य समाज तथा अन्य आर्य संस्थाओं पर इन पार्टियों का कब्जा होगा और आर्यसमाज का कार्य समाप्त हो जायेगा।

—ओमप्रकाश [illegible]

ऋषि दयानन्द की मृत्यु का.....

[पृष्ठ ४ का शेष]

था और यह पागल हो गया था। उसी गांव के पास आर्यसमाज के संन्यासी स्वामी शान्तानन्द जी रहते थे। उन्होंने इस डाक्टर अलीमर्दान खाँ को पागल अवस्था में अनेक बार देखा। वह बार-बार रोता था और उसके मुख से यही शब्द निकलते थे कि मैंने भारी पाप किया, महान् अपराध किया कि एक ऋषि को, महात्मा स्वामी दयानन्द को विष दिया। अनेक वर्ष तक ऐसी ही अवस्था में दुःखी होकर वह मर गया।

इस बार जोधपुर में कुछ व्यक्ति ऐसे मिले जिन्होंने नन्ही भगतिन के विषय मे बताया। रामलियावास 50 घर का एक छोटा सा ग्राम जिला नागौर मे है। इसकी ग्राम पंचायत करड़ाया है। इस नन्ही भगतिन का जन्म तथा ननिहाल इसी ग्राम में था। यह नन्ही भगतिन दूर कुएं पर पानी लेने के लिए आ रही थी। जोधपुर के राजा यशवन्तसिंह इसकी सुन्दरता से मुग्ध होकर जोधपुर ले आये। किसी समय इस नन्ही भगतिन ने महाराजा से यह वचन ले लिया था कि मेरे इस ननिहाल के ग्राम में एक अच्छा कुआं और भगवान् कृष्ण का मन्दिर बनवा दो। महाराजा ने इस माग को पूरा किया। श्री कृष्ण जी महाराज का मन्दिर तथा बहुत सुन्दर कुआं वहां पर बनवाया। कुएं का पानी दो सौ फुट गहराई पर निकला, किन्तु जल उसका खारा है। उस मन्दिर में पुजारी नन्ही की ननिहाल का ही रहता है। उस गांव में यह प्रसिद्ध है कि नन्ही ने स्वामी दयानन्द को विष दिलवाया था, जिससे स्वामी दयानन्द की मृत्यु हुई। उस के इसी पाप के कारण कुएं का पानी खारा है। उस ग्राम मे कोई धार्मिक व्यक्ति चला जाता है तो उस ग्राम का अन्न व जल ग्रहण नही करता।

इस नन्ही भगतिन के पास लाखों रुपये की सम्पत्ति थी। इसके नाम का एक विशाल मन्दिर जोधपुर में भी बना हुआ है। अन्य राज्याधिकारी इससे डरते थे। इसीलिए यह भेद बहुत दिनों तक छिपा रहा। किन्तु आज जोधपुर के सभी जाने माने लोग यह जानते हैं कि महर्षि दयानन्द की मृत्यु का कारण विषपान ही था और रसोइये के द्वारा विष दिलाने में नन्ही भगतिन का पूरा हाथ था। इस षड्यन्त्र में डा॰अलीमर्दान खाँ भी सम्मिलित था।

उपरोक्त सच्चाई की पुष्टि शाहपुरा के कुछ आर्य सज्जन भी करते हैं। जो रसोइया उदयपुर से ऋषि के साथ आया था, वह वृद्ध होने से सेवा करने में असमर्थ था, इसलिए उसके स्थान पर राजा नाहरसिंह ने अपना पाचक स्वामी जी की सेवा में साथ भेज दिया। इसके कई नाम थे। एक नाम घूलिया वा घूरिया भी था। जन्म का ब्राह्मण होने से इसे धौड़ मिश्र भी कहते थे। [शाहपुरा के श्री सोहनलाल शारदा उसका नाम घूल्ण मिश्र या घूल्ण जोशी लिखते हैं।—सं॰] इसके प्राण बचाने के लिए महर्षि दयानन्द ने इसको रुपयों की थैली देकर भगा दिया था। यह जोधपुर से भागकर कहां-कहा गया, भली प्रकार से विदित नहीं। कुछ लोग कहते हैं कि नेपाल भाग गया था। किन्तु शाहपुरा के आर्य सज्जन यही बताते हैं कि अपने अन्तिम जीवन में बहुत वर्ष तक शाहपुरा में ही रहता रहा और उसके बाल बच्चे भी वहीं रहते रहे। शाहपुरा के राजा नाहरसिंह ने उसको पूरा संरक्षण दे रखा था। शाहपुरा राज्य से उसे पेंशन मिलती थी।

['सर्वहितकारी' से साभार]

मेरी बैंकाक और......

(पृष्ठ ६ का शेष)

सचिवों से मिलकर उन्हें अपनी पुस्तकें Arya Samaj Abroad और विदेशों में आर्य समाज भेंट की। उच्चायुक्त महोदय ने हमें कॉफी पिलाई। उच्चायुक्त के प्रथम सचिव श्री बरुआ जी से लगभग ४० मिनट भारत-सिंगापुर तथा भाषा के ऊपर बातचीत हुई। श्री बरुआ जी बिहार के रहने वाले हैं। हिन्दी बहुत अच्छी जानते हैं। उन्होंने बड़ी आत्मीयता से हमारी जानकारी में वृद्धि की और मेरी पुस्तक को सहर्ष स्वीकार किया।

Serangoon Road — सिंगापुर में यह एक ऐसा स्थान है जिसे छोटा भारत कहा जा सकता है। यहाँ पर हिन्दुस्तानी हर प्रकार को चीजें मिल सकती हैं। इसी रोड के साथ Syed Aluri Road पर आर्य समाज भवन है।

Standard Chartered Bank—यह बैटरी रोड पर स्थित है। यह ४२ मंजिल इमारत है। जब हम इसकी ४२ मंजिल पर लिफ्ट से पहुचे और ऊपर से सिंगापुर को देखा तो मन प्रसन्न हो गया। लिफ्ट कम्प्यूटर से कन्ट्रोल होती है।

१-११-८५ को नाश्ता आदि लेने के बाद १ बजे हम Changi-Airport के लिए रवाने हुए। ठीक ४ बजे हम Cathay Pacific Airlines से बैंकाक के लिए रवाना हुए। और सायं ६ बजे हम बैंकाक हवाई अड्डे पर पहुंचे। वहाँ से रात ११॥ बजे भारत के लिए प्रस्थान किया और ४ घन्टे की यात्रा के बाद पालम हवाई अड्डे पहुंचे घर वापिस आये।

युवा सम्मेलन की सरकार से ४ सूत्री मांग

युवक देश के नवनिर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। युवा वर्ष के नाम पर मात्र मनोरंजक कार्यक्रम या सैर-सपाटे युवा वर्ग से धोखा होगा। सरकार व देश के बुद्धिजीवियो को चाहिये कि वे युवाओ को रचनात्मक कार्यक्रमों की प्रेरणा करें। उन महापुरुषों-शहीदो के अनुवर्ती बनने की दिशा दे, जो इतिहास में अमर हो गए। ये शब्द अखिल भारतीय आर्य युवक महासम्मेलन में अपने अध्यक्षीय भाषण में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के नेता ब्रह्मचारी आर्य नरेश ने कहे।

आर्य समाज अनारकली, मन्दिर मार्ग के 61 वें वार्षिकोत्सव पर दो दिवसीय "विशाल युवा संगम" में श्री धर्मवीर एम॰ए॰, ब्र॰ विश्वपाल जयन्त, प्रो॰ वेद सुमन वेदालंकार, सुप्रसिद्ध पत्रकार प॰ क्षितोश वेदालकार, श्री धर्मदेव विद्यार्थी, प॰ यशपाल सुधांशु, श्रीमती सच्चिदानन्द आर्या, श्री ब्रह्म प्रकाश शर्मा वागीश, सासद श्री रामचन्द्र विकल श्रीमती प्रकाश आर्या, श्री रामभज वत्रा आदि ने अपने ओजस्वी विचारो से युवाओं का मार्गदर्शन दिया। सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा॰ धर्मपाल आर्य ने कहा-आर्यसमाज युवा वर्ग के चरित्र निर्माण के लिए अभियान चलायेगा। भारतीय शुद्धि सभा ट्रस्ट के प्रधान श्री देशराज वहल ने ध्वजारोहण किया। गो विनय सिंघल व विजय आर्य के सुन्दर भजन हुए।—केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के महासचिव श्री अनिल कुमार आर्य ने मच संचालन किया।

सम्मेलन की ओर से भारत सरकार को चार सूत्री कार्यक्रम दिया है, जिससे देश को बढ़ते हुए भ्रष्टाचार से बचाया जा सकता है।

1. शिक्षा को रोजगार मूलक बनाने के साथ नैतिक-धार्मिक, एवं देश के शहीदों के जीवन चरित्र के साथ जोडा जाए। आम आदमी को शिक्षा कमसेकम शुल्क में उपलब्ध हो।

2. आकाशवाणी (रेडियो), दूरदर्शन फिल्मों में अश्लील प्रदर्शनों व अश्लील साहित्य पर प्रतिबन्ध लगाया जाए। नारियों के अंग-प्रदर्शन पर कानूनी प्रतिबन्ध हो।

3. दहेज के अभिशाप को समाप्त करने के लिए जाति बंधन तोड़-दहेज छोड़कर शादी करने वाले युवक-युवतियो को सरकारी सेवा में प्राथमिकता दी जाये।

4. अतर्राष्ट्रीय व साम्प्रदायिक तत्वों पर प्रतिबन्ध लगा, मताधिकार से वंचित कर भारत से उनको नागरिकता समाप्त की जाए।

इस सब आयोजन में आर्यसमाज मन्दिर मार्ग के युवा मंत्री श्री रामनाथ सहगल का सराहनीय योगदान रहा।

—चन्द्र मोहन आर्य प्रेस सचिव

महात्मा हंसराज दिवस २० अप्रैल १९८६ को

हर वर्ष की भांति अगले वर्ष (१९८६ मे) भी महात्मा हंसराज दिवस २० अप्रैल, रविवार को तालकटोरा गार्डन के "इन्डोर स्टेडियम" में मनाया जायेगा। अत समस्त आर्य समाजो स्त्री आर्यसमाजो, डी॰ए॰वी॰ संस्थाओं एव अन्य आर्य सस्थाओ से प्रार्थना है कि वे उक्त तिथि को होने वाली सभा मे अवश्य सम्मिलित होने की कृपा करें। विस्तृत कार्यक्रम बनाया जा रहा है, जिसकी सूचना यथा समय भिजवा दी जायेगी। —रामनाथ सहगल, मन्त्री-आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा।

आवश्यक सूचना

आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर दिनाक २४ नवम्बर को टकारा ट्रस्ट द्वारा ऋषि जन्म स्थान टकारा मे चलायी जा रही पानी की योजना पूर्ति के लिए की गयी धन की अपील पर कुछ महानुभावों ने उक्त कार्य के लिए दान देने की घोषणा की थी। उन सज्जनो के हमारे पास नाम तो हैं, पर पते नही हैं। अत: उन सभी दानी महानुभावो से करबद्ध प्रार्थना है कि वे अपने-अपने पते हमे तुरन्त भेजने की कृपा करें, जिससे कि दान की राशि प्राप्त करने के लिए उनकी सेवा मे पत्र आदि भेजे जा सकें।

—रामनाथ सहगल, मन्त्री, टंकारा ट्रस्ट

नैतिक शिक्षा संस्थान का सर्वत्र स्वागत

योग्य धर्मशिक्षक तैयार करने के लिए डी०ए०वी० कालिज प्रबन्ध कर्त्री समिति ने नई दिल्ली में 'डी० ए०वी० नैतिक शिक्षा संस्थान' नामक शिक्षण संस्थान खोलने का निर्णय लिया है। इस सम्बन्ध मे 'आर्यजगत्' 27 अक्तूबर 1985 के अंक में प्रकाशित विवरण को पढकर आर्य समाजी क्षेत्रों मे हर्ष एव उल्लास की लहर उत्पन्न हुई है। अनेक आर्य विद्वानों की जो सम्मतियाँ प्राप्त हुई हैं, उनमें से कुछ यहा प्रकाशित की जा रही हैं :—

धर्म प्रचार की आपने जो योजना 'डी०ए०वी० नैतिक शिक्षा संस्थान' नाम से बनाई है, वह काफी अच्छी और प्रभावशाली है। मैं आपके इस कदम की सराहना करता हू और सफलता की कामना करता हू। शुभ कामनाओ सहित,

—रामगोपाल शालवाले, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली।

वैदिक धर्म प्रचार हेतु डी०ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्थान की जो योजना बनाई है, वह बहुत अच्छी है। मैंने इसके नियमादि सब पढे हैं। मैं इस कार्य के सफलता की कामना करता हू और आप लोगो को बधाई और शुभकामनाएं भेजता हूं।

—ओ३म प्रकाश त्यागी, मन्त्री -सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

आर्य जगत् के 27 अक्तूबर, 1985 के अक मे दिल्ली मे "नैतिक शिक्षा संस्थान की स्थापना का समाचार पढकर बडी प्रसन्नता हुई। इस संस्थान की पर्याप्त समय से आवश्यकता थी। मै समझता हू कि यह संस्थान धर्म शिक्षको की एक बहुत बडी कमी को पूरा करेगा तथा आर्य संस्थाओ में धर्म शिक्षा के अन्तराल को अवश्य ही भर सकेगा। इस संस्थान को प्रारम्भ किए जाने पर मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें।

—धर्मपाल आर्य-महामत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

'डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्था' का कार्यक्रम ठीक है। केवल तीसरे पत्र में दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह में से 'वेद परिचय' के साथ ईश्वर विषयक दोनो निबन्ध भी होते तो उत्तम था।

—शिव कुमार शास्त्री, एम-87, साकेत, नई दिल्ली

'डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्था' के आधीन प्रशिक्षण को चार भागो मे बांटा है-वेद, दर्शन, धर्म व सिद्धान्त तथा ऋषि जीवन व आर्य समाज का इतिहास। ये भाग तो ठीक हैं परन्तु पाठ्यक्रम गलत है। वास्तविक प्रशिक्षण सिद्धान्तो का होना चाहिए, उसमे कुछ संस्कार तथा सत्यार्थ प्रकाश पर्याप्त नहीं है। वैदिक चिन्तन को वैज्ञानिकता देना अत्यावश्यक है। इस सबंध में अनेक प्रमाणिक ग्रन्थ निकल चुके हैं उधर आपका ध्यान नही गया।

—सत्यव्रत सिद्धातालंकार पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

नैतिक शिक्षा योजना के सम्बन्ध मे आर्य जगत् मे प्रकाशित "डी०ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्थान" शीर्षक लेख पढ़ा। जहा तक पाठ्यक्रम का सम्बन्ध है वह बहुत कुछ संतुलित ही है। दर्शन के प्रश्न पत्र मे दत्त एवं चटर्जी के स्थान पर प्रो० राजाराम का 'नव दर्शन परिचय' रक्खा जाना चाहिए।

मेरा सुझाव यह है कि इस सुन्दर योजना के क्रियान्वयन के लिए एक विचार गोष्ठी डी०ए०वी० कालेज प्रबन्ध समिति की ओर से दिल्ली मे आयोजित की जाए।

—डा० भवानीलाल भारतीय, अध्यक्ष-दयानन्द पीठ पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

आचार्य डा० श्रीराम आर्य का अभिनन्दन

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 102 वें निर्वाण दिवस पर श्रीमती परोपकारिणी सभा अजमेर के तत्वावधान में आयोजित ऋषि मेले के अवसर पर आर्य समाज फुलेरा की ओर से आचार्य डा० श्रीराम आर्य कासगंज निवासी को 1101 रुपये का महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार उत्तरीय एवं प्रशस्ति पत्र स्वामी ओमानन्द सरस्वती के कर कमलो द्वारा प्रदान किया गया तथा अभिनन्दन पत्र फुलेरा आर्य समाज के मंत्री श्री भंवर लाल शर्मा ने समर्पित किया।

भंवर लाल शर्मा, मन्त्री आर्य समाज फलेरा

मटर कैलाश-II में वार्षिकोत्सव एवं चुनाव

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश-II का वार्षिकोत्सव 2 से 8 दिसम्बर तक समारोह पूर्वक सम्पन्न होगा। इसमें 7 दिन तक निरन्तर चतुर्वेद शतक महायज्ञ तथा साय वेद कथा का आयोजन किया गया 7-12-85 को मध्यान्ह महिला सम्मेलन तथा 8-12-85 को राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया जायेगा जिसमें दिल्ली के प्रतिष्ठित विद्वानों के भाषण एवं उपदेश होगे।

वार्षिक चुनाव मे निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुए—प्रधान श्री जे० आर० आनन्द, मत्री श्री रघुनन्दन गुप्त तथा कोषाध्यक्ष श्री पृथ्वीराज अबरोल।

—रघुनन्दन गुप्त, ग्रेटर कैलाश -II, नई दिल्ली

नलगोंडा में धर्मरक्षा सम्मेलन

तालुका मिर्यालगुडा शहर (जिला नलगोंडा) में 17-11-85 रविवार के दिन श्री गड्गोज विक्षापति जी के अध्यक्षता मे जिले मे प्रथम धर्म रक्षा सम्मेलन समारोह सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन मे मुख्य अतिथि के रूप में श्री बलराज मधोक जी थे। सम्मेलन मे 250 प्रतिनिधि उपस्थित हुए। शुद्धि की आवश्यकता पर विविध वक्ताओं ने अपने विचार प्रकट किये। मधोक जी ने कहा कि "धर्मनिरपेक्ष राज्य हिन्दुओ के लिए श्राप बन गया है। पाकिस्तान बन जाने के बाद शेष भारत हिन्दूराष्ट्र है, और इसे हिन्दू राष्ट्र घोषित करना न्याय सङ्गत है। हिन्दू सारे मतभेदो को भूलकर सङ्गठित होकर इस ध्येय की पूर्ति के लिए कार्यरत हों।"

श्रीमती संध्यावंदनम लक्ष्मी प्रातीय शुद्धि सभा के सह कार्यदर्शिनी स्त्रियों की दशा सुधारने हेतु एक आयोग की माग की।—बी०के० नर सिंह भारतीय हिन्दु शुद्धि सभा, सिकंदराबाद

—आर्य समाज, वार्ड-17 (डी-64) गोविन्द नगर, कानपुर का उत्सव 25 से 27 अप्रैल-86 तक मनाया जायेगा। इस अवसर पर स्मारिका भी प्रकाशित की जायेगी।

—श्याम प्रकाश शास्त्री

—आर्य समाज, खानपुर-मेरठ का उत्सव 9-10 नवम्बर को सोत्साह मनाया गया। जिसमें युवको न मद्यपान न करने का व्रत लिया एव अनेक युवक-युवतियो को यज्ञोपवीत धारण कराया गया।

आखिर हिन्दू कोई.....

[पृष्ठ ३ का शेष]

रामकृष्ण मिशन वालो का यह कहना कि हम जाति-प्रथा को नही मानते, इसके सम्बन्ध मे भी हमारा निवेदन यह है कि स्वय आज तक हिन्दू ताओ ने ही जाति प्रथा का जितना तीव्र विरोध किया है उतना अन्य किसी ने नही किया। यह जाति प्रथा वेद-विहित नही है, यह तो मध्यकाल की देन है। इसलिए वह हिन्दुत्व का अङ्ग भी नही है। सच बात तो यह है कि धर्म निरपेक्ष भारत सरकार ने धर्म निरपेक्षता को कलंकित करते हुए जो अल्प सख्यको को विशेषाधिकार दिये हैं, वही गलत है। जब तक ये विशेषाधिकार रहेंगे तब तक ये अल्प सख्यको मिलने वाली रियायतो के लिए न जाने कितनो की राल टपकती रहेगी ?

जिस सर्व धर्म समभाव की दुहाई रामकृष्ण मिशन वाले देते हैं, वह भी हिन्दुत्व की ही देन है। हिन्दुओ के सिवाय ससार का अन्य कोई मतावलम्बी इस प्रकार की बात न कहता है, न करता है पर रामकृष्ण मिशन के तथाकथित अनुयायियो के मन मे यदि सर्व धर्म समभाव का यह अर्थ है कि कुरान और बाईबल को भी वेद जैसा ही दर्जा देते हैं,तो क्या वे कुरान और बाईबिल की विज्ञान विरुद्ध बातो को भी-जिनको आज बुद्धिवादी मुसलमान और ईसाई भी मान को तैयार नहीं-मान्यता देंगे ?

एक ओर रामकृष्ण मिशन वाले विश्व धर्म की दुहाई देते हैं और दूसरी ओर अप -आपको अल्प सख्यक सिद्ध करना चाहते हैं, तो 'विश्व' और 'अल्प' का यह मेल कैसे बैठेगा ? न अल्पसख्यको को संविधान के विरुद्ध ऐसी रियायतें मिलती जो बहुसख्यको को प्राप्त नही हैं, न रामकृष्ण मिशन वाले अपने आपको अहिन्दू सिद्ध करने के लिए ऐसी कलाबाजियां खाते। क्षुद्र स्वार्थों से विश्वकल्याण नहीं होता। परमात्मा उन्हें सुबुद्धि दे।

डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल हैदराबाद

7 नवम्बर से लालबहादुर स्टेडियम हैदराबाद मे सम्पन्न बाल-औलिम्पेड 1985 मे 45 संस्थाओ के बच्चों ने भाग लिया जिसमे 7000 बच्चो की ओर से डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल बेगमपेट हैदराबाद की आठवीं कक्षा की छात्रा कुं०के० सुभद्रा नारायणी ने शपथ ग्रहण की और इसी स्कूल के दो शिशुओ ने अन्तर्राष्ट्रीय औलम्पिक कमेटी के अध्यक्ष तथा आंध्र प्रदेश के राज्यपाल का सन्देश लेकर प्रदेश के शिक्षा मंत्री श्री म० कृष्ण नायडू को समर्पित किया।

इस औलम्पेड मे 5 वर्ष से 14 वर्ष के छात्रो ने विभिन्न खेलों में भाग लिया। इन खेलों में डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल हैदराबाद के छात्रों ने 80 मैरिट प्रमाण पत्र के अतिरिक्त एक स्वर्ण, एक रजत तथा तीन कांस्य पदक भी प्राप्त किए।

नेत्रहीन आदिवासी की कन्या का डाक्टर बनने का संकल्प
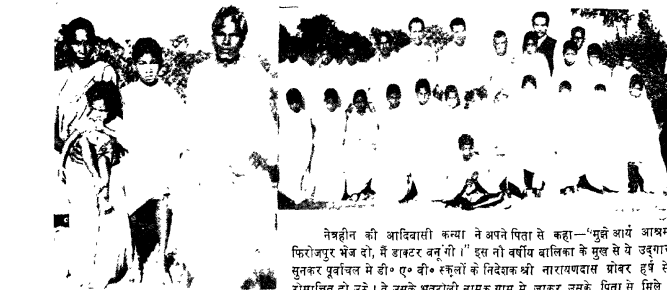
नेत्रहीन की आदिवासी कन्या ने अपने पिता से कहा—"मुझे आर्य आश्रम फिरोजपुर भेज दो, मैं डाक्टर बनूंगी।" इस नौ वर्षीय बालिका के मुख से ये उद्गार सुनकर पूर्वांचल में डी० ए० वी० स्कूलों के निदेशक श्री नारायणदास ग्रोवर हर्ष से रोमांचित हो उठे। वे उसके भूतटोली नामक ग्राम में जाकर उसके पिता से मिले। पिता भी नेत्रहीन था। अपनी पुत्री का यह उत्साह देखकर वह भी हर्षातिरेक से विभोर हो उठा और उसने श्री ग्रोवर को अपनी कन्या को फिरोजपुर भेजने की अनुमति दे दी। प्रथम चित्र—नेत्रहीन कन्या अपने माता-पिता के साथ। द्वितीय चित्र—फिरोजपुर आर्य आश्रम में भेजने के लिए चुने गए बीस आदिवासी बालक-बालिकाएं। बाएं से चौथे नम्बर पर खड़े हैं खूंटी के एस० डी० ओ० श्री जे० पी० सिंह, पाचवें नम्बर पर खूंटी के डी० एस० पी० श्री किण्डो, फिर खूंटी डी० ए० वी० स्कूल के चेयरमैन श्री गोविन्द चन्द्र महतो एडवोकेट, और उसके बाद दयानन्द फाउन्डेशन के चेयरमैन श्री विजयकुमार तिवारी।

खूंटी में स्वामी श्रद्धानन्द डी ए वी शताब्दी स्कूल खुलने से और दयानन्द फाउन्डेशन द्वारा नेत्र ज्योति नाम से निश्शुल्क नेत्र आपरेशन शिविर खोलने और संकल्प नाम से गरीबों का सहायता केन्द्र खोलने से आदिवासियों में नई चेतना जागृत हुई है।

आर्य समाज लोहगढ़ के वार्षिकोत्सव की एक झांकी

3 नवम्बर को हुए आर्य समाज लोहगढ के वार्षिकोत्सव पर समाज के प्रधान प्रि० धर्मवीर पसरीचा सपत्नीक यजमान के आसन पर विराजमान है और यज्ञ में आहुतियां दे रहे हैं। दूसरे चित्र में समाज के अनथक सेवक प्रज्ञाचक्षु श्री रतनचन्द केसर को प्रि० पसरीचा शाल प्रदान कर अभिनन्दन कर रहे हैं।

प्रदूषण मुक्ति यज्ञ

तपोवन देहरादून के महात्मा दयानन्द जी द्वारा भोपाल में गैस प्रभावित जनता के स्वास्थ्य हेतु 28.10 से 4.11.85 तक एक यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ सम्बन्धि 75 किलो शुद्ध गौ घृत 350 किलो सामग्री लखनऊ के एक वैद्य द्वारा विशेष तरीके से तैयार किया गया। इस कार्यक्रम में श्री माधुरी शरण अग्रवाल तथा म०प्र० की आर्य प्रतिनिधि सभा के उप-प्रधान गौरी-शंकर कौशल ने विशेष सहयोग दिया। 10 क्विंटल समिधाएं एक श्रद्धालु व्यापारी ने दान में दी।

—हरकृष्ण लाल ओबेराय

साधना-शिविर का समापन

नई दिल्ली, 10 नवम्बर। वेद-संस्थान में आयोजित सप्त दिवसीय साधना-शिविर का समापन 10 नवम्बर को प्रातःकाल स्वस्तियाग की पूर्णाहुति के साथ हो गया। इस शिविर में 35 शिविरार्थियों ने यजुर्वेद के शिवसंकल्प-मंत्रों का गहराई से चिन्तन किया। शिविर में महात्मा दयानन्द, सस्थानाध्यक्ष डा० अभयदेव शर्मा, डा० बद्री-प्रसाद पचोली, माता नरेन्द्रार्या आदि के प्रवचन हुए। अगला शिविर मई 1986 में आयोजित किया जाएगा।

निबन्ध-प्रतियोगिता

दिनाक 23-10-85 को विजयादशमी के पावन-पर्व पर आर्यसमाज, अल्मोड़ा द्वारा आयोजित कक्षा 7 से 12 तक के विद्यार्थियों की एक प्रतियोगिता में सफल प्रतियोगियों को पुरस्कार भूतपूर्व राज्यपाल महामहिम श्री बी० डी० पाण्डे जी के करकमलों से, एक सुन्दर समारोह में, वितरित किये गए। कुल 40 प्रतियोगिय ने प्रतियोगियों में भाग लिया, जिनमे से राजकीय इण्टर कालेज, अल्मोड़ा से 13, रा० बालिका इ० का०, अल्मोड़ा से 10 तथा एडम्स कन्या इ० का०, अल्मोड़ा से 15 विद्यार्थियों ने भाग लिया। निबन्ध-प्रतियोगिता का विषय मन्दिरों, पूजा तथा सत्संग के स्थानों में पशुबलि तथा नरबलि की प्रथा अधार्मिक तथा पाप-कृत्य है, था।

आर्य समाजों को सूचना

महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, कृष्णपुर पो० मंझना (फर्रुखाबाद) में वैदिक प्रचार मण्डल में विद्वान् और उपदेशक नियुक्त हैं। जो आर्य समाजें उनसे लाभ उठाना चाहें तो उपरोक्त पते पर दो महीने पूर्व सम्पर्क करें। —धर्मपाल आर्य

यू० 103/81 लायसेंस टू पोस्ट विदाउट प्री-पेमेंट
रजिस्ट्रेशन न० आर० एन० आई० 39/57 डी० सी० 409
T D. P. S. O. ON 5-12-1985 ८ दिसम्बर, १९८५

र वधुओं के मेल के लिए

र-वधू मेल मिलाने के लिए श्री आत्मदेव, संयोजक आदर्श लो आर्य प्रतिनिधि सभा 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली से न युवकों/युवतियों के लिए सुयोग्य मेल वांछित है :—

सुयोग्य वर चाहिए :—

1-कन्या 24 वर्ष 5-3" बी०ए० पिता दिल्ली में व्यापार रत 2-कन्या 22 वर्ष 5-4" बी/काम सरकारी सेवा में 3-कन्या 21 वर्ष, 5-4" बी० काम० गृहकार्य में दक्ष 4-कन्या 21 वर्ष, 5-4" एम०ए०बी० एड, 5-कन्या 24 वर्ष 5-3" बी०ए० आय एक हजार रुपए मासिक, 6-कन्या 28 वर्ष 5 3" बी० काम० सरकारी सेवारत, आय 1,500/-मासिक 7-कन्या 23 वर्ष 5-3" बी० काम० पिता प्रिंसिपल 8-कन्या 23 वर्ष बी०ए०/बी०एड०-पिता आई०ए०एस० 9-कन्या 23 वर्ष 5-5" बी०ए०/बी०एड० सरकारी सेवा 700 मासिक 10-कन्या 29 वर्ष 5-2" बी०ए० 11-कन्या 26 वर्ष, 5 फुट नर्सिंग ट्रेन्ड कार्यरत 12-कन्या 22 वर्ष, 5-5" बी०ए० आय 1150 रुपए मासिक 13-कन्या 21 वर्ष 5-2" अध्यापिका 1100/-रुपए मासिक 14-कन्या 22 वर्ष 5-4" बी०ए० ट्रेनिंग कोर्स-ओप्रेटर टेलीफोन आय 1100/-रुपए मासिक।

सुयोग्य वधू चाहिए :—

1-युवक 25 वर्ष 5-7" मैकेनिकल इन्जीनियर आय 1800/-रुपए मासिक 2-युवक 25 वर्ष 5-8 इच इलैक्ट्रीकल इन्जीनियर आय 1500/- मासिक 3-युवक 25 वर्ष 5-2" एमबी०बी०एस० 4-युवक 28 वर्ष 5-8" इच एस-बी०बी०एस० 2300/-मासिक, 5-युवक 30 वर्ष 5-7 इच एम०बी०बी० एम० अपना क्लीनिक 6-युवक 30 वर्ष 5-8" एम०बी०बी०एस० अपना क्लीनिक 7-युवक-30 वर्ष 6 फुट प्रोफेसर पी०एच०डी० आय 2,500/-मासिक 8-युवक-28 वर्ष 5-8" मैकेनिकल इन्जीनियर आय 2,300/-मासिक 9-युवक 26 वर्ष 5-7" बी० काम, अपना कार्यटाइप फोटोस्टेट 2,000/-मासिक 10-युवक 27 वर्ष 5-8" इच बी० काम इण्डियन एयर लाइन्स 1,800/- मासिक 11-युवक 27 वर्ष 5-7" एल०एल०बी० अपना व्यापार 2,000/- मासिक 12-युवक 28 वर्ष 5-6" इच एम० काम०यूनियन बैंक आय 1,800/- मासिक 13-युवक 33 वर्ष 5-4" बी०ए० आय 1100/-मासिक 14-युवक 28 वर्ष 5-8" सरकारी सेवा 1 600/-मासिक

टकारा के लिए व्याकरणाचार्य की आवश्कता

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के लिए एक व्याकरणाचार्य अध्यापक की तुरन्तआवश्यकता है। आवेदन करें—डा० धर्मवीर विद्यालंकार, आचार्य-उपदेशक महाविद्यालय टकारा-363650, जिला-राजकोट (गुजरात)

पुरोहित चाहिए

आर्य समाज दसूहा जिला होशियारपुर पंजाब को एक सुयोग्य पुरोहित चाहिए जो आर्य विद्यालय में केवल दो घंटे अध्यापन भी कर सके। रहने के लिए आर्यसमाज में पत्नी सहित नि:शुल्क व्यवस्था। मासिक वेतन योग्यता अनुसार। पूर्ण विवरण सहित सम्पर्क करें—श्रीराम रल्हन, प्रधान 'आर्य समाज दसूहा [होशियारपुर]

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाड़ी धीरज, (फोन : 516518, 527335) दिल्ली से छपवा कर कार्यालय आर्य जगत, मन्दिरमार्ग,नईदिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली। फोन (343718)

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य जगत्

साप्ताहिक पत्र

वार्षिक मूल्य-२५ रुपये | विदेश मे ३० पौ० या ५० डालर | वर्ष ४८ अक ५०, रविवार, १५ दिसम्बर, १९८५ दूरभाष : ३ ४ ३ ७ १८
आजीवन सदस्य-२५१ रु० | इस अक का मूल्य—६० पैसे | सृष्टि संवत् १९७२९४९०८५, दयानन्दाब्द १६० मार्ग शीर्ष शुक्ला ४, २०४२ वि०

पंजाब में आतंकवादी पुनः सिर उठाने लगे

जालंधर डी० ए० वी० कालेज और पुलिस पर पथराव

विगत एक-दो महीने से पजाब मे आतंकवादी पुन सिर उठाने लगे है। जब से मुख्यमत्री श्री बरनाला ने इस सम्बन्ध मे प्रधान मत्री की नाराजगी के उत्तर मे कहा कि वे मुख्यमत्री पद की जिम्मेदारियों को भली भाति जानते हैं, तब से आतकवादी और भी अधिक स्वच्छन्द हो गए हैं।

नवम्बर मास का दूसरा पखवाडा आतकवादी घटनाओ से परिपूर्ण रहा। 22 नवम्बर को अबाला के निकट यात्री ट्रेन के एक डिब्बे मे बम फटा जिसमे दो व्यक्तियो की जाने गईं तथा 22 घायल हुए। तदनन्तर अमृतसर के पास एक सरपच मारा गया और दो पुलिस वाले जख्मी हुए। अगले दिन ही स्वर्ण मदिर के ग्रन्थी साहिबसिह पर आक्रमण हुआ जिसमे वे घायल हो गए और उनका अगरक्षक मारा गया, 30 नवम्बर को फिरोपुर जिले मे आन्तकवादियो ने दो सिपाहियों की जान ले ली। 1 दिसबर को मुख्य मत्री के अपने कस्बे बरनाला मे दो स्थानो पर गोली बारी हुई जिनमे एक हिन्दू व्यापारी तथा एक सिपाही मारे गए और छ व्यक्ति घायल हुए। उसी दिन निहग नेता बाबा काहन सिह का अगरक्षक मारा गया उसके कुछ दिन बाद नान्देड मे बाबा काहनसिह की हत्या कर दी गई। दो अन्य निहंग घायल किए गए थे, दूसरे दिन भी लुधियाना मे भारतीय जनता पार्टी के कार्य कर्ता की दिन दहाडे हत्या कर दी गई।

5 दिसंबर को आल इण्डिया सिख स्टूडेटस फेडरेशन के नेतृत्व मे आतंकवादियो द्वारा जालंधर डी० ए० वी० कालेज पर पथराव किया गया। दो घटे तक यह पथराव चलता रहा। उसमे कितने छात्र घायल हुए यह विदित नही हो सका। बहुत से पुलिस के सिपाही भी घायल हुए है। प्रात साढे ग्यारह बजे के लगभग एक हजार छात्रो ने 'राज करेगा खालसा' के नारे लगाते हुए डी० ए० वी० कालेज मे घुम कर छात्रो एवं अध्यापको को डरा-धमका कर बाहर निकाल दिया। पुलिस के साथ सडक पर हुए सघर्ष मे ईट पत्थरो का प्रयोग किया गया। गाडियो को आग लगाई गई और पथराव करके क्षति पहुचाई गई। आतंकवादियो को तितर-बितर करने के लिए पुलिस को आसू-गैस का प्रयोग करना पडा। किंतु जब वह छात्रो को नियन्त्रण मे नही कर सकी तो लाठी चार्ज किया गया और चार राउण्ड फायरिंग भी गई। तब आतकवादी तितर-बितर हो गए। इस अवधि में जालधर-अमृतसर जी० टी० रोड पर यातायात बिलकुल रुका रहा। पथराव मे दमकल के भी चार कर्मचारियो को चोटे आई।

4 दिसंबर को मुख्य मंत्री ने कहा था कि उनके पास इस बात के पुष्ट-प्रमाण हैं कि पाकिस्तान में प्रशिक्षण प्राप्त कर आतकवादी राजस्थान की सीमा पार करके भारत मे घुसे हैं। किन्तु इससे पूर्व 29 नवम्बर को उन्होने ही कहा था कि विदेशी हाथ होने का कोई प्रमाण उनके पास नही है। तभी उन्होने यह भी कहा था कि गड़बडियो मे आतकवादियो का नही, अपितु चोरी और लूटमार करने वालो का हाथ है। जब मुख्यमंत्री ने घोषणा की कि गुरुद्वारे और मन्दिरो मे पुलिस को नही घुमने दिया जायेगा तो आतकवादियों की बन आई और उन्होने गुरुद्वारे के भीतर ही साहिब सिह पर आक्रमण कर दिया। गिरफ्तार अतकवादियो की रिहाई के मुद्दे पर भी अकाली सरकार संकट मे फस गई है।

अकालीदल के सत्तासीन होने से आतंकवादी प्रसन्न नही हैं। गिरफ्तार लोगो की रिहाई और सेना के भगोडो के लिए व्यवस्था करना भी उन्हे नही सुहाता। उनका उद्देश्य राज्य मे अस्थिरता उत्पन्न करना है। यह चुनौती 15 दिसम्बर को होने वाले अकाली दल के अध्यक्ष पद के चुनाव के समय भी विद्यमान रहेगी।

5 दिसबर को दिल्ली में विश्व पंजाबी सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए प्रधान मत्री ने कहा कि पंजाब की शाति भग करने वाले आतंकवादियो के विरुद्ध कडी कार्रवाई की जायेगी। उन्होने लोगो से अपील की कि आतकवाद की समस्या से प्रभावी ढग से निपटने के लिए वे केन्द्र और राज्य सरकार को सहयोग प्रदान करे।

आर्य प्रतिनिधि-सभा (दक्षिण अफ्रीका) की हीरक जयन्ती पर कर्मठ सूत्रधारों का परिचय

22 फरवरी 1925 को शिवरात्रि के दिन दक्षिण अफ्रीका मे बडी धूम धाम से दयानन्द जन्म शताब्दी का आयोजन किया गया था। उस अवसर जो वैदिक सम्मेलन किया गया उसी मे दक्षिण अफ्रीका को आर्य प्रतिनिधि की स्थापना की गई। इसके प्रारभिक पदाधिकारी थे—प० भवानी दयाल (अध्यक्ष), श्री बी० ए० मेघराज (मन्त्री), श्री पी० आर० पाथर (सहमत्री) तथा श्री आर० के० कापिटान (कोषाध्यक्ष) थे। श्री मेघराज के त्यागपत्र के बाद श्री डी० जी० सत्यदेव मत्री पद पर रहे।

इसके अतिरिक्त जिन अन्य महानुभावो ने आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से वैदिक धर्म की सेवा की है उनमे अग्रणी थे श्री एम० एल० सिह जो कई बार सभा के अध्यक्ष बने। श्री एम० मुन्नू ने सभा की आर्थिक स्थिति को कभी डावाडोल नही होने दिया। प० बी० सी० नयनराज ने अपना पौराहित्य बडी कुशलता से निभाया। इन के अतिरिक्त अन्य भी अनेक नाम हैं जो सभा की प्रगति मे तन-मन-धन से सहयोग कर उसकी उन्नति के भागी बने।

प्रो० भाई परमानन्द वह व्यक्ति थे जो 5 अगस्त 1905 को श्री लाला मोकमचन्द बर्मन के आग्रह पर उस देश मे गए और वहा के वासियो को हिन्दुत्व (आर्यत्व) की विशेषताओं से अवगत कराया। इसी प्रकार 8 अक्टूबर 1908 को स्वामी शकरानन्द जी ने उस देश मे प्रवेश किया। उन्होने वैदिक धर्म, जीवन दर्शन और सस्कृति का प्रचार-प्रसार किया। उन्होने वहा वेद धर्म सभा, हिन्दू महा सभा आदि की भी स्थापना की।

उसके बाद अनेक भारतीय-विद्वान और मनीषी समय-समय पर वहा जाते रहे उनमे प० कर्मचन्द, प्रो० रलाराम, प० मेहता जैमिनी, पं० ऋषिराम प० नरदेव वेदालकार, प० गगाप्रसाद उपाध्याय तथा डा० सत्यप्रकाश आदि के नाम प्रमुख हैं।

'आर्य जगत्' का स्वामी श्रद्धानन्द विशेषाक

'आर्य जगत्' का आगामी अंक स्वामी श्रद्धानन्द विशेषाक होगा जो २९ दिसम्बर को प्रकाशित होगा। विशेषाक की तैयारी के कारण २२ दिसम्बर का अंक प्रकाशित नही होगा। कृपया पाठक नोट कर ले। विशेषाको की परम्परा में नए कीर्तिमान स्थापित करने के 'आर्यजगत्' के इस विनम्र योगदान की उत्सुकता से प्रतीक्षा कीजिए।—सम्पादक

पं० त्रिलोकचद्र स्मृति दिवस की तिथि मे परिवर्तन

आर्य समाज, माडल टाउन, पानीपत [हरियाणा] की ओर से आर्य-प्रादेशिक उपसभा हरियाणा के महोपदेशक प० त्रिलोकचन्द्र शास्त्री स्मृति दिवस २९ दिसम्बर को होना निश्चित किया था पर विशेष परिस्थिति वश इस तिथि का परिवर्तन करके ५ जनवरी-८६ कर दिया गया है। इस अवसर पर हरियाणा स्तर पर १५० युवको को एक विशेष गोष्ठी होगी। स्मृति-दिवस मे ५ जनवरी को ही पहुचने का कष्ट करे।

—प्रा० वेदसुमन वेदालकार

परामर्शदाता—अमर स्वामी सरस्वती | सम्पादक—क्षितीश वेदालंकार | व्यवस्थापक—रामलाल मलिक

आओ सत्संग में चलें

अन्न, जल और धन की मर्यादित गारण्टी

विश्व के शासन का वैदिक घोषणा-पत्र

—मनोहर विद्यालंकार—

**चोदयत सूनृताः पिन्वत धिय उत्पुरन्धीरीरयत तदुश्मसि ।
यशसं भागं कृणुतं नो अश्विना सोमं न चारुं मघवत्सु नस्कृतम् ॥**
ऋक् १०-३९-२

ऋषि — काक्षीवती घोषा । देवता-अश्विनौ । छन्द-जगती ।

ऋषि —विश्व शासन की घोषित नीति है कि प्रत्येक मानव को भोजन (अन्न) प्राप्त कराया जाएगा और उसकी शिक्षा (ज्ञान) तथा चिकित्सा (बल) का प्रबन्ध किया जाएगा । काक्षीवती (मर्यादित) घोषा (घोषणा) ब्रह्म=अन्न, ज्ञान, बल ।

देवता—इस नीति को सफल बनाने के लिये प्रत्येक युग्म (राजा-प्रजा, स्वामी-सेवक, माता-पिता, पिता-पुत्र, गुरु-शिष्य) को अपने कर्तव्य और अधिकार को समझकर तदनुसार कार्य करने का आदेश दिया गया है । किसी शुभ संकल्प को कल पर नहीं टालना है । अश्विनौ—अ+श्व +द्विवचन ।

छन्द - संकल्प को कार्यान्वित करने के लिये, तन्मय होकर उत्साहपूर्वक सतत प्रयत्न करते रहना ही कारगर उपाय है । जगती—गम्+यङ्लुङन्त—पुनः पुनः ।

शब्दार्थ—(अश्विनौ) युग्म में रहकर कार्य करने वाले दिव्य जनो ! (सूनृता चोदयतम) अन्न अर्थात् भोग्य पदार्थों की प्रार्थना करो, किन्तु मधुर व समुचित शब्दों में; साथ ही (धियः पिन्वतम्) अपने कर्तव्य कर्मों को परिश्रम के स्वेद बिन्दुओं से सींचो, पूरा करो । इसके लिये (पुरन्धीः उत् ईरयतम्) अपनी बुद्धियों को पूरक तथा उत्साहमय बनाओ, (तत् उश्मसि) क्योंकि सब यही चाहते हैं ।

(अश्विनौ) युग्म देवो ! अर्थात् शासक और प्रजा तुम दोनों मिलकर (नः यशसं भागं कृणुतम्) परस्पर अन्न, जल और धन का अपना-अपना भाग प्राप्त करो और कराओ । साथ ही (मघवत्सु) सम्मान्य तथा सम्पन्न राष्ट्र कुलों में (नः) अपने राष्ट्र की स्थिति को (सोमं न चारुम्) चन्द्र के समान आह्लादक तथा (चारु न सोमम्) महामति बृहस्पति के समान शान्तिप्रिय (कृतम्) बनाओ ।

निष्कर्ष—अधिकार और कर्तव्य परस्पराश्रित है । घोर परिश्रम, परस्पर सहमति तथा मधुरवाणी के बिना भोग्य पदार्थ, मान तथा यश नहीं मिला करते ।

टिप्पणी—यश और ब्रह्म दोनों शब्दों के वेद में अन्न, जल और धन तीनों अर्थ है । काक्षीवती—कक्षा, मर्यादा व शासन कश गति शासनयोः । चारुः=बृहस्पतिः, चारु बृहस्पतौ पु सि । विश्व. । सूनृता—अन्ननाम । वि.३-व सूनृता—उत्तम मधुर वाणी ।

त्रिविध ताप दूर करने का उपाय

**शं नो भव चक्षसा शं नो अह्ना शं भानुना शं हिमा शं घृणेन ।
यथा शमध्वञ्छमसद् दुरोणे तत् सूर्य द्रविणं धेहि चित्रम् ॥**
ऋक् १०-३७-१०

ऋषि —सौर्योऽभितपा । देवता— सूर्य । छदः—त्रिष्टुप् ।

ब्रह्म की उपमा केवल सूर्य से दी जा सकती है । आधिदैविक जगत् में सूर्य का जितना महत्व और प्रभाव है, आध्यात्मिक जगत् में परमात्मा का उससे सहस्रगुणित महत्व और प्रभाव है ।

सूर्य के दर्शन और सेवन से मनुष्य के रोग दूर होते है, तो ब्रह्म के ध्यान और धारण से मनुष्य के दोष और पाप भस्म होते है । सूर्य शरीर को पवित्र और समर्थ बनाता है, तो परमात्मा मन और आत्मा को सबल, पवित्र और शान्त करता है । सूर्य की प्रभातकालीन दृष्टि और परमात्मा की वेदवाणी मन को शान्ति प्रदान करती है ।

रात्रि में सूर्य की किरणें चन्द्रमा में प्रतिबिम्बित होकर शीतलता व शान्ति प्रदान करती हैं, और दिन में अपने प्रखर ताप से गन्दगी और बीमारी का नाश करती हैं । इसी प्रकार रात्रि में किया हुआ भगवान् का ध्यान शान्ति और स्थिरता प्रदान करता है, चन्द्रवत् आह्लादक होता है, और उनका प्रखर रुद्र रूप दुष्टों और पापियों का विनाश करने वाला है । जैसे उदित होता हुआ सूर्य हृदय और मस्तिष्क के विकारों को शान्त करता है, वैसे ही भगवान् की अनुभूति की झलक हृदय को समता और मस्तिष्क को शीतलता प्रदान करती है ।

जब मनुष्य सूर्य के समान संयमी और नियम में अटल होकर सूर्यपुत्रवत् आचरण करता है, और अपने जीवन को तपोमय बना कर 'अभितप सौर्य' बन जाता है, तब वह इस सृष्टि के उत्पादक, मार्गदर्शक और स्वामी ब्रह्मसूर्य से प्रार्थना करता है कि—हे उत्पादन व ऐश्वर्य के स्वामिन् प्रभो ! आप हमें अपना चेतना तथा संवेदना प्रदान करने वाला अद्भुत धन और सामर्थ्य प्रदान कीजिये, जिसे पाकर हम घर में और बाहर शान्ति अनुभव करें । हम जीवन के जिस किसी मार्ग को अपनायें, वहां हमारा कल्याण हो और हमें शान्ति मिले ।

त्रिष्टुप् मन्त्र के ध्यान और धारण से साधक के त्रिविध ताप व शोक दूर होते हैं । काम, क्रोध और लोभ शान्त होते हैं । मन, वचन और कर्म में एकरूपता और प्रगतिशीलता आती है ।

अर्थ की प्रामाणिकता—ब्रह्म सूर्यसमं ज्योति । यजु २३-४८
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् । ऋक् १-५०-१०

चक्षसा—चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि । वाणी, चक्षु - दर्शन ।

अह्ना—अह हिंसागत्योः । काशकृत्स्न, अह व्याप्तौ ।

द्रविणम्—बलनाम; नि० २-९ । धननाम, नि० २-१० । फल द्रविण वर्चो द्रविणम, यजु. १०-११

पता—५२२, ईश्वरभवन, खारी बावली दिल्ली-६

स्वामी भवानीदयाल और भाई परमानन्द जिनके चिर ऋणी रहेंगे दक्षिण अफ्रीका के आर्य जन ।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के सूत्रधार श्री रामभरोसे प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका और श्री नरदेव वेदालंकार अध्यक्ष वेद निकेतन तथा वैदिक पुरोहित मंडल

वेद परायण यज्ञ

दि० 15 दिसम्बर से 27 दिसम्बर तक श्री मनोहर विद्यालंकार के निवास स्थान 170 छत्ता भवानीशंकर फतेहपुरी दिल्ली में प्रति दिन प्रातः काल साढ़े सात से साढ़े नौ बजे तक ऋग्वेद तथा यजुर्वेद मन्त्रों से यज्ञ तथा रात्रि साढ़े सात से नौ बजे तक सामवेद तथा अथर्व वेद मन्त्र पाठ परायण होगा । इस अवसर पर पं० हरिशरण जी सिद्धांतालंकार, श्री सत्यभूषण जी योगी तथा आचार्य हरिदेव जी के प्रवचन भी होंगे ।

—मनोहर विद्यालंकार

□

सुभाषित

महान्ति कार्याणि तु यान्यभूवन्
स्वतन्त्र-बुद्धेः सुफलानि तानि।
प्रयुञ्जते ये स्वमतिं न काले
ते ऽज्ञात-वृत्ता जगतः प्रयान्ति ॥

हुए आज तक हैं जगती में शोभनतम जितने भी काम,
लोक-लीक से मुक्त मनीषा से चिन्तन के हैं परिणाम।
ठीक समय पर जो निज मति का करने में असमर्थ प्रयोग,
दुनियाँ से अज्ञात-अचीन्हे कर प्रयाण जाते वे लोग ॥

रचयिता व अनुवादक—धर्मवीर शास्त्री

सम्पादकीयम्

यमराज के दूत

जीवनोपयोगी दवाईयो के आविष्कार और स्वास्थ्य सेवाओ के विस्तार के कारण ज्यों-ज्यो मृत्यु दर कम होती गयी त्यों-त्यों जनसख्या में वृद्धि होती गई। इस जनसंख्या वृद्धि से परेशान होकर राजनीतिक नेताओ ने परिवार नियोजन का नारा लगाया। परन्तु उससे भी जब जनसंख्या में कमी नही आई तो यमराज के दूत घबराये। शायद उन्होंने सोचा होगा कि इसी तरह संसार की आबादी बढ़ती रही और मृत्यु दर कम होती रही तो हमारा सारा कारोबार ही ठप्प हो जायेगा। इसे विधाता का विधान कहें या संसार की नियति कहें—यमराज के दूतों ने यमलोक से उतर कर इस पृथ्वी-तल पर डेरा जमाया और आधुनिक विज्ञान के बल बूते पर ऐसी जहरीली गैसों के बड़े-बड़े कारखाने तैयार किये जिनसे संसार की आबादी को मिनटों मे कम किया जा सके।

अब से एक वर्ष पूर्व भोपाल का यूनियन कार्बाइड का कारखाना यमराज के दूतों का वैसा ही प्रतिनिधित्व कर चुका है और अब दिल्ली मे श्रीराम फर्टिलाइजर्स के कारखाने ने भी अपने यमराज के दूत होने का प्रमाण प्रस्तुत कर दिया है। अब से एक वर्ष पूर्व जब 2-3 दिसम्बर की रात को भोपाल के कार्बाइड कारखाने से जहरीली गैस रिसी थी तो उसकी भयंकरता का शुरू-शुरू में किसी को अदाज नही था। पर जब उसके परिणाम स्वरूप देखते ही देखते अढ़ाई हजार आदमी सदा के लिए मौत की गोद मे सो गये और करीब अढ़ाई लाख आदमी उसके घातक प्रभाव से प्रभावित हुए, तब पता लगा कि यह कितनी भयंकर त्रासदी थी।

कहने वाले तो यह भी कहते हैं कि इस बहुराष्ट्रीय अमेरिकी कम्पनी के कारखाने मे ऐसी जहरीली गैस तैयार करने का परीक्षण तैयार किया जा रहा था जो महायुद्धों के समय बड़े पैमाने पर जनसंहार के काम आ सके। गैस रिसने की दुर्घटना अगर न होती तो इस गोपनीय षड्यन्त्र का पता भी न लगता। पर अब भेद खुल गया तो शायद मन ही मन यमराज के दूत प्रसन्न हुए होगे कि हमने संसार की जनसंख्या को कम करने का एक कारगर उपाय ढूंढ निकाला।

यो गरीब देशों के निवासी तथाकथित विकसित देशो की दृष्टि मे सदा आसान तोपों का चारा (गन फौडर) रहे हैं। युद्धो मे उन्हें तोपों के चारे की तरह ही झोंका जाता रहा है। वैज्ञानिक लोग जिस तरह अपनी दवाईयों के परीक्षण चूहों, खरगोशो और बन्दरो पर करते हैं उसी तरह बहुराष्ट्रीय कपनियां अपनी नई उपलब्धियों का परीक्षण गरीब देशों के निवासियो पर कर तो क्या आश्चर्य है। इससे डबल लाभ भी तो होता है। कम्पनी के मालिकों को आर्थिक लाभ और गरीब देश को अपनी जन संख्या कम करने का लाभ!

बहुराष्ट्रीय कंपनियों का जैसा जाल बिछता जा रहा है और जिस तरह राष्ट्रीय हितों की उपेक्षा करके गरीब देशों की सरकारें उन्हे बढ़ावा दे रही हैं, उससे ऐसा लगता है कि कोई बहुत गहरा अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र है जो गुप-चुप ढंग से मानवता के विरुद्ध चल रहा है और उस षड्यन्त्र में जाने-अनजाने हम सब फसते जा रहे हैं। यूनियन कार्बाइड के कारखाने के सम्बन्ध में कंपनी के मालिकों का और मध्य प्रदेश शासन का जैसा रवैया रहा है उससे मिली भगत की आशंका होती है। पहले कहा गया कि रिसने वाली गैस फोसजीन थी, फिर कहा गया कि नही, वह मिक गैस थी। परन्तु पीछे जानकार लोगों ने बताया कि 250 डिग्री सेंटीग्रेड के तापमान पर मिक गैस विघटित होकर हायड्रोजन सायनाइड मे बदल गयी थी। सायनाईड का विष अपनी प्राणघातकता के लिए विश्व विख्यात है। जब तक यह पता न लगे कि वह कौन-सी गैस थी, तब तक उसका इलाज भी कैसे हो। पर जब यह पता लग गया कि वह सायनाइड थी तो इस बात को छिपाने का प्रयत्न किया गया और उसके बारे में जान बूझकर विवाद उत्पन्न कर दिया गया। जब वैस्ट वर्जिनिया (अमेरिका) स्थित यूनियन-कार्बाइड के मुख्यालय से ही ये गलती हो गई और उसकी ओर से कहा गया कि सायनाइड के असर को दूर करने के लिए सोडियम थायोसल्फेट का इंजेक्शन दिया जाना चाहिये तो एक तरह तो एक तरह से उस गैस के सायनाइट होने की तो पुष्टि हो गई परन्तु तब उसके आर्थिक और कानूनी परिणामों को सोचकर यूनियन कार्बाइड के मुख्यालय ने अपना वह बयान वापस ले लिया। बाद में जिन डाक्टरों ने मरीजों को ये इन्जेक्शन दिये, उनको लाभ भी हुआ। इन इन्जेक्शनों से होने वाले लाभ से अब यह बात लगातार प्रमाणित होने लगी कि रिसने वाली गैस सायनाईड ही थी, तो वे इन्जेक्शन देने रोक दिये गये। हालाकि एक इन्जेक्शन की कीमत सिर्फ 12 पैसे पड़ती है, पर आज तक वे इन्जेक्शन ढाई लाख गैस पीड़ितो में से केवल 5 हजार लोगो को ही दिये जा सके है। आश्चर्य की बात यह है कि मन्त्रियो ने सरकारी अधिकारियो ने और धन पतियो ने गैस त्रासदी के तुरन्त बाद इन इन्जेक्शनो को लगवाना जरूरी समझा, किन्तु गरीब लोगो को इन्जेक्शन देने मे उपेक्षा शुरू हो गयी। और तो और मध्य प्रदेश सरकार ने ऐसे कुछ स्वयं सेवी क्लिनिक भी बन्द करवा दिये जो गैस पीड़ितों को यह इन्जेक्शन लगाने की सेवा कर रहे थे। इन सरकारी अधिकारियो मे से कितने अधिकारी और उनकी पत्नियां यूनियन कार्बाइड की ओर से अमेरिका की सैर कर आये, इसका कुछ पता नही। लेकिन इन सबसे मिली-भगत की पुष्टि तो होती है।

भोपाल के काड को छोड़िये। उसे तो अब एक वर्ष हो चुका। नियति का चक्र देखिए कि जिस दिन उस काण्ड को एक वर्ष पूरा हुआ उससे अगले दिन ही श्रीराम फूड्स एण्ड फर्टिलाईजर कारखाने से जहरीली गैस रिसी। यह गैस मिक या सायनायड नही थी, ओलियम थी। यह उतनी भयकर भी नही थी। पर उससे लोगो मे भगदड मच गयी। अभी तक इस गैस से मरने वालो की संख्या तीन से अधिक नही है। पर इसका यह अर्थ भी नही है कि वह मनुष्यों पर कोई दया करने वाली गैस थी।

हमने ऊपर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और गरीब देशो के बड़े लोगो की मिली-भगत की आशंका की चर्चा की है। पर दिल्ली वाला कारखाना तो अमेरिकी कम्पनी द्वारा निर्मित नही था और न ही वहां कीट नाशक दवाई तैयार हो रही थी। यह कारखाना तो रासायनिक खाद बना रहा था और इसके निर्माता ऐसे लोग हैं जिनका भारत के उद्योगीकरण में काफी योगदान है। भोपाल काण्ड के लिए हम बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को दोष दे सकते हैं परन्तु खाद बनाने वाले और अपने ही लोगो द्वारा निर्मित इस कारखाने के बारे में क्या कहे? यह ठीक है कि भोपाल काड के बाद यूनियन-कार्बाइड कारखाने को और दिल्ली कांड के बाद इस फर्टिलाईजर कारखाने को सरकार ने बन्द करने का आदेश दिया है। परन्तु क्या इतने मात्र से यमराज के दूतों का खेल खत्म हो जायेगा? स्वयं दिल्ली सरकार के रजिस्टर मे ऐसे 112 कारखानों के नाम दर्ज हैं जिनमे इसी प्रकार की घातक चीजे तैयार हो रही है और वे सब कारखाने प्रायः घनी बस्तियों के बीच में ही हैं। अगर विदेशी लोग गरीब भारतवासियो को तोप का चारा समझते हैं तो भारत सरकार भी तो अपने देशवासियो को शायद उससे अधिक दर्जा नही देती। इसके अलावा इस प्रकार के कारखाने अन्य देशो में भी हैं पर वहा जनता की सुरक्षा का जैसा प्रबन्ध किया जाता है उस तरह की व्यवस्था सरकार की और उद्योगपतियो की लापरवाही के कारण इस देश में नही होती।

चाहे भोपाल हो, चाहे दिल्ली हो, चाहे कीटनाशक दवाइया तैयार करनी हों, चाहे रासायनिक खाद तैयार करना हो, इन सबके पीछे कृत्रिम ढग से कृषि की पैदावार बढ़ाने का अभियान काम कर रहा है। पर उसके पीछे एक दृष्टि दोष है जिसे शायद हम नही समझ पा रहे हैं। खेती की पैदावार बढाना आवश्यक है, परन्तु उसके लिए पश्चिम की नकल करके पश्चिम के ही साधन हमने अपनाने शुरू किये हैं, उससे ऐसा लगता है कि इक्कीसवीं सदी मे पहुचने की जल्दी मे हमने आधुनिक तकनीक का जो बहु-विज्ञापित "छोटा रास्ता" अपनाया है वह रास्ता ही खतरे की जड है। नीतिकारो का कहना है—**"यस्य देशस्य यो जन्तुः तज्ज तस्यौषधम् हितम्"**—जिस देश का जो प्राणी है उसके लिए उसी देश में उत्पन्न हुई औषधि हितकारक है। हमने अपने देश के कृषि के साधनों की ओर गोबर और गोमूत्र आदि स्वाभाविक खाद की उपेक्षा करके रासायनिक खाद और रासायनिक कीट नाशक दवाओ को अपना कर जो खतरनाक जीवन-पद्धति अपना ली है उससे यम के दूतों का द्वार खुल गया है। हम अपनी जड़ से कटते जा रहे हैं। हमने अपने ग्रामोद्योगों, सिंचाई के साधनो और खेती के उपकरणों की उपेक्षा करके जो नकलची बन्दर का रोल अपनाया है, उससे इस प्रकार की त्रासदियां सदा हमारे सिर पर लटकती रहेंगी। हमें कोई ऐसा उपाय सोचना पड़ेगा कि आधुनिक वैज्ञानिक उपलब्धियों का लाभ भी हम उठा सकें और अपने देश मे सदियों से आजमाये गये रास्तो को भी न छोड़ें। दोनों के सही सन्तुलन मे ही हमारा सही भविष्य निर्भर है। जब तक यह असन्तुलन रहेगा तब-तक यम के दूत प्रसन्न ही होंगे।

`Presidential Address : 15th December 1985
SVAMI SATYA PRAKASH SARASAVTI
The International Vedic Conference Durban

All of us who belong to the Arya Samaj fraternity are really happy at the opportunity given to them to meet in this great city of Durban from different corners of the globe, and we are over-whelmed by the warmth with which we have been received. Your State and people deserve our gratitude, and may I request the authorities of this International Conference to convey our sentiments to all and sundry, in official and nonofficial circles, who have made such a get-together possible and pleasant. Under the aegis of the Sarvadeshika Arya Pratindhi Sabha (the International Aryan League) with Head Quarters at New Delhi, such conference or Mahasammelanes, were held in past also in India and abroad. Many of us have the pleasant memories of the international congregations at Mauritius, Nairobi and London The present Conference is also one in the same chain.

You have so kindly asked me to share certain responsibilities in this Mahasammelan, you have asked me to preside over the session, you expect from me a key-note in my address which could serve as a tentative draft for further deliberations I consider it as a privilege for which I am highly obliged to you and to the International Aryan League. But you must know that I have my own way in the field of thinking I have from my childhood grown in an atmosphere of the Arya Samaj, the Founder of which was one of the greatest thinkers of the modern age, who stood single-handed, against traditional credulities and superstitions. Again, although my life, I studied and taught up to the highest level modern sciences-science was not only a passion for me, it was the *religion of my life* Science gives a methodology for thinking, one who pursues science is avowed to seek truth, and whatever truth he finds, he shares it with others, and he accepts truth for his life. This, in the Vedic terminology, would be called *Satya*, *Rita* and *Sraddha* and to achieve truth one undertakes Tapas (austerity and penance) and Diksha If I prepare the chronology of my Guru-Parampara (teacher-pupil tradition), this geneology would take me to the United Kingdom, France, Germany and Scandinavia, and I am proud of it Another person who influenced me the most was Mahatma Gandhi, one of the most unique personalities of this age, a person who had his initial laboratory of training in the Republic of the South African Union This Gandhi, hemmed and carved in your country, had been the world's unique wealth, more in evaluation than all your country's Gold and Diamonds. I am proud of all these three in my life. The essence of all the three can be summed up in two words-Rationalization and Spiritualization If I were asked to express it in the Vedic language, I would say. *Anritat satyam upaimi* from falsehood, I shall move towards truth (the same as the phrase *asato ma sad gamaya* (Shatapatha Brahmana) and *ishavasyamidam sarvam*-all this throbs with the presence of the Supreme Spirit—the panorama of Spirit behind the dynamism of creation.

You have called your this great congregation as the international Veda Mahasammelan On this International platform, we can present the Vedas in the real perspective to people who are ignorant of them Moreover, there are certain notions also regarding the Vedas that need clarification. One shall never feel shy in posing questions on such vital matters without any reservation, and then sit down coolly and ponder over them. This is the scientific technique of the modern age, and the seer of our Vedic times also followed the same epistemology. Serious thought must be given to petty questions, posed from even humblest quarters. The sages of the Upanishad and the Brahmana literature never tried to evade an issue So often the great teacher lowers himself down to the level of the humble pupil, gives the pupil a full opportunity of rising step to step, and then to arrive at a convincing final answer. It goes to the credit of Svami Dayananda to pose so many questions regarding the Vedas (none of his predecessors in history did so) and then to his best, he tried to answer these questions. I have several times gone through the contents of Dayananda's great book, the Rigvedadibhasya Bhumika. I shall ask you to enlist all the questions Dayananda had raised in his treatise. I am not worried in respect to the answers given by him. But I am sure, you shall not be able to pose further any new questions, which have not been entertained in the Bhumika. There lies Dayananda's genius. A scientist never evades a question—he always welcomes a new querry and a new approach.

Perhaps you know that for the past several years, I and my colleagues have been busy in rendering the Rigveda into simple readable English. We have now completed the Rigveda, which is now available in print in 13 volumes. We also completed the translation of the Yajurveda and it has already been processed for print During my recent visit to London, with the assistance of Shri Shambhu Gupta (who is very much like a pupil of mine in chemistry), we have been able to create a centre (in the private sector) to promote the sale of our volumes of the Vedas under the caption "THE CENTRE FOR THE VEDIC LITERATURE, THE MANOR HOUSE, THE GREEN, SOUTHALL, MIDDLESEX". The brochure, which has been published by the Centre for the promotion of the sale, incorporates the following phrases

THE RIGVEDA

(i) the first book in our Library;

(ii) the first book in world's literature in the earliest language given to man;

(iii) represents the first dawn of culture, art, philosophy, science and civilization.

Not one word is such in the above three phrases, as could be challenged by any of us. The Gathas of Zoroaster, the Bible of our Christians, the Quran of Muslims, the Gita of the so-called Hindus, or the Canons of Buddhism, and the scriptures of the Jains—none of these can hold their claims in such words.

The Brochure further says

(i) The Rigveda belongs to a period, when man was not divided into races, communities, factions, sects and creeds.

(ii) The Rigveda belongs to your ancestors (i e not only to the ancestors of Indians, but to the ancestors of Europeans, Russians, and Americans also)

(iii) It speaks in general terms. It is the book of mankind. It inspires one to *natural theism*—man's appreciation of the divine creation and his invocation to the Supreme Reality-unborn, eternal, omniscient, omnipresent, omnipotent, benevolent—one and only one without a second.

(iv) The Rigveda evokes you to proceed to light, truth, peace and love.

(v) The Rigveda stands for the philosophy of dynamic realism.

(vi) The Rigveda promotes universal fraternity-the concept of ONE MAN-ONE WORLD.

(vii) The Rigveda inspires you to fight against evil, nescience and ills—the innate devil in all of us.

One of the most unique features of the Rigveda is that throughout the literature there is no man of history that stands between you, and the Supreme Self, no teacher, no saint, no prophet no incarnation, no Buddha, no Tirthankara—all a direct approach, a directer relationship of love and affection—a direct relation between the infinitesimals and the infinity.

This much about the Rigveda—what about the other Vedas ? —the answer is simple. To all the Vedic theists, the Veda is one : THE VEDA · the entire Veda represents one philosophy, one ethics one human relationship, none superior, none inferior, none prior, none posterior. One may speak of the Veda—Trayi-three Vedas—the

Rk, the Yajuh and the Saman and also the fourth one the Atharva. That was a sad day in our history, when man got divided into such factions as the Rigvediya, the Yajurvediya or the Samavediya, i e. belonging to the different schools of the Veda, they became the Dviveda, the Triveda and the Chaturveda This faction or degradation laid the foundations of the present day Hinduism, a term, synonym of disintegration and degradation—degradation is illustrated by the fact that one who has not seen a single Veda, who has never read any of them is still called Dvivedi or Chaturvedi in the Hindu-India. In any case, one thing is clear that a person is considered to be a privileged one, if he is associated with a Veda

Svami Dayananda wrote his *magnus opus*, the Satyartha Prakash in 1874, and subsequently he wrote his commentaries on the Vedas, including his Introduction Volume, the *Bhumika* This created a stir in Indian society Since very old times, ladies and Sudras were denied the privilege of studying the Vedas or even listening the Vedic mantras In fact, every person who has the vocal organ of pronouncing the phonetic alphabet clearly from *a* (अ) to *m* (म) and who has the hearing organ of discriminatingly listening the spoken alphabet, has a right to study the Vedas, and therefore no man can be denied this privilege. Svami Dayananda so many times expressed his regret, I am told, that whatever reverential studies are undertaken on the Vedas, are by the scholars of the Arya Samaj, and not the traditional Hindus And this is a fact The Arya Samaj is the only platform on which we discuss the Vedas with reverence We are proud of our stand on the Vedas.

If someone asks me about my views on the Vedas, I shall without any hesitation say that my views as well as the views of Svami Dayananda and the Arya Samaj are the same as the views of the Risis of the Arya Period, i e, up to a little before the Mahabharata (what Dayananda says from Brahma to Jaimini) all the Brahmanas, all the Aranyakas, all the Vedangas, the Upangas, the Upavedas and the Upanishads This entire literature is pivoted round the Vedas You would be surprised to know, that we have not a single book of this glorious period of our history, that did not assign a position of *Supreme Authority* to the Vedas The Vedas were not only the texts of authority, they were regarded as *apaurusheya* also I am astonished when some of the Hindus (and our own scholars) ridicule or pooh-pooh the concepts of Dayananda on the Vedas, as if he has gone away from the alignment of the old Risis. Not only Sayana, Mahidhara, Skanda Svami and Venkata Madhava are authoritative on the Vedas, there are the *Rishis*, Yaska,

डरबन (दक्षिण अफ्रीका) में 13 से 17 और 21 तथा 22 दिसम्बर को अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन हो रहा है। सार्वदेशिक सभा (दिल्ली) के तत्त्वावधान में आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका की ओर से यह महासम्मेलन आयोजित किया गया है। इस महासम्मेलन में भारत से काफी संख्या में आर्य जन जाना चाहते थे—जिस तरह मारीशस, नैरोबी और लन्दन के अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलनों में गए थे। किन्तु भारत सरकार ने केवल कुछ ही लोगों को जाने की अनुमति दी। हमारी जानकारी के अनुसार श्री स्वामी सत्य प्रकाश जी सरस्वती, श्री ओम्प्रकाश त्यागी महामंत्री सार्वदेशिक सभा, श्री ब्रह्मदत्त स्नातक प्रेस सचिव सार्वदेशिक सभा श्री बालेश्वर अग्रवाल, और श्री सुभाष (बम्बई) को ही अनुमति मिल पाई है। इसी अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका की हीरक जयन्ती भी है। लन्दन, अमरीका, फीजी, हालैण्ड, नैरोबी और मारीशस से अनेक आर्यजन इस महासम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए पहुंच चुके हैं। 15 दिसम्बर को अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के प्रधान पद से श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती ने जो भाषण दिया है उसे अविकल रूप से प्रकाशित करने का गौरव भारत में केवल 'आर्य जगत्' को ही प्राप्त हो रहा है। वही भाषण यहां दिया जा रहा है।

—स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती—

and the Arya Samaj opened the doors of this privilege of studying the Vedas to all and sundry. This was a unique thing to the traditional Hindu—India and it was natural that the Hindu revolted and protested. At the start of my lectures in India, I have been asking my audience to recite with me the Gayatri and other mantras. But wherever I have lectured at a Hindu temple, my sharing of the Gayatri mantras with the mixed audience was not liked by the priest and several times he mildly protested.

The entire burden of reviving the study of the Vedas has fallen on the Arya Samaj. The orthodoxy is also by and by moulding itself according to the new upsurge in the society Of course, the Hindu leader feels shy in his direct involvement. I have very much appreciated the gesture of Svami Gangeshvaranand, a blind Sannyasi, who has been able to live to an age beyond century, to have got the text of all the four Vedas well-edited and printed into one single volume. He has toured in almost all the countries where Indians are resident, and has luxuriously placed a volume of his massive edition of the Vedas. He has also brought out two volumes on the translation of the Samaveda. While I basically differ from his mythology—imposed translation of the Vedic texts, I give him credit for his popularization of the Vedas among all and sundry. He has

Panini, Yajnavalkya, Gotama, Kapila, Kanada, Patanjali and the *Rishis* of the ten or eleven Upanisads who can speak with a better authority on these *Apauruseya texts* Dayananda holds the same position, not an iota less, not an iota more And this is why in his life time, he made no compromise on two major issues. on the Veda and on the idolatory. Even left alone, the Arya Samaj would fight out on these two issues Rest assured that one who believes in idolatory or the theory of incarnations and other nonsenses of this type, *would try to drift you away from* the Vedas and would ask you to accept the Tulsi's Ramayana, the Gita, the Hanuman Chalisa or any other literature of the type to be included in your Dharma Sastra (the Hindu Dharma Sastra).

These days, we hear of so much pressure in India among a certain group of Hindu enthusiasts to get the Gita accepted as the key-book of Hinduism. This is not the occasion for me to speak about the Gita Svami Dayananda during his life-time challenged the orthodoxy of the Kashi Pandits if it could show the sanction of the idol worship in the Vedas. The challenge stands today as such. Those who suggest the Gita to be accepted as the key-book of Hinduism appear to be clearly motivated. If we, in the Arya

Samaj, accept the Gita, they know that then, they shall be able to build up a case for the concept of incarnation and idolatory also and also a case in favour of the Bhakti Sampradaya. I do not know how strongly you feel at this point. I know, some of the best passages in the Gita are verbal reproduction of the lines in the Upanishads. I know, the Gita puts up a strong case for the Karma Siddhanta and the cycle of life and death. I love the passages on the Sthitaprajna. While the Gita in the past hundreds of years did not inspire Indians for a dynamic life (it was merely a handbook of the advaitavadins of the school of Shankara, or a hand-book of the Bhakti-marga of the school of Ramanuja), it gained a new popularity soon after Lokamanya Tilak wrote his Gita-Rahasya, or Gandhiji gave us his fresh vision, or when our Theosophists popularized it in several countrys abroad.

But the position of the Vedas is quite distinct. The Gita is a composition of the post-Mahabharata period. So long as you refer to the Gayatri and the Shantipatha, so long as you have the Vedarambha Sanskara, so long as you have marriage-rituals, so long as you have the guiding phrases of the type of *asato ma sad gamaya, tamaso ma jyotirgamaya*, so long as you have the tradition of the yajna, or the Patanjala Yoga, how can you stop at a composition which belongs to a recent age. I would not like to speak further in respect to the Gita, which I also love to read so often, of course with some caution

Only a four years back I attended the Indian Science Session at Ranchi (Bihar) and I was pleased to see that the function began with the recitation of the Rigvedic verses In one of the meetings of the Indian Chemical Society at Calcutta, when the Bengali maidens recited again the same mantras, I was thrilled at the invocational music. Please remember, that this thing could not have happened in the pre-Dayananda period I would like my friends attending this great Vedic Sammelan to realize some of these points. The Vedas give you full freedom to accept truth or goodness from which-so-ever place it comes. But the Vedas have a unique position in human history which no other text can acquire. This book belongs to the entire humanity irrespective of caste, creed, colour or nationality

I have been a student of science, not of history. You can raise so many questions regarding the Vedas : some relate to history, and others relate to the scientific principles, some relate to the text and some to interpretation and the others relate to culture and civilization. I shall be happy, if you in this Conference divide yourself in different groups and discuss on as many points as you can. It is not always easy to answer all these questions. If I give an answer to any of them, you would immediately answer—what is your reason for the validity of this answer ? How did you arrive at this particular answer ? I have a scientific methodology for my satisfaction. I am not a person trained for advocacy. There are other scholars who would help you there, not me.

I am for the Vedas for reasons of my own :

(i) As far as I have read the Vedas in my own way, there is not one line in the Vedas in which *a human being of history* has a reference. No man between you, your Divine Creator and the Divine Creation. In our Upanishads, figure persons like Yajnavalkya, Pippalada and others In the Brahmana literature, we have Yajnavalkya, Shandilya and others. You cannot read Quran without Muhammad, Bible without Christ, the Gita without Arjuna, Dhritarashtra and Krishna But you can read the Veda without coming across a single man of history.

(ii) When the Gita was written or spoken, it was in Sanskrit language, which had already reached its perfection prior to the Gita. Prior to the Holy Quran, we had the fully-developed Arabic and so with the Holy Bible and the other man-spoken books. But prior to the Rigveda we have not even the rudiments of a language. The language of the Rigveda has *no history of its EVOLUTION*, of course, the Vedic language has a history of *degradation, vikrti and apabhramsha*. The language of the Rigveda is the Source Head of so many languages. It is not a language *derived* from some other one. At least we have no proofs of any language existing prior to it. It has the history of its *downs*, not of its *ups* (one part of the curve, the *descent* ; on curve for its *ascent*) . And so long, this fact remains unchallenged, I cannot place the language of the Rigveda (and the Rigveda also for its contents) in the category of any other language (or any other literature).

(iii) The position of the Rigveda (and for that matter any other Vedic Samhitas) is unique in the world literature, including the other Sanskrit literature. For its uniqueness, I would say, *it is only for the Rigveda*, that Yaska's Vedanga, the *Nirukta* with its *etymological methodology* is applicable—not for any other book, be a Vedanga, Upanga, or the Upanishad. This fact has been accepted by all the commentators. The word *go* (गो) may mean the sun, may mean the earth, may mean the both, and may mean any other things also. The words of the Vedas are plastic or fluid in structure: all the nouns are derived from the akhyata (roots or verbs), and have multiplicity of interpretations. This is not so in a Sastra where each word has its own restricted sense. In the Yoga Shastra, the words Yama, Niyama and Samyama have restricted meanings. In Panini's Ashtadhyayi, Karta, Karma, Karana or Sampradana, each word has one and only one technical meaning—but not in the Rigveda. The word *Sapta* in Arithmetic means only *seven* but in the Veda, it may have any connotation based on the root. I would ask my scholarly audience to ponder over this special and exclusive privilege assigned to the Veda only, and to no other book in the world. Whosoever be the commentator (Dayananda, Mahidhara, Sayana, Max Muller or any other distinguished scholar), there is no dispute on this point. The Vedic lines have words which are in the causal or plastic form (yaugika and yogarudhi) and not rudhi). You cannot put the Gita or the Valmiki Ramayana in this category.

And thus, the Vedas belong exclusively to a singular category, in which no other book of the world can be placed.

(iv) **Every species has a natural language of expression compatible to the organs of speech, organs of hearing and organs of thinking** Nobody would disagree with a simple fact that almost all the creatures of our familiarity have some sort of perception, they respond to them and give out their impressions to others, particularly to them who belong to their own species. In short, we shall say that they have some degree of Chetana, they have a hearing aid and they have an organ of speech Some dominatingly respond to light, some to sound, some to smell and some to touch. One of the most wonderful organ is the organ of speech. Birds, cats, dogs, lions, elephants, mosquitoes, horses, goats, cows—all of them have characteristic organs of utterance, they differently give out sounds. Through these sounds, they express themselves. These sounds go to build up some sort of *language*.

Man has also been provided with an organ, quite different from the vocal organs of other creatures It extends from throat and terminates at lips. With the aid of the tongue and the breath, *it can pronounce distinctively* the entire phonetic alphabet from a (अ) to m (म). Be you a negro, or a Red Indian, a Chinese or an Arab, you are privileged to have this vocal organ Just as we have a speaking organ for the entire alphabet, we have a hearing organ, corresponding to it, i e. we can, by our ears, distinctly and discriminatingly hear the entire alphabet. I hope, you would try to answer this querry : what are the implications of the fact that man alone is given an entire alphabet-pronouncing vocal device ? If *you think* about it with some seriousness, you would come to a conclusion: man's *natural language* is envisaged to be made up of *distinct alphabets*, in this aspect, man's natural language should be different from the language of other animals Just as the language of animals is of divine origin, man's language is also a divine one, quite expressive through the medium of *alphabets*.

All the animals have divine languages and man too. Just as man's vocal organ is different from the organ of other creatures, man's *cetana* (thinking, arguing, and the potentiality of comprehension) is also different from that of any other creature. These vocal and mental complexes have placed man in an entirely different and distinct category. And for such reasons, man's divine language including its transference from ancestory to posterity and its variance through ages essentially differs from the languages of other animals: (i) People who were born in the first group of man's history got the *divine revealed* language; this language was transferred to the subsequent group through *instruction*; by and by, in man's society, the importance of mother, father and teacher increased, and the teacher became supreme in matters of language and learning. In case of other animals teacher is non-existing; father has only biological significance; and mother nourishes her child for a short period—**the entire language and learning of the animal is by *instinct* (which is another term for *revelation*). The first man (or rather the first group**

of men) in the earliest stage of our society worked with instinct, he had the revealed contents of knowledge compatible with his analytic vocal organ, and his specific and singular *chetana*; this revealed nature of language and the knowledge-content gradually in his evolution became *instructive* (not instinctive), and the importance of teacher became more dominant than the importance of mother and father.

I have here indicated a mere outline of my thinking. Perhaps it would help you in understanding what we exactly mean when we presume that the Vedas came to a few of us at the start of man's evolution in society—man's language began with the language of the Vedas, and our ancestral man by and by developed on such an essential minimum given to him

The Vedas, all our Rishis, Dayananda and the Arya Samaj therefore accept *revelation* in the first stage (no society, no species can evolve from Zero), and the evolution in later stages. This is what is meant by the *svatah pramanatva* (Supreme Authority, for the validity of which no other authority is needed) and *apaurusheyatva* (non-man-made) of the Vedas. While the Vedas do not for their validity depend on any other authority, their interpretation depends on three points.

(i) The Vedic Mantras and the code of conduct of man both are revealed or God-given and in that sense, most natural, and hence no Vedic verse is to be interpreted against man's natural code of conduct.

(ii) The Veda is *apaurusheya* (non-man-made, or revealed through the Grace of God) and the Srishti (the entire organic and inorganic creation) is also apauruseya, and hence the interpretation of the Vedic Mantra should be consistent with the Rita in the Creation. Thus means, in other words, it should not go against what we see in Nature. This again means that the Vedas and the Sciences should be supplementary and complementary with each other, and not *contradictory*.

(ii) Being the earliest revealed book, no line of the Veda should have a reference to *human history*—the Vedas would speak of man in general, but not of a man of human history. The Vedas can speak in general of rivers and mountains, but not of the Alps or the Everest, nor of the Thames or the Ganga. The Vedic mantra may refer to lands in general but not to India, England or Japan. Our motherland is the entire Prthivi, and we flourish under the light of the Sun and Moon, but we are neither Indians, nor Thais nor of any other politically so-called mother-country. The Vedas shall glorify and invoke the bounties of Nature, not persons of human history.

I have tried to place some of my views in regards to what I feel about the Vedas. Since the earliest times to the immediate pre-Mahabharata we had the most dynamic creative period of human history. In this period, I am not acquainted with even a book, particularly in India, whose contents are not pivoted round the Veda. This speaks by itself the position of this great text. But there is another side of it. The vested interests of individuals brought the Vedas also into disrepute. They became the books of heinous *ritualism* when the society became static. This has been the saddest side of our history. And a time came, when the Vedas became a text of maximum controversy. This brought discredit to everything supported by the Vedas. Supreme God, the Yajnas, the Vedic conduct of life as depicted by ritualism. It brought science and philosophy into disrepute. A number of atheistic groups developed to oppose the Veda-based society.

It goes to the credit of Dayananda and the Arya Samaj to raise a slogan: Go back to the Age of the Vedas: an age of rationalism, purity and high values of life. Study the Vedas on the lines of Panini, Yaska, the Sages of the Upanishads and the Upangas. Our interest in the study of the Vedas has considerably increased during the past one hundred years. It is gaining momentum. I am glad, we, who love the Vedas, are participating here in the great city of Durban, probably for the first time, to create a healthy atmosphere for the study of the Vedas. We are living in a queer age today: an age of fast-growing Sciences, Technology and Socialism, an age of quick transport, communication and internationalism, an age of exploitation of natural resources with speed, an age of tension and competition, an age of wars, peaces, pacts, and truces, an age of fresh environmental problems, an age of pollution—awareness, an age of mass scale frauds, and new superstitions, an age of frustration, suicide, murders and divorces, an age of tobacco, alcohol and drug-addiction Naturally we live in an age of maximum contradictions and diversification of ideologies. Perhaps, the Vedic approach may indicate to you a new guide-line to restore peace, harmony and benevolence. In that lies the success of this great International Vedic Conference. We would like to achieve something in this International get-together. Perhaps we shall be able to plan something for the next century.

During the past one hundred years, the Arya Samaj has tried to create an awakening among Indians, particularly Hindi-speaking Indians. It has gone to distant lands abroad outside the frontiers of the Indian peninsula Its contributions to countries south of the Equator are very well known—from the West Indies to South Africa. We have now to consolidate this work Recently I have been to Holland where Bharata-vamsiya Surinamis have settled down in large numbers. About 20% of them are the Arya Samajists They speak Dutch language with fluency. The older generation speaks old Bhojapuri, the dialect of Eastern U.P and Bihar, and some sort of the present day Hindi. They very much feel the paucity of the literature of the Arya Samaj in Dutch language. Children of Indians in Denmark speak Danish language with proper accents, and so the Norwegian Indians speaks Norwegian language. May I ask you whether you have anything of the Vedic heritage to give to these children in their language. Similarly in your Republic of South Africa, may I know what you are giving to your children in Bantu and Zulu languages and in African also. My best blessings to your children and grand-children who have adopted the nationality of these countries They shall have to study the Vedas, through their present day languages, and a few of them shall have to pick up the Vedic language too. The Vedas (and for that purpose, the Vedic Language too) constitute a classics of an International character. I shall expect all your children learning the tenets of the Vedic Dharma through the languages of your nationalities. This work has to be done in your respective countries, and such International Conferences, as the present one, will have to establish centres for the promotion of this literature. The joy of reading the Vedic Dharma through these languages will have to be shared by the original residents of these countries also. I have seen in my tours to different countries that Indian children mix and play without any complex with the children of that land, and I shall feel happy that through your children, through your youths, and through your people, the best that you possess in your heritage would pass on to young and sundry of the land where destiny has taken you today. The Arya Samaj is a movement to create an awareness in people of all faiths in respect to what truth is and what its blessings are. One cannot know truth unless he has been told what untruth is. The untruth gets its prevalence in all theologies of the world today as hypocrisy, greed, superstition and credulities. The membership of the Arya Samaj is open to all who are avowed to truth, to the sanctity of life, to the natural and scientific theism and who submit to the Divine Creator and His Creation throbbing with Truth, Goodness, and Beauty.

The task before us is not an easy one—all of us shall have to shoulder responsibilities, we shall have to organize ourselves. We shall have to change an attitude which we have adopted so far in India towards certain communities for national or some other reasons. We have to work in countries where dominant theologies have been Buddhism, Christianity and Muslim, just as in India we worked in the midst of the so-called Hinduism. For this work, we need missionaries of ability and dedication. It is high time that we establish centres of training young boys and girls for this mission work. We can pick up these trainees from countries like Norway, Denmark, Germany, Holland, Spain, Mauritius or Surinam, bring them to a centre in India (to me the best place apears to be Madras, Ajmer or Hardwar), train them for a year or two, then send them to their respective countries for work. You shall have to finance them as best as possible. By and by, their countries of work would take up the burden of expenses. I have given an idea; we all can work out the details. For the present, get an Indian youngman from Norway, who speaks good Norwegian, one from Denmark who

(शेष पृष्ठ 9 पर)

पत्रों के दर्पण में

दीपावलि विशेषांक की सराहना में

(१)

'आर्य जगत' का दीपावली विशेषाक बहुत बढ़िया है। जब इसके साधारण अक ही संग्रहणीय हैं तो विशेषांक तो बढ़िया होता ही। दीपावली पर कवितायें एवं ज्ञानवर्धक सामग्री का चयन एवं ऋषि के निर्वाण पर एक अलभ्य श्रद्धांजलि व अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का लेख बहुत बढ़िया थे। अपने सम्पादकीय में आपने आयसमाज सान्ताक्रुज के महामन्त्री श्री देवरत्न जी आर्य की योजना का उल्लेख किया है। यह नई योजना आर्यसमाज के इतिहास को एक नया मोड़ देने के तुल्य है और इस योजना के जनक श्री देवरत्न जी कपूर का यह विचार अक्षरशः सत्य है कि इस के जनक श्री देवरत्न जी कपूर का यह विचार अक्षरश: सत्य है कि इस योजना से 'आर्य समाज के विद्वानों की अस्त होती हुई पीढ़ी को पुनर्जीवन प्राप्त होगा और स्वयं आर्य समाज मे भी नये रक्त का संचार होगा।' इस योजना के कारण अथवा आर्य समाज के सिद्धान्तो से प्रेरणा लेकर जो 'नया रक्त' आर्य समाज मे प्रविष्ट हो उसकी निर्माणकारी शक्तियो का अधिकतम उपयोग कैसे लिया जाय, इस पर आर्य समाज के कर्णधारों को गहराई से विचार करना चाहिये।

यदि इस योजना से आर्य समाज का अधिक विस्तार अभीष्ट हो तो केवल वेद-वेदाग के साहित्यकारों को ही सम्मानित करने से यह लक्ष्य पूरा नही होगा, उन साहित्यकारो को भी साथ लेना ही होगा, जिनकी आवाज का जनसाधारण पर प्रभाव है। अन्यथा उच्चकोटि की रचनायें केवल इने-गिने बुद्धिजीवियों का मानसिक भोजन बनकर रह जायेंगी।

(२)

आर्य जगत् का दीपावलि विशेषांक वास्तव में महर्षि दयानन्द के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। इस अंक में युगद्रष्टा स्वामी दयानन्द का चित्र बड़ा आकर्षक है। श्री अशोक कौशिक के लेख महत्वपूर्ण हैं। डॉ० गणेशी लाल का लेख "क्रान्तिकारी श्याम जी कृष्ण वर्मा" स्वतन्त्रता संग्राम में आर्य समाज के योगदान का स्मरण करता है। श्री दरबारी लाल जी द्वारा लेख यद्यपि अग्रेजी में था तदपि उससे पर्याप्त जानकारी प्राप्त हुई। इतने सुन्दर अंक के संपादन एवं प्रकाशन के लिए बधाई। —सुन्दरदास, आर्य समाज, श्रद्धापुरी, नई दिल्ली।

(३)

आर्य जगत् दिपावली विशेषाक देखकर चित्त प्रसन्न हो गया विशेषांक में दीपावलि की सामग्री अनूठी और सुन्दर तो है ही पर इस विशेषाक को खास बात है आपका सपादकीय, जो कि विषय वस्तु को बेहतरीन तरीके से स्पष्ट करता है। युगद्रष्टा महर्षि दयानन्द सरस्वती का चित्रबहुत पसंद आया। विशेषाक मे छपी कविताएं समयानुकूल थी। इस विशेषाक के एक और जोरदार आकर्षण हैं गुजराती के राष्ट्रकवि—रमण लाल वसन्त लाल देसाई इतने आकर्षक और पठनीय संयोजन के लिए आर्य जगत् परिवार को बधाई! —ठाकुर सिंह तंवर [गुर्जर] ३ जवाहर मार्ग बागली देवास (म० प्र०)

महर्षि दयानन्द तीन मूर्ति भवन में

नेहरू स्मारक संग्रहालय ने "कांग्रेस और स्वाधीनता आन्दोलनों: १८८५ से १९४७" नामक प्रदर्शनी तीनमूर्ति भवन में आयोजित की है। इस प्रदर्शनी में उन सभी महान् नेताओ के चित्र हैं जिन्होने भारत के पुनर्जागरण में योगदान दिया। इन महान समाज सुधारकों में निम्न नाम विशेष उल्लेखनीय है—राजा राम मोहन राय, महर्षि दयानन्द सरस्वती, रामकृष्ण परमहंस, एम० जी० रानाडे, केशवचन्द्र सेन। इसी अन्तराल के राजाओं में निम्न नाम उल्लेखनीय है—महारानी लक्ष्मी बाई, नाना साहब, बहादुर शाह जफर और आदिवासी बिरसा मुण्डा।

कांग्रेस के अध्यक्षों तथा अन्य नेताओं के चित्र भी इस प्रदर्शिनी में है। वह चित्र जिसका संबंध आर्य समाज से है—लाला लाजपत राय का है। हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि ऐसा नेता जिन्होंने देश के स्वाधीनता संग्राम में भाग लिया और जो आर्य समाज से सम्बद्ध है, उनके चित्र इस प्रदर्शिनी मे अवश्य होने चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द का नाम ऐसा है, जिसे महात्मा गांधी की ओर से भी मान्यता मिली थी तथा जिसके जीवन से संबंधित दिल्ली के घण्टाघर चौक की घटना इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरों में अंकित है—जब इस वीर योद्धा ने अग्रेजों की संगीनों के सामने अपनी छाती खोल दी थी। इस प्रकार की घटनाओं के चित्र विशेष रूप से इस प्रदर्शिनी मे रखे जाने चाहिये।—डा० धर्मपाल आर्य महामन्त्री दि० आ० प्र० सभा, नई दिल्ली।

राष्ट्र धर्म के पुरस्कर्ता श्रीराम

लेख पढ़कर चित्त गद्गद् हो गया। रावण के प्रति विद्वान् लेखक ने कुछ भ्रमों का निवारण कर उदार दृष्टिकोण अपनाया है। रावणो के बारे में निम्न तथ्य अनुपेक्षणीय हैं—

सीता के अपहरण से पूर्व लक्ष्मण ने रावण की बहिन शूर्पणखा की नाक लक्ष्मण ने काट दी थी। इस अपहरण के बाद रावण ने सीता को अशोक-वाटिका में ही स्वतंत्रत बिना किसी प्रकार के उसके प्रति अग-स्पर्श व किसी अन्य प्रकार के लुभावनों पर मिथ्या शब्दों द्वारा उसे अपने वाक्-जाल मे फंसाने के प्रयास के। बाल्मीकि रामायण के एक श्लोक के अनुसार रावण सीता से कहता है कि "मैं तो तुझ चाहता हूं। पर तू मुझे नही चाहती। जब तक तुम नहीं चाहोगी, मैं तुम्हारा स्पर्श नही करूंगा।"

इन तथ्यो के परिपेक्ष्य में आपके सम्पादकीय के निम्न शब्द सर्वथा सार्थक हैं—"उसका (रावण का) सबसे बड़ा दोष यही था कि वह आर्य राज्य को समाप्त कर रावण राज्य स्थापित करना चाहता था।"

—दीनानाथ सिद्धातालंकार, अशोक विहार, दिल्ली-५२

श्री स्वामी सर्वानन्द जी का अभिनन्दन

जो जाति व राष्ट्र अपने कर्यकर्ताओं नेताओं का अभिनन्दन नही करती वह प्रगति नही कर सकती। ७७ वर्षीय वयोवृद्ध सन्यासी श्री स्वामी सर्वानन्दजी (पूर्वनाम पं० रामचन्द्र जी) दयानन्द मठ, दीना नगर के संचलक हैं। अपने पुज्य गुरु श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के पद चिन्हों पर चलते हुए उनका कार्यभार सम्भाले हुए हैं। दयानन्द संस्कृत विद्यालय से निकले हुए सैकडो विद्यार्थियों का विचार है कि अपने अपने पूज्य गुरु श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का अभिनन्दन किया जावे। सारे देश मे उनकी बडी ख्याती है, अत: उनके सन्यास ग्रहण करने की वर्षगांठ १-६-८६ को उनकी सेवा मे ग्यारह लाख रुपये की राशि भेंट की जावे, जिससे वे यति मण्डल द्वारा किये जा रहे वेद प्रचार व अन्य कार्यक्रमो को तीव्र गति दे सके जिसके लिए धन एकत्रित करने का अभियान आरम्भ कर दिया गया है। यदि एक हजार दानी महानुभाव ग्यारह ग्यारह सौ रुपया की राशि दें, तो यह धन शीघ्र एकत्रित किया जा सकता है। दयानन्द मठ दीना नगर में २४-२५ अगस्त १९८५ को हुई यति मण्डल की बैठक में श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज (आचार्य गुरुकुल झज्जर हरियाणा) ने सब उपस्थित सज्जनो को अपील की कि वे सब मिल जुलकर तन-मन-धन से इस कार्य मे जुट जावें। जिन महानुभावों का श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज से सम्पर्क रहा है, जो उनके जीवन के बारे में उन्हें निजो अनुभव हुआ हो वह संयोजक श्री स्वामी सर्वानन्द अभिनन्दन समिति दयानन्द मठ दीना नगर (पंजाब) के पते पर शीघ्र सूचित करें। कार्यकर्ता प्रधान—श्री महात्मा दयानन्द, सयोजक—देव शर्मा (वान प्रस्थ) तपोवन, देहरादून

आर्य सत्याग्रह हैदराबाद : पेंशन का मामला

जिन लोगो ने हैदराबाद आर्य सत्याग्रह १९३८-३९ में सार्वदेशिक सभा द्वारा संचालित निजाम हैदराबाद के विरुद्ध आदोलन में भाग लिया था और जिन्हें जेल की सजा हुई थी। उन सब सत्याग्रहियों से निवेदन है कि अपना प्रार्थना पत्र अपने नाम, पिता के नाम, स्थान जहां से सत्याग्रह के लिए गए थे और जहां गिरफ्तार हुए, तिथि, जेल का नाम जहां आरम्भ में भेजे गए और जहां से छूटे तथा छूटने के तिथि के विवरण सहित अधिकतम २० दिसम्बर, १९८५ तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली ११०००२ के पते पर भिजवा दें ताकि उनका मामला केन्द्रीय सरकार के सामने पेंशन हेतु स्वीकृत कराया जा सके। इसके उपरान्त यदि कोई व्यक्ति छूट गया तो सार्वदेशिक सभा उनके मामले में किसी भी प्रकार के सहयोग के लिए उत्तरदायी नहीं होगी। —रामगोपाल शालवाले, प्रधान सार्वदेशिक सभा

सत्याग्रहियों की दुआयें

हैदराबाद के सत्याग्रहियों को और उनकी विधवाओं को भी जून १९८५ से ५०० रु० मासिक सरकार द्वारा देने के समाचार पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। आपके अथक प्रयत्न इस दिशा में रहे हैं और यह अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य का पुण्य आपको मिला है। अब तो कुछ सौ की संख्या में ही सत्याग्रही अथवा उनकी विधवाएं रही होंगी। उनकी आत्माएं आपको दुआएं देंगी। इस मानव सेवा के लिए कृपया बधाई स्वीकार करें।

—ब्रह्मदत्त, जिकपार्क, मोतीनगरी स्कीम, उदयपुर

Presidential Address ..... (पृष्ठ ७ का शेष)

speaks good Danish, one from Holland who speaks good Dutch, one from Mauritius or France, who speaks good French. You can choose from Burma, Thailand, and one from Japan also in course of time. Give some intensive training in India, and organize facilities for these trainees to work in their countries abroad.

Then we need some good International centres for production, publication and promotion of literature in the world. For the present, I propose three or four centres · New Delhi, Calcutta, London, Durban and Nairobi. In the past, we have been translating the great work, the Satyartha Prakash, into several world languages But this much would not do. The entire Satyartha Prakash has been written from *Hindu point* of view. It is an excellent work on INDOLOGY We shall have to bring out literature from another vision—a literature for Non-Hindus, a literature for Non-INDIANS. The author of this literature should have good familiarity of the people for whom he is writing He should be familiar with the history, art, culture and tradition of the people of the land, its customs, its rituals and new trends in the present age of science and socialism. On the face of it, it appears to be a different task, but once you take it up, I am sure, success would come to you.

In 1983, we celebrated the Death Centenary of Maharshi Dayananda at Ajmer on an International scale, but it was participated by Indians and people of Indian origin only By labelling a get-together as "INTERNATIONAL", it does not become "International". To my regret, there was not one WHITE, BLACK or YELLOW in that great massive gathering at Ajmer The future of Indians in the countries abroad is uncertain. You may be asked (or you may be pressurized) to leave these countries of your new adoption European Christians have left India, but Christianity still flourishes there. Share your temples, your good practices, and your literature with the people of the lands where you today are These people would then keep the candle burning here even when you are gone. I am not worried if from Uganda, Indians have been forced to go out. But I am worried that the *Arya Samaj*, the Vedic way of leading life, has to get out with them,—this is because, we did not allow Ugandians to share in our mission I shall be happy that day when a Negro or an Arab becomes the Purohita of our Yajanas, or a Chinese or Burmese becomes a Vedic Missionary, or an American or Canadian takes to the mission of Dayananda. Of course, all this would take time.

My affectionate blessings to all of you who are participating in this International Conference May your deliberations lead to truth, love, peace and harmony

आर्य विद्यासभा गुरुकुल कांगड़ी की बैठक

आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी [हरिद्वार] की बैठक रविवार १-१२-८५ को आर्यसमाज मन्दिर दीवान हाल मे सम्पन्न हुई। ३०-१०-८५ की कार्यवाही की सम्पुष्टि की गयी तथा सविधान को अन्तिम रूप देकर प्रकाशन की स्वीकृति दी गयी। शेष पदाधिकारियो तथा कार्यकारिणी के सदस्यों का निर्वाचन किया गया। कुल पदाधिकारी और कार्यकारिणी इस प्रकार है—प्रधान—प्रो० शेरसिंह, उपप्रधान—श्री सूर्यदेव और श्री वीरेन्द्र, मन्त्री—डा० धर्मपाल, सहायक मन्त्री—श्री प्रकाशवीर शास्त्री और श्री आशानन्द आर्य, कोषाध्यक्ष डा० हरिप्रकाश, सदस्य—लाला रामगोपाल शालवाले, स्वामी ओमानन्द, श्री हरवंश लाल शर्मा, महाशय धर्मपाल तथा सभी पदेन सदस्य। श्री शालवाले ने कहा कि मै गुरुकुल कांगड़ी के किसी भी झगड़े में नही पड़ना चाहता और न ही मैं वहाँ किसी सभा का सदस्य बनना चाहता हूं। मेरे पास सार्वदेशिक सभा का इतना कार्य है कि मुझे अन्य कामो के लिए फुरसत ही नही। वहाँ आपस मे लोग झगड़ा करते हैं, मेरे पास शिकायतें आती हैं। उपस्थित सदस्यों ने माननीय श्री शालवाले से एक स्वर में अनुरोध किया कि आप हमारे मान्य नेता हैं, आर्यसमाज की शिरोमणि सार्वदेशिक सभा के प्रधान हैं, आप पंजाब सभा के त्रिशासन के भी सर्वमान्य अधिकारी हैं; अत विद्यासभा का सदस्य बनने की हमारी प्रार्थना को अवश्य स्वीकार करें। अन्त में मान्य लाला जी ने अनुरोध स्वीकार कर लिया। इस पर सभी सदस्यो ने हर्ष व्यक्त किया। अन्य विषयो पर भी निर्णय किए गए। कुलाधिपति, कुलपति, मुख्याधिष्ठाता, सहायक मुख्याधिष्ठाता, आचार्य तथा आचार्या कन्या गुरुकुल देहरादून सभी ने गुरुकुल की गौरवमयी परम्परा के अनुरूप मिलकर कार्य करने का सकल्प दुहराया।—सत्यपाल

वेद विद्या का महारथी

राजा रणंजय सिंह

(१)

ईश्वर की भक्ति अनुरक्ति अति सत्य प्रति,
ब्रह्मचर्य शक्ति जिस व्यक्ति में अपार थी।
दया की जो मूर्ति था आनन्द सुधा वर्षक था,
सारस्वती वाणी का जिसके अलकार थी।
जिस परमहस मे राजहस से अधिक,
क्षीर नीर न्याय बुद्धि विविध प्रकार थी।
धन्य है 'रणञ्जय' वह त्यागी तपस्वी ऋषि,
स्वामी दयानन्द वेद विद्या का महारथी॥

(२)

ऋषि दयानन्द के हैं सच्चे अनुयायी तब,
दूर हम करेगे पाखण्ड के प्रसार को।
दूषित व्यापार और घूस की जो लेन देन,
मिट्टी में मिलायेंगे समस्त भ्रष्टाचार को।
रहने नही पायेगी कोई भी कुरीति कहीं,
सुधरेगा समाज ले विमल विचार को।
देश फूले फलेगा वसुधा की भलाई होगी,
मिलेगा महत्व 'रणजय' सदाचार को॥

पता—भूपति भवन, अमेठी, जनपद सुलतानपुर (उ० प्र०) २२७४०

बलराज मधोक : चूरू से लोकसभा के प्रत्याशी

अनेक प्रतिष्ठित एवं गण्यमान्य व्यक्तियों के सतत् आग्रह पर भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष श्री बलराज मधोक ने चूरू लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र से १६ दिसम्बर को सम्पन्न होने वाले उपचुनाव में प्रत्याशी बनना स्वीकार कर लिया है। चूरू की दयनीय स्थिति पर आज तक किसी सासद ने ध्यान नहीं दिया। वहाँ के हिन्दू मुस्लिम समाज से सदा आतंकित रहते हैं। गरीब हिन्दुओं के मकानों को पैट्रो-डालर के पैसों से खरीद कर उनमें मस्जिदें बनाई जाती हैं और फिर वहाँ से मुल्ला-मौलाना धर्मान्तरण के लिए निकलते हैं। इस बार जो लोकदल के प्रत्याशी हैं वे अत्यन्त वृद्ध होने से जनता की दृष्टि में किसी महत्वपूर्ण कार्य करने में असमर्थ हैं। कांग्रेस का प्रत्याशी भी अनुभव विहीन समझा जाता है।

भारतीय जनता पार्टी ने लोकदल के प्रतिनिधि के पक्ष में अपने उम्मीदवार का नाम वापिस लेकर हिन्दुत्ववादी लोगों को निराश कर दिया है। इसलिए यह आशा की जा रही है कि भाजपा के पक्ष में पड़ने वाले वोट श्री मधोक को प्राप्त हो सकेंगे। श्री मधोक अपनी हिन्दुत्ववादी विचारधारा के लिए विख्यात हैं। उनके खड़े होने से समस्त हिन्दू समाज में नया उत्साह पैदा हुआ है। सब की यह कामना है कि श्री मधोक जी जैसा हिन्दुत्वनिष्ठ व्यक्ति लोकसभा में पहुंच जाए तो सरकार के समक्ष हिन्दू हितों को प्रस्तुत करने वाली इस आवाज को आसानी से दबाया नही जा सकेगा। स्थानीय हिन्दू जनता राष्ट्रहित के लिए श्री मधोक के पक्ष में जी-जान से जुटी हुई है। —प्रो० वेदप्रकाश शर्मा

आर्य समाज कलकत्ता स्थापना शताब्दी समारोह

आर्य समाज कलकत्ता का स्थापना शताब्दी समारोह २१ दिसम्बर से २९ दिसम्बर तक कलकत्ता मैदान में आयोजित किया जा रहा है। इसमें आर्य जगत् के महान् विद्वान्, संन्यासी, उपदेशक एवं भजनोपदेशक भाग लेंगे। इस अवसर पर अनेक महत्त्वपूर्ण सम्मेलन एव विद्वानों की विचार-गोष्ठियां भी आयोजित की जायेगी। आर्य महिला शिक्षा मण्डल ट्रस्ट द्वारा "नारी उत्थान और आर्य समाज" विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया है, जिसमें क्रमश. १५ सौ, १३ सौ और ११ सौ के प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार दिए जायेंगे। शताब्दी समारोह स्थल पर महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत ग्रन्थों, वेद एवं वेद-भाष्यो की एक सुन्दर प्रदर्शनी का आयोजन भी किया जायेगा।

इस अवसर पर अनेक स्थायी एवं दूरगामी प्रस्ताव वाले महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने का भी निश्चय किया गया है जिनमें प्रमुख हैं—आर्य समाज कलकत्ता का शतवर्षीय इतिहास प्रकाशन, ऋषि की जीवनी एवं पूना प्रवचन का बंगला में प्रकाशन, हिन्दी-बंगला में कर्मकांड का प्रकाशन तथा स्वास्थ्य एवं स्वाध्याय केन्द्र की स्थापना के साथ-साथ अनेक अन्य उपयोगी हिन्दी-बंगला प्रकाशन।

सामाजिक जगत्

शोभायात्रा में सम्मिलित हों

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने अगामी 15 फरवरी 1986 को डी०ए०वी० शताब्दी समारोह पर निकलने वाले विशाल-शोभा यात्रा मे सम्मिलित होने के लिए सभी आर्य समाजो व कार्यकर्त्ताओ को विशेषकर दिल्ली की समस्त आर्य जनता से अपील की है कि इस दिन सभी लोग अन्य कार्यक्रमो को छोड़कर इस शोभा यात्रा में बडी सख्या में भाग ले। यह शोभा यात्रा प्रात 11 बजे लालकिला मैदान से प्रारम्भ होगी और विभिन्न मार्गों से होती हुई साय 5 बजे आर्य समाज मंदिर मार्ग, नई दिल्ली मे समाप्त होगी। इस अवसर पर अनेक कार्यक्रमो का भी आयोजन किया जा रहा है। —प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

ईसाईयों की शुद्धि

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा पटना द्वारा चलाये गये धर्म रक्षा महाभियान के अन्तर्गत आर्य समाज मठगुलनी (नवादा) के तत्वावधान में 3-नवम्बर को 16 ईसाई बन्धुओ ने स्वेच्छा से पुन: हिन्दु धर्म को अ गीकार कर लिया। लगभग 45 वर्ष पूर्व इन लोगो ने आर्थिक एव सामाजिक कष्ट के चलते ईसाई धर्म को स्वीकार कर लिया था पौरोहित्य श्री सत्यदेव आर्य मरुत ने किया।

—यमुना प्रसाद

बम्बई में दयानन्द निर्वाण दिवस

आर्य समाज सान्ताक्रुज द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण दिवस का आयोजन किया गया, इस उपलक्ष्य मे बुधवार 13 नवम्बर को महर्षि के जीवन से सम्बन्धित कार्यक्रम दूरदर्शन केन्द्र पर बम्बई, हैदराबाद तथा बगलौर केन्द्रो से एक साथ प्रसारित किया। इस कार्यक्रम मे आर्य जगत के प्रकाण्ड विद्वान् पं० उमाकान्त जी उपाध्याय (कलकत्ता) व श्री डा० सोमदेव जी शास्त्री ने भाग लिया। इसे 7 से 7-20 बजे तक चैनल नं० 2 पर दिखाया गया। लाखो व्यक्तियो को महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन तथा कार्यो का दिग्दर्शन कराया गया।

16 नवम्बर को बम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे आर्य समाज मन्दिर सान्ताक्रुज मे श्री माननीय शिवाजी राव पाटिल निलगेकर मुख्यमन्त्री महाराष्ट्र राज्य की अध्यक्षता मे महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाण दिवस का आयोजन किया गया। समारोह के विशिष्ट अतिथि श्री रामचन्द्र राव पाटिल विधि-न्याय एवं तान्त्रिक शिक्षा राज्यमन्त्री तथा प्रसिद्ध उद्योगपति दानवीर श्री दयानन्द आर्य मुख्य अतिथि थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई के प्रधान ओकार नाथ जी ने सभी उपस्थित विशिष्ट अतिथियो तथा जनसमुदाय का धन्यवाद किया। —कैप्टन देवरत्न आर्य

आर्य समाज-ग्रेटर कैलाश

आर्य समाज कैलाश ग्रेटर कैलाश I का वार्षिकोत्सव 30 नवम्बर से 2 दिसम्बर धूम-धाम से मनाया गया। जिसमें वेद सम्मेलन शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज का योगदान युवक सम्मेलन एवं महिला सम्मेलनों का आयोजन किया गया जिसमें उच्चकोटि के विद्वानों ने अपने-2 विचार रखे। उत्सव से पूर्व 25-29 नवम्बर तक आचार्य पुरुषोत्तम जी एम० ए० की सार गर्भित कथा हुई। तथा प्रतिदिन प्रातः काल अथर्व का यज्ञ स्वामी दयानन्द विदेह के ब्रह्मात्व मे सपन्न हुआ।

आर्यसमाज-बिहारीपुर

आर्य समाज, बिहारीपुर, दिल्ली में 7 दिसम्बर को वेद प्रचार का आयोजन किया गया। जिसमे स्वामी स्वरूपानन्द, श्री वीरेन्द्र कुमार शर्मा आचार्य राम चन्द्र शर्मा के उपदेश और प० चुन्नीलाल आर्य के सुन्दर भजन हुए। —बलेशकुमार शारी

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन

महर्षि दयानन्द होम्योपैथिक परिषद के तत्वाधान में दक्षिण-पूर्व एशिया अन्तर्राष्ट्रीय आर्य एवं होम्योपैथिक सम्मेलन सिंगापुर मे 6 जनवरी से 11 जनवरी 86 को होने जा रहा है। इस सम्मेलन मे 20 देशों के प्रतिनिधि भाग लेंगे। आर्य सम्मेलन का उद्घाटन Dr. Tony Tan Keng Yam वित्त, शिक्षा एवं स्वास्थ्य मंत्री सिंगापुर करेंगे।

इस सम्मेलन का अन्तिम समारोह सिंगापुर के राष्ट्रध्यक्ष करेंगे और इस अवसर उनको विद्वावन एवार्ड प्रदान करेंगे प्रोग्राम President Merlin Hotel Pte Ltd में होगा।
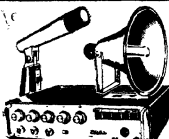
स्त्री आर्यसमाज, मंदिर मार्ग

आर्य स्त्री समाज [अनारकली] मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव 22 नवम्बर 1985 को बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ जिसमें [1] चारों वेदों के शतकों की पूर्णाहुति श्रीमती शान्ति देवी अग्निहोत्री के ब्रह्मात्व में हुई। [2] दयानन्द माडल स्कूल के बच्चों का मनोरंजक कार्यक्रम हुआ। इनाम में सभी को पैन दिए गये और अध्यापिकाओं को सन्ध्या हवनमन्त्र की पुस्तकें प्रदान की गई। [3] उत्सव में भाग लेने लेने वाली सभी बहिनों का वैदिक साहित्य के द्वारा अभिनन्दन किया गया, जिसका व्यय श्रीमती सरला जी सूरी तथा शकुन्तला गुप्ता जी ने किया। [4] वेद सम्मेलन की अध्यक्षता श्रीमती विद्यावती महाजन ने की। मुख्य वक्ताओ में उषा जी शास्त्री, सत्या जी सबरवा, प्रकाशजी आर्या, नरेन्द्र आर्या तथा कृष्णा वर्मा साधिका [गुड़गावा] थी। [5] समाज मन्दिर में रहने वाले सभी कर्मचारियों की धर्मपत्नियों को गर्म शाल प्रधाना जी के कर कमलों से प्रदान किया गया। [6] प्रसाद तथा चाय पानी का व्यय श्रीमती रूपासिंह ने किया।

—डा० चन्द्रप्रभा [मन्त्रिणी]

गोविन्दनगर में शोभायात्रा

आर्य कन्या इन्टर कालेज, गोविन्द नगर, आर्य समाज और स्त्री आर्य समाज गोविन्द नगर की संयुक्त शोभा यात्रा आर्य समाज मन्दिर से निकाली गयी। शोभा यात्रा का नेतृत्व श्री देवीदास आर्य ने किया। कालेज की तीन हजार छात्राओं सहित अन्य संस्थाओं के भारी संख्या में स्त्री पुरुषों ने शोभा यात्रा में भाग लिया

श्री धर्मपाल शास्त्री

श्री धर्मपाल शास्त्री ने अपना पूरा समय आर्य समाज के प्रचार के लिए समर्पित कर दिया है। वे एक सुलझे हुए ओजस्वी वक्ता हैं। जो समाजें अपने उत्सव व कथा के लिए उन्हें अमान्त्रित करना चाहें वे निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें। धर्मपाल शास्त्री महोपदेशक, द्वारा-आर्य समाज 'बापर नगर' मेरठ-250001

—आर्य समाज, शान्ति नगर, सोनीपत में दयानन्द निर्वाणोत्सव 10 से 12 नवम्बर तक श्री राम लाल मदान की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सभा में महात्मा प्रेमभिक्षु, प्रो० यशपाल, श्री रामचन्द्र, महात्मा दयानन्द, श्री ओम्प्रकाश, श्री चन्द्रभान और श्री अमर सिंह आदि के उपदेश और भजन हुए।

निबन्ध प्रतियोगिता का परिणाम

आर्य पथ ने पिछले दिनों विद्वान् लेखकों से मार्ग दर्शन हेतु तीन लेख निबन्ध के रूप मे मागे थे। विषय थे (1) शास्त्रानुसार वानप्रस्थी की दिनचर्या (2) शास्त्रानुसार गृहस्थी की दिनचर्या (3) शास्त्रानुसार संन्यासी की दिनचर्या।

हमे उच्च कोटि के विद्वानों द्वारा कुछ अमूल्य लेख प्राप्त हुये। स्वयं अति व्यस्तता के कारण हमने सब लेख एक विद्वान् महोदय के सुपुर्द कर दिये। अन्तिम निर्णय इस प्रकार है—

			पुरस्कार
1.	प्रथम	डा० नरेश कुमार, जे-235, पटेल नगर प्रथम, गाजियाबाद (उ०प्र०)	500 रुपये
2.	द्वितीय	श्री वीरेन्द्र मुनि शास्त्री, सी-817 महानगर, लखनऊ	300 रुपये
3.	तृतीय	डा० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी, प्रोफेसर्स कालोनी, श्यामगज, बरेली-343005	200 रुपये

विशेष—(1) श्री यशपाल आर्य-बन्धु मुरादाबाद 200 रु०, (2) श्री छाजूराम जी शास्त्री, यमुनानगर (हरियाणा) 200 रु०।

सब आदरणीय विद्वानों को ड्राफ्ट भेज दिये गये हैं।

—वि० प्रा० सेठी, सचालक आर्य पथ, सेठी बिल्डिंग, कृष्णनगर, दिल्ली-51

सूचना

"सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि श्री सुरेन्द्र सिंह आर्य एम०ए० (त्रय) का गुरुकुल ढाणा लाडनपुर (भिवानी) से दिनांक ८ अगस्त १९८५ से कोई सम्बन्ध नही रहा है। अत: उपरोक्त गुरुकुल के नाम से उनको कोई चन्दा आदि न दिया जाए। श्री सुरेन्द्र सिंह जी आर्य से भी विनम्र निवेदन है कि वे जहाँ कहीं भी हों, आकर गुरुकुल ढाणा लाडनपुर के सभी कागजात श्री प्रबन्धक महोदय को संभला दें। अन्यथा कानूनी कार्यवाही की जायेगी।"

भवदीय गजपतसिंह आर्य, प्रधान गुरुकुल ढाणा लाडनपुर चैरिटी ट्रस्ट, डा० हालुवास, जिला भिवानी।

दयानन्द माडल स्कूल में डी ए वी शताब्दी समारोह

डी०ए०वी० शताब्दी समारोह के अन्तर्गत माडल स्कूल, माडल टाऊन, जालन्धर मे 15 नवम्बर को को हवनयज्ञ एवं ऋषि-लगर का आयोजन किया गया। विद्यालय के समस्त छात्र-छात्राओ के साथ शहर के गणमान्य नागरिको स्थानीय डी०ए०वी० परामर्शदात्री समिति के प्रधान श्री सोहनलाल जी सूद, श्री बलदेवराज वर्मा, प्रधान आर्य समाज, माडल टाऊन आदि ने भाग लिया। विद्यालय के छात्र-छात्राओ द्वारा प्रस्तुत सामूहिक भजन एवं शान्ति-पाठ के साथ साथ हवन-यज्ञ का समापन हुआ।

—गायत्री पाठक

आर्य समाज-कृष्णनगर

आर्य समाज कृष्ण नगर दिल्ली मे 26 नवम्बर से 15 दिसम्बर तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। इसके साथ ही 9 से 14 दिसम्बर तक वेद प्रचार सप्ताह का कार्यक्रम रखा गया। जिसमे आचार्य सत्यप्रिय जी के उपदेश हुए।—अशोक पठानिया

गोपाष्टमी

श्री गोशाला जमालपुर गोगरी, मुगेर के वार्षिकोत्सव के अवसर पर गोपाष्टमी महोत्सव सम्पन्न हुआ। जिस के अध्यक्ष श्री अक्षयवर नाथ सिह और मुख्य अतिथि स्थानीय एम.एल.ए. थे। इस अवसर पर श्री धर्मस्वरूप, श्री देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी, डा० कौशल कुमार और श्री प्रेमानन्द के सुन्दर उपदेश हुए।

—आर्य समाज अजमेर के तत्वा धान मे महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। जिसमें महर्षि दयानन्द के देश, धर्म, संस्कृति और सम्पूर्ण मानवता के प्रति किए गए महान् उपकारों पर प्रकाश डालते हुए भावभीनी श्रद्धा-जलियां अर्पित की गई। आचार्य श्री गोविन्दसिंह जी के संयोजकत्व मे बृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया। मंत्री श्री रासासिंह जी ने सब के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।

—आर्य समाज, गाजियाबाद का वार्षिकोत्सव 24 से 26 नवम्बर तक मनाया गया। 20 से 23 नवम्बर तक महात्मा अमर स्वामी सरस्वती की वेद कथा हुई। श्री राम गोपाल वानप्रस्थ, प० ओम्प्रकाश खतौली वाले, श्री जयदेव वेदालकार, प्रो० रत्न सिंह और श्री बालदिवाकर हस आदि के व्याख्यान हुए।

—आर्य समाज, नत्थनपुर देहरादून का वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर मद्य-निषध-प्रदर्शनी और मद्यनिषेध सम्मेलन का आयोजन किया गया। श्री हीरासिंह बिष्ठ विधायक श्री यशपाल आर्य, मास्टर दलीपसिंह और श्री उम्मेद सिंह आदि ने उत्सव में भाग लिया।

श्री ब्रह्मदत्त स्नातक-सार्वदेशिक सभा की ओर से प्रेषित, स्वतन्त्रता सेनानी आर्य महा सम्मेलन के परामर्शदाता और प्रेस सचिव

डी०ए०वी०विद्यालय, बोकारो

डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल, मे 30 नवम्बर की प्रातः 7 बजे शिक्षको एवं कर्मचारियो ने सम्मिलित वैदिक सन्ध्या एवं यज्ञ मे भाग लिया। प्रत्येक माह इस तरह के दो सत्सग होगे, जिसमे विद्यालय के प्रत्येक कर्मचारी एव शिक्षको का भाग लेना अनिवार्य होगा। एक विशेष बैठक मे सम्बोधित करते हुए प्राचार्य जी ने डी०ए०बी० शताब्दी समारोह जो 1986 मे दिल्ली में होगा उनका परिचय तथा डी ए वी शताब्दी छात्रावास के लिए धन-सग्रह करने की अपील शिक्षक-शिक्षाओ से की।

—डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल बोकारो में बाल-दिवस मनाया गया। इस अवसर पर दिनांक 16 नवम्बर को विद्यालय प्रागण मे बाल मेले का आयोजन किया गया। मेले का उद्घाटन बोकारो जनरल अस्पताल के वरिष्ठ शल्य चिकित्सक एवं उप-निदेशक श्री डा० कुलदीपराय कपूर जी ने किया। मुख्य अतिथि के रूप श्री कृष्ण मुरारी पाडेय, सवाददाता 'आवाज' दैनिक पधारे थे। इस अवसर पर नगर के प्रतिष्ठित नागरिकों, बोकारो प्लाट के उच्चाधिकारियो सहित विद्यालय प्रबन्धकर्त्री समिति के सदस्यगण उपस्थित थे। मेले मे मे प्राप्त आय द्वारा विद्यालय के विद्यार्थियो में इस अवसर पर खूबसूरत बालपेन का वितरण किया गया। इस अवसर पर विद्यालय की चहुमुखी विकास की झाँकी देखकर उपस्थित जनता ने विद्यालय के प्राचार्य एव शिक्षको की मुक्तकठ से सराहना की।

—ऋषि निर्वाण दिवस एव दीपावली के शुभ अवसर पर रजौली मे 17 स्थानो पर वैदिक अग्निहोत्र यज्ञ आर्य समाज, रजौली के तत्वाधान मे सम्पन्न कराया गया, जिसका प्रभाव यहाँ की जनता के मानस पटल पर बडा ही सुन्दर रहा। युवराज राम, प्रधान

आर्य समाज बोकारो में ऋषि निर्वाणोत्सव

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस बार भी आर्य समाज बाकारो मे प्रकाश पर्व दीपावली एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाणोत्सव धूमधाम से दिनाक 12 नवम्बर 1985 को मनाया गया। सभी आर्य नर-नारी मोटर द्वारा चास से सोलह कीलोमीटर दूर गाव शिलफोर गये, वहाँ ग्रामवासियो के बीच हवन यज्ञ एव वैदिक धर्म तथा महर्षि जीवन पर प्रवचन हुआ। पश्चात् आर्य समाज की ओर से हजारो ग्राम वासियो एवं आदिवासियो मे भोजन के पैकेटो का वितरण किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य समाज के प्रधान डा० कुलदीपराय कपूर जी ने की।

—वासुदेव शर्मा 'वसु' आर्य पुरोहित

श्री देवीदास आर्य का स्वागत

हमीरपुर—आर्य समाज हमीरपुर के वार्षिकोत्सव के अवसर पर प्रख्यात महिला उद्धारक आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के वरिष्ठ उपाध्यक्ष तथा आर्य नेता श्री देवीदास आर्य का विभिन्न सस्थाओ की ओर से भव्य स्वागत किया गया। श्री आर्य के सेवाओ की भूरि भूरि प्रशंसा की गयी।

सभा की अध्यक्षता राजकीय डिग्री कालेज के प्राचार्य ने की तथा सचालन प्रो० लक्ष्मी शकर द्विवेदी ने किया। उत्सव मे सर्व श्री उत्तमचन्द शरार बलबीरसिंह शास्त्री, प्रो० सत्य काम आदि के भाषण हुये।

धर्मरक्षा सम्मेलन एवं निर्वाचन

करीम नगर आर्य समाज मे प्रथम बार धर्मरक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया जो उत्साह वर्द्धक और सफल सिद्ध हुआ, शुद्धि की महत्ता पर अनेक विद्वानो के भाषण हुए। तदनन्तर वार्षिक निर्वाचन मे निम्न पदाधिकारी चुने गए—अध्यक्ष श्री रामपाल लाहोरी, मुख्य कार्यदर्शी श्री गगुला भीमय्या और कोषाध्यक्ष डाक्टर प्रताप

शोक एवं श्रद्धाजंलि
श्री हरकिशन मलिक को श्रद्धाञ्जलि

हर किशन जी मलिक रिटायर्ड सेशन जज देहली का कुछ बदमाशो ने निर्मम हत्या कर दी। श्री मलिक परोपकारिणी सभा अजेमर के सदस्य थे। इस हत्या समाचार के प्राप्त होते ही 5 नवम्बर को दयानन्दाश्रम केसरगज अजमेर मे एक शोक सभा आयोजित कर मन्त्री श्रीकरण जी शारदा एवं श्री कर्म चन्द जी गुप्ता कोषाध्यक्ष परोपकारिणी सभा तथा कार्यालय सचिव श्री धर्मसिंह जी कोठारी ने भाव भीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। सभा के समस्त कर्मचारियो ने भी खड़े होकर अपनी श्रद्धा-ञ्जलि अर्पित की।

'तेज' के प्रधान सम्पादक का निधन

नई दिल्ली, 15 नवम्बर को साप्ताहिक तेज के प्रधान सम्पादक लाला धर्म पाल गुप्त का आज यहा निधन हो गया। श्री गुप्त कुछ दिनो से बीमार थे। वह 78 वर्ष के थे।

प्रमुख उर्दू शायर लाला धर्मपाल गुप्त 'वफा' उपनाम से शायरी करते थे। उन्हें 1983 मे उर्दू अकादमी पुरस्कार भी मिला था।

सोहनलाल मेहरा का निधन

अमृतसर। 15 अक्तूबर को लाला सोहनलाल मेहरा का देहावसान हो गया। लाला सोहनलाल जी प्रसिद्ध व्यापारी और धार्मिक प्रवृत्ति के महानुभाव थे।

प्रियरत्न का निधन

आर्य समाज सान्ताक्रुज के महामन्त्री कैप्टिन देवरत्न आर्य के अनुज भ्रात व स्वर्गीय आचार्य भद्रसेन जी के छठे पुत्र प्रियरत्न आर्य का नासिक मे 27 वर्ष की अल्पायु मे आकस्मिक निधन हो गया।

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर आपने अपने पिता श्री की स्मृति मे "श्रद्धा" कैसिट तैयार किया था। जिसका विमोचन अजमेर मे निर्वाण शताब्दी के अवसर पर किया गया था।

15 नवम्बर को साय 5 बजे उनकी आत्मा की शान्ति के लिए आर्य समाज मन्दिर सान्ताक्रुज मे शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसम बम्बई महानगरी की समस्त आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई द्वारा स्वर्गीय प्रियरत्न आर्य के कार्यों को स्मरण करते हुए उनके इस छोटी सी आयु मे चले जाने पर हार्दिक शोक प्रकट कर श्रध्दाजलि अर्पित की गयी।—प० प्रकाशचन्द्र शास्त्री

डी० ए० वी० कालेज जालन्धर

महर्षि दयानन्द सरस्वती की पुण्य स्मृति मे इस कालेज की स्थापना सन् १९१८ मे हुई। उच्च शिक्षा के क्षेत्र मे देश तथा समाज की सेवा करते हुए इस कालेज ने छात्र तथा छात्राओ के जीवन निर्माण एव चरित्रोत्थान के मार्ग पर अग्रसर करने का लक्ष्य भी अपने सामने रखा है। हम छात्रो को ईमानदारी, सच्चरित्रता, आत्मनिर्भरता, देश-भक्ति तथा सादगी का जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित करते हैं।

शिक्षा, खेल-कूद, संगीत तथा शिक्षातिरिक्त क्षेत्रो में इस कालेज ने भारत मे अपने लिए विशिष्ट स्थान अर्जित किया है। यहां से निकले हुए छात्रो ने जीवन के विविध क्षेत्रो मे प्रतिभावान् इन्जीनियर, डाक्टर, वकील, शिक्षक उद्योगपति, सैनिक पदाधिकारी, जनसेवक, कलाकार, गायक तथा ओलिम्पिक खिलाड़ी के रूपो मे—अपना स्थान बनाया है और ख्याति अर्जित की है।

विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में यहाँ के छात्रो ने सदैव ऊंचे मानदण्ड स्थापित किये हैं। वर्ष १९८५ में इस कालेज के छात्रो ने ६ स्वर्ण पदक प्राप्त किये तथा १३ ने प्रथम, ११ ने द्वितीय तथा ६ ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

इस कालेज के ३० छात्रो को इन्जीनियरी कालेजों में तथा २० छात्रो को मेडिकल कालेजों में प्रवेश मिला। यह 'कालेज ओलिम्पियंस की नर्सरी' के नाम से विख्यात है। क्योकि यहाँ से शिक्षित कई छात्रो ने ओलम्पिक खेलो मे भाग लेकर ख्याति अर्जित की है। पी० एच० डी० और डी-लिट् उपाधिकारी अध्यापक ६ विषयो में एम० ए०, एम० एस-सी० कक्षाओं को पढा रहे हैं। हिन्दी मे पी० एच-डी० की उपाधि के लिए शोध कार्य की भी व्यवस्था है। —प्रिंसिपल

आर्यसमाज फतेह आबाद

जिला अमृतसर, पंजाब

आर्य समाज फतेह आबाद (पंजाब) द्वारा लोक कल्याण के कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य चल रहे हैं यथा—

- **फ्री सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र**
- **फ्री कोचिंग सैंटर (Free Coaching Centre) तथा**
- **गरीब छात्र-छात्राओं को मुफ्त पुस्तकों, कापियों तथा वस्त्रों की सहायता**

आप से विनम्र प्रार्थना है कि लोक कल्याण के इन कार्यो को सफल बनाने के लिए

सिलाई की मशीनों, पुस्तकों या नकद धन राशि के रूप में योग दान दें।

सेवा के इस महान यज्ञ में बढ़-चढ़ कर आहुतियां डालिये और ईश्वरीय प्रसाद से झोलियां भर लीजिये।

निवेदक:—
बृज मोहन भंगारी
प्रधान

है कोई अग्रवाल समाज का युवक ?

है कोई अग्रवाल समाज का युवक जो एक सुन्दर, स्वस्थ, पढ़ी लिखी अग्रवाल कन्या को विधर्मी होने से बचा सके? लडकी का विवरण इस प्रकार है—

आयु 20 वर्ष, कद 5 फुट 1 इंच, दसवी पास, दो भाई, एक बहिन. पिता प्रिंसिपल, रंग साफ, नाक-नक्श अति सुन्दर, गृह कार्य मे दक्ष। सम्पर्क करें—विशनस्वरूप गोयल, पटवारी जी कानर, 3314 बैंक स्ट्रीट, करौल बाग, नई दिल्ली-5

टंकारा में शिवरात्रि पर ऋषि मेला

आगामी ऋषिबोधोत्सव [ऋषि मेला] शिवरात्रि के अवसर पर ७, ८, ९ मार्च, १९८६ को ऋषि जन्मस्थली टंकारा (राजकोट) में धूमधाम से मनाया जायेगा। ऋषिमेले से पूर्व २ मार्च ८६ से महात्मा दयानन्द जी (तपोवन आश्रम देहरादून) के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद पारायण महायज्ञ होगा। ऋषिबोधोत्सव पर ७, ८, ९ मार्च को भाषण प्रतियोगिता, सांस्कृतिक कार्यक्रम, श्रद्धांजलि सभा तथा शोभा यात्रा आदि अनेक कार्यक्रम होंगे। इस अवसर पर पधारने वाले ऋषि भक्तो के निवास तथा भोजन का प्रबन्ध टंकारा ट्रस्ट की ओर से निःशुल्क होगा।

कृपया इन तिथियो को अभी से अंकित कर लेवें और अवश्य ही सपरिवार टंकारा पधारने की कृपा करें।

—रामनाथ सहगल मंत्री, टंकारा ट्रस्ट

दयानन्द मौडल सी०सै० स्कूल में बालदिवस

दयानन्द मौडल सीनियर सैकेन्डरी स्कूल जालधर में पंजाब के शिक्षा विभाग के खेल प्रयोजक श्री वी-डी० गांधी की अध्यक्षता में बाल-दिवस मनाया गया। स्कूल के छोटे-बड़े सभी छात्रो ने विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन में उत्साह पूर्वक भाग लिया।

स्कूल के प्रिंसिपल श्री कंवल सूद ने अध्यक्ष महोदय का स्वागत करते हुए उनके प्रति आभार व्यक्त किया और स्कूल की गतिविधियो का भी उल्लेख किया तथा अध्यक्ष महोदय से आग्रह किया कि उनके स्कूल में एन०सी०सी० की व्यवस्था के लिए वे शिक्षा-विभाग से सिफारिश कर कृतार्थ करें। अपने अध्यक्षीय भाषण मे श्री गांधी ने स्कूल की बहुमुखी प्रगति और उपलब्धियो की प्रशंसा की और खेलो की प्रगति के लिए तीन हजार रुपए अनुदान की घोषणा की। अन्त मे स्कूल के चैयरमैन श्री सोहनलाल सूद ने मुख्य अतिथि एव समागत सज्जनो का धन्यवाद किया।

—प्रधानाचार्य

आवश्यकता

डी०ए०वी० नैतिक शिक्षा संस्थान नई दिल्ली के लिए प्रवक्ता (लेक्चरर) योग्यता—एम०ए०अथवा आचार्य। अर्हताएं - संस्कृत, हिन्दी व अंग्रेजी भाषा का ज्ञान। यजुर्वेद, दर्शन तथा महर्षि दयानन्द कृत ग्रन्थो के अध्यापन की योग्यता। गुरुकुल अथवा कालिज से सेवा निवृत्त अध्यापक भी आवेदन कर सकते है। वेतन-योग्यतानुसार। आवेदन करने की अन्तिम तिथि—१५ जनवरी १९८६।

—प्रो० रत्नसिंह, परामर्शदाता, नैतिक शिक्षा, डी०ए०वी० कालिज प्रबन्धकर्त्री समिति, चित्र गुप्त मार्ग, नई दिल्ली ११००५५.

मुद्रक प्रकाशक—श्री रामनाथ सहगल सभा मन्त्री द्वारा एस० नारायण एण्ड सन्स 7117/18 पहाड़ी धीरज, (फोन : 516518, 527335) दिल्ली से छपवा कर कार्यालय आर्य जगत्, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित। स्वामित्व—आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली। फोन (343718)

दो हमें साहस......!

दो वही श्रद्धा हमें भी, दो अनोखी शान अपनी !
सिंह-गर्जन से तुम्हारे ही कभी नभ गूंजता था
वीरता ऐसी कि भय ही पग तुम्हारे पूजता था
छा गये थे तुम चतुर्दिक् वेद का गौरव सुनाते
तर्जनाओ में तराने जीत के ही गुनगुनाते
तुम वही जो प्राण-प्रण से थे निभाते आन अपनी !

प्राप्त कीं लघु साधनो से सिद्धियाँ तुमने अनूठी
क्या टिकी सम्मुख तुम्हारे दम्भ की दीवार झूठी
गुरुकुलों को जन्म यत्नों से तुम्हारे ही मिला था
धर्म का सर्वत्र शीतल चाँदना तुमसे खिला था
लोक-हित में सम्पदा तुम कर चुके थे दान अपनी!

खून से अपने लिखा था क्रान्ति का इतिहास तुमने
भर दिया था जाति में नव आत्म-बल-विश्वास तुमने
युद्ध में अन्यायियों से इस सदी के सव्यसाची
था तुम्हारा नाम साहस-सत्य का पर्यायवाची
आपदाओ में न खोते थे कभी मुस्कान अपनी !

कार्य में प्राचीन शिक्षादर्श को परिणत किया था
वेद, संस्कृत और संस्कृति को पुन उन्नत किया था
शुद्धि का दे मन्त्र अरि-मुख कर दिया था बन्द तुमने
दी झुका संगीन छाती खोल श्रद्धानन्द तुमने
धर्म के हित अन्ततः दे ही गये तुम जान अपनी!

देख दुनियाँ ने लिया संगीन से उद्धत छुरा है
साम्प्रदायिक विष सियासत के जहर से सौ बुरा है
आज के हालात स्वामिन् ! और भी उलझे हुए हैं
है नहीं व्यक्तित्व तुम-सा, सर्वतः गहरे कुएं है
दो हमें साहस, विपद् लें झेल छाती तान अपनी!

—धर्मवीर शास्त्री, बी० १/५१ पश्चिम विहार, नई दिल्ली-६३

सम्पादकीयम्

यह आस्थाहीन पीढ़ी !

अमरहुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द ने एक जर्मन लेखक द्वारा लिखी गयी पुस्तक "दि हिस्ट्री आफ ऐसेनिस" के अंग्रेजी अनुवाद की भूमिका मे 'श्रद्धा' शब्द की व्याख्या की है 'श्रत् सत्यम दधाति सा श्रद्धा ।' वास्तव मे श्रद्धा का मूल सत्य है। इस कल्प के प्रारम्भ मे मानव के आदि काल मे वेदो के रूप मे जो सत्य व्यक्त किया गया था उसकी हम उपेक्षा नही कर सकते । वेद से लेकर उपनिषद् काल तक श्रद्धा का अखण्ड साम्राज्य रहा परन्तु उसके पश्चात् पतन प्रारम्भ हो गया तथा पाखण्डी धर्म गुरुओ ने भोले-भोले लोगो की श्रद्धालुता का लाभ उठाकर उन्हें अन्धविश्वास के गर्त मे धकेल दिया और उन्हे सत्य से दूर ले गये । सहस्रो वर्षों तक भारत मे सत्य का बोलबाला रहा परन्तु महाभारत काल में जब भाई-भाई के खून का प्यासा बन गया तब कौरवो की कूट नीति के कारण सत्य पर असत्य हावी हो गया, मानवता पर पशुता छा गयी तथा ज्ञान और भक्ति का सिंहासन डावाडोल हो गया । जिस भारत ने सत्य की पवित्रता का सन्देश सारे विश्व मे फैलाया था उसी भारत के रहने वाले लोगों ने अन्ध विश्वास के कारण सारी जाति को अज्ञान के अन्धकार मे धकेल दिया ।"

यह लिखने के बाद यजुर्वेद के 19 वे अध्याय के 30 वे मन्त्र मे श्रद्धा को सत्य की सीढ़ी बताते हुए उन्होने यह मन्त्र उद्धृत किया है—

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

उसके बाद के पृष्ठो में कट्टर पथी पादरियो और मुस्लिम हमलावरो द्वारा धर्म परिवर्तन के लिए किए गये अत्याचारो के ऐतिहासिक उदाहरणों की चर्चा है ।

श्रद्धा के संबध मे यह लिखने का तात्पर्य है कि स्वामी श्रद्धानन्द का सारा जीवन इसी को केन्द्र बिन्दु बनाकर उसके चारो ओर घूमता है सन्यास ग्रहण करते हुए स्वय उन्होने यह बात स्वीकार की थी और कहा था कि आज तक मैं अपना सारा जीवन ऋषि दयानन्द के वचनों पर आस्था रख कर बिताने का प्रयत्न करता रहा हूं । इसलिए मैं अपना नाम "श्रद्धानन्द" ही रखना चाहता हू । ऋषि के प्रति वे कितने आभारी थे इसका उदाहरण 'कल्याण मार्ग के पथिक' के आमुख मे स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा लिखित इन पंक्तियो से मिलता है—

"ऋषिवर ! तुम्हे भौतिक शरीर त्यागे 41 वर्ष (यह आज से 61 वर्ष पहले लिखा गया था—सं०) हो चुके, परन्तु तुम्हारी दिव्य मूर्ति मेरे हृदय पट पर अब तक ज्यो की त्यों अंकित है । मेरे निर्बल हृदय के अतिरिक्त कौन मरण धर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितनो बार गिरते-गिरते तुम्हारे स्मरण मात्र ने मेरी आत्मा की रक्षा की । तुमने कितनी गिरी हुई आत्माओ की काया पलट दी, इसकी गणना कौन कर सकता है ? परमात्मा के बिना, जिनकी पवित्र गोद मे तुम इस समय विचर रहे हो, कौन कह सकता है कि तुम्हारे उपदेशो से निकली हुई अग्नि ने ससार में प्रचलित कितने पापों को दग्ध कर दिया है ? परन्तु अपने विषय मे मैं कह सकता हू कि तुम्हारे इस सहवास ने मुझे कैसी गिरी हुई अवस्था से उठाकर सच्चा लाभ करने के लिए योग्य बनाया ।"

जिस संकट व परीक्षा की घडी से इस समय देश गुजर रहा है, उसमे कोई असामान्य बात नही है । ऐसी परिस्थितियो में किसी भी देश को संक्रान्ति काल में इनका सामना करना पडता है । परन्तु जिस कारण यह बोझ असह्य मालूम पडता है, वह यह है कि इसको सहन करने योग्य हम मे आत्मिक बल का अभाव है । आज की पीढ़ी मे न विश्वास है, न कोई ऐसी वस्तु है, जिस पर हम अपना विश्वास टिका सके । सामाजिक और आर्थिक ढाचे के बिखरने के साथ पुराने मूल्य भी बिखरते जा रहे हैं । परन्तु उनके स्थान पर नये मूल्य नहीं आये । आज धर्म एक स्वाग रह गया है और प्राचीन परम्परायें जिनमे राष्ट्र की आशा और आकाक्षाएं तथा उसका आदर्श निहित हैं, उनके प्रति अत्यन्त उपेक्षा के साथ मुह फेर लिया गया है । आज आध्यात्मिक खोखलापन बौद्धिक उच्चता का चिन्ह बन गया है । सच्चे मन से की गयी शंका भी आधे मन से अपनाए गये विश्वास से अच्छी होती है और समाज मे अनास्थावादियो के लिए भी स्थान होता है । परन्तु जब सारा का सारा राष्ट्र और खास तौर से उसका प्रबुद्ध वर्ग अनास्थावादी और निराशावादी हो जाय तो वह चिंता का विषय बन जाता है । यह स्थिनि मानसिक स्वास्थ्य की द्योतक नही है । राष्ट्र निर्माण के बडे से बड़े प्रयत्न इस अनास्था की चट्टान से टकराकर चूर-चूर हो जायेंगे । गीता के शब्दों—"संशयात्मा विनश्यति"—मे एक ठोस सत्य छिपा हुआ है । जिस मनुष्य को निरन्तर शकाएं घेरे रहती है, उसका नाश अवश्यभावी है ।

आज जीवन मे सफलता के लिए जिस प्रकार की शिक्षा-व्यवस्था पर जोर दिया जा रहा है, उसमें किसी ऐसे आदर्श की स्थापना नही है जिसकी प्राप्ति के लिए कोई आत्मोसर्ग कर सके । आदर्श के इस अभाव के कारण ही एक गहन मानसिक शून्यता चारो ओर छायी हुई है । यह सत्य है कि हमारे नेताओ ने लोक कल्याणकारी राज्य की कल्पना की है और उसमें गरीबी हटाने और सबके लिए भोजन, वस्त्र, मकान, चिकित्सा और शिक्षा आदि की व्यवस्था का प्रावधान है । ये सब बहुत अच्छी चीजे है और जीवन के लिए जरूरी भी है । परन्तु ये दैनिक जीवन की छोटी छोटी आवश्यकताओ के ही ऐसे विस्तृत रूप है, जिनमे किसी आदर्श मे निहित पवित्रता का अभाव है ।

हमारे वर्तमान नेताओ की एक बहुत बडी सफलता यह मानी जाती है कि उन्होने देश को धर्म निरपेक्ष राज्य की कल्पना दी है । नि सन्देह किसी भी राजा को धर्म-निरपेक्ष ही होना चाहिए । खासतौर से प्रजातन्त्र मे अगर राजा अपना धर्म प्रजा पर लादना चाहे तो वह सर्वथा गलत होगा । परन्तु हमारे देश मे तो साम्प्रदायिकता के हौवे ने धर्म-निरपेक्षता को धर्म के विरोध का समानार्थक बना दिया है । किसी भी मामले मे यदि हिन्दू धर्म या वैदिक धर्म की ओर सकेत भी किया जाय तो उसे शंका की दृष्टि से देखा जाता है । हम भारतीय संस्कृति के समन्वयकारी रूप की बात करते हैं । परन्तु यह भूल जाते हैं कि इसकी मुख्य धारा, जिसमे अनेक सहायक स्रोत भी सम्मिलित हैं, सरस्वती नदी के तट पर वैदिक ऋषियो के सामगान से ही फूट कर मानवोचित सभ्यता के प्रचार के लिए निकल पडी थी ।

यह कहे बिना नही रहा जा सकता कि भारतीय विचार जगत के श्रेष्ठतम तत्वो को जिन साधनो ने प्रेरणा प्रदान की उनकी एक समन्वयकारी संज्ञा है—हिन्दुत्व या वैदिक संस्कृति । इन्ही तत्वो के आधार पर हमारे राष्ट्रीय जीवन का ताना-बाना बुना है और इसी आधार पर हम राष्ट्र के भविष्य का निर्माण कर सकते हैं । इन तत्वो मे एक नई मानवता के सृजन की कल्पना है जिसमे व्यक्ति समाज की चिंता करेगा और समाज व्यक्ति की चिन्ता करेगा । वह महान सन्देश किसी एक जाति, धर्म, देश या राजनीतिक दल तक सीमित नही है, बल्कि वह तो "यथेमा वाच कल्याणीमावदानि जनेभ्य" की जन-जन का कल्याण करने वाली मंगलवाणी है ।

आज के हमारे नेता पश्चिम की ओर मुंह करके हरेक विषय मे उन्ही से प्रेरणा लेने का प्रयत्न करते है । धर्म और संस्कृति का नाम भी वे लेते है, परन्तु स्वयं उनके मन मे उनके प्रति कोई ऐसी आस्था दिखाई नही देती । आजादी के बाद के युग की यह सबसे बडी विडम्बना है । जिस युवा पीढी पर देश का भविष्य निर्भर है, वह आस्थाहीनता की ओर अग्रसर है । उसमे किसी ऊंचे आदर्श के लिए कष्ट सहन की प्रवृत्ति का अभाव है । आज की इस आस्थाहीन पीढी को स्वामी श्रद्धानन्द जैसे आस्थावान् और अपने जीवन को सत्य-परक श्रद्धा के केन्द्र बिन्दु पर आधारित करने वाले व्यक्तित्व की प्रेरणा की आवश्यकता है । यतिवर श्रद्धानन्द ! तुमने अपने गुरु के वचनों पर श्रद्धा करके अपने जीवन की आहुति दे दी । उस तेजोमय आस्था का एक कण आज की इस आस्थाहीन पीढ़ी को भी प्रदान कर दो जिससे इस देश का उद्धार हो ।

ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका के प्रारम्भ में ही लिखा है—"जिस समय मैंने यह ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश बनाया था । उस समय और उससे पूर्व संस्कृत भाषण करने, पठन-पाठन में संस्कृत ही बोलने और जन्म-भूमि की भाषा गुजराती होने के कारण से मुझको इस भाषा का विशेष परिज्ञान था, इससे भाषा अशुद्ध बन गई थी । अब भाषा लिखने और बोलने का अभ्यास हो गया है इसलिए इस ग्रन्थ को भाषा व्याकरणानुसार शुद्ध करके, दूसरी बार छपवाया है । कहीं-कहीं शब्द, वाक्य-रचना का भेद हुआ है सो करना उचित था क्योंकि इसके भेद किये बिना भाषा की परिपाटी सुधरनी कठिन थी, परन्तु अर्थ का भेद नहीं किया गया है प्रत्युत विशेष तो लिखा गया है । हां जो प्रथम छपने में कहीं-कहीं भूल रही थी वह निकाल शोध कर ठीक-ठीक कर दी गई है ।" यह भूमिका ऋषिवर ने सन् १८८२ (संवत् १९३९) में लिखी थी । आदिम सत्यार्थ प्रकाश सन् १८७५ में छपा था । उस समय उसे लेकर काफी तहलका मचा था । तब स्वामी श्रद्धानन्द महाराज ने यह लेख लिखा था । अब से ६८ वर्ष पूर्व लिखे गए इस लेख का भी ऐतिहासिक महत्त्व है । जामनगर के प्रो० दयाल आर्य ने खोज करके यह दुर्लभ लेख भेजा है । यह लेख अविकल यहां दिया जा रहा है ।

आदिम सत्यार्थ प्रकाश भी अपूर्व ग्रन्थ है

लेखक : स्वामी श्रद्धानन्द

"नया नौ दिन पुराना सौ दिन" यह बहुत पुरानी लोकोक्ति है । नए सत्यार्थ प्रकाश को अङ्गीकार करके पुराने को सर्वथा भुलादेने मे आर्य पुरुषो ने बहुत भूल की । लगभग ३१ वर्ष हुए जब मैंने 'आदिम सत्यार्थ प्रकाश' पढा था । उस समय मेरे हृदय पर उसका बहुत अच्छा प्रभाव पडा था । उसके पश्चात् मैंने उसे सर्वथा भुला दिया था और यहा तक भुलाया था कि उसी आदिम गुरु से प्राप्त की हुई युक्तियों तथा प्रमाणो को भी अपने ही निर्मित और अपने ही ढूढे हुए समझ बैठा था । परन्तु परोपकारिणी सभा मे जब यह विषय पिछली दिवाली के दिन पेश हुआ तो मेरा ध्यान इसकी ओर फिर खिचा । प्रश्न यह था कि पडित कालूराम को उस ग्रन्थ के पुन छापने से न्यायालय द्वारा बन्द कराया जावे । मेरी सम्मति के विरुद्ध थी परन्तु उपस्थित सज्जनो ने यह विषय आर्य प्रतिनिधि सभा सयुक्त प्रान्त [अब उत्तर प्रदेश-स०] के सुपुर्द करना उचित समझा । उन्होंने क्या आदोलन किया और क्या सम्पति दी, इसमे कुछ मतलब नही, परन्तु कालूराम जी की किताब निकलते ही आर्य सामाजिक जगत् मे घोर आन्दोलन शुरू हो गया और सयुक्त प्रान्त की आ० प्र० सभा के आर्गन ने बड़े जोश के लेख लिखे । तब मैंने 'आदिमसत्यार्थप्रकाश' पुस्तक गुरुकुल विश्वविद्यालय के पुस्तकालय मे मगाया और पडित कालूराम की पुस्तक भी प्राप्त की । सारा ग्रन्थ पढने पर मुझे आश्चर्य हुआ कि क्यो इतना शोर मचाया गया । क्यो न इस प्रकार के आक्षेपो का उत्तर देकर पहले से ही विरोधियो के मुह बद कर दिए गए और क्यो निष्पक्षपात सर्वसाधारण को भ्रम मे पडने दिया गया । इसका कारण विशेषत आर्यविद्वानो का आलस्य प्रतीत होता है । पहले सत्यार्थ प्रकाश के विषय मे अधिक भ्रम पडित भीमसेन (इटावा निवासी) ने फैलाया था । उसके दो दृष्टांत यहा देने से ही पता लग जायेगा कि उन्होंने कितनी हानि

(१) जब मुशी इन्द्रमणि को आर्य समाज मे निकाला गया तो उन्होने अपने चेले जगन्नाथदास के मत समर्थन के लिये एक लघु पुस्तक "अनत तत्व प्रकाश" नामिनी लिखी उसमे दर्ज था—'स्वामी दयानन्द सरस्वती के मत का कुछ ठिकाना नही है, कभी कुछ कहते है और कभी कुछ—अब से दस वर्ष पहिले जीव को कालपरिच्छिन्न और उत्पत्ति वाला जानते थे सत्यार्थ प्रकाश के पृ० १५२ और २३२ पर देखो । जबकि उनको कोयल और मुरादाबाद मे समझाया गया कि जीव की उत्पत्ति मानना वेद और उपनिषद और सूत्रादि समस्त प्रामाणिक ग्रन्थो के विरुद्ध है"......निदान बहुत समझाने के उपरान्त स्वामी जी ने जीव को अनादि और अन्त रहित माना......"

इस पर पडित भीमसेन को चाहिए था कि पुराने सत्यार्थप्रकाश को आद्योपान्त पढ जाते तो उन्हे पता लग जाता कि मुशी इन्द्रमणि का आक्षेप कैसा निर्मूल है । मु० इन्द्रमणि ने पहला हवाला पृ० १५१ का दिया है । पर्दे के विरुद्ध लिखते हुये ऋषि दयानन्द ने लिखाया है—"देखना चाहिए कि परमेश्वर ने तो सब जीवो को स्वतन्त्र रचे है और उन(स्त्रियो) को पुरुष लोग बिना अपराध से परतन्त्र अर्थात् बधन मे रखते है,' फिर २३२ पृ० पर लिखा है—"ईश्वर है अनत दयालु जब जीवो को ईश्वर ने रचा तब विचार करके सब को स्वतन्त्र ही रख दिये । क्योकि परतत्र के रखने से किसी को भी सुख नही होता ।"

यहा 'रचा' शब्द के अर्थ पर विवाद है । स्वामीजी ने यहा जीवात्मा के निज स्वरूप का निरूपण नही किया प्रत्युत मनुष्य (देह-विशिष्ट जीव) की उत्पत्ति का वर्णन किया है । मुशीजी ने पूर्वापर को छोड कर इस सदिग्ध इबारत के आधार पर झूठा दावा कर दिया और पडित भीमसेन ने कष्ट उठाने से भागते हुए बिना आदिम सत्यार्थ प्रकाश के पन्ने खोले ढीला सा लेख लिख

पत्रे उलटते तो वहा लिखा हुआ मिलता—

पृ० २२२—"जो जीव है सो ज्ञान वाला है, परन्तु जीव का उतना सामर्थ्य नही इसमे कोई पृथिव्यादि भूत और जीव से भी भिन्न पदार्थ अवश्य है जो सब जगत् का कर्त्ता और नियमो का नियन्ता ईश्वर अवश्य है ।"

पृ० २३१—यह बतलाकर कि तत्त्व आप नही मिल सकते और न जड तत्त्वो के मिलने से जीव बन सकता है लिखते है—"इस लिग शरीर मे जो अधिष्ठाता कर्त्ता और भोक्ता उसी को जीव कहते है जोकि एक काल बुद्धयादिको के किये कर्मों का अनुभव करता है चेतन स्वरूप है उसका नाम जीव है ।'

पृ० २३८—मुशी इन्द्रमणि के दिये प्रमाण के नीचे—'प्रश्न-जीव का निज स्वरूप क्या है उत्तर-विशिष्टस्यजीवत्वमन्वयव्यतिरेकाभ्याम् । यह कपिल मुनि का सूत्र है' ...लिङ्ग शरीर जो है उसका अधिष्ठाता है सोई जीव है दर्पण के तुल्य अन्त करण शुद्ध है...... चेतन एक जीव और दूसरा परमेश्वर ही है तीसरा (चेतन) कोई नही ।

पृ० २७८ - "प्रश्न—यह जन्म जो होता है, दूसरी बार नही, क्योकि यह दूसरा जीव है सो नया २ उत्पन्न हो जाता है और शरीर धारण करता है जोकि पहिले शरीर धारण किया था सो जीव फिर नही आता । उत्तर—यह बात मिथ्या है क्योकि जो दूसरा जीव होता तो उसको पूर्व के सस्कार नही दीख पड़ते" इन लेखो को मिलाकर पढने से स्पष्ट दिखाई देता है कि न तो जीवात्मा को स्वामी दयानन्द परिच्छिन्न मानते थे और न उत्पत्ति वाला और नही मुशी इन्द्रमणि से सस्कृत-शून्य आदमी उनको शास्त्रो के सिद्धात विषय मे कुछ बतला सकते थे ।

(२) फिर मुन्शी इन्द्रमणि ने लिखा—"देखो दयानन्द ने भी सत्यार्थ प्रकाश के पृ० २३८ में यही लिखा है । ईश्वर का ज्ञान निर्भ्रम है जो पदार्थ

निदान जबकि वास्तव मे जीव अनन्त है तो परमेश्वर के समीप क्योकर अतीव अल्प है ।" इस के उत्तर मे पुस्तक देखने की जगह प० भीमसेन ने आर्य सिद्धान्त भाग ३ अक ११ मे लिख दिया" यद्यपि वह अनेक प्रकार के उत्तर उन २ तर्कों पर दे सकते है तथापि बहुत गाथा न गाकर मुख्य सिद्धान्त रूप उत्तर यही है कि स्वामी ने सम्मत्ति बदल ली । इस ढीले लेख से विरोधियो को विचित्र कल्पनाए करने का अवसर दिया । यदि आदिम सत्यार्थ प्रकाश का पृ० २३८ निकालते तो वहा इस प्रकार लिखा पाते-ईश्वर सर्व शक्तिमान् है परन्तु उसकी शक्ति न्याय युक्त है, अन्याय युक्त नही, इस से ईश्वर सदा न्याय ही करता है कि अविनाशी पदार्थ को अविनाशी जानता है और उसके विनाश की इच्छा नही करता और जो विनाश वाला पदार्थ है उसका नाश न न होवे, ऐसी भी इच्छा नही करता क्योकि ईश्वर का ज्ञान निर्भ्रम है जो जैसा पदार्थ है उसको वैसा ही करता है" इस पूरे लेख के पढने से मुशी इन्द्रमणि जी ने जिस प्रकरण को इस उद्धरण से सिद्ध करना चाहा था वह सिद्ध नही होता । परन्तु प० भीमसेन ने उत्तर क्या दिया—"परन्तु यह अनुमान होता है कि यह पाठ कदाचित् सबसे पहिले छपे सत्यार्थ प्रकाश मे हो । तो उसका प्रमाण अब देना भूल है । क्योकि पीछे पीछे जो नियम (कानून) बनते हैं उनका स्पष्ट यही अभिप्राय होता है कि पहले मे जो कुछ न्यूनता है वह निकल जावे और अब कोई पुरुष पहिले नियम के अनुसार न चले"

इस प्रकार के भ्रम मूलक लेखो ने आर्य पुरुषो के लिए पहिले छपे सत्यार्थ प्रकाश को त्याज्य बतलाकर उनको इससे इतना डराया कि अपने मूल सिद्धान्त पर ही कुल्हाडा चल रहा है । आर्य समाज का मत वेद है । जब वेद विरुद्ध होने से उपनिषद तक के लेखों की उपेक्षा कर सकते है तो फिर आदिम सत्यार्थ प्रकाश के पुनरुदय से घबराने

मातृशक्ति की वन्दना

—सुशीलादेवी विद्याल कृता—

हे आदिशक्ति, ! हे मातृशक्ति ! !,
जग करे तुम्हारा अभिवन्दन ।
इस सूने से जग को तूने
दे प्रेम सुधा का अमर दान,
रीते से जीवन के घट मे
तुमने ही क्या पूरे न प्राण ?
जीवन का था वह प्रथम दिवस
मानव ने जब अवतार लिया ।
शिशु बन कर माता के आचल
से ममता का रस-पान किया ।
कितना अबोध अल्हड़ था वह,
कृति से, गति-मति से सतत शून्य ।
मीठी रस-भीनी लोरीगा,
तुमने ढाला जीवन अमूल्य ।
जब-जब गिरता वह ठोकर खा
तुम दौड़ पड़ी थीं सुन क्रन्दन ।
हे आदिशक्ति ! हे मातृशक्ति !
जग करे तुम्हारा अभिवन्दन ।
वामन सा नन्हा रूप लिये
माता तेरी ममता असीम ।
है कौन उसे जो माप सके ?

विस्तीर्ण सिंधु को भी घट मे,
है कोई कहीं जो बाघ सके ।
शिशु आया था धरती तल पर ।
माता की ममता माप सकूं,
निश्चय सा था उसके मन मे ।
श्री हरि ने वामन बन त्रिभुवन,
को तीन पैर में नापा था ।
उस महान् घटना का यश
सचमुच ही जग में व्यापा था ।
पर यह वामन तो है अशक्त
अनिवार्य तुम्हारा है बचन ।
हे आदिशक्ति ! हे मातृशक्ति ! !
जग करे तुम्हारा अभिवन्दन ।

माँ तेरी घोर तपस्या से,
यह वामन आज बना मानव ।
उपहार अनोखे देता है
जग को सुन्दर से सुन्दर नव ।
है सृष्टि आज उसकी चेरी
जल, थल, नभ का वह सूत्रधार
उसके कर्मठ कर से निर्मित,
कृत्रिम ग्रह करते नभ-विहार ।
सब कुछ पाया, उसने लेकिन
तन मन में उठता शूल रहा ।
इस चंचल माया के मद में
वह अपना पथ ही भूल रहा ।
पाताल-गगन सब नाप रहे
निज को भूले तेरे नन्दन ।

हे आदिशक्ति, हे मातृशक्ति
जग करे तुम्हारा अभिवन्दन ।
मा, आज जगत् चातक बनकर,
है तेरी ओर निहार रहा ।
दो स्नेह-सलिल की बूंदों का
बस प्यासा यह संसार रहा ।
तुम रजत चन्द्रिका सी बन जग
अंधकार को दूर करो ।
मुसकाये मन की कली-कली
संशय भ्रम भय को दूर करो ।
तेरे जगने से मा जग मे
सुन्दर सा स्वर्ण-विहान जगा ।
करुणा वरुणालय मानस में,
सुमनोहर सुमधुर गूंज उठे
सावन घन बन संताप हरो
यह दाह मिटादो बन चन्दन ।
हे आदि शक्ति, हे मातृशक्ति ! !
जग करे तुम्हारा अभिवन्दन ।

पता—१६७४/६ (वरदान)
ईस्ट माटडयवी सिकन्दाबाद

आदिम सत्यार्थ प्रकाश......

→

की कौनसी बात है । परन्तु इस ग्रन्थ के पढने से आर्य समाजस्थ सभ्यो को विदित हो जाएगा कि आदिम सत्यार्थ प्रकाश मनुसूख शुदा कानून के तुल्य त्यागने योग्य नही, प्रत्युत जङ्ग खाई हुई इस्पात की तलवार है. जिसको सान पर चढा कर ऐसा चमकाया जा सकता है कि अविद्या की जजीरो को काटने का फिर से वही अपूर्व काम कर सके, जो इसने बड़े अन्धकारावृत समय मे किया था ।

आज इटावा निवासी पण्डित भीमसेन चाहे कुछ भी लिखें और कहे परन्तु वह अपनी लेखनी से कई बार लिखकर स्वीकार कर चुके है कि आचार्य दयानन्द को पौराणिक ब्राह्मणो से बहुत धोखा मिलता रहा है । इसका एक उदाहरण देना ही पर्याप्त है । आर्य सिद्धान्त भाग १, अक ५ के पृष्ठ ७७ पर लिखा है—"यह सबको मालूम है कि श्री स्वामी जी ने जो 'सस्कृतवाक्य-प्रबोध' शिक्षाप्रणाली के सुधारने के लिए बनाया था उसमे कई कारणो से छपने मे अशुद्धि रह गई थी । इसमे बडा कारण एक ब्राह्मण लेखक था जो सर्वथा विरुद्ध बुद्धि होकर भी, जीविका के लिए बनारस मे स्वामी जी के पास लेखक था । स्वामी जी महाराज का स्वभाव था कि अपनी बुद्धि धर्म सम्बधी बड़े-बड़े विचारो मे अधिक कर रखते थे । उक्त ब्राह्मण कुछ कुछ सस्कृत भी जानता था । बताते समय अधिक कर सस्कृत वाक्य प्रबोध उससे बनवाया, उसने अशुद्ध किया ।"

ऊपर का लेख पण्डित भीमसेन ने शुद्धभाव से लिखा था क्योंकि वह स्वयम् जानते थे कि वेदाङ्ग प्रकाश के प्राय: सभी प्रकरण ऋषि दयानन्द ने पण्डित ज्वालादत्त और पण्डित भीमसेन से बनवाए थे । यद्यपि इन लोगो को कई बार अशुद्धिया करने पर ताडना की गई परन्तु ये लोग जो कुछ भी लिखने के लिए बाधित किए गए उसे अपनी योग्यता के अनुसार ही तो लिख सकते थे । ऋषि दयानन्द को धर्म प्रचार के लिए दूर दूर जाना पडता था और इस लिए वह अन्तिम प्रूफ बहुत कम देख सकते थे । तभी तो "वेदाङ्गप्रकाश" मे भी ऐसी अशुद्धियां रह गई हैं जिनका ऋषि दयानन्द से अपूर्व वैयाकरण की लेखनी से, रहना असम्भव ही समझना चाहिए । यदि सचमुच ऋषि दयानन्द ने 'आदिम सत्यार्थ प्रकाश' लिखवाने से पीछे किन्ही अशो मे अपने मन्तव्य बदले होते तब भी शायद किसी अश मे 'आदिम सत्यार्थ प्रकाश' से कानो पर हाथ रखना कुछ सार्थक कहा जा सकता, परन्तु जब यह बात निर्विवाद है कि ऋषि दयानन्द के मन्तव्यो मे उस के पश्चात् कुछ भेद नही आया तो फिर इस अपूर्व ग्रन्थ से पीछा छुडाने के यत्न के स्थान मे मैंने यही उचित समझा कि उस मे से कुछ रत्न चुन कर पाठको के भेट धरू जिससे उन्हे ऋषि के विचारो को स्पष्टतया जानने का अवसर मिले ।

मेरी सम्मति तो यही है कि इस अपूर्व ग्रन्थ का पूर्ण रूप से सशोधित सस्करण परोपकारिणी वा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से निकल जाय । परन्तु प्राय आर्य भाइयो की सम्मति शायद यह होगी कि जब नए सत्यार्थ प्रकाश मे सब कुछ आ चुका है तो व्यर्थ का परिश्रम क्यो करना ? यह भी विचार का एक ठीक अङ्ग है और मेरी लिखी इस पुस्तक से आशा है कि सर्व साधारण का भ्रम भी दूर हो जायेगा । परन्तु फिर भी जहा सशोधित सत्यार्थ प्रकाश का नया संस्करण हस्त लिखित पुस्तक के अनुसार छपवाने का विचार है तो परिशिष्ट रूप से आदिम सत्यार्थप्रकाश के कुछ विशेष लेख भी सशोधन करके दे दिये जाय तो कुछ लाभ ही होगा ।

यहाँ मुझे श्री पण्डित पूर्णानन्द जी महोपदेशक आर्यप्रतिनिधि सभा पजाब तथा श्री पण्डित विष्णुमित्र जी आचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र को धन्यवाद देना है, क्योकि यदि पूर्व महाशय उत्साह दिला-कर मुझे बाधित न करते तो यह ग्रन्थ लिखा न जाता, और यदि उत्तर महाशय अपना धन लगाकर ग्रन्थ को छपवा न देते तो निर्धन भिक्षुक का लेख उसके पास ही धरा रह जाता । अत मे श्री पण्डित अनन्तराम जी को भी धन्यवाद देता हूं जिन्होने ग्रन्थ को यथाशक्ति शुद्ध तथा शीघ्र छाप देने से बडी सहायता दी है ॥ इति भूमिका ॥

श्रद्धानन्द सन्यासी
स्थान—गुरुकुल कुरुक्षेत्र
१ भाद्रपद, स० १९७४ वि०

८८ वर्ष पूर्व दिया गया एक उद्‌बोधन

स्वामी श्रद्धानन्द में वह कौनसा जादू था ?

प्रस्तुति —आचार्य धर्मवीर विद्यालंकार

श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने जीवनकाल में अनेकों क्रान्तिकारी कार्य किये, जिनकी प्रेरणा उन्हें महर्षि दयानन्द जी से मिली थी। जैसे कि स्वराज्य आंदोलन, सत्यधर्म का प्रचार, जन्मगत जाति-पाँति का खण्डन, दलितोद्धार, शुद्धि-आन्दोलन, गुरुकुल शिक्षापद्धति का सूत्रपात, हिन्दू हितों के लिये हिन्दू महासभा की स्थापना आदि। ये समस्त कार्य उनके बाद आने वाली पीढ़िया चलाती रहीं। एक कार्य ऐसा है, जिसका अनुसरण आज तक कोई न कर सका। वह है—"दिल्ली की जामा-मस्जिद की वेदी से उनका प्रवचन"। वे वहां अचानक नहीं पहुंचे थे। मुसलमानों के अग्रणी नेता उन्हें घर से बुलाकर लाये थे। मुसलिम जनता की दृढ़ मांग पर अत्यन्त आग्रह, आदर और सत्कार से उन्हें आमन्त्रित किया गया था।

स्वामी जी में ऐसा कौनसा जादू था, जो मुसलमानों के सिर पर चढ़ चुका था। वे शुद्धि-आदोलन के प्रवर्तक थे। कांग्रेस की मुस्लिम-तुष्टिकरण-नीति से असन्तुष्ट होकर, हालांकि कांग्रेस के अमृतसर अधिवेशन में स्वागताध्यक्ष रहे थे, उन्होंने हिन्दू महासभा की स्थापना की थी। स्वामी श्रद्धानन्द जी के उस जादू की खोजना परम आवश्यक है। आज इसकी आवश्यकता और अधिक बढ़ गई है। स्वामी श्रद्धानन्द जी की धीर-गम्भीर वाणी में किये गए भाषण, सरल-हृदयग्राही भाषा में लिखे गये लेख, लोक-हितकारी कार्यों को सम्पादन करने की आकर्षक एवं विश्वसनीय कार्य पद्धति को खोज निकालने की प्रबल इच्छा है। इसी सन्दर्भ में मुझे स्वामी जी का एक लेख मिला है। इसे मैं पाठकों की सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूं।

यह लेख सन् 1896 में लिखा गया था तब स्वामी श्रद्धानन्द अभी सन्यासी नहीं बने थे। यह लेख गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना के 2½ वर्ष पूर्व लिखा गया था। इस लेख से 14 वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द का निर्वाण हो चुका था और पं० लेखराम का बलिदान अभी ताजा था। मुंशी राम एडवोकेट अभी-2 मुन्शीराम 'जिज्ञासु' हुए थे। हिन्दू जाति की दुर्दशा के प्रति उनकी तड़प इस लेख में स्पष्ट है। आज की परिस्थितियों के सन्दर्भ में यह लेख सर्वथा उपयोगी एवं महत्वपूर्ण है और मुन्शीराम जी जिज्ञासु के उस "जादू" को समझने में सहायता देता है, जिसके कारण स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जामा-मस्जिद की वेदी से अपना प्रवचन गायत्री मंत्र से आरम्भ किया था और जिसकी पुनरावृत्ति आज तक नहीं हो सकी।

उस लेख का अविकल रूप प्रस्तुत है —

ब्राह्मण-धर्मियों से निवेदन

आर्य पुरुषो ! सोचो कि वे कौन से सिद्धान्त थे, जिन्होंने एक लंगोटधर को वह शक्ति प्रदान की थी, जो इस समय महाराजाओं में भी दिखाई नहीं देती। पता लगाओ कि आर्य समाज के स्थापित करने से ऋषि का क्या प्रयोजन था ? दयानन्द के जीवन यात्रा के मार्ग पर पथ-प्रदर्शन करने वाले चिन्हों की खोज करो। जिस समय तुम्हें उन्नति का शिखर बहुत ऊंचा और भयानक प्रतीत हो, उस समय इस ज्योति स्तम्भ की ओर टकटकी लगाकर ऊपर चढ़ते जाओ। फिर देखो, कितनी सरलता से मार्ग समाप्त हो जाता है।

मेरे प्यारे हिन्दू भाईयो ! ब्राह्मण-धर्म का अभिमान करने वालो ! ! तुम्हारे लिये महर्षि दयानन्द के जीवन का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है। तुम पुराणों में सुनते आए हो कि कलियुग में भी सतयुग की लहरें वर्तमान रहेंगी। अपने हृदय से पूछो कि सतयुग किस प्रकार आ सकता है। तुम्हें बतलाया जाता है कि दयानन्द ने तुम्हारे धर्म का नाश कर दिया है। सुनी हुई बातों का कुछ समय के लिए त्याग करके, घटनाओं के आधार पर, जरा विचार तो करो कि दयानन्द ने धर्म का नाश किया है कि तुम्हारे बिछुड़े हुए धर्म को तुमसे फिर मिलाने की चेष्टा की है। क्या तुम्हारा हृदय साक्षी देता है कि —

वेदों का सन्मान करने वाला दयानन्द,
वेदों के प्रेम में पागल कहलाने वाला दयानन्द,
आर्य ग्रन्थों में रुचि रखने वाला दयानन्द
ऋषियों की निन्दा सहन न करने वाला दयानन्द,

कभी भी धर्म को हानि पहुंचा सकता है ? क्या तुम अस्वीकार कर सकते हो कि दयानन्द ने तुम्हें उन वेदों का पता दिया जिनका चिरकाल से तुमने दर्शन तो क्या, श्रवण भी नहीं किया था। आओ ! प्रकाश के एकाएक प्रगट हो जाने पर, चुंधिया मत जाओ। सावधान होकर दृष्टि डालो। यह प्रकाश तुमको अविद्यारूपी गर्त से निकालने वाला है। प्रकाश का पता देने वाले के जीवन को दीर्घ-दृष्टि से पढ़ो, ताकि तुम्हें प्रकाश से लाभान्वित होने का ज्ञान प्राप्त हो सके।

बिछुड़े भाइयों से अपील

हे मेरे बिछुड़े हुए मोहम्मदी और ईसाई मित्रो ! ! अविद्या की अन्धकारमयी रात्रि में जबकि हाथ पसारा नहीं सूझता था, तुमने भाइयों के हाथ छोड़ कर अन्यों के हाथ में अपना हाथ दे दिया जब क्रियात्मक रूप में तुम्हें विदित हो गया कि तुमने मूर्खता की है और तुम्हारी आत्मा ने साक्षी दी कि तुम निज गृह से दूर जा रहे हो, तो तुमने व्याकुल होकर, आतुर वचनों से अपने भाइयों की ओर देखा। तुम्हारे भाई उस समय स्वयं देखने योग्य न थे। फिर तुम्हारा हाथ क्यों कर पकड़ते ? परन्तु आज अन्धकार दूर हो गया है। वेद रूपी सूर्य का प्रकाश हो गया है। जीवन के उद्देश्य को समझो और अपने उस भाई के जीवन को पढ़ो जिसने कि तुम्हारे लिए, नहीं केवल तुम्हारे लिये ही नहीं, प्रत्युत सत्य की खोज करने के लिये, —

अपनी जान को हेय समझा,
सांसारिक सुख तथा आनन्द को हेय समझा,
और परमेश्वर के अटल नियम के आगे,
सिर को झुकाए हुए, अपने मिशन को पूरा किया।

हे शिक्षा प्राप्त भाइयो ! इतिहास का सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन करने वालो ! उन्नीसवीं शताब्दी में ऋषि-जीवन क्या एक अचम्भा नहीं है ? मतवादियों के अद्‌भुत से अद्‌भुत चमत्कारों से बढ़कर, क्या यह ऋषि-जीवन एक अद्‌भुत और आश्चर्यमय चमत्कार नहीं है ?

हे दयालु पिता ! प्रत्येक मनुष्य को, चाहे वह किसी वर्ण, स्वभाव, जाति, अथवा सम्प्रदाय का हो, सामर्थ्य दे कि वह दयानन्द का जीवन पढ़ते हुए और इसके मिशन पर विचार करते हुए, उन सिद्धान्तों को दयानन्द से पृथक् करके, उन पर विचार करने की शक्ति प्राप्त करे, जिनके प्रचार के लिये तुमने दयानन्द को विशेष शक्तियाँ प्रदान की थी।"

[यह लेख 21 अक्टूबर, सन् 1897 ई० में, महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस के आस-पास लिखा गया था। महर्षि के प्रति अटूट श्रद्धा, उनके कार्यों के प्रति उपकार भावना, उनकी शक्ति के प्रति आश्चर्य और प्रभु अनुकम्पा आदि हृदय की विशुद्ध भावना के साथ यह सच्ची श्रद्धांजलि है। साथ ही हिन्दू-मुसलमानों, ईसाइयों के एकीकरण की तड़प है। वर्तमान परिस्थितियों में यह उतना ही उपयोगी है, जितना आज से 88 वर्ष पूर्व था। भारत की अखण्डता, एकता का एक ही उपाय है कि हम ऋषि जीवन का गहराई से, अध्ययन करें, तदनुसार आचरण करें अर्थात् वैदिक शिक्षा के अनुसार अपना जीवन-दर्शन अपनाएं]।

पता—अन्तर राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, सौराष्ट्र

वाह ! श्रद्धानन्द !
आह ! श्रद्धानन्द !!
धन्य ! श्रद्धानन्द !!!

धर्मदेव 'चक्रवर्ती'

हमने अपने गुरुकुल के विद्यार्थी-काल में वे दिन भी देखे हैं जब वार्षिक-उत्सव पर हजारों की भीड़ जुटा करती थी। दूर-दूर से गुरुकुल की ओर मानो श्रद्धा का एक सागर उमड़ा चला आता था। और जब कभी वार्षिक उत्सव पर अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द मंच पर आकर विराजमान होते तो लगता था उनकी अलौकिक दिव्य सजीव मूर्ति की आभा से सारा पण्डाल जगमग-जगमग कर उठा हो। तेजोमय मुखमण्डल, उन्नत ललाट, विशाल वक्षस्थल, आजानु बाहु, छ. फुटा भरा-पूरा गोरा शरीर। पूनम के चांद की सी किरणें जब उनके नेत्रों से श्रद्धा और प्रेम का शीतल रस बरसाती तो दर्शक और श्रोता आत्म विभोर हो टकटकी लगाए उन्हीं की ओर ताकते रह जाते। जब वह भाषण करने लगते तो लगता जैसे कोई नर केसरी सिंहनाद कर रहा हो। अपने भाषण के समापन से कुछ ही समय पहले जब वह गुरुकुल के लिए धन की अपील करते हुए अपनी झोली फैला देते तो श्रोताओं में जैसे दान देने की होड़ लग जाती। धनवान लोग हैं कि अपनी थैलियां खोलकर मुक्त हस्त हो सैकड़ों-हजारों रुपयों के नोटों की वर्षा कर रहे हैं। गरीब लोग हैं कि अपनी जेबें टटोल-टटोल कर आखरी पैसा तक न्यौछावर कर रहे हैं। माएं-बहनें हैं कि अपने स्वर्ण-आभूषणों से श्रद्धानन्द की झोली भरने को लालायित हो रही हैं। बच्चे-बच्चियां हैं कि अपने माता-पिता की थैलियां, बटुवे और जेबें टटोल-टटोल कर स्वामी जी पर नोटों और सिक्कों की बरसात करने और उनका आशीर्वाद पाने को मचल रहे हैं। और यूं पलक झपकते ही गुरुकुल के कोश में हजारों रु० जमा हो जाते। फिर साल भर के लिए गुरुकुल को अपना खर्च जुटाने की चिन्ता न रहती।

आज की हालत का उन दिनों की हालत से मुकाबला करता हूं तो बरबस मुख से वेदना का स्वर फूट पड़ता है—

हाय ! वे भी क्या दिन थे,
जब पसीना गुलाब था !

सचमुच जब-जब और जहां-जहां श्रद्धानन्द का पसीना गिरा वहां-वहां श्रद्धा और आनन्द के गुलाब महकने लगे। श्रद्धानन्द ने गुरुकुल कांगड़ी खोलने के लिए इस भीष्म-प्रतिज्ञा के साथ घर-बार त्याग दिया कि जब तक तीस हजार रु० एकत्र न कर लूंगा मैं घर वापस नहीं लौटूंगा। बरसात हो आंधी हो, तूफान हो, झुलसाती दोपहरी हो अथवा कंप कंपाती बर्फानी हवाएं हों, वह नरकेसरी अपने ध्येय की पूर्ति के लिए आगे-ही-आगे बढ़ता गया। घर के मखमली गदेलों को ठुकरा कर वह देश-धर्म का दीवाना कांटों-भरी राह का पथिक बन गया। कुछ गिनती के लोग उपहास करते कि श्रद्धानन्द का दिमाग फिर गया है। नगरों में स्कूल कालेज खोलने के बजाय इसे भयानक जीव-जन्तुओं से भरे जंगल में गुरुकुल खोलने की सनक सवार हुई है किन्तु जो बात के धनी होते हैं वे कुछ कर गुजरने की ठान कर ही मैदान में उतरते हैं। वे उपहास तिरस्कार, गालियों और अपमान के विष का घूंट भी उसे अमृत समझ कर पी जाते हैं।

श्रद्धानन्द ने लक्ष्य को पाने के लिए खून पसीना एक कर दिया और सचमुच लगातार परिश्रम और संकल्प का पसीना बहाकर एक दिन वह तीस हजार के बजाय चालीस हजार रुपये इकट्ठे कर के ही घर लौटा। कल तक जो उपहास के कांटों से उसे छलनी कर रहे थे वे ही आज उस पर स्नेह और प्यार के फूल बरसाने लगे। श्रद्धानन्द का पसीना रंग लाया और एक दिन गंगा के किनारे घोर घने जंगल में मंगल हो गया जब वहां गुरुकुल कांगड़ी की फुलवाड़ी में वैदिक संस्कृति और वैदिक शिक्षा के गुलाब महकने लगे।

गुरुकुल की ही बात चली है तो हम यह भी बतादें कि जिस गुरुकुल की स्थापना स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने दोनों पुत्रों-इन्द्र और हरिश्चन्द्र-के साथ की थी वह शीघ्र ही वटवृक्ष के समान फलता-फूलता गया और कुछ ही वर्षों में देश-विदेश से वहां सैकड़ों विद्यार्थी विद्याध्ययन के लिए आ जुटे। प्रत्येक विद्यार्थी पर श्रद्धानन्द अपना स्नेह और प्यार इस प्रकार लुटाते थे कि विद्यार्थी शीघ्र ही अपने वास्तविक माता-पिता को भूल उन्हें ही अपने माता-पिता के रूप में देखने लगते थे। हमें वे रातें क्या कभी भूल सकती हैं जब स्वामी जी आधी-आधी रात को हमारे छात्रावास का चक्कर लगाते थे यह जानने के लिए कि किसी बच्चे को कोई कष्ट तो नहीं, सब सुख की सुहानी नींद सो रहे हैं या नहीं। एक दिन स्वामी जी को रात को छात्रावास का दौरा करते समय किसी विद्यार्थी का करुण क्रन्दन सुनाई पड़ा। वह तुरन्त उसके पास गये। देखा उसका शरीर तप रहा था। उसको उठाने लगे तो उसने मतली की शिकायत की जब तक सेवक बर्तन लाता उस बच्चे ने उलटी कर दी। स्वामी जी ने बर्तन के अभाव में उसकी उलटी का मल अपनी हथेली में ले लिया ताकि विस्तार और फर्श खराब न हो। बाद में हाथ धोकर बच्चे की दवादारु का प्रबन्ध किया और जब तक बच्चा सो न गया स्वामी जी उसके सिरहाने बैठे उसका सिर दबाते रहे।

वाह ! श्रद्धानन्द !

आजकल आर्य-संस्थाओं एवं प्रतिनिधि सभाओं की यह हालत है कि अधिकांश अधिकारीगण इनमें सेवा करने के लिए नहीं बल्कि मेवा खाने के लिए आते हैं। जो एक बार कुर्सी पर जम गया वह बरसों तक वहां से तब तक टलने का नाम नहीं लेता जब तक वह अपंग न हो जाए अथवा हालात के थपेड़े उसे वहां से हटने को विवश न कर दें। किन्तु वाह रे श्रद्धानन्द ! तेरे त्याग का कोई जबाब नहीं। जब तेरे खून पसीने से सींचा गुरुकुल कांगड़ी लहलहा उठा, तू स्वयं ही उससे इसलिए अलग हो गया ताकि किसी नये व्यक्ति को इस फुलवाड़ी को पुष्प-पल्लवित करने का अवसर मिले। पहले स्वामी श्रद्धानन्द के पुत्र इन्द्र जी ने और फिर आचार्य रामदेव ने अपने परिश्रम के जल से गुरुकुल को सींचा और भली प्रकार ऐसा सींचा कि दिग्दिगन्त में गुरुकुल कांगड़ी का नाम उजागर हो गया। यहां से निकले विद्यार्थियों का विशिष्ट गुण था उनका चरित्रवान होना। यही कारण है कि उन दिनों गुरुकुल से निकला स्नातक जहां भी गया वहां उसने अपने चरित्र की छाप छोड़ी। राजनीति में गया तो वहां उसकी तूती बोलने लगी। समाज-सुधार के क्षेत्र में गया तो लोग उसे सिर आंखों पर बिठाने लगे। साहित्य के क्षेत्र में उतरा तो पत्रकारिता की उपाधि के बिना ही चोटी के पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों और लेखकों-कवियों में उसकी गणना होने लगी। स्वामी श्रद्धानन्द शिक्षा के क्षेत्र में व्यक्ति को चरित्रवान बनाने को प्राथमिकता देते थे। यही कारण था कि गुरुकुल के स्नातकों ने अपने-अपने क्षेत्र में हिमालय की ऊंचाईयों का स्पर्श किया।

गुरुकुल कांगड़ी के वटवृक्ष से अनेकानेक गुरुकुलों की शाखाएं भी फूटने लगीं। इनमें से गुरुकुल कुरुक्षेत्र एवं गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ काफी प्रसिद्ध हुए। गुरुकुल वृन्दावन, राजा महेन्द्र प्रताप के संरक्षण में और महात्मा नारायण जी के परिश्रम से खूब फला-फूला।

किन्तु एक धर्मान्ध मुसलमान ने जब रोग-शय्या पर पड़े स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या कर दी। तब विश्व-मंच से उनके प्रयाण करने के साथ ही गुरुकुल कांगड़ी के कार्यकलाप में कुछ-कुछ शिथिलता आने लगी और एक दिन वह भी आया जब क्षुद्र-स्वार्थों से प्रेरित तथाकथित आर्य समाजी गुरुकुल की हरी-भरी फुलवाड़ी पर कब्जा कर बैठे। इन विघ्नतोषियों की करतूतों ने इस फुलवाड़ी को जिसे श्रद्धानन्द ने खून-पसीने से सींचा था; खण्डहरों में परिवर्तित कर दिया। जहां कभी वेद मंत्रों की मधुर गूंज से वातावरण में एक अलौकिक शांति छाई रहती थी वहां वीरानी में दिवान्धों के कर्कश-स्वर से मनहूसियत पनपने लगी। गुरुकुल कांगड़ी की देव-भूमि पर दानवों का एक छत्र साम्राज्य स्थापित हो गया। इंसानियत पर शैतानियत हावी हो गई। स्वामी श्रद्धानन्द के वे सारे सपने चूर-चूर हो गये जिनमें वह गुरुकुल को एक वैदिक संस्कृति और सभ्यता का एक प्रमुख केन्द्र बनाने की आशा से जीये और मरे ! —अब बरसों के संघर्ष के बाद गुरुकुल कांगड़ी पुनः योग्य एवं अनुभवी शिक्षा-शास्त्रियों के हाथों में आया है। ये शिक्षा-शास्त्री इसी गुरुकुल की उपज हैं। आशा करनी चाहिए कि अपने कुशल नेतृत्व से ये गुरुकुल को पुनः उसका अतीत गौरव प्रदान करने में सफल होंगे।

गुरुकुल के बाद

गुरुकुल से पृथक होकर स्वामी श्रद्धानन्द राजनीति एवं समाज सुधार के क्षेत्र में उतरे। आजकल के सत्ता लोलुप राजनीति-बाज हिन्दुत्व को निर्बल करने और साम्प्रदायिकता का पोषण करने वाले ईसाइयों, मुसलमानों एवं अन्य पृथकतावादियों का तुष्टिकरण करने में ही अपनी कुर्सी की सुरक्षा समझते हैं। किन्तु अपने राजनीतिक जीवन के अधिकांश भाग में कांग्रेस में प्रमुख नेता होते हुए भी स्वामी जी ने कभी भी कोई ऐसा काम नहीं किया और न होने दिया जिससे हिन्दू-हितों का बलिदान हो। इसके विपरीत उन्होंने शुद्धि-आन्दोलन छेड़ कर हिन्दू-मात्र में नव जागृति का संचार किया।

स्वामी जी राजनीति के क्षेत्र के भी कुशल योद्धा थे। यह स्वामी जी के शौर्य का ही चमत्कार था कि उन्होंने चांदनी चौक दिल्ली में जब ब्रिटिश सेना की संगीनों के आगे अपनी छाती तान कर सिंहनाद किया कि मेरे कार्यकर्ताओं पर गोली चलाने से पूर्व मेरी छाती पर वार करो। तब संगीनें झुक गई और गोली चलाने की नौबत नहीं आई।

प्रत्येक सम्प्रदाय के साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार करना स्वामी जी के चरित्र की विशेषता थी। इसी विशेषता के कारण इस्लाम के इतिहास में प्रथम बार स्वामी श्रद्धानन्द जैसे 'काफिर' को जामामस्जिद के मिम्बर पर से भाषण देने का निमंत्रण मुसलमानों के धार्मिक राजनैतिक नेताओं ने दिया था। मस्जिद के मिम्बर पर अपने भाषण से पूर्व स्वामी जी के मुखारविन्द से जब वेद मन्त्रों का स्वर गूंजा तो लगा जैसे हिन्दू-मुस्लिम का भेदभाव मिट गया हो। न कोई हिन्दू रहा, न मुसलमान। हर कोई आर्य (श्रेष्ठ) बन गया हो।

जब कभी स्वामी श्रद्धानन्द के तप-त्याग, अछूतोद्धार, शुद्धि आन्दोलन, चरित्र निर्माण के लिए गुरुकुल की स्थापना और देशभक्ति पूर्ण कार्यों की स्मृतियां उभरती हैं तो बरबस मुख से निकलता है— वाह ! श्रद्धानन्द ! और जब सत्ता लोलुप स्वार्थीजनों को स्वामी जी के किये कराए पर पानी फेरते देखता हूं तो अनायास ही वेदना के स्वर फूट उठते हैं—

आह ! श्रद्धानन्द !

पता—19 माडल बस्ती, दिल्ली-5

काव्यमयी जीवन गाथा

—रणवीर भाटिया—

सुनो सुनो ऐ आर्य बन्धुओ सुनाता हूं, तुमको अमर कहानी,
अमर कहानी उस महापुरुष की-पाया न हमने जिसका सानी,
नानक चन्द था बहादुर अफसर-कन्हैया लाल का था वो बेटा,
मशहूर डाकू संग्राम सिंह ने जिसके आगे था माथा टेका।
उसकी बहादुरी के कारनामे सुने हमने लोगों की जबानी॥

उसके घर हुआ चांद-सा बेटा मुन्शीराम रखा जिसका नाम,
बचपन बीता लाड़-प्यार मे रहीसीपन ने बिगाड़ी जवानी,
शराब मीट के थे वह आदी पढाई में भी न था लगता दिल,
ऐसी हालत देख उनकी बढ़ गई पिता की बेहद परेशानी।

1877 में शादी हो गई बनी धर्म परायण पत्नी शिव देवी,
उसके भाई देवराज थे कन्या महाविद्यालय के थे बानी,
विवाह के बाद कुछ मोड़ आया छोड़ा मीट और शराब,
पढ़ाई मे लगाया मन पूरा, 1888 में बने वकील दिवानी।

मुन्शीराम थे मूर्ति पूजक और रामायण की कथा के थे प्रेमी,
एक दिन मन्दिर जाने न दिया दर्शन कर रही थी रेवा की रानी,
भगवान के घर भेदभाव देखे नास्तिक बन गये मुन्शीराम,
रुचि हो गई अंग्रेजी सभ्यता की ओर ईसाई बनने की ठानी।

महर्षि दयानन्द अपने मिशन पर आये हुये थे बरेली मे,
मुन्शीराम गये दर्शन करने बदली उनके जीवन की कहानी,
मान गया प्रभु सत्ता को फिर भी होता नही विश्वास,
धीरज धरो मन में तुम मानोगे जब होगी कृपा रूहानी।

फिर आर्य समाज में प्रवेश किया किये बड़े अद्भुत काम,
बने प्रधान ऐ. पी. सभा के, समाज सेवा में बीती जिन्दगानी,
कागड़ी में खोला आर्य गुरुकुल वेद मर्यादा के अनुसार,
एक ओर गंगा बहती झरझर दूसरी तरफ नील गिरि रानी।

शीघ्र हो गया मशहूर कांगड़ी बना फिर विश्वविद्यालय,
हिन्दी संस्कृत का बना केन्द्र वेद मन्त्र बोले वहां जबानी,
पन्द्रह वर्ष तक की निष्काम सेवा लिया संन्यास 1917 में,
श्रद्धानन्द रखा नाम श्रद्धा से तप और त्याग की बने निशानी,

देहरादून मे कन्या गुरुकुल दयानन्द जन्म शताब्दी मथुरा में,
उनके परिश्रम का ही फल हैं होती है सबको देख हैरानी,
पहुंची खबर योरुप में गुरुकुल है अड्डा क्रान्तिकारियों का,
भेजा कमीशन वहाँ जांच के लिये करने गुरुकुल की निगरानी।

भेजी रिपोर्ट कमीशन ने श्रद्धानन्द को महापुरुष बतलाया,
दर्शन करना चाहते हो ईसा के करलो दर्शन श्रद्धानन्द महानी,
1919 में पहुंचे दिल्ली में मचा हुआ था जहां हाहाकार,
था आर्डर गोली मारो करे जो जलूस निकालने की नादनी।

वह डरा न गीदड़ भभकियों से चलाओ गोली, मैंने छाती तानी,
हुआ न साहस कमाण्डर को न रोक सके जलूस की रवानी,
गुरु के बाग सत्याग्रह में सिखों की, की उन्होंने रहनुमायी,
पहले ही जत्थे मे जेल चले गये ऐसे थे श्रद्धानन्द सेनानी।

हिन्दू मुस्लिम एकता में रखते थे श्रद्धानन्द अटल विश्वास,
जामा मस्जिद में पहले हिन्दू थे उचारी जिन्होंने वेद वाणी,
हिन्दू धर्म के थे सौदाई हिन्दूत्व पर चोट स्वीकार नही,
हजारों की शुद्धि की उन्होंने हिन्दू धर्म में वापस लानी॥

अब्दुल रशीद था जनूनी मुसलमान उसे यह सब कुछ न भाया,
धोखा देकर मारी गोली, समाप्त कर दी पवित्र कहानी,
शहीदों की नही होती मौत मर कर भी वह अमर होते हैं,
अर्थी उठाई लाखों सिरों ने भाटिया भूलेगी नहीं यह कुरबानी।

पता—लिली सूइंग मशीन, लक्कड़ बाजार, लुधियाना-१४१००८

श्रद्धा और आनन्द के प्रतीक स्वामी श्रद्धानन्द

—प्रि० पी० डी० चौधरी—

ऋग्वेद के दसवें मण्डल के १५१ वें श्रद्धा सूक्त मे एक बडा ही उत्तम वेद वाक्य है—

श्रद्धा हृदय्याकूत्या श्रद्धया विदन्ते वसून् ।

अर्थात्—"हृदय मे अटूट श्रद्धा व सकल्प शक्ति को धारण करके श्रद्धा के द्वारा धन वैभव प्राप्त हो सकता है।

वास्तव मे यदि देखा जाय तो जो कुछ भी इस सृष्टि मे कार्य किया जाता है उसकी सफलता का आधार श्रद्धा व सकल्प शक्ति ही है। दुनिया का दुरूह से दुरूह कार्य भी श्रद्धा व सकल्प शक्ति से सरलतम बन जाया करता है और तभी सासारिक व पारलौकिक सुखो की प्राप्ति सम्भव है। दर्शन शास्त्रों मे भी धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष को 'पुरुषार्थ चतुष्टय' कहा गया है। अर्थात् सब प्रकार के कार्यों मे पुरुषार्थ प्रमुख है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का कार्यक्षेत्र हमेशा से ही श्रद्धा तथा विश्वास पर आधारित रहा है। जीवन के प्रथम चरण मे जब मुशीराम ने स्वामी दयानन्द सरस्वती के दर्शन नही किए थे तब तक वे आस्था हीन यत्र तत्र भ्रमण करते रहे। बरेली मे श्री मुशी राम का स्वामी दयानन्द से प्रथम साक्षात्कार हुआ तो उसी क्षण उनके जीवन मे परिवर्तन की शुरूआत हुई। मुशीराम वकालत कार्य करते हुए भी प्रसन्नतापूर्वक उस व्यवसाय के दुर्गुणो से बचते रहे और जब उन्हों. स्वामी जी के मिशन की पूर्ति के लिए कदम आगे बढाया तो फिर यह ध्यान ही न रहा कि मेरा व्यवसाय क्या है? सब व्यवसायात्मक कार्यों को पूरे करके आपने शिक्षा के क्षेत्र मे क्रान्तिका सूत्रपात किया। कौन जानता था कि उनके द्वारा लगाया गया कागडी गाव मे वह छोटा सा पौधा एक दिन विशाल व सुदृढ वटवृक्ष का स्थान ले लेगा और अनेक ज्ञानपिपासु, क्लान्त पथिक उसकी अमृतमय छाया को प्राप्त तृप्ति का अनुभव करेंगे।

यहा गुरुकुल की पूर्वावस्था व आधुनिकावस्था का विचार यद्यपि उपयुक्त है परन्तु स्थानाभाव के कारण विवरण असम्भव है। अपनी सम्पत्ति का दान तथा उससे भी बढकर गुरुकुल कांगडी के लिए सर्वप्रथम अपनी ही सन्तानों का दान, ये दो बाते ही सिद्ध करती हैं कि स्वामी श्रद्धानन्द अपने सकल्प पर कितने दृढ थे। इससे बरबस उन पर श्रद्धा उमड आती है।

श्रद्धा उत्पादन सरल कार्य नही है। सामान्यतया प्रत्येक कार्य ही श्रद्धाप्लावित होकर पूर्ण होता है। परन्तु वेद का मन्त्र इसे और भी स्पष्ट करता है—

व्रतेन दीक्षामाप्नोति, दीक्षया आप्नोति दक्षिणाम्, दक्षिणा श्रद्धां आप्नोति श्रद्धयासत्यमाप्यते ॥

श्रद्धा प्राप्ति से पूर्व दो वस्तुओ का होना अनिवार्य है। व्रत और दीक्षा, बिना प्रतिज्ञा (निश्चयात्मिका शक्ति) तथा दीक्षा (कुशलता) के हम तिनके को भी नही तोड सकते। फिर स्वामी श्रद्धानन्द जैसे तमाम महापुरुषो ने तो पराक्रम तथा यश व विशालता से परिपूर्ण अनेक कल्याणकारी कार्य किए। श्रद्धा+आनद =श्रत्+धा=सत्य सत्य सरल प्रकृति अनुरूप कार्यों को धारण करके परमसुख या हृदयात्मक व भौतिक आनन्दो के प्राप्त कर्त्ता।

स्वामी श्रद्धानन्द ने स्पष्ट तथा विश्व की इस सच्चाई को पहचाना कि बिना स्वदेशी भाषा, सस्कृति व सरल सर्वग्राह्य शिक्षा के राष्ट्र प्रेम की भावना असम्भव है। तभी तो वे इतने निश्चितात्मा होकर गुरुकुल के लिए कार्य कर सके। वही से उनको राष्ट्रोत्थान तथा राष्ट्र स्वातन्त्र्य के शख को फूकना था और वे कार्य भी उन्होने बडे ही साहसपूर्ण रीति से सम्पन्न किया। चान्दनी चौक दिल्ली मे गोरी फौज के सामने सीना तानकर कहना कि 'पहले मेरी छाती को छलनी करो तब जाकर आगे बढना' यह कोई मामूली बात नही थी, स्वामी श्रद्धानन्द तथा हकीम अजमल खा के दिल्ली मे आन्दोलन की बागडोर सम्भालने के बाद तो महात्मा गांधी भी इस इलाके की तरफ से बेफिक्र हो जाया करते थे।

तीसरी और महत्वपूर्ण बात की शुद्धि सभा का सचालन करना और आर्य-समाज का प्रचार कार्य गतिशील बनाना मलकाने मुसलमानो की शुद्धि ही वह कार्य था जिसके लिए स्वामी जी को हत्यारे की गोली का शिकार होना पडा वास्तव मे स्वामी श्रद्धानन्द जी एक ऐसी मिसनरीस्प्रिट से काम कर रहे थे कि मुसलमानो के गढ मे हलचल सी मचगई तथा उन्हे अपने कार्य को चलाते रखने के लिए सामाजी रूपी बाधा दूर करनी पडी।

सम्पूर्ण भारतीय समाज उनके कार्यों के प्रति नतमस्तक होकर उन्हे प्रणाम करता है। सम्भवतया ये पक्तिया उनपर अक्षरश चरितार्थ होती हैं—

"रग लाती है हिना पत्थर पर घिस जाने के बाद ॥"

पता—आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी

जब डा० सिद्धेश्वर वर्मा गुरुकुल कांगड़ी में रहे

—आचार्य दीनानाथ सिद्धांतालंकार—

मुझे यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि अनेक गुण सम्पन्न विद्याव्यसनी और वेद माता के अनन्य उपासक पद्मभूषण श्री सिद्धेश्वर वर्मा को पर्याप्त समीप से देखने और समझने का अवसर मिला।

गगापार गुरुकुल कांगड़ी में जब मैं दशम कक्षा मे था, तब विद्यालय मध्य बनी यज्ञशाला में उपस्थित एक स्वस्थ, सुन्दर सुगठित शरीर के युवक से भेंट हो गयी। युवक शिष्ट, विनम्र और जिज्ञासु वृत्ति का था। पता चला कि वह गुरुकुल में संस्कृत का अधिक गहन ज्ञान प्राप्त करने के लिये, जम्मू से यहां आया है। नाम है—सिद्धेश्वर वर्मा। क्रमश: परिचय और सान्निध्य बढ़ता गया। हम दोनों ही लगभग समवयस्क थे। वर्मा हम सब छात्रों के साथ ही आश्रम के अन्तेवासी बन गये। ब्राह्म मुहूर्त से रात्रि शयन काल तक वर्मा भी हम ब्रह्मचारियों के साथ रहने लगा। कुश्ती, व्यायाम, सन्ध्या उपासना, जलपान, भोजन, पठन-पाठन सब समान और साथ-साथ रहता। गंगा में तैरना वह नहीं जानता था। वह हम सब ने मिलकर उसे सिखा दिया। इस प्रकार दीर्घकालीन सहनिवास से हमें और उसे भी लाभ हुआ।

दशम परीक्षा पास करने के बाद मैं महाविद्यालय मे पहुच गया। सिद्धेश्वर वर्मा भी लगभग १॥ दो वर्ष बाद उत्तम संस्कृत ज्ञान प्राप्त कर आचार्य स्वामी श्रद्धानन्द जी का स्नेह और सात्विक आशीर्वाद प्राप्त कर अपने घर चले गये।

कई वर्ष बाद। मैं कार्य क्षेत्र में प्रविष्ट हो चुका था। दिल्ली में करौल बाग देवनगर के साथ ही जुड़े आनन्द पर्वत पर डा० सिद्धेश्वर वर्मा रहते हैं—ऐसा समाचार एक पत्र में पढ़ा। पुरानी स्मृतियां जागी। विगत गुरुकुलीय जीवन के दिन साकार हो उठे। पूछताछ करते करते वर्मा जीका निवास स्थान ढूंढ़ ही लिया। जीवन के पृथक क्षेत्रों में होते हुए भी मानसिक दृष्टि से हम दोनों एक सदृश ही थे। वर्मा जी भारत सरकार द्वारा सम्मानित अनेक भाषाओं के विद्वान्, गहन, विद्या युक्त और प्रतिष्ठित पद पर पहुंच चुके थे। और मैं—एक सामान्य लेखक पत्रकार और समाज सेवक। पर वर्मा जी के मिलनसार और अपनत्व के स्वभाव में रंचमात्र भी अन्तर नही आया था। घंटों विभिन्न विषयों पर चर्चा होती रही।

वर्मा जी समय के कट्टर पालक, प्रतिदिन प्रात: पैदल ही आनन्द पर्वत से अपने सरकारी कार्यालय तक—लगभग 8-9 मील तक पैदल जाते थे। कार्यालय मे कभी देर से नही पहुचे। जीवन के सध्या काल—98 वर्ष की आयु मे भी सर्वथा नीरोग, कार्यदक्ष, हंसमुख और युवा सदृश उत्साह पूर्ण थे। इतने विद्वान होने पर भी अतृप्त, जिज्ञास वृत्ति ज्यों की त्यों, गुरुकुलीय सात्विक सस्कारो से युक्त सर्वथा निश्छल, सरल, सेवा तत्पर मृत्यु का समाचार सुन इस वरीय विद्वान के प्रति वेद के शब्दो मे, अन्त मे मेरी प्रभु से यही विनम्र प्रार्थना है—

अध्वनामध्वयते प्रमा तत ।
स्वस्ति मे ऽस्मिन् पथि देवयाने
भूयात् ॥

यजु० ५/३३

हे प्रभो: आप ही एक मात्र सन्मार्ग के स्वामी हैं। मुझे इस भवसागर से पार कर कल्याण मार्ग पर प्रेरित करें। देव यान-विद्वानों के इस मार्ग में मुझे आनन्द और कल्याण प्राप्त हो।

पता—के० सी० 37/बी० अशोक बिहार, दिल्ली-52

बन्दी घर के विचित्र अनुभव

आर्य समाज को बदनाम करने के लिए अनेक सिख इतिहासकार उसे 'सिखों का विरोधी' के रूप में चित्रित करते हैं। परन्तु यह सर्वथा असत्य है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण अमरहुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा लिखित 'बन्दीघर के विचित्र अनुभव' नामक वह पुस्तक है जो उन्होंने सन् १९२२ में लिखी थी। अजनाला के पास 'गुरु का बाग' को लेकर सिखों ने जो सत्याग्रह किया था उसमें स्वयं जत्थेदार बनकर स्वामी जी जेल गए थे और उसी जेल यात्रा के अनुभव उन्होंने इस पुस्तक में लिखे थे। उनकी यह जेल यात्रा इतिहास की अभूतपूर्व घटना है। सिखों और हिन्दुओं में द्वेष की आग भड़काने वालों के कुचक्र का इससे अनायास पर्दाफाश हो जाता है।

स्वामी जी ने सिखों की, सिख मत की और गुरुद्वारों की रक्षा के लिए जो जेल-यात्रा की, उससे जनता में कितना जोश फैला था, यह उस समय के समाचार पत्रों से पता लगता है। जेल में जब भी सिखों का दीवान लगता तो मुख्य ग्रंथियों के भाषण के बाद आशीर्वाद के लिए सदा स्वामी जी से ही प्रार्थना की जाती थी। जेल से मुक्ति के पश्चात सिख भाई

चिरकाल से मैं जेल की प्रतीक्षा मे था। रौलट बिल बड़े लाट की काउन्सिल मे पेश हुआ। समस्त भारत मे हलचल मच गई। देश ऐसे उठ खड़ा हुआ जैसे गाढ़ी निन्द्रा मे निमग्न मनुष्य भिड़ो के काटे घबरा कर उठ खड़ा होता है। गुरुकुल के एक स्नातक को आशीर्वाद देकर मैंने ही दिल्ली मे "विजय" दैनिक पत्र खड़ा करवाया। उनमे 3 मुख्य लेख क्रमानुसार निकले। उनका शीर्षक था। **"हमारी छाती पर पिस्तौल"** उन लेखो ने सयुक्त प्रान्त, पजाब राजपूताना और मध्य भारत मे विजय की धूम मचा दी। दिल्ली मे उसकी इतनी खपत हुई कि 700 प्रति छपने पीछे भी सैकडो उत्सुक मनुष्य निराश लौट जाते थे। दिल्ली-उर्दू का दिलदाद। मुसलमान भाई भी विजय को नित्य खरीदकर और हिन्दी जानने वालों से उसे सुनकर चैन लेते थे, तब इस पर आश्चर्य न होगा कि विजय 7000 की सख्या मे बिक कर भी पर्याप्त नही समझा जाता था। मुसलमान भाइयो का मतलब था कि विजय उर्दू मे भी निकाला करे। यदि विजय को उर्दू का चोला भी पहना दिया जाता तो 25000 प्रतियो से भी दिल्ली की तृप्ति करनी कठिन हो जाती।

आन्दोलन खूब हुआ। दिल्ली रोहतक और गुड़गाव के ग्रामो मे भी विजय की पताका फहराने लगी। और ग्रामीण भी अपने अधिकारो और उनपर नौकर शाही के अत्याचारो को समझने लग गये। उस समय महात्मा गाधी ने सत्याग्रह की घोषणा निकाली। मैं उस आन्दोलन मे कैसे सम्मिलित हुआ? उसकी कहानी कई बार पत्रो मे निकल चुकी है। मेरे परम मित्र स्वर्गवासी गोपाल कृष्ण गोखले के मुख्य शिष्य मिस्टर श्रीनिवास (मिस्टर और शास्त्री का मेल बेढब है परन्तु नायक को स्वीकार यही है) को मैं, माननीय मालवीय जी की प्रेरणा से, मिलने गया। मेरे मिलने का उद्देश्य यह था कि यदि नौकर शाही रौलट बिल के पास करने पर तुली ही रहे, और हिन्दोस्तानी सभासद अपनी अप्रसन्नता प्रकट करने के लिये काउन्सिल से उठ खड़े हो तो मिस्टर शास्त्री भी उन के सग ही उठ जावें। मैंने तो शास्त्री जी के साथ यह चर्चा छेड़ी और उन्होंने गाधी जी की सत्याग्रह सम्बन्धी घोषणा का जिक्र करके लीडर का पर्चा (जिसमे वह घोषणा छपी थी) मेरे आगे कर दिया और कहा कि वह उस घोषणा के विरुद्ध अपनी लेखनी उठाना कर्त्तव्य समझते हैं। मैंने बहुतेरा समझाया कि जब वह गाधी जी के मत और कर्मों के जिम्मेदार नही तो खाहमखाह दाल भात में मूसलचन्द बनने से क्या लाभ? जब उन्होंने एक न सुनी और कहा, It is my duty to protest against this तब मैंने उत्तर दिया—Then I must sign the Satyagrah Vow" और तब मेरे लिए सत्याग्रह के प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर कर देना आवश्यक हो गया। मैंने मिस्टर शास्त्री के यहा से लौटते ही महात्मा गाधी को तार दे दिया। तीसरे दिन वह दिल्ली आए तब मैंने शायद 5 व 6 मार्च सन् 1919 को पहली बार राजनैतिक आन्दोलन मे भाग लेने की घोषणा कर दी। फिर मैं बम्बई में महात्मा जी के साथ काम करके सूरत, भडौच और अहमदाबाद होता हुआ 11 मार्च को दिल्ली लौटा। वहा 25,26 और 27 को मेरे तीन व्याख्यान हो चुके थे। जब लार्ड चैम्सफोर्ड (उस समय के वायसराय) ने भारत सचिव मिस्टर मानटिगू को एक पारिभाषिक तार (Cipher Cable) भेजा जिसका अग्रेजी भाषा मे अनुवाद कोई दैवी शक्ति मुझे दे गई। वह लेख तो महात्मा गाधी को दिखाकर मैंने फाड डाला था परन्तु उसका शब्द शब्द मुझे स्मरण है। तार यह था —

The agitation is proceeding apace. Mahatma Munshiram who has, now assumed the name of Swami Shradhanand, has joined hand with Gandhi He has been, a well Known religious head for a long time and has gained considerable reputation as a social reformer also. He appears to be anxious to gain notriety as a political agitator too. **It is still to be seen what stamina he has got when the time for suffering comes** His elder son was for some time the guest of .....the well known revolutionist as Buenos Aryes. His younger son is running a rabid Anti Government Vernacular daily in Delhi Let us wait and see"

अर्थात आन्दोलन खूब चल रहा है। महात्मा मुन्शी राम, ने जिस, अब स्वामी श्रद्धानन्द नाम रख लिया है, गांधी के साथ हाथ जोड़ लिए हैं। बहुत काल से वह प्रसिद्ध धार्मिक नेता रहा है और सामाजिक सुधार मे उसने बहुत नाम पैदा किया है। अब मालूम होता है कि वह राजनैतिक आन्दोलन मे भी मशहूर होना चाहता है अभी देखना है उसमे सहन करने का कितना पराक्रम। उसका बडा लड़का कुछ काल तक प्रसिद्ध राजनैतिक विप्लव कर्त्ता......का ब्यूनो एरिस (दक्षिण अमेरिका के एक प्रजातन्त्र राज्य की राजधानी) मे अतिथि रहा है। उसका छोटा लडका दिल्ली के एक गवर्नमेन्ट विरुद्ध देशी भाषा का गरम दैनिक निकालता है। हम प्रतीक्षा करते हैं कि क्या होता है।

राम राज्य

30 मार्च स० 1919 को दिल्ली मे हड़ताल हुई। उसी दिन वर्तमान आन्दोलन के अन्दर ब्रिटिश नौकरशाही की सेना से, प्रजा पर गोलियो की बाढ झोक दाई गई। हमारी मैदान में जमा हुई सभा की उस दिन दो बार मशीन गनो और फौज ने घेरा। इन सब समयो मे, फौजी जनरल और सिविल के चीफ कमिश्नर के सामने मे ही हुआ था। बीस दिन बराबर (अर्थात 30 मार्च से 15 अप्रैल स० 1919 तक) हडताल रही। उस बड़े समय के अन्दर ऐसा रामराज रहा जिसे दिल्ली निवासी अभी तक न भूले होंगे। सेंध लगना बन्द, ताले टूटने बन्द, जूए खानो और शराबखानों के ठेकेदार बैठ शराबियों की प्रतीक्षा ही करते रहते थे। उस सारे समय मे डिप्टी और चीफ कमिश्नर सारे फिसाद की जड़ मुझे ही समझते रहे। यदि कोई गवर्नमैन्ट का बागी था तो मैं था। शेष सब नेता खिंचे हुए काम करते थे, परन्तु, जहा उनमे से बहुतों को स्पेशल कान्स्टेबल बनाकर अपमानित किया गया, वहां मुझे किसी ने पूछा भी नहीं कि किधर रहते हो।

कई बार प्रसिद्ध हुआ कि मेरे नाम का वारन्ट कट गया है। मुझे पहली बार शायद 10 अप्रैल को, बतलाया गया कि मेरी गरिफ्तारी रात को होगी तब मैंने, ऊपर का और नीचे सीढ़ी का, दोनों किवाड़ रात को भी खुले रखने शुरू कर दिये। मैं उन दिनों इतना तंग था कि यदि मुझे जेल ले जाते तो मुझे आराम मिलता। डेढ दो लाख प्रजा को अहिंसा धर्म का क्रियात्मक पालक बनाना कोई छोटी बात न थी। परन्तु कोई भी यमदूत मुझे विश्राम गृह में ले जाने को न पहुचा।

19 अप्रैल को हड़ताल खुल गई। मेरे भाई एन्ड्रूज के चीफ कमिश्नर को मेरा सन्देश पहुचाने पर हिन्दू मुसलमान नेताओ ने दो दिनों मे ही स्पेशल कान्स्टेबलों की अपमान जनक अवस्था से मुक्ति पाई। उनमें से कुछ रईस मुक्त होते ही शिमले की हवा खाने चले गये, देहली की हवा उनके लिए बहुत गरम हो चुकी थी।

दूसरी बार.....मालूम हुआ कि चीफ कमिश्नर साहब की तलबी शिमले मे हुई है। पजाब के छोटे लाट, ओडवायर (O Dwyer) ने जोर दे रखा था कि सारी बिहृत पजाब में देहली से जाती है। गांधी तो केवल कार्य प्रणाली बतलाने वाला है, उसकी क्रिया मे लाने वाला मैं हू। ओडवायर के हाथ वह चिट्ठी आ गई थी जिसमे ला० दुली चन्द्र को मैंने लिखा था कि यदि मेरी आवश्यकता हो तो मैं लाहौर पहुचू। ओडवायर का उस पर जो अपना हुकम लिखा हुआ था उसकी नकल मुझे एक सभ्य ने 25 जून 1919 के पीछे दिखाई थी जब मैं लाहौर मार्शल ला से पीडित परिवारो को आर्थिक सहायता देने गया था। उसमें लिखा था कि मुझे अमृतसर न रोका जाए बल्कि लाहौर पहुचने दिया जाए। वहा मेरे पैर में और हाथ में हथकड़ी लगाकर बाजारों मे से घुमाकर ले जाया जाए। यह भी हुकम था कि शहर मे मशीनगनें लगा दी जायें, दो हजार हथियार बन्द फौज बाजारो मे खड़ी हो जायें और मुझे इस प्रकार अपमानित करके घुमाया जाए कि जिस से लोग दहल जायें। परन्तु मैं उन दिनो लाहौर न जा सका और ओडवायर की और मेरी......दोनों की...दिल ही दिल में रह गई, अस्तु।

चीफ कमिश्नर से वायसराय ने या यूं कहें कि सर विलियम् विन्सेट कहा कि मुझे गरिफ्तार कर लिया जाय। सुना है चीफ कमिश्नर ने उत्तर दिया कि दिल्ली

लेखक—स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज
सम्पादक—प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु

को तबाही से और उस समय की गवर्नमेन्ट की बदनामी से स्वामी श्रद्धानन्द ने बचाया है। इस लिये मैं उसे गरिफ्तार नहीं कर सकता। उन्होंने यह भी कहा कि दिल्ली मे न कोई खराबी है और न वहां से कोई विद्रोह बाहर जाती है। विन्सेंट के बहुत जोर देने पर सुना है चीफ कमिश्नर ने कहा कि यदि स्वामी श्रद्धानन्द को गरिफ्तार करना है तो गवर्नमेन्ट-आफ इण्डिया स्वय दिल्ली का प्रबन्ध कुछ दिनो के लिए अपने हाथ मे लेवे। दो चार दिन तक वह जन अपवाद भी ठण्डा पड़ गया।

तीसरी बार अफवाह उठी, उसकी सचाई तो नाटक के एक नट से ही मालूम हो गई। जो नेता शिमले की सर्द हवा खाने गये थे उनमें से एक राय बहादुर और वकील को गुप्तचर दल (C.I.D) के डायरेक्टर सर चार्लसफलीवलेंण्ड ने बुला के पूछा कि यदि अमन और शान्ति स्थिर करने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द को गरिफ्तार किया जाये तो आपकी क्या राय है? तीनो ने (जिन में से दो मेरे साथ लीडरी का कार्य कर चुके थे) कहा कि यदि अमन कायम करवाने के लिए गरिफ्तार करना पड़े तो क्या हर्ज है? गुप्तचराधीश बोले—"तब आप लोग जरूर सरकार का साथ देंगे।" ये सब सिर हिलाकर चले आए। घर पर जाकर वकील साहब बोले—"यार तुम बहुत 1919

के अन्त मे) प्रसिद्ध हुआ था कि कांग्रेस की बैठक बन्द करने के लिये मुझे पजाब से देश निकाला दिया जायेगा। उस समय वर्तमान गवर्नर, सर एडवर्ड मैक्लैगन को मिलते ही इस जन—अपवाद का खण्डन हो गया था। फिर मैं गुरुकुल चला गया। वहाँ 'श्रद्धा' साप्ताहिक निकाला। उस के दो विशेष लेखो के निकलने पर **छठी बार** प्रसिद्ध हुआ कि मुझ पर मुकदमा चलाया जाएगा। एक आर्य सामाजिक लेखक ने मेरी, जेल की यात्रार्थ, सिफारश भी की और सरकार को युक्तियाँ भी बतलाई परन्तु फिर भी लार्ड चैम्सफोर्ड की गवर्नमेण्ट न हिली।

सांतवीं बार—मेरे ब्रह्म देश मे रगून पहुचते ही उस सूबे के छोटे लाट और लार्ड हार्डिञ्ज के समय के मेरे मेहरबान होम मेबर, सर रेजिनल्ड क्रैडक, ने लार्ड चैम्सफोर्ड से मेरी गरिफ्तारी की आज्ञा मागी। यह पत्र व्यवहार भी किसी दैवी चिड़िया ने लाकर मुझे दिखा दिया। मैं एक मास तक ब्रह्म देश मे घूमा। एक सुपरिटेन्डेण्ट एक इन्सपैक्टर और दो सब इन्सपैक्टर इतने सी० आई० डी०

स्थानो मे खुले व्याख्यान देता हुआ देहली पहुचा। फिर गुरुकुल मे तीन महीने रह कर जो लौटा तो देहली की नौकरशाही को दलित जातियो को फुसलाते और उन्हे हिन्दू मुस्लमान के विरुद्ध खड़े करते देखा। मैंने पूरा योग देकर उन्हे सीधे मार्ग पर चलाने की कोशिश की और उनके लिए अपने व्याख्यानो मे कोई कसर न उठा रखी। उस समय चमारो के चार पाच चौधरियो ने, जिनका हलवा मांडा उसी काम पर निर्भर था।

आठवीं बार—मशहूर किया कि मेरी और दलितोद्धार सभा के मन्त्री (डा० सुखदेव) की गरिफ्तारी के वारट निकल रहे हैं। परन्तु परिणाम कुछ न निकला। सन् 1921 का अन्त मैंने अहमदाबाद कांग्रेस मे सम्मिलित होकर बिताया और वहां से बम्बई जाकर दस दिनों तक विविध स्थानो मे तीन व्याख्यान दिये। फिर अकोला, अमरावती आदिक स्थानो मे आर्य मन्दिरो और उनसे बाहर भी शुद्ध वैदिक स्वराज्य और मनुष्य के स्वाभाविक स्वातन्त्र्य की घोषण की। देहली लौट कर प्रिन्स आफ वैल्स के

विचार, मेरे सम्बन्ध मे अनिश्चित हैं। मार्च 1919 मे मैं गुरुकुल चला गया, वहां से अप्रैल मे, अन्तिम निवृत्ति सहित, लौट आया जून के आरम्भ मे लखनऊ कांग्रेस कमेटी की बैठक मे भाग लिया। वहा दलितोद्धार पर जोर दिया, जिसका परिणाम एक सब कमेटी के रूप मे निकला जिसका सभासद भी मुझे बनाया गया जो आन्दोलन सभा वहा बनी उसके मैं विरुद्ध था और उसका परिणाम भी वही निकला जो मैंने बतला दिया था। अछूतोद्धार के प्रश्न पर कारकुन (working) कमेटी की आनाकानी देखकर मैंने दलितोद्धार उप सभा से त्याग पत्र देने के अतिरिक्त कांग्रेस के सब वर्तमान कार्य से किनारा कर लिया और आर्य (हिन्दू) जाति के सगठन को ब्रह्मचर्य द्वारा दृढ़ करके अछूतोद्धार की ओर विशेष ध्यान देने की तय्यारी कर रहा था, कि बिना अगाऊ नोटिस दिये मुझे गरिफ्तार कर लिया गया और मैं——बिना खून लगाए ही शहीदो मे दाखिल हो गया। 9 सितम्बर शाम को गाजी मुस्तफा कमालपाशा को उनकी जगद्विख्यात विजय के लिए, बड़े जलसे मे, बधाई देकर मैं रात की बम्बे मेल से अमृतसर चल दिया। उसी ट्रेन से मसहुलमुल्क, हकीम अजमल खाँ, मौलाना किफायतुल्ला और पण्डित प्यारे लाल शर्मा भी अमृतसर जा रहे थे। दिल्ली से चलते हुए बतलाया

स्वामी जी को अमृतसर के स्वर्णमन्दिर के अकाल तख्त में ले गए और वहां उनका अभूतपूर्व स्वागत किया।

यह वही श्रद्धानन्द थे जिन्होंने दिल्ली की जामा मस्जिद के मिम्बर से वेदमंत्र का उच्चारण करते हुए दिल्ली के मुसलमानों को राष्ट्रीयता का सन्देश दिया था। उसी श्रद्धानन्द ने मांडले (बर्मा) की ईदगाह में २५००० मुसलमानों के समक्ष भारतीय स्वाधीनता संग्राम का शंखनाद किया था। राष्ट्रीय नेताओं में अद्वितीय था स्वामी श्रद्धानन्द।

'गुरु का बाग' के सत्याग्रह से सम्बन्धित इतिहास के इन स्वर्णिम पृष्ठों की खोज करने और 'स्वामी स्वतंत्रानन्द शोध संस्थान, अबोहर' की ओर से उसे प्रकाशित करने का सारा श्रेय प्रो॰ राजेन्द्र जिज्ञासु को है। उन्होंने ही इस दुर्लभ कृति का सम्पादन भी किया है। आर्य जनता को इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए प्रो॰ जिज्ञासु का कृतज्ञ होना चाहिए। हम वही पुस्तक पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं।

चुके। अगर स्वामी जी के पकड़े जाने पर लोग भड़क उठे तो गजब हो जाएगा। फिर हम पर हर्फ आएगा। चलो बात सुलझा आवें।" तीनो उल्टे पैर गये और साहब से बोले—"हुजूर एक बात कहनी हम भूल गये। स्वामी श्रद्धानन्द को गरिफ्तार देहली मे न कीजिये। देहली से बाहर कीजिए। देहली मे फिसाद हो जाने का डर है।" साहब ने कुछ उत्तर न दिया और ये लोग लज्जित से लौट आये। उस समय भी गरिफ्तारी न हुई।

चौथी बार पुलिस वालों ने प्रसिद्ध किया कि देहली से बाहर जाने का मुझे हुकम नही है। प० मोती लाल नेहरू के निमन्त्रण पर मैं 4 जून 1919 को प्रयाग पहुच गया। अलीगढ़ तक जो सी०आई० डी० ने पीछा किया उससे तो मालूम होता था कि गरिफ्तारी होगी। परन्तु वहां भी ढाक के तीन पात ही निकले।

पांचवीं बार जब अमृतसर में नेशनल कांग्रेस की बैठक को अन्य प्रकार कृतकार्य करना असम्भव देखकर मैंने स्वागतकारिणी सभा के सभापति का पद स्वीकार किया, उस समय भी (नवम्बर

के सभ्य बराबर मेरे साथ रहे और स्थानीय पुलिस का तो कुछ ठिकाना ही न था। लाट साहब के कैम्प 'मेमियो' मे भी दो व्याख्यान दिए। माण्डले, स्वेबो, मोलमीन, पीगू, प्रोम मचीना और अन्य कई छोटे-छोटे स्थानो मे स्वराज्य और स्वतन्त्रता का खुला प्रचार किया। सारे काम की समाप्ति रगून की ईदगाह पर पच्चीस सहस्र की उपस्थिति में हुई। मेरे ब्रह्म देश मे रहते हुए पत्ता नही हिला। परन्तु मेरे जहाज पर पैर रखने के दूसरे दिन से ही मेरे काम करने वालो को तग करना आरम्भ हो गया।

नागपुर कांग्रेस मे मुझे इन्फ्लुइन्जा (Influenza) हो गया, और देहली पहुचने पर वह गुर्दे की बीमारी (Bright s disease) के रूप में परिवर्तित हो गया। मैं गुरुकुल भूमि कांगड़ी मे पहुंच कर साढ़े तीन महीने खाटिया पर पड़ा रहा। उस व्यवस्था में भी जो सन्देश मैंने प्रेस द्वारा भेजे वे भी बहुत स्पष्ट थे। अप्रैल सन् 1921 के अन्त में फिर बाहर निकल कर कानपुर, इलाहबाद, जब्बलपुर आदि

स्वागत में राजधानी के अन्दर पूरी हड़ताल का यत्न किया। देहली मे पहले विज्ञापन हिन्दू सभा की ओर से मैंने लगवाए। प्रेस द्वारा गौ घातकों के पुश्त पनाह, प्रिन्स के स्वागत से अलग रहने को प्रेरणा की और हिन्दू युनिवर्सिटी के सचालक पण्डित मदन मोहन मालवीय जी से भी, प्रेस द्वारा ही, प्रश्न किया कि जिस प्रिन्स के साथ मनो गौमास जहाज के दिनो की खुराक मद्दे आया है उसको किस मुंह से हिन्दू सस्था की ओर से उपाधि देने के लिए बुला रहे हैं। उन दिनो हकीम अजमल खां साहब ने बतलाया कि उनके और डाक्टर अन्सारी के नाम के वारट कट चुके हैं और मुझे प्रेरणा की कि वालन्टियरो के साथ न निकलू, जिससे उनके पीछे कांग्रेस का काम चल सके। फिर भी एक बार मैं एक दस्ते के साथ गया, परन्तु किसी ने कुछ न पूछा।

फिर बारदोली का प्रसिद्ध ठहराव आया। उसके विषय मे जो तार मैंने दी और उस पर जो वाद-विवाद चला वह सिद्ध कर रहा था कि नौकरशाही के

गया कि सब हिन्दू मुस्लमान अकाली भाइयो का रुपया और आदमियो से सहायता देने को तय्यार हैं। मुझ से यह भी प्रतिज्ञा ली गई कि यदि "शिरोमणि गुरुद्वारा कमेटी" आदमियो को अमृतसर पहुचने की आज्ञा देवे तो तत्काल 100 भाइयो को भेज दिया जावेगा। 500 नाम लिखे जा चुके थे और 5000 तक भरती करने का विचार था। मेरा विचार था कि अमृतसर का काम पूरा करके सोमवार 11 सितम्बर की शाम को मुलतान के लिए चल दू।

खालसा भाइयों को सन्देश

10 सितम्बर 1922 को प्रात काल अमृतसर पहुचते ही माननीय मालवीय जी का सन्देश पहुचा कि सब से पहले उन्हे मिला जाय। मैं स्नानादि नित्य कर्मों से निवृत्त होकर बाहर बाग मे मालवीय जी के पास पहुंचा। हकीम साहब अभी नही पहुचे थे। मुझे बतलाया गया कि वह अकाल तखत के दीवान मे गये हैं। मैं भी सीधा वहां चला गया। मैंने दिल्ली निवासियों को सन्देसा दे दिया और साथ

बन्दी घर के विचित्र अनुभव

ही आशा दिलाई कि सयुक्त प्रान्त (U.P) से भी बहुत मनुष्य आने को तय्यार होंगे।

अकाल तखत से उठकर मैं मालवीय जी के पास गया। वहा सब भाई जमा थे। उस शाम जल्लियाँवाला बाग मे होने वाली मीटिंग मे पेश होने के लिए रेजोल्यूशन तय्यार हो रहे थे। मैने इस प्रकार का प्रस्ताव पेश करना चाहा कि जिस से ज्ञात हो जाए कि सब हिन्दू मुस्लमान अकाली दल के साथ, पिटने और जेल मे जाने के लिये तय्यार हैं। माननीय मालवीय जी ने इसको टालना चाहा कि शायद गुरद्वारा प्रबन्धक कमेटी सहायता लेने से इन्कार करे, इस लिए उन से पूछ लेना चाहिए। मैंने उत्तर दिया कि शान इसी मे है कि वह इन्कार करे परन्तु हमारा कर्त्तव्य यही है कि हम अपने भाइयो के साथ योग देने के लिये तय्यार रहे। रेजोल्यूशन तय्यार करके मुझे दिखा लाने का बोझ प्रोफेसर रुचिराम साहिनी पर डाला गया और उन्होने गुरु के बाग जाते हुए मेरी सम्मति भी ले ली। मुझे मालूम नही कि फिर वह रेजोल्यूशन उस शाम की मीटिंग मे पेश हुआ या नही।

लगभग एक बजे मोटर गाडी मे थोडा सा स्थान लेकर मै गुरू के बाग को चल दिया। वहा क्या हुआ और मैंने क्या देखा वह मैं अपने 'अदालत' ब्यान मे लिखवा चुका हू। 5.15 बजे शाम को अमृतसर से लौटने लगे। एक पुलिस इन्सपेक्टर ने पुलिस सुपरिन्टेडेन्ट का हुकम गरिफ्तारी दिखाया। भारत दण्ड सग्रह की धारा 117, 157 और 109 के अनु-सार अभियोग चलाने के अभिप्राय से मुझे गरिफ्तार किया गया। दो इन्सपेक्टर (एक हिन्दू एक मुसलमान) साथ हुए परन्तु उनके पास कोई सवारी न थी। हकीम अजमल खाँ साहब ने अपना मोटर दिया। दोनो इन्सपेक्टरो सहित मलिक लाला दुनी चन्द्र भी मेरे साथ आए और जेल के द्वार पर मुझे इन्सपेक्टरो सहित, छोडकर मेरा थैला और और बिस्तरा भिजवाने लाला राधा कृष्ण जी के आर्य-भवन की तरफ चले गये, जहा मैं उतरा हुआ था।

अमृतसर जेल में पहली रात

जेलर अपने मकान के अन्दर थे। मैंने उनके भृत्य से जल लेकर हाथ पैर धोए। उसने आसन बिछा दिया और मैं सन्ध्या मे बैठ गया। इन्सपेक्टरो के पास कोई वारट न था इस लिए जेलर ने किसी अग्रेज अफसर के साथ टेलीफोन द्वारा बातचीत की और मेरे लिए जेल का सगीन दरवाजा खोल दिया। पुलिस इन्सपेक्टर रसीद लेकर चले गये और मुझे ले जाकर एक दो मजिला वार्ड की निचली मजिल के पहिले पिंजरे मे बन्द कर दिया गया। उस समय रात के 8.15 बज चुके थे। कोठरी लगभग 12 फीट लम्बी और आठ फीट चौडी थी। एक ओर दीवार के साथ लगा हुआ डेढ बीता ऊचा, तीन फीट चौडा, और पौने छ फीट लम्बा मट्टी का चबूतरा था उस पर एक टाट बिछा था। दो कम्बल पडे थे। जिनमे से एक को लपेटकर सिरहान बना लिया और अपना कुर्ता लपेट कर भी उसी पर धर लिया। दूसरा कम्बल टाट पर बिछा-कर लेटने को ही था कि ऊपर से किसी सभ्य नें पूछा कि कौन आया है। मेरा नाम सुनकर एक लम्बे खालसाजी उतर आए, जिन्होने एक गलास और एक पखी देदी। मैंने उन्हे कुछ पहिचाना, जब गुरु के जडयाले मे गया था उस समय वह मुझे मिले थे, जडियाले से जो छ काग्रेस के कारकुन पकडे गये थे, उनमे वह भी आये थे और एक वर्ष की कड़ी कैद का हुकम इनके लिए लग चुका था। उन्होने बतलाया कि छ मे से चार हिन्दू मुस-लमान क्षमा मांगकर चले गये हैं, एक जैनी डगमगाया हुआ है, परन्तु खालसाजी दृढ हैं।

इतने मे पानी की घडी भी आ गई और नम्बरदार कोठरी का ताला ठोक कर चला गया। गरमी उस रात बहुत थी, पखा हाथ में लिये लेटा हुआ था। 10-11 बजे फिर कोठरी खुली, लालटेन भी साथ आई। मेरा थैला और बिस्तर भी आ गया, परन्तु बिस्तरे की सूतली उतार कर जेलर साहब ले गये। कैदी के पास किसी प्रकार की भी रस्सी, सूतली वा डोर नहीं रहने पाती। एक तो शायद यह भय कि कहीं रस्सी बाधकर 20 या 22 फीट ऊची दीवार न फांद जाय और दूसरा भय यह कि कही गले मे डालकर आत्मघात कर न ले।

रात भर पखा झलते व्यतीत हुई। कोई हमदर्द न था। केवल पहरे वाला हर घटे पीछे बोलता है, "बोल जवान बोल जवान" यदि कोई न बोला तो उसकी गाली से खबर लेकर बुलाया जाता। मैं हर बार पहिली हांक पर ही उत्तर देता रहा। पहरे वाला बोलता तो चारो ओर से नम्बरदार चिल्ला उठते "सब अच्छा"। मैंने भी उनसे उसी रात शिक्षा ली और बोल जवान का उत्तर दिया—"सब अच्छा" अन्दर ही शौच के लिए बर्तन रक्खा था, अन्दर ही मट्टी का लोटा लघुशका (पेशाब) के लिए, यह नया अनुभव भी लिया। शौच होकर पास रखी मट्टी ऊपर डाल दी, लोटे मे लघुशका की। हाथ धोकर शुद्ध मट्टी से अपना जलपात्र माजा और फिर हाथ धोकर बैठ गया। 5.30 बजे नम्बरदार आया, "उठ जवान बुहारी लगा" सब कमरो के सामने यही हाक लगाता घूम गया। बुहारी अन्दर पड़ी थी। मैंने बुहारी भी लगा डाली। तब हमारे अफसर नम्ब-रदार ने दरवाजे खोल दिये। और कैदी तो चीलो की तरह पाखाने पर जा पड़े और मैंने नलके पर जाकर हाथ और पैर धोए। फिर मैं तेल मलने कमरे में चला गया और स्नान करके लौटा तो भगी पाखाना पेशाब उठा ले गया। तब मैंने बाहर निकलकर सूर्य भगवान के दर्शन किए और अकाली नेताओ से मिला।

जिस गृह की निचली कोठरी में मैंने रात काटी उसका नाम कारन्टीन है। सत्रह पिजरेनुमा कोठरियां नीचे और इतनी ही ऊपर हैं। उससे आठ दस कदम की दूरी पर जेल की पिछली बड़ी दीवार है। कारन्टीन के ठीक मध्य, इमारत और दीवर के ठीक बीचो बीच पाखाना है। पाच बजे पिंजरे खुलने की घटी बजी, फिर पौने छ बजे रोटी बाटन की। पाखाने मे केवल छ आदमियो के लिए, पीठ से पीठ जुडी हुई, बैठने की जगह, ईटो की खुड्डी भी नदारद और पर्दा ऐसा, जैसा भग पीने वाले पुत्र ने पिता की आख बचाने के लिए तिनके का कर लिया था। इस पाखाने में 35 कारन्टीन के और 52 छौलदारियो वाले कैदियो ने निवृत्त होना होता था। फिर दो तीन नम्बरदारो और उतने ही चपरासियों का इसी पर......। नहाने का तो उस समय नाम लेना भी कैदी के लिए पाप, घटी बजी और अपना-अपना लोहे का दो-अढाई आने मूल्य वाला (दारोगा जी ने यही मूल्य बतलाया था), बाटा हाथ मे लिए कैदी पक्ति मे उकडू बैठने लग गए। कोई भाई अभी पाखाने बैठा ही है कि एक पठान नम्बरदार ने पकड कर उसे गर्दनिया दी।......गरीब आबदस्त लेकर ही पक्ति मे बिना बाटे के बैठ गया और वह आधकच्ची .....जली हुई रोटी पर ही दाल डलवाकर खाने लगा। यदि उस समय इस उत्तम भोजन को खाना शुरू न करें तो दिन भर भूखा रहे और घलुए (पजाबी रूगे) उसे शायद पाच सात दिन के लिये डडा बेडी भुगतनी पड़े।

हवालाती पोलिटीकल कैदियो को ऊपर की मजिल मे रखा हुआ था। सुप-रिन्टेडेन्ट मि० जेन्किन्ज असिस्टेन्ट 8 बजे आया। जेलर ने उससे पूछकर मुझे ऊपर की मजिल मे जाने की आज्ञा दी। वहा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी का मानो कार्यालय ही था। सरदार मह-ताब सिंह बैरिस्टर प्रधान, डिपुटी प्रेसि-डेन्ट पजाब काउन्सिल, सरदार भाग सिंह बी०ए०एल०बी० सरदार नारायण सिंह बैरिस्टर मैनेजर गुरुद्वारा ननकाना साहब, प्रोफैसर साहब सिंह बी०ए० उप मन्त्री सरदार रवेल सिंह, सरदार मुकन्द सिंह, सरदार तेजा सिंह लडकाना निवासी तथा सदार तेजासिंह अकालियो के जन-रल और सेनाध्यक्ष, सरदार उमराव सिंह जिला मन्त्री, खालसा लीग और सबसे बढ़कर खालसा पथ के माननीय वृद्ध बाबा केहर सिंह पट्टी वाले और अन्य थे। सरदार महेन्द्र गोपाल ·····और लाला रत्न चन्द्र काग्रेस के प्रचार में पकडे आए थे जिनमे से खालसा······ तो एक साल की कैद आनन्द से भुगत रहे थे, परन्तु रत्नचन्द्र जी उसी दिन··· के लिये जो गये तो क्षमा प्रार्थना करके चम्पत हुए और मुझे न मिले और उन्हीं के खाली किये हुये पिंजरे मे मुझे स्थान दिया गया। ऊपर की कोठरी बारग के आगे साढ़े चार फीट लकड़ी का बरा-मदा है जिसमे सब रात को सोते थे। नीचे से ऊपर इतना भेद था कि हमारे दरवा। दिनरात खुले रहते थे, हां दो बन्धिशें थीं। एक तो जब आठ और नौ बजे के बीच में सुपरिन्टेन्डेंट आता तो दस-

यतिवर श्रद्धानन्द !

—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' अबोहर—

निर्भय होकर प्राण धर्म पर जिसने वारे।
वे थे श्रद्धानन्द यतिवर सन्त हमारे॥
प्रण का पक्का धर्मवीर वह जनहितकारी।
उसके उर के अरमानों पर मैं बलिहारी॥

दीन दुखी की सेवा करते न उकताये।
परहित दुनिया जाने कितने कष्ट उठाए॥
साहस, शौर्य, कर्मठता की मूरत स्वामी।
मुनि, मनस्वी, वेदनिष्ठ, साधु नरनामी॥

पूज्य, पुनीत, विनीत, लोक हित लड़ता अड़ता।
निर्भय हो निर्वैर सदा ही रण में बढ़ता॥
नहीं कभी विपदाओ मे नाहर घबराया।
नहीं पदों का कभी प्रलोभन मन में आया॥

रहा तडपता, सदा तरसता बलि होने को।
रक्त चढ़ाया उसने जग का मल धोने को॥
लेखराम की लिये हिये में आग धधकती।
जिसकी, गर्जन-तर्जन सुनकर जागी जगती॥

पन्द्रह मिनिट पहले ही हम सबको पिंजरे में बन्द कर दिया जाता। सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब खट खट करते, कवायद की चाल बरामदे में नाक की सीध पर देखते अपने लाव लशकर सहित एक मिनिट मे गुजर जाते। लशकर उनका क्या था? उनके पीछे जेलर, फिर जमादार, वार्ड के चपरासी, नम्बरदार क्रमानुसार बूट खटखटाते, एक सीढ़ी चढ़ते और दूसरी सीढ़ी उतर जाते। यदि किसी हवालाती ने कुछ कहना हुआ तो दो तीन मिनिट और लग गये।

दूसरी बंदिश यह थी की जब साधारण कैदियों को खिला पिला करके 'सब अच्छा' की घंटी (जुदा जुदा तीन टकोरे) बजतीं उससे पीछे हम लोग नीचे न रह सकते और प्रातः काल 4 बजे से पहले नीचे नहीं उतर सकते थे।

जेल का पूरा नक्शा

अमृतसर का सब अर्थात छोटा जेल है। इसकी लम्बाई चौडाई इतनी ही है, जितनी मियावाली जेल मे 45 विशेष राजनैतिक कैदियों के लिए अहाता। अमृतसर मे उतनी ही डेढ वा सवा विघा जमीन के अन्दर 246 कैदियो की जगह है और मेरे सामने जब अकाली दल की चढ़ाई हुई तो 550 तक एक समय मे नई छोलदारिया लगीं और 20 के स्थान में 40 वा 45 घुसेड कर रखे गये। जब संख्या और बढ गई तो चार पाच सौ गोबिन्दगढ के किले मे रख कर भोजन नौकरी से एक हजार तक का उतने ही लागरी (पाचक) उसी 18 फीट लम्बी और 14 फीट चौडी कोठरी मे (जिसकी खिडकियो और रोशनदानो मे भी जाली लगी हुई है) दाल रोटी प्रात और शाक रोटी सायंकाल बनाते थे।

जेल का दोहरा दरवाजा, मजबूत लोहे का बना है, दोनो दरवाजों के मध्य मे एक ड्वेडी है जहां जेल का सत पितरस (कूंजी बरादार) ईधर उधर चक्कर लगाया करता है जेलो के अफसरो के लिए बडा दरवाजा खोल देता है, परन्तु कैदियों के लिए छोटी खिडकी ही खोली जाती है। सत पितरस (saint peter) तो वारंट दाखिला देखकर स्वर्ग की कुंजी खोलता है, जेल का पितरस वारण्ट खारिजया देखकर बाहर भी निकाल देता है।

ड्वेढ़ी मे प्रवेश करते ही दाहिनी ओर जेलर का आफिस (दफ्तर) है और बाए ओर के कमरे मे एक मेज कुर्सी पड़ी रहती है जिस पर बैठकर साहब सुपरिन्टेडेन्ट हस्ताक्षर आदि का काम करते हैं। अन्दर घुसते ही दाहिनी ओर एक दो मजिला बारक आगे बढ़कर फिर दुमजिला बारक और वस्तु भण्डार (Store) इत्यादि। बाए ओर रसोई घर, बुड्ढी घर अर्थात् स्त्री कैदियों के लिये चार कोठरियां और बंद आगन, छोटा सा हस्पताल और बस। छोलदारियों की भरमार ने निकलना पैदल कठिन कर छोड़ा था।

बहुत ही खराब और मनुष्यों को पशु बनाने और निर्लज्जो को भी बेशर्मी की पराकाष्ठा पर पहुचाने वाला है। पाखानो का वर्णन मैं कर चुका हू। ऊपर वाली मंजिल की बीच वाली कोठरियों वाले दो घन्टों तक नाक नहीं सम्भाल सकते थे और नीचे एक खुड्डी का दूसरे से नाम मात्र का पर्दा और बाहर से तो सर्वथा अरक्षित, खुड्डियो पर बैठना भी मुश्किल। पेशाब के लिए मट्टी के लोटे रक्खे हुए परन्तु उन मे पेशाब छोडने के लिए वैज्ञानिक शिक्षा (Scientific Training) की जरूरत और केवल पेशाब करने के लिये लोहे के खुले ढोल रखे हुए जिन मे जेल सृष्टि के सामने खडे होकर पेशाब करना पडता। यदि जरा चूका तो नम्बरदार ने पीछे से लात ठोक दी और नम्बरदार बेचारा भी क्या करे, यदि कोई चपरासी वा जमादार देख ले तो नम्बरदार की पेशी करदे और उसे भी दण्ड मिल जाए। जो दण्ड जेल में मिलते हैं उनकी तो समाचार पत्रो मे काफी छानबीन हो चुकी है।

जेलर गरीब को तो पूछता ही कौन है। एक पले हुए मोटे ताजे बीबे (भला पुरुष) खत्री राय साहब दर्शक Visitor नियत थे। उनका ध्यान मैंने इस ओर खींचा और साथ यह भी बतलाया कि जिस पानी से भरी हुई नाली पर बैठकर कैदियों को इक्टठे आबदस्त लेना पडता है उससे सचारी रोगो के फैलने का डर है तो उत्तर मिला "मैंने दो बार रिपोर्ट की परन्तु कोई सुनता नही।" मैने कहा, "आप तो कैदियो के दुख दूर कराने के लिए नियत हो। यदि कोई सुनता नही तो त्याग पत्र दे दो।" बोले, "आप सुपरिन्टेन्डेन्ट को कहो।" ठीक उत्तर मिला। ऊपर से तो विजिटर साहब हमारे दर्द पूछने आते, परन्तु असल मतलब और ही था। आप जब आते ब्रिटिश सरदार की हुकूमत की प्रशसा करके सरकार महताब सिंह जैसे दृढ—सकल्प धर्म प्रिय सज्जन तक को अंग्रेजो के साथ झुककर भी राजीनामा करने की प्रेरणा करते और इधर की उधर लगाने का शुभ कार्य भी करते। इन्होंने सी० आई० डी० का इतना जबरदस्त काम किया होगा कि अब राय बहादुरी के अधिकारी हो चुके।

महात्मा मुन्शीराम जी

लगर के कमरे के पिछले सिरे पर, द्वार के ठीक सामने भट्टी पर एक बडी देग (अजमेर शरीफ की दरगाह वाले नमूने की) रक्खी रहती है। अजमेर वाली उतार कर साफ की जाती है, ताबे की है और उसमें कलई भी की होती है। यहा लाहे की, बिना कलई की हुई है और कभी भट्टी पर से उतारी नही जाती। जब साफ की जाती है तो थोडा पानी डाल उसके अन्दर एक आदमी खडा होकर पैरो से मल दल के साफ करता है। पानी कटोरे मे बाहर निकाला कुछ बाहर निकला कुछ अन्दर रहा और आदमी ने बाहर निकल कर आग जलाई। पानी अन्दर डाला और उसमे दाल छोड दी। जब रिध गई तो 1/4 तोला प्रति कैदी हवालाती के हिसाब से तेल डालकर छोक लगा दिया। शाम को इसी हिसाब से शाक भाजी मे तडका लग गया। दाल और शाक दोनो काले स्याह हो जाते। क्योकि लोहे की जगाल भी तो नित्य उसमे मिल जाती होगी। मैने डाक्टर साहब का ध्यान इस ओर खीचा। उत्तर मिला कि दाल भाजी तो कैदियो को कमजोरी दूर करने के लिये टौनिक का काम देती है। डाक्टर साहब ने पाखानो के बारे मे कुछ ऐसा ही उत्तर दिया था।

जेल की डाक्टरी का खातमा टिंचर आयोडीन और कुनीन की गोलियों पर ही हो जाता। यदि बुखार 104 दर्जे का है तो सरदार नरायण सिह से श्रीमानो को भी जवाब मिलता, "आध सेर दूध लगवा दूगा।" मैंने डाक्टर साहब को प्रसिद्ध 'मनाय' से 1001 बीमारियो को दूर करने वाले हकीम साहब का ही अवतार पाया।

जेलर (बाबू जीवन लाल कश्मीरी) सज्जन पुरुष प्रतीत हुए। कैदियो को आराम भी पहुचाना चाहते थे, यथा शक्ति भोजन भी अच्छा देना चाहते थे। परन्तु जो वश की बात न थी उसमे क्या करते। भाजी वह जहा तक हो सके अच्छी मगाना चाहते थे परन्तु, हुकम यह था कि जो सबसे सस्ती भाजी हो वही मगानी चाहिए। मैंने सम्मति दी कि कुछ हल्दी दाल भाजी मे डाल दी जाय जिससे खाना पच जाया करे। उत्तर मिला कि लाल मिर्चे जितनी चाहे दाल शाक मे डाल सकते हैं परन्तु हल्दी की आज्ञा नही। मैने सम्मति दी कि तेल के मूल्य का ही घी यदि दाल शाक मे डाला जाय तो व्यजन अरुचिकारक न रहेगा। उत्तर मिला कि जेल कमिशन के मेंबर मद्रास, गुजरात और बगाल-तीनो तेल प्रधान प्रान्तो के निवासी थे। यदि पजाब और सयुक्त प्रान्त के भी प्रतिनिधि होते तो शायद घी का प्रश्न भी छिड़ता। मैने सम्मति दी कि देग को यदि कलई करा लिया जावे तो दाल शाक का रग आखो और जिह्वा को इतना न अखरे। दरोगा जी तय्यार भी हुए एक पुलिटिकल कैदी कलई का काम जानने वाला भी आ गया। उजरत तो उसने कुछ लेनी ही न थी, कलई आदि सामान पर शायद छः वा सात रुपये लगते। गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी से मैंने मनवा लिया कि यदि कलई के दाम जेल फण्ड से न दिये जा सकें तो वे दे देंगे। दारोगा जी ने यह शुभ समाचार भी सुना दिया कि एक और देग का सौदा कर रहे है, नई देग कलई करा के चढाएगे तब पुरानी देग को उतार कर कलई हो जायेगी और इस प्रकार डेउढ······परन्तु चार पाच दिन →

बन्दी घर के विचित्र अनुभव

पीछे सब मामला टाय 2 फिश हो गया और जेलर साहब न कह दिया कि नये सुपरिन्टेडेन्ट, मिस्टर वोरन् नही मानते।

जब 500 अवाली सब जेल मे और 500 गोविन्दगढ मे थे, उस समय 1000 की रोटी जेल से बनकर जाती थी दो दिन गेहू की और शेष दिनो सतनाजे (चना आदि मिश्रित) की दो दी मोटी रोटी प्रत्येक कैदी हवालाती को मिलती थी। सरदार महताब सिंह इत्यादिक खालसा नेता भी वही रोटी खाते थे। उनका अधिकार था कि जैसा भोजन चाहे मगाकर खाये परन्तु वह सब भाइयो की सी रोटी ही खाना ठीक समझते थे। यदि प्याज वा गुड वा आचार मगाते तो जितने भाई जेल मे होत सब मे बाटकर खाते। सरदार महताब सिंह के घर से उनके पुत्र प्रेम सहित फल और मिठाई लाते, परन्तु सरदार जी ने सब भाइयो के हिस्से रसदी बाटकर उतना ही बचा हुआ भाग आप खात। मैंने खालसा नेताओ के तप तथा विनय भाव को देखकर निश्चय किया कि स्वराज्य प्राप्ति का भविष्य ऐसे ही वीर क्षत्रियो के हाथो मे है। गेहू की हो या मिस्सी ऐसी तो रोटी खाकर पचाई जा सकती थी, परन्तु कच्ची वा जली हुई को पचाना बडे शूरवीर का ही काम था। सुपरिन्टेडेन्ट का ध्यान इस ओर सरदार महताब सिंह ने खीचा, उत्तर मिला कि यदि यह भोजन पसन्द नही तो जमानत दकर घर चले जाओ। यह अत्याचार इस लिए था कि सत्याग्रही नामिल-वर्तन के वीरो को उनकी प्रतिज्ञा से गिराया जाये। परन्तु यहा गिरने वाला 14 वर्ष का बच्चा भी न मिला जिसने जेल के अन्दर सब भाइयो के जोडे साफ करने का व्रत लिया था। मेरी अमृतधारा की शीशिए बहुत काम आई। चक्षु, रोग, पेट दर्द, कब्ज, शिर पीडा आदिक मे इससे बहुत सहायता मिली और बहुत ने सादे भोजन का अभ्यास कर लिया।

मैंने जो परिवर्तन चाहे थे उनमे कुछ व्यय भी नही होता था और पुलिटिकल कैदी ही नही अन्य, साधारण कैदियो को शिकायत कम होकर गवर्नमेन्ट का कुछ भला ही हो जाता, परन्तु वहा फिर रोब दाब (Prestige) का प्रश्न नौकरशाही गवर्नमेन्ट को आ घेरता है। मुझे दीखता है कि यह गवर्नमेन्ट प्रेस्टीज (रोबदाब) पर सब कुछ कुर्बान करने को तय्यार है। और यदि यही हालत बरस छ महीने और रही तो प्रजा के विश्वास और मान, सभ्य जगत् की सहमति तथा सहयोग और यहा तक कि 30 करोड पर सामराजीय शासन के स्थान मे, नौकर शाही की बदौलत, ब्रिटिश गवर्नमेन्ट के पास सिवाय प्रेस्टीज के और कुछ न शेष रह जायेगा।

मेरा मुकदमा

मेरे मुकदमे का सारा हाल समाचार पत्रो मे छप चुका है। मजिस्ट्रेट बनवारी लाल का फैसला भी छप चुका है और उस पर प्रेस की सम्मतिया भी निकल चुकी हैं। मजिस्ट्रेट को मेरी बदौलत मनुस्मृति के विशेष स्वाध्याय का अवसर मिला, उसकी पडताल श्री स्वामी कृष्ण तीर्थ जी महाराज शकराचार्य शारदापीठ ओजस्विनी भाषा मे कर चुके हैं। मुझे उसके विषय मे बहुत नही लिखना है। पहली बात यह है कि मेरी आयु 67 वर्ष की थी, मजिस्ट्रेट ने बिना मुझसे पूछे 60 वर्ष की आयु लिखली। जेल रजिस्टर मे आयु 67 साल और फैसले मे 60 साल। दूसरी बात यह कि मेरा ब्यान लिखकर मजिस्ट्रेट ने कहा था—"स्वामी जी! आप सब अदालतो पर कटाक्ष करते हैं। अपनी आत्मा की आवाज सुनने वाले भी विद्यमान है"। मैंने उत्तर दिया था कि "आप लोग विवश हैं, आपको आज्ञा माननी पडती हैं।"

फिर उस दिन वकील सरकार बहस कर रहा था तो उसकी सब दलीलो को मजिस्ट्रट ने स्पष्ट शब्दो मे रद्द कर दिया था, जिससे सब श्रोताओ तथा समाचार पत्रो के सवादाताओ ने भी यही नतीजा निकाला था कि मजिस्ट्रेट मुझे अभियोग से मुक्त कर देगा। वकील सरकार न भी ऐसे ढग से बातचीत की थी जैसे कमजोर हारे हुए मुकदमे का वकील करता है। दूसरे दिन एक भद्र-पुरुष ने जेल मे आकर मुझे कहा कि मजिस्ट्रेट अप एक सुहृदय से कह चुका है कि मुकदमा कुछ नही आप छूट जाओगे। मैंने उत्तर दिया—"यदि छोडना होता तो दो पृष्ठ लिखकर उसी समय छोड देता। अब बीच मे सात दिन हैं। सुपरिन्टेडेन्ट मैकफर्सन गवाह गुजरा है। मजिस्ट्रेट के रुख की रिपोर्ट डिप्टी कमिश्नर के पास होगी और वह बिना सजा दिलाए न रहेगा। यदि नौकरी छोडने को तय्यार हो जाय तो मुझे छोडने का हौसला करेगा"। मेरे परिचित ने कहा—"यदि सजा देगा तो तीन महीने से अधिक न देगा"।

मेरा उत्तर था—"एक वर्ष से कम सजा दिये बिना उसका काम नही चलेगा। पाच अक्तुबर को देख लेना।" वैसा ही हुआ, और मैंने मजिस्ट्रेट को कह भी दिया था कि मैंने एक ही वर्ष की ही भविष्यवाणी की थी।

हिंदुस्तानी मजिस्ट्रेट का अपराध क्या है? जीवन ऐसे भोग प्रधान बन चुके हैं कि थोडे में निर्वाह नही होता, और नौकरी छूटे तो पर काम क्या करें? बाधित होकर उन्हे आत्मा का घात करना पडता है। यही कारण है कि मैंने आज से 24 वर्ष पूर्व गुरुकुल-शिक्षा प्रणाली के लिए अपील की और अब चार वर्ष के विविध आन्दोलनो के पीछे फिर मेरी सम्मति स्थिर हुई है कि यदि मातृभूमि को स्वतन्त्र कराना है और उसके साथ ही ससार मे भोग और स्वार्थ को दूर कराके शान्ति का राज्य स्थापन करना है तो बालको तथा बालिकाओ की गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के ढांचे मे ढाल कर ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी बनाना चाहिए।

एक बात का विचार बाकी है। एक दैनिक पत्र के सम्पादक महाशय ने अकाल तखत वाले व्याख्यान के अन्य भागो का समर्थन करते हुए यह सन्देह प्रकट किया था कि मुझे गृहस्थ पुरुषों का सन्देश शिरोमणि प्रबन्धक कमेटी तक पहुचाना नही चाहिए था क्योकि यह सन्यास धर्म के बाहर है। मैंने सन्यास धर्म का अर्थ कर्म का न्यास (त्याग) नही समझा प्रत्युत गुरुवर आचार्य दयानन्द के चरण चिन्हो पर चलने का यत्न करते हुए कर्म फल में अनासक्ति अर्थात् त्याग को ही सन्यास समझा है। इसलिये मैं उन सब साधारण के सहमत नही हू जो कहते हैं कि "सर्व कर्मनासी सन्यासी' होता है। यदि दिल्ली वालो का सन्देश पहुचाने वाले उन्हे कहा से मिल सकता था? और यदि गुरु के बाग (तहसील अजनाला) का आदोलन धर्म विरुद्ध था तो मेरी सारी वक्तृता ही निंदनीय समझनी चाहिए। ऋषि दयानन्द लिखते हैं, "जिससे दुष्ट कर्मों का त्याग किया जाए वह उत्तम स्वभाव जिस मे हो वह सन्यासी कहाता है इसमे सुकर्म का कर्ता और दुष्ट कर्मों का नाश करने वाला सन्यासी कहाता है।"

5 अक्तूबर 1922 ई० के दिन मुझे धारा 117 मे एक वर्ष और धारा 143 मे चार मास का सादा कारगार (Simple Imprisonment) मिला और मैं जेल मे लौट आया। 26 अक्तूबर को साढे सात बजे शाम के मुझे वहा ·········· ··············· 26 अक्तूबर सन् 1922 ई० तक कुल 47 दिन मैं अमृतसर सब जेल मे रहा।

जेल का जीवन

नित्य प्रात दो बजे—कभी-कभी एक बजे—उठकर मैं कोठरी के अन्दर रखे कोलतार से चुपडे हुए मट्टी के लोटे मे लघुशका कर हाथ पैर धो लेता और बरामदे मे आसन लगाए, चार बजे तक आत्म विचार करता। चार बजे कोठरी के अन्दर धरे बर्तन में शौच कर के उस पर बहुत खुश्क मट्टी डाल चल देता। जाता हुआ कोठरी के अन्दर और आसन के आगे बरामदे मे धूप बत्तियां जलाकर और नम्बरदार से पुकार कर आज्ञा ले नीचे चला जाता। वहा हाथ पैर धोकर ऊपर आ तेल की मालिश कर फिर धोती तौलिया बगल में और लोटा हाथ ले उतर जाता। नलके मे उस समय जोर की धार आती क्योकि अन्य नलके बन्द होते। मेरे साथी प्राय: सरदार महताबसिंह और बाबा केहर सिंह होते। धोती तौलिया धो और लोटे मे जल लेकर ऊपर आ बरामदे के सामने धोती उपरना सुखाने के लिए लटका आसन पर बैठ कर उस समय तक बराबर ध्यान लगाने का यत्न करता जब तक पिंजरों मे बन्द भगी कैदी छुटकारा पाकर कोठरी के मल सहित बर्तन उठा ले जाता। उस समय मैं उठकर टहलने लगता और जेलर की विशेष कृपायुक्त आज्ञा के अनुकूल जब भगी कोठरी मे फिनायल छिडक जाता तब मैं अन्दर जाकर नये धूप बत्ती जला फिर टहलने लगता। साढे सात बजे मैं किसी धर्म ग्रन्थ के स्वाध्याय के लिए बैठ जाता और साढे आठ बजे तक उसी में लगा रहता। इसी अन्तर में सुपरिन्टेन्डेन्ट अपनी पलटन सहित कवायद करते निकल जाते मैं अपनी आख पुस्तक पर से न उठाता और वह दूसरी ओर दृष्टि करके निकल जाते। फिर प्रात काल का भोजन होता।

भोजन प्रथम दिवस (11 सितम्बर) को रोटी भाजी आदि यथापूर्व आया था। एक बार जेल की गेहू और सतनाजे की रोटी और काली लोह चून युक्त दाल भाजी का भी आनन्द लिया और एक गुल्ला (मोटी रोटी) भी चखा। फिर भोजन की विधि बदल ली। मुझे दिन को शौच के लिए जाना अखरता था और अन्नादिक ग्रहण करने से वह आवश्यक हो जाता था। मैंने इसका हल उसी समय सोच लिया। प्रात साढे आठ बजे तीन केले और एक छटाक अगूर खाकर एक मीठा नींबू चूस लिया और जलपान हो गया फिर नीचे उत्तर कर टहलता रहा और अकाली नेताओ से बातचीत होती रही, साढे दस बजे दूध आया तीन पाव दूध पी आधा घण्टा टहल और एक घण्टा लेटकर आराम किया फिर एक घण्टा इधर-उधर भ्रमण करके कुछ लिखा और कुछ पढा। चार बजे नए अकाली जत्थे से मिलने सब भाइयों के साथ चला गया। कभी पूरा जत्था अर्थात् सौ अकाली और कभी दो और तीन जत्थो के दर्शन होते। सरदार महताब सिंह जी नित्य उन्हें शान्तमयी वृत्ति को स्थिर रखने और जेल के सब कष्ट सहकर भी प्रतिज्ञा पर दृढ रहने का उपदेश देते। सरदार जी के उपदेश को सुन और उनके विनय भाव को देख सारा दीवान प्रभावित दिखाई देता और खालसा सिंहो के चेहरो पर वीररस की पान चढकर उनके मुख तेज की अग्नि से दहकने लगते। फिर मन्त्री जत्थेदार आदि पथ की आज्ञाएं उनको सुनाते। अन्त मे कुछ कहने की मुझे प्रेरणा होती है और मैं अपनी तुच्छ बुद्धि तथा योग्यता अनुसार भारत माता का उज्ज्वल स्वरूप खींच और उसकी वर्तमान दशा का चित्र दिखला कर कलगीधर गुरु गोबिन्द सिंह के स्थापित सभी पंथ से माता का क्लेश निवारण करने के लिए अपील करता। जो प्रेम मैंने तीन

हजार से अधिक अकाली वीरो के हृदयो मे लहरे मारते देखा है। उससे मुझे निश्चय हो गया कि सारे ससार को विद्या धर्म और जीवन का उपदेश देने वाली देवी फिर से ससार की शिरोमणि बनेगी। इस अपूर्व दृश्य से आत्मिक प्रसाद लेकर मैं फिर कोठरी मे पहुचा और तीन केले और शेष एक छटाक अगूर खाकर और तीन पाव दूध फिर पीता। फिर एक घण्टा भाइयो से बात चीत करते हुए टहलता। ऊपर पहुच कर एक घण्टा फिर आत्म विचार, जिसके पश्चात् मैं सो जाता। अमृतसर जेल मे 47 दिन बड़े आनन्द से व्यतीत हुए। भोजन पहुचाने और मेरी अन्य सब आवश्यकताओ को स्वय अनुभव कर, उनको पूरा कराके आर्य भवन के निवासी श्रद्धा सम्पन्न आर्य सज्जन श्री राधा-कृष्ण जी ने मेरी कठिनाइया दूर कर दी थी। परन्तु अकाली नेताओ के सत्सग और अकाली जत्थो के प्रेम के परिचय ने मुझे भारतीय जाति के भविष्य पर उसी शुभ स्थान मे पूरा विश्वास दिलाया।

अमृतसर जेल से प्रस्थान

26 अक्तूबर को पाच बजे दरोगा जी ने खबर दी कि मुझे दो साथियो समेत किसी अज्ञात स्थान के लिए प्रस्थान करना होगा। मेरे साथ सरदार उमराव सिंह मन्त्री सिख लीग जिला अमृतसर और सरदार ठाकुर सिंह सम्पादक 'ससार' और 'स्वतन्त्र' दफा 108 जाबिता फौजदारी मे एक एक वर्ष के गपफे लेकर चले थे। अकालियो ने गुरुद्वारा सुधार के धार्मिक मोर्चे मे कैद के हुकम का नाम गपफा रखा था। अमृतसर मे जिस जत्थे को छ मास कैद मिलती उसके सभ्य कहते—'कुछ न मिलया जो, छ महीने' और जिन्हे 2½ वर्ष की कैद का हुकम होता वे खम ठोकते आते और कहते—'बडे गपफे मिले', अकाली खालसा वीरो के लिए जेल का जीवन कडाह प्रसाद का स्वादिष्ट भोजन था।

छ बजे हम तीनो दफ्तर मे आ बैठे। ठीक साढे सात बजे मोटर लारी घडघाती हुई पहुची। आगे दो गोरे ड्राइवर (चलाने वाले) अन्दर उनकी पीठ से पीठ मिलाए दो गोरे फौजी और 10 राइफल लिए सगीन चढा मुसलमान मिलिटरी पुलिस के सिपाही। हमारा समान दरोगा जी ने बीच मे रखा दिया और हम तीनो ऊपर चढकर अपने सामान पर बैठ गये। मोटर लारी धड़धडाती हुई फिर चल दी। मुसलमान सिपाही खडे थे और सडक के वृक्षो की डालिया झुकी हुई जब जब उनकी पगडियो मे डालिया लगती तब तब वे अंग्रेजों को भर पेट गालिया देते। दोनो गोरे राइफले टेक कर बैठे थे।

ला० राधाकृष्ण के वहाँ मेरे दो कम्बल पड़े थे, उनके मांगने का भी अवकाश न मिला। एक ठण्डी हवा और दूसरे गर्द के गोले मुह को आते। ड्राइवर पीकर मस्त थे हमे उतारना था खासा के स्टेशन पर साढे 6 बजे रात की ट्रेन मे बैठने के लिए और ले गये तीन मील आगे। वहा कुछ खटकी तो उतर कर मील देखा। तब फिर पीछे लौटे। खासा के स्टेशन पर गोरा पुलिस सुपरिन्टेडेन्ट और एक पुलिस इन्सपैक्टर (जो हमारे साथ जाने वाला था) मोटर मे पहुचे हुए थे। लारी पर से खाक छान कर नीचे उतरे। मेरा सामान एक पुलिस सिपाही उठाने को तैयार थे परन्तु गोरे मैन ने लिया। दोनो सरदारो का सामान भी पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट ने कहा, "He is an old man, hence the coneession You are young men, you must carry your own luggage" अर्थात् वह बूढा है इसलिए उनको रियायत की गई है। तुम जवान आदमी हो, तुम्हे अपना सामान स्वय ले चलना चाहिए।

हम लोग अन्दर पहुचे। एक पूरी पाच कमरो वाली सीखचे लगी कैदियो की गाडी तय्यार थी। हमको इन्सपैक्टर ने एक ओर के कमरे मे चढ़ा दिया। सुपरिन्टेन्डेन्ट न आकर हमे उसमे से उतरवा बीच के कमरे मे करके दोनो ओर के ताले बन्द करा दिये और ताकीद कर दी कि दरवाजे मार्ग मे सर्वथा न खोले जाए। मैं तो मौन साधे रहा, सरदारों ने हाथ मुह धोने को पानी मागा। साहब बहादुर ने बड़ी कृपा करके पानी मगा दिया परन्तु किवाड खोलने की आज्ञा न दी। सीखचे ऐसे घने थे कि उनमें से लोटा तो क्या गलास तक नहीं निकल सकता था। गोरे के चले जाने पर इन्सपैक्टर ने अपने कमरे मे से पानी खुले सीखचो द्वारा हमारे पास पहुचाया। हाथ मुह धोकर बिस्तरे बिछा लिए। गाडी थर्ड क्लास की थी। एक बेंच पूरा मेरे लिए छोडकर दूसरे पर मेरे दोनो साथी सो गये।

एक बात का यहा बतलाना आवश्यक है जिससे इस समय की गिरावट का पता लगता है। लारी पर मार्ग मे तीन पास के सिपाहियो ने मुझे फकीर देखकर दवाई पूछी। तीनो को प्रमेह रोग था और तीनो ने मेरे पूछने पर ऐसी भयकर दशा वर्णन की जिससे मुझे फिर मे विश्वास हुआ कि पहले देश के अन्दर मनुष्यत्व का पुनरुत्थान होना चाहिए, तब सत्य और अहिसा और स्वाधीनता और अन्य गुण राष्ट्र मे आ सकते है, और उसके पीछे स्वराज्य हाथ बाँधे सामने आ खडा होगा।

मार्ग मे लालामूसा (पश्चिमी पजाब मे प्रसिद्ध स्टेशन) तक कोई नही मिला लालामूसा स्टेशन पर, तीन बजे प्रात, बहुत से भाई मौजूद थे। दसो सिपाहियो ने राइफलें सीधी करके गाडी के आगे पक्ति बाध ली। वहा हमारी गाडी कट कर मियावाली जाने वाली ट्रेन मे लगाई गई। मार्ग मे सब स्टेशनो पर विशेष पुलिस शायद इसलिए भेजी जाती रही कि कही लोग हमला करके हमे छुड़ा न ले जायं। लालामूसा वाली पुलिस मलकवाल तक साथ आई। वहा से दो घण्टो से अधिक समय तक ट्रेन ठहरी। मैंने इन्सपैक्टर से कहा कि गाडी के अन्दर तख्ता उठाकर शौच जाना मेरे लिए सम्भव नही, बीमार हो जाऊगा। तुम स्टेशन के पाखाने के चारो ओर बन्दूक का पहरा लगा दो, परन्तु मुझे गाडी से उतर कर पाखाने फिर आने दो। इन्सपेक्टर ने उत्तर दिया कि साथ की गाडी मे ही सी० आई० डी० वाले भेजे गए है, इसलिए इजाजत नही दे सकता। मुझे अपनी निर्बलता पर शोक हुआ। मुझे कुछ भी नही कहना चाहिए था। हमने कमरे के बीचो बीच एक चादर टाग दी और शौच के लिए बैठे। मुझे तो हानि ही हुई न बैठता तो अच्छा रहता। स्टेशन स्टाफ के सब आदमी आ गये। उन्होने ताला खोला और पानी की बालटिया हाथ मुह धोने और गाडी साफ करने के लिए लाकर दी, परन्तु इन्सपेक्टर ने प्लेटफार्म पर उतरने की इजाजत न दी।

सरदार उमराव सिंह ने इन्सपेक्टर से कहा कि हम लोगो के भोजन का क्या प्रबन्ध है? इन्सपेक्टर ने कहा कि उसे तो कुछ दिया नही गया वह अपने पास से खर्च करने को तय्यार है परन्तु यहा तो लालामूसा और मलकवाल और उससे आगे हमे खब फल मिले। मेरे पास भी फल साथ थे। मैंने कुछ खाकर और सरदारो को भी खिलाकर शेष पुलिस को बाट दिये। सरदारो को पूरी-तरकारी भी काफी खाने को देश भक्तो से मिल गई। मेरे सामने एक महाशय के अगूरो की छोटी टोकरी लाकर रख दी। मुझे क्या मालूम था कि मियावाली में फल न मिलेगे। मैंने वह अगूरो की टोकरी भी पुलिस वालो को बाट दी।

दो बजे से पहले कुंडियां जकशन पर पहुचे। वहा मियावाली से पुलिस का खासा दस्ता आया हुआ था और मियावाली के कुछ भाई भी गये हुए थे। कुंडिया से चलकर ट्रेन सीधी मियावाली पहुची स्टेशन पर बहुत भाई उपस्थित थे। उन्होने मुझे बाधित किया कि जेल की ओर पैदल चलू। गुर्दे की बडी बीमारी भुगतने के पीछे मुझे अधिक परिश्रम से मेरे चिकित्सकों ने रोका हुआ था, परतु जब प्रेम से प्रेरित करके भाइयो ने खीच लिया तो पैदल ही चल पडा।

मार्ग मे बहुत भीड भाड हो गई। फिर फरमाइश हुई कि कुछ सन्देश भी दू। मैंने खद्दर के प्रचार, अछूतोद्धार और ब्रह्मचर्य के प्रसार पर बल देते हुए कुछ और बाते भी कही होगी। पौने तीन बजे जेल का द्वार खुल गया और हम पुलिस की हिरासत से सुपरिण्टेण्डेण्ट के आफिस पहुच कर बैठ गये। दरोगा बडी सभ्यता से मिले, हमारा सामान देखा। मेरी पेन्सिल और लिखे हुए कागज रखकर कहा कि बिना सुपरिण्टेण्डेण्ट की आज्ञा से ये वस्तुए अन्दर नही जा सकती। पीछे पेन्सिल कागज और दवात होल्डर भी मिल गए

कौन अमर पद पाता है ?

—कविवर प्रणव शास्त्री, एम० ए०—

जो न मृत्यु से मन मे डरता
वही अमर-पद पाता है॥

प्रण के लिए प्राण-रक्षा की नही मनौती कभी मनाता,
करता है, स्वीकार हर्ष से सघर्षो की काल चुनौती।
जो न स्वार्थ के रथ मे बैठे वही देव कहलाता है॥ १॥

बाधाओ के बढे बवन्डर पथ से विचलित कर न सके हैं,
लक्ष्य-प्राप्ति मे लक्ष प्रलोभन जिसके मन को भर न सके है।
सतत साधना से साधक का साध्य निकट आ जाता है॥ 2॥

पर-उपकार-प्रथा में जिसने तन, मन, धन, सर्वस्व लुटाया,
निम्न धरा से उच्च शिखर पर चढ़ने का पाथेय जटाया।
वही व्रती बलिदान-भवन मे गौरव गाथा गाता है॥ 3॥

क्षण-क्षण में भूखे कण-कण को जीने का सङ्गीत सुनावे,
सर्वा आशा मम मित्रं कह जन-गन को जी मीत बनावे।
वही यशोधन बना भगीरथ यश की गङ्गा लाता है॥ 4॥

राष्ट्र, धर्म के नन्दन वन को रक्त-धार से सीच चुका हो।
लाखो के हित-साधन में जो निज आँखो को मीच चुका हो।
भले न दीखे, वह लाखो की आँखो मे ही बस जाता है॥ 5॥

घिरे अमावस के दूतो से बना सूर्य जो टकरा जावे।
श्रद्धामय आनन्द भाव से प्रणव प्राण जो बिखरा जावे।
वही विजेता नेता प्यारा श्रद्धानन्द कहाता है॥ 6॥

पता—शास्त्री सदन, रामनगर (कटरा) आगरा-6 (उ० प्र०)

→

मियांवाली जेल

मैं जेल से बाहर भी मियावाली जेल के सुपरिण्टेण्डेण्ट डा० रामजीदास के स्वभाव वर्ताव तथा सहनशक्ति की बडी प्रशसा सुन चुका था। हा ! पहले जेलर की सख्ती की कुछ शिकायत थी। मैंने अपने अनुभव से वर्तमान जेलर ला० ज्ञानचन्द को बडा सहनशील तथा सहानुभूति रखने वाला पाया और पूर्व के जेलर ला० शहजादा राम के विषय मे जब बडे से बडे अक्खड कैदी से पूछा तो मुझे उस के विषय मे भी कोई शिकायत न मालूम दी। क्या वह रिश्वतखोर था ? "रिश्वत के तो वह नजदीक न जाता था जेल की कोई वस्तु न वर्तता था"। क्या वह गाली देता था ? "नही प्रत्युत गाली सुनकर भी सहन करता था।" क्या किसी कैदी का पेट काटता था—"यह भी नही" फिर उसकी क्या शिकायत थी ? उत्तर मिला—"वह जेल के नियमो की अक्षरश पाबन्दी कराना चाहता था। परन्तु हम लोगो ने उसे तग किया कि वह हम लोगो से घबराता था।" पास खडे एक बडे सभ्य शान्त पाच वर्ष की कैद भुगतने आए कैदी ने कहा शहजादा राम की सम्मति यह थी कि पोलिटिकल कैदी की शान इसी मे है कि जेल के नियमो का पूरी तरह पालन करे। महात्मा गाधी और काग्रेस की भी तो यही आज्ञा है। यह भी कहा करता था कि उसे अपने स्वदेशी भाइयो के नियम भजक होने पर लज्जा आ जाती है। अक्खड महाशय को भी ऊपर के कथन का समर्थन करने के लिए बाधित होना पडा।

सुपरिन्टेन्डेन्ट डा० राम जी दास तो सचमुच सहनशीलता के सिद्ध हैं। सबके सामने हाथ बाधे आते है और जो कुछ भी उनकी शक्ति मे हो वह आराम सब कैदियो को देते हैं। इसलिए अपने दीर्घ अनुभव के होते हुए भी अग्रेज अफसरो की आखो मे काटे की तरह खटकते है और चिरकाल के स्थानापन्न सिविल सर्जन होते हुए स्थिर किये जाने योग्य नही समझे जाते। मुझसे कई भाइयो ने कहा यदि यह चाकरी त्याग कर असहयोगी हो जाये तो गाधी जी के भाव को समझ कर उस पर चलने वाला शान्त आत्मा इन से बढकर कोई न होगा। मैंने उत्तर दिया यदि यह चले जाये तो शायद आपको सताने वाली ऐसी शैतान की रूह आ जाय कि बहुतो के लिये जेल असह्य हो जाय। उस मनुष्य को देवता कहोगे वा क्या जिसे प्रेम से उसके कर्त्तव्य जतलाते हुए एक युवक काग्रेस वालन्टियर बेटी की गाली देता है। और वह कहता है "काका ! तू भी तो मेरा बच्चा है और वह तेरी बहिन है। बच्चा ऐसे अपशब्दो से मुह अपवित्र नही करते।" जब अनुभवी काम करने वालो ने सुना तो उसकी आखो मे आसू निकल आए। जब अफसर ऐसे हो तो यदि उनके मातहत सब सेवा भाव से काम करे, कोई आश्चर्य की बात नही है।

मियावाली जेल की ड्योढी भी अमृतसर फैशन की है, परन्तु यहा की सफाई बडी प्रशसनीय है। अन्दर जाते ही दाहिनी ओर जेल कार्यालय कमरा जहा नायब जेलर और कलर्कादि भी बैठते है, और बाई ओर सुपरिण्टेण्डेण्ट का कमरा। दरवाजा खुलते ही दोनो ओर ऊची दीवारे दिखाई दी। दाहिनी ओर जेरे तजवीज, अपराधियो (हवालातियो) की दो बारके और बाई ओर साधारण कैदियो की बारके, फिर यूरोपियन वार्ड सेशन कमरा आदि, सामने बडा गोल कमरा साधारण बडे लगर का अमृतसर के लगर से चार गुना बडा जिसमे सवा दो सौ वा अढाई सौ कैदियो का भोजन बनता है। उसके ऊपर पानी की टकी जिससे खीचकर पानी सारे हौज की बारको मे बाटा जाता है और उसके ऊपर मध्य मे एक गोल छत्ता हुआ, चारो ओर से खुला बुर्ज ....जिसमे जाडे बरसात और धूप से सुरक्षित पहरे वाला खडा रहता है। रात के पहरेदार हर 15 वा 20 मिनट पीछे सब नम्बरदारों को बुलाते हैं, और यदि कोई न बोले तो गश्त वाला चपरासी उसे हिला देता है।

लगर खाने के आगे गोदाम का कमरा है उससे आगे चार कोठरियो वाला अहाता लडके मुलजिमों के लिये जिसका नाम मुण्डेखाना है। उससे आगे बडी मियाद के कैदियो की कोठरियो के अहाते हैं। लगरखाना के ठीक बाई ओर हस्पताल की बडी स्वच्छ और सुन्दर इमारत है जिसमे 24 बीमारो के लिए चारपाइया बिछी हुई हैं। टहलने के लिए काफी अहाता और रविशें सुन्दर है। लगरखाने की दाहिनी ओर अमृतसर के अहाते के लगभग बराबर का एक अहाता है जिसमे तीन बारके पन्द्रह 2 कोठरिया है। उनमे स्पेशल क्लास के पुलिटिकल कैदी रखे जाते थे।

स्पेशल क्लास

27 अक्तुबर 1922 ई०, 3॥ बजे स्पेशल क्लास वार्ड का द्वार खुलवाया। जेलर मुझे साथ लिए अन्दर गए। सत् श्री अकाल ! वन्दे मातरम् ! अल्लाहु अकबर के नारे सातवें आसमान को भी गु जा। लगे। सब भाई द्वार पर जमा थे। श्री नानक जहाज के निर्माता और अग्रेजी गवर्नमेंट के घाव खाए हुए वृद्ध बाबा गुरदित्ता सिंह को सबसे पहले पहचाना। सरदार लद्धासिह गुजरावाला के प्रसिद्ध गणितज्ञ और वकील, देहली के मौलाना, अब्दुल्ला पानीपत के मेरे पुराने मित्र और गो रक्षा के प्रेमी मौलाना लकाउल्ला जो पहली खेप के साथ ही पाच वर्षों के असीरेफरङ्ग हुए थे, मार्शल ला के हटते ही मेरे साथ पीड़ितों की सहायता मे सम्मिलित मेरे पुराने चिरञ्जीव महात्मा नन्द गोपाल, पीरजादा अताउल्ला शाह, जमीदार के महाशय सालक और चौधरी अखतर अली खां इत्यादि चालीस से अधिक भाइयो से गले मिला और पहली कोठरी मे ही मुझे निवास दिया गया। पहले सब भाइयो ने जमा होकर बाहर के समाचार सुने, फिर मैं नलके पर नहाया और शाम को कुछ दूध पीकर सो रहा।

मियावाली मे फल नही होते और बाहर से भी कम आते हैं, अत भोजन मे फिर परिवर्तन करना पडा। जेल की ओर से मुझे डेढ सेर दूध और आध सेर दही देकर तथा आवश्यक चीनी दी गई। फलो के स्थान पर फिर से रोटी खानी शुरू कर दी। यहा शौचालय पर्देदार और साफ मिला, इसलिए फिर दो बार शौच जाने मे कठिनाई न प्रतीत हुई केले के स्थान मे प्रात शाक व चने के रस के साथ दो तीन फुल्के खा लेता और ऊपर से आध सेर दही का मठा बनाकर पी लेता। तीसरे पहर आधा दूध और 5॥ बजे शेष आधा सेर पीकर निवृत्त हो जाता। तीन दिन पीछे सगतरे बराबर आने लग गये और इस प्रकार फल भी मिलते रहे। नित्य दो व तीन सगतरे खा लेता रहा। उसके छिलके भी व्यर्थ नही जाते थे। दो युवको के शरीर पर खिम्ब के दाग थे, उन्हे रगडने को दे देता। इससे उनको बहुत लाभ हुआ।

दूध, दही, मीठा जेल की ओर से मिलता। फलादि सब कुछ बाहर से सज्जन भक्त भेजते, शाक जेल से बिना दाम मिलता व बाहर से आता, परन्तु दो तीन रोटी लगर मे भिक्षा मे मिल जाती। मेरे बहुत मना करने पर भी बाबू हाकिमराय, डाक्टर सन्तराम आदिक सज्जनो और विशेषकर अभय सिंह राजपूत कैदी के प्रेम ने मुझे घृत अधिक खिलाया जिससे मैं तीन दिन फिर पुरानी बीमारी मे फसा रहा। वैसे तो सबने ही सहानुभूति दिखाई परन्तु दो युवको (प्रतुलचन्द्र तथा महेन्द्र पाल सिंह) ने विशेष सेवा की। डाक्टर ने बुद्धिमत्ता से चिकित्सा मुझ पर छोडी और इसीलिए शीघ्र निरोग हो गया। उससे पीछे सब प्रेमी भाइयो ने आग्रह छोड दिया और भोजन का क्रम और व्यवस्था अनुकूल हो गई। अधिक सर्दी पडने पर दस दिसम्बर से दही के स्थान मे दूध लेना आरम कर दिया।

प्रात काल दो बजे नियम से उठता। तीक्ष्ण वायु युक्त सर्दी मे भी यह नियम शिथिल नही हुआ। लघुशका कर और हाथ मुह धोकर ध्यान मे बैठ जाता। चार बजे उठकर फिटकरी के पानी से छ सात गरारे करता। दात न होने के कारण दन्तधावन तो कर नही सकता था, इसी से कण्ठ के कफ की निवृत्ति तथा नाक की सफाई हो जाती। उसके पश्चात् शौच से निवृत्त हो 4॥ बजे से 6॥ बजे तक लेख का काम करता। 6॥ बजे

→

वेद ज्ञान का सूर्य खिलेगा

—योगेश आनन्द आर्य एडवोकेट -

वीर युवक हम आर्यावर्त के, वेद हमारा बल है,
घर-घर वेद मशाल जलाएं निश्चय यही अटल है।
राहो मे तूफान बड़े है, पर्वत सीना तान खडे हैं,
नही रुकेंगे, नही झुकेंगे, एक बार जो निकल पडे हैं।
'बाधाओं के मार्ग' प्रश्न का, 'दृढ़विश्वास हमारा' हल है ॥ 1 ॥

ध्येय हमारा नही टलेगा, विश्व हमारे साथ चलेगा,
वेद ज्ञान का सूर्य खिलेगा, तिमिर अविद्या का हर लेगा।
आज हमारा जैसा भी हो, सुन्दर अपना कल है ॥ 2 ॥

गूंज उठेगा दूर-दूर तक, वेद नाद का बिगुल पुराना,
जगत् गुरु के सिंहासन पर, भारत को फिर से है लाना।
छा जायेंगे विश्व क्षितिज पर, लक्ष्य यही अपना केवल है ॥ 3 ॥

पता—ए-105, इन्द्रलोक, दिल्ली-110035

→

कोठरी के अन्दर कपडे से सफाई करके बरामदे और बाहर चबूतरे पर झाडू लगाता। फिर हाथ धोकर कृत्रिम दात पहिन 20 मिनिट तक शारीरिक व्यायाम करता। डाक्टरो के मना करने पर भी इस अभ्यास को छोड नही सका, शायद काम भी इसी की बदौलत करता रहा हू व्यायाम के पीछे सारे बदन मे नित्य सरसो का तेल मलता। यहां की वायु शुष्क और स्वास्थ्य-प्रदायनी है, इसलिए नित्य तेल मर्दन से लाभ रहता है। 7॥ बजे स्नान करके नैत्यिक उपासना विधि के पीछे भगवद्गीता का और पीछे (उपनिषद् का गुटका आ जाने पर) उपनिषद् का पाठ। इतने मे आठ बज जाते। कुछ आर्य भाइयो ने स्यालकोट के युवक रामलाल की प्रेरणा से इकट्ठे सन्ध्या करने का नियम कर लिया था।

कारावास मुनि का तपोवन बन गया

[illegible] व उसी समय सन्ध्या समाप्त करते और मैं सन्ध्या के सम्बन्ध मे ही सन्ध्या मत्रो व अन्य किसी वेद मत्र की व्याख्या करता। फिर नौ बजे तक टहलता रहता। नौ बजे तीन खुशक रोटी और केवल नमक हल्दी से रिंधी हुई भाजी आ जाती उसे खाकर फिर इधर उधर की बातचीत होती। साढे दस बजे प्रातःकाल का एक सेर गर्म दूध पीकर और बीस मिनिट टहल कर पौने मे एक घण्टे तक लेटकर [illegible]चन क्रिया का आरम्भ हो जाता। बारह बजे उठकर दो व तीन सगतरे खाए और दो बजे तक स्वाध्याय किया दस मिनिट टहलते ही कथा का आरम्भ हो जाता। पहले भगवद्गीता की कथा होती रही उसके पश्चात् उपनिषद् तथा अन्य किसी धर्म ग्रन्थ से कथा का क्रम चलता [illegible]। साढे तीन बजे कथा से निर्वृत्त होकर शौच, फिर आध सेर दूध पीकर पाच बजे तक टहलना और बातचीत करना। छ बजे से पहले शेष दूध पीकर टहलना। जो कुछ भी बातचीत करना व प्रश्न पूछना किसी को अभीष्ट होता वह टहलते समय ही हो जाता।

ठीक साढे छ बजे मोमबत्ती जला कर लिखने बैठता तो आठ बजे तक लिखता ही जाता। फिर उठकर पाच मिनिट बाहर वायु सेवन करके लघु शका कर, हाथ मुह धो पृथ्वी पर सोने का सब सामान ठीक कर आधे घण्टे के लिए अपन आत्मा को एकाग्र करने का यत्न करता और रजाई ओढ कर ठीक नौ बजे सो जाता। इस नियम के निरन्तर पालन ने ही मुझे जेल मे स्वस्थ रखा है।

इस स्थान मे एक ही बार लिख देना चाहता हू कि मियावाली के आर्य भाइयो ने न केवल मेरे लिए ही स्वय वस्तुए भेजीं प्रत्युत मेरे कहला भेजने पर स्वामी विश्वानन्द तथा अन्य भाइयो को भी आवश्यक वस्त्र बना भेजे। किंतु इन सब मे से भाई तेज भान का विशेष वर्णन उचित है जिन्होने न केवल अपने कारोबार को ही शिथिल करके अपने भाइयों की सेवा की, प्रत्युत सैंकड़ों रुपयों

से गम भी खाया जो राजनैतिक बदियो के हिसाब खुलवाने और फिर बिना हिसाब खुलवाने और फिर बिना हिसाब करके शेष धन दिए चल देने के कारण उनके पल्ले न पडा। मियावली के भाइयो ने जो सेवा अपने स्वदेशी भाइयो की है वह सदा स्मरण रहेगी।

मेरे जेल मे पहुचने से पहिले पजाब काउन्सिल के मैम्बर सर जान मेनार्ड (Sir john Maynard) जेल का मुलाहिजा कर गये थे। उनके साथ जो बातचीत बाबा गुरदित्ता सिह जी की हुई थी वह समाचार पत्रो मे छप चुकी है। उस समय भोजन के लिये प्रति स्पेशल क्लास के कैदी पीछे नित्य आधा पाव घी मिलता था। जब मेनार्ड जी आये तो लगर मे गुल्ले घी से तले जा रहे थे। वहा से फिर लौटकर बाबा जी से उसने पूछा कि भोजन तो अच्छा मिलता है। बाबा जी ने उत्तर मे कहा था—"साढे सत्तर वरेहा दे दोस्त। रोटी की पुछदा हा। एह दस्सदा जा कि कोई जुत्ती ठोकन वाला आवे ता ओहदी बल्ल हईए कि तेरी वल्ल ?" (अर्थात् "हमारे सत्तर वर्ष के पुराने मित्र तू रोटी की बात क्यो पूछता है। तू यह बात बताता जा कि यदि कोई जूते मारने वाला— बल प्रयोग करने वाला आए, तो हम उसका पक्ष लें अथवा तेरा ?"—सम्पादक)

मेनार्ड साहब उलटे पाव लौटे और पीछे फिर कर न देखा। उधर मेनार्ड यह देख सुन गये और उधर सुना है कि हिन्दोस्तानी जेल विजिटर ने यह रिपोर्ट भेजी कि एक छटाक घी इन कैदियो के लिये काफी होगा। यह हिन्दुस्तानी विजिटर कोई उमरहयात टिवाना के (Inferior Edition) लघु सस्करण ही होगे। इस कहानी को यहा ही विराम देता हू। इसका परिणाम आगे निकलेगा।

अपने कुछ भाईयो का एक काम मुझे अखरा। जहा अन्य कुरान शरीफ, गुरवाणी और अन्य धर्म ग्रन्थो के पाठ मे समय बिताते वहा भोजन पीछे कुछ एक दिन भर शतरञ्ज, ताश और चौपड मे रत रहते। ये भाई चौपड, ऊई ऊह, गप शप और जेल वालो को तग करने के अपने कारनामे ···मेरे मियावाली पहुचने से शायद 7-8 दिन पीछे ही जेलो का इन्सपेक्टर जनरल आया। उस का आना इस अश मे हुआ कि सारे जेल की खूब सफाई की गई। पिछली बार जब आया था तो इस अहाते मे नारे बड़े जोर से लगने शुरू हो गये थे और बिना सारा अहाता देखे ही वह दुम दबाकर भाग गया था—ऐसे मुझे एक अभिमानी युवक ने सुनाया। इस बार सुपरिण्टेण्डेण्ट और दरोगा के निवेदन को मान लिया और कोई नारा नही लगाया गया। कैद सख्त वाले अपनी मशक्कत का चरखा कात रहे थे, महज (सादी) वाले कोई कोठरी के अन्दर और कोई बाहर बैठा था। मैं कोठरी के अन्दर ऊची खुड्डी पर बैठा स्वाध्याय कर रहा था। पहिली कोठरी मेरी थी। गोरा दरवाजे मे खडा होकर कुछ बोला —सुपरिण्टेण्डेण्ट को उत्तर देते सुना—"इन्हे कैद महज की सजा है।'

गोरे को सलाम न की

मैंने उसकी ओर देखा। जब उसने देखा कि मैं न उठता हू और न उसे सलाम करता हू तो एक मिनिट प्रतीक्षा करके वह आगे चला गया। पीछे सुना कि दो तीन उठे, शेष सब बैठे रहे। दरोगा जी ने सुनाया कि इन्सपेक्टर जनरल ने हम लोगो की प्रशसा की है और कहा कि ये लोग जन्टिलमेन (Gentleman) मालूम देते है।

मांस में भी भेद

इसके पीछे एक घटना हुई। प्रत्येक स्पैशल कैदी को नित्य प्रात एक दाल, साग का शाक, 12 छटाक आटा और आध पाव घी दोनो समयो के लिये दिया जाता है। इसके अतिरिक्त तीन दिन मास का आध आध सेर दूध और मीठा और दो दिन हलवा दिया जाता है। मुसलमान तो मास लेते और सिख हिन्दू दूध लेते थे। सिखो मे से कुछ चाहते थे कि मास लें परन्तु झटका न मिलने के कारण वह हलाल को कबूल नही करते थे और मियांवाली मे झटके की कोई दुकान न थी। उन सिखो ने मांस के स्थान मे अण्डे मागे। दरोगा जी ने ला दिये। कुछ ब्राह्मणो को एतराज था कि चौके मे अण्डे न बनें। सिख भाइयो को जुदा पतीला दिया गया कि अलग बना लें जिससे परस्पर शान्ति रहे। उन्होने ऐसा ही किया, परन्तु इसको बुरा माना। लगर मे एक भोजन बनाने वाला खालसा, दूसरा पानी भरने वाला खालसा और बर्तन साफ करने वाला राजपूत अभय सिह था। ब्राह्मण देवताओ के एतराज के तीसरे दिन मैनेजर और नानक सिह पाचक की शिकायत पर दरोगा ने एक खालसा निकाल लिया और उसके स्थान पर दूसरा खालसा भेज दिया। चार पाच खालसो ने एक तो यह जोर दिया कि अभयसिह बाहर से तम्बाखू खाकर आता है ·····जब हमारा खालसा निकाला गया है तो उस को भी न रहने देंगे। दरोगा ने उन्हे शान्त करने के लिए अभय सिह को भी अलग करके उसके स्थान मे राम कृष्ण भेज दिया। फिर अण्डों से भी तसल्ली न हुई (क्योकि नियमपूर्वक न मिलते थे) तो झटका मागा गया और यह कहा गया कि मैनेजरो पर विश्वास नही इसलिए हमारा आधा पाव घी हमे अलग दिया जाए। दरोगा ने तो यह कह कर अपना छुटकारा कराया कि रिपोर्ट भेजी है आपका चालान किसी ऐसे स्थान को हो जाएगा जहा झटके की दुकान हो और मुसलमान भाइयो ने बीच मे पडकर, मेरी उपस्थिति मे घी के विषय मे परस्पर सम्मति करा दी। पुराने दोनो मैनेजर यद्यपि बहुत अच्छा काम करते थे और सभा मे फिर चुने भी जा चुके थे, उन्हे अलग करके रूठे भाइयो की सम्मत्यानुसार ही अन्य प्रबन्धकर्ता चुन लिए गए। →

श्रद्धानन्द-सुधीः सदा विजयते

श्री—केशवप्रसाद उपाध्यायः

प्राध्यापक-संस्कृत विभाग, गुरुकुल म० वि० ज्वालापुरम्

धर्मोद्धारधुरीणधैर्यधनिकः 'सद्धर्म' सयोजकः
नेता यः सकलार्यमौक्तिकमणि विद्यावतां बुद्धिदः।
पारावार इवातिनिश्चलपरः पूर्णेन्दुदिव्याननः
श्रद्धानन्द-सुधीः सदा विजयते सौभाग्यभाग्याधिपः॥

योऽविद्याविहितान्धकारजनकं मायाविनं रावण
विद्याबुद्धिविवेकसाध्यतपसाप्याापकर्मस्थितम्।
हत्वा राम इवैकधर्मनिरतः कालातिगश्चोत्तमः
श्रद्धानन्द-सुधीः सदा विजयते सौभाग्यभाग्याधिपः॥

यद् वा दशरथी रथीव सुमहान् कर्मैकनिष्ठः कृती
'सन्मार्ग'-व्रतीधः सदा-विमलधीः धर्मैकधाराश्रयः।
शुद्ध्यान्दोलनदत्तमानसमणिः मान्यश्च वेदव्रती
श्रद्धानन्द-सुधीः सदा विजयते सौभाग्यभाग्याधिपः॥

सर्वां कष्टतति विचिन्त्य चतुरः सेवाव्रते सस्थित
विद्योद्यानविधानवर्धितयशा लोकैषणावर्जित।
मानी मानसराजहस इव यो धीरश्च वीराग्रणी
श्रद्धानन्द-सुधी सदा विजयते सौभाग्यभाग्याधिपः॥

काङ्ग्रेसीयदलस्य स्वागतसभाध्यक्षः स मान्यो मुनि
काव्यानन्दरसेऽपि सौम्यरसिकः प्रख्यातसामाजिक।
बालाना सुचरित्ररक्षणपरः प्राणः कुलस्यापि यः
श्रद्धानन्द-सुधीः सदा विजयते सौभाग्यभाग्याधिपः॥

मन्ये, मानवजीवनाय जलदो रामोऽपरः कीर्तितः
योऽकृष्णोऽपि च राजनीतिनिपुणः लोकस्य सरक्षकः।
सोऽयं दिव्यगुणावतार इव यो धर्मध्वजी साधकः
श्रद्धानन्द-सुधीः सदा विजयते सौभाग्यभाग्याधिपः॥

→

इस सन्तोष को स्थापित हुए अभी थोड़े दिन ही गुजरे थे कि दरोगा ने इन्स-पेक्टर जनरल द्वारा आया पंजाब गवर्नमेंट का हुकम बतला दिया कि आगे आध पाव के स्थान मे छटाक घी मिला करेगा। कहा तो आधा पाव घी भी अलग-अलग लेना चाहते थे और कहाँ एक छटाक उसमे से छिन गया। इस पर दो तीन तेज तबी-यत वालो ने शोर मचा दिया कि इसके विरुद्ध प्रोटेस्ट (असम्मति) के तौर पर शेष छटाक भी छोड देना चाहिए। सभा की गई। मेरा घी से कुछ वास्ता ही न था, इसलिए सभा मे तो मैंने जाना ही न था। जिन तीन चार भाइयो ने मेरी सम्मति पूछी मैंने उनसे कह दिया कि यह कुछ गिरी हुई सी बात है, इससे हम काग्रेस का नाम घटवाएगे। सभा के प्रधान बाबा गुरदित्त सिह जी को बनाया वह घी छोडकर प्रोटेस्ट करने के पक्ष मे न थे, परन्तु जब महात्मा नन्द गोपाल ने बतलाया कि गवर्नमेट कहती यह है कि मामूली यूरोपियन कैदी के खाने के दाम का खाना स्पेशल क्लास वाले हिन्दुस्तानियो को दिया जाता है और हमारे भोजन पर कम खर्च करती तब बाबा जी भी छोड के पक्ष मे हो गए, और भारी बहु पक्ष से प्रस्ताव पास हुआ। दूसरे दिन सुपरिण्टेण्डेण्ट ने बुलाकर समझाया। मैंने भी फिर कहा घी मत छोडिए, प्रोटेस्ट लिखकर दे दीजिए, समाचार पत्र स्वय आन्दोलन करेगे। परन्तु किसी न एक न सुनी।

इसके पीछे गवर्नर के आने की खबर मिली। खूब सफाई हुई। जेल की सडको ने रोशनारा बाग की सडको को मात कर दिया। इन्सपेक्टर जनरल 25 नवम्बर को आकर सफाई देख गया। उनके आने से पहले दरोगा और सुपरिण्टेण्डेण्ट ने अपील की कि नारे न लगे। सबकी सुपरिण्टेण्डेण्ट की सौम्यता का ख्याल था। उन्हे विश्वास दिला दिया कि उनको शिकायत का मौका अग्रेजो को न देंगे। गवर्नर आए, साथ रावलपिण्डी के कमिश्नर, जेल के इन्सपेक्टर जनरल, मियाँवाली के डिपुटी कमिश्नर 'करी' इत्यादि थे। मैं उस समय कोठरी के आगे धूप सेक रहा था। मुझे उस समय क्षौर कराए अढाई मही. से अधिक ही चुके थे। सिर और दाढी के बाल बढे हुए थे। मैंने उसकी ओर ध्यान देना हो न था, परन्तु सर एडवर्ड मेक्लेगन ने दो बार फिर कर मेरी ओर देखा। बाबा गुरदित्त सिंह जी ने अपने साथ हुए सब अन्यायो की कहानी अग्रेजी मे देकर ब्रिटिश इण्डियन गवर्नमेट के नाम अन्तिम नोटिस गवर्नर के हाथ मे दिया और कुछ कागज भी दिखलाए और पूछा कि जब सिद्ध है कि मेरे सब कागज गवर्नमेट के पास हैं तो यह कहा की इमानदारी है कि उत्तर मे यह लिखा जाता है कि मेरे कोई कागज गवर्नमेट के पास नही हैं। गवर्नर साहब कागज लेकर आगे बढे और कुछ भाइयो से अपराध आदि पूछते रहे। जब सारा चक्र समाप्त हुआ तो मेरे विषय मे पूछा। सुपरिण्टेण्डेण्ट ने कहा कि पहले कमरे के पास खडे थे बोले पहले तो सिर दाढी सब मु डाते थे और खुले हुए दरवाजे को छोड अभिवादन कर और प्रत्यभिवादन लेकर मुझ से पूछा—"Are not you a bit changed Swamiji ?" "स्वामी जी क्या आप मे कुछ तबदीली नही हो गई ?" मैंने उत्तर दिया कि आपके जेल मे मैंने क्षौर नही कराया। बोले—"क्या आपको छ महीने यहाँ हो गये ?" मैंने उत्तर मे अढाई मास बतलाए। चुप करके कुछ ठहरे, शायद मतलब यह था कि मैं कुछ कहूगा।

जब मैं न बोला तो फिर प्रश्न किया "Are you quite comfortable here ?" क्या आप यहा सर्वथा आराम से है ?" मैंने उत्तर दिया—"I am comfortable everywhere". मै सब जगह आराम अनुभव करता हू।" यह सुन टोपी पर हाथ लगाया और बाहर चले गये।

गवर्नर चले गये महात्मा नन्द गोपाल जी पर एक दो भाइयो की ओर से कुछ कटाक्ष हुए थे। इसलिए उन्होने पचायत की ओर से वकालत करना अस्वीकार किया था। फिर दस ग्यारह भाइयो ने प्रार्थना की कि सभा बुलाई जावे और घी छोड़ने के फैसले पर पुन विचार किया जावे, क्योकि अधिक सख्या घी लेने के पक्ष मे है। इस पर सभा जमा न हुई। तब महात्मा नन्द गोपाल और आठ दस अन्य भाइयो ने यह बतलाकर फिर लेना शुरु कर दिया कि जबरदस्ती दबाने से वे लोग न छोडेगे। फिर एक ओर घी लेने के लिए और भाई उद्यत होने लगे और दूसरी ओर से उन पर दबाव डाला जाता रहा कि न लें। बाबा जी ने यह अपनी निज की प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया और उन्ही के लिहाज से बहुतो ने छोडे रखा। परन्तु जहाँ दो तीन आदमी मिलते, चर्चा घी की ही रहती। घी लेने वालो और न लेने वालो मे वैमनस्य बहुत बढ गया। कोठरी मे बैठे हुए भी मेरे एकान्त मन मे विघ्न पडने लगा। एक दिन चौपड या शतरज खेलते हुए तीन भाइयो मे लडाई हो गई। फिर एक दिन एक न लेने पर कुछ अपशब्द कहने का आरोप लगाया गया। उसने पहले इनकार किया। जब फिर उसे दबाया तो उसने गाली पूर्वक उत्तर दिया कि कहा है तो क्या कर लोगे ? घी लेने वाले एक ने गाली का उत्तर भी गाली से दिया। बस फिर एक जबरदस्त झगडा हो गया।

दो दिन पीछे फिर एक घटना ऐसी हुई कि घी लेने वाले 14 मई पास के दो बारको वाले दूसरे अहाते मे चले गये। मैंने उन्हे न हिलने की सम्मति दी परन्तु उन्होने न माना। दो दिन पीछे पहले अहाते मे बहुत कुछ अशान्ति और अपने काम मे विघ्न देखकर मैं भी दूसरे अहाते के सबसे अन्तिम एकान्त कमरे मे आ रहा।

दूसरे अहाते मे अब शान्ति थी। पहले अहाते वालो मे फिर भी घी की चर्चा रहने लगी। एक युवक बहुत कमजोर हो गया था। उसको डाक्टर ने कमजोरी का 1॥ छटाक घी दिलाया। उसके कमरे मे उसे जा दबाया, यहाँ तक कि वह चीख उठा और घी छोड़ने की प्रतिज्ञा की। स्वराज्य और स्वतन्त्रता प्राप्त करने की इच्छुक सेना के कुछ सभ्यो ने बतला दिया कि यदि उन्हे स्वराज्य मिल जाय तो उसका कैसा प्रयोग करेंगे।

फिर एक सभा हुई जिसमे 15 वा 16 की उपस्थिति थी। उसमे बहु पक्ष से घी लेने वालो पर मलामत का वोट पास हुआ। फिर शेष के आग्रह पर एक न लेने वालो की सभा बुलाई गई। उनमें बहुपक्ष से पास हुआ कि छटाँक घी ले लिया जावे फिर भी दो चार ने ही लिया क्योकि बाबा गुरुदित्ता सिंह जी प्रधान ने सबको लेने की स्वतन्त्रता देकर यह कह दिया था कि वह स्वय हलवा खाना भी छोडते हैं। इसके पीछे मध्य दिसम्बर मे 18 स्पेशल क्लास वाले स्यालकोट और और हिसार से चालान होकर मियावाली जेल मे पहुचे। उनमे से एक कुछ रोग पीडित को अलग वार्ड मे, 8 को पहले अहाते मे और शेष 9 को दूसरे अहाते में स्थान दिया गया। इन सब ने आते ही घी ले लिया। 18 दिसम्बर को प्रात: इनमे से स्यालकोटी 6 भाइयो का डेपुटेशन बाबा गुरुदित्त सिंह जी की सेवा मे गया। उनसे अपील की गई कि वह स्वय घी लेकर शेष को भी घी लेने की आज्ञा दे, नही तो घी न खाने के कारण जिनके शरीर क्षीण हो रहे हैं उनका पाप बाबा जी के सिर लगेगा। बाबा जी को अपनी प्रतिज्ञा तोडने पर जो क्लेश हुआ वह देखा न जा सकता था, परन्तु अन्त को उन्होने भी घी लेना स्वीकार किया और सब लेने लग गये। यह सब कुछ हुआ परन्तु जो द्वेषाग्नि प्रदीप्त हो चुकी थी वह शान्त न हुई।

पाठक आश्चर्य मे होगे कि मैंने यह सारी कहानी यहा क्यो विस्तार पूर्वक लिखी है। जेलो मे जो अत्याचार पुलिटिकल कैदियो पर किये जाते हैं उनकी चर्चा तो समाचार पत्रो मे बराबर की जाती है परन्तु कभी-कभी यह भी मालूम होना चाहिए कि हमारी अपनी क्या है और कहा तक हमने उस शान्ति एकता और भ्रातृ भाव के पाठ पर आचरण किये हैं जिनके बिना स्वराज्य के लिये आत्म-परीक्षा लाभदायक है वहा जाति के लिये भी आत्म परीक्षा हानिकारक नही हो सकती।

शहीद की इच्छा

—आशानन्द भजनीक—

मेरा रंग दे वसन्ती चोला,
मेरा रंग दे वसन्ती चोला।
रग रंगने यहीं श्रद्धा से,
श्रद्धानन्द यहाँ आते।
हिन्दू जाति की खातिर,
वे प्राणो की भेट चढ़ाते।
कातिल ने जब पीया पानी,
फिर पिस्तौल को खोला॥
इसी चांदनी चौक के अन्दर,
घंटाघर था खडा हुआ।
घंटाघर के नीचे लोगो,
शेर बबर था अडा हुआ।
खोलो मशीनगनें तुम खोलो,
मैंने सीना खोला॥ मेरा…
जामा मस्जिद के मिंबर पर,
स्वामी जी जब आए।
वेद मन्त्रों की ध्वनि से,
जब दिग् दिगन्त गुंजाए।
छा गया मस्जिद में सन्नाटा,
ओ३म् नाम जब बोला॥ मेरा…
जलिया वाले बाग के अन्दर,
कौन सामने आया।
काग्रेस का नेता बनकर भी,
हिन्दी को अपनाया।
अली बन्धुओं और गाधी के
आगे जो ना डोला॥ मेरा…
गगा और जमुना की धरती,
जिनको मूल न भाती।
अरब का रेगिस्तान और,
ऊंट की बोली जिन्हें सुहाती।
गली गली जो गाते फिरते,
बुलाले मदीने मौला॥ मेरा…
सौगन्ध तुम्हे है उस लोहू की,
आर्यो धर्म निभाओ।
शुद्धि का जो झंडा गिरता,
फिर से उसे उठाओ।
'आशानन्द' कहे आर्य समाज है
बही शहीदी टोला॥ मेरा…

गुरू गोबिन्द सिंह का जन्म दिवस मनाया

मैं यहा लिखना भूल गया कि नवम्बर मे गुरु नानकदेव के जन्म दिवस पर बडा शानदार सह भोज हुआ था। 25 दिसम्बर सन् 1922 राजर्षि कलगीधर गुरु गोविन्द सिंह जी का जन्म दिवस था। इस पर इकट्ठा सब 65 भाइयो का सहयोग तो कठिन था, परन्तु, मेरे लिए यह पर्व मनाना आवश्यक था। मैं गिरी हुई आर्य सन्तान मे क्षात्र धर्म का पुनरुत्थान करने वाले राजर्षि गुरु गोविन्द सिंह का चिरकाल से मान करनेवाला रहा हू। स्वामी विश्वानन्द के साथ यह सलाह की गई कि हम सन्यासियो की ओर से उस दिन सब भाइयो को निमन्त्रण देकर, पहले हवन हो फिर गुरु साहब के गुणो का चिन्तन हो और अन्त मे कडाह प्रसाद बांटा जाय।

21 दिसम्बर को प्रात भाई आसिफ अली (यह वह काग्रेस के तथाकथित

→

→

राष्ट्रवादी नेता थे जिन्होंने स्वामी जी के मतांध हत्यारे को बचाने के लिए वकालत की।) अचानक जेलर के साथ मेरे पास आ पहुंचे। बड़ा आश्चर्य हुआ कि जब वह एक साल से अधिक दिल्ली जेल मे काट चुके थे तो 5½ महीने के लिए उनको इतनी दूर क्यों लाया गया। परन्तु हुई हम दोनों को बड़ी खुशी। तब जेलर जी से पता लगा कि सारे पजाब के स्पेशल क्लास के पुलिटिकल कैदी इस जगह लाए जाने की आज्ञा है। मैंने इसका कारण यह समझा था कि सबको उनके घर से बहुत दूर भेजने मे कल्याण समझा गया है परन्तु, भाई आसिफ अली को इसमे से कुछ और ही गध आई। यदि सब पुलिटिकल कैदियों के साथ एक सा बर्ताव करना हो या सब को ही समाप्त कर देना हो तो इससे बढ़कर और स्थान कहा मिलेगा। इस दिन एक और काम भी हुआ। अब तक पाखानो मे फिनाइल नहीं छिड़का जाता था, मेरे कहने पर दोनो अहातो मे दो बोतल रखी गई। मियावली मे जाडा और गर्मी दोनो सख्त सुनी जाती थी। गवर्नर के चले जाने के पीछे वर्षा हुई तब जाडा कुछ चमका। फिर बादल जमा होते दिसम्बर के मध्य भाग पीछे फिर दो दिन बूदा बादी हुई। 21 दिसम्बर की रात को बिजली की कडक के साथ 12 बजे वर्षा हुई। ठण्ड बढ गई। 22 को दिन भर बादल रहे और शाम को थोड़ा सा सूर्य दिखाई दिया। बुद्धिमानो ने अनुमान किया कि झडी लगेगी परन्तु रात को ही आकाश स्वच्छ होकर तारे छटक आए और 23 को धूप ऐसी निकली कि दोपहर पीछे एक घण्टे के लिए असह्य हो गई। 24 को फिर कुहिरे के बादल बने परन्तु रात फिर साफ हो गई। इन तीन दिनो स्यालकोट से आए नए भाइयों ने बहुत यत्न किया कि दोनो अहाते मिलकर गुरु गोविन्द सिंह का जन्म दिवस मनावे। मेरे अहाते वालो ने दो मिनिट में कह दिया कि वह उद्यत हैं और साथ ही बिना कारण भी क्षमा मांगने के लिए उन्हें कहा जाए और उससे परस्पर का मेल हो जाए तो वह क्षमा मागने को भी तैयार न हुए। इसका असर श्री बाबा गुरदित्तसिह जी पर यह हुआ कि वह बीमार हो गये। 24 दिसम्बर की रात तक बहुत निराशा थी।

25 दिसम्बर को प्रातः स्नानादि से निवृत्त हो मैं दोनो अहातों की "आसां की वार" में शरीक हुआ। फिर द्वितीय अहाते में जो संन्यासियों की ओर से हवन यज्ञ हुआ उसमें सब मुसलमान तथा दोनों अहातों के खालसा तथा हिन्दू भाइयों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। बाबा गुरदित्त सिंह जी बीमारी की अवस्था में ही पहुंचे। बहुत भाइयों ने श्री गुरु गोविन्द सिंह जी के गुण वर्णन करते हुए एकता करने के लिए अपील की। अर्दासा होकर कड़ाह प्रसाद बांटा गया। तीसरे पहर अहाता नम्बर एक में दीवान लगा। कवि महा-सिंह जी की हृदय विदारक अपील पर महात्मा नन्द गोपाल जी ने क्षमा मागी। दूसरे भाइयों के हृदय भी हिल गये। भाई भाई से मिल गए। गुरुनानक देव और गुरु कलगीधर की यादगार मे बिछडो का मिलाप हुआ। रात को खूब मोमबत्तियो की रोशनी हुई और लोटे गलास से साज बनाकर कौमी गीत गाते हुए जलूस दोनो अहातो में गशत कर गया और रात भर दीवान लगाकर मन्दिर ने धर्मोपदेश दिया और भोजन पीछे 11 बजे दिन की गाडी से चल दिया। मार्ग मे मिलने वालो की भीड और बने बनाए एकान्त से बिछोडा हो गया।

स्वामी जी स्वर्ण मन्दिर में

28 दिसम्बर को आठ बजे अमृतसर पहुचा, आगे बहुत से भाई स्टेशन पर मौजूद थे। स्टेशन से बाहर निकला तो शहर की ओर से अकाली जत्था आता दिखाई दिया मुझे उसी समय दरबार साहब चलने के लिए आग्रह किया गया मैंने भाइयों की आज्ञा के आगे सिर झुका दिया। साढे दस बजे उधर से लौटना हुआ। तब स्नान भोजन हुआ। एक से दो बजे तक नया वैदिक पुस्तकालय देखा। दो बजे समाज मन्दिर के फल भोज मे शरीक हुआ।

अकाल तख्त और समाज मन्दिर, दोनो स्थानो मे बोलना पडा। 3½ बजे की कलकत्ता मेल मे सीधे जाने के विचार से बैठा, परन्तु बिस्तरा अमृतसर भूल गया। जालन्धर मे सैकडो भाई ट्रेन पर आ गए और खीचकर बाहर ले गये। रात को गाधी मण्डप मे बोलना पडा। 11 बजे बाम्बे मेल मे बिस्तर भी आ गया और मैं 29 दिसम्बर के प्रात 8½ बजे के पीछे दिल्ली पहुच गया।

एक बात यहा स्पष्ट कर देना चाहता हू। मियांवाली जेल मे चलते हुए (मुझे प्रसन्नता नही हुई। स्वतन्त्रता बडी प्यारी अवस्था है) और उसके लिए प्रसन्न होना चाहिए था, और स्थूल दर्शियों के लिए जेल मे मनुष्य परतन्त्र हो जाता है परन्तु मैंने जेल के एकान्त मे आत्मचिन्तन के आनन्द को ही स्वतन्त्रता समझ लिया था। उसी की अपेक्षा बाहर आकर शायद मैं किसी समय भी, बिना अधिक परिश्रम और धर्म और देश सेवा के प्रेमियों को अप्रसन्न किये, स्वतन्त्र न रह सकूगा। अस्तु अवस्थाए अपने अधीन कहा हैं।

मैं बहुत सन्तुष्ट होता यदि पूरी एक वर्ष की हबसबेजा (परन्तु मेरे लिए शान्त एकान्त आश्रम पूरी भुगत के मैं लौटता। उस अवस्था में मुझे जेल के 'सन्त पितरस' की गुरु गोविन्दसिंह जी के गुण वर्णन पूर्वक समाप्त किया गया।

26 दिसम्बर को नित्य कर्म के पीछे उठकर सब भाइयों का मिलाप देखा। ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे कभी अशान्ति की लहर आई न थी। दो रोटियां खाकर टहलता रहा। विनयशील सुपरिन्टेन्डेन्ट डाक्टर रामजी दास 9½ बजे ही आ गये। उनसे मैंने पूछा कि यदि जेल के नियम के विरुद्ध न हो तो नये आए हुए भाइयों के लिए अखाड़ा खुदवा लिया जावे। उत्तर मिला कि नियम विरुद्ध होगा। मैंने जिस प्रकार सिविल मिलिटरी गजट तक के मंगाने की आज्ञा न मिलने पर मौन धारण किया था, अखाडे के प्रश्न पर भी कह दिया कि जेल के नियम विरुद्ध मैं कुछ भी करना नही चाहता। उस दिन जेलर साथ न आए। असिस्टेन्ट जेलर ही साथ थे। फिर दूध पिया और नियमपूर्वक ठीक 12 बजे कथा के लिए बैठ गया। अभी पहले वाक्य का ही पाठ करके अर्थ किये थे कि बहुत भाई, जेलर सहित दौडते आए। मैंने समझा कही भौचाल आ गया है। आते ही दरोगा साहब ने कहा, "चलिए बाहर अब आप यहाँ नहीं रह सकते। रिहाई का आर्डर आ गया।" मैंने उत्तर दिया कि कल जाऊंगा। उत्तर मिला कि अब दस मिनिट से अधिक आपको नही रख सकते। मैंने कह दिया कि बिना उस दिन की कथा समाप्त किये और बिना सब भाइयो से मिले नही जा सकता। दरोगा जी चले गए। शान्ति पूर्वक कथा समाप्त हुई। मैं सब भाइयों से मिला। सब भाइयो ने मिलकर कांग्रेस के लिए सन्देश दिया। बाबा गुरदित्त सिंह जी ने अपना सन्देश अलग दिया। दोनो सन्देश प्रेस मे भेज चुका हू। और इस लघु पुस्तक के अन्त मे भी देता हू दो बजे के पीछे मैं जेल की ड्योढी मे पहुचा। मुझे मियावाली से दिल्ली तक का तीसरे दर्जे का पास दिया गया। दो रुपये मार्ग का भत्ता मिला। अपनी चीजे सम्भालने की रसीद पर मेरे हस्ताक्षर कराए गए और टमटम पर (जो 12 बजे से खडी थी) सवार होकर मैं मियांवाली शहर पहुंचा। जहा मुझे देखकर सब आर्य भाई चकित हुए। शाम को सिंह सभा मे बोलना पडा। रात को चारपाई पर नीद न आई क्योकि भीमासन का अभ्यासी था। 27 दिसम्बर को प्रात 8½ बजे से 9½ बजे तक समाज साथ मियावाली की गर्मी का मजा चखकर आत्म परीक्षा कर सकता कि कहा तक सहन शक्ति बढ सकती है। परन्तु इतने दिनो के अनुभव से जो परिणाम निकला है वह पाठक सज्जनो के सामने करता हूं।

1, ब्रिटिश इण्डियन सरकार ने जेल का प्रबन्ध ऐसा रखा है जिस में दुराचारी कैदी (Moral Convicts) अधिक दुराचारी हो जाए। उनके भोजन छादन, उनके पाखाना पेशाब, उनके वस्त्र, रहन सहन को ऐसा दूषित बना दिया है कि नया फासा अपराधी तो अनुभवी और निर्लज्ज बदमाश बन जाता है और 'पुराना पापी' ऐसा डूबता है कि फिर उसके उठने की आशा नही रहती। जेलखानो मे एक ओर तो पठान लम्बरदार कैदियो को गन्दी से गन्दी गालिया देने, उनकी बात बात पर गर्दनिया नापने, धकेलने और लातो घूसो से मारने के लिए नियत

→

→

किए हुए है और दूसरी ओर ऐसी ढीली निगरानी है कि बड जेलो मे रिश्वत देकर न केवल शराब, अफीम, चरस, सिग्रेट आदि मगाए जा सकते है प्रत्युत हजारो का जुआ भी हो सकता है।

एक विचित्र बात यहा बतलाना आवश्यक है। जहा कैदियो को सता. के काम पर पठान लम्बरदार नियत होते है वहां भोजन बनाने और अन्य प्रकार के सेवा स कैदियो को सुख पहुचाने का काम खालसा लम्बरदारो के सुपुर्द होता है।

2 राजनैतिक बन्दियो पर जितना अत्याचार जेल के चाकरो की ओर से होता है, वह गवर्नमेट की ठीक मर्जी के मुताबिक होता है। यदि ऐसा न होता तो जो हिन्दुस्तानी सुपरिन्टेन्डेन्ट या जेलर राजनैतिक देशभक्त सभ्य कैदियो के साथ जेल नियमो को न तोडते हुए सभ्य व्यवहार करते हैं, उनकी उन्नति क्यो रोकी जाती और जो रिश्वत लेते, जेल के कारखानो मे से भी सरकार का घर लूटते परन्तु पुलिटिकल कैदियों के साथ बुरा सलूक करते है उनको प्रशसा और उन्नति का पात्र क्यो समझा जाता? मियावाली जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट डाक्टर रामजी दास का मामला मेरे अनुभव मे आया। वह न सिविल सर्जन पद पर स्थिर किये जाने के योग्य समझे जाते हैं और न जेल नियम का उलघन नही हो देते या यूं कहा जाए कि उनकी सहनशीलता पर मोहित होकर कोई सभ्य पुलिटिकल असीर जेल नियम तोडने को अच्छा नही समझता। मुझसे बढकर और किसकी खातर वह जेल नियम तोड सकते थे? परन्तु जब मैंने सब स्वदेश प्रिय अखबारो को छोड लाहौर के स्वदेश शत्रु अखबार सिविल मिलिटरी गजट के मागने की आज्ञा मागी तब भी उन्होने मुझसे इनकार ही किया। वाणी से बडा सभ्य व्यवहार करते और जेल नियम के अनुसार जो भी दुःख पुलिटिकल कैदियो से वह दूर कर सकते थे वह दूर करते हुए भी वह एक भी नियम विरुद्ध काम नही होने देते थे।

अमृतसर जेल के सुपरिन्टेण्डेन्ट मिस्टर जेनकिज ने वहा के जेलर द्वारा मुझे अपने जीवन की घटनाए लिखने की इजाजत दे दी थी। मैंने 10पृष्ठ फुलस्केप कागज के काले भी कर छोड थे। मियावाली मे उन पृष्ठो को पढकर कुछ दिन पीछे आज्ञा मिली। परन्तु जब मैंने 120 पृष्ठ लिखकर पहले साथ लाए कागजो को समाप्त किया और अपने व्यय पर विशेष कागज मागे तो उस समय न मिले जब तक मेरा पूर्व का लेख देखने को न माग लिया गया। उसमे स० 1884 ई० तक की घटनाए देखकर (जब नैशनल काग्रेस की बुनियाद भी न पड़ी थी।) उन्होंने फिर एक दस्ता कागज दिया और यदि मैं उसके चार पाच दिन पीछे ही न छूट जाता तो फिर भी बिना उन कागजो पर लिखे लेख देखे वह मुझे और कागज न देते। मैंने सुना है कि डाक्टर रामजी दास के अतिरिक्त तीन और हिन्दुस्तानी सुपरिन्टेन्डेन्ट हैं जो राजनैतिक बन्दियो पर सख्ती न करने के कारण गवर्नमेन्ट की आखो मे खटकते हैं।

जब कभी जेल के अत्याचारो का जिक्र समाचार पत्रो मे आता है तो गवर्नमेंन्ट उत्तर मे जेल मैनुअल का हवाला देती है, परन्तु क्या जेल कानून पर अमल होता है? उदाहरणो से मालूम होगा कि कानून केवल दिखलावा है।

जेल मैनुअल के वाक्य 143 (2) मे लिखा है कि कोई जेल आफिसर किसी कैदी को सम्बोधन करते हुए सख्त, बदजबान, अपमानयुक्त वा अनावश्यक प्रकार से छेडने वाली भाषा का प्रयोग न करेगा और हरेक कैदी के साथ कौशल, शील मनुष्यत्व और दृढ निष्पक्षपात का व्यवहार करेगा, परन्तु मैंने देखा है कि साधारण कैदियो के साथ इसके विरुद्ध बर्ताव होता है। काले वस्त्रो वाले कैदी अन्यों के साथ और पीले लम्बरदार उनके साथ भी बडा बुरा बर्ताव करते हैं। रिश्वत का बाजार गरम रहता है। जो पैसे खर्चे वह जेल मे आनन्द उडाता है। जो निर्धन है उसके लिए जेल जहन्नम हो जाता है। वाक्य 144 मे कैदी को मारने की मनाही है यहां तक लिखा है कि किसी बहाने से भी न मारना चाहिए परन्तु यहा बहाना क्या अमृतसर जेल मे देखा कि यदि किसी कैदी को कुछ समझाना भी हो तो···गर्दनिया और लात घूसा मार चपरासी और लम्बरदार अपने...भी मुश्कल समझतें थे।

वाक्य 145 मे भोजन की सफाई और पकाने की उत्तमता पर बल दिया है। जली कच्ची रोटी की सख्त मनाही की है। बर्तनो को साफ रखने की हिदायत है। परन्तु मियाँवाली से सर्वोत्तम जेल मे भी बर्तनो की सफाई का पूरा प्रबन्ध नही और भोजन की सफाई का जो हाल अमृतसर जेल मे देखा वह ऊपर वर्णन कर चुका हू।

आगे चलकर यह भी हिदायत है कि खराब मौसम मे छत के निचे बैठाकर खिलाने का प्रबन्ध चाहिए, परन्तु इसके लिए उचित प्रबन्ध नही है। साधारण कैदियो को धूप, वर्षा तथा सर्दी से बचाव का प्रबन्ध पूरा नही है। मियाँवाली जेल पुलिटिकल कैदियो के लिए सब से उत्तम समझा जाता है। वहा जाडा (सख्त होता) है परन्तु नलके पर नहाने के लिए कोई पर्दा नही तीन बारकों के (कैदियों के) लिए वर्षा ऋतु मे भोजन करने के लिए कोई अलग कमरा (नही है)।...सुपरिन्टेन्डेन्ट होते हुए भी जब ऊपर के आफिसर ...तय्यार न हो तो अच्छे से अच्छे कानून धरे ही रह जाते हैं। मेरा यह मतलब नहीं है पुलिटिकल कैदी सुखी जीवन व्यतीत करें। सहन करने के लिए तो वे जेल को स्वराज्याश्रम कहकर आलिंगन करते ही हैं और जितना अत्याचार उन पर होगा उतना ही इस नौकरशाही गवर्नमेंट के पंजे से रिहाई की इच्छा उनके हृदयों में दृढ होगी। परन्तु यह सूर्य के प्रकाश की तरह प्रसिद्ध हो जाना चाहिए कि यहा "हाथी के दात खाने के और तथा दिखाने के और है"।

4 यद्यपि मैंने केवल अमृतसर सब जेल और मियावाली जेल में ही निवास किया जहा बुरा सलूक नही हुआ परन्तु जो भाई अन्य जेलो को भुगत आए उनकी जबानी जो घटनाए सुनी गई और जो कुछ व्यगपूर्ण प्रश्न (Cross Questions) करके उनसे अधिक जाना गया उससे मैंने वही परिणाम निकाला कि यद्यपि बहुत से जेलों मे अत्याचार होते हैं परन्तु उनसे दुःख उन्ही को होता जो महात्मा गाधी की काग्रेस द्वारा सम्पादित इस प्रतिज्ञा को भूल जाते हैं कि जितना भी हम निरपराध होते हुए अत्याचारो को सहन करेंगे उतना स्वराज्य हमारे समीप आवेगा। ऐसे अत्याचारो पर काग्रेस से बाहर के ···· व्याख्यानदाता जो चाहे टिप्पणी चढावें परन्तु शान्तमय असहयोग ······एक शब्द भी अपने मुह से शिकायत मे न निकालना···शान्तमयी (अदम तशद्दुद Non violence) के विषय मे भी विचार मैंने मियांवाली जेल के कुछ राजनैतिक कैदियों से सुने। आपस के भी वाले झगड़े के पीछे बाबा गुरदित्तसिंह सरदार लद्धा सिंह और पीरजादा अताउल्ला शाह की पचायत ने अपराधियों को परस्पर क्षमा प्रार्थना करने और शान्ति स्थापना करने के लिए बुलाया। मेरी कोठरी, सामने पास ही थी और सुन रहा था। एक सिख कैदी(जो अकाली तहरीक से पहले जेल मे थे) इस बात पर अडे रहें कि जिसने उन पर आक्रमण किया है उसको वह भी पुन: अवसर आने पर अवश्य ठोकेंगे। बाबा जी ने इन्हे काग्रेस और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी की आज्ञाओ की याद दिला ऐसा विचार मन से निकालने के लिए अपील की। उनका उत्तर—— रह गया। खालसा वीर बोले, "शान्तमयी का मतलब—नौकरशाही की पुलिस चाहे जूते लाठी मारे चाहे······।

(पुस्तिका के अन्तिम पृष्ठ पर लगता है दो चार पक्तिया ही होंगी, अधिक नही हो सकती—सम्पादक)

अपना पता भेजें

तोरेदमल, भोपाल और शान्ति देव बाला मेरे पास 900/- रु० और 20/- रु० की राशि मनीआर्डर से भेजी है उस पर उनका पता नहीं होने के कारण मैं उनको रसीद भेजने में असमर्थ हूं। उनसे अनुरोध है कि वे मुझे अपना-अपना पता सूचित करें। इसके लिए मैं उनका आभारी रहूंगा। आपकी रसीद नं० हैं 100/- रु० का 5 नं० और 20/- रु० का 6 नं०।

—मदन शर्मा प्राचार्य डी० ए० वी० सेंटिनरी पब्लिक स्कूल, खूंटी, रांची (बिहार)

एक अध्यापक का पत्र : शिष्य के नाम

'पंजाब केसरी' के सम्पादक श्री विजय जी ने आर्य बालगृह फिरोजपुर के संचालक और अपने गुरु श्री पी० डी० चौधरी के सम्बन्ध मे यह मार्मिक लेख लिखा है। आर्य जनता का ऋषि के इस स्मारक की उन्नति के लिए भरपूर सहायता करनी चाहिए।

यह तन विष की बेलरी
मुख अमृत की खान !
सीस दिए भी गुरु मिले,
तो भी सस्ता जान ! !
—महात्मा कबीर

भारत को स्वाधीन हुए अभी एक वर्ष भी नहीं हुआ था, पंजाब में डाक्टर गोपी चन्द भार्गव की वजारत थी और पूज्य पिता लाला जगत नारायण जी डाक्टर साहब के दाएं हाथ समझे जाते थे। उन्हीं दिनों सरकार कपूर सिंह आई. सी. एस. जिला होशियारपुर के डिप्टी कमिश्नर थे और हमें हिन्द समाचार का प्रकाशन आरम्भ किए अभी थोड़ा ही समय गुजरा था। नंगल परियोजना में गबन और घोटाले की खबरें अखबारो में चर्चा का मुख्य विषय बनी हुई थीं। लाला जी ने भी अपने एक सम्पादकीय मे उसके बारे मे लिखा। लाला जी के इस सम्पादकीय से क्षुब्ध होकर सरदार कपूर सिंह ने जून 1948 मे उन्हे गिरफ्तार कर लिया।

यहां यह उल्लेखनीय है कि स्वाधीन भारत मे लाला जी सबसे पहले स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्हें इस ढंग से किसी आई. सी. एस. अधिकारी ने इस प्रकार से गिरफ्तार किया और कुछ दिन जेल में रखा था और वह भी उस हालत में जब कि लाला जी मुख्यमंत्री के इतने निकट थे। उनकी गिरफ्तारी का भारत के प्रेस ने बड़ा सख्त नोटिस लिया और दिल्ली के अखबारो ने तो यहां तक लिख दिया कि पंजाब में कांग्रेस की सरकार बनवाने वाले को ही कांग्रेस के राज में गिरफ्तार कर लिया है।

जिन दिनों यह कांड हुआ उन दिनों मैं डी. ए. वी. कालेज जालंधर में विद्यार्थी था और प्रोफेसर पी. डी. चौधरी अंग्रेजी हमें पढ़ाते थे मगर वह यह नहीं जानते थे कि लाला जी मेरे पिता हैं। लाला जी की गिरफ्तारी के दिन जब प्रोफेसर चौधरी क्लास में आए तो वह मन में इतने दुखी थे कि उन्होंने हमें पढ़ाने की बजाय पूरे पीरियड भर बड़ी बम्बास्टिक (घुंआधार) अंग्रेजी में लाला जी की गिरफ्तारी पर ही अपने मन का क्षोभ व्यक्त किया और कहा कि क्या इसी का नाम आजादी है कि एक स्वाधीनता सेनानी को एक आई. सी. एस. अधिकारी गिरफ्तार करने का दुःसाहस करे और वह भी इसलिए कि एक सच्ची बात उस स्वाधीनता सेनानी ने कही है। क्या स्वाधीन भारत में सच बोलना और सच लिखना भी एक अपराध है ? मैंने पहली बार यह देखा था कि एक शिक्षक भी अपने विषय से हट कर एक अन्य विषय पर इतनी देर तक प्रभावपूर्ण ढंग से अपना विचार व्यक्त कर सकता है।

उन्हीं दिनों प्रोफेसर रोशन लाल वर्मा जालंधर में रहते थे और चौधरी साहब के गहरे मित्रों मे से थे। चौधरी साहब और वर्मा साहब दोनों शहर में इकट्ठे ही रहते थे। बाद मे प्रोफेसर वर्मा पंजाब के जनसम्पर्क विभाग के निदेशक भी नियुक्त हुए। बाद में जब श्री भीमसेन बहल डी. ए. वी. कालेज जालंधर के प्रिंसिपल बने तो पृष्ठभूमि मे काफी काम प्रोफैसर पी. डी. चौधरी ही करते थे। लाला जी प्यार से चौधरी साहब को हमेशा 'प्रिंसिपल साहब' ही कहा करते थे। कुछ वर्ष बाद जब चौधरी साहब को जे. सी. डी. ए. वी. कालेज दसूहा का प्रिंसिपल नियुक्त किया गया तो वह लाला जी के पास आए और कहा कि लाला जी ! आखिर आपकी वाणी सही सिद्ध हो ही गई।

जब तीन दशक तक डी. ए. वी. कालेज जालधर मे बतौर प्रोफेसर और बाद मे डी. ए. वी. कालेज दसूहा मे बतौर प्रिंसिपल लगभग 6 वर्ष काम करने के बाद अप्रैल 1981 मे चौधरी साहब रिटायर हो गए तो डी. ए. वी. कालेज मैनेजिंग कमेटी, नई दिल्ली ने आर्य अनाथालय फिरोजपुर की देखरेख का काम उनके कंधो पर डाल दिया। इस अनाथालय की स्थापना 1877 में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने की थी मगर आज काफी कठिनाइयों के दौर में से इस संस्था को गुजरना पड़ रहा है। इस संस्था की दयनीय स्थिति के बारे में जो पत्र उन्होंने मुझे लिखा है उसे मैं अविकल रूप से यहां प्रस्तुत कर रहा हू। चौधरी साहब लिखते हैं :—

"प्रिय विजय !

डी. ए. वी. कालेजों के प्रति मेरी अनथक सेवाओं के दृष्टिगत आपके पूज्य पिता स्वर्गीय लाला जी मुझे बहुत प्यार करते थे। आपके बड़े भाई स्वर्गीय रमेश जी से भी जो एक साधु स्वभाव के स्वामी थे मेरे बड़े घनिष्ठ सम्बन्ध थे और वह मुझे अपने छोटे भाई की तरह ही प्रिय थे। मेरा हृदय इस गर्व से फुला नहीं समाता कि आप डी. ए. वी. कालेज जालंधर में मेरे अत्यन्त प्रिय शिष्यों में रहे। मुझे इस बात की भी बड़ी प्रसन्नता है कि आप न केवल हिन्द समाचार पत्र समूह की परम्पराओं को निभा रहे हैं बल्कि उन्हें ऊंचा भी उठा रहे हैं।

आपको मालूम होगा कि मैं जे. सी. डी. ए. वी. कालेज दसूहा में बतौर प्रिंसिपल उल्लेखनीय ढंग से सेवाएं करने के बाद 1-4-1981 को रिटायर हो गया था मगर डी. ए. वी. कालेज मैनेजिंग कमेटी, नई दिल्ली के प्रधान प्रोफैसर वेद व्यास जी ने मुझ से आग्रह किया कि मैं आर्य अनाथालय, फिरोजपुर की देखभाल करूं जिसकी स्थापना महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने 1877 में की थी। इसके साथ ही फिरोजपुर और फरीदकोट जिलों के लगभग एक दर्जन डी. ए. वी. शिक्षण संस्थानों की देखरेख भी मुझे सौंप दी गई। मैंने इस अनाथालय की देखभाल का कठिन काम जून 1981 में अपनी धर्मपत्नी समेत यहा आकर सम्हाल लिया। उस समय यह अनाथालय बहुत ही खस्ता हाल मे था। 109 वर्ष पुरानी बिल्डिंग लगभग गिरने वाली थी और जो अनाथ बच्चे यहा रहते थे उनके लिए न तो भर पेट रोटी सुलभ थी और न तन ढकने को पूरी तरह कपड़ा ही मयस्सर था। मेरे लिए यह एक बहुत बडी चुनौती थी जिसे एक पुराने आर्य समाजी के नाते साहसपूर्वक मैंने स्वीकार कर लिया।

उस समय यहाँ 80 अनाथ लडके और लडकियाँ थी। मैंने पहला रक्षाबंधन का उत्सव यहाँ 15 अगस्त, 1981 को मनाया जिसमे आपके पूज्य पिता लाला जगत नारायण जी मुख्य अतिथि थे। उस समय उन्होंने महसूस किया था कि मैंने केवल तीन महीने के समय में ही कुछ उल्लेखनीय परिवर्तन कर दिए हैं। मैंने अपने विद्यार्थियों, मित्रो, सम्बन्धियो और अन्य सुपरिचित दानियो से दान लेना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे मैंने दान की एक ठोस रकम इकट्ठी करके बिल्डिंग मुरम्मत का काम भी शुरू कराया और बच्चों के लिए ढग के कपड़े, भोजन, चिकित्सा सहायता और शिक्षा का भी प्रबन्ध किया। लाला जी ने मुझे आश्वासन दिया था कि वह इस धर्मार्थ संस्था की जितनी भी सहायता कर सकेंगे, अवश्य करेंगे।

अब हमारे पास 150 अनाथ लड़के और लड़कियाँ हैं। 25 आदिवासी बच्चे पिछले सप्ताह आए हैं, हमें उनके लिए भोजन, चारपाइयों, गर्म कपड़ों, दवाइयों और शिक्षा का प्रबन्ध करना है। हम अपने बच्चों को घर-घर दान इकट्ठा करने के लिए नहीं भेजते बल्कि उनके लिए स्वयं दान माँगते हैं। हम उनका स्वाभिमान बनाए रखना चाहते हैं। हमें अपने प्रदेश से यह दान इकट्ठा करने में काफी मुश्किलो का सामना करना पड़ रहा है, विशेष रूप से उन अनिश्चित परिस्थितियों के कारण जिनमें से यह प्रदेश पिछले चार वर्षों से गुजर रहा है। हमारे मुख्य दानदाता बिजनैसमैन या व्यापारिक संगठन हैं और उन पर प्रदेश की कठिन परिस्थितियों का काफी प्रभाव पड़ा है फलस्वरूप हमें भी आर्थिक संकट का जबरदस्त सामना करना पड़ रहा है।

इतना ही नही नित्यप्रति काम में आने वाली चीजों की कीमतें भी आसमान को छूने लगी हैं, इससे हमारी परेशानिया और भी बढ़ गई हैं। 109 वर्ष पुरानी इस बिल्डिंग की मुरम्मत भी तुरन्त कराई जानी जरूरी है। सर्वाधिक दुख की बात तो यह है कि न तो केंद्रीय सरकार ही और न प्रदेश सरकार ही कोई वार्षिक ग्रांट हमें दे रही हैं, हालांकि हम सरकार की ही एक जिम्मेदारी निभा रहे हैं मगर सरकार की ओर से कोई सहायता हमे फिर भी नहीं मिल रही है। इसलिए हम सहायता के लिए आप जैसे दानियो से सम्पर्क कर रहे हैं। मैं आभारी हू कि आदरणीय लाला जी और रमेश जी से लेकर आप तक आपका परिवार ठोस आर्थिक सहायता प्रति वर्ष हमे दे रहा है।

हमे इतनी बडी संख्या में अनाथ लडको और लड़कियो को केवल रोटी, कपडा, रिहायश, चिकित्सा सुविधाएं और अन्य आवश्यक चीजे ही नही देनी हैं बल्कि अच्छी से अच्छी शिक्षा भी देनी है और लगभग आधी दर्जन विवाह योग्य लडकियो के लिए योग्य वर ढूंढ कर सम्मानजनक ढग से उनकी शादियाँ भी करनी हैं। पिछले से पिछले साल भी दो लडकियो की शादियां बडे अच्छे ढग से हमने की हैं। ये लडकिया बडे अच्छे परिवारो मे ब्याही गई हैं और बडा सुख का जीवन व्यतीत कर रही हैं। मैं चाहूगा कि आप अपने समाचार पत्रों मे दानी महानुभावों से यह अपील करे कि वह इस पुण्य कार्य में हमारी सहायता करें ताकि ये अनाथ बच्चे सम्मानपूर्वक ढग से पढ़-लिख कर किसी योग्य बन सकें, लडकियों को योग्य वर मिल सकें और समाज का यह उपेक्षित वर्ग अपने पैरों पर खडा हो सके।"

प्रोफेसर पी. डी. चौधरी का उपरोक्त पत्र किसी विशेष टिप्पणी का मोहताज नहीं है। अनाथ बच्चों को अपने पैरों पर खड़ा करने, उन्हें अच्छी शिक्षा दिलाने और अनाथ लड़कियों को सुशिक्षित बना कर अच्छे घरानों मे उनके ब्याह-शादियां कराने का जो कठिन और महान् कार्य चौधरी साहब ने अपने कधों पर उठाया है उसमें उनको भरपूर सहयोग देना समाज के सभी साधन-सम्पन्न लोगों की जिम्मेदारी है क्योंकि ये बच्चे हम सभी के बच्चे हैं।

हम दानी महानुभावों से यह अनुरोध करेंगे कि 'आर्य अनाथालय, 164 कालेज रोड, फिरोजपुर छावनी-152001' के पते पर दिल खोल कर आर्थिक सहायता भेजें और इस महायज्ञ मे अपनी आहुति डालें। बहुत से लोग केवल कुछेक संस्थाओ को ही प्रायः दान देते रहते हैं, उन्हें भी इस उपेक्षित संस्था की सहायता करने पर ध्यान देना चाहिए। जो लोग विवाह योग्य लड़कियों के लिए अच्छे घर और वर सुलभ कराने में सहायता कर सकते हैं उन्हे भी अपनी सेवाएं इस अनाथालय को देनी चाहिएं। सारांश जो महानुभाव जो भी सहायता इस सस्था की कर सकें उन्हे करनी चाहिए। इसके साथ ही हम प्रादेशिक और केन्द्रीय सरकार से भी यह अनुरोध करेंगे कि वे भी महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित इस ऐतिहासिक अनाथालय को ठोस वार्षिक सहायता देकर समाज के प्रति अपने कर्त्तव्य को पूरा करें।

—विजय

['पंजाब केसरी' से साभार]

गुरुकुल के यशस्वी स्नातक (१)

दिवंगत श्री अमरनाथ विद्यालंकार

इसी वर्ष २१ सितम्बर को श्री अमरनाथ विद्यालंकार का निधन हो गया। 'अमृतसर के स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी' नामक पुस्तक के लिए उन्हीं के द्वारा लिखे गए लेख का संक्षिप्त रूप यहां दिया जा रहा है।

देश के स्वतंत्रता संग्राम में अमृतसर का योगदान बहुत शानदार रहा है। मेरा सौभाग्य था कि अमृतसर निवासियों के साथ इस संग्राम मे तुच्छ योगदान के लिए विधाता मुझे इस नगर में ले आया। मेरा जन्म पंजाब में सरगोधा जनपद के छोटे से नगर 'भेरा' मे 8-12-1907 को हुआ था। इस नगर के किसी कोने में सुलतान महमूद गजनवी के महलों के भग्न शेष आज भी दिखाई दे जाते हैं। भेरा के नवाब का शीश-महल भी भग्नावस्था मे पड़ा है।

गुरुकुल में छात्र जीवन

अपने छः भाई-बहिनों में मैं अकेला ही जीवित बचा। मेरे पिता कट्टर आर्य समाजी थे। उन्होंने मेरे शैशव में ही निश्चय कर लिया था कि वे विद्याध्ययन के लिए मुझे गुरुकुल कांगड़ी (हरिद्वार) भेजेंगे। उन्होंने मेरी माता को समझाया था कि महात्मा मुन्शीराम जी के सरक्षण में चलने वाले इस गुरुकुल में पल कर और पढ़कर बालक योग्य और यशस्वी बनेगा। उस गुरुकुल मे ही मेरा बचपन और किशोरावस्था बीती और 14 वर्ष तक वहाँ शिक्षा प्राप्त करके मैं 1925 में वहाँ से स्नातक बना। विद्यालय स्तर पर हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी भाषा तथा साहित्य, दर्शन, इतिहास, रसायन शास्त्र, अर्थशास्त्र आदि का अध्ययन वहां अनिवार्य था। वहाँ की शिक्षा का सिद्धांत था—'सब विषयों का स्वल्प ज्ञान और कुछ विषयों का विशेष ज्ञान। वहाँ इस प्रकार की शिक्षा दी जाती थी जिससे छात्र जहां एक ओर अपने गौरवमय अतीत से जुड़ता था वहां दूसरी ओर वह उज्ज्वल भविष्य से भी सम्बन्ध जोड़ने में समर्थ होता था। तदपि स्वतंत्रता से पूर्व तक गुरुकुल की उपाधि को ब्रिटिश सरकार ने मान्यता प्रदान नहीं की थी। किंतु स्वतन्त्रता प्राप्त होते ही इसे मान्यता प्राप्त हो गई और गुरुकुल की उपाधि को बी० ए० की उपाधि के समकक्ष स्वीकार किया गया। कुछ देशो ने तो स्वतन्त्रता से पूर्व ही इससे भी उच्चस्तर पर गुरुकुल की उपाधि को मान्यता दी थी।

लोक सेवक संघ में

मेरी शिक्षा पूर्ण होने के उपरान्त मेरे अभिभावकों ने योजना बनाई थी कि मैं अपने एक निकट सम्बन्धी के साथ विदेशी कपड़ों के व्यापार में प्रवेश करूं। पहले मुझे प्रशिक्षित किया जाता फिर मुझे अपनी किसी शाखा का मुखिया बनाकर भेजते। यह उन दिनों की बात है जब इस देश मे विदेशी कपड़ों की 'होली जलाने' का आन्दोलन चल रहा था। यहां तक कि अंग्रेज मिल मालिकों की मिलों का कपड़ा भी सह्य नहीं था। मैं सोचने लगा कि मुझे ऐसे व्यापार में डाला जा रहा है जहाँ मुझे विदेशी कपड़े की बिक्री बढ़ानी होगी। ठीक उसी समय पंजाब केसरी लाला लाजपतराय ने भारत के युवकों का देश की स्वतन्त्रता के लिए आह्वान किया। इसमें मेरा मस्तिष्क झंकृत कर दिया। उस समय उन्होंने "सर्वेन्ट्स ऑफ पीपुल्स सोसायटी" (लोक सेवक संघ) की स्थापना की और उसके आजीवन सदस्यों की भर्ती करने लगे थे। वे उनको भारत के भावी नेता के रूप में प्रशिक्षित करके देश की राजनीतिक तथा सामाजिक सेवा मे संलग्न करना चाहते थे।

लाला जी के शब्दों ने मेरे मर्म को स्पर्श किया और मैंने तुरन्त अपना जीवन-कार्य निर्धारित कर लिया। मैं लाहौर जाकर उनसे मिला और उन्हें अपनी सेवा समर्पित कर दीं। कुछ अन्य युवक भी उनके पास पहुंचे थे। उनको कुछ का ही चयन करना था। उन्होंने प्रसन्नता से मुझे अपने कार्य में सम्मिलित कर सोसाइटी का आजीवन सदस्य बना लिया। प्रसिद्ध पत्रकार फिरोज गांधी, लाला अचिन्तराम, कामरेड छबीलदास और श्री मोहन लाल गौतम पहले से ही उनके साथ थे। श्री लालबहादुर शास्त्री, श्री हरिहरनाथ शास्त्री, श्री बलवन्तराय मेहता तथा कुछ अन्य लोग भी मेरे बाद वहां आए। कालान्तर में बाबू पुरुषोत्तम दास टण्डन भी इसके आजीवन सदस्य बन गए। लाला जी स्वयं इसके आजीवन अध्यक्ष बने।

यह पग उठा कर मैंने अपने अभिभावकों को सर्वथा निराश कर दिया। उन्होंने मुझ से बहुत आशायें लगाई हुई थीं। मैं अपने मां-बाप का इकलौता पुत्र था इसलिए मेरे इस कार्य ने उनको बहुत धक्का पहुंचाया। किन्तु मैं भी अपनी अन्तरात्मा की आवाज पर अटल था। कालान्तर में किसी प्रकार मेरे माता-पिता ने भी स्थिति से सन्तोष कर लिया। मेरे कारण वृद्धावस्था में उनको वह सामान्य सुख भी नहीं मिल सका जिसके वे हकदार थे। मेरे माता-पिता, दोनों का ही देहावसान उस समय हुआ जब मैं जेल में था। न तो मैं उनकी कोई सेवा कर सका। और न उनका आशीर्वाद ही प्राप्त कर सका जब जेल में मुझे उनके निधन का समाचार मिला तो मेरे मन पर आघात लगा। उस समय भी सरकार ने मुझे पैरोल पर नहीं छोड़ा।

रचनात्मक राजनीति में

मैं सोसाइटी द्वारा निर्धारित देश-सेवा के कार्य में संलग्न रहा। मैं हरिजनोद्धार के क्षेत्र में, ट्रेड यूनियन के संगठन में, किसान आन्दोलन के संगठन में कार्य करता रहा। इस के लिए मुझे प्रसिद्ध अर्थ शास्त्री स्व० प्रो० बृजनारायण के सहयोग से ग्रामीण क्षेत्रों मे गठित किसान स्कूलों में भाषण के लिये जाना पड़ता था, इसके साथ ही मैं नित्यप्रति कांग्रेस संगठन में कार्य करता था। मेरी गतिविधि के मुख्य केन्द्र थे—

1. ब्रैडला हाल लाहौर में स्थापित कौमी विद्यालय में भारतीय' इतिहास का अध्यापन;

2. हिसार और राजस्थान में फैले अकाल के लिये कताई और बुनाई केंद्रों की स्थापना करके अकाल सहायता।

3. तीन वर्ष तक सोसाइटी के हिन्दी साप्ताहिक 'पंजाब केसरी' का सम्पादन

यह साप्ताहिक कालान्तर में दैनिक समाचार पत्र के रूप में परिवर्तित होकर तब तक निकलता रहा जब तक कि 1930 और 1932 में सरकार ने इसके प्रकाशन पर प्रतिबन्ध नहीं लगा दिया और मुझे इसके मुद्रक और प्रकाशक लाला जगतनारायण के साथ दो वर्ष के लिए कारागार में नहीं भेज दिया गया।

4. अमृतसर अछूत-उद्धार-मण्डल (हरिजन सेवक संघ) का संचालन और ग्रामीण क्षेत्रों के हरिजन मजदूरों का जन-आन्दोलन संगठित करना;

5. अमृतसर के औद्योगिक क्षेत्र में ट्रेड यूनियन का कार्य करना। मैं इन्टक की पंजाब शाखा का प्रधान रहा और इस प्रकार सारा पंजाब मेरा कार्यक्षेत्र बन गया;

6. कई वर्ष तक मैंने अमृतसर (शहरी) जिला कांग्रेस कमेटी के महा मन्त्री के रूप में कार्य किया;

मैंने 1940 में अमृतसर में व्यक्तिगत सत्याग्रह किया था और फिर मुझे 9 अगस्त 1942 को बन्दी बनाकर कारागार भेज दिया गया। मुझे 1945 तक बन्दी के रूप में रखा और फिर कुछ मास के लिए अमृतसर के बाहर न जाने का आदेश हुआ।

स्वतन्त्रता के तुरन्त पश्चात् अमृतसर (शहरी) जिला कांग्रेस कमेटी ने पश्चिमी पाकिस्तान से आने वाले शरणार्थियों के लिए शिविरों की स्थापना की। इन शरणार्थियों के लिए अमृतसर ही मुख्य द्वार था। अमृतसर के कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने दिन रात एक करके उनको सब प्रकार की सुरक्षा और सहायता प्रदान की।

उसके साथ ही कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने पाकिस्तान जाने वाले उन मुसलमानों को भी शरण और सहायता प्रदान की जो अमृतसर के कुछ निर्धारित स्थानों पर ठहरे हुए थे। अमृतसर के कांग्रेस कार्यकर्ता गर्व से इस बात को स्मरण कर सकते हैं कि उन्होंने उस संकट की घड़ी में दोनों ही समुदायों के लोगों की सेवा की थी।

विधायक और मंत्री

7. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के तत्कालीन अध्यक्ष डा० राजेन्द्र प्रसाद ने मुझे 1949 में कांग्रेस महासमिति के कार्यालय जन्तर मन्तर रोड नई दिल्ली में 'स्थायी मन्त्री' के रूप में कार्य करने के लिए बुलाया। मैंने वहां डेढ़ वर्ष तक कार्य किया। तब मुझ से कहा गया कि मैं पुनः पंजाब जाकर उस क्षेत्र से विधान सभा का चुनाव लड़ूं जो औद्योगिक मजदूरों के लिए सुरक्षित था। मैं निर्वाचन में विजयी रहा।

8. 1952 में जालन्धर निर्वाचन क्षेत्र से लोक सभा के लिए निर्वाचित हुआ और फिर दिल्ली आ गया।

9. मेरी लोक सभा की सदस्यता की अवधि पूर्ण भी नहीं हुई थी कि मुझे कांग्रेस उच्चाधिकारियों ने पंजाब जाकर सरदार प्रताप सिंह कैरों के मंत्री मण्डल में सम्मिलित होने के लिए कहा। मुझे स्वास्थ्य और श्रम विभाग दिए गए।

1957 में मैंने यमुना नगर जगाधरी से पंजाब विधान सभा का निर्वाचन लड़ा और विजयी रहा। मुझे मंत्रि मण्डल में बरकरार रखा गया और शिक्षा, श्रम तथा भाषा विभाग मेरे आधीन किए गए। कदाचित यही पंजाब में स० प्रताप सिंह कैरों के मुख्य-मन्त्रित्व में ऐसा मन्त्री मण्डल था जो अपनी पूर्ण अवधि तक स्थिर रहा।

संसत्सदस्य

10. मैंने आग्रह किया कि मुझे अब मन्त्री मंडल मे नहीं रहना है, तो मुझे पुनः लोक सभा में भेज दिया गया और तब 1962 में मैं होशियार पुर निर्वाचित क्षेत्र से विजयी हुआ।

11. सन् 1967 में मैं पुनः चण्डीगढ़ से लोकसभा के लिए खड़ा हुआ, किंतु हार गया।

12. सन् 1971 में पुनः चण्डीगढ़ में लोक सभा के लिए खड़ा हुआ और अपने निकटतम जन-संघी प्रत्याशी को बड़े मार्जिन से हराकर विजयी हुआ। मैं 1976 तक संसद् सदस्य रहा। तब मैंने निश्चय किया कि अब निर्वाचन में खड़ा नहीं हूंगा और बिना किसी पद के कांग्रेस की सेवा करूंगा।

13. लोक सभा का सदस्य रहते हुए मैंने संसद की—पब्लिक अकाउन्ट्स कमेटी ऐस्टीमेट्स कमेटी तथा पब्लिक अण्डर

(शेष पृष्ठ 22 पर)

गुरुकुल के यशस्वी स्नातक (२)

आयुर्वेदाचार्य ब्रह्मदत्त शर्मा आयुर्वेदालंकार

17 जुलाई 1919 को जि० बन्नू के कमरमिशानी स्थान पर जन्मे आचार्य (स्व०) ब्रह्मदत्त शर्मा बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। आद्योपान्त उनका जीवन विविध उपलब्धियों से परिपूर्ण रहा। 29 वर्ष की आयु में भारतवर्ष की अन्यतम संस्था गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से उन्होंने 1940 में फर्स्ट क्लास फर्स्ट में 'आयुर्वेदालंकार' की उपाधि-अर्जित की, एक वर्ष उपरांत आयुर्वेद विद्यापीठ की 'आयुर्वेदाचार्य' परीक्षा में सम्पूर्ण भारत में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। जब सरकार ने मिश्रित चिकित्सा प्रणाली का पाठ्यक्रम लागू किया तो उसमें भी एस० एम० एस० की परीक्षा में फर्स्ट-क्लास-फर्स्ट रहे। चिकित्सकीय पाठ्यक्रम में ही उन्होंने "आयुर्वेद बृहस्पति" "वैद्य-धुरीण" तथा 'एफ० ए० आई० एम०' उपाधियाँ अर्जित कीं। दो वर्ष तक उन्होंने यूनानी-चिकित्सा शास्त्र का भी अध्ययन किया।

अध्यापन कार्य

अध्ययनोपरान्त आचार्य जी ने अध्यापन के क्षेत्र में पदार्पण किया। लगभग 28-29 वर्ष तक उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार, आयुर्वेदिक कौलेज लखनऊ, आयुर्वेदिक कौलेज, बेगूसराय (बिहार), केन्द्रीय आयुर्वेदान्वेषण संस्था, जामनगर तथा आयुर्वेदिक तिबिया कौलेज, दिल्ली में अध्यापन कार्य किया। अध्यापन की अवधि में ही उन्होंने अनेक संस्थानों में प्रशासनिक पद-भार भी सम्हाला। आयुर्वेदान्वेषण संस्था जामनगर में उन्होंने डिप्टी-डायरेक्टर के पद पर कार्य किया तो आयुर्वेदिक तिबिया कौलेज में वे प्रिंसिपल तथा मेडिकल सुपरिन्टेंडेंट रहे। गुरुकुल कांगड़ी आयुर्वेदिक कौलेज में आचार्य जी ने वाइस प्रिंसिपल के पद पर कार्य किया तो आयुर्वेदिक कौलेज बेगूसराय में प्रिंसिपल रहे।

अनुसंधान-कार्य

अपने अध्यापन तथा प्रशासन की अवधि मे ही आचार्य जी ने लगभग 17-18 वर्ष तक आयुर्वेदीय चिकित्सा पद्धति मे जहाँ स्वयं अनुसंधान कार्य किया वहाँ उन्होंने अपने अनेक शिष्यों का इस दिशा मे मार्ग दर्शन भी किया। इसी अवधि में समय-समय पर आचार्य जी ने भैषज्य कल्पना व रसायनशाला मे भी कार्य करके औषधि-निर्माण मे सहयोग प्रदान किया। इन संस्थानों के अन्तर्गत प्रचलित अन्तरंग एव बहिरंग चिकित्सालयों तथा आतुरालयों में भी आचार्य जी का योगदान रहा है।

फिजिक्स, कैमिस्ट्री और बायोलोजी का आचार्य जी को अच्छा ज्ञान था। आचार्य जी को हिन्दी और संस्कृत के विशेष ज्ञान के अतिरिक्त अंग्रेजी, फ्रेंच, गुजराती, मराठी, उर्दू एवं पंजाबी भाषाओं का भी अच्छा ज्ञान था। क्रीड़ा, व्यायाम, ललित-कला, काव्य, लेखन तथा सामाजिक सेवा आदि में आचार्य जी विशेष रुचि लेते थे। वेद, पुराण, दर्शन, उपनिषद, धर्मशास्त्र तथा स्मृति ग्रन्थों का भी उन्होंने गहन अध्ययन किया था।

मौलिक ग्रन्थ

अपने व्यस्त चिकित्सकीय, अध्यापकीय एव प्रशासनिक जीवन मे भी आचार्य जी अनेक पुस्तको का प्रणयन कर सके तथा विविधि विषयो पर अनेक लेख लिख सके, यह उनकी अन्यतम विशेषता है। उनकी पुस्तकों मे प्रमुख हैं—'विकृति विज्ञान' पैथोलौजी विषय पर हिन्दी भाषा में 300 चित्रों सहित लगभग एक हजार पृष्ठों मे 17 अध्यायो की प्रथम मौलिक पाठ्यपुस्तक। 'तुलसी' पर 225 पृष्ठो की पुरस्कृत पुस्तक। 'अर्शोरोग' पाइल्स पर विविध चिकित्सा पद्धतियों की विवेचनात्मक पुस्तिका 'नेत्रविज्ञान' प्राचीन एवं अर्वाचीन चिकित्सा-पद्धति के नेत्र विशेषज्ञों द्वारा प्रस्तुत विवेचनात्मक अध्ययन (अप्रकाशित)।

इन मौलिक ग्रन्थो की रचना के अतिरिक्त आचार्य जी ने आयुर्वेदीय संहिताओं पर टीकायें लिखीं तथा 20 से अधिक विषयों पर शोध-निबन्ध तथा महानिबन्ध लिखे और 9 महानिबन्ध-लेखक अनुसंधाताओं के गाइड भी रहे। विगत वर्षों में आचार्य जी अनेक विषयों पर पुस्तकों की रचना करने मे व्यस्त थे।

परीक्षक और चिकित्सक

आचार्य जी 10 विभिन्न विश्वविद्यालयों के पी-एच० डी० स्तर के परीक्षक रहे तथा विभिन्न आयुर्वेदिक पत्र-पत्रिकाओ के संपादक रहे। आयुर्वेदिक चिकित्सा में भी आचार्य जी सिद्धहस्त थे। 1940 से 1972 तक वे निरन्तर-चिकित्सा कार्य भी करते थे।

सन् 1983 में उन्हे हार्ट अटैक हुआ। इसके बाद वे इलाज के लिए अमरीका गए। मई 1984 मे उनके हृदय का आपरेशन हुआ। परन्तु भारत वापिस आने के कुछ दिन बाद वे पुन. अस्वस्थ हो गए और 20 नवम्बर को दिवगत हो गए।

श्री अमरनाथ विद्यालंकार......

(पृष्ठ 22 का शेष)

टेंकिग की कमेटियों में तथा इसके साथ ही पंजाब पुनर्गठन समिति में सदस्य के रूप में कार्य किया।

सूचना प्रसारण मन्त्रालय के कार्य की गतिविधि का अध्ययन का सुझाव प्रस्तुत करने वाली समिति के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। डायरेक्टोरेट ऑफ सप्लाई एड डिस्पोजल की गतिविधि में प्रगति के सुझाव के लिए गठित समिति का भी मैं अध्यक्ष रहा।

नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता के लिये गठित समिति का भी मैं अध्यक्ष रहा।

14. सन् 1973 में वायु दुर्घटना में मेरे बड़े पुत्र का देहान्त हुआ तो मुझ उसके व्यापार का तथा छोटे छोटे बच्चों का ध्यान रखने के साथ-साथ 'क्योरवैल (इण्डिया) लि०" के जो बलगारियन तकनीशियनों के सहयोग से जीवनदायी औषधों के निर्माण में संलग्न है, के प्रबन्ध निदेशक का पद संभालना पड़ा। बाद में मैंने वह भी छोड़ दिया।

लेखक के रूप में

15. मेरी सार्वजनिक व्यस्त जीवन चर्या के कारण मैं कभी कभी प्रेस के लिए कुछ लिख लेने के अतिरिक्त कुछ अधिक नहीं लिख पाया। तो भी, अपने जेल-जीवन में मुझे कुछ समय मिला था, तब मैंने इन विषयों पर बहुत कुछ लिखा था—

1. आज की दुनिया
2. आज का मानव संसार
3. भारत का नया इतिहास

(ये तीनों पुस्तकें हिन्दी में थीं जो बाद में पंजाब और राजस्थान विश्वविद्यालय में पाठ्यक्रम में निर्धारित की गईं।)

4. इवोल्यूशन ऑफ मैनकाइंड-एण्ड इट्स सोशल इंप्लीकेशन्स (अंग्रेजी)
5. शिक्षा पर विविध लेख (अंग्रेजी)

बीसवीं सदी का महत्व

मुझे जीवन ने उन घटनाओं को देखने का अवसर दिया जो विशाल जन समुदाय के भाग्य को बदलने में सहायक होती रही हैं। मानव-जाति के इतिहास में 20वीं सदी के जीवन्त और घटनापूर्ण समय का 4/5 भाग मैंने देखा। इस शताब्दी ने मनुष्य जीवन में अगणित परिवर्तन देखे हैं। मनुष्य ने विज्ञान का वरदान पाया है जिसने उसके जीवन को सरल और सुखमय बना दिया है,। इस शताब्दी ने दो महान् विश्व युद्ध देखे हैं और सामाजिक तथा राजनीतिक क्षेत्र के उतार-चढ़ाव देखे हैं। इस सदी ने साम्राज्यों का पतन देखा है, अनेक साम्राज्य ढहे जिनमें ब्रिटिश साम्राज्य सबसे बड़ा है। मैं गुलाम देश में पैदा हुआ था और स्वतन्त्र भारत में मेरी मृत्यु होगी। यह सोचना बड़ा रोमांचक लगता है। मैं चाहता था कि बीसवीं शताब्दी का आंखों देखा इतिहास लिखूं, किंतु मेरी आँखों ने साथ नहीं दिया।

मेरा ध्येय

मैंने यथासम्भव शुद्ध और पवित्र जीवन जिया हैं। इसके लिये मैंने निम्न बातों पर विशेष ध्यान दिया—

1. मैं ऐसा कोई कार्य न करूं जिससे गुरुकुल कांगड़ी पर किसी प्रकार का लांछन लगे।

2. मैं कोई ऐसा कार्य न करू जिसके कारण मेरी राजनीतिक सस्था कांग्रेस मेरी असफलताओं के कारण दोषी मानी जाय।

3. जिस लोक सेवक संघ (सर्वेंट्स ऑफ इण्डिया सोसाइटी) को मैंने अपना जीवन समर्पित किया है उसकी ख्याति को आँच न आए।

ये विचार सदा ही मेरे सम्मुख आते रहे और परमात्मा की कृपा से मैं अनेक बाधाओं को पार कर पाया।

मैं महत्वाकांक्षी भी था और मैं यह नहीं कहता कि मुझे नाम और प्रसिद्धि की चाह नहीं थी। किन्तु प्रत्येक व्यक्ति को यह ध्यान रखना चाहिए कि वह सार्वजनिक रूप से अपने व्यक्तित्व की क्या छवि स्थापित करना चाहता है। गांधी और नेहरू ने हमारी पीढ़ी को बहुत प्रभावित किया था। किन्तु मेरे बाल्यकाल और किशोरावस्था में दूसरे कारण भी प्रभावी रहे हैं। लाला लाजपतराय भी जिनके सम्पर्क में मैं बाद मे आया, नवयुवकों का वैयक्तिक रूप से पथ प्रदर्शन करते रहते थे। सोसाइटी का सदस्य होने के नाते मैं उनके निकटतम सम्पर्क में रहता था। जब मैं उनके निजी सचिव के रूप में कार्य कर रहा था तब उनके लेखन तथा केन्द्रीय धारासभा में दिए जाने वाले भाषणों के लिए सामग्री एकत्रित किया करता था। इन नेताओं ने कभी नवयुवकों का दुरुपयोग नहीं किया और सदा उनके स्वतन्त्र व्यक्तित्व के विकास में सहायता दी थी। यहां तक कि जब लाला लाजपतराय राजनीति में बहुत विवादास्पद समझे जाने लगे, उस समय भी उन्होंने युवको को यही परामर्श दिया कि वे स्वतन्त्र व्यक्तित्व निर्माण कर अपनी अंतरात्मा के अनुसार अपना मार्ग निर्धारित करें, भले ही सार्वजनिक रूप से हमारा विरोध भी क्यो न करना पड़े। इस प्रसंग मे वे गीता मे श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिए गए इस उपदेश का यदि उचित समझते हो तो अपने बड़ों से भी युद्ध करने में न हिचकिचाओ,—का उल्लेख किया करते थे।

आज हमारी लेन-देन की राजनीति देश को विघटन की ओर अग्रसर कर रही है। सभी राजनीतिक दलो, सभी संस्थानो, तथा उन सब स्थानों पर तनिक भी सत्ता का केन्द्र है, विघटन की प्रवृत्तियां दिखाई देने लगी हैं। मेरी पीढ़ी के राजनीतिज्ञों के जीवन का उद्देश्य एकता को बढ़ाना था। आज सत्ता हथियाने की होड़ है। मेरी दृष्टि में सत्ता तो जनता की चेरी है। जनता जिसको उपयुक्त समझे उस पर सत्ता का दायित्व लाद दे। किसी को सत्ता के लिए नही दौड़ना चाहिए। अपने जीवन के ध्येय को मैं इकबाल के शब्दों मे इस प्रकार वर्णन कर सकता हूं—

खुदी को कर बुलन्द इतना
कि हर तकदीर से पहले।
खुदा बन्दे से खुद पूछे।
बता तेरी रजा क्या है॥

जो कुछ मुझे प्राप्त हुआ मैं उससे सन्तुष्ट हूं। आदमी वही पाता है जिसके वह योग्य होता है। फूल विकसित होते हैं और खिलते हैं। केवल कुछ ही फूल देवताओं पर चढ़ते हैं या राजा-रानियों के मुकुटों को शोभित कर पाते हैं। किसी भी मनुष्य के लिए उसका निष्ठावान्, सौम्य तथा यशस्वी जीवन ही उसका

हैदराबाद सत्याग्रह का सचित्र इतिहास

हैदराबाद के आर्यसत्याग्रह का पूर्ण सचित्र इतिहास सस्मरण सर्वअधिकारियों तथा सत्याग्रहियो के नाम और पते के साथ सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित हो और सभी आर्यसमाजें और आर्य प्रतिनिधि सभायें इसमें सहयोगी बनें। इस इतिहास की हजारो प्रतियां हाथो हाथ देश की आर्यसमाजें और सत्याग्रही आर्य वीर जन खरीद लेंगे। आशा है कि सार्वदेशिक सभा के अधिकारी गण इस महान कार्य को अपने हाथ में लेकर आर्य वीरों का सम्मान करेंगे।

इस सत्याग्रह के इतिहास के प्रकाशन यज्ञ मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को मैं अपनी ओर से 1000) एक सहस्त्र रुपया सादर भेंट करूंगा। मेरा विनम्र सुझाव यह है कि जिन आर्य नेताओ, महात्माओं तथा आर्य वीरों ने हैदराबाद सत्याग्रह मे भाग लिया था या जिन समाजो ने आर्य समाजों ने सार्वदेशिक सभा को दान भेजा था उन सब के नाम और पते अवश्य दिए जायें।

वेदपथिक धर्मवीर आर्य झड़ाधारी,
9857, अहाता ठाकुरदास, सरायरोहिल्ला,
नई दिल्ली-5

दयानन्द बाल गुरुकुल खूंटी

आदिवासी बालको मे आर्ष पाठविधि से शौच आचार, वैदिक नैत्यिक कर्म के मन्त्र, सूत्र, श्लोक, पाणिनीय व्याकरण, ब्रह्मचर्य व्रत, प्रारम्भिक शिक्षा (राजकीय) आदि स्वामी दयानन्द की विधि से देने की व्यवस्था की गयी है। यह विद्यालय पहले—श्रद्धानन्द सेवा श्रम खूटी में चलता था किन्तु अब श्रद्धानन्द सेवाश्रम और दयानन्द फाउन्डेशन से कोई सबध नही है। इसलिए आदिवासियो मे वैदिक धर्म के प्रचार के लिए कृपया सभी तरह के सहयोग दे जो एक प्राचीन ढग के विद्यालय में चाहिए।

—भिषक देवदत्त वैयाकरण

सूचनार्थ—पं देवदत्त जी के पत्र के सम्बन्ध में निवेदन है कि अब पं० देवदत्त जी का स्वामी श्रद्धानन्द सेवाश्रम खूटी अथवा दयानन्द फाउण्डेशन से कोई भी सम्बन्ध नहीं है। मैं उनकी लगन तथा त्याग का सदा प्रशसक रहूंगा, परन्तु उनके साथ मिल कर काम करने मे मैंने आपने आपको असमर्थ पाया। पं० देवदत्त जी के किसी भी कार्य, लेन-देन की जिम्मेवारी आश्रम या फाउण्डेशन की नहीं होगी।

—नारायण दास ग्रोवर

निबन्ध-प्रतियोगिता

आर्य समाज दिवान हाल, दिल्ली के शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में निबन्ध-प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है जिसका विषय है—वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक हैं। पुरस्कृत व्यक्ति को क्रमश: प्रथम-1000, द्वितीय-750, और तृतीय 500 रुपये के-शताब्दी समारोह पर सम्मानित किया जायेगा।

—[illegible] गुप्त मंत्री

हैदराबाद के सत्याग्रही

आर्य समाज फतेहाबाद (पंजाब) ने अपने प्रस्ताव में कहा कि उन सभी सत्याग्रहियों को जिन्हें निजाम की सरकार ने छः मास की सजा सुनाई थी, स्वतंत्रता सेनानी माना जाये। छः मास सजा 'भुगतने' की शर्त रखकर ऐसे बहादुर वीरों को सम्मान एवं पेंशन से वंचित नहीं रखना चाहिये। सभी सदस्यों ने हैदराबाद के सत्याग्रहियों को स्वतंत्रता सेनानी मानने के फैसले का तालियों की गड़गड़ाहट से स्वागत किया।—बृजमोहन संगारी

हिसार में रक्तदान शिविर

दयानन्द कालेज हिसार में 24 न० को 37वां एन० सी० सी० दिवस मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित समारोह में छात्रों ने रक्तदान शिविर में 9750सी० सी० रक्तदान किया। आचार्य डा० सर्वदानन्द आर्य ने समारोह की अध्यक्षता की और छात्रों से अनुरोध किया कि वे अनुशासन को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाएं तथा राष्ट्रीय विकास से रचनात्मक योगदान दें। —देवेन्द्र उप्पल

पारिवारिक सत्संग

आर्य समाज फतेहाबाद (पंजाब) के तत्त्वावधान में श्री चुनीलाल आर्य के घर मे पारिवारिक सत्संग का आयोजन हुआ। यज्ञादि के पश्चात श्री ओमप्रकाश जी आर्य प्रधान आर्य युवक परिषद पंजाब का प्रवचन हुआ। सत्संग में लगभग सौ व्यक्ति सम्मिलित हुए। इस अवसर पर पचास व्यक्तियों ने ईश्वर स्तुति के वेद मन्त्र जबानी याद करने एवम् प्रतिदिन उसका अभ्यास करने का व्रत लिया।

श्रद्धानन्द सचित्र ट्रैक्ट

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश समय-समय पर महापुरुषों पर सचित्र टैक्ट प्रकाशित करता रहा है। आगामी 25 दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में सचित्र टैक्ट का प्रकाशन भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के प्रधान श्री रामभज बत्रा जी के सहयोग से हो रहा है। —चन्द्र मोहन आर्य

आर्य समाज एवं आर्य युवक परिषद

आर्य समाज कालेज विभाग नारायण गढ़ के मन्त्री मास्टर किशोरीलाल आर्य ने नारायणगढ़ के निकट हुसैनी नामक गांव में आर्यसमाज की स्थापना तथा नारायण गढ़ में आर्य युवक परिषद की स्थापना की है। —प्रा० वेद सुमन

हरिजन युवक की विधर्मियों से चगुल से मुक्ति

ग्राम [illegible] की मस्जिद के इमाम [illegible] फकीर द्वारा हरिजन युवक बनवारी का धर्म परिवर्तन कर लिया लिया गया था। आर्यसमाज एवं विश्व हिन्दू परिषद [illegible] के कार्यकर्त्ताओं के अथक प्रयास से राष्ट्रघाती तत्वों के चंगुल से मुक्त कराकर पुन: शुद्ध कर लिया गया है।

—[illegible] आर्य

हरियाणा मे डी० ए० वी० शताब्दी

डी० ए० वी० शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में इस वर्ष हरियाणा मे पाच करोड रुपए की धनराशि एकत्रित की जायेगी। इससे वहां 56 नए डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल खोले जायेंगे। 1 फरवरी को विशाल शताब्दी समारोह का आयोजन किया जा रहा है, तथा 15 फरवरी को दिल्ली की शोभा यात्रा में हरियाणा से 5 लाख व्यक्ति भाग लेंगे। इस शताब्दी वर्ष मे दहेज प्रथा के विरुद्ध डी० ए० वी० स्कूलो के छात्र-छात्रायें शपथ ग्रहण करेंगे कि वे अपने विवाह में दहेज का लेन-देन नही करेंगे।

—देवेन्द्र उप्पल, दयानन्द कालेज हिसार

नेपाल मे आर्य महासम्मेलन

आर्यसमाज विराटनगर के तत्वावधान में आगामी 22 जनवरी 86 को एक दिवसीय आर्य महासम्मेलन 'वीरेन्द्र सभा गृह' में होगा। इस का उद्घाटन कोशी अञ्चलाधीश करेंगे। अध्यक्षता भू पू प्रधानमन्त्री श्री नगेन्द्र प्रसाद रिजाल करेंगे और मुख्य अतिथि लाला राम गोपाल जी शालवाले होंगे। यहा आर्य सम्मेलन नेपाल के लिए पहला ही है। जनवरी 22 तारीख वह दिन है जब नेपाल के तत्कालीन राणा सरकार ने अमर शहीद शुक्रराज शास्त्री को फासी दी गयी थी।

उक्त आर्य महासम्मेलन पर एक स्मारिका प्रकाशित करने की भी योजना है।

प्रकाश चन्द्र सुवेदी महासचिव आर्य समाज, विराटनगर नेपाल मोटर कम्पनी प्रा० लि० रानी, विराटनगर (नेपाल)

आदर्श विवाह

—श्री अनिल सुपुत्र श्री बलवीर देव नारग (पटेल नगर दिल्ली) और कु० रेणु सुपुत्री श्री एस०के० कपूर (श्रीनिवास पुरी दिल्ली) का आदर्श विवाह 6 दिसबर को श्री प्रेमपाल शास्त्री के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री नारग जी के घर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ स्वामी आनन्दवेश की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। श्री नारग ने गोविन्द राम वैदिक योगाश्रम के लिए दानदिया।

हिन्दू महासभा का अधिवेशन

अखिल भारत हिन्दू महासभा का स्वर्ण महोत्सवी अधिवेशन हैदराबाद आन्ध्र प्रदेश में 10 से 12 जनवरी 86 को सम्पन्न होगा।—सौ० सिन्धु गोडसे

आर्यसमाज के लिए भूदान

आर्य समाज, अरनियाँ, जि०-बुलंदशहर के ऋषि निर्वाण दिवस के दिन महात्मा अमर स्वामी के सुपुत्रों श्री मृत्युञ्जय सिंह राही, शत्रुञ्जय सिंह और कविवर धनञ्जय सिंह एम० ए० ने पाँच सौ गज की भूमि उपरोक्त समाज को दान की है। समाज को उसी दिन भवन निर्माण के लिए 1525 रु० का दान

वेद प्रचार की धूम

—श्री० आर्य नरेश वैदिक प्रवक्ता ने 15 नवम्बर से 12 दिसम्बर तक करनाल, पानीपत, फरीदाबाद, मथुरा, भरतपुर, अजमेर, जयपुर, नारनौल खेतडी, गुड़गाव और दिल्ली आदि अनेक स्थानों पर अपने वेद प्रचार वाहन से प्रचार किया।

—रिसाल सिंह आर्य

नि शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर

आर्य समाज, बीसलपुर (पीलीभीत) में 24 नवम्बर से 3 दिसम्बर तक नि शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। समाज की ओर से आवास, भोजन आदि की व्यवस्था के साथ ही डा० एस० बी० अग्रवाल (उपनिदेशक चिकित्सा स्वास्थ्य विभाग बरेली) द्वारा सभी नेत्र रोगियो को मुफ्त चश्म वितरित कराए गए।—पूर्णानन्द प्रधान

स्वर्ण जयन्ती समारोह

आय समाज, लल्लापुरा, वाराणसी का स्वर्ण जयन्ती समारोह 19 से 22 दिसम्बर तक सोत्साह मनाया गया। जिसमे स्वामी सच्चिदानन्द, स्वामी स्वरूपानन्द, श्री ओम्प्रकाश आर्य, प० सत्यमित्र शास्त्री, प० सत्यदेव शास्त्री, डा० ज्वलन्त कुमार, श्री सत्यपाल पथिक, श्री वीरेन्द्र आर्य श्री जयप्रकाश आय, श्री रामप्रसाद पांडेय, श्री विजय कुमार आर्य और श्री श्रीप्रकाश आदि विद्वान और उपदेशको ने भाग लिया। इस अवसर पर सगठन विचार गोष्ठी, महिला सम्मेलन आदि का आयोजन किया गया।

—बुद्धदेव आर्य

गुरुकुल शुक्रताल का महोत्सव

गुरुकुल शुक्रताल का 21वाँ वार्षिक महोत्सव 24 से 27 नवम्बर तक समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर समाज सुधार सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, आय सम्मेलन, किसान सम्मेलन, व्यायाम सम्मेलनों का आयोजन किया गया। महोत्सव मे हजारो नरनारियों ने भाग लिया। यजुर्वेद पारायण यज्ञ स्वामी आनन्दवेश जी की अध्यक्षता मे हुआ।

—स्वामी आनन्दवेश

दयानन्द धर्मार्थ औषधालय

आय समाज, राणा प्रताप बाग, दिल्ली में दयानन्द निर्वाण दिवस के अवसर पर दयानन्द धर्मार्थ औषधालय (एलोपैथिक) का शुभारम्भ किया गया। यह औषधालय प्रात 8 से 12 बजे तक खुला रहेगा। यहाँ होम्योपैथिक औषधालय गत 11 वर्षों से कार्य कर रहा है।

—जगदीश चन्द्र आय

—आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ द्वारा धमतरी नगर में वेदप्रचार का आयोजन किया गया, प्रचार कार्य आर्य समाज, बडी औद्योगिक वार्ड, मराठापारा, कोष्टापारा तथा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय खरखुसी में सम्पन्न हुआ। श्री वेदपाल आर्य और श्री सेवक राम आर्य के भजनोपदेश हुए। इन कार्यक्रमों में श्री रोहिताश्व शर्मा और श्री आर० पी० दुबे एस० डी० ओ० का

'आर्य जगत्' के आजीवन सदस्य

पिछले कुछ समय से हम 'आर्य जगत्' के नये आजीवन सदस्यों की सूची प्रकाशित नही कर सके। इससे पहले आजीवन सदस्यों की सूची ६ जनवरी ८५ के अक में प्रकाशित हुई थी। पाठको के स्नेह के लिए क्या कहे। हम इस वर्ष के अन्त तक अपने ग्राहको और आजीवन सदस्यों की संख्या दुगुनी कर देना चाहते हैं। हरेक ग्राहक एक नया ग्राहक बना दे और हरेक आजीवन सदस्य एक आजीवन सदस्य बना दे तो यह संकल्प पूरा हो सकता है। आपके स्नेह और आपकी क्षमता दोनों में हमें विश्वास है। क्या अगली बार आप अपना नाम इस सूची मे छपा हुआ देखना चाहते हैं ? अगर हाँ। तो अपना २५१ रुपये का चैक/मनीआर्डर/ बैंक ड्राफ्ट शीघ्र ही सभा कार्यालय 'आर्य जगत्' आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली—१ को भेजें। अब तक ६९४ आजीवन सदस्यों की सूची छप चुकी है। आगे की सूची नीचे दे रहे हैं।—

६९५. श्रीमती भगवती सेठ ४१/४२, बनारसीदास एस्टेट, लखनऊ रोड, दिल्ली
६९६. डॉ० रमेश कपूर कोट बाजार, बस्ती शेख, जालन्धर (पंजाब)
६९७. डॉ० सुमन प्रभा म०न०-१, सैक्टर-१६, चण्डीगढ़
६९८. श्री आदित्यपाल सिंह एफ-५/५२, चार इमली, भोपाल (म०प्र०)
६९९. अग्रवाल ब्रदर्स सी-१४७,मानसरोवर गार्डन, निकट-मायापुरी चौक, नई दिल्ली—११००१५
७००. श्री आर०के० अरोडा १४३९/ए, इकबाल मार्किट, पाल मण्डी, सदर बाजार, दिल्ली-११०००६
७०१. श्री डी०एस०वर्मा १५६-एल माडल टाउन, हिसार-१२५००५ (हरियाणा)
७०२. श्री एस०के० टण्डन 'टण्डन निवास" मिलाप चौक, जालन्धर (पजाब)
७०३. श्री डी०के० सखूजा म०नं० ३२४, स्ट्रीट नं०-७, सैण्ट्रल टाउन, जालन्धर
७०४. श्री गिरजा शंकर साव ८६/१ बी, अहीरी टोला स्ट्रीट, कलकत्ता-५
७०५. प्रो० चितरजन दयाल कौशल "शारदो धानम्" कुरुक्षेत्र (हरियाणा)
७०६. श्री सोमदेव पुरी बी-१०६, विवेक बिहार दिल्ली-११००३२
७०७. श्री विष्णु प्लास्टिक्स २७९-जी०आई०मी० ओढव, अहमदाबाद ३८२४१५
७०८. श्री शांति स्वरूप अशोक कुमार थोक वस्त्र विक्रेता, हिण्डोन सिटी-३२२२३० (राजस्थान)
७०९. श्री रामस्वरूप आर्य द्वारा अग्रवाल इलैक्ट्रिक स्टोर एण्ड रिपेयरिंग वर्कस, व्यानिया पाडा, हिण्डौन सिटी-३२२२३० (राजस्थान)
७१०. श्री सत्य प्रकाश आर्य द्वारा-कलुवाराम हरगोविन्द, बजाजा बाजार, हिण्डौन सिटी-३२२२३० (राजस्थान)
७११. श्री हरिओम कुमार आर्य द्वारा अग्रवाल जनरल स्टोर, हिण्डौन सिटी
७१२. श्री व्यवस्थापक जी श्री घुडमल आर्य वाचनालय, आर्य समाज-हिण्डौन सिटी
७१३. श्री पटेल गंगाराम कण्ग भाई द्वारा अम्बिका फर्टिलाइजर्स, मु०-विजय फार्म, दहेगाम, ग्राम-पो०-दहेगाम, (अहमदाबाद) गुजरात
७१४. श्री जयसिंह राव सार्वजनिक वाचनालय, कोठी चार रास्ता, बड़ोदरा-३९०००१ (गुजरात)
७१५. श्रीमती उषा एस० सेठ ६५-स्टेट बैंक कालोनी, जी०टी०रोड़, दिल्ली
७१६. श्री सतीश वत्स जी ए-९, सरिता दर्शन, आश्रम रोड़, अहमदाबाद-३८०००९
७१७. श्री नेशी वत्स ५९/३४९, विजय नगर सोसायटी, नारायणपुरा, अहमदाबाद
७१८. श्रीमती ललिता सूर्य प्रकाश कपूर ४५-सासून रोड़, पूना-१ (महाराष्ट्र)
७१९. श्री रविशकर ओम प्रकाश आर्य गांव-माननहेल, रोहतक-१२४१०६ (हरियाणा)
७२०. श्री मंत्री जी आर्य समाज, फतेहाबाद (आगरा) उ०प्र०
७२१ श्री देवीदास भालदार आर्य ग्रन्थालय, नामदारगंज, पो०-अचलपुर सिटी अमरावती-४४८८०६ (महाराष्ट्र)
७२२ श्री गोपालदास कुमार द्वारा कुमार क्लाथ स्टोर, अशोक नगर (गुना) म०प्र०
७२३. श्री मंत्री जी आर्य समाज,महर्षि दयानन्द मार्ग, पोरबन्दर (गुजरात)
७२४. सुश्री कौशल्या भण्डारी ५९५-कर्म सिंह कालोनी, माल रोड़, सैक्टर-३, करनाल
७२५. श्री सजय कुमार पाहवा सुपुत्र श्री नन्द लाल पाहवा १६२-ए "आर्य निवास" गली नं०-४, थापर नगर, मेरठ (उ०प्र०)
७२६. वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून (उ०प्र०)
७२७. श्री मंत्री जी आर्य समाज-पंजाबीबाग, (ईस्ट) रोड़ नं०-३३ के पास, नई दिल्ली-११००२६
७२८. श्री मंत्री जी आर्य समाज, अमृत क्षेत्र पो०-निरोणा (कच्छ) गुजरात
७२९. श्री इन्द्र मोहन मेहता ३/२८, विभो, आगरा (उ०प्र०)
७३०. श्री दर्शन लाल नागपाल सी-२१, ग्रेटर कैलाश-१, नई दिल्ली-११००४८
७३१. श्री रामकुमार शर्मा प्रोजेक्ट इन्जीनियर, इंजीनियरिंग एण्ड डिवलपमैंट द्वारा-आई० टी०सी० जमशेदपुर (बिहार)
७३२. श्री नरदेव कुण्डू सुपुत्र श्री वीरेन्द्र शास्त्री, ग्राम-पो०-टिटौली, रोहतक (हरियाणा)
७३३. स्नेह नरेश द्वारा वेलानी माउल्ड इण्डस्ट्रीज, रामवाडी टैगोर रोड़, थाणे (महाराष्ट्र)
७३४. विमल कान्त शर्मा द्वारा श्री चिरजीलाल शर्मा, ९८४-तिमारपुर, दिल्ली ११०००७
७३५. अशोक चाडक २०३-अंबुपति बिल्डिंग, चिंचोली मार्ग, २रा माला, मलाड़ वैस्ट बम्बई-६४
७३६. श्री ओम प्रकाश ३६१-आर्य भवन सरवाल चौक, जम्मू
७३७. श्री लक्ष्मी कान्त जायसवाल १९-१ डी० गोवा बागान स्ट्रीट, नई मार्किट कलकत्ता-६
७३८. करसन भाई पटेल २५-मातृ शक्ति बिल्डिग, सुभाष रोड़, डोम्बी वल (वैस्ट) कल्याण (थाणा), महाराष्ट्र
७३९ श्री एस०पी० बब्बर ८/४, साऊथ पटेल नगर, नई दिल्ली-११०००८
७४०. श्रीकृष्णानन्द आचार्य सेक्रेट्री आर्य सेन्ट्रल स्कूल, आर्य कुमार आश्रम,पट्टोम (त्रिवेन्द्रम)
७४१. श्री विनोद कुमार बालिया ५००/६-डी, २-ए, गली नं०-१, विश्वास नगर, दिल्ली-११००३२
७४२. श्री मंत्री जी आर्य समाज, बाजार सीताराम, दिल्ली-११०००६
७४३. प्रिंसिपल डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल, फरीदाबाद (हरियाणा)
७४४. विजय कुमार चड्डा ९३-बी, सिंगल स्टोरी, रमेश नगर, नई दिल्ली-११००१५
७४५. श्री रणसिंह यादव स्टेशन मास्टर धोराजी (द०रेल्वे) जिला-राजकोट (गुजरात)
७४६. श्री हरभगवान विशाल प्रिंटिंग प्रैस, गुरुद्वारा रोड, करोलबाग, नई दिल्ली
७४७. श्री गंगाबिशन हुकमचन्द ५१४१-रुई मण्डी, सदर बाजार, दिल्ली-११०००६
७४८. श्रीमती शशि कान्ता शास्त्री, शास्त्री भवन, ११७/४८६, पाण्डु नगर, कानपुर
७४९. श्री राजन चड्डा द्वारा इन्द्रपाल चड्डा, ५-सिंगल स्टोरी ओल्ड क्वार्टर्स, रमेश नगर नई दिल्ली-११००१५
७५०. श्री मंत्री जी आर्य समाज-गिदरबाहा, जिला-फरीदकोट-१५२१०१ (पंजाब)
७५१. श्री सतीश चन्द्र अग्रवाल एवं ब्रदर्स पो०-आड़ूकनर, वाया-आदमपुर, दोआबा (जालन्धर) पंजाब
७५२. श्री मुल्खराज मल्होत्रा ९५-हाजरा रोड़, कलकत्ता-२६
७५३. श्रीमती शान्ता गर्ग ६-बल्देरी रोड़, अलीपुर, कलकत्ता-२७
७५४. मिसेस एस० गन्होत्रा श्रीराम कालोनी, सिविल लाईन्स, गुरदासपुर (पंजाब)
७५५. सर्व दमन दीक्षित डब्ल्यू-८, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-११००२७
७५६. श्री अम्बालाल मल्लू भाई "विनय" सोनीवाड़ा रोड़,पाटण-३८४२६५
७५७. श्री ओ०पी० श्रुति १६/५,गीता कालोनी, दिल्ली-११००३१
७५८. प्रि० वनिता देवराज डी०ए०वी०सै०प० स्कूल, उपवन, बहादुरगढ़ (हरियाणा)
७५९. श्री मंत्री जी, आर्य समाज, सगरूर (पंजाब)
७६०. प्रिंसिपल डी०ए०वी० शताब्दी पब्लिक स्कूल, १४/२६३, डी० एल० एफ० कालोनी रोहतक (हरियाणा)
७६१. प्रिंसिपल डी०ए०वी० सेंटेनरी पब्लिक स्कूल, एच-६२, शंकर भवन, सैक्टर-११, नौएडा (गाजियाबाद) उ०प्र०
७६२. प्रिंसिपल डी०ए०वी० शताब्दी कालेज, एन०एच०III० चिमनीबाई धर्मशाला फरीदाबाद-१२१००१ (हरियाणा)
७६३. प्रिंसिपल भागीरथी देवी आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय-गली आर्य समाज, बाजार सीताराम, दिल्ली-११०००६
७६४. श्री अजय कुमार गुप्ता २८०७, हिन्दूबाड़ा (काली मस्जिद), बाजार सीताराम, दिल्ली-११०००६
७६५. श्री हरवंश लाल खुराना डी-२४, टैगोर, गार्डन, एक्स (८० गज) नई दिल्ली-११००२७
७६६. श्री जगदेव सिंह ८/ए, आनन्द कोर्ट, डा० रघुनाथ मार्ग, बान्द्रा, बम्बई-५०
७६७. श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य "शान्ति भवन" मुकुन्दराज पथ, सईकर मार्ग, महल नागपुर, पिन ४४४००२
७६८. श्री सत्यप्रकाश आर्य पत्रकार, गंजडुण्डवारा (एटा) उ०प्र०

स्वामी जी के जीवन से शिक्षा लें

—सत्यकाम आर्य—

ऐतिहासिक ग्रन्थों मे हमारी संस्कृति और सभ्यता के अभ्युत्थान के लिए अनेक महापुरुषों के योगदान की मधुर चर्चा है। भारत के भाग्य विधाता, आर्य संस्कृति के सफल उद्धारक, अमर हुतात्मा स्वतंत्रता सेनानी श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का नाम उनमे सर्वोपरि है। स्वामी जी की जीवन झांकी जहां हृदयों को झंकृत कर देने वाली है वहां प्रेरणा एवं स्फूर्ति की अजस्त्र मन्दाकिनी भी है। उन्होंने अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे अपनी जीवन सम्बन्धी अनुभूतियो की अभिव्यक्ति वाणी के माध्यम से की।

स्वामी जी का प्रारम्भिक नाम मुन्शीराम था। शिक्षा की दृष्टि से वे सफल विधिवेत्ता थे। आपके पिता प्रशासन मे उच्च अधिकारी थे। यद्यपि उनका जीवन धर्म एवं कर्म निष्ठ था, तब भी पुत्र सभी दुर्गुण एवं दुर्व्यसनो से ओत प्रोत था। युवावस्था के भारी थपेड़े मुन्शी राम के जीवन को अस्तव्यस्त करते रहे तथा वह भौतिकता के गर्त मे स्वाभाविक ही हवा के साथ सूखे पत्ते के समान उड़ता चला गया। समस्त दोषो ने मुन्शीराम के जीवन को ऐसा धूमिल बना दिया था कि जीवन के शुचिमेघ अंधकार मे सन्मार्ग की दिशाए सर्वथा ओझल हो चुकी थी। ऐसी विकट स्थिति मे मुन्शीराम के लिए आर्य समाज के संस्थापक, भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति मे प्राण संचारित करने वाले जगद्गुरु महर्षि दयानन्द का प्रवचन अमृत का काम कर गया। तब जीवन के प्रति उनकी जो श्रद्धा हुई तो फिर वे स्वामी श्रद्धानन्द जी के रूप मे आर्य जगत् के सामने प्रकट हुए। स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन के प्रमुखतम कार्यों मे गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली की पुनर्स्थापना स्वरूप गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना करना है। स्वामी जी शुद्धि आन्दोलन के जन्म दाता थे। दिल्ली के मुसलमानो ने उनके जामामस्जिद के गुम्बज पर खड़े होकर उपदेश देने की प्रार्थना की थी। इस्लाम के इतिहास मे यह अन्यतम घटना थी कि किसी गैर मुस्लिम को इस प्रकार सम्मान प्रदान किया गया। स्वामी जी ने जामा मस्जिद के गुम्बज पर खड़े होकर भी अपना उपदेश वेद मन्त्रो के उच्चारण से प्रारम्भ किया। स्वामी जी गांधी जी की मुस्लिम पोषक नीति को अहितकर समझते थे। अतः उन्होंने शुद्धि के कार्य को अधिक समझा और कांग्रेस से भी त्याग पत्र दे दिया।

स्वामी जी का जीवन विशाल कर्मक्षेत्र रहा है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आप वर्षों प्रधान रहे। प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भी आप वर्षों प्रधान रहे। देश और जाति को जागृत करने मे आपका गहरा हाथ था।

पंजाब में फौजी कानून की घटना के कारण सारे पंजाब मे आतंक छाया हुआ था। उसके आधार पर बहुत से निरीह प्राणियो को अण्डेमान जेल मे ठूंस दिया गया था। रौलेट ऐक्ट के विरोध मे आन्दोलन आरम्भ किया गया तो दिल्ली में इस आन्दोलन के अग्रिम नेता वीर संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द ही थे। उस आंदोलन मे निडर होकर जलूस का नेतृत्व करते हुए स्वामी जी जब घण्टाघर के पास पहुचे तो गोरे के सैनिक अपनी संगीने ताने खड़े थे स्वामी जी ने गरज-कर कहा "निर्दोष जनता पर गोली चलाने से पहले मेरी छाती मे संगीन भोंक दो।"

23 दिसम्बर सन् 1926 को कुछ लीगी नेताओं के बहकावे मे आकर अब्दुल रशीद नामक हत्यारे ने स्वामी जी पर तीन गोलियां चला दी तथा यह वैदिक सभ्यता का अनुरागी ओ३म् के साथ शहीद हो गया।

आज हम सबको यह संकल्प लेना चाहिये कि हम स्वामी जी की भांति आर्य समाज के निर्भीक एवं त्यागी तपस्वी सेवक बनकर महर्षि दयानन्द के अनुपम सन्देश को घर घर फैलाने के लिए प्राण-पण से जुट जाना चाहिए। यही हमारी स्वामी जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

—पता द्वारा श्री सीताराम आर्य, बालसमद रोड, हिसार (हरि०)

श्री पं० त्रिलोक चन्द्र जी शास्त्री स्मृति दिवस

आर्य समाज माडल टाउन पानीपत की ओर से आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हरियाणा के तत्वावधान मे 5-1-86 रविवार को महर्षि स्वामी दयानन्द के अनन्य भक्त लेखनी और वाणी के धनी महोपदेशक स्वर्गीय श्री प० त्रिलोक चन्द्र जी शास्त्री का स्मृति दिवस श्री प्रो० वेद व्यास जी, प्रधान आर्य प्रा० प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की अध्यक्षता मे मनाया जा रहा है। इस अवसर पर श्री दरबारी लाल जी, श्री रामनाथ जी सहगल, श्री प्रो० शेर सिंह जी, श्री ओमानन्द जी सरस्वती श्री शिवकुमार जी शास्त्री, श्री क्षितीश कुमार जी वेदालंकार, श्री प्रो० रत्न सिंह जी, श्री प्रो० राजेन्द्र जी जिज्ञासु, श्री प० सत्यप्रिय जी शास्त्री, श्री प्रि० सर्वदानन्द जी, आदि विद्वान पधार रहे हैं।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि, उपसभा हरियाणा की ओर से आर्य जगत के सम्पादक मान्य श्रद्धेय श्री प० क्षितीश कुमार जी वेदालंकार की अध्यक्षता मे प्रान्तीय आर्य युवको की एक विशेष गोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

—प्रा० वेदसुमन वेदालंकार।

—लखनऊ जनपद में साप्ताहिक आर्य जगत् के प्रचारक श्री ज्ञानप्रकाश की सुपुत्री अ.पुष्पती अचला का शुभ विवाह श्री देवेन्द्र कुमार गुप्त इन्जीनियर के सुपुत्र चि० नीरज के साथ 23 नवम्बर को गाजियाबाद में पूर्ण वैदिक रीत्यनुसार सम्पन्न हुआ। पौरोहित्य आचार्य सोमदेव ने किया।

—सावित्री देवी आर्या

कृष्णनगर में यजुर्वेद यज्ञ

आर्य समाज मन्दिर कृष्णनगर मे 26 नवम्बर से 15 दिसम्बर तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ तथा 9 दिसम्बर से 14 दिसम्बर तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया रात्रि के समय साढे सात से साढे नौ बजे तक आचार्य सत्यप्रिय जी की वेद कथा तथा श्री वेदव्यास जी के भजनोपदेश हुए। 15 दिसम्बर को पूर्णाहुति के अवसर पर विशेष प्रवचन आयोजित किए गए। कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी वानप्रस्थ ने की —अशोक पठानिया,

श्री हरिवंश वेदालंकार का निधन

गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक 'गुरुकुल' पत्रिका के भूतपूर्व सम्पादक, रामजस हायर सेकंडरी' स्कूल मे हिन्दी और संस्कृत के शिक्षक, गंगा, हिमालय, और वनो के अद्भुत प्रेमी और जानकार श्री हरिवंश वेदालकार का 72 वर्ष की आयु मे 18 दिसम्बर को अकस्मात् हृदयगति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। 29 दिसम्बर को 52 ए, कमलानगर दिल्ली-7 मे 13 वीं का शान्तियज्ञ और पगड़ी की रस्म होगी। वे अपने पीछे तीन पुत्र, एक पुत्री और पत्नी छोड गए है। वे जीवन भर अजातशत्रु रहे।

स्व० श्री धर्मेन्दुजी की स्मृति में

आर्य युवक परिषद, दिल्ली (रजि०) के सस्थापक प्रधान, स्व० श्री प० देवव्रत जी धर्मेन्दु की साठ वर्षीय सामाजिक सेवा के सदर्भ मे 'कवि की कविता' नामक पुस्तक सग्रह परोपकारिणी यज्ञ समिति, दिल्ली द्वारा प्रकाशित होना था। इसी दौरान श्री धर्मेन्दु जी का आकस्मिक निधन होगया। अनेक सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक सस्थाओं के शोक सदेश व उस सग्रह के बारे मे सुझाव प्राप्त होने लगे। अब यह सग्रह सयुक्त रूप से प्रकाशित किया जा रहा है। आप से निवेदन है कि प० देवव्रत जी धर्मेन्दु के जीवन सम्बन्धी महत्वपूर्ण सस्मरण व कविताए प्रकाशनार्थ अपनी श्रद्धाजलि के रूप मे समिति के महामन्त्री श्री कमल किशोर आर्य 10-A/15, शक्ति नगर, दिल्ली-7 के पते पर शीघ्र भेजकर कृतार्थ करे।

—ओम प्रकाश, मत्री आर्य युवक परिषद, दिल्ली (रजि०) एच-64, अशोक विहार, दिल्ली-52

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में आर्ययुवक प्रशिक्षण शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान मे गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद मे 23 से 27 दिसम्बर तक आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन होगा। उद्घाटन श्री रोशनलाल आर्य (विधायक हरियाणा) करेंगे।

—अनिल आर्य

—हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी वेद प्रचार समारोह 16 से 18 मई—86 तक 2118-2119 सैक्टर 13 अर्बन स्टेट, करनाल मे होगा। जिसमे गोरक्षा, वैदिक राष्ट्रोत्थान, नारीउत्थान और कवि सम्मेलन आदि का आयोजन किया जायेगा।

—स्वामी सच्चिदानन्द

—जय प्रकाश नगर, घोण्डा, दिल्ली मे 30 नवम्बर से 1 दिसम्बर तक वैदिक धर्म प्रचार के कार्यक्रम में पं० सत्यप्रिय आचार्य, पं० आशानन्द, पं० रामचन्द्र, प० दिनेश शर्मा, श्रीमती ईश्वरी देवी आर्या, श्री मदनलाल महेश्वरी आदि ने भाग लिया।

Registration Notice

THE D.A.V. COLLEGE MANAGING COMMITTEE NEW DELHI (Celebrating the D.A V Centenary in 1986) announces registration for admission to various classes in the following Public Schools in and around Delhi. Kindly contact Principals. Admission to Schools at Nos. 1 and 2 already over

Our main aim is to Indianise Public School Education with emphasis on respect for Indian thought, tradition, culture and Aryan Heritrge. Free education for meritorious students belonging to weaker sections of Society. Hindi medium classes are also available in Schools at Sl. Nos. 2, 3, 4 and 5 in the 2nd Shift:

1 Hans Raj Model School, Punjabi Bagh, New Delhi.
2. Kulachi Hans Raj Model School, Ashok Vihar, Delhi.
3. D A.V. Model School, Maurya Enclave, Pitampura, Delhi.
4 D.A V Model School Shalimar Bagh, Delhi.
5. D.A.V Public School, Chander Nagar, Janakpuri, New Delhi
6. D.A.V. Public School, West Patel Nagar, New Delhi
7. D.A V. Public School, R.K. Puram, Sector 9, New Delhi.
8. C.L. Bhalla Dayanand Model School, Jhandewalan, New Delhi.
9. Dayanand Model School, Mandir Marg, New Delhi.
10. D.A V, Public School, Masjid Moth, Niti Bagh, New Delhi.
11. D A.V Public School, Gagan Vihar, New Delhi
12. D A V Public School, Vasant Vihar, New Delhi.
13. D,A.V. Public School, Sector 15, Faridabad
14. D A.V Public School, Raj Nagar, Ghaziabad (U.P.)
15 D A V Centenary Public School, Rajinder Nagar, Sahibabad (U P.)
16. D.A.V Centenary Public School, NOIDA (U.P.)
17 D A V Centenary Public School, Sector 14. Sonepat (Haryana).
18. D.A V. Centenary Public School, Gurgaon (Haryana).
19. D A V Centenary Public School, DLF Colony, Rohtak (Haryana)
20. D.A V Centenary Public School, Upvan, Bahadurgarh (Haryana)

DARBARI LAL
Organising Secretary

हरियाणा संघर्ष के पथ पर

24 जुलाई को राजीव लोंगोवाल के बीच हुए पंजाब समझौते के बाद देश ने राहत की सास ली थी। यद्यपि भारत के उच्च कोटि के नेताओं ने उसे हित मे बताया परन्तु हरियाणा और राजस्थान मे समझौते के कुछ अशो की तीखी प्रतिक्रिया हुई। क्यो कि नहरी पानी का जो बंटवारा 1981 मे पंजाब, हरियाणा और राजस्थान के लोगो के बीच हुआ था वर्तमान पंजाब समझौते ने उस पर पानी फेर दिया। इसी प्रकार 29 जनवरी 1970 मे श्रीमती इन्दिरा गाधी ने चंडीगढ़ पंजाब को देकर और अबोहर तथा फाजिल्का के क्षेत्र हरियाणा को देकर अपना एक निर्णय दिया था। उक्त पजाब समझौते ने उसे भी समाप्त सा कर दिया। और जहा तक वर्तमान समझौते का संबंध है इस समझौते से हरियाणा और राजस्थान को वह न्याय नही मिला जो उन्हे क्रमोवेश पूर्व समझौते से प्राप्त हुआ था। वर्तमान समझौते मे नहरी पानी की जो बात कही गई है वह अस्पष्ट और अन्यायपूर्ण है। समझौते के अनुसार हरियाणा और राजस्थान के लिये बहुत कम पानी बचता है। 1981 के समझौते मे हरियाणा के हिस्से मे 35 लाख एकड फुट पानी आया था और अब हरियाणा का पानी सिकुड कर 13 लाख एकड़ फुट पानी आ गया है। इसी प्रकार राजस्थान भी भारी घाटे मे चला गया।

जहा तक हरियाणा और पंजाब के सीमाई क्षेत्रो का सम्बन्ध है और चण्डीगढ के बदले हरियाणा को अलग से क्षेत्र देने की बात पूर्व समझौते मे थी, उसका जिक्र इस बार नही है। समझौते में केन्द्र अथवा पजाब से चण्डीगढ के बदले हरियाणा को अधिक सहयोग देने का कोई जिक्र नही है। वह बात तो दूर रही सीमा निरधारण करने वाले मैथ्यू आयोग के निर्णय से पूर्व ही पजाब के मुख्यमन्त्री ने ब्यान दे दिया कि यदि मैथ्यू आयोग द्वारा हरियाणा को पजाब का कोई भी गाव दिया गया तो मेरी सरकार त्याग पत्र दे देगी। परन्तु आश्चर्य तो यह है कि हरियाणा के मुख्यमंत्री चौ० भजनलाल अब भी तोते की तरह रट लगाए जा रहे हैं कि 'हरियाणा के हित राजीव के हाथो मे पूरी तरह सुरक्षित है'।

पजाब समझोते के विरुद्ध हरियाणा आंदोलन

हरियाणा मे छ विपक्षी दलो की एक सघर्ष समिति गठित की गई है, जिसका निर्णयानुसार प्रदेश के विभिन्न स्थानो से पद यात्रा के रूप मे लाखो लोगो ने दिल्ली की ओर कूच किया और वे सब 19 दिसम्बर प्रात दस बजे दिल्ली की वोट कलब पर पहुंचकर संसद का घेराव कर प्रदेश पर हुए अन्याय के विरोध मे अपना प्रदर्शन करेंगे। सघर्ष समिति के अध्यक्ष चौ० देवीलाल के कथनानुसार 'यदि हमारी मागे पूरी स्वीकृत न हुई तो गिरफ्तारियो का सिलसिला शुरू हो जायेगा।' सर्वखाप पचायत हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, उत्तरप्रदेश तक फैला हुआ एक व्यापक क्षेत्र है और यह देहाती लोगो का एक शक्तिशाली सगठन है। उसने भी उक्त आन्दोलन मे भाग लेने की घोषणा की है। विपक्षी दलो की सघर्ष समिति और सर्वखाप पचायत का साझा मोर्चा किस हद तक सफल होगा यह तो समय ही बताएगा परन्तु हरियाणा मे इस बात की सर्वत्र चर्चा है कि हरियाणा के साथ अन्याय हुआ है और बिना किसी सघर्ष के न्याय नही मिल सकता है।

—ओमप्रकाश पत्रकार फरमाणा, सोनीपत

आर्य अनाथालय फिरोजपुर में स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

गत दिनो स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती महाराज आर्य अनाथालय फिरोजपुर मे पधारे। उनका श्रीमती व श्री प्रि० चौधरी ने डी० ए० वी० शिक्षण सस्थानो की प्रधानाध्यापिकाओ व आश्रम के कार्यकर्ताओ के साथ भव्य स्वागत किया। स्वामी जी ने आर्य अनाथालय और तत्सम्बन्धित शिक्षण सस्थाओ का निरीक्षण करके प्रसन्नता व्यक्त की और चौधरी दम्पति की बहुत सराहना की। चित्र मे स्वामी जी प्रि० चौधरी श्रीमती चौधरी और अन्य सभी सहकर्मियो के साथ दिखाई दे रहे है।

यज्ञ की पूर्णाहुति

श्री मनोहर विद्यालकार के निवास-स्थान पर (फतेहपुरी की धर्मशाला के सामने) जो वेद परायण यज्ञ 15 दिसम्बर से चल रहा है उसकी पूर्णाहुति 29 दिसम्बर को 12 बजे दोपहर को होगी। इस यज्ञ में अनेक आर्य विद्वान् भाग ले रहे हैं। यह यज्ञ उनके दिवंगत पूज्य पिता श्री की स्मृति में किया जा रहा है।

—आर्य समाज मन्दिर ताडीखेत में 30 नवम्बर को प्रफुल्ल जी पन्त एडवोकेट (पिथौरागढ़) का कु० अनुराधा जोशी के साथ तथा 1 दिसम्बर को राजेन्द्रसिंह (रानीखेत) का कु० शारदा नेगी के साथ दहेज रहित विवाह पं० प्रेमदेव शर्मा एव पं० भगवती प्रसाद शर्मा के पौरोहित्य मे हुआ और स्वामी गुरुकुलानन्द कच्छाहारी के इस अवसर पर उपदेश हुए।

वनशाला योग शिविर

गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम, कोटद्वार मे 24 दिसम्बर से 4 जनवरी रामजस सस्थान, दिल्ली के 15 वरिष्ठ स्कूलो के योग्य विद्यार्थी वन्य जीवन व प्राकृतिक जीवन का योग के साथ समन्वय' का अध्ययन करेंगे। जिसका उद्घाटन 24 दिसम्बर को गुरुकुल के प्रागण मे सम्पन्न हुआ। —ब्र० विश्वपाल जयन्त

—श्री विनोद कुमार इगोले (पुलिस सब इन्सपेक्टर) और कु० अलका जायसवाल का शुभ विवाह 2 दिसम्बर को आर्य समाज खामगाव (महाराष्ट्र) मे वैदिक रीत्यानुसार प० बाहेकर वसिष्ठ के पौरोहित्य मे सम्पन्न हुआ। उपस्थित जनसमुदाय और श्रीमती शालिनी देवी वानप्रस्थी ने नवदम्पति को शुभाशीर्वाद दिया। श्री इगोले प्रधान मन्त्री निवास पर सुरक्षा अधिकारी के पद पर कार्यरत है।

स्वामी सत्यप्रकाशजी का फिरोजपुर की आर्य संस्थाओं में शुभागमन

ऋषि दयानन्द द्वारा सस्थापित उत्तरी भारत की मुख्य तथा सस्था आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी मे आर्य जगत के विख्यात परिव्राजक स्वामी सत्य प्रकाश जी महाराज पधारे। सर्व प्रथम प्रि०पी० डी० चौधरी ने श्रीमती चौधरी व अन्य कार्यकर्ताओ के साथ आपका स्वागत किया। तत्पश्चात् स्वामी जी को सम्पूर्ण आश्रम का निरीक्षण कराया। बाल आश्रम कन्या आश्रम, गौशाला, चिकित्सालय, यज्ञशाला तथा कृषिक्षेत्र के नियमबद्ध कार्यो मे स्वामी जी बहुत प्रभावित हुए। बालको के स्वास्थ्य, उत्तम पालन पोषण, अनुशासन, तथा विद्या प्रेम का निरीक्षण कर स्वामी जी ने आश्रम प्रबन्धक प्रि०पी०डी० चौधरी व श्रीमती चौधरी तथा कार्यकर्ता मण्डल की भूरि-भूरि प्रशसा की इसके बाद डी०ए०वी० शिक्षण सस्थाओ का भी स्वामी जी को निरीक्षण कराया गया। छात्र छात्राओ ने स्वागत मे गीत गाया तथा विद्यार्थियो ने हास्यव्यंग तथा मोनो ऐक्टिग द्वारा मनोरञ्जन कार्यक्रम प्रस्तुत किया। स्वामी जी ने अपने बचपन के स्मरण सुनाते हुए विद्यार्थियों व अध्यापको से अपना अपना कर्तव्य सुचारु रूप मे निभाने और अधिक से अधिक प्रजा को ज्ञानवान् बनाने का आग्रह किया।

फिरोजपुर छावनी मे महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित अन्य दो आर्य सस्थाए आर्य पुत्री पाठशाला (डी ए वी गर्ल्सहायर सेकेण्डरी स्कूल फिरोजपुर छावनी) तथा आर्य समाज सदर बाजार फिरोजपुर छावनी मे पधारने पर भी स्वामी जी का भव्य स्वागत किया गया। इन सभी सस्थाओ के निरीक्षण से पूज्य स्वामी सत्य प्रकाश जी महाराज प्रसन्न हो गए तथा महर्षि को मौन श्रद्धाजलि अर्पित की जिनके प्रताप से ये सस्थाए इतने सुन्दर ढग मे चल रही है।

प्रबल समाज सुधारक आचार्य पृथ्वी सिंह आजाद दिवंगत

स्वतत्रता सग्राम के प्रबल योद्धा, महर्षि दयानन्द के प्रबल अनुयायी आचार्य पृथ्वी सिह आजाद का 10 दिसम्बर को चण्डीगढ के निकट निधन हो गया है। आचार्य जी ने स्वतन्त्रता सघर्ष की अवधि मे अनेक आन्दोलनो मे बढ-चढ कर भाग लिया था। उस काल मे जब कागडा मे पचास हजार हरिजन धर्म परिवर्तन के लिए तैयार हो गए उस समय आचार्य आजाद उनके मध्य मे जा कर बसे, उन्हे शिक्षित किया और उनके प्रत्येक कार्य मे सहयोग देकर उन्हे धर्म परिवर्तन से बचाया। महामना प० मदन मोहन मालवीय जी उनसे इतने प्रभावित थे कि उन्हे काशी विश्व विद्यालय मे आमन्त्रित कर उन्हे 'आचार्य' उपाधि से सम्मानित किया। तभी से वे आचार्य नाम से प्रसिद्ध हुए।

आचार्य जी सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान, गुरुकुल कागडी के कुलाधिपति, पजाब प्रतिनिधि सभा के प्रधान और पजाब मत्री मडल मे मत्री भी रहे थे।

आचार्य जी के प्रति सम्मानार्थ उनके निधन दिवस पर पजाब सरकार ने सारे प्रदेश मे सार्वजनिक अवकाश की घोषणा की। राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिह ने उनके प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए उन्हे महान साहित्यकार और प्रमुख समाज सुधारक बताया तथा कहा कि उनकी सेवाओ, विशेषतया पिछडे वर्गों के लिए किए गए उनके कार्यों के लिए उन्हे सदा स्मरण रखा जायेगा, उनकी मृत्यु समाज की अपूरणीय क्षति है।

आचार्य जी की स्मृति मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, केन्द्रीय सभा, गुरुकुल कागडी, आर्य समाज मन्दिर मार्ग, दीवान हाल अजमेर अलाबलपुर, पानीपत, करनाल आदि-आदि विभिन्न आर्य सस्थाए श्री महृयानन्द धर्मार्थ आयुर्वेदिक औषधालय, तथा दयानन्द मौडल स्कूल अलावलपुर, टकारा सहायक समिति, नई दिल्ली, डी०ए०वी० प्रबन्ध समिति, नई दिल्ली, आदि शताधिक सस्थाओ ने शोक सभाओं का आयोजन करके शोक प्रस्ताव पारित किए और परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा की सद्गति की प्रार्थना की गई। शोक सभाओ के समाचार निरन्तर प्राप्त हो रहे हैं।

पाक गुरुद्वारो की यात्रा की आड़ में

पाकिस्तान मे गुरुद्वारो की यात्रा के बाद जो यात्री वापस आये है उनके अनुसार यात्रियो ने अपने दस दिन के दौरे में करोड़ रुपये का लेन-देन किया। इसमे हिन्दुस्तानी शराब अरिस्टोक्रेट, पान, चादी और अन्य ऐसी वस्तुए शामिल थी जिनकी पाकिस्तान मे बहुत माग है। बहुत सी ऐसी वस्तुएं पाकिस्तान से खरीद कर भारत मे लाई गई जो भारत मे पाकिस्तान के मुकाबले में चार-पाच गुना महंगी हैं। इनमें गिरी, बादाम, पिस्ता आदि शामिल है।

पाकिस्तान मे अरिस्टोक्रेट में शराब की बहुत माग है और इसकी कीमत अमृतसर में 65 रुपये है जबकि पाकिस्तान मे यह 250 रुपये मे बिकती है। पाकिस्तान मे बादाम की गिरी की कीमत 50 रुपये किलो है जबकि अमृतसर मे यह 200 रु० के निकट है। पिस्ता और अन्य शुष्क वस्तुओ को कीमत पाकिस्तान मे भारत से कई गुना कम है। पान का पत्ता भारत में दस रुपये किलो है जबकि पाकिस्तान मे यह 100 रुपये किलो है। जो यात्री यहा से सिर्फ पान ही ले गये उन्होंने पान मे ही एक-दो हजार रुपये कमा लिये।

पाकिस्तान के कस्टम कर्मचारियो की हालत है कि वे न तो पाकिस्तान मे कोई चीज लाने और न वहा बेचने पर आपत्ति करते हैं। इस तरह यात्रियो को माल के खरीदने की पूरी स्वतन्त्रता है और सिख यात्री, जिनमें सहजधारी सिख भी शामिल होते हैं, पाकिस्तान में गुरुद्वारो की यात्रा के बहाने जाकर लाखो रुपये कमा कर वापस आ जाते हैं। कुछ यात्रियो ने पाकिस्तान जाने के लिए पांच-पांच सौ रुपये वीसा बनवाने पर भी खर्च किया।

वीसा बनाने के लिए बहुत से दलाल काम करते हैं। पाकिस्तान से आने वाले यात्रियो ने बताया कि पाकिस्तानियों ने उनके आतिथ्य मे कोई कसर उठा नहीं रखी और पाकिस्तान में खुले आम घूमने की उनको अनुमति थी। पाकिस्तान से सामान लाने और ले जाने की यह हालत थी कि पाकिस्तानी रेल के डिब्बो मे सामान रखने के ऐसे-ऐसे ढंग अपनाये गये कि एक यात्री ज्यादा से ज्यादा सामान अपने साथ ले जा सके और ला सके। रेल के डिब्बो मे पेच उखाड़ कर उनमे सामान भरकर फिर उसी तरह पेच लगा दिये। कुछ लोग तो इस कारोबार से इतने परिचित हैं, कि अपने साथ इस तरह के औजार भी ले गये थे।

the Empire Canada built up her own tariff in the teeth of a strong protest from Britain and in due course other Dominions followed suit The First World War gave a further stimulus to nationalism in the Dominions They now came to regard themselves not as colonies of Britain but as equal partners with her in the Great British Empire. In the Imperial War Conference of 1917 the Dominions assumed an independent attitude and were allowed to negotiate and sign treaties with foreign powers for themselves They signed the Treaty of Versailles as separate nations and joined the League of Nations both as members of the British Empire as well as separate nations.

Dominion status defined

The position of the Dominions was defined at the Imperial Conference of 1926 which appointed a Committee, known as the Balfour Committee, to clarify the status of Dominions The "Balfour Report" declared that the Dominions were "autonomous communities within the British Empire, equal in status, in no way subordinate one to another in any aspect of their domestic or external affairs, though united by common allegiance to the Crown, and freely associated as members of the British Commonwealth of nations" This principle, *viz.*, that the colonies are equal in status with the mother-country, was embodied in the *Statute of Westminster*, passed by British Parliament in 1931 This statute recognised the Dominions as independent Sovereign States It provided that no law passed by British Parliament would be binding on the Dominions without their express consent. Conversely no law of a Dominion Parliament might be disallowed by the British Government A common allegiance to the Crown is now the only tie which binds the Dominions to the mother-country This Act thus registered the profound change that had taken place in the British colonial policy and marked the transformation of the Empire into a British Commonwealth of Nations

Statute of Westminster, 1931

The British Commonwealth of Nations is a uni-

que experiment in modern history. It is a "procession of different countries at different stages in their advance towards complete self-government." Some are completely self-governing, while others are progressing towards that stage Besides the full-fledged Dominions there are colonies and dependencies The latter are largely controlled by the British Government, though the nature and extent of the control vary from place to place. Lastly, there is another group known as the "mandated" territories. These were added to the British Empire since the First World War and consist of German colonies or Turkish provinces snatched away from these countries. They are administered by Britain under a "mandate" from the League of Nations

Nature of British Commonwealth

Egypt

Egypt was occupied by Britain in 1882 and became a British Protectorate during the period of the First World War Immediately after the war a nationalist party started an agitation for independence The British Government realising that the Egyptians would no longer tolerate British control, withdrew the protectorate and recognised Egypt as an independent State in 1922. But as the Suez Canal is vital to British commerce and forms a connecting link between Britain and India, the British Government retained control of the Canal zone This gave rise to frictions and so in 1936 by the Anglo-Egyptian Treaty Britain undertook to terminate her military occupation of the country. Negotiations for British evacuation began soon after the Second World War and are still going on.

Summary—Changes in the British Empire

Since the First World War great and far-reaching changes had taken place in the British Empire. First, the Dominions became members of the League of Nations as separate nations and began to act independently in their foreign relations Thus Canada made her own treaty with the U S A in 1923 over the dispute arising out of fishery rights The equal

and independent status of the Dominions was recognised by the Statute of Westminster in 1931.

Secondly, the character of the Commonwealth underwent a great change by the admission of three new members, India, Pakistan and Ceylon after their attainment of independence After this the word "British" was significantly dropped and what was before British Commonwealth of Nations came to be called simply Commonwealth of Nations.

Thirdly, Egypt, Iraq and Burma chose to move out of the Commonwealth

Ottawa Conference

Imperial preference

In 1932 Britain abandoned her historic Free Trade policy in her attempt to deal with economic crisis and to restore the balance of trade This made it possible for her to elaborate a scheme of Imperial preference. An Imperial Economic Conference was held at Ottawa (1932) which created something like a tariff wall round the British Empire against foreign goods while giving comparative advantage to goods coming from the Empire The effect of the Ottawa Agreement was to strengthen the economic links between Britain and the Dominions.

Section III

FOREIGN AFFAIRS BETWEEN THE TWO WORLD WARS

Political Revolutions

Rise of Dictatorship.

The Treaty of Versailles did not make the world safe for democracy as was expected by many statesmen The economic distress of the post-war period, coupled with other causes of unrest, led to movements which in many countries turned men's minds away from democracy In most cases these movements were in favour of some sort of dictatorship, based upon the support of a determined minority In Russia the dictatorship was Communist. In Italy, Germany and Japan it was Nationalist.

Revolution in Russia. Bolshevism.

In Russia the overthrow of the Czarist regime was followed by the establishment of a republic of a moderate character This was opposed by Lenin, the head of the Bolshevist Party A civil war followed in which the moderate republicans were ousted from power The Communists signalised their triumph by establishing the Union of Socialist Soviet Republics This was a major event of the century In organising the whole social and political life of the people on Communist lines the Soviet Government was engaged in one of greatest social and political experiments known to history On Lenin's death in 1924, Stalin became the ruler of Soviet Russia. Under his leadership the Communist Party carried out far-reaching social and economic reforms with ruthless efficiency

Turkish revolution —Kemal Pasha.

After the Russian revolution came the Turkish. Led by Kemal Pasha the Turks hurled back the Greeks and compelled the Allies to revise the Treaty of Severes Kemal then proceeded to overthrow the old Turkish regime and to lay the foundations of Modern Turkey The Sultan was deposed, the office of the Caliph abolished and steps were taken to westernise Turkey.

Italy and Fascism

In Italy the government was parliamentary It was, however, quite unable to cope with the disorders and distress which followed the end of the War. As a consequence Communism was making rapid advances Against this movement a new party appeared called the *Fascists* Its leader was Benito Mussolini He organised his black-shirted followers, marched on Rome (1921) and set up a government which developed into a dictatorship He abolished parliamentary government and trade unions and made the rule of the Facist Party supreme No opposition was allowed Mussolini preferred efficiency to liberty and sought to revive the vanished glories of the ancient Roman Empire His first step in this direction was the conquest of Abyssinia

Germany and the Rise of the Nazis

The military collapse of Germany in 1918 was followed by the abdication of the Kaiser (William II) and the establishment of a Republic The Republic accepted the dictated Treaty of Versailles with all its humiliation and so the new regime was regarded with disfavour by many From the beginning the government was handicapped by the necessity of making payment of vast reparations to the Allies The burden proved to be a crushing one. In 1923 a crisis came on account of Germany's default in making payment Thereupon the French sent an army to occupy the Ruhr region, the very centre of Germany's coal and iron industry This foreign incursion outraged German sentiment and the workers in the Ruhr region stopped all work in the coalfields. This general strike ruined German industry and thereby led to the economic collapse of the country. The value of the German mark fell almost to nothing The French were strangling the goose which was to lay the golden eggs Their policy was ruinous to Germany without being beneficial to French.

Post-war problems of Germany.

Distress in Germany

Germany was saved from disaster by the wise policy of Stresemann who became Chancellor in 1923 He called off the passive resistance in the Ruhr, stabilised the currency and resumed the reparation deliveries to France and Belgium. He opened peace negotiations with France, which led to the Locarno Treaty of 1925. By it Germany accepted as permanent her western frontiers as defined by the Treaty of Versailles Next year Germany became a member of the League of Nations Thus under Stresemann's guidance Germany was well on the road to economic recovery and political stability But in 1929 two events occurred which led to the overthrow of the Republic and the assumption of power by the Nazis These were the death of Stresemann before the completion of his work and the world-wide economic depression which began in 1929

Recovery under Stresemann.

Locarno Treaty, 1925

Rise of Hitler

The Nazi Party (abridged form of National Socialists) owed its origin firstly to the misery of the German people, caused by the post-war economic depression, and secondly to the bitter humiliation felt by the Germans from their defeat Its founder was Adolf Hitler, an Austrian by birth. He had enlisted in the German army and had served throughout the War. When the war ended he worked as a house decorator in Munich He, together with some malcontents, formed the German Workers' Party which was subsequently renamed National Socialist or Nazi Party While addressing his party meetings he discovered his oratorical gifts which he applied with great effect in propaganda work in favour of the Nazi. He denounced the whole Treaty of Versailles and demanded the union of all Germans in a Greater Germany He talked in a great frenzy of the woes and wrongs of Germany and fired his audience with indignation He assailed the Jews, condemned the Communists and ridiculed the parliamentary system of government. The Nazi creed is fully set forth in Hitler's book, *Mein Kamph,* which became a sort of Nazi Bible It proclaimed the superiority of the Nordic race and the manifest destiny of the German people to rule the world. The Nazi movement grew slowly but steadily and in 1932 the Nazis became the largest party in the Reichstag.

Creed of the Nazis.

Hitler's opportunity came when a world-wide slump started in 1929 The economic depression seriously affected all sections of people in Germany and made them desperate They lost faith in the Republic and began to turn to the Nazi Party in the hope that it would evolve a policy of national regeneration As the Nazis were strong in the Reichstag it was difficult to carry on the government without their co-operation Hence in 1933 President Hindenburg was compelled to accept Hitler as Chancellor Once in power Hitler proceeded to consolidate his authority By threats and cajoleries he in-

Hitler becomes Chancellor.

duced the Reichstag to delegate all its power to him and to his cabinet He made spectacular drives against the Jews and the communists and decreed that Germany was to have a single political party, that of the Nazis. Those who opposed him were sent to concentration camps. In 1934 President Hindenburg died and Hitler declared himself President as well as Chancellor Thus within a year of his advent to power Hitler established his position as the Dictator of Germany

Hitler as dictator

Hitler's Aggressions : the Second World War

Hitler came to power, pledged to recover Germany's previous position of power and importance He was determined to tear away the Treaty of Versailles which had imposed humiliating restrictions on Germany His first step in this direction was to re-introduce conscription in 1935 in open violation of that Treaty Next he withdrew from the League of Nations and openly flouted it by refortifying the Rhineland which the Treaty of Versailles had declared a demilitarised zone England and France being "war-weary" tamely acquiesced in this violation Hitler was thus encouraged to take larger risks. In 1938 he occupied Austria and declared her union with Germany The ease with which Hitler annexed Austria encouraged him to further acts of aggression. Czechoslovakia contained a considerable element of German population Nazi propaganda had organised these Germans into a "fifth column" and they began to clamour for union with Germany Thereupon Hitler declared that Sudetanland which was predominantly inhabited by Germans, must be joined to Germany on the principle of self-determination. He threatened to use force if peaceful means failed. The Czech Government appealed to France for armed support on the strength of a previous treaty. War seemed imminent and the British Prime Minister, Neville Chamberlain, dramatically flew back and forth between England and Germany to request Hitler not to precipitate a crisis For a time Hitler re-

Hitler's policy

Hitler takes Austria.

Czechoslovakia,

mained adamant, but perceiving the warlike attitude of England and France, agreed to a joint settlement. Accordingly in 1938 a conference was held at Munich, by which Britain and France agreed that Sudetanland should be given to Germany The integrity of the rest of Chechoslovakia was guaranteed by the Powers. The Munich Agreement was a triumph for Hitler and a humiliation for England and France. Their guarantee was of little value for Hitler occupied not only Sudetanland but the whole of Czechoslovakia.

Munich Pact, 1938

Flushed with success Hitler began to mature plans for an assault upon Poland In 1939 he demanded from Poland the cession of Danzig This was the last straw. Chamberlain gave up his policy of appeasement and announced that any aggression on Poland would mean war with England He concluded a formal alliance with France and Poland and the three Powers agreed to guarantee one another's territorial integrity An attempt was made to include Russia in the alliance but Hitler anticipated the Powers by concluding a non-aggression pact with Russia Having secured Russia's neutrality Hitler invaded Poland without any declaration of war. Thereupon Great Britain and France declared war upon Germany **Thus began the Second World War in 1939.**

Hitler's attack upon Poland was the immediate cause of the war

N.B.—It should be noted that the injustice of the Treaty of Versailles was largely responsible for the outbreak of the Second World War That treaty displayed a spirit of vengeance by imposing on Germany terms which were staggering in their severity It had stripped her of all armaments and left her naked before her enemy It had deprived her of all colonies, saddled her with a crushing war indemnity and fastened the war-guilt squarely on her shoulders All this was done without giving Germany any opportunity to plead her cause Forced to accept a dictated treaty the Germans felt deeply humiliated and a bitter sense of injustice rankled in their minds This coupled with a series of economic crisis, heightened their resentment. They wanted to be lifted out of the slough of depression and despon-

Real causes of the war was the injustice of the Treaty of Versailles.

dency Hitler promised to do so and he began by demolishing the structure elaborately raised by the Treaty of Versailles Had this Treaty been timely revised the crisis of the war might have been averted. Hence the short-sighted and selfish policy of the victor Powers was as much responsible for this war as Hitler's aggressions

Character of the War

The Second World War differed in many respects from all previous wars It was a "total war"—a war in which all the resources of the State and the whole activity of the nation were mobilised for war purposes The omnipotence of the State was exercised as never before It took control of the activities of every sphere of life and subordinated them to the exigencies of the war Food and many other things were rationed, private houses requisitioned, factories controlled, the universal blackout was declared—these and many other compulsions brought the war home to every family In a sense everybody was made to contribute to war efforts. Secondly, the scope of the war was world-wide and so was its strategy Its battles were fought in all the quarters of the globe—in the ice floes of the Arctic region, in the deserts of North Africa, in the jungles of Burma and New Guinea, in the Atlantic Ocean and in the islands of the Pacific in the Far East.

"Total wars"

Its scope was world-wide

Thirdly this war differed from the First World War both in strategy and method The First World War was static, its most important feature being trench warfare. The Second, on the other hand, was characterised by unexampled mobility Hitler's *Blitzkrieg* or lightning war struck down six nations within a period of three months This astonishing result was possible because of the close co-operation between the German land and air forces and the perfect organisation of the supply services. Lastly, it was a war of ideas as well as of nations Nazism stood for a totalitarian state in which there was no room for individual freedom of any kind Nazi ideology threw all human rights and moral considerations to the winds with the result that the Nazis committed

Mobile warfare

A war of ideas.

crimes like mass murders at concentration camps, which pen shrinks from recording. Hence to fight against Nazism was really a fight for freedom and civilisation. That was why the Allies clearly formulated their war aims in the famous Atlantic Charter of 1941. President Roosevelt summed up the war aims of the Allies as consisting of "four freedoms"—freedom from want, freedom from fear, freedom of worship and political freedom.

Stages of War : Chief Events

Hitler's conquest of Poland

The war began with the German invasion of Poland in September 1939 It was there that the new German strategy of *Blitzkrieg* or lightning war was first demonstrated with the result that the Polish capital, Warsaw, fell in about a fortnight, and in six weeks all resistance collapsed Russia also invaded Poland in accordance with her pact with Hitler, and the two aggressors partitioned Poland between themselves

Rapid conquest of the West

Hitler next attacked Norway in order to secure iron mines for his war production Next followed in quick succession the subjugation of Denmark, Holland, Belgium and France A British-Belgian expeditionary force narrowly escaped destruction by precipitate withdrawal from the French port of Dunkirk towards the close of May, 1940 The German army entered France on June 5, and in less than three weeks the French General, Marshal Petain, made an unconditional surrender. The world stood aghast at the success of Hitler's *Blitzkrieg*. Italy, under Mussolini, now joined the War on the side of Germany

Fall of France

The Battle of Britain, 1940-41

England subjected to aerial bombardment and submarine blockade

Had Hitler immediately invaded Britain the outcome of the whole war might have been different But after knocking out France he waited for two months in order to break down civilian morale in England by heavy aerial bombardment, and large-scale sinking of British ships Hitler turned his huge air force (the *Luftwaffe*) on Britain and subjected

her to the most intensive attack. The industrial areas, the ports and London itself were heavily bombed and numerous civilian lives were lost. But the English fought on with grim determination and their Hurricanes and Spitfires hit back and shot down hundreds of German planes The German submarines and U-boats took a heavy toll of British shipping. But despite enormous losses the British morale remained unshaken and Britain held on with admirable tenacity against the conqueror of Western Europe

As noted before Italy had declared war upon the Allies immediately after the fall of France Mussolini's object was to take advantage of Britain's critical position to snatch away the British colonies in North Africa and to take Egypt and the Suez Canal The Italians had some initial success but were before long hurled back by General Wavell who took possession of most of the African colonies of Italy such as Eritrea, Abyssinia and Cyrenaica The Italians surrendered in large numbers and about 140,000 prisoners were captured The failure of Italian enterprises led Germany to come to the rescue of her ally A German army under Rommel appeared in North Africa and for the time turned the tide of affairs Rommel drove east for Egypt, scattering the British army before him He came within eighty miles of Alexandria and threatened the Suez Canal But the situation was saved by General Montgomery who defeated Rommel's army at *El Alamein* in October 1942 and sent it headlong back across the desert westwards This British victory is one of the turning-points of the war

Failure of Italian enterprises in North Africa

Defeat of Rommel at El Alamein, 1942

The year 1941 was a very critical year for the Allies Germany had conquered Greece despite British opposition and was now in a position to threaten the Middle East Hitler next threw his grand army against Russia and in the beginning obtained spectacular successes Japan had signed the anti-Communist Pact with Germany and Italy in 1940, and thus the Berlin-Rome-Tokio axis came into existence She

Critical time for the Allies

now provoked the United States into war by bombing the U.S.A. fleet at Pearl Harbour. She startled the world by a series of amazing successes. Thus danger thickened round the Allies on all sides.

Pearl Harbour

Hitler made elaborate preparations for the invasion of Russia. The German army advanced on a thousand-mile front. Three spectacular drives were made, one towards Leningrad in the north, another towards Moscow in the middle and the third towards Stalingrad in the south. The Germans advanced within the striking distance of Leningrad and Moscow but were held up by the grim resistance of Russia. But in the south the Germans for a time swept everything before them. They overran the wheat-producing lands of the Ukraine, forced their way through the industrial area of the Don and advanced as far as the Caucasus. The Russians retreated before the advancing German army, taking care to destroy all bridges and factories, to tear up railways and to damage the standing crops. It was a "scorched earth" policy systematically pursued to prevent the Germans from getting any kind of advantage. The Russians made a desperate stand at Stalingrad where an epic struggle was waged for about six months. With superhuman efforts they created new factories beyond the Urals. In September 1942 the Russians struck back. The German army, reduced to 12,000 from its original strength of 330,000, surrendered. This was the beginning of the end.

Germany's invasion of Russia

Battle of Stalingrad

Meanwhile in the Pacific the Allies had a succession of disasters. Three days after the bombing of Pearl Harbour the Japanese sank two British battleships, *Prince of Wales* and *Repulse* in the Gulf of Siam. They captured in quick succession Hongkong, Wake, Malaya, Singapore and Burma. The Dutch East Indies were overrun and the Philippines surrendered after four months of stubborn fighting. By October 1942 the Japanese were "hammering at the eastern gates of India and the northern gates of Australia."

Initial success of Japan

From the beginning of the year 1943 the prospects of the Allies brightened up in the West. The two victories at Alamein and Stalingrad had foiled the gamble of Hitler. The success of the Allies was assured but Hitler was a tough enemy and it required two years of hard fighting before he was overcome.

The turn in the tide

While Montgomery's Eighth Army was pursuing Rommel, a large British and American force under the American General Eisenhower landed in North-west Africa near Algiers. The two allied armies after a good deal of fighting joined in Tunisia and compelled the whole enemy force to surrender (May 1943). North Africa was thus cleared of the enemy. The Allies next invaded and took Sicily. From there they crossed over to the mainland of Italy and began to march upon Rome. Mussolini fell from power and Italy surrendered unconditionally. But the German army in Italy offered a tough resistance and held up the Allied army for five months. Rome was taken in June 1944. Before this Mussolini was shot dead by the anti-fascists.

Surrender of Italy

Meanwhile the Allies were preparing for an invasion of Germany from the west. As a preliminary to that they subjected Germany to constant and ever fiercer bombing. The Ruhr and other industrial centres, the railway and canal systems—all felt the destructive effects of heavy aerial bombardment. Thus was the stage set for the final assault on Germany. On June 6, 1944, big allied armies under Eisenhower landed in Normandy. The Germans were pushed back everywhere though they put up a stiff resistance. In August Paris was liberated. Soon after the Germans were expelled from Belgium and Holland. At the end of 1944 the allied troops were drawn up along most of the western frontier of Germany. Next they crossed into Germany, forced the Rhine and marched towards Berlin. Meanwhile the Russians had opened their great offensive through Poland and were fighting in Berlin. Hitler commit-

France liberated and German invaded

ted suicide, and on May 7, 1945, Germany surrendered unconditionally

Germany surrenders

Although Germany and Italy had surrendered, the war was not yet over Japan continued to fight. A British and Indian army fought Japan steadily in the jungles of Burma while the Americans directed their attacks upon Japanese bases in the South-west Pacific Slowly but steadily the Americans captured the islands nearer and nearer to Japan which now began to suffer heavily from air attacks. The Solomons and the Mariana islands were captured and the Philippines reconquered in January 1945 The next target was Okinawa within 1,000 miles of Tokio After a hard-fought contest in which both sides suffered heavy casualties, Okinawa was taken. The Allies then issued an ultimatum threatening Japan with prompt and utter destruction if she did not surrender The Japanese Government turned down the proposal Thereupon the Americans dropped two small atom bombs, one upon Hiroshima and the other upon Nagasaki The two cities were completely destroyed and Japan realising the hopelessness of the situation surrendered on August 14, 1945

Japan continued the war but was compelled to surrender

SUPPLEMENTARY NOTES

(1) The English Reformation—Its Character and Course

In England the Reformation began in no sense as a religious movement It began as a revolt against the Papacy and its object was to secure the ecclesiastical independence of the country The movement was thus political It was also anti-clerical The clergy had dominated the Middle Ages because they had a practical monopoly of education and learning But the Renaissance had taught the people to think and act for themselves, and so no longer did they form the dumb multitude Hence they were determined to shake off ecclesiastical tutelage and to reduce the powers and privileges of the priesthood Long ago Wycliffe had voiced this popular feeling It was thus on ground well prepared that Henry VIII entered upon the struggle with the Pope The struggle arose out of what is called the Divorce Question. For reasons both political and personal Henry wanted to divorce his queen, Catharine, and for that purpose, sought the sanction of the Pope But as the Pope evaded his request, he cut off all connection with the Church of Rome That was how the Reformation in England began It was directed against the Papal power and the privileges of the clergy, and not against the doctrines of the Roman Church This is clear from the statute of Six Articles by which Henry VIII sought to check the progress of the reformed faith

The political Reformation of Henry VIII was followed by the *Doctrinal Reformation* in the reign of his son, Edward VI New Prayer Books were issued, and their use was enforced by Acts of Uniformity The Protestant creed was formulated in the Forty-two Articles of Religion Images of saints and pictures were broken and defaced There was much spoliation of the church property But the violence and haste with which these changes were rushed through, shocked the people at large and prepared the way for a Catholic reaction in the next reign Mary, a devout Catholic, was hostile to these recent changes in religion, and so tried her best to re-establish the old faith and to restore Pope's authority in England She sought

to achieve her object by a cruel policy of persecution and many Protestants were burnt alive as heretics But this repressive policy failed in its object, for the fortitude displayed by the martyrs won the admiration of the English

After the violent fluctuations of the last two reigns the English Church was finally settled by Queen Elizabeth She adopted a middle course in religion, avoiding extreme Protestantism as well as extreme Catholicism. Her policy of judicious compromise permanently fixed the character of the Anglican Church and completed the course of English Reformation.

(2) Rise of the Puritans

During the Marian persecution many English Protestants sought refuge in Germany and Switzerland where they came under the influence of the teachings of Calvin There they grew accustomed to a simple form of divine service and democratic system of church government. These advanced Protestants came to be known as Puritans because they contended for "purity of worship" as opposed to what they called the superstition and idolatry of the Roman Church It should be noted that the term Puritan includes a large variety of opinions Some Puritans were not hostile to Episcopacy (the rule of Bishops) and wanted to remain members of the Anglican Church and to reform it from within Others, again wanted to abolish Episcopacy altogether and to establish a Presbyterian form of church government that is, government of Church by Presbyters or elders While a third group wanted to proceed still further and wished to separate the Church from the State and to form independent religious organisations They were known as Independents or Separatists All classes of Puritans, however, were united in their passionate hatred of everything that remotely suggested Roman Catholicism

When on the accession of Elizabeth the Marian exiles returned to England, they found that Elizabeth had determined to retain a large number of ceremonies, which they were accustomed to regard as idolatrous Hence they were dissatisfied and began to clamour for more thorough-

going changes They showed their dislike by refusing to wear surplices and to observe the ceremonies enjoined in the Prayer Book. Then, later on, they went a step further and began to attack the Episcopal system and advocated the establishment of Presbyterianism. Their leader in this movement was Thomas Cartwright Clerical meetings called Prophesyings were held in which various religious subjects were discussed Elizabeth sternly repressed these Puritan gatherings For many years the doings of the Puritans were connived at and they were little molested. But in 1583 Whitgift became the Archbishop of Canterbury. He was fanatically hostile to the Puritans and used the tremendous powers of the Court of High Commission to persecute them Parliament also fell upon them and passed a stringent Act against them in 1593 The Puritans suffered but were not suppressed

***(3) Contribution of the Puritans to Constitutional Progress. (Puritan Revolution)**

The persecuting policy adopted by Elizabeth against the Puritans had very important political results. It turned them from a religious sect into a political faction "To their hatred of the church was now added hatred of the crown." Henceforth they became the firmest champions of constitutional liberty against the arbitrary exercise of royal power They were a strong element in the House of Commons and during the closing years of Elizabeth's reign they offered strong resistance to the Queen's policy The spirit of opposition thus aroused found its fullest vent throughout the Stuart period during which they gained in strength and organisation They were bitterly disappointed in James I who continued Elizabeth's religious policy and rejected their Millenary Petition in which they asked for certain reforms This, coupled with the king's assertion of the *Divine Right* to govern, irritated them beyond measure and the Puritans began to use their Parliamentary majority in offering systematic opposition to the king's policy They sought to enforce the responsibility of the ministers by reviving the old practice of impeachment (See the case of Bacon and Lord Mid-

dlesex). In the memorable Protestation of 1621 (See p. 228) they asserted their right to freedom of speech and to discuss all matters of public importance. To sum up, the constitutional achievements of the Puritans in the reign of James I were not insignificant They had obtained an Act against monopolies, rescued the ancient right of impeachment from falling into disuse and placed on record a Protestation of their claim to debate all matters of public concern. They had remonstrated against the king's attempt to levy customs at the outports and secured their exclusive privilege of determining contested election

Matters came to a crisis during the reign of Charles I Nurtured from his infancy in the doctrine of the Divine Right and absolute power of kings, he continued the invasion of the people's rights even to a greater degree than his father The Puritan majority in the House of Commons took a strong attitude, impeached his favourite, Buckingham, and refused supplies until their grievances were redressed Eventually they forced him to sign the famous document known as the **Petition of Right** which declared the recent arbitrary acts of the king as illegal *Thus did the Puritans extort from the king the second great charter of English liberties* But Charles did not mend his ways. He continued his unconstitutional proceedings, dissolved Parliament and resolved to overthrow the Parliamentary constitution of England He began his personal rule which lasted for eleven years, 1629—40 His tyranny at last involved him in war with Scotland (Bishop's wars) and want of money compelled him to put an end to his personal rule by summoning the famous **Long Parliament.** The Puritans were in the majority in this Parliament and it was owing to their efforts that a series of salutary measures were passed The Court of Star Chamber and High Commission were abolished, the ship-money was declared illegal and a Triennial Act was passed In the words of Hallam these retrenchments of abused prerogative "formed the English constitution much nearly as it now exists" But even now Charles was not brought to his senses Taking advantage of a split in the opposition, which arose on the question of religion as well as on the

debates on the Irish rebellion, Charles sought to arrest five leading members of Parliament and to impeach them. This high-handed proceeding infuriated the Commons. So when differences arose between them and the king on the question of the command of the militia, there was open rupture and the great Civil War known as the *Puritan Revolution* began In the end Charles was executed, and monarchy abolished The rule of the Puritans reached its culminating point during the protectorate of Cromwell Eventually monarchy was restored but the cause of absolute monarchy was lost Thus, in the great struggle involving the issue of Absolute Monarchy *versus* Parliamentary Government *the Puritans successfully opposed the forces of despotism and safeguarded the liberties of the people*

(4) Origin and Growth of Party Government—its Merits and Demerits

Political parties exist more or less in every free country They arise mostly out of contests and factions as well as for the maintenance of class interests A party may be defined as an organised group of citizens who are held together partly by agreement of opinion, and partly by interest and personal association A party always tries to control the government

In England the party system may be dated back to the reign of Elizabeth when the Puritans began their opposition to the Queen's policy This opposition became stronger in the reign of Charles I and became very marked in the Long Parliament of 1641 In this Parliament we have the first example of real Parliamentary parties. The Puritans stood for constitutional government and so sought to put limitations on the arbitrary exercise of the royal prerogative The other party supported the crown and prerogative The friction between these two parties led to the great civil war in which the supporters of the king were known as *Cavaliers*, and the supporters of Parliamentary government *Round-heads* After the Restoration two opposing parties appeared in Parliament and were known as the *Court Party* and the *Country Party*.

It was in the year 1679 during the intense public excitement caused by the introduction of the Exclusion Bill that the names *Whigs* and *Tory* were first applied to the two great political parties in the State Charles II having dissolved Parliament to quash the exclusion of his brother from the throne, the Country Party sent numerous petitions to the king, praying for the speedy summoning of Parliament The Court Party, on the other hand, sent counter-petitions expressing their abhorrance of the conduct of the Country Party. These parties were known as *Petitioners* and *Abhorrers*, names which were soon supplanted by the familiar names **Whig** and **Tory.** The Whigs looked to the people and so were advocates of the Parliamentary government. The Tories looked to the Crown and so were supporters of the royal prerogative These two party names continued for a century and a half But about the middle of the nineteenth century the Whigs came to be called **Liberals** and the Tories **Conservatives.** Besides these two parties, another party has come to the front in the nineteenth century This is the **Labour Party.** It came into existence to support the interests of the working classes The views of the parties change according to the political atmosphere of the country

The party system has its merits as well as defects, and much may be said both for it and against it As regards its **merits** it should be noted that party organisation is essential to modern democracy. Individuals acting alone cannot secure victory for their opinions in Councils; they can do so when united *Secondly*, the party system stimulates public spirit and rouses popular interests in political matters *Thirdly*, it checks arbitrary action on the part of government and prevents hasty legislation This it does by offering free scope for criticism and discussion The voice of an organised party always carries weight

Although the party system is a necessity it has none the less many **defects.** It encourages loyalty to the party at the expense of the loyalty to the State. It, to a great extent, destroys individuality and thus prevents one

from saying what is true and doing what is right The party in opposition is always opposed to the party in power. It does not matter whether a proposed measure is good or bad, but it must be opposed as a matter of party principle There is no room for an independent member in a party. Again the system often keeps out of office some of the ablest men in the country, *viz*, the leaders of the opposite party Lastly, party spirit tends to banish courtesy from political life A party man unduly exalts the doings of his own party and derides and denounces those of his opponents

(5) *Origin and Development of the Cabinet System

The term "Cabinet" literally means a small council of ministers Such councils existed at different periods of English history Before the establishment of the modern Cabinet system it was the Privy Council which was the recognised legal adviser of the king But in course of time this council became too large for the work which it was expected to do Hence it became the practice of the kings to discuss the affairs of the state with a select group of ministers The most prominent example of this type of secret council was the Cabal Ministry of Charles II The law had never recognised the existence of a smaller body within the Privy Council Hence secret councils of a few select ministers chosen by the king were unpopular and were even regarded as unconstitutional Attempts were made from time to time to reform the Privy Council. But even when the reform was effected, as in the reign of Charles II, the Council proved too large and too discordant to be of any use So Charles II reverted to his old practice of Secret Council But such Councils were the creatures of the king, whereas a modern cabinet is the creature of Parliament The transition from the first to the second form of Cabinet was brought about by the great Revolution of 1688 This Revolution accentuated party differences and ensured the supremacy of the House of Commons No government was possible without the co-operation of the Commons In order to obtain this co-operation the king was obliged to choose such ministers as commanded the confidence of the majority of

the Commons. William III, at first, chose his ministers from both parties irrespective of their opinions, but he found by experience that this system did not work well as there was no harmony of policy between the ministers and the Commons. So, acting upon the advice of Lord Sunderland, he chose his ministers entirely from the Whigs. By accident the Whigs were then in the majority in the Commons. The result was that there was harmony of policy between the ministers and the House of Commons After William's death Queen Anne, despite her personal likes and dislikes, had to choose ministers from that party which commanded a majority in the Lower House Thus, by degrees, with no fixed design on the part of any one, and simply as a matter of convenience grew up the practice of choosing ministers solely from the party which was strongest in the House of Commons The accession of George I saw the Cabinet System develop further on modern lines The successful working of this system demands that the Cabinet should be free from royal influence, for the king, by his very position, could not side with any party Hence his absence from the Council was necessary This was effected by an accident George I could not speak English He, therefore, thought it useless to preside at the meetings of the Cabinet Thus he began the custom, now firmly established, that the king should stay away from the Cabinet In his absence it became usual for the most prominent minister to preside over the deliberations of the Cabinet Council This minister in course of time came to be known as the Prime Minister This term was long unpopular in England and it was late in the nineteenth century that it was used in official documents

The Cabinet must be a homogenous ministry, that is all the ministers should hold the same opinions and should be jointly responsible for the policy pursued. If one of them dissents from the rest on any important question he must retire. These characteristics were first secured by Walpole, and hence he has usually been called the first Prime Minister of England. George II also continued his father's policy, but George III tried to upset the

Cabinet system of government and to establish the personal rule of the Crown It was Pitt the Younger who finally established the system on a permanent basis.

It should be noted that the Cabinet ministers are nominally the king's servants but really "an executive committee representing the will of the party majority for the time being in the House of Commons." Under the Cabinet system the king reigns but does not govern (See pp 227, 297-298).

(6) (a) How far is it true to say that Walpole's Administration has no history ?

Walpole's administration was in keeping with his favourite maxim, "Let sleeping dogs lie" In other words Walpole was always anxious to secure political tranquillity. He thought that after a great change, such as the accession of the Hanoverian line, important and contentious measures were inopportune The reforms which he carried out were those which were calculated not to cause violent opposition He always worked on conciliatory and unostentatious lines, and avoided friction with the people In foreign affairs he maintained peace nearly till the close of his ministry In his home policy there is very little to record except his sound financial measures Thus there is little that is heroic or sensational in his policy and hence it has been said that his administration has no history. (For the illustration of his policy see pp 303-305)

(b) Walpole's Administration marks a stage in the Evolution of Cabinet Government

Owing to the continued absence of George I from the Cabinet meetings, Walpole became recognised as the first Prime Minister of England During his long tenure of office the Cabinet became a united body, the members of which acted together and met under his chairmanship It was he, who practically appointed all his colleagues and insisted that they should have the same opinions as himself. By acting on this principle he drove many of the ablest men into opposition, but he increased the strength and homogeneity of his ministry Thus some of the essen-

tial features of the Cabinet system, *viz.*, collective responsibility, political homogeneity and subordination to the Prime Minister, were secured during his administration. The Cabinet government, therefore, entered upon a new stage of development (See also p. 302).

(7) *The Act of Settlement had given England a foreign sovereign; the presence of a foreign sovereign gave her a Prime Minister*

The Act of settlement conferred the crown of England upon the House of Hanover and in due course George I became King of England But as he was ignorant of the English language and politics he used to stay away from the proceedings of the Cabinet Councils In the absence of the king, it became necessary for some minister to preside over the Cabinet and direct its proceedings Gradually this minister and not the king, began to appoint the other members of the Cabinet and came to be known as the Prime Minister

(8) *Calamitous as were its effects the Hundred Years' War does not appear to have been avoidable.*

For the calamitous effects of the Hundred Years' War see p. 111 The War, however, was not avoidable for many reasons, political and economic. The French king had, for some times past, been steadily encroaching upon the English possession of Gascony, and it could not be expected that Edward III should put up with this loss of territory and humiliation Gascony was rich in wine trade and its occupation by the French king would have caused great economic loss to England The economic prosperity of England was further threatened by the attempted interference of the French in Flanders which was then the great market for English wool But what gave England the greatest offence was the alliance which the French had entered into with Scotland, the hereditary enemy of England It portended a grave political danger menacing the safety of England both from the north and the south Thus, for reasons political and economic the war was unavoidable so far as England was concerned.

(9) *The Reform Act of 1832 marked a revolution in English history but a revolution of a very English kind.*

The Reform Act of 1832 enfranchised the middle class men and made them strong in the House of Commons Hence political power was transferred from the landed aristocracy to the middle classes This was a great revolution in the constitutional history of England. Till now the government of the country was an aristocratic oligarchy but now it was well on the way towards democracy But like all other English revolutions it was conservative in character. No violent change was made There was no breach with the past No new principle was enunciated Only the glaring abuses in the system of representation were removed and the old principle was adapted to new circumstances. (See p. 353)

(10) How far is it true to say that Peel was the most liberal of the Conservatives and the most Conservative of the Liberals ?

Judged by the political programme of the Conservatives Peel's measures were very liberal His repeal of the Corn Laws clearly shows it But he fell short of the expectations of the Whigs The Liberals complained that he moved very slowly while the Conservatives grumbled because he moved at all In other words, Peel was a cautious, practical statesman, slow to change, opposed to hasty reforms but with a mind open to conviction and fearless enough to act according to it (For his career and concrete illustration of his policy see p 362)

(11) Palmerston has been described as a conservative at home and a revolutionist abroad.

Palmerston was a determined foe to continental absolutism and a devoted friend of oppressed and struggling nationalities It was on account of his sympathy for the constitutional rights of the people abroad that the rulers of Europe looked upon him as a revolutionist Thus he helped Belgium to gain her freedom, saved Spain and Portugal from absolutism by supporting their constitutional rulers against their despotic rivals, and maintained the integrity of Switzerland. His attitude of sympathy with the people in revolt against their despotic rulers caused him to be looked upon as the fire-brand of Europe.

Though a liberal abroad Palmerston was a conservative at home. Domestic indifferentism was the keynote of his policy He looked upon the Reform Act of 1832 as a final settlement and strongly opposed any further extension of the franchise. He showed no sympathy with the grievances of the Dissenters and was indifferent to the wrongs of the Irish tenants. In a word, no reforms were passed as long as he was in power (See p. 371)

(12) Importance of England's sea-power (*in the wars of the French Revolution and Napoleonic wars*).

Both in the wars of the French Revolution and Napoleonic wars the importance and greatness of British naval power were remarkably demonstrated Time and again England had saved herself from imminent French invasion because of her superior naval strength This was not all. It was England's naval supremacy that eventually contributed to Napoleon's overthrow

In the critical year of 1797 three hostile fleets threatened England with invasion—a French fleet at Brest, a Spanish fleet at Cadiz, and a Dutch fleet in the Texel. A junction of these fleets would have seriously imperilled England's position But the danger was averted by Admiral Jervis's victory over the Spanish fleet off *Cape St Vincent*, and Admiral Duncan's victory over the Dutch fleet off *Comperdown* The navy not only saved England but also saved the British empire in the East Nelson's victory over the French fleet at the *battle of the Nile* shattered Napoleon's well-laid plans of striking at England's eastern commerce and possessions Napoleon next sought to rouse the neutral powers against England At his instigation the northern powers headed by Russia challenged England's maritime supremacy by forming a league known as the *Armed Neutrality* Its object was to prevent English ships from searching neutral vessels for French goods But this hostile league was broken up by Nelson who defeated the Danes at Copenhagen and forced them to accept a truce During the Napoleonic wars the danger of French invasion of England became very acute But this was averted by Nelson's crowning victory at *Trafalgar* in 1805 It was England's naval supre-

macy that frustrated Napoleon's Continental System and enabled her to support Portugal and Spain in the Peninsular War which drained Napoleon's resources in men and money and thereby largely helped to bring about his overthrow

---

APPENDIX

A

DEVELOPMENT OF PARLIAMENT

Origin

England had never been without a National Assembly by whose "consent and counsel" the work of Government has been carried on The *Folk-moot* of the Anglo-Saxon time was a popular body and contained in it the germs of the future House of Commons The *Witenagemot*, which was of later growth, was aristocratic in constitution, being composed of the ealdormen and the chief thegns It foreshadowed the future House of Lords After the Norman conquest the name of the Witenagemot was changed into *Great Council* With the change of its name, its nature also somewhat changed. The Witan had been the assembly of free-landholders, who were officially connected with the king The Great Council, on the other hand, was the assembly of feudal vassals who held land from the king About the year 1246 the word Parliament came to be applied to the Great Council

In the system of recognition by jury as established by Henry II we find the *germ of the principles of election and representation* But as yet these elected representatives were summoned mainly for fiscal purposes It was *Simon De Montfort* who for the first time summoned the Commons to take part in the administration of the country in his famous Parliament of 1265 Under Edward I Parliamentary government became an essential part of the English constitution His Model Parliament represented the three Estates, *viz*, the Lords, the Commons and the Clergy By the *Confirmatio Cartarum* Parliament got the exclusive right to impose taxes

Development

For development of Parliament under Plantagenet kings, see p. 128. The *Good Parliament* of Edward III affords the first example of impeachment. This shows how Parliament sought to control the ministers of the crown The deposition of Richard II was the work of Parliament and this shows how Parliament was becoming strong.

Under Lancastrian and Yorkist kings :—The title of the Lancastrian kings was Parliamentary and so they deferred to the wishes of Parliament The result was that the Commons began to assert their rights and consolidate their position Thus, in the reign of Henry IV the House of Commons secured the sole right of initiating money bills In the reign of Henry V the Commons got important legislative powers. Petitions presented by the Commons were formerly altered by the king's officers But now it was declared that these petitions were not to be altered but were to assume the complete form of Statutes under the name of Bills Thus, towards the close of the Lancastrian Period, Parliament secured control both over legislation and taxation The Yorkist kings ruled independently of Parliament and raised illegal taxes called Benevolences

Tudor Period

The Tudor period was a time of political retrogression Parliament was disgracefully subservient to the king's wishes and allowed him to usurp its legislative functions But Parliamentary activity was not altogether extinct The Commons offered a strong resistance to Wolsey's demand of a property tax in the reign of Henry VIII. Towards the close of Elizabeth's reign the Commons forced the Queen to abolish the monopolies. (See pp 182, 208)

Stuart Period

The "Glorious Revolution of 1688 secured the triumph of Parliamentary government in England." (See the provisions of Bill of Rights in p 271).

The rise of party government in the reign of Charles II and the Cabinet system of government in the reign of William III completed the development of Parliamentary government in England. The Mutiny Act and the annual grant of money by Parliament secured the control of Parliament over the army and expenditure (See p 271).

Parliamentary Reforms

Though Parliamentary government was established Parliament was not yet representative of the whole population Full representation has been secured by the Reform Acts of 1832, 1867, 1884 and the Representation of the People Act of 1918

B

ACTS LIMITING THE ROYAL POWER AND SECURING THE RIGHTS AND LIBERTIES OF THE PEOPLE

Henry's character of liberties

This was the first constitutional check on the royal power. It was the direct precedent of the Magna Carta (See p 59).

The Magna Carta, 1215

It is the foundation-stone of English liberties as it secured the privileges of all classes, *viz*, the clergy, the barons, the tenants and the common people. The most important clause is that which secured personal freedom "To none we sell or deny or delay right or justice" (See pp. 86-87)

Confirmatio Cartarum, 1297

It confirmed the Magna Carta with the important addition of a clause which forbade the exaction not only of the feudal dues but of any kind of taxes Thus the king gave up the right of taxing the people without Parliamentary consent Henceforth the power of the purse was formally vested in Parliament alone (See p. 104).

The Petition of Right, 1628

The second great charter of English liberties. (For its provisions see p. 232)

Habeas Corpus Act, 1679

It secured personal freedom from arbitrary imprisonment. (See p 263).

The Bill of Rights, 1689

This was drawn up by the Convention Parliament after the "Glorious Revolution" of 1688 It formed the third great charter of English liberties and inaugurated an era of constitutional government (See p. 271).

First Mutiny Act, 1689

It secured annual session of Parliament as well as Parliament's control over the army. (See p. 271).

The Act of Settlement, 1701

It settled once for all the Protestant succession to the English throne, made the judges independent of royal influence and secured the responsibility of ministers for all acts of the state by declaring that a royal pardon would not save a minister from the consequences of his illegal and unconstitutional acts. (See p. 279)

C

CHIEF BATTLES AND THEIR IMPORTANCE

(1) Edington, 878

Alfred defeated Guthrum in this battle and thus saved not only Wessex but the whole of England from becoming a Danish province. (See p. 29).

(2) Senlac or Hastings, 1066

The result of the defeat of the English in this battle was to transfer the English crown from the Saxons to the Normans England was brought into contact with the Continent and came to be ruled by a line of energetic rulers, who centralised the government and introduced order and system into the country.

(3) Battle of Bouvines, 1214 (See p 84).

(4) Battle of Bannockburn, 1314 (See p 106-7).

It secured the independence of Scotland (See p. 106-7)

(5) Battle of Crecy, 1346

The English won this battle against the French during the Hundred Years' War in the reign of Edward III. It was a victory of foot-soldiers over horse-soldiers and thus it lowered the prestige of feudal chivalry till now considered invincible It increased the prestige of England but so far as the issue of the war was concerned it settled nothing (See p 113)

(6) Battle of Bosworth, 1485

It was the last battle of the Wars of the Roses It ended in the defeat and death of Richard III It brought the Wars of Roses to a close and established the Tudor dynasty on the English throne (See p 149-50)

(7) Battle of the Boyne, 1690

In this battle William III defeated James II and shattered his hopes of regaining his lost crown. It thus ensured the Protestant ascendency in Ireland (See p. 273).

(8) Blenheim, 1704

Fought during the War of Spanish Succession Marlborough's victory at Blenheim considerably lowered the prestige of the French army hitherto considered almost invincible It also saved Austria from a well-planned attack of the French (See p. 282).

(9) Battle of Quebec, 1759

Wolfe's victory in this battle on the "Heights of Abraham" over the French led to the English conquest of Canada (See p 310)

(10) Saratoga, 1777

The English disaster at Saratoga was the turning-point of the American War of Independence After this the Americans were helped by the French and eventually secured their independence (See p 320)

(11) Battle of the Nile, 1798 ·—(See p 330)

(12) Battle of Trafalgar, 1805

This was Nelson's most brilliant victory over the combined French and Spanish fleets It ensured England's

naval supremacy and baffled Napoleon's ambition of invading England (See p. 338-39).

(13) Battle of Waterloo, 1815

In this battle the Duke of Wellington, helped by the Prussians, completely defeated Napoleon who was subsequently captured and sent to St Helena It thus removed from the scene a man, who for several years was a menace to European peace and freedom (See p 342)

(14) Battle of Navarino, 1827

In this battle the allied fleets of England, France and Russia inflicted a signal defeat on the Turkish fleet. This victory paved the way for Greeks independence (See p. 349)

D

MISCELLANEOUS NOTES

Armed Neutrality

During the American War of Independence the English ships exercised the right of search over all neutral vessels. To prevent this a maritime league was formed in 1780 by Russia, Sweden, Denmark, Prussia and Holland known as the *Armed Neutrality* These allied powers bound themselves to resist the right of search claimed by the British ships and to enforce the doctrine that "neutral vessels make neutral goods" (See p. 320).

Anti-Corn Law League

The Corn Law of 1815 by imposing a heavy tax on foreign corn raised the price of bread and thereby caused great hardship to the poor. So, in 1838 an association was formed in Manchester to agitate for the repeal of the Corn Laws This association is known as the *Anti-Corn Law League* Its chief leaders were John Bright and Richard Cobden They carried on the agitation with great energy and at last succeeded in converting Sir Robert Peel to the principle of Free Trade in corn (See p. 359).

***Chartism**

It was a movement started about the year 1838 to secure political rights to the working classes. It had its origin in the distress of the workmen and their discontent with the result of the Reform Act of 1832 That Act had given power to the middle classes but had done nothing to improve the conditions of workmen. Hence the latter led by an Irish barrister named O'Connor drew up a *People's Charter* demanding six reforms (See p. 358 for the progress and decline of Chartism).

***Continental System**

It was a plan devised by Napoleon to exclude all British commerce from the continent of Europe. He sought to effect this by issuing two decrees known as the *Berlin and Milan Decrees* which declared a blockade of all the British ports and forbade the nations of the Continent to trade with Britain. It was one of the great blunders of Napoleon and eventually led to his downfall. For, to enforce his system he was driven to wage a series of costly wars (*e g.,* Peninsular War, Russian Campaign) which exhausted his resources in men and money. (See p 339)

Divine Right

It was a right claimed by James I and subsequently by the other Stuart kings to rule as irresponsible monarchs with absolute authority over the people and the laws This claim implied "passive obedience" on the part of the subjects This extravagant notion of royal prerogative is largely responsible for the constant friction between King and Parliament under the Stuarts. (See p 223).

Domesday Book

It was a record of the general survey of England carried out by the order of William the Conqueror in 1086. It was in the main a financial measure meant to ascertain what taxes each man ought to pay It is an important historical document inasmuch as it enables us to know the economic condition of England about the time of the Norman conquest.

Declaration of Indulgence

It was a proclamation issued once by Charles II and twice by James II by which the penal laws against the Roman Catholics and Dissenters were suspended. In *appearance* it looked like a general scheme of toleration but in reality the declaration was an attempt to revive Catholicism under the cloak of general toleration The issue of such a proclamation to override statutory law was an unconstitutional use of the royal prerogative.

Cabal

It is a name given to a body of five ministers, who became advisors of Charles II after the fall of Clarendon. It was in no respect like a modern Cabinet for the ministers were not of one mind. (For details See p. 260).

Star Chamber

It was a court consisting of a committee of the Privy Council, set up by Henry VII to enforce the statute against livery and maintenance and thereby to keep the powerful barons in check It tried without jury and its process was a summary Useful at the time it subsequently became an instrument of tyranny. It was abolished by the Long Parliament in 1641. (See p. 162)

Pilgrimage of Grace

It was a revolt headed by a lawyer named Aske as a protest against the dissolution of monasteries by Henry VIII The revolt was put down and a new Court called the Council of the North was established to keep order in the northern provinces

Ship-money

It was an ancient tax levied in time of war upon maritime counties for the upkeep of the navy. Charles I levied this tax, but Hampden refused to pay it on the grounds that it was levied in *time of peace* without Parliamentary sanction, and that it was confined not to maritime counties but was extended to inland counties as well The judges decided the case against Hampden and this unconstitutional decision heightened the unpopularity of Charles I

Synod of Whitby

It was an ecclesiastical meeting held in 664 under the presidentship of the Northumbrian King, Oswy, to settle differences between the Celtic and Roman forms of Christianity. Oswy gave his decision in favour of the Roman Church and thus connected the English Church with the Church of Rome (For the importance of this decision See p 18).

Scutage

Scutage or shield money was a feudal tax devised by Henry II by which the barons were exempted from personal military service in lieu of a payment in money. Henry's object in levying the tax was to weaken the power of the barons by giving them less opportunity to fight. This made them less skilled in warfare and so less dangerous to the king.

Danegeld

It was a tax levied by Ethelred the Unready to buy off the Danes It was the first instance of a general tax in England.

Tariff Reform

Ever since the repeal of the Corn Laws in 1846, the English commercial policy has been one of "free trade. But a Protectionist movement began about the year 1900 and Mr Chamberlain took advantage of it to advocate his scheme of **Imperial Preference.** He contended that the tariff should be so adjusted as to give preference to the colonies by allowing their goods to come in at a lower rate of duties than those of other nations. This, he held, would bind the colonies to Great Britain by strong economic ties and thus would help to consolidate the British Empire The question of Tariff Reform split up the Conservative Party and brought the Liberals to power. (See p 403)

E

ENGLAND AND THE PAPACY

England had never unreservedly submitted to the Papal authority William I set the example of resistance

to Papal claims by refusing to do homage to the Pope and denying all force to Papal bulls or letters without his sanction Henry II in his quarrel with Becket fairly maintained his royal right in the *Constitutions of Clarendon,* but had to submit to the Pope after Becket's murder in which he had an involuntary share John quarrelled with the Pope but afterwards ignominiously submitted to him Under Henry III Papal exactions from the English clergy became very oppressive. The Pope demanded a tenth part of the clergy's movable property and appointed foreigners to English bishoprics A strong anti-Papal feeling grew up in consequence. Edward I by his Statute of Mortmain restricted endowments to the clergy and thus tried to defeat the Pope's spiritual feudalism Wycliffe, in the reign of Edward III, attacked the clergy for their corruption and worldliness and protested against some of the doctrines of the Romish Church There was a strong feeling against the Pope which resulted in *anti-Papal legislation.* The *Statute of Provisors* (1354) forbade the appointment of foreigners to English bishoprics The *Statute of Praemunire* forbade suits and appeals to the Papal Court It was Henry VIII who completely broke with the Pope in connection with the question of Catharine's divorce The *Act of Annates* (1532) suspended payments of the first fruits of the bishoprics; the *Act of Appeals* (1533) put an end to the Papal jurisdiction in the affairs of the English Church Finally, the *Act of Supremacy* of 1535 declared the king to be the *Supreme Head of the Church* and awarded the penalties of treason to all who denied that title Thus the English Church became national It was Elizabeth who completed the system begun by her father and put the English Church on a thoroughly national basis.

F

GROWTH OF THE IDEA OF RELIGIOUS TOLERATION

The liberal spirit of religious toleration was a very slow growth in England. As late as the 17th century religious persecution was the order of the day, and those

who held views opposed to the creed of the Established Church, were subjected to heavy civil and political disabilities. The earliest glimpse of a tolerant spirit is to be found in the *Utopia* of Sir Thomas More, who held that nobody should be persecuted for religious opinion so long as he respected the opinion of others who held different views But his voice was a cry in the wilderness and he himself fell a victim to religious intolerance The subsequent history of England till the Glorious Revolution of 1688 is a tale of religious bigotry which ultimately led to the overthrow of the Stuart dynasty The only redeeming feature of the period, from a religious point of view, was Cromwell's attempt to introduce a scheme of limited toleration He allowed freedom of worship to all sections of Puritans, but excluded the Papists and Episcopalians from his scheme of toleration The Restoration brought with it a violent anti-Puritan feeling and the Cavalier Parliament of Charles II passed a series of penal laws against the Dissenters The Test and the Corporation Acts of the period pressed hard upon the Dissenters and Catholics. (See pp 257 & 261).

But towards the close of the 17th century a liberal spirit began to manifest itself *Locke*, in his Letters of Toleration, urged that the state had no business to interfere with religious convictions This view found its practical application in the *Toleration Act* of 1698, which secured freedom of worship to the Protestant Dissenters It was the first step in the direction of religious freedom although it excluded the Catholics and Unitarians from the scope of toleration But this small measure of toleration was to a great extent nullified by the Occasional Conformity Act and the Schism Act passed in Anne's reign (See p 287) Walpole began the practice of passing an annual *Indemnity Act* by which Protestant Dissenters who had taken municipal offices without complying with the Test and Corporation Acts were exempted from the penalties thereby incurred In the reign of George I the Occasional Conformity Act and the Schism Act were repealed In 1828 the Test Act and the Corporation Acts were repealed as far as they related to the Dissenters.

This removed the disabilities of the Dissenters but those of the Catholics remained The *Catholic Emancipation Act* was passed in 1829 and removed the political disabilities of the Catholics In 1858 was passed the *Jewish Relief Act* by which the Jews were admitted to both Houses of Parliament In 1871 an Act was passed which threw open to the Non-Conformists (Dissenters) all lay degrees at the Oxford and Cambridge Universities. The *Burial Laws Amendment Act* of 1880 allowed the Non-Conformists to conduct funeral services in parish churchyards

G

ENGLAND AND SCOTLAND

(1) Early Relation

From a very early time the English kings tried to make out some claim to be the feudal lords of Scotland They based this claim upon the gift made to the Scottish kings of the territories of Strathclyde and Lothian by Edmund and Edgar respectively But this feudal relation was vague and ill-defined and the Scottish kings were practically independent Scotland was also bound to England by matrimonial alliances Thus Malcolm III married Margaret, sister of Edgar Atheling (1069)

The Norman conquest of England brought about certain changes in the relation between the two countries. Malcolm III being married to the old English royal line became an enemy of William the Conqueror William marched into Scotland and compelled Malcolm to do him homage The subsequent Norman and Plantagenet kings on the whole successfully maintained their claim to feudal overlordship of Scotland Thus Henry II forced Malcolm IV to do him homage and restore the northern counties which David had managed to secure during the troubled times of Stephen's reign Again when William the Lion invaded England he was captured at Alnwick and was compelled by the *Treaty of Falaise* to do homage to Henry II for his whole kingdom But Scotland was

released from English vassalage and restored to independency by Richard I in consideration of a large sum of money

(2) Scotland during the reign of the first three Edwards

Edward I was the first English king who conceived the idea of uniting England and Scotland. (For his Scottish policy, his conquest of Scotland, Scottish national rising under *Wallace*, the winning of Scottish independence by Bruce at *Bannockburn* and the English recognition of such independence by the Treaty of Northampton, see pp 101, 102, 106 and 109) Henceforth the attitude of Scotland towards England became positively hostile The Scots adopted the policy of forming an alliance with France, and this Franco-Scottish alliance was a constant source of danger to England *Edward III* avenged his father's defeat by supporting the cause of Balliol, a son of John Balliol against David II, son of Robert Bruce. He defeated David's supporters at *Halidon Hill* in 1333, and put Balliol on the throne But David managed to regain his inheritance and retaliated on the English by invading England while Edward was engaged in the Hundred Years' War against France He was, however, defeated by the English at *Nevill's Cross*

From the latter half of the 14th Century till the Union of the two Crowns under James I.

From the latter half of the 14th century the relation between the two countries continued to be unfriendly. The Scots adhered to the French alliance and harassed the English by Border raids The most important of these was the affray of *Otterburn* or *Chevy Chase* in which James, Earl of Douglas, was killed on the Scottish side and the two Percies were made prisoners on the English side Then in the reign of Henry IV followed the battle of *Hamildon Hill* in which the Scots were defeated by the Percies (Earl of Northumberland and his son) in 1402 The Scots also fought against the English in Henry V's wars against France. When the **Tudor Dynasty** was established by Henry VII, King James IV of Scotland

helped the cause of the impositor Perkin Warbeck. Henry VII gave his daughter in marriage to James IV in order to win over the Scots to his side. *This marriage paved the way for the future union of the two countries* But this matrimonial alliance did not prove strong enough to enable the Scots to resist the temptation of the French alliance. So when early in the reign of Henry VIII war broke out between England and France, James IV invaded England but was signally defeated and killed at the battle of *Floodenfield* in 1513 The next king, James V, was also hostile to Henry VIII because of his breach with Pope. He renewed the French alliance by marrying the daughter of the French King Francis I and invaded England but his forces were routed at *Sloway Moss*. He died soon after leaving an infant daughter Mary, afterwards the famous Mary Queen of Scots

Henry VIII wanted to unite the two countries by bringing about a marriage between his son, Edward VI, and the young Queen of Scotland On his death Somerset, the Protector, tried to force this marriage by leading an invasion into Scotland The Scots were defeated at *Pinkie* The Scots in anger sent their little Queen to France where she was betrothed, and subsequently married to the Dauphin This Franco-Scottish alliance was a source of grave danger to Elizabeth, especially as Mary was of the English royal line and assumed the style and arms of an English sovereign But Elizabeth's position was saved by the Reformation which was about this time introduced into Scotland The Scottish Reformation, unlike that of England, was the work of the people and not of the crown The Regent, mother of Mary, tried to suppress it and so the Scottish nobles (Lords of the Congregation) turned to Elizabeth for help Elizabeth took advantage of this split in the Scottish nation and by supporting the cause of Reformers won over the bulk of the people of her side **(For her relation with Mary, Queen of Scots, see p. 198).**

Scotland from Personal Union to Parliamentary Union (Stuart Period 1603-1707)

On Elizabeth's death James VI of Scotland, son of Mary Stuart, ascended the English throne as James I His accession united Scotland and English crowns But this union was purely personal, the two countries retaining their separate laws and Parliaments In the reign of Charles I the attempt of Laud to introduce a new liturgy in Scotland led to revolts, and Charles was defeated at *Newburn* During the Civil War of the reign, the Scots joined the Parliamentary Party against Charles by the *Solemn League and Covenant* But after the execution of Charles, the Scots refused to recognise the Commonwealth and supported the cause of Prince Charles But they were defeated by Cromwell at *Dunbar* and *Worcester* After the dethronement of James II a section of the Scottish people led by Dundee opposed the accession of William III The Scots were victorious at *Killiecrankie but Dundee* died in the moment of victory This was followed by the *Massacre of Glence* in 1692 This incident together with the commercial restrictions under which the Scots laboured, produced a bitter feeling against England and the Scots seriously thought of separation from England. But a compromise was arrived at and in 1707 the two countries were united under one Parliament

But this union did not satisfy all sections of the Scots and the Jacobite rebellions of 1715 and 1745 received considerable help from Scotland

H

ENGLAND AND IRELAND

Early Times

About the middle of the fifth century Christianity was introduced into Ireland by St Patrick The country became famous for its missionary activity and the conversion of England was partly the work of the Irish missionaries But the tribal system of government and the constant wars between petty kings and clans stayed all political development

After the Conquest

It was under Henry II that the partial conquest of Ireland was effected by Richard de Clare, surnamed *Strongbow* But the English influence was confined to the districts round Dublin, called the *English Pale* The English settlers, however, became Anglo-Irish, they adopted Irish laws, language, manners and customs. Many of them renounced their allegiance to England. Edward III sought to check this tendency by the *Statute of Kilkenny* (1367) It forbade all Irish usage and customs within the English Pale. But the Anglo-Irish went on their own way and the hold of the English on Ireland grew weaker

Ireland under the Tudors

About this time the chief Anglo-Irish families were the *Fitz Geralds* headed by the Earls of Desmond and Kildare, and the *Butlers* led by the Earl of Ormonde Of the native Irish families the most important were the *O'Neills.* These families were all very powerful and set the English authority at defiance Henry VII was the first English king who made an earnest effort to strengthen England's hold on Ireland He sent Sir Edward Poynings to Ireland as Lord Deputy The Earl of Kildare was made a prisoner under suspicion of treason and Poynings managed to get two laws passed by the Irish Parliament, which became famous as **Poynings' Law.** By these laws the legislative independence of the Irish Parliament was taken away and the Irish Parliament was made completely dependent on England. (For Henry VIII's Irish Policy see page 184)

Under Elizabeth the Irish history presented a long catalogue of rebellions The Irish were treated as more savages to be slain and so they often rose in revolt. For Irish rebellions and the conquest of Ireland by Mountjoy in Elizabeth's reign, see pp. 205-207)

Ireland under the Stuarts

The real sufferings of the Irish people began with the accession of James I. The Ulster chiefs, Earls of Tyrone and Tyrconnel, having attempted a rebellion were compelled to flee from the country The English government

took advantage of this incident and confiscated wholesale the lands belonging to the two rebel clans. Large tracts of land were given to the English and Scottish settlers, while the natives were driven to the west and south This *Colonisation of Ulster* was really an act of robbery which deprived the people of their lands and in future gave rise to the great land question in Ireland Under Charles I Wentworth, *Earl of Strafford*, ruled Ireland as Lord Deputy. His government was admirable in many ways. He maintained peace and order and promoted the growth of the flax industry After the execution of Charles, the Irish supported the cause of his son and proclaimed him king Thereupon *Cromwell* landed in Ireland, stormed Drogheda and Wexford and massacred the inhabitants. His son-in-law, Ireton, completed the new conquest of Ireland The lands of the Irish were again confiscated and distributed to Cromwell's soldiers. The sufferings of the natives knew no bounds Their religion (Catholicism) was rigidly suppressed, a great deal of the country was depopulated and thousands of Irishmen went to serve in foreign armies James II being a Catholic monarch, Ireland enjoyed a period of peace under him When *William III* became king of England, the Irish supported the cause of the dethroned James So William went over to Ireland and defeated James II at the battle of the *Boyne* The Irish Parliament, composed of Protestants, passed a series of penal laws against the Catholics. (See p 273)

Ireland under the House of Hanover

(See the reign of George III and Victoria, pp. 331-334 and 368-69) The chief landmarks in the solution of the Irish question during this period are the following (1) *The Act of Union* brought about in 1800 (See p. 333) (2) *The Catholic Emancipation Act of* 1829 removed the political disabilities of the Irish But the economic troubles arising out of the land question still remained unsolved (3) It was Gladstone who by his *Land Acts* sought to solve the agrarian question (4) This did not satisfy the Irish who from this time began to agitate for Home Rule

For the further development of the Irish Question and the establishment of an Irish Free State (See pp 422-424)

I

WALES

The Welsh are mainly a Celtic people Before the Norman conquest, the Welsh kings often fought against the Anglo-Saxons Thus Offa had to check the Welsh by constructing a dyke After the conquest, William I entered the country in force and prepared the way for the reduction of Wales by settling Norman barons along the frontier But the country heroically maintained its independence till the time of Edward I, and successfully defied even a great King like Henry II Edward I conquered the country under circumstances noted in p 97 He divided it into counties and ruled it directly During the reign of Henry IV, the Welsh rose in revolt under Owen Glendower Wales was finally incorporated with England by Henry VIII (See p 184).

SELECT QUESTIONS

Early and Medieval Period

1. What were the social and economic effects of the Roman occupation of Britain ? (Madras, 1934, See p 8)

2. Trace the gradual unification of England down to the reign of Egbert of Wessex What causes helped England to achieve this national unity ? (Madras, 1924, Punjab, 1940, See pp 19, 23, 25)

[**Hints** :—The two most important causes were the influence of the Church and the unifying results of the Danish invasion]

3 Sketch the career of Simon de Montfort and point out the importance of his work (Madras, 1938, Calcutta, See pp 93-95)

4 What were the results of the Norman conquest ? (Calcutta, 1947, Punjab, 1939, See p 65)

5 Why is the Magna Carta so important in English constitutional history ? (Calcutta, 1945, See pp 87-88)

6 What is meant by the Lancastrian Constitutional experiment ? Why did it fail ? (Madras, 1934, Punjab, 1938, See p 150)

7 Describe the points at issue between the Church and the State in the reign of Henry I and Henry II How were they settled ?
(Madras, 1938, See pp 62 & 71-72)

8 What part did William Wallace and Robert Bruce play in the Scottish War of Independence ? (Cal 1942, Mad 1938, pp 102, 106)

9 What is meant by feudalism ? How did William the Conqueror set up a kind of feudalism different from that which prevailed on the Continent ? (Cal 1944, See pp 50-51.)

10 Account for the early success and later failure of England in the Hundred Years' War against France. (Punj 1940, See pp 114, 141)

11 By what measures did Henry II reduce the power of the barons and strengthen royal justice ? (Cal 1944, See p 73, 75)

12 Describe Alfred's work as a warrior and a statesman
(Cal 1946, Mad , 1939, See pp 28-29)

13 Edward I was one of the greatest legislators of England He was an English Justinian "—Justify.
(Cal 1945, Mad 1939, See pp 98-99)

14 Give an account of the Peasants' Revolt and mention its results (Mad 1939, Cal 1944, See pp 121-23)

15 Discuss the causes of the Wars of the Roses What were the effects of these Wars ? (Cal 1945, See pp 143, 147)

Tudor and Stuart Periods

1 Discuss the causes and consequences of Tudor despotism
(Allahabad, 1937, See p 168)

[Hints —The consequences were highly beneficial to England. The strong rule of the Tudors maintained peace and order in England during a period in which the rest of Europe was convulsed by the religious wars arising from the Reformation This enabled England to evolve a national policy in Church and State affairs]

2 "The reign of Henry VII was a period of seed time, and a period of remedy "—Explain (Cal 1946, Allahabad, 1940, See p 167)

3 "Wolsey was the first statesman to raise England to a great place in European politics "—Discuss (Cal 1941, 1944, See p 171)

4 Explain the nature of Tudor despotism and account for it
(Mad 1938, See pp 168 & 215)

5 Explain how the Reformation in England in the reign of Henry VII was more political than religious (Mad 1938, See p 176)

6 Give a brief account of the relations between England and Scotland during the Tudor Period (Mad 1934, See Appendix p. 470)

7 Give an estimate of the achievements of Elizabeth
(Punj 1939, See p 209)

8 "Elizabeth's reign is one long struggle against the Counter-Reformation"—Explain (Cal 1946, Mad 1934, See pp 202, 213)

9 What were the principal difficulties that Elizabeth had to face during the early part of her reign (1558-88) ? How did she tackle them ? (Cal 1948, See p 190-191)

10 Discuss the issues involved in the constitutional struggle between Parliament and the first two Stuarts
(All 1940, See pp 220, 229-30)

11 Sketch the history of Long Parliament from 1640 to the beginning of the Civil War (Cal 1944, See p 237-39)

12 "Oliver Cromwell was Charles I writ large" Explain this statement critically (Patna, 1941, See p 250-51)

13 "Cromwell's greatness at home was a mere shadow of his greatness abroad" Discuss in the light of this remark Cromwell's foreign policy (Cal 1947, See pp 248-49)

14 What do you understand by the eleven years' tyranny of Charles I ? Give an account of the personal government of Charles I
(Allahabad, 1938, Mad 1939, See p 233-36)

15 What were the principal features of the Revolution settlement in England ? (Mad 1938, See pp 271-72)

16 How far was the Glorious Revolution of 1688 glorious and a revolution ? (Patna, 1942, See p 268)

17 Why did England take part in the War of Spanish Succession ? What did she gain by it ? (All. 1939, Mad 1934, See pp 276, 283)

18 Discuss the Parliamentary legislation of William III How far did it remedy the evils of the later Stuart despotism
(All , 1939, See pp 271, 279)

19 "If at the Armada England entered the race for colonial expansion, she won it at the Treaty of Utrecht"—Explain
(Cal 1945, See pp 283, 290)

20 How far is it true to say that the execution of Charles I was a cruel necessity ? (Cal 1939, See p. 143-44.)

21 What were the causes and results of the Revolution of 1688 ?
(See pp 266-269)

Hanoverian Period

1 Account for the supremacy of the Whigs in the early Hanoverian Period and show in what ways it benefited the nation (Patna 1946, Madras, 1939, See p 297)

2 What was the contribution of Sir Robert Walpole to the economic and political development of England ? (All 1939, See pp 302-305)

3 Describe the career and policy of the Elder Pitt.
(Mad 1938, Cal 1942, See pp 311-313)

4 Examine the attempt of George III at personal government and discuss its chief results —Punjab 1935) George III was ambitious not only to reign but to govern (Madras 1939, See pp 313-14)

[**Hints :**—(a) Till his accession the Whigs had dominated affairs George III sowed dissensions among the Whigs and thus broke their power (b) He resumed the vast patronage of the Crown which till now was dispensed by the Whig ministers Then by distributing pensions and honours he created a body of followers known as the "King's friends", who were pledged to support his policy Lastly by bribery and corruption he made the House of Commons subservient to his will By these unconstitutional methods he sought to revive the power of the Crown and his own personal ascendancy The results of the King's policy were extremely unfortunate It reduced constitutional Government to a shadow, because the King interfered with the freedom of speech and freedom of election and attacked personal liberty This is clear from his attitude towards Wilkes It was his obstinacy which was largely responsible for the loss of the American colonies and for the failure of Pitt the Younger to pacify Ireland]

5 What were the causes of the American War of Independence ? Account for the failure of Great Britain in this war (Cal 1947, Punj 1939, See pp 317, 321)

6 Sketch the policy and work of the Younger Pitt up to 1793 How and why did his policy change thereafter ? (Pat 1941, See pp 324, 328)

7 What was the part played by England in the wars against Napoleon ? (Allahabad, 1939, See pp 343, 458)

8 "England was the principal architect of Napoleon's ruin"—Amplify (Patna, 1946, See pp 343 & 458)

9 Trace the causes of the Industrial Revolution and point out its results, social and political (Allahabad, 1939, Cal 1945, See pp 344-346)

10 Mention the causes of social discontent in England immediately after the close of the Napoleonic wars How did the Government tackle the problem ? (Allahabad, 1937, Patna, 1946)

11. Sketch briefly the foreign policy of Canning and estimate its importance (Allahabad, 1938, Madras, 1939, See p 349)

12 Explain the importance of the Durham Report and the principal changes in the colonial policy of England since its publication

13 Attempt a comparative estimate of the careers and achievements of Disraeli and Gladstone (Allahabad, 1940, See p 385)

14 Review the political career of Sir Robert Peel (See p 360-62)

15 Describe Gladstone's attempt to pacify Ireland How far did he succeed ? (Cal 1946, Punj 1939, See pp 376-78)

16. Write a short note on the Parliamentary Reform in England in the 19th century (Cal 1946, See pp 354, 398)

17 Account for the change in the British foreign policy in the beginning of the twentieth century What were its effects ? (See pp. 405-406)

18 Review the achievements of the Liberal Party in the 19th century (Patna, 1947, See pp 356, 382)

19 Explain the causes that led to the Chartist Movement Why did it fail ? (All 1940, See p 358)

CALCUTTA UNIVERSITY QUESTIONS (1957-1960)

1957

1 Describe the results of the conversion of England to Christianity (See pp 19-20)

2 What were the distinctive features of the Feudal System established by King William I ? Do you think that the essence of the system had existed in Saxon times ? (See pp 51-52)

3 Enumerate the most valuable provisions of the Great Charter of 1215 Explain how it became one of the great starting points of British nation liberties (See pp 86-87)

4 Describe Edward I's parliamentary experiments Give a brief account of his chief legislative measures (See pp 99, 102)

5. Show how Wolsey raised England to an important place in European politics Why was Wolsey thrown over by Henry VIII ? (See p 171)

6 Give a brief review of England's relations with Scotland under Edward VI, Mary Tudor, and Elizabeth (See Appendix)

7. What were the causes of dispute between Charles I and Parliaments ? (See pp 229—231)

8 Show how Cromwell ruled England during the years 1653-58. Describe his foreign relations in outlines. (See pp 247-49)

9 Review the history of the twenty-one years of Walpole's administration (See pp 303-305)

10 What were the achievements of Sir Robert Peel's Conservative Ministry, 1841-46 ?

11 Write short notes on the Act of Settlement (1701), the Union between England and Scotland (1707), the Act of Union of 1800 between Great Britain and Ireland (See pp 279, 284, 334)

1958

1 Narrate the story of the Danish conquest of England and given an account of the work of Canute in England (See p 25, 26, 36).

2 What measures did William the conqueror take to secure his position in England ? (See p 48)

3 What was the extent of the continental empire of Henry II ? Show how most of that empire was lost by John (See p 77 & 84)

4 Describe in outlines the relations between England and Scotland under Edward I and Edward II (See p 101-102 & 106)

5 Explain the importance of the Peasant's Revolt of 1381 and write a note on the Lollard movement in England (See p 123, 120, 136)

6 Show how Henry VII strengthened the monarchy (See p. 161-63)

7. Explain the term "Counter Reformation" Show how England was affected by it during the reign of Elizabeth (See p 213)

8 How do you account for the defect of the Royalists in the Civil War (1642—1645) ?

9 Describe the career of Oliver Cromwell (See p. 253-55.)

10 What were the causes of the quarrel between England and her American colonies ? (See p 317)

11 Give an estimate of the work of Disraeli as the Prime Minister of England (See p. 380)

1959

1 State the main facts concerning the establishment of Christianity in Saxon times. (See p 17)

I and

(See p 71

3 Give in outline the story of the events in the reign ... leading to the signing of Magna Carta Indicate the importance the charter (See p 81-87)

4 Sketch the career of Simon de Montfort Do you think th he was great statesman ? (See p 94)

5 Give an account of the relations between England and Scotland in the reign of Edward I and Edward II (See p 101-102, & 10

6 Do you think that the Reformation in England was a political movement ? (See p 175 & 433)

7 Describe Elizabeth's foreign policy down to 1588 (See 194 & 203)

8 What were the important provisions of the Bill of Rights and the Act of Settlement ? (See p 271 & 279)

9 What were the causes of the American War of Independence How do you explain England's failure in this war ? (See p 317 & 321

10 Give an account of the chief services of Sir Robert Peel England (See p 361)

1960

1 Describe the life and work of Alfred (See p 28-31)

2 What were the results of the Norman Conquest ? (See p 65

3 Review the dispute between Henry II and Thomas Becket What were the effects of crusades on English History ? (See p 71)

4 Describe the part played by Richard I in the third crusade What were the effects of crusades on English History ? (See p 81)

5 "Henry VII's reign has been described as a period of remed and a period of seed time" Why ? (See p 167)

6 Briefly narrate the story of the Spanish Armada Account for its failure (See p 203-05)

7 Explain the circumstances leading to the Revolution of 168 (See p 266

8 Review the administration of Robert Walpole (See p 3

9 What was the part played by England in the overthrow of Napoleon ? (See p 343 & 158)

10 Describe the measures taken by Gladstone for the pacification of Ireland (See p 376)

11 Briefly discuss Disraeli's foreign policy (See p 381)